हुइ है सोई (जो) राम रचि राखा,
को करि तरक बढा वहि साषा।

—गोस्वामी तुलसीदासजी

सत्यमेव जयते

उप शिक्षा मंत्री
भारत
DEPUTY EDUCATION MINISTER
INDIA

नई दिल्ली
जनवरी ६, १९६७ ई०

सन्देश

हमारे अपने देश मे, जिसे हिन्दी भाषा कहते है, उसके अन्तर्गत अनेक उपभाषाये सम्मिलित है, जिनमे राजस्थानी का अपना विशेष महत्व है। मैरा सदैव से यह विश्वास रहा है कि हिदी की उपभाषाओ को शक्तिशाली बनाने से अन्त्वतोगत्वा हिंदी को ही बल मिलेगा और उसके शब्द-भण्डार मे वृद्धि होगी। अतः राजस्थानी भाषा के विकास के लिये जो कुछ भी किया जा रहा है, अथवा आगे किया जायेगा, वह समर्थन के योग्य होगा।

मुझे यह जानकर बडी प्रसन्नता हुई कि राजस्थान सरकार के तत्वावधान मे श्री सीताराम लालसजी जिस राजस्थानी शब्द कोश का सकलन तथा सम्पादन कर रहे है, उसका द्वितीय खण्ड प्रकाशित होने जा रहा है। मुझे उसके प्रथम खण्ड को देखने का अवसर मिला था और मुझे यह अकित करते हुये प्रसन्नता है कि उसके सकलन तथा सम्पादन मे बडे परिश्रम तथा अध्यवसाय का परिचय दिया गया है। मुझे विश्वास है कि राजस्थानी शब्द कोश का यह द्वितीय खण्ड पहले से भी अधिक उच्चस्तर का होगा और इसके प्रकाशन से राजस्थानी के विकास मे विशेष सहयोग मिलेगा।

अत इस अवसर पर मैं अपनी हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ। मै परम पिता परमात्मा से यह प्रार्थना करता हूँ कि इस शब्द कोश का शेष कार्य शीघ्र ही सम्पूर्ण हो और उन सब खण्डो के प्रकाशन के फलस्वरूप राजस्थानी तथा हिन्दी की अतुलनीय सेवा हो सके।

भक्त दर्शन

अपनी बात

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि 'राजस्थानी सबद कोस' का द्वितीय खंड हम दो जिल्दों में जिज्ञासु पाठको के समक्ष प्रस्तुत करने में समर्थ हो सके हैं इस 'कोस' का प्रथम खड आज से चार वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ था और उसके पश्चात निरतर आर्थिक कठिनाइयों और विषम परिस्थितियो के बीच में कोश के परिवर्धन, संशोधन एवं संपादन का कार्य तो चलता रहा -- लेकिन प्रकाशन की गति अत्यन्त धीमी हो गई। परिणाम स्वरूप चार वर्ष का दीर्घ व्यवधान आ गया -- जो हमारी पूर्ण विवशता का प्रतिफलन है। हम आज भी यह कहने की स्थिति मे नही हैं कि आने वाले तृतीय एव चतुर्थ खड यथा समय पाठको की सेवा में पहुँचा सकेंगे -- लेकिन यह अदम्य विश्वास अवश्य है कि जिज्ञासु एव विद्वान पाठको के आशीर्वाद से यह कार्य अवश्य पूर्ण होगा और कार्य की गति में तीव्रता आयेगी।

हम द्वितीय खड को दो विभिन्न जिल्दो में प्रस्तुत कर रहे हैं। इसके पूर्व हमने प्रथम खड में यह इच्छा जाहिर की थी कि द्वितीय खड की एक जिल्द में 'च', 'ट' तथा 'त' वर्ग तक पहुच जायेगे किन्तु अब शीघ्रातिशीघ्र पाठको तक पहुँचने की दृष्टि से यह निर्णय लेने पर विवश हुए हैं कि प्रत्येक खंड को दो दो उप - खडो में विभाजित कर दें — ताकि बहुत बडे समय तक हम नये कार्य से पाठको को वचित न रखें।

द्वितीय खड की संपूर्ति ने हमारे मन में जहाँ एक ओर आत्म विश्वास को दृढ बनाया है — अर्थाभाव की कठिनाइयो के कारण चार वर्षों मे प्रत्येक क्षण ने मन को झकझोर भी दिया। कितने ही ऐसे अवसर भी आये — जब यह विश्वास ही टूटने लगा कि कोश का वृहद एवं पवित्र कार्य कही अधूरा ही नही रह जाय — लेकिन कोशकर्ता एव सपादक श्री सीताराम लालस के अपार धैर्य, आश्वस्त निष्ठा और अनवरत साधना के कारण कार्य चलता ही रहा और ऐन - केन सफलता भी मिली ही। हमारे लिये यह अत्यन्त कठिन निर्णय था कि आने वाले भागों के वृहद खडो को उपखडो में विभाजित करें या न करें। उससे पाठक लाभान्वित होगे या नही। कहीं कोश की योजना को आघात तो नही पहुँचेगा। किन्तु कोश की सपूर्ण आत्मा को सशक्त एव सजीव बनाये रखने का अमित विश्वास हमें यह शक्ति प्रदान कर सका कि उपखंडो का विभाजन मात्र बाह्य-आकार का ही परिवर्तन है — इससे न सर्वांगीणता मे अन्तर आयेगा और न शब्द-विवेचना की गभीरता मे ही फर्क आने वाला है। मुख्य योजना को भी बदलने का प्रयास नही है — यह उपखडीय विभाजन तो व्यवस्थागत कठिनाइयो का व्यावहारिक प्रतिपालन मात्र है। कोशकार्ता एव सपादक श्री सीताराम लालस की एकनिष्ठ साधना एव शब्दगत तन्मयता को ही हमने अपने सामने रखना उचित समझा।

कोश ॰ प्रकाशन की आर्थिक कठिनाइयो का विगतवार हवाला स्वय कोशकर्ता एव सपादक ने अपने सपादकीय निवेदन में व्यक्त किया है। किन्तु उन कठिनाइयों के दौरान में स्वजनो के सद्भाव उनकी सत्प्रेरणा और विश्वास दिलाने की कनुकपा ही हमारे लिए सौभाग्य की बात थी। इस काल में डा० लक्ष्मीमल सिंघवी ससद सदस्य, ठाकुर श्री भैरूंसिंहजी खेजडला, ठाकुर श्री केसरीसिंहजी जोजावर, ठाकुर श्री गोवर्धनसिंहजी मेडतिया आई ए.एस एव ठाकुर श्री ओंकारसिंहजी जोधा आई.ए एस जैसे प्रवर उदारमना महानुभावो का स्नेहपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। साथ ही साथ राज्य एवं केन्द्रीय सरकार से सहायता प्राप्त करने एव सही मार्ग बताने की दृष्टि से केन्द्रीय उपशिक्षा मत्री श्री भक्तदर्शन, राजस्थान के शिक्षा मत्री श्री वृजसुन्दर शर्मा एव राज्य के शिक्षा सचिव श्री विष्णुदत्तजी शर्मा आई.ए एस. का पूर्ण सहयोग एव समर्थन प्राप्त हुआ। सहयोगी बन्धु ठा० श्री नारायणसिंह भाटी एव कठिनाइयो मे भी साथ रहने वाले कोश - कार्यालय के कार्यकर्ताओं को भी धन्यवाद देना हमारा कर्तव्य है। उपर्युक्त सभी कृपालु महानुभावो के प्रति हम अपना आभार प्रकट करना चाहते हैं।

इस कोश के प्रकाशन के लिये राजस्थान सरकार एव भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय द्वारा प्रादेशिक भाषाओं के विकास की योजना के अन्तर्गत आर्थिक सहयोग मिलता रहा है और उसी योजना एव सहायता के कारण कोश का कार्य भी चल रहा है — अतः दोनो सरकारो के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

उपरोक्त सहायता के अतिरिक्त द्वितीय खंड के लिये एक मात्र स्वय प्रेरित अनुदाता श्रीमान महाराजा राजबहादुर श्री मयूरध्वजसिंहजी ध्रांगधरा के प्रति भी कोश उप-समिति अपना आभार प्रकट करती है -- जिनकी इस कोश एव साहित्य मे अदम्य रुचि रही है।

अन्त में मैं उन सब महानुभावो एवं साहित्य प्रेमियों को भी उपसमिति की ओर से धन्यवाद देना चाहूंगा जिन्होंने समय समय पर यथा शक्य सहायता एव सहयोग प्रदान किया है और इस कार्य को पूर्ण करने में अपना आशीर्वाद प्रदान किया है। श्री सीताराम लालस को साधुवाद है कि उनका परिश्रम, उनकी लगन और तपस्या द्वितीय खंड के रूप में अवतरित हो सकी है।

शुभाभिलाषियों की प्रेरणा और श्री लालस की एकान्तिक साधना के बल पर अब हम कोश के तृतीय खंड की ओर अग्रसर हो रहे हैं — सफलता के अमिट विश्वास के साथ।

विनीत

(कर्नल) ठा० श्यामसिंह

सचिव

उपसमिति, राजस्थानी सबद कोस, जोधपुर.

संपादकीय

"निवेदन"

"राजस्थानी सवद कोस" के इस द्वितीय खण्ड को आपके हाथो मे रखते हुए प्रसन्नता का अनुभव होना तो स्वाभाविक ही है परन्तु इस प्रसन्नता के पीछे अन्तर्वेदना और स्वानुभूति की जो दीर्घ रेखायें है उन्हे भी इसी अवसर पर प्रकट करने के लिए यह बोझिल हृदय आतुर सा हो रहा है। न चाहते हुए भी इस द्वितीय खण्ड के प्रकाशन कार्य मे तीन वर्ष की दीर्घावधि व्यतीत हो गई। यद्यपि इस भाग की सभी सामग्री तैयार थी और प्रकाशन हेतु मैं निरन्तर प्रयत्नशील था फिर भी अर्थाभाव की जो विकट घाटी उपस्थित हुई उसे पार करना सहज न हो सका। तीन वर्ष का यह काल इस कोश रचना कार्य मे विकट आर्थिक विवशता और विषम परिस्थितियो का काल रहा है। यह तो सत्य है कि इस बढती हुई महगाई के युग मे इस आकार मे कोश रचना करना व्यय साध्य तो है ही फिर भी यथा समय क्वचित बाधाओ के बाद भी यदि अर्थ व्यवस्था का सहयोग प्राप्त हो जाता है तो कार्य सम्पादित हो सकता है। इस द्वितीय खण्ड के प्रकाशन का काल जिन परिस्थितियो के मध्य गुजरा है उससे तो यही स्पष्ट है कि हमारे लिए लक्ष्मी ने सरस्वती के प्रति अपनी चिर वैमनस्यता का ही पालन किया। ऐसी स्थिति मे दृढ चित्त व्यक्ति भी विचलित हो सकता है तो फिर मुझ अकिंचन का तो सामर्थ्य ही क्या! इसी अवधि मे यह सत्य प्रतीत हुआ कि आर्थिक सहयोग ही सब कुछ नही है, इससे भी प्रबल है सहृदयजनो की सद्भावनायें, सुसहयोग एव सत्प्रेरणायें। इसी सम्बल के सहारे व्यक्ति अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सकता है।

इन विगत तीन वर्षो की विषम आर्थिक विवशताओ के बीच मैं जिन सत्प्रेरणाओ के सम्बल को प्राप्त कर खडा रह सका हूँ उन्हें कैसे भुलाया जा सकता है। साहित्य सवर्द्धक श्रद्धेय श्रीमान् रोडला ठाकुर साहब कर्नल श्री श्यामसिंह जी एव उदारमना सज्जन प्रवर श्रीमान् ठाकुर साहब श्री गोरधन सिंह जी I A S. तथा जनगण मान्य डॉ० लक्ष्मीमल जी सिंघवी ससद सदस्य की परम उदारता एव महत्ती कृपा का ही यह फल है कि कोश का द्वितीय खण्ड आपके हाथ मे है। यह व्यक्त करने मे मुझे किसी प्रकार का सकोच नही होता कि इस विकट अर्थ द्व द के बीच उक्त महानुभावो ने जिस अनुपम उदारता एव सद्भावना के साथ तन मन धन से सहयोग दिया है वह आपकी निस्वार्थ सेवा का उच्चादर्श है। राजस्थानी कोश ही नही अपितु समस्त साहित्य जगत आप जैसे हित चिन्तको का चिर ऋणी है।

"राजस्थानी सवद कोस" को चार खण्डो मे सम्पूर्ण रूप से प्रकाशित करने की निश्चित योजना थी जिसका उल्लेख कोश के प्रथम खण्ड की भूमिका मे किया जा चुका है। इसी योजना के अनुसार ही प्रथम खण्ड जिसमे "अ" से "घ" वर्ण तक के शब्दो का सकलन है, प्रकाशित किया गया। द्वितीय खण्ड मे "च" से "न" वर्ण तक के शब्दो को सम्मिलित करने की ही निश्चित योजना थी। जैसा कि कोश के प्रथम खण्ड की भूमिका मे स्पष्ट किया जा चुका है कि वर्णमाला के सभी वर्णो के प्राप्य शब्दो का अकारादि क्रम से रजिस्ट्रो मे सग्रह किया जा चुका है उसी के अनुसार "न" वर्ण के शब्दो की प्रेस कॉपी भी तैयार की गई। परन्तु अर्थाभाव का जो सघर्ष रहा उसी के कारण प्रकाशन कार्य योजनानुसार सम्पन्न न हो सका। ऐसी स्थिति मे इस द्वितीय खण्ड को जिल्दो मे विभक्त करने की विवशता आ गई। इस बात के लिए मुझे हार्दिक दुःख है कि चाहते हुए और सभी सामग्री तैयार रहते हुए भी मैं कोश के द्वितीय खण्ड को योजनानुसार "न" वर्ण तक के शब्दो सहित आपके समक्ष प्रस्तुत नही कर सका। इस जिल्द विभाजन से उत्पन्न होने वाली सभी असुविधाओ के लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

इस द्वितीय खण्ड के प्रकाशन कार्य को आरम्भ हुए अभी कुछ भी अधिक समय व्यतीत नहीं हुआ था कि धीरे धीरे आर्थिक सहयोग के सभी द्वार बंद हो गए। अनेक संकटों के मध्य भी कार्य में कुछ काल तक निरन्तरता अवश्य रही परन्तु वह निर्वाह कब तक संभव था। मझधार डूबने की स्थिति आ ही गई। ऐसी स्थिति में कोश के दृढ़ स्तम्भ श्रीयुत् ठाकुर साहब श्री गोरधनसिंह जी ने कोश नैया को पार लगाने हेतु रोड्डू ठाकुर साहब से आर्थिक ऋण के लिए निवेदन किया। इस पर रोड्डू ठाकुर साहब श्री शम्भूसिंहजी ने कोश कार्य को यथा विधि निरन्तर रखने के लिए धनराशि ऋण के रूप में देकर अपना सहयोग दिया। आपका यह सामयिक सहयोग मेरे लिए एक बड़ा सहारा सिद्ध हुआ। आपके इस सहयोग के लिए मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

इस खण्ड के प्रकाशन कार्य की अवधि में उपस्थित होने वाली आर्थिक विवशताओं को शिथिल एवं पराजित करने में हमें संसद सदस्य डॉ० लक्ष्मीमल सिंघवी का अपरिमित सहयोग प्राप्त हुआ। आपने अपने अत्यधिक व्यस्त जीवन काल में से कुछ अमूल्य क्षण हमें प्रदान कर इस कोश के लिये केन्द्रीय सरकार से दस हजार रुपये की धनराशि का अनुदान प्राप्त करवाया। यह आर्थिक सहयोग प्रथम खण्ड के प्रकाशन के बाद अप्राप्य सा ही हो गया था परन्तु डॉ० सिंघवी साहब के सद्प्रयत्नों के फलस्वरूप ही उक्त धन राशि केन्द्रीय सरकार से अनुदान के रूप में प्राप्त कर सके। प्रकाशित कोश का प्रथम खण्ड, कोश की समस्त सामग्री एवं कोश के लिए प्राप्त सम्मतियाँ देखकर आप अत्यधिक प्रभावित हुए और आपने राजस्थानी के इस वृहद कोश को तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व० श्री लालबहादुर शास्त्रीजी की सेवा में अवलोकनार्थ प्रस्तुत करने की जिज्ञासा प्रकट की। इस पावन कार्य के लिए मैं सहर्ष सहमत हुआ। तब आपने शीघ्र ही मान्यवर प्रधानमंत्री से साक्षात्कार कराने की व्यवस्था कर दी। यह आप ही का प्रयास था कि मैं अकिंचन सम्माननीय पूज्यवर स्व० श्री लालबहादुर शास्त्रीजी से साक्षात्कार कर उनके दर्शन लाभ करता हुआ अपने इस कोश की सम्पूर्णता की हार्दिक चाहना उनके सामने प्रकट कर सका। डॉ० सिंघवी साहब के इस अतुल सहयोग के लिए मैं सदैव सदैव के लिए आभारी हूँ।

केन्द्रीय सरकार से प्राप्त होने वाले अनुदान के लिए जब जब भी दिल्ली जाने का अवसर मिला तो वहाँ पर मुझे श्रीमान् ठा० समदरसिंह जी शेखावत, (मैनेजर) राजस्थान भवन दिल्ली से पर्याप्त सहयोग प्राप्त होता रहा। अपनी निजी असुविधाओं के बीच भी आपने इस कोश तथा मेरे प्रति जिस आत्मीयता को प्रकट किया उसे किसी क्षण भुलाया नहीं जा सकता।

सरकार द्वारा प्राप्त होने वाले आर्थिक सहयोग की कड़ी में इस कोश के प्रथम खण्ड के प्रकाशन काल में केन्द्रीय अनुदान के साथ राज्य सरकार से भी कुछ आर्थिक अनुदान आरम्भ हुआ था परन्तु इस विगत अवधि में आर्थिक सहयोग के अन्य श्रोतों के अवरुद्ध होते ही विवशताओं को और विकट बनाने के लिए यह द्वार भी प्राय बन्द सा हो गया और केन्द्रीय सरकार से स्वीकृत कराये गये अनुदान को राज्य सरकार से प्राप्त करने में भी बाधायें उपस्थित होने लगी। इस कोश के शुभचिन्तकों को किसी भी स्थिति में यह स्वीकार नहीं था। अत ऐसी स्थिति में उक्त स्वीकृत धनराशि को प्राप्त करवाने में श्रद्धेय श्री लक्ष्मीलालजी जोशी, भूतपूर्व अध्यक्ष राजस्थान लोक सेवा आयोग व परमादरणीय श्रीयुत् विष्णुदत्तजी शर्मा शिक्षा सचिव राजस्थान ने जिस सौजन्यता एवं सौहाद्र का परिचय दिया उसे शब्दों में सीमित नहीं किया जा सकता। आपकी असीम कृपा एवं सद्प्रयासों के फलस्वरूप ही केन्द्रीय सरकार द्वारा स्वीकृत अनुदान वित्तीय बजट की समाप्ति के अन्तिम क्षणों में प्राप्त करने में सफल हुआ।

राज्य सरकार की ओर से पर्याप्त आर्थिक सहयोग के अभाव में कोश कार्य को निरन्तर रखने के लिए ऋण का सहारा लेना अनिवार्य हो गया। ऋण की व्यवस्था करना भी उतना ही विकट हो गया जितना आर्थिक अनुदान प्राप्त करना। ऐसी स्थिति में "उपसमिति राजस्थानी सबद कोस" ने जो श्रीमान् ठाकुर केशरीसिंहजी सदस्य विधान सभा की अध्यक्षता में कार्य कर रही है अपने कर्तव्य का निर्वाह किया। उक्त समिति ने श्री जवर बोर्डिंग हाउस, जोधपुर की निधि में से २०,०००) रुपये का ऋण कोस के लिए प्राप्त किया। इस ऋण को प्राप्त कराने में कर्नल श्रीमान् मोहनसिंहजी भाटी ने अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया। श्री जवर बोर्डिंग हाउस की प्रबंधक समिति तथा कर्नल मोहनसिंह जी भाटी एवं श्रीमान् ठाकुर केशरीसिंह जी के सहानुभूति पूर्ण सुसहयोग के लिए मैं अपना हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

कोश पर वढता हुआ ऋण भार घोर चिन्ता का विषय बना हुआ था परन्तु इसी समय दूसरे वर्ष पुन केन्द्रीय सरकार से २३,७,५०) के आर्थिक अनुदान की स्वीकृति प्राप्त हुई। इस स्वीकृति अनुदान को राज्य सरकार के कोष से प्राप्त कराने मे मान्यवर श्री बृजसुन्दर जी शर्मा, शिक्षा मत्री राजस्थान व उनके निजी सचिव श्री कोमल कोठारी का प्रशंसनीय सहयोग प्राप्त हुआ। आपने समय समय पर मेरे प्रति जो उपकार किए हैं उनके लिए मैं पूर्ण उपकृत हूँ और इसके साथ ही आपने जिस सद्भावनाओ के साथ मेरा मार्ग प्रदर्शन किया है उसके लिए मै हृदय से आभार स्वीकार करता हूँ।

यद्यपि मेरे परम हितेषियो के अनुपम सहयोग से (राजकीय) सहयोग प्राप्त अवश्य हुआ परन्तु इस कार्य के लिये यह आशिक मात्र था। इस अनुदान से कोश का पूर्व का ऋण मात्र ही कुछ हल्का हो पाया। कार्य को आगे वढाने की समस्या तो सामने खडी ही थी। यह अभाव सभी वैतनिक कार्य कर्त्ताओ को हताश कर ही चुका था। आर्थिक अभाव के इन भीषण थपेडो मे कोश कार्य को आगे वढाना असम्भव ही था। परन्तु सदैव की भाति इस कोश के मूल कर्णाधार रोडला ठाकुर साहव कर्नल श्री श्यामसिंहजी ने अपनी पूर्ण उदारता का परिचय दिया। जब जब भी मैं आपके पास पहुचा तो आपने हृदय से मेरी विवशताओ को समझा और अपूर्व आत्मीयता प्रकट की। कोश के प्रति आपकी सच्ची निष्ठा देखकर यह व्यक्त करने मे किसी भी प्रकार की अत्योक्ति नही कि कोश प्रकाशन के गुरुतर भार को आपने अपने वलिष्ठ कधो पर वहन नही किया होता तो यह कार्य कृति के रूप मे प्रकट ही नही हो सकता था। ठाकुर साहव कर्नल श्री श्यामसिंहजी की उदारता यहाँ शब्दो मे सीमिल नही की जा सकती परन्तु हृदय के भाव भी प्रकट हुए विना रह नही पा रहे है। अर्थाभाव मे जव भी कार्य रुका आपने अपनी ओर से सहयोग दे कर कार्य को निरन्तर रखा। निस्सन्देह आपका सच्चा स्नेह जो मुझ पर प्रकट हुआ है उसे किसी भी स्थिति मे विस्मृत नही किया जा सकता।

वृहद् आकार मे कोश के सम्पादन कार्य मे आर्थिक अभाव तो एक विकट विवशता है ही इसमे दो राय नही हो सकती परन्तु अनेकानेक उदारमना साहित्य सेवी सहृदजन अर्थ सम्पन्न सज्जनो का यहाँ अभाव नही है। उन्हे किसी भी स्थिति में ऐसे सत्कार्य का अवरोध स्वीकार्य नही होता। वे किसी भी प्रकार आर्थिक सहयोग जुटाकर इस विवशता को शिथिल कर ही देते है। राष्ट्र को राष्ट्र के साहित्य सेवियो पर महान् गर्व है। आर्थिक सहयोग के साथ साथ इस कार्य की सार्थकता एव उपादेयता के लिए अत्यन्त आवश्यक होती है, सदभावनाओ, सत्प्रेरणाओ एव सन्नमार्ग दर्शन की। यह प्रकट करते हुए अतीव प्रसन्नता होती है कि मेरे आत्मीय स्वजनो विद्धदवर, गुरुजनो और साहित्य मनीषियो की ओर से सदैव मुझ पर असीम कृपा रही और इसी के फलस्वरूप मुझे निरन्तर प्रोत्साहन प्राप्त होता रहा।

अपने इन सभी परम हितेपियो मे परमादरणीय समालोचक प्रवर श्रीयुत भगवत शरण उपाध्याय, सपादक 'हिन्दी विश्व कोष'' के प्रति मैं हृदय से कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होने केन्द्रीय सरकार द्वारा प्रकाशित होने वाली ''भापा'' नामक पत्रिका मे **''राजस्थान सवद कोस''** का सही सही मूल्याकन करते हुए मेरा पथ निर्देश किया और कोश कार्य के लिए नवीन दिशा भी दी। इनके साथ ही मै मान्यवर पद्मविभूषण श्री हरिभाऊ उपाध्याय भूतपूर्व शिक्षा मत्री राजस्थान, के प्रति भी अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होने इस कोश का अध्ययन कर इसके लिये अपनी सुसम्मति प्रदान कर मुझे प्रोत्साहित किया।

इस कोश मे सग्रहित जैन ग्रथो के अनेकानेक शब्दो के अर्थ एव उनकी व्युत्पत्ति आदि स्पष्ट करने मे पूज्यवर पद्मश्री पुरातत्वाचार्य मुनि श्री जिन विजय जी, सचालक प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान एव **श्री गोपाल नारायण जी बहुरा** उपाध्यक्ष प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर का निरन्तर रूप से सौहाद्र पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है। आपके सहयोग से जैन शब्दो की अर्थ व्याख्या एव अनेक शब्दो की अर्थ पुष्टि के लिए वशभाप्कर से उदाहरणो की प्राप्ति मे पूर्ण सुगमता रही। शब्दो की व्युत्पत्ति एव अर्थ व्याख्या के लिए आपसे किए गए विचार विमर्ष से शब्दो के मूल रूप तक पहुचाने में सुविधा रही जिससे राजस्थानी मे वहुत जैन शब्दो को कोश मे उपयुक्त स्थान मिल सका। इसके लिए मैं आप दोनो ही महानुभावो का हृदय से आभार मानता हूँ। इसी प्रसग मे श्री वहुरा जी के सहायक श्री लक्ष्मीनारायण जी गोस्वामी ने भी समय समय पर अपना हार्दिक सहयोग प्रदान किया है इसके लिये निश्चय ही आप घन्यवाद के पात्र हैं।

इसी शृ खला में मैं वयोवृद्ध श्रीयुत बालाराम जी कवि किंकर को सौजन्यता एव सहयोग को विस्मृत नहीं कर सकता जिन्होने अनेक जैन पारिभाषिक शब्दो के स्पष्टीकरण के लिए मुझे अपना समय दिया और ऐसे ही अनेक शब्दो के लिए उपयुक्त उदाहरणो की व्यवस्था भी की । इस कोश कार्य के लिए आपका सहयोग मुझे निरन्तर रूप से प्राप्त होता रहा इसके लिए मैं हृदय से आपका धन्यवाद करता हू ।

राजस्थानी साहित्य मे ज्योतिष सम्बन्धी शब्दो एव नक्षत्रो का भी व्यापक प्रयोग हुआ है । इसी उद्देश्य से कोश मे ऐसे शब्दो को उपयुक्त स्थान देकर उनकी उचित व्याख्या की गई है इसके लिए मैं श्री माँगीलालजी दवे अध्यापक सस्कृत महा विद्यालय, जोधपुर को हार्दिक धन्यवाद अर्पित करता हूँ, जिन्होने मुझे अधिक समय देकर ज्योतिष सम्बन्धी शब्दो की सही अर्थ व्याख्या करने एव विभिन्न नक्षत्रो की उपयुक्त परिभाषा बनाने मे सुगमता प्रदान की । रात्रि में नक्षत्रो की स्थिति को दिखाकर तदनुकूल परिभाषा बनाने मे आपने सराहनीय सहयोग प्रदान किया वस्तुत आप धन्यवाद के पात्र हैं ।

कोश सम्पादन कार्य मे शब्द सग्रह एव शब्दार्थ व्याख्या का महत्त्व विद्वद्जनो से छिपा नही है । शब्द सग्रह कार्य मे मुझे श्री मोहनलाल पुरोहित एम ए, बी एड, साहित्यरत्न द्वारा सुसहयोग सदैव ही प्राप्त होता रहा है । आपने कोश के प्रथम खण्ड के प्रकाशन मे मेरे साथ अनुलेखक के रूप मे कार्य करते हुए प्रथम खण्ड के स्वरूप को सुन्दर एव उपयुक्त बनाने मे पूरा पूरा सहयोग दिया है । इस अवधि मे आपने गोडवाड क्षेत्र मे व्यापक रूप मे व्यवहृत होने वाले शब्दो का उनकी अर्थ व्याख्या सहित अच्छा सग्रह दिया । शब्द की आत्मा को पहिचान उसके मूल अर्थ तक पहुचने की आप की सूझ वस्तुत सराहनीय है । आपने जिन सद्भावनाओ से प्रेरित हो कोश सम्पादन मे मुझे सहयोग दिया है उसके लिए मैं हृदय से धन्यवाद करता हूँ ।

अपने सहृदय सहयोगियो की स्मृति जब भी मुझे होती है तो मेरा हृदय राजस्थान के भूतपूर्व उपशिक्षा मत्री श्रीयुत् पूनमचदजी विश्नोई के प्रति अपना आभार प्रकट किए बिना नही रहता । आपने इस कोश के प्रथम खण्ड के प्रकाशन के समय जिस अपूर्व सहयोग एवं सत्प्रेरणाओ द्वारा समय समय पर मुझे उत्साहित किया था वही सहयोग प्रत्येक परिस्थिति मे सदैव प्राप्त होता रहा है । आपकी इन सद्भावनाओ के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ ।

कोश कार्य मे प्रारम्भ से ही निरन्तर सद्भाव के साथ सहयोग देने वालो मे मुझे श्री कोमल कोठारी और श्री विजयदान देथा की स्मृति सदैव हो आती है । आप दोनो ही ने सच्ची लगन के साथ मेरे कोश को देखा और सच्चे स्नेहीजन के रूप मे प्रत्येक स्थिति मे मुझे प्रोत्साहित किया । साहित्य के प्रति आप पूर्ण निष्ठावान हैं और लोक साहित्य मे आपकी विशिष्ट रूचि है । अत भाषा विकास के वर्तमान काल मे इस "राजस्थानी सबद कोस" की पूर्ण उपयोगिता के प्रति आपने अपना पूर्ण विश्वास प्रकट किया । सरकारी अनुदान प्राप्त कराने मे श्री कोमल कोठारी जी का विशेष सहयोग रहा है । आपने निजी सुविधाओ और असुविधाओ का ध्यान न रखते हुए सदैव मेरे कार्य को प्राथमिकता दी । आप दोनो ही सज्जनो के स्नेहपूर्ण व्यवहार एव सहयोग के प्रति, जो मुझे सदैव प्राप्त होता रहा है, मैं हृदय से धन्यवाद अर्पित करता हूँ ।

साहित्य शोध एव कोश कार्य मे रूचि रखने वाले कतिपय सुहृद साहित्य मर्मज्ञ, भाषा विशेषज्ञ एव विद्वद्जन ने समय समय पर कोश कार्यालय मे पधार कर कोश रचना प्रणाली और कोश का निकट से अध्ययन किया और उस अवसर पर अपनी सद्भावनाओ मे मुझे प्रोत्साहित किया । ऐसे साहित्य मनीषियो मे उदारमना श्रीमान् महाराजा साहिब राजबहादुर श्रीमयूरध्वजसिंहजी ध्रागधडा का नाम सर्वोपरि है जिन्होने इस "राजस्थानी सबद कोस" की आधुनिक समय मे उपयोगिता एव उपादेयता का मूल्याकन किया उसके साथ ही आपने १००१) रुपये का नगद आर्थिक अनुदान देकर अपनी साहित्य सेवा भावना का भी परिचय दिया । आपकी सहृदयता एव सद्भावनाओं के लिए मैं पूर्ण कृतज्ञ हूँ । आपके अतिरिक्त जापानी भाषा विशेषज्ञ श्री के० दोई, डॉ० नगेन्द्र, दिल्ली विश्व विद्यालय, डॉ० रसिकलाल तिवारी, भोगीलाल साडेसरा, श्री उदयनारायण तिवारी, श्री नारायण चतुर्वेदी, सम्पादक सरस्वती समालोचना, एव श्री केशवराम शास्त्री ने भी यहाँ पधार कर मुझे पूर्ण अनुग्रहीत किया । आप सभी ने कोश रचना के कार्य को देखा, अनेक विषयो पर विचार विमर्श भी

किया और अपनी सत्प्रेरणाओ द्वारा मुझे प्रोत्साहित भी किया। मेरे कार्य के प्रति आप सज्जनो ने जो सद्भावनायें प्रकट की उनके लिए मै आप सभी का आभार स्वीकार करता हूँ।

इस कोश कार्य के माध्यम से ही मुझे इस अवधि मे अनेक सज्जन वृ द के निकट सम्पर्क मे आनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है, जिन्होने समय समय पर मुझे प्रोत्साहित ही नही किया अपितु इस कोश को सुगम एव सफल वनाने के लिए भी अपना हार्दिक सहयोग प्रकट किया। महाराजा श्री हरिश्चद्रजी झालावाड, ठा० श्री भैरुंसिहजी खेजडला, ठा० केसरीसिंहजी राखी, ठा० श्रीमनोहरसिहजी वामली, ठा० श्री ओकारसिहजी जोधा वावरा I A S., श्रीमती राणीजी श्रीलक्ष्मीकुमारी चुडावत सदस्य विधान सभा ठा० श्री अक्षयसिहजी रतनू, कुं० श्रीजालमसिहजी मेडतिया खानपुर तथा श्रीरैवतदानजी कल्पित आदि आदि सज्जनो के नामविशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। मुझे कोश कार्य करते हुए जहा जिस क्षेत्र मे आवश्यकता प्रतीत हुई आप महानुभावो ने सच्चे हृदय से अपना सहयोग देकर मेरे प्रति अपनी सद्भावनाये प्रकट की। आप सभी के इस सहयोग के प्रति कृतज्ञता का भाव अनुभव करता हूँ।

कोश के इस खड के यथा विधि प्रकाशन मे स्थानीय साधना प्रेस के व्यवस्थापक श्री हरिप्रसादजी पारीक का समुचित सहयोग प्राप्त हुआ है। कोश सामग्री मे निरतर रूप से परिवर्द्धन होने के कारण उन्हे अवश्य ही अनेक असुविधाए हुई हैं, फिर भी आपने कोश कार्य के लिए प्राथमिकता देकर जो सहयोग दिया है उसके लिए मैं आपको हार्दिक धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

अन्त मे मै उन सभी उदार महानुभावो एव सहयोगी बन्धुओ के प्रति साभार कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मुझे कोश सामग्री सग्रह करने तथा इसके सम्पादन के लिए समय समय पर यथा विधि सहयोग प्रदान किया है। मानवीय भूल प्रवृति के प्रभाव से ही यदि किन्ही महानुभावो के प्रति नामोल्लेख द्वारा आभार प्रदर्शित न कर पाया हूँ तो उनसे विनम्र भाव से क्षमा याचना करता हूँ।

—सीताराम लाळस

॥ श्री ॥

* निवेदन *

— दूहा सोरठा —

नारायण भूले नही, अपणी मायाईश । रोग पैल आखद रचै, जगवाला जगदीश ॥१॥
साच न वूढो होय, साच अमर संसार मे । कैतो धोवो कोय, ओ सेवट प्रकटै 'उदय' ॥२॥
सेवा देश समाज, धरती मे साचो धरम । इण सू पूरै आज, सकल मनोरथ सांवरो ॥३॥
साहित री सेवाह, सेवा देश समाज री । आवे इण एवाह, ईश्वर कीरपा सू उदय ॥४॥
सत ऊजल सदेश, उदयराज ऊजल अखे । दीपै वारा देश, ज्यारा साहित जगमगे ॥५॥

भारत ससद मे सन् १९५० रे करीव देशरी दूसरी सगला प्रान्ता री भासावा मानी गई उणा रे सामल राजस्थानी भाषा ने नही मानो तो कुदरती तौर सू राजस्थान मे अपणी भासा राजस्थानी ने मान्यता दिरावण सारु आन्दोलन पत्रो मे शुरू हुवो ।

राजस्थानी रो विरोध मे अकसर आ बात कही जाती के इण रो कोई आधुनिक कोश नही हो । ओ घाटो मिटावण सारु में श्री सीतारामजी लालस ने क्यो क्योकि हूँ जाणता हो के डिंगल रा शब्द सग्रह रो उणा ने काफी अनुभव है । श्री सीतारामजी इणा काम सारु तैयार हो गया ने म्हे दोनु सामिल होय ने पूरा सहयोग से मैनत सूं कोश रो काम शुरू कियो ने इण में खर्च रोमदत रो जरुरत हुई तो उसा बावत म्हे स्वर्गीय ठाकुर श्री भवानीसिंहजी साहब वारा एटला पोकरण ने अरज करी । इणा कृपा करने मजूर करी ने तारीख १-५-५१ सू रुपीया री मदद देणो चालू कर दीवो । सीतारामजी मथाणिया मे लेखक राख ने काम शब्द सग्रह री स्लिप कोपिया लिखावण रो चालू कर दियो ओर म्हे दोनू तारीख १-५-५१ सू सन् १९५२ रा आखिर तक सामिल कोम कियो जिण सू कुल शब्द ११३००० स्लिप कोपिया में लिखीजीया फ़ेर समय रा हेरफेर सूं श्री पोकरण ठाकुर साहब री सहायता वद हो गई । इण सू सन् १९५३ लगायत सन् १९५६ तक ४ साल तक कोश रो काम बन्द रेयो ।

इण कोश ने पूरो करण री म्हा दोनू री पूरी लगन ही । म्हे करनल श्री सोमसिंहजी रोडला ने जून सन् १९५६ में कोश में सहायता देण सारु कागद लिखियो उण रो जवाब उणा तारीख २९-६-५६ रा कागद मे म्हने लिखियो के कोश सारु मावार रु० ५०), ३ या ४ साल तक या काश पूरो होंवे जठा तक दे सकूला । परन्तु उणारा पिता करनल श्री अनोपसिंहजी वीमार हो गया इण वास्ते सहायता चालू मे देरो हुई । उणा रे स्वर्गवास होणे रे बाद में मास नवम्बर रा अन्त मे ने दिसम्बर रा सरु में जोधपुर में ही जद कर्नल श्री सामसिंहजी कोश री मदत बाबत बातचीत करणने दोयवार म्हारे मकान पर आया ओर फिर सहायता देणी चालू कर दीवी ।

कोश रो काम उणा री सहायता सू सन् १९५७ री जनवरी सू सीतारामजी जोधपुर मे चालू कर दिया क्योकि जद उणा रो तबादला जोधपुर मे हो गयो हो । जो एक लाख तेरह हजार शब्दों री स्लिप कोपिया पेलो बणी हुई ही । उणारी स्लिपा काट काटकर अक्षरवार अलग अलग कर दी गई ने नवा शब्द भी जो मिलिया के शामिल कर दिया गया । इणतरे सब शब्द अक्षरवार किया जाय ने उणा ने अक्षरवार रजिस्टरो मे लिख लिया गया । इणतरे कोश सन् १९५८ री माह मई तक पूरो हो गयो । म्हे पैली री तरे सीतारामजी रे साथ हर तरह रो सहयोग ने मदत राखो ने काम कियो ओ कोष करनल श्री सामसिंहजी री रुपीया री सहायता सू पूरी हुवो ।

इणरे बाद प्रेस कापी वणाइण रो काम चालू हुवे । उणरे खरचे रो प्रबन्ध ठाकुर श्री गोरधनसिंहजी मेडतिया खानपुर वाला श्री झालावाड दरबार सू श्री नीवाज ठाकुर साहब सू रुपिया री सहायता लेने करायो ने करे छपण री प्रवन्ध राजस्थानी सोध संस्थान चोपासणो जोधपुर सू हुवो ने तारीख ११-३-१९५६ ने सीतारामजी ने इण साध सस्थान शिक्षा विभाग सू लोन पर ले लिया जद सू वे इण संस्थान में काम करण लागा ।

इण कोश ने तैयार करावण मे व्युत्पति विभाग पूरो करावण में स्वर्गीय प० नित्यानन्दजी शास्त्री जोधपुर की घणी मदत ही इण वास्ते बैकुंठवासी विदवान ने घणा धन्यवाद देवा हा । तारीख २२-५-५७ ने लिख दय्या नोचे मुजब हो .—

चांद वावडी
ता० २२-५-५७

सीतारामजी लालस ने राजस्थानी कोश की रचना की है। यह भारी कठिन कार्य का यन्त्र श्री उदयराजजी उज्जवल यन्त्री (मेकेनिक) के बल सचालित हुवा है। मैंने इसे देखा इन्होने प्रत्येक शब्द और धातु को जाचकर उनके प्रयोज्य सब प्रकार के प्रयोगो को प्रदर्शित किया है क्योकि इन्होने सस्कृत, प्राकृत अपभ्रश विविध भाषाओ के बल पर यह कार्य भार उठाया है। बीच बीच मे हर समय मेरे साथ विचार विमर्श करते हुए आपने पूर्ण परिश्रम करके इसे रचा है। ऐसे कठिन कार्य को पार करने मे श्री सीतारामजी की ही पूर्ण कृपा ने सहायता की है। आशा है राजस्थान की जनता इससे लाभ उठाकर इस कोश की त्रुटी की पूर्ती से पूर्ण सतुष्ट होगी और श्रम की समझने वाले विद्वान कार्य प्रशसा करेगे। फक्त नित्यानद शास्त्री।

इणी तरे ननण विश्वविद्यालय मू डा० डब्लू० एस० एलन जो ससार री करीब चालीस भाषाओ रो जाणकार है ने अन्तरराष्ट्रीय ख्याती रा भाषा शास्त्री है वे राजस्थानी भाषा रे ध्वनी विज्ञान सबंधी जांच वो शोध रो काम सारु सन् १६५२ में राजस्थान मे आया हा ने जोधपुर मे दोय मास ठहरिया हा, ने भाषा रे सिलसिले में म्हारे कने घणा आता उणाने म्हे ने सीतारामजी दोनू कोश वाली स्लिप कोपिया राय रे वास्ते म्हारा मकान पर दिखाई ही उणा म्हारो उत्साह वधायो उणा री सम्मति नीचे मुजब है —

TRINITY COLLEGE, CAMBRIDGE 26 Feb, 1960.

It is excellent news for Indo-Aryan Linguistics that the Rajastani Dictionary of Shri Udayraj Ujjwal and Shri Sitaram Lalas is now to be published Rajasthani has long presented a serious gap in the comparative Study of the vaca-bulary of the Indo-Aryan Languages and now at last it is filled by the devoted work of two Rajasthani Scholars and the support of their distinguished Sponsors, I know well and difficulties that have beset the under taking of this task and its Completion is therefore all the more a menument to the courage of these who conceived the project and brought it to fruition. With this work added to the grammer by Shri Sitaramji, the status of the Rajasthani language can no longer be denied.

Sd W. S. Allen M A PH D.
Professor of Comprative Philology
In the University of Cambridge

कोश-दोय, दातार राजपूत सरदारो री रुपीया रो मदत सू शुरु होय ने पूरो वणियो इण वास्ते पुरानी प्रथा रे माफक महे ता० २६-६-५७ ने इण बाबत काव्य गीत, कवित, रचियो ने सीतारामजी कने भेजीया वा अठे दिया जावे है इणा ने दोनू सरदारो रो धन्यवाद रे तौर पर वणने है। इण गीत री सीतारामजी पत्रो मे तारीफ की है।

"गीत" राजस्थानी मे

कोम मरु वाणरो सुणे वण्यो नह किणी सू, लाख नव्दो तणे बडो लेखो गया भूपात कवराज गुणा गावता, दियो नह ध्यान इण हेत देखो ॥१॥
खूटगा खजाना नरेसो देखता, गया तजमाल ठकरेत गाढा। सेव साहित्य री वणी न किणी सू, लागता पथ धन छोड लाडा ॥२॥
सेव साहित्य ही रहे ससार मे, सुजसफल लागवे घणी सरसे। मिले सुखलाव हितकर चित समाजा, दिनो दिन किता सनमान दरसे ॥३॥
पाण मरु वान है प्रात रो परपर वेग परताप राजस्थान ऊचो। रसी नह पढण मे भायला प्रातरी, निरंगता जाय है प्रात नीचो ॥४॥
वणाई चारणा व्याकरण विधोविध, वणेगी कोश ही लाख सवदों। सीत रो परिश्रम प्रवग फलिगो सिरे, रेटियो 'उदय' मिल सकल नवदो ॥५॥
पोकरण भवानीसीह चापे प्रथम कोश रे हेत धन खर्च कीयो। पटता लाच उणा समेरा फेर सू, स्यामसी रोडले काम सीधो ॥६॥
रोडले स्यामसी सपूतो सिरोमणा, कमवज आज अगियाज कीधी। वार विपरीत में हजारो खरचवे, दाद ऊजल 'उदे' देस दीधी ॥७॥
चारणा दोय मिल व्याकरण कोश रचि, वण्या नह वडो कवराज मिलियो। कमवा दो ज मिलकियो सुभकामजो, महीयो किणो नह बीस मिलियो ॥८॥

कवित

सूर्यमल मिश्रण ने बनाया वम भास्कर बूदी नृपराम ने खजाना खोल करके।
सावल कविराज ने लिखाया इतिहास त्योही उदियापुर रान के कोष वल धरके।
सीताराम लालस ने कीन राजस्थानी कोश, उदयराज उज्जवल ने योग शक्ति भरके।
पोकरण भवानीसिह स्यामसिह रोडला के कोश हित कोष वने दानी धनवंधर के।
प्रान्त की प्रबल भाषा प्रतिष्ठित परपरा त्रिभुवन दीनमाल वीरपद वाला है।
शिक्षा को माध्यम निज प्रान्त है मैं रही नहीं होय कोटि जनता को दाम गति टाला है।
उन्नत है मात्र भाषा वीर राजस्थान केरी, प्रान्त का भविष्य याते दर्शित विदाजा है।
जीवित रहेगी प्रीय राजस्थानी आशामात्र, व्याकरण कोश याके वनेगे शिवाला है।

Compared by
Sd Bhawar Singh
Sd. लक्ष्मीप्रकाश गुप्ता

Sd ह० उदयराज उज्वल
Sd Nemi chand Jain
Civil Judge, Jodhpur.

संकेताक्षरों का विवरण

संक्षिप्त रूप	पूर्ण रूप	रचियता का नाम
अं०	अंग्रेजी	
अ०	अरबी	
अक०	अकर्मक	
अक० रू०	अकर्मक रूप	
अनु०	अनुकरण	
अनेक०, अनेका०	अनेकार्थी कोश	श्री उदयराम बारहट (गूंगा)
अप०	अपभ्रंश	
अमरत	अमरत सागर	श्री महाराजा प्रतापसिंह (जयपुर)
अ०मा०	अवधान माला	श्री उदयराम बारहट (गूंगा)
अ०रू०	अकर्मक रूप	
अल्प० अल्पा०	अल्पार्थ रूप	
अ० वचनिका	अचलदास खीची री वचनिका	सिवदास गाडण
अव्य०	अव्यय	
इब०	इबरानी	
उ०	उदाहरण	
उप०	उपसर्ग	
उभ०लि०	उभयलिंग	
ऊ०र०	ऊक्ति रत्नाकर	
ऊ०का०	ऊमर काव्य	श्री ऊमरदान लालस
एका०	एकाक्षरी नाम माला	श्री वीरभाण रतनू, श्री उदयराम बारहट (गूंगा)
ऐ०जै०का०स०	ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह	संपादक-अगरचंद जी नाहटा
क०कु०बो०	कविकुल बोध	श्री उदयराम बारहट
क०च०	करणी चरित्र	ठा० किशोरसिंह बार्हस्पत्य
कर्म०वा०, कर्म०वा०रू०	कर्म वाच्य रूप	
कहा०	कहावत	
का०दे०प्र०	कान्हड दे प्रबंध	श्री पद्मनाभ
क्रि०	क्रिया	
क्रि०अ०	क्रिया अकर्मक	
क्रि०प्र०	क्रिया प्रयोग	
क्रि०प्रे०	क्रिया प्रेरणार्थक	
क्रि०वि०	क्रिया विशेषण	
क्रि०स०	क्रिया सकर्मक	
क्व०क्व०प्र०	क्वचित् प्रयोग	
क्षेत्र	क्षेत्रीय प्रयोग	
ग०मो०	गज मोख	हरसूर बारहठ
गी०रा०	गीत रामायण	श्री अमृतलाल माथुर
गु०	गुजराती	(कुचेरा निवासी)

संक्षिप्त रूप	पूर्ण रूप	रचयिता
गु०रू०ब०	गुण रूपक बंध	श्री केसोदास गाडण
गो०र०	गोरादि	
गो०रू०	गोगादे रूपक	श्री पहाड़ खां आढ़ो
ची०	चीनी	
चेत मानखा	चेतमानखा	श्री रेवतदान कल्पित
चौबोली	चौबोली	सम्पादक डॉ० कन्हैयालाल सहल
ज०खि०	जगा खिड़िया रा कवित्त	श्री जगो खिड़ियो
जा०	जापानी	
ज्यो०	ज्योतिष	
डि०	डिंगल	
डि०को०	डिंगल कोश	कविराजा मुरारिदान जी (बूंदी)
डि०नां०मा०	डिंगल नाम माला	श्री हरराज (कवि)
ढो०मा०	ढोला मारू [1]	सम्पादक श्री रामसिंह श्री सूर्य करण पारीक श्री नरोत्तमदास स्वामी
तु०	तुर्की	
द०दा०	दयालदास री ख्यात	श्री दयालदास सिंढायच
दसदेव	दस देव	नानूराम संस्कर्ता
द०वि०	दलपत विलास	सम्पादक श्री रावत सारस्वत
दे०	देशी	
देवि, देवी	श्री देवियांण	श्री ईसरदास बारहठ
द्रो०पु०	द्रोपदी पुकार	श्री रामनाथ कवियो
ध०व०ग्र०	धर्म वर्धन ग्रंथावली	संपादक अगरचंद नाहटा
ना०मा०	नाम माला	अज्ञात
ना०डिं०को०	नागराज डिंगल कोस	श्री नागराज पिंगल
ना०द०	नाग दमण	श्री सांइयां झूला
नी०प्र०	नीति प्रकास	श्री सगरांम सिंह मुहणोत
नैणसी	मुहणोत नैणसी री ख्यात	प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
पं०	पंजाबी	
पं०पं०चौ०	पंच पंडव चरित्र	शालिभद्र सूरि
प०च०चौ०	पद्मिनी चरित्र चोपाई	कविलब्धोदय
पर्याय	पर्यायवाची शब्द	
पा०	पाली	
पा०प्र०	पाबू प्रकास	कवि श्री मोडजी आसियो
पिं०प्र०	पिंगल प्रकास	श्री हमीरदान रतनू
पी०ग्रं०	पीरदान ग्रंथावली	पीरदान लालस

[1] इसके अतिरिक्त हमने "ढोला मारू" की भिन्न २ लेखकों द्वारा लिखित हस्तलिखित वार्तों की प्रतियों में से भी शब्द लिए हैं, उनका भी संकेत चिन्ह ढो मा. ही रखा गया है।

संकेताक्षरों का विवरण

संक्षिप्त रूप	पूर्ण रूप	रचयिता
पु०	पुलिंग	
पुर्त०	पुर्तगाली	
पृष०	पृषोदरादि	
पे०रू०	पेमसिंह रूपक	श्री प्रतापदान गाडण
प्र०	प्रत्यय	
प्रा०	प्राकृत	
प्रा०प्र०	प्राचीन प्रयोग	
प्रा०रू०	प्राचीन रूप	
प्रे०	प्रेरणार्थक	
प्रे० रू०	प्रेरणार्थक रूप	
फा०	फारसी	
फ्रां०	फ्रांसिसी	
बहु०	बहु वचन	
बां०दा०	बांकीदास ग्रंथावली भाग १,२,३,	श्री बांकीदास
बां०दा०ख्या०	बांकीदास री ख्यात	श्री बांकीदास
बी०दे०	बीसल दे रासौ	बीसल दे
भ०मा०	भक्तमाल	श्री ब्रह्मदास जी दादूपंथी
भाव०	भाव वाचक	
भाव वा भाव वा०रू	भाव वाच्य रूप	
भिक्खु	भिक्खु दृष्टान्त	
भि०द्र०	" "	
भू०	भूतकाल	
भू०का०क्रि०	भूत कालिक क्रिया	
भू०का०कृ०	भूतकालिक कृदन्त	
भू०का०प्र०	भूत कालिक प्रयोग	
भ्रं०पु०	भ्रंगी पुराण	श्री हरदास
म०	मराठी	
मह०महत्व०	महत्ववाची शब्द	
मा०	मागधी	
मा०का०प्र०	माधवानल काम कंदला प्रबंध	कवि गणपति
मा०म०	मारवाड़ मृर्दुमशुमारी रिपोर्ट	मुंशी श्री देवी प्रसाद
मि०	मिलाओ	
मीरा	मीरां बाई	
मु०मुहा०	मुहावरा	
मेघ०	मेघदूत	श्री नारायणसिंह भाटी
मे०म०	मेहाई महिमा	श्री हिंगलाजदान कवियो
यू०	यूनानी	
यौ०	यौगिक	
र०ज०प्र०	रघुवरजस प्रकास	श्री किसनो आढ़ो

संक्षिप्त रूप	पूर्ण रूप	रचयिता
र०रू०	रघुनाथ रूपक गीतां रो	श्री मछाराम, मछकवि
र० वचनिका	रतनसिंह महेशदासोत री वचनिका	जग्गो खिड़ियो
र० हमीर	रतना हमीर री वारता	महाराजा मानसिंह जोधपुर
रा०	राजस्थानी	
रा०ज०रासौ	राव जैतसी रो रासौ	अज्ञात
रा०जै०सी०	राउ जैतसी रो छंद	श्री बीठू सूजो नगराजोत
रात वासौ	राजस्थानी कहाणी संग्रह	नृसिंह राजपुरोहित
रा०दू०	राजस्थानी दूहा	सम्पादक नरोत्तमदास स्वामी
रा०प्र०	राजस्थानी प्रत्यय	
रा०रा० / राम रासौ	राम रासौ	श्री माधोदास दधवाड़ियो
रा०रू०	राज रूपक	श्री वीरभाण रतनू
रा०वं०वि०	राठौड़वंस री विगत	अज्ञात
रा०सा०सं०	राजस्थानी साहित्य संग्रह भाग १	सम्पादक नरोत्तमदास स्वामी
ल०पि०	लखपति पिंगळ	श्री हमीरदान रतनू
ला०रा०	लावा रासौ	श्री गोपालदान कवियो
लू०	लू	ठा० चन्द्रसिंह बीको
लै०	लैटिन	
लो०गी०	राजस्थानी लोक गीत	
वं०भा०	वंश भास्कर	श्री सूर्यमल मीसण
व०	वर्तमान काल	
व०का०कृ०	वर्तमान कालिक कृदन्त	
वचनिका	वचनिका रतनसिंह महेशदासोत री	श्री जग्गो खिड़ियो
दरसाठ		श्री मुरलीधर व्यास
व०स०	वर्णक समुच्चय	सम्पादक भोगीलाल सांडेसरा आदि
वाणी	संत वाणी	
वादळी	वादळी	ठा० चन्द्रसिंह बीको
वि०	विशेषण	
वि०कु०	विनय कुमार कुसुमांजली	
विलो०	विलोम	
वि०वि०	विजय विवरण	
वि०सि०	विरद सिणगार	कविराजा करणीदान कवियो
वी०दे०	वीसल दे रासौ	
वी०मा०	वीरमायण	बहादुर ढाढी
वी०स०	वीर सतसई	सूर्यमल मीसण
वी०स०टी०	वीर सतसई टीका	श्री किसोरदान बारहट
वेलि०	वेलि किसन रुकमणी री	महाराजा प्रिथीराज राठौड़
वेलि०टी०	वेलि क्रिसन रुकमणी री टीका	अज्ञात

सकेताक्षरों का विवरण

संक्षिप्त रूप	पूर्ण रूप	रचयिता
व्या०	व्याकरण	
शक०	शकदादि	
शा०हो०	शालि होत्र	
शि०वं०	शिखर वंशोत्पत्ति	श्री गोपाल कवियो
शि०सु०रू०	शिववान सुजस रूपक	श्री लालदान बारहट
सं०	संस्कृत	
सं०उ०	संज्ञा उभय लिंग	
सं०पु०	संज्ञा पुल्लिंग	
सं०स्त्री	संज्ञा स्त्री लिंग	
स०	सकर्मक	
स०कु०	समय सुन्दर कृति कुसुमांजली	महाकवि समय सुन्दर
स०रू०	सकर्मक रूप	
सर्व०	सर्वनाम	
सू०प्र०	सूरज प्रकाश	कविराज करणीदान कवियो
स्त्री०	स्त्री लिंग	
स्पे०	स्पेनिश	
श्री हरि पु०	श्री हरि पुरुषजी	
ह०ना० ह०ना०मा०	हमीर नाम माला	हमीरदान रतनू
ह०पु०वा०	श्री हरि पुरुषजी की वांणी	
हं०प्र०	हंस प्रबोध	श्री हमीरसिंहजी राठौड
ह०र०	हरि रस	श्री ईसरदास बारहठ
हा०झा	हाला झाला रा कुण्डलिया	श्री ईसरदास बारहठ

* [यह संकेत इस बात को सूचित करता है कि यह शब्द केवल कविता मे ही प्रयोग होता हैं ।

लालबहादुर जसलियो, नितहित हिंद निभार ।
तन छोटे मोटे मते, (थारी) बावन ज्यू बलिहार ।।
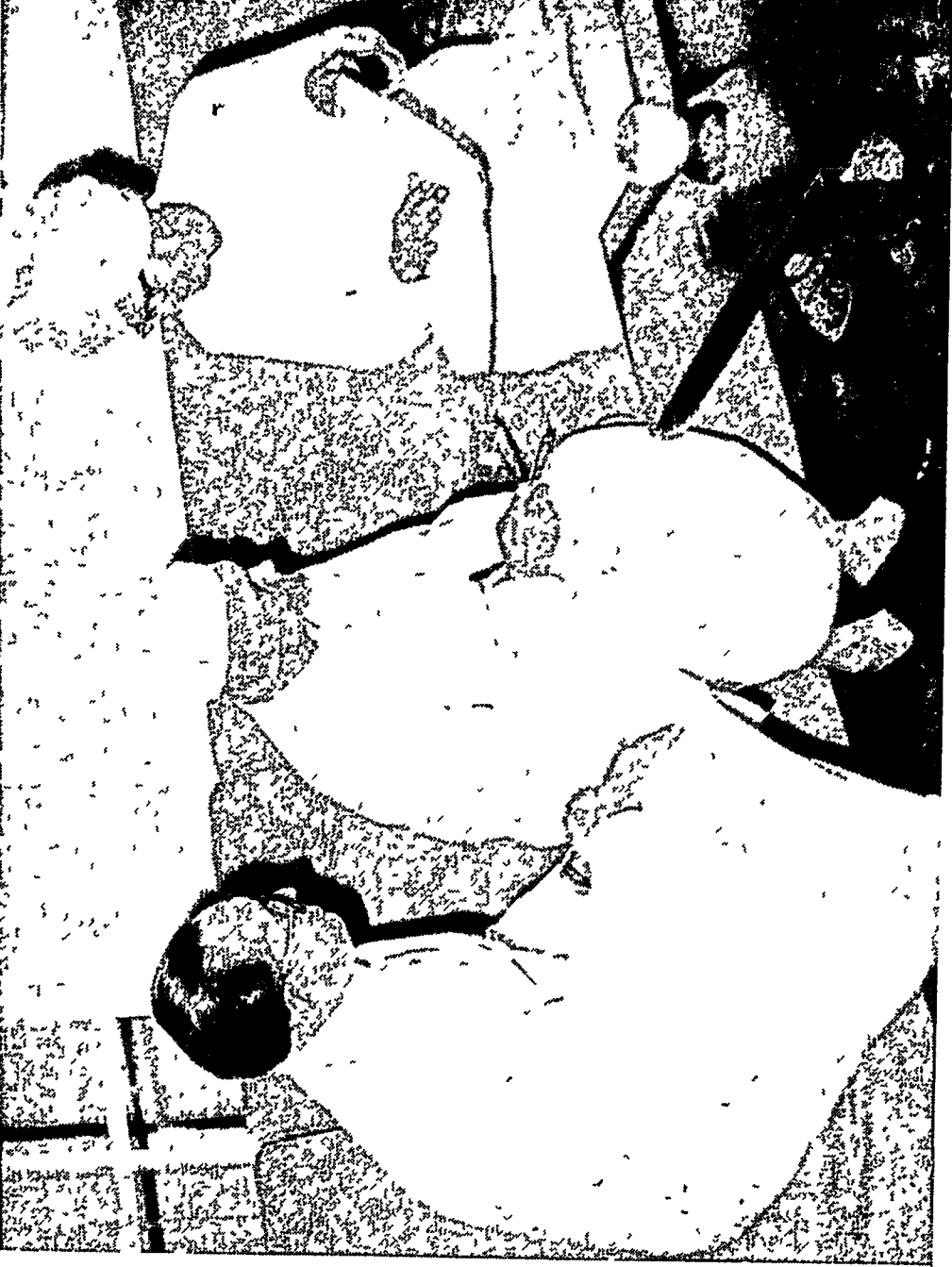
स्व० प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री, कोशकर्त्ता व संपादक श्री सीताराम लाळस,
डॉ० लक्ष्मीमलजी सिंघवी (संसद सदस्य)
के साथ "राजस्थांनी सबद कोष' का अवलोकन करते हुए ।

राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी वृहत् कोश]

[द्वितीय खण्ड]

(प्रथम जिल्द)

च

च–सस्कृत, देवनागरी तथा राजस्थानी वर्ण-माला का छठा व्यञ्जन। यह स्पर्श वर्ण है। इसका उच्चारण-स्थान तालु है।

चऊ—देखो 'चऊ' (रू भे)

चग–स०पु० [फा०] १ भेड या बकरे के चमडे से मढा हुआ लकडी का बना गोल वाद्य जो फाल्गुन मास मे ग्रामीण लोगो द्वारा बजाया जाता है। उ०—बजि म्रदग चग रग उपग बारग। अनग छवि चग उमग अग-अग। (सू प्र)

अल्पा०—चगडी, चगडो। मह०—चगड।

[स० च=चद्रमा] २ पतग, गुड्डी। उ०—उड्डत चग मघि आसमाण। बरजाण अमर सोभित विमाण। (सू प्र)

[स०] ३ पवित्रता, उत्तमता।

[रा०] ४ घोडे की एक जाति या इस जाति का घोडा (शा हो)

५ मुसलमान, यवन. ६ सितार का चढा हुआ सुर (सगीत) ७ गजीफे का एक रग ८ स्वस्थ एव तदुरुस्त व्यक्ति ९ राजस्थानी मे प्रयुक्त होने वाला एक (गीत) छद जिसके प्रथम चरण मे १६ मात्रायें, द्वितीय चरण मे ११ मात्रायें तथा तृतीय व चतुर्थ चरण मे प्रथम छ भगण एव अत मे एक गुरु लघु होते हैं।

वि०—मोटाताजा, हृष्ट-पुष्ट। उ०—१ पाणी पथऊ पवग, खग्ग चगऊ खुरसाणी। विग्या नगरी वस्त्र एक, विण गुर सिरवाणी। —ढो मा उ०—२ किधौ म्रिग जुत्थन पै म्रिगराज, किधौ लखि चग कुलगनि बाज।—ला रा.

चगडी, चगडो—देखो 'चग' (१) (अल्पा रू भे)

चगाण–स०पु०—चक्कर।

उ०—मारू हुदा नयण दोउ, जेहा अरजन बाण। जिहि दिस देखे निजर भर, त्या दिस पडै चगाण।—ढो मा.

क्रि०प्र०—खाणौ।

चगाटी—देखो 'चगाण' (अल्पा रू भे)

चगास–स०पु०—[स०] गोमूत्र।

चगासणौ, चगासबौ–क्रि०अ०—गाय का पेशाब करना।

चगी–स०स्त्री०—[स०] १ कीर्ति, यश। २ श्रेष्ठता। उ०—पगी उबारकौ चगी चौढाडै जोधाण पाणी।—हुकमीचद खिडियौ

वि०—देखो 'चगौ' का स्त्री०। उ०—उत्तर आज स बज्जियउ, सीय पडेसी पूर। दहिसी गात निरध्धणा, धण चगी घर दूर।—ढो मा

चगुल–स०पु० [फा०] १ जाल, फदा। २ षडयत्र। ३ चार अगुलियो के मोड मे फँसने का भाव या फँसाने के समय अँगुलियो की स्थिति।

मुहा०—चगुल में पडणौ—चगुल मे फसना, वश मे आना।

चगेडी–स०स्त्री० [स० चग+पेटा=(भा०) चग वेडी] मिठाई आदि रखने का पात्र, करडिया।

चगेर, चगेरी–स०स्त्री०—'चूका' नाम की एक जडी (वैद्यक)

चगौ–वि०—[स० चङ्ग] (स्त्री० चगी) १ निरोग, स्वस्थ, तदुरुस्त।

उ०—१ पूरव कमाइ पाइये कुण चगा कुण मदा।—केसोदास गाडण

उ०—२ पती भगडा करनै तीन वार नीव रा पाटा बाध चगौ हुवौ। इण स्त्री पाटा सारू घर मे नीव बाय दूध पाय बडी कियो सो कहै।—वी स टी

२ साफ पवित्र, निर्मल। उ०—मन भावणी माधुरी मोहणी, चद वदन चित चगी। अतकाळ में अरथ न आवत, कामणि नैण कुरगी।—ऊ का.

कहा०—मन चगा तौ कठौती मे गगा—अगर मन पवित्र है तो पवित्रता के बाह्य आडबरो की आवश्यकता नही होती।

३ दृढ, मजबूत, जबरदस्त। उ०—सिर माडव गुजरात सिर, दळ सभ कीधी दौड। उण 'सागा' री बैसणी, चगौ गढ चीतौड।—बा दा

४ सुहावना, सुदर। उ०—धवळा सू राजै धणी, चगौ दीसै ग्वाड। नारायण मत नाखजै, धवळा ऊपर धाड।—बा दा

५ उत्तम, श्रेष्ठ। उ०—१ आपण मभ आपसू, ग्रह ग्यान खडग्गा। जुध करता रात दिन, सौ रावत चग्गा।—केसोदास गाडण

उ०—२ चहू भ्रात चौरी चढै नेह चगा। उचारै दुजा देव वाणी उमगा।—सू प्र

स०पु०—१ एक प्रकार का घोडा। उ०—चढ ऊभा चगा भिडै, अगा आचे खग्गा ऊनगा।—रा रू

(मि० चग–४)

२ डफ के आकार का एक वाद्य, देखो 'चग' (१) (रू.भे)

चच–स०स्त्री [स० चञ्चु] १ चोच। उ०—१ चच चच जिण अगनि चमकै। दामणि जाणि अनेक दमकै।—सू.प्र

उ०—२ बाबहिया बग चंचडी, बोल्यौ मक्करि बाण। काइ बोलती मुस्ट करै, कै परदेसी पिव आण।—ढो.मा

अल्पा०—चचडी।

[रा०] २ पार्वती ३ दुर्गा।

चचत्पुट–स०पु० [स०] सगीत का एक ताल जिसमे पहले दो गुरु, तब एक लघु, फिर एक प्लुत मात्रा होती है (सगीत)

चचन, चचनु—देखो 'चच' (रू भे) २ गिरिजा, पार्वती। (क कु. बो)

चचरी–स०स्त्री० [स० चचरीक] १ भ्रमर, भौंरा (ह ना) २ एक प्रकार की चिडिया जो भारत मे स्थायी रूप से रहती है ३ एक मात्रिक छद विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे १२, १२, १२, १० के विराम से ४६ मात्रायें होती हैं। अत मे गुरु होता है। इसका दूसरा

नाम हरिप्रिया भी है. ४ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश रगण, मगण जगण, जगण, भगण एव रगण सहित १८ वर्ण होते है। (पिंगळ प्रकास) ५ एक मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे २६ मात्रायें होती हैं।

चचरीक—स०पु० [स०] भौंरा, भ्रमर (ह ना)

चचळ—वि० [स० चचल] १ अस्थिर, चल, चलायमान, गतिशील। उ०—वग रिरा गजान गु पावसि बैठा, नुर गूता चित्र मोर सर। चातक रटै वळाहकि चचळ, हरि सिणगारै अवर।—वेलि

२ नटखट, चुलबुला, चपल।

कहा०—चचळ नार' बारली भाकी, घर को काम' सूझे ताको—चचल या चपल स्त्री को अपने घर के कार्य की परवाह नहीं, उसकी निगाह बाहर ही रहती है। चचल स्त्री सुलक्षणा नही होती।

३ फुर्तीला। उ०—दुसमणा री वत बीद नै घर मे पग पैंगतां वहता गुणीजियो उण हीज वेळा अचळ कपडा रै गाठ ही तिका छुडाय नै चचळ घोटा नै दुसमणा री फौज ऊपरै सजाहयी।—वी स टी

४ उद्विग्न, विव्हल। उ०—देखण लागी यक्ष आगळी आंसू भरिया, चीतै मन कुरळाय आज आ किसडी जिलिया। निरख्या ऐडा मेघ सजोगी चचळ होवै, तारा काई हवाल कामणी कठ न होवै।—मेघ

स०पु०—१ पवन (ह ना)

२ घोडा (अ मा) उ०—अतरीख मग उरस चचळ सातहमुख चालै। तुरग पग सारथी हेक चक्र रथ हालै।—सू प्र.

३ मन, चित्त, हृदय (अ मा) ४ चद्रमा (ना मा) ५ पारा। उ०—करि सिनान अस्टम दिन काढै। चचळ सोळ मास मझि नाढै।—सू प्र

स०स्त्री० [स० चचला] ५ लक्ष्मी, माया। उ०—चवा चरत करती चचळ, थारा किया ससारह सवळ। मारू राव दीवाण निरमळ, पूर्ण 'मुजउत' तो जागू छळ।—फमा विहारी रो गीत

६ नर्तकी। उ०—चचळ केक करै नृत चाळा। 'थार' तेरै वरसा गनि जाळा।—सू प्र

७ मछली (ह भा) उ०—जोत वाग मळकी मिळ नदि जळ। चमकै मगर ऊछळे चचळ।—सू प्र.

८ बिजली।

क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी (ह ना)

चचळता, चचळताई—स०स्त्री० [स० चचलता] १ अस्थिरता, गतिशीलता २ नटखटपन, चुलबुलापन।

चचळ रूप—स०पु०—एक प्रकार का घोडा (शा हो)

चचळा—स०स्त्री० [स० चचला] १ बिजली, विद्युत (ह ना) उ०—अर'मत्री रा चक्र रै समान मही रै मायं प्रतिबिंब पाडता। मेदुरता मेघमाळा मैं चचळा रा चपळ भाव मै चूक पाडता पटझाग मलाया।—व भा

२ लक्ष्मी, माया ३ घोडी ४ पिप्पली (अ मा.) ५ मछली (अ मा) ६ प्रथम गुरु फिर लघु इस क्रम से १६ वर्ण का एक वर्ण वृत्त।

वि०स्त्री०—अस्थिर, चलायमान, चपल।

चचळाई, चचळाट, चचळाहट—देखो 'चचलता' (रू भे)। उ०—वैरी फुरती चचळाई तथा उमग, नित नित री रमझट-री झट झाल नही सकणै रै कारण काया कोटडी नै खाली करण लागी।—वरसगांठ

चचळी—देखो 'चचल'। उ०—चित्रउड धणी चचळि चडेय, खग्गह लेय आयउ खडेय। मेवाड राण परभोमि माहि, सीकरी सैन आयउ सनाहि।—रा ज सी.

चचाळ—१ पक्षी. २ देखो 'चचळ' (२) (रू भे.) उ०—चेवह वाटी चेभटा, एकल दाग्रटियाळ। कानां सुण बूडै कमद, चाहकाया चचाळ। —पा प्र

चचाळी—स०स्त्री०—मासाहारी पक्षी। उ०—चरियो अगन नको चचाळी, भव चै काम न आयो भाळ। मारू राव असमरा मुंहडै, तिल तिल हुये पडियो रिणताळ।—गोरधन कूंपावत री गीत

चचु—स०स्त्री [स०] १ चोच, तुड २ अरट का पेड. ३ मृग, हिरण.

चचुका, चचुपुट—स०स्त्री [स०] चोच, तुट।

चचुभ्रत—स०पु० [स० चञ्चुभृत] पक्षी।

चचुमान—स०पु० [स० चञ्चुमान्] पक्षी।

चचुराय—स०पु०—सूर्यवशी एक राजा का नाम। इसका दूसरा नाम चाप भी मिलता है। यह रोहिताश्व उनका पौत्र था (सू प्र)

चचू—देखो 'चचु' (रू भे)

चचेडण, चचेड, चचेंडण—स०पु०—मक्खन को गर्म करने के बाद उसे छानने पर छलनी मे बचा हुआ अवशिष्ट अश जो छाछयुक्त होता है।

चचेडणो, चचेटवो—क्रि०स०—१ छेडना, तग करना २ हिलाना, डुलाना, झकझोरना।

चट, चटैल—चतुर, होशियार, चालाक, धूर्त।

चट—स०पु० [स०] १ ताप, गर्मी २ एक दैत्य जो दुर्गा के हाथों मारा गया था ३ एक शिव-गण ४ एक भैरव. ५ राम की सेना का एक बन्दर ६ सम्राट पृथ्वीराज की सेना का एक सामत ७ कुबेर के आठ पुत्रो मे से एक (पौराणिक) ८ कार्तिकेय।

स०स्त्री०—९ चडी, देखो 'चडिका'। उ०—१ ऊडड पासरा भडा भुज डट ब्रह्मड अडै, तुज चट सिहायक झल असुळा, राव ऊथपणा थपण ग्रद रडमला, करां थारा आज वणी 'कुसळा'। —हटोजी खिडियो

वि०—१ तेज, तीक्ष्ण, प्रखर २ कठोर, कठिन, विकट ३ घोर, भयकर। उ०—१ चितड चड दड दें उदट छूटते वहे।—ऊ.का. उ०—२ अलावुद्दीन रा अनीक नू चट चद्रहास चखावण री चहै। —व भा.

४ बलवान, प्रबल।

चडकर—स०पु० [स०] तीक्ष्ण किरण वाला, सूर्य, भानु।

चडका–स०स्त्री० [स० चडिका] १ देवी, दुर्गा (क कु वो) २ पार्वती (ह ना) ३ कलहप्रिय या झगडालू स्त्री।

चडकोसिय, चडकौसिक–स पु० [स० चण्डकौशिक] १ एक सर्प जिसने भगवान महावीर को सताया था (जैन) २ एक मुनि का नाम।

चडघटा–स०स्त्री० [स० चण्डघण्टा] चौसठ योगिनियो मे से ग्यारहवी योगिनी।

चडता–स०स्त्री० [स०] तीक्ष्णता, उग्रता, प्रवलता।

चडनयर—देखो 'चडीनगर' (रू भे) उ०—अवरग असपति हुवौ विखम चडनयर विचाळै।—सू प्र

चडनायिका–स०स्त्री० [स०] १ दुर्गा २ दुर्गा की सखी मानी जाने वाली अष्टनायिकाओ मे से एक (तान्त्रिक)

चडमुड–स०स्त्री०—देवी के हाथो से मारे जाने वाले दो राक्षस।

चडमुडा–स०पु०—१ देखो 'चडमुड'।

स०स्त्री०—२ इन दो राक्षसो को मारने वाली देवी, चामुण्डा।

चडमुडी—१ देखो 'चडनायिका' (रू भे.) २ देखो 'चडमुडा' (रू भे)

चडरुद्रिका–स०स्त्री० [स०] अष्टनायिकाओ को पूजने से प्राप्त होने वाली एक सिद्धि (तान्त्रिक)

चडवती–स०स्त्री० [स] १ दुर्गा २ अष्टनायिकाओ मे से एक (तान्त्रिक)

चडवारण–स०पु० [स०] ४६ क्षेत्रपालो मे से २२वा क्षेत्रपाल।

चडासु–स०पु० [स० चण्डाशु] सूय, भानु (डिं को)

चडा–स०स्त्री०—१ अष्टनायिकाओ मे से एक (तान्त्रिक) २ कर्कशा, तेज स्वभाव की स्त्री।

वि०—भयकर। उ०—चखा झाळ तूटै मुखा झाळ चडा। परस्सी फरस्सी भ्रमावै प्रचडा।—सू प्र

चडाई–स०स्त्री—१ शीघ्रता, जल्दी २ प्रवलता, उग्रता ३ ऊधम, अत्याचार।

चडातक–स०पु० [स०] लहगा, घघरी।

उ०—जावक पावक जिम रडातक जीवै, साता ठोडा मू चडातक सीवै।—ऊ का

चडाळ–स०पु० [स० चडाल] (स्त्री० चडाळण) अत्यन्त नीच मानी जाने वाली जाति विशेप या इस जाति का व्यक्ति। डोम, श्वपच।

वि०—पतित, दुष्ट, दुरात्मा, क्रूर, निष्ठुर।

यौ०—चडाळ-चोकडी।

चडाळ-चोकडी–स०स्त्री०यौ०—उपद्रवी मनुष्यो का गुट या समूह (जो चार पाच व्यक्तियो से अधिक न हो) पडयन्त्रकारी मण्डली।

चडाळणी–स०स्त्री०—१ दोहा छद का भेद विशेप जिसमे विषम चरण मे जगण आता हो। ऐसा दोहा अशुभ समझा जाता है 'चडालिनी'। २ चाडाल जाति की स्त्री, देखो 'चडाल'।

चडाळता–स०स्त्री० [स० चडालता] १ नीचता, अधमता २ चडाल होने का भाव।

चडाळ-पक्षी–स०पु० [स० चडाल पक्षी] कौआ।

चडाळ-वाळ–स०पु०—किसी के सिर मे निकल आने वाला मोटा व कडा वाल (अशुभ)

चडाळि—देखो 'चडाळी' (रू भे) उ०—ससार सुपहु करता ग्रह सग्रह, तिणि हिज पचमी गाळि। मदिरा रीस हिंसा निंदा मति, च्यारे करि मूकिया चडाळि।—वेलि

चडाळिका–स०स्त्री० [स० चडालिका] १ दुर्गा, भवानी २ एक प्रकार की वीणा।

चडाळिणी—देखो 'चडाळणी' (रू भे.)

चडाळी–स०स्त्री०—१ देखो 'चडाळिणी' (रू भे) २ क्रोध, कोप गुस्सा। उ०—किणी नै आपरा रूप रै सिवाय दूजी की चीज निजर नी आई। हाथी नै वेसुमार चडाळी छूटी। वौ रीस रै पाण चिंघाडियो।—कोमल कोठारी

क्रि०प्र०—छूटणी।

चडाळीक–स०पु०—चौहान वश की चित्रावा शाखा की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति (व भा)

चडाळीमन्त्र–स०पु०यौ०—वाममार्गीय मत्र। उ०—अर त्रयी रा तिरस्कार करि किसडो नीच चडाळीमन्त्र रो साधन करै।—व.भा. (मि०—मैला मतर)

चडावळ—देखो 'चदावळ' (रू भे)

चडासि–स०पु०—चौहान वश का राजपूत (व भा)

चडिक, चडिका–स०स्त्री० स० चडिका] १ दुर्गा, देवी, शक्ति। उ०—घमक सेलक ववक घकधक। तदि उवकि पत्र चडिका त्रपतक।—सू प्र

२ लडाकी स्त्री, कर्कशा।

वि०—लडाकू, कर्कशा।

चडी–स०स्त्री० [स०] १ दुर्गा देवी का वह शक्ति रूप जो महिषासुर नामक राक्षस के वध के लिये धारण किया गया था २ दुर्गा, भवानी ३ देखो 'चडी नगर' (रू भे)

चडी नगर–स०पु०—दिल्ली शहर का एक नाम। उ०—चवै चडी नगर 'अमर' ढुळता चमर, राज कर छतर धर आव राजा।

—आणदराम दधवाडियो

चडीपति–स०पु०यौ० [स०] १ शिव, महादेव २ वादशाह।

चडीपुर–स०स्त्री०—दिल्ली।

चडीपुरौ–स०पु०—१ दिल्ली का वादशाह २ दिल्ली नगर का रहने वाला व्यक्ति ३ यवन, मुसलमान ४ चौहान वश का राजपूत।

चडीस–स०पु० [स० चडीश] शिव, महादेव। उ०—जोमगी भडीस जाग आयो जिऊ चडीस जायो। राजपत्री आयो ज्यू थडीस वाळै रेस।—हुकमीचद खिडियो

चडीसा–स०पु०—भाटो की एक शाखा।

चडीसुर–स०पु० [स० चडीश्वर] १ एक तीर्थ-स्थान. २ महादेव ३ वादशाह।

चडू-सं०पु०—अफीम का शहद के समान बनाया हुआ गाढा अवलेह, जिसका धुआं नशे के लिये एक नली द्वारा पीया जाता है।

वि०वि०—धातु के बने चाडू (एक प्रकार के चम्मच) पर अफीम का अवलेह लपेटा जाता है या इस अवलेह से सनी हुई रुई की बत्ती उस पर रखी जाती है। चाडू का सम्बन्ध एक लकड़ी की नली से होता है। फिर चाडू को जलते हुए दीपक की लौ पर रखा जाता है। पीने वाला अफीम का धुआं बिस्तर पर लेट कर या बैठ कर नली द्वारा पीता है और नशे से बेहोश हो जाता है।

क्रि०प्र०—पीणी।

यौ०—चडूखानो, चडूबाज।

चडूखानो-सं०पु०—वह स्थान या घर जहां चडू पीने वाले व्यक्ति चडू पीने के लिए एकत्रित होते हैं।

चडूबाज-सं०पु०—चडू पीने का व्यसनी।

चडूळ-सं०स्त्री०—खाकी रंग की एक प्रकार की छोटी चिड़िया जो वृक्षों पर बहुत सुन्दर घोंसला बनाती है और बहुत ही मधुर बोलती है।

उ०—जिकै जिण समझ चडूळ पखी जिहो जे न रघुनाथ चो नाम जाणै।—र ज प्र

मि०—१ मूर्ख २ बहुत झगड़ालू।

चडेस्वर-सं०पु० [सं० चंडेश्वर] शिव का एक गण जिसका वर्ण रक्त के समान गहरा लाल होता है।

चडेस्वरी-सं०स्त्री०—एक देवी का नाम।

चडोदरी-सं०स्त्री० [सं०] सीता को रावण के पक्ष में करने के लिये समझाने हेतु स्वयं रावण द्वारा नियुक्त की गई एक राक्षसी।

चडोल, चडोळ-सं०पु०यौ० [सं० चंद्र+दोल] १ हाथी के हौदे या अंबारी की आकृति की चार मनुष्यों द्वारा उठायी जाने वाली एक प्रकार की पालकी २ मिट्टी का एक खिलौना ३ देखो 'चदोल' (रू भे.)

चडोळी—देखो 'चदावळ' (रू भे)   उ०—सु जिण दिन हरौळी आगरे रा राजा जैसिंघजी है। फौज लाख तीन सू वा पछाड़ी चडोळी पर जगपतसिंहजी है फौज हजार अगी सू।—द दा

चडोर-सं०पु०—वह वृक्ष जिसके ऊपर सिंचाई के अभाव में पत्ते न हों।

चतामण, चनामणि—देखो 'चिंतामणि' (रू भे)

चद-सं०पु० [सं० चंद्र] १ देखो 'चद्र' (रू भे) (ना.डि को.) २ नाक का बाया छिद्र (योग) ३ पृथ्वीराज चौहान के दरबार का एक प्रसिद्ध कवि ४ चद्र नामिनी (संगीत), ध्रुपद का एक भेद।

उ०—प्रागलि अह निरख इग्य अति विस्रति, मस्त चक्र करि स्यदन मग। प्रसमर्थ सुनर्थ नारी रह, सूया माठा चद सग।

—वेलि.

५ डिंगल का वेलिया सांणोर छंद का भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले में ३२ लघु १६ गुरु, कुल ६४ मात्रायें हों तथा इसी क्रम से अन्य द्वालों में ३२ लघु १५ गुरु कुल ६२ मात्रायें हों (पि.प्र.) ६ राजा हरिश्चद्र (रू भे)   उ०—सतव्रत सुत हरिचद मन जिहाज। रोहिताम चद सुत महाराज।—सू.प्र.

७ देखो 'चदौळ' (रू भे) उ०—डाक तबल मुरसला, हाक छतमाम जसोला। चद गोळ बाजुवा, हुवै रगराग हरौळा।—सू प्र

वि०—१ श्वेत, सफेद* (डि को) २ काला* (डि को)

[फा०] ३ अल्प, थोड़ा, किंचित।

चदक-सं०पु० [सं०] १ चद्रमा, चाद २ चादनी, चद्रिका।

चदकात—देखो 'चद्रकात' (रू भे)

चदगी-स स्त्री०यौ० [सं० चद्रक+रा प्र. ई] १ धन दौलत, सपत्ति।

महा०—करोला बदगी तो पाओला चदगी—किसी की सेवा करने से कुछ लाभ अवश्य मिलता है।

(मि०—करोगे सेवा तो पावोगे मेवा)

२ आर्थिक सहायता।

उ०—लोग पण घणा दिन तिणसू तह खरच हुइ रहियो छै, सो उहरी पण चदगी करणी।—ठाकुर जैतसी री बात

चदण-सं०पु० [सं० चदन] १ एक प्रकार का वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी बहुत ही सुगन्धित होती है। यह वृक्ष अधिकतर मैसूर, कुर्ग, हैदराबाद, नीलगिरी, पश्चिमी घाट आदि स्थानों में बहुत होता है।

उ०—ग्रिह ग्रिह प्रति भीति सुगारि, हीगळू ईंट फिटक मैं चुणी अचभ। चदण पाट कपाट ई चदण, खुभी पना प्रवाळी खभ।

—वेलि.

पर्याय०—अहिप्रिय, अहिभखक, अहिमन, उत्तमतर, गधअपार, गधगात, गधसार, चीलप्यार, पनगपाळ, मळयज, मळयातर, मळियागरी रूखासिणगार, रूखासिरै, रूपवन, रोहण, रोहणीद्रुम, वल्लवसिवा, वामसुद्रुम, व्याळपाळ, सार, सीतरूख, सुगधक, सुझाड, सुनग, सुरभी, गोरभमूळ, स्रीखड।

मुहा०—१ चदण उतारणौ—चदन को पानी के साथ घिसना। बेवकूफ बना कर माल हड़पना। २ चदण चढाणौ—घिसा हुआ चदन लगाना, मूर्ख बनाना। ३ चदण लगाणौ—खर्चा करवाना।

रू०भे०—चदण, चदन।

यौ०—चदणगिरि, चदणगोह, चदणजोत, चदणधेनु, चदणहार।

२ उस वृक्ष की लकड़ी ३ इसकी लकड़ी के टुकड़ों को घिस कर बनाया जाने वाला लेप।

कहा०—चावळ, चदण, घण, त्रिया, तुरी, राग अर तार—ए दस पतळा ही भला, सिंह, सरप, सरदार—चावल, चदन, घास, स्त्री, राग, तार, सिंह, सर्प और योद्धा इन सबका पतला होना ही अच्छा है (पतलेपन की प्रशंसा)

४ छप्पय छद के तेरहवें भेद का नाम जिसमें ५८ गुरु ३६ लघु सहित ९४ वर्ण या १५२ मात्रायें होती हैं (र ज प्र) ५ डिंगल भाषा का एक गीत (छद) विशेष जिसके प्रथम चरण में चार सगण तथा २ लघु तथा द्वितीय चरण में दो भगण एक रगण व एक गुरु होता है।

६ डिंगल के 'वेलिया साणोर' छद का एक भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले में ३६ लघु १४ गुरु कुल ६४ मात्रायें हो तथा इसी क्रम से शेष द्वालो मे ३६ लघु १३ गुरु सहित कुल ६२ मात्रायें हो (पिं प्र)
७ केसर (ह ना)
वि०—श्वेत, सफेद॰ (डिं को)
चदणगिरि—देखो 'चदन-गिरि' (रू भे)
चदणगोह—स०स्त्री०—एक प्रकार की विषैली गोह जो आकार मे छोटी और रग मे कुछ सफेदी लिये होती है।
चदणजोत, चदणज्योत, चदणज्योति—स०पु०—एक प्रकार का घोडा (शा हो)
चदणता—स०स्त्री०—चदनत्व। उ०—कुकव हू त आछो कुतर, ऊगे चदण पास। लहि चदण सौरभ लहै चादणता गुण रास।—बा दा
चदणधेनु—स०स्त्री०—[स० चदनधेनु] सौभाग्यवती मृत माता के पीछे पुत्र द्वारा चदन अकित कर दान मे दी जाने वाली गाय।
चदनहार—स०पु०यौ० [स० चदन+हार] गले मे धारण करने का एक मूल्यवान हार, चद्रहार।
चदणो—देखो 'चादणो' (रू भे) उ०—बाहर भीतर चदणा अनवध अवाह।—केसोदास गाडण
चदन—देखो 'चदण' (रू. भे)
चदनगिरि—स०पु०—[स०] मलयागिरि पर्वत।
चदनगोह—देखो 'चदणगोह' (रू भे)
चदनाम, चदनामो—स०पु०—१ यश, कीर्ति। उ०—१ रिण रमाइण जिसो रचावा, लडे मरा चदनाम लिखावा।—वचनिका
उ०—२ सरण वखाणै जगत, चित वखाणै जेम सिघ। मौज किव वखाणै चदनामो।—र ज प्र
२ उज्ज्वलता।
चदनादितेल—स०पु०यौ०[स०] आयुर्वेद मे एक प्रसिद्ध तेल जो लाल चदन के योग से बनता है।
चदपहास, चदप्रहास—स०स्त्री० [स० चद्रहास] चद्रहास, तलवार।
—ह ना
उ०—केहरि कहियौ पैज करि, ग्रहिया चद्रपहास। गोइद गिणिया मारियौ, पख इकणी काइ मास।—सू प्र
चदवाण—स०पु० [स० चद्रहास] एक प्रकार का बाण।
चदभागा—देखो 'चद्रभागा' (रू भे) उ०—पुकारा करै ऊभी घरे पोतरी, पाण पूजै न क्यू रहै पाली। मद भागा खोर लयण तसकर मिळै, चदभागा नीर तू पियण चाली।—गोपीनाथ गाडण
चदमा—देखो 'चद्रमा' (रू भे)
वि०—२ श्वेत, सफेद॰ (डिं को)
चदमारी—स०स्त्री०—१ घोडे के होने वाला एक प्रकार का रोग जिसके कारण घोडा अधिक सास लेता है और मुह बध रखता है।
२ देखो 'चांदमारी' (रू भे)

चदमुखी—स०स्त्री० [स० चन्द्रमुखी] चन्द्रमा के सामान मुख वाली, सुदर स्त्री। उ०—चदमुखी हमा गमणि, कोमळ दीरघ केस। कचन वरणी कामणी, वेगउ आवि मिळेस।—ढो मा
चदरगढ—स०पु०—चित्तौडगढ का एक नाम।—र हमीर
चदरमणि—स०स्त्री०यौ० [स० चन्द्रकान्त मणि] चन्द्रकान्त मणि।
उ०—चदर मणिया जडी जाळिया गोख सुहावै, मेघ न आडा आय सुधाकर किरण मिळावै।—मेघ०
चदरायण—देखो 'चाद्रायण' (रू भे)
चदरेवो—स०स्त्री०—चदोवा, वितान।
चदरोळियो—देखो 'चद्रमा' (अल्पा रू भे)
चदळ—स०पु०—[स० चदिल] चद्रमा, चाद (ना डिं को)
चदळई, चदळाई—स०स्त्री०—छोटा पौधा विशेष जिसकी पत्तियो का शाक बनाया जाता है।
चदळियो, चदळेवो—स०पु०—देखो 'चदळाई' (रू भे)
चदवदण, चदवदणी, चदवदनी, चदवयणि, चदवयणी—देखो 'चद्रवयणी' (रू भे) उ०—१ तूठा कुमेर वूठा वरुण, अणखूटा घण आविया। कव कहो चदवदनी कहै, (कन) राजा पदम रिझाविया।—द दा.
उ०—२ तणी वधावण नेत वध धरण सोढा तणी, तरण चदवदण कज वरण तावू। अमर कथ करण प्रथमाद सिर ऊपरा, परणवा पधारे राव पावू।—गिरवरदान सादू
उ०—३ चदवयणि चपक वरणि, अहर अलत्ता रगि। खजर नयणी खीण कटि, चदण परिमळ चगि।—ढो मा
चदवाळ—देखो 'चदावळ' (रू भे) उ०—१ गाहट हरवळ गोळ चोळ चदवळ करि चुख मुख।—सू प्र उ०—२ दानयार दहलियो, हुतो सझि हफतहजारी। तजि हरवळ ताण्हूँ, मिळे चदवळ दळ भारी।—सू प्र
चदवो—स०पु०—[स० चन्द्रापत] १ राजा-महाराजा या देवी-देवताओ के सिंहासन या गद्दी के ऊपर ताना जाने वाला छोटा मडप जो प्राय बढिया वस्त्र का बनाया जाता है और उसमे जरी तार आदि का कार्य किया जाता है। वितान।
पर्याय०—उच्चोळ, कदक, चदेरवो, चद्रोदय, वितान २ मोर के पख पर का चद्राकृति भाग।
चदाण, चदाणा—स०स्त्री०—चौहान वश की एक शाखा।
चदाणणि—वि०स्त्री० [स० चद्रानन+रा०प्र०ड] चद्रवदनी, चद्रमुखी।
उ०—चदाणणि चीर चमीर न चचळ, कुवर भडार न चित करिया। माहव समा खगार मरण दिन, सोयण सुणिजी सभरिया।
—खगार सोढा रो गीत
चदावत—स०पु०—सीसोदिया वश की शाखा, या इस शाखा का व्यक्ति।
चदावळ—स०स्त्री०—सेना के पीछे का भाग। (विलो० 'हरावळ')
रू०भे०—चडावळ, चडोळ, चडौळ, चदवळ, चदोळ, चदौळ, चदौळी।
चदिका— देखो 'चद्रिका' (रू भे)

चदिर, चदिळ–स०पु० [स० चादिर] चन्द्रमा, चाद (ना डि को)

चदूबाई–म०स्त्री०—चारण उदयराम सिंढायच की पुत्री जो देवी के रूप मे प्रसिद्ध हुई।

चदेरवो—देखो 'चदवो' (रू भे)

चदेरी–स०स्त्री०—ग्वालियर राज्य का एक प्राचीन नगर।

चदेरीपति–स०पु०यौ० [स०] चदेरी नगरी का राजा शिशुपाल। (महाभारत)

चदेल–स०पु०—राठौड वश की १२ प्रमुख शाखाओ मे से एक अथवा इस शाखा का व्यक्ति।

चदेळी—देखो 'चदळाई' (रू भे) उ०—तीजे रथावा वीरा खीचडी, चौथे चदेळै री साग, मेहा झड माडियो।—लो गी

चदोउ—देखो 'चदोवो' (रू भे)—उ र

चदोळ—देखो 'चदावळ' (रू भे) उ०—१ वाजू गोळ चदोळ महावळ, दळ गळ वीच घर्म धुवि दमगळ।—सू प्र उ०—२ तद कूच कियो। सो पदमसिंहजी सनुसाळ रतनोत हरवळ किया। चदोळ, जगाळ वगाळ वणाय नै कूच कियो सो गनीम आय हरवळ सू राड जे खाधी।
—पदमसिंह री वात

चदोळी—१ देखो 'चदावळ' (रू भे) उ०—तद नवाव महाराज नू बुलाय कही—चदोळी तुम सभाळो।—पदमसिंह री वात
क्रि०वि०—२ पृष्ठ भाग मे, पीछे। उ०—तीरथ जात समस्त सवळ साथा मिळ सगा, रास तमासा रमे हुलस नाचे हुडदगा। माजी-मेळा साग देव राखी चदोळी, मिंदर मडी मसाण होळिका फाग हरोळी।—ऊ का

चदोवो—देखो 'चदवो' (रू भे)

चदो–स०पु० [स० चद्र] १ चद्रमा, चदा। उ०—साजन ऐसी प्रीत कर, निस अर चदे हेत। चदे विन निस सांवळी, निस विन चदो सेत।
—अज्ञात
[फा० चद] २ किसी कार्य के लिए पूरे व्यय का व्यक्तिगत या समूह मे इच्छानुसार दिया गया कुछ अश ३ किसी पत्र या पत्रिका का वार्षिक शुल्क ४ किसी सभा, सोसायटी या क्लब का मासिक या निश्चित अवधि पर दिये जाने वाला शुल्क या धन-राशि।

चदौळ—देखो 'चदोळ' (रू भे) उ०—हरणं खग झाट अमीर हरोळ, चुरै गळ गोळ अनेक चदोळ।—सू प्र

चद्दर–स०पु० [स० चदिर] चद्रमा, चाद (ना मा)

चद्धा–स०स्त्री०—छोटी गोटी। उ०—चद्धा दे मुत ! चाकरिन, पेट स्याण पाळ त। चाकरि प्रदेस वळ चढ़चा, झडभड कगळ जत।
—रैवतसिंह भाटी

चद्र–स०पु० [स०] १ चंद्रमा, चाद (अ मा) २ एक की सख्या* (हिं को) ३ कपूर ४ १८ उपद्वीपो मे से एक (पौराणिक) ५ पिंगल मे टगण के दसवें भेद का नाम ॥ऽ॥ (र ज प्र) ६ मृगशिरा नक्षत्र।

चद्रई–स०पु० [स० चद्र] चद्रमा, चाद। उ०—चद्रई ग्यारमो देव है, तीसरी चद्र छह खोडीला जोगी। काल जोगण भद्रा नही पुख नछत्र नई कातिक मास।—वी दे

चद्रक–स०पु० [सं०] १ चद्रमा, चाद २ देखो 'चद्रिका' (रू भे) ३ मालकोश राग का एक पुत्र (सगीत)

चद्रकन्यका–स०स्त्री०—इलायची (अ मा)

चद्रकळा–स०स्त्री० [स० चद्रकला] १ चद्रमा की किरण. २ चादनी, चद्रिका ३ एक प्रकार की बहुमूल्य स्त्रियो के ओढने की साडी। उ०—गुजरात मे चद्रकळा साडी उमदा हुवै।—वा दा ख्यात ४ सोलह की सख्या*।

चद्रकळाधर–स०पु०यौ० [स० चद्रकलाधर] महादेव, शिव।

चद्रकात–स०पु० [स०] १ एक प्राचीन काल्पनिक रत्न या मणि जिसके विषय मे यह प्रचलित है कि वह चद्रमा के सामने करने पर पसीजता है और बूद-बूद कर टपकता है। २ एक राग (सगीत)

चद्रकांतमणि—देखो 'चद्रकात' (१)

चद्रकाता–स०स्त्री० [स०] १ चंद्रमा की पत्नी २ रात्रि, रात।

चद्रका—देखो 'चद्रिका' (रू भे) उ०—१ चद्र हूत चद्रका द्रस्ट वीछडी न देखी, घण निवास वीजळी पासि तजि टळी न पेखी।
—रा रू.
उ०—२ इम निसि सुकळ वाग न्रप आए। विमळ चद्रका साज वणाए।—सू प्र.

चद्रकार–स०पु०—एक प्रकार का वाण।

चद्रकीरति–स०पु० [स० चद्रकीर्ति] १ वह घोडा जिसके ललाट पर दो भौंरी हो। यह शुभ माना जाता है (शा हो)

चद्रकुळ्या–स०स्त्री० [स० चद्रकुल्या] काश्मीर की एक नदी का नाम (प्राचीन)

चद्रकूट–स०पु० [स०] कामरूप प्रदेश मे स्थित एक पर्वत (पौराणिक)

चद्रकूप–स०पु०—काशी मे स्थित एक कूप जो तीर्थस्थान माना जाता है।

चद्रगच्छ—जैनियो का एक कुल।

चद्रगुप्त–स०पु०—१ चित्रगुप्त का एक नाम. २ मगध देश का प्रथम मौर्य्य वशी राजा (ऐतिहासिक)

चद्रगोळ–स०पु० [स० चद्रगोल] चद्रमडल।

चद्रग्रहण–स०पु०यौ० [स०] चद्रमा का ग्रहण।
वि०वि०—देखो 'ग्रहण'।

चद्रघटका, चद्रघटा–सं०स्त्री० [सं० चद्रघटिका] नव दुर्गाओ के अतर्गत एक दुर्गा। उ०—देवी चद्रघटा महम्माय चडी, देवी वीहळा अग्रळा वडु-वडी।—देवि.

चद्रचूड–स०पु०—अपने शिर पर चंद्रमा को धारण करने वाला, शिव, महादेव।

चद्रचूडामणि–स०पु० [स०] १ फलित ज्योतिष के अनुसार ग्रहों का एक योग।

चद्रज–स०पु०—चद्रमा का पुत्र, बुध।

चद्रतहास—देखो 'चद्रहास' (रू भे)

चद्रदास-सं०स्त्री० [स०] चद्रमा को व्याही गई दक्ष की २७ कन्यायें जो २७ नक्षत्र स्वरूप हैं (पौराणिक)

चद्रदुरग-स०पु०—चित्तौडगढ का एक नाम। उ०—तुरगा मे ज्यूं सूरज री तुरग, दुरगा मे इण भात चद्रदुरग।—र हमीर

चद्रद्युति-स०स्त्री० [स०] १ चंद्रमा का प्रकाश या किरण. २ चादनी।

चद्रधर, चद्रपीड-स०पु०—शिव, महादेव।

चाद्रपुरिया-स०पु०—रामावत साधुओ का एक भेद।

चाद्रप्रभा-स०स्त्री [स०] १ चद्रमा की रोशनी. २ अर्श, भगदर और प्रमेहादिक रोगो पर दी जाने वाली एक गुटिका (वैद्यक)

चद्रप्रभु—जैनियो के आठवें तीर्थंकर का नाम।

चाद्रप्रहास—देखो 'चद्रहास' (रू भे) उ०—ऊगा सूर समौ ऊदावत, बढै वसू वोळ विरोळ। चळग्रळ अरी तणौ चीतौडा, चाद्रप्रहास नित रहे चोळ।—प्रथ्वीराज राठौड

चाद्रबधूटी-स०स्त्री०—वीरवहूटी।

चद्रबाळा-स०स्त्री० [स०] १ चद्रमा की स्त्री २ चद्रमा की किरण ३ स्त्रियो के शिर पर धारण करने का आभूषण विशेष।

चद्रबिंदु-स०पु० [स०] अर्द्ध चद्राकार या अनुस्वार की बिंदी जो सानुनासिक वर्ण पर लगती है।

चद्रभाणु-स०पु० [स०चद्रभानु] श्री कृष्ण की रानी सत्यभामा का एक पुत्र।

चद्रभाग-सं०पु० [सं०] १ चद्रमा की कला २ हिमालय पर्वत श्रेणी के अतर्गत एक पर्वत शिखर ३ सोलह की संख्या।

चद्रभागा-स०स्त्री० [स०] हिमालय के शिखर चद्रभाग से निकलने वाली एक नदी जिसे चिनाव भी कहते हैं। उ०—आगळि वहै प्रवाह अधागा, भळहळ सुजळ नदी चद्रभागा।—सू प्र

चद्रभाळ-स०पु० [स०चद्रभाल] मस्तक पर चद्रमा धारण करने वाला, शिव, महादेव। उ०—देख गरुड अग्रेज दळ वणिया नृप अन व्याळ। जठे मान 'जोधा' हरौ भूप हुवौ चद्रभाळ।—बाकीदास

चद्रमण, चद्रमणि, चद्रमणी [स० चन्द्रमणि]—चद्रकात मणि।

चद्रमानो-स०पु०—एक प्रकार का शुभ रग का घोडा।

चद्रमा-स०पु० [स० चद्रमस्] पृथ्वी की परिक्रमा करने वाला एक उपग्रह जो सूर्य से प्रकाश लेकर आकाश मे चमकता है।
पर्याय०—अब, अपघातस, अपध्यान, अम्रतभव, इदु, उडपति, उडराज, एणपताका, ओखधीस, कजारी, कमोदी, कळानिधि, किरणउजळ, कुमदवधु, गुणयळ, गुणरासि, गोधर, ग्रहि, ग्लौ, चचळ, चक्रवाकवियोग, छदनाच, छपाकर, छायावाळ, जगवदक, जटाअमीझर, जरण, तपस, तारापत, दधिसुत, दरपणजगत, दुजपत, दुजराज, नखत्रेस, नभगामी, नरजपुर, निसकर, निसचरण, निसनेत्र, निसमडण, निसाकर, पदमणीपती, बुधजामी, भ्रातालछी, मधुकर, मयक, अगक, अगवाह, रजनीपति, रतन, राकेस, रोहणीधव, विधु, विसदसरीर, ससहर, ससि, सारग, सिंधुसुवण, सिवभाळी, सीतसु, सीतहर, सुखमादसद, सुधासु, सुधाकर, सुधाधर, सुधारसम, सुधास्रव, सुभरासि, सुभ्रकर, सुभ्रकरण, सेतकरण, सोम।
मुहा०—चद्रमा बळवान होणौ—अच्छा समय होना।
रू०भे०—चद, चद्दर, चद्र, चाद, चादौ।
अल्पा०— चद्रोळियौ, चद्रियौ, चादडौ।

चंद्रमाललाट-स०पु०यौ० [स० चद्रमा+ललाट] शिव, महादेव।

चद्रमाळा-स०पु० [स०चद्रमाला] १ प्रत्येक चरण मे प्रथम दस लघु फिर एक गुरु अत मे आठ लघु, इस प्रकार कुल १९ वर्णों का वर्णिक छद २ २८ मात्राओ का छद विशेष ३ चद्रहार।

चद्रमिणि—१ देखो 'चद्रमणि' (रू भे) २ एक प्रकार का नग विशेष (अ भा)

चद्रमौळी-स०पु० [स० चद्रमौली] शिव, महादेव।

चद्ररूप-स०पु०यौ०—एक प्रकार का घोडा (शा हो)

चद्रलोक-स०पु०यौ० [स०] चन्द्रमा का लोक।

चद्रवस-स०पु० [स० चद्रवंश] क्षत्रियों का एक प्रसिद्ध वश।

चद्रवसी-वि० [स० चद्रवशिन्] चद्रवश मे उत्पन्न व्यक्ति।

चद्रवधू-स०स्त्री—वीरबहूटी।

चद्रवयणि, चद्रवयणी-स०स्त्री यौ० [स०चद्रवदनी] चद्रमा के समान सुन्दर मुख वाली, चद्रमुखी।

चद्रवौ—देखो 'चदवौ' (रू भे) उ०—आभा चित्र रचित तेणि रगि, अनि अनि मणि दीपक करि सूध मणि। माडी रहे चद्रवा तणं मिसि, फण सहसेई सहसफणि।—वेलि

चद्रव्रत—देखो 'चाद्रायण' (रू भे)

चद्रसरोवर-स०पु०—व्रज मे एक तीर्थ-स्थान।

चद्रसार-स०पु०—डिंगल भाषा मे प्रयुक्त एक गीत (छद) विशेष।

चद्रसाळ-स०पु० [स० चद्रशाला] १ छत पर खुला भाग जो किसी कमरे के सामने हो। अटारी। उ०—गवाक्ष तै अगाक्ष की कटाक्ष तै निगै नही। थिराभ चद्रसाळ चद्रसाळ पै थिगै नही।—ऊ का २ चादनी, चद्रिका।

चद्रसिखर—देखो 'चंद्रसेखर' (रू भे)

चद्रसूरिए-स०पु०—घोडे के ललाट पर होने वाली दो भवरिया या चक्र (शुभ) (शा हो)

चद्रसेखर-स०पु० [स० चद्रशेखर] १ शिव, महादेव (ह ना) २ एक पर्वत ३ सगीत का एक ताल।

चद्रस्वारथी-स०पु०—वह घोडा जिसका वर्ण श्वेतमिश्रित लाल हो व श्वेत नेत्र हों। (शा हो)

चद्रहार-स०पु०—गले मे धारण किया जाने वाला मणियों का एक अर्द्धचद्राकार हार विशेष।

चद्रहास-स०स्त्री०—१ तलवार, खग (ह ना अ मा) उ०—१ सिंह

री वार होता ही इणरा कुभी रै कलावै चामुडराज री चद्रहास झडियो ।—व भा
उ०—चद्रहास झट धके चहोडे, तेर हजार दुसह भड तोडे ।—सू प्र
रू०भे०—चद्रतहास, चद्रपहास, चद्रप्रहास ।
चद्राणी–स०स्त्री०—दुर्गा का एक नाम । उ०—देवी वैस्णवी ब्रह्माणी, देवी इद्राणी चद्राणी खराणी ।—देवि
चद्राणण–स०स्त्री—१ चद्रमुखी, सुन्दरी । उ०—मिळिया बहु साजण उच्छव मेळा । चद्राणण राग करत मचेळा ।—सू प्र
२ देखो 'चाद्रायण' (रू भे)
चद्राणणि, चद्राणणी—देखो 'चाद्राणण' (१)
उ०—चद्राणणी कहता चादवदनी रुखमणी जी ।—वेलि टी
चद्रापीड–स०पु० [स०] १ शिव, महादेव. २ पाडुपुत्र अर्जुन के मित्र का नाम ।
चद्रायण, चद्रायणी–स०पु०—१ देखो 'चाद्रायण' (रू भे)
२ २१ मात्राओ का एक मात्रिक छद विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे ११ और १० पर यति हो । प्रथम विराम पर जगण तथा दूसरे विराम पर रगण होता है ।—ल पि
३ गौरी-पूजन के समय गाया जाने वाला एक प्रकार का लोक गीत ।
चद्रालोक–स०पु० [स०] १ चद्रमा का प्रकाश, चादनी ।
२ देखो 'चद्रलोक' (रू भे)
चद्रावत–स०पु०—सीसोदिया क्षत्रियो की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।
चद्रावळ–स०पु०—चाद्रायण व्रत ।
चद्रावळी–स०स्त्री० [स० चाद्रावली] श्री कृष्ण पर अनुरक्त एक गोपी का नाम ।
चद्रासक—देखो 'चद्रहास' (रू भे) उ०—हरी सुत ऊदल भाण हठाळ, चद्रासक आस हणै चमराळ ।—सू प्र
चद्रिका–स०स्त्री० [स०] १ चद्रमा का प्रकाश, चाँदनी, ज्योत्स्ना ।
२ मयूरपख के ऊपर का अर्द्ध चद्राकार भाग जो सुनहले मडल के मध्य चमकता है ३ पंजाब की चिनाब नदी का नाम ४ जूही ५ चमेली ६ सस्कृत का व्याकरण का एक ग्रथ ।
चद्रूग्रो—देखो 'चदोवो' (रू भे) उ०—पट्ट कूल मेधवन्ना करथा, कोठह कोठह विमणा धरथा । रत्नजडित चद्रूग्रा थिका, दीसइ मोती ना भूब्रखा ।—का दे प्र
चद्रूयउ, चद्रोदय–स०पु० [स० चद्रोदय] १ चद्रमा का उदय २ गधक, पारा और सोने की भस्म के योग से बनाया जाने वाला एक रस (वैद्यक) ३ चदोवा, वितान ।
चनण—१ देखो 'चदण' (रू भे) २ प्रकाश, उजाला ।
चप–स०पु०—१ राठौड वश की चापावत शाखा या इस शाखा का व्यक्ति २ भय, डर, शका ३ चपा नामक वृक्ष या इस वृक्ष का पुष्प । उ०—महकीय रभ गळै चप माळ ।—गो रू
४ मार, प्रहार, चोट । उ०—ताहरा पठाणा सेती लडाई की सु मुगळा री फौज मुही । वामा पठाणे चप की तीरा री । ताहरा मुगळ विचळते हौज मार की ।—दळपत विलास
चपई—देखो 'चपाई' (रू भे.)
चपउ–स०पु०—देखो 'चपो' (रू भे) उ०—थळ भूरा वन झखरा, नही सु चपउ जाइ । गुणे सुगधी मारवी, महकी सहु वणराइ ।
—ढो मा
चपक–स०पु०—१ चपा । उ०—पुहपा मिसि एक एक मिमि, पाता लाछिया द्रव माडिया उसेलि । दीपक चपक लाखे दीधा, कोडिधजा फहराणी केळि ।—वेलि
२ सपूर्ण जाति का एक राग (सगीत)
३ पीला, पीत वर्ण का, चपे के रग का (डि को)
चपककळी–स०स्त्री०यौ०—स्त्रियों द्वारा गले मे धारण किया जाने वाला आभूषण ।
चपकमाळा–स०स्त्री०यौ० [स०] १ चपा के फूलों की माला, हार ।
उ०—सोहे नीलावर सहत, प्रमुदा प्रीत प्रमाण । चपक माळा हरत चित, जुत भमरावळि जाण ।—बा दा
२ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक पाद मे क्रमश भगण, मगण, सगण और अन्त में एक गुरु होता है ।
चपकळी–स०स्त्री०—१ चपा के फूल की कली । उ०—चपकळी चकचूर टळी चित चाह सू । नख कमळा दळ नीरक हीर निबाह जू ।
—बा दा
२ चपा के समान नेत्र ३ एक प्रकार का घोडा (शा हो)
चपकवरणी–स०स्त्री०—१ चपा के समान रग वाली स्त्री, गौर वर्ण वाली स्त्री । उ०—सुदर गोरी ग्रोळू थारी परी रे निवार, चपक-वरणी, बावोसा री ग्रोळू सुसरोजी भागसी ।—लो गी
रू०भे०—चपकवरणी, चपावरणी ।
चपणो–वि०—१ भयभीत होने वाला २ दबने वाला ३ छिपने वाला ४ लज्जित होने वाला ।
चपणो, चपबो–क्रि०अ०—१ भयभीत होना । उ०—चपै सीचाणू मग असमाणू पुळत न जाणू पखांणू । तळ खचे बाणू दुसटी पाणू रहे नराणू रखिमाणू ।—भगतमाळ
२ छिपना । उ०—या सुणता ही लोहद्धक होय पडिये थके ही मलय लेर चालुक्यराज हमीर कैमास री काख मे चपिया, आपरा स्वामी नू झाटकियो ।—व भा
३ पैर रखना, कदम रखना । उ०—प्रस्थान रै प्रथम वारहठ लोहठ नरेस नू कहियो—मडोवर रै अधीस हम्मीर पडिहार आपणा चरण चपै जतरी जमी द्विजा नू देण कही ।—व भा
४ दवाना, दावना । उ०—रद चपै होठ डसै रढ रावण अग खडा रोमच अभावण ।—र रू.
५ पकडना । उ०—आगळै प्रिया प्री चौथे आरंभि, फेरा त्रिण्हि

इए भाति फिरि। कर सागुस्ट ग्रहण कर सूं करि, करो कमळ चपियो किरि।—वेलि

६ चौंकना ७ लज्जित होना।

चपणहार, हारौ (हारी) चपणियौ—वि०।

चपवाडणौ, चपवाडबौ, चपवाणौ, चपवाबौ, चपवावणौ, चपवावबौ —प्रे०रू०

चपाडणौ, चपाडबौ; चपाणौ, चपाबौ, चपावणौ, चपावबौ —क्रि०स०प्रे०रू०

चपिग्रोडौ, चपियोडौ, चप्योड़ौ—भू०का० कृ०।

चपीजणौ, चपीजबौ—क्रि० भाव वा०, कर्म वा०।

चपत-वि०—गायब, अंतर्धान, चलता।

क्रि०प्र०—वरणरणौ, होणौ।

चपलौ—देखो 'चपौ' (अल्पा रू भे) उ०—म्हारी धीयड चोळी पान की, जवाई चपलै री फूल, आज म्हारी अमली फळ रही।—लो गी

चपहरी-स०पु०—एक विशेष प्रकार के रग का घोडा (शा हो)

चपा-स०स्त्री०—१ प्राचीन काल के अग देश की राजधानी (महाभारत) २ घोडो की एक जाति विशेष।

चपाई-वि०—चपा वृक्ष के फूल के रग के समान, पीले रग का।

चपाकळी-स०स्त्री०—१ स्त्रियो का गले मे पहिनने का एक आभूषण विशेष जिसमे चपा की कली के आकार के सोने के दाने जजीर या रेशम के धागो मे गुंथे रहते है २ चपा वृक्ष की कली या फूल।

चपाणौ, चपाबौ-क्रि०स०—१ भयभीत करना। उ०—नारद कौ देवा निगळि अग्गै उफणाया, इत नर उर न्रिप के सचिव चाळुक चपाया।—व भा

२ लज्जित कराना ३ चौंकाना ४ छिपाना ५ दबाना।

चपाधप, चपाधिप-स०पु०यौ० [स० चम्पाधिप] कर्ण का एक नाम (अ मा)

वि०वि०—महाभारत मे एक स्थान पर लिखा है कि दुर्योधन ने कर्ण को अग देश का राज्य दे दिया था। अग देश की राजधानी चपापुर थी, अत कर्ण 'चपाधिप' कहलाने लगे।

चपानयरी, चपानरी-स०स्त्री०—१ एक प्रकार की तलवार २ चपानगरी।

चपापुर—देखो 'चपा' (रू भे)

चपायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ डराया हुआ, भयभीत किया हुआ २ चौंकाया हुआ ३ लज्जित किया हुआ ४ दबवाया हुआ। (स्त्री० चपायोडी)

चपारण्य, चपारन-स०पु० [स० चपारण्य] प्राचीन काल का एक जगल, चम्पारन।

चपावणौ, चपावबौ—देखो 'चपाणौ' (रू भे)

चपावरनी, चपावरणी—देखो 'चपकवरणी' (रू भे)

चपावियोडौ—देखो 'चपायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चपावियोडी)

चपियोडौ-भू०का०कृ०—१ छुपा हुआ २ भयभीत ३ लज्जित, शकित (स्त्री०—चपियोडी)

चपी-स०पु०—१ चापना या दबाना क्रिया का भाव। उ०—पगचपी मे करू आपरी, हाजर खडी हजूर। घूणी ऊपर पडयो रहूँला, नही आपसू दूर।—अज्ञात

२ शिर मे तेल डाल कर मालिश करने की क्रिया।

क्रि०प्र०—करणी, कराणी।

चपू-स०पु० [स०] वह काव्य ग्रथ जिसमे गद्य के साथ पद्य भी हो। गद्य-पद्यमय काव्य।

चपेल-स०पु०—चमेली का तेल। उ०—बाघू बड री छाहडी, नीरू नागर वेल। डाम सभाळू हाथ सू, चोपड़ सू चपेल।—ढो मा

चपेली—१ देखो 'चमेली' (रू भे) उ०—म्हारी धीयज हाथ री मू दडी, जवाई म्हारै चपेली री फूल, सहेल्या ए आवौ मोरियौ। —लो गी.

२ देखो 'चापेल' (रू भे)

चपेलू—देखो 'चापेल' (रू भे)

चपोराव-स०पु०—एक प्रकार का घोडा (शा हो)

चपौ-स०पु० [स०चपक] १ हल्के पीले रग के सुगधित फूलो वाला एक वृक्ष तथा इसका फूल। उ०—चपौ चीतोडाह, पोरस तणौ 'प्रतापसी'। सौरभ अकबर साह, अलियळ आभडियौ नही।—सूरायच टापरियौ

२ एक प्रकार का बडा सदाबहार पेड जो दक्षिण भारत मे बहुतायत से पाया जाता है।

३ चपा जाति का एक रग विशेष का घोडा।

रू०भे०—चापौ।

अल्पा०—चपलौ।

चबल-स०स्त्री [स०चर्मण्यवती] राजस्थान की दक्षिणी पूर्वी सीमा पर बहने वाली एक नदी जो विंध्याचल पर्वत से निकल कर यमुना मे मिलती है।

चबुक-स०पु० [स० चुंबक] १ एक प्रकार का कडा पत्थर जिस पर लोहे की चोट पडने से आग निकलती है। चकमक।

२ देखो 'चुबक' (रू भे)

चबेली—देखो 'चमेली' (रू भे)

चमर—देखो 'चावर' (रू भे)

चमाट-स०स्त्री—चिमटी। उ०—हरी वाळ चमाट जेही चहोडै। तमासा ज्यूही खाचि धानख तोडै।—सू प्र

चमाळीस—देखो 'चमाळीस' (रू भे)

चम्मर—देखो 'चवर' (रू भे) उ०—दळा गहमह कीध डवर, चौसरा सिर हुवा चम्मर। गाजता गज मेघ गाजा, वाजता मगळीक वाजा। —सू प्र

चयाळीस—देखो 'छयालीस' (रू भे)

चवटौ—देखो 'चौवटौ' (रू भे) उ०—चवटै ऊतरिया हालरिया रा बाप, ओरा मे उतरी सीतळा।—लो गी

चवर–स०पु० [स० चामर] १ राजाओ या देव-मूर्तियों के सिर पर पीछे या बगल से डुलाया जाने वाला सुरा गाय की पूछ के वालो का गुच्छा जो काष्ठ, चादी या सोने के डडे मे लगा रहता है।
क्रि०प्र०—करणौ, डुलाणौ, ढुळाणौ।
पर्याय०—वाळव्यजण, रोमगुच्छ।
रू०भे०—चम्मर, चामर।
यौ०—चवरदार।
२ देखो 'चवरी' (२) (रू भे) उ०—पडवै नह पौंढीह, उर कोडी विलखै अखा। चवर वीच छोडीह, किम कर सोढी कामणी—पा प्र
वि०—श्वेत, सफेद* (डि को)

चवर गाय–स०स्त्री०—वह गाय जिसके पूंछ के वाल सफेद हो तथा गुच्छेदार हो।

चवरदार–स०पु०—चंवर डुलाने वाला सेवक।

चवरियौ—देखो 'चावरी' (अल्पा)

चवरी–स०स्त्री—१ काठ की डडी मे घोडे की पूछ के वालो का लगाया हुआ गुच्छा जो प्राय मक्खिया आदि उडाने के काम मे लिया जाता है।
[स० चतुरिका, चत्वर, प्रा० चउरी] २ विवाह-मडप, वेदी।
उ०—१ चाल करि कुनणपुर एम चवरी चढे। 'जगा' री किसनगढ जोध जेही।—कमो नाई
उ०—२ परणीजता मगळीक वाजतौ हो, उण ढोल रा ही वाजा सू मूछ मुहारा सू मिळी ही सो म्हैं तौ चवरी मे ही परख लीधौ—कत सूरवीर जुद्ध मे मरणवाळौ है।—वी स टी
मुहा०—चवरी चढणौ (वैठणौ)—विवाह के लिये वर या वधू का विवाह-मडप मे प्रवेश करना।
रू०भे०—चमरी, चम्मरी, चउरी।
यौ०—चावरी-दापौ।
३ विवाह के अवसर पर लिया जाने वाला प्राचीन समय का सरकारी कर।
४ विवाह-मडप मे पाणिग्रहण सस्कार हेतु दूल्हे के आगमन पर गाया जाने वाला एक मारवाडी लोकगीत ५ वह गाय जिसके पूंछ के वाल सफेद व गुच्छेदार हो।
रू०भे०—चवर गाय।
६ जागीरदारो द्वारा प्रजा से विवाह के अवसर पर कन्या के पिता या सरक्षक से लिया जाने वाला कर।

चवरीदापौ–स०पु०यौ०—विवाह-मडप में भांवरी सस्कार होने के वाद उसी समय कुल-गुरु को नेग के रूप मे दिया जाने वाला द्रव्य।

चवरौ–स०पु०—१ एक प्रकार का वृषभ जिसके पूछ व आखो दोनो के वाल सफेद होते हैं। यह अशुभ माना जाता है. २ जमीन के काष्ठ के मोटे व मजवूत डडे गाड कर उस पर छाजन आदि डाल कर वनाई जाने वाली झोपडी। लकडियों के सहारे वना कच्चा मकान
३ शरीर के अंगो पर से मैल उतारने का उभरे हुए दानों का एक उपकरण विशेष ४ काष्ठ का डडी मे घोडे की पूछ के वालो का लगाया हुआ गुच्छा जो प्राय. मक्खिया आदि उडाने के काम मे लिया जाता है।

चवळाई—१ देखो 'चादळाई' (रू.भे) २ देखो 'चवळेरी' (रू.भे)

चवळेरी, चवळोडी–स०स्त्री०—चौंला नामक द्विदलीय अनाज की फली।

चवळौ–स०पु०—एक प्रकार का द्विदलीय अनाज जिसकी दाल वनाई जाती है, चौला।

चवार–स०स्त्री०—मूग, मोठ, चौंला आदि अनाज के पौधो के पुष्प।

चवाळियौ–स०पु०—भारी पत्थर उठाने की मजदूरी करने वाला मजदूर (इमारत)

च–स०पु०— १ आलिंगन २ ज्वाला ३ अग्नि. ४ चद्रमा. ५ समूह ६ मुख ७ ग्रह ८ मनोहर. ९ सपत्ति १० मूर्ख. ११ चोर. १२ दुर्जन. १३ कच्छप (एका०)
अव्य०—और। उ०—दीसइ विव्रहचरियं जाणिज्जइ सयण दुज्जण सहावो अघ्पण च कलिज्जइ, हुडिज्जइ तेण पुहवीए।—ढो मा

चइ–स०स्त्री० [अनु०] हाथी को घुमाने आदि के समय महावतो द्वारा वोला जाने वाला शब्द।
अव्य०—के। उ०—पूगळ देस दुकाळ थियु, किणही पाळ विमेसि। पिंगळ ऊचाळउ कियउ, नळ नरवर चइ देसि।—ढो मा

चइलौ, चईलौ–स०पु०— १ माग, राह, रास्ता २ गाडियों के पहियो के निशानो से वना हुआ रास्ता।
२ लोहे की वनी रेल की पटरी ४ परिपाटी, रूढि।
रू०भे०—चहिलौ, चहीलौ, चीलौ, चील्लौ, चील्हौ।

चउर—देखो 'चवर' (रू भे)
उ०—मारू अउ राउ सहदेइ मत्ति ताणावि छत्र वइठउ तखत्ति। ऊजला चउर ढळकइ अवीह, सिरि छत्र अविच्चळ जइतमीह।
—रा ज सी

चउ–वि० [स०चतुर] चार। उ० — १ केसव कुळ सुरसिंह उचित कहि धुर भट ए चउ गेह घरे—व भा। उ०—२ कीधा इण खेतल कवर आगै चउ उपयाम—व भा।
अव्य०—सवधसूचक, का। उ०—ढोलउ मारू परणिया, वरदळ हुवउ उछाह। आ पूगळ चो पदमिणी, अउ नरवर चउ नाह।—ढो मा

चउक—देखो 'चौक' (रू भे) उ०—मोती चउक पुराविया। वाजीत्र वाजै धुरइ निसाण।—वी दे
देखो—'चोकी' (रू भे) उ०—ढोलउ मारू पउढिया, रस मइ चतुर सुजाण। च्यारे दिसि चउकी फिरइ, सोहइ भूप जुवाण।
—ढो मा

चउकीवट्ट–स०पु० [स० चतुष्कपट्ट] काष्ठ की चौकी।

चउगठि, चउगट्टि—देखो 'चौवट' (रू भे) (उ र)

चउगणउ, चउगणौ, चउगिणउ, चउगुणउ, चउगुणौ—देखो 'चौगुणौ'

(रू भे) (उ र) उ०—१ घन विहाडउ आज कउ, देव उठि दीयो चउगिणउ मान।—वी दे उ०— २ पाडघा परधान तेडावीयो आणि। देसू जब लगि चउगणो मान—वी दे

चउघडयउ, चाउघडिउ—देखो 'चौघडियौ' (रू भे) (उ र) उ०—माघ पडित बोलइ तिणि ठाई। उचघडयउ बाजइ सीह दुवारि।—वी दे

चउचाळक–स०पु०—कछुआ। उ०—गज ठणिया घण ग्राह, बाह जणिया बादाळक। तणिया करभ तिमीस, चरम भणिया चउचाळक।
—व भा

चउडोत्तरसउ—देखो 'चौडोतरसौ' (रू भे) (उ र)

चउतरौ—देखो 'चबूतरौ' (रू भे) उ०—घडी-घडी घडियाळे सान, राति दिवस नु लाभइ मान। चहुटा चउक चउतरा घणा, ठामि ठामि माडई पेखणा।—का दे प्र

चउत्थ—१ देखो 'चौथौ' (रू भे) उ०—पहर चउत्थै पौढियौ, गिणतौ फौज गरीव। दोय घडी जक जीभ नू बैरी आण नकीव।
—वी स

स्त्री०—चउत्थी।

२ देखो 'चौथ' (रू भे) ३ एक प्रकार का व्रत जिसमे तीन समय छोड कर चौथे समय भोजन किया जाता है (जैन)

चउत्थौ—देखो 'चौथौ' (रू भे) उ०—सुमिरि सु चउत्थि हड्डिय सतिय काय हाय रक्खहि किलन।—व भा.

स्त्री०—चउत्थी।

चउत्रीस—देखो 'चौतीस' (रू भे) (उ र)

चउथ, चउथउ, चउथि, चउथी—देखो 'चउत्थ' (रू भे) (उ र) उ०—१ चउथ अधारी (दि) नई मगळवार, चद उजाळउ घरि घरि वारि।—वी दे उ०— २ विढयउ जउत चउथि सिनिवारे।
—रा ज सी

उ०— ३ त्रीजीइ अणतउ सीसोदीउ, जइत वाघेळउ चउथी रहिउ।—का दे प्र

चउथौ—देखो 'चउत्थौ' (रू भे) उ०—पदमनाभ पडित मति कही, चउथा खड समाप्ति हुई।—का दे प्र (स्त्री० चउथी)

चउदती–स०पु० [स० चतुर्दन्ती] इन्द्र का एरावत हाथी जिसके चार दात माने जाते हैं। उ०—चउदतौ चउ पासी रूप मणोहर।—स कु

चउदतौ–स०पु०—एक प्रकार का घोडा (शा हो)

चउद—१ देखो 'चवदै' (रू भे) २ देखो 'चवदस (रू भे)

चउदसी—देखो 'चवदस' (रू भे) (उ र)

चउदह, चउद्दह— देखो 'चवदै' (रू भे) उ०—करण अरथ चउदह विद्या वे उर व्याकरण भला गुण जाणगर।—ल पिं

चउदमउ, चउदमौ—देखो चबदमौ' (रू भे)

चउपट–क्रि०वि०—खुलेग्राम। उ०—हुई वेढि सरोवर तिणि वार, राउति भला किया हथियार चउपट। धाइ एक मना भिडया, लखणउ नइ साल्हउ रिण पडया।—का दे प्र

स०पु०—देखो 'चौपट' (रू भे)

चउपन—देखो 'चौपन' (रू भे) (उ र)

चउफळा–क्रि०वि०—देखो 'चौफेर' (रू भे) उ०—रचीइ चंद्रूआ चउफळा ए माहि मोतीयडे जाळ।—का दे प्र

चउरसउ–वि० [स० चतुस्र] चार (उ र)

चउराणू, चउरांणू—देखो 'चौराणू' (रू भे) (उ र)

चउरासियौ–स०पु०—१ वह राजपूत जिनके अधिकार मे भूमि न हो। २ देखो 'चौरासियौ' (रू भे)

चउमाळीस—देखो 'चौमाळीस' (रू भे) (उ र)

चउरासी—१ देखो 'चौरासी' (रू भे) उ०—कु कु चदन पाका पान, कर जोडे राजा कहई। चालउ चउरासी राव की की जान।
—वी दे

चउरी—देखो 'चवरी' (रू भे) उ०—गढ अजमेरा गम करउ, चउरी बइसी पखाळज्यो पाव।—वी दे

चउवाण—देखो 'चौहान' (रू भे)

चउवीस—देखो 'चौवीस' (रू भे) (उ र)

चउसट्ठि, चउसठि—देखो 'चौसठ' (रू भे) उ०—१ देवडी नामि उमा घरणि, मारुवणी तसु धू कुमरि। चउसठि कळा सुदरी चतुर, कथा तास कहिसु सुपरि।—ढो मा

उ०— २ घूम्मै खेतरपाळ ले घन रत्त घुटक्कै। चाहै रत्त चटट्ठिके चउसट्ठि चहक्कै।—व भा

चउसाळउ—देखो 'चौसाळा' (रू भे) (उ र)

चउहट्ट, चउहट्टइ—देखो 'चौहटौ' (रू भे) उ०—लाखीक मिळइ माडही लोक, चउहट्ट हाट माणिक्क चौक।—रा ज सी

चउहूगमाह–क्रि०वि०—चारो ओर। उ०—रउद्रगढ़ फेरियउ चकराह, गाजिया गोण चउहूगमाह।—रा ज सी (मि चौफेर)

चउहत्तरी—देखो 'चौहोतर' (रू भे)

चऊ–स०स्त्री०—हल मे फाल (हळवाणी) के नीचे लगाया जाने वाला काष्ठ का नुकीला व सम्मुख से चपटा उपकरण। उ०—कूमठ रौ हळ चऊ सुरगी, नाई बीजणी सोवै। काढ ऊमरा धरती थारी, आभै नै काई जोवै।—रेवतदान

चउआण—देखो 'चौहान' (रू भे)

चऊदह, चऊदै—देखो 'चवदै' (रू भे) उ०—रहित चऊदह खट सौ रूप, अठरह मात्रा छद अनूप।—ल पिं

चऊपट—देखो 'चउपट' (रू भे) उ०—आवी पाद्रि सइफळउ माडघउ, लीधा चउपट घाउ। सोरठिया राउत सपराणा, न दीइ पाछा पाउ।—का दे प्र

चऊरस–स०पु०—प्रथम चार लघु फिर दो गुरु सहित कुल ६ वर्णो का एक वरण वृत्त।—र ज प्र

क्रि०वि०—चारों ओर।

चक–स०पु० [स० चक्र, प्रा० चक्क] १ जमी

२ किसी बात के लिये निरन्तर किया जाने वाला हठ ३ दांतों से काटने का भाव या क्रिया। उ०—म्हारै चक बोडलो म्हाराज। ग्रौर तौ म्हारै कुई न काई।—वरसगाठ।

४ दातो से कटा हुआ शरीर का कोई स्थान या कटे हुए स्थान पर दातो का चिन्ह, दतक्षत। (मि० 'चकारी' २)

५ दिशा। उ०—चक ग्रचळाचळ चळचळे, गह्ण गुघळै गरद्दा।—भगवानजी रतनू

६ पृथ्वी, जमीन ७ देखो 'चक्र' (रू भे)

क्रि०वि०—१ ग्रोर, तरफ। उ०—चहक पावक वभक चहु चक। तद ग्ररक रथ थरक कौतिक।—सू प्र

चकई-स०स्त्री० [स० चक्रवाक+रा प्र ई] मादा चकवा पक्षी।

चकडीकम-वि०—चकित, स्तभित, विस्मित, प्रज्ञाशून्य।

मुहा०—चकडीकम होणौ—ग्राश्चर्य मे पडना, किंकर्तव्यविमूढ होना।

चकटीटोप-स०पु०—शिरस्त्राण, लोहे का टोप।

चकचक, चकचकाहट-स०स्त्री० [ग्रनु०] १ पक्षियो का कलरव, चहचहाहट २ जनरव, बकवास ३ लोकोपवाद। उ०—मिनख रखे मुख माय, गुपत बात जब तक गिणै। जब मुख सू कढ जाय, चकचक होवै चकरिया।—मोहनलाल साह

४ गहरे घी मे बना पदार्थ, जिसमे से घी चूता हो।

चकचकाणौ-स०पु०—चकचक या चहचहाहट होने की क्रिया।

चकचकाणौ, चकचकावौ-क्रि०ग्र०—चकचक करना, चहचहाना।

चकचकी-स०स्त्री०—एक प्रकार की छुरी। उ०—पेसकबज चकचकी रूमी विलायती म्याना माहा काढजै छै।—रा सा स

चकचक्क—देखो 'चकचक' (रू भे)

चकचाळ-स०स्त्री०—१ चर्चा, वार्ता ग्रादि प्रारम्भ करने की क्रिया या भाव २ छेडछाड।

चकचाळौ-स०पु०—१ उपद्रव, उत्पात।

मुहा०—चकचाळौ छेडणौ—उपद्रव करना, उत्पात ग्रारभ करना।

२ युद्ध, लडाई। उ०—'धापा' करण मुदै चकचाळौ। ऊदा वाळा वस उजाळौ।—रा रू

चकचूंदियौ, चकचूंध, चकचूंधियौ-स०पु०यौ० [स० चक्षु+रा प्र ऊंदियौ] १ ग्रधिक तेज प्रकाश के कारण ग्राखो की झपक ग्रथवा दृष्टि की ग्रस्थिरता, तिलमिलाहट २ सध्याकाल का वह समय जब न पूर्ण ग्रधेरा हो ग्रौर न पूरा प्रकाश ही हो ३ काष्ठ के नुकीले डडे पर चद्राकार लकडी रख कर उसके दोनो सिरो पर बैठ कर गोल चक्कर मे झूने खाने का एक यत्र विशेष ४ बाह्य प्रदर्शन, दिखावा।

वि०—ग्राकर्षक, मोहक, मनोहर।

चकचूर, चकचूरण-स०पु० [स० चक्र+चूर्ण] १ नाश, ध्वस।

उ०—समोभ्रम 'नाहर' जूटत सूर। चद्रासक मेछ करै चकचूर।

—सू प्र

२ मर्दन।

वि०—१ चकनाचूर, खट-खट। उ०—१ नच्यौ तन तेगन तें चकचूर, पुकारत मेक मसूर मसूर।—ला रा

उ०—२ हठ नाळ पेठ बाजार हाट, प्राजळै महल ग्रम्ण रुपाट। चाचरे गयण चकचूर चोट, कागरा ग्रथारथ बुरज कोट।—वि स

(मि०—चकनाचूर)

२ मदोन्मत्त, नशे मे चूर। उ०—चिपि नसा माय चकचूर हुय, सरधा दूर सिधावसी। गिरत गाडि समै किय गम्रिया, वाड गेत नै खायसी।—उ का

३ तन्मय, मग्न, तल्लीन, चूरचूर। उ०—इतरै यवन री फेट सू रतना री गाडी री पलनी पिण दूर हुवौ जदे कवर रो चित घणौ चकचूर हुग्रो।—र हमीर

चकचोळ-वि०—१ क्रुद्ध, कुपित २ लाल ३ मादक, मदयुक्त।

स०स्त्री०—१ क्रीडा। उ०—नभ मरणी रै बात फुहारा गात सुहावै, ठाडो छाह मदार विसाणी लैण लुभावै। चळ करता चकचोळ सुरा उर हाम जगाती, रमै घिवडिया कोड हेम-रज रतन लुकाती।—मेघ

२ लाल नेत्र, ग्रारक्त नेत्र ३ चपलता, चचलता।

उ०—ग्रधर विच पौढी मास भुलाय, सायत जग भर की ग्रणचेत। चचळ ग्रगा री चकचोळ, लेयगी नभ पथ किसी कुमेत।—साफ

चकचौंध, चकचौंह—देखो 'चकाचूध' (१) (रू भे)

चकडोळ, चकडौळ-स०स्त्री० [स० चक्र+दोल] १ नशे की खुमारी, मादकता २ पालकी, डोली। उ०—१ साह बेगम री चकडोळ माथै छै। कोस दोय रै ग्रातरै डेरा किया।—वीरमदे सोनगरा री वात

उ०—२ तिसै चावडी वीरमती सहेल्या रा साथ सू चकडौळ बैस नै ग्राप री बाग छै तठै ग्राई।—जगदेव पंवार री वात

चकत—१ देखो 'चगताई' (रू भे) २ देखो 'चकित' (रू भे)

उ०—समार्था सामरथ्य प्रबळ बळ ब्यरथ प्रभु बिना, त्रिसुद्धी न्ह्वीगी चकत मय बुद्धि विभु बिना।—ऊ का

चकताई—१ देखो 'चगताई' (रू भे)

चकती, चकत्ती, चकत्थौ—१ देखो 'चगताई' (रू भे) उ०—१ चखाडे कूत चकता घणी चापडे, रौद घड पछाडे ग्रचळ राणी। जीवता सिंभ महाराज वणियौ 'जसौ', समर चा करै रवि चद साखी।

—राठौड महाराजा जसवतसिंह गजसिंगोत री गीत

उ०—२ वळट्ट दुग्रट्ट हठाळ बगाळ, चकत्या इसा चालिया काळ चाळ।—वचनिका

२ दातो से काटने पर होने वाला चिन्ह, दतक्षत।

क्रि०प्र०—नाकणौ, भरणौ, माडणौ।

४ खड, टुकडा ५ रक्त-विकार से ग्रथवा खुजलाने से शरीर पर होने वाली चकती की तरह गोल चपटी व बराबर सूजन।

चकनचूर, चकनाचूर-वि०—१ जिसके टूट-फूट कर बहुत से छोटे-छोटे टुकडे हो गये हो, खड-खड। उ०—केते कुठार वाहत करूर, परिघन कितेक सिर चकनचूर। वके छछोह करि बोह सेल, नट जेम तेहरीय चोट सेल।—ला रा

२ पूर्ण थका हुआ, क्लांत।
क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।
३ देखो 'चकचूर' (रू भे)

चकपत्त-स०पु०यौ० [चक = दिशा+पति] दिक्पाल। उ०—चले चकपत्त चळद्दळ भाति, तळातळ ज्यों अतळा विचळाति। ससत्रनि तेज हुतासन धुक्ख, प्रळै रवि की मनु तुट्टि मयुक्ख।—ला रा

चकवदी-स०स्त्री—भूमि को भागो मे विभाजित कर सीमाबदी करने की क्रिया।

चकवध-स०पु० [स० चक्रवधु] सूर्य (ना मा)

चकवस्त-स०पु० [फा०] भूमि का विभाजन कर उसमे सीमावदी करने की क्रिया, हदवदी।

चकवी-स०स्त्री—चकवी (जल-पक्षी विशेष) उ०—ज्यू चकवी मनि रहै उदास, ऐसे आत्म फूलि ले सुवास।—ह पु वा

चकमक-स०स्त्री० [तु० चकमक] १ एक प्रकार का कडा पत्थर जिस पर चोट पडने व घर्षण होने से आग की चिनगारिया उत्पन्न होती हो। २ चमक, दमक। उ०—चाचा तेरी चकमक रात, जी कोई नणद भोजाई पाणी नीसरी।—लो गी
३ आग, अग्नि। उ०—कहर झडै चकमक चखा चापिया नाग कळ।
—रावत अरजुणसिंह चूडावत री गीत

चकमार—देखो 'चूकमार' (रू भे) उ०—गुरजा चकमारा, अग अपारा डावै पहा जमडड्ढ।—गु रु व

चकमाळा—स०स्त्री०—छेडछाड। उ०—मन मे आ धारणा थी सो औरगजेब सू इर भात चकमाळौ कर अडा लडा तो कैतो सुरग नु खडा कै खड-विहड होय खेत मे पडा।
—प्रतापसिंह म्होकमसिंह री वात।

चकमौ-स०पु० [स० चक्र = भ्रात] १ भुलावा, धोखा।
मुहा०—१ चकमौ उठाणौ—किसी के धोखे मे आ जाना। २ चकमौ खाणौ—धोखा खाना, भुलावे मे आना। ३ चकमौ देणौ—धोखा देना। ४ चकमा मे आणौ—धोखा खाना।
२ हानि, नुकसान।
मुहा०—चकमौ उठाणौ—हानि सहना।
[रा०] ३ एक प्रकार का ऊनी वस्त्र। उ०—१ तद्द सीसोदणी कयौ 'जी चकमा ओढ डेरै जावौ, अठे थानू कुण जीमासी'।—द दा उ०—२ भरमल माटी रौ ऊचौ मोटौ चौक कगयौ तिण ऊपर खडी छै। घूघीदार चकमौ ओढिया छै।—कुवरसी साखला री वारता

चकर—१ देखो 'चक्र' (रू भे., अ मा) उ०—तूगा चकर तूजीहा, कूत भूयाण हवाई।—वखतौ खिडियौ
२ वलिदान किये जाने वाले पशु पर किया जाने वाला तलवार का प्रहार। (मि०—वरको) ३ देखो 'चक्कर' (रू भे)

चकरअणदीठ, चकरअदीठ, चकरअदीठौ-स०पु०—१ अदृश्य या दैवी आपत्ति, सहसा उपस्थित होने वाली आपत्ति २ अदृश्य रूप से प्रहार होने वाला अस्त्र। उ०—चकरअदीठ चक्रवत रा वैरहरा ऊपर वहै।—उमेदजी साढू

चकरडी—१ देखो 'चकरी' (अल्पा, रू भे)। उ०—फेरइ चकरडी माता प्रेरइ। वाळूडा वळिहारी तेरइ।—ऐ जै का स
२ देखो 'चक्री' (अल्पा रू भे)

चकरणौ, चकरबौ—देखो 'चकराणौ' १,२,३ (रू भे)

चकरधर, चकरधरण—देखो 'चक्रधर' (रू भे)। उ०—गुरडधज तरण गज अमर पति, अगम गति चकरधरण ओळगै।—पि.प्र

चकरवरती—देखो 'चक्रवरती' (रू भे) उ०—वणसी अमल चकरवरती री, तदि आवसी कि पर धरत्री री।—सू प्र

चकराक्त-वि०—१ विस्मित, आश्चर्यान्वित, किंकर्तव्यविमूढ
२ भयभीत, आतंकित।

चकराणौ, चकराबौ-क्रि०अ० [स० चक्र] १ अचम्भित होना, चकित होना, चकराना २ (शिर का) चक्कर खाना, घूमना ३ भ्रम में पडना, भूलना।
रू०भे०—चकरणौ, चकरबौ।
क्रि०स०—४ अचम्भित करना, चकित करना, चकराना ५ भ्रम मे डालना, भुलाना।
चकराणहार, हारौ (हारी), चकराणियौ—वि०।
चकरवाडणौ, चकरवाडबौ, चकरवाणौ, चकरवाबौ, चकरवावणौ, चकरवावबौ, चकराडणौ, चकराडबौ, चकरावणौ, चकरावबौ
—प्रे०रू०
चकरायोडौ—भू०का०कृ०।
चकराईजणौ चकराईजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।
चकरणौ, चकरबौ—अक० रू०।

चकरायत-स०पु० [स० चक्र+रा०प्र० आयत] योद्धा, शूरवीर।
उ०—गडगडै नगारा नाद गहरायता। चौगणा जोस मुख चढै चकरायता।—महादान महडू

चकरायोडौ-भू०का०कृ०—१ चकराया हुआ, विस्मित,चकित २ (शिर) चक्कर खाया हुआ ३ भ्रम मे पडा हुआ, भूला हुआ ४ विस्मित किया हुआ, चकित किया हुआ ५ भ्रम मे डाला हुआ, भुलाया हुआ।
स्त्री०—चकरायोडी।

चकरावणौ, चकरावबौ—देखो 'चकराणौ' (रू भे)

चकरावियोडौ—देखो 'चकरायोडौ' (रू भे)
स्त्री०—चकरावियोडी।

चकरियोडौ-भू०का०कृ०—१ अचम्भित, चकित २ भूला हुआ, भ्रमित।
स्त्री०—चकरियोडी।

चकरियौ-स०पु०—१ कपडा वुनने का एक जुलाहो का औजार।
२ देखो 'चक्र' (अल्पा रू भे) उ०—व्यावा घर दोगणा दिपणा, मुरधर मे माटी तणा। चाद चकरिया रेल कोरण, सिर सूणा खदा खिणा।—दसदेव

चकरी–म०स्त्री० [स० चक्रिका] १ चक्की का पाट, चक्की २ गोल वृत्ताकार अपनी धुरी पर घूमन वाला कोई पदार्थ, गिर्री, फिरकनी।
उ०—अजा नमो तप तेज जसराज रा अगजी, रूक अणरेह् दाखे दुहूं राह। पैल दिल्ली तखत चढावै पेरवै, समर चकरी जेम फेरवै साह।
—अनोपसिंह सादू

क्रि०प्र०—घुमाणी, चलाणी, फेरणी।

३ पतग की डोर लपेटने की चरखी। उ०—मन वारतो नवि रहै, सो घण टोलग साथ। मो मन चकरी डोर ज्यू, गह्यो डोगी तव हाथ।—टो मा

४ एक प्रकार की आतिशबाजी जो जलने के साथ तेजी से चक्कर खाने लगती है। उ०—परभाव छटा उलट पलट, जाव आव चकरी जिसा। कमि कध विरथ लाला करै, अस्व छदगाळा इसा।
—मे म

क्रि०प्र०—घुमाणी, चलाणी, फेरणी।

५ देखो 'चक्री' (रू भे)। उ०—चकरी लख नागण चकित, सैस फणा सिमकार। सूदाळम री खग री, धर धमके लग धार।
—रेवतसिंह भाटी

६ ढेर, समूह।

वि०—१ भ्रमित २ अस्थिर, चचल।

चकरीजणी, चकरीजबौ–क्रि०अ० ['चकरणौ' का भाव वा०] १ चकरा जाना, चकित हो जाना २ (सिर का) चक्कर खाना या घूमना ३ भ्रम मे पड जाना, भूल जाना।

चकळ–वि०—भ्रमित। उ०—चकळ डळतळ वितळ चळचळ। मगळ भळ चड धमळ मगळ।—सू.प्र

चकळी—देखो 'चकळौ' (अल्पा रू.भे)

चकळोटी, चकळौ–स०पु० [स० चक्रलोट] लकडी या पत्थर का वह गोल पाटा जिस पर प्राय रोटी बेली जाती है। चकला।
उ०—बना वह गया चकळौ वेलण सीरा मे फुलको रह गयो जी, ठडो लागै नहर को पाणी।—लो गी
अल्पा०—चकळी, चकळोटी।

चकवड–स०पु० [स० चक्रमर्द] लगभग डेढ दो हाथ ऊचा एक पौधा जिसमे लम्बी-लम्बी पतली फलियाँ लगती हैं। उनके अन्दर के बीज खाने मे बहुत कडुवे होते हैं।

चकव—देखो 'चकवौ' (रू भे) उ०—वाणिजा वधू गो वाछ अमइ विट, चोर, चकव विप्र तीरथ वेळ। सूर प्रगटि एतला समपिया, मिळिया विरह विरहिया मेळ।—वेलि.

चकवत, चकवती, चकवत्ती—देखो 'चक्रवरती' (रू भे)
उ०—१ गहपूर अवाळ मिधु गटटै, चकवत मीमाणिय पीठ चडै।
—गो रू
उ०—२ चकवती आण जिम आण चकम्म, हिंदवाण सरव ऊपर हुकम्म।—वि स उ०—३ तो पूठं वरजाग साम्र जैसाण सुभत्ती, पह चौरी परणता चढै नह को चकवत्ती।—रा रू

चकवन—देखो 'चगताई' (रू भे) उ०—चकवन किये चौळ वाजिये चौरगि, राउ राठौट विसम गति रूप। 'ईसर' नमो तुहाळी आसत, गैण दिसा नाखै गज-रूप।—ईसरदास मेडतिया री गीत

चकवाविरह–स०पु०यौ० [स० चक्रवाक+विरह] चक्रवाक पक्षी को विरह-प्रधान करने वाला, चन्द्रमा (ना मा)
वि०वि०—ऐसा कथन है कि रात्रि को नर एव मादा चक्रवाक पक्षी एक साथ एक घोसले मे नही रहते। दिन निकलने पर ही उनका सयोग होता है।

चकवाह—देखो 'चकवौ' (रू भे)

चकवीय–स०पु०—एक प्रकार का घोडा।

चकवीर—देखो 'चक्रवीर' (रू भे)

चकवीविजोग, चकवीवियोग—देखो 'चकवा-विरह' (ना डि को)

चकवे, चकवै—१ देखो 'चक्रवरती'। उ०—१ मानधाता बडो राजा हुवो, चकवे हुओ।—रा व वि
उ०—२ नाम मांनधाता दई वटी चकवै हुसी, इतरो रिखीस्वर कह्यो।—चौबोली
यौ०—चकवैराज।
२ देखो 'चकवन' (रू भे)
४ छ की सख्या*(डि को)

चकवौ–स०पु० [स०चक्रवाक] (स्त्री० चकवी, चकई) १ एक पक्षी विशेष जो प्राय शीत-काल मे भारत मे आता है और ग्रीष्म ऋतु के आरम्भ मे चला जाता है। इसके विषय मे यह बात प्रसिद्ध है कि यह अपने जोडे से बहुत प्रेम करता है और रात्रि मे इनके जोडे का सयोग नही होता।
उ०—जोडी जुग मे दोय, चकवै नै सारस तणी। तीजी मिळै न कोय, जो जो हारी जेठवा।—जेठवा
पर्याय०—कोक, रथाग, सुरगाव।
रू०भे०—चकव, चकवह, चकवाह, चक्रवाक।
२ एक प्रकार का घोडा (रा सा स)

चकस्या–स०स्त्री० [स० चिकित्सा] १ उपचार, चिकित्सा २ समाधान, सतोषप्रद उत्तर।

चका—देखो 'चक्र' (८) (रू भे)। उ०—१ चका चमराळ करै खग चूर। सुत 'सवळेस' 'उरज्जण' सूर।—सू प्र
उ०—२ कढे खगवाह करत कराळ। चका सळ टूक हुवै धखचाळ।
—सू प्र

चकाचक–वि०—१ जिसमें खूब घी पडा हो (खाद्य पदार्थ) २ तर, सराबोर, लथपथ।
२ देखो 'चकचक' (रू भे)

चकाचूध, चकाचौंध, चकाचौंधी—देखो 'चकचूध' (रू भे)
उ०—१ वीसे नाग चमू जोम हुए तोम चकाचूध, धमे कोम भमै गोम पडै सार धोम।—हुकमीचद खिडियो

उ०—२ वीनू आवती नू देख कुवरसी नू चकाचौंध लागी।

—कुवरसी साखला री वारता

उ०—३ सो किवाड इसाही जे निसरिया जे मिया री फौज चमक खडी रही, चकाचौंधी सी लाग गई।—अमरसिंह री बात

चकावध—स०पु० [स० चक्रवध] सेना, फौज। उ०—हल कटका खुरां मेदनी हल हल, सूर गरिंद रज गयण चढं। खेत खडै चकावध राणी, पतसाहा ओदका पडै।—चडीदान दधवाडियो

चकावळ—देखो 'चकावळ' (रू भे) (शा हो)

चकाबोह, चकावो, चकावोह—स०पु० [स० चक्रव्यूह] १ युद्ध, समर।

उ०—१ भाण हिंदवाण असमाण तोलै भुजा, मान मारू चकाबोह माडै।—जवानजी आढो

उ०—२ खडै आरहटा रूपी अच्छरा विवाण खाथा, सारझटा माथा पडै वज्रसोह। तेगा धार हटा तामो कमधा हुचकै, ता तो वामीवदा मारहटा मातो चकावोह।—महेसदास कूपावत रो गीत

२ कोलाहल, हल्ला ३ आक्रमण, हमला ४ समूह, झुड।

चकार—स०पु०—१ वर्णमाला का 'च' वर्ण २ गोलाकृति, वृत्त, चक्र ३ चारणो को प्रदान की गई जागीरी। उ०—जिम्रा जूहर जाळिया, चढ चूथिया चकार। राजा न किम्रा सूमरा, तिम्रा दे परवार।

—प्राचीन

४ जमघट, भीड, समूह ५ योनि।

उ०—चच्चे मामू की घी चकार, विसमल्ला करै न बार बार।

—ऊ का

चकारो—स०पु० [स० चक्र] १ फेरा, घेरा, चक्र, परिधि।

उ०—जोमगी अफारा तेज करारा कजाक जोध। दळा रा चकारा केण ऊपरै दुराह।—पहाडखा आढो

२ दातो से काटने पर बना गोल निशान, दन्तक्षत। उ०—वेसर वळ खायो, जिण मे वळै-जुलफा रो आटो आयो, पलका पीक पडिया, अलका मोती अडिया, गाला चकारा इण भात घिरिया जाणै मदन रा घोडा कूडियै फिरिया।—र हमीर

३ समूह, ढेर। उ०—तठा उपराति करिनै राजान सिलामति वरछिया रो चकारो उतरियो छै।—रा सा स

४ समूह, दल। उ०—'अमरेस' वाळै पाट हेट अैतवार, भडा रा चकारा पोतकारे आपवीर। पाणी चाढ मेडते मीरखा डडि रूका पाण, धाड रे माटीपणो जीतो राड 'वीर'।—नवलजी लाळस

५ वध, वधन, गाठ ६ शस्त्रो के म्यान पर चढाया जाने वाला वस्त्र का आवरण अथवा भाले आदि के फल पर का कपडे का आवरण।

उ०—फळा ऊपर वनात रा मुखमल रा चकारा लगायजै छै।

—रा सा स

चकावळ—स०स्त्री०—घोडे के पैरो मे होने वाला एक रोग या गामचे की हड्डी का उभार (शा हो) (रू भे 'चकावळ')

चकास—वि० [स० चकासृ दीप्तौ] चमकने वाला, प्रकाशयुक्त।

उ०—चख मछी रध्र छेदे चकास, उडता विहंग वेधे अकास।

—वि स

चकासो—स०पु०—झगडा, लडाई।

उ०—धीरजसिंह रामसिंहोत साथे सारो भाइपो लिया मुहै आगे खडो थो सो इणसू आय टक्कर खाधी सो भलो सो चकासो हुवो।

—मारवाड रा अमरावा री वारता

चकित—वि० [स०] १ विस्मित, आश्चर्यान्वित। उ०—भय भ्रम सोच चकित चित भारी। निकटवर्ती कहु ईसव-नारी।—स प्र

२ भयभीत, डरा हुआ।

चकिवान—स०पु० [स० चक्रीवन्त] गधा (ह ना)

चकी—देखो 'चक्की' (रू भे) उ०—सू आगरा ही अमल री चकी बक्या छुरघा सू मिरीवढ कीजै छै।—रा सा स

चकीय—स०स्त्री०—मादा चकवा पक्षी, चकवी।

चकीलो—वि० [स्त्री० चकीली] १ सुदर, छवीला (र हमीर) देखो 'छवीलो' (रू भे) २ चकमा देने वाला

चकू—देखो 'चाकू' (रू भे)

चकोट—स०पु०—चद्रमा (ना डि को)

चकोतरो—स०पु०—एक प्रकार का वडा नीबू जो प्राय नारंगी के आकार से वडा होता है और उसका स्वाद खट्टापन लिये मीठा होता है।

चकोर, चकोरडो—स०पु० [स० चकोर+रा प्र डो] (स्त्री० चकोरी, चकोरडी) १ एक प्रकार का वडा तीतर जो पहाडी स्थानो मे पाया जाता है। इसकी चोच और आंखें वहुत लाल होती हैं। इसके लिये भारत मे वहुत प्राचीन समय से यह वात प्रसिद्ध है कि यह चद्रमा का अत्यधिक प्रेमी है और आग की चिनगारियो को चद्रमा की किरणो के भ्रम मे खा जाता है।

उ०—१ वाग अनेक वावडी अदभुत फूल अपार, कोयल मोर चकोर पिक जपत भवर गुजार।—वगसीरामजी प्रोहित री वात

उ०—२ तुम दरसण हो मुझ आणद पूर कि, जिम जगि चद चकोरडा। तुम दरसण हो मुझ मन उछरग कि, मेह आगम जिम मोरडा।—स कु

मुहा०—चकोर होणो—प्रेमी होना, चद्रमुख का प्रेमी होना।

अल्पा०—चकोरडो, चकोरियो।

यौ०—चकोरवधु।

२ एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे सात भगण, एक गुरु और एक लघु होता है।

वि०—१ सचेत, होशियार, सावधान, सतर्क। उ०—तू रावळ रो घर धणीआ विगोवै छै। नै तू माणस छै तो म्हारो नाम मत लेई। आ चकोर थकी रहै छै।—नैणसी

मुहा०—चकोर होणो—सतर्क व सावधान होना।

चकोरवधु—स०पु०यौ० [स०] चद्रमा।

चक्क—१ देखो 'चक' (रू भे) उ०—दरस्यउ सरि सुरिताण दळ, चळचळ च्यारे चक्क।—रा ज सी

२ देखो 'चक्र' (रू भे) उ०—१ उम्मेद भूपति अग मे, रसवीर मकुरि रग मे। वरवीर बारह से प्रवीरन, चक्क ले चहुवाण।

—व भा

उ०—२ विछोह चक्क चक्कय, अनेक वीर वक्कय।—ला रा

चक्कडीटोप—देखो 'चकडीटोप' (रू भे)

चक्कधरी—स०पु० [स०चक्र = राज्य+धारिन्] चक्रवर्ती राजा, राजा। उ०—जिम अमराउगी इदु, भूमडळि जिम चक्कधरी। सयह माहि मुणिंदु, तिम सोहइ 'जिणउदय' गुरी।—ऐ जै का स

चक्कय—स०स्त्री०—मादा चकवा पक्षी। उ०—विछोह चक्क चक्कय अनेक वीर वक्कय।—ला रा

चक्कर—स०पु०—१ देखो 'चक्र' (रू भे.) उ०—१ चढ ऊतर धाय चलाय सु चक्कर, राख लियौ अपणाय'र रे। अहिया व्रिद लाज उवारण प्रायक काज इसा महाराज करै।—भक्तमाळ

उ०—२ दरसण देहरे हुवौ मातु वाक्य स्री मुख री। काठी हुवै निसक चक्कर वहसी करणी री।—ठाकर जैतसी री वारता

२ गोल या मडलाकार घेरा, वृत्ताकार परिधि, मडल।

मुहा०—१ चक्कर काटणौ—वृत्ताकार परिधि मे घूमना, परिक्रमा करना, इधर-उधर घूमना २ चक्कर खाणौ—भटकना, भ्रात होना, हैरान होना ३ चक्कर मारणौ—चारो ओर घूमना, इधर-उधर फिरना, भटकना ४ चक्कर मे आणौ—चकित होना, अचभे मे आना. ५ चक्कर मे नाखणौ—चकित करना, हैरान करना, परेशान कर देना ६ चक्कर लगाणौ—चारो ओर घूमना, इधर-उधर फिरना, फेरा लगाना, घूमना-फिरना।

३ मडलाकार, मार्ग, घुमाव का रास्ता।

मुहा०—१ चक्कर खाणौ—घुमाव फिराव के साथ जाना, सीधे न जाकर टेढे मेढे जाना २ चक्कर पडणौ—जाने के लिये सीधा न पडना, घुमाव या फेर पटना।

४ पहिये का अक्ष पर घूमना।

मुहा०—१ चक्कर खाणौ—पहिये की तरह घूमना, अक्ष पर घूमना. २ चक्कर देणौ—मडल बाध कर घूमना, प्रदक्षिणा करना, मडराना। ३ चक्कर लगाणौ—परिक्रमा करना, मडराना।

५ घुमाव, जटिलता, दुरूहता, फेर-फार।

मुहा०—१ चक्कर मे आणौ—धोखे मे आना। २ चक्कर मे नाखणौ—असमजस मे छोडना, धोखे में डालना। ३ चक्कर मे पडणौ—असमजस या दुविधा मे पडना। ४ चक्कर मे फसणौ—धोखे मे आना, वश, अधिकार या चगुल मे आना।

६ सिर घूमना, घुमटा, मूर्च्छा।

मुहा०—चक्कर आणौ—सर चकराना, घुमटा आना।

७ पानी का भवर. ८ जजाल।

मुहा०—चक्कर आणौ—विपत्ति आना, आफत आना।

चक्करजीवन—स०पु०—कुभकार, कुम्हार।

चक्करदार—वि०यौ०—जिसमे चक्कर हो। उ०—गुरडी तेरी राग-रगीली, तकळी चक्करदार। चोखौ वण्यो दमकडो तेणौ, कूकडिये री लार।—लो गी

चक्करवरती, चक्कवई, चक्कवट्टि, चक्कवत, चक्कवै, चक्कवत्ति—१ देखो 'चक्रवरती' (रू भे)

उ०—१ चकतौ अकवर चक्कवै, पतसाहा पतसाह। चतुरगी फौजा चढै, दिये दुरगा दाह।—वा दा

उ०—२ जगहत्थ जगत सिर जळहळे, दस दिगपाळ दहवकवै। महि 'माल' छहा जिहा, चौथे पहोरे चक्कवै।—सू प्र

उ०—३ जुग पाणिग्रहण हुई वार जिण सोम चक्कवै, दुलही सजोड लीधा दुलह च्यारु फेरा चक्कवै।—रा रू

उ०—४ तिणि परि हुउ सति जिणेसरु, सगह सति करउ परमेसरु चक्कवट्टि किरि पचमउ।—प प च

उ०—५ जाणे तीह नइ छइ चक्कवत्ति रिद्धि चऊद रयण छइ अन नव विधि।—चि चउपई

चक्की—स०स्त्री० [स० चक्री] १ पत्थर के दो गोल पाटो को एक दूसरे पर रख कर आटा पीसने या दाना दलने के लिये बनाया जाने वाला एक यत्र।

मुहा०—१ चक्की पीसणी—लगातार काम करना, चक्की चलाना २ चक्की मे जुतणौ—काम मे लगना। ३ चक्की टाचणी—चक्की को टांकी से खोद-खोद कर खुरदरा करना जिससे दाना अच्छी तरह पीसा जावे।

२ जमा कर चौकोर काटा हुआ किसी खाद्य पदार्थ का टुकडा अथवा इसी प्रकार की कोई अन्य वस्तु ३ एक प्रकार की मिठाई।

४ दातो को काटने का भाव या दातो से काटने पर होने वाला चिन्ह, दतक्षत ५ तलवार (ना डि को) ६ आर्या या गाहा छद का भेद विशेष जिसके चारो चरणो मे मिला कर ६ गुरु और ४५ लघु वर्ण सहित ५७ मात्रायें हों (ल पि)

चक्कू—देखो 'चाकू' (रू भे)

चक्कौ—स०पु० [स० चक्र, प्रा० चक्क] १ पहिया २ पहिये के आकार के समान कोई गोल वस्तु ३ जमा हुआ कतरा, अथरी, थक्का—ज्यूं दही रौ चक्कौ।

चक्ख—देखो 'चख' (रू भे) उ०—हुई दौड हैमरा, नरा ऊधरा करारा। सेख ज्वाळ सल्लकी, कना सिव चक्ख विकारा।—रा रू.

चक्खी—देखो 'चक्की' (रू भे) उ०—सौ रोगांनी रौसनी केसरिया चक्खी, भाति भाति की मिठाई। मेवे की पुलाव अनेक आई।

—सू प्र.

चक्खेव—देखो 'चख' (रू.भे) उ०—साळीग्राम चक्खेव अक्खे सरोम, गिर्ण कान वे सारिखा सीहगोस।—वचनिका

चक्यउ-वि० [सं० चकित] चकित, अचंभित। (उ.र)

चक्रअग, चक्रग—देखो 'चक्राग' (रू भे) (ना मा)

चक्रगी—देखो 'चक्राग' (रू भे) २ हंसी, मादा हंस।

चक्र-स०पु० [स०] १ वायु, पवन (अ मा) २ राजा, नृप ३ एक प्रकार का पाखंड ४ पहिये के आकार का बना लोहे का एक अस्त्र विशेष जिसकी परिधि की धार बडी तीक्ष्ण होती है। ५ विष्णु भगवान का एक विशेष अस्त्र, सुदर्शन चक्र।

यौ०—चक्रधर, चक्रधरण, चक्रधारी, चक्रपाण, चक्रपाणी, चक्रभ्रत, चक्रमुद्रा।

६ शस्त्र, हथियारा। उ०—आवत्त हुआै एकै घडी, हुआ सुभट्टा सत्थरा। सग्राम चक्र वूहा सत्रा, सूरसिंघ चक्रव्रत्त रा।—गु रू ब

७ देवी का एक शस्त्र विशेष। उ०—१ कर ढोवौ निसक रौ, चक्र वहसी चारण रौ।—द दा उ०—२ और वी फौज माही माताजी री करणी जी रा चक्र वूहा सो सारी साथ आपस रै माही कट कर मुवौ।—ठाकर जैतसी री वात

८ सेना, फौज, दल (अ मा, ह ना) उ०—१ 'सतौ' हालियौ आगरै चक्र सज्जै, वजे बब भेंगी घुरै त्रब बज्जै।—व भा

उ०—२ मखी अर्माणो साहिवो, गिणै पराई देह। सर वरसै पर चक्र सिर, ज्यू भादवडै मेह।—वा दा.

९ योग या तन्त्र के अनुसार राजस्थानी मे माने जाने वाले छ चक्र या आठ कमल। देखो 'कमल' (११)

१० समूह, झुण्ड (अ मा) ११ देव-पूजन का यत्र १२ पुस्तक का भाग १३ वातचक्र, बवडर १४ युद्ध के लिये बनाई जाने वाली सेना की स्थिति।

यौ०—चक्रकुंड, चक्रव्यूह।

१५ गावो या नगरो का समूह, मडल, प्रदेश।

यौ०—चक्रपाळ।

१६ राज्य।

यौ०—चक्रवत, चक्रवति, चक्रवती।

१७ घुमाव, चक्कर, फेरा। उ०—न लाभत सावत सीस नत्रीठ, देतौ चक्र दड फिरै अणदीठ।—मे म.

१८ पहिया। उ०—वद 'किसन' रकार मकार विहु, सत रथ चक्र समाथ का। भव जन तमाम कारक अभय, नाम अक रघुनाथ का।

—र ज प्र

क्रि०प्र०—चलणो, चलाणो, फेरणो।

यौ०—चक्रणधुर, चक्रपाद।

१९ घेरा, आवेष्टन। उ०—तिण समय चद्रमा रै चारौं तरफ परिवेस रै प्रमाण झाले सिंहदेव साठि हजार सेना सू स्वकीय स्वामी रा सिविर रै छवीना रौ चक्र चलायौ।—व भा

क्रि०प्र०—डालणो, देणो, नाखणो।

२० क्रोध, गुस्सा. २१ सर्प (मि० 'चक्री' ११, रू भे)

२२ तेल पेरने का कोल्हू।

यौ०—चक्रचर।

२३ कुम्हार का चाक।

यौ०—चक्रचर, चक्रजीवक।

२४ चक्रवाक पक्षी चकवा पक्षी।

यौ०—चक्रबधु, चक्रविजोग, चक्रवियोग, चक्रवीर।

२५ विस्मय, आश्चर्य २६ भ्रम, भूल २७ हाथ की अगुलियों और पैर के तलुवे पर गोलाकार बनी बारीक रेखाओ के चिन्ह (सामुद्रिक) २८ तीर्थ स्थान पर पहुचने पर वहा शरीर के किसी अग पर अकित कराये जाने वाले देव-मूर्तियों के चिन्ह। उ०—पवित्र सभा वे करिस एण पर, अक दिवाड सख चक्र ऊपर।—ह र.

२९ वृत्त, गोलाकार आकृति।

यौ०—चक्रभ्रमर, चक्रमडळ, चक्रमडळी।

रू०भे०—चक, चकर, चक्क, चक्कर, चक्करी।

३० एक छद विशेष जिसके प्रथम चरण मे क्रमश एक भगण, तीन नगण तथा लघु-गुरु होता है। (र ज प्र) ३१ युद्ध मे वीरगति प्राप्त करने की अभिलाषा रखने वाले राजपूतो के शरीर पर लगाया जाने वाला एक चिन्ह विशेष। उ०—ताहरा आप रामसिंघजी चक्र आप रै हाथ दिया।—द वि

३२ कुत्ता (अ मा, डि को) (मि० 'मडळ' ५)

३३ जल का भँवर, चक्कर ३४ एक प्रकार की काव्य-रचना.

३५ नदी की गूंज ३६ सभा। उ०—अढ प्रताप आठू दिसा पसरै हितु कमळ फूलै विहद भात चक्र हण भर।—र रू

३७ आटा पीसने का यत्र, चक्की ३८ विष्णु की पूजा करते समय शरीर पर लगाया जाने वाला चिन्ह। उ०—परभात हुयौ ताहरा हिंदू ठाकुर सहू को सेवा करि करि अर चक्र सख दे अर मरणे सू होइ होइ अर डेरै वैठा छै।—द वि

३९ दौर, फरा। उ०—धीर वीर धनवान, कई हुयग्या कई होवसी। समय चक्र असमान, चलतौ रहसी 'चकरिया'।

—मोहनलाल साह

चक्रअग—देखो 'चक्राक' (रू भे)

चक्रकुड-स०पु०यौ० [स०] चक्रव्यूह का मध्य भाग। उ०—किता अग्र पाछै किता चक्रकुडे, तरक्कै किता साहता वाह तुडे।—रा रू

चक्रचर-स०पु०यौ० [स०] १ तेली २ कुम्हार।

चक्रजीवक-स०पु०यौ० [स०] कुम्हार।

चक्रणधुर-स०पु०यौ० [स० चक्रधुरीण] रथ (डि ना मा)

चक्रत-वि०—चकित, विस्मित, आश्चर्यान्वित। उ०—आडवर असवाव अपाळा, थटै रसाला गज थूआ। देखै 'गुमान' तणा रा दूथी, हव चक्रवत चक्रत हुआ।—महाराजा मानसिंह (जोधपुर) री गीत

चक्रताळ-स०पु०यौ० [स० चक्रताल] एक प्रकार का चौताला ताल (सगीत)

चक्रति-वि० [सं० चकित] चकित, विस्मित। उ०—चक्रदिस जाइ न मक्रै चक्रति, निजर काळ देखै नयण। म्रिग जीव सरण मारीजतो, राम राम राधारमण।—ज गि

चक्रतीरथ-सं०पु०यौ० [सं० चक्र+तीर्थ] तुगभद्रा नदी के किनारे स्थित एक तीर्थ-स्थान।

चक्रदड-सं०पु०यौ० [सं०] एक प्रकार का व्यायाम।

चक्रदस्टू-सं०पु०यौ० [सं० चक्रदष्ट्र] सूग्रर।

चक्रधर, चक्रधरण चक्रधारि चक्रधारी-वि०—चक्र धारण करने वाला। उ०—जावरी पत्र दिस दिस जुवा, वासी वळे वमावसी। चिता चेत समर हरि चक्रधर, एक तिको दिन ग्रावसी।—ज खि

सं०पु०—१ विष्णु भगवान। उ०—करे सिनान वदन करि ध्यान चित धरे चक्रधर।—सू प्र

२ श्री कृष्ण। उ०—चखं फणधर चक्रधर, पाळी जिण निज पैज। मो मूरा मिर सेहरो, नर पुगव सुरनैज।—बा दा

३ बाजीगर ४ सर्प, साप ५ सूर्य, भानु (ना मा)

६ एक राग विशेष (सगीत)

चक्रपाण, चक्रपाणि, चक्रपाणी-सं०पु०यौ० [सं० चक्रपाणि] १ हाथ मे चक्र धारण करने वाले विष्णु, ईश्वर। उ०—चक्रपाणि उर चित एम 'चहुवाण' उचारै। वडम बोल विस्तरै बोल सोई कुळ मा(ता)रै।—रा रू

२ श्री कृष्ण। उ०—जिमाडे जिके भावता भोग जाणी, पर्से जसोदा जमो चक्रपाणी।—ना द

चक्रपाद-सं०पु०यौ० [सं०] १ गाडी २ रथ।

चक्रपाळ-सं०पु०यौ० [सं०] १ किसी प्रदेश का शासक, सूबेदार २ चक्र धारण करने वाला, विष्णु।

चक्रपूजा-सं०स्त्री०यौ० [सं०] तान्त्रिको की एक पूजा-विधि।

चक्रफळ-सं०पु०यौ० [सं० चक्रफल] गोल फल लगा हुग्रा एक ग्रस्त्र विशेष।

चक्रबध-सं०पु०यौ०—एक विशेष प्रकार का चित्र काव्य जिसके ग्रक्षर चक्र के भीतर बैठाये जाते हैं।

चक्रबधु, चक्रबाधव-सं०पु०यौ० [सं० चक्रबधु] चकवा पक्षी के नर मादा के जोडे को मिलाने वाला सूर्य।

चक्रभ्रत-सं०पु०यौ [सं० चक्रभृत] चक्रधारी, विष्णु भगवान।

चक्रभेदिनी-सं०स्त्री०यौ० [सं०] चकवा पक्षी के युगल ग्रर्थात नर व मादा को पृथक करने वाली रात्रि, रजनी।

चक्रभोग-सं०पु०यौ० [सं०] ग्रहो की वह गति जिसमे वे एक स्थान से चल कर पुन उसी स्थान को प्राप्त होते हैं (ज्योतिष)

चक्रभ्रमर-सं०पु०यौ० [सं०] एक प्रकार का नाच।

चक्रमडळ-सं०पु०यौ० [सं० चक्रमडल] चक्र की भाति घूम कर नाचने का एक नृत्य।

चक्रमडळी-सं०पु०यौ० [सं० चक्रमडली] ग्रजगर सर्प।

चक्रमीमामा-सं०स्त्री०यौ० [सं०] वैष्णवो की एक चक्रमुद्रा धारण करने की विधि।

चक्रमुख-सं०पु०यौ० [सं०] शूकर, शूग्रर।

चक्रमुद्रा-सं०स्त्री०यौ० [सं०] विष्णु के ग्रायुध यथा चक्रादि के चिन्ह जो वैष्णवो द्वारा ग्रपने शरीर के अगो पर चित्रित या ग्रकित कराये जाते हैं। (मि० 'चक्र' २८, २९ व ३८)

चक्रयत्र-सं०पु०यौ० [सं०] ज्योतिष का एक यत्र।

चक्रवत, चक्रवति, चक्रवती-सं०पु०—१ एक वर्णिक छद जिसके प्रत्येक चरण से प्रथम ग्रौर ग्रत मे दो गुरु ग्रौर ग्रन्य १२ लघु वर्ण सहित कुल १४ वर्ण होते हैं।

२ देखो 'चक्रवरती' (रू भे) उ०—१ जूनै गढ गढपत जागळवै, सामै चक्रवत 'कला' सुजाव।—द दा

उ०—२ चक्रवत होसी ग्रभनमो 'चूडो', घणू सराहू कसू घणो।

—तेजसी खिडियो

उ०—३ चक्रवत तो पीढी लग चवदा। रवदा खय करसी खैरवदा।

—सू प्र

उ०—४ ग्रारभै समर चक्रवती उभै, चमर ढुळता चालिया।—सू प्र

उ०—५ धज चमर छत्र कर रेख धन्न। चक्रवती तणा साचा चहन्न।

—सू प्र

उ०—६ करि वप सनाह ग्रावध कसे, लिये सकति जप जय लभो। चक्रवती झपट हूता चमर, ग्राय गयद चढियो 'ग्रभो'।—सू प्र

चक्रवरत, चक्रवरती-वि०—ग्रासमुद्रात भूमि का स्वामी, एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक की भूमि पर राज्य करने वाला।

सं०पु० [सं० चक्रवर्तिन्] १ वह राजा जिसका राज्य एक समुद्र से लेकर दूसरे समुद्र तक फैला हुग्रा हो २ कोई महान राजा या सम्राट। उ०—१ जगि करत राज चक्रवरत जेम।—सू प्र

उ०—२ हरखत सहर उछाह। चक्रवरत दरसण चाह।—सू प्र

३ एक प्रकार का घोडा जिसके बायें पार्श्व मे भौरी होती है (शा हो)

रू०भे०—चकवत, चक्वती, चकवै, चक्करवटि, चक्कधरी, चक्करवरती, चक्रवत, चक्रव्रत, चक्रवती, चक्रव्रत, चक्रव्रति।

चक्रवान-सं०पु० [सं० चक्रवान्] चौथे समुद्र मे स्थित एक पर्वत।

(पौराणिक)

चक्रवाक-सं०पु० [सं०] १ चकवा पक्षी। उ०—१ विधि पाठक सुक मारस रस वदक, कोविद खजरीट गतिकार। प्रगळभ लाग दाट पारेवा, विदुर वेस चक्रवाक विहार।—वेलि उ०—२ सहस किरण परकास, पकज चक्रवाक ग्रति प्रीतम। इळ नव खड उजास, सूरजदव नमो कासिव सुत।—सू प

यौ०—चक्रवाक वधू।

२ वह घोडा जिसके चारो पैर सफेद हो, शरीर पीला हो व नेत्र श्याम वर्ण के हो।—(सुभ, शा हो)

वि०—पीला, पीत वर्ण (डि को)

चक्रवाकवियोग–स०पु०यौ० [स० चक्रवाक+वियोग] चद्रमा, चाद। (ह ना)

वि०वि०—देखो 'चकवौ' (१)

चक्रवाळ–स०पु० [स० चक्रवाल] १ एक प्रसिद्ध पौराणिक पर्वत। २ घेरा। उ०—जिकौ सुणि साखलै वीरमदेव आपरा स्वामी नू पयादौ जाणि चामुडराज सिंहदेव प्रमुख सामता री समूह रोकरण रै काज आडा आय वाजी रा वेग री चक्रवाळ ताणियौ।—व भा ३ मडल, आवृत।

चक्रवाहविजोग—देखो 'चक्रवाकवियोग' (रू भे.)

चक्रवीर–स०पु० [स० चक्र+रा वीर) सूर्य। (अ मा) (मि० 'चक्रवधु')

चक्रव्यूह, चक्रव्यूहू, चक्रवूह–स०पु०यौ० [स० चक्रव्यूह] प्राचीन काल मे युद्ध के समय किसी वस्तु या व्यक्ति की रक्षा हेतु उसके चारो ओर सेना को घेरे मे खडा करने की स्थिति विशेष। उ०—१ दिणि आथमतई हणिउ हाथि हरि पडव हरखीया, दिणि तेरमइ चक्रव्यूहु तउ कउ रवि माडीया।—प प च उ०—२ धारूजळ मुग्गळ तूटत ध्रूह, विढे अभमुन्य ज्यूही चक्रवूह।—सू प्र

चक्रव्रत—देखो चक्रवरती' (रू भे) उ०—आव्रत हुओ एकै घडी हुआ सुभट्टा सत्थरा। सग्राम चक्र वूहा सआ सूरसिंघ चकव्रत रा। —गु रु ब

चक्रसुद्रसण—देखो 'सुदरसणचक्र' (रू भे) उ०—वप तप इम दीसै उण वेळा। भाण वार चक्र सुद्रसण भेळा।—सू प्र

चक्राक–स०पु० [स०] वैष्णवो द्वारा अपने बाहु आदि पर दगवाया हुआ चक्र का चिन्ह।

चक्राकित–वि०यौ० [स०] जिसने अपने शरीर के किसी अग पर विष्णु के आयुधो का चिन्ह अकित कराया हो।

स०पु०—वैष्णवो का एक सप्रदाय भेद।

चक्राग–स०पु० [स० चक्राङ्गी] (स्त्री० चक्रागी) १ चकवा पक्षी २ हस (अ मा) ३ रथ या गाडी ४ कुटकी नामक ओषधि।

चक्रास–स०पु० [स० चक्राश] राशि चक्र का ३६०वा अश।

चक्रा–स०पु० [स० चक्रिन्] सर्प, साप (अ मा)

चक्राअग—देखो 'चक्राग' (रू भे)

चक्राकार–वि० [स०] वृत्तालुकार, मडलाकार, गोल।

चक्राकी–स०स्त्री० [स०] हसिनी, मादा हस।

चक्राक्रत–स०पु०—चक्र, चक्रव्यूह। उ०—सुत आणद महेस, खगे पडवेस धडच्छे। पिंड वाजै पडिहार, व्यूह चक्राक्रत अच्छे।—रा रू

चक्राजुध—देखो 'चक्रायुध' (रू भे)

चक्राथ–स०पु० [स०] कौरव पक्ष का एक योद्धा (महाभारत)

चक्रायुध–स०पु०यौ [स०] विष्णु भगवान।

चक्राळ–स०पु०—रथ (डि ना मा)

चक्रावळ–स०पु० [स० चक्रावलि] घोडे के पैरो मे होने वाला एक रोग जिसके कारण उसके पैरो मे घाव हो जाता है।

चक्रासन–स०पु०—योग के चौरासी आसनो के अतर्गत एक आसन विशेष जिसमे दोनो हाथो की अगुलियो से दोनो पाव की अगुलियो को पकड कर सोया जाता है। कुछ लोगो के अनुसार इसका नाम वर्तुलासन भी है।

चक्रिक–स०पु० [स०] चक्र धारण करने वाला।

चक्रित–वि० [स० चकित] १ विस्मित, दग, भौंचक्का, चकित। उ०—हुवे रथ चक्रित देव निहग, खहाव्रत मेघ कि वेग खसग। —रा रू

२ सशकित, भयभीत, कायर।

चक्रिन–स०पु० [स०] सर्प, साप। उ०—धारण तूझ धडै न्रप धूकै चक्रिन भ्रम छळहू त अचूकै।—सू प्र.

चक्रियवत–स०पु०यौ० [स० चक्रीवत] गधा। उ०—बदनवत बसत विभावर चदन चक्रियवत चढायौ।—ऊ का.

चक्रियाण–स०पु०—चक्र धारण करने वाला यथा विष्णु, श्रीकृष्ण आदि उ०—किले 'रैण' वाऊै माया आसुरा न लागै, कजी ऐवजी फाटका था पहरी चक्रियाण।—बाकीदास

चक्रिवा—देखो 'चक्रियवत' (रू भे)

चक्री–स०पु० [स० चक्रिन्] १ चक्र धारण करने वाला व्यक्ति यथा विष्णु, श्रीकृष्ण आदि। उ०—चक्री रा चक्र रै समान मही रै माथै प्रतिबब पाडता चतुरग चक्र मेघमाळा मे चचळा रा चपळ भाव मे चूक पाडता चद्रहास चलाया।—व भा

२ चक्र नामक अस्त्र (मि० 'चक्र' ४, ५)

३ सर्प, साप। उ०—करी सिंह वाराह रै तुड केती, लसै ग्राह चक्री मुखी वाह लेती।—व भा

४ चक्रवाक पक्षी, चकवा।

वि०वि०—देखो 'चकवौ'

५ कुभकार, कुम्हार. ६ जासूस, खुफिया व्यक्ति ७ तेली ८ चक्रवर्ती सम्राट।

स०स्त्री०—९ तेल पेरने का कोल्हू १० चक्राकार या गोल घेर मे घुमाने की क्रिया (घोडे को)। उ०—पिले रान लागा तिणै ठेक पेरै। फरे बाज चक्री रसी वाल फेरै।—व भा.

११ एक प्रकार का आर्य छद का २२ वा भेद जिसमे ६ गुरु और ४५ लघु होते है।

देखो 'चकरी' (२) (रू भे) उ०—पवन का परवाह, गुलाब की मूठ, सधराज कौ गोटका, तारे की तूट, आतस को भभको, चक्री की चाल, छाती की ढाल।—दरजी मयाराम री वात

१३ सभा। उ०—चक्री विचाळ रघुवर विसाळ, जपे जरूर सुण भरथ सूर।—र रू (मि० 'चक्र' ३६)

१४ आटा पीसने या दाल दलने का यत्र, चक्की. १५ मडली, टोली। १६ देवी, दुर्गा।

वि०—१ अमित २ अस्थिर।
चक्रीवान—म०पु० [स० चक्रीवन्त] गधा (ह ना)
चक्रेस्वर, चक्रेस्वरी—स०स्त्री० [स० चक्रेश्वरी] राठौड वंश की कुलदेवी।
उ०—१ रचि समर वधवा हू त रूठ। देवि चक्रेसुर लीध दूठ।—सू प्र
उ०—२ चक्रेस्वरी वळे स्थाने राटेस्वरी तथा रट, पखणी सप्त मातेण नागणेची नमस्तुते।—पा प्र
चख—स०स्त्री० [स० चक्षुस्] १ आख, नेत्र (ना डि को, ह ना)
उ०—१ सिध हसियौ न्रप चख सकुचाणे। आतमघात वात चित आणे।—सू प्र
उ०—२ सो तौ दीठौ आज साच निज चखा निहारे। वाळि सरीखो पित वहै, जै राम जुहारे।—सू प्र
२ [फा० चख] झगडा, युद्ध।
उ०—चख रा वचन सुणे चडखायौ, अग असळाक मोडतौ आयौ।
—विरजूबाई
यौ०—चख-चख।
[रा०] ४ घोडे के जवाडो मे होने वाला एक रोग (शा हो)
चखएक—वि०यौ०—एक आंख वाला, एकाक्ष, काना।
स०पु०यौ [चक्षू+एक] दैत्यगुरु शुक्राचार्य (अ मा)
चखचख—देखो 'चकचक' (रू भे)
चखचांधी—स०स्त्री०—चकाचौंध। उ०—आई उमड अविद्या आंधी, चारु वरण चढगी चखचाधी।—ऊ का
चखचूदरी—स०स्त्री०—छछुदर नामक जतु।
चखचूधी—देखो 'चखचाधी' (रू भे)
उ०—देखू नैणा दोय, चखचूधी छाई चहू। कहौ री दीसै कोय, जीवण जोता जेठवा।—जेठवा
चखचूधी—वि० (स्त्री० चकचूधी) १ जिसकी आखें मिची-मिची सी एव छोटी हो २ घुधला व चमकीला।
सं०पु०—चकाचौंध।
चखचौळ—वि०—१ रक्तिम नेत्र, लाल आखें वाला। उ०—उर चाट कपाट पटाड अबो, तिण ताळ हुवौ चखचौळ तवो।—पा प्र
२ क्रुद्ध, कुपित।
चखचौंध—देखो 'चकाचौंध' (रू भे)
चखण—स०पु०—१ चखने का पदार्थ २ चखने की क्रिया या भाव।
चखणौ, चखवौ—देखो 'चाखणौ' (रू भे)
चखणहार, हारौ (हारी) चखणियौ—वि०।
चखवाडणौ, चखवाडवौ, चखवाणौ, चखवावौ, चखवावणौ, चखवाववौ
—प्रे०रू०।
चखाटणौ, चखाडवौ, चखाणौ, चखावौ, चखावणौ, चखाववौ
—रू०भे०।
चखिओडौ, चखियोडौ, चख्योडौ—भू०का०कृ०।
चखीजणौ, चखीजवौ—कर्म वा०।
चखताळौ—स०पु०—एक प्रकार का पकाया हुआ माम विशेष।
उ०—कलिया पुलाव विरज दुप्याजा जेरी विरिया असनी चखताळा भाति-भाति के मजे।—सू प्र
चखतौ—देखो 'चकतौ' (रू भे)। उ०—हाथिया घडा विहूटते हाथा, लाखा दळा वरोळ लड। 'चापाहरे' घुराया चाचर, चखता वाजा हिये चड।—वीठळ गोपाळदासोत रौ गीत
चखदेव—स०पु०यौ० [स० देवचक्षु] स्वामी कार्तिकेय (नां मा)
चखघूसहस—स०पु०यौ०—शेषनाग, जिसके सहस्र नेत्र कहे जाते हैं। (अ मा)
चखवाहर—स पु०यौ० [स० द्वादश चक्षु] बारह आखो वाला, स्वामी कार्तिकेय (ह ना)
चखमग—स०पु०यौ० [स० चक्षुमार्ग] दृष्टि-पथ, नजर।
जखस्रवा—स०पु०यौ० [स० चक्षु श्रवस्] साप, सर्प, भुजग (अ मा)
चखामजीठौ—वि०यौ० [स० चक्षु+मजीष्ठा+रा०प्र० औ] क्रोधपूर्ण, क्रोधित, क्रोध मे लाल नेत्र वाला।
चखामरव—स०पु० [स० सर्वचक्षु] सूर्य, भास्कर, भानु। उ०—रच्या राम रा दोय चित्राम रूडा, चखासरव एको वियौ सखचूडा।—मे म
(मि०—जगचख)
चखाचखी—स०स्त्री०—चखने की क्रिया का भाव।
चखाणौ, चखावौ—क्रि०स०—चखाना, स्वाद कराना।
चखाणहार, हारौ (हारी) चखाणियौ—वि०।
चखायोडौ—भू०का०कृ०।
चखायीजणौ, चखाईजवौ—कर्म वा०।
चखणौ—रू०भे०।
चखायोडौ—भू०का०कृ०—चखाया हुआ (स्त्री० चखायोडी)
चखावणौ, चखाववौ—देखो 'चखाणौ' (रू भे)
चखावणहार, हारौ (हारी) चखावणियौ—वि०।
चखाविओडौ, चखावियोडौ, चखाव्योडौ—भू०का०कृ०।
चखावीजणौ, चखावीजवौ—कर्म वा०।
चखावियोडौ—देखो 'चखायोडौ' (स्त्री० चखावियोडी)
चखि—देखो 'चख' (रू भे) उ०—दिन रात सम तुल रासि दिनकर, सरकि अनुक्रमि सरवरी। स्त्रिय जीत पति गुण परखि चखि, मुख मरवस परखि जिम सुदरी।—ग रू
चखियोडौ—भू०का०कृ—चखा हुआ (स्त्री० चखियोडी)
चखु, चरख—१ देखो 'चख' (रू भे)
२ दृष्टि-दोष, नजर। उ०—खजर नेत विशाळ गय, चाही लागइ चक्ख। एकण साटइ मारुवी, देह ऐराको लक्ख।—ढो मा
चखडाई—सं०स्त्री०—चखडा को पुत्री एक देवी विशेष।
चख्यु—देखो 'चक्षु' (रू भे)
चग—स०पु०—एक प्रकार की घास जो अपने तने पर खूब फैली हुई होती है। इसमे कडे डठल अथवा लकडी नही होती है और इसकी

एक ही जड होती है। यह घर अथवा 'ग्वाळ' छाने के काम मे लिया जाता है। सूखने पर इसे जलाने के काम मे भी ले लेते हैं।
उ०—बाधै गाठडिया वडिया चग वाळै, राली गूदड लै काधै पर राळै।—ऊ का (मि० 'सिरिणयौ')

चगचग—देखो 'चकचक' (रू भे)

जगचगाट—देखो 'चहचहाट' (रू भे) उ०—चगचगाट चिड करै मिरगला मौजा माणै। गूजै माखी भवर, महक खीचड रग खाणै।
—दसदेव

चगणौ, चगवौ—क्रि०अ०—१ बूद-बूद टपकना, चूना। उ०—बाभी देवर नींद वस, बोलीजै न उताळ। चगता घावा चौंकसी, जे सुणसी ववाळ।—वी स
२ चिढना, क्रोध करना ३ फुसलाना, बहकाना।

चगत, चगताई—स०पु—१ चगताई खा से चला हुआ मध्य एशिया के तुर्कों का एक प्रसिद्ध वंश या इस वंश का व्यक्ति २ बादशाह।
उ०—चगता तगत कहै चित्तौडा, साम काम हर करन सरू। मार भ्रतार न दीधी मोनै, जार मार दे गयौ जरू।
—राणा राजसिंह रौ गीत
३ यवन, मुसलमान।
रू०भे०—चकत, चकताई चकतौ, चकत्तौ, चकत्थौ, चगताळ, चगतौ, चगत्थ, चगथ, चगथाण, चगथाणी, चगथौ, चिगत, चिगथौ।

चगताइखा—स०पु०—प्रसिद्ध मगोल चगेजखा का एक पुत्र (ऐतिहासिक)

चगताळ, चगताह—देखो 'चगताई' (रू भे) उ०—१ काळ लकाळ कर ढाल कमध, वहै विकराळ रगताळ वाई। भाळ छकडाळ चगताळ चूनाळ भिद, ताळगो झाळ भर धरण ताई।—तेजसी खिडियो
उ०—२ उजबकि ईरानी गोळ आप चगताह तुरानी दस्त चाप।
—वि स

चगतौ, चगत्थ, चगथ—१ देखो 'चगतौ' (रू भे)
२ देखो 'चगताई' (रू भे) उ०—१ तीर अखत ढाल गज तोरण, चहुदस कळळ समगळ चार। चवरी वडौ पेखियौ चगतौ, 'करन' कळाधर राजकवार।—किसनो आढौ
उ०—२ हलकार भडा ललकार हुवै, चगथा मुख तेज सरेज चुवै।
—रा रू

चगताण, चगथाणी—देखो 'चगताई' (रू भे) उ०—'घासी' ने 'सादूळ' घडा चूरै चगथाणी।—रा रू

चगथौ—१ देखो 'चकतौ' (रू भे)
२ देखो 'चगदौ' (रू भे)
३ देखो 'चगताई' उ०—नग्वर प्रथी खबर सु जपाया, चगथौ आवै राह चलाया।—रा रू

चगदायळ—वि०—घावो से परिपूर्ण, घायल। उ०—पडि वत्थ गळत्थिया हथ पडी, चगदायळ मुख चीवरा। बीवरा तवल-बधा वहसि, खागी वधा खीमरा।—सू प्र

चगदौ—स०पु०—१ घाव, क्षत, चोट। उ०—घड इण भरोस कर गरव, धव न गहौ धाराळ। अज-सिर चगदा पाडआ, भजे की भुरजाळ।—रेवतसिंह भाटी
२ कुचलने या चूर्ण करने का भाव।

चगर—स०पु०—घोडे की एक जाति।

चगाडणौ, चगाडवौ, चगाणौ, चगावौ—देखो 'चिगाडणौ' (रू.भे)
चगाडणहार, हारौ (हारी), चगाडणियौ, चगाणहार, हारौ (हारी), चगाणियौ—वि०।
चगाडिओडौ, चगाडियोडौ, चगाड्योडौ, चगायोडौ—भू०का०कृ०।
चगावणौ, चगाववौ—रू०भे०।
चगाईजणौ, चगाईजवौ—कर्म वा०।

चगायोडौ—देखो 'चिगायोडौ' (रू भे) (स्त्री०—चगायोडी)

चगावणौ, चगाववौ—क्रि०स०—देखो 'चिगाणौ' (रू भे.) उ०—'दलौ' चगावै देस नै, इसडौ बुध आवेज। भाया नै भूलावता, जिण रै कासू जेज।—वी मा
चगावणहार, हारौ (हारी), चगावणियौ—वि०।
चगाविओडौ, चगावियोडौ, चगाव्योडौ—भू०का०कृ०।
चगावीजणौ, चगावीजवौ—कर्म वा०।

चगावियोडौ—देखो 'चगायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चगावियोडी)

चगाहटौ—स०पु० [अनु०] १ ध्वनि, आवाज, चहचहाहट, रव. २ यश वर्णन की ध्वनि।

चगियोडौ—भू०का०कृ०—१ बूद-बूद कर टपका हुआ, चूआ हुआ।
२ चुना हुआ, छाट कर एकत्रित किया हुआ ३ फुसलाया हुआ, बहकाया हुआ ४ भुलाया हुआ, ठगा हुआ (स्त्री० चगियोडी)

चगूटियौ—देखो 'चूटियौ' (रू भे)

चड'—देखो 'चडस' (रू भे)

चडखणौ, चडखबौ—क्रि०स०—१ चूसना २ चाटना।
क्रि०अ०—क्रोध करना।

चडखणहार, हारौ (हारी), चडखणियौ—वि०।
चडखावणौ, चडखाववौ—रू०भे०।
चडखिओडौ, चडखियोडौ, चडख्योडौ—भू०का०कृ०।
चडखीजणौ, चडखीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

चडखाणौ, चडखावौ—क्रि०अ०—१ क्रोध करना २ जोश मे आना।
उ०—चख रा वचन सुणे चडखायौ, अग असळाक मोडतौ आयौ।
—विरजूबाई
क्रि०स०—३ चूसाना, चटाना।
चडखाणहार, हारौ (हारी), चडखाणियौ—वि०।
चडखावणौ, चडखाववौ—रू०भे०।
चडखायोडौ—भू०का०कृ०।
चडखाईजणौ, चडखाईजवौ—भाव वा०।

चडखायोडौ—भू०का०कृ०—१ क्रोध किया हुआ, क्रुद्ध २ जोश मे आया हुआ ३ चूसाया हुआ ४ चटाया हुआ (स्त्री० चडखायोडी)

चडखावणी, चडखाववौ—देखो 'चडखाणी' (रू भे)
चडखावणहार, हारौ (हारी) चडखावणियौ—वि० ।
चडखाविग्रोडौ, चडखावियोडौ, चडखाव्योडौ—भू०का०कृ० ।
चडखावीजणी, चडखावीजवौ—कर्म वा० ।
चडखावियोडौ—देखो 'चडखायोडौ' (स्त्री० चडखावियोडी)
चडखियोडौ–भू०का०कृ०—१ चूसा हुग्रा २ चाटा हुग्रा ।
(स्त्री० चडखियोडी)
चडड, चडचड–स०स्त्री० [अनु०] १ सूखी लकडी के फटने या चिरने से उत्पन्न ध्वनि २ चूसने से होने वाली ग्रावाज, पेय पदार्थ को दात भीच कर खीच कर पीने या इस प्रकार चूस कर पीने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि, ध्वनि-विशेष । उ०—१ चडचड जोगणिया रत चोस, जुडै भिड धूहड वाधै जोस ।—गो रू उ०—२ दडद्दड मुण्ड रडव्वड दीस । ग्रडव्वड लेत चडच्चड ईस ।—वचनिका
चडणी, चडवौ—देखो 'चिडणी' (रू भे)
चडवड, चडभड–स०स्त्री० [अनु०] १ व्यर्थ की बकवक, निरर्थक प्रलाप २ टटा, फिसाद ।
चडभडणी, चडभडवौ–क्रि०ग्र०—१ क्रोध करना २ कुपित होकर लडाई करना, परस्पर लडना । उ०—१ यो कह्यौ, लाडक पण ग्रारै हुवौ । तरै तोत करनै रावळ नै लाडक चडभडिया ।—नैणसी उ०—२ तरै ऊ वचन माभळ पिउसघी कह्यौ—कुट्टण मुडका क्या, ग्राधी हमारी है, ग्राधी तुम्हारी है, तठै वयू चडभडचौ रजपूता री साथ ।—जखडा मुखडा भाटी री वात
चडभडाणी, चडभडावौ, चडभडावणी, चडभडाववौ–क्रि०स० ['चडभडणी' का प्रे० रू०] १ क्रोध कराना २ लडाई कराना ।
चडभडियोडौ–भू०का०कृ०—१ क्रुद्ध २ कुपित होकर लडाई किया हुग्रा (स्त्री० चडभडियोडी)
चडस–स०पु०—१ गाजे के पेड का वह नशीला गोद या चेप जिसे चिलम मे जला कर नशे के लिए धुग्रा खीचा जाता है । एक मादक पदार्थ ।
क्रि०प्र०—पीणी, बाळणी ।
२ कुये से पानी निकालने का चमडे या लोहे का बना उपकरण, चरस, मोट ।
रू०भे०—चड' ।
ग्रल्पा०—चडसियौ ।
चडसियौ–स०पु०—१ कुये के बाहर भरे हुए चरस को खाली करने वाला व्यक्ति ।
२ देखो 'चडस' (ग्रल्पा)
वि०—चरस नामक मादक पदार्थ का नशा करने वाला ।
चडाचड–स०पु०—छोटी टिकिया के ग्राकार की एक ग्रातिशबाजी जिसे पत्थर पर रगडने से वह चड-चड की ग्रावाज के साथ जलती है । चटरपटर ।

चडापड–क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी, झटापट, चटपट । उ०—गढा पद वीगडै नही हरगिज गहूँ, चडापड न ग्रावै रोग चाळौ ।
—हिंगळो वारहठ
चडापौ–स०पु०—प्रहार, चोट ।
चडियड–स०स्त्री० [अनु०] चडचड की ध्वनि ।
उ०—गोळी तीर ग्राछटै गोळा, दोळा ग्रालम तणा दळ । पड दडियड चडियड चडु पानै, कृमाणै तूटिया कळ ।
—राजा भीमसिंह सिसोदिया (टोडा) रो गीत
चडियोडौ—देखो 'चिडियोडौ' (रू भे)
चडी–स०स्त्री० [स० चटक] १ मादा चिडिया २ ग्रधिक सर्दी होने से उत्पन्न सिकुडन ३ ग्रविक बल या दबाव देने से होने वाली ग्रथी ।
चडीकली—देखो 'चिडीकली' (रू भे) (स्त्री० चडीकली)
चडौ—देखो 'चिडौ' (रू भे.) (स्त्री० चडी)
चचौ–स०पु०—१ वर्णमाला का च वर्ण, चकार. २ पिता का छोटा भाई, चाचा (मि० 'काको')
चचौक, चचौवक–वि० [स० चकित] १ विस्मित, चकित २ चौकन्ना ३ भयभीत, सशकित. ४ घबराया हुग्रा ।
चच्चौ—देखो 'चचौ' (रू भे) उ०—चाच्चे मामू की धी चकार, विस्मल्ला करै न वार-वार ।—ऊ का.
चज–स०पु०—१ छल, कपट । उ०—मो चावडी नू इसो चज करो जो कठे ही कवरजी नै खबर हुई तौ थारो नाम कहिसी, ग्रठै माल-जादिया रा घर था ।—जगदेव पवार री वात
२ लक्षण ।
स०स्त्री०—३ बुद्धि ।
चट–क्रि०वि० [स० चटुल] तुरत, फौरन, शीघ्र । उ०—चट वाग झलाय जाय तळाव मे पडियौ ग्रोर सनान करणै लागियौ ।
—सूरे खीवै री वात
मुहा०—१ चटचट करणी—शीघ्र करना २ चट सू—झट से ३ चट सू करणी—बहुत जल्दी करना ४ चट सू होणी—बहुत जल्दी होना ५ चट होणी—गायब होना, गुम होना ।
कहा०—चट मेरी मगणी पट मेरा व्याव—शीघ्र मेरी सगाई हुई ग्रौर शीघ्र मेरा विवाह हो गया । किसी कार्य को शीघ्र करने पर ।
यौ०—चटपट, चटापट ।
वि०—गहरा (लाल), नितात (लाल)
यौ०—लालचट ।
स०पु०—१ गर्मी का घाव या जख्म का दाग २ छत पर ककरीट जमाने की क्रिया ३ पर्वतीय चौडी शिला, चट्टान ।
[अनु०] ४ किसी कडी वस्तु के टूटने पर होने वाला शब्द ।
५ देखो 'चट्ट' (३, रू भे.)
चटक–स०स्त्री०—१ गर्व, दर्प, घमड । उ०—राखण रूप बडा राठौडा, चित्तौडा दाखण चटक । रणमल थाटी वार रोकियौ, किलमा चा घाटी कटक ।—ग्रमरसिंह राठौड रो गीत

२ एक प्रकार की चिडिया, गौरैय्या ३ नारियल की गिरी का छोटा टुकडा।

रू०भे०—चिटक।

४ चालाकी ५ चटकीलापन, चमकदमक, कांति। उ०—आ ओपमा देवै है सारा ही कव लोका री कटक पिण इण मुख री कठै चद्रमा मे चटक। जिण दीठा पछै अतर न भावै एक खिण री। इण मूढा री होड करै मूढो किणरो।—र हमीर

वि०—१ चटक-मटकयुक्त, चपल।

उ०—अलवेली हे कलाळण दारू दे, थारी चटक चाल मोहि लागी, एक रात म्हारी मारू ले।—लो गी

६ स्फूर्ति, शीघ्रता।

यौ०—चटकमटक।

वि०—२ नाजुक, नखरायुक्त ३ चटपटा, चरपरा, तीक्ष्ण स्वाद का।

मुहा०—चटक-मटक—मसाला मिर्च आदि पडा हुआ या चटपटा भोजन।

४ चटकीला, शोख ५ फुर्तीला तेज।

चटकउ—१ देखो 'चटको' (रू भे)

२ शीघ्रता। उ०—ससनेही सज्जण मिळ्या, रयण न्ही रग लाइ। चिहुं पुहुरे चटकउ कियउ, वैरणि गई विहाइ।—ढो मा

चटकणियो—देखो 'चटकणो' (अल्पा रू भे)

चटकणी—स०स्त्री० [अनु०] किवाडो को वद करने या अडाने के लिये उनमे लगाई जाने वाली छड, सिटकनी।

चटकणो—वि०—१ चट-चट करने वाला २ चट-चट की ध्वनि कर के टूटने वालो।

स०पु०—वह वैल जिसके चलने पर पैर से चटचट की ध्वनि होती है।

अल्पा०—चटकणियो।

चटकणो, चटकबो—क्रि०अ०—१ 'चट' शब्द करते हुए टूटना, फूटना या तडकना। उ०—चद्रहासा रा चीरिया जठी तठी वकतर टोपा रा टूक चटकिया अर कायरा रा प्राण केवल नाडिया माहे अटकिया। —व भा

२ चट-चट की ध्वनि होना ३ साप, विच्छू आदि विषैले जतुओं का डसना या डक मारना।

चटकणहार, हारो (हारी) चटकणियो—वि०।

चटकवाडणो, चटकवाडवो, चटकवाणो, चटकवाबो, चटकवावणो, चटकवाववो—प्रे०रू०।

चटकाडणो, चटकाडवो, चटकाणो, चटकाबो, चटकावणो, चटकाववो —क्रि०स०।

चटकिओडो, चटकियोडो, चटक्योडो—भू०का०कृ०।

चटकीजणो, चटकीजबो—भाव वा०।

चटकमटक—स०स्त्री०यो—१ चटकीलापन, नाज, नखरा २ चमक-दमक, तडक-भडक ३ चटपटा (भोजन)।

चटकदार—वि०यो [रा० चटक+फा० प्र० दार] १ चटकीला २ चमकोला ३ चटपटा।

चटकलो—देखो 'चटकीलो' (रू भे) उ०—चटकला मटकला मोही न सुहाई, धन कह हियडउ हाथ न लाई।—वी दे

चटकाणो, चटकाबो—क्रि०स० ['चटकणो' का प्रे० रू०] १ 'चट' शब्द करते हुए तोडना, फोडना या तडकाना २ चट-चट की ध्वनि करना ३ साप-विच्छू आदि विषैले जतुओ का डसना या डक मारना।

चटकाणहार, हारो (हारी), चटकाणियो—वि०।

चटकायोडो—भू०का०कृ०।

चटकाईजणो, चटकाईजबो—कर्म वा०।

चटकणो, चटकबो—अ०रू०।

चटकायोडो—भू०का०कृ०—१ तिराड डाला हुआ, तोडा हुआ, तडकाया हुआ २ डक मारा हुआ (स्त्री० चटकायोडी)

चटकाळो—देखो 'चटकीलो' (रू भे)

चटकावणो, चटकाववो—देखो 'चटकाणो' (रू भे) उ०—चोर गुरु विच्छू चटकावै, ग्यान राव विरळा गटकावै।—ऊ का

चटकावणहार, हारो (हारी), चटकावणियो—वि०।

चटकाविओडो, चटकावियोडो, चटकाव्योडो—भू०का०कृ०।

चटकावीजणो, चटकावीजवो—क्रि० कर्म वा०।

चटकणो—अ० रू०।

चटकावियोडो—देखो 'चटकायोडो' (रू भे) (स्त्री० चटकावियोडी)

चटकाहट—स०स्त्री०—१ चटकने, फूटने या तडकने का शब्द या भाव २ कलियो के विकसित या प्रस्फुटित होने का भाव।

चटकियो—१ देखो 'चटको' (रू भे)

२ वह वैल या अन्य पशु जिसके चलने से पैर या खुर से चट-चट की ध्वनि उत्पन्न हो।

रू०भे०—चटकणियो, चटकणो।

चटकियोडो—भू०का०कृ०—१ डक मारा हुआ २ छूटा हुआ ३ तडका हुआ, तराड खाया हुआ ४ टूटा हुआ।

(स्त्री० चटकियोडी)

चटकी—स०स्त्री०—१ छडी, वेंत २ शीघ्रता, स्फूर्ति ३ चट-चट की ध्वनि ४ गाय, वैल आदि पशु द्वारा खुर को झटका देकर चलाई जाने वाली लात।

चटकीलो—वि०पु० (स्त्री० चटकीली) १ चटक-मटक से रहने वाला, तडक-भडकयुक्त। उ०—अथ कवरी रै पत्री सिद्ध श्री लग्न री लडी, जीवरा जडी, सजीली, फवीली, लजीली, छवीली, रमकीली, लकीळी, झमकीली, छकीली, लटकीली, चकीली, चटकीली, वत्तीस लखणी, चोसठ कळा, विचखणी, केळ रसक्यारी, प्राणप्यारी जिण सू म्हारो निज नेह दुरस भात रा छजे देह।—र हमीर

चटको—स०पु०—विच्छू द्वारा डक मारने की क्रिया या भाव या किसी छोटे जतु द्वारा काटने की क्रिया।

क्रि०प्र०—देणी, भरणी, मारणी, मेलणी, लगाणी, लागणी।
२ तडक-भडक, ठसक ३ नाज-नखरा ४ प्रहार, चोट, मार।
उ०—१ हरराज देवै नै दीठी तद देवै घोडै नू चटको वाह्यो।
—नैणसी

उ०—२ कव चटका जे सहै, दूजा करह गिमार।—ढो मा
५ दर्द, कसक, रह-रह कर होने वाला दर्द, टीस।
क्रि०प्र०—ऊठणी, चलणी, चालणी होणी।
६ नौसादर और नीले-थोथे को मिला कर तैयार किया जाने वाला एक मसाला जो सोने को साफ करने के काम मे आता है (स्वर्णकार)
७ दो लकडियो को जोडने के लिए लगाया हुआ लोहे का टुकडा
८ अगुलियो को चटकाने से उत्पन्न चट-चट की ध्वनि ९ गाय बैल आदि पशुओ का एक रोग विशेष जिसमे पीडित पशु खुर को झटका देकर बार-बार लात फेंकता है।
क्रि०प्र०—चालणी।
१० टुकडा, खड।

चटको-मटको—स०पु०यौ०—नाज, नखरा, बनाव, ठमक।
उ०—चटका मटका लटका चुगली, बस अतर भाव छटा बुगली।
—ऊ का

मि०—चटकमटक (रू भे)

चटक्क—देखो 'चटक' (रू भे)

चटक्कडो—स०पु०—१ (पशुओ को छडी से) मारने या ताडने से उत्पन्न चट-चट शब्द २ छडो का प्रहार या चोट। उ०—लाबी काब चटक्कडा, गय लवावड जाळ। ढोलउ अजे न बाहुडइ, प्रीतम मो मन साल—ढो मा ३ देखो 'चटको' (अल्पा रू भे)

चटक्कणो, चटक्कबौ—देखो 'चटकणो' (रू भे)

चटक्को—देखो 'चटको' (रू भे) उ०—आवधा वैरिया वाळा माथा रा चटक्का उडै, बटक्का 'चैन' रा काच सीसी ज्यू त्रडत।
—सूरजमल मीसण

चटडो—देखो 'चटोकडो' (रू भे)

चटचट—स०स्त्री० [अनु०] चटकने, टूटने या तडकने मे उत्पन्न शब्द।
क्रि०वि०—शीघ्र चटपट, फौरन (मि० 'चटपट')

चटचटाणो, चटचटाबौ—क्रि०अ०—१ चटचट की ध्वनि होना।
क्रि०स०—२ चटचट की ध्वनि करना।

चटच्चट, चटटाट—देखो 'चटचट' (रू भे) उ०—चटच्चट पत्र रगत्र चटट्टि, समै अनुसार रमै चवसट्टि।—मे म.

चटट्टणो, चटट्टबौ—क्रि०स०—१ जीभ मे चाटना। उ०—चटच्चट पत्र रगत्र चटट्टि, समै अनुसार रमै चवसट्टि।—मे म
२ चटचट का शब्द करना।
क्रि०अ०—३ चटचट का शब्द होना ४ बोझ से लदे रथ या गाडी के चलने पर ध्वनि होना।

चटणी—स०स्त्री०—१ पुदीना, धनिया, मिर्च खटाई आदि को एक साथ पीस कर बनाई हुई गीली चरपरी वस्तु जो भोजन करते समय स्वाद हेतु थोडी-थोडी खाई जाती है।
मुहा०—१ चटणी करणी—बहुत महीन पीसना, चूर-चूर कर देना, मार डालना २ चटणी बणाणी—देखो 'चटणी न रणी' ३ चटणी होणी—खूब पिस जाना चट हो जाना।
२ चाटने की वस्तु, अवलेह।

चटपट—क्रि०वि० [अनु०] शीघ्र, जल्दी, तुरन्त। उ०—सूरज रस रे सून, रो' घर घर मत रोवणा। चारु वर्ई मो चून, चटपट देमी चकरिया।—मोहनलाल साह

चटपटाणो, चटपटाबौ—क्रि०अ० [अनु०] हडबडी मचाना, शीघ्रता करना, बेचैनी से घबराना।

चटपटी—स०स्त्री०—१ शीघ्रता, उतावली, त्वरा। उ०—इमी गल्हा बाता करता डेरै आइया सो कुवरसी नू तो चटपटी सी लाग रही छै।
—कुवरसी साखला री वारता
२ बेचैनी, आतुरता। उ०—साह रा मन मोळा होय गया, घरै आय सूती पण नीद नही आवै, चटपटी लागी।
—पन्ना दरियाव री बात
३ देखो 'चटपटो' का स्त्री०।

चटपटो—वि० (स्त्री० चटपटी) चरपरा, ममालायुक्त, नमकीन, तीक्ष्ण स्वाद का।

चटरजी—स०पु० [स०] बगाल के ब्राह्मणो की एक शाखा, चट्टोपाध्याय।

चटळ—वि० [स० चटुल] चचल, चपल (ह ना)

चटसाळ, चटसाळा—स०स्त्री० [स० चेटक+शाला] पाठशाला।
उ०—पूत कपूतन की चटसाळ कि, ज्यू कुलटा सुसराल सुणाओ।
—ऊ का.

चटालट—स०स्त्री०—टक्कर, भिडत, युद्ध, गुत्थमगुत्थ। उ०—अइयो असलीमाण, असुरा सू भारथि 'अमर'। करतो घाउ कटारिआं, चटालटा चऊआण।—वचनिका

चटाई—स०स्त्री०—घास-फूस, बास की पतली पट्टियों, ताड के पत्तो आदि से बनाया हुआ बिछावन।

चटाक—क्रि०वि० [अनु०] शीघ्र, फुर्ती से, तुरत, चट से।
उ०—आवते ही चटाक दे नारेळ बाध लियो, प्रोहित नजदीक आय तिलक कियो।—कुवरसी साखला री वारता
मुहा०—चटाक पटाक करणो—बहुत जल्दी करना, चटपट का शब्द करना।

चटाको, चटाचट—स०पु०—किसी वस्तु के टूटने पर होने वाला शब्द, चट-चट की ध्वनि।

चटाणो, चटाबौ—क्रि०स० ('चाटणो' का प्रे० रू०) १ चाटने का काम कराना, जीभ के सहयोग मे थोडा-थोडा अन्न मुँह मे जाने देना २ थोडा-थोडा अवलेह किसी दूसरे के मुँह मे डालना ३ रिश्वत देना, घूस देना।

चटाणहार, हारौ (हारी), चटाणियौ—वि० ।

चटाडणौ, चटाडबौ, चटावणौ, चटावबौ—रू०भे० ।

चटायोडौ—भू०का०कृ० ।

चटाईजणौ, चटाईजबौ—कर्म वा० ।

चटापड, चटापट-स०स्त्री०—शीघ्रता, फुर्ती, जल्दी ।

चटापटी—१ मि० 'चटपटी' (१) २ लडाई, टटा, फिसाद ।

चटायोडौ-भू०का०कृ०—१ चटाया हुआ, रिश्वत दिया हुआ । (स्त्री० चटायोडी)

चटावण-स०स्त्री०—चाटने या चटाने योग्य पदार्थ ।

चटावणौ, चटावबौ—देखो 'चटाणौ' (रू भे.)

चटावणहार, हारौ (हारी), चटावणियौ—वि० ।

चटाविप्रोडौ, चटावियोडौ, चटाव्योडौ—भू०का०कृ० ।

चटावीजणौ, चटावीजबौ—कर्म वा० ।

चटावियोडौ—देखो 'चटायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चटावियोडी)

चटी-स०स्त्री०—१ लडाई, मुठभेड २ कुश्ती ३ चिडिया ।

चटीवाळ-वि०—लडाई-झगडा करने वाला, फसादी ।

चटु-स०पु० [स०] १ चाटु, प्रिय वाक्य २ खुशामद, चापलूसी ३ पेट ।

स०स्त्री०—४ कनिष्ठा अगुली ।

चटुडी—देखो 'चटु' ४ (अल्पा रू भे)

चटुडौ—देखो 'चटोकडौ' (रू भे) (स्त्री० चटुडी)

चटैल-वि० धूर्त ।

स०पु०—शीघ्रता का भाव ।

चटोकडौ, चटोरौ—देखो 'चट्टौ' (अल्पा रू भे) (स्त्री० चटोकडी, चटोरी) ।

चट्ट—१ देखो चट' (रू भे) उ०—मिळ चट्ट वगट्ट सुभट्ट मिळ, दुजडाहत 'पाल' भडं दुजल ।—पा प्र

स०पु०—२ चोटी । उ०—लट्टा चट्टा लूविया वेदल भर वाथ्या । —द दा

३ विद्यार्थी । उ०—नेसालिया ते देखी मूरख, मूरख चट्ट कहति । तिम तिम ते मनि दूहवीइ, अतराय फळ हू तिं ।—वि वि प

चट्टमाळ—देखो 'चटसाल' (रू भे) उ०—विसाळ चट्टसाळ बीच, वेद की धुनी नही । महास्रमी गिरास्रमी गुनी नही ।—ऊ का

चट्टाण-स०स्त्री०—किसी पहाडी भूमि का पत्थर का बडा खण्ड, शिलाखड ।

चट्टी-स०स्त्री०—१ टिकने का स्थान, पडावस्थल २ मजिल ३ देखो 'चटी' (रू भे)

वि०—४ स्वादिष्ट चीजें खाने वाली (लोभिन)

चट्टू—देखो 'चट्टौ' (रू भे)

चट्टौ-स०पु०—स्त्री के गुथे हुए बालो की चोटी ।

वि० (स्त्री० चट्टी) १ स्वादिष्ट चीजें खाने का लोभी, चट्टू, स्वादू । २ लोलुप, लोभी ।

रू०भे०—चट्टू ।

अल्पा०—चटोकडौ, चटोरौ ।

चट्टच – देखो 'चट्ट' ३ (रू भे)

चठठ-स०स्त्री० [अनु०] बोझ से लदे रथ या गाडी आदि के चलने पर उत्पन्न ध्वनि । उ०—चठठ हमला टला बोल नोपा चरख । —अज्ञात

चठठणौ, चठठबौ—देखो 'चटट्टणौ' (रू भे) उ०—१ अठठ पड डडाळा चठठिया वाण अत । खाग झट विकट थट खळा सिर खीज । —वीरभियौ मूळौ

उ०—२ ज्या पर मिलह ससत्र तन जडिया । कळहण जोस चठठती कडिया ।—सू प्र उ०—३ चठौठत सावळ ढाल चढत । कदोइय घेवर जाण कढत ।—सू प्र

चठठाक, चठठाल-स०स्त्री०—चटचट की ध्वनि ।

चठठ्ठ—देखो 'चठठ' (रू भे)

चठठ्ठणौ, चठठ्ठबौ—देखो 'चटट्टणौ' (रू भे)

चठमठ्ठौ-वि०—कजूस, कृपण (डि.को)

चट्ठा-स०स्त्री० [अनु०] द्रव पदार्थ को जीभ से खीच कर पीने से होने वाली चटचट की ध्वनि । उ०—पह वीरहाक पनाक पणाचा, वाज डाक त्रवाक । असनाक पर ग्रीधाक आवध, करण वाज कजाक । चट्ठा करत खप्पराक छडी, राग बज अयराक । रिणछाक चढ रिव ताक राघव, लखण सहित लडाक ।—र ज प्र

चडणौ, चडबौ— देखो 'चढणौ' (रू भे) उ०—कळ चडै जोय चद-जसनामौ करै । मरद साचा जिकै आय अवसर मरै ।—हा झ

चडणहार, हारौ (हारी), चडणियौ—वि० ।

चडवाडणौ, चडवाडबौ, चडवाणौ, चडवाबौ, चडवावणौ, चडवावबौ,—प्रे रू ।

चडाडणौ, चडाडबौ, चडाणौ, चडाबौ, चडावणौ चडावबौ —क्रि०स० ।

चडिग्रोडौ, चडियोडौ, चड्योडौ—भू०का०कृ० ।

चडीजणौ, चडीजबौ—भाव वा० ।

चडमौ-वि०—१ सवारी के योग्य (ऊट) २ ऊचा चढने योग्य. ३ उन्नति के योग्य ।

चडतव-सं०स्त्री०—समुद्र, सागर (ना डि को)

चडवा-स०स्त्री०—कपडे की रगाई व छपाई का व्यवसाय करने वाली एक मुसलमान जाति ।

चडवायोडौ—देखो 'चढवायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चडवायोडी)

चडाचड-स०स्त्री०—१ चढाई, आक्रमण । उ०—गोम तज भार रज वोम रव गडागड, झडं खग बडावड रूप जमरा । 'कसन' हर भडा अणीया धकै, कडाकड आज री चडाचड कठो 'अमरा' । —अमरसिंह सिसोदिया री गीत

२ चढने-उतरने की क्रिया।

चढाणो, चढावो—देखो 'चढाणो' (रू भे)

चढापो—देखो 'चढावो' (रू भे)

चढायोडो—देखो 'चढायोडो' (रू भे) (स्त्री० चढायोडी)

चढावडी—देखो 'चढाचढी' (रू भे)

चढावणो, चढाववो—देखो 'चढावणो' (रू भे)

चढावणहार, हारो (हारी), चढावणियो—वि०।

चढाविश्रोडो, चढावियोडो, चढाव्योडो—भू०का०कृ०।

चढावीजणो, चढावीजबो—कर्म वा०।

चढावियोडो—देखो 'चढावियोडो' (रू भे) (स्त्री० चढावियोडी)

चढावो—देखो 'चढावो' (रू भे)

चढियोडो—देखो 'चढियोडो' (रू भे) (स्त्री० चढियोडी)

चढी री पिलाण—देखो 'चढी री पलांण' (रू भे)

चढू—देखो 'चाढ' (रू भे) उ०—मारू राखां 'मान' हर, मारू मळा अगडू। मोटां चीत मभावणा, जे नव गोटां चढू।—रा रू

चड्डी—स०स्त्री०—एक प्रकार का लगोट, अधोवस्त्र, कच्छा।

चढणसितवारण—स०पु०यौ०—इन्द्र (डि को)

चढणो, चढबो—क्रि०अ० [सं० उच्चलन, प्रा० उच्चडन, चडुन] १ नीचे से ऊपर को जाना, ऊंचे स्थान पर जाना।

मुहा०—१ चढा ऊतरी करणी—बार-बार चढना और उतरना २ दिन चढणो—दिन का प्रकाश फैलना, दिन या काल व्यतीत होना ३ सूरज या चाद चढणो—सूर्य या चन्द्रमा का उदय होकर क्षितिज के ऊपर आना।

२ बढना, उन्नति करना, आगे बढना। उ०—१ धरम तप जप वेद विद्या उच्चरै छै। राजा रो चढतो दौह छै।—पनवटी री वारता उ०—२ दुरजोधन वीर करे ग्रह द्रोपा, खाच सभा विच चीर खरो। पचोयो पण चीर हुवो परमेसर, चीर न खूटाय मोम चरो।

—भक्तमाळ

मुहा०—१ चढ-बढ नै—अधिक अच्छा होना, श्रेष्ठ होना. २ चढा-ऊपरी करणी—एक दूसरे से आगे जाने की कोशिश करना।

कहा०—चढणो जितो ही उतरणो—जितना ऊपर चढेगा वह उतना ही अधिक गिरेगा। उन्नति-पतन एवं दुख-सुख भाई है।

३ चढाई करना, हमला करना, आक्रमण करना। उ०—चढिया हरि मुणि सकरखण चढिया, कह वचध नह मणा किध। एक उजा-थर कळहि एहवा, साथी सह आखाडासिध।—वेलि

मुहा०—चढ आणो—चढाई करना, आक्रमण करना।

४ ऊपर चढना, उडना—ज्यू आकाश मे गरद चढणी।

५ किसी नीचे लटकती वस्तु या ढीली वस्तु का सिकुड कर या सिमट कर ऊपर की ओर बढना या तग होना ६ एक वस्तु के ऊपर दूसरी वस्तु का सटना, आवरण के रूप मे ऊपर आना ७ किसी वस्तु आदि का मॅहगा होना, भाव तेज होना या दाम ऊपर बढना. ८ (नदी आदि का पानी) बाढ पर आना, बढना. ९ ज्वर का तीव्र होना, ज्वर ऊंचा होना १० किसी मामले का ऊपर की अदालत तक जाना।

मुहा०—पेडी चढणी—अदालत में किसी के विरुद्ध मुकदमा का दावा दायर करना।

कहा०—चढै दरबार जाय घर-बार—मुकदमेबाजी की निंदा।

११ सवार करना, सवार होना १२ किसी सवारी पर सवार होना। उ०—१ [illegible] —राजस्थान रा दूहा [illegible] उ०—२ चढि-चढि गज [illegible] ढळावाळ।—ग प्र

१३ ढोल, सितार आदि [illegible] बाजों की डोरी कस जाना, अथवा [illegible] आदि बाजों का गर्मी पाकर तनना, [illegible]।

मुहा०—नस चढणी—नस का अपने स्थान से कुछ हट जाने के कारण तन जाना।

१४ किसी सामग्री या वस्तु का किसी महापुरुष, देवता आदि के अर्पित होना १५ किसी बही, रजिस्टर अथवा अन्य कागज पर दर्ज या अंकित होना, दर्ज होना, खाते मे लिखा जाना १६ निर्दिष्ट समय यथा वर्ष, मास, दिन, नक्षत्र आदि का आरम्भ होकर आगे वृद्धि पर होना—ज्यू दशा चढणी। १७ किसी के ऊपर ऋण का होना, कर्ज का बढ जाना—ज्यूं ब्याज चढणो। १८ किसी मादक वस्तु का नशा अथवा उत्तेजक असर होना—ज्यू नशो चढणो, भाग चढणी।

कहा०—चढी पर चढाय, फिर दूखै न पाव—नशे के चढने पर या पी हुई शराब पर फिर से पीने से शरीर को कोई दर्द महसूस नही होता.

१९ आवेश होना, जोश आना, प्रभावित होना—ज्यू क्रोध चढणो, जोश चढणो।

उ०—गो जांणै वाजीमा तोरण माथै बींद जाय ज्यू थारो देवर गोळी चढियोडो जाय रयो छै।—पी स टी

२० पकने या आंच देने के लिये किसी वस्तु का चूल्हे पर रखा जाना।

कहा०—चढी हाडी नै ठोकर नही मारणी—चूल्हे पर चढी हुई हांडी को ठोकर नही मारना चाहिए। चलती हुई आजीविका या आय को नही छोड़ना चाहिए।

२१ लेप चढना रोगन चढना, पॉलिश चढना।

मुहा०—रंग चढणो—किसी वस्तु पर रंग का आना, प्रभाव होना, असर होना।

२२ पसद आना, दिल को जॅचना।

मुहा०—चित चढणो—मन को पसद आना।

२३ बहुत से आदमियो का दल बाध कर चलना, साज बाजे के साथ-साथ चलना (बारात)।

चढ़णहार, हारौ (हारी), चढणियौ—वि० ।

चढवाडणौ, चढवाडबौ, चढवाणौ, चढवावौ, चढ़वावणौ, चढवाववौ—प्रे० रू०

चढाडणौ, चढाडबौ, चढाणौ, चढावौ, चढावणौ, चढाव्वौ—क्रि० स० ।

चढिग्रोडौ, चढियोडौ, चढ्योडौ—भू०का०कृ० ।

चढीजणौ, चढीजबौ—भाव वा० ।

चढतौ-वि०—१ बढ कर, उन्नत । उ०—तद व्यासजी कही—म्हारी खातर जमा छै। मोटियार मोसू चढता छै।—अमरसिंह री वात २ अधिक ।

चढमौ-स०पु०—सवारी के योग्य (ऊट)

चढाई-स०स्त्री०—१ चढने की क्रिया का भाव २ ऐसी भूमि जो क्रमश ऊंचाई की ओर बढती जाय. ३ आक्रमण, हमला ।
क्रि०प्र०—करणी ।
४ किसी देवता की पूजा की व्यवस्था, चढावा ।

चढाऊपरी-स०स्त्री०यौ०—एक दूसरे से आगे वढने की होड, प्रतिस्पर्धा ।

चढाक-वि०—१ चढने वाला २ सवारी मे चतुर व्यक्ति. ३ चढने मे निपुण ।

चढाचढी-स०स्त्री०यौ०—परस्पर आगे वढने की होड, प्रतिस्पर्धा ।

चढाणौ, चढावौ-क्रि०स०—१ नीचे से ऊपर की ओर ले जाना, ऊचाई पर ले जाना २ चढने का काम कराना, चढने मे प्रवृत्त करना ३ किसी लटकने वाली या ढीली वस्तु को सिकोड कर या खिसका कर ऊपर की ओर ले जाना ४ हमला कराना, आक्रमण कराना ५ (किसी की) उन्नति कराना, ऊचा चढाना ६ एक वस्तु के ऊपर दूसरी वस्तु का सटाना, मढना, आवरण रूप से लगाना ७ किसी वस्तु आदि का भाव ऊचा करना, महगा करना, दाम बढाना । ८ स्वर को ऊचा करना, स्वर तीव्र करना ९ प्रस्थान कराना रवाना कराना १० सवारी पर बैठाना, सवारी कराना ११ ढोल, सितार आदि की डोरी को कसना या तानना १२ किसी देवता या महात्मा आदि को भेंट देना, अर्पित करना १३ चटपट पी जाना, गले से उतार जाना १४ ऋण का वढाना, किसी को देनदार ठहराना. १५ किसी पुस्तक, बही, कागज आदि पर लिखना, दर्ज करना, खाते लिखाना १६ पकने या आच देने के लिये चूल्हे पर रखना १७ लेप करना, पोतना १८ वर पक्ष की ओर से वधू के घर जेवर आदि भेजना १९ पसद कराना, दिल मे जचा देना २० धनुप आदि मे तार या डोरी कस कर बाधना ।
चढाणहार, हारौ (हारी), चढाणियौ—वि० ।
चढाडणौ, चढ़ाडबौ, चढावणौ, चढाववौ—रू०भे० ।
चढ़ाविग्रोडौ, चढावियोडौ, चढाव्योडौ—भू०का०कृ० ।
चढावीजणौ, चढावीजबौ—कर्म वा० ।
चढणौ—अ०रू० ।

चढापौ—देखो 'चढावौ' (रू.भे)

चढावढ़ी—देखो 'चढाचढी' (रू भे)

चढायोडौ-भू०का०कृ०—चढाया हुआ । (स्त्री० चढायोडी)

चढावढ़ी—देखो 'चढाचढी' (रू भे)

चढावणौ, चढावबौ—देखो 'चढाणौ' (रू भे) उ०—कविराजूं कू सीमुख हुकम करि बगसावते हैं। सलाम असीस करि चडी मत्र पढिकै चढ़ावते हैं।—सू प्र
चढावणहार, हारौ (हारी), चढ़ावणियौ—वि० ।
चढ़ाविग्रोडौ, चढ़ावियोडौ, चढ़ाव्योडौ—भू०का०कृ० ।
चढावीजणौ, चढावीजवौ—कर्म वा० ।
चढ़णौ—अ०रू० ।

चढ़ावियोडौ—देखो 'चढायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चढावियोडी)

चढ़ावौ-स०पु०—देवता आदि को चढाई जाने वाली सामग्री ।
रू०भे०—चडापौ, चडावौ चढापौ ।

चढियोडौ-भू०का०कृ०—चढा हुआ (स्त्री० चढियोडी)

चढीरौ-स०पु०—सवारी के योग्य ऊट या घोडा तथा इनके पीठ पर जमाये जाने वाला चारजामा ।

चढीरौपलाण-स०पु०—ऊट पर सवारी करने का चारजामा ।

चण, चणउ, चणक—१ देखो 'चणौ' (रू भे)—उ र
२ एक ऋषि का नाम ।
स० स्त्री० [रा०] लचक, मोच (शरीर मे प्राय यह कमर, कलाई अथवा पैर के टखने मे ही पडती है ।)

चणकरिखौ—देखो 'चाणक्य' (रू भे)

चणकार-स०पु०—१ चने का खेत २ चना बोने के लिये तैयार की हुई भूमि ३ ध्वनि विशेष ।

चणखार—देखो 'चणाखार' (रू भे)

चणग-स०स्त्री०—चिणगारी, अग्निकण ।

चणणक—देखो 'चणण' (रू भे)

चणणकणौ, चणणकवौ-क्रि०अ०—जोश या भय आदि के कारण रोमा-चित होना रोया-रोया खडा होना । उ०—चणणके भड चिहुर छीजि कातर छणणकै ।—व भा

चणण-स०स्त्री०—१ जोश या भय आदि के कारण रोमाचित होने का भाव । उ०—चणण रोम चाचर घरण धाक घर थरर चख, खभ वडड कडड दसण खिजायौ ।—ब्रह्मदास दादूपथी
२ धधकते हुए अगारो को पानी मे डालने से अथवा उन पर पानी डालने से होने वाली छम्म छम्म की ध्वनि ३ तीरो अथवा वदूकों की गोलियो की बौछार की ध्वनि ।

चणणाक—देखो 'चणण' (१)

चणणाट, चणणाटियौ, चणणाटौ—१ देखो 'चणण' (रू भे)
२ ध्वनि विशेष । उ०—सुतर नाल्या जूव रा नाल्यां, रामचगी हथ, नाल्या रा चणणाट वाजै छै ।—रा सा स
३ नाश, वरवाद (अल्पा 'चणणाटियौ')

चणणाणो, चणणावौ–क्रि०अ०—रोमाच आना, रोया-रोया खडा होना।
उ०—ज्यू सूरा पूरा रा चाचरा रा केम चणणाई नें ऊभा हुऐ।
—वचनिका

मि०—चणणकणो।

चणणो, चणवौ–क्रि०स०—१ किन्ही वस्तुओ आदि को एक दूसरे के ऊपर रखते हुए उन्हें जमाना, चुनना २ वस्तुओ को एक-एक कर उठाना, बीनना ३ अगुलियो से चुनना, खोटना।

चणाखार–स०पु०यौ०—चने के डठलो और पत्तियो आदि को जला कर निकाला हुआ क्षार।

चणायका–स०स्त्री०—१ चाणक्य नीति के श्लोक २ वह पुस्तक जिसमे ऐसे श्लोको का सग्रह हो।

चणारी–स०स्त्री०—१ पैर के तलुवे मे होने वाला फफोला विशेष २ एक छोटा काला जन्तु।

चणियोडौ—देखो 'चुणियोडौ' (रू भे) (स्त्री० चणियोडी)

चणो–स०पु० [स० चणक] १ रबी की फसल का एक अन्न जिसका पौधा लगभग डेढ फुट से दो फुट तक ऊचा होता है। इसकी पत्तिया छोटी होती हैं और कुछ खार और खटाई लिये होती हैं। इसका दाना गोल होता है जिसकी दाल भी बनती है।
पर्याय०—चण, हरिमथक।
मुहा०—१ चणा चावणा—कष्ट से दिन निकालना, चने चबा कर निर्वाह करना, कठिन काय करना, परिश्रम का काय करना २ एक चणो, दो दळ होणो—अलग-अलग होना, मतभेद, आपस मे फूट होना।
कहा०—घर मे नही चणा को चून बेटो मागे मोतीचूर—घर मे तो पेट भरने को आटा भी नही और बेटा मीठे पकवान मागता है। साधारण भोजन का भी जहा अभाव हो वहा मिष्ठान्न या पकवान की आशा करना मूर्खता है।

चत—देखो 'चित' (रू भे)
कहा०—चत चगोडौ मन माळवे हियौ हाडौती जाय—मन की एकाग्रता नही होने मे कार्य की सफलता नही मिलती।

चतडाचौथ–स०स्त्री०—भाद्रपद शुक्लपक्ष की चतुर्थी, गणेशचतुर्थी।
उ०—चतडाचौथ भादूडो, दे दे माई लाडूडो। लाडूडा मे पान सुपारी, चौथो राणी हुई विराणी।—लो गी

चतभरम–वि०यौ० [स० चित्त+भ्रम] चित्तभ्रम, पागलपन, उन्माद।

चतमाठो–वि०यौ०—कजूस, कृपण, मूजी (टि को)

चतरग–वि०—चतुर, निपुण। उ०—सायर चतरग नार हो जिसके घर गुन जान, जिसके कुटिला नार हो। परदेसा जी प्यारी प्रीत कर पन्मावो सू ल्यावे मेरी ज्यान जी।—लो गी
स०स्त्री०—चतुरगिणी सेना। उ०—वर्ने चद ताम चढै जुध वीर, गजे चतरग हू सेन सधीर।—शि सु रू
२ चित्तौडगढ। उ०—रव रथ पोहर थकत हुय रहियो, नमो नमो चतरग नरेस। जुगा न जाय नाम सत जडिया, पडिया तो चढियो पडवेस।—महाराणा वडा अडसी रो गीत
३ शतरज। उ०—चाल न आ चतरग री, चतरगिणा री चाल। अद चत बाजी मारणी, घरघा सरै घाराळ।—रेवतसिंह भाटी

चतरगणी—देखो 'चतुरगिणी' (रू भे) उ०—रणखेता चतरगणी सिन्या गाढी नीद सुवायै तूं।—गणपति स्वामी

चतर–वि०—चतुर। उ०—माजण विसराया भला सुमरघा करै बेहाल, देखो चतर विचा'र के साची कहै जमाल।—जमाल
कहा०—१ चतर नै इसारो घणो—होशियार आदमी को इशारा मात्र काफी होता है। भले या समझदार आदमी को सकेत मात्र काफी होता है २ चतर री चार घडी मूरख रो जमारो—चतुर या दक्ष व्यक्ति को किसी कार्य के लिए बहुत थोडा समय काफी होता है परन्तु मूर्ख तो जिन्दगी भर नही कर सकता ३ चतर री एक पो'र मूरख री सारी रात—देखो कहा० २।
स०पु०—१ चतुर व्यक्ति। उ०—सठ सनेह जीरण वसन, जतन करता जाय। चतर प्रीत रेसम लछा, धुळत धुळत धुळ जाय।
—र रा.
२ ब्रह्मा।

चतरणो, चतरबौ–क्रि०स०—चित्रकारी करना, चित्रण करना।

चतरता—देखो 'चतुरता' (रू भे)

चतरभुज–स०पु०यौ० [स० चतुर्भुज] १ चार भुजाओ मे घिरा हुआ क्षेत्र २ चार भुजाओ वाला, यथा–विष्णु।

चतराम–स०पु०—चित्र, तस्वीर। उ०—तागडो डोर मे भडज दखै तर्क जके रह जाय चतराम जेहो।—बखतो खिडियो

चतरामकर–स०पु० [स० चित्रकार] चित्रकारी करने वाला, चित्रकार।

चतराई—देखो 'चतुराई' (रू भे) उ०—१ छद गाळी वोलै न हसै है ऊठी आइ आधि रात आपा छतो करै नही बात यू कहि सिगळी बाहर आई तद रतना कीनी चतराई मिस कर ऊठी।—र हमीर
उ०—२ वीका हाथ भरचा चनवायो रै, वीके चुडलै री चतराई रै।
—लो गी
कहा०—घणी चतराई घणी भूडी—अधिक चतुराई अच्छी प्रतीत नही होती।

चतारण–स०पु० [स० चतुरानन] ब्रह्मा (टि ना मा)

चतारो–स०पु०—चित्रकार, चितेरा।

चतुरग–स०पु०—१ चार प्रकार के बोल से गठा हुआ गायन (सगीत) २ देखो 'चतुरगिणी' (रू भे) उ०—१ चतुरग मिळै दरगाह चद। मामलै जाणि वणि नदी ममद।—सू प्र
उ०—२ नही तो चतुरग चक्र रो आतक देख बलात्कार सू बणाय लेवा री बात कतरीक छै।—व भा
उ०—३ ऊमर उतावळि करइ, पल्लाणिया पवग। खुरसाणी सूधा खयग, चढिया दळ चतुरग।—ढो मा

चतुरगण, चतुरगणि, चतुरगणी—देखो 'चतुरगिणी' (रू भे)
उ०—१ चतुरगण लै म्हैं चलू, रिख न मेल्हू राम ।—रामरासौ
उ०—२ समहर सैंद काच री सीसी, सार्थं चतुरगणि बावीसी ।
—रा रू

चतुरगपत, चतुरगपति–स०पु०यौ०—चतुरगिणी सेना का सेनापति या प्रमुख अधिकारी ।

चतुरगिणी, चतुरगिनी, चतुरगी–स०स्त्री० [स० चतुरगिनी] वह सेना जिसमे हाथी, घोडे, रथ और पैदल—ये चार अग हों ।
उ०—१ हूत नगीनै अजमल हालै, चतुरगी सेन्या सग चालै ।
—रा रू
उ०—२ चकतौ अकबर चक्कवै, पतसाहा पतसाह । चतुरगी फौजा चढै, दिये दुरगा दाह ।—वा दा.
रू०भे०—चतरग, चतरगणी, चतुरग, चतुरगण, चतुरगणि, चतुरगणी, चतुरगिनी, चतुरगीनी ।
वि०—१ चार अगों वाली २ दक्ष, चतुर । उ०—तठा उपराति करिनै राजान सिलामति उवै चतुरगी रायजादी क्रितिया री झुविखौ मोतीआ री लडी हुवै ।—रा सा स

चतुरत–वि० [स० चतुर्थ] चौथा, चतुथ । उ०—तुका वेलिये गीत री, आद दुतिय चतुरत । तिय पद दोय दुमेल तुक, दीपक सौ दाखत ।
—र रू

चतुर–वि० [स०] १ प्रवीण, होशियार, निपुण ।
पर्याय०—अभिजाणण, कुसळ, क्रतमुख, चतुर, नागर, निपुण, निसणात, पटु, परवीण ।
२ धूर्त, चालाक ३ फुर्तीला, तेज ।
[स० चत्वार] ४ चार की सख्या ।
५ शृगार रस का वह नायक जो अपने चातुर्य से प्रेमिका के साथ सभोग का साधन करे ६ कपट ७ कवि (अ मा)

चतुरई—देखो 'चतुराई' (रू भे)

चतुरक–स०पु० [स०] चतुर व्यक्ति, प्रवीण व्यक्ति ।

चतुरक्रम–स०पु० [स०] एक प्रकार का ताल (सगीत)

चतुरगति–स०पु०यौ०—कच्छप, कछुआ (ह ना)

चतुरजातक–स०पु०यौ० [स० चतुर्जातक] इलायची (बीज) दालचीनी (छाल) तेजपत्र (पत्ता) और नागकेसर (फूल)—इन चार का समूह या मिश्रण (वैद्यक)

चतुरजुग–स०पु०यौ [स० चतुर्युग] चार युग—सतयुग, त्रेता, द्वापर तथा कलियुग ।

चतुरजोणि, चतुरजोणी–स०स्त्री०यौ० [स० चतुर्योनि] प्राणियो के चार प्रकार से उत्पन्न होने की क्रिया—अडज, जरायुज, स्वेदज, तथा उद्भिज ।

चतुरता–स०त्री०—चतुर होने का भाव ।

चतुरथ–वि० पु० [स० चतुर्थ] चौथा ।

चतुरथी–वि०स्त्री०[स० चतुर्थी] चौथी । उ०—कवित्रीजी री आघ करि, सजि पचमी सराहि । पगती त्रीजी पचमी, मेलि चतुरथी माहि ।
—ल पि.
स०स्त्री०—चद्रमास के प्रत्येक पक्ष की चौथी तिथि ।

चतुरदत, चतुरदती–स०स्त्री० [स० चतुर्दंतिन्] एरावत हाथी ।

चतुरदस–वि० [स० चतुर्दश] दस और चार का योग, चौदह ।
उ०—व्याकरण पुराण समृति सासत्र विधि, वेद च्यारि खट अग विचार । जाणि चतुरदस चौसठ जाणी, अनत अनत तसु मधि अधिकार ।—वेलि

चतुरदसी–स०स्त्री० [स० चतुर्दशी] मास के प्रत्येक पक्ष की चौदहवी तिथि । उ०—१ रवि पख चतुरदसी सुखरासी, विद्या चतुरदस तणी विलासी ।—रा रू उ०—२ चतुरदसी वैसाख वद, तजगा कोट तुरक्क । पुर जाळ धर मारियौ, कमधा बाघ कटक्क ।—रा.रू

चतुरद्रस्ट्र–स०पु० [स० चतुर्दंष्ट्र] १ ईश्वर. २ कार्तिकेय. ३ एक राक्षस का नाम ।

चतुरदिक, चतुरदिस–स०पु०यौ० [स० चतुर्दिक, चतुर्दिश] चारो दिशायें ।
क्रि०वि०—चारो ओर ।

चतुरधाम–स०पु०यौ० [स० चतुर्धाम] चारो मुख्य तीर्थ-स्थान ।

चतुरपदी–स०पु०यौ०—१ चौपाया पशु २ एक मात्रिक छद विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे तीस मात्रायें होती हैं । १४ व १६ पर यति एव अत मे गुरु होता है (र ज प्र)

चतुरबाह, चतुरबाहु–स०पु०यौ० [स० चतुर्बाहु] जिसके चार भुजायें हों यथा-विष्णु । उ०—झिले रागवागा मुठी वाउ झल्लै, चतुरबाह रा रत्थ ज्यू पत्थ चल्लै ।—वचनिका

चतुरबूह–स०पु०यौ० [स० चतुर्व्यूह] १ चार पदार्थो का योग २ चार मनुष्यो का समूह ३ विष्णु ।

चतुरभुज–स०पु०—देखो 'चतरभुज' (रू भे) उ०—रूप चतुरभुज प्रकटत रीधौ, दरसण निज माता नै दीधौ ।—र रू

चतुरभुजा–स०स्त्री०यौ० [स० चतुर्भुजा] १ एक विशिष्ट देवी. २ गायत्री रूप धारिणी महाशक्ति ।

चतुरभुजी–स०पु० [स० चतुर्भुज+रा०प्र० ई] १ एक वैष्णव सप्रदाय. २ इस सप्रदाय का अनुयायी ३ विष्णु ।
स०स्त्री०—४ दुर्गा, देवी ५ एक प्रकार की तलवार ।
वि०—देखो 'चतुरभुज' (रू.भे)

चतुरमास–स०पु०यौ० [स० चातुर्मास] वर्षा ऋतु के चार मास—आषाढ, श्रावण, भाद्रपद और क्वार ।

चतुरमुख–स०पु०यौ० [स० चतुर्मुख] १ जिसके चार मुख हो—ब्रह्मा २ विष्णु ३ एक प्रकार का चौताला ताल (सगीत) ४ अनिरुद्ध का एक नाम ।
वि०—चार मुख वाला ।

चतुरमुगती–स०स्त्री०यौ० [स० चतुर्मुक्ति] चार प्रकार का मोक्ष—सायुज्य, सामीप्य, सारूप्य और सालोक्य ।

चणणाणो, चणणावो–क्रि०अ०—रोमाच आना, रोया-रोया खडा होना। उ०—ज्यू सूरा पूरा रा चाचरा रा केस चणणाई नें ऊभा हुऐ। —वचनिका

मि०—चणणकणो।

चणणो, चणवो–क्रि०स०—१ किन्ही वस्तुओ आदि को एक दूसरे के ऊपर रखते हुए उन्हें जमाना, चुनना २ वस्तुओ को एक-एक कर उठाना, बीनना ३ अगुलियो से चुगाना, खोटना।

चणाखार–स०पु०यौ०—चने के डठलो और पत्तियो आदि को जला कर निकाला हुआ क्षार।

चणायका–स०स्त्री०—१ चाणक्य नीति के श्लोक २ वह पुस्तक जिसमे ऐसे श्लोको का सग्रह हो।

चणारी–स०स्त्री०—१ पैर के तलुवे मे होने वाला फफोला विशेष २ एक छोटा काला जन्तु।

चणियोडो—देखो 'चुणियोडो' (रू भे) (स्त्री० चणियोडी)

चणो–स०पु० [स० चणक] १ रबी की फसल का एक अन्न जिसका पौधा लगभग डेढ फुट से दो फुट तक ऊचा होता है। इसकी पत्तिया छोटी होती हैं और कुछ खार और खटाई लिये होती है। इसका दाना गोल होता है जिसकी दाल भी बनती है।

पर्याय०—चण, हरिमथक।

मुहा०—१ चणा चावणा—कष्ट से दिन निकालना, चने चबा कर निर्वाह करना, कठिन कार्य करना, परिश्रम का काय करना २ एक चणो, दो दळ होणो—अलग-अलग होना, मतभेद, आपस मे फूट होना।

कहा०—घर मे नही चणा की चून बेटो मागे मोतीचूर—घर मे तो पेट भरने को आटा भी नही और बेटा मीठे पकवान मागता है। साधारण भोजन का भी जहा अभाव हो वहा मिष्ठान्न या पकवान की आशा करना मूर्खता है।

चत—देखो 'चित' (रू भे)

कहा०—चत चगोडी मन माळवे हियो हाडौती जाय—मन की एकाग्रता नही होने मे कार्य की सफलता नही मिलती।

चतडाचौथ–स०स्त्री०—भाद्रपद शुक्लपक्ष की चतुर्थी, गणेशचतुर्थी।

उ०—चतडाचौथ भादूडो, दे दे माई लाडूडो। लाडूडा मे पान सुपारी, चौथी राणी हुई विराणी।—लो गी

चतभरम–वि०यौ० [स० चित्त+भ्रम] चित्तभ्रम, पागलपन, उन्माद।

चतमाठो–वि०यौ०—कजूस, कृपण, मूजी (डिं को)

चतरग–वि०—चतुर, निपुण। उ०—सायर चतरग नार हो जिसके घर मुग्ध जान, जिसके कुटिला नार हो। परदेसा जी प्यारी प्रीत कर पछतावो सू ल्यावे मेरी ज्यान जी।—लो गी

स०स्त्री०—चतुरगिणी सेना। उ०—वर्नै चद ताम चढै जुध वीर, मजै चतरग है सेन सधीर।—शि सु रू.

२ चित्तौडगढ। उ०—रव रथ पोहर थकत हुय रहियो, नमो नमो चतरग नरेस। जुगां न जाय नाम मम जठिया, पढिया तो चढियो पटवेस।—महाराणा वडा अहमी री गीत

३ शतरज। उ०—चाल न आ चतरग री, चतरगिण री चाल। अद चत बाजी मारणी, धरणा सरै धाराळ।—रेवतसिंह भाटी

चतरगणी—देखो 'चतुरगिणी' (रू भे) उ०—रगरेता चतरगणी सिन्या गाढी नीद सुवायें नें।—गणपति स्वामी

चतर–वि०—चतुर। उ०—माजना विसराया भला सुमरना करै बेहाल, देखो चतर विचार के साची यहै जमाल।—जमाल

कहा०—१ चतर नै इसारो घणो—होशियार आदमी को इशारा मात्र काफी होता है। भले या समझदार आदमी को सकेत मात्र काफी होता है २ चतर री चार घडी मूरख री जमारो—चतुर या दक्ष व्यक्ति को किसी काय के लिए बहुत थोडा समय काफी होता है परन्तु मूर्ख तो जिन्दगी भर नही कर सकता ३ चतर री एक पो'र मूरख री सारी रात—देखो कहा० २।

स०पु०—१ चतुर व्यक्ति। उ०—सठ सनेह जीरण वसन, जतन करता जाय। चतर प्रीत रेसम लछा, धुळत धुळत धुळ जाय। —र रा.

२ ब्रह्मा।

चतरणो, चतरबो–क्रि०स०—चित्रकारी करना, चित्रण करना।

चतरता—देखो 'चतुरता' (रू भे)

चतरभुज–स०पु०यौ० [स० चतुर्भुज] १ चार भुजाओ मे घिरा हुआ क्षेत्र २ चार भुजाओ वाला, यथा–विष्णु।

चतराम–स०पु०—चित्र, तस्वीर। उ०—तानडो डोर मे भडज दखे तके जके रह जाय चतराम जेहो।—बखतो खिडियो

चतरामकर–स०पु० [स० चित्रकार] चित्रकारी करने वाला, चित्रकार।

चतराई—देखो 'चतुराई' (रू भे) उ०—१ छद गाळी बोलें न हसै है ऊठी आइ आधि रात आपा छतो करै नही बात यू कहि सिगळी बाहर आई तद रतना कीनी चतराई सिम कर ऊठी।—र हमीर

उ०—२ बीका हाथ भरया चनवायो रै, बीके चुडलै री चतराई रै। —लो गी

कहा०—घणी चतराई घणी भूडी—अधिक चतुराई अच्छी प्रतीत नही होती।

चतारण–स०पु० [स० चतुरानन] ब्रह्मा (डिं ना मा)

चतारो–स०पु०—चित्रकार, चितेरा।

चतुरग–स०पु०—१ चार प्रकार के बोल से गठा हुआ गायन (सगीत) २ देखो 'चतुरगिणी' (रू भे) उ०—१ चतुरग मिळै दरगाह चद। सामळै जाणि धणि नदी समद।—सू.प्र

उ०—२ नही तो चतुरग चक्र री आतक देय बलात्कार सू वणाय लेवा री बात कतरीक छै।—व भा

उ०—३ ऊमर उतावळि करइ, पल्लाणिया पवग। खुरसाणी सूधा खयग, चढिया दळ चतुरग।—ढो मा

चतुरगण, चतुरगणि, चतुरगणी—देखो 'चतुरगिणी' (रू भे)
उ०—१ चतुरगण लै म्हैं चलूं; रिख न मेल्हू राम।—रामरासौ
उ०—२ समहर सैंद काच री सीसी, साथै चतुरगणि वावीसी।
—रा रू

चतुरगपत, चतुरगपति–स०पु०यौ०—चतुरगिणी सेना का सेनापति या प्रमुख अधिकारी।

चतुरगिणी, चतुरगिनी, चतुरगी–स०स्त्री० [स० चतुरगिनी] वह सेना जिसमे हाथी, घोडे, रथ और पैदल—ये चार अग हों।
उ०—१ हूत नगीनै अजमल हालै, चतुरगी सेन्या सग चालै।
—रा रू
उ०—२ चकतौ अकबर चक्कवै, पतसाहा पतसाह। चतुरगी फौजा चढै, दिये दुरगा दाह।—बा दा.
रू०भे०—चतरग, चतरगणी, चतुरग, चतुरगण, चतुरगणि, चतुरगणी, चतुरगिनी, चतुरगीनी।
वि०—१ चार अगों वाली २ दक्ष, चतुर। उ०—तठा उपराति करिनै राजान सिलामति उवै चतुरगी रायजादी क्रितिया री झुबिखौ मोतीआ री लडी हुवै।—रा सा स

चतुरत–वि० [स० चतुर्थ] चौथा, चतुर्थ। उ०—तुका वेलियै गीत री, आद दुतिय चतुरत। तिय पद दोय दुमेल तुक, दीपक सौ दाखत।
—र रू

चतुर–वि० [स०] १ प्रवीण, होशियार, निपुण।
पर्याय०—अभिजाण, कुसळ, क्रतमुख, चतुर, नागर, निपुण, निसणात, पटु, परवीण।
२ धूर्त, चालाक. ३ फुर्तीला, तेज।
[स० चत्वार] ४ चार की सख्या।
५ शृगार रस का वह नायक जो अपने चातुर्य से प्रेमिका के साथ सभोग का साधन करे ६ कपट ७ कवि (अ मा)

चतुरई—देखो 'चतुराई' (रू भे)

चतुरक–स०पु० [स०] चतुर व्यक्ति, प्रवीण व्यक्ति।

चतुरक्रम–स०पु० [स०] एक प्रकार का ताल (सगीत)

चतुरगति–स०पु०यौ०—कच्छप, कछुआ (ह ना)

चतुरजातक–स०पु०यौ० [स० चतुर्जातक] इलायची (बीज) दालचीनी (छाल) तेजपत्र (पत्ता) और नागकेसर (फूल)—इन चार का समूह या मिश्रण (वैद्यक)

चतुरजुग–स०पु०यौ [स० चतुर्युग] चार युग—सतयुग, त्रेता, द्वापर तथा कलियुग।

चतुरजोणि, चतुरजोणी–स०स्त्री०यौ० [स० चतुर्योनि] प्राणियो के चार प्रकार से उत्पन्न होने की क्रिया—अडज, जरायुज, स्वेदज, तथा उद्भिज।

चतुरता–स०त्री०—चतुर होने का भाव।

चतुरथ–वि० पु० [स० चतुर्थ] चौथा।

चतुरथी–वि०स्त्री० [स० चतुर्थी] चौथी। उ०—कविश्रीजी रौ आघ करि, सजि पचमी सराहि। पगती श्रीजी पचमी, मेलि चतुरथी माहि।
—ल पि.
स०स्त्री०—चद्रमास के प्रत्येक पक्ष की चौथी तिथि।

चतुरदत, चतुरदती–स०स्त्री० [स० चतुर्दतिन्] एरावत हाथी।

चतुरदस–वि० [स० चतुर्दश] दस और चार का योग, चौदह।
उ०—व्याकरण पुराण सम्रति सासत्र विधि, वेद च्यारि खट अग विचार। जाणि चतुरदस चौसठ जाणी, अनत अनत तसु मधि अधिकार।—वेलि

चतुरदसी–स०स्त्री० [स० चतुर्दशी] मास के प्रत्येक पक्ष की चौदहवी तिथि। उ०—१ रवि पख चतुरदसी सुखरासी, विद्या चतुरदस तणी विलासी।—रा रू उ०—२ चतुरदसी वैसाख वद, तजगा कोट तुरक्क। पुर जाळ घर मारियौ, कमधा वाघ कटक्क।—रा.रू.

चतुरद्रस्ट्र–स०पु० [स० चतुर्दंष्ट्र] १ ईश्वर २ कार्तिकेय. ३ एक राक्षस का नाम।

चतुरदिक, चतुरदिस–स०पु०यौ० [स० चतुर्दिक, चतुर्दिश] चारो दिशायें।
क्रि०वि०—चारो ओर।

चतुरधाम–स०पु०यौ० [स० चतुर्धाम] चारो मुख्य तीर्थ-स्थान।

चतुरपदी–स०पु०यौ०—१ चौपाया पशु २ एक मात्रिक छद विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे तीस मात्रायें होती हैं। १४ व १६ पर यति एव अत मे गुरु होता है (र ज प्र)

चतुरबाह, चतुरबाहु–स०पु०यौ० [स० चतुर्बाहु] जिसके चार भुजायें हो यथा—विष्णु। उ०—झिले रागवागा मुठी वाउ झल्लै, चतुरबाह रा रत्थ ज्यू पत्थ चल्लै।—वचनिका

चतुरब्रूह–स०पु०यौ० [स० चतुर्व्यूह] १ चार पदार्थो का योग. २ चार मनुष्यो का समूह ३ विष्णु।

चतुरभुज–स०पु०—देखो 'चतरभुज' (रू भे) उ०—रूप चतुरभुज प्रकटत रीधौ, दरसण निज माता नै दीधौ।—र रू

चतुरभुजा–स०स्त्री०यौ० [स० चतुर्भुजा] १ एक विशिष्ट देवी. २ गायत्री रूप धारिणी महाशक्ति।

चतुरभुजी–स०पु० [स० चतुर्भुज+रा०प्र० ई] १ एक वैष्णव सप्रदाय. २ इस सप्रदाय का अनुयायी ३ विष्णु।
स०स्त्री०—४ दुर्गा, देवी ५ एक प्रकार की तलवार।
वि०—देखो 'चतुरभुज' (रू.भे)

चतुरमास–स०पु०यौ० [स० चातुर्मास] वर्षा ऋतु के चार मास—आषाढ, श्रावण, भाद्रपद और क्वार।

चतुरमुख–स०पु०यौ० [स० चतुर्मुख] १ जिसके चार मुख हो—ब्रह्मा २ विष्णु ३ एक प्रकार का चौताला ताल (सगीत) ४ अनिरुद्ध का एक नाम।
वि०—चार मुख वाला।

चतुरमुगती–स०स्त्री०यौ० [स० चतुर्मुक्ति] चार प्रकार का मोक्ष—सायुज्य, सामीप्य, सारूप्य और सालोच्य।

चतुरवरग-स०पु०यौ० [स० चतुर्वर्ग] अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष—इन चारो का समुच्चय ।
चतुरवरण-स०पु०यौ० [स० चतुर्वरण] १ चार प्रकार के वर्ण—क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य और शूद्र २ अनिरुद्ध का एक नाम ।
चतुरविद्या-स०स्त्री०यौ०—चारो वेदो मे लिखी हुई विद्या ।
वि०—चारो वेदो को जानने वाला ।
चतुरविध-क्रि०वि०—चार प्रकार का । उ०—चतुरविध वेद प्रणीत चिकित्सा ससत्र उखध मत्र तत्र सुधि । काया कजि उपचार करता हुवै सु वेलि जपति हवि ।—वेलि
चतुरवेद-स०पु० [स० चतुर्वेद] १ चार वेद—ऋगवेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद और सामवेद २ ईश्वर ।
वि०—चारो वेदो का ज्ञाता ।
चतुरवेदी-स०पु० [स० चतुर्वेदिन्] १ चारो वेदो को सही सही जानने वाला व्यक्ति २ ब्राह्मणो का एक वश या गोत्र ।
चतुरह्-स०पु० [स०] चार दिनो मे होने वाला योग (ज्योतिष)
चतुरा-स०स्त्री० [स०] नृत्य मे नर्तकी द्वारा धीरे-धीरे अपनी भौहो को कपाने की एक क्रिया विशेष ।
चतुराई-स०स्त्री० [स० चतुर+रा० प्र० आई] १ निपुणता, दक्षता, होशियारी । उ०—चौसठ अवधान तणी चतुराई, बोलण महाराजा विरद । खूबी मिळी धारणा ख्याता, जगदबा तो क्रपा जद ।—वा दा २ धूर्तता ३ चातुर्य, चालाकी ।
मुहा०—१ चतुराई छाटणी—चालाक बनना, अपनी चतुराई की बडाई करना २ चतुराई छोलणी—देखो 'चतुराई छांटणी' ।
चतुराणण-स०पु०यौ० [स० चतुरानन] जिसके चार मुख हो—ब्रह्मा ।
चतुरातमक-स०पु० [स० चतुरात्मक] कुशल बुद्धि वाला, कुशाग्र बुद्धि वाला व्यक्ति । उ०—चतुरमुख चतुरवरण चतुरातमक, विश्व चतुर जुग विधायक । सरव जीव विस्वक्रति ब्रह्म सू, नरवर हस देह नायक ।—वेलि
चतुरातमाविश्व-स०पु०यौ—अनिरुद्ध का एक नाम ।
चतुरात्मा—स०पु० [स०] ईश्वर २ विष्णु ।
चतुरानन—देखो 'चतुराणण' (रू भे.)
चतुरास्रम-स०पु०यौ० [स० चतुराश्रम] चार प्रकार के आश्रम—ब्रह्मचर्य गहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास ।
चतुरेस-वि०—दक्ष, निपुण प्रवीण ।
स०पु० [स० चतुरेश] विष्णु ।
चतुसप्रदाय-स०पु० [स० चतु सप्रदाय] श्री, माधव, रुद्र और सनक नाम के वैष्णवो के चार सप्रदाय ।
चतुसकळ-वि०—वह जिसमे चार मात्रा हो ।
चतुसपद-स०पु० [स० चतुष्पद] १ ज्योतिष मे ग्यारह करणो मे से एक का नाम २ चार पैरों वाला जीव या पशु, चौपाया ।
चतुसपदी-स०स्त्री० [स० चतुष्पदी] १ प्रत्येक चरण मे १५ मात्रा वाला छद २ चार पद का गीत ।
चतुस्करणी-स०स्त्री० [स० चतुष्कर्णी] कार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका का नाम ।
चतुस्कळ—देखो 'चतुसकळ' (रू भे)
चतुस्कोण-वि० [स० चतुष्कोण] चार कोण वाला, चौकोना ।
चतुस्टय-स०पु० [स० चतुष्टय] १ चार वस्तुओ का समूह २ चार की सख्या. ३ जन्म कुडली मे केंद्र लग्न और लग्न मे सातवां तथा दसवां स्थान ।
चतुस्ताळ-स०पु० [स० चतुरताल] एक प्रकार का चौताला ताल । (संगीत)
चतुस्पथरता-स०पु० [स० चतुष्पथरता] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम ।
चतुस्पद—देखो 'चतुसपद' (रू भे)
चतुस्पदा-स०स्त्री० [स० चतुष्पदा] एक प्रकार का चौपाया छद जिसके प्रत्येक चरण मे ३० मात्रायें होती हैं ।
चतुस्पदी—देखो 'चतुसपदी' (रू भे)
चतुस्पाणि-वि० [स० चतुष्पाणि] चार हाथों वाला, चतुर्भुज ।
स०पु०—विष्णु ।
चतुस्सन-स०पु० [स०] १ सनक, सनत्कुमार, सनदन और सनातन ये चारो ऋषि २ विष्णु ।
चत्रग—देखो 'चतरग' (रू.भे) उ०—गोळा नाळ चत्रग गढ गाजे, गाहे मीर सधीर घणौ । 'जगा' सुत नह दीये जीवता, तीजो लोचन प्रिथी तणौ ।—पत्ता चूडावत री गीत
चत्रगद-स०पु०—१ चित्तौड २ चितौडगढ का निर्माण करने वाला । (एक मौर्यवशी राजा, चित्रागद)
चत्र-वि०—१ चतुर, दक्ष, पटु २ चालाक, धूर्त, छली ३ चार ।
उ०— १ चत्र विधि मगळ करता चालो ।—ल पि उ०—२ कळि कळप वेलि वळि कामधेनुवा, चिंतामणि सोममलि चत्र । प्रकटित प्रिथिमी प्रिथु मुख पकज, अखरावळि मिसि थाइ एकत्र ।—वेलि
चत्रकोट, चत्रकोटगढ, चत्रकोठ, चत्रगढ-स०पु०—चित्तौडगढ (रू भे)
उ०—१ समर घूबै आबाट होय नाद सिंधू सबद, जगम अग ओर जूथ जडा जाडो । दूठ 'सारग' हुओ आविया दखण दळ, अभग भड धरा चत्रकोट आडो ।—सारगदेव कानोड रो गीत
उ०—२ बाद भड बीजळा दाये वे वे वरग, चाड चत्रकोठ री लडै चोजा । धग कज आपणी लहै 'चूडो' धणी, 'फता' रो सतारा तणी फौजा ।—प्रतापसिंह रावत आमेट री गीत
उ०—३ विरद धारिया भुजा भर्डालया ऊबावरा, हिचै खळ ढाल पाखर जडै हेमरा । धणी छळ स्यामध्रम रखण चत्रगढ धरा घुपटी वाह रे खगा ईडर धरा ।—सारगदेव कानोड री गीत
चत्रगुपत—देखो 'चित्रगुप्त' (रू भे)
चत्रधा-वि०—चार प्रकार का । उ०—राम लखण सत्रघण, भरथ

सूरज वस सिंगार। एक अस चत्र वप अवधि, ऐ चत्रघा अवतार।
—सू प्र

चत्रबाह—देखो 'चतुरवाहु' (रू भे)

चत्रभाण, चत्रभानू—स०पु० [स० चित्रभानु] १ अग्नि (ह ना) २ चित्रक. ३ आक का वृक्ष ४ सूर्य (ना मा) ५ अर्जुन की पत्नी चित्रागदा के पिता जो मणिपुर के राजा थे।

चत्रभुज, चत्रभुज्ज, चत्रभूज—स०पु० [स० चतुर्भुज] १ देखो 'चतरभुज' (रू भे) उ०—१ चौथिम्रा वार वाहर करि चत्रभुज, सख चक्रवर गदा सरोज। मुख करि किसू कहीजै माहव, अतरजामी सूं आलोज।
—वेलि.

उ०—२ देवी पौन रै रूप तू गरुड पाडै, देवी गरुड रै रूप चत्रभूज चाडै।—देवि

२ सूर्य (ना मा) ३ परमेश्वर (ह.ना) ४ मगल-ग्रह (अ मा)

चत्रभूजवाहण—स०पु०यौ० [स० चतुर्भुज+वाहन] विष्णु का वाहन, गरुड (ह ना)

चत्रसाळ, चत्रसाळा—देखो 'चित्रसाला' (रू भे) उ०—ढोला बाईजी नै वेग बुलावौ। म्हारी चत्रसाळा सथिया दिवावौ।—लो गी

चत्राम—स०पु०—१ चित्र, तस्वीर. २ प्रतिमा, मूर्ति। उ०—मगज करता जकै चत्रामा मडाणा। वैर हर पखाणा वीच वसिया।
३ चित्रकारी। —नाथौ बारहठ

चत्रग—स०पु०—चतुरगिनी सेना। उ०—कराळ देस राकसा, कुमार ऐन मोकळू। जिग सहाय काज जै, चत्रग साजि मैं चलू।—सू प्र

चत्रु—वि०—चार। उ०—ए त्रिहु सवद उदार आदि गुण रै मैं आणै। स्रीपति मगळ सरूप ब्रह्म चत्रु वेद बखाणै।—सू प्र

चत्वरवासिनी—स०स्त्री०—कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

चत्वार—वि०—चार। उ०—अखैराज अरक ओहोसियो, नर नरद भजेव निस। कळकळै किरण दीपै कमळ, दस ही दिस चत्वार दिस।
—नैणसी

चदिर—स०पु० [स०] १ कपूर २ चंद्रमा ३ हाथी ४ सांप, सप।

चनण—देखो 'चदण' (रू भे)

चनणगो'—स०स्त्री०यौ०—देखो 'चदणगोह' (रू भे)

चनणियो—स०पु०—चन्दन (अल्पा०) उ०—तू तो मोल चनणिया रो रूख, बीमाणी लाल इतरोसो चनण म्हानै चाहिये।—लो गी
वि०—चन्दन का रग।

चनरमा—देखो 'चद्रमा' (रू भे) उ०—बावल वाई नै खोळै लीनी कहो किसो भरतारो हो राम, कै'वो तो सूरजजी आणा कै'वो तो चनरमा जी हो राम।—लो गी

चनवाई, चनवायी—स०पु०—सोने की पत्तियो से मढा हुआ हाथी दात का चूडा। उ०—वीं का हाथ भर्‌या चनवायी रे।—लो गी

चनाब—स०स्त्री०—सिंधु नदी की एक सहायक पजाव की एक नदी का नाम।

चनिचर—देखो 'सनिचर' (रू भे)

चनिचरियो—देखो 'सनिचरियो' (रू भे)

चनेयक—वि०—तनिक, थोडा, अल्प।

चन्नण—देखो 'चदण' (रू भे) उ०—छूटिया प्रधारक अति छछोह बावना चन्नणा लियण वोह।—वि स

चन्नणगो'—देखो 'चदणगोह' (रू भे)

चप—क्रि०वि० [अनु०] १ तुरन्त, फौरन, शीघ्र. २ यकायक, अकस्मात।

चपक—स०पु०—सेना का बाया भाग (डिं को)

चपकणौ—वि०—देखो 'चिपकणौ' (रू भे)

चपकणौ, चपकवौ—क्रि०अ०—देखो 'चिपकणौ' (रू भे)

चपकणहार, हारौ (हारी), चपकणियौ—वि०।

चपकवाडणौ, चपकवाडवौ, चपकवाणौ, चपकवावौ—प्रे०रू०।

चपकाडणौ, चपकाडवौ, चपकाणौ, चपकावौ, चपकावणौ, चपकाववौ
—क्रि०स०।

चपकिग्रोडौ, चपकियोडौ, चपक्योडौ—भू०का०कृ०।

चपकीजणौ, चपकीजवौ—भाव वा०।

चपकाणौ, चपकावौ—देखो 'चिपकाणौ' (रू भे)

चपकायोडौ—देखो 'चिपकायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० चपकायोडी)

चपकावणौ, चपकाववौ—देखो 'चिपकाणौ' (रू भे)

चपकावियोडौ—देखो 'चिपकावियोडौ' (रू.भे) (स्त्री० चपकावियोडी)

चपकियोडौ—देखो 'चिपकियोडौ' (रू भे) (स्त्री० चपकियोडी)

चपकौ—स०पु०—किसी रोग विशेष के कारण किसी धातु को गर्म कर के रोग-स्थान या शरीर के अग विशेष पर लगाया जाने वाला चिन्ह। (मि० 'डाम')

चपड चपड—स०स्त्री० [अनु०] कुत्ते की जाति के पशुओ के मुह से पानी पीते समय उत्पन्न होने वाली ध्वनि २ अनावश्यक वक-बक।
क्रि०प्र०—करणी, होणी।

चपडास—स०स्त्री०—१ धातु का वह चौकोर अथवा आयताकार चपटा टुकडा जिस पर सबधित कार्यालय या संस्था का नाम खुदा रहता है और जिसे वस्त्र या चमडे की पट्टी पर लगा कर संबधित कार्यालय के प्रमाणस्वरूप चपरासी या चौकीदार अपने शरीर पर धारण करते हैं २ मालखभ की एक कसरत।

चपडासौ—स०पु०—चपरासी अथवा चौकीदार के हाथ में रहने वाला डडा या लकडी।

चपडासी—स०पु० (स्त्री० चपडासण) १ चपडास धारण किया हुआ व्यक्ति, चपरासी २ नौकर, अनुचर, सेवक।

चपडी—स०स्त्री०—१ तखती, पटिया २ साफ की हुई लाख जो प्राय मुहर लगाने के काम मे ली जाती है।

चपडौ—स०पु०—१ शक्कर की चासनी का जमाया हुआ पतला चपटा पत्तर, एक प्रकार की मिठाई २ अनाज के ऊपर का छिलका, भूसा, चापड।

चपट-स०स्त्री० [स०] चपत, तमाचा, थप्पड़।
चपटणौ-वि०—देखो 'चिपटणौ' (रू भे)
चपटणौ, चपटबौ—देखो 'चिपटणौ' (रू भे)
चपटाणौ, चपटाबौ —देखो 'चिपटाणौ' (रू भे.)
चपटायोड़ो—देखो चिपटायोड़ो' (रू भे) (स्त्री० चपटायोड़ी)
चपटावणौ, चपटावबौ—देखो 'चिपटाणौ' (रू भे)
चपटावियोड़ो—देखो 'चिपटावियोड़ो' (रू भे) (स्त्री० चपटावियोड़ी)
चपटियोड़ो—देखो 'चिपटियोड़ो' (रू भे) (स्त्री० चपटियोड़ी)
चपटी-स०स्त्री०—१ हाथ की उँगलियों एवं अंगूठे के बीच समा सकने वाली सामग्री, हाथ की उँगलियों एवं अँगूठे की बनाई हुई वह स्थिति जो किसी (भिखारी आदि) को आटा आदि देने के लिये बनाई जाती है।
वि० -देखो 'चपटो' का स्त्री०।
चपटो-वि० (स्त्री० चपटी) १ पथराया हुआ, फैलाया हुआ २ जो कहीं से उठा हुआ या उभरा हुआ न हो। जिसकी सतह दबी और बराबर फैली हुई हो।
चपणौ, चपबौ-क्रि०अ०—१ दबना २ लज्जित होना. ३ नष्ट होना. ४ चिपकाना ५ झेंपना।
चपणहार, हारो (हारी), चपणियौ—वि०।
चपाडणौ, चपाडबौ, चपाणौ, चपाबौ, चपावणौ, चपावबौ —क्रि०स०।
चपिओड़ो, चपियोड़ो, चप्योड़ो—भू०का०कृ०।
चपीजणौ, चपीजबौ—भाव वा०।
चपत-स०स्त्री० [स० चपट] १ तमाचा, थप्पड।
क्रि०प्र०—खाणी, जमाणी, मारणी, लगाणी।
मुहा०—चपत जमाणी, चपत झाडणी, चपत धरणी—तमाचा मारना।
२ हानि।
क्रि०प्र०—खाणी, लागणी।
चपदस्त-स०पु० [फा०] एक प्रकार का घोड़ा जिसका एक पैर सफेद हो (शा हो)
चपरकौ-स०पु०—एक प्रकार का प्रहार विशेष।
चपरास—देखो 'चपड़ास' (रू भे)
चपरासी—देखो 'चपड़ासी' (रू भे.) (स्त्री० चपरासण)
चपरी—देखो 'चपड़ी' (रू भे.)
वि०—देखो 'चपरो' का स्त्री०
चपरो—देखो 'चपड़ो' (रू भे.)
वि०—तेज मिजाज वाला, वाचाल। (स्त्री० चपरी)
चपळ-वि० [स० चपल] १ स्थिर न रह सकने वाला, चचल (अ मा) २ फुर्तीला. ३ जल्दबाज ४ चुलबुला, नटखट ५ बहुत काल तक न रहने वाला, क्षणिक ६ कायर।
स०पु०—१ चातक (अ मा.) २ पारा (मि० 'चपळ' ५) ३ पपीहा ४ वेग (अ मा.) ५ मछली (मि० 'चपळ' ७) ६ बिजली।
उ०—सरसत जामनि रूप दामनि प्रगटि मिट तम प्रगटही। इण मिळत चमिळत चपळ देतन धरनि पर जन चपटही।—र रू.
(मि० 'चपळ' ८)
क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी (अ मा)
चपळता-स०स्त्री० [सं० चपलता] १ चंचलता। उ०—किसी रै काम पर किणी न हाम रौ, चपळता मानगर्ति मन्नो करै। —मूरे लौहि री बात
२ चालाकी, धूर्तता ३ कायरता।
चपळभाव-स०पु०यौ० [सं० चपल+भाव] चंचलता, चपलता।
उ०—घर नर्गा रा चक रै समान मही रै माथै प्रतिबिंब पाड़ता चतुरंग चक्र मेघमाळा मैं चंचळा रा चपळभाव मैं धूप पाड़ता चढ़ाण चलाया।—वं भा
चपळमती-वि०स्त्री०यौ० —जिसकी बुद्धि चपल हो, चपलमती।
उ०—चपळमती दुराचारणी, चित्त भाव विभचार। नीच त्याग कर गुर सभा, तर नर अंगीकार।—अज्ञात
चपळवास-स०पु०यौ०—मछर (ना मा)
चपळा-स०स्त्री०—१ दुर्गा २ लक्ष्मी (ह ना) ३ बिजली।
उ०—देख्यां त्रिपटी तुझ चळापळ चपळा लागी, वो परबत वा प्रीत चितारै हिवड़ो दोगी।—मेघ
४ पुंश्चली स्त्री ५ पिप्पली वृक्ष, पीपल ६ जिह्वा, जीभ ७ मदिरा (अ मा) ८ जिस आर्या छंद के प्रथम गण के अंत में गुरु हो, द्वितीय गण जगण हो, तृतीय गण दो गुरु का हो, चतुर्थ गण जगण हो, पांचवें गण का आदि गुरु हो, छठा गण जगण हो, सातवां गण जगण न हो, अंत में गुरु हो उसे चपला कहते हैं।
वि०—चीलाक (डि को)
चपळाई, चपळात-स०स्त्री० [सं० चपलता] चंचलता, चपलता।
उ०—चसळ ययण ग्याण चपळाई, विध कमळा गुळ रीत बताई। —अज्ञात
चपळो-स०पु०—एक प्रकार का घोड़ा विशेष (शा हो)
वि०—१ चपल, चंचल २ फुर्तीला। (स्त्री० चपळी)
चपाचप-क्रि०वि० [अनु०] झट पट, शीघ्र, तुरत।
चपेट-स०स्त्री०—१ तमाचा, थप्पड। उ०—प्रतिहार रा प्रहारां नू सिराहि चामुडराज प्रतापसिंह रा सीस रै दो ही हाथा री चपेट दीधी।—व भा.
२ किसी भारी वस्तु के वेगपूर्वक चलाने पर पड़ने वाला दवाव, झोंका, रगड, धक्का, आघात।
उ०—धुजावै धरा दावि दे काळ धक्का, पड़े काच ज्यूं आय जावा पळक्का। फटै कोट घोड़ा जिका चोट फेटा, चलै सीस हूं कुडघपट्टी चपेटां।—व भा

चपेटणौ, चपेटबौ–क्रि०स०—१ बलपूर्वक दबाव डालना, दबाना २ बल-पूर्वक भगाना ३ डाटना, फटकारना।
चपेटणहार, हारौ (हारी), चपेटणियौ—वि०।
चपेटाडणौ, चपेटांडबौ, चपेटाणौ, चपेटाबौ, चपेटावणौ, चपेटावबौ —क्रि०स०, प्रे०रू०।
चपेटिग्रोडौ, चपेटियोडौ, चपेटचोडौ—भू०का०कृ०।
चपेटीजणौ, चपेटीजबौ—कर्म वा०।
चपेटाणौ, चपेटाबौ–क्रि०स० ('चपेटणौ' का प्रे रू) चपेटने का कार्य अन्य से कराना।
चपेटायोडौ–भू०का०कृ०—१ चपेटाया हुआ २ दबवाया हुआ ३ डाटा हुआ (स्त्री० चपेटायोडी)
चपेटावणौ, चपेटावबौ—देखो 'चपेटाणौ' (रू भे)
चपेटावियोडौ—देखो 'चपेटायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चपेटावियोडी)
चपेटियोडौ–भू०का०कृ०—१ दबाया हुआ २ भगाया हुआ ३ पीटा हुआ. ४ डाटा हुआ (स्त्री० चपेटियोडी)
चप्पल–स०स्त्री०—चिपटी एडी का बिना दीवारो का जूता जिसके नीचे केवल समतल तला और ऊपर पट्टिया होती हैं।
चबक—देखो 'चबकौ' (रू भे.)
चबकणौ, चबकबौ–क्रि०अ०—रह रह कर पीडा का उठना, टीस चलना, कसक उठना।
चबकौ–स०पु०—१ रह-रह कर उठने वाली पीडा, टीस, कसक, दर्द।
रू०भे०—चबक, चभकौ।
२ किसी नोकदार शस्त्र का प्रहार या प्रहार का क्षत।
चबडकौ—देखो 'चबकौ' (अल्पा रू भे)
चबणौ—देखो 'छबणौ' (रू भे)
चबणौ, चबबौ–क्रि०अ०—चबाये जाने का काय होना, चबना।
चबर—देखो 'चवर' (रू भे)
चबरक, चबरकौ–स०पु०—१ ब्राह्मणो के विवाह के समय गौडीय पद्धति के अनुसार चतुर्थी कर्म मे वर वधू के सहभोज की प्रणाली २ कैंची से काटने की क्रिया का भाव ३ नुकीले पदार्थ के चुभने का प्रभाव।
चबवाणौ, चबवावौ–क्रि०स०—'चबाणौ' क्रिया का प्रेरणार्थक रूप, देखो 'चबाणौ'।
चबाई–स०स्त्री०—चबाने की क्रिया।
चबाणौ, चबाबौ–क्रि०स० [स० चवनम्] दातो मे कुचलना या काटना, चबाना।
चबावणहार, हारौ (हारी), चबावणियौ—वि०।
चबाडणौ, चबाडबौ—रू०भे०।
चबायोडौ—भू०का०कृ०।
चबाईजणौ, चबाईजबौ—कर्म वा०।
चबणौ—अक० रू०।
मुहा०—चबा-चबा नै बातां करणी—बहुत बन-बन कर धीरे-धीरे बातें करना।
चबायोडौ–भू०का०कृ०—चबाया हुआ (स्त्री० चबायोडी)
चबावणौ, चबावबौ—देखो 'चबाणौ' (रू भे)
चबावणहार, हारौ (हारी), चबावणियौ—वि०।
चबाविग्रोडौ, चबावियोडौ, चबाव्योडौ—भू०का०कृ०।
चबावीजणौ, चबावीजबौ—कर्म वा०।
चबणौ—अक० रू०।
चबावियोडौ—देखो 'चबायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चबावियोडी)
चबियोडौ–भू०का०कृ०—चबा हुआ (स्त्री० चबियोडी)
चबीण, चबीणौ—देखो 'चरवणा' (रू भे) उ०—ढुळ ढुळ आवै नीदडली, लूम्या री डोडी। सासू चबीणौ देय, वारी ए लूम्या री डोडी।—लो गी
चबु–वि०—चार।
चबूतरौ–स०पु० [स० चतुरस्त, चत्वर या चत्वाल] १ ऊंची उभरी हुई चौरस जगह २ जमीन को कुछ उठा कर चौकोर या आयताकार बनाया गया स्थान ३ बैठने के लिये बनाई हुई ऊँची चौरस जगह।
पर्याय०—वितरदिका, वेदी।
रू०भे०—चातरौ, चूतरौ, चौंतरौ।
अल्पा०—चबूतरियौ।
चबेणौ—देखो 'चबीणौ' (रू भे)
चब्बलियौ–स०पु०—१ जल से भरा छोटा गड्ढा।
चब्बू–वि०—बहुत चबाने वाला।
चभकौ—देखो 'चबकौ' (रू भे)
चभडचभड–स०पु० [अनु०] १ किसी वस्तु को चबाते समय मुँह के हिलने से उत्पन्न शब्द २ कुत्ते-बिल्ली आदि के द्रव पदार्थों के पीने से होने वाला शब्द।
चमक, चमकउ—देखो 'चमक' (रू भे) उ०—रातिज बादळ सघण घण, वीज चमकउ होइ। इण समईयइ हे सखी, साल्ह जगाई मोइ।—ढो मा
चमकदार—देखो 'चमकदार' (रू भे)
चमकी—स०स्त्री०—१ चमक, तेज, ज्योति २ तलवार ३ पानी मे गोता लगाने की क्रिया, डुबकी।
चमकौ—देखो 'चमक' (रू भे)
उ०—पवन का परवाह, गुलाब की मूठ, सघराज को गोटकौ, तारे की तूट, आतस की भभकौ, चक्री की चाल, चपळा को चमकौ, छाती की ढाल।—दरजी मयाराम री बात
चमट–क्रि०वि०—शीघ्र, तुरत, चटपट।
चमठ–स०पु०—किनारा, तट।
चमडा–स०स्त्री० [स० चामुण्डा] चामुण्डा देवी।

चमक-स०स्त्री०—१ प्रकाश, ज्योति । उ०—ऊपर सू बादळ गुफ रहिया छै, कोई कोई बूदां पड रही छै, चमकां री धूप लाग रही छै । —कुवरसी साखला री वारता

२ कान्ति, आभा, दीप्ति ।

यौ०—चमक-चांदणी, चमक-दमक ।

३ लज्जा, झेंप । उ०—गागू चालै लागी तिरछी निजर कवर नै जोवै है, हुमै चमक चवदत हुई, राजकाणी पड गई जाणै आग मे हीज वह गई ।—र हमीर

४ कमर पर यकायक अधिक बल पड जाने के कारण पड़ने वाली लचक. ५ चौंकने की क्रिया या भाव, डर, भय (ह ना.) ६ मिर्च मसाले रखने का खानेदार एक उपकरण. ७ सदेह, आशका ।

उ०—१ तरै ऊठि मुजरौ करि कागद हाथ दियौ वै अरज करि नै हाथ जोडि नै कह्यौ इध मिस्री माहि विस छै । देग नै अरोग्यजो तितरै रावास दूध मिस्री भेळा करि ल्यायौ तिको कानड़देजी रै आगै चमक हीज नै तरवाळा निजर आया ।—वीरमदे सोनगरा री वात

उ०—२ चमक छै पण वधू देखे तो कहे ।—जलाल बूबना री वात

चमकआरती-स०स्त्री०—विवाह की एक रसम जिसमे तोरण द्वार पर सास द्वारा दीपक भरे थाल से दूल्हे की आरती की जाती है । परछन ।

चमकचांदणी-स०स्त्री०यौ०—बन-ठन एव साज-शृङ्गार के साथ रहने वाली कुलक्षणा स्त्री ।

चमकचूटी-स०स्त्री०यौ०—कलाई पर पहिनने की सोने की वह चूडी जिस पर मोगरे लगे होते हैं ।

चमक-चोट-स०स्त्री०—अचानक चोट ।

चमकणौ-वि० (स्त्री० चमकणी) १ चमकने वाला. २ चौंकने वाला । ३ चिढने वाला. ४ चमचमाहट करने वाला ।

चमकणौ, चमकबौ-क्रि०अ०—१ प्रकाशित होना, जगमगाना २ कान्तियुक्त होना, झलकना, आभायुक्त होना । उ०—सखि वउळावी फिरि गई, प्री मिळियउ एकत । मुळकत ढोलउ चमकियउ, वीजळ गिवी क दत ।—ढो मा

३ समृद्ध होना, यश प्राप्त करना ४ चौंकना, डरना, भयभीत होना । उ०—१ जइ तू ढोला नावियउ, काजळिया री तीज । चमक मरेसी मारवी, देख खिवती वीज ।—ढो मा

५ भडकना, अधिक प्रभावशाली होना ।

उ०—१ सरदी चमकणी है सीरख्या रजाया वणावणी है ।

—वरसगाठ

उ०—२ हमे काई करसा ओ हालरिया रा बाप, माताजी चमकिया देस मे ।—लो गी

उ०—३ मिगसर पाळौ चमकियौ, प्यारौ लागै पीव ।

—कुवरसी साखला री वारता

६ जागृत होना । उ०—काळी काठळ मे दामणिया दमकी, चित मे कामणिया विरहानळ चमकी ।—ऊ का

७ कौंधना, बिजली का दमकना ।

उ०—बावेली ए धुर माही गुदळा गहर । काळी नै पीळ मे चमकी बीजळी ।—लो गी

चमकणहार, हारौ (हारी), चमकणियौ—वि० ।

चमकाणौ, चमकाबौ, चमकावणौ, चमकावबौ—क्रि०स० (प्रे०रू०)

चमकिओडौ, चमकियोडौ, चमक्योडौ—भू०का०कृ० ।

चमकीजणौ, चमकीजबौ—भाव वा० ।

चमकतेज-स०पु०यौ०—एक प्रकार का घोडा (शा हो)

चमकदमक-स०स्त्री०यौ०—कान्ति, दीप्ति, तडकभडक, ठाटबाट ।

चमकदार-वि०यौ०—कांति या आभायुक्त, चमकीला, भडकीला ।

चमकवाय-स०पु०—ऊटो मे होने वाला एक रोग विशेष जिसमे ऊट खडा-खडा यकायक चौंकता है या भाग जाता है ।

चमकाणौ, चमकाबौ-क्रि०स०—१ प्रकाशित करना, चमकाना २ कान्ति लाना, उज्ज्वल करना ३ प्रसिद्ध करना, कीर्ति फैलाना. ४ भडकाना, प्रभावशाली करना ५ भय दिखाना, डराना, सशकित करना ।

उ०—भर सकतीपुर पे भीम प्राण सुरताण सरायौ गाजे घड गज रूप जीत आलम चमकायौ ।—नैणसी

चमकाणहार, हारौ (हारी), चमकाणियौ—वि० ।

चमकायोडौ—भू०का०कृ० ।

चमकायणौ, चमकायबौ—रू०भे० ।

चमकाईजणौ, चमकाईजबौ—कर्म वा० ।

चमकणौ—अक०रू० ।

चमकायोडौ-भू०का०कृ०—चमकाया हुआ (स्त्री० चमकायोडी)

चमकावणौ, चमकावबौ—देखो 'चमकाणौ' (रू भे)

चमकावणहार, हारौ (हारी), चमकावणियौ—वि० ।

चमकाविओडौ, चमकावियोडौ, चमकाव्योडौ—भू०का०कृ० ।

चमकावीजणौ, चमकावीजबौ—कर्म वा० ।

चमकणौ—अक०रू० ।

चमकावियोडौ—देखो 'चमकायोडौ' (स्त्री० चमकावियोडी)

चमकियोडौ-भू०का०कृ०—१ चमका हुआ, प्रकाशित, उज्ज्वल २ कांति प्राप्त किया हुआ, आभा प्राप्त किया हुआ ३ कीर्ति प्राप्त किया हुआ, यश प्राप्त किया हुआ ४ भडका हुआ ५ भयभीत, सशकित (स्त्री० चमकियोडी) देखो 'चमकणौ'

चमकीलौ-वि०पु०—(स्त्री० चमकीली) १ चमकदार, चमकने वाला, प्रकाश युक्त, जिसमे चमक हो २ आभायुक्त, कांतियुक्त ।

चमकौ—देखो 'चमकौ' (रू भे)

उ०—मुळक मुळक बोली मारवी, सेझ पधारौ कत । जिहै दिस नै चमकौ हुवौ, वीजळ खिवी क दत ।—ढो मा

चमक्कणौ, चमक्कबौ—देखो 'चमकणौ' (रू भे)

चमक्की-स०स्त्री०—तलवार, कृपाण (ना डि को)

चमक्कौ—देखो 'चमकौ' (रू भे)

चमगादड–स०स्त्री० [स० चर्मचटका] एक उडने वाला जतु जिसके चारो पैर परदार होते हैं। यह चूहे की आकृति का होता है। यह उडता है किन्तु पक्षी की जाती मे इसकी गणना नही होती। यह अडे नही देता अपितु बच्चे देता है। यह केवल रात्रि को ही बाहर निकलता है। दिन मे किसी वृक्ष या खडहर के अधकारयुक्त भाग मे उलटा लटकता रहता है।

मुहा०—चमगादड होणौ—दोनो पक्षो में रहने वाला होना।

चमड—देखो 'चमडौ' (रू भे) २ देखो 'चमडपोस' (रू भे)

चमडपोस–म०पु०—वह हुक्का जिसके नीचे का हिस्सा चमडे का बना हो। उ०—दारू मास दपट्ट अमल अणमाप अरोगै, चमडपोस रै चीठ भवर मादक सुख भोगै।—ऊ का

चमडी—देखो 'चामडी' (रू भे)

मुहा०—चमडी उधेडणी—चमडी उतार डालना, बहुत मारना, बहुत कठोर दण्ड देना।

चमडौ–स०पु० [स० चर्म+रा०प्र०डौ] शरीरधारियो के शरीर का ऊपरी आवरण जिसके कारण उनके मास, नसें आदि दिखाई नही देती। चर्म, त्वचा।

अल्पा०—चमडी, चामडी।

रू०भे०—चामडौ।

चमचम—देखो 'चमाचम' (रू भे) उ०—१ ऊचा-ऊचा धोरा म्हारा, उजळी निरमळ रेत। चमचम चमके चादणी, ज्यू चादी रा खेत।
—लो गी

उ०—२ ऐ सहेली म्हारी गरजत बदळी आवै, चमचम चमचम चमके बिजळिया, ठडी लहर सुहावै।—लो गी

चमचमाट–स०स्त्री०—१ चमक दीप्ति, तेज, प्रकाश २ चकाचौंध उत्पन्न करने वाली चमक। उ०—बरछिया री अणी चमचमाट जु करै छै।—वेलि टी

चमचमाणौ, चमचमावौ–क्रि०अ०—१ चमकना, दमकना, जगमगाना। क्रि०स०—२ चमकाना, चमक लाना।

चमचमौ–स०पु०—मिर्च-मसालायुक्त तीक्ष्ण स्वाद का खाद्य, नमकीन पदार्थ।

वि०—१ तीक्ष्ण स्वाद वाला, नमकीन २ चमक-दमकदार, चमक-युक्त।

चमचाटक–म०स्त्री० [स० चर्मचाटक] चमगादड। उ०—कटथा चक्र झाटक हेक रकाव, वणै चमचाटक वेख नवाब।—मे म

वि०वि०—देखो 'चमगादड'।

चमची–स०स्त्री०—१ छोटा चम्मच २ आचमन का पात्र, आचमनी।

चमचेड—देखो 'चमगादड' (रू भे)

चमचौ–स०पु० [फा० चमचा] चम्मच।

अल्पा०—चमची।

चमजुई, चमजू–स०स्त्री०यौ० [स० चर्म+युका] एक प्रकार की बहुत छोटी जू या कीडा जो पशुओ या मनुष्यो के शरीर के बालो की जडो मे उत्पन्न हो जाता है।

चमटकार—देखो 'चमत्कार' (रू भे)

चमटी—देखो 'चमठी' (रू भे)

चमटौ—देखो 'चिमटौ' (रू भे)

चमठाणौ, चमठावौ–क्रि०म०—कान ऐंठना, कान मरोडना।

उ०—चाहे जितरौ चीख, मूढ सला' मानै नही। सहजे आसी सीख, चमठाया सू चकरिया।—मोहनराज साह

चमठी–स०स्त्री० [स० मुचुटी] चुटकी। उ०—या कुमरांती कत री, और न पूगै ओज। चमठी खाली होवता, नमठी चाली फौज।
—वी.स.

चमठुणौ, चमठुबौ–क्रि०स०—१ चुटकी मे पकडना।

उ०—किलमायुध हुट्ठिय सायक पट्ठिय चाप चमट्ठिय जोर दये।
—ला.रा.

२ चुटकी भरना।

चमतकार—देखो 'चमत्कार' (रू भे) उ०—बीरा रस तमक पढण धुन चमतकार पर। अरथामस 'पाल' द्रुत दरस तात पर।—पा प्र

चमतकारी—देखो 'चमत्कारी' (रू भे)

चमतवदी–स०स्त्री०—एक प्रकार की तलवार।

चमत्करण–स०पु० [स०] चमत्कार करने या घटने की क्रिया।

चमत्कार–स०पु० [स०] १ आश्चर्य, विस्मय २ आश्चर्य का विषय, विचित्र घटना, अद्भुत व्यापार ३ करामात।

रू०भे०—चमटकार, चमतकार।

चमत्कारिक–वि० [स० चमत्कारक] १ चमत्कार प्रकट करने वाला, विलक्षणता दिखाने वाला. २ विस्मयपूर्ण। उ०—सो आपरा स्वामी रौ दीधौ अपूरब चमत्कारिक फळ राणी अनगसेना नै जार रै भेट कीधौ।—व.भा

चमत्कारी–वि० [स०] चमत्कार दिखाने वाला, अद्भुत, विचित्र।

चमन–स०पु० [फा०] १ हरी क्यारी. २ उपवन, बगीचा, उद्यान, फुलवारी।

वि०—रौनकदार, सरसब्ज, गुलजार।

चमनी—देखो 'चिमनी' (रू भे)

चमर–स०पु० [स० चामर] १ चॅवर। उ०—हुता चमर हलिया, अधिक रगराज उछाहा। जोए सहर जलूस, उरड गहमह उच्छाहा।—सू प्र

२ घोडे के सिर पर लगाई जाने वाली कलगी ३ प्रत्येक चरण में २६ मात्रा का मात्रिक छद विशेष (ल पि)

[स०] ४ एक प्रकार का मृग।

चमरक, चमरख–स०स्त्री०—चरखे के आगे की ओर छोटी पिढई के आसपास की खूटियों मे लगी रहने वाली मूज या चमडे की बनी हुई चकती जिसमे होकर तकुआ घूमता है।

चम्माळीसे'क—देखो 'चमाळीसेक' (रू भे)
चम्माळीसौ—देखो 'चमाळीसौ' (रू भे)
चय-स०पु० [स०] १ समूह, झुंड (अ मा), उ०—सायर जळ कपि केत सर, पंचाळी चय चीर। यासू मोजा आपरी, वधती 'जेहळ' बीर।—वा दा
२ गढ (ह ना) ३ दिक्पाल, दिग्गज। उ०—१ चय तजि चक्क हुवै वीर हक्क, कटक्क कहाक हुवै बहु हाक।—सू प्र.
उ०—२ चय ताम छुडत चक्क।—सू प्र
स०स्त्री० [रा०] ४ धैर्य, शान्ति।
चयन-स०पु०—१ सग्रह २ चुनने का कार्य, चुनाई ३ क्रम से लगाने की क्रिया।
चयार-वि० [स० चत्वार] चार। उ०—वेद चयार ससार विध मय ख्यात सबै भरा, जीता भारत इळ जवर पाडू पाचू परा।—प्र प्र
स०पु०—चार की सख्या।
चर-स०पु० [स०] १ गुप्त रूप से किसी रहस्य या भेद का पता लगाने के लिये नियुक्त व्यक्ति, गुप्तचर २ किसी विशेष कार्य से कही भेजा जाने वाला व्यक्ति, दूत। उ०—१ चर बहुवै दिस नृपत चलावै, पटभर सेत रग नह पावै।—सू प्र उ०—२ ग्रद्धी के घरियार चर पत्र लगाया। धूजि थरत्थर नाजरूं अवरोध चलाया।
—व भा
३ खजन पक्षी ४ मगल, भौम ५ पैदल व्यक्ति।
उ०—धू ध्यान धरदे, पच वरसदे, छोड चलदे राजदे। तव नृपत सुनदे, चर पटयदे, सिर पदवदे नारदे।—भक्तमाळ
६ रेत, धूलि, रज (अ मा) ७ सूअर ८ हाथी का अनुचर ९ चोर १० वह जो चलता हो।
यौ०—निसचर, अनुचर।
११ ज्योतिष मे देशातर जो दिनमान निकालने मे सहायक होता है १२ पशुओ के घास चरने की क्रिया का भाव १३ पशुओ का खाद्य पदार्थ, घास। उ०—इरा जमीन री चर चोखी कोनी जिणसू वळद थाकोडा है।
१४ फलित ज्योतिष के २८ योगो मे से एक (ज्योतिष बाळबोध)
१५ दास, सेवक। उ०—हे पती! आज आपरी वेगो रात्री वदीत लुवा विना ही जागणो और चर (चरवादार) घोडा नै वेगो कसियो तिणसू म्हानै उनमान हुवै है के कोई पाहुणा मिळिया है।—वी स टी
[अनु०] १६ कागज, कपडा आदि फटने का शब्द (रू भे 'चरड')
वि०—आप से आप चलने वाला २ एक स्थान पर नही रहने वाला, अस्थिर ३ खाने वाला, आहार करने वाला।
चरक-स०पु० [स०] १ चर, दूत, अनुचर २ वैद्यक शास्त्रो के अनुसार वैद्यक के एक प्रसिद्ध आचार्य जिनका रचा हुआ ग्रथ 'चरक सहिता' प्रसिद्ध ग्रथ है ३ चरक सहिता नामक ग्रथ।
४ देखो 'चरख' (रू भे)
चरकचूडी—देखो 'चकचूदियौ' (३, शेखावाटी)
चरकटौ-स०पु० हाथियो का चरवादार।
वि०—नालायक, नीच।
चरकसहिता-स०स्त्री०यौ० [स०] चरक ऋषि का बनाया हुआ प्रसिद्ध वैद्यक ग्रथ।
चरकाई-स०स्त्री०—चटपटापन, मिर्च का स्वाद। उ०—चरकाई, इरा भाति रा सत्तर भख भोजन कहीजै, अठारमो ठडो पाणी।
—रा.सा स
चरकी कौळी-स०स्त्री०—देवी को बलि दिया जाने वाला बकरा आदि, मास (विलो० 'मीठी कौळी')
चरकीन-स०स्त्री० [अ०] टट्टी, पाखाना, विष्ठा। उ०—चुगली उगली चीज है, चुगली है चरकीना, काग हुवै कै कूतरो, इरारे रस आधीन।
—बा दा.
वि०—निकृष्ट, हीन, अधम।
चरकू-फरकू, चरकू-मरकूं-स०पु०यौ० [अनु०] १ चटपटा व्यजन विशेष। २ एक ध्वनि विशेष। उ०—ताकू तेरो सोवणो, लाल गुलावी माळ। चरकू-मरकू फिरै घेरणी, मघरी मघरी चाल।—लो गी
चरकौ-वि०—१ तीक्ष्ण, चरपरा, तेज २ नमकीन, मसालायुक्त
चरकौ-फरकौ, चरकौ-मरकौ—देखो 'चरकू फरकू' (रू भे.)
चरक्ख, चरख-स०स्त्री०—१ तोप खेंचने की गाडी। उ०—धुवे नाळ अरावा 'चरक्खा' बोम गोम धूजै जगा जैत वारा सदा करे खळा जेर।—अज्ञात
[फा० चर्ख] २ देखो 'चरखी' (रू भे)। उ०—रमै वसत राजद पतग चरखा अप्पाळा।—सू प्र
स०पु०—३ एक प्रकार का घोडा (शा हो)
चरखणौ, चरखबौ-क्रि०अ०—पहिये के गतिमान होने पर उत्पन्न होने वाली ध्वनि। उ०—वळदा री रे वीरा वाजी छै टाळ, गाड चरखता म्हे सुण्या जे।—लो गी
चरखलियौ, चरखलौ, चरखियौ—१ देखो 'चरखौ' (अल्पा. रू.भे.)
उ०—चरकू-मरकू फिरै घेरणी, मघरो मघरो चाल। चाल रे चरखला, हाल रे चरखला।—लो गी
२ गन्ने का रस निकालने का यत्र।
चरखी-स०स्त्री०—१ तोप को खेंचने वाली गाडी २ तोप ३ पहिये की तरह घूमने वाली कोई वस्तु ४ कूए से पानी निकालने की गराडी, गिर्री ५ सूत, डोर आदि लपेटने की चकरी ६ छोटा चरखा ७ कुम्हार की चाक, चक्र ८ कपास ओटने की बेलनी, ओटनी ९ वह आतिशबाजी जो छूटने के बाद खूब चक्कर लगाती हुई घूमती है।
उ०—लोक भणे माहुति व्रत लेखै, सूर महा त्या हूत विसेखै। कै सरकै, सहजै अणकपै, चरखी फूलझडी भय कपै।—रा रू
१० मस्त ऊट के दातो के बजने की क्रिया या ढग।

उ०—चगळके दत चरखी चलाय, खिज रथा दिवाणा भग जाय ।
—पे रू

११ मूज आदि की रस्सी बनने का यंत्र १२ प्राचीन काल में मृत्यु-दड देने के लिये उपयोग मे लाया जाने वाला एक यंत्र ।
वि०वि०—देखो 'गडगडी' ।
१२ वह गिर्री जिस पर पतग की डोर लपेटी जाती है। यह बास की कमचियो की बनी होती है १३ चक्रीदार आतिशबाजी की तरह का बारूद का एक उपकरण विशेष जिसमे एक बास के डडे के ऊपर दो अन्य बारूद मे भरी बास की नालिया + या X के आकार मे बाधी जाती है और जिसे किसी उन्मत्त हाथी को वश मे करने के लिए उसके सामने चलाया जाता है ।
वि०वि०—जब उन्मत्त हाथी काबू से बाहर हो जाता है और उसे वश मे करने के अन्य सभी प्रयत्न असफल हो जाते हैं तो इस बारूद के उपकरण मे पलीता लगा दिया जाता है और इसे हाथी के सामने कर दिया जाता है और वत्ती मे पलीता लगाते ही जोर से धडाके के साथ आवाज होती है और बारूद की नालिया चक्र की भांति जोर से घूमती हुई हाथी के सामने घूआधोर उत्पन्न कर देती हैं ।
यौ०—चरखीदार ।

चरखेरी गळखोडी—स०पु०—कुश्ती का एक पेच ।

चरखो—स०पु०—१ लकडी का एक प्रकार का यंत्र जिसके द्वारा ऊन या रूई को कात कर धागा बनाया जाता है । चरखा ।
क्रि०प्र०—कातणी, चलणी, चलाणी ।
कहा०—भू रे चरखा भू, घर मे मालक थूं—चरखे, तू चक्र चला या आवाज कर कारण कि घर मे तू ही मालिक है । जिस पर जीविका आधारित होती है उसका क्रियाशील या गतिशील होना आवश्यक है ।
२ पानी खीचने का रहट ३ सूत लपेटने की गिर्री, गराडी, चरखी ४ बडा या बेडौल पहिया ५ कोई टटा या झझट का काम. ६ कुश्ती का एक पेच ।

चरख्यौ—१ देखो 'चरखलो' (रू.भे.)
२ गन्ने पेलने का एक यन्त्र, कोल्हू । उ०—रहट फिरै चरख्यौ फिरै, पिण फिरबा मे फेर । बो तो बाड हरघा करै, औ छूता रो ढेर ।—महाराजा चतुरसिंह

चरड—स०स्त्री० [अनु०] १ एक ध्वनि विशेष जो बैलगाडी के चलने से बहुधा उसके पहिये द्वारा उत्पन्न होती है २ नई जूती पहिन कर चलने से उत्पन्न ध्वनि ३ देखो 'चर' (१६, रू.भे)
यौ०—चरड-मरड ।
वि०—लाल । उ०—खीज चख चरड नख बरड अधक रग, भडा हडबड बरड घाव भाराथ ।—अज्ञात

चरडको, चरडकौ—स०पु०—१ शरीर पर तेज गर्म धातु के स्पर्श से होने वाला दाह का चिन्ह या दर्द ।
मुहा०—चरडको लागणो (किसी का कथन)—बहुत बुरा लगना ।
२ गर्म धातु के स्पर्श से त्वचा के जलने या दाह चिन्ह अकित होने की ध्वनि ३ शरीर पर दाह चिन्ह लगाने के लिए गर्म की हुई छड ।

चरडणो, चरडबो—क्रि०स०—१ साग छौंकना २ किसी गर्म छड आदि मे शरीर के किसी भाग को दग्ध करना ३ छिद्रने भागों के पोतर मे पानी पीना ४ क्रोध करना, कोप करना ।

चरडमरड—देखो 'चरड' (रू भे)

चरडो—स०पु०—एक छोटा पक्षी जो प्राय झुड बना कर चलता है और खेती को बहुत हानि पहुँचाता है ।

चरच—स०पु० [स० चर्चन] चर्चन, लेपन, लेप ।

चरचणी—स०स्त्री०—अनामिका अगुली ।

चरचणो, चरचबो—क्रि०स० [स० चर्चन] १ उबटन लगाना, लेप करना ।
उ०—अतर गुलाब अबीर, सोभ जोनिया सरीखा । चन्नण केसर चरच, कियो उच्छव सखरीका ।—रा रू.
२ अध्ययन करना, समझना ३ चरचा करना । उ०—ग्यानी पुरमा रा किया, ग्यानी चरचै ग्रथ ।—बाकीदास
४ लथपथ होना । उ०—पातल तूझ तणी पटियाळग, रुधिर चरचियो सदा रहै ।—महाराणा परताप रो गीत
५ पूजा करना, अर्चन करना । उ०—जिका काट माजिया छांट ऊजळ जळ छोळा । रचि सिंदूर चितराम चरचि आणग रग चोळा ।
—मे म
चरचणहार, हारो (हारी), चरचणियो—वि० ।
चरचवाडणो, चरचवाडबो, चरचवाणो, चरचवाबो—प्रे०रू० ।
चरचाडणो, चरचाडबो, चरचाणो, चरचाबो, चरचावणो, चरचावबो
—क्रि०स० ।
चरचिओडो, चरचियोडो, चरच्योडो—भू०का०कृ० ।
चरचीजणो, चरचीजबो—कर्म वा० ।

चरचर—देखो 'चराचर' (रू भे) उ०—बग जतु अवतंस भ्रमन करता चरचर का ।—दुरगादत्त बारहठ

चरचराणो, चरचराबो—क्रि०अ०—१ चर-चर करते हुए टूटना २ नमक, क्षार या अन्य तीक्ष्ण पदार्थ लगाने से शरीर के घाव या अन्य छिले स्थान मे पीडा होना, दर्द करना, पीडा होना ।

चरचराहट—स०स्त्री० [अनु०] १ चर-चर की ध्वनि २ किसी वस्तु के चर-चर शब्द के साथ टूटने से उत्पन्न ध्वनि ३ दर्द विशेष ।

चरचरिका—स०स्त्री० [स० चर्चरी] १ बसत ऋतु में गाया जाने वाला गायन २ एक रागिनी (सगीत)

चरचरी—स०स्त्री०—१ बसत ऋतु मे गाया जाने वाला गीत विशेष, फाग अथवा होली का हुल्लड २ ताल का एक मुख्य भेद ३ आमोद-प्रमोद, क्रीडा ४ चीची की आवाज करने वाला एक जतु विशेष ५ एक वर्ण वृत्त (छद) का नाम (र.ज.प्र)

चरचरौ-वि०पु०(स्त्री० चरचरी) १ तीक्ष्ण स्वाद का, नमकीन, चरपरा। उ०—लूगा सरीसी प्यारी घरा चरचरी ओ राज, राज ढोला राखोनी थारै मुखडै रै माय।—लो गी

२ तेज मिजाज का. ३ सुन्दर, खूबसूरत, सलौना।

चरचा-स०स्त्री० [स० चर्चा] १ शास्त्रार्थ, वाद-विवाद।

क्रि०प्र०—करणी, चालणी, होणी।

२ जिक्र, वर्णन, बयान। उ०—धन तन मिटसी धाम, नाम काम दुय ना मिटै। गुरा अवगुरा सब गांम, चरचा करसी चकरिया।
—मोहनराज साह

क्रि०प्र०—ऊठणी, करणी, चलणी, चालणी, होणी।

३ वार्तालाप, वातचीत। उ०—गोप गाया त्रिया सहत वसिया गिरत। चिरत अदभुत तणी करत चरचा।—वा दा.

क्रि०प्र०—चलणी, चालणी, छिडणी, छेडणी, होणी।

४ वक-झक, वकवक, व्यर्थ का प्रलाप। उ०—भली बुरी जो वात, होणी थी सो हो गई। रोज वही दिन रात, चरचा खोटी चकरिया।
—मोहनराज साह

क्रि०प्र०—करणी, छेडणी (मि० 'गागरत')

५ कुबेर की नौ निधियो मे से एक।

चरचाणौ, चरचाबौ-क्रि०स० ('चरचणौ' का प्रे०रू०) १ लेप कराना, उबटन लगाने का कार्य अन्य से कराना। उ०—केसर भरियो बाटको, सूवा अग चरचाऊ रे। मीरा पासी सूवा की रामराती, चरणा चित लगाऊ रे।—मीरा

२ पूजा कराना ३ अनुमान कराना ४ अध्ययन कराना, समझाना ५ लथपथ कराना।

चरचायोडौ-भू०का०कृ०—१ लेप कराया हुआ २ पूजा कराया हुआ ३ अध्ययन कराया हुआ ४ पूर्ण लथपथ किया हुआ।

(स्त्री० चरचायोडी)

चरचारी-वि०—१ चर्चा करने वाला, विषय वर्णन करने वाला, जिक्र करने वाला २ निंदक।

चरचावणौ, चरचावबौ—देखो 'चरचाणौ' (रू भे.)

चरचावणहार, हारौ (हारी), चरचावणियौ—वि०।

चरचाविओडौ, चरचावियोडौ, चरचाव्योडौ—भू०का०कृ०।

चरचावीजणौ, चरचावीजबौ—कर्म वा०।

चरचावियोडौ—देखो 'चरचायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चरचावियोडी)

चरचित-वि० [स० चर्चित] १ लेपन या उबटन लगाया हुआ २ पूजा किया हुआ, पूजित ३ वर्णित।

चरचियोडौ-भू०का०कृ०—१ चर्चित २ पूजा किया हुआ ३ उबटन लगाया हुआ ४ अध्ययन किया हुआ ५ लथपथ।

(स्त्री० चरचियोडी)

चरच्चणौ, चरच्चबौ—देखो 'चरचणौ' (रू भे.) उ०—भ्रकुट्टिहि भाव जिसौ निल भख्खु, चरच्चयौ जाणि रगत्तहि चख्खु।
—रा ज रासौ

चरच्चियोडौ—देखो 'चरचियोडौ' (रू भे) (स्त्री० चरच्चियोडी)

चरज-स०स्त्री०—पक्षी विशेष। उ०—लगतू रमतू के आतुरी चरज सींचाणू सो लाग आतुरी।—सू प्र

चरजा-स०स्त्री०—देवी की स्तुति जो लय के साथ गा कर की जाती है।

वि०वि०—इसके दो भेद होते हैं—करुणाजनक पुकार को 'घाडउ' एव अन्य प्रकार की मागलिक या श्रद्धापूर्वक की गई स्तुति को 'सीघाऊ' कहते हैं।

चरट-स०पु० [स०] खजन पक्षी।

चरणग, चरण-स०पु० [स० चरण] १ पैर, पाव (अ मा)

उ०—१ मात चरणग करग प्रणमग। सुजस गग रग कथग सरबग।
—सू प्र

उ०—२ चरणे चामीकर तणा चूडाणणि, सज नूपुर घूघरा सजि। पीळा भमर किया पहराइत, कमळतणा मकरद कजि।—वेलि

मुहा०—१ चरण छूणा—अभिवादन करना, नमस्कार करना, खुशामद करना २ चरण पडणा—आगमन होना, चरण पर माथा रखना, विनती या सिफारिश करना ३ चरण लागणौ—देखो 'चरण छूणा'।

यौ०—चरणचिन्ह, चरणदास, चरणदासी, चरणपादुका, चरणपीठ, चरणसेवा, चरणाम्रत।

२ किसी छद या श्लोक आदि का एक पद।

यौ०—चरणगुप्त।

३ किसी पदार्थ या वस्तु का चौथाई भाग, चतुर्थांश ४ मूल, जड ५ गमन, जाना ६ चरने का काम, भक्षण ७ मारे गये पशु की खाल उतार कर मास को अलग करते समय उसके आमाशय से निकाला जाने वाला मल।

चरणगाठ-स०स्त्री०यौ०—ऐडी के ऊपर टखने के दोनो ओर कुछ उभरी हुई हड्डी।

चरणगुप्त-स०पु०यौ० [स०] कोष्ठक मे अक्षर भर कर बनाया जाने वाला चित्रकाव्य जिसके कई भेद होते हैं।

चरणचतु-स०पु०—हाथी (डिं ना.मा)

चरणचिन्ह-स०पु०यौ० [स०] १ कीचड, रेत या बालू आदि पर पडे हुये पैर के तलुए का चिन्ह, पैर का निशान २ किसी महान पुरुष के पदचिन्ह जो पत्थर खोद कर बनाये जाते हैं और उनकी पूजा की जाती है (मि० 'पगलिया' १) ३ पैर के तलुए की रेखायें।

चरणदास-स०पु०—१ एक प्रसिद्ध महात्मा का नाम जिनका जीवन-काल स० १७६० से १८३९ बताया जाता है। इन्होने अपना नया सप्रदाय चलाया था जिसके अनुयायी चरणदासी साधू कहलाते हैं २ सेवक।

चरणदासी-स०पु०—१ महात्मा चरणदास द्वारा प्रचलित सप्रदाय का अनुयायी साधू।

स०स्त्री०यौ० [स० चरण+दासी] २ जूती, पन्ही ३ सेविका।

चरणई–स०पु०—गरुड पक्षी (ना डिं को)

चरणप–स०पु०—वृक्ष, पेड, तरु (डि.को)

चरणपादुका–स०स्त्री०यौ० [स०] १ खडाऊ २ पत्थर पर बने चरण-चिन्ह जिनकी प्राय पूजा की जाती है।

चरणपीठ–स०स्त्री०यौ० [स०] चरणपादुका, खडाऊ।

चरणम्रत—देखो 'चरणाम्रत' (रू भे)

चरणसेवा–स०स्त्री०यौ०—१ सेवा-सुश्रूषा, बडे लोगो की सेवा २ पैर चापने या दबाने का कार्य।

चरणा-अम्रत—देखो 'चरणाम्रत' (रू भे.) उ०—हाथ दीधा जिकै जोड आगळहरी, उदर परसाद चरणा-अम्रत पाय। दीधा जिकै 'किसन' पर-दछ फिर, नाच नाच राघव आगै सफळ कर तन नरा। —र ज प्र

चरणाजुध–स०पु० [स० चरणायुध] मुर्गा।

चरणाद्रि–स०पु० [स०] काशी और मिर्जापुर के बीच मे स्थित चुनार नामक स्थान।

चरणादूहो—एक प्रकार का मात्रिक छद विशेष जिसके प्रथम और द्वितीय चरण मे सोलह-सोलह मात्राएँ और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण मे ग्यारह ग्यारह मात्राएँ हो।—र ज प्र

चरणानुग–वि० [स०] १ किसी बडे और विज्ञ के साथ या उसकी शिक्षा के अनुसार चलने वाला अनुगामी। शरणागत।

चरणाम्रत, चरणाम्रति–स०पु०यौ० [स० चरणाम्रत] १ किसी महात्मा, बडे आदमी या देव-प्रतिमा के चरणो का धोया हुआ जल, पादोदक। उ०—उदर पवित्र करिस अपरपर। चरणाम्रत तो घरै चक्रधर। —ह र

मुहा०—१ चरणाम्रत देणौ—कोई चीज बहुत कम मात्रा मे पीने के लिए देना, किसी पूज्य व्यक्ति का चरण धोकर देना, शालिग्राम का नहलाया जल देना. २ चरणाम्रत लेणौ—किसी बडे का चरण धोकर पीना या आचमन करना, शालिग्राम का धोया जल पीना या आचमन करना।

२ दूध, दही, घी, शहद और चीनी—इन पाच पदार्थो को मिला कर बनाया हुआ देव-प्रसाद जो देव-पूजा आदि के बाद प्रसाद रूप मे सेवन किया जाता है।

कहा०—चरणाम्रत का गटका नै मटे चौरासी रा भटका—देव-प्रसाद चरणामृत का महत्व।

चरणायका–स०स्त्री०—चाणक्य कृत राजनीति शास्त्र।

चरणायुध, चरणायुधक–स०पु० [स०] मुर्गा।

चरणारद्ध–वि० [स० चरणार्द्ध] १ किसी वस्तु का आठवा भाग। २ किसी छद या श्लोक का आधा चरण या पद।

चरणारवद, चरणारविंद–स०पु०यौ०—कमल के समान कोमल पैर, चरण। उ०—'गुमाना' सुतन वीनती करै गरज री, दीनती अरज री भाव दासा। जळधरनाथ महाराज अण जीव रै, एक चरणारवद तणी आसा।—महाराजा मानसिंह

चरणि–स०पु०—१ आदमी, मनुष्य २ किसी छद आदि का एक पद, चरण या पक्ति (पिंगल)

चरणिया–स०पु० [बहु०] शिकार किये हुए पशु के पाव।

चरणियौ–वि०—१ चरने वाला २ विचरण करने वाला ३ देखो 'चरण्यौ' (रू भे)।

चरणी—१ देखो 'चरणि' (रू भे)

स०स्त्री०—२ चरने की क्रिया का भाव।

वि०—१ चरने वाला (पशु) २ भक्षण करने वाली।

उ०—चरणी तूह निसाचरा, दारो म्रिन महदेस। 'करणी' सुख मह दिन करे, हरणी दुख हमेस।—अज्ञात

चरणोई–स०स्त्री०—१ घास। उ०—१ तद महळ अरज करी जे पांणी री निवास छै, घणा रूखा री भाटी छै। मोकळी चरणोई छै मो सूअर दस दिन ताई आवै नही।—कुवरसी सांखला री वारता

उ०—२ तठै खड री दुख हुवो नै पाटण समीयो अवल चरणोई घणी हुई।—नैणसी

२ पशुओ के चरने-फिरने का स्थान या घास चरने की भूमि ३ पशु द्वारा घास खाने का ढग।

चरणोदक–स०पु० [स०] चरणामृत।

चरणौ–स०पु०—एक प्रकार का ढीला पायजामा। उ०—सिकार मुरगाबी ऐकठी कर तळाव मू बाहर पधारजै छै। लीली पोता दूर कीजै छै। चरणा पहरजै छै। मू किण भात रा चरणा छै ? इळायचै रा, मिसरू रा, गुलबदन रा, मालनेगी रा, बाफना रा चाळीस-चाळीस हाथा रा छै।—रा मा म

चरणौ, चरबौ–क्रि०स० [म० चर्] १ पशुओ द्वारा खेत या मैदान में घास आदि खाना, घास खाना। उ०—१ नागरवेली नित चरइ, पाणी पीवइ गग।—ढो मा. उ०—२ भेद कहि लाजा मरा, थानै आसी रीस। थारै आगण बेलडी, थे नीरो हूं चरीस।—र.रा

मुहा०—अकळ चरण नै जावणी—बेवकूफी का कार्य करना।

कहा०—१ चरतिया अर उछरतिया कै सागै होणौ—सब के साथ चलने को तैयार रहना २ चरै फिरै जकै री काई मरै—जो फिरता है और खाता है वह भूखो नही मरता।

२ विचरना, घूमना। उ०—मारवणी मनि रगि, वाटइ तिणि आवी वहइ। कुभा एकणि सगि, तालि चरती दिट्ठिया।—ढो मा

३ भक्षण करना, खाना। उ०—चरै अगन की पखण आचरै सिव कठ किसू करै सिणगार।—गोरधन कूपावत री गीत

मि०—'चरणी' वि०।

चरण्यौ—१ राज-दरबार मे सामन्तों आदि के पदस्थानो की रक्षा करने वाला २ देखो 'चरणियौ' (रू भे)

चरणहार, हारौ (हारी), चरणियौ—वि०।

चरवाडणौ, चरवाडबौ, चरवाणौ, चरवाबौ, चरवावणौ, चरवावबौ —प्रे०रू०।

चराडणौ, चराडबौ, चराणौ, चराबौ, चरावणौ, चराववौ—क्रि०स० ।
चरिग्रोडौ, चरियोडौ, चरयोडौ—भू०का०कृ० ।
चरीजणौ, चरीजबौ—कर्म वा० ।

चरत—देखो 'चरित्र' (रू भे) उ०—चवा चरत करती चचळ, सारे किया ससारह सबळ ।—कमा बिहारी रौ गीत

चरतणौ, चरतबौ–क्रि०ग्र०—१ ठगना, छलना । उ०—वोह रूपी बोह दीपी वाळी, भूपाळा चाखी नह भाळी । 'पीर' हरौ वर वीर प्रवाळी, चरतै तो जाणू चरताळी ।—कमा बिहारी रौ गीत
२ निंदा करना ।

चरताळौ–वि० (स्त्री० चरताळी) १ चकित करने वाला, पाखडी, धूर्त। उ०—वोह रूपी वोह दीपी वाळी, भूपाळा चाखी नह भाळी । 'पीर' हरौ वर वीर प्रवाळी, चरतै जाणू तो चरताळी ।
—कमा बिहारी रौ गीत
२ अद्भुत चरित्र रखने वाला वीर ।
उ०—इतरी वात सुणि वीरमदे नै रीस ऊपनी । तिकौ पाखती भैसा रै ग्राय चरताळै कडिया सू तरवार वाही, तिकौ सीग नै माथौ वाढि दोय वटका कर नाख्या ।—वीरमदे सोनगरा री वात
३ देखो 'चरिताळौ चिरताळौ' (रू भे)

चरतियोडौ–भू०का०कृ०—१ ठगा हुग्रा, छला हुग्रा २ निंदा किया हुग्रा (स्त्री० चरतियोडी)

चरन—देखो 'चरण' (रू भे)

चरनक्षत्र, चरनखत्र–स०पु०यौ० [स० चरनक्षत्र] स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण आदि कई नक्षत्र जिनकी सख्या विभिन्न मतानुसार अलग-अलग है ।

चरनदासी—देखो 'चरणदासी' (रू भे)

चरनाकूळक–स०पु०—प्रत्येक चरण मे सोलह मात्रा का मात्रिक छद । (र ज प्र.)

चरनादूहौ—देखो 'चरणादूहौ' (रू भे)

चरनिसा–स०पु०यौ० [स० निशा+चर] राक्षस, निशाचर ।

चरपट–स०पु०—१ चारण कुलोत्पन्न एक नाथ सम्प्रदाय का सिद्ध पुरुष जो चौरासी सिद्धों मे से एक माना जाता है २ एक प्रकार का मात्रिक छद विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे सोलह मात्रा होती हैं ।

चरपराणौ, चरपराबौ–क्रि०ग्र०—शुष्कता के कारण घाव मे तनाव या सिकुडन होकर दर्द करना । घाव का चर्राना ।

चरपराट, चरपराहट–स०स्त्री०—१ स्वाद की तीक्ष्णता २ घाव आदि की जलन ३ ईर्ष्या, डाह ।

चरपरौ–वि०—१ तीक्ष्ण स्वाद वाला, नमकीन, मसाला युक्त २ चुस्त, तेज, फुर्तीला ३ वाचाल, वातूनी ।

चरबण–स०पु० [स० चर्वण] १ वह भुना हुग्रा खाद्य पदार्थ जो चबा कर खाया जाता है । चबेना २ वह वस्तु जो चबा कर खाई जाय. ३ किसी वस्तु को मुँह मे रख कर बराबर चबाने की क्रिया ।

चरबी–स०स्त्री० [फा०] वैद्यक के अनुसार शरीर की सात धातुग्रो मे से एक जो मास से बनती है । यह पदार्थ कुछ सफेद तथा पीलापन लिये हुए गाढा होता है और प्रायः समस्त प्राणियो के शरीर एवं कुछ पौधो ग्रौर वृक्षो मे पाया जाता है । मेद, वसा ।
मुहा०—१ चरबी चढणी—खूब मोटा-ताजा होना, शरारत सूझना २ चरबी छाणी—देखो 'चरबी चढणी' ।

चरबेचर–स०पु०—१ चराचर, जड ग्रौर चेतन ।
उ०—मनच्छा बीज चलावै मूळ, थयौ चरबेचर सुखम थूळ ।
—ह र.
२ ससार, जगत ।

चरभ–स०पु० [स०] चर राशि, चर गृह ।

चरमर–स०पु०—एक प्रकार का देशी खेल जो एक स्थान पर बैठ कर दो आदमियो द्वारा खेला जाता है ।

चरभवन–स०पु०—चर नामक राशि (ज्योतिष)

चरम–स०पु० [स०] १ ग्रत [स० चर्म] २ चर्म, चमडा ३ ढाल ।
उ०—गज ठणिया घणग्राह, बाह जणिया बादाळक । तणिया करभ तिमीस चरम भणिया चउ चाळक ।—व भा
४ छाल । उ०—द्रुम्म चरम मधु भरे पत्र अकुरे विपुळ वन । फाग राग माधुरे सुरे नर नारि हरे मन ।—रा रू.
वि० [स०] अतिम, हद दरजे का, सर्वोच्च, चोटी का ।

चरमकार–स०पु० [स० चर्मकार] चमडे का काम करने वाला, मोची, चमार ।

चरमकाळ–स०पु०यौ० [स० चरमकाल] अंतिम काल, मृत्यु समय ।

चरमकील–स०पु०यौ० [स० चर्मकील] १ एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर मे नुकीला फोडा निकल ग्राता है जिससे अधिक पीडा होती है । २ बवासीर (ग्रमरत)

चरमचडी–स०स्त्री०—चमगादड, चर्मचटी (डिं को)

चरमणवती–स०स्त्री० [स० चर्मण्यवती] चबल नदी का एक नाम ।
उ०—खीची त्रास मे मूढ होइ लागै जेर वध ही घोडौ चरमणवती क दह मे ठेलियौ ।—व भा.

चरम तित्थयर–स०पु० [स० चरम-तीर्थङ्कर] महावीर स्वामी (जैन)

चरमदळ–स०पु० [स चर्म दल] एक प्रकार का कोढ का रोग । (ग्रमरत)

चरमनग–स०पु०—वह पर्वत जहा सूर्य ग्रस्त होता है, ग्रस्ताचल (व.भा)

चरमफालिका–स०स्त्री—कुल्हाडी, फरसा (डिं ना मा)

चरमराट, चरमराटौ, चरमराहट–स०पु० [ग्रनु०] १ चरमर की ध्वनि. २ घाव के चर्राने की क्रिया ३ चर्राने से उत्पन्न होने वाला दर्द ।
क्रि०प्र०—करणौ, लागणौ ।
कहा०—चरमराटौ तौ मट जाय पण गडबडाटौ नी मटै—घाव का चर्राना तो मिट सकता है परन्तु दिल में चुभी बातों से पडा प्रभाव नही मिट सकता ।

चरमवती—देखो 'चरमणवती' (रू भे)

चरमवरिसारत–स०पु० [स० चरम वर्षारात्र] चातुर्मास का अंतिम समय (जैन)
चरमवस्त्र–स०पु०यौ०—युद्ध की पोशाक, कवच।
चरमावती—देखो 'चरमणवती' (रू भे.)
चरमी—देखो 'चिरमी' (रू भे)
चरमीचोळ–स०पु०—गुघची.के रग का घोडा (शा हो)
चरम्म—देखो 'चरम' (रू भे.)
चरराट—देखो 'चरचराहट' (रू.भे)
चररासि–स०स्त्री०यौ० [स० चर राशि] मेष, कर्क, तुला और मकर नाम की राशिया।
चरराहट–स०पु० [अनु०] १ रात्रि मे एक विशेष जन्तु द्वारा निरन्तर रूप से की जाने वाली ध्वनि। ध्वनि विशेष। उ०—चवरी चरराहट चासरिया, हुड बोलत गूधड़ हालरिया।—पा प्र.
२ देखो 'चरमराट' (रू भे)
चरवण—देखो 'चरबण' (रू भे)
चरवाई—देखो 'चराई' (रू भे)
चरवादार–स०पु०—१ घोडे की देखभाल करने वाला, सईस।
उ०—१ हे पती! आज आपरी वेगी राश्री वदीत हुवा विना ही जागणी और चर (चरवादार) घोडा नें वेगी कसियो तिण सं म्हानें उनमान होवै है कि कोई पाहुणा मिळिया है।—वी.स टा
उ०—२ मो सुणायदं मेंहणा, खेंग नाम घर खार। वूडा वाळी ऊपरै, चढ तू चरवादार।—पा प्र
२ चरवाहा।
चरवौ–स०पु०—१ तावे या पीतल का बना हुआ एक पात्र।
उ०—हाकण रथा सारथी होवै, भीड पड्या होयो भाराय। चोरा तणै सीस दे चरवा, जिण घर धन पटकै जगनाथ।—भक्तमाळ
अल्पा०—चरवी।
२ शिकार किये गये पशु की खाल उतार कर मास अलग करते समय उसके आमाशय को साफ करने की क्रिया।
चरस—१ देखो 'चडस' (रू भे) २ रीति-रिवाज. ३ आनन्द, उत्साह, खुशी। उ०—महाराजा दळ मेलिया, चरम वधे चड-चोट। अधपति पय आया इता, कमध जिता नव कोट।—रा रू
४ एक प्रकार का मादक पदार्थ जो चिलम के साथ प्रयोग किया जाता है। यह गाजे के पेड से निकलता है तथा एक प्रकार का गोद या चेप की तरह का होता है ५ आख (ना डि को)
वि०—श्रेष्ठ, उत्तम। उ०—चत्रभुज व्रजवासी कीध लीला चरस।
—पिं प्र
क्रि०वि०—१ रीति अनुसार २ परपरा से।
चरसी—देखो 'चडसियौ' (रू भे)
चरसौ—देखो 'चडम' (रू भे)
चराई–स०स्त्री०—चराने का कार्य या इस कार्य की मजदूरी।
चराक—देखो 'चिराक' (रू भे.)
चराकी—१ देखो 'चिराक' (रू भे) २ चिराग जलाने वाला व्यक्ति।
चराग—देखो 'चिराक' (रू.भे) उ०—माळा उठ जोत लगी सुरमाग, चगी रग आगण जोत चराग।—मे म.
चराचर–वि० [स०] १ चर और अचर, जड व चेतन।
उ०—राजतणी इच्छा रघुराया, अगिम चराचर जीव उपाया।
—ह र.
२ जगत, दुनिया, विश्व।
चराचरगुर, चराचरगुरु–स०पु०यौ० [स० चराचरगुरु] १ ब्रह्मा. २ परमेश्वर, ईश्वर।
चराणौ, चरावौ–क्रि०स०—१ पशुओ को घास खिलाना. २ विचरण कराना, घुमाना ३ मास को नमक से धोना। ४ भली प्रकार से मास को भेदन कर के उसमे ममाले आदि मिलाना।
उ०—तरै तरै रा दमतां री भात तिका छुग्घा मू मास छुनजे छै। मसाला वेसवार लूण चरायजै छै।—रा सा.स
चराणहार, हारौ (हारी) चराणियौ—वि०।
चरायोडौ—भू०का०कृ०।
चराईजणौ, चराईजवौ—कर्म वा०।
चरायोडौ–भू०का०कृ०—१ चराया हुआ २ विचरण कराया हुआ। (स्त्री० चरायोडी)
चरावण-गाय–स०पु०यौ०—१ गोपाल, श्रीकृष्ण (ना मा) २ परमेश्वर (ह ना)
चरावणी—देखो 'चराई' (रू.भे.) उ०—जै राय फील चरावणी न देवै और पण लाजमे रा जवाब सवाल न करै।
—राठौड अमरसिंह गजसिंहोत री वात
चरावणौ, चराववौ—देखो 'चराणौ' (रू भे)
चरावणहार, हारौ (हारी) चरावणियौ—वि०।
चरावावणौ, चरावाववौ—प्रे०रू०।
चराविओडौ, चरावियोडौ, चराव्योडौ—भू०का०कृ०।
चरावीजणौ, चरावीजवौ—कर्म वा०।
चरावियोडौ—देखो 'चरायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चरायोडी)
चरास–स०पु०यौ० [स० चर+आस] सेवक, चर, दास (अ मा)
चरित्र, चरित्त—देखो 'चरित' (रू भे)
उ०—माइ नमी मनि हरि कू चरित्त, पुरुस पासि कहवाइ चरित्त।
—प प च
चरित–स०पु० [स० चरित्र] १ रहन-सहन, चाल-चलन, आचरण २ काम, करनी, करतूत।
रू०भे०—चरितर।
३ जीवन-चरित्र, जीवनी।
यौ०—चरितनायक, चरितवांन।
४ लीला, चरित्र। उ०—जठै वैताळा रा आस्फाळ, डाकिणी गण

रा डमरू रा डाल्कार, फेरविया रा फेत्कार, प्रेता रा आलाप, राक्षसा रा रास, कुणपा रा कपाळा रा कटकटाहट, चिता रा अगारा केरि चित्र-विचित्र बडो अदभुत चरित देखियो ।—व भा.

५ छल, कपट ६ पाखड, ढोग ।

चरितनायक—स०पु०यो० [स०] वह प्रधान पुरुप जिसके चरित्र का आधार लेकर कोई पुस्तक लिखी गई हो ।

चरितर—स०पु० [स० चरित्र] १ धूर्तता की चाल, बहाना, नखरेबाजी । मुहा०—चरितर दिखाणो—आडवर दिखाना, धूर्तता की चाल दिखाना । २ देखो 'चरित्र' (रू भे)

चरितवान—देखो 'चरित्रवान' (रू भे)

चरितारथ—वि० [स० चरितार्थ] १ वह जिसके अर्थ या अभिप्राय की सिद्धि हो चुकी हो, कृतकृत्य २ जो ठीक-ठीक घटे, जो पूरा उतरे ।

चरिताळो—वि०—१ चरित्र करने वाला लीला करने वाला ।
उ०—कहत 'समान कवर दसरथ रो, वीर वडो चरिताळो ।
—समानवाई

२ देखो 'चरताळो' (रू भे)

चरित्तपुरिस—स०पु०यो० [स० चारित्रपुरुष] चरित्रवान पुरुप (जैन)

चरित पुलाय—स०पु०यो० [स० चरित्रपुलाय] वह साधु जिसका चरित्र निस्सार (दोप सहित) हो (जैन)

चरित्त-बुद्ध—स०पु०यो० [स० चारित्र बुद्ध] चरित्र रूप से बोध प्राप्त (जैन)

चरित्तबोहि—स०स्त्री०यो० [स० चारित्र बोधि] चरित्र रूप से धर्म प्राप्ति करना (जैन)

चरित्तमोह, चरित्तमोहण [स० चरित्रमोह, चारित्रमोहन] चारित्र का अटकाव (जैन)

चरित्तलोय—स०पु०यो० [स० चारित्रलोक] सामायिकादि पाच चारित्र रूप लोक (जैन)

चरित्त, चरित्र—स०पु० [स० चरित्र] १ स्वभाव. २ आचरण, व्यवहार ३ वह जो किया जाय, कार्य, करनी, करतूत, लीला ४ सयम, अनुष्ठान, सदाचार (जैन)
रू०भे०—चरत, चरित, चरित्त, चरित्र ।

चरित्रनायक—देखो 'चरितनायक' (रू भे)

चरित्रवान [स० चरित्रवान] उत्तम चरित्र वाला, सदाचारी, सुआचरण वाला ।

चरिय—देखो 'चरित' (उ र.)

चरियोडो—भू०का०कृ०—१ चरा हुआ, घास खाया हुआ २ विचरा हुआ ३ भक्षण किया हुआ । (स्त्री० चरियोडी)

चरी—स०स्त्री०—१ पशुओ के चरने के लिए जमीदार द्वारा किसानो को विना लगान पर दी गई जमीन २ पीतल या अन्य धातु का एक बरतन जो जल डालने या दूध दुहने के उपयोग मे लिया जाता है । उ०—बीजोडा नै ए मा चरी चरी घीव, बाई नै दीनो ए सासू डोरो तेल रो ।—लो गी

मह०—चरो ।
३ देखो 'चरित्र' (रू भे) उ०—धरमिहिं अचळ वधामणउ ए विधा विलासह चरी ए ।—वि.वि प

चरीय—देखो 'चरित्र' (रू भे) उ०—दीसइ विवह चरीय जाणिज्जय सयण दुज्जण सहावो । अप्पाण चकळिज्जइ, हडिज्जइ तेण पुहवीए ।—ढो मा

चरु—स०पु० [स०] १ हवन या यज्ञ में आहुति दिये जाने के लिये पकाया जाने वाला अन्न २ वह पात्र जिसमें हवन आदि की आहुति का अन्न पकाया जाता है ।
३ देखो 'चरू' (रू भे)
उ०—उण राजा हून नै मो मिआई हुती सो मोनू तीस चरु मोहरा रा भरिया सापिया छै ।—नैणसी

चरुसुकाळ—देखो 'चरूसुकाळ' (रू भे), उ०—चाढण सुजळ उभै कुळ 'चोडो', चरुसुकाळ विरदा घर 'चौंडो' ।—सू प्र

चरूटियो—देखो 'चूटियो' (रू भे)

चरू—स०पु० [स० चरु] १ धातु का बना हुआ एक बरतन विशेष जिसके मुह पर पकडने के लिये कडे लगे होते है । यह प्राय प्राचीन समय मे भूमि मे धन गाडने के उपयोग मे लिया जाता था ।
उ०—१ देगा, चरू, कढाई, कुडछी, खुरपा, डहोला, भरहर, चालणी आदि ।—रा सा स
उ०—२ मदनो कुवरजी रा हुकम पछो हीज भूजाई रा चरू, थाळी, भूजाई री भिणकार, घोडो चहुवाण रामदास री पेस री, परणिया तदि पेसकस कियो ।—द वि.

चरूसुकाळ, चरूसुगाळ—स०पु० यो०—वह उदार पुरुष जो अतिथि-सत्कार करने तथा अनाथो को भोजन कराने का नियम रखता हो ।
वि०वि०—ऐसे व्यक्ति के दरवाजे से कोई व्यक्ति भूखा नही लौट सकता । ऐसा प्रसिद्ध है कि राव चूडा ने भूखी प्रजा को भोजन कराने का प्रण ले रक्खा था, अत चरूसुकाळ उसका विरुद था ।

चरेभरे—देखो 'चरभर' (रू भे)

चरो—स०पु०—वह बछडा जो प्रारभिक अवस्था मे स्तन पान पर रहता है और कभी कभी घास की कोमल पत्ती खाने का प्रयत्न करता है । (पोकरण)

चरचा—स०स्त्री०—क्रिया वह जो किया जाय । आचरण । उ०—आपरा अग्रज री चरचा इण रीति सुणि वगराज गौड हरिचद्र री राणी पण पति रा महा प्रस्थान रै अनतर निज पुत्र गोपीचद रै योही वीतराग जोग रो उपदेस लगायो ।—व भा

चळ, चल—स०पु०—१ दोहा नामक छद का १२ वा भेद जिसमे ११ गुरु वर्ण और २६ लघु वर्ण सहित ४८ मात्रायें होती हैं (र ज प्र) २ शिव (ह ना) ३ विष्णु (ह ना) ४ पारा ५ कपकपी ६ चलने की क्रिया ७ शरीर ८ स्वभाव, प्रकृति (ह ना) ९ सेना (ह ना)

वि०—अस्थायी, चचल, चलायमान। उ०—१ चळ वैभव सपत सुचळ, चळ जोवरण चळ देह। चळाचळी के खेल मे, भला भली कर लेह।—अज्ञात उ०—२ जळ उभळ भळ भळ धार जळ, चळ विचळ दिग्गज अचळ चळ।—र रू.

चळकणी—वि०—चमकने वाला, चमकीला, उज्ज्वल।

चळकणी, चळकबौ—क्रि०अ०—१ चमकना, झलकना।
उ०—थाकी नथ झळके, गाथो थारी चळके ओ।—लो गी
२ चौंकना।
चळकणहार, हारौ (हारी), चळकणियौ—वि०।
चळकाणी, चळकाबौ, चळकावणी, चळकावबौ—क्रि०स०।
चळकिओड़ौ, चळकियोड़ौ, चळक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
चळकीजणी, चळकीजबौ—क्रि० भाव वा०।

चळकरण—स०पु०यौ०—घोडा (डि ना मा)

चळकाणी, चळकाबौ—क्रि०स० ('चळकणी' का स०रू०) चमकाना, झलकाना (मि० 'चमकणी')

चळकायोड़ौ—भू०का०कृ०—चमकाया हुआ। (स्त्री० चळकायोड़ी)

चळकावणी, चळकावबौ—देखो 'चळकाणी' (रू भे)

चळकावियोड़ौ—देखो 'चळकायोड़ौ' (रू भे) (स्त्री० चळकावियोड़ी)

चळकियोड़ौ—भू०का०कृ०—चमका हुआ (स्त्री० चळकियोड़ी)

चळकेतु—स०पु० [स० चलकेतु] पश्चिमोदयी एक इच ऊची व दक्षिण की ओर झुकी हुई शिखा वाला पुच्छल तारा। यह ज्यो-ज्यो उत्तर की ओर जाता है त्यो-त्यों इसकी लबाई बढती है। यह सप्तर्षि ध्रुव और अभिजित को स्पर्श कर लौट कर दक्षिण मे अस्त होता है। इसके उदय के फल महामारी व दुर्भिक्ष आदि होते हैं।
(गहा अशुभ)

चलगत, चलगति—स०पु०—१ स्वभाव. २ चाल।
उ०—रूखा जैडा टेटा नै वाप जैडा बेटा। मा करै सो धी करै। आ तो देखादेखी री चलगत है।—विजयदान

चळचत—वि०यौ० [स० चल+चित्त] अस्थिर चित्त वाला, विक्षिप्त।

चळचळ—१ देखो 'चळचाळ' (रू.भे) उ०—वदोवस्ता मे बाकी नह वाकी, चळचळ प्रजा थाकी वाकी मे चाकी।—ऊ.का
२ विचलित, चलायमान। उ०—चकल इळतळ वितळ चळचळ मगळ भळ वड धमळ मगळ।—सू प्र
३ कपायमान। उ०—कमध मुरड 'कुसळेस' जम प्रथी चळचळ करण।—ठाकुर कुसळसिंह चापावत री गीत

चळचळणी, चळचळबौ—क्रि०अ०—चलायमान होना, विचलित होना।
उ०—चळचलिय चक्रवइ यारि छद, दळरजी पाइ छयउ दुर्णिद। मृगळ जिनावर वाणि मारि, आयास हूत आणइ उतारि।
—रा ज.सी.

चळचळियोड़ौ—भू०का०कृ—कपित, कपायमान (स्त्री० चळचळियोड़ी)

चळचाळ—वि० [स० चलचाल] चचल, अस्थिर, चल।

चळचूचूं—स०पु०—चकोर।
वि०—अस्थिर, चलायमान।

चळच्चळ—वि०—देखो 'चळचळ' (रू भे) उ०—जैसिंघ हेतू जळ थाळ ज्यों, थया चळच्चळ काळ लखि। आंवेर हाल विण गण इसौ, सेख ज्वाळ सँदा परखि।—रा रू

चलण—स०पु०—१ चलने का भाव २ चाल, गति। उ०—हस चलण कदलीह जघ, कटि केहर जिम खीण। मुख सिसहर खजर नयण, कुच स्रीफळ कठ वीण।—ढो मा
३ पैर, चरण (ह ना) उ०—१ गज आरोह वड वडा गढपत, चौरस घर वदे चलण।—अज्ञात
उ०—२ करहा वामन रूप करि चिहु चलणे पग पूरि। तूं थाकउ हू ऊसनउ, भुइ भारी घर दूरि।—ढो मा
४ रिवाज, रस्म।
मुहा०—चलण सू चालणी—अपनी मर्यादा के अनुसार काम करना, उचित रीति से व्यवहार करना।
५ किसी चीज का व्यवहार, प्रयोग, उपयोग।
क्रि०प्र०—उठणी, चलणी, होणी।
यौ०—चलणसार।
[स०] ६ हिरन ७ ज्योतिष मे वह गति जब दिन और रात दोनों बराबर होते हैं।
[रा०] ८ लहँगा, घाघरा।

चलणसार—वि०—१ प्रचलित होने वाला २ जो बहुत दिनो तक चले।

चलणिया—स०पु० (बहु०)—चरण, पैर।

चलणिया-सार—स०पु०यौ०—एक प्रकार का बढिया लोह।
उ०—तरवारघा किण भात री छै? वरगत मे वाही दोय टूक करै, चौरग मे वाही थकी सीकसिरो चलणिया-सार वाढै।—रा.सा स
मि०—'चरणिया' (रू भे)

चळणी—स०स्त्री०—महीन कपडा या जाली का एक घेरे मे मढा हुआ पात्र जिससे आटा, भूसा आदि छाना जाता है अथवा इसी आकार का लोह या पीतल का बना बडा छेददार उपकरण जिससे अनाज आदि छान कर साफ किया जाता है।
रू०भे०—चाळणी, छारणी, छारणी।

चलणी—१ देखो 'चळणी'। २ देखो 'चल्लणी'।

चळण् स०पु०—भैंस का मूत्र। उ०—कीच निहारचा कनै भैंस री चळणू भारी। पैल वळद पग प्रगट खिसै नह दीठा खारी।—उ का

चळणी, चळबौ—क्रि०अ०—१ बासी होना, सडना २ विकृत होना।

चलणी, चलबौ—क्रि०अ०—१ एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर जाना, गमन करना, प्रस्थान करना।
मुहा०—चलती करणी—रवाना करना।
२ हिलना, गतिमान होना।
मुहा०—१ काम चलणी—गुजर होना, निर्वाह होना. २ चलती

गाडी मे रोडौ अटकाणौ—होते काम मे अडचन डालना ३ मन चलणौ—मन मे इच्छा उत्पन्न होना, पसद होना, मन का डावाडोल होना ४ मुह चलणौ—खाना, भक्षण करना।

३ प्रवाहित होना, बहना ४ आरभ होना, छिडना, ज्यूं—जिकर चलणौ ५ प्रचलन होना, व्यवहार में आना, जारी होना या रहना।

मुहा०—चलतौ गाणौ—वह गाना जो बहुत प्रचलित हो।

६ काम मे आना, लेनदेन के काम आना, ज्यूं—ओ रुपयौ चलै कोयनी ७ तीर, गोली आदि का छूटना ८ मरना।

उ०—ऊदावत अमरसिंघजी रौ वडौ वेटौ माधोसिंहजी वडौ अडपदार हौ। ऊ चलिया पछै कल्याणसिंघजी अमरसिंघोत नीबाज रौ धणी हुवौ।—वा दा.ख्यात

मुहा०—चल बसणौ—मर जाना।

९ किसी खेल मे अपना क्रम या अपनी चाल अदा करना. १० कार्य-निर्वाह मे समर्थ होना, निभना ११ क्रम या परपरा का निर्वाह होना, जारी रहना; ज्यूं—नाम चलणौ १२ प्रयुक्त होना, व्यवहृत होना, ज्यूं—झगडा मे तलवार चलणी. १३ आचरण करना, व्यवहार करना, ज्यूं—वडा रै किया सू नी चलै जद दुख पावै १४ खाने-पीने की वस्तु का परोसा जाना, खाने के लिये रक्खा जाना, ज्यू—अवै सीरौ चलै कोयनी (जीमन मे) १५ बरावर काम देना, टिकना, ज्यू—ऐ पगरखिया तौ दो महीना ही नी चलै।

चलणहार, हारौ (हारी), चलणियौ—वि०।

चलवाडणौ, चलवाडवौ, चलवाणौ, चलवावौ, चलवावणौ, चलवाववौ —प्रे०रू०।

चलाडणौ, चलाडवौ, चलाणौ, चलावौ, चलावणौ, चलाववौ —क्रि०स०।

चलिओडौ, चलियोडौ, चल्योडौ—भू०का०कृ०।

चलीजणौ, चलीजवौ—भाव वा०।

चलतौ पहाड—स०पु०यौ०—एक प्रकार का घोडा (शा हो)

चलतौ—वि० (स्त्री० चलती) १ चलने वाला २ चुस्त, चचल।

यौ०—चलतौ-पुरजौ।

३ वह जिसका प्रचलन हो।

चळदळ, चळद्दळ—स०पु० [स० चलदल] पीपल का वृक्ष (ह ना)

उ०—१ चले चक पत्र चळद्दळ भाति, तळातळ यौं अतळा विचळाति। —ला रा.

उ०—२ बीरा रस रत्त वळव्वळ बीर, भयातुर पत्त चळद्दळ भीर। —मे म

वि०—१ चचल* (डि को) २ अधीर।

चळपत, चळपत्र—स०पु० [स० चलपत्र] पीपल का वृक्ष।

उ०—१ ढोलउ मन चळपत थयउ, ऊभड साहइ लाज। साम्हउ वीसू आवियउ, आइ कियउ सुभराज।—ढो मा

उ०—२ चळपत्र पत्र थियौ दुज देखे चित, सकै न रहति न पूछि सकति। ओ आवै जिम जिम आसन्नौ, तिम-तिम मुख्र धारण तकति। —वेलि

मि०—चळदळ।

चळबिचळ—देखो 'चळविचळ' (रू.भे.) उ०—ऊजड़ हुआ सुणि दिल्ली सहित प्रतीची दिसा रौ आधौ आरयावरत चळविचळ थयौ। —व.भा

२ भयभीत, घवराया हुआ। उ०—उर चलत हस किरवान कर, चलत मुगळ चळविचळ चित।—ला रा

चळबिळ—वि०—१ घवराया हुआ २ आतुर।

चळवचळ—देखो 'चळविचळ' (रू भे) उ०—हुए चळवचळ दली 'चत्र' हालियौ, नाथरै कि नहचळ यसौ नाम। —चत्रसाळ हाडा रौ गीत

चळवणौ, चळववौ—क्रि०अ०—जाना, प्रस्थान करना। उ०—वळ पायाळ चळवियौ बोलै, जुग बोलियौ घणा दिन जाय।—अज्ञात

चळवळ, चळवल—स०पु०—रक्त, खून। उ०—चळवळा जोगण खपर चढवै, सिभ कमळा सग। जगजीत चिहुवै वळा जाहर, सुजस हुवै सुढग।—र ज प्र

वि०—डावाडोल, विचलित। उ०—सेखावत जळहर समर, फिर चळवळ फिरगाण। प्रथी सँग कळहळ पडै, भळहळ ऊगा भाण। —गिरवरदान कवियौ

चळवळणौ, चळवळवौ—क्रि०अ०—१ घवराना, विचलित होना।

२ अधिक समय तक पडा रहने के कारण किसी पदार्थ का विकृत होना, सडना या वासना। (मि० 'चळणौ')

चळवळियोडौ—भू०का०कृ०—१ घवराया हुआ २ विचलित। (स्त्री० चळवळियोडी)

चळवळौ—वि०पु० (स्त्री० चळवळी) चितायुक्त, चितातुर।

चळविचळ—वि०—१ जो अपने स्थान से विचलित हो गया हो, डावाडोल। उ०—मेर गिर चळविचळ थयौ जैसिंघ महि, गुरड भारथ रै ढके गजगाह।—अज्ञात

२ चलायमान। उ०—तिण समै सो वा वेळा देख उणरी सूरत देख मन चळविचळ हुवौ छै।—पचदडी री वारता

३ अडवड, अव्यवस्थित, ऊटपटाग। उ०—कवर रै पिण पलका पीक, अधरा काजळ री लीक, आळस अग, भाळ अळता री रग, लाल नैण, चळविचळ वैण, हियै गडियौ हार, तुररा रा तूटा तार, नखा री रेख।—र० हमीर

चळविळ—वि०—१ कपायमान २ डावाडोल।

चळवौ—देखो 'चुळवौ' (रू भे)

चलाणौ—देखो 'चलावौ' (रू भे)

यौ०—हलाणौ-चलाणौ।

चलान—स०स्त्री०—१ चलने की क्रिया, गतिमान करने या होने का भाव या क्रिया।

स०पु०—२ अपराधी को अदालत में पेश करने का भाव. ३ वह कागज जिसमे किसी सूचना के लिये वस्तुओ की फेहरिस्त हो।

चळा–स०स्त्री० [स० चला] १ बिजली २ लक्ष्मी ३ पिप्पली ४ नारी. ५ पृथ्वी, जमीन (ह ना)

चलाऊ–वि०-१ चलने योग्य. २ उपयोग मे आने योग्य ३ बहुत चलने या फिरने वाला।

चलाक—देखो 'चालाक' (रू भे.)

चलाकी—देखो 'चालाकी' (रू भे) उ०—एक दिन आपरी सेणहर माहे सापडै छै नै आपरी अतेवर हजूर चलाकी कर सपडावै छै।
—वीरमदे सोनगरा री वात

चळाचळ–वि०यौ०—चचल, अस्थिर, चलायमान (ह.ना)
स०स्त्री०—गति, चाल।

चळाचळणी, चळाचळबौ–क्रि०अ०—१ चलायमान होना २ भयभीत होना।

चळाचळा–स०स्त्री०यौ०—देवी, दुर्गा। उ०—चळवळा चामुडा चपळा, विकट विकट भ्रू वाळा विमळा।—देवि.

चलाचली–स०स्त्री०—चलने की शीघ्रता. २ बहुत से लोगो का आगे-पीछे प्रस्थान ३ चलने की तैयारी।

चलाणौ, चलाबौ–क्रि०स० ('चलणौ' का प्रे०रू०) १ चलाना, चलने के लिए प्रेरित करना २ रवाना करना ३ हिलाना, डुलाना, गतिमान करना। उ०—माया जळ अति विमळ, तास कोइ पार न पावै। लहर लोभ उठत, मन्न जेहाज चलावै।—ज खि
मुहा०—१ मन चलाणौ—इच्छा करना, लालसा करना २—मुह चलाणौ—खाना, भक्षण करना, बकवाद करना।
४ प्रवाहित करना, बहाना ५ प्रचलित करना, प्रचार करना, ज्यू—धरम चलाणौ ६ कार्य-निर्वाह मे समर्थ करना, निभाना ७ किसी मशीन, यत्र आदि को आरभ करना ८ बराबर बनाये रखना, जारी रखना, ज्यू—नाम चलाणौ, कारखानौ चलाणौ ९ खाने की वस्तु परोसना, ज्यू—अवै पकोडिया चलावौ (जीमन में) १० आरभ करना, छेडना, ज्यू—जिकर चलाणौ. ११ व्यवहार में लाना, लेन-देन के काम में लाना, ज्यू—खोटौ रुपयौ चलाणौ १२ व्यवहृत करना, प्रयुक्त करना, ज्यू—तलवार चलाणौ, कलम चलाणौ, हाथ चलाणौ आदि १३ फेंकना। उ०—ताहरा इये पइसौ चीँपटी मासू चलाय दियौ सो देहरै माही जाय पडियौ।
—पचदडी री वारता
मुहा०—चला'र करम मे भाटौ लेणौ—स्वय आगे होकर आपत्ति मोल लेना। आफत गले में बाधना।
१४ तीर, बदूक, तोप आदि को छोडना या दागना १५ किसी वस्तु से प्रहार करना, ज्यू—लाठी चलाणौ।
चलाणहार, हारौ (हारी), चलाणियौ—वि०।
चलाडणौ, चलाडबौ, चलावणौ, चलाववौ—रू० भे०।
चलायोडौ—भू०का०कृ०।
चलाईजणौ, चलाईजबौ—कर्म वा०।
चलणौ—अक० रू०।

चळापळ–स०स्त्री०—चमक दमक। उ०—चळापळ ओगनिया री कोर, ओपणा किण फूला री भार।—साफ

चलायमान–वि० [स० चलायमान] १ चलने वाला २ चचल ३ विचलित।

चलायोडौ–भू०का०कृ०—चलाया हुआ, देखो 'चलाणौ' (स्त्री० चलायोडी)

चलावकौ–वि०—चलाने वाला, चालाक। उ०—राज माहुइ इणि परिरहई राज चलावकं और परधान।—वी दे

चलावणौ—देखो 'चलाणौ' (रू भे) उ०—सीस कलगी सेहरौ, केसर बोळ दुकूळ। कीजै मूझ चलावणौ, मरिया नावै मूळ।—वी स

चलावणौ, चलाववौ—देखो 'चलाणौ' (रू भे) उ०—तिणसू हमे इणनू चलावणौ छै, जल्दी तयारी करो।—कुवरसी साखला री वारता
चलावणहार, हारौ (हारी), चलावणियौ—वि०।
चलाविप्रोडौ, चलावियोडौ, चलाव्योडौ—भू०का०कृ०।
चलावीजणौ, चलावीजबौ—कर्म वा०।
चलणौ, चलवौ—अक० रू०।

चलावियोडौ—देखो 'चलायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० चलावियोडी)

चलावौ–स०पु०—१ चलाने की क्रिया या भाव २ मृत व्यक्ति की अर्थी को श्मशान भूमि की ओर ले जाने के लिये प्रस्थान करने की क्रिया ३ जौहर मे जलने के लिय प्रस्थान करने की क्रिया।
रू०भे०—चलाणौ।
यौ०—हलावौ-चलावौ।

चलित–वि० [स०] चचल, अस्थिर, चलायमान।
स०स्त्री०—नृत्य मे एक प्रकार की चेष्ठा।

चलित-ग्रह–स०पु० यौ० [स०] १ ज्योतिष के अनुसार वह ग्रह जिसका कुछ भाग तो भोगा जा चुका हो और कुछ भाग अवशेष रह गया हो २ वह ग्रह जिसकी स्थिति चलित कुण्डली मे जन्मकुण्डली की स्थिति से अन्य, पूर्वापर भाव मे हो।

चळियळ—देखो 'चळवळ' (रू भे)

चलियोडौ–भू०का०कृ०—१ विचलित २ चला हुआ ३ प्रस्थान किया हुआ ४ मरा हुआ (स्त्री० चलियोडी)
(मि० 'चलणौ')

चळुअल–स०पु० [स० चर्लतल] रक्त, खून। उ०—ऊगा सूर समौ ऊदावत, वढै वसू छळ बोळ विरोळ। चळुअल अरी तणौ चीतोडा, चद्र-प्रहास रहै नित चोळ।—प्रथ्वीराज राठौड

चळू–स०पु० [स०चुलुक] १ अगुलियो को मोड कर गहरी की हुई-हथेली, जिसमे भर कर पानी आदि पीया जा सके। एक हाथ की अगुलियो सहित हथेली का बनाया हुआ गड्ढा। चुल्लू। उ०—खाती कूप

वचायौ अहि वरण, तूटी लाव सधारणी । हाकडिया री हेक चळू कर, पीगी आवड पाणी ।—अज्ञात

मुहा०—१ चळू भर पाणी मे डूवणौ—लज्जा के मारे मर जाना । २ चळू भर पाणी मे डूव मरणौ—बहुत अधिक शरमा जाना

२ भोजन के पश्चात् हाथ धोने व कुल्ला करने की क्रिया ।

उ०—१ नारी होय तौ धीरे-धीरे खाय, मरद मूछाळौ तौ ओ झटदै जीम चळू करै ।—लो गी. उ०—२ करि अचवन जळ चळू करावै । भक्ष पर पचक चूरण भुगतावै ।—सू प्र

क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ ।

चलू–वि०—प्रचलित ।

स०स्त्री०—चलाने या चलने की क्रिया या भाव ।

क्रि०वि०—शुरू, आरम्भ, प्रारम्भ ।

चळूळ–वि०—रक्त के समान लाल । उ०—१ करोळा निवाजे यु तेजाळा भडा भूल कीधा । नेजाळा चळूळ कीधा आवै प्रथीनाथ ।
—सूरजमल मीसरण

उ०—२ गै घडा विरोळै जोधा दोवळा चळूळा गोमा ।—अज्ञात

स०पु०—रक्त, खून । उ०—भुजगां लचक्कं देत कोम धक्कं भोम भार, वक्कं वळोवळी खेळा कळक्कं वीराण । छिलें घाव चळूळां सूरमा घावा लोह छकै, उभै सेना हक्कै उचक्कै आराण ।
—हुकमीचद खिडियो

चळूळ, चळूळौ–स०पु०—मुसलमान । उ०—वाजे घाव जागिया कुराण वाच लगा वोम, रोस भीना दोवडा चळूळा ऊडे रीठ । साइका छडाळा धारा कटारा जवना सेती, ताखा भडा वापू कारे मेलिया नत्रीठ ।
—धीरतसिह राठौड री गीत

चळोअळ, चळोवळ—देखो 'चळ्वळ' (रू भे) उ०—'भाण' रै लोह सुरताण घड-भेळियौ, चळोवळ पड मो पूर चढियौ ।—अज्ञात

चळौ–स०पु०—भैंस, गधा या घोडे का पेशाव, मूत्र ।

चल्लणी–स०स्त्री०—१ गति, चाल २ माग, रास्ता ।

उ०—चहुवाणा कुळ चल्लणी, वियौ न चल्लै कोय । चाड न घट्टै खूद की, मीस पलट्टै तोय ।—रा रू

चल्लणौ, चल्लबौ—देखो 'चलणौ' (रू भे) उ०—ढोलइ चलता परिठव्यउ, अग्गणी मौजा 'सल्ल' । ढौलउ गयउ न वाहुडइ, सूया मनावण चल्ल ।—ढो मा.

चल्लौ–स०स्त्री०—प्रत्यचा । उ०—सुणताई जोधारपुर चोगडद तुटे, कवाण के चल्ले तें सायक से छूटे ।—र रू

चवड—देखो 'चामुण्डा' (रू भे) उ०—चवड चिता डाकणी, माहै वैठी खाय ।—ह पु वा

चव–वि०—१ चार २ चतुर्थ । उ०—पहली शतीय पद सोळ मत, दुव चव ग्यारह दाख । चरणा दूहा चुरस कर, भल किव तिण नू भाख ।—र ज प्र

क्रि०वि०—चारो ओर ।

उ०—चव इम सुणी दियै वर चाहै । माळा देवि विभ गिर माहै ।
—सू प्र.

चवडै देखो 'चौडै' (रू भे) उ०—सूरमा लडै चवडै संभाळ, वेगमा घसे पडदा विचाळ ।—वि स.

मुहा०—चवडै आणौ—प्रकट रूप मे आना, खुले मैदान मे आना ।

यौ०—चवडै-धाडै ।

चवडै-धाडै—देखो 'चौडै-धाडै' (रू भे)

चवडौ—देखो 'चौडौ' (रू भे) (स्त्री० चवडी)

चवणौ–वि०—चूने वाला, टपकने वाला ।

चवणौ, चवबौ–क्रि०अ०—१ मकान की छत या छाजन मे से पानी टपकना । उ०—झिरमिर झिरमिर मेहसडलो (जी) वरसे मैडिया मे चवण लागौ ।—लो गी

२ कहना । उ०—१ माणस हुवा त मुख चवा, म्है छा कूझडियाह, प्रिउ सदेसउ पाठविसु, लिखि दै पखडियाह ।—ढो मा.

उ०—२ छुटै अत्रताच्चार अप्पार छद । चवै वस वाखाण वे भाण चद ।—सू प्र

३ तरवतर होना, लथपथ होना । उ०—तिका काळी डीगी, मोटा दात, दूवळी घणी, डरावणी, माथा रा लटा विखरिया, घणा तेल माहे चवती, धवळा केस ।—जगदेव पवार री वात

४ चुसाना, रसना । उ०—मुवा पछै हुवौ मनमान्यो, ऊभायगा न दीधी एक । चवता खुरा धेन घर चाली, टुक-टुक ऊपर पग टेक ।
—ईसरदास मोहिल री गीत

५ 'चा'णौ' तथा 'चावणौ' क्रिया का अक० रू० ।

चवणहार, हारौ (हारी), चवणियौ—वि० ।

चववाणौ, चववावौ—प्रे०रू० ।

चवाडणौ, चवाडवौ, चवाणौ, चवावौ, चवावणौ, चवाववौ
—क्रि०स० ।

चविओडौ, चवियोडौ, चव्योडौ—भू०का०कृ० ।

चवीजणौ, चवीजवौ—भाव वा० ।

चवत्थ—१ देखो 'चौथ' (रू भे) २ चौथा, चतुर्थ ।

चवत्थौ–वि० [स० चतुर्थ] जो क्रम मे तीन के वाद आवे, चौथा ।

उ०—हेम सेत मझार न कौ हिव अत्थ न रावह इत्थ चवत्थौ राव हुवत जपियौ सरोवह ।—नैणसी

चवथ—देखो 'चवत्थ' (रू भे) उ०—१ गज गत तीजै पाय गुणीजै, औण चवथ गथ सरप अखीजै ।—र ज प्र

उ०—२ तीजौ लख तिण वार, 'अजा' भादा कर अप्पै । भण ताराचद भाट मौज लख चवथ समप्पै ।—स प्र

चवत्थमौं–वि०—चौथा, चतुथ । उ०—तै अपभ्र स तीतरै, मगधदेसी चवथमै । सरस सूरसेनीस, पढू थानक पचमै ।—सू प्र

चवदत–स०पु०—प्रकट । उ०—त्यासू चाळै लागी, तिरछी निजर कवर नै जोवै है, हमै चमक चवदत हुई, लजकाणी पड गई, जाणै

अग मे हीज वट गई ।—र हमीर

चवद, चवदई—देखो 'चवदे' (रू भे) उ०—परसे परसपर कर प्रीत पूठी रहण की परतीत किय मो पिता वयण प्रकास वरसा चवद री वनवाग । —र रू

चवदमों—वि० [स० चतुर्दश] चौदहवा, जो क्रम मे तेरह के बाद पड़ता हो ।

चवदस, चवदसि, चवदस्स—स०स्त्री० [स० चतुर्दशी] किसी पक्ष की चौदहवी तिथि । उ०—१ चवदस आज सहेलिया, चोवया वैठा रात्र । अणचीत्या साजण मिळया, पड्या निसाणा घाव ।—ढो मा

उ०—२ चवदसि चितवणि सव मिटी, अण वोल्या कछु गाय ।

—ह पु वा

चवदह, चवदा, चवदे, चवदेस, चवदै—वि० [स० चतुर्दशन्, प्रा० चउद्दह, चउद्दह] चौदह । उ०—रागण पच भमरावळी स ज दो भ रह विवेक । सुकळ हुम चवदह लघु, र भ स गुरु पद एक ।—र ज.प्र

रू०भे० —चउद, चउदह, चउद्दह, चऊदह, चऊदै ।

स०पु०—चौदह की सख्या ।

चवदे'क—वि०—चौदह के लगभग ।

चवदो—स०पु०—चौदह का वर्ष, चौदहवां वर्ष ।

चवद्दस—देखो 'चवदस' (रू भे)

चवद्दह, चवद्दै—देखो 'चवदै' (रू भे.) उ०—१ थू हिंदुस्तान मे जगळधर देस न जाणै, जठै चवद्दह जणा हुता राजा हिंदवाणै ।—मे म

उ०—२ चवद्दै हजार किया जग चोडै, टळा ग्रीध गाळा लियै प्रेत दोडै ।—सू प्र

चवधवो—देखो 'चवधो' (रू भे.)

चव-धार—देखो 'चौधार' (रू भे)

उ०—१ समर हुवा संपळा, जोध 'अवरग' 'जसा' रा । घड चव-धारा धमकि, रीठ वागा रगधारा ।—सू प्र

उ०—२ आप मुहरि 'अभपती' भिडज ओरै गज भारा । जडू मुगळ जरदैत, धमक अळहळ चवधारा ।—सू प्र

चवधो—१ देखो 'चवदो' (रू भे.) २ शुभ रग का घोडा ।

चवन-प्राम—स०पु० [स० च्यवनप्राश] च्यवनप्राशावलेह नामक एक पौष्टिक औषधि । (आयुर्वेद)

चवरग—देखो 'चौरग' (रू भे) उ०—१ दुसट घडा हसती गजदती, आगति अति गति अग अनीद । पाट उधोर 'रयण' परणेवा, चुवगी चूपी चढै चवरग ।—दूदो उ०—२ भोग विपळ हल्लिया मन मेळै, घटि-घटि आउध विघन घटा । रग पड पलग पीढियो 'रतनो', चवरग रग गुमार चटा ।—दूदो

चवरग—स०पु०यौ० [स० चवर्ण] वर्णमाला मे च से लगा कर ञ तक के अक्षरो का समूह ।

चवरासि, चवरासी—देखो 'चौरासी' (रू भे) उ०—हुणी सत्रतीस दसा निज हाथ, पडै चवरासिय घाव निपात ।—पा प्र

चवरी—देखो 'चवरी' (रू भे) उ०—मत्थरा सोय सारा सुखी, चवरी कुळ ता चौसरा । तन लगन तीसरा री तिका, भगत ध्यान मन मोसरा ।—ऊ.का

चवळारी—देखो 'चवळेरी' (रू भे)

चवळाई—देखो 'चवळाई' (रू भे)

चवळेरी, चवळेडी—देखो 'चवळेरी' (रू भे)

चवळो—देखो 'चवळी' (रू भे)

चवसट्ट, चवसट्ठि—१ देखो 'चौसठ' (रू भे) २ रणचडी, योगिनी ।

उ०—चवसट्ट अखाडे रग चाय, अरधग सहत सिव खटाह आय ।

—वि स

चवसठ—१ देखो 'चौसठ' (रू भे) २ देखो 'चौसठी' (रू भे)

उ०—१ चवसठ मझि वावन चिरताळा, मद छकिया रमै मतवाळा ।

—सू प्र

उ०—२ पडै रुधिर पत्र भरै प्रचडा, चवसठ सहित पियै चामुडा ।

चवसठि—१ देखो 'चौसठ' (रू भे) २ देखो 'चौसठी' (रू भे)

उ०—धर अवर रज डवर अधारा, जोगण करि चवसठि जयकारा ।

—सू प्र

चवसठे'क—देखो 'चौसठे'क' (रू भे)

चवसठ्ठ, चवसट्ठि—देखो 'चौसठ' (रू भे)

चवहट, चवहट्ट—वि०—कठोर (डि को)

चवाण—देखो 'चौहान' (रू भे) उ०—साखला गोड हाडा सधीर, भाटी चवाण निरवाण धीर ।—पे रू

चवाणो—स०पु०—वर्षा मे छत से टपकने वाला पानी ।

चवा—स०पु० (वहु०)—छत से चूने वाली पानी की बूंद (शेखावाटी)

चवाणो, चवावो—क्रि०स० ('चवणो' क्रिया का प्रे० रू०) १ खिलाना. २ दातो से कटवाना । ३ देखो 'चावणो' का प्रे०रू०

चवाळियो—देखो 'चवाळियो' (रू भे)

चवू—देखो 'चऊ' (रू भे)

चवेळी—१ देखो 'चवळेरी' (रू भे) २ देखो 'चमेली' (रू भे.)

चव्य—स०स्त्री०—एक औषधि विशेष, पीपरामूल की डडी ।

चसप—स०पु० [स० चषक] १ शराव पीने का पात्र २ द्रव पदार्थ या शराव पीते समय होने वाली ध्वनि । उ०—भद्र काळी लोहित रूप आसव रा चसक रै साथ उपदस करि पीधी ।—व भा

३ देवी का खप्पर । उ०—प्रेत गीधादिक पळचरा नू धपाइ चडी रा चसक मे आपरी अस्त्र आसव पूरि च्यारि तरवारि लागा जीवतो ही खेत रहियो ।—व भा

४ हलकी टीस, कसक, पीडा ।

चसकणी, चसकवो—क्रि०अ०—१ हलका हलका दर्द होना, टीस चलना २ चुस्की लेना, चूम-चूम कर घूंट उतारना ।

चसको—स०पु० [स० चषण] १ किसी वस्तु विशेष के स्वाद आदि से या काम मे एक वार या अनेक वार मिला आनद जिसको प्राप्त

करने की बार-बार इच्छा हो, चाट, शौक, लत। उ०—जद मै नणदल जाणियौ, विगडण री वाताह। ग्रधरा चसकौ ऊठियौ, भाभी वतळाताह।—र हमीर

क्रि०प्र०—पडणौ, लागणौ, होणौ।

२-दर्द, टीस। उ०—उमराव म्हारे रात्यू चसका चाले मेरी जान।
—लो गी

क्रि०प्र०—चालणौ।

चसणौ, चसबौ–क्रि०अ०—चमकना, प्रकाशित होना, दमकना।

उ०—१ चसं नैण ज्यू रैण जूपी चरागा, जईमैण रा नैण ज्यू क्रोध जागा।—अगयाअगेंद्र उ०—२ भरमल री मा कन्है बैठी दारू पीवै छै। पीलसोता चस रही छै।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—३ माळा उड जोत लसी सुरभाग, चसी रण ग्रागण जोत चराग।—मे म

चसम–स०स्त्री० [फा० चश्मा] १ ग्राख, नेत्र। उ०—१ रग पायलडी री रणक, मिळी झमक मजीर। चगा चसमा री चमक, सोहत झमक सरीर।—र रा उ०—२ प्रीत कर पुर ऊपर, उठै रघुवर ग्राप। सहस भग किय चसम सहसा, सकत मेटं स्राप।—र रू

रू०भे०—चस्म।

यौ०—चसमदीद।

चसमदीद—देखो 'चस्मदीद' (रू भे)

चसमाण–स०स्त्री० [फा० चस्म+रा०प्र० ग्राण] देखो 'चसम' (रू भे)

चसमौ–स०पु० [फा० चश्मा] १ पानी का स्रोत, झरना २ कमानी मे जडा हुग्रा शीशे या पारदर्श तालो का बना हुग्रा जोडा जो ग्राखो की दृष्टि वढाने या ठडक के लिए पहना जाता है। ऐनक।

क्रि०प्र०—रखणौ, राखणौ, लगणौ, लगाणौ, लागणौ।

वि०—स्नेहपूर्ण नेत्रो वाला।

चसम्म—देखो 'चसम' (रू भे) उ०—रोसाळ मिळे ग्रीखम रसम्म। चित्ता विडाळ नाहर चसम्म।—वि स

चसळक—देखो 'चसळकौ' (रू भे)

चसळकणौ, चसळकबौ–क्रि०अ०—१ गाडी या चरख पर रखे हुये वोझा ग्रादि को ग्रागे खीचने से ग्रावाज होना। उ०—चसळकै तोप चरखा चलत। भरळकै सेल ग्रीधण भ्रमत।—पे रू

२ मस्ती मे ग्राने पर ऊट के दातो की पक्ति के परस्पर टकराने से ग्रावाज होना या करना। उ०—चसळकै दत चरखी चलाय। खिज रया दिवाणा भग खाय।—पे रू

चसळकौ–स०पु०—१ शीतकाल मे ऊट के मस्ती मे ग्राने पर उसके दातो की पक्तियो के परस्पर टकराने से उत्पन्न ग्रावाज।

उ०—जिकै ऊट हाथी ज्यो जोहा खाता, भाद्रवं री गाज ज्यू ग्रावाज करता, साठी करै भमण ज्यू चसळका करता भागै, गाडै ज्यू वठठाट करता।—रा सा सं

[ग्रनु०]-२ ध्वनि विशेष।

चसावणौ, चसाववौ–क्रि०स०—प्रज्वलित करना, ज्योतियुक्त करना।

उ०—ढोला नाईकी नै वेग बुलावौ, म्हारे महला चौमुख दिवलौ चसावौ।—लो गी

चसीड़णौ, चसीडबौ–क्रि०स० [स० चष = भक्षणे] १ द्रव पदार्थ को भर पेट पीना २ खाना, भक्षण करना ३ दातो को भीच कर वायु के साथ या श्वास के साथ द्रव पदार्थ को खीच कर पीना।

उ०—चसीडै वासी मुहडै छास, वर्स न एकण वीजै वास।
—रगरेलौ वीटू

रू०भे०—चहीडणौ, चहीडबौ, चहोडणौ, चहोडबौ।

चस्कौ—देखो 'चसकौ' (रू भे)

चस्म—देखो 'चसम' (रू भे)

चस्मदीद–वि०यौ० [फा० चश्मदीद] ग्राखो से देखा हुग्रा, प्रत्यक्ष देखा हुग्रा।

रू०भे०—चसमदीद।

चस्मनुमाई–स०स्त्री०यौ० [फा० चश्मनुमाई] घूर कर देखते हुए किसी मे भय उत्पन्न करने का भाव।

चस्मपोसी–स०स्त्री०यौ० [फा० चश्मपोशी] परोक्ष मे होने वाला भाव, ग्राँखें चुराने का भाव।

चस्मौ—देखो 'चसमौ' (रू भे)

चह–स०स्त्री०—१ ग्रग्नि-सस्कार के लिए काठ को चुनने का ढग, चिता।

उ०—वासा घरा सू राजा री सुणावणी ग्राई, पाछ ग्राई राणी वळण नूं तयार हुई, चह खिडक तयार करी।—नैणसी

[स०] २ चाह, इच्छा।

स०पु० [फा०] ३ गड्ढा, गर्त।

चहक–स०स्त्री० [ग्र०] पक्षियो द्वारा की जाने वाली चह-चह की ध्वनि। चहकने का भाव। पक्षियो का कलरव।

चहकणौ, चहकबौ–क्रि०अ० [ग्रनु०] १ पक्षियो का ग्रानदित होकर मधुर ध्वनि करना, चहचहाना।

उ०—१ चहकीय चील पखी कळचाळ।—गो रू

२ नाडी दे पग तातौ न्याळी, थर लीलौ रग करवै थाळी। चहकै बैठ सिरै चाचाळी, काठळ वधै उतर दिस काळी।—वर्षा विज्ञान

२ ग्रावेश या जोश मे ग्राकर हर्षपूर्वक कोलाहल करना।

उ०—चहकिया नहर घर चढे चाक, डहकिया डमर हर वाक डाक। घर करण मामला क्रोध धाक, नीसरै किलै कप्पाट नाक।—वि सं

चहकणहार, हारौ (हारी), चहकणियौ—वि०।

चहकवाड़णौ, चहकवाडबौ, चहकवाणौ, चहकवाबौ, चहकवावणौ, चहकवाववौ—प्रे०रू०।

चहकाडणौ, चहकाड़बौ, चहकाणौ, चहकाबौ, चहकावणौ, चहकाववौ
—क्रि०स०।

चहकिग्रोडौ, चहकियोडौ, चहक्योडौ—भू०का०कृ०।

चहकीजणौ, चहकीजबौ—भाव वा०।

चहकियोडो-भू०का०कृ०—१ चहचहाया हुआ २ आवेश या जोश में आकर हर्षपूर्वक कोलाहल किया हुआ (स्त्री० चहकियोडी)

चहक्कणो, चहक्कवो—देखो 'चहकणो' (रू भे) उ०—१ रवि भैरव जीवणी, घणे आराद चहक्की। सम वेळ सूरमा, श्वास-अगरेल महक्की।—रा रू उ०—२ चाहे रत्त त्रटट्टिकै चवसट्ठि चहक्कै। काय उभक्कै के कटै झरि घाय झभक्कै।—व भा

चहचहणो, चहचहवो, चहचहाणो, चहचहावो—क्रि०अ० [अनु०] पक्षियो का कलरव करना, चहचहाना। उ०—चहु दिस चिड़िया चहचही, बोल्या पखी व्रद।—स्रीपाळ रास

चहचहाहट-स०स्त्री० [अनु०] पक्षियो के कलरव की मधुर ध्वनि।

चहचाणो, चहचावो—देखो 'चहचहाणो' (रू भे) उ०—खूमाणी वाणी घणइ ख्यात, भैरव चहचाणी तिणइ भांत।—वि स

चहच्चह-स०स्त्री०—१ द्रव पदार्थ को मुह से खींच कर पीने की क्रिया। उ०—१ वजै सिर गह्वर घजर वाढ़ि, चहच्चह चड पिये रत चोळ।—सू प्र

उ०—चहच्चह चड पिये रत चोळ, ववाळव गात हुवै झकवोळ।—सू प्र

२ प्रसन्नता से हँसने की ध्वनि अट्टहास। उ०—चहच्चह नारद सकर चड, वहे द्रम गूजर गूजर खड।—सू प्र

चहटणो, चहटवो—क्रि०अ०—चिपकना, चिमटना। उ०—तिके वूथा उडि-उडि तुरकां रै टील रै जाय लागी नै चहटी।—वीरमदे सोनगरा री वात

चहटणहार, हारौ (हारी), चहटणियो—वि०।

चहटवाणो, चहटवावो—प्रे०रू०।

चहटाडणो, चहटाडवो, चहटाणो, चहटावो, चहटावणो, चहटाववो—क्रि०स०

चहटिओडो, चहटियोडो, चहट्योडो—भू०का०कृ०।

चहटीजणो, चहटीजवो—भाव वा०।

चहटाणो, चहटावो—क्रि०स०—चिपकाना, चिमटाना।

चहटाणहार, हारौ (हारी), चहटाणियो—वि०।

चहटायोडो—भू०का०कृ०।

चहटाईजणो, चहटाईजवो—कर्म वा०।

चहटणो—अक०रू०।

चहटायोडो-भू०का०कृ०—चिपकाया हुआ (स्त्री० चहटायोडी)

चहटावणो, चहटाववो—देखो 'चहटाणो' (रू भे)

चहटावणहार, हारौ (हारी), चहटावणियो—वि०।

चहटाविओडो, चहटावियोडो, चहटाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

चहटावीजणो, चहटावीजवो—कर्म वा०।

चहटणो—अक०रू०।

चहटावियोडो—देखो 'चहटायोडो' (रू भे) (स्त्री० चहटावियोडी)

चहटियोडो-भू०का०कृ०—चिपका हुआ, चिमटा हुआ।

(स्त्री० चहटियोडी)

चहडुणो, चहडुवो—देखो 'चटणो' (रू भे) उ०—वीज न देख चहड्डिया, प्री परदेस गयाह। आवण लीय झबूकटा, गळि लागी सहराह।—ढो मा

चहणो, चहवो-क्रि०अ०—चाहना, इच्छा करना। उ०—वाळापणो जवानी खोई, खोवण चहत बुढाई नै।—ऊ का

चहणहार, हारौ (हारी), चहणियो—वि०।

चहिओडो, चहियोड़ो, चह्योड़ो—भू०का०कृ०।

चहीजणो, चहीजवो—भाव वा०।

चहन-स०पु० [स० चिन्ह] १ लक्षण, सकेत, चिन्ह।

उ०—लछी रा चहन घण वीज वाळी लपट।—र ज प्र.

स०स्त्री०—२ ध्वजा, पताका (अ.मा)

चहवचो-स०पु० [फा० चाह्+बच्चा] १ छोटा कुड। उ०—ओ महल केसर गुलाब सु छाटीजै छै। माहे जळ गुलाब मू चहबचा भरिया छै।—रा सा.स

-२ हाथी का चारजामा, हौदा। उ०—१ पागडा जोर छक छोह रै पराक्रम, विरम गजरोह रै समै वागी। सिंदुरा बोह रै वीच जागी सगत, लोह रै चहवचै तेग लागी।—कविराजा करणीदान

उ०—२ तरै अख्तियारखा हाथी रै चहवचे बैठो थो। उण एक तीर वाहियो सु जमवतजी रै गळै लागो।—राव मालदेव री वात

चहर-स०पु० [स० चिकुर]-१ शिर के केश, वाल (ह ना.) (रू भे. चँवचो) [रा०] २ कलक

वि०—श्रेष्ठ, उत्तम। उ०—कोपियै छाकियै चहर भड अहर करि, फुरळतै पिमण घड फेरवी अफिर फिरि।—हा झा

चहर की बाजी-स०स्त्री०यौ०—पक्षियो का कलरव। उ०—यो ससार चहर की वाजी, माझ पडचा उठ जासी। रहा भया था भगवा पहरचा, घर तज लया सन्यासी।—मीरा

चहरणो, चहरवो-क्रि०अ०—आलोचना करना, निंदा करना।

उ०—जाणे तूज अभनमा 'जोधा', 'धीर' अखाडै खडग धर। न रहियो सग्रहर अणनामी, नमिया चहरण हार नर।—महमद वारहठ

२ व्यग कसना, ताना मारना। उ०—भोळा की चहरी भला, ईखो चारण एण। केही कढता कायरा, वाढा चावुक वैण।—वी स

चहरणहार, हारौ (हारी), चहरणियो—वि०।

चहरवाडणो, चहरवाडवो, चहरवाणो, चहरवावो, चहरवावणो, चहरवाववो—प्रे०रू०।

चहराडणो, चहराडवो, चहराणो, चहरावो, चहरावणो, चहराववो—क्रि०स०।

चहरिओडो, चहरियोडो, चहरयोडो—भू०का०कृ०।

चहरीजणो, चहरीजवो—भाव वा०।

चहराडणो, चहराडवो, चहराणो, चहरावो-क्रि०स०—निंदा कराना, आलोचना कराना। उ०—१ थारो सुयस अमर 'करणावत' वासुर,

बहु दिन हुवै व्यतीत । वाढा ढयो पाघडो विढतै, चहराडियौ नही वड चीत ।—पदमसिंह री वात

उ०—२ पाधरै खेत भारात रो पाडियो, साथ भूलाडियो रुधर सूरा । पागडो खगा वहराडियो सीस पर, भोयण चहराडियौ नही भूरा ।—बहादुरसिंह रो गीत ।

चहरायोडौ–भू०का०कृ०—आलोचना कराया हुआ, निंदा कराया हुआ (स्त्री० चहरायोडी)

चहरावणौ, चहराववौ—देखो 'चहराणौ' (रू भे)

चहरावियोडौ—देखो 'चहरायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चहरावियोडी)

चहरौ—देखो 'चैहरौ' (रू भे)

उ०—१ कुवर सी भरमल नू कही जे आज इतनो आलस क्यूं मोडा किया पधारिया, चहरौ उदास क्यू छै ।—कुवरसी साखला री वारता

मुहा०—चहरा करणा—आलोचना करना, व्यग कसना ।

चहल–क्रि०वि०—चारो ओर । उ०—भमे चहल अर भजिया, माणी रख मरजाद । नीलो वाहणा नाहरो, विजय समापी वाद ।

—रेवतसिंह भाटी

चहल-पहल, चहन-वहल–स०स्त्री०यौ०—बहुत से लोगों के आने-जाने की क्रिया या घूम । धूमधाम, ठाटवाट, रौनक ।

क्रि०प्र०—करणी, होणी ।

चहलम–स०पु० [फा० चेहलुम] किसी के मरने के दिन से चालीसवा दिन, चालीसवा (मुसल)

चहळाबहळ—१ देखो 'चहल-पहल' (रू भे) २ बिजली की चमक ।

चहळावणौ, चहळाववौ–क्रि०अ०—चमकना । उ०—१ बीजुळिया चहलादहलि, आभइ आभइ एक । कदी मिळूं उण साहिवा, कर काजळ की रेख ।—ढो मा. उ०—२ बीजळिया चहळावहळि, आभइ आभइ च्यारि । कदी मिळूली सज्जणा, लावी वाह पसारि ।—र रा

चहवचौ—देखो 'चहवचो' (रू भे) उ०—इण नू ज्यू कपडा पहिरावा त्यू चहवचै माहे गिरि गिरि पडै ।—द वि

चहि–स०स्त्री०—शव-दाह के लिये चुन कर रक्खा गया लकडियों का ढेर, चिता । उ०—मारवणी ने सचेत करि सदासिव पारवतीजी अलोप होय गया । मारवणी ढोला जी ने पूछै लागी—लकडा मेळा करि चहि क्यू कीनी ? तद ढोलोजी बोलिया—मारवणी थे निरजीव हुय गया छा, पीवणा साप रा डक सू ।—ढो मा.

(मि० 'चह' (१))

चहियै–अव्यय—चाहिये, उपयुक्त है, मुनासिव है । उ०—जब द्वारा-साह नै ऐसा कह्या जो उसका कळेजा निकाळ कर उसी के हाथ मे दिया चहियै ।—द.दा

चहिरौ—देखो 'चैहरौ' (रू भे) उ०—तरै जाणियो वाप जिसो हुवै कै माता सरीसो हुवै तिको इणरी माता को रग चहिरौ दीसै छै ।

—जखडा-मुखडा भाटी री वात

चहिलौ—देखो 'चईलौ' (रू भे)

चही–अव्यय—चाहिये । उ०—कळ त्रितीय सोडस वळे, दसकळ चतुरथी तुक मे चही ।—र.रू

स०स्त्री०—देखो 'चहि' (रू भे)

चहीडणौ, चहीडवौ—देखो 'चसीडणौ' (रू भे)

चहीजै–अव्यय—चाहिये, उपयुक्त है । उ०—नही जाऊ तौ पती रो धरम जावै है, अब काइं करणो चहीजै ।—वी स टी.

चहीलौ—देखो 'चईलौ' (रू भे) उ०—दियै चहीलै चालता, आर गाळ इक दोय । खाडेती खोटी हुवै, धवळ न खोटी होय ।—बा.दा.

चहु–क्रि०वि०—चारो ओर ।

वि०—चार,चारो । उ०—प्रभुता जग मे पाय, मोद न लावै जो मनुस । वे नरवर जग माय, चहु दिस मे धन चकरिया ।

—मोहनराज साह

चहुआण—देखो 'चौहान' (रू भे.) उ०—तूअर गया पाहाड तक्कि, चहुआंण चूरि चाडिया चक्कि ।—रा ज सी.

चहुऐवळा, चहुओर, चहुगमा, चहुगमे, चहुंगम्मा, चहुघा, चहुचक्कां चहुरतफ, चहुधा, चहुवळ–क्रि०वि०—चारो तरफ, चारो ओर ।

उ०—१ गढ भुरज सजिया चहुगमे, असमाण पडतो आग मे ।

—रा रू

उ०—२ टीगर-टोळी ले चटपट घण टोळी, चहुघा चीघणसी दुवधा घट दोळी ।—ऊ का

उ०—३ धूकळ जिण धाराळ री, ध्रुव चहुचक्का धाक । भाळ कंत अर रा भवै, चित्त ह्वै कुम्हार चाक ।—रेवतसिंह भाटी

उ०—४ चहुतरफा वणि चौहटा, अटा वुतग अखड । घुमडे जाणै घणघटा, दमक छटा छवि-डड ।—वगसीराम प्रोहित री वात

उ०—५ चहुघा चरित्र वैसणवै विचित्र, त्रैलोक तत्र वह मिळत अत्र ।—ऊ का उ०—६ जोधा नाकारी जरा, सिर आया खुरसाण । गिर चहुवळ कळ सालळी, फिर मातौ आराण ।—रा रू

चहुअल–वि०—चचल, अस्थिर (ह ना)

रू०भे०—'चहुळ' ।

चहुवळ, चहुवळा–क्रि०वि०—चारो तरफ । उ०—१ हुय हाक चहुवळ कळळ हू कळ, असुर सुर सुरदळ आहुडै ।—रा रू

उ०—२ वजि त्रवाळ चहुवळा दुगम आरवा दगाया ।—सू प्र

चहुवा–वि०—चारो । उ०—करि चाळ वीर साजति करै, घणा जोम हुता घणा । किण भाति तरफ दहुवा कहूं, तिके रूप चहुवां तणा ।

—सू प्र

क्रि०वि०—चारो ओर, मि० 'चहुवा' ।

चहुवाण—देखो 'चौहान' (रू भे) उ०—भाट विडद तिहा ऊचरै, धनि धनि हो वीसळ चहुवांण ।—वी दे

चहुवै–वि०—चारो ।

चहुवैचका, चहुवैवळ, चहुवंवळ, चहुवैवळा, चहुवोवळा–क्रि०वि०—चारो ओर, चारो तरफ । उ०—१ चविजै 'वीर' पाटि राव 'चौंडौ',

चहुवै चका करण जस 'चौंडौ'।—सू.प्र. उ०—२ चहुवा सर चहुवैवळ छूटै, तीड अनेक जाणि दळ तूटै।—सू प्र
उ०—३ वेठ तोपा धरर थरर चहुवौवळा, भाट पड केमरा साट भरळक झळा। खाटखड ढाळडा टूक ऊछळ खळा, वाज गरकाव कीधा रामर वांघळां।
—राठौड उदयसिंह, नरसिंह और लखधीर रौ गीत

चहुर—स०पु० [सं० चिकुर] बाल, केश। उ०—गिरदै उदै चहुर गहराई। अनग जाणि परवाज बणाई।—सू प्र

चहुळ—देखो 'चहुळ' (रू भे)

चहुवा—क्रि०वि०—चारो ओर। उ०—चहुवा इम चहु मत्र उचारै, पह सांभळि निज महल पधारै।—सू प्र.

चहुवाण, चहुघान—देखो 'चौहान' (रू भे)

चहुवै, चहूंवै—देखो 'चहुवै' (रू भे) उ०—१ वळ चहुवै काळ सालळी, चळ चळ पुर हलचल्ल।—रा रू.
उ०—२ चूरे दुसह सहस पच चहुवै। दळपति 'अमर' विहडवा चहुवै।—सू.प्र

चहू—देखो 'चहु' (रू भे.) उ०—जवना वीत चहू दिस जावै, ऊठ घटाण रसत नह आवै।—रा रू

चहूंघूंट, चहूकोर, चहूंगमा, चहूचका, चहूबळ, चहूवळ, चहूवैवळा—क्रि०वि०—चारो ओर, चारो तरफ। उ०—१ विध विध भोग विलास करै, उच्छव कौतूहळ। पछै किया छत्रपती, विदा फुरमाण चहूवळ।—सू.प्र
उ०—२ वासपुर भाजतां सोच पड चहूवळ, सकळ खळ माण तज सेव साधै।—मानसिंह आसियो उ०—३ विस्तार जस चहूवैवळा, साधीर सेवग सावळा।—र ज.प्र

चहोडणी, चहोडवौ—१ देखो 'चढाणौ' (रू भे) उ०—कुदणपुर सुवरण कौ कळस चहोडीजै छै।—वेलि टी
२ उगाड़ना। उ०—हरी ताळ चमाट जेही चहोडै। तमासा ज्युंही माचि धानख तोडै।—सू प्र
३ काटना। उ०—चद्रहास भट धके चहोडै। तेर हजार दुसह भड तोडै।—सू प्र
४ मानना, चाहना। उ०—आप प्रमाणि चहोडै आखर, 'केहरि' कौ मोटा करग। जो अवतार दियै हरि जाचण, जरू वार साधार जग।
—राठौड हरिसिंह राजावत री गीत
५ देखो 'चमीडणौ' (रू भे)

चहोतर—देखो 'चिमोतर' (रू भे)

चहोतरे'क—देखो 'चिमोतरे'क' (रू भे)

चहोतरौ, चहोतरो—देखो 'चिमोतरौ' (रू भे)

चा—अव्यय—के। उ०—सेवति नवै प्रति नवा सवे सुख अग चां मिसि वासी जगति। रुखमिणि रमण तणा जु सरद रितु, भुगति रासि निसि दिन भगति।—वेलि

रू०भे०—'चा'।

चाक—म०स्त्री० [सं० चक्राकन] खलिहान मे साफ किये हुए अन्न के ढेर पर डाला जाने वाला एक प्रकार का चिन्ह।

चाकणी—स०पु०—पहिचान के लिये पशु या वस्तु आदि पर लगाया जाने वाला चिन्ह।

चाकणौ, चाकवौ—क्रि०म०—१ खलिहान मे साफ किये हुए अन्न के ढेर पर राख, मिट्टी या कटे हुए ठप्पे आदि से चिन्ह अकित करना जिससे यदि अनाज निकाला जाय तो मालूम हो जाय २ किसी स्थान पर सीमा बाधने के लिये किसी वस्तु से रेखा आदि खीच कर चारो ओर से घेरना, हद बाधना ३ पहिचान के लिये किसी वस्तु आदि पर चिन्ह अंकित करना ४ अन्न के दानो को बोने के लिए मुट्ठी भर-भर कर खेत मे बिखेरना।
चाकणहार, हारौ (हारी), चाकणियौ—वि०।
चाकणवाडणौ, चाकवाडवौ, चाकवाणौ, चाकवावौ, चाकवावणौ, चाकवाववौ—क्रि०प्रे०रू०।
चाकाडणौ, चाकाडवौ, चाकाणौ, चाकावौ, चाकवणौ, चाकववौ—क्रि०स०
चाकिओटो, चाकियोडौ, चाक्योडौ—भू०का०कृ०।
चाकीजणौ, चाकीजवौ—कर्म वा०।

चाकाणौ, चाकावौ—क्रि०स० ('चाकणौ' का प्रे०रू०) १ खलिहान मे पडे अन्न के ढेर पर चिन्ह अंकित कराना २ सीमा बाधने के लिये किसी वस्तु आदि से रेखा खीचाना ३ पहिचान के लिए पशु या वस्तु आदि पर चिन्ह लगवाना ४ अन्न के दानों को मुट्ठी भर कर फेंकवाना।
चाकाणहार, हारौ (हारी), चाकाणियौ—वि०।
चाकायोडौ—भू०का०कृ०।
चाकाईजणौ, चाकाईजवौ—कर्म वा०।

चाकायोडौ—भू०का०कृ०—१ खलिहान मे अन्नराशि के ढेर पर चिन्ह आदि लगाया हुआ। २ रेखा आदि द्वारा सीमा मे बाधा हुआ, ३ पहिचान के लिए चिन्ह आदि लगवाया हुआ ४ बोने के लिए अन्न के दानो को मुट्ठी मे भर-भर कर फेंकाया हुआ (स्त्री० चाकायोडी)

चाकावणौ, चाकाववौ—देखो 'चाकाणौ' (रू भे)
चाकावणहार, हारौ (हारी), चाकावणियौ—वि०।
चाकाविओडौ, चाकावियोडौ, चाकाव्योडौ—भू०का०कृ०।
चाकावीजणौ, चाकावीजवौ—कर्म वा०।

चाकावियोडौ—देखो 'चाकायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चाकावियोडी)

चाकियोडौ—भू०का०कृ०—१ खलिहान मे राख, मिट्टी आदि से अकित किया हुआ (अन्न आदि का ढेर) २ सीमा बाधने के लिए किसी वस्तु या रेखा आदि से घेरा हुआ, हद बाधा हुआ। ३ पहिचान के लिये चिन्ह लगाया हुआ ४ भूमि पर मुट्ठी भर-भर कर फेक कर बोया हुआ (अनाज) (स्त्री० चाकियोडी)

चाख-स०स्त्री०—जमीन पर हल चलने से बनने वाली गहरी रेखा, सीता।
चाग—देखो 'चग' (रू भे)
चागलाई-स०स्त्री०—नटखटपन, चचलता, शैतानी। (ह ना)
चागलौ-वि० (स्त्री० चागली) इतराया हुआ।
स०पु०—घोडे का एक रग विशेष।
चागल्यौ-सं०पु०—मिट्टी के बर्तनो मे तैयार किया हुआ अवैधानिक शराब।
चागियौ-वि०—चारपाई के बान की चार-चार लडी को ऊपर नीचे रख कर बुनी हुई (खाट, चारपाई आदि)
चाच-स०स्त्री० [स० चचु] १ चोंच।
उ०—सुन्न सरोवर हस मन, मोती आप अनत। 'दादू' चुगचुग चाच भर, यू जन जीवै सत।—दादूदयाळ
कहा०—चाच दी जकौ चुगौ ही देही—जिसने चोच दी है वह खाने को दाना भी देगा अर्थात् ईश्वर ने उत्पन्न किया है तो जीवित रहने के लिये साधन भी देगा। ईश्वर को प्रत्येक प्राणी के पालन-पोषण करने का फिक्र है।
रू०भे०—चूच, चोच।
महत्व०—चाचड।
अल्पा०—चाचडली, चाचडी, चाचली, चोचजडी।
२ ढेकली ३ बैलगाडी का वह अग्र पतला व लबोतरा भाग जिसके ऊपर के सिरे पर जुआ कसा रहता है।
चाचड-स०पु०—१ बाजरी का वह सिट्टा जिस पर परिपक्व अवस्था के दाने होते है। उ०—चरण वछेडा चांचडा, जिण दीघ फडदे। कूक तणा कोळू महा, नित ढोल रणदे।—पा प्र
२ 'चाच' का महत्व, चाच, चचु।
चाचडली—देखो 'चाच' (अल्पा० रू भे) उ०—पाखडल्या पर लिखू ए घण रा ओळवा, चाचडली पर लिखू ए सात सिलाम।
—लो गी
चाचली-स०स्त्री०—देखो 'चाच' (अल्पा० रू भे) उ०—माणस हुवा त मुख चवा, रे लाल, म्हा सू कह्योय न जाय। लिख म्हारी सोवन चांचली, ए गोरी अर रतनाळी पाख।—लो गी
वि०स्त्री०—चोचधारी, चचुधारी (पक्षी)
चाचलौ-वि० (स्त्री० चाचली) १ लम्बी चोच वाला, जिसके लबी चोच हो। २ जिसका नीचे का होठ दबा हुआ और दात बाहर निकले हुए हो (ऊट)
स०पु०—पक्षी।
चाचल्य-स०स्त्री [स०] चचलता, चपलता। उ०—चाचल्य चित्त सिद्धात चूक, सब सेखसली के हैं सलूक।—ऊ का
चाचवौ-स०पु०—ऊट आदि के किसी अग पर गोल वृत्ताकार लगाया जाने वाला दग्ध चिन्ह (क्षेत्रीय)
चाचाळ, चाचाळौ-वि० (स्त्री० चाचाळी) चोचदार, जिसके चोंच हो, चोच वाला।
स०पु०—गिद्ध पक्षी।
उ०—चुगती चोळ थयी चाचाळी, परसी सुरख हुवा पाहाड।—द दा
चाचियौ-स०पु०—१ कुआ खोदने का एक प्रकार का औजार २ पक्षी।
वि०—१ चोच वाला, जिसके चोच हो २ जिसमे ढेकली द्वारा पानी निकाला जाता हो (कुआ) ३ जिसका नीचे का होठ दबा हुआ हो और दात बाहर निकले हुए हों (ऊट)
रू०भे०—चाचलौ।
चाचू-स०पु० [स० चचु] चोच।
वि०—चोचदार, चोच वाला।
चांचौ—देखो 'चाचियौ' (रू भे)
चाटिय, चाटी-स०स्त्री०—१ बेगार मे कराया जाने वाला कार्य।
उ०—पाचा ठाकुरा मोनू चाटी भोळाई है सो हू करू छू।
—बा दा ख्यात
२ सेवा, चाकरी। उ०—अब केताय काम किया पैहली, सिध चाटिय 'पाल' तणी छेहली।—पा प्र
क्रि०प्र०—करणी, काडणी, लेणी।
३ तेज भागने की क्रिया या भाव, दौड। उ०—चरख्या चटीठ अगीठ चख, पीठ समोवड पालणा। पाकेट सज्या सौ कोस पथ, हेकण चाटी हालणा।—मे म
क्रि०प्र०—करणी, देणी, लगाणी।
स०पु०—४ सेवक, अनुचर। उ०—सब पापिन सिरमौड, नमक हरामी कृतघणी। अघ बाकी रा ओर, चेला-चाटी चकरिया।
—मोहनराज साह
चाटीलौ-वि०—बिना वेतन या मजदूरी के कार्य करने वाला, बेगार मे काम करने वाला। (स्त्री० चाटीली)
चाटौ, चाठौ-सं०पु०—१ देखो 'चौवटौ' (रू भे)
२ चपत, थप्पड, तमाचा।
चाड-वि० [स० चड] बलवान, शक्तिशाली।
चाडम-स०पु०—आभूषण (अ मा.)
चाडाळ—देखो 'चडाळ' (रू भे) उ०—वळि वधण मूभ स्याळसिंघ वळि, प्रासै जो बीजौ परणै। कपिळ धेनु दिन पात्र कसाई, तुळसी चाडाळ तणै।—वेलि
चाण-स०स्त्री०—एक देवी का नाम।
चांणक-स०पु० [स० चाणक्य] १ चद्रगुप्त मौर्य्य का महामात्य, चाणक्य, कौटिल्य (ऐतिहासिक)
स्त्री०—चिंता (वा दा)
चाणचक्य-क्रि०वि०—अचानक, अकस्मात्, यकायक।
स०पु०—देखो 'चाणक' (रू भे)
चाणक्य—देखो 'चाणक'।
चाणुर, चाणूर-स०पु०—एक राक्षस का नाम जो कस के दरबार मे मल्लयुद्ध मे विशेषता रखने के कारण रखा गया था और श्रीकृष्ण द्वारा इसका वध किया गया था।

उ०—किलम सिलहबध खाटू जस कर। प्रचड किसन चाणूर तणी पर।—सू प्र.

चांतरणौ, चातरवौ—क्रि०अ०—पीछे हटना।

उ०—जीव ऊपर रूठा फिरै तिण मे पग चांतरै नही पूठ फेरै नही।
—रा सा स

चांतरौ—देखो 'चबूतरौ' (८ भे) उ०—खाख मायलौ मटिया थैलो चातरा माथै धरचौ।—विजयदान देथो

चाद—स०पु० [स० चद्र, चद्रक] १ चद्रमा, शशि।

मुहा०—चाद चढणौ—चद्रमा निकल आना, भाग्य चमकना २ चाद ढळणौ—रात्रि का व्यतीत होना, अवनति होना ३ चांद माथै कुडळ बैठणौ—बदली पर प्रकाश पड़ने के कारण चद्रमा के चारो ओर एक वृत्त या घेरा सा बन जाना ४ चाद माथै (कानी) थूकणौ—निर्दोष पर कलक लगाना, मूर्खता करना, दूसरे को इस प्रकार कलकित करना कि उसका कुछ न हो और अपने को स्वय कलकित होना पडे ५ चाद रौ टुकडौ—अत्यन्त खूबसूरत ६ चाद सो मुखडो—बहुत सुदर मुख ७ चार चाद लगणा—बढना, शोभा का अधिक होना ८ चार चाद लगाणा—चौगुणी इज्जत करना, सौन्दर्य अत्यन्त बढा देना।

कहा०—१ चाद गरण गिडका नै भारी हु—चद्रग्रहण पर कुत्तो को अधिक कष्ट होता है। इसका कारण यह है कि ग्रहण के समय याचक मागने के लिये गलियो मे निकलते हैं जिन्हें देख कर कुत्ते भौकते रहते हैं। जानबूझ कर बेकार मे दूसरो के कारण कष्ट सहने पर २ चाद पचासा मूआ जिवावे—चद्र ग्रह की दशा अत्यन्त शुभ मानी जाती है। आई हुई घोर आपत्ति भी इसके प्रभाव से टल जाती है। यह पचास दिन तक रहती है। (ज्यो०) ३ चोर चोर कठैई जावो चाद तौ ऊपर रैही—चोर कही जाय, चद्रमा तो ऊपर ही रहेगा, ईश्वर सब के कार्य देखता है। किसी की सुविधा या असुविधा से विधि या प्रकृति का क्रम नही बदलता। प्रकृति का क्रम तो नियति के अनुसार ही चलता है। ४ चाद रै डावै वळ—देखो कहा० ७। ५ चाद वळू व्है तो तारा भख मारै—चद्रमा अनुकूल हो तो अन्य नक्षत्रो का प्रभाव कोई महत्व नही रखता (ज्यो०)। किसी बडे व्यक्ति का सहारा मिल जाने पर छोटे-मोटे व्यक्तियो के सहारे की आवश्यकता नही रहती ६ चूलै री चाद नै हाडी री हमीर—अकमण्य और खाने मे अधिक पेटू के प्रति। ऐसे व्यक्ति के प्रति जो प्राय स्त्रियो के पास घर मे चूल्हे के निकट ही बैठा रहता है ७ जाइजै चाद रै डावै वळ—चद्रमा के बायी ओर होना। लोकोपवाद के अनुसार कार्तिक मास की पूर्णिमा के दिन सध्या समय कृत्तिका नक्षत्र चद्रमा के पीछे रहता है। रात्रि व्यतीत होने पर चद्रमा के अस्त होने के समय कृत्तिका नक्षत्र चद्रमा के आगे होकर दाहिनी ओर हो जाय तो आने वाला वर्ष सुकाल माना जाता है और यदि वह बायी ओर हो जाय तो आने वाला वर्ष बुरा गिना जाता है। अनुपयुक्त एव अनुपयोगी व्यक्ति के प्रति।

२ एक प्रकार का आभूषण जो द्वितीया के चद्रमा के आकार का होता है ३ ढाल के ऊपर की गोल फुलिया. ४ चादमारी का वह काला दाग जिस पर निशाना लगाया जाता है ५ घोडे के शिर की एक भौरी (शा हो) ६ स्त्रियो द्वारा अपनी कलाई के ऊपर गोदाया जाने वाला एक प्रकार का गोदना. ७ भालू की गर्दन के नीचे सफेद बालों का समूह ८ मयूरपख के बीच की चद्रिका. ९ चद्र के आकार का मडल जो जल मे तेल की बूद डालने से बन जाता है।

अल्पा०—चादडलो, चादडल्यो, चादटी, चादलउ।

चादडलौ, चादडल्यौ, चादलौ—देखो 'चाद' (अल्पा रू भे.)

उ०—चादडलो भवरजी चढियो गिगनार।—लो गी

चाद चढियो गिरनार—स०पु०—एक राजस्थानी लोकगीत का नाम।

चादछठ—स०स्त्री०—भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की षष्ठी।

वि०वि०—देखो 'ऊबछठ'

चादणियौ—स०पु०—प्रकाश, ज्योति (अल्पा) उ०—चादा थारै चादणियै, तारा री तेज मौळी रे।—लो.गी

चादणी—स०स्त्री०—चद्रमा का प्रकाश, चादनी।

पर्याय०—चद्रातप, ज्योत्स्ना, प्रकाश, हिम-प्रकाश।

मुहा०—चार दिना री चादणी—थोडे दिन रहने वाला सुख या आनन्द, क्षणिक समृद्धि।

कहा०—च्यार दिना री चादणी फेर अधारी रात—सुख के दिन थोडे ही होते है, फिर दुख एव विपत्ति तो भुगतनी ही पडती है. २ बारबार चादणी रातां को आवै नी—सुख के दिन बार-बार नही आते, सुअवसर सदैव नही मिलता।

यौ०—चादणी रात।

२ पर्दानशीन स्त्रियो के बाहर निकलने पर पर्दे के लिए उन पर फैलाया जाने वाला वस्त्र।

वि०वि०—पैदल चलते समय प्राय यह वस्त्र ओढ लिया जाता है, किन्तु गाडी या रथ पर चलते समय उसे ऊपर फैला दिया जाता है।

३ मकान की वह खुली छत जो किसी कमरे के बाहर निकली हुई हो ४ गद्दे के ऊपर बिछाई जाने वाली सफेद चादर।

उ०—ऊपरा गदरा चादणी बिछायजै छै।—रा सा स

५ सफेद रग के फूलो का एक प्रकार का पौधा विशेष या इस पौधे का फूल जो रात्रि मे ही खिलता है (रा सा स) ६ कपडे से बनाया हुआ वह आवरण जो चादी या सोने की परत चढी हुई छडी पर चढाया जाता है। उ०—ऊपर वनात री कलाबूती चादणी रूपैरी चोभा सू खडी की छै।—रा सा स

७ घोडे व पशुओ की एक बीमारी जिसके फलस्वरूप उनका शरीर अकड जाता है (शा हो.) ८ वह भैस जिसके दोनो नेत्र सफेद हों. ९ सिर के सामने वाले भाग मे सफेद टीके वाली भैस. १० रथ के ऊपर तानने का सफेद कपडा।

चादणू, चादणौ–स०पु० [स० चद्र] प्रकाश, ज्योति। उ०—उल्लू उर मे आग, खतम अधारौ खुभियौ। चारू तरफ चादणू, चोर सूझै चित चुभियौ।—ऊ.का.
यौ०—चादणौ पख।
चादणौ पख–स०पु०यौ० [स० चद्रन पक्ष] चाद्रमास का शुक्ल पक्ष।
चादतारौ–स०पु०यौ०—चाद और तारे के आकार की बूटी या छाप का एक वस्त्र या मलमल २ एक आभूषण विशेष।
चादबाळा–स०स्त्री०यौ०—कानो मे पहना जाने वाला अर्द्ध चद्राकार आकृति का एक आभूषण।
चादमारी–स०स्त्री०—वदूक द्वारा निशाना लगाने का कार्य या निशाना साधने का अभ्यास।
चादराइयण, चादराईण, चादरायण—देखो 'चाद्रायण' (रू भे)
उ०—जो माहरी वाई चादराईण वरत कीयौ थौ सो वामण कोई आयौ नही अर दख्यणा दीधी नही है सो थानै सकळप रै वासतै माहरी वाई आपनै बुलावै है।—राजा रा गुर रा वेटा री वात
चादळ–स०पु० [स० चदिर] चाद, चद्रमा (ना डि को)
चादळउ—देखो 'चाद' (अल्पा रू भे)
चादळी—देखो 'चादळ' (रू भे) उ०—तठा उपराति राजान सिलामति सरद रित रै समै री पूनिम रौ चद्रमा सोळै कळा लिया सपूरण निरमळी रैण री उजळी चादळी रै किरण करि नै हस नू हमणी देखै नहीं नै हसणी हस देखै नही छै।—रा सा स
चादसलाम, चादसलामी–स०स्त्री०—१ अमावस्या के वाद नये चद्रोदय के समय प्रजा से वसूल किया जाने वाला कर विशेष २ द्वितीया के चद्रोदय के अवसर पर छोडी जाने वाली तोप की ध्वनि।
चादसूरज–स०पु०यौ०—स्त्रियो का एक प्रकार का आभूषण जो सिर पर धारण किया जाता है। उ०—ओ म्हारा चादसूरज नणदोई सा, म्हारी वाया ने वाजू लाओ सा।—लो गी
चादा–स०स्त्री०—परमार वश की एक शाखा।
चादावत–स०पु० [स० चद्रपुत्र] राठौडो की एक उपशाखा।
चादी–स०स्त्री०—१ एक चमकीली सफेद तथा नरम धातु जिससे प्राय आभूषण, सिक्के और वर्तन आदि वनाये जाते है।
पर्याय०—खरजूर, जीवन, जीवनीय, तार, वसु, रजत, रूपौ, सुभ्र।
मुहा०—१ चादी घडणी—रुपया पैसा कमाना, धन प्राप्त करना, चादी के आभूषण बनाना। २ चादी रा जूता मारणा (लगाणा) रुपये देकर अपने वश मे करना, रुपये खर्च करने को विवश करना। ३ चादी रा जूता लागणा—अर्थ-दड भुगतना। ४ चादी होणी—खूब मजे होना। जखम होना, घाव पडना।
कहा०—चादी रा लागोडा जूत घणा दिन चरचराट करै—अर्थ-दड भुगतने से होने वाली मानसिक पीडा दीर्घ काल तक बनी रहती है। २ घाव, जख्म जो मास के ऊपरी सतह तक ही सीमित है।
क्रि०प्र०—पडणी, होणी।
३ एक प्रकार की लाल मिट्टी ४ हुक्के या चिलम मे जला हुआ नशीला पदार्थ ५ दहीवडा नामक खाद्य-पदार्थ।—(मेवात अलवर)
६ अधिक पीटने से होने वाली अवस्था ७ अपने मान-सम्मान की रक्षार्थ निर्बल व्यक्ति का आततायी के विरुद्ध अपने शरीर पर जख्म कर लोहू निकाल देने की क्रिया (एक प्रकार का सत्याग्रह)
क्रि०प्र०—करणी।
चादू–स०पु०—चौहान वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।
चादोड़ी–स०पु०—महाराणा सग्रामसिंह द्वितीय (मेवाड) के समय मे प्रचलित एक मेवाडी सिक्का (मेवाड)
चादौ, चाद्यौ–सं०पु०—१ चद्रमा. उ०—१ चादा थारै चादणियै, तारा री तेज मोळौ रे।—लो.गी. उ०—२ चाद्या तेरी चकमक रात जी, कोई नणद भोजाई पाणी नीसरी।—लो गी.
अल्पा०—चाद्यौ।
२ दूरदर्शक यत्र लगाने का लक्ष्य-स्थान ३ चादावत शाखा का राठौड क्षत्रिय व्यक्ति ४ भूमि के नाप मे वह विशेष स्थान जिसकी दूरी को लेकर हदवदी की जाती है।
३ कच्चे फूस के छाजन या खपरैल आदि के मकान के आजू-बाजू की दीवार का ऊचा उठा हुआ हिस्सा जिस पर बेंडरी रहती है।
६ रेखा गणित का एक उपकरण।
चादौराणी–स०पु०—लडकियो द्वारा गाया जाने वाला एक लोक गीत।
चाद्र–स०पु०—१ चाद्रायण व्रत २ चद्रकान्त मणि।
वि०—चद्रमा सम्वन्धी।
चाद्रमसायण–सं०पु० [स० चाद्रमस+अयन=चाद्रमसायन] बुध ग्रह।
चाद्रमाण–स०पु० [स० चाद्रमान] चन्द्रमा की गति के अनुसार निर्धारित किया जाने वाला काल का परिमाण।
चाद्रमास–स०पु०यौ० [स०] चन्द्रमा की गति के अनुसार होने वाले मास।
चाद्रवरती, चाद्रव्रतिक–वि०—चन्द्रायण व्रत करने वाला।
स०पु०—राजा।
चाद्रायण–स०पु० [स०] १ पूर्ण मास भर का एक कठिन व्रत जिसमे चन्द्रमा की कलाओ के घटने-बढने के अनुसार आहार मे भी घटा-वढी की जाती है २ ११ और १० के विराम पर प्रत्येक चरण मे २१ मात्राओ का एक मात्रिक छद जिसमे पहिले विराम पर जगण ISI और दूसरे पर रगण SIS होता है।
रू०भे०—चदरायण, चादराइयण, चादराइण, चादरायण।
चाद्रिणु—देखो 'चानणी' (रू भे)
चानणछठ–स०स्त्री०—भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की षष्ठी।
वि०वि०—देखो 'ऊव छठ'
चानणियौ–स०पु०—देखो 'चानणी' (अल्पा) उ०—दिवलो उजाळौ लागी जेझ, चादा रै चानणियै लिख दौ ओळवा।—लो गी
चानणी—देखो 'चादणी' (रू भे)

यौ०—चानणी रात।

चानणो-सं०पु०—प्रकाश, उजाला। उ०—पडत श्रौर मसालची, दाऊ उलटी रीत, श्रौर दिखावै चानणौ, श्राप श्रंधेरै बीच।
—दादूदयाळ

मुहा०—१ घर रौ चानणौ—घर का उजाला, कुलदीपक, परिवार की इज्जत बढाने वाला, सतान २ चानणौ करणौ—कोई महत्वपूर्ण कार्य करना।

कहा०—श्रापरी श्राख्यिा चानणौ है—श्रापकी श्रांखो ही प्रकाश है। किसी व्यक्ति विशेष पर पूर्ण निर्भर रहने पर उस व्यक्ति के प्रति कही जाने वाली कहावत।

रू०भे०—चादणौ।

यौ०—चानणौ पख।

अल्पा०—चानणियौ।

चानणौ पख-सं०पु०यौ० [सं० चद्रपक्ष] चद्र मास का शुक्ल पक्ष।

चानमारी—देखो 'चांदमारी' (रू भे)

चानवाळ—देखो 'चाद्रवाळ' (रू भे)

चानो-सं०स्त्री०—१ सोने चादी के गहनो पर जाली की खुदाई करने का लोहे का कीला विशेष। २ देखो 'चादी' (रू भे)

चाप-सं०पु०—१ चपा का वृक्ष २ देखो 'चापावत' (रू भे)

चापणी-सं०स्त्री०—१ पैर दवाने की क्रिया २ डर, भय।

चापणौ-सं०पु० —घोडे की एक जाति विशेष।

चापणौ, चापबौ-क्रि०स०भ०—१ अधिकार मे करना, कब्जे मे करना। उ०—जे परगह मह श्राप री, चढियौ 'सीवकरन्न'। 'करन' हरा पुर चापिया, उर चापिया जवन्न।—रा रू

२ पैर दबाना, चरण चापना। उ०—१ जग जाडा जूझार, साबर पग चापै श्रधिप। गउ रामण गुजार, पिंड मे राण प्रतापसी।
—दुरसौ श्राढौ

उ०—२ हे सखी कराणी ढेररी सौ पगा रौ साम खावै है तिणनै तो कहै गा म्हारै पती रा चरण चापै छै।—बी स टी.

३ पुचकारना ४ किसी के द्वारा कोई किसी गुप्त या भडकाने वाली कही गई वात या अपनी श्रोर से किसी असत्य या भडकाने वाली वात को दूसरे सवधित व्यक्ति को भडकाने के उद्देश्य से कह देना।

५ डरना, डर जाना, भयभीत होना। उ०—तवही भूमि विसम सह चापी, गाढा श्राणद लीधी। देवगिरि जे राउत रामदे, तणइ वेटी दीधी।—का दे प्र

६ क्रोध करना। उ०—बहर भडै चरमक चप्पा, चापिया नाग चळ।—सरजुरामसिघ चूडावत री गीत

७ जाग्रत होना, चेतन होना ८ गिरना ९ लज्जित होना १० दबना, भींचा जाना।

चापणहार, हारौ (हारी), चापणियौ—वि०।

चापवाडणौ, चापवाडबौ, चापवाडणौ, चापवाडबौ, चापवावणौ, चापवावबौ—प्रे०रू०।

चापाडणौ, चापाडबौ, चापाणौ, चापाबौ, चापावणौ, चापावबौ
—क्रि०स०।

चापिग्रोडौ, चापियोडौ, चाप्योडौ—भू०का०कृ०।

चापीजणौ, चापीजबौ—कर्म वा०।

चपणौ, चपबौ—श्रक० रू०, रू०भे०।

चापर-वि०—१ दृढ, पक्का २ तैयार, कटिवद्ध। उ०—घोडा सवार ए हिज घणा, चापर कर सागै चडण। मै चढे पीठ डाला मर्थै, लै हाला श्राई लडण।—मे म.

चापलौ-स०पु०—एक प्रकार का घोडा (शा हो)

चापा-स०स्त्री०—१ देववृक्ष (श्र मा) २ राठौड वश के राजपूतो की एक शाखा जो राव चापा से श्रारभ हुई मानी जाती है।

चापाणौ, चापाबौ-क्रि०स०—१ अधिकार मे करने को प्रेरित करना, कब्जे मे कराना २ पैर दबवाना ३ डराना ४ क्रोध दिलाना ५ जाग्रत करना ६ गिराना ७ कुचलाना ८ लज्जित करना. ९ दवाना, भींचना।

चापाधिप-स०पु०—दानवीर राजा कर्ण (ह ना)

चापायोडौ—भू०का०कृ०—चापने की क्रिया कराया हुश्रा, देखो 'चापणौ' स्त्री०—चापायोडी।

चापावणौ, चापावबौ —देखो 'चापाणौ' (रू भे.)

चापावत-स०पु०—राठौड राव चापा के वशज राठौडो की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

चापावियोडौ—देखो 'चापायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० चापावियोडी)

चापियोडौ—भू०का०कृ०—१ अधिकार मे किया हुश्रा २ पैर दवाया हुश्रा ३ भयभीत हुश्रा हुश्रा ४ क्रोध किया हुश्रा ५ जाग्रत हुश्रा हुश्रा ६ गिरा हुश्रा ७ कुचला हुश्रा ८ दवाया हुश्रा, भींचा हुश्रा ९ लज्जित। (स्त्री० चापियोडी)

चापेयक-स०पु०—चपा वृक्ष (ना मा)

चापौ-स०पु०—१ चापावत राजपूत २ देव वृक्ष, चपा. ३ चरने जाने वाली गायो का समूह। उ०—चतुरा वयू ऊडी चिंता चापा री, श्राछी ईसुर री भूडी श्रापा री।—ऊ का

चापौ फूल-स०पु०—एक प्रकार का घोडा।

चाब-स०स्त्री०—देखो 'चाम' (रू भे)

चावड, चावडउ, चावडौ-स०पु० [स० चर्मन्] खाल, चमडी।
अल्पा०—चावटी।

चावर-स०पु०—एक प्रकार का घास।

चावळ—देखो 'चवळ (रू भे) उ०—रामसिंघ वीकावत। समत १६८६ प्रथीराज वलुवोत रै काम श्रायौ। पठाण री वेढ चावळ नदी ऊपर हुई तठै।—नैणसी

चावली, चावलीरा, चावलीरास, चावलीराह-स०स्त्री०—चमडे या खाल की वनी चपटी रस्सी।

चाबोचाव–स०पु०—सपूर्ण खेत, पूरा खेत।

चाबौ–स०पु० [स० चर्म] खाल, चमडा। उ०—उपाड नै आला चावा माहे बाध नै गाडे माही घातियौ।—नैणसी

चामड—देखो 'चामुंड' (रू भे.)

चामधर–स०पु० [स० चर्मधर] शिव, महादेव।

चाम–स०स्त्री० १ खेत मे जमीन जोतने के लिये हल से खीची जाने वाली गहरी रेखा, सीता [स० चर्म] २ चर्म, चमडी, खाल, त्वचा। उ०—मुख मे आळौ चाम काढ नाखो ने दूरी, स्वाद वाद बकवाद कपट करवा ने सूती।—सगराम

कहा०—१ चाम नै चाम को पूगै नी—कोई मनुष्य किसी दूसरे मनुष्य के बराबर नही हो सकता, सब मनुष्य समान नही होते। २ चाम प्यारी नही दाम प्यारी है—चमडा अर्थात् मनुष्य प्यारा नही, धन प्यारा है। धन का लोभी घर मे आई हुई वधू को महत्व नही देता, उसे तो दहेज मे प्राप्त धन ही अच्छा लगता है। धनलोलुप के प्रति ३ चाम री काइँ प्यारी, काम प्यारी—कामचोर व्यक्ति किसी को अच्छा नही लगता चाहे वह कितना ही सुदर एव निकट सम्बन्धी ही क्यो न हो।

रू०भे०—चाव।

मह०—चामड।

चामकस, चामघस–स०पु०—एक प्रकार का भूमि पर छितराने वाला पौधा जो पुष्टि के लिए घोट कर पीया जाता है।

चामड—देखो 'चाम' (मह रू भे)

चामडपोस—देखो 'चमडपोस' (रू भे)

चामडियाळ–स०पु०—मुसलमान, यवन। उ०—आवट सेन हुए साह-आलम, पट हत पील पठाण पडै। आडो राण तणौ भड ऊभौ, चामडियाळ न दुरग चडै।—अज्ञात

चामडी–स०स्त्री०– चमडी, चर्म, खाल, त्वचा। उ०—हन्सा वीर म्हारा रे। मारु गी बादस्या नै गळ घोट। जामण का रै जाया, भूरा कटवावू रे थारी चामडी।—लो गी

मुहा०—१ चामडी मे लूण भरणौ—अधिक कडी सजा देना, असाध्य पीडा पहुँचाना २ चामडी उतारणी—अधिक पीटना ३ चामडी तोडणी—अधिक पीटना।

कहा०—जीवती चामडी रा सौ लागू है—जीते जी के सब पीछे लगे रहते हैं और अपना स्वार्थ पूरा करते रहते हैं। मरने पर परिवार के सदस्यो को कोई सहायता के लिए नही पूछता। मनुष्य के जीवन मे सैकडो दुख लगे रहते हैं।

चामडौ–स०पु० [स० चर्म+रा०प्र०डौ] देखो 'चाम' (रू भे)

चामचोर–स०पु०—व्यभिचारी, दुराचारी व्यक्ति।

उ०– मूरख मलीन महा हरामी हरामखोर, चोर चामचोर चाह चाहना न चाही तें।—ऊ का

चामचोरी–स०स्त्री०—व्यभिचार, पर-स्त्री-गमन।

चामटी, चामठी–स०स्त्री० [स० चर्म+यष्टि] चाबुक। उ०—सुकव आविया नजर मेलाय भटकै सदा, कसर सुं चलै मछरा कराता। अदावा वसर वण लगै नह आमटी, तुरी वण चामटी न हुँ ताता।—पीरदान आढौ

कहा०—माठा रै लागै चामठी, ताता रै लागै घाव—हल या गाडी का जो बैल धीरे चलता है उसके चाबुक की मार पडती है तथा तेज चलने वाले के हलकी हूलवाणी से लग कर घाव होने का भय रहता है। अति सर्वत्र वर्जयेत।

चामणी–स०स्त्री०—आख (डि को)

चामर—१ देखो 'चवर' (रू भे) उ०—चडी त्रिकळसइ सातल वइसइ, विहु पखि चामर ढालइ। कटक माहि सिंघासणि बइठउ, पातिसाह निहाळइ।—का दे प्र

२ प्रत्येक चरण मे एक गुरु, एक लघु—इस क्रम से १५ वर्ण का एक वर्णिक छद। मतान्तर से यह क्रमश रगण, जगण, रगण जगण, एव रगण से १५ वर्णो का वर्णिक छद होता है।

३ पूछ। उ०—डकर करै अग्राजियौ, चामर सीस चढाय। धंधीगर करतौ घसा, घसियौ जळ मे जाय।—गजउद्धार

चामरआळ, चामरयाळ, चामरिआळ, चामरियाळ–स०पु०—१ मुसलमान, यवन। उ०—१ इद्र धरा व्रज ऊपरै, ज्या पैले जळ जाळ। घर हिंदू सुर पीडवा, आया चामरआळ।—रा रू उ०—२ वेढ नत्रीठा वज्जिया, दोय पोहर दाढाळ। 'भाण' भले रिण भाजिया, चौडै चामरयाळ।—रा रू

२ देखो 'चामरी' (रू भे)

रू०भे०—चामडियाळ, चामरीयाळ।

चामरियौ–स०पु०—चमडे का कार्य करने वाला, चर्मकार।

उ०—यू माहोमाह भाखता मुहगै मोद, चामरिया छपरा में डेरी चापियौ।—अज्ञात

चामरी–स०पु० [स० चामरिन्] घोडा, अश्व (डि को)

वि०—चवर जैसी, चवर से सवन्वित। उ०—चोवडी धूव रा चामरी पूछ रा, निमसी नळी रा।—रा सा स

चामरीयाळ—देखो 'चामरियाळ' (रू भे) उ०—वड वाहा देखौ मुकनावत, ए दहु मारग न छेलै आळ। चामरियाळ घास मुख चीनौ, मरगण डाळ न लाभै माल।—रुगौ मुहतौ वालरवा वाळौ

चामरौ—देखो 'चवर' (रू भे)

चामळ—देखो 'चवळ' (रू भे) उ०—समहर वळवत वाहता असमर, छूटा फिरग दळा रतछोळ। राती देख अचभ रतनाकर, चामळ किम कीवी रग चोळ।—हाडा वळवतसिंह री गीत

चामस–स०पु० [फा० चश्म] १ नेत्र २ चश्मा, ऐनक।

चामाचेड, चामाचेड—देखो 'चमचेड' (रू भे)

चामाळीसौ, चामाळौ–स०पु०—४४ वा वर्ष।

चामासौ–स०पु० [स० चतुर्मास] वर्षा ऋतु के चार मास।

चामिकर—देखो 'चामीकर' (रू भे) उ०—सत्या न जग सह

सुदरथा, सह जरा हुवै न सूर। चमकं सह नह चामिकर, सह रत रँग न गिदूर।—रेवतसिंह भाटी

चामी—स०स्त्री०—लाल मिट्टी।

चामीकर, चामीर—स०पु० [स० चामीकर] १ स्वर्ण, सोना (ह ना)
उ०—१ चरणे चामीकर तणा चदाणिए, सज नूपुर घूघरा सजि। पीळा भमर किया पहराइत, कमळ तणा मकरद कजि।—वेलि
उ०—२ जगा जोत आदीत री जोत ओपै, उभै हीर चामीर मे सग आपै।—सू प्र
२ धतूरा।
रू०भे०—चामिकर।

चांमट, चामुंटा—स०स्त्री० [स० चामुण्डा] १ एक देवी का नाम जिसने शुभ-निशुभ व चड-मुड नामक दो दैत्यो का सहार किया था।
उ०—देवी मात जानिसुरी ब्रह्म मेहा, देवी देव चामुड सख्याति देहा।—देवि
२ चौसठ योगिनियो के अतर्गत इकसठवी योगिनी ३ गिरिजा, पार्वती।
रू०भे०—चाउड, चाउडा, चावडा।

चामुडानदन—स०पु०—भैरव (डि को.)

चामोदर—स०पु०—आटा आदि भरने का चमडे का बडा थैला।
उ०—मत्था गेमलिया भाखलिया खावै, वेफ्ह दामोदर चामोदर वावै।—ऊ का.

चाय—स०स्त्री०—एक रोग विशेष जिसमे दाढी, मूछ, सिर आदि के वाल उड जाते है।

चांयलो—स०पु०—एक रोग विशेष जिसमे दाढी-मूछ व सिर आदि के वाल उड जाते है और फिर नही उगते। इन्द्रलुप्त (अमरत)
वि०—जिसके वाल उड गये हो।

चावटो—देखो 'चौवटो' (रू भे) उ०—वाई ऐ मामाजी आया है चावटे। वाई ऐ लीधा है परा रे वधाय, मोहरी मूहगा मोल री।—लो गी

चावळ—स०पु०—१ देखो 'चावळ' (रू भे)
स०स्त्री०—२ चवल नदी।
वि०—उज्वल, श्वेत (डि को)

चावली राह—देखो 'चावली राह' (रू.भे)

चा—स०पु०—१ कन्नोजिया ब्राह्मण २ कार्य।
स०स्त्री०—३ कन्या ४ द्रौपदी ५ अग्नि (एकाक्षरी) ६ देखो 'चाय' (रू भे.)
अव्यय—के। उ०—हुइ हरख घणै सिसुपाळ हालियो अथे गायो चेगि गति। कुण जाणै मगि हुआ केतला, देस देस चा देसपति।—वेलि

चाअणी, चाअवो, चा'णी, चा'वो—१ देखो 'चाहणी' (रू भे)
२ देखो 'चराणी' 'चावणी' (रू भे)

चाअरी—स०पु०—चौपाया पशु।

चाइ—स०स्त्री०—१ चाह, लगन। उ०—सखिये साहिव अविया, जाह की हूती चाइ। हियडउ हेमागिर भयउ, तन पजरे न माइ।—ढो मा
२ प्रकार, तरह। उ०—सुणि एकलि पखे सकळ, कळ छावीस कहाइ। इळि जस 'लाळै' री अमर, चमर छद इणि चाइ।—ल पिं

चाइजे, चाइजै—अव्यय—चाहिये, उपयुक्त है। 'विधि' सूचित करने के लिये यह शब्द क्रियाओ के साथ भी लगता है।
रू०भे०—चइजै, चईजै, चहियै, चाइजै, चाइयै।

चाईजै—देखो 'चाहियै' (रू भे)

चाउड, चाउडा—देखो 'चामुडा' (रू भे) उ०—चाउड वसाउ ताजी सचेड, हड जास खेच वासह हुरेड।—रा ज.सी

चाउडा—देखो 'चावडा' (रू भे)

चाउर—१ देखो 'चावर' (रू भे) उ०—काकळ प्रगळ वाहणी काढै, महपत सवळ घणा दळ माण। सत्रहर डगळ किया सह सूधा, दळ चाउर फेरै दईवाण।—वरजूवाई
२ देखो चावळ' (रू भे)

चाउळ—देखो 'चावल' (रू भे) उ०—लाख लाख साहण नी वाट, दस दस सहस दीवाणी हाट। लाभइ चाउळ मूग नइ लूण, आटा गुळ घी खाइ कुण।—का.दे प्र

चाऊ—वि०—१ शुभचिंतक २ चाहने वाला, चाहक, प्रेमी।
उ०—सालुळै रोद रौळा सरू, घणी चाऊ अधीयावणा।—वखतो खिडियो
३ खूब उत्तम व गरिष्ठ पदार्थ खाने का इच्छुक, भोजन-लोलुप
४ रिश्वतखोर (व्यग्य) (मि खाऊ)

चाओडा—देखो 'चावडा' (रू भे)

चाक—स०स्त्री० [स० चक्र] १ पहियेनुमा गोल मडलाकार पत्थर या चिकनी मिट्टी को पथरा कर वनाया हुआ मोटा गोल चक्र जिसे घुमा-घुमा कर कुम्हार मिट्टी के वर्तन उतारता है। उ०—कुळ मांही कुम्हार, माटी रा मेळा करै। चाक उतारणहार, नवो घडीदे नागजी।—र रा
मुहा०—१ चाक चढणी—किंकर्तव्यमूढ होना २ चाक चढाणी—असमजस मे डालना, किंकर्तव्यमूढ करना, उत्तेजित करना।
२ चरखी, गिराडी, चकरी. ३ चक्की ४ छुरी, चाकू, कटार आदि की धार तेज करने की सान ५ वह मिट्टी की जमाई हुई लोथ या पिंडी जो ढेकली के पिछले छोर पर बोझ के लिये वाधी जाती है ६ खरिया मिट्टी ७ तृप्तता, पूर्ण अघाने का भाव। ८ प्रत्यञ्चा चढाने का भाव या क्रिया. ९ सेना (डि.को)
[अ०] १० खरिया मिट्टी की वनी सिगरेटनुमा वस्तु जिससे अध्यापक छात्रो के सम्मुख श्याम पट्ट पर लिखते हैं।
अल्पा०—चाकडली।
स०पु०—११ पहिया, चक्का. १२ वात-चक्र, ववडर।

उ०—चौगडद धोम रज डमर चाक, वीछटिया मेळा चक्रवाक।
—सू प्र

वि०—१ तैयार। उ०—हुसनाका तरकसा सू मैण कपड री खोळी उतारि लीधी छै, कबाण चाक कीजै छै।—रा सा सं

२ स्वस्थ, तन्दुरुस्त। उ०—१ राजा रा बेटा नै मोसू मूढै बोलिया नै चार मास हुवा, न जाणीजै देही चाक छै कै न छै।
—सेठ री वात

उ०—२ हिवै नागजी दिन दिन डील मे गळतौ जावै। सु सारा मुलका रा वैद बुलाया पिण नागजी चाक न हुवै।
—नागजी नागवती री वात

३ पूर्ण रूप से तैयार, सुसज्जित। उ०—चौडे भापता विडगा ताता बोलता जरद्दा चाक, वाजता सिरमी पाना होता रना वाट। उडता बदूका आग जागता छडा(ळा) अणी, नगारा धुवता आयौ अछायौ निराट।—बगतौ खिडियौ

४ पूर्ण अघाया हुआ, तृप्त।

उ०—१ मनुहारा हुवै छै, देसौत आरोगै छै, अमला चाक हुयजै छै।
—रा सा स.

उ०—२ जोगेसर कह्यौ अबार तीजै पोहर रोटी खाई छी सो गाढी चाका छू।—जगमाल मालावत री वात

चाकडली—देखो 'चाक' (अल्पा रू भे)

चाकणौ, चाकवौ—देखो 'चाखणौ' (रू भे)

चाकर—स०पु० [फा०] (स्त्री० चाकरण, चाकरणी, चाकराणी) सेवक, नौकर, दास, भृत्य।

पर्याय०—अनुग, अनुचर, किंकर, खवास, खानजाद, गुलाम, गोलौ, ग्रास, चेट, चेर, चैडौ, डिगर, दास, नफर, निजोज, पतप्रीत, परजात, परजीत, परपघत, परपिंडात, परअ्रत, परसकद, पराचित, प्रईक, भुजक, भ्रत, विधकर, सेवकर।

चाकरडी—देखो 'चाकरी' (अल्पा रू भे) उ०—१ चाकरडी रे मारू थारे हाळीडे ने मेल, राय अवके रे बरसाळै म्हारा मारू घर वसौ।
—लो गी

उ०—२ म्हाने रे, मारू कसूवे री जाभी चास, राय थे सिधावौ रे ईडरगढ री चाकरी। चाकरडी रे मारू थारे बावैजी नै मेल, राय हमकै रे चौमासे, रे म्हारा गाढा मारू घर वसौ।—लो गी

चाकरण, चाकरणी—स०स्त्री०—दासी, सेविका, नौकरानी।
रू०भे०—चाकराणी।

चाकर-बागर—स०पु०यौ०—नौकर, सेवक, दास। उ०—बडा भील वडा सडा माहे बैसाणिया आदमी ४०० चाकर-बागर बीजा सडा माहे बैसाणिया।—नैणसी

चाकराणी—देखो 'चाकरणी' (रू भे.)

चाकरी—स०स्त्री०—१ सेवा, टहल, परिचर्या। उ०—महानस री मालिक होई चारण री चाकरी मे चित लगाई चातुराई री रीभ चही।—व भा

क्रि०प्र०—करणी, देणी, बजाणी, साजणी।

२ वेतन लेकर कार्य करने का भाव, नौकरी। उ०—दिल्ली चाकरी मे दौडि 'जगता' 'मान' जाया। नागाणा ठिकाणा बादिसाहा सै लिखाया।—शि व

कहा०—चाकरी ना कीजिए घास खोद खाइये—नौकरी करने की अपेक्षा घास खोदना अधिक अच्छा है। नौकरी की निंदा।

अल्पा०—चाकरडी।

चाकलियौ—स०पु०—१ चक्की (अल्पा) उ०—फोडू फोडू मा चाकलिये री ए पाट। चाकलिये री पाट, वगड वखेरू मा पीसणू जे।—लो गी

२ देखो 'चाकलौ' (अल्पा रू भे) ३ चक्की का पाट (अल्पा)

४ चकला (अल्पा)

चाकली—१ देखो 'चक्की' (अल्पा रू भे) उ०—मंहदी पीसी पीसी चाकली रे पाट, पेम रस मेहदी राचणी।—लो गी

२ घोडो का एक रोग विशेष जो उनके चारो पैरो मे होता है (शा हो)

चाकलौ—स०पु० [स० चक्र+रा०प्र०लौ] प्राय काष्ठ का बना एक गोल चक्र जिसके घेरे मे रस्नी बैठाने के लिए गड्ढा बना रहता है और जिस पर रस्सी या लाव डाल कर कुयें से मोट आदि द्वारा पानी निकालते हैं। (मेवात) (मि०—भूण)

अल्पा०—चाकलियौ।

२ एक प्रकार का छोटा बिछौना. ३ देखो 'चकलौ' (अल्पा. रू भे.)

चाकवौ—स०पु०—१ पपीहा पक्षी २ चकवा पक्षी।

चाकावध—स०पु०—योद्धा, वीर पुरुप। उ०—हाकौ हाका ऊपडै वैडाका साम्हा खेत हक्कं, छाका सूर लोहा वोहा दुरद्दा विछोड। डाका वागा उजाळै जोधाण जोध धोळै दीह, चाकावध भल्ला भलौ दिखाडै चित्तौड।—हरदान भादौ

चाकी—स०स्त्री०[स० चक्र] आटा पीसने या दाना दलने की चक्की।

उ०—चाकी के पाट पिसाविया, महदी ली कपडे जी छाण, सोदागर महदी राचणी।—लो गी.

चाकू—स०पु० [तु०] शाक-भाजी, फल, कलम आदि छोटी-मोटी चीजो को काटने या छीलने का औजार।

रू०भे०—चक्कू।

चाकचुगा—स०पु०यौ०—एक प्रकार का शस्त्र।

चाकोर—देखो 'चकोर' (रू भे) उ०—वर्ण कोकिला मोर चाकोर वाणी, सुक सारिकाय सुवाय सुहाणी।—रा रू

(स्त्री० चाकोरी)

चाकौ—स०पु० [स० चक्र] १ रहट का वह कंगूरेदार चक्र जिसके धक्के से दूसरा कगूरेदार चक्र घूमता है, रहट का मूल चक्र।

चाख—स०स्त्री०—१ व्यसन, दुर्व्यसन।

[स० चक्षु] २ दृष्टिकोण, नजर, दीठी।

चाखड, चाखडा, चाखडी—स०स्त्री०—१ हड्डी टूटने पर उसे पुन जोडने के लिए उस पर बाधी जाने वाली बास की खपच्ची।

२ खढाऊ। उ०—आखियो जिती घर ओयण थायी इळा, सुभोजन चाखियो थाळ साथे। ताम्र पत्र ढाकियो चाखडा धान तळ, हतेरण राखियो आप हाथे।—खेतसी बारहठ

३ लकडी का वह विशेष उपकरण जो चक्की के ऊपर रहने वाले पाट के मध्य के छेद मे लगा रहता है। यह चक्की की कील पर रह कर पाट को घुमाने मे सहायक होता है ४ मवेशियो के मुह मे हाथ डालने के लिए हाथ की सुरक्षा के लिए बना लकडी का उपकरण ५ दही मथने के निमित्त मथदड के नीचे के भाग मे लगाया जाने वाला काष्ठ का एक उपकरण ६ सेना।

उ०—चढै रण चाखडी सामहो चालियो, झूझतै भलो रायसिंग तै भालियो।—हा झा

महत्व०—चाखड।

चाखणौ, चाखवौ—क्रि०स० [स० चष] १ चखना, स्वाद लेना, आस्वादन करना. २ स्वाद की अनुभूति के लिए वस्तु का अश जीभ पर रखना।

चाखणहार, हारौ (हारी), चाखणियौ—वि०।

चाखिओडौ, चाखियोडौ, चाख्योडौ—भू०का०कृ०।

चाखीजणौ, चाखीजवौ—क्रि० कर्म वा०।

चखणौ, चखवौ—रू०भे०।

चाखाळ—स०पु०—खून, रक्त, लहू।

चाखियोडौ—भू०का०कृ०—चखा हुआ। (स्त्री० चाखियोडी)

चागी—स०स्त्री०—नकल, अनुकरण।

चाड—वि०—चुगलखोर। उ०— ऐ दूहा म्हैं आखिया, रस नीत रा रहाड। सभा भरी मझ साभळै, चिडै जिकौ हिज चाड।—बा दा

देखो 'चाडी' (रू भे)

चाडी—स०स्त्री०—पीठ पीछे की जाने वाली निन्दा, चुगली।

उ०—सायब बडा सरदार, केता चुगल चाडी करै। हाथी गैल हजार, भुसै गिडक रे भैरिया।—महाराजा बळवतसिंह

चाचक—स०पु०—राठोड वश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

चाचगदे—स०पु०—राठौड वश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

चाचपुट—स०पु०—ताल के आठ मुख्य भेदो मे से एक (सगीत)—

चाचर—स०पु०—१ मस्तक, सिर। उ०—१ गौड राजा अरजुनसिंघ वैरिया रा थाट विरोळि वेडा गजा रै चाचर चद्रहास चलाइ सैकडा नूरा नू माथि करि महारुद्र री माळा मे आपरा मुड री मेरु चढाई।—व भा

उ०—२ चरणे नही नमायो चाचर, जिण तिण नै ओळगै जिके।—र रू

२ ललाट, भाल। उ०—विरळा दाता री पातां विरळाती। चोडै चाचर री चाटै चिरळाती।—ऊ.का

३ भाग्य ४ होली के अवसर पर फाल्गुन मास मे गाया जाने वाला गीत या इस प्रकार के गीत की राग विशेष।

उ०—फागण मास बसत रित, जे ढोला नावेस। चाचर के मिस खेलती, होळी झपा देस।—ढो मा.

५ उपद्रव ६ हलचल, शोर-गुल।

[स० चत्वर = प्रा० चच्चर] ७ युद्ध-स्थल, युद्ध-भूमि।

उ०—चोटियाळी कूदै चौसठि चाचरि, ध्रू ढळियै ऊकसै धड। अनत अनै सिसुपाळ ओझडै, झड मातौ माडियौ झड।—वेलि

८ मैदान। उ०—प्रीतम मीर तणी घड पीणक, वेधक विघन तणी वीमाह। रहियौ विचै खडगहथ 'रतनौ', अत मोहर रण चाचर माह।—दूदो

[स० चर्चरी] ९ नगारा। उ०—हाथिया घडा विहडते हाथा, लाखा दळा विरोळ लड। 'चापा' हरे घुराया चाचर, चखता वाजा हियै चड।—विठळ गोपाळदासोत रौ गीत

१० मात मात्राओ की ताल ११ देखो 'चाचरी' (रू भे)

चाचरि, चाचरी—स०स्त्री० [स० चर्चरी] १ योग की एक मुद्रा।

२ देखो 'चाचर' (रू भे) उ०—घणा अहिरण घण घाउ, साम्है चाचरि साबवा। वाहे साहै बीठलो, खाडो खांडेराउ।—वचनिका

३ देखो 'चरचरी' (रू भे)

चाचरे, चाचरै—क्रि०वि०—१ ऊपर, ऊचा। उ०— हठ नाळ पैठ बाजार हाठ, प्राजळै महल चदण कपाट। चाचरै गयण चकचूर चोट, कागरा अबारथ भुरज कोट।—वि स

२ अत्यन्त दूर से। उ०—चाचरै हू त मावळ सुणे, ग्रहण भीड मेटण घणी। काळमी चढे ऊपर करण, धाधलोत आवौ धणी।—पा प्र

चाचरौ—१ देखो 'चाचर' (रू भे) उ०—१ कामठा सू तीर छूटिया मुह आगे आगा-आगा पडण लागिया। तद भूडण चाचरौ ऊपर उठाय नै साम्हे दीठो।—डाढाळा सूर री वात

उ०—२ हाथिया रै जुद्ध रै समै कपोळ सामै चाचरै जुद्ध री ढाल बधै है।—वी स टी

स०पु०—२ स्त्रियो की जननेंद्रिय, भग, योनि।

चाचेरा—स०पु०—१ चौहान वश की एक उपशाखा. २ पिता के छोटे भाई के वशज, चचेरा। (मि० काकाई)

चाचौ—स०पु०—पिता का छोटा भाई, काका। (स्त्री० चाची)

चाट—स०स्त्री०—१ किसी वस्तु के उपभोग का चसका।

उ०—१ निज थाट खोय फीटा निलज, साट न बूझै सार री। आठआठ भागै अकल, चाट लगे विभचार री।—ऊ का

उ० —२ अजहु न आयो कवर नद को, प्यारी लागी चाट। छाड गयौ मझधार सावरौ, बिना अकल रो जाट।—मीरा

क्रि०प्र०—पडणी, लगणी, लागणी, होणी।

२ प्रबल इच्छा, कडी चाह।

क्रि०प्र०—लागणी, होणी।
३ आदत, टेव, लत. ४ मिर्च-मसाला व खटाई आदि डाल कर बनाई हुई तीक्ष्ण या चरपरे स्वाद की वस्तु ५ बडी शिला, चट्टान।

चाटकाणी, चाटकाबौ—क्रि०स०—तेज गति से घोडे आदि को भगाने के लिए चाबुक लगाना, तेज गति से भगाना। उ०—चेवह वाटी चेभडा, एकल दात्रडियाळ। काना सुण 'बूढं' कमद, चाटकाया चचाळ।—पा प्र

चाटकायोडौ—भू०का०कृ०—तेज भगाया हुआ। (स्त्री० चाटकायोडी)

चाटकावणौ, चाटकावबौ—देखो 'चाटकाणौ' (रू.भे)

चाटकावियोडौ—देखो 'चाटकायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चाटकावियोडी)

चाट री टागडी—स०स्त्री०यौ०—कुश्ती का एक दाव।

चाटकौ—स०पु०—१ शोधन के समय किसी पदार्थ से पृथक किया जाने वाला पदार्थ। २ चाबुक या बेंत का प्रहार।
वि०—१ जिव्हा-लोलुप २ चालाक, धूर्त।

चाटण—स०स्त्री०—१ चाटने या खाने के योग्य वस्तु २ चरपरे स्वाद की वस्तु।
वि०—चाट खाने का शौकीन, चटोरा।

चाटणौ, चाटबौ—क्रि०स०—१ किसी खाद्य पदार्थ को जीभ से चाट-चाट कर खाना, किसी रसदार या गाढे पदार्थ को जीभ से पोंछ-पोंछ कर खाना।
२ चट कर जाना, साफ कर जाना।
३ स्नेह या प्यार से वस्तु या प्राणी पर जीभ फेरना (पशु)
चाटणहार, हारौ (हारी), चाटणियौ—वि०।
चटवाडणौ, चटवाडबौ, चटवाणौ, चटवाबौ, चटवावणौ, चटवावबौ—प्रे०रू०।
चटाडणौ, चटाडबौ, चटाणौ, चटाबौ, चटावणौ, चटावबौ—स०रू०।
चाटिओडौ, चाटियोडौ, चाटयोडौ—भू०का०कृ०।
चटाईजणौ, चटाईजबौ—कर्म वा०।

चाटाळ—वि०—१ वह दूध देने वाला पशु जो गिजा खाये बिना दूध न देता हो २ स्वाद का लोभी व्यक्ति ३ रिश्वतखोर।

चाटियोडौ—भू०का०कृ०—१ चाटा हुआ २ साफ किया हुआ, चट किया हुआ। (स्त्री० चाटियोडी)

चाटु—देखो 'चाटू' (रू भे)

चाटुकार—स०पु० [स०] खुशामद करने वाला, झूठी प्रशसा करने वाला, चापलूस।

चाटुकारिया—स०स्त्री० [स० चाटुकारिकाणी] खुशामद। (उ र)

चाटुकारी—स०स्त्री० [स० चाटुकार+रा०प्र०ई] खुशामद, चापलूसी, झूठी प्रशसा का कार्य।
वि०—खुशामदखोर, चापलूसी करने वाला।

चाटू—स०पु०—काठ का चम्मच।
वि० [स० चाटु] १ खुशामदी, चापलूस २ स्वाद या चाह का लोलुप।

चाटौ—स०पु०—१ पशुओ को खिलाया जाने वाला पौष्टिक पदार्थ. २ स्वादिष्ट वस्तु।
मुहा०—चाटौ नाकणौ—लोभ देना, लालच दिखाना, रिश्वत देना।
यौ०—चाटौ-बाटौ।

चाठ—देखो 'चाट' (रू भे) उ०—१ पर निंदा आठू पहर, चाटै बिखरी चाठ। क्यो नह तू प्राणी करै, पच रतन री पाठ।—बां दा

चाठौ—स०पु०—चकत्ता, दाग, धब्बा।

चाड—स०स्त्री०—१ रक्षार्थ बुलाने या पुकारने की ध्वनि, पुकार।
उ०—१ नरहरि थभ विदारियौ, सेवग हुवी चाड। हिके हाथ चूरण हुआ, हिरणाकुस रा हाड।—बा दा
२ त्राहि-त्राहि की पुकार, आर्तनाद। उ०—१ चहुंवाणा कुळ चल्लणी, वियो न चल्लै कोय। चाड न घट्टै खूद की, सीस पलट्टै तोय।—रा रू उ०—२ पहळाद समरियौ आयौ जगपति, चत्रभुज निमो भगत री चाड। वहनामी रै दाढ तणी बळ, हिरणाख तणी जाणिसै हाड।—पीरदान लाळस
३ रक्षा, सुरक्षा। उ०—सेवग भीम धणी धरती सम, दुथणी जायौ न कु दूध्रौ। अमी चाड अवगाढ 'अजीता', हमकै डाढ वाराह हुओ।—किसनौ आढौ
४ सहायता, मदद। उ०—भाई चाड करण रिण भिडतै, अरै सांभै खागा अमळ। चरण विना लोटै घट चौरंग, कर विन घट घट विन कमळ।—द दा
५ वमन, कै ६ उन्नति, बढने का भाव, ७ युद्ध, लडाई।
उ०—आदू चाडा आगळा, गुणी पयपै गीत। राठौडा-कुळ वट्टडी, 'पत्तौ' रखण प्रवीत।—किसोरदान बारहठ
८ घोडे के नाक का अगला भाग, नथुना। उ०—चुभै चित्त ताला मुडे वक्र चाडा। गया सकडे पथ, छै कै छ गाडा।—व भा
९ चाह, इच्छा। उ०—पखण समर, वचार घरै पुर, तुरग वर पूरै कुण चाड। लोहा वोह लालवत लेतौ, वळ करतौ वाकौ अह वाढ —सागा रौ गीत
१० ऊचाव, चढाई ११ प्रयोजन, मतलब, अभिप्राय १२ घर का भेद, रहस्य १३ कुयें की मुडेर का वह स्थान जहा पानी खीचने के लिए खडे होते हैं। (मि० 'ढांणौ' १)
१४ विपत्ति। उ०—पर घर्ड वैरण पर चाडौ पैसण, जगत वखाणै 'चद' जिम। खाटै खगै नवा खेडेचो, करै पुराणा वैर किम।
—राठोडा सुजानसिंह रौ गीत
स०पु०—१५ चुगली करने वाला, चुगलखोर। उ०—करै चाड पर काचडा अठी उठी नू ईख। पण विच हाडक परखिया, तिणसू स्वान सरीख।—बा दा.
१६ रक्षक। उ०—जोध भयंकर, जोधहर, अडर मुरधर आड। सरण छत्रघर साप नै, वणे अकब्बर चाड।—रा रू

(मि० 'चाड' रू भे)

चाडणौ, चाडबौ—१ देखो 'चढाणौ' (रू भे)
क्रि०स० [सं० चटि] २ राज-सत्ता के विरुद्ध किसी सामंत का विद्रोह करना, विद्रोही होना ३ कोप करना।
चाडणहार, हारौ (हारी), चाडणियौ—वि०।
चाडिग्रोडौ, चाडियोडौ, चाड्योडौ—भू०का०कृ०।
चाडीजणौ, चाडीजबौ—कर्म वा०।
चडणौ, चडबौ—ग्रक० रू०।

चाडव-स०पु० [सं० चदि याचने] कवि, काव्यकार (डिं को)

चाडाउ-स०स्त्री०—१ अधिक संकट या विपत्ति के समय देवी-देवता के समक्ष संकट निवारणार्थ की जाने वाली करुणायुक्त पुकार।
वि०वि०—देखो 'चरजा'।
यौ०—चाडाउ-चरजा।
२ संकट विशेष के समय लोगों को सहायतार्थ एकत्रित करने के लिये की जाने वाली ढोल की ध्वनि।

चाडापुरी-स०स्त्री०—अप्सरा, परी। उ०—जाडा थडा जुडै जगजेठी, चाडापुरी भणै एक चाव। गळिया पियण गुणा रा गाडा, अलवलिया लाडा रथ ग्राव।—महादान महडू

चाडियोडौ-भू०का०कृ०—१ देखो 'चढायोडौ' (रू भे)
२ क्रुद्ध, कुपित ३ विद्रोही, वागी। (स्त्री० चाडियोडी)

चाडौ-स०पु०—१ बुद्धि या विचार-शक्ति का अंश २ दही मथने का बडा वर्तन विशेष ३ छोटी मटकी।

चाढ-स०स्त्री०—१ इच्छा, अभिलाषा। उ०—नायक रै विदेस गमण आपरी अगना रै समान राजपुत्रिया भी कुळ रा धरम रै अनुसार पावक रा प्रवेस विनां ही उणाही विदेस मे वसण री चाढ़ लागी।
—व भा
२ देखो 'चाड' (रू भे)

चाढकसौ-स०पु०—१ योद्धा, वीर पुरुष २ भील जाति का व्यक्ति।

चाढणौ, चाढबौ—१ देखो 'चढाणौ' (रू भे) उ०—१ के मेल्हया पूगळ दिसइ, किही भुलाया भार। साल्हकुवर करहइ चढचउ, वासइ चाढी नार।—ढो मा उ०—२ वेणी पवित्र करिस लिखमीवर, मसतग चाढे तुळसी मजर।—ह र उ०—३ मोनूं पुत्र सौ वरस मभारा। पूजा वळ चाढै न पमारा।—सू प्र.
चाढ़णहार, हारौ (हारी), चाढणियौ—वि०।
चाढिग्रोडौ, चाढियोडौ, चाढ़चोडौ—भू०का०कृ०।
चाढीजणौ, चाढ़ीजबौ—कर्म वा०।
चढणौ—ग्रक०रू०।

चाढियोडौ—देखो 'चढायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चाढियोडी)

चातक-स०पु० [सं०] पपीहा पक्षी।
रू०भे०—चातग, चात्रग, चात्रागि, चात्रगी, चात्रक, चात्रक्क, चात्रग, चात्रिग, चात्रिग।

चातकानदन-स०पु० [सं०] १ मेघ २ वर्षाकाल।

चातग—देखो 'चातक' (रू भे) उ०—चहु दिस दामणि सघन घन, पीउ तजी तिण वार। मारू मर चातग भए, पिउ पिउ करत पुकार।—लो.गी

चातरग, चातर, चातरक—देखो 'चतुर' (रू.भे) उ०—चदण री चुटकी भली, गाडी भलौ न काठ। चातर तो एकज भलौ, मूरख भला न साठ।—अज्ञात
उ०—२ रात दिवस हाजर रहै, रस मे अत रूडीह। लग्न जावै दिल री लगन, चातर चतरूडीह।—र. हमीर

चातळ-स०पु०—वडा कछुआ (किशनगढ)

चाती-स०स्त्री०—फोडे-फुन्सी, गाठ आदि पर मरहम के लेप से युक्त लगाई जाने वाली पट्टी।
वि०—चिपका रहने वाला।
मुहा०—चाती होणौ—किसी के साथ लगा रहना।

चातुक—देखो चातक' (रू भे.) (अ मा)

चातुरग-स०स्त्री०—चतुरगिनी सेना। उ०—चमरयघ अनराव थडण मोहर, चातुरग मतग हवदां खतग पाव मडण।
—दौलजी भादो

चातुर—देखो 'चतुर' (रू.भे)
स०स्त्री०—१ गणिका, वेश्या (अ मा) २ बुद्धि (ह ना)

चातुरई-स०पु०—चतुरता।

चातुरज-स०पु० [सं० चातुर्य्य] कपट, छल (अ मा)

चातुरजात-स०पु०यौ० [सं० चातुर्जात] नाग केसर, इलायची, तेजपत्र व दालचीनी इन चार सुगधित द्रव्यों का समूह। (वैद्यक)

चातुरता—देखो 'चतुरता' (रू भे)

चातुरदस-स०पु० [सं० चतुर्दश] १ राक्षस २ वह जो चतुर्दशी को उत्पन्न हो।
वि०—चौदह।

चातुरभद्रावलेह-स०पु० [सं० चातुर्भद्रावलेह] वैद्यक के अनुसार एक प्रसिद्ध अवलेह।

चातुरमास, चातुरमास्य—देखो 'चतुरमास' (रू भे)

चातुरय—देखो 'चातुरच' (रू भे)

चातुराई, चातुरी-स०स्त्री० [सं० चातुर्य्य] १ चतुराई, निपुणता।
उ०—१ महानस री मालिक होइ चारण री चाकरी मे चित लगाई चातुराई री रीझ चही।—व भा
उ०—२ उर ग्यान भगती नीत उपजै, चातुरी लह चोज सू। अवधेस चिरता हुवै वाकव, मिळै सदगत मोज सू।—र रू

चातुरच-स०पु०—चतुराई, दक्षता। उ०—१ ऐसी विध पडतराज चातुरच कळा-प्रवीण त्रिलोकू का प्रबध अनेक विध विमळ वाणी सें उच्चरै जिनू सें रीझ स्री माहाराज कनक जग्योपवीत चढाया।
—सू प्र.

चात्रग, चात्रगि, चात्रगी, चात्रक्, चात्रक्क, चात्रग, चात्रग्ग—देखो 'चातक' (रू भे.) उ०—१ सावण आयो सायवा, वेला झुर रहि वाड। चात्रग झुरै मेघ विन, पिय विन झुर रहि नार।—र रा
उ०—२ ढक्कवी सिर हथ्थडा, चाहती रस लुब्ध। ऊची चढि चात्रगि जिउ, मागि निहाळइ मुग्ध।—ढो मा
उ०—३ जेण सद् जीवत मोर चात्रक बावीहा, तेण सद् जीवत सिद्ध साधक वेह दीहा।—ह र
उ०—४ परनाळ खाळ पहाड खडकीग्रा छै। चात्रग मोर बोलीनै रहीग्रा छै।—रा सा स.
उ०—५ जसवळा तणा हाका सजोर, मिळि सवद आणि चात्रग मोर।
—सू प्र

वि०—चतुर, दक्ष। उ०—१ कागद मे ग्रत हेत कहावौ, द्रग दरसण वेगौ दरसावौ। चात्रक मनै जीवती चावौ, ग्राप हमै तुरगा खड ग्रावौ।—लो गी

चात्रण—स०स्त्री०—शत्रुग्रो को काटने की क्रिया, शत्रुदल का सहार।

चात्रणौ, चात्रबौ—क्रि०स०—सहार करना, मारना। उ०—हरि समरण रस समभरण हरिणाखी, चात्रण खळ खगि खेत्र चढि।
—वेलि

चात्रिग, चात्रिग—देखो 'चातक' (रू भे) उ०—मिळि करत नाच छात्र कोहक मोर, सुक चात्रिग कोकिल करत सोर।—सू प्र
वि०—चतुर, चालाक।

चादर स०स्त्री० [फा०] १ ओढने या पलग पर विछाने का वस्त्र। उ०—जावौ तोसाखानै से एक वाफता लावौ, सो मगाय चादर उठै हीज वैठा सिवाई।—पदमसिह री बात
मुहा०—चादर देख नै पग पसारणा—अपनी शक्ति के अनुसार काम करना। २ कधे ग्रादि पर रखने का छोटा वस्त्र। उ०—ग्राप ग्राप रा घोडा नू देसोत वाफता री चादरा सू पवन कर रह्या छै।
—रा सा स
मि०—ग्रगोछौ।
मुहा०—चादर उतारणी—वेइज्जत करना।
३ किसी धातु का वडा चौखटा, पत्तर ४ किसी देवता या पूज्य स्थान पर चढायी जाने वाली फूलो की राशि।
क्रि०प्र०—चढाणी।
५ महात्मा या साधुग्रो द्वारा ग्रपने शरीर को ढकने के लिये ओढा जाने वाला कपडा। उ०—ग्यांनी तन गोरा ठोरमठोरा चादर मे चिळकदा है।—ऊ का
मुहा०—चादर ओढावणी—चेला स्वीकार करना, चेला बनाना।
६ वेग से वहती हुई नदी या पानी के तेज प्रवाह मे कही कही पर होने वाली जल की एक स्थिति विशेष।
वि०वि०—ऐसे स्थान पर जल की ऊपरी सतह विल्कुल समतल और शान्त होती है ग्रर्थात् उसमे हिलोरें और भवर ग्रादि नही पडते हैं तथा पानी फैला हुग्रा रहता है। उ०—चोळ ग्रगनि रत नदी वीज चलि। होज फुहार ग्रगनि चादर हलि।—सू प्र
७ जल की चौडी धारा जो ऊपर से गिरती है।
उ०—फवहार धार घण फरहरत, वागीचा चादर जळ वहत।—सू प्र
८ तवू, खेमा, रावटी। उ०—१ मारे काम वगस मन ग्राणी, साभर 'ग्रजन' लई न सुहाणी। ग्रसपत दी चादर दिस उत्तर, धारे ग्रमरख सीस मुरद्धर।—रा रू.
उ०—२ जोधपुरै जाळोर सिरि, काम तिको पकड़ेह। कीयौ ग्रारभ कळह री, वाहिरि चादर देह।—गु रू.व
उ०—३ लाखा ग्यान ग्रसख लसक्कर, वाह लहै दुहु लाख वहादर। ग्रारभ खुरम किया ग्राडवर, चालण चाळा दीनी चादर।—गु.रू ब

चादरौ—स०पु०—१ किनारे पर पतली गोट या मगजी लगा हुग्रा एक वस्त्र विशेष जिसे पर्दानशीन स्त्रिया वाहर जाने पर पहने हुए वस्त्रो के ऊपर ओढती हैं २ पलग पर गद्दे के ऊपर विछाया जाने वाला कपडा, पलगपोश।

चाप—स०पु० [स०] १ धनुष (ह ना) उ०—भळावे जती 'सीत' ले चाप माथै, सिकारी हुवा राम मारीच साथै।—सू प्र.
२ अर्द्धवृत्त क्षेत्र ३ धनुराशि ४ पैर की ग्राहट।
स०स्त्री०—५ पत्थर की छोटी व चपटी पट्टी जिसे दीवार चुनते समय खडो या ईंटो के वीच खाली जगह रहने पर या कही जोड के स्थान पर मजवूती के लिये लगाते है ६ रस्सी बुनने के निमित्त बनाई हुई धागो की पतली रस्सी (शेखावाटी). ७ ठगण के तृतीय भेद का नाम। (र.ज प्र)

चापड—देखो 'ग्रापडौ' (मह० रू भे)

चापड़णौ, चापडबौ—क्रि०ग्र०स० [स० चपेटम्] १ दवाना, चापना। उ०—सिव रण कुळवट ग्रधिप सिर, चहुँ मगै चौरग। चहुँ दे घड लड चापडै, रग रजवट रजरग।—रेवतसिह भाटी
२ भयभीत होना। उ०—ग्रन ग्रन देस धर गिर ग्रवर, सकोडी ससार सहि। चहुवाण पिथम सू चापडै, गज्जणवै सुरताण गहि।
—नैणसी
३ तीतर पक्षी का वोलना, ग्रावाज करना ४ भागना ५ पीछा करना. ६ युद्ध करना। उ०—पळ खड चड भुग्र ढड खिड, तिका रंण खळ खूटिया। चापडै वीस चवदह चडै, ग्रारोयण ग्रावट्टिया।
—नैणसी

चापडियोडौ—भू०का०कृ०—१ दवाया हुग्रा. २ भयभीत ३ भागा हुग्रा ४ पीछा किया हुग्रा ५ युद्ध किया हुग्रा।
(स्त्री० चापडियोडी)

चापडियौ—देखो 'चापडौ' (ग्रल्पा रू भे)

चापडै—क्रि०वि०—खुलेग्राम, प्रकट रूप मे। उ०—१ ऊपर ग्रीखम ग्रावियो, उर नह धरी ग्रवेर। चडिया घोडा चापडै, 'ग्रजै' लियौ ग्रजमेर।—रा रू

उ०—२ आपड़ै दाव मत देर ओट, चापड़ै आव समसेर चोट।
—वि स

स०पु०—युद्ध, रण। उ०—१ मार्ग मुगळाह वधि वधि खाटा वाहतो, चारण जूटो चापडै धरमो धाराळाह।—वचनिका

उ०—२ कैरवा न मागी दीघी पाटवा ढीली कीधी, चापडै भिडाय जे दिखाया चाळा चीत। रैणा कस सपायी थपायी उग्रसेन राजा, जिका रैण रीझ देणी 'जसारी' 'अजीत'।—द्वारकादास दघवाडियो

उ०—३ आरुढ हुवै जे नाम अगि, रवि उगमणी पग गडै। गजसिंह दमामा गाजता, चढि आयौ तव चापडै।—गु रू व.

चापडी-स०पु०—१ आटा पीसने पर निकलने वाला दाने का भूसा, चोकर। आटे की चलनी से छानने पर यह भूसी आटे से पृथक हो जाती है २ रहट के कगूरेदार चक्र के जोड के टूटने पर मजबूती के लिए लगाई जाने वाली लकडी।

रू०भे०—चापट।

अल्पा०—चापडियो।

मह०—चापड।

चापजरीब-स०स्त्री०यौ०—किसी भूमि की लम्बाई का माप।

चापट-स०स्त्री० [स० चपेट] १ चपेट, चोट २ चपत।
३ देखो 'चापडो' (१,२ रू भे)

चापटिया-स०पु०—कुम्भट की फली तथा उसके बीज।
(मि० कूमटिया)

चापटी-स०स्त्री०—१ पतले कान वाली वकरी २ चावुक।

चापटो-वि०—चपटा। उ०—तरै वडी रामचगी री गोळी वाहि दीठी। तिका चापटी होय पडियो, पिण ढाल रै रग री चिटक उतरी नही।—कहवाट मरवहिया री वात

स०पु०—हलवाहे या गाडीवान का डडा, बडी चावुक।

चापधारी-स०पु०—धनुर्धारी। उ०—भरत्थ विदा कीध दे सीख भारी। धरा चित्रकोटा वसै चापधारी।—सू प्र

चापर-स०स्त्री० [स० चापल] १ ताकीद, शीघ्रता। उ०—चापर करी सवेगा चालो।—रामरासी
२ टिड्डीदल से भूमि आच्छादित होने का भाव।

चापरि, चापरी-स०स्त्री० [स० चापल्य] शीघ्रता। उ०—भाईवद कडूवी भेळी, पिंड न राखो हेक पुळ। चापरि करै अग सिर चाढी, काढी काढी कहै मुळ।—पृथ्वीराज राठौड

चापळणो, चापळबो-क्रि०अ०—हमला करने के लिये ताक लगाते हुए भूमिसात् होकर बैठना, छिप कर घात मे बैठना। उ०—अण-चीत्यो खतरो जाण गोरियावर हळफळतो वाटका मे चापळग्यो।
—वाणी

चापळियोडो-भू०का०कृ०—छिप कर घात मे बैठा हुआ।
(स्त्री० चापळियोडी)

चापळी-स०स्त्री० [स० चपला] विद्युत, बिजली। उ०—सळसळी चापळी चळी मिर सेस रै। बीजळी तणी वपु देण विवा।
—आलावक्स बारहठ

चापलूस-वि० [फा० चापलूस] झूठी प्रशसा करने वाला, खुशामदी, चाटुकार।

चापलूसी-स०स्त्री० [फा० चापलूसी] खुशामद, चाटुकारी।

चापी-स०पु० [स० चापिन्] १ धनुष धारण करने वाला व्यक्ति २ शिव, महादेव ३ धनुर्राशि।

चाफळणो, चाफळबो—देखो 'चापळणो' (रू भे)

चाफळियोडो—देखो 'चापळियोडो' (रू भे) (स्त्री० चाफळियोडी)

चाब-स०स्त्री० [स० चव्य] १ गजपिप्पली नामक पौधे की जाति का एक पौधा। इस पौधे की जड और लकडी जो औषधि के काम आती है २ वस्त्र, कपडा।

चाबक, चाबकियौ, चाबकौ, चाबख-स०पु०—गाडीवान या हलवाहे के पास रहने वाला लकडी का वह डडा जिसके सिरे पर चमडे की रस्सी के टुकडो का गुच्छा लगा होता है। चावुक, कोडा।

उ०—१ थे तो कोई एक ने नै कोई दो या चार ने वाढ मो नै म्हे चारण जुद्ध रा भागळ हजारा कायरा ने चाबक (चाबकिया) जिसा वचना सू काट न्हाकमा।—वी स टी

उ०—२ सुरद खगार विण कहो कुण सासवै, चारणा चाबका तणी चोट।—खगारसिंह सेखावत रो गीत

उ०—३ हे देराणी म्हारै देवर नै अवार दारू लेता थू कोई ऐ थारा चाबक जेडा वचन कहे मती नही तो औ दारू री छकियोडो लाखा नै छाग न्हाकैला, खातो डाळा छाणै जिण तरै।—वी स टी.

उ०—४ आगी आगी मारूजो नै रीस, गोरी पर वायो चाबको जी म्हारा राज।—लो गी

रू०भे०—चावुक।

अल्पा०—चाबकियो।

चाबण—देखो 'चरवण' (रू भे)

चाबणी-स०स्त्री०—वह अनाज जिससे कृषक खलिहान मे से भूस्वामी द्वारा अनाज के रूप मे लिये जाने वाले लगान लेने के पहले उससे पूर्व स्वीकृति प्राप्त कर खाने के लिये ले जाता है।

चाबणो, चाबबो-क्रि०स०—दातों से कुचलना, चवाना।

उ०—जीणा मेरी बाई ये, तिसियो मै पीस्यू ठढी पून, जामण की ये जायी, भूखो मैं चाबू ये वन रा पानडा।—लो गी

चाबणहार, हारो (हारी), चाबणियो—वि०।

चाबिओडो, चाबियोडो, चाब्योडो—भू०का०कृ०।

चाबीजणो, चाबीजबो—कर्म वा०।

चवणो—अक० रू०।

चाबली-स०स्त्री०—१ एक प्रकार का खजरी के आकार का बाजा विशेष २ इस बाजे पर गाया जाने वाला गीत विशेष ३ छोटी डलिया।

चाबियोडौ–भू०का०कृ०––चबाया हुआ। (स्त्री० चाबियोडी)

चाबी–स०स्त्री०––१ (ताले की) कुजी २ घडी या इसी प्रकार के अन्य यत्र को चलाने के लिए नियमित रूप से घुमाया जाने वाला पुरजा।

मुहा०––चाबी भरणी––वहकाना, लडाई कराने के लिए उत्तेजित करना।

चाबुक––देखो 'चावक' (रू भे.) उ०––भोळा की चहरौ भडा, ईखौ चारण ऐण। के ही कढता कायरा, वाढा चाबुक वैण।––वी स.

चाबुकसवार–स०पु०यौ० [फा०] १ घोडे को विभिन्न प्रकार की चाल सिखाने वाला २ घोडे को चलाने वाला।

चाबुकसवारी–स०स्त्री०––चाबुक सवार का कार्य (देखो 'चाबुकसवार')

चाबुकियौ––देखो 'चावक' (अल्पा रू भे)

चाबेदार–स०पु०––१ चोबदार का कार्य करने वाली एक जाति अथवा इस जाति का व्यक्ति २ चोबदार।

चाभुलेया–स०स्त्री०––चौहान वश की एक शाखा।

चाय–स०स्त्री०––१ एक पौधा या झाड जो लगभग ४-५ फुट की ऊचाई तक का होता है, जिसकी पत्तिया पहिले अनेक प्रक्रियाओं से शुद्ध एव सुगधित की जाती हैं। यह लोगो द्वारा उबाल कर पी जाती है २ चाह, इच्छा। उ०––चीत मरण रण चाय, अकबर आधीनी विना। पराधीन दुख पाय, पुनि जीवै न प्रतापसी।

––दुरसौ आढौ

३ उत्साह। उ०––जतन 'अजीत' मळाय सब, उतन सचीत मिटाय। एम दुरग्गह मारवा, किया सुग्गे चाय ––रा रू

चायक––देखो 'चाहक' (रू भे)

चायगुर–स०पु०यौ०––वीर, योद्धा, बहादुर। उ०––कलमाधर गाहै 'करनावत', चायगुर कनक तुला चाडियौ। भल दाता चेळौ तो भारी, असपत चेळौ ऊपडियौ।––महाराणा जगतसिंह रौ गीत

चायतौ–वि०––इच्छित, चहेता। उ०––पुरा कीधा सळह उर पख राव दापता, चामडा भवानी हुवै मन चायता।––महादान महडू

चायना–स०स्त्री०––१ इच्छा, चाहना, अभिलापा २ जरूरत, आवश्यकता।

चायलवाडौ–स०पु० [चायल+स० पटक] चायल जाति के जाटो के राज्य का प्रदेश जो बीकानेर राज्यान्तर्गत था (ऐतिहासिक) (द दा)

चायोडौ––१ देखो 'चाबियोडौ' (रू भे) (स्त्री० चाबियोडी)

चार–वि०––१ तीन और एक के बराबर।

मुहा०––१ चार आख होणी––नजर से नजर मिलाना, प्रेम होना २ चार चाद लागणा––अधिक प्रतिष्ठा होना, सुदरता बढना, चौगुणी शोभा होना ३ चार री पाच भेळणी––इधर-उधर की बात बनाना, अपनी ओर से उत्तेजित करने के उद्देश्य से कोई बात जोडना।

कहा०––चार हो खूणा एकादसी नै बीच मे सिवरात्री––अधिक निर्धनता की द्योतक, अत्यधिक गरीबी के प्रति।

२ थोडा, कुछ।

मुहा०––१ चार दिन––थोडे दिन, कुछ दिन २ चार पैसे––कुछ धन, कुछ रुपया-पैसा।

[स० चारु] ३ सुदर। उ०––पट वसन हाट अपार, आछादि अवर चार। निरखत रूप सनेम, प्रति महल त्रिय अति प्रेम।––रा रू

स०पु०––१ चार की सख्या।

[स०] २ गति, चाल ३ बधन, कारागार ४ गुप्तदूत, गुप्तचर (डि को)

उ०––तिको मत्र उपहार भी चार लोका रा चतुरपणा थी चौडै आयौ।––व भा

५ कृत्रिम विष ६ मोठ की सूखी पत्तिया ७ पशुओ को डाला जाने वाला घास, चारा। उ०––मुणै ढलेत खगेत मह, जमै न जे जग जोर। चार आव भाग न चरै, ढोवै बोझौ ढोर।

––रेवतसिंह भाटी

८ भोज्य पदार्थ। उ०––चिडौ बचा री चाच मे, चाच दिए भर चार। दुरजण मुख इण विध दियै, मूरख स्रवण मझार।

––वा दा

चारआनी–स०स्त्री०यौ०––चवन्नी।

चारआइनौ–स०पु० [फा० चार आइना] चार पटरी लगा हुआ एक प्रकार का कवच (व भा)

चारक–स०पु० [स०] १ चलाने वाला २ गति, चाल ३ सहचर, साथी ४ गुप्तचर ५ ब्राह्मण छात्र, ब्रह्मचारी ६ चराने वाला, ग्वाला।

चारखी––देखो 'चरखी' (रू भे) उ०––दळा रोळ दताळ ऐसा दुगम्म, जम चालिया सामुहा जाणि चम्म। रजी ऊमटै वोम नू रोस रत्ता, धुआधार चारख्खिया धत्तधत्ता।––वचनिका

चारखाणी–स०स्त्री०यौ०––चार प्रकार से उत्पन्न होने वाले प्राणी––जरायुज, उद्भिज, अण्डज और स्वेदज। उ०––जेण सद्द जीवर्ते चारखाणी चत्रवाणी।––ह र.

चारचक्षु–स०पु०यौ० [स० चारचक्षुप्] वह राजा जो अपने गुप्तचरो के द्वारा सब बातो की जानकारी रखे।

चारज–स०पु० [अ० चार्ज] १ कायभार, काम की जिम्मेदारी।

क्रि०प्र०––दैणौ, लैणौ।

२ जुर्माना।

क्रि०प्र०––दैणौ, लैणौ।

चारजामौ–स०पु०––घोडे, ऊट आदि की पीठ पर कस कर सवारी करने का चमडे या कपडे का बना हुआ आसन।

चारण–स०पु० (स्त्री० चारणी) राजस्थान, मध्यभारत एव गुजरात मे फैली हुई एक जाति विशेष अथवा इस जाति का व्यक्ति। राजस्थान का अधिकतर साहित्य इसी जाति के व्यक्तियो द्वारा लिखा गया है।

चारणविद्या–म०पु०यौ० [स०] अथर्ववेद का एक अंश।

चारणियावट–म०पु०यौ० [स०] भूमि का भाइयों मे किया जाने वाला परस्पर समान बटवारा।

चारणी–स०स्त्री०—१ चारण जाति की स्त्री २ चारण कुलोत्पन्न देवी, शक्ति। उ०—कीधौ तैं कोप माजियौ 'कानौ', रडमल नै दीधौ तैं राज। चारण वाडा तणी चारणी, लोक मही तू राखै लाज।—वा दा

३ चलनी।

चारणौ, चारवौ–क्रि०स०—देखो 'चराणौ' (रू भे)

चारणहार, हारौ (हारी), चारणियौ—वि०।

चारिग्रोडौ, चारियोडौ, चारयोडौ—भू०का०कृ०।

चारीजणौ, चारीजवौ—कर्म वा०।

चारदिवारी, चारदीवारी–स०स्त्री० [फा० चारदीवारी] चारो ओर की दीवार, परकोटा, ग्राहता। उ०—लोटचौ जाट करणियौ मीणौ, करै फिलै की सैल। फिर घिर देखी चारदिवारी, नाय लगाई देर।

—डूगजी जवारजी री पड

चारलोक–स०पु०—१ दूत, हलकारा। उ०—तिको मत्र उपव्हर भी चारलोका रा चतुरपण थी चौडै आयौ थको पहली ही इसो घाट घडता तीजा साहजादा ओरगजेब रै सहायक वणियौ।—व भा

२ चार प्रकार के लोक—देवलोक, मृत्युलोक, पाताललोक व नागलोक।

चारवाक, चारवाक्य–स०पु० [स० चार्वाक] एक अनीश्वरवादी और नास्तिक तार्किक।

चारा जोई–स०स्त्री० [फा०] नालिश, फरियाद।

चारि—देखो 'च्यार' (रू भे)

चारिणी—१ देखो 'चारणी' (रू भे) उ०—पार री बोव लाघण प्रथम, आपै अकल अ घारणी। जिण पार जीत आखू जुगत, सुमत समापै चारिणी।—पा प्र

[स०] २ आचरण करने वाली, चलने वाली।

चारित—देखो 'चरित्र' (रू भे) उ०—चारत ले देहि दडं, अन आविल ...रि सात। गां तौ चारित कोई ओर है, जहा काम क्रोध भ्रम जात।

—ह पु वा

चारिताळी–वि०—विभिन्न चरित्र करने वाली।

चारित्र—देखो 'चरित्र' (रू भे) उ०—इद्र गोतम अहिलिग्रा अलज चारित्र अनत।—रामरासौ

चारी–वि० [स० चारिन्] विचरण करने वाला, चलने वाला।

चारु–वि० [स०] सुदर। उ०—कुळ को बणातौ सुढार, बग कौ देतौ बिगार, चारण वरण चारु छार मे छिपाता।—ऊ का

चारुदेरण–स०पु० [स० चारुदेष्ण] कृष्ण का एक पुत्र जो रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

चारुधारा–स०स्त्री०यौ० [स०] इन्द्र की पत्नी, शची (डिं को)

चारुबिंब–स०पु० [स०] श्री कृष्ण का एक पुत्र।

चारुवेस–स०पु०यौ० [स० चारुवेश] श्री कृष्ण का एक पुत्र जो रुक्मिणी से उत्पन्न हुआ था।

चारुस्रवा–स०पु० [स० चारुश्रवस] श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

चारू–वि०— चारो।

मुहा०—चारू खाना चित पडणौ—ऐसा चित गिरना जिससे हाथ-पाव फैल जाय।

चारूमेर–क्रि०वि०यौ०—चारो ओर। उ०—चारूमेर थे चकारा देता, भूखा नै बेकार फिरलौ। रोटी रा टुकडा टुकडा नै, वे मौत बिलखताई मरलौ।—रेवतदान

चारू–वि०—चरने वाला (पशु)

कहा०—चारू कदै न हारू—चरने वाला या पेट भरने वाला कभी नही थकता।

चारूवळ, चारूवळा–क्रि०वि०—चारो ओर।

चारेक–वि०—चार के लगभग।

चारोळी–स०स्त्री०—१ चिरू जी २ नारियल की गिरी का टुकडा। उ०—मीठी द्राख चारोळी चाखवी निंबोळी कुण खायौ रे।—स कु

३ होली का दूसरा दिन।

चारौ–स०पु०—१ पशुओ के खाने की घास। उ०—आरुण करणि रूप अधिकारी। चरै महिख गूदगिरी चारौ।—सू प्र

२ मूग व मोठ के सूखे पत्ते ३ भोजन, खाद्य वस्तु।

उ०—१ कण एक लिया किया एक कण कण, भर खचै भजियौ भिड। बळभद्र खळै खळा सिर बैठी, चारौ पळ ग्रीधणी चिड।

—वेलि

[फा० चारा] ४ उपाय, तदबीर ५ वस। उ०—इहा कोई नौ नही छै चारौ, बाक न कोई इहा (अछै) पितारौ।—स्रीपाळ रास

चाळ–स०स्त्री०— १ धरा, धरती २ कुर्ते के अग्र भाग का झोलीनुमा बनाया हुआ पल्ला। उ०—जैस अपजस जाचक पढै, मागै चाळ बिलूब। नही चिढै उत्तर न दे, घामघूम हुँ सूब।—वा दा

मुहा०—१ चाळ लूबणौ—शरण मे जाना, शरण मागना २ चाल झूबणौ—देखो मुहा० न० १।

३ खलिहान में धूलि-मिश्रित अनाज को साफ करने का बडा उपकरण, बडी चलनी ४ छेडछाड। उ०—कासीद आणि इम कहिय वत्त, सुनि मीर खान परगह समस्त। को करहि काळ से चाळ कोपि, को जात सिघु पर तीर लोपि।—ला रा

५ क्रोध, गुस्सा ६ परगना। उ०—चवदै चाळा कछ चवदै पटगना है, पडगना नू चाळ कहै। कछ धरा खावै परा जीतै।

—वां दा ख्यात

७ भुवन, लोक (पुराणानुसार लोक चौदह है। सात स्वर्ग और सात पाताल) उ०—चळचळै चवदह चाळ, थट हुवा जिम जळ थाळ। सुत 'विसन' सह वधि सोच, इम लिखे खत आलोच।—सू प्र

चाल–स०स्त्री०—१ चलने की क्रिया, गति, चलने का ढग।

उ०—चकरथा इसा चातिग्रा काळ चालम।—वचनिका

२ आचरण, व्यवहार, चालचलन।

मुहा०—१ चाल ठीक करणी—आदत सुधारना, चाल-चलन ठीक रखना २ चाल सुधारणी—आचरण ठीक करना।

३ आकार, आकृति ४ रीति-रिवाज, प्रथा। उ०—परतु जैतौ अब ही सो मीणा री चाल छोडि रजपूता री राह मे रहण रौ लेख करि सूपै तौ यो सबध करण मे आवै।—व भा.

क्रि०प्र०—निभाणी, राखणी।

५ चालाकी, कपट, धूर्तता। उ०—व्रथा भूट नर वोल, आज काल करता रहै। आखिर उघडै पोल, चाल छिपै नहि चकरिया।

—मोहनराज साह

मुहा०—१ चाल खेलणी—धोखा देना, कपट करना २ चाल चलणी—धोखे से काम पूरा करना, धोखेबाजी करना।

यौ०—चालबाज, चालबाजी।

६ ढग, विधि। उ०—रौळ बिगाडै राज नू, मौळ बिगाडै माल। सनै सनै सिरदार री, चुगल बिगाडै चाल।—बा दा.

७ शतरज या चौपड मे अपनी पारी पर गोटी को आगे बढाने या चलाने की क्रिया ८ हलचल, घूमधाम ९ सर्प (अ मा). १० नकल, अनुकरण। उ०—जैपुर रौ राजा माधोसिंघजी हाथ री दस ही आगळिया मे वीटिया राखता आ राणाजी री चाल।— बा दा

चाळक-स०पु०—१ सोलकी वश या इस वश का व्यक्ति (सू प्र)
२ सिंह ३ एक राक्षस जो आवड देवी के हाथो मारा गया था ४ आवडदेवी का एक नाम।

वि०वि०—देखो 'आवड'।

अल्पा०—चाळकौ।

चालक-वि०—१ चलाने वाला, गतिमान करने वाला २ चलने वाला ३ सचालक।

स०पु०—१ नृत्य मे हाथ चलाने की एक क्रिया. २ अकुश की भी परवाह न करने वाला हाथी।

चाळकनाराय, चाळकनेची—स०स्त्री०—आवड देवी का नाम।

वि०वि०— देखो आवड'।

चाळकरौ-वि०—१ छेड-छाड करने वाला २ युद्ध करने वाला।

स०पु०—३ चालुक्यवशीय राजपूत।

चाळकौ—देखो 'चाळक' (४) (अल्पा रू भे)

चाळगारौ—देखो 'चाळागारौ' (रू भे)

चालचलगत-स०स्त्री०यौ०—१ रीतिरिवाज, चाल प्रथा।
२ देखो 'चालचलन' (रू भे)

चालचलन, चालढ़ाल-स०स्त्री०यौ०—१ चरित्र २ आचरण, व्यवहार।

उ०—वूबना नू पोसाक पहराय खाडा कन्है आणि ओर मूमना री चालढ़ाल देख कही।—जलाल वूबना री बात

चालणी—देखो 'चलणी' (रू भे)

कहा०—चालणी सुई नै हसै—चलनी मे अनेक छेद होते हुए भी सूई पर हँसती है, स्वय के अनेक दोषो पर ध्यान न देकर दूसरे मे दोष निकालने वाले के प्रति।

चाळणौ, चाळबौ-क्रि०स०—उकसाना, छेडना। उ०—कुण थानै चाळा चाळिया जी कोई कुण थानै लाय दिखायौ जी राज क लहरयौ लेदौ जी।— लो गी

चालणौ चालबौ—देखो 'चलणौ' (रू.भे) उ०—गई रवि किरण ग्रहे थई गहमह, रहरह कोइ नह रहे रह। सुजु दुज पुरा नीसरे सूतौ, निसा पडी चालियौ नह।—वेलि

कहा०—१ चालणौ रस्तैसर हुवौ भलाई घेर ही—सदैव रास्ते-रास्ते ही चलना चाहिये चाहे उसमें घुमाव-फिराव कितने ही क्यो न हो। हमेशा नियम एव मर्यादापूर्वक कार्य करते रहना चाहिये। २ चालता बळद कै आर देणी—चलते हुए बैल के लकडी या लकडी मे लगी कील चुभाना। कार्यशील व्यक्ति को बेकार मे तंग करना।

चालणहार, हारौ (हारी), चालणियौ—वि०।

चालिओडौ, चालियोडौ, चाल्योडौ—भू०का०कृ०।

चालीजणौ, चालीजबौ—भाव वा०।

चाळनेच-स०स्त्री०—आवड देवी का एक नाम।

चाळबद, चाळबध-स०पु०यौ० [चाळ = भूमि+बध] राजा, भूमिपति।

उ०—१ साकै राव सको सिरोई, पोहरा कुभळमेर पडै। सत्र तोसु समहर 'सूजावत', चाळबध नह कोय चडै।—मैपजी बारहठ

उ०—२ कहि चहुवाण तणा भड केहा। जम हू लडै चाळबध जेहा।

—सू प्र.

मि०—चाळाबध।

चालबाज-वि० [यौ०] धूर्त्त, कपटी, छली।

चालबाजी-स०स्त्री०यौ०—धूर्त्तता, चालाकी, कपट।

चाळराय-स०स्त्री०—आवड देवी का एक नाम।

चाळवणौ, चाळवबौ-क्रि०स०—छेड-छाड करना, छेडना।

उ०—१ वेंडा जुधा गयदा ढाल, वे ह्लेत वेढीगारो। चाळवै ससआ पजा, विरूथो सचाळ।—बुधसिंह सिंढायच

उ०—२ खळ खेंगरण वडा व्रिद खाटण, वैरा सूं चाळवण विरोध। सोमि सन्'ह दुवाहा सामत, जगि जणियार कळोधर जोध।

—राठौड सुजानसिंह आसकरणोत रौ गीत

२ प्रहार करना। उ०—कोट कटारी चाळवी, खटकी खूमाणाह। मोटै ईसर मारियो, डाकी भरडाणाह।—बा दा ख्यात

३ छानना।

चालसखा-स०स्त्री०—चौहान वश की एक शाखा।

चालहर-स०पु०—एक प्रकार का घोडा।

चालान-स०पु०—१ व्यापारियों द्वारा भेजे गये माल की सूची, बीजक २ भेजा हुआ माल व रुपया ३ पुलिस द्वारा मुजरिम को अदालत में उपस्थित करने का कार्य।

क्रि०प्र०—करणी, कराणी, भरणी, होणी।

चाबियोडौ–भू०का०कृ०—चबाया हुआ। (स्त्री० चाबियोडी)
चाबी–स०स्त्री०—१ (ताले की) कुंजी २ घडी या इसी प्रकार के अन्य यंत्र को चलाने के लिए नियमित रूप से घुमाया जाने वाला पुरजा।
मुहा०—चावी भरणी—बहकाना, लडाई कराने के लिए उत्तेजित करना।
चाबुक—देखो 'चावक' (रू भे.) उ०—भोळा की चहरौ भर्डा, ईखौ चारण ऐण। के ही कढता कायरा, वाढा चाबुक वैण।—वी स
चाबुकसवार–स०पु०यौ० [फा०] १ घोडे को विभिन्न प्रकार की चाल सिखाने वाला २ घोडे को चलाने वाला।
चाबुकसवारी–स०स्त्री०—चाबुक सवार का कार्य (देखो 'चाबुकसवार')
चाबुकियौ—देखो 'चावक' (अल्पा रू भे)
चाबेदार–स०पु०—१ चोवदार का कार्य करने वाली एक जाति अथवा इस जाति का व्यक्ति २ चोवदार।
चाभुलेया–स०स्त्री०—चौहान वंश की एक शाखा।
चाय–स०स्त्री०—१ एक पौधा या झाड जो लगभग ४-५ फुट की ऊंचाई तक का होता है, जिसकी पत्तिया पहिले अनेक प्रक्रियाओ से शुद्ध एव सुगंधित की जाती हैं। यह लोगो द्वारा उबाल कर पी जाती है २ चाह, इच्छा। उ०—चीत मरण रण चाय, अकबर आधीनी विना। पराधीन दुख पाय, पुनि जीवै न प्रतापसी।
—दुरसौ आढौ
३ उत्साह। उ०—जतन 'अजीत' भळाय सब, उतन सचीत मिटाय। एम दुरग्गह मारवा, किया सुरग्गे चाय —रा रू.
चायक—देखो 'चाहक' (रू भे)
चायगुर–स०पु०यौ०—वीर, योद्धा, बहादुर। उ०—कलमाधर गाहै 'करनावत', चायगुर कनक तुला चाडियौ। भल दाता चेळौ तो भारी, असपत चेळौ ऊपडियौ।—महाराणा जगतसिंह री गीत
चायतौ–वि०—इच्छित, चहेता। उ०—पुरा कीधा सळह उर पख राव दापता, चामडा भवानी हुवै मन चायता।—महादान महडू
चायना–स०स्त्री०—१ इच्छा, चाहना, अभिलाषा २ जरूरत, आवश्यकता।
चायलवाडौ–स०पु० [चायल+स० पटक] चायल जाति के जाटो के राज्य का प्रदेश जो बीकानेर राज्यान्तर्गत था (ऐतिहासिक) (द दा)
चायोडौ—१ देखो 'चावियोडौ' (रू भे) (स्त्री० चावियोडी)
चार–वि०—१ तीन और एक के बराबर।
मुहा०—१ चार आख होणी—नजर से नजर मिलाना, प्रेम होना. २ चार चाद लागणा—अधिक प्रतिष्ठा होना, सुदरता बढना, चौगुणी शोभा होना ३ चार री पाच भेळणी—इधर-उधर की बात बनाना, अपनी ओर से उत्तेजित करने के उद्देश्य से कोई बात जोडना।
कहा०—चार ही खूणा एकादसी नै बीच मे सिवरात्री—अधिक निर्धनता की द्योतक, अत्यधिक गरीबी के प्रति।
२ थोडा, कुछ।
मुहा०—१ चार दिन—थोडे दिन, कुछ दिन २ चार पैसे—कुछ धन, कुछ रुपया-पैसा।
[स० चारु] ३ सुदर। उ०—पट वसन हाट अपार, आछादि अवर चार। निरखत रूप सनेम, प्रति महल त्रिय अति प्रेम।—रा.रू
स०पु०—१ चार की सख्या।
[स०] २ गति, चाल ३ बंधन, कारागार. ४ गुप्तदूत, गुप्तचर (डिं को)
उ०—तिकौ मंत्र उपह्वार भी चार लोका रा चतुरपणा थी चौडै आयौ।—व भा
५ कृत्रिम विष ६ मोठ की सूखी पत्तिया ७ पशुओ को डाला जाने वाला घास, चारा। उ०—मुर्गं ढलेत खगेत मह, जमै न जे जग जोर। चार आव भाग न चरै, ढोवै वोझौ ढोर।
—रेवतसिंह भाटी
८ भोज्य पदार्थ। उ० —चिडौ बचा री चाच में, चाच दिए भर चार। दुरजण मुख इण विध दियै, मूरख सवण मझार।
— वा दा.
चारआनी–स०स्त्री०यौ०—चवन्नी।
चारआइनौ–स०पु० [फा० चार आइना] चार पटरी लगा हुआ एक प्रकार का कवच (व भा)
चारक–स०पु० [स०] १ चलाने वाला २ गति, चाल ३ सहचर, साथी ४ गुप्तचर ५ ब्राह्मण छात्र, ब्रह्मचारी ६ चराने वाला, ग्वाला।
चारखी—देखो चरखी' (रू भे) उ०—दळा रोळ दताळ ऐसा दुगम्म, जम चालिया सामुहा जाणि चम्म। रजी ऊमटै वोम नू रोस रत्ता, धुआधार चारखिया घत्तघत्ता।—वचनिका
चारखाणी–स०स्त्री०यौ०—चार प्रकार से उत्पन्न होने वाले प्राणी—जरायुज, उद्भिज, अडड और स्वेदज। उ०—जेण सद् जीवत चारखाणी चत्रवाणी।—ह र.
चारचक्षु–स०पु०यौ० [स० चारचक्षुष्] वह राजा जो अपने गुप्तचरो के द्वारा सब वातो की जानकारी रखे।
चारज–स०पु० [अ० चार्ज] १ कार्यभार, काम की जिम्मेदारी।
क्रि०प्र०—दैणी, लैणी।
२ जुर्माना।
क्रि०प्र०—दैणी, लैणी।
चारजामौ–स०पु०—घोडे, ऊट आदि की पीठ पर कस कर सवारी करने का चमडे या कपडे का बना हुआ आसन।
चारण–स०पु० (स्त्री० चारणी) राजस्थान, मध्यभारत एव गुजरात मे फैली हुई एक जाति विशेष अथवा इस जाति का व्यक्ति। राजस्थान का अधिकतर साहित्य इसी जाति के व्यक्तियो द्वारा लिखा गया है।

चारणविद्या—स०पु०यौ० [स०] अथर्ववेद का एक अंश।
चारणियावट—स०पु०यौ० [स०] भूमि का भाइयो मे किया जाने वाला परस्पर समान बटवारा।
चारणी—स०स्त्री०—१ चारण जाति की स्त्री २ चारण कुलोत्पन्न देवी, शक्ति। उ०—कीधी तैं कोप माजियो 'कानो', रडमल नैं दीधो तैं राज। चारण वाडा तणी चारणी, लोक मही तू राखै लाज।—वा दा
३ चलनी।
चारणौ, चारबौ—क्रि०स०—देखो 'चराणौ' (रू.भे)
चारणहार, हारो (हारी), चारणियौ—वि०।
चारिग्रोडो, चारियोडो, चारचोडो—भू०का०कृ०।
चारीजणौ, चारीजबौ—कर्म वा०।
चारदिवारी, चारदीवारी—स०स्त्री० [फा० चारदीवारी] चारो ओर की दीवार, परकोटा, आहता। उ०—लोटचो जाट करणियो मीणौ, करै किलै की सैल। फिर घिर देखी चारदिवारी, नाय लगाई देर।
—डूगजी जवारजी री पड
चारलोक—स०पु०—१ दूत, हलकारा। उ०—तिको मत्र उपव्हर भी चारलोका रा चतुरपरण थी चौडै आयो थको पहली ही इसो घाट घडता तीजा साहजादा ओरगजेब रै सहायक बणियो।—व भा
२ चार प्रकार के लोक—देवलोक, मृत्युलोक, पाताललोक व नागलोक।
चारवाक, चारवाग्य—स०पु० [स० चार्वाक] एक अनीश्वरवादी और नास्तिक तार्किक।
चाराजोई—स०स्त्री० [फा०] नालिश, फरियाद।
चारि—देखो 'च्यार' (रू भे)
चारिणी—१ देखो 'चारणी' (रू भे) उ०—पार रो बोध लाधण प्रथम, आपै अकल अ.धारणी। जिण पार जीत आपू जुगत, सुमत समापै चारिणी।—पा प्र
[स०] २ आचरण करने वाली, चलने वाली।
चारित—देखो 'चरित्र' (रू भे) उ०—चारत ले देहि दडै, अन आविल करि खात। सो तो चारित कोई और है, जहा काम क्रोध भ्रम जात।
—ह पु वा
चारिताळी—वि०—विभिन्न चरित्र करने वाली।
चारित्र—देखो 'चरित्र' (रू भे) उ०—इद्र गोतम अहिलिआ अलज चारित्र अनत।—रामरासौ
चारी—वि० [स० चारिन्] विचरण करने वाला, चलने वाला।
चारु—वि० [स०] सुंदर। उ०—कुळ की बणातो कुढार, बस कौ देतो बिगार, चारण वरण चारु छार मे छिपाता।—ऊ का
चारुदेस्ण—स०पु० [स० चारुदेष्ण] कृष्ण का एक पुत्र जो रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।
चारुधारा—स०स्त्री०यौ० [स०] इन्द्र की पत्नी, शची (डिं.को)
चारुविद—स०पु० [स०] श्री कृष्ण का एक पुत्र।
चारुवेस—स०पु०यौ० [स० चारुवेश] श्री कृष्ण का एक पुत्र जो रुक्मिणी से उत्पन्न हुआ था।
चारुस्रवा—स०पु० [सं० चारुश्रवस] श्रीकृष्ण का एक पुत्र।
चारू—वि०—चारो।
मुहा०—चारू खाना चित पडणौ—ऐसा चित गिरना जिससे हाथ-पाव फैल जाय।
चारूमेर—क्रि०वि०यौ०—चारो ओर। उ०—चारूमेर थे चकारा देता, भूखां नैं बेकारा फिरलो। रोटी रा टुकडा टुकडा नैं, वे मौत बिलखताई मरलो।—रेवतदांन
चारू-वि०—चरने वाला (पशु)
कहा०—चारू कदै न हारू—चरने वाला या पेट भरने वाला कभी नही थकता।
चारवळ, चारूवळा—क्रि०वि०—चारो ओर।
चारेक—वि०—चार के लगभग।
चारोळी—स०स्त्री०—१ चिरू जी. २ नारियल की गिरी का टुकडा। उ०—मीठी द्राख चारोळी चाखवी निंबोळी कुण खायौ रे।—स कु
३ होली का दूसरा दिन।
चारौ—स०पु०—१ पशुओ के खाने की घास। उ०—आरुण करणि रूप अधिकारो,। चरै महिख गूदगिरी चारो।—सू प्र
२ मूग व मोठ के सूखे पत्ते ३ भोजन, खाद्य वस्तु।
उ०—१ कण एक लिया किया एक कण कण, भर खचै भजियौ भिड। वळभद्र खळ खळा मिर वैठी, चारौ पळ ग्रीधणी चिड।
—वेलि
[फा० चारा] ४ उपाय, तदवीर ५ वस। उ०—इहा कोई नो नही छै चारौ, वाक न कोई इहा (अछै) पितारौ।—खीपाळ रास
चाळ—स०स्त्री०—१ धरा, धरती २ कुर्ते के अग्र भाग का झोलीनुमा बनाया हुआ पल्ला। उ०—जैस अपजस जाचक पढै, मागै चाळ बिलूब। नही चिढै उत्तर न दे, घामघूम हूं सूब।—वा दा
मुहा०—१ चाळ लूवणौ—शरण मे जाना, शरण मागना २ चाल झूबणौ—देखो मुहा० न० १।
३ खलिहान मे धूलि-मिश्रित अनाज को साफ करने का बडा उपकरण, बडी चलनी ४ छेडछाड। उ०—कासीद आणि डम कहिय बत्त, सुनि मीर खान परगह समस्त। को करहि काळ से चाळ कोपि, को जात गिधु पर तीर लोपि।—ला रा.
५ क्रोध, गुस्सा ६ परगना। उ०—चवदै चाळा कछ चवदै पडगना है, पडगना नू चाळ कहै। कछ धरा खावै परा जीतै।
—वा दा ख्यात
७ भुवन, लोक (पुराणानुसार लोक चौदह है। सात स्वर्ग और सात पाताल) उ०—चळचळै चवदह चाळ, थट हुवा जिम जळ थाळ। सुत 'विसन' सह वधि सोच, इम लिखे खत आलोच।—सू प्र
चाल—स०स्त्री०—१ चलने की क्रिया, गति, चलने का ढग।
उ०—चकरथा इसा चालिआ काळ चालम।—वचनिका

चिंगो—स०पु०—घोडा, अश्व (ना डिं को)

चिघाड–स०स्त्री०—चीख मारने से उत्पन्न शब्द, हाथी की वोली।

चिघाडणो, चिघाडबो–क्रि०अ०—१ चीखना, चिल्लाना २ हाथी का जोर से आवाज करना, चिंघाडना।

चिंघाडणहार, हारो (हारी), चिंघाडणियो—वि०।

चिंघाडिग्रोडो, चिंघाडियोडो, चिंघाडयोडो—भू०का०कृ०।

चिंघाडीजणो, चिंघाड़ीजबो—भाव वा०।

चिंघाडियोडो–भू०का०कृ०—चिंघाडा हुआ (स्त्री० चिंघाडियोडी)

चिंचडो—देखो 'चीचडो' (रू भे)।

चिंचौ–स०पु० [स० चिंचा] इमली का वीच, चिंया।

चिंडाळ—देखो 'चडाळ' (रू.भे) (स्त्री० चिंडाळी)

कहा०—१ जात चिंडाळ कोनी, करम चिंडाळ हूँ—जाति से मनुष्य नीच नही होता, नीच कर्म के कारण ही नीच होता है। नीच कर्मो की निन्दा २ चोर कौ माल चिंडाळ खावै—वुरे कार्यो से अर्जित धन वुरे व्यक्तियो द्वारा वुरे कार्यों के लिए ही खर्च होता है। वुरे कार्यों द्वारा धन-उपार्जन की निंदा।

चिंडाळी—देखो 'चडाळी' (रू.भे) उ०—खिजमत करता खिजै छैल छूटै चिंडाळी। सुणां न नाम सिनान गध दे लाखा गाळी।
—ऊ का.

चिंत–स०स्त्री० [स० चिंता] १ चिंता, सोच, फिक्र। उ०—दाखियो प्रभू कुण चिंत देव। भाखियो सुरा दुख राण भेव।—सू प्र

२ चिंतन। उ०—भोग्य चिंत भजै, ग्रीवणी गरज्जै। नीर धार निजै, सोहडै सलज्जै।—रा रू.

३ याद, स्मरण। उ०—१ हसा नै सरवर घणा, सुगणा घणा ज मित। जाय पड्या परदेम मे, साजन आया चिंत।—र रा

उ०—डगरिया रा मोरिया, पीहरिया रा मित। ज्यू-ज्यू सावण ओलरै, त्यू त्यूं आवै चिंत।—र रा

चिंतक–वि० [स०] १ चिंता करने वाला २ चिंतन करने वाला, सोचने वाला।

चिंतकरि–स०पु०—कपट (ह ना)

चिंतण–स०पु० [स० चिंतन] ध्यान, वार-वार स्मरण, मनन।

उ०—नरोत्तम उत्तम तार नितार, चराचर चिंतण हार चितार।
—ऊ का

चिंतणीय–वि० [स० चिंतनीय] १ चिंतन करने के योग्य, मनन-योग्य २ चिंता करने योग्य।

चिंतणो, चिंतबो–क्रि०म० [स० चिंतना] १ चिंतन करना, मनन करना २ चिंता करना, फिक्र करना।

चिंतणहार, हारो (हारी), चिंतणियो—वि०।

चिंतिग्रोडो, चिंतियोडो, चिंत्योडो—भू०का०कृ०।

चिंतमण—देखो 'चिंतामणी' (रू भे)

चिंतवण—देखो 'चिंतण' (रू भे.)

चिंतवणो, चिंतवबो—देखो 'चिंतणो' (रू भे) उ०—चिंतातुर चित इम चिंतवती, थई छीक तिम धीर थई।—वेलि.

चिंतवणहार, हारो (हारी), चिंतवणियो—वि०।

चिंतविग्रोडो, चिंतवियोडो, चिंतव्योड़ो—भू०का०कृ०।

चिंतवीजणो, चिंतवीजबो—कर्म वा०।

चिंता–स०स्त्री० [स०] १ किसी प्राप्त दुख या दुख की आशंका से उत्पन्न होने वाली भावना, सोच, फिक्र। उ०—कहियौ सुणै वीर कुदरत्ती। मेट जती चिंता महपत्ती।—सू प्र

मुहा०—चिंता लागणी—किसी वात का हर समय फिक्र रहना।

२ ध्यान, चिंतन, मनन ३ रस विषय मे करुण रस का व्यभिचारी भाव (साहित्य)

चिंताकुळ, चिंतातुर–वि० [स० चिंताकुल] चिंता से व्याकुल, व्यथित, चिंतित। उ०—तै वासतै मै ढाकि राखियो हुतो, राजा चिंतातुर हुयो।—चौवोली

चिंतामण, चिंतामणि, चिंतामणी, चिंतामिणी–स०पु० [स० चिंतामणि] १ एक कल्पित रत्न विशेष जिसके लिये यह वात प्रसिद्ध है कि उसके समक्ष जो अभिलाषा प्रकट की जाती है वह उसी समय पूर्ण हो जाती है। उ०—१ समुद्र और छीलर, काजी और अम्रत, कल्पव्रक्ष और धतूरो, चिंतामण और पत्थर, सक्कर और लूण।
—पचदडी री वारता

उ०—२ चिंतामणि पारस पौरसो, सुधा सरोवर कामगा। सपजै ताम सुत सपनै, ग्रिह सुरधाम विरामगा।—रा रू.

उ०—३ रचे चिंतामणी सुहार, कठि रक कीजियै। पल पलं विलोकि पुत्र, जेण भाति जीजियै।—सू प्र

२ ब्रह्मा ३ परमेश्वर ४ सरस्वती का एक मत्र विशेष जो विद्यार्थियो द्वारा विद्या प्राप्त करने की इच्छा से अपनी जीभ पर लिखा जाता है।

५ कपिल के यहा जन्म लेने वाला एक गणेश (स्कदपुराण) ६ घोडे के गले या नाक पर की भौंरी (शुभ, शा हो) ७ वह घोडा जिसके ऐसी भौंरी हो। ८ यात्रा का एक योग।

चिंतार–स०स्त्री०—स्मृति।

चिंतारणो, चिंतारबो–क्रि०स०—स्मरण करना। उ०—विसारिया न वीसरइ, चिंतारिया नावत। मारू सायर लहर ज्यू, हिवडै द्रव काढत।
—ढो मा

चिंतावत–वि०—चिंतायुक्त, चिंताशील। उ०—जोई आवै छै। त्यानै पूछिजै छै। महा चिंतावत हुआ छै।—वेलि टी

चिंताहर–स०पु०—चिंता का हरण करने वाला, ईश्वर।

उ०—चिंताहर नागर चिंता नह चीनी। करुणासागर भी करुणा नह कीनी।—ऊ का

चिंतिय–वि०—चिंतित (जैन)

चिंती–वि०—चित्तवाली। उ०—जिण घर घोडी लीलडी, ऊजळ चिंती नार। तिण घर सदा उजासणो, दिवलै तेल न वाळ।—र.रा

चिंतु—देखो 'चित' (रू भे)
चिंत्या—देखो 'चिंता' (रू भे.) उ०—मतना मेरी माता श्रे मतना कर जीवरा केरी सोच; मेरी राताdेई जीवरा चिंत्या श्रे कुळ मे हू करू । —लो गी
चित्रगढु—स०पु०—एक राजा का नाम (जैन)
चिंदी—स०स्त्री०—कपडे की घज्जी, कपडे का बहुत छोटा लबोतरा टुकडा मुहा०—१ चिंदी चिंदी करणी—छोटे छोटे टुकडे करना २ चिंदी देणी—तलाक देना, पति-पत्नी का पारस्परिक सम्बन्ध विच्छेद होना । ३ चिंदी फाडणी—देखो 'चिंदी देणी' ।
चिंध—स०पु० [स० चिन्ह] चिन्ह, निशानी । उ०—पाउढ चिंध कबध वध धर मडळि रोळईं ।—प प च
चिंधपट्ट—स०पु०—खास निशानयुक्त पट्टा (जैन)
चिंम—स०स्त्री०—श्राख मे चोट श्रादि लगने से होने वाला दृष्टि-श्रवरोधक विकार ।
चिंयो—स०पु०—१ जलाशय के किनारे-किनारे पानी में उत्पन्न होने वाली घास विशेष २ कच्चे फल का श्रारभिक रूप । [स० चिंचा] ३ इमली का बीज । ४ वणिक, बनिया । उ०—चित को हू कोळा-चिंयो, बिहू श्रागळी वेख । खत कढै क्रर खग खडी, दो हथ म्हारा देख ।—रेवतसिंह भाटी
चि—स०पु०—१ सूर्य, भानु । स्त्री०—२ श्रावाज ३ दीवार. ४ चित्र ५ बकरी (एका.) ६ पिंड ७ भय ।
चिश्रार, चिश्रारि, चिश्रारे—वि० [स० चत्वार] चार । उ०—१ चत्रभुज भाग श्रनुज चिश्रारि ।—रा रा. उ०—२ चत्रमुख वेद चिश्रारे ।—रा रा
चिऊकार—देखो 'चिकुर' (रू भे.)
चिक—स०स्त्री० [तु० चिक] खिडकी व दरवाजे श्रादि पर डाला जाने वाला पर्दा जो वास व सरकडे की तीलियो से बनता है ।
चिक-चिकतो—वि०—तरवतर, चकाचक । मि०—चकाचक ।
चिकचिकी—स०स्त्री०—१ श्रधिक स्निग्ध पदार्थ से बने खाद्य पदार्थ को खाने पर उत्पन्न होने वाली श्ररुचि २ श्रधिक कमजोरी या बुखार श्रादि के कारण होने वाला पसीना ।
चिकछा—देखो 'चिकित्सा' (रू भे) उ०—चारि विधि की चिकिछा वेदें कही छै । जितना सरीर मांहे रोग छै त्या सिघळा ऊपरि । सु कोण चिकछा । एक तो ससत्र करम जासौं चीरें ।—वेलि टी.
चिकट—स०पु० [स० चिक्कण], स्निग्ध पदार्थ ।
चिकटणो, चिकटबो—क्रि०श्र०—मैल या स्निग्ध पदार्थो के जमने के कारण चिपचिपा होना ।
चिकटाई—स०स्त्री०—चिकनापन, स्निग्धता ।
चिकटियोडो—भू०का०कृ०—मैल या स्निग्ध पदार्थों के जमने के कारण चिपचिपा । (स्त्री० चिकटियोडी)
चिकडोर—स०पु०यौ०—जालीदार कपाट ।
चिकणाई—स०स्त्री० [स० चिक्कण+रा०प्र०श्राई] १ चिकना होने का भाव, चिकनाई, स्निग्धता २ घी तेल श्रादि स्निग्ध पदार्थ ।
चिकणाट—स०पु०—देखो 'चिकणाई' (रू भे.)
चिकणाणो, चिकणावो—क्रि०स० [स० चिक्कण] १ चिकना करना, खुरदरा न रहने देना २ स्निग्ध करना ।
चिकणाय—स०पु०—१ शक, सदेह, श्राशका २ स्निग्ध पदार्थ ।
चिकणावट, चिकणास, चिकणाहट—देखो 'चिकणाट' (रू भे)
चिकणी माटी—देखो 'चीकणी माटी' (रू भे)
चिकणी—देखो 'चीकणी' (रू भे)
चिकणो, चिकबो—क्रि०श्र०—किसी द्रव पदार्थ का बहुत बारीक छिद्रों से होकर सूक्ष्म कणो मे बाहर निकलना । चुकचुकाना, चूना, चुचाना ।
चिकता, चिकतेस, चिकतो—देखो 'चगताई' (रू भे.)
चिकतसथान—स०पु०—चिकित्सालय, श्रस्पताल । उ०—श्रमैं न भिच्छु भिच्छु की मयान दान मान की, न श्रौसधी चिकतसथान दोसघी निदान की ।—ऊ.का
चिकन, चिकन्न—स०पु० [फा० चिकिन] एक प्रकार का कशीदा जो रेशम या सूत से कपडे पर काढा जाता है । उ०—सजत के चिकन्न साज, सुंदरा सरोभरा ।—सू प्र.
चिकर—१ देखो 'चिकुर' (रू भे) २ सर्प श्रादि पेट पर रेंगने वाले जन्तु ३ गिलहरी ४ छछूदर ।
चिकल—स०पु० [स० चिकिल] कीचड, पक ।
चिकाणो, चिकाबो—क्रि०स०—श्रौषधियो श्रादि के पुट देना । उ०—तठा उपरायत पुराणें, श्रगर री चिकायो सूघो मगायजै छै । —रा.सा स
चिकार—स०पु०—१ समूह, झुड । उ०—चिरे बहित्थ हत्थि के चिकार चूर चूर है । भिरे भटाळि भाळ मे भिखार भूर भूर है ।—उ का [स० चीत्कार, प्रा० चिक्कार] २ चिंघाड़, चिल्लाहट । उ०—जहा तहां हत्थनी चड चिकार ।—व भा
चिकारो—स०पु०—१ एक प्रकार का वाद्य जो सारगी की तरह का होता है तथा उसमे नीचे की श्रोर चमडे का मढा कटोरा रहता है श्रौर ऊपर डाडी निकली रहती है । चमडे के ऊपर से गए हुए तारो या घोडे के वालो को कमानी से रेतने से शब्द निकलता है । (सगीत) २ हरिण विशेष ।
चिकाळ—स०स्त्री०—मदिरा, शराब (श्र मा)
चिकिछा—देखो 'चिकित्सा' (रू.भे) उ०—चारि विध की चिकिछा वेदें कही छै ।—वेलि टी.
चिकित्सक—स०पु० [स०] रोग दूर करने का उपाय करने वाला, श्रौपधि उपचार करने वाला ।

चिकित्सा-स०स्त्री० [स०] रोग दूर करने का उपाय या क्रिया, इलाज, उपचार, निदान। उ०—चतुर विध वेद प्रणीत चिकित्सा, ससत्र उखध मत्र तत्र सवि।—वेलि.

चिकिल-स०पु० [स० चिकिल] कीचड, पक (ह ना)

चिकीरसव-स०स्त्री० [स० चिकीर्षा] इच्छा, अभिलाषा (ह ना.)

चिकुर-स०पु० [स०] शिर के केश, बाल (अ मा.)

चिकोतरौ—देखो 'चकोतरौ' (रू भे)

चिक्कट—देखो 'चिकट' (रू भे)

चिक्कण-वि०—देखो 'चिकणौ' (रू.भे), उ०—पतसाह रा चिक्कण कुभ पर सघण बुद वाणी सुजण।—रा.रू.

स०स्त्री०—एक प्रकार की ककडी (किसनगढ)

चिक्कण, चिक्कणी-स०स्त्री० [स०] सुपारी, चिकनी सुपारी का एक भेद।

चिक्करणौ, चिक्करबौ-क्रि०अ०—हाथी का चिंघाडना। उ०—चौंकि दिग्गज चिक्करै उर कल्प भ्रमाया। ध्यान समाधी छोरि कै मन चित्र वढाया।—व भा

चिक्कस-सं०पु० [स०] उबटन। उ०—मेह मह सुगघ चिक्कस मळण, जीतण तप अह मह जुई। जह मह विवाह लागा जुडण, हाडा घर गह मह हुई।—व.भा.

चिक्खल, चिक्खिल-स०पु० [स० चिकिल] कीचड, पक (जैन)

चिख-स०पु० [स० चक्षु] १ नेत्र, नयन, चक्षु। उ०—धुव लाल चख हुय घोम, जुध काळ चढ अत जोम। भड चढै असळी भाळ, कमधेस चिख लकाळ।—पे रू

२ देखो 'चिक' (रू भे) ३ कीचड, पक।

चिगदौ—देखो चिगदौ' (रू भे) उ०—'सेवैई' तरह सौं कामखानी नै भगाया, चिगदा तीन छोटा क्यामखानी कै लगाया।—शि वं

चिग—देखो 'चिक' (रू.भे) उ०—१ ओ जाळिआ चिगा ढाळिनै रही छै।—रा सा स

उ०—२ पछै पातसाहजी आपरी अगरह थी तठै ठोड संवराई। मोहल रौ लोग पिण चिगा रै ओळै देखण आयौ।—नैणसी

चिगचिगी-स०स्त्री०—कमजोरी या बुखार की अवस्था में होने वाला पसीना।

चिगट—देखो 'चिकट' (रू भे)

चिगणौ, चिगबौ-क्रि०अ०—चिढना, खीझना। उ० —सेठ कह्यौ इयै मे चिगण री तौ वात ई कोयनी, आ तौ वैवार री बात है।

—वरसगाठ

चिगत, चिगथौ—देखो 'चगताई' (रू भे) उ०—भाऊ जिसा अरोडा भाई, भड जसवत जे हो भरतार। चिगथा लडण चलावै चोटा, 'सत्रसळ' सधू वजावै सार।—जसमादै हाडीराणी री गीत

चिगथ्थौ-स०पु०—१ किसी कपड या कागज का टुकडा।

२ चिगथौ (अल्पा रू भे)

चिगदणौ, चिगदबौ-क्रि०स०—कुचलना। उ०—धणी रौ रुंड सीम विना रौ धड जुध्ध करतौ हो नै पडियौ नही हो. उठा पैली थू वैरिया रा झुड नै टापा सू मार चिगद टूक-टूक होय धणी' कवध हुवौ लडतौ धणी रा धड पहली पडियौ।—वी स.टी.

चिगदौ-स०पु०—१ छोटा घाव, जख्म। उ०—कोई दीह ताई घाव मे लूण न आया। चिगदा छा सजोरा सेव सिवजी धाम पाया।—शि व

२ धब्बा ३ खड, टुकडा।

चिगळणौ, चिगळबौ-क्रि०स०—१ किसी पदार्थ को जीभ पर रख कर स्वाद लेने के लिए मुह मे इधर-उधर डुलाना २ तरसाना।

चिगाडणौ, चिगाडबौ-क्रि०स०—१ तरसाना, लालायित करना. २ भुलावा देना, फुसलाना। उ०— सोफी सवद सुणाय चोर रग देत चिगाडै। बैरागी नै जगत जगत नै भेख चिगाडै।—ऊ का.

३ चिढाना।

चिगाडणहार, हारौ (हारी), चिगाडणियौ—वि०।

चिगाडिओडौ, चिगाडियोडौ, चिगाड्योडौ—भू०का०कृ०।

चिगाडीजणौ, चिगाडीजबौ—कर्म वा०।

चिगाडियोडौ-भू०का०कृ०—१ तरसाया हुआ २ फुसलाया हुआ।

(स्त्री० चिगाडियोडी)

चिगाणौ, चिगाबौ—देखो 'चिगाडणौ' (रू भे)

चिगाणहार, हारौ (हारी), चिगाणियौ—वि०।

चिगाडणौ, चिगाडबौ, चिगावणौ, चिगावबौ—रू०भे०।

चिगायोडौ—भू०का०कृ०।

चिगाईजणौ, चिगाईजबौ—कर्म वा०।

चिगणौ, चिगबौ—अक० रू०।

चिगायोडौ—देखो 'चिगाडियोडौ' (स्त्री० चिगायोडी)

चिगाळी-स०स्त्री०—किसी को चिढाने के लिए उसके कार्यों या आकृति की उतारी गई नकल।

चिगावणौ, चिगावबौ—देखो 'चिगाडणौ' (रू भे)

चिगावणहार, हारौ (हारी), चिगावणियौ—वि०।

चिगाविओडौ, चिगावियोडौ, चिगाव्योडौ—भू०का०कृ०।

चिगावीजणौ, चिगावीजबौ—क्रि० कर्म वा०।

चिगणौ, चिगबौ—अक० रू०।

चिगावियोडौ—देखो 'चिगाडियोडौ' (स्त्री० चिगावियोडी)

चिगिच्छय-सं०पु० [स० चिकित्सक] चिकित्सक (जैन)

चिगी—देखो 'चिगाळी' (रू भे)

चिग्ग—देखो 'चिक' (रू भे) उ०—साईवान चिग्गा जरी तार सोहै। मडै झालरी मोतिया हस मोहै।—सू प्र.

चिड-स०स्त्री०—१ चिडचिडाने का भाव, चिढ, कुढन. २ नफरत, घृणा ३ अप्रसन्नता, खिजलाहट, विरक्ति. ४ एक प्रकार का पक्षी जो चिडी से छोटा होता है. ५ चिडियो का समूह। उ०—चगचगाट चिड करै मिरगला मोजा माणै। गूजै माखी भंवर महक खीचड रग खाणै।—दसदेव

६ देव मूर्ति का आभूषण।

चिडउ—देखो 'चिडौ' (रू भे)

चिटकल—देखो १ 'चिडी' 'चिडौ' (मह रू भे)

चिडकली—१ देखो 'चिडी' (अल्पा. रू भे) उ०—मेरा मोथी रे बेटा, लैरा तो छोडी रे भोळी चिटकली, हरसा मेरा बेटा रे, होवेली साफ सवेरी रे रोज मेरा ममरथ मोथी। भोजन री वेळ्या रे ऊभी रोवसी।—लो गी

स०स्त्री०—२ चरखे का हत्था जिसे पकड कर चक्र घुमाया जाता है।

वि०—देखो 'चिडोकलो' (रू भे)

चिटकलो-स०पु०—(स्त्री० चिडकली) १ नर चिड़िया या चिडा।

उ०—छोह कर ताळिया चिडकला छडुडही। अभग जसवत जुध गुरड नह उड्डही।—हा झा

२ चित्रा नक्षत्र ३ मतान्तर से अश्लेषा नक्षत्र।

वि० (स्त्री० चिडकली) चिढने वाला।

चिडकोलो, चिडकोल्यौ (स्त्री० चिडकोली) देखो 'चिडकलो' (रू भे)

उ०—क्रूर उनाळे हरिया पता. चिडकोल्या चग चग करै। कुर दसिया कुत्ता विल्ला, चढ रेळ रग रळ भग भरै।—दसदेव

चिडचिडाट, चिडचिडाहट-स०स्त्री०—१ चिडचिडाने का भाव २ चिढने या खीजने का भाव।

चिडचिडौ-वि० (स्त्री० चिडचिडी) १ चिडचिडे स्वभाव वाला २ शीघ्र चिढ़ने वाला।

चिडणौ, चिडबौ-क्रि०अ०—१ चिढना. २ क्रोधित होना, झल्लाना ३ द्वेष करना।

चिडणहार, हारौ (हारी), चिडणियौ—वि०।

चिडवाडणौ, चिडवाडबौ, चिडवाणौ, चिडवावौ, चिडवावणौ, चिडवाववौ—प्रे०रू०।

चिडाणौ, चिडावौ, चिडावणौ, चिडाववौ—क्रि०स०।

चिडिओडौ, चिडियोडौ, चिडयोडौ—भू०का०कृ०।

चिडीजणौ, चिडीजबौ—भाव वा०।

चिडपडौ-वि०—चिढने वाला, शीघ्र अप्रसन्न होने वाला, तुनक मिजाज।

कहा०—चिडचिडे सुमाग सू राडापो चोखौ—चिढने वाले पति के साथ रहने या परस्पर कभी न बनती हो तो ऐसे सुहाग की अपेक्षा वैधव्य ही भला। चिडचिडे स्वभाव वाले साथी की निन्दा।

चिडभडणौ, चिडभड्वौ, चिडभिडणौ, चिडभिडबौ—देखो 'चडभडणौ' (रू भे)

चिडयाटूक—देखो 'चिडियाटूक' (रू भ)

चिडयानाथ—देखो 'चिडियानाथ' (रू भे)

चिडाणौ, चिडावौ-क्रि०स०—१ चिढ़ाना, खिझाना २ अप्रसन्न करना, कुपित या खिन्न करना ३ कुढ़ाने के लिए किसी की आकृति या कार्य की नकल करना ४ उपहास करना।

चिडाणहार, हारौ (हारी), चिडाणियौ—वि०।

चिडावणौ, चिडावबौ—रू०भे०।

चिड़ायोडौ—भू०का०कृ०।

चिडाईजणौ, चिडाईजबौ—कर्म वा०।

चिडणौ—अक० रू०।

चिडायोडौ-भू०का०कृ०—१ चिढ़ाया हुआ, खिझाया हुआ २ अप्रसन्न किया हुआ ३ कुढ़ाया हुआ ४ उपहास किया हुआ।

(स्त्री० चिडायोडी)

चिडावणौ, चिडावबौ—देखो 'चिडाणौ' (रू भे)

चिडावणहार, हारौ (हारी), चिडावणियौ—वि०।

चिडाविओडौ, चिडावियोडौ, चिडाव्योडौ—भू०का०कृ०।

चिडावीजणौ, चिडावीजबौ—कर्म वा०।

चिडणौ—अक० रू०।

चिडावियोडौ—देखो 'चिडायोडौ' (रू भे.) (स्त्री० चिडावियोडी)

चिडिग्नेत, चिडिग्नेतियौ—देखो 'चिडीग्नेत' (रू भे.)

चिड़िया-स०स्त्री०—आकाश मे उडने वाला छोटा पक्षी, पखेरू।

मुहा०—चिड़िया फसाणी—किसी स्त्री को बहका कर सहवास के लिए राजी करना (बाजारू), किसी देने वाले धनी आदमी को अपने अनुकूल करना। किसी मालदार को दांव पर चढाना।

चिड़ियाखानौ-स०पु०—वह घर या स्थान जहा अनेक जाति के पक्षी रखे जाते हैं।

चिडियाचूटी-स०स्त्री०—एक प्रकार की घास।

वि०वि०—देखो 'चिडीग्नेत'।

चिडियाछट-स०स्त्री०—भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की छठी तिथि। (मि० ऊबछठ)

चिडियाटूक-स०पु०—एक पहाडी का नाम जिस पर आजकल जोधपुर का किला बना हुआ है।

चिडियानाथ-स०पु०—जोधपुर की चिडियाटूक पहाडी पर सवत् १५१५ मे रहने वाले एक महात्मा।

वि०वि०—ये नाथ सप्रदाय के एक प्रसिद्ध महात्मा थे तथा चिडियाटूक की पहाडी पर, जहा पर एक जल का कुड है, तपस्या करते थे। तत्कालीन राव जोधा ने मडोर को अपने अधिकार मे करने के बाद चिडियाटूक पहाडी पर पानी की बाहुल्यता देख कर अपना किला बनाने की योजना बनाई। किले की जब नीव डाली गई तो महात्मा को हटने के लिए कहा गया। जब महात्मा नही हटे तो उन्हें अनेक प्रकार से तग किया गया। अधिक तग होने पर महात्मा ने जोधा को शाप दिया कि जिस पानी के कारण तुम मुझे हटा रहे हो उसी पानी के लिए तुम्हारे राज्य की प्रजा हमेशा कष्ट उठायेगी। इसके बाद चिडियानाथ ने यह पहाडी छोड दी तथा अन्य स्थान को चले गये। कहा जाता है कि तभी से हर तीसरे वर्ष मारवाड को अकाल व अनावृष्टि का कष्ट उठाना पडता है।

चित्तौड–स०पु० [स० चित्रकूट, प्रा० चित्तऊड] चित्रांगद मोरी (मौर्य वश) द्वारा राजपूताने के मेवाड राज्य मे स्थापित किया गया प्राचीन गढ (ऐतिहासिक)
रू०भे०—चतरग, चत्रग, चत्रगढ, चत्रकोट, चत्रकोटगढ, चत्रगढ, चात्रग, चात्रक, चितावर, चित्तगौ, चित्रकूट, चित्रकोट, चीतगढ, चीत-दुरग, चितोड, चीत्रौड, चीत्रौडि।

चित्तौडी–स०पु०—१ चादी का एक प्राचीन सिक्का जो चित्तौड के महाराणा सग्रामसिंह द्वितीय द्वारा चलाया गया था २ शिसोदिया राजपूत।
स०स्त्री०—३ चित्तौडगढ के समीप की पहाडी।
वि०—चित्तौड का, चित्तौड सम्बन्धी।
रू०भे०—चीतोडी।

चितौडौ–स०पु०—१ चित्तौड का अधिपति २ शिसोदिया वश का राजपूत ३ चित्तौड निवासी। (स्त्री० चितौडी)
वि०—चित्तौड सम्बन्धी, चित्तौड का।
रू भे०—चीतोडौ।

चित्तग–स०पु० [स० चित्राङ्ग] एक प्रकार का कल्प-वृक्ष (जैन)

चित्तगौ–स०पु०—चित्तौड। उ०—मडी ग्रास मळेछ, खट्टण खड द्रुग चित्तगौ। कित्ती खड विहड, जित्ती हार धार सुरताणौ।—रा रू

चित्त—१ देखो 'चित' (रू भे)
स०पु०—२ चित्तनायक एक जैन मुनि (जैन)
[स० चैत्र] ३ चैत्रमास (जैन)
[स० चित्र] ४ चित्र, ग्राकृति (जैन) ५ चित्र नामक एक पर्वत। (जैन) ६ वेणदेव और वेणदालि इन्द्र के लोकपाल का नाम। (जैन)

चित्त-उत–स०पु० [स० चित्रगुप्त] १ जम्बूद्वीप के भारत खड मे होने वाले सोलहवें तीर्थंकर का नाम। (जैन)
२ देखो चित्रगुप्त' (रू भे)

चित्तकणगा–स०स्त्री० [स० चित्रकनका] एक विद्युत्कुमारी देवी विशेष। (जैन)

चित्तकार—देखो 'चित्रकार' (रू भे) (जैन)

चित्तकूड—देखो 'चित्रकूट' (रू भे) (जैन)

चित्तग–स०पु० [स० चित्रक] पशु विशेप, चीता। (जैन)

चित्तगर–स०पु०—देखो 'चित्रकार' (रू भे) (जैन)

चित्त-गुत्त–स०पु० [स० चित्रगुप्त] चित्रगुप्त। (जैन)

चित्त-गुत्ता–स०स्त्री० [स० चित्रगुप्ता] १ सोम नामक लोकपाल की अग्र महिषी (जैन) २ दक्षिण रुचक पर्वत पर वसने वाली एक दिक्कुमारी (जैन)

चित्तचगौ स०पु०—एक प्रकार का घोडा। (शा हो)
वि०—उज्वल चित्त, पाक दिल।

चित्तचावौ–वि०—मनचाहा, इच्छित, अभीष्ट।
उ०—चिलमी अमली के जुलमी चितचावा, दासी वेस्या रा मदवां रै दावा।—ऊ का

चित्तचूरमौ–स०पु०—एक प्रकार का घोडा (शा हो)

चित्ताण्णु–वि० [स० चित्तज्ञ] मन की जानने वाला (जैन)

चित्त-पक्ख–स०पु० [स० चित्रपक्ष] वेणु देव नामक इन्द्र का एक लोकपाल (जैन)

चित्त-पत्तग्र–स०पु० [स० चित्रपत्रक] चार इन्द्रियधारी, विचित्र पख वाला जन्तु विशेष (जैन)

चित्तप्रसादण, चित्तप्रसादन–स०पु० [स० चित्तप्रसादन] चित्त का वह सस्कार जो मैत्री, करुणा, हर्ष, उपेक्षा आदि के उपयुक्त व्यवहार द्वारा होता है। (योग)

चित्तभग—देखो 'चितभग' (रू भे) उ०—किसे असूधौ कज्ज किना निद्रा भर सोयौ, कै हुवौ चित्तभग, किना रावा दिस जोयौ।
—जगदेव पवार री वात

चित्तभू–स०स्त्री० [स०] कामदेव (डि को)

चित्तभूमि–स०स्त्री० [स०] योग के अनुसार चित्त की पाच अवस्थायें, क्षिप्र, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र, और निरुद्ध।

चित्तभ्रम–वि०—मूर्ख, पागल, मतिभ्रम।
रू०भे०—चितभरम।

चित्तरजण, चित्तरजन–स०पु०—एक प्रकार का घोडा (शा हो)

चित्त रस–स०पु० [स० चित्र रस] विचित्र रस का भोजन देने वाला एक कल्पवृक्ष (जैन)

चित्तळ–स०पु० [स० चित्रल] १ एक प्रकार का मृग २ चिता।
३ देखो 'चितळ' (रू भे)

चित्तवणि–स०स्त्री० देखो 'चितवन' (रू भे.)

चित्तवांन–वि० [स० चित्तवान्] उदार।

चित्तविक्षेप–स०पु० [स०] योग मे वाधक मानी जाने वाली चित्त की चचलता या अस्थिरता।

चित्तविभ्रम, चित्तविभ्रम–स०पु० [स० चित्तविभ्रम] भ्राति, भ्रम, मतिभ्रम।

चित्तवृत्ति–स०स्त्री० [स० चित्तवृत्ति] चित्त की अवस्था।

चित्र सभूइय–स०पु० [स० चित्त सभूतीय] चित्त और सभूत नामक चाण्डाल विशेप के वत्तान्त वाला उत्तराध्ययन सूत्र का एक अध्ययन (जैन)

चित्तहिलोळ–स०पु०—डिंगल का एक गीत छद विशेष।

चित्तारौ–स०पु० [स० चित्रकार] चित्र वनाने वाला, चित्रकार।

चित्तासाळि–स०स्त्री०—चित्रशाला।

चित्तोड—देखो 'चित्तौड' (रू भे)

चित्तोडी—देखो 'चितौडी' (रू भे)

चित्तौर—देखो 'चितौड' (रू भे)

चित्यामणि, चित्यामणी—देखो 'चितामणि' (रू भे)

चित्तसभा–स०स्त्री०यौ० [स० चित्रसभा] चित्रशाला (जैन)

चित्ता–स०स्त्री०—१ चित्रा नक्षत्र (जैन) २ देखो 'चिता' (रू भे)

मुहा०—चित करणौ—कुश्ती मे पछाड़ना ।

स०पु० [स० चित्त]-१ मन, दिल, हृदय । उ०—नैण भलाई लागजो, तू मत लागे चित्त, नैण छूटसी रोय नै, (थू) बध्यो रहसी नित्त ।—र रा

मुहा०—१ चित उतरणौ—भूल जाना, विस्मरण होना, कदर या मान घटना, मूल्य कम होना, नफरत करना, घृणा करना २ चित ऊठणौ—जी न लगना ३ चित चढणौ—पसद आना ४ चित चुराणौ—मन मोहित करना ५ चित चूळिये सू उतरणौ—पागल होना, दिल का ठिकाने न रहना ६ चित देणौ—ध्यान लगाना, आसक्त होना ७ चित फाटणौ—तबियत हट जाना, अरुचि होना ८ चित मे जमणौ—किसी बात का दिल मे पक्का हो जाना ९ चित मे बैठणौ—देखो 'चित मे जमणौ' १० चित लागणौ—मन लगना, प्यार होना. ११ चित सू उतरणौ— हृदय मे स्थान न रहना, स्मरण न रहना ।

यौ०—चितचोर, चितधारी, चितभग, चितहर ।

स०स्त्री०—२ बुद्धि ३ चेतना, ज्ञान, चित्तवृत्ति ।

रू०भे०—चित्त, चीत, चीति ।

[स० चित्र] ४ तस्वीर, चित्र ।

रू०भे०—चित्त ।

चितइलोळ—स०पु०—डिंगल का एक गीत छद विशेष ।

चितकवरौ—वि० [स० चित्रकर्बुर] काले, पीले, श्वेत आदि मिश्रित दाग वाला रग-बिरगा ।

चितकूट—देखो 'चित्रकूट' (रू भे)

चितगुपति—स०पु०—देखो 'चित्रगुप्त' (रू भे)

चितचोजी—वि०—१ दिल से आनद लूटने वाला, मौजी । उ०—मुळकै वेली चख पोळच लख मौजी, चेली दीठा ज्यू साधू चितचोजी ।
—ऊ का

२ शौकीन, छैला. ३ उत्साही ।

चितधारी—वि०यौ०—उदार ।

चितबकौ—वि०—१ उदार २ वीर, साहसी ।

चितबाहु—स०पु० [स०] तलवार का एक हाथ ।

स०पु०—मतिभ्रम, बुद्धिलोप, भौंचक्कापन ।

चितभग, चितभगौ—वि०—१ उन्माद रोग से पीडित २ भग्न हृदय, उदासीन । उ०— सुण भवरा भवरी कहै, तू क्यू फिरै चितभग । जे इण महला रम रहै, लाल करू सब रग ।—र रा

चितभरम, चितभरमियौ—वि०—१ चित्तभ्रम, पागल ।

उ०—१ ताहरा सहर रे धणी नू खबर हुई एक इसो रजपूत सिरदार छै सु चित भरम थकियो बोलै छै ।—रा घ

उ०—२ कोई समद माहै साह गयो थौ, तिकै एक म्रितक देह दीठी थी, तिण री वात राणा कूभा नू कही तद राणौ कूभौ चितभरमियौ हुवौ ।—नैणसी

चितमठियौ—वि०—कृपण, कजूस ।

चितरगताळ—मन को प्रिय लगने वाले छोटे-छोटे ताल-तलैय्या ।

उ०—टीबा वरसौ डैरिया वरसौ, हो चितरगताळ बिछावौ बदळी । जेठ उतरियौ असाढ उतरियौ हो सावण उतरियौ जाय बदळी ।
—लो गी

चितरगमहल—स०पु०यौ०—रगमहल, सुरतिमहल । उ०—भलौ वी करै ए अम्मा, घुडला रा असवार को म्हारै दीवी सिर पर ढाल, ल्याय वी पुंचायी ए अम्मा चितरगमहल मे जी ।—लो गी.

चितरगुप्त—देखो 'चित्रगुप्त' (रू भे)

चितरणौ, चितरबौ—क्रि०स० [स० चित्रण]-१ चित्रित करना, चित्र बनाना ।

२ नक्काशी करना ३ हाथी दात की चूडिया बनाना, खराद से उतारना । उ०—चितरघौ ए चितरायो, हा ए बाई, थारौ पडघौ ए मणियारा री हाट ।—लो गी

चितरणहार, हारौ (हारी), चितरणियौ—वि० ।

चितराडणौ, चितराडबौ, चितराणौ, चितराबौ, चितरावौण, चितरावबौ—क्रि०स० ।

चितरिप्रोडौ, चितरियोडौ, चितरघोडौ—भू०का०कृ० ।

चितरीजणौ, चितरीजबौ—कर्म वा० ।

चितराण, चितराणौ—स०पु०—चित्तौड का अधिपति । उ०—प्रवतौ द्रव रीझ झडी मे केळवछ, सोभा समद झडी मे साद । जिम चितराण जीव जडी मे, आवै घडी घडी मे याद ।— गीत राणा सिंभूसिंघ रौ

चितराम—स०पु०—तस्वीर, चित्र । उ०—१ जिका काट माजिया छाट ऊजळ जळ छोळा । रचि मिंदूर चितराम चरचि आराण रग चोळा ।—मे म

उ०—२ अनेक अनेक रग का चितराम छै ।—वेलि टी

चितराणौ, चितराबौ—क्रि०स० [स० चित्रण, 'चितरणौ' क्रिया का प्रे०रू०] १ चित्रित कराना २ हाथीदात की चूडिया बनाना, खराद से उतराना ।

उ०—चुडलौ चितरा दे ए मा, हा ए म्हारी रातादेई माय, आई ए सावणियै री तीज ।—लो गी.

चितराणहार, हारौ (हारी), चितराणियौ—वि० ।

चितरायोडौ—भू०का०कृ० ।

चितराईजणौ, चितराईजबौ —कर्म वा० ।

चितराडणौ, चितराडबौ, चितरावणौ, चितरावबौ—रू०भे० ।

चितरायोडौ—भू०का०कृ०—१ चित्रित कराया हुआ. २ खराद से उतारा हुआ । (स्त्री० चितरायोडी)

चितरावणौ, चितरावबौ—देखो 'चितराणौ' (रू भे)

चितरावियोडौ—देखो 'चितरायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चितरावियोडी)

चितरियोडौ—भू०का०कृ०—१ चित्रित किया हुआ २ खराद से उतारा हुआ (चूडा) । (स्त्री० चितरियोडी)

चितळ–स०स्त्री० [स० चित्रल] १ एक प्रकार का सर्प जो आकार मे मोटा और शरीर पर चकत्ते लिये होता है।
स०पु०—२ एक प्रकार का हिरण जिसके शरीर पर सफेद चकत्ते होते है।

चितळती–स०स्त्री०—चितकबरी बकरी (क्षेत्रीय)

चितळी–वि०—मन मे समाई हुई, चित चढी हुई। उ०—साप्रत जाणी सोखता, चितळी जांणी चुडेल। हार गयौ अछतौ हुवौ, छता थका ही छैल।—वा.दा

चितवण, चितवणि–स०स्त्री०—कटाक्ष, चितवन, दृष्टि।
उ०—आकरसण, वसीकरण, उनमादक, परठि, द्रवणि, सोखण, सरपच। चितवणि हसणि लसणि गति सकुचणि, सुदरी द्वारि देहरा संच।—वेलि

चितवणौ, चितवबौ–क्रि०स० [स० चिंतन] १ मन मे सोचना, विचारना। उ०—चित ओघ दिसा नह चितवियौ। कमधज 'दला' सिर लोह कियौ।—गो रू
२ इच्छा करना ३ निश्चय करना ४ देखना।
चितवणहार, हारौ (हारी), चितवणियौ—वि०।
चितविओडौ, चितवियोडौ, चितव्योडौ—भू०का०कृ०।
चितवीजणौ, चितवीजबौ—कर्म वा०।

चितवाळी–वि०—१ चचल, चपल २ सुदर. ३ उदार।

चितवियोडौ–भू०का०कृ०—१ सोचा हुआ, विचारा हुआ २ देखा हुआ ३ इच्छा किया हुआ. ४ निश्चय किया हुआ।
(स्त्री० चितवियोडी)

चितविलास–स०पु०—डिंगल का एक गीत (छद) विशेष जिसके प्रथम चरण मे दो पटकल तथा उनके मध्य मे गुरु हो। दूसरे पद मे चौदह मात्रायें हों। तुक अंत में पद के आदि से ही मिलता हो।

चितहर–स०पु० [स० चित्तहर] वस्त्र (अ.मा)
वि०—मनोहर, सुन्दर, आकर्षक।

चितहरन–वि०—चित्त को हरने वाला, मनोहर, चित्ताकर्षक।

चितामण—देखो 'चिंतामणि' (रू भे) उ०—लखि रूप चितामण वारि लिया, कसि तग उतग सु त्यार किया।—रा रू

चिता–स०स्त्री०—१ मृतक की शवदाह के लिये चुन कर लगाई गई लकडियो का ढेर २ चित्रक नामक औषधि ४ चगतई वश का मुसलमान, मुगल।

चिताणौ, चिताबौ–क्रि०स०—१ सचेत करना सावधान करना, होशियार करना. २ स्मरण कराना, याद दिलाना ३ आत्म-बोध कराना ४ सुलगाना, प्रज्वलित करना।

चितानळ–स०स्त्री०यौ०—शव के दाह-सस्कार की अग्नि।
उ०—हेळ मिट काळ कळचाळ कर हात सू, गेल पग रात सू पनग गाहै। जोधपुर नाथ सू रहै ऊमरड जिता, चितानळ बाथ सू भरण चाहै।—चिमनजी आढ़ौ

चिताभूमि–स०स्त्री०यौ०—दाह-सस्कार का स्थान, श्मशान, मरघट।

चितारणी–स०स्त्री०—१ याददाश्त या स्मृति स्वरूप दिया जाने वाला आभूषण या पदार्थ विशेष, स्मृतिचिन्ह २ स्मृति, याद।

चितारणौ, चितारबौ–क्रि०स० [स० चिंतन] १ स्मरण करना, याद करना। उ०—चुगइ चितारइ भी चुगइ, चुगि चुगि चित्तारेह। कुरझी बच्चा मेल्हि कइ, दूरि थका पाळेह।—ढो मा.
२ चित्र बनाना।
चितारणहार, हारौ (हारी), चितारणियौ—वि०।
चितारिओडौ, चितारियोडौ, चितारयोडौ—भू०का०कृ०।
चितारीजणौ, चितारीजबौ—कर्म वा०।

चितारियोडौ–भू०का०कृ०—१ स्मरण किया हुआ, याद किया हुआ २ चित्रित किया हुआ। (स्त्री० चितारियोडी)

चितारौ–वि० [स० चित्रक] १ चित्रकला का कार्य करने वाला, चित्रकार २ लकडी या दीवार आदि पर चित्रकारी व नक्काशी करने वाला ३ चित्रित करने वाला, वर्णन करने वाला।
उ०—दातार सूरू राजू का पुत्र जैसे प्यारे सूबू कायर राजू को विख जंमे रारे। राजसभा के भूखण दिल के उदार विरदू के भारे समसेर वहादरू के समसेरू के चितारे।—सू प्र

चिताळ–स०स्त्री०—वह पत्थर या बडी शिला जिस पर स्नान किया जाता हो या कपडे धोये जाते हो।

चितावणी—देखो 'चेतावणी' (रू भे)

चितावणौ, चितावबौ—देखो 'चिताणौ' (रू भे.)
चितावणहार, हारौ (हारी), चितावणियौ—वि०।
चिताविओडौ, चितावियोडौ, चिताव्योडौ—भू०का०कृ०।
चितावीजणौ, चितावीजबौ—कर्म वा०।

चितावर–स०पु०—चितौड। उ०—काळ जर घेरियौ नव लाख असवार मिळ, सूर सक्रबधी जुर मूवा आप वळ मै। चितावर घेरियौ सुलतांन हू अलावदीन, बारा बरस जुध काळ कात भयौ दळ मैं।—द.दा.

चितावियोडौ—देखो 'चेतावियोडौ' (रू भे) (स्त्री० चितावियोडी)

चिति–स०पु०— १ चित्त (ह ना)
उ०—चिति निति हेत सही चितवियौ, रीझवियौ रुखमण रमण।
—ह.नां.
२ ज्ञान। उ०—कहि चिति निति समपित्र हरि कीरति, कीरति वेद पुराण कही।—ह ना
[स० चैत्य] ३ समाधि-स्थान (जैन)

चितिय—देखो 'चिति' (रू भे)

चितेरण–स०स्त्री०—१ चित्र बनाने वाली स्त्री २ चित्रकार की स्त्री ३ ब्योरा, वर्णन।

चितेरणौ, चितेरबौ–क्रि०स०—चित्र खीचना, चित्रित करना।

चितेरौ–स०पु० [स० चित्रकार] चित्र बनाने वाला, चित्रकार।
पर्याय०—चतरणहार, चतरामकर, रगजीव।

चित्तौड–स०पु० [सं० चित्रकूट, प्रा० चित्तऊड] चित्रांगद मोरी (मौर्य वंश) द्वारा राजपूताने के मेवाड राज्य में स्थापित किया गया प्राचीन गढ (ऐतिहासिक)

रू०भे०—चतरग, चत्रग, चत्रगढ, चत्रकोट, चत्रकोटगढ, चत्रगढ, चात्रग, चात्रक, चितावर, चित्तगौ, चित्रकूट, चित्रकोट, चीतगढ, चीत-दुरग, चितोड, चीत्रोड, चीत्रोडि।

चित्तौडी–स०पु०—१ चादी का एक प्राचीन सिक्का जो चित्तौड के महाराणा सग्रामसिंह द्वितीय द्वारा चलाया गया था २ शिसोदिया राजपूत।

स०स्त्री०—३ चित्तौडगढ के समीप की पहाडी।

वि०—चित्तौड का, चित्तौड सम्बन्धी।

रू०भे०—चीतोडी।

चितौडौ–स०पु०—१ चित्तौड का अधिपति २ शिसोदिया वंश का राजपूत ३ चित्तौड निवासी। (स्त्री० चितौडी)

वि०—चित्तौड सम्बन्धी, चित्तौड का।

रू भे०—चीतोडौ।

चित्तग–स०पु० [स० चित्राङ्ग] एक प्रकार का कल्प-वृक्ष (जैन)

चित्तगौ–स०पु०—चित्तौड। उ०—मडी आस मळेछ, खटूग खड दुग्ग चित्तगौ। कित्ती खड विहड, जित्ती हार धार सुरताणी।—रा रू

चित्त—१ देखो 'चित' (रू भे)

स०पु०—२ चित्तनायक एक जैन मुनि (जैन)

[स० चैत्र] ३ चैत्रमास (जैन)

[स० चित्र] ४ चित्र, आकृति (जैन) ५ चित्र नामक एक पर्वत। (जैन) ६ वेणदेव और वेणदालि इन्द्र के लोकपाल का नाम। (जैन)

चित्त-उत–स०पु० [स० चित्रगुप्त] १ जम्बूद्वीप के भारत खड मे होने वाले सोलहवें तीर्थंकर का नाम। (जैन)

२ देखो चित्रगुप्त' (रू भे)

चित्तकणगा–स०स्त्री० [स० चित्रकनका] एक विद्युत्कुमारी देवी विशेष। (जैन)

चित्तकार—देखो 'चित्रकार' (रू भे) (जैन)

चित्तकूड—देखो 'चित्रकूट' (रू भे) (जैन)

चित्तग–स०पु० [स० चित्रक] पशु विशेष, चीता। (जैन)

चित्तगर–स०पु०—देखो 'चित्रकार' (रू भे) (जैन)

चित्त गुत्त–स०पु० [स० चित्रगुप्त] चित्रगुप्त। (जैन)

चित्त-गुत्ता–स०स्त्री० [स० चित्रगुप्ता] १ सोम नामक लोकपाल की अग्र महिषी (जैन) २ दक्षिण रुचक पर्वत पर बसने वाली एक दिक्कुमारी (जैन)

चित्तचगौ स०पु०—एक प्रकार का घोडा। (शा हो)

वि०—उज्वल चित्त, पाक दिल।

चित्तचावौ–वि०—मनचाहा, इच्छित, अभीष्ट।

उ०—विलमी अमली के जुलमी चितचावा, दासी वेस्या रा मदवा रै दावा।—ऊ का

चित्तचूरमौ–स०पु०—एक प्रकार का घोडा (शा हो)

चित्तण्णु–वि० [स० चित्तज्ञ] मन की जानने वाला (जैन)

चित्त-पक्ख–स०पु० [स० चित्रपक्ष] वेणु देव नामक इन्द्र का एक लोकपाल (जैन)

चित्त-पत्तग्र–स०पु० [स० चित्रपत्रक] चार इन्द्रियधारी, विचित्र पख वाला जन्तु विशेष (जैन)

चित्तप्रसादण, चित्तप्रसादन–सं०पु० [स० चित्तप्रसादन] चित्त का वह सस्कार जो मैत्री, करुणा, हर्ष, उपेक्षा आदि के उपयुक्त व्यवहार द्वारा होता है। (योग)

चित्तभग—देखो 'चितभग' (रू भे) उ०—किसै असुधौ कज्ज किना निद्रा भर सोयौ, कै हुवौ चित्तभग, किना रावा दिस जोयौ।

—जगदेव पवार री वात

चित्तभू–स०स्त्री० [स०] कामदेव (डिं को)

चित्तभूमि–स०स्त्री० [स०] योग के अनुसार चित्त की पाच अवस्थायें, क्षिप्र, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र, और निरुद्ध।

चित्त भ्रम–वि०—मूर्ख, पागल, मतिभ्रम।

रू०भे०— चितभरम।

चित्तरजण, चित्तरजन–स०पु०—एक प्रकार का घोडा (शा हो)

चित्त रस–स०पु० [स० चित्र रस] विचित्र रस का भोजन देने वाला एक कल्पवृक्ष (जैन)

चित्तळ–स०पु० [स० चित्रल] १ एक प्रकार का मृग २ चिता।

३ देखो 'चितळ' (रू भे.)

चित्तवणि–स०स्त्री०—देखो 'चितवन' (रू भे)

चित्तवान–वि० [स०चित्तवान्] उदार।

चित्तविक्षेप–स०पु० [स०] योग मे बाधक मानी जाने वाली चित्त की चचलता या अस्थिरता।

चित्तविब्भम, चित्तविभ्रम–स०पु० [स० चित्तविभ्रम] भ्राति, भ्रम, मतिभ्रम।

चित्तव्रत्ति–स०स्त्री० [स० चित्तवृत्ति] चित्त की अवस्था।

चित्र सभूइय–स०पु० [स० चित्त सभूतीय] चित्त और सभूत नामक चाण्डाल विशेष के वत्तान्त वाला उत्तराध्ययन सूत्र का एक अध्ययन (जैन)

चित्तहिलोळ–स०पु०—डिंगल का एक गीत छद विशेष।

चित्तारौ–स०पु० [स० चित्रकार] चित्र बनाने वाला, चित्रकार।

चित्तासाळि–स०स्त्री०—चित्रशाला।

चित्तोड—देखो 'चित्तौड' (रू भे)

चित्तोडी—देखो 'चितोडी' (रू भे)

चित्तौर—देखो 'चितौड' (रू भे)

चित्यामणि, चित्यामणी—देखो 'चिंतामणि' (रू भे)

चित्तसभा–स०स्त्री०यौ० [स० चित्रसभा] चित्रशाला (जैन)

चित्ता–स०स्त्री०—१ चित्रा नक्षत्र (जैन) २ देखो 'चिता' (रू भे)

चित्तार–स०पु० [स० चित्रकार] चित्रकार (जैन)

चित्र–स०पु० [स०] १ किसी वस्तु आकृति आदि का आकार जो कलम व विविध रगो के मेल से बना हो। किसी वस्तु का वह स्वरूप जो किसी कागज, कपडा आदि पर बनाया गया हो। तस्वीर।

उ०—आभा चित्र रचित तेणि रगि अनि अनि, मणि दीपक करि सूध मणि। माडि रहे चद्रवा तणे मिसि, फण सहसेई सहस फणि। —वेलि

क्रि०प्र०—उतारणौ, कोरणौ, खीचणौ, बणाणौ, माडणौ।

यौ०—चित्रकला, चित्रकार, चित्रमदिर, चित्रमहल।

२ काव्य मे एक प्रकार का अलकार जिसमे पद्यों के अक्षर इस क्रम से लिखे जाते है कि कोई चित्र का आकार बन जाता है. ३ रस, अलकार आदि के चमत्कारयुक्त शब्दो की रचना, काव्य, कविता।

उ०—ज्योतिषी वैद पौराणिक, जोगी सगीती तारकिक सहि। चारण भाट सुकवि भाखा चित्र, करि एकठा तौ अरथ कहि।—वेलि

४ कुष्ठ रोग का एक भेद ५ चित्रगुप्त ६ मुसलमान, यवन। ७ दृश्य। उ०—चढया चक्रपाण विछूटत चित्र। नवे लख तूटत जाण नखित्र।—मे म

८ शृगार मे एक आसन विशेष।

वि०—विचित्र, विलक्षण।

चित्रक–स०पु० [स०] १ एक प्रकार का छोटा क्षुप। इसका फूल रगभेद मे कई प्रकार का होता है परन्तु अधिकतर सफेद रग का ही फूल पाया जाता है। चीताक्षुप (अमरत) २ चीता ३ हिरन।

उ०—सर अत ततौ चित्रक अखव, नह चित्रक नर जाणिये। नर नही नरा नायक निपट, प्रभव भाण पहचाणिये।—र.ज प्र

चित्रकर–स०पु० [स०] चित्र बनाने वाला, चित्रकार।

चित्रकरम–स०पु०यौ० [स० चित्रकर्म] वृहत्तर कलाओ के अतर्गत एक कला।

चित्रकळा–स०स्त्री०यौ० [स० चित्रकला] चित्र बनाने की विद्या।

चित्रकार–स०पु०यौ० [स०] चित्र बनाने वाला, चितेरा।

चित्रकारी–स०स्त्री०—चित्र बनाने का काय, ६४ कलाओ के अतर्गत एक कला।

चित्रकाव्य–स०पु०यौ० [स०] एक प्रकार का काव्य जिसमे अक्षर इस क्रम मे लिखे जाते है कि लिखने से कोई चित्र बन जाता है।

चित्रकूट–स०पु० [स०] १ एक प्रसिद्ध पर्वत जहा वनवास के समय राम, सीता और लक्ष्मण ने निवास किया था २ राजस्थान मे मेवाड का एक प्रसिद्ध नगर चित्तौड, चित्तौडगढ। उ०—अर ऊठी चित्रकूट चत्रासिगराज हम्मीर रा पुत्र रत्नसिह नू सरणे राखि राणा लखमण-सिह री मन आपरै आथाण आवता अलावुद्दीन रा अनीक नू चढ चद्रहास चलावण री चहै।—व भा

चित्रकेतु–स०पु० [स०] १ चित्रित पताका रखने वाला व्यक्ति २ लक्ष्मण का एक पुत्र (भागवत) ३ गरुड का एक पुत्र ४ देव भाग यादव का कसा के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र।

चित्रकोट—देखो 'चित्रकूट' (रू भे) उ०—पग माडो 'जैमल' 'पता' हू अकबर जग जीत। चित्रकोट मे जाणियौ, चित्रकोट मझ चीत। —वा दा.

उ०—२ सिर जटा राखि दसरथ सुतन, चित्रकोट ऊपर चढै। —पीरदान लाळस

चित्रगढ–स०पु०—चित्तौडगढ का एक नाम, देखो "चित्तौड'।

उ०—दिल्ली पह आया राण अत ढिल्लवियौ, तिण सू कहै चित्रगढ तूझ। 'जैमल' जोध काम तौ जेहौ, मारुआ राव म ढील म मूझ। —जैमल मेडतिया रौ गीत

चित्रगुप्त–स०पु० [स०] चौदह यमराजो मे से एक जो प्राणियों के पाप और पुण्य का लेखा रखते है। ये कायस्थ जाति के आदि पुरुष माने जाते हैं।

रू०भे०—चितरगुपत, चितरगुप्त।

चित्रघटा–स०स्त्री० [स०] नौ दुर्गाओ मे मानी जाने वाली एक देवी।

चित्रण–स०स्त्री०—१ चित्रित करने का कार्य, चित्र बनाने का कार्य २ वर्णन।

चित्रणी–स०स्त्री०—स्त्रियो के चार प्रकार के भेदो मे से एक। (कामशास्त्र)

चित्रणौ, चित्रबौ–क्रि०स०—१ चित्रित करना। उ०—१ फेरि कारीगर की पूतळी चित्रणै चाहै।—वेलि टी

उ०—२ आरभ मै कियौ जेणि उपायौ, गावण गुणनिधि हू निगुण। किरि कठचीत्र पूतळी निज करि, चीत्रारै लागी चित्रण। —वेलि

२ वर्णन करना।

चित्रणहार, हारौ (हारी), चित्रणियौ—वि०।

चित्राडणौ, चित्राडबौ, चित्राणौ, चित्राबौ, चित्रावणौ, चित्राववौ — प्रे०रू०।

चित्रिओडौ, चित्रियोडौ, चित्र्योडौ—भू०का०कृ०।

चित्रीजणौ, चित्रीजबौ—कर्म वा०।

चित्रताळ–स०पु० [स० चित्रताल] सगीत मे एक प्रकार का ताल। (सगीत)

चित्रपदा–स०पु० [स०] १ प्रत्येक चरण मे दो भगण और दो गुरु वाला एक छद।

स०स्त्री०—मैना चिडिया।

चित्रपुख–स०स्त्री० [स०] तीर, बाण। (अ मा)

चित्रपुट–स०पु० [स०] एक प्रकार का छ ताला ताल (सगीत)

चित्रपूख—देखो 'चित्रपुख' (रू भे) (ह ना)

चित्रविचित्र–वि०यौ०—अद्भुत, अजीब। उ०—चिताग अगारा करि चित्रविचित्र, वडौ अद्भुत चरित देखियौ।—व भा.

चित्रभाण, चित्रभाणू, चित्रभानु–स०पु० [स० चित्रभानु] १ अग्नि (ह ना) २ सूय (अ मा, ना मा) ३ अश्विनीकुमार ४ भैरव.

५ साठ सवत्सरो के बारह युगो मे से चौथे युग का प्रथम वर्ष ६ अर्जुन की पत्नी चित्रागदा के पिता जो मणिपुर के राजा थे।

चित्रमदिर–स०पु०यौ०—चित्रशाला। उ०—सर सरिता बहु बाग सडवर, मझि तिण सिंगी काम चित्रमदिर।—सू प्र

चित्रमणि–स०स्त्री०—घोडे के पेट पर सीप के आकार की भौंरी (शा हो)

चित्रमद–स०पु० [स०] रगमच पर किसी स्त्री का अपने प्रिय का चित्र देख कर विरह भाव प्रदर्शित करना।

चित्रमहल–स०पु०—वह महल जिसमे चित्रकारी हो। उ०—सुंदर न्रप चित्रमहल बसाई। बाग चद्रिका जेणि बणाई।—सू प्र

चित्रयोग–स०पु० [स०] चौसठ कलाओ मे से एक कला।

चित्ररथ–स०पु० [स० चित्ररथ] १ सूर्य २ एक गधर्व. ३ श्रीकृष्ण का एक पौत्र ४ अग देश के एक राजा का नाम (महाभारत) ५ एक यदुवशी राजा।

चित्ररेखा–स०स्त्री० [स०] बाणासुर की कन्या, ऊषा की एक सहेली।

चित्रल–वि० [स०] चितकबरा।

चित्रलेख–चौदह यमराजो मे से एक जो प्राणियो के पाप-पुण्य का लेखा रखता है। उ०—मर मर थाका जरमनी, लिख थाको चित्रलेख। तोइ न थाकी 'ताहरी', 'पातल' रूक परेख।—किसोरदान बारहठ (मि० चित्रगुप्त)

चित्रलेखा–स०स्त्री० [स०] १ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे १ मगण, १ भगण, १ नगण और ३ यगण होते हैं। २ देखो 'चित्ररेखा' (रू भे) ३ एक अप्सरा का नाम ४ चित्र चित्रित करने की कूची।

चित्रवन–स०पु० [स०] गडकी नदी के किनारे का एक वन (पौराणिक)

चित्रवरमा–स०पु० [स० चित्रवर्मा] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, एक कौरव।

चित्रविचित्र—देखो 'चित्रविचित्र' (रू भे)

चित्रविद्या–स०स्त्री०—चित्रकला।

चित्रसारी, चित्रसाळा, चित्रसाळी–स०स्त्री० [स० चित्रशाला] १ रग-महल। उ०—१ सुख लाधै केळि स्याम स्यामा सगि, सखिये मन राखिए सघट। चौकि चौकि ऊपरि चित्रसाळी, हुइ रहियौ कहकहाट।—वेलि

२ ऐसा स्थान जहा चित्रो का व्यापार होता हो या चित्र टागे जाते हो या चित्रकला सिखाई जाती हो।

चित्रसिखडी–स०पु० [स० चित्रशिखडिन्] सप्त ऋषि—१ मरीचि, २ अगिरा, ३ अत्रि, ४ पुलस्त्य, ५ पुलह, ६ क्रतु, ७ वशिष्ठ।

चित्रसिखडिज–स०पु०यौ० [स० चित्रशिखडिज] वृहस्पति (अ.मा)

चित्रसेन–स०पु० [स०] १ धृतराष्ट्र का एक पुत्र २ परीक्षित के वश का एक पुरुवशी राजा।

चित्राग—देखो 'चित्रागद' (रू भे)

चित्रागढ–स०पु०—चित्तौडगढ।

चित्रागद–स०पु० [स०] १ राजा शातनु का एक पुत्र जो सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न हुआ था और विचित्रवीर्य का छोटा भाई था. २ देवी भागवत के अनुसार एक गधर्व का नाम।

चित्रागदा–स०स्त्री० [स०] १ अर्जुन को व्याही जाने वाली चित्रवाहन राजा की एक कन्या २ रावण की एक स्त्री।

चित्राम–स०पु०—१ चित्र, तस्वीर।

उ०—छवि नवी नवी नव नवा महोछव, मडियै जिणि आणद मई। कातिग घरि घरि द्वारि कुमारी, थिर चीत्रति चित्राम थई।—वेलि.

२ नक्काशी।

चित्रामण–स०स्त्री—एक देवी।

चित्रामणि—देखो 'चित्रमणि' (रू भे)

चित्रामिण—देखो 'चितामणि' (रू भे)

चित्रा–स०स्त्री० [स०] १ सत्ताइस नक्षत्रो मे चौदहवा नक्षत्र (अ मा) २ चितकबरी गाय. ३ एक नदी का नाम ४ एक अप्सरा का नाम ५ सगीत में एक मूर्छना का नाम (सू प्र)

स०पु०—६ प्राचीन काल का एक बाजा जिसमे तार लगे रहते है. ७ एक सर्प का नाम ८ एक प्रकार का छद जो चौपाई का एक भेद है। इसके प्रत्येक चरण मे सोलह मात्राएँ होती है और अंत मे एक गुरु होता है। इसकी पाचवी, आठवी और नवी मात्रा लघु होती है।

चित्रावा–स०स्त्री०—चौहान वश की एक शाखा।

चित्रावौ–स०पु०—चौहान वश की चित्रावा शाखा का व्यक्ति।

चित्रारौ–स०पु०—चित्र बनाने वाला, चित्रकार, चितेरा। रू०भे०—चीत्रारौ।

चित्रावळ—देखो 'चित्रक' (रू भे)

चित्रावेलि–स०स्त्री० [स० चित्रकवल्ली] चित्रकवल्ली (उ र)

चित्रिकोट—देखो 'चित्रकूट' (रू भे)

चित्रित–वि० [स०] १ चित्र खीचा हुआ २ चित्र द्वारा दर्शाया हुआ।

चित्रु, चित्रू—देखो 'चीतौ' (रू भे) एक प्रकार के शिकारी के लिए शिक्षित किए हुए चीते। इनकी आख पर ढक्कन लगे रहते हैं। और शिकार के समय आख का ढक्कन खोल देते हैं।

उ०—१ तिस पर चित्रु कूतू का घाव, सीहगोसूं के दाव।—सू प्र.

उ०—२ आपणौ स्वायद की फौजू के लोहै की ढाल, सेरू की सावजू चित्रू की मिसाल।—सू प्र

चित्रोत्तर–स०पु० [स०] काव्य का एक अलकार जिसमे पूछे जाने वाले प्रश्न मे ही उत्तर निहित हो या कई प्रश्नो का एक ही उत्तर हो।

चिथडौ, चिथरौ–स०पु० [स०चीर्ण = फटा हुआ] १ कपडे की धज्जी २ फटा-पुराना कपडा। उ०—कोई दिन पहना कोई दिन ओढा, कोई दिन चिथरा पथरणा रे। करणा फकीरी क्या दिलगीरी, सदा मगन मन रहणा रे।—मीरा

चिदाकास-स०पु० [सं० चिदाकाश] परब्रह्म, परमेश्वर।

चिदाणंद चिदानद-स०पु० यौ० [स०चिदानन्द] सच्चिदानद, परब्रह्म, ईश्वर (ह ना)
उ०—चिदाणद वह चतुर आप विणि पार ग्रमूळ।—पीरदान लाळस

चिदानदी-वि०—चित्त से प्रसन्न रहने वाला। उ०—हमे भी तरणी है नहिन कछु करणी हित कहें। चिदानदी चन्नों मरणपुल सनों चित चहें। —ऊ का

चिदाभास-स०पु० [स०] जीवात्मा।

चिद्रूप-स०पु० [स०] ज्ञानमय परमात्मा, चैतन्यस्वरूप परमेश्वर।

चिनग-देखो 'चिनगारी' (रू भे)

चिनकियेक, चिनकियोक, चिनकोक-वि०—किंचित, अल्प, जरासा।

चिनख-स०स्त्री०—चिनगारी, अग्निकण। उ०—हुव जेठ तावडा दुसह होम, धावडा अगारा चिनख धोम।—वि स

चिनाव-स०स्त्री० [स०चन्द्रभागा] सिन्धु नदी की पाच सहायक नदियों मे मे एक जो पजाव मे बहती है, चन्द्रभागा।

चिनिया केळौ-स०पु०—छोटी जाति का एक केला।

चिनियोक-वि०—किंचित, अल्प, थोडा।

चिनियो घोडौ-स०पु०—वह घोडा जिसके चारो पैर सफेद हो।
वि०वि०—इसके सारे बदन पर लाल और सफेद रग के मिश्रित बाल होते हैं। (शा हो)

चिनीक-वि०—थोडा, अल्प, कम।

चिनौ-स०पु०—एक रग विशेष का घोडा (शा हो)

चिन्न-वि० [स० चीर्ण, प्रा चिण्ण] १ आचरित, अनुष्ठित २ विहित कृत ३ चिन्ह, निशान (जैन)

चिन्योक—देखो 'चिनियोक' (रू भे)

चिन्ह-स०पु० [स० चिह्न] १ वह लक्षण जिससे किसी वस्तु की पहचान हो, सकेत, निशान। उ०—जवर जवर जोधार, सहसवाहु सिसुपाळ सा। छिन मे होग्या छार, चिन्ह रह्यौ नह चकरिया।—मोहनराज साह
पर्याय०—ग्रहनाण, लच्छण, सहनाणक, सैलाण।
रू०भे०—चहन।
२ किसी प्रकार का दाग या धब्बा ३ पताका, ध्वजा झडी ४ प्रथम लघु ढगण के भेद का नाम।ऽ।

चिन्हाई-स०पु०—चीन देशोत्पन्न घोडा, एक प्रकार का घोडा।

चिपक-स०पु०—एक प्रकार का पक्षी जो शिकार कराने मे सहायक होता है। उ०—बोवडा ऊपर चिपक छूटं छै, बुरजा ऊपर तुरमती छूटै छै।—रा मा स

चिपकणौ, चिपकबौ-क्रि०अ० [स० चिपिट] १ किसी लसीली वस्तु के माध्यम से दो वस्तुओ का परस्पर इस प्रकार सटना या जुडना जिससे वे सरलता से पुन पृथक न हो सकें। चिमटना २ प्रगाढ रूप से सयुक्त होना, लिपटना ३ स्त्री व पुरुष का परस्पर प्रेम-व्यापार करना, आलिगन करना अथवा सभोग करना ४ किसी धधे पर लगना, रोजगार पर लगना।
चिपकणहार, हारौ (हारी), चिपकणियौ—वि०।
चिपकवाडणौ, चिपकवाडबौ, चिपकवाणौ, चिपकवावौ, चिपकवावणौ, चिपकवावबौ—प्रे०रू०।
चिपकाडणौ, चिपकाडबौ, चिपकाणौ, चिपकावौ, चिपकावणौ, चिपकावबौ—क्रि०स०।
चिपकिओडौ, चिपकियोडौ, चिपक्योडौ—भू०का०कृ०।
चिपकीजणौ, चिपकीजबौ—भाव वा०।

चिपकाणौ, चिपकावौ-क्रि०स०—१ लसीली वस्तु के माध्यम से दो वस्तुओ को परस्पर जोडना, चिमटाना २ प्रगाढ आलिगन करना, लिपटाना ३ नौकरी लगाना, धधे पर लगाना।
चिपकाणहार, हारौ (हारी), चिपकाणियौ—वि०।
चिपकायोडौ—भू०का०कृ०।
चिपकाडणौ, चिपकाडबौ, चिपकावणौ, चिपकावबौ—रू०भे०।
चिपकाईजणौ, चिपकाईजबौ—कर्म वा०।
चिपकणौ, चिपकबौ—अक० रू०।

चिपकायोडौ-भू०का०कृ०—१ चिपकाया हुआ, श्लिष्ट किया हुआ २ परस्पर लिपटाया हुआ ३ नौकरी धधे पर लगाया हुआ।
(स्त्री० चिपकायोडी)

चिपकावणौ, चिपकावबौ—देखो 'चिपकाणौ' (रू भे)
चिपकावणहार, हारौ (हारी), चिपकावणियौ—वि०।
चिपकवावणौ, चिपकवावबौ—प्रे०रू०।
चिपकाविओडौ, चिपकावियोडौ, चिपकाव्योडौ—भू०का०कृ०।
चिपकावीजणौ, चिपकावीजबौ—कर्म वा०।
चिपकणौ—अक० रू०।

चिपकावियोडौ—देखो 'चिपकायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चिपकावियोडी)

चिपकियोडौ-भू०का०कृ०—१ चिपका हुआ २ लिपटा हुआ, आलिगन किया हुआ ३ नौकरी या काम-धधे मे लगा हुआ।
(स्त्री० चिपकियोडी)

चिपडौ—१ देखो 'चपडौ' (रू भे)

चिपचिप-स०पु० (अनु०) किसी लसदार पदार्थ को छूने से होने वाला शब्द या अनुभव।
क्रि०प्र०—करणौ।

चिपचिपाट-स०पु०—लसीलापन, चिपचिपाने का भाव।
रू०भे०—चिपचिपाहट।

चिपचिपाणौ, चिपचिपावौ-क्रि०अ०—छूने से चिपचिपा मालूम होना, लसदार मालूम होना।

चिपचिपाहट—देखो 'चिपचिपाट' (रू.भे)

चिपचिपौ-वि०—जिसके छूने से हाथ चिपकता सा जान पडे, लसीला, लसदार, चिपकने वाला।

चिपटणौ, चिपटबौ—देखो 'चिपकणौ' (रू.भे)
चिपटणहार, हारौ (हारी), चिपटणियौ—वि०।

चिपटवाडणौ, चिपटवाड़वौ, चिपटवाणौ, चिपटवाबौ, चिपटवावणौ, चिपटवाववौ—प्रे०रू० ।

चिपटाडणौ, चिपटाड़बौ, चिपटाणौ, चिपटावौ, चिपटावणौ, चिपटाववौ—क्रि०स० ।

चिपटिग्रोडो, चिपटियोडो, चिपटयोडौ—भू०का०कृ० ।

चिपटीजणौ, चिपटीजबौ—भाव वा० ।

चिपटाणौ, चिपटाबौ—देखो 'चिपकाणौ' (रू भे)

चिपटाणहार, हारौ (हारी), चिपटाणियौ—वि० ।

चिपटायोडो—भू०का०कृ० ।

चिपटाईजणौ, चिपटाईजबौ—कर्म वा० ।

चिपटणौ—अक० रू० ।

चिपटायोडौ—देखो 'चिपकायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चिपटायोडी)

चिपटावणौ, चिपटाववौ—देखो 'चिपकावणौ' (रू भे)

चिपटावणहार, हारौ (हारी), चिपटावणियौ—वि० ।

चिपटवावणौ, चिपटवाववौ—प्रे०रू० ।

चिपटाविग्रोडौ, चिपटावियोडो, चिपटाव्योडौ—भू०का०कृ० ।

चिपटावीजणौ, चिपटावीजबौ—कर्म वा० ।

चिपटणौ—अक० रू० ।

चिपटावियोडौ—देखो 'चिपटायोडौ' (रू भे)

चिपटियोडौ—देखो 'चिपकियोडौ' (स्त्री० चिपटियोडी)

चिपटी—देखो 'चपटी' (अल्पा रू भे)

स०स्त्री०—१ चुटकी २ चुटकी वजाने से उत्पन्न ध्वनि ।

क्रि०प्र०—देणी, वजाणी ।

चिपटौ—देखो 'चपटौ' (रू भे)

चिपठी—स०स्त्री०—अगुली व अगठे के मिलाने से वनने वाली पकड या दोनो के मिलने का स्थान ।

रू०भे०—चिवठी, चिमठी ।

क्रि०प्र०—डालणी, देणी, फेंकणी, भरणी ।

चिपणौ, चिपवौ—१ देखो 'चिपकणौ' (रू भे)

२ चोट लगना । उ०—जुध टोळी जपिया जठै, चिपि गोळी चुपचाप । वटको दोळी वाघनै, पपोळी न प्रताप ।—जुगतीदान देथौ

चिपणहार, हारौ (हारी) चिपणियौ—वि० ।

चिपवाणौ, चिपवावौ—प्रे०रू० ।

चिपाडणौ, चिपाडवौ, चिपाणौ, चिपावौ, चिपावणौ, चिपाववौ—क्रि० स० ।

चिपिग्रोडौ, चिपियोडौ, चिप्योडौ—भू०का०कृ० ।

चिपीजणौ, चिपीजबौ—भाव वा० ।

चिपाणौ, चिपाबौ—देखो 'चिपकाणौ' (रू भे)

चिपाणहार, हारौ (हारी), चिपाणियौ—वि० ।

चिपायोडौ—भू०का०कृ० ।

चिपाईजणौ, चिपाईजबौ—कर्म वा० ।

चिपणौ—अक० रू० ।

चिपायोडौ—देखो 'चिपकायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चिपायोडी)

चिपावणौ, चिपाववौ—देखो 'चिपकाणौ' (रू भे.)

चिपावणहार, हारौ (हारी), चिपावणियौ—वि० ।

चिपवावणौ, चिपवाववौ—प्रे०रू० ।

चिपाविग्रोडौ, चिपावियोडौ, चिपाव्योडौ—भू०का०कृ० ।

चिपावीजणौ, चिपावीजबौ—कर्म वा० ।

चिपणौ, चिपवौ—अक० रू० ।

चिपावियोडौ—देखो 'चिपकावियोडौ' (रू भे) (स्त्री० चिपावियोडी)

चिपिड—वि०—चिपिट, चपटा (जैन)

चिपियोडौ—देखो 'चिपकियोडौ' (रू भे) (स्त्री० चिपियोडी)

चिप्प—स०पु०—नाखून के नीचे मास मे होने वाला एक प्रकार का फोडा ।

वि०वि०—इस रोग से नाखून पक जाता है और कभी-कभी हाथ से अलग भी हो जाता है ।

चिप्पिड—स०पु०—१ अन्न विशेष २ क्यारा (जैन)

चिबक—देखो 'चिवुक' (रू भे) (अ मा)

चिवडियौ—देखो 'चिब्भड' (रू भे)

चिवटियौ—स०पु०—दोनो हाथो की तर्जनी के वीच मे पकड कर फेंका जाने वाला ककड ।

क्रि०प्र०—फेंकणौ, मारणौ ।

रू०भे०—चिमटियौ, चिमठियौ ।

चिवटी, चिवठी—स०स्त्री० [स० चुमुटि] १ चुटकी २ चुटकी वजाने से उत्पन्न ध्वनि ३ देखो 'चिपटी' (रू भे) ४ अगुली और अगूठे के कोरो के वीच समाने वाला पदार्थ ।

चिबुक, चिव्बुक—स०स्त्री० [स०चिबुक] ठोडी, ठुड्डी ।

उ०—१ अलक डोरी तिल चडसवौ, निरमळ चिबुक निवाण । सीचै नित माळी समर, प्रेम वाग पहचाण ।—वा दा.

उ०—२ क्रूर करनाळ करवाळ खित भाळ भमै । चिव्बुक लौं स्रोण ताळ काप्यो जिय काळी को ।—स्वामी गणेस पुरी

चिब्भड़—स०पु० [स० चिर्भिट] ककडी, फल विशेष (जैन)

चिब्भडिया—स०स्त्री० [स० चिर्भिटका] १ ककडी की लता २ इस लता का फल ।

चिब्भडियौ—देखो 'चिवडियौ' (रू भे)

चिमठी—देखो 'चिवटी' (रू भे)

चिम—स०स्त्री० [स० चिह्न] १ आख मे चोट आदि लगने से होने वाला दर्द या चोट से होने वाला चिन्ह २ आख दुखने या किसी चोट के कारण अधिक समय तक वद रहने से पुतली मे होने वाला सफेद चिन्ह ।

चिमक—देखो 'चमक' (रू भे) उ०—गाज नगारा चिमक खग, वरसत वाजत डाक । घटा नही आ काम री, आवै फौज लडाक ।
—र.रा

चिमकणौ, चिमकवौ—देखो 'चमकणौ' (रू भे)

उ०—वाकली मे ग्रापरी घोडी नै पाणी पावै। पण पनडी री खडिद सू घोडी चिमकै।—वाणी

चिमकाणी—देखो 'चमकाणी' (रू भे)

चिमकी-स०स्त्री०—पानी के अदर पैठने की क्रिया, गोता, डुबकी।

चिमगादड—देखो 'चमगादड' (रू भे.)

रू०भे०—चमचेड।

चिमचिमाही-स०स्त्री०—एक प्रकार का दर्द विशेष (ग्रमरत)

चिमचिमी-स०स्त्री०—मस्सा, भगदर, फोडा ग्रादि रोगो से होने वाली पीडा विशेष (ग्रमरत)

चिमची-स०स्त्री०—देखो 'चमची' (ग्रल्पा० रू भे)

चिमचौ—देखो 'चमचौ' (रू भे)

चिमटणौ, चिमटबौ-क्रि०ग्र०—१ सटना, चिपकना २ दृढता से ग्रालिगन करना, लिपटना. ३ हाथ, पैर ग्रादि सब ग्रगो को सटा कर दृढता से पकडना। जकड जाना, गुथना ४ किसी कार्य के लिये पीछे पड जाना। पीछा न छोडना।

चिमटणहार, हारौ (हारी), चिमटणियौ—वि०।

चिमटवाडणौ, चिमटवाडबौ, चिमटवाणौ, चिमटवाबौ, चिमटवावणौ, चिमटवावबौ—प्रे०रू०।

चिमटाडणौ, चिमटाडबौ, चिमटाणौ, चिमटाबौ, चिमटावणौ, चिमटावबौ—क्रि०स०।

चिमटिग्रोडौ, चिमटियोडौ, चिमट्योडौ—भू०का०कृ०।

चिमटीजणौ, चिमटीजबौ—भाव वा०।

चिमटाणौ, चिमटाबौ-क्रि०स०—१ सटाना, चिपकाना २ दृढता से ग्रालिगन कराना, लिपटाना ३ सब ग्रगो को सटा कर मजबूती से जकडाना, गुथाना ४ पीछा न छुडाना, पिंड पकडाना।

चिमटाणहार, हारौ (हारी), चिमटाणियौ—वि०।

चिमटायोडौ—भू०का०कृ०।

चिमटाईजणौ, चिमटाईजबौ—कर्म वा०।

चिमटाडणौ, चिमटाडबौ, चिमटावणौ, चिमटावबौ—रू०भे०।

चिमटणौ, चिमटबौ—ग्रक० रू०।

चिमटायोडौ-भू०का०कृ०—१ सटाया हुग्रा, चिपकाया हुग्रा २ दृढता से ग्रालिगन कराया हुग्रा, लिपटाया हुग्रा ३ सब ग्रगो को सटवा कर दृढता से जकडाया हुग्रा, गुथाया हुग्रा। ४ पिंड पकडाया हुग्रा, पीछे डाला हुग्रा। (स्त्री० चिपटायोडी)

चिमटावणौ, चिमटावबौ—देखो 'चिमटाणौ' (रू भे)

चिमटावणहार, हारौ (हारी), चिमटावणियौ—वि०।

चिमटाविग्रोडौ, चिमटावियोडौ, चिमटाव्योडौ—भू०का०कृ०।

चिमटावीजणौ, चिमटावीजबौ—कर्म वा०।

चिमटाडणौ, चिमटाडबौ—रू०भे०।

चिमटणौ—ग्रक० रू०।

चिमटावियोडौ—देखो 'चिमटायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चिमटावियोडी)

चिमटियोडौ-भू०का०कृ०—१ सटा हुग्रा, चिपका हुग्रा २ दृढता से ग्रालिगन किया हुग्रा, लिपटा हुग्रा ३ सब ग्रगो को सटा कर दृढता से जकडा हुग्रा, गुथा हुग्रा ४ पीछे पडा हुग्रा, पिंड पकडा हुग्रा। (स्त्री० चिमटियोडी)

चिमटियौ—देखो 'चिवटियौ' (रू भे)

चिमटी—१ देखो 'चिवटी' (रू भे)

२ सुनारो का एक ग्रोजार जिससे वे सोने चादी के बारीक कण पकड कर उठाते हैं ३ प्रेस मे ग्रक्षर उठाने का एक ग्रोजार विशेष।

चिमटौ—देखो 'चीमटौ' (रू भे)

चिमठणौ, चिमठबौ—देखो 'चिमटणौ' (रू भे)

चिमठाणौ, चिमठाबौ—देखो 'चिमटाणौ' (रू भे)

चिमठायोडौ—देखो 'चिमटायोडौ' (रू भे.) (स्त्री०चिमठायोडी)

चिमठावणौ, चिमठावबौ—देखो 'चिमटाणौ' (रू भे)

चिमठावियोडौ—देखो 'चिमटायोडौ' (रू भे) (स्त्री०चिमठावियोडी)

चिमठियोडौ-भू०का०कृ०—१ कान ऐंठा हुग्रा २ चुटकी काटा हुग्रा (स्त्री० चिमठियोडी)

चिमठियौ—देखो 'चिवटियौ' (रू भे)

चिमठी—देखो 'चिवटी' (रू भे) उ०—बीजोडा नै ए मा धोवा धोवा खाड, बाई नै दीवी सासू चिमठी लूण री।—लो गी

चिमतकारी—देखो 'चमत्कारी' (रू भे) उ०—समभ्र सभाता सीह सूरां सू सग्रांम सभि, चौगणी चिमतकारी वाह वाह चग्चायौ तू।
—जुगतीदान देथौ

चिमतकारी मणी—स०पु०यौ०—१ उत्तम मणी २ गुणयुक्त वस्तु या व्यक्ति।

चिमनप्रास—देखो 'चवनप्रास' (रू भे)

चिमनी—स०स्त्री०—१ धुएँ को ऊपर निकालने के लिये बनाई हुई शीशे ग्रथवा धातु की लम्बी नली जो छत से काफी ऊपर उठी हुई होती है। २ एक प्रकार का छोटा दीपक जो मिट्टी के तेल से जलाया जाता है।

चिमलपोस—देखो 'चिलमपोस' (रू भे)

चिमोटियौ—देखो 'चिवटियौ' (रू भे)

चिमोटौ—स०पु०—उस्तरे की धार तेज करने के लिये नाई के पास रहने वाला एक चमडे का उपकरण।

चिमोतर—वि० [स० चतुस्सप्तति, प्रा० चोसत्तरि, ग्रप० चोवत्तरि] सत्तर ग्रौर चार का योग, चौहत्तर।

स०पु०—चौहत्तर की सख्या।

चिमोतरे'क—वि०—चौहत्तर के लगभग।

चिमोतरौ—स०पु०—चौहत्तरवा वर्ष।

चिय—स०पु० [स० चित] उपचय, वृद्धि (जैन)

चियका, चियगा—स०स्त्री० [स० चिता] शव के दाह-सस्कार हेतु एकत्रित की हुई लकडियो का ढेर, चिता (जैन)

चियत्त–वि० [स० त्यक्त] छोडा हुग्रा, त्यक्त (जैन)

चिया–स०पु०वहु०—१ कच्चे मकानो की छत या छाजन का वह भाग जो ग्राजू-बाजू की दीवारो के बाहर निकला होता है।
मि०—नेव (क्षेत्रीय)
कहा०—चिया को पाणी मगरचा नी चढे—केलू वाले मकान पर का पानी ढाल के विरुद्ध वडेरी की ग्रोर नही चढ सकता। कार्य ग्रपनी स्वाभाविक गति के ग्रनुसार ही होता है विपरीत से नही।
२ इमली का वीज (ग्रमरत) ३ कच्चा फल। उ०—जगळ जाळा माथ, छा रयी विदवी वेला। फूला चिया फळीज, झिलोरा झिलवँ केळा।—दसदेव

चिया–स०स्त्री० [स० चिता] चिता (जैन)

चियाग, चियाय–स०पु० [स० त्याग] त्याग (जैन)

चियाप–स०पु०—मितव्ययिता।

चियापू–वि०—मितव्ययी, कम खर्च करने वाला।

चियावास–स०पु० [स० चैत्य वास] चैत्य वास। उ०—खर हरा चारित्र घर गुरु एह विरुद्ध प्रकासियु, उथाप्पिय चियावास सुविहिय सघ वसहि निवासिउ।—ख ग प

चियार, चियारइ, चियारि, चियारी—देखो 'चार' (रू भे.)
उ०—१ चतुरभुज दाखँ वेद चियार, वदँ मुख सास्तर वैण विचार।—ह र.
उ०—२ सूरती खूव वणी कासिव सुत, वेद चियारइ वांणी वाह।
—पीरदान लाळस
उ०—३ मइ घोडा वेच्या घणा, रहियउ मास चियारि। राति दिवस ढोलइ कन्हइ, रहतउ राज दुवारि।—ढो मा

चियारँ–वि०—चारो। उ०—चियारँ वसै मदरा ग्रात च्यारँ, प्रिय च्यार ग्राए जठै हेत प्यारँ।—सू प्र

चिरजी–स०पु०—एक प्रकार का फल। उ०—ग्राखोड ग्रनास चिरजी ग्रनूपा, सिरै खारक तीन विधि सरूपा।—ग्रज्ञात
वि०—चिरायु, चिरजीवी, दीर्घायु।
उ०—ग्रम कुळ रा ग्रवतस रैण पर चिरजी रहै, वजै सिधारा वस कहवत तै साची करी।—पा.प्र

चिरजीत–क्रि०वि०—चिर काल तक। उ०—इण वासतै देवताग्रा रा थाना मे पगलिया पूजावो सो चूडो थारी स्त्रीग्रा रो चिरजीत रहै।
—वी स टी

चिरजीव–वि० [स० चिरजीवी] चिरायु, दीर्घायु। उ०—१ ऊभी धावळियाळ पह, विरदावै 'पाल' नै। चिरजीवी सुपखाळ, लजधारी मो लज रखी।—पा प्र
उ०—२ इक कपि राकस दैत इक, दूणा दोय दुजात। या जिम नाम उदार रौ, चिरजीव सुखदात।—बा दा

चिरजीवी–वि० [स० चिरजीवी] दीर्घायु, चिरायु, सात की सख्या-सूचक*।

चिर–वि० [स० चिर] वहुत दिनो का।
क्रि०वि०—दीर्घकाल तक, ग्रधिक समय तक।

चिरकणौ, चिरकवौ–क्रि०ग्र०—थोडा-थोडा मल निकालना।
चिरकणहार, हारौ (हारी), चिरकणियौ—वि०।
चिरकवाडणौ, चिरकवाडवौ, चिरकवाणौ, चिरकवावौ, चिरकवावणौ, चिरकवाववौ—प्रे०रू०।
चिरकाडणौ, चिरकाडवौ, चिरकाणौ, चिरकावौ, चिरकावणौ, चिरकाववौ—क्रि०स०।
चिरकिग्रोडौ, चिरकियोडौ, चिरक्योडौ—भू०का०कृ०।
चिरकीजणौ, चिरकीजवौ—भाव वा०।

चिरकाणौ, चिरकावौ–क्रि०स० ['चिरकणौ' का प्रे०रू०] थोडा-थोडा कर हगाना।

चिरकायोडौ–भू०का०कृ०—थोडा-थोडा कर हगाया हुग्रा।
(स्त्री० चिरकायोडी)

चिरकाळ–स०पु० [स० चिरकाल] वहुत समय।

चिरकावणौ, चिरकाववौ—देखो 'चिरकाणौ' (रू भे)

चिरकियोडौ–भू०का०कृ०—थोडा-थोडा कर के मल निकाला हुग्रा।
(स्त्री० चिरकियोडी)

चिरकौ–स०पु०—पतली दस्त का थोडा सा ग्रश।

चिरचणी–स०स्त्री०—हाथ की वह अगुली जिससे तिलक किया जाता है, ग्रनामिका।

चिरचणौ, चिरचवौ–क्रि०स०—१ पूजन करना। उ०—वीच ग्रागण स्यघासण वणाय, ग्राभूखण कर त्रिये वैठ ग्राय। ग्रतर फूलेल चिरचत ग्रग, सुभ लिया किनका गोद सग।
—वगसीराम प्रोहित री वात
२ देह मे चदन ग्रादि का लेप करना।

चिरजा—देखो 'चरजा' (रू भे) उ०—नद करणसिघजी स्री देसनोक पधारिया, स्री करणीजी नू ग्रा चिरजा स्रीमुख सू वणाय मालम करी।—द दा

चिरजीव, चिरजीत्री, चिरजीवौ–स०पु०—१ विष्णु २ कौग्रा ३ सेमर का वृक्ष ४ मार्कण्डेय ऋषि।
देखो 'चिरजीव' (रू भे)

चिरट्ठिइ, चिरट्ठिय–वि० [स० चिरस्थितिक] दीर्घ काल तक जीवित रहने वाला (जैन)

चिरणाटियौ–स०पु०—नाश, ध्वस।

चिरणाम्रत—देखो 'चरणाम्रत' (रू भे.)

चिरणोटियौ–स०पु—सधवा स्त्रियो के ग्रोढने का वस्त्र विशेष।

चिरणौ, चिरवौ–क्रि०ग्र०—१ सीधा फट जाना २ लकीरनुमा सीधा घाव होना या किसी ग्रग का कटना।
चिरणहार, हारौ (हारी), चिरणियौ—वि०।
चिरवाडणौ, चिरवाडवौ, चिरवाणौ, चिरवावौ, चिरवावणौ, चिरवाववौ—प्रे०रू०।

चिराडणौ, चिराडबौ, चिराणौ, चिराबौ, चिरावणौ, चिरावबौ —प्रे०रू०।

चीरणौ, चीरबौ—क्रि०स०।

चिरिओडौ, चिरियोडौ, चिरयोडौ—भू०का०कृ०।

चिरीजणौ, चिरीजबौ—भाव वा०।

चिरत, चिरतत—देखो 'चरित' (रू भे) उ०—१ झट तोड खभ चढ चल्यौ जत्र, तव हुआ विमरजन चरित तत्र।—पा.प्र

उ०—२ विण सिर धड ऊठे विकराळा, चिरत गिणे वाळक जिम चाळा।—सू प्र

उ०—३ हणु दीह हुआ चिरतत अलेख, दरक निज सहस सत दरक देख।—पा प्र

चिरताळ—वि०—१ चरित्र करने वाला, ढोंगी, धूर्त।

उ०—चित फाटी ससार सू, तिय देखे चिरताळ। थयौ वैरागी भरतरी, धारा नगर भोपाळ।—पा प्र

२ देखो 'चिरताळौ' (रू भे)

चिरताळू, चिरताळौ—वि० (स्त्री० चिरताळ, चिरताळी) १ कपटी, ठग, धूर्त। उ०—काळा मे कोडाय चाहि खायौ कर चाळा। मोडा उघडधा मीत चिरत थारा चिरताळा।—ऊ का

२ दुराचारी, व्यभिचारी। उ०—चेली चिरताळी निज नखराळी चितवाळी चितदा हूं।—ऊ का.

३ कुतूहल उत्पन्न करने वाला। उ०—चवसठ भभि बावन चिरताळा, मदछकिया रमै मतवाळा।—सू.प्र

चिरनाटियौ—स०पु०—नाश, ध्वश।

चिरपडौ—वि०—थोडा-थोडा या बूद-बूद कर बरसने वाला (मेह)।

चिरपटी—स०स्त्री०—ककडी।

चिरपोट—देखो 'चिरपोटियौ' (रू भे)

चिरपोटण—स०स्त्री०—काक माची (अमरत)

चिरपोटियौ—स०पु०—एक प्रकार का पौधा जिसके बीज सूजन (रोग) होने पर लगाये जाते हैं।

चिरवरणौ, चिरवरबौ—क्रि०अ०—किसी घाव या कोमल अग मे मिर्च आदि लगने से दर्द का होना, चिरमिराना।

चिरवराट—स०पु०—किसी घाव या कोमल अग मे मिर्च आदि लगने से उत्पन्न होने वाला दर्द। चरमराहट।

चिरभट—स०स्त्री० [स० चिर्भट] ककडी (उ र)

चिरम—देखो 'चिरमी' (रू भे) उ०—कचन चिरम बराबरि तूले, पडधा अगनि मे ज्योरौ। चिरम जळै कचन ज्यू की त्यू, मिटै चिरम कौ जोरौ।—ह पु वा

चिरमठडी, चिरमठि—स०स्त्री०—१ वर्षा ऋतु मे उत्पन्न होने वाली घास विशेष (क्षेत्रीय) २ गुजा, घुघची।

उ०—मोती कउ ही जउ पहिरउ हार, तउ चिरमठि कुण पहिरइ हियइ।—स.कु.

चिरमही—देखो 'चिरमेही' (रू भे) (ह ना)

चिरमिटी, चिरमी—स०स्त्री०—गुजा, घुघची, गुजाफल (अ मा)

रू०भे०—चिरमठडी, चिरमठि।

चिरमेह, चिरमेही—स०पु० [स० चिरमेहिन्] गर्दभ, गधा (ह ना)

चिरमोटियौ—देखो 'चिमटियौ' (रू भे)

चिरळाणौ, चिरळाबौ—क्रि०अ०—चिल्लाना, चीखना।

चिरळायोडौ—भू०का०कृ०— चिल्लाया हुआ। (स्त्री० चिरळायोडी)

चिरवाई—स०स्त्री०—चीरने का कार्य या इस प्रकार के कार्य करने की मजदूरी।

चिरवाणौ, चिरवाबौ—क्रि०प्रे०—चीरने का काम अन्य से कराना।

चिरस्थायी—वि०—दीर्घ काल तक रहने वाला।

चिराई—देखो 'चिरवाई' (रू भे)

चिराक—देखो 'चिराग' (रू भे)

चिराकी—देखो 'चिरागी' (रू भे) उ०—जिन्हा हदा जोत का रवि चद चिराकी।—केसोदास गाडण

चिराग—स०स्त्री० [फा०] १ काठ या लोह के डडे पर रूई या वस्त्र आदि लपेट कर घास तेल या तिल के तेल से जलाई जाने वाली मशाल।

२ दीपक। उ०—जामे कसव जडाव नग, मरदा कळा अनूप। जोति चिरागा जगमगै, हेक हुवदा रूप।—गु रू व

मुहा०—१ चिराग गुल होणौ—रौनक मिटना, चिराग बुझना, कुल का समाप्त हो जाना। २ चिराग ठडौ करणौ—किसी कुल का समाप्त कर देना, चिराग बुझा देना। ३ चिराग नीचे इधारौ—किसी सम्मानित व्यक्ति द्वारा ही बुराई होना, विरुद्ध बात होना।

रू०भे०—चिराक।

यौ०—चिराग-वत्ती।

चिरागी—स०पु०—१ दीपक जलाने का कार्य करने वाला। २ मशाल रखने वाला, मशालची।

स०स्त्री—३ किसी मजार पर या तकिये पर चिराग जलाने के लिये ली जाने वाली लाग।

वि०—चिराग के समान, चिराग के रूप का।

चिराणौ, चिराबौ—क्रि०स० ('चिरणौ' क्रिया का प्रे.रू) चीरने का काम कराना, चिरवाना। उ०—चुडलौ चिरासी घण री सायबौ रे, लजा ओठीडा ऐ लो।—लो गी

चिराणहार, हारौ (हारी), चिराणियौ—वि०।

चिरायोडौ—भू०का०कृ०।

चिराईजणौ, चिराईजबौ—कर्म वा०।

चिरणौ, चिरबौ—अक० रू०।

चिरायतौ—स०पु० [स० चिरतिक्त] पर्वतीय तराई, विशेषतया हिमालय की जो प्राय ठडा स्थान होता है, मे उत्पन्न होने वाला दो तीन फुट ऊचा पौधा जिसकी पत्तिया तुलसी के पौधे से मिलती-जुलती होती हैं। सपूर्ण पौधा औषधि के काम आता है। इसका स्वाद अधिक कडुवा होता है।

चिरायु, चिरायू–वि० [स० चिरायुस्] दीर्घायु, चिरजीवी। उ०—इण सरीर रो आसरो, दियो भला जगदीस। रखो चिरायू ईसवर, इण सरीर आसीस।—जैतदान बारहठ

चिरायोडौ–भू०का०कृ०—चिरवाया हुआ, फडवाया हुआ। (स्त्री० चिरायोडी)

चिराळ–स०पु०—'रघुवरजस प्रकास' के अनुसार 'ढगण' के एक भेद का नाम जिसमे प्रथम लघु फिर गुरु।ऽ होता है।

चिरावणौ, चिरावबौ—देखो 'चिराणौ' (रू भे)

चिरावणहार, हारो (हारी), चिरावणियौ—वि०।

चिराविओडौ, चिरावियोडौ, चिराव्योडौ—भू०का०कृ०।

चिरावीजणौ, चिरावीजबौ—कर्म वा०।

चिरणौ—अक० रू०।

चिरावियोडौ–भू०का०कृ०—देखो 'चिरायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चिरावियोडी)

चिरिताळौ—देखो 'चिरताळौ' (रू भे) उ०—दीसता दीनदयाळा चिरिताळा निमो देव अकरूर आळा, भलै तमासा अलेख।—पीरदान लाळस

चिरियोडौ—चिरा हुआ, फटा हुआ। (स्त्री० चिरियोडी)

चिरी–स०स्त्री०—चिडिया।

चिरूजी, चिरौंजी–स०पु०—पियाल या पियार नामक वृक्ष विशेष के फल के बीजो की गिरी जो आचार आदि मे स्वाद के लिये डाली जाती है। उ०—नोजा चिरूजी जायफळ, अनतास अणछेर।—गजउद्धार

चिलेंवकत—देखो 'चिलत' (रू भे) उ०—मिळै तदि हेक निमख मझारि, चिलेंवकत तूट लगी खग च्यारि।—सू प्र

चिळक, चिळका–स०स्त्री०—चमक, द्युति, आभा, काति। उ०—अलक चिळक चित मे चढी, कुटिळ भ्रकुटी हिये घाव कियो।—गी रा

चिळकणौ, चिळकबौ–वि० (स्त्री० चिळकणी)—चमचमाने वाला, चमकने वाला, द्युतियुक्त। उ०—हीरा नै सरीखी थारी धण चिळकणी, हो राज, राज ढोला राखो नी थारै कठा रै माय।—लो गी

चिळकणौ, चिळकबौ–क्रि०अ०—१ चमकना, चमचमाना, झलकना, द्युति देना। उ०—चिळकै सोने रा चोलरिया, वधगी वा रूपाळी पाळ।—साभ २ बच्चे का चौकना।

चिळकणहार, हारो (हारी), चिळकणियौ—वि०।

चिळकवाडणौ, चिळकवाडबौ, चिळकवाणौ, चिळकवाबौ, चिळकवावबौ—प्रे०रू०।

चिळकाडणौ, चिळकाडबौ, चिळकाणौ, चिळकाबौ, चिळकावणौ, चिळकावबौ—क्रि०स०।

चिळकिओडौ, चिळकियोडौ, चिळक्योडौ—भू०का०कृ०।

चिळकीजणौ, चिळकीजबौ—भाव वा०।

चिळकाणौ, चिळकाबौ–क्रि०स०—१ चमकाना, झलकाना, उज्ज्वल करना २ बच्चे को चौकाना।

चिळकाणहार, हारो (हारी), चिळकाणियौ—वि०।

चिळकायोडौ—भू०का०कृ०।

चिळकाईजणौ, चिळकाईजबौ—कर्म०वा०।

चिळकणौ—अक० रू०।

चिळकायोडौ–भू०का०कृ०—चमकाया हुआ, द्युतिमान किया हुआ, उज्ज्वल किया हुआ। (स्त्री० चिळकायोडी)

चिळकारौ–स०पु०—देखो 'चिळकौ' (रू.भे) उ०—हरकण छाई दिस चिळकारो हुयो। करसण करसणिया किलकारो करियो।—ऊ.का

चिळकावणौ, चिळकावबौ—देखो 'चिळकाणौ' (रू भे)

चिळकावणहार, हारो (हारी), चिळकावणियौ—वि०।

चिळकाविओडौ, चिळकावियोडौ, चिळकाव्योडौ—भू०का०कृ०।

चिळकावीजणौ, चिळकावीजबौ—कर्म वा०।

चिळकणौ—अक० रू०।

चिळकावियोडौ—देखो 'चिळकायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चिळकावियोडी)

चिळकियोडौ–भू०का०कृ०—चमका हुआ, द्युतिमान। (स्त्री० चिळकियोडी)

चिळकौ–स०पु०—चमक, चमचमाहट, प्रकाश।

चिलगोजा–स०पु० [फा०] एक प्रकार का मेवा जो चीड या सनोवर का फल होता है।

चिलडौ–स०पु०—एक प्रकार का छोटा क्षुप।

चिलणौ, चिलबौ–क्रि०अ०—१ चमकना, झलकना, दीप्तिमान होना। उ०—चिलते झिलंव आयुध चढाय, असवार हुवौ गज पीठ आय।—वि.स २ चीरा जाना।

चिलत, चिलतौ–स०पु० [स० चिल-वसने या फा० चिलत] एक प्रकार का कवच। उ०—१ चिलतह झिलम चढाय, ससत्र अग कसे सचेळा। चढि रैवतपसाव, 'बखत' आयौ जिण वेळा।—सू प्र उ०—२ हमगीर करण जुध हैमरा, घोम अरावा घरहरै। चिलतह छतीस आवध चुरस, कुळ छतीस राजस करै।—सू प्र.

चिळबिळौ–वि०यौ० [स० चल+वल] चचल, चपल, नटखट।

चिलम–स०स्त्री० [फा०] १ हुक्के के ऊपरी भाग पर रक्खा जाने वाला वह पात्र जिसमे तम्वाकू भर कर आग रक्खी जाती है। उ०—१ रूपै रा कुलावा लागा थका, सोनै री टूटी, रूपै री चिलम चिलमपोस छै।—रा सा स उ०—२ सुलफी गुडगुडिया चिलम होका री हळकी। हाडी वूरै हरख आभूखण रिपिया रळकी।—दसदेव

क्रि०प्र०—चढाणी, चाढणी, झाडणी, पीणी, भरणी।

यौ०—चिलमपोस।

२ तम्बाकू पीने के लिए लकडी अथवा मिट्टी का बना वह उपकरण जिसके नीचे नली होती है तथा ऊपर कटोरीनुमा हिस्सा होता है जिसमे तम्बाकू रख कर ऊपर से आग रखते हैं। यह कभी-कभी नली के द्वारा तथा कभी हुक्के के ऊपर रख कर पीया जाता है।

उ०—करडी डावळी रौ, सू इण भात री तमाकू सू चिलमा भरीजै छै।—रा सा स

क्रि०प्र०—खीचणी, झाडणी, पीणी, भरणी।

मुहा०—१ चिलम खीचणी—चिलम पर तम्वाकू जला कर धुआ खीचना २ चिलम चढाणी—गुलामी करना, चिलम पर तवाकू रख कर आग रखना। ३ चिलम पीणी—चिलम पर तवाकू पीना ४ चिलम भरणी—देखो 'चिलम चढाणी'।

अल्पा०—चिलमडी।

(मह०—चिलमड)

चिलमगरदा—स०स्त्री० [फा० चिलमगर्दा] हुक्के मे लगाई जाने वाली हाथ भर की लम्बी नली जो नीचे के जलपात्र के मध्य मे लगा रहती है और ऊपर जिसके तम्वाकू भरने का पात्र रखा जाता है।

चिलमडी—देखो 'चिलम' (अल्पा रू भे)

चिलमचट—वि०—बहुत अधिक चिलम पीने वाला व्यसनी।

चिलमची—वि०—अधिक चिलम पीने वाला व्यसनी।

स०स्त्री०—वह पात्र जिसमे हाथ धोये जाते हैं।

रू०भे०—चिलमी।

चिलमपोस—स०पु० [फा० चिलमपोश] धातु का बना एक झरझरीदार ढक्कन जो प्रायः हुक्के की चिलम पर या चिलम पर चिनगारी आदि न उडने के कारण से लगाया जाता है। उ०—रूपै रा कुलाबा लाग्या थका, सोनै री टूटी, रूपै री चिलम, चिलमपोस छै।
—रा सा स

चिलमरदौ—स०पु०—बैलगाडी के अग्र भाग को भूमि से ऊपर रखने के निमित्त जुआ बाधने के स्थान से कुछ ऊपर की ओर दो लम्बे डडे (जो नीचे की ओर लटकते हैं) को बाधने का खाल का रस्सा।

चिलमियौ—स०पु०—चिलम पर तम्वाकू जलाने के लिये रक्खा जाने वाला अगारा। उ०—१ चिलमिया करण चित चाह सू, टळण हार नहि टाळणा। अमलिया तणा सिद्धात ए, वळै जठा तक बाळणा
—ऊ का

उ०—२ ऊपरा थोहर रा आकरा कोयला रा चिलमिया मेल्हजै छै।—रा सा स

क्रि०प्र०—चढाणौ, चाढणौ, झाडणौ।

रू भे.—चिलम्यौ।

चिलमी—देखो 'चिलमची' (रू भे)

चिलम्यौ—देखो 'चिलमियौ' (अल्पा०)

कहा०—चिलम्या चढियोडा ही राखे—चिलम पर आग चढी ही रहती है, हर समय तम्वाकू के नशे मे चूर रहने वाले के प्रति।

चिलाइया—स०स्त्री [स० किरातिका] किरात देश की स्त्री (जैन)

चिलाईपूत—स०पु० [स० चिलातीपुत्र] राज-गृह निवासी धनाशा सेठ की चिलाती नामक दासी का पुत्र, एक जैन साधु।

चिलातिया, चिलाती—स०स्त्री० [स० किरातिका] किरात देशोत्पन्न दासी (जैन)

चिलाय—स०पु० [स० किरात] किरात देश।

चिलिचल्ल, चिलिच्चिल, चिलिच्चील, चिलिण—वि०—अशुचि, अपवित्र (जैन)

चिलिमिणी, चिलिमिलिया—स०स्त्री०—१ ढकने का वस्त्र। २ पर्दा।

चिलौ—स०पु० [फा० चिल्ल]—१ धनुष की डोरी, प्रत्यञ्चा। उ०—करि खच्चै धानख चिलै बधि टक अढारै ग्रहि मूठी। आछटै दत, गजराज उखारै।—रा रू. (रू भे. 'चिल्लौ')

२ चमचमाहट, प्रकाश।

चिल्लग—वि०—प्रकाशमान, देदीप्यमान (जैन)

चिल्लड—स०पु०—शिकारी पशु विशेष, चिता (जैन)

चिल्लाणौ, चिल्लाबौ—क्रि०अ०—शोर करना, चीखना, चिल्लाना।

चिल्लाणहार, हारौ (हारी), चिल्लाणियौ—वि०।

चिल्लायोडौ—भू०का०कृ०।

चिल्लाईजणौ, चिल्लाईजबौ—भाव वा०।

चिल्लायोडौ—भू०का०कृ०—चिल्लाया हुआ, चीखा हुआ।

(स्त्री० चिल्लायोडी)

चिल्लाहट—स०स्त्री०—चिल्लाने की क्रिया, चीख, शोर, हल्ला।

चिल्लित, चिल्लिय—वि०—१ प्रदीप्त, चमकयुक्त। २ सुशोभित (जैन)

चिल्लौ—स०पु०—१ मुसलमानो के चालीस दिन का व्रत।

२ देखो 'चिलौ' (रू भे) उ०—कर छूटौ वाण चिल्लै कवाण, वोलिया जहर अहकार वाण।—वि स

चिल्ही—स०स्त्री०—चील पक्षी।

चिवटी, चिवठी—देखो 'चिवटी' (रू भे) उ०—इण कवणीती पती री औज रीस नै दूजो कोई पूगै नही, तीर छूटता चिवटी खाली होवता ही निमटी नीवडती चाली चाली जावे है।—वी स टी

चिसतिया, चिस्तिया—स०पु०—मुसलमान सूफियो का एक सप्रदाय विशेष।

चिह—देखो 'चह' (रू भे) उ०—देवागना कजिहि दाधि चालउ ए दासि वाधि चिह माहि घालउ।—वि.प

चिहउ—वि०—चार, चारो।

चिहन—देखो 'चिन्ह' (रू भे) उ०—सोभा नाम रूप विसतारा, सुपन चिहन कहिया न्रप सारा।—सू प्र.

चिहर—देखो 'चिहुर' (रू भे.)

चिहरबद—स०पु०—बधन, बध। उ०—तठा उपरायत वाग रा चिहरबद छूटे छै।—रा सा स

चिहु–वि०—चार, चारो। उ०—ससनेही सज्जण मिळया, रयण रही रस लाइ। चिहु पहुरे चटकउ कियउ, वैरणि गई विहाइ।—ढो मा

चिहुएवळा, चिहुवळ–क्रि०वि०—चारो ओर। उ०—१ वरसते चिहुएवळा, रगियो ज्याग रगत्त।—रामरासौ।

उ०—२ बळिवत अतुळवळ जूटा चिहुवळ, झळहळ दळ वीजळ ए।

—गु रू व

चिहुर, चिहुर–स०पु० [स० चिकुर] वाल, केश। उ०—१. उजळ दीहि 'हींगोळ' हर आभरण, भाजती भीर भाराथि भिळियौ॥ ऊजळा चिहुर राता करै आवधा, मुणिस-गुर ऊजळी जोति मिळियौ॥

—राठौड सेखा दुरजनसालोत पातावत री गीत

उ०—२ चरणके भड चिहुर छीजी कातर छणएकै।—व.भा.

रू०भे०—चिहर।

चिहुरवंद, चिहुरवध—देखो 'चिहुरवद' (रू भे.)। उ०—तठा उपराति करिनै राजान सिलामति अतरा माहै वागा रा चिहुरबध छूटै छै।

—रा.सा स.

चिहुवै, चिहूवै–वि०—चार, चारो। उ०—फिरिग्रा उलाक चिहुवै दिसी, हुई राजथाना हटक।—गु रू वं

चिहूवैवळा–क्रि०वि०—चारो ओर। उ०—जगजीत चिहूवैवळा, जाहर सुजस हुवै सुढग।—र.ज प्र

चिह्न–स०पु० [स०] १ देखो 'चिन्ह' (रू भे) २. दाग या धब्बा ३ झडी, पताका।

चीं–स०स्त्री०(अनु०)—१ पक्षियो द्वारा चहचहाने का वारीक स्वर। २ वच्चो अथवा पक्षियो का शोर।

३ व्यर्थ का प्रलाप। वकझक। उ०—आवत दुख इक सार, क्या ग्यानी क्या मूढ नै। इक सह धीरज धार, चींचीं कर इक चकरिया।—मोहनराज साह

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

मुहा०—चीची करणी—ची ची की ध्वनि करना। वकझक करना।

चींकणौ—जगली जानवरो का नाक या थुथने से आवाज करना।

उ०—चिल्हर चीकिया त्या ऊपर सूअर, भूडण घिरिया।

—कुवरसी साखला री वारता

चींकळमादौ–स०पु०—गोमय के अदर उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का जन्तु, गुवरैला (मि० ओकीरौ)

चींगट—देखो 'चीकट' (रू भे)

चींगण–स०स्त्री०—१ पूर्व और दक्षिण के मध्य की आग्नेय दिशा का नाम। उ०—मणी चख भीच मटी मरजाद। चवै दिस तीतर चींगण साद।—पा प्र

२ देखो 'चिगण' (रू भे)

चींगरडि–स०स्त्री०—'पानडी' से उत्पन्न होने वाली ध्वनि। देखो 'पानडी' (३) उ०—पाखती भरटा री झीगडि चींगरडि पडिनै रही छै। डूहा री खटाको लागिनै रहियौ छै। पाखती नाळि वभिनै रही छै।—रा सा स

चींगौ–स०पु०—घोडा। (ना.डि को.)

चींघण–स०स्त्री०—१ देखो 'चिगण' (रू भे)

२ देखो 'चीगण' (रू भे) ३. श्मशान भूमि, मरघट।

उ०—टीगर टोळी ले चटपट घण टोळी; चहुघा चींघण-सी दुवघा घट दोळी।—ऊ का.

४ मरघट मे पडी हुई वे लकडिया जो दाह क्रिया के समय जलती हुई शेष रह जाती है ५ वह लम्वी लकडी जिससे दाह क्रिया के समय शव को चिता मे इधर उधर करते हैं।

चींचड—देखो 'चीचडौ' (मह० रू भे) उ०—चींचड ईता, बुग, दोळा चैठोड़ा, आणै झोळी मे टुकडा अेठोडा।—ऊ का.

चींचडी–स०स्त्री०—१. लकडी की वह कीली जो हल के मध्य मे लगाये जाने वाले डडे 'हरीसा' को उसमे मजवूत करने के लिये, हल के पृष्ठ भाग मे लगाई जाती है।

२. देखो 'चीचडौ' (स्त्री)

चींचडौ–स०पु० (स्त्री० चीचडी) किलनी या किल्ली नामक कीडा जो पशुओ के शरीर पर त्वचा मे चिपट कर उनका रक्त पीता है।

चींचपड–स०स्त्री० (अनु०) निर्वल का सवल या किसी वडे व्यक्ति के सामने प्रतिकार या विरोध के लिये किया जाने वाला कार्य या शब्द।

चींचाडणौ, चींचाडवौ—देखो 'चीचाणौ' (रू भे)

चींचाट–स०पु०—चिल्लाने की आवाज, शोर। उ०—चळ अर गडूरि चेवरा, चढ कर मत चींचाट। सूरी जाया कर सकै, दळा घेर दहवाट।

—रेवतसिंह-भाटी

चींचाणौ, चींचावौ–क्रि०अ०—१ चिल्लाना। उ०—राखै जिण विध राम, राजी हुइ उण विध रहौ। कोई सरै नहिं काम, चींचाया सू चकरिया।—मोहनराज साह

२ (छोटे वच्चे आदि को) तग करना व रुलाना ३. कष्ट देना।

चींटी–स०स्त्री० (पु० चींटो) चिउटी। उ०—खग उडधा आकास कू, चींटी परा समाय। जहा चींटी की गमन नहिं, तहा खग वैठा जाय।

—ह पु वा

चींटौ–स०पु० (स्त्री० चीटी) चिउटा।

चींण–स०स्त्री०—१ घाघरे या लहगे मे नाडा डालने के लिये ऊपर के सिरे पर लगाई जाने वाली कपडे की पट्टी २ पत्थर की लम्वी पतली शिला जो प्राय मकान की छत ढकने के काम आती है ३ लोहे की मोटी जजीर या सण, सूत, चमडे आदि का वह रस्सा जो रहट मे वैलो के जुए से वध कर वैल हाकने वाले के वैठने के भाग के नीचे की कील मे कसा रहता है।

चींत—देखो 'चिता' (रू भे) उ०—'लखो' 'कमो' 'आचागळो', 'सूजो' 'जैत' हराह। चींत भळावी 'दुरगसी', लेखवि प्रीत-घराह।—रा रू

चींतणौ, चींतवौ–क्रि०स०—सोचना, विचार करना, चितन करना। उ०—देखण लागी यक्ष आखडी आसू भरिया, चींतै मन कुरळाय आज या किसडी विळिया।—मेघ

चींतरियो, चींतरी—देखो 'चीथडौ' (रू भे)

चींतवणी, चींतववौ–क्रि०स० [स० चिति = चिंतन] १ देखो 'चितवरणौ' (रू भे.) उ०—ग्रर कारी की सु इम चींतवि ग्रर की हुती जु जीव रै जोखं लग ग्रटकळी हुती, का घरवार हुती रहै।—द वि

२ स्मरण करना, याद करना। उ०—रिख सिख गगाराम सेवै पद कज मजु सीतावर सो राघो पै 'किसना' चींतव निस दिवस उर चगा।—र ज.प्र

चींतवियोडौ—देखो 'चितवियोडौ' (रू भे) (स्त्री० चीतवियोडी)

चींताणी, चींतावौ–क्रि०स० [स० चिंतन] स्मरण दिलाना, याद कराना। उ०—ग्रापरा ग्रनेक प्रत्युपकार 'चीताइ ग्रावरत प्रमुख ग्रनेक ग्रनुकार रा नाच करती ग्ररवली नू विस्राम दे'र जोड़ये घीरण राडोड रै कठ एडग री ग्राघात कीधो।—व भा

चींतायोडौ--देखो 'चितायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चीतायोडी)

चींतावणी, चींताववौ—देखो 'चीताणौ' (रू.भे) उ०—'वाले वरस वत्तीस वय' सभर वैरीसाल। जनक छत्र घरियौ जठै, चींतावै कुळ चाल।—व भा

चींतावियोडौ–भू०का०कृ०—याद दिलाया हुग्रा, स्मरण कराया हुग्रा (स्त्री० चींतावियोडी)

ग्रींथड—देखो 'चीथडौ' (मह० रू.भे)

चींथडियौ—देखो 'चीथडौ' (ग्रल्पा रू.भे)

चींथडी–स०स्त्री०—देखो 'चीथडौ' (ग्रल्पा रू भे)

चींथडौ–स०पु०—फटा पुराना कपडा, पुराने कपडे का टुकडा, कपडे की धज्जी।

रू०भे०—चीतरौ, चीथरौ, ची'डौ, चीरडौ।

ग्रल्पा०—चीतरियौ, चीथडियौ, चीथडी, चीथरियौ, चीथरी, ची'डी, चीरडियौ, चीरडी।

चींथणी, चींथबौ–क्रि०स०—१ रौदना, कुचलना।

चींथणहार, हारौ (हारी), चींथणियौ—वि०।

चींथवाडणी, चींथवाडबौ, चींथवाणौ, चींथवावौ, चींथवावणौ, चींथवाववौ–प्रे०रू०।

चींथाडणी, चींथाडबौ, चींथाणौ, चींथावौ, चींथावणौ, चींथववौ—क्रि०स०।

चींथिग्रोडौ, चींथियोडौ, चींथ्योडौ—भू०का०कृ०।

चींथीजणी, चींथीजबौ—कर्म वा०।

चींथर—देखो 'चीथडौ' (मह० रू)

चींथडियौ—देखो 'चीथडौ' (ग्रल्पा रू भे)

चींथरी–स०स्त्री०—देखो 'चीथडौ' (ग्रल्पा. रू भे.) उ०—जावक पावक जिम रडातक जीवै, साता ठोडा सू चडातक सीवै। ग्राघी उगळाची काचळिया ग्राघी, विलियै चूडी विन चींथरिया वांघी।—ऊ का

चींथरौ—देखो 'चीथडौ' (रू भे)

मुहा०—चीथरा फाडणा—कपडे फाडना, पागल होना, उन्माद मे ग्राना।

चींथाणी, चींथावौ–क्रि०स० ('चीथणौ' का प्रे०रू०) रौंदाना, कुचलाना।

चींथाणहार, हारौ (हारी), चींथाणियौ—वि०।

चींथायोडौ—भू०का०कृ०।

चींथाईजणी, चींथाईजबौ—कर्म वा०।

चींथरियौ–देखो 'चीथडौ' (ग्रल्पा रू भे)

चींथायोडौ–भू०का०कृ०—कुचलाया हुग्रा, रौदाया हुग्रा। (स्त्री० चीथायोडी)

चींथावणी, चींथाववौ—देखो 'चीथाणौ' (रू भे)

चींथावणहार, हारौ (हारी), चींथावणियौ—वि०।

चींथाविग्रोडौ, चींथावियोडौ, चींथाव्योडौ—भू०का०कृ०।

चींथावीजणी, चींथावीजबौ—कर्म वा०।

चींथावियोडौ—देखो 'चीथायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चीथावियोडी)

चींथियोडौ–भू०का०कृ०—कुचला हुग्रा, रौंदा हुग्रा। (स्त्री० चीथियोडी)

चींद—देखो 'चीध' (रू भे)

चींदड, चींदडियौ, चींदळ, चींदळियौ—देखो 'चीधड' (रू भे) उ०—घोळी ग्राखा रा चींदड भड धीठा।—ऊ का

चींदौ—देखो 'चिंदौ' (रू भे)

चींध–स०स्त्री० [स० चिह्न] १ झडी, पताका। उ०—१ गजा ऊपरै धजा, नेजा, स्रीधा फरकिनै रही छै जाणै हेमाचळ रै टूका माथै केसू फूलनै रहिग्रा छै।— रा सा स

उ०—२ सारग खान वहियास हित्ति, खट दूग खान मोखावि खित्ति। पट्टाण फतेपुरि खेति पाडि, चक्कवइ जोधि जस चींध चाडि। —रा ज सी

उ०—३ वैरक चींध धजा गज डवर, नेजे नेजे मीर वहादर। —गु रू व

२ धूल, रज। उ०—चमराळा पाए ऊडी चींध, गूदळइ त्रिवख मूझइ गईध।—रा ज सी

रू०भे०—चीद, चीधी, चीद, चीध।

चींधड, चींधडियौ, चींधळ, चींधळियौ–स०पु० [स० चिह्न = ध्वजा + रा प्र ड, डियौ] १ वह व्यक्ति जो ग्रपना स्वय का झडा रखने मे समर्थ हो, वीर, योद्धा। उ०—१ जोगीदास वैरसीयोत, स० १६५८ जाजीवाळ वरकरार। पछै छाडनै राणाजी रै गयो। स० १६६४ वळै ग्रायो तद जाजीवाळ दीवी। स० १६७८ राम कह्यौ। भलो चींधड थो।—नैणसी

उ०—२ तिणनू रावळ कहै छै, 'ग्रा घोडी ली चाहीजै' तरै भोग्रौ कहै छै 'कूभौ तो पाधारिया घोडी देणरो न छै' सु कूभा नू तेड दरवार वैसाणियो छै ग्रादमी ५०० चींधड सिलह पेहरै सामा वठा छै।—नैणसी

उ०—३ कूंपैजी जाय गाव गागंजी सू ग्ररु जैतैजी सू सला करी गाव घोळहरै थांणो वैठायो हजार च्यार चींधडा सू। हमैं वरसोवरस मोभत रा गाव दोय च्यार दावता जावै।—द दा।

उ०—४ रामसिंघजी आगै राव चंदसेण भागौ । इण वात री विसतार आगै कहीजसी । वुरै हवाल हुइ नीसरियौ । रावळा चींधडिया वासै आय आपडिया ।—द वि

उ०—५ ताहरा मदनौ पूठा ताणि पडियौ । पाछौ हीज विगर लोहडै लागै । ताहरा कुवरजी रै चीधडियै घाव वाहियौ । घावै गोइद टेमाणी पडियौ ।—द वि

२ वह निरुद्यमी व्यक्ति जो याचना के आधार पर ही अपना पेट पालता हो, माग कर पेट भरने वाला निकम्मा व्यक्ति । अकर्मण्य व्यक्ति ३ मलिन और घृणित व्यक्ति ।

रू०भे०—चीदड, चीदळ, चीदड, चीदळ, चीधड, चीधळ ।

अल्पा०—चीदडियौ, चीदळियौ, चीधडियौ, चीधळियौ, चीदडियौ, चीदळियौ, चीधडियौ, चीधळियौ ।

चींधाळ, चींधाळौ—स०पु०—१ वह हाथी जिस पर झडा बाधा जाता है ।

उ०—थियौ चोळ सिंदूर कुभाथळयू व्रन गेरुअ जाण विंझाचळय । चींधाळा चीध अयास चढै, अनळी पख जाण भ्रमै अनडै ।

—गु रू व

२ देखो 'चीधड' (रू भे)

चींधी—देखो 'चीदी' (रू भे.)

चींनणौ, चींनवौ—देखो 'चीनणौ, चीनवौ' (रू भे)

चींनियोडौ—देखो 'चीनियोडौ' (रू भे.) (स्त्री० चीनियोडी)

चींप—१ देखो 'चीप' (रू भे)

२ देखो 'चीपियौ' (रू भे) उ०—मिळ अक्ष गुणावंळ कठ मई, लख चींप कमडळ हाथ लई ।—पा प्र

चींपड—देखो 'चीपडौ' (महत्व. रू भे)

रू०भे०—चीपड ।

चींपडी—स०स्त्री०—नाक के बाल पकड कर उखाडने का नाई का एक औजार, छोटा चिमटा ।

वि०स्त्री०—देखो 'चीपडौ' (अल्पा रू भे)

चींपडौ—स०पु०—१ आंख का मैल ।

२ देखो 'चीमटौ' (अल्पा रू भे)

अल्पा० —चीपडी । (मह०—चीपड) ·

वि०—(स्त्री० चीपडी) वह जिसकी आंखो मे अधिक मैल रहता हो एव मैल से आंखें चिपचिपी रहती हो ।

रू०भे०—चीपडौ ।

चींपटी—स०स्त्री०—१ देखो 'चिवटी' (रू भे) उ०— ताहरा इयै पइसौ चीपटी मासू चलाय दियौ सो देहरै माही जाय पडियौ ।

—पलक दरियाव री वात

चींपटौ—देखो 'चीपियौ' (रू भे)

२ देखो 'चीपटौ' (अल्पा. रू भे)

चींपटौ—देखो 'चीमटौ' (रू भे)

चींपलौ—१ देखो 'चीपडौ' (रू भे)

चींपियौ—१ देखो 'चीमटौ' (अल्पा रू भे) २ योनि, भग (बाजारू)

चींभडौ—स०पु० [स० चिर्भटी] १ छोटी ककडी, कचरी ।

२ सूअर का बच्चा ।

चींमटौ—देखो 'चीमटौ' (रू भे.)

चींयौ—देखो 'चियौ' (रू भे)

चींवटौ—स०पु०—कच्चा फल, भ्रूण । उ०—मूगी छम लावडिया लियां, विच विच चुन्नी चींवटा । खोढ मदीना खडा मोहै, सकड सदीना मीवटा ।—दसदेव

ची—स०स्त्री०—१ स्याही २ कवी ३ हस्तिनी ४ माया. ५ शिव की जट । (एका०)

अव्य०—षष्टी विभक्ति 'की'

उ०—विधि सहित वधावै वाजित्र वावै, भिन भिन अभिन वाणी मुख भाखि । करै भगति राजान क्रिसन ची, राजरमणि रुखमिणि ग्रिह राखि ।—वेलि

चीक—देखो 'चीख' (रू भे)

स०पु० [सं० चिकिल] २ कीचड । उ० —ताहरा पातिसाहजी खुदाई वगस इकदता हाथी असवार हुया । आप सर हुतौ सु पातसाहजी कहियौ चीक छै ।—द वि

रू०भे०—चीखल, चीखलि ।

चीकट—स०पु० [स० चिक्कण] १ घी तेल आदि स्निग्ध पदार्थ. २ घी या तेल की स्निग्धता, चिकनाहट ।

चीकणाई—स०स्त्री०—चिकनाई, स्निग्धता । उ०—मूगा सूं मसळ चीकणाई उतारजै छै ।—रा सा सं

चीकणी—वि०स्त्री०—देखो 'चीकणौ' का स्त्री० ।

उ०—सीयाळइ तउ सी पडइ, ऊन्हाळइ लू वाइ । वरसाळइ भुंइ चीकणी, चालण रत्ति न काइ ।—ढो मा.

मुहा०—चीकणी-चुपडी—फुसलाने वाली, धोखा देने वाली ।

चीकणी चुट्ट—वि०स्त्री०यौ०—अत्यन्त चिकनी ।

उ०—पएस चीकणी चुट्ट पडै डागळिया पक्का । सुद्ध पाधरी पडी जकी सगळी विन टक्का ।—दसदेव

चीकणौ—वि० [स० चिक्कण] (स्त्री० चीकणी) १ जो छूने में खुरदरा न हो २ जिस पर पैर आदि फिसले ।

मुहा०—चीकणौ देख कर फिसळणौ—धन वा रूप पर लुभा जाना ।

३ जिसमे रुखाई न हो, जिसमे तेल हो या लगा हो ।

उ०—घडै चीकणै छाट रैवै ना तिसळै नीचै । घट काचै पट रचै जचै रग सोणौ सीचै ।—दसदेव

मुहा०—१ चीकणौ घडौ—जिस पर अच्छी बातों का कुछ असर न हो, वेहया । २ चीकणा घडा माथै पाणी पडणौ—किसी पर किसी प्रकार का असर या प्रभाव न पडना ।

४ साफ-सुथरा, सँवारा हुआ ।

५ चाटुकार, खुशामदी ।

स पु० [सं० चिक्कण] १ सुपारी का वृक्ष।
[सं० चिक्कणम्] २ सुपारी का फल।
चीकार—स०पु०[सं० चीत्कार] १ चीत्कार, चीख २ चिंघाड़।
उ०—दिकपाळा रा गाढ समेत दिग्गजा रा मद छूटि आठू ही अनेकप चकितपणा रा चीकार करण लागा।—व भा.
चीकू—स०पु०—एक प्रकार का वृक्ष और उस पर लगने वाला फल।
चीकूण—स०पु०—एक प्रकार का वृक्ष विशेष।
चीख—स०स्त्री० [सं० चीत्कार] १ चिल्लाहट। उ०—वडै कोप वैमारिजै लोप चीखा, सदा भारता सीख तो ही असीखा।—रा रू
करुण-क्रंदन। उ०—पण सेठाणी ल्हास नै सभाळ लीवी। वीरा री फाटोडो माथो खोळा मे लिया बाद उणरी हियौ फाटण लाग्यौ अर मूडा सू एक चीख निकळगी।—रातवासौ
चीखणौ, चीखबौ—क्रि०अ०—कष्ट पीड़ा आदि के कारण जोर से चिल्लाना। उ०—चाहे जितरौ चीख, मूढ सला माने नही। सहजे आसी सीख, चमठाया सू चकरिया।—मोहनराज साह
चीखणहार, हारौ (हारी), चीखणियौ—वि०।
चीखवाडणौ, चीखवाडबौ, चीखवाणौ, चीखवावौ, चीखवावणौ, चीखवावबौ—प्रे०रू०।
चीखाडणौ, चीखाडबौ, चीखाणौ, चीखाबौ, चीखावणौ, चीखावबौ —क्रि स.।
चीखिओडौ, चीखियोडौ, चीख्योडौ—भू०का०कृ०।
चीखीजणौ, चीखीजबौ—भाव वा०।
चीखल, चीखलि, चीखलियौ—देखो 'चीखलौ' (रू भे)
उ०—'अमराणी' जीमैं जठै, जुडै सुहडा भड। चळू करै जिण चीखलै, मीन रहै घर मड।—अज्ञात
चीखलौ—स०पु० [सं० चिकिल] १ कीच, दलदल, कीचड।
उ०—दोइ टूक हुवा नै हेठो पडियो. लोही री चीखलो हुवो। —जखडा मुखडा भाटी री वात
२ छोटा मिट्टी का बना जल पात्र। उ०—आज हू तो पाणीडो भरण नै जासू हे माय, नरसी मूते री हूं बाळकी, चीखलो भरू कै डूब मर जाऊ हे माय, नरसी मूते री हू बाळकी।—रतनो खाती
रू०भे०—चुकलियौ।
३ एक प्रकार का सर्प (क्षेत्रीय) ४ सर्प का छोटा वच्चा (क्षेत्रीय)
अल्पा०—चीखलियौ।
मह०—चीखल, चीखल्ल।
चीखल्ल—देखो 'चीखल' (मह रू भे)
चीगट—देखो 'चीकट' (रू भे)
चीगटडौ—वि०—१ जो मैल अथवा स्निग्ध पदार्थों के जमने से चिकना हो गया हो।
२ देखो 'चीकट' (अल्पा रू भे)
चीगटास—देखो 'चीकट' (रू भे)
चीगटौ—वि०—स्निग्ध पदार्थ की चिकनाई व मैल से भरा हुआ, स्निग्धता-युक्त।
चीघटियौ—देखो 'चीगट' (अल्पा रू भे)
चीड—स०पु०—१ ऊट का मूत्र २ हिमालय पर्वत के ढाल मे होने वाला एक ऊचा वृक्ष जिसकी लकडी अन्दर से मुलायम व चिकनी होती है। चीढ।
३ एक प्रकार का छोटा बारीक मोती। काच की गुरिया का दाना, पोत। उ०—गळै बाधण रा तिमणिया री चीडा सू ही सुहाग न्याय है।—वी स टी
चीडणौ, चीडबौ—क्रि०अ०—ऊट का पेशाब करना। उ०—थोडी देर तक कोई एक सब्द ई नही बोल्यौ। सिरफ ऊट चीडता रह्या—तरर-तरर-तरर।—रातवासौ
चीडियोडौ—भू०का०कृ०—पेशाव किया हुआ (ऊट) (स्त्री० चीडियोडी)
चीं'डी—स०स्त्री०—देखो 'चीथडो' (अल्पा रू भे)
चीं'डौ—देखो 'चीथडौ' (रू भे)
चीचूअणौ, चीचूअबौ [सं० चीत्कार] चीखना।
चीज, चीजडी—स०स्त्री० [फा० चीज] १ सत्तात्मक वस्तु, पदार्थ, द्रव्य।
यौ०—चीज-वस्त।
२ गहना, आभूषण ३ किसी प्रकार का गायन, गीत आदि ४ महत्व की वस्तु ५ विलक्षण वस्तु। उ०—देस विदेसा मिळ वणाई माटी री सं रीजडी। सगदा खातर नाव नुवा चतराई री चीजडी।—दसदेव
अल्पा०—चीजडी।
चीटल, चीटलौ—स०पु०—सर्प का वच्चा। उ०—नागण जाया चीटला, सीहण जाया साव।—वी स
चीटौ—देखो 'चीठौ' (रू भे)
चीठ—स०स्त्री०—१ मैल २ कजूमी।
चीठणौ, चीठबौ—क्रि०अ०—सटना, चिपकना।
उ०—दारू मस दपट्ट अमल अणमाप अरोगे। चमडपोस रे चीठ भवर मादक सुख भोगे।—ऊ का
चीठणहार, हारौ (हारी), चीठणियौ—वि०।
चीठाडणौ, चीठाडबौ, चीठाणौ, चीठावौ, चीठावणौ, चीठाववौ —क्रि०स०।
चीठिओडौ, चीठियोडौ, चीठ्योडौ—भू०का०कृ०।
चीठीजणौ, चीठीजबौ—भाव वा०।
चीठियोडौ—भू०का०कृ०—सटा हुआ, चिपका हुआ। (स्त्री० चीठियोडी)
चीठी—स०स्त्री०—१ देखो 'चिट्ठी' (रू.भे) २ देखो 'चीठौ' का स्त्री०।
३ कृपण, कजूस।
चीठौ—स०पु०—१ स्निग्ध पदार्थों के कीट जमने से चिकना मैल।
क्रि०प्र०—गाणौ, जमणौ झिलणौ, वधणौ, लागणौ।
२ मजवूती से सटने वाला।
वि०—१ सटा हुआ २ जो आसानी से न फटे व टूटे, गाढा, मजबूत ३ कृपण, कजूस।
रू०भे०—चीडौ, चीटौ, चीं'डौ।

चीडोत्र–स०पु०—चित्तौडगढ (रू भे) उ०—मइ लीधा माळव चदेरी माडव सारगपुर रिणथभोर चीडोत्र भलागढ वळी लीउ नागुर।
—का दे प्र

चीं'डौ—देखो 'चीठौ' (३,४, रू भे)

चीढ—देखो 'चीड' (२, रू भे)

चीण—देखो 'चीण (रू भे)

चीणदार–वि०यौ०—वह जिसके कपडे की पट्टी या फीता लगा हो।

चीणसुय–स०पु० [स० चीनाशुक] चीन देश की बनावट का रेशमी वस्त्र (जैन)

चीणपिट्ठ, चीणविट्ठ–स०पु० [स० चीनपिष्ट] चीन देश मे बुना हुआ एक प्रकार का उत्तम वस्त्र (जैन)

चीणी–स०स्त्री०—१ चीनी, शक्कर। उ०—हात कमाई घाट हरक सू, पतळी गट-गट पीणी। घोर रेत सम चेत घमडी, चोर लियोडी चीणी।—ऊ का

२ लोहा काटने का एक औजार।

रू०भे०—छीणी।

३ एक प्रकार की मिट्टी विशेष जो प्रारभ मे चीन देश मे प्राप्त हुई थी। कही-कही अन्य स्थानो मे भी प्राप्त होती है। इसके तरह-तरह के खिलौने, तश्तरी, प्याले आदि बनाये जाते हैं। इसके बने वर्तनो पर पॉलिश बहुत अच्छी होती है।

यौ०—चीणी मिट्टी।

वि०—चीन देश का, चीन देश सबधी।

चीणी चपौ–स०पु०—१ एक प्रकार का केला, चीनिया केला (उत्तम) २ एक प्रकार का रग विशेष का घोडा।

चीणी माटी, चीणी मिट्टी—देखो 'चीणी' (३)

चिणोटियौ–स०पु० [स० चीन-पट] स्त्रियो के ओढने का एक मूल्यवान वस्त्र।

चीणौ–स०पु०—१ एक प्रकार का रग विशेष २ एक रग विशेष का घोडा (शा हो)

उ०—रोहड भड वकडै, सेल्ह पद्धर कर तोलै। अस चीणौ ओरियौ, रुद्र जाडा घमरोळै।—रा रू

३ सफेद रग का कबूतर ४ एक प्रकार का घटिया दरजे का अनाज जिसका दाना राई के दाने के समान होता है।

५ देखो 'चीणी' (रू भे)

चीत—१ देखो 'चित्त' (रू भे) उ०—१ कसै चाप केम, जती चीत जेम।—र ज प्र

उ०—२ जडियौ तिलक जवाहरा, जाणै दीपक जोत। वालम चीत पतग विधि, हित सूं आसक होत।—र रा

स०पु०—२ चित्र, तस्वीर।

उ०—उपजे कविता आपरी, हसी न उपजै ओर। भीत प्रमाणै चीत व्है, रीत 'प्रताप' निहोर।—जैतदान बारहठ

३ चीता। उ०—नित ऊगा भूलै नही, सिंघा चीत सिकार। न्रिपति 'अभो' तिम नागपुर, भूलै नही लिगार।—रा रू

[स०स्त्री०] ४ स्मृति, याद। उ०—तरै अरडकमल कह्यौ तिका वात हमार क्यू चीत आई ?—नैणसी

५ चिंता। उ०—तण 'अजमाल' हूत डरपती, पतसाहा त्रिय चीत पडी। बुगचा आळमाळ कर बैठी, खडे पाय हुय तडा खडी।
—अभयसिंह री गीत

चीतकार–स०पु० [स० चीत्कार] १ चिल्लाहट, हल्ला २ करुण-क्रदन। [स० चित्रकार] ३ चित्र बनाने वाला, चित्रकार।

चीतगढ–स०पु०—चित्तौडगढ। उ०—१ गढ वीकाण चीतगढ सगपण, 'कलौ' उदैसिध इळ आकास।—द दा

उ०—२ गहै आवटै थाट कुरखेत जिम चीतगढ, रूकमे रीठ रिण हुवै रहियौ।—ईसरदास मेडतिया री गीत

चीतणौ, चीतबौ—देखो 'चीतणौ' (रू भे) उ०—नर री चीती वात हुवै नह, हर री चीती वात हुवै।—ओपौ आढौ

चीतणहार, हारौ (हारी), चीतणियौ—वि०।

चीतिओडौ, चीतियोडौ, चीत्योडौ—भू०का०कृ०।

चीतीजणौ, चीतीजबौ—कर्म वा०।

चीत दुरग–स०पु०—चित्तौड दुर्ग, चित्तौडगढ। उ०—राखै राण बराबरी, आतपत्र उतवग। तै अकबर खड आवियौ, गाजण चीत दुरग।—बा दा

चीतर—देखो 'चीतरौ' (मह० रू भे)

चीतरी–स०स्त्री०—१ समीप-समीप छितरे हुए छोटे-छोटे वादलों के समूह। उ० —दिन ऊगा री चीतरी, सिंझ्या रा गडमेळ। रात्यूं तारा निरमळा, ए काळा रा खेल।—वर्षा विज्ञान

२ मादा वघेरा ३ गूदे हुए आटे के वहुत देर पडे रहने पर उस पर रेखाओयुक्त जमने वाली पपडी।

क्रि०प्र०—आणी।

चीतरौ–स०पु० (स्त्री० चीतरी) नर वघेरा।

चीतळ–स०पु०—१ चीते के रग का एक मृग विशेष जिसके सीग साभर जैसे होते है। इसके शरीर पर सफेद चित्तिया या वुंदिया होती है।
उ०—आतु सू के घमके वाणू की चोट, समळ चीतळ पाठे केते लोटपोट।—सू प्र

२ एक जाति का अजगर।

स०स्त्री०—३ वडा पत्थर, शिला खड ४ एक प्रकार का लकडी का बना उपकरण जिसे फेंक कर खरगोश व तीतर आदि की शिकार की जाती है।

चीतळती–स०स्त्री—चितकबरी बकरी।

चीतवणौ, चीतवबौ–क्रि०स०—१ सोचना, विचारना। उ०—हीवौ माहे सूतौ चीतवै छै। बारै चोर छै।—चौवोली

२ दृढ करना, निश्चय करना। उ०—कीजै नह आज चढे किरणाल, सत्रा रा चीतविया सु पखाळ।—गो रू

३ स्मरण करना।

चीतवणहार, हारौ (हारी), चीतवणियौ —वि०।

चीतवाणौ, चीतवावौ, चीतवावणौ, चीतवावबौ—प्रे०रू०।

चीतविग्रोडौ, चीतवियोडौ, चीतव्योडौ—भू०का०कृ०।

चीतवीजणौ, चीतवीजवौ—कर्म वा०।

चीतवर-स०पु०—योद्धा, वीर, साहसी पुरुष।

चीतवियोडौ-भू०का०कृ०—१ सोचा हुग्रा, विचारा हुग्रा २ निश्चय किया हुग्रा ३ स्मरण किया हुग्रा, याद किया हुग्रा।
(स्त्री० चीतवियोडी)

चीताणौ, चीतावौ—देखो 'चीताणौ' (रू भे)

चीतामेर-स०पु०—चौहान वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति। (बा दा ख्यात)

चीतायोडौ-भू०का०कृ०—१ सोचाया हुग्रा, विचार कराया हुग्रा. २ स्मरण कराया हुग्रा ३ निश्चय कराया हुग्रा।
(स्त्री० चीतायोडी)

चीतारणौ, चीतारबौ—देखो 'चितारणौ' (१, रू भे)
उ०—१ चीतारती चुगतिया, कुभी रोवहियाह। दूरा हूँता तउ पलइ, जऊ न मेल्हहियाह।—ढो मा
उ०—२ ग्रापरा भूपडा ग्राय वसावता ही वैरिया सू वैर चीतारियौ। घर रो वैर भूलौ नही।—वी स टी.

चीतारणहार, हारौ (हारी), चीतारणियौ—वि०।

चीतारिग्रोडौ, चीतारियोडौ, चीतारचोडौ—भू०का०कृ०।

चीतारीजणौ, चीतारीजवौ—कर्म वा०।

चीतारियोडौ—देखो 'चितारियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० चीतारियोडी)

चीतालकी-वि०स्त्री०यौ०—सिंह या चीते के समान पतली कमर वाली।
उ०—१ मारुजी रै रधावू गुदळी खीर, खीर हो, चीतालकी रा ढोलाजी हो, हा रै ग्राई रुत गाणी हो बीकानेर।—लो गी
उ०—२ लागा नयण लतग मझि, काजळ सार गरूर। चीतालकी चतुर रै, वदग्र वरसै नूर।—र रा

चीताळ-स०स्त्री०—कपडे धोने की शिला, बडा पत्थर।

चीति—देखो 'चित' (रू भे) उ०—ढोला ग्रामण दूमणउ, नख ती खूदइ भीति। हम थी कुण छइ ग्रागळी, वसी तुहारइ चीति।—ढो मा

चीतियोडौ—सोचा हुग्रा, विचारा हुग्रा। (स्त्री. चीतियोडी)

चीती-स०पु०—एक सर्प विशेष जिसके विष से प्राणी सड-मड कर मरता है।

चीतेरण-वि०स्त्री०—चित्र बनाने वाली, चित्रकार। उ०—गावा-गावा मे गीतेरण गाती, चित्रण ग्रह चीतेरण चा'ती।—ऊ का

चीतेवाण-स०पु०—शिकार के लिये चीते को शिक्षण देने वाला व्यक्ति, चीते को पालने वाला।

चीतोडौ—देखो 'चितोडौ' (रू भे)

चीतोडौ-स०पु०—देखो 'चितौडौ' (रू भे)
उ०—१ ले वदनेर ग्रजैगढ लीधौ, गढ बावन भागौ गुमर। चित मैं वार वळै चीतोडौ, पावा लागौ जोधपुर।—मयौ वीठू
उ०—२ नर तेथ निमाणा निलजी नारी, ग्रकवर गाहक वट ग्रवट। चोहटै तिण जायर चीतोडौ, वेचै किम रजपूत वट।
—प्रिथ्वीराज राठौड

चीतौ-स०पु० (स्त्री० चीती) १ एक बडा हिंसक पशु जो बिल्ली की जाति का होता है जो ग्रधिकतर दक्षिणी एशिया (विशेषतया भारत) के जगलो मे पाया जाता है २ एक प्रकार का बडा पौधा जिसकी पत्तिया जामुन की पत्तियों से मिलती-जुलती होती है।
वि०—सोचा हुग्रा, विचारा हुग्रा। उ०—मन चीतौ होवै नही, हर चीतौ ततकाळ।—ग्रज्ञात

चीत्तौड—देखो 'चीतौड' (रू भे)

चीत्तौडौ—देखो 'चीतौड' (रू भे)

चीत्र—१ देखो 'चित्र' (रू भे)
२ शरीर, देह ? उ०—धिनो धारणा राज री राजगिर सै घणी, दूसरी भुळावण नकौ दीनी। चारणा वरण री चीत्र हम चालता, करण सिवरण तणी वार कीनी।—हरराज रावळ (जैसलमेर) रौ गीत

चीत्रउड, चीत्रकोट, चीत्रगढ—देखो 'चित्तौड' (रू भे)
उ०—१ चीत्रउड धणी चचळि चडेय, खरहड लेय ग्रायउ खडेय।
—रा ज सी.
उ०—२ राज-कुवर तेडावियौ, पाट पटोळा कुलह कवाई। दीधौ सोनौ सोळमौ, चीत्रकोट दीधौ तिण ढाई।—वी दे
उ०—३ घडक मत चीत्रगढ, जोधहर धीरवै। गज सम्रा दळा करू गजगाह।—जैमल मेडतिया रौ गीत

चीत्रणौ, चीत्रवौ-क्रि० स० [स० चित्र] चित्रित करना, चित्र बनाना।
उ०—छवि नवी नवी नव नवा महोछव, मडियै जिणि ग्राणद मई। कातिग घरि घरि द्वारि कुमारी, थिर चीत्रति चित्राम थई।—वेलि

चीत्रस-स०पु०—एक प्रकार के रग का घोडा।

चीत्रागद—देखो 'चित्रागद' (रू भे)

चीत्राम-स०पु०—देखो 'चित्राम' (रू भे)

चीत्रारौ—देखो 'चित्रारौ' (रू भे.)
उ०—ग्रारभ मे कियौ जेणि उपायो, गावण गुणनिधि हू निगुण। करि कठचीत्र पूतळी निज करि, चीत्रारै लागी चित्रण।—वेलि.

चीत्रोगढ-स०पु०—चित्तौडगढ

चीत्रुडी, चीत्रोड, चीत्रोडि, चीत्रोडी, चीत्रौड, चीत्रौडी—१ देखो 'चित्तौड' (रू भे.) उ०—१ पोळि फूटरी पाटण तणी, चीत्रुडी नइ ढीली तणी।—का.दे प्र
उ०—२ तियै प्रस्तावि राव कल्याणमल री पुत्र पाटरव्यक महाराजाधिराज महाराजा स्री रायसिंघ चीत्रोडि परणीजण पधारिया हुता।—द वि

उ०—३ आगै चीत्रोडि राणा उदैसिंघ राज करै छै तिणरी विस्तार आगै कहीजसी ।—द वि.

उ०—४ डहती पडती खाण भुजाडड, भडा अगड राठौड अभग । अकवर दुरग चालितौ 'ईसर', दीठौ मिग चीत्रौड दुरग ।

—ईसरदास मेडतिया री गीत

उ०—५ विढण सु प्रबि चीत्रौडि 'वीर' उत, वह दळ पीजरिया वाणासि । धुक धक हेक गया धड धरती, अध धडहेक गया अकासि ।

—ईसरदास मेडतिया री गीत

चीथडी–स०स्त्री०—देखो 'चीथडो (अल्पा रू भे)

चीथडौ—देखो 'चीथडो' (रू भे)

चीथणौ—देखो 'चीथणौ' (रू भे)

चीथरी–सं०स्त्री०—दखो 'चीथडो' (अल्पा. रू भे)

चीथाणौ, चीथाबौ–क्रि०स०—देखो 'चीथाणौ' (रू भे)

चीथायोडौ—देखो 'चीथायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चीथायोडी)

चीथावणौ—देखो 'चीथाणौ' (रू भे)

चीथावियोडौ—देखो ''चीथायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चिथावियोडी)

चीथियोडौ—देखो चीथियोडौ' (रू.भे) (स्त्री० चीथियोडी)

चीद—देखो 'चींद' (रू भे)

चीदड—देखो 'चीघड' (रू भे)

चीदडियौ—देखो 'चीघड' (अल्पा रू भे)

चीदळ—देखो 'चीघड' (रू भे)

चीदळियौ—देखो 'चीघड' (अल्पा रू भे)

चीध—देखो 'चीध' (रू भे) उ०—१ विचत्रा रज घर घर विचै, ऊला कीध प्रमाण । वहुरगी चीधा लखी, अवरगी नीसाण ।—रा रू

उ०—२ चीध फरक्कै भडा प्रचडा कोडडा भणक्कै चिला । माळ-रू डा काज सडा खेडिया महेंस ।—जालमसिंह चापावत री गीत

चीधड—देखो 'चीघड' (रू भे)

चीधडियौ—देखो 'चीघड' (अल्पा रू भे)

चीधळ—देखो 'चीघड' (रू भे)

चीधळियौ—देखो 'चीघड' (अल्पा रू भे)

चीन–स०पु०—भारत के उत्तर मे स्थित एक देश जो एशिया महाद्वीप मे दक्षिण पूर्व मे स्थित है ।

चीनणौ, चीनबौ–क्रि०स०—मास को काट कर छोटा करना । मास के टुकडे करना २ पहिचानना, समझना । उ०—ठा ठा ठरडाया सुख दुख कुण सूझै, विपदा बरडाया विपदा कुण वूझै । चिताहर नागर चिंता नह चीनी, करुणासागर भी करुणा नह कीनी ।—ऊ का

चीनणहार, हारौ (हारी), चीनणियौ—वि० ।

चीनवाडणौ, चीनवाडबौ, चीनवाणौ, चीनवाबौ, चीनवावणौ, चीनवावबौ, चीनाडणौ, चीनाडबौ, चीनाणौ, चीनाबौ, चीनावणौ, चीनावबौ—प्रे०रू० ।

चीनिग्रोडौ, चीनियोडौ, चीन्योडौ—भू०का०कृ० ।

चीनीजणौ, चीनीजबौ—कर्म वा० ।

चींनणौ, कींनवौ, चीन्हणौ, चीन्हवौ—रू०भे० ।

चीनवडौ–स०पु०—एक विशेष प्रकार के रग का घोडा ।

चीनार–स०पु०—एक प्रकार का घोडा ।

चीनियोडौ–भू०का०कृ०—१ काटा हुआ, टुकडे टुकडे किया हुआ (मास) २ पहिचाना हुआ । (स्त्री० चीनियोडी)

चीनीफरोस–स०पु०—चीनी मिट्टी के खिलौने वेचने वाला ।

उ०—मैं नाही चीनीफरोस मैं हफतहजारी ।—सू प्र

चीन्हणौ, चीन्हवौ—देखो 'चीनणौ' (रू भे)

उ०—१ हरि सव माहि सकळ हरि माही, ता साहिव कू चीन्है नाही ।—ह पु वा

उ०—२ द्वादसी सुकरवार तभी यह पूरण कीन्हौ, पुस्तग सत वैराग मुक्ति का मारग चीन्हौ ।—रामस्वरूप स्वामी

चीन्हियोडौ—देखो 'चीनियोडौ' (रू भे) (स्त्री० चीन्हियोडी)

चीप–स०स्त्री०—१ ऊँट के चमडे का या धातु का वना बडा पात्र जो प्राय तेल या घी रखने के काम आता है ।

२ ढोल या डफ के वजते समय लय मिलाने के लिये लगाये जाने वाले डडे के अतिरिक्त दो पतली व लचकीली छडिया ३ डफ बजाते समय बजाने के डडे के अतिरिक्त लगभग छ इन्च लम्बी लचीली पतली किसी पेड की टहनी अथवा मोरपख का डठल जो लय मिलाने के लिये डफ के साथ हाथ से इस प्रकार सटा देते है कि अगुली से पीटने पर वह डफ पर लगती है ४ वडे पत्थर आदि को दीवार मे चुनते समय वरावर जमाने के लिये पत्थर के नीचे रही खोखली जगह पर लगाया जाने वाला छोटा, पतला व चपटा पत्थर या इस प्रकार के उपयोग में आने वाली कोई अन्य वस्तु ५ सधिस्थान मे लगाने का पत्थर ।

मुहा०—चीप लगाणी—किसी स्थान मे जोड लगाना, खाली स्थान की पूर्ति के लिये पत्थर के छोटे टुकडे को रखना । डफ की लय मिलाना ।

चीपड, चीपडौ—देखो 'चीपडौ' (रू भे)

चीपटी–स०स्त्री—१ देखो 'चीपटौ' (अल्पा रू भे)

२ छोटा चिमटा ।

चीपटौ–स०पु०—१ ज्वार के पौधो को काट कर इकट्ठा किया हुआ घास.

२ देखो 'चीमटौ' (रू भे.)

३ देखो 'चीप' (अल्पा रू भे)

चीपडीज–स०पु० [स० चिपट] आँख का मैल, चीपड (उ र.)

चीपनी–स० स्त्री०—देखो 'सीपनी' (रू भे)

चीपलौ–वि०—देखो 'चीपड' (रू भे)

चीपिडउ–स०पु० [स० चिपिट] चपटी नाक वाला ।

चीपी–स०स्त्री०—दूध दुहने का पात्र । उ०—जगलो में चरै छी सो अव्याई भोटी आई । 'मोकळ' का वना सू 'सेख' चीपी मे दुहाई ।

—शि वं.

चीफ-स०पु० [अं०] बडा सरदार या राजा।
वि०—प्रमुख, मुख्य, प्रधान।

चीफ कमिस्नर-स०पु०यौ० [अं० चीफ कमिश्नर] १ किसी डिविजन का प्रधान अधिकारी. २ किसी कार्य करने के सम्बन्ध मे प्रधान अधिकारी।

चीफ कोरट-स०पु०यौ० [अं० चीफ कोर्ट] प्रधान न्यायालय।

चीफ जज-स०पु०यौ० [अं०] प्रधान न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश।

चीफ जसटिस-स०पु०यौ० [अं० चीफ जस्टिस] उच्च न्यायालय का प्रमुख न्यायाधीश।

चीफाड-स०पु [स० चित्तस्फोटक] चित्तस्फोटक।

चीब-स०स्त्री०—आदत, टेव, स्वभाव। उ०—इतरा मे वादसाह रै घोडो एक ऐराक सू आयो। वडो आछो घोडो " ' वादसाह ती घोडा नू देख खुस हुवो पण जद चाबुकसवार चारजामो कर फेरै जद तो आछो फिरै और जिण वगत तग खाचै उण वखत घोडो बैठ जावै सो वादसाह सारा नू दिखायो पण घोडै री खोड चीव छूटै नही, सारा खस रह्या।—दूलची जोइये री वारता

चीवडी-स०स्त्री० [स० चिर्भटी] १ ककडी. २ सूअर का मादा बच्चा। (पु० चीवडो)

चीवडो—देखो 'चीवडी' (स्त्री)

चीवटो, चीवठो—देखो 'चीपटो' (रू भे)
रू०भे०—चीवटी, चीवठी।

चीवरी-स०स्त्री०—१ उल्लू की जाति का एक पक्षी विशेष जो आकार मे कबूतर से छोटा होता है। यह प्राय. रात्रि मे ही वोलता है जिसके आधार पर शकुन लिये जाते है।

चीवी-स०स्त्री०—१ ऊट के बच्चे के दौडने, उछलने या खेलने आदि का काय २ मादा ऊट का मस्ती मे होने का भाव या ऐसे समय मे दौडने आदि की क्रिया ३ चौहान वश की एक शाखा।

चीवरो-स०पु०—मुसलमान।

चीवो-स०पु०—१ चौहान वश की 'चीवी' शाखा का व्यक्ति।
२ मुसलमान, यवन। उ०—भयाणक चीवा जिकै रोम भूरा, पखै पार बीबा हिलै थाट पूरा।—वचनिका
रू०भे०—चीवरो।

चीभडवाळ-स०स्त्री०यौ०—वह मादा सूअर जिसके बहुत से बच्चे हो। उ०—विचो थट भूडण चीभडवाळ, दयै नह तोडण कोट डाढ़ाळ। —पा प्र

चीभडियो—देखो 'चिरभट' (अल्पा रू भे)

चीभडी-स०स्त्री० [स० चीर्भिटी] ककडी।

चीभडो-स०पु०—१ देखो 'चिरभट' (रू भे)
२ (स्त्री० चीभडी) सूअर या सूअर का बच्चा।
उ०—चेवह वाटी चीभडा, एकल दाअडियाळ। कांना सुण 'बूडै' कमद, चाटकाया चचाळ।—पा प्र
रू०भे०—चीवडो, चीमडो।

चीमड-स०स्त्री०—एक देवी का नाम। उ०—ईंदावाटी मे धूतावर गाव चीमड विराजै, खाडो देवळ वडो देवळ है।—वा दा. ख्यात

चीमटियो, चीमडो—देखो 'चीमटो' (रू.भे)

चीमटो-स०पु०—१ लकडी या धातु की दो लचीली पट्टियों को जोड कर बनाया जाने वाला एक उपकरण जिससे प्राय. वे वस्तुएँ पकड कर उठाते हैं जहां हाथो का प्रयोग नही किया जा सकता।
रू०भे०—चिमटो, चीपटो, चीमटो, चीपटो।
२ उन्मत्त हाथी को वश मे करने के लिए उसके अगले पैर मे तेज जकड के साथ डाला जाने वाला लोहे का एक उपकरण जिसका अगला भाग हाथी के पैर की मोटाई के बराबर गोलाकार रूप मे दो भागो मे होता है। इस गोलाई मे छड के साथ लोहे के नुकीने छोटे-छोटे भाले लगे रहते है। इस उपकरण मे पीछे की ओर लगी कमानी को दवाने से यह गोलाकार भाग खुल जाता है और पैर मे डाल कर छोडते ही पैर को जकड लेता है और उसमे लगे छोटे छोटे भाले पैर मे घुस जाते हैं।

चीये-स०स्त्री०—एक देवी का नाम।

चीर-स०पु०—१ स्त्रियो के ओढने का वस्त्र, ओढनी।
उ०—वाणासुर छेद भुजा वळवत, कीधो वोह चीर लिछम्मीवत। —ह र
२ वस्त्र, कपडा (अ मा) ३ पुराने कपडे का टुकडा, चिथडा, लत्ता ४ गाय का थन ५ गुग्गल का पेड ६ चीरने की क्रिया या भाव
यौ०—चीर-फाड।
७ वृक्ष की छाल।

चीरड—देखो 'चीरडो' (महा रू भे)

चीरडी-स०स्त्री०—देखो 'चीथडो' (अल्पा. रू भे)

चीरडो—देखो 'चीथडो' (रू भे)
उ०—सैंती सैंती पीड ताधो लपेट लकडी लीरडा। तीजै दिन वन पयान करै, त्याग हुवाई चीरडा।—दसदेव
मुहा०—१ चीरडा चावणा—उन्माद मे होना, पागल होना। २ चीरडा चुगणा—निर्धन होना, कगाल होना, गिरी हुई अवस्था को प्राप्त होना।

चीरणी-स०स्त्री०—१ एक औजार जो लकडी की बनी वस्तुओ (यथा-कपाट आदि) की सुदरता वढाने के काम मे लिया जाता है २ पत्थर पर खुदाई करने का औजार ३ लोहा काटने का औजार, छेनी।

चीरणो, चीरबो-क्रि०स० [स० चर्तन या चीर्ण] किसी वस्तु या पदार्थ को सीधा फाडना या काटना, विदीर्ण करना।
चीरणहार, हारो (हारी), चीरणियो—वि०।
चीरवाडणो, चीरवाडवो, चीरवाणो, चीरवावो, चीरवावणो, चीरवावबो, चीराडणो, चीराडवो, चीराणो, चीरावो, चीरावणो, चीराववो—प्रे०रू०।
चीरिओडो, चीरियोडो, चीरचोड़ो—भू०का०कृ०।
चीरीजणो, चीरीजवो—कर्म वा०।

यौ०—चीरणी-फाडणी।
(चिरणी—अक० रू०)
चीरफाड—स०स्त्री०यौ०—१ चीरने का फाडने या कार्य वा भाव २ नश्तर से घाव आदि चीरने का कार्य।
चीरतल—स०पु० [स०] पक्षी विशेष (जैन)
चीराई—स०स्त्री०—चीरने का कार्य या इस कार्य की मजदूरी।
चीरागुर, चीरागुरु—स०पु०यौ०—नाथ सप्रदाय का वह व्यक्ति जो इस सप्रदाय मे किसी को दीक्षित करते समय कान मे छेद करता है या कान चीर कर उसमे मुद्रा पहिनाता है।
चीराजिण स०पु० [स० चीराजिन] व्याघ्र और मृग चर्म (जैन)
चीराणौ, चीरावौ—क्रि०स० ('चीरणौ' का प्रे०रू०)—चीरने का काय अन्य से कराना।
चीराणहार, हारौ (हारी), चीराणियौ—वि०।
चीरायोडौ—भू०का०कृ०।
चीराईजणौ, चीराईजवौ—कर्म वा०।
चीरायतौ—देखो 'चिरायतौ' (रू भे)
चीरायुस—देवता (डि को)
वि०—दीर्घायु, चिरायु।
चीरायोडौ—भू०का०कृ०—चीरने का कार्य कराया हुआ।
(स्त्री० चीरायोडी)
चीराळी—स०स्त्री० [स० चर्तल] १ किसी पदार्थ या फल आदि का चीरा हुआ भाग, खड, फाक. २ लम्बा घाव, क्षत।
चीरावणौ, चीराववौ—देखो 'चीराणौ' (रू भे)
चीरावणहार, हारौ (हारी), चीरावणियौ—वि०।
चीराविओडौ, चीरावियोडौ, चीराव्योडौ—भू०का०कृ०।
चीरावीजणौ, चीरावीजवौ—कर्म वा०।
चीरातियोडौ—देखो 'चीरागोडौ' (रू भे) (स्त्री० चीरावियोडी)
चीरिग, चिरिय—स०पु० [स० चीरिक] १ एक जैनी भिक्षु वर्ग. २ फटे हुए कपडे पहनने वाला साधु (जैन)
चीरियोडौ—भू०का०कृ०—१ चीरा हुआ, फाडा हुआ २ नश्तर लगाया हुआ। (स्त्री० चीरियोडी)
चीरी—स०स्त्री० [स० चृ=छेदने] १ फल या किसी पदार्थ आदि का चीरा हुआ भाग, खड, फाक २ लम्बा घाव, क्षत. ३ झीगुर ४ मृत्यु-भोज की चिट्ठी (मेवाड) ५ पत्र, चिट्ठी। उ०—पच सहेली मिळी घन साथ, चीरी म्हेली घन अपणइ हाथ।—वी दे
[स० चीरि] ६ पर्दा। उ०—जन हरिदास या जीव कै, दुख सुख चाले साथि। अब या चीरी क्यू मिटै, ता दिन आई हाथि।
—ह पु वा
चीरौ—स०पु०—१ किसी द्वार के चौखटे के ऊपरी डडे के ऊपर बाहर की ओर लगाया जाने वाला चित्रित पत्थर २ मकान बनते समय दीवार के बाहर छोडी गई चार इच की जगह ३ नश्तर आदि से चीर कर बनाया हुआ क्षत या घाव ४ एक प्रकार का लगान जो जागीरदार कृषक वर्ग से लेता था ५ चीरने की क्रिया या भाव ६ पगडी, उष्णीष। उ०—१ कसवी चीरा पै बाधू तेरे, पहिरण चोळा मोहन मेरे।—स कु
उ०—२ चमकै रतन पेच चीरां रा। हार मुकत भूखण हीरा रा।
—सू प्र
७ टुकडा, खण्ड, धज्जी। उ०—ताहरा पाघडी आपरी उतारि अर चीरा वि किया।—द वि.
अल्पा०—चीरी।
चील—स०स्त्री० [स० चिल्ल] गिद्ध या बाज की जाति की एक बडी चिडिया। यह मासभक्षी होती है। झपट्टा मार कर शिकार करना या खाद्य पदार्थ प्राप्त करना इसकी विशेषता है।
पर्याय०—आतापी, कावळी, चील, समळी, सावळी, सुनखी।
स०पु०—२ चौहान वश की एक शाखा का या इस शाखा का व्यक्ति. ३ सर्प। उ०—चीला गण न तजै द्रुम चदण, माछा गण न तजै महण।—रिवदान महडू
यौ०—चीलपत, चीलपति चीलप्यार, चीलराज, चीला-राव।
४ शेषनाग। उ०—मचक्कै फुणाटा चील लचक्कै कमट्ठी मौर, बोम ढकै उडै खेहा रुकै धीर वाट। अजादा ददेस मुक्कै भैचके भवेस मीट, तणौ धूनरेस हकै हैजमा तुराट।—हुकमीचद खिडियौ
५ गेहूँ की फसल मे उगने वाला घास का एक पौधा जिसका शाक बनाया जाता है ६ मार्ग, रास्ता।
चीलक, चीलख—देखो 'चील' (१) उ०—१ हडोई ऊपर चील का कागला झडाफड करनै रह्या छै।—रा सा स.
उ०—२ लहरचौ सुकायौ सामै वाड पर जी, कोई चीलख झपटा लेवै जी, क लहरचौ लै दौ जी।—लो गी
चीलडी—स०स्त्री०—देखो 'चील' (१) (अल्पा रू भे)
चीलडौ—स०पु० [स० चिल्लीशाकम्] १ गेहूँ की फसल मे होने वाला एक पौधा जिसकी पत्तियो का लोग शाक बनाते हैं।
रू०भे०—चीला।
२ चने, मौठ के आटे या पिसी दाल के घोल को तवे पर छितरा कर घी या तेल मे सिका कर बनाई हुई नमकीन या मीठी रोटी या खाद्य पदार्थ।
चीलपत, चीलपति—स०पु०यौ०—शेषनाग (मि० 'चीळ' ३, ४)
चीलप्यार—स०पु०यौ०—(सर्प का प्यारा) चदन वृक्ष (ह ना)
चीलमण—स०पु०यौ०—सर्प मणि।
उ०—चाळक रा गज चीलमण, निज कर माहि लियत। मोताहळ-मय कुभ रै, ऊपर वार दियत।—बा दा
चीलम्मौ—देखो 'चिलमियौ' (रू भे) उ०—चीलम्मा मैल टिकडी चतुराई, भली भात दासी भर लाई।—अज्ञात
चीलर—सं०पु०—१ रेजगारी, छुट्टे सिक्के २ छिछले पानी का पोखर।

अल्पा०—चीलरियौ।

चीलराज-स०पु०यौ०—शेष नाग।

चीलरियौ—देखो 'चीलर' (अल्पा रू भे) उ०—चिळक सोनै रा चीलरिया, वधगी वा रूपाळी पाळ। कूपली किणरी डुळियौ आज ? गुदळती घणा असमानी ढाल।—साझ

चीलवौ—एक प्रकार का पत्तीदार शाक विशेष (अमरत)

रू०भे०—चील, चीलडौ।

चीलार-स०पु०यौ०—१ देवता।

[रा० चिल्ल+स० अरि] २ गरुड। उ०—जटी जोग पारावारा धावा सुअ्रतटी जेम, गैणवटा तावा ऊच सुभावा गोव्द। चीलार पुरद्र चावा च्यद्र ज्यु, नखत्र चावा नरा लोक दावा सरै 'किसनेस' री वद।—हुकमीचद खिडियौ

चीलू—देखो 'चिल्लौ' (रू भे) उ०—लोद्रा चीलू आध, भागी सोह कोई भर्ण सोभडा सग सात मै, वावा तोरण वाघ।—नैणसी

चीलौ, चील्लौ—देखो 'चहलौ' (रू भे)

चील्ह, चील्हणि—१ देखो 'चील' (रू भे) उ०—१ भड सो ही पहला पडे, चील्ह विळग्गा चेक। नैण वचावै नाह रा, आप कळेजो फेंक।

—वी स

उ०—२ गई चढि चील्हणि गीधणि गैण, नसौ करि वैल चढचौ अण नैण।—मे म

२ देखो 'चीलडौ' (१, रू भे)

चील्हर-स०पु०—धूकरी का वच्चा, सूअर का वच्चा।

उ०—महीना पूरा हुआ जद चील्हर पाच जाया।

—डाढाळा सूर री वात

चील्हाराव-स०पु०यौ०—शेप नाग (मि० 'चील' ३,४)

चील्हौ—देखो 'चीलौ' (रू भे) उ०—कहियौ वय थारौ कढे, सम म्हारौ तदि सूर। कुळ चील्हा ऊजळ करौ, जार्णा मरण जरूर।

—व भा

चीवणी-स०स्त्री०—किवाडो की खूवसूरती के लिये उन पर लगाई जाने वाली एक प्रकार की किनारी।

चीवर-स०पु०—कपडा, वस्त्र (जैन)

चीवा-स०स्त्री०—चौहान वश की शाखा। रू०भे०—चीवा।

चीस-स०स्त्री०—१ रह-रह कर चलने वाली कसक, पीडा, वेदना, शूल, दर्द २ चिल्लाहट।

क्रि०प्र०—ऊठणी, चालणी।

चीसणौ, चीसबौ-क्रि०अ०—१ पीडा से कराहना २ चीत्कार करना, चीखना ३ सिसकना। उ०—चीसै नाग चमू जोम हुए तोम चकाचूघ, धमे कोम भमै गोम पडै सार घोम। विग्रहतौ देख महा असोम सग्राम वोलै, वाह-वाह अहो सूर गिरवाण वोम।

—हुकमीचद खिडियौ

चीसणहार, हारौ (हारी), चीसणियौ—वि०।

चीसाणौ, चीसाबौ, चीसावणौ, चीसावबौ—क्रि०स०।

चीसिओडौ, चीसियोडौ, चीस्योडौ—भू०का०कृ०।

चीसीजणौ, चीसीजबौ—भाव वा०।

चीसळी, चीसाळी—देखो 'चीस' (रू भे) उ०—अोझक ऐळी मे आवेस अळूझै, सीळी रेळी मे चीसळिया सूझै।—ऊ का

चीह-स०स्त्री० १ करुण क्रदन। उ०—ढोला पडसी धीह, करळा ग्वाळा कूकता। चारणिया चीह, स्रवणा हूँ कदे न सुणू।

—पा प्र

२ टीस, कसक, चीस।

चीहलौ—देखो 'चीलौ' (रू भे) उ०—मरुधर ढूढाड आहाड माळवौ, राजा हीदवसथान रहै। चापावता घातीया चीहला, वळ जा चीहला कमण वहै।—दुरसौ आढौ

चीहोर-स०पु०—एक विशेष प्रकार के रग का घोडा (शा हो)

चु—देखो 'चू' (रू भे)

चुगळ-स०पु० [फा० चगाल] हाथ द्वारा किसी वस्तु को उठाते या पकडते समय मनुष्य के हाथ के पजे की होने वाली स्थिति।

मुहा०—१ चुगळ मे आणौ—कावू मे आना, किसी के पजे मे फँसना। २ चुगळ मे फसणौ—वश मे आना, पकड मे आना।

चुगलाळ-स०पु०—मुसलमान, यवन। उ०—चुगलाळा करि चौड, गिरधारी गाहै गजा। चढियौ खग धारा चढै, रभ-रथा राठौड।

—वचनिका

चुगाणौ, चुगाबौ-क्रि०स०—१ चुसाना २ स्तन-पान कराना।

चुगाणहार, हारौ (हारी), चुगाणियौ—वि०।

चुगावणौ, चुगावबौ—क्रि०स० (रू०भे०)

चुगायोडौ—भू०का०कृ०।

चुगाईजणौ, चुगाईजबौ कर्म वा०।

चुगायोडौ-भू०का०कृ०—१ स्तन-पान कराया हुआ. २ चुसाया हुआ। (स्त्री० चुगायोडी)

चुगावणौ, चुगावबौ—देखो 'चुगाणौ' (रू भे)

चुगावणहार, हारौ (हारी), चुगावणियौ—वि०।

चुगाविओडौ, चुगावियोडौ, चुगाव्योडौ—भू०का०कृ०।

चुगावीजणौ, चुगावीजबौ—कर्म वा०।

चुगावियोडौ—देखो 'चुगायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चुगावियोडी)

चुगी-स०स्त्री०—१ किसी शहर के भीतर आने वाले माल पर लगने वाला महसूल, आयातकर २ देखो 'चूगी' (रू भे)

चुघाडणौ, चुघाडबौ—देखो 'चुगाणौ' (रू भे)

चुघाडियोडौ—देखो 'चुगायोडौ (रू भे.) (स्त्री० चुघाडियोडी)

चुघाणौ, चुघाबौ—देखो 'चुगाणौ' (रू भे)

चुघायोडौ—देखो 'चुगायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चुघायोडी)

चुघावणौ, चुघावबौ—देखो 'चुगाणौ' (रू भे) उ०—मेरा वाछा रमे छै गो-ठाण, कुण चुघावै वावल तेरी धीय विना, तेरी भाभ्या चुघासी तेरा वाछडा।—लो गी

चुघावियोडौ—देखो 'चुगायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चुघावियोडी)

चुनडी—देखो 'चूनडी' (रू भे) उ०—ऊभी थी घर आगणे, सज्जरण साभरीयाह । चारे पोहरे चुनडी, रोई रोई भीजवियाह ।—ढो मा

चुबक-स०पु०—१ चुबन करने वाला व्यक्ति २ धूर्त व्यक्ति ३ एक प्रकार का पत्थर या धातु जो लोहे को अपनी ओर आकर्षित करता है।

चुबणौ, चुबबौ—देखो 'चूवरणौ' (रू भे)

चुबन-स०पु० [स०] प्रेमातिरेक या काम के आवेग मे होठो से किसी के गाल आदि अगो को छूने या दबाने की क्रिया, चुम्मा, बोसा ।

चुबित-वि० [स०] १ चूमा हुआ २ स्पर्श किया हुआ, छुआ हुआ । उ०—दाडिमी बीज विसतरिया दीसै, निउछावरि नाखिया नग । चरणे लुचित खग फळ चुबित, मधु मुँचति सीचति मग ।—वेलि

चुबी-वि० [स०] चूमने वाला।

चुबी—देखो 'चुवन' (मह रू भे)

चुभी-स०स्त्री० (अनु०—चुभ-चुभ) पानी मे पैठने की क्रिया, डुबकी, गोता, चुमकी । उ०—बडो तळाव रौ पाणी छै । कुवर तळाव माहे चुभी मारै छै सो पूठो नीसरियौ नही ।—पलक दरियाव री बात

चुवळौ-स०पु०—चवला नामक अनाज, चौरा, लोबिया ।
उ०—सू मूग किण भात रा छै ? मगरै रा नीपना, भरत रै खेत रा, हरियै रग रा, चुवळा जेवडा, इण भात रा मूग हाथा सू रळकायजै छै ।—रा सा स

चुहटी-स०स्त्री०— चुटकी, चिमटी ।

चु-स०स्त्री०—१ पृथ्वी २ शरद ।
पु०—३ काल ४ वज्र ५ उपधान (एका)

चुअणौ, चुअबौ-क्रि०अ० [स० चुड् = च्यवन] १ बूद-बूद गिरना, चूना, टपकना. २ रसमय होना ।
चुअणहार, हारौ (हारी), चुअणियौ—वि० ।
चुआणौ, चुआबौ, चुआवणौ, चुआववौ—क्रि स० ।
चुइओडौ, चुइयोडौ—भू०का०कृ० ।
चुईजणौ, चुईजबौ—भाव वा० ।

चुआई-स०स्त्री०—१ बूद-बूद कर टपकाने की क्रिया २ रसमय करने की क्रिया ।

चुआणौ, चुआबौ-क्रि०स०—१ चुआना, बूद-बूद टपकाना . २ रसमय करना, रसीला करना ।

चुआयोडौ-भू०का०कृ०—१ बूद-बूद कर टपकाया हुआ २ रसीला बनाया हुआ । (स्त्री० चुआयोडी)

चुआवणौ, चुआववौ-देखो 'चुआणौ' (रू भे)
चुआवणहार, हारौ (हारी), चुआवणियौ—वि० ।
चुआविओडौ, चुआवियोडौ, चुआव्योडौ—भू०का०कृ० ।
चुआवीजणौ, चुआवीजबौ—कर्म वा० ।
चुअणौ, चुअबौ—अक० रू० ।

चुआवियोडौ—देखो 'चुआयोडौ' (रू भे.) (स्त्री० चुआवियोडी)

चुइणौ, चुइबौ—देखो 'चुअणौ' (रू भे) उ०—ताह कौ जु रस चुइ पडै छै सोई मानौं छिडकाव होइ छै । मारग छाटिजै छै ।—वेलि.टी

चुई-स०स्त्री०—कपडे बुनने का एक औजार ।

चुकदर-स०पु० [फा०] तरकारी बनाने के काम आने वाली गहरे लाल रग की गाजर या शलगम की तरह की एक जड ।

चुकणौ, चुकबौ-क्रि०अ० [स० च्युत्क, प्रा० चुक्कि] १ समाप्त होना, खतम होना, बाकी न रहना २ अदा होना, चुकता होना ३ देखो 'चूकणौ' (रू भे.)
चुकणहार, हारौ (हारी), चुकणियौ—वि० ।
चुकवाडणौ, चुकवाडबौ, चुकवाणौ, चुकवाबौ, चुकवावणौ, चुकवावबौ —प्रे०रू० ।
चुकाडणौ, चुकाडबौ, चुकाणौ, चुकाबौ, चुकावणौ, चुकाववौ —क्रि०स० ।
चुकिओडौ, चुकियोडौ, चुक्योडौ—भू०का०कृ० ।
चुकीजणौ, चुकीजबौ—भाव वा० ।

चुकमार—देखो 'चूकमार' (रू भे) उ०—तुपक्कनि तोप जमूर जुलाळ, परघ्घन सूळ गदा भिंदिपाळ । गुपत्तिय खजर धूप कटार, करत्तिय चक्र चलै चुकमार ।—ला रा

चुकळणौ, चुकळबौ-क्रि०अ०—बदहवास होना, घबराना ।

चुकळीजणौ, चुकळीजबौ—भाव वा० ।

चुकळाणौ, चुकळाबौ-क्रि०स०—१ बदहवास करना. २ भुलाना, भ्रमित करना ।

चुकलियौ-स०पु०—मिट्टी का छोटा जल-पात्र । उ०—आज ई तन मन सू उण काम मे लाग्योडो चुकलिया सू लोटियौ भर नै ल्यावै अर बाजरी रै गोड मे उधाय दै ।—रातवासौ
मुहा०—चुकलिया ढोळणा—किसी मृत व्यक्ति के पीछे द्वादशे के दिन मृतभोज आरम्भ करने के पूव छोटे-छोटे जल-पात्रों को जो गिनती मे बारह होते हैं, भर कर उलटने की प्रथा (हिन्दू) । किसी व्यक्ति को दी जाने वाली एक गाली जिसमे उसकी मृत्यु की कामना निहित होती है ।

चुकली-स०स्त्री०—१ मिट्टी का बना जल का छोटा पात्र २ मृत व्यक्ति के पीछे द्वादशे के दिन किया जाने वाला सामूहिक भोज, मृत्यु भोज ३ मृत्योपरात मृतक के निमित्त द्वादशे के दिन मिट्टी के छोटे-छोटे बारह जल पात्रों को भर कर के तर्पण हेतु उलटने की प्रथा (हिन्दू)

चुकळीजणौ, चुकळीजबौ-क्रि०अ० ('चुकळणौ' क्रिया का भाव वा०) घबरा जाना, बदहवास होना ।

चुकल्यौ—देखो 'चुकलियौ' (रू भे) उ०—वीरा ओ, आई आई मनडा मे रीस, ले चुकल्यौ सरवर साचरी—लो गी

चुकाई-स०स्त्री०—चुकने या चुकता करने की क्रिया या भाव ।

चुकाणो, चुकावो–क्रि०अ०—१ बेवाक करना, अदा करना २ निबटाना. ३ प्राप्त करने मे असफल करना, लक्ष्य भ्रष्ट करना।
४ भ्रम मे डालना, भुलाना। उ०—हिवै तिण समै पातिसाह स्री अकबर अजमेर पधारिया छै। मुहतै करमचद राजि नू मसलत हुता चुकाइ अर सिवाणै हुता राजाजी नू कहियौ जु राजि पातिसाह रै पाए अजमेर पधारौ।—द.वि
चुकाणहार, हारौ (हारी), चुकाणियौ—वि०।
चुकाड़णौ, चुकाड़बौ, चुकावणौ, चुकाववौ—रू०भे०।
चुकायोड़ौ—भू०का०कृ०।
चुकाईजणौ, चुकाईजबौ—कर्म वा०।
चुकणौ, चुकबौ—अक० रू०।

चुकायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ बेवाक किया हुआ, अदा किया हुआ २ निबटाया हुआ. ३ लक्ष्य-भ्रष्ट किया हुआ ४ भुलाया हुआ। (स्त्री० चुकायोड़ी)

चुकावणो, चुकाववो—देखो 'चुकाणो' (रू भे) उ०—कता मती चुकावज्यो तीजा तण्या तिवार।—लो गी.
चुकावणहार, हारौ (हारी), चुकावणियौ—वि०।
चुकाविश्रोड़ौ, चुकावियोड़ौ, चुकाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
चुकावीजणौ, चुकावीजबौ—कर्म वा०।
चुकणौ, चुकबौ—अक० रू०।

चुकावियोड़ौ—देखो 'चुकायोड़ौ' (रू भे) (स्त्री० चुकावियोड़ी)

चुकियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ बेबाक, चुका हुआ २ निवटा हुआ ३ लक्ष्यभ्रष्ट ४ भ्रमित। (स्त्री० चुकियोड़ी)

चुकुमार—देखो 'चूकमार' (रू भे) उ०—चुकुमार धनुस तुन्नीर सर, सार टोप पक्खर भिलम। करि मित्र भाव हनुमत कौं, वैर छडि भेजे किलम।—ला.रा

चुक्खड—देखो 'चुगडौ' (मह० रू भे)

चुख–स०पु०—खड, टुकडा। उ०—घण लोह वाहि भेलू घणा, वप चुखचुख हो रभ वरू। काय होय सिभजीवत कळह, कर मरण मुजरो करू।—सू प्र

चुखटौ–वि०—कृपण, कजूस।
मह०—चुक्खड।

चुखचुख, चुखचुक्ख, चुखच्चुख—१ देखो 'चुख' (रू भे) २ खड-खड, टुकडे-टुकडे।
उ०—१ घण वाहि भेलै घणी, 'किसनेस' किरम्मर। चुखचुख हुय पडियो 'अचल', 'उदल' सुत अद्दुर।—सू प्र
उ०—२ चुखचुख हुश्रो धार अणिया चढ वणियौ क्रीत न जाय वर। केलपुरा वाळै मिर कारण, कीधा सभू हजार कर।—महादान महडू
उ०—३ वहे मग सावळ धार विहार। वढै चुखचुक्ख हुवो जिण वार।—सू प्र
उ०—४ वजै रव डैरव बीस वतीस, उचै रव फेरव देत असीस। चटी द्रहवाट करै चतुरग, उडै खग भाट चुखच्चुख अग।—मे म.
उ०—५ जुडै इम सावळ व्याकुळ जीव, हुवा अवतार घणा हयग्रीव। करै चुखच्चुख घणा मुगळाण, पोथी जिम मदिर वेद पुराण।—सू प्र

चुग–स०पु०—१ पक्षियो को दिया जाने वाला चुग्गा. २ आहार, भोजन। उ०—चुग नहि मिळै पळचार सचीता, चखण काज लभै नह चारौ। 'धीर' गयौ यर थाट थकावण, हाल गयौ दळ मेळणहारौ।—सुसजी खिडियौ

चुगणौ, चुगवौ–क्रि०स० [स० चयन] १ पक्षियो का अपनी चोच से दाना उठा कर खाना, दाना बीनना। उ०—१ चुगइ चितारइ भी चुगइ, चुगि-चुगि चितारेह। कुरझी बच्चा मेल्हिकइ, दूरि थका पाळेह।—ढो मा उ०—२ मारमडी मोती चुगै, चुगै त कुरळै काय। सुगुण पियारा जे मिळै, मिळै त विछडै काय।—र रा
२ चुनना, बीनना। उ०—सो वटका-वटका न्यारा सा चुग भेळा कर श्रोठिया लिया।—सूरे खीवे री वात
३ पशुश्रो का चारा खाना। उ०—करहउ कूडइ मनि थकइ, पग राखीयउ जाण। ऊकरडी डोका चुगइ, अपस डमायउ आण।—ढो.मा
चुगणहार, हारौ (हारी), चुगणियौ—वि०।
चुगवाडणौ, चुगवाडबौ, चुगवाणौ, चुगवावौ, चुगवावणौ, चुगवाववौ—प्रे०रू०।
चुगाडणौ, चुगाडबौ, चुगाणौ, चुगावौ, चुगावणौ, चुगाववौ—क्रि०स०।
चुगिश्रोड़ौ, चुगियोड़ौ, चुग्योड़ौ—भू०का०कृ०।
चुगीजणौ, चुगीजबौ—कर्म वा०।

चुगद–स०पु० [फा०] मूर्ख, वेवकूफ।

चुगल–स०पु० [फा०] वह ककड जिसे चिलम के छेद पर रख कर तम्बाकू भरते हैं। गिट्टी। उ०—करै न चुगली चाकरी, चुगल दिराणी नाम। विखम अगारा चिलम विच, जळै तेण अठ जाम।—बा दा
२ मुसलमान ३ पीठ पीछे निंदा करने वाला व्यक्ति, इधर की उधर लगाने वाला।
कहा०—चुगल को चूकै नी, श्रोर सगळा चूकै है—निंदा करने वाला व्यक्ति अपने कार्य से कभी नही चूकता। अन्य भले ही अपना कार्य न कर सकें परन्तु चुगली करने वाला व्यक्ति निंदा किये विना नही रह सकता। चुगलखोर की निंदा।
यौ०—चुगलखोर।

चुगलखोर–वि०यौ० [फा०] परोक्ष मे निंदा करने वाला, पीठ पीछे किसी की निन्दा करने वाला।
पर्याय०—करणेजप, खळ, दोयजीह, पिसुन, मच्छरिन, सूचक।

चुगलखोरी–स०स्त्री०यौ० [फा०] पीठ पीछे निन्दा करने का कार्य, चुगली खाने का कार्य।

चुगळणौ, चुगळबौ–क्रि०स०ग्र०—१ चूसना २ स्वाद लेने के लिये किसी वस्तु को मुह मे इधर-उधर डुलाना, घुमाना ३ किसी के टोकने या बाधा डालने के कारण क्रम भग होने पर बदहवास होना, चूकना ।

चुगळणहार, हारौ (हारी), चुगळणियौ—वि० ।

चुगळिग्रोडौ, चुगळियोडौ, चुगळ्योडौ—भू०का०कृ० ।

चुगळीजणौ, चुगळीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

चुगलाळ, चुगलाळौ–स०पु०—१ चुगली करने वाला, निंदा करने वाला २ मुसलमान । उ०—लोहि वधारण लाज, चुगलाळा दळ चूरता । भाटी रिण जूटा भला, 'सुदर' 'ग्रजी' सुकाज ।—वचनिका ३ यवन बादशाह । उ०—रोळ विरोळ सहर जैतारण, तो जिम करै जिके रजपूत । चुगलाळा वाळौ दळ परबळ, भुजळग चोळ किया ग्रद्भूत ।—नीमाज ठाकुर जगरामसिंह ऊदावत रौ गीत

चुगलियौ—देखो 'चुगल' (ग्रल्पा रू भे)

उ०—भडवा भडवापणू चुगलिया चुगली चासी ।—ऊ का

चुगली–स०स्त्री०—१ पीठ पीछे की जाने वाली निंदा । उ०—ताहरा मुहर्त सू कुवर भोपतजी देज रै लियै कुमया करता सु मुहर्त राजाजी ग्रागै कुवर स्री भोपतजी री चुगली खाधी ।—द वि

मुहा०—चुगली करणी, चुगली खाणी—किसी की शिकायत करना ।

२ सिर मे रक्खी जाने वाली बालो की शिखा ।

चुगबौ–वि०—चुनिन्दा, चुना हुग्रा, छँटा हुग्रा, बढिया ।

चुगाई–स०स्त्री०—१ बीनने या चुनने की क्रिया २ इस कार्य की मजदूरी ।

चुगाणौ, चुगावौ–क्रि०स० (चुगणौ क्रि० का प्रे०रू०) पक्षियो को दाना खिलाना, चुगने के लिये प्रेरित करना।

चुगाणहार, हारौ (हारी), चुगाणियौ—वि० ।

चुगाडणौ, चुगाडबौ, चुगावणौ, चुगाववौ—रू०भे० ।

चुगायोडौ—भू०का०कृ० ।

चुगाईजणौ, चुगाईजबौ—कर्म वा० ।

चुगायोडौ–भू०का०कृ०—१पक्षियो को दाना खिलाया हुग्रा २ चुना हुग्रा, बीना हुग्रा. ३ चारा खिलाया हुग्रा (पशु)

(स्त्री० चुगायोडी)

चुगावणौ, चुगाववौ—देखो 'चुगाणौ' (रू भे)

चुगावणहार, हारौ (हारी), चुगावणियौ—वि० ।

चुगाविग्रोडौ, चुगावियोडौ, चुगाव्योडौ—भू०का०कृ० ।

चुगावीजणौ, चुगावीजबौ—कर्म वा० ।

चुगावियोडौ–भू०का०कृ०—देखो 'चुगायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० चुगावियोडी)

चुगियोडौ–भू०का०कृ०—१ दाना चुगा हुग्रा २ चुना हुग्रा ३ बीना हुग्रा । (स्त्री० चुगियोडी)

चुगुलखोर—देखो 'चुगलखोर' (रू भे)

चुगुलखोरी—देखो 'चुगलखोरी' (रू भे)

चुगौ–स०पु०—१ पक्षियो को खाने के लिये डाला जाने वाला दाना या ग्रनाज २ चारा ३ ग्राहार, भोजन ४ एक प्रकार का बाण (ग्र मा.)

५ ठोस वस्तु जैसे तार ग्रादि को पकड कर मोडने का लोहे का एक ग्रौजार ।

चुग्गल—देखो 'चुगल' (रू भे)

चुग्गौ—देखो 'चुगौ' (रू भे)

चुड—देखो 'चूडौ' (रू.भे) उ०—वाहे सुदरि वहरखा, चासू चुड सव चार । मनुहरि कटि-थळ मेखळा, पग झाझर झणकार ।—ढो मा रू०भे०—'चूड'

चुडकली–स०स्त्री०—चिडिया (ग्रल्पा)

चुडखणौ, चुडखबौ–क्रि०ग्र०—१ पीडा या वेदना से दुखी होना या कराहना । उ०—'सोभडै' कियौ सुगाळ मुहगौ एकण ताळ मे, खेतळ वाहण खडखडै चुडखे चामरियाळ ।—नैणसी

क्रि०स०—पशुग्रो का जगल मे छोटा छोटा घास चरना, खाना ।

चुडखौ–स०पु०—छोटा हरा घास ।

चुडलियौ—देखो 'चूडौ' (ग्रल्पा रू भे) उ०—ए मा काकोजी नै कह कै मनै चुडलियौ मगा दै, मैं खेलण जास्यू लूरडी ।—लो.गी.

चुडली—देखो 'चूडी' (ग्रल्पा.)

चुडलौ—देखो ''चूडौ' (ग्रल्पा रू भे) उ०—१ मेहदी हुवणदै, चुडलौ चिरावू हाथी दात रौ ।—लो गी

उ०—२ बाइ ऐ म्हारे घर है चुडला रौ काम, सोनीडा रौ बेटी पत्ती झेलसी ।—लो गी

उ०—३ म्हारे चुडले चूप दिराग्रो सा, ग्रो म्हारा चाद सूरज नणदोईसा ।—लो गी

चुडल्यौ—देखो 'चूडौ' (ग्रल्पा. रू भे) उ०—म्हारै रिमक-झिमक भाती ग्राज्यो, वीरा म्हारै पूचा नै चुडल्यौ लाज्यो ।—लो.गी

चुडैल–स०स्त्री०—१ भूतनी, डायन, पिशाचिनी । उ०—घण घूमर भूत पिसाच घली, हळवै पग गैल चुडैल हली ।—मे म

२ कुरूपा स्त्री ३ क्रूर स्वभाव वाली स्त्री ।

चुचुक–स०पु० [स०] स्तन के सिरे पर की गोल घुडी, कुचाग्र भाग ।

चुज्जेण–स०स्त्री०—चतुराई । उ०—वनिता पति विदेस गय, मदिर मझे ग्रद्धरयणीए । बाळा लिहइ भुयगौ कहि, सुदरि कवण चुज्जेण ।
—ढो मा

चुटकलौ–स०पु०—१ विनोदभरी बात ।

मुहा०—चुटकलौ कैणौ, चुटकलौ छोडणौ—मौके की या चुभती बात कहना, हँसी की बात कहना ।

२ कोई चमत्कारपूर्ण उक्ति ।

चुटकि, चुटकी—१ देखो 'चिवटी' (रू भे)

मुहा०—१ चुटकिया मे उडाणौ— कुछ परवाह न करना, हँसी मे उडाना । ग्रासान समझना २ चुटकिया में होणौ—जल्दी होना, ग्रासानी से होना ।

२ चुटकी वजाने की क्रिया या इससे उत्पन्न शब्द ।

उ०—राणा कुळ की लाज गमाई, साधा के सग भटकी । नित प्रत उठ जाऊ गुर दरसण, नाचू दे दे चुटकी ।—मीरा

मुहा०—चुटकी बजावता—बहुत जल्दी, बहुत आसानी से, हँसी मे ।

३ चुटकी काटने का कार्य, चिकोटी भरना ।

चुटियो—१ देखो 'चिटियो' (रू भे)

स०पु०—२ गेंद खेलने का बल्ला, डडा ।

चुट्टणो, चुट्टबो—देखो 'चूटणो' (रू.भे) उ०—ढाढी एक सदेसडउ, ढोलइ लगि लइ जाइ । जोबन चापउ मउरियउ, कळी न चुट्टइ आइ ।

—ढो मा

चुट्टियोडो—देखो 'चूटियोडो' (रू.भे) (स्त्री० चुट्टियोडी)

चुडलिअ, चुडलिय—स०पु०—रजोहरण के फेरते हुए वदना करना, गुरु-वदना का एक दोष (जैन)

चुणणो, चुणबो—क्रि०स० [स० चिन्] १ एक-एक कर एकत्रित करना, चुनना । उ०—चुणे कर मुड अिडावर चाह, सपेख सपेख सराह सराह ।—रा रू

२ तह पर तह लगाना, क्रमवार रखना. ३ दीवार या भीत बनाना ।

उ०—चुण्या सवारघा ढह पडै, ढहिया सवारै ।—केसोदास गाडण

४ चुगना, बीनना, एक-एक कर उठाना । उ०—इण भात रा मूग हाथा सू रळकायजै छै, चुण वीण काकरा काढजै छै ।—रा सा स

चुणणहार, हारो (हारी), चुणणियो—वि० ।

चुणवाडणो, चुणवाडबो, चुणवाणो, चुणवाबो, चुणवावणो, चुणवावबो चुणाडणो, चुणाडबो, चुणाणो चुणाबो, चुणावणो, चुणावबो

—प्रे०रू० ।

चुणिओडो, चुणियोडो, चुण्योडो—भू०का०कृ० ।

चुणीजणो, चुणीजबो—कर्म वा० ।

चुणाई—स०स्त्री०—१ तह पर तह लगाने का कार्य २ भवन आदि निर्माण करने का काय या इस कार्य की मजदूरी ३ चुनने का कार्य।

चुणाणो, चुणाबो—क्रि०स० (चुणणो क्रि० का प्रे०रू०) १ चुनाना. २ तह पर तह लगवाना ३ दीवार की जोडाई कराना ।

उ०—वापी वाव कबीर बणाई, चोखी ईंटा पकी चुणाई ।—ऊ का.

२ छटवाना ।

चुणाणहार, हारो (हारी), चुणाणियो—वि० ।

चुणाडणो, चुणाडबो, चुणावणो, चुणावबो—रू०भे० ।

चुणायोडो—भू०का०कृ० ।

चुणाईजणो, चुणाईजबो—कर्म वा० ।

चुणायोडो—भू०का०कृ०—१ तह पर तह लगाया हुआ. २ चुनाया हुआ ३ छटवाया हुआ । (स्त्री चुणायोडी)

चुणाव—स०पु०—१ बहुत से मनुष्यो या वस्तुओ मे से कुछ को किसी कार्य के लिये पसद करना या नियुक्ति करना । चुनने का कार्य, चुनाव. २ मत देने का कार्य, निर्वाचन ।

चुणावट—स०पु०—चुनने की क्रिया, चुनाव ।

चुणावणो, चुणावबो—देखो 'चुणाणो' (रू भे) उ०—गैली ए थण म्हारी बोल न जाणे, हर ओछा घर की गोरी टावडी जी । हर आमी-सामी मै तो पोळ चुणावू, हर बीच बहण का गोरी ओवरा जी ।

—लो गी

चुणावणहार, हारो (हारी), चणावणियो—वि० ।

चुणाविओडो, चुणावियोडो, चुणाव्योडो—भू०का०कृ० ।

चुणावीजणो, चुणावीजबो—कर्म वा० ।

चुणावियोडो—देखो 'चुणायोडो' (रू भे) (स्त्री० चुणावियोडी)

चुणावो—स०पु०—ऐसा समूह जिसमे चुनी हुई वस्तुएँ अथवा चुने हुए व्यक्ति हो ।

उ०—माधवदासोत, करमसियोत, मडळावत, रूपावत, भाटी, कछवाह, तवर, चद्रावत, पवार, सोनगरा इतरा साथ लिया । आठ हजार फौज साथ लीन्ही, भलो चुणावो साथ सागे लियो ।

—मारवाड रा अमरावा री वारता

चुणिंदो—वि०—१ चुना हुआ, छटा हुआ ।

उ०—मिरजै कन्है असवार हजार डोढ हुता पणि अवलि चुणिदा ।

—द वि.

२ मनपसद, बढिया ३ खास, प्रधान, मुख्य ।

चुणियोडो—भू०का०कृ०—१ चुना हुआ, छाटा हुआ २ क्रमवार रखा हुआ ३ चुना हुआ, चुनाई की हुई (दीवार, मकान आदि) ४ एकत्रित किया हुआ, वीना हुआ (स्त्री० चुणियोडी)

चुणौती—स०स्त्री०—ललकार, चुनौती, उत्तेजना ।

मुहा०—चुणौती देणी—उत्साहित करना, ललकारना ।

चुण्ण—स०पु० [स० चूर्ण] चूर्ण (जैन) मत्रित चूर्ण (जैन)

चुण्णकोसय—स०पु० [स० चूर्णकोशक] एक जातीय खाद्य पदार्थ (जैन)

चुण्णपेसिया—स०स्त्री० [स० चूर्णपेषिका] आटा पीसने वाली दासी (जैन)

चुण्णिअ—वि० [स० चर्णित] चूर्ण किया गया हुआ (जैन)

चुतरग, चुतरगदळ—स०पु०—देखो 'चतुरगिणी' (रू.भे)

उ०—दूसरा 'माल' सग लिया चतुरगदळ, यर हरा मार सैणां ऊबारै । रण भडा सहल जु भाग हल राठवड, सहल रमता पडै दहल सारै ।

—कल्याणदास महडू

चुतरावेल—स०स्त्री०—एक लता विशेष जिसके साथ मे कोई भी वस्तु रखने पर वृद्धिगत हो जाती है ।

चुतरेस—स०पु०—चार भुजाओं वाला, विष्णु, ईश्वर ।

चुतरो—स०पु०—ब्रह्मा, जिसके चार मुख हैं । उ०—मुज दूसण क्यु वहन, मुज यारो इसो इ सुभाव । चुतरा मे कोई चूक छै, दै छै या हिव दाव ।—अज्ञात

चुदक्कड—वि०—१ बहुत अधिक स्त्री-प्रसग करने वाला, अत्यन्त कामी. २ पुरुष से अधिक सभोग कराने वाली ।

चुदणी–वि०—अधिक सभोग कराने वाली, अत्यन्त कामी।

चुदणौ, चुदबौ–क्रि०अ०—चोदा जाना, पुरुष से सयुक्त होना।

चुदवाई–स०स्त्री०—१ स्त्री-प्रसग, मैथुन २ मैथुन कराने के बदले मे प्राप्त हुआ धन।
रू०भे०—चुदाई।

चुदवाणौ, चुदवावौ—देखो 'चुदाणौ' (रू भे)

चुदाई—देखो 'चुदवाई' (रू भे)

चुदाणी–वि०—अधिक मैथुन कराने वाली, अत्यन्त कामुक।

चुदाणौ, चुदाबौ–क्रि०स० ['चोदणौ' का प्रे०रू०] १ किसी स्त्री को किसी पुरुष से सयुक्त कराना २ चोदने का काम कराना, मैथुन कराना।
रू०भे०—चोदाणौ।

चुदायोडी–भू०का०कृ०—पुरुष से सभोग कराई हुई, मैथुन कराई हुई।
रू०भे०—चोदायोडी।

चुदावणौ, चुदावबौ—देखो 'चुदाणौ' (रू भे.)

चुदावियोडी—देखो 'चुदायोडी' (रू भे)

चुदास–स०स्त्री०—सभोग कराने या करने की इच्छा, मैथुनेच्छा।

चुदियोडी–भू०का०कृ०—पुरुष से प्रसग कराई हुई, मैथुन से निपटी हुई।

चुन्ना–स०स्त्री०—दाख, किसमिस (अ मा)

चुनडियौ–स०पु०—एक प्रकार का घोडा जो अशुभ माना जाता है। इस प्रकार के घोडे के तालू का रग भिन्न होता है।

चुनडी—देखो 'चूनडी' (रू भे) उ०—सोया विना रह्यौ अे न जाय, हिंगळू ढोल्या रा थारी घण खिण लियौ, जी म्हारा राज, चुनडी तौ सरव सुहाग।—लो गी

चुनाळ, चुनाळजौ—? उ०—१ काळ लकाळ करठाळ जडियौ कमद, वहै विकराळ रगताळ वाई। भाळ छकडाळ चगताळ चुनाळ भिद, ताळ गो भाल भर धरण ताई।—वखतौ खिडियौ
उ०—२ भडाळी मगळा भळा सरखी जका, कवरगुर पळा भकती दळा काढ। ऊग्नर दाबी बुगल परा जाय ऊकसी, चुनाळजौ काळजौ वाढ।—अज्ञात

चुनिया गूद–सं०पु०—पलास का गोद, कमरकस।

चुनियौ–स०पु०—अधिक मीठा खाने से पेट मे उत्पन्न होने वाला एक श्वेत छोटा कीडा जो मल के साथ बाहर आता है।
रू०भे०—चुरणियौ।

चुनी–स०स्त्री०—किसी रत्न का छोटा टुकडा, नग या नगीना।

चुनौती—देखो 'चुणौती' (रू भे)

चुन्न–स०पु० [स० चूर्ण] चूर्ण (जैन)

चुन्नी–स०स्त्री०—१ देखो 'चुनी' (रू भे) उ०—मूगी छम लोवडिया लिया, विच विच चुन्नी चीवटा। खोढ मदीना खडा मोहै, सकड सदीनां मीवटा।—दसदेव
२ छोटी लडकियो के ओढने का छोटा डुपट्टा।

चुप–वि०—खामोश, मौन, शान्त, अवाक्।
मुहा०—चुप करणौ—बोलने न देना। अवाक् करना। चुप होना, मौन रहना।
स०स्त्री०—मौन, खामोशी। ज्यू- सब सू भली चुप।
मुहा०—चुप साधणी—मौन धारण कर लेना।

चुपके–क्रि०वि०—१ छिपे-छिपे २ विना आहट किये, चुपचाप। उ०—हिया सू भीड होकौ हमें राज भलेंई राखलौ। आपसू अरज इतरी अवस चुपके पाणी चाखलौ।—ऊ का
३ शात भाव से।

चुपकौ–वि०—खामोश, मौन, शात।

चुपडणौ, चुपडबौ–क्रि०स०—१ किसी लसदार, गीली या स्निग्ध वस्तु को फैला कर लगाना २ चापलूसी करना।
चुपडणहार, हारौ (हारी), चुपडणियौ—वि०।
चुपडाडणौ, चुपडाडबौ, चुपडाणौ, चुपडाबौ, चुपडावणौ, चुपडावबौ, चुपडवाणौ, चुपडवाबौ—प्रे०रू०।
चुपडीजणौ चुपडीजबौ—कर्म वा०।

चुपडाणौ, चुपडाबौ–क्रि०स० (चुपडणौ क्रि० का प्रे०रू०) चुपडने का कार्य दूसरे से कराना।
चुपडाणहार, हारौ (हारी), चुपडाणियौ—वि०।
चुपडायोडौ—भू०का०कृ०।
चुपडाईजणौ, चुपडाईजबौ—कर्म वा०।

चुपडायोडौ–भू०का०कृ०—किसी लसदार वस्तु या स्निग्ध पदार्थ को फैला कर अन्य से चुपडाया हुआ। (स्त्री० चुपडायोडी)

चुपडावणौ, चुपडावबौ—देखो 'चुपडाणौ (रू भे)
चुपडावणहार, हारौ (हारी) चुपडावणियौ—वि०।
चुपडाविओडौ, चुपडावियोडौ, चुपडाव्योडौ—भू०का०कृ०।
चुपडावीजणौ, चुपडावीजबौ—कर्म वा०।

चुपडावियोडौ—देखो 'चुपडायोडौ' (स्त्री० चुपडावियोडी)

चुपचाप–वि०—मौन, खामोश।
क्रि०वि०—१ विना कुछ कहे-सुने. २ शात भाव से ३ निरुद्योग, प्रयत्नहीन।

चुपणौ, चुपबौ—देखो 'चिपणौ' (रू भे)

चुपाणौ, चुपाबौ—देखो 'चिपाणौ' (रू भे)

चुपायोडौ—देखो 'चिपायोडौ' (रू भे)

चुपियोडौ—देखो 'चिपियोडौ' (रू भे)

चुप्पक–वि०—चुपचाप, शात, मौन।

चुप्पालय–स०पु०—१ विजय नामक देवता का शस्त्रागार २ शस्त्रागार (जैन)

चुबारौ—देखो 'चोबारौ' (रू भे)

चुभकी–स०स्त्री० (अनु०–चुभ-चुभ) पानी में पैठने की क्रिया, डुबकी, गोता।

क्रि०प्र०—मारणी, लगाणी ।

रू०भे०—चुभी, चुमकी ।

चुभणौ–क्रि०अ०—१ किसी नुकीली वस्तु का नरम या कोमल वस्तु मे दबाव के साथ अन्दर घुसना, धसना, पैठना २ हृदय मे खटकना, मन मे व्यथा उत्पन्न करना ३ हृदय पर अकित होना, मन मे बैठना, दिल पर प्रभाव होना ।

चुभणहार, हारौ (हारी), चुभणियौ—वि० ।

चुभवाडणौ, चुभवाडबौ, चुभवाणौ, चुभवाबौ, चुभवावणौ, चुभवावबौ —प्रे०रू० ।

चुभाडणौ, चुभाडबौ, चुभाणौ, चुभाबौ, चुभावणौ, चुभावबौ —क्रि०स० ।

चुभिओडौ, चुभियोडौ, चुभ्योडौ—भू०का०कृ० ।

चुभीजणौ, चुभीजबौ—भाव वा० ।

चुभाणौ, चुभाबौ–क्रि०स०—नुकीली वस्तु को भीतर धसाना, गडाना ।

चुभाणहार, हारौ (हारी), चुभाणियौ—वि० ।

चुभायोडौ—भू०का०कृ० ।

चुभाईजणौ, चुभाईजबौ—कर्म वा० ।

चुभणौ—अक० रू० ।

चुभायोडौ–भू०का०कृ०—नुकीली वस्तु को गडाया हुआ, चुभाया हुआ । (स्त्री० चुभायोडी)

चुभावणौ, चुभावबौ—देखो 'चुभाणौ' (रू भे)

चुभावणहार, हारौ (हारी), चुभावणियौ—वि० ।

चुभाविओडौ, चुभावियोडौ, चुभाव्योडौ—भू०का०कृ० ।

चुभावीजणौ, चुभावीजबौ—कर्म वा० ।

चुभणौ—अक० रू० ।

चुभावियोडौ—देखो 'चुभायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चुभावियोडी)

चुभियोडौ–भू०का०कृ०—नुकीली वस्तु के दबाव के साथ कोमल वस्तु मे धँसी हुई, चुभी हुई । (स्त्री० चुभियोडी)

चुभोणौ, चुभोबौ—देखो 'चुभाणौ' (रू भे)

चुभोयोडौ—देखो 'चुभायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चुभायोडी)

चुमकार–स०पु०—प्यार आदि प्रकट करने के लिये होठो से निकाला जाने वाला चूमने का सा शब्द । पुचकार ।

अल्पा०—चुमकारी ।

चुमकारणौ, चुमकारबौ–क्रि०स०—प्यार आदि प्रकट करने के लिये होठो से चूमने का सा शब्द करना, पुचकारना, दुलारना ।

चुमकारियोडौ–भू०का०कृ०—पुचकारा हुआ, दुलारा हुआ । (स्त्री० चुमकारियोडी)

चुमकारी—देखो 'चुमकार' (अल्पा रू भे)

चुमकी–स०स्त्री०—देखो 'चुभकी' (रू भे)

चुमटी—देखो 'चिवटी' (रू भे)

चुमाणौ, चुमाबौ–क्रि०स० ['चूमणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ किसी दूसरे से चूमने का कार्य कराना. २ किसी दूसरे के सामने चूमने के लिए प्रस्तुत करना ।

चुमायोडौ–भू०का०कृ०—चूमने का कार्य कराया हुआ । (स्त्री० चुमायोडी)

चुमावणौ, चुमावबौ—देखो 'चुमाणौ' (रू भे)

चुमावियोडौ —देखो चुमायोडौ' (रू भे.) (स्त्री० चुमावियोडी)

चुम्मक—देखो 'चुबक' (रू भे)

चुम्मौ—देखो 'चुबन' (रू भे)

चुयाचदण, चुयाचदन–स०पु०—एक प्रकार का घोडा (शा हो)

चुरडणौ, चुरडबौ—दातो को परस्पर भिडा कर किसी पेय पदार्थ को वायु के साथ या श्वास के साथ खीच कर पीना जिसमे ध्वनि उत्पन्न हो । उ०—जगरामसिंघ जी बोल्या श्री गूदड भवरियौ सात सेर दूध री चरी ऊभौ ई चुरड जावै ।—वाणी

(मि० चसीडणौ)

चुरडौ–स०पु०—चुल्लू । उ०—सकर सागर हुयगौ सुरडा, करण मिळै नहि पाणी कुरडा । चोभ माय ठहरै नहि चुरडा, जिण री पाळ पडै दस जुरडा ।—ऊ का

वि०—कम, थोडा ।

चुरट–वि०—१ लाल । उ०—जै मे तौ चीर जग्रे ऊमादे गणी, डबोइयो यो तौ राच्यौ छै चुरट मजीठ ।—लो गी

२ देखो 'चुरुट' (रू भे)

चुरठ–वि०—हृष्ट-पुष्ट, मोटाताजा ।

स०पु०—देखो 'चुरुट' (रू भे)

चुरणाटौ—एक प्रकार की ध्वनि ।

चुरणियौ, चुरनियौ—देखो 'चुनियौ' (रू भे)

चुरयण, चुरखुण —देखो 'चरवण' (रू भे)

चुररौ–स०पु०—महीन काट कर किया गया चूरा, चूर्ण । उ०—गिणता जिसा निवाह्यौ गुर रौ, जस लोका मुररौ मजबूत । कर चुररौ भेळौ शिव कीधौ, उतमग रौ तुररौ अदभूत ।—महादान महडू

चुरस, चुरसि–वि०—१ श्रेष्ठ, उत्तम, बढिया । उ०—१ चुरस जग जीवणौ रखौ चित चाह री, तौ कडतळा नाह री आस कीजौ ।

—रामलाल आसियौ

उ०—२ पहल ग्रतीय पद सोळ मत, दुव चव ग्यारह दाख । चरणा दूहा चुरस कर, भल किव तिणनू भाख ।—र ज प्र

उ०— ३ छळ बळ समर वछेक, वीर असि लोह उडाऊ । घाऊ खळ, दळ घणा, चुरसि कुळि सुजस चढाऊ ।—सू प्र.

स०पु०—रीति-रिवाज, परपरा ।

चुराई–स०स्त्री०—चोरी करने का कार्य या क्रिया ।

चुराणौ, चुराबौ–क्रि०स० ['चोरणौ' क्रिया का प्रे०रू०] १ बिना मालिक की जानकारी के उसकी वस्तु या सपत्ति का हरण करना ।

मुहा०—चित्त चुराणौ—मन को आकर्षित करना ।

२ लोगो की दृष्टि से वचाना, छिपाना।

मुहा०—आख चुराणी—नजर वचाना, सामने मुह न करना।

३ किसी वस्तु को देने या काम करने मे कसर रखना।

चुराणहार, हारौ (हारी), चुराणियौ—वि०।

चुरवाडणौ, चुरवाडबौ, चुरवाणौ, चुरवाबौ, चुरवावणौ, चुरवावबौ —प्रे०रू०।

चुराडणौ, चुराडबौ, चुरावणौ, चुरावबौ—रू०भे०।

चुरायोडौ—भू०का०कृ०।

चुराईजणौ, चुराईजबौ—कर्म वा०।

चुरायोडौ—भू०का०कृ०—चुराया हुआ। (स्त्री० चुरायोडी)

चुरावणौ, चुरावबौ—देखो 'चुराणौ' (रू भे)

चुरावणहार, हारौ (हारी), चुरावणियौ—वि०।

चुराविप्रोडौ, चुरावियोडौ, चुराव्योडौ—भू०का०कृ०।

चुरावीजणौ, चुरावीजबौ—कर्म वा०।

चुरावियोडौ—देखो 'चुरायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चुरावियोडी)

चुरु—देखो 'चरु' (रू भे) उ०—चुरु आतसू के झलपट जग्गे अथाह, दूसरे सठमठ राजू के हियै पर दाह।—सू प्र

चुरुट—स०पु० [अ०] तम्बाकू के चूरे से वनी बीडी से कुछ मोटी वत्ती विशेप जिसको धूम्रपान के लिये लोग उपयोग मे लेते हैं।

रू०भे०—चुरट।

चुरुसुकाळ—देखो 'चरूसुकाळ' (रू भे)

चुळ—स०स्त्री० [स० चल] १ खुजलाहट।

क्रि०प्र०—चालणी।

२ कामोद्दीपन मे होने वाली सरसराहट, मस्ती (स्त्री०)

मुहा०—१ चुळ ऊठणी—प्रसग की इच्छा होना, काम का वेग होना।

२ चुळ मिटणी—कामवासना तृप्त होना।

चुळका—स०पु०—एक मात्रिक छद जिसमे क्रमशः १३, १६, १६ व १३ से कुल ५८ मात्रायें होती हैं।

चुळचुळाणौ, चुळचुळावौ—क्रि०अ०—१ खुजली चलना २ शरीर मे काम के आवेग मे सरसराहट उत्पन्न होना, मस्ती होना।

चुळचुळाहट—स०स्त्री०—खुजली चलने का भाव, खुजलाहट।

चुळचुळी—स०स्त्री०—१ चचलता, चपलता. २ गुदगुदी, सरसराहट ३ मैथुनेच्छा।

चुलणी—स०स्त्री—१ व्रह्मदत्त नामक वाहरवा चक्रवर्ती राजा की माता (जैन)

२ द्रुपद राजा की स्त्री (जैन)

चुलणीपिय—स०पु० [स० चुलणी पितृ] भगवान महावीर का एक मुख्य उपासक (जैन)

चुळणौ, चुळवौ—क्रि०अ०—१ अपनी जगह से हिलना। उ०—साप्रत सनमुख सीत ऊट नह चुळै अनाडी, देखै मौसर डूम अटै नह पेड अगाडी।—ऊ का

२ डावाडोल होना। उ०—आधी खूखाटा करती उठ आवै, फदके फूफाटा चेता चुळ जावै।—ऊ का

३ पथभ्रष्ट होना, पतित होना। उ०—वाका फाटोडा थाका दम वाकी, डेळी चुळियोडा डुळियोडा डाकी।—ऊ का

४ पके हुए खाद्य पदार्थ (विशेषतया खीच, घाट, चावल, राव आदि) का अधिक समय तक पडे रहने से अथवा अधिक हिलाने से पानी छोड कर विकृत होना, सडना, खराब होना।

चुळणहार, हारौ (हारी), चुळणियौ—वि०।

चुळवाडणौ, चुळवाडबौ, चुळवाणौ, चुळवाबौ, चुळवावणौ, चुळवावबौ —प्रे०रू०।

चुळाड़णौ, चुळाडबौ, चुळाणौ, चुळाबौ, चुळावणौ, चुळावबौ —क्रि०स०।

चुळिप्रोडौ, चुळियोडौ, चुळ्योडौ—भू०का०कृ०।

चुळीजणौ, चुळीजबौ—भाव वा०।

चुळवळ—देखो 'चुळवळ' (रू भे) उ०—नाळा री चुळवळ मे न्हावै, पाळा रा पग खोल।—लो गी

चुळवुळ—स०पु०—चचलता, चपलता।

चुळवुळाणौ, चुळवुळावौ—क्रि०अ०—१ चचल होना, अस्थिर होना, डावाडोल होना २ देखो 'चुळचुळाणौ' (रू भे)

चुळवुळौ—वि० (स्त्री० चुळवुळी) चचल, चपल, नटखट।

चुळवळ—स०पु०—रक्त, खून। उ०—खपिया जठै अठारै खोयण, आधी रहिया तेण अवाह। चौसट खपर पूरिया चुळवळ, हेकण कमध तणी हथवाह।—प्रथ्वीराज जैतावत री गीत

रू०भे०—चुळवळ।

चुळवौ—देखो 'चुल्लू' (रू भे)

चुळसी, चुळसीइ—स०स्त्री०—अस्सी और चार के योग की सख्या (जैन)

चुळाणौ, चुळावौ—क्रि०स०—१ स्थान से हटाना २ अस्थिर करना, डावाडोल करना ३ पथ-भ्रष्ट करना ४ सडाना।

चुळायोडौ—भू०का०कृ०—१ स्थान से हटाया हुआ २ अस्थिर किया हुआ, डावाडोल किया हुआ ३ पथ-भ्रष्ट किया हुआ ४ सडाया हुआ। (स्त्री० चुळायोडी)

चुळावणौ, चुळाववौ—देखो 'चुळाणौ' (रू भे)

चुळावियोडौ—देखो 'चुळायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चुळावियोडी)

चुळियोडौ—भू०का०कृ०—१ अपने स्थान से हटा हुआ २ डावाडोल. ३ पथ-भ्रष्ट. ४ सडा हुआ। (स्त्री० चुळियोडी)

चुल्ल—स०पु०—छोटा वच्चा, शिशु (जैन)

वि०—छोटा, लघु।

चुल्लसयग—स०पु० [स० चुल्लशतक] चुल्लशतक नामक महावीर स्वामी का एक श्रावक (जैन)

चुल्लहिमवत—स०पु०—एक पर्वत का नाम (जैन)

चुल्ल हिमवतकूड—स०पु० [स० चुल्ल हिमवतकूट] चुल्ल पर्वत का एक शिखर (जैन)

चुल्ली-स०स्त्री०—छोटा चूल्हा, देखो 'चूल्हौ' (अल्पा) (जैन)

चुल्लू, चुल्लौ-स०पु० [स० चुलुक] १ अगुलियो को मोड कर गहरी की हुई हथेली जिसमे भर कर पानी आदि पीया जा सके। गहरी की गई हथेली की अवस्था जिससे गड्ढा सा बन जाय।

मुहा०—चुल्लू भर पाणी मे डूबणौ, चुल्लू भर पाणी मे डूब मरणौ—मुह न दिखाना, लज्जा के मारे मर जाना।

२ इस प्रकार के हाथ की अगुलियो के गड्ढे मे समा सके उतना द्रव पदार्थ।

मुहा०—चुल्लू भर—जितना चुल्लू मे आ सके, बहुत थोडा।

चुवणौ, चुवबौ—देखो 'चुअणौ' (रू भे) उ०—१ ताहरा हेकरसी सूटी पाखती मेक दियौ, वळै तेल सेती दियौ। राखा चोपडि अर वळै बीजी ही वार तिम हीज राती करि चुवण लागौ ताहरा दियौ।
—द वि

उ०—२ जिसडौ टवके टवके चुवण लागौ रातौ लाल कियौ।
—द वि

चुवणहार हारौ (हारी), चुवणियौ—वि०।

चुवाडणौ, चुवाडबौ, चुवाणौ, चुवाबौ, चुवावणौ, चुवावबौ
—क्रि०स०।

चुविओडौ, चुवियोडौ, चुव्योडौ—भू०का०कृ०।

चुवीजणौ, चुवीजबौ—भाव वा०।

चुवाणौ, चुवाबौ—देखो 'चुआणौ' (रू भे)

चुवायोडौ—देखो 'चुआयोडौ' (रू भे) (स्त्री० चुवायोडी)

चुवारी-म०पु०—मुसलमानो मे बच्चे की इन्द्रिय के आगे सुपारी पर या चढा हुआ चमडा काटने वाला व्यक्ति। सुन्नत करने वाला व्यक्ति। (मुसलमानी प्रथा)

चुवावणौ, चुवावबौ—देखो 'चुआणौ' (रू भे)

चुवावणहार, हारौ (हारी), चुवावणियौ—वि०।

चुवाविओडौ, चुवावियोडौ, चुवाव्योडौ—भू०का०कृ०।

चुवावीजणौ, चुवावीजबौ—कर्म वा०।

चुवणौ—अक० रू०।

चुवौ-स०पु०—मज्जा।

चुसकी-स०स्त्री० [स० चपक] १ शराब पीने का पात्र, मद्यपात्र, प्याला २ शराब पीने का एक विशेष प्रकार का पात्र जिसके ऊपर एक पतली महीन सूराख वाली नली लगी रहती है जिसमे से चुसकी के साथ शराब पी जाती है। ३ होठ से लगा कर किसी पीने के पदार्थ को वायु के साथ खीच कर पीने की क्रिया. ४ उतना पदार्थ जितना एक बार खीच कर पिया जाय, घूट।

क्रि०प्र०—लेणी।

चुसणौ, चुसबौ-क्रि०अ०—१ चूसा जाना, होठो से खीच कर पीया जाना. २ निचुड जाना, सारहीन होना ३ शक्तिहीन होना।

चुसणहार, हारौ (हारी), चुसणियौ—वि०।

चुसवाडणौ, चुसवाडबौ, चुसवाणौ चुसवाबौ, चुसवावणौ, चुसवावबौ, चुसाडणौ, चुसाडबौ, चुसाणौ, चुसाबौ, चुसावणौ, चुसावबौ
—प्रे०रू०।

चुसिओडौ, चुसियोडौ, चुस्योडौ—भू०का०कृ०।

चुसीजणौ, चुसीजबौ—भाव वा०।

चूसणौ, चूसबौ—सक०रू०।

चुसाई-स०स्त्री०—चूसने की क्रिया या इस क्रिया का पारिश्रमिक।

चुसाणौ, चुसाबौ-क्रि०स० (चुसणौ क्रि० का प्रे०रू०) १ चूसने का कार्य अन्य से कराना. २ सारहीन कराना ३ शक्तिहीन कराना।

चुसायोडौ-भू०का०कृ०—१ चुसाया हुआ २ सारहीन किया हुआ ३ शक्तिहीन किया हुआ। (स्त्री० चुसायोडी)

चुसावणौ, चुसावबौ—देखो 'चुसाणौ' (रू भे)

चुसावियोडौ—देखो 'चुसायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चुसावियोडी)

चुसियोडौ-भू०का०कृ०—१ चूसा गया हुआ २ सारहीन. ३ शक्तिहीन। (स्त्री० चुसियोडी)

चुस्त-वि० [फा०] १ जिसमे सुस्ती न हो, फुर्तीला २ तत्पर ३ दृढ।

चुस्ती-स०स्त्री० [फा०] १ फुर्ती, तेजी, फुर्तीलापन, २ दृढता, मजबूती।

चुहणौ, चुहबौ-क्रि०अ०—१ देखो 'चुसणौ' (रू भे)
क्रि०स०—२ देखो 'चूसणौ' (रू भे)

चुहळ-स०स्त्री०—ठठोली, मजाक, हँसी।

यौ०—चुहळबाज, चुहळबाजी।

चुहळबाज-वि०यौ०—ठठोली करने वाला, मसखरा।

चुहळबाजी-स०स्त्री० [यौ०] ठठोली, मजाक, दिल्लगी।

चुहियौ-स०पु०—प्राणी के किसी दर्द स्थान पर गर्म की हुई धातु से लगाया जाने वाला चिन्ह। अग्निदग्ध क्रिया।
(मि० डाडौ)

उ०—इम हीज च्यारि चुहिया दिया, राता लाल चुवता करि-करि।
—द वि.

चुही-स०स्त्री०—खान आदि मे पत्थर तोडने के लिये सेंध लगाने की क्रिया। उ०—गरीवा गोता मेट चुही वढ़ चम्मा चाळै। हार्थी रो सो दात, भाठियौ भलौ दिखाळै।—दसदेव

चुहटली-म०स्त्री० [स० चञ्चुपुटिका] चोच, चचुपुट (उ र)

चू-म०पु० [अनु०] १ छोटी चिडियो के बोलने का शब्द २ चू शब्द।
उ०—निपट भयौ नादान, अकडै फिरै अभिमान मे। जिण पुळ जासी जान, चू नहिं होसी चकरिया।—मोहनराज साह

मुहा०—१ चू करणौ—कुछ करना, विरोध मे कुछ कहना।
२ चू होणौ—देखो 'चू करणौ'।

चूक-स०स्त्री०—स्त्रियो द्वारा सम्मुख के दातो पर या उनके बीच मे लगाया जाने वाल सोने का आभूषण।

चूकणौ, चूकबौ-क्रि०स०—१ ऊट के छः दात निकलने के बाद मे दो दातों का निकलना २ टोकना।

चूकळणौ, चूकळबौ–क्रि०स०—१ नुकीली वस्तु को किसी कोमल वस्तु मे दबाव के साथ भीतर घुसाना, धँसाना, चुभाना।
उ०—सुकनं भळकौ पडियौ थौ तिकौ भाल नै लाखै सोलकी राज नू चूकळियौ सु राज रै थण रै लाग गयौ।—नैणसी
२ टोकना।
चूकलौ–स०पु०—१ किसी नुकीले शस्त्र तलवार, भाला आदि का नीचे का नुकीला भाग २ किसी नुकीले या तीक्ष्ण औजार या शस्त्र का प्रहार ३ म्यान के सिर पर लगा हुआ धातु का उपकरण।
चूकारौ–स०पु० [अनु०] १ चू शब्द या चू शब्द की ध्वनि।
क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ, होणौ।
२ किसी बात आदि के उत्तर मे अगूठा दिखाते समय हाथ की बनाई जाने वाली मुद्रा।
क्रि०प्र०—दिखाणौ, बताणौ।
चूकौ–स०पु०—रूई या ऊन के रेशो का गुच्छा।
चूखणौ, चूखबौ—१ देखो 'चूसणौ' (रू भे)
२ स्तनपान करना ३ रूई या ऊन के गुच्छो को रेशो मे पृथक-पृथक कराना।
चूखडियौ–स०पु०—दुबला-पतला ऊँट का बच्चा।
चूखाणौ, चूखाबौ—१ देखो 'चूसाणौ' (रू भे)
२ स्तनपान कराना ३ रूई या ऊन के गुच्छो को रेशो मे पृथक कराना।
चूखायोडौ–भू०का०कृ०—१ स्तनपान कराया हुआ. २ चुसाया हुआ। (स्त्री० चूखायोडी)
चूखावणौ, चूखावबौ—देखो 'चूखाणौ' (रू भे.)
चूखावियोडौ—देखो 'चूखायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चूखावियोडी)
चूखियोडौ–भू०का०कृ०—१ स्तनपान किया हुआ २ चूसा हुआ। (स्त्री० चूखियोडी)
चूखौ–स०पु०—१ छोटा बादल का टुकडा। उ०—१ ऊडा टूक उळूडिया, चूखा मे चमकीह। जाण बूझता वीजळी, जोडी भल ढूढीह।—बादळी
उ०—२ अकास मे बादळ रौ चूखौ नही। लाय पडै तौ इसी कै कच्चा चिणा नाख'र रेत मे सेकलौ।—वरसगाठ
२ देखो 'चूकौ' (रू भे)
चूग–स०पु०—१ एक प्रकार का अस्त्र विशेष।
स०स्त्री०—२ 'चूगना' क्रिया का भाव।
चूगणौ, चूगबौ–क्रि०स०—१ स्तनपान करना। उ०—माता जुद्ध मे जातां कहै म्हारा हाचळ चूगियौ है सो लजाजे मती।
—वी स टी
२ चूसना।
चूंगणहार, हारौ (हारी), चूगणियौ - वि०।
चूगवाडणौ, चूगवाडबौ, चूगवाणौ, चूगवाबौ, चूगवावणौ, चूगवावबौ —प्रे०रू०।
चूगाडणौ, चूगाडबौ, चूगाणौ, चूगाबौ, चूगावणौ, चूंगावबौ —क्रि०स०।
चूगिओडौ, चूगियोडौ, चूयोडौ—भू०का०कृ०।
चूगीजणौ, चूगीजबौ—कर्म वा०।
चूगथणौ–स०पु०—दुधमुहा बच्चा, स्तन पान करने वाला बच्चा।
उ०—थट रु घाया भीलण चूगथणा, तेइ पूत वजै रजपूत तणा।
—पा प्र
चूगाणौ, चूगाबौ—देखो 'चुगाणौ' (रू भे)
चूगायोडौ—देखो चुगायोडौ (रू.भे) (स्त्री० चूगायोडी)
चूगावणौ, चूगावबौ—देखो 'चुगाणौ' (रू भे)
चूगावियोडौ—देखो 'चुगावियोडौ' (रू भे) (स्त्री० चूगावियोडी)
चूगियोडौ–भू०का०कृ०—स्तन पान किया हुआ। (स्त्री० चूगियोडी)
चूगी—१ देखो 'चुगी' (रू भे)
स०स्त्री०—२ शीतकाल मे ताप हेतु बालको द्वारा जलाई जाने वाली अग्नि मे जलाने के लिये प्रत्येक बालक द्वारा डाला जाने वाला ईंधन।
चूघणौ, चूघबौ—देखो 'चूगणौ' (रू भे)
चूघणहार, हारौ (हारी), चूघणियौ—वि०।
चूघाड़णौ, चूंघाडबौ, चूघाणौ, चूघाबौ, चूघावणौ, चूघावबौ —क्रि०स०।
चूघिओडौ, चूघियोडौ, चूघ्योडौ—भू०का०कृ०।
चूघीजणौ, चूघीजबौ—कर्म वा०।
चूघाणौ, चूघाबौ—देखो 'चुगाणौ' (रू भे)
चूघायोडौ—देखो 'चुगायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चूघायोडी)
चूघावणौ, चूघावबौ—देखो 'चुगाणौ' (रू भे) उ०—आगै देखै तौ छवरे हेठै पालणौ राखियौ तौ सु सीहणी आय चूघावण लागी।
—देवजी बगडावत री वात
चूघावियोडौ—देखो 'चुगावियोडौ' (रू भे) (स्त्री० चूंघावियोडी)
चघियोडौ—देखो 'चूगियोडौ' (रू भे.) (स्त्री० चूघियोडी)
चूच–वि०—१ पूर्ण तृप्त, परितुष्ट। उ०—कटका विहु हुइ कूच, गडगड त्रबागळ गुडै। हडवड भड हुई हैंवरा, चढिया पौरस चूच।
—वचनिका
क्रि०प्र०—होणौ।
स०स्त्री० [स० चचु] १ चोच। उ०—कीधौ काम वधै नवकोटा, चूच पकड लीधौ चड चोटा।—रा.रू
२ उमग, जोश, आवेग। उ०—प्रसण करवा पाधरा, थट री काढण चूच, क्रोधीला 'खुस्याळ' री, अहै भुहारा मूच।
—आउआ ठाकुर कुसाळसिह रा दूहा
चूचक–स०पु०—१ विवाहित कन्या के प्रथम प्रसव के बाद उसे ससुराल भेजते समय पिता के घर से दिया जाने वाला विभिन्न प्रकार का घरेलू सामान जिसमे वस्त्र, आभूषण, वर्तन आदि होते हैं (शेखावाटी)
२ देखो 'चूचकी' (रू भे)

चूचकी, चूचडी, चूचाडी—देखो 'चूची' (अल्पा रू भे)

चूचाणौ चूचावौ–क्रि०स०—१ किसी वस्तु आदि को उचित सीमा से अधिक प्रयुक्त करना २ स्त्री सभोग करना, मैथुन करना।

चूचाणहार, हारौ (हारी), चूचाणियौ—वि०।

चूचाडणौ, चूचाडवौ चूचावणौ, चूचाववौ—रू०भे०।

चूचायोडौ—भू०का०कृ०।

चूचाईजणौ, चूचाईजवौ—कम वा०।

चूचायोडौ–भू०का०कृ०—१ किसी वस्तु आदि को उचित सीमा से अधिक प्रयुक्त किया हुआ २ स्त्री के साथ सभोग किया हुआ, मैथुन से निवृत्त। (स्त्री० चूचायोडी)

चूचाळी—देखो 'चूची (रू भे)

चूचावणौ, चूचाववौ—देखो 'चूचाणौ' (रू.भे)

चूचावियोडौ—देखो 'चूचायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चूचावियोडी)

चूची–स०स्त्री०—१ ताप के लिये अग्नि के पास बैठ बालसुलभ चपलता से व्यर्थ मे ही किसी लकडी से आग को इधर-उधर करने की क्रिया या इस आग मे से कोई जलती लकडी हाथ मे लेकर उसे इधर-उधर हिलाने की क्रिया।

२ इस प्रकार की क्रिया करने की आग मे जलती हुई लकडी।

अल्पा० रू०भे०—चूचकी, चूचडी, चूचाडी, चूचाळी।

वि०वि०—यह क्रिया प्राय बच्चे अपनी बाल-चपलता के कारण करते हैं।

मुहा०—चूची लगाणी—किसी वस्तु को नष्ट करना, क्रोधावेश मे किसी वस्तु को खाक करने के लिये कहने का भाव।

३ स्लेट पर लिखने की वर्तिका का आगे का नुकीला भाग ४ स्तन, कुच।५ स्तन का अग्र भाग, कुच के ऊपर की घुडी।

उ०—अगली घर ऊची छेडत चूची, कड कूची कोकदा है।—ऊ का

चूचौ–स०पु०—१ आग, पलीता।

क्रि०प्र०—लगाणौ।

२ स्तन, कुच।

चूट–स०पु०—१ 'चूटणौ' क्रिया का भाव, देखो 'चूटणौ'. २ फुटकर खर्च, छोटा-मोटा व्यय ३ थोडा-थोडा कर के बार-बार किया जाने वाला एक ही वस्तु पर का व्यय।

चूटणौ, चूटवौ–क्रि०स० [स० चुट] १ चुन-चुन कर अगुलियो से तोडना, बीनना, चुनना। उ०—१ लडालूम डाळ्यां लमूटै जाणै झबरख झूटणा, ओयण मे लसकर लुगाया खाणा चुगणा चूटणा।—दसदेव

उ०—२ लावौ मत हेरौ बाबा सागर चूटै, ओछी मत हेरौ बाबा बावन्यू बतावै।—लो गी

२ (पौधे आदि को) ऊपर से काट कर छोटा करना, छाटना ३ खर्च से दबाना, व्यर्थ के खर्च से बरबाद करना ४ नोचना।

चूटणहार, हारौ (हारी), चूटणियौ—वि०।

चूटवाडणौ, चूटवाडवौ, चूटवाणौ, चूटवावौ, चूटवावणौ, चूटवाववौ चटाडणौ, चूटाडवौ, चूटाणौ, चूटावौ, चूटावणौ, चूटाववौ—प्रे०रू०।

चूटिओडौ, चूटियोडौ, चूटयोडौ—भू०का०कृ०।

चूटीजणौ, चूटीजवौ—कर्म वा०।

चूटाणौ, चूटावौ–क्रि०स० ('चूटणौ' का प्रे० रू०) १ फूल, वस्तु आदि चुनने, बीनने या छाटने का कार्य अन्य से कराना २ खर्च से दबवाना, व्यर्थ के व्यय से बरबाद कराना।

चूटाणहार हारौ (हारी), चूटाणियौ—वि०।

चूटायोडौ—भू०का०कृ०।

चूटाईजणौ, चूटाईजवौ—कर्म वा०।

चूटाडणौ चूटाडवौ, चूटावणौ, चूटाववौ—रू०भे०।

चूटायोडौ–भू०का०कृ०—१ अगुलियो से चुनने का कार्य कराया हुआ २ वृक्ष. पौधे आदि को छटाया हुआ ३ व्यर्थ के खर्च से बरबाद किया हुआ। (स्त्री० चूटायोडी)

चूटावणौ, चूटाववौ—देखो 'चूटाणौ' (रू भे)

चूटावियोडौ—देखो 'चूटायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चूटावियोडी)

चूटियोडौ–भू०का०कृ०—१ अगुलियो से चुन-चुन कर तोडा हुआ। २ पौधे या वृक्ष का ऊपरी भाग काट कर छोटा किया हुआ ३ खर्च से बरबाद किया हुआ, व्यय से दबा हुआ। (स्त्री० चूटियोडी)

चूटियौ–स०पु० [स० चुट] १ हाथ के अगूठे और तर्जनी के संयोग से किसी प्राणी के चमडे को पकड कर खीचने या इस प्रकार से दर्द पहुचाने की क्रिया। उ०—एक माथण हँसती-हंसती बोली किणनै पाछौ भेजियौ श्रे धापू ? दूजोडी बोली थनै काईं मतलब, होसी कोई, अर धापू रै पसवाडा मे चूटियौ भरियौ।—रातवासौ

क्रि०प्र०—भरणौ।

२ एक प्रकार का व्यजन जो आटे या बेसण को घी मे सेक कर बनाया जाता है। उ०—गाढी कादै जिसी छाछ री है छिब न्यारी। रधै खीचडी खूब चूटियै रै उणियारी।—दसदेव

यौ०—चूटियौ-चूरमौ।

चूटीजणौ, चूटीजवौ–क्रि०स० ('चूटणौ' क्रिया का कर्म वा० रू०) १ नोचा जाना। उ०—तौ थोडौ पथ लेलौ, मूर्ख री तो काळजौ ई चूटीजै।—वरसगाठ

२ बीना जाना।

चूटौ–स०पु०—१ छोटा घास जो सरलता से हाथ की पकड मे न आवे २ फल का वह डठल जिससे वह लता या वृक्ष से जुडा रहता है।

मुहा०—चूटै उतरणौ—किसी फल का लता या डाल पर ही परिपक्व अवस्था को पहुँचना।

३ घी या मक्खन की टिकिया। उ०—खडी जिसडी राप पचाम्रित पाणी पालर, मोल मळाई स्याळ चीकणा चूटौ कालर।—दसदेव

चूडणौ, चूडवौ–क्रि०स०—बनाना, आकृति देना। उ०—धीया चाकी चूळ मुळकती माडा माडै, सरवर माटी साज खेल री चीजा चूडै।—दसदेव

चूडाळौ-स०पु० (स्त्री० चूडाळी) एक पक्षी विशेष।

चूडावत-स०पु०—१ राठौड राव चूडा के वशज २ शिशोदिया वश के राणा लाखा के पितृभक्त पुत्र चूडा के वशज, शिशोदिया वश की एक शाखा।

चूण-स०पु०—१ चुग्गा, दाना।

उ०—खग इण साकर खोर रे, सग न कर गूण। सबदिन पूरै साइया, चाच दई सो चूण।—वा दा.

[स० चूर्ण] २ चून, आटा ३ जव का आटा (मेवाड)

चूणौ, चूबौ—देखो 'चवणौ' (१, (रू भे) उ०—आख्या मसळता उणें माचौ दूजी कानी खैच्यौ पण उठै उणसू ई ज्यादा चूतौ हौ।
—रातवासौ

चूतरी-स०स्त्री०—छोटा चवूतरा।

चूतरौ-स०पु०—चवूतरा। उ०—याद राखजै जे थू काम आयग्यौ तौ उण ठौड कोई मकराणै रौ चूतरौ नही बणावैला।—रातवासौ

चूथणौ, चूथबौ-क्रि०स०—१ देखो 'चीथणौ' (रू भे) २ लूटना, डाका डालना ३ किसी वस्तु को हाथो से महीन करना या तोडना, हाथ से हिला कर प्रयोग करना, मसलना। उ०—परभाता हर पै'ल, वगडावत गावै विटळ। चूथै काती छैल, मैल जगत रौ मोतिया।
—रायसिह सादू

चूथणहार, हारौ (हारी), चूथणियौ—वि०।

चूथवाणौ, चूथवावौ, चूथवावणौ, चूथवावबौ, चूथाडणौ, चूथाड़बौ, चूथाणौ, चूथावौ, चूथावणौ, चूथावबौ—प्रे०रू०।

चूथिओडौ, चूथियोडौ, चूथ्योडौ—भू०का०कृ०।

चूथीजणौ, चूथीजबौ—कर्म वा०।

चूथाणौ, चूथावौ-क्रि०स०—१ देखो 'चीथाणौ' (रू भे) २ लूटाना, डाका डलाना ३ हाथो से द्रव पदार्थ के साथ तुडवाना या वारीक करवाना, हाथ से हिला कर मसलाना।

चूथायोडौ-भू०का०कृ०—१ देखो 'चीथायोडौ' (रू भे) २ डाका डलाया हुआ ३ हाथो से द्रव पदार्थ के साथ तुडवाया हुआ या वारीक कराया हुआ, हाथो से हिला कर मसला हुआ।

(स्त्री० चूथायोडी)

चूथावणौ, चूथावबौ—देखो 'चुथाणौ' (रू भे)

चूथावणहार, हारौ (हारी), चूथावणियौ—वि०।

चूथाविओड़ौ, चूथावियोडौ, चूथाव्योडौ—भू०का०कृ०।

चूथावीजणौ, चूथावीजबौ—कर्म वा०।

चूथावियोड़ौ—देखो 'चूथायोडौ' (स्त्री० चूथावियोडी)

चूथियोडौ-भू०का०कृ०—१ रौंदा हुआ, कुचला हुआ. २ लूटा हुआ डाका डाला हुआ ३ हाथो से द्रव पदाथ के साथ तोड कर वारीक किया हुआ, हाथो से हिला कर मसला हुआ। (स्त्री० चूथियोडी)

चूदडी-स०स्त्री०—१ स्त्रियो के ओढने का एक प्रकार का बुदियादार लाल रग का वस्त्र विशेष।

वि०वि०—आजकल चूदडी कई रगो और कई प्रकार की बुदियो की बनती है। इसे प्राय सधवा स्त्रियाँ ही ओढती हैं।

उ०—१ कापडिया नै कापडा, गीता वाळी नै चूदड उढाय, झालर वाजै राजा राम री।—लो गी

उ०—२ मई तौ कातै बाई कातणौ, बाद बणावै थारे रंग चूदडी।
—लो गी

(मह०—चूदड)

रू०भे०—चूनडी।

चूदडीमगळ—देखो 'चूनडीमगळ' (रू भे)

चूदडी साफौ-स०पु०—१ एक प्रकार का बिंदियादार विशेष रग का शिर पर पहिनने का साफा।

वि०वि०—इस प्रकार के साफे मे बिंदिया वधन के कार्य से डाली जाती हैं और यह कई रगो मे मिलता है।

चूदौ-वि०पु० (स्त्री० चूदी) १ वह जिसे धुधला दिखाई दे, जिसे स्पष्ट सुझाई न पडे २ छोटी आँखो वाला। उ०—कर खेंचाताणी, चूदी काणी, सुरवाणी सोकदा है।—ऊ का.

चूध-स०स्त्री०—अत्यन्त तीव्र चमक के कारण दृष्टि की अस्थिरता, चकाचौंध।

चूधौ—देखो 'चूदौ' (रू भे) उ०—सेवक जहा तहा ही स्वामी, सबद विचार वस्या सब ठौर। चूधी आखि चपल मति खूटी, चितवत ता सब मिट गई दौर।—ह पु वा (स्त्री० चूधी)

चून-स०पु० [स० चूर्ण] १ आटा, चून। उ०—भड दूजा भाराथ रा, धुर खचण वळ धून। सुत 'सिरदार' 'सुमेर' री, चलै उजाळण चून।—किसोरदान वारहठ

२ चूर्ण, चूरा। उ०—साई दे दे सज्जना, रातइ इणि परि रूंन। उरि ऊपरि आँर ढळइ, जाणि प्रवाळी चून।—ढो मा

चूनड—देखो 'चूंदडी' (मह रू भे) उ०—कोई कोई ओढया झीणी झीणी चूनड, कोई कोई ओढया दिखणी चीर।—लो गी

चूनडियाळी-स०स्त्री०—१ 'चूदडी' नामक वस्त्र को ओढने वाली स्त्री २ सधवा स्त्री।

चूनड़ी—देखो 'चूदडी' (रू भे)

चूप-स०स्त्री०—१ शौक, चाव, उत्साह। उ०—रटौ जाम आठू सदा हो जना चूप सू राम राम।—र ज प्र

२ लगन ३ प्रवल इच्छा, उत्साह। उ०—१ चवडदास का भैरूदास के रूप चावड सी चाद्रप्रहास अरि ग्रास की चूप।—रा रू

उ०—२ अब नोखचोख की वाता वणावै छै। सनेह की चूप जगावै छै।—बगसीराम प्रोहित री वात

४ स्वच्छता।

यौ०—चूपचाप।

५ चतुराई, दक्षता। उ०—पल पल माही पिये, चूप कर चिलम्या चाढै।—ऊ का

६ देखो 'चूक' (रू भे) ७ नग, नगीना (अ मा) ८ दांतों में सोने का जड़वाया जाने वाला छोटा सा आभूषण। उ०—अधर प्रवाळ सा जाणजै, दांत दाडिमी बीज। रसना नागर पान सी, चूपा चमकै बीज।—कु वरसी सांखला री वारता

९ दांत, नारियल आदि की चूड़ी के तिड़कने पर उसकी मजबूती के लिये जोड़ पर लगाई जाने वाली पत्ती विशेष।

उ०—म्हारी देवर चुडलौ हाथ को, देराणी म्हारी चुडला री चूप, आज म्हारी अमली फळ रही।—लो गी

१० शोभा, सुन्दरता, छवि। उ०—अजक ओप तें अनोप रूप चूप पार मे, हुए विद्यात सूलि लूब झूल फूल हार मे।—रा रू

चूपचाप—स०स्त्री०यौ०—स्वच्छता, सफाई।

चूपणौ, चूपबौ—क्रि०स०—१ चूमना. २ स्पर्श करना, छूना।

उ०—जद थू जाणं वाली माटी, चीर काळजौ सूपै। प्राण सजीवण करै मिनख रा, झुक झुक पगल्या चूपै।—रेवतदान

३ देखो 'चूथणौ' (३, रू.भे) उ०—आ अे झमकू, खाटो छमकू। आ अे रूपा, खाटो चूपा।—लो गी

चूपियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ चूमा हुआ २ स्पर्श किया हुआ।

३ देखो 'चूथियोड़ौ' (रू भे) (स्त्री० चूपियोड़ी)

चूवणौ, चूवबौ—देखो 'चुमणौ' (रू भे)

चूबियोड़ौ—देखो 'चूमियोड़ौ' (रू भे.) (स्त्री० चूबियोड़ी)

चूमणौ, चूमबौ—क्रि०स० [स० चुम्बन] स्नेह या प्रेमाधिक के कारण होठों से गाल आदि अंगों को स्पर्श करना, चुम्मा लेना, चूमना।

चूमणहार, हारौ (हारी), चूमणियौ—वि०।

चूमाड़णौ, चूमाड़बौ, चूमाणौ, चूमावौ, चूमावणौ, चूमावबौ —प्रे०रू०।

चूमिओड़ौ, चूमियोड़ौ चूम्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चूमीजणौ, चूमीजबौ—कर्म वा०।

चूमाणौ, चूमावौ—क्रि०स० (चूमणौ क्रि०का० प्रे०रू०)—चूमने का कार्य अन्य से कराना, चुबन लिवाना।

चूमायोड़ौ—भू०का०कृ०—चुमाया हुआ, चुम्मा लिवाया हुआ। (स्त्री० चूमायोड़ी)

चूमावणौ, चूमावबौ—देखो 'चूमाणौ' (रू भे)

चूमावणहार, हारौ (हारी), चूमावणियौ—वि०।

चूमाड़णौ, चूमाड़बौ, चूमाणौ, चूमावौ— रू०भे०।

चूमाविओड़ौ, चूमावियोड़ौ, चूमाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चूमावीजणौ, चूमावीजबौ—कर्म वा०।

चूमावियोड़ौ—देखो 'चूमायोड़ौ' (रू भे) (स्त्री० चूमावियोड़ी)

चूळाई—स०स्त्री०—एक प्रकार का क्षुप जिसकी पत्तियों का शाक बनाया जाता है। चदलाई (क्षेत्रीय)

चूळाफळी—स०स्त्री०—चौंला नामक अनाज की फली।

चूळियौ—देखो 'चूळियौ' (रू भे)

चूळौ—स०पु०—१ चौंला नामक अनाज या इसका पौधा २ देखो 'चूळौ' (रू भे)

चूक—स०पु०—१ भूल, त्रुटि, गलती। उ०—पडी चाकरी चूक घणी जद घणी रिसायौ। झुरती कामण छोड रामगिरि यक्ष सिधायौ।—मेघ

क्रि०प्र०—करणौ, पडणौ, होणौ।

२ धोखा, कपट, छल। उ०—१ ऊंचा रंगमहल मांहै बैठा मिमलत मांडी। रावजी सू चूक कीजै तो राज आपणौ आपणं घरै रहै।—राव रिणमल री वात

उ०—२ एक दिन किणी रै दीवै सू गाडै लाय लागी। रजपूत सोह लाय बुझावण नू गया। राव कनै लाडक ऊभौ छै, मन मांहै चूक। —नैणसी

३ षड्यन्त्र। उ०—१ रावत जसवतसिंघ नू स० १६६० राणै जगतसिंघ चूक कराय मरायो।—बां दा ख्यात

४ कमी, अभाव। उ०—अर चक्री रा चक्र रै समान मही रै माथै प्रतिबिंब पाडता चतुरंग चक्र मेघमाळा मे चचळा रा चपळ भाव मैं चूक पाडता चद्रहास चलाया।—व भा

५ अद्भुत कार्य। उ०—झकझकत वारंग फेर झुकत, हुवै इम चूक मुनेस हसत।—सू प्र.

६ सभ्रम, गफलत। उ०—इधकाय इसड़ौ गजर उडियौ धाय खग जुहि घूमरा, पहराय न सकै माळ कठ परि, आय न सकै अप- छरा, इण चूक ऊपर हसै मुनि इद्र सभै जोगिंद चौसरा, राम रा धाव करत किरमर मिळै भोहर मोसरा।—सू प्र

[स० चुक्र] ७ अमलवेत या खट्टा शाक विशेष।

चूकणौ, चूकबौ—क्रि०अ०—१ त्रुटि करना, गलती करना, भूलना।

उ०—मेहाई महिमा मुणी, मै मूरख मतिमद। जिण अदर चूकौ जिकौ, कीजै माफ कविंद।—मे म

२ लक्ष्यभ्रष्ट होना ३ छोड़ना, अवसर खोना।

उ०—१ बिदर सहेल्या बीच मे, हस-हस मारै होड। चेली सू चूकै नही, मोकौ लागा मोड।—ऊ का

उ०—२ अमली री ऐलाण, बुरौ किणी री ना करै। वेगरझा री वाण, चूकै वार न चकरिया।—मोहनराज साह

उ०—३ क्रम क्रम ढोला पथ कर, ढाण म चूके ढाळ।—ढो मा

४ फैसला होना, निबटारा होना। उ०—ताहरा राजा कनक- रथ कह्यौ—आप तखत विराजै, हू तौ झगड़ू छू म्हारौ झगड़ौ चूकसी तथा पछै वैमस्या।—पलक दरियाव री बात

चूकणहार, हारौ (हारी), चूकणियौ—वि०।

चूकवाणौ, चूकवावौ, चूकवावणौ, चूकवावबौ—प्रे०रू०।

चूकाणौ, चूकावौ, चूकावणौ, चूकावबौ—क्रि०स०।

चूकिओड़ौ, चूकियोड़ौ, चूक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

चूकीजणौ, चूकीजबौ—भाव वा०।

चूकमार—स०पु०—एक प्रकार का शस्त्र विशेष।

उ०—वरछिग्रा रा घमोडा लाग रह्या छै। चूकमारा री खाटखड लाग रही छै।—रा सा स

चूकाणो, चूकावौ—देखो 'चुकाणो' (रू भे)

चूकाणहार, हारौ (हारी), चूकाणियो—वि०।

चूकावणौ, चूकाववौ—रू०भे०।

चूकायोडौ—भू०का०कृ०।

चूकाईजणौ, चूकाईजवौ—कर्म वा०।

चूकायोडौ—देखो 'चुकायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चुकायोडी)

चूकावणो, चूकाववौ—देखो 'चुकाणो' (रू भे)

चूकावणहार, हारौ (हारी), चूकावणियौ—वि०।

चूकाविग्रोडौ, चूकावियोडौ, चूकाव्योडौ—भू०का०कृ०।

चूकावीजणौ, चूकावीजवौ—कर्म वा०।

चूकावियोडौ—देखो 'चुकावियोडौ' (रू भे) (स्त्री० चूकावियोडी)

चूकियोडौ—भू०का०कृ०—१ त्रुटि किया हुग्रा, भूल किया हुग्रा २ फैसला किया हुग्रा, निवटारा किया हुग्रा ३ लक्ष्यभ्रष्ट ४ ग्रवसर चूका हुग्रा ५ छोडा हुग्रा। (स्त्री० चूकियोडी)

चूको—स०पु०—एक प्रकार का खट्टा साग, चुका (ग्रमरत)

चूड—स०स्त्री०—१ प्राय विधवा स्त्रियो द्वारा कलाई या वाहु पर धारण करने का सोने या चादी का एक ग्राभूषण २ शिर के वाल, चिकुर।

चूडलियौ, चूडलौ—देखो 'चूडौ' (ग्रल्पा रू भे)

उ०—१ चूडल्यिँ मजीठ थारै हाथा मैदी सोवै ग्रो।—लो गी

उ०—२ नणदल वाई रै चूडलियौ चिराय ग्रो घण वारी रै हजा। देवरजी नखराळा रै चिटियौ दात रौ ग्रो राज।—लो गी

उ०—३ खूटया टक्या नवसर हार वाला जो, हाले तौ चिरादू थारै चूडलौ ए पणिहारी ऐ लो।—लो गी

चूडल्यौ—देखो 'चूडौ' (ग्रल्पा रू भे.)

चूडाकरण—स०पु० [स०] हिन्दुग्रो के सोलह सस्कारो के अतर्गत एक सस्कार जिसमे वच्चे का प्रथम वार शिर मुडवा कर शिखा रखवाई जाती है।

चूडाक्रम—स०पु० [स० चूडाकर्म] चूडाकरण।

चूडामण—स०पु०—सोलकी वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

चूडामणि, चूडामणी—स०पु० [स० चूडामणि] १ शीशफूल नामक स्त्रियो का गहना। उ०—दई दीध सो मुद्रका सीत दीधी, लहे मुद्र चूडामणी दीध लीधी।—सू प्र

२ प्रधान, मुखिया ३ सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति।

चूडाळ—स०पु०—दोहा छद का एक भेद जिसके विषम पद तेरह तेरह मात्रा के ग्रौर सम पर सोलह सोलह मात्रा के होते है।

चूडाळी—वि०—चूडा पहनने वाली, सधवा। उ०—चूडाळी क्यू यू रै'वै चवै, मन मे क्यू जाणे न। एका फळ खारा हुवै, एका खाइज फेन। —जलाल वूवना री वात

चूडावण—स०स्त्री०—१ चुडैल, प्रेतनी. २ दुष्टा स्त्री।

चूडावळि, चूडावळी—स०स्त्री०—१ वह स्त्री जो चूडा धारण किये हो, सौभाग्यवती २ चुडैल, पिशाचिनी।

चूडासमा—स०स्त्री०—यादव वश की एक शाखा।

चूडी—स०स्त्री०—१ परिधि मात्र का वह मडलाकार पदार्थ जिसके मध्य का स्थान खाली हो २ किसी मशीन के पुर्जे या पेच के ग्रासपास के घेरे की लकीरें जो कसने या इधर-उधर न हिलने देने के लिये होती हैं ३ ग्रामोफोन पर वजाया जाने वाला रेकॉर्ड।

यौ०—चूडीबाजौ।

४ स्त्रियो द्वारा हाथो मे पहनने का एक वृत्ताकार गहना जो काच, लाख, चाँदी या सोने का वनता है। उ०—१ ढोलउ चाल्यउ हे सखी, वाज्या विरह निसाण। हाथे चूडी खिस पडी, ढीला हुग्रा सघाण।—ढो मा

उ०—२ कोई वीर स्त्री भागळ पती नै कहै छै—हे कथ! ग्राप भला भागनै जीवता घरे ग्राया, ग्रवै म्हारी वेस धारण करावौ, ग्रवै म्हनै ग्रा चूडिया सू लाज ग्रावै छै।—वी स टी.

मुहा०—१ चूडिया तोडणी—ग्रपने शौहर के मरने पर स्त्री का ग्रपनी चूडिया तोडना। २ चूडिया पै'रणी—स्त्री वनना, कायर वनना। ३ चूडिया वदरणी—चूडियो का टूटना। ४ चूडिया वदारणी—चूडियो को तोड कर हाथो से ग्रलग करना। (चूकि चूडिया तोडना ग्रशुभ माना जाता है, ग्रत 'चूडियाँ वदारणी' का प्रयोग करते हैं।)

५ किसी तग व लवी मोहरी वाले पाजामा के मोहरी के ग्रत मे डाली जाने वाली शिकनें या घेरे।

६ वह वकरी जिसके पैर सफेद व चूडी के ग्राकार के हो।

चूडिगर—स०पु०—१ नारेली, गेंडे की ढाल ग्रथवा हाथीदात का चूडा ग्रादि वनाने का व्यवसाय करने वाली एक जाति विशेष जो ग्रपने को सैयद कहते है २ इस जाति का व्यक्ति।

चूडीदार—वि०यौ०—चूडी या छल्ले के ग्राकार के घेरे युक्त।

चूडीवाजौ—स०पु० [यौ०] फोनोग्राफ, ग्रामोफोन का वाजा।

चूडौ—स०पु०—१ स्त्रियो द्वारा भुजाग्रो मे पहनने का चूडियो का वह समूह जिसमे छोटी चूडी कुहनी के पास तथा सवसे वडी चूडी बाहुमूल मे रहती है जो किसी जाति मे नववधू ग्रौर किसी जाति मे प्राय: सब विवाहिता स्त्रिया पहनती हैं। चूडे प्राय. हाथीदात के ग्रधिक प्रयोग मे लिये जाते हैं। इनकी चूडिया कुहनी से वाहुमूल तक गावदुम रहती हैं।

उ०—फौजा देख न कीधी फौजा, दोयण किया न खळा-डळा। खवा खाच चूडै खावद,रै, उणहिज चूडै गई यळा।—वा दा

मुहा०—१ चूडौ ग्रमर (ग्रखि) रै'णौ—ग्राशीर्वादात्मक सौभाग्यसूचक शब्द,'सौभाग्य ग्राजीवन वना रहना २ चूडौ पै'रणौ—पुनर्विवाह करना, किसी पुरुष के साथ पति का सम्वन्ध स्थापित करना ३ चूडौ फूटणौ—वैधव्य को प्राप्त होना, सौभाग्य खडित होना ४ चूडौ भागणौ—देखो 'चूडौ फूटणौ' २ ग्रहिवात, सौभाग्यचिह्न। उ०—पुत्रवती सोहागवति, पतिवरता पिण सोय। स्री राणी चूडौ सथिर, वाणी भणै सकोय।—रा रू

३ चोटी, शिखा।

यौ०—चूडाकरम, चूडामणि।

४ हरिजन, भगी (मा म) उ०—ऊच नीच अतर नहि एको, राम भजै सोइ रूडो। परमेस्वर नै नही पिछाणी चार वरण गे चूडो।
—ऊ का

अल्पा०—चुडलियौ, चुडलौ, चुडल्यौ, चूडलियौ, चूडलो, चूडल्यौ।

चूची–स०स्त्री० [स० चूचुक] स्तनो के ऊपर की घुडी, कुचाग्र।

चूजो–स०पु०—मुर्गी का बच्चा।

चूण—देखो 'चुण' (रू भे) उ०—अनड पव्व आकारा मे, नित चूण दिराडै।—केसोदास गाडण

चूणि–स०पु० [स० चूणि] १ चूर्ण. २ सौ कौडियो के योग या जोड (जैन)

चूणो, चूवौ—देखो 'चवणो' (१ रू भे)

चूत–स०स्त्री० [स० च्युति] योनि, भग, जननेन्द्रिय।

चूति–स०पु० [स० च्युति] १ पतन २ अलगाव, पृथकता ३ टपकना।

चूतियाचक्कर, चूतियापथी–स०पु०यौ०—मूर्खता, नासमझी, बेवकूफी।

चूतियौ–वि०—मूर्ख, नासमझ।

यौ०—चूतियाचक्कर, चूतियापथी।

चून—देखो 'चूण' (रू भे) उ०—आटो खाण्या नह अडचा, भीड पडया ग्या भाज। चून खावण्या चंड हूँ, लड राखी वर लाज।
—रेवतसिंह भाटी

वि०—श्वेत, सफेद *।

चूनउ–स०पु०—[स० चूर्णक] १ भुना या पिसा हुआ अनाज।

२—देखो 'चूनो' (रू भे)

चूनगर–स०पु०—चूने का कार्य करने वाली एक जाति विशेष या इस जाति का व्यक्ति २ चूना बनाने या चूने से लीपने, पोतने का कार्य करने वाला।

चूनड—देखो 'चूदडी' (मह) उ०—१ मोतीडा री ईंडी जद सोवै म्हारै चूनड अमोलक होय, भर ल्याबू पाणीडो।—लो.गी

उ०—२ कोई कोई ओढचा, झीणी झीणी चूनड, कोई कोई ओढचा दिखणी चीर, होळी आई ए।—लो गी

चूनडिया साफो–स०पु०यौ०—चुनरो की भाति रगा हुआ बुदियादार साफा।

चूनडी—१ देखो चूदडी' (रू.भे) उ०—पैंहरण आछी चूनडी, कु कु चढण खोळ, कराई। उठो सवारा चालम्या, गाढी रोई गोरी गळिलाई।—वी.दे.

२ विवाह के अवसर पर वधू की माता के भाई के आने पर उसके स्वागत मे गाया जाने वाला एक लोक गीत।

चूनडी मगळ–स०पु०यौ०—फलित ज्योतिष मे एक योग जब मगल ग्रह कन्या की जन्म, कुण्डली में प्रथम, (द्वितीय), चतुर्थ, सप्तम, अष्टम व द्वादश स्थानो मे से किसी एक स्थान मे हो।

वि०वि०—इन स्थानो मे मगल के अतिरिक्त शनि या राहु की स्थिति भी चूदडी मगल मानी जाती है। यह स्थिति लग्न से चद्र व शुक्र से भी जानी जाती है, यह अशुभ माना जाता है, इसमे विवाह वर्जित है।

रू०भे०—चूदडी मगळ। (मि० मौळिया-मगळ)

चूनडी साफो—देखो 'चूनडिया साफो' (रू.भे)

चूनादानी—वह पात्र विशेष जिसमे खाने के लिये पान, सुपारी व सुरती आदि रखी रहती हो।

चूनारो–स०पु०—देखो 'चूनगर' (रू भे)

चूनाळ, चूनाळजो, चूनाळि—देखो 'चुनाळजो' ? (रू भे)

उ०—खान आप गाजियो, हाथि हरणाकुस हणियो चूनाळि जिम चाबियो, खरो तै काळिज खिणियो करि कोप मुख रातो कियो तू नरसिंघ न लाजियो।—पीरदान लाळस

चूनाळो–स०पु०—योद्धा, वीर पुरुष। उ०—घणा घाओ घमचाळि, चूनाळा थिय चालणी। आप तणा तण अरि हरा, छडिया उवर छडाळि।—वचनिका

चूनी–स०स्त्री०—१ रत्न कण, नग ? उ०—जाणो सोना री तो रग कपोळा रा रग सू उरै है, पिण चौका रो चहन ही करणफूना री चूनियां मे दुरै है।—र हमीर

चूनीरग–स०पु०—एक प्रकार का रग विशेष का घोडा।

चूनू–वि०—श्वेत* (डि को)

स०पु०—देखो 'चूनो' (रू भे)

चूनेवाळिया–स०स्त्री० (बहु०)—वे मुसलमान वेश्यायें जो बरात के साथ नाचने गाने के लिये जाया करती हैं (मा म)

चूनो–स०पु० [स० चूर्ण चूर्णक] मुरड, पत्थर, ककर, मोती, सीप आदि को भट्टी मे फूक कर तैयार किया गया एक तीक्ष्ण क्षार जो प्राय दीवार की जोडाई या पोतने के काम आता है।

मुहा०—१ चूनो लगाणो—आर्थिक क्षति पहुँचाना, धन आदि का हरण करना, धोखा देना। २ नाक रै चूनो लगाणो—किसी की इज्जत मे बट्टा लगाना।

चून्यो–स०पु०—१ हीरा, जवाहरात।

२ देखो 'चूनो' (रू भे)

चूप–स०स्त्री०—१ चतुराई, बुद्धिमानी। उ०—सरवग उदर उरवर सरूप, चन्द्रवदन रचै फिर परम चूप।—रा रू

२ चाह, इच्छा। उ०—हाथी सवा लखी नायक नै पातसाह फरमायो है तो ल्यायो छै तैसू कुवरजी रै चूप छै तो आप राखो।
—पलक दरियाव री बात

३ देखो 'चूप' (रू भे)

चूपणो, चूपवो—देखो 'चू पणो' (रू भे) उ०—जुग तरण जुहारै परण पधारै चरण कमळ चूपदा है।—ऊ का

चूवारा–स०पु०—रूई धुनने और चूने व कली का काम करने वाली हिन्दुओ की एक जाति।

चूमणो, चूमबो—देखो 'चूमणो' (रू भे) उ०—मुखडो माताजी चूमे चाव सू, कोई मना न मावै मोद ।—गी रा

चूमाणो, चूमाबो—देखो 'चूमाणो' (रू भे)

चूमायोडो—देखो 'चूमायोडो (रू भे.) (स्त्री० चूमायोडी)

चूमावणो, चूमावबो—देखो 'चूमाणो' (रू भे)

चूमावियोडो—देखो 'चूमायोडो' (रू भे) स्त्री० (चूमावियोडी)

चूमियोडो—देखो 'चूमियोडो' (रू भे) (स्त्री० चूमियोडी)

चूर–स०पु० [स० चूर्ण] १ देखो 'चूरो' (रू भे)
२ ध्वस, नाश । उ०—१ करी चूर कुळ सुभाव हू त सादूळ कह विधु नखित्र सोम भरपूर बरसै ।—र ज प्र
उ०—२ कैजमा भळक सिलहा खळक, भळळ तेज ग्रणिया भमर । देवडा चूर करिवा दुभ्झल, 'सूर' चढे ग्रारभ समर ।—सू प्र
मुहा०- -चूर होणो—नाश होना, ध्वश होना, लीन होना, अनुरक्त होना, उन्मत्त होना ।

चूरण–स०पु० [स० चूर्ण] १ बहुत महीन पीसा हुग्रा या महीन-महीन टुकडे किया हुआ पदार्थ २ चूर-चूर होने का भाव ३ ग्रार्या या गाहा छद का भेद विशेष जिसके चारो चरणो मे मिला कर १८ दीर्घ ग्रौर २१ ह्रस्व सहित ५७ मात्रा हो (ल पि)

चूरणो, चूरबो–क्रि०स० [स० चूर्ण] १ टुकडे टुकडे करना, तोडना, महीन चूरा करना । उ०—सड-सड वाहि म कवडी, रागा देह म चूरि । विहु दीपा विचि मारुई, मो थी केती दूरि ।—ढो मा.
२ नाश करना, ध्वंस करना । उ०—१ चौरग चूरिया वर सेत, 'चादै' भिडै नवली भाति । गोरडी काढै गात गोखैं, रडै गळती राति ।
—चादा वीरमदेवोत री गीत
उ०—२ चउदह हजार खळ चूरिया जैत जै जगदीस री ।
—पीरदान लाळस
चूरणहार, हारो (हारी), चूरणियो—वि० ।
चूराणो, चूराबो, चूरावणो, चूरावबो—प्रे०रू० ।
चूरिग्रोडो, चूरियोडो, चूरयोडो—भू०का०कृ० ।
चूरीजणो, चूरीजबो—कर्म वा० ।

चूरण्यो–स०पु०—गुदा के मुह पर मल मे पडने वाला छोटा कीट ।

चूरमियो, चूरमू—देखो 'चूरमो' (ग्रल्पा रू.भे)
उ०—१ राधा चूरमियो करजो तैयार, म्हे हा तीरथ वासी ।
—लो गी
उ०—२ गैलो गाव, गाव गैलै नै, गिणै नही गरवाई नै । चित जिदा री करचो चूरमूं, कनै राखि कडवाई नै ।—ऊ का

चूरमूर–वि०—चूर्णवत्, महीन, बहुत बारीक, चूर-चूर ।
उ०—हमं गज्ज गाह भय चूरमूरं ।—ला रा

चूरमो–स०पु० [स० चूर्ण] रोटी, बाटी या पूरी ग्रादि को चूर कर घी व शक्कर मिला कर बनाया जाने वाला एक खाद्य पदार्थ ।
उ०—१ फेर भोर कूट छाण माहे बूरो घातजै छै । चूरमो कुतवी वणायजै छै ।—रा सा स
उ०—२ ग्वाळा नै म्हारै गळछट चूरमो, हाळिया नै खीर लापसी ग्रे ।
—लो गी
ग्रल्पा०—चूरमियो ।

चूरीभाटो, चूरूभाटो–सं०पु०—सफेद रग का नर्म पत्थर जो चूर्ण बना कर चूने मे मिलाया जाता है या स्त्रिया जिसको लड्डू में मिला कर खाती हैं ।

चूरो–स०पु० [स० चूर्ण] किसी वस्तु का पीसा हुग्रा भाग, चूर्ण, बुरादा ।

चूळ–स०पु०—१ रहट के चक्र को खडा रखने के लिये दोनो ग्रोर लगाये जाने वाले लट्ठो को जोडने का लकडी का उपकरण २ किसी लकडी का वह पतला सिरा जो किसी दूसरी लकडी के छेद मे उसके साथ जोडने या उसमे घूमने के लिए लगाया जाय ।
मुहा०—चूळ निकाळणो—लकडी खोदना ।
३ कूल्हे की हड्डी ।
ग्रल्पा०—चूळियो ।
४ देवी की भुजाग्रों में धारण किया जाने वाला एक ग्राभूषण
५ फरसे की तेज धार ।

चूलडी–स०स्त्री०—देखो 'चूलो' (ग्रल्पा रू भे)

चूळिका–स०स्त्री० [स० चूलिका] १ एक भाषा विशेष. २ स्त्रियो का कान मे पहनने का एक ग्राभूषण, कर्णफूल ।

चूळियो–सं०पु०—१ देशी या सादे कपाट के नीचे व ऊपर लगाया जाने वाला वह नुकीला भाग जिस पर ग्राधारित रह कर कपाट बद हो सकता है ग्रौर खुल सकता है ।
वि०वि०—यह कब्जेरहित किवाडो मे ही लगाया जाता है ।
२ कूल्हा ।
मुहा०—१ चूळियो कुटावणो—किसी के पास रह कर उसकी सेवा-टहल करना, ग्रथक परिश्रम करना, किसी स्त्री का पुरुष से सभोग कराना २ चूळियो कूटणो—किसी व्यक्ति से ग्रधिक श्रम लेना, स्त्री के साथ सभोग करना ।
रू०भे०—चूळियो ।

चूलियो—देखो 'चूलो' (ग्रल्पा रू भे)

चूळीयाळ, चूळीयाळो–स०पु०—तेरह एव सोलह मात्रा पर यति वाला एक मात्रिक छद विशेष ।

चूलो–स०पु० [स०चुल्लिः] घोडे के नाल के ग्राकार का ग्रर्द्ध चद्राकार लोहे या मिट्टी का बना ग्रगीठी के समान वह पात्र जिसमे ग्राग ग्रादि जला कर उस पर भोजन ग्रादि पकाया जाता है ।
मुहा०—१ चूला मे ऊदरा दौडणा—खाने को बिल्कुल न मिलना ।
२ चूला मे जाणो, चूला मे नाखणो—फेंक देना, दूर करना ।
३ चूला मे पडणो—नष्ट-भ्रष्ट होना, ग्रस्तित्व मिटना ।
४ चूलै चढाणो—पकाने के लिये तैयार करना । ५ चूलै री चाद

होणी—अधिक भोजन-प्रिय होना, स्त्रैण स्वभाव का होना। ६ चूलो फूकणी—रसोई बनाना।

कहा०—१ चवदं चूला री धूळ उडणी—पूर्ण निधन होना, अत्यन्त निर्धनता के प्रति २ चूलो कं'ह साव सोवणो वेवणी कं'ह गूर्दा मे बैठी हूं—चूल्हा अपने आपको बहुत श्रेष्ठ बताता है तो उससे सलग्न वह भाग जिसमे राख एकत्रित होती है, कहता है कि मै तुम्हारे अत्यन्त निकट हू, तुम्हारे गुणो को जानती हू, तुम्हारे स्वय के कहने की आवश्यकता नही है। अपने अत्यन्त निकट रहने वाले व्यक्ति के समक्ष गुणानु-वर्णन करने की आवश्यकता नही, वह पूर्णरूपेण गुणावगुण से परिचित होता है। डीग व शेखी बघारना बहुत बुरा है।

रू०भे०—चूल्हो।

अल्पा०—चूलडी, चूलियो, चूल्हडी।

चूल्हडी—देखो 'चूलडी' (रू.भे.)

चूल्ही-स०स्त्री०—देखो 'चूल्हो' (अल्पा. रू भे.)

चूल्हो—देखो 'चूलो' (रू भे) उ०—कहियो मीसण सस सकळ, चूल्हा दीध चढाइ।—व भा

चूवणो, चूववो—देखो 'चुअणो' (रू भे)

चूवणहार, हारो (हारी), चूवणियो—वि०।

चूवाणो, चूवावो, चूवावणो, चूवाववो—प्रे०रू०।

चूविग्रोडो, चूवियोडो, चूव्योडो—भू०का०कृ०।

चूवीजणो, चूवीजवो—भाव वा०।

चूवाणो, चूवावो—क्रि०स० ('चूअणो' क्रि० का प्रे०रू०) देखो 'चुआणो' (रू भे)

चूवायोडो—देखो 'चुआयोडो' (रू भे)

चूवावणो, चूवाववो—देखो 'चुआणो' (रू भे)

चूवावियोडो—देखो 'चुआयोडो' (रू भे)

चूवियोडो—देखो 'चुयोडो' (रू भे.)

चूसणो, चूसवो—क्रि०स० [स० चूष] १ होठ व जीभ के सयोग से किसी द्रव पदार्थ को खीच-खीच कर पीना, चूसना २ सारहीन करना।

चूसणहार, हारो (हारी), चूसणियो—वि०।

चूसाणो, चूसावो, चूसावणो, चूसाववो—प्रे०रू०।

चूसिग्रोडो, चूसियोडो, चूस्योडो—भू०का०कृ०।

चूसीजणो, चूसीजवो—कर्म वा०।

चूसमार—स०पु०—एक प्रकार का हिंसक पक्षी जो पक्षियो को मार कर उनका रक्त चूसता है।

चूसा—स०स्त्री० [स० चूषा] वह पेटि या पट्टा जो हाथी की कमर मे बाधा जाता है।

चूसाणो, चूसावो—क्रि०स० ('चूसणो' क्रि० का प्रे०रू०) चूमने का कार्य दूसर से कराना।

चूसायोडो—भू०का०कृ०—चुसाया हुआ, सारहीन कराया हुआ।

चूसावणो, चूसाववो—देखो 'चूसाणो' (रू भे)

चूसावणहार, हारो (हारी), चूसावणियो—वि०।

चूसाविग्रोडो, चूसावियोडो चूसाव्योडो—भू०का०कृ०।

चूसावीजणो, चूसावीजवो—कर्म वा०।

चूसावियोडो—देखो 'चूसायोडो' (रू भे)

चूसियोडो—भू०का०कृ०—१ चूसा हुआ, रस खीचा हुआ २ सारहीन किया हुआ। (स्त्री० चूसियोडी)

चूह—स०पु०—एक प्राचीन राजपूत वश।

चूहण, चूहाण—देखो 'चौहान' (रू भे)

चूहावान, चूहावानी—स०स्त्री०—चूहो को पकडने या फँसाने का एक विशेष प्रकार का पिंजडा।

चूहडी—देखो 'चूडी' ३ (रू भे)

चूहों—स०पु०—प्राय घरो व खेतो मे बिल बना कर उसके अन्दर रहने वाला चार पैर का एक प्रसिद्ध छोटा जतु।

वि०वि०—भारत मे खाकी रग के चूहे अधिक प्राप्त होते हैं। इसके दात बडे तेज होते हैं, जिससे खाने-पीने की वस्तुओ के अतिरिक्त कपडे, कागज व अन्य वस्तुओ को भी काट डालता है। इसका शत्रु बिल्ली है जो बडे चाव से इसका शिकार करती है।

चें—देखो 'चें' (रू भे)

चेंठणो—देखो 'चेठणो' (रू.भे)

चे—स०पु०—१ रवि. २ चद्रमा ३ कृष्ण. ४ मन. ५ तलवार ६ समूह (एका)।

चेअर—स०स्त्री० [अ०] बैठने की कुरसी।

चेइ—स०पु० [स० चेदि] १ चेदि देश (जैन) [स० चैत्य] २ शव के दाह-स्थान पर बनाया हुआ स्मारक (जैन) ३ जैन मदिर ४ इष्टदेव की मूर्ति, जिन देव की मूर्ति।

चेइय—स०पु० [स० चैत्य] देव-स्थान (जैन)

चेइय खभ—स०पु० [स० चैत्यस्तभ] चैत्यस्तभ, स्तूप (जैन)

चेइय भूम—चैत्य स्तूप।

चेइय रुक्ख—स०पु० [स० चैत्य वृक्ष] १ वह वृक्ष जहा जैन तीर्थंकर या जिन देव को कैवल्य ज्ञान प्राप्त हुआ हो २ वह वृक्ष जिसके नीचे चबूतरा हो ३ मनुष्यो के विश्राम-स्थान का वृक्ष (जैन)

चेउ खेव—स०पु० [स० चेलोत्क्षेप] आकाश से होने वाली वस्त्रो की वृष्टि (जैन)

चेड—स०स्त्री०—१ बडा भोज, सामूहिक भोज २ विशाल मृत्यु-भोज।

चेडो—स०पु०—१ भूत-प्रेत का उपद्रव २ आफत, इल्लत, बला।

उ०—तै करी कुबधि फेरी तिका, वैरी कदे न वीसरू। चित हूत हटै चेडो अचळ, नेडो फेर न नीसरू।—ऊ का.

३ वस्त्र का किनारा, छोर।

रू०भे०—छेडो।

चेचक—स०स्त्री०—शीतला का रोग।

चेचि—स०पु०—एक प्रकार का घोडा (सू प्र)

चेजारो–स०पु०—दीवार चुनने का कार्य करने वाला व्यक्ति ।
उ०—लिया तगारी नार साफ रोटी ले जावं, चेजारै रो चाव मजूरी मूह री पावै ।—दसदेव

चेजो–स०पु०—१ दीवार की जोडाई का कार्य । उ०—नावें मोल मजूर लदै ऊटा पर बोरा, गार गिलोवणहार चिणावं चेजै ओरा ।
—दसदेव

२ (पशु-पक्षियो का) आहार, भोजन । उ०—१ मूछ न तोडो कोट मे, कढिया छोडै काळ । काळा घर चेजो करै, मूसा पण मूछाळ ।
—वी.स.

उ०—२ इतरी कही डाढाळो चेजो करणै नूं गयो ।
—डाढाळा सूर री वात

३ गुजारा, निर्वाह ।

चेट–स०पु० [स०] १ दास, सेवक, नौकर (ह ना) २ पति, स्वामी । ३ नायक व नायिका को मिलाने वाला व्यक्ति, भाड, भड़आ ।

चेटक–स०पु०—एक रग विशेष या भौंरी विशेष का घोडा (शा हो)
वि०वि०—इस रग का घोडा मेवाड के महाराणा प्रताप के पास था जो उन्हें बहुत प्यारा था ।

चेटकी–वि०—१ क्रोधी चिडचिडे स्वभाव का २ उतावला, उद्धत ।
उ०—रामसिंह रा ठणिया दक्षिणी ऊठिया अर कन्हीराम रामसिंहोत खैर री चेटकी सो महाराजा वखतसिंहजी सू वाणक न रही ।
—मारवाड रा अमरावा री वारता

चेटल–स०पु०—सिंह का बच्चा । उ०—केळ चतर लख कवर, भूलो मत भ्रम भाव । चेटल ही गज पर चढै, सींहा जात सुभाव ।
—र हमीर

चेटिका, चेटी–स०स्त्री० [स०] सेवा करने वाली स्त्री, दासी, सेविका ।

चेड, चेडो–स०पु० (स्त्री० चेडी) नौकर, दास (ह ना)

चेढ़ी–स०स्त्री०—राज्य का एक भाग, प्रदेश । उ०—वडी अळियळ देस चवदै चेढी गाव लागै, चेढी १ री मान ५६० तिण चवदै चेढी रा गाव ७८४० हुआ ।—नैणसी

चेढीमणो–वि०—योद्धा, वीर, पराक्रमी ।

चेढो–स०पु०—नग, रत्न । उ०—प्यारी देख्यो थारा कपोल रो तिल चकाग मे रयो है किसोक तिळ जिको कनक रै आगण जडाउ थाणो जिणमे सिणगार रस रो हीज चेढो लागै जाणो ।—र हमीर

चेत–स०पु० [स० चेतस्] १ चित्त की वृत्ति, चेतना, सज्ञा, होश ।
उ०—इतरै डाढाळा नू चेत हुवो ।—डाढाळा सूर री वात
क्रि०प्र०—आणो, करणो, होणो ।
२ सावधानी ।
मुहा०—चेत नै हालणो—सावधानी या सतर्कता से चलना ।
३ स्मरण, याद ४ मन (ह ना) ५ देखो 'चैत' (रू भे)

चेतकी–स०स्त्री०—१ हरड, हर्रे (अ मा) २ सात प्रकार की हरडो मे से एक विशेष प्रकार की हरड जिस पर तीन धारियां होती हैं ३ एक रागिनी (सगीत)

चेतणो, चेतबो–क्रि०अ० [स० चेतनम्] १ होश मे आना, सज्ञा मे होना । सावधान होना । उ०—घणो वतावै ग्यान, समय जाय है सहज मे । भूलै किम भगवान, चेतै क्यू नहिं चकरिया ।—मोहनराज साह
२ छिडना, आरभ होना (लडाई) उ०—चीण उदगळ चेतयौ, दळ मझ गयो दुवाह । फरक फतूहा फाबियो, आरण कियो उछाह ।
—किसोरदान वारहठ

३ प्रज्वलित होना ।
क्रि०स०—४ विचार करना, सोचना ।
चेतणहार, हारो (हारी), चेतणियो—वि० ।
चेताणो, चेतावो, चेतावणो, चेतावबो—क्रि०स० ।
चेतिओडो, चेतियोडो, चेत्योडो—भू०का०कृ० ।
चेतीजणो, चेतीजबो—भाव वा०, कर्म वा० ।

चेतन–स०पु० [स०] १ आत्मा, जीव । उ०—चेतन वध्या मन सू, मन करमें वध्या ।—केसोदास गाडण
२ प्राणी, जीवधारी । उ०—चेतन किण विध तजै, मन ज्या वसियो मोह । चुकमक सू जाय'र चिपै, लखो अचेतन लोह ।
—र हमीर

३ मनुष्य, आदमी ४ ईश्वर । उ०—चवता चरित तुहारा चेतन, जगत नही पुनरपि मानव जन ।—ह र

चेतनता–स०स्त्री० [स०] चैतन्यता, सज्ञानता ।

चेतना–स०स्त्री० [स०] १ होश, सज्ञा, सचेत अवस्था । उ०—इया वोलतो वोलतो चेतना-सून्य हो'र मूधै मूडै जाय पडियो ।—वरसगाठ
२ बुद्धि, ज्ञान ३ याद, स्मृति ४ सावधानी, सतकता ।

चेतवणो, चेतवबो—देखो 'चेतणो' (रू भे)

चेतवियोडो—देखो 'चेतियोडो' (रू भे) (स्त्री० चेतवियोडी)

चेताचूक–वि०—१ बदहवाश २ गाफिल, वेसुध ३ व्याकुल ।

चेताणो, चेताबो–क्रि०स० ('चेतणो' क्रि० का प्रे०रू०) १ होश मे लाना, चेतन करना २ सावधान करना, सचेत करना ३ प्रज्वलित करना, धधकाना (अग्नि) ४ (युद्ध) छेडना ।
चेताणहार, हारो (हारी), चेताणियो—वि० ।
चेतायोडो—भू०का०कृ० ।
चेताईजणो, चेताईजबो—कर्म वा० ।
चेतणो—अक०रू० ।

चेतायोडो–भू०का०कृ०—१ सचेत किया हुआ २ सावधान किया हुआ. ३ आरभ किया हुआ ४ प्रज्वलित किया हुआ ।
(स्त्री० चेतायोडी)

चेतावणी–स०स्त्री०—सतर्क होने के लिये दी गई सूचना, चेतावनी ।
उ०—एकाएक मेघ गरजना दाई एक भारी गळै रा चेतावणी भरियोडा सवद काना मे पडिया ।—वरसगाठ
रू०भे०—चितावणी ।

चेतावणो, चेतावबो—देखो 'चेताणो' (रू भे)
चेतावणहार, हारो (हारी), चेतावणियो—वि० ।

चेताविश्रोडौ, चेतावियोड़ौ, चेताव्योडौ—भू०का०कृ० ।
चेतावीजणौ, चेतावीजवौ—कर्म वा० ।
चेतावनी—देखो 'चेतावणी' (रू भे)
चेतावियोडौ—देखो 'चेतायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चेतावियोडी)
चेतियोडौ–भू०का०कृ०—१ होश मे श्राया हुआ २ सचेत, सावधान ३ चिन्तन किया हुआ ४ प्रारभ हुआ हुआ, प्रज्वलित । (स्त्री० चेतियोडी)
चेतुरा–स०पु०—ससार के प्राय सब भागो मे पाई जाने वाली एक प्रकार की चिडिया।
चेतौ–स०पु० [स० चेतः] १ चेतना, सज्ञा, होश ।
मुहा०—चेता चुळणा—होशहवास न रहना, ध्यान न रहना ।
२ बोध, ज्ञान । उ०—१ जणा कुवरसी श्रापरा साथ नू कही—म्हे आज रात भीतर जावा छा, था अठै हीज खडा रहिज्यो, ताहरा सगळी साथ कहण लागियौ—चेतौ ठौड छै क नही ।
—कुवरसी साखला री वारता
उ०—२ श्रात्मा मरिया पछै मिनख नै भूडा-भला री चेतौ को रवै नी ।—वाणी
३ सावधानी, सतर्कता ।
४ स्मृति, याद । उ०—दुख दे जेतौ दुसट, तिकौ कुण जाणं तेतौ। चेतौ कुळ चूकगौ, दूर सू धूळ न देतौ ।—ऊ का.
मुहा०—चेतै उतरणौ—भूल जाना, विस्मरण होना ।
चेत्रि—देखो 'चैत्रि' (रू भे) उ०—जइ तू ढोला नावियउ, कइ फागुण कइ चेत्रि ।—ढो मा
चेदि–स०पु० [स०] एक प्राचीन देश का नाम (महाभारत)
चेदिराज–स०पु० [स०] चेदि देश का राजा शिशुपाल जो श्रीकृष्ण के हाथो मारा गया था (महाभारत)
चेप–स०पु०—१ चिपचिपा या लसदार रस २ चिपकाने का भाव ।
चेपकी–स०स्त्री०—१ श्रावरण, ढक्कन. २ चुगली, निंदा ।
वि०—चुगली करने वाला ।
चेपणौ, चेपबौ—१ देखो 'चिपकाणौ' (रू भे) २ लाठी, तमाचा आदि का प्रहार करना ।
चेपणहार, हारौ (हारी), चेपणियौ—वि० ।
चेपाणौ, चेपाबौ, चेपावणौ, चेपावबौ—प्रे०रू० ।
चेपिश्रोडौ, चेपियोडौ, चेप्योडौ—भू०का०कृ० ।
चेपीजणौ, चेपीजबौ—कर्म वा० ।
चेपाणौ, चेपाबौ–क्रि०स० ('चेपणौ' क्रि० का प्रे०रू०) १ चिपकाने का काय कराना २ लाठी, तमाचे आदि का प्रहार कराना ।
चेपायोडौ–भू०का०कृ०—चिपकाया हुआ । (स्त्री० चेपायोडी)
चेपावणौ, चेपावबौ -देखो 'चेपाणौ' (रू भे)
चेपावणहार, हारौ (हारी), चेपावणियौ—वि० ।
चेपाविश्रोडौ, चेपावियोडौ, चेपाव्योडौ—भू०का०कृ० ।
चेपावीजणौ, चेपावीजबौ—कर्म वा० ।
चेपाचापौ–स०पु०यौ—१ काम चल सकने लायक गुजर, निर्वाह । २ समझौता, मेल । उ०—तद नापै नू बुलाय कही—धरती श्रा लेणी पण मोहिल टणका, धरती री इलाज करणौ, हमार मुलक री उजाड कर छै सो थे जाय चेपाचापौ करौ तद नापौ द्रोणपुर श्रायौ, मोहिलां सू मिळियौ, बात कीवी ।—नापा सांखला री वारता
चेपियोडौ–भू०का०कृ०—१ चिपकाया हुआ. २ लाठी, तमाचे आदि का प्रहार किया हुआ । (स्त्री० चेपियोडी)
चेपौ–स०पु०—१ श्राहार, भोजन २ गुजर, निर्वाह ।
यौ०—चेपाचापौ ।
३ कमरा, सदूक श्रलमारी आदि को वद कर खुलने के सधि-स्थान पर चिपकाया जाने वाला कागज का वह पुर्जा जिस पर प्रायः कोई निशान या हस्ताक्षर बने रहते हैं । इससे कमरा सदूक या श्रलमारी आदि को किसी के द्वारा खोलने पर वह कागज का पुर्जा फट जाता है और खोले जाने का पता चल जाता है। ४ किन्ही दो परस्पर विरोधी व्यक्तियो या दलो के मध्य मे राज्य सरकार द्वारा मध्यस्थता के रूप मे मनकूला अथवा गैर मनकूला सम्पत्ति पर लगाया जाने वाला राजकीय मोहर सहित कागज जो फैसला पूरा होने तक लगा रहता है । उ०—ढोर डागर थोडो घणो गैणो-गाठी, राछपीछ और दोनां झूपडा जिका नै रणछोडै रात दिन एक कर नै बडी मुसकिल सू वणाया हा, सगळाई सेठा रा है गया । झूपडा रा बारणा माथै राज रा चेपा लाग गया ।—गतवासी
चेवडौ, चेवरौ–स०पु०—सुअर का छोटा वच्चा । उ०—१ सुतन अद्रसीग केहर अनै सभुसुत, चेवडा वीया जिम नकू चलिया ।—अज्ञात
उ०—२ चल अर गडूरि चेबरा, चढ कर मत चीचाट । सूरी जाया कर सकै, दळा घेर दहवाट ।—रेवर्तसिंह भाटी
चेम–स०पु०—चित (जैन)
चेयर—देखो 'चेअर' (रू भे)
चेर–स०पु०—सेवक, दास, नौकर (अ मा)
चेराई–स०स्त्री०—सेवा, दासता, नौकरी ।
चेरियौ–स०पु०—चरखे मे तकुआ लगाने का उपकरण ।
चेरी–स०स्त्री० [स० चेटक, प्रा० चेडअ] १ दासी, सेविका ।
उ०—चदण घिस लाई वासै प्रीतडी लगाई, वानै लाज ना आई । देखो जी ऊधोजी आखिर चेरी की जाई रे ।—मीरा
२ शिष्या, चेली ।
चेरौ–स०पु० [स० चेटक, प्रा० चेडअ] १ दास, सेवक २ शिष्य । (स्त्री० चेरी)
चेळ–स०पु०—१ कपड़ा, वस्त्र ।
चेल—देखो 'चेलौ' (रू भे) उ०—धित दाहन मेलन थेलिय की, चित चाहन चेलन चेलिय की ।—ऊ.का
चेलक, चेलकडौ–स०पु० (स्त्री० चेलकी) १ वच्चा । उ०—वट वाटै

घाट ओघटे रणवन, जळ थळ महियळ अजर जरै। चेलक चाड आप राया रण, करणी सदा सहाय करै।—बा दा

२ भक्त ३ शिष्य, अनुगामी।

चेलकाई—स०स्त्री०—१ शिष्यत्व २ वचपन।

चेलकी—स०स्त्री०—१ दासी। उ०—हस्यारथ करे चेलकी, भोज घणा देसी तेह वहोड। कहइ समझाई कर पेलवी, रोजा कीसवी तु मागि चितौड।—वी दे २ शिष्या।

चेळको—१ देखो 'चेळो' (रू भे) २ तराजू का पलडा।

चेलर—स०पु०—सूअर का बच्चा।
रू०भे०—चील्हर।

चेला—स०स्त्री०—एक छोटी जाति विशेष जिसके व्यक्ति प्राय. मजदूरी करते हैं। ये घोटेबरदार भी कहलाते हैं।

चेलिकाई—देखो 'चेलकाई' (रू भे.)

चेलिय—देखो 'चेली' (रू भे) उ०—थित दाहन मेलन थेलिय की, चित चाहन चेलन चेलिय की।—ऊ का

चेली—स०स्त्री०—दासी। उ०—मीरा कू प्रभु दरसण दीज्यो, जनम जनम की चेली।—मीरा २ शिष्या।

चेळो—स०पु०—१ तराजू का पलडा, तुला-पाट। उ०—१ वणक कहै आवै वसत, कै कूडै कै गूण। चेळै पडै सो होय सुध, सैभर पडै सो लूण।—बा दा

उ०—२ लाखा लोका री लाखा भर लीनी। दुरलभ वेळा मे चेळा भरि दीनी।—ऊ का

४ पक्ष, पलडा। उ०—१ चेळा वस छत्तीस, गुर घर गहलोता तणो। राजा राणा रीस, कहता मत कोई करो।—सूरायच टापरचो

उ०—२ चुडाहरा तुहारा चेळा, वस छत्तीस वधतै वान। सूरा गुर गाढा गुर सवदी, महाराजा राया गुर मान।—बाकीदास

चेलो—स०पु० [स० चेटक, प्रा० चेडअ] (स्त्री० चेली)

१ शिष्य। उ०—पछै आडा दिन देय आगो नीसरियो, अतीत रो वेस वणाइयो, च्यार चेला सागै रहै, वहता हालै।—महाराज जयसिंह आमेर रा धणी री वारता।

क्रि०प्र०—करणो, वणाणो, मूडणो, होणो।

मुहा०—चेलो मूडणो—शिष्य बनाना, अनुयायी बनाना।

२ सूअर का बच्चा ३ दास, सेवक। उ०—असि चढि विसवनि रमै अकेलो, चोकीदास खवास न चेलो।—सू प्र

यौ०—चेलाचाटी।

चेल्हर—स०पु०—सूअर का बच्चा।
रू०भे०—चील्हर।

चेसटा—स०पु० [स० चेष्टा] १ कायिक व्यापार जो मन के भावो को प्रकट करते हो २ नायक या नायिका का वह प्रयत्न या उपाय जो उनके पारस्परिक प्रेम को प्रकट करता हो ३ प्रयत्न, कोशिश, यत्न। उ०—पच सगळा नै आपरै रग मे रगणरी चेसटा करता र'या।—वरमगाठ

४ इच्छा, कामना।

चेस्टक—स०पु० [स० चेष्टक] वह जो चेष्टा करे, चेष्टा करने वाला व्यक्ति।

चेस्टा—देखो 'चेसटा' (रू भे.)

चेस्टाबळ—स० पु० [स० चेष्टाबल] ग्रहो का किसी विशेष गति या स्थिति के अनुसार अधिक बलवान होना (फलित ज्योतिष)

चेह—स०स्त्री० [स० चिता] १ चिता। उ०—रुत अति चदण कपूर सझे समसाण सफाई। विविध अमित सुचि वसत चेहग्नि निमति चलाई।—रा.रू
रू०भे०—चह।

२ श्मशान, मरघट।

चेहरणो, चेहरबो—देखो 'चै'रणो' (रू भे) उ०—१ वीरा तू वेहलेह कमध अमा कज मरण कर, सारो जुग चेहरहे, सगता मे नाही साको।—पा प्र.

उ०—२ भूलो नही अजरण माया भ्रम, जिण कीरत हित जाणी। सोदागर चेहरिया सामै, मोटै रा मालाणी।—नैणसी

चेहरो—देखो 'चै'रो' (रू भे)

चेहलुम—स०पु० [फा०] मोहर्रम के चालीसवें दिन होने वाली मुसलमानो की एक रस्म।

चैकणो, चैकवो—क्रि०अ०—चौंकना, चमकना। उ० —वाभी देवर नीद वस, वोलीजै न उताळ। चगता धावा चैक सी, जै सुणसी बंवाळ।

चैकणहार, हारो (हारी), चैकणियो—वि०।

चैकाणो, चैकावो, चैकावणो, चैकाववो—क्रि०स०।

चैकिओडो, चैकियोडो, चैकयोडो—भू०का०कृ०।

चैकीजणो, चैकीजवो—भाव वा०।

चैकाणो, चैकाबो—क्रि०स०—चौकाना।

चैकायोडो—भू०का०कृ०—चौंकाया हुआ। (स्त्री० चैकायोडी)

चैकावणो, चैकाववो—देखो 'चैकाणो' (रू भे)

चैकावियोडो—देखो 'चैकायोडो' (रू भे) (स्त्री० चैकावियोडी)

चैकियोडो—भू०का०कृ०—चौंका हुआ। (स्त्री० चैकियोडी)

चैचाट—देखो 'चहचाहट' (रू भे)

उ०—घणी चिडकलिया री चैचाट, रूख री डाळा री ससार।—साझ

चैचै-स०स्त्री० [अनु०] १ चिडियो का कलरव २ व्यर्थ की वकझक, वकवाद।

चैट, चैठ—स०स्त्री०—१ प्रयत्न, लगन २ चिंता. ३ पेट के भीतर होने वाला एक विकार विशेष ४ चिपकने का भाव।

मुहा०—चैठ करणी—चिपक जाना। रुकने के लिये अनुरोध करना।

५ बोये हुए अनाज का भूमि की परत पकड कर अकुरित होने का भाव।

मुहा०—चैठ करणी—खेतों मे अनाज का पुष्टता से अकुरित होना।

चैठणो, चैठवो—क्रि०ग्र०—१ चिपकना। उ०—झट नैड़ा बरण जाय, मतलब हुवै जद मानवी। इसडा चैठै ग्राय, चीटी गुड ज्यूं चकरिया। —मोहनराज साह

२ (कुत्ते या किसी जन्तु ग्रादि का) काटना, दांत लगाना या डक मारना।

मुहा०—चैठणी—क्रोध मे बकझक करना। नाराज होना।

३ बोये हुए ग्रनाज का भूमि की परत मे चिप कर पुष्टता से ग्रकुरित होना।

चैठणहार, हारो (हारी), चैठणियो—वि०।

चैठवाडणो, चैठवाडबो, चैठवाणो, चैठवाबो, चैठवावणो, चैठवाववो —प्रे०रू०।

चैठाडणो, चैठाडबो, चैठाणो, चैठाबो, चैठावणो, चैठाववो—स०रू०।

चैठिग्रोडो, चैठियोडो, चैठ्योडो—भू०का०कृ०।

चैठीजणो, चैठीजबो—भाव वा०।

चैठाणो, चैठावो—क्रि०स०—१ चिपकाना, सटाना २ (कुत्ते ग्रादि का) दात लगाना ३ बोये हुए ग्रनाज को पुष्टता से ग्रकुरित करना।

चैठायोडो—भू०का०कृ०—१ चिपकाया हुग्रा, सटाया हुग्रा. २ दांत लगाया हुग्रा (कुत्ते या जतु ग्रादि का) ३ पुष्टता से अकुरित किया हुग्रा। (स्त्री० चैठायोडी)

चैठावणो, चैठाववो—देखो 'चैठाणो' (रू भे)

चैठावियोडो—देखो 'चैठायोडो' (स्त्री० चैठावियोडी)

चैठियोडो—भू०का०कृ०—१ चिपका हुग्रा, सटा हुग्रा २ (कुत्ते या किसी जतु ग्रादि का) दात लगा हुग्रा ३ पुष्टता से ग्रकुरित। (ग्रनाज) (स्त्री० चैठियोडी)

चै—ग्रव्य०—सबधसूचक ग्रव्यय 'के'। उ०—१ मन म्रिग चै कारणि मदन चो वागुरि जाणे विसतरण।—वेलि

उ०—२ देवाधिदेव चै लाधं दूवै, वाचण लागो ब्राहमण।—वेलि

स०पु०—१ दूत २ चोर. ३ युद्ध (एका)

वि०—१ प्रेरक २ दुष्ट (एका.)

चैडो—स०पु०—राठोड वश की एक उपशाखा या इस उपशाखा का व्यक्ति।

चैडो—स०पु० [स०चेटक] १ नोकर, सेवक, दास (ग्र मा) २ घूघट।

चैत—स०पु० [स० चैत्र] फाल्गुन के बाद ग्रौर वैशाख के पहले पडने वाला महिना जिसकी पूर्णिमा चित्रा नक्षत्र को पडती है। रू०भे०—चेत।

चैतन्य—स०पु० [स०] १ चित्तस्वरूप, ग्रात्मा २ ज्ञान, बुद्धि ३ परमेश्वर. ४ बगाल मे उत्पन्न एक प्रसिद्ध धर्म-प्रचारक महात्मा।

वि०—१ सचेत, सावधान २ चेतन, जाग्रत।

चैतन्य भैरवी—स०स्त्री०यौ०—एक भैरवी का नाम (तान्त्रिक)

चैतरी—वि० [स० चैत्र रा०प्र०ई] चैत्र मास में होने वाला, चैत्र मास से सबधित।

स०पु०— चैत्र मास मे कृष्ण पक्ष की एकादशी से शुक्ल पक्ष की एकादशी तक मारवाड राज्य में बालोतरा के पास तिलवाडा ग्राम मे होने वाला एक प्रकार का पशु-मेला।

चैतवाडो—स०पु०—चैत्र मास की मौसम, बसत ऋतु।

चैती—स०स्त्री०—चैत्र मास मे काटी जाने वाली फसल।

वि०—चैत्र मास का, चैत्र सबधी।

चैत्य—स०पु० [स०] १ मन्दिर २ यज्ञशाला ३ चिता।

चैत्यपरवाडी—स०स्त्री०यौ० [स० चैत्यपरिपाटी] ग्रनुक्रम से मन्दिरो की यात्रा (जैन)

चैत्र, चैत्रक—देखो 'चैत' (रू भे)

चैत्रगौडी—स०स्त्री० [स०] ग्रोडव जाति की एक रागिनी (सगीत)

चैत्ररथ—स०पु० [स०] १ कुबेर का बगीचा २ एक प्राचीन मुनि (महाभारत)

चैत्रावळि, चैत्रावळी—स०स्त्री—१ चैत्र मास की पूर्णिमा २ चैत्र शुक्ला त्रयोदशी।

चैत्रि, चैत्री—देखो 'चैतरी' (रू.भे)

चैन—स०पु०—१ सुख, ग्राराम, ग्रानद, शाति। उ०—जाचूं किणनै जाय, दुनिया मे दीखै नही। विन सुमरघा व्रजराज, चैन मिळै नहि चकरिया।—मोहनराज साह

मुहा०—१ चैन उडणो, चैन उडाणो—ग्रानन्द मे रहना। २ चैन पडणो—शाति मिलना, सुख मिलना ३ चैन सू कटणो—सुखपूर्वक समय बीतना।

२ देखो 'चहन' (रू भे.) उ०—थारा चैन इसा मोहि दीसै, म्हारा पिया ने थू चोरसी।—लो.गी

चैनराव—स०पु०—एक प्रकार का घोडा (शा हो)

चैनसुख—स०पु०—एक प्रकार का घोडा (शा हो)

चैनाळ—वि०स्त्री०—कुलटा, दुराचारिनी।

चैनिया—म०स्त्री०—पडिहार वश की एक शाखा।

चैबचो—देखो 'चहबचो' (रू भे.) उ०—बाभीसा ग्राप खरच गिणता हा वो म्हारो पती सीलै छै ग्ररथात हाथी रै चैबचै (होदै) पर तरवार वाहै छै।—वी.स टी

चैबरो—स०पु०— सूग्रर का छोटा बच्चा।

उ०—पाठडा नवीन चैबरा परा ग्राज भाला रो भार पडता ग्राकुळ दु खी है।—वी स टी

चैबास—ग्रव्य० [फा० शाबाश] एक प्रशसासूचक शब्द खुश रहो, वाहवाह।

चैबासी—स०स्त्री० [फा० शाबाशी] वाहवाहो।

क्रि०प्र०—देणी, मिळणी।

चैल—स०पु० [स०] १ कपडा, वस्त्र २ पोशाक।

चैर—स०पु०—गहरे रग का एक मरुस्थली पौधा जो सीधी शलाको के रूप मे ऊपर बढता है। यह रस्सा बंटने व छाजन के उपयोग मे लिया जाता है। राजस्थान मे इसे खीप भी कहते है।

चें'रणो, चें'रबो—क्रि०स०—ग्रालोचना करना, निन्दा करना।

चैं'राडणौ, चैं'राडबौ–क्रि०स०—निन्दा कराना, आलोचना कराना।
उ०—थ्हारौ सुजस अमर करणावत, वासुर जग बहु हुवै वितीत। वाघारियौ पाघडौ विढतै, चैंराडियौ नही वडचीत।—द दा

चैंराडियोडौ–भू०का०कृ०—निन्दा कराया हुआ। (स्त्री० चैंराडियोडी)

चैं'राणौ, चैं'रावौ—देखो 'चैंराडणौ' (रू.भे.)

चैंरायोडौ—देखो 'चैंराडियोडौ' (रू भे) (स्त्री० चैंरायोडी)

चैंरावणौ, चैंरावबौ—देखो 'चैंराडणौ' (रू भे.)

चैंरावियोडौ—देखो 'चैंराडियोडौ' (रू भे) (स्त्री० चैंरावियोडी)

चैं'रौ–स०पु० [फा० चेहरा] १ शरीर मे गर्दन के ऊपर का वह सम्मुख का भाग जिसमें मुह, नाक, कान, आख आदि सम्मिलित हैं।
मुहा०—१ चैं'रौ उतरणौ—मुख पर चिंता के लक्षण होना, उदास होना। २ चैं'रौ चढणौ- कोप करना, गुस्सा करना। ३ चैं'रौ तमतमाणौ—मुख लाल होना, क्रोध या आवेश मे आना। ४ चैं'रौ फक होणौ—चेहरे का तेज फीका पडना, घबरा जाना। ५ चैं'रौ फीकौ पडणौ—देखो 'चैं'रौ फक होणौ'। ६ चैं'रौ बिगडणौ—मुँह उदास होना। ७ चैं'रौ लाल होणौ—चेहरे पर खून आना, रौनक आना, मुख लाल होना, क्रोध मे आना।
२ किसी लीला या विनोद आदि मे स्वरूप बनाने या स्वांग रचने के लिए चेहरे के ऊपर बाधी जाने वाली किसी धातु, मिट्टी-कुट्टी आदि की बनी किसी देवता, दानव, पशु आदि की आकृति।
३ एक प्रकार की शिर की हजामत।
रू०भे०—चेहरौ।

चैंलक–स०पु० [स०] एक प्राचीन वर्णशकर जाति।

चैं'ल-पैं'ल—देखो 'चहल-पहल' (रू भे)

चैंलेंज–स०पु० [अ०] ललकार, चुनौती।

चैंहन–स०स्त्री० [स० चिह्न] ध्वजा, पताका (ह ना)

चैंहरणौ—देखो 'चैंरणौ' (रू भे)

चैंहरौ—देखो चैं'रौ' (रू भे)

चैंहैन–स०पु०—१ देखो 'चैंन' (रू भे)
स०स्त्री० [स० चिह्न] २ झडा, ध्वजा (ह ना)

चोंगियौ–स०पु०—चारपाई या खाट की बुनावट का एक प्रकार जिसमे खाट बुनने की मूज आदि की रस्सी के चार-चार ताने या बाने डाले जाते है।

चोंच, चोंचजडली—१ देखो 'चांच' (रू भे)
उ०—उडि जावौ री म्हांरा सोन चिडी। काहे सू मढाऊ थारो आख पाखडी, काहे सू मढाऊ थारी चोंचजडी।—मीरा
मुहा०—चोंच निरोणी—ग्रास लेना, थोडा सा भोजन करना।
२ गाडी के अगाडी का नुकीला भाग।

चोंचदार–वि०यौ०—चोंच वाला, जिसके चोंच लगी हो।
स०पु०—सिर पर बांधी जाने वाली पगडी का बाधने का एक ढग विशेष या इस ढग से बांधी जाने वाली (पगडी)।
रू०भे०—चाचदार।

चोंटियौ—देखो 'चूंटियौ' (रू भे)

चोंतरी–स०स्त्री०—देखो 'चोतरौ' (अल्पा रू भे)

चोंतरौ–स०पु०—चबूतरा।

चोंदौ—देखो 'चादौ' (रू भे.)

चोंप—देखो 'चूंप' (रू भे)

चोंपौ–स०पु०—गाय बैल भैंस आदि का सम्मिलित समूह जो ग्वाले की देखरेख मे जगल मे चरने के लिये बाहर जाता है।
उ०—फजर चोपा घेरिया, धूळी अबर धूंद। कै धणा माट बिलोवसी, कै घट जासी घूंद।—वी.स

चो–स०पु०—१ मनुष्य. २ बैल ३ अश्व, घोडा ४ महावत (एका.)
स०स्त्री०—५ गौ, गाय. ६ चतुरगिनी सेना (एका)
अव्य०—षष्ठी विभक्ति अथवा सबधकारक का चिन्ह 'का'।
उ०—हेली हूँ हेर न सकी, थिर जादू की थाय। चिरै वाढ चँदहास चो, चँड अर-उर चिर जाय।—रेवतसिंह भाटी

चोग्रौ–स०पु०—एक प्रकार का सुगधित पदार्थ विशेष। उ०—फूला रा चोसर पेहरीग्रा थका अगरचै मरगचै, केसरिऐ कचमैलै वागै कीऐं घणां चोग्रै अतर फुलेल गळा माहि भीना थका।—रा.सा स
रू०भे०—चीवौ।

चोइग्रौ, चोइज्जौ–वि० [स० चोदित] प्रेरित (जैन)

चोकडी—देखो 'चौकडी' (रू भे) उ०—कुसळसिंह रै हाथ रै गुह रै लागी, सूरजमल रै माथै तरवारिया री चोकडी पडी सो ओ ही सरदार ढळ पडियौ।—मारवाड रा अमरावा री वारता

चोकडौ—देखो 'चौकडौ' (रू.भे)

चोकौ—देखो १ 'चौकौ'। २ 'चोखौ' (रू भे)

चोख–स०स्त्री०—१ फुरती, तेजी २ उमग, जोश। उ०—चापावत राम हरी घरी चोख। समोसर नाहर खान सरोख।—रा रू.
३ शोक। उ०—१ दोनू ही धणी ही चोख सूं जीम्है छै, हसै छै, वाता करै छै।—कुंवरसी साखला री वारता
उ०—२ फकीर रै मन मे तौ वात तीसूं बैठ गयौ सो सतावौ सूं जीम लियौ और भीतर तौ परूसगारी हुवै, होळै होळै चोख सूं जीमै।
—सूरे खीवे काधळोत री वात

चोखउ—देखो 'चोखौ' (रू भे)

चोखतीख—देखो 'चौकतीख' (रू भे)

चोखळौ—देखो 'चौखळौ' (रू भे) उ०—ठाकुरसिंह री धाक पडै चोखळै माहि। रजपूता बळ राख कोई बोलै नाहि।
—ठाकुर जैतसी री वारता

चोखा–स०पु० (बहु०व०)—चावल। उ०—तठा उपरायत सीरौ पूडी वणी छै, सोहितै सारू देवजीभी जोइजै छै। विरजै सारू चोखा मगायजै छै।—रा सा स

चोखाई–स०स्त्री०—चोखापन, अच्छाई।

चोखौ–वि० [स० चोक्ष, चोक्षम्] (स्त्री० चोखी) १ अच्छा, बढ़िया,

उत्तम। उ०—महमा वधि मयक कुळ मडण, पोह अनकारा अमत पढी। कटवा तणी दुयण चै कोटै, चोखी रज कागरै चढी।—अज्ञात २ सब मे चतुर या श्रेष्ठ ३ सच्चा, ईमानदार।

यौ०—चोखौ-चींठौ।

चोतौ-चींठौ-वि०यौ०—भला-बुरा, अच्छा-बुरा। उ०—पोखै प्राण नै नीसरिया परचा, चोतै-चींठै री वीसरिया चरचा।—ऊ का

चोगद, चोगदा, चोगद्दा—देखो 'चौगद्द' (रू भे)

उ०—मुगताईं जोधपुर चोगद्द तूटै। कबान के चल्लेतें सायक से छूटै।—रा रू

चोगर-स०पु०—उल्लू की सी आँखो वाला घोडा (अशुभ)

चोगान—देखो 'चौगान' (रू भे) उ०—सिपाहा समेत हाडै नरेस इगनू आपरा रोकिया दुरग थी वारै कढि चोगान मे सज्ज होई धारा तीरथ मे मरण री ही मनोरथ गहियौ।—व भा.

चोगुठदाई-क्रि०वि०—चारो ओर, चारों तरफ।

चोघडियौ—देखो 'चौघडियौ' (रू भे) उ०—जयसळमेर जाय डेरा किया, उठै रावळजी री टीकौ आइयौ, चोघडिये केसरिया कर असवार हुवा।—मारवाड रा अमरावा री वारता

चोघणौ, चोघवौ—क्रि०स०—ढूढना, तलाश करना, खोजना।

उ०—जाववती री सहेली पिण पाटण माहै देखती चोघती फिरै छै। —जगदेव पँवार री वात

चोघणहार, हारौ (हारी), चोघणियौ—वि०।

चोघाणौ, चोघावौ, चोघावणौ, चोघाववौ—क्रि०स०।

चोघिओडौ, चोघियोडौ, चोघ्योडौ—भू०का०कृ०।

चोघीजणौ, चोघीजवौ—कर्म वा०।

चोघरौ-स०पु०—तिवारी के अदर का मकान (देखो 'तिवारी' शेखावाटी)

चोघाणौ, चोघावौ-क्रि०स०—ढूढाना, तलाश कराना, पता लगाना।

चोघायोडौ-भू०का०कृ०—ढूढाया हुआ, तलाश कराया हुआ। (स्त्री० चोघायोडी)

चोघावणौ, चोघाववौ—देखो 'चोघाणौ' (रू भे.)

चोघावणहार, हारौ (हारी), चोघावणियौ—वि०।

चोघाविओडौ, चोघावियोडौ, चोघाव्योडौ—भू०का०कृ०।

चोघावीजणौ, चोघावीजवौ—कर्म वा०।

चोघावियोडौ—देखो 'चोघायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चोघावियोडी)

चोघियोडौ-भू०का०कृ०—ढूढा हुआ, तलाश किया हुआ। (स्त्री० चोघियोडी)

चोडै-धाडै—देखो 'चोडै-धाडै' (रू भे)

चोच-स०स्त्री० [स०] १ चर्म, चमडी, खाल. २ छाल, वल्कल ३ छल, कपट, धूर्तता ४ आडम्बर।

चोचळा-स०पु० [अनु०] जवानी की उमग मे प्रकट किये जाने वाले नायिका हावभाव, नाज, नखरे।

चोचळी, चोचली-वि०स्त्री०—नखरेबाज, नाज-नखरे दिखाने वाली।

चोचा-स०पु०(बहु०व०)—१ लडाई, टटा, झगडा, कलह २ अपकीर्ति, निंदा।

चोचाकारौ-वि०—लडाई करने वाला, कलहप्रिय २ निंदा करने वाला, चुगली करने वाला।

चोचाळौ-वि०पु०.(स्त्री० चोचाळी) कलह करने वाला, झगडा करने वाला। उ०—बसे तू रोमाळी कवन थळ खाली तुज विना। लसा से चोचाळी कळ कि वळसाळी अज किना।—ऊ का

चोची-वि०—अल्प, थोडी, साधारण।

कहा०—चोची खेती घर ना घणिये खाय—थोडे स्थान पर या छोटे पैमाने पर की गई खेती घर के स्वामी को खा जाती है। थोडे पैमाने पर किये गये कार्य मे कोई विशेष लाभ नही होता।

चोचौ-स०पु०—१ झगडा, कलह २ उपद्रव ३ प्रलाप, बकवाद ४ आडम्बर, पाखड, ढोग। उ०—वाणियै रै बेटै नै बेटौ कहै नही। चोचौ करै तौ चाचर कहै, का कोई बीजौ ठहरावै। —पलक दरियाव री बात

चोज-स०पु०—१ मनोविनोद के लिये कही हुई उक्ति विशेष, मजाक, हँसी, ठट्टा, दिल्लगी २ उमग, उत्साह। उ०—इण भात रा रजपूता नै अमल सिरदार आपरा हाथा करावै छै। घणै चोज सू मन लिया मनहारा कीजै छै।—रा सा स

३ साहस ४ कपट, छल, धोखा ५ चतुराई। उ०—करस्या वात कबूल भली सू भासण सुणस्या। गुण री है नहिं गरज चोज कर औगुण चुणस्या।—ऊ का

६ रसास्वादन। उ०—१ मुनहारा हुय रही छै। घणी फीन सताई चोज लिया अरोगजे छै।—रा सा स

उ०—२ सो आय अरोगणै बैठा, सारो साथ घणै चोज सू जीम रहियौ छै, खुस छै।—कुवरसी साखला री वारता

७ आनन्द, मौज। उ०—तठै गुल कोयल री छिब लीवी इसी चोज ऊपर हास्य इणनू आयौ।—र हमीर

८ स्थान, जगह ? उ०—सूम न जाणे देव जस, सूम न जाणे मोज। मुगळ न जाणे गउ दया, चुगल न जाणै चोज।—वा दा.

स०स्त्री०—९ आभा, काति। उ०—पीछोला को पेखवौ, मानसरोवर मोज। पाणी भरै छै पदमणी, चदवदनी मुख चोज। —वगसीराम प्रोहित री वात

चोजाळौ, चोजीलौ-वि० (स्त्री० चोजाळी, चोजीली)—१ हँसी-मजाक या दिल्लगी करने वाला. २ गुप्त वात जानने वाला, भेद जानने वाला ३ वातचीत मे निपुण, वाक-पटु।

चोजौ-स०पु०—धोखा, छल, कपट। उ०—कुणनै बेटौ कहै छै ? इसौ चोजौ करै छै।—पलक दरियाव री वात

चोट-स०स्त्री०—१ एक वस्तु की किसी दूसरी वस्तु पर लगने वाली जोर की टक्कर, आघात, प्रहार। उ०—लगाऊ मुरा वायका चोट लागै। जती बोलियौ क्रोध पावक जागै।—सू प्र.

क्रि०प्र०—देणी, पडणी, पहुँचाणी, मारणी, मेलणी, लगणी, लगाणी, लागणी, सैणी।

मुहा०—चोट झेलणी—आघात सहन करना।

२ आघात या प्रहार का प्रभाव, जख्म, घाव।

क्रि०प्र०—आणी, लागणी।

३ किसी को मारने के लिये हथियार आदि चलाने की क्रिया, वार, आक्रमण।

मुहा०—चोट खाली जाणी—वार खाली जाना आक्रमण व्यर्थ जाना।

४ मानसिक व्यथा, दुःख, शोक, सताप, हृदय पर लगने वाला आघात।

५ किसी को क्षति पहुँचाने या किसी का अनिष्ट करने के लिये चली हुई चाल ६ व्यग्यपूर्ण उक्ति, ताना ७ विश्वासघात, धोखा। ८ छेडछाड। उ०—झोटा ज्यूं साधू झपट, जोटा दे ज्रुग टाळ। चेलो सू चोटा करै, रोटा हित रुगटाळ।—ऊ का

चोटडियाळ, चोटडियाळी—वि०—जिसके चोटी हो।

स०स्त्री०—१ एक प्रकार की भाग विशेष (रा सा स) २ एक प्रकार का तारा ३ एक प्रकार का पक्षी।

उ०—पाणी नाडा भरनै रह्या छै। चोटडियाळ डहकनै रही छै।

—रा.सा स

रू०भे०—चोटिआळ, चोटीआळी।

चोटलियौ—स०पु०—देखो 'चोटी' (अल्पा रू भे) उ०—फाटा घावळिया घाघरिया फाटा, फरके चोटलिया देता फरराटा।

—ऊ का

चोटियाळ—स०पु०—१ प्रहास गीत के दो पदो के बाद १० मात्रायें रख कर तुकान्त मिलाया जाने वाला गीत विशेष।

२ देखो 'चोटियाळी' (रू भे)

चोटियाळी—देखो 'चोटडियाळ' (रू.भे) उ०—चोटियाळी कूदै चौसठि चाचरि, धू ढळियै ऊकसै धड। अनत अनै सिसुपाळ ओझडै, झड मातौ माडियौ झड।—वेलि

चोटियौ—स०पु०—१ डिंगल का एक गीत (छद) विशेष जिसमे जागडा गीत (जिसके प्रथम व तृतीय पद मे १६ मात्रायें और द्वितीय व चतुर्थ पद मे १२ मात्रा तथा प्रथम द्वाले के प्रथम पद मे १८ मात्रायें होनी हैं) का द्वाला जोड कर फिर एक पाचवा चरण होता है, इसमें १६ मात्रायें अत मे दो गुरु सहित होती हैं। इस प्रकार से जहा द्वाले की रचना होती है वहा चोटिया गीत होता है (र.रू)

२ राजस्थानी साहित्य मे दोहे का एक भेद जिसमे दोहे के पूर्वार्द्ध पर १२ मात्रा अधिक हो और उत्तरार्द्ध मे १० मात्रा अधिक हो। ३ छोटा रस्सा. ४ एक प्रकार का घोडा विशेष. ५ घास के विस्तृत मैदानो मे उसका विभाजन करने के लिये खडी घास के कुछ तृणो को शामिल लेकर उसमे गाँठ लगा कर बनाया हुआ सकेत विशेष। ६ साफ किये हुए आक के महीन रेशो को कातने के निमित्त चोटी के आकार की बनाई हुई पूनी ७ शिखर वाली ढेरी।

उ०—नावै कही, जी दीवाण सलामत, मुरट ऊगै छै, पछै पाकै जद काटा लागै, पछै खारी रै लकडी बाध एक हाथ झालै पछै लकडी एक चीर झाटकणी करै, तेसू काटा झाड के चोटिया करै, भेळा करै।

—नापा साखला री वारता

८ चोटी के आकार का बधा घास का पुआल।

चोटी—स०स्त्री० [स० चूड] १ खोपडी के पीछे थोडे से चपटे भाग मे कुछ बडे वे बाल जिन्हें हिन्दू रखना आवश्यक व पवित्र समझते हैं, शिखा।

मुहा०—१ एडी रौ चोटी उतरणौ—अथक परिश्रम करना, पसीना वहाना। २ चोटी दबणी—वश मे होना, अधिकार मे होना। ३ चोटी पकडणी—काबू मे करना, अधिकार मे करना, किसी बात का मूल पहिचानना। ४ चोटी रौ पसीनौ एडी तक आणौ—कठिन मेहनत करना। ५ चोटी हाथ मे आणी—काबू मे आना, किसी प्रकार के दबाव मे आना, वश मे होना।

२ स्त्रियों के गुथे हुए सिर के बाल, वेणी।

क्रि०प्र०—करणी, गूथणी, बाँधणी।

३ किन्ही-किन्ही पक्षियो के शिर के वे पर जो कुछ ऊपर की ओर उठे रहते हैं। ४ सब से ऊपर का ऊँचा भाग, शिखर।

मुहा० —चोटी चढणी—ऊपर उठना, उन्नति को प्राप्त होना, सर्व श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करना. ५ पुत्र जन्म के इक्कीसवें दिन या जब कभी शुभ मुहूर्त्त हो जच्चा को स्नान करा कर,नये वस्त्र पहिनाने,-घट-पूजन कराने तथा उबाले हुए गेहू व गुड बाँटने की पुष्करणा ब्राह्मणो की एक रस्म। इस दिन स्त्री की सुगधित द्रव्यो से चोटी गूँथी जाती है तथा पिता एव उसके मित्र बच्चे के हाथ मे रुपये देते हैं।

चोटीआळ, चोटीआळी—देखो 'चोटडिआळ' (रू भे)

उ०—पाणी एक नाळ भरिया। चोटीआळी डहकिनै रहीआ छै।

—रा सा स.

चोटीआळौ—वि०—जिसके चोटी हो, चोटी वाला। (स्त्री० चोटीआळी)

स०पु०—१ हिन्दू। उ०—मरते मोडे मारिया, चोटीआळा चार।—अज्ञात

२ दोहा का एक भेद जिसके अनुसार द्वितीय और चतुर्थ चरण में १६ मात्रा हो तथा प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ चरण की तुकबंदी हो।

चोटीकट—वि०—जिसकी चोटी कटी हुई हो।

वि०वि०—देखो 'चोटीवडियौ' उ०—म्हे किव 'किसन' हुलासे चित मे, आस लियौ अमदो। वर-सी राज रै चोटीकट वदौ।

—र ज.प्र.

चोटीवध—स०पु०—स्त्रियों के शिर का आभूषण विशेष।

चोटीवडियौ—वि०—जिसकी चोटी कटी हुई हो।

वि०वि०—जागीर प्रथा के समय जागीरदार की प्रजा का वह व्यक्ति जिसे जागीरदार ने विशेष सहूलियत देकर अपनी जागीर मे आवाद

किया हो। ऐसे व्यक्ति को शादी व मृत्यु के अवसर पर कुछ भेंट-पुरस्कार आदि प्राप्त हो जाता था।

स०पु०—मुसलमान, इस्लाम मत का अनुयायी।

चोटीयाळ, चोटीयाळो—देखो 'चोटीआळो' (रू भे)

चोटीवाळो—देखो 'चोटीआळो' (रू भे) उ०—ग्रीधाळ गूदाळ कजे गहकै, चहकै चोटीयाळ सीयाळ चकै।—गो रू

स०पु०—जटा वाला (नारियल) उ०—चढै नै चढावै थारै चूरमो, चोटीवाळा नारेळ, सेवगा की ओ बावा भली करी।—लो गी.

चोटो—स०पु०—मोटी व लम्बी चोटी।

चोट्टो—स०पु०—वह जो चोरी करता हो, चोर।

चोडडो—वि०—जिसके चारों ओर डडा लगा हुआ हो।

चोडाळ—स०पु०—एक प्रकार की सवारी या वाहन।

उ०—सुखासण पालखी चोडाळ रथ पाइक वर्णीनै रहिग्रा छै।
—रा सा स.

चोडी—स०स्त्री०—कुर्ये मे पानी एकत्र करने के उद्देश्य से एक ओर जहां जल खीचने का पात्र डूबता हो वहा कुछ गहरा खुदा हुआ गड्ढा।

चोडोळ, चोडोळो—स०पु० [स० चतुर्दोल] हाथी, गज (डिं ना मा.)

चोढरो—वि०—चढने वाला, सवारी करने वाला।

चोढ़ाडणो—देखो 'चढाणो' (रू भे) उ०—पगी ऊवारका चगी चोढाडै जोधाण पाणी, मारका पोढाडै भडा पौढियो समीच।
—महेसदास कूपावत री गीत

चोतरफ—देखो 'चौतरफ' (रू भे) उ०—महाराज गजसिंहजी कही अठै ही खडा रहो, चोतरफ तोपखाने री जजीरवदी करी।
—मारवाड रा अमरावा री वारता

चोताळो—देखो 'चौताळो' (रू भे.) उ०—पाखती चोताळै रा सैधा लोग उणनै माऊ कैय नै वतळावै।—वाणी

चोदक, चोदक्कड—स०पु०—१ स्त्री-प्रसग या सभोग के लिये उकसाने वाला २ वहुत अधिक स्त्री प्रसग करने वाला, अत्यन्त कामी व्यक्ति (बाजारू)

चोदणो, चोदबो—क्रि०स०—स्त्री प्रसग करना, सभोग करना।

चोदणहार, हारो, चोदणियो—वि०।

चोदीजणो, चोदीजबो—कर्म वा०।

चोदन—स०पु०—स्त्री-प्रसग, मैथुन, सभोग।

चोदस—देखो 'चौदस' (रू भे) उ०—जोगणी चोसठ नू उमादे भख देती तरै चोदस रै दिन इतरी वारता उमादे करसी, थानू सपडावसी।
—पचदडी री वारता

चोदाई—स०स्त्री०—१ स्त्री-प्रसग, सभोग, मैथुन २ मैथुन कराने के वदले मिलने वाला पारिश्रमिक।

चोदाकड—देखो 'चोदक्कड' (रू भे)

चोदाणो—देखो 'चुदाणो' (रू भे)

चोदायोडो—देखो 'चुदायोडो' (रू भे)

चोदास—स०स्त्री०—स्त्री की पुरुष प्रसग की अथवा पुरुष को स्त्री प्रसग की प्रवल कामना, उत्कट कामेच्छा।

चोदासो—वि०—१ जिसे सभोग की प्रवल इच्छा हो २ कामुक, कामी।

चोदियोडो—भू०का०कृ०—जिसके साथ सभोग किया जा चुका हो।

चोदू—वि०—डरपोक, भीरू, कायर, निकम्मा।

चोद्दग—वि०—चौदह (जैन)

चोद्दसम—देखो 'चवदै' (रू भे) (जैन)

चोद्दमरयणाहिवई—स०पु० [स० चतुर्दशरत्नाधिपति] चौदह रत्नो का स्वामी (जैन)

चोधार, चोधारण, चोधारो—देखो 'चौधार' (रू भे)

उ०—चोधारा लाल लालचख चौरग, वयडा भडा ओरवै वाज।
—चावडदान

चोप—स०स्त्री०—१ सेवा। उ०—चोप अरज हरि चरण चोप फिर रे परदछण।—र ज प्र

२ प्रार्थना, विनती। उ०—चोप करे कर जोड जनम सरजत आगळ जण।—र.ज प्र

३ ध्यान। उ०—चोप करे चित वीच नाम सिर अगर सु नरहर।
—र ज.प्र

४ लगन। उ०—चनण घस जुत चोप कमळ ल्यू तिलक चोप कर।—र ज प्र

५ भक्ति ६ श्रद्धा। उ०—अत चोप भजन सी-वर उचर, ध्यान हृदय जुत चोप धर।—र ज प्र

७ कृपा, दया, अनुकम्पा। उ०—कवि चहे चोप रघुराज को, कर-कर चोप स भजन कर।—र ज.प्र

क्रि०वि०—चारो तरफ।

चोपई—स०स्त्री०—प्रत्येक चरण मे ११ और १३ पर यति सहित २४ मात्रा का एक मात्रिक छद (पिं प्र)

चोपग, चोपगो—देखो 'चौपगो' (रू भे)

चोपड—स०पु०—घी तेल आदि स्निग्ध पदार्थ। उ०—गोरस चोपड एकठा दोय एक दिखाया।—केसोदास गाडण

यौ०—चोपड-चापड।

चोपडणो, चोपडबो—देखो 'चुपडणो' (रू भे) उ०—१ बांधउ वड री छाहडी, नीरू नागर वेल। डाभ सभाळू करहला, चोपडि सु चपेल।
—ढो मा

उ०—२ ताहरा हेकर सो सूटी पाराती सेक दियो, वळे तेल सेती दियो। राळा चोपडि अरवळै वीजी ही वार तिम हीज रातो करि चुवण लागो ताहरा दियो।—द वि

चोपडणहार, हारो (हारी), चोपडणियो—वि०।

चोपडाणो, चोपडावो, चोपडावणो, चोपडाववो—क्रि०स०।

चोपडिओडो, चोपडियोडो, चोपडचोडो—भू०का०कृ०।

चोपडीजणो, चोपडीजवो—कर्म वा०।

चोपडाणौ, चोपडाबौ—देखो 'चुपडाणौ' (रू भे)
चोपडाणहार, हारौ (हारी), चोपडाणियौ—वि० ।
चोपडायोडौ—भू०का०कृ० ।
चोपडाईजणौ, चोपडाईजबौ—कर्म वा० ।
चोपडायोडौ—देखो 'चुपडायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चोपडायोडी)
चोपडावणौ, चोपडाववौ—देखो 'चुपडाणौ' (रू भे)
चोपडावियोडौ—देखो 'चोपडायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चोपडावियोडी)
चोपडास-स०पु०—स्निग्धता, चिकनाई ।
चोपडियोडौ—देखो 'चुपडियोडौ' (रू भे) (स्त्री० चोपडियोडी)
चोपडौ-स०पु०—१ तिलहन या ग्वार की फसल का एक रोग विशेष जिसमे पौधे के पत्ते चिकने से हो जाते हैं। कीटाणु विशेष लगने से फसल नष्ट हो जाती है।
२ देखो 'चौपडौ' (रू भे)
चोपण-स०स्त्री०—१ गर्म लोहे को ठीक करने व सुधारने का एक औजार. २ आभूषणों पर खुदाई के काम मे कोने दवाने का एक औजार (स्वर्णकार)।
चोपदार—देखो 'चोवदार' (रू भे) उ०—१ सार्ग चोपदारां सा'व भादुरजी खिनाया। भैरू सिंघजी नै राजगादी पै बैठाया।—शि व.
उ०—२ देखि अगद वहौ चोपदार अति माम वचारे। चद मद बुद्धि धीर चव असतूति अपारे।—सू प्र
चोपन—देखो 'चौपन' (रू भे)
चोपनियौ—देखो 'चौपनियौ' (रू भे)
चोपनौ—देखो 'चौपनौ' (रू भे)
चोपाड-स०स्त्री०—पुरुषो का सम्मिलित होकर बैठने का स्थान, चौपाल (क्षेत्रीय)
चोपायी-स०स्त्री०—१ चौपाई २ चारपाई ।
चोपाळौ-स०पु०—पालकी, शिविका ।
चोप्पड—देखो 'चोपड' (रू भे, जैन)
चोप्पाळ-स०पु०—सूर्याभदेव का अस्त्रागार (जैन)
चोप्पाळग-स०पु०—मस्त हाथी (जैन)
चोफाडणौ, चोफाडबौ-क्रि०स०—१ काटना, चार भागो मे विभाजित करना। उ०—तिण समय अरिसिंघ गदा री आघात दे'र दूजा सिंधुर री सीस चोफाडो करि पटकियौ।—व भा
२ नष्ट करना ।
चोफाड, चोफाडा-क्रि०वि०—१ चारो तरफ, चारो ओर।
चोफुली—देखो 'चौफूली' (रू भे)
चोफेर—देखो 'चौफेर' (रू भे) उ०—पुरी अवध परवेस सजोडा साथिया। चमर करै चोफेर हलै चढ हाथिया।—र रू
चोब-स०स्त्री०—१ चुभने की क्रिया या भाव' २ किसी नुकीले पदार्थ के अकस्मात् नेत्र मे चुभने से होने वाला दर्द ३ कुआ खोदने के कार्य को आरम्भ करने की क्रिया ४ कुछ छोटे पौधे (विशेष कर मिर्च, प्याज आदि) को एक स्थान से दूसरे स्थान मे गाडने की क्रिया या गाडे जाने वाले पौधे. ५ तालाव या कुयें के मध्य मे किया हुआ वह गहरा गड्ढा जहा पानी कुछ अधिक मात्रा मे एकत्रित रहता है। [फा०] ६ शामियाना खडा करने का बडा खभा. ७ नगाडा या ताशा बजाने का डडा ८ सोने या चादी से मढा डण्डा।
यौ०—चोवदार।
चोबचीणी-स०स्त्री० [फा० चोबचीनी] १ प्राय चीन और जापान मे अधिक होने वाली एक लता की जड, एक काष्ठौषध २ हुवास नामक वृक्ष की जड जिसका रग हलका भूरा होता है।
चोबणौ-स०पु०—जूते पर किया जाने वाला कसीदा विशेष।
उ०—लाल चोवणौ मामा मोचा, लाल कनारी जोडौ।
—डूगजी जवारजी री पड
चोवणौ, चोबबौ-क्रि०स०—पौधे को एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान पर लगाना या गाडना।
चोवणहार, हारौ (हारी), चोबणियौ—वि०।
चोवाणौ, चोबावौ, चोवावणौ, चोबावबौ—प्रे०रू०।
चोबिओडौ, चोवियोडौ, चोव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
चोवीजणौ, चोवीजबौ—कर्म वा०।
चोबदार-स०पु०—वह नौकर जिसके पास 'चोव' या 'आसा' रहता है। प्रतिहार।
वि०वि०—ऐसे नौकर राजा महाराजाओ या किसी रईस के यहा समाचार आदि लाने या ले जाने के लिये रक्खे जाते हैं। ये राजा की सवारी निकलते समय आगे-आगे हाथ मे सोने या चादी के चद्दर से मढा डडा लेकर चलते हैं।
पर्याय०—उतसारक, दडी, द्वारपाळ, प्रतिहार, वेतधर, वैत्री।
चोबाई-स०स्त्री०—चोवने की क्रिया या इस कार्य की मजदूरी।
देखो 'चोवणौ'।
चोवाई गाठ-स०स्त्री०यौ० [स० चतुर्व्याप्तिग्रथि] टूटी हुई रस्सी का जोड विशेष।
चोवाणौ, चोवावौ-क्रि०स० ('चौवणौ' क्रि० का प्रे०रू०)—किसी पौधे को उखडवा कर अन्य जगह पर लगवाना।
चोवायोडौ-भू०का०कृ०—किसी पौधे को उखाड कर अन्य जगह पर लगवाया हुआ। (स्त्री० चोवायोडी)
चोवारौ—देखो 'चौवारौ' (रू भे) उ०—वावौं अग फरकण लागौ, फरकत वावी आख। साजन आसी हे सखी। चढ चोवारे झाक।
—र रा
चोबावणौ, चोवाववौ—देखो 'चोवाणौ' (रू भे)
चोवाविओडौ—देखो 'चोवायोडौ' (रू भे) (स्त्री० चोवावियोडी)
चोवियोडौ-भू०का०कृ०—किसी पौधे व बीज आदि को किसी क्यारी आदि में गाडना, लगाना। (स्त्री० चोवियोडी)
चोवोलौ-स०पु०—एक प्रकार का मात्रिक छद।

चोवौ–स०पु०—शक, सन्देह, आशका ।

चोभ–स०स्त्री०—१ देखो 'चोब' (रू भे) उ०—१ सकर सागर हुयगी सुरडा, करण मिळै नहि पाणा कुरडा । चोभ माय ठहरै नहि चुरडा, जिण री पाळ पडै दस जुरडा ।—ऊ का

उ०—२ ऊपर वनात री कलावूती चादणी रूपै री चोभा सू खडी की छै ।—रा सा स

चोभकौ–स०पु०—तीक्ष्ण या नुकीली वस्तु चुभाने से होने वाली पीडा ।

उ०—एक कानी ब्याज वाळा पल्लौ खाचै है तौ बीजै पासी थे घर वाळा चोभका देवौ हौ ।—वरसगाठ

चोभणौ—देखो 'चोवणौ' (रू भे)

चोभणौ, चोभवौ—देखो 'चोवणौ' (रू भे.)

चोभणहार, हारौ (हारी), चोभणियौ—वि० ।

चोभाणौ, चोभाबौ, चोभावणौ, चोभायवौ—प्रे०रू० ।

चोभिग्रोडौ, चोभियोडौ, चोभ्योडौ—भू०का०कृ० ।

चोभीजणौ, चोभीजबौ—क्रि० कर्म वा० ।

चोभिग्रोडौ—देखो 'चोविग्रोडौ' (रू भे) (स्त्री० चोभिग्रोडी)

चोभौ–स०पु०—अनेक प्रकार की दवाइयो की बधी हुई पोटली जिससे शरीर के कोई पीडित अग या आख आदि पर सिकताव किया जाता है ।

चोमकदीवौ–स०पु०यौ०—चौमुखा दीपक, चार बत्तियो वाला दीपक ।

चोमालहण–स०स्त्री०—चौहान वश की एक शाखा ।

चोमुखौ—देखो 'चौमुखौ' (रू भे.) उ०—देहरौ एकलिंगजी रौ चोमुखौ छै ।—नैणसी

चोमोतर—देखो 'चिमोतर' (रू भे.)

चोय—स०स्त्री० [स० त्वचा] त्वचा, छाल (जैन)

चोयग्र–स०पु० [स० चोयक] एक प्रकार का फल (जैन)

चोयण–वि० [स० चोदनम्] प्रेरणा करने वाला (जैन)

चोयणा–स०स्त्री० [स० चोदना] प्रेरणा (जैन)

चोयाळ–स०स्त्री०—गढ के ऊपर बैठने का स्थान (जैन)

चोयाळा, चोयाळीसा–स०पु० [स० चतुश्चत्वारिंशत्] चमालीस ।

चोरग—देखो 'चौरग' (रू.भे) उ०—१ सावळ अणिया साकही, चोरग वणिया चेत । भाया सू भेळप नही, हुरकणिया सू हेत ।
—बा दा

उ०—२ चोरग वाळ गिलण चुगलाळा, धोळै दिन लागा धाराळा ।
—रा रू

चोर–स०पु० [स०] छिप कर पराई वस्तु का अपहरण करने वाला व्यक्ति । वह मनुष्य जो स्वामी की अनुपस्थिति या अज्ञानता मे छिप कर कोई वस्तु या धन ले जाय । चोरी करने वाला ।

पर्या०—अलाम, एकागर, कुवधमूळ, कुवधी, गूढचर, चोंटो, तेन, तसकर, दसु, दुस्ट, निसचर, परमोख, परसतोख, परासकदी, पाटचर, पारपथक, प्रतरोधक, प्रतिरोधक, मरमोख, मलमलुच, मलीमलुच ।

मुहा०—चोर माथै मोर पडणौ—धूर्त के साथ धूर्तता करना ।

कहा०—घणा चोरा चोरी मूगी—अधिक चोर शामिल होने पर चोरी महगी पड जाती है । अधिक चोरो के इकट्ठे होने पर पकडे जाने की सभावना रहती है । अति मर्वत्र वर्जयते । २ चोर का पग काचा होवै—चोर के मन मे दृढता नही होती । ३ चोर कै पग को होवे नी—देखो कहा० २ । ४ चोर को माल चिडाळ खाय—चोरी से प्राप्त किया हुआ माल दुष्टो द्वारा भी नष्ट होता है अर्थात् चोरी से प्राप्त हुआ धन सदुपयोग नही होता । बुरी कमाई की निंदा । ५ चोर-चोर मासिया भाई—कुकर्म करने वाले या दुष्ट स्वभाव वाले परस्पर मिल कर रहते है । ६ चोर ढोग ना सू भरोसा करणौ—चोर और पशु का भरोसा नही किया जा सकता, न मालूम वे कब हानि पहुचादे । ७ चोर रा तौ सौ दा'डा धणी नौ एक दा'डौ—पकडे जाने पर सौ चोरियो की कसर एक साथ निकल जाती है । बुरे कार्यों का फल हमेशा अनुकूल नही होता । ८ चोर नै कह चोरी कर, कुत्तै नै कह भुस, साह नै कह जाग—उस व्यक्ति के प्रति जो हर प्रकार के स्वभाव वाले व्यक्ति से मिल कर रहे । बुरे कार्य के लिए उकसाने वाले उस बुरे व्यक्ति के प्रति जो अवसर पाने पर उसे हानि भी पहुचा दे । ९ चोर रा पग चोर ओळखै—चोर की गति को चोर ही समझता है । दुष्ट व बुरा व्यक्ति अपने स्वभाव वाले को शीघ्र पहचान जाता है ।

१० चोर री दाढी मे तिणकलौ—किसी मनुष्य मे कोई अवगुण हो और उसके समक्ष किसी अन्य व्यक्ति द्वारा उसी अवगुण की आलोचना की जाय तो वह अपने ही ऊपर उसे समझ कर जब बिगडने लगता है तब यह कहावत कही जाती है । ११ चोर री मा छानै छानै रोवै—चोर की मा छिप कर रोती है । चोर को जब किसी प्रकार की सजा होती है तो उसकी मा छिप कर रोती है, इसलिये कि कही चोर के साथ पुत्र का नाता प्रकट न हो । बुरे व्यक्तियो से अपना सबध साधारणत लोग प्रकट नही करते । १२ चोर री मा नै हीज मारणी—बुरे आदमी को नही बल्कि बुराई के मूल कारण को ही नष्ट करना चाहिये । १३ मिनखा मे चोर छाना को रैवै नी—मनुष्यो मे चोर छिपा नही रह सकता, वह अपने अमानवीय या अस्वाभाविक व्यवहार से अपने आपको प्रकट कर ही देता है ।

यौ०—कामचोर, चोरआळौ, चोरखिडकी, चोरगळी, चोरगाय, चोरचकार, मुहचोर ।

अल्पा०—चोरडौ, चोरटौ ।

२ लीपने-पोतने के कार्य मे असावधानी से रह जाने वाला बिना लिपा-पुता भाग ।

३ ताश का वह पत्ता जिसे छिपाये रखने से दूसरे खिलाडियो को जीतने में बाधा पडती है ४ एक गध द्रव्य ५ एक प्रकार का सर्प ।

वि०वि०—देखो 'पीणौ'

वि०—१ जिसके वास्तविक स्वरूप का बाह्य आकार से पता न चले २ काला, श्याम* (डिं को)

चोरग्राळौ–स०पु०यौ०—दीवार मे बना हुग्रा वह गुप्त ताका जिसका ग्रासानी से किसी को पता न चले। यह ताका धन, जेवर ग्रादि सुरक्षित रखने के लिये बनाया जाता है।

चोरकार, चोरकारी, चोरकळी, चोरकाळी–स०स्त्री० [स० चौर्यकार, चौर्यकारी] चोर का कार्य, चोरी।

चोरखानौ–स०पु०यौ०—किसी सन्दूक ग्रादि का गुप्त खाना, दराज।

चोरखिडकी–स०स्त्री०यौ०—छोटा गुप्त द्वार।

चोरग–स०पु० [स० चोरक] एक सुगंधित वनस्पति (जैन)

चोरगळी–स०स्त्री०यौ०—१ वह गुप्त ग्रौर तग छोटी गली जिसकी जानकारी बहुत कम लोगो को हो २ दोनो जाघो के बीच मे रहने वाला पाजामे का भाग, मियानी।

चोरगाय–स०स्त्री०—वह गाय जो दूध दुहते समय पूरा दूध न दे ग्रौर दूध को थनों मे ही ऊपर रोक रखे।

चोरडौ—देखो 'चोर' (ग्रल्पा रू भे) उ०—कोमळ हरियौ मरु नरा री नेतौ धरमी धोरडौ, राज प्रक्रिति मेळ न राखै मरु जेळा जरु चोरडौ।—दसदेव

चोरजमी, चोरजमीन–स०स्त्री०यौ०—वह जमीन जो देखने मे समतल व ठोस प्रतीत हो परन्तु पैर रखते ही उसमे पैर धँस जाय।

चोरटौ–स०पु० [स० चोरट] (स्त्री० चोरटी) चोर, उचक्का (ग्रल्पा)

चोरणौ, चोरबौ—देखो 'चुराणौ' (रू भे)

चोरणहार, हारौ (हारी), चोरणियौ—वि०।

चोराणौ चोराबौ, चोरावणौ, चोरावबौ—प्रे०रू०।

चोरिग्रोडौ, चोरियोडौ, चोरयोडौ—भू०का०कृ०।

चोरीजणौ, चोरीजबौ कर्म वा०।

चोरताळौ–स०पु०यौ०—ऐसा ताला जिसके लगे होने का पता ग्रासानी से न लगे या जिसके खोलने मे विशेष बुद्धिमानी की ग्रावश्यकता हो।

चोरदरवाजौ–स०पु०यौ०—किसी मकान ग्रादि का वह गुप्त द्वार जिसकी जानकारी सामान्य लोगो को न हो।

चोरदात–स०पु०यौ०—बत्तीस दातो के ग्रतिरिक्त दातो की पक्ति मे ग्रागे या पीछे निकलने वाले दात।

चोरपहरौ, चोरपैरौ–स०पु०यौ०—वह पहरा जो शत्रु के जासूसो से सेना की रक्षा के लिये लगाया जाता हो। किसी प्रकार का गुप्त पहरा।

चोराकूटी–स०पु०यौ०—डकैती, लूट-पाट।

चोरा-चोरी–क्रि०वि०—गुपचुप, छिपे छिपे, चुपके-चुपके।

चोरावणौ, चोरावबौ—देखो 'चुरावणौ' (रू.भे)

चोरिक्क–स०पु० [स० चौरिक्य] चोरी।

चोरिय–स०पु० [स० चोरिक] १ मनुष्य को मार कर चोरी करने वाला (जैन)

[स० चोरित] २ चोरी।

चोरियोडौ–भू०का०कृ०—चुराया हुग्रा, ग्रपहरण किया हुग्रा। (स्त्री० चोरियोडी)

चोरी–स०स्त्री० [स० चुर, चोरिका, चौरिका] छुप कर किसी दूसरे की वस्तु लेने या ग्रपहरण करने का कार्य, चुराने की क्रिया या भाव।

मुहा०—चोरी-चोरी—छिपे तौर पर।

यौ०—चोरी-चकारो, चोरी-जारी।

चोळ–स०पु० [स० चोल] १ भारत के दक्षिण का एक प्राचीन राज्य, चोल राज्य. २ एक प्राचीन राजपूत वश. ३ लाल रंग का वस्त्र, चीर विशेष ४ गहरा लाल रग। उ०—लेता भारी लाल चोळ रग लागा चोखा, काडी फेर किया ग्रजब द्रग घमळ ग्रनोखा।

—ग्रज्ञात

५ कवच. ६ मजीठ ७ ग्रानद, उमग। उ०—पुटिया टोळ पचोळ चोळ चपै चित ग्राला।—दसदेव

८ कामक्रीडा, मैथुन। उ०—करडी कुच नूं भाखता, पडवा हदी चोळ। ग्रब-फूला जिम ग्रग मे, सेला री घमरोळ।—वी स.

९ क्रीडा, किलोल। उ०—१ सूघै मैगळ सूड हुकाळा चोळ करता, फळिया गूलर वन्न सुहाणी चाल बहता।—मेघ

उ०—२ मैंगळ कुटब सहत उनमत रै, ग्राव हिलोळ चोळ की ग्रतरै।

—र ज.प्र.

१० रुचि, लगन। उ०—जा मुखि राम न ऊचरै, ग्रान कथा मन चोळ। जन हरिदास ते मांनई, काग बिलाई कोळ।—ह पु वा

वि०—लाल। उ०—१ चख चोळ भाळ विकराळ मूच, कळ चाळ प्रगट दाढाळ कूच।—वि.स

उ०—२ चोळ ग्रगनि रत नदी बीच चलि, होजफुहारा ग्रगनि चादर हलि।—सू प्र

यौ०—चोळ-बोळ।

चोळग–वि०—लाल, रक्त। उ०—ग्रजगर के कध टामक से सीस, नखू चोळग सैल रीस।—सू प्र

चोळगोळ–स०पु०यौ०—ग्राग से तपा हुग्रा लाल गोला।

चोळचचोळ–स०पु०यौ०—क्रोधपूर्ण नेत्र, गुस्से मे लाल नेत्र।

चोळचख–स०पु०—शेर (ना डिं को.)

चोळचखी–वि०—क्रोधपूर्ण या लाल नेत्र वाला।

चोळबोळ–वि०—१ लाल रग से रगा हुग्रा रक्तवर्णक।

उ०—१ प्रचड लोह पाखरा, चोळबोळा चखचोळा।—सू प्र

उ०—२ थूर हय धवळ री थाट मैंवट थियौ, काळ चाळौ चखा चोळबोळा कियौ।—हा झा.

२ उन्मत्त, मस्त। उ०—मोछ्ण ठुगार हुय रहचौ छै, चोळबोळां हुयजे छै।—रा सा स

चोळरग–स०पु०—मजीठ का रग, गहरा लाल।

चोळवट, चोळवटउ–स०पु० [स० चोलपट्ट] लाल वस्त्र (उ र)

चोळवान, चोळवन्न–वि० [स० चोलवर्ण] रक्त वर्ण, गहरा लाल।

उ०—अगा ऊससे सवायो तायो सुणे वेण राण वाळा, वडाळा छोह मे छायो चखा चोळवन्न ।—र रू

चोळाहडो–स०पु०—एक प्रकार का घोडा विशेष (शा.हो)

चोळियौ–स०पु०—देखो 'चोळो' (अल्पा रू.भे)

चोळी–स०स्त्री०—१ स्त्रियो का एक पहनावा जो स्तनो को ढकने के लिये छाती पर बाधा या पहिना जाता है। कचुकी, अगिया।
उ०—सिरी मीस कुभा मणी हेम साऊ, जथा नारी वक्षोज चोळी जडाऊ।—व भा.
२ मजीठ। उ०—१ प्रीतम वीछुडिया पछइ, मुई न कहिजइ काइ। चोळी केरे पान ज्यू—दिन दिन पीळी थाइ।—ढो मा
उ०—२ म्हारी धीयड चोळी पान की, जँवाई चपले री फूल, म्हारी आज अमली फळ रही।—लो.गी
३ स्त्रियो की अगरखीनुमा पहनने का वस्त्र विशेष (पुष्करणा ब्राह्मण)

चोळीमारग–स०पु० [स० चोलीमार्ग] वाममार्गियो का एक भेद विशेष।
वि०वि०—देखो 'काचळिया पथ'।

चोळीय–स०पु०—नौ नाथो मे एक नाथ (पा प्र)

चोळुवौ–वि०—लाल, लाल रग का। उ०—कडी कुरटे गाळी ओकढा सातरा पटाडा रा चोळुवा वणाया थका, काणा कसणा किया थका चढ खडिया छै।—रा सा स

चोळौ–स०पु०—१ साधु, फकीर, मुल्ला आदि के पहनने का घुटनो तक लम्बा एक प्रकार का ढीला-ढाला सादा कुरता. २ ढीला-ढाला लम्बी बांहो का साधारण कुरता। उ०—विधि होय जद वाम, दोसत ही दुसमण हुवै। वदळ जाय जद वाम, चोळो वैरी चकरिया।
—मोहनराज साह
३ देह, शरीर। उ०—धरचा रहै सब धाम, मात पिता सुत नारि धन। कोई न आवै काम, चोळो छूटंघा चकरिया।—मोहनराज साह
मुहा०—१ चोळो छोडणो—मर जाना। २ चोळो वदळणो—एक शरीर छोड कर दूसरा शरीर धारण करना, नया रूप धारण करना।
४ इल्लत, आफत।

चोल्यौ–स०पु०—टोकरी। उ०—दूणा रेत चोल्यां यां कना सू तो मगाया। पाछै दोय चोल्या ठाकुराणी बताया।—शि.व

चोवखौ—देखो 'चोखौ' (रू भे) उ०—दूलची जाय घणी आछी सादी की। घणी चोवखी दात दायजै दीयो।
—दूलची जोइये री वारता

चोवडौ–वि०—चार लडो वाला। उ०—दूजा दोवडा चोवडा, ऊट कटाळउ खाणा।—ढो मा.

चोवटियौ, चोवटौ—१ देखो 'चौवटौ' (रू भे)
उ०—१ हे चुडलो आयो गोरी चोवटै, लूंदारियो लै, चोवटियै दांम चुकाय, जाजो भरवो लै।—लो गी उ०—२ अणमणो करियां टेपा कान, चोवटै ऊभो हेकल साढ। सेवट किण घर रो मिजमान, भला ओ मीरोळे रो सांड।—सांझ उ०—३ चप्रण पडियो चोवटै, ले उड फिर-फिर जाय। आसी चनण री पारखी, लेसी मोल चुकाय।—र रा
[स० चतुर्+हट्ट] २ वह स्थान जिसके चारो ओर हाटें (दुकानें) हो, बाजार। उ० —सोनो रूपो पहरती, मोत्या भरती भार। सो कासी रै चोवटै, हरचद वेची नार।—अज्ञात

चोवन—देखो 'चौवन' (रू भे)

चोवा-चनण–स०पु०यौ०—सुगन्धित पदार्थ, अगंजा चंदनादि पदार्थ।

चोवौ–स०पु०—एक सुगधित द्रव्य जो केसर, चदन, कपूर आदि के मिलाने से बनता है। उ०—१ म्हे नं ढोलो झू वियां, म्हा नू आवी रीस। चोवा केरै कूपलै, ढोळी साहिव सीस।—ढो मा.
रू०भे०—चोओ।

चोस–स०स्त्री०—कासी (डिं को.)

चोसट—देखो 'चौसठ' (रू भे)

चोसटी—देखो चौसठी' (रू भे)

चोसणो, चोसबौ—देखो 'चूसणौ' (रू भे) उ०—चड चड जोगणियां रत चोस, जुडै भिड घूहड वाधै जोस।—गो रू

चोसर—देखो 'चोमर' (रू भे) उ०—ऊजळा फूला रा चोसर घातियां हाथ ऊजळा फूला रा गेंद उछाळती थकी।—रा सा स

चोसरौ—देखो 'चौसरौ' (रू भे) उ०—मालण लाई चोसरा, फूल अनोखा पोय। मन मुरझायो देखता, ऊतर दीन्हो रोय।—र रा.

चोसागी, चोसींगी–स०स्त्री० [सं० चतुर श्रृगी] एक प्रकार का कृषि उपकरण जिसके लम्बे डडे के एक सिरे पर चार छोटे व पतले सींग के आकार के डडे जो आगे से नुकीले होते हैं और कुछ गोलाई मे मुडे होते हैं। (मि चौकनी)

चोस्क–स०पु० [स०] उत्तम जाति का घोडा (शा हो)

चोहट, चोहटो—देखो 'चौवंटो' (रू भे) उ०—१ लेवा कै थानक लाखावत, घणा समदाये सेन घणां। चलणै तलक तुहाळै चोहट, 'मोकळ' सह मडळीक तणां।—महाराणा मोकळ रो गीत
उ०—२ घटा घटा चौरग वा नारंग ऊलट्टे। फिर फूटै विच चोहटा रगरेजा मट्टे।—द दा

चोहथी—देखो 'चौहथी' (रू.भे)

चोहा–वि०—चारो। उ०—चोहा दिस रोहा रुक्कै छोहा भट छक्कै, जड्डै जजीर न जरै बहु गज वक्कै।—व भा

चोहान–स०पु०—१ फदाली जाति के व्यक्तियो की एक शाखा (मा म)
२ देखो 'चौहान' (रू भे)

चोहिल–स०पु०—पडिहार वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

चौंकलो–स०पु०—भाले की नोक, भाले का नुकीला भाग।
उ०—सु प्रथीराज सिकार रमण गयो थो सु सिकार रमतो एक लुगाई घडो भरिये जाती थी तिण रै चौंकला री लगाई।—नैणसी

चौंगियौ—देखो 'चोगियौ' (रू भे)

चौंडासमा–स०स्त्री०—यादव वश की एक शाखा। उ०—झाला चौंडासमा झळहळं, हाला हर हैकप हुवा।—द दा.

चौंतरौ–स०पु०—चबूतरा। उ०—किणहेक सहर वाटाउ थको किणहेक रै बारणा रै चौंतरै ऊतरियौ हुतौ।—नैणसी

चौंतीस—देखो 'चौतीस' (रू भे)

चौंतीसमौं—जो क्रम मे तेतीस के बाद पडता हो।

चौंतीसे'क–वि०—चौतीस के लगभग।

चौंतीसौ–स०पु०—चौतीसवा वर्ष।

चौंप–स०स्त्री०—१ कीर्ति, यश २ देखो 'चोप' (रू भे)

चौंरी—देखो 'चंवरी' (रू भे) उ०—१ कूरम न्रिप उच्छव कियौ, वेद सनीत विचार। दुलहणि जुग लीधा दुलहि, चौंरी फेरा च्यार।—रा.रू

उ०—२ चहूँ भ्रात चौंरी चढै नेह चगा। उचारं दुजा देव वाणी उमगा।—सू प्र.

चौ–स०पु०—१ मनुष्य. २ बैल. ३ अश्व, घोडा. ४ महावत ५ रस (एका.)

स्त्री०—६ गौ (एका)

वि०—चार। उ०—छद अघ नाराच री, चौ तुक हेक दवाळ। वरण छद सौ गीत वद, दूणौ अठौ दिखाळ।—र ज प्र.

अव्य०—देखो 'चो' (रू भ.) उ०—हू आखू नय वयण हिक, साभळ भरथ सुजाण। करणौ तौ मो अवस कर, पित चौ हुकम प्रमाण।—र ज प्र

चौअटौ—देखो 'चौवटौ' (रू भे)

चौईगी—देखो 'चोसीगी' (रू भे)

चौईस–वि० [स० चतुर्विंशति, प्रा० चउवीस] बीस और चार का योग, चौबीस।

स०पु०—चौबीस की सख्या।

चौईसमौं–वि०—जो क्रम मे तेईस के बाद पडता हो।

चौईसे'क–वि०—चौबीस के लगभग।

चौईसौ–स०पु०—चौबीसवा वर्ष।

चौओतर—देखो 'चिमोतर' (रू भे)

चौओतरमौं—देखो 'चिमोतरमौं' (रू भे.)

चौओतरौ—देखो 'चिमोतरौ' (रू भे.)

चौओं—१ देखो 'चोभौ' (रू भे) २ देखो 'चोवौ' (रू भे)

चौओडी–स०स्त्री०—चावडा वश की कन्या। उ०—सुज कत अत अमरा सुपुरि, चौओडी हरि उच्चरै। छत्रपती सनेह चढू, छडी सेखावत व्रत सभरै।—रा रू

चौक–स०पु० [स० चतुष्क, प्रा० चउक्क] १ चौकोर खुली भूमि. २ नगर या गाव के बीच का वह खुला मैदान जिसके चारो ओर रास्ता गया हो, चौराहा। उ०—चौक गोकळं तणं साय बैठो, चडी, गरडधुज भुयग जमराव रौ धणी।—रुषमणी हरण

३ घर के अन्दर का वह खुला स्थान जिसके ऊपर किसी प्रकार का छाजन न हो। आँगन, सहन ४ चार कोने वाला चबूतरा।

उ०—बीकंजी श्रा जागा श्राछी देखी तद तळाव री पाळ माथै स्त्री गोरंजी री मूरत पधराई, चौक करायौ।—द.दा

५ मैदान, खुला स्थान। उ०—आवध धारिया चौक पधारै छै।
—रा सा स.

मुहा०—१ चौक करणौ—मैदान की ओर प्रस्थान करना। २ चौक पधारणौ—मैदान मे आना, खुले स्थान की ओर गमन करना।

६ मांगलिक अवसर पर आगन मे या खुले स्थान मे आटे, अबीर आदि से बनाये हुए रेखा चित्र। उ०—ओपै रूप घणौ राय अगण, चौक मुक्त कण केसर चनण।—रा रू.

मुहा०—चौक पूरणौ—आगन या सहन मे कल्पना के चित्र चित्रित करना।

७ पीठ। उ०—तिकी जसवतजी रौ गळा माहे हुयनं गुदडी रै पाखती उकसीयौ नै जसवतजी उणरै छाती माहै बरछी री दीधी सु उणरै चौक मा हाथ एक जाती बाहिर फूटी।—राव मालदेव री वात

८ धातु, काष्ट आदि की बनी हुई चौकी। उ०—कनक चौक थाळह कनक, सामिल दई नरेसुरा। सासम्रा जेम भोजन सतर, रीति आदि राजेस्वरा।—सू.प्र.

९ भूल, चूक। उ०—कहियौ न्रप सिघ हू जोडे कर, आयस हसे चौक किण ऊपर।—सू प्र.

चौकडा–स०पु०—मर्दो के कान का आभूषण जिसमे दो मोती तथा एक माणक की लाल मणि होती है।

चौकडालगाम–स०स्त्री०यौ०—घोडे के मूह मे लगाई जाने वाली एक लगाम विशेष। उ०—हजार घोडा तयार कीजं छं, चौकडा लगाम दीजं छं।—रा सा.स

चौकडियौ–स०पु०—चादी का वह चौकोर टुकडा जो पाणिग्रहण सस्कार के समय मेहदी के साथ वर-वधू के हाथ मे रखा जाता है।
(पुष्करणा ब्राह्मण)

चौकडी–स०स्त्री०—१ चार या इससे अधिक मनुष्यो की मडली।

यौ०—चडाळचौकडी।

२ चार युगो का समूह। उ०—चहु जुगा चौकडी छतीस जुगाई, चौकडिया इकोतरा इद्र राज कराई।—केसोदास गाडण

३ चारपाई की एक बुनावट विशेष जिसमे चार-चार सुतडिया इकट्ठी कर बुनी जाती हैं।

४ अनेक तलवारो का एक साथ पडने वाला प्रहार, चोट।

उ०—१ पाळा झगडौ कियौ, तारा रावजी लूणकरणजी ऊपर तरवारा री चौकडी पडी।—द दा.

उ०—२ तरवारिया री रीठ बागियौ। माथै चौकडी पड रही छै।
—सूरे खीवे काधळोत री वात

५ चारो पैरों से एक साथ कूद कर भरी जाने वाली छलाग (हरिन)

उ०—करी आखरी त्यार, ओकळी सोवण सुख भर। मिरग चौकडी भूल, भोकडी लेवै दिन भर।—दसदेव

६ प्राय सडको पर मिट्टी डालने के लिये सडको के आसपास या तालाव खोदते समय मजदूरो द्वारा खोदा जाने वाला चौकोर गड्ढा, ७ बाण के अतिम सिरे पर लगाया जाने वाला उपकरण जिससे वाण प्रत्यञ्चा पर मजबूती से स्थिर होता है। उ०—खुरसाण रा उतारिया, माठी रा तिलारिया ऊपर रूपै रा सावा छै, पीतळ तावै रा छला छै, दात री चौकडी छै।—रा सा स

८ शिर पर पेचा या पगडी वाधने की एक विधि विशेष जिसमे पगडी शिर पर वाधते समय सामने वाले भाग पर क्रॉस के चिह्न की सी अनेक चौकडी पडती जाती हैं।

९ चार घोडो की वग्घी।

चौकडो—स०पु०—१ घोडे के मुह मे लगाई जाने वाली एक लगाम जिसमे मुह मे रहने वाला हिस्सा लोहे का बना एक पतला डडा सा होता है। उ०—घोडा कायजे हुआ ऊभा छै, चौकडो चावै छै। —जगदेव पवार री वात

२ एक प्रकार का आभूषण विशेष।

उ०- कुवरसी साळै नू साथ ले आइयो। आपरं डेरै आय कटारी तरवार जडाऊ चौकडो मोतिया री कठी दीवी।
—कुवरसी सांखला री वारता

चौकणो, चौकवो—क्रि०स०—१ अनाज बोने के पूर्व भूमि को जोतना। हल द्वारा भूमि को इस प्रकार जोतना कि पहले की जुताई की रेखायें दूसरी बार की जुताई की रेखाओ से कट जाय २ खेत मे अनाज को बोने के लिए हाथ से इधर-उधर फेंकना या बिखेरना ३ चारो ओर से आवेष्ठित करना, घेरना। उ०—अहमदपुर नज्जीक आय, चौकियौ दुरग रसवीर चाय।—सू प्र

४ चकित होना।

चौकणहार, हारौ (हारी), चौकणियौ—वि०।

चौकवाडणो, चौकवाडवो, चौकवाणो, चौकवावो, चौकवावणो, चौकवाववो, चौकाडणो, चौकाडवो, चौकाणो, चौकावो, चौकावणो, चौकाववो—प्रे०रू०।

चौकिओडो, चौकियोडो, चौक्योडो—भू०का०कृ०।

चौकीजणो, चौकीजबो—कर्म वा०।

चौकतीस—स०स्त्री०—मान, प्रतिष्ठा। उ०—तुटै कळा छुटै ठीड ठीड री खचाणी तोपा, लाखा हाडा गोड री कुरमा आडी लीक। जोड रा ठिकाणा घणा मगेजी मेल दी जठै, तठै रही राठोड री हेक चौकतीस।—महाराजा मानसिंह री गीत

चौकनी—स०स्त्री०—खलिहान मे गेहूँ को भूसे से अलग करने के लिए हवा मे ऊपर फेंकने का काष्ठ का बना एक उपकरण (मि चोसीगी)

चौकन्नो—वि० (स्त्री० चौकन्नी) सतर्क, सावधान, होशियार, सजग।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

२ चार कान वाला।

चौकळ—स०पु० [स० चतुष्कल] १ चार मात्राओ का समूह। इसके पाच भेद होते है—SS, IIS, ISI, SII, IIII २ सगीत मे एक ताल, चतुष्कल।

वि०—चार कलाओ वाला।

चौकळो—देखो 'चौखळो' (रू भे) उ०—वा'र चढै वा'रू वज्या, चड चौकळा हेत। है न जमी हिक चाम पिण, जान झोक जग देत।
—रेवतसिंह भाटी

चौकळियौ—स०पु०—वह छद जिसमे चार-चार मात्राओ के समूह हों।

चौकस—स०स्त्री०—ढूढने की क्रिया, तलाश। उ०—१ कोटवाळ नट गयौ तद इण चौकस कर फेर कहायौ। कोटवाळ क्यू'क वाद कर फेर नट गयो।—पदमसिंह री वात

उ०—२ सहिनाण सब मिळिया पण डूबी वात छै। चार ही ठावा माणस मेल्ह साची खबर मगावौ, चौकस करि आवै।
—पलक दरियाव री बात

वि०—१ सचेत, सतर्क, चौकन्ना, सावधान २ ठीक, सही, सत्य। उ०—पण माणस च्यार ठावा जाय साची खबर ले आवै। वात चौकस है। महाराज पधारसी।—पलक दरियाव री बात

३ पक्का, निश्चित। उ०—राणी वाता सुण कहण लागियौ जै आयसं चौकस कै नही।—कुवरसी साखला री वारता

४ स्पष्ट। उ०—विजळी चमकी तद ढाल चौकस दीसी।
—कुवरसी साखला री वारता

क्रि०वि०—१ प्रत्यक्ष, सामने। उ०—ताहरा हरमाळा कह्यौ न मानो तो थे जावो चौकस देखो।—पलक दरियाव री बात

२ निश्चय ही, अवश्य। उ०—१ चौकस आस किसी चुडला री, कहोरी अबै सुहाग किसो। देवी इसो भरतार म दै री, जिण सिर वैरी 'मान' जिसो।—मानजी लाळस उ०—२ जिण दिन लीली जळ जवासी, माडै राड साप री मासी। वादळ रहै रात रा बासी, यू जाणै चौकस मेह आसी।—वर्षा विज्ञान

चौकसाई, चौकसी—स०स्त्री०—१ सावधानी, सतर्कता २ निगरानी, देखरेख।

वि०—चादी सोने की कसोटी पर परीक्षा करने वाला (किसनगढ)

रू०भे०—चोगसी।

चौका—स०पु०—तलवार की मूठ के निचले भाग का वह मध्य का चौडा चपटा भाग जहा उसकी खूबसूरती के लिये नक्कासी आदि की जाती है और पकडने के गोल उभरे भाग को मजबूती के साथ उसमे लगाया जाता है।

चौकाणो, चौकावो—क्रि०स०—१ खेत या फसल बोने की भूमि को हल द्वारा सीधा व खडा जुताना २ बोने के लिये अनाज को हाथ से फिंकवाना ३ चकित करना, चमकाना।

चौकायोडो—भू०का०कृ०—१ हल द्वारा जुताई हुई या चिराई हुई भूमि. २ बीज हाथ से फेंक कर बुवाया हुआ ३ चौंकाया हुआ। (स्त्री० चौकायोडी)

चौकावणो, चौकावबो—देखो 'चौकाणो' (रू भे)

चौकावियोडो—देखो 'चौकायोडो' (स्त्री० चौकावियोडी)

चौकियोडो–भू०का०कृ०—१ हलो द्वारा जुताई किया हुआ (खेत) २ हाथ से फेक कर बीज बोया हुआ ३ चमका हुआ, चौंका हुआ। (स्त्री० चौकियोडी)

चौकी–स०स्त्री० [स० चतुष्की] १ चार पायों का काठ या पत्थर का चौकोर आसन २ मदिर मे मडप के ऊपर का घेरा जिस पर शिखर होता है तथा इस घेरे के नीचे का स्थान ३ पडाव या ठहरने का स्थान ४ आसपास के स्थान की सुरक्षा के लिये रक्खे जाने वाले कुछ सिपाहियो के रहने का स्थान ५ पहरा, निगरानी।

उ०—१ रथ सत्तरि लाख चौकी विराज, सौ लाख गयद नग हीर साज।—सू प्र

उ०—२ कळाहीण हूँ भाजि कूके कहोकी, चले जाय कूकी जठै राण चौकी।—सू प्र

६ गले मे पहनने का एक आभूषण, चौरसी ७ पुरुषो की भुजा पर धारण करने का आभूषण विशेष।

८ भुजा पर या गले मे धारण करने का सोने, चादी या तावे का आभूषण जिसमे जत्र मत्र के साथ अभिमन्त्रित धागा भी होता है।

उ०—तथा मरनै भूत होवै तरै प्रेत री जत्र मादळिया मे तथा चौकी मे मडाईजजो।—वी स टी

९ सेना की टुकडी। उ०—पाच पाच सै रजपूता री चौकी सात वैठी छै।—जैतसी ऊदावत री वात

१० रोटी वेलने का चकला ११ राजाओ या जागीरदारो को अपने घर निमत्रित करने पर उन्हें भेंट या नजर की जाने वाली धनराशि।

उ०—चौकी रुपिया लाख री, हाथी निजर तुरत। रकम जवाहर उच रुचि, पद तळ वसन सुरग।—रा रू

१२ छोटा चबूतरा १३ वह लगान या कर जो खेत व पशु आदि की निरन्तर चौकसी करने वाले को दी जाती है।

मुहा०—चौकी भरणी—चौकसी पर निगरानी का कर देना।

१४ ताश का वह पत्ता जिस पर चार बूटिया हो।

१५ तोरणद्वार के इर्द गिर्द बना चबूतरे के आकार का स्थान।

रू०भे०—चउकी।

चौकीखानौ–स०पु०यौ०—चौकी या पहरा देने का स्थान। उ०—गढ रै पाखती जलाल री महल छै, उठै मूमना रहै नै जलाल चौकीखानै दोय घडी दिन चढता आवै।—जलाल बूबना री वात

चौकीदार–स०पु०यौ०—चौकसी करने वाला, पहरेदार, रखवाला।

चौकीदारी–स०स्त्री०यौ०—१ रखवाली करने अथवा पहरा देने का कार्य २ चौकीदार का पद ३ वह कर या चदा जो चौकीदार के वेतन के लिये एकत्रित किया जाता है ४ चौकीदार को दिया जाने वाला पारिश्रमिक।

चौकीवट–स०पु० [स० चतुष्क पट्ट] काष्ट की बनी चौकी (उ र)।

चौकूणो–वि० [स० चतुष्कोण, प्रा० चउक्कोण] (स्त्री० चौकूणी) जिसके चार कोने हो, चौकोर।

चौकोर–सं०पु०—क्षत्रियो की एक शाखा।

वि०—चार कोने वाला।

चौको–स०पु० [स० चतुष्क प्रा० चउक] १ किसी पत्थर का चौकोर टुकडा २ किसी पवित्र कार्य के लिये जल या गोबर के लेप से शुद्ध किया हुआ स्थान ३ वह लिपा-पुता स्थान जहा हिन्दू (विशेष कर ब्राह्मण) लोग रसोई बनाते हैं।

मुहा०—चौको फेरणो—घर की सब सम्पत्ति को बरबाद कर देना।

कहा०—तीन पग ताणिया नै चित्तौड ताईं चौको—तीन पैर बाहर निकले और चित्तौड तक अपना चौका बना लिया। यात्रा मे बाहर निकल कर छुआछूत मे अधिक विश्वास रखने वाले के प्रति व्यंग। यात्रा मे निकलने पर छुआछूत पालने की आवश्यकता नही।

वि०वि०—इस स्थान पर बाहरी लोग या बिना नहाये-धोये घर के लोग भी नही जाने पाते।

क्रि०प्र०—करणो, देणो, फेरणो, राखणो।

यौ०—चौका-बरतन।

४ एक ही स्थान पर एक ही प्रकार की चार वस्तुओ का समूह ५ ताश की चार बूटियो वाला पत्ता ६ चार का अक ७ चार का वर्ष ८ सामने के चार दातो का समूह। उ०—१ हसता फूल झडै है, चौका री चकाचूध मे मुख नीठ निजर पडै है।—र. हमीर

उ०—२ छोटी सी बरछी थी सु इण छळ वाही दात चार चौके रा पाड नै गुदडी में उकसी।—नैणसी

मुहा०—१ चौको तोडणो—बुरी तरह मारना। चौको पाडणो—सामने के चार दातो के समूह को गिरा देना।

९ दातों के काटने से बना हुआ गोल निशान, दत-क्षत।

उ०—सोना री तौ रग कपोळा रा रग सूं उरै है पिण चौका री चहन ही करणफूला री चूनिया मे दुरै है।—र हमीर

१० शव को सुलाने के लिये गोमय से लिपा-पुता स्थान।

चौखड–वि०—१ चार मजिल का, चार मजिल वाला २ जिसमे चार खड हो, चार भाग वाला।

चौखडी–स०स्त्री०—चौथी मजिल। उ०—जाई करि वैठी चौखडी, पेहली वाची उपली ओळि।—वी दे

वि०—चौमजिला।

चौखडो–स०पु०—एक प्रकार की घोडे की लगाम।

चौखट–स०स्त्री० [सं० चतुष्काष्ठिका] १ दीवार मे लगाया जाने वाला पत्थर या लकडी का बना आयताकार ढाचा जिसमें किवाड के पल्ले लगे रहते हैं २ देहलीज ३ ताश के पत्तों मे चौकोर बूटी का रग या इस बूटी का पत्ता।

चौखटियो, चौखटो–स०पु०—१ चार लकडियो का ढाचा जिसमे तस्वीर या शीशा जडा जाता है २ देखो 'चौखट' (अल्पा) ३ आकृति, सूरत।

वि०—चार कोने वाला।

अल्पा०—चौखटियो ।

चौखणो–वि०—१ चार कोने वाला २ चार खड का, चौमजिला ।
उ०—ऊचा मदिर चौखणा, ऊचा घणु ग्रावास । अजब झरोखा जाळिया, सीस्या सूधावास ।—रा रू
३ चार दराजो या खानो वाला ।

चौखळो–स०पु०—चारो ओर के पडोसी गावो का समूह ।
उ०—१ म्हारै गाव रा रासोजी बाजो बाता रा ई पूतळा, चौखळा मे वाजिदा ।—वाणी
उ०—२ इण तरै सू गाव मे ईज नी पण पूरा चौखळा मे सेठा री ठरको जम्योडो हो ।—रातवासी
मुहा०—चौखळो करणो—किसी अवसर विशेष पर अडोस-पडोस के गांवो को भोजन के लिये निमत्रित करना ।
रू०भे०—चोखळो ।

चौखूट–स०पु० [स० चतुष्कोटि] १ चारो दिशा २ भूमडल, जगत ।

चौखूटो–वि०—जिसमें चार कोने हो, चौकोना ।

चौगडद, चौगडदाई–क्रि०वि०—चारो ओर । उ०—१ दारुण 'गोयद' चौगडद, फिरिया पह फट्टी । ओ भी आगि अजागि अग, नाराज निछुट्टी ।—सू प्र
उ०—२ जग जगणी जायो न जो, गरव मकै मो गाळ । फोगट चौगडदा फिरै, काळ झाल करवाळ ।—रेवतसिंह भाटी
उ०—३ गुदा के आसपास चौगडदाई दोय अगुळ माही फुणणी होय ।—अमरत

चौगडो–वि०—चार । उ०—चीतवि त्रिगडो चौगडो, सोजि मेलि करि रात । सात दसा पर सचरै, वात कही विख्यात ।—ल.पि
स०पु०—जाणिजै आक चौगडो जेथि, तळि च्यारि रूप माडिजे तेथि ।
—ल पि

चौगट—देखो 'चौखट' (रू भे)

चौगटियो–स०पु०—१ किसी मेहराब के ऊपर का पत्थर २ देखो 'चौखटियो' (रू.भे)

चौगणो–वि० [स० चतुर्गुण, प्रा० चउग्गुण] (स्त्री० चौगणी) चार गुना, चौगुना ।

चौगणो, चौगवौ–क्रि०स०—देखना ।

चौगरद—देखो 'चौगडद' (रू भे) उ०—फूलां की माळा सू चौगरद आछादित कीया छै ।—वेलि टी

चौगस—देखो 'चौकस' (रू भे) उ०—हूरा कह तुरक अच्छर कह हीदू, वरवा कारण वाद वढै । हटैसीग ऊपर हठ लागी, चौगस वै तो रथा चढै ।—हठीसिंह जोधा री गीत

चौगसी—देखो 'चौकसी' (रू.भे)

चौगान–स०पु० [फा०] मैदान, विस्तृत आगन । उ०—१ दिन पाच कल्याणपुर रहिया । चौगान रमिया ।—द वि
उ०—२ लगावै फळा भोमि आहार लीधो, कपी वाग ऊधामि चौगान कीधो ।—सू प्र

चौगानियो–वि० [फा० चौगान+रा०प्र० इयो] चार तह का ।
उ०—सू नमचा किण भात रा छै? बीटीवा, चौगानिया, घणै वनात रा लपेटिया साळू लपेटिया ।—रा सा स
स०पु०—वह भैसा जिसे मद्यपान करा कर दशहरे के दिन चौगान मे छोडा जाता है और उसे घुडसवार तलवारो मे काटते हैं । उ०—घडा हू त वर घिर करै, अरिया इम अवगाह । चढियौ मद चौगानियो, दपटै दळण दुवाह ।—रेवतसिंह भाटी

चौगिरद–क्रि०वि०—चारो ओर । उ०—१ आदमी बीसे'क तरवारा काढली अर पालखी रै चौगिरद लग गया ।—पदमसिंह री बात
उ०—२ जणा कुवरसी री लोग खरळा'रा लोक नू परा किया अर आप चौगिरद कडी करि ऊभा रहिया ।—कुवरसी साखला री वारता

चौगूडदा—देखो 'चौगडद' (रू.भे)

चौगुणो–वि० [स० चतुर्गुणम्] (स्त्री० चौगुणी) चार गुना ।
उ०—कीधी विगुणा भयाणक काया, माया हू त चौगुणी माया ।
—सू प्र
रू०भे०—चउगणउ, चउगणो, चउगिणउ, चउगुणउ, चउगुणो, चौगणो ।

चौगो–स०पु०—१ वह बैल या भैसा जिसके आयु अनुसार केवल चार दात ही निकले हो । लगभग ३॥ या ४ वर्ष की अवस्था मे चार दात निकलते है २ चार का अक ।

चौगोन—देखो 'चौगान' (रू भे)

चौगोनी–स०स्त्री०—१ गेंद का बल्ला २ हाथ में रखने की पतली छडी, बेंत ।

चौघडो, चौघडियो–स०पु० [स० चतुर्घटिकम्] १ एक प्रकार का नगारे के आकार का वाद्य विशेष जो प्रहर या चार घडी के अन्तर से बजाया जाता है । उ०—पाछलो चौघडियो वाजियो जणा भरमल ऊठ मुजरो कर डेरै गई ।—कुवरसी साखला री वारता
२ समय विशेष, लगभग १½ घटे (लगभग चार घडी) की अवधि ।
उ०— इण भात तमासो करता पाछलो चौघडियो आय रह्यो छै ।
—रा सा स
३ किसी मागलिक कार्य या यात्रादि को आरम्भ करने के लिये वार गणना से निकाला हुआ मुहूर्त ।
वि०वि०—ऐसा प्रतीत होता है कि 'चौघडिया' जैन ज्योतिष से आया है ।
'चौघडिये' सख्या मे सात होते हैं जिनके नाम क्रमश निम्न लिखित हैं—

(१) उद्वेग—रविवार के दिन का प्रथम चौघडिया ।
(२) अम्रत (अमृत)—सोमवार ,, ,, ।
(३) रोग—मगलवार ,, ,, ,, ।
(४) लाभ—बुधवार ,, ,, ,, ।
(५) सुभ(शुभ)—गुरुवार ,, ,, ,, ।
(६) चल—शुक्रवार ,, ,, ,, ।
(७) काळ (काल)—शनिवार ,, ,, ।

इनमे अमृत, लाभ, शुभ और चल श्रेष्ठ है और उद्वेग, रोग और 'काळ' नेष्ठ हैं। इनका उपयोग यात्रा मुहूर्त के अतिरिक्त दैनिक आवश्यक कार्यो के लिये भी होता है। ये दिन में आठ और रात्रि मे आठ आते हैं। इस प्रकार दिन रात मे कुल सोलह होते हैं। इनका स्पष्ट मान दिन या रात्रि के अष्टमाश तुल्य होता है, अतः दिन या रात्रि के घटने-बढने से चौघडियो का मान भी घटता-बढता है।

चौघडियों की गणना दो प्रकार से होती है—

१ सूर्योदय से वार का प्रथम और फिर वार-क्रम से छठा। छठा चौघडिया क्रमश आता जाता है, इस प्रकार दिन रात मे सोलह चौघडिये छ के अन्तर से क्रमश आते जाते हैं, जैसे रविवार का प्रथम चौघडिया उद्वेग है अत. रविवार के दिन मे सूर्योदय के समय उद्वेग तत्पश्चात् उद्वेग से छटा चौघडिया चल (जोकि शुक्रवार का प्रथम चौघडिया है) लगेगा। तीसरा शुक्र से छठा बुध का यानी लाभ का रहता है और आगे इसी प्रकार छ के अन्तर से क्रमश आते जाते है और दूसरे दिन सोमवार के सूर्योदय मे गणना-क्रम के अनुसार अमृत चौघडिया लग जाता है। यह गणना पूर्वी भारत मे प्रसिद्ध है।

२ इस गणना के अनुसार सूर्योदय से वार क्रम से छठा-छठा चौघडिया आता जाता है और दिन का प्रथम व अतिम चौघडिया एक ही होता है जैसे रविवार के दिन का सूर्योदय के समय का प्रथम चौघडिया उद्वेग है तो सूर्यास्त के समय अतिम (आठवां) चौघडिया भी उद्वेग ही होगा, जैसे रविवार को सूर्योदय के समय प्रथम उद्वेग दूसरा रवि से छठा शुक्र का चल। तीसरा शुक्र से छठा बुध का लाभ, इसी प्रकार क्रमश छठा-छठा अमृत काल शुभ रोग और सूर्यास्त के समय अतिम (आठवा) चौघडिया उद्वेग आ जाता है।

इस गणना मे रात्रि के चौघडिये वार क्रम से पाचवें। पाचवें आते जाते है। दिन की तरह रात्रि के भी प्रथम और अतिम चौघडिये समान होते हैं, जैसे रविवार के सूर्यास्त उद्वेग चौघडिये पर दिन समाप्त हो जाता है तो उद्वेग से पाचवा चौघडिया शुभ से रात्रि प्रारम्भ होगी। तत्पश्चात् उस रात्रि मे पाच-पाच के वार क्रम के अनुसार क्रमश चौघडिये लगते जायेंगे, अत रात्रि के प्रारम्भ मे शुभ तथा शुभ से पाचवा अमृत, इसी प्रकार क्रमश पाचवा-पाचवा चल, रोग, काल, लाभ, उद्वेग और अतिम (आठवें) शुभ चौघडिये पर रवि की रात्रि समाप्त हो जायेगी, शुभ से पाचवा चौघडिया अमृत होता है जो कि सोमवार के दिन का प्रथम चौघडिया है। इस प्रकार दिन और रात्रि मे कुल सोलह चौघडिये हो जाते हैं। यह गणना पूर्वी भारत को छोड कर सब जगह प्रचलित है।

चोड–स०पु०—नाश, ध्वस। उ०—चुगलाळा करि चोड़, गिरधारी गाहे गजा। चढियौ खगधारा चढै, रभ रथा राठौड।—वचनिका

चोडाई–स०स्त्री०—लवाई के दोनो किनारो के बीच की लम्बवत् दूरी। लम्बाई के विपरीत किनारे का विस्तार।

चौडै–क्रि०वि०—प्रकट रूप में। उ०—आपरी वेटी सारा जगत रा आटा उधारा लै है सो आप वरज देओ, अे वचन पती री वीरपणी चौडै करण रा छै।—वी स टी

यौ०—चौडै-धाडै।

रू०भे०—चवडै।

चौडै-धाडै–क्रि०वि०यौ०—खुलेआम, दिनदहाडे। उ०—१ चौडैधाड़ै चोर ढग विन ढेढस ढेढी। जिकै नही किण जोग मिळ्या घर घर रा मेढी।—ऊ का

उ०—२ घसे हरवळा चौडैधाडै आडा लोहा लडा अखाडै।—सू प्र.

रू०भे०—चवडै-धाडै।

चौड़ोतरसौ–स०पु०यौ० [स० चतुरुत्तरम्शतम्] एक सौ चार की सख्या या गिनती।

चौडौ–वि० (स्त्री० चौडी) लम्बाई के भिन्न दिशा की ओर फैला हुआ, लम्बाई के दोनो किनारो के बीच का विस्तार।

चौज—१ देखो 'चोज' (रू भे) उ०—१ जिण भळियौ न्रिप चौज तन, माग लियौ माह्रेस। जोडै भतीज 'किसन्न' जै, निस दिन जतन नरेस।—रा रू

उ०—२ चढि मसद बैसि इम कहै चौज, कुण देस नगर पूरव कन्नौज।—सू प्र

२ उदारता। उ०—चाढणी कुळ जळ, दळद चौजां, वाढणी विरदैत।—र ज प्र

चौजीलौ—देखो 'चोजीलौ' (रू भे)

चौजुगी–स०स्त्री०—चार युगो का समय।

चौंटौ—देखो 'चौवटौ' (रू भे)

चौडोळ—२ हाथी १ पालकी। उ०—चौडोळ लगे रुखमणी जो जिहिं भाति चाल्या छै, सुकवि कहै छै।—वेलि

चौतरफ–क्रि०वि०—चारो ओर। उ०—चौतरफ लिख फुरमाण चलवे, डाकदार उदार। धाविया वहू जूग धारक' पैक वड अणपार।—सू प्र.

चौतरौ—देखो 'चबूतरौ' (रू भे.) (स्त्री० चौतरी)

चौतार–स०पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष। उ०—सू किण भात रा वागा छै सिरीसाप, भैरव, चौतार, कसवी, महमूदी, फूलगार, अधरस, सेला. वाफता, डोरिया।—रा सा स.

चौतारौ–स०पु०—चार तारो का एक वाद्य विशेष।

चौताळ–स०पु०—मृदग का एक ताल (सगीत)

चौताळीस—देखो 'चमालीस' (रू भे)

चौताळौ–स०पु०—आसपास के गावो का समूह। उ०—तिणसू सूराचद रै गोखै चौताळै असंधा असवार देखै तरै पूछण रौ गाढ घणौ करै।—जैतसी ऊदावत री वात

मि०—चौखळौ।

जिसमे चार ताल हो चार ताल का।
वि०—चार तालयुक्त।

चौतीणो–स०पु०—वह चौडा कुआ जिस पर चार मोट या चार रहँट एक साथ चल सकें। उ०—महावीर गोतम मुख मोडी, चौतीणो खिणियौ मिण चौडी।—ऊ का

चौतीस–वि० [स० चतुस्त्रिशत, प्रा० चोत्तीस, अ०चौत्रिस] तीस और चार के योग के बराबर।
रू०भे०—चउत्रीस।
स०पु०—३४ की सख्या।

चौतीसमौं–वि०—जो क्रम मे तैंतीस के बाद पडता हो।

चौतीसेक,–वि० - चौतीस के लगभग।

चौतीसौ–स०पु०—३४ वा वर्ष।

चौतुकौ–वि०—जिसमे चार तुक हो।
स०पु०—चार चरणो की तुक मिलने का एक प्रकार का छद।

चौत्रफ—देखो 'चोतरफ' (रू भे) उ०—मल्लानी ईडर मिळाया मारवाड मध्य, चौत्रफ चलायौ चावौ वानौ वीरताई कौ।
—जुगतीदान देथौ

चौत्रीस—देखो 'चौतीस' (रू भे)

चौथ–स०स्त्री० [स० चतुर्थी] १ माह के किसी पक्ष की चौथी तिथि, चतुर्थी।
मुहा०—१ चौथ री चाद—ऐसी वस्तु जिसके देखने से कलक लगे। २ चौथ री चाद देखणी—व्यर्थ मे कलकित होना।
२ विवाह के बाद चौथे दिन का सस्कार विशेष ३ चौथा भाग, चतुर्थांश।
[स० चतुर्थांश] ४ मराठो द्वारा पराजित राजाओ से लिया जाने वाला कर जिसमे आमदनी का चतुर्थांश भाग वसूल किया जाता था। ५ रक्षा के लिए डाकुओ या लूटने का व्यवसाय करने वाली जाति विशेष के व्यक्ति विशेष को रक्षा का उत्तर दायित्व लेनेपर नियमित रूप से दिया जाने वाला कर।
रू०भे०—चउत्थ, चउत्थी चउथी, चउथी, चउथ।

चौथपण, चौथपणौ–स०पु०—मनुष्य के जीवन की चौथी एव अतिम अवस्था, वृद्धावस्था, बुढापा।

चौथ भक्त—उपवास (जैन)

चौथाई–स०स्त्री०—किसी वस्तु के चार भागो मे से एक, चौथा भाग।

चौथियौ–स०पु०—१ प्रति चौथे दिन आने वाला ज्वर २ 'चौथ' नामक कर वसूल करने वाला, देखो 'चौथ' (४,५) ३ चौथे भाग को प्राप्त करने का हकदार।

चौथी पछेवटी–स०स्त्री०यौ०—जीवन की अतिम अवस्था, वृद्धावस्था। उ०—हे कथ, आपरै मुहडै धोळा खत रा केस देखता आपरै विसेख तौ जीवण री आस नही, चौथी पछेवडी आयोडा हौ।—वी स टी

चौथौ–वि० [स० चतुर्थ] (स्त्री० चौथी) क्रम मे तीन के बाद के स्थान पर पडने वाला।
रू०भे०—चउत्थ, चउत्थौ, चउथ, चउथौ।

चौथौ आसरम–स०पु०यौ० [स० चतुर्थाश्रम] मनुष्य जीवन का चौथा काल, वृद्धावस्था २ सन्यासाश्रम।

चौदत–वि०—प्रसिद्ध, ख्यातिप्राप्त। उ०—च्यारि चक्क नव खड प्रिथी रा जगजेठ जोधार, जमदूत राजिंद्र जोगिंद्र रूप करि उजेणि खेति नर हैंवर घेघिगर चौदत हुआ।—वचनिका

चौदतौ–वि० [स० चतुर्दंत] १ चार दातो वाला, बचपन और युवावस्था के बीच का (बैल, भैसा, या अन्य नर पशु)

चौदस, चौदसि, चौदस्स–स०स्त्री० [स० चतुर्दशी] प्रत्येक पक्ष की चौदहवी तिथि, चतुर्दशी। उ०—१ चौदसि मन चौथी दसा, गया लोक तजि लाज।—अज्ञात उ०—२ देवी सप्तमी अष्टमी नोम तूजा, देवी चौथ चौदस्स पूनम्म पूजा।—देवि

चौधर—देखो 'चौधराई' (रू भे) उ०—नरसिंघ नू म्हे मरावसा जै भाडग मै चौधर म्हारी राखौ तौ।—द दा

चौधरण–स०स्त्री०—चौधरी की स्त्री। देखो 'चौधरी'।
उ०—तद सारणा साराई भेळा हुयनै कयौ-चौधरी! चौधरण री अबोलणी भाजसा।—द दा

चौधराई, चौधरात–स०स्त्री०—१ चौधरी का पद, चौधरी का कार्य २ चौधरी को उसके काम के बदले मिलने वाला धन या पारिश्रमिक।

चौधरी–स०पु० [स० चतुर्धरी] १ जागीरदार द्वारा गाव की प्रजा मे से (अधिकतर कृषक वर्ग या व्यापारी वर्ग मे से) चुना हुआ वह सम्मान्य व्यक्ति जो जागीरदार के पास उस गाव की प्रजा का प्रतिनिधित्व करता था २ देशी राज्यो मे राजा की तरफ से चुना हुआ बडा सामन्त जिसकी राय राज्य के प्रत्येक आवश्यक कार्य, नये कानून या कर आदि लगाने पर लेनी आवश्यक थी। ये सख्या मे चार होते थे।
३ जाट, सीरवी, कुनबी (पटल) आदि कृषक वर्ग का व्यक्ति।
(स्त्री० चौधरण) (सम्मान)

चौधार, चौधारण, चौधारौ–स०पु०—१ चारो ओर तेज धार वाला भाला विशेष (ना डि को)
उ०—१ चारग ग्रहि चौधार सत्रु मारण अवसाण सिध, वागौ डारुण वैणउत सिरदारा सिरदार।—वचनिका
उ०—२ त्रुट पडै ऊजडै बगतर, चौधारा धारा खग चोट-।
—राजा भीमसिंह शिशोदिया टोडा रौ गीत
उ०—३ अधारा चौधारा जडै भव्वता रा, पाट्टरा प्रहारा ढिका ढिच्चणा रा।—ना द
२ एक प्रकार का बाण (अ मा)

चौनिजर, चौनिजरै, चौनीजर–क्रि०वि०—समक्ष, सम्मुख, सामने।
उ०—१ चौनिजर मिळै भड समर चाव, रिण मर्म मिळै खग जोधराव।—पे रू
उ०—२ जठै मूणसिघजी व कोटवाळ चौनिजरे हुआ दौढी भीतर।
—द दा.
उ०—३ हे वाह कर आयनें पूगोडा जोधारा पाछा ....

कठै पधारी, मरदा सू चौनिजर हुवोडा कोई विना घांवा जाय सकै नही।—वी स टी

चौपइया, चौपई-स०स्त्री०—एक मात्रिक छद का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे १५ मात्रायें होती हैं और अत मे जगण होता है।

चौपखेर, चौपखैर—देखो 'चौफेर' (रू भे) उ०—१ पत्री च्यारि विचाळै दिराई आगुळ बिहु बिहु रै पहनै री। अर फिरवाज चौपखेर पणि आगुळा बिहु बिहु रै पहनै री।—द वि.

उ०—२ ढाकरिणयै पहाड ऊपरै गढ करायो, चौपखैर कोस २ रै आतरै पहाड ऊपरा वळै गढ कराय नै राजथान वाध्यो।

—राव रिणमल री वात

चौपग, चौपगो, चौपग्गो-स०पु०—चार पैर वाला पशु, चौपाया पशु (ह ना)

मुहा०—चौपगो होणौ—विवाहित होना, शादी करना।

चौपड-स०स्त्री० [स० चतुष्पट, प्रा० चउप्पट] १ चौसर नामक खेल। इस खेल की बिसात और गोटिया आदि। उ०—करे खांग 'पासौ भरतखड चौपड करै, दुगम खेळा मिळै भिड दुवाहा। दियतौ घण घाव दाव जिम, सारा जिमि जोध रमाडै बादसाहा।

—जयसिंह आमेर रा धणी री वात

२ चौसर के खानो के अनुसार पलग की बुनावट।

यौ०—चौपड-भात।

३ वह स्थान जहा से चार रास्ते विभिन्न दिशाओ मे जाते हों।

स०पु०—घृत (ह ना)

रू०भे०—चोपड।

चौपडा-स०स्त्री०—१ परिहार वश की एक शाखा २ जैन समुदाय की एक जाति।

चौपडाबध-वि०यौ०—चौसर के खानो के आकार का वना हुआ।

चौपडी-स०स्त्री०—१ कापी, पजिका २ छोटी वही ३ किताब, पुस्तक ४ चौपड नामक खेल। उ०—चित चौपडी चेतन धारि चौथै, दोऊ मेलि जुग हूवा। खेलै सदा सुरति के नाकै फूटि न चालै जूवा।

—ह.पु वा.

चौपडो-स०पु०—१ पचाग, पत्रा २ कुकुम पत्रिका ३ पूजा के लिये कुकुम चावल आदि रखने का दो खाने का एक पात्र ४ भाटो द्वारा वशावली लिखने की बडी पुस्तक या वही ५ जमाखच करने की वही।

चौपट-वि०—१ चारो ओर से खुला हुआ, अरक्षित २ नाश, ध्वस। उ०—भार ग्रहे घणनाद जिसा भट, चौपट मार अचीता।—र.ज.प्र

मुहा०—१ चौपट करणौ—वरवाद कर देना। २ चौपट होणौ—विगड जाना।

३ देखो 'चौपड' ३ (रू.भे.)

चौपथ-स०पु० [स० चतुष्पथ] चौराहा, चौरास्ता।

चौपद-स०पु० [स० चतुष्पद] चार पैरो वाला पशु, चौपाया।

चौपदार—देखो 'चोवदार' (रू भे) उ०—साथै कामदार काम रै वास्तै वेणीदाम नै लियौ। चदन चौपदार, मोहण सेजवरदार और भी कुवर रा सारा हजूरिया नै साथै लिया।—पलक दरियाव री वात

चौपन-वि० [स० चतु पञ्चाशत, प्रा० चउप्पण्णा, अ० चउवण्णा] पचास और चार के योग के बराबर।

स०पु०—५४ की सख्या।

चौपनमौं-वि०—जो क्रम मे तरेपन के वाद पडता हो।

चौपनियो-स०पु०—छोटी वही, रोजनामचा।

चौपनेक-वि०—चोपन के लगभग।

चौपनो-स०पु०—५४ वां वर्ष।

चौपाई-स०स्त्री० [स० चतुष्पदी] मात्रिक छद का एक नाम जिसके प्रत्येक चरण मे १६ मात्रायें होती है। इसमे केवल द्विकल और त्रिकल का ही प्रयोग होता है।

चौपायो-स०पु० [स० चतुष्पद प्रा० चउप्पाव] चार पैरो वाला पशु। उ०—खूटा नीर नीवाणा खारा, चौपाया घर मिळै न चारा।

—ऊ का

चौफडी—देखो 'चौपडी' (रू भे)

चौफळो-वि०—१ वह जिसमे चारों ओर तेज धार हो २ चारो पैरो को एक साथ उठा कर दौडने वाला। चौकडी भरने वाला।

चौफाड-स०स्त्री०—किसी वस्तु को चीर कर किये हुए चार भाग।

मुहा०—चौफाड बोलणौ—खुलेआम अश्लील भाषा का प्रयोग करना।

चौफूली-स०स्त्री०—१ एक प्रकार की छोटी मेख विशेष २ आक या मदार के पुष्प का अदर का भाग।

चौफूली चौपण-स०स्त्री०यौ०—१ आभूषणो पर खुदाई का काम करने का एक औजार २ आठ फूलो की एक खुदाई विशेष (स्वर्णकार)

चौफेर-क्रि०वि० यौ० [चौ+फेर] चारो ओर, चारो तरफ। उ०—अरै थूं वण अंडी डकलाण. लाई बीती वाता घेर। याद री जूनी जाजम ढाळ, फिरगी पल भर मे चौफेर।—साफ

चौफेरी-स०स्त्री०—१ चारों ओर घूमने का कार्य, परिक्रमा २ क्षत्रियों एव चारणो में दूल्हा, दुल्हिन के मिलने की प्रथम रात्रि का नाम। इस रात्रि में रात्रि भर ढोलनिया गाती रहती हैं। उ०—चौफेरी रो रग चढ, अज किम वण्यो अजाण। कजियो करबा काळ सूं, पिसण कीध प्रयाण।—रेवतसिंह भाटी

क्रि०वि०—चारो ओर। उ०—फसवा वाघ कतार वजै वड बीकानेरी, डूगर गढ डूगरा, तीव्र चूरू चौफेरी।—दसदेव

चौबदी, चौबघी-स०स्त्री०—१ एक प्रकार की छोटी चुस्त अगिया या कुरती २ घोडों के चारो पैरो मे लगाई जाने वाली नालें। उ०—हूनरबधा हूनर घणी तिण दिन मुहगाई, चत्र रुपिया चौबघो जगम खुरताळ जडाई।—सू प्र

चौब—देखो 'चोव' (रू भे)

चौबगळो-स०पु०—कुरती, फतुही और अगे आदि मे बगल के नीचे की ओर कली के ऊपर का भाग।

उ०—हूनरवधा हूनर घणी तिण दिन मुहगाई, चग्र रुपिया चौवधी जगम खुरताळ जडाई ।—सू प्र.

चौवळ–क्रि०वि०—चारो ओर, चारो तरफ ।

चौवळदी–स०स्त्री०—चार बैलो की गाडी ।

चौवा–म०स्त्री० [स० चतुर्वेदी] ब्राह्मणो की एक जाति जो अपने आपको चतुर्वेदी कहते है ।

चौवाई–स०स्त्री०—एक प्रकार की गाठ या टूटी रस्सी के शिरो को जोडने का ढग विशेष ।

रू०भे०—चोवाई-गाठ ।

चौवायौ–वि०—चारो तरफ का, चहु ओर का ।

चौवार–वि० [स० चतुर्द्वार] १ जिसके चार दरवाजे हो २ प्रकट, खुले-आम ।

मुहा०—चौवार करणी—प्रकट करना, विख्यात करना ।

चौवारी–स०स्त्री०—देखो 'चौवारो' (अल्पा. रू भे)

चौवारो–स०पु० [स० चतुर्+द्वार] १ चारो ओर से खुले दरवाजो वाला स्थान या कमरा जो पहली मजिल या छत पर बना होता है ।

उ०—धोमारा धडहडा, डाकदारा हीकारा । चौवारा प्रज चढै, पडै हटनाळ बाजारा ।—सू प्र

२ मकान की छत पर स्वतत्र रूप से बनाया गया कमरा जो नव विवाहित दम्पत्ति के सोने-उठने के काम आता हो (क्षेत्रीय)

३ बैठक के लिए बना हुआ वह स्थान जो चारों ओर खुला हो और ऊपर से छाया हुआ हो ४ चौथी बार उलटा कर तैयार किया हुआ शराव ।

चौविस, चौवीस–वि० [स० चतुर्विशति, प्रा० चउवीसं] बीस और चार का योग ।

स०पु०—२४ की सख्या ।

रू०भे०—चउवीस, चौइस, चौईस, चौवीस ।

चौवीसमौं—देखो 'चौईसमौं' (रू.भे)

चौवीसे'क—देखो 'चौईसे'क' (रू भे)

चौवीसौ–स०पु०—२४ वा वर्ष ।

चौवे—देखो 'चौवा' (रू भे)

चौवोलौ–स०पु०—१ एक मात्रिक छद का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे ८ और ७ पर यति सहित कुल १५ मात्रायें होती हैं और अत मे लघु और गुरु होता है २ प्रथम चरण मे १६ मात्रा, द्वितीय मे १४ मात्रा—इस क्रम से चारो चरणो मे ६० मात्रा का मात्रिक छद विशेष (पिं प्र) ३ 'रघुवरजस प्रकास' के अनुसार १६, १४ पर यति युक्त मात्रा का मात्रिक छद जिसके अत मे गुरु वर्ण होता है ।

चौवौ–स०पु०—ब्राह्मणो की चौबा शाखा का व्यक्ति ।

चौभग–वि०—निर्भय, निशक ।

उ०—राणा री बेटी बरछीया री सवगी बाथ परणीया राठौड नै वळै पग पसार चौभग होइ नै चीतोड ऊपरा पोढै छै ।

—राव रिणमल री वात

चौभट–वि०—खुला, प्रकट ।

चौभुजा–वि०—चार भुजाओ वाला ।

स०पु०—विष्णु ।

चौमजिलौ–वि०—चार मजिल या चार खड वाला ।

चौमक–स०पु०—हटडी ।

चौमख-दिवलौ—देखो 'चौमखदीवौ' (रू भे)

चौमाळ, चौमाळौ, चौमाळीम—देखो 'चमाळीस' (रू.भे)

उ०—धुर अठार चवदह दुति, बारह तीजी बेस । तीन कठ धर तुक तणा मत चौमाळ मुणेस ।—र ज प्र

चौमाळीसौ, चौमाळौ–स०पु०—४४ वा वर्ष ।

चौमास—देखो 'चौमासौ' (रू भे)

चौमासियौ–वि०—वर्षा ऋतु सबधी ।

चौमासी–स०स्त्री०—वर्षा के समय या वर्षा ऋतु मे गाया जाने वाला एक प्रकार का लोकगीत ।

चौमासौ–स०पु० [स० चतुर्मास] १ वर्षा ऋतु का समय, वर्षाकाल, वर्षा ऋतु के चार महीने । उ०—१ पावस चौमासो आया छक पड़ै, घरे रहै जितरै चौमासौ न आवै, इतरै पैला सत्रुआ ने घणी दहल पडै छै ।—वी स टी उ०—२ आसा आसा ऊमडै, चौमासे घण थाट । काळी घटा निहारता, प्यारी जोवै वाट ।—र.रा

उ०—३ हरमा वीर म्हारा रे, बावल आवै म्हारै याद । जामण या रे जाया, नैणा चौमासो रे म्हारै लग रह्यो ।—लो गी.

२ आपाढ शुक्ला चतुदशी से कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी तक वर्षा काल मे कुछ-कुछ दिनो का अतर देकर किया जाने वाला व्रत (जैन)

चौमेळौ–स०पु०—परस्पर दृष्टि मिलने का भाव, चार आखें होने का भाव । (मि० चौनिजर)

चौमुख–क्रि०वि०—१ चारो ओर, चारो तरफ २ देखो 'चौमुखौ' (रू भे)

चौमुखौ–वि०—चार मुह वाला, जिसके चार मुख हो ।

चौरग–स०पु०—१ तलवार का वार करने का एक ढग, तलवार का एक हाथ । उ०—चौरग चूरिया वर सेत 'चांदै' भिडै नवली भाति ।—राठौड चादा वीरमदेवोत मेडतिया री गीत

२ देखो 'चौरगो' (रू.भे) उ०—भाई चाड करण रिण भिडतै, अर साझै खागा अमळ । चरण विना लोटै घट चौरग, कर विन घट घट विन कमळ ।—द दा

३ युद्ध, समर । उ०—१ 'चापा' चौरग अग्गळा, 'कान्ह' अनै 'हरनाथ' । सोजत ऊपर हुल्लिया, बाधै फौज समाथ ।—रा रु

उ०—२ मोनू 'गोयद' मारणो, चित नहिं अनिचाळा । सुरताण दळ मझि सझो, चौरग चिरताळा ।—सू प्र.

४ ससार का आवागमन । उ०—वेखै मात पिता त्रिय बधव, कुळ धन धधव काचो । चौरग मझ जम हू त बचायब, साहिब राघव साचो ।

—र ज.प्र

वि०वि०—ससार की मुख्य चार योनिया मानी गई है—जरायुज, अडज, उद्भिज, स्वेदज और इन्ही चार से ससार के लिये चौरग शब्द का प्रयोग किया गया है ।

५ मैदान, क्षेत्र । उ०—धार विहार अणी घट घोरग, चुख चुख होय पडू रिण चौरग ।—सू प्र

६ बलिदान के लिये लाया हुआ वह भैसा जिसके सीगो मे रस्सा बाध कर अगले पैरों के बीच से निकाल कर रस्से से पिछले पैरो को बाध दिया जाता है । उ०—तरवारघा किण भात री छै।·· बगतर मे बाही दोय टूक करै, चौरग मे बाही थकी सीक सिरी चलणिया सार वाढै ।—रा सा स

७ योद्धा, वीर ।

स०स्त्री० [स० चतुरगिनी] ८ सेना, फौज । उ०—चौरग मे चौरग बिण, बळि की सकै बिगाड । चट ऊछळ हेकज चणी, भवै न फोडै भाड ।—रेवतसिंह भाटी

९ चतुरगिनी सेना उ०—घटा धटा चौरग चा नारग उलट्टै, किर फूटै बिच चोहटा रगरेजा मट्टै ।—द दा

वि०—१ चार. २ वह जिसके चार अग हो, चार प्रकार का, (अ) जैसे चार प्रकार की सेना—१ हाथी, २ घोडे, ३ रथ, ४ पैदल । उ०—हळाबोळ चौरग दळा बीच मुजै हरण गजा कुळ कुळत हुए धर गाह ।—कल्याणदास महडू

यौ०—चौरग-दळ ।

(आ) जैसे—चार प्रकार की लक्ष्मी—१ राज्य लक्ष्मी, २ विजय लक्ष्मी, ३ गृह लक्ष्मी, ४ धन-दौलत (भोग्य लक्ष्मी)

उ०—१ समपै लाख पसाव, गाव पटा ओघा गरथ । चौरग लक्ष्मी चाव, जिण तिण घर कीन्ही 'जसा' ।—ऊ का

उ०—२ धजवधी कोडीधज लखेसरी दौलतिवत चौरग लिखमी रा लाडला लोक वडा वापारी घणा सुख चैन सू वसै छै ।—रा सा.स.

यौ०—चौरग-लक्ष्मी ।

चौरगि, चौरगी—देखो 'चौरग' (रू भे) उ०—१ मुह विहडियो भुजै राव मारू, दुजडै भडा दाखतै देख । चौरगि चहु दळा 'चादाउत, आगळि' हुवा तणो अविसेख ।—राठौड गोरधनसिंह चादावत रो गीत

उ०—२ कसियै जरदि मरद नवकोटी, चौरगि चढिये प्रभत चडै । ऊभो जा वासै 'आसावत', परि हुस सु नह पुराणि पडै ।

—राठौड अमरसिंह आसकरणोत (कूपावत) रो गीत

चौरगो—स०पु०—१ वह व्यक्ति जिसके दोनो हाथ व दोनो पैर काट डाले गये हो । उ०—भभारा भमक्कै, चौरगा उचक्कै ।—सू प्र

२ हाथ पैर काट डालने की क्रिया ।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ ।

३ एक प्रकार का शस्त्र विशेष ।

उ०—तरवारा रा छणकार हुयनै रह्या छै, चौरगा री खाटखड हुयनै रही छै, कटोरा माहै फूल लीजै छै ।—रा सा स

वि०—जिसमे चार रग हो । चार रगो वाला ।

चौर—देखो 'चोर' (रू.भे)

चौरक, चौरगौ—स०पु०—पीणा नामक सर्प ।

वि०वि०—देखो 'पीणौ'

चौरस—वि० [स० चतुरस्र] १ जो समतल हो, जो ऊचा-नीचा न हो २ वर्गाकार ।

स०स्त्री०—चौपड नामक खेल । उ०—मै रात पिया सग चौरस खेली, रम-रम हारी मै, रात पिया सग चौरस खेली ।

—लो गी

चौरसा—स०स्त्री०—प्रथम नगण, फिर यगण सहित कुल छ वर्णं का वर्णिक छद विशेष (पि प्र)

चौरसियौ—स०पु०—बहुत छोटा हथौडा जो प्राय काच के नगीने या कोमल वस्तुओं पर चोट लगाने के काम मे आता है ।

चौरसी—स०स्त्री०—बढई का एक औजार विशेप जो लकडी खोदने तथा चूल निकालने के काम आता है ।

चौरागि—स०पु०—१ खुला मैदान २ युद्ध ।

चौराणवौं—स०पु०—९४ वां वर्ष ।

चौराणु—वि० [स० चतुर्नवति, प्रा० चउणउइ] नब्बे और चार के योग के बराबर ।

स०पु०—९४ की सख्या ।

चौराणूक—वि०—चौरानवे के लगभग ।

चौराणूमौं—वि०—जो क्रम मे तिरानवे के बाद पडता हो ।

चौरा—स०पु०—चौबारा, महल । उ०—थाप्या चौरा चउखडि थाप्या, साभरिक का रणवास । राजा चाल्यौ उलगइ, सहू अतेवरी मेल्ही नीसास ।—वी दे

चौरासियौ—स०पु०—८४ वां वर्ष ।

चौरासी—वि० [स० चतुरशीति, प्रा० चउरासीइ] अस्सी और चार के योग के बराबर ।

स०पु०—१ ८४ की सख्या २ प्राणियो की चौरासी लाख योनिया । (पुराणो के अनुसार जीव चौरासी लाख प्रकार के माने गये हैं ।)

उ०—१ क्रम बधण बधियौ न्याइ भटकै चौरासी । सुज छोडण रिण छोड अगम ओहिज अविणासी ।—ज खि

उ०—२ रात दिवस हिक राम, पढिए जो आठू पहर । तारै कुटब तमाम, मिटै चौरासी मोतिया ।—रायसिंह सादू

३ नाचते समय पैरो मे बाधने का एक प्रकार का घुंघरू ४ पत्थर काटने की एक प्रकार की टाकी, छैणी ५ योग के चौरासी आसन

६ कामशास्त्र के अतर्गत चौरासी आसन ।

वि०वि०—देखो 'आसण' ।

७ चौरासी गावो का समूह ।

चौरासीक—वि०—चौरासी के लगभग ।

चौरासीबध—स०पु०यौ०—डिंगल के चौरासी प्रकार के गीत (छद)

उ०—दोय प्रकार का काइव रूप, च्यार प्रकार की वाणी, सात प्रकार का सर, च्यार सू लेके बाढावै । आठ मे सर की झपट पर वे चौरासीबध रूपको के सिरजणहार ।—सू प्र

चौरासीमौं—वि०—जो क्रम में तिरासी के बाद पडता हो ।

चौरास्टक–सं०पु० [सं० चौरास्टक] पाडव जाति का एक प्रकार राग। (संगीत)

चौरिंद्रय–सं०पु०यौ०—चार इन्द्रिय वाले जीव (डांस, मच्छर, मक्खी, तोड़, पतंग, भ्रमर, वृश्चिक (बिच्छू) कसारी, मकड़ी, कसारी इत्यादि)

चौरी—देखो 'चवरी' (रू भे) उ०—गुण सजोड़ी परणिया, चौरी वदि निग्रारि।—रामरासो

चौळ—देखो 'चोळ' (रू भे)

उ०—१ लागोणी सदेस गुणां पण चौळ करती। मं गुण जिह्णा जितोक सैण-घण बोल गुणंतां।—मेघ.

उ०—२ रीस कलीम घुमती रमती, चवती मदन महारस चौळ। हालै घड नीसाण हुवाल, रिण पातर करि नेवर रोळ।—दूदो

चौलड़ौ–वि० (स्त्री० चौलड़ी) १ चार लड़ का, चार लड़ों वाला, चार परत का २ चौगुना। उ०—अंग-अंग मे दसाणां री गौ दमक जिणसूं ग्रहणा री दो लड़ी, तेलड़ी, चौलड़ी चमक।

—र हमीर

चौळाई–सं०स्त्री०—एक प्रकार की पत्ती वाली सब्जी, चवलाई।

चौवड़, चौवड़ौ—देखो 'चौलड़ौ' (रू भे)

चौवटियौ, चौवटौ–सं०पु०—१ गांव के मध्य का खुला मैदान २ गांव के बीच का वह खुला मैदान जिसके चारों ओर दूकानें हों ३ गायों के एकत्रित होकर रात्रि को विश्राम करने का स्थान ४ चौराहा, चौरास्ता।

रू०भे०—चउहट्ट, चउहट्टइ, चावटौ, चौंटौ, चौ'टौ, चौहटौ, चौहट्टौ।

अल्पा०—चौवटियौ।

चौवळ, चौवळौ, चौवळै–क्रि०वि०—चारों ओर। उ०—चौवळ ग्राह तत गज चरणा। जवड़ ढवोवण एच जवरणा।—र.ज.प्र

चौवळौ—देखो 'चौलड़ौ' (रू भे) उ०—चाळै सागा वळा घणी बीजळा भटवकै चगा। भूल पेरै ग्रावळा चौवळा ढेरै भोत।

—डूगजी जवारजी रौ गीत

चौवाळै–क्रि०वि०—चारों तरफ, चहुं ओर। उ०—वळ वाहड़दे जेड़ जेण पटवौ परजाळे। वाहड़दे ग्रस चढ़ै वैर गजै चौवाळै।—नैणसी

चौवास्या–सं०पु० [सं० चतुर्मास] वर्षाकाल के चार माह।

चौवितार–सं०पु०यौ०—चार प्रकार का आहार (जैन)

चौवीस—देखो 'चौबीस' (रू भे)

चौवीसटौ, चौवीसौ—देखो 'चौइसौ' (रू भे), उ०—इम चैत चौवीसटौ ग्रवचळ। स्री बीकानेर बिराजे ए।—रा रू

चौवोतर—देखो 'चौहतर' (रू भे.)

चौवोतरे'क—देखो ('चौहतरे'क' रू भे)

चौवौ—१ देखो 'चोवौ' (रू भे) उ०—चौवा चदन लाय तन, करता बहोत सिगार।—ह पु वा

२ हाथ की चार अगुलियों का समूह।

चौस—सं०पु०—फूलों का हार, पुष्पहार। उ०—चौहटै चौहटै नगर-नायिका देख्या ... ... री ... रोहैं सिणगार टणियो ... ... रा चौस पहरियो ... ।—र ... ... रू०भे०—चौसरौ।

चौसट—देखो 'चौसठ' (रू भे)

सं०स्त्री०— चौसठ कलियां (योगिनियां) उ०—घाट ... ... बहुत ... ... चौसट ... ... , ... मई।

—... ठाकुर ... रौ ...

चौसटमौं—देखो 'चौसठमौं' (रू भे.)

चौसटौ—देखो 'चौसठ' (रू भे.) उ०—... ... ... , चौसटौ ... ... । ... ... , ... ।—... ... ...

चौसटे'क—देखो 'चौसठे'क' (रू भे)

चौसठ–वि० [सं० चतुःषष्टि, प्रा० चउसट्ठि] साठ और चार के जोड़ के बराबर।

सं०पु०—१ ६४ की संख्या।

सं०स्त्री०—२ चौसठ योगिनियां (योगिनियां)

चौसठमौं–वि०—जो क्रम मे तरेसठ के बाद पड़ता हो।

चौसठि, चौसठौ—देखो 'चौसठ' (रू भे.)

सं०स्त्री०—१ चौसठ कलायें। उ०—... ... ... , विधि ... ... विचार। ... ... चौसठि जाणि, ... तनु ... अधिकार।—वेलि.

वि०वि०—देखो 'कला'।

२ चौसठ योगिनियां। उ०—१ चौटियाळी हुई चौसठि चावंडि, ... । ... ... सिसुपाळ चौसठि, ... मानौ ... ... ।—वेलि.

उ०—२ चौसठी पियें भरि पत्र ... । सिर माळ सभे ... ... ।

—सू प्र

चौसठे'क–वि०—चौसठ के लगभग।

चौसठौ–सं०पु०—६४ वां वर्ष।

चौसर–सं०पु०—१ खेल, दांव। उ०—इसे घाट दरगाह सम टल तोपां हसत, रसत मद मीक्षरा नरा नाणां। मरट तिण वार रासी विकट मोमरां, गुपेती चौसरां तणी 'माणा'।

—रावत सवाईसिंह सक्तावत रौ गीत

सं०स्त्री० [सं० चतुरसारि] २ एक खेल जो बिसात पर चार रंग की चार चार गोटियों से खेला जाता है। गोटी चलने के लिये पासा या कौड़ी फेंकी जाती है. ३ किसी पुरुष की चौथी पत्नी। ४ मूछ, श्मश्रु।

उ०—भूताण राम रा बांण चौसरां अणाय भ्रूहां, खेडेच वेहाक दळां कफणाय खीज।—महादान महडू

५ देखो 'चौसरौ' (रू भे) उ०—१ पहर चौसर सुबर अपछर, सघर रघुवर दुछर वह सर।—र ज प्र

उ०—२ झिलमा सहिता सिर झडै, कर धारै सकर। कठ चौसर घातै करै, छक सूर अपच्छर।—सू प्र.

६ देखो 'चौसरा' (रू भे) उ०—१ चौसर सिर हूता चमर, दळ सझि हले दुझाल। मिळण 'साह महमद' हूँ, महाराजा 'अभमाल'।
—सू प्र

उ०—२ वाजा चौसर वाजिया, जस प्रगटे जैकार। दीन्हौ कूरम्मा दुश्रो, 'अभो' हुवौ असवार।—रा रू

चौसरा, चौसरा, चौसरियै, चौसरै—क्रि०वि०—चारो ओर।

उ०—१ सत्थरा सोय सारा सुखी, चवरी दुळ ता चौसरा। तन लगन तीसरा री तिका, मगत ध्यान मन मोसरा।—ऊ का

उ०—२ दळा गहमह कीध ह्वर, चौसरा मिर हुवा चम्मर। गाजता गज मेघ गाजा, वाजता मगळीक वाजा।—सू प्र

उ०—३ जिस प्यालू के बीच ही अन्नार, दालचीनी, परतकाळी, अगूरी गले-गुलाब एसी भाति भाति के फूल ऐराक भरते हैं। उस बखत चौसरियै पति करि जरकसी समियाना स्रीसाप का मगसखाना खडा करि सुनहरी की चौकी धरि तिस परि भोजन पूर कनकथाळ विराजमान करि खिजमत गारू नै अरज कीवी भौंजाई की तयारी।—सू प्र.

उ०—४ ऐसे मगज सौं आय तख्त परि विराजै, चौसरै चमर होय इद्र सा छाजै।—सू प्र

चौसरियौ, चौसरौ—स०पु० [स०चतुर+सर] १ पुष्पहार, फूलो की माला। उ०—सू सारै साथ नै वकसजै छै। फूला रा चौसरा घातजै छै।—रा सा स

२ मुड-माला। उ०—इधकाय इसडो गजर उडियौ, घाय खळ जुडि घूमरा। पहराय न सकै माळ कठ परि, आय न सकै अपछरा। इण चूक ऊपर हसै मुनि-इद्र, सझै जोगिद चौसरा। रोस रा घाव करत किरमर, मिळै भौंहर मोसरा।—सू प्र

३ आखो से लगातार बूद बूद रूप मे गिरने वाली आसुओ की अविरल धारा, अश्रु-धारा, अश्रु-प्रवाह। उ०—१ सजण सिधाया हे सखी, ऊभी आगण वीच। नैणा चाल्या चौसरा, काजळ माच्यौ कीच।
—अज्ञात

उ०—२ चख जळ चालै चौसरा, सारौ सहर उदास। मुरधर बिलखै मारुवा, अब नह दरसण आस।—ठा फतहसिंह आसोप

४ चौथी बार उलट कर निकाला हुआ तेज शराब। उ०—बाईजी सू थोडौ सौं पिया मतवाळी हुवै, इसो चौसरौ कढाय रे, विदेसीडा रे, आयो छै चौमासो।—लो गी

रू०भे०—चौसर।

अल्पा०—चौसरियौ।

चौसहणो, चौसहवो—देखो 'चूसणौ' (रू भे)

चौसाकौ—स०पु० [स० चतुस्+शाक] वह धातु का बना पात्र जिसमे चार कटोरी नुमा पात्र लगे होते हैं तथा बीच मे उन्हें पकडने की एक कडी होती है। इसे साग परोसने के काम मे लिया जाता है।

चौसारौ—देखो 'चौसरौ' (रू भे) उ०—सोचण लागी इसं रूप री भेट किण नैं देऊला। आख्या मे चौसारा छूट गया।—वरसगाठ

चौसाळा—स०स्त्री० [स० चतु शालम्] वह मकान जिसके चारो ओर खुले बरामदे हो।

चौसाळी—स०स्त्री०—बैल गाडी के आगे के भाग मे लगाये जाने वाले सीधे लम्बे डडे।

मि०—सालियौ।

चौसींगौ—देखो 'चोसीगो' (रू भे)

चौसौ—स०पु०—चार सौ धागो का ताना (जुलाहा)

चौहट—देखो 'चौवटौ' (रू भे)

चौहटी—स०स्त्री०—पेड की शाखा। उ०—ताहरा पीपळ री माळी हेरि नै आया, पाछिलि राति घडी चार थका चौहटिया नु तोडि नै बैसाणिया।—चौबोली

वि०—गाव के चौहटे मे बैठने वाला।

चौहटौ, चौहट्टौ—देखो 'चौवटौ' (रू भे) उ०—ग्यान चौसर मडी, चौहटै सुरत पासा सार।—मीरा

चौहतर, चौहत्तर—वि० [स० चतुस्सप्तति, प्रा० चासत्तरि] सत्तर और चार का योग।

स०पु०—७४ की सख्या।

चौहत्तरमौं—वि०—जो क्रम मे तिहत्तर के बाद पडता हो।

चौहत्तरेक—वि०—चौहत्तर के लगभग।

चौहत्तरो—स०पु०—७४ वा वर्ष।

चौहथी—स०स्त्री०—१ वह वस्तु जो चार हाथ चोडी, लम्बा या मोटा हो २ बकरी के बालो से बुनी हुई मोटी खुरदरी पट्टी जो गाडी पर बडी-बडी लकडिया खडी कर उसके अन्दर की तरफ चारो ओर खीचने के काम आती है, जिसके अदर प्राय भूसा, पाला आदि भर कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर आसानी से लेजा सकते हैं।

वि०—चार हत्थो वाली।

चौहरौ—देखो 'चौलडौ' (रू भे)

चौहवटौ—देखो 'चौवटौ' (रू भे) उ०—बाई ए वीरा रे पळकै मोहळियो, भावज रे चमकै चूडलो। वीरो बैठा है चौंहवटा रे माहि, जाणू जायल रौ जाट खीवाडा रौ चौंधरी।—लो गी

चौहान—स०पु०—क्षत्रियो की एक बहुत प्रसिद्ध वश या इस वश का व्यक्ति।

चौहींगी—देखो 'चोसीगी' (रू भ)

चौहोतर—देखो 'चौहतर' (रू भे.)

च्यत, च्यात—स०स्त्री०—चिन्ता, सोच। उ०—जाल जलाखौ गोरडी, सोवन पायल पय झळकति। रतन जडित सिर राखडी, सवि गति वीसरी थारी च्यत।—वी दे.

च्यहुपरि–क्रि०वि०—चार प्रकार से ।
च्यानणी—देखो 'चादणी' (रू भे)
च्यार—देखो 'चार' (रू भे) उ०—नवे वरस च्यार हुवा जद जबरी सु वीसळदे इणसू रत कियौ ।—बा दा ख्यात
च्यार-म्रानी–स०स्त्री०यौ०—चार आने का सिक्का, चवन्नी ।
च्यारइ-पासई–क्रि०वि०यौ०—चारो ओर ।
च्यारक—देखो 'चार' (रू भे)
च्यारमौं–वि०—जो क्रम मे तीन के बाद पडता हो, चौथा, चतुर्थ ।
च्यारि–वि०—चार । उ०—वरमवि च्यारि न मेह वरसि । पडै धर काळ लागो लगि पखि ।—रा रू
च्यारिभुज–स०पु०यौ० [स० चतुर्भुज] चतुर्भुज, विष्णु ।
च्यारु, च्यारू–वि०—चारो । उ०—परवतसर चौरासी मारोठ री दोळ आवै ओर च्यारु पासा री माल व्यावजै ।
—सूरे खीवे कावळोत री बात
च्यारूमेर, च्यारूमेर–क्रि०वि०यौ०—चारो तरफ ।
उ०—गूजरी कह्यौ—म्हे तो पंसती दीसो न छै नै पैठो छै नै माहै छै तो राजि देस रा धणीयां आगै कठै जाय ? सढो मोटी छै नै च्यारूमेर मढा दोळा ऊतरो, विराजो, ठडाई करो ।—राव रिणमल री बात
च्यारे–वि०—चार । उ०—'दीपो' 'गोइद' 'देद' गिण, रूक हता रिण ढाण । तैसा च्यारे 'कुम' तण, जैसा पडव जाण ।—रा रू
च्यारेक–वि०—चार के लगभग ।
च्यारघामेर—देखो 'च्यारू'-मेर (रू भे) उ०—च्यारघामेर कूवा सूर हाडा सू भरायो । कोसा च्यारि ताईं वीर वाळू सो बुरायो ।—शि व
च्योंरी—देखो 'चवरी' (रू भे)

छ

छ—संस्कृत, देवनागरी और राजस्थानी वर्णमाला मे व्यजनो के स्पर्श नामक भेद के अन्तर्गत चवर्ग का दूसरा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान तालु है।

छगा-वि०—काटा हुआ।

छगाणौ, छगाबौ—देखो 'छागाणौ' (रू भे)

छगायोडौ—देखो 'छागायोडौ' (स्त्री० छगायोडी)

छगावणौ, छगाववौ—देखो 'छागाणौ' (रू भे)

छगावियोडौ—देखो 'छागायोडौ' (रू भे) (स्त्री० छगावियोडी)

छचेड़-स०पु०—मक्खन को गरम करने पर घी को अलग लेने के पश्चात अवशेष रहा हुआ कीटा।

छछाळ, छछाळौ-स०पु०—१ एक प्रकार का घोडा (शा हो) २ हाथी (डिं को.) उ०—१ आग्राजे ऊवा थका, छूटा पटा छछाळ।

—महादान महडू

उ०—२ घम्म घमतइ घूघरइ, पग सोने री पाळ। मारू चाली मदिरे, जाणि छुटी छछाळ।—ढो मा

वि०—मस्त, उन्मत्त। उ०—दळ सिणगार विरोळ दळ, दावानळ दताळ। दिया 'जसै' 'औरग' दुवा, छोडौ गज छछाळ।—वचनिका

छछुहौ-क्रि०वि०—शीघ्र।

छछेडणौ, छछेडबौ-क्रि०स०—पकड कर इधर-उधर हिलाना।

छछेड़—देखो 'छचेड़'(रू भे)

छट-स०स्त्री०—१ छाटने की क्रिया या भाव २ वदबू, दुर्गन्ध ३ समुद्र के बीच की भूमि।

छटणी-स०स्त्री०—छाटने का कार्य, छटने का कार्य।

छटणौ, छटबौ-क्रि०अ०—१ कट कर अलग होना, पृथक होना २ किसी झुड से अलग होना, दूर होना ३ साथ छूटना, साथ से अलग होना ४ चुन कर अलग किया जाना, चुना जाना ५ साफ होना, मैल निकलना ६ क्षीण होना, पतला होना, दुबला होना।

छटणहार, हारौ (हारी), छटणियौ—वि०।

छटवाडणौ, छटवाडबौ, छटवाणौ, छटवाबौ, छटवावणौ, छटवाववौ प्रे०रू०।

छटाडणौ, छटाडबौ, छटाणौ, छटाबौ, छटावणौ, छटाववौ —क्रि०स०।

छटिग्रोडौ, छटियोडौ, छट्योडौ—भू०का०कृ०।

छटीजणौ, छटीजवौ—भाव वा०।

छटवाडौ-स०पु०—हलकी वर्षा, वर्षा के छीटे।

छटाई-स०स्त्री०—छाटने की क्रिया या कार्य तथा इस कार्य के लिये दी जाने वाली मजदूरी।

छटाणौ, छटाबौ-क्रि०स० ('छटणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ छटने का कार्य दूसरे से कराना, छटाना, चुनवाना २ छिडकवाना।

उ०—१ ताहरा मेळौ जागियौ सिखरे जी आख्या छटाया।

—ऊदै उगमणावत री वात

उ०—२ ठाम ठाम विछि गिलम विमळ आराम वणाया, वाग जयनिवास रा माग कुमकुमे छटाया।—सू प्र

३ मृत पुरुष की मृत्यु पर मुडित होने वालो का १२ वें दिन हजामत कराना ४ बाल या दाढी आदि कटवाना। ५ युवा अवस्था में प्रथम बार डाढी की हजामत करना, इस अवसर पर बडी खुशी मनाई जाती है।

छटाणहार, हारौ (हारी), छटाणियौ—वि०।

छटाडणौ, छटाडबौ, छटावणौ, छटाववौ— रू०भे०।

छटायोडौ—भू०का०कृ०।

छटाईजणौ, छटाईजवौ—कर्म वा०।

छटणौ, छटवौ—अक० रू०।

छटायोडौ-भू०का०कृ०—१ छटाया हुआ २ चुनवाया हुआ. ३ पृथक कराया हुआ ४ छिडकाया हुआ ५ बाल, डाढी आदि कटाया हुआ। (स्त्री० छटायोडी)

छटाव-स०पु०—छाटने की क्रिया या भाव।

छटियोडौ-भू०का०कृ०—१ पृथक हुआ हुआ २ कटा हुआ ३ दूर हुआ हुआ ४ चुना हुआ। (स्त्री० छटियोडी)

छटीजणौ, छटीजवौ-क्रि०भाव वा०—१ छटा जाना, चुना जाना, पृथक हुआ जाना।

२ बकरी का गर्भवती होना।

छटेल-वि०—१ धूर्त, चालाक, वदमाश. २ छटा हुआ।

[अनु०] एक ध्वनि।

छडणौ, छडबौ-क्रि०स०—१ छोडना, त्यागना। उ०—१ वाळउ वावा देसडउ, पाणी सदी ताति। पाणी केरइ कारणइ, प्री छडइ अधराति।

—ढो मा

उ०—२ क्रम पाछा न देवै केनपुरी, रिण भू जेथ न छडे राव। सनस तणी वेडी सीसोदे, पहरी 'रतन' तेण परजाव।

—राव रतनसिंह चूडावत शिशोदिया री गीत

२ (राजसत्ता के विरुद्ध होकर) लूट-खसोट करना।

छडणहार, हारौ (हारी), छडणियौ—वि०।

छडवाडणौ, छडवाडबौ, छडवाणौ, छडवाबौ, छडवावणौ, छडवाववौ, छडाडणौ, छडाडबौ, छडाणौ, छडाबौ, छडावणौ, छडाववौ

—प्रे०रू०।

छडिग्रोडी, छडियोडी, छडचोडी—भू०का०कृ० ।
छडीजणी, छडीजवी—कर्म वा० ।

छडाणी, छडाबी—क्रि०स०—१ छीनना. २ छुडवाना. ३ छुडा कर ले लेना ।

रू०भे०—छडाडणी छडाडवी, छडावणी, छडाववी ।

छडायोडी—भू०का०कृ०—१ छीना हुग्रा २ छुटाया हुग्रा. ३ छुडा कर ग्राधीन किया हुग्रा । (स्त्री० छडायोडी)

छडियोडी—भू०का०कृ०—छोडा हुग्रा, त्याग किया हुग्रा (स्त्री० छडियोडी)

छणकणी, छणकवी—क्रि०स०—शाक छौंकना ।

छणका—स०स्त्री० [ग्रनु०] एक ध्वनि विशेष ।

छणेरी—स०स्त्री०—रसोईघर के ग्रदर का मिट्टी का कच्चा बना हुग्रा स्थान जिसमे जलाने के कडे व उपले रखे जाते हैं ।

छद—स०पु० [स० छदस्] १ वर्ण या मात्रा की गणना के ग्रनुसार विराम ग्रादि के नियम के ग्राधार पर बना हुग्रा वाक्य। यह दो प्रकार का होता है। जिस छद के प्रति चरण मे ग्रक्षरो की सख्या व लघु गुरु के क्रम का विचार होता है वह वर्णिक या वर्णवत ग्रौर जहा केवल मात्राग्रो की सख्या का विचार होता है वह मात्रिक छद कहलाता है २ वह विद्या जिसमे छदो के लक्षण ग्रादि का विचार हो ३ ग्रक्षरो की गणना के ग्रनुसार किया गया वेद वाक्यो का भेद ४ वेद ५ कपट, छल। छल छद (सहचारी) ६ ग्रभिप्राय, मतलब ७ विष, जहर। ८ ग्राज्ञा, हुकम ९ हृदयगत गुप्त भाव ।

स०स्त्री०—१० ७२ कलाग्रो मे से एक ।

छदक—वि०—छली, कपटी ।

स०पु०—१ छल २ श्री कृष्ण का एक नाम ।

छदगार, छदगारी, छदगाळ, छदगाळी—(स्त्री० छदगारी, छदगाळी)—देखो 'छदागारी' (रू भे) उ०—१ सहेल्या म्हारी सावरो छदगारी ।—ग्रज्ञात उ०—२ हो छदगारी रा वालम बोलो वन वन तौ भवर वेलडिया मे बोले ।—ग्रज्ञात

उ०—३ छाछ, छावळी, छोकरा ग्रर छदगाळी नार। ये चारो छ छा तव मिळै, तव तूठे करतार ।—ग्रज्ञात

छदणा—स०स्त्री० [स० छन्दना] जैन धर्मानुसार साधुग्रो का एक कर्त्तव्य जिसमे साधु गृहस्थ के यहा से भिक्षा के रूप मे ग्राहार लाकर गुरुजनो को ग्रामत्रण करने की प्रार्थना करता है। (मतान्तर से)

साधुग्रो का किसी गृहस्थी से ग्राहार लाना ग्रौर उसको गुरुजनो को देकर सम विभाग करवा कर भाग प्राप्त कर के उसमे से यतियो को निमन्त्रित करने की प्राथना (जैन)

छदणी, छदवी—क्रि०ग्र०—स्वच्छद होना, उच्छृङ्खल होना ।

उ०—छदै ज्वाब न उच्चरै, नह वदै फरमाण। उर मेरे जेती वसी सो कहसी दीवाण ।—रा रू

छदनाच—स०पु० [स० छद = तरग + नृत्य] जल-तरग मे नृत्य करने वाला, चन्द्रमा ।

छदागारी, छदागाळी—स०पु०—(स्त्री० छदागारी, छदागाळी) १ वह व्यक्ति जो ग्रपने भीतर कुछ भेद, गुप्त रहस्य ग्रादि छिपाये रखे। कुटिल २ शिष्ट, सभ्य, व्यवहारकुशल. ३ ग्राज्ञाकारी ।

रू०भे०—छदगार, छदगारी, छदगाळ, छदगाळी ।

छदोबद्ध—वि० [स०] छद के नियमानुसार लिखा गया वाक्य या पद, वृत्त जो पद्यरूप मे हो ।

छदोभग—स०पु० [स०] छद रचना के नियम यथा वर्ण मात्रा ग्रादि की गणना व लघु गुरु का क्रम पालन न होने के कारण छद रचना मे होने वाला एक दोष । उ०—बादू घाटि ग्राधा दाय मो'रा सा मिळाया। छदोभग छडा प्रबध गीति गाया ।—शि व

छदो—स०पु०[स० छन्द] १ बाह्य प्रेम, दिखावा २ गुप्त भेद, रहस्य । ३ छिपाव, दुराव । उ०—ढोग सू छदो कियौ, धरती मांग्यो धन्न । पुत्रतापै पिछनाथियो, हुई सो जाणै मन्न ।—ग्रज्ञात

४ छल, कपट ५ इच्छा, ग्रभिलाषा (जैन) ६ विषयाभिलाषा (जैन) ७ ग्रभिप्राय (जैन) ८ ग्राज्ञा, हुकम

छम—वि० [स० क्षम] १ उपयुक्त २ सशक्त ३ योग्य ४ वशमे करना समर्थ ।

स० स्त्री०—१ वचना क्रिया । उ०—ज्यौं दव लग्गै जगळ, रहै छम कोई घास । यौं मेवाड उवेळियो, मेट समधा ग्राम ।—रा रू

२ ध्वनि विशेष ।

छयाळीस—वि०—चालीस ग्रौर छ का योग ।

स०पु०—४६ की सख्या ।

छयाळीसमों—वि०—४६ वा ।

छयाळीसेक'—वि०—४६ के लगभग ।

छयाळीसो—स०पु०—४६ वा वर्ष ।

छवरियो—स०पु०—गेहू की फसल के पकते समय उसमें होने वाला रोग जिससे कच्चा गेहू सूख कर गोल पड जाता है व बाल खाली रह जाती है ।

छ—स०पु०—१ केकी २ रवि ३ ध्वनि ४ शशि. ५ कूज. ६ हाथ ७ छवि (एकाक्षरी)

[स०] ८ काटना ९ ढाकना १० घर खड, टुकडा ।

वि०—१ निर्मल, साफ ।

[स० षट, प्रा० छ] २ पाच ग्रौर एक का योग, वह जो पाच से एक ग्रधिक हो ३ देखो 'छै' (रू भे)

उ०—तद दरबारी कहची कमकरथ तौ वधुगढ री राजा छै ।

—पलक दरियाव री वात

छइ—देखो 'छै' (रू भ) उ०—ढोलइ मनह विमासियउ, साच कहइ छइ एह। करह भेकि दोनू चढचा, कूट न सभाळेह ।—ढो मा.

वि०—छ । उ०—जब साहमी ऊठी कूयरी ततखिण परीछण धरी, वोलइ वात कूयरी घणी वीती छइ जमारा तणी ।—कां दे प्र

छइदरसण—देखो 'खटदरसण' (रू भे) उ०—छइदरसण छयाणवइ पाखड करउ ग्रधार, बाळउ चकरवति धन-धन हो राजा ग्रचळेसर ।

—ग्र वचनिका

छउम-स०पु० [स० छद्मन्] १ कपट, माया (जैन) २ आत्मा को आच्छादन करने वाला ज्ञानावरणी आदि आठ कर्म (जैन) ३ छद्मस्थ अवस्था (जैन)

छउवत्थ-वि० [स० छद्मस्थ] १ अपूर्ण ज्ञान वाला मनुष्य २ वह मनुष्य जिसमे राग-द्वेष हो (जैन)

छएक-वि०—छ के लगभग।

छएल-वि०—श्रेष्ठ। उ०—डोह घड चौवडा फतह जग खळा डळा। खत्री गुर रौ छएल करै नित घू कळा।
—रावत सारगदेव द्वितीय कानोड रौ गीत

छक-स०पु०—१ वैभव, ऐश्वर्य। उ०—छक घोडा छक छत्रिया, छक वीरता उछाह। कीरत छक 'पातळ' कमध, सह छक तूझ सराह।—जैतदान बारहठ

२ गर्व, अभिमान। उ०—१ वदे 'जसौ' जिण वार कवर अग्गळ जोडे कर, मीणा अधम गमार घणै छक अनड रहै घर।—व भा

उ०—२ महरावखान दहळे मुगळ, गयौ भाजि तजि छक गजै। पतिसाह हुकम विण जोधपुर, इम खग बलि लीधौ 'अजै'।—सू प्र.

३ नशा, मादकता, खुमारी। उ०—नवा अमल रौ नेह देह दूणा छक आणै।—अरजुनजी बारहठ

४ उत्साह, जोश। उ०—१ परतु मीणा रै ठाकुरपणौ रहिया तौ रजोगुण रा छक को ह्रास उपजियौ।—व भा.

उ०—२ रजवट छर्क बोलै इम रावत, 'करणौ' भाऊ सुत कूपावत।
—सू प्र

५ आनन्द, बहार। उ०—चित्रकूट पर रघुवर रम रह्या ओ छक भर छायौ रे, बावा छक भर छायौ रे।—गी रा

६ अवसर, मौका। उ०—मना देखि देखि छक भलौ लाधौ, इसौ अवसर वळै वहौडि लाभसि नही।—ह पु वा

७ यौवन, युवावस्था। उ०—अब मदन रस लूटिया, छछवा छूटिया गुळ छक र्सी विकसी, भवर गुजार निकसी।—र हमीर

८ कान्ति, दीप्ति, शोभा। उ०—इद्र जेम ओपियौ, 'अजौ' नरिंद अवतारी। हित सु वहौ छक हरख, धरै ऊच्छब छत्रधारी।—सू प्र

९ शौर्य, बहादुरी। उ०—नरा दावागिरा पाधरा नमामी, पर धरा जमासी समद पाजा। तखत जोधाण राखै सरम ताठवड, राठवड 'भीम' छक भीम राजा।—महाराजा भीमसिंह राठौड जोधपुर रौ गीत

१० बल, शक्ति। उ०—वळवळा अजस सयणा वधे, भडा खळा छक भाजियौ। सुत 'वाघ' तणौ उछरग सभै, गगराव' अग्राजियौ।
—सू प्र

११ भय, आतक, डर। उ०—आपरा पति रौ व्यग्यारथ छै, सीह कहावण जैडौ म्हारौ पति छै, उण उप्रत पे मोनू किसू छक वतावौ छौ।—वी स टी

१२ दल, सेना। उ०—नदि कहे ताप मानै तुरक, तिहू छक छाडि तराज का, महि सरब अरावा दे मिळू, म्हैं वदा महाराज का।
—सू प्र

१३ लालसा, इच्छा।

१४ हर्ष, प्रसन्नता। उ०—इम जीपे आवियौ 'गगा' वाजता नगारा सुजस वधै धर सिरै, उछक छक वधै अपारा।—सू प्र

१५ साहस, हिम्मत।

वि०—१ मस्त, मदोन्मत्त। उ०—काढै नाहर काळजा, छक मा अचरज छाक। केस जाळ लग काळजै, साल्है को सूराक।—वा दा

२ श्रेष्ठ ३ सुन्दर। उ०—पावडिया सहत नरम पद पकज, नूपुर हाटक परमपुनीत। छक कडवध सुछगा छाजै, पट अगा राजै पुण पीत।—र.रू

४ तीव्र, तीक्ष्ण, तेज। उ०—जिण तेज अरक जिम छक जहूर, सुदर प्रवीण दातार सूर।—वि स

५ पूर्ण। उ०—करणावत कळिचाळ, ताम पूछै 'अभपत्ती'। दुरगावत 'अभमाल' पाण छक कहै प्रभत्ती।—सू प्र

छकडाळ-स०पु०—कवच। उ०—सारवट सूथण मोजा सार। जडै छकडाळ कडा जोधार।—गो रू

छकडाळौ-स०पु०—कवचधारी, योद्धा। उ०—उण दिन था राणा अगे, हैंवर दोय हजार। सावत कळचाळा सघर, छकडाळा सिरदार।
—पा प्र

वि०—१ प्रचण्ड २ बलवान. ३ पुरुषार्थी।

छकडियौ—कवचधारी योद्धा, शूरवीर।

छकडी-स०स्त्री०—१ छ का समूह २ ताश का एक खेल जिसमे छ व्यक्ति शामिल होकर आठ आठ पत्तो द्वारा खेलते है ३ चलने की शीघ्रता ४ छ कहारो द्वारा उठाई जाने वाली पालकी।

वि०—वह जो छ से बना हुआ हो।

मुहा०—छकडी भूलणी—होश-हवास खो बैठना।

छकडौ-स०पु० [स० शकट, प्रा० सगडो] १ दो पहियो की बोझ लादने की गाडी जो बैलो द्वारा खीची जाती है। आजकल सुविधा व अधिक बोझा लादने के लिये इसमे मोटर के पहियो का उपयोग किया जाता है। उ०—जठै खडरी महा दुकाळ पडियौ जाणि आपरी वसी रा लोका सहित छकडा मे भार घलाई सकुटुब सिरोही, जाळोर, गुजरात रै काकड सधै त्रिण नेपै देखि आइ रहिया।—व.भा

क्रि०प्र०—चलाणौ, जोतणौ, भरणौ, लादणौ।

२ कवच। उ०—कहाडौ विरद वका भीडिया छकडा कडा, वधै रोळै भडा आगा वाधै वसवान।
—रावत सारगदेव दूसरा कानोड रौ गीत

वि०—जिसका ढाचा ढीला हो गया हो, जिसके अजर-पजर ढीले हो गये हो, टूटा-फूटा।

छकणौ-वि० [स० चक्र] तृप्त होने वाला। उ०—ताता लील तुरंग अरक चा अस्व अवेखौ, मद छकणा गज मेघ डूगरा भिळता लेखौ।
—मेघ.

छकणौ, छकवौ-क्रि०अ० [स० चक] १ तृप्त होना, अघाना २ नशे

मे चूर होना, मदोन्मत्त होना। उ०—फूला री तिवारा दारू पी' र लाल रहै। दिन रात सारो साथ मतवाळो छकियौ रहै। सो इण भात जलाल राजस करै।—जलाल बूबना री वात

३ चकराना, आश्चर्य करना, हैरान होना. ४ (घावो से) पूर्ण होना, शरीर पर घाव का लग जाना। उ०—घाव आप छकै पैला हजारा छकावै घावै, घू बोम अडवकै चीत जोम हू धारीक।

—चावडदान मेहडू

छकणहार, हारौ (हारी), छकणियौ—वि०।

छकवाड़णौ, छकवाडबौ, छकवाणौ, छकवावौ, छकवावणौ, छकवाववौ —प्रे०रू०।

छकाडणौ, छकाडबौ, छकाणौ, छकाबौ, छकावणौ, छकाववौ —क्रि०स०।

छकिओडौ, छकियोडौ, छक्योडौ—भू०का०कृ०।

छकीजणौ, छकीजबौ—भाव वा०।

छकपूर—स०पु०—गव, घमड (डि को)

छक बबाळ—वि०यौ०—महान शक्तिशाली, जबरदस्त।

उ०—छकवबाळ अपछरा छायळ, अरज कीध 'पदमै' अजराव्ळ।

—सू प्र

छकसार—स०पु०—द्वारपाल, छडीवरदार (अ मा)

छकाछक—वि०—१ तृप्त, सतुष्ट, परिपूर्ण. २ उन्मत्त, नशे मे चूर।

छकाणौ, छकाबौ—क्रि०स०—१ तृप्त करना। उ०—आनद आगर सुखडा री सागर नागर नगर सरायौ, छटा निहारी नवल छैल री, छवि सू लोक छकायौ।—गी रा

२ नशे मे चूर करना, उन्मत्त करना ३ दिक करना, हैरान करना ४ आश्चर्य मे डालना, चकित करना ५ (घावो से) पूरित करना, पूर्ण करना। उ०—घाव आप छकै पैला हजारा छकावे घावे, घू बोम अडवके चीत जोम हू धारीक।—चावडदान महडू

छकाणहार, हारौ (हारी), छकाणियौ—वि०।

छकाडणौ, छकाडबौ, छकावणौ, छकाववौ—रू०भे०।

छकायोडौ—भू०का०कृ०।

छकाईजणौ, छकाईजबौ—कर्म वा०।

छकणौ, छकबौ—अक० रू०।

छकायोडौ—भू०का०कृ०—१ तृप्त किया हुआ २ नशे आदि मे उन्मत्त किया हुआ ३ दिक किया हुआ. ४ आश्चर्य में डाला हुआ ५ क्षत, प्रहारो से पूर्ण (स्त्री० छकायोडी)

छकार, छकारौ—स०पु०—हिरण, मृग (डि को) उ०—देवी छकारा रूप तें राम छळिया, देवी राम रै रूप दसकध दळिया।—देवि.

छकियार—वि०—मध्याह्न का खेत मे भोजन लाने वाला, पाथेय लाने वाला।

उ०—१ म्हारा काकोजी चरावै टोरडिया, म्हारा माऊजी लावै छकियार।—लो गी.

उ०—२ थे तो वण जाज्यो कीनिया, मारूजी, मैं पातळडी छकियार।

—लो गी

छकियोडौ—भू०का०कृ०—१ तृप्त २ मस्त ३ हैरान।

(स्त्री० छकियोडी)

छकी—वि०—मस्त, तृप्त।

छकीली—वि०स्त्री०—मस्त, मदमत्त, छकाने वाली। उ०—अथ कवरी रै पत्री सिद्ध स्री लग्न री लछी, जीव री जडी, मजीली, फबीली, लजीली, छबीली, रमकीली, लकीली, कमकीली, चकीली लटकीली, छकीली, वत्तीस लछणी, चोसट कळा विचखणी केळरमवयारी, प्राण-प्यारी, जिण सू माहरौ निज नेह, दुरस भात राजै छै देह।—र हमीर

छकीलो—वि० (स्त्री० छकीली) मस्त, मगन, छकाने वाला।

छकेल, छकैल—वि०—मदमस्त, उन्मत्त, छका हुआ, पूर्ण तृप्त, अघाया हुआ।

छको—देखो 'छवको' (रू भे)

छकोटौ—स०पु०—समूह, पुज। उ०—सुणं छकोटा तन सुजस, रिम दोटा सुर रज। धन राघव मोटा धणी, भवजन तोटा भज।—र ज प्र

छक्कडौ—देखो 'छकडौ' (रू भे) उ०—कोरडा लोहडा तूटै विछूटे छक्कडा कडा, नीधका नीवाडा भडा हाकळै नत्रीठ। घूघ ओजडा भडा घजवडा भाजि घडा, राठोडा ओनाटा लागौ वागौ विनै रीठ।

—राठोड किसनसिंह री गीत

छक्कणौ, छक्कबौ—देखो 'छकणौ' (रू भे)

छक्को—स०पु०—१ छ की सख्या का अक, ६ २ ताश का वह पत्ता जिस पर किसी रग की छ बूटिया बनी हो ३ पासा फेंकने का एक दाव जिसमे छ बिंदिया ऊपर पडे ४ छ का समूह, छ अवयवो से बनी वस्तु ५ पाच ज्ञानेन्द्रिय और छठे मन का समूह. ६ सुध, होश-हवास, ख्याल। उ०—छैला छोगाळा छक्का छूटोडा, फिरता गिरता रा फीफर फूटोडा।—ऊ का

मुहा०—छक्का छूटणौ—होश-हवास खोना ध्यान च्युत होना।

७ वह (व्यक्ति) जिसके पजे मे छ अगुलिया हो ८ वह पशु (बैल भैस आदि) जिसके छ दात निकल आये हो।

छग, छगडौ—स०पु० [स० छगल] बकरा (डि को) (स्त्री० छगडी)

छगण—स०पु०—सूखा गोवर, कडा, उपला (डि को)

छगनमगन—स०पु०यौ०—प्यारे बच्चे, छोटे-छोटे बच्चे (प्यार का शब्द)

छगळ, छगल, छगल्ल—स०पु० [स० छगल] बकरा, छाग।

छगा-छगा—स०स्त्री०—चलने की गति विशेष, चाल विशेष।

उ०—छगा छगा धरि नगा, चढे आसण महावत। राह रूत रवि-पूत, धूत थापलिया धूरत।—सू प्र

छगाळियौ—स०पु०—१ वह बैल जिसके केवल छ दात आये हो २ बकरा।

छगौ, छग्गो—देखो 'छक्को' (रू भे) (स्त्री० छग्गी)

छघळौ-स०पु०—चाबुक। उ०—ह्रदै-हीए छघळौ हणै, घरट्ट बड घुमवाय। फूलै पुणि पुणि फैफडा, भ्रम विपताहि प्रढाय।
—रेवतसिंह भाटी

छडग-वि०—अकेला, एकाकी (मि 'छडौ')

छड-स०पु०—१ भाला, नेजा। उ०—१ अत वाढ़ अणी छड ओपवियौ, लकाळ कराळ सैलाळ लियौ।—गो रू.

उ०—२ लोही घड वहि वहि फळ लोहा, छड गहि गहि ऊठत छछोहा।—सू प्र

२ धातु अथवा किसी लकडी का पतला लम्बा टुकडा ३ वह डडा जिसके आगे भाले का फल लगा रहता है।

उ०—तुरग जोर भालै तणी, हुई राव हथवाह। अस पूठौ उलटावता, छड बारै फळ माह।—अज्ञात

४ भाले के ऊपरी भाग की पैनी नोक। उ०—भाजै छडा खरडकै भाला, पडै न पिड देतौ पसार। एकळ 'जैत' 'सलख', आहेडी, सकै न पाडै भड सिहर।—नैणसी

५ देखो 'छडछडीलौ' (रू भे) (अमरत)

छडकणौ, छडकबौ—देखो 'छिडकणौ' (रू भे)

छडकाणौ, छडकावौ—देखो 'छिडकाणौ' (रू भे)

छडकायोडौ—देखो 'छिडकायोडौ' (रू भे) (स्त्री० छडकायोडी)

छडकियोडौ—देखो 'छिडकिगोडौ' (रू भे) (स्त्री० छड़कियोडी)

छडछडीलौ, छडछबीलौ-स०पु० [स० शैलेय] काई के साथ मिल कर वढने वाला लच्छेदार पौधा विशेष जो हल्का भूरापन लिये हुए होता है और सूखने पर मीठी सुगन्ध देता है। यह पत्थर के चकतो व उभरे हुए भागो पर भी पैदा हो जाता है और कडी सर्दी व गर्मी को सहन कर सकता है। औषधि मे भी इसका प्रयोग होता है तथा कई प्रकार के मसालो मे भी इसको डालते हैं (अमरत)।

रू०भे०—छड, छडछबीलौ, छडीलौ।

छडणौ, छडबौ-क्रि०स०—१ ओखली मे कूटे हुए अनाज को सूप से साफ करना. २ घोडे का सीधा न चल कर इधर-उधर मुह मोडते हुए फदक-फदक कर चलना।

छडणहार, हारौ (हारी), छडणियौ—वि०।

छडवाडणौ, छडवाडबौ, छड़वाणौ, छडवावौ, छडवावणौ, छडवाववौ, छडाडणौ, छडाडबौ, छडाणौ, छडावौ, छडावणौ, छडाववौ—प्रे०रू०।

छडिओडौ, छडियोडौ, छडघोडौ—भू०का०कृ०।

छडीजणौ, छडीजबौ कर्म वा०।

छडवडौ, छडवडौ-स०पु० [अनु०] ऐसा समय जब कि कुछ अधकार और कुछ प्रकाश हो, झुकमुख, झुटपुटा।

वि०—१ थोडा, कम। उ०—आप छडवडै हीज साथ थी, सु रावळ हेरो करायो।—नैणसी

२ समवयस्क, सम आयु का। उ०—तरै असवारी कर कालियैद्रह सिधाया, रागरग हुवै छै, छडवडा खिलवत रा साथ सू बैठा छै।
—राव रिणमल री वात

छडहड, छडहडौ-स०स्त्री० [अनु०] घोडे के टापो की ध्वनि।

छडाछड-स०स्त्री० [अनु०] १ छीक से उत्पन्न ध्वनि। २ ध्वनि विशेष।

क्रि०वि०—१ शीघ्र, जल्दी २ निरतर, लगातार। उ०—दे पटपोरा दोय नाक मे दावै नीका, मूढौ खाधौ मोड छडाछड खावै छीका।
—ऊ.का.

छडाळ, छड़ाळि, छडाळौ, छडियाळ-स०पु०—१ भाला (ना डि को.)

उ०—१ हिलोळि छडाळ ग्रहै चद्रहास, तछै घण मीर कलम्म तरास।
—सू प्र

उ०—२ घण घाओ घमचाळि, चूनाळा थोग्र चाळणी। आप तणा तण अरि हरा, अडिआ भला छडाळि।—वचनिका

उ०—३ वाजता त्रबाळो ग्रीह नराताळो खडे वाज, तोलिया छडाळौ पाण पखाळै सुताण।—पहाडखा आढौ

उ०—४ धुणियाळ धकै चड खेग घणी। अममान लगा छडियाळ अणी।—पा.प्र

२ भाला रखने वाला, योद्धा, वीर। उ०—१ छत्रिया धरम पाळण छडाळ, 'पेमसा' करण खटवरन पाळ।—पे.रू

उ०—२ अडियाळ लयै कोइ तुरस ओट। छडियाळ करै केइ घ्रखळ चोट।—पा प्र उ०—३ छडा झलि वाह करै छडियाळ। करै घट पार कडा कडियाळ।—सू प्र

छडी-स०स्त्री०—१ सीधी व पतली लकडी २ झडी जो मजार या देवालय पर चढाई जाती है. ३ लात या लत्ती मारने की क्रिया।

मुहा०—छडी आछटणी—१ लात फेंकना २ तडफना, पैर पटकना।

४ छेड-छाड, झगडा। उ०—खलक लोक तमासो देखै। जलाल कहै—छडी मता करो। तमासो देखण देवो।—जलाल बूवना री वात

५ पाजामे या लहगे की सीधी टकाई (दरजी)

वि०स्त्री० (पु० छडौ)—१ अकेली, एकाकी २ स्वतत्र, आजाद ३ सतानहीन।

छडीझाल, छडीदार, छडीवरदार-स०पु० [स० शर=छड+रा०प्र०ई+फा० दार = छडी रखने वाला और छडी+फा० वरदार] १ राजा, रईसोया सरदारो का नौकर विशेष जिसके हाथ मे सोने या चादी से मँढा मोटा डडा रहता है। चोवदार, द्वारपाल, छडीवरदार।

उ०—१ छडीझाल परवरै हाक उपडै जवाना।—वखतो खिडियो

उ०—२ ताहरा पु रोहित छड़ीदार नै माहे बुलायो।
—पलक दरियाव री वात

पर्याय०—उच्चारक, छकसार, डडी, दडी, दरबारी, दरवान, द्वारपाळ, पोळियौ, प्रतिहार, हुसियारक।

२ एक प्रकार का घोडा (शा हो)

वि०—पतली सीधी लकीरो वाला।

छडीलौ—देखो 'छडछडीलौ' (रू भे)

छडौ-स०पु०—१ पैर मे पहिनने का चूडी के आकार का स्त्रियो का गहना जो प्राय चादी की पतली छड या ऐंठे हुए तार से बनाया

जाता है २ मोती या पोत की लडो का गुच्छा ३ सूत या चमडे की रस्सी, लड ४ स्त्रियो का एक प्रकार का आभूषण विशेष जिसे वे पैर के पजे के ऊपर धारण करती हैं ।

वि०पु० (स्त्री० छडी)—१ अकेला, एकाकी ।

मुहा०—छडी होणी—पत्नीरहित होना, पत्नी का मर जाना ।

२ वाहन, शस्त्र या अन्य सामग्रीविहीन । उ०—सू सिरदारा री सारी ही साथ बहीर हुवौ नै रावजी रै तवू खनै छडा चाकर सौएक र'या ।—द दा

३ बन्धनमुक्त, आजाद ४ सन्तानहीन ।

छचोकियौ—स०पु०—१ तिवारी के कोने का मकान (क्षेत्रीय) २ छोटी डलिया ।

छच्छूदर, छच्छूदरौ—देखो 'छछूदर' (रू भे)

छच्छोह—देखो 'छछोह' (रू भे)

उ०—छच्छोह पायगछ छडहडा, धुरा विरद करवत धरा । करि घाव जाव इसडा तिकै, पाव घडी जोजन परा ।—सू प्र

छछक—स०स्त्री०—धारा । उ०—लोहित लवी छछक छूटी प्रेत न जक पारै । सायक मय दुसार घायक घट सारै ।—व भा

छछवा—स०पु० (वहु०व०)—स्वेद कण, पसीने की वूदें ।

उ०—अव मदन रस लूटिया, छछवा छूटिया । गुल छ कळी विकसी, भवर गुजार निकसी ।—र हमीर

छछवि, छछवी—वि०स्त्री० (पु० छछवौ) तेज, तीव्र, चचल ।

उ०—छछवी छैलण छूट छकी छिब छोल मे, परिहा इण विध ऊभी आय पटाभर पौळ मे ।—र. हमीर

छछहौ—देखो 'छछोहौ' (रू भे) उ०—जैसे मखतूळ को डोरी तूटी छै अर गुण मोती छछहा कहता उतावळा छिटकि छिटकि पडै छै ।
—वेलि.टी

छछियार—स०स्त्री०—वह पात्र जिसमे दही का मथन कर मक्खन व मट्ठा अलग-अलग किया जाता है । उ०—मूधा पडचौ रे विलोवणौ, रीती रै'वै जाय छछियार, वारी, म्हारा मूगा, भल रही वो ।—लो गी

छछुदर, छछुदरौ—स०पु० [स० छुछुन्दर] १ चूहे की जाति का एक जतु जिसकी वनावट चूहे की सी होती है, परन्तु इसके नाक का नथना अधिक निकला हुआ और नुकीला होता है ।

उ०—आया माणस सुण पिया, म्हारी या गति होय । उत पीहर इत पीव सुख, साप छछूदर होय ।—कुवरसी सांखला री वारता

(स्त्री० छछूदरी)

२ एक प्रकार का यत्र या तावीज ।

छछूक—गुनाहगार, शत्रु, चूक करने वाला । उ०—प्रोहित कही होणे री थी जे हुई, ठाकुर काथा मता पडो, सारा भला हुई चालो ज्यू छछूक परा काढ़ो ।—मारवाड रा अमरावा री वारता ।

छछेडणौ, छछेडवौ—देखो 'छचेडणौ' (रू भे)

छछोरौ—देखो 'छिछोरौ' (रू भे) उ०—कोई गभीर सूरवीर छछोरा टोळी रा दुममण जमी लेण री करै तिकां ने कहै है ।—वी.स.टी.

(स्त्री० छछोरी)

छछोह, छछोहक, छछोहो, छछोहौ—स०पु०—१ आभा, काति, प्रभा, रूप २ फुहार, फव्वारा । उ०—कुमकुमै मजण करि धोत वसत धरि, चिहुरे जळ लागौ चुवण । छीणे जाणि छछोहा छूटा, गुण मोती मखतूळ गुण ।—वेलि

वि०—१ तीक्ष्ण, तेज । उ०—छछोहा छडाळा झटा खग झाळा ।
—स प्र

२ स्वच्छ, निर्मल । उ०—छछोहै आव गहर फौहारा छूटै । जमी सै मेघ जाणि आसमान सै जूटै ।—सू प्र

३ उत्साहयुक्त, जोशपूर्ण । उ०—अभग अथाह अप्रेय अरूप, छछोह वदन्न मदन्न सरूप ।—ह.र

४ शीघ्रगामी, तेज चलने वाला ।

उ०—छछोह होसनायकू की हमराह से छूटै । जगजेठू की तरवीत जोम सै जूटै ।—सू प्र

५ योद्धा, वीर ।

उ०—१ असुरा घट बाढत खाग अरोड । छछोहक 'सूर' तणौ रिणछोड ।—सू प्र

उ०—२ छिवता उरस छछोह, फुरस वीरा रस चालै । एक हत्थी आछटै, भाण कौतग रण भाळै ।—सू प्र

६ स्फूर्ति वाला, तेज । उ०—१ 'छतो' भड 'राम' सुतन्न छछोह । तोहा पहराक हणै झठ लोह ।—सू प्र

उ०—२ छछोहक स्रोण घडा उछटन । दारू धिस भैच पजांण दगत ।—सू प्र

७ स्फूर्ति, तेजी । उ०—नवि चीतारइ घर सुख साथ, वाहइ ब्रहकि छछोहा हाथ । रे रे ! मुगळ आघा ढोर, इम कहि वाहइ खग अघोरे ।—गोरा वादळ री चौपाई

क्रि०वि०—१ तीव्र, तेज । उ —मुहडौ कुण मोडै ज्यू भला मोटियार चढि छीनण मे छछोहा फिरै अर डाडिया री कडाकड हुवै ।—मारवाड रा अमरावा री वारता

२ शीघ्रता से, तेजी से । उ०—तगरसेस नागा सिरै जाणि तूटौ । छछोह जिसौ राम रौ वाण छूटौ ।—सू प्र

छज—स०पु०—१ वुद्धि, अक्ल २ व्यवहार, पटुता ३ मकान को ऊपर से छाने की सामग्री ४ छत, छाजन ।

क्रि०प्र०—उतारणौ, चढाणौ ।

वि०—मर्यादा रखने वाला, रक्षक । उ०—वंधव 'जैत' जोड वाहाळौ, ईंदां छज कुळवाट उजाळौ ।—रा रू.

(मि० ढाकण)

छजणौ, छजवौ—क्रि०अ०स०—१ (कच्चे मकान का) छत से पटना, आच्छादित होना. २ शोभा देना, उचित जँचना, सुशोभित होना । उ०—तपवत भूप निज धाम तत्र, छज कनक सिंघासण चमर छत्र ।

दुतिवत करे सन्नान दान, विध राज सासत्र विधांन ।—सू प्र
३ देखो 'छाजणौ' (रू भे)
छजणहार, हारौ (हारी), छजणियौ—वि० ।
छजिग्रोडौ, छजियोडौ, छज्योडौ—भू०का०कृ० ।
छजीजणौ, छजीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।
छजली—देखो 'छज्जौ' (अल्पा रू.भे)
छजेडी–स०स्त्री०—कच्ची दीवार के ऊपर डाला जाने वाला वह छाजन जिससे वर्षा आदि से उसकी रक्षा हो सके। यह छाजन दीवार पर काटे आदि बिछा कर उस पर घास-फूस डाल कर गीली रेत से जमाई जाती है। (मि पलाणी)
छजौ—देखो 'छाजौ' (रू भे)
छज्जल—देखो 'छाजडौ' (मह० रू भे) उ०—कटचा घणा सज्जन छज्जळ कान, सिर गिर कज्जळ कूट समान।—मे म.
छज्जीवणि-काय–स०पु० [स० षड्जीवनिकाय] छ प्रकार के काया जीवों का समूह, छ प्रकार के काया जीव—पृथ्वी, जल, तेज, वायु, वनस्पति और त्रसकाय (जैन)
छज्जीवणिया–स०स्त्री० [स० षडजीवनिकाय] वह जिसमे छ काया जीव की रक्षा का अधिकार, दस वैकालिक सूत्र के चतुर्थ अध्ययन का नाम (जैन)।
छज्जौ–स०पु०—१ छाजन या छत का वह भाग जो दीवार के बाहर निकला रहता है. २ किसी दरवाजे या खिडकी आदि के ऊपर लगी हुई पत्थर की वह पट्टी जो दीवार के बाहर निकली रहती है ३ धूप के बचाव के लिये टोपी या टोप के अगले किनारे का निकला हुआ भाग।
अल्पा०—छजली, छजल्लौ, छाजड्यौ।
छटक–स०पु० [स०] रुद्रताल के ग्यारह भेदो मे से एक।
क्रि०वि०—शीघ्र, फुर्ती से। उ०—मगरा केरा वाहळा, ओछा नरा सनेह। वहता वहै उतावळा, छटक दिखावै छेह।—हा भा
छटकणौ–वि० (स्त्री० छटकणी) उडने वाला, छटकने वाला।
छटकणौ, छटकबौ—देखो 'छिटकणौ' (रू भे) उ०—करम लिखायौ साध सगत मे, हर सागर मे लटकी। मीरा के प्रभु गिरधर नागर, भो सागर से छटकी।—मीरा
छटकाणौ, छटकाबौ—देखो 'छिटकाणौ' (रू भे)
छटकायोडौ—देखो 'छिटकायोडौ' (रू भे) (स्त्री० छटकायोडी)
छटकावणौ, छटकावबौ—देखो 'छिटकाणौ' (रू भे)
छटकियोडौ—देखो 'छिटकियोडौ' (रू भे) (स्त्री० छटकियोडी)
छटकौ—देखो 'चटकौ' (रू भे)
छटछट—देखो 'चटचट' (रू भे)
छटपट–क्रि०वि०—अति शीघ्र, झटपट, तुरत, फौरन।
स०स्त्री० [अनु०] छटपटाने की क्रिया, बेचैनी, घबराहट।
छटपटाणौ, छटपटाबौ–क्रि०अ० [अनु०] १ छटपटाना, बधन या पीडा के कारण हाथ पैर फटकारना, तडफडाना २ बेचैन होना, व्याकुल होना ३ किसी वस्तु आदि की प्राप्ति के लिये आकुल होना, अधीरतापूर्वक उत्सुक होना।
छटपटाणहार, हारौ (हारी), छटपटाणियौ—वि०।
छटपटायोडौ—भू०का०कृ०।
छटपटाईजणौ, छटपटाईजबौ—भाव वा०।
छटपटावणौ, छटपटावबौ—रू०भे०।
छटपटायोडौ–भू०का०कृ०—१ छटपटाया हुआ, तडफडाया हुआ २ अधीर, व्याकुल (स्त्री० छटपटायोडी)
छटपटी–स०स्त्री०—घबराहट, व्याकुलता, अधीरता, अधीरतायुक्त उत्कठा।
छटाक–स०स्त्री०—सेर का सोलहवा भाग, एक तोल।
छटान–स०स्त्री०—छटा, चमक, दीप्ति। उ०—मनाहवान साघणा घटा कि चमडी घणा, खिंवत सेल खेह मे, मिटै छटान मेह मैं।
—रा रू.
छटा–स०स्त्री० [स०] १ शोभा। उ०—सील सजीलौ रूप-रसीलौ छैल छवीलौ छावै, नील जळज तन छटा निराळी, लख लख काम लजावै।—गी रा
२ काति, दीप्ति, आभा, चमक ३ बिजली (अ मा)
उ०—वपु नीलवसन मझि इम वखाण, जगमगत घटा मझि छटा जाण।—सू प्र
४ प्रभाव, रौब ५ सूअर के शरीर के वाल। उ०—डाढाळौ निलोह थकियौ परलै पासै जाय ऊभौ खेरू करै छै। छटा धूणै छै। सख सू खग लगाय फौज साम्ही जोवै छै।—डाढाळा सूर री बात
छटाटोप–स०पु० [स०] ४९ क्षेत्रपालो में से २३ वा क्षेत्रपाल।
छटाणिया–स०स्त्री०—राव सीहा के वश मे राठौड वश की एक उपशाखा।
छटाधर–स०पु०—योद्धा, वीर।
उ०—धकै क्रोध हरसाह 'जेहवार' बटाधर, दुरद मद पटाधर जेम दोवै। धार खग झटा अघटा पडै छटाधर, जटाधर मुगटधर खेल जोवै।—हुकमीचद खिडियौ
छटाधाव–स०पु०—शेर, सिंह (अ मा.)
छटाभा–स०स्त्री०—१ बिजली की चमक २ कांति, ओज।
छटायत–वि०—कातिवान आभायुक्त। उ०—ताखडा उलट मेवासिया लटायत, छटायत नाहरा भडा छोगै, रमै खग झटायत तौ जहीं 'हमीरा' भला जे पटायत पटा भोगै।
—रावत हमीरसिंह चूडावत भदेसर री गीत
छटेल—देखो 'छटेल' (रू भे)
छट्ट, छट्ठ–सं०स्त्री० [स० षष्ठी, प्रा० छट्ठी] चन्द्र मास के प्रत्येक पक्ष की छठी तिथि। उ०—परणीजण पधारियौ, जेसाणै 'अगजीत'। छट्ट ऊजळी छावनै, पख आसाढ सप्रीत।—रा रू

छट्ठभत्त-सं०पु० [स० पष्ठभक्त] लगातार दो दिनो का उपवास (वेला) (जैन)

छट्ठी-स०स्त्री० [स० षष्ठी] १ जन्म के बाद का छठा दिन या रात्रि या इस रात्रि को मनाया जाने वाला उत्सव २ छठो के दिन पूजी जाने वाली एक देवी ३ शरीर की अतिम अवस्था, मृत्यु, मौत।
उ०—सभ जगा जैत रौ वराका छट्ठी जाग सूतो, अराका उनगी आग अग रौ अडाग। सेना थाट काको 'कन्ह पग'रौ वढ़ाय सूतौ, ज्यू सरेव सज्या सूतो गग रौ जडाग।—हुकमीचद खिडियौ

छट्ठौ-वि० [स षष्ठ] (स्त्री० छट्ठी) छठा, ६ वा। उ०—छट्ठै पुहरै दिवस कै, हुई ज जीमणवार। मन चावळ तन लापसी, नैण ज घी की धार।—ढो मा

छठ—देखो 'छट्ठ' (रू भे)
कहा०—छठ सू चौदस करणी—छठी तिथि से आगे चतुर्दशी वताना, किसी वायदे को आगे से आगे वढ़ाना, अधिक लम्वा करना।

छठारीहाण-स०पु०—छ दात आया हुआ युवा ऊट।

छठी—देखो 'छट्ठी' (रू.भे.)

छठौ, छठ्ठोडौ-वि० [स० षष्ठ] छठा, जो क्रम मे छ के स्थान पर हो।
उ०—पहु 'सूर' करे रूपक परस, वरे कुरव वह क्रीत वर। छअपतौ लाख दीधौ छठौ, कविया भांनीदान कर।—सू प्र
अल्पा०—छठ्ठोडौ।

छड्डणौ, छट्टवौ-क्रि०स०—छोडना, त्यागना। उ०—छोह करताळिया चिडकला छड्डही, अभग जसवत जुध गुरड नह उड्डही।—हा झा

छणक-स०स्त्री० [अनु०] १ अग्नि मे तपे हुए ठोस पदार्थ पर जल का छींटा पडने पर उत्पन्न होने वाली छन छन की ध्वनि २ तीर तलवार आदि के तेज प्रहार के समय होने वाली सन सन की ध्वनि।
उ०—१ कर सीस छणक छणक कटै, तरुआर खणक खणंक तुटै।
—पा प्र
उ०—२ छुट तीर जहा कोडड छणक, खग झाट वटका खळ खणक।
—रामदान लाळस

छण—१ देखो 'क्षण' (रू भे) २ छनकने से उत्पन्न शब्द। देखो 'छणकणौ'। ३ देखो 'छिम' (मेवाड)

छणकणौ, छणकवौ-क्रि०अ०—१ चमकना, दमकना. २ छन छन शब्द करना, झनझनाना।
छणकणहार, हारौ (हारी), छणकणियौ—वि०।
छणकिओडौ, छणकियोडौ, छणक्योडौ—भू०का०कृ०।
छणकीजणौ, छणकीजवौ—भाव वा०।

छणक-मणक-स०स्त्री० [अनु०] १ आभूषणो की झनकार २ साज-सजावट, ठसक।

छणकार-स०स्त्री०—१ झनकार, एक ध्वनि विशेष २ तलवार के प्रहार की ध्वनि। उ०—तरवारा रा छणकार हुयनै रहिया छै।
—रा सा.स

छणछणाणौ, छणछणावौ-क्रि०अ०—१ किसी तपी हुई धातु या अन्य ठोस पदार्थ पर पानी गिरने से छन-छन शब्द होना २ झनझनाना।

छणणकणौ, छणणकवौ-क्रि०अ०—१ छन-छन शब्द उत्पन्न होना, झनझनाना।
२ झनकार करना ३ भय से भगना। उ०—चणणंकै भड चिहुर छोजि कातर छणणकै।—व भा.

छणणौ-स०पु०—वह वस्तु जिसमे कोई पदार्थ छाना जाय, छनना।

छणणौ, छणवौ-क्रि०अ०—१ छनना, किसी चूर्ण या तरल पदार्थ का महीन कपडे या वारीक जाली के छिद्रो से होकर इस प्रकार निकलना कि उसका मैल या खूद उस कपडे या जाली मे ऊपर रह जाय २ छोटे-छोटे छेदो से होकर आना ३ चूना टपकना ४ किसी नशे का छाना जाना ५ स्थान-स्थान पर छिद्र हो जाना, छलनी हो जाना. ६ विध जाना, अनेक चोट खाना ७ किसी वात की छानवीन होना, निर्णय होना, जाच होना।
छणणहार, हारौ (हारी), छणणियौ—वि०।
छणवाडणौ, छणवाडवौ, छणवाणौ, छणवावौ, छणवावणौ, छणवाववौ, छणाडणौ, छणाडवौ, छणाणौ, छणावौ, छणावणौ, छणाववौ
—प्रे०रू०।
छणिओडौ, छणियोडौ, छण्योडौ—भू०का०कृ०।
छणीजणौ, छणीजवौ—भाव वा०।

छणदा-स०स्त्री० [स० क्षणदा] रात, रात्रि (डि को)

छणहण-स०स्त्री० [अनु०] १ घुघुरु के हिलने व वजने से उत्पन्न झन-झन का शब्द। उ०—छिलतै तेज रथा पाय छणहण, वेगा छेड कठीरव वाहण। असकता सेवग करण अभै तण, आई आवजै अहिया उग्राहण।
—द दा
२ पैरो के आभूषणो की झनझनाहट।

छणाई-स०स्त्री०—१ किसी चूर्ण या द्रव पदार्थ के छनने का कार्य या इस कार्य की मजदूरी २ पैर के तलुए मे होने वाला एक विशेष प्रकार का फोडा जिसके लिये यह वात प्रसिद्ध है कि यह फोडा एक विशेष जानवर के ऊपर पैर लग जाने से होता है ३ एक जतु विशेष जो काला होता है, इसके लिये यह किंवदती प्रचलित है कि उस पर पैर लग जाने से तलुए मे फोडा उत्पन्न हो जाता है।

छणाकौ-स०पु०—सिक्का वजने की झनकार या झनझनाहट, झनकार, खनाका, ठनाका।

छणारी—देखो 'छणाई' (२, ३)

छणारौ-स०पु०—मल त्यागने का अवयव, मलद्वार, गुदा। २ उपलों तथा कडो को तरतीव से जमा कर वनाया हुआ ढेर।

छणिक—देखो 'क्षणिक' (रू भे)

छणियारौ-स०पु०—१ कासी के वर्तनो का व्यापार करने वाला व्यक्ति। २ विवाह के अवसर पर गाया जाने वाला एक राजस्थानी लोकगीत। ३ देखो 'छणारौ' (रू भे)

छणियोडौ–भू०का०कृ०—१ छना हुआ २ टपका हुआ. ३ छलनी हुवा हुआ. ४ विधा हुआ (स्त्री. छणियोडी)

छणेरी–स०स्त्री०—१ चूल्हे के समीप ही उपले या कडे रखने के निमित्त बनाया हुआ स्थान। २ देखो 'छणाई' (२, ३) (रू भे)

छत–स०स्त्री० [स० छत्र, प्रा० छत्त] १ कमरे की दीवारो पर पट्टिया रख कर उस पर चूना, ककरीट आदि डाल कर बनाया हुआ फर्श।

क्रि०प्र०—कूटणी, जमाणी, ढाकणी, बणणी।

२ घर के ऊपर का खुला भाग। [स० क्षिति] ३ भूमि, पृथ्वी ४ जगह, स्थान [स० छटा] ५ शोभा, कान्ति।

उ०—देख देख सगळी गत दाखी, भूप अभूत रूप क्षत भाखी।
—रा रू

स०पु०—६ देखो 'छत्र' (२, ३) (रू भे) [स० क्षत] ७ घाव

उ०—अर वडाहर रा प्रस्थान रा समय रै पूरव ही आपरा अग मे छुरिका रा छत लगाय समस्त स्वादु द्रव्य मिळाय पूरब री तरह तप्त तैल रा कटाह मे बरावर भपा लेर भद्रकाळी नू प्रसन्न करी।—व भा

८ खतरा जोखा।

उ०—दळै न छत जो देस री, कदर न राखै कोय।
हू छतरी छतरिहु भली, तपै न भीगै तोय।।
—रेवतसिंह भाटी

९ व्रण, फोडा [स० क्षत्र] १० प्रभुता, प्रधानता। उ०—मोह सराव खराव है, छत उमत छाकी।—केसोदास गाडण

छतडी—देखो 'छतरी' (अल्पा०, रू भे) उ०—ठाला भूला जिणा लारै ब्रामण भोजन करायौ तथा मा'राज पदमसिंघजी ऊपर छतडी तापी नदी ऊपर दाह री जागा करवाई।—द दा

छतडौ—देखो 'छातौ' (अल्पा०, रू भे)।

छतज–स०पु० [स० क्षतज] क्षत से उत्पन्न, रक्त, रुधिर, खून (डि को)

वि०—लाल, सुर्ख* (डि को)।

छतप–स०पु० [स० छत्रप, छत्रपति अथवा क्षितिप] नरेश, नृप, राजा।

छतर–स०पु० [स० छत्र] १ छत्र।

उ०—असपतियाँ उतबग सू, ऊचा छतर उतार। राणै दीधा रैणआ, 'सागै' जग साधार।—वा दा

मुहा०—छतरछैया होणी—पूर्ण कृपा होना।

२ छाता ३ सर्प का फन।

छतरडी—देखो 'छतरी' (अल्पा०, रू.भे.)

छतरडौ—देखो 'छातौ' (अल्पा०, रू भे)

छतरधर, छतरधारण, छतरधारी—देखो 'छत्रधारी' (रू भे)

उ०—घटा सिंधुर डमर पटा ओसर घरर, वाज साकुर पखर ददर वारौ। छतरधर असुर ऊपर खीवै पर छटा, थिर अतर अडर नर धजर धारौ।—महाराजा अभैसिंह री गीत

छतर-पत–स०पु०—१ सूर्य (डि को) [स० छत्रपति] २ छत्रपति, राजा।

छतरी–स०स्त्री० [स० छत्र+रा प्र.ई] १ शव के दाह स्थल पर या समाधि के स्थान पर बनाया गया छज्जेदार मडप। २ देखो 'छातौ' (अल्पा०, रू भे) ३ वर्षा ऋतु मे होने वाला एक प्रकार का छतरी के आकार का उद्भिज जिसकी गणना खुमी के अन्तर्गत मानी जाती है।

अल्पा०—छतडी, छतरडी।

स०पु० [स० क्षत्रिय] ४ क्षत्रिय। उ०—छतरी चराता छाळिया, धान न खाता धाप। मौ'रा रा बट्टण मिळै 'पातल' री परताप।
—जुगतीदान देथौ

छतलोट–स०स्त्री०—पेट के बल लेट कर लोटने की एक कसरत।

छतल्लौ—देखो 'छातौ' (अल्पा०, रू भे.)

छता–क्रि०वि० [स० सत्] १ होते हुए, होते। उ०—सुख दुख पाप पुण्य सू न्यारौ, काम छता निसकामी रे।—गी.रा

वि०—मौजूद, तैयार।

कहा०—छता गाडी पाळौ क्यूं—गाडी मौजूद होते हुए पैदल क्यो चला जाय। साधन मौजूद हो तो उसका उपयोग अवश्य करना चाहिए। साधन होते हुए उसका उपयोग न करना मूर्खता ही है

२ लिये, वास्ते।

रू०भे०—छतै।

छति–स०पु० [स० छत्र] १ बादशाह, राजा। उ०—साह मिळै अभसाह सू, सिरै दियौ सनमान। छात नचीतौ लेख छति, जाणै बात जहान।—रा रू

स०स्त्री० [स० क्षति] २ हानि, नुकसान ३ देखो 'छती' (रू भे)

छती–स०स्त्री० [स० क्षिति] १ पृथ्वी, धरा। उ०—ओपौ आढौ कहै ईसवर, नित राखू चित थारौ नाम। तू छती माय देवण सुख तू, रणा तणी वसती तू राम।—ओपौ आढौ

२ वक्ष:स्थल, छाती। उ०—मीरा जी तौ विना कल ना पडै, पल छिन नाही सरै। छतिया तपै नैणा नीर झरै रे।—मीरा

छतीस–वि० [स० षट्त्रिंशत्, प्रा० छत्तीस, छत्रिस] तीस से छ अधिक, तीस और छ का योग।

स०पु०—छतीस की सख्या।

छतीसमौ–वि०—जो क्रम मे पैंतीस के बाद आता हो, छत्तीसवा।

छतीसिका–स०स्त्री०—छत्तीस छद या दोहो का एक काव्य विशेष (वा दा).

छतीसियौ—देखो 'छत्तीसौ' (अल्पा०, रू भे)

छतीसी–वि०स्त्री०—१ छत्तीस की सख्यायुक्त २ कुलटा, कुलक्षणा।

छतीसेक–वि०—छत्तीस के लगभग।

छतीसौ–स०पु०—३६वाँ वर्ष।

वि० (स्त्री० छतीसी) मक्कार, धूर्त।

अल्पा०—छतीसियौ।

छतु—देखो 'छतौ' (रू भे) (उ.र.)।

छतै—देखो 'छता' (रू भे) उ०—१ ऊभा सीहा केस इक, कर लैणी मुसकल्ल। पाण छतै क्यूकर पडै, ऊभा सीहा खल्ल।—वा दा

उ०—२ सास छतै जीवै सकळ, ऊमर रै आधार। जस सूं जीव जगत मे, सास पखै सुदतार।—वा दा.

छत्तो–वि० (स्त्री० छत्ती) १ प्रसिद्ध, विख्यात। उ०—'जवदळ' 'पदम' रायसिंघ 'जुजठळ', हरचद प्रीछन भोज हुआ। माणी मता छता महिमडळ, मता न माणी जिता मुआ।—गोरधन खीची
२ प्रकट, जाहिर। उ०—बहनामी मत राखो बाधा, लाधा म्हे थारा लखण। छता हुआ किमि रहिसी छिपिया, घट माही अजुआळ घणा।
—पीरदान लाळस
३ मौजूद ४ देखो 'छातो' (रू भे)।
क्रि०वि०—होते हुए।
रू०भे०—छत्तो।

छत्त–स०स्त्री०—देखो 'छत' (रू भे) (जैन)

छत्तधारी –देखो छत्रधारी' (रू.भे.)।
उ०—इता छत्तधारी मिळे ज्याग आया। छित धूप लागै नही छत्रछाया।—सू प्र.

छत्तर—देखो छत्र' (रू भे)

छत्तरयण—देखो 'छत्ररत्न' (रू भे.) (जैन)

छत्ति–स०स्त्री०—१ शस्त्र विशेष। उ०—जडे छक्कडी टोप नाही जरद्दा, गुपत्तिन कत्तिन छत्तिन गद्दा।—ना द
२ देखो 'छाती' (रू भे) उ०—छेदै तीरन छत्ति या वीरन बिरमाया। सेल धमाको सकुळं, छाका कि छकाया।—व भा

छत्ती—देखो 'छाती' (रू.भे.)। उ०—१ करावं हुआ टूक पै घाउ कत्ती, छिकै अन्न पाडै गजा चाढि छत्ती।—वचनिका
उ०—२ अघे अघे होहु यो, वंडे भट बकै। ज्यों ज्यों पय पच्छे लगै, छत्ती धक धकै।—वं भा

छत्तीस—देखो 'छतीस' (रू भे)

छत्तीसमों—देखो 'छतीसमो' (रू.भे)

छत्तीसे'क—देखो 'छतीसे'क' (रू भे)

छत्तीसो—देखो 'छतीसी' (स्त्री० छत्तीसी)

छत्तो—देखो 'छतो' (रू भे) उ०—छत्तो सिरजण पीव छत, भँवर पिसण भमियाह। धुव दाटक धासक धुवा, थिर लख अध थयाह।
—रेवतसिंह भाटी

छत्र–स०पु० [स०] १ छाता २ देवता या राजा महाराजाओ का छाते के आकार का चिन्ह। उ०—सोळ हजार पमार सघारे। धरपत्ती छत्र कुरगढ धारे।—सू प्र
यौ०—छत्रछाह, छत्रधर, छत्रधरण।
३ राजा, नृप (डि को) ४ क्षत्रिय (डि को) ५ चादनी, चदोवा, वितान ६ मडप। उ०—बीजळि दुति दड मोतिये वरिखा, झालरिए लागा भडण। छत्रे अकास एम ओछायो, घण आयो किरि वरण घण।
—वेलि
७ फलित ज्योतिष के २८ योगो मे से एक योग (ज्योतिष)
यौ०—छत्रचक्र, छत्र-भग।
८ डिंगल के वेलिया सागोर छद का भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले में ५८ लघु ३ गुरु कुल ६४ मात्रायें हो तथा शेष के द्वाले मे ५८ लघु २ गुरु कुल ६२ मात्रायें हों। (पिं प्र)
९ घास, भूसे आदि के ढेर पर छाया जाने वाला आच्छादन।
१० सर्प की छतरी नामक उद्भिज, खुमी
वि०—श्रेष्ठ, शिरोमणि। उ०—छत्रपती अभो छत्रकुळ छतीस, बहतर कळा लक्खण बतीस।—वि सं
रू०भे०—छत्तर।

छत्रक–स०पु० [स] १ कुकुरमुत्ता, खुमी २ छाता ३ स्मारक, देवल ४ देव मदिर ५ मडप. ६ मधुमक्खी का छत्ता।

छत्रचक्र–स०पु० [स०] फलित ज्योतिष का एक चक्र जिसके अनुसार शुभाशुभ फल निकाला जाता है (ज्योतिष)।

छत्रछागीर–स०पु०—बादशाह का छत्र।

छत्रछाह–स०स्त्री०—१ रक्षा, शरण २ कृपा।

छत्रधर, छत्रधरण, छत्रधार–स०पु० [स० छत्र+धारिन्] (स्त्री० छत्रधारणी) १ वह व्यक्ति जो छत्र धारण करे २ राजा, नृप।
उ०—१ सुणी स्रवण हहकार छत्रधर मग्व सोचियो, क्रूर भणकार भो चहू कानी। सुकवि हसा तणी मांनसर मूकगो, देवपुर साधता चडदानी।—सूरजमल मोतीसर
उ०—२ आगळ धर पूरो परी, धीर पतो छत्रधार।
—किसोरदान बारहठ
२ सर्प, नाग ३ राजा के ऊपर छत्र रखने वाला सेवक
४ देवता।
रू०भे०—छतरधारी, छत्तधारी, छत्रधारी।

छत्रधारणि, छत्रधारणी–स०स्त्री०—१ छत्र धारण करने वाली २ देवी, शक्ति ३ रानी।

छत्रधारी—देखो 'छत्रधर' (रू भे) (स्त्री० छत्रधारणी)
उ०—१ अहिपुर असुर ईंढ न आवै, वहस किसी नर ढ्ढ वीयै। धर सारी जोता छत्रधारी, थारी किण ही न होड थियै।
—सावळदान कवियो
उ०—२ अनि नृप कोय न अहो, जग मझि जैचद जेहो। कुळ दळ बळ अग्रकारी, धर पूरव छत्रधारी।—सू प्र.

छत्रधीस–स०पु० [स० छत्र+अधीस] छत्र का अधिपति, राजा।
रू०भे०—छत्राधीस।

छत्रधोड–स०पु० [स० क्षत्र+धुरा] क्षत्रिय धर्म।

छत्रपत, छत्रपति, छत्रपती, छत्रपत्त, छत्रपत्तिय, छत्रपत्ती–स०पु० [स० छत्र+पति] १ छत्र का अधिपति, राजा। उ०—१ छत्रपत लिये काकण ढ्रम छाजै, वडवानळ रवि चद्र विराजै।—सू प्र उ०—२ बावन दुरग वके विविध, सब क्षिति छोगो छत्रपति। बखतेस तनय वनराव नृप, करत राज अलवर नृपति।—ला रा.
उ०—३ छत्रपतिया लागी नह छाणत, गढपतिया धर परी पुणी।
—बा दा

उ०—४ हव हीस हुकम्म हुलास हुव, भय भग भय छत्रपत्त हुव।
—पा प्र

उ०—५ पीपळोद राजै छत्रपत्तिय, श्रायौ मिया मेळ असपत्तिय।
—रा रू

उ०—६ वळ दे दे वाकरा भणै जय जय भगवत्ती, धारि रुधिर मद धार छाक दीधी छत्रपत्ती।—मे म.

२ देवता. ३ सर्प, नाग।

छत्रप्पती—देखो 'छत्रपत' (रू भे) उ०—छत्रप्पती उछाह मे, धनेस माल उद्धमै। वेदोगतं विधानय, दुजा अनेक दानय।—सू.प्र.

छत्रवध-स०पु०—१ राजा, नृप, भूपति। उ०—पवन वाजसी गजवध छत्रवध गजराज गुडमी।—वचनिका

२ एक प्रकार का चित्रकाव्य।

छत्रभग-स०पु० [स०] १ ज्योतिष का एक योग जो राजा का नाशक माना जाता है। २ अराजकता। उ०—गौरी झालियौ तद जोसी जगजोत ग्राय कह्यौ—'दिल्ली छत्रभग होय तिसडौ जोग छै।
—नणसी

३ हाथी का एक दोष जो उसके दातो के ऊपर नीचे होने के कारण माना जाता है। ४ छत्र के आकार की छत्रदड सहित पीठ पर भौंरी वाला घोडा जो अशुभ माना जाता है (शा हो)।

छत्ररत्न-स०पु० [स०] १ सेना के ऊपर १२ योजन लम्बा ९ योजन चौडा छत्ररूप वनने वाला छत्र जो शीत, ताप, वायु आदि उपसर्ग से स्व-रक्षण करता है (जैन)।

२ चक्रवर्ती के चौदह रत्नो मे से नवा रत्न (जैन)।

छत्राधर—देखो 'छत्रधर' (रू भे)।

छत्राळ-स०पु०—वह जिसके सिर पर छत्र हो। उ०—मुणाळ भुम्राळ छत्राळ महेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।—ह र

छत्राधीस—देखो 'छत्रधीस' (रू भे)।

छत्राळौ-स०पु० [स० छत्र+स० आलुच] छत्र वाला, राजा।

उ०—भाटी सुरताणोत भुजाळौ, छिळतै मच्छर 'रुघौ' छत्राळौ।
—वचनिका

छत्रिय-स०पु० [स० क्षत्रिय] क्षत्रिय, राजपूत।

छत्रियधरम-स०पु० [स० क्षत्रिय-धर्म] क्षत्रियत्व, क्षत्रियधर्म, क्षात्रधर्म।

वि०—रक्त वर्ण, लाल॥।

छत्रियाण-स०पु० [स० क्षत्रिय+रा०प्र० आण] राजपूत, क्षत्रिय।

उ०—करण वाखाण दुनियाण धिन धिन कहै, धरम छत्रियाण भुज अमर धारू। अटक सू लिया हिंदवाण आयौ उरड, मुरड पतसाह बीकाण मारू।—देदौ

छत्री-वि० [स० छत्रिन्] छत्र धारण करने वाला।

स०पु० [स० क्षत्रिय] १ क्षत्रिय, वीर, सुभट। उ०—महि अपणा मा-बाप प्राण हू छत्री प्यारा। इण आफत हू अळग वचै जदि तरुण विचारा।—ऊ का

२ देखो 'छतरी' (रू भे)।

छत्रीधरम—देखो 'छत्री धरम' (रू.भे.) उ०—काढ कटारौ राणाजी वैठिया, त्यौ मीरा नै मार। इत मारा उत दोस लगै, कोई छत्री-धरम घट जाय।—मीरा

छत्रीवट-स०पु० [स० क्षत्रियवर्ती] क्षत्रवट क्षत्रियत्व, रजपूती।

उ०—रटत लखा कव लोक जस आज रा, 'चुड' ग्ज छत्रीवट साज रा जोस छवता।—आईदान सोदौ

छत्रीस—देखो 'छतीस' (रू भे)। उ०—खागि त्यागि सौभागि, वस छत्रीस तणा गुर।—वचनिका

स०पु०—क्षत्रिय वश, क्षत्रिय कुल।

छत्रीसमौं—देखो 'छतीसमौं' (रू भे)।

छत्रीसू, छत्रीसे—देखो 'छतीसौ' (रू भे)।

छत्रेत-स०पु० [स० छत्र+रा० प्र० एत] छत्रधारी।

उ०—वडा विर-देत करमेत रा वीरवर, अजसै दुरग जोधाण धर ऐत। फरै फिरत अणी सावळ फळा, छळणहारा गिलै तुहिज छत्रेत।
—नरवद

छत्रेस्वर-स०पु० [स० छत्र+ईश्वर] वह जो छत्र धारण करे, छत्रपति।

(स्त्री० छत्रेस्वरी) उ०—अम्बा ! ओयण रीह, छाया राख छत्रे-स्वरी। दिल मझ दोयण रीह, व्यापै ताप न वीस हथ।—अज्ञात

छदम-स०पु० [स० छद्म] छल, कपट (ह ना)

छद-सं०पु० [स० छद्म] १ कपट छल (अ मा) [स० छद]

२ पत्र पत्ता (अ मा) ३ कागज, पत्र (डि को) उ०—जमी न पह पीठाण जिण, रद छद जेम रुळेह। वेखे कुण कठ विहड वन, सुळगै किना सुळेह।—रेवतसिंह भाटी

४ पख ५ आच्छादन, आवरण, ढकने की वस्तु।

छदन-स०पु० [स०] १ आवरण, ढक्कन. २ पख ३ पत्र, पत्ता (डि को) उ०—छदन कोरणी दार फूटरा कूट कूटाळा।

४ पत्ते की नस।
—दसदेव

छदम-स०पु० [सं० छद्म] छिपाव, दुराव, कपट, छल। उ०—सरम्म ना सुहाई सून्य छदम छेकाछेकी तें।—ऊ का.

छदमस्ती-वि०—मस्त, शौकीन।

छदमी—देखो 'छद्मी' (रू भे) उ०—परमेसर पाखे आ अभिलाखे छदमी क्यू छूटदा है।—ऊ का

छदर-स०पु० [स० छिद्र] १ ढोग, आडम्वर, पाखड २ छल, कपट।

छदाम-स०स्त्री०—१ पैसे का चौथाई भाग।

कहा०—छदाम री छाजळी टको गठाई री—छदाम का तो सूप और उसकी गठाई एक टक्का। अर्थात् जव कम कीमत की वस्तु या कम लाभ के लिए अधिक व्यय हो तव यह कहावत कही जाती है।

२ एक प्राचीन तोल विशेष।

छदामौ—देखो 'सुदामौ' (रू भे) उ०—हर हर सुम्मरिया हरै, सत छदामा सारसा कोडीधज्ज कियाह।—ह र

छप-सं०पु०[सं०] कपट, छल। उ०—उठै फौज री हाजरी दीठि आता, अमाई बिना मूनरा छप बाता।—व भा

यौ०—छद्मघातक, छद्मवेषी।

छपघातक-सं०पु०— छल से घात करने वाला, धूर्त। उ०—तिण समय बादसाह अजमेर रै मारग छपघातक भेजिया।—व भा

छपी-वि० [सं० छद्मिन्] १ असली रूप छिपा कर बनावटी वेष धारण करने वाला, छली, कपटी २ ढोंगी, पाखंडी।

छद्म-सं०पु० [सं० छद्म] १ छिपाव, गोपन २ आडम्बर, दिखावा ३ छल, कपट।

छनकणौ, छनकबौ-क्रि०अ०—तीर का वेग से चलने के कारण सन-सन की ध्वनि का होना। उ०—ननकिय सायक घोर करूर, भनकिय भाभर रभनि भूर। छनकिय तीर वरच्छनि छोह, ननकिय वोह चिनवनि लोह।—रा रा.

छन—देखो 'क्षण' (रू.भे)। उ०—छन मुरछा छन चेतना सीतावरजी, कोई छन छन छीजे देह प्यारा रघुवरजी।—गी. रा

छनीछर—देखो 'सनिचर'। उ०—डाकोतियै सनै गिरै-गोचर देखाय नै छनीछरजी री दान कियौ।—वरसगाठ

छनीछरियौ—देखो 'सनिचरियौ' (रू.भे)।

छपई—देखो 'छप्पय' (रू भे)।

छपकौ-सं०पु०—१ पानी का बड़ा छींटा २ पानी मे कूद कर या गिर कर हाथ पैर मारने की क्रिया या भाव अथवा पानी मे इस प्रकार कूदने से होने वाली ध्वनि।

छपटणौ, छपटबौ-क्रि०अ०—चिपकना, किसी वस्तु से लगना या सटना।

छपटणहार, हारौ (हारी), छपटणियौ—वि०।

छपटाडणौ, छपटाडबौ, छपटाणौ, छपटाबौ, छपटावणौ, छपटावबौ—क्रि०स०।

छपटिग्रोड़ौ, छपटियोड़ौ, छपटचोड़ौ—भू०का०कृ०।

छपटीजणौ, छपटीजबौ—भाव वा०।

छपटाणौ, छपटाबौ-क्रि०स०—१ चिपकाना, किसी वस्तु से सटाना २ आलिंगन करना, सीने से लगाना।

छपटाणहार, हारौ (हारी), छपटाणियौ—वि०।

छपटायोड़ौ—भू०का०कृ०।

छपटाईजणौ, छपटाईजबौ—कर्म वा०।

छपटणौ—अक० रू०।

छपटायोड़ौ-भू०का०कृ०—चिपकाया हुआ, सटाया हुआ २ आलिंगन कराया हुआ। (स्त्री० छपटायोड़ी)

छपटियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ चिपका हुआ, सटा हुआ २ छाती से लगा हुआ। (स्त्री० छपटियोड़ी)

छपटी-सं०स्त्री०—किसी लकड़ी को छीलने से उस पर से दूर होने वाला छिलका या टुकड़ा।

छपणौ, छपबौ-क्रि०अ०—१ छपना, चिह्नित होना, अंकित होना २ छापेखाने मे मुद्रित होना ३ देखो 'छिपणौ' (रू भे)

उ०—जो पा'ड दसी चाल्या। आगै चोर पा'ड माहे था। जदी विचै जाता मात चोर मिळ्या। जदी ई छपवा लागा।
—पचमार री वात

छपणहार, हारौ (हारी), छपणियौ—वि०।

छपाडणौ, छपाडबौ, छपाणौ, छपाबौ, छपावणौ, छपावबौ—क्रि०स०।

छपिग्रोड़ौ, छपियोड़ौ, छपचोड़ौ—भू०का०कृ०।

छपीजणौ, छपीजबौ—भाव वा०।

छपद-सं०पु० [सं० षट्पद] भौंरा, भ्रमर। उ०—सिंधुर मदभर सिद्ध रा, ऊसेडै वणराय। तज कावेरी कमळ वन, छपदा लीधा छाय।—बा दा.

छपन-वि०—देखो 'छप्पन' (रू भे)।

सं०पु०—५६ की संख्या।

छपनमौं—देखो 'छप्पनमौं' (रू भे)।

छपनिया-सं०स्त्री०—राठौड़ वंश की एक उपशाखा।

छपनियौ-सं०पु०—राठौड़ वंश की 'छपनिया' उपशाखा का व्यक्ति।

वि० [सं० षटपत्र] छः पत्तो वाला।

छपनें'क-वि०—५६ के लगभग।

छपनौ-सं०पु०—५६ वा वर्ष।

छपन्न—देखो 'छप्पन' (रू भे) उ०—जपै पग कोटि छपन्न जादव्व, वदै गुरुदेव जिसा वैसव्व।—ह र

छपय-सं०पु० [सं० षट्पद] १ भ्रमर, भौंरा २ देखो 'छप्पय' (रू.भे.)

छपरडौ—देखो 'छपरौ' (अल्पा०, रू भे)

छपर—देखो 'छपरौ' (मह०, रू भे)

छपरबंदी-सं०स्त्री०—छप्पर छाने का कार्य या इस कार्य की मजदूरी।

छपरियौ—देखो 'छपरौ' (अल्पा०, रू भे)

छपरी-सं०पु०—१ ऊट की एक जाति विशेष या इस जाति का ऊट। उ०—सू ऊठ किण-किण दिसावर रा छै ? काछी, बोदला, छपरी, बगरू, जाळोरी, बलोची, सिववाडिया, खाडाळिया और ही अनेक जात भात रा ऊठ छै।—रा सा स

२ देखो 'छपरौ' (अल्पा०, रू भे)

छपकौ—देखो 'छपाकौ' (रू भे)

छपरौ-सं०पु०—घास-फूस आदि से छाई हुई मकान की छत या ऐसी छत का खुला स्थान जो धूप व वर्षा से सुरक्षा के लिये बनाया जाता है। उ०—सु कोटवाळजी री हवेली हिरण बाधियौ दीठौ। एक छपरौ तिण मे जिनावरखानौ है तठै बाधियौ दीठौ।—द दा

क्रि०प्र०—करणौ, छाणौ, बणाणौ।

अल्पा०—छपरडौ, छपरियौ, छपरी, छप्प रडौ, छप्परियौ, छप्परी।

मह०—छपर, छप्पर।

छपा-सं०स्त्री० [सं० क्षिपा] रात, रात्रि, निशा। उ०—गैरण तारौ तूटौ छपा छूटौ कै तोप नू गोळी, चला गू वछूटौ बांण नारग चटेल। जोगी जटा घटा हू त छुटौ वीरभद्र जाणै, असे रूप आय जुटौ नाहतौ अठेल।—फतेसिंह महड़

रू०भे०—छिपा।

छपाई-स०स्त्री०—१ छापने की क्रिया या इस कार्य की मजदूरी २ मुद्रण, अंकन।

छपाकर-स०पु० [स० क्षिपाकर] चंद्रमा (डिं को)

छपाको-स०पु०—१ पानी मे जोर से कूदने या किसी वस्तु के जोर से गिरने पर उत्पन्न होने वाला शब्द।

क्रि०प्र०—करणी, मारणी।

२ पानी का बडा छींटा जो जोर से उछाल कर या फेंक कर लगाया जाता है।

क्रि०प्र०—देणी, लगाणी, लागणी।

३ पित्त की अधिकता से शरीर पर पडने वाला चकत्ता, एक प्रकार का रोग विशेष।

रू०भे०—छपको, छबको।

छपाखानो—देखो 'छापाखानो' (रू भे)।

छपाडणो, छपाडबो—१ देखो 'छिपाणो' (रू भे)।

२ देखो 'छपाणो' (रू भे.)।

छपाडणहार, हारो (हारी), छपाडणियो—वि०।

छपाडिग्रोडो, छपाड़ियोडो, छपाडचोडो—भू०का०कृ०।

छपाडीजणो, छपाड़ीजबो—कर्म वा०।

छपणो—अक० रू०।

छपाणो, छपाबो, छपावणो, छपाववो—रू०भे०।

छपाडियोडो—देखो 'छपायोडो' (रू भे) (स्त्री० छपाडियोडी)

छपाणो, छपाबो-क्रि०स०—छपाना, मुद्रित कराना २ प्रकाशित कराना ३ देखो 'छिपाणो' (रू भे)

छपाणहार, हारो (हारी), छपाणियो—वि०।

छपायोडो—भू०का०कृ०।

छपवाणो, छपवावबो—प्रे०रू०।

छपाईजणो, छपाईजबो—कर्म वा०।

छपणो—अक० रू०।

छपायोडो-भू०का०कृ०—१ छपाया हुआ, मुद्रित कराया हुआ २ प्रकाशित कराया हुआ. ३ छिपाया हुआ। (स्त्री० छपायोडी)

छपावणो, छपाववो—देखो 'छपाणो' (रू भे)। उ०—जद परधांन कहै। खोटी वणी मैं तो मोहे राजा आगै भाड करसी। जद परधांन रजपूताणी है, कहै मोहे कठे छपाव।—कागा रजपूत री वात

छपावणहार, हारो (हारी), छपावणियो—वि०।

छपाविग्रोडो, छपावियोडो, छपाव्योडो—भू०का०कृ०।

छपावीजणो, छपावीजवो—कर्म वा०।

छपणो—अक० रू०।

छपावियोडो—देखो 'छपायोडो' (रू भे) (स्त्री० छपावियोडी)

छपियोडो-भू०का०कृ०—छपा हुआ, मुद्रित, प्रकाशित। (स्त्री० छपियोडी)

छपै, छप्पई—देखो 'छप्पय' (रू भे) उ०—नगारू की घोर नकीबू के हाके छपै कपोलू क्रीला करते छुट्टै छछाळ छाके रज डवर का पूर चढि ढके भाण।—सू प्र.

छप्पन-वि० [स० षट्पञ्चाशत्, प्रा० छप्पण्णा] पचास से छः अधिक। स०पु०—१ ५६ की सख्या। २ देखो 'छप्पनगिर' (रू भे.)

उ०—दुरग खडे दक्खिण दिसा, अकवर सूं हित आख। कर घर गुज्जर जीमणै, छप्पन वामे राख।—रा.रू.

छप्पनगिर-स०पु० यौ०—मारवाड राज्य के सिवाना तहसील का प्रसिद्ध पहाड।

छप्पनमौं-वि०—५६वा।

छप्पनेक-वि०—छप्पन के लगभग।

छप्पनौ—देखो 'छपनो' (रू भे.)

छप्पय-स०पु० [स० षट्पद] १ छ चरणो का एक मात्रिक छद। इसमे प्रथम चार पद रोला छद के तथा अतिम दो पद उल्लाला छद के होते हैं। इसके लघु गुरु क्रम से कुल ७१ भेद होते हैं।

१ अजै (अजय) २ इदु (इद) ३ कद. ४ कनक ५ कमळ ६ कमळाकर. ७ करण (करन) ८ करतळ ९ कुजर १० कुरम्म (कोम) ११ कुसुम १२ कोकिल (कोइल) १३ ऋरण. १४ गगन. १५ गरुड १६ ग्रीखम. १७ चदण (स० चंदन) १८ जगम. १९ तालक २० दाता २१ दीप. २२ धवळ. २३ ध्रुव २४ नर २५ नवरग २६ पयोधर (पयोहर) २७ बळी (बळ) २८ बुध (बुधी) २९ वेताळ (वैताल, विताळय) ३० ब्रहम ३१ ब्रहमजळ (ब्रिहनट) ३२ भ्रमर ३३ मकर. ३४ मछ (मत्स्य) ३५ मद ३६ मदन ३७ मनोहर ३८ मरकट (मरक्कट) ३९ मेघ ४० मेर (मेरु) ४१ यजगम (अजगम) ४२ यूतिस्ट ४३ रजण (रजन) ४४ रतन. ४५ खर ४६ वारण. ४७ विजै (विजय) ४८ वीर. ४९ वसू. ५० सेख (सेस) ५१ सव्द ५२ समर ५३ सर (सरस) ५४ सरभ ५५ सल्य. ५६ ससि ५७ सारग. ५८ सारद. ५९ सारदूळ ६० सारस ६१ सिंघ (सिंह) ६२ सिद्ध (सिध) ६३ सुग्रान (स्वान) ६४ सुभकर ६५ सुमण. ६६ सुसर. ६७ सूर ६८ सेखर ६९ हर ७० हरि ७१ हीर।

उपरोक्त भेदो के अतिरिक्त डिंगल साहित्य मे २२ प्रकार के भेद और मिलते है जो निम्न हैं—

१ अहर-अळग २ एकळ वयण ३ कमळवध. ४ करपल्लव. ५ कुडळियो ६ चौटियो ७ चौप ८ छत्रबध ९ जातासख. १० ताळूरव्यव ११ नाट १२ नीसरणीवध १३ वळता-सख. १४ मझ अ०खरी. १५ मुगताग्रह १६ लघुनाळीक १७ विधानीक. १८ वेधहीरा १९ वधनाळीक. २० सकळ २१ समवळ २२ हल्लव।

[स० षट्पद] भ्रमर, भौंरा।

रू०भे०—छपई, छपय, छपै, छप्पई, छर्प्प।

छप्पर—देखो 'छपरौ' (महत्व०) (रू भे)

छप्परडौ, छप्परियौ—देखो 'छपरौ' (अल्पा०, रू भे.)

कहा०—भगवान देवै जद छप्पर फाड नै देवै—ईश्वर का सहारा अनायास ही प्राप्त होता है।

छप्पै—देखो 'छप्पय' (रू.भे)

छप्रभग-स०स्त्री० घोडे की पीठ पर बैठने के स्थान पर की भौंरी (अशुभ, शा हो)

छब-वि०—सब, सर्व, समस्त।

स०स्त्री०— छवि, शोभा। उ०—माथा नै मैंमद अधक विराजै, तो रमडी री छब न्यारी जी।—लो गी

छब-अजब-म०पु०—एक प्रकार का घोडा (शा हो.)

छबकाळ-स०पु०—डिंगल मे एक प्रकार का साहित्यिक दोष जिसमे छद रचना मे दूसरी भाषाग्रो के शब्दो का प्रयोग होने पर माना जाता है।

वि०—जिसमे दाग व छबके हो।

रू०भे०—छवकाळ।

छबकाळी-वि०स्त्री० (पु० छबकाळो) चित्र-विचित्र, रग-बिरगे चिन्ह-युक्त। उ०—मोरियो मुजरो कर बोल्यो, साभ री जाभ पडी भण-कार। छबकाळी ढेंढाणी धर सीम, चाली विणघट नै पिणिहार।

—सांभ

छबकौ-स०पु०—चकत्ता, धब्बा, दाग।

छबड—देखो 'छाब' (मह० रू भे)

छबडल्ली—देखो 'छाब' (अल्पा०, रू भे.)

छबडल्लो-स०पु०—देखो 'छाब' (अल्पा०, रू भे)

छबडि—देखो 'छाब' (अल्पा०, रू भे)

छबडियौ-स०पु०—देखो 'छाब' (अल्पा०, रू भे.)

छबडी—देखो 'छाब' (अल्पा०, रू.भे)

छबडो, छबड्यौ-स०पु०—देखो 'छाब' (अल्पा०, रू भे)

उ०—महंदी तो चूटण धण गई, सोनै री छबडो जी हाथ, सोदागर महदी राचणी।—लो गी

छबजाण-स०पु० [स० सर्वज्ञ] ईश्वर।

वि०— सारी बातें जानने वाला। सर्वज्ञ।

छबणौ-स०पु०—दरवाजे की चौखट के ऊपरी भाग पर लगाया जाने वाला गढा हुआ पत्थर या लकडी का पाटा जो चौखट के ऊपर की लकडी के बराबर होता है और उस पर पूरा दबाव रखता है।

छबणौ, छबबौ-क्रि०अ०—१ स्पर्श होना, छूना। उ०—उरस छबता थका आवियो अडाकी ग्रावता असुर रघुवीर ग्रागा कोप लोयण किया।—र.रू

२ छवि देना, शोभा देना, फबना. ३ छाया जाना, आच्छादित होना।

छबभुत-वि० [स० अद्भुत] विचित्र, अद्भुत।

छबर-छबर-स०स्त्री० [स० शबर] नत्र जल-धारा, अश्रु-प्रवाह।

छबल—१ देखो 'छाब' (मह० रू भे)

२ देखो 'छावली' (मह० रू भे)

छबलडी—१ देखो 'छाब' (अल्पा०, रू भे)

२ देखो 'छावली' (अल्पा०, रू.भे.)

छबलडौ-स०पु०—१ देखो 'छाब' (अल्पा०, रू भे)

२ देखो 'छावली' (अल्पा०, रू.भे)

छबलि—१ देखो 'छाब' (अल्पा०, रू भे)

२ देखो 'छावली' (रू.भे)

छबलियौ-स०पु०—१ देखो 'छाब' (अल्पा० रू.भे)

२ देखो 'छावली' (अल्पा०, रू भे)

छबली—१ देखो 'छाब' (अल्पा०, रू भे)

२ देखो 'छावली' (रू भे.)

छबलौ, छबल्यौ-स०पु०—देखो 'छाब' (अल्पा०, रू भे) उ०—हरे बास रा दोय छबल्या मगावो, नीचो गाल ग्यारी मांग चुटाग्रो।—लो गी.

२ देखो 'छावली' (अल्पा०, रू भे)

छबा—देखो 'सभा' (रू भे) उ०—छजत भूपती छबा, सलांम भूपती सजै। कपूर पानदान केक, रासि भूपती रजै।—सू प्र

छबि-स०स्त्री० [स० छवि] १ शोभा, कान्ति। उ०—छबि नवी नवी नव नवा महोच्छव, मदिर्ये जिणि आणद मई। कातिग घरि घरि द्वारि कुमारी, थिर चित्रंति चित्राम थई।—वेलि

२ प्रभा, किरण. ३ सौन्दर्य ४ तस्वीर, चित्र। उ०—पछै आपरी छवि मगाय नै दीवी जे इणरो सदा दरसण करिजै, सेवा कीजै इतरा मे हू आऊ ही छू।—कुवरसी सांखला री वारता

५ रूप, स्वरूप। उ०—आई देखन मनमोहन कौ, मोरे मन मे छबि छाय रही। मुख पर का ग्राचल दूर किया, तब ज्योति मे ज्योति समाय रही।—मीरां

रू०भे०—छवी, छवि, छवी।

छबिलौ-स०पु०—१ एक प्रकार का घोडा (शा हो.)

२ देखो 'छबीलौ' (रू भे)

छबी—देखो 'छवि' (रू भे.) उ०—हेकण हलवाई री दुकान मांही पदमसिहजी री छबी जडी थी सो निराठ दुरस्त थी।

—पदमसिंह री बात

छबीनौ-स०पु०—रात्रि मे सेना के चारो ओर चक्कर लगाने वाला घुड-सवार। उ०—तिण समय चद्रमा रै चारो तरफ परिवेस रै प्रमांण भाले सिहदेव साठि हजार सेना सू स्वकीय स्वामी रा सिविर रै छबीनां रो चक्र चलायो।—व भा

छबीलावार-स०पु०—एक प्रकार का घोडा (शा हो)

छबीलौ-वि० [स० छविल्] १ सुदर, मनोहर, सजाधजा, बनाठना।

उ०—सील सजीलो रूप रसीलो छैल छबीलो छावै। नील जळज तव छटा निराळी, लख-लख काम लजावै।—गी रा

(स्त्री० छवीली) २ शौकीन। उ०—ग्रथ कवरी रै पत्री मिद्ध स्री लग्न री लडी, जीव री जडी, सजीली, फबीली, नजीली, छबीली, रमकीली, लकीनी, कमकीली, छकीली, लटकीली, चकीली, चटकीली, बत्तीम्लछणी, चौमट कळा विचछणी, केळरमव्यारी, प्राणप्यारी, जिण सू माहरी निज नेह, दुरम भात री छजै देह।

(र हमीर)

छबू–स०पु०—एक प्रकार का सुगधित पुष्प।

छबोल–स०पु०—१ देखो 'छाव' (मह०, रू भे) २ देखो 'छावली' (मह०, रू भे)

छबोलडी—१ देखो 'छाव' (ग्रल्पा०, रू भे) २ देखो 'छावली' (ग्रल्पा०, रू भे)

छबोलडौ–स०पु०—१ देखो 'छाव' (ग्रल्पा०–रू भे) २ देखो 'छावली' (मह०, रू भे.)

छबोलि—१ देखो 'छाव' (ग्रल्पा०, रू भे) २ देखो 'छावली' (रू भे)

छबोलियौ–स०पु०—१ देखो 'छाव' (ग्रल्पा०, रू भे) २ देखो 'छावली' (ग्रल्पा०, रू भ)

छबोली—१ देखो 'छाव' (ग्रल्पा०–रू भे) २ देखो 'छावली' (रू भ)

छबोलो, छबोल्यौ—१ देखो 'छाव' (ग्रल्पा०, रू.भे) २ देखो 'छावली' (ग्रल्पा०, रू भे)

छब्बीस—देखो 'छाईस' (रू.भे)

छब्बीसमौं–वि०—छब्बीसवा।

छब्बीसे'क–वि०—छब्बीस के लगभग।

छब्बीसौ–स०पु०—२६वा वर्ष।

छब्बौ–स०पु०—टोकरा। उ०—काल कोई तौ कैवतौ हौ कै एक जणौ भुजिया री छब्बौ ले जावतौ हौ जकौ मऊ खोस लियौ।

—वरसगाठ

छभट्ठिय–स०पु०—हाथी का गड-स्थल। उ०—चवै मद पूर छभट्ठिय राह, मनौ वरसै घन भद्दव माह।—ला रा

छभा—देखो 'सभा' (रू भे) (ग्र मा)

उ०—१ मभि छभा राज मभारि, नव उछब इम नर नारि।—सू प्र

उ०—२ दरियाव का पूर, छभा का दरसाव। पोसत की त्राडी, फुलवाद का वणाव।—सू प्र

छमक–स०स्त्री०—पायलो की ध्वनि विशेष, झनकार।

छमटा–स०स्त्री०—ग्राग की लपट। उ०—रोमच ग्रग धोम रूप ब्रह्म, तेज मे वर्णं। जटास छमटा जडागि ग्राग नेत्र ऊफणं।—सू प्र

छम–स०स्त्री० (ग्रनु०) घुघरू बजने ग्रथवा वर्षा होने से उत्पन्न छम-छम की ध्वनि।

वि० [स० क्षम] समर्थ, बलवान। उ०—उमादत्त चहुवाण छत्र धारियौ समर छम। प'णी गोहिल पुज सुता ललितापुर सक्रम।

—व भा

छमकणौ, छमकबौ–क्रि० ग्र०स०—१ गहनो की भकार होना, ध्वनि करना, छमकना २ घुघरू ग्रादि को हिला हिला कर छम-छम की ध्वनि करना। ३ कडकडाते घी या तेल मे हीग, मीर्च, जीरा, राई, लहसुन ग्रादि मिला कर दाल, कढी ग्रादि मे डालना, छौंकना, छौका लगाना, बघारना. ४ कडकडाते घी या तेल मे भूनने के लिए कच्ची सब्जी डालना।

छमकणहार, हारौ (हारी), छमकणियौ—वि०।

छमकवाडणौ, छमकवाडबौ, छमकवाणौ, छमकवाबौ, छमकवावणौ, छमकवावबौ—प्रे०रू०।

छमकाडणौ, छमकाडबौ, छमकाणौ, छमकाबौ, छमकावणौ, छमकावबौ—क्रि०स०।

छमकिग्रोडौ, छमकियोडौ, छमक्योडौ—भू०का०कृ०।

छमकोजणौ, छमकीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

छमकाणौ, छमकाबौ–क्रि०स० ('छमकणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ छमकने का कार्य दूसरे मे कराना, छमकाना २ छौकने का कार्य दूसरे से कराना, छौंकाना।

छमकाणहार, हारौ (हारी), छमकाणियौ—वि०।

छमकायोडौ—भू०का०कृ०।

छमकाईजणौ, छमकाईजबौ—कर्म वा०।

छमकायोडौ–भू०का०कृ०—१ छमकाया हुग्रा २ छौंकाया हुग्रा, बघार लगवाया हुग्रा। (स्त्री० छमकायोडी)

छमकारणौ, छमकारबौ—देखो 'छमकाणौ' (रू भे) उ०—राईता मिरीता खाटा खारा मीठा गळया तीखा तमतमा तळ्या वघारचा छमकारचा पुगारचा।—भोजनविच्छित्ति

छमकावणौ, छमकावबौ—देखो 'छमकाणौ' (रू भे) उ०—तदनतर मुग वडी, उडद वडी, छमका वडी, पलेह वडी, सउतली वडी, माहिनु चीर, छमकावी डोडी, खाईया टळटळता टीडरा, भलि वाल हुलि।

—विविध व०

छमकावणहार, हारौ (हारी), छमकावणियौ—वि०।

छमकाविग्रोडौ, छमकावियोडौ, छमकाव्योडौ—भू०का०कृ०।

छमकावीजणौ, छमकावीजबौ—कर्म वा०।

छमकावियोडौ—देखो 'छमकायोडौ' (स्त्री० छमकावियोडी)

छमकियोडौ–भू०का०कृ०—छमका हुग्रा छौंका हुग्रा।

(स्त्री०—छमकियोडी)

छमकौ–स०पु०—१ बघार, तडका, छौंका २ नूपुर या पैरों के ग्राभूपरा की ध्वनि। उ०—वाका नैणा री भोक नाखती पायल रै ठमकै सू, घूघरै रै घमकै सू, विछिया रै छमकै सू, रमझोळ करती, ग्रगूठा मोडती, नखरा करती बाजारि चाली जाये छै।—रा सा स

छमच्छर–स०पु० [स० सवत्सर] सवत, सन्, साल, वर्ष।

रू०भे०—छमछर।

छमछम–स०स्त्री० (ग्रनु०) १ घुघुरू हिलाने व चलने से पैरो के ग्राभूपणो से उत्पन्न होने वाली ध्वनि, छमछमाहट २ मजीरा।

क्रि०वि०—छमछम शब्द के साथ।

छमछमणो, छमछमबौ-क्रि०अ०—छमछम का शब्द होना।

उ०—कळकळता कोसभा, सुडहुडती साफळी, उसउसता ढोडिका, छमछमती भाजी, चमचमता चीभडा।—वि व.

छमछमाणो, छमछमावौ-क्रि०स०—१ छम-छम शब्द करना २ छम-छम शब्द करते हुए चलना।

छमछर—देखो 'छमच्छर' (रू भे)

छमछरी-स०स्त्री० [स० सवत्सर+रा० प्र० ई] १ मृत्यु दिवस या दाग तिथि के पश्चात् आने वाला वार्षिक दिन २ आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी से भाद्रपद शुक्ला चतुर्दशी तक कुछ कुछ अन्तर देकर किया जाने वाला व्रत (जैन)।

छमा—१ देखो 'क्षमा' (रू भे) २ देखो 'छमास' (रू.भे., ह ना, अ मा)

छमाई—देखो 'छमासी' (रू.भे)

छमाछम-स०स्त्री० (अनु०) गहने बजने या वर्षा होने से उत्पन्न छम-छम शब्द, छमछमाहट।

क्रि०वि०—छम-छम ध्वनि के साथ।

छमायो-वि०—छ माह के गर्भ से उत्पन्न होने वाला।

क्रि०प्र०—जाणो, पडणो, होणो।

रू०भे०—छमासियो।

छमास-स०पु० [स० षाण्मातुर अथवा षड्मातृक] १ स्वामी कार्तिकेय।

रू०भे०—छमा।

२ छ माह की अवधि, आधा वर्ष।

छमासियो—देखो 'छमायो' (रू भे)

छमासी, छमाही-स०स्त्री० [स० षट् मासी, षण् मासी] १ किसी मृतक की मृत्यु के उपरात छठे मास मे उसके सबधियो द्वारा किया जाने वाला श्राद्ध।

वि०वि०—कही-कही यह छमासी का श्राद्ध अपनी सुविधा के अनुसार छ मास की अवधि के अन्दर कभी भी कर लिया जाता है।

वि०स्त्री० (पु० छमासियो) १ छ. माह के गर्भ काल मे उत्पन्न होने वाली छ मास सम्बन्धी (जो छ मास या अर्द्ध वर्ष के उपरात हो)

छमुख-स०पु० [स० षट्+मुख] षडानन, कार्तिकेय।

छमो-वि०—छठा।

छम्माछोळ-स०पु०—उपद्रव, उत्पात।

कहा०—ढढ वाळी छम्माछोळ है—निर्जन स्थान पर होने वाली प्रेत अथवा मायावी लीला।

छयल, छयलु, छयल्ल—देखो 'छैल' (रू भे) उ०—१ तठा उपराति करिनै भोगिया भमर लजा छयल हुसनाक जुवान निजरबाज वाजार माहे ऊभा जोहा खाये छै।—रा.सा स. उ०—२ इसउ वचनु तव बोलइ, काम गहिल्लिय नारि। छयलु छराळउ छावउ, छई कोइ नयर मभारि।—प्राचीन फागु सग्रह उ०—३ इसी छयली वणजारटी, नियसइ तीणइ देसि। वालभु विणिजिहि चालियउ, मूगिय जोवन वेसि।—प्राचीन फागु सग्रह उ०—४ निजरां रा झडाका लागा थकां जुवानां छयल्लां रा मन गरेदवाज करै छै।

—रा.सा स

छया-स०स्त्री०—छाया।

छयाणवइ—देखो 'छिनू' (रू भे) उ०—छड दरसण छयाणवइ, पाखड का आधार।—वचनिका

छयाळी—देखो 'छियाळी' (रू भे)

छयाळी, छयाळो—देखो 'छियाळीसो, छियाळो' (रू.भे.)

छयासियो—देखो 'छियासियो' (रू भे)

छयासी—देखो 'छियासी' (रू भे)

छयासीमों—देखो 'छियासीमों' (रू भे)

छरडी-स०स्त्री०—होली जलने के बाद दूसरे दिन का उत्सव।

छर-स०पु० [स० क्षर] १ सिंह के अगले पैर का पजा।

उ०—ओ सादूळो ऊठळै छर ऊढग घर छोह। गाजे ऊळहर गयण मे, जाय अठहतै सोह।—बा दा

२ कलक, दोष।

स्त्री० (अनु०) छर्रों या कणो के वेग के साथ निकलने की ध्वनि।

यौ०—छर-छर।

छरछर-स०पु०यौ०—छर्रों या कणो का वेग से निकलने या दूसरी वस्तु पर गिरने से होने वाला शब्द।

छरछराणो, छरछरावौ-क्रि०अ०—देखो 'चरचराणो' (रू भे)

छरछराहट-स०स्त्री०—छर्रो या कणो के वेग के साथ निकलने या अन्य वस्तु पर गिरने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि. २ देखो 'चरचराहट' (रू भे)

छरणी-स०स्त्री०—बढ़ई का औजार विशेष।

छरदी-स०स्त्री० [स० छर्दि] १ वमन, कै (अमरत) २ देखो 'सरदी' (रू भे)

छरमर-स०पु०—वर्षा होने से उत्पन्न शब्द, झरमर का शब्द।

छर्रो-स०पु०—१ ककड व रेत कण का छोटा टुकड़ा २ बदूक मे बारूद के साथ भर कर चलाने का लोहे या शीशे का छोटा कण ३ पहाडो से प्राप्त होने वाली छोटी ककरी जिसे सीमेंट मे मिला कर फर्श बनाने के काम मे लिया जाता है।

छरहरो-वि०—दुबला, पतला।

छराप—देखो 'सराप' (रू भे.)

छराळउ-वि०—मस्त। उ०—इसउ वचनु तव बोलइ, कामगहिल्लिय नारि। छयलु छराळउ छावउ, छइ कोइ नयर मझारि?

—प्राचीन फागु-सग्रह

छराळो-स०पु०—१ सिंह का बच्चा २ सिंह।

छरेरी—देखो 'छिरेटी' (रू भ.)

छरेळ-स०पु०—१ सिंह २ योद्धा, वीर।

छरो-स०पु०—१ सिंह का पजा। उ०—छोह घणे ऊछज छरा, केहर फाडै हाथ। ऐरावत कुळ ऊपरा, मीच मडीजै नाथ।—बां.दा

२ कलक, दोष ३ हाथ। उ०—१ सू सुरताणि 'ईसरै' समहरि, लोह छरा गैतूळा लाइ। भुज पाणि उपाडै माराथि, ब्रहमड साम्हा चाढै वाइ।—ईसरदास मेडतिया रौ गीत

उ०—२ छळि साहि तणँ ग्राहि खाग छरा, धूंसै चढि लीध वलक्क धरा।—वचनिका

३ तलवार ४ इजारवद, नाडा ५ देखो 'छडौ' (रू.भे.) ६ ग्राक, सन ग्रादि की छाल की हाथ से बँटी हुई रस्सी।

छलग—स०स्त्री० —छलाग, फलाग।

छळ—स०पु० [स० छल] १ वास्तविक रूप को छिपाने का भाव, कपट, धोखा, ठगपन। उ०—कथ म राखौ कायरा, करै नजर जो कोड। दोयण दळ बीटो दिया, छळ कर जावै छोड।—बा दा.

क्रि०प्र०—करणौ, रचणौ।

यौ०—छळकपट, छळछड, छळछद, छळवळ।

२ युद्ध, रण। उ०—१ पण धारियौ वडौ पडिहारा, 'ग्रजन' दळा छळ ग्रागळयारा।—रा रू.

उ०—२ तेज पुज कमधज्ज सभा जम सज्भ भयकर, ग्रमर वस ग्रापाण जाण लका छल वदर।—रा रू

यौ०—छळभोम।

३ वार, प्रहार। उ०—जुध जागिया भला जोधावत, तै दोय छळ तरवार तणा।—राव वीका रौ गीत

[स० शाड्=श्लाघायाम्] ४ यश, कीर्ति। उ०—१ कूजरदस दूण करण कव पाता, निय कुळ छळ ग्राप तै नियाय। खिजियै ग्रेक न दीना खाना, रीझियै दिया जगळधर राय।—सावळ वीठू

उ०—२ पातल रा छळ जाग पतावत, ग्ररसी रा छळ ग्रागै। यळ जसरात जनमियौ 'ग्रमरा', जमा रात नह जागै।

—राणा ग्रमरसिंह रौ गीत

५ रक्षा, वचाव। उ०—पोह काज गऊ छळ भोम न पडियौ, ग्रर धारा ग्रावटियौ ग्रग। 'चापौ' चच ग्रीधण चढियौ। नासा चर लेगी नीहग।—राव चापा रौ गीत

६ कार्य, सेवा। उ०—१ साह दरगाह वूझियौ, भळै सकळ भर-भार। 'केहर' ज्यू पत छळ करै, समरै तिका ससार।—रा रू

उ०—२ 'चुतरौ' फतमल वोलिया, सकती पुरा सकज्ज। लजनधारै साम छळ, र्त्यां रजवट्ट न लज्ज।—रा रू

[स० छद्] ७ भूषण, गहना। उ०—ग्रे-विध प्रसिध ग्रभिनमी 'वीकौ', छावौ ग्रावि जस वस छळ। रोर गमै उहवाळि रीझियौ, खिझियौ गमै ग्रकाळ खळ।—रा रू ८ ग्रवसर, मौका (पर्व)।

उ०—मिळि माया कियौ मतौ मा जाया, दळ वळ छळ ग्राया दुरित। गाया गया जीविया कुण गत, गाया लारा मुवा गत।

—बदरीसिंघ नै ग्रनोपसिंघ भाटी रौ गीत

९ मर्यादा, प्रतिष्ठा, मान। उ०—१ वहादुर कुळ छळा रखण सारग विया, केळपुर ऊधरा करा जग सिर किया।

—रावत सारगदेव द्वितीय (कात्तोड) रौ गीत

उ०—२ गोवरधन ग्राजान भुज, साम सुजाव सगाह। रिणमाला छळ रक्खणा, जोधा करण निवाह।—रा रू १० भेद, रहस्य।

उ०—कै 'सोनागिर' कै 'दुरग' कै खीची 'मुकनेस'। ग्रै जाणै छळ साम रौ, जिण थळ रहै नरेस।—रा.रू ११ वहादुरी, शौर्य, पराक्रम।

उ०—घट सोचे डाढी कर घालै, 'मोनग' 'दुरग' तणौ छळ सालै।

—रा रू

१२ गुस्सा, कोप, क्रोध। उ०—पचमजारज इद्र पर, क्यू केसर डकरत। इळ पाळग सिर ग्राफळण, तू छळ व्रथा धरत।—जैतदान वारहठ

वि०—१ श्याम, काला॰ (डि.को) २ श्रेष्ठ।

क्रि०वि०—लिये, वास्ते। उ०—करनोत धरा छळ खीवक्रन्न, महाराज 'ग्रजन' छळ सुद्ध मन्न।—रा रू

रू०भे०—छळ

छळकण—स०स्त्री०—१ छलकने की क्रिया या भाव २ उद्गार।

छळकणौ, छळकवौ—क्रि०ग्र० (ग्रनु०) १ किसी तरल पदार्थ का पात्र के हिलने-डुलने के कारण से उछल कर वाहर ग्राना, छलकना.

२ उमडना। उ०—पालणै हीडै नैना वाळ, मावडी हालरिये हुलराय। कठ मे छळकै नेह ग्रपार, हियै रा हार हिलोळा खाय।—साझ

छळकणहार, हारौ (हारी), छळकणियौ—वि०।

छळकाडणौ, छळकाडवौ, छळकाणौ, छळकावौ, छळकावणौ, छळकाववौ—क्रि०स०।

छळकिग्रोडौ, छळकियोडौ, छळक्योडौ—भू०का०कृ०।

छळकीजणौ, छळकीजवौ—भाव वा०।

छळकाणौ, छळकावौ—क्रि०स०—१ तरल पदार्थ को हिला-डुला कर पात्र मे से वाहर उछालना, छलकाना. २ उमडाना।

छळकाणहार, हारौ (हारी), छळकाणियौ—वि०।

छळकायोडौ—भू०का०कृ०।

छळकाईजणौ, छळकाईजवौ—कर्म वा०।

छळकाडणौ, छळकाडवौ, छळकावणौ, छळकाववौ—रू०भे०।

छळकणौ—ग्रक० रू०।

छळकायोडौ—भू०का०कृ०—१ छलकाया हुग्रा २ उमडाया हुग्रा। (स्त्री० छळकायोडी)

छळकावणौ, छळकाववौ—देखो 'छळकाणौ' (रू भे)

छळकावणहार, हारौ (हारी), छळकावणियौ—वि०।

छळकाविग्रोडौ, छळकावियोडौ, छळकाव्योडौ—भू०का०कृ०।

छळकावीजणौ, छळकावीजवौ—कर्म वा०।

छळकणौ—ग्रक० रू०।

छळकावियोडौ—देखो 'छळकायोडौ' (स्त्री० छळकावियोडी)

छळकियोडौ—भू०का०कृ०—१ छलका हुग्रा २ उमडा हुग्रा। (स्त्री० छळकियोडी)

छळकीजणौ, छळकीजवौ—क्रि० भाव वा०—१ छलका जाना. २ उमडा जाना. ३ चमका जाना।

छळकीजणहार, हारो (हारी) छळकीजणियो—वि० ।
छळकीजिम्रोडो, छळकीजियोडो, छळकीज्योडो—भू०का०कृ० ।
छळकणो—ग्र० रू० ।

छळकीजियोडो—भू०का०कृ०—१ छलका हुआ. २ उमडा हुआ ।
(स्त्री० छळकीजियोडी)

छलड़ो—स०पु०—१ सूत कातने के चरखे मे लगाने का चमडे या लकडी का बना एक उपकरण । चरखे के तकुये मे डाला हुआ चमडे का गोल चक्र २ रेगिस्तान का एक जन्तु विशेष ।
वि०—छ तह किया हुआ, छ लडी किया हुआ (स्त्री० छलडी)

छळछद, छळछद—स०पु०यौ०—छल, कपट, चालबाजी, धूर्तता, ठगपन ।

छळछदी—वि०—कपटी, छली, कपटपूर्ण व्यवहार करने वाला, धोखेबाज, धूर्त ।
रू०भे०—छळ छिद्री ।

छळछळाणो, छळछळावो—क्रि०ग्र०—१ पानी को छल-छल शब्द करते हुए गिराना २ नेत्रो का अश्रुपूर्ण होना ।

छळछळीउ—छिद्रता । उ०—पडित डाहु विद्यावत, नही छळछळीउ कहियाइ सत । गरव न धरइ हईया माहि, सुदर देखी तु प्रवाहि ।
—नल-दवदती रास

छळछळो—वि०—डबडबाया हुआ, अश्रुपूर्ण ।
क्रि०प्र०—करणो, होणो ।
मि०—जळजळो, डबडबो ।
२ लबालब, पूर्ण । उ०—छळछळा पत्र भरि जोगणी छपाई, छत्रधर विनोजी घाघळा छात ।—गिरवरदान सादू

छळछिद्र—स०पु०—मायावी अथवा प्रेत लीला । उ०—ताहरा बहू कह्यो—हे हरमाळा ! अवार तू जाय देख, ओ डेरो छै कै छळछिद्र छै ।
२ कपट, छल । —पलक दरियाव री वात

छळछिद्री—देखो 'छळछदी' (रू भे)

छळण—स०स्त्री०—किसी को छलने या धोखा देने का कार्य । कपट-व्यवहार ।

छळणी—देखो 'चळणी' (रू भे)
वि०स्त्री० (पु० छळणो) छल-कपट करने वाली ।

छळणो—वि०पु० (स्त्री० छळणी) कपट व्यवहार करने वाला, छल करने वाला ।

छळणो, छळवो—क्रि०स०—१ किसी को धोखा देना, किसी के साथ कपट का व्यवहार करना, भुलावा देना, ठगना । उ०—सुता जनक पग न रि समनाई । दुम दगि सुता छळण रजि ग्राई —सू प्र
२ मर्यादा उल्लघन करना, सीमा के बाहर निकलना ।
उ०—[illegible] मुद ग्रहण, रहण पाखर हय राजा । पाजा छळि दळ [illegible], नवल वरसाळ समाजा ।—व भा
३ प्रहार करना, मारना । उ०—[illegible] गज छळतो सीह झापा… ।
—रा रा

४ लहरयुक्त होना, लहलहाना । उ०—महला तळ छळियौ महण, सागर जळ सरसाय । ग्रावै मिळ लजा उठै, पणघट पर पणिहार ।
—सिववगस पालावत

छळणहार, हारो (हारी), छळणियो—वि० ।
छळवाडणो, छळवाडवो, छळवाणो, छळवावो, छळवावणो, छळवाववो, छळाडणो, छळाडवो, छळाणो, छळावो, छळावणो, छळाववो ।
—प्रे०रू० ।
छळिग्रोडो, छळियोडो, छळ्योडो—भू०का०कृ० ।
छळीजणो, छळीजवो—कर्म वा० ।

छळदार—वि०—१ छलछद्म वाला, कपटी । उ०—छळदार होय छाती चढै, ग्रमलदार मुरदार री । ग्रौर तो दार सब ग्रा मिळै, कमी एक छळदार री ।—ऊ का
२ कूटनीतिज्ञ ।

छळ-भोम—स०स्त्री० यौ०—युद्ध-भूमि, समर-भूमि । उ०—पोतका जगत छळभोम न पडियो, ग्रवधारा ग्रावटियो ग्रग । 'चापो' चच ग्रीधा रण चढियो, नासाचर लेगो नीहग ।—राव चापा राठौड रो गीत

छळा—क्रि०वि०—लिये, वास्ते । उ०—माझी सूर ग्रणी कढा सावळा ग्रखाडा मड, धणी छळा ग्रोनाड नमाय खळा धीग । राडीगार धाडा धाडा सउजा सोभाग रीत, ग्रहाडा प्रवाडा जीत दूजा ग्रभैसीग ।
—फतहराम ग्रासियो

छलाग—स०स्त्री०—पैरो द्वारा उछल कर या कूद कर ग्रागे बढने का काम, कुदान, फलाग ।
क्रि०प्र० मारणी, लगाणी ।
मुहा०—छलाग लगाणी—ग्रागे बढना, ऊपर उठना, तरक्की करना ।

छलागणो, छलागवो—क्रि०ग्र० [स० शल्] कूद कर ग्रागे बढ़ना, चौकडी भरना, छलाग लगाना ।

छळाई—स०स्त्री०—छलने का कार्य, धूर्तता, कपट, छल ।

छळावो—स०पु०— छल, कपट, धोखा ।
वि०—फुर्तीला ।

छलास—स०स्त्री०—एक प्रकार की सादी अगूठी जो धातु के तार के टुकडे को मोड कर बनाई जाती है । उ०—समुद्रिका छलास छाप, सो जडाव सग ग । ग्रनेक भौर जाणि ग्राय, रीझ रग राग रा ।
—सू प्र

छळि—देखो 'छळ' (रू भे) उ०—१ घणा वखाणियो सु तेण पौरिस घणो । तेजमलि रहै छळि इसो 'किसनै' तणो ।—हा झा.
उ०—२ सीमोदिया दुरग छळि 'ईसर', धड पड तूटि खेलि खत्र-धोड । विढ पतिसाहि घउा 'वीराउत', रुद्र थानिक पहुतो राठौड ।—ईसरदास मेडतिया रो गीत

छळियो—वि० [स० छलिन्] १ छल करने वाला, धोखेबाज, कपटी ।
उ०—पूछता मुळकाय कह्या यैं बोल सयाणी । छळिया ! पेख्यो तूझ विलमणो नार विराणी ।—मेघ

२ चरखे के तकुये मे लगाया जाने वाला चमडे का बना एक उपकरण ।

छळी-वि०—छल करने वाला, कपटी । उ०—ढेढ नाम सुण पाछा ढळिया, बाट ग्रावता उण हिज वळिया । टाळा ग्रठी उठी नहि टळिया, छळी 'रामले' पाछा छळिया ।—ऊ का

छळु—देखो 'छळ' (रू भे) उ०—सीसु सिखडी तणउ तामु छेदीउ छळु साधीउ, पाप पराभव नइ प्रवेसि गति मागु विराधीउ ।—प प च

छळौ-स०पु०—१ घोडे, गधे या भैंस का पेशाव, २ बकरा । उ०—ग्राप डावौ ग्रनै गिणै काला ग्रवर, खाभलौ कमाई करै खोटी । चराया छळा जिम पान गिणिया चरै, मरण री न जाणै खोड मोटी ।

—ग्रोपो ग्राढौ

छलौ-स०पु०—१ एक प्रकार का रेगिस्तान का जानवर विशेष ।
उ०—मोगरै री वेल केवडै रै तेल सूं केस सुथरो कीजै छै, दातरा, छला रा, चदण रा, चखडी रा कागसिया सू केस सुवारजै छै ।

—रा सा स

२ ग्रगुली मे पहनने का गहना, मु दरी, छल्ला ।
ग्रल्पा०—छलडो (रू.भे) ।

छल्लेदार-वि०—जिसमे मडलाकार चिन्ह या घेरे बने हों ।

छल्लो—१ देखो 'छल्लौ' (रू भे) २ रेशम या तार लपेट कर वनाये जाने वाले नैचे की वदिश मे गोल चिन्ह. ३ सगाई में बेटी के पिता द्वारा लडके के पिता को १ से ५ तक रुपये ग्रौर ४ टके देने का रिवाज (दाधीच ब्राह्मण मा म)

छव-स०पु०—६ की सख्या । उ०—रावळ पण ग्रापरौ साथ हजार छव करनै गयौ ।—नैणसी
स०स्त्री०—छवि, शोभा, सुदरता ।
वि०—छ' । उ०—सीसोदियौ जगमाल राणा उदैसिंघ रौ दत्ताणी काम ग्रायौ जणा १६ सू, लुगाया छव सती हुई ।—वा दा ख्यात
कहा०—छव दात ग्रर मूडो पोलो—छ दात ग्रौर मुह खोखला । किसी ग्रपराध या गलती के जाहिर हो जाने या पोल खुलने पर जब मुह फक हो जाता है तब यह कहावत कही जाती है ।

छवकाळ—देखो 'छवकाळ' (रू भे)

छवगाळ, छवगाळौ—देखो 'छौगाळौ' (मह० रू भे) उ०—छौगो सिर सोनहरी छवगाळ, भळकत सूरजरूप भलाळ । वधै खळ लेत नटा जिम वस, हुई घट फूटत छूटत हस ।—सू प्र

छवडउ—देखो 'छोडौ' (रू भे) उ०—जइ रूखा मारू हुई, छवडउ पडियउ तास । तइ हुती चदउ कियइ, लइ रचियउ ग्राकास ।

—ढो.मा.

छवणो—देखो 'छवणौ' (रू भे)

छवणौ, छववौ-क्रि०ग्र० [स० छुप = स्पर्शे] १ छूना, स्पर्श करना
२ छाना, ग्राच्छादित करना ।
छवणहार, हारौ (हारी), छवणियौ—वि० ।

छवाडणौ, छवाडवौ, छवाणौ, छवावौ, छवावणौ, छवाववौ—प्रे०रू० ।
छविग्रोडौ, छवियोडौ, छव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
छवीजणौ, छवीजबौ—भाव वा०,कर्म वा० ।

छववरण, छववरन-स०पु० [स० षट् वर्ण] याचक वृत्ति करने वाली जातियों का समूह विशेष ।
वि०वि०—देखो 'खटवरण' ।

छवरौ-स०पु०—वृक्ष, पेड । उ०—ताहरा माता साढू पाछी घिरी । ग्रागै देखै तौ छवरै हेठै पालणौ राखियौ तौ सू सीहणी ग्राय चूघावण लागी ।—देवजी वगडावत री वात

छवारौ-स०पु०—खजूर का फल ।

छवाई-स०स्त्री०—छाने का कार्य या इस कार्य की मजदूरी ।

छवाणौ, छवाबौ-क्रि०स०—('छाणौ' क्रि०का० प्रे०रू०) छाने का काम दूसरे से कराना । उ०—करू रघुपतिजी को ग्रारितौ, मोतियन चौक पुराया । 'पदम' भणै प्रणवै पाय लागै, विन खभै गिगन छवाया ।

—रुकमणी मगळ

छवायोडौ-भू०का०कृ०—छवाया हुग्रा, ग्राच्छादित कराया हुग्रा ।
(स्त्री० छवायोडी)

छवारौ—देखो 'छुग्रारौ' (रू.भे)

छवावणौ, छाववौ—देखो 'छवाणौ' (रू.भे)

छवि-स०स्त्री०—१ चर्म, चमडी (डिं को) २ देखो 'छबि' (रू भे)

छवित्ताण-स०पु० [स० छवित्राण] १ शरीररक्षक वस्त्र, कवच ग्रादि (जैन) २ चमडी का ग्राच्छादन, कवच, वर्म (जैन)

छविह—देखो 'छव्विह' (रू.भे., जैन) उ०—सो गुरु सुगुरु जु छविह जीव ग्रप्पण सम जाणइ । सो गुरु सुगुरु जु सच्चरूव सिद्धत वखाणइ ।—ऐ जै का स.

छवी—देखो 'छवि' (रू भे)

छवीस —देखो 'छव्वीस' (रू भे) उ०—रस उल्लाल तिथ तेर मत, छवीस सम पद स्याम । स्यामक रस दूहा सहित, मुण तै छप्पय नाम ।—र.ज प्र

छवैयौ-स०पु०—छप्पर ग्रादि छाने का काम करने वाला, छाने वाला ।

छवौ-स०पु० १ भूमि का वह भाग जहा घास, ग्रनाज ग्रादि कुछ भी पैदा न किया जा सके, वजर भूमि, ऊसर ।
[स० शावक] वच्चा । उ०—छवा नटका ज्यूही कूद ग्रवर छुवै, विहू यटका करा पूर झटका ववै ।—र रू

छव्विह-वि० [स० षड्विध] छ प्रकार का (जैन)
रू०भे०—छविह ।

छह——देखो 'छ' (रू.भे) । उ०—सुवार हुया कूच हुयौ । पातिसाहि डेरा सेखाणै पट्टणि पडिया । होली हु ता ग्रागै छह दिहाडा हुता ।

—द वि

छहडौ-स०पु०—कलह, झगडा, विवाद । उ०—वादसाह रौ जीव जोग

छै जो कठै ही वात जाहरात मे आई तौ मै सू छहडौ जे करसै, आगै तौ कजिया हमेसा करै छै ।
—महाराजा जयसिंह आमेर रा धणी री वारता

छहतरौ–वि०—छियतरवा ।
स०पु०—छियतर का साल या वर्ष ।

छहत्तर, छहत्तरि—देखो 'छियतर' (रू भे.)

छहरग–स०पु०—एक प्रकार का घोडा (शा.हो)

छहलौ–वि०—अन्तिम, आखिरी । उ०—धाऊ चरणा घ्यान, वळवत रौ चित यू वदै । सेवग रौ सतराम, अनदाता छहलौ अवै ।
—महाराजा वळवतसिंह रतळाम

छहवन—देखो 'छववरण' (रू भे)

छहोतर, छहोतरि—देखो 'चहोतर' (रू भे)

छहोतरौ—देखो 'चहोतरौ' (रू.भे) । उ०—समत छहोतरै सतर मे, मती ऊपनी 'हमीर' मन । कीधी पूरी नाममाळिका, दीपमाळिका तेण दिन ।—ह ना

छहोडणौ, छहोडवो—देखो 'चहोडणौ' (रू भे) उ०—मन गहि पवन पलटि पहिराखै, आछा अमल छहोडै। जन हरिदास मान ममता तजि, यू मेवासा तोडै ।—ह पु वा

छा–क्रि०अ० [स० अस्] १ सत्तार्थक क्रिया 'होना' के राजस्थानी के वर्तमान रूप 'छै' का बहुवचन 'है' । उ०—माणस हवा त मुग्ध चवा, म्हे छा कूझडियांह । पिउ सदेसउ पाठविसु, लिखि दै पखडियाह ।
ढो मा

२ देखो 'छाया' (रू भे) उ०—दिन ढळियौ उठै एकरा रोही माही रूखा री छा थी उणरै तळै खाणौ दाणौ कर घोडा नु गुड उडदावो दे'र चढिया ।—कुवरसी साखला री वारता

छाग–स०स्त्री० [स० छाग] १ बकरियो, भेडो तथा गायो का समूह, भुड । उ०—तरै मुखडै गाया रा छाग माहे टोघडा दोय मोटा जातीला साड रा था ।—जखडा मुखडा भाटी री वात
२ वृक्ष की कटी हुई टहनी । उ०—खेजडला री छाग ठूठ भेळा कर राखै, दूढ लगावै ढिग जिग्ग झाफो कर नाखै—दसदेव

छागडौ–वि०—काटने वाला, सहार करने वाला । उ०—भळक्कै सागडा केमुराडा वक्कै भूतरासा, थरदा छागडा राहुरुत का सा ऊप । ऊठीया अखाडै चेला खागडा अंधूत रा सा, रूठीया रागडा जच्छदूत का सा रूप ।
—महादान महडू

छागणौ, छागवौ–क्रि०स० [स० छजि या छद्] १ कुल्हाडी से किसी वृक्ष की बढी हुई टहनियो को काट कर छोटा करना, छागना, काटना, छाटना । २ मारना, सहार करना, काटना । उ०—मद लेता भाखै मती, भोळी चाबुक भात । छकियौ लाडा छागसी, खाती डाहळ खात ।
—वी.स

छागणहार, हारौ (हारी), छागणियौ—वि० ।
छगवाडणौ, छगवाडवौ, छगवाणौ, छगवावौ, छगवावणौ, छगवाववौ, छागाडणौ, छागाडवौ, छागाणौ, छागावौ, छागावणौ, छागाववौ—प्रे०रू० ।
छागिओडौ, छागियोडौ, छाग्योडौ—भू०का०कृ० ।
छागीजणौ, छागीजवौ—कर्म वा० ।
छगणौ, छगवौ—अक० रू० ।

छागाणौ, छागावौ–क्रि०स० ('छागणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ वृक्ष की टहनिया कटाना, छटाना, छगाना २ सहार कराना, मरवाना, कटाना ।
छागाणहार, हारौ (हारी), छागाणियौ—वि० ।
छागायोडौ—भू०का०कृ० ।
छागाईजणौ, छागाईजवौ—कर्म वा० ।

छागायोडौ–भू०का०कृ०—१ छगाया हुआ, कटाया हुआ, छटाया हुआ २ सहार कराया हुआ (स्त्री० छागायोडी)

छागार–स०पु०—एक प्रकार का घोडा ।

छागावणौ, छागाववौ—देखो 'छागाणौ' (रू भे) ।
छागावणहार, हारौ (हारी), छागावणियौ—वि० ।
छागाविओडौ, छागावियोडौ, छागाव्योडौ—भू०का०कृ० ।
छागावीजणौ, छागावीजवौ— कर्म वा० ।

छागावियोडौ—देखो 'छागायोडौ' (स्त्री० छागावियोडी)

छागियोडौ–भू०का०कृ०—१ छागा हुआ, काटा हुआ, छाटा हुआ (वृक्ष) २ सहार किया हुआ, मारा हुआ, काटा हुआ ।
(स्त्री० छागियोडी)

छागी, छागीर—देखो 'छाहगीर' (रू भे) ।

छागौ–स०पु०—एक प्रकार का घोडा (शा हो)

छाछळी–स०स्त्री०—बडी व भयकर तोप ।

छाट–स०स्त्री०—१ छाटने, काटने या कतरने की क्रिया या ढग
२ अलग की हुई बेकार व अनुपयोगी वस्तु. ३ वर्षा की बूद, छीटा । उ०—१ कातिक की छाट बुरी, वाणिया की नाट बुरी, भाया की आट बुरी, राजा की डाट बुरी ।—अज्ञात
२ छीटा । उ०—मन जाणै पीवू पै-मिसरी, छाछ सुवरणी मिळै न छाट । वळिया सो पाछा कुण वाळै, उण घर री लेखण रा आट ।
—ओपो आढौ
अल्पा०—छाटडली, छाटडी ।

छाटडली, छाटडी—देखो 'छाट' (अल्पा०, रू भे) उ०—छिण छिण सोहै छाटडल्या री छोळ, सूरज किरणा सरसर ऊतरै —लो गी

छाटणी–स०स्त्री०—१ बीज बोने की क्रिया जिसमे बीजो को हाथ मे लेकर भूमि पर बिखेरते है २ देखो 'छटणी' (रू भे) ।

छाटणौ, छाटवौ–क्रि०स०—१ किसी पदार्थ के किसी अश को पृथक करना, किसी वस्तु को विशेष आकार देने के लिए काटना, कतरना, छिन्न करना. २ अनाज को साफ करने व भूसी अलग करने के उद्देश्य से कूटना व फटकना ३ वस्तुओ के समूह मे से बेकार व

निकम्मी वस्तुओ को अलग करना, छाटना ४ किसी बढे हुए भाग को काट कर छोटा या सक्षिप्त करना ५ (पानी आदि के) छींटे डालना, छींटे मारना। उ०—छाटी पाणी कुमकुमइ, वीभरण वीझ्या वाइ। हुई सचेती माळवी, प्री आगळि विळळाइ।—ढो मा ६ छिडकाव करना. ७ शेखी बघारना, गढ गढ कर बातें करना।

छाटणहार, हारौ (हारी), छाटणियौ—वि०।

छटवाडणौ, छटवाडबौ, छटवाणौ, छटवाबौ, छटवावणौ, छटवावबौ, छाटाडणौ, छाटाडबौ, छाटाणौ, छाटाबौ, छाटावणौ, छाटाववौ—प्रे०रू०।

छाटिओडौ, छाटियोडौ, छाटचोडौ—भू०का०कृ०।

छांटीजणौ, छाटीजबौ—कर्म वा०।

छटणौ, छटबौ—अक० रू०।

छाटाणौ, छाटाबौ—क्रि०स० ('छटणौ' क्रिया का प्रे०रू०) छाटने का कार्य दूसरे से कराना, छटवाना।

छाटणहार, हारौ (हारी), छाटणियौ—वि०।

छाटायोडौ—भू०का०कृ०।

छाटाईजणौ, छाटाईजबौ—कर्म वा०।

छाटायोडौ—भू०का०कृ०—छटाया हुआ, छाटने का कार्य कराया हुआ। (स्त्री० छाटायोडी)

छाटावणौ, छाटावबौ—देखो 'छाटाणौ'।

छाटावणहार, हारौ (हारी), छाटावणियौ—वि०।

छाटाविओडौ, छाटावियोडौ, छाटाव्योडौ—भू०का०कृ०।

छाटावीजणौ, छाटावीजबौ—कर्म वा०।

छाटियोडौ—भू०का०कृ०—१ छटा हुआ, काटा हुआ, छटनी क्रिया किया हुआ। (स्त्री० छाटियोडी)

छाटौ—स०पु०—१ जल कण, जल विंदु, (किसी द्रव पदार्थ का) छींटा। उ०—मोडा एक वहुत व्हैं महिला, ज्यू भैंसिन मे सोटा। दे छाटा नारी परबोधे, खसम बतावे खोटा।—ऊ का

मुहा०—१ छाटौ देणौ—धोखा देना, फुसलाना, ताना कसना २ छाटौ लेणौ—परहेज रखना, छुआछूत का भाव रखना।

२ पडी हुई बूद का चिन्ह ३ छोटा दाग।

छाडणौ, छाडबौ—देखो 'छोडणौ' (रू भे) उ०—१ थळ मथ्थइ ऊजा-सडउ, थे इए केहइ रग। धए लीजइ प्री मारिजइ, छाडि विडाएउ सग।—ढो मा

उ०—२ राजा! रीत न छाडिजै, समवड करौ सनेह। समवड सू सुख पायजै, नीचा केहो नेह।—जसमा ओडणी री वात

उ०—३ वाणी हर वीसार कर, वचै आन कुवाण। तार छाड पति आपणौ, जार विलग्गी जाण।—ह र

उ०—४ सू परवार छाडगो 'सुरजन', वढे 'पतौ' रहियौ वर वीर। नीर दुरग चढियौ नागद्रहा, नाडूळा ऊतरियौ नीर।

—रावत पत्ता आमेट री गीत

उ०—५ जोय रणथभ चित्रगढ जपै, दळ आया सर बोल दियौ। 'सुरजन' कळ छाड साचरियौ, कळह 'पते' मो रेस कियौ।

—रावत पत्ता आमेट रौ गीत

उ०—६ ब्रह्मादिक इद्रादिक सरीखा, असुर मेल्है बाण। चक्र सरिसु चक्र मागू, छाडियौ पग ठाण।—रुषमणी मगळ

छाडियोडौ—देखो 'छोडियोडौ' (रू भे) (स्त्री० छाडियोडी)

छाण—स०स्त्री०—१ चतुराई, होशियारी, दक्षता २ विवेचना, जाच-पडताल, अनुसन्धान ३ छानने की क्रिया या भाव. ४ गोबर। उ०—तेज साड ताडूकता, छाण करचौ गउ छोण। समर इस्या वाजै सुहड, कायर बाजै कोण —रेवतसिंह भाटी

छाणणी—देखो 'चळणी' (रू भे) उ०—नित असल त्याग सीखै नकल, छाज न व्है व्है छाणणी। कुलखणा माय मोटी कसर, आदत खोटी आणणी।—ऊ का

छाणणौ—स०पु०—बाजरी, अनाज आदि छानने के लिए लोहे की जाली का बना उपकरण।

छाणणौ, छाणबौ—क्रि०स०—१ किसी चूर्ण या द्रव पदार्थ को किसी चलनी या महीन कपडे मे डाल कर इस प्रकार हिलाना कि उसका कूडा-करकट या मोटा अश पृथक रह जाय २ मिली-जुली वस्तुओ को एक दूसरे से अलग करना ३ जाच करना, पडताल करना ४ देखभाल करना, ढूंढना, अनुसधान करना. ५ किसी वस्तु को छेद कर आर-पार निकालना।

छाणणहार, हारौ (हारी), छाणणियौ—वि०।

छणाडणौ, छणाडबौ, छणाणौ, छणाबौ, छणावणौ, छणाववौ, छाणाडणौ, छाणाडबौ, छाणाणौ, छाणाबौ, छाणावणौ, छाणाववौ—प्रे०रू०।

छाणिओडौ, छाणियोडौ, छाण्योडौ—भू०का०कृ०।

छाणीजणौ, छाणीजबौ—कर्म वा०।

छणणौ—अक० रू०।

छाणत—स०स्त्री०—१ कलक, दोष २ असह्यबात, चुभने वाली बात। उ०—छत्रपतिया लागी नह छाणत, गढपतिया घर परी गुमी। बळ नह कियौ बापडा वोता, जोता जोता गई जमी।—बा दा

छाणबीण—स०स्त्री०—१ जाच-पडताल, अनुसधान, शोध २ दखभाल।

छाणरौ—देखो 'छणियारौ' (रू भे)

छाणौ—स०पु० [स० छगण] सूखा गोवर, कडा, उपला। उ०—छाणा धुखाइ नै कह्यौ म्हारा साथी नीकळिया, कह्योजी एही जाइ।—चौबोली

मुहा०—१ छाणा चुगतौ करणौ—कडे बीनने के काबिल बना देना, निधन बना देना, निकम्मा बना देना, पागल बना देना।

कहा०—२ छाणा नै जावै नै मिठाई री भातौ ले जावै—कडे बीनने जावे और मिठाई की दोपहरी साथ ले जावे। निम्न कोटि का कार्य करना और उसके लिये भी खर्च अधिक करना।

छान—१ देखो 'छाण' (रू भे.)

स० स्त्री० [स० छन्न] २ कोई बात गुप्त रखने का भाव । ३ कच्चे मकानों को आच्छादित करने के लिये उन पर लगाई जाने वाली छाजन जो घास-फूस की होती है, घासफूस की छत । ४ घास-फूस से आच्छादित कच्चा मकान ।

उ०—टेक छीपा तणी देस दुरस टाळियो, छान उथवाळियो न को छांना । —भगतमाळ

अल्पा०—छानड़ी ।

मह०—छानड़ ।

५ गुप्त रूप से रक्षित धन ।

छानउ—देखो 'छानो' (रू भे)

उ०—दाखी डाहिम आपणी, रे रजि मुझ मनमोर ।

छयलपणइ छानउ रह्यु, रे हीयडउ करी कठोर ॥ —विद्याविलास पवाडउ

छानके, छानकै—क्रि०वि०—गुप्त रूप से । उ०—महमद रै ईदा तणी, मेळी मडवाणी । कथ तीजणिया छानकै, जगमाल कहाणी । —वी मा.

छानड —देखो 'छान' (मह०)

छानडी—देखो 'छान' (अल्पा० रू.भे)

छानवण, छांनवाण—स०स्त्री०—परिवार के सदस्यों से छिपा कर सग्रहित किया हुआ धन ।

छानू—वि० [स०छन्न] १ गुप्त, छिपा हुआ. २ चुपचाप, खामोश ।

छानै—क्रि०वि०—गुप्त रूप से, चुपचाप ।

उ०—जुवारसिंघ नै छानै सी थें दीज्यो खबर सुणाय । —डूगजी जवारजी री पड

कहा०—छानै बुलाय नै ऊट पै चढ आया—चुपके से आने के लिये कहा परन्तु ऊट की सवारी कर आये । गलत साधन स्वीकार करने से अभीप्ट फल प्राप्त नही होता ।

छानैछुरकै, छानैमानै, छानैसीक—क्रि०वि०—चुपचाप, गुपचुप, गुप्त रूप से ।

छानौ—वि०पु० [स०छन्न] (स्त्री० छानी) १ गुप्त, छिपा हुआ, अप्रकट ।

उ०—१ छानौ 'अजन' जितै छत्रपत्ती, धारै ऊभौ लाज धरत्ती । —रा रू

उ०—२ ए डेरै आया सो वात छांनी नही रही । —सूरे खीवे काधलोत री वात

कहा०—१ छानै करवा हू घणी चौडै आवै—गुप्त रूप से छिपाई जाने वाली वात अधिक प्रकट में आती है । २ छानौ काम छोराये करावौ हो ते वो पोडे घणो करहें—गोपनीय कार्य यदि बालक से कराया जाय तो वह अधिक प्रकट करेगा ।

२ चुप । ज्यू—टाबर छानो नी रै' ।

यौ०—छानोमानो ।

क्रि०वि०—गुप्त रूप से । उ०—कह्यौ तूं पाछै छानौ थकी जा देख आय, कठै जाय म्हांनै ?—गोजल दे पाळ री बात

छांनोमांनो—वि०यौ० (स्त्री० छांनीमांनी) चुपचाप, गुप्त । उ०—बटै यो ठाकुर आंनियो छांनोमांनो मरियो, नाथजी आमळगी । —प्रतापमल देवड़ा री बात

छांमोदरी—वि० [सं० क्षामोदरी] छोटे पेट वाली ।

छाय—देखो 'छाया' (रू भे)

उ०—१ वगत वटाऊ वाह, वाहू दे छुवा टाळै । नवधारदा छियां जनक, गोरजी छाय उजाळै ।—रवी

उ०—२ ऊंभी मारग मांगणा, थां तेरी छाय ।

पागळियां री मूंदड़ी, नागण जागो यांय ॥—र.स.

छायड़ी—देखो 'छाया' (अल्पा० रू भे)

छांया—देखो 'छाया' (रू भे)

छारणी—देखो 'चारणी' (रू भे)

छांव—देखो 'छाया' (रू भे)

उ०—घुमां घूमत मा बैठियो हरिये अंबवा री छांह ।—लो गी.

छावड़ी—देखो 'छाया' (अल्पा० रू भे)

छावणी—देखो 'छांवणी' (रू भे)

उ०—दगो मारियो डूंग नू सोयै गाफलें छावणी डोळा, नीहू लाड नगरी अमाप फोजा पा'र ।—डूंगजी री गीत

छांवळ—१ देखो 'छाया' (मह० रू भे)

उ०—दिनो र नगती जार नळं सुन छा छ पावै ।

पहियें ज्यूं दिन मान उतरता चहुंआ आवै ॥—मेघ.

२ परछाई, प्रतिच्छाया ।

छावळी—१ देखो 'छाया' (अल्पा० रू भे.)

उ०—बावळिया कतरा बीधा में थारी पेड़, बावळिया कतरा बीघा में थारी छावळी ।—लो गी

२ एक प्रकार का वाद्य विशेष जो तुजरी के आकार से मिलता-जुलता होता है । ऐसे वाद्य पर गाया जाने वाला गीत विशेष ।

छाह—देखो 'छाया' (रू भे)

उ०—१ भटियळ ऊभी छाजड्ये री छाह । —लो गी

उ०—२ विहसे तदि सुरजन वदै, बूरी ही तन बाह । बावर मुत बाधं वळै, छत्रहेठ दे छाह ।—व भा

यौ०—छत्रछाह ।

२ दया, कृपा । उ०—जु मछो जळ विन मरे, जळ मन जाणे नाह । तु पिउ की जिय प्रति कठिण, हू चाहू पीय छाह ।—ढो.मा

अल्पा०—छाहडी, छाहरी ।

छाहगीर—स०पु०—१ राजछत्र । उ०—छजे सीस छाहगीर, करे अस वाग करग्गा । रावण ऊपर राम, जाए घडियाळ स वग्गा ।—सू प्र

२ छाता, बडी छतरी ।

छाहड—देखो 'छाया' (मह०, रू भे)

छांहडी—देखो 'छाया' (अल्पा०, रू भे) उ०—बाघू वड री छांहडी, नीरू नागर वेल । डाभ सभाळू हाथ मू, चोपड सू चपेल ।—ढो मा.

छाहडो—स०पु०—छोटा कटीला पौधा।

छाहरी—देखो 'छाया' (अल्पा०, रू भे) उ०—सग किया सापणी डसै, आय अधारे खाय। (जन हरिदास) सूक विरछ की छाहरी, कहो मुक्ति क्यों जाय।—ह पु वा.

छाही—देखो 'छाया' (रू भे)

छा—स०स्त्री०—१ क्रान्ति २ छाया ३ ढक्कण ४ रक्षक. ५ रक्षा (एका०) ६ देखो 'छाछ' (रू भे)।

कहा०—१ छा नै आई नै घर री घणियाणी वणगी—छाछ मागने तो आई और घर की मालकिन वन कर बैठ गई। याचक के रूप मे आकर स्वामित्व ग्रहण कर लेने पर कही जाने वाली कहावत

२ छा नै गई जरै पाडियो मर गियो—छाछ मागने गई तो पाडे का मरने का वहाना वता दिया। मागने पर कोई व्यक्ति किसी वस्तु को न देने के प्रयोजन से वहाना वता देता है तव उसके प्रति यह कहावत कही जाती है ३ छा नै जाय नै लारे कूलडियो छिपावै है—छाछ या मट्ठा जैसी साधारण वस्तु मागने के लिए तो चल दी परतु छाछ लाने का पात्र छिपाने का प्रयत्न करती है। साधारण वस्तु मागने के लिए उद्यत होने पर शर्म या लज्जा करना व्यर्थ है

४ छा ही घालणी नै पगै ही लागणो—छाछ भी डालनी और चरण भी छूना। घर से वस्तु आदि भी देना और फिर उसके अधीन भी रहना यह दुहरा कष्ट नही उठाया जाता ५ मागियोडी छा नै उणमे ही पाणी—माग कर लाया हुआ मट्ठा और उसमे भी पानी। वडी याचना और मिन्नत के वाद जव वेकार या खराव वस्तु प्राप्त होती है तव कही जाने वाली कहावत।

७ नेत्र का एक रोग जिसमे आख की पुतली पर सफेद झिल्ली का आवरण आ जाता है ८ चिन्ता, दुख आदि के कारण चेहरे पर आखो के नीचे पडने वाले कुछ स्यामल दाग।

क्रि०अ० [स० अस्] राजस्थानी के वर्तमानकालिक रूप 'छै' का भूतकाल 'था'।

छाअ—देखो 'छाया' (रू भे) उ०—नट ज्यों नाचता कुलचता अकुलणी रै नैण ज्यो ऊछाछळा, आपरी छाआ सू डरपता वाज पखी ज्यो ऊडाण झापता, जाणै सूरज रा रथ असमान रै फेर लागिनै रहिआ छै।—रा सा स

छाअण—स०स्त्री०—१ साग मे दी जाने वाली खटाई २ कच्चे मकानो की घास-फूस की छत, छाजन।

छाई—देखो 'छाईस' (रू भे)

छाईजणो, छाईजबौ—क्रि०कम वा०—छाया जाना, आच्छादित किया जाना। उ०—आगमि सिसुपाळ मडिजै ऊछव, नीसाण पडती निहस। पट मडप छाईजै कुदण पुरि, कुदण मे वाझै कळस।—वेलि.

छाईस—वि० [स० षड्विंशति, प्रा० छव्वीस] वीस से छ अधिक, वीस और छ का योग। उ०—भमर अखिर छाईस भण, चव लघु गुरु वाईस। यक गुर घट वे लघु वधै, सो सो नाम कवीस।—र ज प्र

स०पु०—२६ की सख्या।

छाईसमौं—वि०—छब्बीसवा।

छाईसे'क—वि०—२६ के लगभग।

छाईसौ—देखो 'छब्वीसौ' (रू भे)

छाओडी—देखो 'छाछ' (अल्पा० रू भे)

छाओडौ—स०पु०—देखो 'छाछ' (अल्पा० रू.भे)।

छाक—स०स्त्री०—१ नशा, मस्ती, मादकता। उ०—सज्जण मिळिया सज्जणा, तन मन नयण ठरत। अणपीयइ पाणग ज्यू, नयणे छाक चढत।—ढो मा

२ शराव पीने का प्याला अथवा इस प्याले मे समाने वाली शराव की मात्रा। उ०—दे भैसा वळदान छाक मदधार छकाई। चडोचडी ऊचरै फतै झडी फहराई।—मे म

क्रि०प्र०—देणी, लेणी।

३ खेत मे किसान के लिए ले जाया जाने वाला भोजन, पाथेय

४ दोपहर, मध्यान्ह। उ०—सात सहेली खेलण आयी म्हारा आगण माय। छाक भई माय करी रसोई दीजो थाळ लगाय।—लो गी.

५ डलिया। उ०—इस वजै खटरितु की क्रीला जल्ले गुलावू की छाक। तिसके देखे ते होत रितराज मुस्ताक।—सू.प्र

वि०—१ मस्त, उन्मत्त। उ०—छाक ववाळ अपछरा छायळ, अरज कीध 'पदमै' अजरायळ।—सू प्र

२ लवालव, पूर्ण। उ०—१ फीटो मूडो फाड नाड कर लेवै नीची। छिली रहै जळ छाक मिळी आख्या अधमीची।—ऊ का.

उ०—२ पुहव ताम पूछियो करमसियोत कमधज। उदैसीध वोलियो छाक पौरस वळ ऊछज।—सू प्र

छाकटौ—वि० [स० साकट्] १ दुश्चरित्र, वदमाश, लुच्चा

२ चलता-पुरजा, चतुर, चचल ३ कृपण, कजूस ४ गुरुरहित, दुष्ट, पाजी, कृतघ्नी।

छाकणो, छाकवौ—क्रि०अ०—१ अघाना, खा पी कर तृप्त होना।

उ०—१ कोपिये छाकिये चहर भड अहर करि, फुरळतै पिसण घड फेरवी अफिर फिरि।—हा झा

उ०—२ छाक पियै जिण पेट छुडायो, भारी पाग्गी जन्म भडायो।
—ऊ.का.

२ शराव आदि नशा लेकर मस्त होना। उ०—इसडौ ही थको मुहडै मारि मारि करतो ऊठै अर पडै। वळै ऊठै ज्यु छाकियै री परै। बीजौ ही लोह आकरौ पडियो।—द वि

३ ललचाना। उ०—माल मुलक हैगो घणा, छत्रछाह मन छाक। कै मारचा कै मारसी, काळ करत है ताक।—ह पु वा

छाकणहार, हारौ (हारी), छाकणियौ—वि०।

छकवाडणौ, छकवाडवौ, छकवाणौ, छकवावौ, छकवावणौ, छकवाववौ
—प्रे०रू

छकाडणौ, छकाडवौ, छकाणौ, छकावौ, छकावणौ, छकाववौ
—क्रि०स०

छाकिग्रोडो, छाकियोडो, छाक्योडो—भू०का०कृ० ।
छाकीजणो, छाकीजबो—भाव वा० ।
छकणो, छकबो—रू०भे० ।
छाकदार-स०पु०—एक प्रकार का घोडा (शा हो)
छाका-स०स्त्री०—मध्यान्ह का समय, दुपहर ।
छाकियोडो-भू०का०कृ०—अघाया हुआ, खा पी कर तृप्त हुवा हुआ, मस्त ।
छाकी-स०पु०—उन्मत्त, मस्त, मदपूर्ण । उ०—मोह सराब खराब है, छत ऊमत छाकी ।—केसोदास गाडण
छाकोटो—वि०—१ नशे मे उन्मत्त, मदोन्मत्त ।
उ० अतरै मे कितरा ग्रेक ठाकुर बोलिया, रावजी ग्राज 'छाकोटै रहै ग्रहडा छै ।—प्रतापमल देवडा री वात
२ देखो 'छकोटो' (रू भे)
छाग, छागड, छागडो-स०पु०—[स०छाग+रा०प्र०ड] बकरा (डि को)
उ०—१ खाग प्रहार छाग हुड खडत, मुड रुड लोहित झड मडत । पान रुधिर करि लहत त्रिपत्ती, स्री करनी जय जयति सकत्ती ।
—मे.म
उ०—२ छऊ भेन छोटी दहू ग्रोड छाजै, विचै पाट राजीव माजी विराजै । खडी लागडी बीर बीराधि खेतू, करै रागडा छागडा राह केतु ।
—मे.म
छागमुख-स०पु०—१ कार्तिकेय का बकरे के समान छठा मुख ।
२ कार्तिकेय का एक अनुचर ।
छागर-स०स्त्री० [स० छागल] बकरी, अजा ।
छागरत, छागरथ-स०पु० [स० छागरथ] अग्नि ।—डि.को
छागळ-स०पु० [स० छागल] १ बकरा (स्त्री० छागळी) । २ बकरे के चमडे से बना जल-पात्र । उ०—साव लोह पाखर नइ चामर, घणी घूघरी घमकइ । पाणी तणी ढळकती छागळ, नीचा फूमत मूकइ ।
—का दे प्र
मि०—दीवडी ।
३ सफर आदि के समय साथ मे लिया जाने वाला जलपात्र जो जिंक धातु का बना होता है ।
मि०—वादळो ।
४ पायल, नूपुर ।
छागळि-स०स्त्री०—१ बकरी २ यात्रा मे जल साथ रखने के लिये बकरे के चमडे, धातु आदि से बना जल-पात्र । उ०—तासु पासि छागळि जळि भरी, ठाकुर तणी द्रस्टि वे ठरी । देखी भाट दियो दीरघाय, रेवत थी ऊतरियो राय ॥—ढो मा
छागळियो-स०पु०—१ जल पिलाने वाला जलधारी । उ०—अर कुवर स्री दळपतजी नूं तिस लागी सु गगाजळ ग्ररोगण रै वास्तै लोक माहै छागळियै नै देखण लागा ।—द वि
२ देखो 'छागळो' (अल्पा० रू भे.)
छागळी—देखो 'छागळि' (रू भे)
उ०—पूछियो कुवरजी किणरी छागळी छै । ताहरा तिण कहियो जु ग्रिथीदीप री छागळी छै ।—द वि.
छागळो-स०पु०—१ एक प्रकार का घोडा (शा.हो.) [स० छाग+रा०प्र०ळो] २ यात्रा मे जल साथ रखने के लिए बकरे के चमडे या धातु आदि का बना जल-पात्र । उ०—तरै लखै कह्यो—राव मानू नही थाहरो कह्यो । तरै सारणेसर चावडै री कोस पीयो । लखो छागळा री पाणी लायो ।—राव लाखै री वात
अल्पा०—छागळियो ।
छागी-स०स्त्री० [स० छाग+रा०प्र०ई.] बकरी ।
छा'डी—देखो 'छाछ' (अल्पा० रू भे)
छाडो-स०पु०—१ देखो 'छाछ' (अल्पा० रू.भे)
२ देखो 'छाज' (अल्पा० रू भे)
छाछ-स०स्त्री० [स० छच्छिका] १ मथा हुआ व मक्खन निकाला हुआ दही का पतला घोल, मट्ठा । उ०—मन जाणै पीवू पै-मिसरी, छाछ सुवरणी मिळै न छाट । वळिया सो पाछा कुण वाळै, उण घर री लेखण रा ग्राट ।—ग्रोपो ग्राढो
पर्या०—उदिश्वित, काळसेय, तक्र, मथिति, मही ।
कहा०—१ छाछ छीतरी बेटी ईतरी—छितरी हुई छाछ अर्थात् अधिक पतली छाछ और लाड-प्यार से इतराई हुई पुत्री का सुधरना कठिन होता है। २ छाछ नै बेटी मागवा री लाज नी—छाछ और लडके के सम्बन्ध के लिए किसी सजातीय लडकी मागना कोई लज्जाजनक वात नही (प्रथा) ३ पतली छाछ खटे नहि पाणी—पतली छाछ मे पानी नही चल सकता । निर्धन व्यक्ति को अपने ऊपर आया हुआ साधारण व्यय का बोझ भी असह्य होता है ।
छोटे दायरे और सकीर्ण विचारो के व्यक्ति मे सहनशीलता बहुत कम होती है ४ रावडी नै खाटी छाछ सू खाणी—निम्न श्रेणी की वस्तु के साथ निम्नतर श्रेणी की वस्तु का सयोग हो जाता है तब यह कहावत कही जाती है ।
२ चाच देश । उ०—छाछ कवाण खुदग सर, समसेरा ईरान । ग्राणै ग्रस ऐराक सू, थटण घणी घन थान ।—बा दा
रू०भे०—छा, छाछि, छास, छासि, छाह ।
अल्पा०—छाग्रोडी, छाग्रोडो, छा'डी, छा'डो, छाछडली, छाछडलो ।
मह०—छाछड ।
छाछड-स०पु०—देखो 'छाछ' (मह० रू.भे.)
छाछडली—देखो 'छाछ' (अल्पा० रू भे)
छाछडलो-स०पु०—देखो 'छाछ' (अल्पा० रू भे.)
उ०—दूघडला नै पीधा ग्रो राव माल घर री डावडी, हा रे छाछडला रा फिस्या रे सवाद । दासडली री जायो ग्रो राव माल घोडै चढै, कॅवर भटियाणी री चरवादार ।—लो गी
छाछठ—देखो 'छासट' (रू भे)
छाछठमो—देखो 'छासठमो' (रू भे.)
छाछठो—देखो 'छासठो' (रू भे)
छाछण-स०पु०—साग-सब्जी मे दी जाने वाली खटाई ।
छाछरो-वि०—ठिगना, बौना, नाटा ।

स०पु०—मस्ती मे आकर गाय या बैल का पूछ ऊँचा करके कूदने की क्रिया।

छाछि—देखो 'छाछ' (रू भे)।

छाछी–स०स्त्री०—मामड की पुत्री, आवड देवी की बहिन (एक देवी)

छाछेतौ–वि०—छाछ सम्बन्धी, छाछयुक्त। उ०—बाळक भर बागळी ल्यावै हरि वाडिया लूट कर। छाछेता रायता ढोकळ किसत फोगलै चूट कर।—दसदेव

छाछयौ–स०पु०—एक प्रकार का रोग जिससे जीरे की फसल नष्ट हो जाती है।

छाज–स०पु० [म० छाद] सीक, तीलिया आदि का बना अनाज फटकने का उपकरण, सूप, आजकल लोहे की चद्दर का भी बनाया जाता है। उ०—१ तू ऊपर माळियै जायनै फूस कचरौ बुहार, छाज भरनै राजा रा माथा ऊपर नाखदे।—पचदडी री वारता।

उ०—२ आधौ रहग्यौ ऊखळी, आधौ रहग्यौ छाज। सागर मट्टै घण गई (अब) मघरौ मघरौ गाज।—अज्ञात

कहा०—१ छाज घाल चालणी घालणौ—सूप मे फटक कर चलनी मे छानना अर्थात् खूब तग करना, दिक करना. २ छाज बोलै नै छावडी, तू क्या बोलै छालणी, थारै अठोतर सौ वेभ—छाज बोलता है न छबडी, चलनी तू क्यो बोलती है तेरे तो एक सौ आठ छिद्र हैं। कई समझदार व्यक्तियो के बीच जब अनेक अवगुणो वाला व्यक्ति बढ-बढ कर बोलता है तो उसकी जबान बद करने के लिए प्रयुक्त की जाने वाली कहावत।

अल्पा०—छाजडौ, छाजडो, छाजलियौ, छाजलौ, छाल्लौ।

मह०—छाजड।

२ छप्पर, छाजन ३ गाडी व बग्गी मे कोचवान के पैर आगे रखने के लिए छज्जे की भाति आगे निकला हुआ भाग।

छाजइयौ—१ देखो 'छज्जौ' (अल्पा०, रू भे) उ०—ऊभी रै बीरा, छाजइये री छाह, देवर मोसौ बोलियौ जे, करती ए भावज, वीरा रौ गुमान।—लो गी

२ देखो 'छाज' (अल्पा०, रू भे)

छाजड—१ देखो 'छाज' (मह०, रू भे) २ देखो 'छज्जौ' (मह०, रू भे)

छाजडकन्नौ–वि०—बडे कान वाला, जिसके कान सूप के समान बडे हो (हाथी के लिए प्रयुक्त)

छाजडौ—देखो 'छाज' (अल्पा०, रू भ)

छाजण–स०स्त्री० [स० छादन] १ छान, छप्पर २ छाने का ढग, छान लगाने का ढग ३ शोभित होने का भाव।

छाजणौ, छाजबौ–क्रि०अ०—१ शोभा देना, फबना। उ०—छक मस्ताक रूप अति छाजै। लख दुति सची उरबसी लाजै।—सू प्र

मुहा०—मोटौ बोल राम नै छाजै—यश की महत्वपूर्ण बातें या गुण ईश्वर को ही शोभित होते है अर्थात् मनुष्य के गुणवान होने पर भी उसे अपनी बडाई अपने ही मुह से नही करनी चाहिए।

क्रि०स०—२ छप्पर छाना, घास-फूस की छत बाधना, आच्छादित करना।

छाजणहार, हारौ (हारी), छाजणियौ—वि०।

छाजिओडौ, छाजियोडौ, छाज्योडौ—भू०का०कृ०।

छाजीजणौ, छाजीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

छाजन—देखो 'छाजण' (रू भे)

उ०—कहै दास 'सगराम' साध के परवाह काही। छाजन भोजन नीर घणौ हरि इच्छा माही।—सगराम

छाजरसि, छाजरसु–स०पु०—एक प्रकार का घास। उ०—१ कस्तूरी नु काज किम काजळि कीजइ, किम सुवरणवाळा छाजरसि छीजइ इद्रनीलमणि काजि किम काच लीजइ।—वि व

उ०—२ मेरुकइ कडणि त्रिणू कान्चनलीला कलइ, सुवरणालकारि, मिळिउ छाजरसु सुवरण तणी छाया पामइ।—वि व

छाजलियौ—१ देखो 'छाज' (अल्पा०, रू भे) २ देखो 'छाजौ' (अल्पा०, रू भे)

छाजली–स०स्त्री०—डलिया, छबडी।

छाजलौ—देखो 'छाज' (अल्पा०, रू भे)

कहा०—भरिये गाडे काई छाजलै को बोझ—बोझ से लदे गाडे पर सूप और अधिक रख दिया जाय तो उसका क्या बोझ। धनिक जो अधिक व्यय करने मे समर्थ है उसके लिये कुछ साधारण व्यय और करना कोई विशेष महत्व की बात नही।

छाजारी–स०स्त्री०—घास विशेष या लोहे के चद्दर की बनी टट्टी जो रहट द्वारा निकाले गये पानी के गिरने के पात्र के उस ओर लगाई जाती है जिधर बैलो के घूमने का चक्र होता है।

छाजिया–स०पु०—किसी वृद्ध की मृत्यु पर रिश्तेदारो की स्त्रियो द्वारा विलाप करते हुए गाये जाने वाले शोकसूचक गीत। (मि पल्लौ, (३)

छाजेडी—देखो 'छजेडी' (रू भे)

छाजौ–स०पु०—१ छाजन या छत का वह भाग जो दीवार के बाहर निकला रहता है। उ०—तब स्री क्रिसणजी पवन चाहै छै। धौळहर कै छाजै आय ऊभा हुआ छै।—वेलि

२ किसी दरवाजे या खिडकी आदि के ऊपर लगी हुई पत्थर की वह पट्टी जो दीवार के बाहर निकली रहती है। ३ धूप के बचाव के लिये टोपी या टोप के आगे किनारे का बाहर निकला हुआ भाग। ४ सर्प का फन।

रू०भे०—छजौ, छज्जौ।

छाट–स०स्त्री०—१ आपत्ति, सकट, उचाट। उ०—नागा फिरै निराट, लोहडा री साकळ लगै। छाती मिटै न छाट, माया कामण मोतिया।
—रायसिंह सादू

२ छत से पाटित जल-कुण्ड (टाका) के ऊपर की पाटित छत का नीचे का भाग (जैन)

३ चट्टान, शिला (जैन)

रू०भे०—छाटण।

छाटक-स०पु०—प्रहार, चोट। उ०—असि घावरिण तो पीव पर, वारी वार अनक। रण भाटकता कत रै, लगै न छाटक एक।—वी स.

छाटको-स०पु०—१ प्रहार, चोट २ देखो 'छाकटो' (रू भे.)

छाटण—देखो 'छाट' (रू भे)—जैन

छाटी-म०स्त्री०—१ बकरी के बालो से बना हुआ एक प्रकार का थैला।

छाड-स०स्त्री०—१ वह स्थान जहा वर्षा के जल के एकत्रित हो जाने के कारण हरा घास खूब उत्पन्न हो।

[स० छर्दि, छर्दिन्] २ वमन, कै, उल्टी।

३ कुए के किनारे का वह स्थान जहा मनुष्य खडा होकर मोट खाली करता है।

रू०भे०—चाड।

छाडणो, छाडबो-क्रि०स० [स० छर्दनम्] १ कै करना, वमन करना २ छोडना, त्यागना उ०—हर मत छाडै रै हिया, लिया चहै जो लाह। दिल साचै तेडो दिया, नेडो लिछमीनाह।—र.ज प्र

३ राजसत्ता के विरुद्ध होना, विद्रोह करना।

छाडणहार, हारो (हारी), छाडणियो—वि०।

छाडाडणो, छाडाडबो, छाडाणो, छाडाबो, छाडावणो, छाडावबो प्रे०रू०।

छाडिग्रोडो, छाडियोडो, छाडचोडो—भू०का०कृ०।

छाडीजणो, छाडीजबो—कर्म वा०।

छाडाणो-स०पु०—१ राज-सत्ता के विरुद्ध विद्रोह या उपद्रव करने का भाव। २ प्रजा का कुपित होकर देश त्यागने का भाव या क्रिया।

छाडाडणो, छाडाडबो-क्रि०स०—('छाडणो' क्रिया का प्रे०रू०) १ छुडाना, छुडवाना। उ०—वाह दे राव दळ ठाह छाडाडिया, क्राह घाते किया ताह कानै।—महेस बारहठ

२ राज-सत्ता के विरुद्ध करवाना।

छाडाऊ-स०पु०—वह ऊट जिसका इडर भुका हुआ हो। देखो 'इडर'. ऊट का एक दोष।

छाडाळो-स०पु०—भाला, नेजा।

छाडि-स०स्त्री०—कदरा, गुफा। उ०—भिडै भाजै नही देस पिए भोगवै, परवतै गिरे नही छाडि पैठो।—सोहिल भोजक

छाडियोडो-भू०का०कृ०—१ कै किया हुआ. २ क्रोध किया हुआ, कुपित. ३ छोडा हुआ ४ विद्रोह किया हुआ। (स्त्री० छाडियोडी)

छाडी-स०स्त्री०—लकडी या पत्थर की बनी नाली जो रहट द्वारा निकाले गये पानी को आगे बहाने के लिये उस पात्र के किनारे पर लगाई जाती है जिसमे घडिया से पानी गिरता है।

छाडीणो, छाडोणो—देखो 'छाडाणो' (रू भे)

उ०—तद इणरै अक देवडा रै वणी नहीं तिए ऊपर देवडा छाडीणो कर नीसरिया।—द दा.

छाडो—देखो 'चाडो' (रू भे)

छाणो, छाबो-क्रि०अ०स०—१ फैलना, पसरना, बिछ जाना।

उ०—१ उलै मेह ज्यौ येह आकास छाई, दिपै चचळा सेल धारा दिखाई।—व भा

उ०—२ जेहल तौ दिस विदिस जस, भळहळ छायो भाळ। पूनमपत रौ पसरियौ, जाणै किरणा जाळ।—बा दा.

२ व्याप्त होना। उ०—अग छागी असळाख, लखा माख्या मुख लागी।—ऊ का.

३ परिपूर्ण होना, पूर्ण होना। उ०—जोवन छाई धण भली र तारा छाई रात।—अज्ञात

४ निवास करना, बसना, रहना। उ०—अखिया क्रिस्ण मिळण की प्यासी, आप तो जाय द्वारका छाये, लोक करत मेरी हासी।

—मीरा

५ छिपना। उ०—छिपा कदळी मे मुनीराण छायो, उठै सोवनी म्रिग मारीच आयो —सू प्र.

६ शोभित होना। उ०—कुच नारगी फळ जसा, सुदर सुघट सिवाय। बाहा गज की सूड सी, चूडा सू रहि छाय।

—कुवरसी साखला री वारता

७ आच्छादित होना, ढका जाना। उ०—१ छायो गयण रभ रथ छाजै, विखमी पाख पाखडी वाजै।—सू प्र. उ०—२ लागै साद सुहामणउ, नस भर कुभडियाह। जळ पीइणिए छाइयउ, कहउ त पूगळ जाह।—ढो मा

क्रि०स०—८ आवृत करना, आच्छादित करना, ढकना।

९ पानी, धूप व वर्षा आदि से बचने के लिये कोई वस्तु तानना, बिछाना १० बिछाना, फैलाना।

छाणहार, हारो (हारी), छाणियो—वि०।

छवाडणो, छवाडबो, छवाणो, छवाबो, छवावणो, छवावबो—प्रे०रू०।

छायोडो—भू०का०कृ०।

छाईजणो, छाईजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

छवणो, छवबो—अक०रू०।

छात—१ देखो 'छत्र' (२, ३, रू भे) उ०—१ कमगजा छात जिग वात क्रत, लख विख्यात सकळप लियौ। रिखि वयण आद वासिस्ट प्रग, कहिया तिम उद्यम कियौ।—रा रू. उ०—२ छक बाघ नोख जोधाण छात। वधि तेम कीजिये नोक बात।—सू प्र.

२ देखो 'छत' (१, २, रू भे)

स०पु०—३ समूह। उ०—सीता वरि जनक पण साचव, सुवह किया अपसोसे। छाता खळा उतोळै छोळा, भ्राता तुझ भरोसे।

—र रू.

४ राज्य। उ०—गढ तू जिसो सिंघ राया गुर, गढ सिरखो रिव तो यह गात। पाम्यो दुरग दुरग सम छत्रपत, छत्रपत पाम दुरग सम छात।—द दा

[स० क्षत] ५ घाव, क्षत।

वि०—श्रेष्ठ, शिरोमणि, सिरमौर। उ०—अवतारा छात नमो अव-धेसर, सक तोवाळा प्रात समै। चरणा नही नमायो चाचर, नर वे अवरा चरण नमै।—र रू.

छातपत, छातपति, छातपती—स०पु० [स० छत्रपति] राजा, नृप, बादशाह। उ०—१ उजेणी खेत सुण वात अखियात, आ छातपत बिया अहमेव छाडै। दुरत गत दिखण गुजरात रा दळा सू, मुरधरानाथ भाराथ माडै।—महाराजा जसवतसिह रौ गीत

उ०—२ छातपति हेक अम्मली छत्त। गिरमेर प्रमाणह तास गत्त।
—रा ज सी

छात-रगी—जबरदस्त, शक्तिशाली।

उ०—जगी रिसाला हलता अळै, सामद हिलोळा जेहा, छात-रगी हसम्मा भळ ता काळ चोट। जोर दीधी फिरगी लिखायौ कौलनामौ जठै, आप-रगी चूडा'तै मेवाड राखी ओट।
—राघोदास सादू

छातर—देखो 'छत्र' (रू भे) उ०—प्रथी कुमया मया तणी पूगी परख नरापत ऊनथा घणा नाथै। आलमा साह सिर छातर ऊथोळिया मेलिया गरीबा तणै माथै।—महाराजा अजीतसिह (जोधपुर) रौ गीत

छातरकौ—स०पु०—छिलका।

छातरणौ, छातरबौ—क्रि०अ०स०—१ जलमग्न होना या करना, डूबना, डुबाना। उ०—सवदी लग कोड अजाद रायसिंघ, गहवत रैणायर वडगात। ऊपर लहर सवाई अपतै, छिळतै छातरिया अन छात।
—दुरसौ आढौ

२ फैलना, पसरना, फैलाना, पसराना।

छातरियोडौ—भू०का०कृ०—१ डूबा हुआ, डुबाया हुआ २ फैला हुआ, पसराया हुआ (स्त्री० छातरियोडी)

छातिया, छाती—स०स्त्री०—१ पेट और गर्दन के बीच का सम्मुख का भाग, सीना, वक्षस्थल। उ०—कहउरी सदेस खरा गुरु आवतिया, तिण वेळा उळसी मेरी छातिया।—ऐ जै का स

वि०वि०—छाती की पसलिया पीछे की ओर रीढ और आगे अस्थि-दड से जुडी रहती हैं। इसके अन्दर के कोठे मे फुफ्फुस व हृदय रहता है।

पर्या०—उर, उरस, उराट, कोड, छाती, वकस, बच्छा, भुजअतर, मनधर।

मुहा०—१ छाती उमडणी—किसी की याद से बेचैन होना। प्रेम या करुणा से गद्गद् होना २ छाती कूटणी—हाय-हाय करना, अधिक विलाप करना शोक या दुख के आवेग मे छाती पर हाथ पटकना ३ छाती खूदणी—निरन्तर तग करना ४ छाती खोलणी—हिम्मत रखना, दिलेर होना। हृदय मे कोई छल-कपट नही रखना। निष्कपट होना ५ छाती चढणी—कष्ट देने के लिये तैयार रहना। किसी काम आदि के लिये हर समय कहते रहना ६ छाती चेपणी—देखो 'छाती लगाणी' ७ छाती छलणी होणी—अनेक कष्टो से अत्यत दुखी होना, बहुत आघात सहना, हृदय विदीर्ण होना ८ छाती छोलणी—कष्ट पहुचा कर तग करना, आघात पहुचाना ९ छाती ठडी होणी—इच्छित कार्य पूरा होना, सतोष होना, हृदय शीतल होना १० छाती ठारणी—अनुकूल कार्य कर सतोष पहुचाना ११ छाती ठोकणी—हिम्मत करना, दृढता के साथ कहना १२ छाती तपाणी—अथक परिश्रम करना १३ छाती निकाळणी—अकड कर चलना, गर्व करना १४ छाती पर फिरणी—हर समय याद आना, तग करने के लिये बार-बार आना १५ छाती पर सवार होणौ—काम कराने के लिये सिर पर सवार होना। तग करने के लिये सदैव सामने रहना। १६ छाती पीटणी—देखो 'छाती कूटणी' १७ छाती फाटणी—दुख से हृदय व्यथित होना, भयभीत होना, डरना। जी जलना, दाह होना १८ छाती फुलाणी—अकड कर चलना, गर्व दिखाना, इतरा कर चलना १९ छाती फूलणी—प्रसन्न होना, खुश होना, गर्वित होना २० छाती बळणी—दुख होना, मानसिक व्यथा होना, ईर्ष्या या क्रोध से चित्त सतप्त होना, डाह होना, जलन होना. २१ छाती भरीजणी—प्रेम या दया से गद्गद् हो जाना, प्रेम उमड आना, स्तनो मे दूध भर आना २२ छाती माथलौ भाटौ—ऐसी वस्तु जिसके कारण सदैव चिंता बनी रहती हो २३ छाती माथै झेलणी—स्वय दुख सहना, आपत्ति को अपने ऊपर लेना २४ छाती माथै भाटौ मेलणौ—चुपचाप दुख या हानि सहन कर लेना २५ छाती माथै मूग दळणा—अधिक कष्ट पहुंचाना, किसी के सामने ही उसकी बुराई या हानि करना २६ छाती मे राध गेरणी—अधिक कष्ट देना, विघ्न डालना, भारी चिंता पैदा करना २७ छाती रा किंवाड खोलणा—हृदय के अधकार को दूर करना। हृदय की बात स्पष्ट कहना, मन मे कुछ गुप्त न रखना. २८ छाती रा छोडा लेणा—देखो 'छाती छोलणी' २९ छाती रौ जम—निरन्तर दुख देने वाली वस्तु या कष्टदायक व्यक्ति. ३० छाती लगाणौ—बहुत प्यार करना। अपना बना कर रखना। ३१ छाती सू छाती मिळाणी—बराबरी करना, मुकाबले के लिये दृढता से सामने खडे होना।

कहा०—छाती साटै बाटी—हिम्मत आदि से कार्य करने पर ही जीविका प्राप्त होती रहती है। साहस रखने पर सारे काम सफल होते रहते हैं।

यौ०—छातीकूटौ, छातीछोलौ, छातीझल्लौ, छातीसधरौ।

२ हृदय, कलेजा, मन, जी, चित्त।

मुहा०—१ छाती उमडणी—प्रेम या करुणा के आवेग से हृदय गद्गद होना २ छाती छलणी होणी—कष्ट या अपमान से हृदय का अत्यन्त व्यथित होना ३ छाती ठडी होणी—प्रसन्न चित्त होना। हृदय शीतल होना। मन का इच्छित कार्य पूर्ण होना ४ छाती धडकणी—भय या आशका से हृदय कपित होना, कलेजा धक-धक करना. ५ छाती पत्थर री होणी—शोक या दुख सहने के लिये हृदय को कडा करना। दिल को मजबूत बनाना. ६ छाती फाटणी—हृदय विदीर्ण होना, अधिक भय या अत्यत शोक का

समाचार सुन हृदय का अन्यत व्याकुल होना। अधिक मानसिक पीडा होना ७ छाती भरीजणी—अगाध स्नेह, अत्यधिक प्रेम या असीम करुणा से हृदय का परिपूर्ण होना। हृदय गद्गद होना. ८ छाती मे पीडा होणी—देखो 'छाती छळणी होणी'।
३ स्तन, कुच।
मुहा०—१ छाती ऊठणी—लडकियो का युवावस्था मे प्रवेश करना। युवावस्था मे स्त्रियो के स्तन उभरना २ छाती देणी—बच्चे के मुह मे स्तन देना, दूध पिलाना. ३ छाती भरीजणी—स्तन मे दूध भर आना, बच्चे के प्रति वात्सल्य उमड आना ४ छाती मसळणी—स्तन दबाना, काम के लिये प्रेरित करना (सभोग का एक अग)।
४ हिम्मत, साहस, दृढता।
मुहा०—छाती करणी—किसी कार्य के करने के लिये हिम्मत करना।
रू०भे०—छति, छती, छत्ति, छत्ती।

छातीकटो—स०पु०यो०—१ व्यर्थ की शिरपच्ची, मगजमारी २ कलह लडाई. ३ अरुचिकर कार्य जो किसी दवाव से करना पडता है ४ छाती पीटने का भाव, हाय-हाय।
वि०—छाती या सीना पीटने वाला।

छातीछोलो—वि०पु०यो० (स्त्री. छातीछोली) दुखदायो, कष्ट देने वाला, पीडा पहुँचाने वाला, निरन्तर तग करने वाला। उ०—छातीछोला छोडदे, ओछा वोला एह। अव ती ढोला चेति उर, गोला खावै गेह।—ऊ का

छातीझलो—वि०पु०यो०—साहसी, हिम्मत रखने वाला। (स्त्री. छातीझली)

छातीपीटो—देखो 'छातीकूटी' (रू भे)

छातीवद—स०पु०—घोडे का एक रोग विशेष (शा हो)

छातो—स०पु० [स० छत्र, प्रा० छत्त] १ लोहे वास आदि की पतली सलाकाओ पर कपडा चढा कर बनाया हुआ आच्छादन जिसे मनुष्य धूप वर्षा आदि मे वचने के लिये उपयोग मे लेते हैं, छाता।
रू०भे०—छतो।
अल्पा०—छतडी, छतडो, छतरडी, छतरडो, छतरी, छत्तल्लो।
२ हल्के किस्म का देशी शराव ३ झुड, समूह ४ मधुमक्खी का छत्ता।

छात्र—स०पु० [स०] १ विद्यार्थी, शिष्य २ राजा, छत्रपति।
उ०—१ चूडा वीरम सळख साख तेरह अजुआळा, छाडा तीडा छात्र हुआ कमधज्ज हथाळा।—वचनिका
उ०—२ छात्र त्रिहलोक रै छेडिया छेहडा, ओकमो परणियो सत तारे।—पीरदान लाळस

छात्रपत, छात्रपति—स०पु० [स० छत्रपति] राजा, नृप।
उ०—१ जोगेस्वर मकज मदर वसु, वदन सुकळीण ससहर विराजै, परा सुळताण ती नीसरै जोधपुर, छात्रपत जोधपुर तू होज छाजै।
—मालो सादू
उ०—२ किता कोट सैलोट चढ चोट अकवर किया, छात्रपति गया सहि देस छडै।—सोहिल भोजग

छात्रवृति—स०स्त्री० [स० छात्रवृति] किसी विद्यार्थी को विद्याभ्यास के लिये सहायता मे दिया जाने वाला धन।

छात्रालय—स०पु० [स०] वह स्थान जहा विद्यार्थियो के निवास का प्रवन्ध हो।

छाद—देखो 'छाड' (रू.भे)

छादण—स०पु० [स० छादन] आच्छादित करने का कार्य या सामग्री।

छादणी—स०स्त्री० [स० छर्दि] कै, वमन (अमरत)।

छादणो, छादवो—क्रि०स०—१ आच्छादित करना, ढकना उ०—अति काळमळ प्राण आपाणं, जळ अवाह छादियो जाणं।—रा.रू
२ वमन करना, कै करना।

छादन—स०पु०—वस्त्र, कपडा। उ०—केता छादन कुरमी रण मोद रगाया, केता अच्छरि चाहिके सिरमोर वनाया।—व भा

छादियोडो—भू०का०कृ०—१ ढका हुआ, आच्छादित २ वमन किया हुआ, कै किया हुआ। (स्त्री० छादियोडी)

छाप—स०स्त्री०—१ किसी साचे या ठप्पे आदि को रग से पोत कर किसी वस्तु पर दवा कर वनाया हुआ चिन्ह, गुदे या उभरे हुए ठप्पे का निशान।
क्रि०प्र०—माडणी. लगाणी।
२ मुहर का चिन्ह, मुद्रा।
क्रि०प्र०—पडणी, मडणी, माडणी, लगाणी।
३ वैष्णवो द्वारा अपने अगो पर गर्म धातु से अकित कराये जाने वाले शख, चक्र आदि के चिन्ह ४ अन्न राशि पर राख का चूर्ण डाल कर वनाया हुआ सकेत-चिन्ह ५ गेय गीतो मे गीतकार का नाम।
क्रि०प्र०—लगाणी।
६ चित्र, तसवीर।
क्रि०प्र०—कोरणी, वणाणी, भरणी, माडणी।

छापणो, छापवो—क्रि०स०—१ छापना, चिन्हित करना २ मुद्रित करना, प्रकाशित करना २ झडवेरी के सूखे काटो की गुच्छे के रूप मे एक दूसरे पर लगाना, जमाना। उ०—कोड कराया करै भरणनै पालो भारी, ऊटा ढेरा होय छापवै वाडा सारी।—दसदेव
छापणहार, हारो (हारी), छापणियो—वि०।
छपवाडणो, छपवाडवो, छपवाणो, छपवावो, छपवावणो, छपवाववो, छपाडणो, छपाडवो, छपाणो, छपावो, छपावणो, छपाववो—प्रे०रू०।
छापिओडो, छापियोडो, छाप्योडो—भू०का०कृ०।
छापीजणो, छापीजवो—कर्म वा०।
छपणो, छपवो—अक० रू०।

छापर, छापरि—स०स्त्री०—१ पहाडी, डूंगरी २ पथरीली भूमि। (मि तालर) ३ ऊसर भूमि ४ रणक्षेत्र, रणभूमि. ५ समतल भूमि, खुला मैदान। उ०—सीहणि हेको सीह जणि, छापरि मंडे आळि। दूध विटाळण कापुरस, वैहळा जणै सियाळि।—हा झा

छापरो—वि०—१ ठिंगना, वौना, नाटे कद का २ फैला हुआ, छितराया

हुआ। उ०—सग्व कुलक्षण, पीत केस, घूयड जिम चीपडी नासिका, मारजार जिम पीळी ग्राखि, उदर जिम लघु करणा, मुख कदराकार, गावडा दात, मोटउ पेट, दूबळी जाघ, छापरा पग, टापरा कान।
—वरण्यवस्तु वरणनपद्धति

छापाखानौ–स०पु०—वह स्थान जहा पुस्तकें, पत्र-पत्रिकायें आदि छपने का कार्य होता हो, मुद्रणालय।
रू०भे०—छपाखानौ।

छापि–स०पु०—पानी, जल (ना डि को.)

छापियोडौ–भू०का०कृ०—१ मुद्रित किया हुआ २ अकित किया हुआ. ३ प्रकाशित किया हुआ ४ कटीली सूखी झाडियो को जमाया हुआ। (स्त्री० छापियोडी)

छापौ–स०पु० १ देखो 'छाप' (रू भे) २ पुस्तकें, पत्र-पत्रिकायें आदि छापने का यंत्र ३ रात्रि मे असावधान व्यक्ति या शत्रु सेना पर अचानक किया जाने वाला आक्रमण, धावा।
क्रि०प्र०—डालणौ, मारणौ।
४ झडवेरी के पत्तो का ढेर ५ ठप्पे या मुहर से दवा कर डाला हुआ चिन्ह। उ०—छाप रोस जरी रो सरसता छजि, तारा घर ऊगा किर नभ तजि।—सू प्र

छाब–स०स्त्री० [स० छविल] बास की छवडी, टोकरी, डलिया।
उ०—तठा उपरायत माळा फूला री छाबा ग्राण हाजर कीजै छै।
—रा.सा म
रू०भे०—छाव।
ग्रल्पा०—छबडली, छबडलौ, छबडि, छबडियौ, छबडी, छबडौ, छवडचौ, छबलडी, छबलडौ, छवलि, छबलियौ, छबली, छबलौ, छवल्यौ, छबोलडी, छबोलडौ, छबोलि, छबोलियौ, छबोलि, छबोलौ, छबोल्यौ, छाबडली, छाबडलौ, छाबडि, छाबडियौ, छाबडी, छाबडौ, छाबडचौ, छाबलडी, छाबलडौ, छाबलि, छाबलियौ, छाबली, छाबलौ, छाबल्यौ, छाबोलडी, छाबोलडौ, छाबोलि, छाबोलियौ, छाबोली, छाबोलौ, छाबोल्यौ, छाबडौ, छाबळी।
मह०—छबड, छबल, छबोल, छाबक, छाबड, छाबड, छाबल, छाबोल।

छाबक–स०स्त्री०—१ छिपकली (डि को) २ देखो 'छाब' (मह रू भे)

छाबड—देखो 'छाब' (मह रू भे) उ०—कळपै अकबर काय, गुण पूगीघर गोडिया। मिणघर छाबड माय, पडै न राण 'प्रतापसी'।
—दुरसौ ग्राढौ

छाबडली—देखो 'छाब' (ग्रल्पा रू भे)

छाबडलौ–स०पु०—देखो 'छाब' (ग्रल्पा रू भे)

छाबडि—देखो 'छाब' (ग्रल्पा रू भे)

छाबडियौ–स०पु०—देखो 'छाब' (ग्रल्पा रू.भे)

छाबडी—देखो 'छाब' (ग्रल्पा रू भे) उ०—१ हरिया वासा री छाबडी रे, माय चपेली रो फूल।—लो गी

छाबडौ, छाबड्यौ–स०पु०—१ देखो 'छाब' (ग्रल्पा रू भे) उ०—जा रे भवरा विणज कर, बोहळै बाजारे। उरै न ढूकै छाबडै, ग्रेह दिन चीतारे।—र रा
२ कुकुम रखने का काष्ठ का बना पात्र।
उ०—१ नमो वीतरागाय, ऊपेलई मालि, प्रसन्नइ कालि, वारू मंडप नीपाइउ, पोइणिने पानि छाइउ, ककू ना छावड़ा, मोती ना चउक।
—विव
उ०—२ सभा माहि रावणाकाच ढाळिउ, कुकम तणा छाबड़ा दीधा कस्तुरिकाना स्तवक पडिया।—सभा सिंगार

छाबल— १ देखो 'छाब' (मह रू भे.) २ देखो 'छाबली' (मह. रू भे)

छाबलड़ी—१ देखो 'छाब' (ग्रल्पा. रू भे) २ देखो 'छाबली' (ग्रल्पा. रू भे)

छाबलडौ–स०पु०—१ देखो 'छाब' (ग्रल्पा रू भे.) २ देखो 'छाबली' (ग्रल्पा रू भे)

छाबलि—१ देखो 'छाब' (ग्रल्पा रू भे) २ देखो 'छाबली' (रू भे)

छाबलियौ–स०पु०—१ देखो 'छाब' (ग्रल्पा रू.भे) २ देखो 'छाबली' (ग्रल्पा रू भे)

छाबली–स०स्त्री०—१ खजरी से मिलता-जुलता एक वाद्य विशेष या इस पर गाया जाने वाला गीत।
रू०भे०—छबलि, छबली, छबोलि, छबोली, छाबलि, छाबली, छाबोलि, छाबोली, छावळी।
ग्रल्पा०—छबलडी, छबलडौ, छबलियौ, छबलौ, छबल्यौ, छबोलडी, छबोलडौ, छबोलियौ, छबोलौ, छबोल्यौ, छाबलडी, छाबलडौ, छाबलियौ, छाबलौ, छाबल्यौ, छाबोलडी, छाबोलडौ, छाबोलियौ, छाबोलौ, छाबोल्यौ।
मह०—छबल, छबोल, छाबल, छाबोल।
२ देखो छाब' (ग्रल्पा रू भे)

छाबलौ, छाबल्यौ–स०पु०—१ देखो 'छाब' (ग्रल्पा रू भे) २ देखो 'छाबली' (ग्रल्पा रू भे)

छाबोल–स०पु०—१ देखो 'छाब' (मह रू भे) २ देखो 'छाबली' (मह. रू भे)

छाबोलडी—१ देखो 'छाब' (ग्रल्पा रू भे) २ देखो 'छाबली' (ग्रल्पा रू भे)

छाबोलडौ–स०पु०—१ देखो 'छाब' (ग्रल्पा रू भे) २ देखो 'छाबली' (ग्रल्पा रू.भे.)

छाबोलि—१ देखो 'छाब' (ग्रल्पा रू भे) २ देखो 'छाबली' (रू भे)

छाबोलियौ–स०पु०—१ देखो 'छाब' (ग्रल्पा रू भे.) २ देखो 'छाबली' (ग्रल्पा रू भे)

छाबोली—१ देखो 'छाब' (ग्रल्पा रू भे) २ देखो 'छाबली' (रू भे)

छाबोलौ, छाबोल्यौ–स०पु०—१ देखो 'छाब' (ग्रल्पा रू भे.) २ देखो 'छाबली' (ग्रल्पा रू भे)

छाय—१ देखो 'छाया' (रू भे) उ०—पग पग पाणी पालरो, वादळिया री छाय । पपैया तू बोल रे, जित म्हारे आलीजे भवर री मुकाम ।—लो गी
२ चोट आदि के कारण आख की पुतली पर छाने वाली सफेदी (रू भे.) ।
३ एक प्रकार की खाड जिसका रग लाल सफेद होता है ।
छायल–वि०—१ वहादुर, वीर, जवरदस्त । उ०—भडा काचा कहे, बोलावै भायला, डायला आगळै रहै डरती तो जसा छायला 'सीह' 'गोकळ' तणा, घणी अजरायळा तणी धरती ।—बद्रीदास खिडियो
२ शौकीन, रसिक । उ०—छाक बवाळ अपछरा छायल, अरज कीध 'पदमै' अजरायळ ।—सू प्र
छायाक–स०पु० [स०] चन्द्रमा, चाद (डि को.)
छाया–स०स्त्री०—१ प्रकाश या किरणो के मार्ग मे किसी व्यवधान के कारण उसके आगे होने वाला प्रकाश का अभाव या इसके कारण उत्पन्न होने वाला कुछ हल्का अधकार या कालिमा ।
मुहा०—घिरती छाया देखणी—जिधर लाभ की आशा हो उधर झुक जाना ।
२ वह स्थान जहा किसी आड या व्यवधान के कारण सूर्य, चन्द्रमा, दीपक या अन्य कोई आलोकप्रद वस्तु का प्रकाश न पडता हो ।
३ उस वस्तु की कालिमापूर्ण आकृति जो प्रकाश को कुछ दूरी तक रोकने से बनती है ४ प्रतिकृति, अनुहार, तद्रूप वस्तु ५ जल, दर्पण आदि मे दिखाई दी जाने वाली आकृति, प्रतिविम्ब, अक्स ६ अनुकरण, नकल ७ किसी देव विशेष की उपस्थिति का शरीर मे अनुभव होकर तदनुसार अग सचालित होने और मुह की ध्वनि उत्पन्न होने की क्रिया, भूतप्रेत का प्रभाव ।
क्रि०प्र०—आणी, जाणी ।
८ सूर्य की एक पत्नी का नाम ।
यौ० छाया-पुत्र.
९ शरण, रक्षा, सुरक्षा ।
क्रि०प्र०—दैणी, राखणी ।
१० काति, दीप्ति, चमक, झलक ११ चिता, दु ख आदि के कारण चेहरे पर आखो के नीचे पडने वाले कुछ श्यामल दाग, धब्बे १२ आर्या या गाहा छद का भेद विशेष जिसके चारो चरणो मे मिला कर २३ लघु १७ दीर्घ वर्ण सहित ५७ मात्रा हो (ल.पि)
रू०भे०—छाय, छाया, छाव, छाह, छाही, छाग्र, छाय, छाह, छिया, छीया ।
अल्पा०—छायडी, छावडी, छावळी, छाहडी, छाहरी, छावळी, छियाडी, छियाळियो, छियाळी, छीयाडी, छीयाळी ।
मह०—छावळ, छाहड, छाहड ।
छायाजन्न–स०पु० [स० छायायत्र] छाया के आधार पर समयसूचक यत्र, धूप घडी ।
छायाटोडी–स०स्त्री०—एक राग विशेष ।

छायापथ–स०पु० [स०] १ आकाश गगा । २ आकाश ।
छायापुत्र–स०पु०—शनिश्चर । उ०—रावण भ्रात जेण रो राजा, रग तिकण सू रेलै । छायापुत्र सहोदर छाकै, छोह न ता पर छेलै ।—र रू
छायापुरस–स०पु० [स० छायापुरुष] आकाश की ओर बहुत देर तक स्थिर दृष्टि से देखते रहने की साधना से दिखाई दी जाने वाली मनुष्य की छाया रूप आकृति (हठयोग) ।
छायामान, छायावाळ–स०पु० [स० छायामान] चद्रमा, चाद । (डि को)
छायोडौ–भू०का०कृ०—१ छाया हुआ, आच्छादित २ फैला हुआ, पसरा हुआ ३ फैलाया हुआ (स्त्री० छायोडी)
छारडी–स०स्त्री०—होली का दूसरा दिन । इस दिन मनाया जाने वाला उत्सव ।
क्रि०प्र०—रोलणी, रमणी ।
छार–स०पु० [स० क्षार] १ क्षार २ राख, भस्म । उ०—१ या मन की रीति है, जहा तहा चलि जाय । कवहुक लोटे छार मे, कवहुक मलि मलि न्हाय ।—ह पु वा उ०—२ जवर-जवर जोधार, सहनबाहु सिसुपाळ सम । छिन मे हुय गया छार, चिन्ह रह्यो नहि चकरिया ।
—मोहनलाल साह
छारोळी—देखो 'चाळोरी' (रू.भे)
छाळ—१ देखो 'छाळी' (मह० रू भे) उ०—एवाळ कहण लागो माहू तो माहरा साथ माह छू । कालै म्हारी छाळ चारती हुती ।—ढो मा
२ छलाग । उ०—सोखा सावै ऊट उवाणा गूजै गाळा, खोसा छोकल खाय छेकता जगळ छाळा ।—दसदेव
३ देखो 'चाळ' (२ रू भे)
छाल–स०स्त्री० [स० छल्लि, छली] १ वृक्ष के तने, शाखा आदि के ऊपर का छिलका, वल्कल ।
पर्या०—चोच, छाल, वलकल ।
२ छिलका. ३ चर्म, त्वचा । उ०—उरमाळ मुडनि छाल म्रिग की खाल केसरि जूसण । वपु भस्म लेप स्मसान राजित व्याळ पाणि विभूसण ।—ला रा
४ वमन, कै । उ०—ओथि राघवदास सजोह पहरियो हुतो अर अफीण खाधो हुतो, ताहरा तळछर ऊपर छाल विहु हुई ।—द वि
छाळकी—देखो 'छाळी' (अल्पा० रू भे)
छाळको—देखो 'छाळो' (२, अल्पा० रू भे)
छालणी–स०पु०—वडी छलनी ।
छालणो, छालबो–क्रि०स०—१ छानना २ छीलना, साफ करना ।
उ०—खळ वटिया री खरड छुरी सू छालण लागै । पोतो पडियो रहै अगाडी मूडा आगै ।—ऊ का
३ इतना भरना कि वस्तु पात्र मे नही समाने के कारण गिरने लग जाय, परिपूर्ण करना, भरना । उ०—छोटी दीवडिया काखा तळ छालै । मोटी लोटडिया दाखा जळ मालै ।—ऊ का
छालणहार, हारौ (हारी), छालणियौ—वि० ।

छालिश्रोडो, छालियोडो, छाल्योडौ—भू०का०कृ०।
छालीजणौ, छालीजबौ—कर्म वा०।
छालि–सं०स्त्री०—छाल, वल्कल।
छाळी–सं०स्त्री० [सं० छागली] बकरी। उ०—पहिरण ओढ़ण कबळा, साठे पुरसे नीर। आपण लोक उभाखरा, गाडर छाळी खीर। —ढो मा
कहा०—१ छाळी नू चरणार नै चीता नू बेहनार—बकरी के चरने का स्थान है वही चीते के बैठने का स्थान है। भक्ष्य और भक्षक का एक ही स्थान पर होना कठिन होता है २ छाळी पकडियो ना'र नै जे छोडै तो खाय—बकरी ने शेर को पकड तो लिया परतु अब छोडती है तो वह उसे ही खा जाता है। सब तरह से कठिन या मुश्किल होना ३ छाळी बाळी और भैस बूढाळी—दूध के लिये बकरी जवान और भैस प्रौढ अच्छी होती है ४ छाळी रा कान एवाळा आधीन—बकरिया गडरिये के आधीन रहती हैं। परवस पडे व्यक्ति की अपनी कोई स्वतत्रता नही रहती ५ छाळी रोवै जीव नै कसाई रोवै मास नै—बकरी तो अपना प्राण बचाने की सोचती है और कसाई अपनी जीविका हेतु उसके मास की सोचता है। ससार मे सब कोई अपना-अपना स्वार्थ ही देखते हैं. ६ म्हारी म्हारी छाळिया नै दही दूधो पाऊ, ना'रियो आवै तो सोटा री धमकाऊ—केवल अपने ही व्यक्तियो की स्वार्थ-सिद्धि मे निरन्तर सहयोग देने वाले के प्रति कही जाने वाली कहावत।
अल्पा०—छाळकी।
मह०—छाळ।
छाळीना'र, छाळीना'रियौ–सं०पु०—कुत्ते की जाति का एक जगली हिंसक पशु जो कद मे कुत्ते से कुछ बडा होता है और कुत्ते, बकरी, बछडे आदि का शिकार करता है।
छाळौ–सं०पु०—१ शरीर के किसी स्थान पर जलने, रगड खाने या किसी अन्य कारण से चमडी का उभरा हुआ तल जिसके भीतर एक प्रकार का चेप या पानी भरा रहता है, फफोला। उ०—हाथाळी छाळा पडचा, चीर निचोइ निचोइ।—ढो मा
[सं० छगल, छागल] २ बकरा (डि को)
अल्पा०—छाळको।
छाल्लौ—देखो 'छाज' (अल्पा० रू भे) उ०—म्हारी मीठी लागै खीचडी, म्हारी चोखी लागै खीचडी। ऊखळ घाल्यो बाजरो, म्हें छाल्लै घाली दाळ।—लो गी
छाव—१ देखो छावौ (मह० रू भे) उ०—सूरौ दाटक सिंहळी, छळ हुत मारै छाव। पिव पतळौ पँनाग पर, घालै चौडै घाव। देखो 'छाव' (रू भे) —रेवतसिंह भाटी
छावउ–सं०पु० [सं० शावक] (स्त्री० छावी) १ युवक। उ०—१ इसउ वचनु तव बोलइ, कामगल्लिय नारि। छयलु छरालउ छावउ, छइ कोइ नयर मझारि?—प्राचीन फागु-सग्रह
उ०—२ पदमिनी कमळ करइ विकास, नवयोवन स्त्री करइ विलास। मिळि सिवे छावी लहूअडी, प्रिय विण न रहइ एकइ घडी।—प्राचीन फागु-सग्रह
२ देखो 'छावौ' (रू.भे)
छावड़ी–सं०स्त्री०—१ पतली-पतली छ रस्सियो की बनी एक मोटी व मजबूत रस्सी जो ऊंट के मुह पर बाधने के लिये बनाई जाती है २ देखो 'छाब' (मह० रू भे)
सं०पु०—३ बालक, बच्चा। उ०—मेटणौ भीड भुजि गयद री मोटिया, छावड वळ हतै कळाइया छोटिया।—हा.झा.
छावडी—देखो 'छाव' (अल्पा० रू भे)
छावडौ—१ देखो 'छाव' (अल्पा० रू भे)
२ देखो 'छावौ' (अल्पा० रू भे) (स्त्री० छावडी)
उ०—१ सीहा हुदा छावडा, धसै समुख खग धार। वाहै लज रा वीटिया, सीस गयदा सार।—प्रतापसीघ म्होकमसीघ री वात
उ०—२ नमो नरनाह हथवाह 'पदमा' निडर, बोट अरि थाट असुरा सवाही। साहिया खडग 'करणेस' रा छावडा, मालियो भलो अवखास माही।—द दा
छावणी–सं०स्त्री०—फौज के रहने का स्थान, डेरा, पडाव।
उ०—बरसात लागी अर उवै मेडतौ झाल बैठिया, वाहरै नीसरता सो सारा काम आइया, तिणसू सोजत पधार आप छावणी कीजे।—मारवाड रा अमरावा री वारता
छावणौ, छावबौ—देखो 'छाणौ' (रू.भे) उ०—१ छहू रिति जिन्हू के तट परि ब्रह्मग्यानी सिध मुनिराज छावै। मान सरोवर के भौळै भूल अनेक लीलग आवै।—सू प्र उ०—२ नवा दिहाडा नव रुता, नव तरुणी सौ नेह। नवा तिण घर छावियौ, वरसौ अधका मेह। —र.रा.
छावणहार, हारौ (हारी), छावणियौ—वि०।
छवाडणौ, छवाडबौ छवाणौ, छवाबौ, छवावणौ, छवावबौ—प्रे०रू०।
छाविश्रोडो, छावियोडौ, छाव्योडो भू०का०कृ०।
छावीजणौ, छावीजबौ—कर्म वा०।
छावनौ–सं०पु०—५६ वा वर्ष। उ०—परणीजण पाधारियौ, 'जेसाणै' अगजीत'। छट्ट ऊजळी छावनै, पख आसाढ सप्रीत।—रा रू
छावळी—१ देखो 'छावली' (रू भे) २ देखो 'छाब' (अल्पा० रू भे.) ३ देखो 'छाया' (रू भे) उ०—बावळिया कतरा वीघा री थारी पेड, बावळिया कतरा वीघा मे थारी छावळी।—लो गा.
छावीस–वि०—देखो 'छव्वीस'। उ०—सहस विनव सौ रूप सुभ, वळि छावीस वताइ। दीसै मोतीदान रै, प्रकट जगण चत्र पाइ। —ल पिं
छावौ–सं०पु० [सं० शावक] १ बच्चा। उ०—ठणै भद्र मद म्रिगा वस ठावा, छटा फैल हालै किना सेल छावा।—वं भा.
२ पुत्र, लडका। उ०—१ औ तौ गहरौ गहरौ विरमाजी रो छावौ

[illegible] गनिया गरो जी पूर गुमान रो ।—जो.गी.

रू०भे०—[illegible] ।

अल्पा०—[illegible] ।

मह०—[illegible] ।

वि० (स्त्री० छाती) प्रसिद्ध, विख्यात । उ०—ऐरापति जग तिलक [illegible], छाको मद माळ । दळ सिंगार गजघट बहादर, [illegible] सिंदूर [illegible] भमर ।—रा रू.

[illegible]—[illegible] ।

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू भे)

छासठ—वि० [सं० षट्षष्टि, प्रा० छासट्ठि] साठ से छ अधिक, साठ और छ का योग, छियासठ ।

सं०पु०—६६ की संख्या ।

छासठमौ—वि०—६६वां ।

छासठ'क—वि० छियासठ के लगभग ।

छासठौ—सं०पु०—६६ वां वर्ष ।

छासट—देखो 'छासठ' (रू.भे.)

छासठवौ—देखो 'छासठमौ' (रू भे)

छासठि—वि०—छियासठ । उ०—अणि तेरह नो छासठि भेद । विगति [illegible] ।—[illegible]

छासट'क—देखो 'छासठ'क' (रू भे)

छासटौ—सं०पु०—६६ वां वर्ष ।

छांग—देखो 'छाग' (रू भे)

छांहु—१ देखो 'छाछ' (रू भे) २ देखो 'छाया' (रू भे.)

उ०—[illegible] हरिदास गोरस नही, घोर तरै मुख पाक । माल मुनक है [illegible], [illegible] छांहु मन [illegible] ।—ह पु वा

[illegible]—सं०पु०—१ [illegible] या इस नाम का व्यक्ति २ देखो '[illegible]' (अल्पा० रू भे)

[illegible]—देखो '[illegible]' (अल्पा रू भे) उ०—१ [illegible] जहां छाहड़ो [illegible] ।—ह पु वा

उ०—२ [illegible] नहि न्हाए । [illegible] ।—बा दे.

[illegible]—स्त्री०—[illegible] (जोत)

छिकणौ, छिकबौ—क्रि०अ० ('छकणौ' क्रिया का रू०भे०) छीकने की क्रिया करना ।

छिकणहार, हारौ (हारी), छिकणियौ—वि० ।

छिकियोड़ौ—भू०का०कृ० ।

छिकाईजणौ, छिकाईजबौ—कर्म वा० ।

छिकाड़णौ, छिकाड़बौ, छिकावणौ, छिकावबौ—प्रे०रू० ।

[illegible]—[illegible] ।

छिकियोड़ौ—भू०का०कृ०—[illegible] छीकने की क्रिया किया हुआ ।

(स्त्री० छिकायोड़ी)

छिगास—देखो 'छगास' (रू भे) उ०—गाया नै गिरमास ठिकाणो चोडै ठायो, सूवै सूतक सुधी, तळै छिगास विसायो ।—दसदेव

छिद्र—सं०पु०—देखो 'छीद्र' (रू भे) उ०—घटि घटि घण घाउ घाइ घाउ रत घण, ऊच छिद्र ऊछळै अति । पिडि नीपनो कि खेत्र प्रवाळी, सिरा हग नीसरै सति ।—वेलि

रू०भे०—छित्र ।

छिदगारी—देखो 'छदगारी' (रू भे) उ०—नही मोती माळा नहि न छक हाला सुचि नही, नहि नारी प्यारी वचन छिदगारी रुचि नही । —ऊ का

(स्त्री० छिदगारी)

छिया—देखो 'छाया' (रू भे)

छियाडी—देखो 'छाया' (अल्पा. रू भे)

छियाळियौ—सं०पु०—देखो 'छाया' (अल्पा रू भे)

छियाळी, छियाळीस—वि० [सं० षट्चत्वारिंशत्, प्रा० छंहैतालीस] चालीस से छ अधिक, चालीस और छ का योग ।

सं०पु०—४६ की संख्या ।

रू०भे०—छयाळी ।

छियाळीसमौं—वि०—४६ वा ।

छियाळीसे'क—वि०—छियालीस के लगभग ।

छियाळीसौ—सं०पु०—छियालीसवा वर्ष ।

रू०भे०—छीयाळीसौ ।

छियाळौ—सं०पु०—१ छियालीसवा वर्ष २ देखो 'छाया' (अल्पा रू.भे)

रू०भे०—छयाळौ, छयाळौ, छीयाळौ ।

छियासियौ—सं०पु०—८६ का वर्ष ।

रू०भे०—छयासियौ ।

छियासी—वि० [सं० षडशीति, प्रा० छासीइ] अस्सी और छ का योग, अस्सी से छ अधिक ।

सं०पु०—८६ की संख्या ।

रू०भे०—छयासी ।

छियासीक—वि०—छियासीके लगभग ।

छियासीमौं—वि०—छियासीवा ।

रू०भे०—छयासीमौं ।

छियौ—देखो 'छियो' (रू.भे)

छियरौ—सं०स्त्री०—देखो 'छियरो' (अल्पा. रू भे)

छिवगौ—सं०पु०—नये पत्तो युक्त किसी वृक्ष की टहनी ।

छिन्नर—देखो 'छिन्तर' (रू भे)

छि—सं०स्त्री०—१ मर्यादा २ नीर ।

सं०पु०—३ कुम्हार ४ शिकारी ५ कुठार ६ समय ७ देवता (एका०)

अव्य०—तिरस्कार, अरुचि या घृणासूचक शब्द ।

छिम्रतर—देखो 'छियतर' (रू भे)

छिम्रतरमों—देखो 'छियतरमों' (रू भे)

छिम्रंतरो—देखो 'छियतरो' (रू भे)

छिकणी-स०स्त्री० [स० छिक्कनी] तने के सहारे ऊपर न उठ कर केवल जमीन पर ही फैलने वाली घास ।

छिकणो-वि०—जो छिकता हो, छिकने वाला (कागज)

छिकणो, छिकवो—१ देखो 'छकणो' (रू भे) उ०—१ बीजो तौ साथ सगळोई छीकियो, ढोलाजी, पिण छिकण लागा मागणहार दी बउ मागणहार लारै गावती थकी कहण लागी ।—ढो मा

उ०—२ भरमल री मा राणै रै दोय चार दाव ज्यादा देय दीन्हा सो राणोजी छिक परवस हुआ ।—कुवरसी साखला री वारता

छिकणहार, हारो (हारी), छिकणियो—वि० ।

छिकाडणो, छिकाडबो, छिकाणो, छिकावो, छिकावणो, छिकाववो —क्रि०स० ।

छिकिम्रोडो, छिकियोडो, छिक्योडो—भू०का०कृ० ।

छिकीजणो, छिकीजबो—क्रि० भाव वा० ।

छिकमल-स०स्त्री०—पृथ्वी (डि ना मा)

छिकरो, छिक्कर-स०पु० [स० छिक्कर] एक प्रकार का मग जा अपनी तेज गति के लिये प्रसिद्ध है ।

छिक्की-स०स्त्री०—१ विवाह अवसर पर पाणि-ग्रहण के दिन कन्या को घोडे पर बिठा कर जलूस के रूप मे वर के यहा और तत्पश्चात वर को वधू के घर ले जाने की प्रथा (पुष्करणा ब्राह्मण) २ यज्ञोपवीत सस्कार के दिन यज्ञोपवीत लेने वाले को जलूस के साथ घुमाने की प्रथा (पुष्करणा ब्राह्मण) ३ देखो 'छिगी' (रू भे)

छिगी-स०स्त्री०—कमजोरी की अवस्था मे होने वाला पसीना ।

छिडकणो, छिडकबो-क्रि०स०—पानी या किसी द्रव पदार्थ को इस प्रकार फेंकना कि उसके महीन महीन छीटे गिरें । उ०—धोलख धोया आसरा मे, माड माडणा मोवणा । राजी रैवण परसग्या मिर, छिडक छाटणा सोवणा ।—दसदेव

२ न्योछावर करना ।

छिडकणहार, हारो (हारी), छिडकणियो—वि० ।

छिडकवाडणो, छिडकवाडबो, छिडकवाणो, छिडकवावो, छिडकवावणो, छिडकवाववो, छिड़काडणो, छिडकाडबो, छिडकाणो, छिडकावो, छिडकावणो, छिडकाववो—प्रे रू ।

छिडकिम्रोडो, छिडकियोडो, छिडक्योडो—भू०का०कृ० ।

छिडकीजणो, छिडकीजबो—कम वा० ।

छिडकाई-स०स्त्री०—छिडकने का कार्य करने की क्रिया या इस कार्य की मजदूरी ।

छिडकाणो, छिडकाबो-क्रि०स० ('छिडकणो' क्रिया का प्रे०रू०) छिडकने का कार्य कराना ।

छिडकाणहार, हारो (हारी), छिडकाणियो—वि० ।

छिडकायोडो—भू०का०कृ० ।

छिडकाईजणो, छिडकाईजबो—कर्म वा० ।

छिडकायोडो-भू०का०कृ०—छिडकवाया हुआ, छींटे गिराया हुआ । (स्त्री० छिडकायोडी)

छिडकाव-स०पु०—पानी या अन्य द्रव पदार्थ छिटकने की क्रिया ।

उ०—सहचरी चतुर सबोह, मिळ रचत उच्छब मोह । वर करत चौक बणाव, करि कुमकुमा छिडकाव ।—सू प्र.

क्रि०प्र०—करणो, होणो ।

छिडकावणो, छिडकावबो—देखो 'छिडकाणो' (रू भे) उ०—पखें सम सज्जन कोई पावै, हेत प्रीत सोइ पवन हलावै । छिमा गुलाब नीर छिडकावै, पितुवट छाया कोइक पावै ।—ऊ का

छिडकावणहार, हारो (हारी), छिडकावणियो—वि० ।

छिडकाविम्रोडो, छिडकावियोडो, छिडकाव्योडो—भू०का०कृ० ।

छिडकावीजणो, छिडकावीजबो—कर्म वा० ।

छिडकियोडो-भू०का०कृ०—छीटे के रूप मे डाला हुआ, छिडका हुआ । (स्त्री० छिडकियोडी)

छिडणो, छिडबो-क्रि०अ०—आरभ होना, शुरू होना, चल पडना ।

छिडणहार, हारो (हारी), छिडणियो—वि० ।

छिडवाडणो, छिडवाडबो, छिडवाणो, छिड़वाबो, छिडवावणो, छिड़वाववो छिड़ाडणो, छिडाडबो, छिडाणो, छिडावो, छिड़ावणो, छिडाववो ।—प्रे रू ।

छिडिम्रोडो, छिडियोडो, छिड्योडो—भू०का०कृ० ।

छिडीजणो, छिडीजबो—भाव वा० ।

छेडणो, छेडबो—क्रि० स० ।

छिडाणो, छिडावो-क्रि०स०—१ ('छिडणो' क्रि का.प्रे.रू) आरभ कराना, शुरू कराना २ तग कराना ।

छिडाणहार, हारो (हारी), छिडाणियो—वि० ।

छिडाडणो, छिडाडबो, छिडावणो, छिडाववो—रू०भे० ।

छिडायोडो—भू०का०कृ० ।

छिडाईजणो, छिडाईजबो—कर्म वा० ।

छिडणो, छिडबो—अक० रू० ।

छिडायोडो-भू०का०कृ०—१ आरभ कराया हुआ, शुरू कराया हुआ २ तग किया हुआ, छेडा हुआ । (स्त्री० छिडायोडी)

छिडियोडो-भू०का०कृ०—आरभ हुआ हुआ । (स्त्री० छिडियोडी)

छिछ—देखो 'छीछ' (रू.भे)

छिछकारी, छिछकी-स०स्त्री०—१ जोश दिलाने या उकसाने का भाव २ उकसाने या प्रेरित करने के प्रयोजन से मुह से निकाली जाने वाली ध्वनि विशेष ।

छिछडो-स०पु०—१ मास का अनुपयोगी टुकडा या तुच्छ टुकडा २ पशुओ की अतडी मे होने वाली मल की थैली ।

छिछलो, छिछिलो-वि०—जो गहरा न हो, छिछला, उथला ।

छिछोर—देखो 'छिछोरो', (मह रू भे)

छिछोरपण, छिछोरपणी–स०पु०—१ बचपन, बालसुलभ चपलता २ ओछापन, क्षुद्रता।

छिछोरी–वि०पु० (स्त्री० छिछोरी) हीन भाव वाला, क्षुद्र, ओछा।

छिजाणी, छिजावी–क्रि०स०—१ छीजने या नष्ट होने देना, किसी वस्तु को ऐसा करना कि वह छीज जाय २ कुढाना, चिढाना. ३ चिंतित करना ४ चूर्ण करना।

छिजाणहार, हारी (हारी), छिजाणियो—वि०।

छिजायोडी—भू०का०कृ०।

छिजाईजणी, छिजाईजवी—कर्म वा०।

छिजाडणी, छिजाडवी, छिजावणी, छिजाववी—रू०भे०।

छीजणी—अक० रू०।

छिजायोडी–भू०का०कृ०—छीजने या नष्ट होने दिया हुआ या किया हुआ। (स्त्री० छिजायोडी)

छिटक–स०स्त्री०—१ जल्दी, शीघ्रता २ पालकी के ओहार का दरवाजे के सामने का भाग।

छिटकणी—देखो 'चिटकणी' (रू भे)

छिटकणी, छिटकवी–क्रि०अ०—१ किसी वस्तु का वेग के साथ अलग हो जाना २ इधर-उधर गिर कर फैलना, चारो ओर बिखरना, छितराना ३ दूर दूर रहना, अलग अलग फिरना. ४ वश मे से निकल जाना ५ देखो 'छिडकणी' (रू भे)

छिटकणहार, हारी (हारी), छिटकणियो—वि०।

छिटकवाडणी, छिटकवाडवी, छिटकवाणी, छिटकवावी, छिटकवावणी, छिटकवाववी—प्रे रू।

छिटकाडणी, छिटकाडवी, छिटकाणी, छिटकावी, छिटकावणी, छिटकाववी—क्रि०स०।

छिटकिओडी, छिटकियोडी, छिटक्योडी—भू०का०कृ०।

छिटकीजणी, छिटकीजवी—भाव वा०।

छिटका–क्रि०वि०—शीघ्रता के साथ। उ०—समजै किउ न अर्ज समजाऊ, भूल मती हव भाया। दोडै उमर छिटका देती, छित जिउ बादळ छाया।—ओपो आढो

छिटकाणी, छिटकावी–क्रि०स०—१ किसी वस्तु को दाव या पकड से बलपूर्वक निकल जाने देना. २ बलपूर्वक झटका देकर छुडाना ३ चारो ओर बिखेरना ४ दूर हटाना. ५ साथ छोडना।

उ०—सुरगा सरीखो पीवर छोडयो, आयी आयी थारै लार। ये छिटकाय मनै सासरै काउचो, पूरवलो कासू वैर, म्हारा काळा रे कागा, एक सनेसो र पिव नै जाय कहो।—लो गी

६ देखो 'छिडकाणी' (रू भे)

छिटकाणहार, हारी (हारी), छिटकाणियो—वि०।

छिटकाडणी, छिटकाडवी, छिटकावणी, छिटकाववी—क्रि०स०।

छिटकायोडी—भू०का०कृ०।

छिटकाईजणी, छिटकाईजवी—कर्म वा०।

छिटकणी, छिटकवी—अक० रू०।

छिटकायोडी–भू०का०कृ०—१ झटके से छुडाया हुआ २ बलपूर्वक अलग किया हुआ ३ चारो ओर बिखेरा हुआ. ४ दूर हटाया हुआ ५ साथ छोडा हुआ। (स्त्री० छिटकायोडी)

छिटकावणी, छिटकाववी—देखो 'छिटकाणी' (रू भे) उ०—गरमी होवै गात जदे वेदा घर जावै, ओखद मूडै आण छैल लाळा छिटकावै।—ऊ का.

छिटकावियोडी—देखो 'छिटकायोडी' (रू भे) (स्त्री० छिटकावियोडी)

छिटकियोडी–भू०का०कृ०—१ वेग के साथ अलग हुआ हुआ २ इधर-उधर गिर कर फैला हुआ, चारो ओर बिखरा हुआ, छितराया हुआ ३ दूर दूर रहा हुआ, अलग अलग फिरा हुआ. ४ वश मे से निकला हुआ ५ देखो 'छिडकियोडी' (रू भे) (स्त्री० छिटकियोडी)

छिटकी–स०पु०—१ किसी द्रव पदार्थ की बूद, छीटा।

क्रि०प्र०—उछळणी, उछाळणी, देणी।

२ झटका, धक्का, आघात।

क्रि०प्र०—देणी।

३ किसी जीव-जन्तु के काटने की क्रिया।

क्रि०प्र०—देणी।

४ वह स्थान जहा किसी जन्तु विशेष ने काटा हो।

क्रि०प्र०—बळणी।

रू०भे०—छिणकी।

छिण–स०पु० [स० क्षण] क्षण, पल। उ०—१ कूरमी घिनि जाणिया, दिन रजनी तिथ वार। एकूकी छिण ऊपरा, वारै रतन अपार।—रा रू

उ०—छिण मे पीड छटाय हाड टूटोडा साधै।—दसदेव

रू०भे०—छिणि।

छिणकी–स०पु०—१ एक प्रकार का घोडा (शा हो) २ देखो 'छिटकी' (रू भे) ३ देखो 'छिणगी' (रू भे)

छिणगटी—देखो 'छीणोटगी' (रू भे)

छिणगारी–वि०पु० (स्त्री० छिणगारी) शौकीन, रसिक, छैला, नखरेबाज। उ०—तोरण आय तुरग नचाया, आप बनू छिणगारी।—समान बाई

छिणगी–स०पु० [स० शृग] १ साफे का वह सिरा जो शिर से पीठ तक लटकता है। सिरा या छोर २ तुर्रा ३ घास विशेष की बाल। रू०भे०—छोगी।

छिणछिणा–वि०—छितराये हुए, छिछले (बादल)

छिणमिण–स०स्त्री०—ध्वनि विशेष। उ०—छिणियां तो छिणमिण चलै, सपक हथोडा साथ। एक घडी मे काट्या लोटियै, बधवा पूरा साठ।—डूगजी जवारजी री पड

छिणवी–स०पु०—९६ का वर्ष।

छिणाई—देखो 'छ'णाई' (रू भे)
छिणि—देखो 'छिण' (रू भे)
छिणियँ—क्रि०वि० [स० क्षण] क्षण भर। उ०—निराउध कियो तदि सोनानामी, केस उतारि विरूप कियौ। छिणियं जीवि जु जीव छडियो, हरि हरिणाखी पेखि हियौ।—वेलि
छिणी—देखो 'छीणी' (रू भे) उ०—इतणी बात सुणी जद लोटचं, तन मन लागी लाय। छिणी-हथोडा ल्येय लोटियो, पडयो कडकडी खाय।—डूगजी ज्वारजी री पड़
छिणु—देखो 'छिन्नू' (रू भे.)
छिणुग्रौ, छिणुवौ—देखो 'छिनुग्रौ' (रू भे)
छित—स०स्त्री० [स० क्षिति] पृथ्वी, धरा। उ०—१ आती ओलण नै अवक दक आयो। छाती छोलण नै छपनो छित छायो।—ऊ का
उ०—२ उपवन सघण वहार अनूठी, छित हरियाळी छायी। अग मरोड लूम तरुवर रै, लूम लता लहरायी।—लो गी
रू०भे०—छिता, छिती।
छितनायक, छितपती—स०पु०—नृप, राजा। उ०—१ छाडा घर तीडौ छितनायक। सवळा घायक प्रजा सहायक।—रा रू
उ०—२ किरण ऊगती भती सरीर वत परस कळा, छितपती दूसरा तणौ छोगो। वखत कामत छाती वणायौ विधाता, जस रती भीम जोधाण जोगो।
—राठौड महाराजा भीमसिंह (जोधपुर) रौ गीत
छितरणौ, छितरबौ—देखो छितराणौ' (रू भे)
छितर-बितर—वि०—देखो 'तितर-वितर' (रू भे)
छितराणौ, छितराबौ—क्रि०अ०स०—१ छोटे कणो या खडो मे विखर कर इधर-उधर फैलना। बिना क्रम के इधर-उधर विखरना। २ खडो या कणो को गिरा कर इधर-उधर फैलाना। वस्तुओ को विना क्रम से इधर-उधर विखराना ३ सटी हुई वस्तुओ को अलग-अलग करना। दूर-दूर करना।
छितराणहार हारौ (हारी), छितराणियौ—वि०।
छितराडणौ छितराडबौ, छितरावणौ, छितराववौ—रू०भे०।
छितरायोडौ—भू०का०कृ०।
छितराईजणौ, छितराईजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।
छितरायोडौ—भू०का०कृ०—छितराया हुआ, फैला हुआ, फैलाया हुआ, विखराया हुआ। (स्त्री० छितरायोडी)
छितरुह—देखो 'छितिरुह' (रू भे)
छिता—देखो 'छित' (रू.भे) उ०—उडै तुरग तें रजी समग्ग धावती अटै। छकै छकान छावती छिता विछावती छटै।—ऊ का
छितिकत—स०पु० [स० क्षितिकात] राजा, नृप।
छितिरुह—स०पु० [स० क्षिति रुह] वृक्ष, पेड (डि को)
छिती—वि०—१ श्वेत. २ कृष्ण* (डि को)
३ देखो 'छित' (रू.भे)

छितीस—स०पु० [स० क्षितीश] राजा, नृप (डि को.)
छित्रसोता—स०पु०—एक प्रकार का घोडा।
छिदणौ छिदबौ—क्रि०अ० [स० छिद्र] १ छेद युक्त होना, विंधना. २ घायल होना, क्षतपूर्ण होना।
छिदणहार, हारौ (हारी), छिदणियौ—वि०।
छिदवाडणौ, छिदवाडबौ, छिदवाणौ, छिदवाबौ, छिदवावणौ, छिदवाववौ, छिदाडणौ, छिदाड़बौ, छिदाणौ, छिदाबौ, छिदावणौ, छिदावबौ—प्रे०रू०।
छिदिग्रोडौ, छिदियोडौ, छिदचोड़ौ—भू०का०कृ।
छिदीजणौ, छिदीजबौ—भाव वा०।
छेदणौ, छेदबौ—क्रि०स०।
छिदर—स०पु० [स० छिद्र] देखो 'छिद्र' (रू भे) उ०—ओगण सहकर एकठा, विदर वणाया वेह। ज्या मझ कादा छोत जिम, छिदरा री नह छेह।—वा दा
छिदराळौ—वि०पु० (स्त्री० छिदराळी) १ पाखडी, ढोंगी. २ दोषी, अवगुणी ३ सूराख वाला, छेद वाला।
छिदाणौ, छिदाबौ—क्रि०स० ('छिदणौ' क्रि० का प्रे०रू०) छेदने का कार्य दूसरे से कराना।
छिदाणहार, हारौ (हारी), छिदाणियौ—वि०।
छिदाडणौ, छिदाड़बौ, छिदावणौ, छिदावबौ—रू०भे०।
छिदायोडौ—भू०का०कृ०।
छिदाईजणौ, छिदाईजबौ—कर्म वा०।
छिदणौ—अक० रू०।
छिदायोडौ—भू०का०कृ०—छेदने का काम कराया हुआ, भेदाया हुआ। (स्त्री० छिदायोडी)
छिदावणौ, छिदावबौ—देखो 'छिदाणौ' (रू.भे)
छिदियोडौ—भू०का०कृ०—१ छिदा हुआ, भिदा हुआ, विंधा हुआ २ घाव लगा हुआ। (स्त्री० छिदियोडी)
छिद्र—स०पु० [स०] १ छेद, सूराख २ दोष, अवगुण ३ पाखड, आडम्बर ४ त्रुटि, गलती।
छिद्रघटिका—स०स्त्री० [स० क्षुद्र घटिका] करधनी, घटिका, क्षुद्रघटिका (अ मा)
छिद्रदरसी—वि० [स० छिद्रदर्शिन्] दूसरो के अवगुण या दोप देखन वाला, दोपदर्शी।
छिद्रावळी—स०स्त्री० —घटिका, करधनी, क्षुद्रघटिका (अ मा)
छिद्री—स०पु०—एक प्रकार का वाण (अ मा.)
छिन—देखो 'क्षण' (रू भे) उ०—छिन छिन वाट हेरता छाया, होय कळळ घोडा हीसाया, अणचिंत्या वैरी अणभाया, ऊठो पीव पाहुणा आया।—वरजू बाई
छिनक—वि०—थोडा, कम, अल्प।
छिनकी, छिनकीक—स्त्री०वि०—१ तुच्छ, थोडी, कम २ क्षणिक।

उ०—करती कुज विहार वना री कामरण निरखो, करता छिनकी जेज वंवता वादळ वरखो।—मेघ.

पु०—छिनकियोक, छिनकियो, छिनकोक, छिनको।

छिनगारौ–वि०पु० (स्त्री० छिनगारी) १ शौकीन, छैलछबीला, रसिक।

उ०—१ श्रो छिनगारी म्हारी गोरडी छळ कर लियो तं बुलाय, सोदागर मद्दी राचरणी।—लो गी

उ०—२ नरणदल बाई तोडचा वड रा पान, देवरियो छिनगारौ तोडी साटकी।—लो गी

२ शृगारयुक्त, रूपवान।

छिनणौ, छिनवौ–क्रि०श्र०—हरण होना, छीन लिया जाना।

छिनणहार, हारौ (हारी), छिनणियौ—वि०।

छिनवाडणौ, छिनवाडवौ, छिनवाणौ, छिनवावौ, छिनवावणौ, छिनवाववौ, छिनाडणौ, छिनाडवौ, छिनाणौ, छिनावौ, छिनावणौ, छिनाववौ—प्रे०रू०।

छिनिश्रोडौ, छिनियोडौ, छिन्योडौ—भू०का०कृ०।

छिनीजणौ, छिनीजवौ—भाव वा०।

छीनणौ, छीनवौ—सक०रू०

छिनदा–स०स्त्री० [स० क्षणदा] रात्रि, निशा, रात।

उ०—दिन छिनदा श्रहिमति उर श्रानत, प्रथम जुद्ध की रीति पिछानत।—ला रा

छिनवौ—देखो 'छिनुश्रो' (रू भे)

छिनाणौ छिनावौ–क्रि०स० ('छिनणौ' क्रि० का प्रे०रू०) छीनने का काम दूसरे स कराना, छिनवाना।

छिनाणहार, हारौ (हारी), छिनाणियौ—वि०।

छिनाडणौ, छिनाडवौ, छिनावणौ, छिनाववौ—रू०भे०।

छिनायोडौ—भू०का०कृ०।

छिनाईजणौ, छिनाईजवौ—कर्म वा०।

छिनणौ—श्रक०रू०।

छिनाळ–वि०स्त्री०—कुलटा, कुलक्षणी, व्यभिचारिणी, पर-पुरुष-गामिनी। उ०—प्रिसरण ज्यो मुख वाको कीग्रा थका कनाश्रण मिळी श्राजर सू छिनाळ मुख वाको करि रही।—रा सा स

छिनि—देखो 'छिण' (रू भे) उ०—पलक-पलक मोहि जुग से वीतं, छिनि छिनि विरह जरावै ही।—मीरा

छिनुश्रो, छिनुवौ–स०पु०—९६वा वर्ष।

रू०भे०—छिनवौ।

छिनू–वि० [स० षण्णवति, प्रा० छण्णउइ] नव्वे से छ अधिक, नव्वे श्रौर छ का योग, छियानवे।

स०पु०—छियानवे की सख्या।

छिनूमौं–वि०—९६वा।

छिनू—देखो 'छिनु' (रू भे)

छिनेक–क्रि०वि०—क्षरण भर। उ०—मेहा री म्हारै लग रही चाव, छिनेक चालो परवा भारण।—लो गी

छिन्न–वि० [स०] १ काटा हुश्रा २ निश्चित्, निर्धारित ३ खडित। (जैन)

छिन्नगथ–वि० [स० छिन्न ग्रन्थ] स्नेहरहित (जैन)

स०पु०—साधु, त्यागी (जैन)

छिन्नछेयणइय–स०पु० [स० छिन्नछेनयिक] प्रत्येक सूत्र को दूसरे सूत्र की अपेक्षा रहित मानने वाला मत, नय विशेष (जैन)

छिन्नद्धाणतर–वि० [स० छिन्नाध्वान्तर] जहा गाँव नगर वगैरह कुछ भी न हो ऐसा रास्ता, मार्ग विशेष (जैन)

छिन्नभिन्न–वि० [स०] १ खडित, टूटा-फूटा, जीर्णशीर्ण, नष्टभ्रष्ट।

२ तितर-बितर, ग्रस्त-व्यस्त।

छिन्नरुह–वि० [स०] काट कर बोने पर पंदा होने वाली वनस्पति (जैन)

छिन्नसोय–वि० [स० छिन्न शोक] जिसने शोक का छेदन कर दिया हो। (जैन)

छिन्नाळ–स०पु०—१ हलकी जाति का घोडा या बैल (जैन)

२ देखो 'छिनाळ' (रू भे)

छिन्नू—देखो 'छनू' (रू भे)

छिपकली–स०स्त्री०—गोह या गोधा जाति का एक वित्ते के लगभग लबा जतु जो पेट जमीन से सटा कर पजो के बल चलता है। वह प्राय. मकान की दीवारो पर दिखाई देता है।

पर्या०—गरोळी, छावक, छिपकली, पल्ली, विसमर, विसमरी, मुसली।

छिपणौ छिपवौ–क्रि०श्र०—१ ऐसी स्थिति मे होना जहा से दिखाई न पडे। किसी की श्रोट मे होना, छिपना। उ०—कै भागा श्रजमेर नू, रिम दळ राह विराह। कै जिपिया 'किरतेस' रै' कै पुर घर घर माह।—रा रू

२ श्रदृश्य होना, दिखाई न देना। उ०—छता हुश्रा किमि रहिमो छिपिया, घट माही उजवाळ घणो। कोमळ पग काना मा कुडळ, तोवह दरसण तूझ तणो।—पीरदान लाळस

३ जो प्रकट न हो, गुप्त। उ०—पण वो पातसा श्रवरगजेव जिण सू छिपै नही किण ही रै मन रो फरेब।

—प्रतापसीघ म्होकमसीघ री वात

छिपणहार, हारौ (हारी), छिपणियौ—वि०।

छिपवाडवौ, छिपवाडवौ, छिपवाणौ, छिपवावौ, छिपवावणौ, छिपवाववौ—प्रे०रू०।

छिपाडणौ, छिपाडवौ, छिपाणौ, छिपावौ, छिपावणौ, छिपाववौ—क्रि०स०।

छिपिश्रोडौ, छिपियोडौ, छिप्योडौ—भू०का०कृ०।

छिपीजणौ, छिपीजवौ—क्रि०भाव वा०।

छिपलौ–स०पु०—मुह छिपाने या गुप्त रहने का भाव।

मुहा०—छिपला खाणौ—कार्य से मुह छिपाना, छिप कर रहना।

छिपा–स०स्त्री० [स० क्षपा] १ रात्रि, निशा। उ०—छिपा तणै बळि श्रासम छूटो, तारो जाण गयण सू तूटो।—रा रू

२ तम्बू, खेमा ।

वि०—घना, सघन । उ०—छिपा कदळी मे मुनीराण छायौ । उठै सोवनी म्रिग मारीच आयौ ।—सू प्र.

छिपाकर–स०पु० [स० क्षपाकर] चन्द्रमा (ना मा)

छिपाडणौ, छिपाडबौ—देखो 'छिपाणौ' (रू,भे)।

उ०—आगळि पित मात रमती अगणि, काम विराम छिपाडण काज ।—वेलि.

छिपाडियोडौ–भू०का०कृ०—छिपाया हुआ (स्त्री० छिपाडियोडी)

छिपाणौ, छिपावौ–क्रि०स०—१ छिपाना, किसी की ओट मे करना. २ अदृश्य करना ३ प्रकट न करना, गुप्त रखना ।

छिपाणहार, हारौ (हारी), छिपाणियौ—वि० ।

छिपाडणौ, छिपाडवौ, छिपावणौ, छिपाववौ—रू०भे० ।

छिपायोडौ—भू०का०कृ० ।

छिपाईजणौ, छिपाईजबौ—कर्म वा० ।

छिपणौ, छिपवौ—अक० रू० ।

छिपायोडौ–भू०का०कृ०—१ छिपाया हुआ. २ अदृश्य किया हुआ. ३ गुप्त रखा हुआ । (स्त्री० छिपायोडी)

छिपाव–स०पु०—१ छिपाने या गुप्त रखने का भाव । किसी से कुछ प्रकट न करने का भाव, दुराव २ भेद, रहस्य, गुप्तता ।

छिपावणौ, छिपाववौ—देखो 'छिपाणौ' (रू भे) ।

छिपावणहार हारौ (हारी), छिपावणियौ—वि० ।

छिपाविओडौ, छिपावियोडौ, छिपाव्योडौ—भू०का०कृ० ।

छिपावीजणौ, छिपावीजवौ—कर्म वा० ।

छिपावियोडौ—देखो 'छिपायोडौ' । (स्त्री० छिपावियोडी)

छिपासत्र, छिपासत्रु–स०पु० [स० क्षपा शत्रु] सूर्य, दिनकर ।

उ०—थिरा आवडा नाम विख्यात थायो । छिपासत्रु सो तेमडै छत्र छायो ।—मे म

छिपियोडौ–भू०का०कृ०—१ छिपा हुआ २ अदृश्य. ३ अप्रकट, गुप्त । (स्त्री० छिपियोडी)

छिब—देखो 'छवि' (रू भे) उ०—१ तन घणस्याम तराज तडिता, छिब भात पीत पीतवर ।—र ज प्र

उ०—२ पीलू पीयुस सने ऊजळी छिब उणियारै, जाणै वणै अगूर भळक हरियाळो सारै ।—दसदव

छिबछिबौ–स०पु०—एक प्रकार का घोडा (शा हो)

छिबणौ—देखो छवणौ' (रू भे)

छिबणौ, छिबबौ—१ देखो 'छवणौ, छववौ' (रू भे.) ।

उ०—गयणाग सीस छिबते गरूर, सभ फते आवियौ वियौ सूर ।
—वि.स.

२ शोभा देना, काति देना ।

छिबणहार, हारौ (हारी), छिबणियौ—वि० ।

छिबिओडौ, छिबियोडौ, छिब्योडौ—भू०का०कृ० ।

छिबदार–वि०—छवियुक्त, शोभा देने वाला, सुदरता वढाने वाला, कातियुक्त ।

छिबवत–वि०—सुन्दर, कान्तियुक्त । उ०—छिबवत उदत दिगत छये, भल सत महत अनत भये ।—ऊ का

छिवि, छिवी—१ देखो 'छवि' (रू भे) उ०—गदाल सहर गढ कोट बाजार पौळि पगार वाग बावडी वगीचा कूआ सरवरा री वडा पीपळा री छिवि सहर री पाखती विराजिनै रही छै ।—रा सा स

२ [अ० तस्वीह] जपमाला, माला ।

उ०—महाराज विच रहमाण, करि सौंस छिबी कुराण । तदि घरे दिल परतीत, इम वोलियौ 'अगजीत' ।—सू प्र

वि०—तेज, तीक्ष्ण । उ०—ताहरा नाडी रै वीच जाइ नै वेलिया कहीयौ इण सगळा माडा रै छिबि कटारी थै मारौ ।—चौबोली

छिम–स०स्त्री०—१ आख के अन्दर अकस्मात हलकी चोट लगने से आख मे होने वाला दर्द या विकार । २ देखो 'क्षमा' (रू भे.)

छिमता–स०स्त्री० [स० क्षमता] १ सहनशक्ति, सहिष्णुता. २ सामर्थ्य, क्षमता ।

छिमा—देखो 'क्षमा' (रू भे) उ०—१ दान की विधान छिमा ध्यान मे छायौ, मति राम विसरि जाहु नाम कान मे कह्यौ ।—ऊ का.

उ०—२ तदि न्रप पग वदि मुनि तणा, क्रोधज छिमा कराय । साथ दिया लछमण सहित, रछ्या कजि रघुराय ।—सू प्र.

छियतर–वि० [स० षट्सप्तति, प्रा० छासत्तरि] सत्तर और छ का योग ।

स०पु०—छियत्तर की सख्या ।

छियतरमौं–वि०—७६ वा ।

छियतरे'क–वि०—छिहत्तर के लगभग ।

छियतरौ–स०पु०—७६ वा वर्ष ।

छिया—देखो 'छाया' (रू भे)

छियाळीस—देखो 'छियाळीस' (रू भे)

छियासियौ—देखो 'छियासियौ' (रू.भे)

छियासी—देखो 'छियासी' (रू भे)

छियासीक —देखो 'छियासीक' (रू भे)

छियासीमौं—देखो 'छियासीमौं' (रू भे)

छिरगौ–स०पु०—१ किसी वस्तु का ऊपरी या शिरे का भाग. १ शिखर या चोटी का ऊपरी छोर ३ घास विशेष की वाल ।

छिरमिर—देखो 'झिरमिर' (रू भे) उ०—सरदी री रात, छिरमिर-छिरमिर छाटचा पडै ।—वरसगाठ

छिररौ—१ देखो 'छररौ' (रू भे) २ गाय या भैस आदि का पतला गोवर ।

छिरेंटी–स०स्त्री०—एक प्रकार की लता, पाताल गरुड । इसके पत्तो से पानी जम जाता है । वैद्यक मे यह मधुर, वीर्यवर्द्धक तथा पित्तदाह और विषनाशक मानी जाती है ।

छिरेवौ–स०पु०—बीस वर्ष की आयु मे हाथी के प्रथम वार टपकने वाला मद ।

छिळक, छिलक–स०स्त्री०—हलका क्रोध, साधारण गुस्सा, आपे से बाहर होने का भाव ।

छिळकणौ, छिळकवौ—देखो 'छळकणौ' (रू भे)

छिळकणहार, हारौ (हारी), छिळकणियौ—वि० ।

छिळकावणौ, छिळकाडणौ, छिळकाडवौ, छिळकाणौ, छिळकावौ, छिळकावणौ—प्रे०रू० ।

छिळकिग्रोडौ, छिळकियोडौ, छिळक्योडौ—भू०का०कृ० ।

छिळकीजणौ, छिळकीजवौ—भाव वा० ।

छिळकाणौ, छिळकावौ—देखो 'छळकाणौ' (रू भे)

छिळकाणहार, हारौ (हारी), छिळकाणियौ—वि० ।

छिळकायोडौ—भू०का०कृ० ।

छिळकाईजणौ, छिळकाईजवौ—कर्म वा० ।

छिळकणौ—अक० रू० ।

छिळकाडणौ, छिळकाडवौ, छिळकावणौ, छिळकाववौ—रू०भे० ।

छिळकायोडौ—देखो 'छळकायोडौ' (रू भे) (स्त्री० छिळकायोडी)

छिळकारौ–स०पु०—१ सूर्यास्त होने के पूर्व का समय २ हलका प्रकाश ।

छिळकावणौ, छिळकाववौ—देखो 'छळकाणौ' (रू भे.)

छिळकौ–स०पु०—१ किसी फल, कद या अन्य किसी वस्तु की ऊपरी छिल्ली जो छीलने, तोडने आदि से सहज ही अलग हो जाता है । फलों की त्वचा या ऊपरी आवरण ।

वि०वि०—'छाल' और 'छिलका' मे अतर होता है । छाल पेडो के तने, शाखायें और टहनियो के ऊपरी आवरण को कहते हैं और छिलका, फल या इसी प्रकार की वस्तु का ऊपरी आवरण होता है ।

क्रि०प्र०—उतारणौ, छोलणौ. २ हलका प्रकाश ।

छिलणौ, छिलवौ–क्रि०अ०—१ छिलकना, उमडना । उ०—छूटी आसारा कासारा छिलती, पडती परनाळा पहुवी पिलपिलती ।
—ऊ का

२ मर्यादा बाहर होना, अपना छेह देना । उ०—१ पूरी सुख हमरोटपुर, लोक न जाणै डड । छोळा जळ लावौ छिलै, वड लागा ब्रह्मड ।
—वा दा

उ०—२ पदम हिलै क छिलै दध पाजा, राजाहू त मामुद्दो राजा ।
—सू प्र

मुहा०—नाका छिलणौ—मर्यादा के बाहर होना, सीमा बाहर जाना, चरम सीमा पर पहुचना ।

३ इस प्रकार कटना कि ऊपरी आवरण पृथक हो जाय, छिलना. ४ रगड आदि से चमडी का कुछ भाग कट कर अलग होना ५ गले के अन्दर खरखराहट अथवा खुजली सी होना ६ पूर्ण भर जाना । उ०—फीटी मूडी फाड नाड कर लेवै नीची, छिली रहै जळ छाक मिळी आस्या अधमीची ।—ऊ.का

७ विस्तार पाना, फैलना, छाना । उ०—घुळ घूम छिले घण भाळ विभीषण, राघव हूत उचारियौ जी । दसकठ करै मद होम हुवा हद, मद मरै नह मारियौ जी ।—र रू

छिलणहार, हारौ (हारी), छिलणियौ—वि० ।

छिलवाडणौ, छिलवाडवौ, छिलवाणौ, छिलवावौ, छिलवावणौ, छिलवाववौ, छिलाड़णौ, छिलाड़वौ, छिलाणौ, छिलावौ, छिलावणौ, छिलाववौ—प्रे०रू० ।

छिलिग्रोडौ, छिलियोडौ, छिल्योडौ—भू०का०कृ० ।

छिलीजणौ, छिलीजवौ—भाव वा० ।

छिलर—देखो 'छीलर' (रू भे.)

छिलरियौ—देखो 'छीलर' (अल्पा रू भे.)

छिलियोडौ–भू०का०कृ०—१ छिलका हुआ, उमडा हुआ २ मर्यादा बाहर हुआ हुआ, अपना छेह दिया हुआ. ३ इस प्रकार कटा हुआ कि ऊपरी आवरण अलग हो गया हो ४ रगड आदि से छिला हुआ ५ (गले के अन्दर) खरखराहट बना हुआ ६ पूर्ण भरा गया हुआ. ७ विस्तार पाया हुआ, फैला हुआ ।
(स्त्री० छिलियोडी)

छिलिहिंडा–स०स्त्री०—मैदानो मे नदी के कछारो पर होने वाली एक छोटी वेल । इसमे बहुत छोटे-छोटे फल गुच्छो मे लगते हैं जो पकने पर काले हो जाते हैं । औषधियो मे यह प्रयुक्त होती है ।

छिलोडी–स०स्त्री०—पैर के तलवे मे होने वाला फफोला (शेखावाटी)

छिल्लणौ, छिल्लवौ—देखो 'छिलणौ' (रू भे) उ०—फौहारू की पकति जल चादरू का उफाण । जळ चादरू की धरहर मानू छिल्लै महिराण ।—सू प्र

छिल्लर—देखो 'छीलर' (रू भे) उ०—किहा सायर किहा छिल्लर, किहा केसरि किहा साल । किहा कायर किहा वर सुहड, किहा वण किहा सुर साल ।—विद्याविलास पवाडउ

छिल्लियोडौ—देखो 'छिलियोडौ' (रू भे.) (स्त्री० छिल्लियोडी)

छिल्लौ–स०पु०—वकरा ।

छिव—देखो 'छिव' (रू.भे) उ०—इम सात सहू भड ओपवियै, देखे छिव टाळोय काळ दियै ।—गो रू

छिवणौ—देखो 'छिवणौ' (रू भे) उ०—आवियौ 'करण' असवान छिवतौ, अफर दिल्ली दीवाण मभ डाण देतौ ।—द दा

छिवारौ–स०पु०—छुआरा, खारक ।

छिहतर—देखो 'छियतर' (रू भे) उ०—कहण सुणण हय चढ क्रमण, साहस धरण समझ्फ । 'पता' छिहतर वरस पण, हेकण न को हरज्ज ।—जैतदान बारहठ

स०पु०—७६ की सख्या ।

छिहतरमौ–वि०—७६वा ।

छिहतरेक–वि०—७६ के लगभग ।

छिहतरौ–स०पु०—७६ का वर्ष ।

छींक-स०स्त्री० [स० छिक्का] नाक की झिल्ली मे चुनचुनाहट होने के कारण नाक और मुंह से वेग के साथ निकलने वाली वायु का झोका या स्फोट या इससे उत्पन्न होने वाली ध्वनि। हिंदुओ मे किसी काम के आरभ मे छीक का होना अशुभ माना जाता है।

क्रि०प्र०--आणी, आवणी, करणी, खाणी।

छींकणौ, छींकवौ-क्रि०अ०—नाक और मुह से वेग के साथ वायु निकलना जिमसे ध्वनि होती है।

छींकल, छींकलौ-स०पु० (स्त्री० छीकली) हरिण, मृग। उ०—खोखा खावै ऊट उवाणा गूजै गाळा, खोखा छींकल खाय छेकता जगळ छाळा।--दसदेव

वि० (स्त्री० छीकली) छीक करने वाला।

छींकाखाई-स०स्त्री०—वह जडी जिसे सूघने से छीक आती हो।

छींकी-स०स्त्री०—१ शीत काल मे मस्ती मे आये हुए ऊट के मुह पर बाघी जाने वाली कटोरे के आकार की एक प्रकार की जाली जो प्राय लोहे के पतले तार या रस्सियों की बनाई जाती है जिससे वह मस्ती मे किसी को काट न सके २ देखो 'छीकौ' (अल्पा, रू भे)

छींकीजणौ, छींकीजबौ-भाव वा०—१ छीका जाना २ ऊट का एक रोग या दोष विशेष से ग्रसित हुआ जाना जिसमे उसके गोशे ऊपर चढ जाते है और वह कमजोर हो जाता है।

छींकौ-स०पु० [स० शिक्यम्] १ रस्सिया, तीलिया या तारो का बना हुआ जालीदार गोल या चौकोर पात्र जो छत आदि मे लटकाया जाता है। इसमे प्राय खाने-पीने की वस्तुयें रखी जाती हैं।

उ०—दूध दही की बयारी फोडी, माटी फोडची गह छींकौ।
—मीरा

मुहा०—छीकौ टूटणौ—अनायास कोई लाभ होना।

२ बैलो के मुह मे पहनाया जाने वाला रस्सी का बुना हुआ जाल जिससे वे चलते समय खडी फसल मे या खलिहान मे खाने के लिये इधर-उधर मुह न मार सकें। जाला, मुसका. ३ रस्सियो का बना झूलने वाला पुल, झूला। उ०—परभात रा जलाल ऊठ छींके सू उतर कर डेरै आयौ।—जलाल बूबना री वात

५ बास की पतली फटियो से बुन कर बनाया हुआ जालीदार टोकरा।

छींछ-स०स्त्री०—तेज धारा। उ०—१ घणा घडा थै ऊची छींछ उछळै छै।—वेलि

उ०—२ जठै रत छींछ गजा सिर जाय। लगी किर पाहड ऊपर लाय।—सू प्र.

छींट-स०स्त्री० [स० क्षिप्त, प्रा० छित्त] १ जल अथवा किसी द्रव पदार्थ की बूद, जल-कण २ किसी द्रव पदार्थ या जल की बूंद का पडा दाग या चिन्ह ३ विभिन्न रगो से वेल-बूटे व डिजाइन आदि छाप कर बनाया हुआ कपडा या कागज ४ टुकडा, भाग, खण्ड।

उ०—१ इतरै तौ आण भेळिया सो लोग सारौ छींट छीट हुइ गयौ।—डाढाळा सूर री वात उ०—२ नैण पटक दू ताळ मे छींट-छीट हुय जाय। मैं तने नैणा कद कह्यौ, मन पहली मिळ जाय।—र रा

मुहा०—१ छीट-छीट करणौ—अलग-अलग करना, तितर-बितर होना २ छीट-छीट होणौ—खड-खड होना, छिन्न-भिन्न होना।

छींटणौ, छींटबौ-क्रि०अ०स०—१ (गाय भैस आदि पशुओ को विरेचन देने पर) पतला गोबर करना २ दस्त लगना, पतले मल का पाखाना आना. ३ द्रव कणो को इधर-उधर गिराना, फैलाना।

छींटौ—देखो 'छाटौ' (रू भे) उ०—पार्वती री हठ देख कैळासनाथ आप उणरै छींटा दीन्हा सो दोनू जी ऊठिया।—जलाल बूबना री वात

मुहा०—१ छीटा डाळणा—व्यग करना, चुभती वात कहना

२ छीटा नाकणौ—आक्षेप करना, व्यग मे कहना।

३ गाय, भैस आदि द्वारा किया गया पतला गोबर।

४ पतला मल या पाखाना।

छींण—देखो 'चीण' (रू भे)

छींतरी—१ देखो 'छीतरी' (क्षेत्रीय)

स०स्त्री०—टूटी-फूटी डलिया।

कहा०—छाया तौ छीतरी की ही आछी—छाया तो टूटी-फूटी डलिया की भी अच्छी लगती है (छाया की तारीफ)।

छींपा, छींपी—१ देखो 'छीपा' (रू भे)

छींपौ—स०पु०—१ कपडो की रगाई या छपाई आदि का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति. २ देखो 'छीपौ' (रू भे)

छींभड़ौ-स०पु०—१ किसी गाय के बछडे या भैस के बच्चे के नाक मे डाला जाने वाला घातु या लकडी का अर्द्धचद्राकार के रूप मे बना उपकरण जिसके कारण वह अपनी माता का स्तनपान नही कर सकता. २ देखो 'चीभडौ' (रू भे)

छींया, छींयाडी—देखो 'छाया' (अल्पा, रू भे.)

छींयाळीस—देखो 'छियाळीस' (रू भे)

छींयाळीसौ—देखो 'छियाळीसौ' (रू भे)

छींयाळौ—देखो 'छियाळौ' (रू भे.)

छी-अव्य० [स० छी] १ तिरस्कार या घृणासूचक शब्द। उ०—छळ सूं वाजी हारची, छी छी छैला छेहडली।—ऊ का

२ घोबियो द्वारा घाट पर कपडे घोते समय किया जाने वाला शब्द।

मुहा०—छी छी करणौ—घृणा या अरुचि प्रकट करना।

स०स्त्री० [रा०] १ बच्चे का पाखाना, टट्टी ३ कटि-मेखला. ४ जीव ५ मद ६ सार ७ काति. ८ छछुदरी (एका०)।

क्रि०अ०—राजस्थानी के 'छै' का भूतकाल 'छा' का स्त्री० 'थी'।

उ०—जगळ मे चरै छी सो अब्याई झोटी आई।—शि व

छीकण-स०पु०—भाटी वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

छीकणी-स०स्त्री० [सं० छिक्किका] एक प्रकार का क्षुप जो औषधि के रूप मे प्रयुक्त होता है, नकछिकनी, छिकनी (उ र)

छीकिया-स०स्त्री०—ढोलियो की एक शाखा विशेष (मा म)

छीछडौ—देखो 'छिछडौ' (रू.भे)
छीछालेदर-स०स्त्री०—नाश, दुर्गति, दुर्दशा।
क्रि०प्र०—करणी, होणी।
छीछी-वि०—गदी, खराब, अपवित्र।
अव्य०—मवेशियो को पानी पिलाने के लिये उच्चरित किया जाने वाला शब्द।
स०स्त्री०—पाखाना, मल।
छीज-स०स्त्री०—१ कमी, हानि, घाटा २ चिढने का भाव, कुढन।
छीजण—देखो 'छीजत' (रू भे)
छीजणौ, छीजवौ-क्रि०अ० [स० क्षीप्-हिंसायाम्] १ क्षीण होना, कम होना, घटना, ह्रास होना। उ०—१ जे कज हे किव राम जपीजै, जाए करजुळ आयुख छीजै।—र ज प्र
उ०—२ पाणी मे पाखाण भीजै पण छीजै नही, मूरख आगै ग्यान रीझै पण बूझै नही।—अज्ञात
२ डाह करना, कुढना, दुखी होना। उ०—रग राग चाग अगराग सू न रीजै, पातिसाह महमदसाह चिंता मे छीजै।—रा रू
३ भयभीत होना, डरना। उ०—१ चरणके भड चिहुर छीजि कातर छणणके।—व भा
उ०—२ छक लख अधिक काचा मन छीजै, गज सूरा रीझा गरज। बीजा 'जसा' अखै वारगना, आलीजा मानो अरज।
—जोरावरसिंह गहलोत री गीत
४ चिंतित होना, मन ही मन मे घुलना ५ चूर्ण होना।
उ०—गिर छीजै खुरताळ पहवि यळ सिखर पलट्टि।—रा रू.
छीजणहार, हारौ (हारी), छीजणियौ—वि०।
छीजवाडणौ, छीजवाडवौ, छीजवाणौ, छीजवाबौ, छीजवावणौ, छीजवाववौ—प्रे०रू०।
छीजाडणौ छीजाडवौ, छीजाणौ, छीजाबौ, छीजावणौ, छीजाववौ
—क्रि०स०।
छीजिओडौ, छीजियोडौ, छीज्योडौ—भू०का०कृ०।
छीजीजणौ, छीजीजवौ—भाव वा०।
छीजत-स०स्त्री० [स० क्षीप] १ कमी होने का भाव. २ कमी, ह्रास ३ कुढन, डाह ४ चिंता, घुटन।
रू०भे०—छीजण।
छीजाणौ, छीजाबौ-क्रि०स०—१ क्षीण करना, ह्रास करना २ घटाना ३ कुढाना, डाह कराना ४ चिंता करवाना ५ भयभीत करना, डराना. ६ चूर्ण कराना।
छीजाणहार, हारौ (हारी), छीजाणियौ—वि०।
छीजाडणौ, छीजाडवौ, छीजावणौ, छीजाववौ—रू०भे०।
छीजायोडौ भू०का०कृ०।
छीजाईजणौ, छीजाईजवौ—कर्म वा०।
छीजणौ, छीजाबौ—अक० रू०।
छीजायोडौ-भू०का०कृ०—१ क्षीण कराया हुआ, ह्रास कराया हुआ. २ कुढाया हुआ ३ चिंता करवाया हुआ ४ भयभीत किया हुआ ५ चूर्ण करा हुआ। (स्त्री० छीजायोडी)
छीजावणौ, छीजाववौ—देखो 'छीजाणौ' (रू भे)
छीजावणहार, हारौ (हारी), छीजावणियौ—वि०।
छीजाविओडौ, छीजावियोडौ, छीजाव्योडौ—भू०का०कृ०।
छीजावीजणौ, छीजावीजवौ—कर्म वा०।
छीजाडणौ, छीजाडवौ—रू०भे०।
छीजियोडौ-भू०का०कृ०—१ क्षीण हुआ हुआ, घटा हुआ, ह्रास हुआ हुआ २ कुढ़ा हुआ, डाह किया हुआ ३ चिंता किया हुआ. ४ डरा हुआ ५ चूर्ण हुआ हुआ। (स्त्री० छीजियोडी)
छीजौ-वि०—१ डाह करने वाला. २ क्रोध करने वाला।
छीटकौ—देखो 'छाटौ' (अल्पा रू भे)
छीडरियौ-स०पु०—छोटा व छिछला ताल, छोटी तलैया।
छीण-वि० [स० क्षीण] १ क्षीण, कृश, दुर्बल।
देखो 'चीण' (रू भे)
छीणतन-वि० [स० क्षीण+तनु] दुबले-पतले शरीर वाला, कृश गात।
छीणी-स०स्त्री०—किसी धातु की मोटी चद्दर या मोटे टुकड़े को काटने या पत्थर को घडने का फौलाद का बना औजार। उ०—वैरी रो मोटो पा'ड ओछी पूजी रूपी छीणी सू टूटै तो कांकर टूटै।
—वरस गाठ
रू०भे०—छिणी।
छीणै-क्रि०वि०—टूटने से, कटने से। उ०—कुमकुमै मजण करि धौत वसत धरि, चिहुरे जळ लागो चुवण। छीणे जाणि छुटोहा छूटा, गुण मोती मखतूल गुण।—वेलि
छीणोटगो-स०स्त्री०—छोटी जू।
छीणौ-वि० [स० छिन्न] १ क्षीण, दुर्बल, कृश गात।
२ टूटा हुआ। उ०—हू वळिहारी साथिया, भाजे नह गइयाह। छीणा मोतीहार जिम, पासै ही पडियाह।—हा झा.
स०पु०—१ पत्थर आदि को तोडने का फौलाद का बना बडा औजार २ रग विशेष का घोडा।
छीतर-स०स्त्री०—पथरीली भूमि, पहाडी भूमि। उ०—उडै वाम अपार जळ अवारत जागा। तकै मडोवर तणा लोक जा छीतर लागा।
—अज्ञात
वि० [स० छित्वर] कपटी, धूर्त (अ मा)
छीतरी-स०स्त्री०—१ वह मट्ठा जिसमे अधिक पानी मिला दिया हो, पतली छाछ (मि० फिण) २ छोटे-छोटे लहरदार श्वेत बादल खड जो वर्षा-सूचक माने जाते हैं।
वि०—छिछली, बिखरी हुई, छितराई हुई।
छीत-स्वामी-स०पु०—अष्टछापभक्तो मे से एक जो वल्लभाचार्य के शिष्य थे।
छीदगत-स०स्त्री०—कपट, चाल, धूर्तता।

छीदरियौ, छीदरौ–वि० (स्त्री० छीदरी) १ ऐसा तरल पदार्थ जो गाढा न हो, जिसमे अधिक पानी मिला हो। उ०—छीदरी छासि पाणी न खमई, पातळी छाया केतलउ आतम गमई।—सभासिंगार

२ पतला, छिछला ३ ऐसा पदार्थ जो बनावट मे गाढा न हो, जिसमे बहुत छेद हो, जिसके ततु दूर दूर हो ४ वह जो कुछ कुछ स्थान के फासले पर हो, जो घना न हो, विरल।

रू०भे०—छीदौ।

अल्पा०—छीदरियौ।

छीदौ—देखो 'छीदरौ' (रू भे) (स्त्री० छीदी)

उ०—लोहया री धकरोळ चादरा चलै छै, जको जाणजै कै पहाडा उपराथी गेरू रा खाळ ऊतरै छै, छीदा छीदा, आछा आछा कमणेता रा हाथ सू तीर सरणकै छै।—प्रतापसीघ म्होकमसीघ री वात

मुहा०—छीदा पडणौ—फुसला जाना, भुलावे मे आना, गर्व करना, इतराना।

छीद्र—देखो 'छिद्र' (रू भे)

छीन—देखो 'क्षीण' (रू भे) उ०—कटि सु छीन केहरी प्रवीन पायका नही, विनोत वानि बीनसी नवीन नायका नही।—ऊ का

छीनणौ, छीनबौ–क्रि०स०—१ किसी दूसरे की वस्तु पर बलात् अधिकार कर लेना, छीन लेना, अनुचित रूप से कब्जा करना. २ काटना, खड-खड करना।

छीनणहार, हारौ (हारी), छीनणियौ—वि०।

छीनवाडणौ, छीनवाडबौ, छीनवाणौ, छीनवाबौ, छीनवावणौ, छीनवावबौ, छीनाडणौ, छीनाडबौ, छीनाणौ, छीनाबौ, छीनावणौ, छीनावबौ—प्रे०रू०।

छीनिग्रोडौ, छीनियोडौ, छीन्योडौ—भू०का०कृ०।

छीनीजणौ, छीनीजबौ—कर्म वा०।

छीनवौ–स०पु०—छियानवे का वर्ष। उ०—अठारै छीनवै वरस असुरा अगै, पहूत ऊबारिया विप्र पाता। अवरकी धाता सुविचार टाळी असी, जाय नह वात जुग चार जाता।—तिलोकजी बारहठ

छीनाखसोटी, छीनाझपटी–स०स्त्री०—जबरदस्ती या बलात् किसी से कोई वस्तु ले लेने की क्रिया।

छीनाणौ, छीनाबौ–क्रि०स० ('छीनणौ' क्रिया का प्रे०रू०) छीनने का कार्य किसी अन्य से कराना २ खड खड कराना, कटाना।

छीनाणहार, हारौ (हारी), छीनाणियौ—वि०।

छीनायोडौ—भू०का०कृ०।

छीनाईजणौ, छीनाईजबौ—कर्म वा०।

छीनायोडौ–भू०का०कृ०—१ छीनाया हुआ। (स्त्री० छीनायोडी) २ कटाया हुआ।

छीनावणौ, छीनावबौ—देखो 'छीनाणौ' (रू भे)

छीनावणहार, हारौ (हारी), छीनावणियौ—वि०।

छीनाविग्रोडौ, छीनावियोडौ, छीनाव्योडौ–भू०का०कृ०।

छीनावीजणौ, छीनावीजबौ—कर्म वा०।

छीनावियोडौ—देखो 'छीनायोडौ' (रू भे)

छीनियोडौ–भू०का०कृ०—१ जबरदस्ती या झाड-झपट कर किसी वस्तु को अधिकार मे किया हुआ २ काटा हुआ, खड खड किया हुआ। (स्त्री० छीनियोडी)

छीनौ–वि०—खिन्न, दुखी। उ०—मालपुरा सरखा गढ मारे, राणै पर हस दीध रिण। भोग सजोग तही रस भीनो, 'औरग' छीनौ रोग इण।—महाराणा राजसिंह वडा री गीत

छीप–स०स्त्री० [स० क्षिप्र] शीघ्रता, जल्दी। उ०—लागौ अग कमध रै, फोडै ढाल खतग। छीप करे दळ दुज्जणा, जीप खडी रण जग।—रा रू

वि०—तेज, जल्द।

छीपा छीपी–स०स्त्री०—१ कपडो को छापने व रगने का व्यवसाय करने वाली जाति विशेष. २ कपडा सीने का व्यवसाय करने वाली एक जाति ३ गुजराती नटो की एक शाखा।

छीपौ–स०पु०—'छीपा' जाति का व्यक्ति।

छीब–स०स्त्री०—छवि, शोभा छटा।

छीवरी–स०स्त्री०—१ वृक्षो के खोखले हिस्से मे रहने वाला उल्लू की जाति का एक पक्षी विशेष जिसके बोलने पर लोग शकुनो पर विचार करते हैं।

रू०भे०—चीवरी।

२ अधिक पानी मिला हुआ मट्ठा, पतली छाछ ३ वर्षासूचक माने जाने वाले छोटे-छोटे लहरदार श्वेत बादल।

मि०—छीतरी।

छीय–स०पु० [स० क्षुत] छीक (जैन)

रू०भे०—छुअ।

छीया–स०स्त्री० [स० क्षुता] छीक (जैन)

छीर–स०पु० [स० क्षीर] दूध। उ०—सरीर सस्कार सार नीर छीर सें सने, विध्वस वैरि वस कौ प्रससनीय तें बनै।—ऊ का

यौ०—छीर-समुद्र, छीर-सागर।

छीरज–स०पु० [स० क्षीरज] १ दधि, दही २ चद्रमा ३ कमल ४ शख (डिं को)

छीरजा–स०स्त्री० [स० क्षीरजा] लक्ष्मी (डिं को)

छीरप–स पु० [स० क्षीरप] बच्चा, शिशु (डिं.को)

छीरल–स०पु० [स० क्षीरल] एक प्रकार का सर्प विशेष (जैन)

छीरविराळी–स०स्त्री० [स० क्षीरविराली] एक प्रकार की वनस्पति विशेष।

छीरावरालिया–स०स्त्री० [स० क्षीरविदारिक] एक प्रकार का कन्द विशेष (जैन)

छीर-समुद्र, छीर सागर–स०पु०यौ० [स० क्षीर-समुद्र, क्षीर-सागर] क्षीर सागर। उ०—अम्रित के समुद्र तैसै लहरू के प्रवाह छाजै।

जिनका रूप देखे सैं छीर-समुद्र का गुमर भाजै।—सू प्र

छीरोदधजा-स०स्त्री० स० [स० क्षीर+उदधि+जा] लक्ष्मी (डिं को)

छीलणौ, छीलबौ-क्रि०स०—१ किसी वस्तु का छिलका या छाल उतारना, वस्तु पर लगी छाल या आवरण को काट कर अलग करना। छीलना २ ऊपर लगी हुई या जमी हुई वस्तु को खुरच कर अलग करना ३ काटना, खड-खड करना।

छीलणहार, हारौ (हारी), छीलणियौ—वि०।

छीलवाडणौ, छीलवाडबौ, छीलवाणौ, छीलवाबौ, छीलवावणौ, छीलवावबौ, छिलाडणौ, छीलाडबौ, छीलाणौ, छीलाबौ, छीलावणौ, छीलावबौ—प्रे०रू०।

छीलिग्रोडौ, छीलियोडौ, छील्योडौ—भू०का०कृ०।

छीलीजणौ, छीलीजबौ—कर्म वा०।

छिलणौ, छिलबौ—अक०रू०।

छीलर-स०पु० [स० छिल्लल] १ छिछले पानी का गड्ढा, तलैया।

उ०—१ ज्यानैं जाय सकव कोई जाचएा, छीलर जेम देखावै छेह।
नेह अभा लेवण नह धारै, नारा हू त वधारे नेह।

—अज्ञात

उ०—२ गरवा हुवौ हरि गुण गावौ, छीलर जेम न दाखौ छेह।
आज क काल करता 'ओपा', विहडा गया सु ताळी देह॥

—ग्रोपो गाढ़ो

२ छोटा तालाब। उ०—१ श्री राम चरण चित राखियो, जन दूजौ है नहिं आवै दाय। जो मन सरोवर मे रम्यो, जद हसो हे छीलर किम जाय।—गी रा

उ०—२ हमा आ पारक्खडो, छीलर जळ न पियत। कै पावासर पीवणा, कै तिरसाहि मरत।—र रा

उ०—३ हसा सरवर ना तजै, जे जळ थोडा होय। छीलर छीतर भटकता, भला न कहसी कोय।—अज्ञात ३ छिछला पानी

रू०भे०—चीलर, छिलर, छिल्लर।

अल्पा०—छिलरियौ, छीलरियौ।

छीलरियउ—देखो 'छीलर' (रू भे) उ०—करहा पाणी खच पिउ, आसा घणा सहेसि। छीलरियउ ढूकिसि नही, भरिया केथि लहेसी।

—ढो मा.

छीलरियौ—देखो 'छीलर' (अल्पा, रू.भे) उ०—डेडरिया तज दै छीलरियै री आस।—अज्ञात

छीलियोडौ-भू०का०कृ०—छीला हुआ, छिलका या छाल आदि पृथक किया हुआ, काटा हुआ। (स्त्री० छीलियोडी)

छीलौ-स०पु०—पलाश का वृक्ष, ढाक (क्षेत्रीय)

छीव-वि०—मस्त, उन्मत्त (डिं को)

छीवोल्लग्र-स०पु०—१ निंदार्थक मुख विकार विशेष (जैन) २ विकूणित मुख (जैन)

छुच्चेंठी-स०स्त्री०—रूई धुनते समय होने वाली ध्वनि।

छुछुई-स०स्त्री०—केवांच का पेड़, कपिकच्छु (जैन)

छुछुमुसय-स०पु०—उत्कण्ठा, उत्सुकता (जैन)

छुत-वि० अधिक, ज्यादा (जैन)

छु-स०स्त्री०—१ मदक २ जुगुप्सा ३ तृष्णा (एका०)

अव्य०—कुत्ते आदि को शिकार या किसी अन्य प्राणी का पीछा करने के लिये उत्प्रेरित करने का शब्द।

छुअ—देखो 'छीप' (रू भे)

छुआछूत-स०स्त्री०—अछूत को छूने की क्रिया या भाव। अस्पृश्य स्पर्श २ स्पृश्य अस्पृश्य का विचार। अस्पृश्यता।

रू०भे०—छुआछूत।

छुआणौ, छुआबौ—देखो 'छुवाणौ' (रू भे.)

छुआणहार, हारौ (हारी), छुआणियौ—वि०।

छुआयोडौ—भू०का०कृ०।

छुआईजणौ, छुआईजबौ—कर्म वा०।

छुआयोडौ—देखो 'छुवायोडौ' (रू भे) (स्त्री० छुआयोडी)

छुइमुई-स०स्त्री०—एक पौधा विशेष जिसकी पत्तियां स्पर्श मात्र से बद हो जाती है और सीकें लटक जाती हैं। लज्जावती।

छुई-स०स्त्री०—बक, पक्षित, बलाका (जैन)

छुक्कारण-स०पु० [स० धिक्कारण] धिक्कारना, निंदा (जैन)

छुच्छ-वि० [स० तुच्छ] क्षुद्र, तुच्छ (जैन)

छुच्छम-वि० [स० सूक्ष्म] सूक्ष्म, थोडा, अल्प, न्यून।

उ०—१ नही तो नार पुरख न सनेह, नही तो दीरघ छुच्छम नेह।

—ह.र

उ०—२ अब दिल्ली मे पातसाह हुमायू थो सू भाज नीसरियो नै हरायत गयो छुच्छम साथ सूं।—द दा.

रू०भे०—छुछम।

छुच्छकार, छुच्छुक्कार-स०पु० [स० छुच्छुकार, छुच्छु+कृ] 'छु छु' शब्द कर के शिकार या किसी प्राणी के पीछे कुत्ते को लगाने का भाव। रू भे.—छु! (जैन)

छुछम—देखो 'छुच्छम' (रू भे)

छुटकारौ-स०पु०—१ किसी बधन आदि से छूटने का भाव या क्रिया। मुक्ति, रिहाई। उ०—जूवा मिर मे जुळै जुळै डाढी मे जूवा। जूना कपडा जुळै मिळै छुटकारौ मूवा।—ऊ का

२ किसी बाधा, आपत्ति, चिंता आदि से रक्षा ३ किसी कार्य-भार से मुक्त होने का भाव।

छुटणौ, छुटबौ—देखो 'छूटणौ' (रू भे) उ०—घम्म घम्मतइ घूघरइ, पग साने री पाळ। मारू चाली मदिरे, जाणि छुटौ छछाळ।

—ढो.मा

छुटभई, छुटभाई-स०पु०—१ छोटा भाई २ पद या मान-मर्यादा मे वश का छोटा व्यक्ति (राजपूत)

छुटाणौ, छुटाबौ-क्रि०स० ('छूटणौ' क्रिया का प्रे०रू०) छुडाना, मुक्त कराना।

छुटाणहार, हारो (हारी), छुटाणियो—वि०।

छुटायोडो—भू०का०कृ०।

छुटाईजणो, छुटाईजबो—कर्म वा०।

छुटायोडो–भू०का०कृ०—छुडाया हुआ (स्त्री० छुटायोडी)

छुटियो–स०पु०—१ लडकियों द्वारा गाया जाने वाला, राजस्थानी लोक गीत. २ गेंद खेलने का बल्ला. ३ हाथ में रखने की मोटी छडी।

छुटो—देखो 'छूटो' (रू भे) (स्त्री० छुटी)। उ०—बोली वीणा हस गत, पग वाजती पाळ। रायजादी घर अगणाइ, छूटे पटे छछाळ।—ढो मा

छुट्ट–वि० [स० छुटित] १ बन्धनमुक्त, छुटा हुआ. २ छोटा, लघु। (जैन)

छुट्टण–स०पु० [स० छोटन] छुटकारा, मुक्ति (जैन)

छुट्टणो, छुट्टबो—देखो 'छूटणो' (रू भे) उ०—मेछ उलट्टा मेदनी, फट्टा जाण समद। बळ छुट्टा भड कायरा, देख प्रगट्टा दुद।—रा रू.

छुट्ट–वि०—फेंका हुआ (जैन)

छुट्टियोडो—देखो 'छूटियोडो' (स्त्री० छुट्टियोडी)

छुट्टी–स०स्त्री०—१ छुटकारा, निस्तार, मुक्ति २ अवकाश, फुरसत ३ किसी कार्यालय के बद रहने का दिन।

क्रि०प्र०—करणी, राखणी, होणी।

४ अनुमति (जाने की)।

क्रि०प्र०—देणी, मागणी, होणी।

छुट्टो–वि० (स्त्री० छुट्टी) १ बधन आदि से मुक्त, उन्मुक्त, खुला. २ अकेला, एकाकी ३ विना किसी माल-असबाब के।

रू०भे०—छूटो, छूटो।

मि०—छडो।

छुडणो, छुडबो—छूटना, मुक्त होना। उ०—दिन जेही रिणी रिणाई दरसणि, क्रमि क्रमि लागा सकुडिणि। नीठि छुडै आकास पोस निसि, प्रौढा करसणि पगुरिणि।—वेलि

छुडणहार, हारो (हारी), छुडणियो वि०।

छुडवाडणो, छुडवाडबो, छुडवाणो, छुडवाबो, छुडवावणो, छुडवावबो, छुडाडणो, छुडाडबो, छुडाणो, छुडाबो, छुडावणो, छुडावबो—प्रे०रू०।

छुडिओडो, छुडियोडो, छुडयोडो—भू०का०कृ०।

छुडीजणो, छुडीजबो—भाव वा०।

छोडणो, छोडबो—सक०रू०।

छुडाई–स०स्त्री०—छोडने या छुडाने की क्रिया या इसके लिये लिया जाने वाला धन।

छुडाणो, छुडाबो–क्रि०स० ('छुडणो' क्रिया का प्रे०रू०) १ बधी, फसी, उलझी वस्तु को बधन से मुक्त कराना। किसी पकड से अलग कराना। उ०—वब सुणायाँ बीद नू, पैसतो घर पाय। चचळ साम्हे चालियो, अचळ वध छुडाय।—वी स

२ किसी के अधिकार से किसी वस्तु, धन, जायदाद आदि को अलग कराना ३ किसी वस्तु आदि पर लगा हुआ दाग या चिन्ह मिटाना. ४ काम या धधे से पृथक कराना, दूर हटाना ५ किसी प्रवृत्ति का त्याग कराना।

छुडाणहार, हारो (हारी), छुडाणियो—वि०।

छुडाडणो, छुडाडबो, छुडावणो, छुडावबो—रू०भे०।

छुडायोडो—कर्म वा०।

छुडणो, छुडबो—अक०रू०।

छुडायोडो–भू०का०कृ०—मुक्त किया हुआ, अलग किया हुआ, छुडाया हुआ। (स्त्री० छुडायोडी)

छुडावणो, छुडावबो—देखो 'छुडाणो' (रू भे) उ०—धरा छुडावण धाधला, मन कीन मरदे। हय वड दोय हजार सू, जिदराव हलदे।—पा प्र

छुडावणहार, हारो (हारी), छुडावणियो—वि०।

छुडाविओडो, छुडावियोडो, छुडा०योडो—भू०का०कृ०।

छुडावीजणो, छुडावीजबो—कर्म वा०।

छुडणो—अक०रू०।

छुडावियोडो—देखो 'छुडायोडो' (स्त्री० छुडावियोडी)

छुडियवर–स०पु० [स० छुटिकवर] आभरण विशेष (जैन)

छुड्डु–वि०—शीघ्र, तुरन्त (जैन)

छुड्डु–वि० [सं० क्षुद्र] क्षुद्र, तुच्छ लघु (जैन)

छुड्डिया–स०स्त्री० [स० क्षुद्रिका] आभरण विशेष (जैन)

छुणगो—देखो 'छिणगो' (रू भे)

छुद्र–वि० [स० क्षुद्र] १ ओछा, नीच, दुष्ट. २ निष्ठुर. ३ उद्दण्ड ४ गरीब ५ कजूस।

छुद्रघट, छुद्रघटा, छुद्रघटिका–स०स्त्री० [स० क्षुद्रघटिका या क्षुद्राघटिका] करधनी, मेखला। उ०—१ छज चित्र कटीस छीण, छुद्रघट छाजय। सको ग्रह ससिध रासि, एक साथि आजय।—सू प्र

उ०—२ छुद्रघटा विछिया का, छूटे छणछणाव। ज्यों हसे बच्चा की वाणी का बणाव।—रा सा स

उ०—३ पुनरपि पधरावी कन्है प्राणपति, सहित लाज भय प्रीति सा। मुगत केस त्रूटि मुगतावळि' कस छूटी छुद्रघंटिका। —वेलि.

छुद्रा–स० स्त्री० दाख, किशमिश (अ. मा)

छुध, छुधा—देखो 'क्षुधा' (रू.भे.) उ०—भोजन लाया थाळ भर, कर पकवान नवीन। तऊ छुधा भाजै नही, परस्या विना प्रवीण।—प्रवीण सागर

छुनणो, छुनबो—देखो 'छूनणो'। उ०—१ मास छुन-छुन पासै कीजै छै।—रा.सा.स उ०—२ मैदे रा माडा कीजै छ। ते मैं घणो नान्हो छुनियो मास-मद्दी आच कढाई मे तळै छै।—रा सा स

छुन्न–वि० [स० क्षुण्ण] १ चूर-चूर किया हुआ, चूर्णित (जैन) २ अभ्यास किया हुआ, अभ्यस्त (जैन) ३ नाश किया हुआ, विनाशित (जैन)

स०पु०—नपुसक (जैन)

छुपणो, छुपबो—देखो 'छिपणो' (रू भे) उ०—ग्रावत मोरी गलियन मे गिरधारी। मैं तो छुप गई लाज की मारी।—मीरा

छुपणहार, हारो (हारी), छुपणियो—वि०।

छुपवाडणो, छुपवाडबो, छुपवाणो, छुपवावो, छुपवावणो छुपवाववो—प्रे०रू०।

छुपाडणो, छुपाडबो, छुपाणो छुपावो, छुपावणो, छुपाववो—क्रि०स०।

छुपीग्रोडो, छुपीयोडो, छुप्योडो—भू०का०कृ०।

छुपीजणो, छुपीजबो—भाव वा०।

छुपाणो, छुपाबो—देखो 'छिपाणो' (रू.भे)

छुपाणहार, हारो (हारी), छुपाणियो—वि०।

छुपायोडो—भू०का०कृ०।

छुपाईजणो, छुपाईजबो—कर्म वा०।

छुपणो, छुपबो—ग्रक०रू०।

छुपाडणो, छुपाडबो, छुपावणो, छुपाववो—रू०भे०।

छुपायोडो—देखो 'छिपायोडो' (स्त्री० छुपायोडी)

छुपावणो, छुपाववो—देखो 'छिपाणो' (रू.भे)

छुपियोडो—देखो 'छिपियोडो' (रू भे) (स्त्री० छुपियोडी)

छुबरणो, छुबरबो—क्रि०स० —टुकडे-टुकडे करना, काटना, छीलना।

उ०—मीठा मधुरा गळिग्रा चोपडा काचा, पाका छोल्या छुबरचा वघारिया ग्रणवघारिया।—जिमणवार-परिधान विधि

छुम—स०स्त्री०— ध्वनि विशेष। उ०—मोर मुकट पीतावर सोहै, छुमछुम वाजत मुरली।—मीरा

छुयायार—वि० [स० च्युताचार] जिसके ग्राचार मे कमी हो (जैन)

छुरगो—देखो 'छिगगो' (रू भे)

छुर—स०पु०—१ नापित का ग्रस्त्र, छुरा (जैन) २ पशु का नख (जैन) ३ वृक्ष विशेष ४ गोखरू (जैन) ५ वाण, क्षर, तीर (जैन) ६ तृण विशेष (जैन) ७ देखो 'छुरी' (मह, रू भे)

छुरघर छुरघरय—स०पु० [स० क्षुरगृह, क्षुरगृहक] नापित का छुरा वगैरा रखने की थैली (जैन)

छुरमड्डि—स०पु०—नापित, हज्जाम (जैन)

छुरि, छुरिग्रा, छुरिका, छुरिगा, छुरिया, छुरी, छुरीका—स०स्त्री० [स० क्षुरिका, क्षुरी] काटने व चीरने-फाडने का एक छोटा लोहे का धार युक्त हथियार जो एक वेंट मे लगा रहता है। यह नित्य प्रति व्यवहार मे ग्राने वाली वस्तुग्रो को छीलने, काटने ग्रादि के काम ग्राती है (जैन) उ०—१ पोतो पडियो रहै ग्रगाडी मूढै ग्रागै। खळ वटिया रो खरड छुरी सू छालण लागै।—ऊ का.

उ०—२ ग्रर वडाहरा प्रस्थान रा समय रै पूरव ही ग्रापरा ग्रग-ग्रग मे छुरीका रा छत लगाय समस्त स्वादु द्रव्य मिळाय।—व भा

मुहा०—१ छुरी चलाणी—छुरी से लडाई करना, किसी पर छुरी का वार करना २ छुरी फेरणी—किसी का ग्रनिष्ट करना, वध करना ३ छुरी रै धार देणी—किसी का ग्रनिष्ट करने की तैयारी करना।

छुरो—स०पु० [स० क्षुर, छुर] १ वेंट मे लगा लम्बा लोहे का एक धारदार हथियार जो प्राय किसी पर ग्राक्रमण करने के काम ग्राता है। उ०—१ वूडावत वैठोह छाती, पर ग्रहिया छुरो। झल स्वत जग जेठोह, जायल राव जगाडियो।—पा.प्र उ०—२ जकडि छुरा खजरा, कसै वह साज वदूका। ढळक ग्रलीवध ढाल, ग्ररण मुक्त धणिक ग्रचूका।—सू प्र

२ (नाई का) उस्तरा।

रू०भे०—छूरो।

ग्रल्पा०—छुरी।

मह०—छुर।

छुळकणो, छुळकबो—क्रि०ग्र०—थोडा-थोडा कर मूतना।

छुळकियोडो—भू०का०कृ०—थोडा-थोडा कर पेशाव किया हुग्रा। (स्त्री० छुळकियोडी)

छुळकी—स०स्त्री०—थोडा थोडा कर पेशाव करने की क्रिया।

छुळक्यो-छाटचो—वि०यौ०—कूट-पीट कर या फटकार कर साफ किया हुग्रा।

छुलणो, छुलबो—देखो 'छिलणो' (रू भे)

छुलणहार, हारो (हारी), छुलणियो—वि०।

छुलवाडणो, छुलवाडबो, छुलवाणो, छुलवावो, छुलवावणो, छुलवाववो, छुलाडणो, छुलाडबो, छुलाणो, छुलावो, छुलावणो, छुलाववो—प्रे०रू०।

छुलिग्रोडो, छुलियोडो, छुल्योडो—भू०का०कृ०।

छुलीजणो, छुलीजबो—भाव वा०।

छोलणो, छोलबो—सक०रू०।

छुलाणो, छुलाबो—क्रि-स० ('छुलणो' क्रिया का प्रे०रू०) छीलने का काम किसी ग्रन्य से कराना।

छुलायोडो—भू०का०कृ०—छिलाया हुग्रा। (स्त्री० छुलायोडी)

छुलावणो, छुलाववो—देखो 'छुलाणो'।

छुलियोडो—देखो छिलियोडो'। (स्त्री० छुलियोडी)

छुवाछूत—देखो 'छुग्राछूत' (रू भ)

छुवाणो, छुवाबो—क्रि०स०—स्पर्श कराना, छुग्राना।

छुवाणहार, हारो (हारी), छुवाणियो—वि०।

छुवायोडो—भू०का०कृ।

छुवावीजणो, छुवावीजबो—कर्म वा०।

छुग्राणो, छुग्राबो—रू०भे०।

छुवायोडो—भू०का०कृ०—स्पर्श कराया हुग्रा, छुग्राया हुग्रा। (स्त्री० छुवायोडी)

रू०भे०—छुग्रायोडो।

छुहारो—देखो 'छुहारो' (रू भे) उ०—राधा, वाईजी थानै जिंदवा रा भात, गिरी ए छुहारा वाईजी थारै मुख भरा।—लो गी.

छुहा–स०स्त्री० [स० सुधा] १ अमृत, पीयूष (जैन) २ चूना (जैन) ३ देखो 'क्षुधा' (रू भे, जैन)
छुहाइअ, छुहाइय, छुहाउल–वि० [स० क्षुधित, क्षुधाकुल] बुभुक्षित, भूखा (जैन)
छुहाकम्मत–स०पु० [स० क्षुधाकर्मान्त] ब्राह्मणों के रसोई करने का स्थान। क्षुधा-परिकर्म (जैन)
छुहापरिसह–स०पु० [स० क्षुधापरिषह] क्षुधा सहन करने की शक्ति। (जैन)
छुहारौ–स०पु०—एक प्रकार के खजूर वृक्ष का फल जो खाने मे अधिक मीठा होता है। खारिक, पिंड खजूर। उ०—फळ कदळी स्रीय स्वादे अफारा। छये स्रेय बादाम पिस्ता छुहारा।—रा.रू
छुहाळु–वि० [स० क्षुधालु] भूखा, बुभुक्षित (जैन)
छुहावेयणिज्ज–स०पु० [स० क्षुधावेदनीय] ऐसा कर्म जिससे भूख लगे। (जैन)
छुहिअ, छुहिय–वि० [स० क्षुधित] बुभुक्षित, भूखा (जैन)
छू–क्रि०अ०—राजस्थानी के वर्तमान-कालिक क्रिया 'छै' का उत्तम पुरुष एक वचन का रूप 'हू'। उ०—जै कदाचित हू हाथ पकडियौ तो हू तो अेकलौ छू अर ऐ घणा छै।—पलक दरियाव री बात
छूकण–स०पु०—छौंका, तडका, बघार।
छूकणौ, छूकबौ—देखो 'छमकणौ' (रू भे) उ०—भावजड़ी म्हारी चाटू रोडै, मायड मारै फूक। माड कचोळी जीजी वैठी, घाल खीचडो छूक।—लो.गी.
छूकियोडौ—देखो 'छमकियोडौ' (रू.भे)
(स्त्री० छूकियोडी)
छूछ–स०स्त्री०—हृदय की उमग, हृदय के भाव या आवेश।
उ०—प्रसणा करवा पाधरा, घट री काढण छूछ। क्रोधीला 'खुसियाळ' री, मिळै भुहारा मूछ।—अज्ञात
देखो 'चूच' (रू भे)
छूत, छूतक, छूतकौ, छूतरौ–स०पु०—छिलका।
उ०—१ गुठली गिटणै जोग जाणै छूतक चूसण चापडा। किसत खावै जठै जमेरी बोर अमर है बापडा।—दसदेव
उ०—२ लडण नै लगि जावै ललिक, तौ पडण न देवै पूतरा। नित नारि गैल रोवै निलज, छैल मती पी छूतरा।—ऊ का.
रू०भे०—छूत।
अल्पा०—छूतक, छूतकौ, छूतरौ, छूतक्, छूतकौ, छूतरौ।
छूरियौ–स०पु०—फूल आदि को एकत्रित कर किया गया गोल ढेर या समूह (शेखावाटी)
छूरौ–स०पु०—पलाश या ढाक का वृक्ष (अलवर)
छू–स०पु०(अनु०)—१ थाट २ शब्द ३ गज ४ खुदा, ईश्वर ५ मत्र पढ कर फूक मारने की क्रिया
अव्य—६ कुत्ते को भगाने या किसी पर झपटने के लिये प्रेरित करते समय उच्चरित किया जाने वाला शब्द।

छूछौ–वि० [स० तुच्छ, प्रा० छुच्छ] रिक्त, खाली।
छूट–स०स्त्री०—१ छूटने का भाव, छुटकारा, मुक्ति।
क्रि०प्र०—दैणी, पाणी, मिळणी।
२ अवकाश, फुरसत ३ दपत्ति का परस्पर सबध त्याग, तलाक, विच्छेद
यौ०—छूटपल्लौ, छूटापौ।
४ स्वतत्रता, स्वच्छंदता, आजादी ५ वह धन या रुपया अथवा अनाज जो महाजन या जमीदार द्वारा स्वेच्छा से आसामी के हक मे छोड दिया जाता हो।
क्रि०प्र०—करणी, दैणी।
६ खुला या विस्तृत स्थान ७ वह भूमि जो किसी कारणवश नही जोती गई हो ८ वह भूमि जिसकी उर्वरा शक्ति बढाने हेतु कुछ वर्षों के लिये छोड दी गई हो, परती ९ किसी कार्य या उसके किसी अग को भूल से न करने का भाव।
क्रि०प्र०— रैणी।
छूटक–वि०—१ फेंका हुआ। उ०—छेडी कर छूटक बाद छडाळ, भलौ थरकत पटाझर भाळ।—मे म.
स०पु०—२ गद्य रचना के वे पद या शब्द जो पिंगल मतानुसार न हो कर स्वतत्र रूप से सुन्दरता के लिये रखे गये हो (र ज प्र)
३ मुक्तक काव्य।
छूटणौ, छूटबौ–क्रि०अ० [स० चुट, छुट] १ किसी वस्तु का अपने बधन, उलझन, पकड व लगाव से दूर होना, लगाव में न रहना, सलग्न न रहना। उ०—पुनरपि पधरावी कन्है प्राणपति, सहित लाज भय प्रीति सा। मुगतकेस त्रूटी मुगतावळि, कस छूटी छुद्रघटिका।—वेलि
मुहा०—१ देह छूटणौ—मृत्यु होना. २ साहस छूटणौ—हिम्मत न रहना।
२ किसी दाग या चिन्ह का दूर होना, मिटना।
३ बधनमुक्त होना, रिहाई होना, छुटकारा होना। उ०—अरधे-उरध उरध मिळ अरधे, हेकमेक होय जावै। छन मे गुरु क्रिपा सू छूटै, आवागवण उठावै।—ऊ का
४ किसी अभ्यास एव प्रवृत्ति का बद होना, ज्यू म्हारी कसरत छूटता ही म्हारौ डील पड गियौ ५ बचना। उ०—भीमु भीर इम कीचक कूटइ, तेह आगळि न कोई छूटइ।—विराट परव
६ शेष रहना, बाकी बचना ७ भूल से किसी कार्य या उसके अग को न किया जाना। ८ किसी कार्य से पृथक होना, दूर होना—ज्यूं म्हारौ लेख अधूरौ छूट गयौ क्यूंकि परीक्षा रौ समै पूरौ होवण री घटी वाजगी ९ प्रस्थान करना, रवाना होना, चल पडना। १० किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान का अपने से दूर पड जाना, बिछुडना। उ०—आभ फटै धर ऊससै, कटै बगतरा कोर। सिर तूटै धड तडफडै, जद छूटै जाळोर।—महाराजा मानसिंह
११ दूरी तक मार करने वाले अस्त्र का चल पडना. १२ किसी

वस्तु या पदार्थ का वेग के साथ निकलना—ज्यू लोही गी धार छूटगी १३ स्खलित होना। १४ किसी वस्तु आदि मे से रस रस कर पानी या ऐसा ही कोई तरल पदार्थ निकलना १५ भूल या प्रमाद से किसी वस्तु का अपने स्थान पर प्रयुक्त न होना, रक्खा न जाना, लिया न जाना १६ रोजी या जीविका वद होना, जीविका का आधार न रह जाना १७ प्रसव पीडा से मुक्त होना, प्रसव होना। उ०—थारै दिन पिण पूरा हुवा छै। दिन १५ तथा २० राणी छूटी, वेटो जायो।—नैणसी

१८ घोडे का शरीर छोडना, मरना। उ०—तिण नू सगतसीह जी मार राणा जी नै हेलो पाड कयो—घोडो तीना पगा है। तद देव जीण उतारता ही घोडो छूटो। राणै जी महा विलाप कियो।—वी स टी.

छूटणहार, हारो (हारी), छूटणियो—वि०।

छुटवाडणो, छुटवाडवो, छुटवाणो, छुटवावो, छुटवावणो, छुटवावबो, छुटाडणो, छुटाडवो, छुटाणो, छुटाबो, छुटावणो, छुटाववो—प्रे०रू०।

छूटिग्रोडो, छूटियोडो, छूटघोडो—भू०का०कृ०।

छूटीजणो, छूटीजवो—भाव वा०।

छोडणो, छोडवो—सक० रू०।

छूटपल्लो, छूटापो—स०पु०—१ दपत्ति द्वारा परस्पर सम्वन्ध-विच्छेद, तलाक २ वधन-मुक्ति।

छूटियोडी—भू०का०कृ०—प्रसव पीड़ा से मुक्त हुई हुई।

छूटियोडो—भू०का०कृ०—१ बन्धन, उलझन, पकड़ या लगाव से दूर हुआ हुआ २ मिटा हुआ, दूर हुआ हुआ (दाग, चिन्ह आदि का) ३ छुटकारा पाया हुआ, रिहा हुआ हुआ ४ किसी अभ्यास एव प्रवृत्ति का वद हुआ हुआ ५ बचा हुआ ६ शेष रहा हुआ, वाकी बचा हुआ ७ भूल से किसी कार्य या उसके अग को नही किया गया हुआ ८ प्रस्थान किया हुआ, रवाना हुआ हुआ ९ किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान का अपने से दूर हुआ हुआ, विछुडा हुआ १० छूटा हुआ, चला हुआ (दूरी से मार करने वाले अस्त्र का) ११ वेग के साथ निकाला हुआ. १२ स्खलित हुआ हुआ १३ रस-रस कर निकला हुआ (पानी या ऐसा ही कोई तरल पदार्थ) १४ भूल या प्रमाद से किसी वस्तु का अपने स्थान पर प्रयुक्त नही हुआ हुआ, रखा नही गया हुआ, लिया नही गया हुआ १५ वन्द हुआ हुआ (रोजी या जीविका का) १६ शरीर छोडा हुआ, मरा हुआ (घोडा) (स्त्री० छूटियोडी)

छूटी—देखो 'छुट्टी' (रू भे)

छूटो, छूट्टो—देखो छुट्टो' (रू भे)

छूणो, छूबो—क्रि०अ० [स० छुप, प्रा०छुव] १ एक वस्तु को दूसरी वस्तु के इतने निकट करना कि दोनो के कुछ अश परस्पर मिल जायें।' छूना, स्पर्श होना. २ किसी वस्तु के अग को अपने किसी अग से लगाना, सटाना, स्पर्श करना, ससर्ग मे लाना, हाथ लगा कर छूना ३ दान के लिये किसी वस्तु को छूना ४ प्रतिस्पर्धा मे किसी को छूना, वरावर आना ५ थोडा व्यवहार मे लाना, वहुत कम काम मे लाना. ६ हलके हलके मारना।

छूणहार, हारो (हारी), छूणियो—वि०।

छूयोडो—भू०का०कृ०।

छूईजणो, छूईजवो—भाव वा०, कर्म वा०।

छूत—स०स्त्री०—१ छूने का भाव, स्पर्श, ससर्ग। २ अस्पश्य का स्पर्श करने से लगने वाला अशौच. ३ अपवित्र वस्तु को छूने का दोष

यौ०—छूप्राछूत, छूतछात।

४ भूतप्रेत आदि का प्रभाव ५ देखो 'छूत' (रू भे.)

छूतको, छूतरो—देखो 'छूत' (अल्पा. रू भे)

छूनणो, छूनवो—क्रि० स०—मास को पकाने के लिये काट कर छोटे टुकडो मे करना। उ०—नान्हो छून देगचा मे घातजै छै।
—रा सा स

छूनणहार, हारो (हारी), छूनणियो—वि०।

छूनवाडणो, छूनवाडवो, छूनवाणो, छूनवावो, छूनवावणो छूनवाववो, छूनाडणो, छूनाडवो, छूनाणो, छूनावो, छूनावणो, छूनावबो —प्रे०रू०।

छूनिग्रोडो, छूनियोडो, छून्योडो—भू०का०कृ०।

छूनीजणो, छूनीजवो—भाव वा०।

छूनो—वढिया, श्रेष्ठ। उ०—धकी वेस माता ताता सुभावा मलोचा धुना, पडै टल्ला कोट चुनास चेजा पाखाण, धूपधार असी चौडै जुना हुत मोह धारै, करग्गा दीवाण छूना ऊवारै केकाण।—महादान महडू

छूमतर—स०पु०—१ एकाएक गुप्त होने या करने का भाव २ जादू-टोना।

छूयोडो—भू०का०कृ०—स्पर्श किया हुआ, छुआ हुआ (स्त्री० छूयोडी)।

छूर—स०स्त्री०—वौछार, छूट। उ०—वरला छूर गोळिया वाळै, वणियो मेघ जाण वरसाळै।—रा रू

छूरो—देखो 'छुरो' (रू भे) उ०—अठी राम रा सुभट नै सुभट रावण उठी, लक रै जोरावर खेन लडवा। तीर सेला छूरा भीक तरवारिया, वाजिया विनै ही रभ वरवा।—र रू.

छूवणो, छूववो—देखो 'छूणो' (रू भे) उ०—अरज एक ऊचरण, चरण छूवण हू चाऊ। पाऊ करण पसाव, समर न करण समझाऊ।
—मे म

छूवियोडो—देखो 'छूयोडो' (रू भे) (स्त्री० छूवियोडी)

छे—स०स्त्री०—१ ऊपर २ फासी ३ इद्रिया. ४ वेणी. ५ वसुधा ६ सियार (एका०)

छे'—देखो—छेह (रू भे)

अव्य०—गाय, भैंस आदि को पानी पिलाने के लिये उच्चरित किया जाने वाला साकेतिक शब्द।

छेग्रोवट्ठावण, छेग्रोवट्ठावणिय—स०पु० [स० छेदोपस्थान, छेदोपस्थापनीय] वडी दीक्षा (जैन), सयम विशेष (जैन)

रू०भे०—छेदोवट्ठावण, छेदोवट्ठावणिय ।

छेक–वि०—१ छेदने वाला २ कसकने वाला, दर्द करने वाला ।

उ०—दोरी लागै दोयणा, छक तारी उर छेक । संणा मन सारी रहै, पदवी डोरी पेख ।—जुगतीदान देथो

३ चतुर ।

स०पु०—१ छिद्र, सूराख । उ०—सुहिणा तोहि मराविसू, हियइ दिराऊ छेक । जद सोऊ तद दोई जण, जद जागू तद हेक ।—ढो मा.

मह०—छेकड ।

अल्पा०—छेकडली, छेकडो, छेकलो ।

२ छेकानुप्रास नामक शब्दालकार ।

छेकड—देखो 'छेक' (मह , रू भे २) उ०—तरै दासी ऊची जाय किंवाडी री छेकड माहि मूढो घालि नै कह्यो, चावडीजी कवरजी नै जगाय उरा मेलो ।—जगदेव पवार री वात

क्रि०वि०—१ अत मे, आखिर मे । उ०—नित-नित थारी-म्हारी हिडक्या रै हाथ लगावतै लगावतै छेकड एक जागा पाढ़ो ढूको ।

२ एक ओर, एक तरफ । —वरसगाठ

वि०—अन्त का, आखिर का ।

छेकडतो–क्रि०वि०—अन्त मे ।

छेकडलो–वि०पु० (स्त्री० छेकडली) अत का, अतिम, आखिरी ।

उ०—१ वा ढेकी छेकडलीवार निरासा भरी निजर कंई नै देखण सारू पसारी पण ओभाजी री डिच-डिच विर्यं नै वठै ज्यादा पग ठामण को दिया नी ।—वरसगाठ

उ०—२ (निसासा नाख'र) आयगी ऊची ? अवकलै तो लदियोडै ऊठ ऊपर छेकड़लो तिणखो ई समझै ।—वरसगाठ

देखो 'छेक' १ (अल्पा., रू भे)

छेकडो—देखो 'छेक' (अल्पा) उ०—भीवै मन माहे जाण्यो बावडी माहे किसू करै छै । यों जाण वरडी रा छेकडा माहे जोवै ।

—जखडा मुखडा भाटी री वात

छेकणो, छेकबो–क्रि०स०—१ छेद करना, सूराख करना ।

उ०—सात्रव नह छोडूह, तोडू हू जड ताह री । मू खजर मोडूह, काळज फीफर छेक कर ।—पा प्र

२ काटना, चीरा देना ३ (लिखने मे) किसी शब्द या वाक्य को काटना ४ शत्रु-दल को चीरते हुए आरपार निकालना ।

उ०—पडै विकट धकै चापा सुदि पुळ गया, भडा थट छेक अडवा सळू भो । तोल खग टेक नह छडै 'मोहकम' तणो, एकलो ठोर भुज लडण ऊभो ।—मोतीराम आम्यियो

५ पार करना, आर-पार जाना । उ०—खोखा खावै ऊट, उवाणै गूजै गाळा । खोखा छीकल खाय, छेकता जगळ छाळा ।—दसदेव

६ आगे बढना । उ०—कूदणा कछी छेकै कुरग । तत्ता सव तुरगा हू तुरग ।—सू प्र.

छेकणहार, हारो (हारी), छेकणियो—वि० ।

छेकवाडणो, छेकवाडबो, छेकवाणो, छेकवाबो, छेकवावणो, छेकवावबो, छेकाडणो, छेकाडबो, छेकाणो, छेकाबो, छेकावणो, छेकावबो—प्रे०रू०

छेकिओडो, छेकियोडो, छेक्योडो—भू०का०कृ० ।

छेकीजणो, छेकीजबो—कर्म वा० ।

छिकणो, छिकबो—अक० रू० ।

छेकरणो, छेकरबो–क्रि०स०—१ छेद करना २ चीरना या फाडना ३ दौड मे आगे बढना ।

छेकरियोडो–भू०का०कृ०—१ चीरा-फाडा हुआ. २ छेद किया हुआ. ३ दौड मे आगे बढा हुआ । (स्त्री० छेकरियोडी)

छेकलो—देखो 'छेक' (अल्पा., रू भे) उ०—मिन्नी पडुतर दियो—ओ काच भीत मे छेकला रै उनमान व्हे । थें उणरै मा कर जोवो तो सामी साफ तस्वीर दीखै ।—वाणी

कहा०—खावै जकी हाडी मे ही छेकलो करै—जिस हाडी मे खाता है उसी मे छेद करता है अर्थात् उपकार करने वाले का अपकार करता है ।

छेकाछेकी–स०स्त्री०—छेकने की क्रिया का भाव ।

उ०—नरम ठौर नरम भयो गरम ठौर भयो गरम, सरम न सुहाई सून्य छद्म छेकाछेकी तें । राज नुकसान थान प्रान देन भयो राजी, आन ते जमाई आछी आह एकाएकी तें ।—ऊ का

छेकानुप्रास–स०पु० [स०] अनुप्रास अलंकार का एक भेद ।

छेकापह्नुति–स०स्त्री० [स०] एक अलकार जिसमे दूसरे के अनुमान का खडन किया जाय ।

छेकियोडो–भू०का०कृ०—१ छेद किया हुआ. २ काट-छाट किया हुआ (स्त्री० छेकियोडी)

छेकोक्ति–स०स्त्री०—वह लोकोक्ति जिसके अर्थ की ध्वनि अन्य भी निकले ।

छेको–वि०—शीघ्र, त्वरायुक्त, उतावला ।

छेड–स०स्त्री०—१ किसी को छू कर या खोद खाद कर तग करने की क्रिया २ व्यग उपहास आदि के द्वारा किसी को तग करने या चिढाने की क्रिया, हसी, ठठोली, दिल्लगी ।

क्रि०प्र०—करणी ।

यौ०—छेडखानी, छेडछाड ।

३ झगडा, टटा, विरोध ।

क्रि०प्र०—करणी, लेणी, होणी ।

मुहा०—छेड लेणी—झगडा मोल लेना, टटा-फिसाद करना ।

४ किसी वाद्य को वजाने या स्वर निकालने के अभिप्राय से उसे छूने की क्रिया. ५ सामूहिक वृहद भोज ६ मृत्योपरात द्वादशे पर किये जाने वाले भोज पर सम्मिलित होने वाले आमन्त्रित व्यक्ति ।

रू०भे०—चेड़ ।

छेड़णौ, छेड़बौ–क्रि०स०—१ छू कर या खोद खाद कर तंग करना, छेड़ना २ व्यंग या उपहास द्वारा किसी को चिढ़ाना, ठठोली करना ३ छूना, खोदना-खादना, कोंचना ४ उत्तेजित करने या चिढ़ाने के लिये किसी के विरुद्ध कोई कार्य या क्रिया करना. ५ कोई बात या कार्य प्रारम्भ करना, शुरू करना ६ ध्वनि उत्पन्न करने के उद्देश्य से किसी वाद्य यंत्र को छूना, बजाने के लिये बाजे के हाथ लगाना ७ संयोग या संसर्ग के लिये ऐसी क्रिया करना जिससे मीठी सिहरन या गुदगुदी उत्पन्न हो, कामोद्दीपन करना । उ०—एड़ै भरख दिन ताई कुण कर कुंवर री बरसी कर पाछै थारै डावियै साईस, दवरे मने छेड़ै मती ।—चौबोली

८ नश्तर से फोड़ा चीरना ९ छेद करना, सूराख करना ।

छेड़णहार, हारौ (हारी), छेड़णियौ—वि० ।

छेड़वाड़णौ, छेड़वाड़बौ, छेड़वाणौ, छेड़वाबौ, छेड़वावणौ, छेड़वावबौ, छेड़ाड़णौ, छेड़ाड़बौ, छेड़ाणौ, छेड़ाबौ, छेड़ावणौ, छेड़ावबौ—प्रे०रू० ।

छेड़िग्रोड़ौ, छेड़ियोड़ौ, छेड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

छेडीजणौ, छेडीजबौ—कर्म वा० ।

छिड़णौ, छिड़बौ—अक० रू० ।

छेड़लियौ—देखो 'छेड़ौ' (अल्पा रू भे)

छेड़लौ–वि०—आखिरी, अन्तिम, सब से अन्त का । उ०—करणौ पड़सी न्याय छेड़लौ, माटी थनै बोलणौ पड़सी ।—चेत मानखा

देखो 'छेड़ौ' (अल्पा. रू भे)

छेड़ाछेड़ी–स०पु०—पति-पत्नी के वस्त्रों के छोर को परस्पर बांधने की क्रिया का भाव, वर के वस्त्र का वधू के आंचल के साथ किया जाने वाला गठबंधन, गठजोड़, गठ-बंधन ।

छेड़ियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ छेड़ा हुआ २ खोद-खाद कर तंग किया हुआ ३ चिढ़ाया हुआ ४ आरंभ किया हुआ, शुरू किया हुआ. ५ भड़काया हुआ, उत्तेजित किया हुआ. ६ (ध्वनि उत्पन्न करने के उद्देश्य से बाजे आदि को) छुआ हुआ ७ कामोद्दीपन किया हुआ ८ चीरा हुआ (नश्तर से फोड़ा आदि) ९ छेद किया हुआ ।

(स्त्री० छेड़ियोड़ी)

छेड़ियौ–स०पु०—१ रहट की माल का अंतिम छोर २ स्त्रियों द्वारा गले मे धारण किया जाने वाला एक आभूषण विशेष. ३ जुलाहों का एक लोहे का औजार जो लगभग एक गज लम्बा होता है जिसे ताना लगाते समय भूमि मे गाड़ देते है और उससे ताने की रस्सी बांध दी जाती है, ये संख्या मे एक साथ दो लगाये जाते है ४ चरखे मे तकुए पर लपेटी जाने वाली कुकड़ी को पीछे खिसकने से रोकने के लिये पीछे लगाया जाने वाला चमड़े का बना छल्ला ५ देखो 'छेड़ौ' (अल्पा , रू.भे)

छेड़ै, छेडै–क्रि०वि०—१ किनारे पर, छोर पर, एक ओर, एक तरफ, दूर । उ०—अरु आदमी तरवारा बाथ मा'राज नू छेडै किया तो

[illegible] ।—[illegible]

२ [illegible] । उ०—[illegible]

[illegible] ।—[illegible]

[illegible]

छेड़ौ–स०पु०—१ छोर, किनारा. २ हद, सीमा. ३ [illegible] (?) ४ [illegible] ५ [illegible] ६ [illegible] ।

रू०भे०—[illegible] ।

अल्पा०—[illegible] ।

छेदणौ—[illegible] ।

छेजारौ—देखो '[illegible]' (रू भे)

छेडै आणौ–क्रि०स०वि०—[illegible] ।

छेणौ–स०पु०—[illegible] ।

क्रि०प्र०—[illegible] ।

छेत्र–वि० [स० [illegible]] १ [illegible] (जैन) २ [illegible] (जैन)

स०पु०—[illegible] (जैन) ।

छेटी–स०स्त्री० [स० [illegible]] [illegible] । उ०—[illegible] ।—[illegible]

क्रि०प्र०—[illegible] ।

मुहा०—[illegible] ।

छेणी—देखो '[illegible]' (रू भे)

छेतर–स०स्त्री०—१ [illegible] भूमि २ श्मशान भूमि, मरघट ।

छेतरण–स०पु०—छल, कपट (अ [illegible])

छेतरणौ, छेतरबौ–क्रि०स०—१ छलना, धोखा देना, ठगना ।

उ०—१ जद [illegible] तद [illegible], जद मोऊ तद चैन । मोहणा थें मो छेतरो, बीजी ताजी हेन ।—[illegible]

उ०—२ [illegible] मांह बगड़ावत कुंगे घाट [illegible] । [illegible] दीजे । त हूरा [illegible] । ताहरा माताजी [illegible] । हूं इयाने छेतरीस पिण ईयारी पैर कुण लेसी ।—देवजी बगडावत री वात

२ संहार करना, मारना ।

३ ढूंढना, तलाश करना ।

छेतरणहार, हारौ (हारी), छेतरणियौ—वि० ।

छेतरिग्रोड़ौ, छेतरियोड़ौ, छेतरयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

छेतरीजणौ, छेतरीजबौ—कर्म वा० ।

छेतरियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ छला हुआ, ठगा हुआ. २ संहार किया हुआ, मारा हुआ. ३ तलाश किया हुआ, ढूंढा हुआ ।

(स्त्री० छेतरियोड़ी)

छेतरी–वि०—छली, कपटो। उ०—छतरी हूँ किम छेतरी, एथे आय अडत। बत वळै म्हांरी वीफरचा, उर दळ तोर उडत।
—रेवतसिंह भाटी

छेताळीस–वि०—देखो 'सैंतालीस' (रू भे)
स०पु०—सैंतालीस की सख्या।

छेती– देखो 'छेटी' (रू भे) उ०—पण हथणी हाथी सू डरती नजीक आवै नही, हाथ तीन री छेती रही।—द दा
क्रि०प्र०—करणी, पडणी, राखणी, होणी।

छेत्त–स०पु० [स० क्षेत्र] १ कृषि-भूमि, खेत (जैन) २ जमीन, भूमि (जैन)
३ आकाश (जैन) ४ गांव, नगर, देश आदि स्थान (जैन)
५ स्त्री, पत्नी (जैन)

छेत्तार–वि० [स० छेतृ] जो छेदन करता हो, जो काटता हो (जैन)

छेद–स०पु० [स० छिद्र] १ किसी वस्तु के फटने या उसमे सुई, काटा आदि तीक्ष्ण वस्तु के आर-पार चुभने से होने वाला खाली स्थान। किसी वस्तु मे वह शून्य या खाली स्थान जिसमे हो कर कोई वस्तु इस पार से उस पार निकल सके। सूराख, छिद्र।
क्रि०प्र०—करणी, पाडणी, होणी।
२ वह खाली स्थान जो किसी वस्तु या भूमि मे कुछ दूर तक खोदने, काटने आदि से पडा हो। बिल, विवर ३ ऐब, दोष, अवगुण।
क्रि०प्र०—ढूढणी, देखणी, मिळणी।
[स०] ४ छेदन, काटने का काम ५ नाश, ध्वश ६ खड, टुकडा (जैन) ७ छ जैन आगम ग्रथ।

छेदक–वि०—छेदने, काटने या नाश करने वाला।

छेदणौ छेदबौ–क्रि०स० [स० छिदिर] १ किसी वस्तु मे नुकीली या तेज वस्तु से आर-पार छेद करना। छिद्रयुक्त करना, वेधना २ क्षत लगाना, नुकीले हथियार से घाव लगाना ३ सहार करना, मारना। उ०—छेदे ग्राह तुरत छोडवियो, अनत जुगा जुग भगत उधार।
—ह ना
४ काटना। उ०—१ विचै आवता वधवा बाह वाळै। रटै राम वाणा जती छेदि राळै।—सू प्र उ०—२ रामण बाण राम छेदे रण, राघव वाहै छेदे रण।—रामरासौ
५ नाश करना, छिन्न करना। उ०—द्रुम सात विभेदण क्रमगत छेदण तै जस कह भव सिंधुतर, सुत स्री कौसल्या तार अहल्या, करुणा निध सो याद कर।—र ज प्र
छेदणहार, हारौ (हारी) छेदणियौ—वि०।
छेदवाडणौ, छेदवाडबौ, छेदवाणौ, छेदवाबौ, छेदवावणौ, छेदवावबौ, छेदाडणौ, छेदाडबौ, छेदाणौ, छेदाबौ, छेदावणौ, छेदावबौ—प्रे०रू०।
छेदिओडौ, छेदियोडौ, छेदचोडौ—भू०का०कृ०।
छेदीजणौ, छेदीजबौ—कर्म वा०।
छिदणौ, छिदबौ—अक०रू०।

छेदन–स०पु० [स०] १ सुइ, काटा, हथियार आदि को आर-पार चुभाने की क्रिया या भाव २ नाश, ध्वश।

छेदनी–स०स्त्री०—पाचवी त्वचा का नाम (अमरत)

छेदाणौ, छेदावौ–क्रि०स० ('छेदणौ' क्रिया का प्रे०रू०) छेदने का कार्य अन्य से कराना।

छेदायोडौ–भू०का०कृ०— छेदने का कार्य अन्य से कराया हुआ। (स्त्री० छेदायोडी)

छेदावणौ, छेदावबौ—देखो 'छेदाणौ' (रू भे)

छेदावियोडौ—देखो 'छेदायोडौ' (रू भे)

छेदित–वि०—खण्डित (जैन)

छेदियोडौ–भू०का०कृ०—१ छिद्र किया हुआ २ काटा हुआ।
३ छिन्न किया हुआ ४ क्षत लगा हुआ, घाव लगा हुआ. ५ संहार किया हुआ, मारा हुआ। (स्त्री० छेदियोडी)

छेदोवट्ठावण, छेदोवट्ठावणिय—देखो 'छेओवट्ठावण, छेओवट्ठावणिय'। (रू भे, जैन)

छेवास—देखो 'चेवास' (रू भे)

छेवासी—देखो 'चेवासी' (रू.भे)

छेम–स०पु० [स० क्षेम] क्षेम, सुरक्षा, कुशल-मगल।
वि०— शुभ, कल्याणकारी। उ०—धिन्न जोधाण ईडर धरा धूहडा, छात निकळ क कमधेस बळ छेम। नीरधर साहसा मीर 'तखतेस' नद, हीरकण साह तौ 'पतौ' निप हेम।—किसोरदान बारहठ

छेमकरी–स०स्त्री० [स० क्षेमकरी] १ सफेद चील २ सफेद चिडिया।

छेय–वि० [स० छेक] अवसर का जानकार, कुशल, होशियार। (जैन)
स०पु० [स० छेद] १ प्रायश्चित्त विशेष। (जैन)
२ विच्छेद। (जैन)

छेयग–वि० [स० छेदक] १ छेद करने वाला, काटने वाला।—(जैन)

छेयण–स०पु० [स० छेदन] १ बिना शस्त्र के काटने की क्रिया। (जैन)
२ कर्म की स्थिति का घात करना। (जैन)
३ विनाश, नुकसान। (जैन) ४ खड, टुकडा। (जैन) ५ कमी, न्यूनता। (जैन) ६ शस्त्र, हथियार। (जैन) ७ निश्चयात्मक वचन। (जैन) ८ सूक्ष्म अवयव। (जैन)

छेयणग, छेयणय–स०पु० [स० छेदनक] १ चमडे को छेदने का औजार। (जैन)

छेयायरिय–स०पु० [स० छेकाचार्य] शिल्पाचार्य। (जैन)

छेयारिह–स०पु० [स० छेदार्ह] प्रायश्चित्त विशेष। (जैन)

छेह–स०पु०—१ काष्ठ का वह टुकडा जो गाडी के पहियो के मुख्य अवयव 'पाटल' को जोडता है। २ एक प्रकार का टोकरा।

छेरविरालिया–स०स्त्री० [स० क्षीरविरालिका] वनस्पति विशेष। (जैन)

छेरे—देखो 'छेडे' (रू भे)

छेरौ—१ देखो 'छेडौ' (रू भे)
२ ऊट का पतला पाखाना।

छेल—स०पु० (स्त्री० छेली) बकरा, छाग, अज (जैन)

छेलक—स०पु०—बिना चरवाहे के जगल मे स्वेच्छा से चरने वाला पशु।

छेलग—स०पु० (स्त्री० छेलिग्रा, छेळी) बकरा, अज, छाग (जैन)

छेलण—वि०—सीमा उल्लघन करने वाला, मर्यादा छोडने वाला।

छेलणो, छेलबौ—क्रि०अ०—१ मर्यादा बाहर होना, उमड कर सीमा उलाघना। उ०—नह भूनो बात सुमत्रा नदण! छोह अनाहक छेले। वे सिय सोध हिमें भड आवें, लगर फौजा ले ले।—र.रू

क्रि०स०—२ छल करना ३ परिपूर्ण करना, भरना, पाटना।

उ०—विभारभ आचभ राठौड वाळा, मही छेलिवा ऊमडे मेघमाळा।

—रा रू

छेलणहार, हारो (हारी), छेलणियो—वि०।

छेलवाडणो, छेलवाडवो, छेलवाणो, छेलवाबो, छेलवावणो, छेलवाववो, छेलाडणो, छेलाडवो, छेलाणो, छेलाबो, छेलावणो, छेलाववो—प्रे०रू०

छेलिग्रोडो, छेलियोडो, छेल्योडो—भू०का०कृ०।

छेलीजणो, छेलीजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

छेलिग्र, छेलिय—स०पु०—१ नाक से आने वाली छीक (जैन)

२ अव्यक्त ध्वनि-विशेष, चीत्कार (जैन)

छेलिया—स०स्त्री०—बकरी, अजा (जैन)

छेलियोडो—भू०का०कृ०—१ हद के बाहर गया हुआ, मर्यादा छोडा हुआ। २ छल किया हुआ। ३ परिपूर्ण किया हुआ, भरा हुआ, पाटा हुआ। (स्त्री०—छेलियोडी)।

छेळी—स०स्त्री०—बकरी।

छेलो, छेल्हो—वि०पु० (स्त्री० छेली, छेल्ही) अतिम, आखिरी।

उ०—१ धरणीतळ व्याकुळ छेलो सिर धुणियो।
सरणागत वच्छल हेलो नह सुणियो॥
लिछमी वर छान-कानू ले लीनू।
दीननवधू हुय दीनन दुख दीनू॥—ऊ.का.

उ०—२ पाटरा घरा माहे राव सुरताण रहे छै नै छेला घरा मे जगमाल आय रह्यो छै।—नैणसी

उ०—३ इतरी उतावळ काण री है। अमल गाळियोडो है सो छेलो वखत रो लेलो पछै युद्ध करसा, जमी अठैइज है, कठैई जावै नही।

—वी स टी.

उ०—४ भोळा प्राणी राम भज, तूं तज झोड तमाम।
दीह्ग छेल्हे देस रे, केसव हूंता काम॥—र ज प्र

रू०भे०—छेल्हो, छेहलउ, छेहलो।

छेवडो—देखो 'छेडो' (रू भे)—अमरत

छेवट—क्रि०वि०—अत मे, आखिरी समय मे। उ०—छकिया नैण रूप रस पीकर, छेवट मे छिटकाय मती। सावरिया अवध सिधाय मती, म्हारा मनडा री मोद मिटाय मती।—गी.रा

छेवटो—स०स्त्री०—घोडे का चारजामा विशेष, जीन (डि को)

छेवट्ट, छेवट्ठ—स०पु० [स० सेवार्त्त, छेदवृत्त] शरीर रचना विशेष जिसमे यो ही हड्डियां आपस मे जुडी हो (जैन)

छेवट्ठसघयण—स०पु० [स० सेवार्त्त सहनन] छ प्रकार की शरीर-रचना मे अतिम शरीर-रचना जो मात्र अस्थि-पजर ही होती है।

छेवट्ठसघयणि—वि० [स० सेवार्त्त सहननिन्] छ प्रकार की शरीर रचना मे अतिम शरीर रचना वाला, केवल कृश हड्डी वाला।

छेह, छेहउ—स०पु० [स० छेद] १ अत, समाप्ति। उ०—सुण राजा जसमल कहे, श्रेह न दाखो छेह। अकल विहूण्या ओढण्या, ताह सू केहा नेह।—जसमल ओडणी री वात

क्रि०प्र०—दैणो, लैणो।

२ छोर, किनारा, सीमा, हद। उ०—साइधण हल्लण साभळइ, ऊभी आगण छेह। काजळ जळ भेळा करी, नाखी नाख भरेह।

—ढो मा

३ विश्वासघात, धोखा। उ०—निरगुण नीसत नीठर, इम मूकी नर को जाइ। प्रीत माडि छेह दीधु, यौवन दोहेळउ थाइ।

—नळ-दवदती रास

४ थाह, गहराई। उ०—नागा नवलो नेह, जिण तिण सू कीजै नही। लीजै परायो छेह, आप तणो दीजै नही।—र रा

मुहा०—छेह लैणो—थाह लेना, भेद लेना, गभीरता की परीक्षा करना।

५ हानि, नुकसान। उ०—सयोग तउ वियोग, जिहा लाभ तिहा छेहउ रूसणउ तिहा तूसणउ।—वि व

स०स्त्री० [स० क्षार] ६ धूलि, खेह, राख।

वि०—१ खडित २ कम, न्यून।

क्रि०वि—१ ओर, तरफ। उ०—विहु छेह वाणावळी, सर-पुख सलळी। अणी अणी अतुळी, खग खग्गा खळी।—अ. वचनिका।

२ अत मे, आखिर मे।

रू०भे०—छे', छेहउ, छेहिं, छेहि।

छेहडलो—वि० (स्त्री० छेहडली) अतिम, आखिरी। उ०—ध्यान बिना थें यूंही गमाई, ऊमर श्रेहडली। छळ सू बाजी हारग्यो छी छी छेला छेहडली।—ऊ का

छेहडो—देखो 'छेडो' (रू भे) उ०—१ वतावण आचळ रग मजीठ, बधाणो छेहडे काळो रग।—साभ्र

उ०—२ अढार भार वनस्पती झुकने रही छै, तळाव रै छेहडा कुवळ फूल नै रह्या छै।—रा.सा स

मुहा०—छेहडै आणो—क्रोध या घवराहट की अतिम अवस्था मे पहुचना।

उ०—३ पछै उण साखुली नै सिणगार कर नै चोरी माहे पधारिया, हथळेवो जुडायो छै, छेहडो बाधियो, ब्राह्मण वेद भणै छै।

—लाली मेवाडी री वात

छेहलउ, छेहलो—देखो 'छेलो' (रू भे) उ०—१ चरचै आज वैण धणी छेहला, वडवा कज भीच कसो वेहला।—पा प्र

उ०—२ हरि पूजो होइ बाहुडी हुई गोरी सू छेहली भेंट ।—वी दे
(स्त्री० छेहली)

छेंहि, छेहि—देखो 'छेह' (रू भे) उ०- -१ लखि कळ सोळह छेंहि लुघ, करिया घडी कविंद । पाये एकणि ए परठि, समझे कुअर सुरिंद ।
—ल पिं

उ०—२ जीभइ जव छोलइ, बोलती छउड ऊतारइ, चालती भुइ फोडती, नव घाया तेर पाडइ, वलि वाधी कउडी आहणइ, कुहणी छेंहि खात्र पाडइ ।— व स

उ०—३ धूमकेत कुडी आहणइ कुहणी छेंहि खात्र पाडइ, टुटि छेहि गाठि वोलइ ।—वि व

छेहु—देखो 'छेह' (रू भे) उ०—जमण मरण ति आणइ छेहु जिहि चित्ति एक वतइ जिण नाह ।—चिंहुगति चउपई

छेइया—देखो 'छाया' (रू भे)

छेताळीस—देखो 'सेंताळीस' (रू भे) उ०—सहस वीस इक आठसौ, छेताळीस पछाणि । इता रूप पनरह अखर, जुगुत लुघू गुर जाणि ।
—ल.पिं.

छै-क्रि०अ० [स० अस] राजस्थानी क्रि० 'होणौ' का वर्तमानकालिक एक वचन रूप 'है' । उ०—घणा नीदाळवा नीद वारौ घणी, तूग नह छै भली हीस घोडा तणी ।—हा झा.

देखो 'क्षय' (रू भे)

स०पु० [रा०] १ देव लोक २ मदपात्र ३ तीक्ष्ण वस्तु. ४ मेना (एका०)

वि०—छ' ।

छैणी—देखो 'चीणा' (रू भे)

छैताळीस—देखो 'सेंताळीस' (रू भे) उ०—ताइ सातमौं छैताळीस, वदिआ रूप वरणवा बीस ।—ल पिं

छैती—देखो 'छेटी' (रू भे) उ०—जु घणी छैती हुती विहु कटका सु घोडे तेज चालते नेडी कीधा ।—वेलि.टी

छैबास—देखो 'साबास' (रू.भे) उ०—पाल दये पग दावटे, उतरता ऐवास । स्री मुख फुरमावै वचन, सोडी नै छैबास ।—पा प्र

छैबासी—देखो 'सावासी' (रू भे)

छैमायौ, छैमाहियौ—वि०—छ मास का, छ मास सम्बन्धी ।

उ०—तिणसू चौदह हजार असवार अेका मोजूद पास रहे नै लाख एक रिपिया छैमाहिया देवौ ।—जलाल बूवना री वात

छैर—स०पु०—भाले की तरह किया जाने वाला तलवार का प्रहार ।
उ०—सूरजमल ऊभौ छै तितरै पूरणमल ऊभी छैर वाह्यो सु सूरजमल री साथळ लागौ ।—नैणसी (रू०भे०—छेर)

छैल—१ देखो 'छैलो' (मह , रू भे) उ०—१ छछवी छैलण छूट छकी छिव छोळ मे ।—र हमीर उ०—२ तिके इण भात वणिया थका छैल नजर आवै छै ।—प्रतापसीघ म्होकमसीघ री वात

यो०—छैलकडी, छैल-छबीलो, छैल-भंवर ।

स०पु०—२ वकरा । उ०—तिका अग्ग हेरव कै छैल तूटै, छकाया सुरा री घरै खेल छूटै ।—व भा.

छैलकडी—स०स्त्री०यो०—कान का एक आभूषण जो कान के मध्य मे पहना जाता है ।

छैलछबीलो—स०पु०यो० (स्त्री० छैलछबीली) सजाधजा युवापुरुष, शौकीन व रसिक व्यक्ति । उ०—कातण वाळी छैलछबीलो, बैठी पीढो ढाळ । मही मही पूणी कातै, लावौ काढै तार ।—लो गी.

छैलभवर—स०पु०—१ रगीला या रसिक व्यक्ति, वनाठना, वनावश्रृगार को पसन्द करने वाला पुरुष । उ०—जद मेह-अधारी राता मे, तूटोडी ढाणी चवती ही । तौ मारू रा रग मै'ला मे, दारू री मैफिल जमती ही । जद वा ऊनाळू लूआ मे, करसे री काया वळती ही, तौ छैलभवर रै चौवारै, चौपड री जाजम ढळती ही ।
—चेत मानखा

२ वह वच्चा या युवक जिसके परदादा जीवित हो ।

छैलो—स०पु० (स्त्री० छैलण, छैली) १ बना-ठना युवा पुरुष, सुन्दर व्यक्ति २ वह वालक या युवक जिसके प्रपिता जीवित हो ।

वि०—१ प्यारा, वल्लभ (पति) उ०—काई करू थारै तेल नै म्हारै आलीजे विना, छैलो म्हारी जोड रो उदियापुर माल्है रे ।
—लो गी

२ वाका, शौकीन, रगीला, रसिक । उ०—इंढी कवडाळी माथै पर ओडी, छैनी अलकावळ मुखडै पर छोडी ।—ऊ का

यो०—छैलो-विलालो ।

मह०—छैल ।

छोकणौ, छोकबौ—देखो 'छौंकणौ' (रू भे) उ०—दही रायतै छोक मोकळी निमझर देवै । ललचावै सुरराज, भाज लबलबको लेवै ।
—दसदेव

छोंकियोडो—देखो 'छौंकियोडो' (रू भे) (स्त्री० छोकियोडी)

छोत, छोतको, छोतरो—देखो 'छोत' २ (रू.भे.)

उ०—ओगण सह कर एकठा, विदर वणाया वेह । ज्या मझ कादा छोंत जिम, छिदरा रो नहि छेह ।—वा दा

छोंती—स०स्त्री०—छिलके का टुकडा, छिलका । उ०—तिकै तरवार रा वटका दो चार व्है पिण सीगरी छोती ही उतरै नही ।
—वीरमदे सोनगरा री वात

छो—स०पु०—१ क्रोध २ जोश. ३ पवन. ४ मृग ५ श्रृगार. ६ भय ७ रोर (नरक) (एका०)

छोअ—स०पु० [स० छोद] छिलका (जैन)

छोइ—स०पु०—क्रोध, गुस्सा । उ०—दुहू कै जुरे छोइ ते नैन छक्के, खरी लाट लग्गी मनू लोह पक्के ।—ला रा

छोई—स०स्त्री०—छाछ, मट्ठा, तक्र ।

छोकरडो, छोकरौ—देखो 'छोरो' (अल्पा , रू भे.)

उ०—१ छाणा तो चुगती छोकरी, घर की ए कुसळ वताव । सोदागर महदी राचणी ।—लो गी उ०—२ देखा वाहर

गुमास्ता छै त्यानू जाय सभाळू जे क्यूही हाथ पडै तो छोकरडी नू फरा दिराखा।— शाह रामदत्त री वारता
(स्त्री०—छोकरडी, छोकरी)

छोग–स०पु०—शोक, कष्ट, दुःख। उ०—जुराग न करणी जीवता, छित जस हरणो छोग। नर वजणो डरणो नहीं, जुध मे मरणो जोग। —जुगतीदान देथो

छोगाळ, छोगाळो—देखो 'छोगाळ, छोगाळो' (रू भे)।

छोगो—देखो 'छोगो' (रू भे) उ०—भ्रूकती माळ भलेज'क तुररा टाकिया। लटकण छोगा लूम दुमाला नाखिया। महादान महडू

छोडणो, छोडबो—देखो 'छोडणी, छोडबौ' (रू भे.)

छोडियोडो—देखो 'छोडियोडो' (रू भे) (स्त्री० छोडियोडी)

छोंडो—देखो 'छोरो' (अल्पा, रू भे) (स्त्री० छोंडी)

छोछोनीब–स०पु०—नीम की जाति का वृक्ष विशेष।

छोछो–वि०पु० (स्त्री० छोछी) १ सार रहित २ व्यर्थ, निष्फल। उ०—अहनिस भज तंनू आव ससार ओछो। छ-दरस यम आखै जे विना सब्र छोछो।—र ज प्र

छोट–स०स्त्री०—१ छोटापन, लघुता (विलो० मोट) २ देखो 'छोटो' (मह रू भे)

छोटकडो, छोटकलो, छोटकियो, छोटको, छोटक्यो, छोटडियो, छोटोडो—देखो 'छोटो' (अल्पा, रू भे) उ०—१ वडवोरा रा वोर जूनोडा जाम-फळ है। छोटकिया छिन्न जोर सरस ज्यू इमीजळ है।—दसदेव
उ०—२ मेरो वडलो भतीजो वाधै भूरटी, मेरो छोटक्यो वाधै गाय, धोळी दूझणी।—लो गी उ०—३ काय खेलता खूब हरखता बाळ हठीला, चढता पटता प्रेम छोटका छैल-छवीला।
—दसदेव
(स्त्री०—छोटी, छोटकडी, छोटकली, छोटकी, छोटडी छोटोडी)

छोटाई–स०स्त्री०—१ लघुता, छोटापन २ ओछापन, नीचता।

छोटीतीज–स०स्त्री०—श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया (पर्व विशेष)
वि०वि०—यह पर्व विशेषतया कुवारी कन्याओ का होता है जिसमे वे नवीन वस्त्र धारण कर उल्लसित मन से झूला झूलती है। इस दिन अनेक जातियो मे सगाई की हुई कुवारी लडकियो को उनके ससुर के घर से नये वस्त्र भी प्राप्त होते हैं।

छोटी माता–स०स्त्री० —हल्की शीतला, चेचक रोग जिसमे छोटे-छोटे व छितराये हुए दाने निकलते है।

छोटोडो—देखो 'छोटो' (अल्पा रू भे) (स्त्री० छोटोडी)
उ०—१ चाकरडी रे माह थारै छोटोडै वीरै जी नै मेल, गय आयो रे चौमासो, रे म्हाजा गाढ़ा मारू घर वसो।—लो गी
उ०—२ छोटोडी छाटा रो वरसे मेह वालाजी, भरिया नाडा नाडिया ऐ पिणिहारी ऐलो।—लो गी (स्त्री० छोटोडी)

छोटोसाणोर–स०पु०—डिंगल साहित्य का एक प्रमुख गीत (छद) जिसके प्रथम चरण मे १६ मात्रा, विषम चरणो मे १६ मात्रायें और सम चरणो मे मगर अन्त मे गुरु हो तो १४ और ह्रस्व हो तो १५ मात्रायें होती है।

छोटो–वि० (स्त्री० छोटी) १ आकार या डीलडौल मे लघु या न्यून हो। उ०—नाउ छोटी मार्टी कछोटो मोक्ष नही, विकट जटा मुकुटि मोक्ष नही।—वि व
कहा०—१ छोटे कुवे घणो सवावे—छोटे छोटे कौर लेने से अधिक खाने मे आता है। थोडा थोडा मुनाफा लेने मे अधिक लाभ होता है। २ छोटी जितो ही खोटी—छोटे के प्रति व्यगोक्ति।
३ जो आयु मे कम हो, अल्पायु।
कहा०—१ छोटी वछियो गधे री ही चोखो—छोटा बच्चा गधे का भी सुन्दर होता है। छोटे बच्चे सभी सुदर होते हैं उनके प्रति प्रत्येक का प्रेम होता है २ छोटे सू मोटो होवै—कोई एकाएक बडा नही होता धीरे-धीरे सभी बढते हैं ३ जो पद या प्रतिष्ठा मे कम हो।
कहा०— छोटे मुडै वडी वात—अपनी योग्यता से अधिक बातें करना।
४ जिसका महत्त्व कम हो।
कहा०—छोटी चाकरी माये सुख नी मळवानो—छोटी सेवा या नौकरी मे सुख प्राप्त नही हो सकता, बडा या ऊची श्रेणी का कार्य करने मे ही सुख की प्राप्ति संभव होती है।
५ जो उदार, शिष्ट या गभीर न हो।
अल्पा०—छोटकडो, छोटकलो, छोटकियो, छोटको, छोटक्यो, छोटडियो, छोटोडो।
मह०—छोट।

छोड, छोडण–स०पु०—त्याग, छुटकारा, तलाक।

छोडणो, छोडबो–क्रि०स०—१ किसी जीव या व्यक्ति आदि को बधन से मुक्त करना, छुटकारा देना, छोडना। उ०—दळै ते वार किता दहकव, वाध्यो दधि देवा छोडण वध।—ह र
२ अपराध का दड न देना, छोडना, मुआफ करना, क्षमा करना
३ किसी चिपकी हुई, पकडी हुई या वधी हुई वस्तु को अलग करना। उ०—सतवाळा दळ आविया, छोडीजे गळबाह। आभ खिमाणा ढकियो, छोणी पाखर छाह।—वी स
४ प्राप्त नही करना, अगीकार नही करना, स्वीकार नही करना
५ धन या धान की छूट देना, लगान की छूट देना ६ त्यागना, परित्याग करना। उ०—इसा राजपून केसरिया करियोडा हीज वैठा है तिकै माथो पाछो लाए दवै नही, उरो हीज लेवै अरथात इसा घर पर जीवणा री आस छोड नै जाणो।—वी स टी
७ साथ न लेना, किसी स्थान पर पीछे रहने देना। उ०—जळ वळ जामी वावळ छोड्यो, रातादेई छोडी माय, भावजा रो रे छोड्यो जाओ झूमखो, कान कँवर सा छोड्या वीर।—लो गी
८ किसी दूर तक जाने वाले या मार करने वाले अस्त्र को चलाना या फेंकना. ९ प्रस्थान कराना, गमन कराना, चलाना, ज्यू सामनो करण सारू फौज रा सिपाही छोडिया १० हाथ मे लिये हुए कार्य

को स्थगित करना, कार्य वद करना, कार्य से अलग होना ११ किसी स्थान, व्यक्ति या वस्तु से आगे बढ आना १२ किसी रोग या व्याधि का दूर होना १३ वेग से निकलने वाली वस्तु को चलाना, ज्यू रेलिया नें पावरण सारू बदा रौ पाणी छोडियौ १४ शेष रखना, बचाना, बाकी रखना १५ लिखावट मे कोई अक्षर या वाक्य भूलना १६ किसी कार्य या उसके अग को भूल से न करना, भूल या विस्मृति से किसी वस्तु को कही से न लेना, न रखना या न प्रयुक्त करना १७ ऊपर से किसी वस्तु को गिराना या डालना ।

छोडणहार, हारौ (हारी), छोडणियौ—वि० ।

छोडवाडणौ, छोडवाडबौ, छोडवाणौ, छोडवाबौ, छोडवावणौ, छोडवावबौ, छोडाडणौ, छोडाडबौ, छोडाणौ, छोडाबौ, छोडावणौ, छोडावबौ—प्रे०रू० ।

छोडिश्रोडौ, छोडियोडौ, छोडयोडौ—भू०का०कृ० ।

छोडीजणौ, छोडीजबौ—कर्म वा० ।

छोडवणौ, छोडवबौ—रू०भे० ।

छुडणौ, छुडबौ—अक० रू० ।

छोडवण—वि०—छुटकारा दिलाने वाला, मुक्ति दिलाने वाला ।

उ०—'ईसरौ' कहै असरण-सरण, बिहण कस सभळ वयण । जग जाड विखै जामण मरण, छोड छोड गज छोडवण ।—ह र

छोडवणौ, छोडवबौ—देखो 'छोडणौ' (रू भे) उ०—छेदै ग्राह तुरत छोडवियौ, अनत जुगा जुग भगत उधार ।—ह ना

छोडवाणौ, छोडवाबौ—देखो 'छुडाणौ' (रू भे)

छोडाडणौ, छोडाडबौ—देखो 'छुडाणौ' (रू भे) उ०—नरनाह पतसाह छोडाड सकियौ नहो, समामो कमध जोय निमामी सिंघ ।—द.दा

छोडाडियोडौ—देखो 'छुडायोडौ' (रू भे) (स्त्री० छोडाडियोडी)

छोडाणौ, छोडाबौ—देखो 'छुडाणौ' (रू भे)

छोडायोडौ—देखो 'छुडायोडौ' (रू भे) (स्त्री० छोडायोडी)

छोडावणौ, छोडावबौ—देखो 'छुडाणौ' (रू भे) उ०—रूखमीई रूडा भावीयइ, छोडावियै जो आजि । कर वध कापौ ग्रास आपौ, भीम नी वहुँ लाज ।—रुपमणी मगळ

छोडावियोडौ—देखो 'छुडायोडौ' (रू भे) (स्त्री० छोडावियोडी)

छोडिअ, छोडिय—वि० [स० छोटित] १ वन्धनमुक्त किया हुआ, छोडा हुआ (जैन)

[स० स्फोटित] २ फोडा हुआ, विदारित (जैन) ३ राई आदि से बघारा हुआ (जैन)

छोडियोडौ—भू०का०कृ०—१ मुक्त किया हुआ, छुटकारा दिया हुआ, छोडा हुआ २ (किसी अपराध का) दण्ड नही दिया हुआ, क्षमा किया हुआ. ३ (किसी चिपकी हुई, वधी हुई या पकडी हुई वस्तु को) अलग किया हुआ ४ स्वीकार नही किया हुआ ५ धन, धान या लगान की छूट दिया हुआ. ६ परित्याग किया हुआ, त्यागा हुआ. ७ किसी स्थान पर पीछे रखा हुआ, साथ नही लिया हुआ ८ (किसी दूर तक जाने वाले या मार करने वाले अस्त्र को) चलाया हुआ, फेंका हुआ. ९ प्रस्थान कराया हुआ, गमन कराया हुआ, चलाया हुआ १० (हाथ मे लिये हुए कार्य को) स्थगित किया हुआ, वद किया हुआ, कार्य से अलग हुआ हुआ. ११ किसी स्थान, व्यक्ति या वस्तु से आगे वढ आया हुआ १२ रोग से मुक्ति पाया हुआ १३ (वाघ का पानी आदि) छोडा हुआ १४ शेप रखा हुआ, वचाया हुआ, वाकी रखा हुआ १५ (लिखावट मे) कोई अक्षर या वाक्य भूला हुआ १७ (भूल या विस्मृति से) किसी कार्य को नही किया हुआ, किसी वस्तु को कही से नही लिया हुआ, नही रखा हुआ, नही प्रयुक्त किया हुआ. १७ (ऊपर से किसी वस्तु को) गिराया हुआ, डाला हुआ । (स्त्री० छोडियोडी)

छोण—स०पु० [स० सूनु] (स्त्री० छोणी) पुत्र, लडका, बच्चा ।

उ०—तेज साड ताडूकता, छाण करचा गउ छोण । समर इस्या बाजै सुहड, कायर बाजै कोण ।—रेवतसिंह भाटी

रू०भे०—छौन ।

छोणी—स०स्त्री० [स० क्षोणी] पृथ्वी, धरती । उ०—१ मतवाळा दळ आविया, छोडीजै गळबाह । आभ त्रिभागा ढकियौ, छोणी पाखर छाह ।—वी स

उ०—२ अत प्रसाड दयानद आयौ, छोणी ग्यान घुमड घरण छायौ ।—ऊ का

रू०भे०—छोनिय, छोनो ।

छोत—स०पु०—१ छिलका, छाल । उ०—मेवा तजिया महमहण, दुरजोधन रा देख । केळा छोत विसेख जाय, बिदुर घर जीम्हिया ।—र ज प्र.

रू०भे०—छोत, छोत, छौत, छयोत ।

अल्पा०—छोतको, छौतरो, छोतको, छोतरौ, छौंतको, छौतरौ, छोतको, छोतरौ ।

स०स्त्री० [रा०] २ किसी रजस्वला या क्रूर नक्षत्र मे जन्म लेने वाले व्यक्ति के सम्पर्क के कारण होने वाली विकृति अथवा लालिमा जो कष्टप्रद होती है । अशौच दोष ।

३ देखो 'छूत' (रू भे) उ०—खळ प्रवळ पाड पडियौ खळै जस प्रकास राखे जरू । तज छोत मरण उपजण तणी, मिळै जोत 'भीमगरू' ।—रा रू

छोतको, छोतरौ—देखो छोत' १ (अल्पा., रू भे)

उ०—ठाकुर कह्यौ—रीडौ आवै है, मोनू उठाणौ, वैठौ करौ, छौतरा मेवो, वागो पहिर बैठौ । अमल करण लागा । तरै रीडौ आयौ ।—प्रतापमल देवडा री वात

छोती—देखो 'छोती' (रू भे) उ०—भैसो रातवा खायै तिणरौ किणी ही सू सीग री छोती करणी नी वै ।—वीरमदे सोनगरा री वात

छोनिय, छोनी—देखो 'छोणी' (रू भे.) उ०—१ छडी छोनिय राव री

हुम साम बनाया । हुलकर मम्मति होय वर्यों गब दइ उपाया ।

—वं भा.

उ०—२ गळा सूं बाह छोडावाळी नैं जुग री तयारी करावो । वेनावाळी आकास तौ बिभागा (भाला) छायो छै नैं छोनी (धरती) पाखर-घोडा रै पाखरा सूं छायो छै ।—वी स टी.

यौ०—छोनीतळ छोनी-मडळ ।

छोनीतळ-स०पु० [स० क्षोणीतल] पृथ्वीतल, पाताल ।

उ०—जग पलाना उारिकैं कसि तग मिळाया । घोर धमकी धाराग छोनीतळ छाया ।—वं भा

छोनीमडळ-स०पु०यौ० [स० क्षोणीमडल] पृथ्वी, भूमि ।

उ०—तरुणी रस तडळ तरुणापण तायो । छोनीमडळ मे कहणारस छायो ।—ऊ का

मि०—भूमडळ ।

छोनो-स०पु० [स० सूनु] वेटा, पुत्र ।

छोपडास—देखो 'चोपडास' (रू भे)

छोब्भ-स०पु०—खल, दुर्जन, पिशुन (जैन)

वि० [स० क्षोभ्य] क्षाभरणीय, क्षोभ-योग्य (जैन)

छोभ-स०पु० [स० क्षोभ] १ क्षोभ, दुःख, चित्त की विकलता ।

उ०—केसरीसिंघ रामसिंघ सवळसिंघ के जाए । रामवाण से प्रभूत रोद्र छोभ पाए ।—रा रू

[स० क्षोभ्य] २ दीन, निस्सहाय (जैन) ३ कलक, दोषारोपण । (जैन)

४ वन्दन विशेष (जैन) ५ आघात (जैन)

छोभणो, छोभवो-क्रि०अ०—दुखी होना, क्षोभ-करना, चित्त का विचलित होना ।

छोयेलो-स०पु०—लडका, वटा ? उ०—माळी को ऊठियो छोयेलो वे तो मोळी है लावी । सी खिजूर म्हारे रगं वनडे रा सेवरा ।—लो गी.

छोर-स०पु०—१ किसी वस्तु की लम्बाई समाप्त होने का स्थान, वस्तु का आयत के विस्तार की सीमा, किनारा ।

यौ०—ओर-छोर ।

२ किनारे पर का सूक्ष्म भाग, कोर, नोक ।

छोरडो—देखो 'छोरो' (अल्पा., रू भे)

उ०—अढार भार वनस्पति फूलपगर भरइ, धन्वतरि वइदऊ करइ, जीवरिति छोरडा रमाडइ ।—व स.

स्त्री०—छोरडी ।

छोरणी-स०स्त्री०—आटा, भूसा, अनाज आदि छानने का कपडा, जाली या धातु का बना छेददार खजरीनुमा उपकरण ।

छोरवेड-स०स्त्री०—परिवार के छोटे-बडे बाल-बच्चो का समूह । परिवार के बाल सदस्य ।

छोरातर-स०पु० —छोटे-छोटे बाल बच्चे ।

छोरारोळ-स०स्त्री०—बचपन की सी खिलवाड, नादानी, बचपन ।

उ०—छोरारोळी म [illegible] मढिया । [illegible] नवरस नव दस हो [illegible] ।—ऊ का.

क्रि०प्र०—करणी, मांडणी ।

छोरियो, छोरीटो—देखो 'छोरो' (अल्पा रू भे.)

उ०—[illegible] छोरिया । [illegible] छोरिया ।—र [illegible]

छोरु, छोरू, छोरू, छोरो-स०पु० [स० [illegible]] (स्त्री० छोरी) १ पुत्र, बच्चा । उ०—१ [illegible] पराया छोरू [illegible] ।—ऊमार भटियाणी री बात

उ०—२ [illegible] छोरू [illegible] महाराज [illegible] ।—[illegible]

२ बालक । उ०—१ [illegible] पुरोहित [illegible] छोरू [illegible] ।—[illegible]

उ०—२ [illegible] छोरू [illegible] हाजर [illegible] ।—[illegible] री बारता

उ०—३ छोरू छत्रपतिया तणा, [illegible] दुबाह । [illegible] 'अजें', [illegible] ।—रा रू.

उ०—४ [illegible] छोरा [illegible] उलटा पगडी कर [illegible] उतार्ई ।—ऊ का

मुहा०—छोरा रो खेल—बालकों के खेल के समान, बहुत सुगम कार्य, सहज काम ।

कहा०—छोरा-छोरया री घर [illegible] तो बायो [illegible]—बच्चों द्वारा किसी महत्वपूर्ण कार्य करने का प्रयास करना व्यर्थ है । उम्र और अनुभव की श्रेष्ठता और महत्व होता ही है ।

३ सतान, औलाद । उ०—१ [illegible] पापरी [illegible] मागवा गयो नैं कह्यो—देख तू [illegible] छोरू है नैं हूं [illegible] जाणी थी तू [illegible] ।—बगी बुहारी री बात

उ०—२ तारा कागद मेलिया नैं [illegible] 'हूं [illegible] रे छोरू नहीं है ।'—द दा

कहा०—मोटो छोरू पर्रे भलो—बडे घर जाने को सम्मान पाने पर पर ही भली रहती है, उनका निभाव अत्यत कठिन होता है, बडी लडकी का अपने ससुराल मे रहना ही अच्छा है ।

४ दास ।

रू०भे०—छोरु, छोरू, छोरू, छोरूक, छोहरो ।

अल्पा०—छोररडो छोकरो, छोंडो, छोरडो, छोरियो, छोरीटो, छोंरतो ।

छोळ—देखो 'छोळ' (रू भे) उ०—१ [illegible] गग हिलोळ, छिलैं सधार सरस्वति छोळ ।—मे म.

उ०—२ पोळ प्रवाह करै पग पूजन, वडा प्रवाह छोळ द्रव वेग । सिंधुर सात दोय दस सातण, नागद्रहे दीधा इम नेग ।

—महाराणा हम्मीर री गीत

छोल–स०स्त्री०—अंग का वह भाग जहां खरोंच लगी हो या छुल गया हो।
  क्रि०प्र०—आणी, उतरणी, लागणी।
छोलणी–स०स्त्री०—देखो 'छोलणौ' (अल्पा रू भे)
छोलणौ–स०पु०—हथियारों का जंग खुरचने का औजार विशेष।
  अल्पा०—छोलणी।
छोलणौ, छोलबौ–क्रि०स०—धारदार औजार से किसी वस्तु की ऊपरी सतह को दूर करना, छीलना। उ०—१ सत्तम प्रहरं दिवस कै, धण जु वाडिया जाइ। आणं द्राख विजोरिया, धण छोलइ प्रिउ खाइ। —ढो मा
  उ०—२ आती ओलण नै अब्रक दक आयौ, छाती छोलण नै छपनौ छित छायौ।—ऊ का
  छोलणहार, हारौ (हारी), छोलणियौ– वि०।
  छोलवाडणौ, छोलवाडबौ, छोलवाणौ, छोलवाबौ, छोलवावणौ, छोलवावबौ, छोलाडणौ, छोलाडबौ, छोलाणौ, छोलाबौ, छोलावणौ, छोलावबौ—प्रे०रू०।
  छोलिओडौ, छोलियोडौ, छोल्योडौ—भू०का०कृ०।
  छोलीजणौ, छोलीजबौ—कर्म वा०।
  छुलणौ, छुलबौ– अक०रू०।
छोलदारी–स०स्त्री०—छोटा तंबू, शिविर लगाने का मोटे वस्त्र का आच्छादन।
छोलियोडौ–भू०का०कृ०—छीला हुआ (स्त्री० छोलियोडी)
छोलौ–स०पु० (बहु व० छोला) चने का कच्चा हरा फल।
छो'ल्लौ—देखो 'छोरौ' (अल्पा, रू भे) (स्त्री० छो'ल्ली)
छोह–स०पु० [स० क्षोभ] १ क्रोध, गुस्सा। उ०—नह भूली वात सुमत्रा नदण, छोह अनाहक छेल्है। वे सिय सोध हिमैं भड आवै, लगग फौजा लेले।—र रू.
  २ जोश, उत्साह। उ०—चढिया छोह बहादुरा, जडिया जरद जवान। रुडिया अत्रक राड रा, अडिया भुज असमान।
  प्रतापसीघ म्होकमसीघ री वात
  उ०—२ तिण वार तोलि खग मूछ ताणि। असपति हू कहियौ छोह आणि।—सू प्र
  ३ गर्व, अभिमान ४ प्रेम।
  स०स्त्री०—५ ओट, आड, पर्दा। उ०—आगे विमर रै मुहडै पातिसाह भीत चुणाइ नै छोह दिराय लई।—सयणी री वात
  ६ बरछी नामक भाले की नोक। उ०—छनकिय तीर वरच्छनि छोह, ननकिय बोह ब्रिलवनि कोह।—ला रा
  ७ दरवाजा बंद करने के निमित्त लगाई जाने वाली पत्थर की शिला।
  [स० शोभ] ८ कांति, दीप्ति। उ०—तिके कुळ सूर हुवा तिण वार, जिके ब्रद पात कहै जिण वार। बडौ खळ थाट हणं गज बोह, छतीसह वंस चढावण छोह।—सू प्र
छोहणौ, छोहबौ–क्रि०स०—द्रव पदार्थ को पीना, सांस के साथ होठों से खींचना, चूसना।
  छोहणहार, हारौ (हारी), छोहणियौ—वि०।
  छोहिओडौ, छोहियोडौ, छोह्योडौ—भू०का०कृ०।
  छोहीजणौ, छोहीजबौ—कर्म वा०।
छोहरु, छोहरौ—देखो 'छोरौ' (रू भे) उ०—तव बोली चपावती, साल्ह कुवर री मात। रे बाजारण छोहरी, काइ खेलाडइ धाति।
  (स्त्री० छोहरी) —ढो मा.
छोहियोडौ–भू०का०कृ०—(द्रव पदार्थ को) सांस के द्वारा खींचा हुआ, पीया हुआ, चूसा हुआ। (स्त्री० छोहियोडी)
छोहियौ–वि०—१ अभिमानी, घमंडी। उ०—खगडै किया खडाक, सीगाळं सुरताण सू। छोहिया उतरी छाक, मीरा मिलका ऊमरा।
  —नैणसी
  २ क्रोध करने वाला, क्रोधीला ३ कांतिवान, दीप्तिवान।
छौंक–स०पु०—बघार, तडका।
छौंकणौ, छौंकबौ–क्रि०स०—शाक में बघार देना, तडका देना।
  छौंकणहार, हारौ (हारी), छौंकणियौ—वि०।
  छौंकवाडणौ, छौंकवाडबौ, छौंकवाणौ, छौंकवाबौ, छौंकवावणौ, छौंकवावबौ, छौंकाडणौ, छौंकाडबौ, छौंकाणौ, छौंकाबौ, छौंकावणौ, छौंकावबौ—प्रे०रू०।
  छौंकिओडौ, छौंकियोडौ, छौंक्योडौ—भू०का०कृ०।
  छौंकीजणौ, छौंकीजबौ—कर्म वा०।
छौंकयोडौ–भू०का०कृ०—तडका दिया हुआ, बघारा हुआ।
  (स्त्री० छौंकियोडी)
छौंत—देखो 'छोत' (रू भे)
छौंतकौ, छौंतरौ—देखो 'छोत' (अल्पा, रू भे)
छौ–स०पु०—१ केतकी २ विरक्ति ३ दुकूल. ४ पर्वत ५ वानर (एका०)
  क्रि०अ०—राजस्थानी की सत्तार्थक क्रिया 'होणौ' के मध्यम पुरुष व अन्य पुरुष के एकवचन व बहुवचन के वर्तमान काल तथा भूतकाल का रूप, हो, था, ज्यू—कठीनै सिधावौ छौ। थे सब जणा क्यू जावौ छौ। मैं उठी हो'र जावं छौ। किसन उठी हो'र जावै छौ।
  उ०—पछै महाराज नू पण चौंकस खबर पड गई—जे नवाव रै मन इसो दगौ छौ।—पदमसिंघ री वात
छौं'–अव्य०—१ जो हो, चाहे जो हो, कुछ परवाह नहीं २ खैर, भला, अच्छा, अस्तु।
छौगाळ, छौगाळ–वि० [स० शृग+आलुच्] श्रेष्ठ, शिरोमणि।
  उ०—भूपाळ हाथाळ छौगाळ भाखौ, लीलग नादग भेदग 'लाखौ'।
  —ल पि.
  २ वीर, योद्धा, बहादुर। उ०—चमराळा हुई असख चाळ, छौगाळ छिलइ करिमाळ काळ।—रा ज सी

३ रसिक, विलासी, शौकीन। उ०—आया थी जा नै ऊजळी, नवे नगर कर नेह। जा नै रावळ जाम नै, छोगाळी न दे छेह।—जेठवा

स०पु०—१ एक प्रकार का घोडा (अ हो) २ वह बधा हुआ साफा जिसके पीछे उसका एक सिरा लटकता हो ३ वह व्यक्ति जिसके इस प्रकार का साफा वधा हो।

रू०भे०—छवगाळी, छोगाळी।

मह०—छवगाळ, छोगाळ, छोगाळ।

छोगौ-स०पु० [स० श्रृग] १ शिर पर बाधे जाने वाले साफे या मुकट पर सुन्दरता के लिये लगाया जाने वाला तुर्रा। उ०—उदगम-सुमना पुसपलता, अत पुसपति के कहीजै प्रिवित। स्रो रिणछोड तणै सिर छोगौ, ईख निजरि भरीजै अत्रिति।—ह ना

मुहा०—छोगो लागणो—शिरमौर होना, श्रेष्ठ होना।

२ साफा या पगडी का छोर जो साफा धारण करते समय पीछे लटकता है या शिर पर तुर्रे के समान खडा रहता है।

उ०—छोगा पाघ जवाहर छाजै, रवि सिर फिर साजोति विराजै। —सू.प्र

३ घोडे के कानो के मध्य मे लगाया जाने वाला तुर्रा।

उ०—के रजत साज जवहर कनक, छोगा मोत्रीयाळ छजि। आणे अनेक हाजर इसा, कमध होण असवार कजि।—सू प्र

४ गुच्छा।

वि०—श्रेष्ठ, प्रधान, शिरोमणि। उ०—बावन दुरग वके विविध, सब क्षिति छोगौ छत्रपति। 'वखतेस' तनय वनराव न्रिप, करत राज अलवर न्रिपति।—ला रा

रू०भे०—छोगो।

छोड-स०स्त्री०—१ स्त्रियो का गर्भाशय या बच्चादानी सम्बन्धी रोग विशेष जिसमे १५ दिन तक स्त्री के योनि मार्ग से रक्त गिरता है, फिर ११ दिन तक रक्त गुल्म जैसी ग्रथी बनती रहती है।

२ देखो 'छोडो' (मह रू भे)

छोड, छोडण, छोडियौ, छोडो-स०पु०—१ पेड के तने या शाखा आदि का ऊपरी छिलका।

क्रि०प्र०—उखेलणी, उतारणी।

२ नाक से निकलने वाला सूखा मल जो पपडी की तरह जम जाता है।

क्रि०प्र०—उखेलणी, उतारणी।

अल्पा०—छोडियौ।

मह०—छोड, छोड, छोडण।

छोत—देखो 'छोत' (रू भे) उ०—पल तो कर हाकल माड पग, विण छोत मिटै नह सूर वग।—पा प्र

छोतको, छोतरो—देखो 'छोत' (अल्पा रू भे)

छोतौ-स०पु० (बहु व० छोता) गेहू, बाजरी के भूसे के बडे बडे टुकडे।

छोन—देखो 'छोण' (रू भे) उ०—छुटी अलमक नाग छौन, सोभ एम साज ही। रथस जाणि चद्र रामि, रूप मे विराज ही।—सू प्र

छोरावौ—(?)

उ०—तठै आलमगीर पूछियो, भाई साहब, पातसाहू के छोरावा में बेअदवी करै जिसका क्या हवाल करणा —द दा

छोळ-स०स्त्री०—१ तरग, लहर, हिलोर (ह ना)

उ०—पख हमाऊ कळवृक्ष पारस, छोळ समद सुरियद छभा। ओरा नै या तणी ओपमा, या ओपम ताहरी 'अभा'।—सावळदास कवियो

क्रि०प्र०—आवणी, ऊठणी, वैठणी।

२ बौछार। उ०—१ पवन सीतळ मद बाजै है, नै घण मेह री सघण छोळा परनाळा पडती जिकै जमी नीठ समै है।—र हमीर

उ०—२ छिण छिण सोहै छाटउल्या री छोळ, सूरज किरणा सर सर ऊतरै।—लो गी.

क्रि०प्र०—लागणी।

३ उमग, उत्साह। उ०—छोळ मे चडिका हूरा वारगा विमाण छायो, केही विना रुडका मचायो म्हाण कीच।—डूगजी रो गीत

क्रि०प्र०—आणी।

४ क्रीडा। उ०—छोडा छोड करता छोळा, नामै मोस नरेस नू। लघे रात अणद अलेखै, सो सुख नही सुरेस नू। —र.रू

क्रि०प्र०—करणी।

५ हर्ष, खुशी। उ०—हीडा जाणो सहल सावण तीजा सिवराती, वागा जाणो सहल छोळ उपजै प्रिय छाती।—अरजुणजी वारहठ

क्रि०प्र०—आणी।

६ धारा, प्रवाह। उ०—१ तहा सुभड कविराजू सहित आय विराजे छत्रधारी, परूसवारे की ऊरड ठाभ ठाभ सै लगी। चडी भोग अनाजू के गजू पर रोगनू की छोळ वगी।—सू प्र

उ०—२ जडै इम काढत सेल जरूर, पडै रत छोळ चढै दिन पूर। —सू प्र

क्रि०प्र०—छूटणी।

७ जोश।

रू०भे०—छोळ छोळि।

छोळानाथ-स०पु०—१ समुद्र २ दानी व्यक्ति, दातार।

छोळि—देखो 'छोळ' (रू भे)

छयाळी—१ देखो 'छाळी' (रू भे) २ देखो 'छियाळीस' (रू भे)

छयाळी ना'रियो—देखो 'छाळी ना'र' (अल्पा रू भे)

छयाळो—देखो 'छियाळो' (रू भे.) उ०—माणक-सदू महप हर माता, सती देवडी सूरज साख। पनरै समत पोह वद पाचम, पोहती परव छयाळै पाख।—द दा

छयासट—देखो 'छासठ' (रू भे)

छयासटो—देखो 'छासठो' (रू भे)

छयासी—देखो 'छियासी' (रू भे)

छयोत—देखो 'छोत' (रू भे)

ज—देवनागरी व राजस्थानी वर्णमाला के चवर्ग का तीसरा अक्षर। यह अल्प-प्राण है, इसका उच्चारण तालु है।

ज–क्रि०वि० [स० यत्] क्योकि, कारण कि (जैन)

जऊडौ—१ देखो 'जाऊडौ' (रू भे) २ देखो 'जुग्रौ' २ (अल्पा, रू भे)

जकसन–स०पु० [अ०] जहाँ दो या दो से अधिक रास्ते या रेल मार्ग मिलते हो।

जंकिंचि–अव्य० [स० यत्किंचित्] जो कुछ (जैन)

जखेरौ–स०पु०—१ वायु का क्षणिक तेज झोंका २ घर की साधारण सम्पत्ति का समूह।

जग–स०स्त्री० [फा०] १ लडाई, युद्ध। उ०—जोग मे धुनी चढ छोह जग। उनमनी मुद्रा निरवौह अग।—वि स
[फा० जग] २ लोहे का मुरचा (अ मा)

जगआवर–स०पु०—योद्धा (डिं को)

जगकालौ–वि०पु०यौ० (स्त्री० जगकाली) युद्धोन्मत्त।

जगडी–स०स्त्री०—१ घुटने तक पहनने का वस्त्र, जाँघिया २ गाने का व्यवसाय करने वाली एक जाति अथवा इस जाति की स्त्री ३ गायिका।

जगचाळ–स०पु०—१ युद्ध मे ले जाया जाने वाला घोडा।
उ०—पमग ग्रोधवाळ जगचाळ सीस पाखरा। दुरी लगाजे जीदराव भोम दाब दोळिया।—पा प्र
२ योद्धा, वीर।

जगजूट–स०पु० [फा० जगजू] शूरवीर, योद्धा (डिं को)

जगम–वि० [स०] १ चलने फिरने वाला, चलता-फिरता।
उ०—पणिहारी पटळ दळ वरण चपक दळ, कळस सीस करि कर कमळ। तीरथि तीरथि जगम तीरथ, विमळ ब्राह्मण जळ विमळ।
—वेलि.
२ जो एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाया जा सके, चल।
उ०—देह जिकण वाता ऐ दोई, तिके सदाई तीखा। बीजा जड जगम वसुधारा, सारा जीव सरीखा।—र रू
स०पु०—१ सिर पर जटा रखने एव कौपीन पहनने वाले एक प्रकार के विरक्त सन्यासी। उ०— ऊग्यौ ड्ख अफीम, नीम रौ रूख निरोगी। वसती होइ हकीम, नीमडौ जगम जोगी।—दसदेव
२ घोडा। उ०—जिसौ नूर नरपती इसौ सामत सूर नर। जव जैसोई जगमा सोभि तैसैइ मद सिंधुर!—रा रू
३ छप्पय छद का ३२वाँ भेद जिसमे ३९ गुरु ७४ लघु से ११३ वर्ण या १५२ मात्रायें होती हैं (र ज प्र)।

जगमकाय–स०पु०यौ०—द्वीन्द्रिय आदि प्राणी, त्रस जीव (जैन)

जगमविस–स०पु० [यौ०स० जगमविष] एक प्रकार का विष (अमरत)

जगमाण—देखो 'जगम' २ (रू भे) उ०—लगी नर है तिल हेक लगाण, जरद्द मरद्द कटे जगमाण।—सू प्र.

जगरी–वि० [फा० जग+रा०प्र०री] योद्धा, वीर।

जगळ–स०पु० [स० जगल] १ वन, अरण्य। उ०—नारायण रौ नाम ज्या, नह लीधौ निरणाह। वा अमवारौ वोळियौ, ज्यू जगळ हिरणाह।
—ह र
मुहा०—१ जगळ जाणौ—पाखाना फिरना, टट्टी जाना।
२ जगळ मे मगळ होणौ—निर्जन स्थान मे चहल-पहल होना।
३ जल शून्य भूमि, रेगिस्तान. ३ घोडा (डिं को)
४ देखो 'जगळधर' (रू भे)

जगळधर, जगळधरा–स०स्त्री०—जागलू देश, बीकानेर राज्य।
रू०भे०—जगळ।

जगळराय–स०पु०—१ बीकानेर का राजा।
स०स्त्री०—२ श्री करणीदेवी का एक नाम।
उ०—प्रश्नोत्तर चरचा मत पीगळ, भूखण सवद अरथ वस भाय। बाकैंदास जाणिया बिध बिध, राज अनुग्रह जगळराय।
—बा दा.

जगळवै–वि०—जागलू देश बीकानेर का।

जगळायत–स०पु० [स० जगला+आयत] वन-रक्षा का सरकारी विभाग।

जगळी–वि०—जगल का, जगल सबधी। उ०—सुणीजै ऊखाणौ पुराणौ सयाणौ। रुकी जे नही जगळी पट्टराणी।—ना द
२ जो घरेलू या पालतू न हो ३ मूर्ख, बेवकूफ ४ असभ्य।
स०पु०—१ घोडा (डिं को) २ जाति विशेष का घोडा (वं भा.)

जंगसारधारण–स०पु०—वीर, योद्धा (डिं को)

जगाळ–स०पु०—१ एक प्रकार का लाल रग जो सोहाग-बिन्दी लगाने के काम आता है। गहरा लाल रग। उ०—लसै आळ जगाळ सिंदूर सूडा। इळा मे घसै धाव रा पाव ऊडा।—व भा
२ घोडा ३ सेना का दक्षिण भाग। उ०—सो पदमसिंहजी सत्रुसाळ रतनोत हरवळ किया। चदोल जगाळ बगाळ बणाय नै कूच कियौ सो गनीम आय हरवळ नू राड खाधी।—पदमसिंह री वात
४ युद्ध मे बजाया जाने वाला नगाडा। उ०—गडक्कै जगाळा नाळा कुडाळा भणक्कै गोण।—सारगदेव कानोड रौ गीत
रू०भे०—जघाळ।

जगाळी–वि०—गहरे लाल रग का। उ०—सुरख जगाळी सावळी सावळी, जी कुण करण जजाळ। चौथी जर री चमकती, झळकै बिंदली भाल।—लो गी
रू०भे०—जघाळी।
स०पु०—लाल रग।

जगिय–स०पु० [स० जाङ्गमिक] जगम जीवो के रोम का बना हुआ कपडा (जैन)
वि०—जगम सम्बन्धी (जैन)

जगी–वि० [फा०] १ लडाई से सबध रखने वाला, युद्धसबधी।
उ०—बजे त्रव जगी गढे नाळ बगी, लजावत जगी दुहू दोठ लग्गी।
—रा.रू.

२ फौजी, सैनिक. ३ बड़ा, दीर्घकाय। उ०—जगी हुवद जडिया जमजाळा, पाच हजार गयद पखराळा।—सू प्र.
४ मजबूत ५ वीर, योद्धा, लडाका। उ०—पवन नद परचड जीत दारुण खळ जगी, अजर अभर अणभग वजर आयुध वजरगी।
—र रू
यौ०—जगीकार, जगीराग, जगीलाट, जगीलाठ, जगी हुरडै।
जगीकार–स०पु०यौ०—एक विशेष प्रकार का बाण या तीर (अ मा)
जगीराग–स०पु०यौ०—युद्ध का राग, सिंधुराग। उ०—पंले कवादी तिलगा बाडा, जगी राग धोरै पोख। महा जोम आपरगी, 'लीक' सोवा मोड।—वा दा
जगीलाट, जगीलाठ–स०पु०यौ०—फौज का सबसे बडा अफसर।
उ०—काकोदरा माथै खगाभीस ज्यू काढवा केवा, लागो केडै वाढवा हजारा जगी लाठ।—गिरवरदान कवियो
जगी हुरडै–स०स्त्री०यौ०—एक प्रकार की हर्र, काली हड (अमरत)
जगू—देखो 'जग' (रू भे) उ०—लख लहण सवालख विद्रवण का विरद बुलावै, वडे जगू विरद बोल लोहवाहू को जोम चढि लडावै।
—सू.प्र.
जगेज–स०स्त्री० [स० यज्ञज] अग्नि (अ मा.)
जगेव–स०पु०—१ जग का उत्सुक व्यक्ति २ युद्ध, जग।
उ०—जोवा रगा वारगा विरुणा नाद सामाजतो, जटी धू अजोणी नाद साझतो जगेव। वाजता विढोणा नाद वाजियो राणेस वावो, गुणा नाद अग्राजतो गाजियो गगेव।—हुकमीचद खिडियो
जगोळ–स०पु० [स० जाङ्गुलु] १ विष उतारने की चिकित्सा विशेष (जैन) २ आयुर्वेद का एक अग जिसमे विष की चिकित्सा का प्रतिपादन है (जैन)
जघ—देखो 'जघा' (रू भे.) उ०—१ नितवणी जघ सुकरभ निरूपम, रभ खभ विपरीत रुख। जुअळि नाळि तसु गरभ जेहवी, वयणे वाखाणे विदुख।—वेलि
उ०—२ जघ सुपत्तळ करि कुअळ, झीणी लव प्रलव। ढोला एही मारुई, जाणिक कणयर कव।—ढो मा.
जघस्थळ–स०पु०—१ जघास्थल। उ०—जघस्थळ किसो छै, जिसो करभ।—वेलि टी
[यौ० फा० जग+स्थल] २ युद्ध का मैदान।
जघा–स०स्त्री० [स०] १ जाघ, रान।
२ पिंडली। उ०—जघा पवित्र करिस हूं जटधर, नूत करतो आगळ नाटेसर।—ह र.
रू०भे०—जघ।
जघाचारण–स०पु० [स० जङ्घाचारण] तप विशेष से सिद्धि प्राप्त, शक्ति वाला चारण मुनि (जैन)
जघात्र–स०पु०—जघा पर धारण करने का कवच। उ०—सवाहुअ उदअ जघात्र सगी, चहै वस चील्हा रहै एक रगी।—व भा

जघाळ–वि०—तेज चलने वाला, वेग से चलने वाला। उ०—लकाळै चडे चाल जघाळ लेलै, हली राजा ज्यों प्रथीराज हेलै।—मे म
स०पु०—देखो 'जगाळ' (रू भे) उ०—लाजवरद सील सुपेद, जघाळ जुगत अत। रांच अगाम नवरग, करे मधि चित्र दव अत।
—रा.रू
जघालस–स०पु० [फा० जगार] १ तावे का कसाव, तूतिया. २ एक रग जो तावे का कसाव है।
जघाळी—देखो 'जगाळी' (रू भे) उ०—सोळा टकियोडा गळ मे खूगाळी, जळ जुत ठोडी पर टिमकी जघाळी।—ऊ का.
जघावरत–स०पु०—एक प्रकार का अशुभ घोडा (शा हो)
जचणी, जचबो—देखो 'जचणो' (रू भे) उ०—भाज्याडा कपडा रा वेढगी पोसाक मे यो चोर व्है ज्यू ईज जचतो हो।—रातवासो
जचा–वि०—जाचा हुआ, परीक्षित, अचूक।
जचाणो, जचावो—देखो 'जचाणो, जचावो' (रू.भे)
जचायोडो—देखो 'जचायोडो' (रू भे) (स्त्री० जचायोडी)
जचावणो, जचावबो—देखो 'जचाणो' (रू भे)
जचावणहार, हारो (हारी), जचावणियो—वि०।
जचाविओडो, जचावियोडो, जचाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
जचावीजणो, जचावीजवो—कर्म वा०।
जचणो, जचबो—अक० रू०।
जचियोडो—देखो 'जचियोडो' (रू भे) (स्त्री० जचियोडी)
जज–स०पु० [स० यजन] सन्यासी, फकीर।
जजण–स०पु० [स० यजन] यज्ञ। उ०—ऊठियो तिणवार वडो उ।बळ सूरजसिंघ सहस वळभ। कोप नळ काळ भुजाळ पमधज, दोमजि जजण समुदळ।—गु.रू व
जजर—ताला उ०—जजर जडिया जाह, आघे जा अे उर महे। कूची कोण कराह, जडिये जाते जेठवा।—जेठवा
२ एक शस्त्र विशेष (सू प्र)
जजळ–वि० [स० जर्जर] जर्जर, जीर्ण, पुराना, कमजोर, वेकाम।
जजाळ–स०पु०—१ झझट, बखेडा, प्रपच। उ०—मिळण नै आया दिन सू रात, पिघळता ढळिया साम्ही ढाळ। रह्यो न दिन दिन रात न रात, विचाळे माझ बणी जजाळ।—साझ
२ बधन, फसाव, उलझन। उ०—१ वदण खी गुरुदेव कू, जिण काटे जजाळ। मूझ सुणाया मै'र कर, गुण थारा गोपाळ।
—भगतमाळ
उ०—२ म्हारा होसी कद नयण निहाल, म्हारा कटसी कद जीव रा जजाळ।—मी रा
मुहा०—जजाळ मे पडणी (फसणी)—चक्कर मे पडना, किसी उलझन मे फसना।
३ स्वप्न, सपना। उ०—१ आसा लुध्धी हू न मुइय, सज्जन जजाळेइ, मारू सेकइ हथ्थडा, झीणे अगारेइ।—ढो मा

उ०—२ सूती ए गौरादे रग भर मै'ल मे, सूतोडी नै आयो ए जजाळ, सपना मे म्हारा भवर मिळ्या छै आज ।—लो.गी

स०स्त्री०—४ एक प्रकार की बडी पलीतेदार बदूक । उ०—फरहरै चीद वहरक सपूर, गुरजा जजाळ तोपा गरूर ।—रामदान लाळस

५ बडे मुह वाली एक प्रकार की तोप । उ०—गज गाडा जबूरा जजाळा दागी गोम गाज, दळा आडा अच्छरा अच्छरा लागी दीठ, जाडा यडा ऊपरै जोसेल आग जागी जठै, रोसेल गुराडा ह्राडा वागी खागा रीठ ।—दुरगादत्त वारहठ

वि०—असत्य, झूठा । उ०—माया जाळ जजाळ है, जग गोरखधधा ।—केसोदास गाडण

जजाळियौ, जजाळी–वि०—१ उपद्रवी, फसादी २ प्रपच करने वाला, प्रपची ।

३ देखो 'जजाळ' (अल्पा०, रू भे)

जजीर, जजीरा–स०स्त्री० [फा०] १ शृखला, साकल । उ०—आया सोही जावसी, राजा रक फकीर । कोई सिंघासण बैठ, कोई पाव लगी जजीर ।—अज्ञात

२ किवाड की कुडी ३ किसी वस्त्र कपडे आदि के जजीरनुमा गूथे हुए किनारे ४ जजीरनुमा कोई वस्तु ।

रू०भे०—जजर, जजीर, जझर ।

जजीरेदार–वि०यौ० [फा०] १ जजीर की तरह सिलाई किया हुआ २ जजीरनुमा, जो जजीर की तरह मालूम पडे ।

जजीरौ–स०पु०—१ एक प्रकार का मत्र विशेष २ वडी व मोटी जजीर ।

रू०भे०—जझीरौ ।

जझर—देखो 'जजीर' (रू भे) उ०—समरथ टाळी ईस्वरी, कर हूत क्रपा कर । किलमा ग्रहिया राव नै, जडिया पग जझर ।

—जुझारसिंह मेडतियौ

जझरी–स०स्त्री०—एक प्रकार का वाजा विशेष ।

जझीरौ—देखो 'जजीरौ' (रू भे)

जझेडणौ, जझेडवौ–क्रि०स०—झकझोरना ।

जझेडियोडौ–भू०का०कृ०—झकझोरा हुआ (स्त्री० जझेडियोडी)

जझौ–वि० [स० योद्धा] योद्धा, बहादुर, वीर ।

जडे–स०स्त्री०—जैसलमेर राज्य की वह भूमि जहां पहले जडे भाटियो का अधिकार था (वा दा ख्यात)

जत–स०पु०—१ वैलगाडी के पहिये से लगी पैजनी के अगले सिरे को वांधने के काम मे आने वाली एक प्रकार की रस्सी ।

वि०वि०—यह प्राय भैस, गाय आदि के पूंछ के वालो को मिला कर सूत की बनी होती है । वालो के सयोग से इसकी मजबूती वढ जाती है ।

[स० यत्र] २ यत्र, कल ३ वख्तर की कडी ।

उ०—जिके सूरवीर दमगळ ऊमडा विना दुचता रहै और जुद्ध मे वगतर री जत (कडिया) जडै नही, उघाडी छाती लडै ।—वी.स टी

४ वशीकरण आदि के लिये प्रयोग मे लिया जाने वाला यत्र, तान्त्रिक (जैन)

[स० यत्] ५ दड देने या शासन करने वाला व्यक्ति. ६ छोटी जाति वाला ।

[स० जतु] ७ जन्म लेने वाला जीव, प्राणी ।

यौ०—जीवजत, जीवजतु ।

[स० यत्री] ८ कुछ अधिक मोटे तारो को खीचने का लोहे का एक औजार जो स्वर्णकार काम मे लिया करते हैं ।

[रा०] ९ जूता ।

जतपिल्लणकम्म, जतपीलणकम्म–स०पु०यौ० [स० यत्रपीडन कर्म] यत्र द्वारा तिल, ईख आदि पेलने का धधा या व्यवसाय (जैन)

जतर—१ देखो 'जत्र' । उ०—१ जतर मतर जादू टोना, माधुरी मूरति वसिके ।—मीरा उ०—२ जतन करो जतर लिख वाधो, ओखद लाऊ घसिके ।—मीरा उ०—३ वीणा जतर तार, थें छेड्या उण राग रा । गुण नै भूल गवार, जात न झीकू जेठवा ।—जेठवा

स०पु०—२ तालो । उ०—जतर जर हरणू अभ्यतर जडियौ । पीतम प्यारी नै परहरणू पडियौ ।—ऊ का

जंतरडी, जतरपट्टी—देखो 'जतरी' १ (अल्पा , रू.भे)

मुहा०—जतरडी मे काढणौ—देखो 'जतरी मे काढणौ ।'

जतर-मतर–स०पु० [स० यत्र-मत्र] १ जादू-टोना, टोना-टोटका ।

२ ज्योतिषियो के नक्षत्र एव उनकी गति आदि का निरीक्षण करने का स्थान ।

जतरणौ, जतरवौ–क्रि०स०—सजा देना, मारना, पीटना ।

रू०भे०—जतरावणौ, जतरावबौ, जत्राणौ, जत्रावौ, जत्रावणौ, जत्रावबौ ।

जतरायोडौ–भू०का०कृ०—सजा दिया हुआ, मारा हुआ, पीटा हुआ । (स्त्री० जतरायोडी)

रू०भे०—जतरावियोडौ, जत्रायोडौ, जत्रावियोडौ ।

जतरावणौ, जतरावबौ—देखो 'जतराणौ, जतरावौ' (रू भे)

जतरावियोडौ—देखो 'जतरायोडौ' (रू भे) (स्त्री० जतरावियोडी)

जतरी–स०स्त्री० [स० यत्रि सकोचे] १ स्वर्णकारो या तारकशो का तारो को पतला करने का धातु की पट्टी का छेददार एक औजार ।

मुहा०—जतरी मे काढणौ— वहुत कष्ट देना ।

रू०भे०—जत्रणी, जत्री ।

अल्पा०—जतरडी, जतरपट्टी, जती, जतौ, जत्ररडी ।

२ तिथि-पत्र, पत्रा [स० यत्री] ३ वाजा वजाने वाला ।

वि०—जादू-टोना करने वाला, जादूगर ।

जतुफळ–स०पु० [स० जतुफल] गूलर, उदुवर, ऊमर ।

जतौ–स०पु० [स० यत्र] १ यत्र, कला २ देखो 'जतरी' । (अल्पा , रू भे)

जत्र—स०पु० [स० यत्र] १ कल, यत्र २ तान्त्रिक यत्र ।
यौ०—जतर-मतर, जत्र-मत्र ।
३ कोई चौकोर या लम्बा तावीज जिसके भीतर तान्त्रिक या टोने की वस्तु रहती है । तावीज । उ०—सो पितरा रा फूना मे मढाई ही जो तथा मरनै भूत होवै तरै प्रेत रौ जत्र मादळिया मे तथा चौकी मे मडाईजजो ।—वी स टी
४ वाजा, वाद्य । उ०—जुगती च्यार जुग च्यार जत्र, अस्ट च्यार परमाण । चौरासी नाटक चतुर, विध रस रीत वखाण ।—सू प्र
५ वीणा । उ०—जुध जीत्यौ करनेस येम मुनि जत्र वजायौ । जुध जीत्यौ करनेस ईस धुनि सीस अघायौ ।—ला रा.
६ तोप, वदूकादि अस्त्र ७ अस्त्र विद्या । उ०—रिखा साधि आये दुहू भ्रात रूप । भणे जत्र चाळीस सग्राम भूप—सू प्र
८ जन्मपत्री ।
रू०भे०—जतर, जत्रक ।
जत्रक—देखो 'जत्र' (रू भे) उ०—रेवत चढिया रोदराव, वज जत्रक भेरी । माग न लाधै भाण रथ, रज डवर घेरी ।—द.दा
जत्रधर, जत्रधार, जत्रपाणी—स०पु०यौ०—वीणा को धारण करने वाला, नारद । उ०—हड हड ताम जत्रधर हसिया । लडता सात सहस भड लसिया ।—सू प्र उ०—२ खिले जत्रधार काळी सिधी वज्र-ताळी खूटै, सार जाळी तूटै सिंध फूटै स्रोण सीर । 'जालमो' अतूटै खेध इसै वेध लागी जूटै, वाणामा विछूटै घाट छूटै नथी वीर ।
—हुकमीचद खिडियौ
उ०—३ मुनि जत्रपाणी असोम वजायौ । ललक्कारि भैरू किल-क्कारि आयौ ।—ला रा
जत्रकमत्र—स०पु०यौ०—जादू, टोना ।
जत्रणी—स०स्त्री०—१ यत्र की क्रिया को जानने वाली या वनाने वाली
२ देखो 'जतरी' (रू भे)
जत्रवाण—स०पु०यौ०—एक प्रकार का अस्त्र विशेष (ला रा)
जत्ररडी—देखो 'जतरी' (अल्पा, रू भे)
जत्रसार—स०पु०यौ०—१ तार वाले वाद्य, २ सारगी ।
जत्राणि—स०स्त्री० [स० यत्र] १ जतर-मतर. २ यत्र, कला
३ तान्त्रिक यत्र ।
जत्राणी, जत्रावौ—देखो 'जतराणी' (रू भे)
जत्रायोडौ—भू०का०कृ०—देखो 'जतरायोडौ' (रू भे.)
(स्त्री० जत्रायोडी)
जत्रावणौ, जत्राववौ—देखो 'जतराणौ' (रू भे)
जत्रावियोडौ—देखो 'जतरायोडौ' (रू भे) (स्त्री० जत्रावियोडी)
जत्रि, जत्री—स०पु० [स० यत्रिन्] १ वीणा आदि तार वाले वाद्य वजाने वाला व्यक्ति, यथा—नारद आदि । उ०—तप्त जत्र जत्री ताणिया, वरमाळ गह गिरवाणिया ।—र रू
२ तत्र-मत्र जानने वाला, तान्त्रिक । उ०—वरधमान नद इद्र 'अग-जीत' का मत्री । सरव सावधान जैसे थान-थान जत्री ।—रा रू
स०स्त्री०—३ देखो 'जतरी' (रू भे)
जद—स०पु०—१ भूत, प्रत, पिशाच आदि ।
[फा० जद] २ पारसियो का धार्मिक ग्रथ ३ वह भाषा जिसमे पारसियो का धार्मिक ग्रथ 'जद अवस्था' लिखा गया है ।
जप—स०पु०—१ नक्कारे की आवाज. २ चैन, शान्ति ।
उ०—जप जीव नही आवती जाणे, जोवण जावणहार जण । वहु विनखी वीछुडती वाळा, वाळ सँघाती वाळपण ।—वेलि
जपग, जपय—वि० [स० जल्पक] वोलने वाला (जैन)
जपणौ, जपवौ—क्रि०स०अ० [स० जपन] १ किसी वाक्य या वाक्याश को वरावर लगातार धीरे धीरे देर तक कहना या दुहराना, जपना ।
उ०—जेण राम उज्जळ सुजस, जपै सकळ जिहान ।—र.ज प्र
२ कहना । उ०—१ साहा राव ग्रह मेल्हियौ 'सागै', नियम न जोवै नही नियाव । अमर उकेकल करी एकरा, वोहो नामी जपै वळराव ।
—महाराणा सग्रामसिह री गीत
उ०—२ रूप लखण गुण तणा रुखमिणी, कहिवा सामरथीक कुण । जाइ जाणिया तिसा मे जपिया, गोविंद राणी तणा गुण ।
—वेलि
३ नक्कारे का वजना ४ झँपना, हल्की नीद आना ।
जपणहार, हारौ (हारी), जपणियौ— वि० ।
जपिओडौ, जपियोडौ, जप्योडौ—भू०का०कृ० ।
जपीजणौ, जपीजवौ—कर्म वा०, भाव वा० ।
जपती—स०पु० [स०] पति-पत्नी, दम्पती ।
जपाण—स०पु० [स० जम्पान] एक प्रकार का वाहन, पालकी विशेष (जैन)
जपिर—वि० [स० जल्पित्] वोलने वाला (जैन)
जफ—स०पु०—युद्ध । उ०—जागळू राउ ऊपरइ जफ, सतळज्ज लघि सुलिताण सफ ।—रा ज सी.
जफीरौ—स०पु०—एक प्रकार का घोडा (शा हो)
जवक—देखो 'जवुक' (रू भे) उ०—जवक सवद नचीन कर, डर कर तु मत भाज । सादूळौ खीजै सुणै, जळहर हदौ गाज ।—वा दा
जववइ—स०स्त्री० [स० जाम्बवती] श्रीकृष्ण की एक राणी (जैन)
जवाल—स०पु० [स० जवाल] १ कीचड, पक २ जरायु (जैन)
जवाळणी, जवाळनि—स०स्त्री० [स० जवालिनी] नदी (अ मा)
रू०भे०—जभाळणी, जवाळिनी ।
जवियौ—देखो 'जभियौ' (रू भे)
जवीर—स०पु० [स०] एक प्रकार का नीवू । उ०—सदाफळ जवीर नारगी, वील फळ उणिहार ।—रुकमणी मगळ
रू०भे०—जवू ।
जवीरीनींवू—स०पु०यौ० [स० जवीर] एक प्रकार का खट्टा व वडा नीवू ।
रू०भे०—जवेरी, जवेरी नीवू जभीरी नीवू, जभेरी, जम्मेरी ।
जवु—१ देखो 'जवुक' (रू भे) २ देखो 'जवुद्वीप' (जैन)
३ देखो 'जवुस्वामी' (जैन)

जबुग्रद्वीप, जबुग्रहवीप—देखो 'जबुद्वीप' (रू भे)

उ०—सोहिया प्रवाडा सिंघ सीस। जबुग्रहवीप जगी जगीस।

—रा ज सी

जबुक–स०पु० [स० जम्बुका] १ बडा जामुन २ एक प्रकार का फूल। ३ सियार, शृगाल, गीदड। उ०—जिए वन भूल न जावता, गंद गवय गिडराज। तिए वन जबुक ताखडा, ऊधम मडै ग्राज।—वी स

रू०भे०—जबु, जबुय, जबू।

जबुखड, जबुदीव, जबुद्दीप जबुद्वीप–स०पु० [स० जम्बूद्वीप] पुराणो के अनुसार सात बडे-बडे द्वीपो मे से एक द्वीप। उ०—१ पहिलु जबुदीव वखाणउ, जोग्रण लाख प्रमाए। भरहखड तसु भीतरि जाणउ, नाना विह गुण ठाए।—विद्याविलास पवाडउ

रू०भे०—जबुग्रद्वीप, जबुग्रहदीप, जबूदीप, जबूद्वीप।

जबुद्दीवपन्नति–स०स्त्री० [स० जबुद्वीपप्रज्ञप्ति] इस नाम का पाचवा उपाग सूत्र (जैन)

जबुमत–स०पु० [स० जबुमत्] जाबवान नाम का एक रीछ (राककथा)

जबुमति–स०स्त्री० [स०] एक अप्सरा का नाम।

जबुमाळी–स०पु० [स० जबुमालिन्] एक राक्षस का नाम।

जबुय—देखो 'जबुक' (रू भे) उ०—जिम ग्रतर गोइक दुद्धि ग्रतरु मणि सुरमणि, जिम ग्रतरु सुरतरु पळास जिम जबुय केसरि।

—ऐ जै का स

जबुसुदसणा–स०स्त्री० [स० जबुसुदर्शना] जबुद्वीप मे होने वाला एक वृक्ष विशेष, जिसके कारण द्वीप का नाम जबूद्वीप हुआ (जैन)

जबुस्वामी–स०पु०—एक जैन स्थविर का नाम।

रू०भे०—जबूस्वामि।

जबू–स०पु० [स०] १ देखो 'जबुक' (रू भे) २ देखो 'जबीर' (रू भे)

उ०—धवै धामण खइर खीरणी, पास पाडल लीव। ग्रब जबू ग्राविली करगचि, कइवट्ट काब।—रुकमणी मगळ

३ जबू वृक्ष के ग्राकार का एक रत्नमय शाश्वत पदार्थ (जैन)

जबूणद, जबूणय–स०पु० [स० जाम्बूनद] सोना, स्वर्ण (जैन)

जबूदीप, जबूदीव, जबूद्वीप—१ देखो 'जबुद्वीप' (रू भे)

उ०—१ जबूदीप मे जाम एको जिकारो। दिसा पच्छमी दूर प्रासाद द्वारो।—मे म उ०—२ जबूद्वीप मह च्यार, महा विदेह मझार। धातकी पुस्कर जेथि, ग्राठ-ग्राठ ग्ररिहत तेथि।

—स कु

२ एक प्रकार का शुभ रग का घोडा (शा हो)

जबूनदी–स०स्त्री०—जबुद्वीप की एक नदी (पौराणिक)।

जबपीढ, जबूपेढ–स०पु० [स० जबूपीठ] एक प्रदेश का नाम (जैन)

जबूफळ–स०पु०—१ जामुन २ एक सामुद्रिक चिन्ह।

उ०—भुज प्रलब ग्राजान, कमळ ग्राकृति पद कोमळ। जव ग्रवुज ध्वज कळस, मीन ग्रकुस जबूफळ।—रा रू.

जबूफळकालिया–स०स्त्री० [स० जम्बूफलकालिका] जामुन की बनी काले रग की मदिरा विशेष (जैन)

जबूय—देखो 'जबुक' (रू भे, जैन)

जबूर, जबूरक–स०पु० [फा०] प्राय ऊँटो पर लादी जाने वाली एक प्रकार की छोटी तोप। उ०—वूर पडि जबूर विहु घड, भूरज वीछडि पडै खडभड। विढण घरि ग्रड सुहड समवड, वडवडै पिंड चार।—रा रू.

जबूरची–स०पु० [फा०] जबूर नामक तोप को चलाने वाला।

जबूरनाळ, जबूरनाळी–स०स्त्री०यौ०—एक प्रकार की तोप।

उ०—गज नाळया, सुतर नाळया, जबूरा नाळया, रामचगी हथनाळया रा चणणाट वाजै छै।—रा सा स

जबूरी–स०स्त्री०—१ पतले-पतले तारो को पकड कर खीचने का लोहे का एक छोटा ग्रोजार. २ एक प्रकार का शस्त्र विशेष।

जबूरौ–स०पु० [फा० जबूर] १ पतले-पतले तारो को पकड कर खीचने का लोहे का एक बडा ग्रोजार २ एक प्रकार का घोडा (शा हो) ३ देखो 'जबूर' (रू भे) उ०—गज गाडा जबुरा जजाळा दागी गोम गान, दळा ग्रांडा ग्रछरा ग्रछरा लागी दीठ। जाडा थडा ऊपरै जोसेल ग्राग जागी जठै, रोसेल गुराडा हाडा वागी खगा रीठ।

—दुरगादत्त बारहठ

४ वाण का फल। उ०—घोडा भड घमसाण पाखरा वगतर पूरा, चौधारा चमकत जवर खग ढाल जबूरा।—बगसीराम प्रोहित री वात

५ किसी वाजीगर के साथ रह कर खेल दिखाने वाला लडका

६ ढीलेढाले कपडे पहिने हुए प्यारा बच्चा।

ग्रल्पा०—जबूरियौ।

जबूस्वामि—देखो 'जबुस्वामी' (रू भे.) उ०—लब्धि गौतमस्वामि तणी, प्रतिवोध जबूस्वामि तणउ।—व स

जबेरी, जबेरी नींबू—देखो 'जबीरी नीबू' (रू भे)

जभ–स०पु० [स०] १ जबीरी नीबू २ प्रह्लाद के तीन पुत्रो मे से एक. ३ डाढ़, चौभड ४ एक दैत्य जो महिषासुर का पिता था एव इद्र द्वारा मारा गया था। उ०—रिमा खेसै लागौ दीखै इद्र ज्यू जभ पै रूठौ। ग्राहसी भाराथा ऊठौ हणू ज्यू ग्रोपाळ।

—गुनावसिंह महडू

जभणी–स०स्त्री० [स० जृम्भणी] एक प्रकार की विद्या (जैन)

जभ-भेदी, जभराति–स०पु० [स० जभाराति] जभ नामक दैत्य का सहार करने वाला, इद्र (ना मा, ह ना)

जभा–स०स्त्री० [स० जम्भा] जम्भाई, उवासी (जैन)

जभाग्राइ, जभाई–स०स्त्री० [स० जृम्भा, जृम्भिका निद्रा या ग्रालस्य ग्रादि के कारण मुँह के खुलने की एक स्वाभाविक क्रिया, उवासी। उ०—ग्रग विस्फोटता कीयौ। जभाई ग्राई, पाछे क्यो थोडा-थोडा चाल्या, गति दिखाई।—वेलि

रू०भे०—जभात।

जभाणो, जभावो–क्रि०अ०—गायो का बोलना, रभाना।
उ०—रातीवासै री माती रभाती, जाया गोवासै जाती जभाती।
—ऊ का

जभात—देखो 'जभाई' (रू भे) उ०—वडे प्रात स्त्री मात मजीर वागै, जरा गात जभात जमात जागै।—मे म.

जभारात, जभाराति, जभारि–स०पु०यौ० [स० जभाराति, जभारि] जभ नामक दैत्य का शत्रु, इद्र (अ.मा, ना मा)

जभाळणी—देखो 'जवाळनी'—रू भे (ह ना)

जभासुरमारण–स०पु०यौ०—जभासुर नामक दैत्य का सहार करने वाला, इद्र (डि को)

जभियगाम–स०पु० [स० जृम्भिकग्राम] बगाल मे पार्श्वनाथ पहाडी के पास आया हुआ एक ग्राम जिसके पास महावीर स्वामी को कैवल्य ज्ञान प्राप्त हुआ था (जैन)

जभियो–स०पु०—एक प्रकार का कटारनुमा सीधा छुरा।
रू०भे०—जबियो।

जभीरी नीवू जभेरी—देखो 'जवीरी नीवू' (रू भे)

जम—देखो 'जन्म' (रू भे) उ०—दुल्लह लाधउ माणस जम अनी विखसइ जिणवर धमु।—चिहुगति चउपई

जमजाळ–वि०—यमराज को भी पीछे हटा सकने की सामर्थ्य रखने वाला, महावीर, वहुत बलवान। उ०—माभी 'मेघ' हरो मछराळ हू तल्ल मल्ल हाथाळ। जैअवादी जमजाळ केविया रो काळ सूरधीर सप्पखाळ।—ल पि २ देखो 'जमजाळ' (रू भे)

जमण—देखो 'जन्म' (रू भे) उ०—जमण मरण ति आणइ छेहु। जिहि चित्ति एक वसइ जिणनाह। -चिहुगति चउपई

जमले–वि० [अ० जुम्ल] सब, कुल, समस्त।

जमाई—देखो 'जवाई' (रू भे)

जम्मेरी—देखो 'जवेरी' (रू भे) उ०—केळा री घडा आय रही छै। जम्मेरी, नीवू, नारगी आय रहिया छै।—डाढाळा सूर री वात

जवर–स०पु० [अ० जौहर] १ तलवार या किसी अन्य धारदार हथियार पर दे सूक्ष्म धारियो के समान दिखाई पडने वाले चिन्ह जिनसे लोहे की उत्तमता प्रकट होती है २ देखो 'जौहर' (रू भे)
उ०—१ रावळ दूदा री वैरा बीजी तौ सगळी ही गढ़ ऊपर जवर कर बळी। एक लखां मागळियाणी री बेटी खीवसर थी सु पातसाह खीवसर कनै आयौ, तरै इण दूदा री वैर कह्यौ—दूदा रो माथौ आण दे तो हू वळू।—नैणसी
उ०—२ चित्तौड भिळियौ जद साढे तीन सै लुगाया रो जवर हुवो।
—वा दा ख्यात

जवरी–स०पु०—१ जोहरी २ देखो 'जौहर' (रू.भे)।

जवहर, जवहार–स०पु०—जवाहरात। उ०—१ साह ताम समसेर, जडत जवहरा जमघर।—सू प्र उ०—२ जमदढ खग जवहार अधिक रीझे जसदावै। दिया जीत दळथभ इता गिणता नह आवै।—सू.प्र

जवहरी—देखो 'जौहरी' (रू भे) उ०—नम्मा जवहरी जोवाण का नाथ।—सू प्र

जवाइ, जवाई–स०पु० [स० जामातृ] १ दामाद, जामाता।
उ०—१ आवै माउ अपार रा, गावै पटिया गीर। वाई रहै जिण वेन रा, वणै जवाई वीर।—ऊ का उ०—२ सुसरो जी बुलावै, जी जवाई जी, मामू बुलावै जी, थारा छोटा साळा कर रह्या थारो चाव।—लो गी
अल्पा०—जवाईडो।
२ एक मारवाडी लोकगीत का नाम।
रू०भे०—जमाई, जमाई।

जवाडो—देखो जुग्रो' २ (अल्पा, रू भे)

जवार–स०पु० [स० युग धार] नमस्कार, अभिवादन। उ०—मारा ज मिळ सरदार, जव किया आप जवार। वाहदर मिळै कर मान, इम नगय भुज असमान।—पे रू

जवारा–स०पु० [स० यवहार] (वहु व०) विभिन्न पर्वो उत्सवो, व्रतों आदि के अवसर पर प्राय स्त्रियो द्वारा मिट्टी के छोटे से कुडे मे बोये गये गेहू या जो के उठे हुए अकुर, इन्हें पवित्र माना जाता है। उ०—ऊचे मगरे एजी म्हारा हरिया जवारा जुळिया जवारा, नीचे मिरगा जव चरै, मिरगा घरो नी ब्रह्माजी रा ढूंगर जी घेरो नी वन रा मिरगला।
रू०भे० जवारा, जुहारा। —लो गी.

जवारी—देखो 'जवारी' (रू भे)

जवारु–स०पु०—जवाहरात। उ० त काई मागीइ जीणइ कुणह पूठि न लागीइ, त कांई घडीइ जीणइ जवारु जडीइ।—व न

जवाळिनी—देखो 'ज्वाळनि' (रू भे) (ना डि को)

जहगम–स०पु० [स० अजिह्मग] तीर, वाण (डि को)

जहो–वि०—जैसा, समान। उ०—हस जहो हालदिया, घाटेचिया तियाह, कनकरता कठियाणिया, जोडे नहो जियाह।—वा दा

ज–स०पु०—१ जन्म २ जीव ३ विजय ४ योगी. ५ मृत्युञ्जय. ६ पिता ७ विष्णु ८ विष. ९ तेज (एका०)
स०स्त्री०—१० जड, मूल (एका०) ११ छदशास्त्र मे तीन अक्षरो का एक गण, जगण।
प्रत्यय [स जन्] उत्पन्न, जात।
अव्य० निश्चयार्थकसूचक 'ही'। उ०—१ वावहिया तू चोर, थारी चाच कटाविसू। राति ज दीन्ही लोर, मइ जाण्यउ प्री आवियउ।
—ढो मा.
उ०—२ तद राजा कह्यो—साहजी पार का वेटा थारै कन्है रह सकै ज नही।—पलक दरियाव री वात
सर्व०—१ जिस। उ०—मीरखान चाकर रह्यो, ज- दन भूप के सत्थ। त-दन बध्यो वट वीजला, कहसू आगम कत्थ।—ला रा
२ उस। उ०—विच साह दला डेरा वणे, तेज पुज आयो त दिन। उतरियो गयद हू ता 'अभो', जळ चढियो मुरधर ज दिन।—सू.प्र

जइ-क्रि०वि०—१ जहा। उ०—वाळू ढोला देसडउ, जइ पाणी कूवेण। कू कू-वरणा हुथ्थडा नही जु घाढा जेण।—ढो मा

[स० यदि] २ जो, यदि। उ०—सखिए सज्जण वल्लहा, जइ ग्रणदिट्ठा तोइ। खिण खिण ग्रतर सभरइ, नही विसारइ सोइ। —ढो मा

[स० यदा] ३ जब (जैन)

स०पु० [स० यति] १ जितेन्द्रिय, सन्यासी, साधु (जैन) २ छद-शास्त्र मे कविता का विश्राम-स्थान, यति (जैन)

वि० [स० जयिन्] जीतने वाला, विजयी।

रू०भे०—जई।

जइजइकार—देखो 'जैजैकार' (रू भे.) उ०—नवइ लाख वान मूकाव्या, वरत्यउ जइजइकार। धन्य धन्य राउळ कान्हडदे, क्रिस्ण तणउ अवतार। —का दे प्र

जइण-स०पु० [स० जैन] जिनदेव का भक्त (जैन)

वि०—१ जिनदेव से सम्बन्ध रखने वाला, जिन भगवान का (जैन) [स० जयिन्] २ जीतने वाला (जैन)

[स० जविन्] ३ वेग वाला, वेगयुक्त (जैन)

जइणा-वि०— जितना। उ०—सो वेव सुगुरु जो मूल गुण, उत्तर गुण जइणा करइ। गुणवत सुगुरु भो भवियणह, पर तारइ ग्रप्पण तरइ। —ऐ जै का स

जइत-स०स्त्री० [स० जिति] जय, विजय, फतह। उ०—तिम करइ जइत तुडिमल्ल तोइ, कमरा कमध भाजइ न कोइ।— रा ज सी.

जइतखभ-स०पु०—विजय-स्तम्भ।

वि०—विजय करने वाला। उ०—वाहुरि साहि भाड, साहि विभाड वळिया साहि कधि कुदाळ, सबळ साहि मान-मरदन, निवळ साहि थापनाचारज, सग्राम साहि ', रिण भाजणा साहि जइत-खभ सुरिताण दूसरउ ग्रलावदीन, किसइ ग्रेक ग्रारभिक-पारभि ग्राइ टिक्यउ छइ।—ग्र वचनिका

जइतणौ, जइतबौ—देखो 'जीतणौ, जीतबौ' (रू भे)

जइतवादी-वि०—देखो 'जैतवादी' (रू भे) उ०—धवळ हस्ती मेरु सरिखु ग्रनोपम गुणवत (ए), सुभट सइनु जइतवादी साहसीक वळवत ए।—नल-दवदती रास

जइतवार-वि०—जीतने वाला।

जइतेल-स०पु०—मालती का तेल। उ०—धूपेल चापेल मोगरेल करणेल जइतेल एव विधि तेलिइ चोळा भीजाइ।—व स.

जइय-स०पु० [स० जीव] जीव, प्राणी। उ०—ताहरी इच्छा दीध तै, जइया ग्रादि जनम्म। तइया हूंता ग्रम्ह तण, केसव किसा करम्म। —ह र

जइलच्छि-स०स्त्री०—विजयलक्ष्मी। उ०—मन्त्रि इण परि मन्त्रि इण परि वरीय जइलच्छि जय जय रव वेहू वलीग्र देस माहि तसु ग्राण वरतीग्र सीमाडा सवि मिळीय भेटि लेई ग्रावइ ग्राणदीग्र। —विद्याविलास पवाडउ

जइवत-वि०—विजयी। उ०—हिव ग्रापण नइ ग्रावइ खोडि, वेगि मसाहणी घोडा छोडि। साल्हउ सोभउ ग्रति बळवत, लखणउ सेभटउ ग्रति जइवत।—का दे प्र

स०स्त्री०—एक देवी का नाम (विद्याविलास पवाडउ)

जइसर-स०पु० [स० यतीश्वर] यतीश्वर। उ०—भाव (ठ) भजण कप्प रुक्ख 'जिन पद्म' मुणीसर, सब सिद्धि वुद्धि समिद्धि व्रिद्धि 'जिणलद्धि' जइसर।—ऐ जै.का स.

जइसौ-वि०पु० [स्त्री० जइसी] जैसी। उ०—जैसइ ऊजळ कमळ ऊपरि जइसी पाणी की बूद होय।—वेलि टी

जई-वि०— विजयी, जीतने वाला।

स०स्त्री०—१ काठ के दो सीगो वाला किसानो का एक ग्रोजार जिसे वे कटीले पदार्थ हटाने व ठीक करने के उपयोग मे लेते हैं. २ एक प्रकार का शस्त्र। उ०—वीफरैल ग्रुसैल कदेई तोल न ग्राव बीजा केई दातडेल जई गुडाया कठीर।—महकरण मइयारियो

सव०—१ जिस। उ०—निरखे ततकाळ त्रिकाळ निदरसी, करि निरणै लागा कहण। सगळै दोख विवरजित साहौ, हूंतौ जई हूग्रौ हरण।—वेलि

२ उस। उ०—ग्रपच्छर सूर जोडै हिज ग्राय, जई रथ वैठि वसै स्रुगि जाय।—सू प्र

क्रि०वि०—जब। उ०—ग्राणे सुर ग्रसुर नाग नेत्रै नहि, राखियौ जई मदर रई। महण मथे मूं लीध महमहण, तुम्हां किणै सीखव्या तई। —वेलि.

देखो 'जइ' (रू भे)

जईणौ, जईबौ—देखो 'जाणौ' (रू भे)

जईन—देखो 'जैन' (रू भे)। उ०—जईन सास्त्र ग्राण जाणै ध्यान ग्यान धारता।—सू प्र

जईफ-वि० [ग्र०] वृद्ध, बुड्ढा। उ०—सोराव फकीर कहावै, कागदा मे फकीर लिखीजै है, जईफ है, कडप करावै नही।—वा दा ख्यात

जईफी-स०स्त्री० [ग्र०] बुढापा, वृद्धावस्था।

जईमैण-स०पु० [स० मदनजयी] महादेव। उ०—चसे नैण ज्यू रैण जूपी चरागा, जईमैण रा नैण ज्यू क्रोध जागा। —हिंगळाजदान कवियौ

जउ, जउ-ग्रव्य० [स० यत्] जो, यदि, ग्रगर, कि (उ र)

उ०—जउ ग्रावसइ पातम्गाह वळी, तउ ग्रावरजन करि सू भली। जउ गठि नावइ करीय पराण, तु सूयर भक्ष करइ सुरताण।—का दे प्र

क्रि०वि०—ज्यो। उ०—वेढ कीध पडियार, निहसि कट्टारउ दुहु करि। राइ न ग्रहउ नरसिघ गळइ, गळहथ जउ गइवरि। —ग्र वचनिका

सर्व० [स० य] जो। उ०—रथगजास्ट सहस्र जउ निरजणइ, दस सहस्र महाभट जो हणइ।—विराट पर्व

स०पु० [स० जतु] लाख।

रू०भे०—जऊ।

जउख—देखो 'जोख' (रू भे) उ०—काहे पाया दुख सरीर, जाम्रो जउख करउ गुरु पीर।—ऐ जैं का स
जउणा—स०स्त्री० [स० यमुना] यमुना नदी (उ र)
जउराणउ—स०पु० [स० यमराज] यमराज (उ र.)
जउव्वेय—स०पु० [स० यजुर्वेद] यजुर्वेद (जैन)
जउहर, जउहरि—देखो 'जौहर' (रू भे) उ०—१ जउहर माहि जळिवाह इसइ तेज पइसइ अनळ, पहिला थी रहि पाछिली पग भ्रेहि पउखइ नाह।—अ वचनिका
उ०—२ सीघए हरं छछोहि अमोलिक घर आएउ, जउहरि आवउ जाळियउ लह्यउ आघउ लोहि।—अ वचनिका
जऊ—देखो 'जउ, जउ' (रू भे) उ०—चीतारती चुगतिया, कुभो रोवहियाह। दूराहुता तउ पलइ, जऊ न मेल्हहियाह।—ढो मा
जऊडो—१ देखो 'जाऊडो' (रू भे) २ देखो 'जुग्रो' २ (अल्पा., रू भे)
जक—स०स्त्री० [स० यकृत = यक] १ चैन, आराम, शान्ति।
उ०—नभे सोती जागी लगन धुन लागी जक नही। स्वयभू ध्याऊ मै परमपद पाऊ सक नही।—ऊ का.
२ विश्राम। उ०—पहर चउत्थै पोढियो, गिणतो फौज गरीब। दोय घडी जक जीभ नू, वैरी आए नकीब।—वी स
[स० यज्ञ] ३ यज्ञ ४ कजूस व्यक्ति।
रू०भे०—जक्क।
जकड—स०स्त्री०—कस कर बांधने या जकडने का भाव।
जकडणो, जकडबो—क्रि०स०—१ कस कर बाँधना।
उ०—प्रचड लोह पाखरा, चोळबोळा चरा चोळा। जगी हूवद जकडिया, तवा खळकिया कपोळा।—सू प्र
क्रि०अ०—२ अकड जाने के कारण अगो का हिलने-डुलने के लायक न रहना।
जकड़ियोडो—भू०का०कृ०—१ जकडा हुआ २ अकडा हुआ।
(स्त्री० जकडियोडी)
जकण—सर्व०—जिस।
जकणो, जकबो—क्रि०अ०—१ चैन पडना। उ०—सातू ही सामत खास वाडा नू तोडि गजा रा गोळ मे जावता जकिया।—व भा
[अ० जक+रा०प्र०णो] २ लज्जित होना।
उ०—काने कुडळ ढाडीमा। पहिरी पटोली जीएइ जकी कू कू भरिये कचोळडी। वाघन-सेज अदीस्ठे जाई।—वी दे
जकसेस—स०पु० [स० जक्षेन्द्र] ऊट। उ०—रेसम्म सामळ रग जकसेस घुघर जग। पळ पच दस वव पाय, जोजन्न ऊपरि जाय।—सू प्र
जका—सर्व०—जो। उ०—करहा कहि कासू करा, जो ए हुई जकाह। नरवर-केरा माणसा, काई कहिस्या जाह।—ढो मा
जकात—स०स्त्री० [अ०] १ दान, खैरात।
वि०वि०—वार्षिक आय का चालीसवाँ अश जो दान पुण्य मे व्यय करना प्रत्येक मुसलमान का परम कतव्य कहा गया है (धार्मिक)
२ चुगी, महसूल।
जकाती—स०पु०—चुगी वसूल करने वा व्यक्ति।
जकार—स०पु०—१ 'ज' अक्षर। २ 'जगण' का एक नाम (छदशास्त्र)
जकियो, जकीयो—स०पु०—वृत्तान्त, हाल। उ०—मूरखो पावरो मुहूर्त कन्है गयो। मुहूर्त नु कह्यो सारो जकीयो।—चौबोली
जको—सर्व० (स्त्री० जका, जकी) १ जो २ वह, उस।
उ०—१ राणी साम्ही आय मुजरो कियो। मु जकै दिन राणी सवाई कीवी थी।—पलक दरियाव री वात
उ०—२ को मन वछित केम, जाअ भरा दीजे जको। इम मुणि पहियो एम, सरा भउा महाराज मू।—सू प्र
जक्क—देखो 'जक' (रू भे) उ०—मन माय धूम गरमेन मार, पड ग्राम ग्रास आठू पुकार। दिन लाग घट हूइर दरक्क, जगनान पडै निस दिवस जक्क।—रा रू
जक्ख—देखो 'जक्ष' (रू भे) उ०—१ नव नाथ चोगडी सिद्ध चनक पखी पळचर गीध चौसठि जोगणि बावन वीर जक्ख किन्नर गए गद्रप सहित रिखि नारद आया।—वचनिका
उ०—२ ऊमर इम बरसा नव आई। मुता जक्खि जद कथा सुणाई।—सू प्र.
जक्खकद्दम—स०पु० [स० यक्षकर्दम] १ इस नाम के दो वनिय (जैन)
२ इस नाम का एक समुद्र और उसमे स्थित द्वीप (जैन)
जक्खग्गह—स०पु० [स० यक्षग्रह] यक्ष कृत उपद्रव (जैन)
जक्खणायग—देखो 'जक्षनायक' (रू.भे, जैन)
जक्खदिन्ना—स०स्त्री० [स० यक्षदत्ता] २२वा तीर्थंकर की मुख्य साध्वी का नाम (जैन)
जक्खभद्द—स०पु० [स० यक्षभद्र] यक्ष द्वीप का अधिपति देवता (जैन)
जक्खा—स०स्त्री० [स० यक्षी] स्थूलिभद्र की बहिन (जैन)
जक्खादित्तय, जक्खालित्तय—स०पु० [स० यक्षादीप्तक] किसी एक दिशा मे थोडे थोडे अन्तर पर बिजली के जैसी चमक का देखा जाना, भूत-पिशाच वगैरह की माया (जैन)
जक्खिन्द—स०पु० [स० यक्षेन्द्र] १ यक्षो का इन्द्र (जैन) २ अमरनाथजी के यक्ष का नाम (जैन)
जक्खि, जक्खी—१ देखो 'जक्ष' (रू भे)
स०स्त्री० [स० याक्षी] २ एक प्रकार की लिपि (जैन)
जक्खोद—स०पु० [स० यक्षोद] एक समुद्र का नाम (जैन)
जक्त—देखो 'जगत' (रू भे)
जक्ष—स०पु० [स० यक्ष] (स्त्री० जक्षणी) देवताओ का एक भेद जो कुबेर के आधीन है और निधियो की रक्षा करता है।
उ०—सुक सनकादिक तेडो जक्ष, किन्नर नै कहावे रे। देव दाणव सहु तेडो रे, मडप भीतर आवो रे।—रुकमणी मगळ
रू०भे०—जक्ख, जक्खि, जख, जखण, जखरा, जख्खु, जच्छ।

यौ०—जक्षनायक, जक्षपत, जक्षपति, जक्षपुर, जक्षपुरी, जक्षरात, जक्षसपुर, जक्षसलोक, जक्षाधिप, जखनायक, जखराज, जखराट, जखरात, जखलोक, जखसनायक, जखसपुर, जखाराज, जखाधप, जखाधिप, जखाधी, जखाधीस, जखाराज, जखेंद्र, जखेसर, जस्यप्रति।

जक्षनायक-स०पु०यौ० [स० यक्ष+नायक] यक्षपति, कुबेर।
रू०भे०—जखनायक, जक्खणायग, जखसनायक।

जक्षपत, जक्षपति-स०पु०यौ० [स० यक्ष+पति] यक्षराज, कुबेर।

जक्षपुर, जक्षपुरी [स० यक्षपुरी] कुबेर की नगरी, यक्षो की पुरी, अलकापुरी।
रू०भे०—जक्षसपुर, जखसपुर।

जक्षरात-स०स्त्री०यौ० [स० यक्ष+रात्रि] कार्तिक मास की पूर्णिमा जो यक्षो की रात्रि मानी जाती है।
रू०भे०—जखरात।

जक्षस-स०पु० [स० यक्षप] यक्षपति, कुबेर।

जक्षलोक-स०पु० [स०] यक्षपुर।

जक्षसपुर—देखो 'जक्षपुर' (रू भे)

जक्षसलोक-स०पु०यौ० [स० यक्ष+लोक] वह लोक जिसमे यक्षो का निवास माना गया है।
रू०भे०—जखलोक।

जक्षाधिप-स०पु० [स० यक्षाधिप] यक्षो का अधिपति कुबेर।
रू०भे०—जखाधप, जखाधिप।

जक्षेस-स०पु० [स० यक्षेश] कुबेर। उ०—जक्षेस वारिईस की सुरेस नेस प्री जिसा, 'अभौ' त्रिलोक मे अत्रभ भोग भोगवै इसा।—रा रू

जख—१ देखो 'जक्ष' (रू भे) उ०—गावै सुर नर नागर पुर, किन्नर राखस जख भगवत थारी ईसवर, लखी न जात अलख।—गजउद्धार
२ देवता (अ.मा)

जखचेर-स०पु० [स० यक्षेश्वर] कुबेर (अ मा, ना मा)

जखण-स०पु० [स० जक्षणम्] १ आहार, खाना (डि को)
२ देखो 'जक्ष' (रू भे)
रू०भे०--जखन।

जखणी-स०स्त्री० [स० यक्षिणी] १ यक्ष की पत्नी २ दुर्गा की एक अनुचरी का नाम।

जखन—देखो 'जखण' (रू भे.) उ०—नरा सुर जखन दानव नाग।
—रा रा

जखनायक—देखो 'जक्षनायक' (रू भे)

जखम-स०पु० [फा० जख्म] १ शरीर मे आघात, अस्त्र आदि के लगने के कारण होने वाला क्षत, घाव।
मुहा०—१ जखम खाणो—घायल होना २ जखम ताजो होणो—भूलो हुई विपत्ति या बात फिर मे याद आ जाना ३ जखम देणो—चोट पहुचाना ४ जखम माथै लूण भुरकाणो (छिडकणो) कष्ट मे और कष्ट देना।
२ सदमा।

जखमाइल, जखमायल-वि० [फा० जख्म+रा०प्र० आइल, आयल] आहत, घायल, जख्मी। उ०—१ राव नू सभाळे छै सो पग जखमाइल हुइ गयो तीसू ऊभो नही हुवो जावै।—डाढाळा सूर री वात
उ० —२ तो भूडण कही आज फौज करारी, पण कजियो आछो कियो छै और काल रो डील जखमायल छै तिणसू विसेस लड सकी नही।—डाढाळा सूर री वात

जखमी-वि० [फा० जख्मी] जिसे जख्म लगा हुआ हो, घायल।
उ०—सारी फौज रो लोग जखमी हुवो।—पदमसिंह री वात

जखराज, जखराट-स०पु०यौ० [स० यक्षराज] यक्षराज, कुबेर (अ मा, ना मा)

जखरात—देखो 'जक्षरात' (रू भे)

जखरो-स०पु०—सिंध का एक राजा समा गोत्र का यादव, इसका पूरा वश बाद मे मुसलमान हो गया जो आजकल पाकिस्तान मे बसते हैं।
उ०—जेहो, जलो, दादरो, जखरो, सोनग ओढो भाग सकाज। लालो हैम काछवो लाखो, इळ पर अमर जिके नर आज।—गोरधन खीची

जखलोक—देखो जक्षसलोक' (रू भे)

जखस—देखो 'जक्ष' (रू भे)

जखसनायक—देखो 'जक्षनायक' (रू भे)

जखसपुर—देखो 'जक्षपुर' (रू भे)

जखाणी-स०स्त्री०—१ यक्ष कन्या २ यक्ष पत्नी, यक्षिणी।

जखाराज-स०पु० [स० यक्षराज] कुबेर। उ०—रूपसीग तणा खत्रीवाट रा उजाळा राह, करै ठाळा मसला आठ रा उग्र काज। आप वाळा देण आगे पाट रा हुकमी आज, राळ काडै कपाट रा ताळा जखाराज।—जवान जी आढो
रू०भे०—जखाराज।

जखाधप, जखाधिप—देखो 'जक्षाधिप' (रू.भे)

जखाधी, जखाधीस-स०पु०यौ० [स० यक्षाधीश] कुबेर (ह ना मा)

जखाराज—देखो 'जखाराज' (रू भे)

जखि, जखी-स०स्त्री० [स० यक्षी] १ यक्षिणी। उ०—वनि इक समे रमै तिण वेळा, मिळ जखि सुता कुसुम हित मेळा।—सू प्र
२ कुबेर की स्त्री।
स०पु०—३ यक्ष।

जखीर, जखीरो-स०पु० [अ० जखीर॰] एक सी चीजो का सग्रह, ढेर, राशि, खजाना। उ०—१ तोप दगी दहु ओर ते भर सोर उपट्टै, लुट्टै माल जखीर दे नर हैमर कट्टै।—ला रा
उ०—२ किल्ला मे पाया और जेता जखीर, सावकही खडपुर नै कीना वहीर।—शि व
रू०भे०—जखेरो।

जखेंद्र-स०पु०यौ० [स० यक्षेन्द्र] कुबेर।

जखेरो—देखो 'जखीरो' (रू भे) उ०—१ करनाळ सुण तुरत हाडा आया सो हाथी घोडा तवू सारो जखेरो कुवर री नजर कियो।
—गौड गोपाळदास री वारता

उ०—२ पण एक गदोल्या जणी ऊपरै गुणती मैं (ल) जखेरी ले जावा।—पचमार री वात

जखेसर, जखेसुर, जखेस्वर—स०पु०यौ० [स० यक्षेस्वर] कुबेर।

जख्खणी—देखो 'जखणी' (रू भे) उ०—देवी जख्खणी भख्खणी देव जोगी।—देवि

जख्खु—देखो 'जक्ष' (रू भे)

जख्यप्रति—स०पु०यौ० [स० यक्षप्रीति] शिव (डिं ना मा)

जगनाथ—देखो 'जगन्नाथ' (रू भे) उ०—धन! धन! देव! देव! जगनाथ। ग्रमर काया रतनाळीय ग्राख।—वी दे.

जग—स०पु० [स० जगत्] १ ससार, जगत, दुनिया। उ०—सेवति नवं प्रति नवा सवे सुख, जग चा मिसि वासी जगती। रुखमिणि रमण तणा जु सरद रितु, भुगति रासि निसि दिन भगति।—वेलि

२ सासारिक लोग।

मुहा०—१ जग हसाई करणी—ऐसा काम करना जिससे ससार मे हसी हो २ जग हसाई कराणी—ससार मे हसी कराना ३ जग हसाई होणी—ससार मे हसी होना।

यौ०—जगकरण, जगकरता, जगकरम, जगचख, जगजणणी, जगजा'र, जगजीवण, जगजेठ, जगदीप, जगधणी, जगधर, जगनायक, जगनेरलेप, जगनैण, जगन्नप, जगपत, जगपाळक, जगपावन, जगपुरस, जगप्राण, जगवद, जगवदक, जगबाधव, जग-भल, जगभाळण, जगभावण, जगभासक, जगमण, जगमनमोहणी, जगमाय, जगमूरती, जगमोहण, जगरजण, जगराणी, जगवदण, जगवलभा, जगवासग, जगसत्रु, जगसाई, जगसाखी, जगसेव, जगहृयपत्र, जगहरता।

[स० यज्ञ] ३ देखो 'जिग' (रू भे, डिं को)

उ०—विहू रघु लक्खण पुत्र बुलाय, सभै जग बिस्वामित्र महाय।
—ह र

यौ०—जगकरम, जगकाळ, जगकुड, जगपात्र, जगफळ, जगवाहु, जगभाग, जगभूमि, जगमडळ, जगवाराह, जगवीरय, जगसाधन, जगसाळा, जगसास्त्र, जगसील, जगसूकर, जगसेन।

४ प्रज्वलित होने का भाव।

रू०भे०—जगि, जगी, जगु, जगू, जग्ग।

जगई—स०स्त्री० [स० जगती] पृथ्वी (जैन)

जगईस—स०पु० [स० जगदीश] जगदीश, ईश्वर, परमेश्वर।

जगकरण, जगकरता—स०पु०यौ० [स० जग+कर्ता] १ सृष्टिकर्त्ता, ईश्वर। (ना मा.)

उ०—१ ग्रमरपति जगकरण देव नर हर ग्रलख। चतुरभुज भजि चलण सामि घण कमळि चख।—पि प्र

उ०—२ कविराजा सू मद कवि, ग्रकस करै ग्रविचार। ग्रव जग-करता सू ग्रकस, करसी घट करतार।—बा दा.

२ ब्रह्मा, विधि।

जगकरम—स०पु०यौ० [स० यज्ञ+कर्म] १ यज्ञ का काम
[स० जगत कर्म] २ सासारिक कार्य।

जगकळपत—स०पु०—१ सहार. २ युगान्त, प्रलय-काल।

उ०—जगकळपत तणी पर जसवत, फेग लहर कहर फरियौ। लोह धार गैणाग लागता, 'ग्रोरग' वु जिम ऊजरियौ।—महेसदास ग्राढो

जगकारण—स०पु०—ईश्वर (ना मा.)

जगकाळ—स०पु० [स० यज्ञकाल] १ यज्ञ करने का निश्चित समय
२ पूर्णमासी।

जगकुड—स०पु०यौ० [स० यज्ञकुड] हवन की वेदी, यज्ञकुड।

जगगुरु, जगगुरू—देखो 'जगदगुरू' (रू भे) उ०—हरीखीय उग्रसेन बेटीय भेटीयउ वर ग्रवरोध। जगगुरु ग्रमीय समाणिय वाणीय जन-प्रतिबोध।—नेमिनाथ फागु

जगघण—स०पु० [सं० यज्ञघ्न] यज्ञ का विघ्नकारक, राक्षसादि।

जगचख, जगचक्ष, जगचक्षु, जगचल, जगचख्ख, जगचख्य, जगच्चक्षु, जगच्चख—स०पु०यौ० [स० जगच्चक्षु] सूर्य।

उ०—१ ग्रसवार सुरूप सतेज इसौ। जगचख ग्रनै सवतास जिसौ।
—सू प्र

उ०—२ ग्रसतूती छद मोतीदाम, वी मोहर हूस कहै नरनाथ। निमो जगचक्ष प्रतक्ष सुनात, नीमादि वसै सविचार ग्रहम।
—सूरज स्तुति

उ०—३ जळे चद्र मिल्यो थाई जगचख, रेणायर सासतो रहै। जय-माल उत जाइ छाडे जुध, वेणी जळ उपराठ वहै।
—रामदास राठौड मेडतिया री गीत

उ०—४ पौसाक जवहर पूर, जगचख्य जोति जहूर।—सू प्र

उ०—५ जगच्चख भाळत कौतुक जुद्ध। माळा कज सकर ठाळत मुद्ध।—मे म

रू०भे०—जगतचख।

जगजगाणो, जगजगावो—क्रि०ग्र०स०—१ जगमग करना, जगमगाना।
२ प्रज्वलित करना, जगाना।

जगजगायोडो—भू०का०कृ०—जगमगाया हुग्रा (स्त्री० जगजगायोडी)

जगजणणी—स०स्त्री०यौ०—१ जगत की माता, पार्वती (ह ना मा)
२ देवी, दुर्गा। उ०—महर करो मेहाई ग्राई, खैंचो डोरी ताण। मो कानी मत जा जगजणणी, क्रपा करो जन जाण।
—राघवदास भादो

जगजामी—स०पु०—जगत के पिता, ईश्वर, परमेश्वर।

उ०—जिण विलोकि कहियौ जगजामी। सिव छै सुखी सिवा तो स्यामी।—सू प्र.

जगजा'र—वि०पु० (यौ० जग+जाहिर) प्रसिद्ध, मशहूर, विख्यात।

उ०—१ सिवाणय रीढ़ बजाय सुसार, जिका वह खाग सिरे जग-जा'र।—पे रू

उ०—२ प्रसध नाम इधकार जगजा'रे माटीपणो, ग्रतुळ दातार कीरत उजाळा। भलम वाता चिहुँ वेस ग्रणिया भमर, वाह रे कवर ग्रवधेस वाळा।—र.रू.

जगजीत-वि०यौ०—ससार को विजय करने वाला, विजयी।

उ०—१ जिका वह तेग इसी जगजीत, रखी रयमाल भुजा बडरीत।
—पे रू

उ०—२ जगजीत परी माणै जिको जाणै न को जिहान मे। रणवास मैहल सूना रहै, आप रहै उद्यान मे।—पा प्र

जगजीव-स०पु० [स० जगज्जीव, जगज्जीह्व] शकर, सदाशिव (अ मा)

जगजीवण, जगजीवन-स०पु०यौ० [स० जगज्जीवन] १ ससार को जीवन देने वाला—यथा बादल, जल आदि (अ मा, ना डि को) २ ईश्वर, विष्णु।

जगजेठ, जगजेठी-स०पु० [स० जगत्+ज्येष्ठ] १ ईश्वर। उ०—गजे रिम केता गरव, धार सरब ब्रद धेठ। दे कोडा दुजवर दरब, जीत परब जगजेठ।—र ज प्र

२ ब्रह्मा. ३ योद्धा, शूरवीर। उ०—१ बहादर जीवण रौ रण वोह, 'लखौ' खळ थाट विभाडत लोह। निजोड बीजळ मूगळ नेठ, जुरावर जोग तणौ जगजेठ।—सू प्र

उ०—२ जाडा थडा जुडै जगजेठी, चाडापुरी भणै इक चाव। गळिया पीयण गुणा रा गाडा, अलवलिया लाडा रथ आव।—महादान महडू

४ राजा। उ०—जुडै जिया दखणाद जगजेठ राण जगा, घोकवा पीर पतसाह धायौ। ताहरै ताप चीतोड रौ राज तज, ऐवडै फेर अजमेर आयौ।—महाराणा बडा जगतसिंह रौ गीत

५ पहलवान। उ०—यम तडफडता अडै वाहि जमदाढ वहाडै, डाव घाव डोरिया जाणि जगजेठ अखाडै।—सू प्र

रू०भे०—जगज्जेठ।

जगजोनि-स०पु० [स० जगत्+योनि] ब्रह्मा।

जगज्जेठ—देखो 'जगजेठ' (रू भे) उ०—इद्री पच जीपै महासूर एहा, जगज्जेठ जोधा हणम्मान जेहा।—वचनिका

जगझप-स०पु० [स०] प्राचीन काल मे युद्ध मे बजाया जाने वाला चमडे का मढा हुआ एक प्रकार का बाजा।

जगढाल-स०पु०—जगत का रक्षक। उ०—ज्या दीहा सिवराज सुत, राणौ रायामाल। ज्या दीहा जोवण जिसौ, उमराणौ जगढाल।
—बा दा

जगण-स०पु० [स०] १ छद शास्त्र मे तीन अक्षरो का एक गण जिसके बीच मे गुरु तथा आसपास के अक्षर लघु होते हैं।ISI

२ जलन, दाह।

जगणी-स०स्त्री०—अग्नि (ह.ना मा)

जगणौ, जगवौ—देखो 'जागणौ, जागवौ' (रू भे) उ०—१ तठा उपरायत दारू रा घडा मगायजै छै, सू दारू किण भात रौ छै? अैराक रौ वैराक, सदली रौ कदली, फूल रौ अतर बाती बळै धुवाधोर तिवारा रौ काढियौ, ओदी वाड मे नाखिया जग उठै।—रा सा स

उ०—२ ऊची ऊची मेडी झरोखा जी च्यार, झबर-झबर दिवलो जगै जी राज।—लो गी

जगत-स०पु० [स० जगत्] १ ससार, दुनिया

यौ०—जगतअबा, जगतउपाता, जगतगुर, जगतचख, जगतठाम, जगतनाथ, जगतपति, जगतपिता, जगतप्राण, जगतभेदण, जगतमावीत्र, जगतमोहणी, जगतरोपण, जगतसाधार, जगतसेठ, जगत्पति, जगत्माता, जगत्मोहिनी, जगत्राता, जगत्साक्षी।

२ वायु ३ महादेव।

रू०भे०—जक्त, जगत, जगद।

जगतअबा-स०स्त्री०यौ० [स० जगदबा] देवी, महाशक्ति, जगजननी।

जगतउपाता-स०पु०यौ० [स० जगदुत्पादयिता] ब्रह्मा (डि को)

जगतगुर, जगतगुरू—देखो 'जगदगुरू' (रू भे) उ०—१ निरधारा आधार जगतगुर, तुम बिन होय अकाज।—मीरा

उ०—२ सबळा विरद वहण सूजावत, अबळा बळी अचळ ऊवेळ। जगळ जपै राज जगळवै, जगतगुरू पहिलौ जग छेळ।
—महाराजा करणसिंह रौ गीत

जगतचख—देखो 'जगचख' (रू भे) उ०—जैत भूप 'जेत' री हार 'कमरा' री होमी। अड पोसी मुंडमाळ, जगतचख कौतुक जोसी।
—मे म

जगतठाम-स०पु०यौ०—ईश्वर, परमेश्वर, विष्णु। उ०—विमळ आणद लिखमीवर, जगतठाम जगसामि। जगत रोपणं जगरजण, जगवदण जगजेठ।—पीरदान लाळस

जगतण-स०स्त्री०—१ सासारिक स्त्री २ वेश्या, पतुरिया।

उ०—जगतण कू भगतण कहै, कहै चोर कू साह। चाकर कू ठाकर कहै, तीनू राह कुराह।—अज्ञात

जगतनाथ—देखो 'जगन्नाथ' (रू भे)

जगतपत, जगतपति-स०पु०यौ० [स० जगदपति] जगत के पति, ईश्वर।

उ०—ऊठिया जगतपति अतरजामी, दूरतरी आवतौ देखि। करि वदण आतिथ श्रम कीधौ, वेदे कहियौ तेणि विसेखि।—वेलि

रू०भे०—जगत्पति, जगपत, जगपत्त, जगपत्ती।

जगतपिता-स०पु०यौ०—ब्रह्मा (ना मा)

जगतप्राण-स०स्त्री०यौ० [स० जगत प्राण] वायु, हवा (ह ना)

जगतभेदण-स०पु०यौ० [स० जगत भेदन] १ शिव, महादेव २ विष्णु, ईश्वर। उ०—जगतभेदण, जगतभजण, जगदीस जयौ तू मूळ जग। जगतधिणी तू जोरवर, जग माहि मरै जीवै जगत।—पीरदान लाळस

जगतमावीत्र-स०पु०यौ० [स० जगन्मातपितरौ] राजा (डि.ना मा)

जगतमोहणी-स०स्त्री०यौ०—महामाया, दुर्गा।

जगतरण-स०पु०यौ० [स० जगत्तारण या जगत्राण] जग को तारने वाला, ईश्वर।

जगतरोपण-स०पु० [स० जगद्रोपण] विष्णु, ईश्वर। उ०—विमळ आणद लिखिमीवर, जगत ठाम जग सामि। जगतरोपण जगरजण, जगवदण जगजेठ।—पीरदान लाळस

जगतसाखी-स०पु०यौ० [स० जगत्साक्षी] १ ईश्वर २ सूर्य।

जगतसाधार-स०पु०यौ०—जगत की रक्षा करने वाला, ईश्वर।

जगतसेठ–स०पु०यौ० [स० जगत्+श्रेष्ठिन्] १ बहुत बडा धनी महाजन. २ प्राचीन समय मे राजाओ या बादशाहो द्वारा किसी धनी व्यक्ति को दी जाने वाली उपाधि ३ यह उपाधिप्राप्त व्यक्ति।

जगतारण–स०पु०—परमेश्वर, ईश्वर (ह.ना)

जगति–स०स्त्री०—१ द्वारिका। उ०—दिन लगन सु नैडो दूरि द्वारिका, भो पहुचेस्या किसी भति। साभ्क सोचि कुदणपुरि सूतो, जागियो परभाते जगति। वेलि

२ देखो 'जगती' (रू भे) उ०—बीजापुरी सैन बीतो वजाऐ जेआई वाजा, जीती-जीती महाराजा वदीतो जगति।—दूदो वीठू

जगतिलक–स०पु०—एक प्रकार का घोडा (शा हो)

जगती–स०स्त्री० [स०] १ ससार, भुवन। उ०—सु मानुखी लीला को सग्रह करि अर जगती रै विखै वसीया।—वेलि टी

२ पृथ्वी (ह ना, ना मा) उ०—जगती पर साख भरै जिणरा, कर दोघ मजीराय कुदण रा।—पा.प्र.

३ जबुद्वीप का कोट (जैन)

रू०भे०—जगति, जगत्ति, जगत्ती।

यौ०—जगतीतळ।

जगतीतळ–स०पु०यौ० [स० जगती+तल] पृथ्वी, भूमि।

जगतेस–स०पु० [स० जगदीश] ससार के स्वामी, ईश्वर।

जगतेसुर–स०पु० [स० जगदीश्वर] महादेव, शिव (अ.मा) ईश्वर, विष्णु।

जगत्ति, जगत्ती—देखो 'जगती' (रू भे) उ०—पुराणी प्रभु वचाणी पत्ति, जगत्पति तू ही सव्व जगत्ति।—ह र

जगत्पति —देखो 'जगतपति' (रू भे)

जगत्माता–स०स्त्री०—दुर्गा।

जगत्मोहिनी–स०स्त्री० [स० जगन्मोहिनी] महामाया, दुर्गा।

जगत्र—देखो 'जगत' (रू भे) उ०—१ समस्त नर जगत्र वैसानर परसतो रहियो—वेलि टी उ०—२ वधियो जिमि इद्र समद्र वरै, कुळि भाण वखाण जगत्र करै।—ल पिं

जगत्राता–स०पु०यौ० [स० जगत्त्राता] १ ससार की रक्षा करने वाला, ईश्वर २ प्रजा की रक्षा करने वाला, राजा।

उ०—दीनन के दाता जगत्राता जसवत जैसे, विमळ विधाता सब वातन विसेस के।—ऊ का

३ यज्ञ की रक्षा करने वाला ४ पडित।

जगतसाक्षी–स०पु० [स०] सूर्य।

जगदब, जगदवा, जगदबि, जगदबिका, जगदबी, जगदभा–स०स्त्री० [स० जगदबा] देवी, दुर्गा, पार्वती आदि (डिं को) उ०—१ सुणिया साद सतेज, आई आगळ आवता। जगदब, अब वर्यों जेज, करी इती तैं करनला।—अज्ञात

उ०—२ घणी जगदबि घकै घमसाण, बूढो कवि दाखि सकै न वखाण।—मे म उ०—३ चौसट अवधान तणी चतुराई, बोनण माहराजा विरद। सूरी मिळी धारणा ख्याता, जगदभा तो कृपा जद।—वा दा

जगद—देखो 'जगत' (रू भे) उ०—वड जगद विसतारै निधि मेधा तुभ्योनम।—रा रा

यौ०—जगदगुर, जगदगौरी, जगदजोणी, जगदाधार, जगदाधिप, जगदानद।

जगदगुर, जगदगुरु, जगदगुरू–स०पु० (यौ० जगद्गुरु) १ परमेश्वर. २ शिव ३ पूज्य एव अत्यत प्रतिष्ठित व्यक्ति ४ शकराचार्य की गद्दी के महत की उपाधि. ५ ब्राह्मण।

रू०भे०—जगगुर, जगगुरु, जगगुरू, जगतगुर, जगतगुरू।

जगदगौरी–स०स्त्री०यौ० [स० जगद्गौरी] १ दुर्गा देवी २ मनसा देवी।

जगदजोणी–स०पु० [स० जगद्योनि] १ शिव. २ विष्णु। स०स्त्री०—३ पृथ्वी।

जगदत–स०पु० [स० यज्ञदत्तक] यज्ञ के प्रसाद स्वरूप जन्म लेने वाला पुत्र।

जगदातार–स०पु०यौ० [स० जगद्दातार] १ महादानी, दानवीर।

उ०—अनवी नरा नवा नवासी, अवतार लियो ऊदापती, जगदातार जवानसी।—अज्ञात

२ ईश्वर, परमेश्वर।

जगदाधार–स०पु०यौ० [स०] परमेश्वर २ वायु (ना मा)

जगदाधिप–स०पु०यौ० [स०] विष्णु का एक नाम।

जगदानद–स०पु० [स०] १ परमेश्वर, ईश्वर. २ श्रीकृष्ण। उ०—विख विसहर डसीयो, गारू डी स्रीगोविंद। अति अग भाजइ लहर, वाजइ जीवीई जगदानद।—रुकमणी मगळ

जगदिवलो, जगदीप–स०पु०यौ० [स० जगद्दीप] १ सूर्य्य (डिं को)

उ०—रात रै काळै डूगर लार, हमै है रूपाळो परभात। पळकती जगदिवलै री जोत, मुळकती मिनख पणै री जात।—साभ्क

२ शिव ३ परमेश्वर।

रू०भे०—जगद्दीप।

जगदीस, जगदीसर, जगदीसवर, जगदीस्वर, जगदीस्वरू–स०पु० [स० जगदीश, जगदीश्वर] १ परमेश्वर, ईश्वर परमात्मा (ह ना, ना मा)

उ०—१ लीध ओट प्रहळाद, पिता तद कोप प्रगासै। जिणरै हित जगदीस, भाज खब नरहर भासै।—र रू.

उ०—२ जीहा जप जगदीसवर, धर धीरज मन ध्यान। करमबध-निकरम-करण, भव भजण भगवान।—ह र

उ०— ३ हा हा जगदीस्वर भैंडी पुळ हेरी, गाफल दुनिया पर ऐडी पुळ गेरी।—ऊ का

उ०—४ इणि परिइ जगदीस्वरू ध्याइयइ स्तवन नइ मिसि उलग लाइयइ।—अर्बुदाचल वीनती

२ श्रीकृष्ण। उ०—१ लीलाधरण ग्रहे मानुखी लीला, जगवासग वसिया जगति। पित प्रदुमन जगदीस पितामह, पोतो अनिरुध ऊखा-पति।—वेलि

उ०—२ रमता जगदीसर तणी रहसि रस, मिथ्या वयण न तासु महे। सरसै रुखमणि तणी सहचरी, कहिया मू मैं तेम कहे।—वेलि
३ विष्णु (डि को) ४ शिव, महादेव।
रू०भे०—जगादीस।

जगदीस्वरी–स०स्त्री० [स० जगदीश्वरी] भगवती, देवी, दुर्गा।

जगद्दीप—देखो 'जगदीप' (रू भे)

जगद्धाता–स०पु० [स० जगद्धातृ] १ ब्रह्मा २ विष्णु।

जगद्धात्री–स०स्त्री० [स०] १ दुर्गा की एक मूर्ति २ सरस्वती।

जगध–स०पु० [स० जग्धि, जग्धि] भोजन (ह ना)

जगधणी–स०पु०यौ०—ईश्वर, परमेश्वर। उ०—वामण देव गुरुड खग वाहण, धरणी धरण जगधणी। प्रामै कमण पार परमेसर, त्रीकम वडिम तूझ तणी।—पिं प्र

जगधर, जगधार–स०पु०—जगत को धारण करने वाला, शेषनाग, ईश्वर। उ०—भै पड सह सत्र हर भजै, भमग तजै सिर भार। जगधर गिर डोलै 'जमू', तू तौले तरवार।—पदमसिंह आढौ

जगन—देखो 'जिगन' (रू भे) (डि को) उ०—१ जेहा केहा ज्याग, हैवर राखोडा हुवै। ताजी दीजै त्याग, जस लीजै सोई जगन।—वा दा
उ०—२ जोवै जा ग्रिहि ग्रिहि जगन जागवै, जगनि जगनि कीजै तप जाप। मारगि मारगि अब मौरिया, अबि अबि कोकिल आलाप।—वेलि
उ०—३ झीण गठजोड पट वाध कर झालियौ, जठै वर बीदणी हेत जोडी। चारण तणौ वित धाड नै चालियौ, घालियौ जगन मे विघन घोडी।—गिरवरदान सादू

जगनक–स०पु०—परमार के दरवार का एक प्रसिद्ध कवि।

जगनराय–स०पु०यौ० [स० यज्ञि (द्विज) राज] चद्रमा (डि को)

जगनामौ–वि०—विख्यात, प्रसिद्ध।

जगनात—देखो 'जगन्नाथ' (रू भे)

जगनाती–स०पु०—१ एक बनावट विशेष का छोटा जल-पात्र (शेखावाटी) २ एक प्रकार का कपडा।

जगनाथ—१ देखो 'जगन्नाथ' (रू भे.) २ श्रीकृष्ण (अ मा)

जगनायक–स०पु०यौ०—१ परमेश्वर, ईश्वर २ विष्णु (डि को)

जगनाह—देखो 'जगन्नाथ' (रू भे)। उ०—गाढउ वीहउ छउ जगनाह, कृमि कूटी नइ कीधउ गाह।—चिहुगति चउपई

जगनेरलेप–स०पु०यौ० [स० जगन्निर्लेप] विष्णु (ह ना)

जगनैण–स०पु० [स० जगन्नयन] सूर्य (डि को)

जगन्नाथ–स०पु० [स०] १ ससार के स्वामी, परमेश्वर. २ विष्णु ३ उडीसा के अतर्गत पुरी नामक स्थान मे स्थित विष्णु की एक मूर्ति।
रू०भे०—जगनाथ, जगनात, जगनाथ।

जगन्नृप–स०पु०यौ० [स० जगन्नृप] परमेश्वर। उ०—नाम नाव चढियौ हू जगनृप, रखे हवै डोलू रावण रिप।—ह र.

जगपत, जगपति, जगपत्त, जगपत्ती—देखो 'जगतपति' (रू भे)
उ०—१ जनकसुता मनरजण जगपत्त, भजण खळ रावण भाराथ।—र ज प्र
उ०—२ कळिया गाडा काढतौ, दे काधौ बड दोर। हुव धवळौ वूढौ हुवौ, जगपत सू की जोर।—वा दा
उ०—३ अकबर समुद्र पर आवियौ, साह सहसा आठ सिर। जीपणौ पाण जगपत्त रै, और माण सोई अथिर।—रा रू.

जगपात्र–स०पु०यौ०—यज्ञपात्र।

जगपाळ, जगपाळक–स०पु०यौ० [स० जगत् पालक] १ जगतका पालन करने वाला ईश्वर २ राजा, नृप।

जगपावन–स०स्त्री०यौ०—गगा, भागीरथी (ह ना., अ मा)

जगपुड–स०स्त्री०—पृथ्वी, जमीन। उ०—जगपुड 'जगा' पाखरा जगम, रमहर माथै घात रहै। रुकमा जोत्र जोखिया राणा, पडिया जोखै दिली पहै।—महाराणा जगतसिंह रौ गीत

जगपुरस–स०पु०यौ० [स० यज्ञ पुरुष] विष्णु।

जगप्राण—स०पु०यौ० [स० जगत्+प्राण] वायु, हवा (डि को)

जगफळ–स०पु०यौ० [स० यज्ञफल] यज्ञ का फल।

जगफळदाता–स०पु०यौ० [स० यज्ञ फलदातृ] विष्णु।

जगबद–वि०यौ० [स० जग+वद्य] जिसकी जगत् वदना करे, विश्ववद्य।

जगवदक–स०पु०यौ०—चद्रमा (ना मा)

जगबधव, जगबधु, जगबाधव–स०पु०यौ० [स० जगत्+वधु] ईश्वर, परमात्मा। उ०—सम्मेत सिखर समरीजइ, अजित प्रमुख तीथकर वीस। सुकळ ध्यान धरि सिव पहुचता, जगबधव जगगुरू जगदीस।—स कु.

जगबाहु–स०पु०यौ० [स० यज्ञबाहु] आग, अग्नि (डि को)

जग-भल–वि०यौ०—१ वह जिसकी ससार मे कीर्ति हो (बा दा) २ वह जो यशस्वी हो ३ वह जो ससार का कल्याण चाहता हो (बा दा.)

जगभाग–स०पु०यौ० [स० यज्ञ भाग] यज्ञ का एक भाग।

जगभाळण–स०पु०यौ—आख (ना डि को)

जगभावण, जगभावन–स०पु०यौ०—ईश्वर, परमात्मा। उ०—भाव भगत करतौ जगभावन। पतित सरीर करिस मम पावन।—ह र

जगभासक–स०पु०यौ०—१ प्रकाश (ना.मा.) २ सूर्य।

जगभूमि–स०पु०यौ० [स० यज्ञ भूमि] वह स्थान जहा यज्ञ किया जाता हो।

जगमडळ–स०पु०यौ० [स० यज्ञमडल] यज्ञमडल।

जगमग–वि०—जो जगमगाता हो, प्रकाशित, चमकीला। उ०—१ महि प्रगटि रास विलास मगळ, अमळ रेण अकास ए। सोभति रिख गण चद्र सोभा, किरण जगमग कास ए।—रा रू
उ०—२ पिंड पिंड दस दस सिर परठि सिर सिर छत्रधारे। जगमग हीर जडाव जोति आदित आभारे।—सू प्र
रू०भे०—जगामग, जगामगि।

जगमगणौ, जगमगवौ–क्रि०अ०—१ चमकना, झलकना, दमकना।

उ०—१ जगमगत दीपक जोत, अति जोति पति उद्योत ।—रा रू

उ०—२ वपु नील वसन मझि इम वखाण । जगमगत घटा मझि छटा जाण ।—सू प्र

२ प्रज्वलित होना । उ०—विखम खीज जिण बार, जैत' भूपति उर जगी । सुरा घिरत सजोग, ज्वाळ जाणं जगमगी ।—मे म

जगमगाट—स०स्त्री०—जगमगाने का भाव, चमक, चमचमाहट ।

उ०—अवासा कळस भळहळ अपारा, जगमगाट जाळिया । काच चानण चित्रकारै, गखि गोख सोहिया ।—वखतो खिडियो

रू०भे०—जगमगाहट ।

जगमगाणौ, जगमगावौ—क्रि०अ०स०—१ चमकना, झलकना, दमकना, प्रकाशित होना २ चमकाना, झलकाना, दमकाना, प्रकाशित करना ।

जगमगायोडौ—भू०का०कृ०—१ चमका हुआ, झलका हुआ, दमका हुआ. २ प्रकाशित किया हुआ, चमकाया हुआ (स्त्री० जगमगायोडी)

जगमगाहट—देखो 'जगमगाट' (रू भे)

जगमण—देखो 'जगमिणि' (रू भे) उ०—अरघ दीध अरक नू जयौ जगमण तम-जारण ।—भगवानजी रतनू

जगमनमोहणी—स०स्त्री०यौ० [स० जगत्-मनमोहिनी] जमीन (अ मा)

जगमहिराण—स०पु०—एक प्रकार का शुभ लक्षणो का घोडा (शा हो.)

जगमाय—स०स्त्री०यौ० [स० जगन्मातृ] जगत की माता, देवी, शक्ति, दुर्गा । उ०—तनि दरसाणी सीतळा, जुगराणी जगमाय । सरम ग्रही देवा सुरा, सुख कज धरम सहाय ।—रा रू

जगमालोत—स०पु०—राठौडो की एक उपशाखा जो राठौड राव रिड-मलजी के पुत्र जगमाल के वशज है, इस शाखा का व्यक्ति ।

जगमिणि—स०पु०यौ० [स० जगद्मणि] सूर्य ।

उ०—महपति धरमबभ कुळ जगमिणि । तीरथराज राज दीधो तिणि ।—सू प्र

जगमूरति—स०पु०यौ० [स० जगन्मूर्ति] १ ईश्वर (ना मा) २ विष्णु ।

जगमोहण, जगमोहन—स०पु०यौ० [स० जगन्मोहन] १ ईश्वर ।

उ०—बदरी टीकम परम बुध, जगमोहण जैकार । घणदाता आणद-घण, स्रीपति सब आधार ।—ह र

२ विष्णु ३ एक प्रकार का घोडा (शा हो.) ४ एक प्रकार का बढिया शराब ।

जगय—स०पु० [स० यकृत] कलेजा (जैन)

जगरजण—स०पु०यौ० [स० जगद्रजन] ईश्वर, परमात्मा ।

उ०—विमळ आणद लिखिमीवर, जगतठाम जगसामि । जगत रोपण, जगरजण, जगवदण जगजेठ ।—पीरदान लाळस

जगर—स०पु० [फा० जिगर] १ कलेजा, यकृत ।

उ०—समहर धर भर बाहदर असमर, कटै वैर हर भर कुरख । जगर खून आवटै श्रीया जा, सर चौसट ऊछटै सुरख ।

—कविराजा करणीदान

२ चित्त, मन ३ साहस, हिम्मत ४ गूदा, सार ५ अग्नि, आग । [स० ६ कवच । (डि को)

जगराणी—स०स्त्री०यौ० [स० जगद्+राज्ञी] १ ससार की स्वामिनी—देवी, दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी आदि । उ०—म्हू चित रौ मूढ़ हू पण हे वाणी सरस्वती देवी तू जगराणी जगत री मालक है सो म्हारो सरम राखजे ।—वी म टी

[यौ० जगत+रानी] २ जगत की स्त्री, वेश्या, पतुरिया ।

जगराज—स०पु० [स० यज्ञिराज ?] १ चद्रमा का एक नाम २ ऋषि, तपस्वी (अ मा)

जगराय—स०पु०—जगतराज, ईश्वर, शिव ।

जगराया—स०स्त्री०—देवी, शक्ति, दुरगा । उ०—माया रूपी मेह रै, आया घर ऊदोत । कहवाया करनी कळू, जगराया निज जोत ।

—अज्ञात

जगरै—स०पु०—(घोडी का) ऋतुमति होना ।

क्रि०प्र०—आणी, होणी ।

जगरौ—स०पु०—१ शीघ्र जल उठने वाले पदार्थों (यथा-सूखे कांटे, घास आदि) का जलाने के उद्देश्य से लाया हुआ महीन चूरा २ जलती हुई अग्नि ।

जगलिग—स०पु०यौ० [स० यज्ञलिग] कृष्ण का एक नाम ।

जगळ, जगळाण—स०स्त्री०—कोल्हू मे अधकचरे किये हुए तिल । (मि० कचर, ३)

जगवदण—स०पु०यौ० [स० जगद्वदन] ईश्वर (ना मा)

उ०— विमळ आणद लिखिमीवर, जगतठाम जगसामि । जगतरोपण जगरजण, जगवदण जगजेठ ।—पीरदान लाळस

जगवलक—स०पु० [स० वज्रवल्क] याज्ञवल्क्य नामक एक प्राचीन ऋषि के पिता का नाम ।

जगवलभा—स०पु०यौ० [स० जगद्+वल्लभा] वेश्या (अ मा)

जगवाणौ, जगवावौ—क्रि०स० ('जगणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ सोते हुए को उठवाना, निद्रा मे विघ्न डलवाना २ जागरण करवाना ।

उ०—ढोला म्हारी देवर-जेठाणी बुलावो । म्हारै महला छठी जगवावौ ।—लो गी

३ उत्साह दिलाना ।

जगवायोडौ—भू०का०कृ०—१ जगवाया हुआ २ जागरण कराया हुआ ३ उत्साह दिलाया हुआ (स्त्री० जगवायोडी)

जगवाराह—स०पु० [स० यज्ञवराह] विष्णु का एक नाम ।

जगवासग—स०पु०यौ०—जगत को बसाने वाला, ईश्वर ।

उ०—लीलाधण ग्रहे मानुखी लीला, जगवासग वसिया जगति ।

—वेलि

जगवीरय—स०पु०यौ० [स० यज्ञवीर्य] विष्णु का एक नाम ।

जगवेल—स०स्त्री०—सोमलता ।

जगसतोख—स०स्त्री०यौ०—नदी (अ मा)

जगसत्रु—स०पु०यौ० [स० यज्ञशत्रु या जगत्+शत्रु] राक्षस ।

जगसव्वदसी–वि० [स० जगत्सर्वदर्शी] समस्त जगत को देखने वाला (जन)

जगसाई, जगसामि, जगसामी–स०पु०यौ० [स० जगत्स्वामी] ससार का स्वामी, ईश्वर । उ०— विमळ आणद लिखिमीवर, जगतठाम जगसामि ।—पीरदान लाळस

जगसाखी–स०पु०यौ० [स० जगत्साक्षी] सूर्य (डि को)

जगसाधन–स०पु०यौ० [स० यज्ञसाधन] विष्णु का एक नाम ।

जगसाधार–वि०—जगत की रक्षा करने वाला ।
उ०—धिन धिन मा करणी जगसाधार, पावै कुण नामा गिणै पार ।—रामदान लाळस
ईश्वर ।

जगसाळा–स०पु०यौ० [स० यज्ञशाला] यज्ञशाला, यज्ञमडप ।
[स० जगत्+श्यालक:] वेश्या का भाई ।

जगसास्त्र–स०पु०यौ० [स० यज्ञशास्त्र] वह शास्त्र जिसमे यज्ञ करने का विधान हो ।

जगसील–स०पु०यौ० [स० यज्ञशील] वह जो यज्ञ करता हो ।

जगसूकर–स०पु० [स० यज्ञशूकर] विष्णु ।

जगसेन–स०पु०यौ० [स० यज्ञसेन] विष्णु का एक नाम ।

जगसेव–स०पु०यौ०—शिव, महादेव (अ मा)

जगस्वामी–स०पु०यौ० [स० जगत्स्वामी] १ ईश्वर २ विष्णु ।

जगह—देखो 'जगा' (रू भे)

जगहत्य, जगहथ–स०पु०— १ दिग्विजय करने की क्रिया । उ०—१ तरु ताळ पत्र ऊचा तडि तरळा, सरळा पसरता सरगि । वैठे पाटि वसत वधिया, जगहथ फिरि ऊपरी जगि ।—वेलि
उ०—२ जगहत्य जगतसिर जळहळै, दस दिगपाळ दहक्कवै । 'महिमाल' छहा जिहा सातमो, चौथै पहोरै चक्कवै ।—सू प्र

जगहथपत्र—स०पु०यौ० [स० जगद्हस्तपत्र] दिग्विजय का घोषणा-पत्र, दिग्विजय का चुनौती पत्र ।

जगहरता–स०पु०यौ०—ईश्वर (ना मा)

जगहेत–स०पु०—ब्रह्मा (ना मा)

जगहोता–स०पु० [स० यज्ञहोतृ] यज्ञ के समय देवताओ को आह्वान करने वाला ।

जगा–स०स्त्री० फा० जायगाह] १ स्थान, स्थल । उ०—तो सलावत खा कही–जो वादसाह रा हुकम ई तरह का ही जे है तो और कैसी जगा मेलें ।—राठौड अमरसिंह री वात
मुहा०—जगा-जगा—सब स्थानो पर, सर्वत्र, थोडी-थोडी दूर, वहुत से स्थानो पर ।
२ पद, ओहदा ३ स्थिति. ४ मौका, अवसर ५ मकान ।
रू०भे०—जगह, जघा, जागा जायगा ।

जगाइणौ, जगाइवौ—देखो 'जगाणौ' (रू भे)

जगाचख—देखो जगचख' (रू भे.)
उ०—चत्र जाग विनीत उदोत जगाचख । सजि रीझ विदा किय तीस छहे सख ।—सू प्र

जगाजोत, जगाजोति–स०स्त्री०—जगमगाहट । उ०—१ जगाजोत आदीत री जोत ओपं । उभै हीर चामीर मे स्रग ओपै ।—सू प्र
उ०—२ फौजा ऊपरा ऊजळा भाला रा डवर भळळाट करि जगा-जोति जागी ।—वचनिका

जगाणौ, जगावौ–क्रि०स०— १ नीद से उठाना ।
कहा०—ऊगियोडौ (सूतौ) हूं तो जगावै पण ओ तो जागतौ घोराजै—सोते हुए को जगाना तो सहज है किन्तु जो सोने का बहाना करता है उसे किस प्रकार से जगाया जाय । जानबूझ कर किसी कार्य को करने वाले को उस कार्य से विरत या विमुख करना कठिन होता है ।
२ होश दिलाना ३ फिर से ठीक स्थिति मे लाना ४ प्रज्वलित करना । उ०—कामनी जु स्त्री तहा जु दीपक जगाया छै ।
—वेलि टी.
५ किसी कार्य के लिये उत्तेजित करना या तैयार करना ।
उ०—कोयल लाज करत जगावै कामनै, रीझावै अदभुत आतमा-राम नै ।—बा दा
६ किसी विशेष देव, सिद्ध आदि के निमित्त रात्रि-जागरण कराना ।
जगाणहार, हारौ (हारी), जगाणियौ—वि० ।
जगायोडौ—भू०का०कृ० ।
जगाईजणौ, जगाईजवौ—कर्म वा० ।
जगणौ, जगबौ –अक०रू० ।
जगाडणौ, जगाडवौ, जगावणौ, जगाववौ—रू०भे० ।

जगात–स०स्त्री० [अ० जकात] १ पुण्य हेतु दिया जाने वाला धन, खैरात. २ कर, महसूल । उ०—पातसाहजी फुरमाया—च्यार लाख रुपया लगाय सूरत दोळो कोट करावणौ, एक वरस री जगात वोपारिया नू माफ कीवी ।—नापा साखला री वारता
रू०भे०—जकात ।

जगातमा–स०पु० [स० यज्ञात्मा] विष्णु ।

जगाती—देखो 'जकाती' (रू भे)

जगादीस—देखो 'जगदीस' (रू भे) उ०—सही सेस लाख मणा धारि सोधा । जगादीस राघौ सको देव जोधा ।—सू प्र

जगामग, जगामगि—देखो 'जगमग' (रू भे) उ०—वणि हीर जगामगि अस्टवळो । महले किर दीपक माळ मिळी ।—रा रू

जगायोडौ—१ जगाया हुआ, नीद से उठाया हुआ २ प्रज्वलित किया हुआ ३ होश दिलाया हुआ ४ फिर से ठीक स्थिति मे लाया हुआ ५ किसी कार्य के लिये उत्तेजित किया हुआ या तैयार किया हुआ.
६ (किसी विशेष देव, सिद्ध आदि के निमित्त) रात्रि जागरण कराया हुआ ।
(स्त्री० जगायोडी)
रू०भे०—जगावियोडौ ।

जगार, जगारि, जगारी–स०पु० [स० यज्ञारि अथवा जगद्+अरि] राक्षस ।

उ०—१ जगमगत दीपक जोत, अति जोति पति उद्योत। —रा रू

उ०—२ वपु नील वसन मझि इम वखाण। जगमगत घटा मझि छटा जाण।—सू प्र

२ प्रज्वलित होना। उ०—विखम खीज जिण वार, जैत' भूपति उर जगी। सुरा धिरत सजोग, ज्वाळ जाणै जगमगी।—मे म

जगमगाट-स०स्त्री०—जगमगाने का भाव, चमक, चमचमाहट।

उ०—अवासा कळस झळहळै अपारा, जगमगाट जाळिया। काच चानण चित्रकारे, गखि गोख सोहिया।—वखती खिडियो

रू०भे०—जगमगाहट।

जगमगाणौ, जगमगावौ-क्रि०अ०स०—१ चमकना, झलकना, दमकना, प्रकाशित होना २ चमकाना, झलकाना, दमकाना, प्रकाशित करना।

जगमगायोडौ-भू०का०कृ०—१ चमका हुआ, झलका हुआ, दमका हुआ. २ प्रकाशित किया हुआ, चमकाया हुआ (स्त्री० जगमगायोडी)

जगमगाहट—देखो 'जगमगाट' (रू भे)

जगमण—देखो 'जगमिणि' (रू भे) उ०—अरघ दीव अरक नू जयौ जगमण तम-जारण।—भगवानजी रतनू

जगमनमोहणी-स०स्त्री०यौ० [स० जगत्-मनमोहिनी] जमीन (अ मा)

जगमहिराण-स०पु०—एक प्रकार का शुभ लक्षणो का घोडा (शा हो.)

जगमाय-स०स्त्री०यौ० [स० जगन्मातृ] जगत की माता, देवी, शक्ति, दुर्गा। उ०—तनि दरसाणी सीतळा, जुगराणी जगमाय। सरम ग्रही देवा सुरा, सुख कज धरम सहाय।—रा रू

जगमालोत-स०पु०—राठौडो की एक उपशाखा जो राठौड राव रिड-मलजी के पुत्र जगमाल के वशज हैं, इस शाखा का व्यक्ति।

जगमिणि-स०पु०यौ० [स० जगद्मणि] सूर्य।

उ०—महपति धरमवभ कुळ जगमिणि। तीरथराज राज दीघो तिणि।—सू प्र

जगमूरति-स०पु०यौ० [स० जगन्मूर्ति] १ ईश्वर (ना मा) २ विष्णु।

जगमोहण, जगमोहन-स०पु०यौ० [स० जगन्मोहन] १ ईश्वर।

उ०—वदरी टीकम पग्स वुध, जगमोहण जैकार। घणदाता आणद-घण, स्रीपति सव आधार।—ह र

२ विष्णु ३ एक प्रकार का घोडा (शा हो.) ४ एक प्रकार का वढिया शराव।

जगय-स०पु० [स० यकृत] कलेजा (जैन)

जगरजण-स०पु०यौ० [स० जगद्रजन] ईश्वर, परमात्मा।

उ०—विमळ आणद लिखिमीवर, जगतठाम जगसामि। जगत रोपण, जगरजण, जगवदण जगजेठ।—पीरदान लाळस

जगर-स०पु० [फा० जिगर] १ कलेजा, यकृत।

उ०—समहर धर भर वाहदर असमर, कटै वैर हर भर कुरख। जगर खून आवटै मीया जा, सर चौसट ऊछटै सुरख।

—कविराजा करणीदान

२ चित्त, मन ३ साहस, हिम्मत ४ गूदा, सार ५ अग्नि, आग। [स० ६ कवच। (डिं को)

जगराणी-स०स्त्री०यौ० [स० जगद्+राज्ञी] १ ससार की स्वामिनी—देवी, दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी आदि। उ०—म्हू चित री मूढ़ हू पण हे वाणी सरस्वती देवी तू जगराणी जगत री मालक है सो म्हागी सरम राखजै।—वी म टी

[यौ० जगत+रानी] २ जगत की स्त्री, वेश्या, पतुरिया।

जगराज-स०पु० [स० यज्ञिराज ?] १ चद्रमा का एक नाम २ ऋषि, तपस्वी (अ मा)

जगराय-स०पु०—जगतराज, ईश्वर, शिव।

जगराया-स०स्त्री०—देवी, शक्ति, दुरगा। उ०—माया रूपी मेह रै, आया घर ऊदोत। कहवाया करनी कळू, जगराया निज जोत।

—अज्ञात

जगरै-स०पु०—(घोडी का) ऋतुमति होना।

क्रि०प्र०—आणौ, होणौ।

जगरौ-स०पु०—१ शीघ्र जल उठने वाले पदार्थो (यथा-सूखे काटे, घास आदि) का जलाने के उद्देश्य से लाया हुआ महीन चूरा २ जलती हुई अग्नि।

जगलिग-स०पु०यौ० [स० यज्ञलिग] कृष्ण का एक नाम।

जगळ, जगळाण-स०स्त्री०—कोल्हू मे अधकचरे किये हुए तिल।

(मि० कचर, ३)

जगवदण-स०पु०यौ० [स० जगद्वदन] ईश्वर (ना मा.)

उ०—विमळ आणद लिखिमीवर, जगतठाम जगसामि। जगतरोपण जगरजण, जगवदण जगजेठ।—पीरदान लाळस

जगवलक-स०पु० [स० वज्ञवलक] याज्ञवल्क्य नामक एक प्राचीन ऋषि के पिता का नाम।

जगवलभा-स०पु०यौ० [स० जगद्+वल्लभा] वेश्या (अ मा)

जगवाणौ, जगवावौ-क्रि०स० ('जगणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ सोते हुए को उठवाना, निद्रा मे विघ्न डलवाना २ जागरण करवाना।

उ०—ढोला म्हारी देवर-जेठाणी बुलावौ। म्हारै महला छठी जगवावौ।—लो गी

३ उत्साह दिलाना।

जगवायोडौ-भू०का०कृ०—१ जगवाया हुआ २ जागरण कराया हुआ ३ उत्साह दिलाया हुआ (स्त्री० जगवायोडी)

जगवाराउ-स०पु० [स० यज्ञवराह] विष्णु का एक नाम।

जगवासग-स०पु०यौ०—जगत को बसाने वाला, ईश्वर।

उ०—लीलाधण ग्रहे मानुखी लीला, जगवासग वसिया जगति।

—वेलि

जगवीरय-स०पु०यौ० [स० यज्ञवीर्य] विष्णु का एक नाम।

जगवेल-स०स्त्री०—सोमलता।

जगसतोख-स०स्त्री०यौ०—नदी (अ मा)

जगसत्रु-स०पु०यौ० [स० यज्ञशत्रु या जगत्+शत्रु] राक्षस।

जगसव्वदसी–वि० [स० जगत्सर्वदर्शी] समस्त जगत को देखने वाला (जन)

जगसाई, जगसामि, जगसामी–स०पु०यौ० [स० जगत्स्वामी] ससार का स्वामी, ईश्वर। उ०— विमळ आणद लिखिमीवर, जगतठाम जगसामि।—पीरदान लाळस

जगसाखी–स०पु०यौ० [स० जगत्साक्षी] सूर्य (डिं को)

जगसाधन–स०पु०यौ० [स० यज्ञसाधन] विष्णु का एक नाम।

जगसाधार–वि०—जगत की रक्षा करने वाला।
उ०—धिन धिन मा करणी जगसाधार, पावै कुण नामा गिणै पार।—रामदान लाळस
ईश्वर।

जगसाळा–स०पु०यौ० [स० यज्ञशाला] यज्ञशाला, यज्ञमडप।
[स० जगत्+श्यालक.] वेश्या का भाई।

जगसास्त्र–स०पु०यौ० [स० यज्ञशास्त्र] वह शास्त्र जिसमे यज्ञ करने का विधान हो।

जगसील–स०पु०यौ० [स० यज्ञशील] वह जो यज्ञ करता हो।

जगसूकर–स०पु० [स० यज्ञशूकर] विष्णु।

जगसेन–स०पु०यौ० [स० यज्ञसेन] विष्णु का एक नाम।

जगसेव–स०पु०यौ०—शिव, महादेव (अ मा)

जगस्वामी–स०पु०यौ० [स० जगत्स्वामी] १ ईश्वर २ विष्णु।

जगहु—देखो 'जगा' (रू भे)

जगहत्थ, जगहथ–स०पु०— १ दिग्विजय करने की क्रिया। उ०—१ तरु ताळ पत्र ऊचा तडि तरळा, सरळा पसरता सरगि। बैठे पाटि वसत वधिया, जगहथ किरि ऊपरी जगि।—वेलि
उ०—२ जगहत्थ जगतसिर जळहळै, दस दिगपाळ दहक्कवै। 'महिमाल' छहा जिहा सातमौं, चौथै पहोरै चक्कवै।—सू प्र

जगहथपत्र—स०पु०यौ० [स० जगद्हस्तपत्र] दिग्विजय का घोषणा-पत्र, दिग्विजय का चुनौती पत्र।

जगहरता–स०पु०यौ०—ईश्वर (ना मा)

जगहेत–स०पु०—ब्रह्मा (ना मा)

जगहोता–स०पु० [स० यज्ञहोतृ] यज्ञ के समय देवताओ को आह्वान करने वाला।

जगा–स०स्त्री० फा० जाय़गाह] १ स्थान, स्थल। उ०—तौ सलावत खा कही–जो बादसाह रा हुकम ई तरह का ही जे है तौ और कैसी जगा मेलें।—राठोड अमरसिंह री वात
मुहा०—जगा-जगा—सव स्थानो पर, सर्वत्र, थोडी-थोडी दूर, वहुत से स्थानों पर।
२ पद, ओहदा ३ स्थिति ४ मौका, अवसर ५ मकान।
रू०भे०—जगह, जघा, जागा जायगा।

जगाइणौ, जगाइवौ—देखो 'जगाणौ' (रू भे)

जगाचख—देखो जगचख' (रू भे.)
उ०—चत्र जाग विनीत उदोत जगाचख। सजि रीझ विदा किय तीस छहै सख।—सू प्र

जगाजोत, जगाजोति–स०स्त्री०—जगमगाहट। उ०—१ जगाजोत आदीत री जोत ओपै। उभै हीर चामीर मे स्त्र ग ओपै।—सू.प्र
उ०—२ फौजा ऊपरा ऊजळा भाला रा डबर भळळाट करि जगा-जोति जागी।—वचनिका

जगाणौ, जगावौ–क्रि०स०— १ नीद से उठाना।
कहा०—ऊगियोडी (सूतौ) ह्वै तौ जगावै पण ओ तौ जागतौ घोराजै—सोते हुए को जगाना तो सहज है किन्तु जो सोने का बहाना करता है उसे किस प्रकार से जगाया जाय। जानबूझ कर किसी कार्य को करने वाले को उस कार्य से विरत या विमुख करना कठिन होता है।
२ होश दिलाना ३ फिर से ठीक स्थिति मे लाना ४ प्रज्वलित करना। उ०—कामनी जु स्त्री तहा जु दीपक जगाया छै।
—वेलि टी.
५ किसी कार्य के लिये उत्तेजित करना या तैयार करना।
उ०—कोयल लाज करत जगावै काम नै रीझावै अदभुत आतमा-राम नै।—बा दा
६ किसी विशेष देव, सिद्ध आदि के निमित्त रात्रि-जागरण कराना।
जगाणहार, हारौ (हारी), जगाणियौ—वि०।
जगायोडौ—भू०का०कृ०।
जगाईजणौ, जगाईजवौ—कर्म वा०।
जगणौ, जगवौ —अक०रू०।
जगाडणौ, जगाडबौ, जगावणौ, जगाववौ—रू०भे०।

जगात–स०स्त्री० [अ० जकात] १ पुण्य हेतु दिया जाने वाला धन, खैरात। २ कर, महसूल। उ०—पातसाहजी फुरमाया—च्यार लाख रुपया लगाय सूरत दोळौ कोट करावणौ, एक वरस री जगात वोपारिया नू माफ कीवी।—नापा साखला री वारता
रू०भे०—जकात।

जगातमा–स०पु० [स० यज्ञात्मा] विष्णु।

जगाती—देखो 'जकाती' (रू भे)

जगादीस—देखो 'जगदीस' (रू भे) उ०—सही सेस लाख मणा धारि सोधा। जगादीस राघौ सको देव जोधा।—सू प्र

जगामग, जगामगि—देखो 'जगमग' (रू भे) उ०—वणि हीर जगामगि अस्टवळो। महले किर दीपक माळ मिळी।—रा रू

जगायोडौ—१ जगाया हुआ, नीद से उठाया हुआ २ प्रज्वलित किया हुआ ३ होश दिलाया हुआ ४ फिर से ठीक स्थिति मे लाया हुआ ५ किसी कार्य के लिये उत्तेजित किया हुआ या तैयार किया हुआ। ६ (किसी विशेष देव, सिद्ध आदि के निमित्त) रात्रि जागरण कराया हुआ।
(स्त्री० जगायोडी)
रू०भे०—जगावियोडौ।

जगार, जगारि, जगारी–स०पु० [स० यज्ञारि अथवा जगद्+अरि] राक्षस।

जगावणौ, जगावबौ—देखो 'जगाणौ' (रू भे) उ०—रिण जग वागा रोस अणभग री दीठो इसो, जिण रग इसडो जोस जाणे भमग जगावियौ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
जगावणहार, हारौ (हारी), जगावणियौ—वि०।
जगाविश्रोडौ, जगावियोडौ, जगाव्योडौ—भू०का०कृ०।
जगावीजणौ, जगावीजबौ—कर्म वा०।
जगणौ, जगबौ—अक०रू०।
जगाडणौ, जगाडबौ—रू०भे०।
जगावियोडौ—देखो 'जगायोडौ' (रू भे) (स्त्री० जगावियोडी)
जगि—स०पु० [स० यज्ञि] १ यज्ञ करने वाला. २ देखो 'जग' (रू भे)
उ०—गज रूप चढण अग रहण असम गति, पुहप कमळ देसोत पगि। जिम जगदीसर पूजतो जैमल, जैमल तिम पूजिजै जगि।
—राठोड जैमल वीरमदेवोत रो गीत
३ देखो 'जिग' (रू भे)
जगियोडौ—देखो 'जागियोडौ' (रू भे.)
जगी—देखो 'जगि' (रू.भे)
जगीस—स०स्त्री०—१ इच्छा, अभिलाषा। उ०—१ जेठे तणी जगीस, मन हू ते मेली नही। वाल्हा मिळणू व्हीस, जोडी तो सग जेठवा।
—जेठवा
उ०—२ लिखी फुरमाण पठावत सवही, धन करमचद्र मत्रीस। 'समयसुदर' प्रभु परम क्रिपा करि, पूरन मनहि जगीस।
—ऐ जै का स
२ जिज्ञासा ३ कीर्ति, यश। उ०—चउँडराउ दिय ऊधूल चाउ, राउत्त आपहे आप राउ। सोहिया प्रवाडा सिंघ सीस, जवूअहृदीप जग्गी जगीस।—रा ज सी
स०पु०—३ युद्ध। उ०—सीस धरणि चो गळै माळ सझि, 'सिंघ' तणौ विढ़ियो स जगीस। सकर-घरणि देखि तिण सकी, सकर लियै रखै मो सोस।—जसवतसिंह सोनगरा रो गीत
[रा० जग=स० जगत+ईश] ईश्वर।
रू०भे०—जगीसो, जग्गीस।
जगीसौ—देखो 'जगीस' (रू भे.) उ०—प्रह उगमते प्रणमिपे, विहरमान जिन वीसो जी। नामे नवनिधि सपजे, पूरे मनह जगीसो जी।
—स कु
जगु, जगू—देखो 'जग' (रू.भे) उ०—भूयवलि भजई रिउभडिवाओ, दाणि जगु ऊरिणु कराए।—प प च
जगेसर, जगेसुर, जगेस्वर—स०पु०यौ० [स० यज्ञेश्वर] विष्णु।
जग्ग— देखो 'जग' (रू भे) उ०—जागळ अउ सरणाइ घाति जग्ग। खिति मिति नदी साहइ खडग्ग।—वचनिका
जग्गीस—देखो 'जगीस' (रू भे) उ०—कोटा कूटा कमसीसा, जुडै न चादो जग्गीसा। जे जुडसी चादो जग्गीसा, कोट न कूट न कमसीसा।
—चादा वीरमदेवोतरो गीत
जग्य, जग्यन—देखो जिग' (रू भे.) उ०—१ आगे देख्यउ तोहि ग्रहि ग्रहि विखै जग्य होय छै। जग्य-जग्य रै विखै तप जाप होइ छै।
—वेलि.टी
उ०—२ जिम करू वीरभद्र दक्ष जग्यन, कचर-घाण किलमाण रो। इम 'अभा' हूत मिसलती अरज, रटै 'पतो' महिराण रो।
—सू प्र
जग्यासेनी—स०स्त्री० [स० याज्ञसेनी] द्रौपदी (अ मा)
जग्योपवीत—स०पु० [स० यज्ञोपवीत] यज्ञोपवीत, ब्रह्मसूत्र, जनेऊ।
उ०—ऐसी विध पडतराज चातुरय कळा प्रवीण त्रिलोकू का प्रबध अनेक विध विमळ बाणी सै उच्चरै जिनूसै रीझ श्री महाराज कनक जग्योपवीत चढाया।—सू प्र
जघन्य—वि० [स०] १ अतिम. २ नीच, निकृष्ट ३ गर्हित।
जघन्यभ—स०पु० [स०] छ नक्षत्र—आर्द्रा, अश्लेषा, स्वाति, ज्येष्ठा, भरणी और शतभिषा।
जघा—देखो 'जगह' (रू भे)
जडग—वि० [स० जड+अग] मूर्ख, असभ्य। उ०—जडग नीचा गमै, ऊधरै भगत जण।—पीरदान लाळस
जड—स०स्त्री० [स० जड] १ वृक्षो, पौधो आदि का भूमि के भीतर रहने वाला भाग, मूल। उ०—विसरियाँ विसर जस वीज वीजिजै, खारी हाळाहळा खळाह। त्रूटै कध मूळ जड त्रूटै, हळधर काँ वाहताँ हळाह।—वेलि
२ नीव, बुनियाद।
मुहा०—१ जड उखाडणी—हानि या बुराई कर के किसी की स्थिति बिगाडना। समूल नष्ट कर देना। जड़ खोदणी—देखो 'जड उखाडणी'. ३ जड जमणी—जड या बुनियाद का मजबूत होना ४ जड जमाणी—बुनियाद मजबूत करना ५ जड ढीली करणी—देखो 'जड उखाडणी' ६ जड पकडणी—जमना, अच्छी तरह जम जाना, अकुरित होना, मजबूत होना।
यौ०—जडामूळ।
३ शीत, सर्दी ४ देखो 'ज्ड' (रू भे)
जडकणौ, जडकबौ—क्रि०स०—प्रहार करना, मारना।
उ०—उचजी कुभथळ थाप जडकी उरड, तुरत कर एक सू बजो ताळी। करी मुख रदन काळीदमण काढिया, मही मूळी कढी जाण माळी।—वा दा
जडकियोडौ—भू०का०कृ०—प्रहार किया हुआ, मारा हुआ।
(स्त्री० जडकियोडी)
रू०भे०—जडक्कियोडौ।
जडक्कणौ, जडक्कबौ—देखो 'जडकणौ' (रू.भे)
उ०—१ चगी फौजा वलूवै वडक्कै डाड फुणी चील, उमगे जोगणी काचा धडक्कै उरेव। हैजमा कडक्कै बीज जगी हौदा रगी हाडै, जडक्कै फरगी सीस वरगी जनेव।—दुरगादत्त वारहठ
उ०—२ जडक्कत सेल भिदै जरदाळ। कडक्कत कध वहै किरमाळ।
—सू प्र.

जडविकयोडौ—देखो 'जडकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० जडविकयोडी)

जडडणौ, जडडबौ, जडणौ, जडबौ—क्रि०स० [स० जटन] १ कपाट वद करना। उ०—१ इतरै बीजी तरवार वाही सो बाढ नाखियौ। उठै सू झोळी मे घाल, बाहर माणस था, उहारे म्होडा श्राण नाखियौ। खिडकी जड लीवी।—श्रमरसिंह राठौड री वात।

उ०—२ पछै राव रा सारा माणस उण घर मे घालिया। राव श्राडी ताळौ जडियौ। ऊपर महोर छाप दिवी।—वां दा ख्यात
२ प्रहार करना। उ०—१ निद्रा वसि पोह निरखि, पिन्नग वध कसे श्रपारा। 'जडी' विखम जमदाढ, एक साथे ज श्रठारा।—सू प्र
३ कवच श्रादि पहन कर श्रस्त्र-शस्त्रो से सुसज्जित होना।

उ०—पहली इसडा वचन रा वाण लगाया जिण थी एक सौ पचीस तोपा साथ दे'र रण री सामग्री सू सिलह मे जडिया वीर वरात मे विदा कीधा।—व भा
४ एक चीज को दूसरी चीज मे ठोक कर बैठाना। ५ एक चीज को दूसरी चीज मे पच्चीकारी कर के बैठाना। उ०— राजमहल के श्रडाव श्ररस सेती श्रडै। मनू धवळागिर विसकरमा जडाव सू जडै—र रू
६ चुगली या शिकायत के रूप मे किसी के विरुद्ध किसी से कुछ कहना, कान भरना। ७ जमाना, स्थिर करना।

उ०—१ पडै श्रमावड द्रोह छत्रधर फरग पालटे, श्राटधर क्रोध भुज गयण श्रडिया। सोध अगरेज हिंदवाण श्राया सरव, जोध सिर सेस रै कदम जडिया।—मोतीराम श्रासियौ
८ प्रविष्ठ होना, घुमना, पैठना। उ०—साजन सिळी सनेह की, खटक रही दिल माय। नीकाळी निकळै नही जडहि कळेजा माय।
—र रा
९ मजवूती से वाधना या कसना। उ०—१ जमदाढ बामै श्रग भीड जडी। सुज ऊपर पेटीय सावरडी।—गो रू
उ०—२ सेखाराव नू मुलताण सपाहा, जडियौ साकळ जाळी। पाछौ जिको श्राणियौ पूगळ, देवी थै ढाढाळी।—वा दा
१० सश्लिष्ट होना, जडा जाना, गड्डमड्ड होना।
जडणहार, हारौ (हारी), जडणियौ वि०।
जडवाडणौ, जडवाडबौ, जडवाणौ जडवाबौ, जडवावणौ, जडवावबौ, जडाडणौ, जडाडबौ, जडाणौ, जडाबौ, जडावणौ, जडाववौ —प्रे रू।
जडिश्रोडौ, जडियोडौ, जडचोडौ—भू०का०कृ०।
जडीजणौ, जडीजबौ,—कर्म वा०।

जडत—स०स्त्री०—एक चीज को दूसरी चीज मे पच्चीकारी कर के बैठाने का कार्य, पच्चीकारी। उ०—साह ताम समसेर, जडत जवहरा जमधर। मुलक वधारे समपि हेम तोडा गज हैमर।—सू प्र.

जडवद—वि०—जडसहित, समूल।

जडाउ, जडाऊ—वि० [स० जटित] जडा हुश्रा, पच्चीकारी किया हुश्रा, जटित। उ०—१ श्रसी कोस चाळीस झाळी उचाळी। जडाऊ नगा सोवनी लक जाळी।—सू प्र
उ०—२ दरगाह श्राया, जद पातसाह भारी सरपाव मोती दिया। राणा नू सिरपेच जडाऊ भेज्यौ।—बा. दा. ख्यात

जडाकढ़—वि०—समूल नाश करने वाला।

जडाग—स०पु०—१ श्राभूषण। उ०—१ लख वरीस नरेसुर 'लाखो' रीत प्रवीत खत्रीध्रम राखै, भारत श्रागि वञाग महाभड जोध जडाग वडा छळ जागै।—ल.पि
उ०—२ जोध जडाग श्रभनमौ 'जैतौ', सदा चलै श्रापरै सुभाय। लखदत दीधै भाजणौ लाखा, खेडेचौ वावळी खुदाय।
—तेजसी खिडियौ
२ पुत्र, बेटा। उ०—सेना थाट काकौ 'कन्ह' पग रौ बछाय सूतौ। ज्यू सरेवसज्जा सूतो 'गग' रौ 'जडाग'।—हुकमीचद खिडियौ
४ घोडा (ना डि को.)
रू०भे०—जडागि।

जडाणौ, जड़ाबौ—क्रि०स० ('जडणौ' क्रिया का प्रे०रू०) जडने का कार्य कराना।

जडाव—स०पु०—१ जडने का कार्य या भाव। उ०—१ पिंड पिंड दस-दस सिर परठि, सिर-सिर छत्रधारे। जगमग हीर जड़ाव जोति, श्रादित श्राभारे।—सू प्र. उ०—२ वाग वेस सोहामणा, भुखण मोती माळ। कनक कचोळा जडाव रा, सुदर सोवन थाळ।—ढो.मा.
रू०भे०—जडावट।
२ शिर के बालो का जूडा।

जडावट—देखो 'जडाव' (१)

जडावणौ, जडाववौ—देखो 'जडाणौ (रू भे) उ०— पोत रा 'सेवा' रा जगी धुरावै सतारा वार, धावै खळा खतारा भूदडा धाड धाड। श्रवीह भतारा डका श्रावै सदा श्राठवाटा, कपनी जडावै किलकत्ता रा किंवाड।—डूगजी जवारजी रौ गीत

जडावियोडौ—देखो जडायोडौ।
(स्त्री० जडावियोडी)

जडित—वि०— जडा हुश्रा, जटित। उ०—श्राया बाहिर एम, वैसि गजा मेघाडवरा। चगथा वे दुळते चमर, हीर जडित छत्र हेम।
—वचनिका

जडिया—स०स्त्री०—नग जडने एव पच्चीकारी का कार्य करने वाली स्वर्णकारो की एक जाति।

जडियाळ—वि०—वह जिससे प्रहार किया जाय। उ०—जोम छक हरख जडियाळ भजै गजा, जेण तक वजर पडियाळ जाणा। जहर री छाक कडियाळ तौ रण जुधा, 'पेम' हर श्रम्गो छडियाळ पाणा।
—जोधसिंह राठौड रौ गीत

जडियोडौ—भू०का०कृ०—१ बन्द किया हुश्रा. २ प्रहार किया हुश्रा ३ सुसज्जित. ४ ठोक कर बैठाया हुश्रा ५ पच्चीकारी कर के बैठाया

हुआ. ६ किसी के विरुद्ध चुगली या शिकायत किया हुआ, कान भरा हुआ. ७ जमाया हुआ, स्थिर किया हुआ ८ मजबूती से बाधा हुआ, कसा हुआ ९ प्रविष्ठ हुवा हुआ, घुसा हुआ, पैठा हुआ। १० सश्लिष्ट हुवा हुआ, मिला हुआ, गड्डमड्ड हुवा हुआ।
(स्त्री० जड़ियोडी)

जडियौ–स०पु०—जडाई का कार्य करने वाला व्यक्ति, वह जो पच्चीकारी करे।

जडी–स०स्त्री०—ऐसा पौधा या कोई वनस्पति जिसकी जड औषधि के लिये काम मे लाई जाय।
यौ०—जडी बूटी।

जडैल–वि०—जडने का कार्य किया हुआ, जटिल।

जडौ–स०पु०—वह बैल, ऊँट आदि पशु जो समुचित रूप से शिक्षित न किया गया हो।

जचणौ, जचबौ–क्रि०अ०—१ जाच मे पूरा उतरना, ठीक मालूम होना, उचित या अच्छा प्रतीत होना २ जुडना, ठीक बैठना।
उ०—साळया हृदौ साथ, अरज करै छै आपनै। हथळेवा री हाथ, जचियौ पण रचियौ नही।—रामनाथ कवियौ
३ ऐसा बैठना कि ढीला ढाला या तग न हो, ठीक बैठना।
उ०—हुवौ हुकम लख चित हरख, जचिया सिलह जडाव। रावळ पिडी रजमटा, पडिया जाय पडाव।—जुगतीदान देथौ
४ देखा भाला जाना, जाचा जाना ५ प्रतीत होना, निश्चय होना, मन मे बैठना ६ शोभित होना, फबना।
जचणहार, हारौ (हारी), जचणियौ—वि०।
जचवाडणौ, जचवाडबौ, जचवाणौ, जचवाबौ, जचवावणौ जचवावबौ, जचाडणौ, जचाडबौ, जचाणौ, जचाबौ, जचावणौ, जचावबौ—प्रे०रू०।
जचिओडौ, जचियोडौ, जच्योडौ—भू०का०कृ०।
जचीजणौ, जचीजबौ—भाव वा०।
जचणौ, जचबौ, जच्चणौ, जच्चबौ—रू०भे०।

जचा—देखो 'जच्चा' (रू भे) उ०—सो सीयाळा मे राजकुमारी रो जनम हुवौ है जिणसू जचा रै तापण नै तपणी लाया है।—वी स टी.

जचाडणौ, जचाडबौ—देखो 'जचाणौ. जचाबौ' (रू भे)
जचाडणहार, हारौ (हारी), जचाडणियौ—वि०।
जचाडिओडौ, जचाडियोडौ, जचाड्योडौ—भू०का०कृ०।
जचाडीजणौ, जचाडीजबौ—कर्म वा०।

जचाडियोडौ—देखो 'जचायोडौ' (रू भे) (स्त्री० जचाडियोडी)

जचाणौ, जचाबौ–क्रि०स० ('जचणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ जाच मे पूरा उतारना, ठीक मालूम कराना, उचित या अच्छा प्रतीत कराना २ जुडाना, ठीक बैठाना, जोडना ३ ऐसा बैठाना कि ढीला-ढाला या तग न हो ४ देख-भाल कराना, जचाना ५ प्रतीत कराना, निश्चय कराना, मन मे बैठाना ६ शोभित कराना, फबाना।
जचाणहार, हारौ (हारी), जचाणियौ—वि०।
जचायोडौ—भू०का०कृ०।
जचाईजणौ, जचाईजबौ—कर्म वा०।
जचणौ, जचबौ—अक०रू०।
जचाणौ, जचाबौ, जचाड़णौ, जचाड़बौ, जचावणौ, जचावबौ—रू०भे०।

जचायोडौ–भू०का०कृ०—१ जाच मे पूरा उतारा हुआ, ठीक मालूम कराया हुआ, उचित या अच्छा प्रतीत कराया हुआ २ जुडाया हुआ, ठीक बैठाया हुआ, जोडा हुआ ४ ऐसा बैठाया हुआ कि ढीला-ढाला या तग न हो ४ देख-भाल कराया हुआ, जँचाया हुआ ५ प्रतीत कराया हुआ, निश्चय कराया हुआ, मन मे बैठाया हुआ. ६ शोभित किया हुआ, जँचाया हुआ। (स्त्री० जचायोडी)
रू०भे०—जचायोडौ, जचाडियोडौ, जचावियोडौ।

जचावणौ, जचावबौ—देखो 'जचावणौ, जचावबौ' (रू भे)
जचावणहार, हारौ (हारी), जचावणियौ—वि०।
जचाविओडौ, जचावियोडौ, जचाव्योडौ—भू०का०कृ०
जचावीजणौ, जचावीजबौ—कर्म वा०।

जचावियोडौ—देखो 'जचायोडौ' (रू भे)
(स्त्री०–जचावियोडी)

जचियोडौ–भू०का०कृ०—१ जाच मे पूरा उतरा हुआ, ठीक मालूम हुवा हुआ, उचित या अच्छा प्रतीत हुवा हुआ। २ जुडा हुआ। ३ ऐसा बैठा हुआ कि ढीला-ढाला या तग न हो। ४ जाचा गया हुआ, जँचा हुआ, देखा-भाला हुवा। ५ प्रतीत हुवा हुआ, निश्चय हुवा हुआ, मन मे बैठा हुआ। ६ शोभित हुवा हुआ, फबा हुआ।
(स्त्री० जचियोडी)

जच्च–वि० [स० जात्य] १ स्वाभाविक २ प्रधान, श्रेष्ठ ३ सजातीय (जैन)

जच्चण्णिय–वि० [स० जात्यान्वित] कुल मे श्रेष्ठ, श्रेष्ठ जाति का (जैन)

जच्चणौ, जच्चबौ—देखो 'जचणौ, जचबौ' (रू भे)

जच्चा–स०स्त्री० [फा० जच्चा] प्रसूता स्त्री जिसके हाल ही मे बच्चा हुआ हो। उ०—रे म्हारे उतर दिखण री, ए जच्चा पीपळी। हे म्हारे पूरब नमी-नमी डाळ रे, हे म्हानै घणी ए सुहावै जच्चा पीपळी।
—लो. गी
रू०भे०—जचा।

जच्चाग्रा–स०स्त्री०—एक प्रकार के मागलिक गीत जो पुत्र-जन्मोत्सव के अवसर पर स्त्रिया गाती हैं।
(मि०—जसाग्रा)

जच्चियोडौ—देखो 'जचियडौ' (रू भे) (स्त्री० जच्चियोडी)।

जच्छ–स०पु० [स० यक्ष] १ देखो 'जक्ष' (रू.भे) २ कुबेर ३ मध्य लघु की पाच मात्रा का नाम (डिं को)

जज–स०पु० [अ०] १ न्यायाधीश, न्याय करने के लिये नियुक्त बडा अधिकारी।

[रा०] २ सख्त या कठोर वचन ३ यज्ञ (ग मो)

जजक–स०स्त्री०—१ हिचक, हिचकिचाहट २ चौंकने का भाव ।
उ०—वाळवाळो तिलक साभ कर वनाती, ओपियो लहर छक खळक आखा । साकुरा धमक पोडा धमक सावळे, लगी ओजक जजक अजक लाखा ।—सूरतसिंह री गीत

जजकणौ, जजकबौ–क्रि०अ०—१ हिचकना, झिझकना ।
२ चौंकना । उ०—सुण वाळा इक रेण पीढती कठ लगाणी । जागी जजका नैण बिळखता नीर भराणी ।—मेघ
रू०भे०—जभकणौ, जभकनौ ।

जजकियोडौ–वि०—१ हिचका हुआ, झिझका हुआ २ चौंका हुआ ।
(स्त्री० जजकियोडी)

जजटुळ देखो 'जुधिस्ठर' (रू.भे.) उ०—तोडे दळ मुगळां खाग तरास, जजटुळ जेम लिये जसवास ।—सू.प्र

जजण–स०पु० [स० यजन] यज्ञ । उ०—इळा राज करि एम, 'माल' स्रगि वसे महावळ । जीत समर दन जजण, अमर रहीयौ जस उज्झळ ।
—सू प्र

जजणौ, जजबौ–क्रि०स०—१ दान देना, उदारता करना २ यज्ञ करना ।

जजमणौ, जजमबौ [स० यजमान] शान्ति प्राप्त करना ।

जजमाण, जजमान–स०पु० [स० यजमान] १ वह जो यज्ञ करता हो, दक्षिणा आदि देकर ब्राह्मणो से यज्ञ पूजन आदि धार्मिक कृत्य आदि कराने वाला व्रती, यष्टा ।
उ०—हसा था सो उड गया, कागा भया दिवान । जा वामण घर आपणे, सिंघ केरा जजमान ।—अज्ञात
२ ब्राह्मणो को दान देने वाला ।
रू०भे०—जजिमान, जुजमाण, जुजमान ।

जजमानता, जजमानी–स०स्त्री०—१ यजमान का भाव या धर्म
२ यजमान के प्रति पुरोहित की वृत्ति ३ खातिरदारी ४ वह गाव या नगर जहा किसी विशेष पुरोहित के यजमान लोग रहते हो ।

जजमाणौ, जजमावौ–क्रि०स० [स० यजमानन] क्रोध शात कराना, धैर्य दिलाना । उ०—वागढाल करीजे, माहै थाहरो चोर छै तो अबै जाय कठै ही नही । इसी भात गूजरी जजमाय घोडा सू उतारिया ।
—राव रिणमल री वात

जजमायोडौ–भू०का०कृ०—क्रोध शात किया हुआ, धैर्य दिलाया हुआ ।
(स्त्री० जजमायोडी)

जजमावणौ, जजमावबौ—देखो 'जजमाणौ' (रू भे)

जजमावियोडौ—देखो 'जजमायोडौ (रू भे) (स्त्री० जजमावियोडी)

जजरग–स०पु०—१ यमराज. २ वज्र ।
वि०—भयकर । उ०—जजरग घाट तूटै जरद, झाट पडै झड ओझडा । दळ खोद वण हू कळ दिली, घोकळ कीधो घूहडा ।
—सू प्र

जजर–स०पु०—१ यमराज । उ०—राव वड उरड दीसै जजर रूप रा । पाण केवाण धारै कमण ऊपरा ।—पदमसिंह आढौ
२ वज्र । उ०—वकि पटा फुल हुआ, सोरि खिलकार कुसत्री । तस कसीस लेजमा, जजर गत्ती जाजत्री ।—सू प्र.
वि०—भयकर । उ०—छोडे भूप दास खळ छोडे । जजर निहाव वजरचै जोडै ।—सू प्र.
[स० जर्जर] २ घावो से परिपूर्ण, क्षत-विक्षित । उ०—इक पडै मुडे मुड लडै आय । घडियाल गजर जिम जजरु घाय ।—रा.रू
३ वृद्ध, वूढा ४ जीर्ण-शीर्ण, पुराना, जर्जर ।
रू०भे०—जज्जर, जज्र, ।

जजराग–वि०—१ भयकर, डरावना २ क्रुद्ध ।
स०पु०—१ यमराज २ वज्र ।

जजराट–स०पु० [स० जज=युध+राट] १ यमराज.
उ०—अेको नीसरै जठी साव जस को ओढकै, तेण री धकी जजराट जेही । वधारै तुरी गढ़ जको भुरा विना, आगमे न को भूपाळ एही ।
—जसजी आढौ
रू०भे०—जज्राट, जुजराट ।

जजात, जजाति, जजाती–स०पु० [स० ययाति] १ यादववशी राजा ययाति (नैणसी)
वि०वि०—ये नहुष के पुत्र थे, इनका विवाह शुक्राचार्य की कन्या देवयानी के साथ हुआ था ।

जजायळ–स०स्त्री०—एक प्रकार की लम्बी ऊटो पर लाद कर चलाई जाने वाली बन्दूक । उ०—असवार हजार द्रोय जजायळा हजार एक ऊट पाच सौ बीस ऊटा ऊपर वाण और बाजार री लोग मोदीखानो पेसखानो कारखानो सारा लेय वहिर हुवा ।
—कुवरसी साखला री वारता
रू०भे०—जुजायळ ।

जजार, जजाळ, जजाळी–स०स्त्री०—एक प्रकार की वडी, लम्बी एव भारी बदूक । उ०—दुझाळा वलाळा झाळा अचाळा दखणी दळा, रूक भाला जजाळा गैढाळा माती रीठ ।—पहाड खा आढौ

जजिमान—देखो 'जजमान' (रू भे)

जजियौ–स०पु० [अ०] अन्य धर्मावलबियो पर मुसलमानी काल मे लगने वाला एक प्रकार का कर ।
रू०भे०—जेजियौ ।

जजी–स०पु०—यज्ञ (ग मो)

जजुवेद जजुरवेद–स०पु० [स० यजुर्वेद] चार वेदो मे से दूसरा वेद, यजुर्वेद (डि को)

जजुरवेदी–स०पु०—यजुर्वेद का ज्ञाता ।

जजुव्वेय–स०पु० [स० यजुर्वेद] यजुर्वेद (जैन)

जजेसर, जजेस्वर–स०पु० [स० यक्षेश्वर] कुवेर (अ मा ना मा)

जजोनी–स०पु० [स० योनिज] १ योनि से जन्म लेने वाला, योनिज ।
उ०—हाम मुघर कुंडळ हीडोळता, जोगाभ्यास जजोनी । अण तसवीर रावळी ऊपर, वारू पीर अजोनी ।—महाराजा मानसिंह

जज्जर—देखो 'जजर' (रू भे) उ०—आया हसनअली अजरायळ, जाजुळमान भयकर जज्जर ।—सू प्र.

जज्जरिय–वि० [स० जर्जरित] जीर्ण, पुराना (जैन)

जज्जीव–स०पु० [स० यावज्जीव] जीवमात्र, प्राणीमात्र ।

जज्ज्र, जज्र्क—देखो 'जजर' (रू भे.) उ०—१ भळकं के मुराडा घकं भूतरा सा, यरदा छागडा राह रूत कासा ऊप । ऊंठया अखाडं चेला खागडा ऐ घूतरा सा, रूठिया रागडा जज्ज्र दूत का सारूप ।

—महादान महडू

उ०—२ काढी दळा सी मगळा प्रळे समदा ऊजळी किन्ना, खळा धू ग्ररूठी जज्ज्र गं थडा खाणास । सरगा विछूटी तूटी माघ पव्वे काळा सीस, वीर 'चूडा' वाळी ज्वाळा वीजळा बाणास ।—तेजराम आसियो

जज्ज्रजीव–स०पु०—जीवो का यमराज, सिंह (डिं.को)

रू०भे०—जीवजज्ज्र ।

जज्ज्रर–स०स्त्री०—१ एक प्रकार की छोटी वकदू २ देखो 'जजर' (रू.भे)

जज्ज्राट—देखो 'जजराट' (रू भे) (डिं को)

जझकणी, जझकवो—देखो 'जजकणी, जजकवो' (रू.भे)

उ०—१ जझक ग्रहराव फुण हूत झाळा अजर, क्रोधवत जटाधर नेत केहो ।—रावत अजीतसिंह सारगदेवोत रो गीत

उ०—२ जझके नही भयाणक जाणे, पनग जिको ग्रहियो नृप पाणे ।

—सू प्र.

जट—१ देखो 'जटा' (रू भे) उ०—जट आड वध सेली जडाव, आवधा वीर सजत अडाव ।—वि स.

२ देखो 'जाट' (रू भे)

स०स्त्री०—३ बकरी व ऊट के बाल. ४ नारियल की ऊपरी जटा ।

जटगग–स०पु०यौ० [स० गगाजट] शिव, महादेव । उ०—उडं गति गेंद नरा उतमग । गहे झट कज करा जटगग ।—मे म.

जटजूट–स०पु०यौ०—जटा का समूह । उ०—नग नायक चा नाह, विच जटजूट वसावियो । पावन गग प्रवाह, प्राणी तू कद परसही ।—बा दा

जटधर, जटधरण, जटधार, जटधारी–स०पु० [स० जटाधर, जटाधारी] १ शिव, महादेव । उ०—१ जघा पवित्र करिस हू जटधर, नृत करतो आगळ नाटेसर ।—ह र

उ०—२ व्रत जनक राख सीतावरण, धानुख भजण जटधरण । मुण 'किसन' सुजस रघुवस मणा, सीतापत असरण सरण ।—र ज.प्र

उ०—३ अन पान फूल छोड़ उदक, घरू ध्यान जटधार रो । यण देह मिळं मोनू अभग, जे सेरसीग 'सरदार' रो ।—पहाड खा आढो

उ०—४ 'दीपावत' 'फतमाल' एम बोलं अग्रकारी, सझि खग सत्र रत्र सीस, पूजू जटधारी ।—सू प्र

२ सन्यासी, फकीर । उ०—जटधारी धारी जांनोई, कविताधारी कथाधार । मारग दस मेवाड नरेसुर, वहै तुहाळं वड दातार ।

—महाराणा हम्मीर रो गीत

जटपख–स०पु०—वह साप जिसके सिर पर जटा हो तथा पर हो । उ०—विरदा पुगी राग वस, मानै मत्र समोद । प्रथी सीर थाका पछै जटपख लाखा जोद ।—कविराजा करणीदान

जटल—देखो 'जटिल' (रू.भे.)

जटवाड–स०पु०—१ जाटो का समूह या झुड ।

[रा० जाट+स० पाटक] २ वह स्थान जहा जाट अधिक सख्या में निवास करते हो ३ जाटो का प्रान्त, जाटो का राज्य ।

उ०—अणी जटवाड वीरा तणी आकळं, विवध तीरा तणी मची वरखा । हसम अगरेज री आठ वाटा हुई, पूर पाटा हुई रुधर परखा ।

—कविराजा बाकीदास

जटसकरी–स०स्त्री० [स० जटा शकरी] गगा (अ मा)

जटा–स०स्त्री० [स०] १ उलझे हुए शिर के बडे बडे तथा अति घने बाल । उ०—सीस जटा पोथी गहै, सेत बसन गळ माय । जोगी जगम है नही, वामण पडत नाय ।—अज्ञात

२ एक मे उलझे हुए बहुत से रेशे आदि ।

रू०भे०—जट, जट्ट, जट्टा ।

जटाई—देखो 'जटायु' (रू भे)

जटाचीर–स०पु० [स०] महादेव, शिव ।

जटाजूट–स०पु० [स०] १ बहुत बडी जटायें. २ शिवजी की जटा ।

जटाधर, जटाधार–स०पु० [स० जटाधर] शिव, महादेव । उ०—अयो कस ऊपर केसव एम, जाळ धर सीस जटाधर जेम ।—सू प्र.

२ एक भैरव का नाम ।

जटाधारी–स०पु० [स०] १ शिव, महादेव २ वह योगी या सन्यासी जिसकी जटायें बडी-बडी एव लम्बी हो ।

जटामाळी–स०पु० [स०] शिव, महादेव ।

जटामासी–स०स्त्री०—हिमालय मे प्राय १७००० फुट तक की ऊचाई पर पाई जाने वाली एक वनस्पति की सुगधित जड ।

जटाय—देखो 'जटायु' (रू भे) उ०—जोए खर दूखर रो घर जाय, जाणं गति प्रामी आज जटाय ।—पीरदान लाळस

जटायत–स०पु०—शिव, महादव ।

जटायु–स०पु० [स० जटायु] रामायण मे वर्णित एक प्रसिद्ध गिद्ध ।

रू०भे०—जटाई. जटाय, जट्टाय ।

जटायुज–स०पु०—घोडा, अश्व (डिं ना मा.)

जटाळ–स०पु० [स० जटाल] १ शिव, महादेव । उ०—रवताळ रोदाळ रोसाळ महारिण, काळ खडाल आताळ करै । झिलमाळ कघाळ कराळ पडै झडि, धू मझि माळ जटाळ धरै ।—सू प्र

२ जटाधारी व्यक्ति । उ०—१ कहजै दिगपाळ जटाळ कणा । मुदरा लय जोगिय आप मणा ।—पा प्र.

उ०—२ गैं घटाळ जटाळ वैताळ गजै । विकराळ त्रबाळ बबाळ वजै ।—गो रू

३ उनचास क्षेत्रपालो के अतर्गत २४वां क्षेत्रपाल. ४ वट वृक्ष, बरगद ।

वि०—जटाधारी ।

जटाळि, जटाळी–स०स्त्री० [स० जटाल] जटा का समूह। उ०—नटाळि दे भटाळि की जटाळि ऐंचते निभे। ग्ररीन मुच्छ-मुच्छ दें स्वमुच्छ खेंचते ग्रभें।—ऊ का

वि०—वह जिसके जटा हो, जटाधारी।

जटाळो–स०पु० [स० जटिल] १ शेर, सिंह. २ शिव, महादेव. ३ देखो 'जटाळ' (रू भे)

जटासुर–सं०पु०—एक राक्षस (महाभारत) उ०—गोवद्धन कर लेण कौ, जिम कन्ह कसाया। जाणि जटासुर जग पै, भुज भीम बजाया। —व.भा

जटि—१ देखो 'जटा' (रू भे)

स०पु० [स० जटी] २ शिव, महादेव ३ गुलर का वृक्ष।

जटित–वि० [स०] जडा हुग्रा। उ०—हट ग्रटा हेम नग जटित हीर। धज कोटि-कोटि ऊपर सधीर।—सू प्र

जटियळ–स०पु०—महादेव, शिव। उ०—महा जटियळ ग्रगुट भेख वक्रत मयक ग्रलक्रत सेख मेचक उथाळो। किरणपत प्रभा परभातरा समोकर, तेज पुज नाथ रा तणो ताळो।—भीम सीसोदिया री गीत

वि०—वह जिसके शिर पर जटा हो, जटाधारी।

जटिया–स०स्त्री०—१ कुम्हारों की एक शाखा जो बकरियो की व ऊँटो के बालो की बुनाई का काम करते हैं २ एक प्रकार की राजस्थानी ग्रछूत जाति जो चमडा साफ करने या रगने का व्यवसाय करती है।

जटियाळ—देखो 'जटा' (मह, रू भे) उ०—जटियाळ छुटाळ परै पत्र जोगणि, पै जिम खाळ रत्राळ पडै।—सू प्र

वि०—वह जिसके जटा हो, जटाधारी ३ देखो 'जटियळ' (रू भे)

जटियो–स०पु० (स्त्री० जटणी) जटिया जाति का व्यक्ति।

जटिल–वि० [स०] १ जो ग्रासानी से सुलभ न सके, दुरूह २ क्रूर, दुष्ट ३ उलझन डालने वाला।

स०पु० [स० जटिल.] १ सिंह २ ब्रह्मचारी. ३ शिव, महादेव ४ फकीर। उ०—मग जटिल सीस लिय सग स्वान, कर स्याम पात्र वर्जित उपान।—ला रा

रू०भे०—जटल।

जटिला–स०स्त्री० [स०] १ ब्रह्मचारिणी २ गौतम वश की एक ऋषि कन्या।

जटी–वि०—वह जिसके जटा हो, जटाधारी। उ०—जटी वीरभद्र घणा जगाया। ग्राठ हजार इसा भड ग्राया।—सू प्र

स०पु० [स० जटि] शिव, महादेव (डि को) उ०—जटी भूत प्रेत लिये लैर लग्यो, हठी वीरभद्र तमासै उमग्यो।—ला.रा

२ वह सन्यासी या तपस्वी जिसके सिर पर जटा हो. ३ वट वृक्ष (ह ना मा)

क्रि०वि०—जहाँ (रू भे जठी)।

उ०—मेचा सु समर माडतै 'मोकळ', तद खाग वागी जटी तटी। ढहिया रेण लाखा घड ढगळा, मुगळा पामी नही मटी। —राणा लखमसिंह री गीत

रू०भे०—जट्टि, जट्टी, जट्ठी।

जटीधू–स०पु० [स० धूजटि] शिव, महादेव। उ०—जोबा रगा बारगा बिरुणानाद सामाजतो। जटीधू ग्रजोणी नाद साभतो जगेव। —हुकमीचद खिडियो

जटेत, जटेल, जटेस, जटेसर, जटेस्वर, जटैत, जटैल–स०पु० [स० जटिल, जटा+ईश्वर] १ (जटाधारी) सिंह।

उ०—१ खूटा झडा हबोळा हैथडा भू बेहरी खुरा, सूर ढका खेहरी भू मज नसा तेम। रोळा काज तेहरी थटेत ग्राया राजा माथै, जटेत केहरी दोळा फीला टोळ जेम।—चावडदान महडू

उ०—२ हला करोला तवल्ला बाज घेरियो गिरद हीदु, जगायो ग्रणी दुजाणी ग्रखाडै जटैत।—फतेसिंह महडू

२ वीर, योद्धा। उ०—गैण ऊचीसवा भाण खचायो थटैल ग्रीधा, वकारू जटैल पाठ बचायो बीराण। ऊजटैल पटा काळो नचायो चमड-ग्राळो, पटैळ बरथा मारू मचायो पीठाण।—महादान महडू

३ शिव, महादेव।

वि०—वह जिसके सिर पर जटा हो, जटाधारी।

जट्ट—१ देखो 'जाट' (रू भे) २ देखो 'जटा' (रू भे.)

जट्टा—देखो 'जटा' (रू भे)

जट्टाय—देखो 'जटायु' (रू भे) उ०—समाचार पूछे कहे भेद साहै, मिळै हस जट्टाय वैकुठ माहै।—सू प्र.

जट्टि, जट्टी, जट्ठी—देखो 'जाट' (रू भे) उ०—मारू ग्रावी चउहडइ, गाधी केरइ हट्टि। हट्ट लूसायउ वाणीयइ, वळद गमाया जट्टि। —ढो मा

२ देखो 'जटी' (रू भे)

जठर–स०पु० [स०] उदर, पेट। उ०—ग्रनग जु काम तैंका ग्रग महादेव जुदा जुदा कीया था, सु जेका जठर कहता पेट कै विखै वसिने जुडिया।—वेलि टी

यौ०—जठरागनी, जठराग्नि, जठरानळ, जठागनि।

रू०भे०—जठरि।

मह०—जठराळ।

वि०—१ वृद्ध, बूढा २ निष्ठुर। उ०—ग्रपहड ग्रथग ग्ररेह, जिको विनडियो वधतो। कुवचन मुख काढता, जिको सुवचन जाणतो। ग्रेक घडी ग्रातरो, दोरम सोहि दाखतो जिको जीव जीवतो, नको ग्रतर राखतो। ग्राफेई माल लेता उरो, कदे न चख झखा किया। 'सेरसा' मरण फूटो नही, है लाणत जठर हिया।—पहाडखा ग्राढो

जठरागनी, जठराग्नि–स०स्त्री० [स० जठराग्नि] उदर की ग्रन्न पचने की गरमी या ग्रग्नि, पेट की ग्राग।

जठरानळ–स०स्त्री०यौ०—जठराग्नि।

जठराळ—देखो 'जठर' (मह०, रू भे) उ०— दयाळ क्रपाळ सभाळ करे, जिळ झाळ कराळ विचाळ रखै। जठराळ उधाळ खुधाळ मरे, नभ नाभिन भाळ रसाळ भखै।—करुणासागर

जठरि—देखो 'जठर' (रू भे) उ०—अवसरि तिणि प्रीति पसरि मन अवसरि, हाइ भाइ गोहिया हरि। अग अनग गया आपाणा, जुडिया जिणि वसिया जठरि।—वेलि

जठा-क्रि०वि०—जहा।
उ०—ओ उठाय एकत धरायौ। जठा पछै न्प सिद्ध जगायौ।
—सू.प्र.

जठागनि—देखो 'जठरागनि' (रू भे) उ०—कइ खाय सिराय पचाय जठागनि, दाय सहाय सवाय मरै।—करुणासागर

जठी-क्रि०वि०—१ जिस तरफ, जिस ओर २ जहा, जिधर।
उ०—रामदास हर रामदास रै, वाडै गोधा वडिया है। जठी तठी नू कर कर जुरडा, खिलखावण खडभडिया है।—ऊ का.

जठे, जठै-क्रि०वि०—जहा। उ०—जोरावर तपियो जठै, भूपत जादव भाण। गाजे तू सो देवगिर, गूजरवै सुरताण।—वा दा
मुहा०—१ जठै तठै होणौ—कही कही होना, बहुत कम जगह पर होना, हर जगह या चारो ओर होना २ जठै री तठै रै' जाणौ—जरा भी टस से मस न होना, उन्नति न करना, न उभरना, कार्यवाही न होना।
कहा०—१ जठै पडै मूसळ वठै खेमकुसळ—जहा मूसल गिरता है वहा क्षेम-कुशल रहती है, जहा कोई शक्तिशाली या समर्थ व्यक्ति पहुचता है वही उसे सफलता मिलती है २ जठै सेर वठै सवा सेर, जठै सौ वठै सवा सौ—इस ससार मे कायर, वीर, निर्बल, बलवान, दुष्ट, सज्जन आदि सभी प्रकार के व्यक्ति मिलते हैं।

जडवा-स०स्त्री०—चौमठ योगिनियो मे से एक योगिनी। उ०—देवी जम्मघटा वदीजे जडवा। देवी साकणी डाकणी रूढ सव्वा।—देवि

जड-वि० [स०] १ जिसमे चेतनता न हो, अचेतन। उ०—देह जिकण वाता ए दोई, तिकै सदाई तीखा। बीजा जड जगम वसुधारा, सारा जीव सरीखा।—र रू
२ चेष्टाहीन, जिसकी इद्रियो की शक्ति मारी गई हो, स्तब्ध. ३ मद बुद्धि, नासमझ, मूर्ख। उ०—मुणै जाय हरि मेले मोनूं, जड तोनू आगूच जताऊ। सीस नमाय सिया ले साथे, वत्तसी जदा उपाव वताऊ।
—र रू
४ गूगा, मूक ५ बहरा ६ अनजान, अनभिज्ञ ७ जिसके मन मे मोह हो ८ झूठा (अ मा) ९ जटा (उ र.)
रू०भे०—जट्ट, जड्ड।

जडचर-स०पु० [स० जडश्चर] उनपचास क्षेत्रपालो मे से एक।

जडटोप-स०पु०—शिरस्त्राण, युद्ध मे पहनने का लोहे का टोप, झिलमटोप।

जडणौ, जडबौ-क्रि०स०—१ टिड्डी दल का घनीभूत होना २ अधिक होना. घना होना. ३ मोटा होना।

जडता-स०स्त्री०—[स० जड + रा०प्र०ता] १ अचेतनता. २ स्तब्धता. ३ मूर्खता, नासमझी ४ गूगापन ५ बहरापन

जडधर, जडधार, जडधारी-स०पु० [स० जटाधर, जटाधारी] १ शिव, महादेव। उ०—तु जडधार तणौ वळ जाणै। तू महराज तणौ घर माणै।—पी ग्र
स्त्री० [रा०] २ कटारी, कृपाण।

जडभरत, जडभरतरी-स०पु०—एक प्राचीन पौराणिक राजा।
वि०वि०—परम विद्वान तथा शास्त्रज्ञ होते हुए भी ये सासारिक वासनाओ से पीछा न छुडा सके थे। वानप्रस्थ होने पर भी सद्य:जात एक मृगशावक को पाल कर उससे अत्यन्त स्नेह किया। अत मे ईश्वर के स्थान मे उसी का ध्यान करते हुए मरे जिसके फलस्वरूप पशु योनि मे उत्पन्न हुए। चौरासी योनिया भोगते हुए पुन मनुष्य योनि मे आये किन्तु फिर भी इनकी जडता नही गई जिसके कारण ये जड भरत नाम से प्रसिद्ध हुये। परम विद्वान होते हुए भी इन्हे लोग मूर्ख समझते थे और केवल भोजन देकर इनसे खूब काम लेते थे। एक बार राजा सौवीर ने इन्हें पालकी ढोने मे लगाना चाहा। इसी अपमान से इन्हे आत्मज्ञान हुआ। पालकी ढोना इन्होने अस्वीकार किया जिससे इनके ऊपर मार पडी। किन्तु फिर भी ये टस से मस न हुए। अत मे राजा सौवीर ने इन्हें पहिचाना और क्षमा मागते हुए इनसे ज्ञानोपदेश प्राप्त किया। भरत ने ज्ञानोद्रेक द्वारा मोक्ष प्राप्त किया।

जडळक, जडलक, जडळग, जडलग-स०स्त्री०—१ तलवार (ह ना)
उ०—सत्र सारत समधा सब कोई, जडळग वह गई सग जिनोई।
—रा रू
२ कटार। उ०—तई सुपहा घडा मोड साहब तणा, ल्हसै अर किता रहिया होण लोग। जडळगा पाण 'माना' हरा तो जसा, भरै कमळा जिया ऊजळा भोग।—रावत सारगदेव कानोड री गीत
रू०भे०—जडळग्ग, जडलग्ग।

जडळगधी-स०स्त्री०—छुरी (डि.को)

जडळग्ग, जडलग्ग—देखो 'जडळग' (रू भे) उ०—जडळग्ग अलग्ग अळग्ग झलै। मगधग्ग वळै पग डग्ग मिळै।—पा प्र

जडा-स०स्त्री० [स० जटा] जटा (जैन)

जडागि—देखो 'जडाग' (रू भे) उ०—फाळै मरण मनोरथ कीधा, लाज मरण भारथ भुजि लीधा। आप तणै डेरे फिरि आयौ, जोध जडागि मिळै गिर जायौ।—वचनिका

जडाधर, जडाधार, जडाधारी-स०पु० [स० जटाधर., जटाधारिन्] १ जटाधारी व्यक्ति २ शिव, महादेव। उ०—१ वेद च्यारइ अनै ब्रह्म वाखाणियौ। जडाधर सरीखै प्रमेसर जाणियौ।—पी ग्र
उ०—२ केवी मुहर पूठि सुर-कामिणि, जडाधार पासे व्योम जोगिणि। मोहिया सुर अतरीख गयण मिणि, राइजादौ सोहियौ महारिणि।
—राठौड गोकुळ सुजानसिंहोत ईसरोत रौ गीत

जडाळी-स०स्त्री०—कटारी, कृपाण। उ०—गढपतिए घणा किया गढ रोहा, परगह ले जूझिया पहू। जिम कीधौ 'अमरेस' जडाळी, किणहि न कीधौ इम कळह।—केसोदास गाडण

जडि–स०स्त्री० [स० जटिका] जटी, जटिका।

स०पु० [स० जटिन्] १ जटाधारी तपस्वी (जैन) २ महादेव (जैन)

वि०—जटाधारी, जटायुक्त (जैन)

रू०भे०—जडी।

जडियाइलग, जडियाल–स०पु० [स० जटितालक, जटाल] ८८ ग्रहो मे से एक ग्रह (जैन)

जडिल–वि० [स० जटिल] जटाधारी, जटावाला (जैन)

स०पु०—१ राहु (जैन) २ केसरीसिंह (जैन) ३ जटाधारी तपस्वी (जैन)

जडियल–स०पु० [स० जटिलक] राहु ग्रह का एक नाम (जैन)

जडी—देखो 'जडि' (रू भे, उ र)

जडुल–स०पु० [स० जटिल] एक प्रकार का सर्प विशेष जिसके शिर पर जटा होती है (जैन)

जडौ—देखो 'जाडौ' (रू.भे)। उ०—१ जडौ रूप तूना अणावत जेहो, कुहाडो अणा ऊपरे मात्र केहो।—ना द

उ०—२ आडा दळ टक्कर हुत उडाय। जडा दळ वीच कियौ जुध जाय।—सू प्र

उ०—३ थावर जगम सुखम थूळ, छीदा भी जडा।

—केसोदास गाडण

२ जड, मूर्ख। उ०—१ न भजै रघुनद दयासभद, जे मतमद जाण जडा। गुण राघव गाणै 'किसन' कहाणै, विच प्रथमाणै भाग वडा।

—र ज प्र.

रू०भे०—जड्डौ।

जड्डु–स०पु०—१ हाथी (जैन) २ देखो 'जड' (रू भे)

जड्डौ—देखो 'जाडौ' (रू भे.)

जण–स०पु० [स० जन] (स्त्री० जणी) १ लोक, लोग।

उ०—वलि रितराइ पसाइ वेसन्नर, जण भुरडितौ रहै जगि।

—वेलि

२ प्रजा, रय्यत ३ अनुयायी, दास ४ झुड, समूह।

उ०—राजा परजा गुणिय-जण, कविजण पडित पात। सगळा मन ऊछव हुअउ, वूठै तौ वरसात।—ढो मा.

५ व्यक्ति। उ०—१ सुहिणा तोहि मरावितू, हियइ दिराऊँ छेक। जद सोऊ तद दोइ जण, जद जागू तद हेक।—ढो.मा

उ०—२ राज कउ जण पाठवइ, ढोलइ निरति न होइ। माळवणी मारइ तियउ, पूगळ पथ जिकोइ।—ढो.मा.

मुहा०—जण-जण, जणा-जणा—प्रत्येक व्यक्ति।

६ भक्त।

[स० जन्म] ७ जन्म, उत्पत्ति ८ सतान, औलाद।

मुहा०—जण खळणौ—सतान का मूर्ख रहना, सतान का पथभ्रष्ट होना।

[स० जन] ९ सात लोको मे से एक लोक, जनलोक।

१० एक राक्षस का नाम।

रू०भे०—जन।

वि०—१ उत्पादक, उत्पन्न करने वाला २ सज्जन।

उ०—पिण पथ वीर जूजुआ पधारचा, पुरि भेळा मिळि कियौ प्रवेस। जण दूजण सहि लागा जोवण, नर नारी नागरिक नरेस।

—वेलि

सर्व०—जिस। उ०—१ चमत्कार जण हुवौ सचेळौ। भाण हुवौ जाणै जळ भेळौ।—सू प्र उ०—२ जण तण आगळ जोय, पडिया काज न पालटै। लागे सेणा लोय, मिसरी सरखौ मोतिया।

—रायसिंह सादू

क्रि०वि०—जब।

रू०भे०—जणौ, जन।

जणअ–स०पु० [स० जनक] पिता (जैन)

जणइ–स०स्त्री० [स० जनिका] उत्पन्न करने वाली, जन्म देने वाली (जैन)

जणइउ–स०पु० [स० जणयितृ] जनक, पिता (जैन)

जणाईत्तर, जणइत्तु–वि० [स० जनयितृ] उत्पन्न करने वाला, उत्पादक (जैन)

जणक–स०पु०—जन्म (ह ना) २ देखो 'जनक' (रू भे, जैन)

जणजण, जणज्जण–स०पु०यौ०—प्रत्येक व्यक्ति।

उ०—१ विसतरी कत्थ जणजण वदन, अरि मति घणा अभावियौ। एसा जवान लीधा अडर, खान मुदफ्फर आवियौ।—रा रू

उ०—२ त्रिथा भुव भार फणफ्फण व्याळ। कणक्कण फौज जणज्जण का'ळ।—मे म

जणण–स०पु० [स० जनन] १ जन्म, उत्पत्ति (ह ना) २ वश ३ सतान।

रू०भे०—जनन।

जणणि, जणणी–वि०स्त्री० [स० जननी] सतान उत्पन्न करने वाली, प्रसव करने वाली।

स०स्त्री० [स० जननी] माता। उ०—१ जणणि तिलक कीधउ वीर नू नाम लीधउ।—विराट पर्व उ०—२ पातसाह अकबर आपरी जणणी नू काध दियौ।—वा दा ख्यात

उ०—३ वहू कन्हा जणणी इक वार, आरीसउ मागयउ तिणि वार।

—ढो मा.

रू०भे०—जननी, जनूनी।

जणणौ, जणवौ–क्रि०स०—१ सतान उत्पन्न करना, प्रसव करना, जन्म देना। उ०—१ जे विण पदम राणिया जणियौ, माई पिता तिके सब भणियौ।—सू प्र उ०—२ माई एहा पूत जण, जेहा राण प्रताप। अकबर सूतौ ओधकै, जाण सिराणै साप।

—प्रथ्वीराज राठौड

२ जानना। उ०—जप जीव नहि आवतौ जाणै, जोवण जावणहार जण। वहू विलखी वीछडती वाळा, वाळ सघाती वाळपण।—वेलि.

जणणहार, हारौ (हारी), जणणियौ— वि० ।

जणवाडणौ, जणवाडवौ, जणवणौ, जणवावौ जणवावणौ, जणवावबौ, जणाडणौ, जणाडवौ, जणाणौ, जणाबौ, जणावणौ, जणावबौ— प्रे०रू० ।

जणिओडौ, जणियोडौ, जण्योडौ—भू०का०कृ० ।

जणीजणौ, जणीजवौ—कम वा० ।

जणपय–स०पु० [स० जनपद] देश (जैन)

रू०भे०—जणवय ।

जणय–स०पु० [स० जनक] पिता (जैन)

जणवइ–स०पु० [स० जनपति] प्रजा का मुखिया, राजा ।

उ०—आइसु विदुरह दीधउ राइ, दह दिसि जणवइ जोवा धाइ ।
—प.प च

जणवय—देखो 'जणपय' (रू भे., जैन)

वि० [स० जानपद] देश मे उत्पन्न, देश निवासी (जैन)

जणवयकल्लाणिआ–स०स्त्री० [स० जनपदकल्याणिका] चक्रवर्ती की रानी ।

जणवा–स०स्त्री०—सीरवी नामक एक काश्तकार कौम का भेद या शाखा ।

जणवौ–स०पु०—१ जन्म देने का कार्य २ जणवा जाति का व्यक्ति ।

जणा–क्रि०वि०—जव । उ०—१ जणा खीमसी वीटू नू बुलाय के कही जे कुवर जाय समझाय जे थारै विवाह तौ घणा ही हुआ ।
—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ दिल मति धारौ देर, पधारौ पावणा । समझू जणा सनेह, अचाणक आवणा ।—सिववक्स पाल्हावत

स०पु०—जन, लोग ।

जणाडणौ, जणाडवौ, जणाणौ, जणावौ–क्रि०स०—१ जन्म दिलवाना, प्रसव कराना २ बतलाना, प्रकट करना, जतलाना ।

उ०—१ अर कोई नैमित्तिक महा अवकार मे निसीथ रै समय दक्षिण दिसा रै द्वार जाय जिकै बटा जतन रै साथ गढ माहिला नू जणाया ।—व भा.

उ०—२ सु तरै देवीजी सू इच्छना करी, मो आगै आ फोज भाजै तौ हू तुरत देवीजी नै म्हारौ माथौ चाढू । मन माहे इच्छना की । वात किणही नू जणाई नही ।—नैणसी

जणाणहार, हारौ (हारी), जणाणियौ— वि० ।

जणायोडौ—भू०का०कृ० ।

जणाईजणौ, जणाईजबौ—कर्म वा० ।

जणाडणौ, जणाडवौ, जणाणौ, जणावौ—रू०भे० ।

जणायोडौ–भू०का०कृ०—१ प्रसव कराया हुआ २ वतलाया हुआ, जताया हुआ (स्त्री० जणायोडी)

जणाव–स०पु०—जानकारी, ज्ञान । उ०—पीछे इण वात री जणाव नसै गोसै स्री रायसिंघजी नू हुवौ ।—द दा

जणावणौ, जणावबौ—देखो 'जणाणौ, जणावौ' (रू भे)

उ०—माल उडावै आवै मस्ती, तन पर लावै तयारघा । जद वेश सू हेत जणावै, सजा रमै सिकारघा ।—ऊ का

जणावियोडौ—देखो 'जणायोडौ' (रू भे) (स्त्री० जणावियोडी)

जणि—१ देखो 'जणी' (रू भ.) उ०—रति मदन वदन हुइ होण रस, रसि उज्जळि पावस धरणि । नव-नव विलास नरपत्ति रा, ज्यौ हुलास हरि गोपि जणि ।—रा रू

स०स्त्री० [स० जनि] २ माता । उ०—धणि सस जणि धण-धण वलय, हुएं सुहट कर हाम । चौरंग मे चंदहास रौ, निरथ होय वदनाम ।—रेवतसिंह भाटी

जणिय–वि० [स० जनित] उत्पन्न हुवा हुआ (जैन)

जणियाणी–स०स्त्री०—प्रजनन करने वाली, स्त्री, औरत ।

जणिया–स०स्त्री० [स० यामिनी] रात्रि (अ मा)

जणियार–स०पु०—१ जगत का पिता, राजा ।

उ०—खळ खेंगरण वडा ब्रिद खाटण, वैरां सू चाळवण विरोध । सोमि सनाह दुवाहा सामत, जगि जणियार कळोधर 'जोध' ।
—राठोड सुजाणसिंह आसकरणोत रो गीत

वि० (स्त्री० जणियारी) उत्पन्न करने वाला, पैदा करने वाला ।

उ०—जुव जणियार अभनमा 'जैता', सुकव करै वाखाण सह । तो तो भुज भार चित्रगढ तेहा, का कव रय चो भार कह ।
—चत्रभुज वारहठ

जणियारी–स०स्त्री०—जन्मदातृ, माता । उ०—गोरी पणियारी तेजी तन गाजै । लारै धोरी रै जणियारी लाजै ।—ऊ का

जणियोडौ–भू०का०कृ०— जन्म दिया हुआ, प्रसव किया हुआ । (स्त्री० जणियोडी)

जणियौ–स०पु० [स० जात] बेटा, पुत्र, लडका । उ०—सुण मरियौ सुत एकलौ, सासू अभणै धार । मो जणियौ कायर थियौ, वेटौ वळण विवार ।—वी स

जणी–स०स्त्री० [स० जनी] नारी, महिला (जैन)

सर्व०—१ जिस । उ०—इसडै टोटै हू सखी, वारी वार अनत । पोत जणी मे मोतिया, चूडो मैगळ दत ।—वी स

२ उस । उ०—पाई फतै रोळै पाव डूढाड दराया पाछा, डाण आयै वहाई न भूलौ घाव डाव । ऊवावरे 'पत्ता' मार भाला घरा आपणाई, सुवाळा जणी नू पाछी वढाई सुजाव ।
—राजराणा माधोसिंह झाला रो गीत

क्रि०वि०—जब भी, जव ।

रू०भे०—जणि ।

जणीता, जणीती–स०स्त्री०—जन्मदात्री, माता, जननी ।

जणीतौ–स०पु० (स्त्री० जणीता, जणीती) जन्म देने वाला, पिता ।

जणुम्मि–स०स्त्री० [स० जनोर्मि] मनुष्यो की तरग के समान पक्ति । (जैन)

जणे—देखो 'जणै' (रू भे)

जणेता–स०स्त्री०—जन्मदात्री, माता। उ०—देवी कोप रै रूप मे काळ जेता, देवी क्रिया रै रूप माता जणेता।—देवि

जणै–क्रि०वि०—जब। रू०भे०—जणे।

जणौ–स०पु० [स० जनक] १ पिता। उ०—पख दुहू नूमळ सासरौ पीहर, जेठ 'अमर' 'सत्रसाल' जणौ। राणी पाणी धरम राखियौ, ताणौ हिंदुसथान तणौ।—जममादे हाडी रौ गीत

२ देखो 'जण' (१,५) उ०—आवासि उतारि जोडि कर ऊभा, जण-जण आगं जणौ-जणौ। राम किसन आया राजा रै, तो को अचिरज मनुहार तणौ।—वेलि.

यौ०—जणोजण।

जण्ण–स०पु० [स० यज्ञ] १ यज्ञ (जैन) २ इष्टदेव की पूजा (जैन)

जण्णइ–वि० [स० यज्ञिन्] यज्ञ करने वाला (जैन)

जण्णइज्ज–स०पु० [स० यज्ञीय] उत्तराध्ययन सूत्र के २५ वें अध्ययन का नाम (जैन)

वि०—यज्ञ सम्बन्धी (जैन)

जण्णजाइ–स०पु० [स० यज्ञयाजिन्] यज्ञ करने वाला (जैन)

जण्णदत्त–स०पु० [स० यज्ञदत्त] इस नाम का एक साधु (जैन)

जण्णवाड–स०पु० [स० यज्ञवाट] यज्ञ करने का एक स्थान (जैन)

जण्णोवईय–स०पु० [स० यज्ञोपवीत] यज्ञोपवीत (जैन)

रू०भे०—जन्नोवाईय।

जण्हु–अव्य०—जहा, जिस लिये (जैन)

जण्हवी–स०स्त्री० [स० जाह्नवी] गगा, भागीरथी (जैन)

जतद्र, जतद्रीयौ,—स०पु० यौ० [स० जितेन्द्रिय] १ देखो 'जितेंद्रिय' (रू भे)।

उ०—१ क्रम उत्सस ताम जतद्र कहै। वळ हाथ अमा तुझ हस वहै।—पा प्र

उ०—२ नागेस पनगा सिरै जतद्रीयौ वायनद, चवा गोरखेस जोगा-रभा सिरै चीत। उदधा खीरोद सिरै जुधा गुडाकेस ओपै, ओपै खाग त्याग सिरै उदा रौ आदीत।

—नीवाज ठाकुर सावतसिह रौ गीत

जत–स०पु० [स० यतित्व] १ जितेन्द्रिय होने का भाव।

उ०—सागी सत हीणा है जत हीणा मत हीणा मागदा है।—ऊ का

२ शील धर्म, सतीत्व। उ०—नित नार निहार अपार निसा, जत खोवण जार हजार जिसा।—ऊ का

३ जन्म. ४ एक मुसलमान कौम।

जतधार–स०पु०—हनुमान। उ०—जतधार जावौ करै कावौ खवर ल्यावौ खोद। घर धाख धावै जठै जावै हर अभावै हेरनै।—र रू

वि०—जितेन्द्रिय।

जतन–स०पु० [स० यत्न] १ साधन। उ०—चाकरी वाळा रै घोडौ चावै। कपडा चावै। हथियार चावै। चाकर चावै। खरची चावै। इतरौ था नखे जतन नहिं।—पचमार री वात

२ उपाय, तरकीब।

मुहा०—जतना दही जमणौ—यत्न से ही दही जमता है। बुद्धिमानी से ही कार्य अच्छा होता है।

३ प्रयत्न, कोशिश। उ०—गावण म्हारा गीत परणी जतन करंती, ओढण मैलौ चीर गोद मे वीण धरती। ईखे मित पयोद आखडी नीर भरता, भूली राग सुवाळ जतन सू तार लुवता।—मेघ.

४ रक्षा, हिफाजत। उ०—१ क्रपण जतन धन रौ करै, कायर जीव जतन्न। सूर जतन उण रौ करै, जिण रौ खाधौ अन्न।

—बा दा.

उ०—२ सू चडौळी रा सिरदार जसवतसिहजी पछाडी हुरमखानै रै जतन सारू हुता।—द दा

५ प्रबध, व्यवस्था। उ०—अवार तौ इणा नै डेरा दिरावौ, खाणा-दाणा रा जतन करावौ।—रीसालू री वात

६ आदर-सत्कार। उ०—जठै जुमाई उजीण रौ परधांन है। जणी नै मास एक सूधी गाम माहे राख्या भली भात सौं जतन करे नै डायचौ दे अर सीख दीवी।—गाम रा धणी री वात

७ प्रमाण, पुष्टि। उ०—अनि सुकवि कोइक पूछै अभास, किण अरथ नाम सूरिज प्रकास। जिण जतन काजि साचौ जवाब, सजुगत अरथ दाखू सताब।—सू प्र.

क्रि०वि०—लिए।

रू०भे०—जतनि, जतनी, जतनेत, जतन्न।

जतना–क्रि०वि०—लिये। उ०—ऐ कूंपा साथे अहकारी, धणी तणा जतनां व्रतधारी।—रा रू

जतनि, जतनी—देखो 'जतन' (रू भे) उ०—जोध सहरी गढ जतनि सदृढ जादव पण सच्चै। सूर पणै समरत्थ रीत अनि पथ न रच्चै।

—रा रू.

वि०—यत्न करने वाला, चतुर, चालाक।

जतनेत, जतन्न—देखो 'जतन' (रू भे) उ०—१ अकबर रै बेटा तणौ, हुरमा सहित जतन्न। भरम निवेडे आपिया, तेडे 'खीव करन्न'।

—रा रू.

उ०—२ जस गाडा भरियौ जुडै, जग सो करौ जतन्न। ओ आभ-रणा आभरण, रतना सिरै 'रतन्न'।—बा दा

उ०—३ दिय सहस तावीन, दीध महाराज पायदळ। उभै सहँस उमराव, बधव जतनेत सहँसबळ।—सू प्र.

जतराव–स०पु०—जितेन्द्रिय व्यक्ति यथा—लक्ष्मण, हनुमान, पाबू राठोड आदि। उ०—जतराव महा सिध पथ जुओ। हाय आज भालाळ त्रिकाळ हुओ।—पा प्र

जतरै–क्रि०वि०—जब तक, जितने मे। उ०—धूंम सुणै चख आग धकतरै। जाजुळ ग्राह जागीयौ जतरै।—र ज प्र

रू०भे०—जतलौ।

जतरौ– (बहु० जतरा) देखो 'जितरौ' (रू भे)

उ०—जतरौ मुख आखी जवन, वात वणाय-वणाय। सह झूठा मीठा वयण, दीठा न आया दाय।—रा रू.

(स्त्री० जतरी)

जतळाणो, जतळावो—देखो 'जताणो' (रू भे)

उ०—१ बिडरी हिरणी-सी फिरणी बिजकाती। मुरडो मुसकाती जोरो जतळाती।—ऊ.का उ०—२ भवर-नाभि निरखाय बहती मन भरमावै। प्रगटै अगा प्रीत भाम कद कह जतळावै।—मेघ

जतळायोडो—देखो 'जतायोडो' (रू भे) (स्त्री० जतळायोडी)

जतळावणो, जतळाववो—देखो 'जताणो' (रू भे)

जतलो (बहु० जतला) देखो 'जितरो' (रू भे) (स्त्री० जतली)

जताणो, जतावो–क्रि०स०—१ जताना, ज्ञात कराना, बतलाना।

उ०—१ मुणं जाय हरि मेले मोनू, जड तोन् आगूच जताऊ। सीस नमाय सिया ले साथै, वचसी जदा उपाव बताऊ।—र रू.

उ०—२ सो पती रा सूरवीरपणा री आनै जतायो के भागला री घर नही सूरवीरा री छै सो अठा जाय नही सकसो नीकळणो मुसकल होवसी।—वी स टी

२ आगाह करना।

रू०भे०—जतळाणो, जतळावो, जतावणो, जताववो।

जतायोडो–भू०का०कृ०—१ जताया हुआ, बतलाया हुआ २ आगाह किया हुआ (स्त्री० जतायोडी)

रू०भे०—जतावियोडो।

जतालो–वि० [स० यतवान] १ साहसी २ ब्रह्मचारी।

जताव–स०पु०—१ असर, प्रभाव २ प्रकट होने का भाव।

उ०—तरै देवराज कह्यो 'भली वात' पिण आदमी पाछा मेलिया, कहाडियो-'म्हारै माथै वैर छै, हू फलाणा दिन रै साहा ऊपर आईस, घणो जताव राज किणही नू मत करो'।—नैणसी

रू०भे०—जतावो।

जतावणो, जताववो—देखो 'जताणो' (रू.भे)। उ०—पती मरण रो सोक नही करणो सती होवणो जतावे है'।—वी स टी।

जतावियोडो—देखो 'जतायोडो' (रू भे.)। (स्त्री०जतावियोडी)

जतावो—देखो 'जताव' (रू भे)

जतिंद्र—देखो 'जितेंद्रिय' (रू भे) उ०—विधना अकं मेटण को वरणै, पह वळ जतिंद्र जको परणै।—पा प्र

जति—देखो 'जती' (रू भे) उ०—लागो हणमत पराक्रम लेखि, दियै नह हार जति वप देखि।—सू प्र

जतिईस–स०पु० [स० यतीश] १ यती. २ हनुमान।

जति चाद्रायण–स०पु०—एक प्रकार का व्रत जिसका विधान यतियो के लिये है।

जती–स०पु० [स० यति] १ जितेन्द्रिय व्यक्ति। उ०—१ साध सरावै सो सती, जती जोखता जाण। रज्जब साचे सूर को, वैरी करै वखाण।

—रज्जबदास

उ०—२ हलै हेक राई न कोसम्म होना, जती जीव चालै न ज्यू वाम जोता।—सू प्र.

२ श्वेताम्बर जैन साधु। उ०—आ परत जिणमे वात कुसळचद जती रो वणायोडी छै।—ढो मा

३ योगी ४ हनुमान (ना मा) उ०—जटी आग ओकवो सिधेस को ओखवो जगा। जती भी मोखवो नगा लका सीस भाल।

—हुकमीचद खिडियो

५ लक्ष्मण (ना मा) उ०—एही राम दाखे जती वेण एहा, दना ताम पाई महादिव्य देहा। सू प्र.

६ सन्यासी ७ ऋषि ८ ब्रह्मा का एक पुत्र ९ नहुष का एक पुत्र १० ब्रह्मचारी ११ छप्पय का एक भेद जिसमे ५ गुरु और १४२ लघु मात्रायें होती हैं।

[स० यती] १२ छदो मे लय ठीक रखने के लिये थोडा विश्राम १३ रोक, रुकावट १४ मनोविकार।

अव्य० [स० यदि] यदि, अगर (जैन)

रू०भे०—जति।

जतीवाह–स०पु०—गरुड (ना डि को)

जतीव्रती–वि० [स० यतव्रती] ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने वाला, जितेन्द्रिय। उ०—जटाधारी जोगधारी अभूत अनाद जोगी, पाणी नमो सीगी नाद पूरता प्रकास। जतीव्रती सिधनाथ आदेस करता जठै, सिधेस रमता जठै सहसा सुहास।—महाराजा मानसिह

जतु–स०पु०—१ वृक्ष का गोद २ शिलाजीत. ३ लाख, लाक्षा।

जतेंद्र—देखो 'जितेंद्रिय' (रू भे) उ०—कहीस ओपमा अनोप धीजिती कविंद्र की। महा सु सूरवीर की जनेत है जतेंद्र की।

—पा प्र

जतेक–वि०—जितने।

जतै, जतै–क्रि०वि०—जब तक। उ०—भाला तणो पाणगो भारी, 'कुभ' कळोवर जतै कियो। तण अपहार वेगला तोडे, गोरी सेन अचेत गियो।—उडणा प्रथ्वीराज रो गीत

जत्त–स०पु० [स० यत्न] देखो 'जत' (रू भे)। उ०—सीता छाडै सत्त, जत्त लिछमण सू जावै। महाजोध हणमत कळा वळहीण कहावै।—चोथो वीठू

जत्ता–स०स्त्री० [स० यात्रा] प्रयाण, यात्रा (जैन)

जत्ताभयअ, जत्ताभयग–स०पु० [स० यात्राभतक] यात्रा मे साथ रहने वाले नौकर (जैन)

जत्तासिद्ध–स०पु० [स० यात्रासिद्ध] बारह बार समुद्र की यात्रा कर के सकुशल लौट आने वाला व्यक्ति (जैन)

जत्तिय–वि० [स० यावत्] जितना (जैन)

जत्ती—देखो 'जती' (रू.भे) उ०—ईस अणवर ब्रह्म अत्ती, जान साथै कोड जत्ती।—पी ग्र

जत्तो–अव्य० [स० यतम्] जहा (जैन)

जत्ते–क्रि०वि०—जब तक।

जत्थ, जत्थो–स०पु० [स० यूथ] झुड, समूह, गिरोह। उ०—मिळ वीर मेळा प्रेत वेळा खेत खेळा नच्चए। जिदराव सत्थ 'पाल' मत्थै सचए।—पा प्र

मुहा०—१ जत्थै जुतणौ—पक्ष करना, तरफ होना २ जत्थै बोलणौ—देखो 'जत्थै जुतणौ'।
क्रि०वि० [स० यत्र] जहा (जैन) उ०—धम्म सुधम्म पहाण जत्थ नहु जीव हणिज्जइ, धम्म सुधम्म पहाण जत्थ नहु कूड भणिज्जइ।
—ऐ.जै का स.

रू०भे०—जथो।
जत्र-क्रि०वि० [स० यत्र] जहा, जहा पर।
उ०—१ जिण सुतण 'अनेरण' हुवौ जत्र। तिण सुतण 'व्रदनर' 'विरुप' तत्र।—सू प्र
उ०—२ कणियर तरु करणि सेवती कूजा, जाती सोवन गुलाल जत्र। किरि परिवार सकळ पहिरायौ, वरणि वरणि ईए वसत्र।—वेलि
यौ०—जत्र-तत्र।
स०पु०—नाश, सहार। उ०—जिकै छत्र गजगत्त जत्र त्यां हुये अलगा। जिकै काळ लकाळ लुळै लुळ पाये लग्गा।—नैणसी
यौ०—जत्रकत्र।
जत्रकत्र-स०पु०—नाश, सहार। उ०—आतपत्र खोस आरूढ कीधौ उठै, जत्रकत्र कियौ खळ जगत जाणी। तै जणणी उवारची पडची कस्ट तत्र-तत्र, रह पखू 'जैत' रै राजराणी।—बालावक्स बारहठ
जत्राकत्रा—देखो 'जत्र-कत्र' (रू भे)
उ०—कोस दोय दताळा दकूळ भूळ जत्राकत्रा। पत्रा तूळ कीधौ वत्रा वधूळ पटैल।—हुकमीचद खिडियौ
जथा-अव्य० [स० यथा] जिस प्रकार, जैसे, ज्यो।
स०स्त्री०—१ डिंगल-गीतो मे प्रयुक्त होने वाला अलकार विशेष, एक प्रकार का शब्दालकार २ डिंगल-गीत रचना के नियम विशेष। ये कुल २५ हैं—अत, अजोगजोग, अनूप, अहिगत, आद, इधक, एकरगीभ्राति, ग्यान, जोगअजोग, निस्चयातभ्राति, न्यून, परस्पर-माळागुण, मुगट, मुगताग्रह, मुगतग्रहबध, वरण, वितीरेक, विधानीक, सकळ, सम, सर, सरळगत, सिर, सीलसम, सुद्ध।
३ मडली, समूह ४ पूजी, सपत्ति. ५ सत्य, सच्चाई (अ मा)
कहा०—१ जथा नाम तथा गुण-जैसा नाम वैसा ही गुण, नाम के समान ही गुण होना। २ जथा राजा तथा प्रजा-जैसा स्वामी वैसा सेवक।
जथाक्रम-क्रि०वि०यौ०— [स० यथाक्रम] क्रमश, तरतीबवार (अ.मा)
जथाजथ-अव्य० [स० यथातथ्य] ज्यो का त्यो, यथातथ्य (ह ना)
जथाजात-वि० [स० यथाजात] १ मद बुद्धि, मूर्ख (अ मा, ह ना) २ सुस्त, काहिल।
जथाजोग, जथाजोग्य-अव्य० [स० यथायोग्य] यथोचित, यथायोग्य, उपयुक्त। उ०—दई न रचतौ विध दुनी, सच 'प्रताप' सामत। जथाजोग जच जीह कौ, कवि की कवत कहंत।—जैतदान बारहठ
जथातथ, जथातथि-अव्य० [स० यथातथ्य] ज्यो का त्यो, जैसा हो वैसा ही।
वि०यौ० [स० यथातथ्य] सत्य। उ०—इण रीति मीसण विजय सूर री वचन सुणि बाटी री अनुचर पाछौ जाइ जथातथ बात कही।
—वं.भा.

जथानियम-अव्य०—यथानियम, नियमानुसार।
स०पु०—डिंगल गीतो की जथाओ से सबधित नियम।
जथान्याय-अव्य०—न्याय के अनुसार, यथान्याय।
जथारत, जथारथ-अव्य०यौ०—यथातथ्य, ज्यो का त्यो।
वि०—यथार्थ, ठीक, उचित।
जथारथता-स०स्त्री०यौ० [स० यथार्थता] यथार्थता, सच्चाई, सत्यता।
जथारुचि, जथारुची-अव्य०यौ० [स० यथारुचि] रुचि के अनुसार, यथारुचि, इच्छानुसार।
जथालाभ-वि०यौ० [स० यथालाभ] जो कुछ मिले उसी पर निर्भर।
जथाविधि-अव्य० [स० यथाविधि] विधि के अनुसार, विधिपूर्वक।
उ०—पधरावि त्रिया वामै प्रभणावै, वाच परसपर जथाविधि। लाधी वेळा मागी लाधी, निगम पाठ के नवे निधि।—वेलि.

जथासभव-अव्य०यौ०—[स० यथासभव] जहाँ तक हो सके, यथासंभव।
जथासकती, जथासक्ति, जथासगती-अव्य०यौ० [स० यथाशक्ति] जितना हो सके, सामर्थ्य के अनुसार, भरसक।
जथासमै-अव्य०यौ० [स० यथा समय] ठीक समय पर, यथा समय।
जथास्थान-अव्य०यौ० [स० यथासमय] ठीक स्थान पर, यथास्थान।
जथौ—देखो 'जत्थौ' (रू भे) उ०—ओड बोलाया। सहर-सहर रा ओड आवै छै। गुजरात रा ओड आया। पाल्हौ ओड गुजरात रौ दौ सौ आदमिया रै जथै सू आयौ।—जसमा ओडणी री वात
जद-क्रि०वि० [स० यदा]१ जब। उ०—जद जागू तद एकली, जद सोऊ तद वेल। सोहणा थे मने छेतरी, बीजी तीजी हेल।—ढो मा.
मुहा०—१ जदकद—जब कभी २ जद तद—देखो 'जद कद' ३ जद तद—हर समय।
रू०भे०—जदा, जदे, जदेक, जदै, जद्द, जद्द, जद्दै।
२ देखो 'जादव' (रू भे) उ०—अवत्तरि दसवार भार भूमि उतार। कुळ जद सिणगार देव आणदकार।—पि प्र.

जदपत-स०पु०यौ० [स० यादवपति] श्रीकृष्ण (पि प्र)
जदपि, जदपी-क्रि०वि० [स० यद्यपि] यद्यपि, अगरचे।
उ०—सु आख्या नै देखिवा की त्रिपति होय नही। जदपि मन नै त्रिपति हुई छै।—वेलि
जदरथ—देखो 'जयद्रथ' (रू भे)। उ०—जदरथ सलव बुलबुल जिसा दईत किता ही दोटिया।—पी ग्र
जदराण-स०पु०यौ० [स० यदुराज] श्रीकृष्ण।
जदवस—देखो 'जदुवस' (रू भे) उ०—जदवस उजाळ भुजाळ महा गुण जाण। तप तेज दिनकर जेम तपै तुडि ताण।—ल पि.
जदा—देखो 'जद' (रू भे)

जवि, जवी–क्रि०वि० [स० यदि] जब। उ०—१ जळ क्रीडा नृप पदम रमै जवि। तन पदमणि उठती देखे तवि।—मू.प्र

उ०—२ जदी भोम्यै पूछी, कहे थारी जात काई अर कठै रहो। जदी यो बोल्यो कहे, फलाणी जायगा रहू अर फलाणी म्हारी जात।—पचमार री वात

जदीक–क्रि०वि०—जब भी, जब।

जदु–स०पु० [स० यदु] १ देवयानि के गर्भ से उत्पन्न ययाति राजा का सब से बडा पुत्र। श्रीकृष्ण इन्ही के वश मे हुए थे २ यदुवश ३ श्रीकृष्ण।

रू०भे०—जदू।

जदुकुळ–स०पु० [स० यदुकुल] यदुवशी महाराज यदु से उत्पन्न सतान।

जदुणदण, जदुनदण–स०पु० [स० यदुनदन] श्रीकृष्ण (जैन)

जदुनाथ–स०पु० [स०] श्रीकृष्ण।

जदुपत, जदुपति–स०पु०यौ० [स० यदुपति] श्रीकृष्ण।

उ०—१ वसु साधार आधार खट ही वरन, जीव जण वारवै कूट जाता। आथ भरतार अणपार जदुपत उमग, वार तण ही करी परार वाता।—रावळ अमरसिंह रो गीत

उ०—२ विधिजा सारद वीनवू, सादर करो पसाव। पावाडो पनगा सिरे, जदुपति कीनो जाव।—ना द

जदुपाळ–स०पु० [स० यदुपाल] श्रीकृष्ण।

जदुपुर–स०पु० [स० यदुपुर] यदुराजा का नगर, मथुरा।

जदुवसी—देखो 'जदुवसी' (रू भे)

जदुराम–स०पु०यौ० [स० यदु+राम] यदुवश के राम, बलराम।

जदुराई, जदुराज, जदुराय–स०पु० [स० यदुराज] श्रीकृष्ण।

जदुवस–स०पु०—राजा यदु का वश।

उ०—उण वार राम जदुवस इद। सरदत जाण राका समद।
—रा रू

रू०भे०—जदवस, जदूवस।

जदुवसी–स०पु० [स० यदुवशी] १ यदुवश मे उत्पन्न व्यक्ति २ श्रीकृष्ण (डि ना)

रू०भे०—जदुवसी, जदूवसि, जदूवसी।

जदुवर–स०पु०यौ० [स० यदुवर] श्रीकृष्ण।

जदुवीर–स०पु० [स० यदुवीर] श्रीकृष्ण।

रू०भे०—जदूवीर।

जदू—देखो 'जदु' (रू भे)

जदूणी–क्रि०वि०—जब से। उ०—जळी जदूणी केतकी, जळया न उणहि सग। प्रीत त्रिगोवै भवरा, भसमि चढावै अग।—र.रा

जदूवस—देखो 'जदुवस' (रू भे)

जदूवसि, जदूवसी—देखो 'जदुवसी' (रू.भे) उ०—सिरै भांति सारी कळा अधिकारी करमी कहावै। जदूवसि जामी सिधावत सामी नवै खडि नामी अनमी नमावै।—ल पिं.

जदूवीर—देखो 'जदुवीर' (रू.भे)

जदे, जदेक, जदै, जद्द—देखो 'जद' (रू भे.) उ०—१ गिर ग्रात कऊथा रूप रूर सदै। जिम जाग रुद्रैहइ फाग जदै।—रा रू

उ०—२ जिकै चार बोलै नडा पात जद्द। वडा वस वाखाण हूं [illegible]।—सू प्र

जद्द–वि० [फा० ज्यादा] १ अधिक, ज्यादा [स० योद्धा] २ प्रचड, बलवान।

क्रि०वि०—देखो 'जदपि' (रू भे.)

जद्दपि—देखो 'जद्यपि' (रू भे)

जद्दव—देखो 'जादव' (रू भे) उ०—पडव गरब गमाय, क्रिस्न आवो जिमि जद्दव। क्रिमि सूकै नै मेध, मनहु धारो धुर भद्दव।—ला रा

जद्दाणी–वि०—यादव वश का, यादव वश सबधी।

स०पु०—यादव वश का पुरुष।

रू०भे०—जद्दोणी।

जद्दापि, जद्दिप—देखो 'जद्यपि' (रू भे)

जद्दुराण–स०पु०यौ० [स यदुराज] यादवराज, श्रीकृष्ण।

जद्दै—देखो 'जद' (रू भे) उ०—मदोमत्त हाथी हुवै हीण मद्दै, जिमो रैणका पुत्र दीसत जद्दै।—सू प्र

जद्दोणी—देखो 'जद्दाणी' (रू भे.) उ०—जल्लहु सुता जद्दोणी, रूमा आणी जिण राणी।—व भा.

जद्यपि–क्रि०वि० [स० यद्यपि] यद्यपि, अगरचे। उ०—प्रति प्रति रूप आविया अप्रिपत, माहव जद्यपि त्रिपत मन। वार वार तिम करै विलोकन, धण मुख जेही रक धन।—वेलि

रू०भे०—जद्दपि, जद्दापि, जद्दिप।

जधा—देखो 'जहा' (रू भे) (जैन)

जनकेस–स०पु०—राजा जनक। उ०—दसा एम राजा जनकेस देसै। प्रतग्या धरी आप सो वात पेसै।—सू प्र

जनगम–स०पु० [स०] भगी, चाडाल।

जन—देखो 'जण' (रू भे)। उ०—अममक समझ अखीजै तो पण, हरिनाम श्रवत जन तारत। जिम परसत अजाण दगधत, तन समरथ दावानळ।—र.ज.प्र

जनअ–स०पु० [स० जनक] पिता (जैन)

रू०भे०—जनय।

जनक–स०पु० [स०] १ जन्मदाता, पिता। उ०—हर रिख दस सिर विजय हित, धर निज कर सर धनक। पढत 'किसन' क्रिव सरण पय, नय रघुवर जग जनक।—र ज प्र

२ उत्पादक ३ अपने अध्यात्म तथा तत्वज्ञान के लिए प्रसिद्ध एक विख्यात पौराणिक राजा, जो राजा निमि के पुत्र थे। इन्होंने ही मिथिलापुरी बसाई। इनके कारण ही बाद के राजवश की उपाधि जनक हो गई। इनका सत्ताइसवी पीढ़ी मे सीरध्वज जनक उत्पन्न हुए जिनकी कन्या सीता थी जो श्री रामचन्द्र को व्याही गई थी।

रू०भे०—जनकेस, जनवक, जन्नक।

जनकता–स०स्त्री०—उत्पन्न करने का भाव या शक्ति।

जनकनदिणी–स०स्त्री० [स० जनकनदिनी] सीता।

जनकपुर–स०पु० [स०] मिथिला प्रदेश की एक प्राचीन राजधानी।

जनकमहेस–स०पु०यौ० [स० जनक+महेश] ब्रह्मा (ह ना.)

जनक-राय–स०पु० [स० जनकराज] राजा जनक। उ०—जनकराय घर सीता जनमी दिन दिन रूप सवाय।—रुकमणी मगळ

जनकाणी–स०स्त्री०—सीता, जानकी।

वि०—१ जनक के वश का २ जनक सबधी।

जनक्क—देखो 'जनक' (रू भे)

जनखौ–स०पु० [फा० जनक] वह हिंजडा (नपुसक) जो मुसलमान धर्म को मानने वाला हो।

वि०वि०—देखो 'हिंजडौ'।

जनघर–स०पु० [स० जनगृह] १ मडप २ विश्रामस्थल।

जनचक्षु, जनचख–स०पु०यौ० [स० जनचक्षु] १ सूर्य २ मनु।

जनचरचा–स०पु०यौ० [स० जनचर्चा] लोकवाद, लोकचर्चा।

जनता–स०स्त्री० [स०] १ जनन का भाव २ जन-समूह ३ प्रजा।

जनन—देखो 'जणण' (रू भे)। उ०—नाहर रै सप्तम तनय, निडर थयौ निरवाण। निरवाण ही जिण रौ जनन, वाजै विदित वखाण।—व भा

जननी—देखो 'जणणी' (ह ना) उ०—धवळ न अटकै धुर वहै, कासू पाणी कीच। इणरी जननी तारही, वैतरणी रै बीच।—बा दा

जननेंद्रिय–स०पु०—प्राणियो को उत्पन्न करने की इन्द्रिय, योनि।

जनपद–स०पु०—१ देश. २ जनता, प्रजा।

जनपदनी–स०पु०—देश (अ मा)

जनपाळ–स०पु० [स० जनपाल] मनुष्यो का पोषण करने वाला, राजा।

जनमतर, जनमतरि–स०पु० [स० जन्मान्तर] दूसरा जन्म।

उ०—१ वाघा जीव सू वधणौ जनमतर खोया।—केसोदास गाडण

उ०—२ ले जनमतर कळह लग, वस भावी वळ वेड कहै सुणावौ सह कथा, म्हानै धुरसू माड।—पा प्र

उ०—३ पदमनाभ पडित भणइ, जनमतरि जे रीति। जाति हुई जूजूई, पूठि न छाडइ प्रीति।—का दे प्र

जनमद, जनमध–स०पु० [स० जन्माध] जो जनम से अधा हो, जन्माध। उ०—हेक चारण जनमद हो वसुवा विकाणौं, निरधन जाचण नीकळ्यौ रजपूता ढाणौं।—पा प्र

रू०भे०—जनमाध, जन्माध।

जनम–स०पु० [स० जन्म] १ उत्पत्ति, पैदाइश। उ०—१ जिण दीध जनम जगि मुखि दे जीहा, क्रिसन जु पोखण भरण करै। कहण तणौ तिणि तणौ कीरतन, स्रम कीधा विणु केम सरै।—वेलि

उ०—२ पेख अजै रिणछोड पद, लियौ जनम क्रम लाभ। छवि निरखे रिणछोड री, अरक कोड सम आभ।—रा रू

पर्या०—अवतार, उतपत, उतपति, उतपन, उदभव, उपजण, उपत, जगस्रजत, जण, जणक, जणण, जणी, जनुख, जिणि, पैदा, प्रजणण, प्रभव, भव, सभव, सस्रत।

क्रि०प्र०—दैणौ, लैणौ, होणौ।

मुहा०—जनम लेणौ—उत्पन्न होना, पैदा होना।

कहा०—१ जनम रा मगता नाव दाताराम—गुण के अनुसार नाम न होने पर २ जनम रा साथी है करम रा साथी कोयनी—मा-बाप जन्म के साथी हैं पर भाग्य के साथी नही, भाग्य का फल तो स्वय को ही भोगना पडता है ३ जनम रौ दुखियारौ नाम सदासुख—गुण के अनुसार नाम न होने पर।

यौ०—जनमआठम, जनमकुडळी, जनमगाठ, जनमघूटी, जनमतत्र, जनमदिन, जनमधरती, जनमपत्री, जनमभूमि, जनमभोम, जनममरण, जनमरोगी, जनमसघाती, जनमाध, जनमाठम, जनमास्ठमी।

विलो०—मरण।

२ अस्तित्व प्राप्त करने का भाव, आविर्भाव ३ जिन्दगी, जीवन। उ०—इण अवसर मत आळसै, ईसर आखै एम। प्राणी हररस प्रामिया, जनम सफळ थयै जेम।—ह्.र.

मुहा०—१ जनम-जनम—सदा, नित्य २ जनम बिगडणौ—वेधर्म होना, धर्म नष्ट होना।

४ जन्म कुडली का वह लग्न जिसमे कुडली वाले का जन्म हुआ हो। (फलित ज्योतिष)

रू०भे०—जम, जमण, जनम्म, जन्म, जम्म, जलम।

जनमआठम–स०स्त्री०यौ० [स० जनमाष्टमी] भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी, इस रात्रि को श्रीकृष्ण का जन्म होना माना जाता है।

रू०भे०—जनमाठम, जन्मअस्टमी, जन्मास्ठमी।

जनमगाठ–स०स्त्री०यौ० [स० जन्म+ग्रथि] जन्मदिन। उ०—जनमगाठ जिण दीह रीत छत्रपतिया जोडै। आध घडी भर अन्न रोज ऊपडै रसोडै।—अरजुनजी बारहठ

पर्या०—बरसगाठ।

जनमघूटी–स०स्त्री०यौ० [स० जन्मघुटिका] बच्चो के जनमते समय दो-तीन वर्ष तक दी जाने वाली घूटी जिसमे निम्न लिखित पदार्थ होते हैं—सनाय, कालानमक, दानामेथी, बायविडग, हरें की छाल, बहेडा की छाल, अजवाइन, जोहरें, अमलतास का गिर, बाय फूवा, गुलाब की पखुडियाँ, गुड आदि।

जनमणौ, जनमबौ–क्रि०अ०—जन्म लेना, उत्पन्न होना। उ०—वनि नयरि घराघरि तरि तरि सरवरि, पुरख नारि नासिका पथि। वसत जनमियौ दैण वधाई, रमै वास चढि पवन रथि।—वेलि

रू०भे०—जनम्मणौ, जनम्मबौ, जन्मणौ, जन्मबौ।

जनमतत्र–स०पु०यौ० [स० जन्मतत्र] जन्मपत्री। उ०—दासी ने दोय जात्र दिया, सधरी मन धारै। जनमतत्र सुण जाव रही, आगम परवारै।—अरजुणजी बारहठ

जनमदिन—स०पु० [सं० जन्मदिन] किसी वर्ष मे आने वाली वह तिथि जिस दिन जन्म हुआ हो, जन्मतिथि।

जनमधरती—स०स्त्री० [सं० जन्म+धरित्री] जन्मभूमि, मातृ-भूमि।

जनमपत्र, जनमपत्री, जनमपुत्र—देखो 'जन्मपत्री' (रू भे)

उ०—साहु ज मोहरत सोधियौ, मुगत हरख मनाह। जनमपुत्र मै जोतसिगा, दीनो नाम 'पनाह'।—पना वीरमदे री वात

जनमभोम—देखो 'जन्मभूमि' (रू भे) उ०—डूग उघाडै ढगळ मूछ मुख धुरड मुडावै। जनमभोम मे जाय भीख ले जनम भडावै।

—ऊ का

जनममरणमेटण—स०पु०यौ०—ईश्वर, परमात्मा।

जनमसघाती—स०पु०यौ० [सं० जन्मसघाती] जन्म से या जन्म भर साथ-साथ रहने वाला।

जनमात—स०पु० [सं० जन्मात] १ जीवन, जिन्दगी २ जन्मजन्मान्तर, दूसरा जन्म। उ०—अब गरव कियौ अमलान मे, तन देखेला तासना। जनमात फेर जासी नही, बुरा करम री वासना।—ऊ का

रू०भे०—जन्मात।

जनमातर—देखो 'जनमतर' (रू भे.)

जनमाध—देखो 'जनमद' (रू भे)

जनमाठम—देखो 'जनमआठम' (रू भे) उ०—निस दिन जनमाठम आठम गम नाही, माधव जनम्यौ कै मरचो जग माही।—ऊ.का

जनमाणौ, जनमावौ—क्रि०स०—प्रसव कराना।

रू०भे०—जन्माणौ, जन्मावौ।

जनमायोडौ—भू०का०कृ०—प्रसव कराया हुआ (स्त्री० जनमायोडी)

जनमियोडौ—भू०का०कृ०—जन्मा हुआ (स्त्री० जनमियोडी)

जनमेज, जनमेजय, जनमेजे—स०पु० [सं० जन्मेजय] १ एक महान पौराणिक राजा जो अर्जुन के प्रपौत्र एव परीक्षित के पुत्र थे, इनके पिता तक्षक नामक सर्प से मारे गये अतएव सर्पो का नाश करने के लिये इन्होने एक महान सर्प यज्ञ किया जिसमे समस्त सर्प और नाग मत्राहूत होकर यज्ञाग्नि मे भस्म हो गये। उ०—१ वदि सूडि घणा रत होद विचि, उडि पडै पडि ऊछळै। जनमेज जाग जाणै भुजग, अगनि कुड मझि आकुळै।—सू प्र

उ०—२ उड पडै पोगरा वरति आण, जनमेज जाग रा नाग जाण।

—वि स

उ०—३ वैसपा एम ओचरे, जनमेजे स्रवणे धरे। विस्तरे वाणीइ, गुण पांडव तणा रे।—नलाख्यान

२ नीप के वशज एक कुलघातक राजा ३ राजा कुरु और वाहिनी के पुत्र एक चद्रवशी राजा. ४ राजा कुरु के पुत्र, इनकी माता कौशल्या तथा स्त्री अनता थी। इनके पुत्र का नाम 'प्राचीन्वस' था। ५ अविक्षित् के वशज एक चद्रवशी राजा ६ एक नाग विशेष ७ विष्णु।

जनमोजनम—अव्य०—जन्म-जन्म तक, जन्मजन्मान्तर।

जनम्म—देखो 'जनम' (रू भे)। उ०—ताहरी इच्छा दीध तै, जइया आदि जनम्म। तइया हू ता अम्ह तणा, केसव किसा करम्म।—ह र.

जनम्मणौ, जनम्मबौ—देखो 'जनमणौ' (रू भे)

उ०—मही बीता दस मास, जाम नृप कुवर जनम्मे। वधाउवा जिण वार, 'अर्ज' बहु दरब उधमे।—सू प्र

जनयती, जनयत्री—स०स्त्री० [सं० जनयित्री] माता, जननी (ह ना)

जनय—देखो 'जनअ' (रू भे) (जैन)

जनयता—स०पु० [सं० जनयिता] पिता (ह ना.)

रू०भे०—जनयिता।

जनया—स०स्त्री० [सं० जन्या] रात्रि (ह.ना)

जनयिता—देखो 'जनयता' (रू भे)

जनरल—स०पु० [अ०] फौज का बडा अफसर। उ०—फिरग जना री फौज मै, पातल प्रथी प्रसिद्ध। करनल व्हैणौ है कठण, हुयगौ जनरल हद्द।—जुगतीदान देथौ

रू०भे०—जनराल, जनरेल।

वि०—साधारण।

जनरव—स०पु० [सं०] १ जनश्रुति २ लोकनिंदा ३ शोर, कोलाहल।

जनराल, जनरेल—देखो 'जनरल' (रू भे)। उ०—अलीमन सूर री वस कीधी असत, रेस टीपू विजे अवट रुडिया। लाट जनराल जरनेल करनैल लख, जाट रै किलै जमजाळ जुडिया।—बा दा

जनलोक—स०पु०—सात लोको मे से पाँचवाँ लोक।

जनवअ—स०पु० [सं० जनपद] देश, राष्ट्र (जैन)

जनवरी—स०स्त्री० [अ०] अग्रेजी साल का प्रथम मास।

जनवास—स०पु० [सं०] १ सर्वसाधारण के रहने या टिकने का स्थान. २ सभा ३ देखो 'जानीवासौ' (रू भे.) उ०—करचाव हूता जनवास कमै। मझरात लगी झड आसव मे।—पा प्र

जनवासी—स०पु० [सं०] १ अन्त पुर के रहने वाले २ नगर निवासी। उ०—आछा आछा जनवासी व्हैगा वनवासी। उठगा उगलाणा पाछा कद आसी।—ऊ का

जनवासौ—देखो 'जानीवासौ' (रू भे)

जनसख्या—स०स्त्री० [सं०] किसी स्थान के निवासियो की सख्या।

जनस—स०पु० [अ० जिन्स] देखो 'जिनस' (रू भे)

उ०—१ जाडया पास हुती दस जनसा, उण दन दाखै सकोयर। हेकण घाव अजसियौ हूसियौ, कमधज वटका बीस कर।

—गोगादे राठौड री गीत

उ०—२ रूपै री बाजोट, पाळौ, कळस और ही सारी जनस थाहरी नजर मे राखजै।—कुवरसी साखला री वारता

जनस्तुति, जनस्तुती—स०स्त्री०यौ० [सं० जनश्रुति] १ अफवाह, लोकोपवाद २ किंवदती। उ०—गती रती न ग्यान की गदा विग्यान की गमी। स्तुती परी करी सदा स्तुती जनस्तुती समी।—ऊ का.

जनहरण–स०पु० [स०] एक दडक वृत्त का नाम । इस वृत्त के प्रत्येक चरण मे तीस लघु और एक गुरु होता है ।

जना–सर्व०—जिस । उ०—जना हृदा कोटवाळ जेरै जमराणा । —केसोदास गाडण

जनानखांनौ–स०पु० [फा० जनान +खान.] भवन का स्त्रियो के रहने का अदर का भाग, रनिवास ।

जनानीडोढी, जनानीडयोढी–स०स्त्री० [फा०जनानः+रा०प्र०ई+डयोढ़ी] १ रनिवास का मुख्य द्वार २ रनिवास, जनाना महल ।

जनानौ–वि० [फा० जनान] १ नामर्द, नपुसक २ निर्बल, डरपोक ३ स्त्रियो के समान वेश-भूषा या हाव-भाव वाला ।

स०स्त्री०—१ स्त्री, औरत ।

स०पु०—२ राजा द्वारा अपनी रानियो को महल मे एकत्रित कर के दरबार लगाना ।

उ०—अर राजा मैहला मे पधारचा, माहे जनानौ कीधौ । सारी राण्या बुलाई ।—साहूकार री वात

क्रि०प्र०—करणौ ।

मुहा०—जनानौ करणौ—पर्दा करना ।

जनाख, जनाखि–स०पु० [फा० जनख या जनख-दाँ] ठोडी, चिबुक ।

उ०—१ सूरज की वीरक वरन साख, जुलमी की चीरत हम जनाख । —ऊ का

उ०—२ द्रुम आखि जनाखि जडाव दिपै, छबि तेण लखै अनि ओप छिपै ।—रा रू

जनाजौ–स०पु० [अ० जनाज] १ शव २ मृतक की अरथी ।

उ०—यवन रै चाळीस हाथ कपडौ चाहीजै अतक सरीर मे, जनाजौ कहै अतक रथी नू यवन ।—बा दा ख्यात

जनाद–स०पु०—देश (अ मा)

जनाब–स०पु० [अ०] अपने से बडो के लिये प्रयुक्त किया जाने वाला आदरसूचक शब्द, महाशय, महोदय ।

यौ०—जनाबआली ।

जनारजन, जनारदन–स०पु० [स० जनार्दन] १ विष्णु. २ श्रीकृष्ण ।

उ०—एहिज परि थई भीरि कजि, आया धनजय अनै सुयोधन । मासे मगसिर भलउ जु मिळियौ, जागिया मीट जनारजन ।—वेलि

३ ईश्वर (ना मा) उ०—जगदाता जनारदन, गिरधारी गुण गेह । व्रजपत रोटी बाटणौ, मोटी नीद म देह ।—बा दा

जनावर—देखो 'जानवर' (रू भे.) उ०—तद कुवर पाच पातळ परिसाय नै दोय पातळ आप राणी जीमै अर तीन्ह पातळ छै सु पखी जनावरा नै घातै ।—चौबोली

जनि–अव्य०—निपेधार्थक सूचक शब्द 'नही' । उ०—क्रम वध पाप जागै कटे, उर परम्म घरता अगा । ऐतौ प्रताप हरि जाप रौ, जाप ज जनि भूले 'जगा' ।—ज खि

रू०भे०—जनी ।

जनित्री–स०स्त्री० [स० जनित्रि] माता, मा, जननी ।

स०पु० [स० जनितृ] पिता ।

जनी–स०स्त्री० [स० जनि] १ माता, जननी ।

उ०—बाळकपणौ के कै विनोद कर बार-बार बिहस बतायौ, मन जनक जनी को तै । सिसुता मे चरम खडग सैधव सुहाये सदा, सहज दिखायौ सोख फनी ज्यू मनी को तै ।—ऊ का

२ दासी, सेविका ।

३ देखो 'जनि' (रू भे)

जनीयित–स०पु० [स० जनयितृ] पिता ।

जनु–अव्य०—मानो । उ०—साभळिया 'अवरग' सा, कर घाम घखाणा । कै सीतापत आय सिर, जनु रावण राणा ।—द दा

जनुख–स०पु० [स० जनुस्] जन्म, उत्पत्ति (अ मा.)

जनुवी–स०स्त्री०—एक प्रकार की तलवार ।

जनून–स०पु० [अ०] पागलपन, उन्माद ।

जनूनी—देखो 'जणणी' (रू भे) उ०—नारी गाठियौ सूठ दूजी न खायौ । जनूनी तुही हेक हेकौ ज जायौ ।—ना द

जनूमणी–स०पु०—श्याम या लाल और चिकना शरीर का वह भाग जो जन्म के साथ ही हो (अमरत)

जनेंद्र–स०पु० [स० जनेन्द्र] राजा, नृप ।

जनेऊ–स०स्त्री० [स० यज्ञोपवीतम्] १ यज्ञोपवीत के स्थान पर धारण करने का सोने का जजीरनुमा एक प्रकार का आभूषण ।

उ०—ढोलोजी नै पिण कडा मोती जनेऊ किलगी अमोलख बसता दीधी—ढो मा

२ यज्ञोपवीत ।

पर्या०—उपवीत, जग्यसूत, पवित्र, ब्रहमसूत ।

३ यज्ञोपवीत का सस्कार. ४ यज्ञोपवीत पहनने के स्थान पर होने वाला रक्त-विकार सबधी रोग विशेष ।

रू०भे०—जनोई ।

जनेऊउतार, जनेऊकट, जनेऊवढ़, जनेऊवाढ़, जनेऊवढ–स०पु०—शस्त्र या तलवार का वह प्रहार जो कधे के एक छोर से कमर के दूसरे छोर तक (जैसे जनेऊ बाधी जाती है ठीक वैसे ही) काट देता है ।

उ०—धरा जरदैत पडै खग धार । उडै धड फाड जनेऊ-उतार । —सू प्र

मि०—उपवीत-उतार ।

जनेत–स०स्त्री० [स० जनयित्री अथवा जनित्रि] १ माता ।

उ०—कहीस ओपमा अनोप धी जिती कविंद्र की । महा सु सूरवीर की जनेत है जितेंद्र की ।—पा प्र.

[स० जन्य+रा०प्र० एत] २ बरात ।

स०पु० [स० जनयितृ अथवा जनेतृ] ३ पिता ।

रू०भे०—जनेता, जनेती ।

जनेता–स०स्त्री० [स० जनयित्री, स० जनित्रि] माता । उ०—१ साह उग्राहणी नाम आछा सुणै, तरिद रै जेम तू दळद तोडै । मुणै कव 'खेतसी' मदद तण माहरै, जनेता ताहरै न को जोडै ।—खेतसी बारहठ

उ०—२ वड महिली तउ वाई सफळादे भोज की काता अचळ की जनेता ।—अ वचनिका

जनेती—स०पु० [स० जन्य+रा०प्र० एती] बराती ।

उ०—१ जमाति जाति वजि अव गजर, जोध जनेती उछव जिम । गढ लियण एम हल्ले गजण, तोरण वांदण वीद तिम ।—सू प्र

उ०—२ हाथा का हथियार ले लिया, खावा को सामान । जान वणाय'र चल्या आगरै, हर राखं लो मान । रात-रात वै चलै जनेती, दिन ऊग्या ठम जाय । आगरै के तीन कोस पर, डेरा दिया लगाय ।
—डूगजी जवारजी री पड

जनेव—स०स्त्री०—एक प्रकार की तलवार (डि को)

उ०—उठी विलंद दळ असुर, बाधि मुगरबा जनेवा । पेस कवज खजरा, जकड वणिया रणजेवा ।—सू प्र

जनेसर, जनेस्वर—स०पु० [स० जनेश्वर या जिनेश्वर] १ जितेन्द्रिय. २ विष्णु ३ वुद्ध ४ सूर्य ५ कुवेर (ह ना) ६ जिनेश्वर, जिनवर । उ०—अवै वसुधा बिन व्याज विचित्र । महाजन पुन्य जनेस्वर मित्र ।—ऊ का

जनोई—१ देखो 'जनेऊ' (रू भे)

जनौ—स०पु०—तलवार की मूठ को पकडने के स्थान पर का मध्य का गोलाई मे उभरा हुआ भाग जो हाथ की हथेली के मध्य मे रहता है।

जन्न—स०पु० [स० यज्ञ] यज्ञ (जैन)

जन्नक—देखो 'जनक' (रू.भे.) उ०—सेवै पग सन्नक जन्नक सूर, अरज्जुण उद्धव अो अकरूर ।—ह र

जन्नट्ठी—स०पु० [स० यज्ञार्थी] यज्ञ की इच्छा रखने वाला (जैन)

जन्नत—स०स्त्री० [अ०] स्वर्ग । उ०—मुहमद मुवा पछै छटै महीनै खातून जन्नत हुई ।—बा दा ख्यात

जन्नवाइ—स०पु० [स० यज्ञवादिन्] १ यज्ञ की स्थापना करने वाला । (जैन) २ यज्ञ का कथन करने वाला, यज्ञवादी (जैन)

जन्नवाड—स०पु० [स० यज्ञवाट] यज्ञवाट (जैन)

जन्नसिट्ठ—स०पु० [स० श्रेष्ठ-यज्ञ] आध्यात्मिक यज्ञ (जैन)

जन्नारजन—देखो 'जनारजन' (रू भे.) उ०—जुग सकळ माहि देखे 'जगा', लाभ धरम समरण लिया । जोतीसरूप जन्नारजन, दिल महिल्ल दीपग दिया ।—ज खि

जन्नोवईय—देखो 'जण्णोवईय' (रू.भे)

जन्म—देखो 'जनम' (रू भे)

जन्मअस्टमी—देखो 'जनमआठम' (रू भे)

जन्मकील—स०पु०यौ० [स०] जन्म मरण को मिटाने वाला, विष्णु ।

जन्मकुडळी—स०स्त्री० [स० जन्म कुण्डली] फलित ज्योतिष के अनुसार वह चक्र जिसके द्वारा किसी के जन्म के समय मे ग्रहो की स्थिति का पता चले ।

जन्मक्रत—स०पु०यौ० [स० जन्मकृत] जन्म देने वाला, माता-पिता ।

जन्मग्रहण—स०पु० [स०] उत्पत्ति ।

जन्मणौ, जन्मबौ—देखो 'जनमणौ, जनमबौ' (रू भे)

जन्मतिथि—स०स्त्री० [स०] जन्मदिन, वषगांठ ।

जन्मनक्षत्र, जन्मनखत्र—स०पु० [स० जन्मनक्षत्र] जन्म के समय का नक्षत्र ।

जन्मप, जन्मपति—स०पु० [स०] १ कुडली मे जन्मराशि का स्वामी २ जन्मलग्न का स्वामी ।

जन्मपत्र—स०पु०—१ देखो 'जन्मपत्री' (रू भे.) २ पूर्ण विस्तृत विवरण ।

जन्मपत्री—स०स्त्री० [स०] वह पत्र जिस पर किसी के उत्पत्ति के समय ग्रहो की स्थिति, उनकी दशा आदि का तथा शुभाशुभ फल का वर्णन हो (फलित ज्योतिष)

रू०भे०—जनमपत्र, जनमपत्री, जनमपुत्र, जन्मपत्र ।

जन्मप्रहार—स०पु०यौ०—ससार मे बार-बार जन्म-मरण, आवागमन ।

उ०—आखै कवि 'ईसर' तेज अवार, प्रभूजी टाळो जन्मप्रहार ।—ह र

जन्मभ—स०पु० [स०] जन्म लेने के समय का नक्षत्र, राशि अथवा लग्न । (ज्योतिष)

जन्मभूमि, जन्मभोम—स०स्त्री०यौ० [स० जन्मभूमि] जन्मस्थान, जहां जन्म लिया हो ।

रू०भे०—जनमभूमि, जनमभोम ।

जन्मरासि—स०स्त्री०यौ० [स० जन्मराशि] किसी के उत्पन्न होने के समय चद्रमा उदय होने का लग्न ।

जन्मविधवा—स०पु०यौ० [स०] जो बचपन मे ही विधवा हो गई हो, बालविधवा ।

जन्मस्थान—स०पु०यौ० [स०जन्म स्थान] १ जन्मभूमि २ कुडली मे वह स्थान जिसमे जन्म के समय के ग्रह रहते हो ।

जन्मात—देखो 'जनमात' (रू भे)

जन्मातर—स०पु० [स०] दूसरा जन्म, पूर्वजन्म । उ०—काळराज ही अवै तौ आपरो लोभायोडो है सो वेगाहीज मारसी तौ पापी रिण तीरथ मे हीज धारा तीरथ करैनी जो जन्मातर रा प्राचत कटै ।
—वी स टी

जन्माध—देखो 'जनमद' (रू भे)

जन्माणौ, जन्माबौ—देखो 'जनमाणौ' (रू भे)

जन्मायोडौ—देखो 'जनमायोडौ' (रू.भे.) (स्त्री० जन्मायोडी)

जन्माधिप—स०पु०यौ० [स०] १ शिव का एक नाम. २ जन्म लग्न का स्वामी ३ जन्म राशि का स्वामी ।

जन्मास्टमी—देखो 'जनमआठम' (रू भे) उ०—जाळ डाळिया मच, जचावा उछव सावा । जन्मास्टमी परव, सिंहासण मढ्ढ सजावा ।
—दसदेव

जन्मेय—देखो 'जनमेजय' (रू भे)

जन्मेस—स०पु० [स० जन्मेश] जन्मराशि का स्वामी ।

जन्मोत्सव—स०पु०यौ० [स०] किसी के जन्म के अवसर पर या जन्म को स्मरण के लिये मनाया जाने वाला उत्सव ।

जन्य—स०पु० [स०] १ साधारण मनुष्य २ राष्ट्र ३ पुत्र ४ पिता. ५ बराती ६ जन्म ।

जन्हु—देखो 'जह्नु' (रू भे) उ०—जन्हु नरिंदह केरी धूय। गगा नामि रइसमरूय।—प प च.

जन्हवी—स०स्त्री० [स० जाह्नवी] जन्हु ऋषि से उत्पन्न, गगा।

जप—स०पु० [स०] १ किसी मत्र, श्लोक या शब्द का बार-बार धीरे-धीरे उच्चारण करते हुए पाठ करना या सध्या-पूजा आदि मे मत्रो का पाठ करना। उ०—कि जोग जाग जप तप तीरथ कि, व्रत कि दानास्रम वरण। मुख कहि क्रिसन रुखमिणि मगळ, काई रे मन कळपसि क्रिपण।—वेलि

यौ०—जप-तप।

२ सेवा (अ मा)

रू०भे०—जप्प।

जप-जाप—देखो 'जप-तप' (रू भे)

जपणी—स०स्त्री० [स० जप+रा प्र.णी] १ जप करने के काम आने वाली माला। उ०—अपणी सरवा खोय अभागी, सपणी आदत सोग। तपणी पर बैठे तावडिये, जपणी फेरण जोग।—ऊ.का.

२ वह थैली जिसमे माला रख कर जप किया जाय।

जपणौ, जपबौ—क्रि०स० [स० जप] १ मत्र-पाठ करना, मत्रो को बार-बार व धीरे-धीरे उच्चारण करना, जप करना। उ०—आलीणी हर नाम, जाण अजाण जपै जो जीहा। सासवर वेद पुराण, सरव मही तत् अक्खर सारम्।—ह र.

२ कथना, कहना। उ०—जपियौ सिध जिण विध जुध जीता। वधै वस खैरोद वदीता।—सू प्र.

३ पढ़ना, जपना। उ०—चतुर विध वेद प्रणीत चिकित्सा, ससत्र उखद मत्र तत्र सुवि। काया कजि उपचार करता, हुवै सु वेलि जपति हुवि।—वेलि

जपणहार, हारौ (हारी), जपणियौ—वि०।

जपवाडणौ, जपवाडबौ, जपवाणौ, जपवाबौ, जपवावणौ, जपवावबौ, जपाडणौ, जपाडबौ, जपाणौ, जपाबौ, जपावणौ, जपावबौ—प्रे०रू०।

जपिओडौ, जपियोडौ, जप्योडौ—भू०का०कृ०।

जपीजणौ, जपीजबौ—कर्म वा०।

जपत—१ देखो 'जब्त' (रू भे)

२ प्रबध, व्यवस्था, इतजाम। उ०—जद नोसेरसाह जवान हुवौ, आग्या करण लागियो, 'बापरौ' देस जपत मे आणियो।—नी प्र

जपतप—स०पु०यौ० [स०] पूजा-पाठ, सध्या-पूजा।

जपता—स०स्त्री०—सिर के उलझे हुए लम्बे-लम्बे बाल, जटा।

जपती—देखो 'जब्ती' (रू भे)

जपमाळा—स०स्त्री०यौ० [स० जपमाला] जप करने की माला।

जपमाळी—स०स्त्री० [स० जपमालिका] जपमाला।

जपा—स०स्त्री० [स०] १ सदा गुलाब का फूल या पौधा, अडहुल (अ मा)

उ०—फबै ललाइ बिंबफळ, परतख अधर प्रवाळ। जपा कुसुम जोडै जिया, भाखै सहिया भाळ।—बा दा

जपाणौ, जपाबौ—क्रि०स० ('जपणौ' क्रिया का प्रे०रू०) जप कराना, जप करने को प्रेरित करना।

जपायोडौ—भू०का०कृ०—जप कराया हुआ (स्त्री० जपायोडी)

जपियोडौ—भू०का०कृ०—१ मत्र पाठ किया हुआ, जप किया हुआ।

२ कहा हुआ, कथा हुआ. ३ पढा हुआ, जपा हुआ। (स्त्री० जपियोडी)

जपियौ, जपी—स०पु० [स० जप] जप करने वाला, वह जो जप करता हो (अ मा)

उ०—म्हारै रे बीस जपिया अपामारजन नू बैसाणिया।
—कुवरसी साखला री वारता

जप्त—देखो 'जब्त' (रू भे)

जप्ती—देखो 'जब्ती' (रू भे)

जप्प—देखो 'जप' (रू भे)

जफरतकिया—स०स्त्री०—एक प्रकार की तलवार।

जब—क्रि०वि०—१ जिस समय।

रू०भे—जब्ब।

२ देखो 'जव' (रू भे)

जबक—स०पु०—चोट। उ०—सो तीनू तूड सू उलाट दीन्हो सो उबो राव समेत परै पडियो। राव रै साथळ रै जबरी जबक आई और डाढाळो निसर गयो।—डाढाळा सूर री वात

जबडौ—देखो 'जवाडौ' (रू भे)

जबत—देखो 'जब्त' (रू भे)

जबती—देखो 'जब्ती' (रू भे)

जबरग—वि०—जबरदस्त।

जबर—वि० [अ० जबर] १ बलवान, शक्तिशाली, शूरवीर। उ०—सो बादसाह औरगजेब सारखो महादिवाण पण जयसिंघ इसो जबर।

२ क्रूर, जुल्मी। —आमेर रा धणी री वारता

कहा०—१ जबर नै पूगै खबर—जबरदस्त अथवा जुल्मी के जुल्मो को धैर्य्यपूर्वक सह लेना ही ठीक है। क्योकि एक दिन निर्बल की हाय से जुल्मी नष्ट हो जायगा। २ जबरा रा पग माथै ऊपर—बलवानो के पैर शिर पर अर्थात् समर्थ की आज्ञा शिरोधार्य। ३ जबरो मारै'र रोवण को देनी—जबरदस्त मारता है और रोने भी नही देता, अत्याचारी एव क्रूर के प्रति।

३ प्रबल। उ०—१ खबर राख कुसमै समै, कासू घबर करीस। खिण खिण ले जग री खबर, जबर सगत जगदीस।—बा दा.

उ०—२ जबर विरोधी अगन जळ, ले निज का लूहार। जबर विरोधी मत्रिया, सुपह काज लै सार।—अज्ञात

४ तीव्र, अधिक।

रू०भे०—जब्बर।

जबरई—देखो 'जबराई' (रू भे)

जबरजगनाळी—स०स्त्री०—एक प्रकार की तोप। उ०—जबर-जग नाळया रा निहा ऊपडिनै रहिया छै।—रा.सा स

जवरण, जवरणा–क्रि०वि० [अ० जब्रन्] जबरदस्ती, बलात् । उ०—चौवळ ग्राह तत गज चरणा । जकड डवोवण खच जवरणा । —र ज प्र.

जवरदस्त–वि० [अ०+फा०] १ शक्तिशाली २ क्रूर, जुल्मी ३ प्रबल । रू०भे०—जवर ।

जवरदस्ती–स०स्त्री० [अ+फा] १ ज्यादती, अन्याय, अत्याचार ।
क्रि०प्र०—करणी, होणी ।
२ प्रबलता ।
क्रि०वि०—बलात्, बलपूर्वक ।

जवरन–क्रि०वि० [अ० जब्रन] बलात्, बलपूर्वक । उ०—तद आदमी एक ठावौ मेल गढ मे कहायौ— बादसाह जबरन सू म्हानू आख्या अदीठ कीन्हा छै ।—जलाल बूबना री बात
रू०भे०— जब्ररण, जवरणा ।

जवराई–स०स्त्री० [अ० जब्र+रा०प्र०आई] १ ज्यादती, सख्ती ।
क्रि०प्र०—करणी, होणी ।
२ जवरदस्ती ।
क्रि०प्र०—करणी, होणी ।
रू०भे०—जवरई ।

जवरायल, जबरायेल–वि० [अ० जब्र+रा०प्र० आयल, आयेल] शक्तिशाली, पराक्रमी, जवरदस्ती । उ०—१ जबरायल जोधार छाक मन मछर छाया । अलवेलिया असवार आजै पीछोलै आया ।
—वगसीराम प्रोहित री बात
उ०—२ जवरायेल स्यव जेम भभका सोर का, जवरायेल कर खीज भुजगम जोर का ।—बगसीराम प्रोहित री बात
रू०भे०—जवरेल, जवरैल ।

जवरी–स०स्त्री०—ज्यादती, अन्याय । उ०—१ जे रो किही रो मुनसब ओछौ करै सो खानजहां होवणै न देवै जबरी कर कराय देवै ।
—गौड गोपाळदास रो वारता
उ०—२ पण औ तौ रिसालो खास छै, सगळो लोग इणरै तावै छै और मै ही इहा रै तावै सो सदा सू जवरी करता रहै छै ।
—जयसिंह आमेर रा धणी री वारता
२ अनुचित बात, कष्टदायक कार्य ।
वि०स्त्री०—देखो 'जबरौ' (रू भे) (पु०)
क्रि०वि०—बलात्, जबरदस्ती ।

जवरेल, जबरैल— देखो 'जवरायल' (रू.भे)

जवरोडौ, जवरौ–वि०पु० [अ० जवर] (स्त्री० जवरोडी, जवरी) १ शक्तिशाली, बलवान, प्रबल, बली । उ०—१ लोभ लाय मे लाख गुण, जबरोडा जळ जाय । कनक दान रा कीच मे, के औगण कळ जाय ।
—ऊ का
उ०—२ सो इण भांति महाराज जयसिंह वडो जबरौ थौ ।
—महाराज जयसिंह आमेर रा धणी री वारता
२ क्रूर, जुल्मी ३ प्रचड । उ०—रजपूता परज लोग सू भली पर पाळी । डील निपट जबरौ हुतौ ।—नैणसी
४ अधिक, ज्यादा. ५ बढ़िया, श्रेष्ठ, अच्छा ।
उ०—झूगरदे रग रौ लट्ठा रौ घाघरौ अर खादी री माखी भात ओरणी उणनै जवरी फबती ।— रातवासौ
६ महान्, वडा । उ०—सो महाराज जयसिंहजी वडो राजा थो । बादसाह रा घणा ही जवरा काम सुधारिया ।
—महाराज जयसिंह आमेर रा धणी री वारता
अल्पा०—जवरोडो ।

जवळ–स०पु० [अ० जबल] पहाड, पर्वत । उ०—तन दुख नीर तडाग, रोज विहगम रूखडौ । विसन सलीमुख वाग, जरा वरक ऊतर जवळ । —बा दा

जबह—देखो 'जिवह' (रू भे.)

जवा, जवान–स०स्त्री० [फा० जवान] १ जिह्वा, जीभ ।
उ०—१ करारा वचन खारा जवा काडतौ, बरारा कोट भरतौ गयण धाथ । घुरा तै कीया चाळा विग्रह धरा रा । 'हरा' रा देख माहरा हमै हाथ ।—पहाडखा आढो
उ०—२ जे निज कहै जवान, हीरा लेख समान है । पीपळ साटी पान, पळटै ज्या न 'प्रतापसी' ।—जैंतदान बारहठ
क्रि०प्र०—करणी, खोलणी, चलणी, चलाणी, रोकणी ।
मुहा०—१ जवान खीचणी–जीभ को बाहर खीच लेने या उखाड लेने की धमकी देना, धृष्टतापूर्ण या अनुचित कार्य के लिये कठोर दड देना । २ जबान खुलणी–मुह से शब्द निकालने या बोलने की हिम्मत पडना, कुछ कहा जाना । बच्चे का बोलना शुरू होना । ३ जवान खोलणी–मुह मे कुछ बात कहना, बोलना, मागना । ४ जवान घिसणी–कहते-कहते थक जाना । ५ जवान चलाणी–विशेषत जल्दी-जल्दी बोलना, अनुचित शब्द का उच्चारण करना । वाचाल होना । ६ जवान चालणी–अनुचित शब्द निकालना, मुह से शब्द निकालना । ७ जवान निकाळणी–थोडा भी बोलना, धमकी देना । ८ जबान पकडणी–बोलने न देना, कहने के लिये मना करना, बात पकडना । ९ जवान वद करणी–चुप होना, बोलने से रोकना, विवाद मे हराना । १० जवान बद होणी–मुह से शब्द न निकालना, गुमसुम होना, विवाद मे हार जाना, बोलने का साहस न होना । ११ जवान विगडणी–मुह से अपशब्द निकालने का अभ्यास होना । १२ जवान माथै होणी–हरदम याद रहना, स्मरण रहना । १३ जवान मुडा मे राखणी–चुप रहना, मौन धारण करना । १४ जवान मे लगाम देणी–सोच-समझ कर बोलना, चुप रहना । १५ जवान मे लगाम नी होणी–अनुचित बातें कहने का अभ्यास होना, बोलने मे उचित अनुचित का ख्याल न होना, अनगल प्रलाप करना । १६ जवान रुकणी–बोलना बद होना, मरने के करीब होना । १७ जवान रै लगाम लगणी–देखो 'जवान रुकणी' । १८ जवान रै लगाम लगाणी—देखो 'जवान रोकणी' । १९ जवान रोकणी–चुप करना, चुप होना । २० जवान लडाणी-सवाल-जवाब करना, आदर योग्य व्यक्ति से तर्क-वितर्क

करना। २१ जबान सभाळणी–मुह से अनुचित शब्द न निकलने देना, सोच-समझ कर बोलना. २२ जवान सू निकळणी–न चाहने पर भी कह देना, कहना। २३ जवान सूं निकाळणी–कहना, उच्चारण करना, बोलना। २४ जवान हिलाणी–कुछ भी बोल देना, थोडी सी सिफारिश करना, बोलने का प्रयत्न करना, विरोध करना। २५ बदजवानी–अनुचित और अशिष्ट बात।

यौ०—जबानदराजी।

अल्पा०—जवानडी।

२ मुह से निकला हुआ शब्द, बात, बोल, वचन।

मुहा०—१ जबान बदलणी–कही हुई बात से फिर जाना। २ जवान री धणी होणी–बात का पक्का होना।

कहा०—जबान है के साटी रौ पान है–जवान है या पुनर्नवा का पत्ता है? कही हुई बात से फिर जाने पर।

३ प्रतिज्ञा, वायदा।

मुहा०—१ जबान देणी–प्रतिज्ञा करना, वायदा करना। २ जबान हारणी–वचन से विमुख होना, वायदे से हट जाना।

कहा०—जवान हारी जिकै जनम हारचौ–जो प्रतिज्ञा से टल गया उसने अपना जीवन व्यर्थ कर दिया। वायदे का पालन न करने वाले की निंदा।

रू०भे०—जुवान, जुवाण, जुवान।

जबानी–वि० [फा० जवान+रा०प्र०ई] जो केवल जवान से कहा जाय, मौखिक।

मुहा०—जवानी जमा-खरच करणी—कुछ काम न करना। सिर्फ कहना।

रू०भे०—जुबानी, जुवाणी, जुवानी।

जबाडौ–स०पु० [स० जम्भ] मुंह के दोनो ओर की वे हड्डिया जिनमे दाढें रहती हैं। उ०—सू हाथी री सूड कट, दांतूसळ दोनू कट बीचलो जबाडो कटियो।—द दा

रू०भे०—जवडौ।

जबाब–स०पु० [अ० जवाव] १ किसी प्रश्न के बदले दिया गया समाधान, उत्तर।

क्रि०प्र०—देणी, पाणी, मागणी, मिळणी, लिखणी।

मुहा०—१ जवाव तलब करणी—कैफियत मागना, किसी बात या घटना का कारण पूछना २ जबाव देणी—धृष्टतापूर्वक उत्तर देना, निषेधात्मक उत्तर देना ३ जवाब मिळणी—निषेधात्मक उत्तर मिलना।

यौ०—जवावतलब, जवाबदावौ, जवावदेह, जबावसवाल।

विलो०—सवाल।

२ कार्य रूप मे दिया गया उत्तर, बदला. ३ मुकावले की चीज, जोड ४ नौकरी छूटने की आज्ञा।

रू०भे०—जवाव, जवावू, जुवाब।

जबाब-तलब–वि०यौ० [फा० जवावतलब] किसी कार्य के लिये मागा गया समाधानकारक उत्तर।

जबाबदावौ–स०पु०यौ० [अ० जवाबदावा] वादी के निवेदन-पत्र के उत्तर मे अदालत के अन्दर प्रतिवादी द्वारा लिख कर दिया गया प्रत्युत्तर।

जबावदेह–वि० [अ० जवाब+फा० देह] जिस पर जिम्मेदारी हो, जिम्मेदार, उत्तरदायी।

जबावदेही–स०स्त्री० [अ० जवाव+फा० देही] जिम्मेदारी, उत्तरदायित्व।

जबाबसवाल–स०पु०यौ० [अ० जवाब+सवाल] वादविवाद, प्रश्नोत्तर।

जबाबी–वि० [फा० जवावी] १ जिसका जवाव देना हो। २ जवाव सबधी। उ०—आसतखान दिवाण, सुणै निज दूत सितावी। साह दिसा डाक सू, जवन मेलिया जबाबी।—रा रू.

जबाबू—देखो 'जबाब' (रू भे.)

उ०—जैतावत मडणसी गोवरधन साथै। जबावू न लेखे आवै निवाबू सौं बाथै।—रा रू

जबुफळ–स०पु०—एक प्रकार का शुभ रग का घोडा (शा हो)

जबून—देखो 'जब्बू' (रू भे)

उ०—सादूळी वन साहिबो, खाटै पग-पग खून। कायरडा इण काम नूं, जवक कहै जबून।—बा दा.

जबेह–स०पु० [अ० जबीह] वह पशु जो नियमानुसार जबह किया जाय। उ०—फेर दिल्ली दाखिल होय. मुरादसाह नूं पकड, तखत बैठाण पछै जबेह करायौ—पदमसिंह री वात

जबोड, जबोडौ–स०पु०—प्रहार, चोट।

उ०—जोडाळा मुहि दियण जवोडा, राम सिहाइ हुअउ राठोडा।
—रा ज.सी.

जब्त–स०पु० [अ०] १ दडस्वरूप किसी की सम्पत्ति का हरण।

२ किसी वस्तु को बलात अपने अधिकार मे लेने का भाव।

३ सहनशीलता। उ०—एक तो सियासत उमराव चाकर दरगाह रा री ओर जब्त राखण रीत इणारी।—नी प्र

रू०भे०—जपत, जप्त, जवत।

जब्ती–स०स्त्री० [अ० जब्त+रा०प्र०ई] जब्त होने की क्रिया।

रू०भे०—जपती, जप्ती, जवती।

जब्ब—देखो 'जब' (रू भे)

जब्बर—देखो 'जबर' (रू भे)

उ०—जेळै कई जब्बर बब्बर जोर, दिखावत वायु बरब्बर दोर।
—मे.म

जब्बू–वि० [फा०] बुरा, खराब, निकृष्ट। उ०—उस बिरया मुलतान खा मूछा कर घल्ले। ऐ चि कवादे टक तोलि जब्बू कहि बुल्ले।
—ला रा

रू०भे०—जबून।

जब्रन—देखो 'जबरन' (रू.भे)

जभै—देखो 'जिवह' (रू.भे) उ०—कहायौ छै—इणनै जभै मत करज्यो

नै इणनै झटका सू मारि नै हमारा चाकरा नै सीख दीजो ।

—वीरमदे सोनगरा री वात

जमद–स०पु०—जामुन के रग का घोडा । उ०—जिलहर श्रावनूसी जमद । मुरहरी हरी सेली समद ।—सू प्र

जमधर—देखो 'जमधर' (रू.भे) उ०—होय लथत्थड श्राहुडै घड जडै जमधर ।—सू प्र

जम–स०पु० [स० यम] १ एक साथ पैदा होने वाले बच्चो का जोडा, यमज (श्र मा)

२ दक्षिण दिशा के दिक्पाल श्रौर मृत्यु के देवता (पौराणिक)

३ मन व इद्रिय का निग्रह । उ०—श्रर जम नियम श्रासण प्राणा-याम—व भा

४ चित्त को धर्म की श्रोर झुके रहने के लिये कर्मों का साधन ।

५ कौश्रा, ६ शनिश्चर (श्र भा)

७ विष्णु ८ वायु ९ जमराज (ना मा)

उ०—भोळै परत्र जम भूप रैं, पिंड जाणै श्रहि पाखिया । विण सुरस वध भक्खी विखम, श्रधकध उपडाखिया ।—सू प्र

श्रल्पा०—जमडो ।

वि०–श्रधा ।

उ०—थाहरै वेटे सरळा री नारियळ झालियौ छै, उवा छोकरी श्राखिया सू जम छै ।—कुवरसी साखला री वारता

क्रि०वि०—जैसे । उ०—जेठ रा भाण सम श्रसह वरकाण जम । माण दुजराण श्रसहाण मारै ।—र ज प्र.

जमक–स०पु० [स० यमक] १ यमक श्रलकार, एक प्रकार का शब्दालकार।

२ प्रत्येक चरण मे पाच लघु वर्ण का एक वृत्त (पि प्र ,र ज प्र)

रू०भे०—जमग ।

जमकाइय–स०पु० [सं० यमकायिक] यमराज (जैन)

जमकात, जमकातर–स०पु०—१ भँवर. २ यम का खाडा ३ एक प्रकार की छोटी तलवार ।

जमग–स०पु० [स० यमक] १ देव कुरु २ उत्तर कुरु-क्षेत्र मे स्थित एक पर्वत का नाम ३ इस पर्वतवासी देवता का नाम ४ एक पक्षी विशेष ।

४ देखो 'जमक' (रू भे)

जमघट–स०पु० [स० यमघट] १ यमराज का घटा (ग मो)

२ दीपावली का दूसरा रोज ।

३ देखो 'जमघटजोग' (रू भे)

जमघटजोग, जमघटयोग—स०पु० [यमघट योग] दिन व रात्रि के साथ रहने वाला मुहूर्त शास्त्र का एक श्रशुभ योग विशेष, जो क्रमश रविवार को मघा नक्षत्र, सोमवार को विशाखा नक्षत्र, मगलवार को श्रार्द्रा नक्षत्र, वुधवार को मूल नक्षत्र, गुरुवार को कृतिका नक्षत्र, शुक्रवार को रोहिणी नक्षत्र श्रौर शनिवार को हस्त नक्षत्र होता है इस योग मे जन्म लेने वाला वालक जीवित नही रहता है श्रौर यदि जीवित रह जाय तो माता-पिता श्रौर कुटुम्व के लिये श्रनिष्टकारक सिद्ध होता है । (फलित ज्योतिष)

रू०भे०—जमघट ।

जमघट, जमघट्ट–स०पु०—मनुष्यो की भीड ।

जमडो—देखो 'जमी' (श्रल्पा. रू भे) उ०—जमडो नाजोगाह, ढळतोडी नाही ढवै । जावै नह जोगाह, रजपूती वाघी रसा ।—उदयराज उज्ज्वल

जमचक्र–स०पु० [स० यमचक्र] यमराज का शस्त्र ।

जमज–स०पु० [स० यमज] एक साथ उत्पन्न दो वच्चो का जोडा ।

जमजनक–स०पु०यौ० [स० यमजनक] सूर्य (डि को.)

जमजन्न–स०पु०यौ० [स० यमयज्ञ] श्रहिंसा, सत्य, श्रस्तेय, ब्रह्मचर्य श्रौर श्रपरिग्रह ये पाच यम—सयम रूप यज्ञ, भाव यज्ञ (जैन)

जमजाळ–स०पु०यौ०—१ यमराज का फदा, यमपाश । उ०—श्राकास रसातळ दिस श्रसट, पारावार समद्र पथ । जमजाळ दुसह जायै जहा, श्राणो ग्रह मेरे श्ररथ ।—रा रू

२ वीर, योद्धा । उ०—जमजाळ कडी जरदाळ जडै । उतबग' र गावळ वोम श्रडै ।—गो रू

३ एक प्रकार की छोटी तोप या वदूक । उ०—१ राखो करै तयारिया, जगा जमजाळा । सुणि भाटी भड ऊससै, जेसाण उजाळा ।

—सू प्र.

उ०—२ 'जसै' घखि क्रोध धरे, जमजाळ, तठै खिज काठिय खाग उनाळ ।—सू प्र

वि०—यमराज के समान जाज्वल्यमान । उ०—१ कूपाराम 'पदम्म' सम 'जैत' सुतन जमजाळ । खळ भाजण श्राया खडे, फिर भूखा लकाळ ।—रा रू

उ०—२ वे भाई विरदाळ, श्रौरगसाहि मुराद वे । हैवै पति भेळा हुश्रा, जुध मडण जमजाळ ।—वचनिका

रू०भे०—जमझाळ ।

जमझमा–स०स्त्री०—तार वाद्यो के वजाने की एक क्रिया विशेष जो प्राय सितार श्रौर वीणा मे काम श्राती है ।

जमझाळ—देखो 'जमजाळ' (रू भे) उ०—जोधाहरौ जोधारण-जूटो, जवना ऊलटता जमझाळ । पीळा खाळ हुत पालटता, राव राठोड थीयो रखपाळ ।—राव वीरमदेव रो गीत

जमडड, जमडडो–स०पु०—१ यमराज द्वारा दिया गया दड, यमयातना । उ०—ते श्राळै ही हर तणा, जे नर नाम लियत । से जमडडा परहरै राघव सरण रहत ।—ह र.

२ यमराज के हाथ मे रहने वाला डडा ।

रू०भे०—जमदड ।

जमडड, जमडढ़, जमडढ़ा, जमडड्ढ, जमडढ–स०स्त्री० [स० यमदंष्ट्रा] कृपाण, कटार । उ०—१ तेज घट श्रमीरा नरा वदळी तरह, छळी खत्रवट नरख हीदवाछात । कमधजा, घणी चडी भुजा कळकळी, हलचली दली जमडड दियौ हात ।—कविराजा करणीदान

उ०—२ जमडड्ढा तरवारिया, सेल्ह बदूका सत्थ। आगे धूप उखेविया, पाछे झाली हत्थ।—रा रू

रू०भे०—जमडाड, जमडाढ, जमदढ, जमदंड्ढ, जमदड्ढा, जमदाड, जमदाढ़, जमदाढक, जमदाढी।

जमडाण, जमडांणो–स०पु० [स० यम+दान+रा०प्र०ई] यमदूत।

उ०—नारायण नाम सू, प्राणी बाणी पोय। जमडाणी लागै नही, हाणी मूळ न होय।—ह र

जमडाड, जमडाढ—देखो 'जमडड' (रू भे)

उ०—करण घाव पर काळजै, जीभ प्रतख जमडाढ। जाफी ह्वंता जीभ सू, कडवो वैण न काढ।—वा दा.

जमडाढाळ–वि०—योद्धा, यमराज के समान विकट वीर। उ०—डाकी जमडाढाळ, वे वे तरगस बधिया। तुरकी रहवाळा तुरक, चढिआ चामरियाळ।—वचनिका

जमण, जमणा—देखो 'जमना' (रू भे)

उ०—मिळियै तट उपटि बियुरी पिळिया, घण घर धाराधर घणी। केस जमण गग कुसुम करवित, वेणी किरि त्रिवेणी वणी।—वेलि

जमणिका–स०स्त्री० [स० यवनिका] कनात, पर्दा। उ०—ओपै वेद जमणिका आगै, ज्वाळ अमळ वेदी मधि जागै। मधुपरकादि सरस रस माधुर, ससकार परखै देवासुर।—रा.रू

जमणिया–स०स्त्री० [स० जमनिका] साधुओ का एक उपकरण विशेष (जैन)

जमणो, जमबो–क्रि०अ०—१ ठडक अथवा समय के कारण किसी द्रव पदार्थ का गाढा हो जाना। किसी तरल पदार्थ का ठोस होना।

२ एक वस्तु का दूसरी वस्तु पर दृढतापूर्वक बैठना।

मुहा०—१ निजर जमणी–दृष्टि का स्थिर होकर किसी ओर लगना। किसी वस्तु पर नजर का अधिक देर ठहरना। २ मन मे बात जमणी–हृदय पर किसी बात का भली भाति अकित होना। मन पर किसी बात का पूरा प्रभाव पडना। ३ रग जमणो–प्रभाव दृढ होना, पूरा अधिकार होना।

४ एकत्र होना, जमा होना, ज्यू–सभा जमणी, दूध माथै मळाई जमणी। ५ अच्छी चोट पडना, ज्यू थप्पड जमणी। ६ हाथ से किये जाने वाले किसी कार्य का पूरा-पूरा अभ्यास होना, ज्यू–लिखण मे हाथ जमणो। ६ मनुष्यो के समुदाय एव जमघट के सामने किसी कार्य का इतनी उत्तमता मे होना कि उसका पूरा प्रभाव पडे, ज्यू–खेल जमणो, गाणो जमणो, तमासो जमणो। ७ किसी कार्य का अधिक प्रभावपूर्ण ढग से सचालित होना।

उ०—तठा पछै वरिहाहा सू दावो मागण री मन मे राखै, सु घणो साथ राखियो। घणा घोडा पायगाह किया, वडी राजवट जमती गई।—नैणसी

मुहा०—ठाठियो जमणो–किसी कार्य का भली प्रकार प्रभावपूर्ण ढग से चलना। ८ किसी सस्था, कार्यालय या व्यवसाय का चल निकलना, ज्यू–दूकान जमणी, स्कूल जमणी। ९ घोडे का ठुमक-ठुमक कर चलना।

जमणहार, हारो (हारी), जमणियौ—वि०।

जमवाडणो, जमवाडबो, जमवाणो, जमवावो, जमवावणो, जमवावबो —प्रे०रू०

जमाडणो, जमाडबो, जमाणो, जमावो, जमावणो, जमावबो। —क्रि०न०

जमिओडो, जमियोडो, जम्योडो—भू०का०कृ०।

जमीजणो, जमीजबो—भाव वा०।

जमतात–स०पु० [स० यमतात] सूर्य्य (ना मा)

जमदत–स०पु० [स० यमदत] यम की डाढ, कराल-गाल।

जमदग, जमदगन, जमदगनी, जमदग्गन, जमदग्गि, जमदग्नि–स०पु० [स० यमदग्नि] ऋचीक के पुत्र एक प्रसिद्ध महर्षि जिनका ऋग्वेद मे कई बार उल्लेख हुआ है। परशुरामजी इनके पुत्र थे।

जमदड—देखो 'जमडड' (रू भे)

जमदग्गिपुत्त–स०पु० [स० यमदग्निपुत्र] परशुराम (जैन)

जमदढ, जमदढ्ढ, जमदढ्ढा—१ देखो 'जमडड' (रू भे)

उ०—१ लड पडै फूट छड छाक लोह, छड पकड जडै जमदढ छछोह। —वि सं.

उ०—२ अवखै सेख ततारखा, उर सहना जमदढ्ढ। मरणै से डरणा कहा, लडणा 'जावै' गढ्ढ।—ला रा

२ यम की दाढ। उ०—२ अभ्रम खळ ओळव, अक्रम कोटे आळूजिस। जमवड्ढा मझ पडिस, खोड माया खोसाडिस।—ज खि

जमदळ–स०पु० [स० यम+दल] यमराज के सैनिक, यमदूत।

उ०—अजामेळ जमदळ अगा, विछटचो बिखमी वार। कीधी नारायण कहै, पुत्तर हेत पुकार।—ह र

जमदाड, जमदाढ, जमदाढक, जमदाढी—देखो 'जमडड' (रू.भे)

उ० —१ मिळिया असपति हूत 'अभैमल', असपति कुरब किया अ(प)रपर। अवि सिरपाव तुरी गज अविया, खग जमदाढ जडित नग खजर।—सू प्र

उ०—२ तुटी खग रोद घडा परतीख। सही जमदाढक झाळ सरीख। —सू प्र-

जमदास–स०पु०यौ० [स० यमदास] यमदूत।

जमदिस, जमदिसा–स०स्त्री० [स० यमदिशा] दक्षिण दिशा जिधर यम का निवास माना जाता है।

जमदूत–स०पु० [स० यमदूत] यमराज के अनुचर, यमदूत। उ०—मन मे फेर धणी री माळा, पकडै नैह जमदूत पलो। मिळै नही वकणा सू माया, भाया कम बोलणो भलो।—वा दा

जमदेवकाइय–स०पु० [स० यमदेवकायिक] यमदेवता की एक जाति (जन)

जमदेवता–स०पु०यौ० [स० यम+देवता] १ यमदेवता २ भरणी नक्षत्र जिसके देवता यम है।

जमद्दढ, जमद्दाढ—देखो 'जमडड' (रू भे.) उ०—१ जमद्दढ खाग कसै जमराण। पला भख सावळ रोळवि पाण।—सू प्र.
उ०—२ कसै हाथळा टोप मोजा अगळ्ळ। जमद्दाढ वामे जिकै खाग ढल्ल।—वचनिका

जमद्वार—स०पु० [स० यमद्वार] यमराज का द्वार। उ०—करि प्रसतानौ ले चले, दस सिरि जमद्वारे। कूदि चढे दहकधर, चित हित चौवारे।—सू प्र.

जमधर—स०पु०—जमडाढ़ नामक कटारी के समान आगे से मुडा हुआ व नुकिला एक हथियार। उ०—हाथी सिरोपाव सिरपेच किलगी समसेर जमधर बक्स विदा किया।—गौड गोपाळदास री वारता
रू०भे०—जमधर।

जमन—१ देखो 'जमना' (रू भे)। उ०—राम भजन सू भाव भेद कोइ विरला जाणै। गग जमन मधि वैसि पाच पायक परिताणै।
—ह पु वा.
२ यवन।

जमनखतर—स०पु०यौ० [स० यम+नक्षत्र] भरणी नामक नक्षत्र जिसका देवता यम है।

जमनभ्रात—स०पु०यौ० [स० यमुनाभ्रातृ] यमराज (अ मा)

जमना—स०स्त्री० [स० यमुना] १ सज्ञा के गर्भ से उत्पन्न सूर्य की पुत्री जो बाद मे सज्ञा को सूर्य द्वारा मिले हुए शाप के कारण नदी हो गई थी. २ उत्तर भारत की एक बडा नदी जो हिमालय से निकल कर प्रयाग के निकट गगा मे मिलती है।
पर्या०—काळद्री, कीळा, क्रस्णा, जमभगनी, जमा यमि, रवजा, सूरजसुता, सूरिजिजा।
रू०भे०—जमण, जमणा, जमनि, जमनी, जमन्ना, जमुण, जमुणा, जमुना, जम्मण, जम्मणा, जम्मना, जम्मन्ना, जम्मुना।
३ दुर्गा।

जमनाभिद—देखो 'जमुनाभेदी' (रू भे)

जमनायण—स०पु० [स० यवन+रा प्र. अयण] मुसलमान, म्लेच्छ।
उ०—धाधळ धारा ऊतरै, मोटी राड 'मुकन्न'। जूटी दळ जमनायणा, तूटी खागा तन्न।—रा.रू

जमनाळू—स०पु०—राठौड राव सीहा के वश की एक उपशाखा।

जमनाह—स०पु०यौ० [स० यम+नाथ] यमराज।

जमनि, जमनी—१ देखो 'जमना' (रू भे) उ०—गग जमनि मधि मुकतिफळ, सतगुरु दिया वताय। मन लोभी लालच पड्या, तो सुख मे रया समाय।—ह पु वा
[यमन देश से] २ एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर विशेष जिसकी गणना रत्नो मे की जाती है (यह यमन देश से आता है)

जमनोतरी—स०स्त्री० [स० यमनोत्तरी] हिमालय मे गढवाल के पास का एक पर्वत जहा से यमुना निकलती है।

जमन्ना—देखो 'जमना' (रू भे)

जमपास—स०पु० [स० यमपास] यमराज का पाश, मृत्युबधन।

जमपिता—स०पु० [स० यमपिता] सूर्य (अ मा)

जमपुर—स०पु० [स० यमपुर] १ यमलोक. २ नरक।
रू०भे०—जमपुरी।

जमपुरस्याम—स०पु०यौ० [स० यमपुर स्वामी] यमराज (अ मा)

जमपुरी—देखो 'जमपुर' (रू भे)

जमप्पभ—स०पु० [स० यमप्रभ] यमदेवता का इस नाम का 'उत्पात' पर्वत (जैन)

जमबाहण—स०पु०यौ० [स० यम+वाहन] यम का वाहन, महिष, भैंसा। (डि को)

जमबीज—स०स्त्री०यौ० [स० यमद्वितीया] १ चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की दूज, यमद्वितीया. २ कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया।

जमभगनी—स०पु०यौ० [स० यम+भगिनी] यमुना।

जमया—स०स्त्री० [स० यमया] ज्योतिष के अनुसार एक प्रकार का नक्षत्र योग।

जमर—देखो 'जोहर' (रू भे)

जमरथ—स०पु० [स० यमरथ] भैंसा (डि को)

जमराण, जमराणौ, जमराउ, जमराज—स०पु० [स० यमराज] १ मृत्यु-देवता यमराज, काल। उ०—१ आहेडे जमराण डाण मडे दीहाडी। सर क्रम वध सधिवा चाप आवरदा चाडी।—ज खि
उ०—२ वनस्पति फुलपगर भरइ जमराउ, भइसा रूपि पाणी वहइ।
—व स
पर्याय०—अत, अतक, अघडडी, कर्ममित्यण, काळ, कालिंद्री-सोदर, कीनास, क्रतात, क्रिताअत, जच्छ, जच्छाट, जम, जमनभ्रात, जमपुरस्याम, जमुनानुज, डडअत, दडधर, दवखण, धरमराज, धरमी, धिस्टदड, धूमोरण, प्राणहर, पितरपती, प्रेतपती, प्रेतराज, विस्वकसहर, भव, महिखधुज, मारतडसुत, मीच, मुदर, अतकर, अतु, रवसुत, सक्रती, सजमनीपत, सउरी, सतक्रती, समण, समवरती, साधदेव, सौरण, सुमन, सूरसुत, हर, हरी।
रू०भे०—जमराव, जमरो, जम्मराण।
२ भृगु ऋषि। उ०—१ महि मडळ 'पदम' पै ओपिया मडळी ओळगू अतगे जिमी असमाण। रिख तणा ओण पाहार जेही रिदै, जवन जगदीस चै 'दलौ' जमराण।
—महाराजा दलपतसिंह रामसिघोत री गीत
३ योद्धा, वीर। उ०—जठै किरमाळ झठा जमराण। भिडै गहलोतत थभै रथ भाण।—सू प्र.

जमराजपिता—स०पु०यौ० [स० यमराज+पिता]—सूर्य।

जमराव—देखो 'जमराज' (रू भे.) उ०—कोपिया सिर घालण घाव कत्ती, भड धीर चढ जमराव भत्ती।—गो रू.

जमरूद—स०पु०—एक प्रकार का लबोतरा फल।

जमरूप–स०पु०—कटार।

जमरौ—देखो 'जमराग' (रू भे) उ०—चउरासी देव छ इउ देइ, छ रितु पुस्प पूरइ जमरा पाणी वहइ, सात समुद्र माजणउ करइ। —व स

जमल, जमलउ–वि० [स० यमल] १ युग्म, जोडा २ दूसरा (अनेका) उ०—मौहर लुघू दीरघ जमल, पायै ए परिग्राण। सकौ कविंदा साभळो, ससिछदा सिहनाण।—पिं प्र

३ साथ। उ०—केतलाइ सुद्धा नारित्रियानी अवग्यानइ काजिइ जमलउ बाह्य क्रियाडवर माडइ।—पष्टिशतक प्रकरण

जमलजूयल–स०पु०यौ० [स० यमलयुगल] बराबर की जोड (जैन)।

जमलज्जुणभजग–स०पु० [स० यमलार्जुनभजक] श्रीकृष्ण का एक नाम। (जैन)

जमलपय–स०पु० [स० यमलपद] आठ-आठ का एक जत्था (जैन)

जमला–क्रि०वि० [स० यमल] एक साथ। उ०—हेलया जई हरि जमला रहिया। सरव समाचार सकेत कहिया।—प्राचीन फागु सग्रह

जमला–स०स्त्री० [स० यमला] एक प्रकार का हिक्का (हिचकी) रोग। (अमरत)

जमलारजुण–स०पु०यौ० [स० यमलार्जुन] गोकुल मे स्थित दो अर्जुन वृक्ष जो पहले कुबेर के नलकूवर और मणिग्रीव नामक पुत्र थे, किन्तु नारद के शाप से ये वृक्ष हो गये थे। श्रीकृष्ण ने इनका उद्धार किया था।

जमलि, जमली, जमलु–वि० [स० यमल] साथ, शामिल।

उ०—१ तिणइ दिवसि वेढि माडिसइ, वीरमदेव प्राण छाडिसइ। मस्तक तणउ अम्हारु नाह, जमली रही करावसु दाह।—का दे प्र

उ०—२ वेगलु हुइ ते न वीसरइ, जमलु मनथिउ न जाय। ते तुम्हनि सदा साभरि, भगतिनु एह उपाय।

—प्राचीन फागु सग्रह

जमलोइय–स०पु० [स० यमलौकिक] परमाधामी वगैरह यमलोक वासी देवता (जैन)

जमलोक–स०पु०यौ० [स० यमलोक] १ वह लोक जहाँ मरने के उपरात मनुष्य जाते है, यमपुरी २ नरक।

जमवान –वि० युवा, जवान।

जमवार–स०पु० [स० यम+वेला] १ मृत्यु समय, अवसान काल।

उ०—वसु आधार साधार खट ही वरन, जोप जमवार वैकुठ जाता। आथ वरतार भुज दार दोहवै उमग, वार जिण कही कव पार वाता।

—जैसळमेर रै रावळ हरराज रौ गीत

२ जीवन। [स० जन्म+वेला] उ०— कवसळ सुता राजकुमार, अवखी वखत सुजन अधार। सुसबद कियो तिण मत विसार, जिता जिके नर जमवार।—र ज प्र.

जमवारउ, जमवारौ—देखो 'जमारौ' (रू-भे.)

उ०—१ तो विन घडी न जाय, जमवारो किम जावसी। विलखतडी वौहाय, जोगण करग्यो जेठवा।—जेठवा

उ०—२ नारायण रो नाम ज्या, नह लीधो निरणाह। वा जमवारौ वोळियौ, ज्यू जगळ हिरणाह।—ह र.

स०पु०—२ यौवन। उ०—भणिज्यो भाछळियाह, सदेसो सयणी तणो। जीवन जमवाराइ, रिध माडै रहिस्यै नही।

—सयणी री वात

३ मृत्युसमय, अवसानकाल।

जमवाहण–स०पु०यौ० [स० यम+वाहन] भैसा (डिं को.)।

जमस–स०पु०—यमराज। उ०—हुडहुडे वीर वैताळ वागो हको, धडहडै आतसा पडै सहदा धको। जमस कम खाय खगधार वहता जको, सरायत जोधपुर तणा वागै सको।—किसनो आढो

जमसाद–स०पु० [स० यम+साद] प्रिय की मृत्यु पर की जाने वाली करुणाभरी पुकार, रुदन। उ०—१ सुरमुख करै सनान पथ सुरपुर रै हाली, दियो नही जमसाद खावद सग कियौ 'खुसाळी'।

—अरजुणजी बारहठ

उ०—२ प्राणनाथ प्राणात देख जमसाद न दीन्हो।

—भगवानजी रतनू

जमहता–स०स्त्री० [स० यमहृत्] काल का नाश करने वाला।

जमहनक–स०पु०—वह घोडा जिसके पैर श्वेत हो और शरीर काला हो (अशुभ)—शा हो

जमहर—१ देखो 'जौहर' (रू भे)

उ०—१ गोहिल पिण तद जोर था। दिन चार सारीखी वेढ हुई। पछै गोहिलै जमहर करनै मैदान आय वेढ़ हुई, तळाव बहुवनसर रै आगोर तठै घणा गोहिल काम आया, घणा तुरक काम आया नै घोडा पाळा गया।—नैणसी

उ०—२ जइतलदे भावलदे ऊमादे, नइ कमलादे राणी। जमहर तणी करइ सजाई, वात हीया माहि आणी।—का दे प्र

स०पु० [स० जन्म+हर] २ यमराज (ना मा.)

स०स्त्री०—३ चिता। उ०—अमराणी लागै अवै, जणणी खारो जैर। राख हू ऊ जमहर चढू, जावू खामद लैर।—पा प्र

जमहार–स०पु०—जवाहिरात। उ०—जमदढ खग जमहार, गज सिर फाड तुरग (जै) धर गुज्जर।—सू प्र

जमानत–स०स्त्री० [अ० जमानत] वह उत्तरदायित्व जो कोई मनुष्य अपराधी को न्यायालय मे उपस्थित होने अथवा किसी कर्जदार के कर्ज अदा करने या ऐसे ही किसी कार्य के लिये ले। जामिनी

जमानतनामौ–स०पु०यौ० [अ० जमानत+फा० नामा] जमानत के प्रमाण-स्वरूप लिखा जाने वाला प्रमाण-पत्र।

जमानती–स०पु० [अ० जमानत + रा०प्र०ई] जमानत देने वाला, जामिन।

जमानावाज, जमानासाज–वि०यौ० [अ० जमानः+फा०वाज,+साज] लोगो का रग-ढग देख कर व्यवहार करने वाला, अपने स्वार्थ एव मतलब के लिये समय-समय पर विभिन्न प्रकार का व्यवहार करने वाला, दुनियासाज।

जमानासाजी-स०स्त्री० [अ० जमान+फा० साज+रा०प्र०ई] अपने स्वार्थसाधन के लिए दूसरो को प्रसन्न रखने का कार्य।

जमानौ-स०पु० [अ० जमान] १ समय, काल, वक्त।

मुहा०—१ जमाना रौ-बहुत पुराना। २ जमानौ देखणौ-खूब अनुभव होना।

२ फसल की अवस्था या पैदावार।

मुहा०—२ जमानौ पैडणौ (बैठणौ)-फसल का मारा जाना, दुष्काल होना। जमानौ होणौ-अच्छी फसल होना, सुकाल होना।

३ ससार, दुनिया।

मुहा०—जमानौ देखणौ-खूब अनुभवी होना, दुनियाँ देखा हुआ होना।

यौ०—जमानावाज, जमानासाज, जमानासाजी।

४ वर्ष, साल। उ०—प्रगट जमानै पैसठै, लागौ सावण मास। पत नवकोटी पेखता, असुरा छूटी आस।—रा रू

जमारात—देखो 'जुमेरात' (रू भे)

उ०—'पातल' रा छळ जाग 'पतावत', 'अरसी' रा छळ आगै। यळ जस रात जनमियौ 'अमरा', जमारात नह जागै।

—महाराणा अमरसिंह रौ गीत

जमा-वि० [अ०] १ एकत्र, इकट्ठा।

मुहा०—कुल जमा-सब मिला कर, कुल, सब।

२ अमानत के तौर पर किसी के खाते मे रक्खा गया।

स०स्त्री० [अ०] १ मूलधन, पूजी।

२ रुपया, धन।

मुहा०—जमा मारणी-अनुचित रूप से किसी का धन हस्तगत करना। वेईमानी से किसी का धन हजम कर जाना।

३ मालगुजारी, लगान।

यौ०—जमाबदी।

४ योग, जोड (गणित)

५ वही या हिसाब-खाते आदि का वह भाग जिधर आए हुए धन या माल का विवरण दिया जाता हो।

यौ०—जमा-खरच।

[स० यमुना] ६ यमुना (अ मा, ह ना मा)

[स० याम्या] ७ दक्षिण दिशा (जैन)

८ यम लोकपाल की राजधानी (जैन)

स०पु० [स० यम] ९ यमराज। उ०—सठ मडल स्रोता हुवै, वक्ता कुकवि वणत। भूकण लागौ भूकवा, जांण जमा दीपत।

—वा दा

जमाअत—देखो 'जमात' (रू भे)

जमाइ, जमाई-स०पु० [स० जामातृ] १ दामाद, जामाता।

उ०—१ केई जमाइ केई साळा, इसा पाती वैठा राजवी ढीचाळा।

—व स

उ०—२ वेग सिकदर वचन सिवाई, जवन इनायत तणौ जमाई।

—रा रू

रू०भे०—जम्माइ, जम्माई।

पर्या०—जवाई, जामाता, दुख्तरपत, दुहितापति, धीप, धीपत, पतदुख्तर।

२ इस नाम से गाया जाने वाला एक राजस्थानी लोक गीत।

३ जमाने की क्रिया या इस कार्य की मजदूरी।

जमाखरच-स०पु०यौ० [फा०] आय और व्यय।

जमाखातर, जमाखातरी, जमाखातिर-स०स्त्री० [अ० खातिरजमाऽ] इतमिनान, खातिरजमा, तसल्ली। उ०—१ अब दरवार कानली तो ये जमाखातरी राखज्यौ।—द दा उ०—२ हरदत्त कहीं आ किसी लेखै री वात छै। ये जमाखातिर राखज्यौ। जैसौ अन्न खाय वैसी बुद्धी ऊपजै।—साह रामदास री वात

रू०भे०—जमैखातर, जमैखातरी, जमैखातर।

जमाज-स०पु० [स० यमाद अथवा स० यम+अज] ऊँट।

उ०—जरवफत झूल जमाज, सकळात मुखमल साज। सीसम्म कूचिय साग, करि दत वेलिय काम।—सू प्र

रू०भे०—जमाद।

जमाणौ, जमावौ-क्रि०स०—१ ठडक अथवा किसी अन्य तरीके से किसी द्रव पदार्थ को गाढा करना, किसी तरल पदार्थ को ठोस करना

२ एक वस्तु को किसी दूसरी वस्तु पर दृढतापूर्वक बैठाना।

मुहा०—१ निजर जमाणी—दृष्टि को स्थिर कर के किसी ओर लगाना। किसी वस्तु पर नजर को अधिक देर ठहराना २ मन मे वात जमाणी—हृदय पर किसी वात को भली भाँति अकित करना। मन पर किसी वात का पूरा प्रभाव डालना ३ रग जमाणौ—प्रभाव दृढ करना, पूरा अधिकार करना।

३ एकत्र करना, इकट्ठा करना, —ज्यू सभा जमाणी।

४ अच्छी चोट देना, प्रहार करना। उ०—तद खाडैती उणरै साचनै ढूढ माथै डडो जमायौ।—वाणी

५ हाथ से सपन्न होने वाले किसी कार्य का अभ्यास करना, ज्यू—लिखण मे हाथ जमाणौ। ६ बहुत से आदमियो के सामने किसी कार्य को उत्तमतापूर्वक करना, ज्यू—खेल जमाणौ, गाणौ जमाणौ, तमासौ जमाणौ। ७ किसी कार्य को अधिक प्रभावपूर्ण ढग से करना, उत्तमतापूर्वक करना।

मुहा०—ठाठियौ जमाणौ—किसी कार्य को भली प्रकार प्रभावपूर्ण ढग से करना।

८ किसी सस्था, कार्यालय या व्यवस्था को उत्तमतापूर्वक चलाना

९ घोडे को ठुमक-ठुमक कर चलाना. १० खाना, भक्षण करना, ज्यू —खीर जमाणी। ११ प्रयोग करना, सेवन करना।

जमाणहार, हारौ (हारी), जमाणियौ—वि०।

जमायोडौ—भू०का०कृ०।

जमाईजणौ, जमाईजवौ—कर्म वा०।

जमणौ, जमवौ—अक०रू०।

जमाडणो, जमाडबो, जमावणो, जमावबो—रू०भे० ।

जमात-स०स्त्री० [अ० जमाअत] १ बहुत से आदमियो का गिरोह, जत्था । उ०—गाडिया ऊपरलै भार भराई । वेलदार अर कहाडी बरदार जिका री जमात दस हजार । जिके बनकटी करै अर मोरचा वणावै ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२ सेना, फौज । उ०—गई पुकारा जोधपुर, कूक गई अजमेर । सुणी इनायत असत खा, वणी जमात जु फेर ।—रा रू.

३ सन्यासियो या साधुओ की मडली । उ०—जिकौ धोक्बा काज जावै जमाता । अपा पाप थावै वजै सिद्ध आता ।—मे म.

४ कक्षा, दर्जा ।

रू०भे०—जमातिय, जमायत, जम्मात ।

जमातदार—देखो 'जमादार' (रू भे) उ०—१ बादसाह रै पठाण वाकरखा चाकर रोकड हजार ड्योढ री असवारी री जमातदार सो दाद पाया नू महिना नव हुवा ।—ठाकुर जैतसी री वारता

उ०—२ नवाव नू और उण जमातदारा नू वाता सू इतबार वधायो । —गौड गोपाळदास री वारता

जमातात-स०पु० [स० यमुना+तात] सूर्य्य (ना मा)

जमाति-स०पु० [स० जामातृ] १ जँवाई, दामाद ।

२ देखो 'जमात' (रू भे)

उ०—१ जरै उठाही सू पीठवै भुवारो भवन छोडि कोइक ओघड अतीता री जमाति रै साथ बेडो रै वळ खाडि लाघि ।—वं भा.

उ०—२ जठै भड 'तेज' हणूमत जाति । जुडै हरनाथ करूर जमाति । —सू प्र

जमातिय—१ देखो 'जमात' (रू भे) २ देखो 'जमाती' (रू.भे)।

उ०—जमातिय जोध जमातिय जान, वजै सुर सिंधव राग विधान । —सू प्र

जमाती-वि०—जमात मे रहने वाला ।

जमाद—देखो 'जमाज' (रू भे) (अ मा)

जमादार-स०पु० [अ० जमाऽ+फा० दार] १ कुछ सिपाहियो या पहरेदारो का प्रधान । २ पुलिस का बड़ा सिपाही ३ पहरेदार ।

रू०भे०—जमातदार ।

जमादारी-स०स्त्री० [अ० जमाऽ+फा० दार+रा०प्र०ई] जमादार का पद या कार्य ।

जमापासा-स०पु०यो०—वही आदि का वह हिस्सा या कोष्ठक जिधर आये हुए व जमा होने वाले धन का विवरण लिखा जाता हो ।

जमा-पिता-स०पु० [स० यमुनापिता] सूर्य, भानु (अ मा)

जमाबदी-स०स्त्री०—१ कुछ व्यक्तियो की सम्मिलित रकम जो किसी एक व्यक्ति के पास जमा हो ।

२ पटवारी का एक कागज जिस पर आसामियो के नाम व लगान की रकम लिखी जाती है ।

जमाभेदण—देखो 'जमुनाभेदी' (रू भे) (ना मा)

जमामरद-स०पु० [फा० जवामर्द] वीर, बहादुर । उ०—पीछे मा'राज काम आया तिण री पातसाहजी सू औरगाबाद मै मालम हुई । तठै वडो अपसोस कियो अर फुरमायो कै वडा सचा निमकहलालिया था, अब मेरी पातसाही मैं ऐसा जमा-मरद बाकी रया नी कोई ।—द दा.

रू०भे०—जमॅमरद ।

जमायत—देखो 'जमात' (रू भे)

उ०—१ सो ऊठ बडा जमायत का तवेलें मे रहै ।
—सूरे खीवे काधळोत री बात

उ०—२ इतने मे आण कूक घाली सो जमायता उतावळ सू चढी ।
—कुंवरसी साखला री वारता

जमायोडौ—भू०का०कृ०—१ (ठड्क अथवा किसी अन्य तरीके से किसी द्रव पदार्थ को) गाढा किया हुआ, ठोस किया हुआ, जमाया हुआ ।

२ (एक वस्तु को किसी दूसरी वस्तु पर) दृढ़तापूर्वक बैठाया हुआ ।

३ एकत्र किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ ।

४ चोट दिया हुआ, प्रहार किया हुआ ।

५ हाथ से सम्पन्न होने वाले किसी कार्य का अभ्यास किया हुआ ।

६ बहुत से आदमियो के सामने किसी कार्य को उत्तमतापूर्वक किया हुआ ।

७ किसी कार्य को अधिक प्रभावपूर्ण ढंग से किया हुआ, उत्तमतापूर्वक किया हुआ ।

८ किसी सस्था, कार्यालय या व्यवसाय को उत्तमतापूर्वक चलाया हुआ ।

९ घोडे को ठुमक-ठुमक कर चलाया हुआ ।

१० भक्षण किया हुआ, खाया हुआ, सेवन किया हुआ, प्रयोग किया हुआ ।

(स्त्री० जमायोडी)

जमार, जमारइ, जमारउ—देखो 'जमारो' (रू भे)

उ०—१ नही तो जाण-पिछाण जमार । नही तो साख सबध ससार ।
—ह.र

उ०—२ भूरमभूरा करइ विमासइ, हवइ जमारइ आणइ । जउ कान्हडदे नही छोडावइ, रह्या सही तुरकाणइ ।—का दे प्र.

उ०—३ घणाइ देवदेवता आराधी जमारउ सघळउ मिथ्यात्वना सइ करानइ मूआइ जि ।—षष्टिशतक प्रकरण

जमारात—देखो 'जुमेरात' (रू भे.)

जमारी-स०पु० [स० यमारि] विष्णु ।

जमारीक-स०पु०—जीवनधारी, प्राणी । उ०—हूं तो निपट ऊडो, साघणो जमारीक भेळा रहण रो प्यार करण मतू छू ।
—जखडा मुखडा भाटी री वात

जमारो-स०पु० [स०जन्म+कार, प्रा० जम्मआर अथवा जन्मवारक]

१ जीवन, जिन्दगी । उ०—१ जोवन दरव न खट्टिया, ज्या परदेसा जाय । गमिया यूही दीहडा, अहिल जमारो जाय ।
—जखडा मुखडा भाटी री वात

उ०—२ जग जाय जमारो जीता रो, सुज सगर सायब सीता रो।
दिल तूं 'किसना' जगवदण री, नहची रख कोसळनदण री।
—र ज प्र

२ आयु। उ०—जारी करता जाय जमारो, थिर न विचारो थाक।
बुधि थारी रो है बळिहारो, 'ऊमर' खारो आक।—ऊ का

३ जन्म। उ०—जब साहमी ऊठी कूवरी, ततखिण आडी परीयछ
घरी। बोलइ वात कूवरी घणी, बीतां छइ जमारा तणी।—का दे प्र
रू०भे०—जमवारउ, जमवारो, जमार, जमारइ, जमारउ, जम्मारो।

जमालगोटो, जमालघोटो—स०पु० [स० जयपाल+गोटो] एक पौधे का बीज जो अत्यन्त रेचक होता है। २ दन्ती नामक पेड का फल।

जमालि—स०पु० [स०] एक प्रसिद्ध क्षत्रिय राजकुमार का नाम जो महावीर स्वामी के दामाद थे। इन्होने महावीर स्वामी से ही प्रथम दीक्षा ली और बाद मे एक नया पथ चलाया (जैन)।

जमाव—स०पु०—१ जमाने की क्रिया या भाव।
२ हुकूमत कायम करने का भाव, शासन जमाने का भाव।
उ०—पीछे भाई बीदेंजी नू द्रोणपुर पडगनै सूधो अनायत कियो नै घरती मै वडो जमाव कियो, अरु फतै कर कवरजी स्री बीकोजी बीकानेर पधारिया।—द दा.
३ गोष्ठि (अफीम ?) उ०—अबै लाल कवर अमला रा जमाव माडिया, गळियो गुलसरो, छूटो, अमल कियो।—जगदेव पवार री वात
४ जमघट, भीड। उ०—जोवत जोख जमाव, घणा नृत भेद घणा।
क्रीडति जाणि किसन्न, वृदावन रास वणं।—सू प्र
५ दूध को जमाने के उद्देश्य से उसमे डाला जाने वाला खट्टा पदार्थ। मि० जामण, (४)
६ उदर का विकार विशेष। (मि० चेठ, ३)
७ डेरा, पडाव।
रू०भे०—जमावट।
अल्पा०—जमावडो।

जमावडो—देखो 'जमाव' (अल्पा, रू भे) उ०—हरेक सभा-सोसाइटी तथा साहित्यक जमावडै मे वैं'रो लवर सगळा सू आगै रै'तो।
—वरसगाठ

जमावट—देखो 'जमाव' (रू.भे)

जमावणियो—स०पु०—दूध जमाने का मिट्टी का पात्र विशेष।
उ०—दवणा ठीवा दीप, तावणी वहळ विलोवण। धावण जमावणियां, पराता पोळी पोवण।—दसदेव

जमावणो—वि० (स्त्री० जवावणी) जमाने वाला, दृढ करने वाला।
उ०—गनीम गड्ढ गव्वतीय गब्भ को गमावणी। जहान आन मान जोर सोर ते जमावणी।—ऊ का

जमावणो, जमावबो—देखो 'जमाणो, जमावो' (रू.भे)
उ०—इस उज्जे तुम इहा, जग कर अमल जमावो। अवरन आवै इहा, आप पतिसाह कहावो।—सू.प्र.

जमावियोडो—देखो 'जमायोडो' (रू.भे.) (स्त्री० जमावियोडी)

जमियत—देखो 'जमीयत' (रू.भे) उ०—सो क्रिया यह जैसाह, दख सात दहुवै राह। कम उतन जमियत काज, दुह दाव मे है आज।
—सू प्र.

जमियोडो—भू०का०कृ०—१ (ठडक अथवा किसी अन्य उपाय से किसी द्रव पदार्थ का) गाढा हुवा हुआ, ठोस हुवा हुआ. २ एक वस्तु का दूसरी वस्तु पर बैठा हुआ ३ एकत्र हुवा हुआ, जमा हुवा हुआ ४ अच्छी चोट पडा हुआ. ५ हाथ से किये जाने वाले किसी कार्य का पूरा-पूरा अभ्यास हुवा हुआ ६ (मनुष्यो के समुदाय एव जमघट के सामने किसी कार्य का) उत्तमता से हुवा हुआ ७ (किसी कार्य का प्रभावपूर्ण ढग से) सचालित हुवा हुआ ८ (किसी सस्था या कार्यालय का) व्यवसाय चला हुआ ९ ठुमक-ठुमक कर चला हुआ (घोडा) (स्त्री० जमियोडी)

जमीं—देखो 'जमीन' (रू भे, ना.मा, डि को)

जमींदार—देखो 'जमीदार' (रू भे.) उ०—जमींदार हुय जमी करजदारी मे कळगी। ईजतदार अधार गरजदारी मे गळगी।—ऊ का

जमींरत—देखो 'जमीरत' (रू भे)

जमी—स०स्त्री० [स० यमी] १ यमुना नदी २ देखो जमीन' (रू भे, डि.ना मा)

जमीकद—स०पु०यौ० [फा० जमीन+स० कद] सब शाको मे श्रेष्ठ माना जाने वाला एक प्रकार का कद, सूरन।

जमीक, जमीकरवत—स०पु०—ऊँट (ना डि को.)

जमीत—देखो 'जमीयत' (रू भे.) उ०—१ आवियो कमध अजीत, जुध काज साज जमीत। करि अवस देस कमध, महि मेल दळ अनिमध।—रा रू. उ०—२ पातसाह रा डेरा हसम रखत तखतूपुरा हूता सु आणि थाणं दाखिलो कीआ छै। अजमेर रा थाणा री जमीत कीजै छै।—रा.सा स

जमीथभ—स०पु०यौ० [फा० जमीन+स० स्तभ] १ योद्धा, वीर २ राजा।

जमीदार—स०पु० [फा० जमीदार] जमीन का मालिक, भूमि का स्वामी।
उ०—अबरकै तो छोडिया छै। जमीदारा की साख सू हर अबरकै चूकस्यो तो मारहीज नाखस्यु।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
रू०भे०—जमीदार।

जमीदारी—स०स्त्री० [फा० जमीदारी] १ किसी जमीदार की जमीन २ जमीदार का हक।

जमीदोज, जमीदोट—वि० [फा० जमीदोज] जो तोड-फोड कर जमीन के बराबर कर दिया गया हो, नाश, ध्वस।

जमीन—स०स्त्री० [फा० जमीन] १ पृथ्वी, भूमि, धरती २ पृथ्वी की ऊपरी सतह।
मुहा०—१ जमीन आसमान एक करणो—किसी कार्य के लिये बहुत

अधिक परिश्रम करना २ जमीन आसमान रौ फरक होणौ—बहुत अधिक फर्क होना ३ जमीन चाटणी—नीचा देखना, इस प्रकार गिर पडना कि जमीन के साथ मुँह लग जाय ४ जमीन पडियौ आसमान चाटणौ—जमीन पर रह कर आसमान की बातें करना, बढ-बढ कर बातें मारना, बहुत महत्वपूर्ण एव कठिन कार्य करना. ५ जमीन माथै पग-ही नी धरणौ—बहुत अभिमान करना, बहुत इतराना ६ जमीन माथै पग ही न पडणौ—बहुत गर्व होना ७ जमीन मे गड (समा) जाणौ—बहुत लज्जित होना ८ पगा नीचै सू जमीन खिसकणी—होस हवास जाता रहना, सन्नाटे मे आना।

३ कपडे, कागज आदि की ऊपरी सतह।

रू०भे०—जमी, जमी, जम्मी।

जमी भरतार-स०पु०यौ० [फा० जमीन+भर्तृ] राजा, पृथ्वीपति।

उ०—मुखा आनूप मन मोह करणी माहा, यळा तरणी मुगध रूप रस ग्रत। रमा भरतार करतार कायम रहौ, जमी भरतार दातार जसवत।—हुकमीचद खिडियौ

जमीयत, जमीरत-स०स्त्री० [अ०जमईयत] सेना, फौज।

उ०—१ पछै देवै आपरा भाईबध तेडनै ठोड वसी राखी। आपरी जमीयत राखी। धरती रस पडी।—नैणसी

उ०—२ जमीरत टूटिया पछै कोई आगै ही आरे न करसी और अठै हळखड हुय जासी।—गौड गोपाळदास री वारता

रू०भे०—जमियत, जमीरत, जमीत।

जमी-री-करोत-स०पु०यौ०—ऊँट। उ०—जोजना उनाळै घडी अडै आसमान जातो, जोया घणा मोद मानै सराहे जीहान। जमीरौ-करोत जाणु पछा हाल छेकै जिसौ, दुजा 'वाघ' जुग ऐहौ तू ही दै सुदान।—अज्ञात

जमुण, जमुणा, जमुना—देखो 'जमना' (रू भे)

उ०—कब्बरी किरि गुथित कुसुम करगित, जमुण फेण पावन्न जग। उतमग किरि अवर आधो अधि, माग समारि कुआर मग।—वेलि

जमुनानुज-स०पु० [स० यमुनानुज] यमुना का छोटा भाई, यमराज। (डि को)

जमुनाभेदी-स०पु० [स० यमुनाभेदी] श्रीकृष्ण के अग्रज बलराम जिन्होने हल से भेद कर यमुना के दो भेद किये।

(मि०—भेदजमा)

रू०भे०—जमनाभिद, जमाभेदण।

जमुर, जमुरक-स०पु० [फा० जबूरक] घोडे या ऊँट पर रखी जाने वाली एक प्रकार की छोटी तोप। उ०—तुपक्कनि तोप जमूर जुलाल, परघ्घन सूल गदा भिंदिपाळ।—ला रा

रू०भे०—जमूरक, जमूरौ।

जमुरौ-स०पु० [फा० जबूर] घोडो के नाखून काटने का एक नालवदी का औजार।

जमूरक, जमूरौ—देखो 'जमुरक' (रू भे)

जमेखातर, जमैखातरी—देखो 'जमाखातिर' (रू भे)

उ०—तरै कारीगर कह्यौ 'ऐ वीच थर हूसी' तरै राजा रै जमैखातरी हुई।—नैणसी

जमेरात—देखो 'जुमेरात' (रू भे.)

जमेरी—१ देखो 'जवेरी' (रू भे.)

२ मिश्री।

जमै-स०स्त्री० [अ० जम्अ] १ धन, द्रव्य। उ०—और मतौ निस ऊपजै, ऊगै अवर प्रकार। जग हू ता लीजै जमै, समै विचार विचार।
—रा रू.

२ आय, आमद?

उ०—बीजै दिन आजमखान नवोनगर लूटियौ। पछै जामवात कर मेळ कियौ। घोडा १० री जमै आगै की, सु वरसावरस द्यै।—नैणसी

जमैखातर—देखो 'जमाखातिर' (रू भे)

उ०—तरै जगमाल कह्यौ—जमैखातर राखो, इणा नू तोत कर मारस्या।—नैणसी

जमैमरद—देखो 'जमामरद' (रू भे)

उ०—तोई झगडै री आसग हुई नही। दळपत वडौ जमैमरद बाहादर देख्यौ।—द.दा

जमौ-स०पु०—महात्मा रामदेव तँवर के भजन व कीर्तन के हेतु किया जाने वाला जागरण।

रू०भे०—जम्मौ, जुम्मौ।

यौ०—जमो-जागण, जमो-जागरण।

जम्मतर—देखो 'जनमतर' (रू भे, जैन)

जम्म—१ देखो 'जम' (रू भे)

उ०—१ पखाला भरै जम्म भैसो सम्राजै। सुरा राव सिक्को छिडक्काव साजै।—सू प्र

उ०—२ अतग्गी वात कुण आगमइ, कउण जम्म सरिसउ जुडइ। बालावत वड दळ विकळ, कउण आणि वळि ऊहडइ।—अ वचनिका

२ देखो 'जम' (रू भे, जैन)

जम्मघटा-स०स्त्री०—१ चौसठ योगिनियो मे से एक योगिनी।

उ०—देवी जम्मघटा वदीजे जडवा, देवी माकणी डाकणी रूढ सब्बा
—देवि

२ देखो 'जमघट जोग' (रू भे)

जम्मण—१ देखो 'जमना' (रू भे)

उ०—दिल्ली साह विरत्ते, रणअगाध जम्मण उपकठे। 'रैणायर' रण मडे, गौ दीवाण राम खळ खडे।—रा रू

जम्मणचरिय-स०पु० [स० जन्मचरित्र] जन्मचरित्र, जीवन-चरित्र। (जैन)

जम्मणभवण-स०पु० [स० जन्मभवन] प्रसूतिघर (जैन)

जम्मणा—देखो 'जमना' (रू भे) (जैन)

स०पु० [स० जन्म] २ जन्म, उत्पत्ति (जैन)

जम्मणी-स०स्त्री०—देवी, शक्ति । उ०—देवी जम्मणी मरुख ग्राहूति ज्वाळा, देवी वाहनी मत्र लीला विसाळा ।—देवि

जम्मदूती-स०स्त्री०यौ० [स० यम+दूती] यमदूती, दुर्गा, कालिका । उ०—देवी राखस धोमरे रक्त रूती, देवी दुरज्जटा विक्रटा जम्मदूती । —देवि.

जम्मना, जम्मन्ना—देखो 'जमना' (रू भे)
उ०—देवी सरसती जम्मना सरी सिद्धा, देवी त्रिवेणी त्रिस्थळी ताप रुद्धा ।—देवि

जम्मभूमि-स०स्त्री० [स० जन्मभूमि] जन्मभूमि, मातृभूमि (जैन)

जम्मराण—देखो 'जमराज' (रू.भे)

जम्मा-स०स्त्री० [स० याम्या] दक्षिण दिशा ।

जम्माइ, जम्माई—देखो 'जमाई' (रू भे)
उ०—'पेमा' परणाईह डर हू ता सह जग दखै । 'जीदो' जम्माईह, जमराणै हू ता जबर ।—पा प्र

जम्मात—देखो 'जमात' (रू भे)
उ०—१ ग्ररवुदा तणा जम्मात ईस, सरदा जिम ग्राणै घणा सीम । —वि स
उ०—२ थटै सामद्रा हाथिया पाळी थाई । उभै जम्म री जाणि जम्मात ग्राई ।—सू प्र

जम्मारो—देखो 'जमारो' (रू भे)
उ०—जेठा घडी न जाय, जम्मारो किम जावसी । विलखतडी वीहाय, जोगण करगो जेठवा ।—जेठवा

जम्मी—देखो 'जमीन' (रू भे)
उ०—सातम निसा सरव्व, 'ग्रभै' निस दिन ग्रसटम्मी । ग्रमासमा घण उडै, ज्वाळ गोळा नभ जम्मी ।—सू प्र

जम्मुना—देखो 'जमुना' (रू भे)
उ०—लिया सार सिंगार गोचार लीला, करै ग्राज रो जम्मुना ग्रट्ट कीला ।—ना द

जम्मु—देखो 'जाम' (रू भे)
उ०—नवरस देसण वाणि, सवणजळि जे नर पियहि । मणुय जम्मु ससारि, सहलउ किउ इत्थु कलि तिहि ।—ऐ जै.का स.

जम्मो—देखो 'जमो' (रू भे)

जयत-स०पु० [स०] १ एक रुद्र २ इद्र के एक पुत्र का नाम (ग्र मा) ३ सगीत मे ध्रुवक जाति का एक ताल ४ स्कद, कार्त्तिकेय ५ ग्रक्रूर के पिता का नाम ६ विराट के यहा ग्रज्ञातवास करते समय भीम का नाम (महाभारत) ७ दशरथ का एक मत्री ८ एक पहाडी, जयति का पर्वत ९ यात्रा का एक योग (फलित ज्योतिप) १० जम्बुद्वीप के मुख्य चार द्वारो मे से पश्चिम दिशा का द्वार (जैन) ११ एक जैन मुनि जो वज्रसेन मुनि के तृतीय शिष्य थे (जैन) १२ एक देव विमान विशेप (जैन) १३ रुचक पर्वत का एक शिखर (जैन) ।

जयतपत्र-स०पु०—ग्रश्वमेधीय घोडे के ललाट पर बाधा जाने वाला जय-पत्र ।

जयता-स०स्त्री०—ध्वजा, पताका ।

जयती-स०स्त्री० [स०] १ विजय करने वाली, विजयिनी २ ध्वजा, पताका ३ दुर्गा. ४ पार्वती ५ किसी महान पुरुप की जन्मतिथि पर किया जाने वाला उत्सव ६ ज्योतिप का एक योग ७ जन्माष्टमी ८ जम्बुद्वीप के मेरु से पश्चिम दिशा मे स्थित रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक कुमारी (जैन) ९ भगवान महावीर की एक उपासिका (जैन) १० सातवें जिनदेव की माता का नाम (जैन) ११ भगवान महावीर के ग्राठवें गणधर की माता का नाम (जैन) १२ प्रत्येक पक्ष की पन्द्रह रात्रियो मे से नवमी रात्रि का नाम । (जैन)

जय-स०स्त्री० [स०] १ किसी विवाद ग्रथवा युद्ध मे विपक्ष की हार, विरोधियो पर प्राप्त विजय, जीत ।
वि०वि०—विजय के ग्रतिरिक्त इस शब्द का प्रयोग देवताग्रो या महात्माग्रो की ग्रभिवदना सूचित करने के लिए भी होता है, यथा—जयइकलिंगजी, जयचामुडा री, जयचारभुजा री, जयवापूजी, जयमाताजी, जयरामजी, जयरामदेवजी, जयश्रीजी री आदि ।
स०पु०—२ बृहस्पति के प्रोष्ठ पद नामक छठे युग का तीसरा वर्ष (ज्योतिप) ३ महाभारत ग्रथ का नाम. ४ विराट के यहाँ ग्रज्ञातवास मे निवास करते हुए युधिष्ठिर का एक नाम ५ विश्वामित्र का एक पुत्र ६ धृतराष्ट्र का एक पुत्र. ७ दक्षिण की ग्रोर दरवाजे वाला मकान ८ सूर्य ९ इद्र । १० ग्रर्जुन (ग्र मा) ११ छप्पय छद का एक भेद १२ ससार (जैन)
[स० यत्न] १३ यत्न, कोशिश (जैन)

जयकंकण-स०पु० [स०] प्राचीन काल मे वीर पुरुपो को युद्ध मे विजय प्राप्त करने के उपलक्ष मे प्रदान किया जाने वाला सोने का कङ्कण ।

जयकरणसत्र-स०पु०—वीर ग्रर्जुन (ग्र मा)

जयकार, जयकारो-स०पु०—१ जयध्वनि, जय-जय की ध्वनि ।
उ०—१ वढेल वीरमदेव नू मारि तिणरो तुरग चामुंड चढियो, ग्रर बैताळ वीरा जठी-तठी जयकार पढियो ।—व भा
उ०—२ नव लोकातिक देवता, जस जपे जयकारो जी ।—स.कु.
२ देखो 'जंजैकार' (रू भे)

जयगोपाळ-स०पु०यौ०—ग्रापस मे किया जाने वाला एक-दूसरे का ग्रभिवादन ।

जयघोस-स०पु० [स० जयघोप] १ एक मुनि का नाम (जैन) २ जयध्वनि (जैन)

जयजयकार, जयजयकारु, जयज्जयकार—देखो 'जै-जंकार' (रू भे)
उ०—१ मारी मलेच्छ पडतउ दीठउ, वतइ वखाणिउ खानि । जयजयकार हुउ सरगा पुरि, बइसी गयउ विमानि ।—का दे प्र
उ०—२ ग्रसुर विणामी किउ उपगारु । इद्रि लोकि हूउ जय-

जयकारु।—प प च उ०—३ सत्रा महिपति करत सधार धडा पग दे खग वाहत धार। करे नृप वीर जयज्जयकार हका करि जाणि रमै होळियार।—सू प्र

जयण–स०पु० [स० यजन] १ याग, पूजा (जैन) २ अभयदान (जैन) [स० जयन] ३ जीत, विजय (जैन) [स० यतन] ४ प्राणी की रक्षा (जैन) ५ यत्न, उद्योग (जैन) वि० [स० जवन] १ वेग वाला, वेग युक्त (जैन) [स० जयन] २ जीतने वाला (जैन)

जयणट्ठ–क्रि०वि० [स० यतनार्थं] जीव-रक्षार्थ।

जयणा–स०स्त्री० [स० यतना] १ प्रयत्न, चेष्टा, कोशिश २ प्राणी की रक्षा, हिंसा का परित्याग (जैन) ३ किसी जीव को दुःख न हो इस प्रकार प्रकृति करने का ख्याल (जैन)

जयणावरणिज्ज–स०पु० [स० यत्नावरणीय] जहाँ पर प्रयत्न या उद्यम मे विघ्न पडे इस प्रकार के कर्म की एक प्रकृति (जैन)

जयत–स०स्त्री०—१ 'जय हो' की ध्वनि, जयध्वनि २ जय, विजय।

जयतवादी—देखो 'जैतवादी' (रू भे)

जयतसिरी—देखो 'जयस्री' (रू भे) उ०—तेज पुज जिम से भंइरवी, जुग प्रधान गुरु पेखउ भवि सवहि ठउर वरी जयतसिरी।

—ऐ.जै. का स

जयती–स०स्त्री० [स० जयन्ति] ध्वजा, पताका (ह ना)

जयद्दह, जयद्रत्थ, जयद्रथ, जयद्रथि, जयद्रथ्, जयद्रथ्थ–स०पु० [स० जयद्रथ] दुर्योधन का बहनोई तथा सिंधु देश का एक राजा जो महाभारत के युद्ध मे अर्जुन द्वारा मारा गया था।

उ०—१ सकुनि दुसासणु जयद्रथु पुत्र्। गरूउ भूरिस्रवा भगदत्तु।

—प प च

उ०—२ किधौ इभ कुभ व्रकोदर हत्थ, किधौ जयद्रथ्थहि पै पण पत्थ।

रू०भे०—जदरथ। —ला रा

जयध्वज–स०पु० [स०] जय पताका, जयती।

जयनी–स०स्त्री० [स०] इद्र की कन्या।

जयनेर–स०पु०—जयपुर नगर (व भा)

जयपत्तु—देखो 'जयपत्र' (रू भे)

उ०—अत्थाणु पहुविरायह तणउ। जिणि रजवि जयपत्तु लियउ।

—ऐ जै का स

जयपत्र–स०पु० [स०] १ पराजय के प्रमाण मे पराजित पुरुष द्वारा विजयी को लिखा जाने वाला पत्र। २ अश्वमेघ यज्ञ मे छोडे गये घोडे के ललाट पर बधो पत्र।

रू०भे०—जयपत्तु।

जयपाळ–स०पु० [स० जयपाल] १ जमालगोटा २ विष्णु ३ राजा।

जयप्रिय–स०पु० [स०] ताल के प्रमुख साठ भेदो मे से एक भेद।

जयमगळ–स०पु० [स० जयमगल] १ राजा का वह हाथी जिस पर वह विजय प्राप्त करने के बाद बैठ कर निकले। २ ताल के साठ भेदो मे से एक भेद। ३ एक प्रकार का शुभ रग का घोडा जिसके हृदय, खुर, मुख, अडकोश और पूछ सफेद हो (शा हो)

जयमल्लार [स०] स०पु०—सपूर्ण जाति का एक राग।

जयमाताजी–स०स्त्री०यौ०—शाक्त लोगो द्वारा एक दूसरे को किया जाने वाला अभिवादन।

जयमाळ, जयमाळा–स०स्त्री०यौ० [स० जयमाला] १ विजयी पुरुष को पहनाई जाने वाली माला। २ स्वयबर मे कन्या द्वारा वरे हुए पुरुष के गले मे डाली जाने वाली माला।

जयरामजी–स०स्त्री०—हिन्दुओ मे एक दूसरे को परस्पर किया जाने वाला अभिवादन।

जयलक्ष्मी—देखो 'विजयलक्ष्मी' (रू भे)

जयवत–वि० [स० जयवत्] विजयी।

स०पु०—राठौड वश की १३ प्रमुख शाखाओ मे से एक (सू प्र)

जयसधि–स०पु० [स० जयसन्धि] पुडरीक राजा के मत्री का नाम (जैन)

जयसद्द–स०पु० [स० जयशब्द] विजयसूचक ध्वनि।

जयस्तभ–स०पु० [स०] अपनी विजय के स्मारकस्वरूप किसी राजा द्वारा बनवाया जाने वाला स्तभ।

जयस्री–स०स्त्री० [स० जयश्री] १ विजयलक्ष्मी, विजय. २ सध्या समय गाई जाने वाली एक रागिनी (सगीत) ३ ताल के साठ भेदो मे से एक।

रू०भे०—जयतसिरी।

जयहाथ–स०पु० [स० जयहस्त] अर्जुन (अ मा)

जयहार–स०पु०—विजयमाला।

जया–स०स्त्री० [स०] १ दुर्गा. २ पार्वती. ३ हरी दूब ४ हरड (ना मा, अ.मा) ५ दुर्गा की एक सहचरी ६ ध्वजा, पताका ७ किसी पक्ष की तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी तिथि (ज्योतिष) ८ सोलह मातृकाओ मे से एक ९ माघ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी १० भाग. ११ यमुना नदी (एका.) १२ बारहवा तीर्थंकर वासुपुज्य की माता का नाम (जैन) १३ चौथे चक्रवर्ती की मुख्य स्त्री (जैन). १४ एक प्रकार की मिठाई (जैन)

वि०—विजय दिलाने वाली।

क्रि०वि० [स० यदा] जब, जिस वक्त। (जैन)

जयादित्य–स०पु० [स०] कश्मीर का एक प्राचीन राजा।

जयानीक–स०पु० [स०] १ द्रुपद राजा का एक पुत्र।

२ राजा विराट का एक भाई।

जयार–सर्व०—जिनका।

क्रि०वि०—१ जब। उ०—जोधाणै 'अजरा' नू, थाट व्रगसण कथ थापै। 'जैसाह' नू जयार, उतन आवेर न आपै।—सू प्र

२ तक, पर्यन्त। उ०—अति धरै धक अणभग जोधार मडण जग। जोजना तीन जयार, वणि हले दळ विसतार।—सू प्र

जयारमयार–स०पु० [स० जकारमकार] जकार मकार रूप अपशब्द (जैन)

जयावती स०स्त्री० [स०] १ कार्तिकेय की एक मातृका का नाम ।
२ एक रागिनी (सगीत)

जयी–स०पु० [स० ययी] १ शिव २ घोडा. ३ मार्ग, रास्ता ।

जयु–स०पु० [स० ययु] अश्वमेध यज्ञ का घोडा ।

जयेत–स०पु० [स०] पाडव जाति की एक राग का नाम (सगीत)

जयेतगोरी–स०स्त्री० यौ० [स०] जयेत और गौरी के मेल से बनने वाली एक सकर रागिनी (सगीत)

जयोडौ—देखो 'जायोडौ' (रू भे) (स्त्री० जयोडी)

जयौ–स०पु०—'जय हो !' का अभिवादन । उ०—स्रीनिध आगमसार, वारिज नयण च ज्यानकी वल्लभ । अखिल जगत आधार, सारगधरण जयौ अवधेस ।—र रू

जरत–स०पु०—महिप, भैंसा ।—डि को

जरद–स०पु०—१ प्रहार २ प्रहार या गिरने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि ।

जरदौ–वि०—हजम करने वाला ।

स०पु०—१ एक ध्वनि विशेष २ दुसाला ।

उ०—कह्यौ–घर-घर भीख मता मागे । एकै ठाकुर कन्हा सवा-सवा क्रोड रा जरदा ले आवै, तौ तो-नू वरू ।—सयणी री वात

३ उपभोग करने का भाव ।

जर–स०स्त्री०—१ चम्मच के आकार का किन्तु चम्मच से अधिक गहरा व वडा छेददार छानने का एक उपकरण ।

अल्पा०—जरियौ ।

[फा०] २ धन, दौलत, सपत्ति । उ०—जतर जर हरणू अभ्यतर जडियौ । पीतम प्यारी नै परहरणू पडियौ ।—ऊ का

[स० जरा] ३ वृद्धावस्था ।

[स० जरायु] ४ वह झिल्ली जिसमे गर्भस्थ बालक रहता और पुष्ट होता है । आँवल ।

स०पु० [स०] ५ सोना, स्वर्ण । उ०—१ सुरख जगाळी सावळी, सावळी जीकु करण जजाळ । चौथी जर री चमकती, भळकै बिंदली भाळ ।—अज्ञात उ०—२ जर तार चिगा साइवान जास । परगटे जाण बहु रवि प्रकास ।—सू.प्र

६ लोहे का मुरचा (अलवर)

[स० ज्वर] ७ बुखार (जैन)

जरई–स०स्त्री०—अकुर निकले हुए धान आदि के बीज ।

जरक–स०स्त्री०—१ मोच, चोट, खरोच, घाव आदि २ प्रहार या प्रहार की ध्वनि । उ०—१ जमी पुड धरहरै उडै रूका जरक, देख क्रपणा थरक पीठ दीधी ।—रावत गुलावसिंह चूडावत री गीत

उ०—२ सैफळ लडै भड असुर सुर, जडै सेल खागा जरक । कौतक्क जेण देखै कळह, ऊभौ रथ थामै अरक ।—सू प्र

३ देखो 'जरख' (रू भे) ४ सोने के टुकडे, स्वर्ण-खड ।

उ०—३ अतक तक भड भचक इक-इक, पडि जरक मुद गरक पासक ।—सू प्र.

रू०भे०—जरक्क ।

(अल्पा)—जरकौ

जरकणौ, जरकबौ–क्रि०अ०—१ गिरना । उ०—थकै जीह चुकै कब कायरा ओद्रकै थोक, जरकै वरकै जमी धरकै जजीर । रणकै वरूपी भेर धधकै ऐराक राग, हूचकै गनीमा हूत दूसरौ हमीर ।
—पहाडखा आढौ

जरकस, जरकसिया, जरकसी, जरकसौ, जरकस्स–वि०—(वह वस्त्र) जिस पर सोने के तार वगैरह लगे हुए हों ।

उ०—१ अदभुत लसै छव गवर अग पदमणि कोमळ चपक प्रसग । कुनडचा रमै सग सखी कूल, दमकत अग जरकस दकूल ।
—वगसीराम प्रोहित री वात

उ०—२ इसो ही पीलसोता री चादरणी इसी ही जरकसिया पोसाक ।
—कुवरसी साखला री वारता

उ०—३ तुरी च्यार पोसाक जरकसी रकमा जवाहरात री जडाऊ आण मेल्ही ।—महाराजा जयसिंह आमेर रा धणी री वारता

उ०—३ साहब नौबत सुद्रब, बमन जरकस्स जवाहर । रतन जडत सिरपेच, माळ मुगताहळ सुदर ।—रा रू.

जरकाणौ, जरकाबौ–क्रि०स०—१ मारना-पीटना २ अधिक भोजन करना, अधिक खाना ।

जरकायोडौ–भू०का०कृ०—१ मारा पीटा हुआ २ अधिक खाया हुआ । (स्त्री० जरकायोडी)

जरकावणौ, जरकावबौ—देखो 'जरकाणौ' (रू भे.)

उ०—देख काम हे जमदूता सू जूता सू जरकावै । अवधूता रै सरणै आपद छूटा ही छुट जावै ।—ऊ का

जरकावियोडौ–भू०का०कृ०—देखो 'जरकायोडौ' (रू भे.) (स्त्री० जरकावियोडी)

जरकियोडौ–भू०का०कृ०—१ गिरने से चोट खाया हुआ, गिरा हुआ. जोर से बोला हुआ (स्त्री० जरकियोडी)

जरकी–वि०—कायर, डरपोक ।

जरकौ—देखो 'जरक' (अल्पा , रू भे)

जरक्क—देखो 'जरक' (रू भे) उ०—तरस लखो 'पातल' तणौ, आयौ कमे अरक्क । भडा समेळा भाइया, जवना दिया जरक्क ।—रा रू

जरख–स०पु० [स० जरक्ष] लकडबग्घा । उ०—कुत्ते दीठो करक जरख दिस खुर रुख खाचौ । ढोल पडियौ ढोर कागला दीठो काचौ ।
—ऊ का.

पर्या०—तरच्छु, डाकण-वाहण, अगडचण ।

रू०भे०—जरख्ख ।

जरखबाहणी–स०स्त्री०—लकडबग्घे की सवारी करने वाली डाकिनी, प्रेतनी, चुडैल आदि ।

जरखेज–वि० [फा०] उपजाऊ, उर्वरा ।

जरख्ख—देखो 'जरख' (रू भे.)

जरग–वि० [स० जरत्क] १ जीर्ण, पुराना (जैन) २ देखो 'जरगव' (रू भे) (जैन)

जरगव–स०पु० [स० जरद्गव] १ लकडबग्घा (जैन) २ बूढा, बैल (जैन)

जरघर–स०पु० [फा० जर+स० गृह] स्वर्णकार, सुनार।

जरड–स०स्त्री० [अनु०] १ वस्त्र के फटने या चिरने की ध्वनि विशेष. २ देखो 'जरडौ' (मह, रू भे)

जरडौ–स०पु०—छेद, सूराख।

जरजर–वि० [स० जर्जर] १ जीर्ण. २ टूटा-फूटा, खडित ३ वृद्ध।

जरजराना–स०स्त्री०यौ० [स० जर्ज्जरानना] कार्तिकेय की एक अनुचरी मातृका का नाम।

जरजरित–वि० [स० जर्ज्जरित] १ टूटा-फूटा, खण्डित. २ पुराना, जीर्ण।

जरजरी–स०स्त्री०—एक प्रकार का आभूषण।

जरजीत–स०पु० [स० जराजित] कामदेव (अ मा)

जरठ, जरढ़–वि० [स० जरठ] १ जीर्ण, पुराना २ वृद्ध, बुड्ढा ३ कर्कश ४ कठिन।

जरण–स०पु० [स०] १ वृद्धावस्था, जरा।
[स०] २ दस तरह के ग्रहणो मे से एक ३ सहिष्णुता ४ चन्द्रमा (डिं को)
वि०—१ हजम करने वाला, पचाने वाला २ वृद्ध।

जरणा–स०स्त्री० [स०] १ सहनशक्ति, सहनशीलता, क्षमा। उ०—केहिक होवै तो सुकीर्रित करिया। जरणा रै वाता सह जरिया।—पी ग्र.
क्रि०प्र०—करणी, होणी।
२ वृद्धावस्था

जरणी–स०स्त्री०—१ वृद्धा २ देवी, दुर्गा ३ माता।
उ०—बाघोडी कमरा ओ भाभोसा मत खोलो, लाजे म्हारी जरणी रो दूध ए।—लो गी

जरणेल, जरणैल—देखो 'जनरल' (रू भे) उ०—अगरेज येम जरणैल साव, आयो अचक रुद्धयो नवाव।—ला रा

जरणौ, जरबौ–क्रि०स०—१ हजम होना, पचना। उ०—१ गुठा जीमता गटक, अब नहिं भावै वानै। राव अरोगता रटक, जरै नह सीरौ ज्यानै।—जुगतीदान देथो
उ०—२ दास मीरा साच प्रगटचो, उदै भये अकूर। जहर प्याला अमी जरिया, प्रगट पीना पूर।—भगतमाळ
उ०—३ कहै रण घोर भग जाय पात खरकाते, उदर गभोर बात तनक जरै नही।—र रू
२ सहन होना। उ०—१ तिणसू घरै किसै मूढै जावू, म्हारी परणी लहुडा भाई री अतेवर कहावै, तिणसू ओ सबद मोनै जरै नही।—जखडा मुखडा भाटी री वात
उ०—२ जरणा रख घेस प्रता । जरतो फिट ग्रीधड मात लिया फिरतो।—पा प्र.
३ जलना, भस्म होना। उ०—जीतै रण पै'ला जर, सुरपुर वसण समीह। किम सेवा वणसी कहो, दासी विण चउ दीह।
—व भा
४ लोहे के मुरचा (जग) लगना। उ०—खेडी री जरियोडी कर मे खाग, फाटोडी मखमल रा दळ मे फस रही।—किसोरसिंह बारहठ
५ (हिन्दुवानी फल का) परिपक्व होना।
६ सहार करना। उ०—जे सुध हरणकुस नूं जरियौ, धड नाहर मानव चौधरियौ।—र ज प्र

जरत–वि० [स० जरत्] १ पुराना, प्राचीन २ वृद्ध। उ०—सुजि जळ पियै जरत विण सूरति। मगर पचीस हुवै दिव मूरति।—सू प्र

जरतार–वि० [फा०] जरी का काम किया हुआ, सलमे-सितारे का काम किया हुआ। उ०—१ जरतार बुकानिय बध जडी। चख सोनहरी छकडाळ चडी।—पा प्र
उ०—२ मोजा कडा मूदडा गजा गामा तोखारा। पच ठाम अवरा जरी जामा जरतारा।—रा रू

जरताव—देखो 'जरतार'। (रू भे)
उ०—नवकेल सुरग नराट, पचरग डोरिय पाट। तखी स रग महताव, जरताव पख जुगाव।—सू प्र

जरद–स०पु०—१ कवच। उ०—१ जजरग घाट तूटै जरद, झाट पडै झड ओझडा। दळ खोद वढै हू कळ दिली, घोकळ कीधौ धूहडा।
—सू प्र.
उ०—२ फोडइ पक्खर जरद अणीसर तीरइ तीर पडति। नासता एक नर मारीजइ परदळ इम विनडति।—विद्याविलास पवाडउ
रू०भे०—जरदाउळि, जरदाळ, जरदाळि, जरदाळौ, जरद्द।
२ पीला रग। उ०—सुण भवरा भवरी कहै, जरद पीठ पर क्यूह। बरछी लाग्या प्रेम री, हळदी लागी ज्यूह।—र रा
वि०—पीला। उ०—केसर को रग जरद है, चूने को रग सेत। दोनू मिळ लाली करै, ऐसौ राखो हेत।—अज्ञात
रू०भे०—जरद्द।

जरदगव–स०पु० [स० जरद्गव] १ एक वीथि जिसमे विशाखा, अनुराधा और ज्येष्ठा नक्षत्र है (ज्योतिष) २ देखो 'जरगव' (रू भे)

जरदपोस, जरदबध–स०पु०यौ० [रा० जरद+फा० पोस, रा० जरद+स० बध] कवचधारी योद्धा। उ०—१ अै कहै 'सूर' दारण इता, जरदपोस सेला जडा। वरियाम मुहर सिर विलद हूं, रमा डडेहड रूकडा।—सू प्र
उ०—२ भूप चदोल ठहै भाराथै। सोळ हजार जरदवध साथै।
—सू प्र

जरदाउळि, जरदाळ, जरदाळि–स०पु०—१ कवच। उ०—१ राठ-उडा हाथे रिम्मराह, सघरइ मोर सहिता सनाह। जरदाउळि फूटइ सेल जीह, अरि उरे अणी ठेलइ अबीह—रा ज सी
उ०—२ जरदाळ होवै दोय टूक जिता। कवि 'मोड' वखाणत हाथ किता।—पा प्र.

२ कवचधारी योद्धा । उ०—१ वहै राग सावळ तात विनाए । फटै जरदाण जुवाण केकाण ।—सू प्र

उ०—२ जरदाळ तुरग वणाव जुग्रो । हय मोर परै असवार हुवो ।
—पा.प्र

वि०—तम्बाकू का व्यसनी ।

रू०भे०—जरदाळी, जरद्दाळ ।

जरदाळू-स०पु०—१ खूबानी नामक मेवा. २ देखो 'जरदाळो' (रू.भे)

जरदाळो—देखो 'जरदाळ' (रू भे) उ०—१ कामणिया तणै ताणियै कसणै, मोहै दूजा तणा मण, 'राजड' राण रहै रळियावत, कसिया जरदाळै कसण ।—जोगीदास कवियो

उ०—२ विहु कूरमा साथ विरदाळा । जोध हजार वीस जरदाळा ।
—सू प्र.

जरदी-स०स्त्री०—१ पीलापन । उ०—हरदी जरदी ना तजै, खट रस तजै न ग्राम । असली गुण कू ना तजै, गुण कू तजै गुलाम ।
—अज्ञात

२ अडे के भीतर का पीला भाग ।

जरदुस्त-स०पु० [फा०] पारसी धर्म का प्रतिष्ठाता जो ईसा से ६०० वप पूर्व फारस मे हुआ था ।

जरदैत-स०पु०—कवचधारी योद्धा । उ०—१ घण घाय घुटै, जरदैत जुटै । रिण रीठ वगै, खिर धार खगै ।—रा रू

उ०—२ जुध सिर कर ग्रहि ग्रहि जरदैता । वह गज धुजा सूर विरदैता ।—सू.प्र

रू०भे०—जरदोत ।

जरदोज-स०पु० [फा०] कपडो पर कलावत्तू या सलमे आदि का काम करने वाला ।

जरदोजी-स०पु० [फा०] एक प्रकार की दस्तकारी जो कपडो पर सुनहले कलावत्तू या सलमे आदि से की जाती है ।

जरदौ-स०पु० [फा० जरदा] १ चावलो का बनाया हुआ एक प्रकार का व्यजन २ चावलो मे हल्दी डाल कर मास के साथ पकाया जाने वाला एक व्यजन. ३ खाने की सुगधित सुरती जो विशेष क्रिया से बनाई जाती है. ४ पत्तेदार तम्बाकू ।

[रा०] ५ कवच (मि. जरद) ६ पीले रग का एक विशेष घोडा (शा हो) ।

जरदोत—देखो 'जरदैत' (रू.भे.) उ०—दुवै दुवै फट हुवै जरदोत, कासि करि तापस लेत करोत ।—सू प्र

जरद्द—देखो 'जरद' (रू भे) उ०—१ छकडी जरद्द सउ अगि छाइ, रोपियउ टोप सिरि जइत राइ ।—रा ज सी

उ०—२ चढया खान दोरा वरच्छी घुमावै, फुलै अग ये तो जरद्द न मावै ।—ला.रा

जरद्दाळ—देखो 'जरदाळ' (रू भे) उ०—जोधारा तोखारा व्है दवा सू भेखा जरद्दाळा । दवा सू कराळा नाद वाजिया दुजीह, कडे चढे भडा फोजा दवा सू देठाळा कीधा । आमा सामां फौजा भडा फाबिया अबीह ।—चावडदान महडू

जनरल—१ देखो 'जरनल' (रू.भे) २ मासिक पत्र ।

जरब-स०स्त्री० [अ० जर्ब] १ आघात, चोट. २ जगल, वन ।

उ०—जवा मे वडा रो दगी पुळ मे जनम हुग्रो जे जरब मे आग लागै, वनस्पती जळै ।—डाढाळा सूर री वात

३ तबले, मृदग आदि पर थाप ।

[रा०] ४ जूता ।

जरबफत, जरबपत-स०पु० [फा० जरबफ्त] एक प्रकार का रेशमी कपडा जिसकी बुनावट मे कलावत्तू देकर कुछ बेल-बूटे बनाये जाते हैं, सोने-चादी के तारो से बुना कपडा । उ०—जरबफत भून जमान सकळात मुखमल साज । सोसम्म कूचिय साम, करि दत बेनिय काम ।
—सू प्र.

जरबाफ-स०पु० [फा० जरबाफ] १ सोने के तारो से सलमे आदि का कार्य करने वाला २ वह कपडा जिस पर जरबफ्त का काम बना हो । उ०—गाजी वहादर ताजक नीलक तार, जरबाफ, बादले, आसावरी, विलाती, हजारी, कपडै रा पहरणहार ।—रा.सा स

जरबाफी-स०पु० [फा० जरबाफी] जिस पर जरबाफ का काम किया हुआ हो ।

जरबे-क्रि०वि०—बलात्, जबरदस्ती । उ०—टणका टणका तरु जरबे टुरि जावै, दुरब्बा गुरब्बा गुण गरबै दुर जावै ।—ऊ.का.

जरबौ-स०पु०—जूती, उपानह । उ०—गुरु गुगा गेला गुरू, गुरु गिडका रा मेल । रूम-रूम मे यू रमै ज्यू, जरबा मे तेल ।—ऊ का.

जरमन-स०स्त्री०—जर्मनी देश की भाषा या वहाँ का निवासी ।

वि०—जरमन देश का ।

जरमन सिलवर-स०स्त्री०यौ० [अ०] जस्ते, तांबे और निकल के सयोग से बनने वाली एक चमकीली व सफेद धातु ।

जरमनी-स०स्त्री० [अ०] यूरोप का एक प्रसिद्ध देश ।

जरमी-स०स्त्री०—जमीन, धरती । उ०—भाया बम कासू तो जरमी को लोभ दायो । सारो देसवास्या भी अर्चे नू जोरि पायो ।—शिव

जरय-स०पु० [स० जरक] पहली नरक के मेरु से दक्षिण तरफ का एक नरक वास (जैन)

जरयमज्झ-स०पु० [स० जरकमध्य] पहली नरक के उत्तर दिशा की तरफ का एक नरक वास (जैन)

जरयावत्त-स०पु० [स० जरकावर्त] पहली नरक के पश्चिम दिशा की ओर का एक वडा नरक वास (जैन)

जरयावसिट्ठ-स०पु० [स० जरकावशिष्ट] पहली नरक के दक्षिण दिशा को ओर का एक वडा नरक वास (जैन)

जररार-वि० [अ० जर्रार] बहादुर, वीर ।

जरराही-स०स्त्री० [अ० जर्रार+रा०प्र०ई] बहादुरी ।

जरराही-स०स्त्री० [अ० जर्राही] शल्य चिकित्सा ।

रू०भे०—जराह।

जर्रो–स०पु० [अ० जर्राह] चीर-फाड करने वाला चिकित्सक, शल्य चिकित्सक।

जरस–स०पु० [स० जरक्ष] एक प्रकार का जगली पशु, लकडबग्घा।

जरसी–स०स्त्री०—जाडे मे पहनने का एक प्रकार का वस्त्र।

जरहजीण–स०पु०—एक प्रकार का कवच। उ०—राउत चडिया सनाह लीधा, किस्या किस्या सनाह। जरहजीण जीवणसाल जीवरखी अगरखी करागी वज्रागी लोहवढलुडि। समस्त सनाह लीधा। —का दे प्र

जरहर–स०पु० [स० जलधर] बादल, वर्षा।

जरां–क्रि०वि०—जब। उ०—जिण वखत मैल पडमी जरा, कौडी रै नह काम रो। तन चाख लगी मेटी तिका, राख भरोसौ राम रो। —ऊ का

जरा–क्रि०वि० [अ०] थोडा, कम।

वि० [स० जरायुज] १ गर्भ से उत्पन्न होने वाले।

उ०—अडज्ज, स्वेदज्ज जरा उद्भिज्ज, माया सब तूझ म भूनव मुझ। —ह.र

स०स्त्री० [स०] वृद्धावस्था, बुढापा।

उ०—१ तरै रावळ मन माहै जाणियौ जु जरा तौ नैडी आई, यूही मर जाईजसी, किणीक सूल नाम रहै तिका वात कीजै।—नैणसी

उ०—२ तन दुख नीर तडाग, रोज विहगम रूंखडौ। विसन सली-मुख वाग, जरा वरक ऊतर जवळ।—बा दा.

जराउअ, जराउज, जराउय, जराउया—देखो 'जरायुज' (रू भे, जैन)

जराक–वि०—जरा सा, थोडा सा।

स०पु०—प्रहार। उ०—अैराक जराक कराक अथाह, समोभ्रम 'भोज' लड़ै 'गजसाह'।—मू प्र

जराकौ–स०पु०—१ भय, आतक। उ०—इळ ईरान मकै लग वाकौ। जवना सुण उर पडै जराकौ।—रा रू

२ चोट, मार, प्रहार, धक्का।

जराग्रस्त–वि०यौ० [स०] वृद्ध, बुड्ढा।

जराजर–स०स्त्री० —१ शीघ्रता व अधिक वेग के साथ प्रहार होने का भाव। [अनु०] २ लाठी प्रहार की ध्वनि।

जरादूत–स०पु० [स०] वृद्धावस्था का सूचक श्वेत बाल।

उ०—दुखा रो डेरियौ बीकानेरियौ दिना रौ दादौ, दीठा सीस ढेरियौ हेरियौ जरादूत। भूंटै लोव लाग वनौ हेरियौ वखाक भड, पीढी सात माथै पाणी फेरियौ कपूत।—उदैभाण बारहठ

जरापाखर–वि०—१ मजबूत, दृढ २ सन्नद्ध, कटिवद्ध।

जराभीर, जराभीरु–स०पु०यौ० [स० जराभीरु] कामदेव (ह ना.)

जरायु–स०पु० [स०] १ वह झिल्ली जिसमे गर्भगत बालक रहता है और पुष्ट होता है, आंवल २ गर्भाशय ३ जटायु।

जरायुज–स०पु० [स०] आंवल की झिल्ली मे लिपटा हुआ माता के गर्भ से उत्पन्न होने वाला पिंडज।

रू०भे०—जराउअ, जराउज, जराउय, जरउया।

जरारहित–स०पु०—देवता (डि ना मा.)

जरासद, जरासध–स०पु० [स० जरासध] मगध देश का एक प्राचीन राजा जो वृहद्रथ का पुत्र था।

वि०वि०—वृहद्रथ ने पुत्र प्राप्ति के लिये चड कौशिक की आराधना की जिसने एक फल देकर राजा से कहा कि इसे रानी को खिला दो। राजा के दो रानियां थी, अत फल को बीचोबीच से काट कर उन्होने एक-एक टुकडा रानियो को दे दिया। समय पर दोनो रानियो के आधा-आधा पुत्र हुआ। राजा ने उन्हें फेंकवा दिया किन्तु श्मशान निवासनी 'जरा' नाम की राक्षसी ने दोनो को जोड (सधि) दिया। इसलिए उसका नाम जरासध पडा। कालान्तर मे यह एक महान योद्धा हुआ। कृष्ण के सकेत पर भीम ने जरासंध के शरीर की सधि तोड कर उसे मार डाला।

रू०भे०—जरसद, जरासधि, जरासधौ, जरासिधु, जुरसध, जुरसिध, जुरासद, जुरासध, जुरासिधी, जुरासीद।

जरासधखय–स०पु०यौ० [स० जरासध+क्षय] भीम (अ मा)

जरासधि, जरासधौ, जरासिध, जरासिधु–स०पु० [स० जरासध] देखो 'जरासध' (रू भे) उ०—जरासिध नउ आविउ दूउ काळकुमरु जई लग्गइ मूउ। वणिजारा नी वात साभळी जरासिधु आवइ तुम्ह भणी।—प प च

जरासुत, जरासेन–स०पु०यौ० [स०] जरासध का एक नाम।

जराह—देखो 'जरराही' (रू भे)

जरि–वि० [स० जरिन्] जरायुक्त, वृद्ध, अतिवृद्ध (ईश्वर)

उ०—नमो तातकारी अमर अघहारी हरि नमो। नमो क्षाताकारी अजर जरहारी जरि नमो।—ऊ का

[स० ज्वरिन्] २ बुखार से पीडित, ज्वर वाला (जैन)

जरिअ–वि० [स० ज्वरित] बुखार वाला, ज्वरित (जैन)

जरिउ–वि० [स० जीर्ण] पुराना (उ र)

जरियोडौ–भू०का०कृ०—१ हजम हुवा हुआ, पचा हुआ २ सहन हुवा हुआ ३ जला हुआ. ४ लोहे के मुरचा लगा हुआ ५ सहार किया हुआ। (स्त्री०जरियोडी)

जरियौ–स०पु०—१ देखो 'जर' (१) (अल्पा०, रू भे)

[अ० जरिया] २ लगाव, सबध, जरिया। उ०—उगणीसवी सदी रै पैला मिनख सू मिनख रा कठ नै आपरा साचेला रूप मे बोली रै सैंदरूप अळगो करण री जुगत नी वणी ही तद फगत लिखावट रा आखरा रै जरियै उणरो कठ सगळा देस मे घूमतौ फिरतौ।—वाणी

जरींद, जरींदौ–स०पु०—१ प्रहार या प्रहार से उत्पन्न होने वाली ध्वनि। उ०—खहड जूथ वळ वड सजे झुड भड तलवारा, जवन थडं वहड खागा जरींदा। सीह रा साकला जेम नव साहसा, ओपियौ कठ जोधाण 'इंदा'।—इद्रसिह रौ गीत

जरी–स०स्त्री० [फा० जरी] १ बादले से बुना जाने वाला ताश नामक कपडा। उ०—खुराका ग्रबाका ततमाल खावै, भली चीज प्रिथी जिके मन भावै। जरी बाफ नीलक जामा जडावै, वपे ग्रन्न ग्रन्नेक धारा बणावै।—वचनिका

२ सोने के तारो ग्रादि से बुना हुग्रा काम। उ०—जरी जवाहर जगमगै, दिल मैं इसी दिखाय। बादळ माहली बीजळी, उतरी भू मे ग्राय।—ग्रज्ञात

जरीको–स०पु०—टक्कर, चोट, ग्राघात। उ०—खेडेचो दरकूच खडि, ग्रायौ गढ उज्जेण। पातिसाह सू पाधरै, लोह जरीका लेण।

—वचनिका

जरीब–स०स्त्री० [फा० जरीब] भूमि मापने की एक माप जो करीब-करीब ६० गज की होती है। कुछ लोग इसे ५५ गज के माप की मानते है।

जरीबकस–स०पु० [फा० जरीबकश] भूमि मापने के समय जरीब खीचने का कार्य करने वाला व्यक्ति।

जरीवानौ, जरीमानौ, जरीयानौ—देखो 'जुरमानौ' (रू.भे)

जरु, जरू–स०पु०—काबू, वश, इख्तियार। उ०—समर जीपै सबळ वडा खाटै सुजस, जिको जो जिही कुळवाट जोवै। सूर सुदतार झूझारसिंघ (तो जिसा), हुवै ग्रित इसा ताइ जरू होवै।

—राठौड जुझारसिंह री गीत

क्रि०वि०—१ जब।

२ ग्रवश्य, जरूर। उ०—१ 'जगौ' जैपर गयौ जीकी वात सुणज्यौ जरु, हसै वोही नारिया कीद हासी। ग्रापरा कुसळ पूछै पिया ग्रापनै, उदैपुर गया सो कदै ग्रासी।—जगतसिंह री गीत

वि०—१ मजबूत, दृढ, ग्रटल। उ०—१ 'जगड' सुत 'ग्रमर-सुत' नाम राखण जरु, सरू जरा बोलिया सूर साखी। ढूक जाडा थडा भूक घळ ढाहिया, रूक रजपूत-वट भली राखी।—जगौ सादू

उ०—२ मुख इता धणी छळ मारवा, मुहर ग्रणी वध मेलिया। जुध करण जैत नामी जरू, भडा ग्रमामा भेळिया।—रा रू

२ जबरदस्त, प्रबल। उ०—ग्रडे 'लखधीर' तणौ 'ग्रमरेस', जरू खग झाट हणै जवनेस।—सू प्र.

जरूर–क्रि०वि० [ग्र० जरूर] निस्सदेह, ग्रवश्य। उ०—जिका लखि बावन वीर जरूर, देव्या जस गावत थावत दूर।—मे मा

जरूरत–स०स्त्री० [ग्र० जरूरत] ग्रावश्यकता, प्रयोजन।

जरूरी–वि० [फा० जरूरी] जिसकी जरूरत हो, ग्रावश्यक।

उ०—कागद राव सेखा पै जरूरी माड दीनू। घोडा का मगवा कौ तगादी वहोत कीनू।—शि व.

जरूला–स०स्त्री० [स० जरुला] चार इन्द्रियधारी जीवो की एक जाति (जैन)

जरेटणौ—देखो 'जेटणौ' (रू भे)

जरै—क्रि०वि०—जब। उ०—जरै ग्रा जाण पोगड ग्रवस्था मे ही कुमार प्रथ्वीराज पिता सू ग्ररज करि।—व भा.

जरोवणीय–स०पु० [स० जरोपनीत] वृद्धावस्था वाला पुरुष (जैन)

जरौ—देखो 'जर' (१) २ भय, डर।

जळदर, जळधर–स०पु० [स० जलधर] १ शिव की कोपाग्नि से समुद्र से उत्पन्न एक पौराणिक राक्षस २ नाथ सप्रदाय का एक सिद्ध।

उ०—ग्रचळ जळधर ध्यान उर, कर गजधनि सुकज्ज। मीठा साचा वयण मुख, 'लाडू' लोयण लज्ज।—वा दा.

३ जालोर नगर। उ०—रचै घर गूजर ग्रारण रोस। जळधर नीर चढावत जोस।—मू प्र

[स० जलोदर] ४ एक प्रकार का रोग जिसमे पेट ग्रागे फूल ग्राता है तथा पेट के चमडे के नीचे की तह मे पानी एकत्रित हो जाता है।

उ०—करण ग्रदीठ मिटै कठमाळा, जांगो डेरू मिटै जिकै। कास जळ दर भगदर कासी, तूझ नाम सू मिटै तिकै।—कला री गीत

रू०भे०—जळ धरी, जळ धरौ।

जळधरा–स०स्त्री०—कुम्हारो की एक शाखा।

जळधरी—१ देखो 'जळ धर' (रू भे)

स०पु०—२ एक वृक्ष। उ०—मौजूद हाथिया ऊपर सब ग्रादमी भला भला तीरमदाज धणी जळधरी धामण रा कामठा, सुही रा तीर।

—डाढ़ाळा सूर री वात

जळधरीपाव–स०पु० [स० जलधरपाद] नाथ सप्रदाय के एक प्रसिद्ध सिद्ध।

रू०भे०—जळ ध्रीपाव।

जळधरौ—देखो 'जळ धर' (रू भे)

जळध्रीपाव—देखो 'जळ धरीपाव' (रू भे)

जळनिद्ध–स०पु० [स० जलनिधि] समुद्र। उ०—'ग्रभौ' चालियौ ग्रासुरा सीस ऐसौ। जळनिद्ध उच्छेदिया वध जैसौ।—रा रू

जळजळ–स०स्त्री०—नदी।

जळ–स०पु० [स० जल] १ पानी, जल।

मुहा०—जळ देणौ—देखो 'पाणी देणौ'।

यौ०—जळ क्रीडा, जळव्रिक्ष। २ पूर्वाषाढा नक्षत्र (ना मा.)

३ ज्योतिष के ग्रनुसार जन्मकुडली मे चौथा स्थान।

[स० ज्वल] ४ कोप, क्रोध, गुस्सा। उ०—ग्रीध हळवळ समर गळळ पळ मळगरा, ग्रसळ मल वटोवळ कळळ हुकळ तरा। कळ विकळ सवळ दळ भळळ सावळ करा, यळापत कीध जळ कसा खळ ऊपरा।

—महादान महडू

[स० ज्वल] ५ कान्ति, प्रभा, दीप्ति। उ०—ग्रासकरन्न 'पिराग' तण, पडियौ खाग वजाड। सुतन सजीपै भोज सम, जळ भाटीपै चाड।—रा रू

६ वीरत्व, वीरता। उ०—जोय कढचो लड सुवण-जळ, बहु भरियौ जळ'ब्रात। जळ मारा सग जात ग्रो, जळ ग्रादै जळ जात।

—रेवतसिंह भाटी

जळग्राधीन–स०पु०—इन्द्र (ग्र मा)

जळग्रासय–स०पु० [स० जलाशय] जलाशय ।

जलइय–स०पु० [स० जलकित] जलकान्त इन्द्र के एक लोकपाल का नाम (जैन) ।

जळग्रोक–स०स्त्री० [स० जल+ग्रोक] पानी मे रहने वाला एक प्रसिद्ध कीडा जो जीवो के शरीर से चिपक कर उनका रक्त चूसता है ।

जळकत–स०पु० [स० जलकान्त] १ मणि विशेष (जैन) २ उदधि कुमार नामक देव जाति का दक्षिण दिशा का इन्द्र (जैन) ३ जल-कान्त इन्द्र का लोकपाल (जैन) ४ इन्द्र विशेष (जैन) ।

जळकतार–स०पु० [स० जलकात] वरुण (ना मा., ग्र मा)

जळकणौ, जळकवौ—देखो 'झळकणौ, झळकवौ' (रू भे.)

उ०—देहुरि दड कळस ग्रामल सारा सोना तणा जळकइ ।—व स

जळकात–स०पु० [स० जलकान्त] वरुण (डि को)

जळकातार–स०पु० [स० जलकातार] वरुण (डि को)

जळकाक, जळकाग–स०पु० [स० जलकाक] जल मे रहने वाला एक पक्षी जो कौए के समान काले रग का तथा बतख के ग्राकार का होता है । यह प्राय जल मे गोता लगा कर मछली ग्रादि को खा जाता है । जलकौग्रा ।

जळकार–स०पु०यौ०—बादल, मेघ, घन (डि को)

जलकारी–स०उ०लि० [स० जलकाग्निन्] चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति (जैन)

जळकिट्ट–स०पु० [स० जलकिट्ट] पानी का मैल, काई ग्रादि (जैन)

जळकीडा, जळकीडा, जळकीला–स०पु०यौ—१ श्रीकृष्ण ।

२ देखो 'जळक्रीडा' (रू भे)

जळकुभी–स०स्त्री० [स० जलकुभी] कुभी नामक वनस्पति जो जलाशयो के पानी के ऊपर प्राय हरे या पीले रग की फैली हुई होती है, काई (ग्रमरत)

जळकूडियौ, जळकूडौ–स०पु०—चद्रमा के चारो ग्रोर यदा-कदा दिखाई पडने वाला प्रकाश का घेरा जो वर्षासूचक माना जाता है ।

विलो०—वायकुडियौ, वायकूडौ ।

जळकेतु–स०पु०यौ० [स० जलकेतु] पश्चिम दिशा मे उदय होने वाला एक प्रकार का पुच्छल तारा ।

जळकौग्रा–स०पु०—देखो 'जलकाक' (रू भे)

जळक्कणौ,जळक्कवौ—देखो 'झळक्कणौ, झळक्कवौ' (रू भे)

उ०—खळक्कै सिलै पाखरा राडि खगि । जळक्कै विचै घोम सी दीठ जगी ।—सू प्र

जळक्रीड–स०पु०—१ ईश्वर २ श्रीकृष्ण (ना मा)

जळक्रीडा–स०स्त्री०—जलाशय मे की जाने वाली क्रीडा, जल-विहार ।

रू०भे०—जळकीडा, जळकीडा, जळकीला ।

जळगडिया–स०स्त्री०—राठौडो की प्रमुख १३ शाखाग्रो मे से एक । (बा दा ख्यात)

जळखानौ–स०पु० [स० जल+फा०खान] पीने का जल रखने का स्थान । मि०—पळीडौ ।

जळखार–स०पु०—समुद्र । उ०—रुघ तपत वाण सधार, खळ भळे जिम जळखार ।—सू प्र

जळखेडा, जळखेडिया—देखो 'जळखडिया' (रू भे)

जळख्यात–स०पु०—नाविक, केवट (ग्र मा.)

जळगग–स०स्त्री०—गगा नदी (ग्र मा)

जळगार–स०पु० [स० जलागार] जलाशय, तालाब ।

जळगौ–स०पु०—ग्रग्नि (ह ना)

जळग्रभ–स०पु० [स० जल+गर्भ] बादल, मेघ । उ०—काळी काळी घटा करि । ऊजळा बादळ । बाउ सो डोलता उवै ग्रागै । स्रावण का मेह धारा बरसण लागा । दिसा-दिसा हुता जु जळग्रभ गळि पडै छै ।
—वेलि टी

जळघडियौ–स०पु० [स० जल+घट+रा०प्र० इयौ] वैष्णव सम्प्रदाय मे विष्णु की पूजा के लिये जल लाने वाला व्यक्ति ।

जळघडी–स०स्त्री०यौ०—एक प्रकार का कटोरीनुमा बरतन जिसमे एक छोटा छिद्र होता है । इसे पानी मे छोड दिया जाता है । निश्चित समय के बाद उसमे पानी भर जाने के कारण वह डूब जाता है । इससे समय का पता लग जाता है (प्राचीन)

जळघरिय–वि० [स० जलगृहिक] पानी की व्यवस्था करने वाला, पानी पिलाने वाला (जैन)

जळचर–स०पु०यौ० [स० जलचर] जल मे रहने तथा उसमे विचरण करने वाले प्राणी, जलजतु । उ०—पूर तोय परिखा चहू पासी, मगर मीन जळचर सुखरासी ।—ला रा

रू०भे०—जळचारी ।

जळचरी–स०स्त्री०यौ० [स० जलचरी] मछली ।

जळचारण–स०पु० [स० जलचारण] जिसके प्रभाव से पानी मे भी भूमि की तरह चला जा सके ऐसी ग्रलौकिक शक्ति रखने वाला मुनि (जैन)

जळचारिया–स०स्त्री० [स० जलचारिका] चार इन्द्रियधारी एक जाति का जीव (जैन)

जळचारी–स०पु० [स० जल चारिन्] देखो 'जळचर' (रू भे)

जळछत्र–स०पु०यौ०—कमल (ग्र मा)

जळजत्र–स०पु०यौ० [स० जल+यत्र] फौव्वारा । उ०—पात गदा दे पुट्ठली फटकार फबाया । घाय हुब्बकै रग के जळजत्र चलाया ।
—व भा

जळज–स०पु० [स० जलज] १ कमल (ना मा) उ०—जळज प्रभु पद जाण, दे सुगध निरवाण पद । मो मन भवर प्रमाण, रात दिवस विलम्यौ रहै ।—र रू उ०—२ डळ सिर भाण 'विजा' हर ग्रोपै, नाथ क्रपा प्रभता नूमळ । जळज गुणिद हरख मय जाझा, खूटे रिख वळ छोड खळ ।—महाराजा मानसिंह री गीत

२ मोती (ना मा.) उ०—ग्रस पाखा ग्रावर 'ग्रजबावत', बावर जुध ग्रावध विखम । ढुढाहडा सतोल जळज ढिग, जे खळ भखिया सुचळ जम ।—प्रिथ्वीसिंह हाडा री गीत

३ शख (डिं को) उ०—नयरा कज सम निपट, सुभग श्रारा हिमकर सम। जप सम ग्रीवह जळज, तवत सम हीर डसरा तिम।
— र.ज प्र

४ चद्रमा ५ वरुरा (श्र मा)

वि०—शीतल॥ (डिं को)

जळजचख—स०पु० [स० जलज+चक्षु] ईश्वर।

जळजनम—स०पु० [स० जल+जन्म] कमल (ह ना मा, श्र मा)

जळजवर—स०पु० [स० जल+वर] वरुरा (श्र मा)

जळजळाकार—स०पु०—जहाँ सर्वत्र जल ही जल हो।

उ०—प्रथम जळजळाकार हुतौ। तिहा निरजन निराकार वड पात माहि पौढिया हुता।—द वि.

जळजळित—वि० [स० जाज्वल्यमान] देदीप्यमान (जैन)

जळजळौ—वि० (स्त्री० जळजळी) श्रश्रपूर्ण, डवडवाया हुआ, सजल नेत्र, ज्यू—टावर री श्राख्या जळजळी व्हैगी।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।

जळजहर—स०पु० [स० जलज+हर] १ हस (ना मा)

[स० जलधर] २ बादल, मेघ (ना.डिं को)

जळजान—स०पु० [स० जलयान] जहाज। उ०—मसक समान कान्ह कू मारचौ। उदनवान जळजान उवारचौ।—मे म

जळजात—स०पु० [स० जलजात] १ कमल। उ०—जोय बक जळजात ज्यौं, सजुत सत श्रसत। बडवानळ कडवा वचन, जळ भलपण जाणत।
२ जोक। —बा दा

जळजात-व्यूह—स०पु—कमल के श्राकार का सेना का एक व्यूह विशेष।

उ०—तिरा भाति री समद व्यूह सेन्या कीश्रा चाली श्रावै छै। काहो जळजात-व्यूह सेन्या कीधी छै।—रा सा स

जळजाळ—स०पु०यौ० [स० जलजाल] मेघमाल, बादल, घनघटा।

उ०—जळजाळ सवलि जळ काजळ ऊजळ, पीळा हेक राता पहल। श्राधी फरै मेघ ऊधसता, महाराज राजै महल।—वेलि

जळजासन—स०पु०यौ० [स० जलजासन.] कमल पर श्रासन जमाने वाला ब्रह्मा।

जळजीव, जळजीवि—स०पु० [स० जल+जीव] जल मे पनपने वाला जीव। उ०—गुरि सरिसा जळि तरइ द्रोरा चलरा जळजीवि लिद्धउ। कूश्रर परीक्षा तराइ मिसि गुरिहिं कूड पोकारु किद्धउ।—प प च

जळजुत—वि०—कान्तियुक्त, दीप्तिमान। उ०—खोळा टकियोडा गळ मे खूगाळी। जळजुत ठोडी पर टिमकी जचाळी।—ऊ का

जळजेता—स०पु० [स० जलजित] वरुरा (श्र मा)

जळजेत—स०स्त्री०—१ कान्ति, शोभा।

स०पु०—२ यश।

जळजोग—स०पु०यौ०—वर्षा का योग (ज्योतिष)

जळझूलणी—स०स्त्री०यौ०—भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

वि०वि०—इस दिन विष्णु की मूर्ति को सिंहासन पर (रेवाडी मे) वैठा कर किसी जलाशय पर ले जाया जाता है, जहा पर उन्हें जल से स्नान करा कर ऋतुफल का भोग रखा जाता है।

जळठाण—स०पु० [स० जळस्थान] १ जलाशय (जैन) २ जल रखने का स्थान (जैन)

मि०—'पळीडौ'।

जळडमरुमध्य—स०पु०यौ०—दो बडे समुद्रो को मिलाने वाला जल का वह तग रास्ता जो किन्ही दो भूमि खडो के बीच मे से होकर गया हो।

जळण—स०स्त्री० [स० ज्वलन] १ दाह, जलन। उ०—राखो लाज विभू! विनती की। जीव की जळण हरौ सब ही की।—गी रा

२ श्रग्नि (ना डिं.को) उ०—१ पारथिया क्रिपरा वयरा दिसि पवरा, विरा श्रवह बाळिया वरा। लागै माधि लोक प्रति लागो, जळ दाहक सीतळ जळण।—वेलि

उ०—२ श्रोम गोम विच दीसे श्रवगत, जळ मे प्राजळतौ जळण।
—प्रथ्वीराज राठोड

३ गर्मी, उष्णता, ताप। उ०—जळ जाळ माळ विसाळ नभ जुत, उरड झड श्ररा पार ए। मिटि जळण घरणि विनोद मानव, भूरि सर जळ भार ए।—रा रू

४ ईर्ष्या, डाह ५ क्रोध, गुस्सा (जैन) ६ श्रग्निकुमार देवता (जैन)।

जळणौ, जळवौ—क्रि०श्र० [स० ज्वलनम्] १ श्रग्नि के सयोग से श्रगारे या लपट के रूप मे होना, दग्ध होना, भस्म होना।

उ०—जउहर महि जळिवाह इसइ तेज पइसइ श्रनळ। पहिला थी राह पाछिनी पग एक पड खइ नाह।—श्र. वचनिका

२ बहुत गरमी या श्राच के कारण किसी पदार्थ का कोयले या भाप के रूप मे हो जाना ३ झुलसना ४ बहुत श्रधिक ईर्ष्या, डाह या द्वेष के कारण कुढना। उ०—इम देखि श्रमल जळिया श्रसह, घरा लियै इम धारियौ। जुध करण न ह्वै श्रासग जदि, विग्रह चूक विचारियौ।—सू प्र

५ कोप करना, क्रुद्ध होना। उ०—वदन्न वर्णे कथ वाके विनाणै, जळै गारडू छेडियो नाग जाणै।—र रू

जळतग, जळतरग—स०पु० [स० जलतरग] १ धातु की बहुत सी कटोरियो को एक क्रम से रख कर बजाया जाने वाला बाजा।

[रा०] २ फरशी के ऊपर लगा हुवा सीधा श्रौर पोला वह भाग जिस पर तम्बाखू की भरी चिलम रखी जाती है।

जळतर—स०पु० [स० जल+तर] जहाज, नाव (श्र मा)

जळतरण—स०स्त्री०—७२ कलाश्रो मे से एक कला (व स.)

जळतवाई, जळताई—स०स्त्री०—१ दीपक मे तेल के कारण जमने वाला चिपचिपा मैल।

स०पु०—गदे स्वभाव का व्यक्ति।

जळतोरु—स०स्त्री०—मछली।

जळद—स०पु० [स० जलद] १ मेघ, बादल। उ०—जोइ जळद पटळ

दळ सावळ, ऊजळ, घुरै नीसाण सोई घणघोर। ओळि ओळि तोरण परठीजै, मडे किरि तडव गिरि मोर।—वेलि.
२ कपूर (अ मा)
वि०—जल देने वाला।
क्रि०वि०—शीघ्र, जल्द। उ०—फौज री कठी अणिया फिरै निजर देख नै धावजो साभळो जिता काना सबद, जळद आय भुगतावजो।—पे रू
रू०भे०—जळद्द।

जळदकाळ—स०पु० [स० जलदकाल] वर्षाकाल।

जळदतिताळौ—स०पु०—वह साधारण तिताला ताल जिसकी गति साधारण से कुछ तेज हो।

जळदाग—स०पु०यौ० [स० जल+रा० दाग] शव को पानी के बहाव मे बहा देने की क्रिया।

जळदि, जळदी—देखो जल्दी' (रू भे)

जळदुरग—स०पु०यौ०—वह दुर्ग जो चारो ओर से नदी, झील आदि से सुरक्षित हो।

जळदेव, जळदेवता—स०पु [स० जलदेव] १ पूर्वाषाढा नक्षत्र २ वरुण। [रा०] ३ एक मारवाडी लोकगीत।

जळद्द—देखो 'जळद' (रू भे)
उ०—हरी केसरी बोळ कू कू हळद्द। जठै मोतिया धार वूठै जळद्द।
—सू.प्र

जळद्र—वि०—जल से भीगा हुवा।
उ०—उस्णकाळ पहुतउ, जिसी दावानळ तणी ज्वाळा तिसी लू वाइ, जिसउ बावन्न पळ तणउ गोध मिउ हुइ तिसिउ आदित्य तपइ, जिसी आमड तणी वेळू तिसी भूमिका धगधगइ, मस्तक तणउ प्रस्वेद पाह्णी ऊतरइ, धरमि जीवलोक गळगळइ, स्रीमत तणा चउवारा झळहळइ, जळद्रा सरीरि लगाडीइ, गुलाव तणा अभ्यग कीजइ, बावन्ना स्रीखड घसीयइ, चउदिसीयइ वीजणा फिरइ, द्राक्षा आवली-पान कीजइ, कळमसालि तणा सीधउरा करवा कीजइ, अच्छा कापडा पहरियइ, लू आहण्या पाणी पीजइ।—व स

जळद्रव्य—स०पु०यौ० [स० जलद्रव्य] जल से उत्पन्न होने वाले मुक्ता, शख आदि द्रव्य।

जळध—स०पु० [स० जलधि] समुद्र (अ मा.)
उ०—विध रा रछक दीन रा वधव, सिव रा ध्यान निगम रा सार। जस रा जळध अतर रा जामी, भामी तो सिय रा भरतार।—र रू

जळधआधीन—स०पु०यौ०—इन्द्र (अ मा.)

जळधर—स०पु० [स० जलधर] १ बादल (ना.मा)
उ०—बरसात भर धर परम सुख वणि, उमडि जळधर आवही। घण घोर सोर मयोर रस घण, घटा घण घहरावही।—रा रू
२ समुद्र। उ०—१ जिण कीध वट पट निपट जळधर, अद्रतार ऊभेखजै।—र ज प्र
उ०—२ कहि जिण बार 'अभैमल' केहो। जळधर बाध लियो लक जेहो।—सू प्र
रू०भे०—जळाधर।

जळधरकेदारा—स०पु०—एक सकर राग (सगीत)

जळधरण—स०पु० [स० जल+धरण] बादल, मेघ (ह ना मा., अ.मा.)

जळधरमाळा—स०स्त्री०यौ० [स० जलधरमाला] घनघटा, मेघमाला।

जळधरियौ—स०पु०—मेघ, बादल।

जळधरी—स०स्त्री०—धातु या पत्थर का बना अर्घा जिस पर शिवलिंग स्थापित किया जाता है।

जळधार—स०स्त्री० [स० जळधारा] १ नदी (अ मा)
[रा०] २ कटारी, तलवार आदि शस्त्र जिनकी बाढ उज्वल हो।
उ०—जळधार पेस कवजा जडत। पोटला मार गुरजा पडत।—वि स

जळधारा—स०स्त्री० [स० जलधारा] १ पानी का प्रवाह २ नदी. ३ वह तपस्या जिसमे तपस्या करने वाले पर निरन्तर पानी की धारा डाली जाती रहती हो।

जळधारी—वि० [स०जलधारी] पानी को धारण करने वाला।
स०पु०—१ बादल, मेघ. २ इंद्र (ना डि को) ३ जलें पिलाने वाला व्यक्ति (जैन)

जळधाव—स०पु०—समुद्र (अ मा)

जळधि—स०पु० [स० जलधि] समुद्र। उ०—हर अकरण करण सरण असरण हरी, तरण अतर भव जळधि तिको।—र ज.प्र

जळधिगा—स०स्त्री० [स० जलधिगा] १ नदी (डि को) २ लक्ष्मी.

जळधिज—स०पु० [स० जलधिज] चद्रमा।

जळधिया—स०स्त्री० [स० जलधिगा] १ नदी, सरिता।
[स० जलधि+रा०धी] २ लक्ष्मी।

जळधेनु—स०स्त्री० [स० जलधेनु] एक कल्पित धेनु जिसकी कल्पना जल के घडे मे दान के लिये की जाती है (पौराणिक)

जळनध—स०पु०यौ० [स० जलनिधि] समुद्र।

जळनवास—स०पु०यौ० [स० जलनिवास] किसी जलाशय के अन्दर बना हुआ भवन। उ०—करै चाव हरिया गरा मौर कळका करै, चलै नद नीर दरियाव चाळा। पातवा पाव आसा तणा पीयाला, आव जळनवासा 'भीम' आळा।—चिमनजी आढो

जळनायिका—स०स्त्री०—राजा महाराजाओ तथा धनवान व्यक्तियो के स्नानागार व जल-क्रीडा मे साथ रहने वाली स्त्री, जल-योपिता।
उ०—प्रेमाधल सात दात जितेंद्रिय जितक्रोध परित्यक्त परिवाद लब्ध साधुवाद सतीजनभाल तिलकानुकारिणी, एव विध जळनायिका।
—व स

जळनिध—देखो 'जलनिधि' (रू भे)
उ०—हिले सप हैथाट, चले वाना बहरगी। इळ जळनिध उल्लटै, बडवानळ सगी।—रा रू

जळनिधराज—स०पु०यौ० [स० जलनिधिराज] महासागर।

जळनिधि, जळनिधी—स०पु० [स० जलनिधि] समुद्र (डि ना मा)
उ०—वरसत दडड नड अनड वाजिया, सघण गाजियो गुहिर सदि। जळनिधि ही सामाइ नही जळ, जळवाळा न समाइ जळदि।—वेलि.

रू०भे०—जळनिध ।

जळनिधि–स०पु० [स० जलनिधि] समुद्र

जळनीम–स०स्त्री०—प्राय जलाशयो के निकट दलदली भूमि मे होने वाली एक प्रकार की लोनिया जो कड़ुई होती है ।

जळनीवाण–स०पु० [स० जलनिपान] पाताल (डिं ना.मा)

जळपक्खद, जळपक्खदण–स०पु० [स० जलप्रस्कद] पानी मे डूब मरने की एक क्रिया विशेष (जैन)

जळपणौ, जळपबौ–क्रि०अ० [स० जल्प्] १ बोलना, कहना ।

उ० —सेना चालि, सेस हालि, माहाले महिपति मलपता । 'नारि वरसू प्रीति करसू, मोद धरसू' जळपता ।—नलाख्यान

जळपत, जळपति, जळपती–स०पु० [स० जल+पति] १ समुद्र (अ मा) २ वरुण (डिं को, ना डिं को.)

उ०—विसन ब्रह्म सिव अरक वखाणौ, जळपति ससि दिस मारुत जाणौ ।—रा रू

जळपथ–स०पु०यौ० [स० जलपथ] १ वह नाली या नहर जिसमे पानी बहता हो २ समुद्री-माग ।

जळपरवा–स०स्त्री०—ईशान कोण की वायु (शेखावाटी)

जळपराब्धी–क्रि०वि०यौ० [स० अब्धि+जल+पार] समुद्रपर्यन्त ।

जळपवेस–स०पु० [स० जलप्रवेश] जल मे डूबने की एक क्रिया (जैन)

रू०भे०—जळप्पवेस ।

जळपान–स०पु० [स० जल+पान] थोडा व हल्का भोजन, नाश्ता, कलेवा ।

जळपियोडौ–भू०का०कृ०—१ बोला हुआ, कहा हुआ २ प्रलाप किया हुआ (स्त्री० जळपियोडी)

जळपू–स०पु०—१ अभ्रक, भोडल । २ घटिया दर्जे का वरक ।

उ०—धूजता हाथा सू पेटी ऊधी करनै सगळी चीज दरी माथै विखेरदी—सिगरेटा रा चिळकता जळपू, भात-भात री छापा, भात-भात रा गुळगुचिया, काच रा केई टुकडा ।—वाणी

रू०भे०—जळफू ।

जळप्पभ–स०पु० [स० जलप्रभ] १ जलकान्त तथा जलप्रभ इन्द्र के चौथे लोकपाल का नाम (जैन) २ उत्तर की तरफ से उदधि कुमार जाति के भवनपति देवता का इन्द्र (जैन)

रू०भे०—जळप्पह ।

जळप्पवेस—देखो 'जळपवेस' (रू भे , जैन)

जळप्पह—देखो 'जळप्पभ' (रू भे , जैन)

जळप्रवाह–स०पु०यौ० [स० जलप्रवाह] १ पानी का प्रवाह २ बहाव मे किसी वस्तु या शव का बहा देने की क्रिया या भाव ।

जळप्रिय–स०पु० [स० जलप्रिय] १ मछली (डिं को) २ चातक, पपीहा ।

जळफळ–स०पु०—वाँस (ह ना.)

जळफू—देखो 'जळपू' (रू भे)

जळबब–वि०—कान्ति व दीप्ति युक्त । उ०—दुय गिरि चढण अवार, वरै जळबब मोताहळ । सेर एक सोव्रन, पच रूपक भाळाहळ ।—नैणसी

जळबटी—देखो 'जळबट' (रू भे) उ०—तूझ तुरगा दान रा, हिमगिर तळहटियाह । गावै गीत तुरग मुख, जळरस जळबटियाह ।—बा दा

जळबळजामी–स०पु०—इद्र । उ०—भल नूती रै म्हारो जळबळजामी बाप, रातादेई म्हारी माय ने जे ।—लो गी.

जळबाळक–स०पु० [स० जलबालक] विध्याचल पर्वत ।

जळबाळा, जळबाळिका–स०स्त्री०यौ० [स० जलबालिका] बिजली, विद्युत । उ०—वरसतै दडड नड अनट वाजिया, सघण गाजियो गुहिर सदि । जळनिधि ही सामाइ नही जळ, जळबाळा न समाइ जळदि ।—वेलि

जळबिडाळ–स०पु०यौ० [स० जलबिडाल] ऊदबिलाव ।

जळबैंत–स०पु० [स० जलवेत्र] लता के आकार का एक प्रकार का बेंत का पेड जो जलाशयो के निकट होता है ।

जळबोळ–स०पु०—१ सहार, नाश । उ०—जळ ' ' नाखेय सोक जळा । कुळ जीद करू जळबोळ कळा ।—पा प्र.

२ देखो 'जळाबोळ' (रू भे) उ०—प्रळै काळ जळबोळ पतसाह दळ पसरिया, सार भुज सजे जुघभार सारू । इनि गिरा नरा अविलोप होवता अकळ, मेर डिगियो नही राव मारू ।

—राठौड वल्लू गोपाळदासोत चापावत रो गीत

उ०—२ जिण समै साह जगडु जिहाज, दरियाव बीच खेडे दराज । जळबोळ महा सामद्र जोर, घण वेळ जत्र आवरत घोर ।

—रामदान लाळस

वि०—क्रोधपूर्ण । उ०—त्यै पातरै वडो छन पडियो, वोटण गढा अथग जळबोळ ।—नैणसी

जळभगरौ—देखो 'जळभागरौ' (रू भे)

जळभागरौ–स०पु०—जलभगरा नामक ओपधि मे प्रयोग होने वाली वनस्पति जो जलाशयो के तटो पर ही होती है (अमरत)

जळमड, जळमडण, जळमडळ–स०पु०—बादल (अ मा , ना डिं को)

जळमडूक–स०पु०यौ० [स० जलमडूक] एक प्रकार का वाजा (प्राचीन)

जलम–स०पु०—१ देखो 'जुल्म' (रू भे)

२ देखो 'जनम' (रू भे)

जलमआठम—देखो 'जनमआठम' (रू भे)

जळमई–वि०—जलयुक्त, जलपूर्ण । उ०—प्रिथी समस्त जळमई होय रही थी ।—वेलि टी.

जलमणौ, जलमबौ—देखो 'जनमणौ, जनमबौ' (रू भे.)

उ०—जलमिया भरती लाखा लाल, कोड रै हालरिये हुलराय । गिणिया बधै वेल री जात, गणगिण खोळा मे रह जाय ।—साझ

जलमणहार, हारौ (हारी), जलमणियौ—वि० ।

जलमाडणौ, जलमाडबौ, जलमाणौ, जलमावौ, जलमावणौ,

जलमावबौ—प्रे०रू० ।

जलमिश्रोडो, जलमियोडौ, जलम्योडौ—भू०का०कृ० ।

जलमीजणो, जलमीजबौ—भाव वा० ।

जलमपतरी—देखो 'जनमपतरी' (रू भे)

जलमभोम—देखो 'जनमभोम' (रू भे)

जळमाणस, जळमाणसियौ—देखो 'जळमानुस' (रू भे)

जलमातर—देखो 'जनमातर' (रू भे)

जळमानुस–स०पु०—एक कल्पित जलजतु जिसका आधा भाग मनुष्य के समान तथा आधा भाग (नाभि के नीचे का) मछली के समान होता है ।

रू०भे०— जळमाणस ।

अल्पा०—जळमाणसियौ ।

जलमाणौ, जलमावौ—देखो 'जनमाणौ' (रू भे)

जळमात्रका–स०स्त्री०यौ० [स० जलमातृका] जल मे रहने वाली सात देविया—मत्सी, कूर्मी, वराही, दर्दु री, मकरी, जलूका, जतुका ।

जळमारग–स०पु०—समुद्री रास्ता ।

जळमाळ, जळमाळयिण, जळमाळा–स०स्त्री० [स० जलमाला] नदी (अ मा , ह ना) उ०—वादळ काळा वरसिया, अत जळमाला आण । काम लगो चाळा करण, मतवाळा रग माण ।—वा दा.

जलमावणौ, जलमावबौ—देखो 'जनमाणौ' (रू भे)

जलमावणहार, हारौ (हारी), जलमावणियौ—वि० ।

जलमाविश्रोडो, जलमावियोडो, जलमाविय्योडो—भू०का०कृ० ।

जलमावीजणो, जलमावीजबौ—कर्म वा० ।

जलमणौ, जलमवौ—अक०रू० ।

जलमावियोडौ–भू०का०कृ०—प्रसव कराया हुआ ।
(स्त्री० जलमावियोडी)

जलमासटमी—देखो 'जनमास्टमी' (रू भे)

जळमित–स०पु० [म० जलमित्र] दूध, पय, दुग्ध ।

जळमुक, जळमुच–स०पु० [स० जलमुक्] मेघ, घन, वादल (ना मा)
रू०भे०—जळमूक ।

जळमुरगाई—एक प्रकार की छोटी बतख ।

जळमूक–स०पु०—देखो 'जळमुक' (रू भे)

जळय–स०पु० [स० जलद] १ मेघ, वादल (जैन)
[स० जलज] २ कमल (जैन)

जळयर, जळयरी–स०उ०लि० [स० जलचर, जलचरी] १ जल मे रहने वाले पचेन्द्रिय जीव (जैन) २ मछली ।

जळयान–स०पु० [स० जलयान] जल मे काम आने वाला यान, नाव, जहाज आदि ।

जळयात्रा–स०स्त्री०यौ० [स० जलयात्रा] १ पवित्र जल लाने के लिये की जाने वाली यात्रा. २ देवोत्थापिनी एकादशी के दिन उदयपुर मे होने वाला एक उत्सव ३ ज्येष्ठ की पूर्णिमा को होने वाला वैष्णवो का एक उत्सव ।

जळयाळ–स०पु०— जलागार, समुद्र ।

जळरय–स०पु० [स० जलरत] जलकान्त तथा जलप्रभ इन्द्र के लोकपाल का नाम (जैन)

जळरक्ख–स०पु० [स० जलराक्षस] राक्षसो का पाचवा भेद (जैन)

जळरख–स०पु०—यक्ष । उ०—तूझ तुरगा दान रा, हिमगिर तळहटियाह । गावै गीत तुरग मुख, जळरख जळ बटियाह ।—वा दा

जळरक्षक–स०पु०यौ० [स० जलरक्षक] वरुण (अ मा)

जळरमण, जळरमणि, जळरमणी–स०स्त्री० [स० जलरमणी] १ विजली (अ मा , ह ना) २ जळक्रीडा (जैन) ।

जळराण, जळराइ, जळराट–स०पु० [स० जलराट्] समुद्र (अ मा.)
उ०—राया राउ उपरि असुरि राइ, जळराइ जाणि मेल्ही अजाइ ।
—रा ज सी.

जळरास, जळरासि, जळरासी–स०पु० [स० जलराशि] १ कर्क, मकर, कुभ और मीन रासिया (ज्योतिष) २ समुद्र (अ.मा)
उ०—ज्या लघन जळरासि को, हणुमा हुळसाया ।—व भा

जळरिप–स०पु०—वायु, पवन (ह ना , अ मा.)

जळरुट, जळरुत–स०पु० [स० जळरुह] कमल (ह ना , अ मा)

जळरुह–स०पु० [स० जलरुह] कमल (ह ना)

जळरूट–स०पु० [स० जलरुह] कमल (अ मा)

जळरूप, जळरूव–स०पु० [स० जलरूप] १ उधदि कुमार के इन्द्र जलकान्त के तीसरे लोकपाल का नाम (जैन) २ मगर, घडियाल ।

जळळ–वि०—१ अतिक्रोधी २ भयकर । उ०—कहर झडै चकमक चखा चापिया नाग कळ, अरि चडै कापिया गिरा ओखा । 'अजन' रा ठेट हु अलल जुध ऊपरै, गढ पडै फेट हू जळळ गोख ।
—रावत अरजुनसिह चूडावत रौ गीत

स०पु०—१ दड, सजा २ युद्ध, सग्राम ।

जळवट–स०पु०—१ समुद्र । उ०—जळवट थळवट चिहुँ दिसी, तणी वस्त विदेसी आवइ घणी । वीसा दसा विगति विस्तरी, एक स्रावक एक माहेसरी ।—का दे प्र
२ जलमार्ग ३ वह स्थान जो चारो ओर जल से घिरा हुआ हो, टापू ।
रू०भे०—जळवटी, जळवटी, जळवट्ट ।

जळवटराय–स०पु०यौ०—विष्णु । उ०—जीव रे जेज म कर तिल जवडी, माठा आखर दळिद चा मेट । मुगत दियण जळवटराय मिळियौ । भुगत दियण थळवट राव भेट ।—ईसरदास वारहठ

जळवटी, जळवट्ट—देखो 'जळवट' (रू भे) उ०—ताहरा कह्यौ—थे मोनू कोई द्रव्यवत वावडो । ताहरा कह्यौ—मूगळ भोजराज-रो जळवटी पातिसाह, ओथ द्रव्य छै, उवै रै कोड ग्यान छै, तोनू देसी, ओथ जाह ।—सयणी री वात

जळवळजामी—देखो जळ वळ जामी (रू भे) उ०—जोडौ खुदा दै,

ओ हा ओ म्हारा जळवळजामी वाप, आई रे सावणिये री तीजा, बाई झीलसी।—लो गी

जळवह, जळवहण—स०पु० [स० जलवाह] मेघ, बादल (ना डि को)

जळवा—स०स्त्री०—नवप्रसूता स्त्री का सूतिका गृह से बाहर निकलने पर सर्वप्रथम किसी जलाशय पर जल-पूजन की क्रिया।

उ०—एक धण देवी ए म्हारी मिरगा नैणी जळवा पूजती।—लो गी

यौ०—जळवा-पूजन।

जळवाणौ, जळवाबौ—क्रि०स० ('जळणौ' क्रि० का प्रे०रू०) जलाने का काम दूसरे से कराना।

जळवाणहार, हारौ (हारी), जळवाणियौ—वि०।

जळवायोडौ—भू०का०कृ०।

जळवाईजणौ, जळवाईजबौ—कर्म वा०।

जळणौ, जळबौ—अक०रू०।

जळवासी—स०पु० [स० जलवासिन्] जल के अन्दर रहने वाले तापस की एक जाति (जैन)

जलवाह—स०पु० [स० जलवाह] बादल (डि को)

जळविभू—स०पु० [स० जल+विभू] वरुण (अ मा.)

जळविसुव—स०पु०यौ० [स० जलविपुव] तुला सक्रान्ति, ज्योतिप का एक योग।

जळवेत—स०स्त्री० [स० जलवेतस] जल के अदर होने वाला लता के आकार का एक वृक्ष।

जळवैक्रत—स०पु०यौ० [स० जलवैकृत] किसी जलाशय के पानी मे आकस्मिक विकार या अदभुत वातो का दिखाई पडना।

जळव्याघ्र—स०पु०यौ० [स० जलव्याघ्र] एक जतु जो वडा क्रूर और हिंसक होता है, यह सील की जाति का होता है।

जळव्याळ—स०पु० [स० जलव्याल] १ जलगर्द, पानी का साप. २ मेढ़क।

जळव्रक्ष, जळव्रिक्ष—स०पु०यौ० [स० जलवृक्ष] जल मे उत्पन्न होने वाले पौधे, वृक्ष आदि जैसे—कमल, सिंघोडा, शेवाल आदि।

जळसव्रत—स०पु०—वरुण (डि को)

जळसपणी—स०स्त्री० [स० जलसर्पिणी] जोक।

जळसमुद्र—स०पु० [स० जलसमुद्र] सात समुद्रो मे से एक समुद्र। (पौराणिक)

जळसळजामी—स०पु०—इन्द्र। उ०—कोयल ए! आज म्हारे जळसळजामी जोइ जे, कोयल ए, जामी म्हारे भर भादरवा रो महेस, बाई रो तौ सरवरजामी सोह भरे।—लो गी.

रू०भे०—जळवळजामी।

जळसाई—स०पु० [स० जलस्वामी] १ ईश्वर (ना.मा.) २ विष्णु (ह ना.)

जळसीप—स०स्त्री० [स० जलशुक्ति] वह सीप जिसमे मोती होता है।

जळसीर—स०स्त्री०—जमीन (अ मा)

जळसुत—स०पु०यौ० [स० जल+सुत] कमल।

जळसूग—स०पु० [स० जलशूक] जलकान्त इन्द्र के दूसरे लोकपाल का नाम (जैन)

जळसोयवाइ—स०पु० [स० जलशोचवादिन्] पानी मे शुद्धि मानने वाले तापस की एक जाति (जैन)

जळसौ—स०पु० [अ० जलसा] आनद या उत्सव मनाने का कार्य जिसके लिये वहुत से मनुष्य इकट्ठे होते हो।

जळस्तभिनी—स०स्त्री०—एक प्रकार की विद्या (व स)

जळस्राव—स०पु० [स० जलश्राव] सूर्य, भानु। उ०—निमो जळ सोख निमो जळस्राव, निमो भव भाण निमो ग्रह राव।—सूरज स्तुति

जळहट्ठ—स०पु०—मोती, मुक्ता। उ०—तें मो लाख समापिया, रावळ लालच छट्ठ। सासण सीचाणा जिसा, चेय हुवै जळहट्ठ।—वा दा.

जळहर—स०पु० [स० जलधर] १ बादल, मेघ (ना.डि को.)

उ०—जवक सवद नचीत कर, डर कर तू मत भाज। सादूळो स्रीजै सुणे, जळहर हदी गाज।—वा दा.

यौ०—जळहरजामी।

रू०भे०—जळवळ।

२ इद्र। उ०—१ मेघाडमर छतर धर मसतक, मही लग गर्म खळा चा मूळ। जळहर गरज करै जोधपुरी, सत्र आफळै मरै सादूळ।—देवराज रतनू

उ०—२ राज करै रिमराह, उगट पिंगळ प्रथवीपति। प्रतपै जसु प्रताप, दान जळहर जिम दीपति।—ढो मा.

३ सरोवर, तालाव। उ०—सुदर सोळ सिंगार सजि, गई सरोवर-पाळ। चद मुळक्कयउ जळ हस्यउ, जळहर कपी पाळ।—ढो मा

यौ० [स० जल+हर] ४ सूर्य ५ वायु, पवन।

जळहरजामी—स०पु०यौ० [स० जलधर+रा० जामी] इद्र।

रू०भे०—जळवळजामी, जळवळसामी, जळमळजामी।

जळहरी—१ देखो 'जलेरी' (रू भे) उ०—त्यै की जु सेन्या घेरि रही छ सु किसी देखिजै छै, जैसी चद्रमा कै पासि जळहरी।—वेलि टी.

२ वह धातु या पत्थर का अर्घा जिसमे शिवलिंग की स्थापना की जाय।

[स० जलधर] ३ वादल।

रू०भे०—जळहळी।

जळहळ—स०स्त्री०—चमक, रोशनी।

जळहळणौ, जळहळबौ—क्रि०अ०—चमकना, झलकना। उ०—चौधारा लाल लाल खग चौरग, वयडा ओरवै वाज। फौजा कहर तमर भर फाडै, रव जम जळहळियौ जसराज।—चावडदान वारहठ

जळहळणहार, हारौ (हारी), जळहळणियौ—वि०।

जळहळिओडौ, जळहळियोडौ, जळहळ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

जळहळीजणौ, जळहळीजबौ—भाव वा०।

जळहळी—वि—आग ववूला। उ०—जामवत क्रुध झळ जळहळी,

सुक्खेरा मयदह सतवळी ।—सू प्र

जळहस्ती–स०पु० [स०] छ से आठ गज तक लम्बा सील की जाति का एक जल जतु ।

जळहि–स०पु० [स० जलधि] समुद्र (जैन)

जळाजळी–स०पु० [स० जलाजलि] पानी से भरी अजुलि ।

जळातक–स०पु० [स० जलातक] सात समुद्र मे से एक समुद्र (पौराणिक)

जळाधीस—देखो 'जळाधीस' (रू भे)

जळा–स०स्त्री०—१ फौज, सेना । उ०—१ कोपै कवर करूर, जळा भड मेले 'जगो' । जोड़या वेध जरूर, आयौ 'वीरम' ऊपरे ।—गो रू

उ०—२ रात दिन मामला किया सजकौ रहे, दोयरा जळा भज इळा डाटी । दूठ कुळ किसव री अजब दूजा 'दला', पढतौ कुरा गजब वीराण पाटी ।—उम्मेदसिंह सीसोदिया री गीत

२ अपार सपत्ति, धन, द्रव्य, लक्ष्मी, माया ३ वडी आपत्ति. ४ फैला हुआ सामान ५ आभा, कान्ति ।

जळाकाक्ष–स०पु० [स० जलकाक्ष] (स्त्री० जळाकाक्षिरणी) हाथी ।

जळाकार–स०पु० [स० जल+आकार] जहा सर्वत्र ही जल हो ।
मि०—जळजळाकार ।

जळाणौ, जळाबौ–क्रि०स० [स० ज्वलन] १ अगारे या अग्नि के सहयोग मे किसी वस्तु को अगारे या लपट के रूप मे कर देना ।

उ०—ज्वाळ घणा खळ उरा जळाई । तितै लीध घर मान तळाई ।
—सू प्र

२ अधिक गरमी पहुचा कर किसी वस्तु को काली बना देना या भुलसाना ।

३ किसी के मन मे डाह, ईर्ष्या, कुढन आदि पैदा करना ।

जळाणहार, हारौ (हारी), जळाणियौ—वि० ।

जळायोडौ—भू०का०कृ० ।

जळाईजणौ, जळाईजबौ—कर्म वा० ।

जळणौ, जळबौ—अक०रू० ।

जळाडणौ, जळाडबौ, जळावणौ, जळावबौ—रू०भे० ।

जलाद—देखो 'जल्लाद' (रू भे)

जळाधर—देखो 'जळधर' (रू भे) उ०—उपै खग टूक लोहो मझि एम । जळाधर वीच कळाधर जेम ।—सू प्र

जळाधार–स०पु०—समुद्र । उ०—भुजा वीस सीस दस मूझ भाई । खिता द्रुग लका जळाधार खाई ।—सू प्र

जळाधिदैवत–स०पु०यौ० [स० जलधिदैवत] १ वरुण २ पूर्वाषाढा नक्षत्र ।

जळाधिप–स०पु० [स० जलाधिप] १ वरुण. २ सवत्सर मे जल का अधिपति ग्रह (फलित ज्योतिष)

जळाधीस–स०पु० [स० जलधीश] १ समुद्र २ वरुण ।

जळाबोळ–वि०—१ भयकर, विकट । उ०—१ बबीडडा रोड चडा होड हाक डाक बागा, सतारौ चीतोड-वागा जळाबोळ सार ।
—हुकमीचद खिडियौ

उ०—२ जळाबोळ कळजुग, महा दूतर भवसागर । मोह लोभ जळ माझि, हुवा गरकाव किता नर ।—ज.खि

२ जलप्लावित । उ०—इम 'सूर' जीत दूजौ अभग, आरभ दळ हालै इसौ । ऊभळै छौळ पौरस उभळि, जळाबोळ सामद जिसौ ।
—सू प्र

३ वैभवपूर्ण, ऐश्वर्यपूर्ण । उ०—छट-त्रीस वस राजकुळी सिरोमणि सूरजवसी राजान मारवाडि रा नव कोट री ठकुराई जळाबोळ राज-पदवी भोगवै ।—रा सा स

४ पूर्ण रूप से रगा हुआ, रग की चमक युक्त ।

उ०—हळाबोळ चतुरग जळाबोळ केसरिया । हाका खभायका डोह ऊच्छब डवरिया ।—सू प्र

५ क्रोधपूर्ण ।

स०पु०—समुद्र । उ०—१ चढि चढ़ि गज भिडजा नयण चोळ । बह हलै प्रघळ दळ जळाबोळ ।—सू प्र

उ०—२ जळाबोळ ससार सिर जोर जग जाणगर, ग्राह पतसाह 'औरग' करै गाज । घरा सिर राखियौ 'करण' हिंदू धरम, राखियौ जेम व्रजराज गजराज ।—ठाकरसी सिंढायच

रू०भे०—जळबोळ ।

जळाभिसेयकढ़िणगाय–स०पु० [स० जलाभिषेककठिनगात्र] वानप्रस्थ तापस की एक जाति जिसका शरीर पानी के वारवार सीचने से कठिन हो गया हो (जैन)

जलायत—देखो 'जिलायत' (रू भे)

जळायोडौ–भू०का०कृ०—१ (अगारे या अग्नि के सहयोग से किसी वस्तु को) अगारे या लपट के रूप मे किया हुआ ।

२ (अधिक गर्मी पहुचा कर किसी पदार्थ को) काला बनाया हुआ, भुलसाया हुआ ।

३ (किसी के मन मे) डाह, ईर्ष्या, कुढन आदि पैदा किया हुआ ।
(स्त्री० जळायोडी) ।

जलाल–स०पु०—१ प्रियतम, (पति) । उ०—१ आप नही जो आवस्यौ, 'हीरा' कवण हवाल । महिला पदमण माणज्यौ, जोडी तणा जलाल ।
—बगसीराम प्रोहित री वात

उ०—२ जलाजी मारू, म्हे तो थारा डेरा निरखण आई हो मिरगा-नैणी रा जलाल ।—लो गी

२ जलाल गाहाणी नामक व्यक्ति जो बडा उदार था एव जिसके नाम का 'जलो' लोकगीत राजस्थानी मे गाया जाता है ।

वि० [अ०] १ प्रकाशमान । उ०—म्हारी नजर तौ माथै पडै, म्हारा जलाल महल री तू थभ है ।—बा दा ख्यात

२ तेजस्वी, कान्तिमान । उ०—केसवदास आदमी वडो सचियार थो, जलाल थो, मरद मोटियार थौ ।
—मारवाड रा अमरावा री वारता

अल्पा०—जलालियौ, जलाल्यौ ।

जलालियो–स०पु०—१ दरवाजे के बीच मे लगाया जाने वाला पत्थर जिसके कारण कपाट अन्दर की ओर खुल सकते है किन्तु बाहर की ओर नही जा सकते ।
२ जबरदस्त, बलवान व्यक्ति । उ०—पडता आसमान कू झेलै । केहर का प्राक्रम, सोर का भभका, बाराह का जोर, जलालिया का धका, काळी का कळस, सती का नारेळ ।
—बगसीराम प्रोहित री वात
३ देखो 'जलाल' (अल्पा , रू भे.)
४ देखो 'जलालो' (अल्पा., रू भे)
रू०भे०—जलाल्यो ।

जलालोक–स०पु० [स० जलालुक] जोक ।

जलालो–वि०—जबरदस्त, दृढ, मजबूत । उ०—१ फाटो लोह धरा आव सुरेस रो वज्र फाटो, पेखे भूप जावो फाटो जलालो पहाड । फेरू कग्र तरु हीरो अठारा ठौड सू फाटो, घणी जाता म्हारो हीयो न फाटो धिकार ।—सरूपदास दादूपथी
उ०—२ जलाला चाढ़ जुधवेर भाजण जबर, यळा आळा लियण विरद अगता । हेजमा तोड चहुवाण भाला हथा, विसाला तपो जुग कोड 'वगता' ।—रामलाल आढ़ो
अल्पा०—जलालियो, जलाल्यो ।

जलाल्यो—१ देखो 'जलाल' (अल्पा , रू भे)
२ देखो 'जलालियो' (रू भे)
उ०—१ प्रपा कूप नैडो न बंडो पयाणो । जलाल्या तणो फेटवो थेट जाणो ।—मे म
उ०—२ सेरा के झुड, बळ के वितुड । हूरा के हार, दिल के उदार'। काळी के चक्र, जलाल्या की टक्कर ।—ला रा
३ देखो 'जलालो' (अल्पा , रू भे)

जळावण–वि०—जलाने वाला, भस्म करने वाला ।
उ०—नमो कपिळेसुर दिस्ट करूर, नमो सुत सग्र जळावण सूर।
—ह र

जळावणो, जळाववो—देखो 'जळाणो' (रू भे)
उ०—जळ वडवानळ जिको जळावै । ऊन्हो तिको सदमदचे आवै ।
—सू प्र

जळाधियोडो—देखो 'जळायोडो' (रू भे) (स्त्री० जळावियोडी)

जळासय–स०पु० [स० जलाशय] वह स्थान जहां अधिक मात्रा मे पानी इकट्ठा रहता हो । उ०—सूरय आपण पइ थापइ, जगत्र सतापइ। जे जीव थळ चरइ, तेहि जळासय अनुसरइ ।—मुत्कलानुप्रास

जळासयसोसण–स०पु० [स० जलाशयशोषण] जलाशय, तालाब आदि सोखते श्रावक के सातवें व्रत का अतिचार रूप, पन्द्रहवा कर्मदान मे चौदहवा कमदान (जैन)

जळाहळ–स०स्त्री०—१ चमक, दमक । उ०—१ भेळा गेहणा सू जडाव जडियो छै। गोभा सूरजै री किरण री जळाहळ लाग रही छै ।
—रीसालू री वात
उ०—२ कठसरी बहु क्राति मिळी मुकताहळा । हिंडुळ नौसरहार, जळूस जळाहळा ।—वा दा
[स० जलधर] २ समुद्र ।
वि०—१ देदीप्यमान । उ०—सुत्र चहन प्रथी मज जिता वरिया सकळ, भाण तप जळाहळ सुजस भावै । इता गुण तूज मे 'वगतसी' 'अजावत', अगोटी देखता निजर आवै ।— महाराजा वगतसिह री गीत
२ प्रज्वलित ।

जळि—देखो 'जळ' (रू भे) उ०—पाखे पाणी वाहरइ, जळि काजळ गहिळाइ । सयणा-तणा सदेसडा, मुख वचने कहिवाइ ।—ढो मा

जळियोडो–भू०का०कृ०—१ अग्नि के सयोग से अगारे या लपट के रूप मे बना हुआ, दग्ध हुवा हुआ, भस्म. २ झुलसा हुआ
३ (बहुत गर्मी या आच के कारण किसी पदार्थ का) कोयले या भाप के रूप मे बना हुआ. ४ ईर्ष्या, डाह या द्वेष के कारण कुढा हुआ
५ क्रुद्ध हुवा हुआ, कुपित हुवा हुआ । (स्त्री० जळियोडी)

जळियोतन–वि०—१ जो सहनशील न हो तथा जिसे शीघ्र क्रोध आता हो २ ईर्ष्यालु ।

जळजपियो, जळियोजामळियो–क्रि०वि०—१ यथास्थान २ शान्त, चुप।

जलिर–वि० [स० ज्वलिर] जलने के स्वभाव वाला (जैन)

जळिहर–स०पु० [स० जलधर] बादल ।

जलील–वि० [अ० जलील] १ तुच्छ, बेकदर २ जिसने नीचा देखा हो, अपमानित ।
क्रि०प्र०—करणो, होणो ।

जलूक, जलूग, जलूगा, जलूया–स०स्त्री० [स० जलुका, जलूका] देखो—'जळोक' (उ र जैन)

जळूस–स०पु० [अ० जुलूस] १ बहुत से लोगो का एकत्रित होकर (प्राय किसी सवारी के साथ) आनन्द या उत्सव हेतु किसी विशिष्ट स्थान पर जाना अथवा नगर की परिक्रमा करना. २ समूह ।
उ०—अलक डोरा तिल चडसचो, निरमळ चिबुक निवाण । सींचै नित माळी समर, प्रेम बाग पहचाण । प्रेम बाग पहचाण निरतर पाळही, ग्रीवा कवू कपोत गरब्बा गाळही । कठसरी बहु क्राति मिळी मुकता हळाह, हिंडुळ नौसरहार जळूस जळाह ।—वा दा

जळूसी–वि०— जलूस से सबधित ।
स०पु०—१ जलूस मे सम्मिलित व्यक्ति ।
स०स्त्री०—२ शान-शौकत ।

जळेंद्र–स०पु०यौ० [स० जलेंद्र] १ वरुण. २ महासागर ।

जळेंचर—देखो 'जळचर' (रू भे)

जळेब, जलेब–स०स्त्री० [अ०] १ हाजरी । उ०—असचढयो राजा अभो, कव चाढै करिराज । पोहर हेक जलेब मे, मोहर हले महाराज ।
—अज्ञात
२ तैनात, मुकर्रर । उ०—स्री जी उमेदसिंघजी देसूरी सैल करण पधारता जद भमरा वा कीपला री कावडा जलेब वैती गाव रा डावडा मागता ज्यानै कीपला भमरा दिरीजता ।—वा दा ख्यात

जवज्जव–स०पु० [अनु०] खण्ड-खण्ड, टूक-टूक। उ०—जवज्जव कीध सघाट जवन्न। तिलत्तिल कीध सिलेंह खळतन्न।—सू प्र.

जवण–स०पु० [स० जव+रा०प्र०ण] वेग, शीघ्र गति (जैन)
[स० यापन] निर्वाह, गुजारा (जैन)
[स० यवन] म्लेच्छ, यवन।

जवण-दीव–स०पु० [स० यवन-द्वीप] वह द्वीप जहा यवन अधिक निवास करते हो (जैन)

जवणपुर—देखो 'जवनपुर' (रू भे) उ०—सगळउ ही ससार आइ जि आलम आणियउ। जवण-पुरउ ज्यउ-ज्यउ करइ किह सउ कळा कमार।—अ वचनिका

जवणाण—देखो 'जवनाण' (रू भे)

जवणा–स०स्त्री० [स० यापना] १ शरीर-निर्वाह (जैन), जीवन-निर्वाह (जैन)
२ सयम का निभाव (जैन)

जमणाणिया–स०स्त्री० [स० यवनानिका] एक प्रकार की लिपि (जैन)

जवणाळिया–स०स्त्री० [स० यवनालिका] कन्या को पहनाई जाने वाली एक प्रकार की चोली (जैन)

जवणि—देखो 'जमना' (रू भे) उ०—खेलइ खेलत रायकुमर अतेउरि जुत्तु। गग जवणि नय अतराळि, कुळगिरि सपत्ता।
—प्राचीन फागु सग्रह

जवणिज्ज–वि० [स० यापनीय] १ समय गुजारना (जैन) २ इन्द्रिय और मन को जीतना (जैन)

जवणिया–स०स्त्री० [स० यवनिका] कनात, पर्दा (जैन)

जवणी–स०स्त्री० [स० यवन+रा०प्र०ई] यवन स्त्री (जैन)

जवदोस–स०पु०यौ० [स० यवदोष] रत्नो मे पडने वाली जव के आकार की रेखा जिससे रत्न दूषित माना जाता है।

जवन–स०पु० [स० यवन] १ यवन, मुसलमान।
उ०—सूरतन रीझता भीजता सेलपुर, पहा अन दीजता कदम पाछै। दात चढता जवन सीस पछटी दुजड, तात सावण ज्युही गई ताछै।
—गोरधन बोगसो
२ राक्षस, दैत्य (अ मा)
[स० जवन] ३ घोडा ४ वेग ५ पवन (अ मा)
वि० [स०] वेगवान, वेगयुक्त, तेज।
रू०भे०—जवन, जवन्न, जवन्निय।
मह०—जवनेस।

जवनणी–स०स्त्री०—यवन स्त्री।
वि०—यवनकी। उ०—जवनणी तणी घड पूगडी जीव लै। होड गहणा हसम छोड हाली।—प्रथीराज राठौड

जवनपत, जवनपति–स०पु०यौ० [स० यवनपति] बादशाह।
उ०—१ कठठ काठळ कटक रोस चामास कर, जवनपत हीदवा छात जूटा। अभग जसराज सर कर्णगर ऊपरा, खाग बादळ वरस वार खूटा।—अजवसिंघ बारहठ उ०—२ जवनपति परताप भाण ग्रीखम जिसो। आगि कहता खळा वदन दाझै इसो।—सू प्र
रू०भे०—जवनापत, जवनापति।

जवनपुर–स०पु०यौ० [स० यवनपुर] दिल्ली। उ०—आयो जवनपुर जग टकी आगरै, समहर सग सप्राणौ।—नैणसी
रू०भे०—जवणपुर।

जवनाण–स०पु० [स० यवन+रा०प्र० आण] यवन, मुसलमान।
उ०—१ जवनाण दळै वीजूजळै देख भले कुळ देस रो।—रा रू
उ०—२ उडै वूथ पळ अग, जूथ ढाहै जवनाणा।—सू.प्र.
रू०भे०—जवणाण।

जवनापत, जवनापति, जवनापती—देखो 'जवनपत' (रू भे)
उ०—चक्रवत कमध चिलै भ्रूह चाडै, निपट निमाडे जेम नमै। जवनापती असल तूजी जिम, खाचो तिम खाचियो खमै।
—तेजो खिडियो

जवनाचारज–स०पु०यौ० [स० यवनाचार्य] यवन वश का एक ज्योतिषाचार्य जिसका उल्लेख ज्योतिष ग्रथो मे आया है।

जवनाळ–स०पु० [स० यवनाल] १ जुआर का पौधा २ ज्वार नामक अन्न ३ सूखने पर पशुओ को खिलाये जाने वाले जौ के डठल।

जवनासव, जवनासु–स०पु० [स० यवनाश्व] मिथिला देश के एक प्राचीन सूर्यवशी राजा का नाम जिसके पुत्र का नाम बहुलाश्व था (सू प्र)

जवनिका–स०स्त्री० [स० यवनिका] नाटक का परदा।
उ०—प्रगटै मधु कोक सगीत प्रगटिया, सिसिर जवनिका दूरि सिरि। निज मत्र पढे पात्र रितु नाँखी, पहुपजाळि वणराय परि।—वेलि
रू०भे०—जवनी।

जवनिस्ट–स०पु०यौ० [स० यवनिष्ठ] मुसलमान। उ०—अज्ज धरम रच्छक इतै रु जवनिस्ट उतै। घाट हळदी रण भ्रमावै भट भालाँ को।—बालाबक्स बारहठ

जवनी—देखो 'जवनिका' (रू भे)

जवनेंद्र–स०पु० [स० यवनेंद्र] बादशाह। उ०—सेहरसाह (सेरसाह) जवन पूरब मे जवनेंद्र हुवौ जिणरा आतक सू कासी सूनी हुई।
—बा दा. ख्यात

जवनेस–स०पु० [स० यवनेश] १ बादशाह। उ०—करि बळ दूणौ कोपियो, जिको दुसह जवनेस। सुरजन हू कहियो सजै, अब मारो सुत एस।—व भा
२ देखो 'जवन' (महत्व, रू भे) उ०—खहे जसक्रन्न तणौ 'खडगेस', जिको खग झाट ढहै जवनेस।—सू प्र

जवन्न—देखो 'जवन' (रू भे) उ०—१ अखई थभ अकास कू, माधवदास सुतन्न। कोड जवन्ना भजणौ, बधव जोड 'बिसन्न'।—रा.रू

जवन्निय–वि०—यवन की। उ०—२ जवन्निय सेन प्रळै किर ज्वाळ। धमधम पक्खर गुग्घरमाळ।—रा रू.

जवफळ–स०पु० [स० यवफल] १ बास (ह ना) २ इन्द्र जौ (ना मा)

जवादिकस्तूरी–स०स्त्री०यौ० [ग्र० जव्वाद+स० कस्तूरी] गध मार्जार से निकाला जाने वाला एक प्रकार का सुगधित द्रव्य, गोरासार ।

जवादु–स०पु०—योद्धा, वीर । उ०—सधा वीर विद्या कवादु ससग्रा ग्राभ लागा सूर, जवादु जम थी जोम ग्रथागा जरूर । ग्रादू पथी खाग वाहा भागा तठै ताक ग्रोळी, पठाणा सू दादुपथी वागा बरापूर ।
—दादूपथी साधा रो गीत

जवाधि–स०पु०—एक प्रकार का पुष्प ।

जवाधिक–स०पु० [स०] बहुत तेज दौडने वाला घोडा ।

जवाब—देखो 'जवाब' (रू.भे)

जवाबतळब—देखो 'जवाबतळब' (रू भे.)

जवाबदावौ—देखो 'जवाबदावौ' (रू भे)

जवाबदेह—देखो 'जवाबदेह' (रू भे)

जवाबदेही—देखो 'जबाबदेही' (रू भे)

जवाबसवाल—देखो 'जवाबसवाल' (रू भे)

जवाबी—देखो 'जवाबी' (रू भे.)

जवार—१ देखो 'जुहार' (रू भे.) उ०—१ कहजे यूं बूडा कमध नै, जे हात हूत जवार । गोळू धरा नागोर रा, सग लाविया सिरदार ।
—पा प्र.

उ०—२ थारी महदी पर वारू पन्ना जवार । पेमरस महदी राचणी ।
—लो.गी

२ एक धान्य विशेष, ज्वार, जुग्रार । उ०—एक नमाया तुड ग्रसि, उर लगि चिबुक ग्रनोप । वण काकणस जवार विधि, पान कलगी ग्रोप ।—रा रू

रू०भे०—जुग्रार, जुवार, जुहार, जूग्रार, जूवार, ज्वार ।

जवारखानौ—देखो 'जवाहरखानौ' (रू भे)

जवारडा (बहु व०) देखो 'जुहार' (१, ग्रल्पा. रू भे)

जवारउौ—देखो 'जुहार' (२,३, ग्रल्पा रू भे)

जवारमल–स०पु०—राजस्थानी का एक लोकगीत ।

जवारा—देखो 'जवारा' (रू भे.)

जवारात—देखो 'जवाहिरात' (रू भे)

जवारी–स०स्त्री०—१ विवाहादि ग्रवसर पर ग्रपने दामाद या बरातियो को दिया जाने वाला नकद रुपया या कपडे ग्रादि मे दी जाने वाली भेंट ।

२ दूल्हे द्वारा किया जाने वाला ग्रभिवादन तथा ग्रभिवादन करने पर दूल्हे को दिया जाने वाला रुपया या भेंट ।

क्रि०प्र०—करणी, दैणी, लैणी ।

३ देखो 'जुग्रारी' (रू भे)

रू०भे०—जवारी, जुग्रारी, जुवारी, जुहार, जुहारी ।

जवाल–स०पु० [ग्र०] १ जजाळ, ग्राफत । उ०—तो तू खजाना रै ऊपर भरोसो मत कर क्यो माल मारग जवाल जाणे रा मे छै ।
—नी प्र

२ ग्रवनति, घटाव ।

जवाळाजीह–स०स्त्री०यौ० [स० ज्वाला जिह्वा] ग्रग्नि (डि को.)

जवाळामुखी—देखो 'ज्वाळामुखी' (रू.भे)

जवाळी–स०स्त्री०—वधू के गले मे विवाह के समय डाला जाने वाला हार जिसमे छुहारे, खोपरे पिरोये जाते हैं ग्रौर उन पर वरक लगे रहते है (कायस्थ)

जवास, जवासी—देखो 'जवासो' (रू भे) उ०—जिण दिन लीली जळै जवासी, माऊ राड साप री मासी । बादळ रहै रात रा वासी, यू जाणै चोकस मेह ग्रासी ।—वरसा विज्ञान

जवासीर–स०पु० [फा० जावशीर] कुछ पीले रग का तथा बहुत पतला एक प्रकार का गधाबिरोजा ।

जवासो स०पु० [स० यवासक, प्रा० जवासग्र] १ एक कटीला पौधा जिसकी पत्तिया करौंदे की पत्तियो के समान होती हैं. २ एक प्रकार का घास जो वर्षा ऋतु मे वर्षा के कारण जल कर भस्म हो जाता है ।

रू०भे०—जवास, जवासी ।

जवाहड–स०स्त्री०—छोटी हर्रै, छोटी हरीतकी ।

जवाहर—देखो 'जवाहिरात' (रू भे) उ०—घणा मोतियां री माळा नै जवाहरा रा जाळ उर ऊपर रुळ रया छै । माहोमाह गुलाब छिडकीजै छै ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

जवाहरखानौ–स०पु० [ग्र० जवाहर+फा० खान॰] वह घर वा स्थान जहा जवाहिरात रक्खे जाते हो ।

रू०भे०—जवारखानौ ।

जवाहरात, जवाहिर, जवाहिरात–स०पु० [ग्र० जवाहरात] रत्न, मणि ग्रादि का बहुवचन जवाहिरात । उ०—एक हिस्से माही नकदी ग्रौर जवाहरात, एक हिस्से मे हाथी घोडा तीन, हिस्से मवेशी गाय भैंस रथ पालकी लेवी ।—गौड गोपाळदास री वारता

रू०भे०—जवारात, जवाहर, जव्वाहर ।

जवाहरी—१ देखो 'जौहरी' (रू भे) उ०—जवाहर परक्ख जोत के जवाहरी करै ।—सू प्र २ देखो 'जवारी' (रू भे)

जवि–वि० [स० जविन्] वेग वाला (जैन)

जविण–वि० [स० जविन] १ वेग युक्त (जैन) २ चचल (जैन)

जविस्ट–स०पु० [स० यविष्ट] ग्रग्नि, ग्राग (डि को)

वि०—छोटा, कनिष्ठ ।

जवेरी–स०पु० [फा० जौहरी] जौहरी ।

जवौ–स०पु०—१ शुभ रग का घोडा २ एक प्रकार का कीडा जो प्राय खाद मिश्रित मिट्टी मे पाया जाता है, पशुग्रो या मनुष्यो के चिपक कर यह उनका खून चूसा करता है ।

रू०भे०—जुग्रो ।

जव्वाहर—देखो 'जवाहिर' (रू भे) उ०—करै दान हित कत तरै दुज दीन निरतर । किता चीर मजीर हीर माणक जव्वाहर ।
—रा रू

नाम (जैन) २ श्रमण भगवान श्री महावीर स्वामी की पुत्री की पुत्री का नाम (जैन) ३ तृतीया, अष्टमी एव त्रयोदशी तिथियो की रात्रि
रू०भे०—जसवती। (जैन)

जसवणी-वि०—यशस्वी। उ०—पाटण मूळराज ली, जसवणी हुतो, कह्यौ 'इतरी पीढी आपणा घर सूं पाटण री राज नही जाय।'—नैणसी

जसवती—देखो 'जसवई' (रू भे, जैन)

जसवान-वि० [स० यशवान] यशस्वी।

जसवा, जसवाउ-स०पु० [स० यशोवाद] यश, कीर्ति।
उ०—१ राज्याभिसेक पुत्र सिक्षा, वत्स! प्रजा सुखि पाळेवी, अन्याय वाट टाळेवी, भलउ न्याय आदरिवो, जसवा उपारजेवउ। —व स
उ०—२ केवलिवयणु जु सच्चु किउ। जिहूं भुयणि जसवाउ लिद्धउ। —प प च.

जसवाय-स०पु० [स० यशोवाद] धन्यवाद (जैन)

जसवास, जसव्वास-स०पु०[स० यशोवाद+रा प्र स] १ यश।
उ०—औसर नरपुर उद्धरे, वैकुठ कीधा वास। राजा 'रैणाइर' तणौ, जुगि अविचळ जसवास।—वचनिका
२ लखपत पिंगळ के अनुसार एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश. दो सगण, एक नगण, लघु एव गुरु होते हैं।

जसंस्सि-वि० [स० यशस्विन्] यशवान, यशस्वी (जैन)

जसहड़-स०पु०—भाटी वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

जसहर-स०पु० [स० यशोधर] १ जम्बूद्वीप के भारत खण्ड मे होने वाला सोलहवा तीर्थंकर (जैन) २ पक्ष के पन्द्रह दिनो मे से पाँचवा दिवस (जैन)
स०स्त्री०—३ दक्षिण रुचक पर्वत के ऊपर की आठ दिशा कुमारिया मे से चौथी दिशा कुमारी (जैन) ४ पक्ष की पन्द्रह रात्रियो मे से चौथी रात्रि का नाम (जैन) ५ जम्बू सुदर्शना नामक वृक्ष (जैन)
वि०—यशस्वी, यशवान (जैन)

जसा-वि०—जैसा। उ०—सावास छै, वडी रजपूती राखी। जसा पुरसा रा थे लडका था विसी ही कीवी।—सूरे खीवे री वात
स०स्त्री० [स० यशा] १ कौशाम्बी के रईस काश्यप की स्त्री और कपिल की माता (जैन) २ भृगु पुरोहित की स्त्री (जैन)

जसाग्रा-स०स्त्री०—पुत्र जन्मोत्सव पर गाया जाने वाला मागलिक गीत, सोहर।
रू०भे०—जसाया।

जसाई-स०पु०—यश का बाजा, नगाडा। उ०—'रामै' तणा जसाई रुडिया।—द दा

जसाया—देखो 'जसाग्रा' (रू भे)

जसियौ-वि०—जैसा। उ०—कँवर अबीढी कासली, जसियौ औरगजेब। आण मिळ्या सो ऊबरया, राजा झालि रकेब।—शि वं

जसी-वि०—१ जैसी। उ०—उच्चरी तुररी कुररी जसी। सुभट ना सवि रोम ज उद्धसी।—विराट पर्व
२ यशस्वी।

जसीलो-वि० [स० यश+रा०प्र० इलो] यशप्रिय, यशलोलुप।

जसु-स०पु०—यश। उ०—गयणे दुदुहि दमदमीय सुरवरि जसु गाईउ।—प प.च
सर्व०—जिसकी। उ०—प्रभणुं पित मात पूत मत पांतरि, सुर नर नाग करै जसु सेव। लिखमी समी रुकमणी लाडी, वासुदेव सम सुत वसुदेव।—वेलि

जसुदा—देखो 'जसोदा' (रू भे.) उ०—गिरावै घृत गोरस भरी गागरा, पूत जसुदा तणी राह पाउ।—वा दा

जसुमती-स०स्त्री० [स० यशुमती] यशोदा।

जसूदा—देखो 'जसोदा' (रू भे.)

जसै-क्रि०वि०—जैसे।
वि०— जैसा।

जसोड-स०पु०—भाटी वश के क्षत्रियों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

जसोचद—देखो 'जसचद' (रू भे, जैन)

जसोडाटी-स०स्त्री०—जैसलमेर राज्यान्तर्गत जसोड भाटियो के राज्य की भूमि।

जसोत—देखो 'जसत' (रू भे, अ.मा)

जसोदा-स०पु० [स० यशोदा] व्रज मे माता के रूप मे कृष्ण का पालन करने वाली नद की स्त्री।
रू०भे०—जसुदा, जसूदा, जसोमत, जसोमति, जसोमती, जस्सुदा।

जसोदानद-स०पु० [स० यशोदानद] श्रीकृष्ण।

जसोधण, जसोधन-वि० [स० यशोधन] यशस्वी। उ०—हुवा जसोधन पुरस जे, इळ वडमत अवदात। ज्यारी कही पुराण मे, व्यास तपोधन वात।—वा.दा.
स०पु०—इस नाम का एक राजा (जैन)

जसोधर-स०पु० [स० यशोधर] रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र।
वि०—यशस्वी।

जसोधरा-स०स्त्री० [स० यशोधरा] १ गौतम बुद्ध की पत्नी और राहुल की माता २ दक्षिण रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिशा कुमारी (जैन) ३ पन्द्रह रात्रियो मे से चौथी रात्रि का नाम (जैन)

जसोनाम-स०पु० [स० यशोनामन्] नाम कर्म की एक प्रकृति जिसके उदय से जीव यश प्राप्त करता है (जैन)

जसोमत, जसोमति, जसोमती—देखो 'जसोदा' (रू भे)
उ०—१ वार वाहा की आठ मासा वळण, नह की वळण जसोमत नद।—वा दा उ०—२ महा अदभूत जचै उपमाण। जसोमति पूत नचै फण जाण।—मे.म.

जहरवाद–स०पु० [फा०] एक प्रकार का रक्त विकार के कारण उत्पन्न होने वाला रोग जिसके कारण शरीर के किसी अग मे विषाक्त फोडा हो जाता है। यह मनुष्यो के अतिरिक्त घोडो, बैलो और हाथियो को भी होता है (शा हो)

जहरवायु–स०पु०यौ० [फा० जह्र+स० वात] घोडो का एक रोग विशेष जिसके फलस्वरूप उनके पैर और पेट पर सूजन आ जाती है। (शा हो.)

जहराळ–स०पु० [फा० जह्र+रा०प्र० आळ] शेषनाग। उ०—रजभाखो किरणाळ, कमळ जहराळ लटक्कै। चोळ भाळ चापडै, कमध रवदाळ कटक्कै।—सू प्र

जहरी, जहरीलो–वि० [फा० जह्र+रा०प्र०ई, इलो] जिसमे विष हो, विषाक्त।

जहवत–वि०पु० [स० यशवत] यशस्वी।

उ०—वेहा लिख खोटा वरण, रेहा हीन रहत। पात अछेहा धन लहै, जेहा धन जहवत।—बा दा.

जहसत्ति–अव्य० [स० यथाशक्ति] शक्ति के अनुसार, यथाशक्ति (जैन)

रू०भे०—जहासत्ति।

जहाँ–अव्य० [स० यत्र, पा० यत्थ, प्रा० जह] जिस जगह, जिस स्थान पर।

स०पु० [फा० जहान] ससार, जगत, दुनिया।

जहाण, जहान–स०पु० [फा० जहान] ससार, जगत, दुनिया।

उ०—गहरी लाली देख कर, फूल गुमान भयाह। कितरा बाग जहान मे, लग-लग सूख गयाह।—अज्ञात

रू०भे०—जीहाण, जीहान।

जहानमी, जहानवी, जहाननेवी, जहान्नवी–स०स्त्री० [स० जाह्नवी] जह्न ऋषि से उत्पन्न, गगा नदी। उ०—१ कोडवै तेतीस देव बीसासो सारण काज, माहाराज तेज धुधारण आसमाण। नरा लोक तारणा पै जारणा जहाननेवी, देवी जै कारणा रूपी चारणा दीवाण।

—हुकमीचद खिडियो

उ०—२ ज्या तुदा व्रत जोय, दोजग नह वासो दियो। ते न्हावै तुय तोय, जोत समावै जहानमी।—बा दा

उ०—३ सभु ध्यान मे गहीर मै प्रमाद भाग पायो सता, जहानवी नीर रो क सापडैवो जन। डोरी व्रज कुज रो समीर रो क आज दीठो, वीरमदे हेळ मै हमीर रो वदन।—सायवो सुरताणियो

रू०भे०—जन्हनवी।

जहापनाह–स०पु० [फा०] ससार का रक्षक। रू भे जापनाह

जहा–अव्य० [स० यथा] जिस प्रकार, जैसे, यथा (जैन)

जहाकम—देखो 'जहाक्रम' (रू भे, जैन)

जहाच्छद–वि० [स० यथाच्छन्द] स्वच्छन्द (जैन)

जहाज—देखो 'जा'ज' (रू भे)

जहाजाय, जहाजायत्ति–वि० [स० यथाजात, यथाजातेति] १ जैसा जन्मा वैसा, नग्न (जैन) २ जड, मूर्ख।

जहाजी–वि० [अ०] जहाज से सबधित।

स०पु०—१ एक प्रकार का अच्छा लौह जिसकी तलवार बनाई जाती है २ एक प्रकार की तलवार।

जहाजेट्ठ–अव्य० [स० यथाज्येष्ठ] बडाई के क्रम से (जैन)

जहाजोग–अव्य० [स० यथायोग्य] यथायोग्य (जैन)

जहाठाण–अव्य० [स० यथास्थान] यथास्थान (जैन)

जहातच्च–वि० [स० यथातथ्य] यथातथ्य, वास्तविक, सत्य (जैन)

जहातह–स०पु० [स० यथातथ्य] १ सूयगडाग सूत्र का तेहरवा अध्ययन (जैन)

२ वास्तविकता, सत्यता (जैन)

जहानाय–अव्य० [स० यथान्याय] न्याय के अनुसार, यथोचित (जैन)

जहापवट्टकरण–स०पु० [स० यथाप्रवृत्तकरण] आत्मा का परिणाम विशेष (जैन)

जहाफुड–वि० [स यथास्फुट] स्पष्ट (जैन)

जहाभूत, जहाभूय–वि० [स० यथाभूत] सच्चा, वास्तविक (जैन)

जहार–वि० [अ० जाहिर] १ जाहिर, प्रकट, विहित. २ प्रकाशित।

जहालत–स०स्त्री० [अ०] मूर्खता, अज्ञानता।

जहावाइ, जहावाई–वि० [स० यथावादिन्] सत्य कहने वाला, सत्य बोलने वाला (जैन)

जहासत्ति—देखो 'जहसत्ति' (रू भे)

जहासुय–अव्य० [स० यथाश्रुतम्] जैसा सुना (जैन)

जहासुह–अव्य० [स० यथासुख] यथासुख (जैन)

जहिं, जहि—देखो 'जही, जहो' (रू भे, जैन)

सव०—जिस। उ०—भला भूमिका तणा प्रदेस, सोभा तणा निवेस, जहि दीठे जाइ मन ना क्लेस।—व स

जहिच्छ, जहिच्छा–अव्य० [स० यथेच्छ, यथेच्छा] यथेच्छा (जैन)

जहिच्छिय–अव्य० [स० यथेच्छित] इच्छा के अनुसार (जैन)

जहिट्ठिल—देखो 'जुधिस्ठर' (रू भे) (जैन)

जहियइ–क्रि०वि०—यदा, जब (उ र)

जहीं, जहो–वि०—जैसी। उ०—कर ग्रहीया 'भीम' प्रथी सिर कमधज, निकळ क अक सुधा-निवास। वधते तेज सह कोई वादे, वाला चद जही वाणास।—महाराजा भीमसिह रो गीत

अव्य०—१ जैसे। उ०—जवना भड पुज पलाल जही। मिळिया किर मारुत चक्र मही।—रा रू

२ जहाँ ३ ज्योही, जब।

जहीइ–क्रि०वि०—जब, यदा (उ.र)

जहीन–वि० [अ० जहीन] समझदार, धारणाशक्ति वाला।

जहीफ–देखो 'जईफ' (रू भे)

जहीफी–देखो 'जईफी' (रू भे)

जहुट्ठिलो—देखो 'जुधिस्ठर' (रू भे) (जैन)

जागळश्रौ—देखो 'जागळवौ' (रू.भे)

जागळवा, जागळवै-स०पु०यौ० [स० जगल] जागलू देश (बीकानेर)

उ०—गोहला वावरिया गह गजे, गजे जेठवा कावा गाव । जूनैगढ गढपत जागळवै, साझै चक्रवत 'कला सुजाव ।'—द दा.

जागळवौ, जागळू-स०पु०—जागलू देश, वीकानेर ।

उ०—१ पूनाहरी सुवौ दळि पलटै, दीपावे जांगळवौ देस । सुर-गिर सथिर कार वध सायर, सूरिज सतप भार झल सेस ।

साखला महेस कल्याणमतोत रौ गीत

उ०—२ इतरी वात करता खीवसी साखलौ जागळू राज करै छै। तिण री वेटी उमा साखुली मारवणि रौ अवतार ।

—लाली मेवाडी री वात

वि०वि०—वस्तुत 'जागलू' वीकानेर के एक भाग का नाम है जहाँ गर्मी खूब पडती है एव जलाभाव रहता है, किन्तु कालान्तर मे पूरे वीकानेर को ही 'जागलू' कहा जाने लगा ।

रू०भे०—जागळश्रौ, जागेळू ।

जांगळूराय-स०स्त्री०—१ श्री करणीदेवी ।

स०पु०—२ 'जागलू' देश बीकानेर का अधिपति ।

जागळूवौ-वि०—जागलू देश का, जागलू देश सवधी ।

जागळौ-वि०—योद्धा, वीर । उ०—नेत दस सहस वाळा गळै नागळा, जनेवा झळा भाजण खळा जागळा । वळोवळ नाम साभळ दुछर वागळा, पथ वहता हुवै किता अग पागळा ।—वद्रीदास खिडियौ

जागियौ—देखो 'जाघियौ' (रू.भे)

जागी-स०पु०—१ नगाडा (डिं को)

उ०—वीरा रस जागी गिरवागा । लोळा पुज सिखर सिर लागा ।

—रा रू

२ ढोली, दमामी ।

वि०—देखो 'जगी' (रू भे)

जागी हुरडे-स०पु०—वडो हड (अमरत)

जागेळू—देखो 'जागळू' (रू.भे)

जागेस-स०पु०—युद्ध का राग, सिंधुराग ।

जाघ—देखो 'जघा' (रू.भे) उ०—राव री जाघ तौ वच गई पण घोडै री काळजौ वूकडा आतडा ओझडा काछ जावतौ निसरियौ ।

—डाढाळा सूर री वात

जाघड—देखो 'जागडौ' (मह , रू भे)

जाघडा—देखो 'जागडा' (रू भे)

जाघियौ-स०पु०—१ कमर मे पहनने का पाजामे की तरह का एक कपडा जिसकी मोहरियाँ घुटने के ऊपर ही रहती है। यह प्राय' शरीर से चिपका रहता है २ मालखभ की एक कसरत ।

रू०भे०—जागियौ ।

जाच-स०स्त्री०—जाचने की क्रिया या भाव, परख, निरीक्षण, देखभाल, परीक्षण ।

यौ०—जांच-पडताल ।

जाचणौ, जाचवौ-क्रि०स०—१ जाँचना, परख करना. २ अनुसधान या परीक्षण करना ३ माँगना ।

जाचणहार, हारौ (हारी), जाचणियौ—वि० ।

जाचिश्रोडौ, जाचियोडौ, जाच्योडौ—भू०का०कृ० ।

जाचीजणौ, जाचीजवौ—कर्म वा० ।

जाचियोडौ-भू०का०कृ० परीक्षण या निरीक्षण किया हुआ, जाचा हुआ (स्त्री० जाचियोडी)

जाजर—देखो 'जाझर' (रू.भे)

जाजरू-स०पु०—१ जहरीला कीडा, विच्छू २ देखो 'जाझर' (रू भे.)

जाजळी-स०स्त्री०—वर्षा ऋतु मे वर्षा होने के बाद का वह सूखा निकलने वाला समय जब तक कि पुन वर्षा न हो । कृषि के लिये यह समय हानिकारक माना जाता है ।

रू०भे०—जाझळी ।

जाजा—देखो 'जादा' (रू भे)

जाझ-स०स्त्री० [स० जझा] १ वर्षा के समय चलने वाली तेज ठडी वायु २ शमी वृक्ष की सूखी फली (क्षेत्रीय) ३ देखो 'जाझर' । (रू भे)

जाझर-स०पु०—स्त्रियो के पैरो का छम-छम की ध्वनि करने वाला एक आभूषण, पैंजनी । उ०—धिन धण छकि जाती छाती लख छाती। जाझर झणकाती जाती मदमाती ।—ऊ का

रू०भे०—जाजर जाजरू, जाझ ।

अल्पा०—जाझरियौ ।

जाझरकौ-स०पु०—पौ फटने का समय, ब्राह्म मूहूर्त्त ।

उ०—एक दिन सारौ परवार लिया डाढाळौ नै भूडण सोय रह्या छै । इतरै जाझरकै री वखत री ठाडी पवन आई ।

—डाढाळा सूर री वात

जाझरियाळ, जाझरीयाळ-स०स्त्री०—'जाझर' नामक आभूषण धारण करने वाली देवी, शक्ति ।

जाझळी—देखो 'जाजळी' । उ०—ललकत जाझलिया वाजण नै लागी, भूखा मरतोडी खळकत पड भागी ।—ऊ का

जाझौ-वि०—वहुत सी, अधिक ।

जाट-स०पु०—शमी वृक्ष (शेखावाटी)

जाणग, जाणगी-वि० [स० ज्ञायक] १ जानकार, विज्ञ । उ०—'दलौ' सकज दईवाण, घण जाणग आयौ घरै ।—गो रू

२ चतुर ।

जाण-अव्य०—उत्प्रेक्षा अलकार का वाचक शब्द, मानो, जैसे ।

उ०—१ वपु नील वसन मझि इम वखाण । जगमगत घटा मझि छटा जाण ।—सु प्र. उ०—२ अधुरा डसण सू उदै, विमळ हास दुतिवत । सो सध्या सू चद्रिका, फैली जाण फवत ।—वा दा.

प्रे०रू०) १ जानकारी देना, जतलाना। उ०—वीरमदे पत धरम सवायौ। जोस भुजे दूणौ जाणायौ।—रा.रू
२ सूचना देना।
जाणावियोडो—भू०का०कृ०—जानकारी दिया हुआ, जतलाया हुआ। (स्त्री० जाणावियोडी)
जाणि—अव्य०—मानो। उ०—कुमकुमै मजण करि धोत वसत धरि, चिहुरे जळ लागो चुवण। छीणे जाणि छछोहा छूटा, गुण मोती मखतूळ गुण।—वेलि.
सर्व०—जिस।
जाणिक—देखो 'जाणक' (रू भे) उ०—१ एक दतउ मुख झळमळइ, जाणिक रोहणीउ तप्पई सूर।—वी दे
उ०—२ उडै ग्रहि अत ग्रिझा असमाण, पलो हिक झालत जोगणि पाण। उभी हुय जाणिक गोख अटारि, उडावत गूडिय राजकुमारी। —सू प्र.
जाणियार—वि०—विज्ञ, जानकार।
जाणी—अव्य०—मानो, जैसे।
जाणीकार—देखो 'जाणकार' (रू.भे.)
जाणीगर—देखो 'जाणगर' (रू भे) उ०—खट भाखा रो जाणीगर। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
जाणीजे—अव्य०—मानो।
जाणीणो, जाणीबो—देखो 'जाणणो' (रू भे) उ०—कणयाचळ जगि जाणीइ, ठाम तणउ जावाळि। तही लगइ जगि जाळहुर, जण जपइ इणि काळि।—का दे प्र
जाणीतो—वि०—१ प्रसिद्ध। उ०—भाटी भीमजी इण चौकळा रो जाणीतो। खानदानी आदमी हो। पल्लो खाली होवता थका ई घर ग्वाडी वाळो रजपूत हो।—रातवासो
२ जानकार।
जाणीवाण—वि०—१ जानकार, ज्ञाता २ परिचित।
जाणु—वि० [स० ज्ञायक] जानने वाला (जैन)
स०पु० [स० जानु] घुटना (जैन)
जाणे—अव्य०—मानो। उ०—कमळापति तणी कहेवा कीरति आदर करै जु आदरी। जाणे वाद माडियो जोपण, वागहीण वागेसरी। —वेलि
मुहा०—जाणे चिडिया मे ढळ पडियो—मानो चिडियो के बीच मे ढेला आ गिरा, उसके प्रति जिसके कारण एकत्रित समूह बिखर जाय।
रू०भे०—जाणै, जाने, जानै।
जाणेऊ, जाणेतो—वि०—१ जानकार, वाकिफ। उ०—आप कमर बाध तयार हुवा तद न जाणेता था तिका अरज कीवी। —ठाकुर जैतसी री वारता
२ देखो 'जाणीतो' १ (रू भे)
जाणै—देखो 'जाणे' (रू.भे) उ०—यू दळा हू त जाणै खडग ऊकठी, वादळा हू त जाणै कढी बीज।—हुकमीचद खिडियो

जाण्हई—स०स्त्री० [स०जाह्नवी] गगा (जैन)
जात—स०पु०—खाट, चारपाई। उ०—एक सात अनई दीठउ गादलउ जात, एक निद्राळ अनइ पाथरिउ पल्यंक विसाळ।—व.स.
जांदा—स०स्त्री०—इच्छा, अभिलाषा, लालसा, लालै।
उ०—जादा जीवण रा पडिया जिय जादा। मागण खावण डर नर पडिया मादा।—ऊ का.
क्रि०प्र०—पडणा।
रू०भे०—जाजा।
वि०वि०—इस शब्द का प्रयोग सदा बहु वचन मे होता है।
जांन—स०स्त्री० [स० जन्य] १ वरात, वर यात्रा।
उ०—जिकै वार स्रीराम री जान जोई। कहै ओपमा पार पावै न कोई।—सू प्र.
क्रि०प्र०—आणी, चढणी, जाणी, जीमणी, देणी।
कहा०—१ जान घणी आई तो माडो थाको—अधिक वरात आने पर वधू पक्ष के लोग भी सत्कार करते-करते तग आ जाते हैं। अधिक खर्चा आदमी को थका देता है। अति सर्वत्र वर्जयेत. २ जान मे माझी कुण—वरात मे मुखिया कौन ? बूझ बुझक्कड के प्रति, किसी समूह एव दल के मुख्य व्यक्ति के प्रति। मि०—'बींद रो काको कुण ?' ३ जूता वाळा किसा जान गिया है—सजा देने वाले कोनसे वरात मे गये हुए हैं ? अपराध करने वाले को सजा देने वाले भी वही मिल जाते हैं।
अल्पा०—जानडली, जानडी, जानणली।
मह०—जानड, जानेस।
[फा० जान] २ प्राणी, जीव।
मि०—जीव।
३ बल, सामर्थ्य।
जानउत्र—स०स्त्री० [स० जन्य+यात्रा अथवा यज्ञ+यात्रा] वरात।
उ०—अभिनव ए चालिय जानउत्र, 'अवडु' तणइ वीवाहि। अप्पुणु ए धम्मह चक्कवइ, हूयउ जानह माहि।—ऐ जै. का स.
रू०भे०—जानत्र, जानुत्र।
जानकी—स०स्त्री० [स० जानकी] श्रीराम की पत्नी एव सीरध्वज जनक की पुत्री, सीता (रामकथा)
जानकीजीवन—स०पु० [स० जानकी जीवन] श्री रामचद्र।
जानकीनाथ—स०पु०यौ० [स० जानकीनाथ] सीतापति, श्रीरामचद्र।
जानकीमगळ—स०पु० [स० जानकी मगल] तुलसीदास का बनाया हुआ राम के विवाह से सबधित वर्णन का एक ग्रथ।
जानकीरमण, जानकीरवण—स०पु०यौ० [स० जानकीरमण] जानकी के पति, श्रीरामचद्र।
जानकीस—स०पु०यौ० [स० जानकी+ईश] श्रीरामचद्र। उ०—राम नाम गाव रे, पाय कज धाव रे। जानकीस जाण रे, वेस तू जवाण रे। —र ज प्र.

जाववती-स०स्त्री० [स० जाम्बवती] श्री कृष्ण की एक पत्नी जो जाबवान की कन्या थी।
रू०भे०—जामवती।

जाववान-स०पु० [स० जाम्बवान्] ब्रह्मा का पुत्र और सुग्रीव का मत्री जो राम की ओर से रावण के विरुद्ध युद्ध मे लडा था। कहा जाता है कि यह रीछ था। श्रीकृष्ण ने इसकी कन्या के साथ विवाह किया था।
रू०भे०—जाववत, जावुवत, जामत, जामति, जामत, जामंति, जामवत, जामवत, जामूत।

जावबि-स०पु० [स० जावबि] वज्र।

जावुमाळी-स०पु० [स० जाम्बुमाली] हनुमानजी द्वारा अशोक वाटिका उजाडते समय मारा जाने वाला प्रहस्त नामक राक्षस का एक पुत्र। (रामकथा)

जावुवत—देखो 'जाववान' (रू भे)

जावू-स०पु० [स०] १ जामुन. २ रक्त-विकार अथवा मच्छर आदि के काटने से शरीर पर पडने वाले चकत्ते ३ एक प्रकार का शुभ रग का घोडा (शा हो)

जावूणय—देखो 'जावूनद' (रू भे) (जैन)

जावूदीप—देखो 'जबुदीप' (रू भे)
उ०—निज सुखरूख सेव करावी नाही, दाखै धन धन जावूदीप।
—वा.दा

जावूनद-स०पु०यौ० [स० जाम्बूनद] १ स्वर्ण, सोना (ह ना) २ धतूरा (अ मा)
रू०भे०—जावूणय।

जावूफळ-स०पु० [स० जाम्बू फल] जामुन।
वि०—काला, श्याम* (डिं को.)

जावो, जाभो-स०पु०—विश्नोई सप्रदाय का प्रवर्तक एक सिद्ध पुरुष।
वि०वि०—इनका जन्म पीपासर ग्राम मे सवत १५०८ के भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को हुआ था। ये लोट के पुत्र थे। कहा जाता है कि ये जन्म से गूगे थे किन्तु श्री गोरखनाथजी के दर्शन से इनकी जवान खुल गई। विश्नोई जाति मे इनका पूजन किया जाता है।

जामग-स०पु०—देखो 'जामकी' (मह०रू०भे०)
उ०—करि बदूक पायका, ज्वाळ विकता जामगा। पाति जजर पेडिया, भाति छेडिया भुजगा।—सू.प्र.

जामगी—देखो 'जामकी' रू भे

जामत, जामति—देखो 'जाववान' (रू भे)
उ०—लगै वैण जामत री सीख लागै। उठै आविया वालि रा नद आगै।—सू प्र

जाम-स०पु० [फा० जाम] १ प्याला। उ०—१ कोमळ राता पातळा, अधर जिका रा ईख। अभिलाखै पीवण अमर, सुधा जाम ते सीख।
—वा दा.

[स० याम] २ क्षण भर का समय, पलक झपकने का समय।
उ०—१ अरहट कूप तमाम, ऊमर लग न हुए इती। जळहर एक जाम, रेलै सब जग राजिया।—किरपाराम
उ०—२ जाम जाम मे उचार राम नाम।—र ज प्र
३ प्रहर, घडी भर का समय। उ०—१ अग अग मझ ऊफणै, जोवन आठू जाम। रया हुदी तसवीर रो, कलम हुवै नह काम।
—वां.दा.
उ०—२ घडी आठ वर्जादिया जाम हेको हो जाई।—केसोदास गाडण
[रा०] ४ पिता, जनक ५ पुत्र, बच्चा।
उ०—कायर घर ऊढा कहे, की घव जोडै काम। कण कण सचै कीडिया, जोवै तीतर जाम।—वी म
६ वस्त्र, कपडा। उ०—साह फतै साभळै जाम गज मिउज जवाहर। ताम तेग नवग्रत्रि, धूप समसेर जमधर।—सू प्र
स०स्त्री०—७ यादव वश की एक शाखा [स० जामि] ८ पुत्री, कन्या।
उ०—विण मरिया विण जीतिया, घणी आविया धाम। पग पग चूडी पाछटू, जे रावत री जाम।—वी स
[स० यामिः, यामी] ९ रात्रि, यामिनी।
वि०—दाहिना। उ०—त्रि मकत वामे धेनु दुहता। जामे करग तारवी ज्हाज।—चौथो वीठू
क्रि०वि० [स० यावत्] जव। उ०—१ जुटा 'रतनागिर' 'ओरग' जाम। वडा जम रूप विन्है वरिआम।—वचनिका
उ०—२ जैचद दळावळ देखि जाम। तोलै खग वोलै एम ताम।
—सू प्र

जामकी-स०स्त्री०—बदूक छोडने का छोटा पलीता।
उ०—वोयदार री डावा छै। कसूमल सूत री लपेटी जांमकी छै।
—रा सा स
रू०भे०—जामग, जामखी, जामगिरो, जामगी।

जामकीदार-स०पु०—एक प्रकार की बदूक जो पलीता लगा कर छोडी जाय।
(मि० तोडादार)

जांमखी, जामगिरी, जांमगी—देखो 'जामकी' (रू भे)
उ०—चाकर कनै थी जिकण कना जाम्मगी काळ'रै लागी थी। अर भील री काळ री घडी आय वागी थी।
—प्रतापसिंह म्होकमसिंह री वात

जामघोस-स०पु० [स० यमघोप] मुर्गा।

जामण-स०स्त्री० [जामि=सती साध्वी स्त्री+रा प्र ण] १ माता, जननी।
उ०—पूत महा दुख पाळियो, वय खोवण थण पाय, एम न जाण्यो आवही, जामण दूध लजाय।—वी स.
यौ०—जामणजाई, जामणजायो।
अल्पा०—जामणडी।
२ जन्म। उ०—छूटा जामण मरण सू, भवसागर तिरियाह। मुवा जूझ जे रण मही, वे नर ऊवरियाह।—वा दा.

जामिनी—स०स्त्री० [फा०] जमानत, जिम्मेवारी ।
[स० यामिनी] रात्रि।
रू०भे०—जामनी ।
जामिप—स०पु० [स० जामिप] बहिन का पति, बहनोई। उ०—तिण री एकसकार तदि, जामिप धन वय जोर । रुपाजीवा रूप री, जिण गुणियी अति सोर।—व भा.
जामिय, जामी—स०पु० [स० जामातृ=प्रभू, स्वामी] (स्त्री० जामण) १ पिता। उ०—जग अघ हरण सुरसुरी जामी। राज तणा चरणा रघुरजा।—र ज प्र
२ स्वामी. ३ योगाभ्यासी, योगी ।
मि०—'जामिए' ।
४ यमराज, यम।
जामीत—स०पु० [स० जामातृ] पिता ।
जामु, जामु—क्रि०वि० [स० यावत्] १ जब । उ०—अरजुनि जामु दळ निरदळ, राय तणु ता सूकउ गळ।—प.प च
२ देखो 'जाम्हो' (रू भे.)
रू०भे०—जामू।
जामुण—देखो 'जामुन' (रू भे)
जामुणी—स०पु०—१ जामुन का वृक्ष ।
वि०—जामुन के रग का।
जामुन—स०पु० [स० जबु] १ गरम देशो में होने वाला एक सदाबहार वृक्ष। गरमियो मे इसके बडे-बडे बेर के आकार के काले काले फल लगे होते हैं २ इस वृक्ष का फल ।
रू०भे०—जामुण, जामून ।
जामू—देखो 'जामु' (रू भे)
जामूत—देखो 'जाबवान' (रू भे) उ०—दहू जेम जुट्टे मधु कीट दानू, मनी हेत सीक्रम्न जामूत मानू।—ला रा
जामून—देखो 'जामुन' (रू भे)
जामेत—स०पु०—योद्धा, बहादुर। उ०—मोह टाळा पूरा मरी जुध वाका जामेत। घिर चमराळा घूमरा लाख दळा अख लेत।—पा प्र.
जामोपत्त—स०पु०—सन्तानोत्पत्ति। उ०—मझि समदा वीट घर, जळ सू जामोपत्त। किणही अवगुण कूझडी, कुरळी माझिम रत्त।
—ढो मा.
वि०—जन्मा हुआ।
जामो—स०पु० [फा० जाम] १ एक प्रकार का चुनतदार घेरदार पहनावा। उ०—जरदोजी जामो वण्या, पादु सुथन पाइ। साहिब घरे पधारिया, सो गळ वळगु जाई।—व स.
२ पुत्र, बेटा। उ०—सुण रावण वात सकामा नू, मारीच बुलाग्रो गामा नू। जा तू छळ दसरथ जामा नू, मिळ ल्यावा तिणसू बामा नू।—र रू
[स० जन्म] ३ जन्म।
उ०—१ भगत बीज पलटै नही, जे जुग जाय अनत। ऊच नीच घर जामा लहै, तोई रहे सत का सत।—सतवाणी
उ०— २ आगली असतरी सुण नै मेहल सू उतर नै करवत लीन्हो। करवत लेता कह्यो—इणहीज भरतार री असतरी होयज्यो। इतरो कहत पाण धरती पडी सो पडता गाय रो हाड पगै लागो। सो अलावदी पातसाह रै घरै जामो पायो।—वीरमदे सोनगरा री बात
जामोत—स०पु० [स० जामातृ] दामाद, जंवाई।
जाम्य—वि० [स० याम्य] १ यमराज सम्बन्धी, यमराज का
२ दक्षिण का।
स० स्त्री० दक्षिण। उ०—सारी ओरग साह सूं, दाखे दूत विगत्त। दुग्ग अकब्बर जाम्य दिस, गा पतराव जुगत्त।—रा रू.
जावण—देखो 'जामण' (रू भे)
जावणी—देखो 'जामणी' (रू.भे)
जावळणो, जावळबो—क्रि०अ०—साथ होना, शामिल होना।
उ०—'कमा' हरी 'गिरवर' रिण कालो, 'पीथलिआ' जावळि प्रोचाळो।
—वचनिका
जावळि—देखो 'जामळ' (रू भे) उ०—वेटो जावळि बाप, 'रासो' 'रैणाइर' तणो। गज 'केहर' रिण गाजियो, नोडेवा खळ ताप।
—वचनिका
जावो—स०पु०—एक प्रकार का सरकारी कर।
जासारी—स०स्त्री०—जूआ।
जाह्नवी—स०स्त्री० [स० जाह्नवी] गगा नदी। उ०—विसवामित्र रघुपति वदति, ए जगपावन जाह्नवी।—रामरासो
जा—स०स्त्री०—माता, जननी २ योनि ३ फासी (एका०)
वि०—१ उत्पन्न (एका०) ज्यू०—गिरजा।
२ वृद्ध ३ चतुर (एका)
सर्व० [स० यद्] १ जो २ जिस। उ०—उत्तर आज स उत्तरउ, पाळउ पडइ असेस। दहिसी गात जु विरहणी, जा का प्री परदेस।
३ जिन। —ढो मा
जाअ—वि० [स० जात] उत्पन्न (जैन)
जाइ—वि० [स० यायिन्] १ जाने वाला (जैन)
२ जितना। उ०—रूप लखण गुण तणा रुखमिणी, कहिवा सामरथीक कुण। जाइ जाणिया तिसा मैं जपिया, गोविंद राणी तणा गुण।—वेलि
सर्व०—जिम, जिन। उ०—१ दधि वीणि लियो जाइ वणतो दीठो, साखियात गुण मैं ससत। नासा अग्रि मुताहळ निहसति, भजति कि सुक मुख भागवत।—वेलि
उ०—२ क्रित करण अकरण अन्यथा करण, सगळे ही थोके समरथ। हालिया जाइ लगाया हू ता, हरि साळै सिरि थापै हत्थ।—वेलि
स०स्त्री० [स० जाति] १ जन्म, उत्पत्ति (जैन)। २ एक इन्द्रिय द्विइन्द्रिय आदि पाच जाति (जैन)। ३ मद्य विशेष (जैन)।
४ देखो 'जाति' (रू भे.) (जैन)

लगाई। लुळ लुळ लगन पगन लागण री, जागण माय जगाई।
—ऊ का

स०स्त्री०—अग्नि (ह ना)

जागणो—वि० (स्त्री० जागणी) जगने वाला। उ०—डाकणी पापणी सापणी, भामणी भोगणी भेद दे रोगणी। जोगणी जागणी भूतणी लागणी, भूकरी सूकरी काकणी कूकरी।—ह.पु वा

जागणो, जागबो—क्रि०अ० [स० जागरणम्] १ जाग्रत होना, नीद से उठना। उ०—घाली टापर बाग मुखि, झेक्यउ राजदुआरि। करहइ किया टहूकडा, निद्रा जागी नारि।—ढो मा.

कहा०—१ जागते नै जगावणो दो'रो है—जागते हुए को जगाना कठिन है। जान-बूझ कर सोये हुए व्यक्ति को जगाना मुश्किल है। जान-बूझ कर गलती करने वाले व्यक्ति को समझाना कठिन है २ जागतो घुररावणो—जान-बूझ कर गलती करने वाले के प्रति।

२ विख्यात होना, फैलना, चमकना। उ०—लागी हर हू ता लगन, जागी क्रीत जिकाह। वडभागी वै वाकला, त्यागी नाम तिकाह।
—वा दा

३ उत्तेजित होना ४ अग्नि का प्रज्वलित होना ५ जगमगाना ६ उन्नति करना।

जागणहार, हारौ (हारी), जागणियौ—वि०।

जगवाडणो, जगवाडवो, जगवाणो, जगवाबो, जगवावणो, जगवावबो, जगाडणो, जगाडवो, जगाणो, जगाबो, जगावणो, जगाववो—प्रे०रू०।

जागिओडो, जागियोडो, जाग्योडो—भू०का०कृ०।

जागीजणो, जागीजबो—भाव वा०।

जगणो, जगवो, जागवणो, जागववो—रू०भे०।

जागतारण—स०पु०यौ० [स० यागत्रातृ] यज्ञ का उद्धार करने वाला। यथा—विष्णु, ईश्वर, श्रीराम।

जागती—स०स्त्री०—देखो 'जगती' (रू भे)

जागतीकळा, जागतीजोत—१ किसी देवी या देवता का चमत्कार २ दीपक।

वि०—प्रभावशाली।

जागदत्ती—स०पु० [स० याज्ञदत्ति] कुबेर।

जागवळिक—स०पु० [स० याज्ञवल्क्य] याज्ञवल्क्य।

जागर—स०पु०—श्वान, कुत्ता (ह ना)

वि०—जागृत रहने वाला, निद्रा के अभाव वाला (जैन)

जागरण—स०पु० [स०] १ किसी पर्व, व्रत या धार्मिक उत्सव मे बिना नीद लिये भगवद भजन करते हुए जाग कर सारी रात्रि बिता देना २ निद्रा का अभाव, जागने का भाव। उ०—राता तत चितारत चितारत, गिरि कदरि बिन्हे गया। निद्रावस जग एहु महा निसि, जामिए कामिए जागरण।—वेलि.

रू०भे०—जागण।

जागरवाळ—स०पु०—पुरोहित ब्राह्मणो का एक भेद विशेष जो अपने को वाल्म ऋषि की सतान कहते हैं। ये सिंघल राठौडो के पुरोहित है (मा.म)

जागरि—वि० [स० जागृत] जागरण। उ०—घरि आवी इम चितवइ, अजे सीम बहु रात। धरम जागरि जागता, प्रकटाणउ परभात।
—ऐ जै का.स

जागरिया—स०स्त्री० [स० जागर्या] १ चितवन २ विचार (जैन)

जागरी—स०पु० [स०] एक जाति विशेष जिसकी कन्यायें प्राय' वेश्यावृत्ति करती हैं (मा.म)

जागरूक—स०पु० [स०] १ वह जो जाग्रत अवस्था मे हो २ चैतन्य, सावधान।

जागळ—स०स्त्री०—एक प्रकार की बढिया मछली।

जागवणो, जागववो—१ देखो 'जागणो, जागबो' (रू भे)

उ०—१ तोही जोध न जागवै मुदगर उडाया।—केसोदास गाडण

उ०—२ जोवै जा ग्रहि-ग्रहि जगन जागवै। जगनि जगनि कीजै तप जाप।—वेलि

देखो—२ 'जगाणो, जगाबो' (रू भे)

उ०—१ मोती-जडी ज हाथि, सुरह-सुगधी वाटली। सूती माझिम राति, जाणू ढोलू जागवी।—ढो मा.

उ०—२ सुरह सुगधी वास, मोती काने झुळकते। सूती मदिर खास, जाणू ढोलइ जागवी।—ढो मा.

जागवणहार, हारौ (हारी), जागवणियौ—वि०।

जागविओडो, जागवियोडो, जागव्योडो—भू०का०कृ०।

जागवीजणो, जागवीजबो—भाव वा०।

जागवलक—स०पु० [स० याज्ञवल्क्य] याज्ञवल्क्य ऋषि।

जागवी—स०स्त्री०—अग्नि (ना मा)

जागसेनी—स०स्त्री० [स० याज्ञसेनी] द्रौपदी।

जागा—स०स्त्री—१ पवार वश की एक शाखा २ वशावलि लिखने वाले भाटो की एक शाखा (मा म)

३ देखो 'जगा' (रू भे)

जागात—स०स्त्री०—देखो 'जकात' (रू भे)

उ०—कुवर महाराज सू अरज कीवी—नायक आछी जागात भरी, भली भाति वसता नजर कीवी, हुकम हुवै तौ सिरपाव दीजै।
—पलक दरियाव री वात

जागार—स०पु०—पवार वश की एक शाखा अथवा इस शाखा का व्यक्ति।

जागियोडो—भू०का०कृ० [स० जागरित] १ जाग्रत हुवा हुआ, नीद से उठा हुआ २ विख्यात हुवा हुआ, फैला हुआ, चमका हुआ ३ उत्तेजित हुवा हुआ ४ (अग्नि का) प्रज्वलित हुवा हुआ। ५ जगमगाया हुआ ६ उन्नति किया हुआ।

(स्त्री० जागियोडी)

रू०भे०—जगियोडो।

२ गलीचा, कालीन।

रू०भे०—जाजिम।

जाजमलार-स०पु० [तु० जाजामलार] सपूर्ण जाति का एक राग (सगीत)

जाजमाज, जाजमाट, जाजमाठ-वि०—कम, थोडा।

जाजरउ-वि० [स० जर्जर] वृद्ध, बूढ़ा, जीर्ण, कमजोर (उ.र)

जाजरणो, जाजरबो-क्रि०स० [स० जृ वयो हाने] १ सहार करना, मारना। उ०—उडवती गुरिज गुरिज भुज आहवि, सत्र घड जाजरतो सनढ। अकबर साहि ईखियो 'ईसर', गढ़ ऊपर चालतो गढ़।—ईसरदास मेडतिया रो गीत

जाजरियोडो-भू०का०कृ० [स० जाजरित] सहार किया हुआ, मारा हुआ। (स्त्री०-जाजरियोडी)

जाजरी-वि० [स० जर्जर, प्रा० जज्जर] जो बहुत हो जीर्ण हो, जर्जर। उ०—माथउ धवळउ देह जाजरी। वाकउ वासउ भवइ लालरी।

—चिहुगति चउपई

जाजरू-स०पु० [फा० जा+अ० जरूर] १ शौचालय। उ०—उतरै माही बादसाह नू जाजरू री जरूरत हुई तद एक छोकरी नू कह्यो—लोटियो मेल्ह।—महाराजा जयसिंह आमेर रा वणी री वारता (मि० 'तारत')।

२ कुए की तरह का एक प्रकार का गहरा पाखाना, शौचकूप।

वि०वि०—यह जमीन के नीचे खोदा हुआ एक प्रकार का गहरा गड्ढा होता है जिसका ऊपरी भाग ढका रहता है, केवल एक छिद्र बना रहता है जिस पर बैठ कर मल त्याग करते हैं। आधुनिक समय मे इस गड्ढे का तल पृथ्वी तल पर ही होता है। मकान के बाहर की ओर इस गड्ढे से सबधित एक खिडकी रहती है जिसमे से मेहतर आकर मल उठा ले जाता है।

(मि० 'सडास')।

जाजळ-स०पु०—जल का बडा बर्तन जिसमे स्नान करने का पानी गर्म किया जाता है (रा सा स)

जाजळमान, जाजळमानू—देखो 'जाजुळमान' (रू भे)

उ०—१ जाजळमान भयकर जोसा। पाडू बह खळ बगतर-पोसा।

—सू प्र

उ०—२ ओळखियो तो केही नही पण फकीर जाजळमान सो तपस्या वाळो माणस छानो न रहै।—नी प्र

जाजळी-वि० [स० जाज्वली] भयकर, जबरदस्त।

उ०—जाजळी फौज मुगळी सजोर, कर दिल्ली सिली दस्तूर कोर। इम हले खेत सनमुख असाध। विख नदी उज्जळी हूत बाध।

—वि.स.

जाजामलार-स०पु० [तु०] सपूर्ण जाति का एक राग (सगीत)

जाजिम—देखो 'जाजम' (रू भे)

जाजी-वि०स्त्री०—देखो 'जाजो' (रू.भे)

स०पु० [स० याजि] यज्ञ करने वाला।

जाजीव-अव्य० [स० यावज्जीवनम्] जीवनपर्यन्त (जैन)

जाजुळ-वि०—भयकर, जबरदस्त। उ०—धूम सुणे चख आग धकतरै। जाजुळ ग्राह जागियो जतरै।—र ज प्र.

२ क्रुद्ध, क्रोधित। उ०—जाजुळ दुजराज करण जुध जाडो, तस कुठार दगतायळ। राह वरात ईस अजरायळ, आय'र ऊभो आडो।

—र रू

३ जाज्वल्यमान, तेजस्वी। उ०—१ उससे लडण इद्रजीत हूँ, जाजुळ भड अगजीत रा।—सू प्र. उ०—२ विचि निमिर घोर गोळा वहै, जाजुळ मगळ जोति ग। अम्ह सम्हां जाणि लागा उडण, सिखर मुकति साजोति रा।—सू प्र

रू०भे०—जाजुळि, जाजुळी।

जाजुळमान-वि० [स० जाज्वल्यमान] तेजस्वी, तेजवान।

उ०—१ उण ग्रह अग्र तन कनक अरोगी। जाजुळमान तपै इक जोगी।—सू प्र उ०—२ आया हुसन अली अजरायळ, जाजुळमान भयकर जज्जर।—सू प्र

रू०भे०—जाजळमान, जाजुळमानो।

जाजुळि—देखो 'जाजुळ' (रू भे) उ०—१ छूटै प्राण पाव नह छूटै। जाजुळि एम दहू दळ जूटै।—सू प्र.

उ०—२ जाजुळि बरव्वा रोहा भडगी अरोहा जच्चे। वडगी अरोहा राचै आसमान वीच।—हुकमीचद खिडियो

जाजो-वि० (स्त्री० जाजी) १ बहुत, अधिक। उ०—रामा पीर ऊनी रूणेचा रै माहि, मागू पूत रतना री जोड। कुळ मे वहुवा री जाजो भूलरो।—लो.गी.

२ सघन, घना।

रू०भे०—जाभो।

जा'भ—देखो 'जा'ज' (रू भे.)

स०स्त्री०—बैलगाडी पर लगाने की टट्टी (किसनगढ)

उ०—हेलो! जग मे जतन हुत, हाण न लेस हुवत। जाभो गाडी पर जच्या, खान न भरयो खिरत।—रेवतसिंह भाटी

जाभो-वि०स्त्री०—देखो 'जाभो' (रू भे) उ०—१ वडा बोलतो बोल, वाता घणी वणातो, जोम छक जणातो ठसक जाभी। 'सदा' री अवाज 'सेर' ऊभो समर, मुदायत 'हरा' रा आव माभी।

—पहाडखा आढो

उ०—२ केसर तो रळायी जाभा नीर मे, जाभी नीर मे, जी म्हारा राज।—लो गी

जाभेरा-वि० (स्त्री० जाभेरी) अधिक। उ०—घणी ज्वार हुवै सखरी साख हुवै छै, ताहरा कण नेपत गोहूँ मण २००००० तथा ३००००० जाभेरा हुवै छै।—नैणसी

जाभो—देखो 'जाजो' (रू भे) उ०—१ कोई भावजडया त चमक्यो जाभो भूमखो ए मोरी सइया।—लो गी

उ०—२ खडणो भाभे भार सित, वापू का रे बोल। नही उचित करणो नरा, धवळा हदो मोल।—बा दा.

जात–वि०—उत्पन्न, जन्मा हुआ २ कुलीन।
सं०पु० [सं०] १ जीव, प्राणी।
सं०स्त्री० [सं० यात्रा] २ मनौती, अभिष्टपूर्ति पर किसी देवता की पूजा का सकल्प, मिन्नत। उ०—सेत्रू जो पिए गोहिला रै छै। पालीतार्णं सिवो गोहिल छै, तिको जात करण आवै छै।—नैणसी
३ विवाहोपरात वर वधू का देव-स्थानो पर देव तुष्ठ-यार्थ जाना और नैवेद्य आदि चढ़ाना।
क्रि०प्र०—करणी, देंणी।
४ यात्रा, तीर्थ यात्रा। उ०—१ जात करण जगदीस री, ईस नवै परकार। चैत मास पख चादणै, 'अजन' थयौ असवार।—रा रू
उ०—२ अकबर पातिसाह ख्वाजा री जात आयो थो तरै मिळिया।
—राव चद्रसेन री वात
५ देखो 'जाति' (रू भे)
मुहा०—जात जणाणी, जात जताणी—जाति-स्वभाव प्रकट करना।
अल्पा०—जातडली, जातडी।
जातक–स०पु० [सं०] १ फलित ज्योतिष का एक भेद. २ एक प्रकार की बौद्ध कथायें ३ बच्चा।
जातकभरण–देखो 'जातिका भरण' (रू.भे.) (सू प्र.)
जातकम्म, जातकरम, जातक्रमय–स०पु० [सं० जातकर्म्म] बालक के जन्म के समय होने वाला हिन्दुओ के दस सस्कारो मे से चौथा सस्कार। उ०—वसिस्ठ आदि ब्रह्मय करत जातक्रमय। हलद कुकुम हरी, करत छोह केसरी।—सू प्र
रू०भे०—जातिकरम।
जातडली, जातडी—देखो 'जात' (अल्पा रू भे.)
उ०—कहा तुमारो नाम जु कहियै, कहा तुमारी जातडली।
भगत बिडद मेरो नाम जु कहियै, जादो हमारी जातडली।
—मीरा
जातणा–स०स्त्री० [सं० यातना] यातना, पीडा (जैन)
रू०भे०—जातना।
जातणौ, जातबौ–क्रि०स० [सं० यात्राकरण या यात्रण] पूजन करना।
उ०—जातण आवै थारै कुळवहू, गोद झडूला जी पूत।—लो गी
जातधान–स०पु० [सं० यातुधान] राक्षस (ना मा)
जातना—देखो 'जातणा' (रू भे)
जातपात–स०स्त्री०यौ०—जाति-बिरादरी।
रू०भे०—जातिपाति।
जातवेद, जातवेध–स०स्त्री० [सं० जात वेदस्] अग्नि (डि को, ना मा)
जातरा–स०स्त्री० [सं० यात्रा] १ यात्रा। उ०—जन्मभूमि मे करै जातरा, पाप प्रबळ पिळ जावै। पुन्न पाछला होवै पूरा, आ मन मे जद आवै।—ऊ का.
२ तीर्थाटन।
रू०भे०—जात्र, जात्रा।
जातरी–स०पु० [सं० यात्री] १ यात्रा करने वाला यात्री, पथिक
२ तीर्थाटन करने वाला। उ०—जिका दाकलै जातरी पोढ जावै। गुसाईं रहै जागता राग गावै।—मे म
रू०भे०—जातरू, जात्री।
अल्पा०—जातीडो।
जातरू–स०पु०—१ गाडी मे लगाया जाने वाला लकडी का डडा जो बोझा ढोने के निमित्त माकडे मे सीधा खडा किया जाता है। ऐसे चार डडे लगाये जाते हैं।
रू०भे०—जातू।
२ देखो 'जातरी' (मा म)
रू०भे०—जातरू।
जातरूप, जातरूपक–स०पु० [सं०] १ धतूरा २ स्वर्ण (ह ना, अ मा.)
३ चादी (अ मा, ह ना.)
जातरूव—स०पु० [सं० जातरूप] देखो 'जातरूप' (जैन)
जातविरुद्ध–स०पु०—डिंगल गीतो के अन्तर्गत एक प्रकार का दोष।
वि०वि०—जिस राजस्थानी गीत के प्रत्येक द्वाले मे अन्य गीतो के मात्रा, वर्ण आदि के नियमानुसार चरण या पक्ति प्रयोग की गई हो, वहा ऐसा दोष माना जाता है।
जातवेद–स०स्त्री० [सं० जातवेदस्] अग्नि (ह ना मा)
जातशिखडी–स०पु० [सं० शिखडी जात] बृहस्पति (अ.मा)
जातासख–वि०—मूर्ख, बेवकूफ।
जाति–स०स्त्री० [सं० जाति] १ हिन्दू समाज मे कर्मानुसार किया गया मनुष्यो का विभाग। बाद मे यह जन्मानुसार ही माना जाने लगा। वश-परपरा, निवास-स्थान या व्यवसाय से भी कुछ उपविभाग बन गये २ गुण, धर्म, आकृति के आधार पर किया गया विभाग ३ वश, कुल ४ सामान्य नैयायियो के मत के अनुसार एक प्रकार का व्यापक धर्म ५ जन्म, उत्पत्ति ६ चमेली का फूल या पौधा (उ र)
७ मालती का फूल या पौधा।
रू०भे०—जाई, जात, जाती।
जातिकम्म—देखो 'जातिकरम' (रू भे, जैन)
जातिकरम—देखो 'जातकरम' (रू भे)
जातिकाभरण–स०पु०—ज्योतिष का एक ग्रन्थ। उ०—दहू ग्रहा जोडि फळ किसू दाखि। सुजि कहू जातिकाभरण साखि।—सू प्र
जातिधरम–स०पु०यौ० [सं० जातिधर्म] जाति या वर्ण का धर्म, जातिगत कर्त्तव्य।
जातिपाति—देखो 'जातपात' (रू भे)
जातिफळ–स०पु० [सं० जातिफल] जायफल।
रू०भे०—जातीफळ।
जातिब्राह्मण–स०पु०यौ० [सं०] जो केवल जन्म से ब्राह्मण हो किन्तु ब्राह्मण के कर्मों का जिमे ध्यान न हो।
जातिसकर–स०पु०यौ० [सं०] वर्णशकर, दोगला।

जादुनाथ–स०पु० [स० यादवनाथ] यदुनाथ, श्रीकृष्ण ।
जादुपत, जादुपति–स०पु० [स०] यादवपति १ श्रीकृष्ण । उ०—स्री जादुपति नै वीनवा जी, स्रीपति अलख अभेव ।—रुकमणी मगळ
स० [यादस्+पति] २ समुद्र, सागर ।
जादुराण–स०पु० [स० यादवराज] यादवपति, श्रीकृष्ण ।
जादू–स०पु० [फा०] १ आश्चर्यजनक, अलौकिक या अमानवीय कार्य या इद्रजाल ।
क्रि०प्र०—करणौ, चलणौ, होणौ ।
२ दर्शकों की बुद्धि या दृष्टि को धोखा देकर किया जाने वाला खेल ३ दूसरे को मोहित करने की शक्ति ४ यादव वश का क्षत्रिय ।
उ०—हव जादू जसवस हुवौ, जग जाहर जेठ्ल्ल । चारण चाहै ज्यू करै, भाळै भारहमल्ल ।—वा.दा
जादूगर–स०पु० [फा०] जादू के खेल करने वाला ।
जादूगरी–स०स्त्री०—१ जादूगर का कार्य २ जादू करने की क्रिया ।
जादूनजर–स०पु० [फा०] जिसमे दूसरो को मोहित करने की शक्ति हो ।
जादौ–वि० [फा० जाद = स० जात] उत्पन्न ।
(स्त्री० जादी) यह प्राय यौगिक शब्दो के अन्त मे प्रयुक्त होकर उत्पन्न का अर्थ देता है, ज्यू–शाहजादौ, हरामजादौ ।
स०पु० [स० यादव] यदु के वशज, यादव । उ०—कहा तुमारौ नाम जु कहियै, कहा तुमारी जातडली । भगत विडद मेरौ नाम जु कहियै, जादौ हमारी जातडली ।—मीरा
जादौराय–स०पु० [स० यादवराज] यादवपति, श्रीकृष्ण ।
जाप–स०पु० [सं०] किसी मत्र या स्तोत्र का वार-वार मन मे किया जाने वाला उच्चारण । उ०—समुद्र के क्रत सनान, रुद्र जाप रच्चय । घट सक्रम्म वाटि खाइ, आप वाट अच्चय ।—सू प्र
२ देखो 'जप' (रू भे)
जापक–स०पु० [स०] जप करने वाला ।
जापजप–स०पु०यौ० [स०] जप तप ।
जापणौ, जापवौ—देखो 'जपणौ, जपवौ' (रू भे)
उ०—जस जापै रे जस जापै, ते सत हरे त्रिण तापै ।—र ज प्र
जापत–स०स्त्री० [अ० जियाफत] १ भोज, दावत. २ प्रवन्ध, इतजाम ।
जापताई–स०स्त्री० देखो 'जापतौ' (रू भे) उ०—आपरा जतना नु माणस ५०१ जवान गुरज झलाय नै पाळा हाथी री च्यारू तरफ राखीया । बीजा ही आपरा असवार था सु नेडा राखीया । घणी जापताई कीजी ।—राव मालदेव री वात
रू०भे०—जाबताई ।
जापतौ–स०पु० [अ० जाबित.] (वहु व० 'जापता') १ इतजाम, प्रवध । उ०—कोई मीणौ भील दौडतौ जिका नू सूधा क्रिया वधे लगाया सो इसो जापतौ कियौ तीसू कठै ही लूट कोस चोरी री नाम न रहियौ ।
—गौड गोपाळदास री वारता
२ रक्षा, हिफाजत । उ०—जदी राजा कोटवाळ नै बुलायौ । कहै सेर री जापता राख । अर खबर करौ किसा चोर छै ।
—पचमार री वात
३ कानूनी न्याय ४ कानून ।
रू०भे०—जाब्तौ, जाव्तौ ।
जापान–स०स्त्री०—ऐशिया मे चीन के पूर्व मे उत्तर की ओर स्थित एक द्वीप समूह ।
जापानी–स०पु०—१ जापान देश का व्यक्ति ।
स०स्त्री०—२ जापान देश की भाषा ।
वि०—जापान सबधी, जापान का ।
जापाघर–स०पु०—सूतिका-गृह ।
जापायती–वि०—प्रसूता ।
जापी–स०पु० [स० जापिन] जप करने वाला व्यक्ति ।
जापूनौ–स०पु०—वह बैल जो शकट, हल आदि मे जोतते ही बैठ जाय, अशक्त, निर्बल ।
वि०—निकम्मा ।
जापैलेदिन, जापैलैदिन–स०पु०—वर्तमान समय से गत या आने वाला पाचवा या छठा दिन ।
जापौ–स०पु०—प्रसव ।
जाप्य–स०पु० [स० याप्य] १ वह रोग जो साध्य न हो किन्तु चिकित्सा करने से ठीक हो सकता हो ।
२ ऐसा रोग जो ठीक न हो परन्तु उचित पथ्य एव उचित औषधियो के प्रभाव से कुछ समय तक शरीर को जीवित रक्खा जा सके । (अमरत)
जाफ–स०स्त्री० [अ० जोफ] बेहोशी, मूर्च्छा ।
मि०—तमाळ, गस ।
जाफत–स०स्त्री० [अ० जियाफत] १ भोज, दावत. २ अतिथिपूजा मेहमानदारी ३ देखो जावत (रू भे)
जाफरा, जाफरान–स०स्त्री० [अ० जाफरान] १ केसर (अ मा)
२ फूल, पुष्प (अ.मा.)
जाफरानी–वि०—केसर के समान रग वाला, केसरिया ।
जाफरानी ताव–स०पु०—पीलापन लिये हुए एक प्रकार का उत्तम तावा जो सोने व चादी मे मिश्रण के काम मे लिया जाता है ।
जाफरी–स०स्त्री० [अ० जाफरान] केसर । उ०—स्वच्छ कपोळ महेळिया, मभ्र छवि न कू मिणाह । पात समर सोनी किया, जर जाफरी तणाह ।
—वा दा
जाब–स०पु०—१ हिसाब । उ०—जिसै अरज हुई कै करमचद हाजर है । तद तेजसी लालै साखलै नू कही, जो हू गावा री जाब काढू तारा थे लोह कीज्यौ ।—द दा
२ उत्तर, जवाब । उ०—१ दई दैत्य जाणै इसो जाब दीधौ । कळा अ्रिघ रौ भेख मारीच कीधौ ।—सू प्र.
उ०—२ 'केसू' कौ सुवा को वैर आपा काढ लीनू । अब तो या नवावा नै ठिकाणा जाब दीनू ।—शि.व

जायनमाज–स०स्त्री०यौ० [फा० जायनमाज] वह वस्त्र जिस पर बैठ कर मुसलमान नमाज पढता है ।

जायपत्री–स०स्त्री०यौ० [स० जातिपत्री] एक प्रकार का सुगंधित छिलका जो जायफल के ऊपर से उतारा जाता है (अमरत)

उ०—लवग, जायफळ, जायपत्री, पाका नागर वेल ना पान ।—व.स

जायफळ–स०पु० [स० जातिफल] अखरोट से कुछ छोटा एक प्रकार का सुगंधित फल जिसका व्यवहार औषधि मे होता है ।

रू०भे०—जाइफळ ।

जायरूव–स०पु० [स० जातरूप] सोना (जैन)

जायल–स०पु०—चौहान वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

जायलियौ–स०पु०—चौहान वश की जायल शाखा का क्षत्रिय ।
(अल्पा रू भे)

जायव—देखो 'जादव' (रू भे , जैन)

जायवेय—देखो 'जायतेय' (रू.भे , जैन)

जाया–स०स्त्री० [स०] १ स्त्री, महिला । उ०—अर जवन जातीय जाया आपरै उचित न हू ती तौ भी पातसाह री पुत्री जाणि स्वकीय साहस नू सफळ होण री अवसर दीधौ ।—व भा

२ जन्मकुडली मे लग्न से सातवाँ योग ।

[स० यात्रा] ३ यात्रा ४ शरीर-निर्वाह (जैन)

जायाइ, जायाई–स०पु० [स० यायाजिन्] यज्ञकर्त्ता, याजक ।

जायाजीव–स०पु०यौ० [स०] अपनी स्त्री के द्वारा जीविका उपार्जित करने वाला व्यक्ति ।

जायी–स०पु० [स० जायिन्] सगीत का एक ताल ।

जायोडौ–भू०का०कृ० [स० जात+रा प डौ] १ जन्मा हुआ ।

उ०—ताहरा साह कह्यौ—घरे जायोडौ छै । इणरी दाई मौजूद छै ।
—पलक दरियाव री वात

२ जन्म दिया हुआ, पैदा किया हुआ । उ०—आडी ओखळिया खायोडा आधा । लाडा-कोडा मे जायोडा लाधा ।—ऊ का
(स्त्री०–जायोडी)

रू०भे०—जयोडी ।

जायौ–वि० (स० जात 'जाणौ' क्रिया का भूतकालिक रूप) १ उत्पन्न किया, जन्म दिया २ उत्पन्न हुआ, जन्म लिया ।

उ०—वैरसी वाघावत पेट हुता सु मुहतौ सुगणौ इणरी मा नू ले नै अजमेर गयौ । उठै गया पछै वैरसी वेगौ ही जायौ ।—नैणसी

कहा०—१ जाया जीका पूत नै कात्या जीका सूत—जिसने जन्म दिया उसी का पुत्र व जिसने काता उसी का सूत है । गोद लिये या दूसरो के लडके काम नही आते । अवसर पडने पर घर का उत्पन्न लडका ही काम आता है २ जाया जेडा ही परणाय देवौ—मूर्ख व्यक्ति के प्रति ३ जाया नै वाया होता काई जेज—उत्पन्न सतान तथा अकुरित पौधे बडे होते देर नही लगाते । उत्पन्न होने के बाद पुन शीघ्र बडा होने लगता है ।

स०पु० [स० जात] (स्त्री०—जाई, जायी) १ पुत्र, लडका ।

उ०—जोडै 'करन' 'मुकन' चौ जायौ । ओ वळ करन, करण कळ आयौ ।—रा रू

२ बच्चा । उ०—इण खारच री बीचली भाग गूगला री काकड बाजै जठै धवळा दिन रा ई मिनख तौ काई चिटी री जायौ ई नही मिळै ।—रातवासौ

जारग–वि०—हजम करने वाला । उ०—जहर विसम जारग भुजा धारग भुजगम । भाल तेज भारग जरा हारग लसे जम ।—सू प्र

जार–स०पु० [स०] (स्त्री० जारणी) १ पराई स्त्री से अनुचित सबध रखने वाला, यार । व्यभिचारी । उ०—वाणी हर बीसार कर, वचै आन कु-बाण । नार छाड पति आपणी, जार विलग्गी जाण ।
—ह र

रू०भे०—जारौ ।

अल्पा०—जारटौ ।

[लै० सीजर] २ रूस के सम्राट की उपाधि

(रा०) ३ ध्वंश; सहार । उ०—जुध जार दस सिर कुभ जेहा, सकळ काम सुधार ।—र ज प्र.

(मि० जारणौ, ३)

जारकरम–स०पु०यौ० [स० जारकर्म्म] व्यभिचार ।

जारज–स०पु० [स०] उपपति या यार से उत्पन्न किसी स्त्री की सतान ।

जारजजोग, जारजयोग–स०पु०यौ० [स० जारजयोग] फलित ज्योतिष के अनुसार बालक के जन्मकाल मे वार, तिथि व नक्षत्र के मेल से होने वाला एक योग विशेष जिसमे जन्म लिया हुआ बालक अपने औरस पिता का पुत्र नही माना जाता है ।

वि०वि०—बालक के जन्मकाल मे लग्न या चन्द्र अथवा सूर्ययुक्त चन्द्र अथवा अन्य पापग्रह सहित सूर्ययुक्त चद्र पर गुरु की दृष्टि न हो तो जारज योग होता है । भद्रा (द्वितीया, सप्तमी या द्वादशी) तिथि मे रवि मगल या शनिवार को त्रिपाद (विशाखा, पुनर्वसु या पूर्वा भाद्रपद) नक्षत्र मे से कोई एक नक्षत्र हो तो भी जारज योग होता है । मतान्तर से, (१) उपरोक्त नक्षत्रो के अतिरिक्त कृत्तिका, मृगशिरा, उत्तराषाढा, घनिष्ठा नक्षत्रो मे, (२) द्वितीया तिथि, रविवार और स्वाति नक्षत्र, (३) सप्तमी तिथि, बुधवार और रेवती नक्षत्र, (४) द्वादशी तिथि शनि या रविवार और घनिष्ठा नक्षत्र, (५) अष्टमी तिथि रविवार और पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र, (६) चतुर्थी तिथि गुरुवार और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, (७) चतुर्दशी तिथि, मगलवार और उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र मे भी जारज योग होता है । उपरोक्त अवस्थाओ मे कुछ अपवाद भी है जिनकी उपस्थिति मे जारज योग होने पर भी वह बालक जारज नही माना जाता ।

रू०भे०—जारज जोग ।

जारटौ—देखो 'जार' (अल्पा रू.भे)
(स्त्री०–जारटी) ।

जारठ–वि०—वृद्ध ।

५ किसी को फसाने के लिये की जाने वाली युक्ति, किसी को धोखा देने या ठगने के लिये की जाने वाली फरेबपूर्ण कार्यवाही, षडयंत्र, छल। उ०—जाळ खाधो सहिजादे, ढाल गज तू ढाहि। मानडा दळ तणा मडण, माडि पग रिण माहि।—जैतो महियारियो

क्रि०प्र०—करणो, खाणो, फैलाणो, बिछाणो, रचणो, होणो।

मुहा०—१ जाळ मे फमणो—चगूल मे आना २ जाल मे फसाणो—धोखे मे लाना। मुहा०—२ जाळ फेंकणो—किसी को फँसाने या चगुल मे लाने के लिए कोई युक्ति लगाना। किसी काम के लिये कोई उपाय करना। ३ जाळ बिछाणो—किसी को वश मे करने के लिये षडयंत्र या उपाय करना। भरमार होना।

यौ०—जाळ-जपाळ, जाळ-फरेब।

६ मकडी का जाला ७ झुड ८ इद्रजाल, जादू. ९ माया-बधन, सासारिक प्रपच। उ०—पोता रै बेटा थिया, घर मे बधियो जाळ। अब तो छोडो भागणो, कत लुभायो काळ।—वी स.

क्रि०प्र०—बधणो, होणो।

यौ०—जाळ-जजाळ, माया-जाळ।

१० जन्म मरण का बधन, कर्मबधन।

उ०—जाळ टळै मन क्रम गळै, निरमळ थावै देह। भाग हुवै तो भागवत, साभळजै स्रवणेह।—ह र

११ झरोखा १२ मोतियो का गुच्छा १३ मछली पकडने का यत्र १४ पाखड।

मुहा०—जाळ फैलाणो—किसी को अपने वश मे करने का आडबर करना १५ आख की पुतली के ऊपर आने वाली वह झिल्ली जिससे दिखना बद हो जाय १६ समूह, राशि (ह ना.मा)

उ०—१ जळ जाळ माळ विसाळ नभ जुत उरड झड अणपार ए। मिटि जळण धरणि विनोद मानव भूरि सर जळ भार ए।—रा रू

उ०—२ भेळो तै कीवो भलो, जळहर ओ जळ जाळ। धुन मुधरी पुहमी ध्रवै, दुसह निवार दुकाळ।—बा दा

१७ प्याज के कद के परत के भीतर की महीन झिल्ली १८ नीबू के वृक्ष की जड मे होने वाला रोग विशेष जिसके कारण नीबू फलता नही है १९ चासणी या बगार की परिपक्व अवस्था का लक्षण।

क्रि०प्र०—बधणो।

रू०भे०—जाळी।

जाळउर—स०पु० [स० ज्वालापुर] जालोर नगर का नाम (प्राचीन)

उ०—रूपइ सलूणडी, सवे साहेलडी, वेलडी रहीअ रा निहालती ए। टोटडे आवीय, आसूडा रोहावीय, जाळउर परवत वधावीउ ए।

—का दे प्र.

जाळक—वि०—जलाने वाला।

जाळकार—वि०—जाल रचने वाला, षडयंत्रकारी।

स०पु०—मकडी (डिं को)।

जाळकिरच—स०स्त्री०—वह परतला मिली पेटी जिसके साथ तलवार भी लगी हो।

जाळकोसी—स०स्त्री०—पदार्थ विशेष मे बना हुआ छोटे-छोटे छेदो का समूह। उ०—चूडीया गादी प्रमुख नानाविध चउरस चउकीवट, ऊची आडणी, जाळकोसी कुडळी ना प्रयोग पूरा हुआ (व स)

जालग—स०पु० [स० जालक] द्विइन्द्रिय जीव विशेष (जैन)

जाळजीवी—स०पु०यौ० [स० जालजीवी] मछुआ, धीवर।

जाळण—स०स्त्री० [स० ज्वलन] अग्नि (अ मा, ना डिं को)

वि०—जलाने वाला। उ०—जयो दाण(व) वस जाळण, विदेही वाळण।—पी ग्र.

जाळणो—स०पु०—झरोखा, जालीदार झरोखा। उ०—ठाडी किरण मयक जाळणे झिळमिळ करती। मिळै मोट उणमोद, वळै दुख विरह भुळसती।—मेघ

जाळणो, जाळबो—क्रि०स०—देखो 'जळाणो, जळाबो' (रू भे)

उ०—१ सच्च पियारा साइया, साईं सच्च सिवाय। सच्चा अगन न जाळही, सच्चा सरप न खाग।—ह र

उ०—२ सातल सोम हमीर कन्ह जिम जउहर जाळिय।

—अ० वचनिका

जाळदार—वि०—१ जिसके अन्दर जाल की तरह पास-पास छिद्र हो २ कपटी, धूर्त ३ पाखडी, ढोंगी ४ धोखेबाज।

जाळपादेवी—स०स्त्री०—एक देवी का नाम।

जाळप्राया—स०पु० [स० जालप्राया] कवच।

जालम, जालमी—वि० [अ० जालिम] १ झूठा (अ.मा)

उ०—खाली तिको न खोय, जोय वहतो जग जालम। खडिया त्यारी खबर, मिळै नह कीधी मालम।—र रू

२ योद्धा, जबरदस्त, वीर। उ०—नाहर के थाहर, लोह की लाट, जगू के जालम, जम की सी झाट।—ला रा.

३ क्रूर, निर्दयी, अत्याचारी। उ०—बादे बाट घाट पण बादे, जालम किया पिसणा जेर। आयो डड न हुओ आगळिया, माटी-पणो न छूटा मेर।—रावत सग्रामसिंह चूडावत री गीत

कहा०—जालम गुजर जाय, जुलम रह जाय—जालिम मर जाता है पर जुलम रह जाता है—अत्याचारी व्यक्ति मर भले ही जाय किन्तु उसके अत्याचारो की कहानी बाद मे भी कई वर्षों तक चलती है।

रू०भे०—जालिम।

जाळव—स०पु० [स० जालव] एक दैत्य जिसको बलरामजी ने मारा था (पौराणिक)

जालवउणो, जालवउवो—देखो 'झालणो, झालबो'। (रू भे.)

उ०—जउ देखीइ पुच्छनउ आस्फाळवउ तउ कउण कहइ हू एहरइ जाळवउ, रक्तोत्पळ कमळनी परिइ सुकुमाळ ताळउ,।—व स

जाळवणो, जाळववो—क्रि०स० [स०] १ जलाना।

उ०—तारइक खाय डूगर जाळवइए, वहतउ ध्यान प्रवाह।

—ऐ जै का स.

जाता है। उ०—जे कदास कुवाव पडै तो, हाथा वासरा छूटजै। जाळोटूट मे' ना काढै, भाग मरू रा फूटजै।—दसदेव

जाळोदुसालो–स०पु०यौ०—एक मारवाडी लोकगीत।

जाळोवळि–स०स्त्री०—अग्नि, आग। उ०—केसर कथिन्न साभळि कन्नि, वाउलि कि वन्नि लागउ वहन्नि। वीझाहर राजा ए वखारा, जाळोवळि सीतउ भ्रित्त जारा।—रा ज सी

जाळो–स०पु० [स० जाल] १ मकडी द्वारा बुना जाने वाला बहुत पतले-पतले तारो का जाल।

२ ग्राख का एक रोग जिसके कारण पुतली के ऊपर एक सफेद परदा सा पड जाता है ३ अधेरा। उ०—जीभडल्या सूकै इमी, ग्राख्या जाळो ग्राय। बीछडै जद वाखोटिया, करज्यो जाय सहाय।—लू

४ सूत या अन्य धागो द्वारा बना हुआ जाल ५ टोकरे मे व्यवस्थित रूप से जमाये जाने वाले उपलो या कडो का ढेर।

६ देखो 'जाळ' (रू.भे)

जाळयो—देखो 'जळ घर' (अल्पा रू भे)

उ०—इद्र नमो जाळ घर ग्रागं, जाळयो इद्र पछाडी जोय। नमिया लाज नही नागद्रहा, तुड 'मालवत' मुख चढै तोय।

—महाराणा सागा री गीत

जाल्हुर–स०स्त्री०—जालोर नगर का एक नाम (ब्व.)

उ०—लाधउ सुपन राय तिणि वारि, ब्राह्मण देखी करीउ जुहार। पूछइ राय कवरा तु नर, विप्रवेखि हु गढ़ जाल्हुर।—का दे प्र

जावत–वि० [स० यावन्त] जितने (जैन)

जावत्री—देखो 'जावत्री' (रू भे)

जाव–स०पु०—१ वह भूमि जहा कुये के पानी द्वारा सिंचाई की जाती हो. २ मेहदी। उ०—निवेदन चद धजावध नाम, सुणू अब 'इद' सको सगराम। लिया खग खप्पर गेंद गुलाल, खळा घट धावक जाव पखाळ।—मे म

३ देखो 'जाव' (रू भे.)

उ०—नै परधानै नाळेर ल्याया सो इणने काई जाव देउं सो राजा समस्त मन मे वीचारीयो।—रीसालू री वात

क्रि०वि० [स० यावत्] जब तक (जैन)

जावई–स०स्त्री० [स० जातिपत्री] १ एक प्रकार की वनस्पति (जैन)

२ एक प्रकार का कन्द (जैन)

३ देखो 'जावत्री' (रू भे.)

जावक–स०पु० [स० यावक] लाह से बना पैरो मे लगाने का लाल रग, महावर।

उ०—१ सहज ललाई सापरत, प्रीतम प्यारी पाव। निरखै भरमै नायणी, जावक दे मिळि जाय।—वा दा

उ०—२ जुवि नेत्र भद्दा रग जावक रा। प्रजळै झल जाणिक पावक रा।—सू प्र.

जावजीव, जावज्जीव–अव्य० [स० यावज्जीव] जीवन पर्यन्त (जैन)

उ०—वाकरा मारवा रा जावजीव पचखाण कराया।—भि द्र

जावण–स०पु० [स० यापन] निर्वाह (जैन)

जावणो, जावबो–क्रि०ग्र० [स० या, यानम्] १ प्रस्थान करना, गमन करना, जगह छोड कर हटना।

मुहा०—१ कोई बात माथै जावणी—किसी बात के अनुसार कुछ अनुमान या निश्चय करना, किसी बात को ठीक मानना, ज्यू—वीरी वाता माथै जा नै पढणी छोड दियो तो फेल होई। २ जा पडणी—किसी स्थान पर अकस्मात जा पहुचना ज्यू—लडाई मे वीरै माथै सो जणा जा पडिया नै चूरी-चूरी कर नाखियो। ३ जा बैठणी—किसी स्थान पर जाकर निवास करना ज्यू—म्हारो कई, मैं तो कठैई जा बैठू तो दो रोटी मिळ जाई। ४ जावरा दो—क्षमा करो, त्याग दो, चर्चा छोडो।

कहा०—१ जावते चोर री लगोट ही भली—जहा कुछ भी मिलने की आशा न हो, वहा कुछ मिलना ही अच्छा। २ जावो कलकत्ते सू आगै, करम छावळी सागै—कही चले जाओ, भाग्य साथ जाता है। ३ जावो लाख रहिजो साख—चाहे लाखो रुपये चले जाय, साख न जानी चाहिए। ४ जिण गाव नही जावणो उणरो मारग ही क्यू पूछणो—जिस गाव जाना ही नही, उसका रास्ता ही क्यू पूछना। जो काम करना ही नही, उसके विषय मे पूछताछ व्यर्थ है।

वि०वि०—प्राय सब क्रियाओ के साथ इस क्रिया का प्रयोग सयोजक क्रिया के रूप मे होकर पूर्णता आदि का बोध कराता है।

२ दूर होना, अलग होना। उ०—हे सखिए परदेस प्री, तनह न 'जावइ' ताप। बाबहियउ ग्रासाढ जिम, विरहणि करइ विलाप।

—ढो मा.

३ अधिकार से निकलना, हाथ से दूर होना, हानि होना।

मुहा०—१ कई जावै ? क्या हानि होती है ? क्या व्यय होता है ? क्या लगता है ? ज्यू—अगर थू नही पढै तो फेल होई, म्हा'रो कई जावै ? २ कोई बात सू ही जावणो—किसी बात से वचित रहना, इतना करने के भी अधिकारी नही हैं क्या ? ज्यू—थू म्हा'रै साथै इतरी दुसमणी राखै तो कई मै कैवण सू ही गयो ?

४ चोरी होना, गायब होना ५ व्यतीत होना, गुजरना।

ज्यू—दो महीना गया परा वो हाल नी आयो।

कहा०—जावै सो दिन आवै नही—जो दिन जाता है वह वापस नही लौटता। गया समय वापस नही आता।

६ नष्ट होना, बिगडना।

मुहा०—गयो-वीतो—निकृष्ट, निकम्मा।

७ मरना ज्यू उणरा दो बेटा गया परा. ८ बहना, जारी होना ज्यू—आख सु पाणी जावै।

रू०भे०—जाणो, जाबो।

जावत–अव्य०—जब तक, यावत्।

जावतीग्र–वि० [स० यावत्] जितना (जैन)

काळै वागै, काळी टोपी, वैहल रै काळी खोळी, काळा बळद जोत-रिया, जिवा रै रूप किया साम्हा मिळसी।—नैरासी

[फा० जिन्द] २ प्राण, जीव। उ०—के गाडै के जगळि जाळै, पूठा वैसै ग्राय वे। जन हरिदास कहै विराजारिया, भी जिंद अकेला जाय वे।—ह पु वा

३ शरीर। उ०—जुदा हुग्रै जिंद जीव, म्रिग खग ग्रामूझै मरै। मारगि वहते माडिग्रो, दाराव प्रळै दईव।—वचनिका

रू०भे०—जिंदु, जिंदौ।

अल्पा०—जिंदडी।

जिंदगाणी, जिंदगी—स०स्त्री० [फा० जिंदगानी, जिंदगी] १ जीवन।

उ०—१ गिणजै मद ज्यारी जिंदगाणी, उभै विरद धरिया ग्रव्वत। प्रारभै दौलत पुन प्राणा, पुर्णे सुवाणा सीतपत।—र रू.

उ०—२ ए सब झूठा ख्याल है जिम बादीगर का। टुक जिंदगी रै वासतै परपच का।—दुरगादत्त बारहठ

मुहा०—जिंदगी सू हाथ धोणा—मरना, जीने से निराश होना।

२ आयु, जीवन काल।

मुहा०—जिंदगी रा दिन पूरा करणा—मरणासन्न होना, कष्ट से दिन बिताना।

जिंदडी—स०स्त्री० [अ० जिन+रा०प्र०डी] १ फूहड स्त्री, अयोग्य स्त्री

२ देखो 'जिंदगाणी' (अल्पा, रू भे)

३ काया, शरीर।

उ०—कहै दास सगराम जितै साजी है जिंदडी। करौ भजन दिन रात काचरी है या सिंदडी।—सगरामदास

जिंदवा रौ भात—स०पु०यौ०—दामाद को परोसे जाने वाले चावल?

उ०—राधा बाईजी, था नै जिंद्रवा रा भात, गिरी ए छुहारा बाईजी थारै मुख भरा।—लो गी

रू०भे०—जिनवा रौ भात।

जिंदु—देखो 'जिंद' (रू भे)

जिंदौ—वि० [फा० जिन्द] जीवित, जीता हुआ।

स०पु०—मुल्ला। उ०—ठाम-ठाम पुर ग्राम, काम हरि धाम अकाजा। पडित मदा पडे, करै जिंदा आवाजा।—रा रू

२ देखो 'जिंद' (रू भे)

जिंभ्राळी—स०पु०—जभासुर नामक राक्षस जो इंद्र द्वारा मारा गया था। उ०—प्रळै काळ चाळहै लागा जिंभ्राळा पुरिंद।

—हुकमीचद खिडियौ

जिंस—स०स्त्री० [फा०] १ सामग्री, सामान २ देखो 'जिनस' (रू भे)

रू०भे०—जिनिस।

जिंसवार—स०पु० [फा०] पटवारियो के पास रखा जाने वाला वह कागज जिस पर अपने हल्के मे बोये जाने वाले अनाज की विगत रखते हैं।

रू०भे०—जिनिसवार।

जिंह—सर्व०—१ जो २ जिस। उ०—जिह घडी नै घणु वाछता था घणा दिन लगै। सु घडी आण मिळी।—वेलि टी

जिंही—जैसे।

जि—सर्व०—१ जो, जिस। उ०—राजा कउ जण पाटवइ, ढोलइ निरति म होइ। माळवणी मारइ तियउ, पूगळ पथ जि कोइ।

२ उस। —ढो.मा

अव्य०—१ पादपूरक व अवधारण सूचक अव्यय।

उ०—सीखावि सखी राखी आखै तु जि, राणी पूछै रुखमणी।—वेलि

२ निश्चयार्थक सूचक, ही। उ०—सैसव तनि सुखपति जोवण न जाग्रति, वेस मधि सुहिणा सु वरि। हिव पळ पळ चढती जि होइसै, प्रथम ग्यान एहवी परि।—वेलि

जिअती—स०स्त्री० [स० जीवती] एक प्रकार की लता (जैन)

जिअ—स०पु० [स० जीव] जीव, प्राणी (जैन)

वि० [स० जित] जीतने वाला (जैन)

जिअट्ठाण—स०पु० [स० जीवस्थान] १ जीव का स्थान भेद (जैन)

२ सूक्ष्म ऐकेन्द्रियादि जीवो के चौदह भेद (जैन)

जिअसत्तु—स०पु० [स० जितशत्रु] १ महावीर स्वामी के समय मे मिथिला नगरी का एक राजा (जैन) २ भगवान अजीतनाथ के पिता (जैन)

जिआ—सर्व०—१ जो २ जिन। उ०—उर ढाल सारीख चौडा अलल्ला, भिडज्जा बाहू वे पवख भल्ला। पुडच्छी जिआ तोछ पै कथ पूरा, सग्राम विखै हाम पूरत सूरा।—वचनिका

जिआग—देखो 'जाग' (रू.भे)

जिआर—क्रि०वि०—जब। उ०—हडाहड रिविख हुए हर हार, जयज्जय जोगणि किद्ध जिआर। महारिणि पौढै सूर मसत्त, दिगबर जाणि अखाडै दत्त।—वचनिका

जिआरी—स०पु० [स० जितारि] १ भगवान सम्भवनाथ के पिता (जैन)

२ देखो 'जीवारी' (रू भे)

जिइदिय—वि० [स० जितेन्द्रिय] इन्द्रियो पर विजय प्राप्त करने वाला, जितेन्द्रिय (जैन)

जिउ—अव्य०—ज्यो, जैसे। उ०—उक्कबी सिर हथ्थडा, चाहती रस लुब्ध। ऊची चढि चात्र गी जिउ, मागि निहाळइ मुध्ध।—ढो मा

रू०भे०—जीउ, जीऊ।

जिउ—स०पु० [स० जीव] जीव, प्राण। उ०—बाबहिया निल-पखिया, मगरिज काळी रेह। मति पावस सुणि बिरहणी, तळफि तळफि जिउ देह।—ढो मा

जिए—सर्व०—जिस। उ०—वालिभ गरथ वसीकरण, बीजा सहू अकयथ्थ। जिए चडचा दळ उत्तरइ, तरुणि पसारइ हथ्थ।—ढो मा

जिकण—सर्व०—१ जिस। उ०—तिण मारी ताडका, जिकण रिख मख रखवाळ। हण सुवाह मारीच पैज खित्रवट धम्र पाळ।

—र ज प्र

२ उस।

जिकर—देखो 'जिक्र' (रू भे)

उ०—३ समय सुंदर व्याय, साचो इण तु सझाय। सुविधि जिणद-राय, मुगति दातार जू।—स कु

उ०—४ नाभिराया कुळचद आदि जिणद्, मरुदेवी नदन विस्वगुरो। —स कु

जिण-सर्व०—१ जिन। उ०—राति जु सारस कुरळिया, गुंजी रहे सब ताळ। जिणकी जोडी बीछुडी, तिणका कवण हवाल।—ढो.मा

२ जिस। उ०—वडै वैकूठ विमाण चलाय। परी ऊपरी जिण सगति पाय।—सू प्र

वि०—जीतने वाला (जैन)

स०पु०—१ सतान।

[स० जिन] २ राग-द्वेष को सर्वथा जीतने वाला तीर्थंकर (जैन)

३ चौदह पूर्व ग्रन्थों को जानने वाला (जैन)

४ जैन साधु विशेष, जिनकल्पी मुनी (जैन)

५ अवधि ज्ञान आदि अतिन्द्रिय ज्ञान वाला (जैन)

६ जन, भक्त। उ०—कोहिक जिण भेटिसै पाउ थारा किसन। —पी ग्र

जिणकप्पि—देखो 'जिनकल्पी' (रू भे)

जिणकप्पिय-स०पु० [स० जिनकल्पिक] जिनकल्पी साधु, उत्कृष्ट आचार वाला साधु (जैन)

जिणक्खाय-वि० [स० जिनाख्यात] जिनेन्द्र का कहा हुआ (जैन)

जिणगी-क्रि०वि०—जिस जगह, जिस तरफ। उ०—कीकर नही घबराऊ ? जिणगी जाऊ उणगी लाग पल्ला खाचै है।—वरसगाठ

जिणचद-स०पु० [स० जिनचद्र] जिनदेव, अर्हन् देव।

उ०—१ चद्रानन जिणचद, दरसण दीठा आणद।—स कु

उ०—२ वृषभानन जिणचद, श्री वीरसेना नद। कीरत्तिराय कुयर ए, सिंह अक सुदर ए।—स कु

रू०भे०—जिनचद।

२ ख-रामख्यात जैन आचार्य विशेष।

जिणणी—देखो 'जणणी' (रू भे)

जिणणो, जिणत्रो—देखो 'जणणो' (रू भे)

उ०—जे जाया रण भजणा, दस सू भली अपूत। जिणज्यो रजपूताणियां, 'पातल' जिसा सपूत।—जैतदान बारहठ

जिणदत्त-स०पु० [स० जिनदत्त] चम्पा नगरी निवासी एक सार्थवाहन का नाम (जैन)

जिणदिट्ठ-वि० [स० जिनदृष्ट] जिनेन्द्र द्वारा अनुभूत (जैन)

जिणदेव-स०पु० [स० जिनदेव] जैन तीर्थंकर। उ०—राग न द्वेस जीते जिणदेव, सोइ देव सुगत कउ कारक हुइ।—स कु

जिणदेसिअ, जिणदेसिय-वि० [स० जिनदेशित] जिन प्रतिपादित अर्थात् जिनेन्द्र का प्रतिपादन किया हुआ (जैन)

जिणधम्म-स०पु० [स० जिनधर्म] जैन धर्म (जैन)

जिणपडिमा-स०स्त्री० [स० जिनप्रतिमा] १ अर्हन्देव की मूर्ति (जैन)

२ वृषभ, वर्द्धमान, चन्द्रानन और वारिसेन नाम से पहिचानी जाने वाली शाश्वती प्रतिमा (जैन)

जिणभद्द-स०पु० [स० जिनभद्र] एक ग्रथकार, जैन आचार्य (जैन)

जिणमग्ग-स०पु० [स० जिनमार्ग] जिनेन्द्र का मार्ग अर्थात् जैन मार्ग (जैन)

जिणमय-स०पु० [स० जिनमत] श्री तीर्थंकर का मार्ग, जैन दर्शन (जैन)

जिणवय-स०पु०—जिनपति, जिनवर। उ०—जिणवल्लह जिणदत्त सूरि जिणचद नम्मिजइ। जिणवय जिणेसर जिणप्रबोह जिणचद थुणिज्जइ।—ऐ जै का.स.

जिणवयण-स०पु० [स० जिनवचन] जिन भगवान के वचन, जिनवाणी (जैन)

जिणवर, जिणवरु-स०पु० [स० जिनवर] जिनदेव, अर्हन्देव।

उ०—१ कूआ वावि सरोवर घणा, विवहारिया नी कोई मणा। तिण नयरी स्रेणिक नर नाह, जिणवर आण धरै उच्छाह।—स्रीपाळ रास

उ०—२ रूव विम्मु ता वाण मयण ता दरिसहि थणुहरु। नम (व) फणि मडिउ सीसि जाव नहु पक्खहि जिणवरु।—ऐ जै का स.

जिणहर, जिणहरइ, जिणहरू-स०पु० [स० जिनगृह, प्रा० जिणहर] जैन मदिर। उ०—१ फळ लेई ढोया जिणहरइ, कुळआचार लघुवग पणि करइ। बीजइ दिनि कहइ, हू आणिस्यु, तुम्हे रहउ वइठा ध्यानिस्यउ।—प्राचीन फागु सग्रह

उ०—२ सघाहिव धरणिद, काराविओ आणदि। चउमुख जिणहरू ए, त्रिहु भूमिइ मणहरू ए।—प्राचीन फागु सग्रह

जिणिंद, जिणिंदु, जिणिंदो-स०पु० [स० जिनेन्द्र] जैनो के तीर्थङ्कर, जिन, अर्हन्। उ०—१ जिणिंद गुण गनि मन मोह्यु, समयसुदर प्रभु ध्याने मन मोह्यु।—स कु.

उ०—२ नम फणि 'पास' जिणिंदु गढिउ अन्नलि जु दिट्ठउ।—ऐ जै का स.

उ०—३ विमळहिं ठवियउ पाव पाव निकदो, तई छइ सामिद रिस जिणिंदो।—आबूरास

जिणि-सर्व०—जिस।

वि०—जिस। उ०—जिणि देसे सज्जण वसइ, तिणि दिसि वज्जउ वाउ। उआ लगे मो लग्गसी, ऊ ही लाख पसाउ।—ढो मा

रू०भे०—जिण।

जिणिआर-वि०—प्रसिद्ध, विख्यात। उ०—मेछाळा सिर मार, देतौ पह आगै दळा। कैलपुरो भारथि 'किसन', आड गो जिणिआर।

स०स्त्री०—माता, जननी। —वचनिका

जिणिउ—देखो 'जिन' (रू भे)

जिणिणि, जिणिती-स०स्त्री० [स० जननी, जनयित्री] माता।

जिणु—देखो 'जिन' (रू भे.) उ०—वरतीय देसि अमारि नासिक ए, जाईउ जिणु नमइ ए।—प प च

जिणुत्तम—देखो 'जिणोत्तम' (रू भे.)

उ०—भगतवछळ दसरथ वो भगवान। गयौ जिनक सा मिळण केवळ-गियान।—पी ग्र

जिनकल्पी-स०पु० [स० जिनकल्पिन्] उत्कृष्ट आचार वाला साधु (जैन)
उ०—अैतौ जिनकल्पी अलपी अणगारा। थीवरकल्पी जन नाखै थुधकारा।—ऊ का
रू०भे०—जिणकप्पी।

जिनचद—देखो 'जिणचद' (रू भे)
उ०—चिहुनाम जिनचद तणुं त्रिभुवन सकळ सुहामणा।—स कु

जिनपति, जिनपाळ-स०पु०—जैनो के तीर्थंकर, जिन।
उ०—पाचमउ चक्रवरती सोळमउ जिनपति, साधत री खट खड भरत री।—स कु

जिनमदिर-स०पु०—जैन मदिर। उ०—सिवाणा री खेडौ पहला पोरवाळा वसायौ। मुसलमाना रा वास मे सोनाणा रा पत्थर रौ जिनमदिर नै आथूणी भाखरी हेटै सिवाणा री सिंदूरियौ पत्थर जिण रचित पारसनाथ रौ मदिर, जुमलै दोनू जिनमदिर सिवाणै।
—वा दा ख्यात

जिनमत-स०पु०यौ० [स०] श्री तीर्थंकर का मत, जैन दर्शन।
उ०—कोई कहै मा भूडी कीधी, निज कन्या नै सीख न दीधी। केई पाठक अवगुण काढै, जिनमत नै केई दूखण चाढै।—स्रीपाळ रास

जिनराइ, जिनराज, जिनराजौ, जिनराय, जिनरायौ, जिनरिस, जिनरिसी, जिनवर, जिनवरु, जिनवरौ-स०पु० [स० जिनराज, जिन ऋषि, जिनवर]—जैनो के तीर्थकर, जिन।
उ०—१ मास खमण नइ पारणइ जी पूछइ स्री जिनराज।—स कु.
उ०—२ आज मनोरथ सवि फळ्या, जउ भेटचा स्री जिनराजो रे।
—स.कु.
उ०—३ हा रे रिखभादिक जिनराय, इणि परि वीनव्या रे।—स कु
उ०—४ साठ लाख वरसा लगी, पाली सगळी आयौ जी। सप्तमी वदि आखाड नी, सिद्ध थया जिनरायौ जी।—स कु
उ०—५ जीव जपि जपि जपि जिनवर अतरयामी।—स कु
उ०—६ इण अवसर स्री जिनवरु जी आव्या नगर उद्यान।—स कु
उ०—७ अह ऊठि नित प्रमणु पाय प्रभु ना, सीमधर युगमध रौ। बाहू सुबाहू सुजात स्वयप्रभ, स्री रिखभानन जिनवरौ।—स कु

जिनवा रौ भात—देखो 'जिणवा रौ भात' (रू भे)
उ०—म्हारी पीवरिये री वाटड्या, वाया जिनवा रा भात।—लो गी.

जिनस-स०स्त्री० [अ० जिन्स] १ वह वस्तु जो खाने के लिये बनाई गई हो, भोज्य पदार्थ। उ०—वज जन्न वगे जद नीठ जगे, इतरी जिनसा किय आण अगे। सतमेख सद, अज सैम अद, मिसटान मद, अण अन्न हद। जिण रच कलेवौ कीध जद।—र रू
२ चित्र, नक्शा। उ०—तरै राजा रै मन आई 'जु एक इसडौ देहुरौ कराऊ, जिसडौ अत्युलोक माहे अचभौ हुवै' सु हमै देस रा सूत्रधार तेडीजे छै, कारीगर देहुरा री जिनस माड दिखावै छै।
—नैणसी

स०पु०—३ प्रकार, तरह, किस्म। उ०—तिका विछेरी दौडती-दौडती 'मेलै'-रै घोडै हू आगै हुई। नै वळी। अपूठी विछेरी आयी। आइ अर वळै आघो विछेरी जावै वळै अपूठी आवै। वार दोइ विछेरी इयै जिनस आयी।—उदै उगमणावत री वात
४ वस्तु, चीज। उ०—डाभ री राछ एकै जिनस री घडायौ।
—द वि
५ देखो 'जिस' (रू भे.)
रू०भे०—जनस, जिनिस।

जिना-स०पु० [अ० जिना] व्यभिचार।

जिनाकार-वि० [फा०] व्यभिचारी।

जिनाकारी-स०स्त्री० [फा०] व्यभिचार।

जिनावर—देखो 'जानवर' (रू भे)
उ०—पिण भय छै जिनावर घणा छै।—सयणी री वात

जिनिखि—देखो 'जनक' (रू भे)
उ०—कहै जिनिखि किसोरी सकति सजोरी चरिति निमो ईता है 'चोरी'।—पी ग्र.

जिनिस—१ देखो 'जिनस' (रू भे)
२ देखो 'जिस' (रू भे)

जिनिसवार—देखो 'जिसवार' (रू भे)

जिनेता—देखो 'जनेत' (रू भे)
उ०—करम अनै अकरम किसन, ध्रिनि नै चिति नै ध्रोख। बाप जिनेता बाहिरौ, मोख नही तु मोख।—पी ग्र.

जिनेसर, जिनेसरराय, जिनेसरु, जिनेस्वर [स० जिनेश्वर, जिनेश्वरराज] देखो 'जिणेसर' (रू भे) उ०—१ अस्टापद गिरि सात जनेसर समय सुदर पाय प्रणमत री।—स कु
उ०—२ खरतर वसही वादियइ रे, स्री साति जिनेसरराय रे।
—स कु
उ०—३ जगगुरु नेमे जिनेसरु, सेना मात मल्हारौ जी। जीवयस नूप नद नौ, सूरज अरु उदारौ जी।—स कु
उ०—४ कृतारथ जिनेस्वर सुद्धमति सिवकर, स्यदन सप्रति चौवीसे तीरथकर।—स कु

जिनोई—देखो 'जनेऊ' (रू भे) उ०—सत्र सारत समधा सब कोई, जडलग वह गई सग जिनोई।—रा.रू.

जिन्न-वि० [स० जीर्ण] १ जीर्ण, पुराना (जैन) २ देखो 'जिण्ण'। ३ देखो 'जिन' (रू भे) (रू भे)

जिन्ना—देखो 'जिन' (रू भे) उ०—साईं तू वड्डा धणी, तुझ न वड्डा कोय। तू जिन्ना सिर हाथ दै, से जग वड्डा होय।—ह र

जिन्नावर-स०पु० [फा० जानवर = हैवान] १ हिंसक जानवर।
उ०—देसपति उवारइ का दईव, जीवामणि भागी लेय जीव। मेदनी केडि मूमल्लमाण, जिन्नावर चिडिया पडिय जाण।—रा ज सी
२ देखो 'जानवर' (रू भे.)

जिन्ह—देखो 'जिन' (रू भे) उ०—जिन्हा जीतव जीतिया, जे रघुबर-नित जाप जपदे।—र ज प्र

जिबह, जिबा—सं०स्त्री० [अ० जिबह] गला काट कर प्राण लेने की क्रिया। उ०—अन्याय करै छै नो आप नु जिबा करै छै।—नी प्र
रू०भे०—जबह, जबै, जिबै।

जिब्भ, जिब्भा—देखो 'जीभ' (रू भे, रू नां) (जैन)

जिब्भायत—वि० [सं० दान्तजित्] जिह्वा का दमन करने वाला (जैन)

जिब्भिदिय—सं०पु० [सं० जिह्वेन्द्रिय] जिह्वा, रसना, जीभ (जैन)

जिब्भिया—सं०स्त्री० [सं० जिह्विका] १ पानी निकलने की परनाल (जैन)

२ देखो 'जीभ' (रू.भे.) (जैन)

जिबै—देखो 'जिबह' (रू भे.) उ०—पीछै तखत पर औरंग मुराद बगत नू बैठायो अर मुराद रो सोगन उतारियो। अथा मूजै दिन मुराद कू जिबै करायो।—द.दा.

जिभ्या—देखो 'जीभ' (रू भे) उ०—अवगा राख्या नाद सूं, नैणा राख्या रूप। जिभ्या राखी स्वाद सूं, दादू यह अनूप।—दादूवाणी

जिभ्याप—सं०पु० [सं० जिह्वाप] कुत्ता, श्वान (प्र मा)

जिम—क्रि०वि० [सं० यथा] १ जिस प्रकार, जैसे।
उ० अनदइ धजर धम्हामरु अड़िया। भूप-बणा जेठो जिम भड़िया।—सू.प्र.

२ देखो 'जम' (रू भे.) उ०—रोहि चड़िया राउत रूठइ जिम जेहा हिड़राऊ।—रिखमिरिखाण पावाडउ

जिमण—देखो 'जीमण' (रू भे) उ०—इम करता घार ही जिमण तियार हुयो। बाड़ना रान दै पोदर हुए पहरामणी।—पनजी हरण

जिमणउ—देखो 'जीमणो' (रू भे. उ र) उ०—छाया तउ आतप, उवउ तउ तीवउ, जिमणउ तउ डावउ, अमिअ तउ विस।—व स

जिमणवार, जिमनार—देखो 'जीमणवार' (रू भे)
उ०—१ जिमणवार निरगोद छइ।—व स. उ०—२ अगत करै जिमणार, स्वारथ रै ऊपर नर्वो। पुन रो पळ पणवार, रोटी नह दै राजिया।—किरपाराम

जिमणु—देखो 'जीमणो' (रू भे, उ र)

जिमणो, जिमबो—देखो 'जीमणो, जीमबो' (रू भे)

जिमतिम—क्रि०वि०—जैसे तैसे।

जिमनार—देखो 'जिमणार' (रू भे)

जिमाड़णो, जिमाड़बो, जिमाणो, जिमाबो जिमावणो, जिमावबो—देखो 'जीमाड़णो, जीमाड़बो' (रू भे.) उ०—१ जिमाडै जिके भावता भाव जाणी, पख्ख अमीदा जमो पख्खाणी।—ना द.
उ०—२ जीमण तियारण भाव जिमावै। मेवा मूंत मनक मिळावै।—सू प्र.

जिमि—देखो 'जिम' (रू भे) उ०—हूं जिमि प्रथम पायें हुनाण दूजे केहरि जिमि भर्द दांण।—व पि.

जिमियोड़ो—देखो 'जीमियोड़ो' (रू.भे.)।

जिमि—सं०स्त्री०—जमीन, भूमि।

जिमु—देखो 'जिम' (रू भे.) उ०—वात सुणी पाछउ वळइ, जा नवि दसइ पग। चउवीस (नाम) रहइ, जिमु रहहीणु (मणगु)।—प.प.च.

जिम्मग—सं०पु० [सं० अजिह्मग] तीर, बाण (डि.को.)

जिम्मावार, जिम्मेवार—देखो 'जिम्मेवार' (रू भे.)

जिम्मेवारी—सं०स्त्री०—उत्तरदायित्व, जवाबदेही।
रू०भे०—जिम्मेदारी।

जिम्मेवार—सं०पु० [अ० जिम्मेवार] उत्तरदाता, जवाबदेह।
रू०भे०—जिम्मावार, जिम्मेदार।

जिम्मेवारी—देखो 'जिम्मेवारी' (रू भे)

जिम्मो—सं०पु० [अ० जिम्म:] १ उत्तरदायित्व, जुम्मा।
मुहा०—१ जिम्मे करणो—भार सोपना। २ जिम्मे नाखणो—उत्तरदायित्व देना। ३ जिम्मे निकळणो—ऋणी होना। ४ जिम्मे निकाळणो—किसी के यहां ऋण बतलाना।
२ देखो 'जम्मो' (रू.भे.)

जिम्हग, जिम्हग—सं०पु० [सं० जिह्मग] सर्प, साप (रू नां) उ०—साहू गुरा गजे समर, गामती'र सलेम। मरविण पाछो मेहिड़यो, जिम्हग रहविण जम।—व भा.

जियतग, जियतय—सं०पु० [सं० जीवान्तक] एक प्रकार की वनस्पति (जैन)

जियती—सं०स्त्री० [सं० जीवती] एक प्रकार की लता, वेल (जैन)

जिय—सं०पु० [सं० जीव] १ जीव, प्राण। उ०—निरगुण नाथ नमो जियनाथ, चवगत देव नमो नीमनाथ।—ह र
२ प्राणी (जैन)
३ हृदय, मन, दिल. ४ सम्मानात्मक शब्द।
अल्पा०—जियड़ो, जियरो।
सं०स्त्री० [सं० जित] ५ जीत, विजय (जैन)

जियसत्तु, जियसत्तू—सं०पु० [सं० जितशत्रु] अजीतनाथ स्वामी के पिता का नाम (जैन)
वि०—जीतने वाला (जैन)

जियसेन—सं०पु० [सं० जितसेन] भरत क्षेत्र के तृतीय कुलकर का नाम (जैन)

जियां—क्रि०वि०—जिस प्रकार, जैसे। उ०—सत्री टेक साथे जिया अप मानै। भरै रूप कामगना दिव्य लाजै।—सू प्र
सर्व०—जिन। उ०—१ उपर जियां यतुम उणिहारे। भमर वह पकवि भरहारे।—सू प्र
उ०—२ ठकिया गाडा काबड़ी, जाजा साथ जियाह। रहे नचीतो सामठी, ज्या कळ आत दियाह।—वां दा.

जियान—सि०वि०—१ जैसे
२ देखो 'जहान' (रू भे.)

जियाग—सं०पु० [सं० यज्ञ] यज्ञ, हवन।

जियावती—सं०स्त्री०—देखो 'ज्यादती' (रू भे)

जियावा—देखो 'ज्यादा' (रू भे)
जियादातर-अव्य०—अधिकतर, प्राय ।
जियाफत-स०स्त्री० [अ० जियाफत] १ मेहमानदारी, आतिथ्य ।
[अ० हिफाजत] २ हिफाजत, देखरेख, रक्षा ।
जियार-क्रि०वि०—जिस समय, जब । उ०—जाडा थडा जियार, लोह आडा भड लागा । जेण वार 'जैसाह', भिडे हुरवळ दळ भागा । —सू प्र.
स०पु० [स० जिय = जीव + रा.प्र.आर] जीवन ।
उ०—वित विलसण री वार, नर सठ वित बिलसै नही । जावै बीत जियार, जेहल पछ्तावै जिकै ।—बा.दा.
जियारत-स०स्त्री० [अ० जियारत] तीर्थयात्रा २ दीदार, दर्शन ।
उ०—अबदुल कही हू फलाणो छू, थाहरी जियारत आइयो छू । —नी प्र
जियारती-वि० [अ०] जियारत के लिये जाने वाला ।
स०पु०—दर्शक ।
जियारा-क्रि०वि०—जिस समय । उ०—नीम कोट भड निडर, जाइ लागिगा जियारा । दाते खग जमदाढ, विखम धारे जिण वारा । —सू प्र.
जियारि-स०पु० [स० जितारि] तीसरे तीर्थंकर सम्भवनाथ के पिता का नाम ।
जियारी—देखो 'जीवारी' (रू.भे)
उ०—भाई ! अवै तौ विरखा-पाणी हु जावै तोई जियारी हुवै । —वरसगाठ
जियाळ—देखो 'जीयाळ' (रू भे)
जियास—देखो 'ज्यास' (रू भे.)
उ०—वरस तयाळै चैत सुद, पूनम परम उजास । साम कमधा सापनो, उर ऊपनो जियास ।—रा रू.
जिरह-स०पु० [अ० जुरह] १ फेर फार कर के पूछे जाने वाले प्रश्न जिससे उतरदाता बात छिपा न सके और सच्ची बात उगल दे । पूछताछ, बहस ।
क्रि०प्र०—करणी ।
[फा० ज़िरह] २ कवच । उ०—याकूब भारी जिरह पहरिया बारै आयो ।—नी प्र.
यौ०—जिरहटोप, जिरहपोस, जिरहवस्तर ।
रू०भे०—जिरै, जीरह ।
जिरही-वि०—कवचधारी ।
जिरांण—देखो 'जीरांण' (रू.भे)
उ०—जो'डे खनै जिराण, जठै नर अतक जळावै । सीढ़ी धोरै मे'ल, विसूणी बीच लरावै ।—दसदेव
जिराफ-स०पु० [अ० जुर्राफ] मरुस्थल का एक प्राणी । यह अफ्रीका के मरुस्थल मे समूह मे घूमा करता है । इसकी गरदन ऊंट की सी लबी होती है ।
रू०भे०—जुराफ ।
जिरै—देखो 'जिरह' (रू भे)
जिलद-स०स्त्री०—देखो 'जिल्द' (रू भे.)
जिलमपत्तरी—देखो 'जन्मपत्री' (रू भे)
जिलवत-स०स्त्री० [अ० जिल्वत] अपने आपको सब के सामने प्रकट करना । उ०—खिलवत-गोसै बैसणो, जिलवत-चोडै बैसणो । —बा दा ख्यात
विलोम—खिलवत ।
जिळसो-स०पु०—देखो 'जळसो' (रू.भे)
उ०—सुण सुण वो नखराळा मेरा देवर वो जिळसो दिखाय ल्यावो दिल्ली को ।—लो गी
जिलह—देखो 'जिलै' (रू भे)
उ०—जिण विध कवि मुख सू जिलै, वधती व्है वरणाह । जुवती तन हूता जिलह, इण विध आभरणाह ।—बा दा.
जिलहदार-वि० [अ० जिला + फा० दार] चमकदार, कान्तियुक्त ।
उ०—हिम हीर गोख जाळी हजार । दमकत जोति अति जिलहदार । —सू प्र.
रू०भे०—जिल्लहदार ।
जिलहरी-स०पु०—रग विशेष का घोडा । उ०—जिलहरी आबनूसी जमद । मुरहरी हरी सेली समद ।—सू प्र
जिला—देखो 'जिलो' (रू भे)
जिलाइयत—देखो 'जिलायत' (रू भे)
जिलाणो, जिलावो-क्रि०स०—देखो 'जिवाणो, जिवाबो' (रू भे)
जिलावार-स०पु० [फा०] १ जिले का अफसर २ देखो 'जिलहदार' (रू भे)
रू०भे०—जिलेदार ।
जिलावारी-वि० [फा०] जिलेदार का कार्य या पद ।
जिलायत-स०पु०—१ किसी बडे जागीरदार के अधीन छोटे-छोटे जागीरदार. २ जिलाधीश ।
रू०भे०—जलायत, जिलाइयत, जिल्लायत ।
जिलायोडो-भू०का०कृ०—देखो 'जिवायोडो' (रू.भे)
(स्त्री०—जिलायोडी)
जिलासाज-स०पु०—सिकलीगर ।
जिलो-वि०—कमजोर ।
स०स्त्री०—पतला आवरण ।
जिलेवार—देखो 'जिलादार' (रू भे)
जिळेबी—देखो 'जळेबी' (रू.भे.) उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति भाति-भाति रा भोजन, जाति-जाति रा मास, जाति-जाति रा पकवान जिळेबी, लाडू, खाजा, मोतीचूर, सीरो, पुरी, साबूणी, खेरा, पचाम्रित ।—रा सा स.
जिलै-स०स्त्री० [अ० जिला] आभा, कान्ति । उ०—जिण विध कवि मुख सू जिलै, वधती व्है वरणाह । जुवती तन हूता जिलह, इण विध आभरणाह ।—बा दा.

उ०—२ किरी रह्या राउत रोह् माडी। जाइ जिसिइ अरजन द्रेठि छाडी।—विराटपर्व

रू०भे०—जिसउ।

अल्पा०—जिसडो, जिहडो, जिहैडो।

जिस्णु, जिस्णू–वि० [स० जिष्णु] जीतने वाला, विजयी।

उ०—निरगुण अणविद्या छाई जग जिस्णू। विद्या वीसरिगो सदगुण वस विस्णू।—ऊ.का

२ देखो 'जिसन' (रू भे)

जिस्तौ—देखो—'जस्तौ' (रू.भे.)

जिस्यान–वि०—जैसा।

क्रि०वि०—जैसे।

जिस्यू–क्रि०वि०—जैसे।

जिस्यौ—देखो 'जिसौ' (रू भे)

उ०—आगइ कुरुखेत्रइ घाउ जिस्या, हीदू तुरक भिडइ रणि तिस्या।
—का दे प्र

जिह–सर्व०—जिस।

जिह—देखो 'जीभ' (रू.भे)

उ०—तो पद अविधान प्रवाडा सूरत, अरविंद इडग तत इधकार। नामै रटै साभळै निरखै, मसतक जिहै स्रुत नयण मुरार।—र रू.

जिहग–स०पु० [स० जिह्मग] १ सर्प (अ मा)

[स० अजिह्मग] तीर, बाण।

जिहडो—देखो 'जिसौ' (अल्पा रू भे)

जिहा–क्रि०वि०—जहा, जिस जगह। उ०—भड भिडि जयलच्छि जिहा वरी। दिसि दिखाडि न लिइ जिम कइच्छरी।—प प च

सर्व० —जिन। उ०—जिहां माहि जोधा हणूमान जेहा। दइ मुद्दका जेण नू मेघदेहा।—सू.प्र.

जिहान—देखो 'जहान' (रू भ)

उ०—'विलद' नै 'अभै' तद कर विचार, चौथै दिन लिखिया समाचार। जाहरा तेग तू सब जिहान, खोटउ अमीर सिर विलद खान।
—वि स

जिहानी—वि०—१ ससारी, जहान से सबधित।

२ देखो 'जहान' (रू भे.)

जिहाज—देखो 'जा'ज' (रू भे)

उ०—सतव्रत सुत हरिचद सत जिहाज। रोहितास चद सुत महाराज।
—सू प्र

जिहाव–स०पु० [अ०] मुसलमानो द्वारा अपने धर्म प्रचार के लिये दूसरे धर्मावलवियो के साथ किया जाने वाला युद्ध। धर्म के लिये युद्ध।

जिहालत–स०स्त्री० [अ० जहालत] मूर्खता, अज्ञानता।

जिहिं, जिहि–सर्व०—जिस। उ०—सो राम 'किसन' किव समर समरि। जिहिं विजय जिगन करि सियहिं वरि।—र ज प्र

क्रि०वि०—जैसे।

वि०—जैसा। उ०—जाणतौ जिको वधव जिहि, धान जेण लखा दिया। 'सेरसा' मरण फूटौ नही, है लाणत लठर हिया।
—पहाडखा आढ़ो

जिहैडो—देखो 'जिसौ' (अल्पा रू भे)

जिह्मग, जिह्मग–वि० [स० जिह्मग] धीमा, मदगति।

स०पु०—टेढा-मेढ़ा चलने वाला, सर्प (ह ना, अ मा)

उ०—उस वरि यौं 'दोले' नवाव पुरजा सुनि पाया। जहर भरे जिह्मग जिम घन रोसण छाया।—ला रा

जिह्मगति–स०पु०—साप, सर्प।

जिह्वाण—देखो 'जीभ' (रू भे)

उ०—जउ देखिइ पुच्छनउ आस्फावळउ तउ कउण कहइ हू एहरइ जालवउ, रक्तोत्पल कमळनी परिइ सुकुमाळ ताळउ, प्रकट जिह्वाणउ अग्र।—व स

जिह्वामूळ–स०पु० [स० जिह्वामूल] जीभ का पिछला स्थान जहा से वह जुडी रहती है।

जिह्वामूळी, जिह्वामूळीय–वि० [स० जिन्ह्वामूलीय] जो जिन्ह्वा के मूल से सबध रक्खे।

जिह्वाळिह–स०पु० [स० जिह्वालिह] कुत्ता, श्वान।

जिह्वास्तभ–स०पु० [स०] एक प्रकार की वात व्याधि (अमरत)

जीं–सर्व०—जिस। उ०—विसील नाम एक नगरी, जीं म्ही नद राजा राज करै।—सिंघासण वत्तीसी

रू०भे०—जी।

जींका–स०स्त्री०—१ ईंट व खपरैल आदि को घिस कर बनाया हुआ महीनतम चूर्ण।

अल्पा०—जीकाळी, जीकाळी।

स०पु० (वहु व०) २ नन्ही-नन्ही बूंदें।

जींकाळी—देखो 'जीका' (१) (अल्पा, रू भे)

जींगडौ–स०पु० (स्त्री० जीगडी) छोटा वछडा (मेवात)

जींजणियाळ–स०स्त्री०—देवी, शक्ति।

उ०—मण धार निभै मण हेक मणौ। तुल वधव जींजणियाळ तणौ।—पा प्र

जींजणी–स०स्त्री०—एक प्रकार की कँटीली झाडी जिसके फूल गुलाबी रग के होते हैं।

जींजौ–स०पु० (वहु व० जीजा) १ कासी, पीतल धातुओ से बना हुआ एक वाद्य जो सख्या मे दो होते हैं।

वि०वि०—दोनो हाथो मे एक-एक लेकर सगीत के साथ ताल देने के लिए इन्हे आपस मे टकरा कर ध्वनि उत्पन्न की जाती है।

२ एक प्रकार की कटीली झाडी का फूल ३ एक प्रकार का कटीला वृक्ष जिसकी पतली टहनियो की छाल से रहट की माल बनाई जाती है।

रू०भे०—जीझो।

उ०—घोडो ऊभो चौंकडो चावै छै।। कवर चवेली विद्रा माहै। जीण-पोस विछाय बैठा छै।—जगदेव पवार री वात

जीण-सवारी-स०स्त्री०यौ०—घोडे पर चारजामा रख कर चढ़ने का कार्य।

जीण-साज-स०पु० [फा० जीनसाज] जीन बनाने वाला।

जीणसाल, जीणसालियौ-स०पु० एक प्रकार का कवच।

उ०—१ जादव जान करइ अति ओपम, छपन कोडि कुळसाख। टाटर टोप जरद जीणसाला, साठि भरी साहि लाख।

—रुकमणी मगळ

उ०—२ घडा ऊपरि ऊजळी धारा तरवारघा चमकण लागी, सु याही मानौ वीजळी चमकण लागी छै अठै काळा जीणसालिया का डीलइ है वादळ। घडा ऊपरि तलवारि चमकै छै सुइ है वीजुळी।

—वेलि.टी

अल्पा०—जीणसालियौ, जीनसालियौ।

जीणी-सर्व०—जिस। उ०—धन माता जीणी जनमिया, जाणिक भेटयौ त्रिभुवन राई।—वी दे

जीणौ, जीवौ—देखो 'जीवणौ, जीववौ' (रू भे.)

उ०—जुग-जुग जीणौ तोई खप्पणौ है।—साईदीन

जीत-स०स्त्री० [स० जिति वैदिक जीति] १ युद्ध या समर मे शत्रु के विरुद्ध सफलता, जय, विजय २ किसी ऐसे कार्य मे सफलता जिसमे दो या अधिक विपक्षी हो ३ लाभ, फायदा।

जीतणौ-वि०—जीतने वाला, विजय प्राप्त करने वाला।

उ०—खगा जीतणा घाव मैं दाव खेल्है, मलगे तडा माकडा पीठ मेल्है।—व भा

जीतणौ, जीतबौ-क्रि०स० [स० जि] १ युद्ध या समर मे शत्रु के विरुद्ध विजय प्राप्त करना, जीतना। उ०—१ दावसी घणा वाका दुरग, जीतसी अजै नृप घणा जग।—वि स उ०—२ जग जीतण हारो हे दीखणमे ही डावडो, सिव चाप चढायो हे राख्यो पण रावळो।

—गी रा

२ दो या अधिक विरुद्ध पक्ष रहते कार्य मे सफलता प्राप्त करना, ज्यू—मुकदमो जीतणौ, खेल जीतणौ।

जीतणहार, हारौ (हारी), जीतणियौ—वि०।

जीतवाडणौ, जीतवाडवौ, जीतवाणौ, जीतवावौ, जीतवावणौ, जीतवाववौ, जीताडणौ, जीताडवौ, जीताणौ, जीतावौ, जीतावणौ, जीताववौ—प्रे०रू०।

जीतिओडौ, जीतियोडौ, जीत्योडौ—भू०का०कृ०।

जीतीजणौ, जीतीजवौ—कर्म वा०।

जइतणौ, जइतवौ—रू०भे०।

जीतव-स०पु० [स० जीवीतव्य] जीवन, जिंदगी।

उ०—१ जिन्हा जीतब जीतिया जे रघुवर नित जीह जपदे।

—र ज प्र.

उ०—२ किणी नै सरप खाधो। गारडू झाडो देई बचायो। जद उ पगा लागे बोल्यो, इतरा दिन तो जीतव माइता रो दियो हुतो अबै अबै आज सू जीतव आप रो दियो।—भि द

रू०भे०—जीतव।

जीतरणताळ-स०पु०यौ० [स० रणतालजित] तलवार, खड्ग (अ मा.)

जीतव—देखो 'जीतव' (रू.भे) उ०—अकलो जाय अतीत, जती काय अकलो जासी, धण विवनी रो धणी, गरढ जासी अभवासी। त्रिया विण जासी तुरक, न तो कय जासी नाजर। लूटण दुल विध लखत, वाम रहू जाय जका वर। पोसाव हीण मोसा समण, जीतव अग ह्वै जावसी। अकलो नाज जावै अलो, रूपनगर रो राजवी।

—अरजुणजी बारहठ

जीताडणौ, जीताडवौ—देखो 'जीताणौ, जीतावौ' (रू भे)

उ०—कृपा अभिलाखियो 'जैत' भिडियो कटक, तुरत कर दाखियो जोर तारा, समर जीताडियो सूर चद साखियो, बीकपुर राखियो कई वारा।—खेतसी बारहठ

जीताडणहार, हारौ (हारी), जीताडणियौ—वि०।

जीताडिओडौ, जीताडियोडौ, जीताड्योडौ—भू०का०कृ०।

जीताडीजणौ, जीताडीजवौ—कर्म वा०।

जीताणौ, जीतावौ, जीतावणौ, जीताववौ—रू०भे०

जीताडियोडौ—देखो 'जीतायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० जीताडियोडी)

जीताणौ, जीतावौ-क्रि०स०('जीतणौ' क्रि० का प्रे०रू०) १ जीतने के लिये प्रेरित करना, विजय करवाना २ किसी विरुद्ध पक्षों को होड मे सफलता प्राप्त कराना। ज्यू—मुकदमे मे जिताणौ या खेल मे जीताणौ।

जीताणहार, हारौ (हारी), जीताणियौ—वि०।

जीतायोडौ—भू०का०कृ०।

जीताईजणौ, जीताईजवौ—कर्म वा०।

जिताणौ, जीतावौ, जीताडणौ, जीताडवौ जीतावणौ, जीताववौ—रू०भे०।

जीतायोडौ-भू०का०कृ०—१ जीतने के लिये प्रेरित किया हुआ, जिताया हुआ २ किसी के विरुद्ध सफलता प्राप्त कराया हुआ।

(स्त्री० जीतायोडी)

जीतावणौ जीताववौ—देखो 'जीताणौ, जीतावौ' (रू भे)

जीतावणहार, हारौ (हारी), जीतावणियौ—वि०।

जीताविओडौ, जीतावियोडौ, जीताव्योडौ—भू०का०कृ०।

जीतावीजणौ, जीतावीजवौ—कर्म वा०।

जीताडणौ, जीताडवौ, जीताणौ, जीतावौ—रू०भे०।

जीतावियोडौ—देखो 'जीतायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० जीतावियोडी)

जीति—देखो 'जीती' (रू भे.)

बोलने मे असमर्थ करना २८ जीभ पकडणी—देखो 'जबान पकडणी'. २९ जीभ फेरणी—देखो 'जीभ हिलाणी'. ३० जीभ बद करणी—देखो 'जबान बद करणी'. ३१ जीभ बद कर देणी—देखो 'जबान बद करणी' ३२ जीभ बद होणी—देखो 'जबान बद होणी' ३३ जीभ भारी पडणी—कठिनता से बोला जाना, बोलने मे असमर्थ होना ३४ जीभ माथै जोर होणो—बोलने मे समर्थ, बोलने मे पटु, अधिक वाचाल होना. ३५ जीभ माथै देणी, (देणी)—स्वाद लेना, चखना. ३६ जीभ माथै सरसती वसणी—देखो 'जीभ ऊपर सरसती वसणी' ३७ जीभ माथै होणी—देखो 'जबान माथै होणी' ३८ जीभ मे जोर होणो—देखो 'जीभ माथै जोर होणो'. ३९ जीभ रुकणी—देखो 'जबान रुकणी' ४० जीभ रोकणी—देखो 'जबान रोकणी' ४१ जीभ वतावणी—कविता पाठ करना, कठस्थ कविता सुनाना, नवीन कविता रच कर सुनाना. ४२ जीभ सभाळणी—देखो 'जबान सभाळणी' ४३ जीभ रुकणी—प्यासा होना, भय से बोला न जाना, मरणासन्न काल मे वाक शक्ति कमजोर होना ४४ जीभ हिलाणी—जिह्वा हिला कर सकेत करना ४५ दाता विचली जीभ—दोनो ओर से सकट मे होना. ४६ होठा माथै जीभ फेरणी—हतोत्साह होना, निराश होना ।

२ कलम की नोक ।

रू०भे०—जिब्भ, जिब्भा, जिब्भिआ, जिभ्या, जिह, जिव्हाण, जीव, जीवो, जीभि, जीभी, जीह, जीहा ।

अल्पा०—जीवडली, जीवडी, जीभडली, जीभ ।

मह०—जीवड, जीभड ।

जीभडली—देखो 'जीभ' (अल्पा, रू.भे) उ०—१ एक जीभडली जस दइयो विनायक लाडले की मायनै, वा तो मीठी सी बोलै निव कर चालै जस रैवै परवार मे ।—लो गी. उ०—२ कागा दिऊ वधाइया, तू पिव मेळै मुज्झ । काढू मुख थी जीभडी, भोजन देस्यू तुज्झ ।
—ढो मा.

जीभप—स०पु०—कुत्ता, स्वान (ह.ना)

जीभि, जीभी—देखो 'जीभ' (रू भे.)

जीमण—स०पु० [स० जेमनम्] १ घी, पानी, मैदे के साथ गुड अथवा शक्कर के सयोग से आग पर पका कर बनाया हुआ खाद्य मिष्ठान्न । उ०—धुरवा घरणी लग लोढा ले धावै । जीमण जीमण नै मोडा जिम जावै ।—ऊ का उ०—२ जीमणू के गज एते दरसावै जिसकी ओट जीमणहार नजर न आवै ।—सू प्र

२ बहुत से लोगो को एक साथ खिलाया जाने वाला खाना, जेवनार, भोज. ३ खाना, भोज । उ०—एक साहो थापियो । पछै वे परणीजण आया, सु जीमण माहे दारू मे धतूरो घात नै पायो, सु सारा वेसुध किया ।—नैणसी

रू०भे०—जिमण, जीमण, जीम्हण ।

यौ०—जीमण-चूठण, जीमण-जूठण ।

जीमण-वार—स०स्त्री०—भोज, रसोइ, ज्योनार ।

उ०—छट्ठै प्रहरै दिवस के, हुई ज जीमणवार । मन चावळ तन तापसी, नैण ज घी की धार ।—ढो मा.

रू०भे०—जिमणवार, जिमणार, जिमनार ।

जीमणियाळ—वि०—दक्षिण पार्श्व का दाहिना ।

उ०—'माल' धणी अर 'जैत' मुसायव, 'कूप' करण दीवाण कहै । वेधड 'अखा' सदा धुर वामै, वळ रा जीमणियाळ वहै ।
—जैताजी कूपाजी रो गीत

जीमणो—वि० (स्त्री० जीमणी) दक्षिण पार्श्व का, दाहिना ।

उ०—१ तरै बीच आप ऊभो रयो नै साथ अढाई सो ओळख्या डावी कानी नै अढाई सो जीमणी बाजू ऊभा राखिया ।—नैणसी

उ०—२ चाल्या चउरास्या न लावी छइ वार, आडी आयज्यो इधण हार । होज्यो देवी जीमणी ।—वी.दे.

स०पु०—दाहिना हाथ, दक्षिण हाथ ।

रू०भे०—जिमणउ, जिमणू, जीमणो, जीवणो, जीवणो ।

जीमणो, जीमबो—क्रि०स० [स० जिम्] भोजन करना, खाना खाना ।

उ०—१ भयण अभ भोजन भूख जोमिया न भज्जै ।—चौथ बीठू

कहा०—जीम्या पछै चळू—भोजन करने के पश्चात हाथ प्रक्षालन नही होता है, अर्थात् अवसर निकल जाने के बाद कुछ नही हो सकता ।

जीमणहार, हारो (हारी), जीमणियो—वि० ।

जीमवाड़णो, जीमवाडवो, जीमवाणो, जीमवावो, जीमवावणो, जीमवाववो, जीमाडणो, जीमाडवो, जीमाणो, जीमावो, जीमावणो, जीमाववो—प्रे०रू० ।

जीमिओडो, जीमियोडो, जीम्योडो—भू०का०कृ० ।

जीमीजणो, जीमीजबो—कर्म वा० ।

जिमणो, जिमवो, जीम्हणो, जीम्हवो—रू०भे० ।

जीमना—स०स्त्री०—यमुना, रवि-तनया (जैन)

जीमाड़णो, जीमाडवो—क्रि०प० ('जीमणो' क्रिया का प्रे० रू०) भोजन करवाना, खिलाना । उ०—१ ताहरां चारण दूहो लै नै हालियो । विचै मारग मे एक गाव चारण घरै उतरियो । ताहरा राति जीमाडियो
—फोफाणद री वात

उ०—२ मोटी रामसिहजी तेडि अर आप कन्है जीमाडियो ।
—द वि.

जीमाडणहार, हारो (हारी), जीमाड़णियो—वि० ।

जीमाडिओड़ो, जीमाडियोडो, जीमाडयोडो—भू०का०कृ० ।

जीमाडीजणो, जीमाडीजवो—कर्म वा० ।

जिमाडणो, जिमाड़वो, जिमाणो, जिमावो, जिमावणो, जिमाववो, जीमाणो, जीमावो, जीमावणो, जीमाववो—रू०भे० ।

जीमाड़ियोड़ो—भू०का०कृ०—भोजन कराया हुआ।
(स्त्री० जीमाड़ियोड़ी)
जीमाणी, जीमाबो—देखो 'जीमाड़णी, जीमाड़बो' (रू.भे)
जीमाणहार, हारी (हारी), जीमाणियो—वि०।
जीमायोड़ो—भू०का०कृ०।
जीमाईजणी, जीमाईजबो—कर्म वा०।
जीमायोड़ो—देखो 'जीमाड़ियोड़ो' (रू.भे)
(स्त्री० जीमायोड़ी)
जीमावणी, जीमावबो—देखो 'जीमाड़णी जीमाड़बो' (रू.भे)
जीमावणहार, हारी (हारी), जीमावणियो—वि०।
जीमाविमोड़ो, जीमावियोड़ो, जीमाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
जीमावीजणी, जीमावीजबो—कर्म वा०।
जीमावियोड़ो—देखो 'जीमाड़ियोड़ो' (रू.भे)
(स्त्री० जीमावियोड़ी)
जीमियोड़ो—भू०का०कृ०—भोजन किया हुआ। (स्त्री० जीमियोड़ी)
जीमूत—सं०पु० [सं०] १ बादल, मेघ (डिं.को)
२ एक ऋषि का नाम (महाभारत) ३ एक मल्ल का नाम जो विराट की सभा में रहता था और भीम द्वारा मारा गया था।
(महाभारत)
४ शाल्मली द्वीप के एक देश का नाम (जैन)
जीमूतरिति—सं०पु०—एक ऋषि का नाम। उ०—१६ माठी, सत्रा परोहित [illegible] जीमूतरिति [illegible] बर, कामदव [illegible] १—[illegible]
रू०भे०—जीमरि(रि)ति।
जीमूतवाहण, जीमूतवाहन—सं०पु० [सं० जीमूत—वाहन] १ शालिवाहन राजा का पुत्र. २ इन्द्र, देवराज। उ०—[illegible] नरेंद्र, [illegible] हरिराइ, निरमल भीम, [illegible] जीमूतवाहन [illegible] १—[illegible]
रू०भे०—जीवाहन।
जीम्हण—देखो 'जीमण' (रू.भे) उ०—[illegible] प्रवाड़ा प्रगरव, [illegible] मन करै [illegible]। मैंशा रटक महाराण मथढें, जीम्हण रांण [illegible]।—महाराणा [illegible] री गीत
जीम्हणी, जीम्हबो—देखो 'जीमणी, जीमबो (रू.भे)
उ०—१ [illegible] महमहण, दुरजोधन रा देस। [illegible] विदुर घर जीम्हिया।—र.ज.प्र
उ०—२ [illegible] राजुला [illegible] रहै, मेळो जीम्हे, दरबार में गोखैं मांही सूतो रहै।—सूर [illegible] री बात
जीम्हियोड़ो—देखो 'जीमियोड़ो' (रू.भे.)
जीय—१ देखो 'जीव' (रू.भे) २ परम्परा से चला हुआ व्यवहार, प्रथा (जैन) ३ कर्तव्य (जैन) ४ व्यवस्था (जैन)
जीयकप्प—सं०पु० [सं० जीतकल्प] परम्परा से चला हुआ आचार (जैन)
जीयकप्पीय—वि०यौ० [सं० जीतकल्पिक] परम्परा से चले हुए आचार वाला (जैन)
जीय-निदा—वि०यौ०—१ वह जो पापी की निंदा नहीं कर के पाप की निन्दा करे (जैन) २ वह जो निंदकों की परवाह न करे (जैन)
३ वह जो स्वल्प निद्रा लेवे (जैन)
जीय-परिसह, जीय-परिसह—वि०यौ०—उपसर्ग, भूख, प्यास आदि २२ परिसहों को जीतने वाला (जैन)
जीय माण—वि०यौ०—वह जो विनय से मान को पराजित करे (जैन)
जीयमाय—वि०यौ०—वह जो सरलता से माया को पराजित करे (जैन)
जीयलोह—वि०यौ०—वह जो संतोष से लोभ को पराजित करे (जैन)
जीयै—सर्व०—जिस। उ०—१ जीयै घड़ी उदैराव रो जन्म हुवो तीयै घड़ी प्रोळि रा कागरा गिर पड़्या।—देवजी बगड़ावत री बात
उ०—२ मारी वळै किवाड़ां नु लगाइ नै जीयै मारिग आयो हुतो तीयै ही मारिग पाछो उतरियो।—चौबोली
जीर—देखो 'जीरो' (मह०, रू०भे०)
जीरय—सं०पु० [सं० जीरक] १ देखो 'जीरो' (रू.भे.)
२ एक प्रकार की वनस्पति (जैन)
जीरउ, जीरक—देखो 'जीरो' (रू.भे) (उ.र)
जीरण—वि० [सं० जीर्ण] १ जर्जर, बूढ़ा। उ०—प्रतिदिन मोळा पड भिन-भिन पद हुवै। धोळा नीरण बिन जीरण जिम हुवै।—ऊ.का
२ फटा-पुराना, जीर्ण-शीर्ण। उ०—सठ-मोह, जीरण वसन, जतन करता जाय। नगर-प्रीत, रेसम-लछा, पुळत-पुळत पुळ जाय।
—अज्ञात
३ टूटा-फूटा, पुराना. ४ कमजोर।
जीरण ज्वर—सं०पु० [सं० जीर्ण-ज्वर] पुराना बुखार।
जीरणता—सं०स्त्री०—पुरानापन, बुढ़ापा।
जीरणा—सं०स्त्री०—चार पुरुषों का वृक्ष विशेष (र.ज.प्र)
जीरणोद्धार—सं०पु० [सं० जीर्णोद्धार] टूटी-फूटी या जीर्ण-शीर्ण वस्तुओं का पुनः सुधार, मरम्मत। उ०—जुगसैं सवा लाख जिन-मंदिर कराया राजा संप्रति। नवासी हजार जिन-मंदिर रो जीरणोद्धार करायो
—वी.दा.ख्यात
जीरवणा—सं०स्त्री०—१ धैर्य। उ०—कहो सेनास, पन थारी माता पिता मा [illegible] ते बात रा जीरवणा राखी पण कही नहीं।
मयी हुदारो री बात
क्रि०प्र०—रापणी, होणी।
२ देखो 'जरणा' (रू.भे)
जीरवणो, जीरवबो—सं०पु०—हजम करना। उ०—दईत राज कुण दखै पारै नरसिंघ नरेसुर, काळकूट जीरवै न को पारै भूतेसर।
—मलूनाथ
जीरवियोड़ो भू०का०कृ०—हजम किया हुआ।
(स्त्री० जीरवियोड़ी)

जीरह—देखो 'जिरह' (रू भे) उ०—जान तणी साजति करउ । जीरह रगावळी पइहरज्यो टोप ।—वी दे.

जीराण–स०पु० [स० ज्वलनस्थान] मरघट, श्मशान । उ०—कमध जोगेस आदेस सह जग करै, दीध आसीस कर रीस दूणी । घाल आयो तू हीज वैरिया तणै घर, धुकै घमसाण जीराण धूणी ।

—महेसदास कूपावत री गीत

वि० [स० जीर्ण] जीर्ण, जर्जर ।

जीरुय–स०पु० [स० जीरुक] एक प्रकार की वनस्पति (जैन)

जीरौ–स०पु० [स० जीरक] १ दो हाथ ऊँचा एक पौधा जिसके सुगधित छोटे फूलो के गुच्छो को सुखा कर मसाले के काम मे लेते है । जीरा ।

रू०भे०—जीरउ, जीरक ।

मह०—जीर ।

२ लडकियो द्वारा गाया जाने वाला लोकगीत ।

जील–स०स्त्री०—सारगी के मुख्य दो तारो के नीचे कसे हुए तार जो सख्या मे कुल १७ होते हैं ।

जीवजीवक, जीवजीवग–स०पु० [स० जीवज्जीवक] १ देखो 'जीवजीव' (२) (रू भे, जैन) २ एक प्रकार की वनस्पति (जैन)

जीवजीव–स०पु० [स० जीवजीव] १ एक प्रकार का वृक्ष २ चकोर पक्षी ३ जीव का आधार, आत्म पराक्रम (जैन) ४ जीवन (जैन)

जीवती–स०स्त्री०—१ सजीवनी (अ.मा) २ हरडै, हरीतकी ।

(ना मा, ह ना)

३ एक लता जिसकी टहनिया औषधि के काम आती हैं (अमरत)

जीववौ–वि०—जो जिंदा हो । सजीव हो । जीवित ।

उ०—मरियदा जीवाड ही जीववा मारै ।—केसोदास गाडण

जीव–स०पु० [स०] १ प्राणियो का चेतन तत्व, जीवात्मा, आत्मा ।

मुहा०—१ जीव कळपणौ—आत्मा का दुखी होना । इच्छा के प्रतिकूल अथवा अनुचित कार्य होने से आत्मा को क्षोभ होना २ जीव कळपाणौ—जी को कष्ट पहुँचाना । अनुचित कार्य कर के अथवा किसी की इच्छा के प्रतिकूल कार्य कर के आत्मा को कष्ट पहुँचाना ३ जीव खटकणौ—जी खटकना । किसी सदेह के कारण आत्मा का वेचैन रहना ४ जीव खटकाणौ—जीव खटकाना । किसी का आत्मा को वेचैन करना. ५ जीव ठडो राखणौ—जी ठडा रखना, शान्त रहना, धैर्य रखना ६ जीव ठडो होणौ—जी ठडा होना । आत्मा को शान्ति मिलना. ७ जीव तपणौ—जी तपना । आत्मा का कष्ट पाना । क्रोधित होना ८ जीव तपाणौ—जी तपाना । किसी कार्य की सिद्धि के लिये साधना करना । आत्मा को कष्ट देना । किसी की आत्मा को कष्ट पहुँचाना । क्रोधित होना । किसी को क्रोधित करना ९ जीव पाणी-पाणी होणौ—जी पानी-पानी होना । बहुत कष्ट सहन करना । चित्त कोमल होना । दयार्द्र होना १० जीव बळणौ—जी जलना । आत्मा का कुढना । दुखी होना । क्रोधित होना । किसी से ईर्ष्या करना ११ जीव बाळणौ—जी जलाना । आत्मा को दुखी करना । कुढाना । क्रोधित करना । ईर्ष्या करना. १२ जीव भरीजणौ—जी भरना । आत्मा का सन्तुष्ट होना. १३ जीव मे जीव आणौ—जी मे जी आना । आत्मा का चिंता रहित होना । चैन आना । आत्मा का सुख पाना १४ जीव मोटो करणौ—जी वडा करना । दुखी नही होना । धैर्य धारण करना ।

कहा०—जीव दोरौ है तौ सोरौ कई है—यदि आत्मा ही दुखी है तो सुख क्या है । सुख के सभी साधन होते हुए भी यदि आत्मा दुखी है तो वह सुखी नही अर्थात् आत्मा की सन्तुष्टि ही सुख है ।

यौ०—जीवात्मा ।

२ जीवन तत्व । प्राण । जान । उ०—जन हरिदास या जीव कै, दुख सुख चालै साथि । अब या चीरी क्यू मिटै, ता दिन आई हाथि ।

—ह पु वा

मुहा०—१ जीव अच्छौ होणौ—जी अच्छा होना । रोग आदि की वेचैनी या पीडा नही होना । स्वस्थ होना । नीरोग होना. २ जीव अटकणौ—देखो 'जीव रुकणौ' ३ जीव आणौ—जी आना । आराम मिलना । विश्राम मिलना । चैन आना ४ जीव ऊँ(सू) खेलणौ—जी से खेलना । जान खो बैठना । मरना. ५ जीव ऊँचो चढणौ—भयभीत होना । जी घबराना । सदमा पहुँचना ६ जीव कापणौ—जी काँपना । भय के कारण दुखी होना । किसी आशका से थर्राना ७ जीव काडणौ—जी निकालना । प्राणविहीन कर देना. ८ जीव खपाणौ—जी खपाना । किसी कार्य मे बहुत दिलचस्पी लेना । अत्यत कष्ट उठाना । प्राण देना । परेशान होना ९ जीव गमाणौ—जी गुमाना । प्राणो की वाजी लगाना । प्राण खोना १० जीव गोटी खाणौ—जी चकराना । जी में घबराहट पैदा होना. ११ जीव घबराणौ—जी घबराना । जी मे उद्वेग उत्पन्न होना । दुखी होना. १२ जीव छूटणौ—जी छूटना । पीछा छूटना । दम तोडना । प्राण निकल जाना १३ जीव छोडणौ—जी छोडना । प्राण देना । मर जाना १४ जीव जान लडाणौ—जी जान लडाना । पूर्ण रूप से दिलचस्पी लेना । मन लगाना । जुट जाना । प्राणो की वाजी लगाना १५ जीव जाणौ—जी निकलना । प्राण निकलना । जिन्दा हो जाना । सजीव हो जाना. १६ जीव तोडणौ—जी तोडना । दम तोडना । प्राण निकलना. १७ जीव दान—जी दान । प्राण दान । प्राणो की रक्षा । १८ जीव देणौ—जी देना । प्राण छोडना । अपने प्राणो से भी बढ़ कर प्रिय समझना १९ जीव दोरो होणौ (ह्वणौ) जी कष्ट पाना । जी घबराना २० जीव धडकणौ—भय के कारण थर्राना । मन मे डरना । आशकित होना । जी धडकना २१ जीव धडका खाणौ—कलेजा धक-धक करना । भय के कारण हृदय का धडकना २२ जीव धक-धक करणौ—देखो 'जीव धडका खाणौ'. २३ जीव धक धक होणौ—किसी भय के कारण सशकित होना, डर के कारण मन का अस्थिर होना. २४ जीव धैंलणौ—भयभीत होना, आतकित होना, एकाएक घबराना २५ जीव धैंलाणौ—

मुहा०—१ जीव आणो—जी मे आना। मन मे बसना। किसी के प्रति स्नेह होना। किसी पर मन चलना २ जीव उकताणो—बहुत समय तक एक ही दशा मे रहने से परिवर्तन के लिये चित्त का व्यग्र होना। मन का न लगना. ३ जीव उखडणो—देखो 'जीव उकताणो' ४ जीव उड जाणो (उडणो)—देखो 'जीव उकताणो' ५ जीव उचकणो—मन हटना। चित्त न लगना ६ जीव उचटना—मन मे उचाट पैदा होना। चित्त विक्षिप्त होना ७ जीव उठाणो—मन हटाना। चित्त फेर लेना। विरक्त होना। जी उठाना. ८ जीव उलट जाणो—चित्त चचल होना। होश-हवास जाता रहना। मन फिर जाना। चित्त विरक्त होना ९ जीव ऊठणो—मन हट जाना। मन न लगना। विरक्त हो जाना १० जीव ओचारणो—मति पलट होना। धोका देना. ११ जीव करणो—जी करना। मन चलना। इच्छा होना। लालायित होना. १२ जीव खपाणो—जी तोड कर किसी कार्य मे लगना। जी खपाना। खूब मन लगा कर कार्य करना. १३ जीव खराव करणो—जी खराव करना। मन पर कावू नही पाना। मन चचल करना. १४ जीव खराव होणो—मन का वश मे नही रहना। अनुपयुक्त या अनुचित इच्छा होना। मन का स्थिर नही रहना। १५ जीव (खट्टो) खाटो करणो—मन हटा देना, चित्त विरक्त कर देना, घृणा उत्पन्न कर देना १६ जीव (खट्टो) खाटो पडणो—१७ जीव (खट्टो) खाटो होणो—अनुराग न रहना, घृणा होना, मन फिर जाना, चित्त हट जाना १८ जीव खुलणो—डर नही रहना, सकोच दूर होना, धडक न रहना, किसी कार्य को करने मे हिचक न रहना. १९ जीव खोटो—कपटी दिल का, धोखा देने वाला २० जीव खोटो करणो—कपट करना, मन विचलित करना २१ जीव खोटो होणो—मति पलटना, मन मे कपट आना २२ जीव खोल नै—जी खोल कर, बिना किसी डर के, बिना किसी हिचक या सकोच के, अपनी ओर से किसी प्रकार की कमी किये बिना, मनमाना, यथेष्ट २३ जीव गोता खाणो—विचलित होना। डावाडोल होना २४ जीव घवराणो—जी घवराना, मन का दुखी होना, कष्ट पाना, मन मे व्यग्र होना, मन स्वस्थ नही रहना, जी ऊबना २५ जीव घालणो—स्नेह करना, मन लगाना, तल्लीन होना, प्राण डालना, जीवित करना, जी डालना २६ जीव चलणो—मन मोहित होना, इच्छा होना, जी चाहना. २७ जीव चलाणो—चाह करना, इच्छा करना, मन दौडाना, लालायित होना हौसला बढाना, हिम्मत बँधाना. २८ जीव चालणो—देखो 'जीव चलणो'. २९ जीव चुराणो—किसी कार्य अथवा बात से बचने के लिए वहाना बनाना, हीला-हवाली करना, जी चुराना ३० जीव छिपाणो—किसी कार्य अथवा बात से बचने के लिए अपने आपको छुपा लेना, इधर-उधर हो जाना, देखो 'जी चुराणो'. ३१ जीव छोटो करणो—कजूसी करना, उदारता छोडना, चित्त उदास करना, उत्साह कम करना. ३२ जी जान ऊ लगाणो—तल्लीन होकर लगना, पूर्ण ध्यान लगाना, मन से प्रवृत्त होना. ३३ जीव जान लडाणो—ध्यान लगाना, जुट जाना, दत्तचित्त होना. ३४ जीव जोग—विश्वासपात्र, जिस पर भरोसा किया जा सके ३५ जाव झेलणो—मन पकडना, धैर्य रखना ३६ जीव टूटणो—विरक्ति होना, उदासीनता होना, उमग या हौसला न रहना ३७ जीव टेकणो—मन लगाना, किसी कार्य मे दिलचस्पी लेना ३८ जीव ठा मार्थ रै'णो—मन स्थिर रहना, डावाडोल न होना. ३९ जीव डूवणो—चित्त व्याकुल होना, कुछ भय सा प्रतीत होना बेचैनी होना, घवराहट होना, मूर्छा आना, बेहोशी होना, लीन होना, तल्लीन होना. ४० जीव ढाईजणो—जी बैठ जाना, जी अधीर होना, घवरा जाना, व्याकुल होना, विलाप करना, रुदन करना, कुछ भय सा प्रतीत होना ४१ जीव ढाळणो—स्नेह करना, प्रेम करना, बहुत प्यार करना ४२ जीव तरसणो—किसी इच्छा की पूर्ति न होने से दुःख होना, अधीर होना, कष्ट पाना, लालायित होना ४३ जीव तरसाणो—किसी वस्तु के लिये लालायित करना, अधीर करना, कष्ट देना ४४ जीव दूखणो—हृदय को कष्ट पहुँचना, चित्त दुखी होना ४५ जीव दुखाणो—हृदय को कष्ट देना, चित्त को व्यग्र करना. ४६ जीव दोरो करणो—इच्छा की पूर्ति नही होने के कारण चिंतित होना, किसी के अनुचित व्यवहार के कारण दुखी होना ४७ जीव दोरो होणो—मन मे घुटन होना, ऊबना ४८ जीव दौडणो—मन चलना, चित्त का चचल होना, किसी समस्या के हल के लिए जी का व्यग्र होना, लालसा होना, जी दौडना। ४९ जीव नै नही भावणो (लागणो)—जी को अच्छा नही लगना, मन हट जाना ५० जीव नैनो करणो—देखो 'जीव छोटो करणो' ५१ जीव पिघळणो—हृदय द्रवित होना, दया आना, दयार्द्र होना, प्रेम से हृदय का द्रवित होना, मन मे स्नेह का सचार होना ५२ जीव पीतळणो—हृदय का (किसी पर) अनुरक्त होना, मन मोहित होना, विचार बदलना, मति पलट जाना, मन मे कपट का सचार होना ५३ जीव फाटणो—पहले का सा प्रेम-भाव न रहना, मन से निकल जाना, उदासीन हो जाना (किसी की ओर से) विरक्त हो जाना, भयभीत होना, डरना ५४ जीव फिर जाणो—मति पलट जाना, हृदय मे कपट उत्पन्न हो जाना ५५ जीव फिरणो—देखो 'जीव फिरजाणो' चक्कर आना, जी घवराना. ५६ जीव फीको पडणो—मन चिंतित होना, उदासीन होना, अरुचि होना, मन मे ग्लानि आना, जी नही लगना। ५७ जीव विगडणो—मति पलटना। इच्छुक होना। क्रोधित होना। घवराना। बेचैन होना। विचलित होना ५८ जीव विगाडणो—(हडपने के लिये) मति पलटना। (खाने के लिये) इच्छुक करना या इच्छुक होना। क्रोधित करना। घवराना। बेचैन करना। ५९ जीव बैलणो—किसी विषय मे चित्त का आनन्दपूर्वक लीन होना। किसी

१० वल, पराक्रम (जैन)

रू०भे०—जिव, जीग्र, जीउ, जीऊ, जीवण, जीय।

ग्रल्पा०—जिवडौ, जीवडली, जीवडौ।

जीवक–स०पु० [स०] १ एक प्रकार का पौधा या जडी जो ग्रष्टवर्ग के ग्रन्तर्गत माना जाता है (ग्रमरत) २ प्राण धारण करने वाला ३ जीव। प्राण ४ सेवक ५ सूदखोर।

जीवका–स०स्त्री० [स० जीविका] जीवन निर्वाह करने का साधन। उपाय। वृत्ति। रोजी। उ०—सीहा के कुळ सभव सदीव। जीवका हेत हसि देत जीव।—ऊ.का.

रू०भे०—जीविका।

जीवकाय–स०पु० [स०] जीवलोक, जीवराशि (जैन)

जीवग्गाह–वि० [स० जीवगाह] जीवित को पकडने वाला (जैन)

जीवडलौ, जीवडौ—देखो 'जीव' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—१ मनडा मे ई येई वसौ रे राज। मीठा मारू रे कागदियौ हाथा मे रे, जीवडलौ वाता मे रे मोरा राज।—लो गी

उ०—२ जीव चा सवद सुण जीवडा, महियळ जळ थळ मभळी। ग्रालेख पुरुस ग्रपरम परम, जळहर सद्द सु सभळी।—ह.र

जीवजज्र—देखो 'जज्वजीव' (रू भे, ग्र मा)

जीवजनावर, जीवजानवर–स०पु०यौ०—जीव-जन्तु।

जीवजूण—देखो 'जीवाजूण' (रू भे) उ०—चौरासी लाख जीवजूण पाणी बुदवुदा।—केसोदास गाडण

जीवजोग–स०पु०यौ० [स० जीवयोग्य] वह व्यक्ति जिसका स्वय का भरोसा हो। विश्वास-पात्र। उ०—इण भात सू उमरावा घणाई वरजिया, पिण रीस रै वसै राजा वाद चढियौ थकौ काळौ घोडौ, काळौ सिरपाव ले नै ग्रापरा जीवजोग रा ग्रादमिया नै साथै मेलिया।

—रीसालू री वात

जीवट्ठाण–स०पु० [स० जीवस्थान] जीव-स्थान, गुण-स्थान (जैन)

जीवण–स०पु० [स० जीवन] १ वह ग्रवस्था जिसमे प्राणी ग्रपनी इन्द्रियो द्वारा चेतन व्यापार करते हैं। जन्म ग्रौर मृत्यु के बीच की ग्रवधि। जिन्दा रहने की दशा। जिन्दगी। उ०—१ सुणी सुद्धि मै वालम-तणी, विरह विथा तिणि छेइ मुझ घणी। जीवण पखइ जमारउ जाइ, भाजइ दुख जै मेळउ थाय।—ढो मा.

उ०—२ जितरा-जितरा पग दीजइ तितरा-तितरा ग्रस्वमेध ज्याग का फळ लीजइ। इणि विधि जीवण वेढिजइ, तउ सूरज-मडळ भेदिजई।

—ग्र वचनिका

उ०—३ हित लेगौ हाथाह, जीवण रौ सुख जेठवा।—जेठवा

क्रि०प्र०—काडणौ, विताणौ।

२ प्राण रहने का भाव। जीने का भाव या व्यापार। जीवित रहने का भाव। प्राण धारण। उ०—तो हुता ढोलो कहै, कूडी गल मा कत्थ। हवै तौ जीवण एकठा, मरतौ मारू सत्थ।—ढो मा

३ जिसके सहारे जिन्दा रहा जाय। प्राण का ग्रवलम्बन।

उ०—वासुदेव परब्रह्म, परम-ग्रातम परमेस्वर। ग्रखिल-ईस ग्रणपार जगत जीवण जोगेस्वर।—ह र.

४ देखो 'जीव' (रू भे) उ०—जे जीवण जिन्हा-तणा, तन ही माहि वसत। धारइ दूध पयोहरे, वाळक किम काढत।—ढो मा

५ पानी। जल। उ०—१ जीवण दाता वादळघा, थासू जीवण पाय। भल लूग्रा वाजै किती, मुरधर सहसी लाय।—लू

उ०—२ फूकण नव कोटी झडा फरहरिया। घर-घर जाती रा टामक घरहरिया। खाली जळ घरथी जळधर जळ खूटौ। ततखिण जीवण विण जगजीवण तूटौ।—ऊ का.

६ वह जिसके प्रति वहुत स्नेह हो, परम प्रिय, प्यारा. ७ जीविका, धधा, वृत्ति ८ हड्डी के भीतर का गूदा। मज्जा ९ सजीवनी. १० घी या मक्खन ११ वेटा, पुत्र. १२ परमेश्वर. १३ पवन, वायु (डि को)

रू०भे०—जीवन, जीवनि।

जीवणमाता—देखो 'जीणमाता' (रू भे)

जीवणसाल—देखो 'जीणसाल' (रू भे) उ०—राउत चडीया। सनाह लीधा। किस्या-किस्या सनाह। जरहजीण। जीवणसाल। जीवरखी। ग्रगरखी। कराग। वज्रागी। लोहवद्धलुडि। समस्त सनाह लीधा। सज्जीभूत हूग्रा।—का दे प्र

जीवणिकाय–स०पु० [स० जीव-निकाय] जीवराशि (जैन)

जीवणिज्ज–वि० [स जीवनीय] जीने योग्य, जीवनीय (जैन)

जीवणी—१ देखो 'जीवनी' (रू भे)

वि०स्त्री०—दाँयें पार्श्व की। दाहिनी।

जीवणौ—देखो 'जीमणौ' (रू भे) (स्त्री० जीवणी)

वि०—२ जीने वाला।

जीवणौ, जीववौ–क्रि०ग्र० [स० जीवनम्] १ जिंदा रहना। सजीव रहना। न मरना। उ०—पति सग जळा ग्रहि लाज पण तजा पास कुळ जुग तणौ। व्रत भग हुए वर वीछडे जिका ग्रजीवत जीवणौ।

—रा रू.

मुहा०—१ जीवणौ जैडे सीवणौ—जीवन भर किसी कार्य मे लगे रहना। २ जीवणौ भारी होणौ, जीवणौ मुस्कल होणौ—जीना दूभर होना, जीने का सुख-चैन चला जाना, जीना कष्टमय होना ३ जीवता—जीवन रहते हुए, बने रहते, जीवित ग्रवस्था मे, न मरने तक, उपस्थिति मे, ज्यू-म्हारै जीवता ग्रौ घर नही विक सकै। ४ जीवता रौ'—(एक ग्राशीर्वाद जो वडो की ग्रोर से छोटो द्वारा पाव छूने, प्रणाम ग्रादि करने पर दिया जाता है।) चिरजीवी हो। ग्रायुष्यमान हो, जिन्द रहो ५ जीवती माखी गिटणी—जान-बूझ कर ग्रनुचित कार्य करना, धोखा देना, मरासर वेईमानी करना ६ जीवतौ जागतौ—पूर्ण रूप से तत्पर, भला-चगा, सजीव ग्रौर सचेत, जिन्दा ग्रौर तत्पर ७ जीवतौ लोही—जिंदा दिल।

२ जीवन का समय व्यतीत करना, जिंदगी काटना। उ०—१ ऊन-

मिळउ उत्तर दिसह, मंडी ऊपर मेह। ते विरहिणी किम जीवसी, ज्यांरा दूर सनेह।—ढो मा.

उ०—२ ढोला ढोली हूर किया, मुंधा मनह विचारि। सदेसउ नह पाठवइ, जीवां किमइ पधारि।—ढो मा

जीवणहार, हारो (हारी), जीवणियो—वि०।

जिवाड़णो, जिवाड़बो, जिवाणो, जिवाबो, जिवावणो, जिवावबो—क्रि०स०।

जीवियोड़ो, जीवियोड़ो, जीव्योड़ो—भू०का०कृ०।

जीवीजणो, जीवीजबो—भाव वा०।

जिवणो, जिवबो—रूप० भे०।

जीणो, जीबो—रू०भे०।

जीवत—वि० [सं० जीवित] जीवित, जिंदा।

जीव तत्त्व-सं०पु० [सं० जीवतत्त्व] आत्मतत्त्व, चेतन पदार्थ (जैन)

जीवतव्य-सं०पु०—जीवन, जिंदगी। उ०—जीवतव्य नो आस्या टळी न पाणी नहीं पीयइ पड़ी। राणी वात विमासी घणी, जिह्वा लेइ कापूइइ भणी।—कां दे प्र.

जीवतसन, जीवतसिन, जीवतासम, जीवतासिन-सं०पु०यौ० [सं० जीवित+अशन] युद्ध में प्राणों से स्पृहा रहित होकर जीवित अपने वाला योद्धा, जीवित ही युद्ध में वीरगति प्राप्त करने वाला वीर।

उ०—१ जीवतसिन जोध अंतहूण जुधि, सार धरि आजान सुज। धुरै सिरि देवीस वरा वहू, भला म तोहर तूफ भुज।

—राठौड़ मनोहरदास रो गीत

उ०—२ यवनाईं कुण रसतो करो पाखई, रोर पह पताई पकड़ राखी। जीवतासिन बगतावर जगिया 'बनो', अमर पद करै रवि-पद साखी।—महारावत बखतसिंह भजनदास रो गीत

रू०भे०—जीवतसिम, जीवनीसम, जीवतोसन्नू, जीवगम।

जीवतौ-वि० [सं० जीवित] (स्त्री० जीवती) जो जिंदा हो, सजीव, प्राणयुक्त, जीवित। उ०—कर जोड़ पदम रावणि कहै, हाथ तुम्हें हूं हारगी। भरतार मनी भूगताय रे, निलज जीवती हूं नारगी।

—ऊ का

रू०भे०—जीतो।

जीवसोसन, जीवनीसन्नू—देखो 'जीवतसन' (रू.भे.) उ०—मद-भिरी भाग मधुकर हता ऊपरा, धाम कुहुवा इणी धाद खिसियो। वरैं तूं केम रंभ उचारै विधाता लेख में जीवसोसम लिखियो।

—राजा गजराज (रतलाम) रो गीत

जीवस्तिकाय-सं०पु० [सं० जीवास्तिकाय] १ चैतन्य उपयोग लक्षण वाला छः द्रव्यों में से एक द्रव्य (जैन) २ जीव समूह (जैन) ३ कर्म के करने तथा कर्म के फल को भोगने वाला (जैन) ४ सम्यक् ज्ञानादि के वश से कर्म समूह का नाश करने वाला (जैन)

जीवद्रव्य-सं०पु० [सं० जीवद्रव्य] छः द्रव्यों में से एक, जीव द्रव्य (जैन)

जीवद-सं०पु० [सं०] १ जीवन देने वाला २ शत्रु ३ वैद्य।

जीवदान, जीवदानु-सं०पु०यौ० [सं० जीवदान] १ प्राण रक्षा, (जिसकी मृत्यु होना निश्चित हो, उसकी प्राण रक्षा) २ अपने अधीन या वश में आए हुए किसी अपराधी या शत्रु (जिसको मारना आवश्यक हो) को प्राण रक्षा, न मारने या छोड़ देने का कार्य, प्राणदान।

उ०—बगु विणासी बगु विणासी जीमु आवेइ, वड़ावइ जगु सयलु जीवदानु तइ देव दिद्धउ केवलियवणु जु सच्चु किउ त्रिहु भुवणि जनवाउ निडउ।—प.प च.

जीवधन-सं०पु०यौ० [सं०] जीवों या पशुओं के रूप में संपत्ति।

वि०—परम-प्रिय, प्यारा।

जीवधारी-सं०पु०यौ० [सं०] चेतन प्राणी, जीवित देह, जानवर।

जीवन-सं०पु० [सं०] १ रक्त, खून, रुधिर (अ मा.)

२ देखो 'जीवण' (रू.भे.)। उ०—१ ढाढ़ी हेक सदेसड़ो, जीवन लग पहुंचाय। सन वन उतर बाळिया, विमणी बाजो बाय।

—ढो.मा.

उ०—२ असत महीनो आवियो, आविया रे जला, अब तो साजर म्हारी जेथ। तो बिन पड़ियन आवड़ै रे, ढोला, जीवन उतं इत दह।—लो.गी

यौ०—जीवनचरित, जीवनधन, जीवनबूटी, जीवनव्रतांत, जीवनवृत्ति, जीवनीय।

जीवनचरित, जीवनचरित्र-सं०पु०यौ० [सं० जीवन चरित्र] १ किसी की जिंदगी का हाल, जीवन वृत्तांत २ वह पुस्तक जिसमें किसी के जीवन का हाल हो।

जीवनद-सं०पु०—१ कमठ (अ मा.) २ बादल, मेघ।

जीवनधन-सं०पु०यौ० [सं०] १ वह वस्तु या व्यक्ति जो जीवन में परम प्रिय हो, जिंदगी का सर्वस्व. २ प्राणाधार, प्राणप्रिय।

जीवनबूटी-सं०स्त्री०यौ०—संजीवनी।

जीवनव्रतत, जीवनव्रत्त, जीवनव्रतांत-सं०पु०यौ० [सं० जीवनवृत्त, जीवन-वृत्तान्त] किसी के जीवन का वृत्तांत, जीवनी।

जीवनवृत्ति-सं०स्त्री०यौ० [सं० जीवनवृत्ति] जीविका, रोजी।

जीवना-सं०स्त्री०—हिम्मत, साहस। उ०—अद्वेत और एस्वरीय जीवना जरणी करै, मान्या करै मतव्य की करतव्य को करणी करै।

—ऊ का

जीवनि—देखो 'जीवण' (रू.भे.)। उ०—१ या वह विथा राम भल जाणै, विरह बसै तन माही। जन हरिदास हरि महलि पधारो, के अब जीवनि नांही।—ह पु वा

उ०—२ दादू दुखिया तब लगै, जब लग नांम न लेहि। तब ही पावन परमसुख, मेरी जीवनि येहि।—दादू

जीवनी-सं०स्त्री० [सं० जीवन+रा०प्र०ई] जीवनचरित, जीवन वृत्तान्त.

रू०भे०—जीवणी।

जीवनीय-सं०पु० [सं०] १ दूध. २ पानी।

जीवनीयगण-सं०पु०यौ० [सं०] बलकारक औषधियों का एक वर्ग।

(वैद्यक)

जीवन्मुक्त–वि० [स०] जो सासारिक मायाजाल से मुक्त हो।

जीवपणसिय—अन्तिम प्रदेश मे ही जीव की स्थिति को मानने वाले विष्णु गुप्त आचार्य के मत का अनुयायी (जैन)

जीवपति–स०पु० [स०] धर्मराज।

जीववधू–स०पु० [स०] जीवबधु, बधुजीव, वधूक (अ मा)

जीवभासा–स०स्त्री०यौ० [स०जीवभाषा]—जन्तुओ की बोली (भाषा)।
उ०—ताहरा कीडी कह्यो—म्हारै पाहुणा आया छै, ले जावण दे मोनु। इसी वात साभळि नै राजाभोज हसीयो। राजा जीवभासा सरब जाणतो।—चौबोली

जीवमात्रका–स०स्त्री०यौ० [स० जीवमातृका] वे सात देविया जो माता के समान जीवो का पालन करती हैं—कुमारी, धनदा, नदा, विमला, मगला, बला और पद्मा।

जीवरखी–स०स्त्री०यौ०—एक प्रकार का कवच या सनाह।
उ०—राउत चडिया, सनाह लीधा, किस्या किस्या सनाह, जरहजीण, जीवणसाल, जीवरखी, अगरखी, करागी, वज्रागी, लोहबद्ध लुडि, समस्त सनाह लीधा, सज्जीभूत हूआ।—का.दे.प्र.

जीवरखो–स०पु०यौ०—१ बडे किले की रक्षा के लिए उसके चारो ओर बने छोटे छोटे किलो मे से एक, छोटा किला। उ०—१ भड भुरजा नू भाळजै, जीवरखा कद जोय। जे जग जुड जीवन रखे, जीवरखा व्है जोय।—रेवतसिंह भाटी
उ०—२ रिणमालोत कहै रिण रूधा, प्रचड तियागी बोल इसो। जूहविढार किसो जीवरखो, केहर रूधा साथ किसो।—द.दा.
२ जीवन रक्षा का उपाय ३ प्राण की रक्षा करने वाला, प्राण-रक्षक ४ एक प्रकार का कवच या सनाह।

जीवरि(खि)ति—देखो 'जीमूतरिखि' (रू भे.)। उ०—बुध सोनउ कसइ, अढार भार वनस्पति फूलपगर भरइ, धन्वतरि वइदउ करइ, जिवरि(खि)ति छोरडा रमाडइ, केतु भामणडा भमाडइ, गौरी सण कातइ, लाछि वस्तु सातइ, नारद हेरउ करइ, नव खडि फिरइ, धनद यक्ष भडारउ करइ, इसिउ रावण नरेस्वर।—व स.

जीवलोक–स०पु०यौ० [स०] मृत्युलोक, भूलोक।

जीवसभ—देखो 'जीवतसभ' (रू भे)। उ०—मेदपाटा तणी नीर राखियौ दूसरा 'मवा', सामध्रमा तणी बेल रहाडी सकत्त। सोहिया विरद मोटा 'जेसाह' जीवसभ, पाई फतै जीत जग रहाई प्रमत्त।
—दानौ वोगसो

जीवसम, जीवसमो–वि०—जीव के समान, परमप्रिय, प्यारा।

जीवहत्या, जीवहिंसा–स०स्त्री०यौ० [स०] १ वह दोष जो प्राणियो की हत्या करने से लगता है. २ किसी प्राणी का वध।

जीवाजूण—देखो 'जीवाजूण' (रू भे.)

जीवाण–स०पु० [स०जाव-प्राण] जलाशय, तालाब (ह ना.)

जीवाणुसासण–स०पु० [स० जीवानुशासन] १ जीव की शिक्षा समझ (जैन)
२ इस नाम का एक ग्रन्थ (जैन)

जीवातक–स०पु०यौ० [स०] प्राणियो का वध करने वाला, व्याध।

जीवा–स०स्त्री० [स०] १ सजीवनी (अ मा). २ पृथ्वी. ३ जीवन. ४ धनुष की डोरी।

जीवाउणो, जीवाउबो—देखो 'जिवाणो, जिवाबो' (रू भे.)
उ०—तद फूलमती विचारी ओ कुवर री ब्राह्मण आसै तो उवं पासै सजीवन विद्या छै सु जीवाउसी।—चौबोली

जीवाडणो–वि०—जीवित रखने वाला, जीवित करने वाला।
उ०—जाहर जग जीवाडणो, मांनै दोयण मेह। किणसू राखै केहरी, सेणाचार सनेह।—वा दा.

जीवाडणो, जीवाडबो—देखो 'जिवाणो, जिवाबो' (रू भे)
उ०—१ जीवाडी जैदेव की, प्रत नार मुरारे। तीलोके घर अत हुय, सब काज सुधारे।—भगतमाळ उ०—२ पण साबास छै मोटी ठकुराणी नू जे थानू राजी राखिया, म्हानू सगळा नू जीवाडिया।
—कुवरसी सांखला री वारता

जीवाउणहार, हारो (हारी), जीवाडणियो—वि०।
जीवाडिओडो, जीवाडियोडो, जीवाडयोडो—भू०का०कृ०।
जीवाडीजणो, जीवाडीजबो—कर्म वा०।
जीवाणो, जीवाबो, जीवावणो, जीवावबो—रू०भे०।
जीवणो, जीवबो—अक० रू०।

जीवाडियोडो—देखो 'जिवायोडो' (रू भे)
(स्त्री० जीवाडियोडी)

जीवाजीव–स०पु० [स०] १ जीव और अजीव पदार्थ. २ जीव अजीव के समझने का उत्तराध्यन का ३६वा अध्ययन।

जीवाजूण, जीवाजोण–स०पु०यौ० [स० जीवयोनि] जीवयोनि, प्राणीमात्र।
रू०भे०—जीवजूण, जीवाजूण।

जीवाणो, जीवाबो—देखो 'जिवाणो, जिवाबो' (रू.भे)
जीवाणहार, हारो (हारी), जीवाणियो—वि०।
जीवायोडो—भू०का०कृ०।
जीवाईजणो, जीवाईजबो—कर्म वा०।
जीवणो, जीवबो—अक० रू०।
जीवाडणो, जीवाडबो, जीवावणो, जीवावबो—रू०भे०।

जीवात्मा–स०स्त्री०यौ० [स०] जीवो की देह मे चेतना का व्यापार करने वाला कारण स्वरूप पदार्थ, आत्मा, जीव।

जीवाद–स०पु०—जीव-जन्तु, प्राणी।

जीवाधार–स०पु०यौ०—प्राण का आधार, वल्लभ, प्यारा।

जीवापोतो–स०पु० [स० पुत्रजीवक] पुत्रजीव वृक्ष, पुत्रजीवक (उ र)

जीवायोडो—देखो 'जिवायोडो' (रू भे) (स्त्री० जीवायोडी)

जीवाभिगम—१२९ उत्कालिक सूत्रो मे से जिवाभिगम नाम का सूत्र (जैन)
उ०—जीवाभिगम प्रमुख माहि भाखिवउ, ए सहु अरथ विचारो जी। साभळता भणता सुख सपदा, हीयडइ हरख अपारो जी।—स.कु.
२ जीव की समझ, जीव का ज्ञान (जैन)

उ०—२ नहग लाख तुग-तुग सग जुग हल्लये। चढ़े कि वेल ग्राकुळै समुद्र मेळ चल्लये।—रा रू.

जुगड़ो, जुगलो—देखो 'जूग' (ग्रल्पा, रू भे)

जुगु—देखो 'जग' (रू भे) उ०—जुगु के जंतवार।—सू प्र

जुगो—देखो 'जू।' 'ग्रल्पा, रू.भे)

जुजण-स०पु० [स० योजन] युक्त करना, जोडना (जैन)

जुजाऊ—देखो 'जूझाऊ' (रू भे)

जुजार—देखो 'जूजार' (रू भे)

जुजवाण-स०पु० [स० युद्धवान] जूझने वाला वीर, सुभट।

जुझाऊ—देखो 'जूझाऊ' (रू भे) उ०—जगा जागी वजे जुझाऊ, पनग सीस धूणै जेम, ग्रमगा वानैत ग्रंगा जोस मे ग्रमाप। घारै खागा उनागा उमगा ग्राप रगा घायो, पमगा ऊपडी वागा ऊ ग्रायो प्रताप।

—रावत प्रतापसिंह चूडावत ग्रामेट री गीत

जुझार—देखो 'जूझार' (रू भे.)

जुटो-स०पु०—१ ग्राहते के रूप मे खडी की हुई पत्थर की पट्टी, (ऐसी कई पट्टियां मिला कर ग्रहाता बनाया जाता है)

क्रि०प्र०—उरोलणी, रोपणी।

२ ऊपर से छितराया हुग्रा छोटा पौधा।

क्रि०प्र०—उरोलणी।

जुवाड़ो—देखो 'जुग्रो' (ग्रल्पा., रू भे)

जुवारी—१ देखो 'जवारी' (रू भे)

उ०—भैरू सिघ नैं भली विचारी, भलो निभायो मेळ। ग्राछी करी जुवारी मेरी, भलो दियो नारेळ।—डूगजी जवारजी री पड

२ देखो 'जुग्रारी' (रू भे.)

जुहो-क्रि०वि०—जैम। उ०—जुग्राळा ठेल घणौ घाव वूठो जम्मराव जुहो। उडिग ग्रावघा राव केफा वपल्ल।

—रावत रतनसिंह चूडावत री गीत

जु—देखो 'जो' (रू भे, उ.र)

उ०—१ स्रीपति कुण सुमति तूझ गुण जु, तवति तारू कवण जु समुद्र तरै। पखी कवण गयण लगि पहुँचै, कवण रक करि मेरु करै।—वेलि

प्रत्यय०—१ एक सयोजक शब्द जो कहना, वर्णन करना, देखना, सुनना ग्रादि क्रियाग्रो के वाद उनके विषय-वर्णन के पहले ग्राता है, कि। उ०—१ ताहरा पातिसाहजी कहियो जु म्हारै किसै तो मारयो न जाइ।—द वि उ०—२ ग्रापरा परधान मेल्हि नैं कहाडियो जु मोनैं मरणै रातो तो या कन्है ग्राऊ—द.वि

२ पादपूरक प्रत्यय। उ०—सत्तम प्रहरै दिवस के, घण जु वाढिया जाइ। पाणै ग्राग-बिजोरिया, घण छोलइ प्रिउ खाइ।—ढो मा.

३ प्रश्नवाचक प्रत्यय।

जुग्र-स०पु० [स० युग] १ काल विशेष (जैन)

२ देखो 'जुग्रो' (रू भे)। उ०—कुळ देवी मागळि छोडि ग्रचळ जुग्र नो ग्राचार। रुखमणी राम रमतडा कुण जीपस्यइ कुण हार।

—रुकमणी मगळ

वि० [स० युत] युक्त, सहित (जैन)

जुग्रजुग्रा—देखो 'जुग्रा' (रू भे.)

जुग्रति, जुग्रती—देखो 'जुवती' (रू भे.) (ग्र.मा)

जुग्रन्न-स०पु० [स० यवन] मुसलमान, यवन। उ०—जळ ग्राप रै रोस ग्रैसा जुग्रन्न। त्रिणा मात्र जाणै घणी कामि तन्न।—वचनिका

जुग्रळ, जुग्रळइ, जुग्रळि-स०पु० [स० युगल] वे जो एक साथ दो हों, जोडा, युग्म। उ०—१ नकुल ग्रनइ सहदेवु भडी जुग्रळइ जाया वेउ। प्रभु चद्रप्रभु थापियउ नासिका कूती देउ।—प प.च

उ०—२ नितवणी जघ सु करभ निरूपम, रभ खभ विपरीत रुख। जुग्रळि नाळि तसु गरभ जेहवी, वयणै वाखाणै विदुख।—वेलि

२ देखो 'जुयळ' (रू भे) उ०—हिम जे जडित हीर जुग्रळे मोजा जजीर।—गु रू व.

जुग्राण—देखो जवान' (रू भे.)। उ०—१ भालिमि कुळ भाण मन महिराण जस रस जाण जुग्राण। तद्र मल तुडि ताण विमळ वखाणि सूरति नाण समाण।—ल पि

उ०—२ वीरम भुज वळ गगदा, सिंह ऊदा सुरताण। घाटंचा ग्राया घरै, जगी सवळ जुग्राण।—पा.प्र.

रू०भे०—जुग्रान।

जुग्राणी—देखो 'जवानी' (रू भे.)

जुग्रान—देखो 'जुग्राण' (रू भे.)। उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति जिके छोगाळा छयल छवीला जुग्रान हूसनाइक फूला रा छोगा नाखीग्रा थका फूला रा चौसर पेहरिया थका।

—रा सा स

जुग्रानी—देखो 'जवानी' (रू भे)

जुग्रा-वि०—पृथक (उ र)

यौ०—जुग्रजुग्रा।

जुग्राडो-स०पु०—१ जेष्ठा नक्षत्र।

उ०—जेठ जुग्राडो। २ देखो 'जुग्रो' (२) (ग्रल्पा, रू भे)

जुग्राजुई—देखो 'जूवाजूवी' (रू भे) उ०—ग्रासालूध ग्रजेपुर ग्रावी, जुग सहू जोवति जुग्राजुई। लसियो हाजन प्रोढ़ो लाडो, ग्रकबर फौज सचीत हुई।—राठौड रतनसिंघ ऊदावत री वेलि

जुग्राजुग्रो-वि०यौ०—पृथक-पृथक, ग्रलग-ग्रलग। उ०—रमि रस ग्रकस सत्ति गति रतनै, जग रग ग्रग जुग्राजुग्रो। खडविहड हुग्रो खेडेचो, हुवइ घडा लयलीन हुवो।—राठौड रतनसिंघ ऊदावत री वेलि

जुग्राठो, जुग्राडो—देखो 'जुग्रो' (२) (ग्रल्पा, रू.भे)

जुग्रार—१ देखो 'जुहार' (रू भे.) २ देखो 'जवार' (२) (रू.भे.)

३ देखो 'जुग्रारी' (रू भे) उ०—या सारा में सार एक पापा री पूरी। लपट चोर जुग्रार जरणै गळकट गडसूरी।—सगराम

रू०भे०—जुग्रार।

जुग्रारभाटो—देखो 'जवार-भाटो' (रू भे)

उ०—२ लड़ग लाग तुग-तुग सग जुग हल्लये। चढ़े कि वेल ग्राकुळं समुद्र मेळ चल्लये।—रा रू

जुगडो, जुगलो—देखो 'जूग' (ग्रल्पा, रू भे)

जुगु—देखो 'जग' (रू भे) उ०—जुगु के जंतवार।—सू.प्र.

जुगो—देखो 'जूग' ग्रल्पा, रू.भे)

जुजण—स०पु० [स० योजन] युक्त करना, जोडना (जैन)

जुजाऊ—देखो 'जूझाऊ' (रू भे)

जुजार—देखो 'जूजार' (रू भे)

जुजवाण—स०पु० [स० युद्धवान] जूझने वाला वीर, सुभट।

जुझाऊ—देखो 'जूझाऊ' (रू भे) उ०—जगा जागी वजे जुझाऊ, पनग गोम धूजे जेम, ग्रभगा वानैत ग्रगा जोस मे ग्रमाप। धारै खागा उनागा उमगा ग्राप रगा धायो, पमगा ऊपडी वागा ऊ ग्रायो प्रताप।

—रावत प्रतापसिंह चूडावत ग्रामेट री गीत

जुझार—देखो 'जूझार' (रू भे.)

जुटो—स०पु०—१ ग्राहते के रूप मे खडी की हुई पत्थर की पट्टी, (ऐसी कई पट्टियां मिला कर ग्रहाता बनाया जाता है)

क्रि०प्र०—उखेलणी, रोपणी।

२ ऊपर से छितराया हुग्रा छोटा पौधा।

क्रि०प्र०—उखेलणी।

जुवाडो—देखो 'जुग्रो' (ग्रल्पा, रू भे)

जुवारी—१ देखो 'जवारी' (रू भे)

उ०—भेम सिघ नै भली विचारी, भलो निभायो मेळ। ग्राछी करी जुवारी भेरी, भलो दियो नारेळ।—डूगजी जवारजी री पड

२ देखो 'जुग्रारी' (रू भे)

जुहो—क्रि०वि०—जैसे। उ०—जुग्राळा ठेल घणो धाव वूठो जम्मराव जुहो। वडिग ग्रावधा राव केफा ववरूत।

—रावत रतनसिंह चूडावत री गीत

जु—देखो 'जो' (रू भे, उ.र)

उ०—१ श्रीपति कुण सुमति तूझ गुण जु, तवति तारू कवण जु समुद्र तरै। पखी कवण गयण लगि पहुँचै, कवण रक करि मेरु हरै।—वेलि.

ग्रव्य०—१ एक सयोजक शब्द जो कहना, वर्णन करना, देखना, सुनना ग्रादि क्रियाग्रो के वाद उनके विषय-वर्णन के पहले ग्राता है, कि। उ०—१ ताहरा पातिसाहजी कहियो जु म्हारै किये तो मारयो न जाइ।—द.वि. उ०—२ ग्रापरा परधान मेल्हि नै कहायो जु मोनै सरणै राखो तो था कन्है ग्राऊ—द.वि

२ पादपूरक ग्रव्यय। उ०—सतम प्रहरै दिवस कै, घण जु वाडिया जाइ। मार्ग राग-विजोरिया, धण छोलइ प्रिउ खाइ।—ढो मा.

३ ग्रवधारणासूचक ग्रव्यय।

जुग्र—स०पु० [सं० युग] १ काल विशेष (जैन)

२ देखो 'जुग्रो' (रू भे)। उ०—कुळ देवी मागळि छोडि ग्रचल जुग्र नी ग्राचार। रुखमणी राम रमतडा कुण जीपसयइ कुण हार।

—रुकमणी मगळ

वि० [स० युत] युक्त, सहित (जैन)

जुग्रजुग्रा—देखो 'जुग्रा' (रू भे)

जुग्रति, जुग्रती—देखो 'जुवती' (रू भे) (ग्र मा)

जुग्रन्न—स०पु० [स० यवन] मुसलमान, यवन। उ०—जळं ग्राप रै रोस ग्रैसा जुग्रन्न। त्रिणा मात्र जाणं धणी कामि तन्नं।—वचनिका

जुग्रळ, जुग्रळइ, जुग्रळि—स०पु० [स० युगल] वे जो एक साथ दो हो, जोडा, युग्म। उ०—१ नकुल ग्रनइ सहदेवु भडो जुग्रळइ जाया वेउ। प्रभु चद्रप्रभु थापियउ नासिका कूती देउ।—प प च

उ०— २ नितवणी जघ सु करभ निरूपम, रभ खभ विपरीत रुख। जुग्रळि नाळि तसु गरभ जेहवी, वयणे वाखाणे विदुख।—वेलि

२ देखो 'जुयळ' (रू भे.) उ०—हिम जे जडित हीर जुग्रळे मोजा जजीर।—गु रू व.

जुग्राण—देखो जवान' (रू भे)। उ०—१ भालिमि कुळ भाण मन महिराण जस रस जाण जुग्राण। तद्र मल तुडि ताण विमळ वखाणि सूरति नाण समाण।—ल पि

उ०—२ वीरम भुज वळ गगदा, सिंह ऊदा सुरताण। घाटंचा ग्राया घरै, जगी सवळ जुग्राण।—पा.प्र

रू०भे०—जुग्रान।

जुग्राणी—देखो 'जवानी' (रू भे)

जुग्रान—देखो 'जुग्राण' (रू भे.)। उ०—तठा उपराति करि नै राजान मिलामति जिके छोगाळा छयल छवीला जुग्रांन हूसनाइक फूला रा छोगा नाखीग्रा थका फूला रा चौसर पेहरिया थका।

—रा सा स

जुग्रानी—देखो 'जवानी' (रू भे.)

जुग्रा—वि०—पृथक (उ र)

यौ०—जुग्रजुग्रा।

जुग्राडो—स०पु०—१ जेष्ठा नक्षत्र।

उ०—जेठ जुग्राडो। २ देखो 'जुग्रो' (२) (ग्रल्पा, रू भे)

जुग्राजुई—देखो 'जूवाजूवी' (रू भे) उ०—ग्रासालूघ ग्रजेपुर ग्रावी, जुग सहू जोवति जुग्राजुई। लगियो हाजन प्रोढ़ो लाडो, ग्रकवर फौज सचीत हुई।—राठौड रतनसिघ ऊदावत री वेलि

जुग्राजुग्रो—क्रि०यौ०—पृथक-पृथक, ग्रलग-ग्रलग। उ०—रमि रस ग्रकस सत्ति गति रतनै, जग खग ग्रग जुग्राजुग्रो। खडविहड हुग्रो खेड़ेचो, हुवइ घडा लयलीन हुवो।—राठौड रतनसिघ ऊदावत री वेलि

जुग्राठो, जुग्राडो—देखो 'जुग्रो' (२) (ग्रल्पा, रू.भे.)

जुग्रार—१ देखो 'जुहार' (रू.भे) २ देखो 'जवार' (२) (रू भे)

३ देखो 'जुग्रारी' (रू भे) उ०—या सारां मे सार एक पापा री पूरी। लपट चोर जुग्रार जणै गळकट गवसूरी।—सगराम

रू०भे०—जूग्रार।

जुग्रारभाटो—देखो 'जवार-भाटो' (रू.भे)

उ०—२ लडग लाल तुग-तुग सग जुग हल्लये। चढे कि वेल ग्राकुळ समुद्र मेळ चल्लये।—रा रू.

जुगडौ, जुगलौ—देखो 'जूग' (ग्रल्पा, रू भे)

जुगु—देखो 'जग' (रू भे) उ०—जुगु के जैतवार।—सू प्र

जुगौ—देखो 'जूंग' 'ग्रल्पा, रू.भे)

जुजण-स०पु० [स० योजन] युक्त करना, जोडना (जैन)

जुजाऊ—देखो 'जूझाऊ' (रू.भे)

जुजार—देखो 'जूजार' (रू भे)

जुजवाण-स०पु० [स० युद्धवान] जूझने वाला वीर, सुभट।

जुझाऊ—देखो 'जूझाऊ' (रू भे) उ०—जगा जागी वजे जुझाऊ, पनग सीस धूणे जेम, ग्रभगा वानैत ग्रगा जोस मे ग्रमाप। धारै खागा उनागा उमगा ग्राप रगा धायौ, पमगा ऊपडी वागा ऊ ग्रायौ प्रताप।

—रावत प्रतापसिंह चूडावत ग्रामेट री गीत

जुझार—देखो 'जूझार' (रू भे)

जुटौ-स०पु०—१ ग्राहते के रूप मे खडी की हुई पत्थर की पट्टी, (ऐसी कई पट्टिया मिला कर ग्रहाता वनाया जाता है)

क्रि०प्र०—उखेलणौ, रोपणौ।

२ ऊपर से छितराया हुग्रा छोटा पौधा।

क्रि०प्र०—उखेलणौ।

जुवाडौ—देखो 'जुग्रौ' (ग्रल्पा, रू भे)

जुवारी—१ देखो 'जवारी' (रू भे)

उ०—भैरू सिंघ नै भली विचारी, भलौ निभायौ मेळ। ग्राछी करी जुवारी मेरी, भलौ दियौ नारेळ।—डूगजी जवारजी री पड

२ देखो 'जुग्रारी' (रू भे)

जुही-क्रि०वि०—जैसे। उ०—जुग्राळा ठेल घणौ घाव वूठौ जम्मराव जुही। वडिग ग्रावघा राव केफा वपरूत।

—रावत रतनसिंह चूडावत री गीत

जु—देखो 'जो' (रू भे, उ.र)

उ०—१ स्रीपति कुण सुमति तूझ गुण जु, तवति तारू कवण जु समुद्र तरै। पखी कवण गयण लगि पहुँचै, कवण रक करि मेरु करै।—वेलि

ग्रव्य०—१ एक सयोजक शब्द जो कहना, वर्णन करना, देखना, सुनना ग्रादि क्रियाग्रो के वाद उनके विपय-वर्णन के पहले ग्राता है, कि। उ०—१ ताहरा पातिसाहजी कहियौ जु म्हारै कियै तौ मारचौ न जाइ।—द.वि. उ०—२ ग्रापरा परधान मेल्हि नै कहाडियौ जु मोनै सरणै राखौ तौ था कन्है ग्राऊ—द.वि

२ पादपूरक ग्रव्यय। उ०—सत्तम प्रहरै दिवस कै, घण जु वाडिया जाइ। ग्राणै द्राख-विजोरिया, धण छोलइ प्रिउ खाइ।—ढो मा.

३ ग्रवधारणासूचक ग्रव्यय।

जुग्र-स०पु० [स० युग] १ काल विशेप (जैन)

२ देखो 'जुग्रौ' (रू भे)। उ०—कुळ देवी ग्रागळि छोडि ग्रचळ जुग्र नौ ग्राचार। रुखमणी राम रमतडा कुण जीपसयइ कुण हार।

—रुखमणी मगळ

वि० [स० युत] युक्त, सहित (जैन)

जुग्रजुग्रा—देखो 'जुग्रा' (रू भे)

जुग्रति, जुग्रती—देखो 'जुवती' (रू भे) (ग्र मा)

जुग्रन्न-स०पु० [स० यवन] मुसलमान, यवन। उ०—जळ ग्राप रै रोस ग्रैसा जुग्रन्न। त्रिणा माग्र जाणै घणी कामि तन्न।—वचनिका

जुग्रळ, जुग्रळइ, जुग्रळि-स०पु० [स० युगल] वे जो एक साथ दो हों, जोडा, युग्म। उ०—१ नकुल ग्रनइ सहदेवु भडौ जुग्रळइ जाया वेउ। प्रभु चद्रप्रभु थापियउ नासिका कूती देउ।—पं प च

उ०—२ नितवणी जघ सु करभ निरूपम, रभ खभ विपरीत रख। जुग्रळि नाळि तसु गरभ जेहवी, वयणे वाखाणै विदुख।—वेलि

२ देखो 'जुयळ' (रू भे) उ०—हिम जे जडित हीर जुग्रळै मोजा जजीर।—गु रू व.

जुग्रांण—देखो जवान' (रू भे)। उ०—१ भालिमि कुळ भाण मन महिराण जस रस जांण जुग्राण। तढ मल तुडि ताण विमळ वखाणि सूरति नाण समाण।—ल पि.

उ०—२ वीरम भुज वळ गगदा, सिंह ऊदा सुरताण। वाटैंचा ग्राया घरै, जगी सवळ जुग्रांण।—पा प्र

रू०भे०—जुग्रान।

जुग्राणी—देखो 'जवानी' (रू भे.)

जुग्रान—देखो 'जुग्राण' (रू भे)। उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति जिके छोगाळा छयल छवीला जुग्रान हूसनाइक फूला रा छोगा नाखीग्रा थका फूला रा चौसर पेहरिया थका।

—रा सा स

जुग्रानी—देखो 'जवानी' (रू भे)

जुग्रा-वि०—पृथक (उ र)

यौ०—जुग्रजुग्रा।

जुग्राडौ-स०पु०—१ जेष्ठा नक्षत्र।

उ०—जेठ जुग्राडौ। २ देखो 'जुग्रौ' (२) (ग्रल्पा, रू भे)

जुग्राजुई—देखो 'जूवाजूवी' (रू भे) उ०—ग्रासालूघ ग्रजेपुर ग्रावी, जुग सहू जोवति जुग्राजुई। लसियौ हाजन प्रोढौ लाडो, ग्रकवर फौज सचीत हुई।—राठौड रतनसिंघ ऊदावत री वेलि

जुग्राजुग्रौ-वि०यौ०—पृथक-पृथक, ग्रलग-ग्रलग। उ०—रमि रस ग्रकस सत्ति गति रतनै, जग खग ग्रग जुग्राजुग्रौ। खडविहड हुग्रौ खेहेचौ, हुवइ घडा लयलीन हुवौ।—राठौड रतनसिंघ ऊदावत री वेलि

जुग्राठौ, जुग्राडौ—देखो 'जुग्रौ' (२) (ग्रल्पा., रू.भे)

जुग्रार—१ देखो 'जुहार' (रू भे) २ देखो 'जवार' (२) (रू भे)

३ देखो 'जुग्रारी' (रू भे) उ०—या सारा में सार एक पापा री पूरी। लपट चोर जुग्रार जणै गळकट गडसूरी।—सगराम

रू०भे०—जुग्रार।

जुग्रारभाटौ—देखो 'जवार-भाटौ' (रू भे)

७ चार की सख्या# (डिं को) ८ वाद्य विशेष (व.स)
९ देखो 'जुग्रो' (२) (जैन)
वि०—एक ग्रौर एक का योग, दो।
रू०भे०—जुगि, जुग।
जुगग्रत–स०पु० [स० युगान्त] प्रलयकाल।
रू०भे०—जुगत, जुगात, जुगातक।
जुगग्रसक–स०पु० [स० युगाश, युगाशक] वर्ष, साल (डिं को.)
वि०—युग का विभाजक।
जुगणी—देखो 'जोगणी' (रू.भे.) उ०—परिवार सहै हुवे ग्रपती, जुगणी चवसठ सगति जिती।—सू प्र
जुगत–स०स्त्री०—[स० युक्ति] १ व्यवस्था, प्रवन्ध। उ०—इण तरै किसनू री काम तो पार लघियो। चदू री मा खनै टापरो हो जिको ग्रडाणै राखर व्याव री जुगत बैठायी।—वरसगाठ
२ कौशल, चातुरी। उ०—१ भरियौ-भरियौ भणै, प्रथम ग्रारभ पहिचाणौ। झाडौ-झाडौ जपै, जुगत ग्राखर मे जाणौ।—ऊ का.
उ०—२ विविध वणाय-वणाय, जुगत घणी रचियौ जगत। कोधी वुसत न काय, रुपिया सरसी, राजिया।—किरपाराम
३ देखो 'जुकत, जुकती' (रू भे) उ०—उण दिन ले पदमणि सिध ग्राणी। बात कही जिम जुगत वखाणी—सू प्र.
४ प्रकार, तरह, भांति। उ०—जाणै इद्रजी घटा करि नै धरती ऊपर पधारिया छै। इण जुगत सो जान पधारिया छै।
—लाली मेवाडी री वात
५ देखो 'जगत' (रू भे) ६ तर्क, दलील।
वि०—उचित, ठीक, वाजिब। उ०—इण बाळक रो मूहडौ बारै वरस ताई देखणौ जुगत नही छै।—रिसाळू री वात
जुगति, जुगती–स०स्त्री० [स० युक्ति] १ विधि, ढग।
उ०—१ स्रीखड पक कुमकुमौ सलिल सरि, दळि मुगता ग्राहरण दुति। जळ क्रीडा क्रीडति जगतपति, जेठ मासि एही जुगति।—वेलि.
२ मेल। उ०—सिव-सगती, सम जुगती। सिव हारयउ, जीत्यउ सगती।—ग्र वर्चानका
३ देखो 'जुकत-जुकती' (रू भे) उ०—१ सरसती कठि स्री ग्रिहि मुखि सोभा, भावी मुगति तिकरि भुगति। उवरि ग्यान हरि भगति ग्रातमा, जपै वेलि त्या ए जुगति।—वेलि
उ०—२ च्यार प्रकार की जुगति सात रूपकू के विधान। पच प्रकार की उगति ग्रस्टा विधान।—सू प्र उ०—३ चोरा जुगती कुगती कीनी, भोग भोगणें धण सुख भीनी।—ऊ का
४ देखो 'जुगत' (रू भे)
जुगनी–स०स्त्री०—विष्णु मूर्ति का शिर का ग्राभूपण।
जुगनू–स०पु०—एक प्रकार का कीडा जो गुवरैला की जाति का होता है ग्रौर उसका पीछे का भाग ग्राग की तरह चमकता है, खद्योत।
जुगपति, जुगपती–स०पु०[स० युग=मिथुन+पति]—चन्द्रमा (ग्र मा)
जुगपवरु–स०पु० [स० युगप्रवर] युगप्रवर। उ०—जयहि जाम जलु रहइ गयणि जाम मह दिणेसरु। ताम पयासिउ सूरि पमु जुगपवरु जिणेसरु।—ऐ जै का.स.
जुगपहाणु–स०पु० [स० युगप्रधान] युगप्रधान। उ०—जुगपहाणु जिण पदम सूरे, नाम ठविउ सुपवित्ता ग्राणदिय सुर नर रमणि, जय जयकार करति।—ऐ जै का.म.
जुगपसा–स०स्त्री० [स० जुगुप्सा] निंदा, बुराई, घृणा।
जुगबाहु–स०पु० [स० युग-बाहु] नवीं तीर्थंकर के तीसरे पूर्व भव का नाम (जैन)
वि०—ग्राजानबाहु (जैन)
जुगमधर–स०पु०—विदेह के वर्ष (देश) मे उत्पन्न एक जिन देव।
उ०—स्री जुगमधर करुणा सागर, विरहमाण जिणिंद जी। सेवक नी प्रभु सार करीजइ, दीजइ परमाणद जी।—स-कु.
जुगम–स०पु० [स० युग्म] १ एक साथ दो, जोडा, दो।
उ०—१ ररो मम्म जुगम ग्रै ग्रक बाकी रह्या, प्रसिद्ध तिणसूं करै लिया पियारा। जेण परभाव निध सिधादिक मो जुमैं, सुर ग्रसुर नाग नर नमै सारा।—र.रू उ०—२ निज ग्राठ जोग ग्रभ्यास ग्रहनिस सधै सुर घर जुगम रवि सस।—र ज प्र
जुगमित्त–[स० युगमात्र] क्षेत्र से चार हाथ प्रमाण देखने वाला (जैन)
जुगरांणी–स०स्त्री० [स०युग+राट्] १ युग मे रानी रूप, ससार की स्वामिनी, देवी, शक्ति।
उ०—तनि दरसाणी सीतळा, जुगराणी जगमाय। सरम ग्रही देवासुरा, सुख कज धरम सहाय।—रा रू
२ नगरवधू, वेश्या।
जुगराज–स०पु० [स० युवराज] वह पुत्र जो राज्य का ग्रधिकारी हो। राजा का वडा लडका, युवराज।
उ०—वरसिंघदे धरमातमा हुवो, मथुराजी मे स्री केसोरायजी रो देहरो करायो। पातसाह री चाकरी ग्रखड कीवी नै मुवा पछै टीकै जुगराज वैठो सु वैठा पछै केई दिन तो घणौ ही तपियो।—नैणसी
जुगळ–वि० [स० युगल] जो एक साथ दो हो, दोनो, दो (ग्रनेका)
उ०—१ व्रिति कान सतीखण ग्रणिय वक। किर कलम जुगळ नभ करत ग्रक।—रा रू उ०—२ जाया धाधळ रा जुगळ, घाया सुरपुर धाम। नह राया म्रित लोक मे, कर जुध ग्राया काम।
—पा प्र
स०पु०—१ जोडा, युग्म २ देखो 'जुयळ' (रू भे)
रू०भे०—जुगाळ।
जुगळियौ–स०पु० [स० युगलिन्] वह मनुष्य जिसके ४०९६ बाल ग्राजकल के मनुष्यो के एक बाल के बराबर हो (जैन)
जुगळी–स०स्त्री० [स० युगल+रा प्र ई] १ मित्र-मडली २ जोडा, युगल. ३ समूह, झुड।
जुगव, जुगव–ग्रव्य० [स० युगपत्] एक ही साथ, एक समय मे (जैन)

६ एकत्रित होना, इकट्ठा होना। उ०—जस गाडा भरियो जुड़ै, जग सो करो जतन्न। ओ आभरण आभरण, रतना सिरै रतन्न।
—वा दा.

७ जमा होना, जुटना, एकत्रित होना। उ०—परणी रै बगैर साम्ही नहीं देखै, थजोग काम देखण सूं आख ढापै तो भली वाता, दौलत नै फतै री जुड़ै।—नी प्र.

८ बहुत से सदस्यो का एक स्थान पर सभा के रूप मे एकत्रित होना। उ०—१ आगै मूगळ भोजराज रो दरवार जुड़ियो छो।
—समणी री वात

उ०—२ तरै आ वात दीवाण ही कवूल करी। दीवाण जुड़ियौ तरै कवर रतनसी नूं राणै सागै कह्यो।—नैणसी

९ दो वस्तुओ का आपस मे सबद्ध होना, सश्लिष्ट होना, जुड़ना। उ०—काळी करै वधावणी, सतिया आयो साथ। हथळेवै जुड़ियौ जिको, हमैं न छूटै हाथ।—वी स

१० दो वस्तुओ का आपस मे इस प्रकार सटना कि उनके बीच दूरी या स्थान न रहे, जुड़ना. ११ आलिगन होना, छाती से लगना, चिभटना, लिपटना, गुथना। उ०—अदर ऊठै आग, विछडतै तो वल्लहा। मन ज सूघै माग, जुड़िया ठरसी जेठवा।—जेठवा

१२ किसी कार्य मे जुट जाना, लग जाना, सलग्न होना, तत्पर होना। १३ एक मत होना, अभिसधित होना (करना)। १४ गाडी आदि मे बैलो का जुतना।

क्रि०अ०स०—१५ बद होना, वद करना। उ०—१ जुलम ग्रह माहि रे जकड जादम जुड़ै, ले कवण असन्न जळ तणो लेखो।
—वालावक्स वारहठ, गजूकी

उ०—२ अवुल फाजर आ खबर सुणी जद डरियो, सो कोट जुड बैठियो।—नी प्र

१६ युद्ध करना, संग्राम करना। उ०—१ कियो जुड़ै 'भूधडै' कूरम, जड सार वप जुवौ-जुवौ। कीमत लाख फतावत कहता, हमैं रतन कौडीक हुवौ।—रामो आसियो

उ०—२ हरी वहोला मै हुवौ, चाढण जळ चहुवाण। जिण दहिय दहिया जुड़ै, पावक दाव प्रमाण।—व भा.

१७ सभोग करना, मैथुन करना १८ धारण करना, पहिनना। उ०—जुडै जरद नह साथी जोवै, परदळ दीठा पचमुख। वाघ न वयू परगह वोळावै, रावत वळियो तेण रुख।—द दा

जुडणहार, हारौ (हारी), जुडणियौ—वि०।

जुडवाडणौ, जुडवाडवौ, जुडवाणौ, जुडवावौ, जुडवावणौ, जुडवाववौ, जुडाडणौ, जुडाडवौ, जुडाणौ, जुडावौ, जुड़ावणौ, जुड़ाववौ—प्रे०रू०।

जुडिओडौ, जुडियोडौ, जुडचोडौ—भू०का०कृ०।

जुडीजणौ, जुडीजवौ—भाव वा०, कर्म वा०।

जुडवाई—देखो 'जोडाई' (रू भे)

जुडवाणौ, जुडवावौ—देखो 'जोडाणौ' (रू भे)

जुडवायोडौ—देखो 'जोटायोडौ' (रू भे.)
(स्त्री० जुडवायोडी)

जुडवौ—वि०—एक के साथ मिला एक, युग्म। उ०—भिरमिर जुड़वां पान, रूख मैदी रग भीनो। दीनो दीनानाथ, देस मे नेह नगीनो।
—दसदेव

जुडाई—देखो 'जोडाई' (रू भे.)

जुडाणौ, जुडावौ—देखो जोडाणौ' (रू भे) उ०— पछै ऊमा सागुली नै सिणगार करै नै चौरी माहे पधारिया। हथळेवौ जुडायो छै।
—ताली मेवाडी री वात

जुडाणहार, हारौ (हारी), जुडाणियौ—वि०।
जुडायोडौ—भू०का०कृ०।
जुडाईजणौ, जुडाईजवौ—कर्म वा०।
जुडणौ, जुडवौ—अक रू०।

जुडायोडौ—देखो 'जोडायोडौ' (रू भे)

जुडावणौ, जुडाववौ—देखो 'जोडाणौ' (रू भे)

जुडावियोडौ—देखो 'जोडायोडौ' (रू भे)

जुडियोडौ—भू०का०कृ०—१ हुवा हुआ २ टक्कर लिया हुआ, भिडा हुआ ३ प्राप्त हुवा हुआ. ४ शामिल हुवा हुआ, भाग लिया हुआ, मिला हुआ ५ जमघट लगा हुआ. ६ एकत्रित हुवा हुआ ७ जमा हुवा हुआ, जुटा हुआ, एकत्रित. ८ सभा के रूप मे सदस्यो का दरवार लगा हुआ. ९ परस्पर जुडा हुआ, सम्वद्ध, सश्लिष्ट १० परस्पर सटा हुआ, पास आया हुआ, जुडा हुआ. ११ आलिगन हुवा हुआ, छाती से लगा हुआ, चिमटा हुआ, लिपटा हुआ, गुथा हुआ १२ किसी कार्य मे जुटा हुआ, लगा हुआ. १३ एक मत हुवा हुआ, अभिसधित. १४ गाडी आदि मे बैलो का जुता हुआ. १५ वद किया हुआ १६ युद्ध किया हुआ, सग्राम किया हुआ १७ सभोग किया हुआ, मैथुन किया हुआ १८ धारण किया हुआ, पहिना हुआ।
(स्त्री० जुडियोडी)

जुज—१ देखो 'जुध' (रू भे) उ०—खग वधियो विखो वीया सांवतसी, भुज कुण ओडै जुज भर। दाणव देव लडै वीरम दे, अमरापुर तेडै अमर।—दुरसो आढो

स०पु०—२ कागज के ८ या १६ पृष्ठो का समूह।

यौ०—जुजवदी।

स०स्त्री०—शतरज के खेल मे चाल द्वारा मोहरो को जमाने का वह ढग जिसमे एक मोहरे का जोर दूसरे पर लगा रहता है जिससे विपक्ष के खिलाडी द्वारा कोई मोहरा मारा नही जा सकता।

क्रि०प्र०—वाधणौ।

जुजटळ, जुजठर, जुजठळ, जुजठळराओ जुजठिर, जुजठिळ, जुजठिल्ल, जुजथर, जुजथिर—देखो 'जुधिस्ठर' (रू.भे)

जुग्रवौ—देखो 'जुजरवौ' (रू भे) उ०—रीठ तोपा वदूका जुग्रवा नाळा पेंड रोपें, वर्क चडी जय-जय रुद्र-पिया रा वाखाण। मारवा काज सो वज्र हिया रा भूरिया मायँ, 'खुसळेस' आयौ हाथा लिया रै केवाण।—सूरजमल मीसण

जुग्राट—देखो 'जजराट' (रू भे) उ०—अग्रियामणा घाट री गुलाती रहै स्रोण आळी, उरा सालौ केका फते खात री अग्रित। रोखगी जलालौ सआ घाट री वखेर राळी, प्रथीनाथ वाळौ भारौ जुग्राट री पूत।—महाराज बळवतसिंह रतलाम री गीत

जुझ—देखो जुध' (रू भे) उ०—झालै भार जुझ री झालै, सीस अपाणं सरव सही। राणा बडै ऊबरै राणा, रवि रयणा ज्या वात रही।—राजराणा अज्जा झाला, सादडी री गीत

जुझक-स०स्त्री०—स्फूर्ति, फुर्ती। उ०—इण विद्ध कवर री हिलियो अग रुच सू घोटियो जाणै कुकम री रग, रतना रा मुख री मोड भूहा री मरोड नाक री चटण, नाही री पटण, नाचती दीठ, वळ पडती पीठ, हाथा री जुझक, अगा री उझक, तिण समै री सीकरण कहै मत्र वसीकरण जेहौ।—र हमीर

जुझाऊ—देखो 'जूझाऊ' (रू भे.) उ०—१ वहै हैमरा सोख जाणै विवाणं। जुझाऊ घटा भाद्रवा जेम जाणं।—सू प्र.

उ०—२ खा सागरिया साग हुवै किरसाण कमाऊ। खा सागरिया साग वणै हैं वीर जुझाऊ।—दसदेव

जुझार—देखो 'जूझार' (रू भे)

जुझू—देखो 'जजुरवेद' (रू भे) उ०—रघुस साम जुझू अयू च्यार वेद के चवै।—सू प्र

जुट-स०स्त्री०—१ एक साथ वधी, लगी या जुडी हुई दो वस्तु। जोडी, गुट, समूह, मउली. ३ अति मेल वाले दो मनुष्य. ४ जोड का आदमी या वस्तु।

जुटणौ, जुटवौ—देखो 'जूटणौ' (रू भे) उ०—१ जुटा रतनागिर औरग जाम। वडा जम रूप विन्है वरिग्राम।—वचनिका

उ०—२ छत्रपती इता मिळि जुट्टत छत्र। तिल मुसटि पडत नह भोमि तत्र।—सू प्र उ०—३ जुटै वागि रावत नूप जोळा। रोळा हेक माहि दो रोळा।—सू प्र.

जुटाडणौ, जुटाडवौ—देखो 'जुटाणौ' (रू.भे)

जुटाडियोडो—देखो 'जुटायोडौ' (रू भे) (स्त्री० जुटाडियोडी)

जुटाणौ, जुटाबौ-क्रि०स०—१ किसी कार्य मे रत करना, सलग्न करना, लगाना. २ दो या दो से अधिक वस्तुओ को आपस मे इस प्रकार जोडना कि वे किसी आघात, झटके अथवा युक्ति के बिना अलग नही हो सकें ३ दो या दो से अधिक वस्तुओ को परस्पर इस प्रकार भिडाना कि उनके बीच मे रिक्त स्थान नही रहे, सटाना। ४ भिडाना ५ युद्ध कराना. ६ आलिंगन कराना, लिपटाना ७ सभोग कराना ८ शामिल करना, बातचीत कराना, मिलाना। ९ भीड लगाना, गरदी करना १० एकत्रित करना, इकट्ठा करना ११ जमा करना, जुटाना. १२ किसी कार्य के करने का प्रबन्ध करना १३ एक मत करना, अभिसधि करना १४ प्राप्त करना, उपलब्ध करना।

जुटाणहार, हारौ (हारी), जुटाणियौ—वि०।

जुटायोडौ—भू०का०कृ०।

जुटाईजणौ, जुटाईजवौ—कर्म वा०।

जुटाडणौ, जुटाडवौ, जुटावणौ, जुटाववौ—रू०भे०।

जुटायोडौ-भू०का०कृ०—१ किसी कार्य मे रत किया हुआ, सलग्न किया हुआ, लगाया हुआ. २ सम्वद्ध किया हुआ, सश्लिष्ट किया हुआ, जोडा हुआ, मिलाया हुआ ३ परस्पर सटाया हुआ ४ भिडाया हुआ. ५ युद्ध किया हुआ, सग्राम किया हुआ ६ आलिगन किया हुआ, लिपटाया हुआ ७ सभोग किया हुआ ८ बातचीत कराया हुआ, शामिल किया हुआ, मिलाया हुआ. ९ भीड लगाया हुआ, गरदी किया हुआ १० एकत्रित किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ. ११ जमा किया हुआ, जुटाया हुआ १२ किसी कार्य के करने का प्रबन्ध किया हुआ १३ एक मत किया हुआ, अभिसधित १४ प्राप्त किया हुआ, उपलब्ध किया हुआ। (स्त्री० जुटायोडी)

जुटाळ, जुटाळौ-स०पु०—युद्ध मे जूझने वाला, भिडने वाला, योद्धा, वीर। उ०—वे जुटाळा जोध तेगा चाळा नराताळा वागा, क्रोध-ज्वाळा माळा जागा करीटी कुरिंद।—हुकमीचद खिडियौ

जुटावणौ, जुटाववौ—देखो 'जुटाणौ' (रू भे)

जुटावणहार, हारौ (हारी), जुटावणियौ—वि०।

जुटाविग्रोडौ, जुटावियोडौ, जुटाव्योडौ—भू०का०कृ०।

जुटावीजणौ, जुटावीजवौ—कर्म वा०।

जुटावियोडौ—देखो 'जुटायोडौ' (रू भे) (स्त्री० जुटावियोडी)

जुटी-स०स्त्री०—वैलो की जोडी। उ०—सुन के नृिप के उर कोप वढयौ, मघवा मनु दानव सीस चढयौ। ठठुरीनि जुटी जुरि तोप हकी, भरि पेटिय समिल सोरन की।—ला.रा.

रू०भे०—जुट्टि, जुट्टी।

जुटैत-वि०—टक्कर लेने वाला, भिडने वाला, योद्धा, वीर।

उ०—हगामा सुपेखे हस मोहता वारगा हुरा, दोमजा दुरदा घडा डोहता दवान। वछूटा साकळा सरु खूटिया सोहता वागा, जूटिया जुटैत नागा नोहता जवान।—महादान महडू

जुट्टि, जुट्टी—देखो 'जुटी' (रू भे) उ०—हकी सव तोपन जुट्टि लगाय। धुनी लववान पताकनि छाय।—ला रा

जुठौ—देखो 'झूठौ' (रू भे) उ०—भिलै ठगारा भूधरा, साध गरीब सुधार। मतिहीणा मुठा मिनिख, जुठा देव जुहार।—पी ग्र

जुडीसल-वि० [अ० जुडीशल] न्याय सम्बन्धी।

जुत-वि० [स० युक्त] १ युक्त, सहित। उ०—१ खोळा टक्कियोडा गळ मे खूगाळी। जळ जुत ठोडी पर टिमकी जघाळी।—ऊ का.

जुद्ध—देखो 'जुध' (रू भे) उ०—हे सखी ! सूता पर जुद्ध मे म्हारा कंत सू दस दस बीसा आदमी आय नै लडण वासतै लूबिया तिका नै ऊठतै ही कंत भजाय दीवा ।—वी.स टी.

जुद्धत—वि०—युद्ध मे प्रवृत्त ।

जुद्धस—देखो 'जुध' (रू भे) उ०—पाता हर पड जुद्धस प्रमाण । रिण रहिया हत्त भड आसमाण ।—शि सु रू

जुद्धस्थिर—देखो 'जुधिस्ठर' (रू भे) (अ मा)

जुद्धाइजुद्ध—स०पु० [स० युद्धातियुद्ध] भयकर युद्ध, दारुण युद्ध (जैन)

जुध—स०पु० [स० युद्ध] सग्राम, युद्ध, लडाई, रण, जग (ह ना.)

उ०—'ऊमेद' खेत रहियौ अभग, 'जैसीह' पडचौ रण करे जग । 'कीरतेस' खित रिहियौ सक्रोध, जुध 'ईसरेस' पड खेत जोध ।

—शि.सु रू

पर्या०—अनीक (अनीकम्), अभ्यागम, अभ्यामरद, अभ्यास, अरपाळ, अवदीक, आकारीठ, आजि, आयोधन, आरण, आहव, आहुड, आस-कदन, कदन, कजियौ, कळह, कळि, खळसाळ, जग, जन्यवत, जुद्ध, झगडौ, ताई-प्रयात, तेग-झाट, दमगळ, दुद, धकचाळ, धमगजर, धमजगर, प्रघात, प्रधन, प्रव, प्रहरण, पीठाण, विग्रह, वेध, भारत, महाहवि, महाहव्य, म्रध, रण, राड, रीठ, रोळौ, लडाई, विग्रह, वेढ, सखि, सगर, सग्राम, सजुग, सजुत, सपरायक, सप्रहार, ससफोट, समर, समित, समीक, समुदाय, सारझकोळा, हीचण, हूचक ।

क्रि०प्र०—करणौ, चेतणौ, छिडणौ, छेडणौ, ठणणौ, ठाणणौ, बढणौ, मडणौ, मचणौ, मचाणौ, माडणौ, माचणौ, होणौ ।

रू०भे०—जुड, जुज, जुज्झ, जुझ, जुद, जुध, जुधि, जुध्धस, जूज, जूझ, जूज, जूझ, जूह ।

यौ०—जुधजय, जुधवध, जुधबाहु, जुधराव, जुधविद्या ।

जुधजय—स०पु०यौ०—हाथ (अ मा)

जुधवध—स०पु०यौ०—युद्ध के नियमो को जानने वाला, योद्धा ।

उ०—कमधजा आज माहेस को, कहिजै ओ दूजो करन । जुधवध खित्री ध्रम जाणगर, राजि वळै बूझो 'रतन' ।—वचनिका

जुधबाहु—स०पु०यौ० [स० बाहु+युद्ध] बाहुयुद्ध, मल्लयुद्ध ।

जुधराव—स०पु०यौ० [स० युद्ध+राट] योद्धा, वीर ।

उ०—जुधराव वकारत जूझ झला । वरियाम चढौ वैहला-वैहला ।

—पा प्र.

जुधविद्या—स०स्त्री० [स० युद्धविद्या] युद्धविद्या ।

जुधसठर, जुधस्टर—देखो 'जुधिस्ठर' (रू भे)

उ०—कामीक वने रहै ते वासे, साथै छै बहु लोक । अरजुन ग्याना राए जुधस्टर, आणै छै बहु सोक ।—नलाख्यान

जुधाण—देखो 'जोधाण' (रू.भे) उ०—पर त्रिया खोस द्रब लेत पाण, दुज बाळ गाय हत आप पाण । पाप इण नीत वरत न प्रमाण, जो सह किम सकह नाथ जुधाण ।—शि सु रू

जुधाजित—स०पु० [स० युधाजित] केकयराज के पुत्र और भरत के मामा ।

जुधि—देखो 'जुध' (रू भे) उ०—सत उकति जेण पडित प्रमाण । जुधि जैत मरम क्रम प्रथम जाण ।—रा रू

जुधिठिल, जुधिस्टर, जुधिस्ठर, जुधिस्ठिर—स०पु० [स० युधिष्ठिर] पाच पाडवो मे सबसे बडे का नाम, माता कुती ने धर्म से इन्हें प्राप्त किया । अपनी सत्यता के कारण ये धर्मराज के नाम से विदित हैं ।

उ०—१ अत प्रव माद्र विन्है तौ मिळिया, कहिजै ज्या वखाण किसा । दुरजोधन जिसडा दूसासण, जुधिठिल अरजिण भीम जिसा ।

—गोरधन बोगसी

उ०—२ अभमानव जुध भीमेण इसा, सतवादि जुधिस्टर द्रोण जिसा । रिण काज उता ग्रह चाळकरा, धजवध उठावसु मेर धरा ।

—शि सु रू.

उ०—३ अमरावत अजवसिंघ अमर बोल काजै । जुध आए जुधिस्ठिर वधव सा राजै ।—रा रू

पर्या०—अजमीढ, अजातसत्र, कक, कउतेय, कुतीसुत, कुरुईस, कौंतेय, जजठळ, जेठळ, धरमपूत, नवग्रराज, पडवतिलक, पडवेस, पडीस, पडुसुत, पाडव, पाडवेय, वयअभीत, सतवाची, सत्यग्ररी, सिलियार ।

रू०भे०—जजट्ठुळ, जहुट्ठिलौ, जुजटळ, जुजट्ठुळ, जुजठर, जुजठळ, जुजठळाराओ, जुजठिर, जुजठिळ, जुजठिल्ल, जुजथर, जुजथिर, जुजसटळ, जुजठिळ, जुजस्टळ, जुजिठळ, जुजिटिळ, जुजिठिलि, जुजिस्टल, जुजिस्तर, जुजीठळ, जुजीस्टर, जुजीस्टळ, जुजुठळ, जुजुठल्ल, जुधस्थिर, जुधसठर, जुधस्टर, जुहिठिर, जुहिट्ठिर, जुहिट्ठल, जुहिट्ठिल्ल, जुहिठळ, जुहिठल्ल, जूठिलु, जूठिलौ, जूठिल्लु ।

जुध्धस—देखो 'जुध' (रू भे) उ०—इक पौहर रच जुध्धस अरोड, महवीर दीध रण असर गोड । जिण वार 'सिवा' रा सुभट जग, अण-पार सूर घायल अभग ।—शि सु रू

जुन—स०स्त्री०—झूल ।

उ०—झटकै रौ मारियोडौ साकर रौ जानवर सेखावत न खावै । सूर न खावै । नगारा रै झालरी नीली राखै, ऊट रौ जुन नीली राखै । नीला निसाण राखै, सेख बुरहान री दवा सू मोकळजी रै 'सेखौ' हुवौ जिणसू ।—वा दा ख्यात

जुनाळौ—वि०—प्राचीन, पुरानी । उ०—जागी जुनाळौ तोपखाना वाळी जुझाऊ नीधसै जगी, ताळी प्रेत काळी खुलै कपाळी ताडीस । बाघ आळी आवता पैल रै हलै अबीह री, पातळा सीह री वागी कराळी पाडीस ।—जवानजी आढौ

जुनीकपीठ—स०स्त्री० [स० कूपीटयोनि] अग्नि, आग (ना डि को)

जुनीगुजरात—स०स्त्री०—एक प्रकार की तलवार ।

जुनौ, जुन्न, जुन्नौ—देखो 'जूनौ' (रू भे) उ०—जुन्नौ भाजि फोमड त भूप जीता । सुरा मोड बागौ जता ज्याहि सीता ।—सू प्र

(स्त्री० जुनी, जुन्नी)

हे । जठी तठी नू फर कर जुरडा, खिलखावण खडभडिया है ।
—ऊ का

जुरजोधन—देखो 'दुरयोधन' (रू भे)

जुरठ-वि०—हृष्ट पुष्ट, मजबूत ।

जुरणो, जुरबो—देखो 'जुडणो, जुडबो' (रू भे) उ०—काळ जर घेरचो नवलाख असवार मिळ, सूर सकबधी जुर मूवा आप वळ मै । चितावर घेरचो सुलतान हू अलावदीन, बारा वरस जुध फळकात भयो दळ मै ।—महाराजा रायसिंह रो गीत

जुरणहार, हारो (हारी), जुरणियो—वि० ।
जुरिओडो, जुरियोडो, जुरचोडो—भू०का०कृ० ।
जुरीजणो, जुरीजबो—कर्म वा० ।

जुरती-स०स्त्री०—आवश्यकता, जरूरत । उ०—जुरती नहि आवन जावन की, फुरती नहि राड फसावन की । परवाह न पाट पटबर की, अघ चाह सु कवर अवर की ।—ऊ का

जुरम-स०पु० [अ० जुर्म] अपराध, कसूर ।
क्रि०प्र०—आणो, करणो, लागणो, होणो ।

जुरमपेसा-स०पु० [अ० जरायम-पेशा] चोरी, डाके आदि से अपनी जीविका चलाने वाले लोग ।

जुरमानो-स०पु० [फा० जुर्मान] वह दड जिसके अनुसार अपराधी को कुछ घन देना पडे, अर्थ-दड, धन-दड ।
रू०भे०—जरीवानो, जरीमानो, जरीवानो ।

जुररो-स०पु० [अ० जर्राह] १ चीर-फाड करने वाला हकीम, अस्त्र-चिकित्सक, वैद्य २ एक प्रकार का पक्षी जिसे छोटे छोटे पक्षियो की शिकार करने की शिक्षा दी जाती थी । उ०—१ नगारै डक डको वागो छै । मोर सिकारा नै हुकम हुवो छै । वाज, जुररा, बहरी, सिकरा, लगड, चिपक, तुरमती साथ लीजै छै ।—रा सा.स
उ०—२ हमै तीतरा ऊपर वाज छूटै छै । कारवानका ऊपर जुररा छूटै छै । तिलारा ऊपर बामा छूटै छे । तवा ऊपर सिकरा छूटै छै । बटेरा ऊपर तुरमती छूटै छै । बोवडा ऊपर चिपक छूटै छै । बुरजा ऊपर लगड छूटै छै । कुलगा ऊपर कुही छूटै छै । इण भात देसोत राजेसर सिकार खेलै छै ।—रा सा स

जुरसध, जुरसिंध—देखो 'जरासध' (रू भे) ।

जुरा-स०स्त्री० [स० जरा] १ वृद्धा अवस्था, बुढ़ापा ।
उ०—आहेडे जमराण डाण मडे दीहाडी, सर क्रम वध सधिया चाप आवरदा चाडी । मोह वास मडवै विघन सडवा विसतारै, कर हाका हाकत जुरा कुत्ती हलकारै । चत्र दिस जाइ न सकै चक्रति निजर काळ देखै नयण । म्रिग जीव सरण मारीजतो, राख-राख राधा-रमण ।—ज खि. उ०—२ भै छाडी निरभै भजो, गुणा रहित गोपाळ । अगम ठौर आणद सदा, जुरा जनम नहि काळ ।—ह.पु वा
२ मृत्यु, मौत, अवसानकाल । उ०—१ जोग विचारी जुरा हम जीति, अगम वस्त सो पाई । निरभै भया निरतरि मेळा, उलटी ताळी लाई ।—ह पु वा उ०—२ बाघउत ऊचरै, सुणो ग्रट-तीस वस, जुरा आगळि रहै वदू जाही । भोज वीकम तणी सुजस सारै भुवण, नरा तिण वार रा मडप नाही ।—राव गागो
रू०भे०—जरा ।

जुराधीस-स०पु० [स० जराधीश] कामदेव (अ मा)

जुराफ—देखो 'जिराफ' (रू भे) उ०—मन भावै उदमाद मुवा द्रुन माफ री । विरछ विलूबी वेल क जुगन जुराफ री ।—र. हमीर

जुरारी-स०पु० [स० ज्वर+अरि] १ तापो का नाश करने वाला, ज्वरारि, ईश्वर । उ०—अला तूझ उचारण जयो जगदीस जुरारी, नरहर गुरु हरनाथ निगो निकळ क निजारी ।—पी ग्र.
[स० जरा+अरि] २ सदैव युवा रहने वाला, ईश्वर ।

जुराळ-वि०—१ गहरा २ बहुत ।

जुरासद, जुरासध, जुरासिंधि, जुरासीद—देखो 'जरासध' (रू भे)
उ०—१ मछकद सरिस दीन्ही मुगति, काळ तणो सिरि क्रोधियो । जुरासध इसो सबळो जवन, तिखमीवर ना लोधियो ।—पी ग्र
उ०—२ जाळ दर जुरासीद दसकद जाणता, कित ही गया न जाणू कोय । चवरी हण मोटै मैगळ चड, लाडा गरब न कीजै लोय ।
—ओपो आढो

जुरियोडो-भू०का०कृ०—युद्ध किया हुआ, भिन्न, जुदा ।
(स्त्री० जुरियोडी)

जुळ-वि०—पृथक, अलग, भिन्न, जुदा ।
उ०—कळ हेवा चूक कूभक्रन राणा, जगत तणा गुर दुरग जुळ । काढया अचरज किसो कटारी, काढ़चा जिण पैतीस कुळ ।
— महाराणा कुभा री गीत

जुळकणो, जुळकवो-क्रि०अ०—टकटकी लगा कर देखना ।
उ०—अनै त्यागवाळो वेठो जुळक जुळक जोवै ।—भि द्र

जुळख-वि०—व्याकुल । उ०—क्रिमीकारी बोवै सिटल घर सोवै सुख करै । जवे वाळे रोवै जुळख मुख जोवै दुख दरै ।—ऊ का

जुळगो-स०पु०—जलाशय के आसपास का रक्षित घास का मैदान ।
उ०—घोडिया-घोडा जुळगा माहे दावणा दे नै छोडज्यो ।
—जखडा मुखडा भाटी री वात

जुळणो, जुळवो-क्रि०अ०—१ मद गति से चलना, विचरना ।
उ०—१ जवा सिर मे जुळै, जुळै डाढी मे जूवा । जूवा कपडा जुळै, मिळै छुटकारो मूवा ।—ऊ का उ०—२ छाया ताणी छान, झूपडी वरखा वरखै । जोड जिनावर जुळै, जियारी फोगा परखै ।—दसदेव
२ गमन करना, जाना । उ०—जाणी जीवण नै जिण तिण मिस जुळिया । पाणी पीवण नै पूरब दिस पुळिया ।—ऊ का
३ सयोग होना, मिलना । उ०—कोपियौ कान इऊ सुण कराळ । जिम घीरत सीचियौ जुळ ज्वाळ ।—रामदान लाळस
४ प्रज्वलित होना ।

जुव-वि० [सं० युवन्] तरुण, जवान (जैन)
जुवइ—देखो 'जुवती' (रू भे, जैन)
जुवक-वि०पु० [सं० युवक] (स्त्री० जुवती) युवक, तरुण।
सं०पु०—जवान आदमी, तरुण पुरुष।
जुवणौ, जुववौ —देखो 'जोवणौ, जोववौ' (रू.भे)
जुवति, जुवती-सं०स्त्री० [सं० युवती, पु० जुवक] युवती, तरुणी, प्राप्त यौवना (स्त्री०) उ०—जिण विध कवि मुख सू जिलै, बधती व्है वरणाह। जुवती तन हू ता जिलह, इण विध आभरणाह।—बा दा.
सं०स्त्री०—जवान स्त्री (ह ना, अ मा) उ०—जसवंत जुवति जे जहहिं जीव, दहनोदय दहहीं अथक पीव। नस्चित पतिव्रत लोक नेम, प्रत्येक करहिं परलोक प्रेम।—ऊ का.
रू०भे०—जुअति, जुअती, जुवइ, जूवती।
जुवनासव-सं०पु० [सं० युवनाश्व] मानधाता का पिता तथा प्रसेनजित का पुत्र एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा। (सू प्र)
जुवर—देखो 'जुर' (रू भे.) उ०—जान्हू डैरू जोय विगत दुख भेद बतावौ। आधासीसी आखि जुवर कुण सूळ जतावौ।—ऊ का.
जुवरज्ज-सं०पु० [सं० यौवराज्य] १ राजा के मरने पर जब तक युवराज का राज्याभिषेक न हुआ हो तब तक का राज्य (जैन)
२ राजा के मरने पर और युवराज के राज्याभिषेक हो जाने पर भी जब तक दूसरे युवराज की नियुक्ति न हुई हो तब तक का राज्य। (जैन)
३ युवराजपन (जैन) ४ देखो 'जुवराज' (रू भे.)
जुवराज, जुवराजकुमार, जुवराय-सं०पु० [सं० युवराज] १ राजा का ज्येष्ठ पुत्र जिसे भविष्य मे राज्य मिलने वाला हो, पाटवी कुमार।
उ०—दिल अतर एह विचारी दसरथ, घर पदवी जुवराज सधीर। सो देणी विसवाहीवीसै, राज जोग दीसै रघुवीर।—र रू
२ राजा का वह राजकुमार जो राज्य का उत्तराधिकारी हो।
उ०—१ चढ़े वखतेस असा जुध चाह। मनो जुवराज लंका जुध माह।—शि.सु रू. उ०—२ राजा जुवराजकुमार राजेस्वर महामडलेस्वर, सामत लघुसामत तलवर...।—व स.
रू०भे०—जुगराज, जुगवराज, जुवरज्ज।
जुवळ-सं०पु०—१ बैलों की गरदन पर जोतने के लिये रखा जाने वाला जुआ। उ०—निज तेज सरति चत्र जुवळ नाळि। भव कमळ जन्नि सूची कि भाळि।—रा रू
२ युगल, दो। उ०—रुहिर रळतळ, प्रछड पड अचळ। जुवळ अणियळ जुडै करिवा जंत।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
३ देखो 'जुयळ' (रू.भे.) उ०—१ सुणी वात राणा सुरताणा, जुवळ सेस चे सीस सजड। पच मुख हुतौ अनै पाखरियो, 'अमरो' अनै चढ़ियौ अनड।—नीमाज ठा अमरसिंह रौ गीत
उ०—२ कुळा छतीसा सरम 'कलावत', कर खग ग्रह दाखतै कळ। आगमना हथवाहा अगळ, जम ही दै विमुहा जुवळ।—अज्ञात

जुवलिय-वि० [सं० युगलित] १ युग्म रूप से स्थित (जैन) २ युग्म-युक्त (जैन)
जुवाण—१ देखो 'जवान' (रू भे.) उ०—१ कसीसत बाण जुवाण कबाण विहू वळ छूटत फूटत बाण।—सू प्र
उ०—२ ढोलउ मारू पउढ़िया, रस मइ चतुर-सुजाण। च्यारे दिसि चउकी फिरइ, सोहड भूप जुवाण।—ढो.मा.
२ देखो 'जवान' (रू भे)
वि०—दूसरा।
जुवांणी-सं०स्त्री०—कुलांच, छलांग. २ देखो 'जवानी' (रू भे)
३ देखो 'जवानी' (रू भे)
जुवान —देखो 'जवान' (रू.भे) उ०—१ मारग माहीं एक जुवान ब्राह्मणी अपणा भरतार नू साथै लिया मिळी।—सिंघासण बत्तीसी
उ०—२ अहुरे अहर लगाइ तनै तन मेळिया। (परिहा) जाणि क गाधी-हाट जुवाने भेळिया।—ढो मा.
२ देखो 'जवान' (रू भे)
जुवानी—१ देखो 'जवानी' (रू भे) २ देखो 'जवानी' (रू भे)
जुवाजुवी—देखो 'जूवाजूवी' (रू भे)
जुवाडो—देखो 'जुओ' (२) (अल्पा० रू भे.) उ०—पीनणी अर पळूड ऊखळी फिरू किंवाडा। ऊभी कील ऊखाड़, भेरणा जबर जुवाड़ा।—दसदेव
जुवाव—देखो 'जवाव' (रू भे) उ०—आगै बाजार रै सिरै गया जद लोग फेर पूछी उहा नू पण ओ ही जुवाव दियो।—गौड गोपाळदास री वारता
जुवार—१ देखो 'जुआरी' (रू भे) उ०—वेस्या नेह जुआर धन, काती अबर छार। पाछल पोर अऊत घर, जात न लागै वार।—अज्ञात
२ देखो 'जवार' (२) (रू भे) ३ देखो 'जुहार' (रू भे)
जुवारडा—देखो 'जुहार' (१) (अल्पा रू भे)
जुवारडौ—देखो 'जुहार' (२, ३) (अल्पा रू भे)
जुवारी— १ देखो 'जुआरी' (रू भे) ऊ०—जुवारी घर रिद्ध कस, माकड कठै हार। गहली माथै वेवडो, कुसळ ह्वै केती वार।—पचदडी री वारता
२ देखो 'जवारी' (रू भे)
जुवाळ—देखो 'ज्वाळा' (रू भे)
जुवियोडौ—देखो 'जोवियोड़ौ' (रू.भे.) (स्त्री० जुवियोडी)
जुवौ—देखो 'जुओ' (रू भे) उ०—१ चोरी करसी चोर, जार करसी नित जारी। हिंसा हिंसावान, जुवा रमसी जुवारी।—ऊ का.
उ०—२ रमै तू राम जुवा धरि रग। तु ही ज समद तु ही ज तरग।—ह र.
उ०—३ थयौ हिव हेक जुवौ किम थाय। मिळैगौ नीर गगोदक माय।—ह र

जुहारीजणौ, जुहारीजवौ—कर्म वा०।

जुहारियोडौ-भू०का०कृ०—१ अभिवादन किया हुआ, नमस्कार किया हुआ २ पूजा किया हुआ, अर्चना किया हुआ ३ प्रसाद चढाया हुआ. ४ मन्नत किया हुआ, मनौती मनाया हुआ।

(स्त्री० जुहारियोडी)

जुहारा—१ देखो 'जवारा' (रू भे.) २ देखो 'जुहार' (१) (अल्पा० रू भे)

जुहारि, जुहारी—१ देखो 'जवारी' (रू भे.) उ०—तद पाच पाच मुहरा चार चार रुपिया च्यार चार नारियळ सारी सासुवा जुहारी देय आसीस दीवी।—कुवरसी साखला री वारता

२ देखो 'जुहार' (अल्पा० रू भे)

जुहारौ—देखो 'जुहार' (अल्पा० रू भे.)

जुहिट्ठिर, जुहिट्ठिल, जुहिट्ठिल्ल, जुहिठळ, जुहिठल्ल—देखो 'जुधिस्ठर' (रू.भे) (जैन)

उ०—१ बळभद्र पहिळाद वभीखण 'रतनौ' रुखमागद अमरेस। माभी हतौ भीच कुळ मडण, सहकारी जुहिठळ सारीस।
—दूदौ

उ०—२ देवी गदा रै रूप भुजभीम साई, देवी साच रै रूप जुहिट्ठल्ल ध्याई।—देवि

जुही-स०स्त्री० [स० यूथिका, प्रा० जूहिया] सफेद सुगधित फूलो वाला एक छोटा किन्तु बहुत घना पौधा या झाड या इसका पुष्प। इस पौधे की पत्तियां छोटी तथा ऊपर नीचे से नुकीली होती हैं (अ मा)

उ०—चपा, मरवा, मोगरा, जुही जाये केतकी छै।
वगसीराम प्रोहित री वात

(रू०भे०—जुई, जूहिय, जूही)

जू-स०स्त्री० [स० यूका] (बहु व० जूआ, जूवा) एक प्रकार का छोटा स्वेदज कीडा जो जीवो के बालो मे पलता है। इस जाति का चीलर नामक कीडा मनुष्य के कपडो मे पडता है। उ०— जूवा सिर मे जुळै, जुळै डाढी मे जूवा। जूवा कपडा जुळै, मिळै छुटकारी मूवा।
—ऊ का.

क्रि०प्र०—काडणी, निकाळणी, पडणी।

२ देखो 'जुग्रौ' (रू भे)

जूग्रडी—देखो 'जुग्रौ' (२) (अल्पा० रू भे.)

जूग्रारौ-स०पु०—पशुग्रो के चरने का मैदान।

जूग्राडी—देखो 'जुग्रौ' (२) (अल्पा० रू भे.)

जूग, जूगडौ जूगलौ, जूगौ-स०पु० [स० जाङ्गिक] ऊँट (अ मा)

उ०—१ वहती इसी पथि ओपै वहीर, नदी हेम थी ले चली जाणि नीर। कतारा कठठु चलै जूग काळा, वहै वादळा जाणि भाद्रव्व-वाळा।—वचनिका

उ०—२ चसळकै जेम लावा चडस, जिकै अमारा जूगला। कज भार सारवाना कठठ, ग्रहिया नुखता गूगला।—वखतौ खिडियौ

रू०भे०—जुग।

अल्पा०—जुगडौ, जुगलौ, जुगौ, जूगडौ, जूगलौ, जूगौ।

जूज—देखो 'जुध' (रू भे.)

जूजणौ, जूजवौ—देखो 'जूझणौ, जूझवौ' (रू भे)

उ०—पोळिया मे वैठोडा भाभोसा वरजिया, मत जाग्रो कवर झगडा री लार (ए), भोमियाजी झगडै जूजिया।—लो गी.

जूजळ—देखो 'जूझळ' (रू भे.)

जूजळी-स०स्त्री०—एक प्रकार का घास विशेष जिसके झाड़ू बनाये जाते हैं।

जूजळौ-स०पु०—गोवर और मल आदि खाने और इकट्ठा करने वाला एक काले रग का कीडा। यह गोवर की गोलियें लुढकाता पाया जाता है, गुबरैला। (शेखावाटी)

जूजाऊ—देखो 'जूझाऊ' (रू भे)

जूजार—देखो 'जूझार' (रू भे)

जूजियोडौ—देखो 'जूझियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० जूजियोडी)

जूजुग्रौ, जूजुवौ, जूजूग्रौ, जूजूवौ—देखो 'जूजुग्रौ' (रू भे)

स्त्री०—जूजुइ, जूजुई, जूजुवी, जजूइ, जूजूई, जजूवी।

जूझ—देखो 'जुध' (रू.भे) उ० १ जोवै ज्या घर राज, मुवा सुरराज मिळै मन। किसन थका हिज कियो, जूझ जुजधिर दरजोधन।
—सू प्र

उ०—२ जसराज हरा कर फतह जूझ। तखत री लाज मरजाद तूझ।
—वि सं

जूझणौ, जूझवौ-क्रि०अ० [स० युध] युद्ध करना। उ०—१ जद तद सूझै जूझणौ, वाघ न नागा वीर। इणरै जात सुभाव औ, सोहै समै सरीर।—वा दा

उ०—२ वीर पुरस री स्त्री आपरा पती नै जूझतौ देख कहै छै।
—वी स टी

जूझणहार, हारौ (हारी), जूझणियौ—वि०।

जूझवाडणौ, जूझवाडवौ, जूझावणौ, जूझवावौ, जूझवावणौ, जूझवावौ, जूझाडणौ, जूझाडवौ, जूझाणौ, जूझावौ, जूझावणौ, जूझाववौ
—प्रे०रू०।

जूझियोडौ, जूझियोडौ, जूझ्योडौ—भू०का०कृ०।

जूझीजणौ, जूझीजवौ—भाव वा०।

जूजणौ, जूजवौ, जूजणौ, जूजवौ, जूझणौ, जूझवौ—रू०भे०।

जूझमड, जूझमल्ल-वि०—योद्धा, वीर, सुभट। उ०—जवर भुजा डड जूझमल, रग है कण रढराण। पख ऊजळ नरपाळ मे, पिंड पौरस अप्रमाण।—पा प्र

जूझळ, जूझळाट-स०स्त्री०—झुंझलाहट। उ०—मोवन-नै मन-ई मन घणी-ई जूझळ आई पण जोर काई चालै।—वरसगाठ

क्रि०प्र०—आणी।

सर्व०—जो । उ०—महिसासुर जू माइ मर, जइ महिखासुर मरइ । सुर छूटइ सुर-राइ, वार तुहारी वीस-हति ।—ग्र वचनिका

जूग्र—देखो 'जूग्रौ' (रू भे) उ०—जूग्र रमइ बेहू जरणा, पासा ढाळइ तेह रे । नळ हारइ कूबर जीपइ, दैवह योग एह रे ।

—नळ-दवदती रास

जूग्रडौ—देखो 'जूग्रौ' २ (ग्रल्पा , रू भे)

जूग्रळ-स०पु०—१ कदम, डग, पैंड़ । उ०—रिणमाल जोध उण वाररा, वळ ग्रणमाप भुग्रव्वळा । वाधियौ प्राण वहमड नू, जारणक बावन जूग्रळा ।—रा रू.

२ देखो 'जुयळ' (रू भे.)

जूग्राडौ—देखो 'जूग्रौ' २ (ग्रल्पा , रू भे)

जूग्रार—देखो 'जुग्रार' (रू भे) उ०—प्रवाडै ग्रगजी राजकँवार, पातिसाहा ग्रभैसाह जैत जूग्रार ।—रा रू

जूग्रारउ, जूग्रारत, जूग्रारी—देखो 'जुग्रारी' (रू भे., उ र)

उ०—१ जूग्रारत मोहि जाण नृप, करहु दया तुम ग्राज । करौ प्रसन्न देवी तुम्ही, सार देहु मम काज ।—सिंघासरण बत्तीसी

उ०—२ भरतार हीडइ कुव्यसनइ, नारी लजवाइ रे । ग्रागुळीइ देखाडरणउ, जूग्रारी कहिवाइ रे ।—नळ-दवदती रास

जूई—१ देखो जुई' (रू भे) उ०—पछै प्राण छूटा । ताहरा सीरख समेत दागिया । काढै तौ हाड सकळि एक-एक जूई जूई हुवै तिण वास्तै सीरख समेत दागिया ।—द वि

२ देखो 'जुही' (रू भे)

जूउ—देखो 'जुग्रौ' (रू भे) उ०—मनुस्य चीतवइ काम जूउ, हुइ जूई परि रे । चीतविउ काई काम न हुइ, जाणेज्यौ खराखरि ए ।

—नळ दवदती रास

जूउ-वि० [स० युत'] १ सहित, साथ (उ.र) २ सम्पन्न (उ र.)

जूग्रौ—१ देखो 'जुग्रौ' (रू भे) उ०—१ तरै दीवाण नै रावजी तो भेळा वैठा नै पवार सारू जूग्रौ थाळ दीधौ ।

—राव रिणमल री वात

उ०—२ जूग्रै सो कीधी जिका, कही न जावै काय । नळ पाडव सिरखा नृपति, मूक्या हार मनाय ।—पी ग्र

२ हस (ग्र.मा.)

जूटणौ, जूडवौ—१ देखो 'जुडणौ, जुडवौ' (रू भे)

उ०—तुली ढाल रूडी घली काळ ग्रोपा । ग्रली जोट जूडी हली ज्वाळ तोपा ।—व भा

२ वाधना, वधन मे डालना ।

जूडाजूड-वि०—घना वृक्ष ।

जूडियौ-स०पु०—वैलो के पाव वाधने का वकरी या ऊँट के वालो का वना रस्सा ।

जूडियोडौ—देखो 'जुडियोडौ' । (स्त्री० जूडियोडी)

जूडी-स०स्त्री०—तम्वाकू के पत्तो या टहनियो का वधा छोटा पुग्राल ।

जूडौ-स०पु०—१ वालो को लपेट कर शिर पर लगाई जाने वाली गाँठ । उ०—१ दात रा, छळा रा, चदरण रा, चखडी रा, कागसिया सू केस सुवारजै छै । केसा रा जूडा वाधजै छै । ऊपरा मखतूल रा डोरा बाधजै छै ।—रा सा स

उ०—२ जठै प्रतपियौ प्रगट जो, हर ग्रवतार हमीर । नीसरतौ जूडा मही, निन निरभर नद नीर ।—वा दा.

२ शामिल वधे हुए दो पशु. ३ पशुग्रो के पैर बाधने की रस्सी ४ देखो 'जुग्रौ' २ (ग्रल्पा , रू भे) उ०—कैंरणा ग्राखडिया जूडा दै काधै । वैंरणा वळवा रै राखडिया बाधै ।—ऊ का.

५ देखो 'जोडौ' (रू भे)

जूज—देखो 'जुध' (रू.भे)

जूजग्रौ, जूजवौ—देखो 'जूजुग्रौ' (रू भे) उ०—१ चापा ऊपर चूक, ऊदा करै न ग्रादरै । रगिया घनियै रूक, जिण जिण माथै जूजवा ।

—धनजी, भीमजी रा दूहा

उ०—२ खडचा ग्रनेक ग्राक्रिति खळा, जोति ह्रेक वप जूजवा । जा मध्य राज राजेस्य री, हिंगळाज परगट हुवा ।—मे म

उ०—३ वेल्हतौ गजा हैथाट लागा ग्रटळ रीठ वागा खगा दुवै राहा । जोध जसराज पूगौ भलौ जूजवौ, सेल रोळै दुहू पातिसाहा ।

—राठौड महाराजा जम्वतसिंघ गजसिंघोत री गीत

जूजाऊ—देखो 'जूझाऊ' (रू भे)

जूजार—देखो 'जूझार' (रू भे)

जूजिग्रार, जूजियार, जूजीयार-स०पु० [स० युद्धकार] योद्धा, वहादुर ।

जूजुग्रौ, जूजुवौ, जूजूउ, जूजूग्रौ, जूजूयौ, जूजूवौ-वि० [स० युत+ ग्रयुत = युतायुत, प्रा० जुग्राजुग्र] (स्त्री० जूजुइ, जूजुई, जूजुवी, जूजूइ, जूजूई, जूजूवी) पृथक, भिन्न, दूर, ग्रलग, जुदा ।

उ०—१ सुभवार म्हूरत जोग दिन, तत ग्रभीच साधै तरा । जूजुग्रा सिरै बाभै जिता, हुग्रा जीण सिर हैमरा ।—रा रू

उ०—२ ग्रौद्रवकै ग्रागरौ हुई दिल्ली हलचल्ले । जाट वाट जूजुवा देस वैराट दहल्ले ।—रा रू

उ०—३ सौ दूहा तेईस सुज, नाम सहत निरधार । जोड देखाऊ जूजूवा, सुणौ राम जस सार ।—र ज प्र

उ०—४ साधिइ साधि जूजुई कीधी, थर पाडेवा लागा । ऊपरि थिका हाथीया घोडा, घण तणौ घाए भागा ।—का दे प्र

उ०—५ इम विलवती व्याहणउ हवउ । महिता जोउ गिउ जूजूउ ।

—विद्याविलास पवाडउ

उ०—६ मलिक तणा जूजूग्रा मरातव, माहि भला झूझार । दळ जोयता दीस ग्राथम्यउ, तुहि न ग्रावइ पार ।—का.दे प्र.

उ०—७ वस्त्र वध्या री नारी मेहेली ऊतारी ग्रति नेहौ । थाया जूजूया, ग्रति दुख पाम्या राजा राणी वेह ।—नळाख्यान

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ ।

रू०भे०—जूजुग्रौ, जूजुवौ, जूजूग्रौ, जूजूवौ, जूजग्रौ, जूजवौ ।

जूझ—देखो 'जुध' (रू भे) उ०—सावळा तणी दे झीक ग्राखाड़-सिंध,

लख चौरासी जूणिम लोटी, खोटा देह छूटसी खोटी ।—ह पु वा.

जूत, जूतड—१ देखो 'जूतो' (मह, रू भे.)

मुहा०—१ जूतफाग आणी, जूतफाग होणी—परस्पर जूतो से पिटना, लडना २ जूत उडणा, जूत खाणा—जूतो की मार खाना। तिरस्कृत होना। ऊँचा नीचा सुनना। व्यर्थ पैसे खर्च हो जाना, घाटा होना। ज्यू-गांव जाय नै फजूल पचा रिपिया री जूत खाय नै आयो। ३ जूत देणा—जूता मारना। किसी के व्यर्थ खर्च करवा देना। नुकसान करवा देना ४ जूत पडणा—व्यर्थ खर्च हो जाना। घाटा होना। हानि होना। जूतो की मार पडना। मुँहतोड उत्तर मिलना ५ जूत बरसणा—देखो 'जूत पडणा' ७, ८ जूत मारणा, जूत मेलणा—देखो 'जूत देणा' ९ जूत लागणा—देखो 'जूत पडणा।'

२ देखो 'जुत' (रू भे) उ०—अभूत रीस पूत साह जूत दाह अग मैं। हले अभग रूप माग धू लगं निहग मैं।—रा रू

जूतणो, जूतबो—देखो 'जुतणो, जुतबो' (रू भे)

उ०—१ जूसहरी भ्रूह नयण म्रिग जूता, विसहर रासि कि अलक वक्र। वाळी किरि वांकिया विराजे, चद रथी ताटक चक्र।—वेलि

उ०—२ दस जूता दस जूतणा, दस पाखती वहत। हेकण धवळा वायरा, खेंचाताण करत।—वा दा. उ०—३ सोई पुरस सुलच्छणो, सोई ज पूत सपूत। सोइज कुळ रो सेहरो, तांडे जस रथ जूत।—वा दा

जूताखोर-वि०—१ निर्लज्ज, बेहया २ जो जूतो से पिटता हो, जूतो की मार खाने वाला।

जूतियोडो—देखो 'जुतियोडो' (रू भे)

(स्त्री० 'जूतियोडी')

जूती-स०स्त्री०—देखो 'जूतो' (अल्पा रू.भे)

मुहा०—१ जिण री जूती उण रो ई सिर—जिसकी जूती उसी का शिर—स्वय की वस्तु और स्वय को ही हानि अर्थात् पूर्ण रूप से उत्तरदायित्व २ जूतिया उठाणी—नीच कार्य करना। दासत्व करना। सेवा करना ३ जूतिया काख मे घालणी—जूतिया बगल मे दबा कर भागना। धीरे से चलता बनना. ४ जूतिया खाणी—अपमान सहना। जूतियो से पिटना। भली-बुरी बातें सुनना ५ जूतिया गाठणी—जूतियो की मरम्मत करना। चमार का कार्य करना। अत्यन्त निकृष्ट धधा करना ६ जूती जकै रो ई सिर—देखो—'जिण री जूती उण रो ई सिर।' ७ जूती जैडो तेल—जैसी जूती वैसा तेल अर्थात् नीच का सम्बन्ध नीच से ही होता है। ८ जूती री तळी होणी, जूती रै बराबर—जूती के समान। बहुत तुच्छ। नाचीज ९ जूती सू पग कटणो (वढ़णो)—जूती से पाव कटना, अपनो से ही हानि पहुँचना।

जूतीड देखो 'जूतो' (मह.व रू भे)

मुहा०—१ जूतीड उडणा २ जूतीड पडणा—देखो 'जूत पडणा'

जूतो-स०पु० [स० युक्त, प्रा० जुत] पाँव की सुरक्षा के लिए दोनों पैरों मे पहना जाने वाला चमडे आदि का बना हुआ थैली के आकार का ढाचा, उपानह, पादत्राण।

मुहा०—१ जूता आळा, जूता वाळा—जूतो वाले, समर्थ, शक्तिशाली, बलवान. २ जूत चलणा —जूते चलना, जूतो से लडना ३ जूता चाटणा—चापलूसी करना, खुशामद करना ४ जूता जडणा—जूतो से मारना, जूतो का प्रहार करना. ५ जूता लगाणा—देखो 'जूत मारणा'।

अल्पा०—जूती।

मह०—जूत, जूतड, जूतीड।

वि०—युक्त, साथ, सहित, एक साथ, शामिल।

जूयग-स०पु० [स० यूथ अथवा यूथाग] १ यूथ, झुण्ड, समूह. २ यूथ का एक अग या समूह।

जूय-स०पु० [स० यूथ] १ समूह, यूथ, झुड, समुदाय (अ मा., डिं को)

उ०—१ जपत भवर गुजार गुलाबा जूय मैं, लता फूल लपटात तरोवर लूथ मै।—बगसीराम प्रोहित री वात

उ०—२ अधिक दसदिस पंक आतुर, धरा पर इम धाय। जोय ग्रीखम सुजळ जाणिक, जूय म्रिग वन जाय।—सू प्र

२ दल, सेना। उ०—१ गयद मान रै मुहर ऊभो हुतो दुरद गत, सिलहपोसा तणा जूय साथै। तद वही रूक अणचूक 'पातल' तणी, मुगळ बहलोलखा तणै माथै।—गोरधन बोगसो

उ०—२ पवग जूय पक्खरा अग बगतरा असल्ली। मगि दुझाल हल्लिया ढाल जेहा पुर दिल्ली।—रा रू.

रू०भे०—जुत्थ, जुथ, जुथ्थ, जूह।

जूयका-स०स्त्री० [स० यूथिका] सोनजुही (अ मा)

रू०भे०—जूथिका।

जूयनाय-स०पु० [स० यूथनाथ] यूथपति, सेनापति।

रू०भे०—जूहनाह।

जूयप-स०पु० [स० यूथप] १ समूह (अ.मा) २ सेनापति।

जूयपत, जूयपति, जूयपती-स०पु० [स० यूथपति] सेनापति।

जूयपाळ-स०पु० [स० यूथपाल] यूथपति, दलनायक, सेनापति।

जूयार-स०पु०—हाथी। उ०—राजा सिंघ चीतगढ राणा। वर माळा लेवा जिण वार। पदमण महल तलाक पडता, जग चै नयण दिया जूयार।—राजा स्री रायसिंघ री गीत

जूयिका—देखो 'जूयका' (रू भे)

जूनउ—देखो 'जूनो' (रू भे) उ०—जइ भागउ तो वाराहउ, जइ थाकउ तो पारकरउ घोडउ। जइ ठालउ तोड कपूर तणउ दावडउ, जइ जूनउ तोइ पाटू, जइ सूकी तोइ वउलसिरी।—व.स

जूनियर-वि० [अ०] जो क्रम मे पीछे हो, छोटा।

जूनु—देखो 'जूनो' (रू भे) उ०—अति घणुहु जूनु एहु, तूय सामि सवळु देहु, इम भणी रहिउ भीमु, सो धनुसु नामइ कीमु।—पं प च.

(स्त्री० जूनी)

गज मिळै मरट्टा। करै विसुद्धा केहरी, जूवान जरट्टा।—द दा

जूवा—वि० [स० युवा] १ युवा, जवान। उ०—देवी बाळ जूवा त्रिय वेस वाळी। देवी विस्व रखवाळ वीसा भुजाळी।—देवि

२ पृथक, अलग ३ भिन्न।

जूवाजूवी—स०स्त्री०—विवाह के बाद वर-वधू द्वारा जुआ खेलने की एक प्रकार की रस्म।

वि०—पृथक-पृथक, अलग-अलग।

रू०भे०—जुआजूई, जुओ, जुवाजुवी, जुवो, जू, जूवो।

जूवाडो—देखो 'जुओ' २ (अल्पा, रू भे)

जूवारी—देखो 'जुआरी' (रू भे) उ०—१ चोरी करसी चोर जार करसी नित जारी। हिंसा हिंसावान जुवा रमसी जूवारी।—ऊ.का

उ०—२ चवदस राम चरन नहिं छाडो। जूवारी ज्यू तन मन आडो।—ह पु वा

जूवो—देखो 'जुओ' (रू भे.) उ०—जळ मे कवळ पणि नीर भेदे नही, जगत मे भक्त यू रहे जूवा। जन हरिदास हरि समद मि बूद कवीर जन, समद मे बूंद मिळिए एक हूवा।—ह पु वा

जूसण, जूसणौ—स०पु० [स० युप = सेवायाम् अथवा फा० जोशन]

१ कवच। उ०—१ फेरा लेतै फिर अफिर, फेरी घड अणफेर। 'सीह' तणी हरधवळ सुत, गहमाती गहडेर। गहड घड-कामणी करै पाणै ग्रहण। करगि खग वाहतो जुवा जूसण कसण। कोपियै छाकियै चहर भड अहर करि। फुरळतै पिसण घड फेरवी अफर फिरि।—हा झा

वि०—लिपटा हुआ, चिपका हुआ।

उ०—२ जगमा पखर जडिया सुपह जूसण, वरण जुध वार घड कुआरी वद। खग झडा ओझडा वाहि ढाहण खळा, होय हरवळ दळा सुतन 'हरियद'।—राव धायभाई नगराज गूजर रो गीत

उ०—३ वजत घाव जूसणे निहाव उट्ठवेणिय। सग्राम पड कैरवै कि खड वाण सेणिय।—रा रू.

उ०—उरमाळ मुडनि छाल म्रिग की खाल केसरि जूसण। वपु भस्म लेप स्मसान राजित व्याळ पाणि विभूसण।—ला.रा

रू०भे०—जूसाण।

जूसणा—स०स्त्री०—सेवा (जैन)

जूसर—स०पु० [स० युग+सर] १ बैलो की गर्दन पर रखा जाने वाला जुआ। उ०—जूसरा धवळ अप्रमाण जव, की विमाण पवमाण कथ। सुलताण मुगळ माथै सज्या, राजथाण बीकाण रथ।—मे म

रू०भे०—जूसर, जूसरू, जूसहरी, जूसारी।

२ कवच। उ०—जड आवध जूसर पाथ जिसा। दळ खडै खत्री उतराद दिसा।—गो रू.

जूसरणो—क्रि०स०—कवच धारण करना। उ०—जूसरिया जवरैल, साथ सतबीसा सावळा—पा प्र

जूसाण—देखो 'जूसण' (रू भे)

जूह—१ देखो 'जूथ' (रू भे.) उ०—१ रिणमालोत कहै रिण रूघा, अचड तियागी धोल इसो। जूह विडार किसो जीव-रखो, केहर रूघा साथ किसो।—द दा

उ०—२ तठा उपरातिं राजान सिलामति वडा जूह गयदा गजराजा नू गडा चरणीआ मारि, पोतारि, नीठ थैसाणीआ छै।—रा सा स

उ०—३ कजाकणि डाकणि काढि कळेज। जिमावत साकणि जूह अजेज।—मे म.

२ देखो 'जुग' (रू.भे.) उ०—निरवहइ अत्ति रोजा निवाज, ववळी वाळ के तवलवाज। जव्वा पलीत मूगुल्ल जूह सारवक जाणि बोलइ समूह।—रा ज सी

जूहणो, जूहवो—क्रि०स०—युद्ध करना, जूझना। उ०—जूं जोवन जूहै सखी। मूरिख लोक नू जाणइ ससार।—वी दे

जूहनाह—देखो 'जूथनाथ' (रू भे)

जूहर—देखो 'जोहर' (रू भे) उ०—तद पताई रावळ नू खबर हुयी जू गड पळटयो तद पताई रावळ भीतर राणिया नू अर बीजै ही जनाने नू कह्यो—जू थे जूहर करो।—पताई रावळ री वात

जूहवइ—स०पु० [स० यूथपति] यूथपति (जैन)

जूहार—देखो 'जुहार' (रू.भे.) उ०—१ उदयचदनय कियउ जूहार, परणावउ रिणधवळ कुमार।—ढो मा.

उ०—२ कुमारा बिन्हे आइ जूहार कीधा, लगे प्रीत छाती पीता भीडि लीधा।—सू प्र

जूहारी—१ देखो जुआरी' (रू भे) उ०—गजवधा जोधाण गढि, दसराहो पूजेय। जूहारी दीपमाळिका, होळी फाग रमेय।—गु रू व.

२ देखो 'जवारी' (रू भे)

जूहाहिवई—स०पु०—१ यूथाधिपति (गो वर्ग का स्वामी) (जैन)

२ देखो 'जूहवई' (रू भे)

जूहिय, जूहिया—देखो 'जुही' (रू भे.) उ०—जगडइ ए जासक जूहिय यू हियडउ निरधार। देखउ केवडी केवडी जेवडी करवत वारि।

—नेमिनाथ फागु

जूहियोडो—भू०का०कृ०—युद्ध किया हुआ, जूझा हुआ।

(स्त्री० जूहियोडी)

जूही—देखो 'जुही' (रू भे, अ.मा) उ०—दाडिमि बीजउरी लीवूइ, मधुर परिमळ फूली जूही। सदा फफळ वाये मन उलहसइ, वाइ तरुअर भइ धसइ।—प्राचीन फागु सग्रह

जेंळेबी—देखो 'जळेबी' (रू भे) उ०—पातळी सेव प्रीसी, उत्तरता घेवर, तळया गुद, कुडळाकित जेंळेबी, सीरा लापसी।—व स

जे—स०पु०—१ वेटा. २ समूह ३ सिंह (एका)

स०स्त्री०—४ मकान मे सामान रखने के लिये लगाई जाने वाली पत्थर की पट्टी जो दीवार मे लगाई जाती है।

क्रि०वि० [स० यदि, प्रा० जइ, अप० जे ?] १ यदि, अगर, जो।

उ०—१ रसणा रटे तो राम रट, आमय लगै न अग। जे सुख चाहै जीव रो, (तो) सुमिर-सुमिर स्रीरग।—ह र

उ०—२ जे रावजी थानै सरणै राखै छै तो हूं थानू तेडावू छूं।

—द वि.

जेठल–वि० [स० ज्येष्ठ] १ ज्येष्ठ भ्राता, वडा भाई (डिं को) २ देखो 'जेठ' (मह० रू भे)
जेठवा–स०स्त्री०—१ एक प्राचीन राजपूत वश जो अपने को हनुमान का वशज वतलाते हैं. २ परिहार वश की एक शाखा।
रू०भे०–जेठूआ।
जेठाणी–स०स्त्री० [स० ज्येष्ठ+रा०प्र० आणी] पति के वडे भाई की स्त्री।
रू०भे०–जिठाणी।
जेठा–स०पु०—देखो 'जेस्ठा' (रू भे.)
जेठाई–स०स्त्री०—१ वडाई, वडप्पन. २ ज्येष्ठता ३ वडे भाई का वशज।
जेठि, जेठिय, जेठी–वि० [स० ज्येष्ठिन्] वडा, ज्येष्ठ। उ०—१ इसी विध जेठिय जोम अताळ। कणेठिय तास लडै कळचाळ।—सू प्र
उ०—२ कणएठी जाणै भिडत काळ। जिण जेठी छूटी ,जगत जाळ।—पा प्र
उ०—३ भेजे इम अणिया भवर, जेठी कवर ,जनेस। वसी हू चढियो वळे, धन चय देण धनेस।—व.भा.
स०पु०—१ ज्येष्ठ भ्राता, वडा भाई (अ.मा , डिं को)
उ०—सुज भ्रात जेठी सेस रा। दइवाण वस दिनेस रा।—र ज प्र
२ पहलवान, मल्ल। उ०—१ जमदढ खजर अम्होसम्ह जडिया। लूयवथा जेठी जिम लडिया।—स प्र
उ०—२ कोई भाखइ, कोई लखइ, सूखडी खाइ पीउ साथि, जेठी मळ्या मालाखाडइ, कोई जूइ वाथोवाथि।—प्राचीन फागु सग्रह
वि०—ज्येष्ठ मास सम्बन्धी, ज्येष्ठ मास की।
रू०भे०–जेठीय।
जेठीपाथ, जेठीपाराथ–स०पु०—[स० ज्येष्ठ=वडा+पार्थ] १ अर्जुन का वडा भाई युधिष्ठिर. २ अर्जुन का वडा भाई भीम (डिं को)
जेठीमधु—[स० यष्टि मधु] मुलैठी।
उ०—जेठीमधु विना दातण करवा री आखडी —रा सा स
जेठीय—देखो 'जेठी' (रू भे)
जेठुआ—देखो 'जेठवा' (रू भे) उ०—वाला वाजा अनइ जेठुआ, चूडासमा मेलावइ। असपतिसेन समुद्र ऊलटिया, ऊपरि चापी आवइ।
—का.दे प्र
जेठुए–स०पु०—जेठवा शाखा का क्षत्रिय। उ०—जेठुए खेमे जोर, कुण तेण चपै कोर। जिण पेख जवन सजोस, सुज गयो तजि गढ सोस।
—रा.रू.
जेठुतो—देखो 'जेठूतो' (रू.भे)।
(स्त्री० जेठूती)
जेठूडो—देखो 'जेठ' (अल्पा, रू भे.)
जेठूत, जेठूतरो—देखो 'जेठूतो' (रू भे.) उ०—जेठूत री स्त्री आपरै सासू री देराणी नै कहै—हे काकी जी साह!—वी.स.टी.
(स्त्री० जेठूती, जेठूतरी)
जेठूतो, जेठूत्रो–स०पु० [प्रा० जेट्ठ+पुत्त=अप० जेठ+उत] (स्त्री० जेठूती, जेठूत्री) पति के वडे भाई का पुत्र।
रू०भे०–जेठुतो, जेठूत, जेठूतरो, जेठूत्रो।
जेठै–क्रि०वि०—जहाँ।
जेठो–वि० [स० ज्येष्ठ] (स्त्री० जेठी) ज्येष्ठ, वडा। उ०—१ गागै रैणवायळी थान वेटा पाच जाया। जेठा स्यामसीहजी रैणवायळि मे रहाया।—शि व
उ०—२ अ सुत पुज तेरह अग्रकारी। धरमवभ जेठो छत्रधारी।
—सू प्र
जेण, जेण, जेणि–सर्व० [स० य, येन] १ जिस, जिसने, जिससे।
उ०—१ वाजा दळ दहुवै जेण वार। ऐसा किया हाजर तयार।
—सू प्र
उ०—२ उठै वाग असोक रूखा अथाहै। महामाय सीता वसै जेण माहै।—सू प्र.
उ०—३ परदेसा प्री आवयउ, मोती आंण्या जेण। धण कर कवळा झालिया, हसि करि नाख्या केण।—ढो मा
उ०—४ थे सिध्धावउ सिध करउ, वहु-गुणवता नाह। सा जीहा सतखड हुइ, जेण कहीजइ जाह।—ढो मा.
उ०—५ जेणि जई नळ राजा ज्याच्यु, ते त्रीजी वार नवि मागि। अनेक यग्य करी धन खरचू, तोहि रिधि न भागि।—नळाख्यान
उ०—६ आरभ मै कियो जेणि उपायो, गावण गुणनिधि हू निगुण। करि कठचीत्र पूतळी निज करि, चीत्रारैं लागी चित्रण।—वेलि.
क्रि०वि०—१ जहाँ। उ०—चाल सखी तिण मदिरइ, सज्जण रहियउ जेंण। कोइक मीठउ वोलडइ, लागौ होसइ तेंण।—ढो मा.
२ देखो 'जैन' (रू भे)
जेत—देखो 'जेथ' (रू भे)
जेतळइ, जेतलइ, जेतळइ, जेतलइ, जेतळई, जेतलई–क्रि०वि०—जव तक। उ०—१ जेतलइ छेदिवा लागउ सीस। तेतलइ तूठी भारती ए।—विद्याविलासपवाडउ
उ०—२ सखी नयण तव नीद्रइ घुळइ, मारू तणी आखि नवि मिळइ। मध्यराति वउळी जेतळइ, ऊमादे चितइ तेतळइ।—ढो मा
वि०—जितना।
जेतलउ–वि०—जितना। उ०—जेतलउ कीजइ नेहलउ जी रे जी, जिवडा तेतलउ हुयइ पछताप रे।—स कु
जेतलु, जेतलू, जेतलौ–वि० (स्त्री० जेतली) जितना (उ र)
उ०—१ पुरुसारथ समथ पराक्रम पीथल, घ्रहूड धन तै खत्र-धरम। दिन जेतला प्रवाडा दीपै, वरिस जिता तेती वडम।
—प्रिथीराज भारमलोत रो गीत
उ०—२ जेतलाइ वन तेतलाइ चदन, जेतलाइ सर तेतलाइ कमळसर, जेतलाइ आगर तेतलाइ वयरागर, जेतलाइ हस्ति तेतलाइ गध

जोघहर 'भीम' अरि करण जेर ।—रा.रू.

२ जो बहुत तग किया जाय, जो बहुत दिक किया जाय ।

उ०—१ दगो धारियो 'डूग' सू सोझै पाकडै छावणी दौळा, लोह लाट लगरी अमाप फौजा लेर । लाखा मुक्ता आठा सोवा ऊपरै सोभाग लीधो, जोम अगी सीह नै आगरै कीधौ जेर ।—डूगजी री गीत

उ०—२ 'ऊदै' 'राजड' 'जगपती' 'जोधहरै' सिवदान । जोधाणै अजमेर विच, कीधौ जेर जिहान ।—रा रू

क्रि०वि०—वश मे, अधिकार मे, कब्जे मे । उ०—१ ईत तणौ नह भीत अगजी, मान दुजा मन मेर । आसेटा मजबूत अडाकी, जीत किया खळ जेर ।—र रू

उ०—२ मडियौ मेर अडिग मेवाडी, जुडै दुरग ग्रिहुँ कीधा जेर । श्री जुध वैर हणू जिम आखा, सुतन सुद्रसण पातर सेर ।

—रावत घासीराम सक्तावत रौ गीत

क्रि०प्र०—करणौ ।

स०स्त्री०—वह झिल्ली जिसमे गर्भ का बच्चा रहता है और पुष्ट होता है ।

जेरणौ, जेरबौ–क्रि०स०—१ बन्धन मे डालना । उ०—काम गयद चौंट फिरि घेरचा, पकड़ि सील साकळ सू जेरचा ।—ह पु वा

२ वश मे करना, आधीन करना । उ०—लिखमीवर लोवियो, लखण देवता न ताधा । पाडव वाल्हा पाच, मया तो ना वह माघा । प्रघळ चीर पूरिया, परम पेखियो पचाळी । पाडव दाखे प्रभू, वेगि आया वनमाळी । जुजिठिळ भीम अरिजण जिसा, जिणा जीता अरि जेरिया । भीसम द्रोण दुरजोघ अिगि, खोहिण अठारै खेरिया ।—पी ग्र

जेरियोडौ–भू०का०कृ०—१ बन्धन मे डाला हुआ २ वश मे किया हुआ । (स्त्री० जेरियोडी)

जेरदस्त–वि०—अधीन, तावै । उ०—नै लोक जेरदस्त दण रा हुकमी छै ।—नी प्र.

जेरपाई–स०स्त्री० [फा०] स्त्रियो के पैर की जूती, स्लीपर ।

जेरबद, जेरबध–स०पु० [फा० जेरबद] घोडे की गर्दन के नीचे अगले पैरो तक शोभा के लिये बाधा जाने वाला कपडे या चमडे का बन्धन जो मोहरी और तग मे फँसाया जाता है, तस्मा ।

उ०—१ बध जोट दीघ कसि जेरबध । सभि पेस बध्र कमसार सध ।—सू प्र. उ०—२ कसता बिर्जमड कोदड कधा । बणावै त्रिथा बरै जेरबधा ।—व.भा

जेरबाव–स०पु०—घोडे का एक रोग विशेष (शा हो)

जेरबार–वि० [फा०] १ आपत्ति से दबा हुआ, तग, दुखी. २ क्षतिग्रस्त ।

जेरबारी–स०स्त्री० [फा०] १ किसी नुकसान के कारण दुखी होने की क्रिया, तगी. २ बेचैनी, परेशानी ।

जेराणौ–स०पु०—मृत व्यक्ति की मृत्यु के बाद स्त्रियो द्वारा गाया जाने वाला एक प्रकार का शोकसूचक गीत ।

जेराजेर–स०पु०—१ हाकी का खेल २ देखो 'जेर' (रू भे.)

जेरीविरिया–स०पु०—एक प्रकार का पकाया हुआ मास ।

उ०—कलिया पुलाव विरज दुप्याजा जेरीविरियां अखनी चखताळा भाति-भाति के मजे ।—सू प्र.

जेळ–स०स्त्री० [अ.] १ कैद ।

क्रि०प्र०—काटणी, भोगणी, होणी ।

२ राज्य द्वारा दडित अपराधियो को कुछ निश्चित समय तक दण्ड-स्वरूप रखने का बद स्थान, बदीग्रह, कारागार ।

क्रि०प्र०—करणी, काटणी, देणी, भोगणी, होणी ।

३ खेल के मैदान की सीमा, अतिम छोर, लक्ष्य-स्थान ३ एक प्रकार का खेल । उ०—जिण तरै दडिया रा रमणा मे जेळ एक खेल रौ नाम है सो उण खेल मे आदमिया रा दोय दळ होवै है नै दोही दळा रै थापियोटी एक-एक दोनू वकै हद होवै है ।—वी स टी

जेळखानौ–स०पु० [अ० जेल+फा० खाना] बदीगृह, कारागार ।

जेलड–स०पु०—स्त्रियो का एक आभूषण । उ०—ग्यान अगूठी कान जुगति का झूठणा । जेलड़ सील सतोख नरत का घूघरा ।—मीरा

जेळणौ, जेळबौ–क्रि०स०—भेजना । उ०—सुण सेस सिया चो सोधा नू, जेळै दिस चारू जोधा नू ।—र.रू.

२ बराबर करना । उ०—जेळै कइ जब्बर बब्बर जोर । दिखावत वायु बरब्बर दोर ।—मे म.

जेळदडी–स०स्त्री०—हॉकी की तरह का एक प्रकार का देशी खेल ।

जेलर–स०पु० [अ०] बदीगृह का अफसर ।

जेळियोडौ–भू०का०कृ०—१ भेजा हुआ २ बराबर किया हुआ । (स्त्री० जेळियोड़ी)

जेळियौ–स०पु०—१ हॉकी खेलने के बल्ले के आकार का आगे से मुडा हुआ गेद खेलने का डडा २ खेल मे सीमा-स्थान का रक्षक, गोल-कीपर ।

यौ०—जेळियौ-दोटौ ।

जेळियौ-दोटौ–स०पु०यौ०—हॉकी की तरह गेंद के देशी खेल मे गेंद के लगाई जाने वाली वह चोट जिससे गेंद लक्ष्य-स्थान (गोल) के भीतर से पार हो जाय ।

जेळी–स०स्त्री०—एक लम्बे लट्ठ के आगे दो नुकीले डडे लगा हुआ काँटे, कटीली झाडियां आदि हटाने का उपकरण जिसे किसान, चर-वाहे आदि प्राय अपने पास रखते हैं । उ०—हाथ ज कसियो, काधे जेळी, सिर धर चाल्नी जो जुवारमल को पालणू ।—लो गी.

मि०—वेई ।

रू०भे०—जेई, जैई, जैळी ।

अल्पा०—जैयली ।

जेवडी–स०स्त्री०—देखो 'जेवडौ' (अल्पा., रू भे.) उ०—रावतजी सलामत श्री भीलडौ हरामखोर, प्रथी रौ चोर, काळ रौ खादौ, मौत री जेवडी रौ बाधौ, श्री आवै ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिघ री वात

आस। अहि काळै मुख अगुळी, वाळै फिर विसवास।—रा रू

जेहडो—देखो 'जै'डो' (रू भे) उ०—१ जसै फतै जेहडा, घडा थभण पतसाही। जोडै गिरधार रा, हरि सम च्यारू भाई।—रा रू

उ०—२ पित मोहिरि 'गजण' प्रचड, जग चख जेहडौ तपवत लडै सतेज, अरिजण एहडो।—सू प्र.

(स्त्री० जेहडि, जेहडी)

जेहनउ, जेहनउ—वि०—जिसका (उ.र) उ०—मनहु मोह्य रे माहरू, गुरु ऊपरि गुणराग। जिनसागर सूरि गुरु भला, साचउ जेहनउ सोभाग।—स कु

जेहर—स०स्त्री०—१ पैर मे पहनने का एक प्रकार का आभूषण।

उ०—कल कदमू के लगर भारी कनक की हूस। जवाहर के जेहर दीपमाळा की रूस।—र रू

रू०भे०—जेहरि, जेहरी।

२ देखो 'जेहड' (रू भे, बा दा ख्यात)

जेहरान—स०पु०—जेवरात, जेवर, आभूषण, गहना।

उ०—सुरग रग भोमि मे तरग है न तान की। ढमक ढोलकी न त्यू घमक घुग्घरान की। छमक बिच्छवान की दमक ना दरीन की। झमक जेहरान की चमक ना चुरीन की।—ऊ का

जेहरि, जेहरी—देखो 'जेहर' १ (रू भे) उ०—जेहरि घूघरमाळ पगा झुणकै जिया। कुजै वारिज पुडू बचा कळहसिया।—बा.दा.

वि०स्त्री०—जैसी। उ०—कुळ री बार मे भडा भली अछेह री कीधी, दीधी भ्राट जगा ज्यो केहरी गजा दोट। गाढै मत्तै खाग दडा भुदडा जेहरी कीधी, चाळागारा खेलियो तेहरी की सी चोट।

—डूगजी री गीत

जेहरौ, जेहवउ, जेहवौ—वि० (स्त्री० जेहरी, जेहवी) जैसा।

उ०—१ बावन चदन अगई परिमळ धूरत तपई निसभ। उर जेहवउ दीसइ उरवसी रूप विसेखइ रभ।—रुकमणी मगळ

उ०—२ लखण बतीसे मारुवी, निधि चद्रमा निलाट। काया कूकू जेहवी, कटि केहरि सैं घाट।—ढो मा

उ०—३ राणु रणथभ तणाह जउहर जउहर जेहवा। कीधा भोजा-कइ कवरि वधता वीस गुणाह।—अ. वचनिका

जेहाण, जेहान—देखो 'जहाण, जहान' (रू भे.) उ०—थापै सोजत थान, पाणा वागै छात्रपती। जाणै सरब जेहान, आरोपी भारी उठै।

—पा.प्र.

जेहा—१ देखो 'जैसा' (रू भे) स०स्त्री० [स० जिह्वा] २ जीभ।

उ०—ताता दोय धोरी जोतरिया, भवर उजळ दोहू पाख भलाह। वाजै जेहा पाटली विध विध, इण रा खेडू आप अलाह।—ओपो आढो

जेहाज—देखो 'जा'ज' (रू भे) (ह ना.)

उ०—माया जळ अति विमळ, तास कोइ पार न पावै। लहर लोभ ऊठत, मन्न जेहाज चलावै।—ज.खि.

जेंहि, जेहि—देखो 'जेही' (रू भे) (उ र)

जेहिर—देखो 'जेवर' (रू भे)

जेहिल—स०पु० [स०] वशिष्ठ गोत्रोत्पन्न आर्यनाग का शिष्य, थिवर मुनि (जैन)

जेही—सर्व०—जिस। उ०—१ ताहरा नायण राजा पास खरची ले नै आदमी दस वीस ले नै एक डूबो कराय नै नदी नदी चाली। तठै जेही सहर माहे नदी आवै सहर माह जाय साहूकार रा घर देखै। वेरा रा गहणा वेस पहरीया तेठै दखै तद पाछी आय डूडै वैसै, आघी चालै। इयै भात केही सहर दीठा।—चौ.गोली

उ०—२ महि मडळ पदम पै ओपिया मडळी, ओळगू अतरै जिमी असमाण। रिख तणा ओण पाहार जेही रिदै, जवर जगदीस चै 'दलौ' जम-राण।—राठौड महाराजा दळपतसिंह रायसिघोत री गीत

क्रि०वि०—जैसे, ज्यो। उ०—हसा गति तणी आतुर थ्या हरि सू, बाधाऊआ जेही वहै। सूधावास अनै नेउर सद, क्रमि आगै आगमन कहै।—वेलि

वि०स्त्री०—देखो 'जेहौ' (रू.भे) उ०—पर मन-रजन कारणइ, भरम म दाखिस कोइ। जेही दीठी मारुवी, तेही आखं मोइ।

—ढो मा

जेहु—वि०—जैसा। उ०—साहेली हे जिणचद सूरि कह्यु जेहु तु, साहेली हे सामल सिरदार। साहेली हे तेह वचन तिमहिज थयु, साहेली हे पुज्य थया पटधार।—स कु.

जेहो—वि० (स्त्री० जेही) १ जैसा। उ०—१ जेहा सज्जण काल्ह था, तेहा नाही अज्ज। माथि निसूळउ नाक सळ, कोइ विणट्ठा कज्ज।

—ढो.मा.

२ समान, तुल्य, सदृश। उ०—१ धरती जेहा भरखमा, नमणा जेही केळि। मज्जीठा जिम रच्चणा, दई सु सज्जण मेळि।—ढो मा

उ०—२ कहि जिण सुतण वीर नृप केहो। जग जस प्रगट भगीरथ जेहो।—सू प्र

३ जिस रूप-रग, आकृति या गुण का, जिस प्रकार का।

उ०—ऊमर दीठी मारुई, डीभू जेही लक्कि। जाणै हर-सिरि फूलडा, डाकै चढी डहक्कि।—ढो मा.

स०पु०—भाटी वश की जैसा शाखा का व्यक्ति।

रू०भे०—जैहो।

जै—देखो 'जे' (रू भे.) उ०—१ श्री लिखमी अवतार सरब लिखमी सारीखो। जै जायो जगत ना अनत इहडी विधि ईखो।—पी ग्र.

उ०—२ जै चढ़ सूत्यो नणद बाई री वीर, गीत कुण्या घर गावै, जी राज।—लो गी

जैगडो—स०पु०—बछडा (मेवात)

जैट—स०पु०—१ शमी वृक्ष (रू भे 'जाट)

२ देखो 'जेट' (रू भे. जट)

जै—स०पु०—१ वृहस्पति २ पुष्य नक्षत्र ३ सूर्य. ४ ब्रह्मा. ५ पतगा. ६ अग्नि (एका) ७ देखो 'जय' (रू.भे)

उ०—३ पछै स० १६६३ लवेरा रै पटै ऊपर आसोप री पटी। पातसाही माहे हेट री जैतवार हुवौ।—नैणसी

रू०भे०—जैतवार।

जैतसी–स०पु०—भाटी वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति। (वा दा.ख्यात)

जैतस्री–स०स्त्री० [स० जयश्री] एक रागिनी (सगीत)

जैतहत्य, जैतहथ, जैतहथौ–वि० [स० जैत्र+हस्त] विजय जिसके हाथ मे हो, विजयी। उ०—१ सेन मेल सिवपुरी, फौज घेरै घासोहर। जैतहत्थ कळिमत्थ साथि भाटी रिण घोयर।—गु.रू व

उ०—२ जैत कळोधर जैतहथ, मडण गोवरधन्न।—रा.रू

उ०—३ जैतहथा जैताहरा, जैतखभ जुधवार। तैसोई मडण वीक तण, खळ खडण खग धार।—रा रू

रू०भे०—जैत्रहथ, जैत्रहथौ, जैथहथ, जैथहथौ।

जैता–स०स्त्री०—एक पतिव्रता राजपूत रमणी जिसका आख्यान राजस्थान के अन्तर्गत 'रातिजोगा' के गीतो मे अवश्य गाया जाता है।

रू०भे०—जैतळ।

जैता–स०स्त्री०—राठौडो की एक शाखा, जैतावत।

जैताई–वि०—[स० जैत्र +रा०प्र०ई] विजयी। उ०—जैसावत सुरतो जैताई, साम तणौ छळि राम मवाई। भाण तणौ साहिवौ भुजाळौ, चक्रवति दळा खळा कळि-चाळौ।—रा रू

वि०—जितने।

जैतार–वि० [स० जैत्र] जीत कर उद्धार करने वाला, जीतने वाला, विजयी। उ०—आजान भुज वळ अग री, जैतार दससिर जग री।
—र ज प्र

जैतारणियौ–स०पु०—१ राठौडो की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति, सीधल राठौड (वा दा ख्यात) २ मारवाड के अन्तर्गत जैतारण कस्बे का निवासी।

जैतावत–स०पु० [स० जैत+पुत्र] राठौडो की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

जैतावार—देखो 'जैतवार' (रू भे)

जैतुग–स०पु०—भाटी वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति। (वा दा ख्यात)

जैतून–स०पु० [अ०] अरब, शाम और यूरोप के दक्षिणी भागो मे सर्वत्र मिलने वाला एक सदावहार वृक्ष। इसके फल और बीज दोनो काम आते है। इसके बीजो का तेल औषधि मे काम आता है।

जैतौ–स०पु०—राठौडो की जैतावत शाखा का राजपूत।

जैत्र–स०स्त्री० [स० जैत्र] जय, विजय। उ०— प्रहसमि गुरुजी पत्तणि अविया, वाज्या जैत्र निसाण। ठाम-ठाम ना सघ मिळ्या घणा, आपै दान सुजाण।—ऐ जै.का.स

जैत्रवादी, जैत्रवार–वि० [स० जैत्र+वादिन्, जैत्र+वार] विजयी। उ०—१ माझी मेघ हरौ मछराळ हूँ, तल्ल मल्ल हाथाळ। जैत्रवादी जमजाळ केविया री काळ सूरवीर सप्पखाळ।—ल पि

उ०—२ धरती पछिमी सूरधीर, भगता-वछ्ल जास भीर। जिहडो गहड जैत्रवार, कुअरा तिलिक जाणकार।—ल पि

जैत्रसाद–स०पु० [स० जैत्र+शब्द] विजय का शब्द।

जैत्रहथ, जैत्रहथौ—देखो 'जैतहथ, जैतहथौ' (रू भे)

उ०—वडा ही वडा आचार दीपै विसवि, वहै सबळा खळा खेति वागै। जगहथै वधिये गजण री जैत्रहथ, जगहथा वध गया विरद जागै।—अमरसिंह राठौड री गीत

जैत्राई–स०स्त्री० [स० जैत्र+रा.प्र आई] जीत, विजय, जय।

वि० [स०जैत्र +रा प्र ई] विजयी। उ०—विजपाळी चाळै विरदाई, जोगीदास तणौ जैत्राई।—रा रू

वि०—जितने ही।

रू०भे०—जेत्राई।

जैथहथ, जैथहथौ—देखो 'जैतहथ, जैतहथौ' (रू भे)

उ०—कर कर क्रामतीजी खोपै जैथहथ जम खभ। नागर नोवती जी घर घर घुरत द्वार असभ।—रा.रू

जैथे—देखो 'जेथ' (रू भे)

जैदरथ, जैदरथौ, जैदरथ्थौ—देखो 'जयद्रथ' (रू भे)

उ०—जैदरथौ माथौ जुई, अई झुकाओ आण। आयौ 'मंदर' ऊपरै, पावू इण परमाण।—पा.प्र

जैदेव–स०पु० [स० जयदेव] गौड के महाराज लक्ष्मणसेन की राजसभा मे रहने वाले एक प्रसिद्ध वैष्णव कवि जो सस्कृत के प्रसिद्ध काव्य 'गीत गोविंद' के रचयिता थे। इनका जन्म आज से प्राय. आठ-नौ सौ वर्ष पहले बगाल के वर्तमान वीरभूम जिले के अतर्गत केंदुविल्व नामक ग्राम मे हुआ था।—(पी ग्र)

जैद्रथ—देखो 'जयद्रथ' (रू भे)

जैन–स०पु० [स०] १ भारत का एक प्रसिद्ध सप्रदाय जिसका अहिंसा परम धर्म माना जाता है २ इस धर्म का अनुयायी, जैनी।

रू०भे०—ज्यान।

जैनगर, जैनेर—देखो 'जयनेर' (रू भे) उ०—नरपति रहियौ जैनगर, परम रिदै घर प्रीत। रीधौ भूप विलास रस, कीधौ चैत वितीत।
—रा रू.

जैपरियौ–वि०—जयपुर से सम्बन्धित, जयपुर का।

स०पु०—जयपुर निवासी।

रू०भे०—जैपुरियौ, जैपुरी।

जैपाळ–स०पु०—१ पँवार वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति (वा दा ख्यात) २ अजयपाळ नामक औपधि।

जैपुर–स०पु०—राजस्थान का एक प्रसिद्ध नगर जो राजस्थान की राजधानी है।

जैपुरियौ, जैपुरी—देखो 'जैपरियौ' (रू भे)

जैपैलैदिन–स०पु०—वर्तमान समय से गत या आने वाला पाँचवाँ या छठा दिन।

जैवहौ, जैवौ—देखो 'जेहवौ' (रू भे) (स्त्री० जैवही, जैवी)

जैसळ—स०पु०—भाटी वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।
वि०—जैसलमेर का, जैसलमेर सम्बन्धी।

जैसळगर—देखो 'जैसलमेर' (रू भे)

जैसळगरौ—देखो 'जैसलमेरौ' (रू भे)

जैसळगिर—देखो 'जैसलमेर' (रू भे) उ०—तोडै रगि तुरकाण, रिण पडि ऊपडिग्रौ 'रघौ'। भाटी भला भवाडिया, जैसळगिर जोधाण।

जैसळगिरौ—देखो 'जैसलमेरौ' (रू भे) उ०—'गोइद' पेखि जैसळगिरौ, वाघ वीसमौ वीरवर। रिण वार राण 'ग्रमरेस' रा, कुरगा जिम भागा कुग्रर।—गु.रू व.

जैसळमेर—स०पु० [स० जयसल+नगर] जयसल नामक भाटी वश के राजा ने विक्रमी सवत् १२१२ श्रावण शुक्ला १२ को किले की नीव डाली ग्रौर उसके पास एक नगर बसाया जिसका नाम जैसलमेर पडा ग्रौर इसी नगर के कारण समूचे राज्य का नाम जैसलमेर पडा।
रू०भे०—जेजळमेर, जैसलगर, जैसलगिर, जेसाण, जेसाणौ, जैसाण, जैसाणौ।

जैसळमेरौ—वि०—जसलमेर का, जैसलमेर सम्बन्धी।
उ०—सिभूनाथ कह्यौ सौ वेरा, भला हुवै तेरा ग्रणभग। मिळियौ माल सुमेरा माफिक, यौ जैसळमेरौ उतमग।
—दुरजनसाळ भाटी री गीत
रू०भे०—जैसलगरौ, जैसलगिरौ।

जैसाण, जैसाणौ—देखो 'जैसलमेर' (रू भे) उ०—१ जैसाण लूटियौ दे जुहार, वीकाण लूटियौ पाच वार। रूपाण भरै डड खिमे रेस, नागाण करै सेवा नरेस।—वि स
उ०—२ माड-घर वीचमै महोछिव मडाणा, दान सू ग्रदेवा हिया दहता। 'चूड' हर ग्रनड जैसाण चवरी चढै, वीदगा चढाया गजा वहता।—द दा
उ०—३ गढ जैसाणै वीकपुर, कै सीरोही पार। जग मै भूपत थान रौ, वुध ग्रनुमान विचार।—रा रू

जैसा—स०स्त्री०—भाटी वश की एक शाखा।
रू०भे०—जेसा, जेहा, जैहा।

जैसौ—वि० (स्त्री० जैसी) जैसा। उ०—ग्ररु जोधपुर जैसौ राज वडेरा रौ वाधियौ पातसाही खालसै रहतौ दीसै है।—द.दा.
स०पु०—भाटी वश की जैसा शाखा का व्यक्ति।
रू०भे०—जेसौ।

जैसौ-राणौ—स०पु०—एक मारवाडी लोकगीत।

जैहर—१ देखो 'जै'र' (रू भे) (ग्र मा)
स०पु०—२ साँप (ग्र मा)

जैहरी—देखो 'जै'री' (रू भे)

जैहा—देखो 'जैसा' (रू भे)

जैहौ—देखो 'जेहौ' (रू भे)

जो—वि०—ज्यो, समान।

जोईडौ—स०स्त्री०—यूका का बच्चा।

जोज, जोट—स०पु०—शमी वृक्ष या इसका पका फलीनुमा फल।
(रू.भे जाट) (मि० सोग्रो)

जो—स०पु०—जौ।
सर्व० [स० य] यह सम्बन्ध वाचक सर्वनाम जिसके द्वारा कही हुई सज्ञा के वर्णन मे कुछ ग्रौर वर्णन की योजना की जाय।
क्रि०वि [स० यत, प्रा० जग्रो, ग्रप० जग्रो] यदि, ग्रगर।
उ०—१ वळिवधण मूझ स्याळ सिघ वळि, ग्रासै जो वीजो परणै। कपिल धेनु दिन पात्र कसाई, तुळसी करि चाडाळ तणौ।—वेलि.
उ०—२ ग्राज ग्रागन्या ग्रापौ जो, मुह्नै हस्तनापोर जाऊ धाई। गदा तणै प्रहार, मारू साथे सोए भाई।—नळाख्यान
रू०भे०—जु।

जोग्र—देखो 'जोग' (जैन)

जोग्रण—देखो 'जोजन' (रू भे) उ०—सिधु परइ सत जोग्रणे, खिविया नीजळियाह। सुरहउ लोद्र महक्कियाै, भीनी ठावडियाह।—ढो मा.

जोग्रणौ, जोग्रवौ—देखो 'जोवणौ, जोववौ' (रू.भे)

जोइ—स०स्त्री० [स० ज्योति] १ ग्रग्नि (जैन) २ ज्योति, प्रकाश। (जैन)
[स० जोपित] ३ स्त्री, महिला ४ देखो 'जो' (रू भे)
उ०—जोइ जळद पटळ दळ सांवळ ऊजळ, धूरै नीसाण सोइ घण-घोर। प्रोळि-प्रोळि तोरण परठीजै, मडै किरि तडव गिरि मोर।
—वेलि.
रू०भे०—जोई।

जोइजणौ, जोइजवौ—क्रि०ग्र०—ग्रावश्यक होना, जरूरी होना।
उ०—पातसाह सीख दी तरै राठोड प्रिथीराज नु महेसजी मिळिया ही नही जाणियौ खेरवौ दियौ जोइजसी।—राव चद्रसेन री वात

जोइजै—देखो 'जोईजै' (रू भे.)

जोइठाण—स०पु० [स० ज्योति स्थान] ग्रग्नि-स्थान, ग्रग्नि-कुण्ड (जैन)
रू०भे०—जोईठाण।

जोइण—स०स्त्री०—१ जोशी की स्त्री. २ देखो 'जोजन' (रू भे)
उ०—१ काछौ करह वियूभिया, घडियउ जोइण जाइ। हरणाखी जउ हसि कहइ, ग्राणिसि एथि चिसाइ।—ढो मा
उ०—२ लावउ पिहुतउ इक लख जोइण नै विस्तार।—ध व ग्र
रू०भे०—जोइन।

जोइणि, जोइणी—देखो 'जोगणी' (रू भे) उ०—उज्जेणि ववकु जोइणि तणउ, जिणि पडि वोहउ भाण वलि। जिणदत्त सूरि पहु सुरगुरवि, हुयउ न होइ सइ इत्थु कलि।—ऐ जै का.सं.

जोइणौ, जोइवौ—क्रि०स०—देखो 'जोवणौ, जोववौ' (रू भे.)
उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति गढ कोट चौफेर कागुरा लागा थका विराजै छै। जाणै ग्राकास लोग गिलण नू दात

१४ भय, डर। उ०—पूज्या देव पयाण सिद्ध-गण सामा मिळसी, वीणा भीजण जोख निचकता दूर विचरसी। नमजो चवळ हेत हिये मे आदर आणो। रतीदं भूकत जिगन री कीरत जाणो।—मेघ

रू०भे०—जउख, जौख।

जोखणी, जोखबी—क्रि०स०—१ वजन करना, तौलना।

उ०—१ वाणियं टकै रो गुळ जोख्यो।—वाणी

उ०—२ जगपुड 'जगा' पाखरा जगम, रमहर माथै घात रहै। रुकमा जोख जोखिया राणा, पडिया जोखै दिली पहै।

—महाराणा स्री जगतसिंह (वडा) री गीत

२ भयभीत करना, आतकित करना। उ०—वारण घड हेक तणी वधूसै, वारण हेके ले विमळ वमळ। जोखिया भला राण जग जेठी, वहु पतसाहा तणा वळ।—महाराणा सागा री गीत

जोखणहार, हारो (हारी), जोखणियो—वि०।

जोखवाडणी, जोखवाडबो, जोखवाणी, जोखवाबो, जोखवावणी, जोख़-वावबो, जोखाडणी, जोखाडबो, जोखाणी, जोखाबो, जोखावणी, जोखावबो—प्रे०रू०।

जोखिग्रोडो, जोखियोडो, जोख्योडो—भू०का०कृ०।

जोखीजणी, जोखीजबो—कर्म वा०।

जोख़त, जोखता—स०स्त्री० [स० योषित्, योषिता] १ औरत, स्त्री। उ०—तुरियं भव तारिया, छान छीपं घर छाई। जोखता जंदेव री, जगत जाणं जीवाई।—अलूनाथ

२ वेश्या, गणिका। उ०—साध सराहै सो सती, जती जोखता जाण। रज्जव सच्चे सूर का, वैरी करत वखाण।—रज्जव

जोखम—स०स्त्री०—१ वह मूल्यवान पदार्थ या धन-दौलत जिसके कारण चोर-डाकुओं द्वारा भारी विपत्ति आने की सम्भावना हो।

मुहा०—१ जोखम उठाणी, जोखम सहणी—ऐसा कार्य जिसमे भारी नुकसान या खतरे की आशका हो २ जोखम मे पडणी—किसी आपत्ति मे फँसना। सकट मे उलझ जाना।

२ आपत्ति, सकट। उ०—१ अरजण वाण जिसो आखाडै, गज खग झाडै गीत गवाडै। 'अखो' 'रिदावत' रावत एहो, जोखम विरिया भीसम जेहो।—रा.रू उ०—२ हरखीयो रिख मन माह आणद हुओ। जीव जामण मरण कीध जोखम जुओ।—रुकमणी हरण

३ खतरा, भय, डर। उ०—१ तद मा भीतर बुलाय कही वेटा इण घर विवाह क्यू करो जिण मे जीव नू जोखम हुवै सो क्यू करै।

—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ खावै जहर अमल पण खावै, करक मसाणा मढी करै। जीवै नर जतरै नह जोखम, मरण तणं दिन अवस मरै।—अज्ञात

४ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी। उ०—लाखा नै हजारा तणी रे। जोखम लेले तो मोल। तेहिज निरधन हो गया रे। प्राणी फिरता डावाडोल।—जयवाणी

जोखमणी, जोखमबो—क्रि०अ०—वीर गति को प्राप्त होना, मृत्यु को प्राप्त होना, मरना। उ०—भिडिया तिकै मुवा काइ अमिया। जट लोहाण खत्री जोखमिया। जुडि गज खेत पडै वौह जिसडा। इकसठ समर जीपिया इसडा।—सू प्र.

जोखमिणो, जोखमिबो—क्रि०अ०—१ टूटना. २ भागना. ३. मरना।

जोखमियोडो—भू०का०कृ०—१ मरा हुआ. २ टूटा हुआ. ३ भागा हुआ। (स्त्री० जोखमियोडी)

जोखमी—वि० वह पदार्थ जिसके कारण किसी आपत्ति के आने की सम्भावना हो।

जोखसोख—स०पु०—१ वैभव, ऐश्वर्य. २ धन-दौलत. ३ विषय-विलास।

जोखहारी, जोखर—स०पु०—१ आमोद-प्रमोद का कार्य करने वाला २ अपनी वेश-भूषा और विशेष बनावट से दूसरो को हँसाने वाला. ३ योद्धा। उ०—कायर जमि जोखर कडक, लाभ जुडचाँ विण लेह। अज रीमा थाव र अहर, दिक कतरा टाळैह।—रेवतसिंह भाटी

४ हानि पहुँचाने वाला, शत्रु।

रू०भे०—जोकर, जोखाहर।

जोखा—स०स्त्री० [स० योषा]-स्त्री, नारी, महिला (ह.ना.म.मा)

जोखाई—स०स्त्री०—तोलने जोखने का कार्य या इस कार्य की मजदूरी।

जोखारा—स०स्त्री०—चूसने वाली स्त्री, वेश्या।

जोखाहर—देखो 'जोखहारी' (रू.भे.)

जोखित, जोखिता—देखो 'जोखत, जोखता' (रू.भे) (ह ना, अ मा.)

जोखिया—स०पु० (अ व) आनन्द, मौज। उ०—हमे थे वैठा जोखिया करो।—जलाल बूबना री बात

जोखियोडो—भू०का०कृ०—१ वजन किया हुआ २ भयभीत किया हुआ, आतकित किया हुआ। (स्त्री० जोखियोडी)

जोखो—स०पु०—१ हानि, क्षति। उ०—१ जोखो दाता तणो न जाणं। दाता भिडणाणा देसोत।—द दा

उ०—२ अर कारी की सु इम चीतवि अर की हुती जु जीव रं जोखं लग अटकळी हुती, का घर वार हुती रहै। पणि केसवराय जे मारं नही तो किम ही ज मारीजं नही।—द वि

२ खतरा, भय। उ०—कुहाडां मार जिहाज वटका करै, धरि सारा घरै मेट धोखो। करा खग तोल मुख वोल कहियो 'करण', जितै ऊभो इतै नही जोखो।—द दा.

क्रि०प्र०—आणी, पडणी।

३ जिम्मेदारी, उत्तरदायित्व। उ०—दूद-कुळ-आभरण घुहडहर दाखवै, घीर मड डरै मत करै धोखो। प्रिथी पर माहरो सीस पडिया पछै, जाणजै ताहरै सीस जोखो।

—राठौड जैमल वीरमदेवोत रो गीत

क्रि०प्र०—होणी।

४ क्षत, पीडा। उ०—पऊँ आख्या कची पड गई, ओखध घणी कीधो तिण सू आख्या मे जोखो थयो।—भि द्र

५ कष्ट, दुख, सताप। उ०—हाय रे हाय फूटो हियो, जतन न दीसै

२३ गद, २४ मातग, २५ राक्षस, २६ चर, २७ स्थिर और २८ वर्द्धमान ।

इनके अतिरिक्त निम्न ६ भेद और हैं—१ अमृतसिद्धि, २ सर्वार्थ सिद्धि, ३ दग्ध, ४ यमघट, ५ यमदष्ट्रा और ६ वज्रमूसला ।

(ग) तिथि व नक्षत्र सम्बन्धी—इसके तीन भेद होते है— १ काल-मुखी, २ ज्वालामुखी और ३ तिथि नक्षत्र दोष ।

(घ) तिथि, वार व नक्षत्र सम्बन्धी—इसके चार भेद होते हैं— १ राज योग, २ कुमार योग, ३ स्थिर योग और ४ हलाहल, (विष योग) ।

स०स्त्री० [स० योगिनी] ३१ पँवारवशोत्पन्न एक देवी ।

वि०—१ योग्य, काबिल, लायक । उ०—जीव दान देवहु इन्हें, मरण जोग ये नाहि । सकर भोळानाथ मैं, करू विनय तुम पाहि ।
—जलाल बूबना री वात

२ उचित, योग्य । उ०—सू मोयला वदळे तै म्हा ऊपर तरवार बाधी, सु आ वात तनै जोग नही ।—द दा

रू०भे०—जोगि ।

जोग-अठग—देखो 'अस्टाग जोग' (रू भे) उ०—कोटिक जोग-अठग सधी, अरु कोटि तपी तप नेम बराबर । ये 'किसना' सुपने न कहू, यक स्री रघुनायक नाम बराबर ।—र ज प्र

जोगअधीस–स०पु० [स० योग+अधीश] योगाधीश, ब्रह्मा ।

उ०—उदोत-तपोनिध त्रैगुण-ईस, अजीत-जरा-म्रत जोग-अधीस । विसन्न विमोह-विसव्व विग्यान, रती-पति-तात प्रकत्त-राजान ।—ह र

जोगखेम–स०पु० [स० योगक्षेम] अप्राप्त की प्राप्ति और प्राप्त की रक्षा (जैन)

जोगजोगी–स०पु० [स० योगयोगिन्] योगासन पर बैठा हुआ योगी ।

जोगटी—देखो 'जोगणी' (अल्पा , रू भे)

जोगडो, जोगटो —देखो 'जोगी' (अल्पा , रू भे)

उ०—१ जटाजूट जोगी जवर है, जूनो जिणरो जोगडो । इळा पिंगळा जडापियाळा, भल मरु फरजन फोगडो ।—दसदेव

उ०—२ जटा कनफटा जोगटा, खाखी पर-धन खावणा । मरुधर मे कोडा मिनख, करसा एक कमावणा ।—ऊ का

उ०—३ दुख थारै 'पेमा' उरै, मन री भ्रम मोटोह । जाण्यो तोनूं जोगटा, 'बूडा' री बेटोह ।—पा प्र

(स्त्री० जोगडी, जोगटी)

जोगण—१ देखो 'जोगणी' (रू भे , डिं को) उ०—१ जमला मैं जोगण भई, पैरै अग की खाल । वन वन सारो ढूढियो, करत जमाल जमाल ।—रसराज उ० —२ वीर नाच रहिया छै । जोगण ढाक बजावै छै । खप्पर भरै छै ।—सूरै खीवै काधळोत री वात

उ०—३ घर अवर रज डवर अवारा । जोगण करि चवसठि जैकारा ।—सू प्र उ०—४ यो गहणी यो वेस अब, कीजै धारण कत । हूं जोगण किण काम री, चूडा खरच मिटत ।—वी स.

उ०—५ भूरै रे म्रिगनैणी भूलर, मेह तणी परि मोरा । जोगण पीठ दिया सहजादी, घूमरि ऊपरि घोरा ।—अमरसिंह राठौड री गीत

२ ज्वार की फसल का एक रोग विशेष जिससे ज्वार के भुट्टो पर जटा के समान बाल वाला पदार्थ निकलता है और दानों के स्थान पर राख निकलती है ।

जोगणपुर, जोगणपुरी–स०स्त्री० [स० योगिनीपुर, पुरी] दिल्ली का नाम ।

उ०—१ तातळिया तुरगम खड खग लीना, जुडवा रथ जोगणपुर जाय । असपत राव तणा दळ आया, तिलोकसी न वीसरै ताय ।
—नैणसी

उ०—२ जोगणपुर लाहौर थटो, भक्खर मुळताणह ।—गु रू ब

उ०—३ जोगणपुरी मयण तण जोवण । वर प्रागत गहि पूरत वेस । परणै जिकी चढी तै परणण । नव खड हिंदू तुरक नरेस ।
—राठौड रतनसिंह ऊदावत री वेलि

उ०—४ धुकै आराण असमाण नीसाण घुबै, ढहे मोहताण मुगळाण ढेरी । जोडिया पाण सज डाण जोगणपुरी, फौज दखणाण पछमाण फेरी ।—जोगीदास चापावत री गीत

रू०भे०—जोगणिपुर, जोगणीनगर, जोगणीनग्गर, जोगणीपीठ, जोगणीपुर, जोगिणपुर, जोगिणिपुर, जोगिणीपीठ, जोगिणीपीठि, जोगिणीपुर ।

अल्पा०—जोगणपुरो, जोगिणीपुरी ।

जोगणपुरी–स०पु०—१ बादशाह । उ०—महादुरग अजमेर, सूर जीतो रिण चाचर । जळियो जोगणपुरो, वाइ जाणै वैसन्नर ।—गु रू ब

२ दिल्ली का निवासी ३ मुसलमान, यवन ।

उ०—१ गाजै बाण आरहट गोळा, धोळै दन सावळा धमोड । गोपाळोत ऊपरै गुडिया, जोगणपुरा तणा गळजोड ।
—वीठळ गोपाळदासोत री गीत

उ०—२ पेखण कळह कमध परणावण, लिखिया रुद्र नारद लगन । जोगणपुरा माडही जानी, जोगणपुर मडियौ जगन ।—किसनो आढो

४ चौहान राजपूत ५ देखो 'जोगणपुर' (अल्पा , रू भे)

रू०भे०—जोगिणपुरो, जोगिणीपुरो ।

जोगणि—देखो 'जोगणी' (रू भे.)

जोगणिपुर—देखो 'जोगणपुर' (रू भे.) उ०—केक दीह मझि कमध, 'अभौ' जोगणिपुर आए । दळ बगसी र दिवाण, जाय अरजा गुजराए ।—सू प्र

जोगणिपुरो—देखो 'जोगणपुरो' (रू भे.) उ०—फुरमास सुपारिस मोकळी, दिढ राजा दळ थभ तूं । जागीर दीध जोगणिपुरै, कणियागिर साचोर सू ।—गु रू ब.

जोगणी–स०स्त्री० [स० योगिनी] १ देवी, शक्ति, योगमाया ।

उ०—१ देवी माळणी जोगणी मत्त मेधा, देवी वेधणी सूर असुरा उवेधा । देवी कामही लोचना हाम कामा, देवी वामनी मेर माहेस वामा ।—देवि उ०—२ हरी अभिलाख कव अमर री हमरकै,

जोगतत–स०पु० [स० योगतत्व] योगत्व, योग रहस्य। उ०—क्रिस्ण जी का जुदाजुदा रूप देखण लागा। कामिनो कहइ काम आयो। सत्रु कहण लागा काळ आयो और जिकेई विरोधी न था त्याह स्त्री नारायण को सरूप जाण्यो। वेद का अरथी था, त्याह कह्यो मूरत्तवत वेद आयो। योगीस्वरा जाण्यो जोगतत यो ही।—वेलि टी
रू०भे०—जोगतत, जोगतत्त।

जोगत–स०स्त्री० [स० योगतत्व] योगविद्या। उ०—इतरी विद्या हूं जाणू छूं—अगम निगम, जोगत सुगन, सुरभेद, कायाकळप।
—पचदडी री वारता

जोगतत, जोगतत्त—देखो 'जोगतत' (रू भे)
उ०—कामिणि कहि काम, काळ कहि केवी, नारायण कहि अवर नर। वेदारथ इम कहै वेदवत, जोगतत्त जोगेसर।—वेलि

जोगता–स०स्त्री०—योग्यता। उ०—सीळवती नै हो जोगता, धरमपणं द्रढ थाय।—वि च कुस

जोगती–वि०—योग्य। उ०—स्रीपत री वेटी तू परण, वे कह्यो हू व्रिद्ध हुवो म्हारै जोगती बात नही।—पचदडी री वारता

जोगतीजोत— देखो 'जागतीजोत' (रू भे)

जोगदोस–स०पु० [स० योगदोष] पैर के ऊपर लेप करने से जो सिद्धि होती है उससे आहार आदि लेना (जैन)

जोगधाता–स०पु० [स० योग+धाता] महादेव, शिव। उ०—देवी सावित्री रूप व्रम्मा सोहाणी, देवी व्रम्म रै रूप तू निगम वाणी। देवी गोरजा रूप तू रुद्र राता, देवी रुद्र रै रूप त जोगधाता।—देवि

जोगनद्रा, जोगनिद्रा–स०स्त्री० [स० योगनिद्रा] १ योगनिद्रा २ निर्विकल्प समाधि ३ युगान्त मे विष्णु की नींद ४ निद्रा के कारण आने वाली झपकी ५ देवी, दुर्गा, शक्ति। उ०—१ देवी आद अनाद ओकार वाणी, देवी हेक हुकार ह्लीकार जाणी। देवी आप ही आपा उपाया, देवी जोगनिद्रा भव तीन जाया।—देवि
उ०—२ भवानी नमो दच्छ लोकेस छोनी। भवानी नमो जोगनिद्रा अजोनी।—मे म

जोगनिद्राळु, जोगनिद्राळु–स०पु० [स० योगनिद्रालु] प्रलय के समय योग निद्रा लेने वाले भगवान विष्णु।

जोगनिधान–स०पु०—योगनिधान, योग का खजाना, योगपरिपूर्ण, योगस्थान। उ०—नमो अनत नित्य अन्नत निखात, बडा कवि-इद व्रहम्म बिख्यात। नमो गुरु नारद व्रह्म-गिनान, नारायण जोगिय जोग-निधान।—ह र

जोगपथ–स०पु० [स० योग पथ] योगियो द्वारा अवलम्बन की जाने वाली राह, योग का रास्ता।

जोगपत, जोगपति, जोगपती–स०पु० [स० योगपति] १ महादेव, शिव २ विष्णु।

जोग-परिणाम–स०पु० [स० योगपरिणाम] जीव के परिणाम का एक प्रकार (जैन)

जोग-परिव्वाइया–स०स्त्री० [स० योगपरिव्राजिका] समाधि वाली परिव्राजिका सन्यासिनी (जैन)

जोगपारग, जोगपारगत–स०पु० [स० योगपारग] शिव।
वि०—जो योग मे प्रवीण हो, पूर्ण योगी।

जोगपीठ–स०पु० [स० योगपीठ] देवताओ का योगासन।

जोगबळ–स०पु० [स० योगबल] योग की साधना से प्राप्त होने वाली शक्ति, योगबल, तपोबल।

जोगभ्रस्ट–वि० [स० योगभ्रष्ट] चित्त विक्षेप या अन्य कारणो से जिसकी योग-साधना पूरी नही हुई हो, जो योगमार्ग से गिर गया हो।

जोगमाता–स०स्त्री० [स० योगमातृ] देवी, शक्ति, दुर्गा।

जोगमाय, जोगमाया–स०स्त्री० [स० योगमातृ] १ दुर्गा, महामाया, योगमाया, देवी, शक्ति। उ०—महारुद्र डेरू वजै जोगमाया। इसा थाट ले तीर सामद्र आया।—सू प्र
२ दिल्ली नगर। उ०—दिल्ली सहर जोगमाया जिसके दरम्यान बावन वीर चौसठ जोगणी का वास।—सू.प्र.
३ [स० योगमाया] यसोदा के गर्भ से उत्पन्न कन्या जिसको कस ने मारा था ४ विष्णु की माया, भगवती।
५ पारवती (डि को) ६ श्री करनी देवी।
उ०—धावता जगळधर हू त मोटा धणी, 'जैत' कज पधारचा जोगमाया।—बालावक्स वारहठ

जोगमुद्रा–स०स्त्री० [स० योगमुद्रा] हाथ की उगलियो को परस्पर अन्तरित कर के मपुट बना कर तथा कोहनियो का भाग उदर के समीप स्थित कर के वदना पाठ का उच्चारण करते समय शरीर के पाच अग २ घुठना २ हाथ और मस्तक नमाने की क्रिया या ढग। (जैन)

जोगरभ—देखो 'जोगारभ' (रू भे) उ०—नऊ नाथ ले साथि, मेर चढि आसण धारचा। जोगरभ विण जोग, भोग विण भोग विचारचा।
—ह पु वा

जोगराणी–स०स्त्री० [स० योगराज्ञी] पार्वती, देवी, शक्ति, दुर्गा, रणचडी।
उ०—१ रमै काळी अताळी हालरै जमै जोगराणी, भडा रोस जा लोपै अचाळ रै भारात। वाह रे अणी रा छैल कोयणा लालरै वाळा, हुआ थेट जाता गेढ़ाल रै माथै हात।—जवानजी आढो
उ०—२ रूका वेग झालरा घू हालरा दे जोगराणी, घुरै राग काळ रा वडाणी बब घोर। असा वीर ख्याल रा मडाणी आप ताप उठै, तठै रिमा सालरा 'सदाणी' वाळो तोर।—फतहराम आसियौ

जोगराज–स०पु० [स० योगराज] महादेव, शिव।

जोगराजगुगळ, जोगराजगूगळ—देखो 'योगराजगुगुल' (रू भे, अमरत)

जोगराया–स०स्त्री०—देवी, शक्ति, दुर्गा।

जोगल–स०पु०—राठौड वश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

जोगव–वि० [स० योगवान्] योग वाला, स्वाध्यायी (जैन)

घणा। ऊधा पत्र वुदवुद जळ प्राकृति, तरि चालै जोगिणी तणा।
—वेलि.

जोगिणीपीठ, जोगिणीपीठि, जोगिणीपुर—स०पु० [स० योगिनी-पीठ' योगिनीपुर] देखो 'जोगणपुर' (रू भे)
उ०—जोगिणीपीठि वीकइ जुडेय, काढ़िया नाळि करवइ फरेय। पाधरइ खेति 'दूदइ' पचारि, सूडाळ लिया सिरियउ सघारि।
—रा ज सी

जोगिणीपुरी—देखो 'जोगणपुरी' (रू भे) उ०—हुसियार मीर साथी हजार, वनिगह वहुत कोठी वजार। जोगिणीपुरा जे जग जीत, दिसि वडी तणा वड्डा दईत।—रा.ज सी.

जोगिय—देखो 'जोगी' (रू.भे) उ०—नमो अनत नित्य अग्रत निखात, वडा कवि-इद्र ब्रहम्म विख्यात। नमो गुरु नारद ब्रह्म-गिनान, नारायण जोगिय जोग निधान।—ह र.

जोगिया—स०स्त्री०—सगीत की एक रागिनी विशेष (मीरा)

जोगिया-भाटघा—स०पु०—पक्षी विशेष, इसका मास वडा स्वादिष्ट होता है।

जोगियौ—वि०—१ जोगी सम्वन्धी, जोगी का २ गेरू के रग मे रगा हुआ, गैरिक ३ मटमैलापन लिए हुए लाल रग, गेरू के रंग का. ४ देखो 'जोगी' अल्पा० (रू भे) उ०—जोगिया जी आज्यो जी इण देस। नैणज देखू नाथ नै धाइ करू आदेस।—मीरा

जोगींद्र—देखो 'जोगिंद' (रू भे) उ०—१ निराकार निरजन निरुपम, ज्योतिरूप निरखत जी। तेरा सरूप तु ही प्रभु जाणइ, के जोगींद्र लहत जी।—स कु
उ०—२ उणि वेळा कोई जोगींद्र, आयउ तिहा करतउ आणद। यत्र जत्र जांणइ अति घणा, ओखध नागा पीणा-तणा।
—दो मा.

जोगी—स०पु० [स० योगिन्] (स्त्री० जोगण, जोगणी) १ वह जो सासारिक भोग-विलासो से सम्वन्ध नही रखे। वह जिनका न तो किसी के प्रति अनुराग हो और न विराग हो, सुख व दुखो को समान समझने वाला, आत्मज्ञानी, जितेन्द्रिय। उ०—ज्योतिखी वैद पौराणिख जोगी, सगीती तारकिक सहि। चारण भाट सुकवि भाखा चित्र, करि एकठा तौ अरथ कहि।—वेलि
२ योगाभ्यास द्वारा सिद्धि प्राप्त करने वाला, वह जो योग करता हो, योगी। उ०—देवी जक्खणी भक्खणी देव जोगी, देवी नूमळा भोज भोगी निरोगी। देवी मात जानेसुरी व्रन्न मेहा, देवी देव चामुड सख्याति देहा।—देवि
३ महादेव, शिव। उ०—जळावोळ प्रळै कोह वागी.वीरा हाक जेती, कचा आकवाका चिता सचा कटा धार। छाजै करै उधरै फिलक्का भैरू छाक लेती, जोगी फिरै डेरू डाक देतौ जठाधार—नदौ सादू
४ ईश्वर। उ०—जोगी आद जुगाद ही दीहुदा डडा।
—केसोदास गाडण
५ मदारी।
६ नाथ सम्प्रदाय का एक भेद जो अपना सम्बन्ध कनीपाव (कृष्ण पाद) से जोडते हैं। इस सम्प्रदाय के कई लोग मेहनत मजदूरी कर के पेट भरते हैं जैसे इंधन के लिये लकडिया फाडना, पत्थर की चकिया वना कर वेचना आदि तथा कई भिक्षा मागते हैं। कई सपेरे होते हैं जो पूगी वजा कर और साप का तमाशा दिखा कर जीवन निर्वाह करते हैं।
वि०—योग्य।
रू०भे०—जोगिय।
अल्पा०—जोगटौ, जोगियौ, जोगीडौ, जोगोटौ।
मह०—जोगींद्र, जोगीस, जोगीस्वर, जोगेंद्र, जोगेस, जोगेसर।

जोगीकुड—देखो 'योगीकुड' (रू.भे)

जोगीडौ—देखो 'जोगी' (अल्पा, रू भे.) उ०—जोगीडै नू मार कर, थानूं करू दिवाण। जे अहडी नाही करू, तौ परमेस्वर री आण।
—नापा साखला री वारता

जोगीनाथ—देखो 'योगीनाथ' (रू भे)

जोगीराज—देखो 'योगीराज' (रू भे)

जोगीस, जोगीसर, जोगीस्वर, जोगेंद्र, जोगेस, जोगेसर—स०पु० [स० योगीश, योगीश्वर, योगेन्द्र, योगेश, योगेश्वर] महादेव, शिव।
उ०—१ समरेस होम जोगेस सुत, सेव पेस कवि साधिये। गावण नरेस 'अभमाल' गुण, श्री गणेस आराधिये।—सू प्र
उ०—२ यू कमधज घरै घू अवर। ज्यूं गगा मेलै जोगेसर।—रा रू
उ०—३ जोगीपर नेमीसर सिव सुख विलसै सार। स्री धरमसिंह कहै ध्यान धरचा सुख हे स्रीकार।—ध व ग.
उ०—४ दत उकती मत मती, जती जोगेसर। गणपती छत्ती गुणा, प्रभती जग ऊपर।—जूझारसिंह मेडतियो
२ योगेश्वर, श्रीकृष्ण ३ याज्ञवल्क्य मुनि का नाम ४ योगियो के स्वामी. ५ वहुत वडा योगी, महायोगी, योगीश्वर।
उ०—१ अहोनिस कागा भुसुड आराध, पढै तौ नाम सदा प्रहळाद। जपै सुकदेव जिसा जोगेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।—ह र.
उ०—२ इम सूरौ पति धरम इरादा जोगेसरा सिधा हूं जादा। लडै नचित लोह नह लागै, जिकौ सूर तपसी सम जागै।—सू प्र.
उ०—३ रूप रेख वहु रग, ध्यान जोगेसर ध्यावै। अमर कोड तेतीस, प्रभु तौ पार न पावै।—ह.र.
६ योग के द्वारा सिद्धि प्राप्त किया हुआ योगी, वडा सिद्ध
७ सन्यासी. ८ देखो 'जोगी' (मह रू.भे)
रू०भे०—जोगेसवर, जोगेसुर, जोगेस्वर।

जोगेसरी—देखो 'योगेस्वरी' (रू भे)

जोगेसवर, जोगसुर, जोगेस्वर—देखो 'जोगेसर' (रू.भे)
उ०—१ वडा जोगेसवर सकज मदर वसु, वदन सुकाळीण ससहर

रू०भे०—जोडगर।

जोडगर–देखो 'जोडग' (रू भे.) उ०—कहै प्रमदास आदेस निस दिन करू, जोडगर सेस माहेस जेहा। बाप हो बाप बळवद तै बदावण, आप विन करै कुण काम ग्रेहा।—ब्रह्मदास दादूपथी

वि०—बराबरी का। उ०—कटै 'ग्रभमाल' छळ 'किसन' 'माहव' 'करण', लोप थट कुसळ 'सगतेस' लडिया। सदामद वगा खग अनै दन साकुरा, जोडगर ठाकरा नगा जडिया।—चापावता री गीत

जोडण–स०स्त्री०—१ जोडने या सचित करने की क्रिया २ योग, जोड।

जोडणौ, जोडवौ–क्रि०स० [स० जुड बधने] १ दो वस्तुओ को किसी प्रकार से एक करना, मिलाना २ किसी टूटी हुई वस्तु के टुकडो को जोड कर एक करना, मिलाना। उ०—रण करि फतै ग्रवक डड रोडै। जोए कुवर सीस धड जोडै।—सू प्र.

३ समूह रूप मे इकट्ठा करना। उ०—थभ जगा वोम वाट जोडतौ रातगा थाट। तोडतौ मातगा घाट रोडतौ ग्रावाट।

—हुकमीचद खिडियौ

४ सग्रह करना, एकत्रित करना, जमा करना।

उ०—जिका भला धन जोडियौ, ऊघमियौ निज ग्राच। कीरत पोहरै करन रै, वीदग ऊठै वाच।—बा दा

५ रचना करना, रचना, कविता करना। उ०—१ ग्रासै डाभी री ग्रगै, वारठ ग्रासै वात। जगजाणी जोडी जका, पढै ग्रजै लग पात।

—दरजी मयाराम री वात

उ०—२ सो दूहा तेईस सुज, नाम सहत निरधार। जोड देखाऊं जूजुवा, सुणै राम जससार।—र ज प्र उ०—३ दादू पद जोडै साखी कहै, विसय न छाडै जीव। पाणी घाल विलोइये, क्यो कर निकसै घीव।—दादू वाणी

६ किसी वस्तु, सामग्री या द्रव्य को क्रम से रखना। यथा-स्थान स्थापित करना ७ कई सख्याओ का योगफल निकालना ८ प्रार्थना, विनय, स्तुति और अभिवादन के समय हाथो के पजो को परस्पर सटाना, हाथ जोडना। उ०—कर वे पवित्र करिस साझणकर, जोडै तो ग्रागळी जगत गुर। पवित्र सभा वे करिस एण पर, ग्रक दिवाड सख चक्र ऊपर।—ह र

९ सयुक्त करना, सश्लिष्ट करना, सम्बद्ध करना।

उ०—कुवरसी हथळेवौ जोडियौ तरै भरमल नू ग्राखै सूझण लागौ।

—कुवरसी साखला री वारता

१० बनाना, रचना। उ०—हिवै बीजी कन्या तणौ, जोडैवा वीवाह है। तेडावी सिव भूति नै, इम भाखै नरनाह।—स्रीपाळ रास

११ जोतना। उ०—बाई का दादोजी चाल्या रथ जोड, बाई रथ थाम लियौ। बाई ए, मागण होय सो माग, ए रथ म्हारौ हाकण द्यौ—लो.गी.

१२ सभा के रूप मे एकत्रित करना। उ०—एथ वीजाणद जाइ पहुतौ। ग्रागै परधान दरवार जोडियै वैठौ छौ। इयै जाइ ग्रासीस दीधी।—सयणी री वात

१३ दीपक जलाना. १४ सम्बन्ध स्थापित करना। उ०—ग्रव तुम प्रीत ग्रौर से जोडी, हमसे करी क्यू पहेली। बहु दिन वीते ग्रजहु नही आये, लग रही ताळा वेली।—मीरा

१५ अनुरक्त करना, लीन करना। उ०—मद मच्छर छोडी जी, जिन सूं मन जोडी।—ध.व.ग्र

जोडणहार, हारौ (हारी), जोडणियौ—वि०।

जोडाडणौ, जोड़ाडवौ, जोडाणौ, जोड़ावौ, जोडावणौ, जोडावबौ प्रे०रू०।

जोडिग्रोडो, जोडियोडो, जोडयोडो—भू०का०कृ०।

जोडीजणौ, जोडीजवौ—कर्म वा०।

जुडणौ, जुडवौ—ग्रक० रू०।

जोडली—देखो 'जोडी' (अल्पा रू भे) उ०—गुरु आचारज जोडली, 'ईडरगढ़' चउमासि। राय 'कल्याणइ' राखीया, पहुँचाडी मन आसि।

—ऐ.जै का स

वि०—१ पास की, समीप की २ वरावर की।

जोडलौ–वि० (स्त्री० जोडली) १ एक ही समय मे एक ही गर्भ से उत्पन्न दो वच्चे, यमज. २ पास का, साथ का ३ वरावरी का, साथ का. ४ देखो 'जोडो' (अल्पा रू भे)

जोडवा–स०स्त्री०—रवी की फसल की अतिम जुतवाई, जिसके पश्चात् गेहूँ बोते हैं।

जोडवाई—देखो 'जोडाई' (रू भे)

जोडवाणौ, जोडवावौ—देखो 'जोडाणौ, जोडावौ (रू भे)

जोडवाळ, जोडवाळौ–वि०—वरावर का, जोड का, समान।

उ०—हाका लिया केहरी गुमान वाळा वगा हाका, रारिया भभका क्रोध डका ववी रोड। गजा काळा मोड वाळा रखै तू दूसरा, 'गजा' जोडवाळा पौहा रिमा रोड जाडी जोड।

—गोपाळदास दधवाडियौ

जोडा–स०स्त्री०—१ मिरासियो की एक शाखा (मा.म)

२ सारगी मे सबसे पहले के मुख्य दो तार।

जोडाग्रत, जोडाइत—देखो 'जोडायत' (रू भे) उ०—पढ पढ ठीक सीख पडवा मा, कडवा वचनां दगध करै। जीमै घी गेहूँ जोडाइत, मा तोडायत भूख मरै।—हिंगळाजदान कवियौ

जोडाई–स०स्त्री०—१ दीवार मे पत्थर या ईंटो के टुकडे रख कर उन्हें चूने आदि से जोडने की क्रिया २ दो या दो से अधिक वस्तुओ को जोडने की क्रिया या भाव ३ जोडने की मजदूरी।

रू०भे०—जुडवाई, जुडाई, जोडवाई।

जोडाऊ–वि०—सग्रहकर्त्ता, जोडने वाला, जमा करने वाला।

उ०—ग्राप तौ सकर उणियार, पारवती जोवै वाट। पधारौ हीरा पना रा जोडाऊ, ऊभी सज सणगार।—लो गी.

यौ०—जोडीवाळ, जोडीवाळौ ।
६ समान धर्म या गुण आदि वाला । वह जो बराबरी का हो ।
अल्पा०—जोडली ।
जोडीक-वि०—१ बराबर का, समान, तुल्य ।
उ०—ग्रोयण चपा ग्राम ज्यू, जळ गगा जोडीक । देसाणै मढ देखिया, काबा नग कोडीक ।—चौथौ बीठू
२ सग्रह करने वाला ३ रचने वाला ।
जोड़ीगर-स०पु०— मोचियो का एक भेद जो केवल जूते ही बनाते है ।
जोडीदार-स०पु०—१ समान कार्य करने वालो मे से एक २ साथ कार्य करने वालो मे से एक ३ पति-पत्नी मे से एक. ४ वह व्यक्ति जो केवल झाझ और मजीरा बजाने का ही कार्य करे. ५ समान ग्रायु वाला, समवयस्क, जोड का ।
रू०भे०—जोडीवाळ, जोडीवाळौ ।
जोडी री बैंठक-स०स्त्री०—मुगदरो की जोडी पर हाथ टेक कर की जाने वाली बैठक (व्यायाम)
जोडी रौ-वि०—समान ग्रायु का, बराबर का, समवयस्क ।
उ०—जानी तौ श्रपणी जोडी रा ल्याज्योजी, पातर थे भल ल्याज्योजी वना ।—लो गी
जोडी रौ जालम-स०पु०—पति (?) । उ०—हे ग्रायौ परदेसी सूवटौ हे, वागा मायलो सूवटौ, म्हैं तौ रमती सहेल्या रै साथ, जोडी रौ जालम ले चाल्यौ ।—लो गी
जोडीवाळ, जोडीवाळौ—देखो 'जोडीदार' (रू भे)
उ०—जोडीवाळ जकै जळ जीवै, पसरै चहु पासा सुख पाय । कीरत वना न चाखू कोई, कारण श्रण रहियौ कुमळाय ।
—रुघनाथ भाऊसिघोत रौ गीत
जोडै-वि०—बराबर, समान, तुल्य । उ०—१ जोधाणौ वगडी विहूं जोडै, 'जोध' 'श्रखा' वेहूं भड जोड । दीना पटा भोगवै दूजा, रावा रा सारा राठोड ।—श्रज्ञात उ०—२ फबै ललाई बिब फळ, परतख श्रधर प्रवाळ । जपा कुसम जोडै जिया, भाखै सहिया भाळ ।—बा दा
उ०—३ श्रति ऊचा तिय रै उरज, बणिया विसवा बीस । जोडै लागै जगत मे, गिर गज कुभ गिरीस ।—बा दा
क्रि०वि०—समीप, निकट, पास । उ०—१ श्रपच्छर सूर जोड़ै हिज श्राय । जई रथ बैठि वसै सुगि जाय ।—सू प्र
उ०—२ पछै सिंघजी रा समाचार सुण्या ऊ तौ राली श्रोढ़ नै धरटी रै जोडै सूती ।—भि द्र
जोडौ-स०पु० [स० जुड = बधने] १ दो समान वस्तुएँ । एक ही प्रकार की दो वस्तुएं । ज्यू-धोती जोडौ, जूतिया रौ जोडौ ।
उ०—तद राणी बीजी मोजडी पग सू चलाय पहाड की गुफा माहै राखी । श्राप पाणी ले घरै श्राई श्रर मोजडियौ बीजौ जोडौ करायौ ।
—चौबोली
२ वे दो वस्तुएँ जो एक दूसरे की पूरक हो । उ०—जोखमी स्त्री-नाथ हाथा श्रनोखौ वणायौ जोडौ, जुगा कोडा श्रासवार घोडौ चिरजीव ।—रामकरण महडू
३ समानता, बराबरी, तुल्य । उ०—तिहूँ लोका मही जोड 'सागा' तणौ, हेक रिव दुवौ जटधर श्ररोडौ । निलज नवरोज मेल्है तिकै नारिया, जिकै छत्रधारिया किसौ जोडौ ।—कविराजा करणीदान
४ पाव मे पहनने की जूते की जोडी । उ०—प्रथीराज श्राय ढोलियै सूतौ, परभात हुवौ, सु गूदळराव रै पगा रौ जोडौ उठै रह्यौ सु प्रथीराज दीठौ ।—नैणसी
५ स्त्री-पुरुष, पति-पत्नी, वर-वधू, दम्पती ।
उ०—१ ढोलणौ नै चौवारै चढाय, ढोलौ मारूणी दोन्यू पोढसी । खातीडा रे श्रसल गवार, जोडौ जोरावर ढोल्यौ साकडौ ।—लो गी.
उ०—२ सो भी श्राततादनू उवारि बापरौ बचावणहार वादियौ तौ भी श्रद्वितीय वार हुवा सुणि किताक कवि लोका तिकण रा ही प्रहार रौ प्रकरखण भणियौ । जूडा, जोडा, परयक, पेखणी, पात्र, पुज, कटि, करवाल पुहवी मे पैठौ तौ भी मतु विहूणा जनक रौ मित्र मारण मे म्हारौ तौ मन श्राघात रौ उत्करस न मानै ।—व भा
६ नर श्रौर मादा (या इन दोनो मे से एक) ७ पुनर्वसु नक्षत्र का एक नाम (पुरुष, प्रकृति)
मुहा०—महा जोडा कटै न घोडा—माघ महिने की रात्रि का ज्ञान पुनर्वसु नक्षत्र से होता है जो बहुत लम्बी होती है ।
वि०वि०—देखो 'नक्षत्र' ।
८ वे दो घटिया जो हाथी की झूल के दोनो श्रोर बाधी जाती है.
९ देखो 'जोडो' (रू भे) उ०—मोटी-मोटी छाटा श्रोसरियौ श्रे बदळी श्रोसरियौ । कोई जोडा ठेलम-ठेल सुरगी रुत श्राई म्हारै देस ।
रू०भे०—जूडौ । —लो गी
श्रल्पा०—जोडलौ ।
जोज-स०पु०—चाकर, सेवक (श्र मा)
जोजण—देखो 'जोजन' (रू भे) उ०—साकुर खडै पक्खर सेरि । फौजा वहै जोजण फेरि ।—गु रू व.
जोजदान-स०पु०—एक प्रकार की पेटी या बक्स (?)
उ०—इतरै एक चितेरा 'रूपा' री बेटी हीरा श्राई, तिण जोजदान खोल तसवीरा दिखाई । तिण मे एक तसवीर इण रै मन मानी, श्रा बार बार देखै उण कानी ।—र हमीर
जोजन-स०पु० [स० योजन] १ दूरी की एक माप जो चार कोस की होती है, योजन । मतान्तर से यह दो कोस श्रथवा श्राठ कोस की भी होती है । जैनियो के श्रनुसार एक योजन मे १०,००० कोस होते है । उ०—१ श्ररसी सुत कीरत दन ऊगै, परसण घण जोजन पारभ । श्रेक खड की हुश्रै श्रमावड, श्रन खडा मावणौ श्रसंभ ।
—जोधपुर नरेस महाराजा मानसिंह
उ०—२ दसा जोजना डागा गै नाम दाखे । यता हूंत दूणा गवाखेस श्राखै ।—सू प्र.

जोणग-स०पु०—एक प्राचीन देश का नाम (?)।

उ०—सगवरण गज्जरण सवर बरबरकाय चिलाय तुरड गुड उडगुड पक्कण चुक्कण कुडक्क तोसल सिंहल दमिल अज्जल विल्लल पारस खस लउस हारोसमोसहिम (?) रोम मरुग पल्लव मालव महुलिय सउलिय जोणग चीरा हूरा मरहट्टय कोकय डुंविलय कुलखय खरमुख तुरगमुख मिंढमुख हयकरण गजकरण प्रभिति अनार्यदेस मनुस्य।
—व स.

जोणि, जोणि—१ देखो 'योनि' (रू भे)

२ पन्नवण सूत्र के नवा पद का नाम (जैन)

३ पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र (जैन)

जोणिपव-स०पु० [स० योनिपद] पन्नवण सूत्र का एक पद (जैन)

जोणिय-वि०—जन्म लेने वाले प्राणी।

जोणिविहाण-स०पु० [स० योनिविधान] उत्पत्ति शास्त्र (जैन)

जोणिसूल-स०पु०यौ० [स० योनिशूल] योनि का एक रोग (जैन)

जोणींद-स०पु० [स० योगेन्द्र] १ श्रीकृष्ण २ महादेव।

जोणौ, जोवौ, जो'णौ जो'वौ—१ देखो 'जोवणौ, जोवबौ' (रू भे)

उ०—१ सौ आदमी इहा रा काम आया छै। पण पडियोडा साम्हा जोयो नही।—सूरे खीवे कांधळोत री वात

उ० —२ जिकै वार स्रीराम री जान जोई। कहै ओपमा पार पावै न कोई।—सू.प्र

उ०—३ ईसानू दे अकडे कत्थे न करदा। जित्थे जित्थे जोइये तिथि दरसदा।—सू प्र

उ० —४ रूनी रडी चडेहि, जोई दिसि जाता-तणी। ऊभी हाथ मलेहि, विलखी हुई वल्लहा।—ढो मा

उ०—५ घोय घोय तन चख जळ धारा, रोय रोय नर नारी। जोय जोय थाका जगजामी, कोय न लागी कारी।—ऊ का

उ०—६ सपना मे ओ मारूजी दीपक जो देख्यो। कुवळा री केळ रळावणी जी।—लो गी

उ०—७ आख्यां उणियारोह, निपट नही न्यारो हुवै। प्रीतम मो प्यारोह, जोती फिरू रे जेठवा।—जेठवा

उ०—८ तेल सिंदूर से चरचि धमळू के जूट जोय। टल्लू सू दोजडे गजपीठ होय।—सू प्र.

जोत-स०स्त्री० [स० ज्योतिस] १ प्रकाश, उजाला, ज्योति।

उ०—१ अनग अस वरतै चक्र आए, जिण ची जोत तिमर उडि जाए। वज्र देवळ अण हाथ वणावै, जिण मझि धरि वज्र सिला जडावै।
—सू प्र

उ०—२ जगाजोत आदीत री जोत ओपै, उभै हीर चामीर मे स्रग ओपै। सिया देख दाखै प्रभू काज सारो त्रिगो नोख रूपी अहो काय मारो।—सू प्र

उ०—३ नही तौ जोत नही तौ जाण। नही तौ पिंड नही तौ प्राण। नही तौ सार नही तौ सुद्धि। नही तौ खोट नही तौ वुद्धि।—ह र.

उ०—४ घर मझळ घर दीप मे, घट घर घर मय होत। कारतवर जेहो कुवर, जाजेचा घर जोत।—बां.दा.

उ०—५ मन, प्रवीण, कुदन मुद्दर, प्रेम प्रगासे जोत। विरह-अगिन ज्यू-ज्यू तपै, त्यू-त्यू कीमत होत।—अज्ञात

उ०—६ तुम्हो जोगत काकळै ओत-प्रोत जोत हू तो, जोत हू ता रही नहो भराका जुहार। सरै यहां मही पुरी सातमी तवरा सार, अन समै रहो पुरी अतका उदार।—बख्तीराम सिढ़ियो

२ दीपशिखा, लौ। उ०—प्रति पोळि गूढ प्रप्रीत, गावति सुदर गीत। जगमगत दीपक जोत, प्रति जोति पति उद्योत।—रा रू.

३ अग्निशिखा, लपट ४ अग्नि, आग. ५ दीपक (अ.मा)

६ दीपक मे प्रयुक्त होने वाली बत्ती ७ देवी या देवता के आगे या उनके निमित्त जलाया जाने वाला घी का दीपक ८ आंख। (ह ना.) ९ दृष्टि, नजर. १० किरण (अ मा.) ११ तारा (अ मा.) १२ कान्ति, दीप्ति, द्युति।

उ०—जवाहर परखत जोत, के जवाहरी करै। अनोप रग तोल भाव, सग ढग नभरै। घर घर मघम, फल फूल पे भळ। तर तर करत ताम-कील वाणि कोकिल।—सू प्र

१३ सगीत मे अष्ट ताल का एक भेद १४ घी नारियल आदि के सयोग से किसी देवी या देवता के सम्मुख या उनके नाम पर प्रज्व-लित की जाने वाली अग्निशिखा जो यज्ञ का ही एक रूप होती है।

स०पु०—१५ सूर्य (ह ना.)

१६ नक्षत्र। उ०—रव मायमता पदम घटै रुच, मिळै उड निस जोत मुख। कमध 'प्रताप' सुपो निस दिन किय, दोयण दाझै उघट दुख।—महाराजा मानसिंह जोधपुर रो गीत

१७ विष्णु १८ ईश्वर, परमेश्वर, परब्रह्म। उ०—स्याम धरम पतिव्रत अति साधइ, अग आरांण आसगइ आग। सुजि मिळि जाय जोत हू ता सुग, लोहा भडा लाकडा लाग।—अज्ञात

१९ परब्रह्म (मोक्ष मुक्ति)

उ०—'सूज्या' जही प्रभनमो 'मूजो', पळहण गजा रुळैगो। घड घज-वडा मिळैगो धारा, मनसा जोत मिळैगो।
—राजा उम्मेदसिंह सीसोदिया रो गीत

रू०भे०—जोति, जोती, ज्योत।

स०पु० [स० योत्र या योक्त, प्रा० जोत्तर] २० वह चमडे की पट्टी या तसमा या रस्सी जो घोडे बैल आदि जोते जाने वाले जानवरों के गले के नीचे से होती हुई उस वस्तु मे बाध दी जाती है जिसमे जानवर जोते जाते हैं।

उ०—कठै तो पडियो मायड गाडूलो, कठै म्हारा धोळा रा जोत।
—लो.गी.

रू०भे०—जोतर, जोतरु, जोतरू, जोत्र।

अल्पा० —जोतरियौ, जोतरौ।

वि०—सुन्दर (अ.मा)

रू०भे०—जोतसरूप, जोतसरूपी, जोतिसरूप, जोतिसरूपी, जोतीसरूप, जोतीसरूपी, ज्योतिस्वरूप।

जोताई-स०स्त्री—जोतने का कार्य या इस कार्य की मजदूरी।

रू०भे०—जुताई।

जोताडणौ, जोताडवौ—देखो 'जोताणौ, जोतावौ' (रू भे)

जोताडणहार, हारौ (हारी), जोताडणियौ—वि०।

जोताडिग्रोडौ, जोताडियोडौ, जोताड्योडौ—भू०का०कृ०।

जोताडीजणौ, जोताडीजवौ—कर्म वा०।

जोताडियोडौ—देखो 'जोतायोडौ' (रू भे)

स्त्री०—जोताडियोडी।

जोताणौ, जोतावौ-क्रि०स० ('जोतणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ घोडे, बैल आदि को रथ, गाडी, कोल्हू आदि मे बधाना २ घोडे, बैल आदि से चलने वाली गाडी, हल आदि मे जानवर जोत कर चलने के लिये तैयार कराना। ज्यू—रथ जोताणौ ३ भूमि को कृषि योग्य बनाने के लिये हल द्वारा खुदवाना ४ किसी को बलपूर्वक किसी कार्य मे लगवाना।

जोताणहार, हारौ (हारी), जोताणियौ—वि०।

जोतायोडौ—भू०का०कृ०।

जोताईजणौ, जोताईजवौ।—कर्म वा०।

जोताडणौ, जोताडवौ, जोतावणौ, जोतावबौ, जोग्राडणौ, जोग्राडवौ, जोत्राणौ, जोत्रावौ, जोत्रावणौ, जोत्राववौ—रू०भे०।

जोतात—स०स्त्री०—खेत की मिट्टी की ऊपरी तह (कुम्हार)

जोतायोडौ—भू०का०कृ०—(घोडे, बैल आदि को रथ, गाडी, हल आदि मे) बधाया हुआ २ (रथ, हल, कोल्हू आदि मे जानवर जोत कर) चलने के लिये तैयार किया हुआ. ३ (भूमि को कृषि योग्य बनाने के लिये) हल द्वारा खुदवाया हुआ ४ (किसी को बलपूर्वक) किसी कार्य मे लगवाया हुआ। (स्त्री० जोतायोडी)

जोतावणौ, जोतावबौ—देखो 'जोताणौ, जोतावौ' (रू भे.)

जोतावणहार, हारौ (हारी), जोतावणियौ—वि०।

जोताविग्रोडौ, जोतावियोडौ, जोताव्योडौ—भू०का०कृ०।

जोतावीजणौ, जोतावीजवौ—कर्म वा०।

जोतावियोडौ—देखो जोतायोडौ' (रू भे) (स्त्री० जोतावियोडी)

जोति—देखो 'जोत' (रू.भे) (ह ना, ना मा.)

उ०—१ विप्र ग्रहण मोखयण रमण आराण विचि, मारको माझिया वचै मिळियौ। खळा करि खेगरण ग्रत साखी ग्ररण, भाजि जामण-मरण जोति भिळियौ।

—राठौड रामदास मेडतिया (चादावत) रौ गीत

उ०—२ पिड पिड दस दस सिर परठि सिर सिर छत्र धारै, जगमग हीर जडाव जोति आदित आभारै।—सू प्र

जोतिक—देखो 'ज्योतिस' (रू भे.) उ०—घडी मडि घडियाळ। जोइ जोतिक जोइसी।—गु रू.व

जोतिकसास्त्र—स०पु०यौ० [स० ज्योतिष शास्त्र] ज्योतिष शास्त्र।

उ०—आयुरवेद धनुरवेद सामवेद अथरवणवेद विद्या अलकार छद जोतिकसास्त्र नाद वीणा पुस्तक।—व.व

जोतिकी—देखो 'ज्योतिसी' (रू भे) उ०—वियास भट्ट के महत जोतिकी ब्रहामण।—गु रू व

जोतिख—देखो 'ज्योतिस' (रू भे.) उ०—जु लगन नीकौ देखि देउ जोतिख ग्रथ देखि विचार कह्यौ।—वेलि टी

जोतिखी—देखो 'ज्योतिसी' (रू भे) उ०—विध राहू करकरी फळ वखाणि। जोतिखी ग्रथ रौ पथ जाणि।—सू.प्र

जोतिग—देखो 'ज्योतिस' (रू भे)

जोतिगी—देखो 'ज्योतिसी' (रू भे) उ०—समस्त जोतिगी बुलाया वसुदेव देवकी मुहडा आए बुलाय बूझ्या।—वेलि.टी

जोतिप्रकास, जोतिप्रकासी—स०पु० [स० ज्योतिप्रकाश] ईश्वर (ना मा.)

रू०भे०—ज्योतिप्रकासी।

जोतियोडौ—भू०का०कृ०—१ (घोडे, बैल आदि का रथ आदि मे) बधा हुआ, जुता हुआ २ (गाडी, हल, कोल्हू आदि मे जोते जाने वाले जानवरो को बाध कर) चलने के लिये तैयार किया हुआ ३ (भूमि को कृषि योग्य बनाने के लिये) हल द्वारा खोदा हुआ ४ (किसी को बलपूर्वक) किसी कार्य मे लगाया हुआ।

(स्त्री० जोतियोडी)

जोतिलिंग—देखो 'जोतलिंग' (रू भे.)

जोतिवत—देखो 'जोतवत' (रू.भे.) उ०—दिअण दान मान दातार, अमर नाम-दार ऊदार। सगह सूर धीर सामत, विमळ जोतिवत जैवत।—ल पि.

जोतिव्रक्ष, जोतिव्रिक्ष—स०पु०यौ० [स० ज्योतिवृक्ष] एक प्रकार का वृक्ष जो रात्रि मे सूर्य के समान प्रकाश करता है (जैन)

जोतिस—देखो 'ज्योतिस' (रू भे.) उ०—१ जोतिस सगुन विहू विध जाणै। पोह ज्या वरजै लेख प्रमाणै।—सू.प्र.

उ०—२ मुख जोतिस काज, कवि ग्रहराज जान सुभाज खगराज।

—र ज प्र

उ०—३ त्रिकाळग्य तत जाण वाणि जोतिस ततवेता। आचारिज रिख उग्र जिके इक्खज गुण जेता।—रा रू.

जोतिसप्रकासी—देखो 'जोतिप्रकासी' (रू भे.)

जोतिसरूप, जोतिसरूपी—देखो 'जोतस्वरूप' (रू भे, ह.ना)

उ०—परखि हो परखि प्रीतम पाथ, निरखि हो निरखि घट माहि नाथ। रामचद नमो हो नमो रूप, पिड पिड माहि जोतिसरूप।

—पी ग्र.

उ०—२ दहूँ गुणा सू न्यारा रहै। सो जोतिसरूपी दरसण लहै।

—ह.पु.वा

जोतिसिखा—स०पु० [स० ज्योतिशिखा] दीपक (ह ना)

रू०भे०—जोतसिखा।

उ०—२ जोधाण नग्र राजत 'विजेस', सुज विभौ देख लाजत सुरेस। मद छकै द्वार घूमै मतग, रित छहूँ पटाभर साम रग।—शि.सु रू.

रू०भे०—जुधाण, जोधाणौ।

जोवाणा—स०स्त्री०—एक प्रकार की तलवार।

जोधाणौ, जोधानेर—स०पु०—जोधपुर नगर। उ०—१ चग बीकाणै वाजै, चग जोधाणै वाजै, कोई, वाजै-वाजै चग अजमेर, ए रगीलो चग वाजणू।—लो गी उ०—२ जला रे, सहरा मायलो सहर भलो जोधांणो रे, म्हारी जोडी रा जला, पिया थारी रा जला। —लो गी.

जोधा—स०स्त्री०—राव जोधा के वशज, राठौडो की एक उपशाखा।

रू०भे०—जोदा, जोध।

जोधापुरी—देखो 'जोधपुरी' (रू भे) उ०—दुरवेस विकट करिवा दुरस, पुरस रूप जोधापुरी। मम हुकम लाज राखण मुदै, महाराज मडोवरी। —रा रू

जोधारभ—स०पु०—युद्ध, सग्राम।

जोधार, जोधाळो—स०पु० [स० योद्धा+आलुच्] योद्धा, शूरवीर (डि ना.मा)

उ०—१ प्रळै साघवा फूटियो सिंघ वारध के लोप पाजा, करी धू पर्टत हकै छूटियो भोधार। काळै पाख महा वेग तूटियो नखत्र किना, 'जालमो' उताळै रोस जूटियो जोधार।—हुकमीचद खिड़ियो

उ०—२ कीजै रग रोळा, भाभा मेहल्या सोना रूपा ना कचोळा। किसी नही कुरम, तिहा वइठा वत्तीसलक्षणा पुरुस। फादाळा, फुदाळा, दुदाळा, भाकभमाळा, सुहाळा, आखि अणीआळा, केसपास काळा, केई जमाई, केई साळा, केई जोधाळा, चालती हाल्ती भाळा, इस्या पाति वइठा वाळगोपाळा।—व स.

जोधो—स०पु०—१ योद्धा, सुभट, वीर (डि ना मा.)

उ०—उवरै सकर सकति अरोधा। जाजुळमान महा भड जोधा। —सू प्र

२ जोधा उपशाखा का राठौड। उ०—मह जोधा सलखा रिडमाला, कमधा कुळ ऊजळो कियो।—हटीसीग रौ गीत

रू०भे०—जोदो, जोध।

जोन—देखो 'जूण' १, २, ३ (रू भे)

जोनकपीट—स०स्त्री० [स० कूपीट योनि] अग्नि (डि को)

जोनळ—स०स्त्री०—ज्वार।

जोनि, जोनी—देखो 'जूण' १, २, ३ (रू भे.) उ०—१ रोम तणी रुघनाथ पार सिव सकति न प्रामै। नरहर रै नाभ मै जोनि ब्रहमा विप्र जामै।—पी ग्र. उ०—२ आदेस करू उण पुरुस नै, जो जोनी सकट हरै। आदेस अहो निस अलख नै, कर जोडै 'ईसर' करै।—ह र

जोनिकद—स०पु०—योनि का एक रोग। (अमरत)

जोनै—जिमको ? उ०—अव्वनी तणो भार ले कथ आयो।जोनै नागणी ते हुतो घन जायो।—ना द

जोन्ह—देखो 'जूण' (रू भे)

जोपणी— ?

उ०—माळीए माळीए हीर हाटक मणी। जाळीए जाळीए नगर री जोपणी।—रुखमणी हरण

जोपणौ, जोपवौ—क्रि०अ०—१ जोश मे आना। २ उत्साहित होना. ३ शोभित होना। उ०—१ आभूसण नर नारि इसी विध वोपिया। जाण क सुरपुर लोक इधक छवि जोपिया।—वगसीराम प्रोहित री वात

उ०—२ जरद जोसण कडी टोप हाथळ जडी। जोपती राग मे लोहमी मोजडी।—रुखमणी हरण

उ०—३ जोपती भावती जीण-साला जडे। भालडे वाधीये नेत भूल भडे।—रुखमणी हरण

४ देखो 'जोतणौ, जोतवौ' (रू भे)

उ०—१ असि धुर जोपि तेज ऊडाणै। आगळि सहस रहकळा आणै। —सू प्र.

उ०—२ तो नापो कही—यै ही गाडा जोप उरा आवो घोडा याहरा छै।—नापा सांखला री वारता

जोपणहार, हारो (हारी) जोपणियो—वि०।

जोपिओडो, जोपियोडो, जोप्योडो—भू०का०कृ०।

जोपिजणो, जोपीजवो—भाव वा०, कर्म वा०।

जोपियोडो—भू०का०कृ०—१ जोश मे आया हुआ २ उत्साहित हुवा हुआ ३ शोभित हुवा हुआ ४ देखो 'जोतियोडो' (रू भे)

स्त्री०—जोपियोडी।

जोपै—अव्य० [स० यद्यपि] यदि, अगर, अगरचे, यद्यपि।

जोवण—देखो 'जोवन' (रू भे)

उ०—पही भमता जइ मिळइ, तउ प्री आखै भाय। जोवण वधण तोडसइ, वधण घातउ आय।—ढो.मा.

जोवणेरी—स०स्त्री०—एक देवी का नाम।

जोवन—स०पु० [स० यौवन] युवा होने का भाव, यौवन, जवानी, तारुण्य। उ०—१ पावस आयउ साहिबा, वोलण लागा मोर। कता तू घरि आव नवि, जोवन कीधउ जोर।—ढो मा.

उ०—२ छक छोह रूप जोवना छाका। पुहपा तणी वणी पोसाका। —सू प्र

मुहा०—१ जोवन आणौ—युवावस्था आना, जवानी आना २ जोवन ऊठणौ—यौवन उभरना, जवानी आना ३ जोवन उतरणौ—जवानी समाप्त होना ४ जोवन गमाणौ—यौवन खोना। देखो 'जोवन ढळणौ'. ५ जोवन गाळणौ—युवावस्था व्यतीत करना, यौवन गुजारना ६ जोवन चवणौ—देखो 'जोवन टपकणौ'। ७ जोवन चढणौ—युवावस्था आना, जवानी भरना. ८ जोवन छळकणौ—यौवन छलकना, जवानी आना ९ जोवन छाणौ—युवा होना, पूर्ण जवान होना १० जोवन जाणौ—युवावस्था का चला जाना। वृद्ध होना।

उ०—२ जेसळ आप वडइ असवार, कोस बधरइ वारावार। जोयण एक घडी मइ जाइ, हारइ नही न थाका थाइ।—ढो मा

३ दर्शन (?) उ०—सरसति सामणि, तू जग जीण। हुस चढी लटकावै वीण। उरि कमळा भमरा भमइ। कासमीरा मुख मडणी माइ। तो तूठा वर प्राविजइ। पाप छयासी जोयण जाइ।
—वी दे

जोयणु—देखो 'जोजन' (रू भे), उ०—गग तडातडि अछइ ग्रोयणु। वित्थरि दीरघि बारह जोयणु। पास हरा वागुरीय वहूय। पइठा वणि कोळाहळ हूय।—प प च.

जोयणौ, जोयबौ—देखो 'जोवणौ, जोववौ' (रू भे)

उ०—हार ग्रोडती, वलक मोडती, ग्राभरण भाजती, वस्त्र गाजती, किंकिणीकळापू च्छोडती, माथउ फोडती, वक्ष स्थळ ताडती, कुतळ कळाप रोळती, प्रिथवीतळि लोळती, एकज्जळ बास्पजळि कचक सीचती, दीन बोलती, सखीजन ग्रपमानती, पुन-पुन रोयती, ग्रपरापर दिगमडळ जोयती, पाणीयरहितमत्स्य जिम घोळती।—व स

जोयल—स०स्त्री०—१ दृष्टि, निगाह, नजर। २ देखो 'जुयळ' (रू भे.)

जोयसी—देखो 'ज्योतिसी' (रू भे)

जोयाण, जोयावाटी—देखो 'जोयावटी' (रू भे.)

जोयीजै—देखो 'जोईजै' (रू भे.) उ०—ताहरा रावजी कह्यौ—'दूदा' 'मेघौ', सीघळ मारियौ जोयीजै।—दूदै जोधावत री वात

जोयिणौ, जोयिबौ—देखो 'जोवणौ, जोववौ' (रू भे)

जोयियोडौ—देखो 'जोवियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० जोयियोडी)

जोर—स०पु० [फा० जोर] १ शक्ति, वल। उ०—१ दौलत सू दौलत वधै, दौलत ग्रावै दोर। जस होवै सब जगत में, जोवन ग्रावै जोर।
—ग्रज्ञात

उ०—२ ग्रोळगै राम ज ग्रापौ ग्राप। विखै त्या पच सकै नह व्याप। रटै तौ नाम कटै दुख रोर। जराऽऽमय पाप न लागै जोर।
—ह.र.

क्रि०प्र०—ग्रजमाणौ, लगाणौ।

मुहा०—१ जोर करणौ—ताकत लगाना, प्रयत्न करना, वल का प्रयोग करना. २ जोर टूटणौ—वल का क्षीण होना, प्रभाव कम होना, निराश होना. ३ जोर डालणौ—वोझा देना, देखो 'जोर देणौ'. ४ जोर देणौ—ताकत लगाना। वोझा लादना। दवाव डालना। किसी बात को बहुत ग्रावश्यक या महत्व की वतलाना ५ जोर दे नै कै'णौ—किसी वात को बहुत या दृढता से कहना ६ जोर मारणौ—ताकत लगाना, बहुत प्रयत्न करना ७ जोर लगाणौ—देखो 'जोर मारणौ'।

यौ०—जोर-जुलम।

२ ग्रधिकार, वश, कावू। ज्यू—वरावरी रै वेटै माथै हमै ग्रापाणौ जोर नी चालै।

क्रि०प्र०—चलणौ, चलाणौ, जताणौ, होणौ।

मुहा०—१ जोर डालणौ—किसी पर ग्रधिकार जतलाते हुए विशेष ग्राग्रह करना। दवाव डालना २ जोर दे नै कै'णौ—देखो 'जोर डालणौ' ३ जोर देणौ—देखो 'जोर डालणौ'।

३ मेहनत, परिश्रम, दवाव। ज्यू—सूता सूता पढण सू ग्रांख्या माथै जोर पडै। ४ तेजी, प्रवलता। ज्यू—ताव रौ जोर। उ०—सभ घोर ग्रधकार कळिराज छायौ ग्रसत, जोर सत कियौ ग्रवछन गवन जास।—उमेदसिंह सिसोदिया रौ गीत

मुहा०—१ जोर करणौ—तेजी दिखलाना, प्रवलता दिखलाना २ जोर पकडणौ—तीव्र होना, तेज होना, प्रवल होना. ३ जोर मारणौ—देखो 'जोर करणौ' ४ जोर मे ग्राणौ—ग्रनायास ही प्रवल हो जाना। ग्रनायास ही उन्नति की ग्रोर वढना।

५ ग्रावेश, वेग। ज्यू—मगरे मे वरसात होणे सू नदी री जोर वधियौ है। ६ ग्रासरा, सहारा, भरोसा। ज्यू—१ ये किण रै जोर माथै राजा सू ग्रडिया हौ २ थे किण रै जोर माथै कूदो हौ।

वि०—प्रवल, तेज। उ०—खीची दिन दिन वधता गया, तद वडी ठाकुराई, पातसाह ग्रकवर गै पातसाही लाइ तौ निपट जोर साहिवी थी।—नैणसी

यौ०—जोर-सोर।

जोरजट—स०पु०—एक प्रकार का वढिया रेशमी कपडा।
उ०—जरी, रेसम नै जोरजट री घेम सो लाग्योडौ।—रातवासौ

जोरजुलम—स०पु०यौ०—ग्रत्याचार, ज्यादती।

जोर-तळव—स०पु०यौ०—ग्रासानी से ग्राज्ञा न मानने वाला।
उ०—तद पूनिया रै थाणायत ग्ररज कीवी, परगनौ नयौ दवियौ छै, लोग जोर-तळव छै, तिणसू कासू ग्राग्या। तद महाराज फरमाई तू कहै तिण माफक पीठ राखा तद उण ग्ररज कीवी इतरी ग्रासामी राखजे।—मारवाड रा ग्रमरावा री वारता

जोरवार—[फा० जोरदार] शक्तिशाली, वलवान।

जोरवत, जोरवर, जोरवान—देखो 'जोरावर' (रू भे)
उ०—१ 'जग्गी' ग्रवसाणौं जोरवत। सुत 'साम' खेत गाजो ग्ररत।
—रा रू.

उ०—२ जुदवार मडै पतसाह जोरवर, ताता भडा उतारण ताप। वाप लडै हलकारै वेटौ, वेटौ लडै ऊससै वाप।—ग्रज्ञात

उ०—३ ग्रठी राम रा सुभड नै सुभड रावण उठी, लक रै जोरवर खेत लडवा। तीर सेला छुरा भीक तरवारिया, वाजिया विनै ही रभ वरवा।—र रू. उ०—४ कीरतसिंघ, उमेदसिंघ, पाली-रा चापावता रा भाणेज सेखावत सिवसिंघ रा कवर वडा जोरवान ज्या नू सिवसिंघ मराया समरथसिंघ रै हाथ।—वा दा ख्यात

जोरवा—स०स्त्री०—पँवार वश की एक शाखा।

जोरसिंह—स०पु०—एक मारवाडी लोक गीत।

जोरसोर—स०पु०यौ० [फा० जोर-शोर] वहुत ग्रधिक प्रवलता या प्रचण्डता।

सास विण, मोटी मेल्हइ धाह ।—ढो मा

२ राह देखना, इन्तजार करना. ४ प्रज्वलित करना, जलाना । (दीपक)

५ देखो 'जोतणो, जोतवो' (रू भे)

जोवणहार, हारो (हारी), जोवणियो—वि० ।

जोवाडणो, जोवाडवो, जोवाणो, जोवावो, जोवावणो, जोवाववो—प्रे०रू० ।

जोविश्रोडो, जोवियोडो, जोव्योडो—भू०का०कृ० ।

जोवीजणो, जोवीजवो—कर्म वा० ।

जुवणो, जुववो, जोश्रणो, जोश्रवो, जोइणो, जोइवो, जोइयणो, जोइयवो, जोणो, जोवो, जोयणो, जोयवो, जोहणो, जोहवो—रू०भे० ।

जोवन—देखो 'जोवन' (रू भे) उ०—१ पथी एक सदेसउउ, लग ढोलइ पैहुच्याइ । जोवन खीर समुद्र हुइ, रतन ज काढइ आइ ।
—ढो मा.

उ०—२ दउढ वरस री मारुवी, त्रिहुँ वरसारिउ कत । उणरउ जोवन वहि गयउ, तू किउ जोवनवत ।—ढो मा.

जोवनवत—देखो 'जोवनवत' (रू.भे.) (स्त्री० जोवनवती)

जोवनराय—देखो 'जोवन' (मह ,रू भे)

उ०—काना माडघा रूसणा, नैणा दीसै नाय । दात बतीसू खिर गया, गया जद जोवन राय ।—अज्ञात

जोवनियो—देखो 'जोवन' (अल्पा., रू.भे.) उ०—ढोलाजी रै थाळिया गाये परणाविया, ढोलाजी रै भर जोवनिया माय, ढोलाजी रै कागदिया नो टोटो, ढोलाजी रै मू मारूणी भर जोवनिया माइ ।
—लो गी.

जोवन्न—देखो 'जोवन' (रू भे) उ०—तिला तेल पोहप फुलेल उज्झेलत सायर । अगनी काठ, जोवन्न घट, भगवट्ट सु कायर ।—ह र

जोवरळो—देखो 'जेवरळो' (रू.भे) उ०— तो जिसडा त्यागीह, भगवत रा छाना भगत । ईसर अनुरागीह, जोवरळा लाधै 'जसा' ।
—उदैराज ऊजळ

जोवराज—देखो 'युवराज' (रू भे)

जोवाडणो, जोवाडवो—क्रि०स० ('जोवणो' क्रिया का प्रे०रू०) १ दिखलाना, जताना, बतलाना । उ०—१ म्हे तो आसीपणो फिटो नही करा, जु आसिया छा सु आसीपणो करी जोवाडिस्या ।
—द वि

उ०—२ वीरत वीर अनै ससवदनी, पुणै 'सुज' उत साच पचाण । मार खळा पर पुरखा मुहडो, जोवाडै ताय लाछण जाण ।
—तेजसी खिडियो

उ०—३ पछै भलो मोहरत जोवाड कूभै नू प्रोहित नाळेर दियो ।
—नैणसी

२ तलाश कराना, ढूढाना. ३ इन्तजार कराना, राह दिखाना. ४ प्रज्वलित कराना, जलाना (दीपक) ५ देखो 'जोताणो, जोताबो' । (रू.भे.)

जोवाडणहार, हारो (हारी), जोवाडणियो—वि० ।

जोवाडिश्रोडो, जोवाडियोडो, जोवाडयोडो—भू०का०कृ० ।

जोवाडीजणो, जोवाडीजवो—कर्म वा० ।

जोवाणो, जोवावो, जोवावणो, जोवाववो—रू०भे० ।

जोवाडियोडो—भू०का०कृ०—१ दिखलाया हुआ, जताया हुआ, बतलाया हुआ २ तलाश कराया हुआ, ढूढाया हुआ. ३ इन्तजार कराया हुआ. ४ प्रज्वलित कराया हुआ (दीपक) ५ देखो 'जोतायोडो', (रू भे) (स्त्री० जोवाडियोडी)

जोवाणो, जोवावो—देखो 'जोवाडणो, जोवाडवो' (रू.भे.)

जोवाणहार, हारो (हारी), जोवाणियो—वि० ।

जोवायोडो—भू०का०कृ० ।

जोवाईजणो, जोवाईजवो—कर्म वा० ।

जोवायोडो—देखो 'जोवावियोडो' (रू.भे.) (स्त्री० जोवायोडी)

जोवावणो, जोवाववो—देखो 'जोवाडणो, जोवाडवो' (रू.भे)

जोवावणहार, हारो (हारी), जोवावणियो—वि० ।

जोवाविश्रोडो, जोवावियोडो, जोवाव्योडो—भू०का०कृ०।

जोवावीजणो, जोवावीजवो—कर्म वा० ।

जोवावियोडो—देखो 'जोवाडियोडो' (रू भे) (स्त्री० जोवावियोडी)

जोवियोडो—भू०का०कृ०—१ तलाश किया हुआ, ढूढा हुआ. २ देखा हुआ, ताका हुआ ३ इन्तजार किया हुआ, राह देखा हुआ. ४ प्रज्वलित किया हुआ, जलाया हुआ (दीपक) ५ देखो 'जोतियोडो'। (रू भे.) (स्त्री० जोवियोडी)

जोव्वण, जोव्वन—देखो 'जोवन' (रू.भे., जैन) उ०—जिम जळ तिम जोव्वण तणा, पन्न दिहाडा प्राण । सेव्या रिण सूकीजसइ, जाण करू छउ जाण ।—माधवानळ कामकदळा प्रबध

जोव्वाणिया—स०स्त्री० [स० यौवनिका] युवावस्था (जैन)

जोसगी—स०पु०—शूरवीर, योद्धा ।

जोस—स०पु० [फा० जोश] १ चित्त की वह वृत्ति जिसमे आवेश हो, मनोवेग, आवेश । उ०—दे दुजा महा खोडेस दान । मारवा लगा भुज आसमान । चोगणा अमल दूणा चढाय । ओपिया सो गुणा जोस आय ।—वि स

क्रि०प्र०—आणो, उतरणो, ऊठणो, खाणो, चढणो, मिटणो ।

२ उफान, उबाल. ३ उत्साह, उमग. ४ रक्त, खून (अ मा) रू०भे०—जोह ।

जोसण—स०स्त्री०—१ ज्योतिसी की स्त्री, ब्राह्मणी ।

उ०—हाथ करा रे कू कू वाटको रे आछी, जोसण होय होय जाय । आलीजो रे जोवसा म्हारा राज ।—लो गी

स०पु० [फा० जोशन] २ जिरह-वख्तर, कवच ।

उ०—रिणवट पाग्र खत्रीवट 'रतनै', घाए मनावै मीर घडाह । लोहाखियै तोडिया लाडै, काचू जोसण कसण कडाह ।
रू०भे०—जोसन । —ऊदावत रतनसिंघ री वेलि

जोचणी-स०स्त्री०—जौ और चनो का मिश्रण (मेवात)
जोजा-स०स्त्री० [सं० जोज] पत्नी, जोरू।
जोतुक-स०पु० [स० यौतुक] दहेज, यौतुक।
जोधिक-स०पु० [स०] तलवार के ३२ हाथो मे से एक।
जोवत, जोवती—देखो 'जोंवत, जोवती' (रू भे.)
जोवन—देखो 'जोवन' (रू भे)
जो'र—देखो 'जोहर' (रू भे)
जोळा-वि०—साथ, युक्त। उ०—जुटे वागि रावत नृप जोळा। रोळा हेक माहि दो रोळा।—सू प्र
जोवन—देखो 'जोवन' (रू भे.)
उ०—संसव कहता वाळक अवस्था। तें मांहि थकउ वाळक जाणें सूता वरावरि छै। जौवन आवै तव जाणे जाग्यो।—वेनि.टी
जोहर-स०पु०—१ जवाहिरात, रत्न।
उ०—घायल की गत घायल जांण्या, हिवडो अगण सजोय। जोहर की गत जोहरी जाणें, क्या जाण्या जिण खोय।—मीरा
२ तलवार के अच्छे लोहे के प्रमाण स्वरूप उस पर वनी हुई सूक्ष्म धारिया।
मुहा०—तलवार रो जोहर देखाणो—रण-कुशलता का परिचय देना। वहादुरी से लडना।
३ विशेपता, खूबी, गुण।
मुहा०—जोहर देखाणो—विशेपता दिखाना, गुण प्रकट करना।
[स० जीव+हर] ४ राजपूतो की युद्ध के समय की एक प्रथा—जव उन्हें यह विश्वास हो जाता है कि शत्रु गढ मे प्रवेश कर जायगा तव वे तो केसरिया वाना पहन कर मरने के लिये शत्रु से भिड जाते थे और उनकी स्त्रिया गढ मे ही चिता वना कर जिन्दी ही आग मे जल जाती थी ताकि शत्रु उन्हें नही पा सके।
क्रि०प्र०—करणो, होणो।
५ स्त्रियो के जलने के लिये दुर्ग मे वनाई गई चिता।
६ आततायी (शासक) के विरुद्ध अन्याय के प्रतिकार के रूप मे किसी के जल मरने की क्रिया।
रू०भे०—जवर, जवरी, जउहर, जउहरि, जमर, जमहर, जवहर, जूहर, जोहर, जो'र, ज्योहर।
जोहरि, जोहरी-स०पु० [फा० जौहरी] १ हीरे, जवाहिरात आदि वेचने वाला, रत्नविक्रेता। उ०—वाघी समझदार हुवै तो जाय पाछो पटक आवै कोई वडे जोहरि रो घर फोडियो होसी, उवो कद भूल सें।
—साह रामदत्त री वारता
२ हीरे-पन्नो की जाच करने वाला, रत्नपरीक्षक।
उ०—१ जोहरि की गत जोहरि जाणें, कै जिण जोहर होय। एरी मैं तो प्रेम दिवाणी मेरो दरद न जाणें कोय।—मीरा
उ०—२ जेम जवाहर जोहरी, पारख करी प्रमाण। तेम निजर 'परताप' री, पुरखा खरी पिछाण।—जैतदान वारहठ
३ गुण का आदर करने वाला, कदरदान, गुणग्राहक।
४ गुण-दोप की पहिचान करने वाला, परखैया, जचवैया।
रू०भे०—जवरी, जोहरी।
जौहारि—१ देखो 'जवारी' (रू.भे) २ देखो 'जुहार' (रू.भे)
उ०—पचमैं प्रहरै दीह रैं, सायघण दियैं वुहारि। रिमझिम रिमझिम हुइ रही, हुइ घण-श्री जोहारि।—ढो मा
ज्झाण-स०पु०—ध्यान (जैन)
ज्यउ—देखो 'जिउ' (रू.भे.)
उ०—सदेसा ही लख लहइ, जउ कहि जाणइ कोइ। ज्यू घणि आवइ नयण भरि, ज्यउ जइ आवइ सोइ।—ढो मा.
ज्यउ, ज्यउ, ज्यऊ—देखो 'जिउ' (रू भे.)
उ०—१ ज्यू ए डूगर ममुहा, त्यू जइ सज्जण हुति। चपावाडी भमर ज्यउ, नयण लगाइ रहति।—ढो मा.
उ०—२ या तो छइ भाव नी आस ज्यउ जाणउ त्यउ मरउ आसपास।
—अ वचनिका
उ०—३ जळमहि वसइ कमोदणी, चदउ वसइ अगासि। ज्यउ ज्या ही कइ मनि वसइ, सउ त्याही कइ पासि।—ढो मा
ज्या—देखो 'ज्या' (रू.भे)
सर्व०—जिन, जिन्होने, जिनके, जिनको। उ०—१ नारायण रो नाम ज्या, नह लीधो निरणाह। वा जमवारो वोळियो, ज्यू जंगळ हिरणाह।—ह र.
उ०—२ सुमति नही ज्यां स्यांन, खात ज्या नही पाप खय।
—र ज प्र
उ०—३ ज्या घर धवळ सनाथ तू, व्है वै नोज अनाथ। थळ ऊतरियो तूझ वळ, गाडो भरियो आथ।—वा दा.
उ०—४ कळिया गाडा काढ हो, जाडा खध जियाह। रहै नचीतो सागडी, ज्या कळ जोत दियाह।—वा दा
उ०—५ ऊनमियउ उत्तर दिसइ, मेडी ऊपर मेह। ते विरहिणि किम जीवसे, ज्यारा दूर सनेह।—ढो मा
उ०—६ कापुरसा फिट कायरा, जीवण लालच ज्याह। अरि देखें आराण मैं, त्रिण मुख माझल त्याह।—वा दा
क्रि०वि०—जव, जव तक। उ०—१ कवि 'जगा' राखि द्रिढ जीव करि, मिटै न लेख करम्म रो। ग्रह दीह सवै ही पद्धरैं, ज्या परमेसर पद्धरो।—ज.खि
उ०—२ पोहो इसडो पर जाव जीवसी ज्या जुडसी नहो।—सू प्र.
ज्यान-स०पु० [फा० जियान] १ हानि, नुकसान। उ०—१ खान रै माणसा रो वडो ज्यान आयो। कामू माणस था त्यारो तळो टूटो।
—सूरे खीवे काघळोत री वात
उ०—२ इसडो मेह जे घडी घडी वरसैं अर गडा अर गडा इसडा हीज पडत तो लसकर रो ज्यान घणो ही करत।—द.वि
२ देखो 'जैन' (रू भे)

ज्येस्टाास्रमी–स०पु० [स० ज्येष्ठाश्रमिन्] गृहस्थी ।

ज्यो, ज्यो–सर्व०—जिन, जो । उ०—१ दीसे माणस प्रत्यक्षकाळ, ज्यो कर त्यो कर दादू टाळ ।—दादू वाणी उ०—२ हम ये हुआ न होइगा, ना हम करणे जोग । ज्यो हरि भावे त्यो करे, दादू कहै सब लोग ।—दादू वाणी

ज्योत—देखो 'जोत' (रू भे) उ०—विहू बध वाजू तणा नग वाहे । मणी नग हीरा तणी ज्योत माहे ।—ना द

ज्योतखी–स०पु० [सं० ज्योतिषी] १ तारा (हना) २ नक्षत्र ३ देखो 'ज्योतिसी)' (रू भे.

ज्योति–देखो 'जोत' (रू भे) उ०—काळ कनक अरु कामिणी, परहर इणका सग । दादू सब जग जळ मुवा, ज्यो दीपक ज्योति पतग ।
—दादू वाणी

ज्योतिक, ज्योतिख—देखो 'ज्योतिस' (रू.भे)

ज्योतिकी, ज्योतिखि, ज्योतिखी—देखो 'ज्योतिसी' (रू भे) उ०—ज्योतिखी तेडै राव सुजाण । पूछै जिण पडित वेद पुराण ।
—रामरासो

ज्योतिधारी–वि०—द्युतिवत । उ०—नै दूजी राणी सोळखणी, तिका दुहागण, तिण रै कवर री नाम जगदेव दीधो । सावळै रग पिण ज्योतिधारी ।—जगदेव पवार री वात

ज्योतिर्लिंग–स०पु० [स० ज्योतिर्लिंग] १ शिव, महादेव । उ०—तरै हारीत रिखि महादेवजी री ध्यान कीयो, उग्र स्तुत करी, तिण थी पहाड प्रिथ्वी फाड़ नै ज्योतिर्लिंग स्री एकलिंगजी प्रगट हुवा ।—नैणसी
२ भारत मे शिव के प्रधान स्थानो पर स्थित वारह लिंग ।

ज्योतिरविद्या–स०स्त्री० [स० ज्योतिर्विद्या] ज्योतिष विद्या ।

ज्योतिरूप–स०पु० [स० ज्योतिस्वरूप] परब्रह्म, परमात्मा । उ०—निराकार निरजन निरुपम, ज्योतिरूप निरखत जी । तेरा सरूप तु ही प्रभु जाणइ, के जोगीद्र लहत जी ।—स कु.

ज्योतिस–स०पु० [स० ज्योतिष] अतरिक्ष मे ग्रहो, नक्षत्रो आदि की परस्पर दूरी, गति, परिणाम आदि के निश्चय का ज्ञान ।
रू०भे०—जोतक, जोतख, जोतग, जोतिक, जोतिख, जोतिस, ज्योतिक, ज्योतिख ।

ज्योतिसी–स०पु० [स० ज्योतिषिन] १ ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता, ज्योतिषी । उ०—ज्योतिसी वैद पौराणिक जोगी, सगीती तारकीक सहि । चारण भाट सुकवि भाखा चित्र, करि एकठा तो अरथ कहि ।
—वेलि.
पर्या०—गणक, जोतकी, ज्योतिग्य, दैवग्य, मूरत जाणणहार ।
२ डक ऋषि से उत्पन्न डाकोत नामक जाति ।
रू०भे०—जोतकी, जातखी, जोतगी, जोतसि, जोतसी, जोतिकी, जोतिखी, जोतिगी, जोयसी, जोसी, ज्योतिकी, ज्योतिखि, ज्योतिखी ।

ज्योतिस्पथ–स०पु० [स० ज्योतिष्पथ] आकाश, व्योम ।

ज्योतिस्पुज–स०पु० [स० ज्योतिष्पुज] नक्षत्रो का समूह ।

ज्योतिस्वरूप—देखो 'ज्योतिरूप' (रू.भे) उ०—दादू जरै सु ज्योतिस्वरूप है, जरै सु तेज अनत । जरै सु झिलमिल नूर है, जरै सु पुज रहत ।—दादू वाणी

ज्योत्सना–स०स्त्री० [स०] चन्द्रमा का प्रकाश, चादनी । उ०—स्निग्ध ज्योत्स्ना पथिक वर्ग, मन मखमल मखतून पर । गोद बडण करै विचारी, रूई रेसम मळ पर ।—दसदेव
रू०भे०—जोत्सणा, जोत्सना ।

ज्योहर—देखो 'जोहर' (रू भे.)

ज्यों–क्रि०वि०—जैसे । उ०—१ छटा ज्यों विछूटै मुजे सेल छूटै । लगे अग तूटै अनोअन्न खूटै ।—रा रू उ०—२ दइ के पहल ज्यों स्रगु पर चढाइ रोळै । छूटे हस पडे जाणं मजीठ वोळै ।—सू.प्र

ज्रिम्भित–स०पु०—श्रृगार मे एक आसन का नाम ।

ज्रिभाळी–स०पु०—पर्वत । उ०—खीरोद सभाळा देत देव द्रोण नागा सागा । प्रळै काळ चाळहै लागा ज्रिभाळा पुरिंद ।—हुकमीचद खिडियो

ज्वर–स०पु० [स०] १ शरीर की स्वाभाविकता से अधिक ताप या गरमी की अवस्था जिससे अस्वस्थता प्रकट हो, बुखार ।
उ०—१ कृपणा जस भावै कठै, विधि विमुखा नू वेद । 'वाका' भोजन नह रुचै, ज्यारै वप ज्वर खेद ।—वा दा. उ०—२ सवत् १७०१ रा पोस सुद ७ महाराज स्री जसवतसिघजी रै ज्वर निपट जोर कियो ।—वा दा ख्यात
रू०भे०—जुर ।
२ एक प्रकार का रत्न । उ०—पद्म राग १, पुष्प राग २, मरकतिमणि ३, करकेतन ४, वन ५, वैदूरभ ६, चद्रकात ७, सूरयकात ८, जळकात ९, नील १०, महानील ११, इद्रजीत १२, रागकर १३, विभाकर १४, ज्वर १५ ॰ इति रत्न जाति ।—व.व.

ज्वळत–वि० [स० ज्वलत] जलता हुआ, दीप्त, प्रकाशमान् ।

ज्वळणो, ज्वळवो—देखो 'जळणो, जळवो' (रू भे)

ज्वाई—देखो 'जमाई' (रू भे) उ०—तद आदमिया कयो, जी अली रो ज्वांई आयो है जिणनू गीत गावै है ।—द दा.

ज्वान—देखो 'जवान' (रू भे) उ०—१ कोई वडकवार ज्वान इणनू छाती सू भीच सुवै तो उण आग री तपत सू औ सावधान हुवै ।
—नैणसी
उ०—२ जहा तहा गोपाळ, गोय सब मे गोपाळक । नही जोर नहिं ज्वान, नही बूढा नहिं बाळक ।—ह पु वा

ज्वाप—देखो 'जाप' (रू भे) उ०—जिगन ज्वाळ होम ज्वाप, अद्भुत्त व्रत अपै । करत पारथी अनेक, जोग इद्र के जपै ।—सू प्र

ज्वाव—देखो 'जवाव' (रू भे) उ०—जग पवन विना तर पत्र ज्यों, थिरि जुवांन पण थप्पियो । उरि ताबि साहि सही असपति री, पाछो ज्वाब न अप्पियो ।—रा.रू.
उ०—२ धरि चित खिमा दोस मत धारो । आप हसण चो ज्वाब उचारो ।—सू प्र

झ

झ—देवनागरी व राजस्थानी वर्णमाला के चवर्ग का चौथा वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान तालु है। यह महाप्राण, सघोष और स्पर्शसंघर्षी व्यञ्जन है।

झ-स०पु० (अनु०) धातु खण्डो के परस्पर टकराने का शब्द।

झउडो—१ देखो 'जुग्रो' २ (अल्पा रू भे) २ देखो 'जाउडी'। (रू.भे)

झक-स०स्त्री०—सताप, उलझन। उ०—कूवरनइ मनि झक पईठ, आ असभम आस्चरच दीठ।—नळ-दवदंती रास

झकण, झकन-स०पु०—समुदाय, झुण्ड। उ०—चटका मटका लटका चुगली, बस अतर भाव छटा बुगली। अनुरजन खजन अखन मे, झपके लपके त्रिय झकन मे।—ऊ का

झकणो, झकवो—देखो 'झखणो, झखबो' (रू.भे)
उ०—कवळ जिकण पुळ कवर री, सुरत झकण फिर सार। झके मुडे फिर आ झके, लिलचावण रे लार।—केहर प्रकास

झकार-स०स्त्री० [स०] १ धातुखण्ड से निकला हुआ झनझनाहट का शब्द, झनकार। उ०—सुणीजे अलकार झकार सूता। हुवै नींद विक्षेप ताकीद हूता।—मे म
२ भ्रमर, झीगुर आदि के बोलने की ध्वनि। उ०—रितिराज प्रगटीओ छै। वसत आयो छै। भमर, मधुकर झकार करी रहिया छै। —रा सा.स.
३ झनझनाहट होने का भाव।
रू०भे०—झणक, झणकार, झणकार, झनकार, झमकार, झमकारू।

झकारणो, झकारबो-क्रि०स० (अनु०) [स० झकार] १ झनझनाहट अथवा झनझन का शब्द उत्पन्न करना।
क्रि०अ०—२ झनझन शब्द होना।
झकारणहार, हारो (हारी), झकारणियो—वि०।
झकारिओडो, झकारियोडो, झकारयोडो—भू०का०कृ०।
झकारीजणो, झकारीजबो—कर्म वा०, भाव वा०।
झणकाडणो, झणकाडबो, झणकाणो, झणकाबो, झणकारणो, झणकारबो, झणकावणो, झणकावबो—रू०भे०।

झकारतन-स०पु०—स्त्रियो के पैर मे पहनने का एक गहना, नूपुर। (अ मा)

झकारियोडो-भू०का०कृ०—१ झनझन का शब्द किया हुआ.
२ झनझन शब्द हुवा हुआ। (स्त्री० झकारियोडी)

झकारी-स०पु०—भौंरा, मधुप (अ मा, ह ना, ना मा)

झकाळ, झकाळो-स०पु०—झडी हुई पत्तियो वाला पेड, सूखा पेड।
उ०—फागुण वाय वागा रे, पान झडिया लागा रे। निकळ गया डाळा रे, नही फळ रसाळा रे। अति काळा झकाळा हो, वाग असोभतो रे।—जयवाणी

झकि-स०पु०—एक वाद्य विशेष। उ०—म्रदग ढोल मगळी, रवाव तार सार ली। वजति वेरिवेरिय, भणकि झकि भेरिय।—रा.रू.

झको-वि०—१ धूलि-कणों, बादलो, कुहरे आदि से आच्छादित, धुधला दिन। उ०—'जीवो' हाल्यो जदी, दीह झको दरसांणो। 'जीवो' हाल्यो जदी, विरग धूहड वरसाणो।—अरजुनजी वारहठ
२ नीरस, शोकसूचक ३ खिन्न, दुखी।
रू०भे०—झखो।

झकोळणो, झकोळवो—१ देखो 'झकोरणो, झकोरवो' (रू भे)
२ देखो 'झकोळणो, झकोळवो' (रू भे)

झकोळियोडो—१ देखो 'झकोरियोडो' (रू भे)
२ देखो 'झकोळियोडो (रू.भे.) (स्त्री० झकोळियोडो)

झख-स०पु०—१ मद या धूमिल दिखाई देने का भाव।
उ०—धमस नाळ रज धोम झलळ तप झख कमळ झळ। घर थरसळ धरधरण, उतन दिस हलै 'अभैमल'।—सू प्र
२ दीपशिखा पर पतगो के गिरने का भाव ३ मोहित या प्रेमासक्त होने का भाव।

झखड—देखो 'झखग' (रू भे)

झखणो, झखवो-क्रि०अ०—१ झलकना, चमकना।
उ०—आदीता हू ऊजळो, मारवणी-मुख-ब्रन्न। झीणा कप्पड पहिरणइ, जाणि झखइ सोव्रन्न।—ढो.मा
२ झलक दिखाई देना, झलक पडना ३ दुखी या तग हो कर पछताना, कुढना, खीजना। उ०—सब सुख माही काळ के, माडचा माया जाळ। दादू गोर मसाण मे, झखै स्वरग पयाळ।—दादू बाणी
४ चौंकना। उ०—आज नीरालइ सीय पडची, च्यारि पहूर माही नू मिळी अखि। उछइ पाणी ज्यु माछली, जिव जागु तिव उठु झखि।—वी दे.
५ देखना। उ०—सूरिज तणइ वसि हुँ आज, वडा पुरुख नि नाणू लाज। गोल्हण तु मनि झखिसि आल, हिव लाजइ माहरू मुहुसाल। —का दे प्र
६ धूमिल होना, धुधला होना। उ०—रणवणीया सवि सख तूर अवरु आकपीउ। हय गयवर खुरि खणीय रेणु ऊडीउ जगु झखीउ। —प प च

झझर, झझरा—देखो 'जाझर' (रू भे) उ०—१ झरणाट नाद नूपर झझर, सुर वाजत्र सैंतीसमों। रग हूर रथा ढकियो अरक, मति व्रहमंड वावीसमो।—सू.प्र उ०—२ जिकै सीत जाता पड़ै भोमि जाणैं। उठै वदरा झझरा चीर आणैं।—सू प्र

उ०—३ झूलपै झझरा, पक्खरो सप्परा। घुम्मि घोमध्धरा, वक्करा वीफरा।—सू प्र

झझरी-वि०—१ ढीला, जर्जरीभूत। उ०—ठही चोट दे झझरी कोट ठाणैं। छकी पान जे अट्टरे जट्ट छाणैं।—व भा.

२ देखो 'जाझर' (रू भे) ३ देखो 'झाझरी' (रू भे)

झझान—देखो 'झाझ' (रू भे) उ०—सुधार सस्त्र अस्त्र के जुधार जागते नही। लखो विहान सान पै झझान लागते नही।—ऊ का

झझा—देखो 'झाझ' (रू भे)

झझारी—देखो 'झझट' (रू भे) उ०—ईसी हो झझारी मइ झखीयो। जो हूं सोहीणइ जाणती साच। हूंठि कर जाती राखती। जव जागु जीव पडी गयी दाह।—वी दे.

झझावत, झझावात, झझावातू—देखो 'झाझ' (रू भे)

उ०—झझावात झपट लपट जळ अवर लागी।—भगवानजी रतनू

झझेडणो, झझेडवो-क्रि०स०—झटका देकर हिलाना, झकझोरना।

उ०—कण वे हूता काछ, साहिव जसवत सारिखा। झालो झझेडै गयो, पाछै रहियो पाछ।—नैणसी

झझेडणहार, हारो (हारी), झझेडणियो—वि०।

झझेडवाडणो, झझेडवाडवो, झझेडवाणो, झझेडवावो, झझेडवावणो, झझेडवाववो, झझेडाडणो, झझेडाडवो, झझेडाणो, झझेडावो, झझेडावणो, झझेडाववो—प्रे०रू०।

झझेडिओडो, झझेडियोडो, झझेडचोडो—भू०का०कृ०।

झझेडीजणो, झझेडीजवो—कर्म वा०।

झझेरणो, झझेरवो, झझोडणो, झझोडवो, झझोरणो, झझोरवो।—रू०भे०।

झझेडियोडो—भू०का०कृ०—हिलाया हुआ, झकझोरा हुआ।

स्त्री०—झझेडियोडी।

झझेरणो, झझेरवो—देखो 'झझेडणो, झझेडवो' (रू भे)

झझेरणहार, हारो (हारी) झझेरणियो—वि०।

झझेरिओडो, झझेरियोडो, झझेरचोडो—भू०का०कृ०।

झझेरीजणो, झझेरीजवो—कर्म वा०।

झझेरियोडो—देखो 'झझेडियोडो' (रू भे)

स्त्री०—झझेरियोडी।

झझोडणो, झझोडवो—देखो 'झझेडणो, झझेडवो' (रू भे.)

झझोडणहार, हारो (हारी), झझोडणियो—वि०।

झझोडिओडो, झझोडियोडो, झझोडचोडो—भू०का०कृ०।

झझोडीजणो, झझोडीजवो—कर्म वा०।

झझोडियोडो—देखो 'झझेडियोडो' (रू भे)

स्त्री०—झझोडियोडी।

झझोरणो, झझोरवो—देखो 'झझेडणो, झझेडवो' (रू भे)

उ०—दिगता लो दोरै मचल मन मोरै मुदमुदी। विदातो झझोरै विसय विग वोरै वुदवुदी।—ऊ का.

झझोरणहार, हारो (हारी), झझोरणियो—वि०।

झझोरिओडो, झझोरियोडो, झझोरचोडो भू०का०कृ०।

झझोरीजणो, झझोरीजवो—कर्म वा०।

झझोरियोडो—देखो 'झझेडियोडो' (रू भे)

स्त्री०—झझोरियोडी।

झड—१ देखो 'झूड' (रू.भे)

उ०—१ चपू की अधेरी वोलमरू के थड। रतिराज के असपक्क आसापालव के झड।—सू प्र.

उ०—२ झपेट देत झड के वहाड व्यापते नही। छलग देत छोनि है मलग मानते नही।—ऊ का

२ देखो 'झडो' (मह रू भे.)

उ०—चत्रवाह साहि दोइ राह चढि, सझि फोजा दोवै समथ। विचि झड थड मडै वडा, करिया भारथ एम कथ।—वचनिका

झडाळ—देखो 'झडो' (मह रू.भे)

उ०—झल्ल झलाणै कुड पै झडाळ झुकाया।—व.भा.

झडियो—देखो 'झडो' (अल्पा रू.भे)

झडी-स०स्त्री०—देखो 'झडो' (अल्पा रू भे)

उ०—दै भेसो वळदान, छाक मदधार छकाई। चडो चडी ऊचरै, फनै झडी फहराई।—मे म

झडीदार-वि०—१ जिसके हाथ मे झण्डी हो, झडी वाला।

२ जिसमे झडी लगी हो।

झडूलो—देखो 'झडूलो' (रू भे)

झडो-स०पु०—लकडी या धातु की डडी मे ऊपर की ओर लगा हुआ तिकोने या चौकोर वस्त्र का टुकडा जो प्राय कई रगो से रगा हुआ तथा चित्रमय या चिन्ह युक्त होता है। इसका व्यवहार किसी राष्ट्र का सकेत करने, किसी स्थान पर अमुक राजसत्ता के होने का सकेत करने, चिन्ह प्रकट करने, सकेत करने, उत्सव आदि सूचित करने अथवा इसी प्रकार के अन्य कामो के लिये होता है, पताका, ध्वजा, निशान।

उ०—फूकरा नवकोटी झडा फरहरिया। घर घर जातीरा-टामक घरहरिया। खाली जळ घरथी जळघर जळ खूटो। ततम्मिण जीवण विण जगजीवण तूटी।—ऊ का

मुहा०—१ झडो खडो करणो—किसी राज्य या किले पर अपना अधिकार कर के झडा फहराना। अधिकार करना। प्रभाव जमाना। फौज आदि को एकत्रित करने के लिये झडा गाड कर सकेत करना। शान-शौकत दिखाना। आडम्बर करना।

२ झडो गाडणो—देखो 'झडो खडो करणो'

उ०—तूल जिम उडै खळ थूल गुरजा तडछ्ह, झूल चवसठ लगी लेण झपा। सूळ चमकावता फिरै बावन सुभट, स्याम वाघूळ विच जाण सपा।—बालाबख्श बारहठ, गजूकी।

झफ—देखो 'झपा' (रू भे)

उ०—मनू आब हीन गुरधो कुभ रीतो, भई झफ खाली परघो जानि चीतो।—ला रा

झफटाळ—देखो 'झपताळ' (रू.भे)

झफणो, झफबो—देखो 'झपणो, झपबो' (रू भे.)

उ०—चढि किलै एम झफै 'अचळ', विच दळ 'सूर' विहारिया। तिण वार मिळै हिंदू तुरक, उडै रीठ तरवारिया।—सू प्र

झफियोडो—देखो 'झपियोडो' (रू भे.)

स्त्री०—झफियोडी।

झब-स०स्त्री०—१ पेड की शाखा, टहनी।

२ गुच्छा, समूह। उ०—सुरा झब रूपी तरा अब सोभै, लखै पारिजाति तजै मार लोभै। प्रभा सप चपे कळी जाळ पेखै। लजै भौण सजीवनी द्रोण लेखै।—रा रू

३ आश्रय, सहारा। उ०—नारगी ससार नीम, अवर कर अवह। करणा सुभ करतूत, झाल हर कदमा झवह।—र ज प्र

४ शरण, पनाह।

झभ-स०स्त्री०—दीपक की बत्ती।

उ०—करहा, लवी वीख भरि, पवना ज्यू वहि जाह। झभ वळंतइ दीवलइ, घण जागती जाह।—ढो मा.

झवरो-स०पु०—१ पत्तियो युक्त वृक्ष की टहनी।

२ वृक्ष की टहनियो का गुच्छा. ३ शरीर का मैल उतारने का एक उपकरण।

रू०भे०—झमरो।

झ-स०पु०—१ मैथुन २ हाथ. ३ मछली, गच्छ. ४ आम ५ निदान ६ नाश. ७ वर्षायुक्त तेज आधी, झझावात ८ वृहस्पति ९ दैत्यराज १० ध्वनि (एका)

झइवर-स०पु० [स० धीवर] धीवर, मल्लाह।

झउडो—१ देखो 'जुओ' २ (अल्पा रू भे)

२ देखो 'जाउडो (रू भे) (अ भा)

झक—१ देखो 'झक' (रू भे.)

२ सनक, धुन, तरग।

झकक-स०स्त्री—प्रतिबिम्ब, प्रतिच्छाया।

झककेतु, झककेतू-स०पु० [स० झपकेतु] कामदेव, अनग (डिं को.)

रू०भे०—झखकेत, झखकेतु, झसकेतू।

झकड-स०पु०—१ वर्षा के पहले आने वाली तेज आधी।

२ तूफान, आधी. ३ लू।

रू०भे०—झक्कड।

झकडो-वि०—१ रहस्यमय ?

उ०—जलाल काना देय कर, सुण हम बातडियाह। झकडी वाता बूझ कर, रमजो रातडियाह।—जलाल बूबना री बात

२ दूध दुहने का बर्तन।

झकडो-स०पु०—जुआ।

झकझक-स०स्त्री० (अनु०) व्यर्थ की बकवाद।

झकझकाहट-स०स्त्री०—जगमगाहट, ओप, चमक।

झकझेलणो, झकझेलबो—देखो 'झकझोरणो, झकझोरबो' (रू.भे)

झकझेलियोडो—देखो 'झकझोरियोडो' (रू भे)

स्त्री०—झकझेलियोडी।

झकझोर-स०पु०—१ इधर-उधर हिलने का भाव।

उ०—सखी, म्हारो कानूडो कळेजे री कोर। मोर मुगट पीतावर सोहै, कुडळ री झकझोर।—मीरा

२ झोंका, झटका।

वि० —जो बहुत तेज हो, जो झोंकेदार हो। उ०—थारी सेवा में तो मोद घन घन मानू रे। वहै उरमिया झकझोर आज म्हूं जाणू रे।
—लो गी.

रू०भे०—झकझोळ।

झकझोरणो, झकझोरबो-क्रि०स०—किसी वस्तु या प्राणी को पकड कर खूब जोर से अथवा झटका देकर हिलाना। उ०—१ प्रिय प्रिय पपीयन रटत प्रगटत, पवन के झकझोर। इस मास सावन दिल दिढावन, सजन मानि निहोर।—वि कु

उ०—२ कुजविहारी राधा गोरी, नव निकुज मे खेलै होरी। भरि भरि अरगजा लई कमोरी, छिरकत झकझोरी झकझोरी।—मीरा

झकझोरणहार, हारो (हारी), झकझोरणियो—वि०।

झकझोरिओडो, झकझोरियोड़ो, झकझोरयोडो—भू०का०कृ०।

झकझोरीजणो, झकझोरीजबो—कर्म वा०।

झकझेलणो, झकझेलबो, झकझोळणो, झकझोळबो—रू०भे०।

झकझोरियोडो-भू०का०कृ०—हिलाया हुआ, झटका दिया हुआ।

स्त्री०—झकझोरियोडी।

झकझोरो-स०पु०—झोंका, झटका।

झकझोळ-स०पु०—१ लाल रग या रक्त मे भीगने का भाव।

२ देखो 'झकझोर' (रू.भे)

उ०—इण परि साभळि बोल, पदमणि प्रेमइ बाधियो जी। आलिम मन झकझोळ कीधी, बादळ वाय करै जी।—प च चौ.

३ क्रीडा। उ०—मान सरोवर हसलउ रे, जेम करइ झकझोळ। तिम साहिब सू मन मिळयउ रे, करइ सदा कल्लोळ।—वि कु

वि०—क्रोध या जोश से परिपूर्ण।

झकझोळणो, झकझोळबो—देखो 'झकझोरणो, झकझोरबो' (रू भे)

उ०—मेघ मरोडै डाळ पवन आधी झकझोळै। दावो देवै दाग, वैर गिरमी मिस घोळै।—दसदेव

उ०—२ एक जिसी छिब चाद सूरज री, पथी लेत विसराम। फूली

४ प्रक्षालन करना, धोना। उ०—दासी भारी झकोळ पाणी सू भरि नै सोनगरौ नूं दीधी।—वीरमदे सोनगरा री वात

५ स्नान कराना ६ गाना। उ०—गीत झकोळै गोरिया, सुणता लागै सु प्यार। हीडै ओलर हीडता, तीज गळै तिण वार।
—महादान महडू

झकोळणहार, हारौ (हारी) झकोळणियौ—वि०।

झकोळवाडणौ, झकोळवाडवौ, झकोळवाणौ, झकोळवावौ, झकोळवावणौ, झकोळवाववौ, झकोळाडणौ, झकोळाडवौ, झकोळाणौ, झकोळावौ, झकोळावणौ, झकोळाववौ—प्रे०रू०।

झकोळिओडो, झकोळियोडो, झकोळयोडो—भू०का०कृ०।

झकोळीजणौ, झकोळीजवौ—कर्म वा०।

झकोळियोडो—भू०का०कृ०—१ मुलम्मा या गिलट चढ़ाया हुआ. २ विलोडित किया हुआ. ३ वायु का झोंका मारा हुआ. ४ प्रक्षालन किया हुआ, धोया हुआ ५ स्नान कराया हुआ ६ गाया हुआ। (स्त्री० झकोळियोडी)

झकोळी-स०स्त्री०—१ झकोलना क्रिया या भाव २ स्नान।

झकोळौ-स०पु०—१ जल की तरग या हिलोर। उ०—१ उरै गजराज रेवा नदी रै काठै द्रह ऊपरै पाचसै हाथी रै हलकै लीआ मोडी सर करनै रहिया छै। पाणी री छोळा रा झकोळा खावता गज कीला करिनै रहिआ छै।—रा सा स

२ आघात, टक्कर। उ०—झेलै नदिया तणा झकोळा, कीडी री आसरौ किसौ।—ओपी आढ़ो

३ अस्थिरता का भाव। उ०—ऊचा नीचा महल पिया का, हमसे चढ़्या न जाय। पिया दूर पथ म्हारो झीणो, सुरत झकोळा खाय।
—मीरा

झक्क-वि०—खूब स्वच्छ और चमकदार, झकाझक, चमकीला।

झक्कड—देखो 'झकड' (रू भे)

झक्की-वि०—१ बहुत बकझक करने वाला, व्यर्थ का बकझक करने वाला. २ वह जिसे झक सवार हो, वह जो अपनी धुन मे किसी की परवाह न करता हो।

रू०भे०—झकी, झखी।

झख-स०पु०—१ वन, जगल (ना मा.)

स०स्त्री० [सं० झष] २ मच्छी, मत्स्य, मीन (अ मा)

उ०—झख खजरीटा अगा, सवर हतक सराह। जैतवार ज्यारा नयण, सरोरूहा सुधराह।—बा दा

उभ०लि०—झीखने का भाव या क्रिया।

मुहा०—१ झख मारणौ (मारणी) व्यर्थ का प्रलाप या बकझक करना, व्यर्थ मे समय नष्ट करना, विवशतावश झीखना।

३ देखो 'झक' (रू भे)

झखकेत, झखकेतु—देखो 'झककेतु' (रू भे)

उ०—वण झखकेतू वैठियौ, महळ सिकारा मूळ। खाग खणका नह खम्या, धणी जमारो धूळ।—रेवतसिंह भाटी

झखझूर-स०पु० (अनु०) चूर-चूर, नाश, ध्वंस।

झखणौ, झखवौ-क्रि०अ० [सं० झष्] इच्छा करना, आकांक्षा करना।
(उ र)

उ०—झखइ लागइ लावर मातुलउ। विरहि विलूंन वातर वाउलउ।
—वि ग

झख-ध्वज-स०पु० [सं० झषध्वज] कामदेव। उ०—झखध्वज भूपति दीयण दून। अनीयण लोयण रूप अमूळ।—मे.म

झखनिकेत-स०पु० [सं० झषनिकेत] १ समुद्र २ जलाशय।

झख-बोळ—देखो 'झक-बोळ' (रू.भे)

झख-बंधक-स०पु०यौ० [सं० झषबंधक] मछली पकड़ने का यंत्र विशेष
(अ मा.)

झखाळ—देखो 'झकाळ' (रू भे)

झखी-स०स्त्री—१ देखो 'झख' २ (रू भे)

२ देखो 'झकी' (रू भे)

झखोरणौ, झखोरवौ-क्रि०स०—१ देखो 'झकझोरणौ, झकझोरवौ'
(रू भे)

२ देखो 'झकोळणौ, झकोळवौ' (रू भे)

झखोरियोडो-भू०का०कृ०—१ देखो 'झकझोरियोडो' (रू भे)

२ देखो 'झकझोळियोडो' (रू भे)

(स्त्री० झखोरियोडी)

झगडणौ, झगड़वौ-क्रि०अ० [सं० झकट] १ झगडा करना, लडाई करना २ विवाद करना, तकरार करना।

झगडणहार, हारौ (हारी), झगड़णियौ—वि०।

झगड़ाडणौ, झगडाडवौ, झगडाणौ, झगडावौ, झगडावणौ, झगडाववौ
—प्रे०रू०।

झगडिओडो झगडियोड़ो, झगडयोडो—भू०का०कृ०।

झगडीजणौ, झगडीजवौ—भाव वा०।

झागडणौ, झागडवौ—रू०भे०।

झगडालू-वि० [सं० झकट+आलुच्] झगडा-टटा करने वाला, लडाई करने वाला, कलहप्रिय।

झगडियोड़ो-भू०का०कृ०—१ झगडा किया हुआ, लडाई किया हुआ। २ विवाद किया हुआ, तकरार किया हुआ।

(स्त्री० झगडियोडी)

झगडी, झगड़ैल—देखो 'झगडालू' (रू भे)

झगड़ो-स०पु० [सं० झकट] १ दो व्यक्तियो का परस्पर आवेशपूर्ण वाद-विवाद, लडाई, टटा २ युद्ध (डिं को)

उ०—१ प्रथम 'अभैपति' पूछियो, भूप कणैठी आत। अब झगडो कीजै किसू, वखतसिंघ वडगात।—सू प्र.

उ०—२ मायली तोपा तौ छूटै आडावळो धूजै ओ, आउवा रा साथ तौ सुगाळी पूजै ओ, झगडो आदरियो। हां ओ झगडो आदरियो, आउवो झगडा नै बाको ओ'क झगडो आदरियो।—लो गी

झडकाणो, झडकावौ—देखो 'झडकणो, झड़कवौ' १,२ (रू भे)
उ०—भीठकिया भरणाय, घरोरी उँवार घालै। तीजै दिन झडकाय, लादडी भर ले हालै।—दसदेव

झडकायोडौ—देखो 'झडकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० झडकायोडी)

झडकावणो, झडकाववौ—देखो 'झडकणो, झडकवौ' (रू भे.)

झडकावियोडौ—देखो 'झडकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० झडकावियोडी)

झडकियोडौ—भू०का०कृ०—१ झटका देकर अलग किया हुआ। २ डाटा हुआ, फटकारा हुआ।

झडकायोडौ—देखो 'झडकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० झडकायोडी)

झडकावणो, झडकाववौ—देखो 'झडकणो, झडकवौ' (रू.भे)

झडकावियोडौ—देखो 'झडकियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री० झडकावियोडी)

झडकियोडौ—भू०का०कृ०—१ झटका देकर अलग किया हुआ. २ डांटा हुआ, फटकारा हुआ।
(स्त्री० झडकियोडी)

झडक्कणो, झडक्कवौ—देखो 'झडकणो, झडकवौ' (रू भे.)
उ०—देखता ग्रेहवो जग घडक्कै आगरो दिल्ली, ववी जैत माग रा रडक्कै वारवार। झडक्कै खाग रा बाढ़ भडक्कै कायरा झुड, हमल्ला नाग रा माथा रडक्कै हजार।—सूरजमल मीसण

झडक्कियोडौ—देखो 'झडकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० झडक्कियोडी)

झडक्को—स०पु०—१ प्रहार। उ०—झडक्का खणकै वाजै सेल रा घमोडा भाट, रडक्का गुरजा गाजै घमोडा रढत। आवधा वैरिया वाळा माथा रा चटक्का उडै, वटक्का 'चैन' रा काच सीसी ज्यू वढत।
—सूरजमल मीसण

२ प्रहार की ध्वनि।

झडज्झड—स०स्त्री०—शस्त्रो का प्रहार या प्रहार की ध्वनि।
उ०—१ मुडै 'उग्रसेण' नणो 'फतमाल'। लुहा खळकट करै गज 'लाल'। घिखै भभकै रण क्रोध धियाग। खडक्खड ढाल झडज्झड खाग।
—सू प्र

उ०—२ अवज्झड त्रिज्झड भडु असध, कटै कर कोपर काळिज कध। भडा धड भजि हुअै विवि भग्ग, खडक्खड ढल्ल झडज्झड़ खग्ग।
-वचनिका

रू०भे०—'झडझ्झड' (रू भे)

झड-झाकड, झड-झांकळ, झड-झाको—स०पु०यौ०—छोटी २ बूदो की निरतर होने वाली वर्षा, हलकी वर्षा। उ०—जाळ जागडो-रूख, सघन गायडमल गाढ़ो। वीन सरेसा वडो, खजूरा खिरसो डाढ़ो। खर खोदरिया माय, गोहिरा साप गजब रा। झड़ झांखड़ जड जाय, उरणिया वडै अजव रा।—दसदेव

झडझ्झड—देखो 'झडज्झड' (रू भे.)

झडडाट—स०स्त्री०—१ शस्त्र-प्रहार की ध्वनि विशेष. २ ध्वनि विशेष।

झडणो, झडबो—क्रि०अ०—१ अपने स्थान से अलग होना, टूट कर अलग होना, गिरना। उ०—१ जठै जादवराय रा सत्रनी, आता जादव देव रा मिवाण करि चाळुक्यराज रा गज रो सुडाडड वाहिय देस सू विछूटि झड़ियो।—व भा
उ०—२ झड़ती आभै बीज, कट ठती भेल कवण। कुण अइ टहर मकीज, चडता रीज 'प्रताप' चरा।—जैतदान बारहठ
उ०—३ वीजळि दुति दउ भांतिए वरिखा, झालरिए लागा झडण। छगे आकास एम ओछायो, घण आयो किरि वरण घण।—वेलि.
उ०—४ हर पढियो हित सू निज हाथा, जड़ियो गढ़ जोपाणं। भळभळाट करतो नग झड़ियो, पडियो लख पयाणं।—ऊ का
२ किसी वस्तु से उसके छोटे-छोटे अशो का टूट-टूट कर गिरना, कण या बूद के रूप मे गिरना। उ०—१ हुवै निहाव पाव भड हाका। आगि झडै पडता ऐराका। किलम हजार पाच अनि कटिया। अली-हुसेन तणा आछटिया।—सू प्र.
उ०—२ अग मे आय निस दिन अडै, झडै नहीं मळ झाडियो। जगदीस पाक कीनो जिको, विलळा नाक विगाडियो।—ऊ का.
३ ढह पडना, गिरना। उ०—अेहा वयण दाखवै 'ईसर', मामी वस तणा कुळ मोड। झड़सी महला तणा झरोखा, रहसी गीत कहै राठौड।—ईसरदास राठौड
४ टपकना। उ०—नाग रा झाग पीवै निलज, झाक आग चख मे झडै। अगरेज मुलक दावण अडै ऐं जुगा सू आथडै।—ऊ का
५ प्रहार होना, वार होना। उ०—१ सिंह रो वार होता ही इण रा कुभी र कळावै चामुडराज रो चद्रहास झड़ियो।—व भा
उ०—२ पातल री वग ऊपडी, अजड झडी मझ आट। वडो वडो वध वीर री, घडो वीर रग घाट।—किसोरदान बारहठ
उ०—३ अर इण ऊपरै घणी तरवारिया रो गज वोह झडै छै।
—प्रतापसिंह म्होकमसिंघ री वात
६ टूटना। उ०—म्होकमसिंघ गढ़ देखता ही उड पडसी। अर इण रै माथै घणी अमामी सीरोहिया रो फूलधारा रो वाढ झडसी।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
७ कट कर गिरना, कटना। उ०—१ अर दो ही वीरा आप आप रो स्वामी धरम ऊजळो दिखायो। दो ही सामता रा सस्त्रा रा सपाता सो दो ही तुरगा रा सीस झडिया।—व भा
उ० —२ प्रतापसिंघ तो साहणसिंगार रै सीस चद्रहास रो प्रहार कियो, तिणसू दो ही दता समेत सुडादड झड़ि पडियो।—व भा
उ०—३ मडियो महाजुध मेडतै, रिण अरिया दे रेस। तन झडियो तरवारिया, मुडियो नही 'महेस'।—महेसदास कूपावत रो दूहो
उ०—४ भिलम टोप सूधो सिर झडियो। पटझरहूँ चूडामणि पड़ियो।

झडफडणो, झडफडबो—१ रोग विशेष के कारण निर्बल होना ।
२ देखो 'झडफडाणो, झडफडावो' ४ (रू भे.)
झडफडाणो, झडफडावो—क्रि०स०अ०—१ पीटना २ कष्ट देना, तकलीफ देना ३ छीनना, लूटना ४ पक्षियो द्वारा परो का फडफडाना । उ०—केहक गिरेवाज कबूतर री नाईं गिरह खाता नै पळचर पखिया ज्यू झडफडाता सफीला सू धरती पडता पहली दोय-दोय तीन-तीन कटारिया लगावै छै ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
रू०भे०—झडफडणो, झडफडबो ।
झडफडायोडो—भू०का०कृ०—१ पीटा हुआ. २ कष्ट दिया हुआ, तकलीफ दिया हुआ ३ छीना हुआ, लूटा हुआ.
४ (परो को) फडफडाया हुआ ।
(स्त्री० झडफडायोडी)
झडफडियोडो—भू०का०कृ०—१ रोग विशेप के कारण निर्बल हुवा हुआ।
२ देखो 'झडफडायोडो' ४ (रू.भे)
झडफणो, झडफबो—देखो 'झडपणो, झडपबो' (रू भे)
उ०—१ कोतिल्ल वह केकांण, पांडवा दोरिय पाण । झळहळत साज भळूस, झड़फिया 'पेमें' झळूस ।—सू प्र
उ०—२ लोह डाच घरि लीण, मळे हायळ दुसमाला । फिरग साज झडफियो, पॅडव छोडिया अपाळा ।—सू प्र
उ०—३ 'हामावत' एको हारवसी, दळ-अर दाख दहण खग दाहि । कुजर कोड मिळे जो कारी, सीह झडफतो सकै न साहि ।
—नैणसी
झडफियोडो—देखो 'झडपियोडो' (रू भे.)
(स्त्री० झडफियोडी)
झडपफणो, झड़पफबो—देखो 'झडपणो, झडपबो' (रू भे.)
उ०—सडपफे बीजूजळा हास मोहा बडपफै सूर, सीसहार झडपफै पडवसै नथी सभ । ग्रीधणी हुडपफै पळा सामळी हुडपफै गूद, रु ड केई अडपफै पडपफै वरा रभ ।—बद्रीदान खिडियो
झडपिफयोडो—देखो 'झडपियोडो' (रू.भे)
(स्त्री० 'झडपिफयोडी')
झडवाण—देखो 'झडवाण' (रू भे)
उ०—कोट तोप कमधजा, जिके लोपै जमराणा । कोट लोप रहकळा वोह लोपै झडवांणा ।—सू प्र.
झडवेरी—देखो 'झाडवोरडी' (रू भे)
झडवोर—देखो 'झाडवोर' (रू भे)
झडमुगट—स०पु०—खुडद साणोर गीत के अन्तर्गत उसके आदि और अत मे यमकालकार होने से बनने वाला छद विशेप ।
रू०भे०—झडमुगट ।
झड़लपत, झडलुपत—स०पु०—डिगल का एक गीत (छद) विशेष जो पालवणी गीत का एक भेद होता है । इसके प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ पदो के तुकांत मिलाये जाते है । इसे नेत्रपालवणी भी कहते हैं ।
रू०भे०—झडलपत, झडलुपत ।
झडलो—देखो 'झडूलो' (रू भे)
उ०—विचलै वीरै के गोद झडला री जात, वारी घण वारी ओ हजा, गठजोडै से ओ जात उपारसी जी, म्हारा राज ।—लो गी
झडवाण—स०स्त्री०—एक प्रकार की तोप ।
उ०—कुहक वाण झडवांण भयकर । ओसर इद्र जाणि व्रज ऊपर ।
—सू प्र
रू०भे०—झड-वाण ।
झडवांणी—स०स्त्री० [रा०झड+स० पानीय] वर्षा की झडी ।
झडवायो—वि०—वर्षा सम्बन्धी ।
झडहुडणो, झडहुडबो—देखो 'झडणो, झडबो' (रू भे)
उ०—१ आग झडहुडै डूडै रमै रण आगणै, नाग फण नमै करै ससत्र नागा । कठा लग कवादी व्यूह रचना करै, लठावन तणा भड लडण लागा ।—कविराजा वाकीदास
उ०—२ जिण दिट्ठइ आणदु चडइ अइ रहसु चउग्गुणु । जिण दिट्ठइ झडहडइ पाउ तणु निम्मल हुइ पुणु ।—ऐ जै का स.
झडहुडियोडो—देखो 'झडियोडो' (रू भे.)
(स्त्री० झडहुडियोडी)
झडाको—स०पु०—१ तिरछी चितवन, कटाक्ष ।
उ०—पायल रै ठमकै सू, घूघरै रै घमकै सू, विछिया रै छमकै सू रमझोळ करती, अगूठा मोडती, नखरा करती वाजारि चाली जाय छै । निजरा रा झड़ाका लागा थका जुवाना छयल्ला रा मन गरेदवाज करै छै ।—रा सा स
२ मुठभेड, लडाई, झडप ।
झडाझड—क्रि०वि० (अनु०) लगातार, विना रुके । उ०—पासै सर आवता पालै, भळकते निज भालै । नयणे निपट निजीक निहाळै, घाव झडाझड घालै ।—वि कु
झड़ाझडी—स०स्त्री०—झडने या झरने की क्रिया या भाव ।
क्रि०वि०—लगातार, विना रुके ।
झडापड, झडापडि, झडाफड, झडाफडि—स०स्त्री० (अनु०) १ पक्षियो द्वारा उनके परो से की जाने वाली आवाज, फडफडाहट या फडफडाने की क्रिया । उ०—१ हाका वीर कळह पुन हडहड । रिण चामड घण घेर रची । पळचर नहराळा पखाळा । माचि झडापडि झाट मची ।—दूदो
उ०—२ हडोई ऊपर चीलका कागला झडाफड करनै रह्या छै । तिका कागला नू मलूकजादा कुवर गिलोला री चोटा कर रह्या छै ।
—रा सा.स
२ छीना-झपटी ३ फिसाद, टटा ।
झडाळ—देखो 'झडी' (मह रू भे)
उ०—उजेणि अकाळ झडाळ अछेह, मडै घण जांणि कि वारह मेह ।
—वचनिका

झझकावणौ, झझकावबौ—देखो 'झिझकाणौ, झिझकावौ' (रू.भे)
झझकावणहार, हारौ (हारी), झझकावणियौ—वि०
झझकाविप्रोडौ, झझकावियोडौ, झझकावयोडौ—भू०का०कृ०
झझकावीजणौ, झझकावीजबौ—कर्म वा०

झझकावीयोड़ौ—देखो 'झडकायोडौ' (रू भे.)
(स्त्री० झझकावियोडी)

झझकियोडौ—देखो 'झिझकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० झझकियोडी)

झझक्कणौ, झझक्कबौ—देखो 'झिझकणौ, झिझकबौ' (रू भे)
उ०—झझक्कत वारग फेर झुकत । हुवै इम चूक मुनेस हसत ।
—सू.प्र
झझक्कणहार हारौ (हारी), झझक्कणियौ—वि० ।
झझक्किप्रोडौ, झझक्कियोडौ, झझक्कयोडौ—भू०का०कृ० ।
झझक्कीजणौ, झझक्कीजबौ—कर्म वा० ।

झझक्कियोडौ—देखो 'झिझकियोडौ' (रू.भे)
(स्त्री० झझक्कियोडी)

झझखणौ, झझखबौ—देखो 'झिझकणौ, झिझकबौ' (रू.भे.)
उ०—हू थानै हस हस पूछा बात हगामी ढोला रे, भवरियौ छैलौ म्हारे झझखेह घणौ हो राज ।—लो.गी

झझखियोडौ—देखो 'झिझकियोडौ' (रू.भे)
(स्त्री० झझखियोड़ी)

झझणण-स०स्त्री० (अनु०) १ वीणा वाद्य की ध्वनि ।
उ०—मपधुनि-मपधुनि झझणण वीण । निनिखुणि ज्यूँखणि आउज लीण ।—विद्याविलास पवाडउ
२ झनझन शब्द, झनकार ।

झझारौ-स०पु०—आभूषणो पर खुदाई के कार्य के अन्तर्गत फव्वारे डालने का एक ओजार (स्वर्णकार)

झझियौ, झझौ-स०पु०—१ वणमाला का 'झ' अक्षर ।
उ०—हहौ करै हितहाण, झझौ तन व्याघ जगाव । —र रू
अल्पा०—झझियौ

झट-क्रि०वि० [स० झटिति] १ उसी समय, तत्काल, तत्क्षण, फौरन, तुरन्त । उ०—हर अकरण करण सरण असरण हरी, तरण अतर भव जळधि तिको । कट कट अघ दुघट विकट्ट थट अणघट, झट झट रट रट 'किसन' जिको । —र ज प्र
मुहा०—झट से—शीघ्रतापूर्वक, जल्दी से ।
यौ०—झटपट ।
स०स्त्री०—१ देखो 'झाट' (रू भे)
उ०—१ असुरा थट 'देव' क्रनोत अडै । लोहडा झट 'सूरिजमाल' लडै । 'अणदेस' सुजाव लडै उरडै । जवना 'सगतेस' छडाळ जडै ।
—सू प्र.
उ०—२ घणा खळ पाडि पडै घमसाण । वरै विहुवै रभ वैसि विमाण । पिता जिम खाग झटा अत पाय । किया सुगि वास सुजस्स कहाय ।—सू.प्र
२ वेग (अ मा.)
रू०भे०—झटत, झटति, झटती, झट्ट ।

झटक-स०स्त्री०—झटका देने की क्रिया, झटकने की क्रिया या भाव ।
उ०—हाथ झटक झिझिकार हस, नाथ न लेऊ नाम जी । भव भाड इसै भरतार सू, राड भली ओ रामजी ।—ऊ का.
क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी, तुरन्त, तत्क्षण, तत्काल ।
उ०—१ वहती सीत भाळिया वादर झटक उतार राळिया झाझर । कहियो एह सदेसो कीजो, दीजो रे प्रभु नू सुद दीजो ।—र रू
उ०—२ डूगर-केरा वाहळा, ओछा-केरा नेह । वहता वहइ उतावळा, झटक दिखावइ छेह ।—ढो मो.

झटकइ, झटकई—देखो 'झटकै' (रू भे.) उ०—मूरख मरण न अगमइ, उत्तरतइ नीर । पाणी पाखिइ माछिळी, झटकइ तजइ सरीर ।
—मा.का प्र

झटकणौ, झटकबौ-क्रि०स०—१ झटका देकर अलग करना
२ गिराना । उ०—सटक भूखण झटक भूवा, दिया तन का डार । चालो सखी नद के दरवार, जोवा सखी स्याम राज कवार ।
—समानबाई
३ किसी चीज को पकड कर इस प्रकार हिलाना कि उससे लगी या सटी अन्य कोई वस्तु छूट कर अलग हो जाय ४ झटका देना ५ चालाकी या जबरदस्ती से किसी चीज को लेना ६ झाडना, बुहारना ७ फटकारना, घुडकना ८ मन्त्रादि से भूत प्रेत का प्रभाव हटाना ।
क्रि०अ०—९ किसी रोग आदि के कारण कृश हो जाना, दुर्बल हो जाना १० इधर-उधर हिलना, लुढकना, डावाडोल होना ।
उ०—झणकै झालरियौ झूमरिया झटकै । लूमी भीगा री खूणी तळ लटकै ।—ऊ.का
झटकणहार, हारौ (हारी), झटकणियौ—वि० ।
झटकवाडणौ, झटकवाडबौ, झटकवाणौ, झटकवाबौ, झटकवावणौ, झटकवाववौ, झटकाडणौ, झटकाडबौ, झटकाणौ, झटकाबौ, झटकावणौ, झटकाववौ—प्रे०रू० ।
झटकिप्रोडौ, झटकियोड़ौ, झटकयोडौ—भू०का०कृ० ।
झटकीजणौ, झटकीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।
झाटकणौ, झाटकबौ—रू०भे० ।

झटकारणौ, झटकारबौ—देखो 'झटकणौ, झटकबौ' (रू.भे)
उ०—सगळा रूख उपाड कर, घरती झटकारचा ।—केसोदास गाडण

झटकारियोडौ—देखो 'झटकियोडौ' (रू.भे.)
(स्त्री०—झटकारियोडी)

झटकियोडौ-भू०का०कृ०—१ झटका देकर अलग किया हुआ.
२ गिराया हुआ ३ झकझोर कर अलग किया हुआ. ४ झटका

झटाझड़ी—देखो 'झाटझड़ी' (रू भे)
झटाझट–स०पु०—१ शस्त्रों के टकराने का शब्द।
उ०—केई आगै नीसरै छै। तरवारिया री झटाझट लाग रही छै।
—डाढाळा सूर री वात
देखो 'झटपट'।
झटायत–वि०—योद्धा, वीर। उ०—तालडा उलट मेवासिया लटायत, छटायत नाहरा भडा छोगै। रमै खग झटायत तो जही 'हमीरा', भला जे पटायत पटा भोगै।
—रावत हमीरसिंह चूडावत (भदसेर) री गीत
झटारौ–स०पु०—प्रहार, चोट।
झटित—देखो 'जटित' (रू भे)
उ०—त्रिय कोटि कोटि इम सरजु तीर। नग झटित भरत घट हेम नीर।—सू प्र
झटैल–क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी।
झटोझट—देखो 'झटपट'
उ०—झटोझट झाल भुज ईस डमरू जठै, बीसहत हाल सग बीर बाधा। अडै भुजडड भड सीस आदोफरा, मिळै दळ सबळ कण सीस 'माधा'।—मेघराज आढो
झट्ट—देखो १ 'झाट' (रू.भे)
उ०—तारुणी सऊजळ सेददत, वाणी सुवाणि नइ लाजवत। सोहिली भोमि वाका सुभट्ट, झूझार दियइ करिमाळ झट्ट।—रा ज.सी.
उ०—२ रिण आगै राजान रै, खग वाहतौ विकट्ट। कवि 'किसनौ' लड केविया, झड पडियौ खग झट्ट।—रा रू
देखो २ 'झट' (रू भे)
झटाक, झठाक–क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी, तत्क्षण, तुरन्त, तत्काल।
ज्यू—झटाक देती री वौ उठै आय उभौ रह्यौ जणै सगळा डर गया।
झठाळी–वि०—१ भयकर। उ०—झठाळी मगळा झळा सरखी जका, कवर गुर पळा भकती दळा काढ। ऊग्रर दावी अुगल परा जाय ऊकसी, वहर चुनाळजौ काळजौ वाढ।—प्रतापसिंघ ऊदावत री गीत
२ जलाने वाली।
झडउलट—देखो 'झडउलट' (रू.भे.)
झडमुगट—देखो 'झडमुगट' (रू भे)
झडलपत, झडलुपत—देखो 'झडलपत, झडलुपत' (रू भे.)
झडलौ—देखो 'झडूलौ' (रू भे.)
झडुयळ, झडूयळ—देखो 'झडुथळ, झडूथळ' (रू भे)
झडूलौ—देखो 'झडूलौ' (रू भे)
झडोथळ—देखो 'झडोथळ' (रू भे.)
झडोलौ—देखो 'झडोलौ' (रू.भे)
झणक—देखो 'झणक' (रू.भे.)
उ०—झणक नूपुरास झीण, ओप तास एहडा। वदत तोतलीस वाणि, जाणि पुत्र जेहडा।—सू प्र.

झणकणौ, झणकबौ—देखो 'झणकणौ, झणकबौ' (रू भे)
उ०—'कूभा' हरै लडै खळ कीधा, मेतळवै नह तास मुणै। पवन झणकै सब रस परसै, सम्रा सगहस नाम सुणै।—उडणा प्रथीराज री गीत
झणकियोडौ—देखो 'झणकियोडौ' (रू भे)
झणका, झणकार–स०स्त्री०—१ वीणा. २ देखो 'झकार' (रू भे)
उ०—मुख (ख) मडळ जोति सोभा विमोह, सुधासागर पूरण चद सोह। फवै स्वासक (का) वासना कज फूलै, झणकार मत्तगण भ्र ग भूलै।—बगसीराम प्रोहित री वात
झणकौ, झण–स०पु० (अनु०) १ वह शब्द जो धातु खण्ड के टकराने से उत्पन्न हो. २ झनझन की ध्वनि झकार।
३ वीणा का बोल। दो दो दो दप मप द्राग्डिडिक दमके म्रिदग। झण रण रण झें झे झाझरि झमकित झग।—ध व ग्र
अल्पा०—झणकौ, झणकौ, झणक्कौ।
झणउ—देखो 'उभणौ' (रू.भे)
उ०—वीजइ दिनि ते छानउ रहिउ, कुमरि हलाणउ किणि नवि लहिउ। एक लाख नउ छइ तु (?उ) झणउ, ते मडाविउ कुमरी-तणउ—ढो.मा
झणक–स०स्त्री० (अनु०) १ धातु आदि के परस्पर टकराने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि, झन झन का शब्द। ज्यू—जुद भूमि मे सस्त्रा री झणक उड रही ही।
२ झकार, मधुर ध्वनि। उ०—१ करधणिया री झणक सांझ नित नाच करता। थाकी कवळी वाह रतन-जुत चवर ढुळता। नरतकिया नख पाय मेह री पहली बूदा। लावा भँवर कटाछ नाखतो प्रीत पिलूवा।—मेघ.
उ०—२ सह राचै जन सादिया, मत बहरौ कर मान। कीडी पग नेवर झणक, भणक सुणै भगवान।—र ज प्र.
उ०—३ रग पायलडी रणक, मिळी झणक मजीर। चगा चसमा री चमक, सावण झमक सरीर।—अज्ञात
मुहा०—झणक होणौ—पूर्ण स्वस्थ होना।
३ झींगुर, झिल्ली आदि छोटे जानवरो की ध्वनि।
रू०भे०—झणक, झणक्क, झणणक, झनक झनक, झननक।
झणकण–स०पु०—एक प्रकार का घोडा (शा.हो)
झणकणौ, झणकबौ–क्रि०अ० (अनु०) १ झनकार का शब्द होना, ध्वनि निकलना। उ०—१ खणकत धार झणकत खाग, रणकत मुड दुलड कराग। भिडै भुज 'चप' हरा अणभग, सम्रा निरलग भुजा घड सग।—रा रू
उ०—२ दिनडौ ढळता देख, सोग मे झालर झणकै। ओवड रगतौ चरगाहे, टेढौ सो ढुळकै।—सक्तिदान कवियौ
२ झींगुर, झिल्लियो आदि छोटे जानवरो का बोलना, ध्वनि करना।
उ०—मोरिया महकसी, डेडरा डहकसी, झिलीगन झणकसी, भमरा भणकसी।—दरजी मयाराम री वात

झणझणाडियोडो—देखो 'झकारियोडो' (रू भे.)
(स्त्री० झणझणाडियोडी)
झणझणा'ट— देखो 'झणझणाहट' (रू भे)
झणझणाणो, झणझणावो—देखो 'झकारणो, झकारवो' (रू भे)
झणझणाणहार, हारो (हारी), झणझणाणियो—वि०।
झणझणायोडो—भू०का०कृ०।
झणझणाईजणो, झणझणाईजवो—भाव वा०, कर्म वा०।
झणझणायोडो—देखो 'झकारियोडो' (रू.भे)
(स्त्री० झणझणायोडी)
झणझणावणो, झणझणावबो—देखो 'झकारणो, झकारवो' (रू भे.)
झणझणावणहार, हारो (हारी), झणझणावणियो—वि०।
झणझणाविग्रोडो, झणझणावियोडो, झणझणाव्योडो—भू०का०कृ०
झणझणावीजणो, झणझणावीजवो।—भाव वा०, कर्म वा०।
झणझणावियोडो—देखो 'झंकारियोडो' (रू भे.)
(स्त्री० झणझणावियोडी)
झणझणाहट-स०स्त्री० (अनु०) १ झन झन शब्द होने की क्रिया या भाव, झकार, झनझन।
२ देखो 'झरणा'ट (रू भे.)
रू०भे०—झणझणा'ट, झणणाहट।
झणझणो—१ देखो 'झणझण' (रू भे)
२ देखो 'झणझणाहट' (रू भे)
झणझ्झण—देखो 'झणझण' (रू भे.)
उ०—भयकर रूप भुजा जुध भार। हणे खळ भूप भणे बळिहार। खणखण खेटत भेटत खाग, रिखेस्वर वीण झणझ्झण राग।
—मे म.
झणणक—देखो 'झणक' (रू भे)
झणणकणो, झणणकवो—देखो 'झणकणो, झणकवो' (रू भे)
उ०—सणणके खुरसाण खाग धारा खणणके। रणणके रणराग झनम पाखर झणणके।—व.भा
झणणकणहार, हारो (हारी), झणणकणियो—वि०।
झणणकिग्रोडो, झणणकियोडो, झणणक्योडो—भू०का०कृ०।
झणणकीजणो, झणणकीजवो—भाव वा०, कर्म वा०।
झणणकियोडो—देखो 'झणकियोडो' (रू भे)
(स्त्री० झणणकियोडी)
झणण-स०स्त्री० (अनु०) धातु आदि के परस्पर टकराने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि, झनझन शब्द, झकार। उ०—आण पाखर झणण हजारी तडछिया, रोळ भुज वडछिया रचण राडा। कर मछर धाडवी लियण विन कडछिया, धडचिया 'चूड' रज भुजा वाडा।
—रावत हमीरसिंह चूडावत (भदेसर) री गीत
झणणा'ट, झणणाहट—देखो 'झणझणाहट' (रू भे)।
उ०—१ झणणाट नाद नूपर झमर, सुर वाजत्र संतोसमों। रभ हूर रथा ढकियो अरक, मडि ग्रहमड वावीसमों।—सू प्र.
उ०—२ खणणाहट पाखरा, नाद झणणाहट नेवर। पट जेवर पहराय, क्रिया सिणगार कलेवर।—मे म
उ०—३ धर अवर श्रम धोम, घटा डवर रज घुम्मट। हाक वीर है हीस, भूल नेवर झणणाहट।—सू.प्र
झणहण—देखो 'झणझण' (रू.भे) उ०—देवतू के मन भूलते डोलते हैं। अदगू के परत धौलकू के टिकोर। सुरवीणू के झणहण तवरू के घोर।—सू प्र.
झणाट, झणाहट, झण्णाट, झण्णाहट—देखो 'झरणा'ट' (रू भे)
झण्णाटो—देखो 'झरणाट' (अल्पा, रू भे)
झनक, झनक—देखो 'झणक' (रू भे)
झनकार—देखो 'झकार' (रू भे)
झननक—देखो 'झणक' (रू भे)
झप-स०स्त्री०—१ (हवा अथवा किसी खराबी के कारण दीपक, लालटेन आदि की) लौ का इधर-उधर झोका खाने की क्रिया।
यौ०—झपझप, झपाझप, झपोझप।
२ देखो 'झव' (रू.भे.)
यौ०—झपझप, झपाझप, झपोझप।
झपक—१ देखो 'झव, झवक' (रू भे) उ०—डील खाघडो दुलड झपक खाघडो भुकावै। दोस खाघडो दिवै रोध खाघडो रुकावै।—ऊ का
यौ०—झपक-झपक।
२ देखो 'झपकी' (रू भे)
झपक-झपक—देखो 'झव-झव'।
झपकणो, झपकवो-क्रि०अ०—१ निद्रित होना, नींद लेना, झपकी लेना, ऊघना. २ पलकों का परस्पर मिलना, पलक गिरना ३ शरमिंदा होना, झेंपना ४ अचानक हमला करना, झपटना ५ चौंकना ६ डरना, सहम जाना।
झपकाणो, झपकावो-क्रि०स०—पलको को वार-वार वन्द करना, वार-वार पलकें गिराना।
झपकायोडो-भू०का०कृ०—वार वार पलको को वन्द किया हुआ, पलकें गिराया हुआ।
(स्त्री०—झपकायोडी)
झपकियोडो-भू०का०कृ०—१ निद्रित हुवा हुआ, ऊँघा हुवा २ पलकें गिराया हुआ, पलकें मिलाया हुआ ३ शरमिंदा हुवा हुआ, झेंपा हुआ ४ अचानक हमला किया हुआ, झपटा हुआ. ४ चौंका हुआ ६ डरा हुआ, सहमा हुआ।
(स्त्री० झपकियोडी)
झपकी-स०स्त्री०—१ हलकी निद्रा, ऊँघ। उ०—रात रा सरणाटा मे जिण वेळा सगळी दुनिया सुख री नींद मे मीठी मीठी झपकिया लेवै उण वेळा इण मकान मे रोवण री आवाजा आवै।—रातवासो
क्रि०प्र०—आणी, लेणी।
२ पलको के परस्पर मिलने की क्रिया, आख झपकने की क्रिया।

झपटाविम्रोडी, झपटावियोडी, झपटाव्योड़ी—भू०का०कृ० ।
झपटावीजणी, झपटावीजबी—कर्म वा० ।

झपटावियोडी—देखो 'झपटायोडी' (रू भे)
(स्त्री० झपटावियोडी)

झपटियोडी–भू०का०कृ०—१ झोंके के साथ किसी ओर वेग से बढा हुआ. २ आक्रमण किया हुआ, हमला किया हुआ ३ द्रुत गति से भागा हुआ ४ लडा हुआ, झगडा हुआ. ५ पकडा हुआ. ६ छीना हुआ ७ बीच मे ही पकडा हुआ, गिरने से पहले ही पकडा हुआ । ८ हवा किया हुआ ९ आघात पहुँचाया हुआ, टक्कर मारा हुआ. १० द्रुत गति से भगाया हुआ, दौडाया हुआ. ११ सहार किया हुआ, मारा हुआ, काटा हुआ. १२ प्रहार किया हुआ, चोट लगाया हुआ ।

झपटी—देखो 'झपट' (रू भे)
उ०—कुत्ते झपटी मारी। अेक छोरी डर'र चीख मारी। सरीर झोब-झोब हुयग्यौ ।—वरसगाठ

झपटैत–वि०—१ झपटने वाला २ आक्रमण करने वाला, हमला करने वाला ३ प्रहार करने वाला, चोट मारने वाला ४ खरोच लगाने वाला ५ छीनने वाला ६ टक्कर मारने वाला, आघात पहुँचाने वाला ७ चँवर डुलाने वाला ८ हवा करने वाला ९ परस्पर लडाई कराने वाला, मुठभेड कराने वाला १० विवाद या तकरार कराने वाला. ११ तेज चलने वाला, भागने वाला १२ पकडने वाला १३ गिरती हुई वस्तु को बीच मे ही झपटने वाला १४ सहार करने वाला, मारने वाला ।
रू०भे०—झपरैत ।

झपटौ–स०पु०—१ प्रहार, चोट, टक्कर ।
क्रि०प्र०—दैणौ ।
२ आक्रमण, हमला ३ किसी कपडे, पखे या अन्य वस्तु से हवा का झोका देने की क्रिया या भाव ।
क्रि०प्र०—करणौ, दैणौ ।
४ छीनने की क्रिया या भाव ५ चपेट ।
रू०भे०—झपाटौ, झपेटौ ।

झपट्ट—देखो 'झपट' (रू भे)
उ०—उलट्ट ए पलट्ट यौं, झपट्ट तै सझावत। समीर ना मिळे सकै, इतेस फेर आँवत।—सू प्र.

झपट्टणौ, झपट्टबौ—देखो 'झपटणौ, झपटबौ' (रू.भे)
उ०—१ जाणं पछी झपट्टण वाज चढ्यौ, जाणं वीज कडक्कत गाज चढ्यौ ।—चेत मानखा
उ०—२ प्रलय काळ रिए मेघ प्रगट्टै, इत तळ थळ उदवट्टै। झळहळ वीजळ खडग झपट्टै, छट्टा वाण ग्राछट्टइ हो ।—वि कु
झपट्टणहार, हारौ (हारी), झपट्टणियौ—वि० ।
झपट्टिम्रोडी, झपट्टियोडी, झपट्टयोडी—भू०का०कृ० ।
झपट्टीजणौ, झपट्टीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

झपट्टियोडी—देखो 'झपटियोडी' (रू.भे.)
(स्त्री० झपट्टियोडी)

झपणौ, झपबौ—देखो 'झपणौ, झपबौ' (रू भे)
उ०—जगाणी उरसा सेज मयक, समदर हिवडै लहरा हार। अरकवी आख झपं आथूण, ऊतरै वादळिया सिणगार।—साझ
झपणहार, हारौ (हारी), झपणियौ—वि० ।
झपवाडणौ, झपवाडबौ, झपवाणौ, झपवावौ, झपवावणौ, झपवावबौ—प्रे०रू० ।
झपाडणौ, झपाडबौ, झपाणौ, झपावौ, झपावणौ, झपावबौ—क्रि०स०।
झपिम्रोडी, झपियोडी, झप्योडी—भू०का०कृ० ।
झपीजणौ, झपीजबौ—भाव वा० ।

झपताळ—देखो 'झपताळ' (रू भे) (सगीत) (ह पु वा)

झपरैत—देखो 'झपटैत' (रू भे.)

झपा–स०स्त्री०—टहनी ।

झपाण, झपांन-स०स्त्री०—एक प्रकार की पहाडी सवारी जिसे आदमी उठा कर चलते हैं ।
उ०—राजा उमराव सरब झपाण मे बैसे।—बा दा ख्यात
रू०भे०—झप्पान ।

झपानी–स०पु०—'झपान' सवारी को उठाने वाला आदमी या कहार ।
रू०भे०—झप्पानी ।

झपाक, झपाकौ–क्रि०वि०—शीघ्रतापूर्वक, जल्दी से ।
स०पु०—जल्दी, शीघ्रता ।

झपाझप—देखो 'झबझब' (रू भे)

झपाटौ—देखो 'झपटौ' (रू भे.)

झपाडणौ, झपाडबौ—देखो 'झपाणौ, झपावौ' (रू भे)
झपाडणहार, हारौ (हारी), झपाडणियौ—वि० ।
झपाडिम्रोडी, झपाडियोडी, झपाड्योडी—भू०का०कृ० ।
झपाडीजणौ, झपाडीजबौ—कर्म वा० ।

झपाडियोडी—देखो 'झपायोडी' (रू भे.)
(स्त्री० झपाडियोडी)

झपाणौ, झपावौ—देखो 'झपाणौ, झपावौ' (रू भे)
झपाणहार, हारौ (हारी), झपाणियौ—वि० ।
झपायोडी—भू०का०कृ० ।
झपाईजणौ, झपाईजबौ—कर्म वा० ।

झपायोडी—देखो 'झपायोडी' (रू.भे)
(स्त्री० झपायोडी)

झपावणौ, झपावबौ—देखो 'झपाणौ, झपावौ' (रू भे)
झपावणहार, हारौ (हारी), झपावणियौ—वि० ।

झवकावीजणौ, झवकावीजबौ—कर्म वा० ।

झवकावियोडौ—देखो 'झवकायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० झवकावियोडी)

झवकारौ—देखो 'झवकौ' (रू.भे) उ०—कवर सखा नू कही इणनू जो दिखावै तौ मन मानियौ इनाम पावै तरै खवास निर्घै कर फेंट पडती जठै ले जाय ऊभा कीया सू रतना पिण झवकारा सूं जाण लीया ।
—र हमीर

झवकियोडौ—भू०का०कृ०—१ चमका हुआ, दमका हुआ २ दृष्टिगोचर हुवा हुआ, झलका हुआ. ३ झिलमिलाया हुआ
४ देखो 'झपकियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री० झवकियोडी)

झवकी—देखो 'झपकी' (रू भे)

झवकौ—स०पु०—एक बारगी ही किसी वस्तु का दृष्टिगोचर हो कर ओझल हो जाने की क्रिया या भाव, अकस्मात या क्षण मात्र के लिये दिखाई देकर ओझल हो जाने की क्रिया या भाव, झाकी ।
उ०—१ साहमा छइ सपराणा मीर, सीगणि थका विछूटइ तीर । ऊघाडा खाडा थरहरइ, बीज तणी परि झवका करइ ।—का दे.प्र.
उ०—२ अध्रुव अनित्य असास्वता रे, उपद्रव लगा है अनेक । वीजळ झवका नी परे रे, जळ-परपोटौ लेख ।—जयवाणी
उ०—३ तद भरमल ख्यात कर दीठो जे झवकौ किणरौ छै ।
—कुवरसी साखला री वारता
२ चमक-दमक ३ प्रकाश, झलक ।
रू०भे०—झवकारौ, झवरकौ, झवळकौ, झवूकु, झवूकौ ।
अल्पा०—झवुककडौ ।

झवक्कणौ, झवक्कबौ—देखो 'झवकणौ, झवकबौ' (रू भे)
उ०—आयौ पावस आज रौ, गयण झवक्कै बीज । विरही मन माहे 'जसा', खिण खिण आवै खीज ।—जसराज

झवक्कियोडौ—देखो 'झवकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० झवक्कियोडी)

झव-झव—स०स्त्री०यौ०—१ किसी अस्थिर या हिलती-डुलती वस्तु के बार-बार दृष्टिगोचर होने की क्रिया या भाव. २ रह-रह कर निकलने वाली आभा, चमक, दमक ।
क्रि०वि०—रह-रह कर निकलने वाली ज्योति के साथ ।
उ०—झव-झव तेजइ झवकत उए जिम रवि जळधर पूठि ।—स कू
रू०भे०—झपक-झपक, झप-झप, झपाझप, झपोझप, झवक-झवक, झवर-झवर, झवाझव, झमझम, झमाझम ।

झवझवणौ, झवझवबौ—देखो 'झवकणौ, झवकबौ' (रू भे)
उ०—१ खीवरा हाथ वाणास खास, वहतीक जाण रोकी वनास । सातरा अती वाराक सेल, तारका झवझवै इणह तेल ।—वि.स
उ०—२ घडा गैघड उरड वाज तोपा घडड, केमरा सोक झड किलम काचा । किलम तड फाडवा वडड ओझड कडा, अणी छड झवझवै प्रगट आचा ।—वखतौखिडियौ

झवझवणहार, हारौ (हारी), झवझवणियौ—वि० ।
झवझविओडौ, झवझवियोडौ, झवझव्योडौ—भू०का०कृ० ।
झवझवीजणौ, झवझवीजबौ—भाव वा० ।

झवझवाहट—स०स्त्री०—१ झिलमिलाहट, टिमटिमाहट
२ चमक-दमक ।

झवझवियोडौ—देखो 'झवकियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री० झवझवियोडी)

झवर—देखो 'झव' (रू भे) उ०—ऊची-ऊची मेडी, झरोखा जी च्यार, झवर-झवर दिवलौ जगं, जी राज ।—लो गी
यौ०—झवर-झवर ।

झवरक—स०स्त्री०—१ झिलमिलाहट, टिमटिमाहट २ चमक ।
वि०—चमकता हुआ, प्रकाशित । उ०—कसतूरी मरदन कियौ, झवरक दीवलै गहरी वाट, सा धन पान सवारिया, जाई वैठी घन प्रीव की खाट ।—बी दे
रू०भे०—झवरख ।

झवरकणौ, झवरकबौ—क्रि०अ०—१ इधर-उधर हिलना, झूमना ।
उ०—ढूढत ढूढत नगरी जी ढूढी कोई, घर तौ वतावौ लाडलै रै बाप रौ । ऊची सी मेडी, लाल किंवाडी, केळ झवरकै लाडलै रै वारणै ।
—लो.गी
२ देखो 'झवकणौ, झवकबौ' (रू भे)
झवरकणहार, हारौ (हारी), झवरकणियौ—वि० ।
झवरकिओडौ, झवरकियोडौ, झवरक्योडौ—भू०का०कृ० ।
झवरकीजणौ, झवरकीजबौ—भाव वा० ।
झवरखणौ, झवरखबौ, झवरणौ झवरबौ, झवूकणौ, झबूकबौ—
—रू०भे० ।

झवरकियोडौ—भू०का०कृ०—१ हिला-डुला हुआ, झूमा हुआ
२ देखो 'झवकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० झवकियोडी)

झवरकौ—स०पु०—१ प्रहार करने पर आर-पार निकलने वाली शस्त्र की नोक ।
क्रि०प्र०—निकळणौ ।
२ देखो 'झवकौ' (रू भे)
रू०भे०—झवरखौ ।

झवरख—देखो 'झवरक' (रू भे)
उ०—पहली तौ पेडी जी ऊमादे राणी पग धरचौ, झवरख दिवलौ हाथ ।—लो गी

झवरखणौ, झवरखबौ—देखो 'झवरकणौ, झवरकबौ' (रू भे)
उ०—१ यो ही छै ओठी, राजाजी रौ महल, केळ झवरखै रे ओठीडा, राजाजी रे वारणै ।—लो गी
उ०—२ कोई किलगी तौ झवरखै राज रै सीस पर, ओ मोरी सइया ।
—लो गी.

झबूकु, पोइणिनिइ पाणी तणउ टबकु, जिस्यु बहुबोला नी जीभ नु लोळ, जिस्यु काग नु डोळो, जिस्यु धज नु अचळ, सिसिउ ससार चचळ, वैराग्य ।—व स

झबोळ–स०पु०—ध्यान व पूजा-पाठ करते समय शरीर को वस्त्र से ढकने की क्रिया । उ०—पीछै झबोळ मार ध्यान कियो सू सरीर माया सू अग्न री झळ नीसर नै सूरज मैं जोत मिळ गई ।—द दा.

झबोळणो, झबोळबो–क्रि०स०—किसी वस्तु को किसी तरल पदार्थ मे झकझोरना, तरबतर करना । उ०—१ तेहना अपार झमाल, रूपा नी कचोळी, देखीइ दही माहि झबोळी ।—व स.

उ०—२ आछी पोळी घी माहि झबोळी, फूकइ मारी फळसइ जाइ, एक वीसनो एक कुलीउ थाइ ।—व स.

झबोळणहार, हारो (हारी), झबोळणियो—वि० ।

झबोळवाडणो, झबोळवाडबो, झबोळवाणो, झबोळवाबो, झबोळवावणो झबोळवावबो, झबोळाडणो, झबोळाड़बो, झबोळाणो, झबोळाबो, झबोळावणो, झबोळावबो—प्रे०रू० ।

झबोळिओडो, झबोळियोडो, झबोळयोडो—भू०का०कृ० ।

झबोळीजणो, झबोळीजबो—कर्म वा० ।

झबलकणो, झबळकबो, झिबळकणो, झिबळकबो, झिबळणो, झिबळबो—रू०भे० ।

झबोळियोडो–भू०का०कृ०—किसी तरल पदार्थ मे झकझोरा हुआ, तर-बतर किया हुआ ।

(स्त्री० झबोळियोडी)

झबोळो–स०पु०—१ बाधा, विघ्न ।

क्रि०प्र०—पडणो ।

२ कोई बडा काम ।

३ देखो 'झबळको' (रू भे)

रू०भे०—झबोळ, झबोळो, झमोळो ।

झबो–स०पु०—१ स्त्रियो के वक्षस्थल को ढकने का एक वस्त्र ।

२ हल द्वारा अनाज बोने के उपकरण मे बास के पोले डडे पर लगा हुआ भाग जो कीप या चिलम के आकार का होता है. ३ बच्चो के पहनने का एक वस्त्र ४ चमक, प्रकाश ।

५ देखो 'झाबो' (रू भे.)

रू०भे०—झब्बो ।

झबोळो—देखो 'झबोळो' (रू भे.)

झब्ब झब्बे–

उ०—देवी वम्मरे डुगरे रत्न वन्ने, देवी थूंबडे लीबड़े थन्न थन्ने । देवी झगरे चाचरे झब झब्बे, देवी अंबरे अतरीखे अलबे ।—देवि

झब्बो–स०पु०—१ गुच्छा । उ०—सीस छबीली छाट, झूमखो मोत्या झब्बो । घडीक घमकै मेघ, घडी दो फोगड फतबो ।—दसदेव

२ देखो 'झबो' (रू भे)

मक—देखो 'झमक' (रू भे.)

उ०—छमक बिच्छवान की दमक ना दरीन की । झमक जेहरान की चमक ना चुरीन की ।—ऊ का

झम्मकणो, झमकबो—देखो 'झमकणो, झमकबो' (रू भे.)

उ०—घमकं जडी पाखरा थाट घोडा, झमकं झडी पाखरां आगि झोडा ।—व भा.

झमकणहार, हारो (हारी), झमकणियो—वि० ।

झमकिओडो, झमकियोडो, झमक्योडो—भू०का०कृ० ।

झमकीजणो, झमकीजबो—भाव वा० ।

झमकियोडो—देखो 'झमकियोडो' (रू भे)

(स्त्री० झमकियोडी)

झम–स०स्त्री० (अनु०) १ घुघरू आदि से उत्पन्न होने वाली ध्वनि ।

यौ०—झमझम ।

२ देखो 'झन' (रू भे)

उ०—झम झम झूमा पागडं, इतनो महर म्हासू कीजो रे आलीजा विछोहो मत दीजो ।—लो गी

झमक–स०स्त्री० (अनु०) १ ध्वनि विशेष, झनकार ।

उ०—१ नागण आठी अरुण नख, कनअक पात कपोळ । ठणणण नूपुर पग ठमक, रमक झमक रमझोळ ।—पा.प्र

उ०—२ ताळू की झमक झझल के झणकार । काम के घुघर जैसे जत्र के तार—सू.प्र.

यौ०—झमक-झमक ।

२ चमक, प्रकाश । उ०—अणवट घडियो मेडतै, जडियो जैसळ-मेर । पैं'र सवागण नीसरी, झमक पडी अजमेर ।—लो गी.

३ नखरे की चाल, ठसक । उ०—रंग पायलडी रणक, मिळी झणक मजीर । चगा चसमा री चमक, सावण झमक सरीर ।

—र.रा

४ यमकालकार । उ०—सोळह मत्ता वरण दस, पद पद झमक गुरत । 'किसन' सुजस पढ स्त्री किसन, अडियल गीत असत ।

—र ज प्र.

५ मजाक, दिल्लगी ।

रू०भे०—झमक ।

झमक-झमक–स०स्त्री०यौ० (अनु०) ध्वनि विशेष, छमक-छमक ।

झमकणो, झमकबो–क्रि०अ० (अनु०) १ आभूषण आदि से ध्वनि होना, झनकार का शब्द होना, झनकना । उ०—१ नित ही नाटक नव नवा हो, दो दो दमकै म्रिदग । झमकित झाझरि झालरी हो, मोहत मन सुख चग ।—ध.व ग्र

उ०—२ पछि पैक झमकत पाय, रिझवत नटवर राय । 'अभसाह' गज असवार, अति ओप रूप अपार ।—रा रू

उ०—३ झण-झण झमक रही छै पायल । मत मत बोल पियारी रा जी ।—लो गी

२ शस्त्रो का टकरा कर ध्वनि करना, खनकना. ३ आभा निकलना,

प्रकाशित होना, चमकना, दमकना। उ०—झमकती तन री झळक, नुअण छिब नरिवाह। कुण कोई कामणिया रहै, परतख हो परिवाह।
—र. हमीर

४ शीतला रोग का विकृत होना।

झमकणहार, हारो (हारी), झमकणियो—वि०।

झमकवाड़णो, झमकवाड़बो, झमकवाणो, झमकवाबो, झमकवावणो, झमकवावबो—प्रे०रू०।

झमकाड़णो, झमकाड़बो, झमकाणो, झमकाबो, झमकावणो, झमकावबो—क्रि०स०।

झमकियोड़ो, झमकियोड़ो, झमक्योड़ो—भू०का०कृ०।

झमकीजणो, झमकीजबो—भाव वा०।

झमकणो, झमकबो—रू०भे०।

झमकेत, झमकराव—सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा (शा हो)

झमकाड़णो, झमकाड़बो—देखो 'झमकाणो, झमकाबो' (रू भे.)

झमकाड़णहार, हारो (हारी), झमकाड़णियो—वि०।

झमकाड़ियोड़ो, झमकाड़ियोड़ो झमकाड़योड़ो—भू०का०कृ०।

झमकाड़ीजणो, झमकाड़ीजबो—कर्म वा०।

झमकाड़ियोड़ो—देखो 'झमकायोड़ो' (रू भे)

(स्त्री० झमकाड़ियोड़ी)

झमकाणो, झमकाबो-क्रि०स०—१ ध्वनि करना, झनकार करना, झनकाना. २ शब्दों को टकरा कर ध्वनि करना, शब्द झनकाना, खनकाना. ३ प्रकाशित करना, चमकाना, दमकाना।

झमकावणहार, हारो (हारी) झमकाणियो—वि०।

झमकायोड़ो—भू०का०कृ०।

झमकाईजणो, झमकाईजबो—कर्म वा०।

झमकणो, झमकबो—अक०रू०।

झमकाड़णो, झमकाड़बो, झमकाणो, झमकाबो—रू०भे०।

झमकायोड़ो-भू०का०कृ०—१ ध्वनि किया हुआ, झनकार किया हुआ, झनकाया हुआ २ शब्द खनकाया हुआ ३ प्रकाशित किया हुआ, चमकाया हुआ।

(स्त्री० झमकायोड़ी)

झमकार, झमकारु—१ देखो 'झणकार' (रू भे)

उ०—१ नगिनु मोती नगु हार, नूपरा तणु झमकार, नटी नवक-मय नवरंग, महाविमान्यानि अंग।—व म.

उ०—२ वलहिया रा घूंघरा, अणां रो झमकार हुय ने रह्यो छै।
—रा ना स.

उ०—३ करयनै कंकण मणि झमकार आदर फानीय पहिरण ए। मदर तंबोळीय हुयती वाळ वाणू नउर रणझुणइ ए।—प प च

सं०पु०—२ एक प्रकार का घोड़ा (शा हो.)

झमकावणो, झमकावबो—देखो 'झमकाणो, झमकाबो' (रू भे)

झमकावणहार, हारो (हारी), झमकावणियो—वि०।

झमकावियोड़ो, झमकावियोड़ो, झमकाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

झमकावीजणो, झमकावीजबो—कर्म वा०।

झमकावियोड़ो—देखो 'झमकायोड़ो' (रू भे)

(स्त्री० झमकावियोड़ी)

झमकियोड़ो-भू०का०कृ०—विकृति-प्राप्त शीतला रोग।

झमकियोड़ो-भू०का०कृ०—१ झनका हुआ, ध्वनित २ खनका हुआ ३ चमका हुआ, दमका हुआ, प्रकाशित।

(स्त्री० झमकियोड़ी)

झमकीलो-वि० (स्त्री० झमकीली) ठमक एवं नखरे से चलने वाला, मस्त, छबीला। उ०—मद भरी रं पत्री सिंह री सम री लड़ी, जीव रा जड़ी, सजीली, फबीली, लजीली, छबीली, रसकीली, नखीली, झमकीली, छकीली, लटकीली, चटकीली, चटकीली, वतीस लखणी, मोहट रूड़ा विध वणी, नेकरंग प्यारी, प्राण प्यारी, जिण नू मांहरो निज नेह, दुरग भाल रा दूधं देह।—र हमीर

झमकै-क्रि०वि०—शीघ्रता से, जल्दी से। उ०—कवरियो है नुनराजा रो जाप (ग), झमकै नै तोरण वांदियो। तोरणियो है तारां छाई रात, झमकै नै तोरण वांदियो।—लो गी

झमको-सं०पु० (अनु०) १ झम-झम की ध्वनि का भाव.
२ देखो 'झूमको' (रू.भे.)

झमझम-सं०स्त्री०यो० (अनु०) १ घुंघरुओं आदि के बजने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि, छमछम. २ देखो 'झमकम' (रू भे)
क्रि०वि०—झमझम शब्द के साथ।
रू०भे०—झमाझम।

झमझमा'ट-सं०स्त्री० (अनु०) १ घुंघरुओं आदि की ध्वनि, छमछमाहट, झमझम शब्द होने की क्रिया या भाव २ एक प्रकार का घोड़ा।
(शा.हो.)

रू०भे०—झमझमाहट।

झमझमाणो, झमझमाबो-क्रि०स०अ०—१ झमझम की ध्वनि करना या कराना. २ चमकना या चमकाना।

झमझमायोड़ो-भू०का०कृ०—१ झमझम की ध्वनि किया हुआ या कराया हुआ २ चमका हुआ या चमकाया हुआ।

(स्त्री० झमझमायोड़ी)

झमझमाहट—देखो 'झमझमा'ट' (रू भे.)

झमझमो-सं०पु०—एक प्रकार का वाद्य ? उ०—जुध नवी नाट समाज झमझमाता, बाज छुट वाण धमधमाता वीर। बिछुटै कट्टा वरमा ऊपर छिमाला, मण गरमर सदा ढमामामीर।—हुकमीचंद खिड़ियो

झमर-सं०पु०—बालों का गुच्छा, बालों का समूह या गुच्छा (?)। उ०—सीस पदम रवि भ्रम, चमर झमर सुर चम्मर। केकी सीव सरसिम सिकर सक फ्यूतर।—सू प्र

झमरतळी-सं०स्त्री०—एक प्रकार का वस्त्र।
उ०—पनवेलि कमळवेलि कपूरवेलि सेलां पटुली झमरतळी भयरतळा नेत्रसी मसरू साळू चारसा।—व०स०

झमरौ-स०पु०—१ शरीर का मैल उतारने का उपकरण.
२ देखो 'झवरौ' (रू भे)
झमाकौ-स०पु० (अनु०) किसी वाद्य या आभूषणो पर एकाएक आघात पहुँचने पर उत्पन्न होने वाला शब्द या ध्वनि ।
झमाझम—१ देखो 'झमझम' (रू भे.)
२ देखो 'झवझव' (रू भे.)
झमाळ-स०स्त्री०—१ डिंगल का एक छद विशेष जिसमे दोहा छद के पश्चात् चाद्रायण और फिर उल्लाला छद रख कर सिंहावलोकन रीति से पढ़ा जाता है । उ०—दूहै पर चद्रायणा, धरै उलाळौ धार । गीता रूप झमाळ गुण, वरणै मछ विचार ।—र.रू.
झमाल, झमालि-स०स्त्री०—१ किरण-जाल । उ०—१ सुवरणमय थाळ, तेह ना अपार झमाल, रूपा नी कचोळी देखिइ, दही माहिं झबोळी ।—व स
उ०—२ तदनतर ऊपेलइ मालि, प्रसन्नइ कालि, सुवरणमइ थाळि, मोटइ झमालि, आवी ऊजमालि, परीसइ फळहुलि ।—व स.
२ गुच्छा, समूह । उ०—जयकुजर हाथीया तणइ कुभस्थळि चडिउ, पाखती अगरक्षक तणी ओळि, मडळीक तणइ परिवारि, पताका, फुरकती, मेघाडबर तणइ आडबरि, सीकरि तणइ झमालि, सुखासण तणी द्रडवड, घोडा तणै थाटि ।—व'स.
३ मच्छर के समान डक मारने वाला पतगा विशेष ।
उ०—जाणे फिरिया सीह रहइ सीयाळ, मातग नइ जेम मसा झमाल। चिहु पखे अरजन बाण छूटइ, सन्नाह माहिइ सर सीघ्र फूटइ ।
—वि प
झमेल–१ । उ०—सकत्या लावौ साथ मे, झाझा फूळ झमेल । करि साजा ईंदर कँवरि, खुडद रचावौ खेल ।—मे म
२ देखो 'झमेलौ' (मह रू भे.)
झमेलियौ–वि०—१ बखेडा डालने वाला, झगडालू ।
२ देखो 'झमेलौ' (अल्पा रू भे)
झमेलौ, झमोलौ-स०पु०—१ झगडा, टटा, बखेडा ।
क्रि०प्र०—होणौ ।
मुहा०—झमेले मे पडणौ (फँसणौ) झगडे-टटे मे फँसना ।
२ पेचीदा कार्य, झझट ।
मुहा०—१ झमेलै मे पडणौ—किसी कठिन कार्य को हाथ मे लेना, झझट मे फँसना । २ झमेलै मे फँसणौ—किसी कठिन कार्य को करने मे परेशान होना। ३ झमेलौ पडणौ—किसी कार्य के होने मे बाधा आना, विघ्न पडना।
अल्पा०—झमेलियौ ।
मह०—झमेल ।
झम्मरिया–स०स्त्री०—१ चौहान वश की एक शाखा ।
२ देखो 'झमरी' (अल्पा. रू.भे)
झम्मरियौ–स०पु०—१ चौहान वश की झम्मरिया शाखा का व्यक्ति ।

झर–स०स्त्री०—किसी पदार्थ के रिसने, चूने, टपकने या गिरने की क्रिया या भाव । उ०—उणनै थोडी चेतौ आयौ अर आख्या मे सू झर झर कर नै आसूडा झरण लाग्या । —रातवासौ
रू०भे०—झरर ।
यौ०—झर-झर ।
झरझरकतौ, झरझरकथौ-स०पु०—१ फटा वस्त्र २ गुदडा
झरडक-स०स्त्री—१ शस्त्र का प्रहार २ शस्त्र का प्रहार करने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि । उ०—पडि पेसकवज खरडक अपार । करडक खाग झरडक कटार ।—सू प्र
३ दधि-मन्थन-घोष. ४ रगड या खरोच लगने की क्रिया या भाव।
क्रि०प्र०—आणौ, लागणौ ।
झरडकणौ, झरडकबौ–क्रि०प्र०—१ रगड लगना. २ खरोच लगना
उ०—वितड खेग ठरडकै मिळै करडकै कवाणा। कगल गात झरडकै, पार खरडकै सराणा ।—वखतौ खिडियौ
३ फटना ।
क्रि०स०—४ प्रहार करना ५ प्रहार कर के ध्वनि उत्पन्न करना।
झरडक-मरडक—देखो 'झरड-मरड' (रू भे.)
झरडकियोडौ–भू०का०कृ०—१ रगड लगा हुआ. २ खरोच लगा हुआ. ३ फटा हुआ. ४ प्रहार किया हुआ ५ प्रहार द्वारा ध्वनि किया हुआ ।
(स्त्री० झरडकियोडी)
झरडकौ–स०पु०—१ रगड लगा हुआ स्थान, रगड २ खरोच ३ (वस्त्र आदि के) फटने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि ४ दधि-मन्थन-घोप । उ०—विलोणा तणा झरडका ऊपजइ ।—व स
५ प्रहार करने की क्रिया या भाव, झटका ६ प्रहार करने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि ।
झरडणौ, झरडबौ–क्रि०स०—१ नाखून आदि से (शरीर को) नोचना । उ०—पडियौ असुर ऊपरा पडिओ, कोपिओ कोपिओ निमो कठीर । भाभै त्रिसळै दंत झरडियौ, वाडियौ मास भरथ रै वीर ।—पी ग्र
२ गर्भस्थ बच्चे को निकालने के लिये पेट को चीरना, विदीर्ण करना।
झरडमरड–स०स्त्री०—दधि-मन्थन-घोप ।
रू०भे०—झरडक-मरडक ।
झरणा'ट–स०स्त्री० (अनु०) १ एक प्रकार की सनसनाहट या पीडा जो हाथ या पैर के बहुत देर तक एक स्थिति मे मुडे रहने या दबे रहने के कारण होती है, झुनझुनी २ बिच्छू आदि जन्तुओ के काटने से होने वाली अवस्था. ३ किसी धातु (विशेषत कास्यादि) पर प्रहार, आघात या टक्कर लगने से उसमे से निरन्तर निकलने वाली ध्वनि. ४ घुघुरू आदि का शब्द, झनझन का शब्द, झकार ।
रू०भे०—झणझणाहट, झणणाट, झणणाहट, झणाट, झणाहट, झण्णाट, झण्णाहट, झरणाहट ।

४ एक प्रकार का ज्वर (शेखावाटी) ५ एक प्रकार का बच्चों का रोग जिसमें मोतीझरा के समान ही छोटी-छोटी फुन्सियाँ होती हैं। (शेखावाटी)

६ देखो 'झडी' (रू भे.)

रू०भे०—झिरी।

झरूको, झरूखो—देखो 'झरोको' (रू.भे) उ०—हरी हो हरी हरी धेन हाकै, झरूखे चडी नद कूमार झाकै। अही राणिया अब्बला भूळ आवै, भगव्वान नैं धेन गोपी भळावै।—ना दे.

झरोक, झरोकडौ, झरोकौ–स०पु०—दीवार मे बनी हुई वह सुन्दर खिडकी जिसके द्वारा हवा और रोशनी आने के साथ उसमे खडे होने अथवा बैठने का स्थान भी हो जिससे बाहर का दृश्य आसानी से देखा जा सके, गवाक्ष, मोखा, गोखा।

उ०—१ ऊची ऊची मैडी झरोका चार, घडल्या रे खाती का बेटा वाजोट्यो।—लो गी उ०—२ इतरै सावण सुदी बीज री आधी गया एक सिकारी आइयो, आय झरोकै नीचै हाकल करी।

—कुवरसी साखला री वारता

रू०भे०—झरू को, झरू खो, झरोखय, झरोखो।

अल्पा०—झरोकडो, झरोखडो, झरोखियो।

मह०—झरोक, झरोख।

झरोख –देखो 'झरोको' (मह, रू भे) उ०—सरोख सात गोखतै झरोख झाकनी नही। निकूप चौक चादनी निकोम नाखनी नही।

—ऊ.का

झरोकडौ—देखो 'झरोको' (अल्पा, रू भे) उ०—सीत सवारै सोणा दिपै, मेडी मोख झरोकडा। भूप हरचद री सी हे'ली, घन गण सारै गोखडा।—दमदेव

झरोखौ—देखो 'झरोको' (रू भे) उ०—१ दती हीडोळै झरोखा हेटै, खुभाळा झाटका देता।—माधोसिंह सीसोदिया रौ गीत

उ०—कवर मारियो मारियो, इसो सबद अपछरा झरोखै बैठी सुणियो।—वीरमदे सोनगरा री वात

झलब–स०स्त्री०—१ चमक, आभा, कान्ति। उ०—सूर खुरसांण ऊपर झलब सुधारी, वसू कुरखेत प्रथमाण वादै। जाजळीमाण जमराण कीधी जिका, वियो 'पदमेस' केवाण वादै।—जवानजी आढौ

२ देखो 'झिलम' (रू.भे)

उ०—हद सोभा तो चढ 'मान' हर, झलबा कडी कडी रण झूल। खाधा अरी चमू खळ खागा, मन्न जडी न लागी मूळ।

—रावत प्रतापसिंघ चूडावत (आमेट) रौ गीत

वि०—१ आभायुक्त, चमकयुक्त, चमकीला। उ०—१ बैठी जोवै वाट ढळक्कै वेसराह, किया झलब पवसाख कसूबल केसराह।

—महादान महडू

झळ–स०स्त्री०—१ झाडी, 'झगी। उ०—उणनू एक दिन पूरे सू सिकार पधारिया था सो धोहरा री झळ थी तीमे सूअर जोवण नै लोग सारी खिड गयो।—पदमसिंघ री वात

२ आग की लपट, अग्नि शिखा। उ०—१ ज्वाळ झळ जेम ग्रस गाव अरि जाळवा, खाग जुध जहर हूं कहर खारो। करण भय सचीतो न्याय ओरग कहै, 'सिघ' बळ नचीतो देस सारो।—द दा

उ०—२ जडि ठाम ठाम थाणा जबर, बैठा मुगळ महाबळी। आसुरा सुरा प्रजळी अगनि, छोह धोह झळ ऊछळी।—सू.प्र

उ०—३ अहि खग म्रिग दम हुस अळूझै, सुणै न सबद गात नह सूझै। दहूं दळा वळि हुवं दिसाई, रजक झळां गोळा रुमनाई।—सू प्र.

३ गरमी, ताप, दाह। उ०—१ तन तरवर फळ लगिया, दोइ नारग सपूर। सूकण लागा विरह झळ, सीचणहारा दूर।—र रा.

उ०—२ लूआ झळ उठ आवती, काना मे कह जाय। मतना पथी नीसरे, म्हारै मारग आय।—लू

उ०—३ पेंडो देखता केई जु घणू तेज उतावळा आवता देख्या। तब पेट माहै झळ ऊठी। जु ए उतावळा आवै छै।—वेलि टी

यौ०—झळ-झळ।

४ अग्नि, ज्वाला, आग। उ०—१ धरा गगन झळ ऊगळै, लद लद लूआ आय।—लू

उ०—२ झझावात झपट लपट झळ अबर लागी।

—भगवानजी रतनू

५ उग्र कामना, उत्कट इच्छा। उ०—देखता पथिक उतामळा दीठा, झाखाणा उरि उठी झळ। नीळ डाळ करि देखि नीलाणा, कुससथळी वासी कमळ।—वेलि.

६ कान्ति, दीप्ति। उ०—कोकिल मोर सुवा जिण कानन, अगनि सरूप वाणि झळ आनन।—सू प्र.

७ चमक, दमक. ८ खुजली, ज्यूं—घास मे सूवण सू म्हारै सारै डील में झळ हालण ढूकगी।

क्रि०प्र०—ऊठणी, हालणी।

रू०भे०—झळी।

९ स्त्री मे पैदा होने वाली सभोग की इच्छा, रति-इच्छा, चुल।

मुहा०—झळ भागणी (भगाणी) रति इच्छा को पूरी करना (कराना)

'१० मृगशिरा नक्षत्र का उदय-स्थान, पूर्व दिशा (शकुन)

११ उष्ण वायु (शेखावाटी)

झल–स०स्त्री०—पकडने की क्रिया या भाव।

वि०—१ पूर्ण।

यौ०—झलोझल।

२ धारण करने वाला. ३ पकडने वाला।

झळक–स०स्त्री० [स० ज्वलत्] १ आभा, प्रभा, द्युति, चमक, दमक, प्रकाश। उ०—झमकत तन री झळक, भूखण विच भरियाह। कुण कोई कामणिया कहै, परतख ही परियाह।—र. हमीर

२ प्रतिबिम्ब। उ०—पीलू पीयुस सनै, ऊजळी छिब उणियारै। जाणै वणै अगूर, झळक हरियाळी सारै।—दसदेव

झळकाविग्रोडो, झळकावियोड़ो, झळकाव्योडो—भू०का०कृ० ।
झळकावीजणो, झळकावीजवो—कर्म वा० ।
झळकणो, झळकवो—ग्रक० रू० ।

झळकाविग्रोडो—देखो 'झळकायोडो' (रू भे)
(स्त्री० झळकावियोडी)

झळकियोडो-भू०का०कृ०—१ ग्राभा दिया हुग्रा, चमका हुग्रा, प्रकाशित हुवा हुग्रा २ स्फुटित हुवा हुग्रा, हल्का दिखाई दिया हुग्रा, झलका हुग्रा ३ दृष्टिगोचर हुवा हुग्रा, दिखा हुग्रा ४ ग्राभास हुवा हुग्रा ५ कुछ कुछ प्रकट हुवा हुग्रा ६ प्रतिबिंब पडा हुग्रा, प्रतिबिंबित हुवा हुग्रा ७ शोभा दिया हुग्रा ८ क्रोध किया हुग्रा, क्रोधित हुवा हुग्रा, ग्रापे से बाहर हुवा हुग्रा ९ सीमा से बाहर हुवा हुग्रा, छलका हुग्रा १० हिला-डुला हुग्रा ।
(स्त्री० झळकियोडी)

झळको-स०पु०—१ चमक, दमक । उ०—ऊँची नीची सरवरिया री पाळ, (जठै) हजारी मोती नीपजै । मोती सोहै सोढ़ी राणी रै नथ, झळका वाळी मोती ग्रध सोहै ।—लो गी
२ ग्राकृति का ग्राभास, प्रतिबिंब ।
मुहा०—झळको पडणो—चमक दिखाई देना । किसी वस्तु के होने का ग्राभास मालूम होना, क्षण मात्र के लिये दिखाई देना ।
रू०भे०—झळकारो झळक्को, झिळको ।

झळक्कणो, झळक्कवो— देखो 'झळकणो, झळकवो' (रू भे)
झळक्कणहार, हारो (हारी), झळक्कणियो—वि० ।
झळक्किग्रोडो, झळक्कियोडो, झळक्कयोडो—भू०का०कृ० ।
झळक्कीजणो, झळक्कीजबो—भाव वा० ।

झळक्कियोडो—देखो 'झळकियोडो' (रू भे)
(स्त्री० झळक्कियोडी)

झळक्को-स०पु०—१ लपट । उ०—दूखण दीधै दुरजणे, ग्रोपै कवित ग्रसल्ल । लूग्र झळक्कै लागतै, ग्रावै स्वाद ग्रवल्ल ।—ध व ग्र
२ देखो 'झळको' (रू भे)

झळजीहा-स०स्त्री० [स० ज्वाला+जिह्व] ग्रग्नि, ग्राग (डि को)

झळझळणो, झळझळवो—क्रि०ग्र०—जगमगाना, चमकना ।
उ०—किरण जोस कळकळै, रूपक झळझळै प्रगट्टा । ग्ररण रूप ग्राखिया, दली करवा दहवटा ।—बखतो खिडियो

झळझळा'ट-स०स्त्री०—जगमगाहट, चमक, दमक ।
उ०—हर घडियो हित सू निज हाथा, जडियो गढ जोधाणे । झळझळा'ट करतो नग झडियो, पडियो लव पयाणै ।—ऊ का
रू०भे०—झळझळाहट, झळा'ट, झळाहट ।

झळझळाणो, झळझळाबो—देखो 'झळझळणो, झळझळवो' (रू भे)

झळझळायोडो—देखो 'झळझळियोडो' (रू भे)
(स्त्री० झळझळायोडी)

झळझळाहट—देखो 'झळझळा'ट' (रू भे)

झळझळियोडो-भू०का०कृ०—जगमगाया हुग्रा, चमका हुग्रा ।
(स्त्री० झळझळियोडी)

झळझाखसउ स०स्त्री०—[स० चलद्ध्वाक्षम्] उडती हुई बात, ग्रविश्वसनीय बात (उ र)

झळझ्झळि-स०स्त्री०—ग्राग, ग्रग्नि । उ०—झळझ्झळि झाळि दिखे करिमाळ ।—वँ सी रासौ

झलण—देखो 'झल्लण' (रू भे)

झळणो, झळवो—क्रि०ग्र०—झुलसना, मुरझाना ।
उ०—घमस नाळ रज धोम, झळळ तप झख कमळ झळ । थर थरसळ घरधरण, उतन दिस हलै 'ग्रभैमल' ।—सू प्र
२ दग्ध होना, जलना. ३ चौंकना । उ०—छुवता झळै ग्रोमळै ग्राप छाया । जिकै ग्रबु ग्रप्पित के वायु जाया ।—व भा
४ भस्म होना, जलना ।
झळणहार हारो (हारी), झळणियो—वि० ।
झळिग्रोडो, झळियोडो, झळयोडो—भू०का०कृ० ।
झळीजणो, झळीजवो—भाव वा० ।

झलणो, झलवो—१ सहन करना । उ०—ग्रठ डाबी इणी मे कवर स्री वीकैजी मोयला ऊपर घोडा उठाय नाखिया, सू उठै वडो झगडो हुवो नै मोयला सू धको झलियो नही ।—द दा
२ फैलना । उ०—झोला सुगध चहू दिस झलिया । ग्रतर गुलाब समद्र उभळिया ।—सू प्र
३ पकड जाना, पकड मे ग्राना । उ०—गहि पान एम कहियो ग्रगज, झट खग वाहे वाहू झलू । मोकळू पकडि मदफर मिलक, मुदफर रो सिर मोकळू ।—सू प्र
४ शोभित होना । उ०—विहु झलिया झडता खग वूर । 'पिया' हर सूर दता ग्रद पूर ।—सू प्र
झलणहार, हारो (हारी), झलणियो—वि० ।
झलिग्रोडो, झलियोडो, झल्योडो—भू०का०कृ० ।
झलीजणो, झलीजवो—भाव वा० ।
झिलणो, झिलवो—रू०भे० ।

झळवकार—वि०—ज्वालामय ।
उ०—ऊगो झाखो ग्ररक, दिसा झाखी दरसाणी । झाखा पथ भयाण, जाण कळपत कहांणी । गिर परवत वन व्रिख, ग्रचळ चळ चाल ग्रखडै । उलकापात ग्रछूट, पडै कोरण टह मडै । तिण समै कैळास सहर तणी, झळवकार पठ झखिया । ग्रागवड सिवराज पडे,' मद भाग कव पखिया ।—साहवो सुरताणियो

झळपट-स०स्त्री०—ग्राग की लपट, लौ, ग्रांच । उ०—उड रीठ गोळा नाळ झळपट ऊपडै । घड पडै ग्रपहड घाट घरपुड धडहडै ।—सू प्र

झलम—देखो 'झिलम' (रू भे) उ०—१ सणणंकै खुरसाण खागधारा खणणंकै । रणणंकै रणराग झलम पाखर झणणंकै ।—व.भा.
उ०—२ झलमा सिर बीजळ झडै, ताता खडै तुरग । तिण वेळा 'पातल' तणो, जरमन सहै न जग ।—किसोरदान बारहठ

अजै गग खळहळै, अजै सावत इद्रासण ।—कम्मो नाई

६ जगमगाना । उ०—उपरि वळी त्रिकळीसा घणा । झळकत दीसइ सोना तणा । तारा तणा किरण सू मिळइ । कोसीसे दीवा झळहळइ ।—का दे प्र.

७ शोभित होना । उ०—पह मिळिया कवी मनोरथ पूरण, रिम अडिया मातै रणताळ । पंजा पाळ उजाळण परिया, दळ आगळ झळहळै दयाळ ।—राठोड दयाळदास सूरजमालोत चापावत री गीत

८ मर्यादा के बाहर होना, उमडना । उ०—सळवयौ मेर समुद्र झळहळियौ, अहि डोल्यौ महि भारौ ।—रुकमणी मगळ

९ प्रज्वलित होना, धधकना ।

झळहळणहार, हारौ (हारी), झळहळणियौ—वि० ।

झळहळाड़णौ, झळहळाडबौ, झळहाळणौ, झळहळावौ, झळहळावणौ, झळहळाववौ—क्रि०स० ।

झळहळिग्रोडौ, झळहळियोडौ, झळहळयोडौ—भू०का०कृ० ।

झळहळीजणौ, झळहळीजबौ—भाव वा० ।

झळहळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ देदीप्यमान हुवा हुआ, चमका हुआ, प्रकाश किया हुआ २ कौंधा हुआ, चमका हुआ ३ फहरा हुआ ४ जाज्वल्यमान हुवा हुआ. ५ प्रकाशित हुवा हुआ ६ जगमगाया हुआ ७ शोभित हुवा हुआ. ८ मर्यादा से बाहर हुवा हुआ, उमड़ा हुआ ९ प्रज्वलित हुवा हुआ, धधका हुआ ।
(स्त्री० झळहळियोडी)

झळा-स०स्त्री०—अग्नि । उ०—वढि वाहत खाग झळा वरणौ । तदि झूझ लडै चद्रभाण तणौ ।—सू प्र.

झलाडणौ, झलाडबौ—देखो 'झलाणौ, झलावौ' (रू भे)
उ०—ग्रोथि राघवदास रा आदमी खोसा खूदी करता हुता, सु कुवर स्री दळपतजो झलाडिया । झलाई अर गाव माहै खेजडी हुती तिण सेती च्यारे बाधा मुहकम ।—द वि

झलाडियोडौ—देखो 'झलायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० झलाडियोडी)

झळाझळ—देखो 'झळाहळ' (रू भे)

झळाझळी-वि०—चमकदार, चमकीला ।

झलाणौ, झलावौ-क्रि०स०—१ लोटाना । उ०—काळ री विधेयकरम करण पाळा ही चलाया । अर विखम दुग्गग ग्रोगट घाट रै कारण आपरा घोडा सिपाह पाछा ही झलाया ।—व भा

२ पकडाना । उ०—१ तद साहजादै ऊपर सू तरवार झलाई सो लेय गौड आय पहुचो ।—अमरसिंह राठौड री वात

उ०—२ ताहरा देवीदास ही लोटी झलाई ।—पलक दरियाव री वात ('झलणौ' क्रिया का प्रे०रू०), ३ देखो 'झलणौ, झलवौ' ।

झलाडणौ, झलाडबौ, झलावणौ, झलाववौ—रू०भे० ।

झळाबोळ-वि०—१ जाज्वल्यमान, तपा हुआ ।

उ०—उड दळा झळाबोळा अनेक । ग्रोळा जिम गोळा रीठ एक ।
—वि स

२ आग-बबूला, कुपित. ३ देदीप्यमान, जाज्वल्यमान, चमकदार, जगमगाता हुआ ।

उ०—घेरयो नद री ढोह अग्नि कोट एहा । झळाबोळ जाणै कळा सोळ जेहा । नळी वाटती सामुही झाळ नाखी, प्रभू अग लागी जाणै फूल पाखी ।—ना द

झळामळ-स०स्त्री०—१ चमक, दमक । उ०—वरसै पावी मेह झळामळ बीजकी । लीजो झोलो देर महोलो तीजको ।—महादान महडू

२ एक प्रकार का घोडा (शा हो)

वि०—चमक-दमक वाला, चमकीला ।

झळामळग्रारती-स०स्त्री०—दूल्हे के तोरणद्वार पर आने पर सास द्वारा कई दीपको को थाल मे सजा कर की जाने वाली आरती या परछन । उ०—आवियो 'कलो' तोरण उठी, अठी झळामळ आरती । उतारै प्रेत ठीकर इसी, चित फाटा तिण वार ती ।
—अरजुणजी बारहठ

झळामळा-स०स्त्री०—सघनतायुक्त काति, दीप्ति.

उ० जिसउ कल्पतरु फळा तिसी किसिउ करइ करीर झळामळा, जो अह्मि करू बहुत भाव तोइ किम हुइ गुरुआ तणा प्रभाव ।—व स

झलायोडौ-भू०का०कृ०—१ लोटाया हुआ ('झलियोडौ' का प्रे रू.)

२ देखो 'झलियोडौ' ।

(स्त्री० झलायोडी)

झलार-वि०—पकडने वाला । उ०—वधे छक पौरस दूजिय-वार । झडै नर तूजिय वाग झलार ।—सू प्र.

झळाळ-वि०—चमकयुक्त, तेज । उ०—फेरै वाढ झळाळ, काळ जमदढ केवाण । तूटै दमग अताळ, झाळ छूटै खुरसाण ।—सू प्र

झलाळौ-वि०—धारण करने वाला, ग्रहण करने वाला ।

उ०—चादै ढेबै सारखा भुज आभ झलाळा । वसिया मेणा लोधिया भीला भुरजाळा ।—पा प्र

झलावणौ, झलाववौ—देखो 'झलाणौ, झलावौ' (रू भे)

उ०—सपडाय बाहर आण, वाग स्यामी नू झलावण लागियौ—जे थे वाग झालै रहो तो हू सापडू ।—सूरे खीवै कावळोत री वात

झलावियोडौ—देखो 'झलायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० झलावियोडी)

झळास-स०स्त्री०—१ ज्वाला, आग २ आग की लपट ।

झळाहळ-स०स्त्री०—१ अग्नि, आग । उ०—१ रोस झळाहळ रूप, जोस ग्रीखम रवि जोडै । तुरग भडा तेडता, दूत च्यारू दिसि दौडै ।
—मे म.

उ०—२ भळाहळ रूप झळाहळ भाय । जुडै खळ आय तिहा उडि जाय ।—सू प्र.

२ आग की लपट, अग्नि-शिखा ।

३ काति, दीप्ति । उ०—तपत झळाहळ अतुळ, पिंड झळाहळ पौरिस । अति प्रकास ऊजळो, जगत उज्जास वधे जस ।—सू प्र.

झल्लिय—देखो 'झल्लरी' २ (रू भे.)

उ०—झनकित झल्लिय कठनि सोर, मनो वरखागम बुल्लिय मोर। चलावत अंकुसतें हुजदार, मनो गिरि के सिर वज्र प्रहार।
—ला रा

झल्लियोडी—देखो 'झलियोडी' (रू.भे.)

(स्त्री० झल्लियोडी।

झवकणौ, झवकवौ—देखो 'झवकणौ, झवकवौ' (रू.भे)

उ०—पावस रित झड मंडियौ, चातक मोर उलास। वीजळिया झवकै 'जसा', विरही अधिक उदास।—जसराज

झवकियोडी—देखो 'झवकियोडी' (रू भे)

(स्त्री० झवकियोडी)

झवाडी—देखो 'जुग्रो' २ (अल्पा. रू भे.)

उ०—झीणी-झीणी वेळूडी रेत, म्हारै धवळौ गोडी ढाळ दी। उठ रे धवळा झवाडी सभाव, (म्हारी) जामण जायी जोवै वाटडी।
—लो गी.

झवेरी—स०पु०—रत्नो की परीक्षा करने वाला, जौहरी।

झसकेतू—देखो 'झकेतु' (रू भे)

झसडक, झसडकौ, झसडक्क—स०पु०—शस्त्र का प्रहार या शस्त्र-प्रहार की ध्वनि। उ०—जुटा 'रतनागिर' 'ओरंग' जाम, वडा जमरूप विहै वरिग्राम। धमद्धम सेल वहै खगधार, पडै झसडक्क पटा अणपार।
—वचनिका

झसणौ, झसवौ—क्रि०अ०—चबाना, काटना। उ०—पण खीवौ तौ ऊठते ही जे वहिर हुवौ सो जाणै काळ सैं नाग पूछ दबिया फुफकारा मारै त्यू ऊभो ऊभो सूसाडा मारै छै, होठ झसै छै।
—सूरे खीवे काधळोत री वात

झसियोडी—भू०का०कृ०—चबाया हुआ, काटा हुआ।

(स्त्री० झसियोडी)

झसोयर—वि० [स० झषोदर] मत्स्य के समान उदर तथा विशाल वक्षस्थल वाला (जैन)

झाइ, झाई—स०स्त्री०—१ प्रतीत होने की क्रिया, महसूस होने या मालूम पडने की क्रिया या भाव, समझने का भाव।

उ०—सुख दुख सब झाई पडै, तब लग काचा मन्न। दादू कुछ व्यापै नही, तब मन भया रतन्न।—दादू बाणी

क्रि०प्र०—पडणी।

२ प्रतिबिंब, परछाई। उ०—अधरा री झाइ सू मूगा रै रंग लीजै हे नै जो कदच मोत्या री झाइ अधर धरै है तौ वीडा रौ चूनौ लागो जाण पूछण री करै है।—र हमीर

क्रि०प्र०—पडणी।

३ आभास? उ०—हरकण छाई दिस चिलकारौ हरियौ, करसण करसणिया किलकारौ करियौ। झेलण हळवेडर झळकी तन झाई, मरिया डेडर ज्यू हरिया मन माही।—ऊ.का.

४ हलका प्रकाश, मद रोशनी, झलक।

क्रि०प्र०—पडणी।

५ आभा। उ०—पासो ढुलै है, हाथ लुळै है, ढीली नथ ढलकै है, प्रेम री झाई जाहर झळकै है।—र हमीर

६ एक प्रकार के हलके काले धब्बे जो प्राय मुह पर रक्तविकार, अत्यधिक चिन्ता अथवा अत्यधिक विषयभोग करने के कारण हो जाते हैं।

क्रि०प्र०—पडणी, होणी।

झाक—स०स्त्री०—१ झलक, झाई। उ०—नाग रा झाग पीवै निलज, झाक आग चख मे झडै। अगरेज मुलक दावण अडै, ऐ जूवा मू आथडै।—ऊ का

२ आधी। उ०—फौज करि अर मुहडै आगै तोपची करि अर हालिया। वैजार रै रिण जाहरा आया कोस एक राजलवाडै हुता ताहरा सामुही झाक आई। ताहरा ओथि घोडा ठामिया।—द वि.

३ झांकने की क्रिया या भाव।

रू०भे०—झांख।

झाकणी—देखो 'झाकी' (रू भे)

झाकणौ, झाकवौ—देखो 'झाखणौ, झाखवौ' (रू भे)

उ०—१ गायण एक सपत सुर गावै, लेख अच्छर उरवसी लजावै। झाकै एक हास द्रग फूलै, कवि रवि उदै कमळसी फूलै।—रा रू.

उ०—२ चुग चुग ककरी महल चुणायो, मोरचा झाकौजी गोरी का भरतार। खिडक्या झाकौजी गोरी का भरतार। थे झाको थारा कवरा नै झकावो, म्हारी रेल हक जाय, म्हारी बाळद लद जाय, उठ गयौ ए गोरी को भरतार।—लो गी

झांकणहार, हारौ (हारी), झाकणियौ—वि०।

झकवाडणौ, झकवाडवौ, झकवाणौ, झकवावौ, झकवावणौ, झकवाववौ, झकाडणौ झकाडवौ, झकाणौ, झकावौ, झकावणौ, झकाववौ, झांकाडणौ, झाकाडवौ, झाकाणौ, झाकावौ, झाकावणौ, झाकाववौ
—प्रे०रू०।

झाक्किओडौ, झाकियोडौ, झाक्योडौ—भू०का०कृ०।

झाकीजणौ, झाकीजवौ—भाव वा०।

झाकळी—स०स्त्री०—

उ०—घाव लग्यो घवराय घण, धव मो इथ उत धाय। झडा-झडा झाकल्या, खतग ससो जिम खाय।—रेवतसिंह भाटी

रू०भे०—झाकळी।

झाकियोडौ—देखो 'झाखियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० झाकियोडी)

झाकी—देखो 'झाखी' (रू भे) उ०—१ कोड काम निछरावळा हे वा-वा हे! वा-वा हे। झाकी तो सियावर तणी हे वा-वा हे।—गी रा

उ०—२ अेक प्यालो म्हारै वालाजी नै प्यादे, वा के सेवगा ने अधर नचाव, अे राजा राम की कलाळी, म्हें झाकी जगाई आधी रात, अे राजा राम की कलाळी।—लो गी

झाझदार-स०पु०—छडीदार ।

झाझर-स०पु०—१ एक प्रकार का घोडा (शा हो.)
२ घोडो के घुटनो पर पहनाया जाने वाला एक ग्राभूषण. ३ देखो 'जाझर' (रू भे)
उ०—१ घमघम सेल वभक्कत घाव, रमझ्झम ग्रच्छर झाझर राव । मिळै कर मूछ गळै वरमाळ, चडी पत्र रत्र रळै दहचाळ ।—मे.म.
उ०—२ बाहे सुदरि बहरखा, चासू चुडस वचार । मनुहरि कटिथळ मेखळा, पग झाझर झणकार ।—ढो मा
उ०—३ माता रै देवरै चढता झाझर खुलग्या ए माय । तेडो सोनीडा रो वेटो झाझर ले ग्रावै ए माय ।—लो गी.

झाझरको—[स० झर्झर] देखो 'जाझरको' (रू भे)
उ०—१ सारी सरवरा करी छै, हमैं हूँ जाय सूवू छू, झाझरको घडी च्यार रो रहै ताहरा जाय कदोई नै बोलाय ल्याया, सीरो करा-वज्यो, परभात महाजन सुवारा ही जिमावा ।
—राजा भोज ग्रर खाफरै चोर री वात
उ०—२ रावजी घडी दोय रै झाझरकै डेरा ग्राया सत्ताइस ग्रसवारा सू ।—द दा

झांझरि—१ देखो 'झाझरी' (रू भे)
उ०—नित ही नाटक नवनवा हो, दो दो दमकै म्रिदग । झमकित झाझरि झालरी हो, मोहत मन मुख चग ।—ध व ग्र
२ देखो झाझर (रू भे)

झाझरियाळ-स०स्त्री०—झाझर नामक ग्राभूषण धारण करने वाली देवी ।
उ०—चाल कनै मढ हूता चाचर । झाझरियाळ सदीमत झूलर । काछ पचाळ लगै छै डाकर । ग्राई ग्रावजै व्रन संकटियै ऊपर ।
—प्रिथ्वीराज राठोड

झाझरी-स०स्त्री०—१ एक प्रकार का वाद्य । उ०—वाजत झाझरी ग्रोर म्रिदग ग्रोर वाजै करताळ । मोर मुकुट पीतावर सोहै, गळ वैजती माळ ।—मीरा
२ देखो 'जाझर' (रू भे)

झाझळी, झाझी—देखो 'झाझ' (रू.भे)
उ०—च्यार सम्प्रदा जिण हित चाली, प्रगट हुई ज्यू झांझी पाली । महिला नीर भरण नै म्हाली, खारो जळ ऊँडो तळ खाली ।
—ऊ का.

झाट-स०पु०—१ पुरुष ग्रथवा स्त्री की मूत्रेंद्रिय पर होने वाले वाल ।
मुहा०—१ झाट उखेलणो—कुछ भी हानि नही पहुँचा सकना ।
मुहा०—२ झाट खाग़ा करणा—देखो 'झाट उखेलणो' ।
३ झाट वरावर—ग्रत्यन्त तुच्छ ।
२ छोटी या निकम्मी वस्तु, वहुत तुच्छ ।
कहा०—झाट-माट झूंपडी नै तारागढ़ नाम-तुच्छ वस्तु की बहुत ग्रधिक प्रशसा या नाम होने पर ।
रू०भे०—झाठ ।

झाटो—देखो 'झाटो' (रू भे.) ऊ०—उठो ना भावजडी म्हारा जुडियो झाटो खोल, वाहर ऊवा प्यारा पावणा जी म्हारा राज ।
—लो.गी.

झाठ—देखो 'झाट' (रू.भे)

झाण-स०पु० [स० ध्यान] ध्यान । उ०—१ ग्रायस पुणति सूरि भिद्द, जिम झाण नाण सतुट्ठ मण । जिणदत्त सूरि पहु सुर गुरवि, थुणवि न सक्कउ तुम्ह गुण । —ऐ जै का.स
उ०—२ झाण खडगिगण मयण सुभड समरगणि पाडिउ ।
—प्राचीन फागु सग्रह

झाती-वि०—ग्रन्तर्मुखी । उ०—१ दादू झाती पायै पसु पिरी ग्रदर सो ग्राहे । होणी पाणी विच्च मे, महर न लाहे ।—दादू वाणी

झाप-स०स्त्री० [स० झप, झपा] १ छलाग, कूदान, उछाल ।
उ०—१ ग्रस लीली लेतीय झाप ग्रपार । ताणै तग हाजर कीध तैयार ।—गो रू
उ०—२ इण भात हँसतो हँसावतो उमग उफणावतो थको निपट ताता झाप खाता टापा ऊपर टापा देता काछचा पर चढ़चा ।
—प्रतापसिघ म्होकमसिघ री वात
उ०—३ म मरि कीचक कूड निकाळिजा, मरी य मू करि सूढ म जाळिजा । ग्रकळ ग्रवुधि माहि म झाप दइ, मुहि हळाहळ कउळ म मूढ़ लइ ।—वि प
३ छीनने या झपटने की क्रिया या भाव ।
रू०भे०—झाफ ।

झापडी—देखो झूंपडी (रू.भे.)

झापणो, झापवो—क्रि०स०—१ छीनना २ झपटना ३ पकड कर दवा लेना । उ०—नगारा सख ग्रारती धूप, घुम्रै नै झांपै है झण-कार । दुळकिया ग्रेवड धोरै ग्रोट, सुणीजै किलकारी उण पार ।
—साझ
झांपणहार, हारो (हारी), झापणियो—वि० ।
झपाडणो, झपाडवो, झपाणो, झपावो, झपावणो, झपाववो, झापा-डणो, झापाडवो, झापाणो, झांपावो, झांपावणो, झापाववो—प्रे०रू०।
झापिग्रोडो, झांपियोडो, झाप्योडो—भू०का०कृ० ।
झापीजणो, झापीजवो—कर्म वा० ।

झापभैरव—देखो 'भैरव झाफ' रू भे)

झापरो—देखो 'झाफरो' (रू.भे)

झापियोडो—भू०का०कृ०—१ छीना हुग्रा २ झपटा हुग्रा ३ पकड कर दवाया हुग्रा, वीच मे ही पकडा हुग्रा ।
(स्त्री० झापियोडी)

झापो—वि० [स० झपा] १ छीना-झपटी से ग्रपना स्वार्थ सिद्ध करने वाला, किसी प्रकार ग्रपना कार्य बनाने वाला २ डाकू, लूटेरा ३ वलवान, जवरदस्त. ४ 'भुरट' नामक काटो को हटाने का कटीली झाडियो का वना उपकरण ।
रू०भे०—झाफो ।

झाक-जमाल, झाक-झमाल—वि०— जोशपूर्ण विजय वाणी का उच्चारण करने वाला। उ०—१ देस देस रा राजवी, करता झाक-जमाल। वाची कागद ऊठिया, जान सजी तत्काळ।—जयवाणी

२ देदीप्यमान, चमकदार, तेज। उ०—२ च्यार ग्रासण तिहां चिहुं दिसि जी, मोतिए झाक-झमाल। सम विचें कुण ईसाण मे देवछदो सुविसाळ।—ध व ग्र

३ चचल। उ०—घमघमइ घूघरमाळ, घोडे झाकझमाल, सोहइ करि करवाळ तुज्झ घण। खळ कुरग ग्रहण पास, ग्ररि घरि पाडइ त्रास, पूरइ सुजण ग्रास, सगण भण।—व स

४ स०स्त्री०—चमक, दमक। उ०—एहवी जेहना घरमा रिद्धि, पुण्य-सयोगे दिन दिन विद्धि। सूरिज नी परि झाक-झमाल, विनयचद्र कहै बीजी ढाल।—वि कु

झाकझमाला—१ देखो 'जाकजमाला' (रू भे)
उ०—किसी नही कुरुख, तिहा बइठा बत्रीस लक्षण पुरुख, फादला फुदाला दुदाला झाकझमाला सुहाला, ग्राखि ग्रणीग्राळा, केसपास काळा, केइ जमाई, केइ साळा।—व स.

२ हो-हा की ध्वनि। उ०—इक्षु-रस हेतौ रे, ज्या का पाका छै खेतौ रे। रस रा बहु चाला रे। बहै घाणा रा नाळा रे। जिम झाकझमाला हो भीड लगी रहै रे।—जयवाणी

झाकझीक—स०स्त्री०—शस्त्र प्रहार या शस्त्र प्रहार की ध्वनि।
उ०—रासावत मडियौ जुद रावत, जिण तिण पूगू जुवौ जुवौ। झाकझीक कह राख जवानी, हुरमत कह ग्रस बगन हुवौ।
—सिवसिंघ वाघेला री गीत

रू०भे०—झाकाझीकौ।

झाक-झोळ—वि०— पसीने से तरबतर, लथपथ। उ०—राव राणगदे कोसे १० उठा थी उतरियौ थौ तठा थी पाखती खड नै सामा घोडा झाक-झोळ नै ग्राया।—नैणसी

झाकणौ, झाकबौ—देखो 'झाखणौ, झाखबौ' (रू भे)
झाकणहार, हारौ (हारी), झाकणियौ—वि०।
झाकिग्रोडौ, झाकियोडौ, झाक्योडौ—भू०का०कृ०।
झाकीजणौ, झाकीजबौ—कर्म वा०।

झाकरौ—स०पु०—१ घी रखने का पात्र (शेखावाटी)
२ एक प्रकार का घोडा (शा हो)

झाकळ, झाकल—स०पु०—ग्रोस की बूद, छोटी बूद।
उ०—मे तु तौ मेह, वूठे वनस्पति वळै। झाकळ नै जामेह भोम नो पाकै भाण ना।—जेठवा
रू०भे०—झाखळ।

झाकळी—देखो 'झाकळी' (रू भे)

झाकाझीकौ—स०पु०—१ छोटे-बडे जेवर, ग्राभूषण २ टूटा-फूटा सामान ३ देखो 'झाक-झीक' (रू भे.)

झाकियोड़ौ—देखो 'झाखियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री० झाकियोडी)

झाकौ—देखो 'झाखौ' (रू भे.)
उ०—मेछ करारा ऊपरा, हुवा नगारा सद्द। दळ हळवळ झाका दिया, राका जाण समद।—रा.रू
क्रि०प्र०—दैणौ, पडणौ।

झाखणौ, झाखबौ—देखो 'झाखणौ, झाखबौ' (रू भे)
उ०—१ माळवणी नै मारवणी हजूर तेडिया। तारै माहिलो राज-लोक झाखवा लागो।—ढो.मा.
उ०—२ वचन बोलै भली रीत सू, मधुरी वाणी सू भाखै रे। काई खावै पीवै किसू, इण री तन ग्रारीसा ज्यू झाखै रे।—जयवाणी
झाखणहार, हारौ (हारी), झाखणियौ—वि०।
झाखिग्रोडौ, झाखियोडौ, झाख्योडौ—भू०का०कृ०।
झाखीजणौ, झाखीजबौ—कर्म वा०।

झाखल—देखो 'झाकळ' (रू.भे)

झाखियोडौ—देखो 'झाखियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० झाखियोडी)

झाग—स०पु०—पानी ग्रादि पर उठने वाला फेन, गाज।
क्रि०प्र०—ऊठणौ, छूटणौ, छोडणौ, निकळणौ, फेंकणौ।
मुहा०—झाग ग्राणा—फेन ग्राना। शारीरिक कष्ट या ग्रधिक परि-श्रम से मुह मे से फेन ग्राना।

झागड—१ देखो 'झागडू' (मह. रू.भे)
२ देखो 'झागड' (रू भे)

झागडणौ, झागडबौ—देखो 'झगडणौ, झगडबौ' (रू भे)
उ०—१ स्रीराम मुहरि लका समरि, कियौ ग्रजं कपि जिम करू। झागडू सेर-विलद हू, ग्रमरपुर जाऊ ग्रर रभ वरू।—सू प्र.
उ०—२ के दिया न दीठ वैठ नागडै जोगिंद्र के ही, सही लका ग्राधा घडै दीठ वका सूर। दवा सू पागडै लगो नूपरा चलावै दोहूं, गहठ्ठी बरा ऊपरा झागडै परी जे हूर।—बद्रीदान खिडियौ
झागडणहार, हारौ (हारी), झागडणियौ—वि०।
झागडिग्रोडौ, झागडियोडौ, झागड्योडौ—भू०का०कृ०।
झागडीजणौ, झागडीजबौ—कर्म वा०।

झागडियोडौ—देखो 'झगडियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री० झागडियोडी)

झागडू—वि० [स० झकट] १ लडाई करने वाला, टटा-फिसाद करने वाला, झगडालू २ मुकदमेबाज। उ०—ताहरा राजा कहै—रे दरबारी, राजा तौ राजा री जायगा छै। हूं तौ झागडू छूं।
—पलक दरियाव री वात
रू०भे०—झागडौ।
मह०—झागड।

झागडौ—१ देखो 'झगडौ' (रू.भे)
२ देखो 'झागडू' (रू.भे.)

उ०—१ अर सोढ सारगदेव चामुडराज रै चाचरै चद्रहास झाडियो ।—व भा

उ०—२ फाडतो फौजा अफिर, घूमाडतो घाग्रे घड । भवाड तो 'वीक' भलो, खिलतो निघात । वीजळा झाडतो वैरी, वावाडतो 'जैत' बीजो। पैलाडै पाडतो सोहै, राठौडा रौ छात ।—दूदो वीठू सुरताणोत

उ०—३ रिण 'गोगा' कर रीस, 'दला' सीस झाडी दुजड । इम हुय वटका वीस, श्रोध अरि त्रिय ईस कर ।—गो रू.

२ काटना । उ०—तिण समय चहुवाण कुमार मडळाग्र रौ आघात दे'र नाहरराज रा तुरग रौ खध पाखर समेत झाडियो ।—व भा

उ०—२ झट खग जवन कवट घड झाडै । पाच हजार रावता पाडै ।
—सू प्र.

३ सहार करना, मारना । उ०—झाडतो झटकाह, घट बटका करतो घणां । मयुरो भारथि मल्हपिग्रो, कावो विचि कटकाह ।
—वचनिका

४ (वदूक या तोप) दागना, छोडना । उ०—वदै जय 'भैरव' खाग समाय, मडै पग खान रहै रिणमाय । ग्रयो जद सामहि वाज उपाड, झले कर खान दुनाळिय झाड ।—पे रू.

५ एक वस्तु पर से दूसरी वस्तु हटाना, अलग करना, पृथक करना, दूर करना । उ०—अग मे आय निस दिन अडै, झडै नही मळ झाडियो । जगदीस पाक कीनो जिको, विलळा नाक विगाडियो ।
—ऊ का.

ज्यू०—गावँ मे लागोडा जवा रा दाणा झाड'र नीचा नाखिया ।

६ गर्द आदि दूर करने के लिये किसी वस्तु को झटका देना, फटकारना, झटकारना. ७ झाडू या कपडे आदि से किसी वस्तु अथवा स्थान को साफ करना. ८ मत्रादि का स्मरण कर के किसी रोग अथवा प्रेत-बाधा आदि को दूर करना, मत्रोपचार करना, फूकना ।

यौ०—झाड-फूक ।

९ नाराज हो कर अथवा बिगड कर कटु शब्द कहना, कडी-कडी बातें कहना, डाँटना, फटकारना १० गिराना, ढहाना ११ बूद-बूद या कण-कण के रूप में गिराना, टपकाना १२ तोडना १३ कम करना १४ मिटाना १५ निर्धन करना, कगाल करना १६ वधन खोलना ।

उ०—सेखो मुलतान मे वदीखानै मे थो सो माताजी स्री करणीजी वेडी झाड काढियो ।—नापै साखलै री वारता

झाडणहार, हारौ (हारी), झाडणियौ—वि० ।

झडवाडणौ, झडवाडवौ, झडवाणौ, झडवावौ, झडवावणौ, झडवाववौ, झडाडणौ, झडाडवौ, झडाणौ, झडावौ, झडावणौ, झडाववौ—
प्रे०रू० ।

झाडिओडौ, झाडियोडौ, झाड्योडौ—भू०का०कृ० ।

झाड़ीजणौ, झाडीजवौ—कर्म वा० ।

झडणौ, झडवौ—अक०रू० ।

झाडन—देखो 'झाडण' (रू.भे)

झाड़वार—वि०—१ वह वस्तु जिस पर वेल-बूटे वने हो ।

२ कटीला ।

झाड पूछौ—स०पु०—१ वह हाथी जिसकी दुम झाडू की तरह छितराई हुई हो ।

रू०भे०—झाड दुमौ ।

२ वह वैल जिसकी पूछ भूमि को स्पर्श करती हो (अशुभ)

झाड-फाणूस, झाड-फानूस—स०पु०यौ०—काच के वने हुए फूलों आदि का गुच्छा जो शोभा के लिये छत मे लटकाया जाता है और उसमें दीपको, मोमवत्तियो अथवा विजली की रोशनी की जा सकती है ।

झाडफूक, झाडफूकी—सं०स्त्री०—मत्रोच्चारण अथवा मत्रादि के स्मरण सहित झाडने व फूकने की क्रिया जो किसी रोग निवारण अथवा प्रेत-बाधा आदि दूर करने के लिये की जाती है।

झाडवट, झाडवड—स०स्त्री०—झडवेरी को काटने के निमित्त परशु के आकार का बना छोटा उपकरण ।

रू०भे०—झाडवड ।

झाडवुहार—स०स्त्री०यौ०—झाडने व बुहारने का कार्य, सफाई करने का कार्य ।

झाडवोर—स०स्त्री०—१ छोटे वेर का वृक्ष, झडवेरी ।

अल्पा०—झडवेरी, झाड-वोरडी ।

२ झडवेरी का फल ।

रू०भे०—झडवोर, झाडीवोर ।

झाडवोरडी—स०स्त्री०—देखो 'झाडवोर' (अल्पा रू भे)

रू०भे०—झडवेरी ।

झाडवड—देखो 'झाडवड' (रू भे)

झाडमाही—स०पु०—मारवाड राज्य का एक प्राचीन सिक्का । इसका प्रचलन जयपुर राज्य मे भी था ।

झाडाणौ, झाडावौ—क्रि०स०—छुडाना । उ०—युग-प्रधान जिनचद यतीसर, छइ जसु नाम विसाळ । साहि अकवर तसु फरमाइ, तिणि झाडाया ळा जाळ ।—ऐ.जै का स

झाडायोडौ—भू०का०कृ०—छुडाया हुआ ।

(स्त्री० झाडायोडी)

झाडि—देखो 'झाडी' (रू भे)

उ०—करहा, देस सुहामणउ, जे मू सासर वाडि । आव सरीखउ आक गिणि, जाळि करीरा झाडि ।—ढो मा

झाडियोडौ—भू०का०कृ०—१ प्रहार किया हुआ, वार किया हुआ. २ काटा हुआ. ३ सहार किया हुआ, मारा हुआ ४ (वदूक या तोप) दागा हुआ, छोडा हुआ ५ एक वस्तु पर से दूसरी वस्तु हटाया हुआ, पृथक किया हुआ, अलग किया हुआ, दूर किया हुआ ६ (गर्द आदि दूर करने के लिये किसी वस्तु को) झटका दिया हुआ, फटकारा हुआ, झटकारा हुआ ७ झाडू या कपडे आदि से किसी वस्तु या स्थान को साफ किया हुआ ८ मत्रादि का स्मरण कर के

किसी रोग या प्रेत-बाधा आदि को दूर किया हुआ, मन्त्रोपचार किया हुआ, फूका हुआ ९ डाटा हुआ, फटकारा हुआ १० गिराया हुआ, ढहाया हुआ. ११ बूंद-बूंद या कण-कण के रूप मे गिराया हुआ, टपकाया हुआ. १२ तोडा हुआ १३ कम किया हुआ १४ मिटाया हुआ १५ निर्धन किया हुआ, कगाल किया हुआ। १६ बधन-मुक्त किया हुआ।
(स्त्री० झाडियोडी)

झाडी-स०स्त्री०—पेड-पौधो का समूह, बहुत से वृक्षो अथवा झाडो का समूह, झुरमुट । उ०—१ कठै वजै वडवोर, कठै झाडी मोटोडी । कठै वोरटी नाव, वणी देवा री छोडी ।—दसदेव
उ०—२ कोट माहै कूवौ १ मीठौ पाणी । हळवद री पाखती झाडी थोडी, मैदान छै ।—नैणसी
२ छोटा झाड या पौधा ३ सूअर के बालो की कूची
४ देखो 'झाडीगर' (रू भे)

झाडीगर-स०पु०—मन्त्रोपचार करने वाला ।
रू०भे०—झाडी, झाडीदार ।

झाडीदार-वि०—१ झाडी की तरह का, कटीला, काटेदार।
२ देखो 'झाडीगर' (रू भे)

झाडीवोर—देखो 'झाडवोर' (रू भे)
उ०—साजन इसा न चाहिजै, जैसा झाडी-वोर । ऊपर लाली प्रेम की, हिरदा माय कठोर ।—अज्ञात

झाडू-स०पु०—जमीन व फर्श आदि साफ करने के लिये लबी सीको के समूह का बना उपकरण, बोहरी, झाडन ।
उ०—जळहर जामी वावो मागा, रातादेश्री माय। कान्हकवर सो वीरो मागा, राई सी भोजाई। सावळियो वहनोई मागा, सोदरा बहन मागा। हाडा धोवण फूफी मागा, झाडू देवण भूवा ।—लो गी
क्रि०प्र०—देणौ, फिरणौ, फेरणौ, मारणौ ।

झाडूकसी, झाडूदार—देखो 'झाडूबरदार'

झाडूमी—देखो 'झाडपूछौ' (रू भे)

झाडूबरदार, झाडूवाळौ-स०पु०—झाडू देने वाला, मेहतर ।

झाडोलो-स०पु०—पावो मे पहनने के चमडे का मोजा जिसे किसान काटा, जीवजतु आदि से पाव की रक्षा के लिये पहनते हैं ।
रू०भे०—झडूलौ । ये सख्या मे दो होते हैं ।

झाडौ-स०पु०—मन्त्रोपचार, भाडफूक। उ०—१ किण ही नै सरप खाधौ। गारडू झाडौ देइ वचायौ।—भि द्र.
उ०—२ व्यतर नीचौ पद पायौ रे, लागै लुगाया नै जायौ। देई मत्र नै झाडा रे, गैलाया करै पवाडा ।—जयवाणी
उ०—३ कर कर वाडा कपट रा, धाडा पाडण धाम । दिल चोरण झाडा दियै, भाडा वाळी भाम ।—ऊ का
क्रि०प्र०—देणौ ।
मुहा०—झाडा देणा—मन्त्रोपचार करना, फुसलाना ।
यौ०—झाडौ-झपटौ, झाडौ-झपाटौ ।
२ पाखाना, मल, टट्टी । उ०—तीन दिना लग ताक जिकै झाडै नहैं जावै । जावै तौ ही जुलम ऊठ वेगा नहैं आवै ।—ऊ का
३ सफाई करने का कार्य ।

झाडौ-झपटौ, झाडौ-झपाटौ-स०पु०यौ०—मन्त्रोपचार, झाड-फूक ।
उ०—झाडा झपाटा मत करौ, मत करौ छकाया री घात । च्यारू ई जाप जपौ भला, मोटी दिवाळी नी रात ।—जयवाणी

झाज—देखो 'जा'ज' (रू भे)

झाजौ—देखो 'झाझौ' (रू भे)

झाझ—देखो 'जा'ज' (रू भे.)
उ०—हरि मदिर मा निरत करावा, घूघरधा घमकास्या। स्माम नाम रा झाझ चलास्या, भोसागर तर जास्या ।—मीरा

झाझउ—देखो 'झाझौ' (रू भे)
उ०—जोजन घडीयइ झाझउ थाय, लोहा भरइ न थाका थाइ । दीवइ मारगि जेसळ वहइ, वाट घाट सगळी विधि लहइ।—ढो मा.

झाझु—देखो 'जाझौ' (रू भे.)

झाझेरडौ—देखो 'झाझौ' (अल्पा रू भे)
उ०—१ सातवीस झाझेरडा, इम पूछइवा छइ बहु बोल। ते सुधी परि सरद हौ, भव भ्रामक काइ (ग) वाझो निटोळ कि ।
—ऐ जै.का.सं.
उ०—२ चार मास झाझेरडा ए, रह्या 'विमल गिर' पास। नव्याणु यात्रा करी ए, पोहोती मन तणी आस ।—ऐ जै का स

झाझौ-वि० (स्त्री० झाझी) १ ज्यादा, अधिक।
उ०—१ फौजा तौ वाटी करी, स घोडा नै दीनी दाळ। झाझा पडिया पातिया, कोई लग्या खुसी का थाळ।
—डूगजी जवारजी री पड
उ०—२ अति घण ऊनिमि आवियउ, झाझी रिठि झडवाइ। वग ही भला त वप्पडा, धरणि न मुक्कइ पाइ ।—ढो मा
उ०—३ झाझै मळ मूत्र झरै, अग तणा सहु अस। तौ पिण खावा तरसिया, माणस पापी मस ।—ध व ग्र. उ०—४ म्हानै रे मारू कसूबै री झाझी चाव, राय थे सिधावौ रे ईडरगढ री चाकरी।
—लो गी
२ गहरा। उ०—जा लगि तेह नइ तू प्रिय पासि, ता लगि प्रीतम चडे ग्रहासि। झाझी निद्रा व्यापइ अगि, तिण वेळ प्रिय चडयउ पवगि ।—ढो मा
३ तेज। उ०—१ झीकै झाझी झाळ, काळ चाळ झटकै 'कमौ'। भटकै क्रोध भुजाळ, खटकै उर खूदाळमौ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
उ०—२ पडियौ असुर ऊपरा पडियौ, कोपिग्रै श्रोपिओ निमौ कठीर। झाझै त्रिसळ दैत झरडियौ, वडियौ मास भरथ रै वीर ।—पी ग्र
४ वढिया, सुन्दर। उ०—१ भल नूती रे म्हारी जामण-जाग्री

वैन। सैणा बनोग्री भाणजा जे। भल नूती रे म्हारे काका-बाबा री जोड। काकी-बडिया री झाझी झूलरी जे।—लो.गी.

उ०—२ झाझै झूलर झीलता, पंठो कुवर विचित्र। अजहु न आयो आपणो, मन मानीतो मित्र।—पलक दरियाव री वात

५ अप्रिय, कटु। उ०—मन तौ खिण खिण वस नही म्हारी, झाझौ वचन झखाळ। काय चपलता कहियै केतली, जासी किम भव जाळ।

—ध व ग्र

६ वडा, महान्। उ०—गाया ग्वाळी कानो काळी वसी वाळी वेहारी। झाझा झाझौ प्रिथी प्राझी मोटो ग्राझी मोरारी।—पि प्र

७ मजबूत, दृढ. ८ सघन, घना. ९ सुहाना, मनमोहक।

क्रि०वि०—मजबूती से, दृढ़ता से। उ०—काधै चाढो कामिणी, झाझो कप्पड झाल। माहि पहूती माळियै, विरह हुवी वेहाल।

—बीझरै अहीर री वात

रू०भे०—जाजो, जाझो, झाजो, झाझउ।

अल्पा०—झाझडलो, झाझू, झाझेरडो।

झाट-स०स्त्री० [स० झट्] १ प्रहार, चोट। उ०—इम वागा लाग असमाणा। कूता धमक झाट केवाणा।—सू प्र.

क्रि०प्र०—पडणी, लागणी, होणी।

२ आघात, टक्कर, चोट। उ०—१ लोहरा लगरा झाट लाग। अघफरा गिरा तर झडै आग। मेवास तूटगा मगज मेट। फूटगा गिरद हैताळ फेट।—वि.स उ०—२ तोपा घर दरजा पडै, झडै गिरा सिर झाट। जाणै सागर खीर रै, मदर री अरराट।—वी स

क्रि०प्र०—देणी, पडणी, लागणी।

३ मुकाबिला, टक्कर। उ०—१ म्हारी राड छै काळ री झाट सी राणोजी अरु सुखो अै भी म्हा सू टाळी दै छै।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ वीरा के वीर, सागर के धीर। नाहर के थाहर, लोह की लाट। जगू के जालम, जम की सी झाट। लावा के किले मे ऐसे रजपूत, सार के सगर वळ के मजवूत।—ला रा

उ०—३ मूघा हालरा उगेर, व्रथा पालणै हिंडाया मात। पोखै केण कारणै, जिवाया थानै पीव। लोका लाज धारणै, फिरगी हू त झाट लेता। जै'र खाय घणी रै, बारणै देता जीव।—दलजी महडू

क्रि०प्र०—करणी, लैणी।

४ भिडन्त।

क्रि०प्र०—होणी।

५ झपट, चपेट। उ०—तठा उपरात करि नै राजान सिलोमति वाज, कुही, सिकरा, सीचाण, जुररा, तुरमती, हुसनाका, सारवाना रा हाथा ऊपरा सू सगगाट करता छूटै छै। वाइ पखरा जोर सू नीला घास धरती सू लपट नै रहिग्रा छै। आसमान रै फेर जितरा जिनावर चिडी, कमेडी झाट माही आवै छै।—रा.सा स

क्रि०प्र०—आणी।

६ युद्ध, लडाई, भिडन्त। उ०—१ हे सखिया उठै ठिकाणा में भडनै घोडा सुहगा हा सो एक आदमी सू झाट उडता (युद्ध होता) भड नै घोडा मुहगा होय गया।—वी स टी

उ०—२ घेरी घेरी सह कहै, मुहडै चढै न कोय। डाढाळै री झाट मे, सारा रहिया जोय।—डाढाळा सूर री वात

क्रि०प्र०—उडणी, मचणी।

७ चपत, तमाचा।

क्रि०प्र०—पडणी, लागणी।

८ झडी। उ०—इसी करतौ गुण झाट उपाट। झडै खळ खेलि तसी खग झाट।—सू प्र

क्रि०प्र०—करणी।

९ सांप का डसना. १० ध्वनि, आवाज। उ०—१ कपड़ा काळा कीट, नीठ ऊठ ऊठ निरोधै। मीट अमल रै माय सीठ कुचरै जू सोधै। भले न उतरै भीट धीठ जद सीस धुणावै। प्रात झाट पाद री साट पादडा सुणावै। कर काम इसो मानै कुसळ, लाज न आवै लेस री। अमलिया करि देखो अवै, दुमह दसा इण देस री।—ऊ का

उ०—२ हाका वीर कळह पुन हड-हड। रिण चामड घण घेर रची। पळचर नहराळा पखाळा। माचि झडापडि झाट मची।—दूदौ

क्रि०प्र०—करणी, मचणी, सुणणी।

रू०भे०—झट, झाटक।

झाटक-वि० [स० झट+इति] १ प्रहार करने वाला, वार करने वाला २ योद्धा। उ०—कावरडा काटक करै, कुळ दी झाटक काण। ताखा दाटक 'बगत' तण, जस खाटक घण जाण।

—कविराजा करणीदान

३ देखो 'झाट' (रू भे) उ०—१ छत्रीस दडायुध लीधा। तेहे राउते चालते वदीजन विरदावळी वोलइ छइ। सूरा राउत चडीया। हाथी हाथीया सू। घोडा घोडा स्यूं। पाळा पाळा स्यू। खडग तणा खाटक। खेडा तणा भाटक। तरूयारि तणा झाटक। धुनुख तणा वोकार। अणी तणा अगार। वाण तणी व्रिस्टि।—का दे.प्र.

उ०—२ करै घण झाटक लोह कराळ। दुवै दुव टूक हुवै रवदाळ।

—सू प्र

उ०—३ करि फोतकार झुक्कै कहर, चाढि सूड फण चाचरै। सिखराळ गिरद चढि जाणि स्रप, काळदार झाटक करै।—सू प्र

रू०भे०—झाटक्क।

झाटकणो-स०पु०—१ किसी चिपकी हुई वस्तु आदि को दूर करने अथवा झाडने का उपकरण २ शमी वृक्ष की कोमल टहनियो से बना 'भुरट' की बालो को झाडने का उपकरण।

उ०—नापै कही, जी दीवाण सलामत, भुरट ऊगै छै, पछै पाकै जद काटा लागै, पछै खारी रै लकडी बाध एक हाथ झालै, पछै लकडी एक चीर झाटकणो करै, तेसू काटा झाड के चोटिया करै, भेळा करै।—नापा साखला री वारता

अल्पा०—झाटी।

झाटकणौ, झाटकबौ—क्रि०स०—१ गर्द आदि दूर करना, साफ करना।

उ०- झाटकि रूमाला गिरद झाडि। पै छोळ कीध जिम घण पहाडि।—सू प्र

२ गर्द आदि दूर करने के लिये किसी वस्तु को झटका देना, फटकारना, झटकारना ३ एक वस्तु पर चिपकी हुई या लगी हुई दूसरी वस्तु को हटाना, अलग करना, पृथक करना, दूर करना।

४ प्रहार करना, वार करना। उ०—थारै पीव रै हाथा री वळिहारी, वारणा लेऊ इसी तरवार खुरसाण चढाय तयार कर दीधी है सो रिण में दुसमणा ऊपर झाटकता हाथ रै नाम भर झटको हचको नही आवै।—वी स टी

५ मारना, पीटना ६ फटकारना, डाटना।

उ०—औ थेट पूगा तद पातसाह जी द्वारासाह नू जुगवराज दियौ। पीछे महीनै एक सू इण एक अनीत करी। तिण माथै साजिहानजी इणनू झाटकियौ। तद द्वारासाह बाप कूं कैद कर दिया।—द.दा

७ घोडा दौडाना। ८ वेग से खीचना। उ०—या सुणता ही लोह छक होय पडियै थकै ही मलफ लेर चाळुक्य हमीर कैमास री काख में चपिया आपरा स्वामी नू झाटकियौ।—व०भा०

९ आहरण करना। उ०—भूखा केहरी री केहर खीजिया नागराज री मणी माडाणी झाटकि लेण री वळ होय तौ म्हारा प्रस्थान री राह रोकण री सलाह छै।—व०भा०

१० देखो—'झटकणौ, झटकबौ' (रू.भे)

झाटकणहार, हारौ (हारी), झाटकणियौ—वि०।

झाटकिग्रोडौ, झाटकियोडौ, झाटक्योडौ—भू०का०कृ०।

झाटकीजणौ, झाटकीजबौ—कर्म वा०।

झाटकपट—स०पु०—राजपूताने के प्रतिष्ठित सरदारो को राजदरबार से मिलने वाली ताजीम।

झाटकियोडौ—भू०का०कृ०—१ गर्द आदि दूर किया हुआ, साफ किया हुआ २ गर्द आदि दूर करने के लिये किसी वस्तु को झटका दिया हुआ, फटकारा हुआ, झटकारा हुआ ३ किसी एक वस्तु पर चिपकी हुई या लगी हुई दूसरी वस्तु को हटाया हुआ, अलग किया हुआ, पृथक किया हुआ, दूर किया हुआ. ४ प्रहार किया हुआ, वार किया हुआ ५ मारा हुआ, पीटा हुआ ६ फटकारा हुआ, डाटा हुआ ७ घोडा दौडाया हुआ ८ वेग से खीचा हुआ. ९ आहरण किया हुआ १० देखो 'झटकियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री० झाटकियोडी)

झाटकौ—स०पु०—१ चँवर डुलाने की क्रिया या भाव।

उ०—हुवै चम्मरा झाटका जोति हुवै। सदा ऊतरै आरती साझ सुबै। तकै भादवी माह ऊपात तिथ्थी। पडै मायरै पाय प्रिथ्थीप प्रिथ्थी।—मे म

२ प्रहार, चोट, वार। उ०—लोहा करती झाटका फणा कवारी घडा री लाडी, आडी जोधाण सूं खेंचियौ वहै अट। जगी साल हिंदवाण री आवगौ जीनै, आउवौ खायगौ फिरगाण री अजट।

—सूरजमल्ल मीसण

झाटक्क—देखो 'झाटक' (रू भे)

उ०—खेगक्क उचक्क खाटक्क खगक्क। काटक्क कटक्क झाटक्क झटक्क।—सू.प्र

झाटक्कणौ, झाटक्कबौ—देखो 'झाटकणौ, झाटकबौ' (रू भे)

उ०—दुरग वडाई दाखवै, झाटक्कै कोसीस। 'अचळ' लडेवा ऊठियौ, अवर लागौ सीस—अ वचनिका

झाटक्कियोडौ—देखो 'झाटकियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री० झाटक्कियोडी)

झाटझडी—स०स्त्री०—शस्त्रो के प्रहारो से होने वाली ध्वनि।

उ०—लोहा रा वोह सेला रा घमका नीजै। खाडा री खाटखडि झाटझडि डडाहडि खेलीजै।—वचनिका

झाटणौ, झाटबौ—क्रि०स०—१ सहार करना, मारना।

उ०—झाळ सा वाळिया किलग नॉ झाटिया। काळ रै काळि काळीग नॉ काटिया।—पी ग्र

२ सॉप का डसना।

३ देखो 'झाटकणौ, झाटकबौ' (रू भे)

उ०—वंगाळक झाटत खाग अवीह। सफै जुध दारुण ठाकुरसीह।

—सू प्र.

झाटियोडौ—भू०का०कृ०—१ सहार किया हुआ, मारा हुआ।

२ सॉप का डसा हुआ।

३ देखो 'झाटकियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री० झाटियोडी)

झाटी—स०स्त्री०—१ काटेदार वृक्ष की टहनी. २ काटेदार वृक्ष।

३ देखो 'झाटकणौ' (अल्पा. रू भे)

४ जिद्द, हठ।

मुहा०—झाटी झिलाणी—हठ करने के लिये प्रेरित करना, दुराग्रह करने के लिये प्रेरित करना।

५ कष्ट, दु ख, आपत्ति ६ कँटीली झाडियो की टहनियो को जमा कर वनाया हुआ फाटक।

मह०—झाटौ।

झाटौ—स०पु०—देखो 'झाटी' (मह, रू.भे.)

झाड—देखो 'झाड' (रू.भे.) (उ र) उ०—ताल तमालीय तणच्छ घण, तिहा तुळसी नइ ताड। तज तडिळ नइ तिलवडी, ताळीसाना झाड।—मा.का प्र.

झात्कारि, झात्कारी—स०स्त्री० (अनु०) झल्लरी नामक वाद्य की ध्वनि।

उ०—सीकरी तणउ झमाल, अलवा तणौ डमाल, भेरि तणै भाकारि, झल्लरी तणै झात्कारि, सख तणै ओकारइ, तिविळ तणै दोकारि, मादळ तणै धोंकारि, ढोल तणै ढमढ़िमाट, पटह तणै गुमगुमाटि, रणतुर तणै रणरणाटि।—व स

झा ड, झापट-स०स्त्री० [स० चपट] चपत, तमाचा थप्पड ।
क्रि०प्र०—देणी, मारणी, लगाणी ।

झापणो, झापबो-क्रि०अ०—छलाग भरना, कूदना ।
उ०—अग साखा असि अगा पवन उडाण डाण झापदा। पाली हरि विलि पिगा दादुरिया नैव कुदति ।—रामरासो

झापाझूपो-स०पु०—अनुचित रूप से अधिकार करने की क्रिया या भाव, छीना-झपटी ।

झापियोडो-भू०का०कृ०—छलाग भरा हुआ, कूदा हुआ ।
(स्त्री० झापियोडी)

झाफ-स०स्त्री०—१ झपकी । २ देखो 'जाफ' (रू भे)

झाब-स०स्त्री०—मिट्टी का बडा वर्त्तन जिसमे पापड, मंगोडी आदि भर कर लडकी का पिता अपने जामाता को दहेज मे देता था (शेखावाटी)
रू०भे०—झावो । (मरुभारती)

झाबकि-क्रि०वि०—सहसा, एकाएक, झट, शीघ्र ।
उ०—झाबकि पइठी झाळि, सुदरि काइ न सळसळइ । बोलइ नही ज बाळ, वण धवूणी जोइयउ ।—ढो मा.

झाबरो-वि०—घने वालो वाला । उ०—चाकर्म ईडर रा, झाबरै पूछ रा, वळि मे रूप रा, नवहथी झोक रा ।—रा.सा.स.

झाबलो—देखो 'झाउलियो' (रू भे) (शेखावाटी)

झावी-स०स्त्री०—कोल्हू मे से तेल निकालने का लकडी का बना छोटा बरतन ।

झाबूकणो, झाबूकबो—देखो 'झबकणो, झबकबो' (रू भे.)
उ०—ढोला, जाइ वळि आविज्यउ, आसा सहि फळियाह । सावण केरी वीज ज्यउँ, झाबूकइ मिळियाह ।—ढो सा.

झाबूकियोडो—देखो 'झबकियोडो' (रू भे.)
(स्त्री० झाबूकियोडी)

झाबोलियो, झाबोलो—देखो 'झाबो' (अल्पा रू भे).

झाबौ-स०पु०—१ घी, तेल आदि तरल पदार्थों के रखने का ऊट के चमडे का बना बरतन । २ चिथडो एव कागज को कूट कर बनाया हुआ बरतन ।
उ०—भर भर झाबा पीसण लागी, पीस्यो छै मण भर धान, मारूणी घणा कमावणी ।—लो.गी
३ सुरणाई नामक वाद्य का खुला मुह. ४ छोटे बच्चो के पहनने का वस्त्र, झगला ५ दही आदि रखने का मिट्टी का बना चौडे मुह का बरतन. ६ किसी वस्तु के ऊपर का आगे का चौडा भाग। ७ अनाज बोने के उपकरण मे बांस की खोखली नली पर लगा हुआ चोगे के आकार का भाग. ८ सिर, मस्तक । उ०—ब्याज बटाउ थनै वाला लागै, ओ काई लालच लागो रे । कहत कबीर सुणो भाई साधो, जम कूटैला झाबो रे ।—कबीर
९ ऊपर से आने वाले प्रकाश को रोकने वाली वस्तु, आड, रोक ।
ज्यू—ई दरखत रो झाबो पडणे सू इण रै नीचै वायोडा बीज ऊगा ई कोयनी ।
क्रि०प्र० —पडणो ।
रू०भे०—झबो, झब्बो ।
अल्पा०—झबोलियो, झाबोलियो, झाबोलो ।

झार्य-झार्य-स०स्त्री० (अनु०) १ सन्नाटे मे हवा का शब्द. २ झन-झन शब्द, झनकार ।

झायणो, झायबो-क्रि०स० [स० ध्यै] ध्यान लगाना, मनन करना, चिन्तन करना । उ०—१ विरहि विरागीय वण मझारि जाईउ मणि झायइ । 'लवणिम जूवणु रूपरेह ता आलिहि जाइ' ।
—प च
उ०—२ सुहगुरु सिरि 'जिणलबधिसूरि', पट्ट कमळ मायडु । झायहु सिरि, जिणचदसूरि, जो तव तेय पयडु ।—ऐ.जै का स

झार-स०पु०—समूह, झुण्ड, यूथ । उ०—जे परसो दीवाण महला ऊपर खडा कूजा री झार बोलतो देख थारौ सामो जोय मूछा हाथ फेरियो ।—नापै साखलै री वारता

झारणी-स०स्त्री०—मिटाने वाली, नाश करने वाली ।
उ०—सब वस तारणी उबारणी अनेक सता, सारणी सगता काज दारणी सहाय । कारणी तीरथा मुदै झारणी कलक काट, मानवा ऊधारणी मुगत दाता माय ।—गगाजी रो गीत

झारा-स०पु० (बहु० व०) सारंगी के मुख्य दो तारो के बाद के सात छोटे तार ।

झारणो, झारबो-क्रि०स०—१ टपकाना, स्रवाना ।
उ०—तठा उपराति कर नै राजान सिलामति किण भाति रा सरबत छाणीजै छै । घणै वेदानै, दाडिम कुळी रा रस लीजै छै । सो घणी काळपी मिसरी रा भेळ सू घणी एळची नै मिरचा रै भेळ बोह लागै थकै ऊजळा कपूर वासी गगोदक पाणी सू ऊजळै गळणै झोळि झोळि झारीजै छै ।—रा सा स.
२ किसी द्रव पदार्थ को ऊँचे स्थान से गिराना ३ किसी पदार्थ को ऊँचे स्थान से झाडना, गिराना. ४ टुकडे-टुकडे कर के गिराना. ५ बरसाना, ६ वीर्य स्खलित करना ७ छिडकना ।
उ०—रगभूमि सजकारीय, झारीय कुकुम झो(घो)ळ । सोवन साकळ साधीय, बाधीय चपक दोळ ।—व वि.
८ प्रहार करना, मारना, वार करना ।
झारणहार, हारो (हारी), झारणियो—वि० ।
झारिओडो, झारियोडो, झारयोडो—भू०का०कृ० ।
झारीजणो, झारीजबो—कर्म वा० ।
झरणो, झरबो—अक० रू० ।

झारिया-स०पु० (बहु व०) छनी हुई भग ।
मुहा०—झारिया जमाणा—भग पीना ।

झारियोड़ो-भू०का०कृ०—१ टपकाया हुआ, स्रवाया हुआ
२ (द्रव पदार्थ को) ऊँचे स्थान से गिराया हुआ
३ (ऊपर से किसी पदार्थ को) झाडा हुआ, गिराया हुआ.

४ टुकडे-टुकडे कर के गिराया हुआ. ५ बरसाया हुआ.
६ वीर्य स्खलित किया हुआ। ७ छिडका हुआ. ८ प्रहार किया हुआ, वार किया हुआ।
(स्त्री० झारियोडी)

झारी-स०स्त्री०—१ टोटी लगा हुआ लुटिया की तरह का एक प्रकार का लम्बोतरा पात्र। उ०—१ हा रे वाला साथीडा नै लोटो दिवाय। जेंवाम्री नै झारी सोने की, जी म्हारा राज।—लो गी.
उ०—दूजी तो पैंडी जी उमादे राणी पग धरयो, दातण झारी जी हाथ।—लो गी
उ०—३ सोनगरी आपरी छोकरी नू कह्यौ—'झारी तळाव थी भर ल्याव।' तरै छोकरी झारी भर ल्याई।—नैणसी
२ चम्मच के आकार का किन्तु चम्मच से कुछ बडा तथा आगे से छितराया हुआ छेददार उपकरण।

झारीबरदार-स०पु०—पानी का बर्तन रखने वाला।
उ०—दूदो सुरजणोत चापावत जैसिंघ भैरूंदासोत रौ दोहितो। राव सुरजन रै कवर दूदो वडै डील वडो रजपूत हुतो। उणनू उणरा झारीबरदार बिरामण जिणरै हाथ कवर भोज सुरजणोत जहर दिरायो। दूदा रै बेटो नरहरदास।—वा दा ख्यात

झारोळी-स०स्त्री०—वर्षा की धारा। उ०—वीजळिया झारोळियां, चमकि डरावै मोहि। आवि घरै सज्जण 'जसा', हूं बळिहारी तोहि।
—जसराज

झारो-स०पु०—१ एक प्रकार का लकुटि के आकार का लम्बोतरा जल-पात्र जिसके आगे टोटी लगी रहती है। उ०—१ तठा उपरायत पाळा झारा चळू करण रै पगा मगायजै छै, चळू कीजै छै।
—रा सा स.
उ०—२ इतरो कहि ब्रहदभाण झारो ले नै सकळप घालियो।
—पलक दरियाव री वात
उ०—३ महँदी तो सीचण घण गयी, सोनै रो झारो जी हाथ, सोदागर महँदी राचणी।—लो गी.
२ प्रात काल का भोजन और नाश्ता ३ लबी डडी वाली करछी या चम्मच जिसका अगला भाग छोटे तवे का सा होता है और जिसमे बहुत से छोटे-छोटे छेद होते हैं।
४ महीन महीन छेद का कलछे के आकार का किन्तु छिछला उपकरण जिससे प्राय घी, दूध आदि छाने जाते हैं ५ किसी द्रव पदार्थ की धारा जो प्राय किसी रोग, सूजन या घाव आदि के अच्छा होने के लिये डाली जाती है।
क्रि०प्र०—देणी।
६ (?)
उ०—पछै कितरे हेक दिने जसवतजी बोराड वसिया। पछै मेरा नू निपट दवाया। मु चाग रो धणी जसवंतजी रा हीडा करतो। नै जसवतजी रै राठोड मानो करमसोत चाकर थो सु पातळो काळजो थो। सु उण आगै जसवतजी कह्यो—राठोड माना! आपै चाग रा धणी नू मारा। हू चोट करण नै जाइस। तरै हाथ झारो देइस। तरै हू लोह वाहू छू, थे पिण लोह वाहज्यो।—राव मालदे री वात

झाळ—स०स्त्री० [स० ज्वाला] १ अग्नि, ज्वाला।
उ०—१ स्वारथिया स्वारथ्थ मे, कछु सरमावै नाय। चैन घडी पुळ ना पडै, झाळ उठै हिय माय। हिय मे ऊठै झाळ, निपट अधा ह्वै जावै। कूड-कपट रै हाथ, सभी ससतर अपणावै। गरज मिटै जद पलट दै, आख पलक रै माय। स्वारथिया स्वारथ्थ मे, कछु सरमावै नाय।—अज्ञात
उ०—२ साजे द्रढ आसण इस्ट अराधण, पैठो जाय पताळ मे जी। दिल पच इद्री दम घोम सखी, धम झोखै आहुत झाळ मे जी।
—र रू
२ अग्नि की लपट, अग्नि-शिखा। उ०—१ मेह को ममोलो, बादळा की बीज, होळी की झाळ, सावण की तीज।
—दरजी मयाराम री वात
उ०—२ दादू माया फोडे नैन दो, राम न सूझै काळ। साधु पुकारै मेर चढ, देख अग्नि की झाळ।—दादू वाणी
क्रि०प्र०—ऊठणी।
३ लौ, अग्नि-शिखा। उ०—अचपळो दिनडो होसी रात, चानणो होसी घोर अंधार। कोड री इण मिटवा री वेळ, साझ रै दिवलै ह्वैगी झाळ।—साझ
४ क्रोधाग्नि, क्रोध। उ०—१ तरै लालजी ना कासीद जाय कागळ दिया। प्रधान रो लिखियो। समाचार साभळिया। तद पगा री झाळ माथै ऊठी तरै तळवटा आवण लागा।—लाली मेवाडी री वात
५ सूर्य-किरण, रश्मि। उ०—झवकुत कूत किरणाळ झाळ, निसि जाण नवइ नाखत्र माळ।—रा.जै. पाघडी
६ प्रसग करने की कामना, कामेच्छा, चुल।
उ०—सखी-वयण सुदरि सुण्या, उठी मदन की झाळ। सुदरि नू सज्जण-विरह, ऊपन्नउ तत्काळ।—ढो मा
क्रि०प्र०—ऊठणी।
७ चरपराहट, तीखापन ८ देखो 'झाळण' (रू भे)
९ देखो 'झळ' (रू भे)

झाल-स०स्त्री०—१ स्त्रियो के पहनने का एक प्रकार का कर्णाभूषण।
उ०—१ सारग वाणी सरिस बोलई, नही तोलई कोई। करणेनि सोवन झाल झवकइ, अवसि रभा होई।—रुकमणी मगळ
उ०—२ सरळ तरळ अति कोमळ, गोरिय चपकवानि। दत वइरा-गर दीपइ, झाल झळापइ कानि।—प्राचीन फागु सग्रह
२ बैलगाडी पर भूसा आदि भरने के लिये लगाई जाने वाली खीप, कपास की टहनियो की अथवा बकरी के बालो से बुनी हुई चौडी व लम्बी पट्टी ३ ऐसी दो पट्टियो के बीच गाडी मे भरा हुआ भूसा.
४ ऐसी दो पट्टियो के बीच गाडी मे भूसा आदि भरने का एक नाप विशेष।

महः०—झालड, झालण ।

५ पकडना क्रिया का भाव ६ एक प्रकार का बडा जल-पात्र (शेखावाटी)

रू०भे०—झालि ।

झालड़—१ देखो 'झाल' (२, ३, ४) (मह , रू.भे)
२ देखो 'झालर' (रू.भे) ३ देखो 'झालरी' (रू भे)

झाळण-स०स्त्री०—धातु की वस्तुओं को जोडने के लिये लगाया जाने वाला टांका ।

झालण-स०स्त्री०—१ अनाज ढोते समय गाडी पर बिछाया जाने वाला कपडा २ पकडने की क्रिया या भाव ३ देखो 'झाप' ।
(२, ३, ४) मह , रू भे)

झाळणौ, झाळबौ-क्रि०स०—१ धातु की बनी वस्तु मे टांका देकर जोड लगाना. २ भस्म करना, जलाना ।

झाळणहार, हारौ (हारी), झाळणियौ—वि० ।

झाळिग्रोडौ, झाळियोडौ, झाळयोडौ—भू०का०कृ० ।

झळणौ, झळबौ—अक०रू० ।

झालणौ, झालबौ-क्रि०स०—१ पकडना । उ०—ऊमर साल्ह उतारियउ, मन खोटइ मनुहारि । पग सू ही पग कूटियउ, मुहरी झाली नारि ।—ढो मा उ०—२ नदिया सुत तासु सुता रो नायक, जिण नू काठी झालै । जळसुत मीत तासु-सुत जिण नूं, घात करै नह घालै ।
—र रू.

उ०—३ आप एकत देहुरी जड नै कवळ पूजा करणी माडी । तरै देवजी हाथ झालियो, कह्यौ—म्हे थारी सेवा-पूजा सौं राजी हुवा ।
—नैणसी

२ सहन करना । उ०—१ कजियौ खोखरा सू करस्या । खोखर आपा रो धवको झालै सो कुण ।—सूरै खीवै कामळोत री वात

उ०—२ तो दस मास न झाल्यौ भार मुझ मातजो । तें भाखीज्यें वात करू तिण मे कजी ।—प च चौ

३ स्वीकार करना । उ०—१ कीधो चौथ विखायता, किता इजारो कीध । केताई झाली चाकरी, दूण इजाफा दीध ।—रा रू.

उ०—२ हू तोनू सराप देयस्यू, सो झाल ।
—डाढ़ाळा सूर री वात

उ०—३ या ग नाळेर पाछा मेलो मती । तारां नाळेर झालिया ।
—वीरमदे सोनिगरा री वात

४ धारण करना । उ०—१ जिणि दीहे तिल्ली त्रिडइ, हिरणी झालइ गाभ । ताह दिहा री गोरडी, पडतउ झालइ आभ ।—सू प्र.

उ०—२ झळहळ पखर सिलह अत्र झालै । हय असवार दोय लख हालै ।—सू प्र.

५ ग्रहण करना । उ०—गुरुउपदेस झालइ, धरमतत्व न हालइ ।
—व स

६ प्राप्त करना, लेना । उ०—परदेसा प्री आवियउ, मोती आण्या जेण । धण कर-कवळा झालिया, तुमि करि नाह्या केण ।—ढो.मा.

७ रोकना, थामना । उ०—१ जिण दीहे तिल्ली त्रिडइ, हिरणी झालइ गाभ । ताह दिहा री गोरडी, पडतउ झालइ आभ ।—ढो मा.

उ०—२ सावळ पकडे सूर, तुरा चढ़िया जम तेहा । पड़तो आभ प्रचड, अडर झालै भुज एहा ।—सू प्र.

८ उत्तरदायित्व लेना । उ०—कहै साहि सुण सामन, बादळ कीयो तै उपगार । जीवी दान दीधो सुजस, लीधो झालि गढ़ री भार ।
—प च चौ.

झालणहार, हारौ (हारी), झालणियौ—वि० ।

झालिग्रोडौ, झालियोड़ौ, झाल्योडौ—भू०का०कृ० ।

झालीजणौ, झालीजबौ—कर्म वा० ।

झलणौ, झलबौ—अक० रू० ।

झेलणौ, झेलबौ—रू०भे० ।

झाळपूळौ-वि०यौ०—१ अत्यन्त क्रोधित, बहुत कुपित, आग-बबूला ।
उ०—१ देख ताप खावै दुनी, आप पराक्रम आस । रोस झाळपूळा रहै, सादूळा स्याबास ।—बा दा

उ०—२ द्रगा देख सुडाळ झडा दकूळा । प्रळै काळ रूपी हुवो झाळपूळा । करै पूछ आछोट गुजार कीधी । लडेवा अडे आभ झप लीधी ।
—हिंगळाजदान कवियो

३ तेजस्वी, तेजवान । उ०—उडणो प्रथीराज, निपट झाळपूळा हुवो । तोडो नै जाळोर एक दिन रै बीच मारिया, तरै आ वात पातसाह सुणी, तरै उडणो प्रथीराज कहाणो, असख प्रवाडै जैनवादो राणो रायमल जीवता ही मूओ ।—नैणसी

झाळबवाळ-वि०यौ०—अत्यन्त क्रोधी ।

झालर-स०स्त्री० [स० झल्लरी] १ पूजा के समय बजाया जाने वाला घडियाल । उ०—१ अवर जाग्या देस्री-देवता, धरती जाग्यो वासग नाग, झालर तो वाजी राजा राम की ।—लो गी

उ०—२ अह माथै राग आभ लग ऊचो, नव खडे जस झालर नाद । रोप्या भला रायपुर राणा, पडै न सासणतणा प्रसाद ।
—दुरसो आढ़ो

उ०—३ तिमर री जोर हटण लागो, दीपक री पिण तेज घटण लागो, चिडिया चहकण लागी, झालरां ठहकण लागी, इण भात पघडो हूण लागो जठै प्रेम प्रीत रो झगडो हूण लागो ।—र हमीर

२ एक प्रकार का वाद्य विशेष । उ०—छत्र धरातइ, चमर वीजातइ, नफेरी, सरणाइ, वरगा, ढोल, झालर, डुडि, दमामा, दडदडी, म्रिदग, नीसाण प्रमुख वाजित्र वाजइ, तेणइ आकास गाजइ ।
—व.स.

३ एक मारवाडी लोक गीत. ४ जल-पात्र विशेष ।
उ०—जणा एक खासा गुलाम सुलतान अरब रो झालर पाणी री लेय बादसाह रै पसवाडै पहोचियो ।—नी प्र.
रू०भे०—झालरी, झालिर ।

महू०—झालड ।
अल्पा०—झालरियौ ।
५ देखो 'झालरी' (१) (मह रू भे)
उ०—कचण खभ मडति कीन वरणण छविकरा, झलहळ क्रतपूर झळूस मुगता झालरा। अद्भुत विताना आरभ मोल अपपरा, जोडै इमर डेरा जोग भाद्रव जळधरा।—वा दा
६ देखो 'झालरी' (मह. रू भे)
यौ०—झालर-वाव, झालर-वाव ।
७ देखो 'झाल' (मह रू भे)
वि०—मूर्ख, पागल ।
झालरडी—देखो 'झालरी' (अल्पा, रू.भे)
झालरदार—देखो 'झालरीदार' (रू भे)
झालरवाव, झालरवाव-स०स्त्री०यौ० [रा० झालर+स० वापिका]
देखो 'झालरी' (१) उ०—वाडी रा वड रळियामणा ए, सियळी बड री जी छाय। नागादडी नाडे भरी ए झिलती झालरवाव।
—लो गी
झालरियौ-स०पु०—१ फेनयुक्त छाछ २ पुराना कपडा
३ झल्लरीदार ।
उ०—ऊचली मेडी झालरिया किंवाड, चालै(नी) गडपतिया चौपड खेलसा।—लो गी
४ देखो 'झालर' (अल्पा, रू भे) ५ देखो 'झालरी' (अल्पा., रू भे)
६ देखो 'झालरी' (अल्पा., रू भे) उ०—ईंढी कवडाळी माथै पर ओडी, छैली अलकावळ मुखडै पर छोडी। झणकै झालरियौ झूमरिया झटकै, लूमी भीगा री खूणी तळ लटकै।—ऊ का
झालरी-स०स्त्री०—१ किसी वस्तु के किनारे पर शोभा के लिये लटकने वाला या लगाया जाने वाला हाशिया ।
उ०—१ बीजळि दुति दड मोतिए वरिखा, झालरिए लागा झडण। छत्रे अकास एम औछायौ, घण आयौ किरि वरण घण।—वेलि
उ०—२ नगारा रै झालरी नीली राखै, ऊटा री जूण नीली राखै।
—वा दा. ख्यात
२ देखो 'झालरी' (अल्पा, रू भे)
अल्पा०—झालरडी।
महू०—झालड, झालर, झालिर ।
३ देखो 'झालर' (रू भे) उ०—१ भेदी मादळ झालर रे, सुरणाई सख भेरी। इत्यादिक वाजित्र घुरै रे, पडै नगारा री घोरी।
—जयवाणी
उ०—२ देहरा माहै कथा कीरतन नाठक पड़िनै रहिआ छै। धूप-दीप कीजै छै। आरती उतारीजै छै, केसर-चदण चरचीजै छै। अगर उखेवीजै छै। पच सवदा वाजि रहिया छै। झालरिया झण-कार हुइनै रहिआ छै।—रा सा.स
झालरीदार-वि०—जिसमे झल्लरी लगी हो ।
रू०भे०—झालरदार ।
झाळहळ—देखो 'झळाहळ' (रू भे) उ०—जगत नमै झाळहळ सु तौ काठ नै जळावै।—पहाडखा आढौ
झालरौ-स०पु०—१ कूप से चौडा तथा तालाब से गहरा वह जलाशय जिसके भीतर आने-जाने के लिये चारो ओर सीढियाँ बनी हुई हो.
२ स्त्रियो (प्राय: जाटनियों) के गले मे पहिनने का हारनुमा चादी या सोने का एक जेवर विशेष ३ घोडे के कठ का आभूषण ।
उ०—करै हालरा कालरा नाद कठा। ग्रथीला मणि झालरा लूम गंठा।—व भा
अल्पा०—झालरियौ ।
महू०—झालर ।
झाळामुख-सं०पु०—भाला (ना डिं को)
रू०भे०—झाळामुख ।
झाळा—देखो 'झाळ' (रू भे) उ०—१ केस पास काळा, केई जमाई, केई साळा, केई जोवाळा, चालती हालती झाळा, इस्या पाति वडठा वाळगोपाळा।—व स उ०—२ कारतूस घन युद्ध कर सुम्मा लग थग्गे। एक पलीती काळिका दहू ओरनि दग्गे। रिंजक प्याला सोर ही झाळा जगमग्गे। यारौ परळै काळदी ज्वालानळ जग्गे।—ला रा.
उ०—३ झाळा धोम तेज झळहळियौ, अगन सरूप पनग ऊठळियौ। जभके नही भयाणक जाणै, पनग जिकौ ग्रहियौ नृप पाणै।—सू प्र
उ०—४ नारसिंघ नीछटै, अरण नहराद इता उद्र। काळ झाळ कळकळै, रोस विकराळ जडा रुद्र।—सू प्र
झाला-स०स्त्री०—१ सगीत व तार वाद्यो मे एक स्वर के साथ दूसरे स्वर को बजाने को झाला कहते है। इसे तीव्र लय मे ही बजाया जाता है २ राजपूतो के छत्तीस वशो मे से एक वश ।
झाळामुख—देखो 'झाळामुख' (रू भे)
झालाळी-वि०—१ वह वस्तु (आभूषण आदि) जिसके नीचे झल्लरी लगी हो। उ०—झूटणिया झूटणिया, गोरी कामी विलखै, मेह विना धरती तरसै, मेहडो हूवण दे, झूटणिया घडाऊ झालाळा मेहडो हूवण दै।—लो गी
२ सकेत करने वाला ।
झाळाहळ—देखो 'झळाहळ' (रू भे) उ०—१ पग राज प्रमाण प्रगट चढ़ियौ 'अभपत्ती'। सह जाणियौ समार राज झाळाहळ रत्ती।—सू प्र.
उ०—२ दुय गिरि चदण अढार, वरै जळवव मोताहळ। सेर एक सोवन्न, पच रूपक झाळाहळ।—नैणसी
उ०—३ खुटहड गज जिम विखम भरै पौरस भाळाहळ। पय रकेव धरि पमग हरख चढियौ झाळाहळ।—सू प्र.
झाळि—देखो 'झाळ' (रू भे) उ०—झावकि पइन्नी झाळि, सुंदरि काइ न सळसळइ। बोलइ नही ज वाळ, घण धवूणी जोइयउ।
—ढो मा.
झालि—देखो 'झाल' (रू भे.) उ०—१ झालि झळामळ नागला, नाग

लागा छंद गालि, देसि हू ओपम तिहा सीय ? हांसीय जीपए चालि।
—प्राचीन फागु सग्रह

उ०—२ ग्रिगमदवासित वेणि काळी, झालि कानि वनी कनक-वाळी। सोहीइ निरमळु नाकि मोती, आरसी करि ग्रही रूप जोती।
—प्राचीन फागु सग्रह

झाळियोडो-भू०का०कृ०—१ धातु की वस्तु मे टांका देकर जोड लगाया हुआ. २ भस्म किया हुआ, जलाया हुआ।
(स्त्री० झाळियोडी)

झालियोडो-भू०का०कृ०—१ पकडा हुआ २ सहन किया हुआ. ३ स्वीकार किया हुआ ४ धारण किया हुआ. ५ ग्रहण किया हुआ. ६ प्राप्त किया हुआ, लिया हुआ ७ रोका हुआ, थामा हुआ. ८ उत्तरदायित्व लिया हुआ।
(स्त्री० झालियोडी)

झालियो-स०पु० (बहु व० झालिया) बैल गाडी के ऊपर लगाये जाने वाले काष्ट के डडे जिनके द्वारा कोई भी सामान गाडी मे आसानी से भरा जा सके।

झालिर—देखो 'झालर' (रू भे) उ०—माहि तास सोभै हरि मूरति, झालिर तणा हुग्रै झणकार।—ह ना.

झाळी—देखो 'झाळ' (रू भे) उ०—१ असी कोस चाळीस झाळी उचाळी। जडाऊ नगा सोवनी लक जाळी।—सू प्र

उ०—२ झिगे जाणि सामद्र री हेक झाळी। अनै दूसरी तीसरी नैण ज्वाळी।—सू प्र.

झाळोझाळ—स०स्त्री०—१ क्रोधाग्नि।
उ०—हाजरिया री वात सुण नै ठाकर रै झाळोझाळ लागगी। एक भावणकी री इतरी हिम्मत के म्हारा कणवारिया नै इज मारण नै'।—रातवासो
२ कलहाग्नि. ३ पूर्ण रूपेण आग का प्रज्वलित होने का भाव या क्रिया।
रू०भे० —झळोझळ, झाळोझाळ।

झालो-स०पु०—सकेत, इशारा। उ०—१ सागरिया सह पाकिया, लूआ री लपटाह। खोखा लाग्या खिरण नै, दे झाला हिरणाह।—लू
उ०—२ अछर झाला दिये, लडै परला लेवता। किरवार धार जोधार कटि, उड अकास पाछो पडै।
—प्रतापसिघ म्होकमसिघ री वात
उ०—३ दारू री प्यालो भलो, दुपट्टे रा झालो। मरवण तो पतळी भली, मारू मतवाळो।—लो गी
उ०—४ आ रमकीली सूरती, चित देखण रो चाव। अलवेलो वालो सखी, झालो द घर लाव।—अज्ञात

झावलियो, झावल्यो—देखो 'झाग्रोलियो, झाग्रोलो' (रू भे)

झावी-स०स्त्री०—स्त्रियो के पहनने का एक आभूपण।
उ०—चूडो थारो चिलकै, झावी थारी झवकै।—लो.गी

झावू—देखो 'झाऊ' (रू भे)

झावोलियो, झावोलो—देखो 'झाग्रोलियो, झाग्रोलो' (रू भे)

झावो-स०पु०—१ एक जड़ विशेष जो नदी के किनारे मिलती है (ग्रमरत)
२ एक प्रकार का मिट्टी का पात्र जो मिठाई परोसने के काम आता है। (शेखावाटी)

झिगर, झिगार-स०स्त्री०—१ वृक्षो की लताग्रो का झुरमुट, घनी झाडी।
उ०—१ कह पय सोग्रन कडो, लिया पग सोग्रन लगर। वसै दिवस जिदरो जठै जाडा तर झिगर।—पा.प्र.
२ देखो—'झिगोर' (रू भे)
उ०—जळ थळ थळ जळ हुइ रहेउ, वोलइ मोर झिगार। सावण दूभर हे सखी, किहा मुझ प्राण आधार।—लो गी

झिगोर-स०पु०—१ प्राय खेतो, मैदानो और अधेरे स्थानो मे पाया जाने वाला एक प्रसिद्ध छोटा कीडा जो कई रगो का होता है। यह तेज आवाज मे झीझी की ध्वनि निकालता है जो वरसात मे अधिक सुनाई देती है, झीगुर, झिल्ली. २ झीगुर या झिल्ली की आवाज।
उ०—गहरो गहकै है, डेडरा डहकै है, मोरा री सोर, झिल्ली री झिगोर, वळै बोलै चातक, विरही जना का घातक।—र हमीर
३ मस्ती मे झूमने अथवा किलोल करने का भाव, मस्ती।
उ०—१ जठै राज हसा कळ हसा री केळ है, वतक सर खिरट हजा तरै है, सारसा रा टोळा झिगोर करै है, छोटा मीन जिकै एक-एक रै लारै धावै है।—र. हमीर
उ०—२ दादरा डरराट करै छै, मोरिया झिगोर खायनै रह्या छै।
—जखडा मुखडा भाटी री वात
उ०—३ भवरा ऊपर गुजार कर रहिया छै। सारसा बोल रही छै। मयूर झिगोर करै छै।—डाढ़ाळा सूर री वात
रू०भे०—झिगोर, झिगोर, झीगर, झीगोर, झीगोर, झीगोर, झोगोर।

झिगोरणो, झिगोरवो-क्रि०स०—मस्ती को अभिव्यक्त करना।
उ०—१ डूगरिया हरिया हुया, वणे झिगोरचा मोर। इणि रिति तीनइ नीसरइ, जाचक, चाकर, चोर।—ढो मा
उ०—२ पपइया, तू वोल रे, जित म्हारै आलीजे भवर रो मुकाम। सावण आयो सायवा, वने झिगोरत मोर, काळिगडो कू कू करै, करत कोयलडी सोर।—लो गी

झिगोर—देखो झिगोर' (रू.भे)

झिझोटी-स०स्त्री०—सम्पूर्ण जाति की सब शुद्ध स्वरो वाली एक रागिनी (सगीत)

झिडो—देखो 'झडो' (रू भे) उ०—तोर वहे छै। जिसै दखणी झिडै ताई आय वागा।—द दा.

झिकाडणो, झिकाडबो—देखो 'झैकाणो, झैकावो' (रू.भे.)
झिकाडणहार, हारो (हारी), झिकाडणियो—वि०।

झिकाड़िग्रोडौ, झिकाडियोड़ौ, झिकाडयोड़ौ—भू०का०कृ० ।
झिकाडीजणौ, झिकाडीजबौ—कर्म वा० ।
झिकाडियोडौ—देखो 'झंकायोडौ' (रू.भे)
(स्त्री० झिकाडियोडी)
झिकाणौ, झिकाबौ—देखो 'झंकाणौ, झंकावौ' (रू.भे)
झिकाणहार, हारौ (हारी), झिकाणियौ—वि० ।
झिकायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
झिकाईजणौ, झिकाईजबौ—कर्म वा० ।
झिकायोडौ—देखो 'झंकायोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री० झिकायोडी)
झिकाळ—देखो 'झकाळ' (रू भे) उ०—झूठी मत करौ झिकाळ ।
—जयवाणी
झिकावणौ, झिकावबौ—देखो 'झंकाणौ, झंकावौ' (रू.भे.)
उ०—कोहर पाणी काढिजै, कोळाहळ कोकाय । ढोलै करह झिका-वियौ, कोहर पुहता आय ।—ढो मा.
झिकावणहार, हारौ (हारी), झिकावणियौ—वि० ।
झिकाविग्रोडौ, झिकावियोडौ, झिकाव्योडौ—भू०का०कृ० ।
झिकावीजणौ, झिकावीजबौ—कर्म वा० ।
झिकावियोडौ—देखो 'झंकायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० झिकावियोडी)
झिकोळणौ, झिकोळबौ—देखो 'झकोळणौ, झकोळवौ' (रू भे)
उ०—घुड़ला रुघिर झिकोळिया, ढीला हुआ सनाह । रावतिया मुख झाखणा, सहीक मिळियौ नाह ।—हा.झा
झिकोळणहार, हारौ (हारी), झिकोळणियौ—वि० ।
झिकोळिग्रोडौ, झिकोळियोड़ौ, झिकोळयोडौ—भू०का०कृ० ।
झिकोळीजणौ, झिकोळीजबौ—कर्म वा० ।
झिकोळियोडौ—देखो 'झकोळियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० झिकोळियोडी)
झिखणौ, झिखबौ—क्रि०अ०—१ प्रकाशित होना । उ०—झाझडा तणे उरि झाझ नामौ झिखै, वडौ जाण निरखिसै दुलभ दरिसण त्रिखै ।
—पी ग्र
२ शोभा देना । उ०— तिलक बीच विंदी झिखनै रही छै ।
—रा सा स
३ क्रोधित होना, कुपित होना ४ टिमटिमाना, चमकना
उ०—करै घात बोलै पारसी, वगतर तवा झिखै जाणै आरसी ।
५ वक-झक करना, वकना ।
झिखणहार, हारौ (हारी), झिखणियौ—वि० ।
झिखिग्रोडौ, झिखियोडौ, झिख्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
झिखीजणौ, झिखीजबौ— भाव वा० ।
झिखियोडौ—भू०का०कृ०—१ प्रकाशित हुवा हुआ २ शोभा दिया हुआ. ३ टिमटिमाया हुआ, चमका हुआ ४ वकझक किया हुआ, वका हुआ. ५ क्रोधित हुवा हुआ, कुपित ।
(स्त्री० झिखियोडी)
—अ वचनिका
झिगझिग, झिगझिगा'ट, झिगझिगाहट—स०स्त्री०—१ चमक-दमक, चमचमाहट, जगमगाहट । उ०—जठै आगरा खीरा बुझनै राख रह गई है उठै भलाई मन री चाह पूरण करिजै । प्रयोजन जिण धरती रा धणी खीरा होवै जैडा झिगझिगाट करता है ।
—वी स.टी.
२ व्यर्थ की वकवाद, वक-झक । उ०—१ मनजी माराज गोमुखी मे हाथ घाल्या वैठा जप करता हा अर सागे-सागे खघी सू झिगझिग ई करता जावता हा ।—वरसगाठ
क्रि०प्र०—करणी ।
झिगणौ, झिगबौ—क्रि०अ०स०—१ प्रकाशित होना, जगमगाना, चमकना, दमकना । उ०—आ तौ किसा नगर सू आई है भाग, रग भर दिवलौ झिग रह्यौ । आ तौ नवानगर सू आई है भाग, रग भर दिवलौ झिग रह्यौ ।—लो.गी.
२ (दही, मट्ठा आदि द्रव पदार्थ) विलोडित करना, मथना
३ किसी वस्तु पर एकाएक ऐसी मार या दाव पहुँचना जिससे वह वहुत दव जाय और विकृत हो जाय, कुचलना, मसलना ।
झिगणहार, हारौ (हारी), झिगणियौ—वि० ।
झिगवाडणौ, झिगवाडवौ, झिगवाणौ, झिगवावौ, झिगवावणौ, झिगवावबौ, झिगाडणौ, झिगाडवौ, झिगाणौ, झिगावौ, झिगावणौ, झिगावबौ—प्रे०रू० ।
झिगिग्रोडौ, झिगियोड़ौ, झिग्योडौ—भू०का०कृ०
झिगीजणौ, झिगीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।
झिगमिग—देखो 'झिगमिगा'ट, झिगमिगाहट' (रू भे)
उ०—सिर ऊपर मुकट सुहामणौ हौ, कुडळ दोनू कान । झिगमि(ग) तेजे झळकता हो, सूरिज तेज समान ।—ध व ग्र
झिगमिगणौ, झिगमिगवौ—क्रि०अ०—१ जगमगाना, चमकना, दमकना. २ मद-मद प्रकाशित होना, झिलमिलाना ।
झिगमिगा'ट, झिगमिगाहट—स०स्त्री०—जगमगाहट, चमचमाहट ।
उ०—आयौ है अब देस बना जिनकपुरी, झिगमिगा'ट हेम थाळ मोतिया भरी, जिनक नार वार वार आरती करी ।—समानवाई
रू०भे०—झिगमिग, झिगामिग ।
झिगमिगियोडौ—भू०का०कृ०—१ जगमगाया हुआ, चमका हुआ
२ मद मद प्रकाशित हुवा हुआ, झिलमिलाया हुआ ।
(स्त्री० झिगमिगियोडी)
झिगामिग—देखो 'झिगमिगा'ट, झिगमिगाहट' (रू भे)
उ०—जिणेसर विंव झिगामिग ज्योति, अहोरति आठू जाम उदोत ।
विजोडी देहरी बावन वेव, दीयै सुख वछित रिखभदेव ।—ध व ग्र
झिगियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ जगमगाया हुआ, प्रकाशित ।

२ (दही, मट्ठा आदि द्रव पदार्थ) विलोडित किया हुआ, मथा हुआ
३ कुचला हुआ, मसला हुआ ।
(स्त्री० झिगियोडी)

झिगोर—देखो 'झिगोर' (रू भे)
उ०—श्रो दूहो जलाल सुण नै बोलियो—रे माळी, के कहै छै ? माळी कही—महरबान मोर बैठ्या झिगोर करै छै तिणनूं कहूं छू ।
—जलाल बूबना री वात

झिडकणो, झिडकबो-क्रि०स०—उपेक्षा के भाव से अथवा तिरस्कार-पूर्वक विगड कर कोई वात कहना ।
झिडकणहार, हारो (हारी), झिडकणियो—वि० ।
झिड़कवाडणो, झिडकवाडबो, झिड़कवाणो, झिडकवाबो, झिडकवावणो, झिडकवावबो, झिडकाडणो, झिड़काड़बो, झिड़काणो, झिडकाबो, झिड़कावणो, झिडकावबो—प्रे०रू० ।
झिडकिग्रोडो, झिडकियोड़ो, झिडक्योडो—भू०का०कृ० ।
झिडकीजणो, झिडकीजबो—कर्म वा० ।

झिडकियोडो-भू०का०कृ०—अवज्ञा अथवा तिरस्कारपूर्वक विगड कर कोई वात कहा हुआ, झिडका हुआ ।
(स्त्री० झिडकियोडी)

झिडकी-स०स्त्री०—१ विगड कर अथवा झिडक कर कही हुई बात, डाँट, फटकार । उ०—रमेस पैलाई सू अमूजियोडो वैठो हो । तडक'र बोलियो—था-नै था-री-ई पडी है, बीजो कोई मरो'र जीवो । म्हारो तो देवाळो पिटीज रयो है अर थारी फरमास आगै-ई खडी है । कमळा-री मा झिडकी सै' को सकी नी । आख्या माय-सू आसू नाखती बोली—दो पूर तो म्हे-ई मागा, गैणा-गाठा, तीरथ-वरत तो था-रा भर पाया ।—वरसगाठ

झिझक-स०स्त्री०—१ किसी प्रकार की भय की आशका से सहसा चमकने अथवा रुकने की क्रिया, झझकने की क्रिया या भाव ।
मुहा०—१ झिझक भागणी-भय का नष्ट होना ।' झझक दूर होना ।
२ झिझक भागणी-भय या झझक का निवारण करना, भय दूर करना ।
२ झिडक कर अथवा कुछ क्रोध से बोलने की क्रिया या भाव ।
३ कभी-कभी होने वाली सनक, रह-रह कर होने वाला पागलपन, हल्का दौरा ।
रू०भे०—जजक, जझक, झझक ।

झिझकणो, झिझकबो-क्रि०अ०—१ भय की आशका से सहसा डर कर चमकना, भडकना, ठिठकना, बिदकना ।
उ०—चमकत बीज अचाणचक, झिझकत उठत जगात । हीरा डर-पत महल मैं, थरर थरर थररात ।—बगसीराम प्रोहित री वात
२ क्रोधित होना, कुपित होना, खिजलाना, झुझलाना ।
३ सहसा चौक पडना ।
झिझकणहार, हारो (हारी), झिझकणियो—वि० ।
झिझकवाडणो, झिझकवाडबो झिझकवाणो, झिझकवाबो, झिझकवावणो, झिझकवावबो—प्रे०रू० ।
झिझकाडणो, झिझकाड्बो, झिझकाणो, झिझकाबो, झिझकावणो, झिझकावबो—क्रि०स० ।
झिझकिग्रोडो, झिझकियोडो, झिझक्योड़ो—भू०का०कृ० ।
झिझकीजणो, झिझकीजबो—भाव वा० ।
जजकणो जजकबो, जझकणो, जझकबो, झझकणो, झझकबो, झझपकणो, झझपकबो—रू०भे० ।
झिझकाडणो, झिझकाडबो—देखो 'झिझकाणो, झिझकाबो' (रू भे)
झिझकाडणहार, हारो (हारी), झिझकाडणियो—वि० ।
झिझकाडिग्रोडो, झिझकाडियोडो, झिझकाड्योडो—भू०का०कृ० ।
झिझकाडीजणो, झिझकाडीजबो—कर्म वा० ।

झिझकाडियोडो—देखो 'झझकायोडो' (रू भे)
(स्त्री० झिझकाडियोडी)

झिझकाणो, झिझकाबो-क्रि०स०—१ चमकाना, भडकाना, ठिठकाना, बिदकाना २ क्रोधित करना, खिजाना ३ सहसा चौंका देना ।
झिझकाणहार, हारो (हारी), झिझकाणियो—वि० ।
झिझकायोडो—भू०का०कृ० ।
झिझकाईजणो, झिझकाईजबो—कर्म वा० ।
झझकाडणो, झझकाडबो, झझकाणो, झझकाबो, झझकावणो, झझकावबो, झिझकाडणो, झिझकाडबो, झिझकावणो, झिझकावबो
—रू०भे० ।
झझकणो, झझकबो, झिझकणो, झिझकबो—अक० रू० ।

झिझकायोडो-भू०का०कृ०—१ चमकाया हुआ, भडकाया हुआ, ठिठकाया हुआ, बिदकाया हुआ २ क्रोधित किया हुआ, खिजाया हुआ.
३ चौंकाया हुआ ।
(स्त्री० झिझकायोडी)

झिझकार—देखो 'झिझिकार' (रू०भे०)

झिझकारणो, झिझकारबो-क्रि०स०—१ किसी को दुत्कारना, दुरदुराना.
२ डाटना, डपटना, फटकारना ३ अभिमान करना, अपने से आगे किसी को नही गिनना, अपने सामने दूसरे को हीन समझना
४ चौंकाना या भडकाना ।
झिझकारणहार हारो (हारी), झिझकारणियो—वि० ।
झिझकारिग्रोडो, झिझकारियोडो, झिझकारयोड़ो—भू०का०कृ० ।
झिझकारीजणो, झिझकारीजबो—कर्म वा० ।
झिझिकारणो, झिझिकारबो—रू०भे० ।

झिझकारियोडो-भू०का०कृ०—१ दुत्कारा हुआ, दुरदुराया हुआ ।
२ डाँटा हुआ, फटकारा हुआ ३ अभिमान किया हुआ, अहकारी.
४ चौंकाया हुआ, भडकाया हुआ ।
(स्त्री० झिझकारियोडी)

झिझकावणो, झिझकावबो—देखो 'झिझकाणो, झिझकाबो' (रू भे)

झिझकावणहार, हारौ (हारी), झिझकावणियौ—वि० ।
झिझकाविश्रोडौ, झिझकावियोडौ, झिझकाव्योडौ—भू०का०कृ० ।
झिझकावीजणौ, झिझकावीजवौ—कर्म वा० ।

झिझकावियोडौ—देखो 'झिझकायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० झिझकावियोडी)

झिझकियोडौ–भू०का०कृ०—१ चमका हुआ, भडका हुआ, ठिठका हुआ, विदका हुआ. २ क्रोधित हुवा हुआ, कुपित हुवा हुआ, खिजला हुआ, भुभलाया हुआ ३ चौंका हुआ ।
(स्त्री० झिझकियोडी)

झिझिकार–स०स्त्री०—१ डांटने या फटकारने की क्रिया या भाव । २ दुत्कारने या दुरदुराने की क्रिया या भाव । उ०—हाथ झटक झिझिकार हेंस, नाथ'म लेऊं नाम जी । मव भाड इसै भरतार सू, रांड भली ओ रामजी ।—ऊ का.
३ चौंकाने या भडकाने की क्रिया या भाव. ४ अभिमान, घमण्ड ।
रू०भे०—झझकार, झिझकार ।

झिझिकारणौ, झिझिकारवौ—देखो 'झिझकारणौ, झिझकारवौ' (रू भे.)
झिझिकारणहार, हारौ (हारी), झिझिकारणियौ—वि० ।
झिझिकारिश्रोडौ, झिझिकारियोडौ, झिझिकारयोडौ—भू०का०कृ० ।
झिझिकारीजणौ, झिझिकारीजवौ—कर्म वा० ।
झिझिकारियोडौ—देखो 'झिझकारियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० झिझिकारियोडी)

झिझिम–स०स्त्री० (अनु०) ऊपर के वोल से सम्वन्धित वाद्य का वोल विशेप । उ०—रिमि झिमि रिमि झिमि झिझिम कसाळ, कररि करिर करि घट पट ताळ । भरर भरर सिरि भेरिम्र साद, पायडीउ आलवीउ नाद ।—विद्याविलास पवाडउ

झिझोटी–स०स्त्री०—एक राग विशेप (मीरा)

झिण–स०पु०—१ दलिया या अन्य इसी प्रकार के खाद्य को दूध, पानी आदि के सयोग से वनाया हुआ पतला व्यञ्जन ।
२ पतला मट्ठा, छाछ । उ०—विलळी वाला री वाणी वधरावै । पतळी झिण मे पाणी पधरावै ।—ऊ का

झिणकार–स०स्त्री०—१ एक प्रकार का वर्तन विशेप ?
उ०—मदनौ कुवरजी रा हुकम पखौ ही ज भूजाई रा चरू, थाळी, भूजाई री झिणकार, घोडौ चहुवाण रामदास री पेस रौ, परणिया तदि पेसकस कियौ हुतौ, वीजौ ही भूजाई रो समदाव सहु मदनौ ले गयौ ।—द वि
२ झकार ।

झिणकारणौ, झिणकारवौ–क्रि०अ०—ध्वनि करना ।
उ०—ऐलडी चपेलडी, आभा मायली वीजळी, म्हारा बाळक वनजी, भीण पडै झणकारिया तोरण वादियौ ।—लो गी

झिणकारियोडौ–भू०का०कृ०—ध्वनि किया हुआ ।
(स्त्री० झिणकारियोडी)

झिणौ—देखो 'झीणौ' (रू भे) उ०—चलै सर वेधि सिलै घट चोळ । झिणै पट जाणि समीर झकोळ ।—सू प्र
(स्त्री० झिणी)

झिवझिव—देखो 'झव-झव' (रू भे) उ०—तेज करइ झिवझिव, फटिक रतन विंव, माडचौ है...... दिगवर धाम मे । समयसुदर इम तीरथ कहइ उत्तम, चद्रप्रभ भेटचौ हम, चदवारि गाम मे ।—स कु.

झिवळ, झिवळक—देखो 'झवळक' (रू भे)

झिवळकणौ, झिवळकवौ—१ देखो 'झवळकणौ, झवळकवौ' (रू.भे.)
२ देखो 'झवोळणौ, झवोळवौ' (रू भे)
झिवळकणहार, हारौ (हारी), झिवळकणियौ—वि० ।
झिवळकिश्रोड़ौ, झिवळकियोडौ, झिवळक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
झिवळकीजणौ, झिवळकीजवौ—कर्म वा० ।

झिवळकियोडौ—१ देखो 'झवळकियोडौ' (रू भे.)
२ देखो 'झवोळियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० झिवळकियोडी)

झिवळणौ, झिवळवौ—१ देखो 'झवळकणौ, झवळकवौ' (रू भे)
२ देखो 'झवोळणौ, झवोळवौ' (रू भे)
झिवळणहार, हारौ (हारी), झिवळणियौ—वि० ।
झिवळिश्रोडौ, झिवळियोडौ, झिवळयोडौ—भू०का०कृ० ।
झिवळीजणौ, झिवळीजवौ—कर्म वा० ।

झिवळियोडौ—१ देखो 'झवळकियोडौ' (रू भे.)
२ देखो 'झवोळियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० झिवळियोडी)

झिमझिम–स०स्त्री०—आभूषणो की ध्वनि ।
उ०—धुनि अदग धुधकटस, धुकट धुधुकटस धुकट धुर । झणण-णणणण जत्र झणकि, प्रगट झिमझिम धुनि नूपर ।—सू प्र.

झिरझिरौ–वि० [स० जीर्ण] गला हुआ, जीर्ण (कपडा)

झिरणौ, झिरवौ—देखो 'झरणौ, झरवौ' (रू.भे.)
उ०—इणि वचनइ रिखि उद्धसिउ, हीयडइ हरख न माइ । गदगद जळ नयणा झिरइ, कारण कहिउ न जाइ ।—का मा प्र.
झिरणहार, हारौ (हारी), झिरणियौ—वि० ।
झिरिश्रोडौ, झिरियोडौ, झिरयोडौ—भू०का०कृ० ।
झिरीजणौ, झिरीजवौ—कर्म वा० ।

झिरमट, झिरमटियौ–स०पु०—१ वालिकाओ द्वारा नृत्य के रूप मे खेला जाने वाला एक प्रकार का खेल ।
उ०—म्हा गिरधर रग राती, सैया म्हा । पचरग चोळा पहरचा सखी म्हा झिरमट खेलण जाती ।—मीरा
२ वृक्षो का समूह, कुज । उ०—पचरग चोळा पहरचा सखी म्हा, झिरमट खेलण जाती । वा झिरमट मा मिळयौ सावरो, देख्या तन मन राती ।—मीरा
३ एक लोक गीत का नाम. ४ एक प्रकार की घास विशेप ।

अल्पा०—झिरमटियौ ।

झिरमटियौ—देखो 'झिरमट' (अल्पा., रू भे)

उ०—होळी आयी ऐ फूला री झोळी झिरमटियौ अक लै । औ कुण खेलै ऐ केसरिये वागा झिरमटियौ अक लै । औ कुण खेलै ऐ ऊघाडै डीला झिरमटियौ अक लै ।—लो गी

झिरमिर-स०स्त्री०—महीन-महीन बूदो के रूप मे धीरे-धीरे वर्षा होने की क्रिया या इस प्रकार वर्षा होने से उत्पन्न ध्वनि ।

उ०—झिरमिर झिरमिर मेहुडो वरसै, वादळियो घररावै ऐ। जेठजी तौ म्हारा वूजा काटै, परण्यौ हळियो वावै ऐ ।—लो गी.

रू०भे०—छिरमिर, झरमर

झिरियोडौ—देखो 'झरियोडौ' (रू.भे)

(स्त्री० झिरियोडी)

झिरी—देखो 'झरी' (रू.भे.)

झिलव—देखो 'झिलम' (रू भे.) उ०—चिलते झिलव आयुध चढ़ाय। असवार हुआै गजपीठ आय। गहकिया गीध टोळा गरूर। अहकिया अव ऐराक तूर ।—वि स

झिल-वि०—परिपूर्ण, पूर्ण। उ०—चडियो रे कोडीलो मारू आघोडी झिल रात, आयो म्हारी गोरा दे रै पास, कुरजा ए थूं म्हानै भवर मिळायो ए ।—लो गी

झिळकणौ, झिळकवौ—देखो 'झळकणौ, झळकवौ' (रू भे)

उ०—१ धोरा ढिगं ढळाख, धूप घाभो सोनलियो, झिळकै झोळ धुवाख, चादणी रूपै रळियो। प्रक्रिति सुख उपभोग, करण ईमीरो आगर। सौ साला सिग्ग करै, अमर ओसाथ नटनागर।—दसदेव

उ०—२ ठाणै पुरा केतला ठाकर, भूटा लक रहिया झिळक। 'सेवा' वाण कवळ सोवियो, तू माणक मुरधर तिलक।

—सिवनाथसिंघ रो गीत

झिळकणहार, हारौ (हारी), झिळकणियौ—वि० ।

झिळकवाडणौ, झिळकवाडवौ, झिळकवाणौ, झिळकवावौ, झिळकवावणौ, झिळकवाववौ—प्रे०रू० ।

झिळकाडणौ, झिळकाडवौ, झिळकाणौ, झिळकावौ, झिळकावणौ, झिळकाववौ—क्रि०स० ।

झिळकिओडौ, झिळकियोडौ, झिळक्योडौ—भू०का०कृ० ।

झिळकीजणौ, झिळकीजवौ—भाव वा० ।

झिळकाडणौ, झिळकाडवौ—देखो 'झळकाणौ, झळकावौ' (रू.भे.)

झिळकाडणहार, हारौ (हारी), झिळकाडणियौ—वि० ।

झिळकाडिओडौ, झिळकाडियोडौ, झिळकाड्योडौ—भू०का०कृ० ।

झिळकाडीजणौ, झिळकाडीजवौ—कर्म वा० ।

झिळकणौ, झिळकवौ—अक० रू० ।

झिळकाडियोडौ —देखो 'झळकायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री० झिळकाडियोडी)

झिळकाणौ, झिळकावौ—देखो 'झळकाणौ, झळकावौ' (रू भे)

झिळकाणहार, हारौ (हारी), झिळकाणियौ—वि० ।

झिळकायोडौ—भू०का०कृ० ।

झिळकाईजणौ, झिळकाईजवौ—कर्म वा० ।

झिळकणौ, झिळकवौ—अक० रू० ।

झिळकायोडौ—देखो 'झळकायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० झिळकायोडी)

झिळकावणौ, झिळकाववौ—देखो 'झळकाणौ, झळकावौ' (रू भे)

झिळकावणहार, हारौ (हारी), झिळकावणियौ—वि० ।

झिळकाविओडौ, झिळकावियोडौ, झिळकाव्योडौ—भू०का०कृ० ।

झिळकावीजणौ, झिळकावीजवौ—कर्म वा० ।

झिळकणौ, झिळकवौ—अक०रू० ।

झिळकावियोडौ—देखो 'झळकायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० झिळकावियोडी)

झिळकियोडौ—देखो 'झळकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० झिळकियोडी)

झिळकौ—देखो 'झळकौ' (रू भे)

उ०—हेली रा नैण निजर भर निरखो। सिय वर वीद वण्यो जोवा सिरखो। केसरिया पाग कसूवल जामो। तुररा किलगी रौ झिळकौ।

—समानबाई

झिलणौ, झिलवौ-क्रि०अ०—१ देदीप्यमान होना, चमकना, दमकना।

उ०—विलम तबल वाजिया, डका सिधव दहुवै दळ। साकति पमग सझै, झिलै पाखर झाळाहळ ।—सू प्र

२ ऐश्वर्य प्रकट करना, तपना। उ०—अकळ भूळ आवळा, झिलै 'गजवध' झळाहळ। पित अजसै भूपाळ, 'सूर' झळहळ दळ सब्बळ।

—सू प्र.

३ परिपूर्ण होना, पूर्ण होना। उ०—वाडी रा वड रळियामणा ए, सियळी वड री जी छाव। नागादडी नाडै भरी ए, झिलती झालरवाव ।—लो गी.

४ शोभा देना, शोभित होना। उ०—पणिहारया परवार, जाय सरवर जळ ल्यावण। फूलरियै झणकार, लसकरा लै'रो गावण। मधुर मोवणी राग, रीझवै आभो राजा। झीणी छाटा झिलै, सोळवै साळू गाजा ।—दसदेव उ०—२ चुडलो जोवन झिल रह्यो।

—स्री पाळरास

५ समृद्ध होना, वैभवयुक्त होना। उ०—वावेली ए घोय घोय किया रे विणाव, मनडो ऊमायो झिलतै सासरै ।—लो.गी.

६ देखो 'झलणौ, झलवौ' (रू.भे)

उ०—प्रथम दुतिय चवथै पढै, मोहरा वहिस मिळ त। रह अमेळ पद तीसरो, जो झडलुपत झिलत ।—र रू

८ मस्त होना। उ०—झिलै वीर भैरवा भार किलकिलै भवानी। गिरै तुरा ऊपरा खगा वाढिया खवानी ।—वखतो खिडियो

उ०—२ सह्यो परीसो थोडी वार, करमा रो कियो अपहार। सुकोमळ साघ अविचळ सुखमा झिल रह्या ए ।—जयवांणी

झिलणहार, हारो (हारी), झिलणियो—वि० ।
झिलवाडणो, झिलवाडवो, झिलवाणो, झिलवावो, झिलवावणो, झिलवाववो—प्रे०रू० ।
झिलाडणो, झिलाडवो, झिलाणो, झिलावो, झिलावणो, झिलाववो —क्रि०स० ।
झिलिग्रोडो, झिलियोडो, झिल्योडो—भू०का०कृ० ।
झिलीजणो, झिलीजवो—भाव वा० ।
झलणो, झलवो, झिल्लणो, झिल्लवो—रू०भे० ।

झिलम-स०पु०—युद्ध के समय शिर पर धारण करने का लोहे या कुछ दूसरी धातुग्रो के मिश्रण से बना टोप, शिरत्राण ।
उ०—१ झूसण ग्राभूखण झिलै, पूसण झिलम प्रकास । जुग्रळ निमासी जरमनी, 'पातल' चद्रप्रहास ।—किसोरदान बारहठ
उ०—२ चित्तौड ऊपर ग्रकवर रै झिलम रै गोळा री फेट लागी ।
—वा दा ख्यात
उ०—पमग भाण पसाव, पमग पखरैता पाडै । मुगळा खगि 'ग्रभमाल' झिलम सहिता सिर झाडै ।—सू प्र
रू०भे०—झलव, झलम, झिलव ।
यौ०—झिलमटोप ।

झिलमटोप-यौ०—देखो 'झिलम' ।
उ०—झिलमटोप सूधो सिर झडियो । पटझर हूँ चूडामणि पडियो ।
—सू प्र
रू०भे०—झलमटोप ।

झिळमिळ-स०स्त्री०—१ ग्रस्थिर ज्योति, झिलमिलाहट ।
उ०—१ यहु सब माया मिरग जळ, झूठा झिळमिळ होइ । दादू चिळका देख कर, सत कर जाणा सोइ ।—दादू वाणी
उ०—२ दादू जरै सु ज्योति स्वरूप है, जरै सु तेज ग्रनत । जरै सु झिळमिळ नूर है, जरै सु पुज रहत ।—दादू वाणी
२ टिमटिमाहट ।
उ०—सूरज नही तहँ सूरज देखे, चद नही तहँ चदा । तारे नही तहँ झिळमिळ देख्या, दादू ग्रति ग्रानदा ।—दादू वाणी
३ चमक-दमक ४ युद्ध मे पहिनने का लोहे का कवच ।
वि०—रह रह कर चमकने वाला ।
रू०भे०—झिळमिळ, झिळोमिळ ।

झिळमिळाणो, झिळमिळावो-क्रि०ग्र०स०—१ प्रकाश का हिलना, ज्योति का ग्रस्थिर होना २ रह रह कर चमकना. ३ हिलाना, कपाना ।

झिळमिळायोडो-भू०का०कृ०—१ ग्रस्थिर हुवा हुग्रा (प्रकाश, ज्योति) २ रह रह कर चमका हुग्रा ३ हिलाया हुग्रा, कपाया हुग्रा ।
(स्त्री० झिळमिळायोडी)

झिळमिळाहट-स०स्त्री०—झिलमिलाने की क्रिया या भाव ।

झिळमिल्ल—देखो 'झिळमिळ' ।
उ०—झडै खग थाट लोहा झिळमिल्ल । तेगा मुह घाट हुवो तिलतिल्ल
—सू प्र.

झिलम्म—देखो 'झिलम' (रू.भे.) ।
उ०—झडै खग ग्रातस रूप झिलम्म । कटै विहरार ग्रपार क्रिलम्म ।
—सू प्र

झिलाडणो, झिलाडवो—देखो 'झिलाणो, झिलावो' (रू भे)
झिलाडणहार, हारो (हारी), झिलाडणियो—वि० ।
झिलाडिग्रोडो, झिलाडियोडो, झिलाड्योडो—भू०का०कृ० ।
झिलाडीजणो, झिलाडीजवो—कर्म वा० ।

झिलाडियोडो—देखो 'झिलायोडो' (रू भे)
(स्त्री० झिलाडियोडी)

झिलाणो, झिलावो-क्रि०स०—१ स्नान करना २ मग्न करना, लीन करना ३ देखो, 'झलाणो, झलावो' (रू.भे.)
उ०—इसडो सम्मत करि काळ रा खेचिया प्रेत पति री पुरी रा पाहुणा होइ हुकम रै प्रमाण तत्काळ ही लेख करि झिलाइ दीधो ।
—व भा.
('झिलणो' क्रिया का प्रे०रू०) ४ देखो 'झिलणो, झिलवो'
('झेलणो' क्रिया का प्रे०रू०) ५ देखो 'झेलणो, झेलवो'
उ०—झेलू लोह ग्रनेक झिलाऊँ । ग्ररण होय मुजरा कजि ग्राऊ । रैवत सहित होय रातवर । करू सिलाम रगियै किरमर ।—सू प्र.
झिलाणहार, हारो (हारी), झिलाणियो—वि० ।
झिलायोडो—भू०का०कृ० ।
झिलाईजणो, झिलाईजवो—कर्म वा० ।
झिलणो, झिलवो, —ग्रक० रू० ।
झिलाडणो, झिलाडवो, झिलावणो, झिलाववो—रू०भे० ।

झिलायोडो-भू०का०कृ०—१ स्नान कराया हुग्रा. २ मग्न किया हुग्रा, लीन किया हुग्रा ३ देखो 'झलायोडो' (रू.भे)
('झिनियोडो' का प्रे०रू०) ४ देखो 'झिलियोडो'
('झेलियोडो' का प्रे०रू०) ५ देखो 'झेलियोडो'
(स्त्री० झिलायोडी)

झिलावणो, झिलाववो—देखो 'झिलाणो, झिलावो' (रू भे)
उ०—ए मिळताईं ग्रेंठ झूठ परसाद झिलावै, कुळ मे घालै काळह माजनो धूड मिळावै ।—ऊ का.
झिलावणहार, हारो (हारी) झिलावणियो—वि० ।
झिलाविग्रोडो झिलावियोडो, झिलाव्योडो—भू०का०कृ० ।
झिलावीजणो, झिलावीजवो—कर्म वा० ।

झिलावियोडो—देखो 'झिलायोडो' (रू भे)
(स्त्री० झिलावियोडी)

झिळिमिळि-स०स्त्री—१ मद-मद वर्षा होने की क्रिया या ध्वनि ।
उ०—सुन सुधारस पीजिये, पति प्राण ग्रधार । झिळिमिळि झिळिमिळि होत है, वरिखा बहो धारा ।—ह पु वा
२ देखो 'झिळमिळ' (रू भे)

झिलियोडो-भू०का०कृ०—१ देदीप्यमान हुवा हुग्रा, चमका हुग्रा, दमका

हुआ २ ऐश्वर्य प्रकट किया हुआ, तपा हुआ. ३ परिपूर्ण हुवा हुआ, पूर्ण हुवा हुआ ४ शोभित हुवा हुआ. ५ समृद्ध, वैभवयुक्त हुवा हुआ. ६ मस्त हुवा हुआ।

७ देखो 'झलियोडौ' (रू.भे)

(स्त्री० झिलियोडी)

झिली—देखो 'झिल्ली' (रू भे.)

उ०—मोरिया महकसी, डेडरा डहकसी, झिलीगन झणकसी, भमरा भणकसी।—दरजी मयाराम री वात

झिलोझिल—देखो 'झलोझल' (रू भे)

झिळोमिळ—देखो 'झिळमिळ' (रू भे)

उ०—इसौ समइयौ वण रह्यौ छै। वरखा मड नै रही छै। विजळी झिळोमिळ कर नै रही छै, वादळा झड लायौ छै।—रा सा स.

झिलोळौ—स०पु०—हिलोर, तरग, लहर।

उ०—जोडौ खुदा दै ओ, हा ओ म्हारा जळवळ जांमी वाप। आई रे सावणिया री तीजा, वाई झीलसी। खुदौ अे खुदायौ अे, हा अे वाई थारौ भरचौ अे झिलोळा खाय, झीलण वाळी वाई गवरा सासरे।
—लो गी.

क्रि०प्र०—ऊठणौ, खाणौ।

झिल्लणौ, झिल्लवौ—देखो 'झिलणौ, झिलवौ' (रू भे.)

उ०—वरण कजि अपछरा वाट जोवै खडी। ज्या भडा तणी झिल्लै उरसा झूपडी।—हा झा.

झिल्लियोडौ—देखो 'झिलियोडौ' (रू.भे)

(स्त्री० झिलियोडी)

झिल्ली—स०स्त्री० [स०] १ किसी वस्तु के ऊपर की वह पतली तह जो पारदर्शक अथवा अल्प पारदर्शक होती है. २ आंख का जाला. ३ बहुत पतला छिलका ४ झींगुर। उ०—ओर ही झूळा रा झूळा लमभम करता फूलवाग नूं आवै है, लहरिया गावै हैं, गहरौ गहकै है, डेडरा डहकै है, मोरा री सोर, झिल्ली री भिंगोर, वळै बोलै चातक, विरही जना का घातक।—र. हमीर

रू०भे०—झिली।

झिल्लीदार—वि०—जिसके ऊपर बहुत पतली तह लगी हो।

झींक—देखो 'झीक' (रू.भे.) उ०—१ बरसात मे भलेई सारी रात मेह झींक दौ पण मायनै छाट ई नही पडै। माय नै सूतोडा तौ परभातै वारै आवै जरै ईज ठा, पडै कै रात रा वरसात हुई ही।
—रातवासौ

उ०—२ वाजिया रोसेल वका, घमै आवध धार धका। असतरां वेदै असका, भिडै लका भूर। झींक अगा हुवै झका, प्रथी माचै रुधर पका। कहर थापै ग्रीध कका, प्रवळ सका पूर।—र रू

झींकणौ—देखो 'झीकणौ, झीकवौ' (रू भे.)

झींकणौ, झींकवौ—देखो 'झीकणौ, झीकवौ' (रू.भे.)

उ०—वीणा जतर तार, थै छेडया उण राग रा। गुण नै रोऊ गवार, जात न झींकू जेठवा।—जेठवा

झींकणहार, हारौ (हारी), झींकणियौ—वि०।

झींकिओडौ, झींकियोडौ, झींक्योडौ —भू०का०कृ०।

झींकीजणौ, झींकीजवौ—कर्म वा०।

झींकरौ—स०पु०—कूए को गहरा करने के हेतु काटा हुआ पत्थर।

रू०भे०—झीकरौ।

झींका—देखो 'जीका' (रू.भे)

झींकियोडौ—देखो 'झीकियोडौ' (रू.भे.)

(स्त्री० झीकियोडी)

झींखणौ—देखो 'झीकणौ' (रू भे.)

झींखणौ, झींखवौ—देखो 'झीकणौ, झीकवौ' (रू भे)

झींखणहार, हारौ (हारी), झींखणियौ—वि०।

झींखिओडौ, झींखियोडौ, झींख्योडौ—भू०का०कृ०।

झींखीजणौ, झींखीजवौ—भाव वा०, कर्म वा०।

झींखा—देखो 'जीका' (रू भे.)

झींखाळी—देखो 'जीका' (रू.भे)

झींखियोडौ—देखो 'झीकियोडौ' (रू.भे)

(स्त्री० झीखियोडी)

झींगडि, झींगडी—स०स्त्री०—१ नौवत की ध्वनि. २ किसी वस्तु पर (नौवत आदि पर) ध्वन्यार्थ किया जाने वाला किसी दूसरी वस्तु (डके आदि) का प्रहार या इस प्रहार से उत्पन्न ध्वनि।

उ०—१ पाखती अरटा री झींगडि चीगडि पडि नै रही छै।
—रा सा स.

उ०—२ नौवत रा टकोरा लागै छै। नौवत झींगडी पडि नै रही छै।—रा सा स

झींगर—स०पु० [स० धीवर] १ प्राय मछली पकडने और वेचने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति, धीवर।

उ०—वाही राण प्रतापसी, वगतर मे वरछीह। जाणक झींगर जाळ मे, मुह काढचो मच्छीह।—पृथ्वीराज राठौड

२ देखो 'झिंगोर' (रू भे)

झींगरनिसाणी—स०स्त्री०—वह 'निसाणी छद' जिसमे प्रथम १८ मात्रायें फिर १४ मात्रायें और तुकात मे मगण (SSS) हो।

झींगोर, झींगोर—देखो 'झिंगोर' (रू भे) उ०—फेर केळि रै गिरद-वाइ माहे सारसा रा टोळा झींगोर करि नै रहिआ छै।—रा.सा.स.

झींझणियाळ, झींझळियाळ—देखो 'जीजणियाळ' (रू भे)

उ०—वटपाडा घरपाडा वाळी, आभ जडा नाखै ऊपाड। कोय न गाज सकै किनियाणी, झींझणियाळ तुहाळा झाड।

—कविराजा बाकीदास

झींझौ—स०पु०—१ पहाडो मे उत्पन्न होने वाला एक वृक्ष विशेष। (वहु व० झीझा) २ देखो 'जीजौ' (रू भे.)

झींट—देखो 'झीत, झीथ' (रू भे)

झींटझींटाळो—वि० (अनु०) (स्त्री० झीटझीटाळी) घने बालो वाला।

उ०—फोगल पछै घिटाळ, जगळा भींटभिंटाळी। सूरज ऊगरा वेळ, फडमला छवी निराळी।—दसदेव

भींण—देखो 'झीणो' (मह, रू भे)

भींणउ, भींणो—देखो 'झीणो' (रू.भे) उ०—१ गाया गोसाळा गूदा गळगळती, ढाळा द्रग ढळती वूदा वळवळता। डाई डेडर सी धाई घुर घीणें, झीणी झेडर झुर गाई सुर झीणें।—ऊ.का.

उ०—२ वैरी नथडी री मोती उतर नहिं जाय, भींणो झीणो रै वायरिया, झोलो सह्यो न जाय।—चेत मानखा

(स्त्री० झीणी)

भींणोडो, भींणोडो—देखो 'झीणो' (अल्पा, रू भे)

(स्त्री० झीणोडी, झीणोडी)

भींत, भींथ-स०स्त्री०—१ कपडे मे अनाज भर कर उसके चारो कोनो को पकड कर पीठ पर लाद कर ले जाने वाली खुली गठरी.

२ कपडे का बनाया हुआ वह झोला जिसमे कपडे के एक ओर के दोनो छोरो को मिला कर गाँठ लगा कर गरदन मे डाल ली जाती है और दूसरी ओर के दोनों छोर पृथक-पृथक दोनो हाथो में रहते हैं।

रू०भे०—झीट।

भींपरो, भींफरो-वि० (स्त्री० झीपरी, झीफरी) जिसके शरीर पर बहुत बडे-बडे बाल हो, घने बालो वाला।

भींवर-स०पु० [स० धीवर] मछली पकडने और बेचने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति। उ०—१ धोय नीर उडप पग धरजे, रज सिल उठी किसू वनदार। उज्जळ उदक धुवाया ओयरा, लघे पार सरिता म्रिदु लोयरा, प्रभु भींवर कीधो भव पार।—र रू

उ०—२ अगम तहा पहुता नही, गुरा इद्री प्रतिपाळ। गुरु भींवर वर सिख माछळी, तकि तकि मेल्है जाळ।—ह पु वा

भीक-स०स्त्री०—१ झीखने की क्रिया या भाव २ शस्त्र प्रहार।

उ०—१ वीच फरक्कै झडा प्रचडा कोडडा भराकै चिला- माळ रु डा काज सडा खेडिया महेस। खडा भीक देते सूडाडडा धू भेरिया काथा, जाडा थडा ओरिया वितुडा 'जालमेस'।

—जालमसिंघ चापावत री गीत

उ०—वहै गोळा हुळा कूत झटका वहै, अनत रुधर वहै नीक अझडा। घणू घमसारा दळ हीक चाडे घरा, दियै 'सारग' तराौ भीक दुजडा।—वसराम रावळ

३ शस्त्र प्रहार की ध्वनि ४ ध्वस, सहार।

उ०—राजा करि हाक खित्री भ्रम राहि, मघाउत खेग धरै रिरा माहि। हिलोळै फौज चढ़ावै हीक, भिडा गज वाजि हुअै भड भीक।—वचनिका

५ युद्ध। उ०—अरावा तराौ असबाव अपरााविया, भट किलकता तराौ भागो। आड रोपी वज्र द्र भीक वागो असभ, 'लीक' टोप पटक पथ लागो।—कविराजा वाकीदास

६ वर्षा की झडी।

रू०भे०—झीक।

मि०—रीठ।

झीकणो-स०पु०—१ दु ख का वर्णन, दुखडा रोना. २ झीखने की क्रिया या भाव।

रू०भे०—भीकणो, झीखणो, झीखणो।

झीकणो, झीकवौ-क्रि०अ०स०—१ लालायित होना, इच्छा करना, तरसना। उ०—नानग सरवर भरियो नीको, झुकै लोग पीवरा दे झीको। ठगवाजी गादी रो ठीको, फेर सिखा कर दीनो फीको।

—ऊ.का.

२ दुखी हो कर पछताना ३ खीजना ४ कुढना ५ अपने दु.ख का हाल सुनाना, दुखडा रोना. ६ शस्त्र प्रहार करना. ७ युद्ध करना।

झीकणहार, हारो (हारी), झीकणियो—वि०।

झीकवाड़णो, झीकवाडवो, झीकवाणो, झीकवावो, झीकवावणो, झीकवाववो—प्रे०रू०।

झीकाडणो, झीकाडवो, झीकाणो, झीकावो, झीकावणो, झीकाववो

—क्रि०स०।

झीकिओडो, झीकियोडो, झीक्योडो—भू०का०कृ०।

झीकीजणो, झीकीजवो—भाव वा०, कर्म वा०।

भींकणो, भींकवो, भींखणो, भींखवो, झीखणो, झीखवो—रू०भे०।

झीकरो—देखो 'झीकरो' (रू भे)

झीकियोडो-भू०का०कृ०—१ लालायित हुवा हुआ, इच्छा किया हुवा, तरसा हुआ २ दुखी हो कर पछताया हुआ ३ खीजा हुआ ४ कुढा हुआ. ५ अपने दुःख का हाल सुनाया हुआ, दुखडा रोया हुआ ६ शस्त्र प्रहार किया हुआ ७ युद्ध किया हुआ।

(स्त्री० झीकियोडी)

झीकोळणो, झीकोळवो - देखो 'झकोळणो, झकोळवो' (रू भे.)

उ०—आई तेरी मा की जाई भैनडी जी राज! ओ वीरा रोय रोय नू क समद झीकोळ। वीरा ऊपर चढ हेलो दियो जी राज! ये वाई रूसडी नरणद जाणूं छोय।—लो गी

झीकोळणहार, हारो (हारी), झीकोळणियो—वि०।

झीकोळिओडो, झीकोळियोडो, झीकोळयोडो—भू०का०कृ०।

झीकोळीजणो, झीकोळीजवो—कर्म वा०।

झीकोळियोडो—देखो 'झकोळियोडो' (रू.भे.)

(स्त्री० झीकोळियोडी)

झीख—देखो 'झीक' (रू.भे)

उ०—तरै राठोडा तो टाळो कियो। तरै घोडा री खुरी कराय नै मुगळा री फौज माहै घोडो नाखियो, ऊपर लोह री घरणी झीख पडी —राव मालदे री वात

झीखणो—देखो 'झीकणो' (रू भे.)

झीखणो, झीखवो—देखो 'झीकणो, झीकवो' (रू.भे)

झीखणहार, हारौ (हारी), झीखणियौ—वि० ।

झीखियोडौ, झीखियोडौ, झीख्योडौ—भू०का०कृ० ।

झीखीजणौ, झीखीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

झीखा—देखो 'जीका' (रू भे)

उ०—झीखा झीखाळं, पौसाळं पढियौ नही । ऊभौ आफाळेह, हळिया सू माथौ हमैं ।—अज्ञात

झीखाळणौ, झीखाळबौ—क्रि०स०—१ खपरैलों को परस्पर रगड कर महीनतम चूर्ण बनाना । उ०—झीखा झीखाळं, पौसाळं पढियौ नही । ऊभौ आफाळेह, हळिया सू माथौ हमैं ।—अज्ञात

२ सफेदे से पुती हुई पढ़ने की तख्ती पर खपरैल को परस्पर घिस कर बनाया हुआ महीनतम चूर्ण छितराना ।

झीखाळियोडौ—भू०का०कृ०—१ खपरैलो से महीनतम चूर्ण बनाया हुआ. २ पढने की लकडे की तख्ती पर खपरैलो का महीनतम चूर्ण डाला हुआ, (छितराया हुआ)

(स्त्री० झीखाळियोडी)

झीखियोडौ—देखो 'झीकियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री० झीखियोडी)

झीगोर, झींगोर—देखो 'झिंगोर' (रू भे)

झीण—स०स्त्री०—[स० ध्वनि] १ ध्वनि, आवाज । उ०—झणक नूपुरास झीण, ओपतास एहडा । बदत तोतळीस बाणि, जाणि पुत्र जेहडा ।—सू प्र.

२ देखो 'जीण' (रू भे)

उ०—रग रग री पौसाखा इनायत करै छै नै माता घोडा उडणा ताजी ऊपर झीण करावं छै ।—पना वीरमदे री वात

३ देखो 'झीणौ' (मह रू भे)

उ०—१ भिदि वज्र सिखर चकर इम भळकै, झीण वदळ माझळ रवि झळकं । ईख सिला वज्र दूर करावै । उणहिज तरह लियण नृप आवै ।—सू प्र

उ०—२ विविधि वजत्री वीण वजावै, सुघड झीण सुर सार । बोळी कहै खीण हूं वचक, हीण वजावण हार ।—ऊ.का

झीणउ—देखो 'झीणौ' (रू भे) (उ र)

झीणोडौ—देखो 'झीणौ' (अल्पा, रू भे)

(स्त्री० झीणोडी)

झीणौ—वि० [स० क्षीण] (स्त्री० झीणी) १ जो मोटाई और घेरे मे इतना कम हो कि छूने से हाथ मे क्षीण आभास हो, महीन, पतला । उ०—तिल हिक अमख कपाट सतूटै । छेदै तास गयण मग छूटै । झीणै तत जिम नाद झणकै । भमर गुजारउ सबद भणकै ।—सू प्र

२ तह के आकार की वह वस्तु जिसका दल मोटा न हो, (जो प्राय: पारदर्शक अथवा अल्प-पारदर्शक होता है), पतला, हलका ।

उ०—१ आदीता हूं ऊजळो, मारवणी-मुख-ब्रन्न । झीणा कप्पड पहिरणइ, जांणी झंखइ सोब्रन्न ।—ढो मा.

उ०—२ सुदर सकुळीणी झीणी साडी मे, जुलफा सपणी जिम अपणी आडी मे । सूनी ढाणी मे सेठाणी सोती, रैंणी विणियाणी पाणी नै रोती ।—ऊ का

३ मधुर, सुरीला । उ०—१ गोरियां उंच्यो माथै बोझ, गीतडा गावै झीणी राग । गोद मे झुरै हठीला बाळ, रमै जद खांखळ नैणां फाग ।—साझ

उ०—२ धापूडी नै झंपावण नै उण री साथणिया एक तरकीब सोची अर साथै गावती-गावती एकदम चुप रैयगी । एकली धापू री ईज झीणी सुर गूज ऊठघो ।—रातवासौ

उ०—३ वाह रे वाह ! क्या झीणो कठ है, सुण नै कळी-कळी खिलगी ।—रातवासौ

उ०—४ गाया गोसाळा गूदा गळगळती । ढाळा द्रग ढळती बूदा बळबळती । डाई डेडरसी धाई धुर धीणै । झीणी झेडर झुर गाई सुर झीणै ।—ऊ का

४ जो सुनने मे कर्कश, वेगयुक्त, तीव्र अथवा अप्रिय न हो, मृदु । उ०—तठा उपरात करि नै राजान सिलामति सिकार पाखती जिनावर चालिआ जाअै छै । सेत सूआ, सवज सूआ, सारा, मैना, कोइल, तीतुर, कागा-कउआ, सेत काग, सेत कवूतर, उडण गिरहबाज, लख जातिरा पखी, भाति भाति री झीणी भाखा बोलता, पढ़ता कठपिंजरै घातिआ वहै छै ।—रा सा स

५ जिसकी देह का घेरा कम हो, जिसके शरीर के इधर-उधर का विस्तार कम हो, जो स्थूल या मोटा न हो, छरहरा ।

उ०—जध सुपत्तळ, करि कुअळ, झीणी लब-प्रलब । ढोला एही मारुई, जाणि क कणियर-कब ।—ढो मा

६ कृश, पतला (कमर) उ०—१ चमकै हीड मचोळता, लचकै झीणी लक । तन दमकै दामणी तिही, मुखडो जाण मयक ।

—र. हमीर

उ०—२ झीणी मध्यप्रदेस कटि, पीन प्रचड नितव । कनक वरण चढती कळा, नाभि कुड प्रतिबिंब ।—वैताळ पच्चीसी

७ सुकुमार, सुकोमल, लचीला । उ०—ढोला, सायधण मांण नै, झीणी पासळियाह । कइ लाभै हर पूजियां, हेमाळै गळियाह ।

—ढो मा

८ जो छूने मे कडा न हो, कोमल, मुलायम, नरम, मृदुल ।

उ०—जाघा गरभ ज केळकी, पीडी पुहुरीयाह । गिरिया गोळ सुपारिगा, झीणो मास ळियाह ।—कुवरसी साखला री वारता

९ जो धधकता हुआ न हो, मद, क्षीण ।

उ०—आसालुध्धी हूं न मुइय, सज्जन-जजाळेइ । मारू सेकइ हथ्थडा, झीणै अगारेइ ।—ढो मा

१० मद, धीमा, हलका । (प्रकाश)

११ छितराया हुआ, क्षीण । उ०—धम्मधमतइ घाघरइ, उळटघउ जाण गयद । मारू चाली मदिरे, झीणै वादळ चद ।—ढो.मा.

१२ जो वेग युक्त न हो, मद-मद । उ०—कर ठाली प्याल्या सबै,

फूला पुरसी जेम । झीणी मसती झूमती, वहकी लूआ केम ।—लू
१३ जो स्थूल या अधिक भारी न हो, वजन मे हल्का । उ०—झीणी गाडी रा झीणा वैलिया, झीणी घूघरमाळ । जिण पर चढ आयो पाचियो, लारै घोडा री घमसाण ।—लो गी
१४ जिसकी रचना मे दृष्टि की सूक्ष्मता और कला की निपुणता प्रकट हो । उ०—कोई चूनड तो साळूडा, झीणा सळ भरया ए, मोरी सइया ।—लो गी
१५ जो विना अच्छी तरह ध्यान से सोचे समझ मे न आए, जिसे समझने के लिये सूक्ष्म बुद्धि आवश्यक हो । उ०—ज्यू जीव खवाया में पाप ते पिण थें न जाणो तो पडिमाधारी नें अव्रत सेवाया पाप थारै किम बैसे । आ चरचा तो घणी झीणी है ।—भि द्र.
१६ दुर्गम, कठिन । अदर दीपक नै ओळखो आदू हसा री ठौड, भाय थोडी नै झीणो पथ । पाचैला विरला कोय ।—सतवाणी
१७ सँकरा, तग । उ०—ऊँचा नीचा महल माळिया, हमसे चढ़या न जाय । पिया दूर पथ म्हारो झीणो, सूरत झकोळा खाय ।—मीरा
१८ जिसमे सूक्ष्म बुद्धि न पहुँचे, वुद्धि से बाहर, न जानने योग्य, दुर्वोध, अगम्य, (जो केवल आभासित हो) । उ०—वै तो सुखम झीणा भारी, कोण लखै गत थारी । सतगरु से गम पाई, दरियावा लहर समाई ।—श्री हरिरामजी महाराज
१९ बहुत ही छोटा, सूक्ष्म उ०—पणिहारया परवार जाय, सरवर जळ ल्यावण । झूलरियै झणकार, लसकरा लै'री गावण । मधुर मोवणी राग, रीझवै आभो राजा । झीणी छाटा झिलै, सीळवै साळू गाजा ।—दसदेव
२० जिसके अणु बहुत ही छोटे या सूक्ष्म हो ।
उ०—वाई ए मन मै धीरज राख, वीरो दीसै म्हनै आवतो । वाई ए झीणी झीणी उडै है गुलाल, धोळा रा जाजण वाजिया ।—लो.गी.
उ०—२ ढोल वळाव्यउ हे सखी, झीणी ऊडइ खेह । हियडउ वादळ छाइयउ, नयण टवूकइ मेह ।—ढो मा
२१ वह जिसमे प्रचडता व उग्रता न हो. २२ धुधला २३ जिसमे जलाश अधिक हो, अधिक तरल ।
विलो०—गाढो ।
२४ आगे से छितराया हुआ, फैला हुआ (घूघट) ।
उ०—१ भवरजी हथाया वैठा हेलो कीकर पाडू ओ, ए झीणो काढू घूघटियो सनकारी देऊ ओ, क घर मे आवो तो । हा रे घर मे आवो तो, मनडै री वाता थानै कैऊ ओ, क घर मे आवो तो ।—लो गी.
उ०—२ झीणं घूघटियै मोतीडा पोवती, मैं'ला वैठी वीरोसा री वाटां जोवती, क वीरो आवै तो ।—लो गी.
उ०—३ तिरछा कटाक्ष रा नेतर झमकै छै, झीणा घूघटा मे जडाव री टीक्या चपळा सी चमकै छै ।—पना वीरमदे री वात
वि०वि०—घूघट का वह ढग जिसमें घूघट निकालने वाली स्त्री अपने आस-पास चारो ओर देख सकती है और अगर दूसरा भी चाहे तो उस स्त्री के मुह की झाकी देख सकता है ? क्योकि घूघट मुँह के ऊपर सीधा न होकर इधर-उधर कधो तक छितराया हुआ या फैला हुआ होता है ।
स०पु०—महीन वस्त्र । उ०—हा ए राज गोरी झीणो ही ओढो हो, हा ए गोरी झीणो ओढो हो, म्हारी सदा रे सवागण सुदर नार, मानेतण गोरी, झीणो ओढो हो ।—लो गी
रू०भे०—झीणउ, झीणौ, झीणउ ।
अल्पा०—झीणोडो, झीणोडौ, झीणोडो, झीणोडो ।
मह०—झीण, झीण ।
झीणोडो—देखो 'झीणो' (अल्पा, रू.भे) उ०—डीगोडा डूगर धोरा माझ, वरसतो झीणोडो विसराम । जिकण मे भीजै वा इकलाण, विराजी सायत वण जजमान ।—साझ
(स्त्री० झीणोडी)
झीणोमोरियो—स०पु०—लडकियो द्वारा गाया जाने वाला एक लोकगीत ।
झीथरो—स०पु०—एक प्रकार का घोडा (शा हो)
झीनातिझीन—वि०—अत्यन्त बारीक, महीन से महीन ।
उ०—सूक्ष्म सरीर, व्याकृत्ति वहीर । झीनातिझीन, चित विदित चीन ।—ऊ का.
झीमर—स०पु० [स० धीवर] १ कहार जाति का एक भेद २ मछली पकडने और वेचने का कार्य करने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति ।
झीरा-लूणवासियो घोळ, झीरा-लूणवासीयो घोळ—स०पु०—जीरे के सयोग से वना नमकीन पेय पदार्थ । उ०—करवा आणिया रग रोळ, झीणा लूणवासियो घोळ, दहीवडा बणाविया घोळ, नाखियो राई तणो झोळ ।—व स
झीरोको—देखो झरोको' (रू भे)
झीरोख—देखो 'झरोको' (मह, रू भे) उ०—जावै सुख पावै जठै, झुकिया गोख झीरोख । काच जडै तगता किता, सरस चित्रामा सोख ।
—महादान महडू
झीरोखो—देखो 'झरोको' (रू भे)
झीरोहर—स०पु०—चूर-चूर । उ०—भाख सत्रा खटतीस भाखीजै । घरपुड घाय निहाइ ध्रुवै । झीरोहर कर झाट जूवरिक । हुळ हाथळ जिहिं भगति हुवै ।—दूदो
झील—स०स्त्री०—१ चारो ओर जमीन से घिरा हुआ वहुत वडा जलाशय, ताल, सर ।
अल्पा०—झीलडी ।
स०पु०—२ एक छोटा पौधा विशेष जिसकी रहट की माल वनाई जाती है और दाँतुन करने के काम मे भी लिया जाता है ।
अल्पा०—झीलडी ।
झीलडी, झीलड़ी—देखो 'झील' (अल्पा, रू भे.)

उ०—खडचा नीचै वड खूटोडा, लिपै चिपै लुक सीलडी। तळै हरचो भागरो ऊगै, जावक सूकी झीलडी।—दसदेव

झीलणौ, झीलबौ-क्रि०अ०—१ स्नान करना, नहाना।
उ०—ढोला, हूँ तुझ वाहिरी, झीलण गइय तळाइ। ऊजळ काळा नाग जिउँ, लहिरी ले ले खाइ।—ढो०मा
२ मग्न होना, लीन होना। उ०—दोय मुनी अणसण उच्चरइ जी, झीलइ ध्यान मझार।—स कु
रू०भे०—'झूलणौ झूलबौ'।
झीलणहार, हारौ (हारी), झीलणियौ—वि०।
झीलवाडणौ, झीलवाड़बौ, झीलवाणौ, झीलवावौ, झीलवावणौ, झीलवावबौ—प्रे०रू०।
झीलाडणौ, झीलाड़बौ, झीलाणौ, झीलावौ, झीलावणौ, झीलावबौ—क्रि०स०।
झीलिग्रोडौ, झीलियोडौ, झील्योड़ौ—भू०का०कृ०।
झीलीजणौ, झीलीजबौ—भाव वा०।

झीलाडणौ, झीलाडबौ—देखो 'झीलाणौ, झीलाबौ' (रू भे)
झीलाडणहार, हारौ (हारी), झीलाडणियौ—वि०।
झीलाडिग्रोडौ, झीलाडियोडौ, झीलाडचोडौ—भू०का०कृ०।
झीलाडीजणौ, झीलाडीजबौ—कर्म वा०।
झीलणौ, झीलबौ—अक०रू०।

झीलाडियोडौ—देखो 'झीलायोडौ' (रू भे.)
(स्त्री० झीलाडियोडी)

झीलाणौ, झीलाबौ-क्रि०स०—स्नान कराना, नहलाना।
झीलाणहार, हारौ (हारी), झीलाणियौ—वि०।
झीलायोडौ—भू०का०कृ०।
झीलाईजणौ, झीलाईजबौ—भाव वा०।
झीलणौ, झीलबौ—अक०रू०।
झीलाडणौ, झीलाडबौ, झीलावणौ, झीलावबौ—रू०भे०।

झीलायोडौ-भू०का०कृ०—स्नान कराया हुआ।
(स्त्री० झीलायोडी)

झीलावणौ, झीलावबौ—देखो 'झीलाणौ, झीलाबौ' (रू.भे)
झीलावणहार, हारौ (हारी), झीलावणियौ—वि०।
झीलाविग्रोडौ, झीलावियोडौ, झीलाव्योडौ—भू०का०कृ०।
झीलावीजणौ, झीलावीजबौ—कर्म वा०।
झीलणौ, झीलबौ—अक० रू०।

झीलावियोडौ—देखो 'झीलायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० झीलावियोडी)

झीलियोडौ-भू०का०कृ०—१ स्नान किया हुआ, नहाया हुआ।
२ मग्न, लीन।
(स्त्री० झीलियोडी)

झीवर-स०पु० [स० धीवर] मछली पकडने तथा बेचने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति, मछुआ। उ०—१ नदी जळनील सुफील निसाण, उझेळत छीलर ढील न आण। वगतर झीवर जाळ बहत, आवै नँह माळ-रगत्तर अंत।—मे.म.
उ०—२ सिल उधरती सारि, नाठो झीवर नाव ले। महिमा चलण मुरारि, देखे दसरथ रावउत।—प्रिथ्वीराज राठौड

झुकार-स०स्त्री०—ध्वनि, हुंकार।

झुजार—देखो 'जूझार' (रू.भे.)
उ०—राव रामा रै वडो वेटो करण थो नै छोटो वेटो कलो थो, सु करण ही निपट लायक थो। दातार, झुंजार वडो रजपूत थो।
—राव चद्रसेन री वात

झुझळाणौ, झुझळावौ-क्रि०अ०—दुख और क्रोध के कारण वहकना, चिडचिडाना, खिजलाना।

झुझळायोडौ-भू०का०कृ०—चिडचिडाया हुआ, खिजलाया हुआ।
(स्त्री० झुझळायोडी)

झुझाऊ—देखो 'जूझाऊ' (रू भे.)
उ०—ऊनै खडपुर का ईस ऊनै राव राजा। वागा फौज किल्ला मे झुझाऊ बीर बाजा।—शि व

झुझार, झुझारि—देखो 'जूझार' (रू भे)
उ०—१ झुकै घर हैमर सूर झुझार। भमै किर साख तिडा दळ भार।
—सू प्र
उ०—२ दळ-थभ तुझ दुवारि झुझारि धवळ तणा। घणा विरदा लहण आविया अरि घणा।—हा.झा

झुंड-सं०पु०—प्राणियो का समुदाय, गिरोह। उ०—मड घमड जुध थड विहड रुड मुड। झुड अकुड चड त्रिपत ग्रध झुड।—सू प्र
रू०भे०—झड।

झुणकार—देखो 'झकार' (रू भे)
उ०—मगळ गावै कामनी, पच सवद तणउ झुणकार। मेघाडबर छत्र सिर दियउ, आज सफळ राजा जनम ससार।—वी दे

झुपडी—देखो 'झूपडी' (रू.भे)
उ०—झडी पडी झुपडी, किया दर उदर कोळै। गघीला गूदडा, खाट पिण वधण खोलै।—ध व ग्र.

झुब—देखो 'झब' (रू भे)
उ०—लुळि लुव झुब कदब होवत, अव के चिहुँ फेर। तरू डार घूजत मधुर कूजत, कोकिला तिहिं वेर।—वि कु

झुबणौ, झुबबौ—देखो 'झूबणौ, झूबबौ' (रू भे.)
उ०—हस्ती थे लाइजो कजळी देस रो, हस्तिया रै हलक पधारजो रे तोरै आवजो, जिसडो सावणिया रो मेह लुब्या झुब्या आवजो।
—लो.गी.

झुबाडणौ, झुबाडबौ—देखो 'झूबाणौ, झूबाबौ' (रू भे)

उ०—कमध ग्रगंजी विमन्ने कहियो, वड दाता कीरत चो वीद। वाक तुम्राळी करडी वाळी, काळो झुवाड कासीद।—ग्रोपो ग्राढो

झुबाडियोडौ—देखो 'झूवायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० झुवाडियोडी)

झुवाणौ, झुवावौ—देखो 'झूवाणौ, झूवावौ' (रू भे)

झुवायोडौ—देखो 'झूवायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० झुवायोडी)

झुवावणौ, झुवाववौ—देखो 'झूवाणौ, झूवावौ' (रू भे)

झुवावियोडौ—देखो 'झूवायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० झुवावियोडी)

झुविखौ—देखो 'झूवौ' (ग्रल्पा रू भे)

उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति उवै चतुरगी रायजादी क्तिीया री झुविखौ मोतीग्रा री लडी हुवै तिणि भाति री ऊजळी गोरगीग्रा।—रा सा स

झुग्राफ—देखो 'जाफ' (रू भे)

झुकणौ, झुकवौ—क्रि०ग्र० [स० युज्] १ किसी खडी वस्तु का नीचे की ग्रोर लटकना, निहुरना, नवना। उ०—मरद गरद हुय जाय, देख घूघट को ग्रोलौ। झुक पीछोळा तीर, दीयै पणियारचा झोलौ।
—महादान महडू

२ किसी पदार्थ का एक ग्रोर या दोनो ग्रोर ग्रपनी सही ग्रवस्था या उसी स्थिति मे प्रवृत्त होना, लवमान होना। उ०—चादडलौ भँवरजी गयो गढ गिरनार, ग्रोजी रसीला भँवरजी, कोई किरत्या झुक ग्राई गढ रै कागरै, हो राज।—लो गी

३ किसी खडे या सीधे पदार्थ का किसी ग्रोर प्रवृत्त होना.

४ मजवूर होना, हारना। उ०—मा रै जीव नै एक गिरै सी व्हैगी। रोज वदूगा ग्रर तलवारा वाळी का'णी कठा सू लावणी। मा वोली वेटा, दिन रा काणी कै'वा तो मारग वैवता वटाउडा मारग भूल जावै। जवाव मे वेटी गळगळी व्हैग्यो, ग्राख्या डव डव व्हैगी, मा नै झुकणौ पडचो।—रातवासो

५ प्रवृत्त होना, मुखातिव होना, रजू होना।

उ०—नानग सरवर भरियौ नीको, झुकै लोग पीवण दे झीको। ठगवाजी गादी रौ ठीको, फेर सिखा कर दीनौ फीको।—ऊ का

६ तल्लीन होना, दत्तचित्त होना, लगना।

उ०—कमधाण केकाण उडाण कळा। झुकिया घमसाण उफाण झळा।—सू प्र

७ ढीला होना, शिथिल होना। उ०—कविता टुक सुण सुख ग्रविक, स्री मुख हुकम सहत। पै जस ग्रस वग झुक 'पता', रुक पग नीठ रहत।
—जैतदान वारहठ

८ ग्राच्छादित होना, फैलना। उ०—झुकै घर हैमर सूर झुझार। भमै फिर साख तिडा दळ भार।—सू.प्र

९ पूर्ण रूप से तैयारी पर होना, सज-धज पर होना, ऐसी ग्रवस्था मे होना कि उसकी तैयारी प्रतीत हो (जैसे घटा का ऐसी ग्रवस्था मे होना कि वह वरसने ही वाली हो)

उ०—भादू वरखा झुक रही, घटा चढी नभ जोर। कोयल कूक सुणावती, वोलै दादुर मोर।—लो गी

१० (मेघ या घन-घटा का) मडराना। उ०—झड लागौ वादळ झुकै, ऊठै हुवै ग्रमवार। पीसाका इक रग पहर, साईणा सिरदार।
—महादान महडू

११ (समृद्धि या विशालता युक्त) शोभित होना।

ज्यू—१ सहर मे सेठा री वडी-वडी हवेलिया झुकयोडी छै।

ज्यू—२ जवाना रै मौळिया सागेडा झुक्योडा छै।

१२ दवना १३ व्यापक होना, चारो ग्रोर फैलना।

उ०—ग्रर नदिया पूर वहै छै। रात ग्रधारी झुक रही छै।
—पना वीरमदे री वात

१४ सघनता युक्त होना, हरा-भरा होना (वृक्ष, फसल ग्रादि)

१५ ग्रभिमान या उग्रता छोडना, विनम्र होना, विनीत होना.

१६ मोहित होना १७ दवना, नीचे झुकना।

झुकणहार, हारो (हारी), झुकणियौ—वि०।

झुकवाडणौ, झुकवाड़वौ, झुकवाणौ, झुकवावौ, झुकवावणौ, झुकवाववौ—प्रे०रू०।

झुकाडणौ, झुकाड़वौ, झुकाणौ, झुकावौ, झुकावणौ, झुकाववौ—क्रि०स०।

झुकीजणौ, झुकीजवौ—भाव वा०।

झुकवाई—स०स्त्री०—झुकने या झुकाने की क्रिया का भाव या इस कार्य की मजदूरी।

रू०भे०—झुकाई।

झुकाई—देखो 'झुकवाई' (रू भे)

झुकाडणौ, झुकाडवौ—देखो 'झुकाणौ, झुकावौ' (रू भे)

झुकाडणहार, हारो (हारी), झुकाडणियौ—वि०।

झुकाडिग्रोडो, झुकाडियोडौ, झुकाडचोडौ—भू०का०कृ०।

झुकाडीजणौ, झुकाडीजवौ—कर्म वा०।

झुकणौ, झुकवौ—ग्रक०रू०।

झुकाडियोडौ—देखो 'झुकायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० झुकाडियोडी)

झुकाणौ, झुकावौ—क्रि०स०—१ किसी खडी वस्तु को नीचे की ग्रोर लटकाना, नवाना, निहुराना २ मजवूर करना, हराना।

उ०—रागिया रुदन छद वोहौ रचातौ, झुकातौ वागिया जवा झूटौ। उसासा घडस नद ग्रागिया उडातौ, जागिया जिंद जिम ग्राण जूटौ।
—भैरूदान वारहठ

३ प्रवृत करना, मुखातिव करना, रजू करना ४ तल्लीन करना, लीन करना, दत्तचित्त करना, लगाना। उ०—दूजा गज रौ पौगर ग्ररिसिंह री पाघ पर ग्रायौ। जाणै पूग्या रा पुज पर नागराज भोग

झुकायो ।—व.भा
५ ढीला करना, शिथिल करना ६ किसी पदार्थ को एक ओर या दोनो ओर अपनी सही अवस्था या उसी स्थिति मे प्रवृत्त करना लवमान करना. ७ आच्छादित करना, फैलाना ८ पूर्ण रूप से तैयारी पर करना, सजधज करना । उ०—कचन कोटि महल मालिया झुकाऊ रे । मालिया मे सूवा मोतीडा वधाऊ रे ।—मीरा
९ किसी के ऊपर घुमाना, मडल बाध कर चारो ओर घुमाना
१० (समृद्धि या विशालतायुक्त) शोभित करना. ११ दबाना, नीचे झुकाना. १२ व्यापक करना, चारो ओर फैलाना १३ सघनतायुक्त करना, हराभरा करना (वृक्ष, फसलादि). १४ अभिमान या उग्रता छुडाना, विनम्र करना, विनीत करना. १५ मोहित करना
झुकाणहार, हारो (हारी), झुकाणियो—वि० ।
झुकायोडो—भू०का०कृ० ।
झुकाईजणो, झुकाईजवो—कर्म वा० ।
झुकणो, झुकवो—अक०रू० ।
झुकाडणो, झुकाडवो, झुकावणो, झुकाववो—रू०भे० ।

झुकायोडो–भू०का०कृ०—१ किसी खडी वस्तु को नीचे की ओर लटकाया हुआ. २ मजबूर किया हुआ, हराया हुआ. ३ प्रवृत्त किया हुआ, मुखातिब किया हुआ, रजू किया हुआ. ४ तल्लीन किया हुआ, लीन किया हुआ, दत्तचित्त किया हुआ, लगाया हुआ.
५ ढीला किया हुआ, शिथिल किया हुआ. ६ किसी पदार्थ को एक ओर या दोनो ओर अपनी सही अवस्था या उसी स्थिति मे प्रवृत्त किया हुआ, लवमान किया हुआ ७ आच्छादित किया हुआ, फैलाया हुआ. ८ पूर्ण रूप से तैयारी पर किया हुआ, सजा धजा हुआ.
९ किसी के ऊपर घुमाया हुआ, मडल बाध कर चारो ओर घुमाया हुआ १० (समृद्धि या विशालता युक्त) शोभित किया हुआ.
११ दबाया हुआ, नमाया हुआ १२ व्यापक किया हुआ, चारो ओर फैलाया हुआ १३ सघनता युक्त किया हुआ, हराभरा किया हुआ (वृक्ष, फसल आदि) १४ अभिमान या उग्रता छुडाया किया हुआ, विनम्र किया हुआ १५ मोहित किया हुआ ।
(स्त्री० झुकायोडी)

झुकाव–स०पु०—१ किसी ओर झुकने, प्रवृत्त होने या लटकने की क्रिया। २ किसी ओर मन के आकृष्ट होने या लगने की क्रिया. ३ वह भाग जो किसी ओर झुक गया हो ।
क्रि०प्र०—आणो, करणो, दणो, होणो ।
४ ढाल, उतार ।
विलो०—चढाव ।

झुकावट–स०स्त्री०—१ झुकने की क्रिया या भाव ।
२ इच्छा, चाह, प्रवृत्ति ।

झुकावणो, झुकाववो—देखो 'झुकाणो, झुकावो' (रू.भे)
उ०—१ सीस झुकावै अे राजा पातस्या ।—लो.गी.
उ०—२ तो भी तत्काळ ही ऊठि वाहण विहूणो भी नाक री नारिया रा झुड झुकावतो निसक जूटियो ।—व भा.
उ०—३ मेर मीणा नै सिकस्त लेतां ही पाछै सू प्रतिहार नाहर राज पखरैता रा भार सू प्रिथ्वी रा पुड झुकावतो वडै वेग आयो ।
—व.भा.
झुकावणहार, हारो (हारी), झुकावणियो—वि० ।
झुकाविओडो, झुकावियोडो, झुकाव्योडो—भ०का०कृ० ।
झुकावीजणो, झुकावीजवो—कर्म वा० ।
झुकणो, झुकवो—अक रू० ।

झुकावियोडो—देखो 'झुकायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० झुकावियोडी)

झुकियोडो–भू०का०कृ०—१ किसी खडी वस्तु का नीचे की ओर लटका हुआ, निहुरा हुआ, नवा हुआ २ मजबूर हुवा हुआ, हारा हुआ ३ प्रवृत्त हुवा हुआ, मुखातिब हुवा हुआ, रजू हुवा हुआ. ४ तल्लीन हुवा हुआ, दत्तचित्त हुवा हुआ, रजू हुवा हुआ ५ ढीला हुवा हुआ, शिथिल हुवा हुआ ६ कोई पदार्थ एक ओर या दोनो ओर अपनी सही अवस्था या उसी स्थिति मे प्रवृत्त हुवा हुआ, लवमान हुवा हुआ. ७ आच्छादित हुवा हुआ, फैला हुआ. ८ पूर्ण रूप से तैयारी पर हुवा हुआ, सज धज हुवा हुआ ९ मडराया हुआ. १० (समृद्धि या विशालतायुक्त), शोभित हुवा हुआ. ११ दबा हुआ. १२ व्यापक हुवा हुआ, चारो ओर फैला हुआ. १३ सघनतायुक्त हुवा हुआ, हरा भरा हुवा हुआ (वृक्ष, फसल आदि). १४ कोई खड़ा या सीधा पदार्थ किसी ओर झुका हुआ, प्रवृत्त हुवा हुआ १५ अभिमान या उग्रता छोडा हुआ, विनम्र हुवा हुआ, विनीत हुवा हुआ. १६ मोहित हुवा हुआ, १७ दबा हुआ, नीचे झुका हुआ ।
(स्त्री० झुकियोडी)

झुकेड़ो–स०पु०—धक्का । उ०—दादू मरबो एक जुबार, अमर झुकेडै मारिये । तो तरिये ससार, आत्मा कारज सारिये ।—दादू वाणी

झुक्कणो, झुक्कवो—देखो 'झुकणो, झुकवो' (रू भे.)
उ०—प्रवाहे खडग्ग झडै हत्थ पग्ग, लहै जाण आरा घर काठ लग्ग।
मुडै सालळै सालळै पै मुडक्कै, झडा ओझडा साड ज्यों माड झुक्कै ।
—रा रू.

झुक्कियोडो—देखो 'झुकियोडो' (रू.भे)
(स्त्री० झुक्कियोडी)

झुखण–स०पु०—झडबेरी आदि के काटो का समूह ।

झुज्झ—देखो 'जुध' (रू भे)

झुज्झमल, झुज्झमल्ल–स०पु० [स० युद्धमल्ल] वीर, योद्धा ।
उ०—भुयाण कवाण जुआण सभल्ल, मिळै मीरजादा इसा झुज्झमल्ल । जिन्हे फौज फौजा धणी चत्रवाह, सझै सार आवद्ध लीधा सनाह ।—वचनिका

झुझणो, झुझवो—देखो 'जूझणो, जूझवो' (रू भे.)

उ०—झिपण पुरिखि केतउ दीजइ, गरदभ केतउ वूझइ, कातर केतुं झुझइ, वाझि गाय केतइ दुझइ ।—व स.

झुझियोडो—देखो 'जूझियोडो' (रू.भे.)

झुझु—देखो 'जुध' (रू भे.) उ०—वेटउ रुडु करतउ जाणी, ताखणि ग्रावी गगाराणी। वेउ पखि झुझु करता राखइ, नियप्रिय ग्रागळि नदणु दाखइ ।—प.प च.

झुटपटियो—देखो 'झुटपटो' (ग्रल्पा., रू भे.)

झुटपटी—देखो 'झुटपुटी' (रू.भे)

झुटपटो—देखो 'झुटपुटो' (रू भे)

झुटपुटियो—देखो 'झुटपुटो' (ग्रल्पा, रू भे) उ०—झवरा झुटपुटियं री वेळ, खुलं वा ग्रधारं री ग्राख। वेल पड लचकाणी लख जाय, लजाळू सिरकं पल्लो नाख।—साझ

झुटपुटी-स०स्त्री०—ऐसा ग्रवेग समय जव किसी वस्तु को देखने ग्रथवा किसी व्यक्ति व वस्तु को पहचानने मे कठिनता हो।
रू०भे०—झुटपटी ।

झुटपुटो-स०पु०—प्रात: ग्रथवा सन्ध्या का वह समय जव न तो पूर्ण रूप से ग्रधेरा हो ग्रोर न प्रकाश, ऐसा समय जिसमे किसी वस्तु ग्रथवा व्यक्ति को पहिचानना कठिन हो।
रू०भे०—झुटपटो ।
ग्रल्पा०—झुटपटियो, झुटपुटियो ।

झुटाळक-वि०—उत्पादी, उपद्रवी ।

झुठाई-स०स्त्री०—१ ग्रसत्यता। उ०—झूठा विप्र सास्त्र सव झूठा, झूठा जगत झुठाई। कोप विवस्था करम-काड री, एकण साथ उडाई ।—ऊ का
२ शरारत, वदमाशी, उत्पात ।

झुठामूठी—देखो 'झूठमूठ' (रू भे)

झुणकणो, झुणकवो—देखो 'झणकणो, झणकवो' (रू भे)
उ०—जेहरि घूघर माळ पगा झुणकं जिया, कुजं वारिज पुडू वचा कळहसिया ।—वा.दा.

झुणकाणो, झुणकावो—देखो 'झणकाणो, झणकावो' (रू भे)

झुणकायोडो—देखो 'झणकायोडो' (रू भे)
(स्त्री० झुणकायोडी)

झुणकारणो, झुणकारबो-क्रि०ग्र०स०—१ (रूई ग्रादि धुनते समय) ध्वनि उत्पन्न होना २ देखो 'झणकणो, झणकवो' (रू भे)
३ (रूई ग्रादि) धुनना ४ देखो 'झणकाणो, झणकावो' (रू भे.)
झुणकारणहार, हारो (हारी), झुणकारणियो—वि० ।
झुणकारिग्रोड़ो, झुणकारियोडो, झुणकारयोडो—भू०का०कृ० ।
झुणकारीजणो, झुणकारीजवो—भाव वा०, कर्म वा० ।

झुणकारियोडो-भू०का०कृ०—१ ध्वनि उत्पन्न हुवा हुग्रा, ध्वनित.
२ देखो 'झणकियोडो' (रू भे) ३ धुना हुग्रा
४ देखो 'झुणकायोडो' (रू.भे)
(स्त्री० झुणकारियोडी)

झुणकियोड़ो—देखो 'झणकियोडो' (रू भे)
(स्त्री० झुणकियोडी)

झुणझुण-स०पु०—नूपुर ग्रादि के वजने से उत्पन्न झुन-झुन शब्द ।

झुणि-स०स्त्री० [स० ध्वनि] ग्रावाज, ध्वनि ।
उ०—१ भाजिवा लागा धनुरदड, वाजिवा लागी खाडा तणी झुणि, सुभट तणी कड-कड वाजिवा लागी ।—व.स
उ०—२ साच वचन ऊगाढ़ीग्रा, काढ़िया निज मुख सीम। नेउर झुणि पग लागता, लाग लाख्या लहइ कीम ।
—प्राचीन फागु सग्रह

झुवझुव-सं०पु०—१ स्त्रियो की भुजाग्रो पर धारण करने का ग्राभूषण विशेष. २ देखो 'झवझव' (रू भे.)

झुवी-स०स्त्री०—प्राय' पिछडी हुई जातियो की स्त्रियो के काम मे धारण करने का एक ग्राभूषण विशेष ।

झुमाड़णो, झुमाड़वो—देखो 'झुमाणो, झुमावो' (रू.भे)
झुमाडणहार, हारो (हारी), झुमाडणियो—वि० ।
झुमाडिग्रोडो, झुमाडियोडो, झुमाडयोडो—भू०का०कृ० ।
झुमाड़ीजणो, झुमाड़ीजवो—कर्म वा० ।
झूमणो, झूमवो—ग्रक० रू० ।

झुमाडियोड़ो—देखो 'झुमायोडो' (रू भे)
(स्त्री० झुमाडियोडी)

झुमाणो झुमावो-क्रि०स० ('झूमणो' क्रिया का प्रे०रू०) झूमने मे प्रवृत्त करना ।
झुमाणहार, हारो (हारी), झुमाणियो—वि० ।
झुमायोडो—भू०का०कृ० ।
झुमाईजणो, झुमाईजवो—कर्म वा० ।
झूमणो, झूमवो—ग्रक० रू० ।
झुमाडणो, झुमाडवो, झुमावणो, झुमाववो—रू०भे० ।

झुमायोडो-भू०का०कृ०—झूमने मे प्रवृत्त किया हुग्रा ।
(स्त्री० झुमायोडी)

झुमावणो, झुमाववो—देखो 'झुमाणो, झुमावो' (रू.भे.)
झुमावणहार, हारो (हारी), झुमावणियो—वि० ।
झुमाविग्रोडो, झुमावियोडो, झुमाव्योडो—भू०का०कृ० ।
झुमावीजणो, झुमावीजवो—कर्म वा० ।
झूमणो, झूमवो—ग्रक० रू० ।

झुमावियोडो—देखो 'झुमायोडो' (रू भे)

झुरट-स०स्त्री०—नखक्षत, खरोच ।

झुरडणो, झुरडबो—देखो 'झुरडणो, झुरडवो' (रू भे)

झुरडियोडो—देखो 'झुरडियोडो' (रू भे)
(स्त्री० झुरडियोडी)

झुरकण-स०स्त्री०—१ काटो का समूह (झडवेरी ग्रादि के)

२ ईंधन के काम आने वाली सूखी हुई पतली-पतली व छोटी-छोटी कांटेदार टहनियां या टहनियों का समूह ।

झुरकौ-स०पु०—ऊंट की चाल विशेष । उ०—वटाऊ बैठा आड पिलाण, ऊंठडा मारग झुरकै जाय । सुणीजै फुरणी मूरी ढील, मोद सू मूमल-रूप सराय ।—साफ

झुरटियौ-स०पु०—नखक्षत, खरोंच (अल्पा.)

झुरडणौ, झुरडबौ क्रि०स०—१ नाखूनों से खुजली मिटाने के लिये हाथ को बार-बार शरीर पर फेरना २ खरोंचना, कुरेदना. ३ वृक्ष की टहनी को हाथ में पकड कर उसके पत्ते सूत लेना, हाथ की रगड से पत्तियां दूर करना. ४ किसी को तंग करना, कष्ट पहुँचाना ।

झुरडणहार, हारौ (हारी), झुरडणियौ—वि० ।

झुरडिओडौ, झुरडियोडौ, झुरडयोडौ—भू०का०कृ० ।

झुरडीजणौ, झुरडीजबौ—कर्म वा० ।

झुरडियोडौ-भू०का०कृ०—१ नाखूनों से खुजली मिटाने के लिये हाथ को बार-बार शरीर पर फेरा हुआ २ खरोंचा हुआ, कुरेदा हुआ. ३ हाथ की रगड से टहनी की पत्तियां दूर किया हुआ. ४ किसी को तंग किया हुआ, कष्ट पहुँचाया हुआ ।

(स्त्री० झुरडियोडी)

झुरणी—देखो 'झुरनी' (रू भे)

झुरणौ-स०पु०—वियोगजनित दुःख, विलाप, रुदन ।

उ०—इसडा तो झुरणा ये जीण सगती झुरती, गई गई कोस दोय च्यार ।—लो गी

झुरणौ, झुरबौ-क्रि०अ०स०—१ बहुत दुखी होना, शोक करना ।

उ०—१ झुरै इम रगरेजणी, कूडा ठाकुर काय। वसन सती घण रगता, दीधी आस छुडाय ।—वी स

उ०—२ मारू जाता चाकरी, करग्या कोल करार । सावण सुरंगी तीज नै, आवागा घर-नार । सावण सुरंगो बीतग्यो, गयी रे नुहेली तीज, पिव विन झुर झुर मै मरू, उफळै म्हारौ हीव ।—लो गी.

२ बेचैन होना, विकल होना । उ०—जिणि दीहे पाळउ पडइ, टापर तुरी सहाइ । तिणि रिति बूढी ही झुरइ, तरुणी केम रहाइ ।

—ढो.मा

३ बिलखना, सुबकना । उ०—इहि जोडा उणिहार, जणणी फिर जाया नही । निकमी नाजुक नार, झुरती रैंगी जेठवा ।—जेठवा

४ रुदन करना, विलाप करना, प्रलाप करना ।

उ०—१ निरखै मिळै झुरै रघुनायक, सुण सुण वायक सारा । जोवा अमर विया जड जगम, व्याकुळ हुआ विचारा ।—र रू.

उ०—२ पडी चाकरी चूक घणी जद घणी रिसायी । झुरती कामण छोड रामगिरि यक्ष सिधायी । जनक सुता रै स्नान जेथ री निरमळ पाणी । गहरी विरछा-छाह जाय न कदै बखाणी ।—मेघ.

उ०—३ झुरै म्रिगनयणी झुरै, मेह तणी रुत मोरा । जोगण पूठ दिया सायजादी, घूमर ऊपर घोरा ।—अमरसिंह राठौड री वात

५ कलपना, आंसू बहाना ।

६ रोग, अधिक परिश्रम या बहुत अधिक चिन्ता के कारण कृश होना, दुर्बल होना, घुलना । उ०—१ छट्टुं सहेली साहिवो, छाय रह्यौ परदेस । झुर-झुर नै पीजर हुई, बाळा जोवन वेस ।—र रा.

उ०—२ ईंयै गोरवधियै रै कारणै म्हैं तो झुर-झुर पीजर व्है गई रे, म्हारो गोरवध लूवाळो ।—लो गी.

७ झूमना, लटकना । उ०—सावण आयो, सायवा, वेला झुर रहि वाड । चातक झुर रह्यौ मेघ नै, पिव नै झुर रहि नार ।—लो गी

८ याद करना, स्मरण करना । उ०—१ झुरसी निरधन नूबळ हजारा, रीझ दियण सिरै दोय राह । पडतै 'पदम' कमध पटोधर, पाड लियो दिराण्या पतसाह ।—महाराजा पदमसिंह रो गीत

उ०—२ वीणा जंतर तार, थै छेडया उण राग रा । गुण नै झुरू गवार, जात न झीकू जेठवा ।—जेठवा

उ०—३ ना घर आवै पीवजी, बीत गई वरसात । अगहन झुरै कामणी, जाडौ जहर लखात ।—लो गी.

झुरणहार, हारौ (हारी), झुरणियौ—वि० ।

झुरवाडणौ, झुरवाडबौ, झुरवाणौ, झुरवावौ, झुरवावणौ, झुरवावबौ, झुराडणौ, झुराडबौ, झुराणौ, झुरावौ, झुरावणौ, झुरावबौ

—प्रे०रू० ।

झुरिओडौ, झुरियोडौ, झुरयोडौ—भू०का०कृ० ।

झुरीजणौ, झुरीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

झूरणौ, झूरबौ—रू०भे० ।

झुरनी-स०स्त्री०—१ प्रायः किशोरावस्था के बालकों द्वारा वृक्ष की टहनियों से झूम-झूम कर पृथ्वी पर आने व बार-बार चढ कर खेला जाने वाला एक खेल २ इस खेल मे प्रयोग किया जाने वाला लकडी का एक डडा ।

क्रि०प्र०—आणी, खेलणी, देणी, रमणी ।

रू०भे०—झुरणी ।

झुरमट—देखो 'झुरमुट' (रू भे.)

झुरमटियौ—देखो 'झुरमुट' (अल्पा, रू भे)

झुरमुट-स०पु०—१ झाड, पत्ते, लताओ अथवा वृक्षों का ऐसा समूह जिससे कोई स्थान ढक जाय किन्तु नीचे या बीच मे कुछ स्थान रिक्त रहे २ झुंड, समूह (मा म) ३ चादर या अन्य किसी वस्त्र से शरीर को चारों ओर से ढक या छिपा लेने की क्रिया ।

रू०भे०—झुरमट ।

अल्पा०—झुरमटियौ, झुरमुटियौ ।

झुरमुटियौ—देखो 'झुरमुट' (अल्पा रू.भे)

झुररी-स०स्त्री०—किसी वस्तु पर पडने वाली सिकुडन, सिलवट, शिकन ।

झुरगौ-स०पु०—नेत्रों के आंसू ।

उ०—थारी धीव जवाग्रीडा ले जासी, थारै नैणा मे रहसी झुररी रे। ढाळया ढळ कर चालै ढेलणी, मळया मळ कर चालै मोरडी।—लो गी.

झुराडणो, झुराडवो—देखो 'झुराणो; झुरावो' (रू.भे)

झुराडणहार, हारो (हारी), झुराडणियो—वि०।

झुराडिग्रोडो, झुराड़ियोडो, झुराड्योडो—भू०का०कृ०।

झुराडीजणो, झुराडीजबो—कर्म वा०।

झुरणो, झुरवो—ग्रक०रू०।

झुराडियोडो—देखो 'झुरायोडो' (रू.भे.)

(स्त्री० झुराडियोडी)

झुराणो, झुरावो-क्रि०स०—१ वहुत दुखी करना २ वेचैन करना, विकल करना ३ सुवकाना, विलखाना ४ विलाप कराना, रुदन कराना, प्रलाप कराना. ५ ग्रांसू वहाना, कलपाना।

उ०—मारवणी मन मोहियो, मनह न मेलो न जाय। जिम जिम हियडै साभरै, तिम तिम नयण झुराय।—ढो मा.

६ कृश करना, दुर्वल करना, घुलाना. ७ याद कराना, स्मरण कराना. ८ लटकाना

झुराणहार, हारो (हारी), झुराणियो—वि०।

झुरायोड़ो—भू०का०कृ०।

झुराईजणो, झुराईजवो—कर्म वा०।

झुरणो, झुरवो—ग्रक०रू०।

झुराडणो, झुराड़वो, झुरावणो, झुराववो—रू०भे०।

झुरापो-स०पु०—१ वियोगजनित दुख का प्रलाप २ वियोगजनित दुख का रुदन. ३ प्रिय के वियोग मे गाया जाने वाला लोक गीत विशेष।

क्रि०प्र०—करणो, गाणो, होणो।

रू०भे०—झुरावो, झूरापो, झूरावो, झेरापो, झेरावो।

झुरायोडो-भू०का०कृ०—१ वहुत दुखी किया हुग्रा २ वेचैन किया हुग्रा, विकल किया हुग्रा ३ सुवकाया हुग्रा, विलखाया हुग्रा. ४ विलाप किया हुग्रा रुदन किया हुग्रा, प्रलाप किया हुग्रा. ५ ग्रांसू वहाया हुग्रा, कलपाया हुग्रा. ६ कृश किया हुग्रा, दुर्वल किया हुग्रा, घुलाया हुग्रा. ७ याद कराया हुग्रा, स्मरण कराया हुग्रा. ८ लटकाया हुग्रा।

(स्त्री० झुरायोडी)

झुरावणो, झुराववो—देखो 'झुराणो, झुरावो' (रू भे.)

झुरावणहार, हारो (हारी), झुरावणियो—वि०।

झुराविग्रोडो, झुरावियोडो, झुराव्योडो—भू०का०कृ०।

झुरावीजणो, झुरावीजवो—कर्म वा०।

झुरणो, झुरवो—ग्रक० रू०।

झुरावियोडो—देखो 'झुरायोडो' (रू.भे)

(स्त्री० झुरावियोडी)

झुरावो—देखो 'झुरापो' (रू भे)

झुरियोडो-भू०का०कृ०—१ वहुत दुखी हुवा हुग्रा, शोक किया हुग्रा २ वेचैन हुवा हुग्रा, विकल हुवा हुग्रा. ३ विलखा हुग्रा, सुवका हुग्रा. ४ रुदन किया हुग्रा, विलाप किया हुग्रा, प्रलाप किया हुग्रा. ५ कलपा हुग्रा, ग्रासू वहा हुग्रा. ६ कृश हुवा हुग्रा, दुर्वल हुवा हुग्रा, घुला हुग्रा. ७ झूमा हुग्रा, लटका हुग्रा. ८ याद किया हुग्रा, स्मरण किया हुग्रा।

(स्त्री० झुरियोडी)

झुळक-स०स्त्री०—रोने की ग्रवस्था मे ग्रासू ढलकाने की क्रिया।

उ०—झुळक झुळक माता रोवती, कुंवर सामो रही जोय। ए सुरती जाया थाहरी ए, ग्रवर फूल ज्यूं होय।—जयवाणी

झुळकणो, झुळकवो-क्रि०ग्र०—जगमगाना, झलमलाना, चमकना।

उ०—सुरह सुगधी वास, मोती कानै झुळकते। सूती मदिर खास, जाणू ढोलइ जागवी।—ढो मा.

झुळकणहार, हारो (हारी), झुळकणियो—वि०।

झुळकाडणो, झुळकाडवो, झुळकाणो, झुळकावो, झुळकावणो, झुळकाववो—क्रि०स०।

झुळकिग्रोडो, झुळकियोडो, झुळक्योडो—भू०का०कृ०।

झुळकीजणो, झुळकीजवो—भाव वा०।

झुळकियोड़ो-भू०का०कृ०—जगमगाया हुग्रा, झलमलाया हुग्रा, चमका हुग्रा।

(स्त्री० झुळकियोडी)

झुलणो, झुलवो—देखो 'झूलणो, झूलवो' (रू.भे)

उ०—हर ग्रोपमा तेण रिख हासा। पवन झुलै फिर फुलै पळासा।
—सू.प्र

झुलर—देखो 'झूलर' (रू भे)

झुलराणो, झुलरावो-क्रि०स०—झूला देना, झुलाना, हिंडोला देना।

उ०—माथा धोता नीर-मळ झुलरायो झोळी, हालरियै हुलरावियो, हींडोळ हिंचोळी। वळि रमियो ग्रठ दस वरस तु वाळक टोळी, परणायो तु नइ पछे दयिता हुइ दोळी।—ध व ग्र

झुलरायोडो-भू०का०कृ०—झूला दिया हुग्रा, झुलाया हुग्रा, हिंडोला दिया हुग्रा।

(स्त्री० झुलरायोडी)

झुळसणो, झुळसवो-क्रि०ग्र०—१ किसी पदार्थ के ऊपरी भाग या तल का इतना गर्म होना कि काला पड जाय २ किसी ग्रग का ग्रधिक ताप के कारण लाल होना. ३ कुम्हलाना. ४ ग्रध जला होना।

क्रि०स०—५ किसी पदार्थ के ऊपरी भाग या तल को इतना गरम करना कि काला पड जाय. ६ ग्रधिक ताप दे कर लाल करना. ७ ग्रध जला करना।

झुळसणहार, हारो (हारी), झुळसणियो—वि०।

झुळसवाड़णो, झुळसवाड़वो, झुळसवाणो, झुळसवावो, झुळसवावणो, झुळसवाववो—प्रे०रू०।

झुळसाडणो, झुळसाडबो, झुळसाणो, झुळसावो, झुळसवावणो, झुळसाववो—क्रि०स० ।
झुळसिग्रोडो, झुळसियोडो, झुळस्योडो—भू०का०कृ० ।
झुळसीजणो, झुळसीजबो—भाव वा०, कर्म वा० ।

झुळसाडणो, झुळसाडबो—देखो 'झुळसाणो, झुळसावो' (रू.भे)
झुळसाडणहार, हारो (हारी), झुळसाडणियो—वि० ।
झुळसाडिग्रोडो, झुळसाडियोडो, झुळसाडचोडो—भू०का०कृ० ।
झुळसाडीजणो, झुळसाडीजबो—कर्म वा० ।
झुळसणो, झुळसबो—अक०रू० ।

झुळसाडियोडो—देखो 'झुळसायोडो' (रू भे)
(स्त्री० झुळसाडियोडी)

झुळसाणो, झुळसावो–क्रि०स०—१ अधिक गरमी से अधजला करना २ अधिक ताप दे कर लाल करना. ३ किसी पदार्थ के ऊपरी भाग या तल को इतना गरम करना कि काला पड जाय ।
झुळसाणहार, हारो (हारी), झुळसाणियो—वि० ।
झुळसायोडो—भू०का०कृ० ।
झुळसाईजणो, झुळसाईजबो—कर्म वा० ।
झुळसणो, झुळसबो—अक० रू० ।
झुळसाडणो, झुळसाडबो, झुळसावणो, झुळसाववो, झूसाडणो, झूसाडबो, झूसाणो, झूसावो, झूसावणो, झूसाववो—रू०भे० ।

झुळसायोडो–भू०का०कृ०—१ अधिक गर्मी से अधजला किया हुआ २ अधिक ताप दे कर लाल किया हुआ ३ किसी पदार्थ के ऊपरी भाग या तल को अधिक गरमी से काला बनाया हुआ ।
(स्त्री० झुळसायोडी)

झुळसावणो, झुळसाववो—देखो 'झुळसाणो, झुळसावो' (रू.भे)
झुळसावणहार, हारो (हारी), झुळसावणियो—वि० ।
झुळसाविग्रोडो, झुळसावियोडो, झुळसाव्योडो—भू०का०कृ० ।
झुळसावीजणो, झुळसावीजबो—कर्म वा० ।
झुळसणो, झुळसबो—अक०रू० ।

झुळसावियोडो—देखो 'झुळसायोडो' (रू.भे)
(स्त्री० झुळसावियोडी)

झुळसियोडो–भू०का०कृ०—१ (किसी पदार्थ का ऊपरी भाग या तल) गर्म हो कर काला पडा हुआ २ (किसी अग का) अधिक ताप के कारण लाल हुवा हुआ ३ कुम्हलाया हुआ ४ अधजला हुवा हुआ ५ अधिक गर्मी से अधजला किया हुआ ६ अधिक ताप दे कर लाल किया हुआ ७ किसी पदार्थ के ऊपरी भाग या तल को अधिक गर्मी से काला बनाया हुआ ।
(स्त्री० झुळसियोडी)

झुलाडणो, झुलाडबो—देखो 'झुलाणो, झुलावो' (रू.भे)
झुलाडणहार, हारो (हारी), झुलाडणियो—वि० ।
झुलाड़िग्रोडो, झुलाडियोडो, झुलाडचोडो—भू०का०कृ० ।
झुलाडीजणो, झुलाडीजबो—कर्म वा० ।
झूलणो, झूलबो—अक०रू० ।

झुलाडियोडो—देखो 'झुलायोडो' (रू भे)
(स्त्री० झुलाडियोडी)

झुलाणो, झुलावो–क्रि०स०—१ स्नान कराना, नहलाना २ किसी वस्तु को अधर अवस्था मे रख कर, टाग कर अथवा लटका कर हिलाना, झोका देना ३ भरोसे पर रखना, अनिर्णीत अवस्था मे रखना ।
मुहा०—झूलतो राखणो—किसी को किसी कार्य के लिये झूठा वायदा करना, बार-बार फिराना, निश्चित उत्तर नही देना ।
४ झूले मे बैठा कर झूला देना, हिंडोला देना ५ झुमाना, डोलाना. ६ मोहित करना. ७ जल मे विचरण कराना ८ अग्निकुण्ड के पास बैठा कर तपस्या कराना ।
झुलाणहार, हारो (हारी), झुलाणियो—वि० ।
झुलायोडो—भू०का०कृ० ।
झुलाईजणो, झुलाईजबो—कर्म वा० ।
झूलणो, झूलबो—अक०रू० ।
झुलाडणो, झुलाडबो, झुलावणो, झुलाववो—रू०भे० ।

झुलायोडो–भू०का०कृ०—१ स्नान कराया हुआ, नहलाया हुआ । २ अधर मे टागी हुई वस्तु को हिलाया हुआ, झोक दिया हुआ ३ झूले मे बैठा कर झुलाया हुआ, हिंडोला दिया हुआ ४ झुमाया हुआ, डोलाया हुआ ५ भरोसे पर रखा हुआ, अनिर्णीत अवस्था मे रखा हुआ. ६ मोहित किया हुआ ७ जल मे विचरण कराया हुआ ८ अग्निकुण्ड के पास बैठा कर तपस्या कराया हुआ ।
(स्त्री० झुलायोडी)

झुलावणो, झुलाववो—देखो 'झुलाणो, झुलावो' (रू.भे.)
झुलाणहार, हारो (हारी), झुलाणियो—वि० ।
झुलाविग्रोडो, झुलावियोडो, झुलाव्योडो—भू०का०कृ० ।
झुलावीजणो, झुलावीजबो—कर्म वा० ।
झूलणो, झूलबो—अक०रू० ।

झुलावियोडो—देखो 'झुलायोडो' (रू भे)
(स्त्री० झुलावियोडी)

झुलियोडो—देखो 'झूलियोडो' (रू भे.)
(स्त्री० झुलियोडी)

झुल्ल, झुल्लो–वि०—वृद्ध, बुड्ढा । उ०—चढै सिंध के भाव नगरी मुसल्ले । करा ले कमट्ठे वयं केक झुल्ले ।—ला रा

झुवाफ—देखो 'जाफ' (रू भे)
उ०—अबा सिर सूदत कूदत एम, तजै गिरि स्त्रिग प्लवगम तेम । थावै गज कायल खाय सथाप, झुकै घट घायल आय झुवाफ ।—मेम

झुसाण—देखो 'झूसाण' (रू भे) उ०—झुसांण-झीका झीक हुत, रघड दे दे रेस । पिसरणा पहुडा पिछ पगा, घर आयो गमरेस ।
—रेवतसिंह भाटी

झूझ—देखो 'जुध' (रू भे) उ०—नखत परमाण वाखाण वाघो नरै। ग्रावगो झूझ रो भार भुजि ग्रापरै।—हा झा

झूझणो, झूझबो—देखो 'जूझणो, जूझबो' (रू भे.)
उ०—देव दाणव झूझिया रिव धुधळ छाया।—केसोदास गाडण

झूझळ—स०स्त्री०—१ दुख और क्रोध मिश्रित खिजलाहट।
उ०—ग्रा झूझळ वणि ग्रति विजण, किसा गुना पर कौन। रहा सदाई राज रै, हुकम हुकम ग्राधीन।—पना वीरमदे री वात
२ देखो 'जाजळो' (रू भे) उ०—साठीका पर नह चाल्यो, लूग्रा री जद दाव। झूझळ मे सह सोसिया, वेरघा कुड तळाव।—लू

झूझाऊ—देखो 'जूझाऊ' (रू भे)

झूझार, झूझारि—देखो 'जूझार' (रू भे.) उ०—१ तिणि वेळा उजेणि वीर खेत रा झूझार राउ राठौड जोधा रिणमल ग्रोतिग्रा।
—वचनिका

उ०—२ थई वळिहारि झूझारि रोळण थटा। सेन रायसिंघ रा सामठा सुभटा।—हा झा.

झूझियोडो—देखो 'जूझियोडो' (रू भे)
(स्त्री० झूझियोडी)

झूझो—स०पु० [स० योद्धा] १ योद्धा, वीर। उ०—रिमा माण मूकै नहीं वै रण गो वढताह। घण झूझो रण भोम ही, चढिया चाखडियाह।—हा झा
२ देखो 'जुध' (रू भे.) उ०—हाथ ग्रावाहतो सिंधु राणा थिया। सहै झूझा थया वळि 'जसा' रा साथिया।—हा झा

झूट—देखो 'झूठ' (रू भे)

झूटण—१ देखो 'झूटणो' (मह. रू.भे.)
२ देखो 'झूटण' (रू भे)

झूटणियो—देखो 'झूटणो' (ग्रल्पा., रू भे.)
उ०—झूटणिया झूटणिया, गोरी, काई विलखै, मेह विना धरती तरसै। मेहडो हुवण दै, झूटणिया घडावूं झालाळा, मेहडो हुवण दै।
—लो गी

झूटणो—स०पु० (बहु व० झूटणा) स्त्रियो के कान का एक ग्राभूषण।
(मा म.)

उ०—१ वाका लोयणा मे ग्रणियाळो ठास सजै छै। जडाव री लडी दावणी झूटणा झूवरा ग्रलोक वण रह्या छै।—रा सा स
उ०—२ कोई काना-केरा हाल्या वाळी झूटणा, ए मोरी सइया।
—लो गी

रू०भे०—झूठणो, झूटणो, झूठणो।
ग्रल्पा०—झूटणियो, झूठणियो, झूटणियो, झूठणियो।
मह०—झूटण, झूठण, झूटण, झूठण।

झूट-साच—स०पु०यौ०—सत्यासत्य, झूठ और सच।

झूटि—स०स्त्री०—किसी वस्तु को ग्रचानक शीघ्रता से झपटने की चेष्टा, ग्रचानक शीघ्रतापूर्वक हमला करने का प्रयास।
उ०—झूटि धरी धूबड धाइ ताडइ ग्राक्रदती द्रूपदि वूब पाडइ। धाए धरानायक राखि राखि, ए पापीया नइ फळ दाखि दाखि।
—विराटपर्व

झूटिणो, झूटिबो—क्रि०स०—किसी वस्तु को ग्रचानक शीघ्रतापूर्वक झपटने ग्रथवा उस पर हमला करने की चेष्टा करना, ग्रचानक शीघ्रता से ग्राक्रमण करना। उ०—झूटि झूविय महीतळि रोळी, काढिवा वसन कीध हीयाळी। ग्रतराळि थई राखिसि राखी, तोणइ हूई हिव होग्रत चाखी।—विराटपर्व

झूटियोडो—भू०का०कृ०—ग्रचानक शीघ्रतापूर्वक झपटने ग्रथवा हमला करने का प्रयास किया हुग्रा।

झूठ—स०पु०—१ जूठन, उच्छिष्ट। उ०—ग्रे मिळताई ऐंठ झूठ परसाद झिनावै। कुळ मैं घालै कळह माजनो धूड मिळावै।—ऊ का.
२ देखो 'झूठ' (रू भे)

झूठण—१ देखो 'झूटणो' (रू भे) २ देखो 'भूटण' (रू भे)

झूठणियो—देखो 'झूटणो' (ग्रल्पा, रू भे)

झूठणो—देखो 'झूटणो' (ग्रल्पा., रू भे)

झूठो—देखो 'झूठो' (रू.भे) उ०—१ हे गुलाम वैद्य नू कह मैं झूठो होय। पछताऊ छू कोल तोडिया री तोवा करू छू।—नी प्र.
उ०—२ जे वैद्य कहे छै ऊ खरो झूठो छै, कहे जिको पाळण नही करै।—नी प्र.
उ०—३ जद वादसाह कही वायदो ग्रापरो क्योकर झूठो कर सकू छू।—नी प्र.
उ०—४ तरै इणा ठाकुरा नू वुरहान पूछियो कह्यो—ये कठी नू पधारो छो? तरै इणा ठाकुरा झूठो मिस कर नै कह्यो—तेजसीजी कछवाही परणीजण जाय छै।—राव मालदे री वात

झूथरा—स०पु० (बहु व०) घने वाल (शेखावाटी)

झूथरियो, झूथरो—वि०—घने वालो वाला (शेखावाटी)

झूप—देखो 'झूपडो' (मह, रू भे) उ०—ऊचा ऊचेरा वळी, परठि पाघडी खूप। दीसइ जाणइ दूवळा, वसवा केरा झूप।—मा का प्र.
२ देखो 'झूपो' (मह., रू भे)

झूपकी—स०स्त्री०—१ देखो 'झूपडो' (ग्रल्पा, रू.भे) २ देखो 'झूपो'।
(ग्रल्पा, रू.भे)

झूपको—१ देखो 'झूपडो' (ग्रल्पा, रू भे) २ देखो 'झूपो'।
(ग्रल्पा, रू.भे)

झूपड—१ देखो 'झूपडो' (मह, रू भे) २ देखो 'झूपो' (मह, रू भे)

झूपडको—देखो 'झूपडो' (ग्रल्पा., रू भे.)

झूपडको—देखो 'झूपडो' (ग्रल्पा रू भे)

झूपडली—स०स्त्री०—देखो 'झूपड़ो' (ग्रल्पा., रू भे)

झूपडली, झूपडियो—देखो 'झूपडो' (ग्रल्पा, रू भे)

झूपड़ी—स०स्त्री०—देखो 'झूपडो' ग्रल्पा, रू भे) उ०—मोटा रावजी हो रावजी, नही रे महला री म्हानै कोड, झूपडी भली हो म्हारा भील री, विलिया भला हो म्हारै भील रा।—लो.गी.

झूपड़ो—स०पु०—प्राय गावों, जगलो ग्रादि स्थानो मे मिट्टी की छोटी-छोटी दीवारें उठा कर तथा ऊपर घास-फूस छा कर बनाया हुआ घर, कुटिया, पर्णशाला । उ०—सुणि करहा, ढोलउ कहइ, साची ग्राखै जोइ । ग्रगर जेहा झूपडा, तउ ग्रासगे मोइ ।—ढो मा

उ०—ढोर-डागर, थोडो घणो गैं'णो-गाठो राछ-पीछ ग्रर दोन्यू झूपडा जिका नै रणछोडै रात-दिन एक कर नै वडी मुस्कल सू वणाया हा, सगळाई सेठा रा व्हेग्या ।—रातवासो

रू०भे०—झूपी, झूफडो, झूफो, झूपडो, झूपो, झूफडो, झूफो ।

ग्रल्पा०—झूपकी, झूपको, झूपडकी, झूपडको, झूंपडली, झूपडली, झूपडियो, झूपडी, झूपली, झूपलो, झूपियो, झूपी, झूफकी, झूफको, झूफडकी, झूफडको, झूफडली, झूफडलो, झूफडियो, झूफडी, झूफली, झूफलो, झूफियो, झूफी, झूपकी, झूपको, झूपडकी, झुपडको झूपडली, झूपडलो, झूपडियो, झूपडी, झूपली, झूपलो, झूपियो, झूपी, झूफकी, झूफको, झूफडकी, झूफडको, झूफडली, झूफडलो, झूफडियो, झूफडी, झूफली, झूफलो, झूफियो, झूफी ।

मह०—झूप, झूपड, झूफ, झूफड, झूप, झूपड, झूफ, झूफड, झूफल ।

झूपली—१ देखो 'झूपडो' (ग्रल्पा , रू भे)

२ देखो 'झूपो' (ग्रल्पा , रू भे)

झूपलो, झूपियो—१ देखो 'झूपडो' (ग्रल्पा , रू भे)

२ देखो 'झूपो' (ग्रल्पा , रू भे.)

झूपी-स०स्त्री०—१ एक प्रकार की मकान की लाग या कर जो जागीरदार विना पट्टे किये हुए मकान निवासियो से वर्ष मे एक वार लेता था ।

रू०भे०—झूफी, झूपी ।

२ देखो 'झूपडो' (ग्रल्पा , रू भे) ३ देखो 'झूपो' (ग्रल्पा , रू भे)

झूपो-स०पु०—१ 'ढाणी' से वडी ग्रौर गाव से छोटी वस्ती जिसमे प्राय पक्का मकान एक भी नही होता है, केवल झोपडिया ही बनी हुई होती हैं ग्रौर उसमे प्राय एक ही जाति के लोग रहते हैं ।

ज्यू०—मेणा रो झूपो, वागरिया रो झूपो, रैवारिया रो झूपो ग्रादि ।

२ देखो 'झूपो' (१) (रू भे)

रू०भे०—झूफो, झूपो, झूफो ।

ग्रल्पा०—झूपकी, झूपको, झूपली, झूपलो, झूपियो, झूपी, झूफकी, झूफको, झूफली, झूफलो, झूफियो, झूफी, झूपकी, झूपको, झूपली, झूपियो, झूपी, झूफकी, झूफको, झूफली, झूफलो, झूफियो, झूफी ।

मह०—झूप, झूपड, झूफ, झूफड, झूप, झूपड, झूफ, झूफड ।

३ देखो 'झूपडो' (रू भे)

झूफ—१ देखो 'झूपडो' (मह , रू भे.) २ देखो 'झूपो' (मह , रू भे)

झूफकी-स०स्त्री०—१ देखो 'झूपडो' (ग्रल्पा , रू भे)

२ देखो 'झूपो' (ग्रल्पा , रू भे.)

झूफको—१ देखो 'झूपडो' (ग्रल्पा., रू भे)

२ देखो 'झूपो' (ग्रल्पा , रू.भे)

झूफड—१ देखो 'झूपडो' (मह रू भे)

२ देखो 'झूपो' (मह , रू भे)

झूफडकी-स०स्त्री०—देखो 'झूफड' (ग्रल्पा , रू.भे)

झूफडको—देखो 'झूपडो' (ग्रल्पा , रू भे.)

झूफडली-स०स्त्री०—देखो 'झूपडो' (ग्रल्पा , रू.भे.)

झूफडलो, झूफडियो—देखो 'झूपडो' (ग्रल्पा , रू भे)

झूफडी-स०स्त्री०—देखो 'झूपडो' (ग्रल्पा , रू भे)

झूफडो—देखो 'झूपडो' (रू भे)

झूफली-स०स्त्री०—१ देखो 'झूपडो' (ग्रल्पा , रू भे)

२ देखो 'झूपो' (ग्रल्पा , रू भे)

झूफलो, झूफियो—१ देखो 'झूपडो' (ग्रल्पा , रू भे)

२ देखो 'झूपो' (ग्रल्पा , रू भे)

झूफी-स०स्त्री०—१ देखो 'झूपडो' (ग्रल्पा , रू भे)

२ देखो 'झूपो' (ग्रल्पा., रू भे)

३ देखो 'झूपी' (रू भे)

झूफो—१ देखो 'झूपडो' (रू भे)

२ देखो 'झूपो' (रू भे)

झूब-स०पु०—१ 'झूबणो' क्रिया का भाव । उ०—इतरो कहि कटारी री पडदडी माहि सू मोहर च्यार काढि छानी-सी हाथ माहै दीनी नै कह्यो, वाई, रजपूत छू तो थारो ग्रवसाण कदेही भूलू नही, पिण ग्रवै काई सला दो नै कहो, म्है किसी भाति सूराचद सू झूब करा ।

—जैतसी ऊदावत री वात

२ देखो 'झूबो' (मह. रू भे)

उ०—कपूर गरम केळी का जूथ केळू की झूब । स्रीफळ विदाम ग्रौर नींबू के लूब ।—सू प्र

रू०भे०—झूब ।

झूवक—देखो 'झूबो' (मह. रू भे) उ०—सखी मोतिया रा लूवक झूंवक, किस्तूरी ग्रो राजा वानरमाळ वधावो जी म्हारै ग्रावियो ।

—लो गी

झूबकडी-स०स्त्री०—देखो 'झूबो' (ग्रल्पा , रू भे)

झूबकडो, झूबकियो—देखो 'झूबो' (ग्रल्पा , रू भे.)

झूबकी-स०स्त्री०—देखो 'झूबो' (ग्रल्पा , रू भे)

झूबको—देखो 'झूबो' (ग्रल्पा., रू भे) उ०—एडी पीडी ऊमदा, तक एण तरारा । जाणै करती झूबको, तगमगियाँ तारा ।

—दरजी मयाराम री वात

झूबख—देखो 'झूबो' (मह , रू भे)

झूबखडी-स०स्त्री०—देखो 'झूबो' (ग्रल्पा., रू.भे)

झूबखडो, झूबखियो—देखो 'झूबो' (ग्रल्पा , रू.भे)

झूबखी-स०स्त्री०—देखो 'झूबो' (ग्रल्पा , रू भे)

झूबखो—देखो 'झूबो' (ग्रल्पा , रू.भे) उ०—हाम काम लोचनी

ग्राभै री वीज, भादुवै री, ग्राकास री परी, मोतिया सरी। ग्रत्या री झूवखो पून्यू रै चद सो मुख। थाको हस, ग्रसील वस।
—रा.सा सं

झूवड—देखो 'झूवो' (मह, रू भे)
झूवडकी-स०स्त्री—देखो 'झूवो' (ग्रल्पा, रू भे.)
झूवडको—देखो 'झूवो' (ग्रल्पा, रू भे)
झूवडणो, झूवडवो—देखो 'झूवणो, झूववो' (रू भे)
झूवडली-स०स्त्री०—देखो 'झूवो' (ग्रल्पा., रू.भे)
झूवडलो—देखो 'झूवो' (ग्रल्पा, रू भे)
झूंवडियोड़ो—देखो 'झूवियोडो' (रू भे)
(स्त्री० 'झूवडियोडी')
झूवडियो—देखो झूवो' (ग्रल्पा, रू भे)
झूवडी-स०स्त्री०—देखो 'झूवो' (ग्रल्पा., रू भे.)
झूवडो—देखो 'झूवो' (ग्रल्पा, रू.भे)
झूवणो, झूववो-क्रि०ग्र०स०—१ ग्रकवार भरना, लपटना।
उ०—तिसं भीवा री नै माता री निजर मिळी नै माता ग्रोळख्यो। तरै डोकरी ग्राख्या गळगळी करि नै गळै झूवी नै कह्यो, धन दिन ग्राज रो, घणा दिना रो वीछडियो पुत्र मिळयो।
—जखडा मुखडा भाटी री वात
२ युद्ध करना, भिडना। उ०—१ ग्रिसणा साथ कासळी पडियो। ग्रागम लग्गा दुग्रो ग्राखडियो। निस गळती झूबियो नग्रीठो। रूक तणो मच ग्राकारीठो।—रा.रू.
उ०—२ चेतो उठा दोडियो सु कुवरजी रै कटक मैं वीदावता नू ग्रर मदनै नू खवरि दीन्ही। जे रामसिघजी नू झूबियो तो ग्रा वेळा नहीं नहो।—द वि
३ धावा करना, झपटना। उ०—एक दिन राजा ग्रारोगतो हुतो ग्रोर राणी जी माख्या उडावता हुता। गढ्ढगरी रो ग्रागणो थो, तितरै एक कीडी चावळ ले हाली हुती तितरै बीजी ग्राइ खोसण नु झूबी।—चौवोली
४ लूटना। उ०—१ तद पातसाही भागेसुर मोजत रो सवळो पाणी थो तिण नू झूवण रो विचार कियो।—राव मालदे री वात
उ०—२ स्यामदास भगवानदासोत, करमसेन रै वास, पवार झूविया तठै काम ग्रायो।—नैणसी
उ०—३ तठै गाव जाय झूवियो तठै वेढ हुई।—नैणसी
५ लटकना। उ०—ढोलउ हल्लाणउ करइ, धण हल्लिवा न देह। झब झब झूबइ पागडइ, डब डब नयण भरेह।—ढो.मा.
६ (मस्ती मे) हाथापाई करना। उ०—२ म्हैं नै ढोलो झूबिया, लूगे-लकफडियेह। म्हानै ग्रिउजी मारिया, चपा रै कळियेह।—ढो.मा.
उ०—२ म्हैं नै ढोलो झूविया, म्हानू ग्रावी रीस। चोवा केरै कूपलै, ढोळी साहिब सीस।—ढो मा
७ जीव-जतुग्रो ग्रथवा पशुग्रो का काटना.
८ देखो 'झूमणो, झूमवो' (रू.भे.)
झूवणहार, हारो (हारी) झूवणियो—वि०।
झूववाड़णो, झूववाडवो, झूववाणो, झूववावो, झूववावणो, झूववाववो —प्रे०रू०।
झूवाडणो, झूवाड़वो, झूवाणो, झूवावो, झूवावणो, झूंवाववो— क्रि०स०।
झूवियोडो, झूवियोडो, झूब्योडो—भू०का०कृ०।
झूवीजणो, झूबीजवो—भाव वा०, कर्म वा०।
झूवणो, झूववो, झूवडणो, झूवडवो, झूवणो, झूववो—रू०भे०।
झूवर—देखो 'झूवरो' (मह, रू भे)
झूवरी-स०स्त्री०— देखो 'झूवरो' (ग्रल्पा, रू भे)
झूवरो-स०पु० (वहु व० झूवरा) एक प्रकार का कर्णाभूषण।
उ०—हीगळू री वदी दीजै छै। वाका लोयणा मे ग्रणियाळो ठास सजै छै। जडाव री लडी दावणी झूटणा, झूंवरा ग्रलोक वण रह्या छै।—रा.सा स
झूवल—देखो 'झूवो' (मह, रू भे)
झूवलड़ी-स०स्त्री०—देखो 'झूवो' (ग्रल्पा, रू भे)
झूवलडो, झूवालियो—देखो 'झूवो' (ग्रल्पा, रू.भे)
झूवली-स०स्त्री०—देखो 'झूवो' (ग्रल्पा, रू भे)
झूवलो—देखो 'झूवो' (ग्रल्पा, रू.भे.)
झूवाडणो, झूवाडवो—देखो 'झूवाणो, झूवावो' (रू भे.)
झूवाडणहार, हारो (हारी), झूवाणियो—वि०।
झूवाड़िग्रोडो, झूवाडियोडो, झूवाड्योडो—भू०का०कृ०।
झूवाडीजणो, झूवाडीजवो—कर्म वा०।
झूवणो, झूववो—ग्रक० रू०।
झूवाडियोडो—देखो 'झूवायोडो' (रू भे)
(स्त्री० झूवाडियोडी)
झूवाणो, झूवावो-क्रि०स०—१ ग्रकवार भराना, लिपटाना २ युद्ध कराना, भिडाना. ३ धावा कराना, झपटाना ४ लुटाना.
५ लटकाना ६ (मस्ती मे) छीना-झपटी कराना. ७ जीव-जतुग्रो ग्रथवा पशुग्रो ग्रादि से कटाना। उ०—जीवै पयिया तोय, नाग झूवाऊं, इसडी मन मे ग्राई। 'भगवत' मरण तणी कथ भूडी, खवणा मूझ सुणाई।—ग्रोपो ग्राढो
८ देखो झुमाणो, झुमावो' (रू भे)
झूवाणहार, हारो (हारी), झूवाणियो—वि०।
झूवायोडो—भू०का०कृ०।
झूवाईजणो, झूवाईजवो—कर्म वा०।
झूवणो, झूववो—ग्रक० रू०।
झुवाडणो, झुवाडवो, झुवाणो, झुवावो, झुवावणो, झुवाववो, झूवाडणो, झूवाडवो, झूवावणो, झूवाववो—रू०भे०।
झूवायोडो-भू०का०कृ०—१ ग्रकवार भराया हुग्रा, लिपटाया हुग्रा।

२ युद्ध कराया हुआ, भिडाया हुआ. ३ धावा कराया हुआ, झपटाया हुआ. ४ लुटाया हुआ. ५ लटकाया हुआ. ६ (मस्ती मे) हाथापाई कराया हुआ. ७ जीव-जतुओ अथवा पशुओ आदि से कटाया हुआ ८ देखो 'झूमायोडी' (रू.भे.)
(स्त्री० झूवायोडी)

झूवावणी, झूवावबौ—देखो 'झूवाणी, झूवाबौ' (रू.भे.)
झूवावणहार, हारौ (हारी), झूवावणियौ—वि०।
झूवाविश्रोडौ, झूवावियोडौ, झूवाव्योडौ—भू०का०कृ०।
झूवावीजणी, झूवावीजबौ—कर्म वा०।
झूवणौ, झूवबौ—अक० रू०।

झूवावियोडी—देखो 'झूवायोडी' (रू भे.)
(स्त्री० झूवावियोडी)

झूवियोडी—भू०का०कृ०—१ अकवार भरा हुआ, लपटा हुआ २ युद्ध किया हुआ, भिडा हुआ. ३ धावा किया हुआ ४ लूटा हुआ ५ लटका हुआ ६ (मस्ती मे) हाथापाई किया हुआ. ७ जीव-जतुओ अथवा पशुओ का काटा हुआ ८ देखो 'झूमायोडी' (रू भे.)
(स्त्री० झूवियोडी)

झूंवियो—देखो 'झूवौ' (अल्पा, रू भे.)

झूवी-स०स्त्री०—देखो 'झूवौ' (अल्पा., रू भे.)

झूवौ, झूंवौ-स०पु०—१ छोटी-छोटी वस्तुओ का समूह जो एक मे लगी या बधी हुई हो २ कई फलो, फूलो या पत्तो आदि का समूह जो एक मे लगे या बधे हो, गुच्छा ३ समूह, टोली ४ पौधा। उ०—खेत मे वडबोरडिया आयोडी, गहर डम्मर व्हियोडी, जाणै वडला ऊभा। फळसा आगली बोरडी रै नीचै एक छ सात बरस रो टाबर रम रह्यो। टाबर एक बाजरी रा झूवा नै पाळ राख्यो सो उणरै च्यारू मेर पाळी बणा'र रोज उण नै पाणी पावै।
—रातवासो

रू०भे०—झूमौ, झूवकु, झूमौ।

अल्पा०—झुविखो, झूवकडी, झूवकडो, झूवकियौ, झूवकौ, झूवखडी, झूवखडो, झूवखियौ, झूवखी, झूवखो, झूवडकी, झूवडको, झूवडली, झूवडलो, झूवडियौ, झूवडी, झूवडो, झूवलडी, झूवलडो, झूवलियौ, झूवली, झूवलो, झूवियौ, झूवी, झूमकडी, झूमकडो, झूमकियौ, झूमको, झूमखडी, झूमखडो, झूमखियौ, झूमखी, झूमखो, झूमडकी, झूमडको, झूमडली, झूमडलो, झूमडियौ, झूमड़ी, झूमड़ो, झूमलडी, झूमलडो, झूमलियौ, झूमलो, झूमियौ, झूमी, झूवकौ, झूमकडी, झूमकडो, झूमकियौ, झूमको, झूमखडी, झूमखडो, झूमखियौ, झूमखो, झूमखो, झूमडी, झूमडो, झूमलडी, झूमलडो, झूमलियौ, झूमली, झूमलो, झूमियौ, झूमी।

मह०—झूव, झूवक, झूवख, झूवड, झूवल, झूम, झूमक, झूमख, झूमड, झूमल, झूम, झूमक, झूमख, झूमड, झूमल।

झूम, झूमक—देखो 'झूवौ' (मह, रू.भे.)

झूमकडी-स०स्त्री०—देखो 'झूवौ' (अल्पा, रू.भे)

झूमकडो, झूमकियौ—देखो 'झूवौ' (अल्पा, रू भे)

झूमकी-स०स्त्री०—देखो 'झूवौ' (अल्पा, रू भे)

झूमको—देखो 'झूवौ' (अल्पा., रू.भे) उ०—गोरी हबोळी गाय सू वहो नीसरिया वारि। फिरत्या सो झूमको, वेहद हरख वधारि।
—पना वीरमदे री वात

झूमख—देखो 'झूवौ' (मह, रू भे.)

झूमखडी-स०स्त्री०—देखो 'झूवौ' (अल्पा, रू भे)

झूमखडो, झूमखियौ—देखो 'झूवौ' (अल्पा, रू भे.)

झूमखी-स०स्त्री०—देखो 'झूवौ' (अल्पा, रू भे)

झूमखो—देखो 'झूवौ' (अल्पा, रू भे)

झूमड—देखो 'झूवौ' (मह, रू.भे)

झूमडकी-स०स्त्री०—देखो 'झूवौ' (अल्पा, रू भे)

झूमडको—देखो 'झूवौ' (अल्पा, रू भे)

झूमडली-स०स्त्री०—देखो 'झूवौ' (अल्पा, रू भे)

झूमडलो, झूमडियौ—देखो 'झूवौ' (अल्पा., रू भे)

झूमडी—देखो 'झूवौ' (अल्पा, रू भे)

झूमडो—देखो 'झूवौ' (अल्पा, रू भे)

झूमणौ, झूमबौ—देखो 'झूमणौ, झूमबौ' (रू भे)

झूमर—देखो 'झूमर' (रू भे) उ०—कमरा करै कटाछ, झणक झुक झुकती झूमर। फिरत्या को झमको, अग चपा रग केसर।
—महादान महडू

झूमल—देखो 'झूवौ' (मह, रू भे)

झूमलडी-स०स्त्री०—देखो 'झूवौ' (अल्पा, रू भे.)

झूमलडो, झूमलियौ—देखो 'झूवौ' (अल्पा, रू भे)

झूमली-स०स्त्री० —देखो 'झूवौ' (अल्पा, रू.भे)

झूमलो, झूमियौ—देखो 'झूवौ' (अल्पा, रू.भे)

झूमियोडी—देखो 'झूमियोडी' (रू भे)
(स्त्री० झूमियोडी)

झूमी-स०स्त्री०—देखो 'झूवौ' (अल्पा, रू भे)

झूमौ—देखो 'झूवौ' (रू भे.)

झूसणौ, झूसबौ—देखो 'झुळसणौ, झुळसबौ' (रू भे.)
झूसणहार, हारौ, (हारी), झूसणियौ—वि०।
झूसवाडणौ, झूसवाडबौ, झूसवाणौ, झूसवाबौ, झूसावणौ, झूसावबौ—प्रे०रू०।
झूसाड़णौ, झूसाड़बौ, झूसाणौ, झूसाबौ, झूसावणौ, झूसावबौ—क्रि०स०।
झूसिश्रोड़ो, झूसियोडो, झूस्योडो—भू०का०कृ०।
झूसीजणौ, झूसीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०

झूसर, झूसरौ-स०पु०—गाडी या हल जोतते समय बैलो की गरदन पर रखा जाने वाला जुआ। उ०—रथ हळको घणो वाजणो, वळै चार पैंडा रो जाण रे लाला। हळवा काष्ट नो झूसरो, वळै चोडा पैंडा जोत रे लाला।—जयवाणी

झूसाडणो, झूसाड़बौ—देखो 'भुळमाणो, भुळसावौ' (रू.भे.)

झूसाडणहार, हारो (हारी), झूसाडणियो—वि०।

झूसाडिग्रोडो, झूसाडियोडो, झूसाड्योडो—भू०का०कृ०।

झूसाडीजणो, झूसाडीजबौ—कर्म वा०।

झूसणो, झूसबौ—ग्रक० रू०।

झूसाडियोडो—देखो 'भुळसायोडो'।
(स्त्री० झूसाडियोडी)

झूसाणो, झूसावौ—देखो 'भुळसाणो, भुळसावौ' (रू भे)

झूसाणहार, हारो (हारी), झूसाणियो—वि०।

झूसायोडो—भू०का०कृ०।

झूसाईजणो, झूसाईजबौ—कर्म वा०।

झूसणो, झूसबौ—ग्रक० रू०।

झूसायोडो—देखो 'भुळसायोडो' (रू भे)
(स्त्री० झूसायोडी)

झूसारी-स०स्त्री०—गाडी या हल जोतते समय बैलो की गरदन पर रखा जाने वाला जुआ।

झूसावणो, झूसाववौ—देखो 'भुळमाणो, भुळसावौ' (रू भे)

झूसाणहार, हारो, (हारी), झूसावणियो—वि०।

झूसाविग्रोडो, झूसावियोडो, झूसाव्योडो—भू०का०कृ०।

झूसावीजणो, झूसावीजबौ—कम वा०।

झूसणो, झूसबौ—ग्रक० रू०।

झूसावियोडो—देखो 'भुळसायोडो' (रू भे)
(स्त्री० झूसावियोडी)

झूसियोडो—देखो 'भुळसियोडो' (रू.भे)
(स्त्री० झूसियोडी)

झूकणो, झूकबौ—देखो 'झुकणो, झुकबौ' (रू भे)

उ०—भेदै मडळ सूर वहु भाणा, वर वहु चाढै परी विमाणा। झूकै वकै वहो गळि झालै। भेदै खजर पहरि उर मालै।—सू प्र.

झूकणहार, हारो (हारी), झूकणियो—वि०।

झूकिग्रोडो, झूकियोडो, झूक्योडो—भू०का०कृ०।

झूकीजणो, झूकीजबौ—कर्म वा०।

झूकियोडो—देखो 'झुकियोडो' (रू भे.)
(स्त्री० झूकियोडी)

झूड-स०पु०—१ झाडने की क्रिया या भाव
उ०—कामी कूड प्रपच घणा कर, झूड करै तन झेर। ऊ साध्वी दिस धूड उडाय'र, फूड बतावै फेर।—ऊ का

झूडणो, झूडबौ-क्रि०स०—१ एकत्रित करना, बटोरना।
उ०—रही हुती मन राचि, मन लाये मूकी गयो। केथो कीजे काचि, मोती झूडै (जो) मेहउत।—जेठवा

२ काटना। उ०—रीसियै 'जसै 'भड रिमा घड रोळिया। झूडि ग्रस ग्रसमरा रुधिर झकझोळिया।—हा झा.

३ पीटना।

झूडणहार, हारो (हारी), झूडणियो—वि०।

झूडवाडणो, झूडवाडवो, झूडवाणो, झूडवावौ, झूडवावणो, झूडवाववो, झूडाडणो, झूडाडवौ, झूडाणो, झूडावौ, झूडावणो, झूडाववौ—प्रे०रू०।

झूडिग्रोडो, झूडियोडो, झूड्योडो—भू०का०कृ०।

झूडीजणो, झूडीजबौ—कर्म वा०।

झूडणो, झूडवौ—रू०भे०।

झूडियोडो—भू०का०कृ०—१ एकत्रित किया हुआ, बटोरा हुआ. २ काटा हुआ. ३ पीटा हुआ।
(स्त्री० झूडियोडी)

झूडौ—स०स्त्री०—१ ऊँट की तग के साथ गुच्छेदार लटकने वाला सूत या ऊन का बना एक उपकरण, फूदा. २ पालने के ऊपर बधा हुआ रगीन चिथडो का बना खिलोना. ३ समूह।
रू०भे०—झूडो।

झूझ, झूझ—देखो 'जुध' (रू भे) उ०—१ ते तुम केरी आण न मानइ, मागइ छइ वळी झूझ रे। जे कहिउ वळी स्वामी तुम नइ, कहिता थाउ ग्रमूझ रे।—नळ-दवदती रास

उ०—२ झालिया सार मोसर भलै, झूझ भार भुज झालियो। भूपाळ 'जैत' उणहीज भुज, हय कध थापलि हालियो।—मे म.

उ०—३ दादू रहते पहते राम जन, तिन भी माडया झूझ। साचा मुह मोडै नही, ग्रस्थ इता ही बूझ।—दादू वाणी

झूझणो, झूझबौ—देखो 'जूझणो, जूंझबौ' (रू भे)

उ०—१ परा वीर दादो जियै आप एकाधपति, धरा रखपाळ झूझै ग्रधायो। ऊनगै ग्रसि मरे घरै छित्रतो ग्ररसि, आव रे सामध्रमि 'राम' आयो।—राठौड रामदास मेडतिया री गीत

उ०—२ सूरा झूझै खेत मे, साईं सन्मुख काइ। सूरै को साईं मिळै, तब दादू काळ न खाइ।—दादू वाणी

उ०—३ दादू पाखर पहर कर, सब को झूझण जाइ। अग उघाडै सूरवा, चोट मुह खाइ।—दादू वाणी

झूझवारौ—स०पु०—युद्ध, लडाई।

झूझाऊ—देखो 'जूझाऊ' (रू भे) उ०—इणि भाति सू तीन पोहर दळ जूटा। खग नर हाथी खूटा चौथा पोहर लागा। झूझाऊ वागा।
—वचनिका

झूझाडणो, झूझाडवौ—देखो 'झूझाणो, झूझावौ' (रू भे)

उ०—ए पचास सहस मूगळा, ग्रसी सहस सीधी भड भला। एका-एकइ झूझाडज्यो, मारीनइ प्राणइ पाडज्यो।—का दे प्र.

झूझाडणहार, हारो (हारी), झूझाडणियो—वि० ।
झूझाडिओडो, झूझाडियोडो, झूझाड्योडो—भू०का०कृ० ।
झूझाडीजणो, झूझाडीजबो—कर्म वा० ।
झूझणो, झूझबो—अक०रू० ।

झूझाडियोडो—देखो 'झूझायोडो' (रू भे.)
(स्त्री० झूझाड़ियोडी)

झूझाणो, झूझाबो–क्रि०स० ('झूझणो' क्रिया का प्रे०रू०) युद्ध कराना, लडाना ।
झूझाणहार, हारो (हारी), झूझाणियो—वि० ।
झूझायोडो—भू०का०कृ० ।
झूझाईजणो, झूझाईजबो—कर्म वा० ।
झूझणो झूझबो—अक० रू० ।
झूझाडणो, झूझाडबो, झूझावणो, झूझावबो—रू०भे० ।

झूझायोडो—भू०का०कृ०—युद्ध कराया हुआ, लडाया हुआ ।
(स्त्री० झूझायोडी)
झूझार—देखो 'जूझार' (रू भे)
उ०—झूझार आगइ अतिहिं वदीतु । अनइ अह्वार अति ओळखीतु ।
—विराटपर्व

झूझारी–स०पु०—एक प्रकार का घोडा (शा हो)

झूझावणो, झूझावबो—देखो 'झूझाणो, झूझाबो' (रू भे)
झूझावणहार, हारो (हारी), झूझावणियो—वि० ।
झूझाविओडो, झूझावियोडो, झूझाव्योडो—भू०का०कृ० ।
झूझावीजणो, झूझावीजबो—कर्म वा० ।
झूझणो, झूझबो—अक० रू० ।

झूझावियोडो—देखो 'झूझायोडो' (रू भे)
(स्त्री० झूझावियोडी)

झूझि—देखो 'जुध' (रू.भे)
उ०—जिहा गुरूआ तिहा गाजणउ कुलीन तिहा लाछणए, भाणइ भउ झूझि क्षयु ।—व स

झूझु—देखो 'जुध' (रू भे)
उ०—जिहा गुरूवत्तण तिहा गाजणउ जिहा कुलीन तिहा लाछनउ जिहा भाणउ तिहा भउ जिहा झूझु तिहा खय ।—व.स.

झूझो–वि० [स० योद्धा] लडाई करने वाला, लडाकू, योद्धा, वीर ।
उ०—रिमा माण मूकै, नही वै रण गी वढताह । घण झूझो रण-भोम ही, चढ़िया चाखडियाह । चढै रण चाखडी सामहो चालियो । झूझतं भलो रायसिंघ तं झालियो । तास वरणागियं दीठि मन हतणो । मलफियो सामहो कळह वेढ़ीमणो ।—हा झा.

झूट—देखो 'झूठ' (रू भे)

झूटण–उभ० लिं०—१ उच्छिष्ट, ऐंठा ।
२ देखो 'झूठणो' (मह रू भे.)

झूटणियो—देखो 'झूटणो' (अल्पा. रू.भे.)

झूटणो—देखो 'झूठणो' (रू.भे)
उ०—काना नै घडिया लाय, भवर म्हारै काना रै घड़िया लाय । होजी म्हारा झूटणा हीरै जडाय, भवर म्हानै खेलण दो गिणगौर ।
—लो गी

झूटो—देखो 'झूठो' (रू भे)

झूठ–स०पु० [स० द्यूतस्थ, प्रा० जूअट्ठ] (वि० झूठो) १ वास्तविक स्थिति के विपरीत कथन, असत्य । उ०—क्रम-क्रम ढोला पथ कर, ढाण म चूकै ढाळ । आ मारू वीजी महळ, भाखइ झूठ एवाळ ।—ढो.मा.
क्रि०प्र०—कै'णो, वोलणो ।
यौ०—झूठ मूठ, झूठ-साच ।
२ क्रोध, कोप ३ उत्पात, शैतानी. ४ चचलता ।
[स० जुष, जुष्ठ = सेवित अथवा उच्छिष्ट] ५ उच्छिष्ट, ऐंठन ।
रू०भे०—झूट, झूठ, भूट ।

झूठण—१ देखो 'झूटणो' (मह रू.भे.)
उ०—लेता यू विसराम सीचता कळी चमेली । वरस फुहारा वाग वाहणी तीर सहेली । मगमी झूठण-लूब कपोळा नीर लुवती, तिण भामणिया छाह करो जे फूल विणती ।—मेघ
२ देखो 'झूटण' (रू भे)

झूठणियो—देखो 'झूटणो' (अल्पा रू भे)

झूठणो—देखो 'झूटणो' (रू भे)
उ०—ध्यान अगूठी कान, जुगति का झूठणा । जेलड सील सतोख, नरत का घूघरा ।—मीरा

झूठमी–वि०—क्रोध युक्त, क्रोध वालो । उ०—मुळमली पसम रा, कलीसी कान रा, झूठमी द्रैठ रा, कूकडा कध रा ।—रा सा स

झूठमूठ, झूठमूठी–क्रि०वि०यौ०—विना किसी वास्तविक आधार के, व्यर्थ ही । उ०—झूठी-मूठी जान वणा लो, झूठो जान रो वीन । चुग चुग करला कूची माडो, चुग चुग घुडला जीण ।
—डूगजी जवारजी री पड

झूठिय—देखो 'झूठो' (रू भे)
उ०—दुरवेस गयो पतसाह दिसी, उड मूठिय झूठिय वात इसी । सुणता कमधा दळ मान सही, रस वाघ थयो निस प्राध रही ।
—रा.रू

झूठो–वि० [स० द्यूतस्थ, प्रा० जूअट्ठ] (स्त्री० झूठी) १ असत्यवादी, असत्य भाषी । उ०—भारतिया मे रुपयो रोकडो, प्रोर मगावो वाला चूंनडी । झूठा भूवा वाई झूठ न वोल, चार टका रो वाई रो भारत्यो ।
—लो गी.
२ जो सत्य न हो, जो झूठ हो. ३ जो दिखावे मात्र के लिये हो, जो असली न हो, नकली. ४ जवरदस्त, वलवान ।
उ०—वीरा हाक नगारा वाजै, गिर गोळा पडसादै गाजै । भणी मिळै अरि मुडै अफूठा, झगडै कमध तणा दळ झूठा ।—रा.रू.

५ प्राण लेने वाला, रक्तपायी, खूख्वार । उ०—काळ वाळी चरखी प्रसाध झूठो नाग किना, रूठो जिसो झूठो जम्री घर्खे उरा रीस । एक मूठो महारथी वाई कराळ तो आगि, सायिका अरोडं टूटी याध रतो सीस ।—वद्रीदान खिडियो

६ क्रोधयुक्त, क्रोध वाला, क्रोधी. ७ उत्पात करने वाला, चचल. ८ शैतानी करने वाला. ९ देखो 'जूठो' (१, २, ३,) (रू.भे)

१० देखो 'झूठ' (रू भे)

रू०भे०—जुठो, जूठो, झूंठो, झूटो ।

झूडणो, झूडबो—देखो 'झूडणो, झूडवो' (रू भे)

उ०—रे रे आदळ क्रोधी कूड । सगळो लसकर मेल्यो झूड ।

—प च चो

झूडियोडो—देखो 'झूडियोडो' (रू भे)

(स्त्री० झूडियोडी)

झूडो-स०पु०—१ समूह । उ०—काळ रा जुधा घण बोल दूजा 'किसन'। भेड खग वाढ रिम डोळ झूडा । वीरवर भुजा नभ तोल पाछी वळे, चोळ रग किया समसेर चूडा ।—मेघराज आढो

२ देखो 'झूडो' (रू भे)

झूथ—देखो 'जूथ' (रू.भे.) उ०—माझळि झूथ मतग घण, मद मोल खोल घूमना ।—रामरासो

झूप—१ देखो 'झूपडो' (मह , रू भे.)

२ देखो 'झूपो' (मह , रू.भे)

झूपकी-स०स्त्री०—१ देखो 'झूपड़ो' (अल्पा , रू भे)

२ देखो 'झूपो' (अल्पा , रू भे)

झूपको—१ देखो 'झूपडो' (अल्पा , रू भे)

२ देखो 'झूपो' (अल्पा , रू.भे)

झूपड़—१ देखो 'झूपडो' (मह., रू भे)

२ देखो 'झूपो' (मह , रू भे)

झूपड़की-स०स्त्री०—देखो 'झूपडो' (अल्पा , रू भे)

झूपड़को—देखो 'झूपडो' (अल्पा., रू भे)

झूपडली-स०स्त्री०—देखो 'झूपडो' (अल्पा , रू.भे.)

झूपडलो, झूपडियो—देखो 'झूपडो' (अल्पा , रू.भे)

झूपडी-स०स्त्री०—देखो 'झूपडो' (अल्पा , रू.भे)

उ०—लछमण सूनी झूपडी हिया भर आया ।—केसोदास गाडण

झूपडो—देखो 'झूपडो' (रू भे)

झूपली-स०स्त्री०—१ देखो 'झूपडो' (अल्पा , रू.भे)

२ देखो 'झूपो' (अल्पा , रू भे)

झूपलो, झूपियो—देखो 'झूपडो' (अल्पा , रू भे)

२ देखो 'झूपो' (अल्पा , रू भे)

झूपी-स०स्त्री०—१ देखो 'झूपो' (अल्पा , रू भे) २ देखो 'झूपडो'। (अल्पा., रू.भे.)

३ देखो 'झूपो' (अल्पा., रू भे)

झूपो-स०पु०—ढेर ? । उ०—तद राणिया कह्यो—म्हे ही रजपूताणिया छा, म्हे ऊचिया चढस्या, अर नीचे लकडिया री झूपो करो, ज्यू ज्यू थे काम आस्यो त्यू त्यू म्हे कूद-कूद पडस्या ।

—पताई रावळ री वात

२ देखो 'झूपो' (रू भे)

झूफ—१ देखो 'झूपडो' (मह , रू.भे)

२ देखो 'झूपो' (मह , रू भे)

झूफकी-स०स्त्री०—देखो 'झूपडो' (अल्पा , रू भे)

२ देखो 'झूपो' (अल्पा., रू भे)

झूफको—१ देखो 'झूपडो' (अल्पा., रू भे)

२ देखो 'झूपो' (अल्पा , रू भे)

झूफड—१ देखो 'झूपडो' (मह , रू भे)

२ देखो 'झूपो' (मह , रू.भे)

झूफडकी-स०स्त्री०—देखो 'झूपडो' (अल्पा., रू भे)

झूफडको—देखो 'झूपडो' (अल्पा , रू भे)

झूफडली-स०स्त्री०—देखो 'झूपडो' (अल्पा., रू.भे)

झूफडलो, झूफडियो—देखो 'झूपडो' (अल्पा , रू भे)

झूफडी-स०स्त्री०—देखो 'झूपडो' (अल्पा , रू.भे)

झूफडो—देखो 'झूपडो' (रू भे)

झूफली-स०स्त्री०—१ देखो 'झूपडो' (अल्पा , रू भे)

२ देखो 'झूपो' (अल्पा , रू भे)

झूफलो, झूफियो—१ देखो 'झूपडो' (अल्पा., रू भे.)

२ देखो 'झूपो' (अल्पा , रू भे)

झूफी-स०स्त्री०—१ देखो 'झूपडो' (अल्पा , रू.भे)

२ देखो 'झूपो' (अल्पा , रू भे) ३ देखो 'झूपी' (रू भे)

झूफो—१ देखो 'झूपडो' (रू.भे) २ देखो 'झूपो' (रू भे.)

झूब—देखो 'झूब' (रू.भे)

झूबकु—देखो 'झूबो' (रू भे)

झूबको—देखो 'झूबो' (अल्पा , रू भे) उ०—मोती तणा झूबका झमाल, सेअजी पाथरी चुसाळ ।—नळ-दवदती रास

झूबणो, झूबबो—देखो 'झूमणो, झूमबो' (रू.भे)

उ०—माथउ धवळउ देह जाजरो, वाकउ वासउ झूबइ लालरी । घर हूतउ नवि क्याहइ जाइ, सघळा कुटुब ऊभीठउ थाइ ।

—चिहुगति चउपई

झूबियोडो—देखो 'झूबियोडो (रू भे)

(स्त्री० झूबियोडी)

झूम-स०स्त्री०—१ झूमने की क्रिया या भाव ।

२ गायन विशेष ?

उ०—सो रावजी काम आइया तिण वखत ऊपर पण वहदो हुवो, गढी रात री अर सहनाय माहे झूम गायो ।—नापै साखलै री वारता

३ देखो 'झूबो' (मह रू भे.)

झूमक-स०स्त्री०—१ स्त्रियों द्वारा वृत्ताकार रूप में लोक नृत्य करते समय गाया जाने वाला गीत। उ०—ग्राखि ग्राजि सिर गूथत भारी, झूमक गावत ग्रचळ जोरी। मीरा प्रभू रस सिंधु झकोरी, नवल हि गिरघर नवल किसोरी।—मीरा

२ देखो 'झूंबौ' (मह, रू भे) उ०—सुरख डाडिया रै ऊपरै घूघरा रा झूमक, ग्रोस रा जाम ग्रायो, भीमसिंघ जाण्यो।
—पना वीरमदे री वात

झूमकड़ी-स०स्त्री०—देखो 'झूंबौ' (ग्रल्पा, रू भे.)

झूमकडौ, झूमकियौ—देखो 'झूंबौ' (ग्रल्पा., रू.भे.)

झूमकी-स०स्त्री०—देखो 'झूंबौ' (ग्रल्पा., रू.भे)

झूमकौ—देखो 'झूंबौ' (१,२,३) (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—१ साळाजी नै वैठाण कवाड ताळी जो दीवी। कूचिया रो झूमकौ वारै बादरवाळ मे कीधो।—केहर प्रकास

उ०—२ काम जडाऊ कामरा, कुडळ धारण कीन्ह। भळहळ तारा झूमका, दुहु पाखा ससि दीन्ह।—वा दा.

उ०—३ वा सहेल्या मे हीरा पराग रूपी मन मोहै, किरत्या को झूमको तारा मडळ की सोभा, ग्राफू की क्यारी, पोसाख मन लोभा।
—वगसीराम प्रोहित री वात

उ०—४ कमरा करै कटाछ, झणक झुक झुकती झूंमर। किरत्या को झूमकौ, ग्रग चपा रग केसर।—महादान महडू

झूमख—देखो 'झूंबौ' (मह, रू भे)

झूमखडी-स०स्त्री०—देखो 'झूंबौ' (ग्रल्पा, रू भे)

झूमखडौ, झूमखियौ—देखो 'झूंबौ' (ग्रल्पा, रू भे)

झूमखी-स०स्त्री०—देखो 'झूंबौ' (ग्रल्पा, रू भे.)

झूमखौ—देखो 'झूंबौ' (ग्रल्पा, रू भे.)

उ०—१ ग्रागण खेलै कान्ह कवरिया वीर, भोजायां रा म्हारै जाझा झूमका जी, म्हारा राज, बाबोसा री कोटडिया में राज।—लो.गी.

उ०—२ सात सैया रै झूमखै, राधा न्हावण चाली, ग्रो राम। ग्राडा किसनजी फिर गया, थानै जाण न देस्या, ग्रो राम।—लो गी.

झूमड—देखो 'झूंबौ' (मह, रू भे)

झूमडकी-स०स्त्री०—देखो 'झूंबौ' (ग्रल्पा, रू भे)

झूमडकौ—देखो 'झूंबौ' (ग्रल्पा., रू भे)

झूमडली—स०स्त्री०—देखो 'झूंबौ' (ग्रल्पा., रू.भे)

झूमडलौ, झूमडियौ—देखो 'झूंबौ' (ग्रल्पा, रू भे.)

झूमडी-स०स्त्री० देखो 'झूंबौ' (ग्रल्पा, रू भे.)

झूमडौ—देखो 'झूंबौ' (ग्रल्पा, रू भे.)

झूमणू, झूमणु, झूमणौ-स०पु०—१ एक प्रकार का कर्णाभूषण।

उ०—१ गळइ नगोदर नइ झूमणू, घणु सणगार हव केहु भणू। हाथि हाथुळि करि मूद्रडी, माणिक मोती हारै जडी।
—प्राचीन फागु संग्रह

उ०—२ ऊपरि एकाउळि हार। सरिसु मोती तणु हार, झूमणा तणु झमकार, कनकमय पदकडी।—व.स.

२ गुच्छा, झूमका। उ०—मोटा महल ग्रनइ माळिया, छोह पक काचै ढाळिया। गउख ग्रपूर व चदण-तणा, रतन-जडित मोती झूमणा।—ढो मा

झूमणौ, झूमबौ–क्रि०ग्र०—झोका खाना।

उ०—झूलै झूलै झूमती, तीजण सावण तीज। तरु बादळ छाया तळै, भेळी ग्रवक्कै वीज।—लो.गी.

२ किसी जीव का ग्रपने सिर, धड, हाथ, पैर ग्रादि को प्राय बहुत ग्रधिक प्रसन्नता, मस्ती, नशे या नींद के कारण ग्रागे-पीछे, ऊपर-नीचे या इधर-उधर हिलाना, लहराना।

उ०—१ हालै जिण ग्रगर घूमता हस्ती, ताता गयण झूमता तुरग। पैदल प्रबळ रथा हद पगी, चतुरगी ग्रत फौज सुचग।—र रू.

उ०—२ पवन साझ-वनी रग राच्यो, झूमतो ग्रावै मुघरी चाल। पोढ़ती नागण जगा कपोळ, तोडदै घण धीरज री पाळ।—साझ

३ ग्राधार पर खडे किसी पदार्थ के ऊपरी भाग या सिरे का बार-बार ऊपर-नीचे, ग्रागे-पीछे, इधर-उधर हिलना, झोंके खाना।

उ०—पवन री ठडी लै'रां ग्रावती ग्रर खेता मे ऊभोडा गेहूं बिणा मस्ती मे झूमण लाग जावता।—रातवासो

४ लटकना, लूमना। उ०—झम झम झूमा पागडै, इतनी मेहर म्हा सू कीजो। ग्ररै ग्रालीजा विछोहो मत दीजो।—लो गी.

५ किसी ऊंचे स्थान से पदार्थ को लेने के लिये लटकने या लूमने का ऐसा प्रयास करना जिसमे न तो पूर्ण रूप से लटका जाय ग्रौर न पूर्ण रूप से पैरो पर ही ग्राधारित रहा जाय।

उ०—साथण्या तो फूल चूववा नै झूमी छै, ग्रर सोना की सी केळ पना ऊभी छै।—पना वीरमदे री वात

झूमणहार, हारो (हारी), झूमणियौ—वि०।

झूमवाडणौ, झूमवाड़बौ, झूमवाणौ, झूमवाबौ, झूमवावणौ, झूमवावबौ, झूमाडणौ, झूमाड़बो, झूमाणौ, झूमाबौ, झूमावणौ, झूमावबौ
—प्रे०रू०।

झूमिग्रोडो, झूमियोडौ, झूम्योडो—भू०का०कृ०।

झूमीजणौ, झूमीजबौ—कर्म वा०।

झूबणौ, झूबबौ, झूमणौ, झूमबौ।—रू०भे०।

झूमर-स०स्त्री०—१ प्राय. स्त्रियो द्वारा एक साथ मिल कर इस प्रकार घूम-घूम कर नाचना कि उनके कारण एक गोल घेरा सा बन जाय. २ इस नृत्य के साथ गाया जाने वाला लोक गीत. ३ संगीत मे एक ताल. ४ काठ के एक गोल टुकडे मे छोटी-छोटी गोलिया लटकने वाला एक खिलौना जो प्राय बच्चे के पालने के बाधा जाता है।

५ स्त्रियो के सिर पर धारण करने का एक ग्राभूषण।

रू०भे०—झूमर।

ग्रल्पा०—झूमरियौ, झूमरी, झूमर।

६ देखो 'झूमरी' (मह, रू भे) ७ देखो 'झूंबौ' (मह., रू भे.)

८ देखो 'झूमरो' (मह, रू भे) ९ देखो 'झूमरदे' (रू भे)

झूमरकाळी-स०स्त्री०—एक प्रकार की गाय विशेष।

उ०—झखड खसता अच्छ दवानळ दपटा झाळै। झूमरकाळी सुराधेण रा पूछ दभाळै। वपराती ठाटोळ तूठजे वार खेगाळा। दुखिया मेटण दुक्ख विडद घण सपत वाळा।—मेघ

झूमरदे-स०स्त्री०—हरापन लिये हुए एक प्रकार का रग विशेष या इस रग मे रगा कपडा विशेष जिसका घघरा बनाया जाता है।

उ०—नथ री काळी डोरी सदा तण्योडी रैवती अर काजळ री कूपली चादी री साकळी में पोयोडी डावा खाधा पर सू छाती पर हरदम लटकती रैवती। झूमरदे रग री लट्टा री घाघरी अर खादी री माखी भात ओरणी उणनै जबरी फबती।—रातवासो

झूमरियो—१ देखो 'झूमर' (अलपा, रू.भे)

२ देखो 'झूमरी' (अल्पा., रू भे)

उ०—ईंढी कवडाळी माथै पर ओढो। छैली अलकावळ मुखडै पर छोडी। झणकै झालरियो झूमरिया झटकै। लूमी भीगा री खूंणी तळ लटकै।—ऊका

३ देखो 'झूमरो' (अलपा, रू भे)

झूमरी-स०स्त्री०—१ स्त्रियो के कान में पहनने का आभूषण।

वि०वि०—यह दो प्रकार का होता है—

१ स्त्रियो के कान के आभूषण 'टोटी' के नीचे लटकने वाला लटकन. २ वह लटकन जो कान के नीचे के भाग मे ही लटकाया जाता है। इसमे 'टोटी' नही होती है।

२ हाथी के कान मे पहनाया जाने वाला आभूषण ३ रगरेज, चमार, धोबी आदि के काम आने वाला एक प्रकार का गोल डडा जो आगे से मोटा तथा पकडने के स्थान पर पतला होता है।

अल्पा०—झूमरियो, झूमरो।

मह०—झूमर।

४ देखो 'झूमर' (अलपा, रू भे) ५ देखो 'झूमरो' (अल्पा, रू भे)

झूमरो-स०पु०—१ बहुत बडा व भारी लोहे का हथोडा २ सडक या फर्श आदि जमाने के लिये ककड आदि कूटने का लोहे का बना उपकरण जिसके प्राय बास का लम्बा दस्ता लगा रहता है।

अल्पा०—झूमरियो, झूमरी।

मह०—झूमर।

३ देखो 'झूमर' (अलपा, रू भे) ४ देखो 'झूमरी' (अलपा, रू भे.)

झूमल—देखो 'झूबो' (मह., रू भे)

झूमलडी-स०स्त्री०—देखो 'झूबो' (अलपा., रू भे)

झूमलडो, झूमलियो—देखो 'झूबो' (अलपा, रू भे)

झूमली-स०स्त्री०—देखो 'झूबो' (अलपा, रू भे)

झूमलो, झूमियो—देखो 'झूबो' (अलपा, रू भे)

झूमी-स०स्त्री०—देखो 'झूबो' (अलपा, रू भे)

झूमो—देखो 'झूबो' (रू भे)

झूरटियो-स०पु०—नख-क्षत, खरोच (अल्पा.)

झूर (झूरडियो)-स०स्त्री०—१ किसी पदार्थ का महीन चूर्ण, किसी पदार्थ के छोटे-छोटे टुकडे २ सूखी कटीली झाडियों का महीनतम चूर्ण जो प्राय. आग जलाने के काम मे लिया जाता है।

उ०—चरखा, पीढा, साणवा भल, पेई पिलाण पाचरा। हलव भरिया कडाव हालै, ओग झूर री आच रा।—दसदेव

३ समूह, झुण्ड। उ०—खनकिय सायक धार करूर, झनकिय झाझर रभनि झूर। छनकिय तीर वरच्छनि छोह, ननकिय बोह बिलवनि लोह।—ला रा

यौ०—झूर-झूर।

अल्पा०—झूरडियो, झुरियो, झूरो।

झूरणो, झूरबो—देखो 'झुरणो, झुरबो' (रू.भे)

उ०—१ विरहनि रोवै रात दिन, झूरै मन ही माहि। दादू अवसर चल गया, प्रीतम पायै नाहि।—दादू वाणी

उ०—२ सुण सुण वीरा घाटवी, आजय देखी ओर। घर री खूणै झूरसी, चख मग आता चोर।—वी स

उ०—३ गोरी तो बैठी रे झूरै मेडिया, स्याम समदा जी पार। काळा रे कागा एक सनेसो, पिव नै जाय कहो।—लो गी

झूरमझूर, झूरमझूरो-स०पु०—१ किसी वस्तु का महीनतम चूर्ण २ नाश, ध्वश। उ०—झूरमझूरा करइ विमासइ, हवइ जमारइ आणइ। जउ कान्हडदे नही छोडावइ, रह्या सही तुरकाणइ।

झूरापो, झूराबो—देखो 'झुरापो' (रू भे)

झूरियोडो—देखो 'झुरियोडो' (रू भे.)

(स्त्री० झूरियोडी)

झूरियो-स०पु०—देखो 'झूर' (अलपा रू भे)

झूरी-स०स्त्री०—वह खाई जो किसी मकान या खेत के चारो ओर खोदी जावै (शेखावाटी)

झूरो-स०पु०—देखो 'झूर' (अलपा, रू भे)

उ०—किवाड तोड दिया, ठीकर फोड दिया अर पेटिया रो झूरो-झूरो कर नाख्यो।—रातवासो

यौ०—झूरो-झूरो।

झूळ-स०पु०—१ झुण्ड, यूथ, समूह।

उ०—१ बणी दहूं काळ तणी तसवीर, गणी नह जाय घणी हमगीर। सझ्या खग खप्पर चक्र त्रसूळ, झल्या कर डैरव भैरव झूळ।

—मे म.

उ०—२ सुवन 'सोन' 'सादूळ', झूळ वनचरा विचाळै। जिसो चद जग वद, बीज रख ब्रिद समाळै। बाज नद बळवड, झुण्ड लावा आभासै। कना बीच वादळा, कळा सूरज परकासै। असपति निरख अचरज्जियो, रूप परख कुळ राह मैं। आदीत जोत प्रतपै 'अभो', दिपै एम दरगाह मे।

—रा रू

उ०—३ तूल जिम उडै खळथूळ गुरजा तडछ, झूळ चवसठ लगी लेण

झपा। सूळ चमकावता फिरै बावन सुभट, स्याम वाघूळ बिच जाण सपा।—बालाबक्स बारहठ

उ०—४ सझि आवत पदमणि झूल सग। उरवसी सची रति लजत अग।—सू प्र

उ०—५ राव रिणमल अठै धिणलै सोजत फनै रहै। गाव री ठकुराई, पाखती घणा रजपूता रा झूळ रहै।—राव रिणमल री वात

उ०—६ साह सू गयो अनमी थको सूर-सुत, राय सतिया तणै झूळ रसियो। विरद वाकम तणा स्रोकमळ वाधियो, वीर वांकम सुरा-लोक वसियो।—महाराजा करणसिह रो गीत

२ सेना, फौज, दल। उ०—फिलम्मेस वाळा उठी झूळ काळा। अठी आवळा-झूळ भूपाळ वाळा।—सू प्र

झूल-स०स्त्री०—१ पाखर, कवच। उ०—गजवोल चिन्नह गात, सिर इद्र धनुख सुभात। जरकसी के जरतार, पिड झूल फूल अपार।
—सू प्र

२ शीत, घाम, वर्षा आदि से बचाने तथा शोभा के लिये चौपायो पर डाला जाने वाला चोकोर कपडा।

उ०—१ रेसम री रास, सीगा पीतळ री खोळी। वनाती झूला घातिया रहकळा इका खडसला जूता छै।—रा सा स.

उ०—२ धर अवर क्रम धोम, घटा डवर रज घुम्मट। हाक वीर है हीस झूल नेवर झणणाहट।—सू प्र

अल्पा०—झूलकियो, झूलकी, झूलको, झूलडको, झूलडियो, झूलडी, झूळडी, झूलो।
मह०—झूलड।

झूळकियो—देखो 'झूळी' (अल्पा, रू भे)

झूलकियो—स०पु०—देखो 'झूल' (अल्पा, रू भे)
२ देखो 'झूलो' (अल्पा., रू भे)

झूलकी—देखो 'झूल' (अल्पा, रू.भे)

झूळको—देखो 'झूळी' (अल्पा, रू भे)

झूलको—स०पु०—१ देखो 'झूल' (अल्पा, रू भे)
२ देखो 'झूलो' (अल्पा. रू.भे.)

झूलड—देखो 'झूल' (मह, रू भे)
२ देखो 'झूलो' (मह, रू भे)

झूलडको, झूलडियो—स०पु०—१ देखो 'झूल' (अल्पा., रू भे)
२ देखो 'झूलो' (अल्पा, रू भे)
उ०—पीळी कीघी पाघडी, झूलडिए रग-रोळ।—मा का प्र

झूलडी—देखो 'झूल' (अल्पा, रू भे)

झूलडौ—स०पु०—१ देखो 'झूलो' (अल्पा, रू भे)
उ०—झाफी वाहि झूलडां, झगा झगझगइ माहि। फाळ सटी आंनी फाटि विचि, कोहलूजाइ किहाइ।—मा का प्र.
२ देखो 'झूल' (अल्पा, रू भे)

झूलण-स०पु०—१ ऊँट का एक अवगुण (जो ऊँट झूमता रहे)
२ स्नान।

झूलणा—स०स्त्री०—१ ३७ मात्राओं का मात्रिक छद (र ज प्र)
८ यगण का २४ वर्ण और ४० मात्रा का छद विशेष।
(रूप दीप पिंगळ)
२४ अक्षर का वर्णिक छद विशेष जिसके अन्त मे यगण हो।
२ देखो 'झूलणा इग्यारस' (रू.भे.)

झूलणा इग्यारस—स०स्त्री०यौ०—भाद्रपद शुक्ल पक्ष की एकादशी या इस दिन मनाया जाने वाला उत्सव। इस दिन देव-मूर्ति को किसी सरोवर, नदी आदि मे झुलाया जाता है।

झूलणी—वि० (स्त्री० झूलणी) १ विचरण करने वाली।
उ०—ऐसी कहा वेद पढ़ी, छिन मे विमाण चढी। हरिजी सू वाध्यो हेत, वैकुठ मे झूलणी।—मीरा
२ देखो 'झूलो' (अल्पा., रू भे)
उ०—१ छोटी सी वनी का लबा लबा केस, करै ए वावाजी सू वीणती जी राज। वावाजी म्हानै द्यो परणाय, म्हारै जोड़ा की गई ओ सायण सासरिये जी राज। राजल झूठी ए वाई झूठ न बोल, थारै जोडा की झूलै झूलणै जी राज।—लो.गी.

झूलणो, झूलबो—क्रि०अ०—१ हिंडोले लेना, झूले खाना, झूलना।
उ०—१ जरणी का रै जाया, एकै पालणियै दोन्यू झूलिया।
—लो गी.
उ०—२ काढी धर छोडै मुळकती। झूलै कनक तणै झूलती।
—सू.प्र.
२ हिलना, डोलना ३ लटक कर वार-वार इधर-उधर हिलना, लटकना. उ०—अधर दुती आक्रती जन्न वजवती जुगत्ती, रूपवती रजती माळ झूलती मुकत्ती।—सू प्र
४ झूमना, हिलना, लटकना।
उ०—फरै मोगरो सेवती जाय फूली, अंगी पति सेवति झूली अभूली। लता माधुरी मालती फूल लेखै, दसा आप झूलै तपी रूप देखै।—रा रू
५ किसी कार्य के होने की आशा मे लम्बे अर्से तक अथवा बहुत समय तक पडे रहना, भरोसे पर रहना, अनिर्णीत अवस्था मे रहना।
६ मोहित होना। उ०—तुझ गुण पकति वाडो फूली। मुझ मन भमर रह्यउ तिहा झूली।—वि कु.
७ स्नान करना, नहाना। उ०—१ अमलिया मनहारा कर देणै नू लागिया, पछै तळाव मे झूलण नू वडिया।
—भाटी सुदरदास बीकूपुरी री वात
उ०—२ आगै देखै तौ नीवो सिवाळोत सातवीसी साईना रा साथ सू झूलै छै।—वीरमदे सोनिगरा री वात
८ (जलचरो आदि का) जल मे विचरण करना।
उ०—अनेक होद, सरोवर, दादरे, मीन जळ झूलै छै।
—वगसीराम प्रोहित री वात
९ अग्निकुण्ड के पास बैठ कर तपस्या करना, तप करना, तपना।
उ०—गोदड कानफाड जोगी जगम सोफी सन्यासी अविधूत पचाग-

निरा झूलणहार अलमसत फकीर जिके सनार नू भागा थका फिरै।
—रा सा स

१० (भौंरो का ध्वनि करते हुए) मँडराना।
११ देखो 'झीलणो, झीलबो' (रू भे)
झूलणहार, हारो (हारी), झूलणियौ—वि०।
झूलवाडणो, झूलवाडबो, झूलवाणो, झूलवाबो, झूलवावणो, झूलवावबो—प्रे०रू०।
झूलाडणो, झूलाडबो, झूलाणो, झूलाबो, झूलावणो, झूलावबो—क्रि०स०।
झूलिओडो, झूलियोडो, झूल्योडो—भ०का०कृ०।
झूलीजणो, झूलीजबो—भाव वा०।
झुलणो, झुलबो—रू०भे०।

झूलर—देखो 'झूलरो' (मह, रू भे)
उ०—झाके झूलर झीलता, पैंठो कुंवर विचित्र। अजहु न आयो आपणो, मन मानीतो मित्र।—पलक दरियाव री वात

झूलरउ—देखो 'झूलरो' (रू भे)
उ०—वाळू, वावा, देसडउ जहा पाणी सेवार। ना पणिहारी झूलरउ, ना कूवइ लेंकार।—ढो मा

झूलरियौ—वि०—१ झुण्ड या समूह के साथ रहने वाला। उ०—मा को जायो वीर भलो, म्हासू ऊभो ही मिळ जाय। मिळो रे वीरा, झूलरिया वीरा, मिळो रे वाह पसार।—लो गी
२ देखो 'झूलरो' (अल्पा, रू भे)
उ०—पणिहारचा परवार, जाय सरवर जळ ल्यावण। झूलरियै झणकार, लसकरा लै'रो गावण।—दसदेव

झूलरो—स०पु०—समूह, झुण्ड, यूथ, टोली।
उ०—१ तीज का उछाह मू चित्त ज्या का छाजै छै, जठै रिमझोळा का झरणाट वाजै छै। हींडोळा लुहरा गावै छै, झूलरा का झूलरा वाग में आवै छै।—पना वीरमदे री वात
उ०—सात सहेलिया रै झूलरै, पणिहारी ए लो। हिळमिळ गई रे ताळाव, वाला जी ओ।—लो गी
रू०भे०—झूलरउ।
अल्पा०—झूलरियो।
मह०—झूलर।

झूला—स०स्त्री०—पृथ्वी, धरती (ना डि को)

झूलाळ—वि०—१ हिंडोले खाने वाला, झूलने वाला २ हिलने-डोलने वाला. ३ लटकने वाला. ४ झूमने वाला. ५ भरोसे पर रहने वाला, अनिर्णीत अवस्था मे रहने वाला. ६ मोहित होने वाला ७ स्नान करने वाला, नहान वाला ८ जल मे विचरण करने वाला ९ अग्निकुण्ड के पास बैठ कर तपस्या करने वाला, तप करने वाला १० मँडराने वाला (भौरा आदि) ११ कवचधारी, योद्धा।
उ०—१ गठजोड अच्छर झूलाळ ग्रठ। कदमा अग्राळ वरमाळ कठ।
—वि स

उ०—२ गजराजू की हलवळ। वाज राजू की कळहळ। नाळू का निहाव, सावळूं का सिळाव। नवागळू के डाके। जसोल्लू के हाके। झूलाळू की झळहळ। पैदलू की हलवळ।—सू प्र.
१३ मग्न होने वाला, लीन होने वाला १४ देखो 'झूलो'।
(मह, रू भे)
अल्पा०—झूनाळो।

झूलाळो—देखो 'झूनाळ' (अल्पा, रू भे)
उ०—१ चाढा दहू दळ चाढवै, झळहळ झूलाळा। सुरसाण दहू दळ खिवै, वीजळ वाटाळा।—सू प्र
उ०—२ झूलाळा कीया झाडि-झाडि। मोटा ग्रह मोखी मारुआडि।
—रा ज सी.
उ०—३ झूलाळा सग झाडि, वेटा विहुं सहितो 'वलू'। खिति पडियो मोटो खित्री, आधो दळ ऊडाडि।—वचनिका

झूलि—स०स्त्री०—१ एक प्रकार का झूलानुमा पलग।
२ देखो 'झूल' (रू भे)

झूलियोडो—भू०का०कृ०—१ हिंडोले लिया हुआ, झूले खाया हुआ, झूला हुआ २ हिला हुआ, डोला हुआ ३ लटक कर हिला हुआ, लटका हुआ ४ झूमा हुआ, हिला हुआ ५ भरोसे पर रहा हुआ, अनिर्णीत अवस्था मे रहा हुआ ६ मोहित हुवा हुआ. ७ स्नान किया हुआ, नहाया हुआ ८ (जलचरो आदि का) जल मे विचरण किया हुआ ९ अग्निकुण्ड के पास बैठ कर तपस्या किया हुआ, तपा हुआ. १० (भौंरो आदि का) मँडराया हुआ
११ देखो 'झीलियोडो' (रू भे)
(स्त्री० झूलियोडी)

झूळो—स०पु०—१ एक साथ बहुत से अस्त्र-शस्त्रो को समूह के रूप मे सीधा खडा करने का ढग। उ०—१ कवर वीरमदे आय ऊतरिया। वडा री छाया घोडा री वागा लगाइजै छै। कमरिया खुलाइजै छै। बन्दूका अर वरछिया रा झूळा दीजै छै।
—पना वीरमदे री वात
उ०—२ तठा उपरायत देसोत राजान आपरा टोळी मजल रा जुवान जिया विराजमान हुवा छै। कमरा खोलजै छै। वरछी रा झूळा कीजै छै।—रा सा स.
२ सूखने के लिये पृथक-पृथक रखे गये घास के गट्ठर. ३ समूह, यूथ, झुण्ड, टोला। उ०—और ही झूळा रा झूळा लमझम करता फूल वाग नू आवै है, लहरिया गावै है।—र हमीर
४ जटाजूट। उ०—मार्थ केसा री झूळो रहै नै ऊपरा लपेटो वाधै। वागो, चिळकता वगतर पैरै।—जखडा मुखडा भाटी री वात
५ एक प्रकार का पहनने का वस्त्र विशेष।
अल्पा०—झूळकियो, झूळको।

झूलो—स०पु०—१ हिंडोला, पालना। उ०—१ काढी घर खोदे मुळकती। झूलै कनक तणै झूलती। आणी झूला सहित उठाए।

परगह मन्त्री अचभ नृप पाए ।—सू प्र.

उ०—२ सोवन झूलै वानो झूलै, झोटै झोटै बोली यू । उतणी वार हिलाये पिरथवी मै तोय जितरा झोटा चूं ।—लो गी.

उ०—३ गयी गयी बगीचा रै माय, झूलै तो लागा झूलवाजी राज ।
—लो.गी.

उ०—४ झूलै झूलै झूमती, तीजण सावण तीज । तरू वादळ छाया तळै, भेळी भ्रबके बीज ।—लो गी.

क्रि०प्र०—खाणौ, देणौ, लेणौ ।

२ रस्सियो अथवा तारो से बनाया हुआ पुल । ज्यू०—लिछमण झूलौ ।

क्रि०प्र०—बाधणौ ।

३ वर्षा ऋतु मे श्रावण शुक्ला तृतीया से पूर्णिमा तक होने वाला एक प्रकार का उत्सव जिसमे श्रीकृष्ण या श्री रामचन्द्र की मूर्तियो को झूले मे झुलाते है. ४ श्रावण मास मे गाया जाने वाला एक लोक गीत ।

क्रि०प्र०—गाणौ ।

अल्पा०—झूलकियौ, झूलकौ, झूलडकौ, झूलडियौ, झूलड़ौ, झूलणौ ।
मह०—झूलड ।

५ देखो 'झूल' (अल्पा , रू भे)

झूवखौ—देखो 'झूवौ' (अल्पा , रू भे.)

उ०—पताका फरहरती कीधी, कस्तूरी नी गूहली दीधी, मोती तणा झूवखा डवाव्या, माहिं पद्मराग पटल लवाव्या ।—व स.

झूस, झूसण–स०पु०—१ कवच, बख्तर । उ०—१ चढै खळ हीक तुरी उर चोट । काळाहळ झूस हुवै वज्र कोट ।—सू प्र.

उ०—२ सावळा भीच अणिया भवर, काळरूप झूसण किया । काळवी 'पाल' आगै क्रमै, लगा पूठ धेना लिया ।—पा.प्र.

उ०—३ तठा उपराति करि नै राजान सिलामति असवारा री वाग ऊपाडी, किलकिला ज्यो ऊपाडि ऊपाडि नांखीजै छै । झूसणा ऊपरै वरछी चमकिनै रही छै । रामण गाजा सेला रा घमोडा पडिनै रहीआ छै ।—रा.सा स

२ तलवार, खडग. ३ गाडी, हल आदि जोतते समय बैलो के कंधे पर रखा जाने वाला जुआ । उ०—बाहळिया बळ छडियौ, कध झूसण इनकार । पिंड 'पातल' यूरोप री, है धुर खचणहार ।
—किसोरदान बारहठ

रू०भे०—झूसाण ।

झूसणौ, झूसबौ–क्रि०स०—अस्त्र शस्त्रो से सुसज्जित करना, कवच आदि पहनाना । उ०—पमगा घाती पाखरा, झूसणिया जोधार । काळी निस आया कठठ, लीधा लगर लार ।—वी.मा.

झूसर, झूसरी, झूसरौ–स०पु०—१ हल, गाडी आदि जोतने के लिये बैलो के कधे पर रखा जाने वाला लकडी का बना जुआ ।

उ०—झूसर भार न झल्लही, गोधा गावडियाह । इम जस भार न ऊपडै, मोला मावडियाह ।—वा दा

उ०—२ 'कव सुत रथी बरद ललकारा, तपण कलोडा घरै न ताड । अद झूसरी 'अडस' नृप वाळा, मूछाळा वेगड भुज माड ।—अज्ञात

२ तलवार, खड्ग । उ०—झालै भुजडड झूसरी, मार झुड यर माण । आज राम कोडड भव, प्रचड खिग्रीवट पाण ।—र ज.प्र.

झूसांण—देखो 'झूसण' (रू भे.) उ०—छायौ धूम्रै अयास घमका सोर भका छूट, घोर तोपा अमला चरेल पला घाण । कसीस अढार टका ऊघडी परीर कका, झडी वीर वका सीस असंका झूसांण ।
—दुरगादत्त बारहठ

झूसिय–वि० [स० जूषित] युक्त, सज्जित (जैन)

झें झें–अव्य० (अनु०) झनझन का शब्द, ध्वनि, झकार ।

उ०—थेइ थेइ थेइ ठवति पाय, वेणु वीणा करि वजाय । झें झें झझरिय लाय, रणण रणण नेउरि । सुरियाम सुर करि प्रणाम, मागति अब मुक्तिधाम । समयसुदर सुजस नाम, जय जय जय सामरी ।
—स कु.

झे–स०पु०—१ राम. २ लक्ष्मण. ३ चमार. ४ वन. ५ शशि-मण्डल ।

स०स्त्री०—६ मर्यादा. ७ अग्नि (एका.)

झें–अव्य०—गाय, भैस व बैल को पानी पिलाने के लिये उच्चारित किया जाने वाला शब्द ।

रू०भे०—छे' ।

झेडणौ, झेडबौ–क्रि०स०—१ प्राप्त करना । उ०—ग्यान समद गुण गाइ च्यार मुगिते हू चेडै । ग्यान तत गुण गाइ सात तरगा फळ झेडै ।—पी ग्र.

२ देखो 'झाडणौ, झाडबौ' (रू भे) उ०—झोटा वकर झेडिया खळकै रत खाळै । कीनी रिघ मोटै कडाव भाद्रवै विचाळै ।—पा प्र

झेडणहार, हारौ (हारी), झेडणियौ—वि० ।

झेडाडणौ, झेडाड़बौ, झेडाणौ, झेडाबौ, झेड़ावणौ, झेडावबौ—प्रे०रू० ।

झेडिग्रोडौ, झेडियोडौ, झेडयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

झेडीजणौ, झेडीजबौ—कर्म वा० ।

झडणौ, झडबौ—अक०रू० ।

झेरणौ, झेरबौ—रू०भे० ।

झेडियोडौ–भू०का०कृ०—१ प्राप्त किया हुआ

२ देखो 'झाडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० झेडियोडी)

झेडर–स०स्त्री०—एक मारवाडी लोकगीत । उ०—गाया गोसाळा गूदा गळगळती । ढाळा द्रग ढळती बूदा बळवळती । डाई डेडरसी घाई घुर धीएँ । झीणी झेडर झुर गाई सुर झीणै ।—ऊ.का.

झेर–स०स्त्री०—१ नीद का झोका, हल्की नीद ।

उ०—१ ऊठा पर वैठ्या सेठा री पागडिया विखरण लागती अर झेरा लेवती सेठाण्या रा काळजा अचाणक ऊचा चढ जावता ।
—रातवासौ

२ देखो 'जेर' (रू भे) उ०—कामी कूड प्रपंच घणा कर, झूड करै तन झेर। ऊ साव्वी दिस धूड उडायर, फूड वतावै फेर।—ऊ का यो०—झेर-झेर।
३ झरना, चश्मा (मेवाड)

झेरण—देखो 'झेरणौ' (मह, रू भे)

झेरणियौ—देखो 'झेरणौ' (अल्पा, रू भे.)

झेरणू—देखो 'झेरणौ' (रू भे)

झेरणौ-स०पु०—१ मथने का उपकरण, मथदण्ड, मथानी।
उ०—रतना सारू तद मन्द्राचळ पहाड री मथाणी (झेरणा जैडी) करी ही—तिण सहू दरियाव नै मथियौ, इण तरै म्हारी पती रण रतनाकर डोहै छै।—वी स टी
२ एक प्रकार का घास विशेष।
रू०भे०—झेरणू।
अल्पा०—झेरणियौ।
मह०—झेरण।

झेरणौ, झेरबौ-क्रि०स०—१ काटना, मारना।
उ०—१ लडा झीक देतै सूडाडडा घू झेरिया काथा। जाडा थडा घोरिया वितुडा 'जालमेस'।—जालमसिंह चापावत रो गीत
उ०—२ चापा हरो सामहो जे आवतो चौडे, जीवतो न जावतो नांखतो खागा झेर। जोध 'सवळेस' रो पावतो फतै जाडा थडा, खाय जातो अमीरा देतो सायवी विखेर।—नवलजी लाळस
२ तंग करना, दिक करना, कष्ट देना ३ देखो 'जेरणौ, जेरबौ'। (रू भे)
४ देखो 'झेडणौ, झेड़बौ' (रू भे) उ०—मळका सवारि अण्या काडीजै छै। फूलधारा रा वाड झेरीजै छै।—पना वीरमदे री वात
झेरणहार, हारौ (हारी), झेरणियौ—वि०।
झेरवाडणौ, झेरवाडबौ, झेरवाणौ, झेरवाबौ, झेरवावणौ, झेरवावबौ, झेराडणौ, झेराडबौ, झेराणौ, झेराबौ झेरावणौ, झेरावबौ—प्रे०रू०।
झेरिओडौ, झेरियोडौ, झेरयोडौ—भू०का०कृ०।
झेरीजणौ, झेरीजबौ—कर्म वा०।
झेरवणौ, झेरववौ—रू०भे०।

झेरवणौ, झेरवबौ—देखो 'झेरणौ, झेरबौ' (रू भे.)
उ०—हायळै झेरवी कडतला हाथिया। सहै भुभा थया वळि 'जसा' रा साथिया।—ह्रा भा.

झेरवियोडौ—देखो 'झेरियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० झेरवियोडी)

झेरापौ, झेराबौ—देखो 'झुरापौ' (रू भे)

झेरियोडौ-भू०का०कृ०—१ काटा हुआ, मारा हुआ २ तंग किया हुआ, दिक किया हुआ, कष्ट दिया हुआ ३ देखो 'जेरियोडौ' (रू भे.)
४ देखो 'झेडियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० झेरियोडी)

झेल, झेलण-स०स्त्री०—१ खुले दरवाजो या झरोखो के कमानदार पत्थरो के ऊपर लगाया जाने वाला पत्थर. २ झेलने की क्रिया या भाव।

झेलणौ, झेलबौ-क्रि०स०—१ बन्धन मे डालना।
उ०—थे खाडो हूं ढाल हगामी ढोला रे। हेकै नै रोसीलै दोय झेलिया हो राज।—लो गी
२ सहारा देना, आश्रय देना। उ०—आभ-विमूहा माणसा, है घर झेलणहार। धरणीधर घर छडिया, अच्छै तू आधार।—ह र.
३ देखो 'झालणौ, झालबौ' (रू भे) उ०—१ वूडती दरियाव विच, झ्याज लई भुज झेन। देवी सो भुज इद्र रै, माथै दीजै मेल। जी मेहाई थारै वाईसा री करीजै उवेल।—मे म
उ०—२ झेली-झेली सुदर गोरी घोडै री लगाम, आसू तो रळकाया कायर मोर ज्यू, जी म्हारा राज।—लो गी.
उ०—३ गजघडा रा गाहणहार, काली रा कळस, सिवकासी जावणहार, डिगता आसमान रा झेलणहार, अवसाण रा खेलणहार।
—पना वीरमदे री वात
उ०—४ या सुणता ही अणिलपुर रो अधीस सेना रा सभार सू मही रै मचोळा देतो गजनवी रो वेग झेलण रै काज जवनेस रो राह रोकि सोझति सहर आडो आय पडियो।—व भा
उ०—५ म्हारो हेलो, म्हारो हेलो, सरवव्यापी झेलो, जगत रा जामी! देवा दळ सरणै आयो।—गी रा.
उ०—६ पावस री सघन छोळा पडै छै जको जमीन झेलै छै।
—पना वीरमदे री वात
उ०—७ पहला तो वार वैरी नै कहै थू वाह लै सो वैरी रो सस्त्र सरीर माथै झेल नै पाछो आप वावै सो एक ही वार मे असु उतार असु खवा सू उतार नीची आवै तरवार जिनोई उतार वहै छै।
—वी स टी
उ०—८ अरि परदेसा साझणो, अतर पणो अपार। विण चापा विण भाटियां, भुज कुण झेलै भार।—रा रू.
उ०—९ अकळ कळा एक आरंभ रचियो, सकळ कळा मे खेलै। उपजै सपै आपरै करमा, हरि पाप पुण्य नही झेलै।
—स्री हरीरामजी महाराज
उ०—१० जुगत अरध भक्ष त्रिखा जतावै। अधर झेल पुक्कर अचवावै।—सू प्र.
उ०—११ सरवणा री ओर ओपमा न वणसी, सीप मानू स्वाति वूद झेली छै।—पना वीरमदे री वात
झेलणहार, हारौ (हारी), झेलणियौ—वि०।
झेलवाडणौ, झेलवाडबौ, झेलवाणौ, झेलवाबौ, झेलवावणौ, झेलवावबौ, झेलाडणौ, झेलाडबौ, झेलाणौ, झेलाबौ, झेलावणौ, झेलावबौ—प्रे०रू०।
झेलिओडौ, झेलियोडौ, झेल्योडौ—भू०का०कृ०।

झेलीजणो, झेलीजवो—कर्म वा० ।

झलणो, झलवो, भिलणो, भिलवो—ग्रक०रू० ।

झेलणो झेलवो-स०पु०—१ कुए से पानी निकालने का वह मोट जिसे मनुष्य हाथ से पकड कर खाली करता है ।
रू०भे०—झेलो ।

२ ऐसे मोट द्वारा सिंचाई किया जाने वाला कुग्रा ।

वि०—वह जो हाथ से पकड़ा जाय ।

झेलाजोड़, झेलाजोडी-स०स्त्री०यो०—कान का ग्राभूपण ।

झेलू-वि०—१ उत्तरदायित्व लेने वाला । उ०—जोवनिया रा झेलू ह्वो तो, मडियोडो घर भागूं ग्रो । ग्रधविच् मे छिटकावो जिणरो, कोल मागू ग्रो, क लिख दो कागदियो ।—लो.गी

२ रक्षक ३ मदद करने वाला, सहायक ।

झेलो-स०पु० (वहु व० झेला) १ कान का ग्राभूपण, कर्णा-भूपण ।
यौ०—झेला-जोड, झेला-जोडी ।

२ स्त्रियो के ललाट के ऊपर शिर पर धारण करने का एक ग्राभूपण ।

३ हाथी की गर्दन पर लगाई जाने वाली घटियो की माला

४ सहारा, मदद । उ०—ग्रसरण दीन दुखित ऊपर री । ध्रू धारण झेलो गिरधर री ।—र ज प्र.

५ कुये पर लगाया हुग्रा पत्थर जिस पर खड़े होकर व्यक्ति पानी का मोट खाली करता है. ६ मकान के प्रधान द्वार के ग्रगाडी का ग्रहाता (चहार दीवारी का स्थान) ७ एक लकडी जो ताने के तारो को ठीक करने के लिये करघे के ऊपर लगी रहती है ।

८ वह स्थान जहा पर जल भरे चरस के वाहर ग्राने पर लाव से जुडी कीली निकालते है ।

झै-ग्रव्य०—देखो 'झै' (रू भे)

झैकणो, झैकवो-क्रि०स०—ऊँट को वैठने के लिये प्रेरित करना, ऊँट को वैठाना । उ०—१ उठी नै घाडंतिया चावटा रै बीच ऊठ झैक्या, चातरै पर जाजम ढाळी, कपडै री दुकान फोड'र मोठडा झुकाया, खवे नवा खेस राळ्या ग्रर सव सूं पै'ली सुनार री दुकान लूट'र मोहरत कियो ।—रातवासो

उ०—२ ढोलाजी करहलो थाव्यो रे झैक्यो रेतूड रै माय । काडचो डावा पग रो ताकळो काई पूगो छिन रै माय ।—लो.गी

झैकणहार, हारो (हारी), झैकणियो—वि० ।

झैकवाडणो, झैकवाडवो, झैकवाणो, झैकवावो, झैकवावणो, झैकवाववो, झैकाडणो, झैकाडवो, झैकाणो, झैकावो, झैकावणो, झैकाववो —प्रे०रू० ।

झैकिग्रोडो, झैकियोडो, झैक्योडो—भू०का०कृ० ।

झैकीजणो, झैकीजवो—कर्म वा० ।

झिकणो, झिकवो—ग्रक०रू० ।

झैकवणो, झैकववो, झैकणो, झैकवो, झैकवणो, झैकववो—रू०भे० ।

झैकवणो, झैकववो—देखो 'झैकणो, झैकवो' (रू भे)

उ०—पटाळा हठाळा महागात पूरा, सुरगा सगाहा सकोपा सनूरा । सलीता कन्हैं झैकवै प्राण साहै, लिया हाथ लट्ठी समा सेल ठाहै ।
—रा.रू

झैकवियोडो—देखो 'झैकियोडो' (रू.भे)

झैकाडणो, झैकाडवो—देखो 'झैकाणो, झैकावो' (रू भे)

झैकाडणहार, हारो (हारी), झैकाडणियो—वि० ।

झैकाडिग्रोडो, झैकाडियोडो, झैकाडचोड़ो—भू०का०कृ० ।

झैकाडीजणो, झैकाडीजवो—कर्म वा० ।

झिकणो, झिकवो—ग्रक० रू० ।

झैकाडियोडो—देखो 'झैकायोडो' (रू भे)
(स्त्री० झैकाडियोडी)

झैकाणो, झैकावो-क्रि०स० (झैकणो क्रिया का प्रे०रू०) १ ऊँट को वैठाना, ऊँट को वैठाने के लिये प्रेरित करना २ ऊँट को वैठाने का कार्य किसी दूसरे से कराना ।

झैकाणहार, हारो (हारी), झैकाणियो—वि० ।

झैकायोडो —कर्म वा० ।

झिकणो, झिकवो—ग्रक०रू० ।

झिकाडणो, झिकाड़वो, झिकाणो, झिकावो, झिकावणो, झिकाववो, झैकाडणो, झैकाडवो, झैकारणो, झैकारवो, झैकावणो, झैकाववो, झैकाडणो, झैकाडवो, झैकाणो, झैकावो, झैकारणो, झैकारवो, झैकावणो, झैकाववो—रू०भे० ।

झैकायोडो-भू०का०कृ०—१ (ऊँट को) वैठाया हुग्रा, वैठाने के लिये प्रेरित किया हुग्रा २ ऊँट को वैठाने का कार्य किसी दूसरे से कराया हुग्रा ।

स्त्री०—झैकायोडी ।

झैकारणो, झैकारवो— देखो 'झैकाणो, झैकावो' (रू भे)

उ०—कह्यो ऊभा रह्या तो समझै कोयनी, थारै काम छै तो ऊंट झैकारू छूं ।—ढो मा.

झैकारियोडो—देखो 'झैकायोडो' (रू.भे)
(स्त्री० झैकायोडी).

झैकावणो, झैकाववो—देखो 'झैकाणो, झैकावो' (रू भे)

झैकावणहार, हारो (हारी), झैकावणियो—वि० ।

झैकावविग्रोडो, झैकावियोडो, झैकाव्योडो—भू०का०कृ० ।

झैकावीजणो, झैकावीजवो—कर्म वा० ।

झिकणो, झिकवो—ग्रक०रू० ।

झैकावियोडो—देखो 'झैकायोडो' (रू भे)
स्त्री०—झैकावियोडी ।

झैकियोडो-भू०का०कृ०—ऊट को वैठने के लिये प्रेरित किया हुग्रा, (ऊँट को) वैठाया हुग्रा । (स्त्री० झैकियोडी)

झैपणो, झैपवो-क्रि०ग्र०—लज्जित होना, शर्माना । उ०—भूडण खादी धड-धडी, गिरिया भाला तीर । देख पराक्रम झैपिया, चकित रह्या सै वीर ।—डाढाळा सूर री वात

झेंपणहार, हारो (हारी), झेंपणियो—वि० ।
झेंपवाड़णो झेंपवाडवो, झेंपवाणो झेंपवावो, झेंपवावणो, झेंपवाववो —प्रे०रू० ।
झेंपाडणो, झेंपाडवो, झेंपाणो, झेंपावो, झेंपावणो, झेंपाववो—क्रि०स०
झेंपिग्रोडो, झेंपियोडो, झेंप्योडो—भू०का०कृ० ।
झेंपीजणो, झेंपीजवो—भाव वा० ।
झेंपणो, झेंपवो—रू०भे० ।

झेंपाडणो, झेंपाडवो—देखो 'झेंपाणो, झेंपावो' (रू भे)
झेंपाडणहार, हारो (हारी), झेंपाडणियो—वि० ।
झेंपाडिग्रोडो, झेंपाडियोडो, झेंपाड्योडो—भू०का०कृ० ।
झेंपाडीजणो, झेंपाडीजवो—कर्म वा० ।
झेंपणो, झेंपवो—ग्रक०रू० ।

झेंपाडियोडो—देखो 'झेंपायोडो' (रू भे.)
स्त्री०—झेंपाडियोडी ।

झेंपाणो, झेंपावो–क्रि०स०—लज्जित करना ।
झेंपाणहार, हारो (हारी), झेंपाणियो—वि० ।
झेंपायोड़ो—भू०का०कृ० ।
झेंपाईजणो, झेंपाईजवो—कर्म वा० ।
झेंपणो, झेंपवो—ग्रक०रू० ।
झेंपाडणो, झेंपाड़वो, झेंपावणो, झेंपाववो, झंपाडणो, झेंपाडवो, झंपाणो, झेंपावो, झेंपावणो, झेंपाववो—रू०भे० ।

झेंपायोड़ो—लज्जित किया हुआ । (स्त्री० झेंपायोडी)

झेंपावणो, झेंपाववो—देखो 'झेंपाणो, झेंपावो' (रू भे)
उ०—घापूडी नै झेंपावण नै उणरी मावणिया एक तरकीब सोची अर साथै गावती-गावती एकदम चुप रैयगी । एकली घापू रो ईज झीणो सुर गूंज ऊठ्यो ।—रातवासो
झेंपावणहार, हारो (हारी), झेंपावणियो—वि० ।
झेंपाविग्रोडो, झेंपावियोडो, झेंपाव्योडो—भू०का०कृ० ।
झेंपावीजणो, झेंपावीजवो—कर्म वा० ।
झेंपणो, झेंपवो—ग्रक० रू० ।

झेंपावियोडो—देखो 'झेंपायोडो' (रू भे)
स्त्री०—झेंपावियोडी ।

झेंपियोडो–भू०का०कृ०—लज्जित हुवा हुआ, शरमाया हुआ ।
स्त्री०—झेंपियोडी ।

झे–स०पु०—१ ब्रहस्पति २ गुरु ३ नाक, नासिका. ४ मैथुन ५ स्वर्ग. ६ कृत्तिका ७ ग्रात्मा (एका)
ग्रव्य०—ऊंट को बैठाने के लिये बोला जाने वाला साकेतिक शब्द (एका)

झेंकणो, झेंकवो—देखो 'झेंकणो, झेंकवो' (रू भे)
उ०—घाली टापर वाग मुख्नि, झेंक्यउ राजदुग्रारि । करहइ किया टहूकडा, निद्रा जागी नारि ।—ढो मा

झेंकवणो, झेंकववो—देखो 'झेंकणो, झेंकवो' (रू.भे)

झेंकवियोडो—देखो 'झेंकियोडो' (रू भे.)
स्त्री० —झेंकवियोड़ी ।

झेंकाडणो, झेंकाड़वो—देखो 'झेंकाणो, झेंकावो' (रू.भे.)

झेंकाडियोडो—देखो 'झेंकायोडो' (रू भे)
स्त्री०—झेंकाडियोडी ।

झेंकाणो, झेंकावो—देखो 'झेंकाणो झेंकावो' (रू.भे)

झेंकायोडो—देखो 'झेंकायोडो' (रू भे.)
स्त्री०—झेंकायोडी ।

झेंकारणो, झेंकारवो—देखो 'झेंकाणो, झेंकावो' (रू भे.)
उ०—तोडाह चेड नुखता तणा रा, राज दवारै झेंकारियां ।
—वखतो खिडियो

झेंकारियोडो—देखो 'झेंकायोडो' (रू भे)
स्त्री०—झेंकारियोडी ।

झेंकावणो, झेंकाववो—देखो 'झेंकाणो, झेंकावो' (रू भे)

झेंकावियोडो—देखो 'झेंकायोडो' (रू भे)
स्त्री०—झेंकावियोडी ।

झेंकियोडो—देखो 'झेंकियोडो' (रू भे)
स्त्री०—झेंकियोडी ।

झेंपणो, झेंपवो—देखो 'झेंपणो, झेंपवो' (रू भे.)

झेंपाडणो, झेंपाडवो—देखो 'झेंपाणो, झेंपावो' (रू भे)

झेंपाडियोड़ो— देखो 'झेंपायोडो' (रू भे.)
स्त्री०—झेंपाडियोडी ।

झेंपाणो, झेंपावो—देखो 'झेंपाणो, झेंपावो' (रू.भे)

झेंपायोडो—देखो 'झेंपायोडो' (रू.भे)
स्त्री०—झेंपायोडी ।

झेंपावणो, झेंपाववो—देखो 'झेंपाणो, झेंपावो' (रू भे.)

झेंपावियोडो—देखो 'झेंपायोडो' (रू भे)
स्त्री०—झेंपावियोडी ।

झेंपियोड़ो—देखो 'झेंपियोडो' (रू भे) (स्त्री० झेंपियोडी,

झें'र—देखो 'जेंर' (रू.भे.)
उ०—जंपुरनाथ जैसा धाम वेटा तीन जाया । प्याला झें'र पाया । एक वेटा नै मराया ।—शि व

झोक—देखो 'झोक' (रू भे)

झोकणो, झोकवो—देखो 'झोकणो, झोकवो' (रू भे.)

झोको—देखो 'झोको' (रू भे)

झोंपडी–स०स्त्री०—देखो 'झूपडी' (ग्रल्पा , रू.भे.)

झोंपडो—देखो 'झूपड़ो' (रू भे)

झोक–स०पु०—१ ऊंटो के बैठने का वाडा ।
उ०—१ झोक भरी छै म्हारी टोडिया जे, जे मै म्हारो गल्लेवाळो टोड, ग्रोक वरसै वरसोदण होळी पावणी जे ।—लो गी.

उ०—२ झोक माय म्हारा ऊँट अरळावै, गोरचा माय गाय'रा भैंस, छपना श्रोजू मत पडियै म्हारै देस मे ।—लो गी

उ०—३ हिवै जखडै रैवारी नै तेड पूछियौ, धणी फरवी, चलाक साढ हुवै तिका बताय । तरै रैवारी कह्यौ, महाराजा, रावळै झोक नव छै, तिण मे अकाळगारी तिणरी नानो बनास पाणी पीवती नै नागरवेली री पनवाडी चर नै घरै आवती । तरै जगडै उण साढ नै सारणी माडी । तिका मास एक माहै सभाई । तिका कोस पचास जाय नै एकै ढाण पाछी आवै ।—जखडा मुखडा भाटी री वात

२ उतनी भूमि जो एक ऊँट के वैठने से घिर जाय ।

उ०—नवहत्थी झोक रा, मसत फीफरा भरारा । वगला उरळी विहूँ, वगलि नीकळै छिकारा ।—सू प्र.

३ मादा ऊँट के वच्चा देने अर्थात् प्रसव करने की क्रिया ।

क्रि०प्र०—देणी ।

४ जोश, उत्साह, साहस । उ०—कढिया खग सावळ झोक किया। लगिया सिर अवर वाग लिया ।—सू प्र.

क्रि०प्र०—आणी, करणी ।

स०स्त्री०—५ तराजू के किसी पलडे का नीचे होने की क्रिया ।

क्रि०प्र०—होणी ।

६ झुकाव, प्रवृत्ति ७ 'झुकणो' क्रिया का भाव

८ तिरछी चितवन, कटाक्ष । उ०—चोहटै माहे नगर-नायिका वेस्या लाख लाख री लहणहार, सोळै सिंगार ठविया थका, फूला रा चौस पैहरिया थका, टोय अणियाळा काजळ ठासिया थका, वाका नैणा री झोक नाखती पायल रै ठमकै सू, घूघरै रै घमकै सू, विछिया रै छमकै सू, रमझोळ करती, अगूठा मोडती, नखरा करती वाजारि चाली जाय छै ।—रा सा स

क्रि०प्र०—नाखणी, देणी, फैंकणी ।

९ तरग, लहर ।

१० इधर से उधर हिलने-डुलने या झुकने की क्रिया ।

ज्यू—नसै री झोक, नीद री झोक ।

अव्य०—प्रशसा सूचक शब्द, वाह, शावाश ।

उ०—१ वदै अगदेस हुवा जोध वका । लगा झोक रे झोक प्राजाळ लका ।—सू प्र

उ०—२ काळा झोक लागै मेद पाटका कवाड ।

—माधोसिंह सीसोदिया री गीत

उ०—३ प्रथम नेह भीनो महाक्रोध भीनो पछै, लाभ चमरी समर झोक लागै । रायकँवरी बरी जेण वागै रसिक, वरी घड कवारी तेण वागै ।—वा दा.

११ शोभा । उ०—नवो जन्म ले कुड कडीर न्हावै । महा सुद्ध ह्वै सुद्ध मानू नमावै । लखै सूळ सिंदूर री झोक लेतो । सज्यो मात सी हाथ श्री नोक सेतो ।—मे म.

झोकडी—स०स्त्री०—झूम, मस्ती । उ०—वडा दातारा सिरदारा रसभाइनी माहे दूहा गाईजै छै । जग जागडा गवाडीजै छै । ढाढीग्रा री जोडी गजराज पटाभर ज्यो झोकडी खाइ नै रही छै ।—रा सा.स

२ नीद का झोका, झपकी । उ०—करी आखरी त्यार ओकळी सोवण सुख भर । मिरग चोकडी भूल, झोकडी लेवै दिन भर ।

—दसदेव

झोकणो, झोकवो—क्रि०स०—१ प्रहार करना, वार करना ।

उ०—जटी आक ओकवो सघेस को झोकवो जगा, जती को मोकवो नगा लका सीस झाल । कळैसा कोकवो काळ तोकवो तुरी को कना। छोळा नाथ सभरी को झोकवो छडाळ।—हुकमीचद खिडियो

२ किसी वस्तु को एक वारगी ही झटके के साथ आगे की ओर फेंकना, फेंक कर छोडना, सामने की ओर वेग से फेंकना ।

३ जोशपूर्वक आगे की ओर वढाना । उ०—'अभमाल' फोघ देवै अताळ । महमद-साह दिये मुक्तमाळ । पत हुकम मदपफरखान पेल । झोकिया थाट भुज भार झेल ।—वि सं.

४ जवरदस्ती आगे की ओर करना, ढकेलना, ठेलना. ५ प्रवृत्त करना । उ०—१ सोण छोळा रा कीच माचसी, वावन वीर आखाड नाचसी । काया खडे छै । सहुडा झोकसी, खळा रा अमख सू पळचरा नै पोखसी ।—पना वीरमदे री वात

उ०—२ ऊगती मोसरा अडर, सिघ करण अभावत । कवरा गुर इम कहे वरण मुख अरण वधावत । अणी फूल ऊपरा, झोकि ऊडड झळाहळ । सभू राड साधणी, वाहि सावळ वीजूजळ ।—सू प्र.

६ वहुत अधिक खर्च करना, अधाधुध व्यय करना। ज्यू०—छोरै री पढाई मे घणाई रिपिया झोकिया । ७ आहुति देना । उ०—धुवै राग सिंधुवा, गजै नाळिया अनागळ । मेळा भड गहमहै, वहै गोळा वीझाभळ । ठहै दवानळ ठठर, झोकि पिंड सामी झाळां। खोभ गिरद खोहरा, लिया मोरचा लकाळा ।—सू प्र.

८ आपत्ति मे डालना, वुरी जगह भेजना या ढकेलना। ज्यू०—थे तो थारी छोरी नै कसाइया रै घर मे झोक दी । ९ खीचना ।

उ०—ताहरा हेकै रजपूत नू भुवाळा हू झालि झोकि करि नीचो नाखियो ।—द वि.

१० डालना । उ०—अर जिकण रै वदळै ऊकळता कडाह रा तेल मे आपरो ही कलेवर झोकि दीधो ।—व भा.

११ अत्यधिक कार्य देना, बहुत श्रम करने के लिये जोत देना, वहुत कार्य लादना । ज्यू०—१ औ सगळो काम करण रै सारू थै नित म्हनै ईज क्यू झोक दिया करो ज्यू०—२ औ सगळो काम म्हारै माथै ईज क्यू झोक दियो ।

१२ वन्दूक छोडने के लिये वन्दूक की कल गिराना या वन्दूक छोडना । उ०—करै वदूका तीर वध, दे सूवा दोय वार । फूल मार कर पाघरी, झोकै पळ जोधार ।—पना वीरमदे री वात

१३ देखो 'झैकणो, झैकवो' (रू भे) उ०—मिळि रीछ रूप

अधियामणा, जकस जिहाजा जिम जिसा। झोकिया सिंधु नुखता झटकि, अधकध राकस इसा।—सू प्र.

झोकणहार, हारो (हारी), झोकणियो—वि०।

झोकवाड़णो, झोकवाडवो, झोकवाणो, झोकवावो, झोकवावणो, झोकवाववो, झोकाढणो, झोकाडवो, झोकाणो, झोकावो, झोकावणो, झोकाववो—प्रे०रू०।

झोकिग्रोडो, झोकियोडो, झोक्योडो—भू०का०कृ०।

झोकीजणो, झोकीजवो—कर्म वा०।

झुकणो, झुकवो—अक०रू०।

झोंकणो, झोंकवो, झोखणो, झोखवो—रू०भे०।

झोका-अव्य०—एक प्रशंसासूचक शब्द, शाबाश, वाह।

उ०—१ आपाण दिखायो भलो झोका वखतेस आळा, 'आपा' नै धपायो रोळा छकायो अपार।—हुकमीचद खिडियो

उ०—२ खेद ग्रह पूज विमुहा खडै झाट खग। झाट खग थाट थर भज झोका।—र ज प्र.

रू०भे०—झोखा।

झोकाइत, झोकाई, झोकाऊ-वि०—१ वीर, बहादुर।

उ०—१ नीवो संवाळोत। साख राठोड। घिणला री धणी। लाखा री लोडाऊ। कळियां री जोड। राका री माळवो। अधणिया री धणी। पर नोम पचायण। मयणां री सेहुरो। दुसमणा री नाटसाल। वडो झोकाइत।—वीरमदे सोनिगरा री वात

उ०—२ हिवै पाटण थी ४० कोस ऊपरै कागलो वळोच रहै। तिको वडो झोकाई। गाव ४० री धणी।—जखडा मुखडा भाटी री वात

उ०—३ तरै एकण चाकर कह्यो—साखि राठोड, नीवो सिवाळोत, लाखा री लोडाऊ, वडो झोकाऊ, सैणा सेहुरो, दुसमणा री साल, जाता-मरता री साथी, लाखा री राहुरी।

—वीरमदे सोनिगरा री वात

२ लुटेरा, डाकू। उ०—परवतसर चोरासी मारोठ री दाळ थावै ग्रोर च्यारू पासा री माल खायजै। बडा झोकाई। दिल्ली सू उरै-उरै मुलक री धाडो हमेसा करै।—सूरे खीवे काधळोत री वात

रू०भे०—झोकायत, झोखाइत, झोखाई, झोखाऊ, झोखायत।

झोकाडणो, झोकाडवो—देखो 'झोकाणो, झोकावो' (रू भे)

झोकाडणहार, हारो (हारी), झोकाडणियो—वि०।

झोकाडिग्रोडो, झोकाडियोडो, झोकाड्योडो—भू०का०कृ०।

झोकाडीजणो, झोकाडीजवो—कर्म वा०।

झुकणो, झुकवो—अक०रू०।

झोकाडियोडो—देखो 'झोकायोडो' (रू भे)

(स्त्री० झोकाडियोडी)

झोकाणो, झोकावो-क्रि०स० ('झोकणो' क्रिया का प्रे०रू०) झोकने का कार्य दूसरे से कराना।

झोकाणहार, हारो (हारी), झोकाणियो—वि०।

झोकायोडो—भू०का०कृ०।

झोकाईजणो, झोकाईजवो—कर्म वा०।

झुकणो, झुकवो—अक०रू०।

झोकाडणो, झोकाडवो, झोकावणो, झोकाववो, झोखाडणो, झोखाडवो, झोखाणो, झोखावो, झोखावणो, झोखाववो—रू०भे०।

झोकायोडो-भू०का०कृ०—झोकने का कार्य दूसरे से कराया हुआ।

(स्त्री० झोकायोडी)

झोकायत, झोकायती—देखो 'झोकाइत' (रू भे)

उ०—१ सीस वद भुजा तोकायता सावळा, रखा रोकायता ग्ररक रीझ। राळिया भडज धक नयण रोखायता, बीच झोकायता 'रयण' वीज।—रामकरण महडू

उ०—२ वव इळा ठोर वागा हका वीरवर, खळ थटा किता खागा रदन खेर। थया मद हीण ग्रर हग थोकायती, जग ग्रचळ किया झोकायती जेर।—साहपुरै राजा ग्रमरसिंह री गीत

झोकावणो, झोकाववो—देखो 'झोकाणो, झोकावो' (रू.भे)

झोकावणहार, हारो (हारी), झोकावणियो—वि०।

झोकाविग्रोडो, झोकावियोडो, झोकाव्योडो—भू०का०कृ०।

झोकावीजणो, झोकावीजवो—कर्म वा०।

झुकणो, झुकवो—अक०रू०।

झोकावियोडो—देखो 'झोकायोडो' (रू भे)

(स्त्री० झोकावियोडी)

झोकि—देखो 'झोका'। उ०—जरदाळ घण पखराळ जुडि, विहड खाळ नारग वहै। हद करा इमो जुध विहद हूं, करा झोकि सूरिज कहै।—सू.प्र.

झोकियोडो-भू०का०कृ०—१ प्रहार किया हुआ, वार किया हुआ. २ किसी वस्तु को एक बारगी ही झटके के साथ आगे की ग्रोर फेंका हुआ, फेंक कर छोडा हुआ, सामने की ग्रोर वेग से फेंका हुआ ३ जोशपूर्वक आगे की ग्रोर बढाया हुआ. ४ जबरदस्ती आगे की ग्रोर किया हुआ, ढकेला हुआ, ठेला हुआ. ५ प्रवृत्त किया हुआ ६ बहुत अधिक खर्च किया हुआ, अधाधुध व्यय किया हुआ ७ आहुति दिया हुआ ८ आपत्ति मे डाला हुआ, बुरी जगह भेजा हुआ या ढकेला हुआ ९ डाला हुआ. १० खीचा हुआ. ११ अत्यधिक कार्य दिया हुआ, बहुत श्रम करने के लिये जोता हुआ, बहुत कार्य लादा हुआ १२ बन्दूक छोडने के लिये बन्दूक की कल गिराया हुआ या बन्दूक छोडा हुआ १३ देखो 'झोंकियोडो' (रू भे.)

(स्त्री० झोकियोडी)

झोको-स०पु०—१ झपट्टा, रेला, धक्का।

क्रि०प्र०—आणो, लागणो।

२ झटका, आघात।

क्रि०प्र०—आणो, लागणो।

३ हवा का प्रवाह, झकोरा।

क्रि०प्र०—आणौ, खाणौ, लागणौ।

४ इधर-उधर हिलने-डुलने या झुकने की क्रिया।

उ०—अहमद लडका पढण मे, कह किन झोका खाय। तन-घट मे विद्या रतन, भरत हिलाय-हिलाय।—अज्ञात

मुहा०—१ झोका आणा—निद्रा के कारण झपकिया आना

२ झोका खाणा—नशे मे इधर-उधर झुकना, डावाडोल होना, किसी आघात या वेग के कारण इधर-उधर झुकना।

५ लहर, तरग।

क्रि०प्र०—आणौ।

रू०भे०—झोखो।

झोख—देखो 'झोक' (रू भे) उ०—सुपाता पाळ-गर जोग पारथ समर, केविया गाळ-गर वस रा दिनकर। वसू साधार झोख लागै क्रीतवर, अभग पारथ अत इळा राजो 'अमर'।—विसनदास बारहठ

झोखणौ, झोखबौ—१ देखो 'झैकणौ, झैकवौ' (रू भे.)

उ०—मजबूत थूभ डाचा मगर, जिया पूछ करवत जिसा। झोखिया सिंधु नुखता झटकि, अध कध राकस इसा।—सू प्र.

२ देखो 'झोकणौ, झोकवौ' (रू.भे) उ०—साजै द्रढ आसण इस्ट अराधण, पैठी जाय पताळ मे जी। दिल पच इद्री दम धोम सखी, धम झोखै आहुत झाळ मे जी।—र रू

झोखा—देखो 'झोका' (रू.भे)

झोखाइत, झोखाई, झोखाऊ—देखो 'झोकाइत' (रू भे.)

झोखाड़णौ, झोखाडवौ—देखो 'झोकाणौ, झोकावौ' (रू.भे.)

झोखाडियोडौ—देखो 'झोकायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० झोखाडियोडी)

झोखाणौ, झोखावौ—देखो 'झोकाणौ, झोकावौ' (रू.भे.)

झोखायोडौ—देखो 'झोकायोडौ' (रू.भे)

(स्त्री० झोखायोडी)

झोखायत, झोखायती—देखो 'झोकाइत' (रू भे.)

झोखावणौ, झोखाववौ—देखो 'झोकाणौ, झोकावौ' (रू.भे)

झोखावियोडौ—देखो 'झोकायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री० झोखावियोडी)

झोखियोड़ौ—देखो 'झोकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० झोखियोडी)

झोखौ—देखो 'झोकौ' (रू भे)

झोड़-स०पु०—१ टक्कर, आघात। उ०—धमकै जडी पाखरा थाट घोड़ा। झमकै झडी पाखरा आगि झोडां।—व.भा.

२ देखो 'झौड' (रू भे)

झोट—१ देखो 'झोटौ' (मह, रू भे.), उ०—१ घिरत घला घू ए भूरी झोट रो।—लो गी

उ०—२ उवा झोट छोड देवो।—कुवरसी साखलै री वारता

२ देखो 'झोटौ' (मह, रू भे)

झोटींग देखो 'झोट' (मह, रू भे)

झोटी-स०स्त्री०—युवा भैस। उ०—दूध पीवण नै जोसी झोटी दिराऊ रे, धान भराऊ थारी कोठी रे, म्हारा जूना जोसी, राम मिळण कद होसी रे।—मीरा

मह०—झोट।

झोटौ-स०पु०—१ झूले को इधर-उधर हिलाने के लिये दिया जाने वाला धक्का, झोका। उ०—१ सोवन झूलै वानो झूलै, झोटै झोटै बोली थूं। उतणी बार हिलायै पिरथी, मै तोय जितणा झोटा द्यू।—लो गी

उ०—२ गाजै घण सुण गावणौ, प्याला भर मद पाव। झूलै रेसम रग झड, झोटा दे'र झुलाव।—वा दा

क्रि०प्र०—दैणौ।

२ किसी अधर लटकी हुई वस्तु को हिलाने-डुलाने के लिये दिया जाने वाला धक्का, झोका। उ०—सू उण ही बादळा सू घोडा रा लाळिया छाटजै छै। फेर बादळा लखोळ उण हीज तळाव रै पाणी सू छाण भरजै छै। उण हीज बडा, पीपळा री साखा सू टागजै छै। झोटा दीजै छै। पवन खुवाय पाणी ठडौ कीजै छै।—रा सा स

क्रि०प्र०—दैणौ।

३ इधर से उधर झूमने, झुकने या हिलने-डुलने की क्रिया।

उ०—१ लुळि लुळि लपाक झोटा लिवै, ऊचा नीचा आवता। नमि नमि नाक अमली निलज, जमी लगावै जावता।—ऊ का

उ०—२ इण भात रा रजपूता नै अमल सिरदार आपरा हाथा करावै छै। घणै चोज सू मन लिया मनहारा कीजै छै। दिल हाथ लीजै छै। अमला गहतत हुवा छै। मातै हाथी ज्यूं झोटा खाय रह्या छै।—रा.सा स

वि०वि०—यह क्रिया प्राय. मस्ती, नशे अथवा नीद आदि आने के कारण होती है।

क्रि०प्र०—खाणौ, लैणौ।

(स्त्री० झोटी) ४ भैसा, महिषा। उ०—मोडा एक बहुत ह्वै मह्रिला, ज्यू भैसिन मे झोटा। दे छाटा नारी परबोधै, खसम बतावै खोटा।—ऊ का.

मह०—झोट।

वि०—हृष्ट-पुष्ट।

झोतिखिक, झोतिसिक—देखो 'ज्योतिसी' (रू भे) (व स)

झोवा-झोब-वि०यौ०—पसीने मे तरबतर। उ०—कुत्तै झपटी मारी। अेक छोरी डर'र चीख मारी। सरीर झोवा-झोब हुयग्यो। आखिया सू आसू पडण लागा।—वरसगाठ

झोर-स०पु०—१ समूह, झुण्ड। उ०—कपोळा रै मदगध करि न भौंरा रा झोर पड नै रहिआ छै।—रा सा स.

२ देखो 'झोरौ' (मह, रू.भे)

३ देखो 'झोरौ' (मह., रू.भे)

झोरापौ, झोरावौ—देखो 'झुरापौ' (रू भे)
झोरी-स०पु०—१ गुच्छा। उ०—रसे माधुरै पी जभीरी बिजोरा। झुकै साख फूला फळा भारि झोरा।—रा रू.
महू०—झोर।
२ देखो 'झोरौ (रू भे.)
झोळ-स०पु०—धातुग्रो पर चढाया जाने वाला मुलम्मा।
उ०—१ रूपा री म्हारी वणी ए वाटकी, सोना के री झोळ चढ़ायौ, कहौ तौ सहेल्या ग्रापा वागा मे चाला, वागा मे हीडो ए घलायौ। —लो गी.
उ०—२ ग्रनै इणरै माहे तौ तावौ ग्रनै ऊपर रूपा री झोळ तिण सू ए खोटो।—भि द्र.
२ तरकारी ग्रादि का शोरवा, शाक का द्रव पदार्थ. ३ वह घोल जो ग्रन्न के ग्राटे मे मसाले ग्रादि मिला कर पकाया जाता है जैसे कढ़ी। ४ परदा, ग्रोट. ५ हाथी का झूमते हुए चलने का एक ऐव।
६ देखो 'झोळौ' (रू भे)
झोल-स०स्त्री०—१ किसी वस्तु के तनाव का कहीं से झुक जाने या वीच से मुड जाने का भाव।
क्रि०प्र०—काडणी, दैणी, निकाळणी, पडणी, होणी।
२ तनाव या कसाव के शिथिल होने का भाव, तने हुए कपडे ग्रादि का कहीं से लटक जाने या झोली की तरह हो जाने का भाव।
क्रि०प्र०—दैणी, पडणी।
३ । उ०—ग्राप तो जाय द्वारका छाये, हमको पड गये झोल। मीरा के प्रभु गिरधर नागर, पिछले जनम को कोल।—मीरा
४ देखो 'झोलौ' (मह, रू भे.)
उ०—डेरा माहि मिळै 'जैसाह' ग्राय। वैमदर जाणिक झोल वाय। —सू प्र
झोळउ—देखो 'झोळौ' (रू.भे)
उ०—करुणा कीलइ लेपीउ ए, ग्यान निरूपम नीर। झोळउ समरस भरयो ए।—ऐ जै का स.
झोळका—देखो 'झोळी' (रू भे)
झोळणौ-स०पु०—प्राय यात्रा मे सामान ग्रादि डालने के लिये साथ रखा जाने वाला कपडे का बना हुग्रा वडा थैला या झोला जो कधे पर लटकाया जाता है।
वि०वि०—इसमे कपडे के दोनो छोरो को सी कर थैलियो के ग्राकार का बना लिया जाता है तथा बीच के हिस्से को कधे से लटकाने पर दोनो थैलिया ग्रागे पीछे लटक जाती हैं।
झोळणौ, झोळवौ-क्रि०स०—हिलाना-डुलाना, झकझोरना, मथना।
उ०—सो घणी काळपी मिसरी रा भेळ सू घणी एळची नै मिरचा रै भेळ वीह लागै थकै ऊजळा कपूर वासी गगोदक पाणी सू ऊजळै गळणै झोळि झोळि झारीजै छै।—रा सा स

झोलणौ-स०पु०—एक प्रकार का दीपक विशेष जो प्राय लोहे का बना हुग्रा होता है।
झोळदार-वि०—१ जिसमे शोरवा या रसा हो २ जिस पर मुलम्मा चढा हुग्रा हो।
झोलदार-वि०—जिसके बीच मे झुकाव या मोड हो २ जो ढीला-ढाला हो।
झोळायत-स०पु०—गोद लिया हुग्रा लडका, दत्तक पुत्र।
झोलि-स०स्त्री०—तलहटी ?
उ०—ग्रथास्तोदय, ग्रस्तमइ ग्रसुमाळिमडळ, विघट्टइ चक्रवाकचक्रवाळ, उच्छळइ वहुल वहुल तिमिररिछोळि, सयाळ पक्षिकुळ ग्रपसरइ परवत झोलि, ग्रलकरइ तरुणि ग्रोलि, प्रज्वलइ मदिरोदरि मगळप्रदीपमाळिका, उन्मीळइ गगनातराळि तारिका, उल्लसइ चद्रमडळालोक, ज्योत्स्नाधवळयाइ जीवलोक।—व स.
झोळियां-स०स्त्री०—ग्रक, गोद। उ०—राजा री कुमरि नळराजा मागै छै, कवर ग्रापरी झोळियां घाल्यौ छै।—ढो मा
क्रि०प्र०—घलाणी, घालणी, दैणी, लैणी।
वि०वि०—यह केवल गोद लेने के ग्रर्थ मे ही प्रयुक्त होता है।
रू०भे०—झोळया।
झोळियोडौ-भू०का०कृ०—हिलाया-डुलाया हुग्रा, झकझोरा हुग्रा, मथा हुग्रा।
झोळियौ-स०पु०—१ पानी डाल कर ग्रथवा मथ कर पतला बनाया हुग्रा दही २ वच्चे को झुलाने का पालना ३ वच्चे को झुलाने के लिये कपडे की वनाई हुई झोली।
झोळी-स०स्त्री०—१ प्राय चौकोर कपडे के चारो छोरों को मिला कर लटकाने से वनने वाला गोलनुमा ग्राकार जिसमे कोई वस्तु रखी जा सके। इसमे कपडे के किनारे पर छोरो के मध्य से छोरो की ग्रोर कुछ दूर तक सी भी देते है। उ०—झोळी मा'ला झाट रोट गिडका नै राळो। दो जूता री दोय करो मोडा री काळो।—ऊ का
यौ०—झोळी-झडो, झोळी-डडो।
२ किसी लम्बे ग्रोर चौडे वस्त्र के एक ग्रोर के दोनो छोरो को कमर मे वाध दिया जाता है ग्रोर दूसरी ग्रोर के दोनो छोरो को शामिल कर पीठ पर से होते हुए, कधे के ऊपर से लाते हुए ग्रागे कमर मे वधे हुए छोरो से ग्रटका दिया जाता है। इस प्रकार ग्रटकाने से पीठ पर एक वडा थैला वन जाता है।
वि०वि०—यह थैला वाजरा ग्रोर ज्वार की वालें काटते समय ही उपयोग मे लाया जाता है ग्रोर एक-एक वाल काट कर इस थैले मे डालते जाते हैं।
३ ।
उ०—झडी सरम फूलां री झोळी। हुयगी परम धरम री होळी।
४ ।
उ०— झोलो झालरि झीपडू, झझू झाझइ मुरि। झखमख झरहर झरडीग्रा, झापट झाझा धुरि।—मा का प्र.

५ घायलो को ले जाने के लिये प्रयोग किया जाने वाला झोलीनुमा उपकरण।

उ०—१ नूरमली अहली दसा, गो गिर लग्गे हार। झोळी डोळी घायला, ले बेली वे पार।—रा.रू

उ०—२ माडचौ मुकद रौ देस अजाद दुभल्ल। झोळी वीस घता-विया पडिया तीस मुगळ।—रा रू

६ बच्चो के झुलाने का पालना. ७ कपडे का बनाया हुआ वह झूला जिसमे बच्चे को सुला कर झुलाया जाता है। उ०—माथा धोता नीरमळा झुलरायो झोळी हालरि हुलरावियो हीडोळ हिंचोळी।

—घ व ग्र.

८ अक, गोद।

रू० भे०—झोळका।

झोळी-झडौ, झोळी-डडौ—स०पु०यौ०—प्राय भिक्षुओ अथवा साधुओ द्वारा अपने पास रखी जाने वाली झोली तथा डडा।

झोळौ—स०पु०—१ किसी कपडे के चारो छोरो को मिलाने से बनाने वाली गठरी। उ०—इसो कहि झोळौ माडि, सरव भेळी करि गाठ वाधी।—पलक दरियाव री वात

२ वडा थैला ३ किसी वस्तु का ढीला-ढाला आवरण ४ पहनने का ढीला-ढाला वस्त्र, चोला। इसे प्राय. साधु पहनते हैं ५ गोद, अक (ढूढ़ाड)।

रू०भे०—झोळउ।

मह०—झोळ।

झोलो—स०पु०—१ वायु-प्रवाह का आघात, वायु-प्रवाह की टक्कर, झोका। उ०—१ फौहारू की पकति जळ-चादरू का उफाण। जळचादरू की घरहर मानू छिल्लै महिराण। खीखड़ू का डबर समीर सै झोला खावै। मलियागिर के भोळै भूलि पखेसर मिणधर भुजग आवै।—सू.प्र

उ०—२ बायरै रा ठडा झोला सामी छाती झेलजै। पैलौ जोटौ आवै है पाणतिया खोडौ घेरजै।—चेत मानखा

क्रि०प्र०—खाणौ, झेलणौ।

मुहा०—झोला खाणौ—अनिर्णीत अवस्था मे रहना, विना सहारे अथवा विना मजिल के जाने भटकना।

२ वायु-प्रवाह। उ०—फळ-फूलू के भार भरी अढार भार, ठाम-ठाम के ऊपर मोरू का तडव भौरू का गुजार। ठाम-ठाम सेती रतिराज के नकीब कोकिला बोलै, सीतळ मद सुगध तीन प्रकार के झोलै।—सू प्र

३ प्रवाह। उ०—अबै जलाल वूबना सू सीख कीवी। तरै झरोखा सू रेसम रै लच्छा सू उतरियो, सो सूघै भीनो थकियो, अतर रा झोला पडता, दोय लाख री मोतिया री हार गळै मे पहरिया थका महल नू आवै छै, सो येभी व तनोमनो सगळा नू सुवास री झोलौ पवन सू आयो। वारह मोहर तोळा रौ इतर जलाल लगातो, तिण री सुवास रा झोला पडणं लाग्या। तद सारा ही कही—खसबू रा झोला आवै छै, सो देखो तौ सही जलाल आवै छै।

—जलाल वूबना री वात

उ०—२ साचा कुळ चकोर चदा झोलै वहि जासी। ब्रज नारी री वीणती रै (बाला) राम मिळै मिळ जासी।—मीरा

उ०—३ नित तडिव नाचणी, निझरि आछणी नीहाळं। रग साज रेळिया अतर झोला आइजं। अली नाभ ऊपरै, राग भौरा छाइजं।

।—पना वीरमदे री वात

क्रि०प्र०—आणौ, झलणौ, पडणौ।

४ तरग, हिलोर। उ०—तिको तळाव किण भात रौ छै। राती वरडी रौ। पाडरौ नीर। पवन रौ मारियौ, फीण आछटतौ थको झोला खाय रह्यौ छै।—रा सा स

क्रि०प्र०—खाणौ।

५ हिलने-डुलने या झूमने की क्रिया या भाव।

उ०—आभा झळपट अग क चदै चीरिया, दरियाई घुज देह धरै डग धीरिया। लटकण झोला लेह कवेसर वकिया। भरिया भूखण भार लचकत लकिया।—र हमीर

उ०—२ गाढा दीसा री घडाई नथ लुळ लुळ जाय। तीसा री पोवाई नथ डचोढा झोला खाय।—लो गी.

उ०—३ गहरौ फूल गुलाव रौ, झुक झुक झोला खाय। ना माळी रै नीपजै, ना राजा रै जाय।—अज्ञात

क्रि०प्र०—खाणौ, लैणौ।

६ जल को विलोडित करने की क्रिया या भाव। उ०—मरद गरद हुय जाय देख घूघट को ओलो। झुक पीछोळा तीर दियै पणियारचा झोलौ।—महादान महडू

क्रि०प्र०—दैणौ।

७ वात रोग विशेप। उ०—का तौ राणै नू झोलै मारियौ, का राणै री वुद्धि भ्रस्ट हुई।—नापै साखलै री वारता

क्रि०प्र०—मारणौ।

८ आश्विन मास मे सप्तर्पि के अस्त होने के स्थान से चलने वाला वायु जो फसल को हानि पहुँचाता है। उ०—१ नैरति प्रसरि निर-घण गिरि नीझर, धणी भजै घण पयोघर। झोलै वाइ किया तरु झखर, लवळी दहन कि लू लहर।—वेलि

उ०—२ भूख भागण अर तिर छिजण, थाका रै आवै वेल। थनै झोलौ मती लागजो, म्हारी मतीरा री वेल।—लो गी

वि०वि०—यही वायु श्रावण मास मे 'सूरियौ' तथा माघ मास मे 'दावौ' कहलाता है।

९ आपत्ति, सकट। उ०—सेर सेर सोनौ पीरती, मोत्या भरती भारा कोइक झोलौ आइयो, घर घर री पणियार।—अज्ञात

क्रि०प्र०—लागणौ, वाजणौ।

१० पीडा, दुख। उ०—हमै मयाराम नै जसा रगराग माणै छै,

जका नैं इंद्र भी वखाणे छै। रग-राग री घोरी लागी छै, विरह री झोलो भागो छै।—दरजी मयाराम री वात

क्रि०प्र०—भागणौ।

११ विक्षेप, बाधा। उ०—पूरब जनम की मैं हूं गोपिका, अधविच पड़ गयो झोलो रे। जगत बदीती तुम करो मोहन, अब क्यूं बजाऊ ढोलो रे।—मीरा

क्रि०प्र०—डालणौ, नाखणौ, पड़णौ, होणौ।

१२ शोभित होने का भाव। उ०—जिस वखत सिर सोभा के हरवळ का मोती पाघ के जवाहर के ऊपर तारीफ सूं झोला खावै, जिसका जबाव इम वर्ज कहता है जो आलम के विच इस भूपति की जोड़ और नृपति कोई नही आवै।—सू प्र

क्रि०प्र०—खाणौ।

१३ चितवन, दृष्टि।

उ०—साईं टेढ़ी अखियां, वैरी खलक तमाम। टुकियक झोलो महर री, लाखा करै सलाम।—अज्ञात

१४ (रोग विशेष का) आक्रमण, झपट। उ०—१ माताजी पूजो सीतळा, ठडो झोलो देसी माता सीतळा।—लो गी.

उ०—२ म्हारा सुमरोजी ऊवा राज री अरजा मे, वारा कवरा नै ठडो झोलो दीजै, माता सीतळा।—लो गी.

उ०—३ पछै उठा थी छाडियो। को दिन सीयले जाय कवळे रह्यो। सान री झोलो हुवो।—नैणसी

उ०—४ किसतूरी खवास नै पना सू मिळायो, जठै देखताई तडाछ खाय इसी पडियो जाणै सीतग री झोलो आयो।—पना वीरमदे री वात

क्रि०प्र०—आणौ देणौ, लागणौ, होणौ।

१५ उलझन, फदा। उ०—जीवडा नाख दिया इण झोलै, ठहर सकै नहि ठाई। सतगुरु बिन गोता बहु खावै, भरम न भागै भाई।
—स्री हरिरामजी महाराज

क्रि०प्र०—नाखणौ।

१६ प्रभाव, असर। उ०—साधू झोलो सबद रो, नर नै झोलो नार। दीपक झोलो पवन रो, किस विध उतरै पार।—सतवाणी

क्रि०प्र०—लागणौ।

झोळया—देखो 'झोळिया' (रू भे)

झोवरी—स०स्त्री०—एक प्रकार का आभूषण विशेष।

झोवौ—स०पु०—एक प्रकार का मिट्टी का वर्तन। उ०—घट घडकलिया माट, मगळिया मटकी हाडा। झोवा कुज कुडाळ, कढावणी ढकण खाडा।—दसदेव

झौंक—स०स्त्री०—१ ध्वनि, आवाज। उ०—झरा झगरा वजि पावक झौंक। सरा वजि तीड परा जिम सौक।—सू प्र.

२ देखो 'झोक' (रू भे)

झौंप—स०स्त्री०—१ शमी वृक्ष की कोमल टहनियो से बना 'भुरट' की वालो को झाडने का उपकरण।

झौक—देखो 'झोक' (रू.भे) उ०—१ घन घन हरि चाप निखग घरी, घर सील सघर क्रत ऊच करी। करतार करा जग झौक जपै, जय क्रती जिकै खळ पाप खपै।—र ज प्र

उ०—२ गरुडध्वज रिम माण-गाळा, वैर वाहर सीत वाळा। करा झौक अनूप काळा, रूप भूपा राम।—र.ज प्र.

उ०—३ नोहरयी झौक झागूड झल्लेस। कडे छट चसळकते नेस।
—सू प्र

झौका—देखो 'झोका' (रू भे) उ०—थूरण रिण दैता थोका, लाज रखण सत लोका। राम रिण दसमाथ रोका, करा झौका करा झोका।—र ज प्र.

झौड़—स०पु०—१ प्रपच। उ०—भोळा प्राणी राम भज, तू तज झौड तमाम। दीहा चेल्हे देख रे, कैसो हूता काम।—र ज प्र.

२ टटा, कलह। उ०—१ दाम दाम विसार निकाम झौड हूवै उदाम। नरा जाम जाम मे उचार राम राम।—र.ज प्र

यौ०—झौड-झपाड, झौड-झपोड।

झौड-झपाड़, झौड-झपोड़—स०पु०यौ०—टटा-फिसाद, झगडा-टटा।

झौडो—स०पु०—विवरण, हाल, वृत्तान्त।

झौर—देखो 'झौरी' (रू.भे)

झौरापो, झौरावो—देखो 'झुरापो' (रू भे)

झौरी—स०पु०—खुजलाहट, खुजली।

क्रि०प्र०—हालणौ, होणौ।

रू०भे०—झौरी।

मह०—झोर, झौर।

झ्यकारतन—स०पु०—स्त्रियो के पैरो मे पहनने का आभूषण (अ मा.)

झ्याझ—देखो 'जा'च' (रू भे.)

झग—स०पु०—एक प्रकार का वाद्य विशेष। उ०—दो दो दो दप मप द्राग्डिदिक दमकै म्रिदग। झण रण रण कें कें झाझरि झमकित झग।—ध.व ग्र

ट

ट—संस्कृत, राजस्थानी व देवनागरी वर्णमाला मे ग्यारहवा व्यञ्जन जो टवर्ग का प्रथम वर्ण है। यह मूर्धन्य-स्पर्श व्यञ्जन है। इसके उच्चारण मे जिह्वा का अग्र भाग किञ्चित् मुड कर कठोर तालु को स्पर्श करता है। यह अघोष-अल्पप्राण है।

ट-स०पु० [स० टम्] १ अकुश २ पुत्र।
स०स्त्री०—३ आँख ४ पृथ्वी ५ भौंहे (एका)
वि०—गभीर २ वीर (एका.)

टक-स०पु० [स० टकि-बधने+घञ] १ भोजन का समय।
उ०—परजापतिया न परजा नैं पाळै। टुकडै टुकडै नै टीवै टक टाळै।—ऊ का.
मुहा०—टक टाळणी—जैसा-तैसा भोजन कर के समय गुजारना।
यौ०—टक-टाळी।
२ तलवार का अग्र भाग (जैन)
[स० टक] ३ सिक्का (जैन) ४ एक ओर से टूटा हुआ पर्वत (जैन) ५ औषधिया तोलने के लिए काम आने वाला एक तोल (अमरत) ६ एक तोल जो चार माशे का होता है परन्तु कई इसको केवल तीन माशे का ही मानते हैं।
७ पत्थर घडने की टाकी, छेनी ८ सम्पूर्ण जाति का एक राग। (सगीत)
९ तलवार। उ०—१ उस विरयो मुलतान खा मूछा कर घल्ले। अंचि कवादे टक तोलि जव्वू कहि बुल्ले।—ला रा
उ०—२ सकन हिय रख समण री, वेध बजा है वक। पक भीरु पग भव पुणे, टक-टक तोल्या टक।—रेवतसिंह भाटी
१० सुहागा. ११ म्यान १२ टकसाल मे सिक्के बनाने के लिए धातु को तोलने का नियत मान. १३ धनुष के कोडी की शक्ति को आकने के लिए प्रत्यचा पर लटकाया जाने वाला तोल।
वि०वि०—धनुष की शक्ति को आकने के लिए उसे लटका कर उसकी प्रत्यचा मे एक टक जो लगभग ४½ सेर वजन के बराबर का वजन होता था, बाध कर लटकाया जाता था। इस वजन से यदि धनुष की कोंडी मे खिचाव आ जाता था तो वह टकी कहलाता था। इसी प्रकार अधिकाधिक बल से चलाये जाने वाले धनुषो की कोडी मे विशेष शक्ति के प्रयोग से ही खिचाव हो सकता था। ऐसे धनुष अठारह टकी, इक्कीस एव तीस टकी आदि कहलाते थे अर्थात् इनकी कोडी के खिचाव के लिए १८ टक या २१ टक के वजन के बराबर शक्ति का प्रयोग करना पडता था। राजस्थानी मे ३६ टकी धनुषो का विवरण मिलता है।
रू०भे०—टकउ, टकी, टकौ।
यौ०—अठार-टक, अढार-टक, इक्कीस-टक, तीस-टक, छत्तीस-टक, टक-परीक्षा, टक-साळ।

टक-अठार, टक-अढार—देखो 'अढारटकी'। उ०—१ दुइ दुइ तरकुस पासि जुवाणा। दुइ दुइ टक-अठार कबाणा।—गु रू व.
उ०—२ कसीसत टक-अढार कबाण, परी अह रूप ध्रवं सिरपाण।
—सू प्र.

टकउ—देखो 'टक' (रू.भे)

टकण-स०स्त्री०—१ सुहागा. २ घोड़े की एक जाति विशेष (शा हो)
रू०भे०—टगण।

टकणौ—देखो 'टाकणौ'। उ०—दुसमण कू दाह साजण कै मन भाए। तिस वखत होसनायकू चाक चढाय टकणे बणवाए।—सू प्र

टकपरीक्षा—स०स्त्री०यौ०—७२ कलाओ मे से एक (व स)

टकणौ, टकवौ—देखो 'टगणौ, टगवौ' (रू.भे.)
उ०—खोळा टकियोडा गळ मे खूगाळी। जळ जुत ठोडी पर टिमकी जघाळी।—ऊ का

टकर—देखो 'टकार' (रू भे)
उ०—सरण असरण व्रदण साभण। टकर वण किय वजण दिन तिण।—सू प्र.

टकसाळ—स०स्त्री०यौ०—१ वेह स्थान जहा धनुष-विद्या सीखी जाती हो (व स.) २ देखो 'टकसाळ' (रू भे.)
उ०—जेसध नाणा खटिया, टक-साळ बुहारी। खीची दस दिन वास गये, खरळा पिण चारी।—द.दा

टकसाळी—देखो 'टकसाळी' (रू भे.) उ०—सवद जिहाज वैण टकसाळी, तरि तरि सुकवि गया तिण ताळी। महण ससार तरणि वनमाळी, जोडिस हुई तुवाडा जाळी।—रुकमणी हरण

टकाई—स०स्त्री०—१ टाकने की क्रिया २ टाकने का पारिश्रमिक।

टकाअळि, टकाउळि—देखो 'टकावळी' (रू भे)
उ०—रतनजडित कचुक कस, खचित कुच दोइ सार। एकाउळि मुगताउळि, टकाउळि गळि हार।—प्राचीन फागु सग्रह

टकाडिलौ—वि०—बहुमूल्य, कीमती। उ०—अरजन जू धन लियो सनाह। गली पैहरई टकाडिल्ल हार।—वी दे.

टकार—स०स्त्री०—१ धनुष की प्रत्यचा की ध्वनि।
उ०—१ वार हजार बगाळ, विलदं तिण वार वकारे। करि कबाण टकार, घाव सामा पग धारे।—सू प्र
उ०—२ खुले हास नारदा तमासा भाण रथा खचे, तडच्छे सतारा दळा हाकले तुरग। टकारा धानखा बजे सत्रा घडा करे टूका, दूजे 'मान' लीधो सका गैजूह दुरग।
—राव सवाई केसवदास परमार री गीत
२ कसे हुए तार आदि पर उँगली मारने से उत्पन्न टन-टन शब्द।
रू०भे०—टकारय, टकारव।

टकारणो, टकारवौ–क्रि०स०—१ गिनना २ मानना, समझना. ३ आघात से ध्वनि करना।

टकारव—देखो 'टंकार' (रू भे) उ०—गोडीरव गैमरा, जह वहता तळ जोडा। घटारव पक्खरा हुय हीसारव घोडा। टोवारव टिगटिगै, गोम गैणारव गज्जै। गुजारव भेरिया, घनक टकारव वज्जै।
—गु रू व.

टकारो–सं०पु०—देखो 'टंकार' (रू भे.)
उ०—१ चाढ्यौ धनुम कियो टकारो। सब्द सुण्यो स्रीकृस्ण मुरारो।
जयवाणी

टकावळ, टकावळि, टकावळी–वि० [स० टंका+आवळी] बहुमूल्य, वेश कीमती। उ०—१ दत जिसा दाडम-कुळी, सीस फूल सिणगार। काने कुडळ झळहळइ, कठ टकावळ हार।—ढो मा
उ०—२ दीसए रवि जिस्यु राखडी, राखडी सोहए सार। कठि ठवइ टकावळि, एकावळि वळी हार।—प्राचीन फागु सग्रह
रू०भे०—टकाउळि, टकाउळी।

टकारियोडौ–भू०का०कृ०—१ गिना हुआ. २ माना हुआ, समझा हुआ ३ आघात से ध्वनि किया हुआ।
(स्त्री० टकारियोडी)

टकियोडौ—देखो 'टगियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री० टकियोडी)

टकी–स०स्त्री०—१ पानी भरने का लोहे का बडा वर्तन. २ पानी भरने का वह कुड जो दीवार उठा कर बनाया जाता है. ३ धनुष।
यौ०—अट्ठार-टकी, इक्कीस-टकी, तीस-टकी, छत्तीस-टकी।

टकरणौ—देखो 'टचणौ' (रू भे) (अमरत)

टकेत–वि०—खगधारी, कृपाणधारी। उ०—टका छीन ले टचरा, टाट पींज टकेत। कीडचा सचे जेम कण, लख भक्ष तातर लेत।
—रेवतसिंह भाटी

टकोर–स०स्त्री०—१ ध्वनि, आवाज। उ०—घोडा बाधै घूघरा, तोडा दए टकोर। नाळा लए कळाइया, लडवा कज लकोर।—पा प्र
२ देखो 'टकोर' (मह, रू भे)

टकोरियौ—देखो 'टकोरौ' (अल्पा, रू भे)

टकोरी–म०स्त्री०—देखो 'टकोरौ' (अल्पा, रू भे)

टकोरौ–स०पु०—१ देव मदिरो मे पूजा के समय बजाया जाने वाला मिश्रित धातुओ से बना हुआ एक वाद्य विशेष।
वि०वि०—यह दो प्रकार का होता है। एक चपटा व गोल आकार का होता है जिसे पूजा के वक्त हाथ मे लटका कर आग लकडी के हथौडे से बजाया जाता है। दूसरा मदिर की छत मे लटका रहता है जिसे दर्शनार्थी लोगो द्वारा आते-जाते समय तथा पूजा के समय बजाया जाता है २ पशुओ के समूह मे (विशेष कर गायो के) किसी एक मुख्य पशु के गले मे लटकाया जाने वाला घटा। इसकी बनावट देव मदिरो की छत मे लटकाये जाने वाले घटे से मिलती-जुलती होती है। ३ हाथी की झूल के बाधा जाने वाला घटा। यह हाथी की झूल के दोनो ओर झूल के पट्टे से लटकाये जाते हैं।
रू०भे०—टकोरो, टिकोरौ, टोकरौ।
अल्पा०—टकोरियौ, टकोरी, टिकोरियौ, टिकोरी, टोकरियौ, टोकरी
मह०—टकोर, टकोर, टिकोर, टोकर।

टकौ—१ देखो 'टक' (रू भे)
उ०—ब्राह्मण नइ नळइ आपीउ सोवन टका लाख। आगता स्वागति घणी, मीठा बोलु द्राग।—नळ-दवदती रास
२ देखो 'टको' (रू भे प्राचीन) (उ र.)

टग—देखो 'टाग' (मह, रू भे)

टगडी—देखो 'टाग' (अल्पा, रू भे)

टगण—देखो 'टकण' (रू भे)

टगणौ, टगवौ–क्रि०अ०—टगना, लटकना।
टगणहार, हारौ (हारी), टगणियौ—वि०।
टगिओडौ, टगियोडौ, टग्योडौ—भू०का०कृ०।
टगीजणौ, टगीजवौ—भाव वा०।
टकणौ, टकवौ—रू०भे०।

टग-पाणी–स०पु० [स० टङ्कपाणि] ४६ क्षेत्रपालो मे से २७ वा क्षेत्रपाल

टगलौ–वि०—जो पैरो से चलने मे असमर्थ हो।

टगियोडौ–भू०का०कृ०—टगा हुआ लटका हुआ।
(स्त्री० टगियोडी)

टच–वि०—१ तैयार, प्रस्तुत।
क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।
२ कृपण, कजूस। उ०—टका छीणाले टच रा, टाट पीज टकेत। कीडचा सचै जेम कण, लख भक्ष तीतर लेत।—रेवतसिंह भाटी

टचणौ, टचवौ–क्रि०अ०—'टाचणौ' क्रिया का अकर्मक रूप।

टचर–स०पु०—शीश, शिर (अल्पा)
उ०—मालम नही, आ कांईं रीत चाल पडी? एक तो घर रौ जीव जावै, बीजौ खरचै-पू टचर पाखती मे कूटीजै।—वरसगाठ

टट, टटी–स०स्त्री०—घुटने से नीचे का भाग।
मुहा०—टटिया भिडणी, टटिया लडणी— कमजोरी के कारण चलते समय पैरो का आपस मे टकराना।

टटेर–स०पु०—मरे पशु का अस्थि-पजर।

टटोळणौ, टटोळवौ–क्रि०स०—ढूढना, खोजना।
उ०—१ फिरडा कर रिमझोळ, डोळ डाळ्या रग घोळै। ऊंदरिया री ओळ, कोळ जिल जडा टटोळै।—दसदेव
उ०—२ सवद कहत रसना अटकत, नटत घटत नहिं घाट। लटकि लटकि लुटि लुटि उठत, तकत टटोळत खाट।—ह पु.वा.
२ थाह लेना ३ परखना, आजमाना।
टटोळणहार, हारौ (हारी), टटोळणियौ—वि०।
टटोळणौ, टटोळवौ—स०रू०।
टटोळावणौ, टटोळावबौ—प्रे०रू०।

टटोळिओडो, टटोळियोडो, टटोळचोडो—भू०का०कृ० ।
टटोळीजणी, टटोळीजवी—कर्म वा० ।
टटोळियोडो–भू०का०कृ०—१ टटोला हुआ २ थाह लिया हुआ ३ परखा हुआ, आजमाया हुआ ।
(स्त्री० टटोळियोडी)
टटो–स०पु०—उपद्रव, कलह, झगडा, तकरार, लड़ाई ।
क्रि०प्र०—करणी ।
मुहा०—टटो खडो करणो—झगडा उत्पन्न करना ।
यौ०—झगडो-टटो ।
टडीरो, टडेरो–स०पु०—घरेलू सामान (शेखावाटी)
टपणो, टपवो–क्रि०अ०—छलांग भरना, कूदना ।
टपाघोडी–स०स्त्री०—बच्चो का खेल विशेष (शेखावाटी)
टपाडणो, टपाडवो—देखो 'टपाणो, टपावो' (रू भे)
टपाडियोडो—देखो 'टपायोडो' (रू भे)
(स्त्री० टपाडियोडी)
टपाणो, टपावो–क्रि०स० ('टपणो' क्रिया का प्रे०रू०) छलांग भराना, कुदाना ।
टपाडणो, टपाडवो, टपावणो, टपाववो—रू०भे० ।
टपायोडो–भू०का०कृ०—छलांग भराया हुआ, कुदाया हुआ ।
(स्त्री० टपायोडी)
टपावणो, टपाववो—देखो 'टपाणो, टपावो' (रू भे)
उ०—सेसनाग फण कुण कपावइ, सीस मू कवण अस्व टपावइ ।
—विराटपर्व
टपावियोडो—देखो 'टपायोडो' (रू.भे)
(स्त्री० टपावियोडी)
टपियोडो–भू०का०कृ०—छलांग भरा हुआ, कूदा हुआ ।
(स्त्री० टपियोडी)
टमको–स०पु०—१ ध्वनि २ शब्द, आवाज ३ नगाड़ा. ४ चमक, हलका प्रकाश ।
ट–स०पु०—१ योद्धा २ देवदार ३ पीपल ४ चादी (एका.)
टओवो–स०पु०—पेंदा, तल ? उ०—तठै कूभो तिसियो आयो नै कह्यो—डोकरी, दूध पाणी पाय । तरै गूजरी कह्यो—कूभा बेटा ! माहे चालि, टओवा को दूध छै ।—राव रिणमल री वात
टक–स०स्त्री०—१ ताक लगा कर बिना पलक बद किये निरतर देखने की क्रिया या भाव ।
क्रि०प्र०—लगणी, लागणी ।
मुहा०—टक टक देखणो—निरतर देखना २ टक लगाणी—प्रतीक्षा करना, ध्यान से किसी वस्तु को देखते रहना ।
रू०भे०—टुक ।
२ तक, पर्यन्त । उ०—सीस जकण री मोभियो, ताळ र नेहारा । अलका सिर सू ऊतरी, टक एडी तारा ।—दरजी मयाराम री वात
३ स्थिति । उ०—दूजा कुछ मागै नही, हमको दे दीदार । तू है तब-लग एक टक, दादू के दिलदार ।—दादू वाणी
४ देखो 'टक' । उ०—स्वामी जी पूछयो थारा मुनि आहार करै कै नही, करै जब त्या कहै एक टक करै ।—भि द्र.
५ क्षण, पलक ।
यौ०—टकअक, टकेक ।
६ देखो 'ठक' (रू भे)
टकअेक, टकेक–क्रि०वि०—पलक भर, अनिमिष दृष्टि ।
उ०—जव आमण टकएक आरोगै मीठ समर्थ । काठी करतो बीज गाज मिस मेघ पयपै ।—मेघ.
टकटकणी, टकटकवो, टकटकाणो, टकटकावो–क्रि०स० (अनु०) १ स्थिर दृष्टि से देखना, एकटक ताकना २ टक-टक शब्द उत्पन्न करना ।
रू०भे०—टकटकणी, टकटपकणी ।
टकटकी–स०स्त्री० (अनु०) ऐसी स्थिर दृष्टि जिसमे बहुत देर तक पलकें नही गिरे ।
क्रि०प्र०—लगणी, लगाणी ।
रू०भे०—टकटपकी, टिकटिकी ।
टकटपकणी, टकटपकवो—देखो 'टकटकणी, टकटकवो' (रू भ)
टकटपकी—देखो 'टकटकी' (रू भे)
टकटपको–वि०—चकित, स्तभित ।
टकणो, टकवो—देखो 'टिकणो, टिकवो' (रू भे.)
उ०—अर जे बळात्कार सू पुत्री रो पाणिग्रहण वर्णे तो विक्रम रा वस रो रजपूतपणो न टकियो ।—व भा
टकतत्री–स०स्त्री० [स०] एक प्रकार का प्राचीन तार वाद्य जो सितार के ढग का होता था ।
टकर—देखो 'टक्कर' (रू भे) उ०—टकर दियै भड़ त्या 'पता', फिकर न जायै फेर । फिकर ऊचो नह कर सकै, हुव तो धक्के हेर ।
—जैतदान बारहठ
टकरणो, टकरवो–क्रि०अ०—टकरा जाना ।
टकराणो, टकरावो–क्रि०अ०—१ वेग से भिडना, धक्का या ठोकर लेना, टकराना २ कार्य सिद्धि के हेतु मारा-मारा फिरना ।
मुहा०—माथो टकराणो—किसी के पैरो पर सिर लगा कर अनुनय-विनय करना । किसी कार्य-सिद्धि के हेतु घोर परिश्रम करना अथवा प्रयत्न करना, परेशान होना ।
क्रि०स०—३ मिलान करना, जाच करना ।
टकराणहार, हारो (हारी), टकराणियो—वि० ।
टकरवाडणो, टकरवाडवो, टकरवाणो, टकरवावो, टकरावणो, टकरावयो—प्रे०रू० ।
टकरायोडो—भू०का०कृ० ।
टकराईजणो, टकराईजवो—कर्म वा० ।
टकरीजणो, टकरीजवो—भाव वा० ।

टकराडणो, टकराडबौ, टकरावणो, टकरावबौ—रू०भे० ।
टकरायोड़ो–भू०का०कृ०—१ वेग से भिडा हुआ, धक्का या ठोकर खाया हुआ, टकराया हुआ. २ कार्य सिद्धि के हेतु मारा-मारा फिरा हुआ ३ मिलान किया हुआ, जाच किया हुआ ।
(स्त्री० टकरायोडी)
टकरावणौ, टकरावबौ—देखो 'टकराणौ, टकरावौ' (रू.भे)
टकराविायोडो–भू०का०कृ०—देखो 'टकरायोडो' (रू.भे)
(स्त्री० टकरावियोडी)
टर्करियोडो–भू०का०कृ०—टकरा गया हुआ ।
(स्त्री० टकरियोडी)
टकसाळ–स०स्त्री०—१ वह स्थान जहा सिक्के बनाये या ढाले जाते है ।
मुहा०—१ टकसाळ चडणो–प्रवीण होना, कुशल होना, निर्लज्ज होना, नीच होना, बदमाश होना, सिक्के या धातु खड को आजमाना, परखना २ टकसाळ री खोटो–जन्म से ही नीच, बुरा. ३ टकसाळ रो पक्को–दक्ष, प्रवीण, होशियार ४ टापा विचै टकसाळ होणी—कुलटा का पैसे के लिए व्यभिचार करना ।
रू०भे०—टकसाळ ।
टकसाळी, टकसाळीक–वि०—१ जो टकसाल मे बना हो, खरा, अच्छा। २ सर्व सम्मत, प्रामाणिक, जाच किया हुआ ।
मुहा०—१ टकसाळी वात करणी—सही बात करना जो सबको मान्य हो, जची तुली बात करना २ टकसाळी बोली–दोष रहित भाषा, व्यावहारिक भाषा, शिष्ट भाषा, सर्व सम्मत भाषा ३ पठित वैरागी (साधु)। उ०—पूरव मे पढै वैरागी टकसाळी कहावै, अपढै अडवगी कहावै ।—बा दा ख्यात
स०पु०—टकसाल का कर्मचारी, अधिकारी अथवा अध्यक्ष ।
रू०भे०—टकसाळी ।
टकाणी–स०स्त्री०—गाडी की दोनो बाहुओ की ओर निकला हुआ गुटका जो चक्र के ऊपर रहने वाले उटो को रोकता है ।
रू०भे०—टावाणी ।
टकाणौ, टकाबौ—देखो 'टिकाणौ, टिकावौ' (रू भे.)
टकायोडो—देखो 'टिकायोडो' (रू भे)
(स्त्री० टकायोडी)
टकार–स०पु०—'ट' अक्षर ।
टकावळ—देखो 'टकावळ' (रू भे.)
उ०—हार टकावळ हीडळै, उण मोल अपारा । हीया सनेहा हेतका, अमीयाण ठैवारा ।—दरजी मयाराम री वात
टकियाई, टकियारी–स०स्त्री०—वह स्त्री जो टके-टके के लिए व्यभिचार कराती हो, टकहाई ।
टकियारो–स०पु०—अत्यधिक लालची, नीच, धन-लोलुप, शूद्र ।
टकियोडो—देखो 'टिकियोडो' (रू भे)
टकोर–स०स्त्री०—१ टकोरे पर लगने वाली डके की चोट या इससे उत्पन्न ध्वनि २ धनुष की प्रत्यचा खीच कर छोडने से उत्पन्न शब्द ।
टकोरो—देखो 'टकोरौ' (रू भे.)
उ०—हुकारव कर नाळ टकोरा लाग चपेटा, रुड अ वाट ओप्राज लियै गजराज लपेटा ।—साहबौ सुरताणियौ
टको–स०पु०—१ दो पैसो के बराबर का तावे का बना एक सिक्का, अथवा, दो पैसे ।
मुहा०—१ टका वाळो—रुपये पैसे वाला, धनी २ टका करणा—धन प्राप्त करना, धन कमाना, किसी वस्तु को बेच कर रुपये प्राप्त कर लेना, टैक्स वसूल करना ३ टका खरचणा धन खर्च करना, रुपया-पैसा व्यय करना. ४ टका घडणा—धनोपार्जन करना. ५ टका टका रा पाजी—किंचित स्वार्थ के लिए तुच्छ कार्य करने वाले. ६ टका होणा—धनी, रुपये-पैसे वाला ७ टकै जेडो मूडो करणो—खिसिया जाना, लज्जित होना ८ टकै पावडा भरणा—अत्यधिक लालची होना. ९ टकै टकै री नेत (न्यूत) होणी—मेल-जोल नही रहना १० टकै री ईजत—अप्रतिष्ठित, कम इज्जत, मान-प्रतिष्ठा रहित ११ टकै री जबान—जिसकी बात का कोई विश्वास न हो १२ टकै रो करणो—तुच्छ बना देना, नगण्य कर देना १३ टकै रो होणो—तुच्छ हो जाना, नगण्य बन जाना. १४ टको नी होणो—निर्धन होना १५ टको मा-बाप—सब कुछ पैसा ही, पैसे को महत्व. १६ टको हूंसै, टको करै—सब रुपये की माया ।
कहा०—टकै आळी री झूझणियो बाजसी—पैसे वाली का बच्चा ही खिलौने से खेलेगा, पैसे वाले का कार्य ही सफल होता है । २ टकै बींद, मोॅर जानी—दूल्हे का मूल्य टके के समान किन्तु बराती का मोहर के समान । शादियो के समय जब अधिक बरातें निकलती हैं तो बरातियो की कमी पडने पर कहा जाता है अर्थात् समय आने पर नगण्य वस्तु गण्य से अधिक महत्वपूर्ण बन जाती है ३ टकै री हाडी फूटी, गडक री जात पिछाणी—टके की हाडी तो टूट गई किन्तु कुत्ते की पहिचान हो गई। एक बार धोखा खाने पर भविष्य मे सावधान हो जाना ४ टकै रो नेतियार नै थाम हेठै झाडै जाऊ—बहुत साधारण आदमी और पवित्र स्थान पर शौच जाना चाहे अर्थात् बहुत साधारण व्यक्ति का महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करने की अनधिकार चेष्टा के प्रति व्यग्योक्ति ५ टको दाई लेगी नै कूडो फोडगी—जन्म के वक्त पैसे तो दाई ले गई और कूडा फोड गई, गुणहीन व्यक्ति के लिए ६ टको लाग्यो न पातडो, घर मे भू दडकदे आ पडी—दुल्हन वाले धनवान होने से दूल्हे के पिता को बिना कुछ व्यय किये ही वधू मिल गई अर्थात् दूसरो के बल से कार्य बना लेना ७ दमडी री डोकरी नै टको सिर मुडाई रो—पैसे के मूल्य की वृद्धा और शिर मुडाई के दो पैसे अर्थात् तुच्छ वस्तु पर अधिक व्यय करना. ८ पइसै री भाजी नै टकै रो वघार—एक पैसे की सब्जी मे दो पैसे का वघार अर्थात् तुच्छ वस्तु पर अधिक खर्च ।

मि०—'दमड़ी री डोकरी नै टको सिर मुडाई रो' ।

६ बींद मरो बींदणी मरो बामण रो टको खरो—शादी करवाने के पश्चात् भले ही दूल्हा या दुलहिन मर जाओ किन्तु ब्राह्मण ने तो अपने पैसे प्राप्त कर ही लिये अर्थात् भविष्य में कार्य बिगड़ जाने की परवाह नहीं करते हुए वर्तमान में अपनी स्वार्थ-सिद्धि करने की चेष्टा।

यौ०—पईसो-टको ।

२ दो बालाशाही पैसों के बराबर की एक तोल ।

मुहा०—टकै भर—टके के बराबर की तोल जो दो बालाशाही पैसों के बराबर होती है ।

३ कर, टैक्स । उ०—१ तद रावजी कूच कियो सो छोटी सी मजल करै, कठै ही मुकाम करता जावै, सारै देस रै सिर टका करता जावै ।—नापै सांखलै री वारता

उ०—२ सो परगना री ही टको मागै, चाकरी जे करावै सो इण भांत तो टूटता जावा छा ।—गौड़ गोपाळदास री वारता

उ०—३ लोक रै माथै टको कियो दिन पन्द्रह नखेरै में रहियो ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

रू०भे०—टंको ।

टक्कदेस-स०पु० [सं० टक्कदेश] एक प्राचीन प्रदेश का नाम जो चिनाव और व्यास के बीच में था ।

टक्कर-स०स्त्री०—१ दो वस्तुओं का वेग के साथ आपस में भिड़ जाने का आघात । किसी वस्तु से वेग से आती हुई दूसरी वस्तु का भिड़ जाने का धक्का, ठोकर । उ०—आढा दळ टक्कर हूंत उडाय । जडा दळ बीच कियो जुध जाय ।—सू प्र

क्रि०प्र०—खाणी, देणी, लागणी, लेणी ।

मुहा०—१ टक्कर खाणी—इधर-उधर भटकते फिरना, लोहा लेना २ टक्कर देणी—मुकाबिला करना, समानता दिखाना ३ टक्कर रो—बराबरी का, समान ।

२ घाटा, नुकसान, धक्का, हानि ।

मुहा०—१ टक्कर झेलणी—घाटा सहन करना, नुकसान उठाना २ टक्कर लागणी—नुकसान पहुँचना, घाटा आना ।

रू०भे०—टकर, टाकर ।

टक्कूणी, टखणी-स०पु०—एडी के ऊपर उठी हुई हड्डी की ग्रंथि, (गाठ), पादग्रंथि, पैर का गट्टा ।

पर्या०—गिरियो, गुलफ, घुट, टक्कूणी ।

रू०भे०—टकूरणो ।

टग-स०स्त्री०—वह टुकड़ा या खंड जो किसी वस्तु को ऊँचा रखने के लिए या रोकने के लिए या सहारे के निमित्त लगाया जाता हो ।

क्रि०प्र०—देणी, लगाणी ।

मुहा०—१ टग करणी—खिल्ली उड़ना, व्यंग्य कसना. २ टग लगाणी—सहारा देना (विशेष तौर से लड़ाने-भिड़ाने के कार्यों में)।

रू०भे०—टग्ग।

टगटग-क्रि०वि०—मन्द गति से, धीमी चाल से ।

उ०—टगटग मैं'ला जी क चनणा ऊतरी जी, कोई गई-गई रामूडा री हाट, ढाक्यो तो फळसो खोल दे हो जी ।—लो गी.

टगटगणौ, टगटगबौ-क्रि०स०—स्थिर दृष्टि से देखना, ताकना, टकटकाना । उ०—घर सू उमगै दाव घड, अध मगै अविचार । पग लगै फाटक पछै, निज टगटगै निहार ।—जैतदान बारहठ

रू०भे०—टगटगाणौ, टगटगावौ ।

टगटगाट, टगटगाटो-स०पु०—(गिलहरी की) ध्वनि विशेष ।

कहा०—टीलो रा टगटगाटा कुण सुणै ।

टगटगाणौ, टगटगावौ—देखो 'टगटगणौ, टगटगबौ' (रू.भे)

टगटगी, टगटग्गी-स०स्त्री० (अनु०) स्थिर दृष्टि जिसमे बहुत देर तक पलकें न गिरें, आश्चर्यपूर्वक देखने का भाव, अनिमेष दृष्टि, टकटकी ।

उ०—१ रिमा पाड भगी तगी बागा रमै, दुफल माफल लगी चूप दावा । धज विलद देख सूमा चढ़ी धगधगी, ठगठगी टगटगी लगी ठावा ।—बखतो खिडियो

उ०—२ ऊभा दास खिजमती अग्गी । ताव विताव लखै टगटग्गी ।

—रा रू

क्रि०प्र०—बधणी, बांधणी, लागणी ।

टगण-स०पु०—छंद शास्त्र में छः मात्राओं का मात्रिक गण । इसके कुल १३ भेद होते हैं ।

टगमग-स०स्त्री०—विशेष प्रकार से देखने की क्रिया या भाव ।

उ०—एतला देख अचिरज हुवै, रोमचै सुर नर सवै । सुप्रसाद कीध जैसिंघ ते, टगमग चाहै चक्खवै ।—नैणसी

टगै-स०पु०—घोडे या घोडी की अपनी चाल से चलते-चलते अचानक रुक जाने की क्रिया ।

क्रि०प्र०—आणी, होणी ।

टगो-स०पु०—विशेष अवसर, समय ।

क्रि०प्र०—आणी, होणी ।

टग्ग—देखो 'टग' (रू भे) उ०—भाटा, तू सभागियो, पीछोला री टग्ग । गुललजा पाणी भरै, ऊपर दे-दे पग्ग ।—महादान महडू

टचटच-स०स्त्री०—बड़े बूढ़ों के सम्मुख स्त्रियों द्वारा संकेत स्वरूप किया जाने वाला शब्द, चुपके से इशारा करने का शब्द ।

टचरको-स०पु०—कहा-सुनी, झगड़ा, टंटा, लड़ाई ।

टच्च-क्रि०वि०—झट, तुरत, शीघ्र । उ०—खीरा मेली खीचड़ी नै टीलो आयो टच्च ।

देखो 'खीचड़ी' (कहा० २)

टटपूंजियौ-वि०यौ०—कम पूंजी वाला, तुच्छ, निकम्मा, साधारण ।

उ०—'काई कैवै है घरा-रा गूदड़ा ? माईत मूरख हा काई ? इया टटपूंजिया-मे-ईज अक्कल घणी ?'—वरसगांठ

टटियो—देखो 'टट्टू' (अल्पा., रू भे)

टटोळणौ, टटोळबौ—देखो 'टंटोळणौ, टंटोळबौ' (रू.भे)

टटोळियोडो—देखो 'टटोळियोडो' (रू भे)
(स्त्री० टटोळियोडी)
टट्टी-स०स्त्री०—१ पाखाना, शौच ।
क्रि०प्र०—जाणो ।
मुहा०—टट्टी समझणो—तुच्छ समझना ।
२ पाखाना जाने का स्थान ३ देखो 'टाटी' (रू भे)
उ०—लोभी लपक गोळ कप लेवण, चक्कर ग्रस्व चलावै । वाटर जप उलघ वावरो, केइक टट्टी कुदावै ।—ऊ का.
टट्टू-स०पु०—१ छोटे कद का घोडा जो बोझा ढोने मे मजबूत होता है २ शिश्न ।
टट्टो-स०पु०—'ट' ग्रक्षर ।
ग्रल्पा०—टटियो ।
टडियो—देखो 'टड्डो' (ग्रल्पा, रू भे)
टडो—देखो 'टड्डो' (रू भे.)
टडुणो, टडुबो—देखो 'ताडूकणो, ताडूकबो' (रू भे)
टड्डियोडो—देखो 'ताडूकियोडो' (रू भे)
टड्डो-स०पु०—सोने या काच का बना हुग्रा एक ग्राभूपण जिसे स्त्रिया भुजा पर धारण करती हैं ।
रू०भे०—टडो
ग्रल्पा०—टडियो ।
टणकार—देखो 'टणकार' (रू भे.)
टणकारो-स०पु०—ध्वनि विशेप, ग्रावाज ।
टण-स०स्त्री०—१ घण्टा बजने की ध्वनि या शब्द ।
मुहा०—टणटण गोपाळ । देखो—'ठणठण गोपाळ' ।
२ देखो 'टणो' (मह, रू भे.)
टणकचद, टणकचदजी, टणकसींग, टणकसींघ-वि०—बलवान, जबरदस्त, मान-मर्यादा वाला ।
टणका-री-टग-वि०यौ०—बलवानो का सहारा, शक्तिशाली, सामर्थ्यवान ।
मि०—टग ।
टणकाई-स०स्त्री०—बल, शक्ति, सामर्थ्य ।
क्रि०प्र०—करणी, देखणी, राखणी ।
टणकार-स०स्त्री०—धातु पर ग्राघात पहुँचने से उत्पन्न ध्वनि, ग्रावाज ।
उ०—ग्रठगा उडै खख रा गोट, टोकरा टणमणती टणकार । खुडकै गाया हुदा लाठ, सुणाजै बसी री भणकार ।—साझ
रू०भे०—टणकार ।
टणकेल, टणकैल—देखो 'टणको' (मह, रू भे)
टणको-स०पु० (बहु व० टणका) स्त्रियो के पैरों मे धारण करने का चादी का बना एक ग्राभूपण ।
वि०पु०—(स्त्री० टणकी) १ जबरदस्त, बलवान, शक्तिशाली ।
उ०—१ ग्रमल गळियोडो है सो छैली बखत रो ले लो पछै जुद्ध करसा, जमी ग्रठै इज है कठै ई जावै नही, टणका होसी वै ग्रपणाय लेसी ।—वी स टी
उ०—२ रावजी कही सिंघु टणको छै तू धीरज करै जितरै म्हे ग्रावा ।
—नापै साखलै री वारता
२ खूब लम्बा-चोडा, ग्रधिक विस्तार का ।
उ०—टणका टणका तरु जरवै दूरि जावै । दुरब्बा गुरब्बा गुण गरवै दुर जावै ।—ऊ का
३ दीर्घ, महान्, विशाल । ज्यू —उदैपुर री जयसमद बडो टणको है ।
मह०—कणकेल, टणकैल ।
टणटणाणो, टणटणावो-क्रि०स०—किसी धातु खण्ड पर ग्राघात कर के टनटन की ध्वनि ग्रथवा शब्द उत्पन्न करना, टनटनाना ।
टणणक-स०स्त्री०—एक ध्वनि विशेप, धनुप की प्रत्यचा चढ़ाने से उत्पन्न ध्वनि ।
टणणकणो, टणणकवो-क्रि०ग्र०—घटो व नगाडो की ध्वनि होना, टनटन बजना । उ०—चणणकै भड चिहुर छीजि कातर छणणकै । टणणकै टामक ग्रमर फीला भणणकै ।—व भा
टणमण-स०स्त्री०—१ लटकने वाली छोटी घटी की ध्वनि, यह प्राय पशुग्रो के गले मे लटकाई जाती है । उ०—१ बाजै टणमण टोकरिया रै चापो चारै गोरी । पावण लायो पीच डागरा वाटा जोवै थारी ।—चेतमानखा
उ०—२ हूळ थळ बाखळ मे बळबळ थळ हेरै । टणमण टोकरिया बळधा गळ टेरै ।—ऊ का.
टणमणणो, टणमणवो-क्रि०ग्र०—टकोरे या घटे की ध्वनि होना ।
उ०—ग्रळगा उडै खख रा गोट, टोकरा टणमणतो टणकार । खुडकै गाया हुदा लाठ सुणाजै बसी री भणकार ।—साझ
टणियो—देखो 'टणो' (ग्रल्पा, रू भे)
टणो-स०पु०—स्त्री की योनि के दोनो किनारो के बीच उभरा हुग्रा मास का टुकडा ।
रू०भे०—टैणो ।
ग्रल्पा०—टणियो, टुणियो ।
मह०—टण ।
टप-स०स्त्री०—१ बूद के टपकने का शब्द । उ०—१ टपटप टपकै नैण दिरघडना हिवडो भर भर ग्रावै । म्हारा राजीडा री पल पल ग्रोळू ग्रावै ।—लो.गी.
उ०—२ चमचम चमकै बीजळी, टपटप बरसे मेह । घर भादू बिलखत तजी, भलो निभायो नेह ।—लो गी
मुहा०—टप देती री—झट से, फुर्ती से ।
२ पानी रखने का नाद के ग्राकार का खुला बर्तन ३ तागे के ऊपर का मोटे कपडे का बना हुग्रा ग्रोहार या सायवान जो ग्रावश्यकतानुसार चढ़ाया व गिराया जा सकता है ।
क्रि०प्र०—गिराणी, चढ़ाणी, चाढ़णी ।
४ छोटी झोपडी । उ०—तवू तो भीजै घरमी टप चूवै, भीजै सोळा सिणगार ग्रो ।—लो.गी

रू०भे०—टिप ।

टपक–स०स्त्री०—१ बूंद-बूंद टपकने या गिरने का भाव
२ शीघ्र, जल्दी ।
यौ०—टपक-टपक ।

टपकणौ, टपकबौ–क्रि०अ०—१ तरल पदार्थ का बूंद-बूंद गिरना ।
उ०—१ छपर पुराणो भवरजी पड गयो जी कोई टपकण लाग्या एजी ए जूण, अब घर आवो आसा थारी लग रही जी ।—लो गी
उ०—२ टपटप टपकै नैण दीरघडा, हिवडो भर-भर आवै । म्हारा राजीडा री पल-पल ओळू आवै ।—लो.गी
२ फल का पक कर अपने आप पेड से गिरना ।
मुहा०—टपकणौ, टपक पडणौ—अनायास आ जाना, अचानक उपस्थित हो जाना ।
३ किसी भाव का प्रतीत होना, आभास पाना, झलकना ।
टपकणहार, हारौ (हारी), टपकणियौ—वि० ।
टपकवाडणौ, टपकवाडबौ, टपकवाणौ, टपकवावौ, टपकवावणौ, टपकवावबौ—प्रे०रू० ।
टपकाडणौ, टपकाडबौ, टपकाणौ, टपकाबौ, टपकावणौ, टपकावबौ—क्रि०स० ।
टपकिओडौ, टपकियोडौ, टपक्योडौ—भू०का०कृ० ।

टपकीजणौ, टपकीजबौ—भाव वा० ।

टपकलौ—देखो 'टपकौ' (रू भे)

टपकाडणौ, टप डब —देखो 'टपकाणौ, टपकाबौ' (रू.भे)

टपकाडियोडौ—देखो 'टपकायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० टपकाडियोडी)

टपकाणौ, टपकाबौ–क्रि०स०—बूंद-बूंद गिराना ।
टपकाणहार, हारौ (हारी), टपकाणियौ—वि० ।
टपकवाडणौ, टपकवाडबौ, टपकवाणौ, टपकवावौ, टपकवावणौ, टपकवावबौ—प्रे०रू० ।
टपकायोडौ—भू०का०कृ० ।
टपकाईजणौ, टपकाईजबौ—कर्म वा० ।
टपकणौ, टपकबौ—अक०रू० ।
टपकाडणौ, टपकाडबौ, टपकावणौ, टपकावबौ—रू०भे० ।

टपकायोडौ–भू०का०कृ०—टपकाया हुआ, गिराया हुआ ।
(स्त्री० टपकायोडी)

टपकार–स०स्त्री०—किसी सुदर प्राणी या वस्तु पर पड कर उसे खराब कर देने वाला दृष्टि का कल्पित प्रभाव, नजर ।
क्रि०प्र०—लागणी, होणी ।
रू०भे०—टुकार ।

टपकावणौ, टपकावबौ—देखो 'टपकाणौ, टपकाबौ' (रू भे.)

टपकावियोडौ—देखो 'टपकायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० टपकावियोडी)

टपकियोडौ–भ०का०कृ०—टपका हुआ, गिरा हुआ ।
(स्त्री० टपकियोडी)

टपकौ–स०पु०—१ टपकने वाली बूद, छीटा । उ०—इणरै लोटै माही थी पाणी रा टपका पडता ।—भि द्र.
२ टपकी हुई वस्तु ।
रू०भे०—टपौ, टप्पौ, टबकू, टिपकौ, टिबकौ, टुबकौ, टोपौ ।

टपटप—देखो 'टिपटिप' (रू भे)

टपटपणौ, टपटपबौ—देखो 'टपकणौ, टपकबौ' (रू भे)
उ०—विरखा ! टपटपीआह, विण वादळ विछुटीआ, आखे आभ थयाह, नेह तुम्हारे साहिबा ।—ढो मा.

टपर—देखो 'टपरी' (मह , रू भे)

टपरियौ—देखो 'टपरी' (अल्पा , रू भे)

टपरी–स०स्त्री०—१ घास-फूस का बना झोंपडा । उ०—अै महल-माळिआ थारै, थारी बरोबरी म्हे करा स कोम्रो, टूटी टपरी म्हारै ।
—लो गी
२ छप्पर, छान ।
अल्पा०—टपरियौ, टपरौ ।
मह०—टपर, टप्पर ।

टपरौ–स०पु०—देखो 'टपरी' (अल्पा , (रू भे)

टपलौ–स०स्त्री०—१ छोटा खाट. २ सिर, टाट (अल्पा)

टपसियौ, टपसौ–स०पु०—छोटी झोपडी (अल्पा)

टपाक–क्रि०वि०—जल्दी, झट, शीघ्र ।
मुहा०—टपाक देती रौ—अचानक, अनायास ।

टपाटप–स०स्त्री०—१ निरतर आघात पहुँचाने से उत्पन्न ध्वनि ।
२ बूद-बूद गिरने या टपकने का भाव ।
क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी ।

टपूकडौ–स०पु०—१ किसी तरल पदार्थ की बूद ।
उ०—सातमै पाताळ वासग नागरै माथै टपूकडा खाइ नै रहिआ छै ।
—रा सा स
२ सिंह, शेर (मेवाड)

टपौ—१ देखो 'टिप्पौ' (रू भे) २ देखो 'टपकौ' (रू भे)
उ०—गवीजै लूहरा टपा भावन गहर, विरह-जन विरह छीजै बराण । दुवारा छाक पोजै 'अरस' दूसरा, रैणवा दिरीजै द्रस राणा ।
—चिमनजी आढ़ौ

टप्प–स०स्त्री०—१ शीघ्र, जल्दी । उ०—खीरा मेली खीचडी नै टीलो आयो टप्प ।

टप्पर–स०पु०—देखो 'टपरी' (मह., रू भे)

टप्पौ—१ देखो 'टिप्पौ' (रू भे) २ देखो 'टिपकौ' (रू.भे.)

टब–स०स्त्री०—१ नांद के आकार का पानी रखने का एक प्रकार का खुला बरतन २ उपाय, तरकीब । उ०—म्हे घणी इज खप कीधी, पिण काई टब लागी नही ।—भि द्र
क्रि०प्र०—लागणी ।

टबकडो—देखो 'टबूको' (अल्पा, रू भे)

टबकियो–स०पु०—१ छोटी डलिया २ मिट्टी का छोटा बर्तन।

टबकु, टबको—देखो 'टपको' (रू भे) उ०—१ जिस्यु वीज नु झबूकु, पोइणिनिइ पाणी तेणउ टबकु।—व स

उ०—२ सु उण कूपा माहि था टबको ? छण नै पडियो, तिको देवराज री कटारी रै लागो, सु लोह री थी सु सोना री हुई।—नैणसी

अल्पा०—टबरको।

टबक्क–स०पु०—शब्द, ध्वनि, रव। उ०—दादुर-मोर टबक्क घण, वीजळडी तरवारि। सूती सेजइ एकली, हइ हइ दइव म मारि। —ढो मा.

टबक्कडो—देखो 'टबूको' (अल्पा, रू भे) उ०—तती ताल टबक्कडा, मद्दल वस विसाळ। निरति करइ नव राग मा, माडी मस्तक थाळ। —मा का प

टबरको—देखो 'टबको' (अल्पा, रू भे)

टबारो–स०पु०—जीवनयापन, गुजारा, गृह कार्य, काम, ढग, व्यवस्था क्रि०प्र०—करणी, चलाणी (हालणी)।

टबूकणो, टबूकबो—देखो 'टपकणौ, टपकबौ' (रू भे.)

उ०—ढोल वळाव्यउ हे सखी, झीणी उडुइ खेह। हियडउ बादळ छाइयउ, नयण टबूकइ मेह।—ढो मा

टबूको, टबूक्को–स०पु०—१ सगीत की ध्वनि।

उ०—१ अेक सुस्वर मुखि आलवइ, राग तणा रस जेह। मधुरि-मधुरि करि चालवइ, तति टबूका तेह।—मा.का.प्र.

उ०—२ सेजि समारांस सुदरी, वापी माहि विसाळ। झणि आई जळ यत्रणी, तति टबूक्का ताल।—मा का प्र

२ बूद।

अल्पा०—टबकडो, टबक्कडो।

टब्बर–स०पु० [स० तर्पर] कुटुब, परिवार।

टब्बा–स०स्त्री०—राजस्थानी भाषा मे सक्षिप्त भाषानुवाद का नाम।

टमकणो, टमकबो—१ देखो 'टमकणी, टमकबौ' (रू भे) (जैन)

उ०—मचे जग वेसग हिंदू मुगळ्ळ। अहक्कं नफेरी टमकं तवल्ल। —रा रू

२ देखो 'तमकणौ, तमकबौ' (रू भे)

उ०—मसा हणी छोडा विसाहण, टमक कीधो ताल। सिसिपाळ बोलइ नही, तोलइ डगमग्या दिगपाळ।—रुकमणी मगळ

टमकणो, टमकबो–क्रि०अ०—१ चमकना, झलकना, प्रकट होना, मालूम होना। उ०—पीथल घोळा टमकिया, वहुली लागी खोड। पूरै जोबन पदमणी, ऊभी मुक्ख मरोड।—प्रिथ्वीराज राठौड

२ जाडा चमकना, सर्दी आना। उ०—हेमतरा वरफ ऊपडिआ, टाढो टमकियौ, पाळो पडण लागो।—रा.सा स

३ नगारे आदि का ध्वनि करना ४ कम्पायमान होना, कापना (आख आदि का)

टमकाडणो, टमकाड़बो—देखो 'टमकाणौ, टमकावौ' (रू.भे)

टमकाडियोडो—देखो 'टमकायोडो' (रू.भे.)

(स्त्री० टमकाडियोडी)

टमकाणो, टमकावो–क्रि०स०—१ चमकाना, झलकाना २ प्रकट करना, मालूम करना. ३ नगारे आदि की ध्वनि करना. ४ कम्पायमान करना, कपित करना (आख आदि का)

टमकायोडो–भू०का०कृ०—१ चमकाया हुआ, झलकाया हुआ २ प्रकट किया हुआ, मालूम किया हुआ ३ ध्वनित किया हुआ. ४ कपित किया हुआ।

(स्त्री० टमकायोडी)

टमकार—देखो 'टमकारो' (रू भे)

उ०—भेरी भुगळ भरहरइ, करइ भाट जयकार। तूर तिविल वाजा सुणइ, तति तणा टमकार।—मा का प्र

टमकारणो, टमकारबो—देखो 'टमकाणौ, टमकावौ' (रू.भे)

टमकारियोडो—देखो 'टमकायोडो' (रू भे)

(स्त्री० टमकारियोडी)

टमकारो–स०पु०—१ घटे या घडियाल के बजने का शब्द, ध्वनि।

उ०—दळ दस देस तणा मिळि चाल्या, घडियालइ टमकारो। सळक्यो मेर समुद्र झळहळीयो, अहि डोल्यो महि भारो। —रुकमणी मगळ

रू०भे०—टमकार।

२ देखो 'टमोरो' (रू भे)

टमकावणो, टमकावबो—देखो 'टमकाणौ, टमकावौ' (रू भे)

टमकावियोडो—देखो 'टमकायोडो' (रू भे)

टमकियोडो—भू०का०कृ०—१ चमका हुआ, झलका हुआ, प्रकट २ ध्वनि किया हुआ, ध्वनित ३ कपित, कपायमान हुवा हुआ।

(स्त्री० टमकियोडी)

टमकीलो–वि० (स्त्री० टमकीली) बनावटी साज-शृगार किया हुआ, नखरा किया हुआ।

टमको–स०पु० (वि० टमकीलो) बनावटी साज-शृगार, नखरा।

टमचरो–स०पु०—मस्तक, शिर, खोपडी (अल्पा)

टमटम–स०पु० (अनु०) १ बडे-बडे पहियो वाली एक प्रकार की घोडा गाडी जिसमे केवल एक घोडा ही जोता जाता है. २ ध्वनि विशेष।

टमटमाणो, टमटमावो—देखो 'टिमटिमाणौ, टिमटिमावौ' (रू भे)

टमरकटू–स०पु० (अनु०) फाख्ता नामक पक्षी के बोलने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि। उ०—आदळवाई री दिन। मघरो मघरो आथूण वायरो चालै। खेजडी परा बैठी कमेडी बोली—'टमरकटू'।

टमरियो–स०पु०—वृक्ष विशेष। उ०—वीयो टमरियो व्रदावन वासी, वणराय भार अढार सख्या, विस्णुवाणी एह, जेतलु जाण्यु तेतलु वखाण्यउँ, भणइ पदम विसेख।—रुकमणी मगळ

टमरु–स०पु०—एक प्रकार का वस्त्र। उ०—नीलुहुरा जरजरी मलवारी लाछरी अघोतरी अमरी। गगापारी मोतीचूरि टमरु मसरु रत्नकवळ छाइल।—व स

टमाटर–स०पु०—एक प्रकार का पौधा व उसका फल जो पकने पर गहरे लाल रंग का होता है और स्वाद मे कुछ खट्टा होता है ।

टमोरौ–स०पु०—आंख मटकाने की क्रिया या भाव, इशारा ।
क्रि०प्र०—दैणौ ।
रू०भे०—टमकारौ ।

टर–स०स्त्री०—१ अप्रिय शब्द, कटु वाक्य, बक-झक ।
मुहा०—टरटर करणौ—व्यर्थ का बक-झक करना ।
कहा०—अठै टर वठै टर, तेरै खातर छोडवूं घर—इस स्थान पर टर टर करता है, उस स्थान पर टर टर करता है तो क्या तेरे लिए घर त्याग दू अर्थात् व्यर्थ बक-झक से परेशान होने पर कही जाती है ।
यौ०—टर टर ।
२ देखो 'डर' (४) (रू भे)
यौ०—टर टर ।
३ ऐंठ से भरी बात, अकड, घमड ।
क्रि०प्र०—राखणौ ।
मुहा०—टर राखणी—घमड रखना, गर्व रखना ।
४ महत्व रहित बात, तुच्छ बात ।

टरकणौ,टरकबौ—क्रि०अ०—खिसकना, टल जाना, टरकना ।
टरकणहार, हारौ (हारी), टरकणियौ—वि० ।
टरकवाणौ, टरकवाबौ—प्रे०रू० ।
टरकाडणौ, टरकाडबौ, टरकाणौ, टरकाबौ, टरकावणौ, टरकावबौ—क्रि०स० ।
टरकिग्रोडौ, टरकियोडौ, टरक्योडौ—भू०का०कृ० ।
टरकीजणौ, टरकीजबौ—भाव वा० ।
टळकणौ, टळकबौ, टळक्कणौ, टळक्कबौ—रू०भे० ।

टरकाडणौ, टरकाडबौ—देखो 'टरकाणौ, टरकाबौ' (रू भे.)

टरकाडियोडौ—देखो 'टरकायोडौ' (रू भे.)
(स्त्री० टरकाडियोडी)

टरकाणौ, टरकाबौ–क्रि०स०—कार्यार्थ आये हुए का कार्य पूरा किये विना ही किसी बहाने द्वारा वापिस भेज देना, टाल देना ।
मुहा०—टरका दैणौ—किसी काय से आये हुए का कार्य किये विना ही बहाने से उसे चलता कर देना ।
टरकाणहार, हारौ (हारी), टरकाणियौ—वि० ।
टरकवाडणौ, टरकवाडबौ, टरकवाणौ, टरकवाबौ, टरकवावणौ, टरकवावबौ—प्रे०रू० ।
टरकायोडौ—भू०का०कृ० ।
टरकाईजणौ, टरकाईजबौ—कर्म वा० ।
टरकणौ, टरकबौ—अक०रू० ।
टरकाडणौ, टरकाडबौ, टरकावणौ, टरकावबौ—रू०भे० ।

टरकायोडौ–भू०का०कृ०—खिसकाया हुआ, टरकाया हुआ, टाला हुआ ।
(स्त्री० टरकायोडी)

टरकावणौ, टरकावबौ—देखो 'टरकाणौ' (रू.भे)

टरकावियोडौ— देखो 'टरकायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० टरकावियोडी)

टरकियोडौ–भू०का०कृ०—खिसका हुआ, टरका हुआ ।
(स्त्री० टरकियोडी)

टरड–स०स्त्री०—१ घमड, ऐंठ २ भेड

टरडकौ–स०पु०—१ क्रोध करने का भाव, नाराज होने का भाव ।
क्रि०प्र०—करणौ, मारणौ ।
२ दर्द से कराहने का भाव, पीडा के कारण स्वयमेव निकलने वाली आवाज ।
क्रि०प्र०—करणौ ।
३ घोडे की एक दौड ४ अधो वायु निकलने से उत्पन्न शब्द ।
क्रि०प्र०—करणौ, धरणौ, मेलणौ ।
रू०भे०—डरडकौ ।

टरडपच–वि०—विना नियुक्त किये या विना आग्रह किये ही पच बनने वाला ।

टरटराणौ, टरटराबौ, टरराणौ, टरराबौ–क्रि०अ० (अनु०) १ मेढक का बोलना २ टर टर करना, बक बक करना ।

टळकणौ, टळकबौ—देखो 'टळक्कणौ, टळक्कबौ' (रू भे)
उ०—वीर भाला झळकइ तेतइ कायर ना मन टळकइ ।—व स.

टळकाणौ, टळकाबौ–क्रि०स०—१ कपायमान करना, डिगाना
२ देखो 'टरकाणौ, टरकाबौ' (रू.भे)

टळकायोडौ–भू०का०कृ०—१ कपायमान किया हुआ, डिगाया हुआ ।
२ देखो 'टरकायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० टळकायोडी)

टळकियोडौ—देखो 'टळक्कियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री० टळकियोडी)

टळक्कणौ, टळक्कबौ–क्रि०अ०—१ कपायमान होना, डिगना ।
उ०—खड पूगळ खळभळै कोट, मरवटा टळक्कै । देरावर डिगमगै लसेवरि हा ही सकै ।—नैणसी
२ देखो 'टरकणौ, टरकबौ' (रू भे.) ३ स्थान से दूर होना, लुढकना, खिसकना । उ०—सख मुखिइ जिणि पूरिय भूरिय हरि मनि जपु । टोळ टळक्कइ रैवत दैघत मनि आकपु ।—नेमिनाथ फागु

टळक्कियोडौ–भू०का०कृ०—१ कपित, विचलित ।
२ देखो 'टरकियोडौ' (रू भे) ३ स्थान से दूर हुवा हुआ, लुढका हुआ ।
(स्त्री० टळक्कियोडी)

टळटळणौ, टळटळबौ, टळट्टळणौ, टळट्टळबौ–क्रि०अ०—खिसकना, डिगना, हिलना-डुलना, कपायमान होना । उ०—१ नव नाथ न मेलै वासना, टिकियौ मेरज टळटळै । सेवगा तणा मेहा सदू, साद न करनी सभळै ।—चौथौ बीठू

उ०—२ कसमस्सै कोरभ, सेस नागिंद्र सळसळि। सात समद्र गिर आठ, ताम घर मेर टळटुळि।—वचनिका

उ०—३ अहनहते त्रवक तणे अहनहाटि त्रिभुवन टळटळिउ।—व स

टळणो, टळवो–क्रि०अ० [स० टल] १ स्थान से अलग होना, खिसकना, हटना। उ०—टळै ढोल लागा घणा फौल टल्ला। हुठं नीठि पाइक्क हल्ला हमल्ला।—व भा

मुहा०—बात सू टळणो—प्रतिज्ञा पूरी नही करना, कही हुई बात के अनुसार कार्य न करना।

१ पृथक होना, अलग होना। उ०—तीन वेळा उपाड उपाड लगार रै साथ मे नाखिया, साहिब नू झटको वाह्यो सु टोप लाग टळियो। —नैणसी

३ दूर होना, निवारण होना, मिटना। उ०—१ वसइ जे जिनमदिरि, सीयळइ। विहु परे तीह तापु सही टळइ।—अर्बुदाचलवीनती

उ०—२ बिन भुगत्या न टळ त।—जयवाणी

उ०—३ दैवइ लिखिउ ते नवि टळइ, वाडच रहिउ विचारि। धीर धरीधर अडिगु, हईडा। हुवइ म हारि।—मा का प्र.

४ मर्यादा से हटना, कर्तव्य से विमुख होना।

उ०—टळै नह 'राम' खत्रीवट टेक। उडावत लोह अमीर अनेक। —सू.प्र

५ कापना, थर्राना, डोलना ६ स्थिरता छोडना, अस्थिर होना।

उ०—मेर टळइ मरजाद, जाय नव खड रसातळह। सेस भार जु तजइ चलइ रविचद दिखणाध।—प प चो

७ दूर होना, आपत्ति टलना। उ०—जोवन गयो स भल हुई, सिर री टळी बलाय। जणं जणं री रूसणो, ग्रो दुख सह्यो न जाय। —अज्ञात

उ०—२ देवी वैद्य सुग्रव रा दीह वळिया, देवी तत्र तोरा किया सोक टळिया।—देवि

८ नाश होना, मिटना, क्षय होना। उ०—इसा पग तूझ तणा उद्धार, सेवता पाप टळै ससार।—ह र.

९ बचना, सुरक्षित होना। उ०—चिलमिया करण चित चाह सूं, टळणहार नहि टाळणा। अमलिया तणा सिघात ए, बळै जठा तक बाळणा।—ऊ का

१० व्यतीत होना, समाप्त होना। उ०—चाली परवा पून, बादळी गळ गई। मिरिया मिरिया घाल सगी, वा मौसम तो टळ गई। —लो गी

११ अनुपस्थित होना, चलना, हटना। ज्यू—काम री वगत तो यू अठू रोज टळ जावै है. १२ स्थगित होना, आगे स्थिर होना। उ०—कह्यो, मोहरत री वेळा टळी जाय छै, ग्रोळ खोलो, सेजवाळा बारणै ऊभा छै।—नैणसी

१३ उलघित होना, न माना जाना। ज्यू—राजाजी रो हुकम टळै नी १४ ऊँट का रोग विशेष से पीडित होना. १५ गाय, भैंस व बकरी का दूध देना बन्द होना।

टळणहार, हारो (हारी), टळणियो,—वि०।

टळवाडणो, टळवाडवो, टळवाणो, टळवावो, टळवावणो, टळवाववो, टळाडणो, टळाडवो, टळाणो, टळावो, टळावणो, टळाववो—प्रे०रू०।

टळिग्रोडो, टळियोडो, टळ्योडो—भू०का०कृ०।

टळीजणो, टळीजवो—भाव वा०।

टल्लन–स०स्त्री०—आघात, टक्कर। उ०—पिली गज टलन तोप प्रचड। झिली जनु मीच वची मिळ झुड।—ला रा

टळवळणो, टळवळवो–क्रि०अ०—१ हिलना-डुलना, अस्थिर होना, अचल न रहना २ छटपटाना, तडफना। उ०—१ माता देवी टळवळइ जी, माछनडी विनु नीर। नारी सगळी पाय पडो जो, मत छडो साहस धीर।—स कु.

उ०—२ जिम-जिम जाव जामिनी, आवि ऊसा काळि। तिम-तिम तरुणी टळवळइ, मच्छि पडि जिम जालि।—मा का.प्र

३ परेशान होना, बेचैन होना, व्याकुल होना। उ०—आघेरु जईनि चीतवि, लोचन माहारू डावू लवि। जोऊ रही हुसि टळवळी, पुनरपि आव्यु पाछु वळी।—नळाख्यान

४ लालायित होना, इच्छुक होना। उ०—मुहडइ घाल्या तरत गळइ, घणु स्यु ? स्वरग ना देव देवी पणि स्वादनइ टळवळइ। —व स.

टळवळा'ट–स०स्त्री०—१ बेचैन, घबराहट २ हिलने-डुलने की क्रिया, धीरे धीरे रेंगने की क्रिया।

टळवळाडणो, टळवळाडवो—देखो 'टळवळाणो, टळवळावो' (रू भे)

टळवळाडियोडो—देखो 'टळवळायोडो' (रू भे)
(स्त्री० टळवळाडियोडी)

टळवळाणो, टळवळावो–क्रि०स०—कपायमान करना, हिलाना, डुलाना।

टळवळायोडो–भू०का०कृ०—कपायमान किया हुआ, हिलाया हुआ।
(स्त्री० टळवळायोडी)

टळवळावणो, टळवळाववो—देखो 'टळवळाणो, टळवळावो' (रू भे)
उ०—वरउ पाडतउ, माणस मारतउ, राउत रसाडतउ, अटाळ टळवळावइ, हाटु हळवळावइ।—व स

टळवळावियोडो—देखो 'टळवळायोडो' (रू भे)

टळवळियोडो–भू०का०कृ०—१ हिला-डुला हुआ, अस्थिर
२ छटपटाया हुआ, तडफडाया हुआ ३ परेशान हुवा हुआ, बेचैन, व्याकुल. ४ लालायित हुवा हुआ, इच्छुक हुवा हुआ।
(स्त्री० टळवळियोडी)

टळवाडणो, टळवाडवो–क्रि०स०—खीच कर निकालना ?
उ०—एकि अगि बाई, ऊपरि गुल रेखलाई, जिसा अम्रत तणा, पुणि टळवाडइ घणा रूप्पोज्वळ, काविलउ घाट।—व.स.

टळियोडी–भू०का०कृ०—वह गाय, भैंस या बकरी जिसने दूध देना बन्द कर दिया हो।

टळियोडो–भू०का०कृ०—१ खिसका हुआ, हटा हुआ २ अलग, स्थिति में पृथक. ३ निवारण हुवा हुआ ४ कर्तव्य से हटा हुआ. ५ आपत्ति टला हुआ, निकट नहीं रहा हुआ ६ कापा हुआ, धर्राया हुआ. ७ मिटा हुआ. ८ स्थिरता छोडा हुआ, अस्थिर हुवा हुआ ९ बचा हुआ, सुरक्षित बना हुआ १० जो व्यतीत हो गया हो, समाप्त ११ अनुपस्थित बना हुआ, हटा हुआ, चला हुआ. १२ स्थगित रहा हुआ, आगे स्थिर रहा हुआ १३ न माना हुआ, उलंघित १४ रोग विशेष से पीडित ऊँट।
(स्त्री० टळियोडी)

टलो, टल्लो–स०पु०—धक्का, टक्कर। उ०—१ टळि गयो परो जमराउ वाळो टलो।—पीरदान लाळस
उ० –२ रिणखेत रै विखै रगिअै बाणासि मतवाळा ज्यू घूमता थका हाथिया सू टल्ला खाइया।—वचनिका
उ०—३ टळै ढील लागा घणा फील टल्ला। हुठै नीठि पाइक्क हल्ला हमल्ला।—व भा
मुहा०—टल्लो देणो—टक्कर देना, आगे खिसका देना, उकसाना, प्रेरित करना।

टवरग–स०पु० [स० टवर्ग] ट ठ ड ढ ण—इन पांच वर्णों का समूह।

टवाळी–स०स्त्री०—१ खेत की फसल की रखवाली २ चौकीदारी, रखवाली।
रू०भे०—टोवाळी।

टवौ–स०पु०—भाले का अग्र भाग।

टस–स०स्त्री०—भारी वस्तु के खिसकने का शब्द, टसकने का शब्द।
मुहा०—टस सू मस नी होणी—जरा सा भी नहीं खिसकना, किसी बात का बिल्कुल प्रभाव न पडना।

टसक–स०स्त्री० (वि० टसकीलो) १ गर्व, अभिमान, दर्प।
उ०—कीजै कुण मोड न पूगै कोई, धरपत झूटी टसक धरै। तो जिम 'भीम' दीयै तावापत्रा, कवी अजाची भला करै।—किसनो आढ़ो
क्रि०प्र० —राखणी।
कहा०—टसक री टारडी नै गारा मंइ घच—घमड से सिर ऊँचा कर के चलने वाला निर्बल व्यक्ति कीचड आने पर फँस जाता है अर्थात् अभिमानी का सिर नीचे झुकता ही है।
२ नखरा, बनावटी साज-शृंगार. ३ शेखी, गल्ल.
रू०भे०—टसकाई।
अल्पा०—टसको।
४ ठहर-ठहर कर उठने वाला दर्द, टीस, कसक।

टसकणो, टसकबो–क्रि०अ०—१ दर्दभरी आवाज करना, करहाना. २ खिसकना, हिलना ३ मल त्यागते वक्त विबध के कारण आवाज करना।
टसकणहार, हारो (हारी), टसकणियो—वि०।
टसकवाडणो, टसकवाडबो, टसकवाणो, टसकवाबो, टसकवावणो, टसकवावबो—प्रे०रू०।
टसकाडणो, टसकाडबो, टसकाणो, टसकाबो, टसकावणो, टसकावबो—क्रि०स०।
टसकिओडो, टसकियोडो, टसक्योडो—भू०का०कृ०।
टसकीजणो, टसकीजबो—भाव वा०।

टसकाई—देखो 'टसक' (रू भे)

टसकिओडो–भू०का०कृ०—१ दर्दभरी आवाज किया हुआ, करहाया हुआ २ खिसका हुआ, हिला हुआ।
(स्त्री० टसकियोडी)

टसकीलो–वि० (स्त्री० टसकीली) १ अभिमानी, घमडी. २ बनावटी साज-शृगार करने वाला, नखरा करने वाला. ३ शेखी मारने वाला. ४ जिसके टीस उठती हो, जो दर्द के कारण टसकता हो।

टसको—देखो 'टसक' (अल्पा, रू भे) उ०—एकीका की डील को जी, टसको कदे न जाय।—जयवाणी

टसर–स०पु० [स० तसर, त्रसर] एक प्रकार का कडा व मोटा कपडा।

टसरियो, टसरीओ, टसरीयो, टसरयो–स०पु०—१ ऊँट की एक चाल विशेष. २ काष्ट, हाथीदांत अथवा धातु का बना अफीम रखने का पात्र।
मि०—हुडियो।
३ एक प्रकार का वस्त्र (व स)
रू०भे०—टं'रियो, टहरियो।

टहकणो, टहकबो–क्रि०अ०—१ टिटहरी या कोयल का बोलना।
उ०—ऊपर कुजा, सारसा गहकनै रही छै। डेडरा डहकनै रह्या छै। टीटोडी टहकनै रही छै।—रा.सा स.
२ रह रह कर दर्द करना, टीस मारना. ३ आघात या झटके के कारण किसी पदार्थ का ध्वनि करना।

टहकाणो, टहकाबो–क्रि०स०—१ जाचने के हेतु बजाना. २ ध्वनि करना।

टहको–स०पु०—नगारे अथवा ढोलक आदि वाद्य पर प्रहार करने से उत्पन्न ध्वनि। उ०—धोगऊग थोऊग तत्ता धत्ता धत्ता थग थग टहका गहका करै भेळा खेळा टोळी। खे खट्ट वि नट्ट नट्ट जालिम तालिम खाना झाझा देसलाणी आगै राग रा झकोळ।—ल पि.
क्रि०प्र०—देणो।

टहटह–स०स्त्री०—१ खिलखिला कर हँसने की ध्वनि।
क्रि०प्र०—करणी।
२ अट्टहास। उ०—कतियाणी क्रह क्रह नारद डह डह हेका टहटह वीर हसै।—गु.रू व
३ ध्वनि विशेष।
रू०भे०—टहटहाट, टहट्टह।

टहटहणो, टहटहबो–क्रि०अ०—१ किसी वाद्य का ध्वनि करना, नगारा बजना। उ०—पथी हेक सदेसडो, बाबल नै कहियाह। जायां

बाळ न वज्जिया, टामक टहटहियाह ।—सती चरित्र

२ खिलखिला कर हंसना ।

टहटहाट, टहट्टह—देखो 'टहटह' (रू भे.)

उ०—टहट्टह रभ अहव्वह वीर । मिळें रणताळि कमध्वज मीर ।

—राजरासो

टहणो—देखो 'टॅ'णो' (रू भे)

टहरको—देखो 'टॅरको' (रू भे)

टहरियो—देखो 'टॅ'रियो' (रू भे)

टहल-स०स्त्री०—१ सेवा, खिदमत, चाकरी ।

उ०—राणी स्री जगराज री, मात वधायो मोड । दोनू महल हजूर में, राज टहल राठोड ।—रा रू

क्रि०प्र०—करणी ।

रू०भे०—टॅ'ल

यौ०—टहल बदगी ।

स०पु०—२ सोलकी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

टहलणो, टहलवो—देखो 'टॅ'लणो. टॅ'लवो' (रू.भे)

टहलदार-वि०—टहल करने वाला, खिदमत करने वाला ।

रू०भे०—टॅ'लदार ।

टहलियोडो—देखो 'टॅ'लियोडो' (रू भे)

(स्त्री० टहलियोडी)

टहिटी-स०स्त्री०—एक प्रकार का वाद्य । उ०—टीडुरी नइ टीडसी, टहिटी टोकरि टूट । टबकावनी टाउरी, टोकरि टोळा ऊट ।

—मा का प्र

टहुकडो—१ देखो 'टहुको' (अल्पा, रू भे.)

उ०—कोयल दीये टहुकडा, पपइयो करै पुकार । पाणी परनाळा पडै, घर अबर इक धार ।—महादान महडू

२ देखो 'टहूकडो' (१) (रू भे)

टहुकणो, टहुकवो-क्रि०अ०—१ कोयल, मोर आदि पक्षियों का आवाज करना, बोलना ।

उ०—काळी कोयलि आब वइठी टहुकइ ।—स कु

२ ध्वनि करना. ३ तेज आवाज करना ।

टहूकणो, टहूकवो—रू०भे० ।

टहुकियोडो-भू०का०कृ०—१ (कोयल, मोर आदि पक्षियों का) आवाज किया हुआ, बोला हुआ २ ध्वनिमय हुवा हुआ, ध्वनि किया हुआ, ध्वनित. ३ तेज आवाज किया हुआ ।

(स्त्री० टहुकियोडी)

टहुको-स०पु०—१ मोर, कोयल आदि पक्षियों की आवाज ।

उ०—सूखा हुआ जु अबुआ, (ज्यारी) वासा गई वळेह । कोयलड़ी टहुका दहै, अगळूणें ज गुणेह ।—लो गी

क्रि०प्र०—देणी ।

रू०भे०—टहूको ।

अल्पा०—टहुकडो, टहूकडो ।

२ आवाज देने का भाव ।

क्रि०प्र०—देणी ।

३ कोई चुभती बात, ताना, व्यग्य ।

टहूकडो-स०पु०—१ ऊट का बोलना । उ०—घाली टापर वाग मुखि, झेरयउ राज दुआरि । करहइ किया टहूकडा, निद्रा जागी नारि ।

—ढो मा.

रू०भे०—टहुकडो ।

२ देखो 'टहुको' (अल्पा, रू भे.)

उ०—१ बागां बागा बावडया, फुलवाडा चहु फेर । कोयल करै टहूकडा, अइयो घर आवेर ।—अज्ञात

उ०—२ कोयल करइ टहूकडा म्हाकी सहिय ।—स कु.

टहूकणो, टहूकवो—देखो 'टहुकणो, टहुकवो' (रू भे.)

उ०—कोइल कुरळइ अब की डाळ । मोर टहूकइ तीवर थी ।

—वी दे

टहूकियोडो—देखो 'टहुकियोडो' (रू भे)

(स्त्री० टहूकियोडी)

टहूको—देखो 'टहुको' (रू भे)

टहोलो—देखो 'ठोलो' (रू भे)

टाक-स०स्त्री०—१ धनुष । उ०—टकणेत टाक सज झिलम टोप । कर सिलह आप सब भरय कोप ।—पे रू.

२ देखो 'टक' (६) (रू भे)

उ०—बीझो पूछै सोरठी, प्रीत किता मण होय । लागतडी लाखा मणा, तूटी टाक न होय ।—बीझा सोरठ री वात

३ देखो 'टक' (१३)

उ०—सवासेर रो भालो अेक तीर इसडो राखै छै, अेक कवाण दस टाक रै चिलै इसडी कमाण राखै छै, कोई पखी ही फिरण पावै नही ।—वात सयणी चारणी री

४ देखो 'टाको' (रू भे)

टाकडो—देखो 'टाकणो' (रू भे)

उ०—ए क्रोध व्यापण रा टाकडा ।—जयवाणी

टाकणी-स०स्त्री०—देखो 'टकाणी' (रू भे)

रू०भे०—टिकाणी ।

टाकणो-स०पु०—१ घरेलू होने वाला शुभाशुभ अवसर, अवसर विशेष, कोई विशेष दिन, मुहूर्त ।

मुहा०—टाकणो साजणो—अवसर पर पहुँच जाना ।

२ समय ३ स्त्री के रजस्वला होने का भाव ।

क्रि०प्र०—आणो ।

४ पत्थर गढने का औजार विशेष । उ०—गढ गिरूउ जिसउ कैळास, पुण्यवतनउ ऊपरि वास । जिसउ त्रिकूट टाकणे घडिउ, सपत धात कोसीसे जडिउ ।—का दे प्र

५ ऊपर लटकाया हुआ मास । उ०—भीमा घना नै खबर लागी तद आय टाकणो ले हाडीया फोड वहीर हुआ ।—वी स टी

रू०भे०—टकणो, टाकडो, टाकलउ, टाकलो, टागणो ।

टाकणो, टाकवो—क्रि०स०—१ किसी वस्तु को दीवार मे लगी कील या खूटी मे अटकाना, लटकाना २ सिलाई करना, सीना ३ बटन या मोती आदि को किसी वस्तु पर इस प्रकार चिपकाना ताकि वह निकल न सके ।

टाकणहार, हारो (हारी), टाकणियो—वि० ।

टाकवाडणो, टाकवाडवो, टांकवाणो, टाकवावो, टाकवावणो, टाकवाववो, टाकाडणो, टाकाडवो, टाकाणो, टाकावो, टाकावणो, टाकाववो—प्रे०रू० ।

टाकिओडो, टाकियोडो, टाक्योडो—भू०का०कृ० ।

टाकीजणो, टाकीजवो—कर्म वा० ।

टकणो, टकवो—अक०रू० ।

टागणो, टागवो—रू०भे० ।

टाकमों—वि०—लटकाया हुआ, टाका हुआ । उ०—मडै रिणथट मेलवै, काटा काढ़णहा'र । कल सिर उपरा टाकमो, आटा लेय उधार ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

टाकरो—स०पु०—एक तोले का वजन ।

टाकल—वि०—कुपुत्र ।

टाकलउ, टांकलो—१ देखो 'टाकणो' (३) (रू भे)
२ देखो 'टक' (रू भे) (उ र)

टाकियोडो—भू०का०कृ०—१ लटकाया हुआ २ सिला हुआ ३ चिपका हुआ (बटन, मोती आदि)
(स्त्री० टाकियोडी)

टाकी—स०स्त्री०—१ लोहे का बना पत्थर गढ़ने का औजार । उ०—कृपण सतोस करै नही, सौ मण जाणै सेर । कर टाकी ले काट ही, सुपना माही सुमेर ।—बा दा.

पर्या०—चीरणी, छैणी, पत्थरफाडी ।

मुहा०—टाकी बाजणी—इमारत बनने सम्बन्धी कार्य का चलता रहना ।

२ देखो 'टाकी' (रू भे)

३ सोना, चादी, जवाहिरात आदि तोलने का छोटा तराजू ।

टाकीबद—स०पु०—इमारत मे लगे पत्थर के टुकडो या आमने-सामने की कीलो की मजबूत जुडाई ।

वि०—वह मकान जिसमे पत्थर के टुकडो या आमने-सामने की कीलो की मजबूत जुडाई की हुई हो ।

टाकोली—स०स्त्री०—पुनर्वसु नक्षत्र का एक नाम ।

टांको—स०पु० [स० टकि-बधने] १ भूमि खोद कर अथवा बाहिर दीवार उठा कर दीर्घकाल तक पानी इकट्ठा रखने हेतु बनाया हुआ जलकुण्ड । उ०—तिसोता जिसो नीर गभीर टाको, बिलूमै बिचै जाळ भुज्जाळ वाको । जिका कोट नू देवता हाथ जोडै चहू, कूट रै बीच वैकूट चोडै ।—मे म.

२ सोने या चादी के आभूषणो मे डाला जाने वाला विजातीय द्रव्य, जोड ३ चोर के पद-चिन्हो को खोजने निमित्त चक्कर लगाने का भाव. ४ सिलाई का पृथक-पृथक अश, सीवन ।

क्रि०प्र०—दैणो, लगाणो ।

५ शरीर पर लगे घाव या कटे हुए स्थान की सिलाई ।

क्रि०प्र०—दैणो, लगाणो ।

रू०भे०—टेको ।

६ भोमियो (राजपूतो) से भूमि सम्बन्धी लिया जाने वाला कर विशेष (मेवाड)

वि०वि०—देखो 'भोमियो' ।

टांग—स०स्त्री० [स० टक्, टगा] शरीर का निचला भाग जिससे प्राणी चलते फिरते हैं । इनकी सख्या भिन्न-भिन्न प्राणियो मे भिन्न भिन्न होती है । मनुष्य की जाघ से एडी तक का अग ।

मुहा०—१ टाग अडाणी—व्यर्थ दखल देना, उलझन या बाधा पैदा करना, बिना ज्ञान के विचार प्रकट करना २ टाग ऊपर दैणी—पराजित करना, हरा देना ३ टाग ऊपर राखणी—अपनी बात रखना, अपने विचारो को प्राथमिकता देना ४ टाग नीचू निकळणी—हार मानना, पराजित होना ५ टाग फमाणी—देखो 'टाग अडाणी' ६ टाग बराबर—बहुत छोटा, तुच्छ ७ टागा तोडणी—बहुत प्रयत्न करना, दण्ड देना ८ टागा रह जाणी—बहुत अधिक थक जाना ९ टागा री पिणियारी गाणी—देखो 'टागा रह जाणी' १० टागा रो बळ काडणो—पैरो के बल पर बहुत अधिक दौड-धूप करना, किसी को इधर-उधर भगाना या भटकाना ११ टागा लैणी (उठाणी)—सभोग करने हेतु स्त्री की टागें उठाना ।

१ रहट मे कूए के भीतर की ओर लगाई हुई लकडी जो माला को ठीक स्थान पर रखती है ।

अल्पा०—टगडी, टागडी, टागडो ।

मह०—टग ।

टागडी—स०पु०—देखो 'टाग' (अल्पा , रू भे) उ०—मगर पचीसी माय डोकरो बणगो डाकी, डागडिया नित डिगै थिगै टागडिया थाकी ।
—ऊ का

टागडो—स०पु०—देखो 'टाग' (अल्पा , रू भे) उ०—१ टागडो फेर लागै टळै, पडै खिसकनै पागडो । नागडो तोई देखो निलज, अमल न छोडै आघडो ।—ऊ का.

उ०—२ ऊपर सू एक जमाई लात पेट पर सो हाजरसिंह धडाम करता धरती पर अर टागडा ऊपर ।—रातवासो

टागण—देखो 'टाघण' (रू भे)

टागणो—देखो 'टाकणो' (रू.भे)

टागणो, टागवो—देखो 'टाकणो, टाकवो' (रू.भ)

टागर—स०स्त्री०—भैंस (शेखावाटी) (अल्पा)

टागरियो, टागरो–स०पु०—फेरी लगा कर सौदा वेचने वाला व्यापारी।

टागा-टोळी—देखो 'टींगा-टोळी' (रू भे)

टागियोडो—देखो 'टाकियोडो' (रू भे)
(स्त्री० टागियोडी)

टाघण–स०पु०—प्रदेश विशेष का घोडा।
उ०—सु घोडा कुण जातरा छै, कुण रग भातरा छै ?—अँराकी, आरवी, तुरकी, ताजी, त्रघारी, सिकारपुरी, घाटी, काछी, माळवी, पूरवी, टाघण, पहाडी, विन्हाई और ही अनेक जात रा घोडा तयार कीजै छै।—रा सा स
रू०भे०—टागण।

टाच—देखो 'टूच' (रू.भे)

टाचणो, टाचबो–क्रि०स०—१ चक्की के पाटों को टाकी आदि से खुरदरा कर के अनाज पीसने योग्य वनाना २ धोखे से किसी की वस्तु हडप लेना।
३ चचु से प्रहार करना (पक्षियों द्वारा) ४ तीक्ष्ण शस्त्र से प्रहार करना।
टाचणहार, हारो (हारी), टाचणियो—वि०।
टाचवाडणो, टाचवाडवो, टाचवाणो, टाचवाबो, टाचवावणो, टाचवावबो, टाचाडणो, टाचाडवो, टाचाणो, टाचाबो, टाचावणो, टाचाववो—प्रे०रू०।
टाचिग्रोडो, टाचियोडो, टाच्योडो—भू०का०कृ०।
टाचीजणो, टाचीजवो—कर्म वा०।
टचणो, टचबो—अक०रू०।
टूचणो, टूचबो—रू०भे०।

टाचियोडो–भू०का०कृ०—१ टाकी आदि से खुरदरा कर के पीसने योग्य बनाया हुआ (चक्की का पाट) २ धोके से हडपी हुई वस्तु ३ चचु से प्रहार किया हुआ ४ तीक्ष्ण शस्त्र से प्रहार किया हुआ।
(स्त्री० टाचियोडी)

टाचो, टाजो–स०स्त्री०—आमदनी का धधा, रोजी।

टाट–स०स्त्री०—पैर, टाग।
वि०—१ दुबला-पतला २ अशक्त ३ अयोग्य।
अल्पा०—टाटळियो, टाटियो।

टाटणो–स०पु०—मास (अल्पा)

टाटळ–स०पु०—एक राजपूत वश या इस वश का व्यक्ति (नैणसी)

टाटळियो–स०पु०—देखो 'टाट' (अल्पा., रू भे)
उ०—पट भाला वट पिंड वर, निरखे दुरद्द न्हाय। पीव टाटळियो पीठ दे, भाला बीह भगाय।—रेवतसिंह भाटी

टाटियो–स०पु०—१ पाट और पलग के पायो को मजबूती मे जकडने के लिए लगाई जाने वाली लोहे की खलाव २ वर्र नामक डक मारने वाला पतग ३ मुह मुडा हुआ व्यक्ति, जिसका मुह टेढ़ा हो।
वि०—दुवला-पतला, अशक्त।

टाटो, टाटो–वि०—हाथ-पैरो से लाचार, अपाहिज।

टाड–स०स्त्री०—१ मकान मे सामान रखने के लिए दीवार के समानान्तर लगाया जाने वाला लम्बोतरा पत्थर. २ मकान के बीच का शहतीर। उ०—हरि डाळिया चयन, पान समूह कर ऊपर। टेर आसरा टाड, ऊजरा डासरिया डर।—दमदेव
३ देखो 'टाडो' (मह, रू भे) ४ खेत की रखवाली के लिए बनाया गया मचान ५ शोभा (नळ-दवदती रास)

टाडणो, टाडवो—देखो 'टाडूकणो, टाडूकवो' (रू भे.)
उ०—अटकै सार घर वेध डगिया असत, सार फाटै गयण मेळ साधो। घणी दाखै धमळ टाड कज इळा धुर, 'केहरी' तणा हव माड काधो।—रावत अरजुनसिंह चूडावत री गीत

टाडो–वि० [स० तुण्डकम्] शोभायुक्त, सौभाग्ययुक्त।
उ०—किसीइ वातिइ नवि आडी, ए दुग्ध कहू जु हुइ माडी। फूल विना नवि सोभइ वाडी, पति विना न हुइ नारी टाडी।
—नळ-दवदती रास

टाडो–स०पु०—१ अगारा, अग्नि-कण. २ बैलो का समूह जो प्राय बनजारे रखते है। उ०—भोळी मो पिव भाळजै, अराण अडचो उदड। गुर टाडै जण गुणत्या, मह पडिया रुड मुड।
—रेवतसिंह भाटी
मि०—बाळद।
३ गाव के बाहर का वह स्थान जहा मृत पशुओ का चर्म निकाला जाता है (किसनगढ) उ०—लपपथ सोणित लोथडा, पडिया रण अणपार। जण ढाडा टाडा जचै, चमडो लिया चमार।
—रेवतसिंह भाटी
मह०—टाड।
अल्पा०—टाडियो।

टाण, टाणो–स०पु०—१ विशेष समय जिसमे बहुत अधिक धन खर्च होता है (विवाह आदि पर) उ०—अवता टाणा ऊपरै, नाणो खरचै नाहि। हाथ घसै निरधन हुआ, माखी ज्यों जग माहि।—बा दा
२ विशेष खुशी का दिन, उत्सव का दिन, त्यौहार ३ समय, वक्त। उ०—पछै कितराहेक दिने राठौड तेजसी राणा उदयसिंघ रै वास वसियो। तिण टाणै राठौड प्रिथीराज जैतावत मेडतै काम आया।
—रावत मालदे री वात
४ अवसर, मौका। उ०—१ ऐसो काळ जोरावर जाणी, मन मे समता आणी रे। ऐसी सीख दै रिखि 'जयमलजी', पायो नर भव टाणो रे।—जयवाणी
उ०—२ क्षमा करी सुख लो खरो, आछो मिळियो टाणो रे।
—जयवाणी

टानर-टनर— देखो 'टामण-टूमण' (रू भे) उ०—चारण आ जाणै मत्र चाव, वळ टानर-टूनर जत्र भाव।—रामदान लाळस

टापी–स०स्त्री०—१ छोटा समी वृक्ष, छोटा वृक्ष. २ झोपडी।

टामक, टामक्क–स०पु०—नगाडा । उ०—१ चणणके भड चिहुर छोजि कातर छणणके । टणणके टामक भ्रमर फीला भणणके ।—व भा
उ०—२ सू ऊठ किण भात रा छै ? थाप वी तळी रा . . . .. कसतूरिया पटा रा, कोरवै कान रा, टामक सै माथै रा, लोकवै नाक रा, तजियै होठ रा ।—रा सा स
टामकी–स०स्त्री०—ढोलक (शखावटी)
टामण-कामण, टामण-टूमण–स०पु०यौ०—वशीकरण मत्र, जादू, टोना ।
उ०—टामण-कामण टोटका, कर देखो सै कोय । छदे चालै पीव रै, आपै ही वस होय ।—अज्ञात
रू०भे०—टानर-टूनर, टूमर-टामण ।
टामेर–स०पु०—१ एक प्राचीन राजपूत वश या इस वश का व्यक्ति ।
टाय टाय–स०स्त्री० [अनु०] १ कर्कश आवाज, अप्रिय शब्द ।
२ बक-झक, बकवाद ।
क्रि०प्र०—करणी ।
मुहा०—टाय टाय फिस—कार्यारभ तो बडी तत्परता से करना किन्तु अन्त मे शिथिल पड जाना अथवा कुछ नही होना ।
३ टिट्टिभ पक्षी के बोलने की आवाज ।
टास–वि०—तृप्त । उ०—१ जद म्हैं मोडी, माय मोरी, खेळ नै अे, वै तो पी पाणी भइ टास, जद म्हारौ मन माय मोरी हरखियौ ।—लो.गी.
उ०—२ खाय रोट जद टास हो गया, दीना पलग ढळाय । कुरड कुरड हुक्को ठळळावै, गूदड दिया पकडाय ।—लो.गी
टासणौ–वि०—मजबूत, ताकतवर, शक्तिशाली, बलवान ।
रू०भे०—ठासणौ ।
टासणौ, टासबौ—देखो 'ठासणौ, ठासबौ' (रू भे.)
टासियोडौ—देखो 'ठासियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० टासियोडी)
टा–स०स्त्री०—१ बडवानल २ मच्छी
स०पु०—३ देवता ४ वस्त्र. ५ तोता ६ भजन. ७ सिद्ध. ८ यश (एका)
टाइम–स०स्त्री० [अ०] समय, वक्त ।
टाक–स०पु०—१ नागवश की एक क्षत्रिय शाखा या इस शाखा का क्षत्रिय
२ चौहान वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।
[स० टक्क] ३ सिंधु और व्यास नदियो के बीच का प्रदेश (नळ-दवदती रास)
उ०—टोकर टीटू टीबरू, टाहुलिआ नइ टोट । टहि टटिवटणि टहिकला, टाक टपालो सोट ।—मा का प्र
टाकर–स०स्त्री०—१ टक्कर, झपट । उ०—कान-कटा कागा कधर, ऊपरि इम सु थाइ । टाकर मारी टीलूज, मेहलइ मयण सीदाइ । —मा.का प्र.
क्रि०प्र०—लगणी, लागणी, देणी ।
२ घाव, चोट । उ०—१ वणक खतारा काम नै, श्री दरसावै खैर । नाई नू दीधी मुहर, वाळण टाकर वैर ।—वा दा
उ०—२ नाहर सर टाकर कुण न्हाखै, चालै कुण वाक रजम चाह । राण 'सरूप' आण रा आखर, मेटै कुण ठाकर जग माह ।
—जसजी महियारियौ
३ जख्म ठीक होने पर ऊपर आने वाला कडा भाग, खरूट ।
क्रि०प्र०—आणी, उखेलणी ।
४ किसी पदार्थ से निरन्तर रगड खाने के कारण शरीर पर होने वाली कठोर गाठ जो सुन्न हो जाती है ५ धूलि, रेणु ।
उ०—साकर टाकर सम गिणै जी, राम गिणै धातु पाखाण ।
—जयवाणी
टाकरु–स०पु०—बिलोचिस्तान के एक प्रदेश के छोटे कद के ऊटो की एक जाति विशेष या इस जाति का ऊट ।
टाकरौ–स०पु०—१ ऊसर भूमि (शेखावाटी)
२ आस-पास की जमीन से ऊँचा उठा हुआ भू-भाग (शेखावाटी)
टाकसिया–स०स्त्री०—परिहार वश की एक शाखा ।
टाकाणी—देखो 'टकाणी' (रू भे.)
टाकी–स०स्त्री०—१ जख्म, घाव, क्षत. २ तरबूज, खरबूजे आदि पर छोटा सा चौखूटा कटाव जिससे उसके अदर से कच्चा पक्का या सडा हुआ होने का मालूम पडता है (शेखावाटी)
रू०भे०—टाकी ।
टाचकणौ, टाचकबौ–क्रि०अ०—१ आक्रमण करना, हमला करना
२ आक्रमण करने के लिए उद्यत होना. ३ उछल कर आना, उछलना ।
मुहा०—टाचक नै आणौ—उछल कर आना, जोश या क्रोध से उछल कर आना ।
टाचकियोडौ–भू०का०कृ०—आक्रमण किया हुआ, हमला किया हुआ ।
(स्त्री० टाचकियोडी)
टाचरकौ–स०पु०—विशेष अवसर, समय ।
टाचरणौ, टाचरबौ–क्रि०स०—दूर करना, पृथक करना ।
टाचरियोडौ–भू०का०कृ०—दूर किया हुआ, पृथक किया हुआ ।
(स्त्री० टाचरियोडी)
टाचरौ–स०पु०—शिर, मस्तक ।
वि०—शक्तिशाली (किशनगढ)
टाट–स०स्त्री०—१ बकरी, अजा ।
उ०—समझ तमाकू सूगली, कुत्तो न खावै काग । ऊँट टाट खावै न आ, अपणौ जाण अभाग ।—ऊ का.
अल्पा०—टाटी ।
२ खोपडी, कपाल, शिर । उ०—१ कथा तू काई करै, हाय तमाखु हेत । टका एक री टाट मे, दिन ऊगाई देत ।—ऊ का
उ०—२ मूड मुडाया तीन गुण, मिटी टाट की खाज । बाबा बाज्या जगत मे, मिळ्यो पेट भर नाज ।—अज्ञात
मुहा०—१ टाट गजी करणी—देखो 'टाट रा बाळ उडाणा ।'

२ टाट गजी होणी—देखो 'टाट रा वाळ उडणा'।
३ टाट मे खाज हालणी—मार खाने की इच्छा करना, ऐसा कार्य करना जिससे मार खानी पडे, सजा पाने का कार्य करना. ४ टाट मे खाणी—मस्तक पर ग्राघात होना, बहुत व्यय होना, ग्रनावश्यक व्यय हो जाना, धोखा खाना, नुकसान उठाना ५ टाट रा वाळ उडणा—खूब मार पडना, पास मे कुछ नहीं रहना, बीमारी के कारण शिर के वाल झड जाना ६ टाट रा वाळ उडाणा—मारते-मारते सिर मे वाल न रहने देना, खूब पीटना।
कहा०—टाट जीकै ठाट—जिसके सिर पर वाल नहीं होते ग्रर्थात् टाट होती है उसका ठाट रहता है, गजापन धनवान होने का चिन्ह माना जाता है।
यौ०—धन-टाट।
३ सिर का एक रोग जिसमे वाल उड जाते हैं, कई लोगो के इस रोग मे फुसिया भी हो जाती है. ४ सन या पटुए का बना हुग्रा मोटा कपडा।
वि०—१ डरपोक, कायर २ मूर्ख, ग्रयोग्य।
उ०—राम भजन बिन खोदिया, ग्रक्ल विहूणी टाट। ग्रट सासा की एक पल, घडी एक पल साठ।—सगरामदास

टाटर-स०स्त्री०—घोडे की झूल। उ०—१ टाटर पाखर सजति कियौ राव. धार नगरी राजा परणवा जाइ।—बी.दे
उ०—२ जादव जान करइ ग्रति ग्रोपम, छपन कोड़ि कुछ साख। टाटर टोप जरद जीणमाला, साढ़ि भरी साट्ठी लाख।
—रुकमणी मगळ

टाटलो, टाटियो-वि०पु० (स्त्री० टाटली) जिसके शिर मे टाट हो, जिसके शिर के वाल उड गये हो, गजा (ग्रल्पा)
उ०—ग्राभो सफाचट टाटिया रा माथा ह्वै जिसो।—रातवासो

टाटी-स०स्त्री०—१ वास की फट्टियां ग्रादि को जोड कर बनाई हुई ग्राड, रक्षा के लिए बनाया हुग्रा ढाचा २ पत्थर की वह टाट्टी जो छज्जे, रोक या सहारे के लिए लगाई जाती है।
रू०भे०—टट्टी।

टाटो-स०पु०—१ ठडी हवा के लिए खस, काटे ग्रादि की बनाई जाने वाली टट्टी। उ०—खस रा टाटा घेरिया, मूडा ग्रोरा जाय। भागी मिनख न भेटिया, लूग्रा विरथा लाय।—लू
२ बकरा, बकरी।
रू०भे०—टेटो।
३ देखो 'टाटी' (१ मह., रू भे) उ०—वाडे फोग खेतडा काढ़े, सीवा वाड वणावता। टापी टाटा टेर वाती, फळसा छान छवावता।
—दसदेव

टाड-स०पु०—ग्राभूषण विशेष (शेखावाटी)

टाडूकणो, टाडूकवो—देखो 'ताडूकणो, ताडूकवो' (रू भे)

टाडूकियोडो—देखो 'ताडूकियोडो' (रू भे)
(स्त्री० ताडूकियोडी)

टाढ़ो—देखो 'ठाडो' (रू भे) उ०—१ हेमत रा बरफ ऊगडिग्रा, टाढो टमकियो, ग्राळो पडण लागो।—रा सा स
उ०—२ तुम्हे करउ टाढ़ी छाह रे।—म कु
(स्त्री० टाढी)

टाप-स०स्त्री०—१ घोडे की टाग का सबसे नीचे का हिस्सा, नीचे का नाखून, सुम, पादतल २ घोडे के पैर के नीचे के भाग (पादतल) का जमीन पर बना चिन्ह ३ घोडे के पैरो का जमीन पर पडने का शब्द ४ घोडे के ग्रगले पैर का प्रहार, ग्राघात।
उ०—धणी री रुड सीस बिना री धड जुद्ध करती ही नै पडियो नही हो उण पैली यू बैरिया रा झुड नै टापा सू मार चिगद टूक-टूक होय धणी कबध हुवो लडना धणी रा धड पहली पडियो।—वी.स टी.
५ छान, छप्पर। उ०—सूका केळा काट टाप घर गाया भैसा, खेत झूपडी लेत खमित ग्राणद सदेसा।—दसदेव
६ खस, काटे ग्रादि की बनाई टट्टी जिसको पानी से भिगोने पर ठडी हवा ग्राती है।

टापटीप—देखो 'टीपटाप' (रू भे)

टापदार-वि०—टाप के ग्राकार का, टाप सम्बन्धी।

टापर-स०स्त्री०—१ घोडे की झूल २ घोडे की जीण का एक उपकरण जो काठी के नीचे लगाया जाता है ३ पशुग्रो की सर्दी से रक्षा करने हेतु ग्रोढ़ाने का एक मोटा वस्त्र। उ०—जिणि दीहे पाळउ पडइ, टापर तुरी सहाइ। तिणि रिति वूढ़ी ही झुरइ, तरुणी केम रहाइ।—ढो मा
४ देखो 'टापो' (मह, रू.भे)

टापरणो, टापरवो—देखो 'टपणो, टपवो' (रू भे)

टापरियोडो—देखो 'टपियोडो' (रू भे)
(स्त्री० टापरियोडी)

टापरियो—देखो 'टापरो' (ग्रल्पा, रू भे) उ०—कठै सू भाइपै वाळा जीमसी। जमा-जत मे तौ ग्रेक टापरियो है जिको भलाई ग्रडाणै धर दो।—वरसगाठ

टापरी-स०स्त्री०—देखो 'टापरो' (ग्रल्पा, रू भे)
कहा०—टपकण लागी टापरी, भीजण लागी खाट—वर्षा से गरीब की झोपडी मे पानी टपकने लगा जिससे खाट भी भीगने लगी ग्रर्थात् निर्धनता मे दु खो की वृद्धि होती जाती है।

टापरो-स०पु०—१ घास-फूस का मकान, कच्चा मकान, झोपड़ा।
उ०—ग्रौर बीकेजी की उमेदसर कोट माडियौ, चेजी हुवै छै, लोग टापरा बाधिया।—नाप साखलै री वारता
मुहा०—टोटा री टापरी है—निर्धन, कगाल, दरिद्र।
ग्रल्पा०—टापरियो, टापरी।
मह०—टापर।
वि०—छोटा ग्रौर ग्रागे की ग्रोर मुडा हुग्रा (कान)
उ०—पग छापरो, कान टापरो, ग्राखि उड़ि, निलाडि भूडि।—व.स.
रू०भे०—टापो, टेपो।

टापी–सं०स्त्री०—१ पतली, सीधी तथा कोमल लकडी जो वाति (देखो 'वाती') के काम मे आती है। उ०—वाडे फोग खेतडा काढे, मीवा वाड वणावता। टापी टाटा टेर वातों, फळसा छान छवावता।
—दसदेव

२ खेत मे बना छप्पर या झोपडी।

टापू–सं०पु०—चारो ओर जल से घिरा हुआ भू-खण्ड, द्वीप।

टापो–सं०पु०—१ टक्कर, आघात।

मुहा०—टापा मारणा—टक्करें खाना, व्यर्थ घूमना, आवारा घूमना, ऐसा घूमना जिससे कोई फल नही निकले. २ देखो टापरो (रू भे)

टाबर–सं०पु० [सं० तर्पं तृप्ति (प्रसन्नता) राति ददाति तर्परः, प्रा० टप्पर, टव्वर, टाबर] बालक, लडका। उ०—कूवो व्है तो ढाक लू, समद न ढाक्यो जाय। टाबर व्है तो राखलू, जोवन(न) राख्यो जाय।
—लो गी.

मुहा०—१ टाबर रुळणा—बच्चो का अनाथ होना. २ टाबर री आख मे घाल्यो ही नही खटकणो (रडकणो)—सयाना बालक जिसका आचरण किसी को नही अखरे।

कहा०—१ टाबरा घर बसतो व्है तो बावो बूढी क्यू लावै—मा के न होने पर घर का कार्य-भार यदि बालक सम्भाल ले तो पिता को दूसरी पत्नी लाने की क्या आवश्यकता होती अर्थात् यदि नौसिखियो स काम चलता होता तो अनुभवी लोगो को कौन पूछता २ टाबरा री टोळी बुरी, घर मे नार बोळी बुरी—घर मे बहुत ज्यादा सन्तान होना ठीक नही, इसी प्रकार घर मे बधिर स्त्री का होना भी अच्छा नही होता है।

यौ०—टाबर-छोरू, टाबर-टीगर, टाबर-टीकर, टाबर-टूबर, टाबर-टोळी, टाबर-दार, टाबरीदार।

अल्पा०—टाबरियो।

टाबर-टींगर–सं०पु०यौ०—बाल-बच्चे। उ०—लारै फुर'र देखियो तो आगै लुगाया, टाबर-टींगर, मिनख, सै मिळा'र कोई १५ जणा ऊभा।
—वरसगाठ

रू०भे०—टीगर-टोळी।

टाबरदार—देखो 'टाबरीदार' (रू भे)

टाबरपण–सं०पु०—१ बाल्यावस्था, बचपन। उ०—झमकू अर भीमजी टाबरपण मे घणा साथै रम्या हा।—रातवासो

२ बच्चा होने का भाव, बाल्यावस्था का गुण।

टाबरियो—देखो 'टाबर' (अल्पा, रू भे)

उ०—घोडा रोवै घास नै, टाबरिया रोवै दाणा नै। बुरजा मे ठुकराण्या रोवै, जामण जाया नै, हा रै, रोळो वापरियो, क देस मे अगरेज आयो रे, क रोळो वापरियो।—लो गी.

टाबरीदार–वि०—अधिक सन्तान वाला, जिसके अधिक बच्चे हो।

टार–उभ०लिं० [सं० टार] दुबला-पतला घोडा या घोडी, साधारण घोडा या घोडी। उ०—अबै हू सी कद सूरज अस्त, मिळ कद पिव सू होसू मस्त। महनत मोटी टोटी टार, पगां पागळो हाकणहार।
—र हमीर

कहा०—१ टार मारिया केकाण कापै—दुबले-पतले घोडे को पीटने मे पास मे खडा जबरदस्त घोडा भी भयभीत हो जाता है अर्थात् निर्बल को अपनी शक्ति से दबा कर शक्तिशाली को भी भयभीत किया जा सकता है।

टारड़ी–सं०स्त्री०—देखो 'टार' (अल्पा, रू.भे)

टारडो–सं०पु०—देखो 'टार' (अल्पा, रू भे)

टाळ–सं०स्त्री०—१ बालो के बीच की वह रेखा जो शिर के बालो को दोनो ओर विभक्त करती है, माग।

उ०—नथ रै मोती लाग गुलाल, टाळ मे सूती रेख सिंदूर। जगावै ओळू हीयै अलख, आखडी आसूडा भरपूर।—साफ

क्रि०प्र०—काडणी, निकाळणी।

२ गहराई। उ०—असा राण 'राजेस' कमठाण कीधा अकळ, कोड जुगा लग नह जाय कळिया। पाळ जोय 'हेम' रा गरव गळिया पहल, टाळ जोय समद रा गरभ टळिया।—जोगीदास कवारियो

३ बैल के गले मे बाधी जाने वाली छोटी घटी।

उ०—झीणी-झीणी रे वीरा उडै छै खेह, बादळ दीसे बूथळा जे, बळदा री, रे वीरा, बाजी छै टाळ, गाड चरखता म्हे सुण्या जे।
—लो गी

४ पृथक करने की क्रिया या भाव।

यौ०—टाळ-टूळ, टाळ-मटूळ, टाळ-मटोळ।

क्रि०वि०—१ बिना, रहित। ज्यू—थारै टाळ म्हारो काम को चलै नी २ सिवाय, अतिरिक्त। ज्यू—इणरै टाळ बीजा सैंग चोखा है।

टाल–सं०स्त्री०—१ जलाने की लकडी बेचने की बडी दुकान.

२ बूढी गाय।

टाळउ—देखो 'टाळो' (रू भे)

उ०— तू तउ मोसू रहई निराळउ, माया गाळउ। इम टाळउ किम कीजइ रे लो।—वि कु

टाळको—देखो 'टाळमो' (रू भे)

(स्त्री० टाळकी)

टाळटूळ—देखो 'टाळमटूळ' (रू भे)

क्रि०प्र०—करणी।

टाळणी, टाळबो–क्रि०स०—पृथक करना, अलग करना।

उ०—रावळ रै भाई हरधवळ असवार १००० टाळ नै पेला ऊपर तूट पडियो।—नैणसी

२ दूर करना, निवारण करना। उ०—पीडति हेमत सिसिर रितु पहिलो, दुख टाळ्यो वसत हित दाखि। व्याए वेली तणी तरुवरा, साखा विसतरिया वैसाखि।—वेलि

३ मिटाना, दूर करना, नाश करना। उ०—१ ऊगारि अबळा स्वामि सबळा, कान्ह टाळि कळक। केतला रिण भाजस्यइ, केसरी नर वर सख।—रुक्मणी मगळ

उ०—२ जिणेसर सासो टाळै एम ।—जयवाणी

४ बचाना, छिपाना । उ०—लोका हुँती पगि बीहतै, लोक री नदर टालि अर गोवळजी कुवरजी सेती अरज की ।—द वि

५ रक्षा करना, सुरक्षित करना, बचाना ।

उ०—१ ताहरा इयू गोवळजी कहियो थे रामसिघजी रो मरण टाळो आज रो काको काढो—द वि

उ०—२ चिलमिया करण चित चाह सू, टळणहार नहि टाळणा । अमलिया तणा सिधात ए, वळै जठा तक वाळणा ।—ऊ का

६ चुनना, छाटना. ७ किसी कार्य को नियत समय पर न कर के आगे का समय निश्चित कर देना । ज्यू—वे तो ब्याव टाळ दियो पण थे कद करो ।

८ उल्लघन करना, नही मानना । ज्यू—वै म्हारो कै'णो नही टाळसी ।

९ अनुपस्थित करना, दूर करना । ज्यू—इण नीच नै अवै अठू टाळ देणो चाइजै ।

टाळणहार, हारो (हारी), टाळणियो—वि० ।

टळवाडणो, टळवाडवो, टळवाणो, टळवाबो, टळवावणो, टळवाववो, टळाडणो, टळाड़वो, टळाणो, टळाबो, टळावणो, टळाववो, टाळाडणो, टाळाडवो, टाळाणो, टाळाबो, टाळावणो, टाळाववो—प्रे०रू० ।

टाळिओडो, टाळियोडो, टाळयोडो—भू०का०कृ० ।

टाळीजणो, टाळीजबो—कर्म वा० ।

टळणो, टळबो—अक०रू० ।

टाळमटूल, टाळमटोळ—स०स्त्री०—हीला-हवाला, बहाना ।

क्रि०प्र०—करणो ।

रू०भे०—टाळटूल, टाळाटोळी ।

टाळमो—वि० (स्त्री० टाळमी) चुनिंदा ।

रू०भे०—टाळको, टाळवो, टाळिमो ।

टाळवो—वि० (स्त्री० टाळवी) १ दूर करने वाला, मिटाने वाला, निवारण करने वाला, टालने वाला । उ०—सावळा रहै साथै सदा, कहू चढण नै काळवी । यण रीत म्हनै कीजै अमर, आप महू दुख टाळवी ।—पा प्र

देखो 'टाळमो' (रू भे)

टाळाटोळी—देखो 'टाळमटोळ' (रू भे) उ०—तरै सुहवदे नू प्रथीराज कह्यो—'ओ जूतो किणरो छै ? अठै कुण मरद आवै छै ? तरै सुहवदे वेळा दोय च्यार तो टाळाटोळी री कही, तरै प्रथीराज री आख भूठी देखी ।—नैणसी

क्रि०प्र०—करणो ।

टाळिमो—देखो 'टाळमो' (रू भे.) उ०—घरि वइठा ही आविसयइ. लाखे लिया लडग । तिणिमइ लेस्या टाळिमा, वाकड मुहा विडग ।

—ढो मा

टाळियोडो—भू०का०कृ०—१ पृथक किया हुआ, अलग किया हुआ २ आपत्ति टाला हुआ, दुख दूर किया हुआ. ३ मिटाया हुआ, दूर किया हुआ, नाश किया हुआ ४ बचाया हुआ, छिपाया हुआ ५ रक्षा किया हुआ, सुरक्षित किया हुआ. ६ चुना हुआ, छाटा हुआ ७ आगे स्थिर किया हुआ (कार्य या समय) ८ उल्लघन किया हुआ, नही माना हुआ ९ अनुपस्थित किया हुआ, दूर किया हुआ ।

(स्त्री० टाळियोडी)

टाळी—स०स्त्री०—१ पशुओ के गले मे बाधी जाने वाली घटी

२ देखो 'टाळी' (१) (अल्पा , रू भे)

टाली—स०स्त्री०—१ गिलहरी (मेवाड) २ वृद्ध गाय।

टाळो—स०पु०—१ वृक्ष के तने से निकलने वाली बडी और मोटी शाखा ।.

अल्पा०—टाळी ।

२ निवारण करने की क्रिया या भाव । उ०—भीव तो अठै जाण टाळो करै । नाथ वार दोय तीन कह्यो ।—नैणसी

यौ०—आग्य-टाळो ।

३ व्यतीत करने की क्रिया या भाव । उ०—कध जोड उभै महि खाण किया । दन टाळांय सोळह पौ'र दिया ।—पा प्र

४ बहाना करने की क्रिया या भाव । उ०—ताहरा आमै बारहट नू वाधेजो कह्यो—भरमल मोनू दीजै । आसै घणो ही टाळो कियो। दीठो—वाघै रया रजपूताण्या ओळभो देसी । पण वाघो छाडै नही। ताहरा आसै भरमल दीन्ही ।—ऊमादे भटियाणी री वात

५ रुकावट या बचाव करने की क्रिया या भाव ।

उ०—दळ गयद टाळा दियै, वाघ तणी वधवाह । हौल पडै प्रसणा हियै, गहन 'पतो' गजगाह ।—किसोरदान बारहठ

६ दूर रहने या बचने की क्रिया या भाव । उ०—आ तो इसडा ई बलाय, जिका सू जम ही टाळो दे जाय ।

—प्रतापसिघ म्होकमसिघ री वात

रू०भे०—टाळउ ।

टालो—स०पु०—१ वृद्ध या निर्बल बैल २ ऊंट पर लादा जाने वाला ईंधन या घास का गट्ठर ।

टावळ—स०स्त्री०—घोडी ।

टावाटेवो—स०पु० (अनु०) विशेष अवसर ।

टावो—स०पु०—१ विशेष अवसर २ समय ३ मृत्यु भोज ।

टाहुली—स०स्त्री०—टहल करने वाली, नौकरानी । उ०—यान समारो टाहुली । चोवा चदन अग सुहाई ।—बी दे

टिंचर—स०स्त्री०—१ लोहे का बना हुआ पत्थर घडने का औजार विशेष (अ० टिंकचर) २ स्पिरिट के योग से तरल रूप में बनाया जाने वाला किसी औषध का सार ।

टि—स०स्त्री०—१.पैदा. २ देवता ३.हथिनी. ४ पुतलीधर.

५ पृथ्वी ६ क्षमा (एका)

वि०—१ जिद्दी. २ बहुत ।

टिकडियो—देखो 'टिक्कड' (रू भे) (शेखावाटी)

टिकडी-स०स्त्री०—१ हुक्के की चिलम के ककड पर तम्बाकू के नीचे रक्खी जाने वाली मिट्टी की बनी गोल व चपटी वस्तु (अमरत)
२ छोटी गोलाकार व चपटी वस्तु ।
रू०भे०—टिकली, टीकडी।

टिकडौ-स०पु०—१ आभूषण विशेष २ देखो 'टिकडी' (मह, रू भे)
रू०भे०—टिकलौ ।

टिकट—देखो 'टिगट' (रू भे)

टिकटिक-स०स्त्री० (अनु०) घडी के बोलने का शब्द ।

टिकटिकी—देखो 'टकटकी' (रू भे)

टिकणौ, टिकबौ-क्रि०अ०—१ निवास करना, रहना, बसना ।
उ०—था अठै टिकौ, जोख आवै तौ जायगा लेवौ जे भावै तौ नकदी लेवौ ।—गौड गोपाळदास री वारता
२ ठहरना, रहना । उ०—कन्हीराम रामसिंहोत कूपावत नू अभैसिंहजी मेडतै बखतसिंहजी कन्है मेल्हिया । महीना दोय टिक वाता कर मेडतौ छुडाइयौ ।—मारवाड रा अमरावा री वारता
३ बना रहना, स्थाई रहना । ज्यू—औ नवौ कुड तौ किताक दिन टीकी । ४ आधार पर स्थिर होना, सहारे पर रहना । ज्यू—हेटौ पडता ही म्हारा हाथ टिक गया । ५ थमना, रुकना ।
उ०—किणैई रैबारिया रै बाडा री सरण लीवी, किणैई भीला रा झूपा सभाळिया तौ कोई रा पग ठेठ खेता री बाजरिया मे जावता टिकिया ।—रातवासौ
६ रुकना, ठहरना । उ०—मिळतौ मगण नू कहै, मुदौ करू मालूम । मारग लागौ मत टिकौ, हाजर नाजर सूम ।—बा.दा.
७ किसी घुली हुई वस्तु का पैदे मे जमना. ८ (अपनी) स्थिति बनाये रखना । ज्यू—वीर रै साम्ही कायर नही टिक सकै ।
टिकणहार, हारौ (हारी), टिकणियौ—वि० ।
टिकवाडणौ, टिकवाडबौ, टिकवाणौ, टिकवाबौ, टिकवावणौ, टिकवावबौ—प्रे०रू० ।
टिकाडणौ, टिकाडबौ, टिकाणौ, टिकाबौ, टिकावणौ, टिकावबौ —क्रि०स० ।
टिकिओडौ, टिकियोडौ, टिक्योडौ—भू०का०कृ० ।
टिकीजणौ, टिकीजबौ—भाव वा० ।
टकणौ, टिकबौ, टिगणौ, टिगबौ—रू०भे० ।

टिकली—देखो 'टिकडी' (रू भे)

टिकलौ—देखो 'टिकडौ' (रू भे)

टिकाणी—देखो 'टकाणी' (रू भे)

टिकाई-स०स्त्री०—१ टिकाने की मजदूरी या वेतन ।
२ देखो 'टीकायत' (रू भे)

टिकाउ, टिकाऊ-वि०—कई दिनो तक काम देने वाला, मजबूत, दृढ, टिकने वाला ।

टिकाणौ, टिकाबौ-क्रि०स०—१ ठहराना. उ०—वीरमजी भीमराजजी नू मेड़तै नीठ टिकाया, पछै साखत रा घोडा चार और बागा देय विदा किया ।—ठाकर जैतसिंह री वारता
२ थामना. ३ रोकना. ४ निवास कराना, रखना, बसाना ।
५ सहारे पर रखना, आधार पर रखना ६ मारना, पीटना.
७ स्थिति पर कायम रखना ।
टिकाणहार, हारौ (हारी), टिकाणियौ—वि० ।
टिकायोडौ—भू०का०कृ० ।
टिकाईजणौ, टिकाईजबौ—कर्म वा० ।
टिकणौ, टिकबौ—अक० रू० ।
टिकाणौ, टिकाबौ, टिकाडणौ, टिकाडबौ, टिकावणौ, टिकावबौ —प्रे०रू० ।

टिकायोडौ-भू०का०कृ०—१ ठहराया हुआ, रोका हुआ २ मारा हुआ, पीटा हुआ ३ निवास कराया हुआ, बसाया हुआ, रखा हुआ
४ सहारे पर रखा हुआ, जमाया हुआ. ५ थामा हुआ ६ रोका हुआ ७ स्थिति पर कायम रखा हुआ ।
(स्त्री० टिकायोडी)

टिकाव-स०पु०—१ धैर्य २ यात्रियो के ठहरने का स्थान, पडाव.
३ स्थायित्व, ठहराव. ४ छूने की क्रिया या भाव, स्पर्श करने की क्रिया या भाव ।

टिकियोडौ-भू०का०कृ०—१ बसा हुआ, निवास किया हुआ, रहा हुआ
२ ठहरा हुआ, रहा हुआ ३ स्थाई रहा हुआ. ४ आधार पर स्थिर हुवा हुआ. ५ थमा हुआ. ६ रुका हुआ ७ पैदे मे जमा हुवा हुआ ८ स्थिति बनाया हुआ ।
(स्त्री० टिकियोडी)

टिकैत—देखो 'टीकायत' (रू भे.)

टिकोर-स०पु०—१ (ढोलक, मृदग आदि) वाद्य की ध्वनि ।
उ०—देवतु के मन भूलतै डोलतै है, म्रदगू के परन और ढोलकू के टिकोर और सुरबीणू के झणहणा और तबूरन की घोर ।—सू.प्र.
२ देखो 'टकोरौ' (मह, रू भे)

टिकोरियौ—देखो 'टकोरौ' (अल्पा, रू भे)

टिकोरी-स०स्त्री०—बढ़ई के आरे को तेज करने का एक औजार ।
२ देखो 'टकोरौ' (अल्पा, रू भे)

टिकोरौ—देखो 'टकोरौ' (रू भे)

टिक्कड़-स०पु०—मोटी रोटी (मह)
उ०—घर मे मामी दमोदम हो । मामो-भाणजो हाथै-ई टिक्कड पोवता जणै भोजन मिळतौ ।—वरसगाठ
अल्प०—टिकडियो ।

टिगट-स०पु० [अं० टिकट] १ वह प्रमाण पत्र जो किसी प्रकार का कर, किराया, महसूल आदि के भुगतान के रूप मे प्राप्त किया जाय २ कोई काम करने या प्रवेश व प्रस्थान के लिए अधिकार-पत्र ।
वि०वि०—कई स्थानो पर यह कागज के अतिरिक्त धातु का भी बनाया जाता है ।
रू०भे०—टिकट, टिगस ।

टिगटी-स०स्त्री०—जल आदि का पात्र रखने की तिपाई (शेखावाटी)

टिगणो, टिगबो—देखो 'टिकणो, टिकबो' (रू भे)
उ०—जो कू ललो-पतो कीजै तो टिग मगीजै ।—नैणसी

टिगस—देखो 'टिगट' (रू भे)
उ०—चौवरी दौडता भागता टिगस कराय नै गाडी तो पकडली पण डिब्बा मे गरमी इसी ही कै उगरो दम घुटण लागग्यो ।
—रातवासो

टिचकारणो, टिचकारबो—देखो 'टुचकारणो, टुचकारबो' (रू भे)

टिचकारी-स०स्त्री०—देखो 'टिचकारो' (अल्पा, रू.भे)
उ०—१ ठाकर जोर सूं खंखारो कियो अर ऊठा नै टिचकारी दीवी ।
—रातवासो
उ०—२ तद गाव चौवरी टिचकारी देवतो तिपडा री गोळ नाळ साम्ही इसारो कर'र कह्यो—'गजब रा घर कर दिया, मोटी खोड राखदी ?'—वाणी

टिचकारो-स०पु०—१ पशुओ को हाकने का शब्द ।
क्रि०प्र०—करणो, देणो ।
२ इनकार करने के लिए किया जाने वाला शब्द ।
क्रि०प्र०—करणो, देणो ।
३ घूघट निकालने वाली अथवा पर्दानशीन औरत के सकेत का शब्द
क्रि०प्र०—करणो, देणो ।
४ विस्मित हो कर किया जाने वाला शब्द ।
क्रि०प्र०—करणो, देणो ।
अल्पा०—टिचकारी ।

टिचटिच-स०स्त्री०—१ ध्वनि विशेष ।
क्रि०प्र०—करणो ।
२ पशुओ को हाकने की, इनकार करने की, पर्दानशीन औरत के सकेत करने की तथा विस्मित होने पर मुंह से निकलने वाली ध्वनि ।
क्रि०प्र०—करणो ।

टिटिभ, टिटिहो, टिट्टिभ—देखो 'टीटोडी' (रू भे, डि को)

टिड्डी—देखो 'तीड' (रू भे, शेखावाटी)

टिणण-स०स्त्री०—चिंता । उ०—मियाजी दूबळा क्यू कै साता घरा री टिणण है ।—अज्ञात

टिप—देखो 'टप' (रू भे)

टिपको—देखो 'टपको' (रू.भे)

टिपटिप-स०स्त्री०—१ बूद-बूद गिरने या टपकने की क्रिया २ ध्वनि विशेष ।
रू०भे०—टपटप ।

टिपण, टिपणी-स०स्त्री०—वह विवरण जिससे किसी प्रसग या वाक्य का अर्थ मालूम हो, टीका ।
रू०भे०—टिप्पण, टिप्पणी, टीपणी ।

टिपली-स०स्त्री—देखो 'टिपलो' (अल्पा, रू भे)

टिपलो-स०पु०—मस्तक, शिर ।
क्रि०प्र०—कूटणो, घडणो ।
अल्पा०—टिपली ।

टिपस-उ०लिं०—उपाय, युक्ति । उ०—टिपस करै लेवा टका, नही मन माहे नेह । राग करै इण सू रसै, गणिका अवगुण गेह ।—घ.व ग्र.
क्रि०प्र०—करणो, जमाणो, बैठणो, भिडाणो, लागणो ।
रू०भे०—टिप्पस ।

टिपूडो-वि०पु० (स्त्री० टिपूडी) छोटे बच्चों के लिये प्रयोग किया जाने वाला (प्यार सूचक) शब्द ।

टिपो-स०पु०—१ गायन । उ०—कळावता कळावा कनै आपरा कीया ख्याल टिपा गवावै है —र हमीर
२ देखो 'टिप्पो' (रू भे)

टिप्पण, टिप्पणी—देखो 'टिपणी' (रू भे)

टिप्पस—देखो 'टिपस' (रू भे)

टिप्पो-स०पु०—१ उछल-उछल कर जाती हुई वस्तु का बीच-बीच मे टिकान, फेंकी हुई वस्तु का जाते हुए बीच-बीच मे भूमि का स्पर्श ।
क्रि०प्र०—खाणो, देणो ।
मुहा०—१ टिप्पा खाणा—आवारा घूमना, बेकार फिरना, भरे हुए जलाशय मे उठने वाली लहरो का तट से टकराना २ टिप्पा देणा—मस्ती मे झूमते हुए फिरना ।
२ एक रागिनी विशेष ।
मुहा०—टिप्पा देणो—मधुर ध्वनि मे गायन करना ।
३ सकेत मात्र ।
मुहा०—टिप्पो धरणो, नाकणो—याद आने के लिये थोडा सा लिख लेना, सकेत देना ।
४ बूंद, कतरा. ५ इधर से उधर झुकने या हिलन-डोलने की क्रिया, झोका । उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति दारू री तूगा लागी सू ओछाछिआ घणं'ठंडे पाणी सू छाटि-छाटि नै वडा री साखा सू नागळी थकी झूलै छै । पवन री हवा सू टिप्पा खाइनै रही छै ।—रा सा स
रू०भे०—टपो, टप्पो, टिपो ।

टिबको—देखो 'टपको' (रू भे)

टिमकी-स०स्त्री०—बिन्दी । उ०—खोळा टगियोडा गळ मे खूगाळी । जळजुत ठोडी पर टिमकी जघाळी ।—ऊ का

टिमची-स०स्त्री०—तिपाई ।
रू०भे०—टिबचो ।

टिमटिमाणौ, टिमटिमावौ–क्रि०अ०—रह रह कर चमकना, मन्द-मन्द प्रकाश देना, झिलमिलाना।

टमटमाणौ, टमटमावौ (रू भे)

टिरड—देखो 'टरड' (रू भे)

टिरडी–वि०—१ घमडी, अभिमानी, २ सिनकी।

स०स्त्री०—घमड, अभिमान। उ०—खळ भाति सिरडी मन मे खिटै, मिटै न टिरडी कुमाणसा।—ऊ का

टिरणौ, टिरवौ–क्रि०अ०—ऊँचे आधार से नीचे की ओर अधर मे रहना, लटकना।

टिरयोडौ, टिरियोडौ–भू०का०कृ०—लटका हुआ।

(स्त्री० टिरयोडी, टिरियोडी)

टिलायत—देखो 'टीकायत'। उ०—गिण आत उभै राढ एक गिर। किण हूत टिलायत राव कर।—चिमनजी कवियौ

टिलौ, टिल्लौ–स०पु०—धक्का, टक्कर, आघात।

उ०—१ हुले टिला हाथिया, जूट हम्मला हजारा। सभे चाढि बळ सवळ, इसी नाळिया अपारा।—सू प्र.

उ०—२ करे पाव टिल्ला पछै चूर कीधौ। दिसा लक आकास मे डाण दीधौ।—सू प्र

मुहा०—टिल्ला देणा—उकसाना, प्रेरित करना।

रू०भे०—ठिलौ, ठिल्लौ।

टिवची—देखो 'टिमची' (रू भे) उ०—खाड रा कापा भेळा कर वेकी कर राखी, मैदौ, घिरत सारौ काढ तयार कर राखियौ, टिवची, गळणी सरब तयार कर गुमासता च्यार-पाच था तिका नै कह्यौ सारी सरवरा करी छै।—राजाभोज अर खाफरै चोर री वात

टींगण — देखो टेंगणौ' (मह, रू भे)

टींगणियौ—देखो 'टेंगणौ' (अल्पा, रू भे)

टींगणौ—देखो 'टेंगणौ' (रू भे)

(स्त्री० टींगणी)

टींगणौ, टींगवौ–क्रि०अ०—किसी पदार्थ की प्राप्ति के लिए तकना, लालायित होना, दीन होना।

टीवणौ, टीववौ, टीवणौ, टीयवौ, टूगणौ, टूगवौ—रू०भे०।

टींगर–उ०लि०—बाल-बच्चे।

यौ०—टाबर-टींगर, टींगर-टोळी।

अल्पा०—टींगरियौ।

टींगर-टोळी—देखो 'टाबर-टींगर' (रू भे) उ०—टींगर-टोळी ले चटपट घण टोळी। चहुधा चीधणसी दुवधा घट दोळी।—ऊ का

टींगरियौ—देखो 'टींगर' (अल्पा., रू भे) उ०—ढाढा ताभाडै केरडिया ढीकै। रोटी पाणी नै टींगरिया रीकै।—ऊ का

टींगा-टोळी–स०स्त्री०यौ०—१ हाथ-पाव पकड कर जबरन ले जाने की क्रिया।

वि०वि०—इसमे किसी मनुष्य या बच्चे को ज़बरन ले जाने के लिए एक व्यक्ति उसके हाथ व दूसरा पैर पकड़ता है, फिर उसे उठा कर ले जाया जाता है।

क्रि०प्र०—करणी।

२ खीचातान।

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

रू०भे०—टागा-टोळी, ठीगा-ठोळी।

टींगाणौ, टींगावौ–क्रि०स०—लालायित करना, तकाना।

रू०भे०—टीवाणौ, टीवावौ, टीवाणौ, टीवावौ, टूगाणौ, टूगावौ।

टींगायोडौ–भू०का०कृ०—लालायित किया हुआ।

(स्त्री० टींगायोडी)

टींगियोडौ–भू०का०कृ०—लालायित हुवा हुआ, तका हुआ।

(स्त्री० टींगियोडी)

टींच–स०स्त्री०—लडाई, युद्ध। उ०—अवै अठै जसवतजी सवार रा हौज सेवा पूजा कर जीम कर नै जीनसाल पहर नै घाटा रै मुहडै आवै। उठी या पातसाही फौज चढ नै आवै। अठै पोहर ३ टींच हुवै।

—राव मालदे री वात

टींचणौ–स०पु०—पशु के पिछले पैर का सधिस्थान।

अल्पा०—टींचणी।

टींचियौ—देखो 'टीचियौ' (रू भे)

टींट–स०स्त्री०— पक्षी का विष्ठा, बीट।

टींटोळी, टींटोडी, टींटोहडी–स०स्त्री० [स० टिट्टिभ] जल के निकट रहने वाली बडी चिडिया, टिटहरी।

रू०भे०—टिटिभ, टिटिडी, टिटिभ, टीटोळी, टीटोडी, टीटभ, टीटी, टींटूडी।

टींडरौ—देखो 'टींडसी'।

उ०—तदनतर मुग वडी, उडद वडी, छमका वडी, पलेह वडी, साउतली वडी, माहिन नु चीर छमकावी, डोडी खाइया टळटळता टींडरा भली वालहुलि।—व स

टींडसी–स०स्त्री०—१ टिंड नामक एक लता व उसके लगने वाला फल जिसकी तरकारी बनती है। उ०—नारेळा वरगी गुडैक टींडस्यू रामूडौ अव राजी ह्वै गयौ।—लो गी.

रू०भे०—टींडी।

मह०—टींडसी, टींडौ।

टींडसौ—देखो 'टींडसी' (मह रू भे) उ०—मीठा हुवै मतीर, खूब खाटोडा फोगा। काचर काकडिया, टींडसा सागा जोगा।—दसदेव

टींडी—देखो 'टींडसी' (रू भे)

टींडू–स०पु०—काले रग का वृक्ष विशेष, इसके पत्तो से वीडिया वनती है।

टींडौ—देखो 'टींडसी' (मह, रू.भे)

टींप—देखो 'टीप' (रू भे)

टींबरू—देखो 'टीमरू' (रू भे) उ०—टोकर टीट्ट टींबरू, टाहुलोआ

नइ टोट। टहि टटिवटिण टहिकला, टाक टपाली सोट।—मा.का प्र

टींवणो, टींववो—देखो 'टीगणो, 'टीगवो' (रू भे)

टींवाणो, टींवावो—देखो 'टीगाणो, टीगावो' (रू भे)

टींवायोडो—देखो 'टीगायोडो' (रू भे)

(स्त्री० टींवायोडी)

टींवियोडो—देखो 'टीगियोडो' (रू भे)

(स्त्री० टींवियोडी)

टी-सं०पु०—१ आकाश. २ बादल ३ पर्वत

सं०स्त्री०—४ पृथ्वी ५ गर्दन. ६ हानि।

टीकडी—१ देखो 'टिकडी' (रू भे.) २ देखो 'ठीकरी' (रू भे.)

टीकणो, टीकवो–क्रि०स०—तिलक करना।

टीकम, टीकमो–सं०पु० [सं० त्रिविक्रम] १ वामनावतार। उ०—बदरी टीकम परस बुध, जगमोहण जैकार। घण दाता आणदघण, स्रीपति सब आधार।—ह र

२ विष्णु। उ०—टीकमादेस अनत सिध तारण, उदाहरण अेळा असमान।—अज्ञात

३ श्रीकृष्ण। उ०—सतवार जरासध आगळ स्रीरग, विमहा टीकम दीध वग। मेलि घात मारे मधुसूदन, असुर घात नाखे अळग।—जमणजी सोदो

टीकर–सं०पु०—बबूल का वृक्ष (तोरावाटी, मेवात)

टीकली कमेडो–नि०यौ०—१ मुख्या, प्रमुख व्यक्ति २ दक्ष, प्रवीण, हर्फनमौला।

क्रि०प्र०—होणो।

टीकलो–वि०पु० (स्त्री० टीकली) १ वह बैल जिसके सिर पर टीका हो। (अशुभ)

२ वह पशु जिसके सिर मे सफेद चिन्ह हो. ३ जिसके सिर पर तिलक किया हुआ हो, तिलकधारी।

टीका–सं०स्त्री०—वह व्याख्या, ग्रथ या वाक्य जो किसी पद, ग्रथ या वाक्य का अर्थ स्पष्ट करे।

क्रि०प्र०—करणी।

मुहा०—टीका टिप्पणी करणी—आलोचना करना।

यौ०—टीका-टिप्पणी।

टीकाइत, टीकाइस, टीकाई—देखो 'टीकायत' (रू भे)

उ०—१ वरे मेहराज कह्यो—राव राणगदे रो वेटो टीकाइत सादो ...माहिला रै दिना दोय नै परणीजसी।—नैणसी

उ०—२ रावळ केहरण, रावळ केहर रो वडो वेटो टीकाइत हुतो, लाछा देवडी रै पेट रो।—नैणसी

उ०—३ राजा भगवांतदास भारमल रो, आवेर टीकाई, वडो ठाकुर हुवो।—नैणसी

उ०—४ राणो पतो टीकाई।—नैणसी

टीकाकार–सं०पु०—टीका करने वाला, व्याख्याकार।

टीका-दौड़–सं०स्त्री०यौ०—नये राजा के गद्दीनशीन होते ही विपक्षी देश पर हमला करने की एक रस्म।

वि०वि०—राजा गद्दीनशीन होकर किसी दुश्मन के शहर या इलाके को लूटे। अगर कोई बडा दुश्मन उस वक्त न हो तो मेवाड के महाराणा अपने ही देश के भील, मेर आदि के ग्रामो पर इस रीति को पूरा करते थे।

टीकायत–सं०पु०—१ राज्याधिकारी पट्टाधिकारी, राजा का उत्तराधिकारी, टिकैत। उ०—मडोवर गढ राव चूडोजी राज करै। तिणरै १४ कवर, तिण मे राजपाट टीकायत राव रिणमलजी।

—राव रिणमल री वात

२ ज्येष्ठ पुत्र. ३ किसी महत या मठ का उत्तराधिकारी, पट्ट शिष्य ४ तिलकधारी ५ मुखिया, प्रधान, नायक, नेता।

उ०—वारै म्हाको कूचिया तुडावो ताळा रे, झगडो आदरियो, वा वा' झगडो आदरियो टोळी रै टीकायत मायै रे, झगडो आदरियो।

—लो.गी

रू०भे०—टिकाई, टिकैत, टीकाइत, टीकाइस, टीकाई, टीकाळ, टीकैत, टीकोइत।

टीकाळ—१ देखो 'टिकायत' (रू भे) उ०—सग लोक सीस सुचग आदेस तोवह अग। परमेस पाव पताळ कहि किमन घर टीकाळ।

—पीरदान लाळस

२ वह जिसके भाल मे तिलक हो।

टीकियोडो–भू०का०कृ०—तिलक किया हुआ।

(स्त्री० टीकियोडी)

टीकी–सं०स्त्री०—१ गोल बिन्दु, बिंदी, बेंदा २ ललाट पर लगाया जाने वाला छोटा गोल टीका।

क्रि०प्र०—देणी, लगाणी।

यौ०—टीकी-टमको।

३ वह भैंस या गाय जिसके ललाट पर सफेद गोल बिंदु या तिलक हो ४ लडकियो द्वारा गाया जाने वाला एक लोक गीत.

५ स्त्रियो के ललाट पर धारण करने का एक आभूषण विशेष।

उ०—वादळा मे वीजळी रो झळको ज्यू घूगट मे टीकी को पळको

—पना वीरमदे री वात

टीकैत, टीकोइत—देखो 'टीकायत' (रू भे)

टीको–सं०पु०—१ श्रृगार या साम्प्रदायिक सकेत के लिए ललाट व शरीर के अन्य अगो पर गोल चदन, केशर, रोली, मिट्टी, आदि से बनाया हुआ चिन्ह, तिलक। उ०—१ सद्धु नारि तणे सिर टीको।

—श्रीपाळ रास

उ०—२ तोरण आया करै आरती टीको काढ नै सासू-खाचै नाको रे।—जयवाणी

क्रि०प्र०—काडणो, लगाणो ।

मुहा०—१ टीको काडणो, टीको लगाणो—बहुत खर्च करवाना, व्यर्थ खर्च कराना, धोखा दे कर खर्च करवाना । २ टीको लागणो—कलक लगना, धब्बा लगना ।

२ विवाह से पूर्व मॅगनी करते समय कन्या पक्ष वालो की ओर से वर पक्ष वालो को दी जाने वाली नक़दी, जेवर, पशु आदि ।

उ०—कुवर विजयसिहजी पण आ सामल हुवा, वडी जान बणाय जयसळमेर जाय डेरा किया, उठै रावळजी री टीको आइयो ।
—मारवाड रा अमरावा री वारता

क्रि०प्र०—दैणो, भेजणो, मेलणो, लैणो ।

३ राजसिहासन, गद्दी । उ०—१ वासं कान्हो निबळो सो ठाकुर हुवो तरै सतै चूडावत कान्है कन्हा टीको उरो लियो ।
—राव रिणमल री वात

उ०—२ वणवीर रै कवर दो हुवा, वडा कवर रो नाम कानडदे । छोटो राणगदे । टीकै कानडदेजी सोवनगीर राज करै छै ।
—वीरमदे सोनीगरा री वात

उ०—३ राजा मोखरो काम आयो । पछै मोखरा रो वेटो वहुवन टीकै वैठो ।—नैणसी

मुहा०—टीकै वैठणो—राजगद्दी पर वैठना, राज्य-सिहासनारूढ होना ।

४ राज तिलक । उ०—राव जैतसिघ युद्ध करि वैकूठ सिघायो । राव कल्याणमलजी नू ठकुरीयासर ग्राम टीको हुयो पर बिखो हुओ ।
—द वि

५ ललाट का मध्य भाग (जहा तिलक लगाते हैं) ६ प्रजा या साहूकारो द्वारा राजा या जमीदार को दी जाने वाली भेंट ।

७ स्त्रियो के मस्तक पर धारण करने का एक स्वर्णाभूषण ।

क्रि०प्र०—गूथाणो, घडाणो, वाधणो, लगाणो ।

८ पुरुषो की पगडी के साथ लगाया जाने वाला एक आभूषण विशेष ९ घोडे का ललाट जहाँ भावरी या चिन्ह होता है १० चिकित्सा करने की युक्ति जिसमे बीमारी विशेष से बचने के लिए सुइयों द्वारा शरीर मे ओषध पहुँचाई जाती है । ज्यू हैजे रो टीको, चेचक रो टीको, प्लेग रो टीको ।

क्रि०प्र०—दैणो, लगाणो ।

११ मृत्यु के वारहवें दिन सम्बन्धियो या मित्रो द्वारा दिया जाने वाला रुपया ।

१२ राजा, अधिपति । उ०—राणो ईसरदास, ऊमरकोट टीको छो । पछै समत १७१० रावळ सवळसिघ इणनू परो काढ नै जैसिघ नू टीकै वैसाणियो ।—नैणसी

टीचियो—स०पु०—१ चोट लगने से होने वाला घाव या चिन्ह ।

क्रि०प्र०—दैणो, लगणो, लगाणो ।

मुहा०—टीचियो दैणो—कटु शब्द वोलना, व्यग्य कसना ।

२ वह चिन्ह जो घाव मिलने के पश्चात् वना रहता है ।

रू०भे०—टीचियो ।

टीटण—स०स्त्री०—१ एक प्रकार का छोटा जानवर (शेखावाटी)

टीटभ, टीटीं, टीटूडी, टीटोडो—देखो 'टीटोडी' (रू.भे.)

उ०—थियो सदय सुण निज थुई, टीटभ हू त रूसान । उणरा बाळ उवारिया, महामत्र जन मान ।—बा.दा

मुहा०—टीटूडी समद उळीचणो—तुच्छ या छोटे द्वारा वहुत बडा कार्य करने का साहस करना ।

मि०—'ठीकरी घडो फोडणो' ।

टीड —देखो 'तीड' (रू भे)

टीडी—स०स्त्री०—देखो 'तीड' (रू भे)

टीडी-भळको—स०पु०यो०—स्त्रियो के भाल पर लगाया जाने वाला अर्द्ध-चन्द्राकार आकृति का एक स्वर्ण आभूषण, इसमे नगीने जडे रहते हैं ।

मि०—सिवतिलक ।

टीडूर, टीडूरो—स०पु०—टीडसी ।

उ०—मोगरी उढवी कइरा ककोडा कारेला रायकारेला तोरईआ सीघोडा सेलरा राइआ टीडूरा सउसउती डोडी, कळकळता कसूमा ।
—व स

टीन—स०स्त्री० (अ० टिन) १ रागे की कलई की हुई लोहे की पतली चद्दर २ इस प्रकार की चद्दर का वतन ।

टीप—स०स्त्री०—१ दीवार के दो पत्थरो की सधिस्थान मे लगाई जाने वाली पतली चूने या सीमेट की लकीर या लेप ।

क्रि०प्र०—करणो ।

२ पतला चूना या सीमेट जो दीवार के पत्थरो की जोड पर मजवूती के लिए लगाया जाता है ।

यौ०—टीप-टाप ।

३ चूने की गच कूटने का कार्य, पिटाई ४ गाने का ऊँचा स्वर, तान (सगीत)

क्रि०प्र०—दैणी, लगणी, लगाणी ।

५ वह धन जो किसी कार्य को करने या जारी रखने के लिए लोगो अथवा सदस्यो से लिया जाय, चदा ।

६ चदा देने वालो के नाम का सूची-पत्र ७ स्मरण के लिए जल्दी-जल्दी लिखने की क्रिया ८ (खर्चे आदि का) ब्योरा, आकडा ।

उ०—आप सारू दारू की-भटी कढाई छै, लाख रुपिया री टीप चढाई छै, लाख लाख लागा छै, मुसाला जिका तो अरोगै दोय प्याला'
—दरजी मयाराम री वात

९ सगीत मे वह स्वर जिस पर गायक स्वर की खोज मे जाते हैं ।

१० वाद्य की ध्वनि, आवाज । उ०—जवन्निय सेन प्रळै किर ज्वाळ, घमघम पक्खर घुघरमाळ । टमकि तवल्ल नफेरिय टीप, भूझाउ अवक्क वाज सजीप ।—रा रू

वि०—अत्यधिक ठडा । उ०—पण ओरी में ई वा छाट सू गिरिया-

गिरिया तक पाणी भरीजग्यो। सामनै सू ठडो-टीप वायरो ग्रावतो हो।—रातवासो
यौ०—ठडो-टीप।
टीप टाप–स०स्त्री० (ग्रनु०) ठाटवाट, सजावट, दिखावट।
रू०भे०—टाप-टीप, टीम-टाम।
टीपणी—१ देखो 'टिपणी' (रू भे) २ किसी कार्य को करने या जारी रखने के लिये लोगो से ग्रथवा सदस्यो से लिया जाने वाला धन, चदा ३ चदे का सूची-पत्र।
टीपणो–स०पु० [स० टिप्पनकम्] मान, वार, तिथि ग्रादि जानने की पुस्तक पचाग। उ०—सूर न पूछै टीपणो, सुकन न देखै सूर। मरणा नू मगळ गिणै, समर चढै मुख नूर।—वा दा
टीपणो, टीपवो–क्रि०स०—टाकना, ग्रकित करना, लिख लेना, टीपना।
टीपर—देखो 'टीपरो' (मह, रू भे)
टीपरियो—देखो 'टीपरो' (ग्रल्पा, रू भे)
टीपरी–स०स्त्री०—देखो 'टीपरो' (ग्रल्पा., रू भे)
टीपरो–स०पु०—घी, तेल, दूध ग्रादि तरल पदार्थ निकालने तथा नापने के लिए बना हुग्रा धातु का एक कटोरीनुमा बरतन जिसको पकडने के लिए लम्बी डडीनुमा ग्लास लगी रहती है।
ग्रल्पा०—टीपरियो, टीपरी।
मह०—टीपर।
टीपाटीप–वि०—१ पूर्ण भरा हुग्रा, परिपूर्ण. २ शौकीन।
टीपो–स०पु०—बद, कतरा।
टीब—देखो 'टीबो' (मह.) उ०—पावस हुवा व्यतीत, टिकै ना टीब ठिराणै। द्रुत गत भागा दौड, हेड रमवा हळ माणै।—दसदेव
टीबडो—देखो 'टीबो' (ग्रल्पा, रू भे) उ०—१ भूरा-भूरा भाखर भूलै, टीबडिया मू रौळ।—लो गी.
उ०—२ चाद किरण रात्यू रमी, कोरा टीबडिया।—लू
उ०—३ टीबो ग्रोलै टीबडो ग्रे, ज्या रह मवमी का पूत। वारी, म्हारा गूगा, भल रहो वो।—लो.गी
टीवर, टीवरण–स०स्त्री०—श्याम रग के तने वाला एक मध्य ग्राकार का वृक्ष जिसकी पत्तियो की बीडिया बनती हैं। इसके फलो मे बडे-बडे बीज निकलते हैं, यह दो प्रकार का होता है—कडुए फल वाला तथा मीठ फल वाला। इसके फल स्वादिष्ट होते है।
ग्रल्पा०—टीवरियो, टीबरू, टीवरो।
मह०—टीवर।
टीवरणी–स०स्त्री०—लगभग दो-तीन फुट लम्बा एक पौधा विशेष जिसकी पत्तिया ग्रोषध के रूप मे प्रयुक्त होती हैं।
टीबरू–स०पु०—१ टीवरण का फल २ देखो 'टीवरण'। (ग्रल्पा., रू भे)
टीबरो–स०पु०—१ फूटा हुग्रा मिट्टी का जल पात्र २ देखो 'टीवरण'। (ग्रल्पा, रू भे)

टीबो–स०स्त्री०—१ क्षय रोग २ देखो 'टीबो' (ग्रल्पा, रू.भे)
उ०—पग पग टीबी मारगा, रोकै ग्राडी ग्राय। पाछा फेरै पथिया, जाणै हेत दिखाय।—लू
३ देश का नाम (व स)
टीबो–स०पु०—१ वालू का ढेर, रेत का ढेर। उ०—१ टीबे तो ग्रोलै, ग्रे लाडो बेटा, टीबडी, ज्या तळ हाळीडै रो खेत, बावल नै कहियो ग्रे, हाळी नै बेटी क्यू दई ?—लो गी
उ०—२ टीबा वरसो उँरिया वरसो, हो चितरग ताळ विछायो वादळी। जेठ उतरियो ग्रसाढ उतरियो, हो सावण उतरियो जाय वादळी।—लो गी.
२ रेगिस्तानी, पहाडी।
ग्रल्पा०—टीवडियो, टीवडी, टीवडो।
मह०—टीव।
टीम–स०स्त्री० [ग्र०] खेलने वालो का दल।
टीमक–स०स्त्री०—रात्रि मे खरगोश की शिकार करने के हेतु काम मे ली जाने वाली कावड (मेवाड़)
वि०वि०—कावड के ग्रगले पलडे मे लालटेन रख कर उसके पीछे कागज का ठप्पा लगा दिया जाता है ताकि प्रकाश ग्रागे ही पडे पीछे नही पडे ग्रौर उसके पिछले पलडे मे पत्थर रख दिया जाता है ताकि सन्तुलन हो जाय। एक ग्रादमी कावड वाले ग्रादमी के पीछे बन्दूक लेकर चलता है। जब ग्रगले पलडे की लालटेन के प्रकाश मे खरगोश दिखाई देता है तो उस पर बन्दूक चलाई जाती है।
टीमटाम—देखो 'टीप-टाप' (रू.भे)
टीमडग्रो–स०पु०—लकडबग्घा। उ०—भूखो तिसियो भटकियो, जो सिह-सुत जोधार। टीमडग्रा री टाटळया, फोजा फाडणहार।
—रेवतसिह भाटी
टीमल–स०पु०—कृत्य, काम (व्यग्य) ? उ०—पण हाल पितरी मेळो ग्रर बारह महीना-रा टीमल तौ बाकी ई पडिया है।—वरसगाठ
टीला–स०स्त्री०—सोलकी वश की एक शाखा।
टीली–स०स्त्री०—१ बिन्दी, तिलक. २ एक प्रकार का ग्राभूषण (व स) ३ गिलहरी।
ग्रल्पा०—टीलोडी।
टीलु, टीलू—देखो 'टीलो' (रू भे) उ०—विवेक सोवन टीलु तपतपे, साचो साचो वचन तबोळ रे। सतोख काजळ नयणे भरचा, जीवदया कुकुम घोळ रे।—स कु
कहा०—टीलू तकदीर वाळा नै थाय—भाग्यशाली को ही तिलक होता है।
टीलोडी—देखो 'टीली' (ग्रल्पा., रू भ)
टीलो–स०पु०—१ ढेर २ वालू का ऊँचा ढेर।
३ राजतिलक। उ०—वाळक थकै लियो ग्रतुळीबळ, महपत त को

प्रताप मणी। सहित जोधपुर सूर कळोधर, टीलों राव मालदे तणी।
—महाराजा जसवंतसिंघ प्रथम जोधपुर रो गीत

४ सामने जा कर अगवानी करने का भाव. ५ तिलक, टीका।
उ०—पीळो तिलक बैसणी परगट, रुच सुद्रणी स्याम टीलो रट।
—र ज प्र.

५ एक प्रकार का आभूषण (व स)
रू०भे०—टीलु, टीलू।

टीवणो, टीववो—देखो 'टीगणो, टीगवो' (रू भे)
उ०—परजापतिया नह परजा नै पाळै। टुकडै टुकडै नै टीवै टक टाळै।—ऊ का

टीवाणो, टीवाबो—देखो 'टीगाणो, टीगावो' (रू भे)

टीवायोडो—देखो 'टीगायोडो' (रू.भे.)
(स्त्री० टीवायोडी)

टीवियोडो—देखो 'टीगियोडो' (रू भे)
(स्त्री० टीवियोडी)

टीस—स०स्त्री० (देश०) १ ठहर-ठहर कर उठने वाला दर्द, चुभती हुई पीडा, कसक।
क्रि०प्र०—चालणी, मारणी, हालणी।
२ अत्यधिक पीडा के कारण मुँह से निकलने वाली दर्दभरी ध्वनि।
उ०—१ पूत मोर जद कट पडयो, चौरग पाडी चीस। बहु अधकी हर खर बळी, दुक यक करी न टीस।—रेवतसिंह भाटी
उ०—२ चित हूत सूई चवडकै, टसकै पाडै टीस। रज वाको वा तो रहै, पळ झडिया पाडीस।—रेवतसिंह भाटी
क्रि०प्र०—ऊठणी, करणी, निकाळणी।

टीसणो, टीसवो—क्रि०अ०—१ पीडा होना, ठहर-ठहर कर दर्द होना, कसकना २ बहुत पीडा के कारण मुँह से दर्दभरी आवाज निकालना।

टीसियोडो—भू०का०कृ०—१ रह-रह कर उठने वाले दद के कारण पीडित हुवा हुआ. २ दर्दभरी ध्वनि निकाला हुआ।
(स्त्री० टीसियोडी)

टीसी—स०स्त्री०—१ ऊपर का सिरा, शिखर २ टहनी।
उ०—सो किण भांति रा वाकरा जिके कडकती सांध रा, वडकती नळी रा, भाहुरे साद रा, मादळिए पेट रा, माडि बोर काचर रा, बरडणहार, घणै कूमट नै वावळी री टीसीआ रा आडणहार।
—रा.सा स

३ (नाक का) अग्र भाग। उ०—देह रो विदेह होय गयो पण नाक री टीसी सू ओळख लियो।—पलक दरियाव री वात

टुकार—देखो 'टपकार' (रू भे)

टुगरी, टुगारी—वि०—बात-बात पर नाराज होने वाला, तुनक-मिजाजी।
मुहा०—टुगारी ओर भिखारी—बात बात पर नाराज होने वाला, हीन या असमर्थ व्यक्ति के प्रति व्यग्य।

टुटी—
उ०—बोलती छउड ऊतारइ, पाहण फाडइ, बगाई करता कठ ओढइ, जीभइ जव छोलइ, केसि बाधी ज्वर नी वहिन, धूमकेत कुंडो आहणइ कुहणी छेहि राम्र पाडइ, टुटि छेहि गाठि वोलइ, आखि हूतउ काजळ हरइ।—व स

टुटो—देखो 'टूटो' (रू भे) उ०—टुटो हुतो टाभिजु, वाघो भूख मरू ह। जावु ढोलाजी रै सासरै, तो नागरवेलि चरू ह।—ढो.मा.

टुडी—स०स्त्री० [स० तुण्ड] १ ठोडी २ नाभि।
रू०भे०—टुडी।

टु—स०पु०—१ हाथ २ सुहागा ३ मुर्गा. ४ मुकुट. ५ चांटी ६ सुदर्शन चक्र (एका)

टुक—वि०—किंचित्, थोडा, तनिक, जरा। उ०—कठै ही टुक बात सुणं तो तुरत आग जाय राजी कर दस्तो मेट आवं छै।
—कुंवरसी साखला री वारता

क्रि०वि०—१ किंचित सा, जरा सा २ क्षण भर, पलक भर।
उ०—मूवे पीड पुकारता, वैद्य न मिळिया आइ। दादू थोडी बात थी, जे टुक दरस दिखाइ।—दादू बाणी
३ देखो 'टक' (रू भे)
मुहा०—टुक टुक देखणो—देखो 'टक टक देखणो'।
यौ०—टुक-टुक।
४ देखो 'टूक' (रू भे) उ०—मुवा पछहु वोम न मान्यो, ऊभा पगा न दीदी थेक। चवता खुरा घैन घर चाली. टुक-टुक ऊपर पग टेक।—ईसरदास मोयल री गीत
स०स्त्री०—५ कचुकी का वह भाग जो स्तन की चूची के ठीक ऊपर रहता है। यह कचुकी के कपडे के रग से भिन्न रग का भी होता है और आगे से नुकीला होता है।
रू०भे०—टुग।
यौ०—टुक-टुक।

टुकड—वि०—१ मोटा, दृढ़, मजबूत (कपडा) २ देखो 'टुकडो'।
(मह, रू भे)
रू०भे०—टुक्कड।

टुकडगदाई—स०स्त्री०—टुकडा (रोटी) मागने या भीख मागने का कार्य

टुकडगदो—स०पु०—१ केवल अपनी उदर-पूर्ति का ध्यान रखने वाला, दूसरे के टुकडे (रोटी) पर आराम करने वाला २ रिश्वतखोर, टुकडैल ३ भिखारी।

टुकडतोड—स०पु० —दूसरो के टुकडे (रोटी) पर पलने वाला व्यक्ति।

टुकडियो—देखो 'टुकडो' (अल्पा., रू भे)

टुकडी—स०स्त्री०—१ एक प्रकार का करघे से बुना मोटा कपडा विशेष
उ०—त्रीभणा सू वायेरा लीजै छ। सू किण भान रा वीभणा छै? लाहोर रा, कियोडा छै, रूपै री डाडी जरी सू मढ़ी, टुकडी री झालरी
—रा.सा स.

२ मास रखने का बर्तन। उ०—तठा उपरायत हिरण खुलै छै सू

जाएँ धोबी रै घर कपडा मोकळा किया छै। माम उतार उतार टुकडिया मे घातजै छै।—रा सा स.

३ सेना का खण्ड, दल।

यौ०—फौजी-टुकडी।

४ देखो 'टुकडो' (३) (अल्पा, रू भे)

टुकडेल, टुकडैल-वि०—१ घर घर रोटी माग कर खाने वाला भिखारी, मगता २ घूसखोर, रिश्वतखोर।

टुकडो-स०पु० [स० स्तोक =थोडा] १ वह हिस्सा या भाग जो किसी वस्तु से टूट कर अलग हुआ हो, खण्ड। ज्यूं—पत्थर रो टुकडो, कागज या रोटी रो टुकडो।

मुहा०—टुकडा टुकडा करणा—चूर चूर करना।

२ चिन्ह आदि के द्वारा विभक्त अश। ज्यूं—खेत रो टुकडो।

३ रोटी का तोडा हुआ भाग, कौर, ग्रास। उ०—१ परजापतिया नह परजा नै पाळै। टुकडै टुकडै नै टीवै टक-टाळै।—ऊ का

उ०—२ डिगती डोकरिया टोकरिया डोलै। बावा टुकडो दो हावा कर बोलै।—ऊ का

मुहा०—१ टुकडा तोडणा—जीवन निर्वाह करना, किसी प्रकार जीविका चलाना. २ टुकडा देणा—रोटी देना, भिक्षुक को भिक्षा देना, आश्रित को रोटी देना ३ टुकडा मागणा—भिक्षावृत्ति करना, रोटी मागना. ४ टुकडो नाकणो—(कुत्ते को) रोटी देना अर्थात् घूस देना, रिश्वत देना ५ टुकडा पर पळणो—पराश्रित रहना, दूसरो की कमाई पर निर्वाह करना।

कहा०—टुकडा दे दे बछडा पाळ्या, सीग हुआ जद मारण चाल्या—खिला खिला कर बछडो का पालण-पोषण किया किन्तु जब वे बडे हुए तो पालने वाले ही को मारने लगे अर्थात् नमकहराम आश्रितो के प्रति उक्ति।

अल्पा०—टुकडी।

मह०—टुकड, टुवकड, टूक, टूकड।

टुकरी-स०स्त्री०—रोटी।

टुकियक-क्रि०वि०—१ थोडा सा, लेश मात्र, तनिक।

उ०—मुग खाणा है खीचडी, माहै टुकियक लूण। मास पराया खाय के, गळा कटावै कूण।—अज्ञात

२ क्षण, निमिष मात्र। उ०—साईं टेढी अखिया, वैरी खलक तमाम। टुकियक फोलो महर को, लयखू करै सलाम।—अज्ञात

टुकिया—देखो 'टुक' (५) (रू भे)

उ०—सिधायो सूरज धरती छोड, देख्यो सलाणी मे साझ। करै आथूण घणी अवेर, लुकावै पीळा टुकिया माझ।—साझ

टुक्कड—देखो 'टुकड' (रू भे)

टुग—देखो 'टुक' (रू भे) उ०—धोवडिया घर वाळापण धीर, उगेरै 'वीरो' ऊचो राग। जोवता टुग टुग तारी ओक, सरावै धरती रा सोभाग।—साझ

मुहा०—टुग टुग देखणो—देखो टुक टुक देखणो'।

यौ०—टुग-टुग।

टुगर-स०स्त्री०—स्थिर दृष्टि से देखने की क्रिया, एकटक देखने की क्रिया।

टुचकार-स०स्त्री०—पशुओ को हाकने के लिए मुह से की जाने वाली टचटच की ध्वनि विशेष। उ०—विणजारा रा अखभ ज्यू, टोळ्या दे टुचकार।—किसोरसिंह बारहठ

टुचकारणो, टुचकारबो-क्रि०स०—मुह से टिच टिच शब्द करते हुए पशुओ को चलने के लिए प्रेरित करना, हाकना।

टिचकारणो, टिचकारबो—रू भे.।

टुचकारियोडो-भू०का०कृ०—पशु को चलने के लिए प्रेरित किया हुआ।

(स्त्री० टुचकारियोडी)

टुचको, टुचियो-वि०—१ छोटे कद का, छोटा।

मि०—ठीगणो।

२ तुच्छ, मावारण।

टुच्चापण-स०पु०—धूर्तता, नीचता। उ०—अर बो सोचण लागो—गरीब बाळक सामा ऊभा रोटी रै टुकडै नै तरसै अर म्है वानै चिगाय माल उडावा। हिरदै री कित्ती गिरावट अर सभाव-री कित्तो टुच्चापण है।—वरसगाठ

टुच्चो-वि०—चालाक, नीच, धूर्त, कपटी, ओछा।

मि०—लुच्चो।

टुटरक—

उ०—सो आप आगा नू पधारजै, तमासो जोयजै है, काहु दोय गडकडा टुटरक सो लिया बैठिया छै।

—मारवाड रा अमरावा री वारता

टुटरूटू-स०स्त्री० (अनु०) पेंडकी या फाख्ता नामक पक्षी की बोली।

मि०—गटरगू।

टुडी—देखो 'टुडी' (रू भे)

टुणटुणाट, टुणटुणाटो-स०पु०—१ बकझक, बकवाद। उ०—तो काईं हू खायगी! काय रो टुणटुणाटो लगायो है?—वरसगाठ

२ टुन टुन की ध्वनि।

रू०भे०—टुरणाट, टुरणाटो।

टुणटुणी-स०स्त्री०—वाद्य विशेष। उ०—फेर ले आया गैनाश्री-रो लटको! कुण गरीवा री मदद करै है! सॅग ऊपरली टुणटुणी वजावै है।—वरसगाठ

टुणियो—देखो 'टणो' (अल्पा, रू भे)

टुनो—देखो 'टोनो' (रू भे)

टुबकियो-स०पु०—१ मिट्टी का छोटा जल-पात्र. २ छोटी बलिया टोकरी।

टुबको—देखो 'टबको' (रू भे)

टुरण-स०स्त्री०—१ इच्छा के प्रतिकूल कार्य होने पर उठने वाला क्रोधयुक्त मनोवेग।
क्रि०प्र०—आवणी।
टुरणाट, टुरणाटी—देखो 'टुणटुणाट' (रू भे)
टुरणी-वि०—१ तुनक-मिजाजी २ बात-बात पर बिगडने वाला।
टुरणो, टुरबो-क्रि०अ०—१ किसी पदार्थ की प्राप्ति के लिए लालायित होना, तकना। उ०—ईंठा पर कूकर ज्यू त्यागे टुररया।—अज्ञात
२ गिरना, ध्वस्त होना। उ०—टणका टणका तरु जरबं टुरि जावै, टुरब्बा गुरब्बा गुण गरबं दुर जावै।—ऊ का
३ खिसकना, चलता बनना, जाना। उ०—काम करता करता छव वजी। मजूरा आपरा सस्तर पाती सांभणा सरू किया। डोकरी मूडी मचकोळती बोली—ऊह! हर्णं ई टुरण लागग्या।
—वरसगाठ
टुराणो, टुराबो-क्रि०अ०—१ लालायित करना, तकाना २ गिराना, ध्वस्त करना. ३ खिसकाना, चलता बनाना।
टुरायोडो-भू०का०कृ०—१ लालायित किया हुआ, तकाया हुआ. २ ध्वस्त किया हुआ, गिराया हुआ ३ खिसकाया हुआ।
(स्त्री० टुरायोडी)
टुरियोडो-भू०का०कृ०—१ तका हुआ २ गिरा हुआ, ध्वस्त ३ खिसका हुआ।
(स्त्री० टुरियोडी)
टुळ-वि०—पृथक, अलग, विलग।
टुळकणो, टुळकबो-क्रि०अ०—१ मद मद गति से चलना, खिसकना। उ०—नगारा सख आरती धूप, धुम्र नै झार्प है झणकार। टुळकिया अेवड धोरै ओट, सुणीजै किलकारी उण पार।—साफ
२ इधर-उधर घूमना, फिरना। उ०—दिन मे वेळा दोय जगत मे मरै'र जीवै। बिगड जावै वाणि टुळक अमला नै टोवै।—ऊ.का.
२ टपकना, छलकना। उ०—रामलै री भूवा टुळक-टुळक आसू नाकण लागी।—वरसगाठ
टुळकाणो, टुळकाबो-क्रि०स०—मद गति से चलाना, खिसकाना २ इधर उधर घूमाना, फिराना, घिराना. ३ टपकाना, छलकाना।
टुळकायोडो-भू०का०कृ०—१ चलाया हुआ, खिसकाया हुआ. २ फिराया हुआ, घूमाया हुआ. ३ टपकाया हुआ, छलकाया हुआ।
(स्त्री० टुळकायोडी)
टुळकियोडो-भू०का०कृ०—१ चला हुआ, खिसका हुआ २ घूमा हुआ, फिरा हुआ ३ टपका हुआ, छलका हुआ।
(स्त्री० टुळकियोडी)
टुळणो, टुळबो-क्रि०अ०—१ (चित्त का) चलित होना, अस्थिर करना. २ देखो 'टुळकणो, टुळकबो' (रू भे.)
टुळाणो, टुळाबो-क्रि०स०—(चित्त को) चलित करना, अस्थिर होना. २ देखो 'टुळकाणो' (१) (रू भे.)
टुळायोडो-भू०का०कृ०—१ चलित किया हुआ, अस्थिर किया हुआ २ देखो 'टुळकायोडो' (रू.भे)
टुळियोडो-भू०का०कृ०—१ चलित बना हुआ, अस्थिर. २ देखो 'टुळकियोडो' (रू भे)
(स्त्री० टुळियोडी)
टुसी—देखो 'ठुसी' (रू भे)
टू-स०पु०—ध्वनि विशेष।
टूक-स०पु०—पर्वत की चोटी, शिखर। उ०—बावहिया मोर कोयला बोलै, मद आयो गिर हेक मन्नो। टूका गळ काठळ लपटाणी, वणियो अरवद नवल वनो।—नवलजी लाळस
रू०भे०—टूक।
अल्पा०—टूकली।
टूकको-स०पु०—एक जाति विशेष का घोडा (शा हो.)
टूकली—१ देखो 'टूक' (अल्पा, रू.भ) २ छोटी पहाडी। (शेखावाटी)
टूकलो—देखो 'टूक' (अल्पा. रू भे)
टूकियो, टूक्यो-स०पु०—१ वह ऊँचा स्थान जिस पर बैठ कर समीपवर्ती भू-भाग पर निगरानी का कार्य किया जा सके। उ०—एक जणो बदूक ले'र टूकियै बैठयो।—रातवासो
२ वह व्यक्ति जो किसी ऊँचे स्थान पर बैठ कर निकटवर्ती भू-भाग की निगरानी या चौकन्ना हो कर देख-रेख करता है। उ०—उठी नै टूकियै बदूक सभाळी अर अठी नै तरवार चमकी पळाक करती।
—रातवासो
३ किसी ऊँचे स्थान पर बैठ कर समीपवर्ती भू-भाग की चौकन्ना हो कर निगरानी रखने का कार्य या इस कार्य के बदले मे दिया जाने वाला पारिश्रमिक ४ भालू, रीछ (मेवाड)
रू०भे०—टूकियो, टूकीयो, टूक्यो।
टूगणो, टूगबो—देखो 'टीगणो, टीगबो' (रू भे)
टूगाणो, टूगाबो—देखो 'टीगाणो, टीगाबो' (रू भे)
टूगाटोडो—देखो 'टीगायोडो' (रू भे)
(स्त्री० टूगायोडी)
टूगियोडो—देखो 'टीगियोडो' (रू भे)
(स्त्री० टूगियोडी)
टूच-स०स्त्री० [स० त्रोटि] १ चोच।
मुहा०—टूच घालणी, टूच देणी—बनते हुए कार्य मे विक्षेप डालना।
२ नोक, अनी. ३ देखो 'टूचको' (मह, रू भे)
रू०भे०—टाच।
टूचको-स०पु०—१ किसी वस्तु पर निकला हुआ या उभरा हुआ तीक्ष्ण भाग २ छोटा काष्ठ-खण्ड ३ पत्ते या फलादि का वह उपरि भाग जो वृक्ष या लता से सटा हुआ हो।
रू०भे०—टोचको।

महु०—टूच ।
टूचणो, टूचबो—देखो 'टाचणो, टाचवो' (रू भे)
टूचरी—स०स्त्री०—हथौडे के समान एक औजार जिसका आगे का भाग नुकीला होता है ।
टूचरो—स०पु०—देखो 'टूचको' (रू.भे)
टूचियोड़ो—देखो टाचियोडो' (रू भे)
(स्त्री० टूचियोडी)
टूट—स०स्त्री०—१ वात रोग से हाथ पैरो मे पडने वाली मोड.
२ एहसान, आभार ३ मारवाड मे होने वाले फोग नामक वृक्ष का एक रोग विशेष । उ०—जे कदास कुवाव पडै तो, हाथां बासण छूटजै । जाळो टूट मे ना काडै, भाग मरू रा फूटजै ।—दसदेव
टूटउ—देखो 'टूटो' (रू भे) उ०—सम्य समरहित केतउ घाव वचइ, दुब्बळ केतउ माचइ टूटउ केतउ लाखइ, सत्पुरख केतउ झखइ ?
—व स
४ नकल ।
मि०—टूटियो (१)
टूटियो—स०पु—१ बारात जाने के पश्चात् दूल्हे के घर पर औरतो द्वारा आपस मे रचा जाने वाला नकली विवाह. २ एक प्रकार का बुखार ३ देखो 'टूटो' (अल्पा, रू भे)
रू०भे०—ठूठियो ।
टूटी—स०स्त्री० [स० त्रोटि] १ पानी निकालने के लिए धातु की बनी मुडी हुई नली विशेष जिसे आवश्यकतानुसार खोली व बन्द की जा सकती है । वह पानी की नली के एक छोर पर कसी जाती है.
२ बरतन के लगी हुई वह नली जिसके द्वारा द्रव पदार्थ उडेला जाता है ।
टूटो, टूट्यौ—वि० (स्त्री० टूटी) १ हाथो से अशक्त या कटे हुए हाथ वाला व्यक्ति । उ०—लूला टूटा फेरत डोळा ।—जयवाणी
रू०भे०—टूटो ।
यौ०—टूटो-पागळो ।
अल्पा०—टूटियो, टूट्यो ।
२ देखो 'टूटियो' (१, २) (रू.भे)
टूड—स०स्त्री० [स० तुण्डम्] सुअर के मुँह का अग्र भाग, थूथन ।
उ०—आडा फिरिया साग उनागा, डडाळा बागी डकर । आधा हू उडता भड आवै, टूड तणी लागी टकर ।—महादान महडू
टूडाळ, टूडाहळ—स०पु० [स० तुण्डम्+आलुच्] सुअर, वराह (डिं को.)
टूडी—स०स्त्री०—१ वह ढलवा मार्ग जिस पर कुए से पानी खीचते समय बैल चलते हैं २ देखो 'टूडाळ' (रू भे.)
टूडो—स०पु०—पेंदा, तल ।
टूणो—देखो 'टाणो' ।
टूपणो, टूपबो—क्रि०स०—१ गला घोटना २ गर्दन मे रस्सी आदि डाल कर इस प्रकार कसना कि मृत्यु हो जाय, फासी देना. ३ किसी कार्य को कराने के लिए बाध्य करना ।
टूपियोडो—भू०का०कृ०—१ गला घोटा हुआ २ फासी दिया हुआ.
३ बाध्य किया हुआ ।
(स्त्री० टूपियोडी)
टूपियो—स०पु०—कठ का आभूषण विशेष ।
टूपो—स०पु०—हाथो या रस्सी से फासी देने की क्रिया ।
उ०—आपरै ऊ ऊ री आवाज सू साफ मालम होवती हो कै कोई आपरै टूपो देय रह्यो है ।—रातवासो
रू०भे०—टूपो ।
टूम—स०स्त्री०—१ आभूषण, गहना २ मजाक, हँसी, नकल ।
रू०भे०—टूम ।
टू—स०पु०—१ वाहन २ गणेश ३ डर, भय. ४ भार, बोझा ।
[स०स्त्री०] ५ दौड ६ मारवाड. ७ छाया (एका)
टूक—स०पु० [स० स्तोक] १ खण्ड, टुकडा । उ०—ढूकै नह गढ ढूकडा, अकबर रा उमराव । करै वीर गढ रा कवच, दोय टूक इक घाव ।
—वा दा.
महु०—टूकड ।
२ देखो 'टूक' (रू.भे) । उ०—१ टूकै टूकै केतकी, झरणै झरणै जाय । अरबुद की छबि देखता, और न आवै दाय ।—अज्ञात
उ०—२ बनस्पती पाखर बणी, वणिया टूक विहद्द । परा बिछूटै नीझरण, आयौ मद अरबुद्द ।—अज्ञात
३ देखो 'टुकडो' (३) (मह रू भे)
उ०—१ नागजी मालपूवै री टूक रे, वैरी जीम्या अडियो नै ताळवै ओ नागजी ।—लो गी.
उ०—२ चूल्हा आगै टाबर रोवै, टूक नाही वासी एक । छपना ओजू मत पडयो म्हारै देस ।—लो गी
टूकड़—१ देखो 'टुकडो' (मह रू भे)
२ देखो 'टूक' (१) (मह.)
उ०—तिल तिल हुइ टूकड, वेलै तुरमड, मच्छक तडफड तुच्छ जळं ।
—गु रू.व.
टूकियो, टूकीयो, टूक्यो—स०पु०—१ जोर से पुकारने के लिए किया जाने वाला शब्द २ देखो 'टूकियो' (रू भे)
टूकू—स०पु०—एक प्रकार का वस्त्र (व स)
टूट—स०स्त्री०—किसी वस्तु का वह भाग जो टूट कर अलग हो गया हो, खंड, टूटन ।
टूटणो, टूटबो—क्रि०अ० [स० त्रुट] झटके या दबाव के कारण किसी वस्तु का एक ही समय मे दो या अधिक भागो मे विभक्त हो जाना, खण्ड-खण्ड होना, टुकडे-टुकडे होना ।
यौ०—टूटो-फूटो ।
२ शरीर के किसी अग का उखड जाना, जोड ढीला पड जाना अथवा बेकाम हो जाना ३ निरन्तर चलते हुए क्रम का बन्द हो जाना । ज्यू—मायै सैंत री डोरी दे दी धार टूटणी नहीं चाइजै ।

मुहा०—पाणी टूटणो—पानी के श्रोत का बद हो जाना। कूए मे पानी कम हो जाना।
४ किसी ओर तीव्र गति से जाना, झपटना, धावा करना, आक्रमण करना। उ०—कूआ सामा आवता, डरै न अब रोळा। खेळ्या मे डूट्या पड़े, काळा दिन धोळा।—लू
मुहा०—टूट पडणी—झपटना, आक्रमण करना।
५ मेळ न रहना, सम्बन्ध विच्छेद हो जाना ६ कमजोर होना, क्षीण होना, दुर्बल होना ७ दरिद्र होना, दीन होना, कगाल होना। उ०—सो परगना रो ही टको मागै चाकरी जे करावै सो इण भात तो टूटता जावा छा।—गौड गोपाळदास री वारता
८ कम होना, घाटा पडना, हानि होना।
ज्यू—मिरचा रा व्योपार मे म्हारा ५००) रुपिया टूट गिया।
९ शरीर मे आलस्य का अधिक होना, दर्द होना, पीडा होना।
मुहा०—डील टूटणो—शरीर के अग अग मे पीडा होना.
१०—क्षय होना। उ०—टूटती अमावस री जण्यो।—जयवाणी
११ भग होना, विक्षेप होना। उ०—उणरै लावा कियोडा हाथ पर वळद करडी करडी जीभ फेरी अर उणरो ध्यान टूटो।—रातवासो
१२ अपने स्थान से अलग होना, दूर होना, स्थान भ्रष्ट होना।
उ०—करै सरवरा काचडा ? स्याळ किसूकी सीह। काधा सेथी टूट कर, जमी पडी वा जीह।—वा दा.
टूटणहार, हारो (हारी), टूटणियौ—वि०।
टूटिम्रोडो, टूटियोडो, टूटोडो, टूटो, टूटचोडो—भू०का०कृ०।
टूटियोडो, टूटोडो, टूटचोडो, टूटो—भू०का०कृ०—१ टूटा हुआ, खडित, भग्न. २ शरीर का वह अग जो बेकाम, उखडा हुआ अथवा जोड मे से ढीला पडा हुआ हो ३ निरन्तर चलता हुआ वह क्रम जो बन्द हो गया हो. ४ झपटा हुआ, धावा किया हुआ, आक्रमण किया हुआ ५ विच्छेदित सम्बन्ध, टूटा हुआ मेल ६ कमजोर बना हुआ, क्षीण, दुर्बल ७ दरिद्र बना हुआ, दीन, कगाल. ८ वह कार्य या व्यापार जिसमे हानि हुई हो, घाटा पडा हुआ ९ आलस्य से पीडित बना हुआ। १० क्षय हुवा हुआ। ११ भग हुवा हुआ, विक्षेप हुवा हुआ। १२ अपने स्थान से अलग हुवा हुआ, दूर हुवा हुआ, स्थान भ्रष्ट हुवा हुआ। १३ देखो 'तूटियोडो'—(रू भे)
(स्त्री० टूटिम्रोडी, टूटी, टूटोडी)
टूटो-फूटो—वि०यौ०—टूटा-फूटा, भग्न, खडित।
टूंपो—देखो 'टूपी' (रू भे)
टूम—देखो 'टूम' (रू भे)
उ०—आप इनायत कीधी तिके पार्या, पिण माईजी म्हासू घणी महरवानी फुरमावै छै नै आप वाघेलजी रै महल पधारिया तरै सगळी टूमा (गैणो) मगावणी पडसी।—जादेव पवार री वात
टूमणढामण—देखो 'टामण-टूमण' (रू भे)
टूर—स०पु०—१ अधिक बच्चे (शेखावाटी) २ बहुत अधिक अफीम खाने वाला, अफीमची।
वि०—१ अतिवृद्ध २ मूर्ख।
टूलियो, टूळो—स०पु०—तनेदार करील का वृक्ष। उ०—तिण ऊपर घणा वडा पीपळा बोर बकायण नीव नाळेर आवा आवली सीसू सरेस खेजड जाळ आसापाळो, खिजूर गूदी लेसूडो केसूलो खिरणी मोळसिरी फरवास रायसेण महुवा ढाक कुभरा फोकर टूळा झूकने रह्या छै।—रा सा स.
टूव्हणो, टूव्हवो—देखो 'टीगणो, टीगवो' (रू भे)
उ०—सांट वळद हळ खोल्ह जाट री ढाणी जोवै, नासै टूव्हे निलज खास अपणू घर खोवै।—ऊ का
टूव्हियोडो—देखो 'टीगियोडो' (रू भे.)
(स्त्री० टूव्हियोडी)
टें—स०स्त्री० (अनु०) १ तोते की बोली, तोते की आवाज २ बकवाद, बकझक।
मुहा०—टें टें करणी—बकवाद करना, व्यर्थ बोलना।
यौ०—टें टें।
टेंकिका—स०स्त्री० [स०] ताल का एक मुख्य भेद।
टेंकी—स०स्त्री० [स०] १ एक प्रकार का नृत्य. २ शुद्ध राग का एक भेद।
टेंगण—स०पु०—१ ऊट (व्यग्य) २ देखो 'टैगण' (रू भे.)
टेंट—स०पु०—करील वृक्ष का फल (क्षेत्रीय)
वि० [अ० टाइट] मजबूत, जमा हुआ।
टेंटुम्रो, टेंटुवो—स०पु०—गर्दन के आगे उभरी हुई गाठ (कठ), स्वरयत्र।
रू०भे०—टेंटुम्रो, टेंटूवो।
टेंलम्रो, टेंलयो—देखो 'टें'लवो, टें'लियो' (रू भे)
टे—स०स्त्री०—१ स्त्री २ पक्षी (एका)
टेक—स०स्त्री०—१ हठ, जिद्द। उ०—१ सो सुणता ही भावी रै प्रमाण बारुणी रै वसीभूत हुवै समुद्रसिंघ विपरीत व्यवहार वतावण री टेक गही।—व भा
उ०—२ आखू न कही मानी न एक, कोप्यो नवाब नहि तजी टेक।
—ला रा
मुहा०—टेक झेलणी, टेक पकडणी—हठ पकडना, जिद्द पर अडा रहना।
२ प्रण, प्रतिज्ञा। उ०—१ आहुई वडो राठौड विसरामिया, तज गया दूसरा न सायत टेक। हसत नित वरीसण नको इळ रायहर, हसत बध कवि नही जग मैं हेक।—द्वारकादास दधवाडियो
उ०—२ इण विध चिहुवै टेक उतारू। असुर विलंद तदि जीव उवारू।—सू प्र उ०—३ अकबर जिसा अनेक, आहव अड अनेक अरि। असली तजै न एक, पकडी टेक प्रतापसी।—दुरसो आढ़ो
मुहा०—टेक निभाणी—सकल्प से नहीं टलना, प्रण के अनुसार कार्य करना, प्रतिज्ञा पूरी करना।

३ मान, प्रतिष्ठा। उ०—कोई वीर पुरख नीद में सूतो हो—इतरै दुसमण ऊपर आय गया तिका नै वीर री स्त्री कहै छै—रे नींद मे सूतो देख इण आपरी टेक आन रा निभावण वाळा नै थे मत छेडो, पुळ जावो।—वी.स टी

उ०—२ आपणै आपणै भेख की, सब कोई राखै टेक। निगम निसाणी एक है, गोळ दाज अनक।—सतवाणी

उ०—३ जगपति कुण थारी गति जाणै, अकळि तुहारी एक अनेक। जुध वाहिरो जगत सहि जीतो, नू राखै भगता री टेक।—पी ग्रं

मुहा०—१ टेक रैणी—बात निभ जाना, इज्जत रह जाना.

२ टेक राखणी—बात को निभा लेना, लज्जा रख लेना।

५ गीत की वह प्रारम्भिक पंक्ति जो बार बार गाई जाती है, पद या टुकड़ा, स्थायी ६ आश्रय, अवलम्ब।

टेकडो—देखो 'टेगडो' (रू भे)

टेकणौ, टेकबौ—क्रि०स०—तन्मय करना, मन लगाना, चित लगाना।

उ०—थे सारा अठै बैठिया टको भरो, दुख पावो, राज तौ छुटियो परगना उपर जीव टेकियो।—गौड गोपाळदास री वारता

२ स्थित करना, टिकाना, रखना। उ०—तिण समै सको देखै छै सरवहियो जैसो पातसाह ऊभो छो तठो नाखिया सु घोडै हाथी रै दातूसळा पग टेकिया।—नैणसी

३ अन्दर डालना, पैठाना, घुसाना ४ किसी पकडी हुई वस्तु को छोड देना, गिराना, डालना, फेंकना। ज्यू—उणां रै समै मे कबूतरा नै रोजीना की सवामण जवार टकीजती।

५ एक वस्तु को दूसरी वस्तु मे मिलाना, छोडना, डाल देना। ज्यू—ओ घाची भूठ बोलै, इणरै दूध मे जरूर पाणी टेकियोडो है, पाव घी टेकियोडो दाळ तो सवाद हुं तो सवाद हुंला इज।

६ किसी के जिम्मे छोड देना, थोपना, भार डाल देना

ज्यू—ये तो थारै आळो काम भी म्हारै माथै टेक दियो। इण काम रो सैंग खरचो म्हारै माथै टेक दियो ७ लगाना, उपयोग करना

ज्यू—इण व्योपार मे पाच हजार री रकम टेकियोडी है।

८ थकान दूर करने अथवा श्रम से बचने के लिए किसी वस्तु के सहारे शरीर पर लदे हुए बोझ या भार को रखना या टिकाना

९ सहारे आदि के लिए किसी अग को टिकाना, ठहराना, रखना.

१० सहारे के लिए थामना, पकडना। ज्यू—भाखर रो चढाव ऐंडो कोजो है के हाथ टेक टेक'र चढणो पडियो।

उ०—निनाण करती उणरी मा आमगी अर कस्सी रै हिचकी टेक नै ऊभी हुंगी।—रातवासो

टेकणहार, हारो (हारी), टेकणियो—वि०।

टेकवाडणो, टेकवाडबो, टेकवाणो, टेकवाबो, टेकवावणो, टेकवावणो, टेकाडणो, टेकाडबो, टेकाणो, टेकाबो, टेकावणो, टेकावबो—प्रे०रू०।

टेकिओडो, टेकियोडो, टेक्योडो—भू०का०कृ०।

टेकीजणो, टेकीजबो—कर्म वा०।

टिकणो, टिकबो—अक० रू०।

टेकर, टेकरी—सं०स्त्री०—छोटी पहाडी, टीला।

टेकलो—वि०—अपनी आन-मान पर मर मिटने वाला, अपना प्रण निभाने वाला। उ०—घर घर वैर वसाविया दिन दिन लूवे धाड। हेनी मो धव टेकलो, जडै न धाम किवाड।—वी स

टेकाण—स०पु०—किसी गिरने वाली छत, धरन आदि को सभालने के लिए उसके नीचे खडी की जाने वाली लकडी।

टेकियोडो—भू०का०कृ०—१ मन लगाया हुआ स्थित किया हुआ

२ टिका हुआ, रखा हुआ स्थित किया हुआ. ३ अन्दर डाला हुआ घुसा हुआ, पैठा हुआ ४ पकडी हुई वस्तु को छोड दी गई हो, गिराई हुई, डाली हुई, फेंकी हुई ५ दूसरी वस्तु मे मिलाई हुई, छोडी हुई, डाली हुई ६ किसी के जिम्मे छोडा हुआ, थोपा हुआ, भार डाला हुआ ७ लगाया हुआ, उपयोग किया हुआ.

८ किसी वस्तु का सहारा लिया हुआ. ९ सहारे के लिए अग का टिकाया हुआ, ठहराया हुआ, रखा हुआ. १० सहारे के लिए थमा हुआ, पकडा हुआ।

(स्त्री० टेकियोडी)

टेको—स०पु०—१ वह बडा और मोटा रस्सा जो प्राय गाडियो से सामान ढोने पर कसने के काम आता है। उ०—टेका कढिया बाध, टोवता घर पर आखो। फोगा हुदो फसल, गरीबा गायक लाखो।

—दसदेव

२ देखो 'टाको' (४, ५) (रू.भे)

३ देखो 'ठेको' (६) (रू भे)

उ०—प्रोहित की असवारी पीछोले आई। अलबेली नायका कै मन भाई। अलबेलिया असवार घोडा खिलावै छै, पाच पांच बरछी का टेका दिरावै छै।—बगसीराम प्रोहित री वात

४ आवेष्टन बन्धन। उ०—रावजी फूल महल मे पोढिया। जरै पघ आख मिळी, घोर निकळी सुणी तरै रजपूता आय नै रेसमी डोर धो आटा लिया। गिरिया बिचै नै गळा बिचै एक सरीखा टेका लिया

—राव रिणमल री वात

टेगडियो, टेगडो—स०पु० (स्त्री० टेगडी) कुत्ता, श्वान।

रू०भे०—टेकडो।

अल्पा०—टेगडियो।

टेटुवो—देखो 'टेंटुओ' (रू भे)

टेटूणी—स०पु०—बर्तन विशेष (शेखावाटी)

टेटो—देखो 'टाटो' (२) (रू भे)। उ०—टेटो कटता ठाकरा, वजै केम वारूह। बा'रू रण री वाजिया, निकळै पग नारूह।

—रेवतसिंह भाटी

टेडो—वि० (स्त्री० टेडी) १ जो सीधा न हो, इधर-उधर झुका हुआ हो, जो लगातार एक ही ओर को न गया हो, वक्र, कुटिल।

मुहा०—टेढी सुणाणी—देखो 'टेढी सीदी सुणाणी'
२ टेढी सीदी सुणाणी—भली-बुरी कहना, फटकारना, डाटना।
यौ०—टेढो-मेढो।
२ जो बिलकुल सीधा न हो गया हो, किसी एक ओर झुक गया हो अर्थात् आधार पर समकोण बनाता हुआ न गया हो, तिरछा
३ जो मुश्किल, कठिन या पेचीदा हो, जो सरल न हो.
मुहा०—टेढी खीर—दुष्कर कार्य, कठिन कार्य।
४ जो उद्दण्ड हो, गँवार हो, जो शिष्ट न हो, उग्र हो।
मुहा०—१ टेडो पडणी, टेडो होणो—कठोरता लाना, क्रोधित हो जाना उग्र होना, अकड जाना।
२ टेडो टेडो हालणी—स्वभाव मे कठोरता लाना, व्यवहार ठीक नही करना, अकडना, ऐंठना।
३ टेढी बात—कटु वाक्य, व्यग्यात्मक वाक्य, जो बात सीधी न हो।
रू०भे०—टेढो।

टेढ़—स०स्त्री०—१ वक्रता, तिरछापन, टेढापन. २ गँवारपन, उजड्डपन, अकड।
मि०—बाक।

टेढ़विडगो, टेढवेढ़गो—वि०—बेढगा, बेडोल, टेढा-मेढ़ा।

टेढ़ाई—स०स्त्री०—टेढा होने का भाव, वक्रता।

टेढ़ापण—स०पु०—टेढा होने का भाव।

टेढ़ो—देखो 'टेडो' (रू भे')। उ०—फंटा छोगाळा खाधा सिर फावै, टेढा डोढा ह्वै डिगतो नभ ढावै।—ऊ.का

टेणो, डेवो—क्रि०स०—चूल्हे पर चढ़ाना।
उ०—बावो ल्यायो मोठ बाजरी, मायड बैठ'र छुळक्यो। पाडोसण घर लूण मगायो, भरके हाडो टेयो।—लो गी

टेपो—वि० (ब० व० टेपा) मिलन की आशा मे मुडा हुआ (कान)
उ०—अणमणो करिया टेपा कान, चोवटे ऊभो हेकल साड।
—साझ

टेभो—स०पु०—सुअरनी का बच्चा, छोटा सूअर।

टेर—स०स्त्री०—१ शब्द, आवाज (ह.ना) २ बुलाने का ऊँचा स्वर
३ गाने मे ऊँचा स्वर।
क्रि०प्र०—लगाणी।
मि०—टेक (५)
४ पुकार, प्रार्थना, रट। उ०—पचाळी बेर वधायो पल्लव, करता टेर सिहाय करी।—र ज प्र
क्रि०प्र०—करणी, लगाणी।
मुहा०—टेर लगाणी—अनुनय-विनय करना, प्रार्थना करना।

टेरणो, टेरबो—कि०स०—१ पुकारना, प्रार्थना करना, रट लगाना।
उ०—पिया मोहि दरसण दीजै हो। बेर बेर मै टेरहु, अहे क्रिपा कीजै हो।—मीरा
२ ऊँचे स्वर से गाना, तान लगाना ३ ऊँचे स्वर से बुलाना।
४ किसी वस्तु को दीवार मे लगी कील या पेड की शाखा या किसी भी आधार से अधर मे लटकाना। उ०—हळथळ बाखळ में बळ बळ थळ हेरै। टणमण टोकरिया बळधा गळ टेरै।
—ऊ का.

टेरियोडो—भू०का०कृ०—१ प्रार्थना किया हुआ, पुकारा हुआ, रट लगाया हुआ. २ ऊँचे स्वर मे गाया हुआ, तान लगाया हुआ
३ ऊँचे स्वर से बुलाया हुआ ४ अधर मे लटकाया हुआ।
(स्त्री० टेरियोडी)

टेरो—स०पु०—किसी गाढे पेय पदार्थ अथवा ऐसे ही घोल की पडने वाली बूद।
वि०—१ मूर्ख, अविवेकी।
उ०—ढीलो मूडो मेलं ढेरा, टिकगा पाणी पीवण टेरा। डळा उठै कर दीधा डेरा, चाटै हिळगा चाटण चेरा।—ऊ का.
[स० टेर वलिर् केकरौ इति रभस] २ ऐचाताना, भेगा।
यौ०—वाडो-टेरो।

टेव—स०स्त्री० [स० स्थापयति, प्रा० ठवइ] १ आदत, बान।
उ०—रामति नी छइ मू घणी टेव। गरुया सघ नी नितु करउ सेव।
—चिहुगति चउपई
क्रि०प्र०—पडणी।
मुहा०—टेव टाळणी—शौचादि से निवृत्त होना।
कहा०—टाट्या नी टाट जाय, टेव नी जाये—शिर का गजापन दूर होने पर भी खुजलाने की आदत नही जाती है अर्थात् बुराई दूर होने पर भी बुरी आदतो का जाना सम्भव नही।
२ अभ्यास।
क्रि०प्र०—पडणी।
३ प्रकृति, स्वभाव। उ०—कुमर परीक्षा जोइवा, आयो तिहा वन देव। रूप कियो वग्गर तणो, तज पूरवली टेव।—वि कु
क्रि०प्र०—पडणी।
रू०भे०—ठेव।

टेवकी—स०स्त्री०—१ (एकमात्र) सहारा।
उ०—१ आ बात तै कैयी जकी ठीक, पण छोरो-ई हुवै। छोरो घर-रो चानणो, घर-री टेवकी हुवै।—वरसगाठ
उ०—२ तीनू घरा-मे वो अेक-अी तुरक-रो दातण, घर-री जा'ज, घर-री टेवकी हो।—वरसगाठ
२ मदद, सहारा।
३ किसी कार्य के निमित्त उकसाने का भाव।
मुहा०—१ टेवकी देणी (रखणी)—प्रेरित करना, उकसाना।
२ टेवकी सरकाणी—देखो 'टेवकी देणी'।
४ द्वार पर के चौड पत्थर के नीचे लगाया जाने वाला पत्थर।

५ किसी पदार्थ विशेष के लुढकने या गिरने से बचाने के लिये उसके नीचे लगाई जाने वाली वस्तु, सहारा ।
क्रि०प्र०—दंणी, लगाणी ।
रू०भे०—ठेवकी ।
टेवको-स०पु०—सहारा । उ०—टेपरियो डागडी रै टेवकै डिगतो डिगतो घरै पूग्यो अर रभा नै भाबी माचा मे घाल नै घरै लेग्या ।
—रातवासो
टेवटियो, टेवटो-स०पु०—१ स्त्रियों के गले में पहनने का आभूषण विशेष । उ०—१ ओ जी ओ मनै रांमूडा रो टेवटियो घडा दे, मोरी माय, लूग्रर रमवा म्है जास्यू ।—लो गी
उ०—२ तीजी सखी मेरी पहर टेवटो, नथली मू रूप सवारघो । चौथी सखी मेरी चूनड ओढी, गळै मे मोतीडा रो हारो ।—लो.गी.
२ तीन परत या साथ का चौडा कपडा जो ओढने या धोती की जगह पहनने के काम आता है ।
मुहा०—टेवटै जाणो —शौचादि से निवृत होना ।
टेवो-स०पु० [स० टिप्पन] जन्म लग्न व राशि लग्न (कुडली) का वह पत्र जिसमे जातक के जन्म दिन की तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण के साथ जन्म का समय (इष्ट) घटी पलो मे अकित रहता है जिसके आधार पर जन्म-पत्रिका बनाई जाती है।
टेसण-स०पु० [अ० स्टेशन] १ रेलगाडी के ठहरने का वह स्थान जहा यात्री चढते-उतरते हैं, ठहरने का स्थान ।
रू०भे०—ठेसण, ठेहण।
टेसू-स०पु० [स० किंशुक] पलाश या ढाक का फूल ।
टेंगण-स०पु०—१ टट्टू २ देखो 'टेंगणो' (मह, रू भे)
टेंगणियो—देखो 'टेंगणो' (अल्पा., रू भे)
टेंगणो-वि० (स्त्री० टेंगणी) छोटे कद का, ठिगना, नाटा, बौना ।
रू०भे०—टीगणो, टेंगणो, टेणो ।
अल्पा०—टीगणियो, टेंगणियो, टेंगणियो ।
मह०—टीगण, टेंगण, टेंगण ।
टेंगार-स०स्त्री० [वि० टेंगारी] मद, अहकार, गर्व ।
उ०—थयू बूडे रे बापडा, कर कर टेंगार ।—जयवाणी
टेंगारी-वि०—अहकारी, अभिमानी ।
टेंटो-स०पु०—वट वृक्ष तथा पीपल वृक्ष का फल
२ ककडी का कच्चा फल ।
टै-स०पु०—१ भाई का लडका, भतीजा २ आकाश, नभ ३ धन, द्रव्य ४ भोजन, भक्षण. ५ शत्रु, दुश्मन ६ अधा ७ पुत्र का पुत्र, पौत्र (एका)
टैकस, टैक्स-स०पु० [अ०] कर ।
टैंगण—देखो 'टेंगणो' (मह, रू.भे)
उ०—अलल वचेरा ऊपरै, भूल न चढ़िया 'म्यार' थेट्ट रहिया याहरै, टैंगण घोडा तरार ।—दरजी मयाराम री वात

टैंगणो—देखो 'टेंगणो' (रू.भे)
टैंणियो-स०पु०—१ बर्तन विशेष (शेखावाटी)
२ देखो 'टेंगणो' (अल्पा, रू भे)
टैं'णी-स०स्त्री०—पेड के ऊपर की छोटी डाली, टहनी ।
रू०भे०—टहणी ।
टैं'णो—१ देखो 'टणो' (रू भे)
२ देखो 'टेंगणो' (रू भे)
(स्त्री० टैं'णी)
टैम-स०स्त्री० [अ० टाइम] समय, वक्त । उ०—१ नही तार नहि टैम है, नही बती मे तेल । आ चालै मन रै मतै, मारवाड री रेल ।
उ०—२ जो कोई बम्बोई गयो व्हैना वो जाणतो व्हैला कै भूलेसर रोड पर किसीक भीड रैवै । जिण मे फेर सुबै अर साझ री टैम तो पछै पूछणो ईज काई ।—रातवासो
यौ०—टैमो-टैम ।
टैमो-टैम-क्रि०वि०—ठीक समय पर ।
टैरको-स०पु०—१ किसी महत्वपूर्ण बात का संक्षिप्त सकेत ।
ज्यू—उण खास बात पूरी तो कही कोनी, थोडो सो'क टैरको नाखियो
क्रि०प्र०—नाखणो ।
२ नखरा, चमक-दमक ।
उ०—नीवडै नीबोळी पाकी, ढालू पाका कैर का । जोवनियो जातो रह्यो, तू मत जाइजै टैरका ।—अज्ञात
क्रि०प्र०—करणो, रखणो ।
३ व्यग्यात्मक वाक्य, कटु शब्द । ज्यू—वो तो टैरका देतो ईज बोलै ।
क्रि०प्र०—दैणो, न्हाखणो ।
४ घमड, अभिमान, गर्व । ज्यू—उणरी काई बात, वो तो पूरो टैरको राखै ।
५ गुस्सा, कोप, क्रोध ।
रू०भे०—टहरको ।
टैरणो—देखो 'अटेरणो' (रू भे) (शेखावाटी)
टैं'रियो—देखो 'टसरियो' (रू भे)
टैं'ल—देखो 'टहल' (रू भे)
यौ०—टैं'ल-बदगी ।
टैं'लणो, टैं'लबो-क्रि०अ०—वायु सेवन करना, घूमना, फिरना ।
रू०भे०—टहलणो, टहलबो ।
टैलवार—१ देखो 'टहलदार' (रू.भे) २ कसाइयो का एक नाम । (मा म)
टैलवो, टैलियो-स०पु०—टहलुआ, चाकर, नौकर, सेवक ।
रू०भे०—टैलुओ, टैलवो ।
टैं'लियोडो-भू०का०कृ०—वायु सेवन किया हुआ, घूमा हुआ ।
(स्त्री० टैं'लियोडी)

टोक–स०पु०—तलवार का सबसे नीचे वाला नुकीला भाग।

टो–स०पु०—१ नारियल २ लगन ३ चपक ४ चोटी. ५ दाँत ६ गुरु (एका)

टो'—देखो 'टोह' (रू.भे)

टोक–स०स्त्री०—रोकने अथवा मना करने की क्रिया या भाव।
यौ०—टोक-टाक, रोक-टोक।

टोकणी—देखो 'टोकणो' (अल्पा., रू भे, शेखावाटी)

टोकणो–स०पु०—धातु का बना बर्तन विशेष। उ०—१ एक गव गवती गऊ दीनो, अवर सुरही बाछिया। टोकणा ए चरु ए तबोळ दीन्या, कळस वेल सवाइया।—लो गी.
उ०—२ माडा तो पोवा लवभवा जी, तीवण तीस वतीस। घीवर नरवा टोकणां जी, जाळा पर कीजी खाड, राणी सोरठी।—लो गी
अल्पा०—टोकणी।

टोकणो, टोकवो–क्रि०स०—मना करना, निषेध करना, रोकना।
टोकणहार, हारो (हारी), टोकणियो—वि०।
टोकवाडणो, टोकवाड़वो, टोकवाणो, टोकवावो, टोकवावणो, टोकवाववो, टोकाडणो, टोकाडवो, टोकाणो, टोकावो, टोकावणो, टोकाववो—प्रे०रू०।
टोकिश्रोडो, टोकियोडो, टोक्योडो—भू०का०कृ०।
टोकीजणो, टोकीजवो—कम वा०।

टोकर–स०पु०—१ आभूषण विशेष। उ०—भाट था त्यानू घोडा, ऊट, कडा, मुरकी, टोकर दीन्हा।
—कुवरसी साखला री वारता
२ देखो 'टोकरो' (मह, रू भे) उ०—ताहरा रावळजी वाघ ऊदं नू बगसियो, ताहरा ऊदं लियो नै गळ टोकर बाधि-नै छोडि दियो कह्यो जी वाघ म्हारो छै।—ऊदं उगमणावत री वात

टोकरियो—देखो 'टोकरो' (अल्पा., रू.भे) उ०—रूपा रो टोकरियो जाणै रे।—जयवाणी

टोकरी–स०स्त्री०—१ वह थोडी सी जमीन जो किसी वडे तालाब के पास स्थित हो. २ देखो 'टोकरो' (अल्पा, रू भे)
रू०भे०—टोपली।

टोकरो–स०पु०—१ वडी डलिया २ देखो 'टकोरो' (रू.भे)
रू०भे०—टोपलो।
अल्पा०—टोकरियो, टोकरी।
मह०—टोकर।

टोकळ, टोकळो–स०पु०—१ वडी जू, यूका २ किसी मनुष्य के प्रति व्यग्य के रूप मे कहा जाने वाला शब्द।
वि०—मूर्ख।
मह०—टोकळ।

टोकियोडो–भू०का०कृ०—मना किया हुआ निषेध किया हुआ, रोका हुआ।
(स्त्री० टोकियोडी)

टोको–स०स्त्री०—शिखर, चोटी। उ०—१ काती भलं दाती फेरी, लासू वन रा वाउता। भाड जुगत लादा लदावं, डिगला टोको काढता।—दसदेव
उ०—२ गरव स्मृति पुराण, सुवाणो लागो सूची। अवड ऊजळं रूप, ऊघाडो टोको ऊची।—दसदेव

टोगड़—देखो टोगडो' (मह, रू.भे.)
यौ०—टोघड-टोळी।

टोगड़ियो, टोगड़ो–स०पु० [स० तोक = टोक] (स्त्री० टोगडी) १ गाय का बच्चा, बछडा।
मुहा०—टोगडा टाळणा, टोगडिया टाळणा—साथ छोड देना, पृथक हो जाना।
२ मूर्ख, गंवार।
रू०भे०—टोघडो।
अल्पा०—टोगडियो, टोघडियो।
मह०—टोगड, टोघड।

टोघड—देखो 'टोगडो' (रू भे) उ०—होली लागा रा डेरा ढळकाता। टोघड टुकडा रा डेरा खळकाता।—ऊ.का

टोघडियो—देखो 'टोगडो' (अल्पा, रू भे)

टोघडो—देखो 'टोगडो' (रू.भे.) उ०—आदू तिवार मे सुगन ओ, देव अमल विन दोघडा। आ रसम फंनाई अमलिया, तार न सोचं टोघडा।—ऊ का
(स्त्री० टोघडी)

टोचको–स०पु०—१ अगुलियो को मोड कर प्रहार करने का भाव २ व्यग्य, टोट ३ सिर, मस्तक (अल्पा) ४ देखो 'टूचको'। (रू.भे)

टोट–वि०—हृष्टपुष्ट, शक्तिशाली। उ०—भेजी लिख जुध भिडण री, राणी कनं रपोट। प्रबळ विचारी तै 'पता' टक्कर लैण री टोट।
—जुगतीदान देथो
३ देखो 'टोटो' (मह, रू भे.) उ०—परणाई पीळा पोतडा, मेली ऊभा कोट। एक सनेहीसा रा सायवा, काई थारै कागदिया रा टोट। ओळू घणी आवै रे म्हारा सैण, नीद नही आवै छै।—लो गी

टोटकाचारय–स०पु०—शकर स्वामी का एक शिष्य विशेष जिसने उत्तर मे जोशी मठ की स्थापना की थी (मा म)

टोटको–स०पु०—१ किसी बाधा या व्याधि आदि को दूर करने के लिए किया जाने वाला तन्त्र-मन्त्र का प्रयोग।
क्रि०प्र०—करणो।
२ जादू, टोना। उ०—टामण-टूमण टोटका, कर देखो सब कोय। छदं चालं पीव कै, आपै ही वस होय।—अज्ञात
क्रि०प्र०—करणो।

टोटलो–स०पु०—भुना हुआ चना। उ०—गवा-चिणा की घूघरडी,

रघाय, चिणा का ग्रूपर टोटला जी, म्हारा राज ।—लो गी
टोटी-स०स्त्री० [स० ग्रोटि] (बहु व० टोटिया) १ स्त्रियो के कान के नीचे के भाग मे पहनने का ग्राभूषण ।
यौ०—टोटी-झूमरा, टोटी-साकळी ।
देखो 'टोट' (रू भे)
उ०—दुरद पगा दोटीह, तैं टोटी इण वसत मैं । मुरधर री मोटीह, खत्रवट 'पता' खताय दी ।—जुगतीदान देथो
टोटी-झूमर, टोटी झूमरो-स०स्त्री०यौ०—स्त्रियो के कान के ग्राभूषण टोटी के साथ लगाया जाने वाला लटकन ।
टोटी-साकळी-स०स्त्री०यौ०—स्त्रियो के कान का ग्राभूषण ।
टोटो-स०पु० [स० ग्रोट] १ घाटा, हानि, नुकसान ।
उ०—पोडो उपेजो थो जिको राज ही माहो टोटो ग्रायो ।
—राठोड राजसिंघ री वारता
क्रि०प्र०—उठाणो, खाणो, झेलणो, पडणो, भुगतणो, सेणो ।
२ ग्रभाव, कमी । उ०—१ खोटं टोटं नग कणिया वीखरगी । माहव मोटं दुख जाटणिया मरगी ।—ऊ का.
उ०—२ कछु दोस नहीं कुवज्या नैं, वीरो ग्रपणा स्याम खोटा । ग्राप न ग्रावैं पतिया न भेजै, कागद का काईं टोटा ।—मीरा
क्रि०प्र०—ग्राणो, पडणो ।
कहा०—टोटा नी टापरी माये रात-दा'डा राड—ग्रभाव ग्रोर कमी जिस घर मे होती है वहा हर वक्त झगडा होता रहता है ।
३ एक प्रकार का वाद्य जो शहनाई ही की तरह का होता है ।
मह०—टोट ।
टोड-स०स्त्री०—१ युवा मादा ऊँट ।
स०पु०—२ ऊँट (बीकानेर) । उ०—१ झोक भरी छै म्हारी टोडिया जे, जे मै म्हारो गल्लै वाळो टोड, ग्रो क वरसं वरसोदण होळी पामणी जे ।—लो गी.
टोडकी, टोडडी-स०स्त्री०—१ मादा ऊँट । उ०—डायया टोडा टोडडी, लोपी नदी वनास । ग्राडो गैलो उलगिया, जद घण छोडी ग्रास ।
—लो गी
२ देखो 'टोडती' (रू भे)
टोडडो—१ देखो 'टोडियो' (रू भे.) उ०—ग्रै हाथी घोडा थारै, थारी वरोवरी म्हे करा स कोई ऊट टोडडा म्हारै, गिरधारी हो लाल ।
—लो गी
२ देखो 'टोडो' (ग्रल्पा, रू भे) । उ०—वायस वइठउ टोडडै, ऊडाडइ करि पाणि । 'माधव क्या हरि ग्रावसी ?' ग्रेम कहती वाणि ।—मा का प्र
टोडती-स०स्त्री०—ऊँट का मादा वच्चा । उ०—मेरो देवरियो चरावैं साड, करला गाजणा । टोडियो चरावैं, टोडती चरावैं, वो तो ल्यावैं-ल्यावैं घरा ग्रे चराय, माडया गरजणा ।—लो गी.
रू०भे०—टोडकी, टोडडी ।
टोडर-स०पु०—१ हाथी २ पुरुष के पैरो मे धारण करने का गोल स्वर्णाभूषण जो राजा द्वारा मान या प्रतिष्ठा के लिये दिये जाते थे ।
टोडरमल, टोडरमल्ल, टोडरमाल—देखो 'तोडरमल' (रू.भे)
टोडरो-स०पु०—स्त्रियो के पैरो मे पहनने का ग्राभूषण विशेष ।
उ०—१ विणजारा रै लोभी, लेज्या गळा केरो हार, वावें पग को लेज्या टोडरो, विणजारा रे ।—लो गी
उ०—२ ग्रेक सखी मेरी पहरी पायल, विछिया री रमझोळ । दूजी सखी मेरी पहर टोडरो, पिवजी नैं जाय दिखायो ।—लो गी.
टोडारू—देखो 'तोडारू' (रू भे)
टोडियो-स०पु०—ऊँट का वच्चा । उ०—मेरो देवरियो चरावैं साड, करला गाजणा । टोडिया चरावैं टोडती चरावैं, वो तो ल्यावैं ल्यावैं घरा ग्रे चराय, साडिया गरजणा ।—लो गी
रू०भे०—टोडडो, टोरडो, तोडडो ।
ग्रल्पा०—टोरडियो, तोडियो ।
टोडी-स०स्त्री०—१ सगीत की एक रागिनी विशेष (सगीत)
२ कूए के ऊपरी भाग मे लम्बाई की ग्रोर लगा हुग्रा पत्थर जो रहट की लाट के सिरे को टिकाये रहता है ३ पत्थर का वह भाग जो कुए के ग्रन्दर की ग्रोर ऊपरी सतह पर कुए की चुनी हुई दीवार से कुछ वाहर निकला हुग्रा होता है जिस पर वह पात्र रखा जाता है, जिसमे रहट से निकला हुग्रा पानी गिर कर ग्रागे नाली मे जाता है.
४ देखो 'टोड' (१) (रू भे)
उ०—ऊची-नीची सरवरिया री पाळ, जठै नै मिळै टोडी टोडडा । साथीडा रै चढण टोड, पावू धणी रै चढण केमर काळका ।
—पावूजी राठोड री गीत
टोडो-स०पु०—१ छज्जे के सहारे के लिए लगाया जाने वाला पत्थर ।
२ वच्चे मकान की चौडाई की दीवार का वह भाग जो टाट के सुभीते के लिए लवाई की दीवार से त्रिकोण के ग्राकार का ग्रधिक ऊचा किया जाता है ग्रोर जिस पर वडेर का छोर रक्खा रहता है । ये सख्या मे दो होते है ३ मकान के दरवाजे के वाहर ग्राड लिए वनाई गई दीवार ४ प्राय· घोडे के मुख के ग्राकार के काठ के करीव हाथ दो हाथ लवे डडे जो घर की दीवार के वाहर की ग्रोर पक्ति मे वढी हुई छाजन के सहारा देने के लिये लगाए जाते है ५ जमीन की सरहद वताने वाला पत्थर ।
टोणौ—देखो 'टोनौ' (रू भे)
टोणौ, टोवौ-क्रि०स०—१ ग्राखो मे ग्रजन डालना, सँवारना ।
उ०—इदु वदन गोखडा ऊभी, टोया काजळ टीवी । गळती रात पुकारै गोरी, वावहिया ज्यू वीवी ।—ग्रमरसिंह राठौड रौ गीत
२ देखो 'टोहणौ, टोहवौ' (रू भे)
टोनौ-स०पु०—कोई वाधा, व्याधि ग्रादि दूर करने या मनोरथ पूर्ण करने के निमित्त किया जाने वाला प्रयोग जो किसी ग्रलौकिक या दैवी शक्ति पर विश्वास कर के किया जाता है । मत्र-तत्र का प्रयोग ।

उ०—हूँ जळ भरने जात थी सजनी, कळस माथै धरचौ । सावरी सी किसोर मूरत, कछुक टौनौ करचौ ।—मीरा

क्रि०प्र०—करणौ, चलाणौ, मारणौ ।

रू०भे०—टुनौ, टोणौ, टोनौ ।

यौ०—जादू-टौनौ ।

टोप-स०पु० [स० ष्टुप् उच्छ्राये] १ युद्ध के समय शिर पर पहनने की लोहे की टोपी, शिरत्राण । उ०—तीन वेळा उपाड-उपाड खगार रै हाथ मे नाखिया । साहिब नू झटको वाह्यो सु टोप लाग टळियो । —नैणसी

पर्या०—उतवग-पनाह, सिरत्राण, सीरसक ।

२ शिर पर धारण करने की कपडे अथवा पशुओ की खाल से बनी टोपी ३ शिर पर धारण करने की टोपी विशेष जिसको साधारणतया सरकारी अफसर अथवा अमीर लोग धूप से बचने के लिए पहनते हैं ४ तरल पदार्थ की बूद ।

५ देखो 'टोपी' (मह, रू भे)

६ देखो 'टोपो' (मह रू भे)

टोपरउ-स०पु० [स० टोपपर] (उ.र)

टोपरौ-स०पु०—फल विशेष ।

उ०—सदाफळ अम्रितफळ फाळसा सकरलीवु कमळ काकडी सीघोडा, टोपरा ना फटका, कुकणा केळा ।—व स

टोपली-स०स्त्री०—१ डलिया, टोकरी ।

२ देखो 'टोपी' (अल्पा, रू भे)

३ देखो 'टोपाळी' (रू भे)

टोपलौ-स०पु०—१ बडी डलिया । २ देखो 'टोपो' (अल्पा., रू भे)

टोपसी—देखो 'टोपाळी' (रू भे)

उ०—आगरीया मे प्रतापजी कोठारी बोल्यो, स्वामीनाथ ! आप जोडा किस तरै करो छो । जद स्वामीजी एक टोपसी मे सपेतो हुतो इतलै वायरो वाज्यो ।—भि द्र.

टोपाळी-स०स्त्री०—नारियल की गिरी के ऊपरी कठोर भाग का आधा हिस्सा । उ०—रावळो डाग हाथ मे अर धणिया री ऊपर मैं'र पछै पूछणोई काई । हाजरिया नै आभो टोपाळी जितरो निजर आवतो । —रातवासो

वि०वि०—नारियल की जटा उतारने के पश्चात कठोर भाग को गिरी निकालने के लिए तोड कर प्राय' दो भागो मे विभक्त किया जाता है जो प्राय. कटोरी के आकार के होते हैं किन्तु नीचे से चपटे नही होते हैं । इन दो भागो मे से एक मे तो तीन छिद्र होते हैं किन्तु दूसरे भाग मे छिद्र नही होने के कारण इससे किसी वडे वर्तन मे से वस्तु को निकालने अथवा कोई चीज उसमे रखने तथा अन्य कई कार्यों के लिए प्रयुक्त किया जाता है ।

रू०भे०—टोपनी, टोपसी ।

टोपिया-स०स्त्री०—पगडी, टोपी (जैन)

टोपियौ-स०पु०—१ बर्तन विशेष (शेखावाटी) २ देखो 'टोपो' (अल्पा, रू भे)

टोपी-स०स्त्री०—सिर ढाँकने का आच्छादन, छोटा टोपा ।

क्रि०प्र०—उतारणी, पटकणी, पै'रणी, पै'राणी, फेंकणी, मेलणी, राखणी ।

मुहा०—१ टोपी उतारणी—बेइज्जत करना, कगाल करना २ टोपी पटकणी—बहुत प्रयत्न करना ३ टोपी पहन लेना, सन्यास ले लेना ४ टोपी पै'राणी—निर्धन कर देना, फकीर बना देना. ५ टोपी फेंकणी—उत्तरदायित्व छोड देना, जिम्मेवारी से दूर हो जाना ६ टोपी राखणी—इज्जत रखना, प्रतिष्ठा रखना

२ अनाज के ऊपर का छिलका ।

क्रि०प्र०—उतारणी ।

३ गोल आकार की कटोरीनुमा वस्तु, ढक्कन आदि ।

क्रि०प्र०—लगाणी ।

४ बदूक छोडने के लिए धातु की बनी वस्तु, पटाखा ।

क्रि०प्र०—चडाणी, चाढणी ।

यौ०—टोपीदार ।

५ लिंग का अग्र भाग ६ विष्णु मूर्ति का शिर का आभूषण.

अल्पा०—टोपली ।

मह०—टोप ।

टोपौ-स०पु०—१ छोटे बच्चो के शिर मे पहनाने की टोपी विशेष ।

२ देखो 'टपको' (रू भे)

उ०—या सारा मे सार छाण नै पीजै पाणी, गाळो गरणो राख करै जळ मे जीवाणी । टोपौ हो ढोळै मती, धरती बिना विचार । करणी नै करतूत रो, क्यौं न आवै पार ।—सगरामदास

३ रहट के काष्ठ के मध्य स्थभ के नीचे के भाग मे लगा हुआ लोहे का टुकडा ।

४ देखो 'टोयौ' (२) (रू भे)

वि०—खण्ड, टुकडा ।

टोय—आख का वह छोर जो कनपटी की ओर होता है । उ०—फूला रा चोस पैहरिया थका टोय अणियाळा काजळ ठासिया थका वाका नैणा री भोख ।—रा मा स

२ देखो 'टोह' (रू भे)

उ०—ठिकाणा रा चुगलखोर इणी टोय मे रैवता ।—वाणी

टोयोडौ—भू०का०कृ०—१ (आखो मे अजन आदि) डाला हुआ, सँवारा हुआ । २ देखो 'टोहियोडौ' (रू भे.)

टोयौ-स०पु०—स्त्री की योनि के दोनो किनारो के मध्य का उभरा हुआ मास २ लोहे की कील जो खैंगद की लकडी के मध्य बाहर निकली रहती है ।

रू०भे०—टोपो ।

टोर-स०स्त्री०—कटारी । उ०—पातसाह-परगह प्रघण, जमा सकै की जोर । धरजे धक धाराळ की, टरड निभावै टोर ।

—रेवतसिंह भाटी

टोरडियो—देखो 'टोडियो' (अल्पा, रू भे)

उ०—म्हारा काकोजी चरावै टोरडिया, म्हारा भाऊजी लावै छकियार।—लो गी

टोरडो—देखो 'टोडियो' (रू भे.)

उ०—साड टोरडया टोड, कोड कर काट किंटाळी। लफलफ लेत वुगाळ, सूत खेजडना डाळी।—दसदेव

(स्त्री० टोरडी)

टोरणो, टोरबो–क्रि०स०—१ पद-चिन्हो को पहिचान कर चोर को ढूढने के निमित्त पीछा करना।

२ देखो 'टोळणो, टोळबो' (रू भे)

टोराबाज–वि०—जो डीग हाकता हो, गप्पी, झूठा।

टोरियोडो–१ पद-चिन्हो को पहिचान कर चोर को ढूढने के लिये पीछा किया हुआ। २ देखो 'टोळियोडो' (रू भे)

(स्त्री० टोरियोडी)

टोरियो, टोरो–स०पु०—१ असत्य वात, तथ्य रहित वात, डीग, गप्प।

क्रि०प्र०—देणा, हाकणा।

२ टक्कर, प्रहार (गेंद पर)

क्रि०प्र०—ठोकणो, देणो, मेलणो।

यौ०—टोराबाज।

अल्पा०—टोरियो।

टोळ–स०पु० [स० प्रतोली, प्रा० टोल्ल] १ निवास-स्थान, घर।

उ०—१ भला ठाकुर मान करी, नवा गाम वासति। डूगर तणै नींझरणै तेणइ, ताणिया टोळ घसति।—नळ दवदती रास

उ०—२ सस मुनिंद जिणि पूरिय भूरिय हरि मनि जपु। टोळ टळवळइ रैवत दैवत मनि आकपु।—नेमिनाथ फागु

उ०—३ भवि भवसउ ते बोलइ बोनइ गिरिसिर टोळ। सहजिइ परभव भेदन वेदन वदन विलोळ।—नेमिनाथ फागु

२ सम्पूर्ण जाति का एक राग।

३ देखो 'टोळो' (मह, रू भे)

उ०—१ टूटा मत रह टोळ सै, राव भीड के बीच। एक अकेले मिनख कू, सूझै ऊच न नीच।—अज्ञात

उ०—२ कळपव्रछ री डाळ, पारस रो टोळ, मेरु री महर, दरियावा री छोळ।—दरजी मयाराम रा वात

उ०—३ बोल के कुबोल भगी, टोळ तू भयो।—ऊ का

टोळउ—देखो 'टोळो' (रू भे)

टोळगइ–स०स्त्री० [स० टोलगति] तीड के समान कूदते-कूदते वदना करने का बत्तीस दोषो मे से पाचवा दोष (जैन)

टोळणो, टोळबो–क्रि०स०—चलने के लिए प्रेरित करना, हाकना (पशुओ को) उ०—पण एक दिन ईसडो दईव सजोग हुवो सो म्होकमसिघ तो हिरण री सिकार मूळ वैठो थो अर साथ रो रजपूत हिरण टोळवा नै वन माहि पैठो थो।

—प्रतापसिघ म्होकमसिघ री वात

टोळणहार, हारो (हारी), टोळणियो—वि०।

टोळवाडणो, टोळवाडबो, टोळवाणो, टोळवाबो, टोळवावणो, टोळवावबो, टोळाड़णो, टोळाडबो, टोळाणो, टोळाबो, टोळावणो, टोळावबो—प्रे०रू०।

टोळिओडो, टोळियोडो, टोळयोडो—भू०का०कृ०।

टोळीजणो, टोळीजबो—कर्म वा०।

टोरणो, टोरबो—रू०भे०।

टोळाटाळ–स०पु०—वह जैन साधु जो वदचलनी के कारण किसी दल से निष्कासित कर दिया गया हो।

टोळाटोळ–स०पु०यौ० (अनु०) भीड-भडक्का। उ०—नगर माहि निरखइ सहू, हूउ हाल कल्लोळ। टळवा किहि तिल को नही, जिहि तिहि टोळाटोळ।—मा का प्र

टोळियोडो–भू०का०कृ०—चलने के लिए प्रेरित किया हुआ, हाका हुआ।

(स्त्री० टोळियोडी)

टोळी–स०स्त्री०—१ समुदाय, झुण्ड समूह, मडली, जत्था, सघ, टुकडी।

उ०—१ तठा उपरायत देसोत राजान आपरा टोळी मजल रा जुवान लिया विराजमान हुवा छै।—रा सा स.

उ०—२ रातू दे रोडो लूला खोडा दुखियारा दीसदा है। झोळी झडकावै पोळी पावै टोळी सू टाळ दा है।—ऊ का

२ पक्ति, कतार। उ०—लागै घणी लुभावणी, टोवा री टोळीह। जाणक जोवण री प्रकृति, घड री घड खोलीह।—लू

टोळो–स०पु०—१ पशु विशेष का समूह (ऊट, गाय, मादा ऊट, हरिन)

२ समूह, झुण्ड। उ०—मऊ रा टोळा रा टोळा सहर कानी आग्या जा रह्या हा।—रातवासो

३ अनगढ वडा पत्थर। उ०—पाण मरकट हुनस गुरज रिम सिर पडै। झट कुलस हूत गिर जाण टोळा झडै।—र रू

४ घर (नळदवदती रास)

वि०—मूर्ख, गवार।

रू०भे०—टोळउ।

मह०—टोळ।

टोवण–स०स्त्री०—ऊट की नाक मे लगी काष्ट की लकडी पर लगा हुआ सूत का बना गोल घेरा (नाकी), जिसमे ऊट को बाधने या हाकने के लिए रस्सी बाधी जाती है।

टोवा-रव–स०पु०—ध्वनि, आवाज ? उ०—गोडीरव गैमरा जूह वहता तळ जोडा। घटारव पक्खरा हुय हिंसारव घोडा। टोवा-रव टिगटिगै गोम गैणारव गज्जै। गुजारव भेरिया धनक टकारव वज्जै।

—गु.रू व.

टोवाळी—देखो 'टवाळी' (रू भे)

टोह–स०स्त्री०—१ ध्यान, सजगता, तकन।

क्रि०प्र०—गाळणी, लगाणी।

२ खोज, तलाश।

क्रि०प्र०—मिळणी, राखणी, लगणी, लगाणी, लागणी, लैणी ।

मुहा०—टोह मे रैणी—खोज में रहना, तलाश मे रहना ।

३ खबर, पता ।

क्रि०प्र०—मिळणी, राखणी, लगणी, लगाणी, लागणी, लैणी ।

रू०भे०—टो', टोय।

टोहणो, टोहवो—क्रि०स०—१ दर्द के स्थान पर बार-बार सेक करना. २ दर्द के स्थान पर आक का दूध लगाना ।

रू०भे०—टोणो, टोवो ।

टाहियोडो—भू०का०कृ०—१ दर्द पर सेका हुआ. २ दर्द के स्थान पर आक का दूध लगाया हुआ ।

(स्त्री० टोहियोडी)

टौंस—स०स्त्री० [स० तमसा]- एक छोटी नदी जो अयोध्या के पश्चिम से निकल कर गगा मे मिलती है । इसी नाम की एक दूसरी नदी जो मैहर के पास कैमोरे के पहाड से निकल कर रीवा मे होती हुई इलाहबाद और मिर्जापुर के बीच गगा मे मिलती है ।

टौ—स०पु०—१ छत्र. २ वैल ३ समुद्र ४ पुरुष ५ दावानल. ६ नीति (एका)

टौनौ—देखो 'टोनो' (रू भे) उ०—भ्रकुटि कुटिल चपळ नैण चितवन से टौना, खजन अस मधुप मीन मोहे अगछौना ।—मीरा

ट्ठिइयास—वि० [स० स्थितिका] स्थिति वाली (जैन)

ठ

ठ—संस्कृत, राजस्थानी व देवनागरी वर्णमाला मे बारहवां व्यञ्जन जो टवर्ग का दूसरा वर्ण है। यह मूर्द्धन्य-स्पर्श व्यञ्जन है। इसके उच्चारण मे जिह्वा का अग्र भाग किंचित् मुड कर कठोर-तालु को स्पर्श करता है। यह अघोष महाप्राण है।

ठ-सं०पु०—१ शरद. २ पानी. ३ मदिरा. ४ अमृत. ५ वसत. ६ छिद्र (एका)
वि०—निर्मल (एका)

ठठ-वि० [सं० स्थाणु] सूखा हुआ या शाखाओ कटा हुआ (पेड), ठूंठा।
रू०भे०—ठठो।

ठठण—देखो 'ठण' (रू भे)
यौ०—ठठणपाळ।

ठठणपाळ-वि०यौ०—मूर्ख, गंवार। उ०—अक्षर भेद न जाणै मूढ, चाल रह्यौ छै कुळ री रूढ। ठोठ महारक ठठणपाळ।—जयवाणी

ठठाणौ, ठठाबौ-क्रि०स०—१ दूसरे का माल हडपना या अधिकार मे करना २ (वस्त्रादि) धारण करना (व्यग्य के रूप मे कहा जाता है)
ठैठाणौ, ठैठाबौ—रू०भे०।

ठठायोडौ-भू०का०कृ०—१ हडप किया हुआ, अधिकार मे किया हुआ. २ धारण किया हुआ।
(स्त्री० ठठायोडी)

ठठारी-सं०स्त्री०—जुकाम, ठंड, सर्दी। उ०—ठठारी लग जाय, डील करडौ पड जावै। आवै अळगो ओग, ऊकळै ताव तपावै।—दसदेव

ठठारु, ठठारौ, ठठारौ—देखो 'ठठारौ' (रू भे.)
उ०—१ तबोळी सुथार ठीक भैसात ठठारु।—ध व.ग्र.
उ०—२ राघण भटियारा कठियारा रे, भरावा कसारा ठठारा।
—जयवाणी

ठठियो-सं०पु०—सूखी लकडी, पेडी मात्र।

ठठेरणौ, ठठेरबौ-क्रि०स०—१ झटकना, हिलाना २ मारना, प्रहार करना।
ठठोरणौ, ठठोरबौ, ठठेरणौ, ठठेरबौ, ठठोरणौ, ठठोरबौ, ठमठोरणौ, ठमठोरबौ—रू०भे०।

ठठेरियोडौ-भू०का०कृ०—१ झटकाया हुआ, हिलाया हुआ २ मारा हुआ, प्रहार किया हुआ।
(स्त्री० ठठेरियोडी)

ठठेरौ—देखो 'ठठारौ' (रू भे.) उ०—पके ठूठिया ईंट, चूनौ, सुरखी हुळकी फूल घुट। ठठेरा लुहार सारा, लोह चढावै लाल चुट।
—दसदेव

ठठो—देखो 'ठठ' (रू भे)

ठठोरणौ, ठठोरबौ—देखो 'ठठेरणौ, ठठेरबौ' (रू भे)

ठठोरियोडौ—देखो 'ठठेरियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० ठठेरियोडी)

ठड-सं०स्त्री०—जाडा, शीत, सरदी।
क्रि०प्र०—पडणी, लागणी, होणी।
मुहा०—१ ठंड पडणी—सर्दी का फैलना, शीत बढना।
२ ठड लगणी, लागणी—जुकाम हो जाना, सर्दी लग जाना, ठड का अनुभव होना।
रू०भे०—ठढ।

ठडक-सं०स्त्री०—१ शीतलता। उ०—उण नै आपरा सरीर पर ठडक मालम हुई। वो जाग्यो तो देख्यो मेह वरसण लागग्यो है।
—रातवासो
२ मनोरथ की पूर्ति या मनचाही वस्तु की प्राप्ति से होने वाला सतोप।
क्रि०प्र०—पडणी, वापरणी।
३ उष्णता की शान्ति, जलन या उष्णता की कमी, तरी।
क्रि०प्र०—आणी।
४ किसी महामारी, हलचल या उपद्रव की शान्ति।
क्रि०प्र०—पडणी।
५ देखो 'ठड' (रू भे)

ठडकार-सं०पु०—ठडा मौसम, शीतल, ठडा।

ठडाई-सं०स्त्री०—१ शरीर की उष्णता शान्त करने तथा तरी लाने का मसाला या दवा।
क्रि०प्र०—घोटणी, पीणी।
२ शीतलता।
रू०भे०—ठढाई।

ठडिल, ठडिल्ल—देखो 'थडिल' (रू भे.)

ठडी-सं०स्त्री०—१ शीतला. चेचक (शेखावाटी)
क्रि०प्र०—टमकणी, ढळणी, निकळणी।
२ देखो 'ठड' (रू भे)
उ०—ठंडी सेज हरम्मावती, ठडा वसन तमाम। पोस भई वेहोस मे, घर ना सिर का स्याम।—लो गी
रू०भे०—ठढि।

ठडोडौ—देखो 'ठडौ' (अल्पा.)
(स्त्री० ठडोडी)

ठडोळ—देखो 'ठाडोळ' (रू भे)

ठडौ-वि० [सं० स्तब्ध] (स्त्री० ठडी) १ शीतल, सर्द। उ०—सियाळा मे वारणा वद किया पछै जाणै गुफा मे घुस्या अर ऊनाळा री जिकी ठडी-ठडी लै'रा आवै कै वैठा-वैठा नै नींद आय जावै।—रातवासो
क्रि०प्र०—करणी, होणी।

मुहा०—१ ठडै ठडै—सूर्य की गर्मी बढ़ने से पहले, सवेरे, तडके । अथवा सूर्य की गर्मी के घटने के बाद का समय, सायकाल ।
२ ठडी सास भरणी, लैणी—मानसिक उद्वेग या दुख के कारण जोर से सास खीचना या सास छोडना ।
यौ०—ठडो-टीप, ठडो-ठरियो, ठडो-ताव, ठडो-पौ'र, ठडो-मीठो, ठडो-वासी, ठडो-हेम ।
२ जो प्रज्वलित न हो, बुझा हुआ. ३ जिसमे आवेश न हो, जो क्रोध नही करता हो ।
मुहा०—१ ठडी माटी रौ—शान्त, गम्भीर, ढीला.
२ ठडो करणौ—क्रोध शान्त करना, ढाढ़स देना. ३ ठडो-मीठो करणौ—क्रोध शान्त करना, चुप करना ।
४ नामर्द नपुसक. ५ जिसमे चचलता, स्फूर्ति तथा उत्साह की कमी हो ६ जो विरोध नही करे, इच्छा के प्रतिकूल कार्य होने पर भी हाथ पैर नही हिलाए, सुस्त, कमजोर ।
मुहा०—ठडै ठडै—बिना कुछ बोले, चुपचाप ।
७ मरा हुआ, प्राणरहित ।
मुहा०—१ ठडो करणौ—मार डालना, समाप्त कर देना २ ठडो पडणौ—समाप्त हो जाना, मर जाना, जोश समाप्त हो जाना.
३ ठडो पाडणौ—देखो 'ठडो करणौ'
४ ठडो राखणौ—देखो 'ठडो करणौ'
५ ठडो होणौ—देखो 'ठडो पडणौ'
स०पु०—शीतला को प्रसन्न करने के लिये बनाया हुआ भोजन जिसे पहले दिन बना कर दूसरे दिन खाया जाता है ।
उ०—माताजी चमकिया देस मे, ठडो रादो ओ, हालरिया री माय ।
—लो गी.

रू०भे०—ठढ़ो ।

ठडो-ठरियो, ठडो-वासी—वि०यौ० (स्त्री० ठडी-ठरी, ठडी-वासी) वह भोजन जो ताजा न हो, एक या एक से अधिक दिन पहले बना हुआ भोजन ।
रू०भे०—ठाडो-ठरियो, ठाढो-ठरियो, ठाढो-वासी ।

ठडो-ताव—स०पु०—शीत ज्वर ।

ठडो-पौ'र—स०पु०यौ०—सूर्योदय के पश्चात् व सूर्यास्त से पूर्व का वह समय जब गर्मी अधिक नही । उ०—ठडा-पौ'र री टैम ही अर रभा आपरा पोता प्रवीण कुमार रै साथै आटो लेजावण नै चक्की पर आई ।—रातवासो

ठढ़—देखो 'ठड' (रू.भे.)

ठढ़ाई—स०स्त्री०—१ विश्राम । उ०—गूजरी कह्यो म्हे तो पेसती दीसो न छै नै पेठी छै नै माहे छै तो राजि देस रा धणिया आगै कठै जायै ? सढी मोटी छै नै च्यारू मेर सढा ढोळा ऊतरो, विराजो, ठढ़ाई करो ।—राव रिणमल री वात
२ देखो 'ठडाई' (रू.भे.)

ठढि—देखो 'ठडी' (रू भे.)
उ०—सूरजजी ठढि रा मारीआ उतर पथ छोडो नै दक्षिण सामा वहण लागा ।—रा सा स.

ठढौ—देखो 'ठडो' (रू भे.)
(स्त्री० ठढ़ी)

ठाढो-ठरियो—देखो 'ठडो-ठरियो' (रू भे.)

ठमणौ, ठमबौ—देखो 'थमणौ, थमबौ' (रू भे.)

ठमाणौ, ठमावौ—देखो 'थमाणौ, थमावौ' (रू भे.)

ठमायोडौ—देखो 'थमायोडो' (रू भे.)
(स्त्री० ठमायोडी)

ठमियोडौ—देखो 'थमियोडो' (रू भे.)
(स्त्री० ठमियोडी)

ठ—स०पु०—१ चन्द्रमा. २ वृहस्पति ३ ज्ञानी ४ महादेव ५ श्रीकृष्ण ६ वेग ७ बादल, मेघ. ८ वाचाल (एका.)

ठइत—स०पु० [स० स्थापित] साधु के निमित्त पृथक रखा हुआ पदार्थ (जैन)

ठइय—वि० [स० स्थगित] ढका हुआ (जैन)

ठउडणौ, ठउडबौ—क्रि०स०—अपमान करना । उ०—सुद्धचारित्रिया तेहहइ अपमाननइ काजिइ, तेहे ठउडवा इम करइ ।
—षष्टिशतक प्रकरण

ठक—स०स्त्री०—वह शब्द जो एक वस्तु पर दूसरी वस्तु के आघात से होता है ।
रू०भे०—टक ।

ठकठकाणौ, ठकठकाबौ—क्रि०स०—१ एक वस्तु पर दूसरी वस्तु का प्रहार करना २ ठक ठक शब्द उत्पन्न करना ३ खटखटाना, ठोकना. ४ जाच के हेतु बजाना
रू०भे०—ठपकाणौ, ठपकावौ, टपकारणौ, ठपकारबौ ।

ठकठकायोडौ—भू०का०कृ०—१ किसी वस्तु पर प्रहार किया हुआ २ ठक ठक शब्द उत्पन्न किया हुआ. ३ खटखटाया हुआ, ठोका हुआ ४ जाच के हेतु बजाया हुआ ।
(स्त्री० ठकठकायोडी)

ठकठोळी—स०स्त्री०—हँसी, मजाक, दिल्लगी । उ०—गरथ तणै गारव हुओ गहिलौ विण होळी । नेट करै निवळ री ठेक हासी ठकठोळी ।
—ध व ग्र

ठकर—देखो 'ठाकर' (रू भे.)

ठकराणी—स०स्त्री०—१ ठाकुर की पत्नी । उ०—काइमि रो बारठ कहै, ठकराणी अे ठीक । साहिब राघव सारिखा, तू सीता सारीख ।
—पी ग्र.
२ स्वामिनी, मालकिन ।

ठकराई—देखो 'ठकुराई' (रू भे.)
उ०—राजाई कहीजै किना पातसाही राम, ठगाई तुम्हारी निमो

ठकराई ठीक ।—पी ग्र

ठकराहो—देखो 'ठाकर' (रू भे.)

उ०—ठाहर पग गाडो ठकराहा, हुग्रा यो सुण वाहर हको । मों ऊभा ग्रतरी छै मालम, 'सालम' धन ले जाय न मकौ ।

—ईसरदास मोयल रो गीत

ठकाणो—देखो 'ठिकाणो' (रू.भे)

उ०—गण सपत होइ गुरु ग्रति गाह, ठकाणो छट्ठे विप्र जगण ठाह ।

—ल पिं.

ठकार—स०पु०—'ठ' ग्रक्षर ।

ठकावळ—स०स्त्री०—धक्का ।

ठकुर—देखो 'ठाकर' (रू भे.)

ठकुर-सुहाती—स०स्त्री०यौ०—केवल किसी को प्रसन्न करने हेतु कही जाने वाली वात खुशामद ।

ठकुराणी—देखो 'ठकराणी' (रू भे)

उ०—दादू माया चेरी सत की, दासी उस दरवार । ठकुराणी सब जगत की, तीनो लोक मझार ।—दादू वाणी

ठकुराई—स०स्त्री० [स० ठक्कुर+रा०प्र०ई] १ शासन, हुकूमत ।

उ०—धरती थाहरे घरे हुयी । ग्रर थाहरे कुरसी दर कुरसी ठकुराई हुयी ।—नैणसी

क्रि०प्र०—करणी, राखणी, होणी ।

२ राज्य । उ०—१ कछवाहा री राज येटू पूरव मे रोहितासगढ़ जठे । उठासू नरवर वसिया । नरवर सू दोसे ठकुराई वाधी । दोसा सू ग्रावेर । ग्रावेर मू जैपुर ।—वा दा ख्यात

उ०—२ ग्राज राव रे तो ग्रोहिज माथे मोड छै । इण साथ मुवे राव री ठकुराई घणी पातळी पडसी ।—राव मालदे री वात

क्रि०प्र०—करणी, वाधणी, होणी ।

३ स्वामित्व, ग्रधिकार, कब्जा । उ०—राव रिणमल उठे धिणले सोजत कने रहे । गाव री ठकुराई पावती घणा रजपूता रा भूळ रहे ।

—राव रिणमल री वात

४ बडप्पन की धाक, रोब, हुकूमत । ज्यू—था रोज-रोज म्हारे माथे ठकुराई जमावो ग्रा वात ठीक नी है ।

क्रि०प्र०—जमाणी, राखणी ।

५ ग्रभिमान, घमण्ड, गर्व ।

क्रि०प्र०—करणी, जताणी, राखणी ।

रू०भे०—ठकराई, ठकुरात, ठकुरायत, ठाकराइ, ठाकरि, ठाकरी, ठाकुराई, ठाकुरी ।

ठकुरात, ठकुरायत—देखो 'ठकुराई' (रू भे) उ०—हाथा हळ हाकता, नार करती नेदाणी । निरस घरा सनमध, कदे ठकुरात न जाणी ।

—ग्ररजुणजी वारहठ

ठकुराळो—देखो 'ठाकर' (ग्रल्पा , रू भे) उ०—ताहरा रजपूत बोलियो—'जी वसती सोळ किया री छै ।' कह्यो—'ठकुराळा ! ग्रा वेटी किणरो छै ? ताहरा ऊ रजपूत बोलियो—'जी, ईये रजपूत री डावडी छै ।'—नैणसी

ठकोरो—स०पु०—१ घटी पर प्रहार करने से उत्पन्न शब्द. २ चोट, प्रहार । उ०—फजर के पहर गजर ठकोरा वगे । ठोड-ठोड घचळ मगळ होणे को लगे ।—रा रू

ठक्कुर—देखो 'ठाकर' (रू भे.)

ठग—वि० [स० ठक] (स्त्री० ठगण, ठगणी) छल ग्रौर धोखे से लूटने वाला, भुलावा देकर धन हरण करने वाला, धूर्त, छली ।

उ०—१ दगो दियो कर दोसती, ठग जाहर सव ठाह । वाणण जाया 'वाऊला', कहै महाजन काह ।—बा दा

उ०—२ एक कहै ग्रवरग, एह ग्रालोच ग्रकब्बर । एक कहै किम एक, एह दिल्ली ठग ग्रासुर ।—रा रू

यौ०—ठग-वाजी, ठग-विद्या ।

ग्रल्पा०—ठगारो, ठगोरो, ठिगारो ।

ठगठगतउ—वि०—स्तभित । उ०—नसाजाळ व्यक्ता दीसइं, ग्रस्थिवध ढीला ढळहळता, जिसा गामटि ग्रजाणि सूत्रधारि ठगठगतउ साल सचउ मेळिउ जिसिउ, जिनप्रवचनालकार ।—व स

ठगठगी—स०स्त्री० (ग्रनु०) विस्मय से देखने की क्रिया या भाव ।

उ०—रिमा पाडे भगी तगी वागा रमे, दुभल माभल लगी चूप दावा । घज विलद देख सूमा चढी धगधगी, ठगठगी टगटगी लगी ठावा ।—वखतो खिडियो

ठगठगो—वि० (स्त्री० ठगठगी) चकित, डाँवाडोल, ग्रस्थिर ।

उ०—मन भये ठगठगा जाम-जाम । तद ग्रावै 'करनल' वचन ताम ।

—रांमदान लाळस

ठगण—स०पु०—छद शास्त्र मे ५ मात्राग्रो का एक गण जिसके ग्राठ उपभेद होते हैं ।

ठगणी—स०स्त्री०—१ ठगने की क्रिया. २ ठगने वाली स्त्री ।

क्रि०प्र०—करणी ।

ठगणो—वि० (स्त्री० ठगणी) जो धूर्तता से द्रव्य हडपता हो, जो छल करता हो ।

ठगणो, ठगवो—क्रि०स०—१ भुलावे मे डाल कर धन हरण करना, धोखा देकर माल लूटना. २ दगा करना, धोखा देना ३ माल वेचते समय उचित से ग्रधिक मूल्य लेना, सौदा वेचने मे वेईमानी करना ।

ठगणहार, हारो (हारी), ठगणियो—वि० ।

ठगवाड़णो, ठगवाडवो, ठगवाणो, ठगवावो, ठगवावणो, ठगवाववो, ठगाडणो, ठगाडवो, ठगाणो, ठगावो, ठगावणो, ठगाववो—प्रे०रू० ।

ठगिग्रोडो, ठगियोडो, ठग्योडो—भू०का०कृ० ।

ठगीजणो, ठगीजवो—कर्म वा० ।

ठगपणो—स०पु०—१ धूर्तता, छल, चालाकी २ ठगने का कार्य या भाव ।

ठग-वाजी—स०स्त्री०यौ०—१ धूर्तता, छल, चालाकी २ ठगने का कार्य

या भाव । उ०—नानग सरवर भरियो नीको, झुकै लोग पीवण दे झोको । ठगबाजी गादी रो ठीको, फेर सिखा कर दीनो फीको ।
—ऊ का

ठग-विद्या—स्त्री०यौ०—१ धूर्तता, छल, चालाकी २ ठगने का कार्य या भाव ।

ठगाण, ठगाई—स०स्त्री०—१ धूर्तता, धोखेबाजी, छल ।
उ०—राजाई कहीजै किना पातसाही थारी राम । ठगाई तुम्हारी निमो ठकराई ठीक ।—पी.ग्र
२ ठगना क्रिया का भाव।
क्रि०प्र०—करणी ।

ठगाठगी—स०स्त्री० (अनु०) धूर्तता, धोखेबाजी ।
मि०—धोखा-धडी ।

ठगारौ—देखो 'ठग' (अल्पा , रू भे.) उ०—१ ग्यान ठगारी गोडियो, सकर करिसैं सेव । बीठुल माहि विराजियो, दरसण दोरो देव ।
—पी.ग्र
उ०—२ कूडा नेह कुटुब सू, सब साथ ठगारा ।—केसोदास गाडण
(स्त्री० ठगारी)

ठगियोडौ—भू०का०कृ०—१ धोखे से लूटा हुआ. २. दगा किया हुआ, धोखा किया हुआ ३ उचित से अधिक मूल्य लिया हुआ ।
(स्त्री० ठगियोडी)

ठगी—स०स्त्री० [स० ठक] १ धूर्तता, छल, चालाकी ।
क्रि०प्र०—करणी ।
२ ठगने की क्रिया या भाव, ठगने का कार्य । उ०—खेडापा सीथळ दोई खोटा, जाहर ठगी जमाई । ऊमरदान गुरु कर आ नै, गैला स्यान गमाई ।—ऊ का

ठगोरी—स०स्त्री०—ठगो की विद्या ।
वि०—धोखा देकर लूटने वाली ठगिन । उ०—दिन ऊनाळै वोभर भट्ठी, घोरा मोज प्रभात री । कासमीर री ठड वखेरै, वाय ठगोरी रात री ।—दसदेव
रू०भे०—ठगोसरी ।

ठगोरौ—देखो 'ठग' (अल्पा , रू भे)
(स्त्री० ठगोरी)

ठगोसरी—वि०—१ ठगने वाला, कपटी, धूर्त ।
२ देखो 'ठगोरी' (रू भे)

ठडड, ठडहड—स०स्त्री० (अनु०) १ घोडे के नाक की ध्वनि ।
उ०—१ रिख हडड, ठडड अस, दडड रत, वड़वड अच्छर वाधामणा । गडगड अवाट तडतड प्रगट, उरड थाट अघियामणा ।
—वखतो खिडियो
उ०—२ अवक गडगड गडड गोम ठडहड तुरा ।—भाखसी लाळस .
२ बन्दूक की आवाज ।
रू०भे०—ठरड ।

ठ'ड़णो, ठ'डबो—देखो 'ठरडणो, ठरडबो' (रू भे.)

ठ'डियोडौ—देखो 'ठरडियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० ठ'डियोडी)

ठ'डौ—देखो 'ठरडौ' (रू भे)

ठट—स०पु० [स० स्थाता] १ बहुत से लोगों का समूह, भीड, गरदी ।
२ एक स्थान पर स्थित बहुत सी वस्तुओ का समूह ।
मुहा०—ठट लागणो—ढेर होना, भीड होना ।
रू०भे०—ठट्ट ।

ठटरी—स०स्त्री०—अस्थि-पजर, हड्डियो का ढाचा ।

ठट्ठ—देखो 'ठट' (रू भे.)
उ०—तू जा भूडण रिवछडै, म्है जाऊ घण ठट्ठ । मैं'ला रोवाऊ कामणी, कै मास विकाऊ हट्ट ।—लो'गी.

ठट्ठौ—स०पु०—१ हँसी, मजाक, विनोद ।
उ०—दोनू सरदार भेळा बैठिया, ठट्ठो मसखरी हासी हो रही छै ।
—कुवरसी साखला री वारता
क्रि०प्र०—करणो, मारणो ।
रू०भे०—ठट्ठो ।
यौ०—ठट्ठावाज ।
२ 'ठ' अक्षर ।

ठठकणो, ठठकबो—देखो 'ठिठकणो, ठिठकबो' (रू भे.)

ठठकार—स०स्त्री०—१ डाट-डपट, दुत्कार ।
क्रि०प्र०—दैणी ।
२ शाप, बददुआ ।
क्रि०प्र०—दैणी ।
३ अत्यधिक शीत, सरदी ।
क्रि०प्र०—पडणी ।
वि—पापी, दुष्ट । उ०—वडा हथियारा वरस, अई पापी अठताळा, तै अठताळा तणा, अई चडाळ सियाळा । तिकण सियाळा तणो, माघ ठठकार महिनो, तिण रै पख चानणै, महा घोरारव कीनो । तिण पख तिथ चवदस तणी, रात घटतै छ घडी । 'सिवसाह' कमध विसरामियो, धाह अचाणक ऊपडी ।—साहिबो सुरतांणियो

ठठकारणो, ठठकारबो—क्रि०स०—१ फटकारना, दुत्कारना, धिक्कारना, तिरस्कार करना. २ शाप देना, बददुआ देना ।

ठठकारियोडौ—भू०का०कृ०—१ फटकारा हुआ, दुत्कारा हुआ ।
२ शाप दिया हुआ ।
(स्त्री० ठठकारियोडी)

ठठकियोडौ—देखो ठिठकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० ठठकियोडी)

ठठणो, ठठबो—क्रि०अ०—घुसना, प्रविष्ठ होना । उ०—दूजोडो भरपूर वार निछरावळ करण' वाळा पर हुओ सो बरोबर बैठघो होतो तो माथो मूळा री कापी रै ज्यू आघो जाय पडतो पण इण पै'ला ईज

टूकिया री गोळी पेडू मे आय'ठडी अर'वानै वैठणो पड्यो'।
—रातवासो

ठठर–वि०—सिकुडा हुआ।
स०स्त्री०—तलवार।
उ०—राघै फिर पग रोपिया, एकै अडपाई। राघै ऊपर रूक रस, वीरमदे वाही। करतै फिरतै कूदतै, ठठर तै ठाही, ठाहै ठठर ठोर भुज, वाघै खा वाही।—वी मा

ठठरणौ, ठठरवौ—देखो 'ठिठरणौ, ठिठरवौ' (रू भे)

ठठरियोडौ–भू०का०कृ०—देखो 'ठिठरियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० ठठरियोडी)

ठठळणौ, ठठळबो–क्रि०अ०—वेकार होना, अनुपयोगी होना ?
उ०—ठाम थिका ठठल्या पछी, नागवेलि ना डीच। पाचय परि परि रडवडइ, दत केस नख नीच।—मा का.प्र.

ठठार—१ देखो 'ठठारा' (रू.भे)
उ०—सोनी पारखि जवरीह गाधी दोसी नेस्ती कणसरा मपारी मणीयार सोनार कुभार ठठार लोहाग तलाल पटोलीया पटसुत्रीया माळी तबोळी।—व स.
२ देखो 'ठठारौ' (मह, रू भे)'

ठठारा–म०स्त्री०—कासी, पीतल आदि के वर्तन बनाने वाली एक जाति विशेष।
रू०भे०—ठठार, ठाठर।

ठठारौ–स०पु० (स्त्री० ठठारण, ठठारी) कासी, पीतल आदि के वर्तन वनाने का व्यवसाय करने वालो 'ठठारा' जाति का व्यक्ति, ठठेरा।
रू०भे०—ठठारू, ठठारौ, ठट्टारौ, ठठेरौ, ठठार, ठठियार, ठठेरौ, ठाठर।

ठठियार—देखो 'ठठारौ' (रू भे)
(स्त्री० ठठियारण, ठठियारी)

ठठियोडौ–भू०का०कृ०—प्रविष्ट हुवा हुआ, घुसा हुआ।'
(स्त्री० ठठियोडी)

ठठियौ—१ देखो 'ठठौ' (अल्पा, रू.भे) २ देखो 'ठाटौ'।
(अल्पा', रू भे)

ठठुरी–स०स्त्री०—तोप का ठाठा'। उ०—सुन के नृप के उर कोप बढ्यौ,' मघवा मनु दाणव सीम चढ्यौ। ठठुरीनि जुटी जुरि तोप हकी, भरि पेटिय समिल सोरन की।—ला रा

ठठेरणौ, ठठेरवौ—देखो 'ठठेरणौ ठठेरवौ' (रू भे)

ठठेरियोडौ—देखो 'ठठेरियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० ठठेरियोडी)

ठठेरौ—देखो 'ठठारौ' (रू भे)'
(स्त्री० ठठेरी)

ठठोर—देखो 'ठट्ठोळ' (रू भे) उ०—ठठोर सयु गोठ की जवान गोठ लें जवै, वडी मठोठ मे वहै, दु होठ दत तें दवै।—ऊ का

ठठोरणौ, ठठोरवौ—ठठेरणौ, ठठेरवौ' (रू भे)

ठठोरियोडौ—देखो 'ठठेरियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० ठठोरियोडी)

ठठोळ, ठठोळी—देखो 'ठट्ठोळ' (रू भे.) उ०—सो कछोटियो लोग ओछा अधका वोल वोलै, ठठोळिया करै।—अमरसिंह राठोड री वात

ठठौ–स०पु०—'ठ' अक्षर। उ०—जिको न पूरो जाणतो, ठठो मीडो ठोठ।—घ.व.ग्र.
रू०भे०—ठट्ठौ, ठठौ, ठठ्ठौ।
अल्पा०—ठठियौ, ठठ्ठियौ।
२ देखो 'ठट्ठौ' (रू भे)

ठट्ठियौ—देखो 'ठठौ' (अल्पा, रू भे)

ठट्ठोळ, ठट्ठोळी–स०स्त्री०—हँसी, मजाक, दिल्लगी'।
रू०भे०—ठठोर, ठठोळ, ठठोळी।

ठट्ठौ—१ देखो 'ठठौ' (रू भे) २ देखो 'ठट्ठौ' (रू भे)

ठड्डौ, ठड्ढौ–वि०—खडा, स्थिर (व भा)

ठणक—देखो 'ठण' (रू भे)

ठणकणौ, ठणकवौ–क्रि०अ०—धातु के या चमडे से मढे वाद्य की आघात पाकर ध्वनि करना, ठन-ठन शब्द होना, ठन-ठन की ध्वनि होना।
उ०—रणकै तिका घोर रुडी रचाई। ठणकै किना झलरी ठोर ठाई।
—व.भा
२ (तुरत सतर्क होकर) किसी विचार का मस्तिष्क मे आना
३ रह-रह कर आघात पडने की सी पीडा होना ४ भागना।
उ०—कोरुल परिया गान घणकिया, ओभा भमर भणकिया गाढ। वरही ऋपण ठणकिया वहु वळ, विविध सुवास खणकिया वाढ।
—अभैराम महियारियो
ठणकणौ, ठणकवौ, ठणणकणौ, ठणणकवौ, ठमकणौ, ठमकवौ,'ठमकणौ, ठमकवौ—रू भे.।

ठणकियोडौ–भू०का०कृ०—१ ठन-ठन शब्द से ध्वनित २ (तुरत सतर्क होकर किसी विचार का) मस्तिष्क मे आया हुआ ३ रह-रह कर आघात पडने के कारण वना हुआ पीडित ४ भागा हुआ।
(स्त्री० ठणकियोडी)

ठण–स०स्त्री० (अनु०) किसी धातु खण्ड पर आघात पडने से उत्पन्न शब्द, ध्वनि, आवाज। उ०—इत्तैइ मे एक जणो आगै वध'र आसू पूछतो वोलियो—'कुई पिड मे दया हुवै तो करो नी गरीब भाई री मदद' आ कैवण-रै-सागै-ई ठण ठण टका-पइसा-री विरखा होवण लागी।—वरसगाठ
मुहा०—ठण-ठण गोपाळ—गोपाल की मूर्ति के आगे केवल ठन-ठन की' ध्वनि करता हुआ घटा ही वजता है क्योकि प्रसाद आदि तो पुजारी खा जाते हैं अर्थात् वह स्थान जहा कुछ भी प्राप्ति की आशा न हो, निर्धन, कगाल।
रू०भे०—ठणक, ठणक, ठमक, ठमक।

ठणक—१ देखो 'ठए' (रू.भे) उ०—रिमझिम रिमझिम बिछिया वाजै, ठणक-ठएक वाजै पायलडी ।—लो गी

२ किसी पशु की खाल से मढे वाद्य पर आघात पडने का शब्द ।

रू०भे०—ठणक ।

ठणकणौ, ठणकवौ—१ देखो 'ठणकणौ, ठएकवौ' (रू भे.) २ ठिनकना । उ०—रोवत ठणकत धू माता कनै आयो । माता धू नै ले कठ लगायो ।—लो गी

ठणकाणौ, ठणकावौ–क्रि०स०—१ धातु के या चमडे से मढ़े वाद्य से ध्वनि करना, ठन-ठन शब्द उत्पन्न करना, ठन-ठन की ध्वनि करना ।

ठणठणाणौ, ठणठणावौ—रू०भे० ।

ठणकायोडौ–भू०का०कृ०—ध्वनि किया हुआ, ठन-ठन शब्द किया हुआ ।

(स्त्री० ठणकायोडी)

ठणकार–स०स्त्री० (अनु०) ठन-ठन की ध्वनि, धातु खड के वजने की आवाज ।

ठणकियोड़ौ—देखो 'ठएकियोडौ' (रू.भे)

(स्त्री० ठएकियोडी)

ठणको–स०पु०—१ वल, शक्ति । उ०—वणावौ आप वाता वडी, साप हुवै किम सीदरौ । सनमद थयौ लाठौ सदा, जाणा ठणको जीद रौ ।

—पा प्र

२ वैभव, ऐश्वर्य, ठाट-वाट. ३ खांसने से उत्पन्न शब्द ४ किसी धातु खण्ड पर आघात पडने से उत्पन्न शब्द । रह-रह कर आघात पडने की सी पीडा ५ रोने का भाव ६ गर्व, घमण्ड ।

रू०भे०—ठणाको, ठुणको ।

ठणठणणौ, ठणठणवौ–क्रि०अ०—ध्वनि होना, आवाज होना ।

ठणहठणणौ, ठणहठणवौ—रू०भे० ।

ठणठणियोडौ–भू०का०कृ०—ध्वनित ।

(स्त्री० ठएठणियोडी)

ठणठणाणौ, ठणठणावौ—देखो 'ठएकाणौ, ठएकावौ' (रू भे.)

ठणठणायोडौ—देखो 'ठएकायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री० ठएठणायोडी)

ठणणकणौ ठणणकवौ—देखो 'ठएकणौ, ठएकवौ' (रू भे)

उ०—ठणणकै घट गदला ठहै, गएएकै पळचर गयण ।—व भा.

ठणणकियोडौ—देखो 'ठएकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० ठएएकियोडी)

ठणण, ठणणणण, ठणणाहट–स०स्त्री० (अनु०) ध्वनि विशेष ।

उ०—१ ठमकती पाय गूघर ठणण, भएए सग करता भमर । चमकती वीज आवै चली, समर हूत करवा समर ।—र. हमीर

उ०—२ जाणौ वादळा माहे वीजडिया रा सिला ऊपडिया पाखरा ऊपरै सारधारा फूलधारा वाजी सु ठणणणण जाणै परभात री झालर ठएकी ।—रा सा सं

उ०—३ कोतक हारा कळळ, अवर सुएजै नह आहट । सएएाहट चरखिया, वीर घटा ठणणाहट ।—सू प्र

रू०भे०—ठएहए ।

ठणणौ, ठणवौ–क्रि०अ०—१ सज्जित होना, तयार होना । उ०—ठणै भद्र मदा भ्रिगा वस ठावा । छटा फैल हालै किना सेल छावा ।—व भा.

२ होना, रूप लेना । उ०—गज ठणियां घए आह वाह जणिया वादाळक । तणिया करभ तिमीस चरम भणिया चउ चाळक ।

—व भा.

३ निश्चित होना, पक्का होना, तय होना ।

४ ठहरना, स्थिर होना ।

ठणियोडौ–भू०का०कृ०—१ सज्जित, तैयार २ बना हुआ, रूप लिया हुआ ३ निश्चित, तय ४ ठहरा हुआ.

(स्त्री० ठणियोडी)

ठणहण—देखो 'ठएए' (रू भे)

उ०—वएहएता अलका भवर, पायल ठणहण पाव । मिळ मिळ आई वाग मे, विधविध किया वएाव ।—पना वीरमदे री वात

ठणहणणौ, ठणहणवौ—देखो 'ठएठएएौ, ठएठएवौ' (रू भे.)

ठणहणियोड़ौ—देखो 'ठएठएियोडौ' (रू.भे)

(स्त्री० ठएहएियोडी)

ठणाको—देखो 'ठएको' (रू भे)

ठ'णौ, ठ'वौ—देखो 'ठहएौ, ठहवौ' (रू भे.)

उ०—भाडा रा भाई हाडा हाई, राडा मे रोवदा है । ठ'तोडा आंसू फिरता फासू, जिग्यासू जोवदा है ।—ऊ.का

ठयोड़ौ—देखो 'ठहियोडौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ठयोडी)

ठपकाणौ, ठपकावौ, ठपकारणौ, ठपकारवौ—देखो 'ठकठकाणौ, ठकठकावौ' (रू भे)

ठपकायोड़ौ, ठपकारियोड़ौ—देखो 'ठकठकायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० ठपकायोडी, ठपकारियोडी)

ठप्प–स०पु०—एकाएक रुक जाना क्रिया का भाव ।

वि० [स० स्थाप्य] एक तरफ रख देने योग्य, स्थापन करने योग्य, लोक व्यवहार मे अनुपयोगी (जैन)

ठप्पौ–स०पु०—१ पुस्तको आदि की जिल्द वाधने मे प्रयुक्त होने वाला मोटे कागज का टुकडा, मोटा कागज २ देखो 'टप्पौ' (रू.भे.)

३ किसी वस्तु पर वेल-वूटे, अक्षर आदि उभारने या वनाने का साचा ।

क्रि०प्र०—लगाणौ ।

४ कपडो आदि पर रग, स्याही आदि से वेल-वूटे छापने का छापा ।

५ साचे से वनाया हुआ वेल-वूटा, छाप ।

ठवक–स०स्त्री०—देखो 'ठवको' (रू भे)

ठबको–स०पु०—१ किसी प्रकार का दोष, कलक ।

क्रि०प्र०—आणौ, लागणौ ।

ठरकेत-वि०—हस्ती रखने वाला। उ०—जमी चाळागारिया, ठरकेता वरका। अपणी अपणी कर गया, सब हिंदू तुरका।
—दुरगादत्त बारहठ

रू०भे०—ठरकैत।

ठरकेल-वि०—१ हीन, अयोग्य, मूर्ख. २ अशक्त, निर्बल। ३ निर्धन, कंगाल।
रू०भे०—ठरकैल।
मि०—गयोबीतो।

ठरकैत—देखो 'ठरकेत' (रू भे)

ठरकैल—देखो 'ठरकेल' (रू.भे)

ठरको-सं०पु०—बलिदान किये जाने वाले पशु को तलवार से काटने की क्रिया, झटका। उ०—खाजरू आए हाजर हुआ छै, रावताला नू कहिओ छै। ठाकरा खाजरूआ नै ठरका करो।—रा सा स.
२ वैभव, संपत्ति। ३ हैसियत, हस्ती। उ०—अठा तक कै खुद ठाकुर सा'ब ई बाईजी रा ब्याव मे सेठा सू तीन हजार रुपिया उधार लिया हा। इण तरह सू गाम मे ईज नी पण सारा चौखळा मे सेठा रो ठरको जम्योडो हो।—रातवासो
४ ठसक, गर्व, घमण्ड।
क्रि०प्र०—राखणो।
५ चोट, प्रहार ६ बल, शक्ति. ७ प्रतिष्ठा, गौरव।

ठरड-स०स्त्री०—१ ध्वनि विशेष। उ०—सात खंधक दिराई। पाखती रजपूत सो डोढ़-सौ दोयसै बैसे। पोळा रो जावतो निपट घणो राखै। तिकै तवाखू री ठरड़ा लागी रहै।
—जखडा मुखडा भाटी री वात

२ देखो 'ठडड' (रू भे)

ठरडणो, ठरडबो-क्रि०स०—घसीटना, खींचना।
ठ'डणो, ठ'डबो—रू०भे०।

ठरडियो-भू०का०कृ०—घसीटा हुआ, खींचा हुआ।
(स्त्री० ठरडियोडी)

ठरडो-स०पु०—१ पोकरण के आस-पास के भू-भाग का नाम।
उ०—भाटी केसोदास भारमलोत ठरड़ै पोकरण रै रहै।—नैणसी
२ एक प्रकार का शराब जो नीचे स्तर का होता है।
रू०भे०—ठ'डो।

ठरठिम-वि०—ऐंठनयुक्त। उ०—धोर गात्र ठरठिम कइ चालइ, सिरि सेवत्रा भार। गवरीय नदन विघन विहडण, दुख खडण सुखसार।—रुकमणी मगळ

ठरणो, ठरबो-क्रि०अ०—१ शीतल होना, ठडा पडना।
उ०—सज्जण मिळिया सज्जणा, तन मन नयण ठरत। अणपीयइ पाणग ज्यू, नयणे छाक चढत।—ढो मा
२ सरदी से जकडना, ठिठुरना। उ०—२ रवि बैठो कळसि थियो पालट रितु, ठरे जु डहक्यियो हेम ठठ। उडण पख समारि रहै अलि, कठ समारि रहै कळकठ।—वेलि
२ क्रोध मिटना ३ जोश समाप्त होना।
ठरणहार, हारो (हारी), ठरणियो—वि०।
ठरवाडणो, ठरवाडबो, ठरवाणो, ठरवाबो, ठरवावणो, ठरवावबो, ठराडणो, ठराडबो, ठराणो, ठराबो, ठरावणो, ठरावबो—प्रे०रू०।
ठरिओडो, ठरियोडो, ठर्योडो—भू०का०कृ०।
ठरीजणो, ठरीजबो—भाव वा०।
ठारणो, ठारबो—स०रू०।
ठिरणो, ठिरबो—रू०भे०।

ठल-स०स्त्री०—सेना, दल। उ०—माधै हेळवी दखणी द्रळ माहे, मुगळा ठला मझारी। अरिया उअरि विचै धसि आधो, कूपले चरै कटारी।—नाहरसिंह आसियो

ठळक-स०स्त्री०—बूद-बूद के रूप मे आसुओ के गिरने की क्रिया।
उ०—ठळक ठळक आसू पडै, जाणै टूटयो मोत्या रो हारो जो। कुंवर कनै माता आय नै, भाखै वचन उदारो जी।—जयवाणी

ठळकणो, ठळकबो-क्रि०अ०—१ तरल पदार्थ का बूद रूप में गिरना।
ज्यू—आसू ठळकणा। २ प्रहार होना।

ठळकाणो, ठळकाबो-क्रि०स०—१ तरल पदार्थ का बूद रूप मे गिराना २ प्रहार करना।

ठळकायोडो-भू०का०कृ०—१ (तरल पदार्थ को बूद में) गिराया हुआ।
२ प्रहार किया हुआ, प्रहार हुवा हुआ।
(स्त्री० ठळकायोडी)

ठळकियोडो-भू०का०कृ०—(तरल पदार्थ का) बूद रूप में गिरा हुआ।
(स्त्री० ठळकियोडी)

ठळको-स०पु०—ठेस, आघात। उ०—पहली सखी उठ यू बोली, दोनूं फाक बराबर क्यू। दूजी सखी उठ यू बोली, काळा केस किनारे क्यू। तीजी सखी उठ यू बोली, बिच मे काळो मणियो क्यू। चौथी सखी उठ यू बोली, ठळको लागै पाणी क्यू।

ठळणो, ठळबो-क्रि०अ०—'ठाळणो' क्रिया का अकर्मक रूप।

ठळाडणो, ठळाड़बो, ठळाणो, ठळाबो, ठळावणो, ठळावबो-क्रि०स०—हुक्का पी कर हुक्के को ध्वनिमान् करना।
उ०—खाय रोट जद टास हो गया, दीना पलग ढळाय। कुरड-कुरड हुक्को ठळावै, गूदड दिया पकडाय।—डूगजी जवारजी री पड

ठळोकड़ी-स०स्त्री०—हँसी, मजाक, दिल्लगी।

ठलो-वि०—खाली, रिक्त, रहित। उ०—पाव उघाडे सिर ढकै, कर दोउ ठलै।—केसोदास गाडण
रू०भे०—ठल्लो।

ठल्ल-सं०स्त्री०—धकेलना क्रिया का भाव।
वि०—खाली, रिक्त।

ठल्लणो, ठल्लबो-क्रि०स०—१ ठूसना, भग्ना। उ०—अंतकाळ पेटचा अरथ, आटो मिळै न अंत। बळिहारी वर-रक पण, दर ठल्लै गजदत।—रेवतसिंह भाटी

२ खाली करना, रिक्त करना।

ठल्लो—देखो 'ठलो' (रू.भे) उ०—नमणी, खमणी, बहुगुणी, सगुणी अनइ सियाइ। जे धण एही सपजइ, तउ जिन ठल्लउ जाइ।—ढो मा

२ टक्कर, आघात।

क्रि०प्र०—देणी, लगाणी।

ठभणो, ठभबो–क्रि०अ०—१ चकित होना, दंग रहना।

उ०—सुलफ सिला छाया जळ सुंदर, पेख प्रभा ठभ रहे पुरदर।
—र.रू

२ देखो 'थमणो, थमबो' (रू भे)

ठभियोडो–भू०का०कृ०—१ चकित हुवा हुआ, अचभित।

२ देखो 'थमियोडो' (रू.भे.)

(स्त्री० ठभियोडी)

ठमक–स०स्त्री०—१ चलते समय या नृत्य करते समय पैर रखने का ढंग विशेष। उ०—ठमका रमका झका रमका ठमक।—र ज प्र.

२ देखो 'ठण' (रू भे)

ठमकणो, ठमकबो—देखो 'ठमकणो, ठमकबो' (रू भे)

ठमकियोडो–भू०का०कृ०—देखो 'ठमकियोडो' (रू भे)

(स्त्री० ठमकियोडी)

ठमको, ठमक्को—देखो 'ठमको' (रू.भे.)

उ०—एरण ठमक्को म्है सुण्यो रे, लोहा घडै लुहार। सूरा सारू सेलडा, भूडण सारू भाल।—लो.गी.

ठम–स०स्त्री०—चलते समय डग या पैर रखने की क्रिया।

उ०—ठम ठम पाय ठमकति घमकति घूघरि सग।—ध व ग्र.

ठमक–स०स्त्री०—१ मद और सुन्दर चाल या गति, चलने का हाव-भाव, चलने की ठसक, लचक। उ०—जतन सू दिवलो आचळ ओट, ठमक सू लाई मेल्यो थान। उजाळै झीणं झुकी पलक, झुकाणी मनडै री असमान।—साझ

२ धातु खण्ड पर आघात पडने से अथवा टकराने से उत्पन्न ध्वनि। उ०—पायजेबा री घमक, पायला री ठमक, झमकि फिरै छै। आप आप रा अवसाण माफक तैहरी करै छै।
—पना वीरमदे री वात

ठमकणो, ठमकबो–क्रि०अ०—१ डग रखना, पैर रखना, चलना, गतिमान होना। उ०—ठम ठम पाय ठमकति घमकति घूघरि सग।
—ध व ग्र

२ किसी धातु खण्ड का ध्वनि करना। उ०—निरमळ नेह चवर करि जनकै, गगन मडळ मे झालरि ठमकै।—ह पु वा.

रू०भे०—ठमंकणो, ठमकबो।

ठमकाड़णो, ठमकाडबो—देखो 'ठमकाणो, ठमकावो' (रू.भे.)

ठमकाडियोड़ो—देखो 'ठमकायोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री० ठमकाडियोडी)

ठमकाणो, ठमकायो–क्रि०स०—गतिमान करना, चलाना।

२ (किसी धातु खण्ड से) ध्वनि करना।

ठमकाड़णो, ठमकाड़बो, ठमकावणो, ठमकावबो—रू०भे०।

ठमकायोडो–भू०का०कृ०—१ गतिमान किया हुआ, चलाया हुआ।

२ (किसी धातु खण्ड से) ध्वनि किया हुआ।

(स्त्री० ठमकायोडी)

ठमकावणो, ठमकावबो—देखो 'ठमकाणो, ठमकाबो' (रू.भे)

उ०—तता तवा थेई थेई पद ठमकावति, गावत गुण गुण ग्रिदा।
—स कु.

ठमकावियोडो—देखो 'ठमकायोडो' (रू भे.)

(स्त्री० ठमकावियोड़ी)

ठमकियोडो–भू०का०कृ०—१ गतिमान हुवा हुआ, चला हुआ।

२ ध्वनित।

(स्त्री० ठमकियोडी)

ठमको–स०पु०—१ धातु खण्ड मे उत्पन्न ध्वनि, जेवर की आवाज, पायल का शब्द। उ०—मणियाळा काजळ ठासिया वका बांका नैणां री नोक नाखती पायल रै ठमकै सू, घूघरै रै घमकै सं, बिछिया रै छमकै सू रमझोळ करती, गमूठा मोडती, नखरा करती, बाजारि चाली जायै छै।—रा मा न.

२ चटक-मटक, नखरा। उ०—मिंदर वाळी पुजारण ठमकै सू चालै रै, क ठमको छोड दे।—लो गी.

३ नृत्य करते हुए पैर के रखने का ढग।

रू०भे०—ठमको, ठमक्को।

ठमठोरणो, ठमठोरबो—देखो 'ठठेरणो, ठठेरबो' (रू भे)

ठमठोरियोडो—देखो 'ठठेरियोडो' (रू भे)

ठमणो—देखो 'ठवणो' (रू भे)

ठमणो, ठमबो—देखो 'थमणो, थमबो' (रू.भे)

ठमाणो, ठमावो—देखो 'थमाणो, थमावो' (रू भे)

ठमायोडो—देखो 'थमायोडो' (रू भे)

(स्त्री० ठमायोडी)

ठमियोडो—देखो 'थमियोडो' (रू भे.)

(स्त्री० ठमियोडी)

ठयणो, ठयबो—देखो 'ठहणो, ठहबो' (रू भे)

यौ०—ठयो-ठायो।

ठयियोडो—देखो 'ठहियोडो' (रू.भे.)

(स्त्री० ठहियोडी)

ठयो—१ देखो 'ठियो' (रू.भे) २ देखो 'ठायो' (रू भे)

ठयो-ठायो–वि०यौ०—बना-बनाया, यथास्थान।

ठरक–स०स्त्री०—हानि, कमी।

ठरकणो, ठरकबो–क्रि०अ०—१ होना। ज्यू—एडो थारै घर मे काई ठरकै है। २ देखो 'टरकणो, टरकबो' (रू भे)

ठरकाणौ, ठरकावौ–क्रि०स०—मार-पीट करना, पीटना ।

ठरकायोडौ–भू०का०कृ०—मार-पीट किया हुआ, पीटा हुआ ।
(स्त्री० ठरकायोडी)

ठरकियोडौ–भू०का०कृ०—१ मूर्ख, गँवार, अयोग्य २ हुवा हुआ ।
३ देखो 'टरकियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री० ठरकियोडी)

ठवड—देखो 'ठौड' (रू भे)
उ०—ताहरा ग्रोधि वेढि हुई, पणि सवळ वेढ़ि हुई। ग्रमरै रा आदमी ३० ठवडि रहिया ।—द वि

ठवण–स०पु० [स० स्थापन] स्थापन करना (जैन)

ठवणा—देखो 'थापना' (१, २, ३, ४, ५)

ठवणाकम, ठवणाकम्म—देखो 'थापनाकरम' (रू भे) (जैन)

ठवणापुरिस—देखो 'थापनापुरस' (रू भे)

ठवणायरिय, ठवणारी—देखो 'थापनाचारज' (रू भे) (जैन)

ठवणासच्च—देखो 'थापनासत्य' (रू भे) (जैन)

ठवणी–स०स्त्री० [स० स्थापनी, स्थापिका] १ न्यास-रूप मे रखा द्रव्य, न्यास (जैन) २ काठ का बना उपकरण जिस पर पुस्तक रख कर पढ़ा जा सके । उ०—वरतणा वारू वळिय कमळी, पाच झळमळि सति मली । थापना चारिज पाँच ठवणी, मुहपती पुड पाटली ।
—स.कु

३ वह छोटा ढाचा जो प्राय अगुली के आकार की लगभग चार तीलियों को इस प्रकार खडा कर के बनाया जाता है कि बीच मे से वह डमरू के आकार का बन जाय ।
वि०वि०—तीलियों के मध्य मे छेद होने से उन्हें परस्पर डोरी से बाध देते हैं और उसमे कुछ गुच्छे से लगे रहते हैं। ढाचे के ऊपर एक कपडा लगा रहता है, उस पर जैनियो के पाच स्थापनाचार्यो की असद्भूत स्थापना की जाती है जो पोटली के रूप मे उस ढाचे पर रखी रहती है।

ठवणुछव–स०पु०यौ०—स्थापनोत्सव । उ०—पय ठवणुछव जुगवरह, कारावितु वहु रगि । ताम सुगुरु आइसु दियए, निसुणवि हरिसिउ अगि ।—ऐ जै.का स.

ठवणौ, ठववौ–क्रि०अ०—१ रखना, टेकना ।
उ०—पय ठव सूका पांनडा, मा वजाड मयमत। खबरदार के वेखबर, वन द्रुण सीह वसत ।—वां दा.
२ सुसज्जित होना, सजना । उ०—१ चोहटै माहै नगर-नायिका वेस्या लाख लाख री लहणहार सोळै सिणगार ठवियां थकां फूला रा चौसर पैहरिया थका ।—रा सा स
३ स्थापित होना, रखना । उ०—वायस वीजउ नाम, ते आगळि लल्लउ ठवइ । जइ तू हुई सुजाण, तउ तूं वहिलउ मोकळो ।
—ढो मा.
४ कहना, कथना । उ०—कडाजूड कर कोडडर घजवडा ले करग, ठवती कडकडा कथन ठावी । वाद वर छेहडा वादवर वेहडा, अर घडा जोगडा वरण आवी ।
—जोगीदास चापावत री गीत

ठव्वणौ, ठव्ववौ—रू०भे० ।

ठविय–स०पु० [स० स्थापित] साधु या साध्वी के लिये रखी हुई वस्तु (भोजन वगैरह) (जैन)

ठविया–स०स्त्री० [स० स्थापिता] आचार्य आदि को भोजन कराने मे यदि कोई वाधा या व्याघात डाले तो उसका प्रायश्चित वर्तमान समय मे न कर के भविष्य मे करने के लिए निश्चित कर रखना ।
(जैन)

ठवियोडौ–भू०का०कृ०—१ पैर रखा हुआ, टिका हुआ. २ सजा हुआ, सुसज्जित ३ रखा हुआ, स्थापित ४ कहा हुआ, सुशोभित ।
(स्त्री० ठवियोडी)

ठव्वणौ, ठव्ववौ—देखो 'ठवणौ, ठववौ' (रू भे.)
उ०—आठम प्रहर सभा समै, घण ठव्वै सिणगार। पान कजळ पाखर करै, फूला की गळि हार ।—ढो मा

ठव्वियोडौ—देखो 'ठवियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० ठव्वियोडी)

ठस–वि०—१ जो अपने स्थान पर मजबूत हो, जो कठिनाई से हिलता-डुलता हो ।
क्रि०प्र०—करणौ, होणौ ।
२ कठोर, दृढ़, ठोस, कड़ा, मजबूत ।
क्रि०प्र०—होणौ ।
३ जिसमे भीतरी स्थान रिक्त न हो, भरा हुआ. ४ कजूस, कृपण. ५ सुस्त, निष्क्रिय ।
क्रि०प्र०—होणौ ।
६ परिपूर्ण, पूर्ण । उ०—ठस गुण भरियौ ठाकरा, लालो पेट्यो लीध । घड लड घरा समाय धुव, गुण खाया गुण कीध ।
—रेवतसिह भाटी

ठसक–स०स्त्री०—१ स्वाभिमान, आन, शान ।
उ०—मोवन ही वडो ठसक वाळौ'र समझदार ।—वरसगाठ
२ अहंकार, घमण्ड, गर्व, ऐंठ, अकड ।
उ०—१ वडा बोलतौ बोल, वाता घणी वणातौ। जोम छक जणातौ ठसक जाझी । 'सदा' री अग्राजै 'सेर' झमो समर, मुदायत 'हरा' रा आव माझी ।—पहाडखा आढ़ो
उ०—२ इसो चाकरा नू सुणाय नू वडी ठसक राख नै कुवरजी कनै आय नै वडी रीस कीधी ।—रीसाळू री वात
३ नखरा, चटक-मटक ।
क्रि०प्र०—राखणी ।

४ ठेस, धक्का ।

क्रि०प्र०—लागणौ ।

ठसकदार, ठसकालौ, ठसकीलौ–वि०—१ स्वाभिमानी, गौरवशाली । उ०—घडियौ घाट सुघाट, नारायण निज कर निपुण । ठसकीला वो ठाट, जो किम भूलीजै 'जसा' ।—ऊ का.

२ ऐंठीला, अभिमानी, गर्वीला ।

ठसकौ–स०पु०—१ ठेस, ठोकर, धक्का ।

क्रि०प्र०—लगाणौ, लागणौ ।

२ शान ।

क्रि०प्र०—होणौ ।

३ अहकार, घमड. ४ नखरा, चटक-मटक ।

क्रि०प्र०—राखणौ ।

५ खासी चलने की क्रिया या ध्वनि ।

क्रि०प्र०—हालणौ ।

ठसणौ, ठसबौ–क्रि०अ० [स० स्तब्ध] १ (तरल पदार्थों का) ठोस रूप लेना, जमना. २ गतिविहीन होना, ठहरना, रुकना ।

मुहा०—ठस होणौ—ठहर जाना, आगे नही बढ़ना, जम जाना ।

३ प्रविष्ठ होना, पैठना । उ०—सेठा वाळी वात रणछोडा रै हिया मे ठसगी ।—रातवासौ

ठसाठस–क्रि०वि०—दबा-दबा कर भरा हुआ, ठूस-ठूस कर भरा हुआ, खचाखच ।

ठसाणौ, ठसावौ–क्रि०स०—१ ठोस रूप देना, जमाना २ ठहराना, रोकना. ३ प्रविष्ठ करना, पैठाना ।

ठसायोडौ–भू०का०कृ०—१ ठोस रूप दिया हुआ, जमाया हुआ २ ठहराया हुआ, रोका हुआ ३ प्रविष्ठ किया हुआ ।

(स्त्री० ठसायोडी)

ठसियोडौ–भू०का०कृ०—१ ठोस रूप लिया हुआ, जमा हुआ २ रुका हुआ, ठहरा हुआ ३ प्रविष्ठ ।

(स्त्री० ठसियोडी)

ठसौ, ठस्सौ–स०पु०—विशेषता ?

उ०—तिण समै सरा मे ज्यू मानसरोवर, तरा मे ज्यू कळपतरोवर, खगा मे ज्यू राजहस, नगा मे ज्यू भोमअस, नसां मे ज्यू नेह रो नसो, रसा मे ज्यू सिणगार रस रो ठसो ।—र. हमीर

२ अभिमान, गर्व. ३ अभिमान झलकाने की क्रिया, गर्वपूर्ण चेष्ठा

ठह–वि०—१ कटिबद्ध, तैयार, सज्जित । उ०—थिरा उबारण थान जुलम जरमन्न रै । ऊभा ठह अखडैत आधार अवन्न रै ।

—किसोरदान बारहठ

२ देखो ठं' (रू.भे)

ठहक–स०स्त्री०—१ नगारे पर आघात पडने से उत्पन्न शब्द, नगारे की ध्वनि २ नगारे को बजाने के हेतु किया जाने वाला प्रहार, आघात.

क्रि०प्र०—देणी, लगाणी ।

३ स्तभित होने का भाव ।

क्रि०प्र०—जाणौ, रैणौ ।

ठहकणौ, ठहकबौ–क्रि०अ०—१ ध्वनि होना, बजना. २ कोयल मोर आदि पक्षियो का बोलना । उ०—मोर सिखर ऊंचा मिळै, नाचै हुआ निहाल । पिक ठहकै झरणा पड़ै, हरिए डूगर हाल ।—बां दा.

३ नगारे की ध्वनि होना, नगारे का बजना ।

ठहक्कणौ, ठहक्कबौ—रू०भे० ।

ठहकाणौ, ठहकावौ–क्रि०स०—१ ध्वनि करना, बजाना २ किसी वस्तु की दृढता ज्ञात करने के लिये उस पर हाथ से प्रहार करना, जांचना ।

मि०—ठरठकाणौ ।

ठहकायोडौ–भू०का०कृ०—१ ध्वनित किया हुआ, बजाया हुआ.

२ जाचा हुआ, ज्ञात किया हुआ ।

(स्त्री० ठहकायोडी)

ठहकियोडौ–भू०का०कृ०—१ बजा हुआ, ध्वनित (नगारा आदि)

२ (कोयल, मोर आदि) बोला हुआ, आवाज किया हुआ ।

(स्त्री० ठहकियोडी)

ठहकौ—देखो 'ठंकौ' (रू भे)

ठहक्कणौ, ठहक्कबौ—देखो 'ठहकणौ, ठहकबौ' (रू भे.)

उ०—ठहक्कै त्रंबी ककटा ठौर ठाई । ढहक्कै भडा वकड़ा घोर डाई ।

—व.भा.

ठहक्काणौ, ठहक्कावौ—देखो 'ठहकाणौ, ठहकावौ' (रू.भे)

ठहक्कायोडौ—देखो 'ठहकायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० ठहक्कायोडी)

ठहक्कियोडौ–स०पु०—देखो 'ठहकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० ठहकियोडी)

ठहठहणौ, ठहठहबौ–क्रि०अ० (अनु०) १ उचित रूप से किसी कार्य का होना २ युद्ध का होना ३ होना ।

ठहठहाणौ, ठहठहावौ–क्रि०स० (अनु०) १ उचित रूप से किसी कार्य को कराना २ युद्ध कराना ।

ठहठहायोडौ–भू०का०कृ०—१ कार्य किया हुआ २ युद्ध कराया हुआ ।

(स्त्री० ठहठहायोडी)

ठहठहियोडौ–भू०का०कृ०—१ उचित रूप से कार्य बना हुआ. २ युद्ध हुवा हुआ. ३ (हो चुका) हुवा हुआ ।

(स्त्री० ठहठहियोडी)

ठहणौ, ठहबौ–क्रि०अ०—१ निश्चित होना, तय होना ।

उ०—छतीस वस मोक नै, दये न अभ दाम नै । ठहै न बात आ अठै, खडो तुरग ठाभ नै ।—पा प

२ उचित बैठना, तय होना । उ०—आभ लागा गोरा-दळा छोडियां न काढै आगो, अथी सारी आपाण छोडिया बहै पाण । रोडिया नगारो, ठहै नह माने टेकलो राजा, जिका सतोडिया बहै हेकलो जोधाण ।—नवलजी लाळस

३ स्थिर होना, ठहरना। उ०—१ कहै धरा नू किसू रक किण नाम जितू कह। मद भाग की मुणै ठहै तारा किण ठामह।—र.ज प्र.
उ०—२ ठहियौ ठौड़-ठौड खभ ठौरे। रजवठ वहियौ इक रग।
रतनसिंह कूपावत री गीत
मुहा०—ठह-ठह नै वोलणौ—रुक-रुक कर हाव-भाव के साथ बोलना।
४ लगना (प्रहार, चोट)। उ०—ठही चोट दे मझरी कोट ठाणै, छकी पान जे अट्ट रे वट्ट छाणै।—व भा
५ स्थापित होना, जमना। उ०— ठहिया तो पिण राज ठिकाणै। जगत मूझ दिल उभळ न जाणै।—सू प्र
६ सुशोभित होना, शोभित होना। उ०—ठहिया भूवण सरव ठिकाणै। अहि साकळि पुहपा अहिनाणै।—सू प्र
७ प्रहार होना, आघात पहुँचना। उ०—ठहै दवानळ ठठर, झोकि पिड सामी झाळा। खोभ गिरद गोहरा, लिया मोरचा लकाळा।
—सू प्र
८ नगारा वजना ९ (तरल से) ठोस रूप मे आना, जमना।
ठ'णौ, ठ'बौ, ठयणौ, ठयबौ—रू०भे०।
क्रि०स०—१० धारण करना। उ०—ठग नीत सनातन रीत ठही, कर भेट अतीत की देह कही।—ऊ का
ठहरणौ, ठहरबौ–क्रि०अ०—१ रुकना, ठहरना। उ०—जठै घणा रा कचरघाण मै आपरा अनीक रा पदद्रव रा प्रवाह मैं पड़ियो नवाव कामिमखान समेत मुमार दारासाह भी ठहरण न पायो।—व भा.
२ रहना, माना जाना। उ०—धणी खुसियाळी मैं रग रग गोठा करीजै। थाप-उथाप रावजी री ठहरि सीसोदिया री गिणत काई रही नही।—राव रिणमल री वात
३ साथ देना। उ०—कूकर लाय जळै नहीं, जुडै न कायर जग। विदर नह ठहरै विपत मे, सपत मे हिज सग।—वा दा
४ किसी स्थान पर टिकना, डेरा डालना, विश्राम करना।
ज्यू—गाडी में उतरताई म्हे तो धरमसाळ मे ठहरिया।
५ स्थिर रहना, किसी स्थान पर जमा रहना, टिका रहना।
ज्यू—राजाजी री चाकरी इतरी अवकी कै चार दिन ही को ठहरिया नी।
६ वहने या गिरने से रुकना, टिका रहना, स्थित रहना ७ वना रहना, नष्ट न होना। ज्यू—कच्चो रग तो ठहरै नी, धोवता ही ऊतर जासी।
८ धैर्य धारण करना, स्थिर भाव रखना। ज्यू—इयू काई डुळै, थोडी दूर तो ठहर।
९ लगातार होने वाले कार्य का वद होना। ज्यू—हमैं मेह ठहर गियो झट दौड जा।
१० पक्का होना तय होना, निश्चित होना।
मुहा०—१ भाव ठहरणौ, कीमत ठहरणौ—मूल्य का निश्चित होना.
२ वात ठहरणौ—किसी वात का तय होना, पक्का होना।
११ एकत्रित होना, जमा होना। उ०—ठाह-ठाह ठहरिया, काम अति कामगरा। मडिया झड रूप मे, ससत्र छटतीस समारा।
—सू प्र
ठहरणहार, हारौ (हारी), ठहरणियौ—वि०।
ठहरवाड़णौ, ठहरवाड़बौ, ठहरवाणौ, ठहरवाबौ, ठहरवावणौ, ठहरवाववौ—प्रे०रू०।
ठहराड़णौ, ठहराड़बौ, ठहराणौ, ठहराबौ, ठहरावणौ, ठहराववौ—क्रि०स०।
ठहरिग्रोड़ौ, ठहरियोड़ौ, ठहर्योड़ौ—भू०का०कृ०।
ठहरीजणौ, ठहरीजबौ—भाव वा०।
ठ'रणौ, ठ'रबौ—रू०भे०।
ठहराण—देखो 'ठहराव' (रू भे)
ठहराई–स०स्त्री०—१ ठहराने या पक्का करने की क्रिया.
२ मजदूरी, पारिश्रमिक।
रू०भे०—ठ'राई।
ठहराणौ, ठहराबौ–क्रि०स०—१ रोकना, ठहराना। उ०—अर वाजी सू उतारि वार-वार पट्टिस चलावता दिणयर नू ठहरायौ दोय घडी।
—व भा.
२ स्थिर करना, पक्का करना, जमाना। उ०—१ जोई फुरै अरु होवे मनण, आगे वस्तु ठहराणी। फुरण अरु अफुरण ये तो सव, माया क्रत ही जाणी।—सुखरामजी महाराज
उ०—२ नाहि नाहि करके तै नाई, है है करके ठहराई।
—सुखरामजी महाराज
उ०—३ भय दिखाय कूभेण, जीव धर द्रोह जणाये। करण चूक कमधज्ज, ठीक मसलति ठहराये।—सू प्र.
३ तय करना, पक्का करना, निश्चित करना।
उ०—वसतपचमी करो विमाहो। सुध निरदोख वेद विध साहो। इम ठहराय महल नृप आए। पदमणि ताम महासुख पाए।—सू प्र.
४ किसी स्थान पर टिकाना, डेरा दिलाना, विश्राम कराना, ठहराना।
उ०—सिध दाखियौ भळाहळ सूरत, पौरस नृपत तूझ भरपूरत। राजा ज तू अवस ठहरावै, अवै समै विण हाथ न आवै।—सू प्र
५ धारण करना, मालूम करना, जान जाना, निश्चय करना।
उ०—ईख रूप मनि इम ठहराई, भरता एह अवर पित भाई।
—सू प्र
६ निरन्तर चलते हुए कार्य की गति मन्द करना ७ गिरने या वहने से वचाना, टिका रखना, स्थित करना. ८ वना रखना, नष्ट नही करना। ज्यू—आप कैवो कै इण माथै रग नी ठहरै पण मैं ठहराय दियो।
९ धैर्य देना. १० एकत्रित करना, जमा करना।
ठहराणहार, हारौ (हारी), ठहराणियौ—वि०।

ठहरायोडौ—भू०का०कृ०।

ठहराइजणौ, ठहराइजबौ—कम वा०।

ठहरणौ, ठहरबौ—अक०रू०।

ठहराडणौ, ठहराडबौ, ठहरावणौ, ठहरावबौ, ठ'राडणौ, ठ'राडबौ, ठ'राणौ, ठ'राबौ, ठ'रावणौ, ठ'रावबौ—रू०भे०।

ठहरायोडौ—भू०का०कृ०—१ रोका हुआ, ठहराया हुआ २ स्थिर किया हुआ, पक्का किया हुआ, जमाया हुआ ३ तय किया हुआ, निश्चित किया हुआ, पक्का किया हुआ ४ टिकाया हुआ, डेरा दिलाया हुआ ५ मालूम किया हुआ, धारण किया हुआ ६ (निरन्तर चलते हुए) कार्य को बन्द किया हुआ ७ गिरने से बचाया हुआ, टिकाया हुआ, स्थित किया हुआ ८ नष्ट नही किया हुआ।

(स्त्री० ठहरायोडी)

ठहराव—स०पु०—१ ठहरना क्रिया का भाव, विश्राम। उ०—छत्रपत सुत 'गुमन' व्रवण वत छोळा, हेर-वना मद वीया हटै। पौह जस 'मान'-सरोवर पार्खं, कव हसा ठहराव कठै।—रिवदान महडू

२ निश्चय, निर्धारण। उ०—१ दूजै कोई बिगैर ठहराव मसलत रै काम करै तौ सो भलौ भी होय तौ लोग मौसा दै।—नी प्र

उ०—२ तद जालिमसिंह कही मोनू माहिर न छै किण तरह ठहराव छै।—मारवाड रा अमरावा री वारता

३ विश्राम करने का स्थान, ठहरने की जगह। उ०—करि तहस-नहसा केक, असपत्ति सहर अनेक। महि साह सहरा मौड, ठहराव सोबा ठौड।—सू प्र

४ धैर्य, धीरज, शान्ति। उ०—जे क्रोध रै समय थानू माफी बकसण री अरज करै तौ प्रकृति ठहराव रै ऊपर आवै।—नी प्र.

५ छद शास्त्र मे यति, विश्राम। उ०—सो पिडतराज स्रो महाराज की कीरति प्रताप का वरणण का सिलोक पढते हैं जिस सिलोका का आदि प्रवध अस्ट अखिरू से लेकरि इकीस अक्षरू लग पद वणावणी का ठहराव, च्यार पद हुवै।—सू प्र

रू०भे०—ठहराण, ठैंराण, ठैंराव।

ठहरावणौ, ठहरावबौ—देखो 'ठहराणौ, ठहराबौ' (रू भे)

उ०—तीन पौहरू का आफताफ राठौडू पर रोसनाई ठहरावै। चौथै पहर की रोसनाई अव आलम पर आवै।—सू प्र

ठहरावियोडौ—देखो 'ठहरायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री० ठहरावियोडी)

ठहरियोडौ—भू०का०कृ०—१ रुका हुआ, ठहरा हुआ २ रहा हुआ, माना गया हुआ ३ साथ दिया हुआ. ४ टिका हुआ, डेरा दिया हुआ, विश्राम किया हुआ ५ स्थिर या स्थित रहा हुआ ६ बहने या गिरने से रुका हुआ, टिका हुआ, जमा हुआ ७ वना रहा हुआ ८ धैर्य धारण किया हुआ, स्थिर भाव रखा हुआ. ९ (लगातार होने वाला कार्य) वन्द हुवा हुआ १० निश्चित हुवा हुआ, पक्का, तय ११ एकत्रित हुवा हुआ, जमा हुवा हुआ।

(स्त्री० ठहरियोडी)

ठहाणौ, ठहाबौ—क्रि०स०—१ निश्चित करना, तय करना २ उचित बैठाना, तय कराना, जमाना ३ रोकना, ठहराना. ४ लगाना, मारना ५ स्थापित करना, जमाना ६ सुशोभित करना, शोभित करना ७ प्रहार करना, आघात पहुँचाना. ८ नगारा बजाना, ध्वनि कराना. ९ (तरल से) ठोस रूप मे करना, जमाना।

ठहायोडौ—भू०का०कृ०—१ निश्चित किया हुआ, तय किया हुआ. २ उचित बैठाया हुआ, तय कराया हुआ, जमाया हुआ ३ रोका हुआ, ठहराया हुआ ४ लगाया हुआ, मारा हुआ ५ स्थापित किया हुआ, जमाया हुआ ६ सुशोभित किया हुआ, शोभित किया हुआ ७ प्रहार किया हुआ, आघात पहुँचाया हुआ ८ (नगारा) बजाया हुआ, ध्वनि किया हुआ ९ (तरल से) ठोस रूप मे किया हुआ, जमाया हुआ।

(स्त्री० ठहायोडी)

ठहियोडौ—भू०का०कृ०—१ निश्चित बना हुआ, तय २ उचित बैठा हुआ, तय, ३ रुका हुआ, ठहरा हुआ. ४ लगा हुआ, (प्रहार, चोट) ५ जमा हुआ, स्थापित. ६ शोभायमान बना हुआ, शोभित ७ आघात पहुँचा हुआ, प्रहारित ८ (नगारा) वजा हुआ ९ कटिवद्ध, तैयार १० (तरल से) ठोस रूप मे हुवा हुआ, जमा हुआ।

(स्त्री० ठहियोडी)

ठहीक—स०स्त्री०—१ प्रहार करने का भाव २ ध्वनि, आवाज।

ठहीडणौ, ठहीडबौ—क्रि०स०—१ पीटना, मारना. २ (नगारा) बजाना, ध्वनि करना।

ठहोडणौ, ठहोडबौ—रू०भे०।

ठहीडियोडौ—भू०का०कृ०—१ पीटा हुआ २ बजाया हुआ, ध्वनि किया हुआ।

(स्त्री० ठहीडियोडी)

ठहीडौ—स०पु०—१ आवाज, ध्वनि. २ प्रहार, आघात, ठेस. ३ प्रहार से होने वाली ध्वनि।

ठहोडणौ, ठहोडबौ—देखो 'ठहीडणौ, ठहीडबौ' (रू भे)

ठहोडियोडौ—देखो 'ठहीडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० ठहोडिओडी)

ठहोलौ—देखो 'ठो'लौ' (रू भे)

ठहौ—१ देखो 'ठायौ' (रू भे)

२ देखो 'ठियौ' (रू भे)

ठा'—स०पु० [स० स्था] १ स्थान, जगह। उ०—१ दती वराह नाहर दनुज, सो तिण ठा' रह सावता। रे पुत्र घणी विध राखजो, जनक-सुता रा जावता।—र रू

उ०—२ वाठा वाठा मे ठा'ठा ठाठरिया। भूखा मरतोडा मरिया गुण भरिया।—ऊ का.

मुहा०—ठां'ठां—स्थान-स्थान, जगह-जगह ।

२ घनीभूत झाडियों का स्थान । उ०—ठां'ठां ठरडाया सुख दुख किण सूझै । विपदा वरडाया विपदा कुण बूझै ।—ऊ का

रू०भे०—ठाह ।

ठांई—देखो 'ठाइ' (रू.भे.) उ०—खोडा उडण मुदफर फरी चहु चकी ठांई ठाई ।—ग्र०वचनिका

ठाउ, ठाऊ—देखो 'ठाउ' (रू भे) उ०—दादू उस गुरुदेव की, मैं बलिहारी जाउ । जह आसण अमर अलेख था, ले राखे उस ठाउ ।

—दादू वाणी

ठागर-स०स्त्री०—वह गाय जो सुगमता से दूध नही दुहने दे ।

कहा०—ठागर कै हेज घणू नापी'री कै तेज घणू—आसानी से दूध नहीं दुहने देने वाली गाय अपने बछड़े के प्रति अधिक स्नेह करती है और जिस स्त्री के पीहर न हो वह अधिक क्रोधित होती है ।

(व्यग्य)

मि०—खाट ।

ठागळणो, ठागळबो-क्रि०स०—१ मारना, पीटना २ दण्ड देना, आधीन करना । उ०—ठहक नगारा डका दावायता ठागळै, ओघ घोडा मडा मळै अगळा । 'भीम' उनाळ वाळा तरण भळहळै, सीत परवत दोयण गळै सगळा ।—जवानजी आढो

ठांगळियोड़ो-भू०का०कृ०—१ मारा हुआ, पीटा हुआ २ दण्ड दिया हुआ, आधीन किया हुआ ।

(स्त्री० ठागळियोडी)

ठागळो-स०पु०—१ कैदी, वन्दी, उ०—ठह लगर पाय दुसहा करण ठागळा, रूक दोय आगळा वाढ रा है । बोलता नाम थारै मयद वाघळा, भ्रिग हुवै पागळा जगळ माहे ।

—जालमसिंघ झाला री गीत

२ वश, काबू । उ०—ठहै पग जठी करणं रिमा ठागळा, पागळा पोठ फरणै जुधा पीच । तराजू नागळा भुकै मिसला तणा, बागळा वेहु 'ऊदा' जिका वीच ।—जसजी आढ़ो

ठाठ, ठाठर-स०स्त्री०—बच्चा नही देने वाली मादा मवेशी ।

वि०—सूखा, नीरस ।

रू०भे०—ठाठी ।

ठाठरणो, ठाठरबो-क्रि०अ०—सूखना, नीरस होना ।

उ०—वाठा वाठा मे ठाठा ठाठरिया । भूखा मरतोडा मरिया गुण भरिया ।—ऊ का

ठाठराणो, ठाठराबो-क्रि०स०—नीरस करना, सुखाना ।

ठाठरायोडो-भू०का०कृ०—नीरस किया हुआ, सुखाया हुआ ।

(स्त्री० ठाठरायोडी)

ठाठरियोडो-भू०का०कृ०—नीरस हुवा हुआ, सूखा हुआ ।

(स्त्री० ठाठरियोडी)

ठाठार—१ देखो 'ठठारा' (रू भे) उ०—माळी, तबोळी छीपा परीयट वघारा तूनारा सोनारा ठाठार लोहार चमार सुई वालघ कडीया सिलवट उड गाछा कोळी टाटिया बावर ढेढ़ डूंब ।—व.म.

२ देखो 'ठटारो' (रू भे)

ठाठी-स०स्त्री०—बच्चा नही देने वाली ऊँटनी, वाझ ऊँटनी ।

ठाठो-वि०—जो तोल मे कम हो । उ०—ठाठो दो किम ठाकरा, धान धणी किण घेय । मूड समापै मूळ मे, घड वाढी मे देय ।

—रेवतसिंह भाटी

ठाण, ठाणउ-स०पु० [स० स्थान] १ मवेशी को नियमित रूप से बाघने का स्थान । उ०—खूटो नही है ताजणो, पडवं नही पिलाण । सेजा नही सायवो, ठाण नही केकाण ।—लो गी

मुहा०—ठाण देणो—घोडी का प्रसव या बच्चा देना ।

२ मवेशी को चारा डालने का स्थान । उ०—ओझाजी गाय नै टोरी, वा मचकी ठाण री हर करण लागी ।—वरसगाठ

यौ०—ठाण-सणगार ।

३ उत्पत्ति स्थान, जन्म-भूमि ।

मुहा०—ठाण लजाणो—किसी नीच कार्य से जन्म-भूमि की प्रतिष्ठा कम करना ।

४ स्थान । उ०—ब्रह्मादिक इद्रादिक सरीखा, असुर मेल्है वाण । चक्र सरि सु चक्र भागु, छाडियो पग ठाण ।—रुकमणी मगळ

५ गति की निवृत्ति, स्थिति, अवस्थान (जैन)

६ स्वरूप-प्राप्ति (जैन) ७ निवास, रहना (जैन)

८ कारण, लिए, निमित्त, हेतु (जैन) ९ आसन (जैन)

१० प्रकार, भेद (जैन) ११ स्थान, पद, जगह (जैन)

यौ०—ठाण-पूर, ठाण-सणगार, ठाणा-पूर ।

१२ धर्म, गुण (जैन) १३ आश्रय, मकान, घर, वसति, आधार (जैन)

१४ तृतीय जैन अग-ग्रथ, 'ठाणाग' सूत्र (जैन)

१५ शरीर पर के ममत्व का त्याग, कायिक क्रिया का त्याग, ध्यान के लिए शरीर की निश्चलता (जैन)

अल्पा०—ठाणियो ।

ठांणगुण-स०पु० [स० स्थान गुण] अधर्मास्तिकाय ।

ठाणठिअ-वि० [स० स्थानस्थित] स्थानस्थित (जैन)

ठांणणो, ठांणबो-क्रि०स०—१ विचार करना, निश्चय करना ।

उ०—जाणै सो राघो जाणै, ठाणै सो राघो ठाणै । जीवाडै राघो जैनू, तो मारै केहो तैनू ।—र ज प्र

२ जर्जरित करना, ढीला करना । उ०—ठही चोट दे झफरी कोट ठाणै, छकी पान जे अट्ट रै बट्ट छाणै ।—व भा

३ रखना, स्थापित करना । उ०—सत दुजवर ठाणो अथ कळ आणी, कहि घत्ता यकतीस कळ । रटजै मझ राघो दुख अघ दाघो, फिरत न धारण पाय फळ ।—र ज प्र

४ करना । उ०—१ यो ससार कुवधि रो भाडो, साध सगत ना

भावै रे। वा साधा जण री निंदा ठाणी करम रा कुगत कुमावा रे।
—मीरा

उ०—२ विनती सुणी रुकमणी राणी की, प्यारी पतनी जाणी। 'पदमैया' तेली के ऊपर, दया प्रभूजी ठाणी।—रुकमणी मगळ

५ दृढ सकल्प करना।

ठाणपथी—स०पु० [स० स्थान+पथिन्] एक स्थान पर रहने वाला साधु (जैन)

ठाणपद—स०पु० [स० स्थानपद] प्रज्ञापना सूत्र के द्वितीय पद का नाम (जैन)

ठाणपूर—वि०यौ०—१ जो अपने स्थान पर शोभा देता हो, जगह की प्रतिष्ठा व मान-मर्यादा रखने वाला, प्रतिष्ठित, गम्भीर।

ठाणबधु—स०पु० [स० ठाणबन्धु] ४६ क्षेत्रपालो मे से २८ वा क्षेत्रपाल।

ठांणभट, ठांणभट्ट, ठाणभिस्ट—वि०यौ० [स० स्थानभ्रष्ट] अपने स्थान से भ्रष्ट, अपनी जगह से च्युत (जैन)

ठाण सणगार—वि०यौ०—केवल स्थान पर शोभा देने वाला (व्यग्य)

ठाणलक्खण—स०पु०यौ० [स० स्थिति लक्षण] ठहरने मे सहायक होने का भाव (जैन)

ठाणाग—स०पु० [स० स्थानाङ्गम] १ सूत्र का अध्ययन. २ एक सूत्र का नाम (जैन)

ठाणाण—देखो 'ठाण' (मह., रू भे.)

उ०—हे वमाण आरोहे सुराण ठोड ठोड हाता, नीसाण वजाण सिंधु कायरा नरम। धुवाण आतसा पूर ठाणाण लपटं धुआ, फटका मडाण केण ऊपरै कुरम।—पहाड खा आढो

ठाणा—स०पु० (ब०व०) व्यक्ति (जैन साधु)

ठाणाइय—वि० [स० स्थानातिग] जो शरीर पर के ममत्व का त्याग करता हो, कायिक क्रिया का त्याग करने वाला, ध्यान के लिए शरीर को निश्चल करने वाला (जैन)

ठाणाग्रोठाण—वि०—स्थान का पलटा किया हो।

ठाणायग—स०पु०—एक सूत्र-ग्रथ का नाम। उ०—आठ बोल ठाणायग कह्या, मायाविया होय कपटी रे।—जयवाणी

ठाणायय—स०पु० [स० स्थानायत] ऊँचा स्थान (जैन)

ठाणि—वि० [स० स्थानिन्] स्थान युक्त, स्थान वाला (जैन)

ठाणियोडौ—भू०का०कृ०—१ विचार किया हुआ, निश्चित किया हुआ. २ जर्जरित किया हुआ, ढीला किया हुआ ३ रखा हुआ, स्थापित किया हुआ ४ किया हुआ. ५ दृढ सकल्प किया हुआ।

(स्त्री० ठाणियोडी)

ठाणियौ—स०पु०—घोडे के बांधने के स्थान की सफाई आदि करने वाला। उ०—मजूर री रूप धर नै घोडा कोढीधज रै ठाण द्रोब री पोट ले जाय नै सैंधो हुवो, पछै द्रोब री पोट फिटी करनै ठांणियौ हुय रयो।—नैणसी

२ देखो 'ठाण' १, २ (अल्पा., रू भे)

ठांबणौ—देखो 'ठामणौ' (रू भे.)

ठावणौ, ठावबौ, ठाभणौ, ठाभवौ—क्रि०स०—१ किसी निरन्तर चलती हुई गति को बन्द कर देना। उ०—१ भारत मझि मिळै दूसरो भारथ, रथ ठांभियो जोवण ग्रहराज। उमया ईस उभै आहुडिया, किसनावती तणै सिर काज।—गारधन बोगसो

उ०—२ वागो निहाव अरावा गोळा रजी घू छायो बोम, राड चाळो लागो भाण ठांभियो रहेस। मामलै पेखते खागा प्राय लागो ताण मूछा, मेड़तै भागळा साथे न मागो 'महेस'।

—महेसदास कूपावत री गीत

२ रोकना, ठहरना। उ०—१ राजबाई री तळाई वासणपी नै जेसळमेर विच मे छै सु तठै आया। सु उठै कोई कसवण हुवो, तरै वयु'पग ठांभिया, उठै उतरिया।—नैणसी

उ०—२ रथ ठाभो रहमाण, सुणै अक्रूर मुरारी। करो सिनान किसन, भलो ऊजळ जळ भारी।—पी ग्र.

३ गिरते हुए को बचाना, गिरने या लुढकने से रोकना

४ सभालना, मदद देना, सहायता देना। ज्यू—काळ वरस मे मर जाता पण राजाजी ठाभ लिया।

५ किसी कार्य की जिम्मेदारी लेना, कार्य का भार ग्रहण करना

६ चौकसी मे रखना, पहरे मे रखना, वन्दी रखना।

ठाभणहार, हारौ (हारी), ठांभणियौ—वि०।

ठाभियोडौ—भू०का०कृ०।

ठाभीजणौ, ठाभीजबौ—कर्म वा०।

ठभणौ, ठभवौ—अक०रू०।

थांमणौ, थामबौ—रू०भे०।

ठांभियोडौ—भू०का०कृ०—१ वह बन्द की हुई गति जो निरन्तर चलती थी. २ रोका हुआ, ठहराया हुआ ३ गिरते हुए को बचाया हुआ, गिरने या लुढकने से बचाया हुआ ४ सम्भाला हुआ, मदद दिया हुआ, सहायता दिया हुआ ५ (किसी कार्य की) जिम्मेदारी लिया हुआ, भार ग्रहण किया हुआ ६ चौकसी मे रखा हुआ, पहरे मे रखा हुआ, वन्दी रखा हुआ।

(स्त्री० ठाभियोडी)

ठांम—स०पु० [स० स्थाम अथवा स० स्था+ण्यत = स्थाप—ठाम]

१ स्थान, जगह। उ०—कुवरी पिंगळराय नी, मारवणी तसु नाम। नरवरगढ ढोलइ भणी, परणी पुहकर ठांम।—ढो मा

यौ०—ठामोठाम।

२ पात्र, बर्तन। उ०—उणही ठाभ अरोग, भाजण री मन मे भणै। आ तो वात अजोग, राम न भावै राजिया।—किरपाराम

मुहा०—ठाम करणौ—यथास्थान रखना, ठिकाने लगाना।

३ मकान के भीतर बने हुए कमरे, कोठरी आदि।

रू०भे०—ठाय, ठाव।

अल्पा०—ठामडो, ठावडो।

ठामड़ो—देखो 'ठाम' (अल्पा, रू.भे)

ठामडी-स०स्त्री०—लाव की गति को रोकने के लिये ववूल इत्यादि की पतली टहनियो को चीर कर बनाई गई रस्सी विशेष जो भूण के मध्य मे लिपटी रहती है। सीचने वाला सिचारा उसे लाव अन्दर फेंकते वक्त हाथ मे पकडे रखता है।
रू०भे०—ठावणी।

ठामणौ, ठांमवौ—देखो 'ठाभणौ, ठाभवौ' (रू भे)
उ०—१ वैंजार रै रिण जाहरा आया कोस एक राजलवाडै हुता ताहरा सामु ही भाक आई। ताहरा ओथि घोडा ठामिया। —द वि
उ०—२ काज सरणाइया भूप सिर कावली, दुभल घन रावळी कठै दाई। वाप रिव ठामियौ घडी दोय वाजता, ताही सुत ठामियौ पौहर ताई।—महाराजा मानसिंह

ठामियोडौ—देखो 'ठाभियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० ठामियोडी)

ठामी-वि०—स्थान पर रहने वाला।
क्रि०वि०—स्थान पर। उ०—भूला नै आणै ठामी।—जयवाणी

ठामौ—देखो 'ठाम' (अल्पा, रू.भे) उ०—ओलै वैठो एकली, करै सगळाई कामो रे। राती रस भीनी रहै, छोडै नही निज ठामौ रे। —घ व ग्र

ठाय—देखो 'ठाम' (रू भे) उ०—१ मुकद म पैस पडद्दा माय। ठावौ मैं कीधो मरवट्ट ठाय।—ह र.
उ०—२ भवरा कळी लपेटिया, कायर कापै काय। जीवियै जुग माणसा, मुवौ त मोटै ठाय।—जलाल वूवना री वात

ठाव—देखो 'ठाम' (रू भे) उ०—कुवरसी कही तीज रै दिन आयसै तो खरा पण की ठाव आऊ, इठै तो ओ रग छै। —कुवरसी साखला री वारता
मुहा०—भेळा पडिया ठाव इ खड़वडै—वर्तनो को अगर पास-पास रखा जाय तो वे जरा-सी ठेस लगते ही आपस मे टकरा कर आवाज करेंगे अर्थात् मनुष्यो के एक ही स्थान पर रहने से लडाई-टटा होना स्वाभाविक है।

ठांवडो—देखो 'ठाम' (अल्पा., रू भे.) उ०—एक सेर का ठावडा, क्योही भरा न जाइ। भूख न भागी जीव की, दादू केता खाइ।—दादू वाणी

ठासण-स०स्त्री०—एक प्रकार की घास।

ठासणी-स०स्त्री०—सहारा।

ठांसणौ—देखो 'टासणौ' (रू भे)

ठांसणौ, ठासबौ-क्रि०स०—१ जोर देकर भरना, दवा कर प्रविष्ठ कराना, ठूमना २ खूव पेट भर कर खाना, कस कर खाना. ३ किसी का माल छीनना, अपने अधिकार मे करना, हडपना. ४ सँजोना। उ०—फूला रा चौसर पैहरिया थका टोय अणियाळा काजळ ठासिया थकां वाका नैणा री भोख।—रा सा स.
टासणौ, टासबौ—रू०भे०।

ठासियोडौ-भू०का०कृ०—१ जोर देकर भरा हुआ, ठूसा हुआ. २ खूव पेट भर कर खाया हुआ. ३ किसी का माल छीना हुआ, हडपा हुआ. ४ सजोया हुआ।
(स्त्री० ठासियोडी)

ठांसौ-स०पु०—१ फैला हुआ कैर का पेड. २ धव्बा ?
उ०—अणीयाळा नैणा मे काजळ की रेखा, अमरत रा ठासा चदा मे पेखो।—दरजी मयाराम री वात

ठाह—देखो 'ठा' (रू भे) उ०—मूक वोल निपा माह, ठीक आप रखे ठाह। आलसा कहे उमाह, वाह वाह वाह।—र रू

ठा-स०पु०—१ शून्य २ ऋषि।
स०स्त्री०—३ पृथ्वी. ४ पीठ (एका.)
वि०—धनवान (एका)

ठा'—देखो 'ठाह' (रू भे) उ०—१ वाप नै रोवतौ देख नै नेरूओ ई मा री छाती मे मूडो घाल नै रोवण लाग्यो। उण नै ठा' नी पडी कै ओ काई रासो है।—रातवासो
उ०—२ समभ सू वैणा सूक्षम कैणा, माग विना पग दैणा। हसा एक पाख विन उडिया, ठा' विन किया ठिकाणा। —हरिरामजी महाराजा

ठाइ-स०स्त्री०—जगह, स्थान। उ०—मारवणी मुख-ससि तणइ, कसतूरी महकाइ। पासइ पन्नग पीवणउ, विळकुळियउ तिणि ठाइ। —ढो मा
रू०भे०—ठाइ, ठाई, ठाई।
वि० [स० स्थायिन्] स्थिर रहने वाला (जैन)

ठाई—देखो 'ठाइ' (रू भे.) उ०—राजा भोज वोलइ तिणी ठाई। चिहु खड जोवज्यो भूपती राय।—वी दे.

ठाउ, ठाऊ-स०पु०—स्थान, जगह। उ०—१ केडइ नकुळ अनइ सहदेउ, पाणी वूडा तेई वेउ। माइ मोकळावी पइठउ राउ, सविहु हूउ एकु जु ठाउ।—प प च
उ०—२ पर प्रवेस नही, हाथी आनउ ढोउ नही, पाखरचा रहण नही, सूयरा विसय नही, नीसरणी ठाउ नही, भेद सभावना नही। —व स
उ०—३ अथ पस्टेन धनोपार्जने केई हल खेडी अयर ठाउ फेडी धन उपारजइ।—व स.
रू०भे०—ठाउ, ठाऊ।

ठाओठा-क्रि०वि० (अनु०) उपयुक्त स्थान पर।

ठाओ—१ देखो 'ठावौ' (रू.भे) २ देखो 'ठायौ' (रू भे)

ठाक-स०स्त्री०—१ प्रतिज्ञा, प्रण, नियम २ दरी आदि वुनते समय तागो को कसने के लिए ठोकने की लकडी ३ पीटने या मारने का भाव ४ पत्थर का टुकडा।

ठाकणौ, ठाकबौ-क्रि०स०—पत्थर को सुडौल वनाना, पत्थर गढना।

ठाकर—स०पु० [स० ठक्कुर] (स्त्री० ठकराणी) १ किसी भू भाग का नायक, अधिष्ठाता। उ०—रे सीहा राजेस, द्विज मिळ किण दिन पद दियो। उर भुजबळा असेस, मन सू ही ठाकर मोतिया।
—रायसिंह सादू

२ गाँव का मालिक, जमीदार। उ०—असिट भड़ा वळ अग मे, कोठारा सामान। सामध्रमी ठाकर सको, दिए रग दुनियान।
—वां दा

मुहा०—ठाकरसुहाती कैंणी—दूसरो को प्रसन्न करने के लिए कही जाने वाली बात, खुशामदयुक्त बात।

३ स्वामी, मालिक। उ०—चिंता मे वुघ परखिये, टोटै परख त्रियाह। सगा कूवेळा परखिये, ठाकर गुन्हा कियाह।—अज्ञात

४ क्षत्रियो की उपाधि ५ प्रतिष्ठित व्यक्ति, माननीय व्यक्ति.

६ ईश्वर, भगवान, विष्णु।

यौ०—ठाकरदवारौ, ठाकरद्वारौ।

७ देव मूर्ति (विशेष कर विष्णु के अवतारों की मूर्ति) ८ भूमिपति.

९ नाई जाति की उपाधि. (सम्मान)

रू०भे०—ठकर, ठकुर, ठक्कुर, ठाकुर।

अल्पा०—ठकराहो, ठकुराळो, ठाकरडो, ठाकरियो, ठाकरो, ठाकुरलो, ठुकराळो।

ठाकरडौ—देखो 'ठाकर' (अल्पा., रू.भे)

उ०—अमली ठाकरड़ा डेरा मे आवै। मोटी घसका घड मावा मटकावै।—ऊ का

ठाकरदवारौ, ठाकरदुवारौ—स०पु०यौ०—देवालय, देवस्थान, विष्णु-मदिर।

रू०भे०—ठाकुरदवारौ, ठाकुरदुवारौ, ठाकरद्वारौ।

ठाकराई, ठाकरि—देखो 'ठकुराई' (रू.भे.) उ०—तीणिइ ठाकरि किस्यु कीजइ, जीणिइ पगि-पगि पामीइ अपमान।—व स.

ठाकरियौ—देखो 'ठाकर' (अल्पा., रू.भे)

ठाकरी—देखो 'ठकुराई' (रू.भे)

ठाकरौ—देखो 'ठाकर' (अल्पा., रू.भे)

ठाकियोडौ—भू०का०कृ०—(पत्थर) सुडौल बनाया हुआ, गढा हुआ। (स्त्री० ठाकियोडी)

ठाकुर—(स्त्री० ठकुराणी, ठाकुराणी, ठुकराणी) देखो ठाकर' (रू भे)

उ०—१ राव गागो जोघपुर वडो ठाकुर हुवो। वडो आखाडसिध रजपूत हुवो।—राव जोधाजी रै वेटा री वात

उ०—२ ठाकुर ही रक्षा करै, और न किंही रै हाथ। हिंदू सब तू जाणलै, राम आपणै साथ।
—महाराजा जयसिंह आमेर रा धणी री वात

उ०—३ राम भणता रे! ह्रिदा, कह केता गुण होय। ठाकुर मानै जग नवै, पिसण न गर्जै कोय।—ह.र.

उ०—४ सहि ग्यान जाब सनका दिखा, जण-जण सरिसो जूजुओ। सूर जेठ भीड पडता समौ, इस रूप ठाकुर हुवौ।—पी ग्र.

यौ०—ठाकुरदवारौ।

ठाकुरदवारौ, ठाकुरदुवारौ, ठाकुरद्वारौ—देखो 'ठाकरदवारौ' (रू भे)

उ०—झाला री वांकानेर जठै कूवावता री ठाकुरदुवारौ है।
—वा दा.ख्यात

ठाकुरलौ—देखो 'ठाकर' (अल्पा., रू.भे.)

ठाकुराई, ठाकुरी—देखो 'ठकुराई' (रू.भे) उ०—१ खेड गोहिला री वडी ठाकुराई थी, राजा मोख री धणी छै।—नैणसी

उ०—२ एक वात यू सुणी, इणारी ठाकुराई पैंहली दिखण नू अयवक हुती।—नैणसी

ठागौ—स०पु०—१ आडंबर, ढोग। उ०—नागो ह्वै नाचै बणक, माग्यो सूपै माल। अद्भुत ठागौ जात इण, लागौ लोभ कमाल।
—वा दा.

२ कपट। उ०—जिनरिख जिनपाळ रै रैणा देवी तीन बाग तो वरज्या नही अनै दक्षिण नो बाग वरज्यो। झूठ बोली, सरप खावा री भय वतायो। जाण्यो दक्षिण री बाग जासी तो मोनै खोटी जाणस्यै। ठागा री उघाड होय जासी। यू जाण नै दक्षिण नो बाग वरज्यो।—भि द्र.

३ धूर्तता, छल।

ठाड़ौ—स०पु०—स्थान, जगह। उ०—किण ठाड़ै रहै आवास काह, आदेस तुनै गरढ़ा अलाह।—पी.ग्र

ठाट—स०पु०—१ सजावट, रचना, शृगार। उ०—साझ पडै दिन आथवै रे जला, खातण लावै खाट। काहि हे करू थारी खाट नै, म्हारै माडडै विना किसो ठाट। जलो म्हारी जोड री उदियापुर मालै रे।—लो गी

२ शान-शौकत। उ०—घडियो घाट सुघाट, नारायण निज कर निपुण। ठसकीला वो ठाट, जो किम भूलीजै 'जसा'।—ऊ का.

३ तडक-भडक, आडम्बर, दिखावट, धूम-धाम. ४ आराम, चैन

५ आयोजन, तैयारी।

यौ०—ठाट-बाट।

६ सितार का तार. ७ समूह, झुण्ड। उ०—खुलै कपाटू विकट घाटू पवन वाटू थक्क ए। डुलै विराटू सोक काटू भक्त ठाटू सक्क ए। खट मास माई मिळै सांई अचळ पाई धाम ए।—करुणासागर

८ देखो 'थाट' (रू.भे)

रू०भे०—ठाठ।

ठाट-बाट—स०पु०यौ०—१ सजावट, शृगार २ तडक-भडक, आडम्बर।

क्रि०प्र०—राखणौ।

ठाटियौ—देखो 'ठाटौ' (अल्पा., रू.भे.)

मुहा०—ठाटियो जमाणौ—ढग बैठना, कारोबार जमना।

२ देखो 'थाटियो' (रू भे.)

ठाटौ—स०पु०—१ बैलगाडी पर लगाया जाने वाला चौड़ा तख्ता जिस

पर बोझा आदि लादा जाता है २ इस तख्ते पर समा सके उतना वजन या सामान।

रू०भे०—थाटो।

२ कागज की लुगदी का बना कूडे की शक्ल का गहरा चौडे मुँह का बर्तन।

वि०वि०—कागज, मेथी, मरवा के बीज, इमली के बीज आदि को पानी मे भिगो कर गलाया जाता है। फिर इन्हें कूट कर लुगदी तैयार की जाती है। फिर मिट्टी के घडे आदि को ओंधा रख कर उस पर लुगदी फैला कर बर्तन का रूप दिया जाता है। इसको मुल्तानी मिट्टी के घोल से पोत दिया जाता है जिससे इसका रग सफेद हो जाता है और यह सुन्दर बन जाता है। सूखने पर यह बर्तन अनाज आदि डालने के लिये विभिन्न प्रकार से उपयोग किया जाता है। इस पर कई लोग रग भी लगाते हैं ताकि उसकी सुन्दरता और बढ़ जाय।

रू०भे०—ठाठो।

अल्पा०—ठठियो, ठाटियो, ठाठडियो, ठाठडो, ठाटियो, ठाठीडो।

ठाठ—देखो 'ठाट' (रू भे) उ०—हुडिया ज्यारो हालर्ता रे, रहता गहरा ठाठ। पाछला पुन्य पूरा हुवा रे प्राणी, जब कोइचा मागे हार।—जयवाणी

कहा०—ठाठ तिलक और मधरी वाणी, दगाबाज की यही निसाणी—जो ऊपर से बडा ठाट-बाट दिखाते हैं और मीठे बोलते हैं वे अवश्य धोखेबाज होते हैं।

ठाठडियो—देखो 'ठाटो' (अल्पा)

ठाठडी-स०स्त्री०—१ देखो 'ठाठो' (अल्पा, रू भे.) २

उ०—जिका रै पाखै मस्त हाथी टला देण नू चाले। बाणारा ऊंट ठाठडचा का थाट। जिका मैं बडी छाटो केई घाट।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

ठाडर-स०स्त्री०—हड्डियो का ढाचा, अस्थि-पंजर।

ठाठरणो, ठाठरबो—देखो 'ठिठरणो, ठिठरबो' (रू भे)

उ०—ठड सबळी पडै हाथ पग ठाठरै, वायरो ऊपरा सबळ वाजै। माल साहिब तिकै मोज माणै, भूनियइ लोक रा हाड भागै।

—घ व ग्र

ठाठरियोडो—देखो 'ठिठरियोडो' (रू भे)

(स्त्री० ठाठरियोडी)

ठाठियो—देखो 'थाटियो' (रू भे.)

ठाठी-स०स्त्री०—विघ्न, बाधा, आड, रोक।

ठाठीडो—देखो 'ठाटो' (अल्पा, रू.भे)

ठाठीया-स०स्त्री०—राजस्थान की एक प्राचीन जाति विशेष।

उ०—भोई मेहर अनइ ठाठीया, चालइ काहर कमाणी। च्यारि सहस साथइ साचरिया, वहइ पखाली पाणी।—का दे प्र

ठाठो-स०पु०—१ ऊंट के चमडे का बना तीर रखने का उपकरण।

उ०—दात रा सुफाळा छै, सोन्है री हळ लिखी छै, नचमूठ रा तीर छै। इसा तीरा सू ठाठा भरिया थका।—रा सा स

२ देखो 'ठाटो' (रू भे) ३ देखो 'थाटो' (रू.भे)

ठाड-स०स्त्री०—१ सीढी या जीने मे पैर रखने के पत्थर के नीचे या बीच मे लगाया जाने वाला पत्थर।

२ 'सरदी' (रू भे) उ०—गाढो ओढ़ो गूदडो, लाग जायला ठाड। छोटी होसी भजन सू, इणं री ओही लाड।—सगरामदास

रू०भे०—ठाढ।

ठाडी-स०स्त्री०—१ लम्बी लकडी का वह उपकरण जो रहट के घूमने वाले चक्र पर लगाया जाता है जो बैलो को अपने घेरे तक रहने मे सहारा देता है अर्थात् उन्हें चक्र की ओर आने से रोकता है।

२ चूल्हे की राख, भस्म।

रू०भे०—ठेडी।

वि०स्त्री०—१ ठडी, शीतल। उ०—पग-पग ऊपर जळ घणा, रू खा री ठाडी छाया।—डाढाळा सूर री वात

२ एक दिन पहले की बनी हुई, वासी. ३ खडी, ठहरी, सीधी।

उ०—एक तो म्हानै हळियो दीज्यो, हाल दीज्यो ठाडी। दोय तो म्हानै बेल्या दीज्यो, बिच मे दीज्यो गाडी।—लो गी.

रू०भे०—ठाड, ठाढ़, ठाढी।

अल्पा०—ठाढडली।

ठाडेळ—देखो 'ठाडोळ' (रू भे)

ठाडेळो—देखो 'ठाडोळो' (अल्पा, रू.भे) उ०—घाट मे दूध री अदोळी लेलीजो, छाछ मत लीजो, ठाडेळो घणो है।—रातवासो

ठाडोळ-स०स्त्री०—शीतलता। उ०—भली यू साफ़ सुखा री देण, दाफ़तै दिनडै री ठाडोळ। नीद री नणदल सपना सेज, परणती सरग परी री खोळ।—साफ़

रू०भे०—ठडोळ।

अल्पा०—ठाडेळो, ठाडोळो।

ठाडोळो—देखो 'ठाडोळ' (अल्पा., रू भे)

ठाडो-स०पु०—१ प्राणी के किसी दर्द-स्थान पर चिकित्सार्थ लगाया जाने वाला गर्म की हुई धातु का चिन्ह, अग्नि-दाव क्रिया.

२ जाडा, सर्दी, ठड।

वि० (स्त्री० ठाडी) १ ठडा, शीतल।' उ०—समदडी सू जाळोर सोळै कोस पडै, इण वास्तै ब्याळू कर नै तुरत-पिलाण कर लिया हा ताकै दिनुगा पैली ठाडै-ठाडै पो'र जाळोर पूग्यो जा सकै।

—रातवासो

विलो०—ऊनो।

३ एक दिन पहले का बना हुआ, बासी (भोजन)

वि०पु०—बलवान, शक्तिशाली।

कहा०—१ 'ठाकरा ठाडा किसाक हो ?' 'के कमजोर का तो बैरी ही पड्या हाँ'—पूछने पर कि ठाकुर साहब कितने शक्तिशाली हो तो ठाकुर साहब उत्तर देते है कि केवल कमजोरो के शत्रु है अर्थात् हम

इतने शक्तिशाली हैं कि हमारा बल-प्रयोग केवल निर्बलो पर ही हो सकता है, सबलो पर नही।

कहा—२ 'बारठजी, या लाठी कोई नै कोनी द्यो कै ?'

'ठाकरा, ठाडो मांगै कोनी अर माडै नै द्यू कोनी।'—बारहठजी से पूछा गया कि क्या यह लाठी किसी को नही दोगे क्या ? इस पर उत्तर मिला सबल तो मागता नही है और कायर को मैं देता नही 'अर्थात् मुझे यह लाठी देनी ही नही है क्योकि निर्बल और कायरो के प्रति तो मेरी श्रद्धा नही और जो शक्तिशाली होगा वह मागेगा नही।

विलो०—माडो।

४ खडा, ठहरा। उ०—१ क्षत्री दडवत करि ठाडौ हुवौ।

—सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ म्हारो मोवन मुरळी वाळो रे, ठाडो जमुना री तीर।

—मीरा

५ गम्भीर (व्यक्ति)। ६ सुस्त। उ०—छेवट चौधरण आय नै उणरी विचार तोडची आज यू ठाडा होय नै किया बैठा हो ? रोटी खाय नै लाटै चालण री विचार कोयनी काई ?—रातवासो

(स्त्री० ठाडी)

ठाडो-ठरियो—देखो 'ठडो-ठरियो' (रू भे)

ठाडो-पो'र—देखो 'ठडो-पो'र' (रू भे) उ०—समदडी सू जाळोर सोळै कोस पड़ै, इण वास्तै ब्याळू कर नै तुरत पिलाण कर लिया हा ताकै दिनुगा पै'लो-पै'ली ठाडै-ठाडै-पो'र जाळोर पूगो जा सकै।

—रातवासो

रू०भे०—टाढो, ठाढो।

ठाढ़—१ देखो 'ठाड' (रू भे) २ देखो 'ठाडो' (रू भे)

ठाढडली—देखो 'ठाडो' (अल्पा, रू.भे) उ०—पडे ठाढ़डली जोरावर ओ राज, मरे रे वन रा मोरिया।—लो गी

ठाढो—देखो 'ठाडो' (रू भे) उ०—१ ठाढ़ो नूतत आय मुनि वन थित। रति अरु साथि काम बहुवै रति।—सू.प्र.

ठाडेसरी, ठाढ़ेस्वरी—स०पु० [स० स्तब्ध+ईश्वर+रा०प्र०ई] दिन रात निरतर खडा रह कर तपस्या करने वाले एक प्रकार के सन्यासी।

उ०—माहे जोगेसर पवन रा साझणहार त्रिकुटी रा चडावणहार धूम्रपान रा करणहार उरधवाहू ठाडेसरी दिगबर सेतबर निरजनी आकास-मुनी।—रा सा स

ठाढ़ो—देखो 'ठाडो' (रू भे) उ०—कोडि थोक करतार हेम हुता ठाढ़ो हरि। कोडि जम है किसन-किसन वाखाण इसो करि।

—पी ग्र

ठाढ़ो-ठरियो—देखो 'ठडो-ठरियो' (रू भे)

ठा'णो, ठा'बौ—क्रि०स०—१ करना। उ०—ठहक्कै कडीं कफटा ठोर ठाई। डहक्कै भडा वकडा घोर डाई।—व भा.

२ निश्चित करना, तय करना. ३ ठहराना, रोकना. ४ लगाना (प्रहार, चोट, निशाना) ५ स्थापित करना, जमाना ६ रखना। ७ सुशोभित करना, शोभित करना।

ठायोडो—भू०का०कृ०—१ किया हुआ. २ निश्चित किया हुआ, तय किया हुआ. ३ ठहराया हुआ, रोका हुआ. ४ लगाया हुआ ५ स्थापित किया हुआ, जमाया हुआ ६ रखा हुआ. ६ सुशोभित किया हुआ, शोभित किया हुआ।

(स्त्री० ठायोडी)

ठायो—स०पु०—१ स्थान, जगह। उ०—१ गाया नै गिरमास, ठिकाणो चोडै ठायो। सूवै सूतक सुधी, तळै छिगास बिछायो।—दसदेव

उ०—२ चौधरण ई जागगी। जठै चू'तौ उण ठाया पर कठैई भरणको कठैई थाळी नै कठैई कूडियो माड दियो।—रातवासो

२ देखो 'ठावो' (रू.भे.) उ०—लूकड खावै बोरिया लिप, सुसिया सरणो ओट है। ठाया ठाया टोपली अर बाकी रा लगोट है।

—दसदेव

३ देखो 'ठियो' (रू भे)

रू०भे०—ठयो, ठह्यो, ठाह्यो, ठिओ, ठेयो।

ठार—स०स्त्री०—१ ठौर, स्थान। उ०—हाथ कमडळ झळमळई, ब्राह्मण वेद भणइ झूणकार। राति दिवस करि चालीयउ, पनरमइ दिवस पहुतो तिणि ठार।—बी दे

२ शीत, ठड, सर्दी ३ आराम (पीडा कम होने पर) शान्ति

४ पता, इल्म, ठिकाना. उ०—पाख तणि हेमि सू ताहरा भरासि भडार ? सागर जळ केटलू वाधि पडतो साहि ठार।

—नळाख्यान

रू०भे०—ठाह्यो।

५ देखो 'अठारह' (रू भे) उ०—ठार सोळ सोळह चवद, तुक प्रत मत चवसाठ। नीसाणी मगणत निज, पैडी थण विध पाठ।

—र.ज प्र

ठारक—वि०—१ शीतल करने वाला, ठडा करने वाला. २ सतोष देने वाला। उ०—घणा जीवा के ठारक वळी।—जयवाणी

ठारणो, ठारबो—क्रि०स०—१ ठडा करना, शीतल करना।

उ०—पवन री हवा सू टिप्पा खाईनै रही छै। कोरी गागर माहे घाति-घाति ठारीजै छै।—रा सा स.

मुहा०—ठार-ठार नै खाणो—अधिक गर्म भोजन को ठडा कर कर के खाना चाहिये अर्थात् हर कार्य मे धैर्य रखना नितान्त आवश्यक है।

२ निश्चय करना, तय करना। उ०—पीछै बेळोजी बीकानेर आय रावजी स्री बीकैजी सू मालम करी। तद रावजी अमरावा सू वा मुसदिया सू सला' करी। अरु जोधपुर ऊपर फौज लेय पधारणै री ठारी।—द दा.

३ बुझाना, शीतल करना। उ०—ठहे सामद्रा नीर मे पूछ ठारी। मिळै कूदि सामद्र सेना मझारी।—सू.प्र.

४ भट्टी जलाना (मागलिक)। उ०—कोकर काट मजूर, ठूठिया भट्टी ठारै। पाणी-पाणी करै, पुणो पारै उणियारै।—दसदेव

ठारणहार, हारो (हारी), ठारणियो—वि० ।
ठरवाड़णो, ठरवाडबो, ठरवाणो, ठरवाबो, ठरवावणो, ठरवाववो, ठराडणो, ठराड़बो, ठराणो, ठराबो, ठरावणो, ठराववो—प्रे०रू० ।
ठारिग्रोडो, ठारियोडो, ठारयोड़ो—भू०का०कृ० ।
ठारीजणो, ठारीजबो—कर्म वा० ।
ठरणो, ठरबो—अक०रू० ।

ठारा—देखो 'ठार' (५) (रू.भे.) उ०—ठारा सं रनेए का वरस मे जग जूटा । माढणी खेत फेरघो कामखानी भागि छूटा ।—शि व

ठारियोडो—भू०का०कृ०—१ ठडा किया हुआ, शीतल किया हुआ. २ निश्चय किया हुआ, तय किया हुआ. ३ बुझाया हुआ. ४ भट्टा जलाया हुआ ।
(स्त्री० ठारियोडी)

ठारी—स०स्त्री०—शीत, ठडक, सर्दी ।
क्रि०प्र०—पड़णी, होणी ।

ठाळ—म०स्त्री०—१ खोज, तलाश । उ०—सीहा विपत न सभवै, ठाली जाय न ठाळ । हाथळ सूं पल हेक मे, सीहा हुवै सुगाळ ।—वा दा.
२ छलाग ।

ठाल—म०स्त्री०—१ रिक्तता, खालीपन ।
क्रि०प्र०—पडणी, रै'णी ।
२ अभाव, कमी ।
क्रि०प्र०—पडणी, रै'णी, होणी ।

ठालउ—देखो 'ठालो' (रू भे) उ०—जइ भागउ तौ वाराहउ, जइ थाकउ तो पार करउ घोड़उ, जइ ठालउ तोइ कपूर तणउ दावडउ ।
—व.स

ठाळणो, ठाळबो—क्रि०स० [स० प्ठल+ण्यत=स्थालना=स्थापना=थापना=ठाळणो] १ तलाश करना, खोज करना, ढूढना ।
२ चुनना, छाटना (इगित करना) उ०—राणी तौ कळिजुग रो रूप एहा अभिरूप अवनीम रो तिरस्कार करि सुढ़ात रै आस्तित अनेक जन रहै जिका मे कोई दो ही लोक रो खोवणहार ठाळियो ।—व.भा
३ निश्चित करना, तय करना ।
४ देखना । उ०— तावीत हीयरा माए अदाता जावते ताळै, नेत्रा ठाळै वारूवार सभाळै निधान ।
—महाराज बळवतसिह रतलाम रो गीत

ठाळणहार, हारो (हारी), ठाळणियो—वि० ।
ठळवाडणो, ठळवाडबो, ठळवाणो, ठळवाबो, ठळवावणो, ठळवाववो, ठळाडणो, ठळाडबो, ठळाणो, ठळाबो, ठळावणो, ठळावबो
—प्रे०रू० ।
ठाळिग्रोडो, ठाळियोडो, ठाळयोडो—भू०का०कृ० ।
ठाळीजणो, ठाळीजबो—कर्म वा० ।
ठळणो, ठळबो—अक०रू० ।

ठालप(फ)—स०स्त्री०—१ वेकार या निकम्मा रहने का भाव ।
कहा०—ठालफ सूं वेगार भली—वेकाम वैठे रहने से तो वेगार करना ही अच्छा । मि०—'ठाली वैठा विचै वेगार भली ।'
२ रिक्तता, अभाव ।

ठाळवरो—वि०—चुनिन्दा । उ०—सीहो रांणा प्रताप रो भोपतसीहोत राणा जगतसिघ रो मेलियो पातसाहजी री हजूर रहतो । वडो दातार वडो ठाळवरो सिरदार हुवो । उणरै वेटा केसरीसिघ ।
—वा दा ख्यात

ठाळियोड़ो—भू०का०कृ०—१ तलाश किया हुआ, खोजा हुआ, ढूढा हुआ २ चुना हुआ. ३ निश्चित किया हुआ, तय किया हुआ ४ देखा हुआ ।
(स्त्री० ठाळियोडी)

ठाली—स्त्री०वि०—१ खाली, रिक्त । उ०—हाथा ठाली हालणो, जाभी सपत जोड । मौत सरीखो मनख रै, खलक मही नहि खोड ।
—वा.दा
२ केवल, सिर्फ । उ०—पाळा पर रोप्या पड्या, तगरा हिरणा हेत । पाणी लूग्रा चोमियो, ठाली ग्राली रेत ।—लू
३ गर्भहीन मादा पशु (गाय, भैस आदि) ४ वेकार, निकम्मा ।
उ०—कज न होय तउ कुछ करै, चूप मिटावण चित्त । मह ठाली मूंडै मुदित, नायण पाटा नित्त ।—रेवतसिंह भाटी
मुहा०—१ ठाली फिरणो—वेकार घूमना, भटकना २ ठाली दौडणो—परिश्रम करना किन्तु प्राप्ति कुछ नही ।
५ निर्जन, एकान्त ६ निष्फल ।
उ०—सीहा विपत न सभवै, ठाली जाय न ठाळ । हाथळ सू पल हेक मे, सीहा हुवै सुगाळ ।—वा दा

ठालु—देखो 'ठालो' (रू भे.) उ०—कुभसुति ते आचमन कीवू, कोटि वरस रहु ठालु । अनेकि कुभि उळेचता, ए धरि नही सर चालु ।
—नळाख्यान

ठालू-भूलो, ठालू-भूलो—देखो 'ठाली-भूलो' (रू.भे)

ठालेड—वि०—१ वेकार, निकम्मा. २ चोर, उच्चका ।
स०स्त्री०—१ वह मादा पशु जिसके पेट मे गर्भ न हो ।
२ रिक्तता, खालीपन ।
क्रि०प्र०—पडणी, होणी ।

ठालो—वि०पु० (स्त्री० ठाली) १ रिक्त, खाली, रहित ।
मुहा०—ठालो काडणो—विना कुछ दिये चलता करना ।
यौ०—ठालो-भूलो ।
२ वेरोजगार, निकम्मा, वेकार ।
मुहा०—१ ठालो दौडणो—देखो 'ठाली दौडणो'
२ ठालो फिरणो—देखो 'ठाली फिरणो' ।
३ निर्जन, एकान्त. ४ केवल, सिर्फ ।
सं०पु०—१ सोने या चादी की वनी देवताओं की मूर्ति. २ एक प्रकार का आभूषण विशेष ।
रू०भे०—ठालउ ।

ठालो-भूलो-वि०यौ०—१ भाग्यहीन, हतभाग्य। उ०—ठाला-भूला ठोठ कुबुध नहि छोडै काल्हा। पुण्य गया परवार व्यसन जद लागा वाल्हा।—ऊ का

२ निकम्मा, बेकार; भटकने वाला।

कहा०—ठाला-भूला भेळा थायँ, जे नगर ठा'नी वात करै—जब निकम्मे लोग इकट्ठे होते हैं तो बिना ठौर-ठिकाने की बातें करने लगते हैं।

रू०भे०—ठालू-भूलो, ठालू-भूलो।

ठावअ-स०पु० [सं० स्थापक] पक्ष को स्थापित करने के लिए (जैन)

ठावको—देखो 'ठावो' (रू भे) उ०—विचित्रकुंवर रो नगारची, वाजदार बैठा ठावका उवा रा गुण सुण लजाय बैठा।

—पलक दरियाव री वात

ठावड़-स०स्त्री०—ठौर, जगह, स्थान (जैन)

ठावण—देखो 'थापण, थापन' (रू भे, जैन)

ठावणया, ठावणा—देखो 'थापना' (रू भे., जैन)

ठावणो, ठावबो-क्रि०स० [सं० स्था] १ स्थिर करना, रखना।

उ०—जीण मेरी बाई ये, पैं'ला ये मेलो पाछो पाव। जामण की ये जायी, पाछै तो हरसी ये एडी ठावसो।—लो गी

२ स्थापित करना। ३ बनाना। ४ करना। ५ समझना।

६ सुसज्जित करना, सजाना ७ शोभायमान करना, शोभित करना। ८ निवास करना। उ०—कोसळ नगरी ए नळ आवीया, उपवन माही ते ठावीया। तिहा सघळू मेहलिउ मेल्हाण, नळराय नी वरतइ आण।—नळ-दवदती रास

ठावणहार, हारो (हारी), ठावणियो—वि०।

ठववाड़णो, ठववाड़बो, ठववाणो, ठववाबो, ठववावणो, ठववाववो, ठवाणो, ठवाबो, ठवावणो, ठवाववो—प्रे०रू०।

ठाविओडो, ठावियोडो, ठाव्योडो—भू०का०कृ०।

ठावीजणो, ठावीजबो—कर्म वा०।

ठवणो, ठवबो—अक०रू०।

ठावियोडो-भू०का०कृ०—१ स्थिर किया हुआ, रखा हुआ २ बनाया हुआ ३ किया हुआ. ४ समझा हुआ ५ सुसज्जित किया हुआ, सजाया हुआ. ६ शोभायमान किया हुआ, शोभित किया हुआ ७ निवास किया हुआ ८ स्थापित किया हुआ.

(स्त्री० ठावियोडी)

ठावो-वि० (स्त्री० ठावी) १ प्रतिष्ठित, माननीय।

उ०—१ पडदै घालो पातरा, ठावी-ठावी ठोड। परणी नै नह पेटियो, देखो बुध री दौड।—बा दा.

उ०—२ टीकम गाव रो खावतो-पीवतो ठावो आदमी गिणीजतो।

—रातवासो

२ विश्वासपात्र, विश्वसनीय। उ०—१ विलमी आमरै ठावै साथ सू भीतर जावणो ठहरायो जे जाफर नू मारा।—नी प्र.

उ०—२ तद दळकरण ठावा माणस बुलावणे नू मेलिया सो ऊबै माणस आय कही—ठाकुर बुलावै छै।—भाटी सुदरदास बीकूपुरी री वारता

३ फैला हुआ, व्यापक। उ०—ठावो सकळ सकळा री ठाकर, तू चाकर चाकरा तणो—भगतमाळ

४ प्रसिद्ध, विख्यात। उ०—१ ठऐ भद्र मदा म्रिगा वस ठावा। छटा फैल हालै किना सैल छावा।—वं भा.

५ महान्, बड़ा, जबरदस्त। उ०—१ जुड़ण जांदू दीपि जावो, ठीक करिजो कळह ठावो। आव आवो आव आवो, आलमां आवो।—पी ग्र

६ हाजिर, उपस्थित। उ०—१ मोड मुरधर तणौ खळा दळ मोड़तो, दौड पतसाह सू करै दावो, रोड रमता थका चौड रिम चूरिता, ठौड ही ठौड राठौड ठावो।—ध व ग्र.

७ योग्य। उ०—अला अहे चद्रावळी बीज आवी। अला ठाकुरा मेघड़ी विरिए ठावी।—पी ग्र

८ सत्य, पक्का, निश्चित। उ०—म्हे कुंवरजी सू मिळ वाता करि ठावा समाचार लाया छा, सहनाण लाया छा।

—पलक दरियाव री वात

९ प्रकट, जाहिर। उ०—आगै सहर मे खाफरो चोर चोरी करतो, चोरी ठावी न हुवती।—राजा भोज अर खाफरै चोर री वात

मुहा०—१ ठावो करणो—प्रकट करना, जाहिर करना २ ठावो पड़णो—पता लगना, मालूम होना. ३ ठावो होणो—प्रकट होना, जाहिर होना, प्रसिद्ध।

१० मुख्य, खास, अग्रगण्य उ०—१ ठावा उपमाण घटघा उण ठौड। कटघा जदु जाणक छप्पन कोड़।—मे म

उ०—२ पाछा आया तरै वड वेहुडा सू वधाय वधावा, ठावा-ठावा आदमी तिका रा नाम सू गावीजण लागा।—वी स.टी.

११ गभीर, धैर्यवान. १२ समझदार, बुद्धिमान १३ सुरक्षित।

रू०भे०—ठाग्रो, ठायो, ठाहो।

यौ०—ठावी ठौड।

ठाह-स०स्त्री०—१ स्थान, जगह। उ०—१. दगो दियो कर दोसती, ठग जाहर सब ठाह। वाणिए जाया 'वाकला', कहै महाजन काह।

—बां.दा.

२ पता, ठिकाना। उ०—धाम नाथ न गाम धाम, कुछ ठाम न ठाह।—केसोदास गाडण

३ ध्यान, खबर, खोज, ज्ञान। उ०—अवरि बारइ रवि तपइ, दिसा प्रति दिदाह। सीतळ तुझ सभारवउ, अवर न अेकू ठाह।—मा का.प्र.

रू०भे०—ठा'।

ठाहणो, ठाहबो—देखो 'ठा'णो, ठा'बो' (रू.भे.)

ठाहर-स०स्त्री० [सं० स्था] १ स्थान, जगह। उ०—मारि खळा 'रिणमाल', एक हुकमह घर आणी। सीह गाय इक साथ, पियै इक ठाहर पाणी।—सू.प्र.

२ निवास-स्थान, डेरा।

स०पु०—३ कदम, डग। उ०—डारणा नाहर डाण ठवतो ठाहरा। फुरळ तो ग्ररि फौज तसा घिन ताहरा।—किसोरदास बारहठ

ठाहराणो, ठाहराबो—१ जमाना। उ०—जन हरिदास मनसा वसी, तहा बसै हरि नीर। कनक कटोरै ठाहरै, ग्राघणि वप का खीर।
—ह.पु.वा.

२ रोकना, ठहराना।

ठाहरियोडो—भू०का०कृ०—१ जमाया हुग्रा २ रोका हुग्रा, ठहराया हुग्रा।
(स्त्री० ठाहरियोड़ी)

ठाहरूपक—स०पु० [स० स्था = रूपक] सात मात्राग्रो का मृदग का एक ताल।

ठाहियोडो—देखो 'ठायोडो' (रू.भे.)
(स्त्री० ठाहियोडी)

ठाहोकणो, ठाहोकबो—क्रि०स०—ठोकना, पीटना, मारना।
उ०—हिवै हू करू न हुवो, ताहरा 'हेमो' महेवै रै किवाड़ै घाव करसी, प्रोळ ग्राय ठाहोकसी।—नैणसी

ठाहोकियोडो—भू०का०कृ०—१ ठोका हुग्रा, मारा हुग्रा, पीटा हुग्रा।
(स्त्री० ठाहोकियोडी)

ठाहो—स०पु०—१ पात्र। उ०—जीव की जडी, हीरा को हार, ग्रमी को ठाहो, रूप को ग्रवतार।—दरजी मयाराम री वात

२ देखो 'ठायो' (रू.भे.)

३ देखो 'ठियो' (रू.भे.)

ठिंगणो—देखो 'ठींगणो' (रू.भे.)
(स्त्री० ठिंगणी)

ठिइकम्म—स०पु० [स० स्थिति कर्मन्] १ कर्म की स्थिति (जैन)
२ स्थिति कर्म, जन्म सस्कार (जैन)

ठिइकल्लाण—उभ० लि० [स० स्थिति कल्याण] उत्कृष्ट स्थिति वाला (जैन)

ठिइक्खय—स०पु० [स० स्थितिक्षय] ग्रायु का क्षय, मरण (जैन)

ठिइपद—स०पु० [स० स्थितिपद] प्रज्ञापन सूत्र के चतुर्थ पद का नाम (जैन)

ठिइबंध—स०पु० [स० स्थितिबन्ध] कर्मबन्ध की काल मर्यादा (जैन)

ठिइया—स०स्त्री० [स० स्थितिका] स्थिति (जैन)

ठिई—स०स्त्री [स० स्थिति] स्थिति (जैन)

ठियो—वि० [स० स्थित] १ ठहरा हुग्रा (जैन)
२ देखो 'ठायो' (रू.भे)
३ देखो 'ठियो' (रू.भे)
रू०भे०—ठिय।

ठिकदार—देखो 'ठेकेदार' (रू.भे)

ठिकरी—देखो 'ठीकरी' (रू.भे.) उ०—जउ पापी गरभइ ग्रावइ, तउ मात खिहाळा खावइ। कइ ठिकरी माखाइ खड, कइ खायइ भीत लवड।—ऐ जै.का स.

ठिकाणो—स०पु० [स० स्था] स्थान, जगह। उ०—१ ठहिया भूखण सरब ठिकाणै, ग्रहि काकळि पुहपा ग्रहिनाणै।—सू प्र.
उ०—२ सारी धरती प्रदिक्षणा दी। राजा नु सारा ठिकाणा बताया छै।—चौबोली

मुहा०—१ ठिकाणै ग्राणो—उलझन मे पडे हुए का यथार्थता पर ग्राना, वास्तविक वात पर ग्राना।
२ ठिकाणै नी रैणो—बुद्धि-विक्षिप्ति होना, ग्रस्थिर रहना, ग्रपने स्थान पर न रहना। ३ ठिकाणै पहुँचाणो, ठिकाणै मेलणो—उपयुक्त स्थान पर भेजना।

२ निवास-स्थान, ठहरने की जगह, पता, ठिकाना।
उ०—करिजै तू कल्याण इसो मन मे मति ग्राणै। ठाम चुकावै ठिकर ठहरसी किमै ठिकाणै।—ध व ग्र

मुहा०—१ ठिकाणा री वात—समझदारी की वात, पते की वात
२ ठिकाणै नी रैणो—स्थान पर नही टिकना।
३ ठिकाणै री वात—देखो 'ठिकाणा री वात'।
४ ठिकाणै लागणो—उचित स्थान पर पहुँचना, खर्च हो जाना।
५ ठिकाणै लगाणो—उपयुक्त स्थान पर पहुँचाना, सुरक्षित स्थान पर ले जाना, खर्च कर देना। ६ ठिकाणो जोणो, ठिकाणो ढूढणो—निवास-स्थान की तलाश करना, सम्बन्ध के लिए उपयुक्त लडका या लडकी ढूढना। ७ ठिकाणो लागणो—खबर लगना, पता लगना।

३ प्रबध, इन्तजाम, प्राप्ति का ढग।
मुहा०—१ ठिकाणै लगाणो—काम धधे पर लगाना।
२ ठिकाणो करणो—शादी विवाह के लिए सम्बन्ध निश्चित करना।

४ सहारा ग्राश्रय, ग्रवलम्ब।
मुहा०—१ ठिकाणै लगाणो—काम धधे पर लगाना, ग्राश्रय दिलाना।
२ ठिकाणो करणो—प्राप्ति का स्थान तय करना, नौकरी पर लगना, ग्राश्रय लेना, ३ ठिकाणो जोणो, ठिकाणो ढूढणो—ग्राश्रय ढूढना, नौकरी की तलाश करना।

५ भरोसा, यथार्थता, प्रमाण. ६ जिसकी कोई सीमा ही न हो, पारावार। ज्यू—इण दरियाव रो काई ठिकाणो कोनी।

७ ग्रत, हद।
मुहा०—१ ठिकाणै पहुँचाणो, ठिकाणै मेलणो, ठिकाणै लगाणो—काम तमाम कर देना, समाप्त कर देना.
२ ठिकाणै लगणो—मृत्यु को प्राप्त होना, धाम सिधाना।

८ कुल, वश, घराना।
मुहा०—१ ठिकाणा रो टाबर—ग्रच्छे कुल का व्यक्ति, कुलीन

व्यक्ति २ ठिकाणो जोणो, ठिकाणो ढूढणो—लडके या लडकी के सम्बन्ध के लिए अच्छा कुल ढूढना।

३ ठिकाणो लजाणो—कुल को लज्जित करना, मर्यादा छोडना।

मि०—घर (३)

६ किसी राज्य का वह भू-भाग जो किसी सामन्त या जागीरदार के अधीन हो। उ०—आउवा वाळा वाग मे वावळियै वाळो घेरो रे। माथे फौजा आई नै अगरेज भेळो रे क भाया साभळजो। हा रे भाया साभळजो रे ठाकर नै ठिकाणो छूटे रे क भाया साभळजो।

—लो गी.

मुहा०—१ ठाकर सु ठिकाणो वाजणो—यदि जागीरदार समझदार और बुद्धिमान हो तो हल्की जागीर की भी कद्र हो जाती है

२ ठिकाणै ठाकर पूजीजणो, ठिकाणै ठाकर वाजणो—मनुष्य की कद्र उसके स्थान पर ही होती है। जागीर या वैभव के कारण ही व्यक्ति की कद्र होती है ३ ठिकाणै री ठाकर—धन के पीछे अयोग्य की भी कद्र होती है। बहुत वडी जागीर का अयोग्य स्वामी भी ठाकुर कहलाता है। सम्पन्न घर का व्यक्ति।

४ ठिकाणो अवेरणो—किसी जागीर का बुद्धिमानी से सचालन करना, कीसी अयोग्य व्यक्ति का अपने वैभव को समाप्त कर देना.

५ ठिकाणो केवटणो—किसी बुद्धिमान व्यक्ति का अपने वैभव या जागीर का बुद्धिमानी के साथ सचालन करना।

६ ठिकाणो लजाणो—जागीर की प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचाना, जागीर को कलकित करना, वश मे कलक लगाना।

रू०भे०—ठकाणो।

ठिकादार—देखो 'ठेकेदार' (रू भे)

ठिको—देखो 'ठेको' (रू भे.)

ठिगारो—देखो 'ठग' (अल्पा, रू भे) उ०—कीधा खुवारी ठिकाण-धारी अणिया सुभावा कोते, छदा दावा केही पचहजारी छलूत। माया अभ्र छाया रूपी ठिगारी जिहान मोयो वापो छत्रधारी मोयो न जावै वळूत।—महाराजा वळवतसिंह रतलाम रो गीत

(स्त्री० ठिगारी)

ठिठकणो, ठिठकवो—क्रि०अ० [स०स्थिति+करण] १ चलते-चलते यकायक ठहर जाना २ चकित होना, आश्चर्य मे पडना।

ठठकणो, ठठकवो—रू०भे०।

ठिठकारणो, ठिठकारवो—क्रि०स०—धिक्कारना, फटकारना।

ठिठकारियोडो—भू०का०कृ०—धिक्कारा हुआ, फटकारा हुआ।

(स्त्री० ठिठकारियोडी)

ठिठकियोडो—भू०का०कृ०—१ यकायक ठहरा हुआ २ आश्चर्य मे पडा हुआ।

(स्त्री० ठिठकियोडी)

ठिठरणो, ठिठरवो—क्रि०अ० [स० स्थित] अधिक सरदी के कारण ऐंठना या सकुचित होना, ठिठुरना।

ठठरणो, ठठरवो, ठाठरणो, ठाठरवो, ठिठुरणो, ठिठुरबो—रू०भे०।

ठिठरियोडो—भू०का०कृ०—अधिक सरदी के कारण ऐंठा हुआ, सकुचित।

(स्त्री० ठिठरियोडी)

ठिठुरणो, ठिठुरवो—देखो 'ठिठरणो, ठिठरवो' (रू भे.)

ठिठुरियोडो—देखो 'ठिठरियोड़ो' (रू.भे)

(स्त्री० ठिठुरियोडी)

ठिठोराई—स०स्त्री०—१ तग करने की क्रिया या भाव. २ ढिठाई।

क्रि०प्र०—करणी।

ठिणकणो, ठिणकवो, ठिणगणणो ठिणगणवो, ठिणगणो, ठिणगबो—क्रि०अ० रुदन करना, रोना, विलखना। उ०—रोवत ठिणगत वायी तुळछा घर नै वी आयी तो वावोजी गोद वैठायी, हो राम, भरण गयी जळ जमना को पाणी।—लो.गी

ठिणकयोडो, ठिणगणियोडो, ठिणगियोडो—भू०का०कृ०—रुदन क्रिया हुआ, रोया हुआ, विलखा हुआ।

(स्त्री० ठिणकियोडी, ठिणगणिओडी, ठिणगियोड़ी)

ठिमर—वि०—१ गभीर, धैर्यवान २ बुद्धिमान, समझदार।

रू०भे०—ठीमर, ठीमर।

ठिय—देखो 'ठिओ' (रू भे.)

ठियो—स०पु० (वहु व० ठिया) १ उन दो पत्थर खडो मे से एक पत्थर खड जिन पर शौच जाते समय उकडू वैठने पर पैर टिके रहते हैं २ चूल्हे के ऊपर उठे हुए वे भाग जिन पर भोजन, शाक आदि पकाने का वतन रखा जाता है. ३ वस्त्र विशेष (शेखावाटी)

४ स्थान, जगह।

रू०भे०—ठयो, ठहो, ठायो, ठिओ, ठीयो, ठीयो, ठीहो, ठेयो।

ठिरणो, ठिरवो—देखो 'ठरणो, ठरवो' (रू भे)

ठिरियोडो—देखो 'ठरियोडो' (रू भे)

(स्त्री० ठिरियोडी)

ठिलणो, ठिलवो—क्रि०अ०—१ दूर होना, पीछे हटना। उ०—रिदै माय वेस्या सुतो नाम राखी भिणै राम सूवा सदा एम भाखी। ठिलै पाप सारा मिळै मोख ठामू निमो राम नामू निमो राम नामू।

—भगतमाळ

२ गतिमान होना, चलना।

ठिल-ठिल—वि०यो० (अनु०) विल्कुल ऊपर तक भरा हुआ, मुँह-तक भरा हुआ, लवालव। उ०—भरियो-भरियो सजड तळाव, ठिल-ठिल भरगी, अम्मा, सुरता वावडी जी।—लो.गी

रू०भे०—ठिलाठिल।

स०स्त्री०—हँसने की क्रिया या ध्वनि।

ठिलाठिल—देखो 'ठिलठिल' (रू.भे)

ठिलियोडो—भू०का०कृ०—१ पीछे हटा हुआ. २ चला हुआ।

(स्त्री० ठिलियोडी)

ठिलो, ठिल्लो—देखो 'टिल्लो' (रू भे.) उ०—दत रा ठिला ढाहिक

दुरग। ऊधरा चाचरा भसम अग।—सू प्र.

ठिवणो, ठिवबो–क्रि०अ०—चलना। उ०—रूक-हथ पेखि सो हाथ जसराज रा। ठिवता पाव धोरा दियो ठाकुरा।—हा.का.

ठिवियोडो–भू०का०कृ०—चला हुआ।
(स्त्री० ठिवियोडी)

ठींगणो–वि०पु० (स्त्री० ठींगणी) दूसरो से अपेक्षाकृत कम ऊँचाई का, जिसका कद साधारण से कम हो, बौना, नाटा।
रू०भे०—ठिगणो।

ठींगळ, ठींगळियो, ठींगळो–स०पु०—मिट्टी के टूटे हुए वर्तन का छोटा या बडा खड, टूटा हुआ वर्तन (अल्पा.) उ०—१ गीघ्र खणेही खोद, पीळती माटी लावो। गोवर रै गुण घाल, ठींगळे घोळ मिजावो।
—दसदेव

उ०—२ पछी जळ-पय गियं, ठींगळा ठडो कोरा। वासं वाजी विकै, दूध अर साग सिकोरा।—दसदेव
रू०भे०—डीगळो।
अल्पा०—ठीगळियो, डींगळियो।
मह०—ठींगळ, डीगळ।

ठींगलो—देखो 'धींगलो' (रू भे)

ठींगा-ठोळी—देखो 'टींगाटोळी' (रू.भे) उ०—कम पोद्या कायरा ठहे, सट ठींगाठोळी। मैला घटा जवान तठै जिण सूरा टोळी।—पा.प्र

ठींगो–वि०पु० (स्त्री० ठींगी) १ जवरदस्त, शक्तिशाली। उ०—पद वनराव न पामियो, दुरद दिखाळै दात। सीह थयो वन साहिवो, ठींगा री सकरात।—वा दा.
२ धौंस, धमकी, डाट-डपट।
कहा०—ठाई को ठींगो सिर पर—सवल की धौंस या डाट-डपट सिर पर अर्थात् शक्तिशाली की धमकी सहनी पडती है।
मि०–'लाठा रो हुकम माथा माथै।'

ठींचो–स०पु० —मृतक के पीछे वारहवें दिन किया जाने वाला भोज
(शेखावाटी)

ठींडो–स०पु० —छेद, छिद्र।

ठींनर, ठींमर—देखो 'ठिमर' (रू भे) उ०—दादो तो विछडिया मेलइ, दादो ठींनर दुममण ठेलइ हो।—स.कु.

ठींयो—देखो 'ठियो' (रू.भे)

ठी–स स्त्री०—१ पौत्री २ धुघ।
स०पु०—३ क्षय ४ कुम ५ कुटुव ६ कुटवाल (एका)

ठीक–स०स्त्री० [स० स्थितक, प्रा० ठिअक्क] १ दृढ वात, निश्चय, ठिकाना। उ०—ठीक ठीक इण ठीक री, ठीक ठीक, कद ठीक। तू भूपत पोढी तणा, कळविछ वात कितीक।—रिवदान महडू
यौ०—ठीक-ठाक।
२ पता, इल्म, खवर, ज्ञान। उ०—आलम रूघो मारवा, ठीक हुई सव ठोड। आलम आयो साह पै, छोड दियो चीतोड।—रा रू
३ पक्का इन्तजाम, स्थिर प्रवध। ज्यू—पं'ली पेट पूजा री तो की ठीक करलो पछै चालण री वात व्हैसी।
यौ०—ठीक-ठाक।
वि०—१ प्रामाणिक, सच, यथार्थ २ जिसमे किसी प्रकार की कमी या कसर न हो, अच्छा, दुरुस्त। ज्यू—१ दीवाळी माथै म्हारो मकान ठीक कराणो है। २ आ गाडी हमै काम को दै नी, ठीक करावो।
मुहा०—१ ठीक करणो—कमी या कसर निकालना, दुरस्त करना.
२ ठीक कराणो—अड़चन दूर करवाना, कसर निकलवाना.
३ ठीक होणो—कसर रहित होना, स्वस्थ होना, दुरस्त होना।
यौ०—ठीक-ठाक।
३ अच्छा, योग्य, उचित। ज्यू—आ मिनख इण काम रै सारू ठीक है।
मुहा०—ठीक लागणो—प्रतिष्ठा वढ़ना, भला जान पडना।
४ जो अशुद्ध न हो, सही, शुद्ध। ज्यू—मुनीमजी अणपढ कोनी, वे हिसाव ठीक करियो।
५ जो ढीला या तग न हो, जो अच्छी तरह वैठ जाय या जम जाय। ज्यू—ओ कोट म्हारै डील माथै ठीक वैठ गियो।
मुहा०—ठीक वैठणो—किसी स्थान पर अच्छी तरह जमना या वैठना। अधिक कसा या ढीला न होना। व्यवस्थित होना।
६ जो प्रकृति से सीधा हो, जो प्रतिकूल आचरण न करे, विनयी, नम्र, सीधा। ज्यू—घणी वदमासी करी तो मास्टरजी एक एक नै ठीक कर दैला।
मुहा०—ठीक करणो—दड देना, राह पर लाना।
७ जिसमें कुछ अन्तर न आवे, जो आकार या परिमाण मे वरावर हो, जो निश्चित हो। ज्यू—सगा सगा मिळ नै वात तै करी कै जान ठीक मो'रत माथै आवणी चाइजै।
मुहा०—ठीक उतरणो—कम ज्यादा नही होना, वरावर होना, परिमाण मे सही होना।
८ तय किया हुआ, ठहराया हुआ, निश्चित, पक्का, स्थिर।
ज्यू—आपरै वेटा रै व्याव री वात ठीक होगी इणसू म्हानै घणी खुसी हुई।
क्रि०अ०—करणो, होणो।
यौ०—ठीक-ठाक।
९ वढिया, श्रेष्ठ। उ०—आणी माणिक मोतीय ठीक, आणीय वस्त्र पट्टउलडाए। जाणीय मुहतानदन एह सेत, सिणगार करावीउ ए।—विद्याविळास पवाडउ
क्रि०वि०—१ पूर्ण रूप से, निश्चित रूप से। उ०—ठीक ठीक इण ठीक री, ठीक ठीक कद ठीक। तू भूपत पोढी तणा, कळविछ वात कितीक।—रिवदान महडू
२ उचित ढग से, उचित रीति से। ज्यू—ओ आदमी ठीक चालणो नी जाणं।

मुहा०—ठीक देणौ—उचित रूप से देना, काम ज्यादा नही देना, ठीक परिमाण मे देना ।

ठीक-ठाक—स०पु० (अनु०) १ पक्की बात, निश्चय । ज्यूं—पचा सू मिळ नै गाव री सफाई री बात ठीक-ठाक करणी ।

क्रि०प्र०—करणी, होणी ।

२ ठौर-ठिकाना, जीविका का प्रवध, आश्रय । ज्यू—उणा रै तो नौकरी री ठीक-ठाक व्हे गियो ।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ ।

३ आयोजन, प्रवध, इन्तजाम । ज्यूं—टेसण सू वारै निकळता ही धरमसाळ मे रैवण री ठीक-ठाक व्हे गियो ।

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ ।

ठीकडी—१ देखो 'ठीकरी' (रू भे.) २ घूघट निकालने वाली अथवा पर्दानशीन औरत के सकेत का शब्द । उ०—वडारण दातण झारी लेय पाछी आई सो कुवरजी पोढ रहिया छै तद वैठी ठीकडी दीवी ।
—कुवरसी साखला री वारता

ठीकर—देखो 'ठीकरौ' (मह , रू भे) उ०—थिरकस होय ठीकरा जोया, थिरकस ठीकर माई । दे चसमा घट भीतर देख्या, दीस्या अमर गुसाई ।—स्री हरिरामजी महाराज

यौ०—ठालो-ठीकर ।

ठीकरियौ—देखो 'ठीकर' (अल्पा , रू भे)

ठीकरी—स०स्त्री०—मिट्टी के वरतन का टूटा हुआ भाग, टूटा खण्ड ।
उ०—ओ म्होकमसिघ जीकु हासी मे जहर चाखै छै । अै तो मोटा सिरदार छै । पण ठीकरी घडा नु फोड न्हाखै छै ।
—प्रतापसिघ म्होकमसिघ री वात

मुहा०—१ ठीकरी जाणणौ—तुच्छ समझना, महत्व नही देना ।
२ ठीकरी समझणौ—देखो 'ठीकरी जाणणौ' ।

रू०भे०—ठिकरी, ठीकडी ।

ठीकरौ—स०पु०—१ मिट्टी के वरतन का टूटा भाग ।
उ०—१ ठाकर कूडा-ठीकरा खरा दीठा राखै । खूणै मे खेखार पडया रै' ढिगला पाखै ।—ऊ का.
उ०—२ चुगली करता चुगल रा, जग होटडा जुडत । मळ नाखण जाणै मिळै, दोय ठीकरा दत ।—वा दा.

अल्पा०—ठीकरी

२ तुच्छ वस्तु, निकम्मी चीज । उ०—गुण विन ठाकर ठीकरौ, गुण विन मीत गवार । गुण विन चदण लाकडी, गुण विन नार कुनार ।—अज्ञात

३ वर्तन, पात्र (व्यग्य)

मुहा०—१ ठीकरो फूटणौ—कलक प्रकट होना, भेद खुलना
२ ठीकरौ फोडणौ—कलक प्रकट करना, भेद खोलना ।

४ पुराना वरतन, टूटा-फूटा वरतन ५ भीख मागने का वरतन ।
उ०—अतर की गत किसकू कहू, सभी अभेदू सात । कर सिणगार वैराग विभूती, प्रेम ठीकरा हात ।—स्री हरिरामजी महाराज

६ ब्रह्माण्ड (मत वाणी) उ०—थिरकस होय ठीकरा जोया, थिरकस ठीकर माई । दे चसमा घट भितर देख्या, दीस्या अमर गुसाई ।—स्री हरिरामजी महाराज

७ शरीर (व्यग्य, साधु)

मि०—भाडौ (२)

रू०भे०—ठीवडौ, ठीवरौ ।

अल्पा०—ठीकरियौ ।

मह०—ठीकर ।

ठीकिरी—देखो 'ठीकरी' (रू भे.) उ०—ठीकिरी कारणि कोइ कामितु कुभु कुनु फोडइ ।—व स.

ठीठी—स०स्त्री०—हँसने की क्रिया या ध्वनि ।

ठीडी—वि०—खडा । उ०—काई वावळ काव, माळव ठीडी मेडतै । तिण अहिणी सै आव, वीरम देय वढाडिया ।—ठाकुर जैतसी री वारता

ठीडौ—स०पु० [स० स्था] ठावर, पता, ठिकाना (शेखावाटी) ।

ठीणणौ, ठीणवौ—क्रि०स०—उपालभ देना, बुरा-भला कहना ।
उ०—नरा न ठीणौ नारिया, इखो सगत एह । सूरा घर सूरी महल, कायर कायर गेह ।—वी स

ठीणियोडौ—भू०का०कृ०—उपालभ दिया हुआ, बुरा-भला कहा हुआ । (स्त्री० ठीणियोडी)

ठीणौ—स०पु० [स० स्तब्ध] सरदी के कारण जमा हुआ (घी) ।

ठीवडौ, ठीवरौ—देखो 'ठीकरौ' (रू भे)

ठीमर—देखो 'ठिमर' (रू भे)

ठीयो, ठीहौ—देखो 'ठियौ' (रू भे) उ०—१ भूख लागी छै तीसू अठै ही रोटी कर खावा, मोकळो जळ, मोकळा छाणा, चोखा चूल्हा तीन तीन भाटा रा ठीया छै ।—साह रामदत्त री वारता
उ०—२ दही रो रजवौ दीजै छै । तरगसा माहा सीका काढजै छै । वेवडा ठीहा चाढजै छै ।—रा सा स

ठुडी—स०स्त्री०—साँप का मुह ।

ठु—स०पु०—१ कदम २ यमदूत ।
स०स्त्री०—३ मक्खी ४ रज ५ त्वचा (एका)
वि०—१ रोगी २ दरिद्री (एका)

ठुकणौ, ठुकवौ—क्रि०अ०—'ठोकणौ' क्रिया का अक० रू० ।

ठुकराणी—देखो 'ठकराणी' (रू भे) उ०—घोडा रोवै घास नै, टावरिया रोवै दाणा नै । बुरजा मे ठुकराण्या रोवै, जामण जाया नै क रोळो वापरियो । हा रे रोळी वापरियौ रे, देस मे अगरेज आयो रे क रोळो वापरियो ।—लो.गी

ठुकराणौ, ठुकरावौ—क्रि०स०—१ पैर से ठोकर मारना. २ तिरस्कार कर के हटाना ।

ठुकरायोडौ—भू०का०कृ०—१ ठोकर मारा हुआ । २ तिरस्कार किया हुआ ।

(स्त्री० ठुकरायोडी)
ठुकराळो—देखो 'ठाकर' (अल्पा., रू.भे.)
ठुणकाणी, ठुणकाबी—क्रि०स०—उंगली से या किसी वस्तु से हल्की चोट पहुँचाना।
ठुणकायोड़ो—भू०का०कृ०—हल्की चोट किया हुआ।
(स्त्री० ठुणकायोडी)
ठुणको—देखो 'ठणको' (रू.भे.) उ०—नीची जाता रो ठुणको पण न्यारो, ऊंची जाता रो उडियो उणियारो।—ऊ.का.
ठुण—१ देखो 'ठण' (रू.भे.)
२ बच्चों के ठहर ठहर कर रोने का शब्द।
ठुमक—स०स्त्री०—उमग से भरी या ठसक भरी (चाल)। बच्चों की तरह छोटे छोटे कदम भरते हुए और पैर पटकते हुए (चलना)।
उ०—ठुमक ठुमक री चाल।—जयवाणी।
ठुमकणो, ठुमकबो—क्रि०अ०—प्राय: बच्चों का जल्दी जल्दी छोटे छोटे कदम रख कर चलना, फुदकते हुए चलना।
ठुमकार—स०स्त्री०—ठुमक के साथ चलने से उत्पन्न पैरों की ध्वनि।
—लूंबत मागं वाम चरण ठुमकार हळफतो। झूमत जाचं मुख-मदिरा मो बाण कळपतो।—मेघ.
ठुमराई—स०स्त्री०—मद मंद गर्वपूर्ण चाल। उ०—चोमासो लग आयो अे घोडी, धीमा धीमा चाल वछेरी, ठुमराई सू चाल।—लो गी
ठुमरी—स०स्त्री०—एक प्रकार का गीत जो केवल एक ही स्थान और एक ही अंतरे मे समाप्त होता है।
ठुमरीझंझोटी—स०स्त्री०—एक राग विशेष (मीरा)
ठुरणो, ठुरबो—'ठोरणो' क्रिया का अक०रू०।
ठुरियो—स०पु०—ऊंट की चाल विशेष (शेखावाटी)
ठुळी—स०स्त्री०—१ वह लाठी जो लबाई मे छोटी हो, डडा।
उ०—तिका ऊपर कुता री डोर छूटी छै। वाठ-वोभा कुदै छै। घुचली खाय रह्या छ। ठुळी री, गोफण री, तीरा री चोटा हुय रही छै।—रा.सा स.
२ एक प्रकार का कमजोर काटा।
ठुसकणो, ठुसकबो—क्रि०अ०—धीरे-धीरे सास रोक-रोक कर रोना।
ठुसकियोड़ो—भू०का०कृ०—रोया हुआ।
(स्त्री० ठुसकियोड़ी)
ठुसको—स०स्त्री०—१ धीरे-धीरे सास रोक-रोक कर रोने से उत्पन्न शब्द २ धीरे से अपानवायु निकालने की क्रिया जिससे 'ठुस' शब्द उत्पन्न हो।
ठुसणो, ठुसबो—क्रि०अ०—१ दवा-दवा कर भरा जाना. २ कठिनाई से घुसना या पैठना।
ठुसियोड़ो—भू०का०कृ०—१ दवा-दवा कर भरा हुआ २ कठिनाई से घुसा हुआ या पैठा हुआ।
(स्त्री० ठुसियोडी)
ठुसी—स०स्त्री०—स्त्रियो के गले मे पहनने का एक आभूषण विशेष।
रू०भे०—ठुसी, ठूसी।
ठूक—स०स्त्री० [स० तुड] चोच, चञ्चु। उ०—सु किण भात री तरवार येट सिरोही री, सातरी, दाणादार, मिआन घातिया विआगुळे बाढे झेरिआ-मिआन सू काढि नै घास मे नाखी हुवै तो पाणी रै-भोळै जिनावर ठूक मारै।—रा सा स.
रू०भे०—ठूग।
ठूग—स०स्त्री०—१ शराब के साथ खाया जाने वाला चुर्वन.
२ देखो 'ठूक' (रू.भे)
ठूगार—स०स्त्री०—१ भग के नशे की अवस्था मे भूख को शान्त करने के लिये खाया जाने वाला स्वादिष्ट पदार्थ. २ छौंक, वघार।
ठूठ—वि०—१ मूर्ख, गँवार।
मि०—टोळ (१)
२ देखो 'ठूठो' (मह, रू.भे) उ०—१ कोट माहिला झाड-झंगी वाळ दिया, तिके अजेस वळिया ठूठ दीसै छै।—नैणसी
उ०—२ ऊपर टीड रै चाटयोड़ी ठूठ व्है जिसी खेजडी अर सामनै वरवाद हुयोडो उणरो घर।—रातवासो
ठूठा—स०स्त्री०—पँवार वश की एक शाखा
ठूठियो—स०पु०—१ बैलगाडी के पहिये मे आरे की भांति लगाया जाने वाला लकडी का उपकरण. २ देखो 'ठूटियो' (रू.भे)
३ देखो 'ठूठो' (अल्पा., रू भे.)
ठूठो—स०पु०—वह पेड जिसकी पत्तिया और डालिया काट डाली गई हो या सूख कर गिर गई हो।
रू०भे०—ठूढो।
अल्पा०—ठूठियो, ठूढियो।
मह०—ठूठ, ठूढ।
ठूढ—देखो 'ठूठो' (मह, रू.भे) उ०—खेजडला री छाग, ठूढ भेळा कर राखै। ठूढ लगावै ढिग, जिगग जाझो कर तांखै।—दसदेव
ठूढियो—देखो 'ठूठो' (अल्पा., रू.भे) उ०—१ पकै ठूढिया ईंट, चूनो, सुरखी ढुळकी फूल घुट। ठठेरा लुहारा सारा, लोह चढ़ावै लाल चुट।—दसदेव
उ०—२ कोकर काट मजूर, ठूढियो भट्टी ठारै। पाणी पाणी करै, पुणो पारै उणियारै।—दसदेव
ठूढो—देखो 'ठूठो' (रू.भे)
ठूसणो, ठूसबो—क्रि०स०—१ दवा दवा कर भरना २ जोर से घुसेडना या पैठाना ३ अपेक्षाकृत अधिक खाना, खूब पेट भर कर खाना, कस कर खाना।
ठूसणो, ठूसबो, ठोसणो, ठोसबो—रू०भे०।
ठूसियोडो—भू०का०कृ०—१ दवा दवा कर भरा हुआ २ जोर से घुसेडा हुआ या पैठा हुआ ३ कस कर खाया हुआ।
(स्त्री० ठूसियोडी)
ठूसियो—स०पु०—ऊंट का एक खास रोग जिसमे उसको खासी होती है.

ठू-स०पु०—१ विष्णु २ बुध ३ प्रेम ४ धैर्य ५ धर्म
स०स्त्री०—६ लक्ष्मी (एका)

ठूग—देखो 'ठूक' (रू.भे) उ०—सू म्यान माहा काढ़ घास मे नाखजै तो पाणी रे भोळावै जनावर ठूग वाहै।—रा सा स.

ठूमरी-स०स्त्री०—देखो 'ठुमरी' (रू.भे)
रू०भे०—ठुमरी।

ठूमरो-स०पु०—सिंध और बिलोचिस्तान के बीच की पहाड़ियों के बीच हिंगलाज देवी के मंदिर के आसपास के भू-भाग पर पाया जाने वाला पत्थर का कण जिसकी आकृति गेहूँ, जौ और ज्वार के दाने के समान होती है।
वि०वि०—श्रद्धालु भक्त अपने बच्चो को शीतला से बचाने के लिए शीतला निकलने से पहले इनको पानी मे डाल कर पिलाते हैं और इनकी माला बना कर पहनाते हैं।

ठूळ-स०पु०—जडो सहित निकाली हुई मोटी लकडी। उ०—सूड करता वाढ़ा मूळ। जडिया हेता ठूठा ठूळ।—चेत मानखा
वि०—१ अल्हड, गँवार, मूर्ख २ मजबूत।

ठूसणो, ठूसबो—देखो 'ठूसणौ, ठूसबौ' (रू भे)

ठूसियोडौ—देखो 'ठूसियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० ठूसियोडी)

ठूसी—देखो 'ठुसी' (रू भे)

ठॅण-स०पु०—कठोर एव समतल भूमि।

ठे-स०पु०—१ वामन. २ शेष ३ स्थान ४ मन ५ सक्षेप।
स०स्त्री०—६ शिखा (एका)

ठेक-स०स्त्री०—१ मजाक, ठठोर, हसी। उ०—जळ परियौ देवै जितौ, रयौ न घाघळरोह। एक न आप उवारियौ, क्यू पत ठेक करोह।
—पा प्र
२ छलाग मारने की क्रिया या छलाग।

ठेकणो-वि० (स्त्री० ठेकणी) छलाग मारने वाला। उ०—पडै रूप पेखणा देखणा कठै बीजा पोहा, सोभा चत्रकारिया अलेखणा सुभात। वागी ताळी छेकणा जे सु फीला कगुर वाळी, भागी डाळी ठेकणा लगूर वाळी भात।—जवानजी आढौ

ठेकणो, ठेकबौ-क्रि०स०—छलाग मारना, कूदना।

ठेकरी—देखो 'ठीकरी' (रू भे) (शेखावाटी)

ठेकदार—देखो 'ठेकेदार' (रू भे)।

ठेकागाडी-स०स्त्री०—एक प्रकार का सरकारी लगान।

ठेकावार—देखो 'ठेकेदार' (रू भे)

ठेकाळौ-वि० (स्त्री० ठेकाळी) छलाग मारने वाला, कूदने वाला।

ठेकियोडौ-भू०का०कृ०—छलाग मारा हुआ।
(स्त्री० ठेकियोडी)

ठेकी-स०स्त्री०—छलाग।

ठेकेदार-स०पु०यौ०—१ किसी कार्य को करने का उत्तरदायित्व लेने वाला। उ०—कचैडी मे दावो पेस हुयो अर न्याव रा ठेकेदारा उण रै नाम कुडकी रो हुकम निकाळ दियो।—रातवासो
२ मकान बनाने, सडक बनाने या किसी अन्य कार्य को कुछ धन-राशि के बदले मे पूरा करने का जिम्मा लेने वाला. ३ किसी आमदनी वाले स्थान के मालिक को निश्चित धन-राशि दे कर मुनाफे की आशा से उस स्थान की आमदनी लेने वाला, इजारेदार।
रू०भे०—ठिकदार, ठिकादार, ठेकदार, ठेकादार।

ठेको-स०पु०—१ किसी कार्य को करने का उत्तरदायित्व. २ मकान बनाने, सडक बनाने या किसी अन्य कार्य को कुछ धन-राशि के बदले मे पूरा करने का दायित्व, जिम्मा।
क्रि०प्र०—दैणौ, लैणौ।
३ किसी आमदनी देने वाली वस्तु अथवा स्थान के मालिक को समय-समय पर निश्चित धन-राशि दे कर मुनाफे की आशा से उस वस्तु अथवा स्थान की आमदनी लेने अथवा वसूल करने की क्रिया, इजारा।
क्रि०प्र०—दैणौ, लैणौ।
यौ०—ठेकेदार।
४ तबले मे बायाँ ५ बाँयें तबले पर ताल देने की क्रिया।
क्रि०प्र०—करणौ, दैणौ।
६ छलाग।
मुहा०—ठेका दैणा—भाग जाना, छोड जाना, गायब हो जाना, टल जाना।
रू०भे०—ठिको।

ठेगडौ-स०पु०—कुत्ता।

ठेगण-स०स्त्री०—सहारा लेने या लगाने की लकडी।
उ०—माचा रा पागलिया लिया, लामी-लाम भडामडी। टावरिया गेडिया टाळै, बूढा ठेगण कामडी।—दसदेव

ठेचरी-स०स्त्री०—मखौल, मजाक, हँसी। उ०—'ओपो' कहै अबै नह आचा, सेज सिधाता वाव सुरै। जस वाता लतिया नह जाणै, कवि पाता ठेचरी करै।—ओपो आढ़ो

ठेट, ठेठ-स०पु०—१ सीमा, हद, छोर, पार, अत।
उ०—१ एक तो नगारो धणियाँ रातंनाडै वाजै-ओ, दूजोडो नगारो धणिया ठेट वाजै ओ क भगडो रोपियो।—लो.गी.
उ०—२ घोडा घालौ वरगडे, जद पूगोला ठेट। विचलै वासै रह गया, तौ पडसी किण रै पेट।—सगरामदास
उ०—३ उणरो मन तो ठेठ जोधपुर रा बगळा मे भमतो हो।
—रातवासो
२ आरम्भ, शुरू। उ०—१ ठेट सू रिवदास गुरू'र, हरि तणै रस भीनी। मीरा दासी आपरी, भव सू पार कीनी।—मीरा
उ०—२ गोरो निछोर रग, कैरी री फाक जिसी मोटी-मोटी आख्या, सूवा री चाच सी तीखी नाक अर ठेट कमर सू नीचै तक लटकता

भूरा कवळा केस ।—रातवासो

ठेठर, ठेठरियौ, ठेठरौ-स०पु०—१ पुराना सूखा जूता जो सूख कर कठोर हो गया हो. २ पशुग्रो के खुरो की कठोरता।

उ०—सिर नहिं सिंगी सचरी, पग न ठेठर वध । दूध पिवतै वाछड़ै, दियो महा-भड कध ।—महाराजा मानसिंह, जोधपुर

अल्पा०—ठेठरियौ ।

मह०—ठेठर।

ठेठी-स०पु०—कान का मैल, कर्ण-मल ।

मुहा०—१ ठेठी आणी—ध्यान न देना, लापरवाही करना.

२ ठेठी काढणी—राह पर लाना, सीधा करना, दण्ड देना ।

ठेठी-काढणियौ-स०पु०यौ०—धातु का बना छोटी कलछीनुमा एक उपकरण जिससे कान का मैल निकाला जाता है।

वि०—दण्ड देने वाला, राह पर लाने वाला, सीधा करने वाला।

ठेडी—देखो 'ठाडी' २ (रू.भे) (शेखावाटी)

ठेप-स०स्त्री०—टक्कर, आघात । उ०—सो किण भांति तळाव जाणै दूसरी मानसरोवर राती सी एके रडि रै मांथै पाडरी नीर पवन री मारिओ कराडै फीण आछटती ठेपां खाइनै रहिओ छै ।—रा सा स

क्रि०प्र०—खाणी, देणी, लगाणी ।

रू०भे०—ठेव, ठेव ।

ठेपाह-स०स्त्री०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष (व स)

ठेब—देखो 'ठेप' (रू भे) उ०—वरखा रितु लागी, विरहणी जागी, आभा झरहरै, बीजा आवास करै, नदी ठेबा खावै, समुद्रे न समावै। —रा सा स

ठेवौ देखो 'थेवौ' (रू भे)

ठेयौ—१ देखो 'ठायौ' (रू भे) २ देखो 'ठियौ' (रू भे)

ठेळ—देखो 'ठेळौ' (मह, रू.भे.)

वि०—निर्भय, निडर, प्रभावशाली ।

मुहा०—ठेळ मारणी—डीग मारना, गप्प लगाना ।

ठेल—धक्का, टक्कर, आघात । उ०—समासम मेल घमाघम सेल । घमातम आतम ठेल ठठेल।—रा रू

ठेलण-स०स्त्री०—बैलगाडी मे अग्र भाग के नीचे लगाया जाने वाला एक डडा जो बैलों को चक्के से दूर रखता है।

ठेलणौ, ठेलबौ-क्रि०स० [सं० स्थलयति, प्रा० ठलइ] १ पीछे हटाना, दूर करना, खदेडना, धकेलना । उ०—१ जिके जिके ही अहकार रै उफाण प्राकार रै कगुरै कगुरै होय गढ रा सिपाहा पाछा ठेलिया। —व भा

उ०—२ घिर लोक चहू वळ भाग गह्यौ । रिण चौक कमधज ठेल रह्यौ ।—पा प्र

उ०—३ भीज रीझ झेली भली, पात्रस पाणी पैल । मतवाळा मनवार री, छाक म ठेली छैल ।—बा दा.

२ प्रहार से दूर करना, धक्का लगाना, ठेलना । उ०—म ठेल म ठेल पगा सू मूझ । त्रिविक्रम राय दीनानाथ तूझ ।—ह र

३ टालना, दूर करना, आगे बढाना । उ०—ताहरा ओ लगन ठेलि अर कहाडियौ राजाजी नूं अर राणीजी नू—कुवरजी री कारी अजै रूडा साखा री नही हुई ।—द.वि.

४ झोकना, डालना । उ०—खेल वीरता खेलणा, अस ठेलणा अपल्ल । तो हुवै मल जास पख, झुकतौ लै नभ झल्ल । —जैतदान बारहठ

५ व्यतीत करना, गुजारना । उ०—करहा, इण कुळि गामडइ, किहा स नागरवेलि । करि कइरां ही पारणउ, अइ दिन यही ठेलि । —ढो.मा.

६ पराजित करना, भगाना, खदेडना । उ०—मोखावी मडोवर किना मेछ गहि, पीड गाहियो वडै पजाय । जिण पतसाह ठेलिया जैतै, जैत स किम ठेलता जाय ।— सूजो नगराजोत

७ उंडेलना, डालना । ज्यू—विसनोइया रै ब्याव में गिया जिको थाळिया मे अनाप-सनाप घी ठेल दियौ ।

८ मिटाना, नाश करना । उ०—सबर रूपी करौ ढाकणौ, ग्यान रूपियौ तेल । याठू ही करम परजाळ नै, दी रै अधारौ ठेल । —जयवाणी

क्रि०अ०—भाग जाना, दौड जाना ।

ठेलणहार, हारौ (हारी), ठेलणियौ—वि० ।

ठेलवाड़णौ, ठेलवाडबौ, ठेलवाणौ, ठेलवाबौ, ठेलवावणौ, ठेलवावबौ, ठेलाड़णौ, ठेलाडबौ ठेलाणौ, ठेलाबौ, ठेलावणौ, ठेलावबौ—प्रे०रू०

ठेलिओडौ, ठेलियोडौ, ठेल्योडौ—भू०का०कृ० ।

ठेलीजणौ, ठेलीजबौ—कर्म वा० ।

ठिलणौ, ठिलबौ—अक० रू० ।

ठेलमठेल, ठेलाठेल-स०स्त्री०—१ बहुत से आदमियो का ऐसा समूह या भीड जिसमे लोगो के शरीर एक दूसरे से रगड खाते हो । धक्कमधक्का, रेलापेल ।

२ बहुत अधिक आदमियो का परस्पर धक्का देने का काम । धक्कापेल ।

वि०—बहुत अधिक, परिपूर्ण, पूर्ण । उ०—१ मोटी मोटी छाटा ओसरचो, अे बदळी, ओसरचो अे बदळी, कोई जोडा ठेलमठेल, सुरगी रुत आयी म्हारै देस, भली रुत आई म्हारै देस ।—लो गी

उ०—२ खेळ'र कोठा लाडा ठेलाठेल भराउ राज, ऐसा कामण म्हारा राईवर नै सोहै राज ।—लो गी

ठेळियौ—देखो ठेळौ' (अल्पा, रू भे)

ठेलियोडौ-भू०का०कृ०—१ पीछे हटाया हुआ, दूर किया हुआ, खदेडा हुआ, धकेला हुआ २ प्रहार से दूर किया हुआ, धक्का लगाया हुआ, ठेला हुआ ३ टाला हुआ, दूर किया हुआ, आगे बढ़ा हुआ ४ झोका हुआ, डाला हुआ ५ व्यतीत किया हुआ, गुजारा हुआ ६ पराजित किया हुआ, भगाया हुआ, खदेडा हुआ. ७ उंडेला हुआ, डाला हुआ ।

(स्त्री० ठेलियोड़ी)
ठेळी-स०स्त्री०—देखो 'ठेळो' (अल्पा, रू भे)
ठेळो-स०पु०—१ कूड़े-करकट का ढेर।
क्रि०प्र०—करणो, देणो।
२ घास-फूस का ढेर।
क्रि०प्र०—करणो, देणो, लगाणो।
मि०—कीदू।
३ छोटी लाठी, डंडा।
अल्पा०—ठेळी।
४ डंडे से गिल्ली पर प्रहार करने की क्रिया।
क्रि०प्र०—ठोकणो, देणो, मारणो, लगाणो।
मुहा०—ठेळा मारणो—देखो 'ठेळ मारणो'।
अल्पा०—ठेळियो।
मह०—ठेळ।
ठेलो-स०पु०—१ आदमी द्वारा ठेल कर चलाने की एक प्रकार की सामानवाहक गाडी २ एक बैल द्वारा खींची जाने वाली गाडी।
३ झोका। उ०—हींदोळि हरखइ चढ़ी, हीचण लागी हेलि। उल्लाह अवर भवनि, माधव दीठइ ठेलि।—मा का प्र.
ठेव—१ देखो 'ठेप' (रू भे) २ देखो 'टेव' (रू भे.)
ठेवको—देखो 'टेवको' (रू.भे)
ठेस-स०स्त्री०—चोट, आघात, धक्का। उ०—देखो लागै नहिं ठेस, वीणा टूट नहिं जाय। होळै होळै रै वावरिया, झोलो सह्यो न जाय।—चेत मानखा
क्रि०प्र०—देणी, लगणी, लगाणी।
ठेसण—देखो 'टेसण' (रू भे) उ०—अे भोळी! थनै इतरोई ठा' कोयनी। वडी ठेसण ईज वो गाडी वदळणी पडै।—रातवासो
ठेह—देखो 'ठेस' (रू भे) उ०—पागै छोटो पाक छै, लागै ठेह लगीस। मार्चे जण सू मालकी, आर्चे वाजै ईस।
—दरजी मयाराम री वात
ठेहण—देखो 'टेसण' (रू भे)
ठैठाणो, ठैठावो—देखो 'ठठाणो, ठठावो' (२) (रू भे.)
ज्यू—कोठ ठैठा नै कठी जावो।
ठैठायोडो—देखो 'ठठायोडो' (२) (रू भे)
(स्त्री० ठैठायोडी)
ठैं-स०पु०—१ शास्त्र २ आकाश ३ शिष्य (एका)
वि०—मूर्ख (एका.)
ठैं'-स०पु०—शब्द, आवाज, ध्वनि। उ०—अवळी गत ससार नी, धन लिछमी रै काज। हिचकारी करता थका, ठैं ठैं फूटै छाज।
—जयवाणी
रू०भे०—ठह।
ठैको, ठैंअको-स०पु०—१ किसी वस्तु का दूसरी पर आघात करने से उत्पन्न शब्द, आवाज, ध्वनि।
क्रि०प्र०—करणो, होणो।
२ डंके से नगारे पर चोट लगाने की क्रिया।
क्रि०प्र०—देणो, लगाणो।
३ हलका प्रहार, चोट। उ०—ईसरर तो नाक री डांडी रै ऊपर बैठो से मो अणहूती ठुतांई भट ठैको देदे।—अज्ञात
क्रि०प्र०—देणो, लगाणो।
रू०भे०—ठहको।
ठैं'रणो, ठैं'रवो—देखो 'ठहरणो, ठहरवो' (रू भे.)
उ०—हे मळली पेग देस पार बैरिया रा फौजा एक फिण ही पछो आगै नही ठैं'रिया सो भाग जायं है।—पी स टी
ठैराण—देखो 'ठहराव' (रू भे)
ठैराई—देखो 'ठहराई' (रू भे.)
ठैराणो, ठैरावो—देखो 'ठहराणो, ठहरावो' (रू भे)
ठैरायोडो—देखो 'ठहरायोड़ो' (रू भे)
(स्त्री० ठैं'रायोडी)
ठैं'राव—देखो 'ठहराव' (रू भे)
ठैं'रियोडो—देखो 'ठहरियोडो' (रू.भे)
(स्त्री० ठैरियोडी)
ठैहराणो, ठैहरावो—देखो 'ठहराणो, ठहरावो' (रू भे)
ठैहरायोडो—देखो 'ठैहरायोडो' (रू भे)
(स्त्री० ठैहरायोडी)
ठो-स०पु०—१ रक्त २ शिर, मस्तक।
स०स्त्री०—३ पीड़ा ४ मूर्खता, गँवारपन (एका.)
ठोकणो, ठोकवो-क्रि०स०—१ प्रहार करना, चोट मारना, पीटना।
मुहा०—ठोक-ठोक नै लेणो—मार-मार कर लेना अर्थात् किसी वस्तु को जबरन हासिल करना।
२ (दण्ड देने हेतु) लात, घूसे, डंडे आदि से मारना, पीटना.
३ ऊपर से मार कर भीतर पैठाना, ऊपर से चोट लगा कर धँसाना, गाडना। ज्यू—खीलिया ठोक नै तबू ताण दिया।
४ हाथ से प्रहार कर के ध्वनि करना।
मुहा०—ठोक बजाय नै लेणो—डंके की चोट पर हासिल करना, झगड कर प्राप्त करना, परीक्षा या जाच कर के लेना ५ जडना, लगाना, बाधना, बन्द करना। ज्यू—स'वार का किवाड ठोक नै बैठा हो हमै तो वा'र नीकळो नीतर हूं वा'रै ताळो ठोक देस्यू।
६ किसी वस्तु से (डंडे या हाथ से) प्रहार कर के 'खट-खट' की ध्वनि करना, खट-खटाना ७ सभोग करना, मैथुन करना.
८ आहार करना, खाना। उ०—वा'रै मास साड टोरडा, ठोक धपटवो धापियै। अेडा-मेडा आडो र, भेड खजानो खापियै।—दसदेव
मुहा०—१ माल ठोकणो—द्रव्य हडपना, किसी का धन गायब कर देना, पकवान खाना।

२ रुपिया ठोकणा—रिश्वत लेना, रुपए हड़पना।

ठोकणहार, (ठूकणहार), हारो (हारी), ठोकणियो (ठुकणियो)—वि०।

ठोकवाडणो, ठोकवाडवो, (ठुकवाडणो, ठुकवाडवो), ठोकवावणो, ठोकवाववो (ठुकवावणो, ठुकवाववो), ठोकाडणो, ठोकाड़वो, (ठुकाडणो, ठुकाडवो), ठोकाणो, ठोकावो (ठुकाणो, ठुकावो), ठोकावणो, ठोकाववो (ठुकावणो, ठुकाववो)—प्रे०रू०।

ठोकिओडो, ठोकियोडो, ठोक्योडो—भू०का०कृ०।

ठोकीजणो, ठोकीजवो (ठुकीजणो, ठुकीजवो)—कर्म वा०।

ठुकणो, ठुकवो—अक० रू०।

ठोकर-स०स्त्री०—१ पैर मे किसी कडी वस्तु के टकराने से लगने वाली चोट।

क्रि०प्र०—आणी, लाणी, लागणी।

मुहा०—१ ठोकर उठाणी—दु:ख सहन करना, हानि उठाना।

२ ठोकर खाणी—रास्ते मे पडी हुई किसी वस्तु या रुकावट के कारण पैर मे चोट लगना, धोखा खाना, हानि सहन करना, नुकसान उठाना ३ ठोकर लगणी (लागणी)—देखो 'ठोकर खाणी'।

४ ठोकरा खाणी—प्रयोजन-सिद्धि या जीविका आदि के लिए चारो ओर घूमना, अनुभव प्राप्त करना ५ ठोकरा खातो फिरणो—इधर-उधर मारा मारा फिरना, हीन दशा मे भटकना, दुर्दशाग्रस्त हो कर घूमना, कष्ट सहना, दुर्गति सहना।

२ रास्ते मे पटने वाला उभरा हुआ स्थान, उभरा पत्थर या ककड जिसमे पैर रुक कर चोट खाता है ३ किसी गाडी आदि को रोकने के लिए पहियो के पास लगाया जाने वाला पत्थर या उपकरण।

क्रि०प्र०—लगाणी।

४ वह तेज प्रहार जो पैर के अगले भाग अथवा जूते के अगले भाग से मारा जाय, पैर के अगले भाग से लगाया हुआ जोर का धक्का।

क्रि०प्र०—देणी, मारणी, लगाणी।

मुहा०—१ ठोकर जडणी—देखो 'ठोकर देणी'।

२ ठोकर देणी—पजे से प्रहार करना, तिरस्कार करना, अवज्ञा करना, ठुकराना. ३ ठोकर मारणी—देखो 'ठोकर देणी'।

४ ठोकर लगाणी—देखो 'ठोकर देणी' ५ ठोकरा में पडियो रैणो—अपमानित हो कर रहना, बेइज्जत हो कर दिन काटना।

५ तेज प्रहार, चोट, धक्का ६ जूते का अग्र भाग. ७ बैल द्वारा खीचा जाने वाला छोटा ठेला जिसमे एक सवारी बैठती हो ८ कुश्ती का विशेष पेच ९ आभूषण विशेष (सेखावाटी)

रू०भे०—ठोहर।

ठोकाक-वि०—खाने वाला, इच्छुक।

कहा०—डळी रा ठोकाक—कुछ (द्रव्य या खाने की वस्तु आदि) प्राप्त करने या खाने का इच्छुक।

ठोकाबाटी-स०स्त्री०—सभोग, मैथुन।

क्रि०प्र०—करणी, कराणी।

ठोकियोडो-भू०का०कृ०—१ प्रहार किया हुआ, चोट मारा हुआ, पीटा हुआ. २ (दण्ड देने हेतु) लात, घूसे, डडे आदि से मारा हुआ, पीटा हुआ ३ ऊपर से मार कर भीतर पैठाया हुआ, ऊपर से चोट लगा कर भीतर धँसाया हुआ, गाडा हुआ. ४ हाथ से प्रहार कर के ध्वनि किया हुआ. ५ जडा हुआ, लगाया हुआ, बाधा हुआ, बन्द किया हुआ. ६ किसी वस्तु से (डडे या हाथ) 'खट खट' की ध्वनि किया हुआ, खटखटाया हुआ ७ सभोग किया हुआ, मैथुन किया हुआ. ८ आहार किया हुआ, खाया हुआ।

(स्त्री० ठोकियोडी)

ठोट, ठोठ-वि०—१ मूर्ख, गँवार। उ०—दादू आदर भाव का, मीठा लागै मोठ। विण आदर व्यजन बुरा, जीमण वाळा ठोठ।

—दादू वाणी

२ अपठित, अशिक्षित. ३ अनभिज्ञ, अज्ञ। उ०—ठग कामेती ठोठ गुर, चुगल न कीजै सैण। चोर न कीजै पाहरू, ब्रहसपती रा वैण।—वा दा

ठोड—देखो 'ठौड' (रू.भे.) उ०—तहा ए दून्या वरग विवर कहुता भुंहिरा निपात ठोड तहा जाइ रहवासि कीधा।—वेलि.

ठोड-स०पु०—बैलगाडी का अग्र भाग।

ठोडी-स०स्त्री० [स० तुड] चेहरे मे होठ के नीचे का भाग, चिबुक, ठोडी, ठुड्ढी। उ०—खोळा टकियोडा गळ मे खूगाळी। जळ जुत ठोडी पर टिमकी जधाळी।—ऊ का

२ पशुओ के मुँह का अग्र भाग। उ०—ठोडी आली ठोड मे, गोडी सामी पाळ। अब किण विध पाछो फिरै, किण विध साधै छाळ।

—लू

३ साँप का मुँह। उ०—हाथी भी मिल्या घोडा भी मिल्या, रथ पायक नी कोडी रे। पिण परवस पडिया जोर न लागै, जिमी दवी साप नी ठोडी रे।—जयवाणी

ठोबरो-स०पु०—फूटा हुआ बर्तन।

ठोर-स०स्त्री०—१ प्रहार करने की क्रिया, प्रहार। उ०—ठहक्कै कडी ककटा ठोर ठाई। डहक्कै भडा वकडा घोर डाई।—व.भा

२ ध्वनि, आवाज ३ धाक, रौब, आतक।

क्रि०प्र०—जमाणी, पटकणी।

४ देखो 'ठौड' (रू भे)

स०पु०—५ एक प्रकार का मिष्ठान्न। उ०—बामण मागै सीधो नै बामणी मागै ठोर। वाइसा री वीरो म्हारी नथडी रो चोर।

—लो गी.

वि०—स्वस्थ, तन्दुरुस्त।

रू०भे०—ठौर।

यौ०—ठोरठोरा, ठोरमठोर, ठोर-ठोरा।

मह०—ठोरड।

ठोरड—देखो 'ठोर' (मह , रू भे.)

ठोरठोरा—देखो 'ठोरमठोर' (रू भे)

ठोरणौ, ठोरबौ—क्रि०स०—१ मारना, पीटना । उ०—डारण भुज डडाह, ठावै मोकै ठोरिया । झगमग नग झडाह, पर खडा पळकै 'पता' ।—जुगतीदान देथौ

२ ऊपर से चोट मार कर धँसाना, गाडना ।

३ प्रहार करना, चोट मारना । उ०—जागिया ठोर सिंधू गावै जागडा, लडण रण खागडा वीर हूलकै । भेर तण जठै पीघा अमल भागडा, जो मरद रागडापणौ झळकै ।

—माधोसिंघ सक्तावत विजयपुर री गीत

ठोरणहार, हारौ (हारी), ठोरणियौ—वि० ।

ठोरवाडणौ, ठोरवाडबौ, ठोरवाणौ, ठोरवाबौ, ठोरवावणौ, ठोरवावबौ, ठोराडणौ, ठोराडबौ, ठोराणौ, ठोराबौ, ठोरावणौ, ठोरावबौ—प्रे०रू० ।

ठोरिग्रोडौ, ठोरियोडौ, ठोरयोडौ—भू०का०कृ० ।

ठोरीजणौ, ठोरीजबौ—कर्म वा० ।

ठुरणौ, ठुरबौ—अक०रू० ।

ठोर-पाखर—वि०—१ कटिबद्ध, तैयार. २ पूर्ण स्वस्थ, मजबूत ।

ठोरमठोर—वि०—हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ, मजबूत । उ०—म्यानी तन गोरा, ठोरम-ठोरा, चादर मे चिळकदा है । है मदवा हाथी साथण साथी, खाती चाल चलदा है ।—ऊ का.

रू०भे०—ठोर-ठोरा, ठौर-ठौरा ।

ठोरियोडौ—भू०का०कृ०—१ मारा हुआ, पीटा हुआ २ ऊपर चोट मार कर धँसाया हुआ, ठोका हुआ. ३ प्रहार किया हुआ, चोट मारा हुआ ।

(स्त्री० ठोरियोडी)

ठोरियौ—स०पु० (बहु व० ठोरिया) स्त्रियो या पुरुषो के कान का आभूषण विशेष ।

ठोरौ—स०पु०—लाठी, लकडी (शेखावाटी)

ठोळी—स०स्त्री०—हँसी-मजाक । उ०—कुवरसी आप अर बीठू पाखती एकला ठोळिया हसिया करता वहै छै ।—कुवरसी साखला री वारता

क्रि०प्र०—करणी, होणी ।

ठोलौ—स०पु०—१ मुट्ठी बद कर के मध्यमा या तर्जनी अगुली को इस स्थिति मे रखना जिससे उसका पीछे का जोड दूसरी अगुलियो से कुछ आगे निकल आये या ऊपर उठ जाय । यह उठा हुआ भाग या इससे किया जाने वाला प्रहार । उ०—लूण चबीणौ गूम गयौ, लूम्या री डोडी, नणदल ठोला देय, वारी ओ लूम्या री डोडी ।

—लो गी

क्रि०प्र०—ठोकणौ, देणौ, मारणौ, मेलणौ ।

मुहा०—१ ठोला खमणा, ठोला खाणा—मातहत रहना, अधिकार मे रहना, ताने सहन करना ।

२ ठोला देणा—ताने मारना, व्यग्य कसना ।

रू०भे०—ठहोलौ, ठोहोलौ ।

ठोवडी—देखो 'ठोड' (अल्पा., रू भे) उ०—सिंधु परद सत जोअणे, खिविया वीजळियाह । सुरहउ लोद्र महक्किया, भीनी ठोवडियाह ।

—ढो.मा.

ठोस—वि०—१ जिसके अणु आपस मे सटे हुए हो, जो भीतर से खाली या खोखला न हो, जो कठोर हो २ मजबूत, दृढ़ ।

ठोसणौ, ठोसबौ—देखो 'ठूसणौ, ठूसबौ' (रू भे.) उ०—करकरीय ठोसी वाकुडी वीटळी विविध प्रकारि । मुद्रडी हीरे जडी नई, कनक ककण सार ।—रुकमणी मगळ

ठोसियोडौ—देखो 'ठूसियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० ठोसियोडी)

ठोसौ—स०पु०—१ मुट्ठी बद कर के मध्यमा या तर्जनी अंगुली को इस स्थिति मे रखना जिससे उसके पीछे का जोड उभर आए । यह उभरा हुआ जोड या इस उभरे हुए जोड से किया जाने वाला प्रहार ।

मुहा०—१ ठोसा खमणा, ठोसा खाणा—देखो 'ठोला खमणा, ठोला खाणा' २ ठोसा देणा—देखो 'ठोला देणा' ।

२ मुट्ठी के पीछे के तथा अगुलियो के उभरे हुए जोड ।

ठोहोलौ—देखो 'ठोलौ' (रू भे)

ठौ—स०पु०—१ गौतम ऋषि २ समुद्र ३ कुल-धर्म ।

स०स्त्री०—४ तरग, लहर ५ मर्यादा (एका)

ठौड—स०स्त्री० [स० स्थान] स्थान, जगह । उ०—१ अर धनवत मनुस्य था त्या प्रिथी का पुड विवरण करि ऊडी ठौडा सवारि ।—वेलि टी

उ०—२ आवा री आवली कर नै बीजै दिन एक चेलौ आसण री ठौड गाडियौ नै बदवा दीनी, कह्यौ माहरी ठौड उपाडी छै त्यौं नाथ करै तौ थाहरी ठौड उपडज्यौ ।—नैणसी

मुहा०—१ ठौड-कुठौड—अनुपयुक्त स्थान पर, बुरी जगह, अच्छी जगह, बुरी जगह २ ठौड ठौड सू तोड देणौ—मार मार कर हड्डी हड्डी तोड देना, बहुत ज्यादा मारना ३ ठौड राखणौ—मार डालना, काम तमाम कर देना ४ ठौड रै'णौ—मारा जाना, काम आना, जहा का तहा रह जाना, पडा रहना, मर जाना ।

रू०भे०—ठोड, ठोर, ठौर ।

यौ०—ठौड-ठिकाणौ, ठौडौठौड ।

अल्पा०—ठोवडी ।

ठौडौ-ठौड—क्रि०वि०—उचित स्थान पर, उपयुक्त स्थान पर, यथा स्थान पर ।

ठौर—१ देखो 'ठोर' (रू भे) उ०—हाथिया रा पाखर जूडै, कळहळीया केकाण बै । हडवड आग हीसता, वन दीस आयै दौर बै । एवाळीयो मारग चलै, वाजै नगारा ठौर बै ।—रीसाळू री वारता.

२ देखो 'ठौड' (रू भे) उ०—साधु सगति अतर पडै, तौ भागेग किस ठौर । प्रेम भक्ति भावै नही, यहू मन का मत और ।

—दादू बाणी

ठौर-ठौरा—देखो 'ठोर-ठोरा' (रू भे)

ठौळ—स०स्त्री०—हँसी-मजाक, दिल्लगी ।

क्रि०प्र०—करणी, होणी ।

ठौहर—देखो 'ठोकर' (रू भे)

ड

ड—संस्कृत, राजस्थानी व देवनागरी वर्णमाला मे तेरहवा व्यञ्जन जो टवर्ग का तीसरा वर्ण है। यह मूर्धन्य-स्पर्श व्यञ्जन है। इसके उच्चारण मे जिह्वा का अग्र भाग किञ्चित मुड कर कठोर तालु को स्पर्श करता है। यह सघोष-अल्पप्राण है।

ड-सं०पु०—१ दात २ दूध. ३ जल. ४ मृत्यु।
सं०स्त्री०—५ आंख ६ चमेली (एका)

डक-सं०पु० [सं० दश] १ विच्छू, भिड के पूंछ के पीछे का व मधुमक्खी व भौंरे के मुंह का जहरीला काटा। उ०—१ दीजै तिहा डक न दड न दीजै, ग्रहणि सवरि तरु गान गर। करग्राही परवरिया मधुकर, कुसुम गध मकरद कर।—वेलि

उ०—२ कडपदार आटाळो साफो अर विच्छू रा डक व्है जिसी मूछा लिया वो हरदम करडो लट्ठ बण्यो रैवतो।—रातवासो
क्रि०प्र०—मारणो, लगाणो, लागणो।
मुहा०—डक लागणो—१ विच्छू, भौंरे आदि का डक मारना २ सर्प का काटना।

२ नगाडा। उ०—नवकोट सुभट कुळवट निहार, सग्राम अडप नृप छळ सभार। हुई वीर सधीरा वीरहवक, हर सकति डक डमरू डहक्क।—रा.रू

३ नगाडे की ध्वनि। उ०— सगा उलघा कर खिवै, चीत असगा चाय। वागा सिंधू वीर डक, लग्गा रावत आय।—रा रू.

४ देखो 'डाको' (२) (मह रूभे) उ०—विकट तोपा कठठ डक अवटा वगा, मह रजी आगळै भाण ढळै मगा। लाखा भाखा विचित्र आय दोळा लगा। जाय छै खग्रीभ्रम राख दूजा 'जगा'।
—नीमाज ठाकुर अमरसिंघ रो गीत

५ नखक्षत। उ०—१ चग राता चोळ, काजळ छूया कपोळ। छातिया ऊपर नखा रा डक किना हियै उघडिया भाला रा अक।
—र हमीर

उ०—२ नद री नारी सू दायवै नित्तरा, अक पयोधरा डक दीयो धरा। मात वैठी अठै लाज आवै मुना, चोहटै चाल ज्यु कहूं यै राचना।—रुखमणी हरण

६ डक मारा हुआ स्थान (विच्छू, साप आदि का) ७ सर्प का विषदत। उ०—अक छोड प्रोहित उठ्यो, प्यारी रही प्रजक। हीरा मुरछित पर रही, डसी भुजगम डक।—वगसीराम प्रोहित री वात

८ साप के काटने की क्रिया, दशन। उ०—मारवणी नै सचेत करि सदासिव पारवतीजी अलोप होय गया। मारवणी ढोलाजी नै पूछण लागी—लकडा भेळा करि चहि क्यू कीनी ? तद ढोलोजी वोलिया—मारवणी, थे निरजीव हुय गया था, पीवण साप रा डक सू।—ढो मा

९ अनाज, लकडी आदि को खोखला कर देने वाला कीडा विशेष, घुन।
मुहा०—डक लागणो—अनाज, लकडी आदि का कीडा लग कर खोखला हो जाना। मनुष्य का किसी रोग विशेष के कारण दिन-प्रति दिन दुर्बल होना।

१० कलम की जीभ ११ राजस्थान के प्रसिद्ध ज्योतिषी का नाम जिसने राजस्थानी मे वर्षा विज्ञान का 'डक भड्डळी पुराण' नामक ग्रथ रचा है १२ डक ज्योतिष से चलने वाला वंश या इस वश का व्यक्ति १३ देखो 'डकी' (१) (रू भे) वि०—अभिमुख ?
उ०—तू पूरण रस प्रौडडा, हु रसि हीणी रकि। स्वामि सुधा भरि हु पिऊ, डगि-डगि ताहरइ डकि।—मा.का.प्र

डकणो, डकवो-क्रि०स०अ०—१ साप, विच्छू, वरं, मधुमक्खी, भौंरा आदि विषैले जीवों का दशन करना, डक मारना।
उ०—फुण कीधा खाग डकतो फोजा, विस घोळतो गुसै वरियाम। काळो नाग छेडियो किलमा, जाणिया मत्र विना 'जगराम'।
—नीवाज ठाकुर जगरामसिंघजी रो गीत

२ अनाज, लकडी आदि मे घुन लगना. ३ नगाडा वजना।
डकणहार, हारो (हारी), डकणियो—वि०।
डकवाडणो, डकवाडवो, डकवाणो, डकवावो, डकवावणो, डकवाववो, डकाडणो, डकाडवो, डकाणो, डकावो, डकावणो, डकाववो—प्रे०रू०
डकिओडो, डकियोडो, डक्योडो—भू०का०कृ०।
डकीजणो, डकीजवो—कर्म वा०, भाव वा०।

डकदार-वि०—जिसके डक हो।

डकरणो, डकरवो-क्रि०स०अ०—१ ध्वस करना, नाश करना।
२ क्रोध प्रकट करना, क्रुद्ध होना।

डकरियोडो—भू०का०कृ०—१ ध्वस किया हुआ, नाश किया हुआ.
२ क्रोधित, क्रुद्ध।
(स्त्री० डकरियोडी)

डका री पछेवडी—सं०स्त्री०यौ०—एक प्रकार का वस्त्र जिसे प्रतिष्ठावान व्यक्ति अपनी पगडी के ऊपर बांधते थे (मेवाड)

डकि-वि०—१ सहारक, विध्नसक। उ०—डकि निसीथ रुख चढि डाकी अतर दुरग गयो एकाकी।—व भा
२ देखो 'डकी' (रू भे.)

डकिणी—देखो 'डाकण' (रू भे)

डकियोडो—भू०का०कृ०—१ (विच्छू, साप, वरं, मधुमक्खी, भौंरा आदि द्वारा) दशन किया हुआ, डक मारा हुआ २ घुन लगा हुआ, खोखला किया हुआ (अनाज, लकडी आदि) ३ ध्वनित (नगाडा)
(स्त्री० डकियोडी)

डकी—सं०पु०—१ छोटा मच्छर। उ०—रात्रि प्रचुर आरोग्य परिमळ, सोया पुळ सू पावणी। साप सळींटा विच्छू काटा, माछर डकी न आवणी।—दसदेव
रू०भे०—डक।

२ वीर, योद्धा।

वि०—सहारक, विध्वसक।

रू०भे०—डकि।

डकीलौ-वि०—जिसके डक हो।

डकोळी-स०स्त्री०—१ ज्वार, वाजरी ग्रादि ग्रनाजो के पौधो का सूखा व पोला डंठल।

डको-स०पु० [स० ढक्का] १ नगाडा। उ०—लोक जठै रको नही, नह सको पर थाट। सोढ़ा जस डको घुरै, पाघर वको घाट।
—वा दा.

क्रि०प्र०—घुरणी, वाजणौ।

मुहा०—१ डका री चोट कै'णी—सब के सामने, खुल्लमखुल्ला कहना, डका वजा कर, सवको सुना कर कहना २ डका री चोट सू—शक्ति से किसी कार्य को करना, जबरदस्ती करना.

३ डको वजाणौ (घुराणौ)—घोपित करना, हल्ला कर के सब को सुनाना, मशहूर करना, सब पर प्रकट करना ४ डको वाजणौ (घुरणौ)—किसी का राज्य या शासन होना, किसी का प्रभाव होना।

रू०भे०—डाको।

२ देखो 'डाको' (२) (रू भे) उ०—दुरघर डका दे वका द्रढ़ धाया। उठिया उद्योगी उद्दिम उमगाया।—ऊ का

डक्कणी—देखो 'डाकण' (रू भे) उ०—हरामखोर चोर को कुहक्क दे हरावणी। कराळ कठ ककनीय डक्कणी डरावणी।—ऊ का.

डग-स०स्त्री०—१ दोहनी। उ०—करियै न पिसुन भायो कवहि, कथन खलक यौं करि कहै। 'राजेस' राण इहि मत तैं, दूध डग दोहूं रहै।—राजविलास

२ देखो 'डाग' (मह, रू भे)

डगर—देखो 'डागर' (रू भे)

डगी-स०पु०—राठोड वश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति
(वा दा ख्यात)

डटकडो-स०पु०—सोने या लाख का वना भुजा पर धारण किया जाने वाला एक ग्राभूषण, टड्डा।

डठळ-स०पु०—छोटे पौधो की टहनी या शाखा।

रू०भे०—डाठळ।

डड-स०पु० [स० दण्ड] १ किसी ग्रपराध के वदले मे ग्रपराधी को पहुँचाई जाने वाली पीडा।

क्रि०प्र०—दैणौ, भुगतणौ।

२ किसी भूल-चूक ग्रथवा ग्रपराध के प्रतिकार मे लिया जाने वाला द्रव्य, ग्रर्थ-दण्ड, जुर्माना।

क्रि०प्र०—दैणौ, भरणौ, भुगतणौ, भोगणौ, लगाणौ, लैणौ।

३ देखो 'डडो' (मह, रू भे) उ०—मखो ग्रमीणो साहिवो, सूर घोर समरत्थ। जुव मे वामण डड ज्यू, हेली वाधै हत्थ।—वा दा.

४ नगाडा वजाने का डडा। उ०—रण करि फतै ग्रवक डड रोड़ै। जोए कुवर सीस धड जोड़ै।—सू प्र

५ एक प्रकार का व्यायाम जो हाथो व पैरो के पजो के बल से जमीन पर ग्रौंधे हो कर किया जाता है। उ०—डड सहत करि दुरत रवद काचा पळ रोळै। मण वारह मुदगरा ग्रणा जेही ऊतोळै।
—सू प्र.

क्रि०प्र०—काडणा, निकाळणा।

यौ०—डड-पेल, डड-बैठक।

६ डडे के ग्राकार की सेना की एक स्थिति।

यौ०—डड-व्यूह।

७ देखो 'डडोत' (रू भे) ८ डडे के ग्राकार की कोई वस्तु

९ वह डडा जिस पर ध्वजा ग्राधी जाती है।

यौ०—ध्वज-डडा।

१० तराजू की डाडी।

यौ०—तुला-डड।

११ इक्ष्वाकु राजा के सौ पुत्रो मे से एक जिनके नाम के कारण विध्याचल से लेकर गोदावरी नदी के किनारे तक के वन का दडकारण्य नाम पडा १२ चौवीस मिनट का समय या साठ पल का काल।

डडक—देखो 'दडक' (रू भे)

डडकार, डडकारन-स०पु० [स० दडकारण्य] वह प्राचीन वन जो विंध्य पर्वत से ले कर गोदावरी नदी के किनारे तक फैला हुग्रा है।

डडणौ, डडवौ-क्रि०स०—१ किसी ग्रपराध या भूल-चूक के प्रतिकार मे पीडा पहुँचाना, सजा देना। उ०—सीरोही धर सहर, घोम ग्ररवद घुजाया। दळे भाण देवडा लूटि, डडि पाय लगाया।—सू.प्र

२ ग्रपराध या भूल-चूक के वदले मे द्रव्य लेना, जुरमाना लेना।

उ०—खाग झड राण खुरसाण दळ जिण खडे। डीडवाणा सहित सहर साभरि डडे।—सू प्र.

डडणहार, हारौ (हारी), डडणियौ—वि०।

डडवाडणौ, डडवाडवौ, डडवाणौ, डडवावौ, डडवावणौ, डंडवाववौ, डडाडणौ, डडाडवौ, डडाणौ, डडावौ, डडावणौ, डडाववौ—प्रे०रू०।

डडिग्रोडो, डडियोडो, डडयोडो—भू०का०कृ०।

डडीजणौ, डडीजवौ—कर्म वा०।

डाडणौ, डाडवौ—रू०भे०।

डडभ्रत-स०पु० [स० दडभृत्] १ यमराज (ग्र मा, ना मा)

२ कुम्हार, कुभकार।

वि०—डडा चलाने या घुमाने वाला, डडा रखने वाला।

डडवत—देखो 'डडोत' (रू भे) उ०—व्रिजराज जुग्रौ व्रिजवासिया, मोहण रा निरखो मता। कमाळी व्रह्म डडवत करै, देखण ग्राया देवता।—पी ग्र

डडव्यूह-स०पु०यौ० [स० दण्डव्यूह] सेना की डडे के ग्राकार की स्थिति विशेष।

वि०वि०—अग्नि पुराण और मनुस्मृति के अनुसार सेना के इस व्यूह मे सब से आगे बलाध्यक्ष, बीच मे राजा, पीछे सेनापति, दोनो ओर हाथी, हाथियो के पास मे घोडे और घोडो की बगल मे पैदल सिपाही रहते थे।

डडव्रत—देखो 'डडोत' (रू भे)

डडाकार-वि०—१ निर्जन, शून्य। २ दण्ड के आकार का।
उ०—रोही तो घणी डडाकार।—जयवाणी

डडाडणौ, डडाडबौ—देखो 'डडाणौ, डडावौ' (रू भे)

डडाडियोडौ—देखो 'डडायोडौ' (रू.भे)
(स्त्री० डडाडियोडी)

डडाणौ, डडावौ-क्रि०स० ['डंडणौ' क्रिया का प्रे०रू०] दडित करवाना, दूसरे से दड दिलवाना।
डडाडणौ, डडाडबौ, डंडावणौ, डडाववौ—रू०भे०।

डडायोडौ-भू०का०कृ०—दडित करवाया हुआ, दूसरे से दड दिलवाया हुआ।
(स्त्री० डडायोडी)

डडारोपण-स०पु०यौ०—माघ शुक्ला पूर्णिमा को गाँव के चौहटे मे प्राय होली जलाने के स्थान पर रोपा जाने वाला डडा।
वि०वि०—देखो 'रोपणी'।

डडावणौ, डडाववौ—देखो 'डडाणौ, डडावौ' (रू भे)

डडावियोडौ—देखो 'डडायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० डडावियोडी)

डडाळ-स०पु०—१ वह शस्त्र जिसको पकडने के लिये डडा लगाया जाता है, भालादि। उ०—उेहै रवदाळ झकोळि डडाळ। कढि खिज झाळ जिसी करमाळ। ग्रहै चहुवै दळ मीर अयाग, लिवै 'अममाल' चहूवळ लाग।—सू प्र
२ देखो 'डडोळौ' (मह, रू.भे, डि को.)

डडाळी-वि०—१ डडे के जोर से कार्य करने वाला।

डडाळौ-वि० [स० दण्ड+आलुच्] १ डडा रखने वाला, डडाधारी २ वह जिसके डडा लगा हुआ हो. ३ देखो 'डडोळौ' (रू भे)
उ०—आडा फिरिया नाग उनागा, डडाळा वागी डकर। आघा हू उडता भड आवै, टूड तणी लागी टकर।—महादान महडू
उ०— हलकारा आपता फिरै दोवडा किनारै। गम-गम घरहरै, नाद जैत रा डडाळा।—वखतो खिडियो

डडाहुड, डडाहुडि, डडाहुळ-स०पु०—१ नगाड़ा, दुदुभि (डि को)
उ०—१ राग दिस हालिया टाण आराण रुख, कोह असमाण चढ भाण ढका। गोम नेजा हुलक राग सिंधु गहक, डहक डडाहुडा सीस ढका।—र रू
२ देखो 'डडियौ' (रू भे)
उ०—लोहा रा वोह सेला रा घमका लीजै। खाडा री खाटखडि झाटझडि डडाहुडि खेलीजै।—वचनिका
रू०भे०—डडीहुड, डडेहुड, डडैहुड, डडोहुड, डाडहुडि, डाडहुडी।

डडि-स०पु० [स० दण्डिन्] दण्डधारी (जैन)

डडिअळ, डडिअळि-स०पु०—प्रत्येक चरण मे १८, १४ पर यति वाला अतिम वर्ण गुरु सहित ३२ मात्रा का छद विशेष (पिं प्र.)

डडि-खड-स०पु०यौ० [स० दण्डिखण्ड] वह वस्त्र जो चिथडो को जोड कर बनाया गया हो।

डडिया गेर-स०स्त्री०यौ०—होली पर्व का वह नृत्य जो हाथो मे पतले डडे धारण कर के किया जाता है।
वि०वि०—इसमे बहुत से पुरुष जिनमे कुछ स्त्रियो के वेष मे होते हैं तथा कही-कही वेश्याएँ भी इनके साथ होती हैं, मिल कर गोल घेरा बनाते हैं। प्रत्येक के दोनो हाथो मे एक-एक पतला व खूबसूरत रगीन डडा होता है। घेरे के बीच मे ढोल अथवा नगाडा बजाया जाता है। नगाडे या ढोल की ताल पर पैर उठा कर और उसी ताल पर क्रमशः आगे व पीछे वाले नर्त्तक के डडे से डडा भिडा कर गोल घेरे मे लगातार घूमा जाता है। ताल के साथ सब के डडों के भिडन्त की आवाज व पावो के घुँघरो की मधुर ध्वनि एक साथ होती रहती है।

डडियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ सजा पाया हुआ, दण्डित २ जुरमाना लिया हुआ, दण्डित।
(स्त्री० डडियोडी)

डडियौ-स०पु०—१ होली के पर्व पर 'डडिया-गेर' के उपयोग मे लाया जाने वाला डडा विशेष (अल्पा) उ०—अगम निगम का ढोल वजत है, सतसग चोक सजो री। डडियौ सवद जोड सतन सू, नाथ निव्रती नचो री।—स्री जियारामजी महाराज
वि०वि०—देखो 'डडिया-गेर'।
रू०भे०—डडाहुड, डडाहुडि, डडाहुळ, डडीहुड, डडेहुड, डडैहुड, डडोहुड, डाडहुडि, डाडहुडी, डाडियौ, डीडोळियौ, डीडियौ।
२ देखो 'डडौ' (अल्पा, रू भे)

डडी-स०पु० [स० दडिन्] १ द्वारपाल, ड्योढ़ीदार
२ देखो 'डाडी' (रू भे) उ०—घट के घमडी के अफडी ऊठ डडी लागे, नीचे किये नीचो को अनीचे किये ऊचो को।—ऊ.का
३ सन्यासियो का एक भेद जो जटा नही बढ़ाते, शिर मुडाते है और लकडी का एक दण्ड हाथ मे रखते है ४ दण्ड देने वाला, सजा देने वाला।

डडीड—देखो 'डडौ' (मह, रू भे.)

डडीयौ—देखो 'डडियौ' (रू भे) उ०—ऐसी विध खेलो होरी! ज्या मे चेतन पुरुस मिळो री। गुरुमुख अगी पहर गळा मे, पतरी पाग बधी री। भाव-भगत का बाध अगोछा, सनमुख डडीयो जोरी री।
—स्री हरिरामजी महाराज

डडीहुड—देखो 'डडाहुडि' (रू भे) उ०—खग हुय खडाखड किरी डडीहुड, रिण भुइ रीहुड रत्त रिडै। वीहारी वडी-वडी तूटै घडि-घडि, अणिया चडि-चडि अडभ अडै।—गु रू.ब.

डडूकळी–स०स्त्री०—काष्ठ का छोटा डडा (शेखावाटी)
मि०—ठेळी।

डडूर, डडूळ–स०पु०—१ वर्षा की वे बूदें जो हवा के वेग से छितरा जाती हैं। उ०—१ चलत लोह उत्ताळ, सूळ सर गदा परिघ्घन। चलत सोर सावत, मनहु डडूर बूद घन।—ला रा
उ०—२ इतरै लाभ वथूळी आवै, कहर क्रोध डडूळ कहावै। छित पर काम धुध नभ छावै, पात्र विवेक निजर नहि पावै।—ऊ का
उ०—३ आसाढ़ जाणि डडूळ अति समै गयण चढ़ियौ गैतूळ।
—रा रू.
२ एक दैत्य का नाम। उ०—खड डडूळ सरीखा खाफर, वळै अगासुर कस वहि। कितरा दैत कूटिया केसव, कवियण दाखै साच कहि।—पी ग्र
३ वात-चक्र, ववडर ४ देखो 'डडाळी' (मह , रू भे)

डडूळी—१ देखो 'डडाळी' (रू भे) २ देखो 'डडूर'।

डडेहड, डडेहड—१ देखो 'डडाहडि' (रू भे) उ०—१ तिण भात होळी रा खेल माहे डडेहडा री घाई लागै तिण भात लागी।
—प्रतापसिंघ म्हौकमसिंघ री वात
उ०—२ या वग्गी तरवारिया, ज्या डडेहड फाग। ऊठगी सर गोळिया, फिर झड लग्गी आग।—रा रू
उ०—३ तरवारि कुवाणा तीरा रै, माती झड मीर हमीरा रै। गुरजा वोह वाणी गोळी रै, हुविया डडेहड़ होळी रै।
रावत अचळदास सक्तावत बानसी री गीत
उ०—४ अै कहै 'सूर' दारण इता, जरद पोस सेला जड़ा। वरियाम मुहर सिर विलद हु, रमा डडेहड रूकडा।—सू प्र.

डडोक—१ देखो 'डडी' (मह रू भे) उ०—जिसडै राजाजी रै पाये लागा तिसडै राजाजी डडोका सेति पूठि ऊपर मारण लागा आपरै हाथ सेती, ताहरा राणीजी स्री जसवतदेजी आडा हाथ दिया।
—द वि.
२ देखो 'डडोत' (रू भे)

डडोत–उभ०लि० [स० दडवत्] पृथ्वी पर डडे के समान लेट कर किया हुआ प्रणाम, साष्टाग प्रणाम्। उ०—१ केवळ परकमा दीजिये, केवळ डडोता होय। केवळ नित्त नेम कीजिये, केवळ सिमरण सोय।
—स्री हरिरामजी महाराज
उ०—२ रिणवास पधारे सुर कज सारे अग अपारे धाख धरै, परसे मा प्रीता सीत सहीता करा रीता डडोत करै।—र रू.
रू०भे०—डड, डडवत, डडव्रत।

डडोतियौ–वि०—दण्डवत करने वाला।

डडोळ—देखो 'डडोळौ' (रू भे)

डडोळौ–स०पु०—नगारा, दुदुभि।
मुहा०—डडोळौ पीटणौ (फेरणौ)—ढिंढोरा पीटना, घोषणा करना।
रू०भे०—डडाळौ, डडूळौ।
मह०—डडाळ, डडूर, डडूळ, डडोळ।

डडोहड—देखो 'डडाहड' (रू भे.) उ०—लोहा जाण लुहार का, घण घडाथै। जाण रमै रिण गेहरिया, डडोहड हाथै।—वी.मा

डडौ–स०पु० [स० दड] १ लकडी या वास का कुछ लम्बा टुकडा जो हाथ मे छडी के रूप मे रखा जाता है। उ०—वाघिया नै नीचै आगणै सुवाय नै एक मजवूत लट्ठ उणनै सूप दियौ अर म्हूं खुद ई एक मोटौ छुरौ अर डडौ सिराणै ले'र ऊपर सोयग्यौ।—रातवासौ
२ वांस या लकडी का लम्बा टुकडा।
क्रि०प्र०—खाणौ, चलाणौ, मारणौ।
मुहा०—१ डडा खाणा—डडे की मार सहना। डडौ पटकणौ, डडौ बजाणौ—धमकी देना, डाँट देना।
३ किसी स्थान को चारो ओर से घेरने वाली कम ऊँची दीवार या अहाता।
क्रि०प्र०—उठाणौ, खीचणौ।
मुहा०—डडौ खीचणौ—चहारदीवारी उठाना।
४ देखो 'डाडौ' (रू भे)
अल्पा०—डडियौ, डडोकियौ।
मह०—डड, डडीड, डडोक, डाड।

डफर–स०पु०—आडबर, बाह्य उपाङ्ग। उ०—डहक्यौ डफर देख, वादळ थोथौ नीर विन। हाथ न आई हेक, जळ री बूद न जेठवा।
—जैतदान बारहठ

डब–स०पु०—ढोग, आडम्बर, पाखण्ड। उ०—धावै जाळंदरी पाव जोत रा धारणा धारै, वैरिया वतावै सज मौत रा बैताळ। जथा कथा सारा डब तोत रा वलाय जावै, ताळै अदोत रा राजा धुरावै अवाळ।—चिमनजी आढौ

डबक-डील–स०पु०—वेडौल शरीर। उ०—हुवौ वागौ, मुगौ नै गूगौ रे, कदै डबक-डील हुरदगौ रे।—जयवाणी

डबक-डोळौ–वि०यौ०—उभरा हुआ। उ०—जीव आघौ हुवै, कदै बोळौ रे, आख मे फूलौ डबक-डोळौ रे।—जयवाणी

डवणौ, डववौ–क्रि०अ०—लटकना।

डबर–स०पु० [स०] १ वैभव, गौरव। उ०—व्रज भाखा मुरधर विमळ, आदि करे उच्चार। देस-देस भाखा डबर, वरणू करि विस्तार।
—सू प्र
२ वादल, घटा। उ०—प्रभाता गह डबरा, साझा सीळा वाव। डक कहै सुण भड्डुळी, काळा तणा सभाव।—भड्डुळी पुराण
३ धूआ। उ०—सुगध ग्रधसार एण सार मेघसार ए। सुवास अबरे लुवान डबरे निसार ए।—रा रू.
४ सेना, दल। उ०—१ गजबध कमध्ध निहट्टा, तव साह निवाज पळट्टा। दखणी गजवध विडारै, गौ 'अबर' डबर हारै।—गु रू ब.
उ०—२ दखणीस डंबर खरळ सक्कर, थेट मोगर थड ए।—गु रू.ब.
५ समूह, यूथ। उ०—१ उडी रज डबर अबर गोम, विहगम को पर व्जिय व्योम।—ला.रा.

उ०—२ माग न लाधै भाण रथ, रज डवर घेरी। माहे अग मूझै मरै, नह लभ्भै सेरी।—द दा.
मि०—गोट (६)
६ उमग, जोश। उ०—प्रथम लाख समपियो, कवी वारठ 'सकर' कर। 'लखपति' वारठ लाख, दीध दूजो करि डवर।—सू प्र
७ वन, जगल। उ०—राज मिधाग्रो मिध करो, वळि वहला मिळ-ज्योह। डूगरजीवी जीवज्यो, डवर ज्यू फळज्योह।—ढो मा
८ ध्वनि, ग्रावाज। उ०—धुर-धुर ग्रासाढा ग्रवर घरहरियो। घोरा डवर मे खवर-घर-हरियो।—ऊ का
६ प्रवाह। उ०—सखिया तणै सभाज ललित गहणा नीलवर। किसतूरी केवडा टहक परमळ घण डवर।
—वगसीराम प्रोहित री वात
मि०—डोरी, (११) घोरी (३)
१० चकाचौध। उ०—गज भिडज जरी जवहर गरक, दोप मुसाला डवरा। उण वार चमर होता 'ग्रभौ' गज चढ़ियो धारै गुमर।
—सू प्र
११ सुगन्ध, महक। उ०—१ पहरि तास पौसाक, मळळ जवहर घर भूखण। ग्रवर गुलावा ग्रनर, घणा करि डवर विरद घण।
—सू.प्र.
उ०—२ फोहारू की परति जळ-चादरू का उफाण। जळ-चादरू की घरहर मानू दिल्लै महिराण। स्रीखडू का डवर समीर से झोला खावै। मळियागिर के भोळै भूलि पवेसर मिणघर भुजग ग्रावै।
मि०—डोरी (११) —सू प्र
१२ शान-शौकत, ठाट-बाट १३ लाली. १४ ग्राच्छादन, तवू।
वि०—१ ग्रश्रुपूर्ण, सजल। उ०—ग्राखडिया डवर हुई, नयण गमाया रोय। से साजण परदेस मइ, रह्या विडाणा होय।—ढो मा.
२ ग्राच्छादित। उ०—तार गुल डवर रूप मैं तारा। विहद सिगार कीध जिण वारा।—सू प्र
३ लाल ४ घना, गहरा। उ०—डीगा वड छाया डवर, लूवा जमी लगाय। ज्या तळ केही राजवी, झोम रीझ कर जाय।
—पना वीरमदे री वात
५ तरवतर। उ०—सूरजमल 'डूगा' सहत, केसरिया डवर करै। कटका सिघाळ 'सेरा' कमध, घण देवाळ ग्राजै घरै।—पहाडखा ग्राढो
रू०भे०—डमर, डमर, डमार, डम्मर, डामर।
डबाडणौ, डबाडबौ—देखो 'डवावणौ, डवाववौ' (रू भे)
डबाडियोडौ—देखो 'डवावियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री० डवाडियोडी)
डबाणौ, डवाबौ—देखो 'डवावणौ, डवाववौ' (रू भे)
डबायोडौ—देखो 'डवावियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० डवायोडी)
डबावणौ, डवाववौ—क्रि०स०—लटकना। उ०—पताका फरहरती कीधी, कस्तूरी नी गूहली दीधी। मोती तणा झूमखा डवाव्या, माहि पद्मराग पटळ लवाव्या।—व स
डवाडणौ, डवाडवौ, डवाणौ, डवावौ—रू०भे०।
डवणौ, डववौ—ग्रक०रू०।
डवावियोडौ—भू०का०कृ०—लटकाया हुग्रा।
(स्त्री० डवावियोडी)
डवियोडौ—भू०का०कृ०—लटका हुग्रा।
(स्त्री० डवियोडी)
डभ—१ देखो 'डिभ' (रू भे) (ह ना. पाठान्तर)
२ देखो 'डाम' (रू भे.) उ०—पांडु रोग सोफोदर सही. तीजो रोग जळोदर लहि। च्यारे डभ चिकित्सा जाणि, ज्यू कीजै त्यु कहु वखाणि।—ध व ग्र.
डभण—स०पु० [स० दम्भन] पाखड कर के दूसरे को ठगने वाला (जैन)
डभणया, डभणा—स०स्त्री० [स० दम्भना] १ ठगाई (जैन)
२ माया (जैन) ३ कपट, छल (जैन)
डभरणौ, डभरबौ—क्रि०ग्र०—ग्रानन्द से फैलना, प्रफुल्ल होना, उमग मे ग्राना।
डभरियोडौ—भू०का०कृ०—ग्रानन्द से भरा हुग्रा, प्रफुल्लित।
(स्त्री० डभरियोडी)
डमर—स०पु०—१ जोश। उ०—कर डमर गड वरड कर धड। लुडत तडफड जुटत लडथड।—सू.प्र.
२ ऐश्वर्य, वैभव, ठाट। उ०—डहकियौ साह देखे डमर, घणू भेद न लहै घणा। ग्रण लाख दुसह भाजै तिसा, ग्रण हजार 'गजवध' तणा।—सू प्र
३ देखो 'डवर' (रू भे)
वि०—परिपूर्ण, पूर्ण, ग्राच्छादित। उ०—दुति वीह सरु रूप मे डमर, मदन फौज नीसाण मनोहर।—सू प्र.
डवाडोळ—देखो 'डावाडोळ' (रू.भे)
डस—स०पु० [स० दश] १ काटने वाला वडा मच्छर, डाँस.
२ ईर्ष्या, डाह।
उ०—सोना गइ सुतार पणि, ग्रागड वागड वस। तेली तबोळी वळी, दोसी उपरि डस।—मा का प्र
डसण—स०पु० [स० दशन] दशना या काटना क्रिया।
क्रि०प्र०—करणौ, होणौ।
डसणौ, डसवौ—देखो 'डसणौ, टसवौ' (रू भे.)
डसियोड़ौ—देखो 'डसियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० टसियोडी)
ड—स०पु०—१ महादेव २ महादेव के गण. ३ डमरू. ४ ग्रर्जुन. ५ ताड वृक्ष।
स०स्त्री०—६ वृद्धावस्था ७ ध्वनि. ८ गाय (एका)
डइया—देखो 'डाया' (रू भे.)

डउडि, डउडी—देखो 'डूडी' (रू.भे) उ०—१ नीसाण वाजि तरगा नफेरि, रउद्र गति डउडि भरहरी भेरि। गरुग्राडि मेन हालिया मसत्त, साइयर जाणि फाटा सपत्त।—रा ज सी.

उ०—२ डउडी दमाम नीसाण नद्द, सप्रत्त जाणि घण मेघ सद्द।

—रा.ज.सी.

डक-स०स्त्री०—१ नक्कारा वजने की ध्वनि। उ०—ठहक डक अव-कवा फायरा ठेलवा, क्रोध धक कठीनै नाग काळा। श्राय रूका रचक लीयै कुण ग्राहाडा, वगा रण भचक 'कुसिग्राळ' वाळा।—गुलजी ग्राढो

२ एक प्रकार का वाद्य विशेष। उ०—घाव डक गमक तोपा सबद गरहरै, दुजड भड उरड काडण दखूदो। रोद छरहरी लागो करी ऊपरा, सैर रो सैर जीमगयो सूदो।—हरिसीघ री गीत

३ देखो 'डाको' (रू.भे) ४ एक प्रकार का मोटा कपडा।

रू०भे०—डक्क, डग।

डकचूक—देखो 'डाकचूक' (रू भे) उ०—घमक घक्क रत्रक्क खळक घुग्रो। हुक वक्क जिंदो डकचूक हुग्रो।—पा प्र

डकडठ-स०स्त्री० (अनु०) १ हँसने की क्रिया या ध्वनि।

२ छोटे मुह के पात्र से द्रव पदार्थ उडेलते समय होने वाली ध्वनि या ग्रावाज ३ किसी पेय पदार्थ को तेजी से पीते समय होने वाली ध्वनि।

रू०भे०—डकडुक, डगडग।

डकडकणो, डकडकवो-क्रि०ग्र०—ध्वनि होना (हँसते समय, पात्र से द्रव पदार्थ उडेलते समय या पेय पदार्थ को तेजी से पीते समय)

उ०—१ डकडकै भैरवी बजावै रुद्र डाक।

—नीवाज ठाकुर सुरताणसिंघ री गीत

उ०—२ धूपिया धकै चिटका घिरत धकधकै, वारुणी डकडकै तरफ वामी। वकवकै वीर जोगण छकै दोय वखत, भकभकै हुतासण हेत भांमी।—मे म.

डकडवकणो, डकडवकवो, डखडखणो, डखडखवो—रू भे

डकडकि, डकडकी-स०स्त्री०—१ कपकपी, थर्राहट। उ०—नाखे निसास नाम सुण, ताक्या डकडकी थाय। अजरे ग्रस्व उडावता, अव जिय ग्रवर जाय।—रेवतसिंह भाटी

क्रि०प्र०—ग्राणी, छूटणी।

२ हँसने की ध्वनि. ३ तग मुह के से पात्र से द्रव पदार्थ उडेलते समय होने वाली ध्वनि ४ पेय पदार्थ को तेजी से पीते समय होने वाली ध्वनि या ग्रावाज।

रू०भे०—डगडगाटी, डगडगारी, डगडगि, डगडगी।

डकडवकणो, डकडवकवो—देखो 'डकडकणो, डकडकवो' (रू भे.)

उ०—दोउ ग्रोर दुवाह यो ग्रति वाह ग्रछवकै। डेरा डाहल डिंडिमी डकडक्कै।—व भा

डकडुक—देखो 'डकडक' (रू.भे) उ०—धकध्धक स्रोण चडी रत-धार। डकडुक पीवत लेत डकार।—सू.प्र

डकणो, डकवो—'डाकणो' क्रिया का ग्रक० रू०।

डकर-स०स्त्री० [स० डात्कार'] १ जोश, ग्रावेश। उ०—१ खत जिखिया दिस खान डकर धारै वजराई। कहर गरीवा करण मकर छाडी मुगळाई।—सू प्र

उ०—२ डकर करै ग्राग्राजियो, चामर सीस चढाय। वैधीगर करतो घसा, घसियो जळ मे जाय।—गजउद्धार

२ ग्रातकपूर्ण ग्रावाज। ३ जोशीली ग्रावाज ४ वीर ध्वनि।

उ०—डरर ऊपर डमर ग्रतर भरतो डकर, ग्रत मकर वयण कहतो अवूभा। पाट रखवाळजे 'माल' हर पचाळै, दाख खगवाट रिडमाल दूजा।—पहाडखा ग्राढो

५ दहाड ६ धाक, भय, ग्रातक, डाट।

मुहा०—१ डकर मे राखणो—धाक रखना, रोब से काम लेना, डॉट ग्रौर दवाव मे रखना. २ डकर देणी—डॉट देना, फटकारना

७ धमकी. ८ ध्वनि, ग्रावाज। उ०—ग्राडा फिरिया खाग उनागा डडाळा वागो डकर। माघा हू उडता भड ग्रावै, टूड तणी लागी टकर।

—महादान महडू

९ दवाव, रौव।

रू०भे०—डक्कर, डाकर, डाक।

डकरणो, डकरवो—देखो 'डाकरणो, डाकरवो' (रू भे.)

उ०—१ डागण चढी जिया परि डकरै। वाणी विकट भयकर वकरै।—सू.प्र.

उ०—२ कदमेस भडै रण लोह करै, विफरै होकरडै डकरै वकरै।

—सू प्र.

डकराणो, डकरावो-क्रि०स० ('डकरणो' क्रिया का प्रे०रू०) भयभीत करना, डराना, धाक जमाना। उ०—तणै उण लुगाई कह्यो, 'कवरजी! मारो घडो काई फोडियो ? इसडा तरवारिया छो तौ मेवाड जेजियो लागै छै सु परो छोडावो।' तितरै पाखती ऊभा था तिणा उण नू डकराई, कह्यो 'तू वोल मती।'—नैणसी

डकराणहार, हारो (हारी), डकराणियो—वि०।

डकरायोडो—भू०का०कृ०।

डकराईजणो, डकराईजवो—कर्म वा०।

डकरणो, डकरवो—ग्रक०रू०।

डकरवाडणो, डकरवाडवो, डकरवाणो, डकरवावो, डकरवावणो, डक-रवाववो, डकराडणो, डकराडवो, डकरावणो, डकराववो—रू०भे०।

डकरायोडो-भू०का०कृ०—भयभीत किया हुग्रा।

(स्त्री० डकरायोडी)

डकरावणो, डकराववो—देखो 'डकराणो, डकरावो' (रू.भे.)

उ०—डाकी डाकिया जिऊ चोडै डकरावै, ग्रागमणी नह ग्रावै। कम-धज हेक तनै 'केहरिया', साची वात सुहावै।—पहाडखा ग्राढो

डकरावियोडो—देखो 'डकरायोडो' (रू भे.)

(स्त्री० डकरावियोडी)

डकरियोड़ो—देखो 'डाकरियोडो' (रू भे)
(स्त्री० डकरियोडी)
डकरेल-वि०—वलवान, वहादुर ।
स०पु०—सिंह ।
डकळ-डकळ-स स्त्री० (ग्रनु०) १ जल पीते समय गले से निकलने वाली ध्वनि विशेष । उ०—हा, तिस लागतो जगाँ नीगळयोडी हाडी मायलो पाणी रो मोटो लोटो भर'र ऊभाई डकळ-डकळ पी लेवता । —वाणी
२ हँसने की क्रिया या ध्वनि ।
मि०—डकडक ।
डकाणो, डकावो–क्रि०स० ('डकणो' क्रिया का प्रे०रू०) छलाग भराना, फदाना, कुदाना । उ०—प्रोहित इण प्रकार घोडो डकायो, हीरां का महल के झरोखे नीचे ग्रायो ।—वगतीराम प्रोहित री वात
मुहा०—घोडो डकाणो—घोडे द्वारा घोडी के गर्भाधान कराना ।
डकायोडो–भू०का०कृ०—कुदाया हुआ ।
(स्त्री० डकायोडी)
डकार–स०स्त्री०—पेट की वायु का उद्गार जो कठ द्वारा शब्द करता हुआ मुँह से बाहर निकल जाता है । उ०—धकधक खोण चडी पन घार । डकहुक पीवत लेत डकार ।—सू प्र
क्रि०प्र०—ग्राणी, लाणी, लेणी ।
मुहा०—डकार भी नी लेणी—किसी का द्रव्य लेकर न देना । कोई काम कर के न बताना ।
ग्रल्पा०—डडकारो ।
डकारणो, डकारवो–क्रि०ग्र०स०—१ पेट से वायु का उद्गार निकलना, पेट की वायु को मुह से निकालना, डकार लेना　२ किसी का द्रव्य ले लेना, हडप लेना, हजम करना, पचाना ।
मुहा०—डकार जाणो—किसी का द्रव्य हडप लेना, हजम कर लेना, खा जाना ।
डकारियोडो–भू०का०कृ०—१ डकार लिया हुआ.　२ किसी का द्रव्य हडप किया हुआ ।
(स्त्री० डकारियोडी)
डकावणो, डकाववो—देखो 'डकाणो, डकावो' (रू भे)
डकावियोडो—देखो 'डकायोडो', (रू भे)
(स्त्री० डकावियोडी)
डकियोडो–भू०का०कृ०—छलाग भरा हुआ, कूदा हुआ ।
(स्त्री० डकियोडी)
डकैत–स०पु०—जवरदस्ती माल छीनने वाला, लुटेरा ।
डकैती–स०स्त्री०—जवरदस्ती माल छीनने का काम, डाका मारने का काम, लूटमार ।
डको–स०पु०—१ वाद्य विशेष.　२ देखो 'डाको' (रू भे)
उ०—फिरणिया चहू तरफा फिरै, काळ रूप ग्ररवा चका । काढिया खगा किलका करै, टका ढोल तवला डका ।—सू प्र.

डक्क—देखो 'डक' (रू भे)　उ०—१ दोऊ ग्रोर दुवाह मौं ग्रसि वाह ग्रछक्कैं । डेरा डाहल डिंडिमी डक्का डकडक्कै ।—व.भा
उ०—२ जहा तह डाकिनी टिंडिम डक्क । जहा तह धारन की धमचक्क ।—व भा.
डक्कण, डक्कणी—स०स्त्री० —१ कपकपी, थर्राहट ।
क्रि०प्र०—ग्राणी, छूटणी ।
२ देखो 'डाकण' (रू भे)
डक्कर–स०स्त्री०—१ छोटे वच्चों के खेलने का डडा
२ देखो 'डकर' (रू.भे)
डक्का–स०स्त्री० [स०] शिव का वाद्य, डमरू ।
डक्क—देखो 'डकर' (रू भे)
उ०—ड्रीवड्ड ड्रीवड्ड डक्क पग धरती, कुळट नट-वटा ज्यू मक्क करती । काळका-चक्र ज्यू नावडी केविया, भडा सिर काळमी डक्क भरती ।—गिरवरदान सादू
डखडखणो, डखडखवो—देखो 'डकडकणो, डकडकवो' (रू भे.)
उ०—चोळ वदन चहुवाण, मिलक प्रहारै मारिया । सुजडी ग्रायो सोभडो, डखडखती दीवाण ।—नैणसी
डगवर—देखो 'दिगवर' (रू.भे)
डग–स०स्त्री०— १ हाथी के पिछले दोनो पैरो मे वाधी जाने वाली रस्सी । उ०—डग वेडिया दुलट्ठ, लगा चहु वा पग लगर । ग्राकासी सारसो, करै ग्रग्राज भयकर ।—सू प्र
वि०वि०—इस रस्सी को हाथी के पैरो मे पहने हुए धातु के कडो से वाध देते हैं ग्रौर रस्सी को वापिस उलट कर वंधी हुई रस्सी पर ही लपेट देते हैं जिससे हाथी चल तो सकता है ग्रर्थात् वह डग भर सकता है किन्तु भागने मे समर्थ नहीं हो सकता ।
२ हथकडी । उ०—'सेखा' नै पकड'र ग्रसुरा, डग वेडी झट डाळी । मेहाई वह सम्मळी, कुनफा पाव कढाली ।
—हिंगळाजदान जायावत
यौ०—डग-वेडी ।
३ पाव को एक स्थान से उठा कर दूसरे स्थान पर रखने के वीच की दूरी, उतनी दूरी जितनी पर एक जगह से दूसरी जगह कदम पड़े, पैड ।
क्रि०प्र०—दैणी, भरणी ।
४ चलने मे ग्रागे की ग्रोर पैर रखने का भाव, कदम, पैड ।
उ०—१ भीनै झाचळियै धम धम डग भरती । धसला देतोडी धम-धम पग धरती ।—ऊ का
उ०—२ ग्रगम पथ इण झमक रै, निभै ठाकरी नाहि । डग ग्वाळणिया डोलियौ, सुरपुर पत व्रिज माहि ।—र. हमीर
क्रि०प्र०—दैणी (दैणो), भरणी (भरणो) ।
मुहा०—डग भरणी (भरणो)—चलने में ग्रागे की ग्रोर पैर रखना, कदम भरना ।

५ पैर, पांव । उ०—डगा घीसता साकळा सूत डोरा । घरा यूं खणें ज्यू वर्णे खेत घोरा ।—व.भा.
रू०भे०—डगल, डग्ग ।
६ देखो 'डक' (४) (रू भे)
डगड—देखो 'डगरौ' (मह , रू भे)
डगडौ—देखो 'डगरौ' (रू भे)
डगडग—देखो 'डक-डक' (रू.भे) उ०—बोतल तो डगडग करै प्यालो करै पुकार ।—डूगजी जवारजी री पद
डगडगाटी—देखो 'डकडकी' (रू भे)
डगडगाणौ, डगडगावौ–क्रि०अ० —इधर से उधर हिलना, डगमगाना ।
डगडगायोडौ–भू०का०कृ०—डगमगाया हुआ ।
(स्त्री० डगडगायोडी)
डगडगारी—देखो 'डकडकी' (रू भे)
डगडगारौ–स०पु०—बक-झक, बकवाद ।
कहा०—डोकरो मुवो नै डगडगारो मटग्यो—वृद्ध की मृत्यु हुई और बक-झक मिटी ।
डगडग, डगडगी–स०स्त्री०—१ एक प्रकार का वाद्य विशेप ।
रू०भे०—डुगडुगी ।
२ इस वाद्य की ध्वनि ३ देखो 'डकडकी' (रू भे)
उ०—त्रिल्यू सीमा सी रावो विसमा सी । भीमा भावी सी भीमा निस भासी । तूहिन कठीरव तन कुजर तावै । डगडगि चढियोडा मरिया डुसकावै ।—ऊ का
डगडोलणौ, डगडोलवौ–क्रि०अ०—हिलना-डुलना, डगमगाना ।
डगडोलियोडौ–भू०का०कृ०—डगमगाया हुआ ।
(स्त्री० डगडोलियोडी)
डगणौ, डगबौ—देखो 'डिगणौ, डिगवौ' (रू भे)
उ०—ऊपाडै आवू जिती, पर निंदा री पोट। पिसण न्याय पग डग पडै, दुरासीस लग दोट ।—बा दा
डगमगणौ, डगमगवौ–क्रि०अ०—१ स्थान छोड़ना, भयभीत होना ।
उ०—मसाहणी छोडा विसाहण, टमक कीधो ताळ। सिसिपाळ बोलई, नहीं तोलई, डगमग्या दिगपाळ ।—रुकमणी मगळ
२ कपायमान होना, थर्राना । उ०—तू क्यू ए मंडी वैरण डगमगी, थारी लगी ए धरम री नीम । एक दिन राजन खडया ए चिणावता ।
—लो गी.
३ हिलना-डुलना, डगमगाना, डावाडोल होना ।
उ०—छक छिव री छोळा छिली, पीली प्रेम दद्ध पाज । मगर उथेलै डगमगी, जाणक मदन जिहाज ।—र हमीर
डगमगा'ट–स०पु०—कपायमान होने का भाव, थर्राहट ।
उ०—अर मन माहे डरै छै जु महादेवजी कायु कहसी । सु इसो डगमगा'ट करै छै ।—वेलि टी
रू०भे०—डिगमग, डिगमगा'ट, डिगमगाहट, डिगमिग, डिगमिगा'ट डिगमिगाहट ।

डगमगाणौ, डगमगावौ–क्रि०अ०स०—१ इधर से उधर हिलना, डगमगाना, डोलना ।
डिगमगणौ, डिगमगवौ, डिगमिगणौ, डिगमिगवौ—रू०भे० ।
२ हिलाना-डुलाना, डोलाना ।
डगमगावणौ, डगमगाववौ, डमगावणौ, डमगाववौ, डिगमगाणौ, डिगमगावौ, डिगमगावणौ, डिगमगाववौ, डिगमिगाणौ, डिगमिगावौ
—रू०भे०
डगमगायोडौ–भू०का०कृ०—डगमगाया हुआ ।
(स्त्री० डगमगायोडी)
डगमगावणौ, डगमगाववौ—देखो 'डगमगाणौ, डगमगावौ' (रू भे)
डगमगावियोडौ—देखो 'डगमगायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० डगमगावियोडी)
डगमगियोडौ–भू०का०कृ०— हिला-डुला हुआ, डोला हुआ, डगमगाया हुआ ।
(स्त्री० डगमगियोडी)
डगर–स०पु०—१ पथ, मार्ग, रास्ता । उ०—होय विरगी नार, डगर बिच हे क्यू खडी । काईं थारो पीहर दूर, काईं घरा सासू लडी ।
—मीरा
२ चाकर, सेवक (हृ ना)
अल्पा०—डगरियौ ।
३ देखो 'डगरौ' (मह , रू भे)
डगरीयौ—देखो 'डगर' (अल्पा , रू भे)
२ देखो 'डगरौ' (अल्पा, रू भे)
डगरौ–स०पु०—१ वृद्ध या दुर्वल ऊँट ।
रू०भे०—डगळौ ।
२ अघटित बडा पत्थर. (मि० टोळ, ३) ३ काष्ठ का चौकोर टुकडा.
४ एक प्रकार का मिट्टी का बना बडा बरतन (शेखावाटी)
रू०भे०—डगडौ, डगळौ ।
मह०—डगड ।
अल्पा०—डगरियौ ।
४ देखो 'डगर' (अल्पा , रू भे) उ०—साप गया सहनाण कौ, सब मिळ मारै लोक । दादू ऐसा देखिये, कुळ का डगरा फोक ।
—दादू वाणी
डगळ–स०पु०—१ शून्य । उ०—दीसै जगळ डगळ, जेथ जळ बगळा चाढै । अन्न हू ता गळ दियै, गळा हू ता गळ काढै । मच्छ गळागळ माहि, ग्वाळै व्है गळी दिखाळै । गळी डाळ फळ गजै, गजी डाळा फळ गाळै । न गळै असुर सुर नाग नर, आपण वै कुळ ऊधरै । अनत रै हाथ मगळ अमगळ, कई भगळ विद्या करै ।
—महात्मा अलूनाथ
२ देखो 'ढळी' (मह , रू भे) उ०—हाकाहाक हुई, कोहक माची, जाणै चिडिया डगळ पडि ।—पना वीरमदे री वात

वि०—निर्जन ।

डगल—देखो 'डग' (३, ४, ५) (रू.भे) उ०—ताहरा डगला गिणतु मूह्वि मेहेलि वीजि देस । पगला लागु गिणवानि ते मानि वोल नरेस ।—नळाख्यान

डग-लग-स०पु०यौ०— कंकड़, पत्थर (जैन)

डगळियो—देखो 'ढळो' (अल्पा, रू.भे)

डगली—स०स्त्री०—रूई भरा हुआ वदन पर धारण करने का एक वस्त्र विशेष, अंग-रक्षिका । उ०—थरमो थिरक्यो गग परि, डगली आवी दाय । ठाढो वाजै हो प्रिया, तो लीजै अग लगाय ।—व स.

डगलू—स०पु०—देखो 'डगली' । उ०—वेउल थ्या डगलू न दिइ, चितातुर नीपाय । लेई आवे लाल तू, करवा मेह उपाय ।

—मा.का प्र.

डगळो—देखो 'ढळो' (रू भे)

अल्पा०—डगळियो ।

मह०—डगळ ।

मि०—डळो ।

२ देखो 'डगरो' (रू भे)

डगलो—स०पु०—देखो 'उगली' (मह०, रू भे) उ०—हीमाळउ हाली वळइ, हुई हाल कल्लोळ । डगला डोटी पहिरीइ, मुखि भरीइ तबोळ ।

—मा.का प्र

डगाडणो, डगाडवो—देखो 'डिगाणो, डिगावो' (रू भे)

डगाडियोडो—देखो 'डिगायोडो' (रू भे)

डगाणो, डगावो—देखो 'डिगाणो, डिगावो' (रू भे)

डगायोडो—देखो 'डिगायोडो' (रू भे.)

(स्त्री० डगायोडी)

डगावणो, डगावबो—देखो 'डिगाणो, डिगावो' (रू भे.)

डगावियोडो—देखो 'डिगायोडो' (रू भे)

(स्त्री० डगावियोडी)

डगियोडो—देखो 'डिगियोडो' (रू भे.)

(स्त्री० डगियोड़ी)

डगो—देखो 'डागो' (रू भे) उ०—मावट पोवट मध्य, गुलम गण कूळ काढे । नेसावरिया डगा, घणेरा घुरड़ै वाढे ।—दसदेव

डग्ग—देखो 'डग' (रू भे)

डचकण—स०पु०—एक प्रकार का घोडा जो दिन भर अपना शिर हिलाता रहता है (अशुभ, शा हो.)

डचको—स०पु०—बलगम का लौंदा ।

रू०भे०—डुचको

अल्पा०—डचियो ।

डचकणो, उचपकबो—क्रि०स०—निगलना । उ०—नाच न चुक्कै डकिनी ले डाच उचक्कै ।—व भा.

डचळ-डचळ—सं०स्त्री० (अनु०) जल्दी-जल्दी भोजन करने की क्रिया ।

मि०—डफळ-डफळ ।

डचली—स०स्त्री०—१ कुत्ते का तेजी के साथ किसी खाद्य पदार्थ में जबरन मुह मारने की क्रिया, झपटी ।

क्रि०प्र०—मारणी ।

२ शीघ्रता से भोजन करने का भाव ।

क्रि०प्र०—मारणी ।

डचाडच—स०स्त्री० (अनु०) १ शीघ्रता से भोजन करने की क्रिया

२ भोजन करते समय मुँह से उत्पन्न होने वाली ध्वनि ।

डचियो—स०पु०—१ झपट कर भोजन ले जाने वाला कुत्ता.

२ देखो 'डाचो' (अल्पा, रू.भे) उ०—अमल उगावै अग मे, निपट घुळावै नैण । आडा नै वैठा अपत, डचिया घालै डैण ।—ऊ.का

३ देखो 'उचको' (अल्पा., रू भे)

वि०—१ शीघ्रता से भोजन करने वाला. २ क्षीण ।

डटणो, डटवो—क्रि०अ०—१ रुकना, ठहरना, दबना ।

उ०—आज जाडेरा डेरा डगरा मारूजी, मारघा-मारघा दादुर मोरजी, थे समजो थे समजो जोडो विन जाडो न डटै मारूजी ।—लो गी.

२ जम कर खडा होना, दृढ रहना, टिकना, ठहरना, डटना ।

३ भिडना, डटना ।

मुहा०—१ डट नै खाणो—अधिक भोजन करना. २ डटियो रै'णो—जमा रहना, टिका रहना, न हटना, कठिनाई झेलने को प्रस्तुत रहना ।

डटणहार, हारो (हारी), डटणियो—वि० ।

डटवाडणो, डटवाडवो, डटवाणो, डटवावो, डटवावणो, डटवाववो, डटाडणो, डटाडवो, डटाणो, डटावो, डटावणो, डटाववो—प्रे०रू० ।

डटिओडो, डटियोडो, डट्योडो—भू०का०कृ० ।

डटीजणो, डटीजवो—भाव वा० ।

डाटणो, डाटवो—सक०रू० ।

डटाडणो, डटाडवो—देखो 'डटाणो, डटावो' (रू भे)

डटाडियोडो—देखो 'डटायोडो' (रू भे)

(स्त्री० डटाडियोडी)

डटाणो, डटावो—क्रि०स०—१ जमाना, खडा करना. २ जोर से भिड़ाना, ठेलना ३ सटाना, भिडाना ।

डटाणहार, हारो (हारी), डटाणियो—वि० ।

डटायोडो—भू०का०कृ० ।

डटाईजणो, डटाईजवो—कर्म वा० ।

डटणो, डटवो—अक०रू० ।

डटाडणो, डटाडवो, डटावणो, डटाववो—रू०भे० ।

डटायोडो—भू०का०कृ०—१ जमाया हुआ, खडा किया हुआ

२ भिडाया हुआ, ठेला हुआ ३ सटाया हुआ, भिडाया हुआ ।

(स्त्री० डटायोडी)

डटावणो, डटाववो—देखो 'डटाणो, डटावो' (रू भे)

डटावियोडो—देखो 'डटायोडो' (रू भे)
(स्त्री० डटावियोडी)
डटियोडो–भू०का०कृ०—१ रुका हुआ, ठहरा हुआ, दवा हुआ २ जमा हुआ, टिका हुआ, डटा हुआ, दृढ़. ३ भिडा हुआ, डटा हुआ।
(स्त्री० डटियोडी)
डडकारौ—देखो 'डकार' (अल्पा, रू.भे) उ०—जासक पीवें योगणी, भरि-भरि पात्र रगत। डडकारा डाकणि करै, जिण दीठइ डरै जगत।—प.च चौ.
डडियौ—१ देखो 'दादौ' (अल्पा, रू.भे) २ देखो 'डडौ'। (अल्पा., रू भे)
डडौ, डड्डौ–स०पु०—१ 'ड' अक्षर। २ देखो 'दादौ' (रू भे.)
उ०—जोगी आद जुगाद ही दीहृदा डडा।—केसोदास गाडण
अल्पा०—डडियौ, डलियौ।
डड्ढ, डढ–वि० [स० दग्ध] १ जला हुआ (जैन) २ देखो 'दादौ'। (रू.भे)
देखो 'डाड' (रू भे.)
डढ़ियल–वि०—जिसके बडी डाढ़ी हो, डाढ़ीवाला।
डणडणणौ, डणडणवौ—खिलखिलाना, हँसना।
डणडणीयोड़ो–भू०का०कृ०—हँसा हुआ।
(स्त्री० डणडणियोडी)
डपटणौ, डपटवौ–क्रि०स०—१ कठोर स्वर मे वोलना, डाटना २ कपडे या अन्य किसी चौडी वस्तु से पखा झलना, हवा करना. ३ तेज दौडना।
डपोरसख–स०पु०—दिखने मे वडे व अच्छे डील-डौल का किन्तु मूर्ख।
रू०भे०—डफोळसख, ढफोळसख।
डप्फौ–वि०—मूर्ख, गँवार। उ०—खप्फा होवै खलक पर, डप्फा डावा-डोल। नप्फा थारै है नही, गप्फा खावै गोल।—ऊ.का
डफ–स०पु० [अ० दफ] लकडी के वडे घेरे पर चमडा मढा हुआ एक वाद्य विशेष जो हाथ या लकडी से वजाया जाता है।
उ०—डफ खजरी दुतार, विखम रोहिला वजावै। पसतो अरवी पाड, गजल कहखा वह गावै।—सू.प्र
अल्पा०—डफली।
डफणौ, डफवौ–क्रि०अ०—१ भौंचक्का होना, अचभित होना. २ घवराना. ३ भूलना, चूकना।
डफणहार, हारौ (हारी), डफणियौ—वि०।
डफवाडणौ, डफवाडवौ, डफवाणौ, डफवावौ, डफवावणौ, डफवावबौ —प्रे०रू०।
डफाड़णौ, डफाडवौ, डफाणौ, डफाबौ, डफावणौ, डफावबौ—स०रू०
डफिग्रोडौ, डफियोड़ौ, डफ्योडो—भू०का०कृ०।
डफीजणौ, डफीजवौ—भाव वा०।
डफळणौ, डफळवौ—रू०भे०।
डफळणौ डफळवौ—देखो 'डफणौ, डफवौ' (रू.भे)
डफळाडणौ, डफळाडवौ—देखो 'डफाणौ, डफावौ' (रू भे.)
डफळाडियोडो—देखो 'डफायोडो' (रू भे.)
(स्त्री० डफळाडियोडी)
डफळीजणौ, डफळीजवौ—रू०भे०।
डफळाणौ, डफळावौ—देखो 'डफाणौ, डफावौ' (रू.भे)
डफळायोडो—देखो 'डफायोडो' (रू भे)
(स्त्री० डफळायोडी)
डफळावणौ, डफळावबौ—देखो 'डफाणौ, डफावौ' (रू.भे.)
डफळावियोडो–देखो 'डफायोडो' (रू भे.)
(स्त्री० डफळावियोडी)
डफळियोडो—देखो 'डफियोडो' (रू भे)
(स्त्री० डफळियोडी)
डफली–स०स्त्री०—देखो 'डफ' (अल्पा, रू भे)
डफाण, डफान–स०स्त्री०—आडवर, ढोग, पाखण्ड।
उ०—१ काहे रे नर करहु डफाण, अतकाळ घर गोर मसांण।
—दादू वाणी
उ०—२ दादू मढा मसाण का, केता करै डफान। म्रितक मुरदा गोर का, वहुत करै अभिमान।—दादू वाणी
२ गर्व, अभिमान।
डफाणी–वि०—१ धूर्त, कपटी २ पाखडी, ढोगी. ३ अभिमानी।
डफाडणौ, डफाडवौ—देखो 'डफाणौ डफावौ' (रू भे)
डफाडियोडो—देखो 'डफायोडो' (रू भे)
(स्त्री० डफाडियोडी)
डफाणौ, डफावौ–क्रि०स०—१ भौंचक्का करना, अचभित करना. २ डराना. ३ भुलाना, भटकाना, फटकारना।
डफाणहार, हारौ (हारी), डफाणियौ—वि०।
डफायोडो—भू०का०कृ०।
डफाईजणौ, डफाईजवौ—कर्म वा०।
डफणौ, डफवौ—अक० रू०।
डफळाडणौ, डफळाडवौ, डफळाणौ, डफळावौ, डफळावणौ, डफळावबौ, डफाडणौ, डफाडवौ, डफावणौ, डफावबौ—रू०भे०।
डफायोडो–भू०का०कृ०—१ भौंचक्का किया हुआ, अचभित किया हुआ २ डराया हुआ ३ भुलाया हुआ, भटकाया हुआ, फटकारा हुआ।
(स्त्री० डफायोडी)
डफाली–स०पु०—१ खजरी वजाने वाला. २ एक मुसलमान जाति जो डफ, ताशे आदि का व्यवसाय करती है। इस जाति के लोग स्थान-स्थान पर इन वाद्यो को वजाते फिरते हैं।
डफावणौ, डफावबौ—देखो 'डफाणौ, डफावौ' (रू.भे)

डफावियोडो—देखो 'डफायोडो' (रू भे)
(स्त्री० डफावियोडी)
डफियोडो–भू०का०कृ०—१ भौंचक्का, अचभित २ घबराया हुआ. ३ भूला हुआ, चूका हुआ।
(स्त्री० डफियोडी)
डफोळ–वि०—मूर्ख, नासमझ।
अल्पा०—डफोळियो।
यौ०—डफोळसख।
डफोळपण, डफोळपणो–स०पु०—मूर्खता, बेवकूफी, नासमझी।
डफोळसख—देखो 'डपोरसख' (रू भे)
डफोळियो—देखो 'डफोळ' (अल्पा, रू भे)
डब–स०स्त्री०—ध्वनि विशेष। उ०—लाखं फूलाणी झीणा सुर लेता, डीघा गाडीणा डबडब धुनि देता।—ऊ.का.
मुहा०—डबडब होणी—कार्य पूरा नही होना, असफल होना, निष्फल होना, पोल खुलना, सारहीनता प्रकट होना।
वि०—परिपूर्ण, पूर्ण (अश्रुपूर्ण, सजल) उ०—पिव बैसाखा हालियो, सैणा सीख करेह। ऊभी झूरं गोरडी, डब-डब नैण भरेह।—र.रा.
मुहा०—डब डब होणी—अश्रुपूर्ण होना, सजल होना (नयन)
यौ०—डब डब।
डं'ब–स०पु०—एक प्रकार का घास।
डबक–स०स्त्री०—१ देखो डबकी' (१, २) (अल्पा, रू भे.)
२ देखो 'डबकी' (३) (मह, रू भे.) ३ देखो 'डुबकी' (रू भे.)
डबकणो, डबकबो–क्रि०अ०—१ इधर-उधर जाना, फिरना।
उ०—ऊंचे मुख सू ऊट, चूट चट लूगा लबकं। गलर-गलर गटकाय, डोलती डागा डबकं।—दलदेव
२ पानी मे पैठना, डूबना।
डबकणहार, हारो (हारी), डबकणियो—वि०।
डबकवाडणो, डबकवाडबो, डबकवाणो, डबकवाबो, डबकवावणो, डबकवावबो—प्रे०रू०।
डबकाडणो, डबकाडबो, डबकाणो, डबकाबो, डबकावणो, डबकावबो—स०रू०।
डबकिओडो, डबकियोडो, डबक्योडो—भू०का०कृ०।
डबकीजणो, डबकीजबो—भाव वा०।
डबकाडणो, डबकाड़बो—देखो 'डबकाणो, डबकाबो' (रू भे)
डबकाडियोडो—देखो 'डबकायोडो' (रू भे)
(स्त्री० डबकाडियोडी)
डबकाणो, डबकाबो–क्रि०स०—१ इधर-उधर घुमाना, फिराना
२ पानी मे पैठाना, डुबाना (पानी भरने के लिए)
डबकाणहार, हारो (हारी), डबकाणियो—वि०।
डबकायोडो—भू०का०कृ०।
डबकाईजणो, डबकाईजबो—कर्म वा०।
डबकणो, डबकबो—अक०रू०।
डबकाडणो, डबकाडबो, डबकावणो, डबकावबो—रू०भे०।
डबकावणो, डबकावबो—देखो 'डबकाणो, डबकाबो' (रू.भे)
डबकावियोडो—देखो 'डबकायोडो' (रू भे)
(स्त्री० डबकायोडी)
डबकियो—देखो 'डबकी' (अल्पा, रू भे)
डबकी—देखो 'डुबकी' (रू भे) उ०—सास अम्हारू सरप-परि, पईठउ पाणी माहि। डबकी-डबकी देखीइ, वीसमबु नही क्याहि।
—मा का प्र.
डबकीड—देखो 'डबकी' (मह, रू भे)
डबकी–स०पु० [स० दव एव दवक 'दुदु उप तापे' अप्] १ डूबने का भाव।
क्रि०प्र०—लैणो।
२ किसी तरल पदार्थ मे किसी पदार्थ के गिरने से होने वाला शब्द।
क्रि०प्र०—बोलणो, वाजणो।
मुहा०—१ डबकी ऊठणो—देखो 'डबकी पडणो' २ डबकी पडणो—अकस्मात् चिंता होना, सदमा पहुंचना. ३ डबकी वाजणो—ध्वनि होना अर्थात् सार्थक होना।
अल्पा०—डबक, डबक्क।
३ फूलो आदि की आकृति के छोटे या बडे चिन्ह जो वस्त्रो पर सुन्दरता के लिये छापे जाते हैं।
रू०भे०—डमकी।
अल्पा०—डबकियो।
मह०—डबक, डबकीड, डबम्क।
डबक्क—१ देखो 'डबक' (१, २) (अल्पा, रू.भे.)
उ०—कटै सिलहक्क कड' कसणक्क। भभक्क डबक्क स्रोणक्क भभक्क।—सू.प्र.
२ देखो 'डबकी' (३) (मह, रू भे) ३ देखो 'डुबकी' (रू.भे)
डबगर–स०पु०—१ चमडे को गला कर तेल, घी रखने के कुप्पे और तराजू के पलडे बनाने का पेशा करने वाली एक जाति विशेष या इस जाति का व्यक्ति जिसमे हिन्दू व मुसलमान दोनो होते है। ये नक्कारे और मृदग आदि भी मढते हैं।
रू०भे०—डबगर।
डबडी–स०स्त्री०—१ लडकियो द्वारा गाया जाने वाला एक राजस्थानी लोक-गीत २ बच्चो द्वारा छोटी-छोटी डिबियाओ से खेला जाने वाला खेल. ३ सुडौल व सुन्दर घडा हुआ शिला-खड जो मकान की दीवार को सुदृढ व सुन्दर बनाने के लिये लगाया जाता है।
यौ०—डबडी-बध।
४ तरबूज आदि फलो की परीक्षा के लिये उसके ऊपर किया जाने वाला चौकोर या गोल कटाव जिससे उसके भीतर से सडे-गले या कच्चे-पक्के होने का पता चले।

५ देखो 'डवी' (अल्पा., रू.भे.)
रू०भे०—डवली, डावडी, डावली ।

डवडवणो, डवडववो—क्रि०अ०—१ अश्रु-पूर्ण होना, नेत्रों का सजल होना २ जल से भरे हुए पात्र के हिलने से पानी का ध्वनि करना. ३ डमरू का ध्वनि करना, वजना ।

डवडवाणो, डवडवावो—क्रि०स०अ०—१ डमरू वजाना.
२ देखो 'डवडवणो, डवडववो' (रू.भे.) उ०—सोचता सोचता वियै री आखियां प्रेमासुवां सू डवडवायीज जाती ।—वरसगांठ

डवडवौ—वि०—अश्रु-पूर्ण, सजल ।
मि०—जळजळो ।

डवर—स०पु०—१ आडम्बर, तडक-भडक । उ०—डवर विरध घण डहकिया, डडाहड डकाह । रूडी रजवट जे रखिए, विग्रह हूं वकाह ।—रेवतसिंह भाटी
२ गंभीर शब्द. ३ बडा ढोल. ४ तम्बू ।

डवरौ—स०पु०—१ पात्र विशेष २ पलाश के पत्तों का दोना ।

डवल—वि० [अं०] दोहरा ।

डवलियौ—देखो 'डव्वौ' (अल्पा., रू.भे.)

डवली—देखो 'डवडी' (रू.भे.)

डवलौ—देखो 'डव्वौ' (अल्पा. रू.भे.)

डवाक—स०पु०—१ किसी वस्तु के अकस्मात गिरने या टपकने का भाव तथा उससे उत्पन्न ध्वनि २ वमन होते समय मुह की आकृति.
३ वमन, कै ।

डवाडव—देखो 'डवोडव' (रू.भे.)

डवियौ—देखो 'डव्वौ' (अल्पा., रू.भे.)

डवी—स०स्त्री०—१ छोटा ढक्कनदार वर्तन, डिबिया ।
उ०—१ नवी हुवोडा तीच डबी भर लेवै डाकी । वैठ सभा रै वीच करै मनवार कजाकी ।—ऊ.का.
उ०—२ ताहरा कुवर कह्यौ—डवी कीमत कराय सूपो । ताहरा डवी खोली । जुहार वुलाय कीमत कराई ।—पलक दरियाव री वात
२ शीशी के ऊपर लगाने का धातु का बना हुआ ढक्कन ।
अल्पा०—डवडी, डवली, डावडी, डावली ।
रू०भे०—डव्वी, डावी, डिबिया, डिवी, डिव्वी ।
३ देखो 'डवौ' (अल्पा., रू.भे.)

डवोडव—वि०—पूर्ण भरा हुआ, लबालब ।
रू०भे०—डवाडव ।

डवोडणो, डवोडवौ—देखो 'डुवाणो, डुवावौ' (रू.भे.)

डवोडियोडौ—देखो 'डुवोयोडौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डवोडियोडी)

डवोणो, डवोवौ—देखो 'डुवाणो, डुवावौ' (रू.भे.)
उ०—तरै सेख फरमायो सो नावा तोड पाणी मे डवोय दीवी ।
—नी प्र

डवोयोडौ—देखो 'डुवायोडौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डवोयोडी)

डवोवणो, डवोववौ—देखो 'डुवाणो, डुवावौ' (रू.भे.)
उ०—चोवळ ग्राह तत गज चरणा । जकड डवोवण सच अवरणा ।
—र.ज.प्र.

डवोवियोडौ—देखो 'डुवायोडौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डवोवियोडी)

डवौ—स०पु०—१ वह ढक्कनदार वरतन जिस पर ढक्कन जम कर बैठ जाय और हिलाने-डुलाने पर भीतर रखी हुई वस्तु नहीं गिरे, डिब्बा । उ०—जितरै साहू री वहू घर मे आयी । उवै आए ओरी कही काम राखियो । सभाळै तो डवो नही । देखै तो वीजो-ही डवो नहीं ।—राजा भोज अर खापरै चोर री वात
२ रेलगाडी की एक गाडी जो अलग की जा सकती है ३ वच्चा को निमोनिया के समान होने वाला एक रोग विशेष ४ पानी मे उठने वाला वुदवुदा. ५ फूल आदि वस्तुओं के चिन्ह जो सुन्दरता के लिए वस्त्रों पर छापे जाते हैं ।
वि०—मूर्ख, गंवार, नासमझ । ज्यू—ओ तो साव डव्वौ है ।
रू०भे०—डव्बो, डावो, डिवो, डिव्वो ।
अल्पा०—डवलियो, डवलो, डवियो ।

डव्वी—देखो 'डवी' (रू.भे.)

डव्वौ—देखो 'डवौ' (रू.भे.)

डब्भर—देखो 'डवर' (रू.भे.)
उ०—गडि गडि गोळा नाळि, वीज खडहै फिरि अवर । अगन वाए ऊछळै, घोम वूहा रव डब्भर ।—गु रू वं.

डभको—देखो 'डवको' (रू.भे.) उ०—वाघो अठा सू विदा हुवो हुतो सू दुराहो ऊपर जावता चील्हा नजर पडिया । तद वाघै रै मन मे डभको पडियो ताहरा साथ नू कहै छै ये चालो, हू तो इया चील्हां री खवरि ले आयोस ।—ऊमादे भटयाणी री वात

डमकणो, डमकवौ—देखो 'डमकणो, डमकवौ' (रू.भे.)
उ०—जड डैरू डमकिया आवक अहकाया ।—व भा

डमकियोडौ—देखो 'डमकियोडौ' (रू.भे.)
(स्त्री० डमकियोडी)

डमगळ—देखो 'दमगळ' (रू.भे.) उ०—अलै थलै अगळ डरे, डूगरे डमगळ । गोडी रव गडगडे, मिळै रन माभळ मगळ ।—पा.प्र.

डम—स०स्त्री०—ध्वनि विशेष (डमरू आदि की)
रू०भे०—डिम ।
यौ०—डम-डम ।

डमकणो, डमकवौ—क्रि०अ०—१ चमकना । उ०—वणक सहोदर पर भिया, वणक राय साधार । चोपग चितामए वणक, वे डमक्या वरवार ।—वा दा
२ डमरू का वजना, ध्वनि करना ।

डमकणहार, हारौ (हारी), डमकणियौ—वि० ।
डमकवाडणौ, डमकवाडवौ, डमकवाणौ, डमकवावौ, डमकवावणौ, डमकवावबौ—प्रे०रू० ।
डमकाड़णौ, डमकाडवौ, डमकाणौ, डमकावौ, डमकायणौ, डमकाववौ—क्रि०स० ।
डमकिग्रोड़ौ, डमकियोडौ, डमक्योडौ—भू०का०कृ० ।
डमकीजणौ, डमकीजवौ—भाव वा० ।
डमकणौ, डमकवौ—रू०भे० ।

डमकलौ–स०पु०—वाद्य विशेष ? । उ०—गाडी छोड वळदिया छोडया, घरा सुलखणी नारी । तेरै द्वारै वाजै डमकला, त्या रोटी तरकारी ।—लो गी

डमकाडणौ, डमकाडवौ—देखो 'डमकाणौ, डमकावौ' (रू भे)

डमकाडियोडौ—देखो 'डमकायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० डमकाडियोडी)

डमकाणौ डमकावौ–क्रि०स०—१ चमकाना. २ डमरू बजाना, ध्वनि कराना।
डमकाणहार, हारौ (हारी) डमकाणियौ—वि० ।
डमकायोडौ—भू०का०कृ० ।
डमकाईजणौ, डमकाईजवौ—कर्म वा० ।
डमकणौ, डमकवौ—अक०रू० ।
डमकाडणौ, डमकाडवौ, डमकावणौ, डमकाववौ—रू०भे० ।

डमकायोडौ–भू०का०कृ—१ चमकाया हुआ. २ ध्वनित किया हुआ, बजाया हुआ (डमरू)
(स्त्री० डमकायोड़ी)

डमकावणौ, डमकाववौ—देखो 'डमकाणौ, डमकावौ' (रू भे)

डमकावियोडौ—देखो 'डमकायोडौ' (रू.भे)
(स्त्री० डमकावियोडी)

डमकियोडौ–भू०का०कृ०—१ चमका हुआ. २ ध्वनित ।
(स्त्री० डमकियोडी)

डमगावणौ, डमगाववौ—देखो 'डगमगाणौ, डगमगावौ' (रू.भे)

डमडम–स०पु०—१ एक ध्वनि विशेष
२ डमरू की ध्वनि ।

डमडेर—देखो 'ढमढेर' (रू.भे)

डमडोल—देखो 'डावाडोळ' (रू भे.)
उ०—जिन सासन राय्यउ जिणइ, डोलतउ डमडोळ । समझायउ स्री पातसाह, सदगुरु म्हाटयउ तइ सुवोल ।—स कु.

डमडोळणौ, डमडोळवौ–क्रि०अ०—१ चचल होना ।
उ०—मेघमुनि काइं डमडोळइ रे । इण जाति सहु कौं स्रावक साभळइ जी ।—ऐ जै.का स
२ डांवाडोल होना ।

डमर–स०पु०—१ कोलतार २ डमरू । उ०—चहकिया नहर घर चढे चाक । डहकिया डमर हर आक डाक ।—वि स.
३ उपद्रव । उ०—इह स्रयनी गुरु मेरा ब्रह्मचारी । हु चरण लागु डर डमर वारी ।—ऐ जै का स.
४ दो राज्यो अथवा दो राजकुमारो का परस्पर विरोध होने से पैदा होने वाला उपद्रव (जैन)
५ शानशोकत, आडम्बर, ठाट-बाट । उ०—१ चवि वडम वोल गयदा चढे, चमर डमर कर चालिया । सिव विसन ब्रहम सुर जाणि सव, हेक साथ मिळि हालिया ।—सू प्र.
उ०—२ चहु चढै दुरदा चमर ढुळता, डमर सजिया डाण । चळ वाघ तोरण वैठ चवरी, प्रगट जोडै पाण ।—र.रू.
६ देखो 'डवर' (रू भे.) उ०—१ हुवो कूच 'चिमनेस' यू अदव राखे हुकम, भडा कोचा किता प्राण भागा । देख फोजा डमर दुरग छोट दीधो, जोधहर न छोडी दुरग जागा ।—लिछमीदान वारहठ
उ०—२ ताम छोळ घ्रत तणी, वणै ऊपरा वहोतरि । छकै मसाला डमर तर्क सोरभा अम्मरि ।—सू प्र.
उ०—३ कचण जवहर कंत विविध सिंगार वडाई । पोसाका परमळ अतर डमरा छवि आई ।—वा.दा.
उ०—४ केहर तणी कळाइया, भणणाहट भमराह । भीजी गज सिर भाजता, मद सोरभ डमराह ।—वा.दा.
उ०—५ इळा वेघ घड मोड राठोड दखणी अडै, खडै लसकर डमर जोम खायै । पडति वडा गढ लाग आणी 'पतै', मुराडा झाडती आग मायै ।—महाराजा प्रतापसिंघ (किसनगढ) रो गीत
उ०—६ चोगडद घोम रज डमर चाक । विछटिया मेळा चक्र-वाक ।
—सू प्र.
उ०—७ किरमर वाही करग सू, पळकी इसै पर । जाणक चमकी वीजळी, कर काळै डमर ।—वी मा.
उ०—५ हालिया थाट रज डमर होय । दळ जाणि हेक घर अंवर होय ।—सू.प्र.

डमरु, डमरुअ, डमरुक, डमरुग, डमरुय—देखो 'डमरू' (रू.भे) (जैन)

डमरू–स०पु० [स० डमरु] १ एक प्रकार का वाद्य विशेष ।
उ०—१ खाडा हत्थउ भैरवौ रे, कर डमरू नै डाक । तिण-अवसर प्रगटयो तिहा, आव्यो मारतो हाक ।—स्रीपाळ रास
उ०—२ जे जिमणै श्री भैरव जिमणै श्री हाथ त्रिसूळ, डावै श्री भैरव डावै श्री डमरू डिगमिगै ।—लो गी
वि०वि०—यह वाद्य बीच मे से पतला होता है किन्तु दोनो तरफ सिरो की ओर वडा होता जाता है । यह गोल और लम्बा होता है और खोखला होता है । दोनो सिरो के घेरे चमडे से मढे हुये होते हैं । इसके बीच मे दोनो तरफ वरावर वढी हुई डोरिया वधी हुई होती हैं जिनके छोरो पर गोली या कौडी वधी होती है । यह इतना छोटा होता है कि इसको एक हाथ से बीच मे से पकड कर आसानी से हिलाया जा सकता है । बीच मे से पकड कर जव इसको हिलाया जाता है तव दोनो कौड़िया चमडे पर पडती हैं जिससे शब्द होता है । यह

शिवजी का प्रिय वाद्य कहलाता है। मदारी लोग भी इसका प्रयोग करते है।

यौ०—डमरू-कर, डमरू-धरण, डमरू-नाथ।

२ बालक (अ मा) ३ वाए घुटने मे होने वाला क्रोष्टु वात।

४ ऐसी वस्तु जो बीच मे से पतली हो और दोनो ओर चौडी हो। डमरू के आकार की वस्तु।

रू०भे०—डडरू, डमरुग्र, डमरुक, डमरुग, डमरुय, डम्मरू, डवँरू, डँरू।

यौ०—डमरू-जत्र, डमरू-मध्य, जळडमरू-मध्य।

डमरूकर–स०पु०यौ० [स०] महादेव, शिव (अ मा.)

डमरूजत्र–स०पु०यौ० [स० डमरू+यत्र] एक प्रकार का यत्र जो अर्क निकालने तथा सिगरफ का पारा, कपूर नौसादर आदि उडाने के काम आता है।

डमरू-धरण, डमरू-नाथ–स०पु०यौ०—डमरू को धारण करने वाले शकर, महादेव।

डमरूमध्य–स०पु०यौ० [स०] धरती के दो बडे भागो को मिलाने वाला बीच का तग या पतला भाग।

डमामो–स०पु०—वाद्य विशेष। उ०—काहुळ तणँ कोलहळि कान कम-कम्या, डूडि डमामा दुडदडी, द्रमद्रमाटि भयकर होइवा लागउ।
—व.स.

डमार—देखो 'डवर' (रू भे) उ०—गुलाल अबीरा री घमरोळ उठी, गुलस रो डमार गैणाग छायो।—पना वीरमदे री वात

डम्मर—१ देखो 'डवर' (रू भे) उ०—१ खेत मे वडबोरडिया आयोडी गहर डम्मर व्हियोडी, जाणँ वडला ऊभा।—रातवासो

उ०—२ दळ मेहळ ऊपडँ, भमर रज डम्मर भ्रमँ।—गु.रू व.

स०पु०—२ डमरू। उ०—नाचे बावन वीर नृत, डह डह करि डम्मर।—सू प्र

डम्मरी–स०स्त्री०—१ लडाई २ प्रतिस्पर्धा।

वि०—१ बहुत, अत्यधिक. २ भयानक, विकट।

डम्मरू—देखो 'डमरू' (रू भे.) उ०—जपइ तुहाळइ काळि, डहुडहिण डम्मरु तणा। छाडे असुर सु आळि, तइ वा भारथि नीसहथि।
—सिवदास गाडण

डम्माडम्मा–वि०—भयभीत, कम्पायमान। उ०—कहै कुराण कतेव, उरह हुय डम्माडम्मा। पैकवरा पुकारि, मिळँ साजणा कुटम्मा।
—सू प्र.

डयोढी—देखो 'डोढी' (रू भे)

डयोढीदार—देखो 'डोढीदार' (रू भे)

डर–स०पु० [स० दरः] १ किसी अनिष्ट या हानि की आशका से उत्पन्न होने वाला एक दुखपूर्ण मनोवेग, भय, खौफ, त्रास (ह ना)

पर्या०—अतक, आतक, आसक्या, उद्रक, चमक, त्राप, त्रास, दर, बी, बीहँ, भय, भी, भीत, भीय, भँ।

क्रि०प्र०—लागणौ, होणौ।

मुहा०—१ डर राखणौ—शका रखना, भय रखना, बडे-बूढो का मान रखने के लिये उनके नियत्रण मे रहना, सकोच रखना.

२ डर रौ मारियौ—भय के कारण।

२ किसी अनिष्ट की आशका। उ०—सबळ जळ सभिन्न सुगध भेट सजि, डिगमिगी पाउ वाउ क्रोध डर। हालियौ मळयाचळ हूत हिमाचळ, कामदूत हूर प्रसन कर।—वेलि

यौ०—डर-फरू।

३ ध्वनि विशेष। उ०—उवक डाळियाँ दुळँ, डागडधा डर-डर सूतँ। ऊची नीची तकँ, लळँ लुळ पूरी कूतँ।—दसदेव

४ मेढक के बोलने की ध्वनि। उ०—डेडरिया करँ (बोलँ) डरा-डरा, खाली कोठा भरा-भरा।—अज्ञात

रू०भे०—टर।

यौ०—डर-डर, डरा-डरा।

वि०—सघन, गहरा, काला। उ०—दीह गयउ डर डवरे, नीले नीझरणेहि। काळी जाया करहला, तोल्यउ किसे गुणेहि।—ढो मा.

डरकण–वि०—कायर, डरपोक।

कहा०—डरकण री तो राम ही वेली कोयनी—कायर का साथ ईश्वर भी नही देता है अर्थात् भाग्य भी बहादुरो के ही पक्ष में होता है।

डरडको—देखो 'टरडको' (रू.भे)

डरडो–स०पु०—बूढ़ा ऊँट। उ०—ऊणा ऊरणिया खरसणिया मोळँ। डरडा नरडा विण अरडा दे टोळँ।—ऊ का.

डरणी–स०स्त्री०—भय, त्रास। उ०—उतक्रस्टी रे लाल की जो करणी, तो मिटै लाल जम की डरणी।—जयवाणी

डरणौ, डरबौ–क्रि०अ० [स०दरः] १ किसी आपदा, अनिष्ट या हानि की आशका से आकुल होना. २ सशक होना, अदेशा करना, आशका करना। उ०—किमाड ही न जडै। आ सत्रू जाणलैला'क म्हासू डरतो दरवाजो जडै है।—वी.स टी

डरणहार, हारौ (हारी), डरणियौ—वि०।

डरवाडणौ, डरवाडबौ, डरवाणौ, डरवाबौ, डरवावणौ, डरवावबौ—प्रे०रू०।

डराडणौ, डराडबौ, डराणौ, डराबौ, डरावणौ, डरावबौ—स०रू०।

डरिग्रोडौ, डरियोडौ, डरयोडौ—भू०का०कृ०।

डरीजणौ, डरीजबौ—भाव वा०।

डरपणौ, डरपबौ—रू०भे०।

डरपणौ, डरपबौ—देखो 'डरणौ, डरबौ' (रू.भे)

उ०—ककण-कोरा नार-सुरा जे अगन चीरँ। फूटँ मेघ फुंहार बगँ जळ वेग नदी रँ। गात सुहाता नीर हठीली लार म छोडँ। कड़क घमका मांड डरपती दडकँ दौडँ।—मेघ.

डरपणहार, हारौ (हारी), डरपणियौ—वि०।

डरपाडणो, डरपाडवो, डरपाणो, डरपावो, डरपावणो, डरपाववो—क्रि०स०।
डरपिग्रोडो, डरपियोडो, डरप्योडो—भू०का०कृ०।
डरपीजणो, डरपीजवो—भाव वा०।
डरपाडणो, डरपाडबो—देखो 'डराणो, डरावो' (रू भे)
डरपाडियोडो—देखो 'डरायोडो' (रू भे)
(स्त्री० डरपाडियोडी)
डरपाणो, डरपाबो—देखो 'डराणो, डरावो' (रू.भे)
उ०—ग्रति लहवउ तदि ग्राप, डरपायउ डरपो करी। चादउ ही चालइ नही, वेटो ग्रवछडि वाप।—ग्र. वचनिका
डरपाणहार, हारो (हारी), डरपाणियो—वि०।
डरपायोडो—भू०का०कृ०।
डरपाईजणो, डरपाईजवो—कर्म वा०।
डरपणो, डरपवो—ग्रक०रू०।
डरपाडणो, डरपाडवो, डरपावणो, डरपाववो—रू०भे०।
डरपायोड़ो—देखो 'डरायोडो' (रू भे)
(स्त्री० डरपायोडी)
डरपावणो, डरपाववो—देखो 'डराणो, डरावो (रू भे)
डरपावणहार, हारो (हारी), डरपावणियो—वि०।
डरपाविग्रोडो, डरपावियोडो, डरपाव्योडो—भू०का०कृ०।
डरपावीजणो, डरपावीजवो—कर्म वा०।
डरपणो, डरपवो—ग्रक० रू०।
डरपावियोड़ो—देखो 'डरायोडो' (रू.भे.)
(स्त्री० डरपावियोडी)
डरपियोड़ो—देखो 'डरियोटो' (रू भे)
(स्त्री० डरपियोडी)
डरपोक-वि०—जो बहुत डरता हो, कायर, भीरु। उ०—कोई वीर स्त्री नवी डरपोक स्त्री नै उपदेस देवै है।—वी.स.टी
डरपोकपणो-स०पु०—कायरता, भीरुता।
डरमध-स०पु०—एक प्रकार का घोडा जो शुभ माना जाता है।
वि०वि०—इसका रग जामुन का सा होता है, ललाट पर सफेद तिलक होता है तथा चारो पैर सफेद होते है।
डरर-स०स्त्री० (ग्रनु०) १ जोशीली ग्रावाज, जोशपूर्ण ध्वनि. यौ०—डरर-डाफर।
२ मेढक के बोलने की ध्वनि।
३ क्रोधपूर्ण ध्वनि।
डरर-डाफर-स०स्त्री०यौ० (ग्रनु०) जोशीली ग्रावाज, जोशपूर्ण ध्वनि।
उ०—डरर-डाफर ग्रतर कहर भरतो डकर, ग्रत मकर वयण कहतो ग्रजूभा। पाट रिछपाळ जै 'माल' हर पुचाळै, दाख खग्रवाट रिड़माल दूजा।—पहाडखा ग्राढ़ो
डररा'ट-स०स्त्री०—१ ध्वनि विशेष २ मेढ़क की ग्रावाज।
उ०—तिसै भाद्रवै री ग्रधारी रात, मेह वरसनै रह्यो छै, दादरा डररा'ट करै छै।—जगडा मुखडा भाटी री वात
डरामणो—देखो 'डरावणो' (रू भे) उ०—हस जेम ग्रीध पकती हुई, दीसै घाट डरामणो। ग्रसुराण विहुउ कीधो 'ग्रभै', रिण समद ग्रध्रियामणो।—सू प्र.
(स्त्री० डरामणी)
डराडणो, डराडवो—देखो 'डराणो, डरावो' (रू भे)
डराडियोड़ो—देखो 'डरायोडो' (रू भे)
(स्त्री० डराडियोडी)
डराणो, डरावो-क्रि०स०—भयभीत करना, डर दिखाना, डराना।
डराणहार, हारो (हारी), डराणियो—वि०।
डरायोड़ो—भू०का०कृ०।
डराईजणो, डराईजवो—कर्म वा०।
डरणो, डरवो—ग्रक०रू०।
डरपाडणो, डरपाडवो, डरपाणो, डरपावो, डरपावणो, डरपाववो, डराड़णो, डराडवो, डरावणो, डराववो, डारणो, डारवो—रू०भे०।
उ०—दुरवासा ग्रायो, ग्राय डरायो, चक्र चलायो, त्रिचळायो।
—भगतमाळ
डरायोड़ो-भू०का०कृ०—भयभीत किया हुग्रा, डराया हुग्रा।
(स्त्री० डरायोडी)
डरावणो-वि०पु० (स्त्री० डरावणी) जिसको देखने से भय पैदा हो, भयभीत करने वाला, भयावह, डरावना, भयानक।
उ०—१ थोडो वधियो-ई हो कै काई देखै है कै ग्रेक जणो जकै री ग्राख्यां लाल, मूडो डरावणो, हाथ मे सोटो लिया, मूडे सू गाळ्या रा गोळा छोडतो, वार वार दात पीस'र ग्रेक लुगाई-नै मारण नै उचकै है।—वरसगाठ
उ०—विणजारी ग्रे लोभण, खोटो छै परदेसा री काम, रात तो ग्रधेरी लागै डरावणी, विणजारी ग्रे।—लो गी.
रू०भे०—डरामणो।
डरावणो, डराववो—देखो 'डराणो, डरावो' (रू.भे)
उ०—इण घर री राणिया सिघणिया छै। वे कवर जिणै सो काळ जिसा छै। थे डरावणा चाहो सो डरै नही।—वी स. टी.
डरावणहार, हारो (हारी), डरावणियो—वि०।
डराविग्रोडो, डरावियोडो, डराव्योडो—भू०का०कृ०।
डरावीजणो, डरावीजवो—कर्म वा०।
डरणो, डरवो—ग्रक० रू०।
डरावियोडो—देखो 'डरायोडो' (रू भे)
(स्त्री० डरावियोडी)
डरियोड़ो-भू०का०कृ०—१ भयभीत, ग्रातकित २ शकित।
(स्त्री० डरियोडी)
डरू-फरू-वि० यौ०—घबराया हुग्रा, भयभीत, सशकित।
उ०—हीरू लिछमी री हाथ भाल'र वारै ग्रायो। कापते कापते डरू-फरू हो'र डाकियै नै पूछियो काई है ?—वरसगाठ

डळ—१ देखो 'डळौ' (मह, रू भे.)
२ देखो 'ढळौ' (मह, रू भे)
डळणौ, डळबौ–क्रि०अ०—१ गिरना, पडना.
२ देखो 'डुळणौ, डुळब' (रू भे)
डळियोडौ–भू०का०कृ०—१ गिरा हुआ, पडा हुआ।
२ देखो 'डुळियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० डळियोडी)
डळियौ—१ देखो 'डळौ' (अल्पा, रू भे)
२ देखो 'ढळौ' (अल्पा, रू भे)
डलियौ—देखो 'डडियौ' (अल्पा, रू भे)
२ देखो 'डलौ' (अल्पा, रू भे)
डळी–स०स्त्री०—१ नमदे का बना गद्दीनुमा उपकरण जिसे घोडे की पीठ पर रख कर ऊपर जीन या चारजामा कसा जाता है, अरकगीर.
२ देखो 'डळौ' (अल्पा, रू भे)
उ०—१ जिम छोहि दीधी भीतिइ, सामुही चूना नी डळी मूकी लाखीइ। अनइ त्या चूना नी सूकी डळी भीतिइ लागी पाछी पडइ। भीति माही काईं न रहइ।—षष्टिशतक प्रकरण
उ०—२ माणस मुरधरिया माणक सम मूगा। कोडी कोडी रा करिया सम सूगा। डाढी मूछाळा डळिया मे डुळिया। रळिया जायोडा गळिया मे रुळिया।—ऊ का
डलेवर–स०पु० [अ० ड्राइवर] रेल या मोटर को चलाने वाला।
डळौ–स०पु०—१ खडित भाग, खड, ढोका, टुकडा।
उ०—पातर हू ता प्रीत कर, आफू डळा अरोग। आखर पछताया अठे, लानत दे दे ता ग —वा.दा
२ लोदा, पिंड, लुगदा। उ०—१ खीच रा डळा खावै खिसक, नीच तळा कुळ नाळ रा। नित मीच आख बैठे निलज, भीच अमल भूपाळ रा।—ऊ का
उ०—२ डाक चमू वजाडे घपाडे गीधा गळा डळा। वीजूजळा भुजा वळा भाजे खळा वीह।—नीमाज ठाकुर सुरताणसिंघ रो गीत
अल्पा०—डळियौ, डळी।
मह०—डळ।
३ मूर्ख, गँवार। उ०—ढीलो मूडो मेलै ढेरा, टिकगा पाणी पीवण टेरा। डळा उठै कर दीवा डेरा, चाटै हिळगा चाटण चेरा।—ऊ का
४ देखो 'ढळौ' (रू भे)
डल्लौ–म०पु०—ऊचे (लम्बे) पायो की चारपाई (शेखावाटी)
डवरू—देखो 'डमरू' (रू भे)
डवगर—देखो 'डवगर' (रू भे.) (व.स)
डवोइणौ, डवोइबौ—देखो 'डुबोणौ, डुबोवौ' (रू.भे.)
उ०—जीमतो चीर जपै उमादे राणी, डवोइयो यो तो राच्यो-छै चुरट मजीठ।—लो गी
डस–स०स्त्री०—१ तराजू के पलडे की डडी (डाडी) के मध्य मे बाधी जाने वाली रस्सी. २ एक विशेष प्रकार के ताले का अवयव।
अल्पा०—डसियौ।
३ डाह, ईर्ष्या।
क्रि०प्र०—करणी, झेलणी, पकडणी, राखणी।
४ नेत्र मे होने वाली लाल रेखा जो सुदरता और वीरत्व की सूचक मानी जाती है ५ नक्कारा।
उ०—डसा गडड ओगाज तोपा बखम दोयणा, दळा भक काज मह वेघ दुखतो। असुभ गजराज अधपती घड ऊपरा, बरूथो मयद अध-राज वखतो।—महाराजा वखतसिंघ रो गीत
६ देखो 'डसी' (रू भे.)
रू०भे०—डमी।
डसकौ—देखो 'डुसकौ' (रू भे) उ०—नगर लोक सहू ऊभा जोवै। करै कोलाहळ डसकै रोवै।—गोपाळ रास
डसण–स०पु० [स० दशन] १ दांत, दत। उ०—१ अधरा डसणा सू उदै, विमळ हास द्युतिवत। सो सध्या सू चद्रिका, फैली जाण फबत। —बा.दा.
उ०—२ नासिका सुक चच सरिखी, मुगतफळ सजोति। अहिर विद्रुम ओपमा, जेहा डसण हीरा जोति।—रुकमणी मगळ
२ देखो 'डसणि, डसणी' (रू भे.)
मह०—डसणेस।
डसणि, डसणी–स०स्त्री०—कटार। उ०—किये साखी कमळ राइमल कळोधर, पट हथा डसणी करिमाळ पूजो। देसि परदेसि दळ सिंघा दीपै दळै, दळा रो थभ रिणिमाल दूजो।
—राठौड गोपाळदास (कान्होत, रायमलोत) रो गीत
रू०भे०—डसण।
डसणेस—देखो 'डसण' (मह, रू भे) उ०—फरस-पाणि फावेस उभै डसणेस अवक्कर। निलै अरध नखतेस मसत भणेस मधुक्कर। —सू.प्र
डसणौ डसवौ–क्रि०स० [स० दशन] १ (सांप आदि जहरीले कीडो का) काटना। उ०—१ सारग वज्यो रग रच्यो, उरे पसार्यो अग। ऊभी थी लडथड पडी, जाणे डसी भुजग।—र.रा.
उ०—२ वाळू जाळू थारी जीभडी ए लजा ओठी जी ए चो। डसजो थनै काळोडो नाग, वाला जी ओ।—लो गी.
२ काटना, चवाना। उ०—तिसडै एकै रजपूत कसूभो पीयो हुतो अर कुवरजी मानसिंघजी रै वास्तै आइ अर होठ डस्या अर कटारी काढि अर जिसडो मानसिंघजी नू वाहणहारो हुयो।—
३ डक मारना।
डसणहार, हारो (हारी), डसणियो—वि०।
डसवाडणौ, डसवाडबौ, डसवाणौ, डसवावौ, डसवावणौ, डसवावबौ, डसाडणौ, डसाडबौ, डसाणौ, डसाबौ, डसावणौ, डसावबौ—प्रे०रू०।
डसिओडो, डसियोडौ, डस्योडौ—भू०का०कृ०।
डसीजणौ, डसीजबौ—कर्म वा०।

डसा-स०स्त्री० [स० दंष्ट्रा] दाढ़ ।
डसियोड़ो-भू०का०कृ०—१ डसा हुआ २ काटा हुआ. ३ डक मारा हुआ ।
(स्त्री० डसियोडी)
डसियौ—देखो 'डस' (२) (अल्पा, रू भे)
डसी-स०स्त्री०—१ कष्ट निवारणार्थ देवी-देवताओ के स्थानो पर, मडप पर अथवा वहा के वृक्ष की टहनी पर अपने अग के वस्त्रो मे से फाड कर बाधा जाने वाला छोटा टुकडा, धज्जी ।
क्रि०प्र०—बाधणी ।
२ देखो 'डस' (२) (रू भे)
डहक-स०स्त्री०—१ नक्कारे की ध्वनि, आवाज ।
उ०—वहक भाजै असुर वका, डहक ववी सुणै टका, तहक वाजै तूर ।
—र रू
रू०भे०—डहक्क ।
२ आडम्बर ३ कपट, छल. ४ देखो 'डहक्क' (रू भे)
डहकणो, डहकवौ-क्रि०प्र०—१ नक्कारे का ध्वनि करना, बजना ।
उ०—राण दिस हालया ठाण आराण रुख, कोह असमाण चढ माण ढका । गोम नेजा हलक राग सिंधू गहक, डहक डडाहड़ा सीस डका ।—र रू.
२ (डमरू का) वजना, ध्वनि होना । उ०—डहकिया डमरू दात-दाते डमै, खाग खागा सरिसि खान खाना खसै ।—पी ग्र
३ भौंचक्का होना, हक्का-वक्का होना । उ०—डहकियो साह देखे डमर, घणू भेद न लहै घणा । अण लाख दुसह भाजै तिसा, अण हजार गजवध' तणा ।—सू प्र
४ धोखा खाना, ठगा जाना । उ०—१ डहक्यौ उफर देस, वादळ धोधौ नीर विन । हाथ न आई हेक, जळ री बूद न जेठवा ।
—जैतदान वारहठ
उ०—२ स्रो दसरथ-दसरथ सुतन, पीथळ मूज पवार । कुण-कुण डहकाणा नही, वम नुगला वापार ।—बा दा.
५ बहकना । उ०—डहक्योडा डोलै केई डोफा, गाफल जनम गमावै । राजी नेख मात्र नै राखै, सैजा ही सुख पावै ।—ऊ का
६ हँसना । उ०—कालिका डहक डमरू ऋहाक । हर रिख मिळि जोगणी वीर हाक । —सू प्र
७ मेढ़क का बोलना, मेढक का ध्वनि करना ।
उ०—ऊपर कुजा, सारसा गहकनै रही छै। डेडरा डहकनै रह्या छै।—रा सा स
८ लहलहाना, हरा-भरा होना । उ०— रवि वैठो कळसि थियो पालट रितु, ठरे जु डहकियो हेम ठठ । ऊडण पख समारि रहे अलि, कठ समारि रहे कळकठ ।—वेलि
९ खिलना, प्रफुल्लित होना । उ०—माचा ऊपर फूल एकै-एकै पाखती कुम्हळाया छै, वीजा सरव डहकै छै ।—रायधण री वात
१० सुगध फूटना, महकना । उ०—सखिया तणै समाज ललित गहणा नीलवर । किसतूरी केवडा डहक परमल धण डवर ।
—बगसीराम प्रोहित री वात
११ सतर्क होना, चौकन्ना होना १२ पक्षियो का मस्ती मे बोलना । उ०—भाखरा रा नाळा वोलनै रह्या छै । पाणी नाडा भरनै रह्या छै । चोटडियाळ डहकनै रही छै ।—रा सा स.
१३ मस्ती मे चलना, राह छोड कर चलना । उ०—सारसी मेल्हइ मूयया माडइ असवार, उभडइ अणाचीतव्या डहकइ अकुसि लहकइ ।
—व स
१४ उमंग मे आना, उल्लसित होना १५ रुक-रुक कर रोना, खुल कर न रोना, सिसकना ।
डहकणहार, हारौ (हारी), डहकणियौ—वि० ।
डहकवाडणो, डहकवाडवो, डहकवाणो, डहकवावो, डहकवावणो, डहकवाववो—प्रे०रू० ।
डहकाडणो, डहकाडवो, डहकाणो, डहकावो, डहकावणो, डहका-ववो—स०रू० ।
डहकिग्रोडो, डहकियोडो, डहक्योड़ो—भू०का०कृ० ।
डहकीजणो, डहकीजवो—भाव वा० ।
डहक्कणो, डहक्कवो, डहिकणो, डहिकवो, डंकणो, डंकवौ—रू०भे० ।
डहकाडणो, डहकाडवो—देखो 'डहकाणो, डहकावो' (रू भे.)
डहकाडियोडो—देखो डहकायोडो' (रू भे)
(स्त्री० डहकाडियोडी)
डहकाणो-वि०—जो चमकाता हो, चमकाने वाला ।
डहकाणो, डहकावो-क्रि०स०—गुमराह करना, बहकाना ।
उ०—दोयण मत खोटी दियै, वाका विसवा वीस । डहकायो दुरवोध दे, आदम नै इळवीस ।—बा.दा
२ भ्रम मे डालना, सशकित करना । उ०—क्यू डहकावै मनडो मेरो, क्यू तरसावै जीव ।—सतवाणी
३ (नक्कारा, डमरू आदि) वजाना, ध्वनि करना ४ भौंचक्का करना, हक्का-वक्का करना. ५ धोखा देना, ठगना ६ हँसाना
७ हरा-भरा करना ८ प्रफुल्लित करना, खिलाना ९ सुगध फैलाना, डहकाना १० सतर्क करना, चौकाना ।
डहकणहार, हारौ (हारी), डहकणियौ—वि० ।
डहकायोडौ—भू०का०कृ० ।
डहकाईजणो, डहकाईजवो—कर्म वा० ।
डहकणो, डहकवो—अक० रू० ।
डहकाडणो, डहकाडवो, डहकावणो, डहकाववो, डहक्काडणो, डह-क्काडवो, डहक्काणो, डहक्कावो, डहक्कावणो, डहक्काववो, डंकाडणो, डंकाडवो, डंकाणो, डंकावो, डंकावणो, डंकाववो, डंहकाडणो, डंहकाडवो, डंहकाणो डंहकावो डंहकावणो डंहकाववो—रू०भे० ।
डहकायोडो-भू०का०कृ०—१ गुमराह किया हुआ, बहकाया हुआ

२ भ्रम मे डाला हुआ, सशंकित किया हुआ. ३ बजाया हुआ, ध्वनित (नगारा, डमरू आदि) ४ भौंचक्का किया हुआ, हक्का-बक्का किया हुआ. ५ धोखा दिया हुआ, ठगाया हुआ ६ हँसाया हुआ ७ हरा-भरा किया हुआ ८ प्रफुल्लित किया हुआ, खिलाया हुआ ९ सुगंध फैलाया हुआ, उहकाया हुआ १० सतर्क किया हुआ, चौंकाया हुआ।
(स्त्री० डहकायोड़ी)

डहकावणो, डहकायबो—देखो 'डहकाणो, डहकाबो' (रू.भे.)
उ०—१ बाजी भरम दिखावा, बाजीगर डहकावा।—दादू वाणी
उ०—२ ये ता जिय मे जाणत नाही, आई कहा चल जावे। आगे पीछे समझे नाही, मूरख यो डहकावे।—दादू वाणी
डहकावणहार, हारो (हारी), डहकावणियो—वि०।
डहकाविप्रोड़ो, डहकावियोड़ो, डहकाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
डहकावीजणो, डहकावीजबो—कर्म वा०।
डहकणो, डहकबो—अक० रू०।

डहकावियोड़ो—देखो 'डहकायोड़ो' (रू भे)
(स्त्री० डहकावियोड़ी)

डहकियोड़ो—भू०का०कृ०—१ बजाया हुआ, ध्वनित (नक्कारा, डमरू आदि) २ भौंचक्का हुआ हुआ ३ धोखा दिया हुआ, ठगा गया हुआ. ४ बहका हुआ. ५ हँसा हुआ ६ बोला हुआ (मेढक आदि) ७ लहलहाया हुआ, हरा-भरा ७ खिला हुआ, प्रफुल्लित ९ महकाया हुआ, सुगंधित १० चौंका हुआ, सतर्क।
(स्त्री० डहकियोड़ी)

डहक्क-स०स्त्री०—१ विकसित होने का भाव, प्रस्फुटन।
उ०—कसतूरी कडी केवडी, ममकत जाय महक्क। मारू दाडम-फूल जिम, दिन दिन नवी डहक्क।—ढो मा
२ देखो 'डहक' (रू भे)

डहक्कणो, डहक्कबो—१ बिलखना। उ०—सज्जणिया वळाइ कर, गउखे चढ़ी लहक्क। भरिया नयण कटोर ज्यउ, मुघा हुई डहक्क।
—ढो मा.
२ देखो 'डहकणो, डहकबो' (रू भे)
उ०—१ ठहक्कै कडी ककटा ठोर ठाई, डहक्कै भडा वकडा घोर डाई।—व भा
उ०—२ ऊमर दीठी मारुई, डीभू जेही लक्कि। जाणे हर-सिरि फूलडा, ऊपर चढ़ी डहक्कि।—ढो मा
उ०—३ हुई धीर सधीरा वीर हक्क। हर सकति डक डमरू डहक्क।—रा रू
देखो 'डहक' (रू भे)

डहक्काडणो, डहक्काड़बो—देखो 'डहकाणो, डहकाबो' (रू भे)

डहक्काड़ियो—देखो 'डहकायोड़ो' (रू भे)
(स्त्री० डहक्काडियोडी)

डहक्काणो, डहक्कावो—देखो 'डहकाणो, डहकाबो' (रू भे.)

डहक्कायोड़ो—देखो 'डहकायोड़ो' (रू भे)
(स्त्री० डहक्कायोड़ी)

डहक्कावणो, डहक्कावबो—देखो 'डहकाणो, डहकाबो' (रू भे.)

डहक्कावियोड़ो—देखो 'डहकायोड़ो' (रू भे)
(स्त्री० डहक्कावियोड़ी)

डहक्कियोड़ो—देखो 'डहकियोड़ो' (रू भे)
(स्त्री० डहक्कियोड़ी)

डहचक्क-क्रि०वि०—लगातार, निरन्तर। उ०—मछाहूठ घूटंत घोण भमक्क। ऊछाहूठ सीस उडै डहचक्क।—सू प्र

डहडह-स०स्त्री०पु०—हँसने की ध्वनि। उ०—कलिवाणी ग्रह-ग्रह नारद डहडह हेके दहदह वीर हसे —सू प्र

डहडहणो, डहडहबो-क्रि०अ० - १ प्रफुल्लित होना, खिलना।
उ०—डहडहत कुसम पूरत पराग, पल्लव दळ मिळ जेव जाग। रसभरी दाखी पुन पळास, नाफुरमा परगत आस-पास।
—मयाराम दरजी री वात
२ भयातुर होना, भयभीत होना। उ०—करमराज कुणउणिउ नीतारिण घाउ वळइ, समरतूर आफळइ, सुभट-हृदयमनोरथ माविवइ, कातर डहडहइ, वीर गहगहइ, चिंध लहलहइं, मयगळ गुडया...।
—व स.
३ प्रसन्न होना, हर्षित होना। उ०—बावन वीर नचण बहबहिया। ठेरु जटी चउ डहडहिया।—सू प्र
४ डमरू आदि वाद्यो का बजना, ध्वनि करना।
उ०—सूर घाय सास है, नूर ब्रह्वहे नगारा। डाक वीर डहडहे, 'जसौ' मेनिया जयारा।—वचनिका राठौड़ रतनसिंघजी री
५ लहलहाना, हरा-भरा होना। उ०—यो सज्जण सुख पूरिया, दूर गया सहु दुक्ख। दळ नव पल्लव डहडहे, ज्यों जळ पाया रुक्ख।
—रा.रू
६ मेढक का बोलना। उ०—मोर सोर मचै, दुद्र धार न सई। दादुरा डहडहे, सावण भादुवै री संधि कहै।—रा सा स
डहडहणहार, हारो (हारी), डहडहणियो—वि०।
डहडहाडणो, डहडहाडबो, डहडहाणो, डहडहाबो, डहडहावणो, डह-डहावबो —स०रू०।
डहडहिप्रोड़ो, डहडहियोड़ो, डहडह्योड़ो—भू०का०कृ०।
डहडहीजणो, डहडहीजबो—भाव वा०।
डहडुहणो, डहडुहबो—रू०भे०।

डहडहाट—देखो 'डँडा'ट' (रू भे)

डहडहाणो, डहडहावो—देखो 'उहडहणो' (रू.भे)

डहडहायोड़ो—देखो 'डहडहियोड़ो' (रू.भे)
(स्त्री० डहडहायोड़ी)

डहडहाव-स०पु०—हरा-भरा होने का भाव, हरापन, ताजगी।

डहडहियोड़ो-भू०का०कृ०—१ खिला हुआ, प्रफुल्लित. २ भयभीत,

आतंकित. ३ हर्षित, प्रसन्न ४ बजा हुआ, ध्वनित (डमरू आदि) ५ लहलहाया हुआ ६ बोला हुआ (मेंढ़क आदि)
(स्त्री० डहडहियोडी)

डहडहौ–वि०—हरा-भरा, प्रफुल्लित, ताजगीयुक्त।

डहडुहणी, डहडुहबौ—देखो 'डहडहणी, डहडहबौ' (रू भे)
उ०—१ दम्माम डहडुह तूर ग्रहग्रह, गोळ गहम्मह गंगुडिय।
—गु रू व
उ०—२ डहडुह डाइणि डामर सद्द। नहग्रह ग्रीखौ सीधू नद्द।
—रा जै रासौ

डहडुियोडौ—देखो 'डहडहियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० डहड्डहियोडी)

डहणौ, डहबौ–क्रि०स०—१ उठाये हुए रखना, सम्भाले हुए रखना।
उ०—१ डहतौ भुज गयण वयण कहतौ दिढ़, एकलमिड वहतौ अणमाव। भूरा सिंघ रजवट रा भाखर, ग्राइयौ सुधमना ग्रमराव।
—रतनसिंघ कूपावत रौ गीत
उ०—२ डिगतौ ग्राभ कुण भुजा ऊपर डहै, खहै कुण जमदूता वार खाटी। दूसरौ 'ग्रमर' किण मरै धोळै दिवस, भवस दरियाव विच विना भाटी।—ग्रमरसिंघ भाटी रौ गीत
२ स्थापित करना, रखना। उ०—दुय दुय सहँस बदूक, सहति वगसरा सकाजा। तै दस दस भरि तोप, डहै बारह दरवाजा।—सू प्र.
३ धारण करना। उ०—डहिया विरद वडा भुज डडै। तीख करै मियळापुर तडै।—र ज प्र
४ पहनना, धारण करना। उ०—डगस बेडिया डहै, जभीर भार जूवळा। करत धून काळकीट, सुउ नाग सामळा।—सू प्र.
५ ग्रहण करना, पकड़ना, धारण करना। उ०—मारू काम ग्रडोल मन, सारू साम धरम्म। डहौ खडगा धूप कर, एवा गही सरम्म।
—रा रू
६ ध्वनि करना, बजाना (डमरू ग्रादि वाद्यों को)। उ०—डहरू सकर डहै, करै जोगण किलकारा। दडै सिंधुडौ राग, पडै सर सोक ग्रपारा।—रा रू
७ ग्रारूढ होना? उ०—सुरापत इंद्र नै कियौ गजराज सज, डुडद नै जीण सपतास डहियौ। कुसळउत ग्रनै भूरौ दुरग वस कियौ, वृसभधुज ग्रनै कर त्रिपुर वहियौ।
—नीवाज ठाकुर ग्रमरसिंघ रौ गीत
क्रि०ग्र०—८ शोभित होना। उ०—डहत केलि डालय, उपति वद्रवाळय। वहत दुदन वय, जपत देव जैजय।—सू प्र
९ होना, बनना। उ०—परवता ऊपर पथ डहै। गिरि कदर भगर मोर गहै।—गु रू व
१० सुसज्जित होना, सजना। उ०—भळहळ रती भुजा भर भल्ले, हल्ले उतन नरेस 'जसाहर'। ग्रायौ जोध दुरग ऊमहिया, डहियां फौज गजा धज डबर।—सू प्र
११ दुखी होना, सतप्त होना। उ०—डहती डूलीसी भूली ढग ढागै, मोटी ग्राख्या री रोटी मुख मागै। तोता वोता मे रैंता तुतळाता, बाता बीसरगा वैंता वतळाता।—ऊ का.
डहणहार, हारौ (हारी), डहणियौ—वि०।
डहवाडणौ, डहवाडबौ, डहवाणौ, डहवाबौ, डहवावणौ, डहवावबौ—प्रे०रू०।
डहाडणौ, डहाडबौ, डहाणौ, डहाबौ, डहावणौ, डहावबौ—स०रू०।
डहिग्रोडौ, डहियोडौ, डह्योडौ—भू०का०कृ०।
डहीजणौ, डहीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

डहर—१ देखो 'डैंरौ' (रू भे) उ०—१ देवर चूटया दोय ऊमरा, थारी धण चूटयौ सारौ डहर, सोदागर महदी राचणी।—लो गी
उ०—२ गिरवर डहर भंगर गाहि, पाधर किया पवगा पाहि।
—गु रू व
स०पु० (देश) २ बालक (जैन) ३ तरुण, युवक (जैन)
वि०—हलका, तुच्छ, छोटा।

डहरउ–स०पु० [स० दहर:] १ बच्चा, शिशु (उ र) २ जानवर का बच्चा (उ र) ३ छोटा भाई, अनुज (उ र) ४ चूहा (उ र)

डहरी–स०स्त्री०—प्रेतिनी, भूतिनी, डायन। उ०—सियकोतर भैरव साकणिया, डहरी बहरी मिळ डाकणिया। गयणाग न मावत ग्रोधणिया, सुज भोम ग्रसी चत्र चारणिया।—पा प्र

डहरू—१ देखो 'डमरू' (रू भे) उ०—डहरू सकर डहै, करै जोगण किलकारा। दडै सिंधुडौ राग, पडै सर सोक ग्रपारा।—र रू
२ देखो 'डैरू' (रू भे.)

डहरौ–स०पु० [स० दहर] छोटा वच्चा, शिशु (जैन)

डहलणौ, डहलबौ, डहलाणौ, डहलावौ–क्रि०ग्र०—हाथी का चिंघाडना।
उ०—ग्रसमानक ग्रज्भर धार ग्रसम्मर तूट तरोवर तुग नर, डहलाए दद्दर हीसै हैगर फूटि सरोवर फाळ फर।—गु रू व

डहळौ–वि०—गधला या मैला (पानी)। उ०—तू न तान सारखौ जिको जळ डहळौ पीवै। तू न तान सारखौ सुणे पन हर नह जीवै।
—द दा

डहाडणौ, डहाडबौ—देखो 'डहाणौ, डहाबौ' (रू भे)

डहाडियोडौ—देखो 'डहायोडौ' (रू भे)

डहाणौ, डहाबौ–क्रि०स०—१ शोभित करना २ करना, बनाना.
३ सुसज्जित करना, सजाना ४ दुखी करना, सतप्त करना.
५ देखो 'डहणौ, डहबौ' (रू भे)
डहाणहार, हारौ (हारी), डहाणियौ—वि०।
डहायोडौ—भू०का०कृ०।
डहाईजणौ, डहाईजबौ—कर्म वा०।
डहणौ, डहबौ—ग्रक०रू०।
डहाडणौ, डहाडबौ, डहावणौ, डहावबौ—रू०भे०।

डहायोडौ–भू०का०कृ०—१ शोभित किया हुआ. २ किया हुआ, बना

हुआ ३ मुसज्जित किया हुआ, सजाया हुआ ४ दुखी किया हुआ, सतप्त किया हुआ ५ देखो 'टहियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० डहायोडी)

डहाल-स०स्त्री०—तलवार ।

डहावणौ, डहाववौ—देखो 'डहाणौ, डहावौ' (रू भे)
डहावणहार, हारौ (हारी), डहावणियौ—वि० ।
डहाविग्रोडौ, डहावियोडौ, डहाव्योडौ—भू०का०कृ० ।
डहावीजणौ, डहावीजवौ—कर्म वा० ।
डहणौ, डहवौ—अक०रू० ।

डहावियोडौ—देखो 'डहायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० डहावियोडी)

डहिकणौ, डहिकवौ—देखो 'डहकणौ, डहकवौ' (रू भे.)

डहिकियोडौ—देखो 'डहकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० डहिकियोडी)

डहिडहणौ, डहिडहवौ—देखो 'डहडहणौ, डहडहवौ' (रू.भे.) उ०—द्वादस मेघ नै दुवौ हुवौ, सू दुखियारी री आस हुवौ । भड लागौ, प्रथी रौ दळद्र भागौ । दादुरा डहिटहै, सावण आवण री सिध कहै ।
—रा सा.स.

डहियोडौ-भू०का०कृ०—१ उठाया हुआ, सम्भाला हुआ. २ स्थापित किया हुआ ३ धारण किया हुआ. ४ पहना हुआ, धारण किया हुआ ५ ग्रहण किया हुआ, पकडा हुआ ६ ध्वनि किया हुआ, वजाया हुआ ७ आरूढ हुवा हुआ ८ शोभित. ९ वना हुआ. १० सुमज्जित ११ दुखी, सतप्त ।
(स्त्री० डहियोडी)

डहूकौ—देखो 'दुसकौ' (रू भे.)

डहोळणौ, डहोळवौ—देखो 'डोळणौ, डोळवौ' (रू भे.)
डहोळणहार, हारौ (हारी), डहोळणियौ—वि० ।
डहोळवाडणौ, डहोळवाडवौ, डहोळवाणौ, डहोळवावौ, डहोळवावणौ, डहोळवाववौ, डहोळाडणौ, डहोळाडवौ, डहोळाणौ, डहोळावौ, डहोळावणौ, डहोळाववौ—प्रे०रू० ।
डहोळिग्रोडौ, डहोळियोडौ, डहोळ्योडौ—भू०का०कृ० ।
डहोळीजणौ, डहोळीजवौ—कर्म वा० ।

डहोळियोडौ—देखो 'डोळियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री० डहोळियोडी)

डहोळौ—१ भय, डर । उ०—पडै डहोळा छातिया, नजर पडता नाह । आवै आवै ऊचरै, ओडो हेर सिपाह ।—वी स
२ आन्दोलन, उपद्रव । उ०—महा डहोळौ मेदनी, विसतरियौ तिण वार । साह तपस्या आगळौ, अकबर सेन अपार ।—रा रू
३ खलवली, क्षोभ । उ०—सामद्र डहोळा ओद्रका, जाण हिलोळा हल्लियौ । आलम भडा 'अजमल्ल' रा, घांण मथाणै घल्लियौ ।
—रा.रू.

डहोलौ-स०पु०—१ काष्ट का बडा चम्मच । उ०—१ सू वासण तयार कीजै छै, देगा चरू, कढ़ाई, कुडछी, सुरपा, डहोला, झरहर, चालणी, थाळ, कटोरा, प्याला, ढकणी, लोटा, पाळा बाजोट और ही सब छकडा गाडा घातजै छै ।—रा सा स
उ०—२ आगै सहर मे एकै माह-रै विहा थौ, तै-रै महीनै-री तयारी करावै छै, भठी कढाय कढा, चरू, सुरपा, डहोला सारा वासण आण हाजर किया ।—राजा भोज अर खापरै चोर री वात

डहो—देखो 'डूग्री' (रू भे) उ०—पाखती अरटा री झीगडि चीगरडि पडिनै रही छै । डहा री खठाको लागिनै रहिम्रो छै । पाखती नाळि वझिनै रही छै ।—रा सा.स

डांक-स०स्त्री०—१ सोने चांदी के गहनो मे लगाया जाने वाला जोड ।
क्रि०प्र०—लगाणी (स्वर्णकार)
२ देखो 'डाखलौ' (मह, रू भे) (अमरत)
रू०भे०—डाख ।

डाक-घोटी-स०स्त्री०यौ०—सोने चादी की चद्दर को चमकाने का एक घोटा जिसके दोनो ओर विशेष प्रकार का पत्थर लगा रहता है । (स्वर्णकार)

डाकळ—देखो 'डाखळौ' (मह, रू भे.)

डाकळियौ—देखो 'डाखळौ' (अल्पा., रू भे.)

डांकळी-स०स्त्री०—देखो 'डाखळौ' (अल्पा, रू भे)

डाकळौ—देखो 'डाखळौ' (रू भे)

डाकियौ—देखो 'डाखियौ' (रू भे.)

डाख—देखो 'डाखळौ' (मह., रू भे)

डाखणौ, डाखबौ—देखो 'डाखिणौ, डाखिवौ' (रू भे)

डाखरौ-वि०—धुधला । उ०—आज न दीसै गोठ मे, सज्जण थारौ दीह । तारौ दीसै डाखरौ, सेरी वधियौ सीह ।
—जलाल-वूबना री वात

डाखळ—देखो 'डांखळौ' (मह, रू.भे)

डाखळियौ—देखो 'डाखळौ' (अल्पा, रू भे.)

डाखळी-स०स्त्री०—देखो 'डाखळौ' (अल्पा, रू.भे)

डाखळौ-स०पु०—डठल । उ०—आख्या मे काजळ लिया घाघरा रा उछाळा देवती बोली—सेठा रा रुपिया चुकाय नै अवकै म्हनै चूडौ जरूर पैरावणौ पडैला । हाथा मे चार-चार डाखळा लिया फिरू, म्हनै तौ लाज ईज घणी आवै ।—रातवासौ
रू०भे०—डाकळौ ।
अल्पा०—डाकळियौ, डाकळी, डाखळियौ, डाखळी, डावळी ।
मह०—डाक, डाकळ, डाख, डाखळ ।

डाखिणौ, डाखिबौ-क्रि०अ०—१ क्रोधित होना २ आकाश मे विचरण करना, उडना. ३ चोच से कुरेदना ।
डाखणौ, डाखवौ—रू०भे० ।

डाखियोडौ-भू०का०कृ०—१ चोच से कुरेदा हुआ २ क्रोधित, कुपित

३ आकाश मे विचरण किया हुआ, उडा हुआ।
(स्त्री० डाखियोडी)

डाखियो–स०पु०—क्रोधित सिंह, भूखा सिंह (डि.को.)
उ०—१ असुर सरोख डाखिया आया। आगै जादम राड़ अघाया।
—रा रू.
उ०—२ वाघळो विकट सादूळ वाहण वणै, डाखियो मीस सम तूळ डालै। अरोहै मूळ दुस्टा तणा उखाडण, भाडखया रखाळण सूळ भालै।—मे.म.
वि०—क्रोधित, कुपित।
रू०भे०—डाकियो।

डाग–स०स्त्री०—पाच या छ फुट लम्बे व मोटे वास का मजबूत डडा। लाठी। उ०—देव न मारै डाग सूं, देव कुबुद्धी देत।—अज्ञात
मुहा०—डाग माथै (ऊपर) डेरो है—वह घुमक्कड जिसके पास अधिक सामान आदि न हो तथा किसी निश्चित स्थान पर ठहरने का प्रबन्ध न हो, वैभवहीन।
२ खेत या ऐसी ही खुली भूमि के चारो ओर बना अहाता।
अल्पा०—डागडकी, डागडी।
मह०—डागड।

डांगड़की—देखो डाग (अल्पा, रू भे)

डागडियो–स०पु०—सीरवी जाति की आराध्य देवी आईजी की पूजा करने वाला साधू (मा म)

डागडी–स०स्त्री०—१ बैलगाडी के ऊपर लगाये जाने वाले सीधे पाट को गाडी के अगले डडों से मिलने वाली लकडी.
२ देखो 'डाग' (अल्पा, रू भे.) उ०—टेपरियो डांगड़ी रै टेवकै डिगतो-डिगतो घरै पूग्यो अर रभा नै भावी माचा मे घाल नै घरै लेग्या।—रातवासो
यौ०—डागडी-रात।

डागडी-रात–स०स्त्री०यौ०—वह रात्रि जिसमे तीर्थ-यात्रा से लौटने पर तीर्थ-यात्रा के उपलक्ष मे हरि-कीर्तन किया जाता है।
वि०वि०—हरिद्वार, बद्रिकाश्रम आदि तीर्थ-स्थानो से लौटते समय यात्री उस स्थान का जल व एक लाठी अपने साथ लेकर आता है। अपने निवास-स्थल पर एक निश्चित रात्रि को कीर्तन करने वालो के साथ जागरण करता है। जल और लाठी को कीर्तन के बीच मे रख देता है। सवेरे ब्राह्मणों व साधु सन्तो को भोजन करा कर उस लाठी को दान के रूप मे किसी साधु को दे देता है।
क्रि०प्र०—जगावणी।

डागपटेलाई–स०स्त्री०—डडे का जोर, मारपीट (मा म.)

डागर–स०पु० (पजाबी–डगर) पशु, चौपाया, मवेशी।
उ०—अबै तौ कब्जो नही कियो तौ रही-सही घर-वकरी अर ढोर-डागर ई हाथ मागनै सूं जावता रैवैला।—रातवासो
वि०—मूर्ख, गँवार।
रू०भे०—डगर।
अल्पा०—डागरो।

डागरजत्र–स०पु०—एक प्रकार की तोप। उ०—तरै कागुरा सू मतवाळा डागरजत्र छोडिया सु घणा आदमी मारिया।—नैणसी

डागरु, डागरू–वि०—वह जो घोषणा करता हो, घोषणा करने वाला।
उ०—इसी वात साभळी प्रधाने, वान विगूचता दीठा। कटक माहि डागरु फेराव्यउ, कथन कहाव्या मीठा।—का दे.
२ देखो 'डागर' (रू भे)

डागरो—देखो 'डागर' (अल्पा., रू भे) उ०—सारा सरदार आए भेळा हुया तो केसरीसिंह कहणै लागियो—जे मोटा ठाकुर छो, डागरा रो वाद क्यू ही नही छै, आपा भाट मगत नूं ही उठाय देवा छा।—राठोड अमरसिंह री वात

डांगी–स०पु०—१ राठौड वश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति (बा दा ख्यात) २ ढोली जाति की एक शाखा जो राठौडो से निकली हुई मानी जाती है या इस शाखा का व्यक्ति. ३ एक प्रकार का सर्प। उ०—डूवी डागी डाहकलु भुडउ नइ भुइ फोड वासिग कुळ को वेगलू अे को आगळ ओड—मा का प्र.
४ एक प्रकार का मोटा ताजा हृष्टपुष्ठ लगूर की जाति का बदर विशेष जो अपनी टोली का मुखिया होता है।
स०स्त्री०—५ छोटी नाव ६ गेहू की बाल।
वि०—हृष्टपुष्ठ (मि लठ १)

डागो–स०पु०—हसिया लगा हुआ लम्बा बास जो टहनिया काटने के काम आता है।
मि०—अकुडो।

डाचो–स०पु०—ऊँचे पायो का पलग।
रू०भे०—डूचो, डैंचो।

डाजी, डांभी–स०स्त्री०—रेगिस्तान की ऐसी भूमि जहां लम्बे फासले तक आबादी, पेड-पौधे, पानी आदि नही मिलता हो।

डाटणो, डाटबो—देखो 'डाटणो, डाटबो' (रू भे)

डांटियोडो—देखो 'डाटियोडो' (रू भे)
(स्त्री० डाटियोडी)

डाठळ—देखो डठळ' (रू भे)

डाड–स०पु०—१ नाव खेने का लबा बल्ला, चप्पू।
पर्या०—खेपणी, खेवणी।
२ सीधी लकडी, डडा ३ अकुश का हत्था ४ देखो 'डडो'।
(मह, रू भे)
वि०—१ मूर्ख, गँवार २ जबरदस्त।

डाडणो, डाडबो—देखो 'डडणो, डडवो' (रू भे)
उ०—सवत १६५१ पोस माहै जोधपुर पधारिया, पाट बैठा। दिन आठ रह्या। गुजरात पधारता देवडा डांडीया।
—महाराजा सूरजसिंघजी रै राज री वात

डाडियोडो—देखो 'डडियोडो' (रू भे)

(स्त्री० डाडियोडी)

डाडर—देखो 'डाडरी' (रू भे.) उ०—राव री जाघ तो वच गई पण घोडै रो काळजो'बुकडा आतडा ओझडा फाट काछ जावतो नीसरियो। घोडै री डाडर जाय धरती पडियो, च्यारू पग चहल हुवा।—डाढाळा सूर री वात

डाडहडि, डाडहडी—देखो 'डडाहड' (रू भे)

२ देखो 'डडो' (अल्पा, रू.भे.) उ०—वडिम वार वडुवार खत्रभार धरियै, विसवि डाडहडी सावळा खळा डोहै। सिंघ झूझार नरसिंघ रा सीघळी, सूरवट सुयणवट भुजै सोहै।

—राठोड जूझारसिंघ री गीत

डाडि—देखो 'डाडी' (रू भे)

डाडीयौं—१ देखो 'डडियौ' (रू भे.) उ०—१ भिडे भीम अरजुण कुरु भारत, गेहर-डाडीया रम कुळ गारत।—ऊ का.

उ०—२ मोटियार चढी छीनण मे छछोहा फेरै अर डांडीया री कड़ाकड हुवै तिण-तरह तरवारिया री खडाखड हुइ रही छै।

—मारवाड रा अमरावां री वारता

२ देखो 'डाडो' (अल्पा, रू.भे)

डाडी-स०स्त्री० [स० दण्डिका, प्रा० दडिआ, डडिआ, अप० दडिअ, डडिअ] १ पग-डडी, मार्ग, रास्ता (अ मा)

उ०—डरै लोग वन डाडीया, सूतै ही सादूळ। जे सूता ही जागता, सबळा माथा सूळ।—वा दा

मुहा०—डाडी पीटणी—एक ही वात को वार-वार दोहराना, वकझक करना, रूढिवादी होना।

मि०—लकीर पीटणी।

२ नाक का ऊपरी भाग।

कहा०—राम नाक री डाडी रै ऊपर वैठो-स सो अणहुती हुताई झट ठैको दे दै—ईश्वर नाक के ऊपर बैठा है अर्थात् ईश्वर सदैव अपने साथ रहता है अतः हमारे द्वारा अनुचित कार्य या अत्याचार ते ही हमे दण्ड दे देता है।

३ तराजू की डडी जिसमे रस्सिया वाँध कर पलडे लटकाये जाते हैं। उ०—दगो पालडा डाडिया, तोला मझ तणियाह। गुर सू ही गुदरै नही, वणिक वेत वणियाह।—वा दा

४ सीधी लकीर ५ किसी उपकरण, आभूषण, औजार आदि के लगा हुआ वह भाग जो उसे पकडने के लिए हो अथवा जिससे वह किसी स्थान पर स्थिर हो सके। ज्यू—वेसर रो डाडी, जरियै री डाडी।

५ पालकी उठाने के डंडे।, देखो 'डाडो' (अल्पा., रू भे)

रू०भे०—डडी, डाडि।

मह०—डाडीड, डाडो।

डाडीड़—१ देखो 'डाडो' (मह., रू भे)

२ देखो 'डाडी' (मह, रू भे)

डाड-मीढ़—वि०—क्रोधी।

डाडो-स०पु०—१ फाल्गुन मास के या होलिका के सकेत के निमित माघ मास की पूर्णिमा को जगल से काट कर लाया हुआ वह वृक्ष जो गाव के चौहटे मे प्रायः होली जलाने के स्थान पर रोपा जाता है। मि०—रोपणी (१)

२ औजार, कुल्हाडी आदि का हत्या, दस्ता।

३ कावर या बहगी का वह डडा जिसे बोझा ले जाते समय कंधे पर रखा जाता है। उ०—कावड ते जूनी थई रै लाल, घुणादिक जीव खाय सुविचारी रे। तणिया छीको बोदी थयो रै लाल, डाडो सुळियो जाय सुविचारी रे।—जयवाणी

४ देखो 'डाडी' (मह., रू भे.) उ०—वेसर डाडो वळ पड़यो, औ किण रो उपगार। रग काथो चढ़ियो नखा, हिवडै गडियो हार।

—पना वीरमदे री वात

५ देखो 'डडो' (रू भे) उ०—हाथै डाडो झालियो जी, चालतो लडथडै देह।—जयवाणी

अल्पा०—डाडियौ, डाडी।

मह०—डाउ, डांडीड।

डाडवेड—देखो 'ढाढवेड' (रू भे)

डाढ़ो—देखो 'ढाढ़ो' (रू भे) उ०—डाढ़ा ताभाडै केरड़िया ढीकै। रोटी पाणी नै टीगरिया रीकै।—ऊ का.

डाण-स०पु० [स० दान] १ चौपड आदि का खेल, दाव।

उ०—एक समै मीया बुढण महेचा रै परणियो छै। तिकी उणरो नाम बाइ लाडु छै। उण सु मीया बुढण चौपड रमै छै। सो बाई लाडु रै डाण पडै नही, तरै बाई पासो वावती कयो—पासा तोनै राम-दास वेरावती री आण छै। पोवारा पडिया तरै लाडु बाई री जीत हुई।—रा.सा स

२ दाव। उ०—अना सुरति का खेल फकीरी, सहज समझ कर जाण। निराधार का खेल फकीरी, लगे न जम का डाण।

—श्री हरिरामजी महाराज

३ कर, टैक्स। उ०—१ कूडा तोला मापला ए, ताकडी अतर-काण के। इण धन रै कारणै ए, भाजै राजा री डाण के।—जयवाणी

उ०—२ दधि पीतो हरि लेतो डांण।—ह ना.

४ दण्ड, जुर्माना, सजा। उ०—ग्यान गरुआ गोविंद गोसाईं दाणवा ऊपरा दिओ ती डाण।—पी ग्र.

५ सिंह, हाथी तथा ऊँट की गरदन से झरने वाला मद।

उ०—१ धाक हाक डाक धीह, धूसा आभ धुजाड़ियो। गिरा गुजाडियो, डांण सूक गी गयद। ओझाडियो ढाल हूत, नाराज झाडियो आचा, मारू 'पतै' फतै पाय पाडियो मयद।

—किसनगढ रा राजा प्रतापसिंघ रो गीत

उ०—२ वन माझल बघवाव सू, दुरद विसूकै डांण। जेठ लुवा सूकत जिम, निरजळ देख निवाण।—बा.दा

६ सिंह, हाथी तथा ऊँट की गरदन से मद झरने का स्थान।
उ०—मद पिसणा री किम मही, पिव आगळ रह पाय।। मद झरता जिम मदगळा, सिंह लख डाण सुवाय।—रेवतसिंह भाटी
७ गर्व, अभिमान। उ०—जुड़ै मुगळ जाणियो, मारि नाखै पल माहै। माण डाण तजि मुगळ, लाज लगरा तुहाडै।—सू.प्र
क्रि०प्र०—करणो, राखणो, होणो।
यौ०—माण-डाण।
८ जोश। उ०—लोह लाठ गनीमा सू वाणै मूछा डाणै लागो। केवाणा ज्वाणै वागो दूजो 'भीम' क्रोध।—प्रयोसिंघ रो गीत
९ बहुत से मनुष्यों के समूह द्वारा धूमधाम की यात्रा, जलूस।
उ०—बहु चडै दुरदा चमर दुळता, डमर सजिया डाण। चल बाघ तोरण वैठ चवरी, प्रगट जोडै पाण।—र रू
१०. मचान, मच। उ०—आहेडै जमराण डाण मडै दीहाडी, मर नम बध सधिया चाप आवरदा चाडी। मोहवास मडवै विघन सइवा विसतारै, कर हाका हाकत जुरा कुत्ती हुलकारै। चत्र दिस जाइ न सकै चक्रति, निजर काळ देखै नयण। जिग जीव सरण मारीजतो, राज राम राघा रमण।—ज खि.
११ खाता विभाग, मद. १२ समूह, दल। उ०—डाण ठेलै तू मातगा भडा डाचरा उवाड डाको, मूछा ताण पेलै तू कपनी गजै माल। काट थाणो रेलै तू खयणा जमी जोस खाथै, खसतो उपाणा माथै झेलै 'गुमाळ'।—सूरजमल मीसण
१३ मस्ती। उ०—१ पाछा आवता राजा रा काका सारगदेव रा वडा पुत्र प्रतापसिंह अरीसिंह दो ही सहोदर एक नदी रै तीर उचित जळ देखि सायकाळ रो विधेयकरम करण पाळा ही चलाया अर विसम दुरग श्रोघट घाट रै कारण आपरा घोडा सिपाह पाछा ही झलाया। तिण समय साहणसिंगार नाम राजा रो पाट हाथी डाण लागो थको पैली तीर आपरा सजातीय नू जळ पीवतो देखि तिण ऊपर चालियो अर ऊ भी वैतड साहणसिंगार नू आवतो देखि साम्हो हालियो।
—व.भा
उ०—२ गिर डाणा लागो वैंधीगर, पवै मेर, सू ऊचपणो। उण रित मे दीठा वण आवै, तद जेठी कयळास तणो।—नवलजी लाळस
उ०—३ वरसता महरा वीटाणो, नमख न टूमै नराळो। डाणा आज लगो डूगरियो, वनलो काठळ वाळो।—नवलजी लाळस
१४ उपाय, युक्ति, तरीका। उ०—कोई सुसामदी नही काण ए, ए समझावण रा डाण ए।—जयवाणी
१५ मौज, आराम, ऐश. १६ ऊँट की पीठ पर सवारी करने के लिए रखी जाने वाली साधारण गद्दी, या बोरी।
वि०वि०—इसमे पलाण या चारजामा नही कसा जाता है।
स०स्त्री०—१७ छलाग, कुदाल, फलाग, चौकडी।
उ०—१ कवीलेह जे रचिया रेह कुदै, सजै डाण लवा म्रिगा, मांण सूदै।—व.भा

उ०—अगसाखा असि अण पवन उडाण डाण झपदा। पालीहरि विलि पिगा दादुरिया नैव कुदती।—रामरासो
उ०—३ करै पाव टिल्ला पछै चूर कीधो, दिसा लक आकास मे डाण दीधो।—सू प्र.
क्रि०प्र०—झापणी, घरणी, मारणी, लगाणी।
१८ डग, कदम। उ०—अडीखभ डाण भरता अछाया। अडै गैण सू दड के कघ आया।—सू.प्र.
क्रि०प्र०—भरणी, मेलणी, राखणी।
१९ सीमा, हद। उ०—डारण वर री डाण घर, खळ सबको की खाट। मूडा-थळ भो मडणो, देवळिया दहवाट।—रेवतसिंघ भाटी
२० युद्धार्थ सेना की तैयारी, सज-धज। उ०—१ दखण ऊपरि मडे डाणा। सुरम किया दरकूच पयाणा।—गु रू.व
उ०—२ आवू मत कर ओरतो, देखे फौजा डाण। जब लग ऊभो 'पातडो', तब लग मूछा ताण।—अज्ञात
२१ पारी, वारी।
वि०—१ तीव्र, तेज। उ०—पाच बरस रहिया प्रथम, दिन दिन वधतै डाण। गच्छ नायक 'जिनलाभ' गुरु, वड वखतो 'बीकाण'।
—ऐ.जै.का.स.
२ स्वस्थ, निरोग. ३ समान, तुल्य। उ०—डारण नाहर डांण ठयतो ठाहरा। फुरळतो अरि फौज तसा धिन ताहरा।
—किसोरदान बारहठ
डाणणो, डाणबो—क्रि०स०—ऊँट की पीठ पर सवारी करने के लिए साधारण बोरी या गद्दी कसना।
डाणवळरोजगार—स०पु०यौ०—एक प्रकार का सरकारी लगान।
डाणहुलो—वि०—वीर, योद्धा। उ०—सू किसा-अक सरदार जुवान छै? पाका पाका वरियामा नू, जीवरा नू, डांणहुला डाकिया नू, करडदता नू, लोह घडा लाह पर डाहला नू, लोली देता, कटारी उगराइ खाता, पचासा वोळाविया आधे आध वाढ उतरिया, जिया रा पाच-पाच हजार दाम पाटा-वधाई रा पाटैदार खाय चुका छै।
—रा सा स.
डाणियोडो—भू०का०कृ०—साधारण बोरी या गद्दी कसा हुआ (ऊँट) (स्त्री० डाणियोडी)
डाणी—वि०—कर वसूल करने वाला, लगान वसूल करने वाला।
उ०—१ दह दसि खडा जगाती डाणी, जम दरवारि जाय वो प्राणी। नाथ निरजन अलख विनाणी, राम भजन की गळी न जाणी।
—ह.पु वा
उ०—२ वस्तु भरी परदेस तै रे, वेळा बिन लद जाय। दुरमत डाणी आगै खडो, जैसी माल लुटाय।—स्री हरिरामजी महाराज
डाणै—क्रि०वि०—आनन्द मे।
डाणो—स०पु०—१ रहट के उस किनारे पर की शिला जिधर से माल

पानी से भर कर आती है और जिसमे रहट को उल्टा घूमने से रोकने के लिए लगाया जाने वाला 'डूग्रो' लगा रहता है. २ वृद्ध, बुड्ढा।
रू०भे०—दानो।

डाफर–स०स्त्री०—१ वाह्य ठाट-बाट, बाह्य आडम्बर २ वातचक्र, आंधी ३ शीतल वायु। उ०—डाफरा कहसी तूझ विखा, भणसी लूआ वावळा।—दुरगादास
रू०भे०—डंफर।

डाफी–स०स्त्री०—शीतल वायु (शेखावाटी)

डाव—देखो 'डाम' (रू.भे)

डावणौ, डावबौ—देखो 'डामणौ, डामबौ' (रू भे)

डावियोडौ—देखो 'डामियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० डावियोडी)

डावियौ–स०पु०—काटेदार वडा वृक्ष विशेष जिसके लम्बे पत्ते आम से मिलते-जुलते होते है।

डाभ—देखो 'डाम' (रू भे) उ०—१ जैसे खोर भई पग ऊठ कै, दीजे खरकै डाभ। ऊठ रै पग रै पीड हुई नै गदो डाभियौ।—वी स.टी
उ०—२ वाघउ वड री छाहडी, नीरू नागरवेल। डाभ सभाळूं करहला, चोपडि सू चपेल।—ढो मा

डाभणौ, डाभबौ—देखो 'डामणौ, डामबौ' (रू भे)
उ०—१ जैसे खोर भई पग ऊठ कै, दीजे खर कै डाभ। ऊठ रै पग रै पीड हुई नै गवो डाभियौ—कारण ग्रौर कारज ऊठ रै पग पीड कारण गदो डाभणौ।—वी स.टी

डाभियोडौ—देखो 'डामियोडौ' (रू.भे)
(स्त्री० डाभियोडी)

डाम–स०पु०—किसी तपी हुई धातु से मनुष्य या पशुग्रो के शरीर के रुग्ण स्थान पर लगाया जाने वाला दाग।
उ०—ग्रकल सरीरा ऊपजै, दीधा लागै डाम।—ग्रज्ञात
कहा०—कै राम करै कै डाम करै—या तो राम ही कर सकता है या अग्नि-दग्ध से ही हो सकता है अर्थात् किसी रोग विशेष को या तो ईश्वर ही ठीक कर सकता है या अग्नि-दग्ध क्रिया से ही ठीक हो सकता है। अग्नि-दग्ध क्रिया की महत्ता।
२ अग्नि-दग्ध क्रिया से शरीर पर वनने वाला चिन्ह।
रू०भे०—डभ, डाब, डाभ, डाव।

डामडौ—१ मचान २ देखो 'डाम' (अल्पा., रू भे)

डामणौ, डामबौ–क्रि०स०—अग्नि-दग्ध करना, दाग लगाना, दागना।
डामणहार, हारौ (हारी), डामणियौ—वि०।
डामवाडणौ, डामवाड़बौ, डामवाणौ, डामवावौ, डामवावणौ, डामवावबौ, डामाडणौ, डामाडबौ, डामाणौ, डामाबौ,
डामावणौ, डामावबौ—प्रे०रू०।
डामिग्रोडौ, डामियोडौ, डाम्योडौ—भू०का०कृ०।
डामीजणौ, डामीजबौ—कर्म वा०।
डावणौ, डावबौ, डाभणौ, डाभबौ, डावणौ, डावबौ—रू०भे०।

डामर–वि० [स० डामर] भयानक, भयकर। उ०—डहडुडह डाइणि डामर सद्द। नहन्नह ग्रोसो सीधू नद्द।—रा ज रासो
स०पु०—१ कान्ति, चमक। उ०—दिसि-दिसि सीकिरि डामर चागर ढळइ सभावि, वाजइ तूर ग्रनाहत नाद् वणइ ग्रनुभवि।
—नेमिनाथ फागु
२ ४९ क्षेत्रपालो मे से २९वा क्षेत्रपाल ३ एक प्रकार का तत्र जो शिव-कथित माना जाता है तथा जिसके छ भेद किये गये हैं
४ डमरू नामक वाद्य ५ डमरू की ध्वनि ६ देखो 'डबर'।
(रू भे)
७ कोलतार।

डामरी–स०स्त्री०—ग्रधेरा, धुधलापन। उ०—साव दळह चालिउ सुरताण, वार सहस वाज्या नीसाण। चाल्या कटक दुदामा करी, खेह तणी दीसइ डामरी।—का.दे प्र

डामाडोळ—देखो 'डावाडोळ' (रू भे)

डामाडणौ, डामाडबौ—देखो 'डामाणौ, डामावौ' (रू भे)

डामाडियोडौ—देखो 'डामायोडौ' (रू भे.)
(स्त्री० डामायोडी)

डामाणौ, डामावौ–क्रि०स० ('डामणौ' क्रिया का प्रे०रू०) अग्नि दग्ध करवाना, दाग दिलवाना।
डामाणहार, हारौ (हारी), डामाणियौ—वि०।
डामायोडौ—भू०का०कृ०।
डामाईजणौ, डामाईजबौ—कर्म वा०।
डामाडणौ, डामाडबौ, डामावणौ, डामावबौ—रू०भे०।

डामायोडौ–भू०का०कृ०—अग्नि दग्ध करवाया हुआ।
(स्त्री० डामायोडी)

डामावणौ, डामावबौ—देखो 'डामाणौ, डामावौ' (रू भे.)
डामावणहार, हारौ (हारी), डामावणियौ—वि०।
डामीजणौ, डामीजबौ—कर्म वा०।
डामाविग्रोडौ, डामावियोडौ, डामाव्योडौ—भू०का०कृ०।

डामावियोडौ—देखो 'डामायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० डामावियोडी)

डामियोडौ–भू०का०कृ०—अग्नि दग्ध किया हुआ, दागा हुआ।
(स्त्री० डामियोडी)

डालवणौ, डालवबौ–क्रि०ग्र०—मेढ़क का वोलना। उ०—भारतारिइ सू भाद्रवइ मासि, हीडोळाटइ करइ नसि अधारी, विजळि खवइ, गमे गमे दादर डालवइ।—प्राचीन फागु-सग्रह

डाव—देखो 'डाम' (रू भे)

डावणौ, डावबौ—देखो 'डामणौ' (रू भे)

डावळी–स०स्त्री०—देखो 'डासळी' (अल्पा, रू भे) उ०—करडी डावळी री सू इण भात री तमाकू सू चिलमा भरीजै छै।—रा.सा.स.

ावाडोळ, डावाडोळ–वि०—जो हिलता-डुलता हो, हिलता-डुलता हुआ, अस्थिर. २ चलचित्त, भ्रमित, विचलित।
उ०—१ दादू एक विस्वास विन, जियरा डावाडोळ। निकट निधि दुख पाइये, चिंतामणी अमोल।—दादू वाणी
उ०—२ बाळपणं की प्रीत रमइयाजी, कदं नहिं आयी थारो तोल। दरसण विण मोहि जक न परत है, चित मेरो डावाडोळ।
—मीरा
रू०भे०—डँवाडोळ, डमडोळ, डांमाडोळ, डावाडाळ, डावाटोळ।
डावियोडो—देखो 'डामियोडो' (रू.भे.)
(स्त्री० डावियोडी)
डास, डासर–स०पु० [सं० दश] १ बडा मच्छर (उ र.)
उ०—तिहा टास, मुसा, माकुण, जु प्रमुख न उपजइ।—व स
पर्या०—दसक, माछर।
२ पशुओं को बहुत कष्ट देने वाली एक प्रकार की मक्खी या कीडा
वि०—१ जबरदस्त. २ बहुश्रुत, वयोवृद्ध।
अल्पा०—डासरियो।
डासरियो–स०पु०—१ एक प्रकार का मध्यम आकार का पहाडी वृक्ष व उसका फल। इनका फल छोटा व गोल होता है। यह कच्ची अवस्था मे खट्टा और पकी अवस्था मे मीठा होता है। यह औषधियो के लिए अधिक प्रयुक्त होता है (शेखावाटी)
२ देखो 'डासर' (अल्पा, रू भे०) उ०—हरो डाळिया चयन, पान समूह कर ऊपर। टेर आसरा टाड, ऊवरा डासरिया डर।—वसदेव
डा–स०पु०—१ सूर्य. २ भूत. ३ समूह.
स०स्त्री०—४ पृथ्वी. ५ उमा. ६ रमा. ७ डायन (एका)
डा'—१ फसल की गुडाई अथवा कटाई के समय प्रत्येक व्यक्ति द्वारा प्रत्येक पारी मे अपने लिए लिया हुआ कार्य भाग।
उ०—छोड छोड यूं काई करै गेला। दिन ढळग्यो है अर म्हारै निनाण री डा' अधूरी पडी है।—रातवासो
२ देखो 'डाह' (रू.भे)
डाइआळ—देखो 'डाइयाळ' (रू भे)
डाइचउ, डाइचो—देखो 'दायजो' (रू.भे)
उ०—कनक मइ तिहा वेह परठी, कीध लोक सार। प्रथम फेरइ डाइचो यइ, राय अस्व अपार।—रुकमणी मगळ
डाइण, डाइणि, डाइणी, डाइन—देखो 'डायण' (रू भे)
उ०—डहुडुह डाइणि डामर सद्द, नहग्गह श्रीखो सींधू नद्द।
—रा ज रासो
डाइयाळ–वि०—१ जो बाईं ओर चलने के लिए ठीक हो या जो बाईं ओर अधिक चलता है (बैल)
[सं० दक्ष+कार] २ बुद्धिमान, दक्ष, चतुर।
रू०भे०—डाइआळ, डाउयाळ, डाहीयार, डाहीयाळ, टावियाळ, डाहूआर।

डाइरेक्टर–स०पु० [अ०] कार्य-सचालक।
डाइरेक्टरी–स०स्त्री० [अ०] वह पुस्तक जिसमे किसी वस्तुओं, मनुष्यो या व्यवसायियो आदि की अक्षर-क्रमानुसार सूची हो।
डाई–स०पु० [सं० डाकी] १ पिशाच, दुष्ट। उ०—ठहक्कै कठी ककटा ठोर ठाई। ठहक्कै भडा बकडा घोर डाई।—व भा.
स०स्त्री०—२ बच्चो के खेल मे हारने वाले पर लगाया जाने वाला दोष या अपराध।
क्रि०प्र०—आणी, देणी।
वि०स्त्री० (पु० डायो) सीधी-सादी, विनम्र। उ०—१ गाया गोसाळा गूदा गळगळती। ढाळा द्रग ढळती बूंदां वळवळती। डाई डेडरसी धाई धुरधीणी। फीणी फेडर फुर गाई सुर फीणी।
—ऊ का
उ०—२ दूभर द्रीहायन श्रीहायन दोरी। सूभर चतुरब्दा सब्दारथ सोरी। इक नाहि आक्राता क्रान्तातुर आडी। डाइ अवसोका सोकाकुळ डाडी।—ऊ का
रू०भे०—डाही।
डाईचउ, डाईचो, डाईजो—देखो 'दायजो' (रू भे.)
उ०—बीजलई फेरई डाईचउ देई, गज रथ सिणगार। त्रीजलइ फेरई डाईजो देई, रतन कोडी भडार।—रुकमणी मगळ
डाउडो—देखो 'डावडो' (रू भ.) उ०—आवा री सिळाक हुवै तिण भाति रा वारा 'वारा' वरसा रा डाउडा रा कान वीघीजै।—रा सा स
डाक–स०स्त्री०—१ ध्वनि, आवाज। उ०—१ विसमी सुरा सिद्धवा डाक वागी। ब्रहमड इक्कीस मे डाक वागी।—सू प्र.
उ०—२ गाज नगारा चिमक खग, वरसत बाजत डाक। घटा नही आ काम री, आवै फौज लडाक।—र ग
२ वाद्यों की ध्वनि। उ०—दहूवळ घोर ग्रंबागळ डाक। हुवै रिणताळ दहूवळ हाक।—सू प्र
३ युद्ध का वाद्य। उ०—धाक पडै जिण अरि घरा, डाक वजै जिण दिन। चाक चढै जिण छत्रवट, वे मसताक सु मन।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
४ विजयी होने पर विजयोल्लास मे वजाया जाने वाला नगारा, दुंदुभि। उ०—इम वासर ऊगता, डाक वागी दसदेसा। जुध जीता 'अगजीत', सुणे जवनेस नरेसा।—सू प्र.
५ युद्धप्रिय देवताओ का युद्ध के समय हर्षित हो कर वजाया जाने वाला वाद्य। उ०—१ सूर घाव सास है, हूर ग्रहग्रहै तयारा। डाक वीर डहडहै, 'जसै' मेतिया जयारा।—वखतो खिडियो
उ०—२ हुय धडधडाट घर व्योम हाक। दस ही दिस वागी प्रेत डाक।—पा प्र.
उ०—३ खाचा हरखउ भैरवो रे, कर डमरू नै डाक। तिण अवसर प्रगटयो तिहा, आव्यो मारतो हाक।—सीपाळ रास
६ महादेव का डमरू। उ०—हुवै हाक-डाक वकी कायरा ऊकके

हियो, डकडकै भैरवी वजावै रुद्र डाक ।

—नीमाज ठाकुर सुरताणसिंघ री गीत

७ उल्लू की आवाज (अशुभ) उ०—दिव स्याळ बोलण लगै, निपट निकट ही आय । घू घू डाक बजाय है, लगै भयानक ताय ।

—गज उद्धार

८ तग और लम्बा प्रदेश, लम्बा भू-भाग । उ०—आबू नै सरणुवा री भाखर एक लगती डाक छै ।—नैणसी

९ एक प्रकार का छोटा भाला जो मस्त हाथी को अपने स्थान पर लाने के लिए उपयोग मे लाया जाता है । उ०—जगरूप भयाणक जमाति जाणै, डाकदार नै डाक के हुन्नर से आणै ।—सू प्र

१० छोटे भाले द्वारा हाथी के शरीर पर लगा हुआ क्षत, घाव ।

११ डग, कदम ।

क्रि०प्र०—दैणी, मारणी ।

१२ लूट-खसोट करने वाली डाकुओ की टोली ।

मि०—धाड (१)

१३ प्राचीन काल मे राजा महाराजाओ तथा बादशाहो, नवाबो आदि द्वारा परस्पर के पत्र-व्यवहार का प्रबन्ध या क्रिया ।

उ०—अहमद सतार गढ वात ए, पमग डाक खत पूजिया । तिण वार 'विलद' साहू तणा, धडक जीव उर धूजिया ।—सू प्र.

१४ प्राचीन काल मे राज्य सत्ता द्वारा सरकारी अफसरो के पास भेजे जाने वाले पत्रो का प्रबध या इस प्रकार के पत्र.

१५ वह सरकारी प्रबध जिसके द्वारा जन-साधारण की चिट्ठी-पत्री एक स्थान से दूसरे स्थान पर आती व जाती हैं १६ राज्य के उच्चाधिकारियो के लिए राज्य सत्ता की ओर से किया जाने वाला सवारी का ऐसा प्रबध जिसके अनुसार रास्ते मे प्रत्येक ठहराव पर जानवर, गाडी आदि बदले जाते थे (प्राचीन)

१७ दूरी, फासला । उ०—अरध उरध कडियै फेरचा, तारी तार मिळाणा । हद वेहद की डाक डकाई, सब्द ही रूप दिवाणा ।

—स्री हरिरामजी महाराज

१८ हाथियो का हैजा रोग १९ शिवजी के गणो आदि का समूह २० देखो 'डाकी' (रू भे) उ०—फिट रा 'बुडा' पुळ एण फुरै, घल डाक कुकाउअ डोल घुरै ।—पा प्र

डाकखरच-स०पु०—वह खर्च या व्यय जो किसी वस्तु को डाक द्वारा मगाने मे लगे ।

डाकखानौ-स०पु०—वह सरकारी दफ्तर जहाँ पर विभिन्न स्थानो से चिट्ठियाँ व पार्सल आदि आते हैं और भेजे जाते हैं ।

डाकगाडी-स०स्त्री०—डाक ले जाने वाली तथा तेज चलने वाली वह रेलगाडी जो छोटे स्टेशनो पर नही ठहरती है ।

डाकघर—देखो 'डाकखानौ' ।

डाकचूक-वि०—घबराया हुआ, डाँवाडोल ।

रू०भे०—डाकाचूक ।

डाकटर-स०पु० [अ० डॉक्टर] १ पाश्चात्य ढग से चिकित्सा करने वाला २ चिकित्सक, वैद्य, हकीम. ३ विद्वान, आचार्य ।

रू०भे०—डाकदर, डागदर ।

डाकटरी-स०स्त्री० [अ० डॉक्टर+रा०प्र०ई] पाश्चात्य चिकित्सा-शास्त्र ।

क्रि०प्र०—करणी, कराणी, छाटणी ।

डाकडमाल-स०स्त्री०—आडम्बर, दिखावा । उ०—आज कालिना रे कपटी थया, माडी डाकडमाल । निज पर आतम ने धूतारता, एहवो न घरची रे चाल ।—ए जै का स

डाकडमाली-स०स्त्री०—एक प्रकार की लता व उसका फल ?

उ०—डडाळी नइ डोडकी, डायणि डूगरि वेलि । डीसामूळी डुहकळी, डाकडमाली डोलि ।—मा का प्र

डाकण, डाकणि, डाकणी-स०स्त्री० [स० डाकिनी] १ वह स्त्री जिसकी दृष्टि आदि के प्रभाव से बच्चे मर जाते हैं, डायन ।

उ०—१ इणनै सहनता कहै—सो डाकी ठाकुर तो सहनता कर रजपूता रा माथा लेवै वा प्राण लेवै नै डाकण दीठ चलाय जिजर सू प्राण लै ।—वी स टी

उ०—२ साकणि डाकणि सकति, सकती चवसठै समोसरी ।—सू प्र

उ०—३ सबद विचारि सहज घरि खेलै, नाव निरतरि जागै । मनसा डाकणि मारती मारै, तौ नगरी चोर न लागै ।—ह.पु वा.

पर्या०—आखरढागीआखणी, जरखवाहणी, डाकण, डाकणी, डायण, डायणी ।

मुहा०—१ डाकण नै किसो माळवो भौ(दूर) है—डायन के लिये मालवा कोई दूर नही है अर्थात् समर्थ और प्रबल के लिए कोई कार्य मुश्किल नही होता है । २ डाकण नै मासी कै'र वतळावणी—डायन से मौसी कह कर बात करनी चाहिए अर्थात् दुष्ट को सम्मान अथवा प्रेम-व्यवहार से प्रसन्न रखना चाहिए । दुष्ट या अत्याचारी के लिए ३ डाकण बेटा दै क लै—डायन बेटे देती है या लेती है । डायन बेटे देती नही है बल्कि जो होता है उसे भी ले लेती है अर्थात् अत्याचारी या दुष्ट से लाभ के स्थान पर हानि ही होती है ।

कहा०—डाकण्या रै व्यांव मै नोतियार री गटको—डाइनें अपने यहा आमन्त्रित व्यक्तियो पर ही प्रतिघात करती है । दुष्ट व्यक्ति स्वजनो को ही हानि पहुँचाता है ।

२ प्रेतनी, राक्षसी, चुडैल । उ०—वीरे डाक वाया । विमाणे वोम छाया । साकणी डाकणी मिळि मगळ गाया ।—वचनिका

रू०भे०—डकिनि, डाइण, डाइणि, डाइणी, डाइन, डक्कण, डक्कणी, डागणी, डायण, डायणि, डायणी, डायनि, डायनी ।

डाकणिया-री घोडौ-स०पु०—लकडबग्घा ।

डाकणौ, डाकबौ-क्रि०स०—कूद कर पार करना, फादना, लाँघना ।

उ०—कूवौ हूँ तौ डाक लू समद न डाक्यो जाय । टाबर हूँ तौ राखलू, जोवन न राख्यो जाय ।—र रू.

डाकणहार, हारो (हारी), डाकणियौ—वि० ।
डकवाडणौ, डकवाडवौ, डकवाणौ, डकवावौ, डकवावणौ, डकवाववौ, डकाडणौ, डकाडवौ, डकाणौ, डकावौ, डकावणौ, डकाववौ—प्रे०रू०
डाकिग्रोडौ, डाकियोडौ डाक्योडौ—भू०का०कृ० ।
डाकीजणौ, डाकीजवौ—कर्म वा० ।
डकणौ, डकवौ—ग्रक० रू० ।

डाकवर—देखो 'डाकटर' (रू भे)

डाकदार-सं०पु०—१ मस्त हाथी को राह पर लाने वाला।
उ०—डिगाया डगा जे मगा डाकदारां । लगा चड वंतड यू दड लारा ।—व भा
२ सरकारी चिट्ठिया ग्रादि ले जाने वाला कर्मचारी ।
उ०—दौडिया साह दिस डाकदार । सज्या सु वरस ग्राडी सवार ।
—रा रू.
३ चिट्ठीरसा, डाकिया, चिट्ठी बाँटने वाला ।

डाकघर—देखो 'डाकटर' (रू भे) उ०—खरो मीठं सू सरस है, भळे वतेरा पानडा । देस विदेस दुवाया वणे, सुसी डाकघर सानडा।
—दसदेव

डाकवगळौ-स०पु० [ग्र०] वह सरकारी निवास-स्थान जहाँ परदेसियो के लिए रुपए दे कर ठहरने की व्यवस्था हो ।

डाकमुसी-स०पु०—वह सरकारी कर्मचारी जिसकी जिम्मेदारी मे डाकघर हो, पोस्टमास्टर ।

डाकमँसूल-स०पु०—किसी वस्तु को डाक द्वारा भेजने व मगाने मे लगने वाला खर्च ।

डाकर—देखो 'डकर' (रू भे.) उ०—१ भाकर काठै वाग भडाळा, डाकर सुण मंवास डरै । ग्रादे ग्राखर थारै 'ईदा', भाकर वका डड भरै ।—मालावावडी रा ठाकर इद्रसिघ रो गीत
उ०—२ तरै पातसाह कहण लागो 'कानडदे तौ म्हानू सामौ डाकर दिखावै छै नै पातसाह नू तलाक छौ जु वीच गढ मेल विगर लीया यू ही ग्राघो न जाय सु हू जातो हुतो सु कानडदे ग्रै वात कहाडै छै तो हू कर विगर जाळोर लिया हमै हू ग्राघो न जाऊ, मोनू तलाक छै ।'—नैणसी

डाकरडोर-स०पु०—भय, डर ।

डाकरणौ, डाकरवौ-क्रि०ग्र०—१ सिंह या सुग्रर की क्रोधपूर्ण गर्जना करना, दहाडना । उ०—१ डाकरतौ भरतौ उकर, धरतौ मकर सघीर । बीफरतौ वाकारियौ, करतौ चून कठीर ।
—उदैपुर राणा सरूपसिघ रो गीत
उ०—२ दळ फिरतौ देख दिसू दिस दोळा, ग्रण डरतौ करतौ ग्रोग्राह । डाकरतौ ग्रायौ थह डारण, बीफरतौ चरतौ वाराह ।
—महादान महडू

क्रि०स०—२ डाँटना, फटकारना ।

डाकरियोडौ-भू०का०कृ०—१ गर्जना किया हुग्रा, दहाडा हुग्रा
२ डाँटा हुग्रा, फटकारा हुग्रा ।
(स्त्री० डाकरियोडी)

डाकली-स०स्त्री०—एक प्रकार रा वाद्य । उ०—घम घमत घूघरी, पाय नेउरी रणभण । डम डमत डाकली, ताळ ताळी वज्जे तण ।
—देवि.

डाकवेल-स०स्त्री०—वह सीधी लकीर जो जमीन पर रस्सी या फीते ग्रादि की सहायता से मकान की नीव खोदने, बगीचे मे क्यारिया बनाने ग्रादि कार्यो के लिये खीची जाती है ।

डाकापाचम-स०स्त्री०—फाल्गुन कृष्णा पचमी जिस दिन से होली का लोक-नृत्य (गैहर) खेलना प्रारम्भ होता है ।

डाकाबध-वि०—जिसके यहाँ नक्कारे बजते रहते हो, बहादुर, योद्धा, वीर । उ०—डाकावध कमध ग्रारक चमम डोरिया, गिरद तारक रिछक समै गजगाह । 'सदा' रा जोघ वेढाक मारक सग्रा, ग्रभीडा पेच धारक निग्रग राह ।—कविराजा करणीदान

डाकिणी, डाकिनि, डाकिनी—देखो 'डाकण' (रू भे)
उ०—१ जठै वेताळा रा ग्रास्फाळ, डाकिणी गणा रा डमरू रा डाकार, फेरविया रा फेत्कार, प्रेता रा ग्रालाप ··।—व.भा
उ०—२ लोहो वूढनि लाल की, धारा धकधक्कै । के डाकिनि खप्पर भरै, के साकिनि छक्कै ।—व भा

डाकियौ-स०पु०—चिट्ठी बाँटने वाला कर्मचारी, चिट्ठीरसा ।

डाकी-वि० (स्त्री० डाकण) १ बहुत खाने वाला, पेटू ।
उ०—१ वाका फाटोडा थाका दम बाकी । डेळ्ही चुळियोडा डुळियोडा डाकी । थिग्ता मन री नहि तन री गति थाकी । फुरणा पर-धन री ग्रन री नहि फाकी ।—ऊ का
उ०—२ नवी हुवोडा नीच उगी भर लेवै डाकी । बैठ सभा रै वीच करै मनवार कजाकी ।—ऊ का
२ महान् शक्तिशाली, प्रचड, जबरदस्त, सबल । उ०—१ डाकी जम डाढाळ, वे वे तरगस बधिया । तुरकी रहवाळा तुरक, चढिग्रा चामरिग्राळ । -वचनिका
उ०—२ डाण ठेलै तू मातगा भडा डाचरा उवाड डाकी, मूछ्या ताण पैले तू कपनी गजै माल । काट थाणै रेलै तू स्रयणा जमी जोस खाधै, खसतो खगाणा माथै झेलै 'खुसाळ' ।—सूरजमल मीसण
३ वीर, बहादुर । उ०—डाणा ग्राक-ग्राक जागी जैत रा रुडाया डाकी ।—व भा.
४ ग्राततायी, दुष्ट ५ नरभक्षी, ग्रसुर, राक्षस, दैत्य । उ०—साम्हू सीयाळो साकी सरसायो । वाकी वचिया नै डाकी दरसायो ।
—ऊ का.

स०स्त्री०—१ वृद्ध मादा ऊट ।
स०पु०—२ सोलकी वश की शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

महु०—डाकीड।

डाकीड—देखो 'डाकी' (मह, रू भे)

डाकू-स०पु०—१ जबरदस्ती दूसरो का माल लूटने वाला, लुटेरा.
२ अधिक खाने वाला, पेटू।

डाकोत-स०पु०—डक ऋषि से उत्पन्न एक जाति विशेष जो शनिश्चर की पूजा करते हैं और शनिश्चर का दान भी लेते है। ये लोग ज्योतिष विद्या का कार्य भी करते है। (मा मा)
अल्पा०—डाकातियो।

डाकोतियो—देखो 'डाकोत' (अल्पा., रू भे)
उ०—किसनू घणी-श्री भैरू जी-रै परसाद सुखियो, मावडियाजी-रै आखा भेजिया, डाकोतियै खनै गिरै गोचर देखाया, छनीछरजी-रो दान कियो पण आल्या-रा पट्ट मिळ-श्री गया।—वरसगाठ

डाकोर-स०पु०—१ एक तीर्थ स्थान का नाम २ विष्णु भगवान, ठाकुर (गुजरात)

डाकौ-स०पु०—१ धन, माल, असवाब आदि जबरदस्ती छीनने के लिये कुछ आदमियो का दल बाव किसी स्थान पर अचानक किया जाने वाला आक्रमण, धावा, बटमारी।
मुहा०—१ डाकौ डाळणौ—जबरदस्ती माल छीनने के लिये धावा करना २ डाको पडणौ—लूट के लिये आक्रमण होना।
३ डाकौ मारणौ—देखो 'डाकौ डाळणौ'।
२ ढोल, नगाडा, डफ आदि बजाने का लकडी का बना डडा।
उ०—१ तूटा गज सिर करै अवाका। दातूमळा बजावै डाका।
—सू प्र
उ०—२ जावता ईज धाकल रा घडूका साथै ढोल री डाकौ रुकग्यो, निछरावळा करता हाथ ऊचा रा ऊचा ईज रैग्या अर ऊठ चीडता-चीडता बद व्हैग्या।—रातवासौ
क्रि०प्र०—दैणौ।
रू०भे०—डको, डक्को।
महु०—डक।
३ देखो 'डकौ' (१) (रू भे) ४ देखो 'डागौ' (रू भे)
उ०—ऊमर दीठी मारुई, डीभू जेही लक्कि। जाणै हर-सिरि फूलडा, डाके चढी डहक्कि।—ढो मा
(स्त्री० डाकी)
५ आतक, भय। उ०—पग-पग जम डाका पडै, वाका धार विवेक। हुतभुक विच जळ खाख व्है, उडणौ है दिन एक।—बा दा

डाक्टर-स०पु० [अ०] १ पाश्चात्य चिकित्सा शास्त्र के अनुसार चिकित्सा करने वाला, चिकित्सक २ किसी विषय मे विशेष ज्ञान प्राप्त करने पर किसी विश्वविद्यालय द्वारा दी जाने वाली- सर्वोच्च डिग्री प्राप्त व्यक्ति।
रू०भे०—डाक्तर।

डाक्टरी-स०स्त्री०—१ चिकित्सक का कार्य।
क्रि०प्र०—करणी।
२ विश्वविद्यालय की डाक्टर की डिग्री।

डाक्तर—देखो 'डाक्टर' (रू भे)

डाग-स०स्त्री०—१ वृद्ध मादा ऊट। उ०—ऊचै मुख सू ऊट, चूट चट लूवा लबकै। गलर गलर गटकाय, डोलती डागा डबकै।
—दसदेव
२ छोटी डाली, टहनी (जैन) ३ साग-भाजी, तरकारी (जैन)

डागड—देखो 'डागौ' (मह, रू भे)

डागडियो, डागड़ो—देखो 'डागौ' (अल्पा, रू भे)
उ०—डवक डाळिया डुळै, डागडचा डरडर सूतै। ऊँची नीची तर्कै लखै लुळ पूरी कूतै।—दसदेव
(स्त्री० डागडी)

डागणी—देखो 'डावणी' (रू भे) (जैन)

डागळ-वि०—१ जो आकार मे वडा हो (?)
उ०—कसूवी रा डागळ डागळ पान गूथैला, ए म्हारी माळण सेवरो।—लो.गी
२ देखो 'डागळौ' (मह, रू.भे)

डागळियो—देखो 'डागळौ' (अल्पा., रू भे)
उ०—ऊठी वाईसा, डागळियै चढ जोय, कुणजी रै सिधाया कुणजी घर वसै, जी म्हारा राज।—लो गी

डागळी—देखो 'डागळौ' (अल्पा, रू भे) उ०—और सहेली म्हारी पीवर जाय, मनै य न आयो कोश्री लेण नै जी राज। चढ-चढ देखू डागळी, कोई य न दीसै आवतो जी राज।—लो गी

डागळौ-स०पु० [स० दाघ+तल] मकान के ऊपर की खुली पाटन, छत।
अल्पा०—डागळियो, डागळी।
महु०—डागळ।

डागाळ-स०पु०—एक प्रकार का भाला (डि ना मा)

डागी-स०स्त्री०—वृद्ध मादा ऊट।

डागौ-स०पु० (स्त्री० डाग, डागी) वृद्ध ऊट।
रू०भे०—डगो, डाकौ।
अल्पा०—डागडियो, डागडो।
महु०—डागड।

डाच—देखो 'डाचौ' (मह., रू भे) उ०—१ छोह घणै ऊछज छरा, केहर फाडै डाच। ऐरावत कुळ ऊपरा, मोच मडीजै नाच।—बा दा
उ०—२ लगै अबर लायर्सा के घाय टप्पकै। के बटके बटके करै झटके न झमक्कै। नाच न चुक्कै डकिकनी लै डाच डचक्कै। ज्वाळ झरक्कै के जरी गज ढाळ ढरक्कै।—व भा.

डाचकौ-स०पु०—वमन के पूर्व की अवस्था, ओकाई, मिचली।
क्रि०प्र०—आणौ, खाणौ।
मुहा०—डाचकौ आणौ (खाणौ)—असमर्थता के कारण आनाकानी करना।

रू०भे०—डूचको, डूचको ।

डाचो-स०स्त्री०—मादा ऊट (जैसलमेर)

डाचो-स०पु०—१ मुख, मुँह (अवज्ञा) उ०—१ सिंघ सरीख ससार प्राण डाचा मा पडियो । नर किम कर निसरीस, जरू ले ताळो जडियो ।—पी ग्र

उ०—२ मजबूत यूभ डाचा मगर, जिया पूछ्र करवत ,जिसा । फोखिया सिंधु नुखता भटकि, अघकय राकस इसा ।—सू.प्र.

२ बड़ा ग्रास. ३ वह स्थान जहा पर मुँह से काटा गया हो ।

अल्पा०—डचियो ।

मह०—डाच ।

डाट-स०स्त्री०—१ क्रोधपूर्वक कर्कश स्वर से कहा हुआ शब्द, घुड़की ।

क्रि०प्र०—जमाणी, वताणी ।

यौ०—डाट डपट ।

२ दबाव, शासन ।

क्रि०प्र०—राखणी ।

मुहा०—१ डाट मे राखणी—अधिकार में रखना, वश मे रखना, शासन मे रखना. २ डाट राखणी—प्रभाव रखना, अकुश रखना, शासन या दबाव रखना ।

३ देखो 'डाटो' (अल्पा., रू.भे.)

रू०भे०—डाटी ।

डाटउ—देखो 'डाटो' (रू भे) उ०—ससिहर रहि रे सांसतु, जळ घट्ट भीतरि लेय । सिर ऊपरि मेहली सिला, डाटसी डाटउ देय ।

—मा का.प्र

डाटक्या-स०स्त्री०—घोडों की एक जाति । उ०—घोटकजाति केहाडा नीलडा हरियाडा सेमहा हडराहा कोहाणा भरयाणा ताई तुरगी ऊघसिया नीघसिया डाटकिया ढोटकिया चेलवि(या) मल्हाविया लडाविया पुलाविया तरळा छोटकरणा. एकरण्णा ।—व स

डाटकियो—१ देखो 'डाटो' (अल्पा , रू.भे) २ डाटकिया जाति का घोडा ।

डाटड—देखो 'डाटो' (मह , रू भे)

डाटड़ियो—देखो 'डाटो' (अल्पा , रू.भे)

डाटणो, डाटबो-क्रि०स०—१ डराने के लिये क्रोधपूर्वक कठोर स्वर से बोलना, फटकारना २ गाडना । उ०—१, सूभ नाम लेणो सुतो, मूग पकावण वेर । अन दिन उण री आथ जू, डाटी माठो देर ।

—वा.दा

उ०—२ ससिहर रहि रे सासतु, जळ घट्ट भीतरि लेय । सिर ऊपरि मेहली सिला, डाटसी डाटउ देय ।—मा.का प्र

३ बद करना, ढकना ४ छेद या मुह वद करना. ५ किसी वस्तु को भिडा कर ठेलना. ६ खूब पेट भर कर खाना, कस कर खाना. ७ (कपडे या आभूषण आदि) ठाट से पहिनना ।

डाटणहार, हारो (हारी), डाटणियो—वि० ।

डाटिग्रोडो, डाटियोडो, डाटयोडो—भू०का०कृ० ।

डाटीजणो, डाटीजबो—कर्म वा० ।

डटणो, डटबो—अक०रू० ।

डाटियोडो-भू०का०कृ०—१ डराने के लिय क्रोधपूर्वक कठोर स्वर से बोला हुआ, फटकारा हुआ. २ गाडा हुआ. ३ वद किया हुआ, ढका हुआ ४ छेद या मुँह वद किया हुआ. ५ किसी वस्तु को भिडा कर ठेला हुआ ६ खूब पेट भर कर खाया हुआ, कस कर खाया हुआ. ७ (कपडे या आभूषण आदि) ठाट से पहना हुआ ।

(स्त्री० डाटियोडी)

डाटियो—देखो 'डाटो' (अल्पा , रू भे.)

डाटी-स०स्त्री०—देखो 'डाट' (अल्पा., रू.भे.)

डाटीड—देखो 'डाटो' (मह., रू भे)

डाटो-स०पु०—१ रद्दे की लकडी. २ किसी छेद को रोकने या बन्द करने की वस्तु ३ किसी बोतल आदि का मुँह वन्द करने की वस्तु ४ मस्तक । उ०—जो चोरग चढ़ जोय कर, चमके चँदहस चोट । रण मे उण पर खळ रटक, दे डाटा मे दोट ।

—रेवतसिंह भाटी

रू०भे०—डाटउ ।

अल्पा०—डाट, डाटकियो, डाटड़ियो, डाटियो, डाटी ।

मह०—डाटड, डाटीड ।

डाड-स०स्त्री० [स० दंष्ट्रा] १ चोडा दात जिससे चबाया जाता है ।

उ०—सोक री दसा नित मिटावण सेवगा, सुण घणा थोक री श्रवण गाडा । चाड ग्रहु लोक री निसुभसुभ वाघ चड, डोकरी गहै खळ विकट डाडा ।—चेतसी वारहठ

पर्या०—दसा, जभ, दाढ़ा ।

मुहा०—१ डाड मीठी होणी—कुछ मीठा खाने को प्राप्त होना, रिश्वत लेना. २ डाड मे काकरो होणो—देखो 'डाड हेटै काकरो आणो'. ३ डाड रै लागणो—दाढ़ के लगना, किञ्चित मात्र खाने को मिलना. ४ डाड हेटै काकरो आणो—कार्य निकलवाने की गरज होना, गरज पडना. ५ डाड हेटै आणो—देखो 'डाड रै लागणो'. ६ डाडा कुळणी—किसी स्वादिष्ट पदार्थ को खाने की प्रबल इच्छा होना ।

रू०भे०—डड्ढ, डढ, डाढ, दाढ ।

यौ०—धरम-डाड ।

२ रहट का वह उपकरण जो रहट के चक्र के ऊपर दोनो ओर रहने वाले लट्ठों को लकडी या पत्थर के स्तम्भ के साथ मिलाये रखने के लिये लगाया जाता है ।

रू०भे०—डढ़, डाढ, दाड, दाढ ।

अल्पा०—डाडडी, डाढडी, दाढडी ।

मह०—डाढो ।

३ रुदन करने की क्रिया या भाव, रुदन । उ०—डोकरियो डाडां मार-मार नं रोयो पण सुणं कुण ।—वाणी

रू०भे०—डाढ़ ।

अल्पा०—डाडडी, डाढडी ।

डाडडी—देखो 'डाड' (अल्पा, रू भे)

डाडणो, डाडबो–क्रि०अ०—१ जोर से रोना, गला फाड कर रोना, दर्दनाक रुदन करना। उ०—दूभर द्वीहायन श्रीहायन दोरी, सूभर चतुरब्दा सब्दारथ सोरी। इक नहिं आक्राता क्रातातुर आडी, डाई अवतोका सोकाकुळ डाडी।—ऊ.का

२ चिल्लाना।

डाडणहार, हारो (हारी), डाडणियो—वि०।

डडवाडणो, डडवाडबो, डडवाणो, डडवाबो, डडवावणो, डडवावबो डडाडणो, डडाडबो, डडाणो, डडाबो, डडावणो, डडावबो—प्रे०रू०।

डाडिओडो, डाडियोडो, डाड्योडो—भू०का०कृ०।

डाडीजणो, डाडीजबो—भाव वा०।

डाढणो, डाढबो, डिढाणो, डिढ़ावो—रू०भे०।

डाडर–स०पु०—१ वक्षस्थल, सीना। उ०—१ भडा घड डाडर घाव ववार।—गो रू

उ०—२ फोड डाडर धजर पार फूटी।—कविराजा करणीदान.

२ पीठ ३ मढक।

अल्पा०—डाडरो।

डाडरो—देखो 'डाडर' (अल्पा, रू भे) उ०—डाड रा वीह रा, स्रोण रा डाल्ह रा। गूद रा मास रा, अत रा व्हे गरा।—सू प्र.

डाडाणो—देखो 'दादाणो' (रू.भे.)

डाडागुरभाई—देखो 'दादागुरभाई' (रू भे)

डाडाळ—१ देखो 'डाढाळो' (मह, रू.भे)

२ देखो 'डाढाळी' (मह., रू भे)

३ वह प्राणी जिसके बडी-बडी दाढें हो।

डाडाळी—देखो 'डाढाळी' (रू.भे.) उ०—डाडाळी चवियो वरद दैत, जुद जैत ताह री सदा जैत।—रामदान लाळस

डाडाळो—देखो 'डाढाळो' (रू.भे)

डाडिम—देखो 'दाडम' (रू भे.) उ०—खाईइ खाड बीजोरडी, डोलहर डाडिम द्राख। लीजइ लाख लखेसरी, दीजइ डावी काख।

—मा का.प्र.

डाडियोडो–भू०का०कृ०—१ जोर से रोया हुआ, गला फाड कर रोया हुआ, दर्दनाक रुदन किया हुआ २ चिल्लाया हुआ।

(स्त्री० डाडियोडी)

डाडी—देखो 'डाढी' (रू भे)

डाडो—देखो 'दादो' (रू भे) उ०—निरखियो भीम सरखं भडै नारीयण, देवता देवता तणो डाडो। विसन नर रइणि री वाह सूरति, लछि करतार लाडो।—पी ग्र.

डाढ़—देखो 'डाड' (रू भे.) उ०—१ मद भरया मोती झरइ, गाजइ जेम असाढ। व्रक्ष अमूळइ वन-तणा, डगर खणता डाढ़।

—मा.का.प्र.

उ०—२ वडकै डाढ़ वराह, कडकै पीठ कमट्ठ री। अडकै नाग धराह, वाघ चढै जद वीसहथ।—रामनाथ कवियो

डाढ़डी—देखो 'डाड' (अल्पा, रू भे.)

डाढ़णो, डाढ़बो—देखो 'डाडणो, डाडबो' (रू भे)

डाढ़ाळ, डाढ़ाळ—१ देखो 'डाढ़ाळी' (मह, रू भे) (डिं को)

उ०—इळा नभ भाळ पाताळ खप उपावण, कपावण काळ विकराळ केवी। सु कर प्रतमाळ किरमाळ जुग सम्हणी, दिपै डाढ़ाळ घटियाळ देवी।—खेतसी बारहठ

२ देखो 'डाढाळो' (मह, रू भे) (डिं को)

उ०—१ कइ रस्स डाढ़ाळ ढीचाळ उगाळण, होय अभै खळ खाण नरो।—करुणासागर

उ०—२ खागीवध खळ गयद खुराकी, नाकी नह मेल्ही नहराळ। सीह लडाकी लडण सलूभो, डाकी डह ऊभो डाढ़ाळ।

—महाराजा मानसिंघ री गीत

डाढ़ाळी–स०स्त्री०—१ देवी, दुर्गा, शक्ति। उ०—बाढाळी बहताह, राढाळी अवक रुडे। साढाळी सहताह, डाढाळी ऊपर करै।

—महाराजा बखतावरसिंघ (अलवर)

२ वह स्त्री जिसकी चिबुक पर दाढी आ गई हो।

३ वह मादा प्राणी जिसके बडी बडी दाढें हो।

रू०भे०—डाडाळी, डाडवाळी।

मह०—डाडाळ, डाढाळ।

डाढाळो–स०पु०—१ वराह अवतार। उ०—जे खळ जठी तठी जुव जीपण, हठी भीम कारज हडमत। वणियो यळ राखण- वरदाळा, डाढाळा केसव चो दत।—किसनो आढ़ो

२ सूअर, शूकर। उ०—तिण ऊपर एकल डाढ़ाळो तपस्या करै। अेक भूडण तिण अरवद ऊपर तपस्या करै।

—डाढाळा सूर री वात

३ सिंह, शेर ४ वह प्राणी जिस के बडी बडी दाढें हो.

५ मुसलमान, यवन।

वि०—जिसके बडी-बडी दाढें हो, बडे दांत वाला।

रू०भे०—डाडाळो, दाढाळो।

मह०—डाडाळ, डाढाळ, दाढाळ।

डाढ़ी–स०स्त्री०—१ ठुड्डी पर के बाल। उ०—१ डाढ़ी मूछाळा डांळिया मे डुळिया। रळिया जायोडा गळिया मे रुळिया।—ऊ का.

उ०—२ वाचा साच न दकखै वाणी, पै विसार मगावै पाणी। घट सोचै डाढ़ी कर घालै, 'सोनग' 'दुरग' तणो छळ सालै।—रा.रू

यौ०—डाढ़ी-खूटी।

२ चिबुक, ठुड्डी। उ०—हीरा की सी लडी बतीसो सोवै छै, अधर मदन मन मोहै छै। डाढ़ी रा चौक मे स्याम बूद विराजै छै, जाणे चद्रमा रै सरीर हार राजै छै।—पना वीरमदे री वात

रू०भे०—डाडी, दाढ़ी।

महु०—डाढ़ो ।
३ देखो 'दाढ़ी' (रू भे)
डाढ़ेराव-वि०—वडे-वडे दातो वाला (सिंह)
उ०—१ डाला मथा वरुथा डाकरै डाकी डाढ़ेराव, आराण लडाकी आक वाकरै अरेस। आण प्यालै सावात छाक रे भीमसिंघ आळा, नो हथेस चोडै-धाडै वाकरै नरेस।—जवानजी आढ़ो
उ०—२ डाकी डाढ़ेरावगजा गनीमा भरतो डाचा ।
—हुकमीचंद खिडियो
डाढ़ो—देखो 'डाढ' (मह, रू भे)
२ देखो 'डाढी' (मह, रू भे.)
३ देखो 'दादो' (रू.भे)
डाढ़ाळी—देखो 'डाढाळी' (रू भे) उ०—हरनि दुख सभि केहरी, डरणी न डाढ़ाळी। करणी तूंहि कामही, करणी तूंहि काळी।
—हिंगळाजदान बारहठ
डात्कार-सं०पु०—डमरू की ध्वनि। उ०—जठै वेताळा रा आस्फाळ, डाकिणीगणा रा डमरू रा डात्कार, फेरविया रा फेत्कार, प्रेता रा आलाप, राक्षसा रा रास, कुणपा रा कपाळा रा कटकटाहट, चिता रा अगारा करि चित्रविचित्र वडो अद्‌भुत चरित देखियो।—व.भा
डाफर—देखो 'डाफर' (रू भे.)
डाफळ-वि०—छितराया हुआ, वडा। उ०—सावण रो महीनो सो बाजरी निनाण आयोडी। नीली कच, सावळी भवर, डाफळ पानी। खेत जाणै ऊफण आयोडो है।—रातवासो
डाफा-स०पु० (वहु व०) चक्कर।
मुहा०—१ डाफा खाणा—चक्कर लगाना, भटकना।
मुहा०—२ डाफाचूक होणो—पथ से विचलित होना, मति भ्रष्ट होना।
डाफी-स०स्त्री०—मति, बुद्धि।
मुहा०—डाफी चढणी—बुद्धि का सतुलन खोना, भौंचक्का होना।
डाब-स०पु० [स० दर्भ] १ प्राय रेह मिली हुई ऊसर जमीन में पैदा होने वाली कुश की जाति का एक घास विशेष, एक प्रकार का कुश।
रू०भे०—डाभ, दाभ।
अल्पा०—डाबडो, डाभडो।
स०स्त्री०—२ बन्दूक मे लगा चमडे का वह तस्मा जिससे वदूक कधे पर लटकाई जा सकती है। उ०—दूसरो बीज री सळाव सीसू पीळियै दुर्ध री लकडी रा कुदा छै। रूपै री तारा रा कोकडी सीरम सपेतै रा वध छै। वोयदार री डाबा छै। कसूमल सूत री लपेटी जामकी छै।—रा सा स
अल्पा०—डाबडी।
३ देखो 'दाव' (रू भे) उ०—हारि जीति कायासा डारचा, बाजी जीती डाब विचारचा। खेलणहार गया मुख गोय, ताका पला न पकडै कोय।—ह.पु.वा.
डाबउ, डाबउ—देखो 'डावो' (रू.भे) (उ र.)
डाबडी—१ देखो 'डाब' (२) (अल्पा, रू भे.)
२ देखो 'डवडी' (रू.भे.)
डाबडो-स०पु०—१ रहट का वह घेरा जिस पर घडिया लगी हुई माल रहती है और उसके घूमने के साथ माल भी घूमती है जिससे भरी हुई घडिया एक ओर से आ कर ऊपर खाली हो कर दूसरी ओर कुए के भीतर चली जाती है।
२ देखो 'डाब' (१) (अल्पा., रू भे.)
डाबर-स०पु०—१ आखो के वडी व सुन्दर होने का उपमा का शब्द।
उ०—बावर वीखरिया ओढणियै आडै। डाबर नयणा री टाबर वय डाडै।—ऊ का
यौ०—डाबर-नैणी।
२ छोटा तालाव, पोखर, गड्ढा। उ०—डोढा कथलोटा जूटण नै घुमडै। महिसी महिसी ज्यू डावर मे रमडै।—ऊ का.
डाबरो—देखो 'डाब' (१) (अल्पा., रू भे) २ देखो 'डावड' (रू भे)
३ देखो 'डाबर' (अल्पा., रू.भे) उ०—झीलस्या री कामना म्हारै, डाबरा कुए जावा री। गगा जमना कामना म्हारै, म्हा जावा दरियावा री।—मीरां
डाबली—देखो 'डवडी' (रू भे)
डाबी-स०पु०—१ राजपूतों मे पँवार वश के अन्तर्गत एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।
रू०भे०—डाभी।
२ देखो 'डवी' (रू भे.) उ०—चौथी तो पैंडी दिवला पग धरो, पाना डावी धण रे हाथ।—लो गी
३ देखो 'डवो' (अल्पा., रू भे)
डाबू—देखो 'डावो' (रू भे) उ०—आघेरु जईनि चीतवि, 'लोचन माहारू डाबू लवि। जोऊ रही हसि टळवळी', पुनरपि आव्यु पाछु वळी।—नळाख्यान
डाबो—१ देखो 'डवो' (रू भे) उ०—१ गोरी अे, पेया मेलो म्हारो फूल। डाबा नै मेलो म्हारी पातडी।—लो गी
उ०—२ आई आई काछवियारी जान, सैयर म्हारी ए, आई आई काछविया री जान, केसर नै किस्तूरी रा डाबा खोलिया, जी म्हारा राज।—लो गी
२ देखो 'डावो' (रू भे) उ०—१ डावो न फरूकै देरा कर, जळ आख मम जीवणी। साथिया कठै तू सीखियो, पीव तमाखू पीवणी।
—ऊ का
उ०—२ डाबा जिमणा नह डगड़, चवकु अेक न चक्षु। ध्यान धरी रहिया धीर सह, काम कदळा भिक्षु।—मा का प्र
(स्त्री० डाबी)

डाभ—देखो 'डाव' (रू.भे.) उ०—रीति नही रज रेत नी, नही गुरविणी ना गाभ। सीतासुत बीजू करिउ, प्रगट प्रतिस्टी डाभ।
—मा.का प्र.

डाभी—१ देखो 'डावी' (१) (रू.भे.) उ०—१ जठै डाभी देवसीघ बोलियो।—पना वीरमदे री वात

डायचौ—देखो 'डायजो' (रू.भे.) उ०—वाणातरा साह नै परणायो। जठै सारो विध विधान कर नै सगा डायचौ दीधो।—साहूकार री वात

डायजावाळ-स०उ०लिं०—दहेज मे दिया हुआ या दहेज मे आया हुआ व्यक्ति।

डायजो—देखो 'दायजो' (रू.भे.) उ०—भोग मिळीजै किम जठै, नरा नारिया नास। यो ही मायड डायजो, दीजै सूवस वास।—वी.स

डायण, डायणि, डायणी, डायनि, डायनी—१ देखो 'डाकरण' (रू.भे.)
उ०—१ डायण चढी जिया परि डकरै। वाणी विकट भयकर वकरै।—सू प्र
उ०—२ डाक हाक हू कळ आडवर, डह डायणी उडियाण डोह। वर कज चलि आवी विस कन्या, लखण बतीरा छतीसे लोह।—दूदो
उ०—३ दादू जब जागै तब मारियै, बैरी जिय के साल। मनसा डायनि काम रिपु, क्रोध महाबळि काळ।—दादू वाणी
२ एक प्रकार की लता या उसका फल।
उ०—डडाळी नइ डोडकी, डायणि डूगरि वेलि। डीसामूळी डुहकळी, डाकडमाळी डोलि।—मा.का.प्र.

डायरी-स०स्त्री० [अ०] वह छोटी पुस्तिका जिसमे दिन भर के कार्य का सक्षिप्त विवरण या आवश्यक स्मरण हेतु कुछ बातें अकित की जायें।

डायलौ—१ जबरदस्त, समर्थ। उ०—भडा काचा कहै बोलावै भायला, डायलां आगळै रहै डरती। तो जसा छायला सीह 'गोकळ' तणा, धणी अजरायला तणी धरती।—बदरीदास खिडियो
२ देखो 'डायो' (अल्पा., रू.भे)
(स्त्री० डायली)

डायां-स०स्त्री० (बहु व०) (एक व० डई, डयी, डाई, डायी) दो लम्बे डडे जो बैलगाडी को पृथ्वी से ऊपर रखने के लिए अग्र भाग मे बाधे जाते हैं।
रू०भे०—डइया।

डायोयाळ—देखो 'डाइयाळ' (रू भे.)

डायो-वि० [स० दक्ष] (स्त्री० डाई, डायी) १ चतुर, दक्ष, समझदार, प्रवीण। उ०—नेम धरो न करो नाकारो, धन उद्यम मन मगज धरो। चित डाया गहला नै चहरै, कोई गहला री होड करो।
—अज्ञात
२ छँटा हुआ, धूर्त, चट, चालाक।
३ सीधा, सरल।
रू०भे०—डावो, डाहउ, डाहु, डाहो।
अल्पा०—डायलो, डाइलो।

डार-स०पु०—१ झुण्ड, समूह। उ०—१ गुडा री नह घाट साट नह है सूगा रो। चोखो मेळो चलै डार भेळो डूमा रो।—ऊ का.
उ०—२ ताहरा फूलमती कही—राजा सिंह आयो छै। तद उठै कुवरसिंह नु मारियो। तद बीजै दिन हाथियां री डार आयो।
—चौबोली
उ०—३ इतरै बीच हिरणा रा डार आय नीसरै छै।—रा सा स
उ०—४ एक वडो वराह डार समेत सुधियै रै उनवै मे आवियो छै।—कुवरसी सांखला री वारता
२ पक्ति, अवली। उ०—सुणता मुधरी गाज तणीजै नाग छतरिया, सुणता गागै घोक हूस री उडै पमतिया। कवळ नाळ ले संग पयाणो पावासर नै, करसी थारो साथ सांतरी डारा कर नै।—मेघ.
अल्पा०—डारडियो, डारडो।
मह०—डारड, डारो।

डारड़—देखो 'डार' (मह., रू भे.)

डारडियो, डारडो—देखो 'डार' (अल्पा, रू भे)
उ०—आठ पौ'र एकलो पौ'रै, ऊभ करै उपकारडा। माय बाप आसरो देवै, डिगता पछ्या डारडा।—दसदेव

डारण-वि०—१ योद्धा, वीर। उ०—डारण नाहर डाण, ठवतो ठाहरा। फुरळ तो अरि फौज तसा धिन ताहरा।
—किसोरदान बारहठ
उ०—२ दळ फिरतो देख दिस् दिस दोळा, अण डरतो करतो ओछाह। डाकरतो आयो थह डारण, बीफरतो चरतो वाराह।
—महादान महडू
२ शक्तिशाली, बलवान, जबरदस्त। उ०—डेरा रोपया उत्तर दिस डारण। मन नहचै लकेसुर मारण।—र रू
३ दीर्घकाय, प्रचडकाय, भीमकाय।
अल्पा०—डारो।

डारणो, डारबो—१ गिराना, पटकना, पछाड़ना। उ०—'पाल' री दळा रखपाळ विरदा धपति, पह वडा भला तै खाग पूजो। डोलिया साथ पूठै सत्रा डारतौ, 'दलै' दह पेखियो 'मयक' दूजो।
—राठौड दळपतसिंघ गोपाळदासोत चापावत री गीत
२ देखो 'डराणो' डराबो' (रू.भे) उ०—चूरइ रहवइ नरकरोडि दतूसळि डारइ। अरजुन पाखइ पड कटकु हणतु कुणु वारइ।
—प प च

डारपत, डारपती-स०पु०—सूअर, शूकर (अ मा.)

डारियोडो—१ देखो 'डरायोडो' (रू.भे) २ गिराया हुआ।
(स्त्री० डारियोडी)

डारुण—देखो 'दारुण' (रू भे.) उ०—पटै ऊपटै मह धारा पठाळ, खळक्कै गिरा मेर थी नीर खाळ। प्रळै काळ छछाळ छूटा पटाळ, क्रमै डारुणा कारणाभूत काळ।—वचनिका

डारौ-स०पु०—१ सूग्रर २ देखो 'डार' (मह., रू भे)
३ देखो 'डारण' (ग्रल्पा, रू.भे.)

डाळ-स०स्त्री०—१ तलवार की मूठ के ऊपर का मुख्य भाग.
२ तलवार का फल। उ०—छछोहक वाहत भाल छडाळ। दुसारक डाळ पडै रवदाळ।—सू प्र
३ दरार, शिगाफ। उ०—डाळडाळ हिवडौ हुयौ, चाली चीरा चीर।—लू
४ दरवाजे के ऊपर लगाया जाने वाला ऐसा पत्थर जो दो पत्थरों की जोड से कमान की आकार का होता है. ५ स्त्रियो का कलाई पर चूडियो के ऊपर पहना जाने वाला आभूषण विशेष
६ देखो 'डाळी' (मह, रू भे) उ०—१ कोई घडलो तौ मेल्यौ सरवरिये री पाळ पर, कोई ईंढ़ाणी तौ टागी चपलै री डाळ मे।
—लो गी.
उ०—२ अजहू तरु पुहप न पल्लव अकुर, थोड डाळ गादरित थिया। जिम सिणगार अकीधै सोहति, प्री आगमि जाणियै प्रिया।—वेलि.

डाल—देखो 'डालौ' (मह., रू भे) उ०—आया आया मा भैस्या रा ग्रे गवाळ, वै भी चावै मा पीसणो जे। पीस्या पीस्या मा डाल दो डाल, अधमण पीस्यो मा वाजरौ।—लो.गी

डाळकियौ—देखो 'डाळी' (ग्रल्पा, रू.भे.)

डालकियौ—देखो 'डालौ' (ग्रल्पा, रू भे)

डाळकी-स०स्त्री०—देखो 'डाळी' (ग्रल्पा, रू.भे.)

डालकी-स०स्त्री०—देखो 'डालौ' (ग्रल्पा, रू भे)

डाळणौ, डाळवौ-क्रि०स०—१ किसी वस्तु को किसी दूसरी वस्तु के भीतर या ऊपर गिराना, प्रविष्ठ करना, घुसेडना २ एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर फैला कर रखना. ३ पहनाना।
उ०—सेखा नै पकड'र असुरा, डा वेडी झट डाळी। मेहाई ह्वै सम्मळी, कुलफा पाव कडाळी।—बारहठ हिंगळाजदान जागावत

डालाअग-स०पु०—केवट, मल्लाह (अ मा.)

डालामथौ-स०पु०यौ०—सिंह, शेर। उ०—घोडा सवार एहिज घणा, चापर कर सागै चडण। मै चढ़ूं पीठ डाला-मथै, ले हाला आई लडण।—मे म

डाळियोडौ-भू०का०कृ०—१ किसी वस्तु को किसी दूसरी वस्तु के भीतर या ऊपर गिराया हुआ, प्रविष्ठ कराया हुआ, मिलाया हुआ, घुसेडा हुआ. २ एक वस्तु को दूसरी पर फैला कर रखा हुआ
३ पहनाया हुआ।
(स्त्री० डाळियोडी)

डाळियौ—देखो 'डाळी' (ग्रल्पा, रू भे)

डालियौ—देखो 'डालौ' (ग्रल्पा., रू भे.)

डाळि, डाळी—देखो 'डाळौ' (ग्रल्पा, रू.भे) उ०—ना हू सीची सज्जणे, ना वूठउ अगाळि। मो तळि ढोलउ वहि गयउ, करहउ वाघ्यउ डाळि।—ढो.मा

डाली—देखो 'डालौ' (ग्रल्पा, रू भे)

डाळौ-स०पु० [स० दार] वृक्ष के तने से निकलने वाला भाग, शाखा, डाल। उ०—ग्रै थारा चावक जैडा वचन कहै मती नहीं तौ ग्रौ दारू री छकियोडौ लाखा नै छाग म्हाकैला, खाती डाळा छागै है जिण तरै।—वी स टी
मुहा०—डाळौ भेलणौ, डाळौ लैणौ—सकट मे फंसना, विपदा मे पडना।
रू०भे०—डाहळौ।
ग्रल्पा०—डाळकियौ, डाळकी, डाळियौ, डाळि, डाळी, डाहळी।
मह०—डाळ, डाहळ।

डालौ-स०पु० [स० डल्ल, डल्लक] बांस की खपच्चियों ग्रादि से बनाया हुआ बड़ा टोकरा, बडी डलिया।
ग्रल्पा०—डालकियौ, डालकी, डालियौ, डाली।
मह०—डाल।

डाव-स०पु०—१ नृत्य, नाच २ देखो 'दाव' (रू भे)
उ०—१ दरिया यहु ससार है, ता मे राम नाम निज नाव। दादू ढील न कीजिये, यहु ग्रौसर यहु डाव।—दादू वाणी
उ०—२ यम तडफडता ग्रडै, वाहि जम दाढ़ वहाडै। डाव घाव डोरिया, जाणि जगजेठ ग्रखाडै।—सू.प्र.
उ०—३ पुरख नारि मै ते मती, नहि पासा नहि सारी। डाव नही चौपडि नही, नही जीति नहि हारी।—ह पु वा.
उ०—४ जन हरिदास साचै मतै, रमै स साचा डाव। सूरवीर साचै मनै, साचा रोपै पाव।—ह पु वा.
उ०—५ देखे डाव पीठ दुसमण की, धीमी चाल धपावै। पूरै वेग करै जव पट्टो, लख ममरेज लगावै।—ऊ का

डावउ, डावउ—देखो 'डावौ' (रू.भे) उ०—१ दिवस तु रात्रि, सुक्लपक्ष तु क्रिस्णपक्ष, उद्योत तउ ग्रधकार, छाया तउ ग्रातप, उचउ तउ नीचउ, जिमणउ तउ डावउ, ग्रम्रित तउ विस।—व स
उ०—२ डावउ करेजउ फरकरइ, महा ग्रपसूकन होज्यौ ए। भुवाळ।—वी दे.

डावड—देखो 'डावडौ' (मह, रू भे) उ०—गावड डावड का भावन गुण गाता। गाया गरभाती गोरी गरवाता।—ऊ का

डावडियौ—देखो 'डावडौ' (ग्रल्पा., रू भे) उ०—ग्रोछा कुळ मे ऊपना, दोभा डावड़ियाह। हवळै वोलै होट मे, मूरख मावडियाह।
—वा दा

डावडी-स०स्त्री०—पुत्री, बेटी। उ०—पायौ किण धनवत पद, दामै डावडियांह। कवियण किण पायौ कुरब, मागै मावडियाह।
—बाँ.दा
२ बालिका, कन्या ३ दासी, सेविका। उ०—१ कोई वीर प्रकृति वाळी स्त्री कहे है—हे सखी, हू सारी वाता रीस सहण वाळी हू, म्हारी डावडी ही रीस मे आय कुछ कहे तो सह लेऊ सो सासू नणद

रो नो तहू ईं तहू ।—वी म टी

उ०—२ छोकरिया डावडिया जाय जाय दौड दौड देय आवै छै ।

—कुवरसी साखला री वारता

रू०भे०—डावरो ।

डावड़ो-स०पु० (स्त्री० डावडी) १ बालक, लडका ।

उ०—१ पैना रै वहकाविया, पडै सयाणा हूल । डाकण रै घर डावडा, भेजै जिकण म भूल ।—वी स

उ०—२ उणा फिर फिर सारा वस्ती रा डावडा जोया ।—नैणसी

२ पुत्र, आत्मज । उ०—दसरथ हूदा डावडा तेतीस छुडाया ।

—केसोदास गाडण

रू०भे०—डावरो ।

अल्पा०—डावडको, डावडियो ।

मह०—डावड ।

डावरो—देखो 'डावडो' (रू.भे.)

डावरो—देखो 'डावडो' (रू भे.) उ०— जग-जीतणहारो हे, दीखण मे ही डावरो । सिव-चाप चढ़ायो हे, राख्यो पण रावरो ।

—गी.रा.

(स्त्री० डावरी)

डावलियो, डावलो—वि० (स्त्री० डावली) १ जिसका बाया पाव बाया हाथ अधिक तत्पर हो २ देखो 'डावो' (अल्पा , रू भे)

डावाडोळ, डावांडोळ—देखो 'डावाडोळ' (रू भे.)

उ०—१ रोळ हूं डफोळ डावांडोळ मैं रह्यो । मानखो अमोल गोळ-मोळ मे गयो ।—ऊ का.

उ०—२ गप्फा होवै खलक पर, उप्फा डावाडोळ । नप्फा थारै है नहीं, गप्फा रावै गोल ।—ऊ.का.

डावियाळ—देखो 'डाइयाळ' (रू.भे)

डावु, डावू—देखो 'डावो' (रू भे.) उ०—१ डावी हूम डाळि गह-गहगही, जिमणी भइरव भनइ गहइगही । खर डावू हूउ तीणी वारि, सून सकुन ना कम्म विचार ।—व स.

उ०—२ डावा देव जिमणी भइरव, डावु खइर डावु राजा । डावा नाळी जिमणी मनाळी, तदळ भरं भाण ।—व स.

डावो-वि० (स्त्री० डावी) १ किसी मनुष्य या प्राणी के पूर्व दिशा की ओर मुंह कर के खड़े होने पर उसके शरीर के उस पार्श्व की ओर पड़ने वाला जो उत्तर की ओर हो, दाहिने का उल्टा, बाया, वाम ।

उ०—१ तठै इण री तरवार घोडा रै फर मे पडी । आगलो डावो पग उठै हीज पडियो नैं महाराणा नैं ले घोडो चेटक अठारा कोस म इत रा भाखरा म पुगो ।—वी म टी

उ०—२ डावा कर ऊपर मुगट, कर जीमणो करत । मो लगाय मुख मारतो, माडियो मुघरत ।—बा.दा.

मुहा०—डावा हाथ रो खेल—जो बाऐं हाथ से किया जा सके, अत्यन्त सरल ।

२ प्रतिकूल, विरुद्ध ३ उल्टा ४ देखो 'डायो' (रू भे)

उ०—आप डावो अनै गिणै काला अवर, साभळो कमाई करै खोटी । चराया छळा जिम पान गिणिया चरै, मरण री न जाणै खोड मोटी ।—ओपो आढो

स०पु०—१ बाया हाथ २ देखो 'दा'वो' (रू भे)

रू०भे०—डावउ, डावउ, डावउ, दावउ, डावु, डावू, डाहउ ।

अल्पा०—डावलियो, डावलो, डाहलो ।

डाह-स०स्त्री० [स० दाह] ईर्ष्या, द्वेष, जलन ।

रू०भे०—डा' ।

डाहउ—१ देखो 'डायो' (रू भे) उ०—उत्सूत्र बोलतउ जे सका नाणइ अनइ कुगरु रहइ सुगुरु करी मानइ ते विदुख डाहउ हूंतउ ते पाप पुण्य करी मानइ ।—षष्टिशतक प्रकरण

२ देखो 'डावो' (रू भे)

डाहणो, डाहबो-क्रि०स०—धारण करना, पहनना ।

उ०—बावन जुध जीतो बहुस, पह कारण पतसाह । डारण कदे न डाहियो, निज तन 'गजन' सनाह ।—किसोरदान बारहठ

डाहपण—देखो 'डाहापणो' (रू भे) उ०—हवडा पाछिलया भवनइ अग्यान कस्टनइ प्रमाणि डाहपण चतुराइ आवी छइ ।

—षष्टिशतक प्रकरण

डाह्रर-स०पु०—एक जाति विशेष । उ०—नर गोडिया नै गवारिया रे, ऐ तो वही भार पवारिया रे, डबगर डूम डाहरने भरवा रे ।

—जयवाणी

डाहळ-स०स्त्री०—१ वाद्य विशेष । उ०—दोऊ ओर दुबाह यो असि वाह अछक्कं । डेरा डाहळ डिंडिमी डक्को डकडक्कं ।—व भा

२ देखो 'डाळो' (मह , रू भे) उ०—मद लेता भाखै मती, भोळी चाबुक भात । छकियो लाखा छागसी, खाती डाहळ खात ।—वी स

डाहल-स०पु० [स० दाह+आलुच् रा०प्र०+ल] १ शिशुपाल ।

उ०—१ विप्र तणा पय पूजी प्रणमी, इम बोलइ सीमात । डाहल नइ दळ मगळ गावइ, विस्णु तणी कहो वात ।—रुकमणी मगळ

२ देश विशेष का नाम (व.स)

३ देखो 'डाहलो' (मह , रू भे.) उ०—येम नारि छुटवाय, मेछ अपने मग लग्गिय । मनु डाहल सिसपाळ, खोय घन को खळ भग्गिय ।

—ला.र.

डाहळो—देखो 'डाळो' (अल्पा , रू भे) उ०—मोटा पुरखा कही छै सरम धरम रै रौंखडा रै डाहळो छै ।—नी प्र

डाहलियो—१ देखो 'डाहलो' (अल्पा., रू.भे)

उ०—१ सारग स्यग द्रिस्टि जिम कपइ, तिम डाहलियो द्रिस्टिइं । नलणी नीर विना किम जीवइ, कु हरि विना वीसेगइ ।

—रुकमणी मगळ

उ०—२ डाहलियो राजा सिसुपाळ । मन मानै तो पाळो वरमाळ ।

—जयवाणी

२ देखो 'डाहन' (अल्पा, रू भे.)

डाहळौ—देखो 'डाळौ' (रू भे) उ०—ढाक कुभरा फोकर दूळा झुक नै रह्या छै। डाहळां सू डाहळा अडनै रह्या छै।—रा.सा स.

डाहलौ-वि० (स्त्री० डाहली) १ ईर्ष्या करने वाला, ईर्ष्यालु
२ देखो 'डावौ' (अल्पा, रू.भे)

संपु० [स० दाह+रा०प्र०लो] १ शिशुपाल २ देश विशेष का नाम ३ देखो 'डायो' (अल्पा, रू भे) उ०—मू किसाअेक सरदार जुवान छै? पाका पाका वरियामा नू, अजरायळा नू, खीवरा नू, डाणहुला डाकिया नू, करडदंता नू, लोह घडा लाह पर डाहला नू, लोली दता, कटारी उगराई खाता ।—रा सा स.

अल्पा०—डाहलियो।

मह०—डाहल।

डाहिणी-स०स्त्री०—छत्तीस प्रकार के शस्त्रो मे से एक।—व व

डाहिया-स०स्त्री०—राजपूतों मे सोलकी वश की एक शाखा।

डाहियौ-स०पु०—राजपूतो मे सोलकी वश की उाहिया शाखा का व्यक्ति।

डाही—देखो 'डाई' (रू भे.) उ०—१ तरै चावडी कह्यो, पर-पुरस रा मुह देखू नही। पिण तू डाही समझवार छै, तिणसू आवू छू।
—जगदेव पवार री वात

उ०—तात न जाणि तिम तेड़ावू पिरि प्रीऊनि वाही। तु हि मन माहा वात राखज्ये, माता छे अति डाही।—नळाख्यान

डाहीयार—देखो 'डाइयाळ' (रू.भे) उ०—१ तेह भणी जिम वाळक तत्त्वातत्त्वविचार न जाणइ, हित अहित न जाणइ। तेह वाळका ऊपरि डाहीयार लोक रोस न करइ।—षष्टिशतक प्रकरण

उ०—२ आलं वाळउ वाकु अहिठाणउ आकु तोणइ वाळी, माहि धूली टाली, घीइ मोईं, डाहीयारइ जोई, एकल्ल पाट साल्यार घाट।
—व स

डाहीयाळ—देखो 'डाइयाल' (रू भे)

डाहु—देखो 'डायो' (रू भे) उ०—१ प्रजा नइ सुखकारीउ, माइ पिता समान। विचार चतुर डाहु भलु ए, दिइ यथोचित दान।
—नळ-दवदती रास

उ०—२ पडित डाहु विद्यावत, नही टळवळीउ कहिवाइ सत। गरव न धरइ हुई आमाहि, सुदर दीसीतु प्रवाही।—नळ-दवदती रास

डाहुउ-स०पु०—देश विशेष का नाम (व स)

डाहुल—देखो 'डाहल' (रू भे) उ०—आवै तू आप लियौ अवतार, मडा भड'भोमि उतारण भार। सोहे तू डाहुल दंत सिंघार, निमो नरकासुर खोसण नारि।—पी ग्र

अल्पा०—डाहुलियो, डाहुलो।

डाहुलियो, डाहुलौ—देखो 'डाहलो' (अल्पा., रू भे)

उ०—तातं अति लोही तणा, वहिसे वाहिळिया। तिमि काळिगा ओडिया, जिमि दळिया डाहुलिया।—पी ग्र.

डाहूआर—देखो 'डाइयाळ' (रू भे.) उ०—इसउ महाराज प्रजापाळवत सलक्षण विचक्षण डाहूआर, अतिहि सुविचार, वहुत्तरि कळाकुसळ।
—व स

डाहेरौ—देखो 'डायो' (रू भे) उ०—डोसे डाहेरे मिळी, कीधउ अस्यु विचार। गरभ धरइ नहि गोरडी, सिउ समसिइ ससार।
—मा का प्र.

डाह्यौ—देखो 'डायो' (रू.भे) उ०—१ तरै किणहेक डाहै माणसै कह्यो—'जु अै काळ पूछिया धरती दूलता लेता आवै छै, इणा रै ना जाइजै।'—नैणसी

उ०—२ महुतउ वेग सभा आविउ, राजा रगिइ वोलावीउ। डाहा भुनइ केती वार, तुह्म सरिखा नु किसिउ विचार।
—विद्याविळास पवाडउ

(स्त्री० डाही)

डिगळ-स०स्त्री०—राजस्थानी भाषा का एक नाम, मरु भाषा।
वि०वि०—देखो 'राजस्थानी' (२)

डिगळियौ, डिगळयौ-स०पु०—वह जो डिगळ पढा हुआ हो (अल्पा)
उ०—डिगळिया मिळिया करै, पिंगळ तणौ प्रकास। ससक्रत व्है कपट सज, पिंगळ पढिया पास।—वा.दा.
रू०भे०—डीगळियौ।

डिडिभ, डिडिम, डिडिमि, डिडिमी-स०पु०—एक प्रकार का वाद्य विशेष।
उ०—१ डेरा डिडिम डाकिनी डफ डक्क वजाया।—व भा
उ०—२ दोऊ ओर दुवाह यो असि वाह अच्छक्कं। डेरा डाहल डिडिमी डक्को डकटक्कं।—व भा.

डिडीर-स०पु०—फेन, झाग।

डिब, डिभ-स०पु० [स०] १ पुत्र, वेटा (ह ना.)
उ०—१ डहकिक मिच्छि जास डिभ-डिभ वाम सझरै। जिहान आन कान जोध जग आइ सो जुरै।—राजविलास
उ०—२ पिता मात मामाळ पिण, बळ धक रो वळवत। डिम मे उाकी डिभ डट, दळ दे दुसहा दत।—रेवतसिंह भाटी
२ युद्ध, लडाई। उ०—डहकिक मिच्छि जास डिभ-डिभ वाम सझरै। जिहान आन कान जोध जग आइ सो जुरै।—राजविलास
रू०भे०—डिभ, डिम।

डिभक-स०पु०—१ वच्चा, शिशु। उ०—सता मानि मरोडघा मारै रे, डिभक सा डाकण चुणि खाया। कोई म्रितक पडघा पुकारै रे।
—ह पु वा.

डिभककरास्त्र-स०पु०—एक प्रकार का अस्त्र (व.स.)

डिकामाळी-स०स्त्री०—मध्य भारत तथा दक्षिण मे पाया जाने वाला एक प्रकार का पेड।

डिगवर, डिगमर—देखो 'दिगवर' (रू.भे.)
कहा०—डिगमरा कै गाव मे धोवी को के काम—दिगम्बरो के गाँव

मे धोबी का क्या काम । जैनियो के दिगम्बर साधु नगे रहते है अत उनके गाँव मे धोबी का क्या काम ।

डिगणौ, डिगवौ–क्रि०अ०—हिलना, डुलना । उ०—डिगै गेण अण-डोल, जोग तज बैसे सकर । हार कठ सिणगार, गार छोडवै मिण-धर ।—चौथ बिठू

२ जगह छोडना, हटना । उ०—उण मोसर मद ऊगिया, सावळि हुवा समाजि । मछ उथेलया ज्या डिगो, जोवन तणी जिहाजि ।

पना वीरमदे री वात

३ डगमगाना, हिलना-डुलना । उ०—१ डिगती डोकरिया डोक-रिया डोलै । वावा टुकडी दौ हावा कर बोलै ।—ऊ का.

उ०—२ मगर पचीसी माय डोकरौ बणगौ डाकी । डागडिया निठ डिगै थिगै टागडिया थाकी ।—ऊ का

४ नीचे की ओर प्रवृत्त होना, झुकना । उ०—ओछी अगरखिया दुपटी छिव देती, गोढै वरडी जे पूरा गामेती । फैटा छोगाळा खाधा सिर फावै, टेढा डोढा ह्वै डिगतौ नभ ढावै ।—ऊ का

५ प्रण पर स्थिर न रहना, विचलित होना । उ०—१ इम करता रभ कोड इलाजा । रिख व्रत चित डिगियौ न राजा ।—सू प्र.

उ०—२ डिगै न चित्त नाही डरै, फिरै न कह फुरमाण । करण चहै ज्यूही करै, 'पातल' खरै प्रमाण ।—जैतदान बारहठ

डिगणहार, हारौ (हारी), डिगणियौ—वि० ।

डिगवाडणौ, डिगवाडवौ, डिगवाणौ, डिगवायौ, डिगवावणौ, डिगवा-ववौ—प्रे०रू० ।

डिगाड़णौ, डिगाडवौ, डिगाणौ, डिगावौ, डिगावणौ, डिगाववौ

—क्रि०स०

डिगिओडौ, डिगियोडौ, डिग्योडौ—भू०का०कृ० ।

डिगीजणौ, डिगीजवौ—भाव वा० ।

डगणौ, डगवौ—रू०भे० ।

डिगपाळ—देखो 'दिगपाळ' (रू भे) उ०—तत पाच गुण तीन कोम डिगपाळ कमाळी । सोम राहु छिनि सूर केत त्रिसपति कोलाळी ।

—पी ग्र

डिगमग—देखो 'डगमगा'ट' (रू भे.)

डिगमगणौ, डिगमगवौ—देखो 'डगमगणौ, डगमगवौ' (रू भे.)

उ०—हीगा वड डिगमगै, मऊ माळवै जाय ।—अज्ञात

डिगमिगा'ट—देखो 'डगमगाहट' (रू भे)

डिगमगाणौ, डिगमगावौ—देखो 'डगमगाणौ, डगमगावौ' (रू भे)

डिगमगायोडौ—देखो 'डगमगायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० डिगमगायोडी)

डिगमगावणौ, डिगमगाववौ—देखो 'डगमगाणौ, डगमगावौ' (रू.भे)

डिगमगावियोडौ—देखो 'डगमगायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री० डिगमगावियोडी)

डिगमगियोडौ—देखो 'डगमगियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री० डिगमगियोडी)

डिगमिग—देखो 'डगमगा'ट' (रू भे) उ०—१ देरावर दादौ दीपतौ रे, डिगमिग काई डमडोल रे जात्रीडा । परचा दादौ पूग्वै रे, लो तीरथ को इण तोल रे जात्रीडा ।—स कु

उ०—२ सुजडा मुहि सघर लडिया लसकर, डिगमिग काइर कळह डरै । खागा पळ खडर कटि सिर कूपर, स्रोणी खप्पर सकति भरै ।

—गु रू वं.

डिगमिगणौ, डिगमिगवौ—देखो 'डगमगणौ, डगमगवौ' (रू भे)

उ०—१ सवळ जळ सभिन्न सुगध भेट सजि, डिगमिग पाउ वाउ क्रोध डर । हालियो मलयाचळ हूत हिमाचळ, कामदूत हर प्रसन्न कर ।—वेलि

उ०—२ जे जिमणै ओ भैरव, जिमणै ओ हाथ त्रिसूळ । डावै ओ भैरव, डावै ओ डमरू डिगमिगै ।—लो गी.

डिगमिगा'ट—देखो 'डगमगा'ट' (रू भे)

डिगमिगाणौ, डिगमिगावौ—देखो 'डगमगाणौ, डगमगावौ' (रू भे)

डिगमिगायोडौ—देखो 'डगमगायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० डिगमिगायोडी)

डिगमिगावणौ, डिगमिगाववौ—देखो 'डगमगाणौ, डगमगावौ' (रू.भे)

डिगमिगावियोडौ—देखो 'डगमगायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० डिगमिगावियोडी)

डिगमिगाहट—देखो 'डगमगा'ट' (रू भे)

डिगमिगियोडौ—देखो 'डगमगियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० डिगमिगियोडी)

डिगर–स०पु० [स० डिंगर] नौकर, चाकर, टहलुआ (ह.ना , अ मा)

डिगरी–स०स्त्री० [अ० डिक्री] १ अदालत की वह आज्ञा जिसके द्वारा मुद्दई को कोई अधिकार प्राप्त होता है ।

क्रि०प्र०—आणी, करणी, देणी, पाणी, भेजणी, मिळणी, मेलणी, होणी ।

[अ० डेग्री] २ परीक्षा मे उत्तीर्ण होने पर विश्वविद्यालय द्वारा दी जाने वाली पदवी।

क्रि०प्र०—मिळणी ।

यौ०—डिगरीदार ।

डिगळी-चूक–वि०यौ०—वह जिसकी नीयत स्थिर नही रहे ।

मि०—डेळी-चूक ।

डिगाडणौ, डिगाडवौ—देखो 'डिगाणौ, डिगावौ' (रू.भे)

डिगाडणहार, हारौ (हारी), डिगाडणियौ—वि० ।

डिगाडिओडौ, डिगाडियोडौ, डिगाड्योडौ—भू०का०कृ० ।

डिगाडीजणौ, डिगाडीजवौ—कर्म वा० ।

डिगणौ, डिगवौ—अक०रू० ।

डिगाडियोडौ—देखो 'डिगायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री० डिगाडियोडी)

डिगाणौ, डिगावौ—क्रि०स०—विचलित करना; अटल न रहने देना, पथ-भ्रष्ट करना। उ०—१ सत पाय उपाय डिगाय सती। पद गाय रिझाय छोडाय पती।—ऊ.का

उ०—२ डिगायौ डिगू नहीं, जो देव चलावै आण।—जयवाणी

२ जगह छुड़ाना, हटाना ३ हिलाना-डुलाना. ४ दूर करना, टालना ५ नीचे की ओर प्रवृत्त करना, झुकाना।

डिगाणहार हारौ (हारी), डिगाणियौ—वि०।

डिगायोडौ—भू०का०कृ०।

डिगाईजणौ, डिगाईजवौ—कर्म वा०।

डिगणौ, डिगवौ—अक० रू०।

डगाड़णौ, डगाडवौ, उगाणौ, उगायौ, डगावणौ, डगाववौ, डिगाड़णौ, डिगाउवौ, डिगावणौ, डिगाववौ—रू०भे०।

डिगायोडौ—भू०का०कृ०—१ विचलित किया हुआ २ जगह छुड़ाया हुआ, हटाया हुआ ३ हिलाया-डुलाया हुआ ४ दूर किया हुआ, टाला हुआ. ५ नीचे की ओर प्रवृत्त किया हुआ, झुकाया हुआ।

(स्त्री० डिगायोडी)

डिगावणौ, डिगाववौ—देखो 'डिगाणौ, डिगावौ' (रू भे)

डिगावणहार, हारौ (हारी), डिगावणियौ—वि०।

डिगावियोडौ, डिगावियोडौ, डिगाव्योडौ—भू०का०कृ०।

डिगावीजणौ, डिगावीजवौ—कर्म वा०।

डिगणौ, डिगवौ—अक० रू०।

डिगावियोडौ—देखो 'डिगायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० डिगावियोडी)

डिगियोडौ—भू०का०कृ०—१ हिला हुआ, टला हुआ २ जगह छोडा हुआ, हटा हुआ ३ हिला-डुला हुआ, डगमगाया हुआ ४ नीचे की ओर प्रवृत्त हुवा हुआ, झुका हुआ ५ बात पर स्थिर न रहा हुआ, विचलित हुवा हुआ।

(स्त्री० डिगियोडी)

डिचकार—देखो 'टुचकार' (रू भे)

डिचकारणौ, डिचकारवौ—देखो 'टुचकारणौ, टुचकारवौ' (रू भे)

डिचकारी—देखो 'टिचकारी' (अल्पा, रू भे) उ०—१ दूध दियौ जितै-तौ माथौ मारियो, नीरौ नाखियौ। टळिया पछै दिनूगै-सू डिचकारी दे'र घर सू बारै टोर देवता।—वरसगाठ

उ०—२ डिचकारी करता थका।—जयवाणी

डिचकारौ—देखो 'टिचकारौ' (रू भे)

डिचडिच—देखो 'टिचटिच' (रू भे) उ०—गाय माडाणै टुरी। दीनता अर करुणा भरी भोळी द्रस्टि घर कानी नाखी। पण फजूल बा ढेकी, छेकडली वार निरासा-भरी निजर फेई-नै देवण साहू पसारी, पण ओमजी-री डिचडिच विर्य नै वठै ज्यादा पग ठामण को दिया नी।—वरसगाठ

डिढ—देखो 'द्रढ' (रू भे) उ०—म्हारी तौ ओ डिढ विस्वास कै धरती माथै मिनख सू वेसी की चीज कोनी।—वाणी

डिडाणौ, डिडावौ—देखो 'टाडणौ, डाडवौ' (रू भे.)

उ०—भूरा रू भुरडीजिया, लूआ वैरण लाय। चटका लागै चौगिरद, पहूँ डिडाय डिडाय।—लू

डिडायोडौ—देखो 'डाडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० डिडायोडी)

डिपटी—१ देखो 'डयूटी' (रू भे.) २ देखो 'डुपटी' (रू.भे)

डिवलौ—देखो 'दिवलौ' (रू भे) उ०—जानी म्हारा ले डिवलौ ले बात, वूढलै री सेजा घणा गई ओ म्हारा साम।—लो गी.

डिविडि, डिवियां—देखो 'डवी' (रू भे)

डिवौ—देखो 'डवौ' (रू भे)

डिव्वी—देखो 'डवी' (रू भे.)

डिव्वौ—देखो 'डवौ' (रू भे) उ०—चौधरी दौडता भागता टिगस कराय नै गाडी तौ पकडली पण डिव्वा मे गरमी इसी ही के उणरौ दम घुटण लागग्यो।—रातवासौ

डिभ—देखो 'डिभ' (रू भे) (हृ ना)

डिम—१ देखो 'उम' (रू.भे) उ०—डिम डिम डमरू वाजता, सार्थ भूत बहु प्रेत। रुड (तणी) माळा सकर रचै, सिलौ करै रिण सेत।—प च चौ

यौ०—डिम-डिम।

२ देखो 'डिभ' (रू भे) उ०—पिता मात मामाळ विण, वळ धक रौ वळवत। डिम मे डाकी डिभ डट, दळ दे दुसहा-दंत।

—रेवतसिंह भाटी

डिमर—देखो 'डमरू' (रू भे)

डिलि—देखो 'डील' (रू.भे) उ०—साचउ कहिता सुदरी, रखै आणती रोस। डगळइ डगळइ दीसीइ, डिलि तुम्हारइ दोस।

—मा का प्र

डिल्ली—देखो 'दिल्ली' (रू भे) उ०—राघव कहइ तुम्ह मति डरउ, हु करउ मत्र मनि भाईयउ। सुळताण ताम समझाइ करि, बाहुडि डिल्ली लाइयउ।—प च चौ

डिल्लौ—स०पु०—१ प्रत्येक चरण मे १६ मात्राओ का एक छद जिसके अत मे भगण होता है २ एक वर्ण वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे दो सगण होते हैं।

डींग—स०स्त्री० [स० डीन = उडान] खूब बढा-चढा कर कही हुई बात, झूठी बडाई की बात, शेखी, गप्प।

क्रि०प्र०—उडाणी, धरणी, मारणी, हाकणी।

डींगड—१ देखो 'डीगौ' (मह, रू भे) २ देखो 'डीगरौ' (मह, रू भे)

डींगडियौ, डींगडौ—१ देखो 'डीगौ' (अल्पा, रू भे.)

२ देखो 'डीगरौ' (अल्पा, रू.भे)

(स्त्री० डीगडी)

डींगर—देखो 'डीगरौ' (मह, रू भे)

डींगरियौ—१ देखो 'डीगरौ' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'डीगौ' (अल्पा, रू भे)

डींगरौ—स०पु०—एक ओर छेद की हुई वह लकडी जिसे शीघ्र कावू मे

नही ग्राने वाले चौपाये के गले मे बाधी जाती है। यह जमीन तक लटकती रहती है और चौपाये के चलने पर उसके अगले पैरो पर लगती है जिससे वह अधिक तेजी से नही भाग सकता है। ठेंगुर।
अल्पा०—डीगडियौ, डीगडौ, डीगरडौ, डीगरियौ।
मह०—डीगड, डीगर, डीगरड।

डींगळ—१ देखो 'डिंगळ' (रू भे) २ देखो 'ठीगळी' (मह, रू भे)

डींगल—देखो 'डीगौ' (मह, रू भे)

डींगळियौ—१ देखो 'डिंगळियौ' (रू भे) २ देखो 'ठीगळौ'। (अल्पा, रू.भे)

डींगलियौ—देखो 'डीगौ' (अल्पा., रू भे) (स्त्री० डीगली)

डींगळौ—देखो 'ठीगळौ' (रू.भे)

डीगलौ—देखो 'डीगौ' (अल्पा, रू भे.) (स्त्री० डीगली)

डींगाड, डींगार—देखो 'डीगाड' (रू भे.)

डींगोड—देखो 'डीगौ' (मह., रू भे)

डींगोडियौ, डींगोडौ—देखो 'डीगौ' (अल्पा, रू भे.) (स्त्री० डीगोडी)

डींगौ—देखो 'डीगौ' (रू भे) (स्त्री० डींगी)

डींघड—देखो 'डीगौ' (मह., रू.भे)

डींघडियौ, डींघडौ—देखो 'डीगौ' (अल्पा, रू भे) (स्त्री० डीघडी)

डींघल—देखो 'डीघौ' (मह, रू भे)

डीघलियौ, डींघलौ—देखो 'डीगौ' (अल्पा, रू भे.) (स्त्री० डीघली)

डींघोड—देखो 'डीगौ' (मह, रू भे.)

डींघोडियौ, डींघोडौ—देखो 'डीगौ' (अल्पा, रू भे) (स्त्री० डीघोडी)

डींघौ—देखो 'डीगौ' (रू भे) (स्त्री० डीघी)

डींच—पत्ती या फल के ऊपर का वह भाग जो लता या वृक्ष से जुडा रहता है, डठल। उ०—ठाम थिका ठठल्यां पछी, नागवेलि ना डींच। पाचय परि परि रडवडइ, दत केम नख नीच।—मा का प्र

डींडू—स०पु०—जल मे रहने वाला सांप।
रू०भे०—टीडू।

डींडोळियौ—देखो 'डडियौ' (रू.भे.)

डींबु—देखो 'डीभो, डीमौ' (रू भे)
उ०—तू दुख पामी तेहवु, जेहवी हू ती ग्रास। दिन केते डींबु चढी, वीभू हुउ विणास।—मा का प्र.

डींभू—स०पु०—भिड नामक कीडा, ततैया, वरं।
उ०—१ डींभू लक मराळि गय, पिक-सर एही वाणि। ढोला, एही मारुई, जेहा हुभ्र निवाणि।—ढो.मा
उ०—२ ऊमर दीठी मारुई, डींभू जेही लक्कि। जाणं हर-सिरि फूलडा, डाकं चढी डहक्कि।—ढो मा.
रू०भे०—डीभू।

डींया—स०स्त्री० [स० दृष्टि] नेत्र, नयन (जयपुर)

डी—स०पु०—१ ग्रासन २ ग्रामला ३ ग्राकाश ४ समुद्र. ५ फेन, झाग।
स०स्त्री० ६ हरीतकी. ७ जजीर (एका)

डीकर—१ देखो 'डीकरी' (मह., रू भे.)
२ देखो 'डीकरी' (मह, रू भे)

डीकरडो—देखो 'डीकरी' (अल्पा, रू भे)

डीकरडौ, डीकरियौ—स०पु०—१ देखो 'डीकरौ' (अल्पा, रू भे)
२ देखो 'डीकरी' (अल्पा, रू भ)

डीकरी—स०स्त्री०—१ पुत्री, बेटी। उ०—१ राजा सूं कहाडी—म्हारं एक डीकरी नव वरस की सो पडदो ग्राडो करि बैठे। —सिघासण बत्तीसी
२ बालिका, लडकी। उ०—वा जाळोर रा प्रसिद्ध मूंहता परिवार री डीकरी ग्रर समदडी रा प्रसिद्ध सेठ परिवार री बींदणी ही। —रातवासो
अल्पा०—डीकरडी, डीकरडो, डीकरियौ।
मह०—डीकर।

डीकरौ—स०पु० [स० दीप्तिकर] (स्त्री० डीकरी) १ पुत्र, बेटा। उ०—भाभैजी री गवरादे जावे रे वलाय, राय म्हारं रे सरीखा रे म्हारं भाभैजी रै डीकरा।—लो गी
२ बालक, लडका। उ०—विना कीजता ब्रह्म राजा वकारै। धरा तूज ही डीकरा ग्रन्न धारै।—सू प्र
अल्पा०—डीकरडौ, डीकरियौ।
मह०—डीकर।

डीगड—देखो 'डीगौ' (मह, रू भे)

डीगडियौ, डीगडौ—देखो 'डीगौ' (अल्पा रू भे.) (स्त्री० डीगडी)

डीगल—देखो 'डीगौ' (मह, रू.भे.)

डीगलियौ, डीगलौ—देखो 'डीगौ' (अल्पा, रू भे) (स्त्री० डीगली)

डीगाड, डीगार—स०पु०—लकडी का वह डडा जो रहट मे कुए के ऊपर घूमने वाले घेरे (डावडौ) की पट्टी व लाठ मे लगा रहता है। ये कुल ३२ होते है। जिस प्रकार साइकिल का पहिया ताडियो से सुरक्षित रहता है ठीक उसी प्रकार यह घेरा इन डडों द्वारा सुरक्षित रहता है।
रू०भे०—डीगाड, डीगार।

डीगोड—देखो 'डीगौ' (मह, रू भे)

डीगडियौ, डीगोडौ—देखो 'डीगौ' (अल्पा, रू.भे.)
उ०—घूघा घोरा नाव कठै लाका लामोडा। गाळा झाडावळा गगरण-चुंबी डीगोडा।—दसदेव
(स्त्री० डीगोडी)

डीगौ-वि० [सं० दीर्घ] (स्त्री० डीगी) ऊंचे कद का, लम्बे कद का।
रू०भे०—डीगो, डीघौ, डीघो।
अल्पा०रू०भे०—डीगड़ियौ, डीगडो, डीगलियौ, डीगलौ, डीगोडियौ, डींगोडो, डीघडियौ, डीघडो, डीघलियौ, डीघलौ, डीघोडियौ, डीघोडो, डीगडियौ, डीगडो, डीगलियौ, डीगलौ, डीगोडियौ डीगोडो, डीघडियौ, डीघडो, डीघलियौ, डीघलौ, डीघोडियौ, डीघोडो।
मह०—डीगड, डीगल, डीगोड, डीघड, डीघल, डीघोड, डीगड, डीगल, डीगोड, डीघड, डीघल, डीघोड।

डीगोड़ौ—देखो 'डीगौ' (अल्पा, रू.भे.)
उ०—डीगोडा डूगर धोरा माभ, वरसती भीणोडी विसराम। जिकण मे भीजें वा इकलारण, विराजी सायत वण जजमान।—माभ

डीघड—देखो 'डीगौ' (मह, रू.भे.)

डीघडियौ, डीघड़ौ—देखो 'डीगौ' (अल्पा रू.भे.)
उ०—बाकडी मरद हद गीत अद वाकडा, मरद लहरीक वाकिम तणा मेच। 'सेर' वारै कमळ वणै सोना मणा, पावडै डीघडै वाकटा पेच।
—कविराजा करणीदान

डीघल—देखो 'डीगौ' (मह, रू.भे.)

डीघलियौ, डीघलौ—देखो 'डीगौ' (अल्पा, रू.भे.)
(स्त्री० डीघली)

डीघोड—देखो 'डीगौ' (मह, रू.भे.)

डीघोडियौ, डीघोडौ—देखो 'डीगौ' (अल्पा, रू.भे.)
(स्त्री० डीघोडी)

डीघौ—देखो 'डीगौ' (रू.भे.) उ०—१ नाडा भरियोडा नैंडा निजराता, गाडा गुडकाता पैंडा फडवाता। लाखँ फूलाणी भीणा सुर लेता, डीघा गाडीणा डव डव धुनि देता।—ऊका
उ०—२ तारा तेजसी कयौ, 'भो तौ खाटरौ है, नै करमचद डीघो है।'—द दा
(स्त्री० डीघी)

डीठ—देखो 'दीठ' (रू.भे.)

डीडियौ—देखो 'डडियौ' (रू.भे.)

डीडू, डीडू—देखो 'डीडू' (रू.भे.) उ०—हूंकडि कर अर हू करै, भी की भुजग न भाळ। डीडू भ्रो डरपावणी, विस विण सकै न वाळ।
—रेवतसिंह भाटी

डीवसियौ—देखो 'ढीवसियौ' (रू.भे.)

डीवौ—देखो 'डठी' (रू.भे.) उ०—व्याह वाहरा जाहि खाहि अरु विक्रत गावै। डीठी माही द्रस्टि एह सिद्ध रूप कहावै।—ह पु.वा.

डीबौ—देखो 'डीभौ' (रू.भे.)

डीभू—देखो 'डीमू' (रू.भे.)

डीभौ, डीमौ-सं०पु०—किसी दुखद या अमागलिक घटना के घटने के कारण होने वाला मानसिक आघात, सदमा।
उ०—मरता नै जाता थका, राखौ न सकै कोय। पिण जो भाखण काढियौ, तो मन डीभौ होय।—जयवाणी
रू०भे०—डीबौ।

डीर-सं०पु०—कुछ विशिष्ट वृक्षो मे फूलो व फलो के लगने से पहले उनके स्थान पर लगने वाला छोटे-छोटे दानो का समूह, बौर, मौर, मजरी। उ०—नारद होय वहीर राति नगरी मे आया, जैसे खेल वजार गोड आवा मळगाया। होय सारग वहीर डीर सूकै ज्या तरवर, हसा होय वहीर नीर सूकै ज्या सरवर।—अरजुणजी बारहठ

डीरा-सं०स्त्री०—ढोलियो की एक शाखा विशेष।

डील-सं०पु०—१ शरीर, देह। उ०—देखा कह हाथ विहूणी डील। खपावरण ढाफर री खोडील।—पी ग्र
मुहा०—डील मे आणौ—किसी देव विशेष की उपस्थिति का शरीर मे अनुभव करना।
२ व्यक्ति, मनुष्य। उ०—गोहिला री वडो घोम राज, अर डाभी पण डीला घणा सिरीखा परधान, सु रीसाणा थका छाड गया।
यौ०—डील-आगौ, डील-डौळ, डीलवडो, डीलोडील।
३ योनी, भग।
रू०भे०—डीलि।

डील-आगौ-सं०पु०यौ०—व्यापार, व्यवसाय अथवा कृषि के अन्तर्गत वह भाग जो किसी मनुष्य को केवल उसी के परिश्रम के बदले मे मिलता है।
वि०वि०—किसी मनुष्य के पास यदि कृषि करने के लिये बैल अथवा अन्य साधन न हो, व्यापार करने के लिये पूजी अथवा अन्य साधन न हो तो केवल उसके स्वय की मेहनत के आधार पर निश्चित किया जाने वाला भाग।

डील-डौळ-सं०पु०यौ०—१ शरीर का आकार, ढाचा, आकृति।
२ शरीर की लम्बाई-चौडाई, देह-विस्तार।

डील-वडी—देखो 'हाड-वडी'।

डीलायती-वि०—१ शरीर सम्बन्धी, शरीर का।
उ०—सूरजमल सुजाणसिंघ राणा अमरसिंघ रो बेटो डीलायती पटे फूलियो।—बा दा ख्यात
वि०स्त्री०—२ दीर्घकाय, भीमकाय।

डीलायतौ-वि०पु० (स्त्री० डीलायती) दीर्घकाय, भीमकाय।

डीलि—देखो 'डील' (रू.भे.)
उ०—चोरनउ मूकीनइ आपणइ डीलि पापि चोरी करइ। ते एवहा जाणिवा।—षष्टिशतक प्रकरण

डीली—देखो 'दिल्ली' (रू.भे.)
उ०—आस्थान आप जोगिन हुइ, विप्र पथ आस्रम करयउ। आणद

अग ऊलट घणइ, तव डोली गढ़ सचरयउ ।—प च चौ

डीलोडील–स०पु०—अग-उपाग ।

डीवा-पाणत–स०स्त्री०—एक प्रकार का सरकारी कर ।

डीसामूळी–स०स्त्री०—लता ?

उ०—डडाळी नइ डोडकी, डायणि डूगरि वेलि । डींसामूळी डुहकळी, डाकडमाळी डोलि ।—मा का प्र.

डुगर—देखो 'डूगर' (रू भे)

उ०—डुगर सिरि दीवउ बळइ, हाडि गळइ ते काय । वाजा विणसइ केणि परि ? उत्तर एक मुखाय ।—मा का प्र

डुगरजीवो–वि०—जिसकी पर्वत के समान आयु हो, दीर्घायु, चिरजीवी ।

उ०—राज सिवाश्री सिध करी, वळि वहला मिळज्योह । डुगरजीवी जीवज्यो, इवर ज्यु फळज्योह ।—ढो.मा

डुगरि—देखो 'डूगर' (अल्पा, रू भे)

उ०—कइय आवूय डुगरि जाइसिउ, रिसह नेमि तणा गुण गाइसिउ ।
—अर्बुदाचलवीनती

डुडि—देखो 'डूडी' (रू भे)

उ०—नफेरी सरणाइ बरगा ढोल झालर डुडि दमामा दडदडी अदग नीसाण प्रमुख वाजित्र वाजइ ।—व स.

डुव—देखो 'डूम' (रू भे)

उ०—पीहर हदी डुबणी, राग अलापै तेण । ढोलो मारू ऊगरै; कहि समझावै वेण ।—ढो मा

(स्त्री० डुवणी)

डुबड़ो, डुबडो—देखो 'डूम' (रू भे.)

उ०—पछै ऊमर-सूमरा विछायत कराई । मुहडा आगै डुबडा गावै छै ।—ढो.मा.

(स्त्री० डुबडी)

डुविलय–स०पु०—एक अनार्य जाति विशेप या इस जाति का व्यक्ति ।

डुहकली–स०स्त्री०—लता ?

उ०—डडाळी नइ डोडकी, डायणि डूगरिवेलि । डीसामूळी डुहकळी, डाकडमाळी डोलि ।—मा.का प्र

डू–स०पु०—१ रक्त २ स्तम्भ. ३ समुद्र ४ कबूतर.

स०स्त्री०—५ पार्वती ६ आँख ७ शक्ति. ८ लता (एका)

डुक—देखो 'डुकौ' (मह, रू भे)

डुकलियो, डुकलो–स०पु०—टूटा-फूटा, जीर्ण-शीर्ण खाट ।

रू०भे०—डुखलो ।

अल्पा०—डुकलियो, डुखलियो ।

डुकौ, डुक्कौ–स०पु०—१ बधी हुई मुट्ठी जो मारने के लिये उठाई जाय, मुक्का ।

क्रि०प्र०—चेपणो, ठोकणो, देणो, वरणो, पडणो, मारणो, लगाणो, लागणो ।

२. बधी हुई मुट्ठी का प्रहार ।

डुखलियो—देखो 'डुकलो' (अल्पा, रू भे)

डुखलो—देखो 'डुकलो' (अल्प, रू.भे.)

डुगडुगाडणो, डुगडुगाडवो—देखो 'डुगडुगाणो डुगडुगावो' (रू भे).

डुगडुगाडियोडो—देखो 'डुगडुगायोडो' (रू भे)

(स्त्री० डुगडुगाडियोडी)

डुगडुगाणो, डुगडुगावो–क्रि०स० (अनु०) डुगडुगी वजाना ।

डुगडुगाडणो, डुगडुगाडवो, डुगडुगावणो, डुगडुगाववो—रू०भे० ।

डुगडुगायोडो–भू०का०कृ०—डुगडुगी वजाया हुआ ।

(स्त्री० डुगडुगायोडी)

डुगडुगावणो, डुगडुगाववो—देखो 'डुगडुगाणो, डुगडुगावो' (रू भे)

डुगडुगावियोडो—देखो 'डुगडुगायोडो' (रू भे)

(स्त्री० डुगडुगावियोडी)

डुगडुगी–स०स्त्री०—चमडा मढा हुआ एक छोटा बाजा, डौंगी, डुग्गी ।

मुहा०—डुगडुगी पीटणी—चारो ओर घोषित करना; डौंडी पीट कर सब जगह प्रकट करना ।

रू०भे०—डुगी, डुवडुभी ।

डुगी—१ देखो 'डुगडुगी' (रू भे) २ देखो 'डूगी' (रू भे)

डुडद—देखो 'डुडद, डुडमंद' (रू भे)

उ०—सुरापत इद्र नै कियो गजराज सज, डुडद नै जीण सपतास डहियो ।—नीमाज ठाकुर अमरसिंघ री गीत

डुचकौ—देखो 'डचकौ' (रू भे)

डुडद, डुडियद–स०पु०—सूर्य, भानु (डिंकों)

उ०—भारथ लखण सेस अह भाया, सुकवि दुति धारा सुकविया डुडद । लिछमीवर भगता धू लायक, नायक जगत दासरथ नंद ।
—र ज.प्र

डुपटी–स०स्त्री०—देखो 'दुपटो' (अल्पा, रू भे.) उ०—राजा म्होंडा ऊपर झीणी डुपटी ओढया छै ।—पचदडी री वारता

डुपटो, डुपट्टो—देखो 'दुपटो' (रू भे)

डुबकी–स०स्त्री०—पानी मे गोता लगाने की क्रिया, डूबने की क्रिया, बुडकी, गोता । उ०—मतवाला घूमत फिरै, गिणै नहिं रक न राव । दिल दरियाव मे डुबकी दीवी, होय गया आनद उछाव ।
स्री हरिरामजी महाराज

क्रि०प्र०—खाणी, देणी, मारणी, लगाणी, लेणी ।

रू०भे०—डबक, डबकी, डबक्क ।

डुबडुभी—देखो 'डुगडुगी' (रू.भे) उ०—वाजा वाजइ डुबडुभी, परणवा चाल्यौ वीसळराव—वी दे

डुबाडणो, डुबाड़वो—देखो 'डुबाणो, डुबावो' (रू भे.)

डुबाडणहार, हारो (हारी), डुबाडणियो—वि० ।

डुबाडिओडो, डुबाडियोडो, डुबाड्योडो—भू०का०कृ० ।

डुबाडीजणो, डुबाडीजवो—कर्म वा० ।

डूबणो, डूबवो—अक०रू० ।

डुबाडियोडो—देखो 'डुवायोडो' (रू भे.)
(स्त्री० डुबाडियोडी)

डुवाणो, डुवाबो—क्रि०स०—१ पानी या किसी तरल पदार्थ के भीतर डालना, गोता देना, बोरना ।

मुहा०—१ घर डुवाणो—घर को चोपट कर देना, सोच-समझ कर कार्य न करना, घर पर अधिकार न रहना २ नाम डुवाणो—जमी हुई प्रसिद्धि को खोना, अव्यवहारिक होना, कलंकित होना. ३ लुटिया डुवाणी—प्रतिष्ठा नष्ट करना, महत्व खोना ४ वंश डुवाणो—कुल की प्रतिष्ठा खोना, मर्यादा नष्ट करना।

डुवाणहार, हारो (हारी), डुवाणियो—वि० ।

डुवायोडो—भू०का०कृ० ।

डुवाईजणो, डुवाईजवो—कर्म वा० ।

डूवणो, डूववो—अक०रू० ।

डवोड़णो, डवोडवो, डवोणो, ढबोवो, डवोवणो, डवोववो डुवाडणो, डुवाडवो, डुवावणो, डुवाववो, डुवोड़णो, डुवोडवो, डुवोणो, डुवोवो, डुवोवणो, डुवोववो, डोवणो, डोववो—रू०भे० ।

डुवायोडो—भू०का०कृ०—१ पानी या किसी तरल पदार्थ के भीतर डाला हुआ, गोता दिया हुआ, बोरा हुआ ।
(स्त्री० डुवायोडी)

डुवावणो, डुवाववो—देखो 'डुवाणो, डुवावो' (रू भे.)

डुवावणहार, हारो (हारी), डुवावणियो—वि० ।

डुवाविओडो, डुवावियोडो, डुवाव्योडो—भू०का०कृ० ।

डुवावीजणो, डुवावीजवो—कर्म वा० ।

डूवणो, डूववो—अक०रू० ।

डुवावियोडो—देखो 'डुवायोडो' (रू भे)
(स्त्री० डुवावियोडी)

डुवोडणो, डुवोडवो— देखो 'डुवाणो, डुवावो' (रू भे)

डुवोडियोडो—देखो 'डुवायोडो' (रू भे)
(स्त्री० डुवोडियोडी)

डुवोणो, डुवोवो—देखो 'डुवाणो, डुवावो' (रू भे)

डुवोयोडो—देखो 'डुवायोडो' (रू भे)
(स्त्री० डुवोयोडी)

डुवोवणो, डुवोववो—देखो 'डुवाणो, डुवावो' (रू भे)

डुवोवियोडो—देखो 'डुवायोडो' (रू भे)
(स्त्री० डुवोवियोडी)

डुरकी—स०स्त्री०— करुण या करुण-विप्रलंभ भाव का वह गीत जो विशेष प्रकार की करुण ध्वनि मे गाया जाता है (जैसलमेर)

डुरगलियो—देखो 'डुरगलो' (अल्पा, रू भे)

डुरगली—स०स्त्री०— देखो 'डुरगलो' (अल्पा , रू भे)

डुरगलो—स०पु०—स्त्रियो के कान मे पहनने का एक आभूषण विशेष ।
अल्पा०—डुरगलियो, डुरगली ।

डुळणो, डुळवो—क्रि०स०—१ विचलित होना, चित्त अस्थिर होना ।

उ०—१ माणस मुरधरिया माणक सम मूगा । कोडी कोडी रा करिया सम सूगा । डाढी मूछाळा डळिया मे डुळिया, रळिया जायोडा गळिया मे रुळिया ।—ऊ का

उ०—२ वाका फाटोडा थाका दम वाकी, डेळही चुळियोडा डुळियोडा डाकी । थिरता मन री नहि तन री गति थाकी, फुरणा पर-धन री अन री नहि फाकी ।—ऊ का.

२ हिलना, डिगना, कपायमान होना, विचलित होना ।

उ०—अर दाहिमा री तीव्र लागता ही प्रामार री प्राण कढण पैठण पद्धति सू डुळियो ।—व भा.

डुळणहार, हारो (हारी), डुळणियो—वि० ।

डुळवाडणो, डुळवाडवो, डुळवाणो, डुळवावो, डुळवावणो, डुळवाववो —प्रे०रू० ।

डुळाड़णो, डुळाडवो, डुळाणो, डुळावो, डुळावणो, डुळाववो—क्रि०स०

डुळिओडो, डुळियोडो, डुळ्योडो ।—भू०का०कृ० ।

डुळीजणो, डुळीजवो—भाव वा०

डुलणो, डुलवो—देखो 'डोलणो, डोलवो' (रू भे)

डुलणहार, हारो (हारी), डुलणियो—वि० ।

डुलवाड़णो, डुलवाडवो, डुलवाणो, डुलवावो, डुलवावणो, डुलवाववो —प्रे०रू० ।

डुलाडणो, डुलाडवो, डुलाणो, डुलावो, डुलावणो, डुलाववो—क्रि०स० ।

डुलिओडो, डुलियोड़ो, डुल्योडो—भू०का०कृ० ।

डुलीजणो, डुलीजवो—भाव वा० ।

डुलहर—देखो 'डोलर' (रू भे.) उ०—दपति हूर अपच्छर सूर (वरि) वैठि विमाननि जात । मानहु तीज दिन, डुलहर वैठि डुलात ।
—ला रा.

डुळावणो, डुळाडवो—देखो 'डुळाणो, डुळावो' (रू.भे)

डुळाडणहार, हारो (हारी), डुळाडणियो—वि० ।

डुळाडिओडो, डुळाडियोडो, डुळाड्योडो—भू०का०कृ० ।

डुळाडीजणो, डुळाड़ीजवो—कर्म वा० ।

डुळणो, डुळवो—अक०रू० ।

डुलाडणो, डुलाडवो—देखो 'डोलाणो, डोलावो' (रू.भे)

डुळाडियोडो—देखो 'डुळायोडो' (रू भे)
(स्त्री० डुळाडियोडी)

डुलाडियोडो—देखो 'डोलायोडो' (रू.भे)
(स्त्री० डुलाडियोडी)

डुळाणो, डुळावो—क्रि०स०—१ विचलित करना, चित्त अस्थिर करना.
२ कपायमान करना, हिलाना, डिगाना ।

डुळाणहार, हारो (हारी), डुळाणियो—वि० ।

डुळायोड़ो—भू०का०कृ० ।

डुळाईजणो, डुळाईजबो—कर्म वा० ।
डुळणो, डुळबो—अक०रू० ।
डुलाणो, डुलाबो—देखो 'डोलाणो, डोलाबो' (रू.भे.)
उ०—१ पवन डुलायो मेरु न डोलै । मोटा दीन वचन नवि बोलै ।
—सीपाळ रास
उ०—२ जठै आपरो अकटक अमल जमाई नरेस भी बूंदी आद विजय री सुजस सत्रवा समेत दिसा दिसा डुलायो ।—व भा.
डुळायोडो–भू०का०कृ०—१ विचलित किया हुआ, चित्त को अस्थिर किया हुआ. २ कपायमान किया हुआ, हिलाया हुआ, डिगाया हुआ ।
(स्त्री० डुळायोडी)
डुलायोडो—देखो 'डोलायोडो' (रू.भे.)
(स्त्री० डोलायोडी)
डुळावणो, डुळावबो—देखो 'डुळाणो, डुळाबो' (रू भे.)
डुळावणहार, हारो (हारी), डुळावणियो—वि० ।
डुळाविग्रोडो, डुळावियोडो, डुळाव्योडो—भू०का०कृ० ।
डुळावीजणो, डुळावीजबो—कर्म वा० ।
डुळणो, डुळबो—अक०रू० ।
डुलावणो, डुलावबो—देखो 'डोलाणो, डोलाबो' (रू भे.)
डुळावियोडो—देखो 'डुळायोडो' (रू भे.)
(स्त्री० डुळावियोडी)
डुलावियोडो—देखो 'डोलायोडो' (रू.भे.)
(स्त्री० डुलावियोडी)
डुळियोडो–भू०का०कृ०—१ विचलित हुवा हुआ, चित्त अस्थिर हुवा हुआ. २ कपायमान हुवा हुआ, हिला हुआ, डिगा हुआ ।
(स्त्री० डुळियोडी)
डुलियोडो—देखो 'डोलियोडो' (रू भे.)
(स्त्री० डुलियोडी)
डुळियो–वि०—जो विचलित हो, धैर्यहीन ।
डुलीसुत–स०पु०—कछुआ (डिं को.)
डुसकणो, डुसकबो–क्रि०अ० (अनु०) १ भीतर ही भीतर रुक-रुक कर रोना, सिसक-सिसक कर रोना, घुल कर न रोना २ मरने के निकट की अवस्था मे होना, हिचकिया भरना ।
डुसकणहार, हारो (हारी), डुसकणियो—वि० ।
डुसकिग्रोडो, डुसकियोडो, डुसक्योडो—भू०का०कृ० ।
डुसकीजणो, डुसकीजबो—भाव वा० ।
डुसकाणो, डुसकाबो, डुसकावणो, डुसकावबो—रू०भे० ।
डुसकाणो, डुसकाबो—देखो 'डुसकणो, डुसकबो' (रू भे.)
उ०—मिळिया मनमेळू माती मुसकाती । डुसका भरतोडी आती डुसकाती ।—ऊ का
डुसकाणहार, हारो (हारी), डुसकाणियो—वि० ।
डुसकायोडो—भू०का०कृ० ।
डुसकाईजणो, डुसकाईजबो—भाव वा० ।
डुसकायोडो—देखो 'डुसकियोडो' (रू भे.)
(स्त्री० डुसकायोडी)
डुसकावणो, डुसकावबो—देखो 'डुसकणो, डुसकबो' (रू भे.)
उ०—ग्रिखमु नीमा नी राजी विसमा नी । भीमा भावी सी भीमा निख भासी । तूहिन कठोरव तन कुआर ताव । उगडगि चढ़ियोडा मरिया डुसकावै ।—ऊ.का
डुसकावणहार, हारो (हारी), डुसकावणियो—वि० ।
डुसकावियोडो—भू०का०कृ० ।
डुसकावीजणो, डुसकावीजबो—भाव वा० ।
डुसकावियोडो, डुसकियोडो—भू०का०कृ०—१ भीतर ही भीतर रुक-रुक कर रोया हुआ, घुन कर न रोया हुआ. २ मरने के निकट हुवा हुआ, हिचकिया भरा हुआ ।
(स्त्री० डुसकावियोडी, डुसकियोडी)
डुसको–स०पु० (अनु०) १ भीतर ही भीतर रुक-रुक कर रोने का शब्द, घुन कर न रोने का शब्द, सिसक, सिसकी । उ०—मिळिया मनमेळू माती मुसकाती । डुसका भरतोडी आती डुसकाती । सासू सकुचोणी सतू सुर सानी । ऊजळ दती नै उर मे उर लीनी ।—ऊ का
क्रि०प्र०—खाणो, भरणो, लेणो ।
मुहा०—डुसकै चढ़णो—लगातार रुक-रुक कर रोना ।
निकलती हुई सास का शब्द ।
क्रि०प्र०—नाखणो ।
३ रुकती हुई लबी सास भरने का शब्द ।
क्रि०प्र०—खाणो, भरणो, लेणो ।
४ मृत्यु के निकट की अवस्था मे मुंह से निकलने का शब्द, हिचकी ।
मुहा०—डुसकै चढ़णो—मृत्यु के निकट होना, हिचकिया भरना ।
रू०भे०—डसको, डहूको ।
डुहळू—देखो 'डोळो' (रू भे.) उ०—जउ सूको तुहइ बुलसिरी, जउ वीधी तुहइ मोतीसिरी । जउ डुहळू तुहइ गगाजळ, जउ घोडी तुहइ सपुरिस वाणी ।—नळ-दवदती रास
डूख–स०पु०—१ (अनाज की फसल का) सूखा डठल ।
२ सूखी जड । उ०—ऊग्यो डूख अफीम, नीम रो रूंख निरोगी । वसती होड हकीम, नीमडो जगम जोगी ।—दसदेव
अल्पा०—डूकळियो, डूकळो, डूखळियो, डूखळो, डूगळो ।
मह०—डूखळ ।
डूखळ—देखो 'डूख' (मह, रू.भे.)
डूखळियो, डूखळो—देखो 'डूख' (अल्पा रू.भे.)
डूगर–स०पु० [स० तुग] पहाड, पर्वत (अ मा) उ०—परतख पग जळती पेखै नह पाई । डूगर बळती नै देखै दुखदाई ।—ऊ का.
मुहा०—१ एक ही डूगर रा मोरिया होणो—एक ही पहाड मे विचरण करने वाले मोर होना, एक स्थान पर रहने वाले, वे जिन्हें

अपने निवास-स्थान की पूरी जानकारी हो, समान गुण वाले

२ डूगर माथै छाया करणी— पहाड पर छाया करना, बडे आदमी की मदद करना (असम्भव)

रू०भे०—डुगर।

अल्पा०— डुगरि, डूगरडी, डूगरडो, डूगरियो, डूगरी।

डूगरडी-स०स्त्री०—देखो 'डूगर' (अल्पा, रू भे) उ०— पदक प्रियु तउ हू मोतिन माळा, हीरउ तउ हू मूदरडी रे वहिनी। चद्र प्रियु तउ हू रोहिणी थाऊ, चदन मलय डूगरडी रे वहिनी।—स कु

डूगरडो—देखो 'डूगर' (अल्पा, रू भे)

डूगरि-स०स्त्री०—देखो 'डूगर' (अल्पा, रू भे.) उ०—दळ सुरताण जाण डूगरि दव, कपी धरा हुई प्रज लव कव। अह सुरताण आवियउ अवघरि, 'करन' तणा ऊठिय गज केसरि।—रा ज सी.

डूगरियो—देखो 'डूगर' (अल्पा, रू भे.) उ०—डूगरिया हरिया हुआ, वर्ण झिंगोरचा मोर। इणि रीति नीनइ नीसरइ, जाचक, चाकर, चोर।—ढो.मा.

डूगरी-स०स्त्री०—देखो 'डूगर' (अल्पा, रू भे.) उ०—डूगर ओलै डूगरी, ज्या तळ हाळीडै री खेत। बावहिया हाळी नै वेटी म्यू दीवी। —लो गी.

डूगरो—देखो 'डूगर' (अल्पा, रू.भे.)

डूगरेची-स०स्त्री०—आवड देवी का एक नाम।

वि०वि०—देखो 'आवड'।

डूगरोत-स०पु०—चौहान वश की देवडा शाखा की उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

डूगळी-स०पु०—१ एक प्रकार का घास.

२ देखो 'डूख' (अल्पा, रू भे)

डूगी-वि०स्त्री—गहरी।

उ०—गुजो तो वगसो म्हानै भूरा की ये राणी, सेवग तो पडियो ये थारै वारणै। जीण जुग वालो ये! मोटा चिणवावू ये मदिर देवरा, डूगी धरवाघू जा री नीव।—लो गी

डूच—१ देखो 'डूचको' (मह, रू भे.)

२ देखो 'डूज' (रू भे.)

डूचको-स०पु०—१ डठल. २ देखो 'डाचको' (रू.भे.)

रू०भे०—डूचको।

अल्पा०—डूचकियो, डूचियो, डूचियो।

मह०—डूच, डूच।

डूचणो, डूचवो-क्रि०स०—१ ज्वार व वाजरे की खडी फसल की वाल तोडना (काटना)। २ काटना। उ०—सारा विडाणा हिव हुवा, जासी हमारा सीस वै। सीस घणा रा डूचिया, अव आया मूझ चोर वै।—राजा रीसाळू री वात

२ इकट्ठा करना।

डूचणहार, हारो (हारी), डूचणियो—वि०।

डूचवाडणो, डूचवाडवो, डूचवाणो, डूचवावो, डूचवावणो, डूचवाववो, डूचाडणो, डूचाड़वो, डूचाणो, डूचावो, डूचावणो, डूचाववो —प्रे०रू०

डूचिओडो, डूचियोडो, डूच्योडो—भू०का०कृ०।

डूचीजणो, डूचीजवो—कर्म वा०।

डूचणो, डूचवो—रू०भे०।

डूचियोडो-भू०का०कृ०—काटा हुआ।

(स्त्री० डूचियोडी)

डूचियो—१ देखो 'डूचो' (अल्पा., रू भे) उ०—खूटा खडा वळा डूचिया, हाला सू हळ ठाटिया। सिरधर अर सैंतीर साळा, खूड, भूण, यम, पाटिया।—दसदेव

२ देखो 'डूचको' (रू भे)

डूचीड—देखो 'डूचो' (मह, रू भे.)

डूचो-स०पु०—१ खेत मे बना हुआ मचान जिस पर बैठ कर खेत की रखवाली करते है या रात्रि मे सोते है. २ देखो 'डांचो' (रू भे)

३ देखो 'डूजो' (रू भे)

रू०भे०—डूचो।

अल्पा०—डूचिगो, डूचियो।

मह०—डूचीड, डूचीड।

डूज-स०पु०—१ तेज हवा, अघड, आधी.

२ देखो 'डूजो' (मह, रू.भे)

रू०भे०—डूच, डूच।

डूजियो, डूजो-स०पु०—किसी वस्तु का मुंह वद करने का उपकरण या वस्तु।

मुहा०—डूजो आणो—रुकावट आना, अवरोध पड़ना।

रू०भे०—डूचो।

अल्पा०—डूचियो, डूजियो।

मह०—डूच, डूज, डूज।

डूड-स०पु०—१ वायु के साथ यकायक उठने वाला धूम या धूलि-समूह। उ०—धूवें को जद डूड ऊपड्यो, काप्यो कपनी साथ। वाडै घोडै चढ कै आयो, गुरजण कुत्ती लार।—डूगजी जवारजी री पड

२ वातचक्र, वगूला।

डूडळी-स०स्त्री०—१ विना सीग की गाय या भैस (शेखावाटी)

२ देखो 'डूडी' (अल्पा., रू भे)

डूडलो—देखो 'डूडो' (अल्पा, रू.भे)

डूडि—देखो 'डूडी (रू भे) उ०—काहल तणै कोलाहळि कान कम-कम्या, डूडि डमामा डुडदडी द्रमद्रमाटि भयकर होइवा लागउ।

—व.स

डूडियो—देखो 'डूडो' (अल्पा, रू.भे)

डूडी-स०स्त्री०—१ नगारा।

मुहा०—डूडी पीटणी—किसी वात का प्रचार करना, ढिंढोरा पीटना

२ देखो 'डूडो' (अल्पा, रू भे) उ०—तद ऐ अठे सू ऊठ अर

नदी आई । आधै उठै रजपूत डूडी लीया बैठा छै ।—चौबोली
रू०भे०—डूडि ।

डूडो-स०पु०—१ नाव, नौका । उ०—१ तठै जेही सहर माहे नदी आवै, सहर माहे जाय साहूकार रा घर देखै, वैरां रा गहणा रे । पहरिया तेठ देखै तद पाछी नाव चढै वेगै, आपी पावै ।—चौबोली
२ वृद्ध भैंस ।
अल्पा०—डूडली, डूडलो, डूड, डूडियो, डूडी, डूगलो ।

डूब—देखो 'डूम' (रू भे) उ०—चारण भट्टा बामणां, वयण गुणावै डूब । थँ राजी मनमान सूं, दीधे राजे डूर ।—बां दा.
(स्त्री० डूबण, डूबणी)

डूबडियो, डूबडो—देखो 'डूम' (रू भे.)
(स्त्री० डूबडी)

डूबाण—देखो 'डूवाण' (रू भे)

डूबी—देखो 'डूमी' (रू भे) उ०—डूबी डागी आहाकलु, भुइड नह भुइ फोड । वासिग कुळ थी वेगलु, जे हो भागळ भोड ।—मा रा प्र

डूम—देखो 'डूम' (रू भे) उ०—इसै समय मे दिन ऊगो । घणो हर । हुवो । भक्ति हुवणै लागी । डूम गावणै लागा । गाढो सतोस हुवो । घणो मेळ हुवो ।—चौबोली
(स्त्री० डूमण, डूमणी)

डूमड—देखो 'डूम' (मह , रू भे.)

डूमडयो, डूमडो—देखो 'डूम' (अल्पा , रू.भे)

डूमी—देखो 'डूमी' (रू भे)

डूग्री-सं०पु०—रहट के गोल घेरे को जिस पर माल लगी रहती है पीछे घूमने से रोकने के लिये लगाया जाने वाला लकडी का बना उपकरण ।
रू०भे०—डहो ।

डूकण—देखो 'डूकणो' (मह , रू भे)

डूकणियो—देखो 'डूकणो' (अल्पा , रू भे)

डूकणो-स०पु०—मनुष्य तथा पशुओ के कूल्हे के ऊपर की हड्डी जो रीढ की हड्डी से जुडी रहती है ।
अल्पा०—डूकणियो ।
मह०—डूकण ।

डूकळ, डूकळियो, डूकळो-स०पु०—१ खलिहान मे अनाज को भूसे से अलग करते समय वह अवशिष्ट भाग जिसमे भूसे के साथ अनाज रह जाता है ।
अल्पा०—डूकळियो ।
मह०—डूकळ ।

डूगलो-स०पु० [स० दोल , दोला, दोलिका] १ एक प्रकार की विशेष बनावट की पालकी जो राजा या सामन्त द्वारा किसी जागीरदार, प्रतिष्ठित व्यक्ति अथवा किसी प्रतिष्ठित महिला को राज-दरबार या अत पुर मे बुलाने के लिये भेजी जाती थी (उदयपुर)
उ०—भीडर रा महाराज री मा बाई राजबाई जे मोटा पली तीने लीकी पातसाह री दीवी है । दसरावा री डूगलो, गणगोरी रो सिरपाव, बनाणी पाडी नाहर सू भीडर-महाराज पावै ।—बां दा.ख्यात
२ देखो 'डूगो' (अल्पा., रू.भे.)

डूगको-स०पु०—१ पालतू पशुओं को शामिल कर के मध्य की पसलियों के उभरे हुए भाग मे लिया जाने वाला प्रहार या इस प्रकार का उभरा हुआ पसलियों का भाग । २ देखो 'डोकडो' (रू.भे) ३ देखो 'डूगडो' (रू.भे)

डूगणो, डूगवो - देखो 'डूगणो, डूगवो' (रू भे.)

डूगियोडो- देखो 'डूगियोडो' (रू भे.)
(स्त्री० डूगियोडी)

डूगियो —१ देखो 'डूगो' (अल्पा., रू.भे.) २ देखो 'डूगडो' ।
(अल्पा , रू भे)

डूगोड —देखो 'डूगो' (मह रू भे)

डूगो—देखो 'डूगो' (रू भे)

डूज—१ देखो 'डूज' (रू भे) २ देखो 'डूजो' (रू.भे.)

डूजियो- देखो 'डूजो' (अल्पा., रू भे)

डूजो—देखो 'डूजो' (रू.भे)

डूंटो—देखो 'गूटो' (रू भे)

डूब—देखो 'डूम' (रू भे) उ०—माळी तमोळी धावा परीवट बजाज सुनार सोनारा ठठारा लोहार चमार नई बालग कडीया सिलावट ढाढी भाट दाढिया बाबर डेरू डूब ।—व म.
(स्त्री० डूबण, डूबणी)

डूबडियो डूबडो—देखो 'डूम' (अल्पा , रू.भे.)

डूबणो, डूबबो—क्रि०अ०—१ पानी या और किसी तरल पदार्थ के भीतर समाना, बूडना । उ०—१ उठै भाबुन नू पायता भटक न डूब मुवो ।—नैणसी
उ०—२ मात सहेल्या रै झूलरै थे पणिहारी थे मो, पाणीडै नै चाली रै नदाव राना जो । घडो म न डूबै ताळ मे थे पणिहारी अे लो, भीडाणी तिर-तिर जाव राना जो ।—लो गी
मुहा०—१ चुळू भर पाणी मे डूब मरणो—चुल्लू भर पानी मे डूब मरना, शरम के मारे मर जाना या मुँह न दिखाना. २ डूब जाणो—डूब जाना, लुप्त हो जाना, मारा जाना. ३ डूबती नाव पार करणी—डूबती हुई नैया को पार लगाना, दुख या विपत्ति से बचाना ४ डूबती नाव पार लगाणी—डूबती हुई नैया का पार होना, कष्ट या विपत्ति से छुटकारा पाना ५ डूबती नाव पार लगाणी—देखो 'डूबती नाव पार करणी ।' ६ डूबतै नै तिणकै रो सा'रो होणो—डूबते हुए को तिनके का सहारा होना, सकट मे पडे हुए निस्सहाय के लिये थोडी सहायता भी बहुत होना, निराश्रय के लिये थोडा आश्रय भी बहुत होना. ७ डूबतै नै था' मिळणी—सकट मे सहारा मिलना ८ डूबती सिवाळां मे हाथ घालै—डूबता हुवा बचने के लिये काई को भी पकडता है, सकट मे पडा हुआ तुच्छ से तुच्छ वस्तु से भी सहारे की आशा करता है. ९ तिरू डूबू होणो—कभी तैरना कभी डूबना, उलझन मे पडना, सकट मे पडना ।

२ विचार मे मग्न होना, चिंतन मे लीन होना। उ०—वोहत तिरदा डूबही, डूवदा तारै।—केसोदास गाडण

मुहा०—१ डूबणो उतराणो—डूबना उतराना, ख्यालो मे खोना, विचारो मे मग्न होना, किसी नतीजे पर पहुँचने के लिए सोचना, उलझन में पडना, घबराना।

२ तिरू डूबू होणो—देखो 'डूबणो-उतराणो'।

३ अच्छी तरह लगना, तन्मय होना, लिप्त होना, लीन होना।

उ०—१ कोई एक पुरुष पर स्त्री नो लपट। ते साधा कने पर स्त्री गमन नो पाप सुणी नै त्याग किया। घणो राजी होय साधा रा गुण गावै, आप मोनै डूबता नै तारयो।—भि द्र

उ०—२ प्राणी तू डूबो पुसत, मोह नदी रै माहि। देव नदी मे डूबियो, नख पग हदो नाहि।—वा दा.

४ बुरे घर ब्याहा जाना, ऐसे से सम्बन्ध होना जिससे उसे बहुत दुख पहुँचे ५ बरबाद होना, बिगडना, नष्ट होना, सत्यानाश होना, चौपट होना। उ०—१ डूबगी बात सब देस री, खूब असुभ गुण खाटियो। पान रो ध्यान धरिया पछै, सासो गिणै न साटियो।

—ऊ का

उ०—२ आ तीसरी आपत छै तिण सू पासो खावो नही तो मारवाड़ डूबै छै।—मारवाड रा अमरावा री वारता

मुहा०—१ काळी धार डूबणो—कालीद्रह मे डूब जाना, सम्पूर्ण नष्ट हो जाना, बरबाद हो जाना २ डूब जाणो—डूब जाना, कुछ कर न सकना, क्षुब्ध होना, नष्ट होना, बरबाद होना।

३ नाम डूबणो—प्रतिष्ठा नष्ट होना, मर्यादा बिगडना, वश का नष्ट होना ४ वस डूबणो—वश डूबना, कुल का नष्ट होना, नामोनिशान मिटना।

६ किसी व्यवसाय मे घाटा पडना या लगाया हुआ धन नष्ट होना, किसी को दिए हुए माल या पैसे का भुगतान न होना, दिया हुआ पैसा वसूल न होना।

मुहा०—१ करजै मे डूबणो—बहुत कर्जा हो जाना, दिवालिया हो जाना २ डूबोडो आसामी—दिवालिया, कर्जदार।

७ सूय व ग्रहो आदि का अस्त होना। उ०—आवै डूब कह्यो अठै ग्रह थानक रनरोह। पडियो घायल पाटवी, डूबते दिनरोह।—पा प्र.

डूबणहार, हारो (हारी), डूबणियो—वि०।

डुबवाड़णो, डुबवाडबो, डुबवाणो, डुबवाबो, डुबवावणो, डुबवावबो—प्रे०रू०।

डुबाडणो, डुबाडबो, डुबाणो, डुबाबो, डुबावणो, डुबावबो, डुबोडणो, डुबोडबो, डुबोणो, डुबोबो, डुबोवणो, डुबोवबो—क्रि०स०।

डूबिओडो, डूबियोडो, डूबोडो, डूब्योडो—भू०का०कृ०।

डूबीजणो, डूबीजबो—भाव वा०।

डूबवणो, डूबवबो—रू०भे।

डूबवणो, डूबवबो—देखो 'डूबणो, डूबबो' (रू भे.)

उ०—रयणायर पुत्री रमा, डाटी कर दुरभाव। रयणायर ते डूबवै, सूमा केरी नाव।—वा दा.

डूबवियोडो, डूबियोडो—भू०का०कृ०—१ पानी या किसी तरल पदार्थ के भीतर समाया हुआ, बूडा हुआ. २ विचार मे मग्न हुवा हुआ, चिन्तन में लीन हुवा हुआ. ३ अच्छी तरह लगा हुआ, तन्मय हुवा हुआ, लिप्त हुवा हुआ ४ बरबाद हुवा हुआ, बिगडा हुआ, नष्ट हुवा हुआ, सत्यानाश हुवा हुआ, चौपट हुवा हुआ. ५ किसी व्यवसाय मे घाटा पडा हुआ. सूर्य्य, ग्रहो आदि का अस्त हुवा हुआ. ७ बुरे घर ब्याहा हुआ।

(स्त्री० डूबवियोडी, डूबियोडी)

डूबाण—स०स्त्री०—१ नीची भूमि जहाँ वर्षा मे जल एकत्रित हो जाता हो, २ गम्भीरता, गहराई ३ डूबना क्रिया का भाव।

डूबी—देखो 'डूमी' (रू भे) उ०—गज डूबी चीतळ गोराबा, सुज काळा पत्ताळा सेत। नव कुळ नाग म आणै नैडा, नकुलाई टाळै नखतेत।—आसो गाडण

डूबोडो—देखो 'डूबियोडो' (रू भे.) उ०—सेठ ऊठ नै चाल्या गया, दिन निरोई चढग्यो, अळाव रा खीरा बुझ नै राख हुंग्या पर रणछोडो वंठोईज रह्यो, वंठोईज रह्यो—विचार मे डूबोडो।—रातवासो

(स्त्री० डूबोडी)

डूम—स०पु० [स० डम] (स्त्री० डूमण, डूमणी) एक जाति जो मागलिक अवसरो पर लोगो के यहा गाती बजाती है, ढाढी, डोम, ढोली। उ०—जिण समय तीनसै घरा री वसती रा वूदी ग्राम मे जिकण वापी वणाइ डूम नू दीधी तिण कारण डूमडावाई कहीजै।—व भा

मुहा०—१ डूम की जाणै तो वखाणै—डोम कुछ जाने तो वर्णन करे, अज्ञानी के प्रति २ डूमणी रै रोवण मे ही राग—डोमनी के रोने पर भी राग निकलती है। किसी बात को स्वाभाविक ढग पर कहते हुए भी उसमे किसी विशेष बात की ओर सकेत कर देने पर.

रू०भे०—डुव, डूव, डुम, डूव, डूमल, डोम।

अल्पा०—डुवडियो, डुवडो, डूवडियो, डूवडो, डूमडियो, डूंमडो, डूवडियो, डूवडो, डूमडियो, डूमडो, डूमल, डूमलियो, डूमलो, डोमडियो, डोमडो।

मह०—डूमड, डूमड, डोमड।

यो०—डूम डरडो।

डूमड—देखो 'डूम' (मह, रू भे)

(स्त्री० डूमडी)

डूमल, डूमलियो, डूमलो—देखो 'डूम' (अल्पा., रू भे)

उ०—हुवो जिण ठौर वडी धमसाण, नठो तज डूमल वाज निसाण। हणै सत्र तीस दसा निज हाथ, पडै चवरासिय घाव निपात।—पा प्र

(स्त्री० डूमली)

डूमी—स०पु० —गौर वर्ण का श्याम मुँह वाला भयकर विषैला सर्प जो पीछे दौड कर मनुष्य को काटता है।

रू०भे०—डूबी, डूमी, डूबी ।

डूर-स०पु०—१ भुट्टों से बाजरा निकाल लेने के पश्चात् उनका अवशिष्ट पदार्थ जो बहुत हल्का होता है और पशुओं को खिलाया जाता है. २ देखो 'दूर' (रू भे) उ०—विचौं सभी डूर-कर, अदर विया न पाइ ।—दादू बाणी

डूराण-स०स्त्री०—परिहार वश की एक शाखा ।

डूळ-स०पु०—वडी हड्डी ।

डूल-स०पु०—१ भ्रम, भ्रान्ति । उ०—पैला रै वहकाविया, पडै सयाणा डूल। डाकण रै घर डावडा, भेजै जिकण म भूल ।—वी.स.

स०स्त्री०—२ भूमि पर लिया जाने वाला एक प्रकार का कर्ज ।

वि०वि०—भूमि को गिरवी रख कर देनदार इस शर्त पर बिना ब्याज कर्ज देता था कि निश्चित अवधि के भीतर यदि भुगतान नही किया तो भूमि उसकी हो जायगी । (मारवाड)

यौ०—डूल-रो-खत ।

वि०—चलायमान, डोलता हुआ । उ०—पार पय ऊतरे अवध पत, पाजवध चारसै कोस पैरा । डूल असुराड पड भूल सुध माण हट, फिरै चित डूल जिम चाक फेरा ।—र रू

डूलणौ, डूलबौ—देखो 'डोलणौ, डोलवौ' (रू भे)

उ०—१ डूलाया किण रा नहिं डूला, फूलाया नहिं फूला । भूलाया थारा म्हे भूला, भूलाया नहिं भूला ।—ऊ का.

उ०—२ डहती डूली सी भूलो डग डागै । मोटी आख्या री रोटी मुख मागै । तोता वोता मे रै'ता तुतळाता । वाता वीसरगा वै'ता वतळाता ।
—ऊ का.

उ०—३ तरै किणहेक डाहे माणस कह्यौ—जु औ काळपूछिया घरतो डूलता लेता आवै छै, इण ना जाईजै ।—नैणसी

उ०—४ पहिलइ पोहरै रैण कै, दिवला अवर डूल । धण कसतूरी हुइ रही, प्रिव चपा रो फूल ।—ढो मा

डुलणहार, हारौ (हारी), डुलणियौ—वि० ।

डुलवाडणौ, डुलवाडवौ, डुलवाणौ, डुलवावौ, डुलवावणौ, डुलवाववौ—प्रे०रू० ।

डुलाडणौ, डुलाडवौ, डुलाणौ, डुलावौ, डुलावणौ, डुलाववौ—क्रि०स० ।

डूलिओडौ, डूलियोडौ, डूल्योडौ—भू०का०कृ० ।

डूलीजणौ, डूलीजवौ—भाव वा० ।

डूलाडणौ, डूलाडवौ—देखो 'डोलणौ, डोलवौ' (रू.भे)

डूलाडणहार, हारौ (हारी), डूलाडणियौ—वि० ।

डूलाडिओडौ, डूलाडियोडौ, डूलाडयोडौ—भू०का०कृ० ।

डूलाड़ीजणौ, डूलाडीजवौ—कर्म वा० ।

डुलणौ, डुलवौ, डूलणौ, डूलवौ—अक०रू० ।

डूलाडियोडौ—देखो 'डोलायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री० डूलाडियोडी)

डूलाणौ, डूलावौ—देखो 'डोलाणौ, डोलावौ' (रू भे.)

उ०—डूलाया किण रा नहिं डूला, फूलाया नहिं फूला । भूलाया थारा म्हे भूला, भूलाया नहिं भूला ।—ऊ का.

डूलाणहार, हारौ (हारी), डूलाणियौ—वि० ।

डूलायोडौ—भू०का०कृ० ।

डूलाईजणौ, डूलाईजवौ—कर्म वा० ।

डुलणौ, डुलवौ, डूलणौ, डूलवौ—अक०रू० ।

डूलायोडौ—देखो 'डोलायोडौ' (रू.भे.)

(स्त्री० डूलायोडी)

डूलावणौ, डूलाववौ—देखो 'डोलाणौ, डोलावौ' (रू भे)

डूलावणहार, हारौ (हारी), डूलावणियौ—वि० ।

डूलाविओडौ, डूलावियोडौ, डूलाव्योडौ—भू०का०कृ० ।

डुलावीजणौ, डूलावीज्वौ—कर्म वा० ।

डुलणौ, डुलवौ, डूलवौ, डूलवौ—अक०रू० ।

डूलावियोड़ौ—देखो 'डोलायोडौ' (रू.भे)

(स्त्री० डूलावियोडी)

डे-स०पु०—१ धर्मराज २ धर्म ३ मृग ।

स०स्त्री०—४ जिह्वा (एका)

डेग—१ देखो 'देगडौ' (मह, रू भे) २ देखो 'देगचौ' (मह, रू.भे)

डेगड़—१ देखो 'देगडौ' (मह, रू भे)

२ देखो 'देगचौ' (मह, रू भे)

डेगडियौ—१ देखो 'देगडौ' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'देगचौ' (अल्पा, रू.भे)

डेगडी—१ देखो 'देगडौ' (अल्पा., रू भे)

२ देखो 'देगची' (अल्पा, रू भे)

डेगडौ—१ देखो 'देगडौ' (रू भे)

२ देखो 'देगचौ' (रू.भे)

डेगच—देखो 'देगचौ' (मह, रू भे)

डेगचियौ—देखो 'देगचौ' (अल्पा, रू भे)

डेगची—देखो 'देगचौ' (अल्पा, रू भे)

डेगचौ—देखो 'देगचौ' (रू भे)

डेडक—देखो 'डेडरौ' (मह, रू भे.)

डेडकडौ, डेडकियौ—देखो 'डेडरौ' (अल्पा, रू भे)

(स्त्री० डेडकडी, डेडकी)

डेडकौ—देखो 'डेडरौ' (रू भे) उ०—सत्य सहित हुवो डेडको, आपणी वायी मझारो रे ।—जयवाणी

डेडण-स०स्त्री०—ढाढी जाति की एक शाखा विशेष ।

डेडर—देखो 'डेडरौ' (मह., रू.भे.) उ०—हरकण छाई दिस चिलकारो हरियौ । करसण करसणिया किलकारो करियौ । झेलण इळ वेडर झळकी तन भाई । मरिया डेडर ज्यू हरिया मन माहीं ।
—ऊ का.

डेडरड़ो, डेडरियौ—देखो 'डेडरौ' (अल्पा, रू.भे.)

उ०—पहुर हुवउ ज पधारिया, मो चाहती चित्त । उेडरिया खिण मइ हुवइ, घण वूठइ सरजित्त ।—ढो मा
(स्त्री० डेडरडी, डेडरी)

डेडरी-स०पु० [स० दर्दु र] (स्त्री० डेडरी) मेढक, दादुर ।
उ०—१ क्रमगत पूछू तो कने, गोविंद हू ज गिवार । नाड वसती डेडरी, पुणं समदा पार ।—ह.र
उ०—२ हूसा कहै रे डेडरा, सायर निया न सद्द । ग्रोछै जळ मे रंविया, ग्रोछो होवै वुद्ध ।—र रा.
मुहा०—१ डेडरं नं जुकाम होणो—मेढ़क को जुकाम होना । अपनी हैसियत से ऊपर काम करने वाले के प्रति व्यग्य.
२ डेडरं वाळी दरियाव—मेढक का समुद्र । अपने आपको वहुत अनुभवी समझने वाले अनुभवहीन के प्रति व्यग्य ।
२ मिट्टी के दीपक के आकार का बना एक खिलौना जिसे चमडे की भिल्ली से मढ कर घोडे के पूछ के बाल द्वारा एक लकडी मे वाघ कर लडके चारों ओर घुमा कर बजाते हैं जो मेढ़क की आवाज करता है. ३ दोहा नामक छद का एक भेद ।
मि०—मडूक (१)
रू०भे०—डेडको ।
अल्पा०—डेडकडो, डेडकियो, डेडरडो, डेड रयो ।
मह०—डेडक, डेडर ।

डेणकी-स०स्त्री—घडिया के टूटने पर बचा हुआ नीचे का भाग ।

डेयरो—देखो 'डेरो' (रू भे) उ०—डेयरां लगि आविय जोड दहूं । सोढिया घण वीटिय ग्रोड चहू ।—पा प्र

डेर-स०स्त्री०—१ वाद्य विशेष । उ०—दोऊ ग्रोर दुवाह यौं असि वाह अद्धक्कं । डेरा डाहत डिंडिमी डक्का डकडक्कं ।—व भा
२ देखो 'डेरो' (मह , रू भे)

डेरउ—देखो 'डेरो' (रू भे.) उ०—वागरवाळ विचारियउ, ए मति उत्तिम कीघ । साल्ह महल हू टूकडा, ढाढी डेरउ लीध ।—ढो.मा.

डेरकियो—देखो 'डेरो' (अल्पा , रू भे)

डेरड—देखो 'डेरो' (मह , रू भे.)

डेरडो, डेरियो—देखो 'डेरो' (अल्पा., रू भे)

डेरापथी-वि०यौ०—सदा एक स्थान से दूसरे स्थान को घूमते रहने वाला, खानाबदोश ।

डेरो-स०पु०—१ धन, द्रव्य । उ०—आउवा मे उत्तमोजी ईराणी बोल्यो, भीखणजी थे देवरा निखेघो छो पिण आगै तो वडा वडा लखेसरी कोडेसरी त्यां देवळ कराया । जद स्वांमीजी वोल्या थारा घरै पचास हजार री डेरो थया देवळ करावो के नही । जब ते बोल्यो—हूं कराबू ।—भि.द्र.
२ रहने या ठहरने के लिए फ़ैलाया हुआ सामान, टिकान का सामान ।
क्रि०प्र०—ऊठाणो, करणो, दैणो. समेटणो, हटाणो ।
यौ०—डेरो-डाडो ।
३ यात्रा मे साथ रखा जाने वाला सामान । उ०—निरवळ चोरां डर बसियोडा नैडा । दुरवळ मोरा पर कसियोडा डेरा ।—ऊ का.
क्रि०प्र०—करणो, कसणो, दैणो ।
यौ०—डेरो-डाडो ।
४ किसी सामत अथवा प्रतिष्ठित व्यक्ति की हवेली, निवास-स्थान । (बीकानेर)
उ०—ग्रोर साथ नै तो आप आप रा डेरा नै सीख दीनी ग्रोर खिलवति का लोगा नै साथै लेवा की तजवीज किनी ।
—पना वीरमदे री वात
५ तबू, शामियाना, खेमा, छोलदारी । उ०—ग्रबै बादसाह चिता करै । जे काई बुद्धी उपाय सूं जलाल नू मारणो । सो उण साइत मजकूर करि कह्यो—वडो डेरो हमारै झरोखै साम्हो खडो करो ग्रोर तणाव ढीलो राखो । जिको आवसो सो डेरै तळा कर आवसी । सो जलाल आवै उस वखत तणाव छोड दीजै जे जलाल दब जायसी ।
—जलाल बूबना री वात
क्रि०प्र०—करणो, ताणणो, दैणो ।
६ विश्राम-स्थल, ठहरने का स्थान । ज्यूं—चोखी जायगा मे जान रो डेरो दिरायो ।
क्रि०प्र०—करणो, दिराणो, दैणो ।
७ थोडे समय के लिए टिकान, थोडे दिन के लिए निवास, ठहराव ।
उ०—वहुता दिन बीजइ पछइ, राति पडती देखि । रोही मझि डेरा किया, ऊजळ जळधर देखि ।—ढो मा.
८ छाया बनाया हुआ ग्रोर साफ किया हुआ ठहरने का स्थान, टिकने का स्थान, कैंप ।
वि०वि०—यह वह स्थान होता है जहा पर प्राय घुमक्कड जाति विशेष के लोग ठहरते हैं। ज्यूं—अठै नटिया डेरो दियो है । गाडिया लुहारा कै डेरै सू दातळो ल्यायो छू ।
क्रि०प्र०—करणो, दैणो, पडणो, होणो ।
९ नाचने गाने वालो की मडली, गोल, दल ।
क्रि०प्र०—करणो, दैणो, पडणो, होणो ।
क्रि०प्र०—आणो, जाणो ।
१० फौज का पडाव, छावनी । उ०—आलम्म तणा डेरा अमिट, यौं घेरो पण अगळा । वीटिया रवद कमधा वणै जाण अरव्वद वद्दळा ।—रा रू
क्रि०प्र०—करणो, दैणो, पडणो, होणो ।
११ दल (मा म)
रू०भे०—डेयरो, डेरउ ।
अल्पा०—डेरकियो, डेरडो, डेरियो ।
मह०—डेर, डेरड ।

डेळ-वि०—१ पथभ्रष्ट । उ०—मन फेल न मावै सेल सुहावै, डेळ

चक्र डोलदा है। खट चक्र न खोलै तक्र वितोलै, एक चक्र श्रोलदा है।—ऊ का

२ सुस्त। उ०—सजै ग्रणक री भणक सुण, डाढ़ाळो कद डेळ। पाण कूत उठिया पहल, पिसण नू दे पेल।—रेवतसिंह भाटी

३ देखो 'देहली' (मह., रू.भे.)

डेलटो–स०पु०—नदियो द्वारा लाये गये कीचड या रेत से बनी हुई प्राय तिकोने रूप की वह भूमि जो उनके मुहाने या सगम स्थान पर बहाव के धीमा होने के कारण धारा को कई शाखाओ मे विभक्त कर के बीच मे उभर आती है।

डेळही, डेल्ही—देखो 'देहरी' (रू भे.) उ०—वाका फाटोडा थाका दम वाकी। डेळही चुळियोडा डुळियोडा डाकी। थिरता मन री नहि तन री गति थाकी। फुरणा पर धन री ग्रन री नहि फाकी।—ऊ का

मुहा०—डेळी चुळियोडो, डेळीचूक, डेळो चूकोडो—स्थानभ्रष्ट, पथभ्रष्ट, बदनीयत।

डेहळ—देखो 'देहळी' (मह, रू.भे.)

डेहळो—देखो 'देहली' (उ र.)

डेवणी, डेवबो—देखो 'देवो' (रू.भे)

उ०—वह दिसि फूटा नीर निखूटा लेखा डेवण साळवै। दादूदास कहै वणिजारा, तू रता तरुणी नाळवै।—दादू वाणी

डेण–वि०—सठिया बुद्धि का, अतिवृद्ध, बूढा।

उ०—ग्रमल उगावै ग्रग मे, निपट घुळावै नैण। ग्राडा नै बैठा ग्रपत, डचिया घालै डैण।—ऊ का

रू०भे०—डैण।

डे–स०पु०—१ वृक्ष २ कान ३ एक प्रकार का घास, कास। स०स्त्री०—४ कोयल (एका.) वि०—सफेद (एका)

डे'कणो, डे'कबो—देखो 'डहकणो, डहकबो' (रू.भे)

डे'काडणो, डे'काडबो—देखो 'डहकाणो, डहकावो' (रू भे.)

डेकाडियोडो—देखो 'डहकायोडो' (रू.भे.)

(स्त्री० डे'काडियोडी)

डे'काणो, डे'कावो—१ देखो 'डहकाणो, डहकावो' (रू भे)

२ देखो 'डकाणो, डकावो' (रू.भे.) उ०—जद हरयाळो वनडो तोरण ग्रायो ग्रे, तोरण तुरी डेकायो, ग्रे बाई जी म्हारा राजा, तोरण सहेल्या सरायो, ग्रे बाई जी म्हारा राज।—लो.गी

डे'कायोडो—देखो 'डहकायोडो' (रू.भे)

(स्त्री० डे'कायोडी)

डे'कावणो, डे'कावबो—१ देखो 'डहकाणो, डहकावो' (रू भे)

२ देखो 'डकाणो, डकावो' (रू भे)

उ०—वणी वचै वडबोर, खेजडा नै खणकावण। डोकरियाळै डाळ, मिचा डोळा डे'कावण।—दसदेव

डे'कावियोडो—देखो 'डहकायोडो' (रू भे.)

(स्त्री० डे'कावियोडी)

डे'कियोड़ो—१ देखो 'डहकियोड़ो' (रू.भे)

२ देखो 'डकायोडो' (रू भे.)

(स्त्री० डे'कियोडी)

डेचो—देखो 'डाचो' (रू भे)

डेड—देखो 'डोढ़' (रू भे)

डेडाट–स०पु०—हरापना, प्रफुल्लित, ताजगी (घास, फसल ग्रादि)

उ०—तिल नै ग्वार नीना डेडाट करतोडा जाणै ग्राज ईज बरस नै गयो हुवै जिसा।—रातवासो

रू०भे०—डहडहाट।

डेडो—देखो 'डोढ़ो' (रू.भे)

(स्त्री० डेडी)

डेढ़—देखो 'डोढ़' (रू भे) उ०—सो ग्रोठो दूजै दिन, दिन पहर डेढ़ चढ़ता पाछा ग्राया।—भाटो सुदरदास वीकूपुरी री वारता

डेढ़ो—देखो 'डोढ़' (रू भे.)

(स्त्री० डेढी)

डेण—देखो 'डेण' (रू.भे) उ०—गोपाळ रै एक तो नोकरी नही, बीजो डेण मादो। घर मे ऊदरा थिड़चा करै।—वरसगांठ

डेणकी—देखो 'डेण' (ग्रल्पा., रू भे.)

डेपूटेसन–स०पु० [ग्र०] जन-साधारण या किसी सभा सस्था की ग्रोर से सरकार, राजा महाराजा या किसी ग्रधिकारी के पास किसी विषय की प्रार्थना करने के लिए भेजी जाने वाली चुनिंदा लोगों की मण्डली। उ०—साची है! ग्रापा नै तो ईस्तो-ईज करणो जोयीजै कै कोई डेपूटेसन-वैपूटेमन ग्राय जावै तो ११), २१), ५१) घणै सू घणा देय देणा।—वरसगाठ

डेर—१ देखो 'डेरी' (मह, रू भे) उ०—महदी तो वावण घण गयी, सोनै रो हळियो जो हाथ, सोदागर महदी राचणी। देवर वाया दोय ऊमरा, थारी घण वायो सारी डेर, सोदागर महदी राचणी।—लो गी.

२ देखो 'डेरो' (मह, रू.भे)

डेरडी—देखो 'डेरी' (ग्रल्पा, रू.भे)

डेरडो–स०पु०—देखो 'डेरो' (ग्रल्पा, रू भे)

डेरव—देखो 'डेरु' (रू भे.) उ०—सझ्या खग खप्पर चक्र ग्रसूळ। झल्या कर डेरव भेरव झूल।—मे म

डेरी–स०स्त्री०—१ वालू रहित पीली, काली या चिकनी मिट्टी वाली समतल ग्रौर कठोर भूमि जहा वर्षा के पानी का भराव होता है। यह कृषि के लिए बहुत उपयोगी होती है। उ०—डेरचा डेरचा वाजरो ये वदळी, टीबा टीबा मोठ मेवा मिसरी। सुरगी रुत ग्रायो म्हारा देस मे, भले री रुत ग्रायी म्हारा देस मे।—लो गी

२ ग्रास-पास के धरातल से कुछ नीची भूमि। उ०—रास रगळी रचै चादणी राता चिळकै, विच विच डाडा विरख सीन री झूमख भिळकै। कर कर केळा माथ कसारी करती गावै, डूगी डेरचां बोल राग मे राग मिळावै।—दसदेव

३ देखो 'डेरो' (ग्रल्पा., रू भे.)

रू०भे०—डहर, डंरी ।

अल्पा०—डंरडियो, डंरडी, डंरडो ।

डंरीमाता-स०स्त्री०—एक देवी, इसकी पूजा प्राय गूजर लोग करते हैं ।

डंरु, डंरू, डंरू-स०पु०—१ डमरू नामक वाद्य । उ०—१ जगी डंरु डमकिया अवक अहकाया । ईरानी भट उप्फने वपु सज्ज वनाया ।
—व भा.

उ०—२ वावन वीर नचरण वहवहिया । डंरु जटी चड डहडहिया ।
—सू प्र.

उ०—३ साता-दीप रास रमै सातू, घूघरिया घमकाणी । वीण त्रिदग वजावै डंरू, गावै अम्रित वाणी ।—राघवदास भादो

उ०—४ भुजा भामणा करूणा सज्ज कीधा । लसै सूळ डंरू खडग्गग्र लीधा ।—मे म

२ वाएँ घुटने मे होने वाला वात विकार का रोग विशेष जिससे घुटने में सूजन और पीडा होती है, वाएँ घुटने का क्रोष्टुशीर्ष ।

उ०—गिरमी गिरमी मे गिरवै गुडियोडा, जान्हे डंरू ज्यू गोडा जुडियोडा । कुलटा साची व्हे टुकरांणी कूडी, पहदै पडदायत राणी सू रूडी ।—ऊ का

३ मत्र विशेष, जादू-टोना ।

रू०भे०—डंरव ।

डंरो-स०पु०—धातु का वना गोल चौडे मुँह का वडा वर्तन जिसके एक ओर लकडी का खडा डडा लगा रहता है ।

वि०वि०—वडे भोज मे खीर, दाल, कढ़ी आदि को कडाह मे से निकालने के लिये इसका प्रयोग होता है ।

अल्पा०—डंरी ।

मह०—डंर ।

डंळ—देखो 'डंण' (रू भे) उ०—१ नख वधियोडा निपट सीत वधियोडो साथे । दुख वधियोडो डंळ मैल वधियोडो माथै ।—ऊ का.

उ०—२ मैलं ऊपरं माखिया, घणणाटा ले गैल । हेंकड कठी नं हालिया, डवी खळीगण डंळ ।—ऊ का

डंळको-स०पु०—१ किसी अमागलिक या दुखद घटना के होने के कारण हृदय को लगने वाला धक्का, मानसिक आघात ।

२ देखो 'डंळ' (अल्पा , रू भे.)

डंलाण-स०पु०—मुख्य द्वार के ऊपर की मजिल पर वना हुआ वडा कमरा जिसके खिडकिया और झरोखे होते हैं ।

डंहकणो, डंहकवो—देखो 'डहकणो, डहकवो' (रू भे)

डंहकाडणो, डंहकाडवो—देखो 'डहकाणो, डहकावो' (रू भे)

डंहकाडियोडो—देखो 'डहकायोडो' (रू भे)

(स्त्री० डंहकाडियोडी)

डंहकाणो, डंहकावो—देखो 'डहकाणो, डहकावो' (रू भे)

डंहकायोडो—देखो 'डहकायोडो' (रू भे)

(स्त्री० डंहकायोडी)

डंहकावणो, डंहकाववो—देखो 'डहकाणो, डहकावो' (रू.भे.)

डंहकावियोडो—देखो 'डहकावियोडो' (रू भे.)

(स्त्री० डंहकावियोडी)

डंहकियोडो—देखो 'डहकियोडो (रू.भे)

(स्त्री० डंहकियोडी)

डंहव—देखो 'डंरु' (रू भे)

डो-स०स्त्री०—१ प्रोढा ।

स०पु०—२ पाप ।

वि०—१ पापी. २ मुग्ध (एका)

डो'—देखो 'डोह' (रू भे)

डोग्रो—देखो 'डोई' (मह , रू.भे)

डोइलउ, डोइलियो—देखो 'डोई' (अल्पा , रू भे)

डोइलो-स०पु०—१ वर्तन विशेष ?

उ०—कुघरणि महा कुहाडि सदा घरइ आटोप, वइठी भरतार दिइ निरोप । डोइला हेठै किकिउ घरइ, मुहि साह्यो चीवर वरइ' ।
—व स

२ देखो 'डोई' (अल्पा , रू.भे)

डोई-स०स्त्री० [स० दारुहस्तक] काष्ट का वना चम्मच ।

उ०—हाडी खाडी मे डोई सग हालै । चख झख खजन मे घारोळा चालै ।—ऊ का

अल्पा०—डोईलउ, डोइलियो, डोइलो, डोयलियो, डोयली, डोयलो, डोयो ।

मह०—डोग्रो ।

डोईलो—देखो 'डोई' (अल्पा., रू भे)

डोक-स०स्त्री०—१ घोडे, गधे, सूअर आदि पशुओ का भूमि पर लोटने के कारण वना हुआ चिन्ह, लोट । उ०—वी ठाव आय पहला तो लोटिया, थकाण मिटाई, पाछै तुड सू जमी नरम कर येह वणाई । इतरै वागवान आयो । पग दीठा जद पगा-पगा गयो । देखै तो वाराह लोटिया छै तिणरी डोका छै ।—डाढाळा सूर री वात

२ देखो 'डोको' (मह , रू भे)

डोकर—१ देखो 'डोकरी' (मह , रू भे) डाढाळी डोकर थई, का तू गई विदेस । पूत विना क्यू खोसजे, निज वीका रा नेस ।—अज्ञात

२ देखो 'डोकरो' (मह , रू भे) उ०—खूणइ पडिउ खूखू करइ, अजी स डोकर कहिअ मरइ ।—चिहुगति चउपई

डोकरडो—देखो 'डोकरो' (अल्पा , रू भे) उ०—डिगती डिगती डोकरडी, पहु ती 'दला' पास । 'दला' चूक तो मे दुफल, न्हास सकै तो न्हास ।—वी मा

डोकरडो—देखो 'डोकरो' (अल्पा , रू भे.) उ०—कहे दास सगराम अवध आई डोकरडा । जेज नहीं है हमैं भजन रा दै सोकरडा ।
—सगरामदास

(स्त्री० डोकरडी)

डोकरि—देखो 'डोकरी' (रू भे.) उ०—डाही डागी डोकरी, ते पारइ बहू ग्राम। हाथि न लागइ हीउता, सोधइ सगळू माग।—मा का प्र

डोकरियो—देखो 'डोकरो' (अल्पा, रू भे) उ०—ई धरती पर वो 'दुरग' हुवो, जो सदमै सू 'श्रोरग' मुवो। श्रगरेज गाधो गाळपुयो, जद डोकरयै श्रजीरण कियो। श्रा नै बोदा काटा वाळा ला। धरती रो लूरण उजाळा ला।—भवरलाल कछवाहा

(स्त्री० डोकरी)

डोकरी-सं०स्त्री०— वृद्ध स्त्री, बुड्ढी स्त्री। उ०—ईहा काम नही छोकरी, श्रीमद डोकरी।—व स.

रू०भे०—डोकरि।

अल्पा०—डोकरडी।

मह०—डोकर।

डोकरू—देखो 'डोकरो' (रू भे.)

डोकरो-सं०पु० [सं० डोलत्कर या दुष्कार, प्रा० दुक्कर] (स्त्री० डोकरी) वृद्ध पुरुष, बुड्ढा आदमी। उ०—मगर-पचीसी माय डोकरो वणगो डाकी। डागडिया निठ डिगै थिगै टागडिया थाकी।—ऊ.का

रू०भे०—डोकरू।

अल्पा०—डोकरडो, डोकरियो।

मह०—डोकर।

डोकी-सं०स्त्री०—देखो 'डोको' (अल्पा, रू भे)

डोको-सं०पु०—१ ज्वार, बाजरा आदि का सूखा पौधा, उठल।

उ०—करहउ कुडइ मनि धकइ, पग रालीयउ जाए। ऊकरडी डोका चुगइ, प्रपस डभायउ श्राए।—ढो मा

मुहा०—१ डोका चराणा—डठल खिलाना, मूर्ख बनाना, फुसलाना

२ डोको देणो—उठल से सकेत करना, उकसाना, प्रेरित करना

३ डोको लगाणो—देखो 'डोको देणो।'

२ प्रसव से पूर्व गाय व भैस के स्तनो की अवस्था जिससे प्रसव देने के समय का भान होता है।

क्रि०प्र०—नाखणो, देणो।

डोडखुरकीय-सं०स्त्री०—घोडे के चलने की एक विशेष गति।

डोगो-सं०पु०—एक प्रकार का तारवाद्य जिसका स्वर बड़ा ही मधुर और प्रिय होता है।

डाटकिया-सं०स्त्री०—घोडो की एक जाति विशेष (व स)

डोटी-सं०स्त्री०—श्रोढ़ने का वस्त्र। उ०—डगला डोटी मोजडा, सीरख केरी सुडी। तप्तोदक नइ तापणा, थाती तेणइ थूडि।—मा.का प्र

रू०भे०—डोवटी।

डोड-सं०पु० [सं० द्रोण+काक] १ एक प्रकार का बडा कौश्रा।

उ०—सगरामा सागी करै सतपुरखा की होड। वे हसा मेहराण का थे डूगर का डोड।—सगरामदास

यौ०—डोड-काग।

२ पवार वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति। (बा दा ख्यात)

३ देखो 'डोडो' (मह, रू भे.)

डोडकियो—देखो 'डोडो' (अल्पा., रू.भे)

डोडकी-सं०स्त्री०—१ एक लता विशेष।

उ०—डाळी नइ डोडकी, ढायणि झूंमरि वेलि। डीलानूंळी ढूंढ़क्की, जाकडमाळी जालि।—मा.कां प्र

२ देखो 'डोडो' (अल्पा, रू भे.)

डोडको—देखो 'डोडो' (अल्पा., रू भे.)

डोडर-सं०स्त्री०—कमर, कटि।

डोडळ-सं०स्त्री०—सूजन, शोथ।

डोडळो—१ देखो 'डोळो' (रू भे) उ०—घालू टरि कुनुक सिचतो डोडळा अस्टि मीचती।—व स

२ देखो 'डोडो' (अल्पा, रू.भे.)

३ सं०पु० देखो 'डोडळ' (अल्पा, रू भे.)

डोडपाटो-सं०पु० [रा० डोड+सं० पाटक.] डोड वंश के क्षत्रियों का राज्य।

डोडा-सं०स्त्री०—पंवार वंश की एक शाखा।

डोडिक, डोडीको-

उ०—तदनंतर मुग वडी, उडद वडी, छमका वडी, पलेह वडी, सउतळी वडी, माहिनु चोर, छमकावी डोडी, धारदीया टळटळता टोडरा, भली वालतुलि, मळकळता फोसभा, सुन्हडतो साफ्ळी, उतउसता डोडिका, छमछमती माजी, चमचमता चीभडं।—व स.

डोडीया-सं०स्त्री०—एक राजपूत वंश।

डोडियो-सं०पु०—१ जैसलमेर राज्य में चलने वाला प्राचीन तांबे का सिक्का जो 'धींगले' के समान ही था. २ डोडिया राजपूत वंश का व्यक्ति। उ०—इण वासते कोई श्रासर किण ही तरै री रह गई होय तो फेर रेटो करै डोडिया।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

३ देखो 'डोडो' (अल्पा., रू भे) उ०—श्राक तणा श्रक डोडिया, खावता खारा होय। ईसर देव नइ ते चउड, मन मानै बात जोय।

—स कु.

डोडी-सं०स्त्री०—१ भुजा के चूडे के नीचे पहिना जाने वाला आभूषण विशेष। उ०—कानिइ उगनिउ झळहळइ, कोटिइ नवसर हार। मादळीश्रा डोडी भुजइ, गरसती कालीउ सार।—नळ-दवदती रास

२ पुरुषो की भुजा पर धारण करने का आभूषण विशेष।

३ देखो 'डोडो' (अल्पा. रू.भे)

डोडो-सं०पु०—१ (जुआर आदि का) भुट्टा, बाल।

उ०—गडमच-गडमच गाडी जावै, डोडो जवार को। गोरावायो बैठी जावै, डोडो जवार को।—लो गी.

२ आक या मदार का फूल. ३ इलायची, खसखस, कपास आदि के दाने रहने का फल। उ०—१ कठै तो सुकाऊं डोडा एळची रे, म्हारा लोटण करवा, कठै रे सुकाऊ नागर वेल, एजी म्हो मिरगानैणी रा ढोला।—लो.गी.

उ०—२ तिण माहे गिरी, केसर, दाळचीणी, जावत्री, जायफळ इळायची, पान, लूग, डोडा, धतूरा रा बीज, मोहरी, मिसरी घाल नै काढोजै छै।—राव रिणमल री वात

४ गोखरू तथा काटी नामक घास का गोल फल जिसके काटे लगे रहते हैं। यह लगभग चने जितना बडा होता है ५ आँख का कोया।

अल्पा०—डोडकियो, डोडकी, डोडको, डोडलो, डोडियो, डोडी।

मह०—डोड।

६ बडा कोग्रा ७ पँवारवश की डोड शाखा का व्यक्ति।

डो'णो, डो'वो—देखो 'डोहणो, डोहवो' (रू भे)

डोपाई—देखो 'डोफाई' (रू भे)

डोपो—देखो 'डोफो' (रू भे)

डोफाई—स०स्त्री०—मूर्खता, नासमझी। उ०—डोफाई सू डूबगो, खोटी सगत खूब। डूबो सो तो डूबगो, कूक मती बेकूफ।—ऊ का.

डोफो—वि०—मूर्ख, नासमझ। उ०—डहधयोडा डोलै केई डोफा, गाफल जनम गमावै। राजी भेख मात्र नै राखै, स'जा ही सुख पावै।—ऊ का

डोब—स०स्त्री०—१ गहराई, थाह। उ०—तिको तळाव किण भात री छै। राती वरडी री। पाडरो नीर। पवन मारियो फोण आछटतो थको झोला खाय रह्यो छै। लहरां लिये छै। अथग डोब छै। कडिया सुधे पाणी मे पैठा पगा रा नख झाले छै।—रा सा.स.

२ डूबाने की क्रिया या भाव

क्रि०प्र०—देणी।

३ डुबकी, गोता।

क्रि०प्र०—देणी, लेणी।

४ नीची भूमि।

रू०भे०—डोव।

स०पु०—५ मदमा।

क्रि०प्र०—ऊठणो।

डोबणो, डोबबो—देखो 'डुबाणी, डुबावो' (रू भे)

उ०—मोटल सरखो मारियो, जिण सकज जमाई। 'देऊ' री घर डोबियो इण हिज अनिग्राई।—वी मा.

डोबणहार, हारो (हारी), डोबणियो—वि०।

डोबवाडणो, डोबवाड़बो, डोबवाणो, डोबवाववो, डोबवाणो, डोबवाववो, डोबाडणो, डोबाडवो, डोबाणो, डोबावो, डोबावणो, डोबाववो —प्रे०रू०।

डोबिग्रोडो, डोबियोडो, डोब्योडो—भू०का०कृ०।

डोबीजणो, डोबीजवो—कर्म वा०।

डूबणो, डूबवो—अक० रू०।

डोबरो—स०पु०—१ दरार पडा हुआ मिट्टी का वर्तन २ फटा हुआ वास ३ दरार पडे हुए मिट्टी के वर्तन या फटे हुए वास को बजाने पर निकलने वाली ध्वनि विशेष।

क्रि०प्र०—बोलणो, वाजणो।

कहा०—डाग भागी तोई डोबरा जोगी परी है—लाठी टूटी किन्तु आवाज करने योग्य तो है ही, समय के फेर से सम्पन्न व्यक्ति निर्धन हो जाता है किन्तु फिर भी वह अन्य साधारण व्यक्तियो से तो अच्छा ही होता है।

डोवल—स०पु०—१ खड्डा, गड्ढा।

२ देखो 'डोवो' (मह, रू भे)

डोवलियो—देखो 'डोवो' (अल्पा., रू भे)

डोवली—स०स्त्री०—१ दीवार मे किया जाने वाला वह छेद जो उसके सहारे लकडी को मजबूत कसने के लिए किया जाता है।

क्रि०प्र०—करणी।

२ वह लकडी जो पत्थर के गड्ढे या दीवार मे लगाई जाती है।

क्रि०प्र०—देणी।

३ देखो 'डोवी' (रू भे)

डोवलो—देखो 'डोवो' (रू भे)

(स्त्री० डोवली)

डोवियोड़ो—देखो 'डुवायोडो' (रू.भे)

(स्त्री० डोवियोडी)

डोवियो—देखो 'डोवो' (रू भे)

(स्त्री० डोवी)

डोवी—स०स्त्री०—वृद्ध भैस।

कहा०—दूध डोवी माये नी है, दूध दोवा वाळी माये है—दूध भैस मे नहीं होता अपितु निकालने वाली मे होता है अर्थात् दुहने वाली की चतुरता दुधारू के पालन-पोषण मे उसकी कुशलता आदि पर ही दूध की मात्रा निर्भर करती है।

रू०भे०—डोवली।

डोवो—स०पु० (स्त्री० डोवी) १ वृद्ध भैसा, पाडा २ वृद्ध भैस।

उ०—डाटघा डोवा डागरा, डोलै खेता-डोळ। रणखेता रजपूत किम, हाटघा दिया हडोळ।—रेवतसिंह भाटी

३ आँख। उ०—तरुणी वरुणी मे नीझर झर-ताकी। थिग थिग अगनैणी पिकवैणी थाकी। पिंजर पासळिया भीतर पैठोडा, बोलै बोवाता डोवा बैठोडा।—ऊ का.

४ देखो 'डोव' (रू भे)

डोम—देखो 'डूम' (रू भे)

डोमड—देखो 'डूम' (मह, रू भे)

डोमडियो—देखो 'डूम' (अल्पा, रू भे)

डोमडो—देखो 'डूम' (अल्पा., रू भे)

डोयठो—स०पु० [स० द्वयुत्थ, प्रा० दोठा] एक प्रकार की मिठाई।

डोयलियो—स०पु०—देखो 'डोई' (अल्पा, रू भे.)

डोयली—देखो 'डोई' (अल्पा, रू भे)

डोयलो, डोयो—स०पु०—देखो 'डोई' (अल्पा., रू भे)।

डो'योडो—देखो 'डोहियोडो' (रू भे)
(स्त्री० डो'योडी)

डोर–स०स्त्री०—१ रस्सी, रज्जु। उ०—१ तालरियै तवूडा ताणिया, डूगरियै रळकाई रेसम डोर। घण गोरी ए अबा लागणियै नैणा रो ढोलो मिणियार।—लो.गी
उ०—२ रतन कुग्रो मुख साकडो, लाबी लागै डोर। सीचतडा मैदी गई, गयौ कमर रौ जोर।—लो गी.
२ घोडे की लगाम, वाग। उ०—घोडा री पूठ तखता ऊपर बैठा छै। ग्राख्या ग्राडी कूल्है छै। सकळायत रा पटा, रूपै री भवर कडी, रेसम री डोर।—रा सा.स.
मुहा०—१ डोर खाचणी—स्मरण कर के दूर से अपने पास बुलाना, पास बुलाने के लिये स्मरण करना २ डोर ढीली छोडणी—डोरी शिथिल करना, अधिकार या शासन से मुक्त करना, निगरानी या चौकसी कम करना, ध्यान न देना ३ डोर मे राखणी—अधिकार में रखना, शासन मे रखना, नियन्त्रण मे रखना।
३ पतग की डोरी। उ०—१ जमडाडा जडै छै, ग्रीजपग्रा ग्राता ले उडै छै। जिकै गुडी री सी डोर ग्रसमान नै चढै छै।
—पना वीरमदे री वात
उ०—२ राजन गुडी उडावता, लवी देता डोर। गुडी घर राजन नही, चले न मेरी जोर, ग्रो दिल ज्यान म्हानै एकवर दरस दिखाग्रो मेरी जान।—लो गी.
४ देखो 'डोरी' (ग्रल्पा., रू भे)

डोरउ—देखो 'डोरी' (रू भे) उ०—परणावा चाल्यौ ग्रीसळराव, वाज्या ढोल नीसाणै घाव। डोरउ वाध्यउ पाटको, पाळिय परगह ग्रत न पार।—वी दे

डोरडावध–वि०यौ०—विवाह का ककण बधा हुग्रा।
उ०—सूरातन तेज जीतो समर, फ्रोटा सिर नामो कियौ। डोरडा-वध मुजरा दयण, इण विध पाबू ग्राविया।—पा प्र.

डोरडियौ—देखो 'डोरडो' (ग्रल्पा, रू भे)

डोरडी—देखो 'डोरी' (ग्रल्पा, रू भे)

डोरडौ—देखो 'डोरी' (ग्रल्पा, रू भे) उ०—१ हाथा पगा कै वाधो डोरडा, सिर सोना को मोड। काना घाली सामा मुरकी, गळ मे घाली गोय।—डूगजी जवारजी री पड
उ०—२ लाडा थारै डोरडै वीस गाठ हो।—नैणसी
उ०—३ बैठा रजपूत खावै छै। हेमो डोरडो गावै छै।—नैणसी

डोरवास–स०पु०—सारगी के तातो को मडतग पर घोडे के वालो से वाँधने वाली वस्तु।

डोरातर–स०स्त्री० [स० दोलातर] वह झोली जिसमे वच्चे को सुला कर पीठ पर लादा जाता है। उ०—वळदा गाडासळ ग्राडा पर वोरा, छोटा डोरातर रोराकुर छोरा। करणा दरसावै केता वर-कडिया, जूती फाटोडी वाधी जेवडिया।—ऊ का.

डोराइणी, डोराइवौ—देखो 'डोराणी, डोरावौ' (रू भे)

डोराडियोडी—देखो 'डोरायोडी' (रू भे)

डोराणी, डोरावौ–क्रि०स०—ऋतुमति घोडी से घोडे का प्रसग कराना।
डोराणहार, हारो (हारी), डोराणियौ—वि०।
डोराईजणी, डोराईजवौ—कर्म वा०।
डोराडणी, डोराडवौ, डोरावणी, डोरावबौ—रू०भे०।

डोरावद–वि०यौ०—जिसके किसी सम्प्रदाय, देवता ग्रादि के निमित्त डोरा वधा हो (मा म)

डोरायोडी–भू०का०कृ०—घोडे से प्रसग कराई हुई (ऋतुमति घोडी)

डोरावणी, डोरावबौ—देखो 'डोराणी, डोरावौ' (रू.भे.)

डोरावियोडी—देखो 'डोरायोडी' (रू भे)

डोरि—देखो 'डोरी' (रू भे)

डोरियौ–स०पु०—१ वह वडा ग्रौर मोटा कपडा जो ग्रनाज ढोते समय बैलगाडी पर लगाया जाता है. २ शामियाने बनाने में काम ग्राने वाला मोटा कपडा, पाल ३ जाजम या दरी की भाति विछाने का एक प्रकार का मोटा कपडा. ४ एक प्रकार का ग्रोढने का वस्त्र. ५ एक प्रकार का सूती मोटा कपडा जिसमे मोटे सूत की धारिया होती हैं ६ एक प्रकार का कपडा विशेष।
उ०—तठा उपरायत वागा रा चिहरवद छूटै छै। सू किण भांत रा वागा छै? सिरीसाप, भैरव चौतार, कसवी महमूदी, फूलगार ग्रध-रसखेला वाफता डोरिया मोमनी तनजेब सासाहिवी तरै-तरै रै कपडै रा वागा छै, सू उतार-उतार उणहीज दरखता री साखा ऊपर उरळा कीजै छै।—रा.सा स
रू०भे०—डोरयौ।

डोरी–स०स्त्री० [स० दोर] १ रस्सी, रज्जु।
मुहा०—डोरी सू पत्थर काटणौ—कूए से पानी निकालते समय डोरी जैसी नरम वस्तु की निरन्तर रगड से भी पत्थर की कठोर शिला कटने के कारण निशान हो जाते हैं ग्रर्थात् निरन्तर प्रयत्न करते रहने पर सफलता ग्रवश्य मिलती है।
२ लगाम, वाग। उ०—१ यम तडफडता ग्रंडै, वाहि जमदाढ वहाडै। डाव घाव डोरिया, जाणि जगजेठ ग्रखाडै।—सू प्र.
उ०—२ कसि सिरी गडद निस सघ कीध। डोरिया वाधि गजगाह दीध।—सू प्र.
३ स्त्री-पुरुष के वदचलन होने पर उनके चरित्र को प्रकट करने के लिए फाल्गुन मास मे गाया जाने वाला ग्रश्लील गीत।
उ०—१ सरती सदनामी चाहत नहि चोरी, डरती वदनामी गाव्रत नहि डोरी। चित भव भाडा री चरचा नहि चावै, लिपळी राडा री ग्ररचा नहि लावै।—ऊ का
उ०—२ हाथा हळ हाकता, नार करती नेदाणी। निरस घरा सन-मध कदै, ठकुरात न जाणी। सायवी इसी होती सदा, दादा गवता डोरिया। मोहकमा कमध मोटा मिनख, चित सू ही छानी चोरिया।
—ग्ररजुणजी बारहठ

क्रि०प्र०—गाणी।

४ आंख मे दिखाई देने वाली लाल रेखा जो सौंदर्य व शौर्य-सूचक मानी जाती है। उ०—डाकावध कमध आरक चसम डोरिया, गिरद तारक रिच्छ समै गजगाह। 'सवारो' जोध बेढ़ाक मारक सत्रा, अभीडा पेच धारक निखग वाह।—कविराजा करणीदान

५ नदी या नाले के किनारे बना हुआ वह कूआ जिसमे नदी या नाले मे से पानी आता रहता है या नाली बना कर लाया जाता है, फिर उस कूए से सिंचाई होती है (मेवाड, अजमेर) ६ दूरी को मापने का एक माप विशेष जो २० गट्ठे या ६० गज का होता था. ७ वह रस्सी जो राजा-महाराजा या बादशाहो की सवारी के आगे भीड को रोकने के लिए सिपाही रास्ते के दोनो ओर हद बाधने के निमित्त लेकर चलते थे (मेवाड)

मि०—जळेव (३)

८ ध्यान, लगन। उ०—जमिया जोगी जोग कमायँ, लगी निरतर डोरी। हिंदू मुसळमान सू न्यारा, ऐसी उल्टी फोरी।

—श्री हरिरामजी महाराज

मुहा०—डोरी लागणी—किसी के ध्यान मे मग्न होना।

रू०भे०—डोरि।

अल्पा०—डोरडी।

मह०—डोर।

डोरीजणो, डोरीजबो—भाव वा०—घोडी का घोड़े के साथ सयोग होना, गर्भवती होना।

डोरीजियोडो—भू०का०कृ०—गर्भ धारण की हुई, गर्भवती (घोडी)

डोरो—स०पु० [स० दोर] १ रूई, रेशम, सन आदि को बट कर बनाया हुआ महीन और लम्बा ततु जो चौडा और मोटा नही होता है, धागा, तागा, सूत्र। उ०—१ तिण ऊपरि कहाव माडियो राम-सिघजी गाडा, ऊट कुवरजी कन्हा मगाडि अर धरती महा डोरो एक छोडियो नही।—द वि

उ०—२ नथ रो काळो डोरो सदा तण्योडो रेंवतो।—रातवासो

मुहा०—डोरो ई नही छोडणो—कुछ भी शेष नही रखना, सब ले लेना।

२ स्त्रियो के शिर के बाल गूथने के लिए उपयोग मे लिया जाने वाला मोटा धागा। उ०—डोरा डिगमगता आठी फुल डुलती, तिरछी भाकणिया बरछी-सी तुलती। दुरबळ लाजाळू साळू मे दीखे, भामण भूखाळू व्याळू बिन बीखे।—ऊ का.

यौ०—आटी डोरा, आठी-डोरा।

३ पुरुषो के गले मे धारण करने का सोने या चादी का बना आभूषण। उ०—नणदल बाई रे गहणो ई घडाय, ओ था पर वारी रे हुजा, देवरजी नखराळा रै डोरो माठिया ओ राज।—लो गी.

४ विवाह सम्बन्ध स्थापित करने के लिए कन्या पक्ष वालो की ओर से दिया जाने वाला धन, टीका।

क्रि०प्र०—आणो, देणो।

५ विवाह सबध स्थापित करने के लिए लडके के माता-पिता कन्या के तथा कन्या पक्ष वालो की ओर से लडके के दायें हाथ की कलाई पर बांधा जाने वाला मागलिक धागा।

उ०—इतरे तो इण रा विहाव सारू सगपण साधियो। चित्रगढ रो फूलाणी इद्रभाण, जिण रा बेटा लिखमीदास रै डोरो बाधियो।

—र हमीर

वि०वि०—कई जातियो मे इस अवसर पर लडके के माता-पिता कन्या के लिये कपडे व मिठाई आदि ले जाते हैं और कन्या पक्ष वाले भी लडके के माता-पिता को कपडे आदि भेंट करते हैं तथा लडके के लिये भी कपडे, मिठाई, नारियल, मागलिक धागा आदि भेजते हैं।

क्रि०प्र०—बाधणो।

६ दूल्हा और दुल्हिन के विवाह के पूर्व हाथ व पाव मे बाधा जाने वाला मागलिक डोरा जिसमे लोहे की कड़ी, लाख, कपर्दिका, मरोडा-फली तथा डोडा आदि बाधते हैं। उ०—हँस खोलत दुलहो राम सिया कर डोरो री, सावित्री कमळा सिवा सचि सहित सुर भाम। आई अपणे धाम सूं, जुडी जनक रै धाम।—समान बाई

क्रि०प्र०—बाधणो।

७ विवाह के अवसर पर 'काकण डोरा' बाधते व खोलते समय गाया जाने वाला राजस्थानी लोकगीत।

क्रि०प्र०—गाणो।

८ रक्षार्थ अथवा कष्ट निवारणार्थ देव विशेष के नाम से अभिमन्त्रित कर के बाधा जाने वाला धागा, सूत्र।

क्रि०प्र०—बाधणो।

मि०—तातो (२)

यौ०—डोरडा-बध, डोरो-डांडो, राखडी-डोरो।

९ निश्चित परिमाण मे कूए से पानी निकालने की जानकारी के लिये रहट के 'ऊबडियों' के ऊपर लकडी की चरखी पर लपेटा जाने वाला सुनिश्चित लम्बाई का धागा।

वि०वि०—बैलो द्वारा 'ऊबडियों' के घूमने के साथ उस पर लगी चरखी भी घूमती रहती है और पास की दूसरी धागे मे भरी हुई चरखी जो घूमते हुए 'ऊबडियों' पर न हो कर स्थिर लकडी पर लगी रहती है, उससे धागा खिच कर घूमते हुए 'ऊबडियों' के ऊपर लगी चरखी पर लिपटता रहता है। जब पूरा धागा लिपट जाता है तो वह उस समय तक एक निश्चित परिमाण मे पानी निकल जाने का द्योतक होता है और एक पारी समाप्त हो जाती है। तत्पश्चात् दूसरी पारी के लिये चरखियों को बदल दिया जाता है अर्थात् 'ऊबडियों' पर लगी चरखी जो भर जाती है उसे निकाल कर उसके स्थान पर स्थिर लकडी वाली चरखी लगा दी जाती है जो अब तक खाली हो चुकी होती है और भरी हुई चरखी को उसके स्थान पर लगा दिया जाता है। बदलने वाला भरी हुई चरखी के धागे के छोर को खाली चरखी

पर लपेट देता है। इस समय बैल भी बदल दिये जाते है।
उ०—माळ फिरै ज्यू पनडी वाजै, फिरै काळियो डोरो। ग्रोड पाणी भरै घडलिया, ग्रागै हालै धोरी, रूपल रेत रे।—चेतमानखा
क्रि०प्र०—उतरणौ, चढणौ।
१० धूलि-कणो ग्रथवा धूम्र का वह लम्बोतरा महीन ग्राकार जो भूमि से ग्राकाश की ग्रोर खूब ऊँचा बढ़ा हुग्रा दिखाई देता है।
उ०—१ ग्राप रमणै'र मारग भाखरा नै खुडा रै मारग चालिया छै। घोडा रा पौडा सू जमी गूज रही छै। खेह री डोरो ग्राकास नै जाय लागी छै।—रा सा स
उ०—२ ऊपरा थोहर रा ग्राकरा कोयता रा चिलमिया मेल्हजे छै। जाणै साहिजादै रा ताइत, बभूत लगायोडा जोगीसा छै। तिणा री होस माणजै छै। मधरी-मधरी खासजै छै। घरराटा हुय नै रह्या छै। जाणै ग्राभो मधरी गाजै छै। धुवै री डोरो लाग रह्यो छै सू जाणै ग्रासाढ री खाली ग्रोमा वहै छै।—रा.सा स
क्रि०प्र०—ऊठणौ, चढणौ, लागणौ।
११ प्रवाह (निरन्तर बहने वाली महक, सुगन्ध)।
उ०—ऊजळा वणाव किया ऊजळी चादणी मिळि गई छै। सु ग्रागली सखिग्रा नू जावती लखै नही छै। लखाव नही पडतो छै। तिणि सोवे रै डोरै लागी जाए छै।—रा.सा स
मि०—भोलो (३)
क्रि०प्र०—ग्राणौ, ऊठणौ, छूटणौ।
१२ पिघले हुए घी ग्रादि की पतली धारा जो शाकादि मे डालते समय बँध जाती है। उ०—बकरा रा फीफर गरम पाणी सू धोयजै छै। ललाई मिटायजे छै। पासै देगचा मे राधजै छै। घणौ घी वेसवारा मसाला सू वणायजै छै। सीका पासै वणै छै। ग्राडा डोरा घी रा दीजै छै।—रा.सा स
क्रि०प्र०—देणौ।
१३ शाकादि छौकते समय डाला जाने वाला खट्टा पदार्थ. १४ ग्रांख मे दिखाई देने वाली महीन लाल नसें जो सुन्दरता व शौर्य की सूचक मानी जाती हैं। उ०—धाडैती गाव भाग रह्या हे नै थे वाजरी मे लुक रह्या हो! फिट रै नादारा थानै! राजपूता री ग्राख्या मे लाल डोरा तणग्या ग्रर मूछा रा बाल ऊभा व्हैग्या। उणी वखत हाथ रो दातर फैक नै वै गाव कानी रवानै व्हैग्या।—रातवासो
क्रि०प्र०—तणणौ।
१५ तलवार की धार. १६ प्रेम-सूत्र, स्नेह-बन्धन।
मुहा०—डोरी डाळणौ—प्रेम से ग्रपनी ग्रोर ग्राकर्पित करना, प्रेम मे फँसाना, प्रेम-पाश मे बाधना।
१७ घी, तेल ग्रादि निकालने ग्रथवा दूध को कडाही ग्रादि मे हिलाने का लोहे का बना एक उपकरण जो कटोरीनुमा होता है ग्रौर उसके ऊपर एक डाडी खडे बल लगी होती है (शेखावाटी) १८ एक राजस्थानी लोक गीत. १९ चाशनी की परिपक्व ग्रवस्था के समय जाच करने पर बनने वाला ततु।
वि०वि०—चाशनी की परिपक्वता की जाच करने के लिये तर्जनी ग्रौर ग्रगूठे के बीच कुछ चाशनी लेकर ग्रगूठे व ग्रगुली को परस्पर मिला कर जाच करते समय बनने वाला ततु जो परिपक्व चाशनी के चेप के कारण बन जाता है।
रू०भे०—ऊोरउ, दोरौ।
ग्रल्पा०—डोरडियो, डोरडो, दोरडो।
मह०—डोर।

डोरी-डाडो-स०पु०यौ०—किसी देव विशेष के नाम से ग्रभिमन्त्रित कर के, रक्षार्थ ग्रथवा कष्टनिवारणार्थ बाधा जाने वाला धागा, सूत्र।

डोरयो—देखो 'डोरियो' (रू भे)

डोळ-स०स्त्री०—१ पानी गदा होने का भाव २ पानी के भीतर का गदलापन. ३ देखो 'डोळी' (मह, रू भे)
४ गप्प, घसक (किसनगढ)
५ देखो 'डौळ' (रू भे)

डोल—१ देखो 'डोली' (मह, रू.भे.) उ०—सरवर पाणी म्हैं गई रे, मोहन मांडी रोळ। म्हैं मोहन री काई कियो रे, मो पर भर भर कूडै डोल।—मीरा
२ देखो 'डोलौ' (मह, रू भे)

डोलकाजत्र—देखो 'दोलाजत्र' (रू भे) (ग्रमरत)

डोलकी, डोलची—देखो 'डोली' (ग्रल्पा, रू भे)

डोलण-स०पु०—वह घोडा जो ग्रपने स्थान पर बँधा शरीर हिलाता रहता हो (ग्रशुभ)

डोळणौ, डोळबौ—१ देखो 'डोहळणौ, डोहळबौ' (रू भे)
२ देखो 'डौळणौ, डौळबौ' (रू भे) उ०—पछटि घाव उडि पडै, पाव निरलग पटाभर। देवळ कजि डोळियो, खभ जाणै कारीगर।
—सू प्र
डोळणहार, हारो (हारी), डोळणियो—वि०।
डोळवाडणौ, डोळवाडबौ, डोळवाणौ, डोळवाबौ, डोळवावणौ, डोळवावबौ, डोळाडणौ, डोळाडबौ, डोळाणौ, डोळाबौ, डोळावणौ, डोळावबौ—प्रे०रू०।
डोळिग्रोडो, डोळियोडो, डोळ्योडो—भू०का०कृ०।
डोळीजणौ, डोळीजबौ—कर्म वा०।
डहोळणौ, डहोळबौ—रू०भे०।

डोलणौ, डोलबौ-क्रि०ग्र०[स० दोलयति, प्रा० डोलइ] १ (इधर-उधर) फिरना, चक्कर लगाना। उ०—१ स्याम म्हासू ऐंडो डोलै हो। ग्रोरन सू खेलै धमाळ, म्हासू मुख नहिं बोलै हो, स्याम म्हासू ऐंडो डोलै हो। म्हारी गळिया ना फिरै, वाकै ग्रागन डोलै हो। म्हारी ग्रगुळी ना छुवै, वाकी वहिया मोरै हो।—मीरा
उ०—२ चौगिरद डोलिया फिरै पण ग्रराबै ग्रागै दाव कोई लागै नही।—मारवाड रा ग्रमरावा री वारता

२ भ्रमण करना, घूमना। उ०—फेरी न फिरता माग न खाता, निरभै भया पद लीना। इजगर इधर उधर नहिं डोलै, चून हरि वाकू दीना।—स्री सुखरामजी महाराज

३ भटकना। उ०—१ दादू सब घट मे गोविंद है, सग रहै हरि पास। कस्तूरी म्रिग मे वसै, सूघत डोलै घास।—दादू वाणी

उ०—२ वन वन डोलू रैण दिन, धीरज घरै न लेस। पड पड ल्हू घरण पर, दीजौ मोय उपदेस।—स्री हरिरामजी महाराज

उ०—३ अगम पथ इण इसक रै, निभै ठाकरी नाहि। डग ग्वाळणिया डोलियौ, मुर पुर पत व्रिज माहि।—र हमीर

४ झूलना ५ विचरण करना। उ०—सिह स्याळ पतग कुजर, सरप कीटी काग। मछ कछ होय जळा डोल्यौ, तोकूं अजहु न आई लाज।—ह पु वा.

६ गतिमान होना, चलना। उ०—चाहत जोवन अधिक चित, मदन भई उन्मत्त। हीरा डोलत हस गत, सुघड सहेली सथ्य।

—बगसीराम प्रोहित री वात

७ चलायमान होना, हिलना, हटना। उ०—पवन डुलायौ मेरु न डोलै। मोटा दीन वचन नवि बोलै—स्रीपाळ रास

८ कपायमान होना, थर्राना। उ०—१ कळपात ना नीरद नाद तोलइ। वाजित्र नादिइ गिरिराज डोलइ।—विराटपर्व

उ०—२ जळनिधि ना जळ ऊछळया रे, ऊघाए चढ्या असमान। वाहण लागा डोलिवा, जाणे चचळ पीपळ पान।—स्रीपाळ रास

९ डांवाडोल होना। उ०—१ सुगुरु जिणचद सोभाग सखरो लियो, चिहूं दिसै चदनामो सवायो। जैन सासन जिकै डोलतउ राखियौ, माखियौ जगत सगळइ कहायौ।—स कु.

उ०—२ किताईक कोस गया नाव दरियाव मे डोलण लागी।

—वा दा ख्यात

१० विचलित होना। उ०—घाट औघट वाट वेगम, काट करम कपाट खोलै। ज्यारी सुघड सुरता नहिं डोलै, जिकै सत सुजाण हो।

—आसा भारती

११ अधीर होना। उ०—साधण्या मे सारो दिन खोयो ए मिरगानैणी, थारै विन हिवडो भरघो डोलै।—लो गी

१२ भ्रम मे पडना

क्रि०स०—१३ देखो 'डोलाणी, डोलावी' (रू.भे.)

उ०—ओरा तो माय धरमी ओवरी, ओ राती पिलग विछाय ओ। जठै गोगोजी धरमी पोढिया, मीडल डोलै छै वाव ओ।—लो गी

डोलणहार, हारौ (हारी), डोलणियौ—वि०।

डोलवाडणो, डोलवाड्वो, डोलवाणी, डोलवावौ, डोलवावणो, डोलवाववौ—प्रे०रू०।

डोलाडणो, डोलाड़वो, डोलाणो, डोलावो, डोलावणो, डोलाववो—क्रि०स०।

डोलिओड़ो, डोलियोड़ो, डोल्योडो—भू०का०कृ०।

डोलीजणो, डोलीजवौ—भाव वा०।

डुलणो, डुलवो, डूलणो, डूलवौ—रू०भे०।

डोलमा, डोलमा-स०पु० (वहु व०) महुडा के वीज जिनका तेल निकाला जाता है।

डोलर, डोलहर-स०पु० [स० दोल] चक्कर के समान नीचे ऊपर घूमने वाला एक प्रकार का झूला जिसमे लोगो के बैठने के लिये चार पालने लगे रहते हैं। ये झूले प्राय मेलो मे लगते हैं। उ०—गीत झकोळै गोरिया, सुणता लगै सु प्यार। हीडै डोलर हीडता, तीज गळै तिण वार।—महादान महडू

रू०भे०—डुलहर, डोलहर, डोल्लहर, डोल्ल्हर।

यौ०—डोलरहींडो।

डोलाडणो, डोलाड़वो—देखो 'डोलाणो, डोलावौ' (रू भे)

डोलाडणहार, हारौ (हारी), डोलाडणियौ—वि०।

डोलाडिओडो, डोलाडियोडो, डोलाडचोडो—भू०का०कृ०।

डोलाडीजणो, डोलाडीजवौ—कर्म वा०।

डोलणो, डोलवौ—अक०रू०।

डोलाडियोडो—देखो 'डोलायोडो' (रू भे)

(स्त्री० डोलाडियोडी)

डोलाजत्र—देखो 'दोलाजत्र' (रू भे) (अमरत)

डोलाणो, डोलावौ—क्रि०स०—१ चक्कर कटाना, फिराना

२ भ्रमण कराना, घुमाना. ३ भटकाना ४ झुलाना.

५ विचरण कराना ६ गतिमान करना, चलाना. ७ चलायमान करना, हिलाना, हटाना ८ कपायमान करना. ९ डांवाडोल करना. १० विचलित करना ११ अधीर करना. १२ प्रसारित करना।

डोलाणहार, हारौ (हारी), डोलाणियौ—वि०।

डोलायोडो—भू०का०कृ०।

डोलाईजणो डोलाईजवौ—कर्म वा०।

डोलणो, डोलवौ—अक०रू०।

डुलाडणो, डुलाडवो, डुलाणो, डुलावो, डुलावणो, डुलाववो, डूलाडणो, डूलाडवौ, डूलाणो, डूलावौ, डूलावणो, डूलाववो, डोलाडणो, डोलाडवौ, डोलावणो, डोलाववौ—रू०भे०।

डोलायोडो-भू०का०कृ०—१ चक्कर कटाया हुआ, फिराया हुआ

२ भ्रमण कराया हुआ, घुमाया हुआ ३ भटकाया हुआ

४ झुलाया हुआ. ५ विचलित किया हुआ ६ गतिमान किया हुआ, चलाया हुआ. ७ चलायमान किया हुआ, हिलाया हुआ, हटाया हुआ ८ कपायमान किया हुआ. ९ डांवाडोल किया हुआ. १० विचरण कराया हुआ ११ अधीर किया हुआ १२ प्रसारित किया हुआ।

(स्त्री० डोलायोडी)

डोलावणो, डोलाववौ—देखो 'डोलाणो, डोलावौ' (रू भे.)

डोलावणहार, हारौ (हारी), डोलावणियौ—वि०।

डोलाविओड़ो, डोलावियोडो, डोलाव्योडो—भू०का०कृ०।

डोलावीजणौ, डोलावीजबौ—कर्म वा० ।
डोलणौ, डोलबौ—अक०रू० ।

डोलावियोडौ—देखो 'डोलायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० डोलावियोडी)

डोळियोडौ-भू०का०कृ०—१ देखो 'डोहळियोडौ' (रू भे)
२ देखो 'डोळियोडौ' (रू.भे)
(स्त्री० डोळियोडी)

डोलियोडौ-भू०का०कृ०—१ (इधर-उधर) फिरा हुआ, चक्कर लगाया हुआ. भ्रमण किया हुआ, घूमा हुआ ३ भटका हुआ भूला हुआ ५ विचरण किया हुआ ६ गतिमान हुवा हुआ, चला हुआ ७ हिला हुवा, चलायमान हुवा हुआ, हटा हुआ.
८ कपायमान हुवा हुआ, थर्राया हुआ ९ डांवाडोल हुवा हुआ.
१० विचलित किया हुआ. ११ अधीर किया हुआ ।
(स्त्री० डोलियोडी)

डोळियौ—देखो 'डोहळियौ' (रू भे.)

डोलियौ—देखो 'डोलौ' (अल्पा., रू भे)

डोळी-स०स्त्री० [स० दोला] १ कहारो द्वारा उठा कर ले जाई जाने वाली एक प्रकार की सवारी, पालकी । उ०—स्वजन वेवाहिया घूरइ भूरइ निगहिय नेह । लेई अचेत उपाडिय माडिय आणीय गेहि । भूतळि भभरभोलिय डोळिय जिम न चडत । विलवइ कुमरि विलखिय देखिय ते विरतात ।—नेमिनाथ फागु
२ घायल या जख्मी को उठा कर ले जाने का एक उपकरण ।
उ०—१ वसत रा केसू फूलै तिण भात घणा घाया सू घ्राया थका डोळिया झोळिया ऊपडिया छै ।—रा सा.स.
उ०—२ सो घोडा रै जवां नू जिका जावै तिका डोळी घालिया आवै ।
—डाढ़ाळा सूर री वात
३ दान मे दी गई भूमि । उ०—इण सहर मे अरहट रावळै कोई नही डोळिया रा अरहट च्यार तथा पाच हुसी ।
—सोजत रै मडळ री वात
४ अहाते की छोटी दीवार (शेखावाटी) ५ २०० पन्नो की गड्डी ।
रू०भे०—डोहळी ।

डोली-स०स्त्री० [स० दोला, दोलिका] १ कुए से पानी खीचने का लोहे का वना वरतन २ होली खेलते समय पानी उछालने का एक पात्र विशेप । उ०—१ होरी सतगुरु फाग रमायो, डोली सब्द ग्यान की भर भर, अनुभव जळ वरसायो ।—स्त्री अचळरामजी महाराज
उ०—२ गुलाल अवीरा री घमरोळ उठी, गुलस रो डमार गैणाग छायो, ख्याल रो भार दोन्या ही तरफा आयो । डोल्यां रा घूघरा छणकै छै, वाजूवद री लूमा वाहिया वीच खणकै छै ।
—पना वीरमदे री वात
३ देखो 'डोलौ' (अल्पा, रू भे)
अल्पा०—डोलकी, डोलची ।
मह०—डोल, डोलीड ।

डोलीड—१ देखो 'डोली' (मह, रू भे.)
२ देखो 'डोलौ' (मह, रू भे)

डोळौ-स०पु०—१ आंख का सफेद उभरा हुआ भाग, आंख का कोया ।
उ०—१ खोटी खोडी रा गोळा गळकाता, पीळी कोडी रा डोळा पळकाता । ममता भव सागर ममता मढ़ियोडी, केवळ नळिया री नळिया कढियोडी ।—ऊ.का.
उ०—२ पग छापरो, कान टापरो, आख उडि, निलाडि भूडि, घमिया लोह गोळा, तिसिया वेउ डोळा, एव विध वेताळ ।
—व स
२ नेत्र, नयन । उ०—मावडियो वन माझली, सो नह जाय सिकार । डोळा मिनकी सू डरै, मूसा ज्यू मुरदार ।—बा दा
३ मिट्टी की वनाई हुई दीवार (शेखावाटी)
[सं० दोल] ४ विवाह करने की एक प्रथा विशेप जिसमे पिता द्वारा पुत्री को विवाह के लिए वर के घर भेज दी जाती थी । यह प्रथा मुसलमानी काल मे आरम्भ हुई जो वाद में भी राजा महाराजाओं या शाही खानदानो मे कई दिनो तक चलती रही ।
क्रि०प्र०—देणौ ।
वि०—वह द्रव पदार्थ जो साफ नही हो, गदा ।
रू०भे०—डुहळू ।
मह०—डोळ ।

डोलौ-स०पु० [स० दोल.] १ पानी भरने का पात्र. २ कुए मे से पानी निकालने का पात्र. ३ कडाह मे से खीर, दाल, कढ़ी आदि निकालने का उपकरण (बीकानेर)
(मि० डैरो)
अल्पा०—डोलियो डोली, डोल्यो ।
मह०—डोल, डोलीड ।

डोल्यौ—देखो 'डोलौ' (अल्पा, रू.भे.)

डोल्लहार, डोल्हर—देखो 'डोलर' (रू भे) उ०—डोल्लहर रा पल्लहा रै प्रमाण ऊपरा ऊपरी लोथि लागण ढूकी ।—व भा.

डोव—देखो 'डोव' (रू.भे)

डोवटी—देखो 'डोटी' (रू.भे)

डोवणौ, डोयबौ—देखो 'डोहणौ, डोहवौ' (रू.भे.)
उ०—हजा तमीणी हेत, सर सारोही डोवियो । सर् मे पखी ढेर, नही मुआ वै हज रे ।—र.रा.
डोवणहार, हारौ (हारी), डोवणियौ—वि० ।
डोविओड़ौ, डोवियोड़ौ, डोव्योडौ—भू०का०कृ० ।
डोवीजणौ, डोवीजबौ—कर्म वा० ।

डोवियोडौ—देखो 'डोहियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री० डोवियोडी)

डोसी-स०स्त्री०—वृद्धा, बुड्ढी । उ०—डाही डोसी डोकरि, ते बाइ

बहू ग्राम। हाथि न लागइ हिंडतां, सोधइ सघळु गाम। —मा का प्र

डोसो—स०पु० (स्त्री० डोसी) १ वृद्ध, बुड्ढा। उ०—डोसे डाहेरे मिळी, कीधउ ग्रस्यु विचार। गरभ घरइ नहिं गोरडी, सिउ समसिइ ससार ?—मा का प्र.

२ प्रतिष्ठित, बडा। उ० तारां सोढ़ी वोलो—हूवा साठी नें बुध नाठी। डोसा गढपतिया रा नाळेर पाछा मेल्हो मती।

—वीरमदे सोनीगरा री वात

३ एक प्रकार का खाद्य पदार्थ।

डोह—स०पु०—१ मस्ती। उ०—इण भात सू गजराज मुहडा आगै ही झुलै'छै। डोहां करता हमलाखाता वहै छै।—रा सा स.

२ आनन्द, मजा। उ०—फतियो फिरिसै फोज मा, मुडा रै उरि माहि। डोहा करिसै दीनियो, मुसै रै घर माहि।—पी ग्र

क्रि०प्र०—लैणो।

३ रसास्वादन।

क्रि०प्र०—लैणो।

रू०भे०—डो'।

डोहणो, डोहबो—क्रि०स०—१ विलोडित करना, मथना।

उ०—१ ओ डोह्यो के वार मै, भात भात कर भाय। सुण हे प्यारी सुदरी, तू काहे पछताय।—गजउद्धार

उ०—२ सू लें तळाव मे वडजै छै। माथै रा जूडा केसां रा छूटा छै। सू किसा नजर आवै' जाणै काळा वासग तिरै छै। जळ डोहि रह्या छै जाणै रेवा-नदी नै हाथी डोहळ रह्या छै।—रा.सा स.

२ सहार करना, नाश करना। उ०—१ कळि वाघी जैतमल कळोघर, गज फोजा डोहण गहण। समहर भर ऊपरि नव सहसो, ताइ ग्रोडविजै भाण तण।—नरहरदास भाणोत चापावत रो गीत

उ०—२ समोभ्रम ऊद घुवै चद्रहास। दळां खळ डोहत मोहनदास।

—सू प्र

३ ध्वस्त करना। उ०—ग्रर इळा आकास रै हारावळी रूप विघ्नकारी डूगरा रा डोह्णहार विघ्नविहिण परिरभ मे जुडण लागा।—व भा.

४ वरबाद करना, विगाडना, नाश करना। उ०—गिड़ सूर तो वन वाडिया नै डोहै है ग्रर ऊडा ऊडा पहाडी नदिया रा दहा नै गजराज डोह रहिया छै।—वी स टी.

५ गिराना। उ०—कइयइ माता कठइ लागइ, कइयइ लोटइ माता आगइ। कइयइ घडा ना पाणी डोहणो कइयइ हसि माता मन मोहइ।

—ऐ जै का स

६ बार-बार ढूढना, घूम-घूम कर पता लगाना। ज्यू—म्हे थारै सारू सारो वन डोह लियो पण थू मिळियो नही।

७ इस पार से उस पार जाना, लाघना, डाकना, नांघना।

उ०—मन सीचाणउ जइ हुवइ, पाखा हुवइ त प्रांण। जाइ मिळीजइ साजणां, डोहीजइ मांहराण।—ढो.मा.

डोहणहार, हारो (हारी), डोहणियो—वि०।

डोहवाडणो, डोहवाडवो, डोहवाणो, डोहवावो, डोहवावणो, डोहवाववो, डोहाडणो, डोहाडवो, डोहाणो, डोहावो, डोहावणो, डोहाववो—प्रे०रू०।

डोहिग्रोडो, डोहियोड़ो, डोह्योडो—भू०का०कृ०।

डोहीजणो, डोहीजवो—कर्म वा०।

डो'णो, डो'वो, डोवणो, डोववो, डोहळणो, डोहळवो—रू०भे०।

डोहलउ, डोहलऊ—देखो 'डोहलो' (रू भे.) (उ र)

उ०—गभु घरीऊ गभु घरीऊ देवि गघारि। दुट्ठत्तणि डोहलउ कूड कळहि जण झुझि गज्जइ। पुरुखवेसि गइवरि चडई सुहड जेम मनि समरु सज्जइ। गानि रडता वदीयण पेखीउ हरिसु करेइ। सासु ससरा कुणवि सु ग्रहनिसि कळहु करेइ।—प प च.

डोहळणो, डोहळवो—क्रि०स० [स० दोलयति] १ (पानी आदि) गंदा करना। उ०—सू लै तळाव मे वडजै छै। हासो-तमासो कर रह्या छै, माथै रा जूडा केसा रा छूटा छै। सू किसा नजर आवै जाणै काळा वासग तिरै छै। जळ डोहि रह्या छै जाणै रेवा नदी नै हाथी डोहळ रह्या छै।—रा.सा स

२ देखो 'डोहणो, डोहवो' (रू.भे) उ०—डोहळे मीर घडा गज डवर, वाजित्र नर हैमर कर वेस। आऊगति हिंदुआ ऊपरि, दस सहसि नव सहसउ देस।—दूदो

डोहळणहार, हारो (हारी), डोहळणियो—वि०।

डोहळवाड़णो, डोहळवाडवो, डोहळवाणो, डोहळवावो, डोहळवावणो, डोहळवाववो, डोहळाडणो, डोहळाडवो, डोहळाणो, डोहळावो, डोहळावणो, डोहळाववो—प्रे०रू०।

डोहळिग्रोडो, डोहळियोडो, डोहळ्योडो—भू०का०कृ०।

डोहळीजणो, डोहळीजवो—कर्म वा०।

डोळणो, डोळवो—रू०भे०।

डोहळियोडो—भू०का०कृ०—१ (पानी आदि) गदा किया हुआ.

२ देखो 'डोहियोडो' (रू भे)

(स्त्री० डोहळियोडी)

डोहळियो—स०पु०—१ उदक से प्राप्त भूमि का स्वामी, माफी की छोटी जागीर प्राप्त व्यक्ति

रू०भे०—डोळियो।

डोहळी—देखो 'डोळी' (रू भे)

डोहलो—स०पु० [स० दोहदम्, दोहद] गर्भवती स्त्री की अभिलाषा, गर्भवती की रुचि (गर्भवती की अभिलाषा पूर्ण करना बहुत श्रेष्ठ समझा जाता है) उ०—१ इम डोहला पामइ जेह, 'धरमसी' साह पूरइ तेह। उत्तम नर गरभइ आयउ, माता पिण आणद पायउ।—ऐ जै का.स

उ०—२ आस फळी माइडी मन मोरी, कुखइ कुमर निधान रे। मनवछित डोहला सवि पूरइ, पामइ अधिकउ मान रे।—ऐ जै का स

रू०भे०—डोहलउ, डोहलऊ।

डोहियोडो–भू०का०कृ०—१ विलोडित किया हुआ, मथा हुआ २ सहार किया हुआ, नाश किया हुआ ३ ध्वस्त किया हुआ ४ बरबाद किया हुआ, बिगाडा हुआ, नाश किया हुआ. ५ गिराया हुआ ६ बार-बार ढूढ़ा हुआ, घूम-घूम कर पता लगाया हुआ ७ इस पार से उस पार गया हुआ, लाघा हुआ, डाका हुआ, नाघा हुआ।

डौंढो—देखो 'डाढ़ो' (रू भे) (अ मा)

डौ–स०पु०—१ नृसिंह अवतार. २ पति ३ व्यभिचारी।

स०स्त्री०—४ गाय (एका)

डौड–वि० [स० अध्यर्द्ध, प्रा० डिड्यड्ढ] एक और आधा, डेढ़।

वि०वि०—दहाई की सख्या मे बीस तथा दहाई से ऊपर की सख्याएँ जैसे सौ, हजार, लाख आदि के पहले जब इस शब्द का प्रयोग होता है तब उस सख्या को इकाई मान कर उसके आधे को जोडने का अभिप्राय होता है, जैसे—डौड बीसी = बीस और उसका आधा दस अर्थात् ३०, डौड सौ = सौ और उसका आधा पचास अर्थात् १५०, डौड हजार = हजार और उसका आधा पाँच सौ अर्थात् १५००।

मुहा०—१ डौड चावळ री खीचडी न्यारी पकाणी— भिन्न मत प्रकट करना, अपनी राय अलग रखना २ डौड चावळ री खीचडी पकाणी—अपने विचारो को सब से अलग रखना, अपनी अकेली राय सब से भिन्न रखना. ३ डौड वंत री काळजो होणो—साहसी होना ४ डौड कसणी, डौड मारणी—व्यग कसना, ताना मारना, अपनी बडाई करना।

रू०भे०—डैड, डैढ, डौढ।

डौडवणो, डौडवबो–क्रि०स०—१ डेढ गुना करना, डेढ़ा करना २ कपाट वन्द करना ३ कार्य बन्द करना।

डौढवणो, डौढ़वबो, डयौडवणौ, डयौडवबौ, डयौढ़वणो, डयौढ़वबो—रू०भे०।

डौडहतो, डौडहत्थी, डौडहथी–स०स्त्री०—तलवार।

उ०—१ सुमरण हरि रौ दे सुरग, जता न जोध जतीह। बाट वतावण हथ वसै, हेली डौडहतीह।—रेवतसिंह भाटी

उ०—२ छळोहा भडाला पेखै आभै गिरवाण छायौ, कत्तळी बार मे आयौ करतौ कुवाद। माण भू लखायौ सोवा पति रै आथाण गाहै, सेखाणी चखायौ डौडहत्थी री सवाद।—डूगजी री गीत

डौड़ी–स०स्त्री०—१ वह स्थान जहा से हो कर किसी घर के भीतर प्रवेश करते है, दरवाजा, फाटक, मुख्यद्वार. २ किसी मकान मे घुसने पर सबसे पहले पडने वाली पौरी, वह कोठरी जो द्वार मे घुसते ही होती है।

यौ०—डौडी-दस्तूर, डौडी-पडदौ

३ 'जामे' की तरह का पहनने का एक वस्त्र जो 'जामे' से छोटा और लवी 'अगरखी' से बड़ा होता है। इसमे 'जामे' को तरह घेर भी होता है। यह राज-दरबार मे पहनी जाती थी (मेवाड)।

वि०स्त्री०—देखो 'डौडो'।

रू०भे०—डौढी, डयोडी, डयौढ़ी।

डौडीदस्तूर–स०पु०यौ०—१ एक प्रकार का सरकारी लगान. २ नेग।

रू०भे०—डौढीदस्तूर, डयोडीदस्तूर, डयौढ़ीदस्तूर।

डौडीदार, डौडीवान–स०पु०—१ द्वार पर रहने वाला सिपाही, पहरेदार, २ द्वारपाल, दरवान।

रू०भे०—डौढीदार, डौढ़ीवान, डयौडीदार, डयौडीवान, डयौढ़ीदार, डयौढ़ीवान।

डौडो–वि० (स्त्री० डौडी) १ किसी वस्तु का उससे आधा और अधिक, डेढगुना, डेढ़ा।

मुहा०—डौडो करणो, डेढ़गुना करना—कपाट वन्द करना, कार्य वन्द करना।

२ कठिन, विकट ३ तिरछा, टेढ़ा।

मुहा०—डौडो बोलणो—सीधे ढग से बात नहीं करना, ताना मारना, कटु शब्द कहना।

स०पु०—१ गाने मे साधारण से कुछ ऊँचा स्वर २ एक प्रकार का पहाडा जिसमे क्रम के अको की डेढ़गुनी सख्या बतलाई जाती है।

रू०भे०—डौढो, डयोडो, डयौढ़ो।

डौढ़—देखो 'डौड' (रू भे)

डौढ़वणो, डौढ़वबो—देखो डौडवणो, डौडवबो' (रू.भे)

डौढ़हती, डौढ़हत्थी, डौढहथी—देखो 'डौडहती' (रू भे)

डौढी—देखो 'डौडी' (रू भे) उ०—डौढी-पडदो देखिये, सूमा घरै सिवाय। भीतर जम किंकर विना, जीव मात्र नहं जाय।—बा दा

यौ०—डौढ़ी-पडदो।

डौढ़ीदस्तूर—देखो 'डौडीदस्तूर' (रू भे)

डौढ़ीदार, डौढ़ीवान—देखो 'डौडीदार, डौडीवान' (रू भे)

डौढ़ो—देखो 'डौडो' (रू भे) उ०—ओछी अगरखिया दुपटी छिब देती, गोढ वरडी जे पूरा गामेती। फेंटा छोगाळा खाधा सिर फाबै, टेढा डोढ़ा हूं डिगतो नभ दाबै।—ऊ का

(स्त्री० डौढी)

डौर–स०स्त्री०—१ सिंह की दहाड २ सिंह की गुर्राहट ३ वाह्य ठाट, आडम्बर।

डौळ–स०पु०—१ वैभव, ठाट, ऐश्वर्य।

२ व्यवस्था, प्रवन्ध, ढग। उ०—१ दीसै वदन दयामणो, डूबण जोगो डौळ। रहै हमेसा राज मे, मावडिया री मौळ।—बां दा.

उ०—२ चदू रै घर रै खनै एक वाळ-सभा ही। रात नै बो बठै पढ़ण नै जातो परो, कारण घणी वेळा घर मे तेल रो ई डौळ को हुतो नी।—वरसगाठ

३ दशा, स्वरूप, हालत। उ०—देखो बिगडी देह डौळ वीगडगो देखो। बिगड़ गई सब वात लारलो लै कुण लेखो।—ऊ का

४ लंबे छेदों वाली एक छलनी विशेष जो प्राय. दालों का छिलका हटाने के काम आती है ५ किसी वस्तु को गढने या ठीक रूप देने का भाव ६ किसी वस्तु विशेष से काठी के आकार की बनाई शक्ल जिसे ऊँट की पीठ पर काठी के स्थान पर रख कर बैठा जाता है।
क्रि०प्र०—करणी।
७ रग-ढग, तखमीना. ८ तरह, प्रकार ९ युक्ति, उपाय।
यौ०—डौळ-डाळ, डौळ-दार।
डौळ-डाळ—स०पु०—१ ढग, व्यवस्था. २ उपाय, युक्ति. ३ प्रयत्न।
डौळणौ, डौळवौ—क्रि०स०—१ काट-छाँट कर सुन्दर बनाना, गढ़ना।
उ०—डौळते लगा यक सूत सीधा अडर, छोलते सकजे सार चाढे। कवाण जिसा ह्रास असुर कावळी, किया वाय वाण जिसा वक काढे।—वा दा
२ स्वरूप देना, ढाँचा तैयार करना, आकृति मे लाना।
३ ठीक करना, दुरुस्त करना।
डौळणहार, हारौ (हारी), डौळणियौ—वि०।
डौळवाड़णौ, डौळवाडवौ, डौळवाणौ, डौळवावौ, डौळवावणौ, डौळवाववौ, डौळाडणौ, डौळाडवौ, डौळाणौ, डौळावौ, डौळावणौ, डौळावबौ—प्रे०रू०।
डौळिग्रोडो, डौळियोड़ौ, डौळयोडौ—भू०का०कृ०।
डौळीजणौ, डौळीजबौ—कर्म वा०।
डौळदार—वि०यौ०—सुन्दर, खूबसूरत, सुडौल।
डौळियोडौ—भू०का०कृ०—१ काट-छाँट कर सुन्दर बनाया हुआ, गढा हुआ २ स्वरूप दिया हुआ, ढाँचा तैयार किया हुआ, आकृति मे लाया हुआ ३ ठीक किया हुआ, दुरुस्त किया हुआ।
(स्त्री० डौळियोडी)
ड्यूटी—स०स्त्री० [अ०] १ सुपुर्द किया हुआ कार्य।
क्रि०प्र०—करणी।
२ नौकरी का कार्य, चाकरी, सेवा।
क्रि०प्र०—करणी, देणी, लेणी, होणी।
३ चुगी, महसूल।
क्रि०प्र०—लागणी।
४ कर्त्तव्य, धर्म।
क्रि०प्र०—होणी।
रू०भे०—डिपटी, डू'टी।
ड्योड—देखो 'डोड' (रू भे.)
ड्योडवणौ, ड्योडववौ—देखो 'डोडवणौ, डोडववौ' (रू.भे)
ड्योडहती, ड्योडहत्थी, ड्योडहथी—देखो 'डोडहती' (रू भे)
ड्योडी—देखो 'डोडी' (रू भे.)
ड्योडी-दस्तूर—देखो 'डोडीदस्तूर' (रू भे.)
ड्योडीदार, ड्योडीवान—देखो 'डोडीदार, डोडीवान' (रू भे.)
ड्योडो—देखो 'डोडो' (रू भे)
(स्त्री० ड्योडी)
ड्योढ़—देखो 'डोड' (रू.भे)
ड्योढ़वणौ, ड्योढ़ववौ—देखो 'डोडवणौ, डोडववौ' (रू भे.)
ड्योढ़हती, ड्योढ़हत्थी, ड्योढ़हथी—देखो 'डोडहती' (रू.भे.)
ड्योढ़ी—देखो 'डोडी' (रू.भे)
ड्योढ़ीदस्तूर—देखो 'डोडी-दस्तूर' (रू.भे.)
ड्योढ़ीदार, ड्योढ़ीवान—देखो 'डोडीदार, डोडीवान' (रू.भे)
ड्योढ़ो—देखो 'डोडो' (रू भे)
(स्त्री० ड्योढ़ी)

ढ

ढ—संस्कृत, राजस्थानी व देवनागरी वर्णमाला मे चौदहवा व्यञ्जन जो टवर्ग का चौथा वर्ण है। यह मूर्धन्य-स्पर्श व्यजन है। इसके उच्चारण मे जिह्वा का अग्र भाग किंचित् मुड कर कठोर तालु को स्पर्श करता है। यह सघोष महाप्राण है।

ढक-सं०पु०—१ एक प्रकार का पक्षी (जैन) २ कौग्रा (जैन) ३ कुम्हार जाति का एक जैन उपासक (जैन) ४ देखो 'ढाकणी' (मह, रू भे)

ढकण-सं०पु०—१ चार इन्द्रियो वाले जीव की एक जाति (जैन) २ देखो 'ढाकणी, (मह, रू भे)

ढकणउ—देखो 'ढाकणी' (रू भे)

ढकणियौ—देखो 'ढाकणी' (अल्पा, रू.भे.)

ढकणी-सं०स्त्री०—१ देखो 'ढाकणी' (अल्पा., रू.भे) २ देखो 'ढाकणी' (रू भे)

ढकणौ—देखो 'ढाकणी' (रू भे)

ढकणौ, ढकवौ—देखो 'ढाकणौ, ढाकवौ' (रू भे)

उ०—१ गहके ग्रारगपुर सारग सुर गावै, वाणिक दोठाई नीठा वणि ग्रावै। भूलर भाखळ बिन साखळ दिन ढक्यो। हीडै हीडण विन हीडै हिय हक्यो।—ऊ का

उ०—२ ग्रहर ग्रभोखण ढकियउ, सो नयणे रग लाय। मारू पक्का ग्रव ज्यू, भरइ ज लग्गे वाय।—ढो मा

उ०—३ ढके जस जेती धरण, वडपण अकेवार। इण वर्क 'पातल' ग्रगै, सह सकै ससार।—जैतदान बारहठ

ढकणहार, हारौ (हारी), ढकणियौ—वि०।

ढकवाडणौ, ढकवाडवौ, ढकवाणौ, ढकवावौ, ढकवावणौ, ढकवावबौ, ढकाडणौ, ढकाडवौ, ढकाणौ, ढकावौ, ढकावणौ, ढकावबौ—प्रे०रू०

ढकिग्रोड़ौ, ढकियोडौ, ढक्योडौ—भू०का०कृ०।

ढकीजणौ, ढकीजबौ—कर्म वा०।

ढकियोडौ—देखो 'ढाकियोडौ' (रू.भे) (स्त्री० ढकियोडी)

ढकर-वि०—शून्य, निर्जन।

सं०स्त्री०—एक प्रकार का वाद्य ? उ०—ढमढमइ ढमढमकार ढकर, ढोल ढोळी जगिया। सुरकरहि रणसरणाइ समुहरि, रसि समरगिया।
—स्रीधर

ढकुण-सं०पु०—१ एक प्रकार का वाद्य (जैन) २ खटमल (जैन)

ढकौ-वि०—१ ढका हुग्रा २ असुहावना, अप्रिय।

ढखर, ढखरौ-सं०पु०—वह वृक्ष जिसके पत्ते गिर गए हों, बिना पत्तो वाला वृक्ष।

वि०—१ उदासीन, खिन्न २ असुहावना, बेढंगा। (मि० ढाखरौ)

ढग-सं०पु०—१ व्यवस्था, प्रबध। उ०—रूड़ा गुळया रजपूत विरामण मिळगा विटळा। वेस्य मिळ गया विरुळ सूद्र कुळ रळगा सिटळा। चोढंधाडै चोर ढग बिन ठेटग ढेढ़ी। जिके नहीं किए जोग मिळ्या घर घर रा मेढी।—ऊ का

मुहा०—ढग करणौ—व्यवस्था करना, प्रबन्ध करना।

यौ०—ढग ढाळ, ढग-ढाळौ, ढगमर, ढगौ-ढग, रग-ढग।

२ पद्धति, प्रणाली, तरीका।

मुहा०—ढग रौ—ढग का होना, ठीक होना, व्यवहारिक होना, सुन्दर होना।

यौ०—ढगसर, ढगौ-ढग।

३ वैभव, ऐश्वर्य ४ उपाय, युक्ति।

मुहा०—ढग निकाळणौ—ढग निकालना, कोई रास्ता या युक्ति मालूम करना।

५ प्रकार, भांति, तरह, क़िस्म. ६ दशा, हाल।

उ०—१ तिमडै सै विजै रोइ ग्रर कहियो—भोपतजी रौ इसडौ ढग हुग्रौ। भोपतजी वैकुठ सिधाया।—द वि

उ०—२ डहती डूनी-सी भूली ढग ढागै। मोटी ग्राख्या री रोटी मुख मागै। तोता वोता मे रै'ता तुतळाता, वाता वीसरगा वै'ता वतळाता।—ऊ का.

मुहा०—ढग मार्थ लाणौ—ढग पर लाना, अपने कार्य के योग्य बनाना।

यौ०—ढग-ढाळ, ढग-ढाळौ।

७ स्वरूप, बनावट, ढाचा। ज्यू—ग्रा पोळ दूजै ढग री बणियोडी है।

८ लक्षण, ग्राभास। ज्यू—इण काम रै होवण री ढग को दीसै नी।

यौ०—ढग ढाळ, ढगढाळौ, रग ढग।

९ चाल-ढाल, ग्राचरण। उ०—करहै असवारी क्रियां, सोना हरणी सग। उण ढोला ज्यू ग्रापरौ, ढोतौ मानै ढग।—वा दा

मुहा०—ढग वरतणौ—ढग से चलना, अच्छा ग्राचरण करना, व्यवहारिक होना, शिष्टाचार दिखाना, मितव्ययिता से काम चलाना।

यौ०—ढग-ढाळ, ढग-ढाळौ, ढगसर, ढगौ ढग।

ढग उजाड-सं०स्त्री०—घोडे के दुम के नीचे की भँवरी (अशुभ)

ढगढ़ाळ, ढगढ़ाळौ-सं०पु०यौ०—१ व्यवस्था, प्रबन्ध. २ दशा, हालत ३ लक्षण, ग्राभास ४ चाल-ढाल, ग्राचरण।

ढगणौ, ढगबौ-क्रि०स०—१ (अनाज ग्रादि) निश्चित परिमाण के माप से मापना. २ तोलना।

ढगसर-वि०यौ०—१ ठीक, अच्छा। उ०—मकान बण्योडो-ई ढगसर

हो २ क्रमश ३ सुचारु।

ढगियोडो-भू०का०कृ०—१ (अनाज आदि) निश्चित परिमाण के माप से मापा हुआ. २ तोला हुआ।
(स्त्री० ढगियोडी)

ढगी-वि०—१ खेल मे हारा हुआ २ प्रतियोगिता मे पिछड जाने वाला।
स०पु०—मेहतर, भगी।

ढगो-ढ्ग-क्रि०वि०—१ उचित स्थान पर. २ व्यवस्थित।

ढचो—देखो 'ढूचो' (रू भे)

ढढ-स०पु०—१ पुराना तालाव जो काश्त के काम आता हो।
२ कीचड, पक (जैन)
वि०—मूर्ख। उ०—अगार तणी वेटी, दाहज्वर तणी वहिनि, साप मायइ सउयउ फाडइ, जिसी केवळिइ हाळाहळि विखि जडी हुइ, इसी ढढ़ स्त्री।—व स.

ढढ्ण-स०पु०—१ एक ऋषि का नाम (जैन) ०—धन-धन स्री ढढण रिखि, नेमि प्रसरयउ जेहो जी। अलाभ परिसउ जिण सह्यउ, दुरवळ कीधी देही जी।—स कु

ढढ़णो, ढढवो—देखो 'ढूढणो, ढूढवो' (रू.भे.)

ढढ़ाड—देखो 'ढूढाड' (रू भे)

ढढ़ाळणो, ढढ़ाळवो—देखो 'ढढोळणो, ढढोळवो' (रू भे)

ढढ़ाळियोटो—देखो 'ढढोळियोडो' (रू भे)
(स्त्री० ढढाळियोडी)

ढढ़ाहर—देखो 'ढूढाड' (रू भे)

ढढ़ो—देखो 'ढाढो' (रू भे)

ढढ़ेर-स०पु० (बहु व०) मरे हुए पशुओ की हड्डिया, अस्थि-पजर।

ढढ़ेरो, ढढेरवो-स०पु०—ढिढोरा पीटने वाला। उ०—नगर मध्य आया तिमे रे, ढढेरा नो ढोल। राजा वाजा साभळी रे, वोलै एहवा वल रे।—प.च चौ

ढढ़ेरणो, ढढ़ेरवो—देखो 'ढढोळणो, ढढोळवो' (रू.भे)
ढढोरणहार, हारो (हारी), ढढ़ोरणियो—वि०।
ढढ़ोराड़णो, ढढोराडवो, ढढ़ोराणो, ढढ़ोरावो, ढढ़ोरावणो, ढढ़ोरावबो—प्रे०रू०।
ढढ़ोरिओडो, ढढ़ोरियोडो, ढढ़ोरयोड़ो—भू०का०कृ०।
ढढोरीजणो, ढढ़ोरीजवो—कर्म वा०।

ढढ़ोरियो-स०पु०—ढिढोरा पीटने वाला, घोषणा करने वाला।

ढढ़ोरियोडो—देखो 'ढढ़ोळियोड़ो' (रू भे)
(स्त्री० ढढोरियोडी)

ढढ़ोरो-स०पु०—१ वह ढोल जिसे वजा वजा कर किसी वात की घोषणा की जाय।
मुहा०—ढढोरो पीटणो—ढोल वजा कर प्रचार करना, चारो ओर जताना।
२ वह घोषणा जो ढोल वजा कर की जाय। उ०—१ तद मोजडी राजा उवा देखनै ढढ़ोरो फेरियो, कहियो इयं मोजडी री जोडी पैदास करो तो जैनु आधो राज अर वेटी परणाऊ।—चौवोली
उ०—२ राजा ढढ़ोरो फेरियो, प्रगट नाम म्हारो लीजो रे।
—जयवाणी
मुहा०—ढढोरो फेरणो—देखो 'ढढोरो पीटणो'।
रू०भे०—ढडोळो, ढढोळो, ढिढ़ोरो।

ढढ़ोळणो-वि०—१ घुमाने वाला, फिराने वाला। उ०—भाजणो त्रिवेघी घडा, भेळणो भिडज भालै। ढाहणो गयदा खेती, ढढोळणो ढाल। आगळी दळा अभग जैतखभ हुवो जुधै, जोधाहरो जगजेठ जोध जगमाल।—जगमाल राठोड रो गीत
२ तलाश करने वाला, ढूढने वाला ३ लूटने वाला. ४ सहार करने वाला, मारने वाला. ५ पीटने वाला. ६ नगारा, ढोल आदि वजाने वाला. ७ सहलाने वाला ८ टटोलने वाला।

ढढोळणो, ढढ़ोळवो-क्रि०स०—१ लूटना। उ०—१ कध कुहाडो करि मिळै, तो पाछो वळै कटक्क। नही गढ़ ढढ़ोळस्यै, लेम्यै नगर भटक्क।—सीपाळ रास
उ०—२ दखणी दहवाटा किया, दौलतावाद डरिया। गज थाट कीध गहट्ट, ढढोळे हाट चोहट्ट।—गु.रू व.
उ०—३ वहुलोल साहि सउ वोलि वोल, ढीली ढढोळि वावाडि ढोल। पुर फतै लाइ झीझणू पाइ, राखिया वाह दे रोपि राइ।
—रा ज.सी
उ०—४ विघूस्यो देस किया सहि चक्कि, कमघ्घज दीठ्ठा मेच्छ कटक्कि। महम्मद मारण मोटिम मल्ल, ढढोळण ढिल्लिउ एकम ढल्ल।—रा ज रासो
२ सहार करना, मारना. ३ पीटना, मारना. ४ (नगारा, ढोल आदि) वजाना, पीटना.
५ घुमाना, फिराना (लाठी, ढाल आदि) ६ तलाश करना, ढूढना।
उ०—१ सोळ की सारै मछर मारै, ढढोळै पहाड। वाळीसा वोए फौजा ढोए, मलवट्टै मेवाड़।—गु रू.व.
उ०—२ ले पायै घानिया मेर, साखा कर कर वाढै। वळावध ढढ़ोळ 'कमो', अळगा हू काढै।—गु रू व.
७ टटोलना, ढूढना। उ०—ढाढ़ी एक सदेसडउ, प्रीतम कहिया जाइ। सा धण वळि कुइला भई, भसम ढढ़ोळिसि जाइ।—ढो मा
८ सहलाना। उ०—प्रह फूटी दिसि पुडरी, हणहणिया हय-थट्ट। ढोलइ धण ढढ़ोळियउ, सीतळ सुदर घट्ट।—ढो.मा
ढढ़ोळणहार, हारो (हारी), ढढ़ोळणियो—वि०।
ढढ़ोळवाडणो, ढढोळवाडवो, ढढोळवाणो, ढढोळवावो, ढढोळवावणो, ढढोळवाववो, ढढोळाडणो, ढढ़ोळाडवो, ढढोळाणो, ढढोळावो, ढढोळावणो, ढढोळाववो—प्रे०रू०।
ढढ़ोळिओड़ो, ढढ़ोळियोड़ो, ढढोळ्योडो—भू०का०कृ०।

ढढोळीजणौ, ढढोळीजवौ—कर्म वा० ।

ढढळणौ, ढढळवौ, ढढोरणौ, ढढोरवौ, ढढाळणौ, ढढाळवौ, ढमढोळणौ, ढमढोळवौ—रू०भे० ।

ढढोळियोडो–भू०का०कृ०—१ लुटा हुआ, छिना हुआ २ सहार किया हुआ, मारा हुआ ३ पीटा हुआ, मारा हुआ ४ (नगारा, ढोल आदि) वजाया हुआ, पीटा हुआ ५ घुमाया हुआ, फिराया हुआ ६ तलाश किया हुआ, ढूढा हुआ ७ टटोला हुआ, ढूढा हुआ ८ सहलाया हुआ।

(स्त्री० ढढोळियोडी)

ढढोळौ—देखो 'ढढोरो' (रू भे) उ०—राता जागण री जगळ मे रोळौ। ढाणी ढाणी मे फिरतौ ढढोळौ। धुणता नर माथा चुणता धर धाडा। पावू हरवू रा सुणता परवाडा।—ऊ का.

ढपणौ, ढपवौ–क्रि०अ०—आच्छादित होना, ढक जाना।

उ०—सव सेन हल्लिय सत्थ, पाथोद लहर प्रभत्त। उड गिरद ढपिय अवक, चकचौंघ हुय चहु चक्क।—केहरप्रकास

ढपियोडो–भू०का०कृ०—आच्छादित हुवा हुआ, ढक गया हुआ।

(स्त्री० ढपियोडी)

ढळक–स०स्त्री०—सेना, फौज (वां दा)

ढ–स०पु०—१ ढोल २ भैरव. ३ श्वान. ४ ढक्कन, ५ मृग ६ दात ७ गधा ८ स्वाद. ९ शब्द।

स०स्त्री०—१० विल्ली (एका.)

वि०—निर्गुण (एका)

ढइचाळ—देखो 'ढीचाळ' (रू भे) उ०—तळहटी आइ रोडिय तवल्ल, ढइचाळ पूठी ढळकती ढल्ल।—रा ज सी

ढक–स०पु० [स० ढक्का] १ वडा ढोल। उ०—मधुर ध्वनि गाजइ रे अपार, सुभिक्षइ जय ढक वाजइ सार।—नळ दवदती रास

२ मूली नामक तरकारी (जैसलमेर)

रू०भे०—ढकी, ढको, ढक्क, ढक्कु।

३ देखो 'ढाकणी' (मह, रू भे)

ढकचाळ, ढकचाळौ—देखो 'धकचाळ, धकचाळौ' (रू भे)

उ०—१ राणी जाया च्यार हजार, सूर सवळ मोटा जूझार। दोडचा ले करवाळ, धूम मचायो माडचो ढकचाळ।—प च.चौ

उ०—२ मची धन लूबी कूह कराळ। चहौ ढिग होय रह्यौ ढकचाळ
—राज विलास

ढकण—देखो 'ढाकणी' (मह, रू भे)

ढकणउ—देखो 'ढाकणी' (रू भे.)

ढकणसरीर–स०पु०—वस्त्र (अ.मा)

ढकणि—देखो 'ढाकणी' (अल्पा, रू भे)

ढकणी—१ देखो 'ढाकणी' (अल्पा., रू भे)

२ देखो 'ढाकणी' (रू.भे) उ०—कोरौ कळस कुमार, वणावै आखा लावै। व्यावा वेहा रोप, नेग विन नीरै पावै। खोपर ढकणी खिडा, वीर वनडो वण ज्यावै। माटी मगळकार, निरतर काज सरावै।—दसदेव

ढकणौ—देखो 'ढाकणी' (रू भे)

ढकणौ, ढकवौ–क्रि०अ०—१ आच्छादित होना, ढका जाना।

उ०—अइ सोई वौ भरोसा दारतौ पहला पडगो नै पछै पाखती मालक घावा ढक मुरछा आय पडियो।—वी स टी.

२ देखो 'ढाकणी, ढाकवौ' (रू भे)

ढकणहार, हारौ (हारी), ढकणियौ—वि०।

ढकवाडणौ, ढकवाडवौ, ढकवाणौ, ढकवावौ, ढकवावणौ, ढकवाववौ, ढकाडणौ, ढकाडवौ, ढकाणौ, ढकावौ, ढकावणौ, ढकाववौ—प्रे०रू०

ढकिओडो, ढकियोडो, ढक्योडो—भू०का०कृ०।

ढकीजणौ, ढकीजवौ—भाव वा०, कर्म वा०।

ढकवत्थुल–स०पु० [स० ढकवास्तुल] एक प्रकार की हरी तरकारी (जैन)

ढकियोडो–भू०का०कृ०—१ आच्छादित हुवा हुआ, ढका गया हुआ

२ देखो 'ढाकियोडो' (रू.भे)

(स्त्री० ढकियोडी)

ढकी—देखो 'ढक' (२) (रू भे.)

ढकेलणौ, ढकेलवौ—देखो 'धकेलणौ, धकेलवौ' (रू भे)

ढकेलियोडो—देखो 'धकेलियोडो' (रू भे)

(स्त्री० ढकेलियोडी)

ढकोळौ—देखो 'ढळौ' (रू भे.)

उ०—कोई खोदवानै तौ मजूरी काज आता। गैलागीर आता सो ढकोळा नाखि जाता।—शि व

ढकोसळौ–स०पु० [स० ढग+स० कौशल] मतलव साधने या धोखा देने के लिये किया जाने वाला आयोजन, आडम्बर, पाखण्ड।

क्रि०प्र०—करणी, फैलाणी।

यौ०—ढकोसळावाज।

ढकौ, ढक्क—देखो 'ढक' (रू भे) उ०—१ काहळ कलयळ ढक्क बूक त्र वक नीसाणा। तउ मेल्हीउ भगदत्ति राइ गजु करीउ सढाणा।
—प.प च.

उ०—२ त पइसारउ सघहु कियउ, वज्जहि वज्जतेहि। जिम रामहि अवडा नयरि, ढक्क वुक्क पमुहेहि।—ऐ जै का स.

ढक्कण—देखो 'ढाकणी' (मह, रू भे.)

ढक्कणौ, ढक्कबौ—१ देखो 'ढकणौ, ढकवौ' (रू भे)

उ०—धाये बद्दळ धूम के, छाये छिति ढक्कै।—वं भा.

२ देखो 'ढाकणौ, ढाकवौ' (रू भे.)

ढक्कारव–स०पु०—४९ क्षेत्रपालो मे से ३०वा क्षेत्रपाल।

ढक्कियण–वि०—आच्छादित करने वाला। उ०—धर-अवर-ढक्कियण, वेद-ब्रह्मा-विमतारण। त्रिभुवन-तारण-तरण, सरण-असरण-साधारण।—ह.र.

ढक्कियोडो—देखो 'ढाकियोडो' (रू.भे)
(स्त्री० ढक्कियोडी)

ढक्कु—देखो 'ढक' (रू.भे) उ०—मधुर स्वरी करीउ गाजइ, जाणे सुभिक्ष भूपति आवता जय ढक्कु वाजइ।—व स.

ढगण-स०पु० [सं०] एक मात्रिक गण जो तीन मात्राओं का होता है।

ढगमगणो, ढगमगबो—देखो 'डगमगणो, डगमगबो' (रू भे)
उ०—मुडै माळवो आज चीतोड मचकोडतो, छात री छा रणथभ छायो। ढेलडी ढगमगी कोट गढ धूजिया, आगरो वीयं श्रो 'माल' आयो।—राव मालदेव री गीत

ढगमगियोडो—देखो 'डगमगियोडो' (रू.भे)
(स्त्री० ढगमगियोडी)

ढगळ—१ देखो 'ढळो' (मह, रू भे) उ०—१ ढूंग उघाडै ढगळ, मूछ मुख घुरड मुडावै। जन्मभूमि मे जाय भीख ले जन्म भडावै।
—ऊ का.

उ०—२ छह गज कळी कागरा छाजा, पडिया ढगळ हुवै पाखाण। भाखे कमध सुणो भूपतिया, कोरत महल अमर कमठाण।
—राव गागो

उ०—३ काकड प्रबळ वाहणी काढे, महपत सबळ घणा मल माण। सत्रहर ढगळ करै सह सूधा, दळ चावार फेरै दईवाण।
—वरजूबाई

ढगळणो ढगळबो-क्रि०स०—प्रहार करना।

ढगळियोडो—भू०का०कृ०—प्रहार किया हुआ।
(स्त्री० ढगळियोडी)

ढगलो—देखो 'ढिगलो' (रू भे)

ढगळो—देखो 'ढळो' (अल्पा, रू भे.)
उ०—लाज न लेखइ लोक नी, लाही रही निमेख। घर अबर ढगळइ घसिइ? सिउ सळसळसिइ सेख।—मा का.प्र

ढगलो—देखो 'ढिगलो' (रू भे)

ढगास-स०पु०—ढेर, राशि।

ढचको—स०पु०—१ खासी चलने की क्रिया या भाव।
२ देखो 'घचको' (रू.भे)
रू०भे०—ढचरको।

ढचरको—स०पु०—१ लगडा कर चलने की क्रिया या भाव
२ चाल विशेष की क्रिया।
उ०—मालदे दूसरा हूत न धरै मगज, सरब तज बाक चख रात समळा। करतो नही पाडोसिया ढचरका, कमध सू लचरका लिये कमळा।—
३ देखो 'ढचको' (रू भे.)

ढचरी-म०स्त्री०—प्रेतनी, डायन। उ०—ढिग आविय लार लिया ढचरी, ककाळण चारण तू कछरी।—पा.प्र
वि०—बूढा, बुड्ढी, असक्त।

ढचरो-वि० (स्त्री० ढचरी) वृद्ध, बुड्ढा, अशक्त।
उ०—दत्त सराडा दोय, कोरत रा कांधा 'कर्म'। हमैं न ढचरो होय, माग न भालै 'मूळसी'।—अज्ञात
स०पु०—ढग, व्यवस्था।

ढढाळणो, ढढाळबो—देखो 'ढढोळणो, ढढोळबो' (रू भे.)

ढड्ढ, ढड्ढर-स०पु० [स० ढढ्ढर] १ वक्षस्थल।
उ०—केते होदन कगुरा, खुरताळ खणक्कं। कपि कळेजा कै कटे, कै ढढ्ढर ढक्कै।—व.भा.
२ राहुदेव का नाम (जैन) ३ एक प्रकार की ध्वनि विशेष (जैन)

ढणणक-स०स्त्री०—एक ध्वनि विशेष।

ढणहण-स०स्त्री०—किसी पदार्थ के चूने, टपकने, रिसने या गिरने की क्रिया या भाव। उ०—तउ कुमर निच्छय जणिए जाणेवि ढणहण नयणि नीर झरती।—ऐ जै का स

ढ'णो, ढ'बो—देखो 'ढहणो, ढहबो' (रू भे)
उ०—जम तत्र फबतो 'जसो', लिया खत्रवट लाज। छत्र हुतो छत्र धारिया, अत्र ढयो दिन आज।—ऊ का.

ढपणो, ढपबो-क्रि०स०—आच्छादित करना, ढकना।
उ०—आप रहदे अघ अळग, पर छिद्र निस दीह ढपदे।
ढप्पणो, ढप्पबो—रू०भे०। —केसोदास गाडण

ढपला-स०पु० (बहु व०) १ ढोग, आडम्बर, पाखण्ड।
उ०—१ दुनिया नै ठागो बतावण सारू श्रै झाडागर ढपला करै। श्रै तो फगत रिपिया कमावण री अटकळा है।—वाणी
उ०—२ राणी माडया ढपला नै सोगो रे, माहरै म्हाला को पडै वियोगो रे।—जयवाणी
क्रि०प्र०—करणा।
२ बहाना, होला।
क्रि०प्र०—करणा।

ढपलागारो, ढपलाळो-वि० (स्त्री० ढपलागारी, ढपलाळी) १ ढोग करने वाला, आडम्बर करने वाला. २ बहाना करने वाला।
रू०भे०—ढफलागारो, ढफलाळो।

ढपियोडो—भू०का०कृ०—आच्छादित किया हुआ, ढका हुआ।
(स्त्री० ढपियोडी)

ढपोरसख, ढपोळसख—देखो 'डपोरसख' (रू.भे)

ढप्पणो, ढप्पबो—देखो 'ढपणो, ढपबो' (रू भे)

ढप्पियोडो—देखो 'ढपियोडो' (रू भे.)
(स्त्री० ढप्पियोडी)

ढफ-वि०—मूर्ख, नासमझ।

ढफल-स०पु०—पाखण्ड, आडम्बर।

ढफलागारो, ढफलाळो—देखो 'ढपलागारो, ढपलाळो' (रू.भे)
(स्त्री० ढफलागारी, ढफलाळी)

ढबवो-स०पु०—किसी भारी वस्तु का ऊपर से पानी मे गिरने के कारण होने वाला शब्द।

ढढोळीजणो, ढढोळीजवो—कर्म वा० ।

ढढळणो, ढढळवो, ढढोरणो, ढढोरवो, ढढाळणो, ढढाळवो, ढम-ढोळणो, ढमढोळवो—रू०भे० ।

ढढोळियोडो–भू०का०कृ०—१ लुटा हुआ, छिना हुआ. २ सहार किया हुआ, मारा हुआ ३ पीटा हुआ, मारा हुआ ४ (नगारा, ढोल आदि) बजाया हुआ, पीटा हुआ ५ घुमाया हुआ, फिराया हुआ ६ तलाश किया हुआ, ढूढा हुआ ७ टटोला हुआ, ढूढा हुआ ८ सहलाया हुआ ।

(स्त्री० ढढ़ोळियोडी)

ढढोळौ—देखो 'ढढोरौ' (रू भे) उ०—राता जागण रो जगळ मे रोळो । ढाणी ढाणी मे फिरतो ढढोळौ । घुणता नर माथा चुणता घर घाडा । पावू हरबू रा सुणता परवाडा ।—ऊ का.

ढपणो, ढपवो–क्रि०अ०—आच्छादित होना, ढक जाना ।

उ०—सव सेन हल्लिय सत्थ, पायोद लहर प्रभत्त । उड गिरद ढपिय अवक, चकचौंध हुय चहु चक्क ।—केहरप्रकास

ढपियोडो–भू०का०कृ०—आच्छादित हुवा हुआ, ढक गया हुआ ।

(स्त्री० ढपियोडी)

ढळक–स०स्त्री०—सेना, फौज (बां दा)

ढ–स०पु०—१ ढोल २ भैरव. ३ श्वा. ४ ढक्कन, ५ मृग ६ दात ७ गधा ८ स्वाद ९ शब्द ।

स०स्त्री०—१० बिल्ली (एका.)

वि०—निर्गुण (एका)

ढइचाळ—देखो 'ढीचाळ' (रू भे) उ०—तळहटी आइ रोडिय तवल्ल, ढइचाळ पूठी ढळकती ढल्ल ।—रा ज सी

ढक–स०पु० [स० ढक्का] १ बडा ढोल । उ०—मघुर ध्वनि गाजइ रे अपार, सुभिक्षइ जय ढक वाजइ सार ।—नळ दवदती रास

२ मूली नामक तरकारी (जैसलमेर)

रू०भे०—ढकी, ढको, ढक्क, ढक्कु ।

३ देखो 'ढाकणो' (मह , रू भे)

ढकचाळ, ढकचाळौ—देखो 'घकचाळ, घकचाळौ' (रू.भे)

उ०—१ राणी जाया च्यार हजार, सूर सबळ मोटा जूझार । दोडया ले करवाळ, धूम मचायो माडचो ढकचाळ ।—प च.चौ

उ०—२ मची घन लूवी कूह कराळ । चहो ढिग होय रह्यो ढकचाळ —राज विलास

ढकण—देखो 'ढाकणो' (मह , रू भे)

ढकणउ—देखो 'ढाकणो' (रू भे.)

ढकणसरीर–स०पु०—वस्त्र (अ.मा)

ढकणि—देखो 'ढाकणी' (अल्पा., रू भे)

ढकणी—१ देखो 'ढाकणो' (अल्पा., रू भे.)

२ देखो 'ढाकणी' (रू.भे.) उ०—कोरो कळस कुभार, वणावै आखा लावै । व्यावा वेहा रोप, नेग विन नीरै पावै । खोपर ढकणी खिडा, वीर वनडो वण ज्यावै । माटी मगळकार, निरतर काज सरावै ।—दसदेव

ढकणो— देखो 'ढाकणो' (रू भे)

ढकणो, ढकवो–क्रि०अ०—१ आच्छादित होना, ढका जाना ।

उ०—भड सोई वो भरोसा दारतो पहला पडगो नै पछै पासती मालक घावा ढक मुरछा आय पडियो ।—वी स टी.

२ देखो 'ढाकणो, ढाकवो' (रू भे)

ढकणहार, हारो (हारी), ढकणियो—वि० ।

ढकवाडणो, ढकवाड़वो, ढकवाणो, ढकवावो, ढकवावणो, ढकवावबो, ढकाउणो, ढकाडवो, ढकाणो, ढकावो, ढकावणो, ढकावबो—प्रे०रू०

ढकिओड़ो, ढकियोडो, ढक्योडो—भू०का०कृ० ।

ढकीजणो, ढकीजवो—भाव वा०, कर्म वा० ।

ढकवत्थुल–स०पु० [स० ढकवास्तुन] एक प्रकार की हरी तरकारी (जैन)

ढकियोडो–भू०का०कृ०—१ आच्छादित हुवा हुआ, ढका गया हुआ.

२ देखो 'ढाकियोडो' (रू भे)

(स्त्री० ढकियोडी)

ढकी—देखो 'ढक' (२) (रू भे.)

ढकेलणो, ढकेलवो—देखो 'घकेलणो, घकेलवो' (रू भे)

ढकेलियोडो—देखो 'धकेलियोडो' (रू भे)

(स्त्री० ढकेलियोडी)

ढकोळौ—देखो 'ढळौ' (रू भे.)

उ०—कोई खोदवानै तो मजूरी काज आता । गैलागीर आता सो ढकोळा नाखि जाता ।—शि व

ढकोसळौ–स०पु० [स० ढग+स० कौशल] मतलब साधने या धोखा देने के लिये किया जाने वाला आयोजन, आडम्बर, पाखण्ड ।

क्रि०प्र०—करणो, फैलाणो ।

यौ०—ढकोसळावाज ।

ढको, ढक्क—देखो 'ढक' (रू भे) उ०—१ काहळ कळयळ ढक्क बूक त्र वक नीसाणा । तउ मेल्हीउ भगदत्ति राइ गजु करीउ सढाणा । —प.प.च.

उ०—२ त पइसारउ सघहु कियउ, वज्जहि वज्जतेहि । जिम रामहि अवडा नयरि, ढक्क बुक्क पमुहेहि ।—ऐ जै का स

ढक्कण—देखो 'ढाकणो' (मह , रू भे)

ढक्कणो, ढक्कवो—१ देखो 'ढकणो, ढकवो' (रू भे)

उ०—धाये वद्दळ धूम के, छाये छिति ढक्कै ।—वं भा.

२ देखो 'ढाकणो, ढाकवो' (रू भे.)

ढक्कारव–स०पु०—४९ क्षेत्रपालो मे से ३०वा क्षेत्रपाल ।

ढक्कियण–वि०—आच्छादित करने वाला । उ०—धर-अबर-ढक्कियण, वेद-ब्रह्मा-विसतारण । त्रिभुवन-तारण-तरण, सरण-असरण-साधारण ।—ह.र.

ढकियोड़ो—देखो 'ढाकियोडो' (रू.भे.)
(स्त्री० ढकियोडी)

ढक्कु—देखो 'ढक' (रू.भे) उ०—मधुर स्वरी करीउ गाजइं, जाणे सुभिक्ष भूपति प्रावता जय ढक्कु वाजइ।—व स.

ढगण-स०पु० [स०] एक मात्रिक गण जो तीन मात्राओं का होता है।

ढगमगणो, ढगमगबो—देखो 'डगमगणो, डगमगवो' (रू भे)
उ०—मुहं माळवो प्राज चीतोड मचकोडतो, छात री छा रणथभ छायो। ढेलडी ढगमगी कोट गढ़ धूजिया, प्रागरो वीयं प्रो 'माल' प्रायो।—राव मालदेव रो गीत

ढगमगियोडो—देखो 'डगमगियोड़ो' (रू.भे)
(स्त्री० ढगमगियोडी)

ढगळ—१ देखो 'ढळो' (मह, रू.भे) उ०—१ दूंग उघाडै ढगळ, मूछ मुख घुरड मुडावै। जन्मभूमि मे जाय मीस ले जन्म भडावै।
—ऊ.का.
उ०—२ छह गज कळी कागरा छाजा, पडिया ढगळ हुवै पाखाण। भाखै कमध सुणो भूपतियां, कीरत महल प्रमर कमठाण।
—राय गागो
उ०—३ काकड प्रबळ वाहणो काडै, महपत सबळ घणा मल माण। सत्रहर ढगळ करै सह सूधा, दळ चावार फेरै दईवाण।
—वरजूबाई

ढगळणो ढगळबो—क्रि०स०—प्रहार करना।

ढगळियोड़ो-भू०का०कृ०—प्रहार किया हुआ।
(स्त्री० ढगळियोड़ी)

ढगलो—देखो 'ढिगलो' (रू भे)

ढगळो—देखो 'ढळो' (अल्पा, रू भे.)
उ०—लाज न लेखइ लोक नी, लाही रही निमेख। घर प्रबर ढगळइ पडिइ? सिउ सळसळसिइ सेख।—मा का.प्र

ढगलो—देखो 'ढिगलो' (रू भे)

ढगास-स०पु०—ढेर, राशि।

ढचको—स०पु०—१ खासी चलने की क्रिया या भाव।
२ देखो 'धचको' (रू भे)
रू०भे०—ढचरको।

ढचरको—स०पु०—१ लगडा कर चलने की क्रिया या भाव.
२ चाल विशेष की क्रिया।
उ०—मालदे दूसरा हूत न धरै मगज, सरब तज वांक चख राख समळा। करती नही पाडोसिया ढचरका, कमध सू लचरका लिये कमळा।—
३ देखो 'ढचको' (रू भे.)

ढचरी—स०स्त्री०—प्रेतनी, डायन। उ०—ढिग आविय लार लियां ढचरी, ककाळण चारण तू कचरी।—पा प्र.
वि०—बूढा, बुड्ढी, असक्त।

ढचरौ-वि० (स्त्री० ढचरी) वृद्ध, बुड्ढा, अशक्त।
उ०—दत्त सुराडा दोय, कीरत रा कीधा 'करमं'। हमै न ढचरो होय, माग न भाखै 'मूळसी'।—अज्ञात
स०पु०—ढग, व्यवस्था।

ढढाळणो, ढढाळबो—देखो 'ढढोळणो, ढढोळबो' (रू भे.)

ढड्ढ, ढड्ढर-स०पु० [स० ढड्ढर] १ वक्षस्थल।
उ०—केते होदन कगुरा, खुरताळ खणक्कं। कपि कळेजा कै कटै, कै ढड्ढर ढक्कं।—व-भा.
२ राहुदेव का नाम (जैन) ३ एक प्रकार की ध्वनि विशेष (जैन)

ढणंक-स०स्त्री०—एक ध्वनि विशेष।

ढणहुण-सं०स्त्री०—किसी पदार्थ के चूने, टपकने, रिसने या गिरने की क्रिया या भाव। उ०—तउ कुमर निच्छय जणणि जाणेवि ढणहुण नयणि नीर झरती।—ऐ जै का स

ढ'णो, ढ'वो—देखो 'ढहणो, ढहवो' (रू भे.)
उ०—जप्र तत्र फरतो 'जसो', लिया खत्रवट लाज। छत्र हुतो छत्र धारियां, प्रब ढयो दिन प्राज।—ऊ का

ढपणो, ढपवो-क्रि०स०—प्राच्छादित करना, ढकना।
उ०—प्राप रहदे प्रब प्रळग, पर छिद्र निस दीह ढपदे।
ढप्पणो, ढप्पवो—रू०भे०। —केसोदास गाडण

ढपला-स०पु० (बहु व०) १ ढोग, आडम्बर, पाखण्ड।
उ०—१ दुनिया नै ठागो बतावण सारू प्रै झाडागर ढपला करै। प्रै तो फगत रिपिया कमावण री प्रटकळा है।—वाणी
उ०—२ राणो माडया ढपला नै सोगी रे, माहरै म्हाला को पडै वियोगी रे।—जयवाणी
क्रि०प्र०—करणा।
२ बहाना, हीला।
क्रि०प्र०—करणा।

ढपलागारो, ढपलाळो-वि० (स्त्री० ढपलागारी, ढपलाळी) १ ढोग करने वाला, प्राडम्बर करने वाला. २ बहाना करने वाला।
रू०भे०—ढफलागारो, ढफलाळो।

ढपियोडो-भू०का०कृ०—प्राच्छादित किया हुप्रा, ढका हुप्रा।
(स्त्री० ढपियोड़ी)

ढपोरसख, ढपोळसख—देखो 'डपोरसख' (रू.भे.)

ढप्पणो, ढप्पवो—देखो 'ढपणो, ढपवो' (रू भे)

ढप्पियोड़ो—देखो 'ढपियोडो' (रू भे.)
(स्त्री० ढप्पियोडी)

ढफ-वि०—मूर्ख, नासमझ।

ढफल-स०पु०—पाखण्ड, प्राडम्बर।

ढफलागारो, ढफलाळो—देखो 'ढपलागारो, ढपलाळो' (रू.भे)
(स्त्री० ढफलागारी, ढफलाळी)

ढवदो-स०पु०—किसी भारी वस्तु का ऊपर से पानी मे गिरने के कारण होने वाला शब्द।

क्रि०प्र०—करणौ, बोलणौ, होणौ।

ढब-स०पु०—१ मौका, अवसर। उ०—पीछे उठा सू कानो वहीर हुवौ। सू सागानेर आयौ। अर रतनसीजी सूणकरणोत सागंजी रा मामा ठिकाणै माजन रा तिणा नू कयौ, 'सागंजी सू म्हारो मुजरो करावौ।' तद रतनसीजी सागंजी सू काने रौ मुजरो करायो। सू हमें कानो सदा सागंजी खनै आवै। अर सागंजी कानै नू नानाणै री जाण अवरोसो राखियो नहीं। सू इण नू आयै नूं दिन दोय हुवा है। पण ढब लागो नहीं, नै तीजै दिन औ कमर में कटारी घाल सागंजी खनै गयो।—द दा

क्रि०प्र०—बैठणौ, लागणौ।

२ सहारा, मदद। उ०—१ ढबां खेती ढबां न्याव, ढबा रै है बूढां री ब्याव।

उ०—२ ढब तूटत दूटाड।—अज्ञात

३ तरकीब, उपाय, युक्ति। उ०—जवाहर जो ढब सूं नित रायरू जादा नै देखै। देखै ज्यौं डेरै नावा-गावा-सू उमेखै।—केहरप्रकास

४ ढग, रीति, तौर। उ०—सफरी पकडण सातरी, बैठौ ढब बुगलाह। कथा बुरी करवा तणौ, चोखौ ढब चुगलाह।—बां दा.

५ व्यवस्था, प्रबन्ध, इन्तजाम। उ०—ऊट च्यार री वांरूद, ऊट दोय री सीसौ, लोहो बीकानेर सू आपरै वळ ढब कर मगाय लियो।
—भाटी सुदरदास बीकूपुरी री वारता

६ मेल, मेल-जोल। ज्यू—औ काम म्हू कराय देसू, वो म्हारै ढब रो आदमी है।

क्रि०प्र०—करणौ, राखणौ, होणौ।

यौ०—ढबोढब।

७ फाल्गुन मास मे बजाया जाने वाला बकरी, भेड, भेडियां आदि के चमडे से मढा हुआ डफ।

रू०भे०—ढव।

ढबक-स०स्त्री०—१ पानी में जल-पात्र डुबाने का भाव २ पानी भरे जल-पात्र के हिलने से होने वाली ध्वनि ३ पानी में किसी ठोस वस्तु के गिरने से होने वाला शब्द ४ हल्की निद्रा, झपकी ५ कलक, दोष।

क्रि०वि०—झट, शीघ्र।

ढबकण-स०स्त्री०—कूए के अन्दर पानी की समान सतह पर बताने वाला माप-दण्ड।

ढबणौ, ढबबौ-क्रि०अ०—रुकना, ठहरना, थमना।

उ०—१ इसडो बचन सुणि विरोध री क्रोध विसारि विजयसूर री जोडायत कर मे कटार झालि साहस ढबण रै काज रीढ़क रै समीप आपरी पीठ फाडि नेत्र मूढ सूरछित बाळक नू काढि नणद रै हाथ दीधौ।—वं भा.

उ०—२ हू आपनै बुलावण सारू पच हारी, मैनत कर नै थाक गई, तूलसी वरण सारू वरमाळ ले केई वार हुलस चूकी, पण आप झगडो करता ढबौ नहीं।—वी.स.टी.

ढबणहार, हारौ (हारी), ढबणियौ—वि०।

ढबवाड़णौ, ढबवाडबौ, ढबवाणौ, ढबवाबौ, ढबवावणौ, ढबवावबौ, ढबाड़णौ, ढबाडबौ, ढबाणौ, ढबाबौ, ढबावणौ, ढबावबौ—प्रे०रू०।

ढबिग्रोड़ौ, ढबियोड़ौ, ढब्योड़ौ—भू०का०कृ०।

ढबीजणौ, ढबीजबौ—भाव वा०।

ढबियोडौ-भू०का०कृ०—रुका हुआ, ठहरा हुआ, थमा हुआ।

(स्त्री० ढबियोडी)

ढब-स०पु०—१ तांबे का बना एक प्रकार का बड़ा और मोटा पैसा।

वि०वि०—मारवाड राज्य का तांबे का प्राचीन सिक्का विशेष जो महाराजा विजयसिंहजी के राज्य में प्रचलित हुआ था।

२ गुब्बारा।

रू०भे०—ढब्बू।

ढबूसाही—देखो 'ढबू' (१)

ढबूसो-स०पु०—हाथ को अर्द्धचन्द्राकार बना कर गर्दन पकड कर धक्का देने का भाव।

ढबोढब-क्रि०वि०यौ०—१ ठीक ढग से, उचित रीति मे.

२ व्यवस्थित ३ क्रमपूर्वक।

(मि० ढगोढग)

ढब्बण, ढब्बन-स०पु०—योद्धा (?)। उ०—ढब्बन भट भूमी वणत ढाल, करवाळ सत्रु काटन कराळ। स्वामी ससद सुवरण समान, जालमन कोह पै लोह जान।—ऊ का.

ढब्बू—देखो 'ढबू' (रू भे) उ०—सगळी चीजा दरी मायै बिखेरदी—सिगरेटा रा चिळकता जळपू, भात-भात री छापा, भात-भात रा गुळगुचिया, सीप रा बटण, रबड़ रा ढब्बू, चिडिया री रग-रगीली पाखा।—वाणी

ढभीड—देखो 'धमीडो' (मह, रू भे.)

ढभीडो—देखो 'धमीडो' (रू भे)

ढमक-स०स्त्री०—वाद्य की ध्वनि।

रू०भे०—डमक।

ढमकणौ, ढमकबौ—देखो 'डमकणौ, डमकबौ' (रू.भे)

उ०—१ निमट्टो 'जैत' घुरै नीसाण, खळभळ होय दळां सुरसाण। महा मुहि खेत्र चढे बिहु मल्ल, दुलद्दुल ढोल ढमकै ढल्ल।
—रा.ज रासो

उ०—२ ढमकिय वाहर वाहर ढोल।—गो रू

ढमकाडणौ, ढमकाडबौ—देखो 'ढमकाणौ, ढमकाबौ' (रू.भे.)

ढमकाडियोडौ—देखो 'ढमकायोडौ' (रू.भे.)

(स्त्री० ढमकाडियोडी)

ढमकाणौ, ढमकाबौ—देखो 'डमकाणौ, डमकाबौ' (रू भे.)

ढमकायोड़ौ—देखो 'डमकायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० ढमकायोडी)

ढमकारो-स०पु० (अनु०) नक्कारे की ध्वनि, ढोल की आवाज।

उ०—रूपगा हेडाऊ सारा सुपात पावसी रीझा, ढमकारा मद्र गाज बजावसी ढोल। प्रथमी गावसी कीत थावसी समदा पाजा, वारा बंजावसी थारा रंजावसी बोल।—महादान महडू

रू०भे०—ढमकारो।

ढमकावणो, ढमकाववो—देखो 'ढमकाणो, ढमकावो' (रू.भे)

ढमकावियोडो—देखो 'ढमकायोडो' (रू.भे)
(स्त्री० ढमकावियोडी)

ढमकियोडो—देखो 'ढमक्रियोडो' (रू भे)
(स्त्री० ढमक्यियोडी)

ढमको—देखो 'ढमको' (रू भे)

ढमक्कणो ढमक्कवो—देखो 'ढमकणो, ढमकवो' (रू भे)
उ०—ढाणी रे ढाणी भ्रखडो ढहै उच्छव, गाळ कसूवो रे ढोल ढमक्कं। ढकं री चोट अ वाळ धमक्कं, घरती रा किरसाण घमकं।
—चेतमानखा

ढमक्कियोडो—देखो 'ढमक्यियोडो' (रू.भे)
(स्त्री० ढमक्यियोडी)

ढम-स०पु० (अनु०) नक्कारे, ढोल आदि की ध्वनि, आवाज।
उ०—विहु दाळि ढमढम ढोल ढमकई, वर्ण वाजिया रणतूर। गळी रात्रि प्रभात अवर, उदय ऊग्यो सूर।—रुकमणी मंगळ
यौ०—ढमढम, ढमाढम।

ढमक-स०स्त्री०—१ गति या चाल विशेष २ देखो 'ढमक' (रू भे)

ढमकणो ढमकवो-क्रि०अ०—(ढोल, नक्कारे आदि का) बजना, ध्वनि निकलना। उ०—१ साहण वसि सुरताण दळ, समुहरि जिम ढमकत। तिम तिम ईडर सिहर वरि, ढोल गहिर ढमकत।—स्रीधर
उ०—२ टीली वात म ढाहि, पुण्य री कारज पडता। ढीली वात म ढाहि, वहम सू पडियो टाहि, न्याय सूधो नीवडता। ढीली वात म ढाहि, वहम सू पडियो वोलै, ढीली वात म ढाहि ढमकिया वाहर ढोलै। सहुकरै पूछि आगै सुजस, ढीली तठै न ढाहिजै। आवियै दाव औढमता, कुळ धरमसीह कहाइजै।—घरमसीह
ढमकणहार, हारो (हारी), ढमकणियो—वि०।
ढमकवाडणो, ढमकवाडवो, ढमकवाणो, ढमकवायो, ढमकवाणो, ढमकाववो—प्रे०रू०।
ढमकाडणो, ढमकाडवो, ढमकाणो, ढमकावो, ढमकावणो, ढमकाववो—क्रि०स०।
ढमकिओडो, ढमकियोडो, ढमक्योडो—भू०का०कृ०।
ढमकीजणो, ढमकीजवो—भाव वा०।
ढमकणो, ढमकवो, ढमक्कणो, ढमक्कवो—रू०भे०।

ढमकाडणो, ढमकाडवो—देखो 'ढमकाणो, ढमकावो' (रू भे)
ढमकाडणहार, हारो (हारी), ढमकाडणियो—वि०।
ढमकाड़िओडो, ढमकाड़ियोडो, ढमकाड्योडो—भू०का०कृ०।
ढमकाडीजणो, ढमकाड़ीजवो—कर्म वा०।
ढमकणो, ढमकवो—अक०रू०।

ढमकाडियोडो—देखो 'ढमकायोडो' (रू.भे)
(स्त्री० ढमकाडियोडी)

ढमकाणो, ढमकावो-क्रि०स०—(नक्कारा, ढोल आदि) बजाना, ध्वनि करना।
ढमकाणहार, हारो (हारी), ढमकाणियो—वि०।
ढमकायोडो—भू०का०कृ०।
ढमकाईजणो ढमकाईजवो—कर्म वा०।
ढमकणो, ढमकवो—अक०रू०।
ढमकाडणो, ढमकाडवो, ढमकाणो, ढमकावो, ढमकावणो, ढमकायवो, ढमकाडणो, ढमकाडवो, ढमकावणो, ढमकाववो—रू०भे०।

ढमकायोडो-भू०का०कृ०—(नक्कारे, ढोल आदि) बजाया हुआ, ध्वनि किया हुआ।
(स्त्री० ढमकायोडी)

ढमकारो—देखो 'ढमकारो' (रू भे.)

ढमकावणो, ढमकाववो—देखो 'ढमकाणो, ढमकावो' (रू भे.)
ढमकावणहार, हारो (हारी), ढमकावणियो—वि०।
ढमकाविओडो, ढमकावियोडो, ढमकाव्योडो—भू०का०कृ०।
ढमकावीजणो, ढमकावीजवो—कर्म वा०।
ढमकणो, ढमकवो—अक०रू०।

ढमकावियोडो—देखो 'ढमकायोडो' (रू भे)
(स्त्री० ढमकावियोडी)

ढमकियोडो-भू०का०कृ०—(नक्कारा, ढोल आदि) बजा हुआ, ध्वनि किया हुआ।
(स्त्री० ढमकियोडी)

ढमको-स०पु० (अनु०) १ नक्कारे, ढोल आदि पर प्रहार करने पर उत्पन्न ध्वनि। उ०—१ कूवो पूज घर पाछी आई, फळसं वडता वोली यू। फळसं मे ढोला रै ढमकं, आरतडी करवायं तू।—लो गी.
उ०—२ हसती ये भल लाज्यो, जी वनडा, घुडला ये भल ल्याव। करवा मारू देस का, ढोला कं ढमकं आव।—लो गी
२ शोभा, चमक-दमक।
रू०भे०—ढमको।

ढमक्कणो, ढमक्कवो—देखो 'ढमकणो, ढमकवो' (रू.भे)
उ०—के ग्रगक ववक वजं के ढोल ढमक्कं। के जबुक मडै कवल के कक किलक्कं।—व भा

ढमक्कियोडो—देखो 'ढमकियोडो' (रू भे)
(स्त्री० ढमक्कियोडी)

ढमढमकार-स०स्त्री० (अनु०) नक्कारे, ढोल आदि की ध्वनि।
उ०—ढमढमइ ढमढमकार ढकर, ढोल ढोली जगिया। सरकरहि रणु सरणाइ समुहरि, सरस रसि समरंगिया।—स्रीधर

ढमढमणो, ढमढमवो-क्रि०अ०—ध्वनिमान होना, बजना।

उ०—१ उडी खेह थयू अधारू, गयणि न सूझइ भाण। चाली दळ मुहुजानइ मान्या, डमडमिया नीसाण।—का दे प्र

उ०—२ धापइ अति महुमाण, महिमुद सुरताण, भूपति भुजप्रमाण रहलि मग। डमडमइ ढोल नीसाण, पडइ कायर प्राण, सुहड युगति जाग अनुराग।—प ग

डमडमियोडौ-भू०का०कृ०—ध्वनिमान हुवा हुआ, बजा हुआ।
 (स्त्री० डमडमियोडी)

डमडेर-स०पु०—१ वह भवन जहा कोई आबाद न हो, सूना घर।
 उ०—लकडी थारी रीढ़, लास रोमावळ लै'रा। दिस्सा मठ डमडेर, ईन नळ ऊगा वरा।—दमदेव
 २ वह ढेर जो किसी वस्तु के गिरने से बन गया हो।
 उ०—१ गढ़ पाड कियो डमडेर। कागरा बुरज नाख्या बिखेर।
 —जयवाणी
 उ०—२ कोट करि चोट उपाडि अळगो करो, बुरज गुरजा करि करो हिवं भूक। ढाहि डमडेर गढ घेरि करि पाकडो, करो हिवं वदि दिन अध धूक।—प च चौ

डमडोळणौ, डमडोळवौ—देखो 'ढडोळणौ, ढडोळवौ' (रू भे)

डमडोळियोडौ—देखो 'ढडोळियोडौ' (रू भे)
 (स्त्री० डमडोळियोडी)

डमाडम-स०स्त्री०—ढोल आदि की ध्वनि।
 क्रि०प्र०—करणी, लागणी, होणी।

डयोडौ—देखो 'डहियोडौ' (रू भे.)
 (स्त्री० डयोडी)

डर-स०स्त्री० (अनु०) बकरी, भेड आदि को बुलाने की आवाज।
 रू०भे०—डरर।
 यौ०—डर-डर।

डरकणौ, डरकवौ—देखो 'ढळकणौ, ढळकवौ' (रू भे)
 डरकणहार, हारौ (हारी), डरकणियौ—वि०।
 डरकवाडणौ, डरकवाडवौ, डरकावणौ, डरकाववौ, डरकवावणौ, डरकवाववौ—प्रे०रू०।
 डरकाडणौ, डरकाडवौ, डरकाणौ, डरकावौ, डरकावणौ, डरकाववौ—क्रि०स०।
 डरकिप्रोडौ, डरकियोडौ, डरक्योडौ—भू०का०कृ०।
 डरकीजणौ, डरकीजवौ—भाव वा०।

डरकाडणौ, डरकाडवौ—देखो 'ढळकाणौ, ढळकावौ' (रू भे.)
 डरकाडणहार, हारौ (हारी), डरकाडणियौ—वि०।
 डरकाडिप्रोडौ, डरकाडियोडौ, डरकाड्योडौ—भू०का०कृ०।
 डरकाडीजणौ, डरकाडीजवौ—कर्म वा०।
 डरकणौ, डरकवौ—अक०रू०।

डरकाडियोडौ—देखो 'ढळकायोडौ' (रू भे)
 (स्त्री० डरकाडियोडी)

ढरकाणौ, ढरकावौ—देखो 'ढळकाणौ, ढळकावौ' (रू भे)
 ढरकाणहार, हारौ (हारी), ढरकाणियौ—वि०।
 ढरकायोडौ—भू०का०कृ०।
 ढरकाईजणौ ढरकाईजवौ—कर्म वा०।
 ढरकणौ, ढरकवौ—अक०रू०।

ढरकायोडौ—देखो 'ढळकायोडौ' (रू भे)
 (स्त्री० ढरकायोडी)

ढरकावणौ, ढरकाववौ—देखो 'ढळकाणौ, ढळकावौ' (रू भे.)
 ढरकावणहार, हारौ (हारी), ढरकावणियौ—वि०।
 ढरकाविप्रोडौ, ढरकावियोडौ, ढरकाव्योडौ—भू०का०कृ०।
 ढरकावीजणौ, ढरकावीजवौ—कर्म वा०।
 ढरकणौ, ढरकवौ—अक०रू०।

ढरकावियोडौ—देखो 'ढळकायोडौ' (रू भे)
 (स्त्री० ढरकावियोडी)

ढरकियोडौ—देखो 'ढळकियोडौ' (रू भे)
 (स्त्री० ढरकियोडी)

ढरक्कणौ, ढरक्कवौ—देखो 'ढळकणौ, ढळकवौ' (रू भे)
 उ०—कै वदी बुल्लं बिरद रसवीर उबक्कै। सूर ढरक्कै सम्मुही नभ हूर थरक्कै।—व भा

ढरक्कियोडौ—देखो 'ढळकियोडौ' (रू भे)
 (स्त्री० ढरक्कियोडी)

ढरडकौ-स०पु० (अनु०) ध्वनि विशेष।
 क्रि०प्र०—ऊठणौ, करणौ, होणौ।

ढरडौ—देखो 'ढररौ' (रू भे)

ढरणौ, ढरबौ-क्रि०अ०—१ गिरना, लुढ़कना। उ०—गुण को न लेस ताको बडे गुणवान कहै, दानी कहत जाकै कोडी फरतै ढरं नहीं। कहे रणधीर भग जाय पात खडका ते, उदर गभीर बात तनक जरं नहीं।—र रू
 २ देखो 'ढळणौ, ढळवौ' (रू भे)
 ढरणहार, हारौ (हारी), ढरणियौ—वि०।
 ढरवाडणौ, ढरवाडवौ, ढरवाणौ, ढरवावौ, ढरवावणौ, ढरवाववौ, ढराडणौ, ढराडवौ, ढराणौ, ढरावौ, ढरावणौ, ढराववौ—प्रे०रू०।
 ढरिप्रोडौ, ढरियोडौ, ढरचोडौ—भू०का०कृ०।
 ढरीजणौ, ढरीजवौ—भाव वा०।

ढरर—देखो 'ढर' (रू.भे)
 यौ०—ढरर-ढरर।

ढररौ-स०पु०—१ शैली, प्रणाली, तरीका, ढग. २ पथ, मार्ग. ३ चाल-चलन, चरित्र, आचरण।
 क्रि०प्र०—पडणौ।
 ४ उपाय, युक्ति।
 क्रि०प्र०—काढणौ।

रू०भे०—ढरडो ।

ढरियोडो-भू०का०कृ०—१ गिरा हुआ २ देखो 'ढळियोडो' (रू भे)
(स्त्री० ढरियोडी)

ढल-सं०पु०—१ पंवार वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति.
२ वह नीची भूमि या पहाडी ढाल जो उसके स्वामी अथवा सरकार द्वारा रक्षित हो ।
वि०वि०—इसमे से ग्राम लोग घास, लकडी आदि नही काट सकते तथा पशुओ को नही चरा सकते हैं ।
रू०भे०—ढळ ।
३ देखो 'ढळी' (मह , रू भे) (उ र) उ०—लूवै सळ लागाह, ढळ घेरे गड दोळियां । भागल पड भागाह, चिडिया ढळ पडियो 'चिमन' ।—लिखमीदान बारहठ

ढल-सं०स्त्री०—१ ढाल. २ देखो 'ढळ' (रू भे)

ढलकतो-सं०पु०—हाथी (ना डि को)

ढळक-सं०स्त्री०—१ ढीला चलने की क्रिया या भाव. २ वह स्थान जो लगातार नीचा होता गया हो, ढाल, उतार ३ लुढकने का भाव ४ आंसू गिरने का भाव ।
यौ०—ढळक ढळक ।
५ हिलने-डुलने की क्रिया या भाव ।

ढळकणो, ढळकबो-क्रि०अ०—१ इधर-उधर हिलना, हिलना-डुलना ।
उ०—१ नाजिक अग मे नार, साथ फूला भरि सारो । कटघज केहर लक, भार गहणा को भारी । मद हाम मुळकता, दात चूपा प्रति भळकै । वेसर भळकादार, ढोल नथ मोती ढळकै । सिणगार सारा सजै, वार गोर दूजी वणी । मूदडो भळकि कर मे इसो, जाण किरण सूरज तणी ।—पनां वीरमदे री वात
उ०—२ पासो ढुळै है, हाथ नुळै है, ढीलो नथ ढळकै है, प्रेम री भाई जाहर भळकै है ।—र हमीर
२ पानी या अन्य किसी द्रव पदार्थ का आधार से नीचे की ओर गिरना. ३ लुढकना । उ०—१ मड वच जेणि सेहुरा कामण, कर गेवर मालै फिरमाळ । ढूगी ढाल वेगि ढळकती, तोरण जंतारण रिणताळ ।—दूदो
उ०—२ पारसीपोस आहीन पोस, रेवत खेडि आया सरोस । तळहटी आइ रोडिय तवल्ल, ढइचाळ पूठि ढळकतो ढल्ल ।—रा ज सी
उ०—३ हिंदुळता गै जूह हमल्ला । ढळकै काळो पीळी ढल्ला ।
—गु रू व
उ०—४ वूढा हुवा हो तेजा जेठजी, थाहरै सळ पडिया गालै । कदै न आया पाहुणा, ए ढळकती ढालै ।—देवजी बगडावत री वात
४ भडा फहरना, लहरना । उ०—हुई दळ हूकळ हालि हमल्ल । ढळक्या नेजा आलव ढल्ल ।—रा ज रासो
५ आधार से नीचे की ओर सरकना, लुढकना ६ चलते समय हाथों का इधर-उधर हिलना । उ०—१ खळकतइ चूडइ, भळकते ककणि, ढळकतइ हाथि, सीति गयोदकि हस्तोदकु दीधा ।—व.स
७ वृत्ताकार घूमना, चक्कर लगाता हुआ घूमना, फिरना. ८ मोटाई की ओर से दूसरी ओर क्रमश पतला होता जाना ।
उ०—चउरगली पाली, जडी मूठि, सारऊ आर, त्रिहुत्रवधि जलोई, वीछडी खेलीन, सली खीली, भळकती पाली, अणीयाळी धाराळी ढळकती धार, भळकती मूठि इसी छुरी ।—व स.
ढळकणहार, हारो (हारी), ढळकणियो—वि० ।
ढळकवाडणो, ढळकवाडबो, ढळकवाणो, ढळकवाबो, ढळकवावणो, ढळकवावबो—प्रे०रू० ।
ढळकाड़णो, ढळकाडबो, ढळकाणो, ढळकाबो, ढळकावणो, ढळकावबो —क्रि०स० ।
ढळकिग्रोडो, ढळकियोडो, ढळक्योडो—भू०का०कृ० ।
ढळकीजणो, ढळकीजबो—भाव वा० ।
ढरकणो, ढरकबो, ढरक्कणो, ढरक्कबो, ढळक्कणो, ढळक्कबो—
रू०भे० ।

ढळकाणणो, ढळकाणबो —देखो 'ढळकाणो, ढळकाबो' (रू भे.)
उ०—अकळ थाट आसमान अर ऊपरै आणिया । दुहरी कुजरै ढाल ढळकाणियां । सिम्बर भुरजा चढी सखी साऊवाणिया । रायसिंघ सपेखं नदगिर राणिया ।—महाराज रायसिंघ बीकानेर रो गीत

ढळकाणियोडो—देखो 'ढळकायोडो' (रू भे)
(स्त्री० ढळकाणियोडी)

ढळकाडणो, ढळकाड़बो—देखो 'ढळकाणो, ढळकाबो' (रू भे.)
ढळकाड़णहार, हारो (हारी), ढळकाड़णियो—वि० ।
ढळकाड़िग्रोडो, ढळकाडियोड़ो, ढळकाड्योडो—भू०का०कृ० ।
ढळकाड़ीजणो, ढळकाड़ीजबो—कर्म वा० ।
ढळकणो, ढळकबो—अक०रू० ।

ढळकाडियोडो—देखो 'ढळकायोडो' (रू भे)
(स्त्री० ढळकाडियोडी)

ढळकाणो, ढळकाबो-क्रि०स०—१ वृत्ताकार घुमाना, फिराना ।
उ०—इत्यादिक मोवी आदित रा अळिया, थोथी थळवट रा थळिया वेथळिया । ढीली लागा रा ढेरा ढळकाता, टोघड टुकडा रा खेरा खळकाता ।—ऊ का
२ इधर-उधर हिलाना, हिलाना-डुलाना ३ पानी या अन्य किसी द्रव पदार्थ को आधार से नीचे की ओर गिराना.
४ भडा फहराना, लहराना ५ आधार से नीचे की ओर सरकाना, लुढकाना उ०—श्रीद्राव तणा घण के अपाल । ढळकाय चाचरा भमर ढाल ।—सू प्र
६ चलते समय हाथो को इधर-उधर हिलाना.
७ मोटाई की ओर से दूसरी ओर क्रमश पतला या ढालू करते जाना ।
ढळकाणहार, हारो (हारी), ढळकाणियो—वि० ।
ढळकायोडो—भू०का०कृ० ।

ढळकाईजणौ, ढळकाईजबौ—कर्म वा०।

ढळकणौ, ढळकबौ—अक०रू०।

ढरकाड़णौ, ढरकाड़बौ, ढरकाणौ ढरकाबौ, ढरकावणौ, ढरकावबौ, ढळकाड़णौ, ढळकाड़बौ, ढळकावणौ, ढळकावबौ—रू०भे०।

ढळकायोड़ो-भू०का०कृ०—१ वृत्ताकार घुमाया हुआ, फिराया हुआ. २ इधर-उधर हिलाया हुआ ३ पानी या अन्य किसी द्रव पदार्थ को आधार से नीचे की ओर गिराया हुआ ४ भंडा फहराया हुआ, लहराया हुआ ५ आधार से नीचे की ओर सरकाया हुआ, लुढकाया हुआ ६ चलते समय हाथों को इधर-उधर हिलाया हुआ ७ मोटाई की ओर से दूसरी ओर क्रमशः पतला या ढालू किया हुआ।

(स्त्री० ढळकायोड़ी)

ढळकावणौ, ढळकावबौ—देखो 'ढळकाणौ, ढळकाबौ' (रू.भे.)

उ०—१ नटियल ऊभी छाजस री छांह, हो आंसूड़ा ढळकावै कायर मोर ज्यूं।—लो गी

उ०—२ राजति अति गण पदाति कुंज रथ, हय माळ वधि लास हय। ढाळि चऊरि पूठि ढळकावै, गिरिवर सिणगारिया गय।—वेलि.

ढळकावणहार, हारौ (हारी), ढळकावणियौ—वि०।

ढळकाविओड़ो, ढळकावियोड़ो, ढळकाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

ढळकावीजणौ, ढळकावीजबौ—कर्म वा०।

ढळकणौ, ढळकबौ—अक०रू०।

ढळकावियोड़ो—देखो 'ढळकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ढळकावियोड़ी)

ढळकियोड़ो-भू०का०कृ०—१ इधर-उधर हिला हुआ, हिला डुला हुआ २ पानी या अन्य किसी द्रव पदार्थ का आधार से नीचे की ओर गिरा हुआ ३ भंडा फहरा हुआ, लहरा हुआ ४ आधार से नीचे की ओर सरका हुआ, लुढका हुआ. ५ चलते समय हाथ का इधर-उधर हिला हुआ. ६ वृत्ताकार घूमा हुआ, फिरा हुआ. ७ मोटाई की ओर से दूसरी ओर पतला हुआ हुआ।

(स्त्री० ढळकियोड़ी)

ढळकौ—सं०पु०—नेत्रों का एक रोग विशेष (अमरत)

ढळखणौ, ढळखबौ—देखो 'ढळकणौ, ढळकबौ' (रू.भे.)

उ०—१ ढळखकै गजा घम्मरा ढोल ढाला। भळक्कै अणी सम्मरा लोह भाला।—सू प्र.

उ०—२ तुरंगां हलविस्य, सिंधु सलविस्य, हर हुलविस्य हेर हर। ... ... ढळविस्य, ... ढळविस्य, ताळ नळविस्य ओन भर।

—ला रा.

ढळखियोड़ो—देखो 'ढळकियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० ढळखियोड़ी)

ढळखणौ, ढळखबौ—देखो 'ढळकणौ, ढळकबौ' (रू.भे.)

उ०—ढाल खवै ढळखती मूठ तरवार ग्रही कर'। कर दूजै रूमाल घर्क काळमी डोर घर।—पा प्र

ढळखाड़णौ, ढळखाड़बौ—देखो 'ढळकाणौ, ढळकाबौ' (रू भे.)

ढळखाड़ियोड़ो—देखो 'ढळकायोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री० ढळखाड़ियोड़ी)

ढळखाणौ, ढळखाबौ—देखो 'ढळकाणौ, ढळकाबौ' (रू भे.)

ढळखायोड़ो—देखो 'ढळकायोड़ो' (रू भे)

(स्त्री० ढळखायोड़ी)

ढळखावणौ, ढळखावबौ—देखो 'ढळकाणौ, ढळकाबौ' (रू भे)

ढळखावियोड़ो—देखो 'ढळकायोड़ो' (रू भे)

(स्त्री० ढळखावियोड़ी)

ढळखियोड़ो—देखो 'ढळकियोड़ो' (रू.भे)

(स्त्री० ढळखियोड़ी)

ढळणौ, ढळबौ–क्रि०अ० [सं० ध्वरित] १ पानी या किसी तरल पदार्थ का नीचे की ओर ढरक जाना, बहना, गिरना, सरक जाना।

उ०—मोडकी मगरी री पाणी ढाळो ढाळ ढळियो रे। आवू थारै पा'ड़ा मे अंग्रेज वड़ियो रे, क काळी टोपी री। हा रे काळी टोपी री रे, देस मे छावणिया नाखै रे, क काळी टोपी री।—लो गी.

२ गिरना, पड़ना। उ०—१ साई दे दे सज्जना, रातइ इणि परि रूंन। उरि ऊपरि आर ढळइ, जाणि प्रवाळी चून।—ढो मा.

उ०—२ माधव वरसइ माहवठउ, सात सलिल एक ठाह। हूं धूजी धरणीइ ढळू, दिइ हरणाखी ! बाह।—मा का प्र.

३ रखा जाना। ज्यूं—आला ढळियोड़ा है।

४ बिछना (पलंग, जाजम आदि) ज्यूं—माचा ढळियोड़ा है, जाजम ढळियोड़ी है।

५ डेरा दिया जाना, पड़ाव डाला जाना।

उ०—१ हीलाकर हिमाकै ईला हुय आधा, लीला भगवत री लीला नहिं लाधा। ढाळा ढाळातर गातर ढळियोड़ा, वैठा नीरातर आतर वळियोड़ा।—ऊ का

उ०—२ पड़िया अस भड पाखती, घड न्यारा न्यारा। जाणक आय चोगान मे, ढळिया वणजारा।—वीरमायण

६ गमन करना, जाना। ज्यूं—फलाणो आदमी गाव सामी ढळग्यो।

७ लोटना। उ०—ढेढ़ नाम सुण पाछा ढळिया, वाट आवता उगहिज वळिया। टाळां अठी उठी नहिं टळिया, छळी 'रामलै' पाछा छळिया। ऊ का.

८ ऊट, घोड़े आदि का चरने के लिये छोड़ा जाना या चरने के लिये चल पड़ना। उ०—१ रेवारोड़ा सोजा सेग वीर, रैण अधारी करहा ढाळदै। मैं'लां ऊहुवड़ असल गिवार, करहा जचौड़ा अब ना ढळै।

—लो गी.

उ०—२ भूरा तिसिया थाकला, रार्गाजे नेटाह। ढळिया हाथ न सावती, सोगादे धाड़ाह।—सो रू.

६ सूर्य, चन्द्रमा, तारो आदि का अस्त की ओर गमन करना ।
उ०—१ चाद चढचो गिगनार, फिरत्या ढळ रहिया जी ढळ रहिया। अब वाई घरै पधार, माउजी मारैला जी मारैला। भाभोसा दैला गाळ, वडोडो वीरो वरजैला जी वरजैला। मत दो म्हारी वाई नै गाळ, म्हारी वाई परदेसण जी परदेसण। आ आज उडै परभात, तडकै सासरै जी सासरै ।—लो.गी.
उ०—२ छोड छोड यू काई करै नै'ला ? दिन ढळ्यो है अर म्हारै निनाण री डा' अधूरी पडी है ।—रातवासो
उ०—३ ढळग्यो दिनडो जोता वाट, बिताणो आधो सावण मास । आयो न लेवण मोटो वीर, वर्ना जद नाख्या घणा निसास ।—साझ
उ०—४ फिरतो माथै ढळ गई, हिरणी गई उलट्य । सुवै नचीतो गोरडी, उर माथै दे हत्थ ।—र.रा.
मुहा०—१ दिन ढळणो—सूर्य का अस्ताचल की ओर गमन करना। २ दिन ढळिया—सध्या को, सायकाल को।
३ सूरज ढळणो (चाद ढळणो)—सूर्य या चन्द्रमा का अस्त की ओर जाना ।
१० व्यतीत होना, बीतना, गुजरना। उ०—१ पिव परदेसा छा रह्यो, गया परी नै भूल । जोवनियो ढळ जायसी, थारी है दौलत मे धूळ ।—लो गी
उ०—२ जैसी ढळती छाया रे । रानै प्रीत सवाया रे ।—जयवाणी
उ०—३ चढचा भॅवरजी ढळतोडी माझल रात, सोया नै कोमा पर सूरज ऊगियो, हो म्हारा राज ।—लो गी.
उ०—४ चढचो राणो ढळती मांझल रात, दिनडो उगायो दूदाजी रै मेडतै हो राज ।—मदनगोपाल
उ०—५ चौमासै मे चवरी चढनै, सावण पूगी सासरै । भरै भादवै ढळी जवानी, आधी रै'गी आस रै ।—चेतमानखा
मुहा०—१ जवानी ढळणो—युवावस्था से सनै-सनै वृद्धावस्था मे प्रवेश होना। २ जोवन ढळणो—देखो 'जवानी ढळणो'
३ ढळता दिन—वृद्धावस्था। (मि० पडता दिन)
४ ढळती छाया—गुजरती हुई छाया। देखो 'ढळती-वळती छाया'।
५ ढळती जवानी—प्रौढावस्था। ६ ढळती रात—अर्ध रात्रि और उषा काल के बीच का समय। ७ ढळती-वळती छाया—छाया का चढ़ना-उतरना। हमेशा एक-सा समय नही रहना।
८ ढळतो दिन—तीसरा प्रहर, सायकाल का समय ।
११ खैराद पर उतारा जाना, रूप दिया जाना। उ०—खातीडा, तू गोळ घदण री रूख, वाठ घड लाज्यै रग गो ढोलियो। आया-पाया रतन जडाव, ईसा ढळावो जाझा ढोगळ् ।—लो.गी
१२ किसी पिघले हुए, गले हुए या लेह के रूप की सामग्री का साचे द्वारा रूप ग्रहण करना, ढाला जाना। उ०—विकसी भाता ले भतवारा वाली, चगी चोधरण्या सतवारा चाली । जोवन रायजादी सादी सिणगारी, नखसिख सचै मे ढळियोडी नारी ।—ऊ.का
मुहा०—साचा मे ढळणो—सुन्दर रूप ग्रहण करना, सुडौल बनना ।
१३ रोग विशेष की प्रचण्डता का कम होना, रोग विशेष के प्रकोप की उग्रता का मिटना । ज्यू—माता ढळणी, निकाळो ढळणो ।
१४ वीर गति को प्राप्त होना । उ०—जठै चामुडराज रा खडग आघात करि वाजी समेत गाजी नृसिंह आजी अगण मे खड खड होय ढळियो ।—व भा
१५ अवसान होना, मरना। उ०—छात ढळतै 'जसू' हुई नाका छिली, साक तजि साह सू करै साका। दाव पाका किया सुजस डाका दिया, जोध वाका करै नाव जाका ।—ध व ग्र.
१६ कट कर गिरना, कटना। उ०—चोटियाळा कूदै चौमठि चाचरि, ध्रू ढळिय ऊकसै धड। अनत अनै सिसुपाळ ओफडै, झड मातो माडियो झड ।—वेलि.
१७ प्रवृत्त होना, झुकना १८ आकर्षित होना १९ अनुकूल होना, रीझना २० लुढकना. २१ देखो 'ढुळणो ढुळवो' (रू भे)
उ०—१ मत्री तह्या मयण वसंत महीपति, सिला सिघासण थर सघर। माथै अब छत्र मडाणा, चलि वाइ मजरि ढळि चमर ।—वेलि.
उ०—२ सिर ऊपर चामर छत्र ढळइ ।—स कु
२२ निगला जाना। ज्यू—म्हारै तो रोटी री कवो ई को ढळै नी। पाणी री घूट को ढळै नी।
ढळणहार, हारो, (हारी), ढळणियो—वि०।
ढळवाडणो, ढळवाडवो, ढळवाणो, ढळवावो, ढळवावणो, ढळ-वाववो, ढळाडणो, ढळाडवो, ढळाणो, ढळावो, ढळावणो, ढळाववो —प्रे०रू०।
ढळिओडो, ढळियोडो, ढळ्योडो—भू०का०कृ०।
ढळीजणो, ढळीजवो—भाव वा०।

ढळपति-स०पु०—दिल्लीपति बादशाह। उ०—मद्दु हुवा आयो मुगळ, नाया ढळपति ढाल। पडियो दिल्ली पॉटणो, गो रण तोडै गाळ। —नैणसी
रू०भे०—ढलीपत।

ढळहळणो, ढळहळवो-क्रि०अ०—शिथिल होना ?
उ०—करुणा नउ निधि, वात्सल्य नउ समुद्र, नासाजाळ व्यक्ता दीसइ, अस्थिवध ढीला ढळहळता, जिसा गामटि अजाणि सूत्रधारि ठगठगतउ माल सचउ मेलिउ जिसिउ ।—व स

ढळहळियोडो—भू०का०कृ०—शिथिल हुवा हुआ ?

ढळाख, ढळात-स०स्त्री०—ढालू स्थान, ढाल। उ०—धोरा ढिगे ढळाख, धूप आमो सोनळियो। झिळकै झोळ धुवाख, चादणी रूपै रळियो। —दसदेव

ढळाई-स०स्त्री०—१ ढालने की क्रिया या भाव।
क्रि०प्र०—करणी, होणी।
२ ढालने की मजदूरी।

ढळावो-स०पु०—गिरती दशा, बुरा समय।

ढळियोडो-भू०का०कृ०—१ पानी या अन्य किसी द्रव पदार्थ का नीचे की ओर ढरक गया हुआ, बहा हुआ, गिरा हुआ, सरक गया हुआ २ कट कर गिरा हुआ, कटा हुआ. ३ गिरा हुआ, पडा हुआ. ४ रखा गया हुआ ५ बिछा हुआ (पलग, जाजम आदि) ६ डेरा डला हुआ, पडाव डला हुआ ७ गमन किया हुआ, गया हुआ ८ लौटा हुआ ९ ऊंट, घोडे आदि का चरने के लिये छोडा गया हुआ, चरने के लिये निकल गया हुआ १० सूर्य, चद्रमा, तारो आदि का अस्त की ओर गमन किया हुआ ११ व्यतीत हुवा हुआ, बीता हुआ, गुजरा हुआ १२ खैराद पर उतारा गया हुआ, रूप दिया हुआ १३ किसी पिघले हुए, गले हुए या लेह के रूप की सामग्री का साचे द्वारा रूप ग्रहण किया हुआ, ढाला गया हुआ. १४ किसी रोग विशेष के प्रचण्ड रूप का कम हुवा हुआ, रोग विशेष के उग्र रूप का मिटने की ओर गया हुआ १५ वीरगति को प्राप्त हुवा हुआ १६ अवसान प्राप्त हुवा हुआ, मरा हुआ. १७ प्रवृत्त हुवा हुआ, झुका हुआ १८ आकर्षित हुवा हुआ १९ अनुकूल हुवा हुआ, रीझा हुआ. २० लुढका हुआ २१ देखो 'ढुळियोडो' (रू भे)

(स्त्री० ढळियोडी)

ढळियौ—१ देखो 'ढळौ' (अल्पा, रू भे) २ देखो 'ढाळियौ' (रू.भे)

ढलीपत—देखो 'ढलपति' (रू भे)

ढलैत, ढलैती-स०पु०—ढाल बाधने वाला, योद्धा।

उ०—तिणसू चौदह हजार असवार अेका मोजूद पास रहै नै लाख अेक रिपिया छैमाहिया देवौ। तिण मे सात हजार ढलैत राखू नै हजार सात बरकमदाज रहै।—जलाल बूबना री वात

ढळौ-स०पु० [स० ढलि] ढेला।

वि०—मूर्ख, गँवार।

रू०भे०—डगळौ, डळौ, ढकोळौ, ढगळौ।

अल्पा०—ढळियौ

मह०—डगळ, डळ, ढगळ, ढळ।

ढल्ल—१ देखो 'ढाल' (रू.भे)। उ०—१ 'अखई' वाला आभरण, रिणमाला रिण ढल्ल। कीधा मेर प्रमाण चित, लीधा व्रत 'अजमल्ल'।—रा रू

उ०—२ रिण 'अचळ' जोड दळ ढल्ल राम। जादम सग्राम कज गिणत जाम। रिप जोर सोर प्रगट्टौ दहन्न। कनवज्ज समर कज्ज फिर अडर कन्न।—रा रू

उ०—३ हिंडळुता गंजूह हमल्ला, ढळके काळी पीळी ढला—गु रू ब.

२ देखो 'ढोल' (रू भे) उ०—१ निहट्टौ 'जैत' घुरै नीसाण, खळब्भळ होय दळा खुरसाण। महामुहि खेत्र चढै बिहु मल्ल, ढुळद्दुळ ढोल ढमक्कै ढल्ल।—रा ज रासौ

ढल्ली—देखो 'दिल्ली' (रू भे.)

ढल्लीप-स०पु० (रा० ढल्ली+स०प) सम्राट।

उ०—कही ग्रहफळ जद कह्या पित्थ ढल्लीप प्रमाणै। कवरपदौ घण कह्यौ, आयु कहि घण उपराणै।—केहरप्रकास

ढल्लीस-स०पु० [रा० ढल्ली+स० ईश] बादशाह।

उ०—चाळीसो कर पातसाह पदवी नै ईं चहियौ। जो बैठ तखत ढल्लीस सूं अमानणौ व्है रहियौ।—केहरप्रकास

ढल्लौ-वि० (स्त्री० ढल्ली) मुक्त।

क्रि०प्र०—करणौ।

ढव—देखो 'ढब' (रू भे)

ढसणौ, ढसबौ-क्रि०अ०—१ ढहना, गिरना, पडना।

उ०—पाथर चूनो ढग पडै, सिरज्या भुरज न सार। धूळ कोट मह ढसण दे, गोळा गिटणी गार।—रेवतसिंह भाटी

२ देखो 'धसणौ, धसबौ' (रू भे)

ढसणहार, हारौ (हारी), ढसणियौ—वि०।

ढसवाडणौ, ढसवाडबौ, ढसवाणौ, ढसवाबौ, ढसवावणौ, ढसवावबौ—प्रे०रू०।

ढसाडणौ, ढसाडबौ, ढसाणौ, ढसाबौ, ढसावणौ, ढसावबौ—क्रि०स०।

ढसिओडौ, ढसियोडौ, ढस्योड़ौ—भू०का०कृ०।

ढसीजणौ, ढसीजबौ—भाव वा०।

ढसाडणौ, ढसाडबौ—देखो 'ढसाणौ, ढसाबौ' (रू भे)

ढसाडणहार, हारौ (हारी), ढसाडणियौ—वि०।

ढसाडिओडौ, ढसाडियोडौ, ढसाड्योडौ—भू०का०कृ०।

ढसाडीजणौ, ढसाडीजबौ—भाव वा०।

ढसणौ, ढसबौ—अक०रू०।

ढसाडियोडौ—देखो 'ढसायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० ढसाडियोडी)

ढसाणौ, ढसाबौ-क्रि०स०—१ ढहाना, गिराना.

२ देखो 'धसाणौ, धसाबौ' (रू भे)

ढसाणहार, हारौ (हारी), ढसाणियौ—वि०।

ढसायोडौ—भू०का०कृ०।

ढसाईजणौ, ढसाईजबौ—कर्म वा०।

ढसणौ, ढसबौ—अक०रू०।

ढसाडणौ, ढसाडबौ, ढसावणौ, ढसावबौ—रू०भे०।

ढसायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ ढहाया हुआ, गिराया हुआ।

२ देखो 'धसायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० ढसायोडी)

ढसावणौ, ढसावबौ—देखो 'ढसाणौ, ढसाबौ' (रू.भे)

ढसावणहार, हारौ (हारी), ढसावणियौ—वि०।

ढसाविओडौ, ढसावियोडौ, ढसाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

ढसावीजणौ, ढसावीजबौ—कर्म वा०।

ढसणौ, ढसबौ—अक०रू०।

ढसावियोडौ—देखो 'ढसायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० ढसावियोडी)

ढसियोड़ो-भू०का०कृ०—१ ढहा हुआ, गिरा हुआ, पडा हुआ.
२ देखो 'धसियोड़ो' (रू भे)
(स्त्री० ढसियोड़ी)

ढहकणो, ढहकबो-क्रि०अ०—१ गिरना, पटना. २ धँसना, गडना।
ढहकणहार, हारो (हारी), ढहकणियो—वि०।
ढहकवाड़णो, ढहकवाडबो, ढहकवाणो, ढहकवाबो, ढहकवावणो, ढहकवावबो—प्रे०रू०।
ढहकाड़णो, ढहकाडबो, ढहकाणो, ढहकाबो, ढहकावणो, ढहकाववो—क्रि०स०।
ढहकिग्रोड़ो, ढहकियोड़ो, ढहक्योड़ो—भू०का०कृ०।
ढहकीजणो, ढहकीजबो—भाव वा०।

ढहकाड़णो, ढहकाडबो—देखो 'ढहकाणो, ढहकाबो' (रू भे)
ढहकाडणहार, हारो (हारी), ढहकाडणियो—वि०।
ढहकाड़िग्रोड़ो, ढहकाड़ियोड़ो, ढहकाड्योड़ो—भू०का०कृ०।
ढहकाड़ीजणो, ढहकाड़ीजबो—कर्म वा०।
ढहकणो, ढहकबो—ग्रक०रू०।

ढहकाणो, ढहकाबो-क्रि०स०—१ गिराना २ धँसाना, गडाना।
ढहकाणहार, हारो (हारी), ढहकाणियो—वि०।
ढहकायोड़ो—भू०का०कृ०।
ढहकाड़ीजणो, ढहकाडीजबो—कर्म वा०।
ढहकणो, ढहकबो—ग्रक०रू०।
ढहकाड़णो, ढहकाडबो, ढहकावणो, ढहकाववो—रू०भे०।

ढहकायोड़ो-भू०का०कृ०—१ गिराया हुआ. २ धँसाया हुआ, गडाया हुआ।
(स्त्री० ढहकायोड़ी)

ढहकावणो, ढहकावबो—देखो 'ढहकाणो, ढहकाबो' (रू भे)
ढहकावणहार, हारो (हारी), ढहकावणियो—वि०।
ढहकाविग्रोड़ो, ढहकावियोड़ो, ढहकाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
ढहकावीजणो, ढहकावीजबो—कर्म वा०।
ढहकणो, ढहकबो—ग्रक०रू०।

ढहकावियोड़ो—देखो 'ढहकायोड़ो' (रू भे)
(स्त्री० ढहकावियोड़ी)

ढहकियोड़ो-भू०का०कृ०—१ गिरा हुआ, पडा हुआ २ धँसा हुआ, गडा हुआ।
(स्त्री० ढहकियोड़ी)

ढहढहणो, ढहढहबो—देखो 'ढहणो, ढहबो' (रू भे.)
उ०—ग्रादित्यकिरण निरुद्ध हुआ, हुसमस हय दळ हैसारवि हरिण कन्हा हरिण ग्राठठ, उच्चैस्रवा ऊकनिउ, ऐरावण ऊमदिठिउ, दिग्गज ढहढह्या, बूब वाजो।—व स

ढहढहियोड़ो—देखो 'ढहियोड़ो' (रू भे)
(स्त्री० ढहढहियोड़ी)

ढहणो, ढहबो-क्रि०अ०—१ घर, दीवार ग्रादि का गिर पडना, ध्वस्त होना। उ०—१ जेहल ताल खड़ीए हूँ, तरवर लाकड होय। हरम ढहे ढूढा हुवै, जस ग्रविकारी जोय।—वा दा
उ०—२ जाडी किलै सफील, माय ज नर निवळा वसै। ढूढो ढहता ढील, रती न लागै राजिया।—किरपाराम
मुहा०—ढहियोड़ा घर बतावणा—ढहे हुए मकान दिखाना, निराशा-जनक बातें करना।
२ गिरना, पडना। उ०—सूहप सीस गुमाय कर, चदै दिस मत जोय। कदैक चदो ढह पडै, रैण ग्रधारी होय।—र रा
३ ग्रवसान होना, मरना ४ नष्ट होना ५ वीरगति को प्राप्त होना, धराशायी होना। उ०—१ खहै 'जमक्कन्न' तणो 'खडगेस'। जिकै खग झाट ढहै जवनेस।—सू प्र
उ०—२ ढहै गयद भ्ळ ढहै प्रेत भख लहै ग्रीध पळ।—सू प्र
६ कटना। उ०—१ गुडै गज्ज पाहड टूक ढहिया कूभाथळ। वज्र-पात करमाळ ग्रुडि तूटै कवू-थळ।—गु रू व.
उ०—२ ढहै ढीचाळ रत खाळ खळकै धरा, जुडै घड पडै भड दड जडाळै। 'सता' विण ग्रवर कुण साह सू समवडै, पावरै पैज मैदान पाळै।—नैणसी
७ मिटना ८ दूर होना ९ दमन होना।
ढहणहार, हारो (हारी), ढहणियो—वि०।
ढहवाड़णो, ढहवाडबो, ढहवाणो, ढहवाबो, ढहवावणो, ढहवाववो—प्रे०रू०।
ढहाड़णो, ढहाडबो, ढहाणो, ढहाबो, ढहावणो, ढहाववो—क्रि०स०।
ढहिग्रोड़ो, ढहियोड़ो, ढह्योड़ो—भू०का०कृ०।
ढहीजणो, ढहीजबो—भाव वा०।
ढंणो, ढंबो, ढूंणो, ढेंबो—रू०भे०।

ढहाड़णो, ढहाडबो—देखो 'ढहाणो, ढहाबो' (रू भे)
उ०—सीधुरा ढहाड़ सूवा दहाड विभाड सत्रा, धाव सिम्र विरदाई प्रवाडा धरेस। तुरगा कव्यदा वाग्रराड भडा राम ताखा, निखंगा रीझणा धाड जानकी नरेस।—र.ज.प्र.
ढहाडणहार, हारो (हारी), ढहाडणियो—वि०।
ढहाड़िग्रोड़ो, ढहाड़ियोड़ो, ढहाड्योड़ो—भू०का०कृ०।
ढहाड़ीजणो, ढहाडीजबो—कर्म वा०।
ढहणो, ढहबो—ग्रक० रू०।

ढहाड़ियोड़ो—देखो 'ढहायोड़ो' (रू भे)
(स्त्री० ढहाड़ियोड़ी)

ढहाणो, ढहाबो-क्रि०स०. ('ढहणो' क्रिया का प्रे०रू०) १ घर, दीवार ग्रादि गिरवा देना, ध्वस्त करवा देना। उ०—ग्ररु मिंदर रै लारै लारै महजीद कराई। सू ग्रब तळक मौजूद है। ग्ररु व्रिंदावन वा गिरराज ऊपर मिंदर था सो ढहाय दीना।—द दा
२ गिरवाना. ३ मरवाना. ४ सहार करवाना. ५ नाश कर-

वाना ६ धराशायी करवाना. ७ कटवाना ८ मिटवाना ९ दूर करवाना १० कहलवाना ।

ढहायोडौ–भू०का०कृ०—१ घर, दीवार आदि गिरवाया हुआ. २ गिरवाया हुआ, पटकाया हुआ ३ मरवाया हुआ ४ धराशायी कराया हुआ ५ कटवाया हुआ ।
(स्त्री० ढहायोडी)

ढहावणौ, ढहाववौ—'ढहाणौ, ढहावौ' (रू भे)
ढहावणहार, हारौ (हारी), ढहावणियौ—वि० ।
ढहाविप्रोडौ, ढहावियोडौ, ढहाव्योडौ—भू०का०कृ० ।
ढहावीजणौ, ढहावीजवौ—कर्म वा० ।
ढहणौ, ढहबौ—अक० रू० ।

ढहावियोडौ—देखो 'ढहायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० ढहावियोडी)

ढहियोडौ–भू०का०कृ०—१ घर, दीवार आदि गिरा हुआ, ध्वस्त हुवा हुआ २ गिरा हुआ, पडा हुआ. ३ अवसान हुवा हुआ, मरा हुवा ४ वीर गति को प्राप्त हुवा हुआ, धराशायी हुवा हुआ ५ कटा हुआ ।
(स्त्री० ढहियोडी)

ढाक–स०स्त्री०—१ कलक, धव्वा । उ०—देवळ मन मे जाणियौ आज पावू मारीजसी अर हूमै पालियौ पिण रय नही जद दूजी सगता नै कह्यौ आपा माथै मोटी ढाक आसी ।—पा प्र
२ देखो 'ढाकणौ' (मह, रू भे)

ढाकण—देखो 'ढाकणौ' (मह, रू.भे)
उ०—१ राखण कुळ मरजाद, अघपतिया ढाकण अडिग । आवै वर वर याद, भूला किम भीमेण रा ।—अवादान रतनू
उ०—२ निज गुण ढाकण नेक नित, पर गुण गिण गावत । असा जग मे सुजण जण, विरळा ही पावत ।—अज्ञात

ढाकणउ—देखो 'ढाकणौ' (रू भे)

ढांकणी–स०स्त्री०—१ देखो 'ढाकणौ' (अल्पा, रू भे)
उ०—ढाकणी मै ढोकळी, मेह वावौ मोकळौ ।—लो गी.
२ देखो 'ढाकणी' (रू भे)

ढाकणियौ—देखो 'ढाकणौ' (अल्पा, रू भे.)

ढाकणौ—देखो 'ढाकणौ' (रू भे)
उ०—सवर रूपी करौ ढाकणौ, ग्यान रूपियौ तेल । आठू ही करम परजाळ नै, दौ रे अधारौ ठेल ।—जयवाणी

ढाकणौ, ढांकवौ—देखो 'ढाकणौ, ढाकवौ' (रू भे)
उ०—१ कै किण सू वाता करै, कै किण नै ल्यै तेड हो चित्ता । कै आख्या दोनू ढाक दै, कै गरदन देवै फेर हो चित्ता ।—जयवाणी
उ०—२ आपणा दोख ढाकण नै काज, छोड देवै मरजादा लाज ।
—जयवाणी

उ०—३ रुकम साची कही, ढाकिया न रहै धरम । करम सभळावसो जेम छूटै करम ।—रुखमणी हरण
उ०—४ भूका पोसण हार यूं, ज्यू जग कमळाकत । नागा ढाकण-हार इम, जिम तरवरा वसत ।—वा दा
उ०—५ रमणौ रमण सिकार, सझै दळ पूर सकाजा । नौवति वाजा निहसि, रजा ढाकै ग्रहराजा ।—सू प्र

ढाकियोडौ—भू०का०कृ०
देखो 'ढाकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० ढाकियोडी)

ढाग–स०पु०—१ वाह्याडम्वर, पाखण्ड, ढकोसला ।
उ०—जागरणा जागै लाज न लागै, ढागा ढिग कूकदा है । सुर झीण न साजै, वीण न वाजै, करमहीण कूकदा है ।—ऊ.का
क्रि०प्र०—करणौ, रचणौ ।
२ कपट, छल ।

ढागी–वि०—ढोग रचने वाला, पाखण्डी २ कपटी, छली, धूर्त ।

ढागौ–वि० (स्त्री० ढागी) आपत्तियुक्त, बुरा, खराब ।
उ०—ढहती डूलीसी भूली ढग ढागै, मोटी आख्या री रोटी मुख मगै । तोता वोता मे रै'ता तुतळाता, वाता वीसरगा वै'ता वतळाता ।
—ऊ का

ढाच–स०स्त्री०—१ पालना लटकाने का लकडी का वना उपकरण ।
२ देखो 'ढाचौ' (मह, रू भे)

ढाचियौ—देखो 'ढाचौ' (अल्पा, रू भे)

ढाचौ–स०पु०—१ लकडी का वना उपकरण विशेष जिसमे सामान भर कर पशुओ की पीठ पर लादा जाता है । उ०—१ वूठा वीतोडा जाझरकै जाता, लादा विसनोई ऊटा पर लाता । ढाचा खाना सू कळसा जळ ढारा, जोगी जाभै रा घुरता जसवारा ।—ऊ का
उ०—२ छुरी पासु परसु पट्टिस सक्ति, करमुक्त, यत्रमुक्त, मुक्तामुक्त, दुस्फोट तरवारि अग्नि तेल लोहवद्ध लुडि एवविध आयुद्ध विसेखी ढाचा भरिया ।—व स
२ ठठरी, पजर ३ किसी वस्तु के अगो की स्थूल रूप से सयोजित वह समष्टि जो उसकी रचना की प्रारभिक अवस्था होती है ।
अल्पा०—ढाचियौ ।
मह०—ढाच ।

ढाढ—देखो 'ढाढ़ौ' (मह, रू भे)

ढाढ़की—देखो 'ढाढ़ी' (अल्पा, रू भे)

ढाढ़वाड, ढाढ़वेड–स०स्त्री०—पशुधन, चौपाये पशु ।
रू०भे०—डाढवेड ।

ढाढापणौ–स०पु०—पशुता । उ०—वोलो, काई इसी जूण पूरी करण री नाव ई 'जीवण' है ? इयै-नै मिनखापणौ कैवू कन ढाढ़ापणौ ।
—वरसगाठ

ढाढ़ियौ—देखो 'ढाढौ' (अल्पा, रू भे.)

ढांडी-सं०स्त्री०—१ बुड्ढी गाय २ छोटी तलैया, पोखरा।
वि०—मूर्ख, गँवारन।
अल्पा०—ढाडकी।

ढांडो-सं०पु०—चौपाया पशु।
वि० (स्त्री० ढांडी) मूर्ख, नासमझ। उ०—वात मानली लपै वाडा, नीत विगाडी निलजा नाडा। मिळगी जोडी जाना माटा, टेढ कह्यो ज्यू मुणियो ढांडा।—ऊ का
रू०भे०—ढाडो।
अल्पा०—ढाडियो।
मह०—ढाड।

ढाण-सं०स्त्री०—१ ऊंट की चाल या गति विशेष। उ०—१ तरै जवढै रण साढ नै सारणी माडी। तिका मास एक माहे सभाई। तिका कोस पचास जाय नै एकै ढाण पाछी आवै।
—जलउा मुमडा भाटी री वात

उ०—क्रम ग्रम ढोला पथ कर, ढांण म चूकै ढाळ। आ मारू बीजी महळ, आखड भूठ एवाळ।—ढो मा
२ मार्ग, रास्ता. ३ नाश, सहार. ४ युद्ध, लड़ाई. ५ गढ।
उ०—टदोळग ढिल्ली हेवै ढाण। सभोडिम जेह वडा सुरताण।
—रा ज रासो

६ समूह ७ ढग, प्रकार, भाति ८
उ०—बदूक घोर उडै सोर भाण धूधळो रह्यो। वाराह ऊठ सैग पूठ भूपती ऊभो ग्रह्यो। मई न वाह गैक राह चाह चेत मे रही। करोड प्राण द्वार ढांण भाण मढळो ग्रह्यो।—पा प्र
९ टेर। उ०—सावणी मढी हुकार मींह, तोखरा वडा हींडै सवीह। ढळियाक गूजुए दघर ढाण, जोगद्र कोयले घूप जाण।
—पा प्र

१० प्रहार ? उ०—जुडै अर तटळ राण दूजा 'जगड', ढाहण ढळा वोजूढळा ढाण। अभग राग तणा नमस अजुआळियो, पमग आता लियो वीज पीठाण।—भाटी माहसिह मोही रो गीत
११ कूए पर बैल जोतने का स्थान १२ स्थान आवाग।
उ०—ढाण सतपुर वसी छोट रजढाणिया, सूर अथमाणिया सुकव साखी। करै वन होम उमगाणिया कथ कज, राणिया वात अखियात राखी।—किसनो आढो

ढाणी-सं०स्त्री० [स० स्थान+रा०प्र०ई] १ एक या एक से अधिक कच्चे मकानों की वह बस्ती जो गाव स दूर खेत मे बसी हुई होती है।
उ०—सुदर सुकुलीणी भीणी साडी मे, जुलफा सपणी जिम अपणी आडी मे। मूनी ढाणी मे सेठाणी सोती, रैंगी विणियाणी पाणी नै रोती।—ऊ का
२ वह भूमि जहा रेत के बहुत से टीबे हो (मालाणी)

ढाणो-सं०पु०—१ वह स्थान जहा कूए से निकाला हुआ पानी खाली होता है. २ बहुत सी 'ढाणिया' का समूह, देखो 'ढाणी'।
३ डेरा, पडाव।
क्रि०प्र०—देणो।

ढाप, ढापण—देखो 'ढाकणो' (मह., रू.भे.)

ढापणउ—देखो 'टाकणो' (रू.भे.)

ढापणियो—देखो 'ढाकणो' (अल्पा., रू भे.)

ढापणी-सं०स्त्री०—१ 'ढाकणी' (अल्पा रू भे)
२ देखो—'ढाकणी' (रू.भे)

ढापणी—देखो 'ढाकणो' (रू भे)

ढापणी, ढापवो—देखो 'ढाकणो, ढाकवो' (रू भे)
उ०—१ जिको वादसाह गरीबा रा छिद्र ढाकै उणरा ऐब प्रभू ढापै।—नी प्र
उ०—२ परणी रै बगैर साम्हो नही देखै, अजोग काम देखण सू आख ढापै।—नी प्र
ढापणहार, हारो (हारी), ढापणियो—वि०।
ढांपवाडणो, ढापवाडवो, ढापवाणो, ढापवावो, ढापवावणो, ढापवावो, ढापाडणो, ढांपाडवो, ढापाणो, ढापावो, ढापावणो, ढापावो
—प्रे०रू०

ढापिग्रोडो, ढांपियोडो, ढाप्योडो—भू०का०कृ०।
ढांपीजणो ढापीजवो—कर्म वा०।

ढापियोडो—देखो 'ढाकियोडो' (रू भे.)
(स्त्री० ढापियोडी)

ढामक-सं०पु०—१ ढोल. २ नगारा ३ ढोल, नगारे आदि का शब्द।

ढांहर-सं०पु०—काटेदार वृक्ष या झाड़ी की शाखा या टहनी।
उ०—भलाइ अर गाव माहै खेजडी हुती तिण सेती च्यारे वाघा मुहकम तिण ऊपरि ढाहर वधाडिया। ढाहर वाधि अर पछै कुवर स्त्री दळपतजी आपरै हाथ सरै मारिया।—द वि

ढा-सं०स्त्री०—१ सरस्वती, वाणी २ नाभि ३ गदा।
सं०पु०—४ ब्रह्मा ५ सुमेरु पर्वत ६ पलाश वृक्ष। (एका०)

ढाई-वि० [स० अर्द्धद्वितीय, प्रा० अड्ढाइय] जो गिनती मे दो से आधा अधिक हो। दो और आधा।
सं०पु०—वालको द्वारा कौडियो से खेला जाने वाला एक प्रकार का खेल विशेष।
मुहा०—ढाई लागणी—अनुकूल अवसर मिलना।

ढाउ—देखो 'दाव' (रू.भे)। उ०—जाणहार हु इ तिहा अछउ मझ मनि लागउ ढाउ। तुम्ह साथिइ आवउ जउ तेडउ घणउ करी सुपसाउ।
—विद्याविलास पवाडउ

ढाक-सं०पु०—१ पलाश का वृक्ष। उ०—ऊपर वरसात आई, तरै वघू ढाक-पळासिया रा आसरा किया छै।—नैणसी
२ कुम्हार का चाक।
मुहा०—ढाक चाढ़णो—भौंचक्का करना, हक्का-बक्का करना।
३ कूल्हे की हड्डी।

मुहा०—ढाक चाढणी—कुश्ती का एक पेच विशेष जिसमे गिराने के लिये कूल्हे की हड्डी पर चढ़ाना।

४ ढोल। उ०—विसम ढाक स ढूकस ढमढमी, भरहरी भर भेरि विहामणि। उच्चरी तुररी कूकरी जसी, सुभट ना सवि रोम ज उद्ठसी।—विराटपर्व

५ रणचण्डी का वाद्य विशेष। उ०—वीर नाच रहिया छै, जोगण ढाक वजावै छै, खप्पर भरै छै।—सूरे खीवे कांधळोत री वात

६ देखो 'ढाकणी' (मह, रू भे)

ढाकण—देखो 'ढाकणी' (मह, रू भे.)

उ०—जगत री हुतौ ढाकण जिको, मान मडोवर मेलियौ।

—वुधजी ग्रासियौ

मुहा०—घर री ढाकण—घर की मर्यादा रखने वाला।

ढाकणउ—देखो 'ढाकणी' (रू.भे)

ढाकण-पूछौ-स०पु०यौ०—वह बैल जिसके पूछ के सफेद वालो के ऊपर का भाग काले वालो वाला हो या काले वालो के ऊपर का भाग सफेद वालो वाला हो।—अशुभ

ढाकणियौ—देखो 'ढाकणी' (अल्पा, रू भे)

ढाकणी-स०स्त्री०—१ मिट्टी का वना ढकने का उपकरण जिसके एक ओर वीच मे पकडने के लिये उभरा हुआ भाग होता है।

मुहा०—ढाकणी मे नाक डुवोणी—लज्जा के मारे मर जाना, शरम के मारे मुह न दिखाना।

२ आच्छादन, ढकन।

उ०—अला एकण ढाकणी, सव दुनिया ढाकी।—केसोदास गाडण

३ घुटने के जोड पर की गोल हड्डी, जावील।

४ देखो 'ढाकणौ' (अल्पा, रू भे)

रू०भे०—ढकणी, ढकणी, ढाकणी, ढापणी।

ढाकणौ-वि०—१ ढकने वाला २ आच्छादित करने वाला ३ छुपाने वाला. ४ वन्द करने वाला. ५ रक्षा करने वाला. ६ मर्यादा रखने वाला।

स०पु०—किसी वर्तन का मुह वद करने के लिये लगाया जाने वाला आच्छादन, ढक्कन।

रू०भे०—ढकणउ, ढकणौ, ढकणउ, ढकणौ, ढाकणउ, ढाकणौ, ढापणउ, ढापणौ, ढाकणउ।

अल्पा०—ढकणियौ, ढकणी, ढकणियौ, ढकणी, ढाकणियौ, ढाकणी, ढापणियौ, ढापणी, ढाकणियौ, ढाकणी।

मह०—ढक, ढकण, ढक, ढकण, ढक्कण, ढाक, ढाकण, ढाप, ढापण, ढाक, ढाकण।

ढाकणौ, ढाकबौ-क्रि०स०—१ (किसी वर्तन आदि पर) ढक्कन लगाना, वन्द करना।

२ (किसी छिद्र आदि को) रोकना, वन्द करना।

३ (कपाट, आख, मुह आदि) वन्द करना।

उ०—टग टग म्हला जी क चनणा ऊतरी जी, कोई, गई गई रामुडै री हाट, ढाक्यो तो फळसो खोल दै जी।—लो.गी.

४ आच्छादित करना, ढकना ५ छुपाना।

उ०—अै नेता लोग डूगर बळती देखै, पण बळती को देखै नी, खुदरा दोसण ढाकै; लोगा रा दोसण उघाडै।—वाणी

ढाकणहार, हारौ (हारी), ढाकणियौ—वि०।

ढकवाडणौ, ढकवाडबौ, ढकवाणौ, ढकवाबौ, ढकवावणौ, ढकवाववौ, ढकाडणौ, ढकाडबौ, ढकाणौ, ढकाबौ, ढकावणौ, ढकावबौ—प्रे०रू०

ढाकिग्रोडौ, ढाकियोडौ, ढाक्योडौ—भू०का०कृ०।

ढाकीजणौ, ढाकीजबौ—कर्म वा०।

ढकणौ, ढकबौ, ढकणौ, ढकबौ, ढाकणौ, ढाकबौ, ढापणौ, ढापबौ —रू०भे०।

ढाकियोडौ-भू०का०कृ०—१ (किसी वर्तन आदि पर) ढक्कन लगाया हुआ, वन्द किया हुआ।

२ (किसी छिद्र आदि को) रोका हुआ, वन्द किया हुआ।

३ (कपाट, आख, मुह आदि) वन्द किया हुआ।

४ आच्छादित किया हुआ, ढका हुआ ५ छुपाया हुआ। (स्त्री० ढाकियोडी)

ढाग—१ देखो 'ढागौ' (मह, रू.भे) २ देखो 'ढागी' (मह, रू भे)

३ देखो 'ढाक' (३) (रू.भे.)

ढागलियौ—देखो 'ढागौ' (अल्पा, रू भे)

ढागली—देखो 'ढागी' (अल्पा, रू भे)

ढागलौ—देखो 'ढागौ' (अल्पा, रू भे)

ढागियौ—देखो 'ढागौ' (अल्पा, रू भे)

ढागी-स०स्त्री०—१ वृद्ध गाय २ वृद्ध मादा ऊट।

अल्पा०—ढागली।

मह०—ढाग।

ढागीड—१ देखो 'ढागौ' (मह, रू भे.) २ देखो 'ढागी' (मह, रू भे)

ढागौ-स०पु० (स्त्री० ढागी) १ वृद्ध वैल २ वृद्ध ऊँट।

अल्पा०—ढागलियौ, ढागलौ, ढागियौ।

मह०—ढाग, ढागीड।

ढाड—देखो 'डाड' (रू भे)

ढाडी—देखो 'ढाढी (रू भे.)

ढाडीड—देखो 'ढाढी' (मह., रू भे.)

ढाडीडौ—देखो 'ढाढी' (अल्पा, रू.भे.)

ढाढस-सं०पु० [स० दृढ, प्रा० डिढ) धैर्य, सान्त्वना धीरज।

उ०—गीध दास झडपै घणा, झडप परा हुत जग। ढस्यौ वर न ढाढस ढस्यौ ढस्यौ न राजस ढग।—रेवतसिंह भाटी

क्रि०प्र०—देणौ, वधाणौ, राखणौ, होणौ।

ढाढी-स०पु० (स्त्री० ढाढण) विवाह, जन्मोत्सव आदि मागलिक अवसरो पर गायन करने वाली एक मुसलमान जाति या इस जाति का व्यक्ति। उ०—ढाढी, एक सदेसडउ, प्रीतम कहिया जाइ। सा धण

वळि कुइला भई, भसम ढढोळिसि ग्राइ ।—टो मा
रू०भे०—टाडी ।
ग्रल्पा०—डाडीडो, डाडोट ।
मह०—टाडोड, ढाडीड ।
डाढ़ोड—देखो 'टाडी' (मह , रू भे)
डाढ़ोडो—देखो 'डाढ़ी' (ग्रल्पा , रू.भे)
उ०—डाढ़ीडा त घरम री है रीग, डाडी म्हारा गो। म्हानें रे बता दे राणो काढ्वो जो म्हारा राज ।—ना गी
डा'णो—देखो 'डाहणो' (रू भे)
उ०—छिनियाणी वधतो कळा, डा'णी सत्रवा दून। सिंह पवाणी साढुळो, ताणी हात सिगळ ।—नानाबरश बारहठ
(स्त्री० डा'णी)
डा'णो, डा'बो—देखो 'डाहणो, डाहबो' (रू भे)
उ०—१ द्रस्टा सिरया द्रस्य नहिं पावें, द्रस्य मिटया द्रस्टाजी। जो कोई मनकू सउपा चावो, पाच दिनें कू डाजी।
—श्री हरीरामजी महाराज
उ०—२ ऐसे भगाएल्ल एकळगिड वराह डाए। ऐते मे केतैक सिर-मोर सिंग सामरू के चूथ ग्राए।—सू प्र
उ०—३ हुरम सायजादी ये हिंदू रो छोडयो कोनी देव, दिनज्यानी वेगम चु ग युग तो डाण ये मदिर दवरा ।—लो गी.
ढाब-स०पु०—छोटी तलैया । उ०—ग्रा रतनागर सागर थारें, थारी वरोवरी म्हे करा स, कोई ढाव नरचा है म्हारें, गिरधारी हो लाल ।—लो गी
ढाबणो, ढाबबो-क्रि०स०—१ ठहराना, रोकना ।
२ थामना, रोकना । उ०—ग्रोछी ग्रगरख्या दुपटी छिन देनो, गोडें वरछी जे पूरा गामेती। फेटा छोगाळा खागा सिर फावे, टेढा डोटावें दिगतो नभ डावें ।—ऊ का
३ निभाना, रखना । उ०—एक नारी रो काई ढावणो, नारी होवें घर को सिणगार। नारी विना मदिर किसो, क्रस्णजी परण्या वत्तीस हजार ।—जयवाणी
४ सहारा देना, ग्राश्रय देना । उ०—सुतन 'सावत' मयद सुणे थारा सवद, मद ग्ररद जिकै सुध गाढ भाजै। वाह छोटा जिकै गिरद ढकावसे, वाह ढावो जिकै नरद वाजें ।
—नीवाज ठाकुर सवाईसिह रो गीत
५ पकड़ना । उ०—ग्रारत स्रवण सुणी ग्रणदा री, पडता कूप ज पाव। दमी रूप तुरत हो ग्राई, ले मुख ढावो लाव ।
—हिंगळाज दान बारहठ
ढावणहार, हारो (हारी), ढावणियौ—वि० ।
ढववाड़णो, ढववाउवो, ढववाणो, ढववाबो, ढववावणो, ढववाववो, ढवाडणो, ढवाडवो, ढवाणो, ढवावो, ढवावणो, ढवाववो—प्रे०रू० ।
ढाविग्रोड़ो, ढावियोडो, ढाव्योडो—भू०का०कृ० ।
ढाबीजणो, ढाबीजवो—कर्म वा० ।
ढवणो, ढववो—ग्रक०रू० ।
ढावियोडो—भू०का०कृ०—१ ठहराया हुग्रा, रोका हुग्रा. २ थामा हुग्रा, रोका हुग्रा ३ निभाया हुग्रा, रखा हुग्रा ४ सहारा दिया हुग्रा, ग्राश्रय दिया हुग्रा ५ पकड़ा हुग्रा ।
(स्त्री० ढावियोडी)
ढावो—स०पु०—१ वह स्थान जहा पैसे देकर भोजन करने व ठहरने का प्रबन्ध होता है २ पक्षियों ग्रादि को पकडने का उपकरण
३ चिथडो व कागजों ग्रादि की लुग्दी से बनाया हुग्रा वर्तन ।
४ भैंस को पैर से बाधने की लोह की बनी साकल विशेष (शेखावाटी)
५ रगीन ग्रोढ़नी के बीच मे लगने वाली बडी छाप ।
उ०—पाली तो जावो तो म्हारै पीळी लाइजो ग्रो क हरिया ढावा रो।—लो गी
६ ग्ररावली पर्वत (?) उ०—वीजळिया सळभळिया, ढावा-थी ढळियाह। काठी मीढे वल्लहा, घण दीहे मिळियाह।—जसराज
ढावो—स०पु०—घास-फूस रखने का कच्चा मकान (शेखावाटी)
वि०—मूर्ख ।
ढाळ—स०स्त्री०—१ वह स्थान जो क्रमश बराबर नीचा होता गया हो, उतार। उ०—क्रम-क्रम ढीला पग्र कर, ढाण म चूकै ढाळ । ग्रा मारू बीजी महूळ, ग्राखड़ भूठ एवाळ ।—ढो.मा.
२ सगीत मे नाच, गाने ग्रौर वाद्यो का मेल, लय, तर्ज ।
क्रि०प्र०—लेणी ।
३ रीति, ढग। उ०—कीता खेत कवोज वाल्हीक कच्छी। उडै फाळ लै लै फिरै ढाळ ग्रच्छी।—व भा.
४ पड़ाव, डेरा ।
वि०—घटिया किस्म का, हल्का ।
क्रि०वि०—तरह, प्रकार, भांति। उ०—काळ वरस मे भूखा धाया, हुयग्या एकण ढाळ। घोरा नें पूछै रूखड़ला, लासा नें ग्रगनी री भाळ ।—चेतमानखा
ढाल—स०स्त्री०—१ चमड़े, धातु, सिलहट के कपड़े ग्रादि से बना हुग्रा थाली के ग्राकार का गोल ग्रस्त्र जो युद्ध के समय ग्रस्त्र-शस्त्रो के प्रहारो को रोकने के काम मे लिया जाता है ।
पर्या०—ग्राडण, ग्रावरण, खेटक, चरम, तुरस, सिपर ।
२ युद्ध के समय हाथी के ललाट पर बाधा जाने वाला एक उपकरण विशेष जिस पर तलवार, भाला, तीर, बन्दूक ग्रादि का ग्रसर नहीं होता है ।
उ०—ग्रर हजारा वैरिया नें वसुधा माथै विछाइ ढाला समेत कई गजराजा नू ढाळिया ।—व भा.
३ वडा भडा । उ०—तुली ढाल रूडी घली काळ ग्रोपा। ग्रली जोट जूड़ी हली ज्वाळ तोपा ।—व भा
४ रक्षक । उ०—१ 'पतो' 'जगा' रो विरद पत, वीरम रो 'जैमाल'। केळपुरो कमधज दहु, हुग्रा चीत गढ ढाल ।—वा दा.

उ०—२ घणी स अग्र होत ढाल, जूटि घामज्जग मे। इसा वसत के अपार, गाढ पूर नग्र मे।—सू प्र

रू०भे०—ढल्ल, ढालि।

ढालगर–स०पु०—ढाल नामक अस्त्र बनाने वाली जाति या इस जाति का व्यक्ति। (मा म)

ढालडियौ–स०पु०—१ कागज, कपडे आदि की लुग्दी से बना हुआ बरतन विशेष। २

उ०—कुळ करसण करै बरीसण कोडी, ढीक कनक मभ ढालडिया। 'अडसी' सभ्रम ठोड सिचै इम, हुम्म महादत हाथडिया।

—महाराणा हम्मीरसिंह री गीत

ढालडौ–स०पु०—देखो 'ढाल' (अल्पा, रू भे.)

उ०—विसर रा नगारा नाद वाजिया। आ वात सुणता इसा दूला सीह ज्यु गाजिया। सिलह भीडिया। ढालडा खडभडिया।

—पना वीरमदे री वात

ढाळणौ, ढाळबौ–क्रि०स० [स० ध्वर्] १ पानी या अन्य किसी द्रव पदार्थ को गिराना, बहाना। उ०—१ बिरमाजी नै घणी तरह सू दोस लगाय नै आख्या सू आसू ढाळण ढूकी।

—ठाकुर श्यामसिंह सिंधल

उ०—२ सात जनम आगइ सामळिया, तिणि कारणि मन मोहइ। आसू ढाळइ चिहुँ दिसि न्हाळइ, गोख चढी दळ जोवइ।

—रुकमणी मगळ

उ०—३ एहवा वचन कहीनी, धामणी नयणे ते ढाळि नीर। तुहि चित वाळि नहो, कळियुगि वाध्यु वीर।—नळाख्यान

२ अभिसिंचन करना। उ०—आणी नव नव तीरथ तोय, कनक कुभ भरइ सवि कोय। तिम वळि दूध तणा भ्रंगार, स्नान भणी सुर भालइ सार। कनक कुभ सुर ढाळइजस्यइ, हरि ससय ऊपन्नउ तस्यइ। अति लहुडउ ए जिणवर वीर, किम सहस्यइ कळसा ना नीर।—स.कु

मुहा०—१ तेल ढाळणौ—मन्नत की प्रतिज्ञा पूरी करने के लिये भैरव, हनुमान आदि देवताओ पर तेल का अभिसिंचन करना

२ पांणी ढाळणौ—'वायासा' (ऊपरलिया) लोक देवियो के प्रसन्नार्थ जल का अभिसिंचन करना। मृतक प्राणी के फूल (अस्थियो) पर जल का अभिसिंचन करना ३ दारू ढाळणी (ढाळणौ)—देवी, दुर्गा, भैरव आदि देवताओं के प्रसन्नार्थ शराब का अभिसिंचन करना. ४ बोतल ढाळणी—देखो 'दारू ढाळणी'।

३ उँडेलना ४ गिराना, पटकना. ५ रखना ६ बिछाना (पलग, जाजम, आसन आदि) उ०—१ मन जाणे बूडलो हुवा, (ऊगा) वेणप री थळिसाह। वीभो ढाळै ढोलियो, वळती छाहडियाह।

—र रा

उ०—२ लाल लगोटो तिलक सिंदूर को, बैठा आसण ढाळ। बाबा बजरगी री बगळी हद बण्यो।—लो गी.

७ डेरा डालना, पडाव डालना ८ लौटाना, भेजना ९ घोडे, ऊँट, बैल आदि को चरने के लिये छोडना।

उ०—रैवारीडा सोजा मेरा वीर, रैण अधारी करहा ढाळ दै। गैली बहुवड असल गिवार, करहा लद्योडा अब ना ढळै।—लो.गी.

उ०—इयै कह्यो—म्हे आगलै सहर जाय बळद ढाळसा।

—बिसनी वेखरच री वात

१० व्यतीत करना, बिताना, गुजारना ११ खैराद पर उतारना, रूप देना १२ किसी पिघले हुए पदार्थ या लुग्दी को साचे मे डाल कर किसी वस्तु की रचना करना। उ०—पेट मूमल रौ पीपळियै री पान, कोई पसवाडा मूमल रा सचै ढाळिया।—लो गी.

१३ अर्पण करना, चढ़ाना। उ०—एक वाम अगुंम्ठ आधारै, नव दिन रात रहै निरहारै। कमध मतो सिर ढाळण कीधो, दरसण सकति प्रतखि तदि दीधो।—सू प्र

१४ दूर करना। उ०—ताहरा मेघै घाव कियो, सो दूदै ढाल सू ढाळि दियो।—दूदै जोधावत री वात

१५ मारना, सहार करना, काटना। उ०—अर हजारा ही वैरिया नू वसुधा माथै बिछाय ढाला समेत केई गजराज ढाळिया।—व भा

१६ आच्छादित करना, ढकना। उ०— ऊचो हाथ करै न, मुख दै पल्लो ढाळ हो चित्ता।—जयवाणी

१७ ओढ़ाना १८ देखो 'ढोळणौ, ढोळबौ' (रू भे)

उ०—१ निछरावळि कीध नाखि नजीक, मोताहळ ऊच्छाळ ए। राठौडा 'गजण' देव मैं राजा, चिहु दिसि चम्मर ढाळ ए।—गु रू व

उ०—२ सेसनाग गजछत्र धरइ, गगा यमुना चमर ढाळइ, व्रिहस्पति घडि आलउ वायइ।—व स

१९ नीचे करना, भुकाना। उ०—मारग पिण मिळिया साध सू जावै मूढो ढाळ हो।—जयवाणी

२० निगलना। ज्यू—कवो ई को ढाळीजै नी। घूट ई को ढाळीजै नी।

उ०—आगै भोपतजी समाधिया हुया हुता। काचो पाको वारो ढाळियो हुतो। पथ्य लियै हुता। पथ्य गोवळजी आपरै हाथि आरोगाडता।

—द वि

२१ देखो 'ढळणौ, ढळबौ' १३ (रू भे)

ढाळणहार, हारो (हारी), ढाळणियो—वि०।

ढळवाडणौ, ढळवाडबौ, ढळवाणौ, ढळवाबौ, ढळवावणौ, ढळवावबौ, ढळाडणौ, ढळाड़बौ, ढळाणौ, ढळाबौ, ढळावणौ, ढळावबौ—प्रे०रू०।

ढाळिओडौ, ढाळियोडौ, ढाळयोडौ—भू०का०कृ०।

ढाळीजणौ, ढाळीजबौ—कर्म वा०।

ढळणौ, ढळबौ—अक रू०।

ढाळमौ, ढाळवौ—देखो 'ढळवौ, ढळमौ' (रू भे)

ढालाळ, ढालाळौ–स०पु०—ढाल धारण करने वाला, ढलैत, योद्धा।

उ०—जाहर सारै जगत मे, अजरैल भालाळा। मेवासी वाका मरद, थळ भोम विचाळा। चावै ढेवै सारखा, जबरैल ढालाळा। मेवासै डूगर मही सोहड़ कळचाळा।—पा प्र

ढालि—देखो 'ढाल' (रू भे.) उ०—राजति ग्रति एण पदाति कज रथ, हंसमाळ वधि लास हय। ढालि खजूरि पूठि ढळकावें, गिरिवर सिणगारिया गय।—वेलि

ढालियोड़ो—भू०का०कृ०—१ पानी या ग्रन्य किसी द्रव पदार्थ को गिराया हुग्रा, बहाया हुग्रा. २ ग्रभिसिचन किया हुग्रा. ३ उंडेला हुग्रा. ४ गिराया हुग्रा, पटका हुग्रा ५ रखा हुग्रा. ६ बिछाया हुग्रा, (पलंग, जाजम, ग्रासन ग्रादि) ७ डेरा डाला हुग्रा, पड़ाव डाला हुग्रा. ८ लौटाया हुग्रा, भेजा हुग्रा. ९ घोड़े, ऊंट, बैल ग्रादि को चरने के लिये छोड़ा हुग्रा १० व्यतीत किया हुग्रा, बिताया हुग्रा, गुजारा हुग्रा. ११ खैराद पर उतारा हुग्रा, रूप दिया हुग्रा १२ किसी पिघले हुए पदार्थ या लुग्दी को साँचे में डाल कर बनाया हुग्रा. १३ ग्रर्पण किया हुग्रा, चढाया हुग्रा १४ दूर किया हुग्रा १५ सहार किया हुग्रा, मारा हुग्रा, काटा हुग्रा १६ ग्राच्छादित किया हुग्रा, ढका हुग्रा. १७ ग्रोढ़ाया हुग्रा १८ देखो 'ढोळियोडो' (रू भे) १९ नीचे किया हुग्रा, झुकाया हुग्रा २० देखो 'ढळियोड़ो' १३ (रू भे) (स्त्री० ढालियोडी)

ढालियो—स०पु०—१ ऊपर से लोहे की चद्दरों या घास-फूस से छाया हुग्रा प्रायः मकान के ग्रागे का खुला भाग, छप्पर।
क्रि०प्र०—उतारणो, करणो।
२ सिंचाई के खेत का एक भाग. ३ छोटा ढालू घास।
रू०भे०—ढळियो।

ढाळु, ढाळू—वि०—१ जो क्रमशः बराबर नीचा होता गया हो, ढालदार, ढालू। उ०—ससारचक्र तणउ इण परि ढाळु चडतउ पडतउ वरतइ काळु, कल्पद्रुम मनवछित होइ जुगळाधरम तिहां वरतइ सोइ।
—चिहुगति चउपई

ढालू—स०पु०—करील का पका हुग्रा फल।

ढालेत, ढालेती—स०पु०—ढाल रखने वाला, ढलैत, योद्धा। उ०—ग्राप भमर ग्रसवार, ढालेती पैदल घणं। तेरह सथ तोखार, मणधारी ग्रायो मिळण।—पा प्र.

ढाळे—वि०—ठीक, ग्रच्छा।
क्रि०वि०—तरह, प्रकार। उ०—ग्रागे लाठा माणसा सू कजियो छै, सो जाणं किस ढाळे ऊतरं।—कुवरसी साखला री वारता

ढाळोढाळ—क्रि०वि०—ढाल की ग्रोर।
उ०—मोडकी मगरी रो पाणी ढाळोढाळ ढळियो रे। ग्रावू थारे पा'डा मे ग्रगरेज वुड़ियो रे क काळी टोपी रो। हा रे काळी टोपी रो रे, देस मे छावणियां नाखे रे क काळी टोपी रो।—लो.गी.
वि०—ठीक, उचित।

ढाळो—स०पु०—१ पडाव, डेरा। उ०—किय ढाळो पूनागर कनै, ग्राय खबर यण रैविया। सो तुरग ग्रसी ग्रोठा सहित, है वोळावो खीचिया
—पा.प्र.

२ देखो 'ढाळियो' (रू भे)
३ प्रकार, भांति, तरह। उ०—ग्रापरै ढाळा रो वो सगळा चोखळा मे एक ई हो।—वाणी
४ हालत, दशा ५ शक्ल, रूप, ग्राकृति. ६ ढग।
उ०—थू तो काई, म्हारी होळी माता गरभ री। थू तो देख गँवरिया रो ढाळो रे, ढाल्या ढळकर चाल्यो ठेलणी, मोल्या मळक'र चालै मोरडी।—लो गी.

ढावणो, ढावबो—देखो 'ढाहणो, ढाहबो' (रू.भे.) उ०—१ जोर सू कई जणा भेळा-ई कूक ऊठिया—घर फूटै नै कारी कोयनी, घरभेदू ई लका ढावै।—वरसगाठ
उ०—२ दिल्लीसर वादस्या फौजा तो दीनी हुकवाय। हीलेडो वादस्या ऊपर चढ़ ग्रायो रे ढावण देवरा।—लो.गी.

ढावियोडो—देखो 'ढाहियोडो' (रू भे)
(स्त्री० ढावियोडी)

ढावो—स०पु०—तट, किनारा (नदी का) उ०—सारस केळ करै संजोडै, ऊचा भमग चढै तर ग्रोडै। दिस पिछमाण वादळा दोडै, तद जळ नदिया ढावा-तोडै।—वर्षा विज्ञान
रू०भे०—ढाहो।

ढाहढह, ढाहडोह—स०पु०—हाथी, गज (ना.डि.को)

ढाहणो—वि० (स्त्री० ढाहणी) १ मकान, दीवार ग्रादि ध्वस्त करने वाला. २ गिराने वाला. ३ मारने वाला। उ०—भाजणो ग्रिवेघी घडा भेळणो भिडज भाळै, ढाहणो गयदा खेति ढढोळणो ढाल। ग्रागळी दळा ग्रभग जैतखभ हुग्रो जुधं, 'जोधाहरो' जगजेठ जोध जगमाल।—जगमाल राठोड री गीत
४ सहार करने वाला. ५ नाश करने वाला. ६ काटने वाला.
७ मिटाने वाला ८ दूर करने वाला. ९ कहने वाला।
१० दमन करने वाला।

ढाहणो, ढाहबो—क्रि०स०—१ मकान, दीवार ग्रादि गिराना, ध्वस्त करना। उ०—चकतो ग्रकबर चयकवै, पतसाहा पतसाह। चतुरगी फौजा चढ़े, दिए दुरगा ढाह।—वा.दा.
२ गिराना, पटकना। उ०—नदी किनारै ग्राय रथी लात सू ढाय नाखी।—पचदडी री वारता
३ मारना। उ०—सूग्ररा रो सिकार माणीजै छै। एकल ढाहीजै छै।—रा सा.स.
४ नष्ट करना, उजाडना ५ संहार करना, मारना।
उ०—१ चख मुख ग्ररुण सचोळ, विळकुळतो वाकारतो। घीव झडा घमरोळ, ग्ररिदळ ढाहे हरिदउत।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
उ०—२ महावळ मुग्गळ ढाहि ग्रमाप। पटाझर सेल जडे 'परताप'।
—सू.प्र.
६ मिटाना। उ०—दादू ग्ररस खुदाय कर, ग्रजरावर का थान। दादू सो क्यू ढाहिये, साहिव का नीसाण।—दादू वाणी

७ दूर करना ८ कहना। उ०—ढीली वात म ढाहि, पुण्य री कारज पडता। ढीली वात म ढाहि, न्याय सूधी नीवडता। ढीली वात म ढाहि, बहस सूं पडियो बोलै। ढीली वात म ढाहि, ढमकिए वाहर ढोलै। सहु करै पूछि आगै सूजस, ढीली तठै न ढाहिजै। आवियै दाव ओठभता, कुळ धरमसीह कहाइजै।

९ दमन करना। —ध व ग्र

१० देखो 'ढहणो, ढहवो' (रू भे) उ०—राजा अपूठो आयो, राणी बैठी छै। इतरै राजा आयो। राणी वात पूछी। राजा बात कही। राणी धरि ढाहि पडी। सहेलिया सचेत की। विलाप करण लागी। राजा धीरज देण लागो। हूणहार मिटै नही।—चौबोली

ढाहणहार, हारो (हारी), ढाहणियो—वि०।

ढहवाडणो, ढहवाडवो, ढहवाणो, ढहवावो, ढहवावणो, ढहवाववो, ढहाडणो, ढहाडवो, ढहाणो, ढहावो, ढहावणो, ढहाववो—प्रे०रू०।

ढाहिओडो, ढाहियोडो, ढाह्योडो—भू०का०कृ०।

ढाहीजणो, ढाहीजवो—कर्म वा०।

ढहणो, ढहवो—अक०रू०।

ढा'णो, ढा'वो, ढावणो, ढाववो, ढाहवणो, ढाहववो—रू०भे०।

ढाहवणो, ढाहववो—देखो 'ढाहणो, ढाहवो' (रू भे)

उ०—ढाहेवा गजढाल, जसवत छळि मातै जुडणि। पाटोधर पडि ऊपडै, समहरि रायासाल।—वचनिका

ढाहवियोडो—देखो 'ढाहियोडो' (रू भ)

(स्त्री० ढाहवियोडी)

ढाहिक-वि०—१ मकान, दीवार आदि गिराने वाला, ध्वस्त करने वाला। उ०—दत रा टिला ढाहिक दुरग, ऊधरा चाचरा मसत अग।—सू प्र

२ गिराने वाला ३ मारने वाला. ४ सहार करने वाला ५ नष्ट करने वाला ६ काटने वाला. ७ मिटाने वाला. ८ दूर करने वाला. ९ कहने वाला।

ढाहियोडो-भू०का०कृ०—१ मकान, दीवार आदि गिराया हुआ, ध्वस्त किया हुआ २ गिराया हुआ, पटका हुआ ३ मारा हुआ नष्ट किया हुआ, उजाडा हुआ. ५ सहार किया हुआ, मारा हुआ ६ मिटाया हुआ. ७ दूर किया हुआ ८ कहा हुआ ९ दमन किया हुआ १० देखो 'ढहियोडो' (रू भे)

(स्त्री० ढाहियोडी)

ढाही-स०स्त्री—गाय।

कहा०—ढाही नू डोबी नीचे, डोबी नू ढाही नीचे करवू है—गाय का भैंस के नीचे और भैंस का गाय के नीचे करता है अर्थात् भैंस के लाभ से गाय का काम चलाना और गाय के लाभ से भैंस का काम चलाना। तात्पर्य यह है कि ससार मे इधर का उधर और उधर का इधर करने से ही काम चलता है।

(मि०— डाढी)

ढाहो-स०पु० (स्त्री० ढाही) १ बैल।

कहा०—ढाहो तो हाकी न लेवो, डोबी दोई न लेवो—बैल को हल मे जोत कर लेना चाहिये और भैंस को दुहने के बाद अर्थात् प्रत्येक वस्तु की जाच कर के लेना चाहिए।

२ देखो 'ढावो' (रू भे.) उ०—१ तद आप गोयद मूळाणी नू कही—गोयंद, आज री लोह विगडियो तिणसू तू इण नदी रै ढाहै चढ देखवो कर, गिणती कर, म्हारी कितरो हाथ वाह हुवै।

—पदमसिह री वात

उ०—२ उठै माधोसिहजी री मेल्नियो सदासिव भट आइयो, च्यार हजार फौज लेय उठा री कूच कर नागलै डेरो कियो, जोधा सारा खारी रै ढाहै मिळिया।—मारवाड रा अमरावा री वारता

ढिक ढिकण, ढिकुण-स०पु०—१ पक्षी विशेष. २ खटमल।

ढिढोरणो, ढिढोरबो-क्रि०स०—तलाश करना, ढूढना।

ढिढोरियोडो-भू०का०कृ०—तलाश किया हुआ, ढूढा हुआ।

(स्त्री० ढिढोरियोडी)

ढिढोरो—देखो 'ढढोरो' (रू भे) उ०—१ जो मैं ऐसी जाणती, प्रीत कियै दुख होय। नगर ढिढोरो फेरती, प्रीत न कीजो कोय।

—मीरा

उ०—२ तरै वादसाह फरमाई जे इण देस माही ढिढोरो फेरो। विगर फरयादी कोई माथै ऊपर लाल कपडो न पहरै।—नी प्र

ढि-स०स्त्री०—१ पतग २ मोरनी ३ निंदा ४ गदा ५ भूख.

स०पु०—६ लिंग (एका)

ढिकडियो—देखो 'ढीकडो' (अल्पा, रू भे)

ढिकोर-स०स्त्री०—१ मिट्टी का पात्र विशेष ?

ढिग-क्रि०वि०—१ ओर, तरफ। उ०—मची घन लूबी कूह कराळ, चहो ढिग होय रह्यो ढकचाळ।—राज विलास

२ निकट, पास। उ०—खोली खोला री डेढा ढिग ढोली, पोली सेढा री लीला विण-पीळी।—ऊ का.

३ देखो 'ढिगलो' (मह., रू भे) उ०—तद ओर हाथी नाठ गया ताहरा कुवर हाथी री माथो चीर अर गजमोती काढ फूलमती रै मोहडै आगळ ढिग कियो।—चौवोली

रू०भे०—ढिग।

ढिगलियो—देखो 'ढिगलो' (अल्पा, रू भे)

ढिगली-स०स्त्री०—देखो 'ढिगलो' (अल्पा., रू भे.) उ०—एक बार माळा री हुकारो भरचा पछै वो हेम री ढिगली नै ई ठोकर मार देवतो।—रातवासो

ढिगलो-स०पु०—ढेर, राशि, पुज। उ०—केहर हाथळ घाव कर, कुजर ढिगलो कीध। हसा नग हर नू तुचा, दात किराता दीध।

—बा.दा.

अल्पा०—ढिगलियो, ढिगली।

मह॰—ढिग, ढिग्ग ।

ढिगास-स॰पु॰—ढेर, राशि । उ॰—साह तणं दळ पाच सो, पडिया अठी पचास । मेर 'नरो' साता भडा, हुयगो घडा ढिगास ।—रा रू

ढिग—१ देखो 'ढिगलो' (मह, रू भे) उ॰—खेजडला री छाग, ठूठ नेळा कर राखे । दूद लगावे ढिग, जिग जाफो कर नाखे ।—दसदेव
२ देखो 'ढिग' (रू भे)

ढिरळणो, ढिरळबो-क्रि॰स॰—घसीटना, खींचना ।

ढिरळियोडो-भू॰का॰कृ॰—घसीटा हुआ, खींचा हुआ ।
(स्त्री॰ ढिरळियोडी)

ढिलडी—देखो 'दिल्ली' (अल्पा, रू भे)

ढिलाई-स॰स्त्री॰—ढीला होने का भाव, शिथिलता, सुस्ती ।

ढिलाडणो, ढिलाड़बो—देखो 'ढिलाणो, ढिलावो' (रू भे)

ढिलाडियोडो—देखो 'ढिलायोडो' (रू भे.)
(स्त्री॰ ढिलाडियोडी)

ढिलाणो, ढिलाबो-क्रि॰स॰ ('ढीलणो' क्रिया का प्रे॰रू॰) ढीला करवाना, शिथिल करवाना ।

ढिलायोडो-भू॰का॰कृ॰—ढीला करवाया हुआ, शिथिल करवाया हुआ ।
(स्त्री॰ ढिलायोडी)

ढिलावणो, ढिलावबो—देखो 'ढिलाणो, ढिलावो' (रू भे)

ढिलावियोडो—देखो 'ढिलायोड़ो' (रू भे)
(स्त्री॰ ढिलावियोडी)

ढिली—१ देखो 'दिल्ली' (रू भे.) उ॰—लगन कळह ढिली विह लिखियो, आलम घड देखे असमान । चीदाणो अजमेर विसारे, खिसियो लसियो हाजीखान ।—दूदो
२ मुक्त, छोडना क्रिया ।
३ देखो 'ढीली' (रू भे)

ढिलीवे-स॰पु॰ [स॰ दिल्ली+पति] बादशाह । उ॰—वस छतीस वरम गनीमा गाळणो, आफाळी अधपती भनी दृढ भाळणो । जारज पचम जोध ढिलीवे बूकडो, आठू पहर अबीह सेढेचो रहै मडो ।
—किसोरदान बारहठ

ढिलो—१ छोडने का भाव, मुक्त । उ॰—घर नारी घर घोडले, सब कीन्हे ढिले ।—केसोदास गाडण
२ देखो 'ढीलो' (रू भे.)

ढिल्ल—देखो 'ढील' (रू भे) उ॰—आस पूरो हुण दास नी, करदा हो काहे ढिल्ल ।—ध व ग्र

ढिल्लणो, ढिल्लबो—देखो 'ढीलणो, ढीलवो' (रू भे)
उ॰—ढिल्लीपह आयै राण अत ढिल्लियो, तिण सू कहै चित्रगढ तूझ । जैमल जोध काम तो जेही, मारुआ राव म ढीलिस मूझ ।
—राव जयमल मेडतिया रो गीत

ढिल्लि—देखो 'ढील' (रू भे) उ॰—मेल्हिय प्रधान कहियउ मुगुळिळ, घर साजि मुहर हू म करि ढिल्लि । छा छत्र सरिस म म जाहि छेहि, दम कोडि द्रव्य वीवाह देहि ।—रा ज सी.

ढिल्लिय—देखो 'दिल्ली' (रू भे.) उ॰—सुनि ठोर परी सद नद्दन के, परि ढिल्लिय सोर रवद्दन के ।—पा.रा.

ढिल्लियोडो—देखो 'ढीलियोडो' (रू भे.)
(स्त्री॰ ढिल्लियोडी)

ढिल्ली—देखो 'दिल्ली' (रू भे.) उ॰—नर मोटो सहिस्ये नही, राउ तणो कुण रेस । स्यो ढिल्ली सुरताण स्यो, आठ पुहर अह तेस ।
—रा ज रासो

ढिल्लीउ—देखो 'दिल्ली' (रू भे.)

ढिल्लीपह, ढिल्लीपत, ढिल्लीपती-स॰पु॰ [स॰ दिल्ली+प्रभु, दिल्ली+पति] बादशाह । उ॰—ढिल्लीपह आयै राण अत ढिल्लियो, तिण सू कहै चित्रगढ तूझ । जैमल जोध वार तो जेही, मारुआ राव म ढीलिस मूझ ।—राव जयमल मेडतिया रो गीत

ढिल्लो-वि॰पु॰ (स्त्री॰ ढिल्ली) शिथिल, ढीला ।
उ॰—महमदसाह तजै जो दिल्ली, तो गुजरात करू मे ढिल्ली ।
—रा रू.

ढिस्सो-स॰पु॰—मिट्टी का कठोर टीवा । उ॰—१ लकडी थारी रीठ, लास रोमावळ लै'रा । ढिस्सा मठ ढमढेर, ईल जळ ऊडा वेरा ।
—दसदेव
उ॰—२ घूधा धोरा नाव, कठै लाका लामोडा । गाळा आडावळा, गगणचुवी डोगोडा । टोकी भव्य सोपान, सातसम सीतळ टोळी । ढिस्सा दडा पडाळ, लुभाणी खोतिज खोळी ।—दसदेव

ढींक-स॰पु॰—१ लाल मुँह वाला एक पक्षी विशेष जिसकी गरदन के नीचे थैली होती है ।
अल्पा॰—ढींकडो ।
२ मुष्ठि प्रहार । उ॰—आठ ढींक गरदन माही रे । दीजे वात कही सत ताही रे ।—स्री धर्मपरीक्षानो रास
रू॰भे॰—ढीक ।
(मि॰ धीक)

ढींकडजी—देखो 'ढीकडो' (मह, रू भे) उ॰—कैणा मे तो ठाकर रो वाटो चोथो हो पण रोजीना री मागी तागी मे कै आज फलाणजी रै मिरचा भेजणी, आज ढींकडजी रै, आज फलाणजी रै ।—वाणी

ढींकडो—१ देखो 'ढींक' (अल्पा, रू भे) २ देखो 'ढीकडो' (रू भे)
(स्त्री॰ ढीकडी)

ढींकणो-वि॰ (स्त्री॰ ढीकणी) रभाने वाला ।
रू॰भे॰—ढीकणो ।

ढींकणो, ढींकबो-क्रि॰अ॰—रभाना । उ॰—डाढा ताभाडै केरडिया ढींकै, रोटी पाणी नै टीगरिया रीकै ।—ऊ का.
ढीकणो, ढीकबो—रू॰भे॰ ।

ढींकली—देखो 'ढीकली' (रू भे) उ॰—गढ़ कैळास जिम ऊचउ, गरुई पोळि । सघर कपाट लोहमय भोगळ, विजयहरी तणी पद्धति, यत्र तणी स्रेणि, ढींकली तणी परपरा, खाई गढ, पाणी गढ़ ।
—व स

ढींकाळी-स०स्त्री०—लता विशेष। उ०—दूदवनी ढोकळ फळी, ढीवर ढाढर ढाढि। ढींकाळी नइ ढीचणी, आवइ खरिइ असाढि।
—मा का.प्र

ढींकियोडौ-भू०का०कृ०—रम्भाया हुआ।
(स्त्री० ढींकियोडी)

ढींकुली—देखो 'ढीकली' (रू भे) उ०—विजाहरी तणी पद्धति, यत्र तणी सं॑णि, ढींकुली तणी परपरा।—व.स

ढींकेळ-स०स्त्री०—रहट के मध्य स्तम्भ को स्थिर रखने वाले ऊपर के दो बडे डडो को जोडने वाली कील।
रू०भे०—ढीकलौ।

ढींगर—देखो 'ढीगळौ' (मह, रू भे)

ढींगरियौ—देखो 'ढीगळौ' (अल्पा, रू भे)

ढींगरी-स०स्त्री०—देखो 'ढीगळौ' (अल्पा., रू भे)

ढीगरौ—देखो 'ढीगळौ' (रू भे)

ढींगळ—देखो 'ढीगळौ' (मह, रू भे)

ढींगळियौ—देखो 'ढीगळौ' (अल्पा, रू भे)

ढींगळी-स०स्त्री०—देखो 'ढीगळौ' (अल्पा, रू भे)

ढींगळौ-स०पु०—१ मिट्टी के बरतन का टूटा हुआ वेडौल भाग जिसमे किसी वस्तु को रखा जा सकता है २ देखो 'ढूलौ'।
उ०—माहोमाहि माडइ कग्इ, परिपरि खुदइ खेलि। परि परिणावइ ढींगळा, गान करती गेलि।—मा का प्र
रू०भे०--ढीगरौ, ढीगोळ।
अल्पा०—ढीगरियौ, ढीगरी, ढीगळियौ, ढीगळी, ढीगोळियौ, ढीगोळी
मह०—ढीगर, ढीगळ, ढीगोळ।

ढींगोळ—देखो 'ढीगळौ' (मह, रू भे)

ढींगोळियौ—देखो 'ढीगळौ' (अल्पा, रू भे)

ढींगोळी-स०स्त्री०—देखो 'ढीगळौ' (अल्पा, रू भे)

ढीगोळौ—देखो 'ढीगळौ' (रू भे)

ढींगौ-वि० (स्त्री० ढींगी) १ जबरदस्त २ वडा।

ढींच-स०पु०—१ तालावो के किनारे रहने वाला पक्षी विशेष।
२ कक पक्षी ३ कुप, कुआ ४ पानी लाने के लिए काठ का बना हुआ उपकरण जो ऊँट, भैंस आदि पर रखा जाता है ५ हाथी।
उ०—भिडै भीच भल्ल, ढहे ढींच ढल्ल।—गु.रू व.
वि०—१ वडे डीलडौल वाला २ प्रभावशाली।
रू०भे०—ढीच।
अल्पा०—ढीचाळौ, ढीचाळौ।
मह०—ढीचाळ ढीचाळ।

ढींचाळ—देखो 'ढींच' (मह, रू भे) उ०—१ ढळ ढींचाळ तणी रण दाणि। पडै अ्रू रेणु धिखं पीठाणि।—रा ज. रासौ
उ०—२ कइ नर डाढाळ ढींचाळ उगालण होय भ्रमं खळ खाण नरो।—रुहणा सागर

ढींचाळौ—देखो 'ढीच' (अल्पा, रू भे) उ०—ढाला ढोला भ्रर ढींचाळा, जुडै न कमधज किरमाळा। जे जुडसी कमधज किरमाळा, ढाल न ढोल न ढींचाळा।
—राठौड चादा वीरमदेवोत मेडतिया री गीत
(स्त्री० ढीचाळी)

ढींब, ढींबड—देखो 'ढीमडौ' (मह, रू भे,) उ०—नागोर सू धाय पुसकरजी स्नान करण नू आयी जद महाराज अभैसिंघजी फुरमाया तू अजमेर आव, हू तो आगै छाती रौ ढीब भराणो है सू हूं फोड़ू। राजाधिराज रा भय सू।—बा दा ख्यात

ढींवडियौ—देखो 'ढीमडौ' (अल्पा., रू.भे)

ढींबडी—देखो 'ढीमडौ' (अल्पा, रू भे)

ढींबडौ—देखो 'ढीमडौ' (रू भे)

ढींम, ढींमड—देखो 'ढीमडौ' (मह, रू भे)

ढींमडियौ—देखो 'ढीमडौ' (अल्पा, रू भे)

ढींमडी-स०स्त्री०—देखो 'ढीमडौ' (अल्पा, रू भे)

ढींमडौ—देखो 'ढीमडौ' (रू भे)

ढी-स०पु०—१ विल्व. २ ब्रह्मचर्य ३ शिष्य ४ गधा ५ वृक्ष।
स०स्त्री०—६ पृथ्वी ७ मति, बुद्धि (एका)

ढीक-स०पु०—१ एक प्रकार का कीडा जो धान मे लग जाता है, घुन.
२ देखो 'ढेकली' (रू भे) उ०—कुल करसण करै वरीसण कोडी, ढीक कनक मभ ढालडिया। 'अडसी' सभ्रम ठोड सिचै इम, हम्म महादत हालडिया।—महाराणा हमीरसिंघ रौ गीत
३ गरीब (रू भे) उ०—महाजन निमनि मोटी दया, राक ढीक उपरि बहु मया।—ऐ जै का.सं.
४ देखो 'ढीक'। उ०—पाठक पञ्चा बोल्या ततखिणे, ढीक पाटु ना प्रहार रे।—स्त्री धर्म परीक्षाना राम

ढीकडजी—देखो 'ढीकडौ' (मह, रू भे)

ढीकडियौ—देखो 'ढीकडौ' (अल्पा, रू भे)

ढीकडी—देखो 'ढीकली' (रू भे)
उ०—तोही जोध न जागवै मुदगर उडाया। जाण ज दीधी ढीकडी नीसाण घुराया।—केसोदास गाडण
वि०स्त्री०—अमुक, ढिमकी।

ढीकडौ-वि० (स्त्री० ढीकडी) अमुक, ढिमका।
रू०भे०—ढीकडौ।
अल्पा०—ढिकडियौ, ढीकडियौ।
मह०—ढीकडजी।

ढीकणौ—देखो 'ढीकणौ' (रू भे)
(स्त्री० ढीकणी)

ढीकणौ, ढीकवौ—देखो 'ढीकणौ, ढीकवौ' (रू भे.)

ढीकली-स०स्त्री०—१ तोप के आकार का पत्थर फेंकने का प्राचीन

पत्र। उ०—मोलहण साह बोलियो—तीस बरस ईंधण हूं पूरीस। भीमसाह कह्यो—म्हारै इतो गुळ है, अठारै वरस ताईं ढीकली गुळ रा हीज गोळा चलावो।—बां दा ख्यात

२ देखो 'ढेकली' (रू भे)

रू०भे०—ढीकली, ढीकुली ढीकडी, ढीकुली।

ढीकलो—१ देखो 'ढीकेल' (रू भे)

२ देखो 'ढकलो' (रू भे)

ढीकुली—देखो 'ढीकली' (रू भे) उ०—पत्र तणी स्रेणी, ढीकुली तणी परपरा।—व स.

ढीकोळ—स०पु०—युद्ध, सग्राम।

ढीगाळ—वि० [सं० दीर्घाल] महान्, बडा। उ०—जेजळमेर सू राणी गगाजी मार्ग राखेचा करमसी रूपसीगोत बीकानेर आया। पीछै कवर सूरसिघजी रै पटै फळोधी छी। अरु गहणा जड ऊ निजर सूरसिघजी रै किया। राखेचा भाटी वेजलण मे मिळै छै। अरु गगा राणी सार्गे ढीगाळ भेरू आयो। पीछै स० १६५१ पोह सुद १२ नै गगा राणीजी रै पेट सूरसिघजी रो जन्म हुवो। उण हीज वरस १६५१ माघ सुद १५ राणी निरवाणजी रै किसनसिघजी जन्मिया अर वडो उछव हुवो।—द दा

ढीगास, ढीगासो—स०पु०—समूह, ढेर।

उ०—पड लक जग जासं, अत प्रकासं आवधा। ग्रीधा ढीगासं मास ग्रासं, सुज हुलासं सूर।—र.ज.प्र.

ढीच—देखो 'ढींच' (रू भे)

ढीचकनळियो—स०पु०—एक पक्षी विशेष।

ढीचाळ—देखो 'ढींच' (मह, रू.भे)

ढीचाळो—देखो 'ढींच' (मह, रू भे.) उ०—आगं मेली सोना नी थाळी, कीधा रग-रोळा, भाजा मेलीया रूपामोना ना कचोळा, तिहा बैठा बत्रीस लखण पुरुष दुदळा फुदळा जाकजमाळा मुछाळा, केई जमाई केई साळा, ईसा पाती बैठा राजवी ढीचाळा।—व स

(स्त्री० ढीचाळी)

ढीठ—देखो 'ढीठो' (मह, रू भे) उ०—१ नमो ढीठ ढोटा चवै नाग नारी। हवै जोड तूं सु हुवै वाद हारी।—ना द.

उ०—२ सोतै बाळक आन जगावै, ऐसो ढीठ तेरो कन्हैया। मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरि लागू तोरै पैया।—मीरा

उ०—३ दादू नैन हमारे ढीठ हैं, नाळै नीर न जाहि। सूकै सरा सहेतवै, करक भये गळि माहि।—दादू वाणी

ढीठता—स०स्त्री० [सं० धृष्टता] ढिठाई, धृष्टता।

ढीठो—वि० [स० धृष्ट] (स्त्री० ढीठी) धृष्ट, निष्ठुर।

मह०—ढीठ।

ढीढा—स०स्त्री०—पंवार वश की एक शाखा।

ढीढो—स०पु० (स्त्री० ढीढी) पंवार वश की ढीढा शाखा का व्यक्ति।

ढीव, ढीवड—देखो 'ढीमडो' (मह, रू भे)

ढीवडियो—देखो 'ढीमडो' (अल्पा रू भे)

ढीवडी—देखो 'ढीमडो' (अल्पा, रू भे.)

ढीवडो—देखो 'ढीमडो' (रू भे)

ढीवस—देखो 'ढीवसो' (मह, रू भे)

ढीवसियो—देखो 'ढीवसो' (अल्पा, रू भे)

ढीवसो—स०पु०—मिट्टी का नन्हा दीपक (शेखावाटी)।

रू०भे०—डीवस।

अल्पा०—डीवसियो, ढीवसियो।

मह०—ढीवस।

ढीम—देखो 'ढीमडो' (मह, रू भे)

ढीमको—देखो 'ढोलक' (अल्पा, रू भे)

ढीमड—देखो 'ढीमडो' (मह, रू भे)

ढीमडिया—स०स्त्री०—चौहान वश की एक शाखा।

ढीमडियो—स०पु०—१ चौहान वंश की ढीमडिया शाखा का व्यक्ति.

२ देखो 'ढीमडो' (अल्पा, रू भे)

ढीमडी—देखो 'ढीमडो' (अल्पा, रू भे)

ढीमडो—स०पु० १ शरीर के किसी अग पर उठने वाली गाठ, फोडा.

२ रहट, कुआ। उ०—एक सवार ढीमडै वेरै आयो। वाकली मे आपरी घोडो पाणी पावै।—वाणी

३ वालू का टीवा।

वि०—मूर्ख, नासमझ।

रू०भे०—टीवडो ढीमडो, ढीवडो।

अल्पा०—टीवडियो, ढीवडी, ढीमडियो, ढीमडो, ढीवडियो, ढीवडी, ढीमडियो, टीमडी।

मह०—ढीव, टीवड, ढीम, ढीमड, ढीव, ढीवड, ढीम, ढीमड।

ढीमर—स०पु० [स० धीवर] कहार जाति का वह व्यक्ति जो मछली पकडने का कार्य करता है (अ मा)

ढीर—देखो 'ढीरो' (मह, रू भे)

ढीरकियो, ढीरकी, ढीरको, ढीरडो, ढीरियो—देखो 'ढीरो' (अल्पा, रू भे)

ढीरी—स०स्त्री०—देखो 'ढीरो' (अल्पा, रू भे)

ढीरो—स०पु०— काटेदार वृक्ष अथवा झाडी की टहनी, काटेदार शाखा।

मुहा०—१ ढीरो फिरणो—समूल नष्ट हो जाना, बरबाद हो जाना।

२ ढीरो फेरणो—नष्ट कर देना, बरबाद कर देना।

अल्पा०—ढीरकियो, ढीरकी, ढीरको, ढीरडो, ढीरियो, ढीरी।

मह०—ढीर।

ढील—स०स्त्री०—१ विलम्ब, देरी। उ०—१ म म करिसि ढील हिव हुए हेक मन, जाइ जादवा इद्र जत्र। माहरै मुख हु ता ताहरै मुखि, पग वदण करि देई पत्र।—वेलि

उ०—२ सुण ऐ वचन सनेह रा, कीनी ढील न काय। रग भीनो नै राजवी, लीनो कठ लगाय।—पना वीरमदे री वात

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

२ समय। उ०—जाडी क्रिलै सफील, माय ज नर निवळा वसै। ढूढा ढहता ढील, रती न लागै राजिया।—किरपाराम

३ अतत्परता, सुस्ती। उ०—मिळिया अनुकेत सुद्यावसु मारग, मान महातम सेत मनो। सह रोटी बीज समेत सताना, ढील न लायो देत घनो।—भगतमाळ

क्रि०प्र०—लाणी।

४ बन्धन ढीला करने का भाव ५ डोरी को खिचाव की ओर छोडते रहने की क्रिया या भाव।

मुहा०—१ ढील छोडणी—देखो 'ढील दैणी'।

२ ढील दैणी—बन्धन से मुक्त करना। स्वच्छदता देना, आजादी देना, मनमाना कार्य करन का अवसर देना, पतग की डोरी को आगे की ओर वढाना।

रू०भे०—ढिल्ल, ढिल्ली।

६ यूका, जू।

वि०—जिसके ठहरे या बधे हुए छोरो के बीच झोल हो।

उ०—वटाऊ वंठा आड-पिलाण, ऊठडा मारग झुरकै जाय। सुणीजै फुरणी मूरी ढील, मोद मू.ल रूप सराय।—साझ

ढीलउ—देखो 'ढीलो' (रू भे) उ०—स्रवणि तारस्फर झळकता कुडळ, ढीलउ घम्मिल्ल, मस्तकि समारित केसकळाप।—व स

ढीलडी—१ देखो 'दिल्ली' (अल्पा, रू भे) उ०—चाढ़ि घड वेहडा, वाढि भड चोसरा, चाळि कळि काळि उजवाळि चीला। परव इसडै मुओ नाथ रो माडि पग, ढीलडी तणा पग हुआ ढीला।

—हाडा रावा सत्रसाळ गोपीनाथोत रो गीत

२ देखो 'ढेलडी' (रू भे) ३ देखो 'ढील' (अल्पा, रू भे)

ढील-ढालो—स०पु०—हाथी, गज (ना डिं को)

ढीलणो, ढीलबो—क्रि०स०—१ ढीला करना, बन्धनमुक्त करना

२ डोरी आदि को आगे वढाना ३ छोडना, मुक्त करना।

उ०—अकबर आवत उदियासिघ, चवै ढीलो कीधो चित्तोड। मोटा छात जोध हर मडण, रखै मूझ ढीलै राठोड।

—राव जयमल राठौड मेडतिया (वदनोर) रो गीत

ढिल्लणो, ढिल्लबो, ढीलवणो, ढीलवबो—रू०भे०।

ढीलवणो, ढीलवबो—देखो 'ढीलणो, ढीलबो' (रू भे)

ढीलवियोडो—देखो 'ढीलियोडो' (रू भे)

(स्त्री० ढीलवियोडी)

ढीलिणो—वि० (स्त्री० ढीलिणी) दिल्ली मे रहने वाला।

उ०—ढीलिणि अनु नागोरिय, गउरिय सोहग पूरि। जसु वर वदनि कळकिउ, पक्रिउ चदल दूरि।—प्राचीन फागु-सग्रह

ढीलिणो, ढीलिबो—देखो 'ढीलणो, ढीलबो' (रू भे)

ढीलिपति, ढीलिपती—स०पु० [स० दिल्लीपति] वादशाह।

उ०—माहरा साथ रा हाथ हिवै देखज्यो, ढीलिपति रहै मति हिवै ढीलो।—प.च चौ

ढीलियोडो—भू०का०कृ०—१ ढीला किया हुआ, बन्धनमुक्त किया हुआ २ डोरी आदि को आगे वढ़ाया हुआ।

(स्त्री० ढीलियोडी)

ढीली—देखो 'दिल्ली' (रू भे) उ०—वहलोलसाह्नि सउ वोलि वोल, ढीली ढढोळि वावाडि ढोल। पुरफते लाइ झीझणू पाइ, राखिया वाह दे रोपि राउ।—रा ज सी

यौ०—ढीली-नयर, ढीली-नयरी।

वि०स्त्री०—१ आलसी, सुस्त २ जो कस कर नहीं वधी हुई हो। उ०—ढीली लागा रा ढेरा ढळकाता, टोघड टुकडा रा सेरा खळकाता।—ऊ का.

मुहा०—ढीली धरणी—शिथिलता धारण करना, सुस्त पडना।

उ०—अदृढ़, शिथिल। उ०—ढीली वात म ढाहि, पुण्य रो कारज पडता। ढीली वात म ढाहि, न्याय सूधो नीवडता। ढीली वात म ढाहि, वहस सू पडियो वोलै। ढीली वात म ढाहि, ढमचिए वाहर ढोलै। सहु करै पूछि आगै सुजस ढीली तठै न ढाहिजै। आवियो दाव ओढभता, कुळ वरमसीह कहाइजै।—घ व ग्र.

४ कमजोर, निर्वल ५ जो एक स्थान पर ठहरी हुई न हो, अस्थिर। उ०—पासो ढुळै है, हाथ लुळै है, ढीली नथ ढळकै है, प्रेम री झाई जाहर झळकै है।—र हमीर

ढीलीपति, ढीलीपहो, ढीलीराव—स०पु० [स० दिल्ली+पति, दिल्ली+राज] दिल्ली का अधीश्वर, वादशाह।

ढीलु, ढीलू—देखो 'ढीलो' (रू भे) उ०—१ राघती सीधती खारु मउलु करइ, दाधु काचउ करइ, ढीलु गीलु करइ।—व स

ढीलो—वि० [स० शिथिलक] (स्त्री० ढीली) १ मद, धीमा।

उ०—नीला काय ढीलो वहै, देस पयाणो दूर। पथ जोवै हद पदमणी, पना ज जोबन पूर —पना वीरमदे री वात

२ जिसके वधे या ठहरे हुए छोरो के बीच झोल हो ३ शिथिल। उ०—हिवडा थारो जाझो रे, वैराग छै ताजो रे। पायो धरम रसीलो रे, रखै पडि जाय ढीलो रे। मटक वैरागी हो राजिंद! होयज्यो मतो रे।—जयवाणी

४ जो दृढता से वधा या लगा न हो, जो खूब कस कर पकडा गया न हो, जो भली प्रकार जमा या वैठा हुआ न हो।

उ०—हाथा रा हथफूल भाभी ढीला कीकर पडगा ओ।—लो गी

५ कमजोर, निर्वल। उ०— दिलीपति ढीलो हुवो, पहुचै कोइ न पाण। अचिरज आसगी न सकै, वोलै एहवी वाण।—प च चौ

६ जो खूब कस कर पकडा हुआ न हो। ज्यू—गाठ ढीली पडणी।

७ अतत्पर, सुस्त। उ०—१ माहरा साथरा हाथ हिवै देखज्यो, ढीलिपति रहै मति हिवै ढीलो। भाजता लाज तुज काज आवै नाहि, देखियो साहि मोटो अडीलो।—प च चौ

उ०—घर कारज ढीला घणा, पर कारज समरत्थ। ज्यानै साईं उवारसी, दे दे आडा हत्थ।—अज्ञात

८ जिसमे किसी वस्तु को डालने से बहुत सा स्थान इधर-उधर खाली छूटा हो। ज्यू—कुरतो ढीलो होणो, पगरखी ढीली होणी।
९ जो जकडा हुआ न हो, शिथिल। उ०—कर ढीलो मेहिल्यु तव पछी ऊडीग्यु आकास।—नळाख्यान
१० प्रयत्न या सकल्प मे शिथिल, जो अपने हठ पर अडा न रहे। ज्यू—ढीला मत पडजो, घडी घडी यात याद अणावता रईजो।
११ जो भली प्रकार जुडा हुआ न हो, असलग्न। उ०—नसा जाळ व्यक्ता दीसइ, अस्थिवध ढीला ढळहळना जिमा गामटि अजाणि सूत्रधारि रास्ट।—व स
१२ जिसके क्रोध का वेग शान्त पड गया हो, नरम, शान्त। ज्यू—ढीला पडग्या तो लोग पग ही को टिकण देला नी।
मुहा०—१ ढीलो मूडो करणो—कुछ प्राप्ति की आशा करना।
२ ढीलो मूडो मेजणो—देखो 'ढीलो मूडो करणो'।
१३ छोडना, मुक्त। उ०—१ चैत सुद १२ भीमराव राम वळै हसनकुळी मुदफरखान कटक ले आयो। वैसाख वद २ री रात गाव ढीलो कियो।—राव चद्रसेन री वात
उ०—२ अकवर आवत उदियागिध, चर्व ढीलो कीधो चित्तौड, मोटो छात 'जोध' हर मडण, रखै मूक ढीलै राठोड।
—राव जैमल मेडतिया रो गीत
१४ जिसमे काम का वेग न हो, नपुसक १५ जो एक स्थान पर ठहरा हुआ न हो, अस्थिर १६ अदृढ, शिथिल १७ जो कडा न हो, जिसमें जलांश अधिक हो, गीला।
रू०भे०—ढिलो, ढीलउ, ढीलु ढीलू।
यौ०—ढीलो-ढालो।
ढीह, ढीहो-स०पु०[स० दीर्घ] वडा टीला, टूह।
ढुई—देखो 'ढुई' (रू भे)
ढुढ—१ देखो 'ढूढ' (रू भे) २ देखो 'ढूढो' (मह, रू भे)
३ देखो 'ढूढियो' (मह, रू भे)
ढुढदेस—देखो 'ढूढाड'।
ढुढराव-स०पु०—सिंह, पचानन (ना डि को)
ढुढा-स०स्त्री०—१ हिरण्यकश्यपु की वहिन एक राक्षसी (पौराणिक)
२ देखो 'ढूढाड' (रू भे)
ढुढाड, ढुढार, ढुढाहड—देखो 'ढूढाड' (रू भे)
ढुढि-स०पु० [स०] गणेश का एक नाम।
ढुढियो—देखो 'ढूढियो' (रू.भे) उ०—सीस चो लाख न हुवै समा, खोटि जड रा खुडीया। पारकी निंद करता प्रगट, धरमी किहा थी ढुढिया।—ध व ग्र.
ढुढो—देखो 'ढूढो' (रू भे) उ०—अपयस जीव उदेग मान तो नही छै मूढा। सुणि भारथ धरमसीह, ढाहि गढ कीधा ढुढा।—ध.व ग्र
ढु-स०पु०—१ कर्म. २ दुष्ट ३ हाथी. ४ सर्प ५ सूर ६ वन्दर (एका)

ढुई-स०स्त्री०—१ रीढ की हड्डी के नीचे का भाग जहा कूल्हे की हड्डिया मिलती है, त्रिकास्थि।
क्रि०प्र०—पडणी, होणी।
मुहा०—ढुई टेकणी—हार मानना।
२ पीठ के नीचे का कूल्हो पर्यन्त भाग. ३ वाजरी के डठलो का एक प्रकार का महीन चारा जो मवेशी को चराने के काम आता है।
रू०भे०—ढुई, ढुही।
ढुओ—देखो 'ढुवो' (रू भे)
ढुकडो—देखो 'ढूकडो' (रू भे) उ०—एक ढुकडा जेवै गळा, ज्यो चित उछाह। ज्यो वसता चिहु आगळा, लायण कनन दीठ।—ढो मा
ढुकाडणो, ढुकाडवो—देखो 'ढुकाणो, ढुकावो' (रू भे)
ढुकाडियोडो—देखो 'ढुकायोडो' (रू भे)
(स्त्री० ढुकाडियोडी)
ढुकाणो, ढुकावो-क्रि०स०—कार्य मे प्रवृत्त करना, कार्य आरम्भ कराना, लगाना।
ढुकाणहार, हारो (हारी), ढुकाणियो—वि०।
ढुकायोडो—भू०का०कृ०।
ढुकाईजणो, ढुकाईजवो—कर्म वा०।
ढूकणो, ढूकवो—अक० रू०।
ढुकायोडो-भू०का०कृ०—कार्य मे प्रवृत्त किया हुआ, कार्य आरम्भ कराया हुआ, लगाया हुआ।
(स्त्री० ढुकायोडी)
ढुकायणो, ढुकायवो—देखो 'ढुकाणो, ढुकावो' (रू भे.)
ढुकावियोडो—देखो 'ढुकायोडो' (रू भे)
(स्त्री० ढुकावियोडी)
ढुक्कणो, ढुक्कवो—देखो 'ढूकणो, ढूकवो' (रू भे)
उ०—हुकार नाद वन सिंह ढुक्कि। ढूढत भक्ष निसचार ढुक्कि।
—राजविलास
ढुक्कियोडो—देखो 'ढूकियोडो' (रू भे)
(स्त्री० ढुक्कियोडी)
ढुगली-स०स्त्री०—देखो 'ढिगली' (अल्पा रू.भे)
ढुगलो—देखो 'ढिगलो' (रू.भे)
ढुचको-स०पु०—धीरे-धीरे दौडने की एक चाल।
ढुचरो-वि० (स्त्री० ढुचरी) १ वृद्ध, बुड्ढा २ अशक्त, निर्बल।
स०पु०—पत्नी का पिता, श्वसुर (अवज्ञा)
ढुरियो-स०पु०—ऊँट की चाल विशेष (शेखावाटी)
ढुळकणो, ढुळकवो—देखो 'ढळकणो, ढळकवो' (रू भे)
उ०—दो आसूडा ढुळकनै उणरी पेटी रा खजाना मे जुडग्या।
—वाणी
ढुळकाणो, ढुळकावो—देखो 'ढळकाणो, ढळकावो' (रू भे)
ढुळकायोडो—देखो 'ढळकायोडो' (रू भे)

(स्त्री० डुळकायोडी)

डुळकियोडो—देखो 'ढळकियोडो' (रू भे)

(स्त्री० डुळकियोडी)

डुळडी -देखो 'ढूली' (अल्पा., रू भे) उ०—अदभुत लसं छब गवर अग, पदमरिग कोमळ चपक प्रसग। डुलड्या रमं सग सखी ढूळ, दमकत अग जरकस दकूळ।—बगसीराम प्रोहित री वात

डुळडुळ-स०स्त्री०—युद्ध के बाजे की आवाज, ढोल की आवाज।

उ०—निहट्टी 'जंत' घुरं नीसारा, खळभळ होइ दळा खुरसारा। महा मुहि खेत्र चढं विहु मल्ल, डुळड्डुळ ढोल ढमके ढल्ल।

—राज रासो

डुळणौ, डुळबौ—क्रि०अ०—१ गिर जाना, लुढ़क जाना, वह जाना।

उ०—१ घणा रत छूटत फुटत घाट, मजीठ जाणि ढुळे रग माट।

—सू.प्र

उ०—२ पासी ढुळे है, हाथ लुळं है, ढीली नथ ढळकं है, प्रेम री झाई जाहर झळकं है।—र हमीर

२ वीर गति को प्राप्त होना। उ०—१ क्रोध मुखी सारा मति कार्मात, विसधारी निज लीध वर। ढुळियं 'रयण' ढोलियं ढोवं, लोह तणा वार्ज लहर।—दूदो

उ०—२ सवाहा जोध ढुळे स-सनाह। गुडे गज थाट हुवो गजगाह।

—राज रासो

३ अत्यधिक स्नेह के कारण द्रवित होना। उ०—साम कृपा कर सूर की, आरूयाज उधारे। नरसीहा के हेत सू, हूडी सतकारे। प्रभु तं माधव ऊपरा, ढुळ कावळ ढारे, भळकं खाडा भवन के, पत राखी प्यारे।—भगतमाळ

४ कृपालु होना, अनुकूल होना, प्रसन्न होना. ५ झुकना, प्रवृत्त होना ६ (चँवर का) लहर खाकर डोलना, इधर-उधर हिलना-डुलना। उ०—१ तात तणका जस हका, मद प्याला मतवाळ। धोळहरा चमरा ढुळे, ऊ 'भाराणी' भाळ।—वा दा

उ०—२ चम्मरा ढुळतेस चारं। तखत वैठो छत्र धारं।—सू प्र

डुळणहार, हारो (हारी), डुळणियो—वि०।

डुळवाडणौ, डुळवाडबौ, डुळवाणौ, डुळवाबौ, डुळवावणौ, डुळवावबौ, डुळाडणौ, डुळाडबौ, डुळाणौ, डुळाबौ, डुळावणौ, डुळावबौ—प्रे०रू०।

डुळिओडो, डुळियोडो, डुळ्योडो—भू०का०कृ०।

डुळीजणौ, डुळीजबौ—भाव वा०।

ढळणौ, ढळबौ—रू०भे०।

डुळवाई, डुळाई— देखो 'ढोळाई' (रू भे)

डुलार, डुलारो—स०पु०—समूह, झुण्ड। उ०—झली मुसाला जोत सू, अधरात दोफारा। भगतण, पातर, कचणी, ढोलण डुलारा।

—मयाराम दरजी री वात

डुळियोडो—भू०का०कृ०—१ गिरा हुआ, लुढका हुआ, वहा हुआ २ वीर गति को प्राप्त हुवा हुआ. ३ अत्यधिक स्नेह के कारण द्रवित हुवा हुआ ४ कृपालु हुवा हुआ, अनुकूल हुवा हुआ, प्रसन्न हुवा हुआ ५ प्रवृत हुवा हुआ, झुका हुआ ६ (चँवर का) लहर खा कर डोला हुआ, इधर-उधर हिला-डुला हुआ।

(स्त्री० डुळियोडी)

डुवारो—स०पु०—एक प्रकार का कीडा।

डुवौ—स०पु०—१ समूह, झुण्ड। उ०—अर अनेक वार दिल्ली रा साह जवनेस अलाउद्दीन रा फौजा रा विखेरिया डुवा।—द.भा.

२ सेना, दल। उ०—जरं कवर री पविकर नागौर आय सो सासन प्रामारा दाहिमानू सुणाय रस्सारा ततुवा रै समान एक मतं हुवो, अर नागपुर री लज्जा कैमास नू भळाय अणहिलपुर गजनवी रा अनीक मे रतिवाह देण हाकियो—वणाय डुवो।'—व भा.

३ मिट्टी का ढेर. ४ पीठ के नीचे का भाग।

क्रि०प्र०—भागणौ

मुहा०—डुवा भागणा—खूब पीटना।

५ आक्रमण, हमला।

रू०भे०—डुग्रौ, डुहो, डूग्रौ, डूवो, डूहो।

डुहो—देखो 'डुई' (रू भे) उ०—तद अमरावा अरज कीवी जे बाहर नीसर राड करं नही, डुहो घसोय भीना मे वैठा छै, तिणसू कूच करीजे, मुलक मे अमल कीजे।—मारवाड रा अमरावा री वारता

डुहौ—देखो 'डुवौ' (रू भे)

डूकणौ—देखो 'ढूकणौ' (रू भे)

डूग, डूगड—देखो डूगो' (मह, रू भे) उ०—डूंग उघाडे ढगळ, मूछ मुख घुरड मुडावं। जन्मभूमि मे जाय, भीख ले जन्म भडावं।

—ऊ का

डूगरी—स०स्त्री०—घास को विशेष ढग से जमा कर बनाया हुआ छोटा ढेर।

डूगलियौ—देखो 'डूगो' (अल्पा., रू भे)

डूगलो, डूगियौ—देखो 'डूगो' (अल्पा, रू भे)

डूगोड—देखो 'डूगो' (मह, रू भे)

डूगो—स०पु०—कमर के नीचे और जाघ के ऊपर गुदा के पास का मासल भाग, चूतड, कूल्हा।

मुहा०—१ डूगा कूदाणा—कूल्हे मटकाना. २ डूगा माथै ओढणौ—निर्लज्ज होना, वेशर्म होना ३ डूगा रै एडिया लगाणी—भाग जाना, टल जाना, हट जाना, खिसक जाना।

अल्पा०—डूगलियो, डूगलो, डूगियो।

मह०—डूग, डूगड, डूगोड।

डूचो—स०पु०—साढे चार का पहाडा।

डूड—१ देखो डूढ' (रू भे) २ देखो 'डूढियौ' (मह., रू भे) ३ देखो डूढो' (मह, रू भे.)

डूडड—१ देखो 'डूढो' (मह, रू भे)

२ देखो 'ढूढियो' (मह , रू भे)
ढूडड़ियो—१ देखो 'ढूढ़ियो' (रू भे)
२ देखो 'ढूढो' (अल्पा , रू भे.)
ढूडियो—१ देखो 'ढूढ़ियो' (रू भे)
२ देखो 'ढूढो' (अल्पा , रू भे)
ढूडोड—१ देखो 'ढूडियो' (मह., रू भे)
२ देखो 'ढूढ़ो' (मह , रू भे)
ढूडो—देखो 'ढूढो' (रू भे.)
ढूढ—स०स्त्री०—१ खोजने की क्रिया या भाव, तलाश, खोज
२ अन्वेषण ३ पीठ मे कमर के नीचे का भाग, कूल्हो के पास तथा चूतड के ऊपर का भाग। उ०—तद खाडैतो उणरी खाच नै ढूढ़ मार्थ डडो जमायो।—वाणी
मुहा०—ढूढ घडणी—पीटना।
४ बच्चे के जन्म के उपरान्त प्रथम होली पर किया जाने वाला सस्कार। उ०—चग म्हारी गै'री वाजै, माल वाजै पेटा री। ढूढ़ तो करावो थारै मोवी वेटा री, म्हानै खाजा दो।—लो गी
वि०वि०—इस सस्कार के अवसर पर शिशु की जाति, मोहल्ले अथवा गाव के लोग फाल्गुन के गीत गाते हुए शिशु के घर पर आते हैं। शिशु का सम्बन्धी एक बडा बच्चा पाट पर शिशु को गोद मे ले कर बैठ जाता है और आने वाले आदमियो मे से दो आदमी एक लम्बी लाठी के दोनो छोरो को अपने हाथो मे पकड कर शिशु के ऊपर उसे आडी स्थिति मे रखते हैं। दूसरे आदमी जिनके हाथो मे भी डडे होते है, उस आडी लाठी पर डडो से हल्के-हल्के प्रहार करते हैं जिससे तड-तड की सम्मिलित ध्वनि निकलती रहती है। एक आदमी, जो उन सब मे अगुआ होता है, रस्म के अनुसार कुछ कुल-प्रशसक व आशीर्वादात्मक काव्य के चरण बोलता रहता है और दूसरे आदमी उसे दोहराते रहते हैं। इस क्रिया के पश्चात् उस घर का मालिक सब आगन्तुकों के अगुआ को भेंट स्वरूप अपनी स्थिति के अनुसार कुछ पैसे, गुड, खाजे, मिष्ठान्न आदि देता है। कही-कही पर पर्दा रखने वाली जातियों मे केवल ब्राह्मण ही घर मे जा कर इस रस्म का दस्तूर करता है और दूसरे आदमी बाहर खडे रहते है।
५ खोज। उ०—रंग राग ज्या घाट त्रिवेणी, गगन मे घोर परो री। ढूढ जाय निज मन री कीजै, फूल्या मुक्ति गहो री।
—श्री हरिरामजी महाराज
६ जयपुर रियासत के अचरोल के पास की पहाडियो से निकलने वाली एक नदी।
रू०भे०—ढुढ़, ढूड।
७ देखो 'ढूढ़ियो' (मह , रू भे)
८ देखो 'ढूढो' (अल्पा., रू.भे)
ढूढड—१ देखो 'ढूढियो' (मह , रू.भे.)
२ देखो 'ढूढो' (मह., रू भे)
ढूढडियो—१ देखो 'ढूढियो' (रू भे)
२ देखो 'ढूढो' (अल्पा , रू भे)
ढूढ़णौ, ढूढ़बौ—क्रि०स०—१ खोज करना, तलाश करना।
उ०—गोकुळ ढूढ़ व्रिंदावन ढूढ़चौ, ढूढ़ी मथुरा कासी है। रैणी दिवस मछळी ज्यू तळफा, तळफ तळफ जिवडो जासी है।—मीरा
२ पीटना। ज्यू—घणी अलफताई करी तो ढूढ नाखूला।
३ बच्चे के जन्म के उपरान्त प्रथम होली पर सस्कार विशेष की क्रिया करना।
ढूढणहार, हारो (हारी), ढूढ़णियो—वि०।
ढूढ़वाडणो, ढूढ़वाडवो, ढूढ़वाणो, ढूढ़वावो, ढूढ़वावणो, ढूढ़वाववो, ढूढ़वाणो, ढूढ़वावो, ढूढ़ावणो, ढूढ़ाववो—प्रे० रू०।
ढूढ़ाडणो, ढूढ़ाडवो, ढूढ़ाणो, ढूढ़ावो, ढूढ़ावणो, ढूढ़ाववो—क्रि०स०।
ढूढ़िओडो, ढूढ़ियोडो, ढूढचोडो—भू०का०कृ०।
ढूढ़ीजणो, ढूढ़ीजवो—कम वा०।
ढूढ़ला—स०स्त्री० [स० ढुढा] ढुढा नाम की एक राक्षसी।
ढूढ़ा—स०स्त्री०—पँवार वश की एक शाखा।
ढूढ़ाड—स०स्त्री०—भूतपूर्व आम्बेर या जयपुर राज्य का एक नाम।
रू०भे०—ढढा, ढढ़ाड, ढुडाड, ढूढ़ाड, ढूढार, ढूढाहड।
ढूढ़ाडी—वि०—'ढूढाड' सम्बन्धी।
स०स्त्री०—१ राजस्थानी भाषा की पाच बोलियो मे से एक बोली (डाइलेक्ट) जिसके अन्तर्गत तोरावाटी, जयपुरी, काठैडी, राजावाटी, अजमेरी, किशनगढी, शाहपुरी एव हाडौती उप-बोलिया सम्मिलित हैं। इसे मध्यपूर्वी राजस्थानी भी कहा जाता है।
ढूढाडो—वि० (स्त्री० ढूढाड़ी) जयपुर राज्य का, जयपुर राज्य सम्बन्धी।
स०पु०—१ ढूढ़ाड प्रदेश का पुरुष २ कछवाह राजपूत।
रू०भे०—ढूढाहडो।
ढूढ़ाहड—देखो 'ढूढाड' (रू भे)
ढूढाहडो—देखो 'ढूढ़ाडो' (रू भे)
ढूढ़ाहर—देखो 'ढूढ़ाड' (रू भे) उ०—धर पद्धर को पातस्या, ढूढ़ाहर की ढाल। आन महीपत के मुकट, शत्रुन को नटसाल।—ला रा
ढूढ़ियोडो—भू०का०कृ०—१ खोज किया हुआ, तलाश किया हुआ
२ पीटा हुआ ३ (वह बच्चा) जिसके जन्म के उपरान्त प्रथम होली पर सस्कार विशेष हो चुका हो।
ढूढ़ियो—स०पु० (बहु व० ढूढिया) १ बच्चे के जन्म के पश्चात् प्रथम होली पर 'ढूढ' नामक सस्कार करने वाला आदमी, जो शिशु की जाति, मोहल्ले अथवा गाव का होता है और गाता-बजाता घर पर आता है।
२ देखो 'ढूढो' (अल्पा , रू भे.)
ढूढ़ी—स०स्त्री०—मरे हुए पशु का अस्थि-पजर।
ढूढ़ो—स०पु०—१ पुराना मकान। उ०—हिरण नै देख्यो नही नै हिरण पातसाह रा डर सू अळगो ढूढ़ा मे छिपियो, 'नै कुमरजी सोच करै।—रीसाळू री वात

२ वडा भवन (गढ़, किला) उ०—१ जाडी किलै सफील, माय ज नर निवळा वसै। ढूढ़ौ ढहता ढील, रती न लागै राजिया।
—किरपाराम

उ०—२ अर माह रावळा मे जेसळमेरीजी संपाडौ कर गादी ऊपर विराजिया। केस माथा रा वडारण उरळा करै छै, गूथण वास्तै। दूजी वडारण रै हाथ मे तखतौ छै। माथा नायण गूथै छै, जेठ रौ महीनौ छै, ग्रीखम रितु छै। जिसै अेक वतूळियौ आयौ सू रेत सू कपडा भरीज गया। तद कपडा झाडण नू ऊठ खडा हुवा। रीस कर कहण लागा जो कोट रै धणी रै वेटी ई धणी हुसी पिण वेटी नू ढूढै रै धणी नै देणी। बीजा धसाई डुळता फिरै। लुगाया रै सिर मे धूड घतावता फिरै। सू ठाकुरसी जी नू कह्यौ सू सुण नै चुप रह्या। वात नू मन मे राखी।—द दा

३ खण्डहर। उ०—'जेहल' ताळ खडीण व्है, तरवर लाकड होय। हरम ढहै ढूढा हुवै, जस अविकारी जोय।—बा दा

४ शरीर का पृष्ठ भाग, पीठ। उ०—सगरामा कह ऊट कूटसी चढ-चढ ढूढ़ौ। आन देव रा दास, घणौ दीसैला भूडौ।—सगरामदास

५ पवार वश की ढूढा शाखा का व्यक्ति।

अल्पा०—ढुडियौ, ढूडड़ियौ, ढुउडकौ, ढूडियौ, ढूढ़डियौ, ढूढियौ।

मह०—ढूड, ढूडड, ढूढ, ढूढड।

ढू–स०पु०—१ सेतु. २ अधर्म ३ शरीर।

स०स्त्री०—४ हथिनी ५ हरिताल।

वि०—स्थिर (एका)

ढूओ—देखो 'ढुवौ' (रू भे)

ढूकडौ–वि० [स० ढौकति, प्रा० ढुक्क] (स्त्री० ढूकडी) समीप, निकट, पास। उ०—१ सैंवज जिण वरस इण गाव मे पाकती मिनख निहाल व्है जावता। अठी नै होळी ढूकडी आवती नै उठी नै खेता मे साख पाक नै तयार व्है जावती।—रातवासौ

उ०—२ जिणवर आण हियइ सिउ जडी। तीह जीव मुगति छइ ढूकडी।—चिहुगति चउपई

उ०—३ वस छतीस वरस गनीमा गाळणौ। आझाळौ अधपती भली द्रढ भाळणौ। जारज पचम जोध ढिलीवै ढूकडौ। आठू पहर अबीह खेडेचौ रहै खडौ।—किसोरदान वारहठ

रू०भे०—ढूकणौ, ढूकडउ, ढूकणौ।

ढूकढ़ाक—वि०—कुछ नही। उ०—यही लो सभार आगै ढूकढ़ाक है।—स कु

ढूकणौ—देखो 'ढूकडौ' (रू भे.)

ढूकणौ, ढूकबौ–क्रि०अ०—१ किसी कार्य मे प्रवृत्त होना, तत्पर होना, लगना। उ०—अहर-रग रत्तउ हुवइ, मुख काजळ मसि-व्रन्न। जाण्यउ गुजाहळ अच्छइ, तेण न ढूकउ मन्न।—ढो मा.

२ झुकना। उ०—करहा, पाणी खच पिउ, त्रासा घणा सहेसि। छीलरियउ ढूकिसि नही, भरिया केथि लहेसि।—ढो.मा.

३ सम्मिलित होना, साथ। उ०—जागरण जागै लाज न लागै, ढागा ढिग ढूकदा है। सुण झीण न साजै वीण न वाजै, करमहीण कूकदा है।—ऊ का.

४ पहुँचना। उ०—१ हाडोती हिळमिळ हुई, मेळ कियौ मेवाड। घर 'जसवत' रै घुमड नै, ढूकी धर ढूढाड।—ऊ का

उ०—२ मड वच जेणि सेहुरा कामण, कर गैवर मालै किरमाळ। ढूकी ढाल वेणि ढळकती, तोरण जैतारण रिणताळ।—दूदौ

उ०—३ सो अभयसिहजी री सचियौ अरावौ थौ सो आण लागियौ सो नैडौ ढूक सकै नहीं।—मारवाड रा अमरावा री वारता

५ प्रारम्भ होना, शुरू होना। उ०—हमै कळजुग आयौ नै कळजुग री पवन लागेवा ढूकौ।—मयाराम दरजी री वात

ढूकणहार, हारौ (हारी), ढूकणियौ—वि०।

ढूकवाडणौ, ढूकवाडवौ, ढूकवाणौ, ढूकवावौ, ढूकवावणौ, ढूकवाववौ, ढूकाडणौ, ढूकाड़वौ, ढूकाणौ, ढूकावौ, ढूकावणौ, ढूकाववौ—प्रे०रू०

ढूकिओडौ, ढूकियोडौ, ढूक्योडौ—भू०का०कृ०।

ढूकीजणौ, ढूकीजवौ—कर्म वा०।

ढूकवौ–वि० (स्त्री० ढूकवी) समीप, निकट। उ०—हाकवै दिली दरियाव हीलोळतौ, ढूकवै साह अमराव ढाहै। आगरै सहर हडताल पडिया अमर, मारवा राव दरियाव माहै।—अमरसिंघ राठोड रौ गीत

ढूकियोडौ–भू०का०कृ०—१ किसी कार्य मे प्रवृत्त हुवा हुआ, तत्पर हुवा हुआ २ झुका हुआ ३ सम्मिलित हुवा हुआ, साथ हुवा हुआ. ४ पहुँचा हुआ. ५ प्रारम्भ हुवा हुआ।

(स्त्री० ढूकियोडी)

ढूढी–स०स्त्री०—रीढ की हड्डी के नीचे का भाग जहा कूल्हे की हड्डिया मिलती है, त्रिकास्थि।

ढूव–स०स्त्री०—१ पीठ का उभरा हुआ भाग, कूबड. २ धातु के वरतनो मे पडने वाली मोच जिससे या तो उसका कोई हिस्सा अदर वैठा हो या बाहर उभरा हुआ हो ३ देखो 'ढूवौ' (मह, रू भे)

मह०—ढूवड, ढूवल, ढुवीड।

ढूवड—१ देखो 'ढूव' (मह., रू भे) उ०—पूठै ढूवड कूवडौ, मोटौ माथौ जास। दात गदहडा सारिखा, तेहवा दात उजास।
—स्रीपाळ रास

२ देखो 'ढूवौ' (मह, रू भे.)

ढूवडियौ, ढूवडौ—देखो 'ढूवौ' (अल्पा, रू भे) उ०—होय जावै वळै बै'रा नै बोळा, गूगा मूगा वडका बोला रे। लूला टूटा फेरत डोला कूवडा ढूवडा भोळा रे।—जयवाणी

ढूवल—१ देखो 'ढूव' (मह, रू भे.)

२ देखो 'ढूवौ' (मह, रू भे)

ढूवलियौ, ढूवलौ—देखो 'ढूवौ' (अल्पा, रू भे)

(स्त्री० ढूवली)

ढूवियौ—देखो 'ढूवौ' (अल्पा, रू भे)

(स्त्री० डूबी)

डूबीड—१ देखो 'डूब' (मह, रू भे)
२ देखो 'डूबो' (मह, रू भे.)

डूबो-स०पु० (स्त्री० डूबी) १ वह मनुष्य जिसके पीठ का भाग उभर गया हो २ वह मनुष्य जिसकी पीठ झुक गई हो, कुबडा ३ वह बरतन जिसके मोच पडी हो।
अल्पा०—डूबडियो डूबडो, डूबलियो, डूबलो, डूबियो।
मह०—डूब, डूबड, डबल, डूबील।

डूमलियो—देखो 'डूमलो' (अल्पा, रू भे)

डूमलो-स०पु०—कागज आदि को गला कर लुग्दी से बनाया हुआ बरतन विशेष।
अल्पा०—डूमलियो।

डूळ, डूल-स०पु०—झुण्ड, समूह। उ०—१ माळा चढ ऊभा रमवाळ, दाकळ गोफणिया सूसाय। उडै जद चिडिया डूळ अलेख, अजकता आभै मे गम जाय।—मेघ
उ०—२ किनियाणी वधती कळा, डा'णी ससवा डूळ। सिंह पलाणी सादुळो, ताणी हाथ त्रिसूळ।—वालावस्न वारहठ
उ०—३ केसरिआ वणाव कीआ थका आगै वखाणी तिण भाति री नाइका पात्रा रा डूल चालिआ जावै छै।—रा सा.स.
अल्पा०—डूळकियो, डूलकियो, डूळको, डूलको।

डूळकियो, डूलकियो—देखो 'डूट, डूल' (अल्पा., रू भे)

डूलकी—देखो 'डूली' (अल्पा, रू भे)

डूळको—देखो 'डूळ, डूल' (अल्पा, रू भे.)

डूलको—१ देखो 'डूळ, डूल' (अल्पा, रू भे)
२ देखो 'डूलो' (अल्पा, रू.भे)

डूलड—१ देखो 'डूली' (मह, रू भे)
२ देखो 'डूलो' (मह, रू भे)

डूलडी—देखो 'डूली' (अल्पा, रू भे) उ०—१ अनि वरिस वधै ताइ मास वधै ए, वधै मास ताइ पहर वधति। लखण बत्रीस वाळ लीला मै, राजकुआरि डूलडी रमति।—वेलि.
उ०—२ महीना माहे वधै, तितरो रुकमणीजो अेक पुहर माहे वधै। लखण बत्रीस सयुक्त। वाळ लीला माहे राजकुमारि डूलडिया रमै छइ।—वेलि टी

डूलड़की—देखो 'डूली' (अल्पा, रू भे)

डूलडको—देखो 'डूलो' (अल्पा., रू भे)

डूलडो—देखो 'डूलो' (मह, रू भे)

डूली-स०स्त्री०—१ गुडिया. २ देखो 'दिल्ली' (रू भे.)
उ०—सानळ सोम हुत भगनी सुत, पह वेरिया जका डूलो पत। वचिया कागद वेढ विहाणै, छै सगटरी सिवियाणै।—पा.प्र.
अल्पा०—डूलडी, डूलकी, डूलडकी, डूलडी।
मह०—डूलड।

डूलो-स०पु० [स० दुर्लभ] गुड्डा। उ०—१ नैणा रा मीगन करै, भै मानै सुण भूत। रामत डूला री रमै, राडोली रा पूत।—वा दा
उ०—२ मावडिया तन मैण रा, मिटै कदै नह माद। मावडिया डूला मरद, चूल्हा हुदा नाद।—वा दा.
अल्पा०—डूलको, डूलडको, डूलडियो, डूलडो।
मह०—डूलड।

डूवो—देखो 'दुवो' (रू भे)

डूसर-स०पु०—वनियो की एक जाति या इस जाति का वनिया।

डूह, डूहो-स०पु०—१ ढेर, टीला २ देखो 'डुवो' (रू भे)

ढेंकली—देखो 'ढेकली' (रू भे)

ढेंको'-स०स्त्री०—मादा मोर के वोलने की आवाज।

ढेंचाळ—देखो 'ढंचाळ' (रू भे) उ०—झूझार लडै लग पडै झाल। ढेंचाळ मुडै हिय टूडै ढाल।—पा.प्र

ढे-स०पु०—१ मन २ मृग ३ गढ. ४ चर्म।
स०स्त्री०—५ हीग (एका.)

ढेक, ढेकड, ढेकल—देखो 'ढेको' (मह, रू भे)

ढेकलियो—देखो 'ढेको' (अल्पा, रू भे)

ढेकली-स०स्त्री०—एक प्रकार का यत्र जिसकी सहायता से सिंचाई के लिये कुए से पानी निकाला जाता है।
वि०वि०—इसमे एक ऊँची खडी लकडी पर जो नीचे से भूमि मे गडी रहती है, उसके ऊपर के छोर पर एक आडी लकडी वीचोवीच से इस प्रकार लगाई जाती है कि उसके दोनो छोर नीचे ऊपर हो सकें। इस आडी लकडी के एक छोर पर पत्थर वाध दिया जाता है या मिट्टी थोप दी जाती है तथा दूसरे छोर पर जो कुए के ठीक ऊपर होता है, रस्सी द्वारा डोल वाध दिया जाता है। कुए की ओर वाले छोर को नीचे करने पर डोल कुए मे जाकर भर जाता है। दूसरे छोर पर पत्थर आदि का वजन लगा रहता है जो आसानी से नीचा हो जाता है। उसके नीचा होते ही डोल वाला छोर ऊपर हो जाता है और डोल कुए से वाहर निकल जाता है।
रू०भे०—ढीक, ढेंकली।

ढेकियो—देखो 'ढेको' (अल्पा, रू भे)

ढेकीड—देखो 'ढेको' (मह, रू.भे)

ढेको-स०पु०—१ कूल्हा, चूतड।
अल्पा०—ढेकलियो, ढेकियो।
मह०—ढेक, ढेकड, ढेकल, ढेकीड।

ढेखळ-स०पु०—पँवार वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

ढेटो-वि०—घृष्ट, ढीठ।

ढेडभींग, ढेडभींगो, ढेडलभींगो—देखो 'ढेढभींगो' (रू भे)

ढेढ-स०पु० (स्त्री० ढेढण, ढेढणी) १ चमार। उ०—रगरेज छीपा नै लोहारो रे, माळी दरजी नै सूथारो। भट भाट भोपा नै .मरडा रे, गुरुवा ढेढा रा गुरडा।—जयवाणी

२ कौग्रा।

वि०—मूर्ख, नासमझ। उ०—काग पढ़ायौ पीजरै, पढग्यौ च्यारू वेद। समझायौ समझै नही, रह्यौ ढेढ़-री-ढेढ़।—सगरामदास

रू०भे०—ढेढस।

ढेढ़भींग, ढेढ़भींगी, ढेढ़लभींगी—स०स्त्री० [स० भृ ग] टिड्डी के ग्राकार का एक उडने वाला कीडा जिसकी गर्दन पर ग्रद्ध चन्द्राकार ग्रासमानी रग का चमकीला कठोर पदार्थ होता है, भृ ग विशेष।

रू०भे०—ढेडभीग, ढेडभीगी, ढेडलभीगी।

ढेढ़वाड—स०स्त्री०—१ चमारो का समूह २ देखो 'ढेढवाडौ'

ढेढ़वाडौ—स०पु० [रा० ढेढ+स० पाटक = मोहल्ला] १ चमारो का मोहल्ला, चमारो के रहने का स्थान २ वह घृणित स्थान जहाँ हड्डिया, माम ग्रादि बिखरा हुग्रा हो।

ढेढ़स—देखो 'ढेढ' (रू भे) उ०—चौडैंधाडै चोर, ढग विन ढेढ़स ढेढ़ी। जिकै नही किण जोग, मिळया घर घर रा मेढी।—ऊ का

ढेढ़ियानट—सं०पु०—चमारो को नट क्रिया दिखाने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति।

ढेढी—देखो 'ढेढ' (रू.भे) उ०—चौडैंधाडै चोर, ढग विन ढेढस ढेढ़ी। जिकै नही किण जोग, मिळया घर घर रा मेढी।—ऊ का

ढेण—स०स्त्री०—१ सख्त भूमि, कठोर जमीन २ समतल भूमि।

ढेणियालग, ढेणियालिया—स०पु० [स० ढेणिकालक, ढेणिकालिका] पक्षी विशेष (जैन)

ढेपाळौ—वि० (स्त्री० ढेपाळी) तहयुक्त, तहवाला। उ०—पच धार लापसी कसार, घान रसोई भाव ग्रढार। ग्रति ऊजळा ढेपाळा दही, भजाई ए राउळ लही।—का दे प्र

ढेपौ—स०पु०—१ किसी जमने वाले पदार्थ का जमा हुग्रा खड, जमा हुग्रा ढोका. २ गोबर से बना हुग्रा वह बडा उपला (कडा) जिसमे मिट्टी की मात्रा ग्रधिक हो।

वि०—१ मूर्ख, नासमझ २ ग्रालसी, सुस्त।

ढेब, ढेबड, ढेबर—देखो 'ढेबौ' (मह, रू भे)

ढेबरियौ—देखो 'ढेबौ' (ग्रल्पा, रू भे.)

(स्त्री० ढेबरी)

ढेबरी—स०स्त्री०—१ तरबूज, खरबूजे ग्रादि पर से कटा हुग्रा छोटा गोळ या चोकोर टुकडा जो उसके सडे-गले या ग्रच्छे-बुरे का मालूम करने के लिए काट कर ग्रलग किया जाता है ग्रौर जाँच के बाद वही पर वापिस लग सकता है।

मि०—टाकी (२)

२ दीवार मे खूटी ग्रादि लगाने के लिए पत्थर को काट कर उसमे लगाया जाने वाला काष्ठ का टुकडा जिसमे खूटी लगती है

३ लकडी को गढ कर या काट कर बनाया हुग्रा टुकडा जो किसी छेद को रोकने के लिए काम ग्राता है जैसे नल के ढेबरी' लगाने से पानी का ग्राना बन्द हो जाता है ४ धातु, पत्थर या काष्ठ का बना चोकोर या गोल टुकडा जो देशी किवाडो की चूल के नीचे गडा या लगा रहता है ग्रौर उस पर किवाड घूमता है।

वि०—बडे पेट वाली।

ढेबरौ—देखो 'ढेबौ' (रू भे.)

(स्त्री० ढेबरी)

ढेबल—देखो 'ढेबौ' (मह., रू भे)

ढेबलियौ—देखो 'ढेबौ' (ग्रल्पा, रू भे)

(स्त्री० ढेबली)

ढेबलौ—देखो 'ढेबौ' (रू भे.)

(स्त्री० ढेबली)

ढेबियौ—देखो 'ढेबौ' (ग्रल्पा, रू.भे.)

(स्त्री० ढेबी)

ढेबीड—देखो 'ढेबौ' (मह., रू भे.)

ढेबौ—वि० (स्त्री० ढेबी) बडे पेट वाला।

रू०भे०—ढेबरौ, ढेबलौ।

ग्रल्पा०—ढेबरियौ, ढेबलियौ, ढेबियौ।

मह०—ढेब, ढेबड, ढेबर, ढेबल, ढेबीड।

ढेमकी—देखो 'ढोलक' (ग्रल्पा, रू भे)

ढेर—स०पु०—१ राशि, समूह।

ग्रल्पा०—ढेरडौ, ढेरी।

२ देखो 'ढेरौ' (मह, रू भे)

ढेरडौ—१ देखो 'ढेर' (ग्रल्पा, रू.भे) उ०—ग्राक नीबा तणी ग्राख ग्रब केरडा। घिरिणि नीली हुई घान रा ढेरडा।—पी ग्र

२ देखो 'ढेरौ' (ग्रल्पा, रू भे)

ढेरण—देखो 'ढेरौ' (मह, रू.भे)

ढेरणियौ—देखो 'ढेरौ' (ग्रल्पा., रू भे)

ढेरणौ—देखो 'ढेरौ' (रू भे)

ढेरणौ, ढेरबौ—देखो 'ढेरवणौ, ढेरवबौ' (रू.भे)

मुहा०—१ कान ढेरणा—ध्यान देना २ मूडो ढेरणौ—लालायित होना, इच्छुक होना ३ होट ढेरणा—देखो 'मूडौ ढेरणौ'।

ढेरवणौ, ढेरवबौ—क्रि०स०—शिथिल करना, ढीला करना।

उ०—ग्रळगी ही नैंडी की उखवते, देठाळौ हुग्रौ दला दुह। वागा ढेरविया वाहरूए, मारकुए फेरिया मुह।—वेलि.

ढेरवाल—देखो 'ढोरवाल' (रू भे)

ढेरवियोडौ, ढेरियोडौ—भू०का०कृ०—शिथिल किया हुग्रा, ढीला किया हुग्रा।

(स्त्री० ढेरवियोडी, ढेरियोडी)

ढेरियौ—स०पु०—१ बच्चो के खेलने का डोरी बधा हुग्रा छोटा पत्थर।

वि०वि०—इसे किसी पेड, तारो ग्रादि मे ग्रटकी हुई या उडती हुई पतग को उतारने के लिये फेंका जाता है। इसके ग्रतिरिक्त बच्चे एक दूसरे के ढेरिये की डोरी परस्पर लडाते हैं जिससे कमजोर डोरी

कट जाती है।

२ देखो 'ढेरौ' (अल्पा, रू भे.)

ढेरी-सं०स्त्री०—१ देखो 'ढेर' (अल्पा, रू.भे)

उ०—ढोळं दूधाळू गळियोड़ी गेरी। ढाळं ढळियोडी रतना री ढेरी।—ऊ.का.

२ देखो 'ढेरौ' (अल्पा., रू भे.)

ढेरौ-सं०पु०—१ परस्पर एक दूसरी को बीचोबीच से काटती हुई दो आडी लकडियो के बीच मे एक खडी लकडी जोड कर बनाई हुई फिरकी जिससे सुतली, रस्सी आदि वट कर तैयार की जाती है।

उ०—१ सत्या छेलिया भालिया साथं, वेकळ दामोदर चामोदर बाथं। मुखिया मनमोहण दोहण घर मेडी, गोढं टेरी तूं सूणी मे गेढ़ी।—ऊ का

उ०—२ होली लागा रा ढेरा ढुळकाता। टोघड टुकडा रा खेरा खळकाता।—ऊ का.

२ एक निश्चित मात्रा मे फिरकी (ढेरो) पर कात कर तैयार की हुई ऊन, सूत या रेशम का व्यवस्थित रूप से लपेटा हुआ अण्डाकार या गोल गुच्छा (कोया) जो फिरकी की आडी और खडी लकडियों को निकाल देने से अलग हो जाता है।

३ बडी यूका, जू। ४ देखो—'ढेर' (१) (मह. रू भे)

वि०—मूर्ख, नासमझ। उ०—ढोलो मूडो मेलं ढेरा, टिकगा पाणी पीवण टेरा। ढळा वठं कर दीधा ढेरा, चाटं हिळगा चाटण चेरा।
—ऊ का

रू०भे०—ढेरणो।

अल्पा०—ढेरडो, ढेरणियो, ढेरियो।

मह०—ढेर, ढेरण।

ढेल-सं०स्त्री०—मादा मोर, मोरनी। उ०—सगी चालउ हे करनी गज गेलि, ढेल तणी पर ढळकती। सखी म्हाका मद्गुरु मोहनवेलि, वाणि अमी रस उपदिसइ।—ऐ जै का सं

ढेलडी-सं०स्त्री०—१ मादा मोर, मोरनी. २ देखो 'दिल्ली'। (अल्पा, रू भे)

उ०—१ ईमे ढेलडी नासपुर नामं, भटनेरी भडवायो। कलमा कालव ग्रहणे कोटा, ईखं 'मोकळ' आयो।
—महाराणा मोकळ री गीत

उ०—२ जूनी ढेलडी रं जपं सायजादी, वाका जोघ विलूधा। औरग-साह घरा किम आवं, राह 'दुरगं' रु घा।—रुघो मुहतो

रू०भे०—ढेलणी।

यौ०—ढेलडी-पत।

ढेलणी—१ देखो 'ढेलड़ी' (रू भे) उ०—तू तो काग्री, म्हारी होळी माता, गरमरी, तू तो देम गंवरिया री ढाळी रे। ढाळ्या ढळक'र चाल्यो ढेलणो, मोल्या मळक'र चालं मोरडी।—लो गी

२ देखो 'दिल्ली' (अल्पा, रू भे.)

यौ०—ढेलणी-पत।

ढेलू—देखो 'ढालू' (रू भे)

ढेलौ—देखो 'ढळौ' (रू भे.)

ढेंक-सं०पु०—एक मासाहारी पक्षी विशेष। उ०—एक वीरं स्त्री पती जुद्ध मे मारीजियोडो पडियौ छं तिण नं देख सखी नं कह रही छं—हे सखी! ककाणी ढेंक री स्त्री पगा री मास खावं तिण नं तौ कहै आ म्हारै पती रा चरण चापं छे—वी.मं टी

ढेंकणौ, ढेंकबौ-क्रि०अ०—१ रम्भाना। उ०—ओभाजी गाय नें टोरी। वा मचकी। ठाण री हूर करण लागी। अवकी ओभाजी नंजरां री मदद ली। गाय माडाणं टुरी। दीनता अर करुणाभरी भोळी द्रिस्ट घर कानी नाखी। पण फजूल। वा ढेंकी, छेकडली वार निरासा-भरी-निजर कंईं-नं देखण सारू पसारी, पण ओभाजी-री डिच-डिच थियं-नं वठे ज्यादा पग ठामण को दिया नी।—वरसगाठ

२ मादा मोर का बोलना।

रू०भे०—'ढीकणौ, ढीकबौ'

ढेंकियोडी-भू०का०कृ०—१ रम्भाई हुई. २ बोली हुई (मोरनी)

ढेंचाळ, ढेंचाळौ-सं०पु०—हाथी, गज। उ०—हे सुरं गाहतो ढेका, वोलाडतो भडा वाजा, साहतो वाहतो सार गाहतो सरीक। ढाहतो काळा ढंचाळा रोदाळा पोचाळी राजा, वडा व्रद वीका वाळा वहै दूजो वीक।—वीठू दूदो सुरताणोत

वि०—वडा, मोटा ताजा, हृष्ट-पुष्ट। उ०—जिण वार वावन जाग यू। अत हरख चौसठ आग यू। तरवार चद्र त्रिकाळ यू। ढेह पडघो 'ढेव' ढेंचाळ यू।—पा.प्र

(मि० ढीच, ढींचाळ)

ढेंभ—देखो 'ढींभ' (रू भे)

ढेंरो—देखो 'ढींरो' (रू भे) उ०—कोड कराया करं, भरण नं पालो भारी। ऊटा ढेंरा ढोय, छापवं वाडा सारी। मावट पोवट मध्य, गुलम गण कूपळ काढें। नेसावरिया डगा, घणां रा घुरडं वाढं।—दसदेव

ढें-सं०पु०—मेघ, बादल २ कामदेव।

सं०स्त्री०—३ दामिनी. ४ वक पक्ति. ५ वीरवहूटी

६ आशा (एका)

ढें'णौ, ढें'बौ—देखो 'ढहणौ, ढहबौ' (रू भे.)

ढेंभक, ढेंभकी, ढेंमक, ढेंमकी-सं०स्त्री०—ढोलक के आकार का चमडे से मढ़ा हुआ एक प्रकार का वाद्य।

ढेंयोडौ—देखो 'ढहियोडौ' (रू भे)

ढेर—देखो 'डेरौ' (१, २) (रू भे) उ०—गुरसल गावं गीत, कमेडी चग बजावं। चिडी जिनावर बैठ, ढेर मे मोज उडावं।—लो गी

ढेहणौ, ढेहबौ—देखो 'ढहणौ, ढहबौ' (रू भे) उ०—१ छळ सू बळ दाख गढ़ी चढ़णौ। वरदायक रात थका वढणौ। रण रोपय पाव खरो रहणौ। ढळती निस 'पाल' खगा ढेहणौ।—पा.प्र

उ०—२ जिण वार वावन जाग यू। अत हरख चौसठ आग यू। तरवार चद्र त्रिकाळ यू। ढेह पडघो 'ढेव' ढेंचाळ यू।—पा प्र

ढो-स०पु०—१ सुख २ साधन ३ धनवान. ४ प्रधान
५ बाल (एका)

ढोग्रो-स०पु०—पत्थर जो 'ढीकली' नामक यंत्र से शत्रु पर फेंका जाता है (?) उ०—तड डवर घुतणा रणतूर भेरू ग्रहै, सालळै रवदा पाच सबदा वहै। खेल री नीध्रसग्ग ढीकली रा ढोग्रा, सालकिया सबद सुण थाट ग्रागण सोहा।—रुखमणी-हरण

ढोउ-स०पु०—प्रहार, टक्कर, ग्राघात। उ०—गढ गरुउ ग्रनइ विसमो जीह तणी पाय पाताळि पइठउ, परवत नइ स्रिग वइठउ, उच्चस्तर पोळि, लोहमय कपाट, महाकाय भोगळ, विजहारी तणी पद्धति, यंत्र तणी स्रेणी, ढीकुली तणी परपरा, जळ निभ्रित खाई तणउ दुरग, प्रवेश नही, हाथिया ढोउ नही, पाखरिया रहण नही, नीसरणी ठाउ नही, भेद सभव नही।—व स

ढोक—देखो 'घोक' (रू भे) उ०—तद्दा राजा मोसर देख ग्राप राजा हीज थो, ढोक करि नै क्षेत्रपाळजी रै पाव पडियो।
—पचदडी री वारता

ढोकणो, ढोकवो—देखो 'घोकणो, घोकवो' (मह, रू भे)

ढोकळ—देखो 'ढोकळो' (मह., रू भे) उ०—बाळक भर वागळी ल्यावै, हरी वाडिया लूट कर। छाछेता, रायता, ढोकळ, किसत फोगलै चूट कर।—दसदेव

ढोकळियो—देखो 'ढोकळो' (ग्रल्पा, रू भे.)

ढोकळी-स०स्त्री०—देखो 'ढोकळो' (ग्रल्पा, रू.भे)

ढोकळो-स०पु०—१ चना, गेहूँ, वाजरी, मक्का ग्रादि के चून की बनी हुई मोटी ग्रौर गोल रोटी जो कचौरी के ग्राकार की होती है ग्रौर बरतन को बन्द करके वाष्प द्वारा पकाई जाती है।
उ०—एकण नै तुस ढोकळा जी, पूरा पेट न थाय। एकण रै रहे लाडवा जी, वैठा भाणं कै माय।—जयवाणी
२ बडी यूका, जू ३ डलिया, छबडी (ग्रलवर)
वि०—मूर्ख, नासमझ।
ग्रल्पा०—ढोकळियो, ढोकळी।
मह०—ढोकळ।

ढोकियोडो—देखो 'घोकियोडो' (रू भे)
(स्त्री० ढोकियोडी)

ढोटी-स०स्त्री०—पुत्री, लडकी।

ढोटो-स०पु०—पुत्र, लडका। उ०—कुवज्या दासी कस राय की, वे नदजी के ढोटा। मीरा के प्रभु गिरधर नागर, कुवज्या वडी हरि छोटा।—मीरा

ढोणो, ढोवो-क्रि०स० [स० ढौक्, प्रा० ढ] १ भेंट धरना, चढाना।
उ०—१ सुणउ सिंह! जइ सउ हइ, थाळ कचोळा जाई जोइ। एहनइ घरि पहुचउ सहु कोइ, धनदत्तइ ग्राण्या सव ढोइ।
—प्राचीन फागु-सग्रह
उ०—२ फळ लेई ढोया जिणहरइ, कुळ ग्राचार लघु वय पणि करइ। वीजइ दिनि कहइ हूँ ग्राणिस्यु, तुम्हे रहउ वइठा ध्यानस्यउ।
—प्राचीन फागु-संग्रह
उ०—३ तप ऊजमणइ रजत पाळणउ, सोवन पूतळि चग। मोदक थाळ देहरइ ढोइ, जिनवर स्नात्र सुचग—स कू
२ वोझ लाद कर ले चलना ३ चलाना। उ०—सूर वरेवा ग्रच्छरां, रिण ढोया रथ्था। सारा मत्र-दळ सोखिया, सामद ग्रगसथ्था।—द दा
४ प्रवृत्त करना। उ०—कोहरि कोळाहळ वहु सुणी, ढोलउ ग्रायो पाणी-भणी। सगळै तिणि सांम्ही जोइयो, ग्राणि प्रवाहि करही ढोइयो।—ढो मा
ढोवणो, ढोववो—रू०भे०।

ढोवलो, ढोवो-स०पु०—घडे या माटे का मिट्टी का बना ढक्कन।
(शेखावाटी)

ढोमनिया-स०स्त्री०—गाने का व्यवसाय करने वाली एक जाति।

ढोमनियो-स०पु०—'ढोमनिया' जाति का व्यक्ति।

ढोयोडो-भू०का०कृ०—१ रजु किया हुग्रा, सहमत किया हुग्रा, प्रसन्न किया हुग्रा, तैयार किया हुग्रा २ वोझ लकर चला हुग्रा बोझ लाद कर ले गया हुग्रा ३ चलाया हुग्रा ४ प्रवृत्त किया हुग्रा।
(स्त्री० ढोयोडी)

ढोर-स०पु० [स० धुर्य] पशु, मवेशी। उ०—किसी'क कुटेम ही। ठोड-ठोड ढोर इतरा मरघा हा के गावा रै वारै हाडका रा ढिग लाग्योडा हा। —रातवासो
वि०—मूर्ख, गँवार। उ०—कहै दास सगराम मिनख तू दीखै चोखो। कदेक तो कह राम रात दिन होको होको। होको होको रात दिन, ग्रकल विहूणा ढोर। ग्रावै है नैडी ग्रवध, पडसी नरक ग्रघोर। पडसी नरक ग्रघोर म्हूनै यो मारै घोको। कहै दास सगराम मिनख तू दीखै चोखो।—सगरामदास
रू०भे०—ढोरु, ढोरू।

ढोरवाल-स०पु०—गाय, वैल, भैंस ग्रादि पशुग्रो के पूछ के वाल।

ढोरी-स०स्त्री०—धुन, लौ, लगन। उ०—दादू वाहै देखता, ढिग ही ढोरी लाइ। पिव पिव करते सव गये, ग्रापा दे न दिखाइ।
—दादू वाणी

ढोरु, ढोरू—देखो 'ढोर' (रू भे)

ढोल-स०पु० [स० ढोल] लकडी या लोहे की चद्दर के बने वडे गोल घेरे के दोनो ग्रोर चमडा मढा हुग्रा वाद्य। उ०—कूवो पूज घर पाछी ग्राई, फळसै वडता वोली यू। फळसै मे ढोला रै ढमकै, ग्रारतडी करवायै तू।—लो गी
मुहा०—१ ढोल कूटणो—रूढ़ीवादी होना, वक-झक करना।
२ ढोल दिराणो—ढोल वजा कर एकत्र करना या सचेत करना।
३ ढोल पीटणो—देखो ढोल बजाणो'।
४ ढोल वजाणो—घोषणा करना, प्रकट करना।
५ ढोल मे पोल—ढोल वोलता हुग्रा, बडा तथा सुदृढ दिखाई

देता है किन्तु उनमें पोल होती है अर्थात् अधिक बोलने वाले आदमियों की बातें पक्की नहीं हुआ करती हैं। ६ दूर रा ढोल सुहावणा—ढोल की ध्वनि दूरी से सुहावनी प्रतीत होती है किन्तु उसके निकट जाने पर विशेष आनन्द नहीं आता, बाह्याडम्बर दिखाने वालों के प्रति। ७ फूटो ढोल—निकम्मा, बेकार (व्यक्ति), मूर्ख।
यौ०—ढोल-दमकौ।
२ पानी रंग आदि रखने का बड़ा पात्र, ड्रम।
अल्पा०—ढोलड़ी, ढोलडी, ढोली।
मह०—ढोलड।

ढोलक-सं०स्त्री० [सं० ढौल] लकड़ी के गोल, मोमले व लम्बोतरा घेरे के दोनों ओर चमड़े से मढ़ा हुआ वाद्य जो ढोल से छोटा होता है। उ०—वीणा ताल-म्रिदंग वाजि रहिया छै। वामलि व जि रही छै। ढोलका वाजि रही छै। फाग गाइजै छै।—रा सा स
अल्पा०—ढोलकी, ढोलटी।

ढोलकियौ—१ देखो 'ढोल' (अल्पा रू भे)
२ देखो 'ढोलियौ' (अल्पा रू भे)

ढोलकौ—देखो 'ढोलक' (अल्पा, रू भे.)

ढोलड—१ देखो 'ढोल' (मह, रू भे)
२ देखो 'ढोलियौ' (मह, रू भे)

ढोलडकौ—देखो 'ढोलियौ' (अल्पा, रू भे)

ढोलड़ो—१ देखो 'ढोल' (अल्पा, रू भे)
२ देखो 'ढोलक' (अल्पा., रू भे)
उ०—हर नाचवा लागी बडी बडी। जिण भात ढोलड़ो वागा नट नू नच नची लागै। इण भात इण वेळा रजपूता री रजपूतवट जागै।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
३ देखो 'ढोलियौ' (अल्पा रू भे)

ढोलड़ौ—१ देखो 'ढोल' (अल्पा, रू भे)
उ०—१ घर घोडौ पिव अचपळौ, वैरी वाडा वास। नित उठ खुडकै ढोलड़ा, न चुडनै री आस।—लो गी
उ०—२ मोहड अस समाज सदाई दळ मर्फ, भोमी चारै गाम के धाड़ै दोडजै, लूंटे बाहर लार दिरीजै ढोलडा, एता दै फिरतार फेर नहिं बोलणा।—अज्ञात
उ०—३ नाग निदाळूया घणा दूयं ढोलडौ। खडहड्यौ जाण आकास री खोळडौ।—रुखमणी हरण

ढोलण-स०स्त्री०—ढोली जाती की स्त्री।

ढोलणी-स०स्त्री०—१ देखो 'ढोलियौ' (अल्पा, रू भे)
उ०—आय पना सेक की त्यारी कराई। अगर चनण री ढोलणी कसाई। सेजरध मोडीजै छै।—पना वीरमदे री वारता
२ ढोली जाति की स्त्री।

ढोळणौ, ढोळबौ-क्रि०स० [सं० दोलन्] १ किसी पदार्थ को गिराना, ढरकाना, ढालना, बहाना। उ०—१ म्है नै ढोलो भूवियया, म्हानू आवी रीस। चोवा-केरै कूपळै, ढोळी साहिब सीस।—ढो मा
उ०—२ मठ देवकुळ खडहडत पाडतउ, चतुस्पद दडवड ग्रडवडतउ, घलहलमिश्रित तैल भोजन ढोलतउ।—व स
उ०— ३ सूयावहि दूखण घणा, वलि गरभ गळाया। जीवाणी ढोळया घडा, सील वरत भजाया।—स कु
२ इधर-उधर हिलाना, डुलाना (चँवर, पखा आदि)
उ०—१ हे जठै नै बहू सिणगार दे पोढिया ए। ए वारी दासी ढोळै छै वाव, ये म्हानै धणी वे सुहावै जच्चा पीपळी।—लो गी
उ०—२ चादी को एक वाटको, जी मे वूरा भात। हुकम होय सिरकार को, दोन्यू जीमा साथ, ओ सिरदार थानै पखा ढोळ जिमाऊ, म्हारा प्राण! उमरावजी ओ रसिया।—लो गी.
ढोळणहार, हारौ (हारी), ढोळणियौ—वि०।
ढुळवाडणौ ढुळवाडवौ, ढुळवाणौ, ढुळवावौ, ढुळवावणौ, ढुळवाववौ, ढुळाडणौ, ढुळाडवौ, ढुळाणौ, ढुळावौ, ढुळावणौ, ढुळाववौ, ढोळाडणौ, ढोळाडवौ, ढोळाणौ, ढोळावौ, ढोळावणौ, ढोळाववौ—प्रे०रू०।
ढोळिओडौ, ढोळियोडौ, ढोळ्योडौ—भू०का०कृ०।
ढोळीजणौ, ढोळीजवौ—कर्म वा०।
ढुळणौ, ढुळबौ—अक०रू०।

ढोलणौ—देखो 'ढातौ' (अल्पा., रू भे)

ढोलर—चिडिया के समान एक पक्षी विशेष जो बाजरी की खडी फसल को हानि पहुँचाता है।
अल्पा०—ढोलरियौ।

ढोलरहीडौ—देखो 'डोलरहीडौ' (रू भे)

ढोलरियौ—देखो 'ढोलर' (अल्पा, रू भे)

ढोळाई-स०स्त्री०—१ ढोलने की क्रिया २ ढोलने की मजदूरी।
रू०भे०—ढुळवाई, ढुळाई।

ढोलि—देखो 'ढोल' (रू भे) उ०—उरि करिय प्रजा जइतसी राउ, घेर करि चलिय दे ढोलि घाउ। भारत्थ जइतसी भळिय भार, लसकरी विलाया आप लार।—रा ज सी

ढोळियोडौ-भू०का०कृ०—१ किसी पदार्थ को गिराया हुआ, ढरकाया हुआ, बहाया हुआ २ इधर-उधर हिलाया हुआ, डुलाया हुआ।
(स्त्री० ढोळियोडी)

ढोलियौ-स०पु०—वह चारपाई जो साधारण चारपाई से कुछ बडी और सुन्दर होती है, पलग। उ०—१ ढोलणी नै चौवारै चढाय, ढोलो माल्हणी दोनू पोटसी। खातीडा रै असल गिवार, जोडी जोरावर ढोलियौ सफडी।—लो गी
उ०—२ आमा जी साम्हा ढोलिया ढळावा, ढोला जे रे बीच राखा झगा झारी रे, प्रीतम प्यारी रा साहिबा सेजा नै पधारो रे।
—लो.गी
रू०भे०—ढोल्यौ।

अल्पा०—ढोलकियो, ढोलडकी, ढोलडी, ढोलणी।

महृ०—ढोलड, ढोलीड।

ढोली-स०पु० [स०ढोल:+रा प्र ई] ढोल बजाने और गाने-बजाने का कार्य करने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति।

ढोलीड—देखो 'ढोलियो' (मह, रू भे)

ढोळो—१ सफेदी।

उ०—कारी कुटका वरसाळं मे, टळं ऊटा मजूरडी। ढोळो अर अगाळी देवण, माडण खूब खजूरडी।—दसदेव

२ देखो 'ढोळो' (रू.भे)

ढोलो-स०पु०—१ रहट के मध्य स्तभ को स्थिर रखने के लिये लगाये जाने वाले डडे को मजबूत करने के लिये जमीन पर गडे हुए पत्थरो के साथ लगाई जाने वाली लकडी।

[स० दुर्लभ, प्रा० दुल्लह] २ पति, खाविंद।

उ०—इकथभियो, ढोला महल चिणाय, च्यारू दिसा मे राखो गोखडा, जी म्हारा राज। गोखं-गोखं दिवलो सजोय, राजीदा ढोला, दियं रे चानणियो ढाळू ढोलियो, जी म्हारा राज।—लो गी

३ सडक की पुल के नीचे बना हुआ मेहराबदार छेद (मोखा) जिसमे से पानी बहता है और सडक को क्षति नही पहुँचती

४ देखो 'ढोल' (अल्पा., रू भे)

उ०—पूरव जनम की मै हू गोपिका, अधविच पडग्यो झोलो रे। जगत , अब क्यू बजाऊ ढोलो रे।—मीरा

६ बच्चा, बालक, लडका. ७ सीमा का चिन्ह।

वि०—मूर्ख।

ढोल्यो—देखो 'ढोलियो' (रू भे) उ०—चगो महल ढोल्यो चगो, चगो चतुर हद नाह। चगी सेजा राजवणि, पीजं मद प्यालाह।

—पना वीरमदे री वात

ढोवणो, ढोवबो-क्रि०स०—१ लाना। उ०—ढोवै रभ रत्थ, वरै वीद तत्थ।—गु रू व

२ देखो 'ढोणो, ढोवो' (रू भे) उ०—टेका कडिया बाध, ढोवता घर पर आखो। फोगा हदी फसल, गरीबा गायक लाखो।—दसदेव

ढोवणहार, हारौ (हारी), ढोवणियो—वि०।

ढोवाडणो, ढोवाडबो, ढोवाणो, ढोवाबो, ढोवावणो, ढोवावबो—प्रे०रू०।

ढोविग्रोडो, ढोवियोडो, ढोव्योडो—भू०का०कृ०।

ढोवीजणो, ढोवीजबो—कर्म वा०।

ढोहणो, ढोहबो—रू०भे०।

ढोवाई-स०स्त्री०—ढोने की मजदूरी।

ढोवियोडो-भू०का०कृ०—१ लाया हुआ २ देखो 'ढोयोडो' (रू.भे)

ढोवो-स०पु०—१ आक्रमण, हमला, चढ़ाई। उ०—१ पछं गढ पाखर नै अमरकोट सू ढोवो हुवो, गढ मेळियो।—नैणसी

उ०—२ जिणसू दूदं तिलोकसी गढ साझियो नै सासता ढोवा हुवं छं।—नैणसी

उ०—३ तरं सगळं ठाकुरं प्रथीराजजी नू कह्यो—हिमै तो आथमण हुवो, सवारं ढोवो करस्या, तरं प्रथीराजजी साथ उरो तेडियो।

—राव मालदेव री वात

क्रि०प्र०—करणो, होणो।

२ युद्ध, लडाई।

क्रि०प्र०—करणो, होणो।

३ युद्ध-स्थल, रण क्षेत्र। उ०—क्रोध मुखी सारा मति कामति। विस धारी निज लीध वर। ढुळियं रयण ढोलियं ढोवं। लोह तणा वाजं लहर।—दूदो

रू०भे०—ढोहो।

ढोसरी-स०स्त्री०—एक प्रकार का घास विशेष।

ढोहणो, ढोहबो—१ देखो 'ढाहणो, ढाहबो' (रू भे)

२ देखो 'ढोवणो, ढोवबो' (रू भे)

ढोहियोडो—१ देखो 'ढाहियोडो' (रू भे)

२ देखो 'ढोवियोडो' (रू भे.)

(स्त्री० ढोहियोडी)

ढोहो—देखो 'ढोवो' (रू भे)

ढौ-स०पु०—१ चपक २ देवता

स०स्त्री०—३ पक्ति ४ सुगध ५ पृथ्वी (एका)

वि०—१ सज्जन २ दुष्ट (एका)

ढौळो-स०पु०—पशुओ का अधिक कमजोर हो जाने के कारण बैठने के बाद न उठ सकने का रोग, पशुओ की कमजोरी।

क्रि०प्र०—पडणो।

रू०भे०—ढोळो।

ण

ण—सस्कृत, राजस्थानी व देवनागरी वर्णमाला का पन्द्रहवा व्यञ्जन तथा ट वर्ग का पचम वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है। इसके उच्चारण मे आभ्यान्तर प्रयत्न स्पष्ट और सानुनासिक होते हैं। बाह्य प्रयत्न सवार, नाद, घोप और अल्प प्राण हैं। इसका सयोग मूर्द्धन्य वर्ण अन्तस्थ तथा 'म' और 'ह' के साथ होता है।

स०पु०—१ कुआ २ ववूल ३ प्रचण्ड शरीर.

स०स्त्री०—४ विजय ५ मेघा ६ वक्रगति (एका)

णगण-स०पु० [स०] दो मात्राओ का एक मात्रिक गण। इसके दो रूप होते हैं। यथा स्त्री (ऽ)—सिव (।।)

त

त—सस्कृत, राजस्थानी व देवनागरी वर्णमाला का सोलहवा व्यजन तथा तवर्ग का प्रथम अक्षर जिसका उच्चारण-स्थान दत है। इसके उच्चारण में विवार श्वास और अघोप प्रयत्न लगते हैं।

त-स०पु०—१ पुण्यफल २ युग ३ सुर, देवता ४ चरण ५ भ्रमण (एका.)

सर्व [सं० तद्, प्रा० त] वह, उस। उ०—जाणीउ राइ कुतिचितु पडु जु परिणावइ। लिहिउ जोसु निलाडि जाम त सजु आवइ।—प.प च.

तइयासियो-स०पु०—८३ का वर्ष या साल।

रू०भे०—तैयासीयो।

तइयासी-वि० [स० त्र्यशीति, प्रा० तेयासीई, तेयासी, मा० तेयासी, अ० भ्र० त्रेयासी, रा० त्रैंयासी] अस्सी और तीन का योग के बराबर।

स०पु०—८३ की सख्या।

रू०भे०—तयासी, तयामी, तैयासी।

तइयासीक-वि०—८३ के लगभग।

रू०भे०—तैयासियेक।

तइ-क्रि०वि० [स० तत्र] लिये, निमित्त।

सर्व० [स० त्वम्] तूं, तुम। उ०—जउ तइ रे देव दीधी हुती पाउडी, तउ हू ऊडी प्रभु जात पासि।—स कु

तउबो—देखो 'तसतूबो' (रू भे)

तग-स०पु० [फा०] १ घोडे की जीन अथवा ऊट का पलान कसने का चमडे का तस्मा, घोडे की पेटी, कसन। उ०—चैत महीनो चैन रो, हुवा जो हालणहार, तग खैंचो तुरिया तणा, साईं णा सिरदार।—र रा

क्रि०प्र०—कसणो खींचणो, ताणणो।

मुहा०—तग कसणो—तैयार होना, कटिबद्ध होना।

२ शरीर का कमर के नीचे या ऊपर का भाग।

उ०—निचलो होठ जाडो नैं लटकतो। ऊपरला दो दान पडियोडा। लाधा थोडास माय बैठोडा। धूध रो घेरी सोना सू लाठी। निचलो तग हळको नैं ऊपरलो भारी।—वाणी

३ पशुओ के शरीर का पिछला हिस्सा।

वि०—१ दुखी, विकल, हैरान। उ०—अकबर जग उफाण, तग करण भंजै तुरक। राणावत रिढ राण, पाण तजै न प्रतापसो।—दुरसो आढ़ो

क्रि०प्र०—करणो, होणो।

मुहा०—१ तग आणो—(किसी से) तग आना, दुखी हो जाना २ तग करणो—दुखी करना, कष्ट देना, सताना ३ तग होणो—देखो 'तग आणो'।

२ सकरा, संकुचित, चुस्त, छोटा।

क्रि०प्र०—पडणो, होणो।

मुहा०—१ तग पडणो—(वस्त्र आदि का) चुस्त होना, छोटा पडना, शरीर मे तग होना २ तग रहणो—गरीब रहना, धनाभाव मे कष्ट देखना ३ तग हाथ—अर्थाभाव, धन की कमी. ४ तग होणो—देखो 'तग पडणो'।

३ अकडा हुआ, ऐंठा हुआ। उ०—कुवधी करै न सूधरै सो सुवधी के सग। मूज भिजोवै गग मे, रहै तग री तग।—अज्ञात

तगड—देखो 'तागड' (रू भे) उ०—तद कही भली बात, चट बहिर हुआ, तगड पूगिया आदमी लेय गया।—ठाकर जैतसी री वारता

तगडी-स०स्त्री०—१ गुजराती नटों द्वारा पहना जाने वाला कच्छा विशेष २ जाघिया।

तगाई, तगी-स०स्त्री० [फा० तगी] १ तग या सकरा होने का भाव, सकोच, सकीर्णता. २ निर्धनता, गरीबी, धनाभाव।

क्रि०प्र०—आवणी, भुगतणी।

मुहा०—तगाई भुगतणी—गरीबी का कष्ट झेलना, धनाभाव होना।

कहा०—तगी मे कुण सगी—पास मे जब पैसा नही होता तब कोई साथ नही देता। दरिद्रावस्था मे कोई सहायक नही होता।

३ कमी, न्यूनता, अभाव. ४ तकलीफ, कष्ट, दु.ख।

उ०—समज मन सदा धरम एक सगी, तेरै कवहु न आवै तगी।—ऊ का

तगोटी-स०स्त्री०—छोटा तबू, छोलदारी। उ०—१ हिरदाहु जरा अजब है, फेरि तहा मन आणि। जन हरिदास तीसू तखत, तहा तगोटी ताणि।—ह पु वा

उ०—२ दळ बादळ डेरा तगोटी, फरहर नेजा धजा अति मोटी।—स कु

तजेब-स०स्त्री० [फा०] उच्च-स्तर की महीन मलमल।

तटर-स०पु० [स० तट] किनारा, कूल, तट। उ०—जीवन प्रेम प्रवाह जळ, अटक सकी नहिं आज। तटर तर ज्यू टूट नैं, छूट पडी छै लाज।—अज्ञात

तड-स०पु०—ताडव नृत्य।

तडण-स०पु०—१ मथन। उ०—तडण कर कविता तणो, घालू चडण घूव। भडण जोगं भेख रो, खडण करणो खूब।—ऊ का.

२ नृत्य, नाच।

तडणो, तडबो-क्रि०अ०—१ नृत्य करना, नाचना।

उ०—हुवै घत्त लोहित्त मेमत्त हाला। नसारा किसा सूळा निवाला। मधू मास आसोज मे रास मडै। तिहू लोक री डोकरो तेथि तडै।—मे म

२ उछल कूद करते हुए नृत्य करना, उद्धत नृत्य करना।

उ०—जग नगारा जाण रव, आण धगारा अग। तग लियता तडियो, तोनै रग तुरग।—वी स.

३ ताडव नृत्य। उ०—तडै सिव जिण वेळ 'जपा ज्यू आथण लाली, लेतो सोवै मेघ, चाम गजहर रीझाळी।—मेघ.

४ बैल का जोश भरी आवाज करना, टाडना।

उ०—धुर सूती मरियो धवळ, सकट हचक्का खाय। तिण री बाळी वाछडी, तडै खध लगाय।—वी.स.

तडळ–स०पु० [स० तड या तड] १ ध्वस, सहार, नाश।

उ०—खाप-खाप रा खत्री अवर बहु सूर अकारा। करि-करि तडळ किलम धणी छळि तीरथि धारा।—सू प्र

[स० तण्डुल] २ चावल। उ०—छदामा के तडळ सारे पावता कर प्यार। किसन सोव्रन पुरी कीनी साख भर ससार।—भगतमाळ

[स० तड] ३ टुकडा, खण्ड, हिस्सा।

तडव—१ जोश भरी गर्जना, दहाड। उ०—१ कुभेण राण हणिया कलम, आजस उर डर उत्तरिय। तिण दीह द्वार सकर तणै, कामधेनु तडव करिय।—लूणकरण खिडियो

उ०—२ उण गिरवर पै आय कै, केहर तडव कीन। घणहर मानु इद्रघन, भादव जळधर मीन।—बगसीराम प्रोहित री वात

२ देखो 'ताडव' (रू भे) उ०—ऊनमियो उत्तर दिसा, गयण गरज्जै घोर। दह दिसि चमकै दामिनी, मडै तडव मोर।—ढो मा,

तडवि—देखो 'ताडव' (रू भे) उ०—कोकिल सोर मोर तडवि क्रत, नटवर गान सगीत करै नृत।—सू.प्र

तडियोडो–भू०का०कृ०—१ नृत्य किया हुआ, नाचा हुआ २ उछल-कूद करते हुए नृत्य किया हुआ, उद्धत नृत्य किया हुआ ३ ताडव नृत्य किया हुआ ४ (बैल का) जोश भरी आवाज किया हुआ। (स्त्री० तडियोडी)।

तडिळ–स०पु०—एक वृक्ष विशेष। उ०—ताळ तमाळीय तणच्छ घण, तिहा तुळसी नइ ताड। तज तडिळ नइ तिलवडी, ताळी सोना झाड।

—मा.का प्र

तडीर, तडीरव–स०पु०—तरकस, तूणीर। उ०—१ जडि अग सिलह सस्त्र अग जकडै। कसै तडीर कवाण पकडै।—सू प्र

उ०—२ चलि हस किता किता तह चाली, खहता हुवा तडीरव खाली।—सू प्र

तडुळ–स०पु० [स० तदुल] १ चावल, धान २ खड, टुकडा, भाग ३ शरीर का कटा हुआ भाग ४ तमाल-पत्र।

तडुळकुसुमावळीविकार–स०पु० [स० तडुल कुसुमावली विकार] ६४ कलाओ मे से एक।

तडेव—देखो 'ताडव' (रू भे) उ०—महाराग छडेव-छडेव व्है न दे न गूड वजडेव डम्मरु चडेव हत्तीवीस। सडेव छडेव मेख पाथ बाण पाय साच, उमडेव मडेव तडेव नाच ईस।—बद्रीदास खिडियो

तढ़मल–वि०—वीर, योद्धा। उ०—भालिमि कुळ भाण मन महिराण जस रस जाण जुआण। तढ़मल तुडिताण विमळ वखाणै सूर-नाण समाण।—ल पि.

तण—देखो 'तण' (रू भे) उ०—मथियो के फेरा महण, भगते भरिया भूक। तै दीन्ही वसदेव तण, फेरा कितरा फूक।—पी.ग्रं

तणो—देखो 'तणो' (रू भे) उ०—पहळाद समरियो आयो जगपति, चत्रभुज निमो भगत री चाड। वहनामी रै दाढ तणौ वळ, हरिणख तणो जाणिसै हाड।—पी ग्र.

तत–स०पु० [स० तत्व] १ सत्यता, असलियत।

क्रि०प्र०—खोजणी, ढूढणी, निकाळणी।

मुहा०—तत निकाळणी—असलियत मालूम करना।

२ ओज, तेज, शक्ति। उ०—उद्दम आगम आखड़ी, ताप निडरता तत। गाज मलफ एता गुणा, सीहा काज सरत।—बा दा

मुहा०—तत नीरणो (निकळणो)—ओजहीन होना, शक्तिहीन हो जाना।

यौ०—तत बायरो।

३ मौका, अवसर। उ०—१ तकिया तो इण तत, चूकै उर अवरन चढै। बाघ लियो बुधवत, चुपाळी मो मन चपळ।—र. हमीर

उ०—२ मनै तो देखि लीवी। पवन भी वैरी हुवो। इसो तत साझ्यो। हू तो आज ताई कणी सामो चोघी नही।

—पना वीरमदे री वात

मुहा०—तत मिळणो—मौका पडना, अवसर आना।

४ समय, अवसर। उ०—तै जेहा दीधा तुरी, भ्रिग जीपण मलफत। चढै जिका अनपह चढै, तोरण वारण तत।—बा दा.

५ रहस्य, भेद। उ०—१ पीहर सदी ऊमणो, ऊमर हुदइ सथ्थ। मारवणी नू तत मइ, कहि समझावइ कथ्थ।—ढो.मा

उ०—२ परभातै पना का जगावा कै वासतै साथण्या आई। जिकै मुदै तत समझी नही, सोणा की वात नै पाई।

—पना वीरमदे री वात

मुहा०—तत निकाळणो—रहस्य ढूढना, भेद ज्ञात करना।

६ सार, तत्व, साराश। उ०—पूरण-पुनीत स्री राम पद, विघन हरण त्रैलोक्य वर। परणाम सुकवि ईसर पुणै, तत नाम भवसिंधु तर।—ह.र.

मुहा०—तत निकळणो—सार अथवा तत्व ज्ञात करना।

यौ०—ततबायरो।

[स० तत्व] ७ तत्व। उ०—तै परठै पचीस तत पच भूतक प्राणी।

—केसोदास गाडण

८ शीघ्रता, आतुरता।

[स० तत्री] ९ सारगी, सितार १० तार।

उ०—विकट अत करि तत वजाणी। इसढा कइक तबूरा आणी।

—सू प्र.

११ तारवाद्य। उ०—तत तणक्कइ पिउ पियइ, करहउ ऊगाळे ह। भल वउळावी दोहडा, दई वळावण देह।—ढो मा.

१२ निश्चय। उ०—आण न जागै आखिया, तिण सिर दीधा तत। पल-पल मुख पुळकावणो, कायर ही उचकत।—बा दा.

१२ देखो 'तत्र' (रू भे)

ततबायरो-वि०यौ०—१ तत्वहीन, सारहीन, साराशहीन २ शक्तिहीन, तेजहीन।

ततर—देखो 'तत्र' (रू.भे) उ०—खलवति करै न खिलवति खानै, तसवी खानै अजू न ततर। आलमीन रवील न उचारै, सर्फ न न्याव अदालित सध्धर।—सू.प्र.

ततरी—देखो 'तत्री' (रू भे)

ततसपत-स०पु० [स० सप्ततत्तु] यज्ञ (अ मा)

तताळ-स०पु० [स० ततु, नतुन] जल मे रहने वाले जतु विशेष।
उ०—नभ ताळ तताळ धराळ मिळै, अयलोक सुरप्पति विद्ध सही।
—करुणासागर

तति-स०पु० [स० ततम्] १ तारवाद्य। उ०—तति सुखिर घन सब्दीइ, पवन तणा पल्लोळ। माधव महिला सिउ करइ, क्रीडा रसि कल्लोळ।—मा का.प्र.
२ देखो 'तत्री' (रू भे) उ०—भेरी भुगळ भरहरइ, करइ भाट जयकार। तूर तिविल वाजा मुणइ, तति तणा टमकार।
—मा.का प्र

तती—देखो 'तत्री' (रू भे) उ०—विराजै मुखाधाय तती वितती, वदै आरती राग वाणी वणती।—रा रू

ततु-स०पु० [स०] १ सूत, तागा, डोरा, धागा. २ तात
३ देखो 'ताती' (रू भे) उ०—पत्र अक्खर दळ द्वाळा जस परिमळ, नवरस ततु विधि अहोनिसि। मधुकर रसिक सु भगति मजरी, मुगति फूल फळ भुगति मिसि।—वेलि

ततुण-स०पु० [स० ततुण] १ मत्स्य २ मकडी का जाला।

ततुल-स०स्त्री०—कमल की नाल।

ततुसप्त-स०पु० [स० सप्त ततु] यज्ञ, होम (अ मा)

ततुवाय-स०पु० [स० ततुवाय] कपडा बुनने वाला, बुनकर, जुलाहा।
(डि को)

तत्र-स०पु० [स०] १ तागा, डोरा, सूत २ तात ३ मकडी का जाला. ४ सेना (डि को) ५ वस्त्र ६ चौसठ कलाओं के अतर्गत एक कला (व स) ७ मत्र, जादू, टोना। उ०—मणि मत्र तत्र बळ जत्र अमगळ, थळि जळि नभमि न कोइ छळति। डाकिणि साकिणि भूत प्रेत डर, भाजै उपद्रव वेलि भणति।—वेलि
८ तार वाद्यो का तार। उ०—घूघरा तणा झरणाट हुय घमाघम, वेण रा तत्र तरणाट वाज। नकीवा वोल हरणाट हुय नोवता, गयण घर सवद गरणाट गाजै।—रेतसी बारहठ
रू०भे०—तत, ततर।

तत्रणी-स०पु०—तत्र शास्त्र का ज्ञाता अथवा रचयिता।

तत्रनाळि-स०स्त्री०—तोप। उ०—नीछटिया गोळा तत्रनाळि। पावक जाणि पइठउ पलाळि।—रा ज सी.

तत्रवाद-स०पु०—७२ कलाओ मे से एक।

तत्रवादी-वि०—जादू टोना जानने वाला (व स)

तत्रिक—देखो 'तत्री' (३) (रू भे)

तत्री-स०पु० [स०] १ सारगी, सितार आदि तार वाले वाद्य।
उ०—तणै तार सै तार वीणादि तत्री, वणै वीस वत्तीस भेरू बजत्री। डफा मादळा नाद डैरू डमकै, धरा व्योम पाताळ घूजै धमकै।—मे म
२ तार के वाद्यो को बजाने वाला ३ टोना, मत्रादि करने वाला जादूगर।
रू०भे०—तत्रिक।
४ तार-वाद्यो का तार ५ तार ६ तात।
रू०भे०—ततरी, तति तती।

तदरा-स०स्त्री० [स० तद्रा] १ तद्रा, ऊघ, हलकी नीद मे आने वाली झपकी २ हलकी मूर्छा।
रू०भे०—तद्रा।

तदळ—देखो 'तदुल' (रू.भे) उ०—डावा लाळी जिमणी मलाळी, तदळ भरू भाण।—व स.

तदुल-स०पु०—श्वान, कुत्ता (अ मा)

तदुरस्ती-स०स्त्री० [फा० तदुरुस्ती] सुस्वास्थ्य, निरोग होने की दशा या उसका भाव।

तदुळ-स०पु० [स० तण्डुल] १ चावल। उ०—तै मुख कमळ सदामा तदुळ, पाया विलकुल भरे पुसी। विदुर तणी भगती हित वाधा, साधा केळा छोत खुसी।—र ज.प्र
रू०भे०—तदळ।
२ मस्तक, शिर। उ०—धोम क्रोधानळा जाग वसुधा धमै, राम जोधा खळा लाग आडै रमै। गयण मग गयदा लाग तदुळ गमै, भेद मडळ मिहर जाण चीला भमै।—र रू
अल्पा०—तदुळियो।

तदुलवेयाली, तदुलवेयालीसूत्र-स०पु० [स० तण्डुलवैकालिक सूत्र] जैन धर्म के एक सूत्र ग्रथ का नाम। उ०—१ पचम पयन्नो तदुलवेयाली, ध्यारसै गाह भली तिहा भाळी।—ध व ग्र.
उ०—२ नीपनउ नयरि नादउद्रि वच्छरी ए चऊददहोत्तर ए। तदुलवयालीसूत्र माझिला ए भव अम्हि ऊधरघा ए।—प प च

तदूर-स०पु० [फा० तनूर] अगीठी या भट्टी आदि की तरह का बना हुआ मिट्टी का गोल और ऊचा पात्र जिसके नीचे आग सुलगा कर उसकी दीवारो को खूब तपा दिया जाता है। तपने के बाद इसमे मोटी-मोटी रोटिया चिपका देते हैं जो ताप से सिक कर तैयार हो जाती हैं।
रू०भे०—तनूर।

तदूरो-स०पु०—१ वीणा के आकार का एक वाद्य विशेष जिसे प्राय भजन कीर्तन करने वाले लोग बजाया करते है
२ देखो 'तदूर' (रू भे) उ०—अरक दुत सोम सम नमै लोयण असम, धूआ तम तोम लग धूरा-धूरा। तठै सूर लडैता थटै घण तदूरा, हरख सूरा निरख रभ हूरा।—वा दा

रू०भे०—तनुरी ।

तत्रा–स०स्त्री० [स०] १ एक रोग विशेप (ग्रमरत)
२ देखो 'तदरा' (रू भे)

तनै [स० तनय] १ सतान, पुत्र ।

तपा–स०स्त्री० [स० तुम्प] सीगो वाली गाय (ह ना)

तब–स०पु०—१ वैल (अ मा) २ अभिमान, गर्व (ह ना)
३ देखो 'अब' (रू भे) उ०—तब तणी पय धार लेवता, सगत वधारै पाण सिताव । तूडी उदध तणै डूवता, गाढै सुत तारियौ ग्राव ।
—चौथ वीठू
४ देखो 'तावौ' (रू भे) (जैन)

तबक—देखो 'अवक' (रू भे)

तब-पत्र—देखो 'तावापतर' (रू.भे) उ०—विहद लीध जिणवार, रैण प्रथ भूप जही रस । जस ध्रम कजि जग जीत दिया तवपत्र दवा-दस ।—सू प्र

तंबा–स०स्त्री०—गाय (ह ना) उ०—पीर जठै पूजता पवित्र सुर जठै पूजाया, तवा कटती तठै, जिग वह होम जगाया ।—सू.प्र
स०पु० [फा० तवान] चौडी मोहरी का पायजामा ।

तबाकू, तवाखू—देखो 'तमाकू'(रू भे)

तबाळ—देखो 'अ वाळ' (रू भे) उ०—रूपमल वळोवळ जाण रणताळ रा, फील दळ माल रा झडा फरकै । वाजता सुणै तवाळ 'वजपाळ' रा, थाळ रा नीर जिम दिली थरकै ।—महाराजा विजयसिंघ री गीत

तबावळ—देखो 'तवोळ' (रू भे)

तबी–स०स्त्री०—१ नगारा २ भय ।

तबू–स०पु०—१ खेमा, डेरा, शिविर २ शामियाना ।
क्रि०प्र०—खडो करणौ, खीचणौ, ताणणौ ।
मुहा०—तवू ताणणौ—पडाव डालना ।

तबूर, तबूरौ–स०पु० [फा० तवूर] १ युद्ध मे वजाया जाने वाला एक प्रकार का छोटा ढोल विशेप । उ०—१ वगै वीर ताळ जगै, ज्वाळ तोपा जेण वार, अहक्कै अ वाळ डका डहक्कै तवूर ।
—वुधसिंघ सिंढायच
उ०—२ विकट अत करि तत वजाणै, इसडा कइक तवूरा आणै ।
—सू प्र
२ सितार या वीन की तरह का एक वाद्य जिसके बीच मे दो लोहे के तार होते हैं और दोनो ओर दो तार पीतल के होते हैं, तानपुरा । उ०—ताल अदग तवूर, सुर वीणा वीणा धरि सुदरि । हरखत नूपत हजूर, सर्भ सलाम अलाप कीध सुर ।—सू प्र
३ एक तार वाला एक वाद्य जिसके नीचे की ओर एक तूम्वा लगा रहता है ।
रू०भे०—तदूरो, तमूरो ।

तबेडो—देखो 'तावेडो' (रू भे.)

तबेरण, तबेरम, तबेरव, तबोरम–स०पु० [स० स्तवेरम] हाथी, गज
(डि.को)

उ०—तवेरम कुभ दुहाथळ तत्थ, आडा गिर मत्थक हत्थ अगत्थ । प्रहोहत होफर खोफ अपार, अवोफर आभ डरै असवार ।—मे म

तबोळ–स०पु०—१ मुह मे से निकलने वाले झाग या फेन ।
उ०—इण घोडा नै इतरी दौड किस रोज करी है, तिससे जल्दी रखी है । जलाल री घोडौ देखै तौ चौकडी चवै छै । तबोळ पडै छै, काठा पसेवीजै छै ।—जलाल वूवना री वात
[स० तावूल] २ तावुल, पान बीडा । उ०—केसर चरचसी, काजळ घालसी, तबोळ खवायसी ।—पचदडी री वारता
३ देखो 'तबोळी' (मह, रू भे) ४ क्रोध ।
स०स्त्री०—५ पुष्करणा ब्राह्मणो की 'बडी जान' और समधी की प्रशसा के उद्देश्य से वर पक्ष की ओर से सुनाई जाने वाली कविता विशेप ।
वि०—१ लाल । उ०—'भैरव' रा साभळ वचन, तन चढ रीस तबोळ । विसटाळ, पाछा वळै, चख धुवता मद चोळ ।—पे.ख
२ अधिक, वहुत ।
रू०भे०—तवावळ, तवोळि, तमोळ तमोळ ।

तबोळखानौ–स०पु०—तावूल रखने का स्थान, वह स्थान जहा पान के वीडे वनते हैं । उ०—उदैपुर आवदार खानौ पाणीडौ कहावै । कपडा रो कोठार निकारी ओरी कहावै । दवाखाना ओखध री ओरी कहावै । तबोळखाना री ओरी वीडा वणै । सिलहखाना री ओरी ससतर रहै ।—बा दा ख्यात

तबोळनित–स०स्त्री०—नागर वेल ।

तबोळि—देखो 'तबोळ' (रू भे) उ०—मानिनी मरकलडइ हसइ मुख भरिउ तबोळि । तिणइ त्रितय भूयणपति, जाणइ चिणोठी चोळ ।—मा का प्र

तबोळी–स०पु० (स्त्री० तबोळण) १ पान का व्यवसाय करने वाली एक जाति अथवा इस जाति का व्यक्ति २ पान वेचने वाला ।
रू०भे०—तमोरी, तमोळी ।
मह०—तबोळ ।

तमाकू—देखो 'तमाकृ' (रू भे)

तमारौ–सर्व०—तुम्हारा, तुम्हारे ।

तमे–सर्व०—तुमको । उ०—सौ जोजने मेलिया, ढोलो कुअर तमेह । कहु गुण केही परहरी, वध दाखवु अमेह ।—ढो मा.

तमोळ—देखो 'तबोळ' (रू भे)

तयाळीसेक–वि०—तेतालीस के लगभग ।
रू०भे०—तैयाळीसेक ।

तयाळीस–वि० [स० त्रिचत्वारिंशत्, प्रा० तेचत्तालीस, तेयालीस, अ०अ० अयालीस, रा० तयाळो] चालीस और तीन का योग ।
रू०भे०—तयाळी, तयाळीस

तयाळीसमो, तयाळीसवो–वि०—तेतालीसवां ।

तयाळीसो, तयाळो–स०पु०—४३ का वर्ष ।
रू०भे०—तयाळीसो, तयाळीसौ, तयाळी, तैयाळीसो ।

तयासी—देखो 'तइयासी' (रू.भे.)

तयासीमों–वि०—८३ वां।

तयासीयो–स०पु०—८३ की संख्या का वर्ष।

तवर–स०पु०—१ एक राजपूत वंश या इस वंश का व्यक्ति २ सिलावट जाति की शाखा या इस शाखा का व्यक्ति

रू०भे०—तुअर, तुवर, तूअर, तोमर।

३ वह व्यक्ति या बालक जिनका प्रपितामह जीवित हो।

तवरावटी–स०स्त्री०—जयपुर राज्य का एक प्रदेश जहां तवरों का राज्य था। यहां आज भी तवरों की अधिक संख्या है।

रू०भे०—तवरावाटी, तोरावटी, तोरावाटी।

तवाई–स०स्त्री०—१ मूर्च्छा, बेहोशी। २ हलचल, घबराहट, खलबली। उ०—माचै खाग झाटा राचै तवाई छ खंडा माथै, रखा आट पाटा नदी वहाई रोमाग। पाथ थाटा जग रूपी कुवाणा नवाई पाणा, अआटा वेढियो थाटा सवाई 'सोभाग'।—सूरजमल मीसण

३ भय, आतंक।

तवायफ—देखो 'तवायफ' (रू भे.)

तस–वि० [स० त्र्यस्र] त्रिकोणाकार, त्रिकोण (जैन)

तह–क्रि०वि०—वहां। उ०—जह गिरवर तह मोरिया, जह सरवर तह हंस। जह 'बापो' तह भारमल, जह दारू तह मंस।

—आसो बारहठ

तहीं–क्रि०वि०—उसी स्थान पर, वहीं।

त–स०पु० [स० त] १ पुण्य. २ चोर. ३ झूठ ४ गर्भ ५ रत्न ६ सुख ७ तीर्थ ८ पाप ९ मोल १० चित्त, हृदय। ११ स्थान १२ सगुन।

स०स्त्री०—१३ नाव १४ दुम १५ आत्मा।

अव्य० [स० तत्] १ उस दशा में, तब, तो।

उ०—१ माणस हुवा त मुख चवां, म्हे छां कूझडियांह। प्रिउ संदेसउ पाठविसु, लिखि दे पखडियांह।—ढो मा

उ०—२ देस सुहावउ जळ सजळ, मीठा-बोला लोइ। मारू कामण भुइ दखिण, जइ हरि दियइ त होइ।—ढो मा

[स० तु] २ एक अव्यय जिसका व्यवहार यों ही पाद-पूर्ति अथवा किसी शब्द पर जोर देने के लिये किया जाता है।

उ०—१ अति घण ऊनिमि आवियउ, झाझी रिठि झडवाइ। बग ही भला त बप्पटा, धरणि न मुक्कइ पाइ।—ढो मा.

उ०—२ पगि-पगि पाणी पथ सिर, ऊपरि अबर छाह। पावस प्रगट्यउ पदमिणी, कहउ त पूगळ जाह।—ढो मा.

सर्व० [स० तुभ्यम्] १ 'तू' शब्द का वह रूप जो उसे प्रथमा और षष्ठी के अतिरिक्त और विभक्तियां लगने के पहले प्राप्त होता है, तुझ। उ०—१ तद पदू कहायौ 'हूं त नै ले जासू'।—द दा.

उ०—२ तीनां ही देव त नैं, देवी आदर दीध। मरव सयाणा हेक मत, कहवत साची कीध।—बा दा.

२ तूं, तुम ३ उस। उ०—विच साह दळा डेरा वणे, तेजपुंज आयो त दिन। उतरियो गयद हूंता 'अभो', जळ चाढै मरुघर ज दिन।—सू प्र.

रू०भे०—थ।

तइ, तइ–सर्व० [स० त्वम्] १ तू, तुम। उ०—१ सयणा पाखा प्रेम की, तइ अब पहिरी तात। नयण कुरगउ ज्यू वहइ, लगइ दीह नइ रात।—ढो मा

उ०—२ जे तइ दीठी मारवी, कहि सहिनाण प्रगट्ट। साच कहे तू दासवइ, वहा ज पूगळ वट्ट।—ढो मा

उ०—३ ढोला, मारवणी मुई, तइ सारडी न लध्ध। दीवा-केरी वाटि जिम खोडी-खोडी दध्ध।—ढो मा

[स० तुभ्यम्] २ तुझ। उ०—१ अम्हा मन अचरिज भयउ, सखिया आखइ एम। तइ अणदिट्ठा सज्जणा, किउ करि लग्गा पेम।

—ढो मा

उ०— २ सुहिणा, हू तइ दाहवी, तो नइ दहियउ अग्गि। सव जोयण साजण वसइ, सूती थी गळि लग्गि।—ढो मा

३ तेरे। उ०—उज्जळ-दंता घोटडा, करहइ चढियउ जाहि। तइ घर सुध कि नेहवी, जे कारिणी सी खाहि।—ढो मा

[स० तद्] ४ उस। उ०—जइ रूखा मारू हुई, छवडउ पडियउ तास। तइ हुती चदउ कियइ, लइ रचियउ आकास।—ढो मा

प्रत्य०—१ करण और अपादान कारक का चिन्ह, तृतीया और पचमी की विभक्ति, से। उ०—कवण देस तइ आविया, किहा तुम्हारउ वास। कुण ढोलउ कुण मारुवी, राति मल्हाया जास।

—ढो मा.

२ देखो 'तई' (रू भे)

तइनात, तइनाथ—देखो 'तैनात' (रू भे) उ०—सो नकीब कहि गयो—तुम नवाब रै कावुल कू तइनाथ हो सो तैयारी करो।

—अमरसिंह राठौड री वात

तइय–वि० [स० तृतीय] तीसरा (जैन)

सर्व०—उस, उन (जैन)

तइया–वि० स्त्री० [स० तृतीया] तीसरी (जैन)

क्रि०वि० [स० तदा] तब (जैन)

तइयार—देखो 'तैयार' (रू भे.) उ०—धोम नयण सिंधुरा जगी हौदा दागर जडि। ताम हुआ तइयार भीड सिलहा ससत्रा भडि।—सू प्र.

तइयौ—देखो 'तीयो' (रू भे)

तइसै–क्रि०वि०—वैसे।

तई–क्रि०वि०—तब, उस समय। उ०—आणे सुर असुर नाग नेत्र नहि, राखियो जई मदर रई। महण मथे म लीध महमहण, तुम्हा जिणे सीखव्या तई।—वेलि

वि० [स० आततायी] १ शत्रु, दुष्ट। उ०—मण धार नले नह आप मणी. तइयां घर आटोय बाप तणी।—पा.प्र

२ देखो 'तइ, तइ' (रू भे) उ०—अफ़ास उडाय पखी अत पाय, तई रज तेण अमूझत एण ।—सू प्र

तईनात—देखो 'तैनात' (रू भे.) उ०—महताबा छीकादार अर चोर मार जिका पर आदमी तईनात ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

तईनाती—स०स्त्री० [अ० तअय्युन+रा प्रा ई] १ तैनाती, नियुक्ति २ प्रबन्ध । उ०—जिकण अजीम साह नु बगाळा रो सोबो दे बिदा कीधो जिण बगाळा मे साठ हजार फठाण रो फसाद ऊठियो तिकण नू मार लीधो । तिकण री तईनाती मे नाजर पातसाह कीधो ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

तईयासी—देखो 'तइयासी' (रू भे)

तईयार—देखो 'तैयार' (रू भे) उ०—दिन ३५४ हुवा इसै समीयै मे पाछिलो पहर छै, जीमण तईयार हुवो छै ।—चौबोली

तउ, तउ–अव्य० [स० तत, प्रा० तओ, अप० तउ] पाद-पूरक अव्यय, तो । उ०—वायस वीजउ नाम, ते आगळि लल्जउ ठवइ । जइ तू हुई सुजाण, तउ तू वहिलउ मोकळै ।—ढो मा

क्रि०वि०—१ तो । उ०—जउ तइ रे देव दीधी हुती पाखडी, तउ हू ऊडी प्रभु जात पासै ।— स कु.

२ तो भी । उ०—जइ सूकी तउ वउलसिरी, त्रूटी तउ मोतीसरी ।

—व स.

३ यदि ४ तव । उ०—राउ पहतउ सरगलोकि गगेय कुमारि । तउ लघु वधवु ठविउ पाटि तिणि वयण विचारि।—प प च

वि० [स० त्रीणि] तीन (जैन)

सर्व० [स० त्वम्] तू, तुम, आप । उ०—१ मइ ओळखी तउ हव अगु साति । भाजउ जिसिइ कौरव सैन्य वाति ।—विराट पर्व

उ०—२ पदक प्रियु तउ हू मोतिन माळा । हीरउ तउ हू मूदरडी रे बहिनी ।—स कु

तउणि, तउणी—देखो 'तपणी' (रू भे) उ०—घर घरणी पहती घर-बारि, चित पडिउ सथळ थाइ । ईंधण तउणी तणीग्र सपति, तिणि कारणि भमइ दीह नइ राति ।—चिहु गति चउपई

तउय–स०पु० [स० त्रपुअ] रागा, कलई (जैन)

तउस स०पु० [स० त्रपुप] १ एक प्रकार की लता (जैन)

२ देखो 'तउसमिजगा' (रू भे)

तउसमिजगा, तउसमिंजिया–स०स्त्री० [स० त्रपुषमिञ्जिका] एक प्रकार का तीन इन्द्रिय वाला जीव (जैन)

तऊ—देखो 'तउ' (रू.भे) उ०—दादू जे साहिब मानै नही, तऊ न छाडू सेव । ईंहि अवलबन जीजियै, साहिब अलख अभेव ।

—दादू वाणी

तकजी–स०स्त्री०—विष्णु मूर्ति के शिर का आभूषण ।

तक–स०स्त्री०—१ तकने की क्रिया या भाव, टकटकी २ शक्ल, सूरत । ज्यू—इण री तो तक दीसै ओ काई कर सकै ।

३ प्रकृति, स्वभाव ४ प्रकार, ढग । उ०—वाळा वधे वाछडा, तक घोडा लावै । वाळक तोई न वीसरै, घर रीत जणावै ।

—वीरमायण

(अनु०) ५ बकरो आदि को लडने हेतु उद्यत करने के लिए किया जाने वाला शब्द ।

अव्य० [स० अत+क] पर्य्यंत ।

क्रि०वि०—तरह, भाँति । उ०—कीजै पहिलो गण करण, आणि गुरु पय अत । तवै कवेसुर यण तक, ताळी रूपक तत ।—पिं प्र

तकख—देखो 'तक्षक' (रू भे)

तकडतअ–वि०—तना हुआ, खीचा हुआ ।

तकडी—देखो 'ताकडी' (रू भे)

तकडौ—देखो 'ताकडौ' (रू भे)

तकण–वि०—तकने वाला ।

सर्व०—वह, उस ।

तकणौ, तकबौ–क्रि०स०—तकना, टकटकी लगाना, निहारना, देखना ।

उ०—१ सादूळो किण ही समै, लटियो लाघणियाह । तो पिण नह खावण तकै, हूतळ पर हणियाह ।—वा दा

उ०—२ लगी गाव मे लाय तकै डूम तिवारी । साध सराहै सती निरथक व्है विधवा नारी ।—ऊ का

तकणहार, हारो (हारी), तकणियो—वि० ।

तकवाडणौ, तकवाडबौ, तकवाणो, तकवावो, तकवावणौ, तकवावबौ, तकाडणौ, तकाडवौ, तकाणौ, तकावौ, तकावणौ, तकाववौ—प्रे०रू० ।

तकिओडौ, तकियोडौ, तक्योडौ—भू०का०कृ० ।

तकीजणौ, तकीजबौ—भाव वा० ।

तक्कणौ, तक्कबौ, ताकणौ, ताकबौ—रू०भे० ।

तकत—देखो 'तखत' (रू भे)

तकतूवौ–स०पु०—१ विकृत कलिन्दा या हिन्दवाना २ इन्द्रायण लता का फल ।

तकतौ–स०पु०—तकुआ । उ०—चरखो तो लेलू भवरजी रागलो जी, हा जी ढोला पीडो लाल गुलाल, तकतो तो लेल्यू जी भवरजी बीजळ-सार को जी ।—लो गी

तकदीर–स०स्त्री० [अ० तकदीर] भाग्य, प्रारब्ध, किस्मत ।

क्रि०प्र०—खुलणौ, चमकणौ, जागणौ, फूटणौ, बिगडणौ, लडणौ ।

मुहा०—१ तकदीर अजमावणौ (अजमावणौ)—किस्मत आजमाना, भाग्य की परीक्षा करना २ तकदीर खुलणौ—भाग्य चेतना ३ तकदीर चमकणौ—देखो 'तकदीर जागणौ' ४ तकदीर जागणौ— भाग्योदय होना, भले दिन आना, भाग्य अच्छा होना. ५ तकदीर पलटणौ—भाग्य का फिरना, बुरे दिन आना ६ तक-दीर पाधरी होणौ—भाग्य सीधा होना, अच्छे दिन आना ७ तक-दीर फूटणौ—बदकिस्मत होना, बुरे दिन आना. ८ तकदीर री बाजी—भाग्य का खेल, भाग्य के भरोसे ९ तकदीर लडणौ—भाग्य से कार्य मे सफलता मिलना, कार्य ठीक होना ।

रू०भे०—तगदीर ।

यौ०—तकदीरधारी ।

तकबीर–स०स्त्री० [ग्र०] ग्रल्हा हो ग्रकबर, ईश्वर सब से बडा है । उ०—जीता मौज दीन दळ जीता, कंद करै तकबीर करद्द्र । ग्रसपति फरकसेर तिण ग्रवसर, बीद जुवान हुवा दिल्लीवर ।—सू प्र

तकमीनो—देखो 'तखमीनो' (रू.भे)

तकमो—देखो 'तुकमो' (रू भे.)

तकरार–स०स्त्री० [ग्र०] १ वाद-विवाद, वहस, कही बात को वार-वार दोहराना । उ०—स्याहजादी इण नु तकरार कर कहे ।
—प्रतापसिंघ म्हौकमसिंघ री वात

मुहा०—तकरार करणौ—दलील करना, बहस करना ।

२ शीघ्रता, जल्दबाजी ।

मुहा०—तकरार करणौ—शीघ्रता करना, जल्दी मचाना ।

तकरीर–स०स्त्री० [ग्र०] बातचीत, भाषण ।

तकली–स०स्त्री०—छोटा तकला, सूत कातने की टेकुरी ।

उ०—गुड्डी तेरी रंगरंगीली, तकली चक्करदार । चोखो वण्यो दमकडो तेरो, कूकडियै री लार । —लो गी.

तकलीणो–वि० (स्त्री० तकलीणी) १ सामान्य रूप ग्रथवा सरलता से प्राप्त होने वाला । सुलभ । उ०—कई-कई मोती कीध, तकलीणा घर-घर तिके । ग्रधरो तोल ग्रवीध, माधव घडियो मोतिया ।
—रायसिंह सादू

२ दुर्बल, कृश ।

तकलीफ, तकलीब–स०स्त्री० [ग्र० तक्लुफ] १ कष्ट, दुख ।

क्रि०प्र०—उठाणी, करणी, झेलणी, दखणी, देणी, पडणी, हाणी ।

मुहा०—१ तकलीफ उठाणी—कष्ट झेलना २ तकलीफ देणी—कष्ट देना ।

२ पीडा, वेदना ।

क्रि०प्र०—होणी ।

तक्लो, तकवो—देखो 'ताकळो' (रू भे) उ०—चरखो तो लेल्यू भवरजी रागलो जी, हाजी ढोला पीडो लाल गुलाल । तकवो तो लेल्यू भवरजी वोजळसार को जी, ग्रोजी म्हारी जोडी रा भरतार, पूणी मगाल्यू जी क वीकानेर री जी ।—लो गी

तकसीम—स०स्त्री० [ग्र०] बाँटने की क्रिया का भाव, वितरण, बँटाई ।

तकसीर–स०स्त्री० [ग्र०] १ ग्रपराध, गुनाह, दोष ।

उ०—ताहरा राजा पडवो फेरियो—जो चोर म्हारै मुजरै ग्रावै तो चोरी री तकसीर माफ करू ।—राजाभोज ग्रर खापरै चोर री वात

२ त्रुटि, गलती । उ०—ग्रागै जो वण ग्रागई, करहु माफ तकसीर । समय पाय सीतळ हुवै, नरपति सुणहु समीर ।
—ठा० राजसिंह री वारता

रू०भे०—तगसीर, तगसीरी ।

तका—देखो 'तिका' (रू भे) उ०—तका ले वीयै देर हलो न कीधो वजाड तासा । उदा रा 'पता' रो कोट दूसरो ग्रासेर ।—वा दा.

तकाई–स०स्त्री०—१ तकने की क्रिया या भाव २ ताकने के कार्य की मजदूरी ।

तकाजो–स०पु० [ग्र० तकाज] १ ग्रपने ग्रधिकार की वस्तु को मागने का ग्राग्रह २ वचन दिए हुए कार्य के लिए ग्राग्रहपूर्वक कहने की क्रिया या भाव । उ०—दो चार वार तकाजो कियो ग्रर थोडा दिन वाद १०, १५ नोटिस लिख्या उणा भेळो एक नोटिस रणछोडा रै नाम रो ई चेप दियो ।—रातवासो

क्रि०प्र०—करणो ।

रू०भे०—तकादो, तगादो ।

तकात–ग्रव्य०—तक, पर्यंत ।

तकादो—देखो 'तकाजो' (रू.भे) उ०—तकादो मात बताडै दात से तुडाऐगो तू ।—ऊ का

तकावी–स०स्त्री० [ग्र० तकावी] सरकार की ग्रोर से किसानो को कृषि सबधी उपकरण खरीदने, कुग्रा खुदवाने तथा बीज, खास ग्रादि के लिए ऋण के रूप मे दिया जाने वाला धन जिसकी वसूली प्राय किस्तो मे होती है ।

क्रि०प्र०—देणी, मागणी, लेणी ।

रू०भे०—तकावी ।

तकार–स०पु०—१ छद शास्त्र का तगण गण का एक नाम (पि प्र) २ त ग्रक्षर ।

तकावी—देखो 'तकावी' (रू.भे)

तकियाकलाम–स०पु० [ग्र०] वह व्यर्थ का शब्द जो बात करने के दौरान मे ग्रादत के कारण ग्रनेक ग्रावृत्ति के साथ प्रयुक्त होता है । सखुन तकिया । उ०—बीच बीच मे बात बात पर ठाकर रो तकिया-कलाम 'समझ्या कै नी' चालतो रैवतो ।—रातवासो

तकियोडो–भू०का०कृ०—तका हुग्रा, टकटकी लगाया हुग्रा, निहारा हुग्रा, देखा हुग्रा ।

(स्त्री० तकियोडी)

तकियो–स०पु० [फा० तकिय] कपडे की वह थैली जिसमे रूई ग्रादि भरते हैं ग्रौर जिसे लेटने के समय सुविधा के लिए सिर के नीचे रखते हैं, तकिया, उपधान, सिरहाना ।

उ०—पडियो तकिये सू परा, ग्राडो दियो ग्रजक । मसलत ग्राया मीरज्या, ग्रै ऊठिया ग्रसक ।—रा रू

पर्या०—उठग, उपधान, उपबर, उसीर, उसीस, गिंदुक, गिलम ।

२ पत्थर की वह पट्टी जो छज्जे, रोक या सहारे के लिए लगाई जाती है ३ वह स्थान जहा मुसलमान फकीर रहता है

उ०—ग्रावियो 'बखत' ग्राखेट ग्रलवर ग्रधिप', जिकण कर हूत निज कूत जडियो । धाव छक घूमतो झूमतो भूम घट, पीर तकिया निकट कौल पडियो ।—बालावख्स बारहठ

४ कब्र पर तकिये के ग्राकार का लगाया जाने वाला पत्थर ।

तकौ–सर्व०—वह, उस ।

तक्क-स०स्त्री०—१ तर्क। उ०—गुरु तक्क कव्व नाडय पमुह, विज्जा वास पसिद्ध धर। परिहरवि आवि विहि पयड कइ, पुहवि पससिजइ सुपरपरि —ए जै.का स

२ देखो 'तक' (रू.भे) उ०—दीठा सू पडती दहल, भूप वडा भैचक्क, नर दुवणी जायो नहो, तो काकै री तक्क।—पा प्र

तक्कउ-स०स्त्री०—तकाजा, शीघ्रता, जल्दबाजी।

तक्कणो, तक्कबो—देखो 'तकणो, तकबो' (रू भे)

तक्कर-म०पु० [स० तस्कर] चोर (जैन)

तक्कियोड़ो—देखो 'तकियोडो' (रू भे)

(स्त्री० तक्कियोडी)

तक्ख—देखो 'तक्षक' (रू भे) उ०—रमे पग-छाह मधुकर रिक्ख, तवै पग नाग सरीसा तक्ख।—ह र

२ देखो 'तारख' (रू भे)

तक्खण, तक्खणि-अव्य० [स० तत्क्षण] तत्काल, तत्क्षण।

उ०—पर्मारउ परिमल मलइवाउ, दसदिसि पूरतो। माणिणि कामिणि मनह माहि, तक्खणि चूरतो।—प्राचीन फागु सग्रह

रू०भे०—तखण, तिखण।

तक्र-स०पु० [स०] छाछ, मठा। उ०—प्रति भोजन कृत पान प्रफूले, तक्र मठा अम्रित सम तूलै।—सू प्र

तक्रमउ-स०पु०—दही, दधि (अ मा)

तक्रसार-स०पु० [स०] मक्खन, नवनीत।

तक्रि—देखो 'तक्र' (रू भे) उ०—दुग्ध त्रिसणा किम तक्रि विलीजई।
—व स

तक्ष-स०पु० [स०] भरत का वडा पुत्र, रामचद्रजी का भतीजा।

रू०भे०—तच्छ।

तक्षक-स०पु० [स०] १ आठ नागो मे एक जिसने राजा परीक्षित को काटा था २ सर्प, नाग। उ०—औ हुव वळै तक्षक हुय आवै। पाण हूत तो जाण न पावै।—सू प्र.

३ एक अनार्य जाति ४ विश्वकर्मा, वढई।

वि०—लाल, रक्तवर्ण (डि.को)

रू०भे०—तकख, तक्ख, तक्खि, तखिक, तग्गो, तख्यक, ताग्गो, तगम, तगसि, तगस्सेस, तच्छक।

तक्षण-स०पु० [स०] १ बढ़ई का काम, ६४ कलाओ मे से एक।

२ देखो 'तक्खण' (रू भे) उ०—विरचइ विपिनि विचक्षण तक्षण दस दिस दमार। नव नव निरमळ भूषण दूषण रहिय स गार।
—नेमिनाथ फागु

तक्षसिला-स०स्त्री० [स०] एक प्राचीन नगर जो भरत के पुत्र तक्ष के राज्य की राजधानी था। अभी हाल ही मे पजाब मे रावलपिडी नगर के पास खोद कर इस नगर को निकाला गया है। यह प्रचलित है कि परीक्षित के पुत्र जनमेजय ने सर्प यज्ञ यही किया था।

रू०भे०—तखसती, तखिसिला।

तखग, तखगी-स०पु० [स० तक्षक+अग रा प्र ई] १ शेषनाग (डि को)

२ तक्षक नाम का सर्प. ३ सर्प।

वि०—तीक्ष्ण, पैना, तेज।

तख-स०पु०—१ अधिक अफीम खाने वाला, अफीमची २ मूर्ख।

तखक्र-स०पु० [स० तक्ष तनू (कृशी) करण करोतीतिमल विभुजादि. महीध्रवत] सुदर्शन चक्र (अ.मा)

तखड—देखो 'तखडो' (मह., रू.भे)

तखडीतुमडीका-स०स्त्री०—गुजराती नटो की एक शाखा।

तखडो-वि०—शीघ्रता करने वाला, तेज गति वाला।

मह०—तखड।

तखण, तखणइ-स०पु०—आँखों का गर्म पानी से सिकताव करने का कार्य (अमरत)

तखत-स०पु० [फा० तख्त] १ सिंहासन, राजगद्दी। उ०—तखत विराज्या जान रा, सत विराज्या खाट। केवळ कूचो यू कहै, दोनू मे कुण घाट।—कूचो

मुहा०—१ तखत उलटणो—राजपाट छीनना, राजा को गद्दी से हटा देना २ तखत विराजणो—सिंहासनारूढ होना, राज्य को सभालना।

२ चौकी, पाट, तख्त।

रू०भे०—तकत, तखति, तखत्त, तगत।

वि०—चकित, विस्मित, दग। उ०—खरळा री सगळी लोग देख कर तखत रहि गयो।—कुवरसी साखला री वारता

तखतखी-स०पु०—इन्द्र (ह ना)

तखतताऊस-स०पु० [फा० तख्त+अ० ताऊस] मुगल वश के बादशाह शाहजहाँ का राजसिंहासन जो मोर के आकार का था, मयूर सिंहासन।

तखतनसीन-वि०यौ० [फा० तख्तनशीन] राज्यासीन, सिंहासनारूढ, राजगद्दी प्राप्त।

तखतपोस-स०पु०यौ० [फा० तखतपोश] तख्त या चौकी पर बिछाने की चादर।

तखतवदी-स०स्त्री०यौ० [फा० तखतवदी] १ तख्तो से बनी हुई दीवार. २ तख्तो से दीवार बनाने की क्रिया।

तखत-रबुल-आलमीन-स०पु०—मुसलमानों का एक तीर्थ-स्थान।
(बा दा ख्यात)

तखति—देखो 'तखत' (रू भे)

तखती-स०स्त्री० [फा० तख्त] १ छोटा तख्ता २ लकडी की चौकी. ३ विद्यार्थियो के लिखने की काठ की पट्टी ४ कठ का आभूषण विशेष।

यौ०—तखतिया री काठली।

तखतियाँ री काठली-स०पु०—स्त्रियो के कठ का आभूषण।

तखतो-स०पु०—१ लकडी का पाटा, पटा। लकडी का लम्बा-चौडा चौकोर टुकड़ा।

मुहा०—तखतो उलटणो (पलटणो)—किसी प्रबन्ध को नष्ट-भ्रष्ट करना।

मि०—जाजम पलटणी।

२ खड, टुकडा। उ०—१ तरै पिउसधी रीस करि कमची री घोडा री कमर माहै दीधी, तिको दोय तखता हुवा।
—जसदा मुन्वड़ा भाटी री वात

उ०—२ इतरा मे सूमर मूडण तो तरवारा सू मार तखता किया।
—कुवरसी साखला री वारता

३ दर्पण, आईना। उ०—केस माथा रा वडारण उरला करै छै, गूथण वास्तै। दूजी वडारण रै हाथ मे तखतो छै।—द दा

रू०भे०—तगतो।

तखत—देखो 'तख्त' (रू भे) उ०—रंगा आया राठवड, थापै राण तखत। दोळा बीस हजार दळ, अकळ 'अजो' नरपत्त।—रा रू.

तखफीफ-सं०स्त्री० [अ० तखफीफ़] अभाव, कमी, न्यूनता।

तखभख-सं०स्त्री०—सज-धज। उ०—सोर मे पण रजक। तिण भात रजपूती री तीख रो तखभख। तिण री रजपूती री सीग।
—प्रतापसिघ म्होकमसिघ री वात

तखमीनन-क्रि०वि० [अ० तख़मीनन्] अदाज से, अनुमानतः।

तखमीनो-स०पु० [अ० तख़मीना] अदाजा, अनुमान।

रू०भे०—तकमीनो।

तखसली—देखो 'तक्षसिला' (रू भे)

तखिक—देखो 'तक्षक' (रू भे) उ०—भेख तखिक धीजिया भमगा। दुरत रोस चख फड़ै दमगा।—सू प्र

तखिणा—देखो 'तक्षण' (रू भे.) उ०—तोय सूप पग घोयत तखिणा, दस दम मोहर समर्प दखिणा।—सू प्र

तखिसला—देखो 'तक्षसिला' (रू भे) उ०—तखिसिला नगरो रिसम समोसरया रे।—स कु

तखो—देखो 'तक्षक' (रू भे) उ०—तखा भुजग ज्यूं ही भल तेगा
—सू प्र

तख्ख-स०पु०—शस्त्र का पैनापन, तीखापन। उ०—देवी दधीची रूप तैं हाड दीधो, देवो हाड रो तख्ख थे वज्र कीधो।—देवि

तख्यक—देखो 'तक्षक' (रू भे)

तगग-स०स्त्री० (अनु०) ऊँचा जाने की तीव्र गति, तेज गति।

उ०—कर ग्रेहत वाग केकी कला, तगग गई ऊची तुरग। हुल जाण व्योम पग हालियो, समस कला तजियो चरग।—पा प्र.

तगड-स०पु०—१ सोने या चादी का पतला चद्दर।

स०स्त्री०—२ अधिक चलने से या कार्य करने से होने वाली थकान

३ तीव्र गति से चलने का भाव।

रू०भे०—तगद।

तगडणो, तगडबो-क्रि०स०—हाँकना, चलाना, दौडाना।

तगडियोडो-भू०का०कृ—हाका हुआ, चलाया हुआ, दौडाया हुआ।
(स्त्री० तगडियोडी)

तगडो-वि०—१ स्वस्थ, तन्दुरुस्त। उ०—सुक्र निरोगता रो रोगिया नै अन्याय रा दुखिया नै पूरण औखध देय तगडा करणा।—नी प्र.

२ हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा। उ०—माटी रै खावणं सू रोग मिट गइयो, बादसाह तगडो हुवो।—नी प्र

तगण-स०पु० [स०] दो गुरु और एक लघु का एक वर्णिक गण। ऽऽ।

तगत—देखो 'तखत' (रू भे) उ०—पातर थे भत लाज्यो जी बना म्हारा, तगता पर नाच कराय। बनडी बडे परवार की जी बना, म्हारा जोडी मे महल पधार।—लो गी.

तगतगई—स०स्त्री०—स्त्रियो के कठ का आभूषण विशेष
उ०—माणिक वइठी मुद्रडो, करि नव ग्रहु अनत। कठि जनोई तगतगई, ग्रथि त्रिणि त्रय तत।—मा का प्र.

तगतगाणो, तगतगाबो—देखो 'तिगतिगाणी, तिगतिगाबो' (रू भे)

तगतागु-स०स्त्री०—सुन्दरता। उ०—रूपिइ कउतिग करति अ, धरति अ रभ तगतागु। वसत रितुराय खेलइ, गेलिइ गाती फागु।
—प्राचीन फागु सग्रह

तगतो—देखो 'तखतो' (रू भे.)

तगदमा-स०पु० [अ० तकद्दुम] अनुमान, अदाज।

तगदीर—देखो 'तकदीर' (रू भे)

कहा०—तगदीर नै कीगलो नी लागै—भाग्य के कारी नही लगाई जा सकती। भाग्यवादी लोग विधि के लेख को अपरिवर्तनशील मानते हैं।

तगमगणो, तगमगबो-क्रि०अ०—टिमटिमाना, चमकाना। उ०—एडी पीडी ऊमदा, तक एण तरारा। जाणै करती झूबको, तगमगियो तारा।
—मयाराम दरजी री वात

तगमगियोडो-भू०का०कृ०—टिमटिमाया हुआ, चमका हुआ।
(स्त्री० तगमगियोडी)

तगमो—देखो 'तुकमो' (रू भे)

तगर-स०पु० [स०] १ सुगधित लकडी वाला पेड जिसकी लकडी औषधि के काम मे आती है। यह वृक्ष प्राय: काश्मीर व भूटान मे नदियो के तट पर पाया जाता है। उ०—तिल तदुल नइ ताड खर, तिगडा त्रिपुसी चग। तिदुरग ततणि तिम वळी, तगर तणा तिहा तुग।—मा का प्र.

तगरी -देखो 'तिगरी' (रू भे)

तगरो-स०पु०—मिट्टी के जल-पात्र के नीचे का अर्द्ध भाग जो जानवरो, पक्षियो आदि को पानी पिलाने के लिए काम मे लिया जाता है।
उ०—पाळा पर रोप्या पडिया, तगरा हिरणा हेत पाणी लूआ चोसियो, ठाली आली रेत।—लू

तगस—स०पु०—१ अग्नि, आग। उ०—ऊपर सआ पडता इधण, अ्रत रत दरडै पुर घणो। पोरस झाळ काळ पडवेसा, तगस भटकियो 'पाल' तणो।—केसोदास गाडण

२ [स० ताक्ष्य] गरुड। उ०—उदैपुर सहर रो सुवप पख उभळै, छळे खग लहर रो घाव छकरै। कैलपुर तगस रण मत्र पढ कहर रो, नाग खळ जहर रो जोर न करै।—साहपुरै राजा अमरसिंघ रो गीत

३ देखो 'तक्षक' (रू.भे)

तगसणौ, तगसबौ–क्रि०अ०—उडना (पक्षी) उ०—पळ भखती राती पिंड पंखण, तगसती राता गिर ताय।—द दा.

तगसि—१ देखो 'तक्षक' (रू भे) २ देखो 'तारख' (रू भे)

तगसियोडौ–भू०का०कृ०—उडा हुआ।
(स्त्री० तगसियोडी)

तगसीर, तगसीरौ—देखो 'तकसीर' (रू भे) उ०—१ किव राजा सू किमन किव, यम अक्खै अरदास। माफ करो तगसीर मो, देख राम पय दास।—र ज प्र

उ०—२ कर विचार मन हू कहू, वरणण सुद्ध वणाय। तगसीरी छिमजो तका, 'किसन' कहै कविराय।—र ज प्र

तगस्सेस–देखो 'तक्षक' (रू भे)। उ०—तगस्सेस नागा सिरै जाणि तूटो। छछोहो जिसो राम गै बाण छूटो।—सू प्र

तगागीर–वि०—तकाजा अथवा आग्रह करने वाला, शीघ्रता करने वाला। उ०—काल अदीतवार नै आय'र दाम ले जायीजो। दोनू तगादगीरा रस्तो नापियो।— वरसगाठ

तगादौ—देखो 'तकाजौ' (रू भे) उ०—छव महीना वात री वात मे वीत गया। रामसा री सख्त तगादौ आवण लागौ।—वरसगाठ

तगारी–स०स्त्री०—१ चूना, गारा आदि ढोने का लोहे की चद्दर का बना तसला। लोहे के चद्दर की बनी डलिया।

उ०—आटा री तगारी हाथ मे लेवता ईंज वा बोली, 'आटो थोडो मईं पीस्या करी हाजरजी'।—रातवासौ

तगी–स०स्त्री०—सण आदि का रेशा।

तगीर–स०पु० [अ० तगय्युर] १ निकलना क्रिया। उ०—गढ तोपन नें करि सफा, पुरतें करी तगीर। 'लाव' हिन्दू न रख्ख हू, तौ मैं दवल उजीर।—ला रा

२ जब्त। उ०—इगताळी लागौ वरस, चाळौ सरस गहीर। सोभ्रत हुई सुजाण नू, थई पठाण तगीर।—रा रू

३ परिवर्तन, वदलने की क्रिया। उ०—तरा स्याहजादे उकीला नै लिख तलास कर इणनू तगीर करायौ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

तगीरी–स०स्त्री०—१ हेर-फेर, परिवर्तन २ ।

उ०—अहमदपुर इवराम लिखाई, आजम साह तगीरी पाई।—रा रू

तगौ–स०पु०—१ ब्राह्मण के लिए अपमानसूचक शब्द (व्यग)

२ सूत का धागा, डोरा (जैन)

तग्ग—देखो 'तागा' (रू भे) उ०—निरखी जोया नग्ग, (जि) मोल मुहगा जाणती। उळझ्यौ काचौ तग्ग, जाण्या पाछै जेठवा।—जेठवा

तग्गड—देखो 'तगड' (रू भे)

तग्य, तग्यौ–वि० [स० तज्ञ] १ ज्ञानी, तत्त्वज्ञ।

उ०—१ वाता विसतारै वर्णं, सठ आगं सरवग्य। मून ग्रहे छाडे मछर, तीखो मिळिया तग्य।—वा दा.

उ०—२ अनुलोम प्रतिलोम न कोई, सरवातीत थितोरी। हे सुखराम मोई निज चेतन, नहिं कोई अग्य तग्यो री।—स्री सुखरामजी महाराज

२ दर्शन शास्त्र का ज्ञाता।

तड़ग–वि०—१ नगा, वस्त्रहीन।

यौ०—नागो-तडग।

२ लम्बा।

यौ०—लावौ तडग।

३ झुड, टोली। उ०—काछेला गाव उजाड कर, गया तडगे दस दिसा। राज तप हीण लारै रह्या, 'आले' 'ऊदळदे' जिसा।—पा प्र.

तडबौ–स०पु०—बेंत की चोट, प्रहार की ध्वनि।

वि०—लम्ब, लम्बायमान।

रू०भे०—तडींदो।

तड–स०पु०—१ प्रात काल। उ०—भोरीलौ तड भेळियो, खोसा कर अत खति। दुरमत अध न देखवै, मसतक आई मात।

—चिमनजी कवियो

२ वश, कुल। उ०—त्रिह रावळ गहलोत भाण तड भीम हठी उग्रसेन महाभड।—सू प्र.

३ देखो 'तडो' (मह, रू भे.)

४ वास। उ०—खगा जीतणा धाव मैं, दाव खेल्है मलगं तडां माकडा पीठ मेल्है।—व भा

५ वश या कुल की शाखा। उ०—'अजो'वाल अवसता लेख दइवै गढ लीधौ। घर छळ भड धूहडा कटक तड तड मिळ कीधौ।—सू प्र

६ सेना, फौज। उ०—तड लाग गयौ सग माग तणं, सुध हीण अकव्वर राग सुणे। खड खेंग बिकोस कमध खडा, तिण ताळ भई दुघडा त्रिगडा।—रा रू

७ दल, पार्टी।

(अनु०) ८ आवाज, ध्वनि। उ०—१ वसुधा काळी री ताळी तड वागी, भिडिया सोना री चिडिया पड भागी।—ऊ का.

उ०—२ ऊभौ ऊठ मीगणा करै, तड तड वाजै ताली।—अज्ञात

उ०—३ रह्या न कोई राज, जुलम किया सू जगत मे। तड तड तूटा ताज, चोखा-चोखा चकरिया।—मोहनलाल साह

वि०—समान, तुल्य। उ०—रूपमल घोड असवार 'उम्मेद' हर, अरा नो जोड वागा अताळी। न दीठी अवर घडमोड़ भड निरख्या, असी तड जोड भड भिडज वाळी।—चावडदान महडू

तडक–स०स्त्री०—१ चमक, दमक।

यौ०—तडक-भडक।

२ फटने तथा विदीर्ण होने की क्रिया या भाव ('तड' शब्द की ध्वनि के साथ) ३ दरार ४ तालाब, सरोवर। उ०—मदतळ डाण मसत, झरं झरणा गिर नीझर। अनचारा तजि अरध, पियै तडका नीरोवर।—सू प्र.

क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी। उ०—नागजी, तड़क तडक मत तोड रै वैरी, कतवारी रै तार जिउ, ओ नागजी।—नागजी री वात

तडकउ–स०पु०—सूर्य की किरणों की तेजी, धूप की प्रखरता।

उ०—वैसाख वार मास, नहीं ताढि तडफउ तास। उचि चटिग्रावास, वइसयइ केहनइ पास।—स कु

२ देखो 'तडकौ' (रू भे)

तडकण-वि०—१ फटने वाला, तडकने वाला २ चटकने वाला, दरार पडने वाला ३ कुपित होने वाला, क्रोधित होने वाला।

तडकणौ, तड़कबौ-क्रि०ग्र०—१ 'तड' शब्द की ध्वनि के साथ फटना फूटना या तडकना। उ०—१ छपर पुरांणा पिया पड गया रे, कोई तडकण लागा रे वास।—लो गी

उ०—२ माता रै देवरै चुडलो तडक्यो ए माय।—लो गी.

२ क्रोध करना, कुपित होना। उ०—तो ये तो इया नैं तडकती-ई रैवो हो। कदेई मिठास सू फनैं वेंटाय'र सीख देवो तो कोनी।

—वरसगाठ

३ चमकना। उ०—तडातडी तोव करि गयण तउकै तडित, महा भड झड़ि करि कूफ भग्यो।—ला गां.

४ देखो 'तरक्कणौ, तरक्कबौ' (रू भे)

तडकणहार, हारौ (हारी), तडकणियौ—वि०।

तडकाड़णौ, तडकाड़बौ, तटकाणौ, तड़कावौ, तडकावणौ, तडकाववौ

—प्रे०रू०।

तडकिग्रोडौ, तर्डकियोडौ, तडक्योडौ—भू०का०कृ०।

तडकीजणौ, तडकीजबौ—भाव वा०।

तरक्कणौ, तरक्कबौ, तिडकणौ, तिडकबौ—रू०भे०।

तडक भड़क-स०स्त्री०यौ०—चमक-दमक।

तडकली-स०स्त्री०—स्त्रियों का एक कर्ण-ग्राभूपण।

तडकलौ—देखो 'तडकौ' (ग्रल्पा. रू भे.) उ०—१ मत दो म्हारी वाई नै गाळ, म्हारी वाई परदेसणजी परदेसण। ग्रा ग्राज उडै परभात, तडकलै उड ज्यासी जी उड ज्यासी।—लो गी.

उ०—२ दैव ग्रटाह ग्रह्म प्रति, लिम्वि चुरासी माहि। टळवळता नितु तटफलइ, क्षिणू एक दाखौ छांहि।—मा का प्र

तडकाऊ—देखो 'तडकौ' (रू भे)

तर्डकियोडौ-भू०का०कृ०—१ फटा हुग्रा, चटका हुग्रा, २ क्रोध किया हुग्रा ३ चमका हुग्रा ४ देखो 'तरक्कियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० तडकियोडी)

तडकी—देखो 'तिडकी' (रू भे)

तडकै-क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी। उ०—परिग्रह रे वस मानवी ए, तिणा ऊपर लो तेह के। वाहला सज्जन भणी ए तडकै तोडै नेह वे।—जयवाणी

तडकौ, तडक्कौ-स०पु०—१ प्रात काल, सवेरा। उ०—१ ग्राधी रात पहर को तडको, सासू हेलो भारियो। भवरजी लाजा मरगी ग्री, मेरा तनकमिजाजी, सरमा मर गई ग्री —लो गी

उ०—२ तडकै ग्रावेगी वरात, जेठ घोडे, सुमरो पालकी, देवर चरवाजोदार।—लो गी.

२ धूप, गरमी। उ०—वील रूख तळि वैसि, टाळणो माडचौ तडकौ। तह हुती फळ तूटि, पडचौ सिर माहे फडकौ।—घ व ग्र

३ अगले दिन का प्रात.।

तडच्छ, तडछ-स०स्त्री०—१ तडफडाहट, छटपटाहट।

उ०—गजा तूटै ग्रसुडा गै ढाल फूटै सोर गजा। जुटै भडा हजारा तडच्छा खावै जोह।—सूरजमल मीसण

२ देखो 'तडाछ' (रू भे.) उ०—तुटै माथा, खाय तडछ फुटै कै फीफर, पड घावा रावत पडै होय घावा हैवर।—सगतीदान खिडियो

तडछणौ, तडछबौ-क्रि०ग्र०—१ तडफना, छटपटाना, पीडा से व्याकुल होना। उ०—तडछै मछी जिम तरह, पाणी पाणी ग्रोछा पर। जिण वेळा पाछा हुवै, कै काचा कायर।—सगतीदान खिडियो

२ मूर्च्छित होना।

क्रि०स०—३ सहार करना, काटना। उ०—तप 'मोहण' जै छक- 'पूर' तणो। तडछै रवदां खगि 'सूर' तणो।—सू.प्र.

तडछणहार, हारौ (हारी), तडछणियौ—वि०।

तडछाडणौ, तडछाडबौ तडछाणौ, तडछावौ, तडछावणौ, तडछाववौ,

—प्रे०रू०।

तडछयोड़ौ—भू०का०कृ०।

तडछीजणौ, तडछीजबौ—भाव वा०।

तडच्छणौ, तडच्छबौ, —रू०भे०।

तडछाणौ, तडछावौ—१ किसी को तडफडोना, छटपटाना

२ मूर्च्छित करना ३ काटना, सहार करना।

तडछायोडौ-भू०का०कृ०—१ किसी को तडफाया हुग्रा २ मूर्च्छित किया हुग्रा ३ काटा हुग्रा।

(स्त्री० तडफायोडी)

तडछियोडौ-भू०का०कृ०—१ छटपटाया हुग्रा. २ मूर्च्छित हुवा हुग्रा

३ सहार किया हुग्रा, काटा हुग्रा।

(स्त्री० तडछियोडी)

तडण-वि०—'तड' शब्द की ध्वनि के साथ फटने वाला या फूटने वाला, चटकने वाला, दरार पडने वाला।

स०स्त्री०—दरार।

तडणौ, तडबौ-क्रि०ग्र०—१ 'तड' शब्द की ध्वनि के साथ फटना, फूटना ग्रथवा चटकना। दरार पडना २ क्रोध करना, कुपित होना

३ पशु का पतला मल करना।

तडणहार, हारौ (हारी), तडणियौ—वि०।

तडाडणौ, तडाडबौ, तडाणौ, तडावौ, तडावणौ, तडाववौ—प्रे०रू०।

तडिग्रोडौ, तडियोडौ, तडयोडौ—भू०का०कृ०।

तडीजणौ, तडीजबौ—भाव वा०।

तडकणौ, तडकबौ, तिडकणौ, तिडकबौ, तिडणौ, तिडबौ—रू०भे०।

तडत-स०स्त्री० [स० तडिता विजली, दामिनी, विद्युत।

उ०—छकि हीरा मदन छकि, वण वुध सदन विसेख। चद वदन मुळ-

कण दमक, रदन तडत की रेख ।—जगसीराम प्रोहित री वात

रू०भे०—तडता, तडित, तडिता, तडिताळ, तडिति ।

तडतडणो, तडतडबौ–क्रि०अ०—१ कष्ट पाना, व्याकुल होना २ किसी तरल पदार्थ घी, तेल आदि का उबाल पर आना ।

तडतडतौ–वि०—अति उष्ण, उष्ण । उ०—तडतडते नाख्या तावडे, सुक्या धान जिवार । तडफड नइ जीव ते मूआ, दया न रही लगार ।
—स कु

तडतडाणो, तडतडाबौ–क्रि०स०अ०—१ किसी को कष्ट देना २ तरल पदार्थ को उबलने की अवस्था पर लाना । गर्म करना ३ तडतड शब्द करना ।

तडतडायोडो–भू०का०कृ०—१ किसी को कष्ट दिया हुआ २ (तरल पदार्थ को) उबाला हुआ, गर्म किया हुआ ३ तडतड शब्द किया हुआ ।
(स्त्री० तडतडायोडी)

तडतडियोडो–भू०का०कृ०—१ कष्ट पाया हुआ, व्याकुल हुवा हुआ २ (किसी तरल पदार्थ घी, तेल आदि का) उबाल पर आया हुआ।
(स्त्री० तडतडियोडी)

तडता—देखो 'तडत' (रू भे) उ०—घणस्याम सरूप अनूप घणौ रे, तडता पळको पट पीत तणौ रे ।—र.ज.प्र

तडतूबो—देखो 'तसतूबो' (रू भे) (अल्पा)

तडदादो–स०पु०—प्रपितामह का पिता या वंश का पूर्वज ।

तडप–स०स्त्री०—१ तडपने की क्रिया या भाव २ यत्न, प्रयत्न ।

तडपडा'ट–स०स्त्री०—तडपडाहट, छटपटाहट, व्याकुलता, अधीरता ।
रू०भे०—तडफडा'ट ।

तडपणो, तडपबौ—क्रि०अ०—देखो 'तडफणौ, तडफबौ' (रू भे)
उ०—ढोलो नदिया रो नीर । मरवण जळ मायली माछळी, रे लाल । सूकण लागो है नीर, तडपण लागी है माछळी रे लाल ।—लो गी

तडपफड—देखो 'तडफड' (रू भे) उ०—वडपफर टूक हुए गज वाज । तडपफड मच्छ जिही सिरताज ।—र वचनिका

तडपाणो, तडपाबौ—देखो 'तडफावणो, तडफावबौ' (रू भे)

तडपायोडो—देखो 'तडफायोडो' (रू भे.)
(स्त्री० तडपायोडी)

तडपियोडो—देखो 'तडफियोडो' (रू भे)
(स्त्री० तडफियोडी)

तडपीलो–वि०—१ फुर्तीला, उतावला २ प्रभाव रखने वाला, मेहनती ।

तडप्फणो, तडप्फबौ—देखो 'तडफणौ, तडफबौ' (रू भे)
उ०—पडै पक्खराळा, तडप्फै उताळा । जळा तोछ जेहा ओपै मच्छ एहा ।—सू प्र

तडफ—देखो 'तडप' (रू.भे)

तडफड–स०स्त्री०—तडफडाहट, छटपटाहट । उ०—तडफड़ सायक आतस आड, वडवड काळज घाव वराड ।—गो रू.
रू०भे०—तडपफड, तडप्फड ।

तडफडणो, तडफडबौ—देखो 'तडफणौ, तडफबौ' (रू भे)
उ०—पनगेस पडै कध कोम पर, घोम आरावा धडहडै । तडफडै पडै मछ नीर तिम, पडै दमग गोळा पडै ।—सू प्र

तडफडा'ट—देखो 'तडपडा'ट' (रू भे.)

तडफडियोडो—देखो 'तडफियोडो' (रू.भे.)
(स्त्री० तडफियोडी)

तडफणो तडफबौ–क्रि०अ०—१ तडफना, छटपटाना, व्याकुल होना. २ खूब प्रयत्न करना । उ०—अकबर तडफै आप, फतै करण च्यारू तरफ । पण राणौ प्रताप, हाथ न चढै हमीर हर ।
—दुरसो आढो

तडफणहार, हारो (हारी), तडफणियौ—वि० ।

तडफाडणो, तडफाडबौ, तडफाणो, तडफाबो, तडफावणो, तडफावबो—क्रि०स० ।

तडफिओडो, तडफियोडो, तडफ्योडो—भू०का०कृ० ।

तडफीजणो, तडफीजबो—भाव वा० ।

तडपणो, तडपबो, तडप्फणो, तडप्फबौ, तडफडणो, तडफडबौ—रू०भे० ।

तडफाणो, तडफाबौ–क्रि०स०—तडफने के लिए बाध्य करना, सताना ।

तडपाणो, तडपावौ—रू०भे० ।

तडफायोडो–भू०का०कृ०—छटपटाया हुआ, तडफाया हुआ ।
(स्त्री० तडफायोडी)

तडफियोडो–भू०का०कृ०—तडफा हुआ ।
(स्त्री० तडफियोडी)

तडप्फड—देखो 'तडफड' (रू भे)

तडबदी–स०स्त्री०यौ०—१ स्वजाति या वंश का विभाजन, जाति का शाखाओ मे विभक्त होने का भाव २ दलबदी ।

तडबडणो, तडबडबौ–क्रि०अ०—प्यास के मारे व्याकुल होना, तृषातुर होना २ भोजन का अधिक समय तक रहने से विकृत होना ।

तडभडणो, तडभडबौ—रू०भे० ।

तडबडियोडो–भू०का०कृ०—१ प्यास के मारे व्याकुल हुवा हुआ, तृषातुर हुवा हुआ २ (भोजन का अधिक समय तक पडा रहने से) विकृत हुवा हुआ ।
(स्त्री० तडबडियोडी)

तडबो–स०पु०—१ इन्द्रायन का फल २ पकाया हुआ तरल खाद्य पदार्थ जो पडा रहने से विकृत हो जाता है ।

तडभड–स०स्त्री०—शीघ्रता, ताकीद । उ०—हुवा नगारा सद्द हुए तडभड नर इदा । 'अभो' हुवो असवार हुवो जैकार कविंदा ।—रा रू.
क्रि०वि०—शीघ्रता से, जल्दी से । उ०—तडभड घड आथड गैतूळा, झडफड ग्रीध उरड रभ झूला ।—सू प्र

रू०भे०—तडभड़ि, तडभडी।

तडभडणौ, तड़भडवौ—क्रि०अ०—१ मारा-मारा फिरना, भटकना, ठोकरें खाना। उ०—आउा खाडा मे भोडक अडवडता, सता आलम मे जिम तूवा तडभडता।—ऊ का.

२ देखो 'तडवडणौ, तडवड़वौ' (रू भे)

तडभडियोडौ—भू०का०कृ०—१ मारा-मारा फिरा हुआ, भटका हुआ २ देखो 'तडवडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० तडभडियोडी)

तडभड़ि, तड़भड़ी—देखो 'तडभड' (रू भे.) उ०—तुरत उठया तडभडि करी, सुणि के साहि वचनो रे। मीर मुगळ मसती हुआ, सनह पहरी मवनो रे।—प च चौ.

तडवड-वि०—सदृश, समान, बराबर।

तडाक-स०स्त्री०—तडाके का शब्द, किसी वस्तु के टूटने की ध्वनि। उ०—इतरै नौ बगळा रै मांयनै मूं जोर सू हाको हुवौ—चोर-चोर! वो भाग्यो जितरै तो किणीई उणनै लारा सू काठी पकड लियो अर तडाक करती एक लकडी माथा पर पडी।—रातवासौ

मुहा०—तू-तडाक होणी—तू-तू मैं-मैं होना, ओछेपन पर आना।

क्रि०वि०—शीघ्र, तुरन्त, चटपट।

यौ०—तडाक-पडाक, चटपट।

तडाकौ—स०पु० (अनु०) १ जोर से होने वाली 'तड' शब्द की ध्वनि। २ चोट, प्रहार, वार।

तडाखडी—स०स्त्री०—खलवली। उ०—तण अजमाल हूत उरपती, पतसाहा त्रिय चीत पडी। चुगचा आळमाळ कर बैठी, खडे पाय हुय तडाखडी।—राजा अभयसिंह रौ गीत

तडाग—स०पु० [स० तडाग] तालाब, सरोवर। उ०—१ रोज सिकारा खेलणो, देखे वाग तडाग। हूकळ दळ गज हेवरा, अमरग नरा अथाग।—रा रू

उ०—२ तर घर सूका नदी तडागा, लाज धरम विद्या मग लागा। —ऊ का

तडाछ—स०स्त्री०—मूर्च्छा, बेहोशी। उ०—म्है रावळा हुकम का आधीन रहसा, फिमतूरो खवासण पना नू मिळायो जठै देखताई तडाछ खाय इसडो पडियो जाणै मीतग रो झोलो आयो।

क्रि०प्र०—खाणी। —पना वीरमदे री वात

रू०भे०—तडच्छ, तडछ।

तडातड—क्रि०वि० —१ लगातार, निरन्तर।

स०स्त्री०—२ तड-तड शब्द की ध्वनि।

तडातडि, तडातडी—स०स्त्री० (अनु०) ध्वनि, आवाज।

उ०—१ भडाभडि भडाभडि नाळ टूट भली, कडाकडि कूट बाजै कुडाग। तडातडि-तडातडि सबद गढ ठावता, वडावटि वाण लागै उठारा।—प.च चौ.

उ०—२ तडातडी तोव करि गयण तडकै तडित, महा झडा झडि करि झूक मच्यो।—लो गी

क्रि०वि०—निरन्तर, लगातार।

तडाळ—स०स्त्री० [स० तडिता] बिजली, विद्युत (डि को)

तडि—देखो 'तडी' (रू भे) उ०—तरु ताळपत्र ऊचा तडि तरळा, सरळा पसरता सरगि। वेंठै पाटि वमत वधिया, जगहथ किरि ऊपरी जगि।—वेलि

तडिछ—देखो 'तडाछ' (रू भे)

तडित—देखो 'तडत' (रू भे) उ०—वपु स्याम सुदर मेघ रुचि फवि तडित पीत पटवर।—र ज प्र.

तडितदेह—स०पु० [स० तडिद्देह] ४६ क्षेत्रपालो मे से ३२ वा क्षेत्रपाल।

तडितवान—स०पु०यौ० [स०] बादल, मेघ (अ मा)

रू०भे०—तडेतवान।

तडिता, तडिताळ, तडिति—देखो 'तडत' (रू भे)

उ०—१ तन स्याम अबुद रूप तडिता, वसन पीत विचार। —र ज प्र

उ०—२ जिण मक्ति परसि लजि तडिति जात, ब्रित गवन पवन मन ज्यौं विख्यात।—रा रू.

तडियळ, तडियाळ—स०स्त्री०—बिजली। उ०—१ कळह लफ कुर खेत गद्द कर, दोमझि बिन 'गोपाळ' दुआढ। मद झर सिर कर माडे मारी, 'जसा' रा तडियळ जम दाढ।

—राज बहादुर गोपाळदास चूडावत रौ गीत

उ०—२ गजर झाट घडियाल त्रिजड तडियाल तूटि झल। पडै ढोल पुडियाळ वरग गुडियाळ चहुवळ।—पना वीरमदे री वात

तडियोडौ—भू०का०कृ०—१ दरार पडा हुआ, फटा हुआ, चटका हुआ २ पतला मल किया हुआ (पशु)

(स्त्री० तडियोडी)

तडियौ—स०पु०—१ एक ही बैल अथवा एक ही ऊट से खींचे जाने वाले हल की दो हरिसाओं मे से एक।

वि०वि०—ये दोनो बैल या ऊंट के आजू-बाजू मे रहती हैं।

२ देखो 'तडो' (अल्पा, रू भे)

तडिल्लता—स०स्त्री० [स० तडिता] बिजली, चपला।

तडी—स०स्त्री०—१ वृक्ष की पतली टहनी।

क्रि०प्र०—देणी, बताणी, मारणी, लगाणी।

२ हसिये को लम्बे बास के सिरे पर लगा कर बनाया जाने वाला एक उपकरण जिससे भूमि पर खडे-खडे ही पशुओ को चरने के लिए वृक्ष की टहनिया काटी जाती है।

मि०—अकुडो।

३ उडा। उ०—कोमळ अग न सहतौ कळियाँ, ताती झळिया सहै तप। घडी घडी कर तडी ओवियो, वडी-वडी वाळियो वप।

—प्रथ्वीराज राठौड

रू०भे०—तडि।

तडीक—स०स्त्री० [स० तडिता] १ बिजली।

स०पु०—२ ऊट के वक्षस्थल का स्थान विशेष जहाँ का चमड़ा कठोर एवं खुरदुरा होता है।

तडौंबौ—देखो 'तड दौ' (रू भे)

तडेतवान—देखो 'तडितवान' (रू.भे)

तडेवडे-वि०—समान, सदृश, मिलता-जुलता।
क्रि०वि०—करीब, लगभग।
रू०भे०—तडोवड, तडोवडी, तडोवउ, तडोवडि, तडोवड़ी।

तडेल-स०पु० [स० तड+रा०प्र० एल] योद्धा।

तडोवड, तडोवडी, तडोवड, तडोवडि, तडोवडी-स०स्त्री०—१ समानता, बराबरी। उ०—पदमनाभ पडित भणइ, जिह तूठइ जगदीस। तास तडोवडि हुइ किसी, अगि म आणउ रोस।—कां दे प्र
२ देखो 'तडवडे' (रू भे)

तडोवडयौ-वि०—बराबरी वाला, तुल्य, समान।

तड़ौ-स०पु०—१ हसिये को लम्बे बांस के सिरे पर लगा कर वृक्ष की टहनियो को काटने के लिए बनाया जाने वाला औजार २ डडा। उ०—सो मुह भुडो कर बैठियो लोग नू तडो मार माणस मेल्है मो माणस तो आवता आवै।—भाटी सुदरदास बीकूपुरी री वारता
अल्पा०—तडियौ, तडी।
मह०—तड।

तचणौ, तचबौ-क्रि०अ०—१ कष्ट सहना, सतप्त होना। उ०—तिहारे द्वारे पे पन पल पुकारे तन तचैं। बिना तेरी धेरी मूरख मति मेरी नहिं बचैं।—ऊ का
२ गर्म या तप्त होना।

तचा-स०स्त्री० [स० त्वचा] चमडी, त्वचा (जैन)

तचाणौ, तचाबौ-क्रि०स०—१ तपाना, गर्म करना २ दुबल करना।

तचायोडौ-भू०का०कृ०—१ तपाया हुआ २ दुर्बल किया हुआ।
(स्त्री० तचायोडी)

तचियोडौ-भू०का०कृ०—१ क्षीण या कृष हुवा हुआ २ तपा हुआ ३ कष्ट सहा हुआ, सतप्त हुवा हुआ।
(स्त्री० तचियोडी)

तचौळ-स०स्त्री०—कपायमान होने की क्रिया या भाव।

तच्च-वि० [स० तथ्य] १ सचाई, यथार्थता, सत्य (जैन)
२ देखो 'तचा' (रू भे)

तच्छ—देखो 'तक्ष' (रू भे) उ०—धरा सुघाट घाट के कपाट छत्ति के धरें। धन प्रतच्छ तच्छ के प्रदच्छ स्वच्छ के धरे।—ऊ का.

तच्छक-स०पु०—देखो 'तक्षक' (रू भे.)

तच्छणि-स०स्त्री०—लकडी छीलने का बढई का एक उपकरण, बसूला।

तच्छन, तच्छिन-क्रि०वि० [स० तत्क्षण] तत्काल, उसी समय।

तछणौ, तछबौ-क्रि०स०—प्रहार करना, काटना। उ०—तछै खळ 'पेम' खगा झट ताम। रचै जुध एम समोभ्रम राम।—सू प्र.
तछणहार, हारौ (हारी), तछणियौ—वि०।
तछाड़णौ, तछाड़बौ, तछाणौ, तछाबौ, तछावणौ, तछावबौ—प्रे०रू०
तछियोड़ौ, तछियोड़ौ, तछ्योड़ौ—भू०का०कृ०।
तछीजणौ, तछीजबौ—कर्म वा०।

तछियोड़ौ-भू०का०कृ०—प्रहार किया हुआ, काटा हुआ।
(स्त्री० तछियोड़ी)

तछेक-क्रि०वि०—शीघ्र, तेज। उ०—छटा'र हुवौ पाडू गया, दळो दाई तछेक। हुकारा कर धाविया, कुवरजी एका एक।—ग्रा.मा.

तज-स०पु०—१ एक वृक्ष की छाल। जिसका औषधि में काम ली जाती है।—अमरत। २ एक वृक्ष विशेष।

तजड़-स०पु०—[स० तृष्णता, निरवता] १ धनुष २ देखो 'त्रिजड़' (रू.भे.)

तजणौ, तजबौ-क्रि०स० [स० त्यज] १ त्यागना, छोड़ना।
उ०—गुण सू तजे न मान, मान ह्वै दर सू मरम। भेड़ नहै सर मान, राग वहै जद राखिया।—किरपाराम खिड़ियौ
२ कृश होना, क्षीण होना।
तजणहार, हारौ (हारी), तजणियौ—वि०।
तजाड़णौ, तजाड़बौ, तजाणौ, तजाबौ, तजावणौ, तजावबौ—प्रे०रू०।
तजियोड़ौ, तजियोड़ौ, तज्योड़ौ—भू०का०कृ०।
तजीजणौ, तजीजबौ—कर्म वा०।
तज्जणौ, तज्जबौ—रू०भे०।

तजबीज-स०स्त्री० [अ० तजवीज] १ निर्णय, फैसला।
उ०—और साथ नै तो भाण भाण रा डेरा नै सीख दीनी। और खिलवति का लोगां न साथ लवा री तजबीज होनी।
—पना वीरमदे री वात
क्रि०प्र०—करणी, होणी।
२ प्रबंध, बन्दोबस्त, इतजाम। उ०—इण तजबीज पड़ी धनवारी, धर बुगलाण घते छत्रधारी।—सू.प्र.
क्रि०प्र०—करणी, बैठाणी।
मुहा०—तजबीज बैठाणी—इतजाम करना।
३ उपाय, युक्ति। उ०—इण किसी रीत पाछो जीजे, इस तजबीजां कवर वीरमदे नैला रा साथरा सू पतळावै छै।
—पना वीरमदे री वात
रू०भे०—तजवीज।

तजबीर-स०पु० [अ० तज्विर] अनुभव ? उ०—जैसा था भरोसा तैसा तुमने जवाब दिया। जग का तजबीर ऐ भी मनजूर किया।—सू.प्र.

तजरबौ-स०पु० [अ० तजुर्बा] अनुभव, ज्ञान।
क्रि०प्र०—करणी, होणी।
यौ०—तजरबाकार।

तजवीज—देखो 'तजबीज' (रू भे)

तजियोडौ-भू०का०कृ०—१ त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ २ कृश।

(स्त्री० तजियोडी)

तजोरी—देखो 'तिजोरी' (रू भे)

तज्जणा-स०स्त्री० [स० तर्जन] तिरस्कार, भर्त्सना (जैन)

तज्जणौ, तज्जबौ—देखो 'तजणौ, तजवौ' (रू भे)

उ०—नारद जुध निरखना तिको पिण हासो तज्जै। भयण अभ भोजन भूल जीमिया न भज्जै।—चोथ बीठू

तज्जियोडौ—देखो 'तजियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० तज्जियोडी)

तट-स०पु० [स०] १ किनारा, कूल, तीर। उ०—ज्या वारै तट जाय, उदर भर पीधो उदक। मिनख जिकै फिर माय, आया नह जननी उदर।—वा.दा.

२ सीमा, हद। उ०—हूं करत कूक हजार, पडि ठौड ठौड पुकार। दळ दवल उजडि देस, चढि तटा लोक चलेस।—सू प्र

३ महादेव (अ मा)

क्रि०वि०—१ पास, निकट, समीप।

उ०—कट तट ओप निखग कोट छिब काम की। रूप अनूप सचूप यसी दुति राम की।—र ज प्र

२ नीचे।

रू०भे०—तट्ट, तड।

तटक-स०स्त्री०—ध्वनि विशेष। उ०—तत नक तायेइ तायेइ तटक दे तोडत तान।—ध व ग्र

क्रि०वि०—तत्क्षण, तुरन्त।

तटणी-स०स्त्री० [स० तटिनी] नदी। उ०—नभ हुत तीर निहाळता, सदीव पीव मचेत। तटणि-तीर किम छिप तको, विग्रह मुग्ग वाणेत।

—रेवतसिंह भाटी

रू०भे०—तटणी, तटिनी।

तटकणौ, तटकबौ—देखो 'तटक्कणौ, तटक्कबौ' (रू भे)

तटकियोडौ—देखो 'तटक्कियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० तटकियोडी)

तटक्कणौ, तटक्कबौ-क्रि०अ०—तटकना, टूटना। उ०—अत नाहि तटक्क प्राण सटक्कय छोड घटक्कय सीर टरो।—करणा सागर

तटक्कियोडौ-भू०का०कृ०—तडका हुआ, टूटा हुआ।

(स्त्री० तटक्कियोडी)

तटनी—देखो 'तटणी' (रू भे) उ०—उर वीचि उरोज स्वयंभु लसै, तटनी तट मानहु कोक वसै।—ला रा

तटस्थ-वि० [स०] १ किनारे पर रहने वाला. २ किसी के पक्ष मे नहीं रहने वाला।

तटा-स०पु० [स० तट] १ किनारा, कूल।

स०स्त्री०—२ नदी, सरिता।

क्रि०वि०—१ पास, समीप २ ऊपर। उ०—अरि गज घटा पीठि पछटै इम, जळ सिल तटा रजक दुपटा जिम।—सू प्र

तटाक-स०पु० [स० तडाग] १ तालाब, सरोवर, जलाशय।

उ०—तूटा वह जळ सर नदि तटाक, हूकळ असि कळळ नकीब हाक।—सू प्र.

स०स्त्री० (अनु०) २ (फलादि के गिरने से होने वाली) ध्वनि विशेष।

क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी।

तटारी, तटी-स०स्त्री० [स० तट] किनारा, कूल।

उ०—१ उतमग खडाऊ उमग अगाऊ दरसण दाऊ पाव पिले। भादव घण भारी फैल अफारी महण तटारी जाण मिले।—र रू

उ०—२ नक्र तीह निवाण निवळ दाय नावै, सदा वसै तटि जिके समद। मनचीजै ठाकुरै न मानै, रावळ ओळगियै राजिद।

—ईसरदास बारहठ

तटिनी—देखो 'तटणी' (रू भे)

तटी-स०स्त्री० [स० तटिनी] १ नदी, सरिता २ घाटी, तराई।

तटे तटै—देखो 'तठै' (रू भे) उ०—पीछै खडेलै सू रिडमल निरवाण साथ कर कोस दो सामां आया। तठै वेढ हुई।—द दा

तट्ट—देखो 'तट' (रू भे) उ०—तेसी झिलै झिलम मुख तट्टं, पूरण ससि कर ग्रहण प्रगट्टं।—रा.रू

तठा-सर्व० [स० तत्] उस। उ०—राणी वळी तठा पछै विजैदत्त रै उण उावडा री ओलाद हुई।—नैणसी

क्रि०वि० [स० तत्र] १ वहाँ। उ०—हे पती, म्हनै आप लाया तद आगै आप नै लारै हू ही पण आज आपरी जीव सू ही प्यारी आपरी घणू आप जूझ नै काम आया तो अबै छेलै पयाणै आगै हू नै लारै आप। प्रयोजन सत करण नै बहीर हुई तठा री वात छै।—वी स टी

२ तब। उ —बोडा री ठिकाणो घणा दिना री थो सु समत १६६६ राव महेसदास दळपतोत नू जाळोर हुई. वरस ४ महेसदास जीवियो, तठा ता अो बोडा कल्याणदास नारणदासोत नू सैणो।—नैणसी

तठी-क्रि०वि०—१ उस तरफ, उधर २ वहाँ।

उ०—दिखण डभोळ थी सूरत पुसकी रै राह कोस १३० तठी सिवा दिगणी री चाकर नैमूजी जादोराय तीन हजार असवार पाच हजार पाळा ले साथै नै सवत १७२० रा माह वद ५ सूरत मारी।

—वा दा ख्यात

तठे, तठै-क्रि०वि०—वहा। उ०—परमेसर तणी वडाई पेखो, जळ सू वारै काढ जठै। मेह करम पैठायो मैगळ, तिण भेळी खळ गयो तठै।

—भगतमाळ

रू०भ०—तटे, तटै।

तड—देखो 'तट' (रू भे) उ०—नदी दो तड पाडती, कचवर उपाडती, रूख उन्मूळती, कु भिणि घातती।—व ग

तडकस-वि०—तग, कसा, दृढ। उ०—चदवदनी ते सिवि सहि लालइ. रमइ रग रसि अवळा वाळि। तडकस कचू उर वरि हार, रेणि रगि रीझवइ भरतार।—प्राचीन फागु-सग्रह

तडक्कणो, तडक्कबो—देखो 'तडकणो, तडकबो' (रू भे)
उ०—उयरि कचूउ तडक्कइ, लहकइ नवसरहार, कणयवन्न करि चूडउ, रूडउ तस झळकार।—प्राचीन फागु-सग्रह
तडक्कियोडो—देखो 'तडकियोडो' (रू भे)
(स्त्री० तडक्कियोडी)
तडफडणो, तडफडबो—देखो 'तडफणो, तडफबो' (रू भे.)
उ०—आकास धडहडइ, खोलड खडहडइ, परि तडफडइ, वडा मांणस अडवडइ।—व स
तडरको—स०पु०—जल्दबाजी, शीघ्रता।
तडळ—स०स्त्री०—अग्निकण। उ०—हुतासण तडळ सत्रा सिलह फौज होय, ढाय 'पातल' जिसा किया रिण ढेर। मुवा नह सोहड चावा तणा इळ अमर, उदैपुर जोदपुर कहै आवेर।—धनजी भीवजी री गीत
तडूकु, तडूको—स०पु० [स० ताटक ?] स्त्री के कान का आभूषण।
उ०—सोवन तडूका सोहि कानि, एकि गोरी एक भीनइ वानि।
—प्राचीन फागु-सग्रह
तडो—देखो 'टट्टो' (रू भे)
तणक, तणको—स०पु०—तार वाद्यो के तार की झनझनाहट, ध्वनि विशेष। उ०—अरथ जिका दी आपणी, हुरख गमेवा हत्थ। गवरीजै जस गीतडा, तात तणका सत्थ।—वा दा
२ देखो 'तणकौ' (रू भे)
तण—स०पु० [स० तनय] १ पुत्र, लडका। उ०—हरनाथ भाण तण भाण हद। वळवत जोध खाटण विरद।—रा रू
[स० तनु] २ काया, शरीर। उ०—तसु रग वास तसु वास रग तण, कर पल्लव कोमळ कुसुम। वणि वणि माळिणि केसरि वीणति, भूली नख प्रतिबिंब भ्रम।—वेलि.
वि०—तीन। उ०—मान अनै रहमाण वेहु एकण दन वदळीया। साजता सुरताण तौ पण लागी पोहर तण।—किसनो आढो
सर्व०—उस। उ०—जण तण आगळ जोय, पडिया काज न पालटै। लागै सैणा लोय, मिसरी सरखो मोतिया।—रायसिंघ सादू
प्रत्य०—सम्बन्ध या पष्ठी विभक्ति का चिन्ह का, की, के।
उ०—तिया कुणि भाजिसी भुवण अधियार तण। भर्म नर सजोगी विजोगी इणि भुवण।—हा.झा
क्रि०वि०—१ लिए, इसलिए। २ देखो 'तिणकौ' (मह.,रू भे)
तणइ—प्रत्य०—पष्टी विभक्ति का चिन्ह, के। उ०—जउ तू साहिब नावियउ, सावण पहली तीज। बीजळ-तणइ झबूकडइ, मूध मरेसी खीज।—ढो मा
तणउ—प्रत्य०—पष्ठी विभक्ति का चिन्ह, का। उ०—सुणि ढोला, करहउ कहइ, सामि तणउ मो काज। सरढी-पेट न लेटियइ, मूध न मेळू आज।—ढो मा
तणकणो, तणकबो—क्रि०अ०—१ तनना, खिंचाव मे आना।
२ तार वाद्यो के तारो का झनझनाना।

तणकार—स०स्त्री० (अनु०) १ तार-वाद्यो के तार की झनझनाहट, ध्वनि विशेष २ तनना क्रिया का भाव, तनाव।
३ देखो 'तणकारौ' (अल्पा, रू भे)
तणकारी—देखो 'तणकारौ' (अल्पा., रू भे)
तणकारौ—स०पु०—१ खीचने या तानने की क्रिया या भाव २ झटका देकर खीचने की क्रिया. ३ तार वाद्यो की ध्वनि। उ०—भूपत भणकाराह, जसरा जिकै न जो तिया। ता-ता तणकाराह, गाणै वयू गरवाजिया।—वा दा
रू०भे०—तणकार, तणकारी।
तण कासप—स०पु० [स० तनयकश्यप] सूर्य (डि को)
तणकौ—वि०—१ तना हुआ, खिचा हुआ।
रू०भे०—तणक, तणको।
२ देखो 'तिणकौ' (रू भे.)
तणक्कणो, तणक्कबो—देखो 'तणकणो, तणकबो' (रू भे)
उ०—तत तणक्कइ पिउ पियइ, करहउ कगाळेह। भल यउळावो दीहडा, दई वळावण देह।—ढो मा
तणखा—देखो 'तनखा' (रू.भे) उ०—तणखा-रा रुपिया मिळता हा ७०) मर देणा हा दूणा रै नैडा।—वरसगाठ
तणच, तणच्छ, तणछ—स०स्त्री०—१ एक वृक्ष विशेष जिसकी लकडी वडी नरम और लचीली होती है। उ०—ताळ तमाळिय तणच्छ घण. तिहा तुळसी नइ ताड। तज तडिन नइ तिलवडी, ताळीसाना झाड।—मा का प्र
२ इस वृक्ष की लकडी जिससे धनुप तथा चारपाई की पाटी आदि बनाई जाती है ३ धनुप की प्रत्यचा ४ छटपटाने की क्रिया।
उ०—आछटै तणछ पग हाथ आल, खळकै रगावळ रुधर खाळ।
—पा प्र
तणणो, तणबो—क्रि०अ०—१ खिंचित होना, खिंचना। उ०—इद्र धनुस तणियो अजब, चातुक धुन मन चाव। बीज न मावै बादळा, रसिया तीज रमाव।—बां दा
२ अकडना, ऐंठना. ३ गर्व करना, शेखी बघारना ४ फैलना, विस्तार मे होना. ५ वलपूर्वक वढना, प्रवृत्त होना। उ०—पाउस री कादविनी रै अनुकार आपरो अनीक तणियो।—व भा.
६ खिचाव मे आना ७ जोश मे आना, युद्धार्थ तत्पर होना।
उ०—महण वन दहण 'केसर' गहण मडियो, तेण खग वहण घण सघण तणियो।—किसोरदान बारहठ
तणणहार, हारौ (हारी), तणणियो—वि०।
तणवाडणो, तणवाडबो, तणवाणो, तणवाबो, तणवावणो, तणवावबो, तणाडणो, तणाडबो, तणाणो, तणाबो, तणावणो, तणावबो—
प्रे०रू०।
तणिओडो, तणियोडो, तण्योडो—भू०का०कृ०।

तणीजणो, तणीजबो—भाव वा० ।
तांणणो, ताणबो—सक्रू०रू० ।
तणतणाणो, तणतणाबो-क्रि०अ०—१ तनना, तनाव मे आना २ क्रोध करना, कुपित होना ।
तणतणायोडो-भू०का०कृ०—१ तना हुआ, खिचा हुआ. २ क्रोध किया हुआ ।
(स्त्री० तणतणायोडी)
तणय-स०पु० [स० तनय] पुत्र, लडका ।
प्रत्य०—के । उ०—रामायण भारथ तणय रग, जाणियो मभायण विकट जग ।—वि स
तणया—देखो 'तनया' (रू.भे.) उ०—द्रूपद तणी तणया रे, पाच पाडव नी नारि रे। समयसुदर कहइ द्रुपदी रे, पहुती भव तणइ पारि रे।—स कु.
तणस-स०स्त्री०—वृक्ष विशेष । उ०—गलो गोवल तणस त्र वठ, करज नइ कैळास । विसाम वणरुउ सेलपी, फिर सागणि पळास ।
—रुकमणी मगळ
तणहस्तक-स०पु० [स० तृणहस्तक] घास का पुआल (जैन)
तणाव-स०पु०—१ मादा ऊट के ऋतुमती होने का भाव २ मनमुटाव, वैमनस्य । उ०—सो राम रो मालस आयो उण वखत मे दोय गुरजबरदारा आय तणावा सुणाय मागस अरज कर भीतर लेय गया ।—महाराजा जयसिंह आमेर रै धणी री वात
३ चिन्नित होने का भाव । उ०—रूगल्या नागतो दीठो जोईजै, घटा रो वणाव, इसो ही तिण मे इन्द्र धनुस रो तणाव ।—र हमीर
४ शिविर, तम्बू आदि को तनाव मे रखने के लिए कीलो मे बांधी जाने वाली रस्सी । उ०—१ वाजी सावळिया रा चरण डेरा रा तणावां उळभिया जाणि कुमार दूदा रो चावक वहियो ।—व भा
उ०—२ जय जरी सिमाना खभ जड़ाव, ते रूप मेरु रेसम तणाव ।
—सू प्र
उ०—३ वेध धरती तणं नगारा वाजिया, ऊभै राठोड छत्रधर अरोडा। तणावां चदोळी तणी तोडीजता, धातिया हूरौळा वीच घोडा ।—पहाट गा आदो
५ तनाव, खिचाव ।
रू०भे० तांणाव ।
तणियर-स०पु० [स० त्रिनयन] महादेव, शिव । उ०—तू सुरताण ज्यपण 'सागा', समहर भोम अवीहण मार । त्रिपुर आगळी नमियो तणियर, तणियर त्रिपुर पछाडी तार ।—महाराणा सागा रो गीत
तणियोडो-भू०का०कृ०—१ तनाव मे आया हुआ, खिचा हुआ, तना हुआ. २ अकडा हुआ, ऐंठा हुआ ३ गर्व किया हुआ, शेखी वधारा हुआ ४ विस्तृत हुवा हुआ, फैला हुआ ५ वलपूर्वक वढा हुआ ६ चिन्नित हुवा हुआ ।
(स्त्री० तणियोडी)
तणीं, तणी-स०स्त्री०—१ विवाह, भवन प्रवेश, पुत्र जन्मोत्सव आदि मागलिक अवसर पर घर मे आगन के ऊपर बांधी जाने वाली मूज की बनी रस्सी जो चारो कोनो मे आमने-सामने कोनो से एक दूसरे को केन्द्र मे स्पर्श करती हुई बाधी जाती है । उ०—कह्यो महाराज! तणी आडी दिरायीजै, ताहरा कह्यो वाह वाह तणी वधायीजै । तरै तणी वधायी, ढूम गावण लागा ।—प्रतापमल देवडा री वात
२ घर मे वस्त्र आदि रखने, सुखाने व लटकाने के लिए वाधी जाने वाली रस्सी, अरगनी । उ०—तणिया छीको बोदो रे ।—जयवाणी
[सं० तनया] ३ पुत्री, लडकी ।
४ तराजू के पलडो को डडी से लटकाये रखने के लिए बांधी जाने वाली रस्सी । उ०—दगो पालडा डाडिया, तोला मभ्ह तणियांह । गुरु सू ही गुदरे नही, वणिक वेंत वणियाह ।—वा दा
५ डोरी की तरह वटा हुआ वह कपडा जो अगरखी आदि मे उसका पल्ला बाधने के लिए लगाया जाता है ।
६ देखो 'तिरणी' (रू भे)
प्रत्य०—पष्ठी विभक्ति का चिन्ह, की । उ०—भलभली भेट भूपा तणी भोगवै ।—घ व.ग्र
तणीवध-स०पु०—विवाह, पाणिग्रहण सस्कार ।
तणु-प्रत्य०—पष्ठी विभक्ति का चिन्ह, का । उ०—रुकमइयो पेखि तपत आरणि रणि, पेखि रुखमणी जळ प्रसन्न । तणु लोहार वाम कर निय तणु, माहव किउ साउसी मन ।—वेलि
स०पु० [स० तनय] १ पुत्र [स० तनु] २ तन, शरीर ।
उ०—प्रतिहार प्रताप करै सी पाळै, दपति ऊपरि दसै दिसि । अरक अगनि मिसि धूप आरती निय तणु वारै अहोनिसि ।—वेलि.
रू०भे०—तणू, तणू ।
तणे, तणै-प्रत्य०—पष्ठी विभक्ति का चिन्ह, के । उ०—१ तू ऊपर दोयण तणै, दया करे दुरवोध ।—वा.दा
उ०—२ नठे तीन लोका तणै दड आवै, नरा हैमरा गैमरा पार नावै ।—सू प्र
क्रि०वि०—पास, समीप, निकट । उ०—खळकै नाडा नाडिया, छिल छिल नदिया जाय । ढळकै आसू ढाळिया, पीव तणै मन जाय ।
—ग्रोळू
तणुयरी-वि० [स० तनुतरी] वहुत पतली (जैन)
तणुया-स०स्त्री० [स० तनुजा] १ सर्प की काचली (जैन)
२ पुत्री, वेटी (जैन)
तणुवाय-स०स्त्री०—स्वर्ग के तल की वायु (जैन)
तणू—देखो 'तणु' (रू भे) उ०— रावळिया रामत समै, मावडियो लो माग । तो रतना-पातर तणू, सखरो लावै साग ।—वा दा.
तणो-प्रत्य०—पष्ठी विभक्ति का चिन्ह, का । उ०—परतख ही दीसै रे प्राणी, पिरभू भजन तणो परताप ।—र रू
स०पु० [स० तनय] १ पुत्र, लडका । उ०—किसन तणो साम्हो क्रमै, वढतो वाकिम वींद । नीदवतो नवतै नरा, अणभग रहे अनीद ।
२ पेट की बात । —हा झा

मुहा०—तणा भरीजणा—पेट की आंतो मे विकार होना ।

३ कूल्हे की हड्डी के ऊपर और पसलियों के नीचे का पेट का खाली स्थान ४ आश्रय, सहारा, बल । ज्यू—डूगा तणो पडियो ।

रू०भे०—ताणि ।

तत-स०पु०—तत्त्व । उ०—तेरसि तन मे परम तत, पाच तत ते और । वसै कहा नाही कहा, जहा तहा सब ठौर ।—ह पु

ततग-वि०—नि वस्त्र, नग्न ।

तत-सर्व० [स० तद्] वह, उस । उ०—हीर पनावाळा हरख, पपाळा तज पत । तै कर चाळा ली तिका, तुम्मा माळा तत ।

—जुगतीदान देथो

क्रि०वि० [स० तत्र] १ वहा, तहा । उ०—आ वात समज मे कही अत । तातै मत जाजो कोउ तत ।—रामदान लाळस

२ देखो 'तत्त्व' (रू भे) उ०—१ नही तहा थैं सब किया, आपै आप उपाइ । निज तत न्यारा ना किया, दूजा आवै जाइ ।

—दादू वाणी

उ०—२ नूर तेज का मेळा कीजै, तत मे तत बीलासा । कहण सुणण मे आवै नाही, सहज्या हुया हुलासा ।

—स्री हरीरामजी महाराज

उ०—३ ग्यान समद गुण गाइ च्यार मुगितै हू चेडै । ग्यान तत गुण गाइ सात सरगा फळ झेडै ।—पी ग्र

उ०—४ माया कया मिळै नहिं माया, यू वाचक तत कू नहि पाया । दरद मिटै नहिं कोई ।—स्री सुखरामजी महाराज

ततकार-स०पु० (अनु०) नृत्य का बोल ।

क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी । उ०—सुत भ्रात लिया परवार सग । खेड नृप खडै ततकार खेग ।—पा प्र.

ततकारणो, ततकारबौ-क्रि०स०अ०—१ तेज गति से चलने के लिए बैलो आदि को उकसाना । उ०—गोरी पणियारी 'तेजो' तन गाजै लारै धोरी रै जोणियारी लाजै । फेरै खाथा नै गाळी फटकारै, तोरै जाता नै हाळी ततकारै ।—ऊ.का

२ तेज गति से चलना, तेज गति से भागना, जाना या दौडना, भागना ।

ततकारियोडो-भू०का०कृ०—१ तेज गति से चलाया हुआ २ तीव्र गति से चला हुआ ।

(स्त्री० ततकारियोडी)

ततकाळ, ततकाळि, ततकाळी, ततकाळौ—देखो 'तत्काळ' (रू भे)

उ०—१ मिरजै खबर निबाब नू, पहुचाई ततकाळ ।—रा रू

उ०—२ नलनी वाडी माहा विसाळ, विहिडु व्रिक्ष दीठो ततकाळि ।

—नळाख्यान

उ०—३ नवलो कोई कुमर निहाळी, तुम परणावा ततकाळी हरो लाल ।—ध व ग्रं

उ०—४ ढढण कुमर हलू क्रमउ, प्रतिबूधउ ततकाळौ जी । नेमि समीपि सजम लीयउ, जिन आग्या प्रतिपाळी जी ।—स कु

ततक्षण, ततक्षणि, ततक्षिण, ततखण, ततखिण, ततखिणि, ततछिन, ततखेव, ततख्यण—देखो 'तत्क्षण' (रू भे)

उ०—१ ततक्षण सामहणी सधि करी, राजा तेडिउ ऊलट धरी । आविउ राजा सिउ परिवारि, जिमवा नइ मिसि जोवा नारि ।

—विद्याविलास पवाडउ

उ०—२ देव छता नळ सी परि वरि । मेहनि कोपि ततक्षणि मरि ?

—नळाख्यान

उ०—३ ततखण माळवणी कहइ, माभळि कत सुरग । सगळा देस सुहामणा, मारू-देस विरंग ।—ढो मा

उ०—४ छायबो रहे छट्ठ रितु मस्त मद्दा मतवाळ, झायी झरणा जिम झरतो मद असराळ । परवत सम सबळो पूठ पड्यो मुडाळ, ततखिण जिण नामं अस करै नहि आळ ।—घ व ग्र

उ०—५ वळी प्रभाति पधारिया, महादेव नी सेव । ततखिणि ते तेडाविउ, भेटि भणी भूदेव ।—मा का प्र.

उ०—६ ततखिन तुम्हें असुभ करम तोडउ । नित नाम जपउ स्री नाकउडउ ।—स कु.

उ०—७ एहवू मन वितरक करता साचरि तव देव । मारग माहि नळ निरखु अवनीइ ततखेव ।—नळाख्यान

उ०—८ गनिन राजि ए तमने आपू, निज भुजबळ देखाडूं । मुझ साहामो जे जोध आवै, तेहे नै ततख्यण पाडू ।—नळाख्यान

ततग्यान—देखो 'तत्त्वग्यान' (रू भे) उ०—देवी नारद रूप ते प्रश्न नाख्या । देवी हूम रै रूप ततग्यान भाख्या ।—देवि.

तत-छिन—देखो 'तत्क्षण' (रू भे) उ०—अतकाळ ऐसो भयो, तत-छिन भये सहाय ।—करुणासागर

ततताथेई, ततत्थी, ततथेई, ततथेयव-म०स्त्री० (अनु०) नृत्य के बोल ।

उ०—१ रजै तेण तमासा सू रूकेणो आयास रत्थी, धार सत्थी नचै के ततत्थी वीर धाड ।—हुकमीचद खिडियो

उ०—२ सब जोगनि स्रोणित खप्र भरै, ततथेयव भैरव नित्य करै ।

—ला रा.

रू०भे०—तत्थेई ।

ततपर—देखो 'तत्पर' (रू भे) उ०—विणजै सासू अर बहू, धर्मे ततपर धूत । ठग नह जे गणिका ठगै, वणियाणी रा पूत ।—बा दा

ततव—देखो 'तत्त्व' (रू भे)

ततवाउ-स०पु० [स० ततुवाय] बुनकर, जुलाहा ।

ततवीर—देखो 'तदबीर' (रू भे) उ०—तोड जोड ततवीर मे, कसर न राखे काय । आप अकबर ओलियो, गढ औ लियो न जाय ।

—बा.दा

ततरे-क्रि०वि०—इतने मे ।

ततव—देखो 'तत्त्व' (रू.भे)

ततवादी-स०पु०—तत्त्ववेत्ता, तत्त्वज्ञानी ।

ततवितत-स०पु०—तात अथवा तार वाद्य ।

उ०—ततवितत घन सुखिर पचवरण वाजिन्न वाजइ छइ।—का दे.प्र

ततबीर—देखो 'तदबीर' (रू भे) उ०—आनि करै कुण विण आप, इह दिली थाप उथाप। ततबीर कर घरि तोर, असपति कीजै ग्रोर। —सू प्र.

ततबेग-क्रि०वि०—तत्काल, शीघ्र। उ०—ततबेग 'करनळा' आय ताम, जळ हूत मगायो पुत्र जाम।—रामदांन लाळस

ततबेत्ता—देखो 'तत्ववेत्ता' (रू भे.) उ०—वित रज करम धरम ततवेत्ता, मोर्प 'करन' हुरा दळ एता।—रा रू

ततसार-स०पु०—प्रथम जगण फिर रगण फिर भगण, अन्त मे गुरु लघु ११ वर्ण का छद विशेष।—ल. पि.

ततायेई-स०स्त्री०—नृत्य का बोल।

ततारी-स०पु०वि०—१ तातार देशोत्पन्न घोडा २ तातार देश सम्बन्धी।

ततियो—देखो 'तत्तो' (अल्पा, रू.भे)

ततो-वि० (पु० तत्तो) १ क्रोधपूर्ण, क्रोध मे लाल।

उ०—ततो देख चसमा गयदा घडा ताप खावै, धावै काळ रूपी जोस प्रभावै घंघींग।—महेसदास आढो

२ तेज, तीक्ष्ण। उ०—ततो खग झाट खळा सिर तांम। सझै अबदार चह्लाण संग्राम।— सू प्र.

३ तप्त, उष्ण। उ०—दादू सांचा साहिब सिर ऊपरै, ततो न लागै बाव। चरण कमळ की छाया रहै, कीया बहुत पसाव। —दादू वाणी

क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी, तुरत। उ०—मिळ मदमती, सिय लेर सती, वर मानवती ग्रिय लोकपती। तकसीर निवारै होय तती। —र रू.

ततैया-स०पु० भागने की क्रिया।

क्रि०प्र०—मनाणा।

ततैयो-स०पु०—बर्रे।

ततो-क्रि०वि०—१ तत्पश्चात्। उ०—ततो दक्षा पठति तसु तिहुग्रण जण दास।—सीपाळ

२ देखो 'तत्तो' (रू.भे.)

तत्काळ-क्रि०वि० [स० तत्काल] तुरन्त, शीघ्र, तत्क्षण।

उ०—फिकर करो मत आप तो, आप रहो सुस हाल। ठाकुरजी करसे भली, मुगळह नू तत्काळ।—गोड़ गोपाळदास री वारता

रू०भे०—ततकाळ, ततकाळि, ततकाळी, ततफाळो, तत्तकाळ, तत्तकाळू।

तत्काळीन-वि० [स० तत्कालीन] उसी समय का।

तत्काळो—देखो 'तत्काळ' (रू भे.) उ०—आगि ग्रोरहाइ गई ते एह-वए, कहि कुण करिस्यइ चाळो जी। अरणी नउ सरियउ घसि लाकडइ, अगनि पाडी तत्काळो जी।—स.कु.

तत्क्षण-क्रि०वि० [स०, प्रा० तक्खण] तुरन्त, शीघ्र, तत्काल।

रू०भे०—ततक्षण, ततक्षणि, ततखण, ततखिण, ततखिणि, तत-खिन, ततखेव, ततस्यण, ततछिन।

तत्त-वि० [स० तप्त] पीडित, दुखी (जैन)

क्रि०वि० [स० ततः] १ तत्पश्चात्, तदन्तर (जैन)

२ देखो 'तत्त्व' (रू भे) उ०—१ विहुए पख तारणी सोभ जुग च्यार सुवाणी। पाच तत्त होमणी रीत मोटी खटराणी।—रा रू

उ०—२ गुर थी लहियै ग्यान, सास्त्र सहु तत्त सिखावइ। वळि सगळी ही वस्तु, दोस निरदोस दिखावै।—ध.व ग्र.

उ०—३ ठाम देखि उपगार करी कहियो ठठै। तत्त तणी तू वात म नाखि जठै तठै।—ध व ग्र.

३ देखो 'तातो' (रू भे) (जैन)

तत्तकाळ, तत्तकाळू—देखो 'तत्काळ' (रू भे) उ०—थंभै विचाळू, तत्तकाळू, विरद वाळू ग्राम ए।—करुणासागर

तत्तवेत्ता—देखो तत्ववेता' (रू भे)

तत्तोयबो—देखो 'थयोबो' (रू भे)

तत्तो-वि० [स्त्री० तत्ती] १ तीक्ष्ण, तेज। उ०—मागी सीख मंडोवरै, सीखन अप्पै तत्ती। साह सेर विलद री, असपत्ती उर दाह।—रा रू.

२ तेज। उ०—कूदणा कछी छेकै कुरग। तत्ता सव तुरंगा हूं तुरग। —सू प्र.

३ क्रोधित, कुपित।

मुहा०—तत्तो तवो होणो—लाल होना, क्रोधित होना, गर्म होना।

३ देखो 'तातो' (रू भे) उ०—थळ तत्ता लू सामही, दाफेला पहियांह। म्हारो कहियो जे करो, घर वैठा रहियाह।—ढो.मा.

स०पु०—त वर्ण।

रू०भे०—ततो।

अल्पा०—ततियो।

तत्त्व-स०पु० [स०] १ पंचभूत (पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश)

उ०—पच तत्त्व थै घट भया, वहु विधि सव विस्तार। दादू घट थै ऊपजै, मैं तैं वरण विकार।—दादू वाणी

२ परब्रह्म। उ०—एक तत्त्व ता ऊपरि इतनी, तीन लोक ब्रह्मडा। धरती गगन पवन अरु पाणी, सप्त द्वीप नो खडा।—दादू वाणी

३ जगत का मूल कारण। साख्य मे इसके पच्चीस तत्त्व माने गये हैं उ०—तामस अहकार तैं पाच महाभूत, पाच सूक्ष्म भूत नीपना। एव चोवीस तत्त्व भेळा हुया, ताहरा ब्रह्माड नीपनो। —द वि.

४ सार वस्तु, सारांश ५ यथार्थता, असलियत। ६ स्वरूप।

रू०भे०—तत, ततव, ततव, तत्त, तत्व।

यो०—तत्त्वग्यान, तत्त्वग्यानी, तत्वदरसी, तत्त्वद्रस्टी, तत्त्ववाद, तत्त्ववेत्ता, तत्त्वविद्या।

तत्त्वग्य-स०पु० [स० तत्त्वज्ञ] तत्त्ववेत्ता, तत्त्वज्ञानी, दार्शनिक।

तत्त्वग्यांन-स०पु०यो० [सं० तत्त्वज्ञान] आत्मज्ञान, ब्रह्म, सृष्टि आदि के सम्बन्ध मे यथार्थ ज्ञान।

रू०भे०—ततग्यान।

तत्त्वग्यांनी-स०पु०यो० [स० तत्त्वज्ञानी] आत्मज्ञानी, तत्ववेत्ता, जीव-

ब्रह्म प्रकृति आदि के सम्बन्ध मे यथार्थ ज्ञान रखने वाला व्यक्ति।
तत्वता–स०स्त्री० [स०] सत्यता, यथार्थता, वास्तविकता।
तत्त्वदरसी–स०पु०यौ० [स० तत्त्वदर्शिन्] ब्रह्म, जीव का ज्ञान रखने वाला दार्शनिक।
तत्त्वद्रस्टी–स०स्त्री०यौ० [स०] दिव्य या सूक्ष्म दृष्टि।
तत्त्ववाद–स०पु०यौ० [स०] दर्शन या जीव, ब्रह्म सम्बन्धी किया गया पारस्परिक विचार।
तत्त्वविद्या–स०स्त्री०यौ० [स०] तत्त्वज्ञान, दर्शन शास्त्र।
तत्त्ववेता–स०पु०यौ० [स०] तत्त्वज्ञानी, दार्शनिक।
रू०भे०—तत्तवेता।
तत्थ–वि० [स० त्रस्त] त्रास युक्त, त्रसित (जैन)
क्रि०वि० [स० तद्] वहा। उ०—ढोवै रभ रत्थ, वरै वीद तत्थ। —गु रू ब.
सर्व० [स० तद] १ उस। उ०—तत्थ समयमि सुरराय आसण चलइ, अवहि नाणेण तसु सव्व ससय टळइ।—स कु
२ देखो 'तथ्य' (रू भे) उ०—यौं दरकुच अनीक नें लाहोर निराया। पजावी दळ बुल्लि के कछु तत्थ मिळाया।—व.भा
तत्थयेई—देखो 'तततायेई' (रू भे) उ०—तत थुग-थुग तत्थेई ताल साजती नही। वधू उमग सग मे म्रिदग बाजती नही।—ऊ का
तत्पट्टाभिसेक–स०पु०—उत्तराधिकारी। उ०—कल्याणमल पुत्र महाराजाधिराज महाराजा स्री रायसिघजी विद्यमान तत्पट्टाभिसेक महाराजकुमार चिरजीवी कुवर स्री दळपतजी, विजयराज्ये तस्यात्मज सभा-स्रगार हार कुवर स्री उदयसिघ, कुवर स्री सबळसिघ, कुवर तुळसीदास सहित चिरजीयात्।—द वि
तत्पर–वि० [स०] तैयार, उद्यत, सनद। उ०—एह हेली लोक साभळी थानक न दीधो कोई रे। इतरा मे एक नगर मे, कुभार तत्पर होई रे। —जयवाणी
रू०भे०—ततपर।
तत्परता–स०स्त्री० [स०] सनद्धता, तैयारी।
तत्पुरस–स०पु० [स० तत्पुरुष] १ परमेश्वर २ एक रुद्र ३ छ समासो मे से एक समास (व्या)
तत्र–क्रि०वि० [स०] वहा, उस ठौर। उ०—१ जिण सुतण अनेरण हुवौ जत्र। तिण सुतण व्रद नर विरुप तत्र।—सू प्र.
उ०—२ भ्रात पत्र खोस आरूढ कीधो उठै, जत्र-कत्र कियो खळ जगत जाणी। तै जननि उबारधो कस्ट तत्र-तत्र, रइ पखू 'जैत' रै राजराणी।—बालावख्स बारहठ
स०पु०—लोहे का तार।
तत्व—देखो 'तत्त्व' (रू भे)
तत्सम–स०पु० [स०] सस्कृत का वह शब्द जो भाषा मे अपने शुद्ध रूप मे व्यवहृत होता हो।
तथ—१ देखो 'तथ्य' (रू भे.)
२ देखो 'तिथि' (रू भे.) उ०—तेड मत्री त्रिवै पत्र यम तवै तथ, कहीजै घणै हित सयवर तणी कथ। पाण करसी ग्रहण जानकी वेद पथ, दासरथ, दासरथ, दासरथ।—र रू.
तथख्यण—देखो 'तत्क्षण' (रू भे) उ०—गजसीघोत भूप घन गाम, तथख्यण माच वनै रणताळ।—नरहरदास बारहठ
तथा–अव्य० [स०] उसी प्रकार, वैसा।
यौ०—तथास्तु।
स०पु०—ध्यान।
तथागत–स०पु० [स०] भगवान बुद्ध का एक नाम।
तथापि–अव्य० [स०] यद्यपि, तब भी, तो भी। उ०—तथापि रहे न हूं सकू वकू तिणि, त्रिया थनै प्रेम आतुरी। राज दूरि द्वारिका विराजो, दिन तेडउ आयौ दुरी।—वेलि.
रू भे—तहवि, तहावि।
तथासतू, तथास्तू–अव्य०यौ० [स० तथास्तु] एवमस्तु, ऐसा ही हो।
उ०—तथासतू कहियो सिव तारा, तत दुहु हुवा अस अवतारा। —सू प्र.
तथि—देखो 'तथ्य' (रू भे) (ह ना)
तथुग–स०पु०—नृत्य के समय बजाई जाने वाली बाजे की ताल विशेष। उ०—तथुग थुग तत्थयेर ताल साजती नही। वधू उमग सग मे म्रिदग बाजती नही।—ऊ का
तथोपणो, तथोपबो–क्रि०स०—जोश दिलाने अथवा उत्साहित करने के निमित्त पीठ थपथपाना, पीठ ठोकना। उ०—तद गठजोडो तोड, कर मरोड बळ मूछ कस। बाळक वनो विछोड, कमध तथोपै काळमी। —लखो बारहठ
तथ्य, तथ्य–वि० [स० तथ्य] यथार्थ, तथ्य, सच्चाई।
उ०—सउदागर राजा सू कहइ, सुणउ हमारी कथ्य। मारवणी छानी रहइ, ये पाळवणी तथ्य।—ढो मा.
रू०भे०—तथ्य, तथ्यय, तथ, तथि।
तदतर–क्रि०वि० [स०] तत्पश्चात्, इसके उपरात।
तदवा–क्रि०वि०—तब।
तद–क्रि०वि० [स० तदा] १ उस समय, तब। उ०—'राम' महेवै काम आयो, राव उदैसिघ वेढ हारी तद।—नैणसी
२ उसके बाद। उ०—इण दोखण नृप नह आदरसी। भावी साखि मुनिंद तद भरसी।—सू प्र
रू०भे०—तदिया तदया।
तदगुण–स०पु० [स० तद्गुण] अर्थालकार का एक भेद जिसमे वस्तु का अपना गुण त्याग कर अन्य समीपस्थ वस्तु का गुण ग्रहण करने का वर्णन किया गया हो।
तदग्ग–क्रि०वि०—उसके आगे। उ०—भैरव तदग्ग खयरव अभय, अभ्रवाज तिम वग्घ उर। बळि अभ्नदेव सरखेल बुध, धारण सब कुळ-धरम धुर।—व.भा.
तदपि–अव्य० [स०] तिस पर भी, तो भी।

तद्बीर–प०स्त्री० [प्र०] उपाय युक्ति तरकीब, यत्न ।
उ०—करै तदबीर गोरा चढण कांगुरा तिनग फरर फुरत फैली ताळी ।—बा दा
रू०भे०—ततबीर, ततवीर ।
तदभी—देखो 'तदपि' (रू भे)
तदरा–क्रि०वि०—तब से, उस समय से । उ०—तद विहारी मिलकखान हेतावत नू परगना ४ जाळोर वासै दीया था सु तदरा जाळोर वासै पड़िया ता सु हमैं जाळोर वानै हीज छै ।—नैणसी
तदा–क्रि०वि०—तब ।
तदारुक, तदारूक–स०पु० [प्र० तदारुक] १ खोई हुई वस्तु के सम्बन्ध में की जाने वाली जांच २ सजा, दंड । उ०—हुक्काम हुकम हाजिर हजूर, करिए न तदारुक बेकसूर ।—ऊ का
३ दुर्घटना आदि को रोकने के लिए किया जाने वाला प्रबन्ध ।
तदि, तदी—देखो 'तद' (रू भे) उ०—१ कमध मतो सिर ढाळण कीधो, दरसण सकति प्रतखि तदि दीधी ।—सू प्र.
उ०—२ वामण देह वधीह, बळ रो ज्याग विधूसवा । तीनू लोक तदीह, मापै तिण पद मोतिया ।—रायसिंह सादू
तदीक–क्रि०वि०—तभी ।
तदीय–सर्व०—उसके । उ०—चहुवाण वार जिण सोदर मल्हण नवम जोध, सब कुल तदीय माल्हण सुबोध ।—व भा
तद्धित–स०पु० [स०] १ राजस्थानी व्याकरण के अनुसार संज्ञा, विशेषण व क्रिया विशेषण के अंत में लगने वाला प्रत्यय जिससे शब्द निष्पन्न होता है २ वह शब्द जो इस प्रकार प्रत्यय लगने से बना हो ।
तद्भव–स०पु० [स०] संस्कृत के शब्द का अपभ्रंश रूप, संस्कृत के शब्द का विकृत या परिवर्तित रूप ।
तद्पा—देखो 'तद' (रू भे)
तद्रूप–वि० [स०] समान, सदृश, तुल्य ।
स०पु०—रूपक अलंकार का एक भेद ।
तद्रूपता–स०स्त्री०—सादृश्य, समरूपता, समानता ।
तन–स०पु० [स० तनु] १ शरीर, देह, गात । उ०—हे सखिए, परदेस प्री, तनह न जाइ ताप । वावहियउ आसाढ जिम, विरहणि करइ विलाप ।—ढो मा
मुहा०—१ तन तपणो—अधिक परिश्रम से शरीर का स्वेदयुक्त होना २ तन तोडणो—अथक परिश्रम करना ३ तन देणो—तन की बलि देना ४ तन फूलणो—अत्यधिक प्रसन्न होना ५ तन-मन एक करणो—लगन से काम करना ६ तन री लाय मिटाणी—अपनी इच्छा पूरी करना, संतुष्ट होना ।
कहा०—१ तन सीतळ हो सीत सू मन सीतळ हो मीत सू—तन शीत से शीतल होता है और मन मित्र के मिलने से । मित्र ही दुःख में उचित शांति प्रदान कर सकता है २ तन सुखी तो मन सुखी—मन की प्रसन्नता के लिए सुस्वास्थ्य आवश्यक है ।
यौ०—तनताप तनत्राण, तनदीवाण, तनधर, तनमन, तनसार ।
२ मन ।
मुहा०—तन लागणो—किसी बात का हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ना ।
३ सम्बन्धी, रिश्तेदार. ४ वंशज, सन्तान, पुत्र, लड़का ।
रू०भे०—तन्न, तन्नु ।
अल्पा०—तनडो ।
तनक–वि०—तनिक, थोड़ा, किंचित । उ०—जोड़ै ज्यूही जोड, विणजारा रा ब्याज ज्यू । तनक जोड मत तोड, नातो तातो नागजी ।
—नागजी
स०स्त्री०—१ नाज, नजाकत २ दिखावा ।
यौ०—तनक-तनक ।
तनक-मिजाजी–स०स्त्री०यौ०—छोटी-छोटी या साधारण बात पर तुनकने का भाव या आदत ।
वि०—पु० (स्त्री० तनक-मिजाजण) छोटी-छोटी बातों पर नाराजगी प्रकट करने वाला, असहिष्णु । उ०—धोरा भुवावो डोडा एळची रे, म्हारी तनक-मिजाजण, थयारा भुवा दो नागर वेल ।—लो गी.
तनकळानिध–स०पु०—चन्द्रमा (ना मा)
तनकीह–स०स्त्री० [अ० तनकीह] तहकीकात, जांच ।
तनखा, तनख्वाह–स०स्त्री० [फा० तनख्वाह] वेतन, तलब ।
रू०भे०—तणखा तिनखा ।
तनगणो, तनगबो–क्रि०अ०—अप्रसन्न होना, रुष्ट होना, रूठना ।
तनगियोडो–भू०का०कृ०—रूठा हुआ, चिढा हुआ, अप्रसन्न ।
(स्त्री० तनगियोडी)
तनडो—देखो 'तन' (अल्पा, रू भे) उ०—१ कोई मनडा तनडा सू निरमळ म्हे रै'वा ।—लो गी
उ०—२ हेमाणी मख हाट नरम तनडो उपगारी । ऊपर चढ देखै दूर तक विजन-विहारी ।—दसदेव
तनजा—देखो 'तनुजा' (रू भे)
तनताप–स०पु०यौ०—शरीर का कष्ट, व्याधि ।
तनत्राण, तनत्रान–स०पु० [स० तनुत्राण] कवच, बख्तर ।
उ०—उण वार तहव्वर जोर इसो, जुध राम दळा सिर 'कुंभ' जिसो । घण माण अधताय भीड घणो, तनत्राण सहायक प्राण तणो ।
—रा रू.
रू०भे०—तनुत्राण ।
तनदीवाण–स०पु०यौ०—अंगरक्षक, (राजा महाराजाओ का)
तनधय–स०पु० [स० स्तनधय] शिशु, बच्चा (ह ना)
तनधर–स०पु० [स० तनुधारिन्] शरीरधारी ।
रू०भे०—तनुधारी ।
तनपटाट–स०स्त्री०यौ०—अनुपयुक्त वाद-विवाद, तर्क-वितर्क ।
तनपात–स०पु० [स० तनुपात] देह का अवसान, मृत्यु ।
तनबीचि–स०स्त्री०—कटि । (ह ना)
तनमध–स०स्त्री० [स० तनुमध्य] कटि, कमर । (ह ना)

तनमय-वि० [सं० तन्मय] लवलीन, मग्न, तन्मय ।

तनमात्रा-सं०स्त्री० [सं० तन्मात्र] सांख्य के अनुसार पंच भूतों का आदि, अमिश्र व सूक्ष्म रूप । ये पांच हैं—गंध, रस, रूप, शब्द और स्पर्श, तन्मात्र ।

रू०भे०—तन मातरा, तन्मात्रा ।

तनय-सं०पु० [सं०] पुत्र, सुत ।

तनयतू, तनयनू-सं०पु० [सं० स्तनयित्नु] १ मेघ, बादल (ह ना) २ सम्बन्धी ।

सं०स्त्री०—३ बिजली, बिजली की चमक ।

वि०—रक्षा करने वाला ।

तनया-सं०स्त्री० [सं०] पुत्री, बेटी । उ०—सो कथ सखा धारि निज मन या, तू इण देसपती री तनया ।—सू.प्र

रू०भे०—तणया, तनिया ।

तनराग-सं०पु० [सं० तनुराग] १ शरीर पर केसर, चन्दन, कपूर आदि को मिला कर किया जाने वाला लेप, उबटन २ उबटन के लिए काम में आने वाले पदार्थ ।

रू०भे०—तनुराग ।

तनरुह-सं०पु० [सं० तनुरुह] रोम, लोम (अ मा.)

रू०भे०—तनोरुह ।

तनविद्र-सं०पु० [सं० तनु+व्याध] शत्रु, वैरी (ह ना)

तनसणगार-सं०पु० [सं० तनु+शृंगार] वस्त्र, वसन (अ.मा)

तनसाच-सं०पु०—कामदेव (अ मा)

तनसार-सं०पु० [सं० तनु+सार] १ मनुष्य (अ मा.)

२ देखो 'तनुसार' (रू.भे) उ०—ए प्रदिमन का नाम जु कामदेव को अवतार । दरपक, काम, कुसुमायुध, सबरारि, रतिपति, तनसार, समर ।—वेलि टी

वि०—शरीर को छेदने वाला । उ०—जठै तठै इण जगत में, ओंकारो ओंकार । वालो जसरा सायका, तूकारो तनसार ।—बा दा.

तनसुख-सं०पु०—१ फूलदार सुन्दर वस्त्र, फूल छाप का उत्तम कोटि का वस्त्र ।

यौ०—२ शारीरिक सुख ।

तनसोर-सं०पु०—मनुष्य (अ मा)

तनहंस-सं०पु० [सं० तनु+हंस] हंसावतार, विष्णु ।

उ०—नमो तन-हंस त्रिलोकी नाथ, नमो विध ध्यान सुणावण बात । —ह र

तनहा-वि० [फा०] एकाकी, अकेला ।

क्रि०वि०—बिना किसी संगी-साथी के, अकेले ।

तनहाई-सं०स्त्री० [फा०] एकान्त, अकेलापन ।

तनाजान-वि०—अकेला, एकाकी ।

मुहा०—तनाजान सूं समाप्त करणो—पूर्ण नष्ट करना ।

तनाओ-सं०पु० [सं० तानाव] १ झगड़ा, विवाद, टंटा, बखेड़ा.

२ वैर, शत्रुता ।

तनाती-सं०पु०—१ शरीर सम्बन्धी. २ निकट सम्बन्धी, रिश्तेदार. ३ ईश्वर ।

तनायत-सं०पु० [सं० तनु+रा.प्र आयत] स्वजन, निकट सम्बन्धी ।

तनारसी-सं०पु०—धनुष । उ०—तीखा नैंण तनारसी, सायक काजळ सार । छाती छेदै छैल की, निकस्या परलै पार ।

—जलाल बूबना री वात

तनिक-वि०—थोडा, अल्प ।

तनिया—देखो 'तनया' (रू भे.)

तनु-सं०पु० [सं०] १ जन्मकुंडली में प्रथम स्थान.

२ देखो 'तन' (रू भे)

वि०—१ क्षीण, दुबला, पतला (अ मा.) २ प्रिय, प्यारा ।

तनुज-सं०पु० [सं०] पुत्र, बेटा ।

रू०भे०—तनूज ।

तनुजा, तनुज्जा-सं०स्त्री० [सं० तनुजा] पुत्री, बेटी । उ०—बतक जग जाहुर हुई, साम्रत आसुर आय । तनुजा खामद नैं तजै, मिळी देवगत माय ।—पा प्र

रू०भे०—तनजा, तनूजा, तनूजा ।

तनुत्राण—देखो 'तनत्राण' (रू भे)

तनुधारी—देखो 'तनधर' (रू भे.)

तनुनपात, तनुनिपात-सं०स्त्री० [सं० तनूनपात्] अग्नि, आग । (ह ना.)

तनुवध-सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र (व.स.)

तनुमझ्या-सं०स्त्री० [सं० तनुमध्या] पतली कमर की स्त्री ।

तनुमझ्यो-सं०पु०—एक वर्णवृत्त ।

तनुराग—देखो 'तनराग' (रू भे)

तनुरी—देखो 'तन्नूरी' (रू भे) उ०—तनुरा ताल सिंधु झणकता, नरा आय अपच्छर झुकी सगा असमान रा ।—जवानजी आढी

तनुसार-सं०पु० सं० तनु+सृ (धातु)] १ शरीर में व्याप्त होकर रहने वाला २ कामदेव या प्रद्युम्न का एक नाम ।

उ०—दरपक कंदरप काम कुसुमायुध, संबरारि रति पति तनुसार । समर मनोज अनंग पंचसर, मनमथ मदन मकरध्वज मार ।—वेलि

३ बलवान शरीर वाला ।

रू०भे०—तनसार ।

तनू, तनू-सं०पु० [सं० तनु] देखो 'तन' (रू भे) उ०—'पता' को तनू येम 'गोपाळ' सज्जै, धरा नेत वधी हय रूप भज्जै ।—ला रा

तनूजा—देखो 'तनुजा' (रू भे) उ०—धारा फेण कलिंद तनूजा धारिया ।—बा दा

तनूज—देखो 'तनुज' (रू भे) उ०—कपोत कंठ पोत केम, मोह ओपमा मिळी । जिको तनूज नागिण आणि, मेर स ग मंडळी ।—सू प्र

तनूजा—देखो 'तनुजा' (रू भे)

तनूदर, तनूदरी-सं०स्त्री०—स्त्री, महिला (ह ना)

तनूनपात-स०स्त्री०—देखो 'तनुनपात' (रू भे.)
तनूर—देखो 'तदूर' (रू.भे)
तनेयक-वि०—तनिक, थोड़ा, किंचित। उ०—हा ए हा आसूड़ा री धार तनेयक डट जाय, तनेयक डट जाय चिनेयक डट जाय।—लो गी
तनैं, तनै—देखो 'तनय' (रू भे)
तनेरुह—देखो 'तनरुह' (रू भे.)
तन्न—देखो 'तन' (रू भे) उ०—सुणिया 'पातल' समर रा, नीधसता नीसाण। तेज न मावै तन्न मे, तन्न न मावै त्राण।
—किसोरदान बारहठ
तन्नु-स०पु०—१ निकट सम्बन्धी, स्वजन २ देखो 'तन' (रू भे)
तन्मात्रा—देखो 'तनमात्रा' (रू भे)
तप-स०पु० [स० तपस्] १ वे नियम और व्रत जो मन की शुद्धि के लिए शरीर को कष्ट देकर किये जाते हैं, तपस्या।
उ०—सुजळ गिनान मजन तन सारिस। ध्रम क्रम जप तप नेम वधारिस।—ह र.
क्रि०प्र०—करणौ, झेलणौ, साधणौ।
२ तन व इंद्रियों को वश मे रखने का धर्म। उ०—'वक' तेज कारण वणै, निहचळ तप निरदोख। ग्यान मोक्ष कारण गिणै, सुख कारण सतोख।—बा दा
३ ताप, गरमी, उष्णता. ४ ग्रीष्म ऋतु ५ माघ का महिना (डि को) ६ बुखार, ज्वर ७ अग्नि (ह ना.) ८ शीत को दूर करने अथवा तापने के लिये जलाई जाने वाली आग, अलाव, कौड़ा।
क्रि०प्र०—करणौ।
९ सूर्य (क कु वो)
यौ०—तपकर, तपकरण।
१० तेज, ओज, कान्ति। उ०—विहुण पहल अथाक वागा, लगे तप सह पाय लागा।—सू प्र
रू०भे०—तपु, तप्प, तव।
तपई-स०पु०—एक प्रकार का कपडा (व स)
तपकर, तपकरण, तपघण-स०पु०यौ०—सूर्य (क कु वो)
उ०—तेज तपकरण अप्रत सुजस तेहडो, माहवळ दुग्रो 'कुसळेस' कुळ मोड़। वसे सकळक चन्द्र भाळ वागीम रै, रसै भुरजाळ निकळक राठौड़।—पीरदान आढ़ो
तपण-स०स्त्री० [स० तपन] १ ताप, गरमी, जलन, तपन २ सूर्यकांत मणि. ३ वियोगाग्नि।
स०पु०—४ सूर्य (डि को)
रू०भे०—तपन, तवणु।
तपणी-स०स्त्री०—१ वह अग्नि जो सन्यासी अथवा योगी के अग्निकुण्ड मे जलाई जाय २ सन्यासी अथवा योगी के तपस्या करने का स्थान ३ अग्निकुण्ड ४ लोहे व मिट्टी का वह पात्र जिसमे ताप के हेतु अग्नि रखी जाती है। उ०—सो, सियाळा मे राजकुमारी रौ जनम हुवौ है जिणसू जचा रै तापण नै तपणी लाया है।—वी स.टी.
५ गरमी, तपन।
रू०भे०—तउणि, तउणी।
तपणीय-वि०—तपाने योग्य।
स०पु० [स० तपनीय] सोना, स्वर्ण (ह ना)
रू०भे०—तपनीय।
तपणौ, तपबौ-क्रि०अ० [स० तपन] १ गरमी या आच से गर्म होना, तपना। उ०—१ मिळि माह तणी माहुटी सू मसिअन, तपि आसाढ़ तणौ तपन। जन नीजन पणि अधिक जाणियौ, मध्यरात्रि प्रति मध्याह्न।—वेलि
उ०—२ देस तपती ताव सू, मुरधर अग्ग रै भाण। हियौ हिमाचळ उभ्भळियौ, वह चाल्यौ वरफाण।—लू
२ दग्ध होना, जलना। उ०—घन सीळ रतन नै घरती तिम विरह करि तनु तपती हो लाल।—ध व ग्र
३ क्रुद्ध होना। उ०—रुकमइयौ पेखि तपत आरणि रणि, पेखि रुखमणी जळ प्रसन। तणु लोहार वाम कर निय तणु, माहव किउ साडसी मन।—वेलि
४ सतप्त होना, दुखी होना। उ०—माळवणी कउ तन तप्यउ, विरह पसरियउ अगि। ऊभी थी खड़हड पडी, जाणै डसी भुयगि।
—ढो मा
५ तपस्या करना, तप करना ६ कष्ट सहना। उ०—वाहू नाम तीर्थकर चउ मुझ, दुरगति पडता वाह रे। हू तपतउ आवियउ तुम पासै तुम्हे करउ टाढी छाह रे।—स कु
[स० तप ऐश्वर्य दीप्तौ] ७ प्रताप फैलना, शौर्य बढना।
उ०—१ राव चूडो वीरमोत मडोवर घणौ तपियौ। पछै तुरका नु मार नै नागोर लियौ।—नैणसी
उ०—२ इण विध राव केल्हण पूगळ घणौ हुवौ। पछै रावळ केल्हण मुलताण जाय नै सलेमखान नू नागौर ऊपर ले आयौ। राव चूडा नू मारियौ। राव केल्हण घणौ तपियौ।—नैणसी
८ ऐश्वर्य भोगना, सुख भोगना।
तपणहार, हारौ (हारी), तपणियौ—वि०।
तपवाडणौ, तपवाडबौ, तपवाणौ, तपवाबौ, तपवावणौ, तपवावबौ—प्रे०रू०।
तपाडणौ, तपाडबौ, तपाणौ, तपाबौ, तपावणौ, तपावबौ—क्रि०स०।
तपिओडौ, तपियोडौ, तप्योडौ—भू०का०कृ०।
तपीजणौ, तपीजबौ—भाव वा०।
तवणौ, तवबौ—रू०भे०।
तपत-स०स्त्री० [स० तप्त] १ गरमी, उष्णता, जलन २ कष्ट, पीडा।
उ०—दादू तपत विना तन प्रीत न उपजै, सग ही सीतळ छाया। जनम लगै जीव जाणै नही, तरुवर त्रिभुवन राया।—दादू वाणी

तपायोडौ—भू०का०कृ० ।
तपाईजणौ, तपाईजबौ—कर्म वा० ।
तपणौ, तपबौ—अक० रू० ।
तपाड़णौ, तपाड़बौ, तपावणौ, तपावबौ—रू०भे० ।
तपायोडौ-भू०का०कृ०—१ तपाया हुआ, गर्म किया हुआ २ दग्ध किया हुआ, जलाया हुआ. ३ कष्ट दिया हुआ. ४ ऐश्वर्य का उपभोग कराया हुआ ५ संतप्त किया हुआ, क्रुद्ध किया हुआ ।
(स्त्री० तपायोडी)
तपावत-स०पु०—तपस्वी ।
तपाव-स०पु०—देखो 'तपावस' (रू भे) उ०—अनीति कीही वात री नहीं तीसू सारा परगना रो न्याव तपाव सगळो भटनेर आवै ।
—ठाकुर जैतसी री वारता
तपावणौ, तपावबौ—देखो 'तपाणौ, तपाबौ' (रू भे)
उ०—तपावौ राछ ज्यूं पूठ रो कारी करा ।—र वि.
तपावस-स०पु०—१ कृपा, महरबानी । उ०—चगसखान री वायरि पातिसाह सौ अकबर कन्है पुकारी । सु पातिसाह इया नैं सजा दीन्ही। हाथी रा पगा सू वधाई मारिया । चगसखान री वायरि महला आहे रासी । पातिसाह तपावस कियो ।—द वि
२ न्याय, निर्णय, फैसला । उ०—१ वाणिये रै बेटै नैं बेटो कहै नही चोचो करै तो चाकर कहै का कोई बीजो ठहरावै । पण कोईक तो कारण छै । इसी विचार कर राजा कनकरथ ना अेकात मे लेनै पूछियो—महाराज, सांच कहो सेठ तो साच कह्या तपावस होसी, लारली सरब वात कहो ।—पलक दरियाव री वात
उ०—२ ताहरा राजा प्रदभाण कह्यो—देवीदास अो तपावस म्हासू ना होवै । अो तोसू हीज होसी ।—पलक दरियाव री वात
उ०—३ तद कोटवाळ, पच हसिया अो वडो तमासो कह्यो जी अो तपावस म्हासू नही होवै । राजाजी करसी ।—पलक दरियाव री वात
३ पूछताछ । उ०—ठाकुर थे कठै रहो छो, कासू नाम छै । ताहरा कनकरथ कह्यो—कासू पूछ करो छो ? रजपूत छू, परदेसी छू । दरवारी कह्यो—थे आगहू छो तो तपावस तो होसी हीज पण हू हवालदार छू ।—पलक दरियाव री वात
४ देखो 'तपास' (रू भे.)
तपावियोडौ—देखो 'तपायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० तपावियोडी)
तपास-स०स्त्री०—१ खोज, तलाश, अनुसधान. २ जाच-पडताल ।
क्रि०प्र०—करणी, होणी ।
रू०भे०—तपावस ।
तपियोडौ—देखो 'तापियोडौ' (रू.भे)
तपियोडौ-भू०का०कृ०—१ (गर्मी या आच से) गर्म हुवा हुआ, तपा हुआ. २ प्रताप फैला हुआ, शौर्य बढा हुआ. ३ ऐश्वर्य भोगा हुआ, सुख भोगा हुआ. ४ दग्ध हुवा हुआ, जला हुआ. ५ क्रुद्ध हुवा हुआ ६ संतप्त हुवा हुआ, दुखी हुवा हुआ । ७ तपस्या किया हुआ, तप किया हुआ. ८ कष्ट सहा हुआ ९ देखो 'तापियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० तापियोडी)
तपिस-स०स्त्री० [फा० तपिश] गरमी, तपन, उष्णता ।
तपी-स०पु०—तप करने वाला, तपस्वी, ऋषि ।
उ०—तपी तपतें सुरता इकतार, धपी रसना रस इम्रितधार ।
—ऊ का.
तपीस-स०पु० [स० तप+ईश] तपस्वी ।
तपु—देखो 'तप' (रू भे) उ०—महीयळे महिळीय करइ विचारू, कवणु कीउ तपु द्रूपदीय । कोइ न अिहु जगि हुईय नारि, हिव पछी कोई न होइसि ए ।—प प.च
तपेदिक-स०पु० [फा० तप+अ० दिक] एक रोग विशेष जो प्राय: फेफडो मे की टाणु विशेष लगने से हो जाता है जिससे शरीर शनै: शनै क्षीण व अशक्त होने लगता है । राजयक्ष्मा, क्षय रोग ।
तपेसर, तपेसुर-स०पु० [स० तपेश्वर] १ तपस्वी । उ०—१ कर हर धान चढावै केसर । तपियौ धुमर ताप तपेसर ।
—जीवराज सोलकी री गीत
उ०—२ गुफा ध्यान लवलीन गिरोवर, ताळी खुलि ऊठिया तपेसुर ।
—सू प्र
२ महादेव, शिव ।
तपोअण—देखो 'तपोधन' (रू भे) उ०—सुखि तपोअण भरम भ्रम सम, मरम निघ जिम माल ।—रा.रू
तपोतम-स०पु०—१ श्रेष्ठ तपस्वी । उ०—मछळी उर जाया जोग कमाया मोन मछदर कहवाया । सिसिया तैं गौतम वडो तपोतम व्यास कीरणी निपजाया ।—पा प्र
२ उत्तम तपस्या ।
तपोधन-स०पु० [स०] १ वह जिसका केवल तपस्या ही धन हो, तपस्वी, मुनि, महात्मा । उ०—दात दमकै अहर दुत, जाण चमकै बीज । ज्यारी धुनि मधुरी सुणे, रहे तपोधन रीज ।—बा दा
२ ऐश्वर्यवान, वैभवशाली ।
रू०भे०—तपोअण, तवोधण ।
तपोनिध-स०पु० [स० तपोनिधि] ब्रह्मा, विष्णु ।
उ०—उदोत तपोनिध-अेगुण-ईस, अजीत-जरा-अत जोग अधीस ।
—ह.र
तपोवळ-स०पु० [स० तपोवल] १ ऐश्वर्यबल, वैभवशक्ति ।
उ०—राजत प्रोहित राण तपोवळ रूप को, भड घोडा घमसाण समोवड भूप को ।—वगसीराम प्रोहित री वात
२ राज्यवल । उ०—धाक सुण खान सुळतान वोहो धूजसी, सतारौ दिली मुळताण साथै । आन रा तपोवळ जगत कुण आदरै, 'मान' रा तपोवळ जगत माथै ।—महाराजा मानसिंघ रो गीत

३ तपबल, तपस्याबल। उ०—मरु जिए सुतए तपोबळ मडे, खित गळिका परगट नव खडै।—सू प्र
रू०भे०—तपबळ।

तपोभूमि—स०स्त्री० [स०] तपस्या करने का स्थान, तपोवन।

तपोमूरति—स०पु० [स० तपोमूर्ति] १ महातपस्वी २ परमेश्वर।

तपोरति—स०पु० [स०] तपस्या मे लवलीन, तपस्या-प्रेमी, तपस्यानुरागी।

तपोरासि—स०पु० [स० तपोराशि] तपस्वी, मुनि।

तपोलोक—स०पु० [स०] ऊपर के सात लोको मे से छठा लोक जो जन लोक और सत्य लोक के मध्य स्थित है।

तपोवन—स०पु० [स०] वह वन प्रदेश जहाँ तपस्वी अपनी तपस्या मे रत रहते है। तपस्वियो की निवासस्थली।

तपोवृद्ध—वि० [स०] तपस्वियो मे जो वृद्ध हो, महामुनि २ तपस्या द्वारा जो श्रेष्ठ हो।

तप्त—वि० [स०] १ गरम, तपा हुआ, उष्ण। उ०—जठै नदी रा जळ सू पुद्गाळ पवित्र करि कोई सिद्ध रा दीघा मत्र रा जप पूरवक तप्त तेल रा कटाह मे वडाह राजा झप लीघी।—व भा
२ दुखित, पीडित, सतप्त।

तप्तकुड—स०पु० [स०] १ एक तीर्थ-स्थान. २ गर्म जल का कुड।

तप्तमुद्रा—स०पु० [स०] शरीर के किसी अग पर लगाये जाने वाले शख, चक्र, गदा, पद्म आदि के छापे। वैष्णव सम्प्रदाय मे इसकी प्रथा प्रायः अधिक है।

तप्प—देखो 'तप' (रू भे) उ०—रहै विलवे राम रस, अनरस गिरणे अलप्प। एह महाघू आतमा, ऐ तीरथ ऐ तप्प।—ह.र

तप्पड—देखो 'तापड' (रू भे)

तप्पना—स०स्त्री०—तपस्या।

तफरीह—स०स्त्री० [स० तफरीह] १ आमोद-प्रमोद, प्रसन्नता २ दिल्लगी, हसी, ठट्ठा ३ सैर, भ्रमण।

तफसीर—स०स्त्री० [अ० तफसीर] १ टीका. २ किसी धर्म ग्रथ की टीका।

तफसीळ—स०स्त्री० [अ० तफसील] १ विस्तृत वर्णन. ब्योरेवार वर्णन. २ टीका ३ सूची, फेहरिस्त, फर्द।

तफावज, तफावत—स०पु० [अ० तफावुत] १ अन्तर, भेद, फर्क।
उ०—१ दैणा उत्तर कविजणा, सुवरन अरथ सनेह। सु कवि सूम सम दाखिये, नही तफावज रेह।—बा दा.
उ०—२ सारो लोग तै भेळो करि फौज वणाई, परगना री सरवत तै खाच लीन्ही। सजा तफावत करै छै।—ठाकुर जैतसिंघ री वारता
२ दूरी, फासला।

तर्फ—स०पु०—वश, अधिकार। उ०—स० १६४० बीलाडो तर्फ हुवो बीलाडा रौ तर्फ रा बाघ प्रथीराजोत नू हुतो।
—राजा उदैसिंघ री वात

तफो—स०पु०—१ समूह, दल २ वजन, बोझा ३ कलक, इल्जाम.

तबकरा—स०स्त्री०—सोलकी वश की एक शाखा का नाम।

तब—अव्य० [स० तदा] १ उस समय २ इस कारण।

तबक—स०पु० [अ० तबक] १ ब्रह्माड के कल्पित खड जो पृथ्वी के ऊपर तथा नीचे माने जाते हैं, लोक, तल। उ०—सकल स्रिस्ठी का चित ही कारण, कारज बहु विध ठाणी। नाना रूप भावना नाना, चवदह तबक च्यारू खाणी।—स्री सुखरामजी महाराज
२ सोने चादी के पत्तरो को ठोक कर बनाया हुआ पतला वरक. ३ परत, तह ४ मेढक की चाल ५ घोड को होने वाला एक रोग विशेष जिसके कारण उसके पेट के नीचे सूजन आ जाती है। (शा हो)
६ थाली। उ०—नीली सोपारी, कातली, तबक खर वडी, तबकी काथु।—व स
रू०भे०—तबक।

तबकगर—स०पु० [अ०+फा०] सोने चादी के वरक बेचने वाला।
अल्पा०—तबकियो।

तबकिया हुडताळ (हरताळ)—स०स्त्री०—एक प्रकार की हरताल। (अमरत)

तबकियो—१ देखो 'तबकगर' (अल्पा, रू भे)
२ देखो 'तबको' (अल्पा, रू भे)

तबको—स०पु० [अ० तबक] १ चादी या सोने का वरक।
२ रह-रह कर उठने वाला दर्द, चीस. ३ किसी नुकीले औजार, शस्त्र तथा नुकीली वस्तु का सीधा प्रहार। नुकीली वस्तु के चुभने का भाव।
रू०भे०—तबीडो, तबोडो।
मह०—तबकीड, तबीड।

तबडक—स०स्त्री०—१ कूदते हुए दौडने की क्रिया या भाव
२ देखो 'तबडको' (रू भे.)

तबडकणो, तबडकबो—क्रि०अ०—१ उछलते हुए दौडना २ ऊट का चारो पैर एक साथ उठाते दौडना।

तबडको—स०पु०—१ ऊट का कूद कर छलाग भरते हुए दौडने का भाव.
२ कूदते हुए दौडने का भाव।
मुहा०—१ तबडको मारणो—नाराज होकर चला जाना, नाराजगी प्रकट करना. २ तबडको लैणो—देखो 'तबडको मारणो'।

तबज्या—स०स्त्री० [अ० तवज्जुह] ध्यान, देख-रेख। उ०—उण दिन सू सगळा महल लोगा री तबज्या करणे लागिया।
—कुवरसी साखला री वारता
क्रि०प्र०—दैणी।
२ कृपा-दृष्टि।

तबदील—वि० [अ०] १ जो बदला गया हो, परिवर्तित.
२ देखो 'तबदीली' (रू भे)

तबदीली—स०स्त्री०—परिवर्तन, बदलने का कार्य।

क्रि०प्र०—करणी, होणी।
रू०भे०—तबदील।
तबर-स०पु० [फा०] १ लम्बे दस्ते की बडी कुल्हाडी, परशु
२ कुल्हाडी के आकार का लडाई का एक हथियार.
३ देखो 'तबरो' (मह , रू भे)
रू०भे०—तब्बर।
तबरियो—देखो 'तबरो' (अल्पा., रू भे.)
तबरो-स०पु०—एक प्रकार का बर्तन विशेष। उ०—खाडा खामा खाय, कियो यो खालो तबरो। माथ चडावण मोल, परम प्रसाद है जबरो।
—दसदेव
अल्पा०—तबरियो।
मह०—तबर, तब्बर।
तबरक-स०पु०—कमरपट्टे की बारूद आदि रखने की पेटी।
तबल-स०पु० [फा०] १ बडा ढोल. २ नगाडा
३ देखो 'तबलो' (मह , रू भे.) उ०—तबल नै धवकै धर धूजवइ। भरि तणा मन नु मद गूटवइ।—विराटपर्व
४ कुल्हाडी के आकार का एक प्रकार का शस्त्र।
उ०—असि गयद तबल नेजा लिया, लडे अमर भड रिण खळै। भागा हजार बावन भिडे उभै हजारा आगळै।—सू प्र.
यौ०—तबल-बध।
रू०भे०—तबन, तब्बल।
तबलबध-स०पु०यौ०—१ युद्ध में रणभेरी या बडा ढोल बजाने वाला. २ तवल नामक कुल्हाडी के आकार का शस्त्र धारण करने वाला।
उ०—१ सूरमा सेख प्रति वळ समद। बावरी बगाळी तबलबध।
—वि स
उ०—२ पडि वरथ वळथिय हय पडि, चगदायळ मुख चीवरा। बीबरा तबळबध बाना बहमि, खागी वधा खीमरा।—सू प्र
रू०भे०—तबलवध।
तबलबाज-स०पु०—तबला बजाने वाला, तबलची २ नगाडा बजाने वाला ३ तबल नामक शस्त्र को धारण करने वाला।
उ०—तबलबाज गजराज मकबंध अकबर तणा, रहचिया मीर हालै रढाळै। 'सतै' आफाळिया भला खुरसाण सू, काछ पचाळ सोराठ काळै।—नैणसी
तबली-स०स्त्री०—सारगी नामक वाद्य के नीचे का भाग जो चमडे से मढ़ा रहता है।
तबलियो—देखो 'तबलो' (अल्पा , रू भे.)
तबलो-स०पु० [अ० तबल] सगीत, नृत्य आदि के साथ ताल देने का एक प्रसिद्ध वाद्य जिसमे काठ, मिट्टी या लोहे की चद्दर के कूड पर चमडा मढा रहता है। इस चमडे पर बीच में लोहचून, मगरैल, लोईकावै, सरेस और तैल को मिला कर बनाई हुई स्याही की गोल टिकिया जमा कर लगाई हुई होती है। यह बाजा अकेला नही बजाया जाता। इसी तरह के दूसरे बाजे के साथ बजाया जाता है जिसे 'बायाँ', 'डुग्गी' अथवा 'नारी' कहते हैं।
वि०वि०—साधारण बोलचाल मे तबला और बायाँ अर्थात् नर और मादा को एक साथ मिला कर भी तबला कहते हैं।
मुहा०—१ तबला उतरणा—तबले की बद्धी का ढीला पडना.
२ तबला उतारणा—तबले की बद्धी को ढीला करना ३ तबला चढाणी—बजाने के लिए तबले की बद्धी को कसना। तबले को तनाव मे लाना ४ तबला ठणकणा—तबला बजना, तबला ठनकना।
२ चूतड।
मुहा०—१ तबला कूटणा—सभोग करना २ तबला कुटाणा—सभोग कराना (व्यग)
अल्पा०—तबलियो।
मह०—तबल, तबल्ल, तब्बल।
तबल्ल—१ देखो 'तबल' (रू भे.) २ देखो 'तबलो' (मह , रू भे.)
उ०—मचे जग बेसग हिंदू मुगळ्ळ, अहक्के नफेरी टमके तबल्ल।
—रा.रू.
तबक-स०पु० [अ० तबाक] बडा थाल, परात (क्षेत्रीय)
तबाह-वि० [अ०] नष्ट-भ्रष्ट, तहस-नहस।
तबियत-स०स्त्री० [अ० तबीयत] १ चित्त, मन, जी।
मुहा०—१ तबियत आणी—किसी से प्रेम होना २ किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा होना २ तबियत उळझणी—१ जी घबराना, २ किसी के साथ दिल का लगना, मुहब्बत हो जाना
३ तबियत जाणी—१ किसी वस्तु पर मन चलना. २ नियत बिगडना ४ तबियत फडकणी—१ उमग से मन का प्रसन्न होना, २ जोश आना ५ तबियत फिरना—मन मे उचाट होना, जी हटना ६ तबियत भरणी—मन मे सतोष होना, तसल्ली होना.
७ तबियत लागणी—किसी पर तबियत आना, अनुराग हो जाना, चित्त को किसी कार्य मे लगाना ८ तबियत होणी—इच्छा होना।
यौ०—तबियतदार, तबियतदारी।
२ स्वास्थ्य या रोग के दृष्टिकोण से शरीर की दशा, मिजाज।
उ०—तीसू जे बादसाह सिलामत री तबियत जाणै थो सो कन्है रहियो।—गौड गोपाळदास री वारता
मुहा०—१ तबियत बिगडणी—स्वास्थ्य खराब होना, बीमार होना
२ तबियत सुधरणी—स्वस्थ होना, स्वास्थ्य का सुधार पर होना।
३ बुद्धि, समझ, भाव ४ प्रकृति, स्वभाव।
रू०भे०—तबीअत।
तबियतदार-वि०यौ० [अ०+फा०] १ मनचला, रसिक, रसज्ञ.
२ समझदार।
तबी—देखो 'तभी' (रू भे.)
तबीअत—देखो 'तबीयत' (रू भे.)

तवीड—देखो 'तवको' (मह , रू.भे)
तवीडो—देखो 'तवको' (रू भे)
तवीब, तवीव–स०पु० [अ० तबीब] वैद्य, चिकित्सक।
उ०—वैद रहीजै राज घर, पावै केय गरीव। हेली दूध धपाडियो, म्हारै नीम तबीब।—वी.स
तवेलो–स०पु०—अश्वशाला, घुडशाल। उ०—कान कलम अरु मुख कळी, पीडा चाक प्रमाण। सिरै तबेलै सोहिया, कूकड कध केकाण। —प्रे रू
तवोडी–स०स्त्री०—आख मे चोट आदि लगने से आख का बढने वाला मास या फूला।
तवोडो—देखो 'तवको' (रू भे)
तव्वर—१ देखो 'तवर' (रू भे) २ देखो 'तवरो' (मह., रू भे.)
तव्वल—१ देखो 'तवल' (रू भे) २ देखो 'तवरो' (मह. रू भे)
तव्वी–क्रि०वि०—देखो 'तभी' (रू भे) उ०—मरा मीर मसूर को दुख धारा तव्वी। ज्यो घ्रत डारा आगि मे हिय पावक हुव्वी।—ला रा
तभी–अव्य०—१ उसी समय, उसी वक्त २ इसी कारण।
रू०भे०—तवी।
तमक–स०पु०—क्रोध, कोप। उ०—जिण वार तमक पावू जवान, विसताल भडै खेंग रीठवान।—पा प्र
तमकणो, तमकबो—देखो 'तमकणो, तमकबो' (रू भे)
तमकियोडो—देखो 'तमकियोडो' (रू भे)
(स्त्री० तमकियोडी)
तमचय, तमचो–स०पु० [फा तमचा] १ छोटी बदूक, पिस्तोल २ बहुधा दीपावली पर पोटास छोडने के लिए लोहे का बना एक उपकरण विशेष। उ०—जम जमडाढ तमचय जास, विढै रिण काज सजय बाणास।—प्रे रू
क्रि०प्र०—छूटणो, छोडणो।
३ दरवाजे की मजबूती के लिए दरवाजे की चौखट के बगल मे लगाया जाने वाला लम्बा पत्थर।
तमस–स०पु०—१ श्यामता, कालिमा। उ०—सरीस मोतिया सधार, कोर भाळ केसरी। कळा तमस वीच कीध, चद जाणि चदरी। —सू प्र
२ अधकार, अधेरा।
तम–स०पु० [स०] १ अधकार, अधेरा (नां.मा)
उ०—तुलि बैठी तरणि तेज तम तुलिया, भूप कणय तुलता भू भाति। दिणि-दिणि तिणि लघुता आमै दिन, राति राति तिणि गोरव राति।—वेलि
२ तमाल वृक्ष ३ राहु ४ पाप. ५ क्रोध. ६ अज्ञान ७ कलक ८ नरक. ९ साख्य के अनुसार प्रकृति का तीसरा गुण, तमोगुण। उ०—सत रज तम रस पाच रहत रस, ता रस सू मन लागा। यम्त्रित जरै प्राण रस पीवै, भरम गया मै भागा।—ह पु वा.
सर्व०—तुम। उ०—तम छत्री ताते कहु तोय, हम चारण आदु सीर होय।—रामदान लाळस
रू०भे०—तमि, तमु।
वि०—काला वर्ण, श्याम# (डिं को)
क्रि०वि०—वैसे, तैसे। उ०—घम घम वाजै घूघरा, वाजै चम-चम वीच। तम तम यम 'मालू' तवै, म्यार(म) चसम म मीच। —मयाराम दरजी री वात
तमक–स०पु०—१ जोश, आवेश, तेजी २ क्रोध, कोप।
उ०—सळसळ कमठ पीठ 'लचक सेस रा, दहल पद कक हक वक देस देस रा। पाण तज अनमी भरै पेस रा, तमक किण सिर बद 'सगतेस' रा।—रामलाल बारहठ
रू०भे०—तमख।
तमकणो, तमकबो–क्रि०अ०—१ तमकना, क्रोध करना।
उ०—१ तद रावजी जैतसी पर विराजी हा सू तमक'र कयो, 'जैतसी नू काई दू भाठा कै ?'—द दा
उ०—२ तद कान्हो बोल्यो तमक, मत करणा मऋर। वीरोटण पण वेखता, नह सोभ चढै नर।—ठा भूभारसिंह मेडतियो
२ आवेश दिखलाना।
तमकणहार, हारो (हारी), तमकणियो—वि०।
तमकाडणो, तमकाडबो, तमकाणो, तमकाबो, तमकावणो, तमकाववो —प्रे०रू०।
तमकिओडो, तमकियोडो, तमक्योडो—भू०का०कृ०।
तमकीजणो, तमकीजबो—भाव वा०।
तमकणो, तमकबो, तमक्कणो, तमक्कबो, तमखणो, तमखबो—रू०भे०।
तमकसास–स०पु० [स० तमकश्वास] एक प्रकार का दमा जिससे फेफडों मे घरघराहट होती है और कठ रुक जाता है।
तमकियोडो–भू०का०कृ०—१ क्रोध किया हुआ २ आवेस मे आया हुआ।
(स्त्री० तमकियोडी)
तमक्कणो, तमक्कबो—देखो 'तमकणो, तमकबो' (रू भे)
उ०—बीर बक्तर पार कै, दै तीर तमक्कै, दत दमक्कै हीर लौं, चिनगी किं चमक्कै।—व भा
तमखणो, तमखबो—देखो 'तमकणो तमकबो' (रू भे) उ०—तस धरे मूछ रवतेस बोलै तमख, हुआ वेद लेख म्हें कीध हथा। —सूरजमल आसियो
तमगण—देखो 'तमोगुण' (रू भे) उ०—गया तमगण करेह, हेता सुध वसता हिवि। कर मुझ माळ ठवेह, जळ वसा जोगी थया।—जेठवा
तमगो—देखो 'तुकमो' (रू भे)
तमचर–स०पु० [स० तमीचर] १ निशाचर, राक्षस (अ मा , ना मा)
२ उल्लू पक्षी. ३ सूर्य (अ मा)
रू०भे०—तमचार, तमचारी, तमचूर, तमाचारी, तमीचर।
तमचररिपु–स०पु० [स० तमीचररिपु] सूर्य (क कु.बो)

तमचार-स०पु०—१ सध्याकाल, सायकाल का समय (अ मा)
२ देखो 'तमचर' (रू भे.)
तमचारी-स०स्त्री०—१ रात्रि, निशा (ना.मा)
२ देखो 'तमचर' (रू.भे)
तमचुर-स०पु० [स० ताम्रचूड] मुर्गा, कुक्कुट।
तमचूर—देखो 'तमचर' (रू भे)
तमछीर-वि०—श्वेत कृष्ण वर्ण* (डि को)
तमजा-स०स्त्री०—१ पार्वती. २ दुर्गा।
तमजारण-स०पु० [स० तमोदारण] सूर्य। उ०—अरघ दीव अरक नू, जयो जगमग तमजारण।—भगवान रतनू
तमजाळ-स०पु०—अधेरा, तिमिर।
तमणियो, तमण्यो-स०पु०—स्त्रियो द्वारा धारण किया जाने वाला गले का एक जेवर।
उ०—हिवड़ा नै हार ज लावजो, म्हारै हिवडा नै हार ज लाव जो। म्हारै तमण्यो पाट पडावजो, हो भवर म्हानै खेलण द्यो गणगोर।
—लो गी
तमतमाणो, तमतमाबो-क्रि०अ० [स० ताम्र] १ धूप या क्रोध के कारण चेहरा लाल होना, तमतमाना. २ चमकना ३ कांप करना।
तमतमाणहार, हारौ (हारी), तमतमाणियो—वि०।
तमतमायोडो—भू०का०कृ०।
तमतमाईजणो, तमतमाईजबो—भाव० वा०।
तमतमायोड़ो-भू०का०कृ०—१ क्रोध या धूप से लाल पडा हुआ, तमतमाया हुआ।
(स्त्री० तमतमायोडी)
तमतमाहट-स०स्त्री०—तमतमाने का भाव।
तमतमो-वि०—१ तीक्ष्ण स्वाद का, चरपरा, चटपटा।
उ०—पापड नि पापडी, तू जमसि जोभ वापडी ? तीखा तमतमां राईता, मींठा मधुरां, गळ्या, तळ्या, मचमचा इस्या सालणा तणी युगति।—व.स
२ क्रोधयुक्त।
तमता-स०स्त्री० [सं०] तम का भाव, अधेरा।
तमनास-स०पु०—दीपक (ह.ना)
तमनीत-स०स्त्री० [स० तमोनीत] रात्रि (अ मा)
तमपा—देखो 'तपा' (रू भे.)
तमप्रभ-स०पु० [स०] एक नरक (पौरा)
तममात्री-स०स्त्री०—रात्रि, निशा। (ना मा.)
तममाळ-स०पु०—राहु। उ०—मितमाल खळा तममाळ तिसो, भ्रम ढाल धरा अवदाळ इसौ।
तमरग-स०पु०—एक प्रकार का नीबू।
तमर-स०पु० [स० तिमिर] अधेरा, अन्धकार (डि.को)
तमरार-स०पु० [स० तिमिर+अरि] सूर्य (अ मा)
तमरिप, तमरिपि-स०पु० [स० तम+रिपु] प्रकाश (ह ना)
तमवाळी-स०स्त्री०—रात्रि, निशा (डि.को)
तमस-स०पु० [स० तमस्] १ अन्धकार, अधेरा (ह ना)
उ०—सब तमस मिटियो प्रगटयौ सराह।—ध व ग्र
२ अज्ञान का अधकार. ३ तमोगुण।
तमसा-स०पु० [स०] १ तमसा नदी, टौंस नाम की नदी।
उ०—विमवामित्र प्रसन्न वर, तमसा तटि निसि ताम।—रामरासो
स्त्री०—रात्रि (ना मा.)
तमसि, तमसी-स०स्त्री०—रात्रि (ह ना)
तमस्र—देखो 'तमिस्र' (रू भे) (ह ना)
तमस्वती, तमस्विनी-स०स्त्री० [स० तमस्विनी] १ रात्रि, रात
२ हल्दी।
तमस्सुक-स०पु० (अ०) वह लिखित पत्र जो ऋण प्राप्तकर्ता ऋण के प्रमाण-स्वरूप लिख कर ऋणदाता को देता है। ऋणपत्र, दस्तावेज।
तमहडी-स०स्त्री०—हाडी के आकार का एक ताम्रपात्र।
तमहर—देखो 'तमोहर' (रू भे.)
तमा-सर्व०—तुम।
कहा०—आज हमा तो काल तमा—आज हम तो कल तुम, ससार मे परस्पर एक दूसरे व्यक्ति से काम पडता ही है।
तमाम-वि० [अ० तमाम] १ सब, सपूर्ण, कुल, पूरा।
उ०—रात दिवस हिक राम, पढ़िए जो आठू पहर। तारे कुटव तमाम मिटै चोरासी मोतिया।—रायसिंह सादू
रू०भे०—तम्माम।
तमास्ती-सर्व०—तुम, तुम्हारी। उ०—वाजबी है—तमास्ती री पगरखी घिसकावा हा'र दिन तोडा हा।—वरसगाठ
तमा-स०स्त्री० [स० तम] १ अधेरा. २ रात, रात्रि।
तमाकु, तमाकू, तमाखू-स०स्त्री० [पुर्त० टबैको] एशिया, अमेरिका तथा उत्तर यूरोप मे अधिकता मे पाया जाने वाला प्राय तीन से छ. फुट की ऊचाई का एक पौधा जिसकी पत्तियो को लोग नशे के लिए खाते, पीते तथा सूघते है। इसके पते १ से २ फुट तक लम्बे, विषाक्त और नशीले होते हैं। भारत मे विभिन्न प्रातो मे भिन्न-भिन्न समय पर इसकी फसल तैयार की जाती है। पौधे पर ही जब पत्ते पील पडने लगते हैं तब उन्हें काट कर धूप मे सुखा लिया जाता है और सूखने पर ये ही पत्ते नशे के लिए भिन्न-भिन्न रूपो मे काम मे लिए जाते हैं।
वि०वि०—अमेरिका की खोज के पूर्व एशिया एव यूरोप महाद्वीप के निवासी तमाकू के व्यवहार से पूर्ण अनभिज्ञ थे। सन् १४९२ मे जब कोलबस सर्व प्रथम अमेरिका पहुचा, तब उसने वहाँ के लोगो को तमाकू के पत्ते चबाते और इसका धूआं पीते देखा। सन् १५३९ मे स्पेन वाले इसे पहले-पहल यूरोप ले गए थे। भारत मे इसे पहले-पहल पुर्तगाली पादरी लाए थे। सन् १६०५ मे असदबेग ने बीजापुर मे देखा

था और वहा से वह अपने साथ दिल्ली ले गया। धीरे धीरे इसका प्रचार बहुत बढ़ गया। आज समस्त ससार मे इसका प्रचार इतना हो गया है कि प्राय पुरुष, स्त्रिया, बच्चे, बुड्ढे सभी किसी न किसी रूप मे इसका प्रयोग करते है। कुछ इसके पत्तो को चूर कर खाते है, कुछ इसके महीन चूर्ण को सूघते हैं तथा अन्य धूआ खीचने के लिए नली मे या चिलम पर जलाते है।

उ०—१ समज तमाकू सूघनी, कुत्तो न खावै काग। ऊट टाट खावै न आ, अपणी जाण अभाग।—ऊ का

उ०—२ ध्यान तमाखू धरै ग्यांन गुण धूळ गटागू। दीय हाथ प्रभु दिया एक दियो भटाणू।—ऊ का

क्रि०प्र०—खाणी, पीणी, बाळणी, सूघणी।

मुहा०—१ तमाकू चढणी—नशा हो जाना २ तमाकू भरणी—१ तमाकू का धूआ पीने के लिए चिलम या हुक्का तैयार करना, २ खुशामद करना।

रू०भे०—तमाकू, तबाखू, तमाकू, तमाखू, तम्माकू।

तमाचारी—देखो 'तमचर' (रू भे) (ना मा)

तमाचो-स०पु० [फा० तबान्च] १ हथेली और उगलियो का गाल पर किया हुआ प्रहार। तमाचा, थप्पड, झापट।

क्रि०प्र०—खाणी, देणी, मारणी, लगाणी।

२ तमाशा, खेल।

तमादी-स०स्त्री० [अ०] किसी लेन-देन अथवा बात आदि की अवधि या मियाद गुजरने का भाव।

तमार-स०पु०—एक प्रकार का वृक्ष। उ०—पाडर पुन रांयन तरु तमार। तहा सरु बकायन सरस तार।—मयाराम दरजी री वात

तमारा-सर्व०—तुम्हारा। उ०—सुर भुवण रा महत तोरु दरबार तमारा। कहै मेरकिमेर हमें गिमि पाप हमारा।—पी ग्र

तमारि-स०पु० [स०] सूर्य।

तमारू-सर्व०—तुम्हारा। उ०—गरना डूगर जागिया, फरवया रेणु-वन। मेल्ह तमारू मन, उकोळ थ्यु वरडा घणी।—जेठवा

तमारो-सर्व०—तुम्हारा।

तमाळ-स०पु० [स० तमाल] १ एक वृक्ष विशेष जिसकी ऊचाई लगभग २०-२५ फुट होती है और जिसके पत्ते तेजपात और छाल दालचीनी कहलाती है।

यौ०—तमाळपत्र।

२ वरणवृक्ष ३ 'पिंगळ सिरोमणि' के अनुसार १६ गुरु और १६ लघु का छद विशेष, इसका दूसरा नाम करम भी है ४ अन्त मे एक गुरु लघु सहित उन्नीस मात्रा का मात्रिक छद विशेष।

स०स्त्री०—५ एक प्रकार की तलवार. ६ मूर्छा, बेहोशी।

उ०—होस उडै फाटै हियो, पडै तमाळा आय। देखे जुध तसवीर द्रग, मावडिया मुरझाय।—बा दा.

तमाळक-स०पु०—१ तमालवृक्ष २ तेज-पत्ता. ३ बास की छाल।

तमाळी-स०स्त्री०—१ ताम्रवल्ली नाम की लता. २ वरुण वृक्ष. ३ तमाल वृक्ष।

तमास-स०पु० [अ० तमाशा] तमाशा, खेल, क्रीडा।

उ०—धाकिया धार मदधार छाक, दहूक नगार वज नद डाक। रमा'र हूर मिळ फरर गाग, तिण वार सूर देखे तमास।—दि म

तमासगीर-स०पु० [अ० तमाश+फा० गीर] १ तमाशा देखने वाला।

उ०—तमासगीर भीत घणो ही जारै-जारै लागियो आवै, मगळा वाह-वाही करै।—राठोड ठाकुरसी जैतसिघोत री वारता

२ तमाशा करने वाला। उ०—धालत गम तमासगीर नेड़ा न सळगा।—किसोदास गाडण

तमासबीन-स०पु० [अ० तमाश+फा० बीन] देखो 'तमासगीर'।

तमासबीनी-स०स्त्री० [अ० तमाश+फा० बीन+रा०प्र०ई] खेल या तमाशा देखने का काम.

तमासय—देखो 'तमासो' (रू भे) उ०—पखियल सूर निडर आराण, भाळै रथ थाभ तमासय भाण। खिले मिळ मचर मूचर हथार, हूवै सग जोगण देख हुलास।—मे रू

तमासाई-स०पु०—तमाशा देखने वाला।

तमासागीर—देखो 'तमासगीर' (रू भे)

तमासू, तमासो-स०पु० [अ० तमाश] वह दृश्य या खेल जिसके देखने से मनोरजन हो। तमाशा, खेल। उ०—मो डखडा तो जोध रा तमासा म्होकमसिघ किताई कीधा।—प्रतापसिघ म्होकमसिघ री वात

क्रि०प्र०—करणी, कराणी, देखणो, होणो।

मुहा०—तमासा करणो—हसी-मजाक करना, दिल्लगी करना।

तमि, तमी-स०स्त्री० [स० तमा] १ रात्रि (ह ना) २ देखो 'तम' (रू भे)

तमिनाथ-स०पु० [स०] चन्द्रमा, निशिनाथ।

तमियो-स०पु०—मिट्टी का पात्र विशेष। उ०—मूद छाट कर तमियो भर ल्यायो, गेरयो हाडी माय। गरण-नरण टाडी गरणावै, झाग ऊफण्या जाय।—लो गी

मुहा०—तमियो सिराणै धर नै सोणी—मिट्टी के पात्र आदि हीन वस्तु को भी सिरहाने रख कर सोना, दरिद्र होना, गरीबी मे दिन तोडना।

तमिस्र-स०पु० [स०] १ अधेरा, अधकार।

यौ०—तमिस्र पक्ष।

२ क्रोध, गुस्सा ३ एक नरक (पौरा)

रू०भे०—तमस्र।

तमिस्रपक्ष-स०पु० [स०] किसी मास का कृष्णपक्ष।

तमिस्रा-स०स्त्री० [स०] अधेरी रात, निशा।

तमी-स०स्त्री० [स०] रात्रि, निशा। उ०—सो सुणता ही तिण ही अवसेस तमी रा अधकार मे मागळियाणी स्वकीय सुत चूडा समेत आपरी वसी रो एक जाट औठोपै साथ आयो।—व.भा

तमीचर—देखो 'तमचर' (रू भे)

तमीज़-सं०स्त्री० [अ०] १ भले और बुरे को पहिचानने की शक्ति, विवेक, ज्ञान २ अदब, कायदा।
तमीणो-सर्व० (स्त्री० तमीणी) तुम्हारा। उ०—हुआ तमीणो हेत, सर सारो ही सोहियो। सर मे पतो डेर, नहीं मुग्रावे हुज रै।
तमीपति-सं०पु० [सं०] निशापति, चंद्रमा।
तमीसत-सं०पु०—चंद्रमा।
तमु—देखो 'तम' (रू.भे.)
तमुक्काय-सं०पु० [सं० तमस्काय] अन्धकार (जैन)
तमूरो—देखो 'तबूरो' (रू.भे.)
तमूळ—देखो 'तंबूळ' (रू.भे.)
तमे-सर्व०—तुम।
तमेला-सं०पु०—किसी महल के तीसरे खंड की छत, हवेली की सबसे ऊपरी छत।
तमोगण—देखो 'तमोगुण' (रू.भे.)
तमोगणी—देखो 'तमोगुणी' (रू.भे.) उ०—चरा चोळ मूछ भूहा चड़ी, तामस ऊठि तमोगणी। मेह री गाज जाणी मरद, नारदूळ काना सुणी।—मे म
तमोगुण-सं०पु०—सांख्य के अनुसार प्रकृति का तीसरा गुण जिसके प्राधान्य से मनुष्य विवेकहीन कार्य करता है।
रू०भे०—तमगुण, तमोगण।
तमोगुणी-वि०—जिसकी प्रकृति में तमोगुण की प्रधानता हो, मध्यम-वृत्ति वाला, अहंकारी, क्रोधी।
रू०भे०—तमोगणी।
तमोघण, तमोघन-सं०पु० [सं० तमोघ्न] १ अग्नि २ चंद्रमा. ३ सूर्य।
तमोटी-सं०स्त्री०—सोते समय चद्दर आदि ओढ़ने की क्रिया विशेष जिसमें ओढ़ने वाला वस्त्र का एक छोर सिर के नीचे दबे एवं दूसरा छोर दोनों पैरों के बीच दबे तथा दोनों छोरों का कपड़ा खूब तना हुआ रहे। उ०—ना मर्ग माळी मोचयो ना मेरी जड गई पताळ, सूत्यो पूगो चौड़ाणु नी रोड सूत्यो र तमोटो ताण—लो गी.
तमोतम-सं०पु०—गहन अंधकार, घोर अंधकार।
तमोदरसन-सं०पु० [सं० तमोदर्शन] वह ज्वर जो पित्त के प्रकोप से उत्पन्न हो।
तमोनुद-सं०पु० [सं०] १ ईश्वर २ चंद्रमा ३ अग्नि।
तमोभिद-सं०पु० [सं०] १ जुगनू २ दीपक।
वि०—अंधकार को दूर करने वाला।
तमोमणि-सं०पु० [सं०] जुगनू।
तमोमय-वि० [सं०] १ तमोगुणयुक्त, क्रोधी २ अज्ञानी ३ अंधकार-युक्त।
सं०पु० [सं०] राहु।
तमोर—देखो 'तमोळ' (रू.भे.)
तमोरी—देखो 'तंबोळी' (रू.भे.) उ०—आप मिळ्या विन कळ न पड़त है, त्यागे तिलक तमोरी। मीरा के प्रभु मिळज्यो माधो, सुणज्यो अरजी मोरी।—मीरां
तमोळ-सं०पु०—१ तांबूल, पान बीड़ा २ उमंग।
उ०—पुटिया टोळ पचोळ, चोळ चंग चित आळा। झामर झोळ तमोळ, मोळ मन मकडी जाळा।—दसदेव
३ क्रोध, गुस्सा।
तमोळी—देखो 'तंबोळी' (रू.भे.)
उ०—सांझ पड़ै दिन आथवै रे, तमोळण लावै पान।—लो गी.
(स्त्री० तमोळण)
तमोविकार-सं०पु० [सं०] तमोगुण के कारण उत्पन्न होने वाला विकार।
तमोहत-सं०पु० [सं०] दस ग्रहों में से एक।
तमोहपह-सं०पु० [सं०] १ सूर्य. २ चंद्रमा ३ अग्नि ४ ज्ञान।
वि०—अंधकार दूर करने वाला, अज्ञानता हटाने वाला।
तमोहर, तमोहरि-सं०पु० [सं०] १ सूर्य २ चंद्र. ३ अग्नि. ४ ज्ञान।
वि०—१ अंधकार हरने वाला. २ अज्ञान दूर करने वाला।
रू०भे०—तमहर।
तम्माकू—देखो 'तमाकू' (रू.भे.)
तम्माम—देखो 'तमाम' (रू.भे.)
तम्ह-सर्व०—तेरे, तुम्हारे, तुझे।
तम्हा-सर्व०—तुम।
तम्हारा-सर्व०—तुम्हारा।
तम्हीणा, तम्हीणा, तम्हीणो-सर्व०—तुम्हारा, आपका।
उ०—हरि जस रस साहस करै हालियो, मो पडिता वीनती मोख। अम्हीणा तम्हीणं आया, स्रवण तीरथे वयण सदोख।—वेलि
तम्हे-सर्व०—तुम। उ०—तम्हे कहो त्रिभुवन नो राजा श्रीजी खड महीनऊ।—रुकमणी मगळ
तय-सं०पु० [अ०] १ निश्चित, स्थिर २ पूरा किया हुआ, समाप्त।
क्रि०प्र०—करणी, कराणी, होणी।
३ निर्णीत, फैसला प्राप्त।
तयाळी, तयाळीस—देखो 'तयाळीस' (रू.भे.)
तयाळीसो—देखो 'तयाळीसो' (रू.भे.)
तयांसी—देखो 'तइयासी' (रू.भे.)
तयार—देखो 'तैयार' (रू.भे.) उ०—तद कुवरसी ऊठ सूपण पहर नै झिलम टोप बखतर पहर तयार हुवो।—कुवरसी साखला री वारता
तयारी—देखो 'तैयारी'। उ०—सो उण वरडो सू साम्है मेडतो ज्यू री त्यू नजर आवै तीसू फौज आई देख माहिला पण तयारी करणै लागिया।—मारवाड रा अमरावा री वारता
तयाळीसो, तयाळो—देखो 'तयाळीसो' (रू.भे.)
तय्यार—देखो 'तैयार' (रू.भे.) उ०—अै तो पाचसो आदमी था निमित्त तय्यार हुवा छै।—पलक दरियाव री वात

तरग-स०पु०—१ तालाव, सरोवर। उ०—तरा जड ऊपडं भरा सूकं तरग।
२ घोडा ३ एक शुभ रग का घोडा विशेष ४ ग्रथ का अध्याय या विभाग विशेष।
स०स्त्री०—५ हवा से पानी मे आने वाला उछाल, लहर, हिलोर। उ०—साजन खारा खाड सा, केसर जिसा कुरग। मैला मोती सारसा, ओछा सिंधु तरग।—अज्ञात
पर्या०—इलोळ, उभळ, उभल्ल, उभेल, उतकलिका, उरमी, उळघी, किलोळ, कावळी, छोळ वेक, वेळ, भग, भ्रमर, लहर, लहरी, वेळा, वेळावळ, हिलोळ।
क्रि०प्र०—ऊठणी।
६ मन की मौज, उमग। उ०—१ आ वात सुणसी-सुणावसी ज्याने कद्रप कौ फळ ग्राछो दरसावसी। इण मे नवरस की तरग निजर आवसी।—पना वीरमदे री वात
उ०—२ भवसागर मे नवसै नदिया, उलट वाही मे जाही। दुख-सुख तरग उठै बहुतेरी, तीन लोक दुख पाही।
—श्री हरिरामजी महाराज
मुहा०—तरग आणी—उमग उठना, मौज मनाना, सनक आना।
यौ०—तरगवाज।
७ सगीत की स्वर-लहरी, स्वरो का उतार-चढाव ८ हाथ मे पहिनने की एक प्रकार की चूडी जो सोने के तार को उमेठ कर बनाई जाती है।

तरगक-स०पु० [स०] १ पानी की लहर. २ स्वरो का उतार-चढाव, स्वर-लहरी।

तरगण, तरगणी, तरगनि, तरगनी-स०स्त्री० [स० तरगिणी] नदी, सरिता (ह ना) उ०—उमगी सुरखी कुच कोर कढ़ी, मनु बूडनि कज कलीनि चढी। त्रवळी तन रोम तरगनि सी, मधु सिंधु मे नाभिय कज लसी।—ला.रा.
रू०भे०—तरगिणी।

तरगबाज-वि० [स० तरंग+फा प्र बाज] १ उमग वाला, मौजी २ सिनकी।

तरगभीरू-स०पु० [स०] चौदहवें मनु के एक पुत्र का नाम।

तरगभ्रजण-स०पु० [स० तरग-भ्राजन] जल, पानी (ना डि को)

तरगवती-स०स्त्री० [स०] नदी (डि को)

तरगाळि, तरगाळी-स०स्त्री० [स० तरग+आलुच्] नदी, सरिता।

तरगिणी- देखो 'तरगणी' (रू भे)

तरगित-वि० [सं०] लहरता हुआ, हिलोर भरता हुआ।

तरगी, तरगीलो-वि० [स० तरग+रा प्र ई, इलो] १ तरगयुक्त २ मनमौजी, मनोनुकूल करने वाला. ३ वेपरवाह ४ सिनकी।

तरज-स०स्त्री०—लाख की बनी हुई एक प्रकार की चूडी जिसे केवल सधवा स्त्री अपनी कलाई मे धारण करती है।

तरजणप्रथी-स०पु०—लोहा (अ मा)

तरड-स०पु० [स०] १ नाव, नौका (ह ना) २ नाव खेने का डाड ३ वृक्ष। उ०—उचड नवखड तरड ऊडड, चड कुमड प्रभु वहे सर चड।—सू.प्र

तरत-क्रि०वि०—१ जोर से, तेजी से। उ०—उत्तर आज स उत्तरउ, पाळउ पडइ तरत। माळवणी इम वीनवइ, हू किम जीवू कत।
—ढो मा
२ देखो 'तुरत' (रू भे)
स०पु० [स०] १ समुद्र २ मेढक।

तरती-स०स्त्री० [स०] नाव, नौका।

तरद-स०पु० [स० तरु+इन्द्र] कल्प-वृक्ष (डि को)

तर-स०पु० [स० तरु] १ वृक्ष, पेड। उ०—तर घर मूका नदी तडागा।—ऊ का
यौ०—तरअरि।
२ तैरने की क्रिया या भाव।
[स०] ३ पार होने या करने की क्रिया. ४ अग्नि।
[स० त्वरा] ५ वेग (अ मा)
स०स्त्री०—६ मस्ती मे आए हुए ऊट की नाक की वालियो से बाधी जाने वाली खीप के रेशो, ऊँट की पूछ के बाल या जटा की बनी रस्सी।
रू०भे०- -तरक, तरक्का।
वि०—[फा०] १ भीगा हुआ, गीला, नम।
मुहा०—तर होणी—१ पूर्ण आर्द्र होना, गीला होना २ सजल नेत्र होना।
२ शीतल, ठडा।
मुहा०—तबियत तर होणी—जी ठडा होना, दिली प्रसन्नता होना।
३ हरा-भरा, जो सूखा न हो ४ मालदार, भरा-पूरा। ज्यू—तर आसामी। ५ गहरा हरा, (एक रग)। उ०—वावहिया तर-पखिया तइ किउ दीन्ही लोर। मइ जाण्यउ प्रिउ आवियउ, ससहर चद चकोर।—ढो मा.
अव्य०—तो। उ०—अन हरिदास कमोदनी इस्ट एक विसास। ससि निवस्या विकसै भलो, नही तर रहै उदास।—ह पु वा
क्रि०वि०—१ तले, नीचे। उ०—पीछे पडगनो खीचियावाड रो सू तर री धरती गाव १४० खीची देवराज मानसिघोत नू मार लियो।
—द दा
२ शीघ्र, जल्दी (ह ना) ३ शनै, धीरे। उ०—यू तर तर पडता दिन आसी, जोहा कर पद चख थक जासी। पाकड जम घातेला पासी, पापी इण दिन ने पछतासी।—वगसीराम लाळस
यौ०—तर-तर।
प्रत्य०—गुणवाचक शब्दो के आगे लगाया जाने वाला प्रत्यय। इसका प्रयोग एक वस्तु का गुण दूसरी की अपेक्षा अधिक बताने के लिए किया जाता है।

तरग्ररी—स०पु०यौ० [सं० तरु+ग्ररि] हाथी (ग्र मा.)
तरई—स०स्त्री० [सं० तारा] नक्षत्र (जैन)
तरक—स०स्त्री० [सं० तर्क] १ विचार-विमर्श, सोच-विचार।
क्रि०प्र०—करणी।
यौ०—तरक-चरचा।
२ विचार। उ०—उनसे तुम्हारा घणा इकळास था तो जो बात तुमने नेळं बैठ कर करी उसका तरक करो।—पदमसिंघ री वात
३ देखो 'तर' ६ (रू.भे.)
रू०भे०—तरक्क।
तरकक—स०पु०—१ तर्क करने वाला, विचार करने वाला.
२ याचक।
तरकणो, तरकबो—देखो 'तडकणो, तडकवो' (रू भे.)
तरकवितरक—स०पु०यौ० [सं० तर्कवितर्क] १ सोच-विचार, विचार-विमर्श २ वादविवाद, बहस।
तरकस—सं०पु० [फा० तरकश] तीर रखने का चोंगा, तूणीर।
उ०—पतळी सी केळ थी उणसू तरकस टाक जाजम बिछाय बैठा।
—ठाकुर सी जैतस्योत री वारता
पर्या०—उपासग, तरकस, तून, तूनीर, निखग, भाथो, विसखधाम, सरधि।
रू०भे०—तरगस, तरगस्स।
ग्रल्पा०—तरकसी।
तरकसासतर—स०पु० [सं० तर्कशास्त्र] १ वह शास्त्र जिसमे उचित तर्क या विवेचना ग्रादि करने के नियम लिखे हो। सिद्धान्तो का खडन व मडन बताने वाली विद्या २ न्याय शास्त्र।
तरकसी—देखो 'तरकस' (ग्रल्पा., रू भे)
तरकाभास—स०पु० [सं० तर्काभास] ऐसा तर्क जो उचित न हो, कुतर्क।
तरकारी—स०स्त्री० [फा०तर+कारी] १ वह पौधा जिसकी पत्ती, जड, डठल, फल-फूल ग्रादि पका कर भोजन के साथ खाने के काम मे लेते हैं। शाक, सागपात, भाजी। उ०—पाणी घटै तद माहे वेरी दोय सौ च्यार सौ ग्राखारी सी हुवै छै। ऊपर छोतरा, गेहूँ, तरकारी हुवै।—नैणसी
२ खाने के लिए पकाया हुग्रा इसी प्रकार के पौधे का फल-फूल पत्तियां ग्रादि। शाक-भाजी।
३ पका हुग्रा खाने योग्य मास।
तरकी—स०स्त्री०—१ फटे हुए वस्त्र पर लगाया हुग्रा ग्रन्य कपडे का जोड, थिगरी। उ०—दरजी ग्रमरेस' बणाई दोमक, तरकी मुजड कूत खग तीर। रोम रोम खोलाणो रावत, सिध कथा ताहरो सरीर।
—महाराणा ग्रमरसिंघ री गीत
[सं० ताडकी] २ कान मे पहनने का फूल के ग्राकार का एक गहना।
[रा०] ३ देखो 'तरक्की' (रू भे)
वि०—तर्क करने वाला।
तरकीब—स०स्त्री० [ग्र०] युक्ति, उपाय।
क्रि०प्र०—लागणी, सोचणी।
२ शैली, प्रणाली, तरीका ३ सयोग, मेल।
तरकुज—स०पु०यौ०—कूज (ग्र मा)
तरक्क—१ देखो 'तरक' (रू भे) २ देखो 'तर' (६) (रू भे)
उ०—तनै दाखवै जोसवाळी तरक्का। करंदात ग्रालावता क्रासळक्का।
—रा.रू
तरक्कणो, तरक्कबो—क्रि०ग्र०—१ जोर से ग्रावाज करना, जोश से बोलना। उ०—सुत 'धाळ' 'मघ कर' साम छळ, तोले खाग तरक्कियो। ऊपडै वहै न ऊगता, ग्रालमसाह ग्रटक्कियो।—रा रू.
२ तर्क करना, वहम करना। उ०—किता ग्रग्र पाछै किता चक्र कुडे। तरक्कं किता साहता वाह तुडे।—रा रू.
३ देखो 'तडकणो, तडकवो' (रू भे)
तरक्कियोडो—भू०का०कृ०—१ जोर से ग्रावाज किया हुग्रा, जोश से बोला हुग्रा. २ तर्क किया हुग्रा, वहस किया हुग्रा.
३ देखो 'तडकियोडो' (रू भे)
(स्त्री० तरक्कियोडी)
तरक्की—स०स्त्री० [ग्र०] उन्नति, वृद्धि, वढती।
रू०भे०—तरकी।
तरक्क—स०पु० [सं० तर+क्र=तरस्क्र] हरिण (ग्र मा)
तरक्षु—स०पु० [सं०] लकडबघा (डि को.)
रू०भे०—तरच्छ, तरच्छु।
तरखासी—स०स्त्री०यौ०—वह खासी जिसमे वलगम ग्राता हो।
तरखा—स०स्त्री० [सं० तृषा] १ प्यास २ इच्छा. ३ लोभ।
तरगस, तरगस्स—देखो 'तरकस' (रू भे) उ०—१ जिसडै साथ ग्रायो तिसडै हामू नाखि तरगस-री खोळी ग्रर कवाण पकडी जिकं नू तीर वाहे सू गुडदा-पेच कबूतर दाई ग्रळगो जाइ पडै।
—कपूरै वळोच री वात
उ०—२ वे वे कवाण तरगस्स वध, ग्रसुरांण कध गिड जोम ग्रध।
—सू प्र
तरगसवध—स०पु०यौ०—तीर-तरकश धारण करने वाला, योद्धा।
उ०—मिरजे इब्राइम री फौज विचळी पणि मिरजै रै तरगसवधे कहियो पातिसाह योडै साथ सेती छै।—द वि.
तरडणो, तरडवो—क्रि०ग्र०—१ पशु का पतला मल निकलना.
२ क्रोध करना, कोप करना, गुस्सा करना।
तरडाणो, तरडावो—क्रि०स०—१ पतली दस्त करवाना (पशु)
२ क्रोध कराना।
तरडियोडो—भू०का०कृ०—१ पतला मल किया हुग्रा (पशु)
२ गुस्सा किया हुग्रा, क्रोध किया हुग्रा।
(स्त्री० तरडियोडी)
तरडो—स०पु०—१ पशु का पतला मल २ कुपित होकर ग्रावाज देने

का भाव, झिडकी। ३ गर्म पानी या क्वाथ आदि का छींटे डालते हुए किया जाने वाला सिकताव।

तरच्छ, तरच्छु–स०पु० [स० तरक्ष] १ देखो तरक्षु' (रू भे.)' [स० तार्क्ष्य] २ गरुड, पक्षीराज।

तरच्छौ—देखो 'तिरछौ' (रू भे) उ०—सजम जप तप सापरत, व्रत जुत जोग विनाण। आख तरच्छी ईखता, जीता समधा जांण।

—बां दा

(स्त्री० तरच्छी)

तरछणौ, तरछबौ—देखो 'तरसणौ, तरसबौ' (रू.भे)

तरछाणौ, तरछाबौ—देखो 'तरसाणौ, तरसाबौ' (रू.भे.)

तरछायोडौ—देखो 'तरसायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री० तरछायोडी)

तरछावणौ, तरछावबौ—देखो 'तरसाणौ, तरसाबौ' (रू.भे.)

उ०—भोळी अति भूडी भलौ, प्यारौ घर रौ पीव। देख पराई चोपडी, क्यू तरछावै जीव।—पना वीरमदे री वात

तरछावियोडौ—देखो 'तरसायोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री० तरछावियोडी)

तरछियोडौ—देखो 'तरसियोडौ' (रू.भे.)

(स्त्री० तरछियोडी)

तरछौ—देखो 'तिरछौ' (रू भे)

(स्त्री० तरछी)

तरछोल–वि०—१ तरगी, मनमौजी २ चालाक, धूर्त।

तरज–स०स्त्री० [अ० तर्ज] १ गीत या गायन की लय, राग।

क्रि०प्र०—निकाळणी, बैठावणी, सुणावणी।

स०पु० [स० तज्ज] २ बादल (अ मा.)

तरजणी–स०स्त्री० [स० तर्ज्जनी] अगूठे की पास की उगली, तर्जनी।

तरजणीमुद्रा–स०स्त्री० [स० तर्जनीमुद्रा] तत्र की एक मुद्रा जिसमे बाये हाथ की मुट्ठी बाध कर तर्जनी और मध्यमा को फैलाते हैं।

तरजणौ, तरजबौ–क्रि०अ० [स० तर्जनम्] १ डाटना, डपटना, धमकाना, डराना। उ०—आपरा अगज मैं आई असाधारण आपदा ईखि मडोवर रा महीप हम्मीर री माता बूदी रा नरेस हम्मीर री सासु मडोवर ही द्विजा नू देण री जणाइ आपरा अप्रतिभ तनुज नू तरजियौ।—व भा

२ सकेत करना। उ०—वो'रा थळ विहुणा तिल खळवत तरजै। वूढी चेली नै साधु ज्यूं बरजै।—ऊ का.

तरजणहार, हारौ (हारी), तरजणियौ—वि०।

तरजवाडणौ, तरजवाड़बौ, तरजवाणौ, तरजवाबौ, तरजवावणौ, तरजवावबौ, तरजाडणौ, तरजाडबौ, तरजाणौ, तरजाबौ, तरजावणौ, तरजावबौ—प्रे०रू०।

तरजिअोडौ, तरजियोड़ौ, तरज्योडौ—भू०का०कृ०।

तरजीजणौ, तरजीजबौ—भाव वा०।

तरजणौ, तरजबौ—रू०भे०।

तरजमौ—देखो 'तरजुमौ' (रू भे.)

तरजियोडौ–भू०का०कृ०—१ डाटा हुआ, धमकाया हुआ. २ संकेत किया हुआ।

(स्त्री० तरजियोडी)

तरजुई–स०पु० [फा० तराजू] छोटी तराजू।

तरजुमौ–स०पु० [अ० तरजुमा] भाषानुवाद, भाषातर, उल्था।

उ०—पातसाह अकबर फिरग रा पातसाह कनै सय्यद मुजफ्फर नू वकील मेलियौ, खत लिख दीनौ, तौरत अंजील जबूरआ किताबा रौ तरजुमौ मगायौ।—बा.दा ख्यात

क्रि०प्र०—करणौ।

रू०भे०—तरजमौ।

तरझगर–स०पु०—१ वृक्ष समूह, झाड-झखाड।

उ०—द्वादस कोस अजाद है, ओयण तरझगर। सरणै आवै जगत सो, प्रतपाळ करै पर।—ठा. जूझारसिंघ मेडतियौ

२ वन, जगल। उ०—लंगर लज्जा रा तरझगर रा लाडा, गौरव गाया रा गाहिड रा गाडा।—ऊ.का

तरझणौ, तरझबौ—देखो 'तरजणौ, तरजबौ' (रू.भे.)

तरझियोडौ—देखो 'तरजियोड़ौ' (रू.भे)

(स्त्री० तरझियोडी)

तरण–वि० [स० तरुण] १ युवा, वयस्क। उ०—आलम का अडसाळ ईखे गूडर आसना। गढ़ का गा गढ़पति कन्हइ, व्रध अर तरणा बाळ।

—अ वचनिका

२ तैरने वाला।

यौ०—तरणतारण।

स०पु०—१ युवक। उ०—गुरु गुर है चिरजीव, जिण जोडी कर मेळ। हूं तरणी थू तरण पिव, करलै रस रग केळ।—र रा

[स० तरणि] २ सूर्य। उ०—१ घण मोहर अराबा गज घटा मोहरि रावत घणा। वरियाम दहू झळहळ वरण, तरण जाणि ग्रीखम तणा।—सू.प्र.

उ०—२ उडै खाग ऊपरा, हसै नारद रिख हासौ। विढ़ण एम वेखवै, तरण रथ थाभि तमासौ।—सू प्र.

३ तैर कर नदी, सरोवर आदि को पार करने की क्रिया।

[स० तरुण] ४ बछडा (ह ना) ५ प्रकाश, उजाला (नां.मा.)

स०स्त्री० [सं० तरुणी] ६ युवा स्त्री। उ०—अंब आदि तरण आमासे। परम कवर लखि हरख प्रकासे।—रा रू.

[स० तरणी] ७ नाव, नौका।

रू०भे०—तरन।

तरणजा–स०स्त्री०—देखो 'तरणिजा' (रू.भे)

तरणसुतण–स०पु० [स० तरणिसुत] १ यमराज. २ कर्ण. ३ शनिश्चर।

रू०भे०—तरणिसुत।
तरणाई—देखो 'तरुणाई' (रू भे)
तरणाट-स०पु० (अनु०) १ ध्वनि विशेष. २ तार वाद्यो की ध्वनि।
उ०—घूघरा तणा झरणाट हुय घमाघम, वैण रा तग्र तरणाट वाजे।
—सेतसी बारहठ
२-देखो 'तरणाटी' (रू भे)
तरणाटी-स०स्त्री०—कोप, गुस्सा।
रू०भे०—तरणाट।
तरणाटो-स०पु०—१ कोप, गुस्सा २ देखो 'तरणाट' (रू भे)
तरणापउ, तरणापौ-स०पु०—तरुणावस्था, युवावस्था।
उ०—जिम जिम मन ऊमले किग्रइ, तार चढती जाइ। तिम तिम मारवणी तणइ, तन तरणापउ थाइ।—ढो मा.
रू०भे०—तरुणापौ।
तरणाय-स०पु० [स० तरणि] सूर्य। उ०—निमो भव भाण निमो ग्रह राव, निमो तरणाय निमो तमचूर।—सूरज प्रस्तुत
तरणि-स०पु० [सं० तरणि] १ सूर्य। उ०—तुलि बैठो तरणि तेज सम तुलियां, भूप कणय तुलतौ भू भांति। दिणि दिणि तिणि लघुता ग्रामै दिन, राति राति तिणि गौरव राति।—वेलि.
२ आक, मदार. ३ किरण।
स०स्त्री०—४ नौका, नाव। उ०—तो पै धूळि सिल तरणी वारी सारै है। कहो रार्घो तरणि उडै छै त्यो साको स कुळ छूडै।—र ज.प्र
[स० तरुणी] ५ स्त्री, तरुणी। उ०—जिण फेरा लीधा तरणि, योगी करि रेघुनाथ।—रा रा
रू०भे०—तरणी, तराणि।
तरणिकुमार-स०पु०यौ०—देखो 'तरणसुतण' (रू भे)
तरणिजा-स०स्त्री० [स०] सूर्य की पुत्री यमुना नदी।
रू०भे०—तरणजा, तरनिजा।
तरणितनय-स०पु०यौ०—देखो 'तरणसुतण' (रू भे)
तरणितनूजा-स०स्त्री०यौ० [स०] देखो 'तरणिजा' (रू भे.)
तरणीसुत—देखो 'तरणसुतण' (रू भे)
तरणी—देखो 'तरणि' (रू भे) उ०—१ पै रज रिम वरणी गति पाई। वळ तरणी भीवर तिरवाई।—र ज प्र.
उ०—२ पुरु गुर है चिरजीव, जिमी जोडी कर मेल। हू तरणी थू तरण पिव, करलै रम रग केळ।—र रा.
उ०—३ भीकै खगे जग -भोकणौ, कमाल कथा रोह। रज छा रकोय रथ करै, तरणी धुव तारोह।—रेवतसिंह भाटी
तरणो-स०पु०—तृण, तिनका। उ०—तनु तरणा सरसु हवु, तूटइ रखे हिचोळि। वनिता! तुझ नइ वागस्यइ, रहि रिदयानी योळि।
—मा का प्र.
तरणौ, तरबो—देखो 'तिरणौ, तिरबौ' (रू.भे)
उ०—भीतर घर द्रढ भाव, तौ भांभल दूजी तिके। दुस्तर भव दरियाव, नर तरिया निरझर नदी।—बा दा.
तरणहार, हारौ (हारी), तरणियौ—वि०।
तरवाड़णौ, तरवाडबौ, तरवाणौ, तरवाबौ, तरवावणौ, तरवावबौ—प्रे०रू०।
तराडणौ, तराडबौ, तराणौ, तराबौ, तरावणौ, तरावबौ—क्रि०स०।
तरिओड़ौ, तरियोडौ, तर्योड़ौ—भू०का०कृ०।
तरीजणौ, तरीजबौ—भाव वा०।
तरत-स०पु०—तरु पत्र, पेड के पत्ते। उ०—१ तरत झरत सूकत सरत, दादर मरत, दुरत। प्रीतम घर नन पेखता, वैरण वृणी वसत।
—अज्ञात
क्रि०वि० [स० तुर=वेग] शीघ्र, जल्दी, तुरन्त।
कहा०—तरत नी काकडी तरत नी लागे—तुरन्त बोई हुई ककडी के फल उसी समय नही लगते। परिश्रम का फल यथा समय ही प्राप्त होता है।
तरतम-स०स्त्री०—फल देने की न्यूनाधिक शक्ति (जैन)
तरतात-स०पु० [स० तरु+तात] जल, पानी (अ मा.)
तरतीब-स०स्त्री० [अ०] क्रम, सिलसिला।
तरतोज-स०पु०—उपाय। उ०—पीछै वाघेजी कवर स्ौ वीकैजी नू कयो हु तो आपरी मदत मैं हू सू आप कहो सो तरतोज करू जिण सू आपरै फायदो हुवै।—द दा
तरत्तड-क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी।
तरदीद-स०स्त्री०—काटने या रद्द करने की क्रिया, खडन।
तरदोज— उ०—कदेही सैहला नीकळो नही सो दीवाण पधारो, काळीयेद्रह विराजज्यो म्हे मिण आवा छा। राणोजी भोळा हुआ, या रो तरदोज चूक जाण्यो नही।
—राव रिणमल री वात
तरन—देखो 'तरण' (रू भे)
तरनिजा—देखो 'तरणिजा' (रू भे.)
तरनी—देखो 'तरणी' (रू भे)
तरप-स०स्त्री०—१ तडपने की क्रिया या भाव २ चमक-दमक।
स०पु०—१ सारगी के मुख्य दो तारो के नीचे कसे हुए तार जो एक क्रम विशेष से लगाए जाते हैं और जो सख्या मे कुल १७ होते हैं।
रू०भे०—तरव।
४ देखो 'तरफ' (रू भे)
तरपण-स०पु० [स० तर्पण] १ सतुष्ट करने की क्रिया, तृप्त करने की क्रिया २ कर्मकाण्ड की एक क्रिया जिसमे देव, ऋषि और पितरो को तुष्ट करने के लिए अजली से जल देते हैं, तर्पण।
उ०—अयोध्या कासी परस परागजी आय, मकर रो नाहण करि, फेर पाछा जाय कुवर रा पिड भराया, पछै वैजनाथजी, जगन्नाथजी, परस मारकडेय कुड तरपण किया।—पचदडी री वारता
[रा०] ३ ईंधन।
तरपणी-स०स्त्री० [स० तर्पणी] १ गगा नदी २ खिरनी का वृक्ष।

वि०—तर्पण देने वाली, तृप्ति देने वाली।

तरपत-वि० [सं० तृप्त] तुष्ट, अघाया हुआ, तृप्त।

उ०—धरपत चोरासो धणी, वड चित दत ववज्ज। हव सुरपत तरपत हुवो, नरपत किय नेवज्ज।—पा प्र

तरपी-वि० [सं० तर्पिन्] १ तृप्त करने वाला, सतुष्ट करने वाला या होने वाला २ तर्पण करने वाला।

तरपोख-स०स्त्री० [सं० तरु+पोष] नदी (अ मा.)

तरफ-स०स्त्री० [अ० तरफ] १ ओर, दिशा २ पार्श्व, वगल।

उ०—दोनू तरफां हू त लिया दळ, मिळिया सामत राम महावळ।
—रा रू.

३ पक्ष, पासदारी।

रू०भे०—तरप।

यौ०—तरफदार, तरफदारी।

तरफणो, तरफबो-क्रि०अ०—१ बिजली का चमकना, दमकना।

उ०—जरदोज नी हेम ध्वजा सरफं। तडिता घण वीच मनो तरफं।
—ला रा

२ देखो 'तड़फणो, तडफबो' (रू.भे)

तरफदार-वि० [अ० तरफ+फा० दार] पक्ष मे रहने वाला, पक्षपाती, समर्थक।

तरफदारी-स०स्त्री० [अ० तरफ+फा० दारी] पक्षपात, मदद, हिमायत।

क्रि०प्र०—करणी, वतावणी।

तरफळणो, तरफळबो—देखो तडफणो, तडफबो' (रू भे)

तरफाणू-क्रि०वि०—ओर से, तरफ से। उ०—झळ फद जळाणू जळ वरसाणू वहु तरफांणू निहचतू।—भगतमाळ

तरव-स०पु०—देखो 'तरप' (३) (रू भे)

तरबतर-वि० [फा०] खूब भीगा हुआ, सराबोर।

तरबहणो-स०पु०—परात के आकार का तावे या पीतल का एक पात्र जिसका उपयोग ठाकुरजी को स्नान कराने के लिए किया जाता है।

तरबूज, तरबूजो-स०पु० [फा० तर्बुज] एक प्रकार की वेल जो भूमि पर पसरती है और जिसमे वडे-वडे गोल फल लगते है जिनका गूदा खाने के काम मे आता है। ससार के सभी गरम देशो मे यह फल उत्पन्न होता है। यह वेल कलिंग लता की वल के समान ही होती है।

अल्पा०—तरबूजियो।

तरभव-स०पु० [सं० तरु+भव] पुष्प, सुमन (ना मा)

तरमवार-स०पु० [सं०मदार+तरु] कल्पतरु, कल्पवृक्ष।

उ०—कल्पव्रक्ष सतान पारिजातो हरिचदण। तरमदार दुवार आण ऊगा सुख अप्पण।—रा रू

तरमीम-स०स्त्री० [अ०] सशोधन, त्रुटि निवारण, दुरुस्ती।

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

तरय-क्रि०वि० [सं० त्वरया] शीघ्र, जल्दी (अ मा)

तरर-स०स्त्री०—कांतिहीन होने का भाव, निस्तेज होने का भाव।

उ०—तरर मुख खडभडै सहर तरसीग रा, ऊजडै झाक आथुण अरडीग रा। धरहरै धमक धाका परै धीग रा, सीस किण आज री रीस गजसीग रा।—महादान महडू

तररा-स०स्त्री०—चावुक का फीता या डोरी जो छडी मे सिरे पर बधी रहती है।

तरराज-स०पु० [सं० तरुराज] कल्पवृक्ष। उ०—तर सुर सरित गगा तरराज।—र ज प्र

तरराट, तरराटी-स०स्त्री०—१ तर शब्द की ध्वनि. २ कोप, गुस्सा।

तरराटौ-स०पु०—१ तर-र-र शब्द की ध्वनि. २ गुस्सा, क्रोध।

तरलग-स०पु० [सं० तरल=चचल+अग] घोडा। उ०—सीना गजा गुडावही, तीना वडा तुरग। अँ जेहल कीना अमर, तैं दीना तरलग।
—बा.दा

वि०—चपल, चचल, तेज।

तरळ-वि० [सं० तरल] १ (पानी की तरह बहने वाला, द्रव २ अस्थिर, क्षणभगुर ३ चचल। उ०—रैण अंधारी भवर डर, ऊठत तरळ तरग। तट वाळा कहा जाणै, जो दुख म्हौरे अग।
—अज्ञात

४ तेज, तीव्र गति वाला, चपल। उ०—हाथी दीधा अति घणा, पाखरचा दीधा तरळ तुखार।—वी.दे

स०पु०—१ वृक्ष, तरु। उ०—वणिया दग लगर चरणा विच, व्रद सुरताण ताण वखाण। खळ दळ तरळ ढाय खेडैचै, ठेल गयो गज खभूठाण।—द दा.

२ पिंगळ शिरोमणि के अनुसार १७ गुरु और १४ लघु का दोहा छद विशेष. ३ पिंगळ शिरोमणि के अनुसार छप्पय के ७१ भेदो मे से एक जिसमे २८ गुरु और ९६ लघु वर्ण होते हैं. ४ चन्द्रमा ५ घोडा (मि० चचळ) ६ ततु। उ०—वेली तरळा तरा विलूवी, वण हरियाळा वीस विसा। नृप अखभाण तणो हर नागर, उपवण जोवण जोग इसा।—वा दा

तरळको-स०पु०—शीघ्र आने वाला गुस्सा, सनक।

तरळता-स०स्त्री० [सं० तरलता] १ चचलता, चपलता २ द्रवत्व।

तरळनयण, तरळनयन-स०पु० [सं० तरलनयन] एक वर्ण वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे चार नगण अथवा १२ लघु वर्ण होते हैं।
—र ज प्र.

तरळभाव-स०पु० [सं० तरल+भाव] १ पतलापन, द्रवत्व. २ चचलता, चपलता।

तरळा-वि०—चचल, चपल। उ०—तरु ताळ पत्र ऊचा तडि तरळा, सरळा पसरता सरगि।—वेलि

स०पु०—घोडे की एक जाति (व स)

तरळाई-स०स्त्री०—१ चचलता २ द्रवत्व।

तरवक्र-स०पु०—सुदर्शन चक्र (अ मा)

तरवण-स०स्त्री०—१ श्याम तने का एक पोधा विशेष जिसकी जड को निरगुडी कहते हैं जो ओषधि के प्रयोग मे ली जाती है २ एक परदार छोटा जगली जन्तु विशेष जो प्राय ग्रीष्म ऋतु मे जगल में लगातार

ध्वनि से बोलता रहता है ।

मि०—तिवरी ।

तरबर—देखो 'तरु' (रू.भे.) उ०— तरवर सरवर सत जन, चौथो वरसै मेह । परमारथ रै कारणै, च्यारा धारी देह ।—अज्ञात

तरबरय-क्रि०वि० [स० त्वरयैव] शीघ्र, जल्दी (अ मा)

तरवरियो—देखो 'तरुवर' (अल्पा, रू भे)

उ०—भातरिया हरिया हुआ, पोखर भरिया पास। तरवरिया प्रफुलित थया, नीर निसरिया खास ।—लो गी

तरवरौ-स०स्त्री०—द्रव पदार्थ मे ऊपर तैरने वाली स्निग्धता, चिकनाहट।

उ०—तपत दूध अत तरवरा, सासू ! सुत पातीह । तक तिण हेक न तरवरौ, रगो धर रातीह ।—रेवतसिंह भाटी

तरवाडो—देखो 'तरवाळो' (रू भे)

तरवार-स०स्त्री० [स० तरवारि] लोहे की मोटी पत्ती का लम्बा एक धारदार हथियार जिसके प्रहार से वस्तुयें कट जाती हैं। तलवार, असि । उ०—रथ ताम धाम तेलत रवि, उडै रीठ तरवारिया। घण रटै पार जरदा घटा, करदा छुरा कटारियां ।—सू.प्र

पर्या०—असमर, असि, आभानरा, आनुधर, ऐराक, कडवाधी, करठाळग, करताळीक, करद, करमचडी, करमर, करवाळ, किरमाळ, केवाण, कोंखियर, क्रग, क्रपाण, खग, खळकाळ, खाडहळ, खाडो, खाग, घाव, चद्रहास, जडळग, जनेव, भटसार, डोहती, तिजड तेग, दुजड, दुधार, दुधारो, धबच, धजवड, धाराळी, धाराजळ, धूप, निसतेयस, निसत्रस, नाराज, प्रभावक, प्रहास. पाडोम, पाती, बाक, बाणास, बाढ़कढ़, बाढाळी, बीजळ, बीजूजळ, भुजळग, मडळाग्र, माळवधण, मूढाळी, मूठाळी, रूक, लपट, लोह, लोहसार, विजड, सगत, समसेर, सारग, सार, सुजड, सुधवट्टी, हेजम ।

मु०—१ तरवार काढ़णी—देखो 'तरवार खीचणी'।

२ तरवार खीचणी—तलवार को म्यान से बाहर करना, युद्ध के लिए ललकारना ।

३ तरवार जडणी—तलवार मारना, तलवार से प्रहार करना

४ तरवार तोलणी—तलवार सभालना, वार का अदाज देखना

५ तरवार बजाणी—युद्ध करना ६ तरवार माथै हाथ पडणो—तलवार सभालना, क्रोधित होना ७ तरवार म्यान मे रखणी—शाति धारण करना, युद्ध रोकना ८ तरवार री धार चलणी—कठिन परिश्रम करना, कडी तपस्या करना ९ तरवार रै घाट उतारणी—तलवार के प्रहार से मारना, यमलोक पहुचाना

१० तरवार रो धणी—वीर, बहादुर. ११ तरवार रो बळ दिखाणो—१ अपना शस्त्र बल दिखलाना, २ अपना पराक्रम दिखलाना. १२ तरवार रो हाथ दिखाणो—तलवार का दाव दिखाना, प्रहार करना, वार करना ।

कहा०—१ तरवार रो घाव भर ज्यावै पण बात रो कोनी भरै—तलवार का घाव भर जाता है परतु बात का घाव कभी नही भरता। किसी चुभती हुई बात का लगा घाव जन्मपर्यन्त नही मिटता

२ तरवार बाजी आछी पण दाताकची खोटी—तलवार का चलना अच्छा परन्तु केवल वाक्‌युद्ध या तू-तू मैं-मैं होना ठीक नही । शस्त्र द्वारा लडने से फैसला शीघ्र हो सकता है परतु केवल मुह से झगडने से कोई प्रयोजन हल नही होता, उलटा वैर ही बढता रहता है ।

२ तलवार के आकार का एक प्रकार का औजार जिससे बगीचो मे दोब काटी जाती है।

रू०भे०—तरुआर, तरुआरइ, तरुआरि, तरुवारि, तरुवारी, तरुआर, तरुआरि, तरुयारि, तलवार ।

तरवारपिधान-स०पु०यौ०—म्यान, तलवार का आवरण (डि.को)

तरवारि—देखो 'तरवार' (रू भे) (व स)

तरवारियो-वि०—तलवार चलाने वाला, योद्धा ।

उ०—तरां उण लुगाई कह्यो, 'कवरजी ! म्हारी घडी काई फोडियां ? इसडा तरवारिया छो तो मेवाड जेजियो लागै छै सु परो छोडावो ।

—नैणसी

तरवाळो—देखो 'तरवाळी' (अल्पा., रू भे)

तरवाळो-स०पु०—१ पानी व दूध जैसे तरल पदार्थ पर तैरने वाली स्निग्धता जो छितराई हुई होती है। उ०—ततरै खवास दूध मिस्री भेळा कर ल्यायो, तिको कानउदेजी रै आगै चमक हू तीज नै तरवाळा निजर आया ।—वीरमदे सोनगरा री वात

रू०भे०—तिरवाळो ।

अल्पा०—तरवाळी, तिरवाळी ।

२ काष्ठ की बनी तीन पायो की ऊची चौकी जिस पर खडे होकर हवा मे अनाज साफ किया जाता है। तिपाई ।

रू०भे०—तरवाडो ।

तरविस्तार-स०स्त्री०यौ० [स० स्तरविस्तार] भूमि, पृथ्वी, धरा (अ.मा.)

तरसग-स०पु० [स० तरु-सग] पक्षी (अ मा)

तरस-स०स्त्री० [स० त्रस] १ करुणा, दया, रहम ।

उ०—ताव अलाजा तरस, सरस रण चाव सलाजा । बणै न राजा बहिर, गहिर तोपा घण गाजा ।—व भा

क्रि०प्र०—आणी, खाणी ।

मुहा०—तरस खाणी—दया दिखाना, रहम करना ।

२ ढाल ।

[स० तर्ष] ३ तृष्णा, प्यास । उ०—सेरी माहि भमतउ पातरघउ, भूख तरस लागी तात साभरघउ ।—म कु

४ इच्छा, अभिलाषा । उ०—बिहु थाट अकस बधे बरकस, सरम जम कजि तरस साहस ।—रा रू

५ लालच, लोभ ।

स०पु० [स० तरसम्] ६ मास ।

क्रि०वि०—शीघ्र, जल्दी ।

रू०भे०—तरसि, तरसस ।

तरसणा-स०स्त्री०—दया, रहम, करुणा।
मुहा०—तरसणा आणी—दया दिखाना, रहम प्रकट करना।
तरसणो, तरसबो-क्रि०स० [सं० तर्पणम्] १ किसी वस्तु के अभाव में उसकी प्राप्ति के लिए इच्छुक अथवा व्याकुल रहना, अभाव में बेचैन होना। उ०—तरसै देस अवर वनतावा, भूलै रघुवर भोळा। जद करमी पिमतावो जम रा, दूत फिरैला दोळा।—र रू
२ छीलना।
तरसणहार, हारो (हारी), तरसणियो—वि०।
तरसवाड़णो, तरसवाड़बो, तरसवाणो, तरसवाबो, तरसवावणो, तरसवावबो—प्रे०रू०।
तरसाडणो, तरसाडबो, तरसाणो, तरसाबो, तरसावणो, तरसावबो —क्रि०स०।
तरसिओड़ो, तरसियोड़ो, तरस्योड़ो—भू०का०कृ०।
तरसीजणो, तरसीजबो—भाव वा०।
तरस्सणो, तरस्सबो—रू०भे०।
तरसळणो, तरसळबो-क्रि०अ०—देखो 'तिरसळणो, तिरसळबो' (रू भे)
उ०—कोई हाथा री थाळी रा मोती तरसळिया।
—पाबूजी रा पवाडा
तरसा-क्रि०वि० [सं० तरस्] शीघ्र, जल्दी (हं ना)
स०स्त्री० [सं० तृषा] तृषा, प्यास।
तरसाड़णो, तरसाड़बो—देखो 'तरसाणो, तरसाबो' (रू.भे.)
तरसाड़णहार, हारो (हारी), तरसाड़णियो—वि०।
तरसाड़िओड़ो, तरसाड़ियोड़ो, तरसाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
तरसाड़ीजणो, तरसाड़ीजबो—कर्म वा०।
तरसणो, तरसबो—अक०रू०।
तरसाड़ियोड़ो—देखो 'तरसायोड़ो' (रू.भे)
(स्त्री० तरसाड़ियोड़ी)
तरसाणो, तरसाबो-क्रि०स०—१ किसी वस्तु के लिए बेचैन करना। तरसाना, आकुल करना २ अभाव का दुःख देना।
उ०—ऊधो भली निभाई रे, त्यागे गोपी गोकुळ म्हानै यूं तरसाई रे।—मीरां
३ किसी वस्तु के प्रति इच्छा और आशा उत्पन्न कर के उससे वंचित रखना। ललचाना, लालायित करना। उ०—हूमा हित सरवर नहिं हरषो, पन चातक न तरसाया रे।—लो गी
मुहा०—तरसाय-तरसाय नै खिलाणो—ललचा-ललचा कर खाने को देना।
तरसाणहार, हारो (हारी), तरसाणियो—वि०।
तरसाड़णो, तरसाड़बो, तरसवाणो, तरसवाबो, तरसवावणो, तरसवावबो—प्रे०रू०।
तरसायोड़ो—भू०का०कृ०।
तरसाईजणो, तरसाईजबो—कर्म वा०।
तरसणो, तरसबो—अक० रू०
तरछाड़णो, तरछाडबो, तरछाणो, तरछाबो, तरछावणो, तरछावबो, तरसाडणो, तरसाडबो, तरसावणो, तरसावबो—रू०भे०।
तरसायोड़ो-भू०का०कृ०—१ अभाव में दुखित किया हुआ, तरसाया हुआ २ ललचाया हुआ।
(स्त्री० तरसायोड़ी)
तरसाळो-स०पु०—घोड़े की गर्दन में डाला जाने वाला बंधन या इस बन्धन की रस्सी।
तरसावणो, तरसावबो—देखो 'तरसाणो, तरसाबो' (रू भे)
उ०—चढो नै चढावो ढोला सिध करो, काहे तरसावो धण री जीव, जी ढोला।—लो गी
तरसावणहार, हारो (हारी), तरसावणियो—वि०।
तरसाविओड़ो, तरसावियोड़ो, तरसाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
तरसावीजणो, तरसावीजबो—कर्म वा०।
तरसणो, तरसबो—अक० रू०।
तरसावियोड़ो—देखो 'तरसायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० तरसावियोड़ी)
तरसि [सं० तरस्] देखो 'तरस' (रू.भे)
तरसित-वि० [सं० तृषित] प्यासा, तृषातुर।
तरसियोड़ो-भू०का०कृ०—१ किसी वस्तु के अभाव में बेचैन हुवा हुआ. २ छीला हुआ।
(स्त्री० तरसियोड़ी)
तरसींग-वि०—बलवान, जबरदस्त। उ०—रयण रछपाळ आ जोड चिरजी रहो, धराथभ भुजा रजवाट अद धींग। छत्रापत 'जसा' री सरै वस छतीसा, तेज उत जोड रा सरै तरसींग।—दयाळदास आढ़ो
तरसुतर-स०पु०—चंदन का वृक्ष तथा इस वृक्ष की लकड़ी। (अ.मा)
तरसुर-स०पु०यौ० [सं० सुर+तरु] कल्पवृक्ष। उ०—तरसुर सरित गग तरराज, राजा सह सरहर रघुराज।—र ज प्र.
तरस्स—देखो 'तरस' (रू भे)
तरस्सणो, तरस्सबो—देखो 'तरसणो, तरसबो' (रू भे)
उ०—'अखो' परग्गह आगळो, जरद नमावै जोम। वाद तरस्सै साह सू वाह परस्सै व्योम।—रा रू
तरस्सियोड़ो—देखो 'तरसियोड़ो' (रू भे)
(स्त्री० तरस्सियोड़ी)
तरस्सी-क्रि०वि० [सं० तरस्] जल्दी, शीघ्र। उ०—'जगपत्ती' बळराम, रूप 'सामळ' 'रूपस्सी'। ऊदा जुध ऊपरा, वेग ऊधरी तरस्सी।
—रा रू.
तरह-स०स्त्री० [अ०] १ प्रकार, भांति। उ०—मिनखा नू पय माय, तू पावै किण तरह रो। जणणी खोळै जाय, पय फिर नह पीणो पड़ै।—बा दा.
२ बनावट, रचना-प्रकार, डौल ३ हाल, दशा।

उ०—नापो रावजी री तरफ सू टीको ले आयो सो दियो, तरह दीठी सो सारा आप मुरादा, तद नापै दीठी इव दाव आयो सो विदा हुइ रावजी कनै आयो।—नापा सांखला री वारता
रू०भे०—तरै।
तरहटी—देखो 'तळहटी' (रू भे)
तरहदार-वि० [फा०] १ सुन्दर बनावट का, सुन्दर रूप-रंग का २ शौकीन, सजधज वाला। उ०—जे नापा नूं एक घोडो मता दीज्यो, नापो माणस तरहदार छै।—नापै सांखलै री वारता
तरहर-क्रि०वि०—तले, नीचे।
वि०—निकृष्ट, नीच।
तरा-क्रि०वि०—१ तब। उ०—तरा मोडोजी बोलिया—रावजी सलामत नाळे'र वादिया के नहीं।—वीरमदे सोनगरा री वात
२ तरह, प्रकार। उ०—रात रा फेर तरा तरां का जीमण हुआ।
—ठा जैतसिंघ री वारता
तरांणि—देखो 'तरणि' (रू भे) उ०—सज्जण गुणाण पूरे, वयणे विछोह वाण अवगुण ए। ज्यां जळ तरांणि लहिय, काळे अकाळ उच्छव कर ए।—रा रू
तराई-स०स्त्री०—पर्वत के नीचे का वह मैदान जहां तरी रहती है। पर्वतीय प्रदेशों में पहाड़ों के नीचे आई हुई भूमि।
तराछणो, तराछबो—देखो 'तरासणो, तरासबो' (रू भे)
तराछणहार, हारो (हारी), तराछणियो—वि०।
तराछिओडो, तराछियोडो, तराछयोडो—भू०का०कृ०।
तराछीजणो, तराछीजबो—कर्म वा०।
तराछियोडो—देखो 'तरासियोडो' (रू भे)
(स्त्री० तराछियोडी)
तराज-वि०—१ समान, तुल्य, सदृश। उ०—१ तणो भ्रम हिंदव सिंघ तराज। मआ सग वाहत जोध समाज।—सू प्र
उ०—२ तन घनस्याम तराज तडिता छवि भात पीत पीतबर। मुकर वाण सारग सीता अग वांम रांम भज नृप सिघ।—र ज प्र
२ देखो 'तराजू' (रू भे) उ०—कोट गयद सतोल निर्धं कर, तोलण हेक तराज। पात 'किसन' अडोळ रघुपत, बोल गरीब-नवाज।—र ज प्र
रू०भे०—ताराज।
तराजू-स०स्त्री० [फा०] एक डंडी के छोरो पर रस्सियो से बंधे दो पलडो का यंत्र जो वस्तुओं का तोल मालूम करने के काम मे आता है। तुला, तकडो। उ०—वाय भरी तोलै दीवडी, पद्धै काढ़ि रे वाय। घालि तराजू मे तोलता, किंचित फेर ज थाय।—जयवाणी
तराजै-वि०—समान, बराबर, तुल्य, सदृश। उ०—दावागिरा हिरद्दा जे श्री गाजै बंदूका दारू, जगायो कठीर छाजै तराजै जोधा दार। जीवणा गराजै राजै सादै देह भोगै जमी, 'अ टसी' नवाजै राजै ईसरा औतार।—ठा जैतसिंघ राठौड मेडतिया री गीत
तराडणो, तराडबो—देखो 'तिराणो, तिरावो' (रू भे)

तराडियोडो—देखो 'तिरायोडो' (रू भे)
(स्त्री० तराडियोडी)
तराणो, तरावो—देखो 'तिराणो, तिरावो' (रू भे)
तराणहार, हारो (हारी), तराणियो—वि०।
तरायोडो—भू०का०कृ०।
तराईजणो, तराईजवो—कर्म वा०।
तरणो, तरवो—अक०रू०।
तरायल-वि०—१ योद्धा, वीर २ जबरदस्त।
तरायोडो—देखो 'तिरायोडो' (रू भे)
तराळ-वि०—भयकर, भयानक। उ०—लपटै कराळ तोपा झाळ आसमान लागी, देव बोम जागी जोम प्रळै काळ दीठ। नाराजा ऊनागी ढाळ अभागी तराळ नेजा, राठोडा गनीमा बागी नराताळ रीठ।
—हुकमीचद खिडियो
स०पु०—वृक्ष, तरु, पेड। उ०—धरा धूळ धकरूळ, करै फूकार कराळा। अहि ऊथलै गैतूळ, तूळ जिम मूळ तराळां।—सू प्र
तरावट-स०स्त्री० [फा० तर.+रा प्र आवट] १ नमी, तरी, गीलापन, आर्द्रता २ ठढक, शीतलता ३ क्लान्त या श्रान्त चित्त को स्वस्थ करने वाला शीतल पदार्थ ४ स्निग्ध भोजन (दूध, घी आदि) ५ सपन्नता, वैभव। ज्यू—इण रा घर मे तरावट है।
वि०—सम्पन्न, वैभवशाली, धन-धान्यपूर्ण। ज्यू—तरावट आसामी।
तरास-स०स्त्री० [फा० तराश] १ काटने की क्रिया, काटने का ढग, काट-छाट २ प्रहार। उ०—तोडै दळ मुग्गळ खाग तरास। जुजुट्ठळ जेम लियै जसवास।—सू प्र
३ ढग, तर्ज।
[स० त्रास] ४ भय ५ कष्ट, पीडा।
क्रि०प्र०—देणी।
तरासखरास-स०स्त्री०यौ० [फा० तराशखराश] काट-छाट, कतरब्योत।
तरासणो, तरासबो-क्रि०स० [फा० तराशना] काटना, कतरना।
उ०—'वाघावत' 'सूरज' गो विकराळ। तरासत गीर खगा रिणताळ।—सू प्र
तराछणो, तराछबो—रू०भे०।
तरासियोडो-भू०का०कृ०—काटा हुआ, कतरा हुआ।
(स्त्री० तरासियोडी)
तराहि, तराही—देखो 'आहि' (रू भे)
तरिंद-स०पु० [स० तरु+इन्द्र] तरुराज, कल्प-वृक्ष (डिं को)
उ०—साह उग्राहणी नाम आछा सुणै, तरिंद रै जेम तू दळद तोडै।
—खेतसी बारहठ
तरि-स०स्त्री० [स०] १ नाव, नौका (डिं को)
स०पु० [स० तरणि] २ सूर्य।
[स० तरु] ३ वृक्ष, पेड। उ०—वनि नयरि घराघरि तरि तरि सरवरि, पुरख नारि नासिका पथि। वसत जनमियौ दैण वधाई, रम वास चढि पवन रथि।—वेलि

तरिण–स०पु० [स० तरणि] १ सूर्य। उ०—सहस ग्राम सल्लळै जळै पज्जळै प्रळै जिम। धूम व्योम धूघळो तरिण भ्रम तोम सोम तिम।
—रा रू.

म०स्त्री० [स० तरुणि] २ युवा स्त्री, युवती, तरुणि (ह ना)

तरियल–स०पु०—केनाल नामक फल लगी हुई लकडी से मस्त हाथी को राह पर लाने वाला। उ०—१ हरवळ पठाण तरियल हलाय, बादसाह तणा सइदा बुलाय।—वि स

उ०—२ तरियला डाकदारा तलक, खूमारण नग खोलिया। सिध पन्नक खुलै धारै सबद, बापुकारे बोलिया।—सू प्र

उ०—३ तरियला नजर आणे तयार। दौडिया हाक करि डाकदार।
—सू प्र

तरिया—देखो 'तिरिया' (रू भे)

तरियौ–स०पु०—१ पतली लम्बी लचकीली लकडी २ तर ककडी।

वि०—प्यासा, तृषातुर।

कहा०—तळाव तरियो विवा भूखियो—तालाब के होते हुए भी प्यासा रहा एव विवाह अवसर होने पर भी भूखा रह गया। यदि साधन प्राप्त होते हुए भी उनका उपयोग न कर सके तो दोष किसका।

तरिवर—देखो 'तरु' (रू.भे.)

तरी–स०स्त्री० [स०] १ नाव, नौका (डि को) उ०—मयदी वणै 'कान्ह' रै थाप मारी, तरी साह तोफान रै माह तारी।—मे म.

२ नमी, गीलापन, आर्द्रता।

क्रि०प्र०—होणी।

३ शीतलता, ठडक ४ तरावट।

क्रि०प्र०—आणी, होणी।

५ पर्वत के नीचे की भूमि, तलहटी ६ महगाई ७ अधिकता, बहुलता।

तरीको–स०पु० [अ० तरीका] १ विधि, रीति, ढग।

मुहा०—तरीको बरतणो—नियम का पालन करना।

२ उपाय, युक्ति, तदबीर।

मुहा०—तरीको लगाणो—युक्ति बैठाना, उपाय लगाना।

३ चाल, व्यवहार।

तरीप–स०स्त्री० [स० तरीप] १ नाव, नौका २ समुद्र।

तरु, तरुअर, तरुअरि–स०पु० [स० तरु] वृक्ष, पेड।

उ०—१ आंहर परहर अवर नू, मत सभरै अयाण। तरु अडै लागी लता, पत्थर चे गळ जाण।—ह र.

उ०—२ हू पद्मिनी तू भमरलू, तू तरुअर हू वेलि। माधव महा योवन माहि, हू खेलू तू खेलि।—मा का प्र

रू०भे०—तरवर, तरिवर, तरुयर, तरुवर, तरू, तरुअर, तरोवर, तरोट्र।

अल्पा०—तरुवरियो, तरुवो।

तरुआर, तरुआरई, तरुआरि—देखो 'तरवार'।

उ०—१ राणी राउत वावरइ कटारी, लोह कटाकडि ऊडइ। तुरक तणा पाखरिया तेजी, ते तरुआरे गुडइ।—का दे प्र

उ०—२ भाला अणी कणस तरुआरइ, वाजइ खाडा धार।
—का दे.प्र

उ०—३ थूळ ऊथापिया साथ तै थापिया, किलग रा सेन तरुआरि सा कापिया।—पी ग्र

तरुकाम–स०पु० [स० कामतरु] कल्पवृक्ष। उ०—रात दिन हुलस मन सुजस 'किसनेस' रट, रखण जन माम तरुकाम रघु राम है।
—र ज प्र

तरुण–वि० [स०] युवा, वयस्क। उ०—म्हारो पती म्हारा बूढा पणा पहला मारीजसी, इसो सूरमापणो दीसै छै और हू लारै सत कर सुरग मे पाछा तरुण मोटियार होय रहसा।—व स टी

स०पु०—युवा पुरुष।

रू०भे०—तरण।

तरुणज्वर–स०पु० [स०] वह ज्वर जो सात दिन का हो गया हो।

तरुणतरणि–स०पु० [स०] मध्यान्ह का सूर्य।

रू०भे०—तरण-तरणि।

तरुणाई–स०स्त्री०—तरुणावस्था, युवावस्था, जवानी।

रू०भे०—तरणाई।

तरुणापो—देखो 'तरणापो' (रू भे)

तरुणि, तरुणी–स०स्त्री० [स० तरुणि] १ युवा स्त्री, युवती।

उ०—फागण मास वसत रितु, नव तरुणी नव नेह। कहो सखी कैसे राहु, च्यार अगन इक देह।—र रा

२ स्त्री, औरत। उ०—१ पणि मूळ एह कायर पणै, साग धरै हरि वीसरै। कुळ तरुणि तेण सोभै किसी, कत मरण जीवण करै।—रा रू

उ०—२ वीणा डफ महुयरि वस वजाए, रोरी करि मुख पचम राग। तरुणी तरुण विरहि जण दुतरणि, फागुण घरि घरि खेलै फाग।
—वेलि.

तरुणीपरिकरम्म–स०पु० [स० तरुणीपरिकर्म्म] ७२ कलाओ मे से एक कला (व स.)

तरुतूलिका–स०स्त्री० [स०] चमगादड।

तरुपच–स०पु०—पाच की सख्या* (डि को)

तरुपत–स०पु० [स० तरुपति] कल्पवृक्ष। उ०—तरुपत सी रीझ वज्र सी तेगा, अरणव जिसी दया वरियाम। अरथी असुर सत जण ऊपर, राजै तूझ तणी रघुराम।—र रू

तरुयर—देखो 'तरु' (रू भे) उ०—ऊन्हाळी थी अति घणउ, अधिकुं करिउ आसाढ़ि। जेस्ठि तरुयर जे फळ्या, ते माहरू काळिज काढि।
—मा.का प्र

तरुराज–स०पु० [स० तरु+राट] १ कल्पवृक्ष २ ताड का वृक्ष।

तरुवर—देखो 'तरु' (रू भे) उ०—अति अव मोर तोरण अजु अबुज,

कळी सु मगळ कळस करि । वन्नर वाळ वधांणी वल्ली, तरुवर एक
विए तरी ।—वेलि
तरुवारि, तरुवारी—देखो 'तरवार' (रू भे.) (व.स)
तरुवौ—देखो 'तरुवर' (अल्पा , रू भे)
तरुसार-स०पु० [स०] कपूर ।
तरू—देखो 'तरु' (रू भे.)
तरूग्रर—देखो 'तरु' (रू भे.) उ०—साल्हा वाडी तरूग्रर चग, राय
तणउ छइ मडप रग ।—का दे प्र.
तरूग्रार, तरूग्रारि—देखो 'तरवार' (रू भे.) उ०—केतला फूलसिउ
क्रीडा करइ, केतला हाथमा तरूग्रारि ज धरइ ।—नळ दवदती रास
तरूणौ—देखो तरुण' (अल्पा , रू भे) उ०—कोई पुरख तरूणौ थको
रे लाल, विग्यानवत नीरोग । नवो कावड छीका नवा रे लाल, भार
उपाडवा जोग ।—जयवाणी
तरूनावत-सं०स्त्री०—घोडे के कानो के पीछे होने वाली भौरी जो अशुभ
मानी जाती है (शा हो)
तरूयारि—देखो 'तरवार' (रू भे) उ०—खडग तणा खाटक, खेटा
तणा भाटक । तरूयारि तणा भाटक ।—का दे.प्र
तरे—देखो 'तरै' (रू.भे) उ०—१ घडियाल ची घडी मारै तरे छीणी
ठहकावै ।—चौबोली
उ०—२ पूछण री विरिया हुई, तरे लाज आई मन माय ।
—जयवाणी
तरेपन—देखो 'तिरेपन' (रू.भे) उ०—सेवं राज सम्रासं यकावन साल
पायो, सम्रासं तरेपन सं'र सीकरां नै वसायो ।—दि व
तरेस-स०पु० [स० तरु+ईश] कल्पतरु, कल्पवृक्ष ।
तरै-क्रि०वि०—१ तब । उ० —राजा नू दैत्यदमनी परणी जण री होस
हुई छै, तरै राजा दिलगीर हुवो ।—पचदडी री वारता
वि०—१ जैसा, समान, तुल्य । उ०—कणवारियो आय बैठो नै
कवर री तरै हुकम चलावण लागो ।—रातवासो
२ देखो 'तरह' (रू भे) ज्यू—विण तरवार हाथ मे लीधी नै तरै-
तरै रा हाथ वतावण लागो (वी स टी)
तरैदार-वि० [अ० तरह+फा० दार] १ होशियार, चतुर ।
उ०—केइ छळ सू पिचरका कान मे नाखे छै, रसियो तो छदी, पिण
वदी भी तरैदार । पिचकार नै तो करणफूल सू बचावै छै, पलटता
पहली ढोला री भडकावै छै ।—पना वीरमदे री वात
२ सजधज वाला, शौकीन, चतुर. ३ अच्छे ढग का, सुन्दर, मनोहर ।
तरोवर, तरोहर-स०पु० [सं० तरु+वर] १ कल्पवृक्ष ।
उ०—सूर सधीर सकज्ज तरोवर सारिखो, पाण प्रमाणि सपेखि करै
कवि पारिखो ।—ल पि
२ देखो 'तरु' (रू भे.)
तळ-स०पु० [स० तल] १ नीचे का भाग, निम्न भाग २ वह स्थान
जो किसी वस्तु के नीचे पडता हो यथा 'नभतळ' 'तरुतळ' ।
उ०—१ तळ पथी गळ फूल फळ, सर पछी न समाय । ओहिज हरियो
रू खडो, सूखो ठूठ कहाय ।—अज्ञात
उ०—२ झणके झालरियो झूमरिया झटकै । लूबी भींगा री लूणी
तळ लटकै ।—ऊ.का.
३ तला, पेंदा ४ कूआ, कूप । उ०—महिला नीर भरण नै
म्हाली, खारी जळ ऊडी तळ खाली ।—ऊ का.
५ आधीनता, मातहती । उ०—भागं सागं भाम, अम्रत लागं
ऊमरा । अकबर तळ आराम, पेखं जहर प्रतापसी ।—दुरसो आढो
६ जल के नीचे का भाग । उ०—लूआ भले न सास ली, तळ मे
चीर चलाय ।—लू
७ पैर का तलुवा ८ हथेली ९ वस्तु का बाह्य फैलाव, धरातल,
सतह. १० धनुष की प्रत्यचा की रगड से बचाने के लिए बाईं बाह
पर बाधा जाने वाला चमडे का एक पट्टा ११ ताड का पेड.
१२ आधार, सहारा. १३ सप्त पातालो मे से प्रथम १४ एक
नरक का नाम १५ तलहटी, तराई । उ०—टीबै तो ओलै, अे
लाडो बेटी, टीबडी, ज्या तळ हाळीडै रो खेत, बावल नै कहियो अे,
हाळी नै बेटी क्यू दई ?—लो.गी
क्रि०वि०—नीचे, पास । उ०—वाध्यो भैसो बावळी, उण थाहर
तळ आय । नाहर सो निरखै नयण, हियै अधिक हरखाय ।
—सिववगस पाल्हावत
तल—देखो 'तिल' (रू भे)
तळई—देखो 'तळै' (रू भे) उ०—मल्ल भाट सुरताण पय, आयउ
मगण कज्जि । मुहुल तळई जइ द्वा करइ, जिहा खडे असपति सज्जि ।
—प च चौ
तलक-स०पु०—१ ऊट के पाव द्वारा उत्पन्न ध्वनि विशेष ।
२ देखो 'तिलक' (रू भे.) उ०—सुरह दुज देव तीरथ निगम
सासतर । जनेऊ तलक तुळसी नरजण जाय ।
—महाराजा जसवतसिंघ प्रथम रो गीत
स्त्री०—३ इच्छा, चाह ।
क्रि०वि०—तक, पर्यन्त । उ०—सावण री तीज सू लगाय भादो
मे जन्मास्टमी तलक बाहर ही नही नीसरणै पावै ।
—कुवरसी साखला री वारता
तलकणौ, तलकवौ—देखो 'तलक्कणौ, तलक्कवौ' (रू भे.)
तळका-स०पु०—चक्कर, फेरा, भ्रमण ।
तलकार-स०पु०—राजलोक, पौरलोक । उ०—आलविणिकार अल-
विकार कूटकार वसकार यन्त्रकार उलकार तलकार तालाकार भुगल-
कार ।—व स
तलक्कणौ, तलक्कवौ-क्रि०अ०—शीघ्र भागना, रपट कर दौडना ।
उ०—तुरकान तलक्किय हिंदु ललक्किय हूर हलक्किय हेरि वर ।
करसेल भलक्किय ढाल ढलक्किय खाळ खळक्किय स्रोन भर ।
—ल रा

तलग–क्रि०वि०—तक, पर्यन्त ।

तळगटी–स०स्त्री०—चरखे के नीचे लगी लम्बी पट्टी के ऊपरी सिरे पर आडी लगाई जाने वाली एक पट्टी जिसमे चरखे की धुरी को सहारा देने के लिए दो लकडी की कीलिया लगी रहती हैं ।

तलगू–स०स्त्री०—तैलग देश की भाषा ।

तळघरौ–स०पु० [स० तल+गृह] तहखाना ।

तळछट–स०स्त्री०—पानी या इसी प्रकार के अन्य तरल पदार्थ के तले जमने वाला मैल ।

तळछणौ, तळछबौ–क्रि०स०—मारना, काटना, सहार करना ।

तळछियोडौ–भू०का०कृ०—मारा हुआ, सहारा हुआ ।
(स्त्री० तळछियोडी)

तळणौ, तळबौ–क्रि०स०—१ खौलते हुए घी अथवा तेल मे किसी पदार्थ को पकाना अथवा भूनना, तलना । उ०—तैमे घणौ नान्हौ छूनियौ मास मदी आच कढाई मे तळजै छै ।—रा सा सं
२ कष्ट देना, सताना, तग करना । ज्यू०—गाव भाभी ठाकुर नू जाय मिळियौ नै अरज करी, आपरौ कणवारियौ मनै घणू तळियौ ।
तळणहार, हारौ (हारी), तळणियौ—वि० ।
तळवाडणौ, तळवाडबौ, तळवाणौ, तळवाबौ, तळाववणौ, तळावबौ, तळाडणौ, तळाडबौ, तळाणौ, तळाबौ, तळावणौ, तळावबौ—प्रे०रू०
तळिश्रोडौ, तळियोडौ, तळ्योडौ—भू०का०कृ० ।
तळीजणौ, तळीजबौ—कर्म वा० ।

तळतळणौ, तळतळबौ—देखो 'तळणौ, तळबौ' (रू भे.)
उ०—तळत्तळि तोय तरौ मनु तेल, लगे दुहु ओर न तै यह खेल ।
—ल रा

तळतळाट, तळतळाटौ-स०पु०—१ खौलने की क्रिया या भाव.
२ कलह ।

तळतळौ—१ कलह, झगडा. २ उद्वेग, चिन्ता ।
अल्पा०—तळतळी ।

तलप–स०स्त्री० [स० तल्प] १ शैय्या, चारपाई (अ मा).
उ०—तलप परहर अतुर चढ़ तुर चकर घर मग्ग सघर सचर ।
—र ज प्र
यौ०—तलपकीट ।
२ महिला, स्त्री (ह नां)
रू०भे०—तल्प ।
अल्पा०—तल्पिका ।

तलपकाउ–स०पु०—एक प्रकार का वस्त्र (व स)

तलपकीट–स०पु० [स० तल्पकीट] खटमल, मत्कुण ।

तळपट–स०पु० [अ० तलफ+रा प्र.ट] नाश, बरबाद ।
मुहा०—तळपट फेरणौ—नाश करना, चौपट करना ।

तळफ–वि० [अ० तलफ] नष्ट, बरबाद ।

तळफणौ, तळफबौ–क्रि०अ०—देखो 'तडफणौ, तडफबौ' (रू भे)
उ०—१ बाबहिया निल पखिया, मगरि ज काळी रेह । मति पावस सुणि विरहणी, तळफि तळफि जिउ देह ।—ढो मा
उ०—२ ऐसी लगन लगाय कहा तू जासी । तुम देख्यां बिन कळ न पडत है, तळफ तळफ जिय जासी ।—मीरा

तळफाणौ, तळफाबौ—देखो 'तडफाणौ, तडफाबौ' (रू भे)
उ०—चकवी निसपिउ सू चहै रे लाल, त्यु मुझ चित्त तळफाय हे सहेली ।—घ व ग्र

तळफी–स०स्त्री० [अ० तलफी] बरबादी, नाश, खराबी ।

तळफफणौ, तळफफबौ—देखो 'तडफणौ, तडफबौ' (रू भे)
उ०—बरखत पच तते तनु अच्छ, तळफ्फत मीन मनो जळ तुच्छ ।
—ला रा.

तळब–स०स्त्री० [अ० तलब] १ खोज, तलाश ।
क्रि०प्र०—करणी, होणी ।
२ इच्छा, चाह, ख्वाहिश ३ किसी नशीली वस्तु जिसके खाने की आदत हो, चाह ।
क्रि०प्र०—करणी, होणी ।
४ माग, आवश्यकता ।
क्रि०प्र०—करणी, कराणी ।
५ वेतन, तनख्वाह ६ बुलावा, बुलाहट । उ०—झगडौ लागौ जिका झूपडा रगडौ तळबा तणा रहै ।—बा दा.
७ वह जागीर जिस पर सरकार से कर लगता हो ।

तळबगार–वि० [फा० तलबगार] १ चाहने वाला, इच्छा करने वाला
२ मागने वाला, याचना करने वाला ३ बुलाने वाला ।

तळबजात–स०स्त्री०—स्वय अधिकारी का वेतन ।

तळबळाट, तळबळाटौ-स०पु०—व्याकुलता, बेचैनी, अधीरता ।
उ०—बेगम तौ देखत समान भरतार धारचौ, जीव तळबळाटा लैणा माडिया ।—वी दे
क्रि०प्र०—करणौ, मचणौ, होणौ ।

तळबाणौ-स०पु०—१ वह धन-राशि जो अदालत मे गवाहो को बुलाने के लिए उनके सफर खर्च के रूप मे जमा होती है २ राजकीय तथा सरकारी रकम को जमा कराने की सूचनार्थ प्राप्त होने वाला सरकारी आदेश पत्र ३ एक प्रकार का सरकारी कर जो प्रजा से वसूल किया जाता था ।
रू०भे०—तळवाणौ ।

तळबियौ–वि० [अ० तलब+रा प्र इयौ] १ माग करने वाला, मागने वाला २ चाह रखने वाला ३ आदेशानुसार किसी को बुलाने जाने वाला. ४ रकम वसूली करने वाला ।
स०पु०—सरकारी रकम वसूल करने के लिए नियुक्त किया गया कर्मचारी ।

तळबी–स०स्त्री० [अ० तलबी] १ बुलाना, बुलाहट २ माग, आवश्यकता ।

तळमळ–स०पु० [स० तलमल] १ तरल पदार्थ मे उसके तले जमने वाला मैल, तलछट, गाद ।
स०स्त्री०—२ तिलमिलाहट ।
तळमळणो, तळमळबो, तळमळाणो, तळमळाबो–क्रि०अ०—तडपना, बेचैन होना, तडफडाना ।
मुहा०—तळमळातो फिरणो—बेचैन घूमना ।
तळमळयोडो–भू०का०कृ० –तिलमिलाया हुआ ।
(स्त्री० तळमळायोडी)
तळमळाहट—तडफने का भाव या क्रिया, व्याकुलता, बेचैनी ।
तळमीरोटी–स०स्त्री०यौ०—वह परतदार रोटी जो तवे पर घी मे सेकते हैं । तली हुई रोटी ।
तलवर–स०पु०—१ कोटवाल, नगर-रक्षक (व स) २ राजा द्वारा पट्टबंध से विभूषित सम्मान्य व्यक्ति (जैन)
तळवाणो—देखो 'तळत्राणो' (रू भे)
तळवा–स०पु०—बैलो के खुरो मे होने वाला रोग ।
तळवाईजणो, तळवाईजबो–क्रि०अ०—अधिक चलने से पैरों मे विकार होना ।
मि०—अकराईजणो ।
तलवार—देखो 'तरवार' (रू भे)
तळवो–स०पु० [सं० तल] १ पैर के नीचे का वह भाग जो खडे होने या चलने पर जमीन पर लगता है । पैर के नीचे का वह हिस्सा जो एडी और पजे के बीच मे होता है, तलवा ।
मुहा०—१ तळवा तणी मेटणो—नष्टभ्रष्ट करना, कुचलना २ तळवा ढूगा रै लगाणा—खूब उछलना, उछल-कूद करना, भाग जाना ३ तळवो खुजाणो—तलवे मे खुजाल चलना, किसी यात्रा का शकुन मानना ४ तळवो चालणो होणो—अधिक चलने पर पैरों का शिथिल हो जाना, पैरो मे काटे लग जाना ५ तळवा चाटणा—खूब खुशामद करना ६ तळवो धो'र पीणो—अत्यन्त सेवा-सुश्रूषा करना ।
२ जूते का तला।
रू०भे०—तळ्ओ ।
तळसारणो, तळसारबो–क्रि०स०—सजा देना, दण्ड देना ?
उ०—सो माधवसिंहजी आछी तरह राखिया, साभर री आधी ओपत दीवी अर धायभाई मेडतिया सारा नू तळसारिया, मारिया और मनाइया ।—मारवाड रा अमरावा री वारता
तळसीर–स०पु०—जल की धारा जो भूमि से स्वत निकलती हो, स्रोत, सोता । उ०—तठै अरजुन नू कह्यो 'अठै वडो पाणी रो कुड तळसीर छै ।—नैणसी
तळहटो, तळहट्टी–स०स्त्री० [स० तल+घट्ट] १ कसी ऊचे स्थान के तले की भूमि, नीचे का भाग । उ०—१ सो तळाव मोटो इसी ही पाळ ऊची तिण री तळहटी डेरा और तोपखानो सारो तळाव ऊपर माडियो ।—मारवाड रा अमरावा री वारता
उ०—२ रावजी रै साथ कवर जोधोजी तळहटी रै डेरा रहै नै रावजी चीत्तौड ऊपरै फूल-महल तठै रहै ।—राव रिणमल री वात
२ पहाड के नीचे की भूमि, पहाड की तराई ।
उ०—विणजारै रै सदाई हुवै छै, इसो वहानो करि चालतो-चालतो गिरनार री तळहटी पावासर माहे राजथान छै तठै आय पडियो ।
—कहवाट सरवहिया री वात
३ अधीनस्थ भाग, अधिकार मे रहने वाला भाग या भूमि ।
उ०—अरु कई एक घोडा पाच सै सू महेसदास मडळावत चढिया, सू जाय जैसळमेर री तळहटी लूट खोस करी ।—द दा
रू०भे०—तरहटी, तळहट्टी, तळैटी, तळंटी, तळैरी ।
'तळहासणो, तळहासबो—देखो 'तळासणो, तळासबो' (रू भे.)
उ०—कामदेव कटारउ वाघइ, वासुगि खाट पहरउ दिइ, कुळकि उपकुळिक पाय तळहासइ ।—व स
'तळाथा–स०पु०—एक प्रकार का सरकारी कर ।
तळाई–स०स्त्री०—१ छोटा ताल, तलैया, तालाब (अल्पा, रू भे)
उ०—ढोला, हू तुज वाहिरी, झीलण गइय तळाइ । ऊजळ काळा नाग जिउ, लहिरी ले ले खाइ ।—ढो.मा
२ तलने का भाव या इस कार्य की मजदूरी ।
रू०भे०—तळायी ।
तळाउ—देखो 'तळाव' (रू.भे) उ०—कमकमो गुलाव तैं कै पाणी तळाउ भरयो छै ।—वेलि.
तलाक–स०स्त्री० [अ० तलाक] १ पति-पत्नी का सम्बन्ध विच्छेद, पति-पत्नी का परस्पर विधानपूर्वक सम्बन्ध त्याग ।
क्रि०प्र०—देणी ।
२ त्याग ३ प्रण, प्रतिज्ञा । उ०—तरै पातसाह कहण लागो 'कानड दे तो म्हानू सामो डाकर दिखावै छै । नै पातसाह नू तलाक छै जु वीच गढ मेळ विगर लीया यूंही आधो न जाय ।—नैणसी
४ अवरोध, निषेध, रोक, मनाई । उ०—तिण ऊपरै रजपूत वैसै तिको इसडी आखडी पाळै, तिको इज वैसै नही तो तलाक छै । गाव गाव रो धणी पाटवी नै छै । और लोक नचत बैठो व्यापारी नचित वैसो देसोत नै तलाक छै ।—रा.सा स
तलाकणो, तलाकबो–क्रि०स०—१ पति-पत्नी का परस्पर विधानपूर्वक सम्बन्ध विच्छेद करना २ छोडना, त्यागना. ३ प्रण लेना, शपथ खाना ।
तलाकियोडी–भू०का०कृ०—पति द्वारा छोडी हुई ।
तलाकियोडो–भू०का०कृ०—१ पत्नी द्वारा छोडा हुआ २ त्यागा हुआ ३ प्रण किया हुआ ।
(स्त्री० तलाकियोडी)
तलाची–स०पु० [स०] चटाई ।
तळातळ–स०पु० [स० तलातल] सात पातालो मे से एक पाताल का नाम । उ०—सर घून-घून दिगपाळ डरि, कसि कमट्ठनि पिट्ठि भर ।

घर घुजि तळातळ तळ वितळ, सेस सळसळ छड्डि धर ।—ला.रा

तळाब—देखो 'तळाव' (रू.भे)

तळाय—देखो 'तळाव' (रू.भे) उ०—च्यारू दिस कीरत रही, पीर तणी छित छाय । जग मे नीर तळाय सह, वणिया खीर तळाय ।
—बा दा

तळायी—देखो 'तळाई' (रू भे.) उ०—डूगरिया हरिया हुया, भरिया भरिया ताळ तळायी ।—लो गी

तलार-स०पु०—१ नगर-रक्षक, कोटवाल ।

उ०—१ आसगायत आवियो, तेहवें ते तलार । पायस भोजन पेखि ने, जिमवा करै जिवार ।—घ व ग्र

उ०—२ महा भडारी रसोई तलार, राजवैद्य गजवैद्य ज सार । दीवटिग्रा सुहवोला जेह, उचित बोला वइठा छइ तेह ।
—नळ-दवदती रास

२ नगर-रक्षक (कोटवाल) के खर्चे के रूप मे लिया जाने वाला कर ।
—नैणसी

तलारक्ष-स०पु० [प्रा० तलवर] नगर-रक्षक, कोटवाल (व स)

तलारु-स०स्त्री०—सेवा ? उ०—वैस्वानर वस्त्र पखाळइ, चामडा तलारु करइ, विनायक गरद्दभ वारइ ।—व स

तलाल-स०पु०—एक जाति या इस जाति का व्यक्ति ।

तळाव-स०पु० [स० तडाग] वह लम्बा-चौडा गड्ढा जिसमे वर्षा का पानी भरा रहता है, जलाशय, सरोवर, तालाव ।

पर्या०—कवर, कासर, कासार, जीवाण, जोडौ, तडाग, तळाव, ताग, ताळ, धरमसुभाव, नाडौ, निवाण, नीरनिवास, पदमाकर, पयद, पुसकर, पोहकर, सर, सरवर, सरसी, सरोवर ।

मुहा०—तळाव पाणी रौ सीर होणौ—तालाब पानी का साझा होना अर्थात् किसी प्रकार का लेन-देन बाकी नही होना अत भविष्य मे सामान्य व्यवहार जारी रहना ।

रू०भे०—तळाउ, तळाब, तळाय, ताळाव ।

अल्पा०—तळाई, तळायी, तळावडी, तळावडौ, तळावली ।

तळावडी—देखो 'तळाई' (अल्पा , रू भे) उ०—अहिलइ गयु अवतार इम, काम कदळा नारि । परवत स गि तळावडी, विथा रहिउ जिम नारि ।—मा का प्र

तळावट-स०स्त्री०—एक प्रकार का कर जो जागीरदार अपने गाव मे विक्री की हुई वस्तु पर लेता था ।

तळावटियौ-स०पु०—तळावट नाम का कर वसूल करने वाला कर्मचारी ।

तळावरत-स०पु०—एक प्रकार का घोडा (अशुभ) (शा हो)

तळावळी—देखो 'तळाव' (अल्पा , रू भे)

उ०—विकसित पकज पाखडी, आखडी ऊपम टाळि । ते विख सलिलि तळावळी, सा वलि पांपिणि पाळि ।—प्राचीन फागु-सग्रह

तळावौ-स०पु०—बैलगाडी के पहिये को धुरी पर स्थिर रखने के लिए पहिये के बाहर की ओर लगाया हुआ डडा या काष्ठ का उपकरण जिसके एक सिरे मे धुरी घुसी रहती है। ये दो होते हैं ।

तलास-स०स्त्री० [तु० तलाश] १ खोज, अनुसंधान ।

क्रि०प्र०—करणी, कराणी, होणी ।

मुहा०—तलास मे रैणौ—खोज मे रहना, फिराक मे रहना ।

२ आवश्यकता, चाह ।

तळासणौ, तळासबौ–क्रि०स०—पैर चपना ।

उ०—चित साळि पलियक पउढणइ दक्षिण चीर, भलउ ओढणइ पाय तलासइ परणी नारि, अउर किसी सै सरगह बारि ।—लो गी

रू०भे०—तळहासणौ, तळहासबौ, तळौसणौ, तळौसबौ ।

तलासणौ, तलासबौ–क्रि०स०—तलाश करना, खोजना, ढूढना

तलासी-स०स्त्री० [फा० तलाशी] किसी गुम हुई वस्तु या छिपाई हुई वस्तु को ढूढने की क्रिया, तलाशी ।

तलिंग—देखो 'तैलग' (रू भे) (व स)

तळि—देखो 'तळी' (रू भे) उ०—१ तदि हुवा हाजर ताम वड वडा सव वरियाम । तळि गोख ऊभा ताम सझत सुपह सलाम ।—सू प्र

उ०—२ ना हू सीची सज्जणे, ना बूठउ अगाळि । मो तळि ढोलउ बहि गयउ, करहउ बाध्यउ डाळि ।—ढो मा.

उ०—३ गिरि वेयड्ढह तळि गयउ, पणमिउ नाभि मल्हारु ।
—प प च

उ० —४ वेउ खेलइ सरसि तळि सीतळ लाखारामि । नीरगु नेमि न भीजइ खीजइ नारि नामि ।—नेमिनाथ फागु

तळिछणौ, तळिछबौ–क्रि०स०—१ सहार करना, मारना

२ प्रहार करना ।

(मि० तडछणौ, तडछबौ)

तळिछियोडौ–भू०का०कृ०—१ संहार किया हुआ २ प्रहार किया हुआ ।

(स्त्री० तळिछियोडी)

तलिन–वि० [स०] १ दुर्बल, क्षीण २ थोडा, कम, अल्प

३ साफ, स्वच्छ ।

स०स्त्री०—शैय्या, पलग ।

तळियोडौ–भू०का०कृ०—१ तला हुआ, घी, तेल आदि मे भूना हुआ.

२ कष्ट दिया हुआ, सताया हुआ, तग किया हुआ ।

(स्त्री० तळियोडी)

तळियौ-स०पु०—१ वह भू-क्षेत्र जो भवन निर्माण के लिए हो

२ देखो 'तळी' (अल्पा., रू भे) देखो 'तळियोडौ' (रू भे)

तळियौ-तोरण-स०पु०यौ० [स० त्रिक+तोरण, प्रा० तिरिअ+तोरण] एक प्रकार का तोरण ।

उ०—राव कल्याणमल ग्रर सरव राजलोक दूल्ह-दुलहणि देखि दूणा रळियाइत हुग्रा । तळिया-तोरण बाध्या, हाट सिंगारी, पोळि सिंगारी, घरि-घरि गूडी ऊछाळी ।—द वि

वि०वि०—देखो 'तोरण' ।

रू०भे०—तळ्यौ-तोरण।

तळींगण-स०पु० [स० तलेंगन] आग पर चढाए जाने वाले वर्तनो पर कालिख से बचाने के लिए किया जाने वाला मिट्टी का लेप।

तळी-स०स्त्री० [स० तल] १ किसी वस्तु के नीचे की सतह, पेंदी. २ जलाशय, गड्ढा आदि का तल। उ०—तळी तळी मे पापडिया, प्रगटी जोडा माय। जाणै लूआ कोरडां, दीन्ही खाल उडाय।—लू. ३ जूते के नीचे की चमडी ४ खलिहान का निचला भाग. ५ रहट की 'लाट' के दोनों सिरो के नीचे रखी जाने वाली चन्द्राकार लोहे की पत्ती। इसके सहारे लाट सरलता से घूमती रहती है. ६ ऊट के पैर के नीचे का तलुवा ७ मकान के ऊपर की पक्की फर्श के नीचे का भाग, छत ८ हथेली मे किसी तरल पदार्थ को लेने के लिए बनाया जाने वाला गड्ढा।

मुहा०—तळी लैणी—हथेली मे किसी वस्तु या औषधि का ग्रहण करना, हथेली की औषधि खा जाना।

९ मोट के खाली होने के स्थान 'चाड' के नीचे जमाया हुआ पत्थर १० तलहटी, तराई।

क्रि०वि०—नीचे।

रू०भे०—तळि, तल्ली।

तळीकढ़-स०पु०—बैठते समय पाव का तलुवा बाहर रखने वाला (ऊट) (ऊट का एक दोष विशेष)

तळुओ—देखो 'तळवौ' (रू भे)

तळूजी-स०स्त्री०—पैंदा, तला।

तळे—देखो 'तळै' (रू भे) उ०—घडी दोय दिन थका उण भाखरी तळे जाय ऊभा रहिया।—गोट गोपाळदास री वारता

तळेक्षण-स०पु० [स० तलेक्षण] शूकर, सूअर।

तळेचो-स०पु०—१ द्वार की चौखट मे नीचे फर्श पर रहने वाला काष्ठ का डडा २ इमारत मे मेहराव के ऊपर और छत से नीचे रहने वाला भाग।

रू०भे०—तळैचो।

तळेटी—देखो 'तळहटी' (रू भे) उ०—केसर चरुग्रा ऊकळै, कचमच माच्यो कीच। भरमल परणीजै तळेटियां, रिडमल मेहला वीच।
—लो गी

तळेम—देखो 'तसलीम' (रू भे)

तळै-क्रि०वि०—नीचे (विलो० ऊपर)

मुहा०—१ तळै ऊपर करणौ—एक पर एक रखना. २ तळै ऊपर रखणौ—एक के ऊपर एक कर तह से रखना।

रू०भे०—तळइ, तळे।

तळैचौ—देखो 'तळेचौ' (रू भे)

तळैटी—देखो 'तळहटी' (रू भे)

तळैम—देखो 'तसळीम' (रू भे)

तळैरी—देखो 'तळहटी' (रू भे) उ०—देवराज नू धाट रै दहइयै मारियो, पछै जैसळमेर सू रावळ घडसी केहर हमीर नू तेडण नू थाट मिनख मेलिया, आप तळैरी हुतो, जसहड भाटिया आसकरण रा वेटा घोडै सवार घडसी नू झटको कियो।—वा दा ख्यात

तळोट-स०पु०—घोडे के अगले पैरो मे 'फर' और घुटनो के बीच का अग। उ०—तळोटा खुरा थभ पावा तराजै, सको पिंड प्रासाद आघार साजै।—व भा

तळोदरी-स०स्त्री० [स० तलोदरी] स्त्री, भार्या।

तळोदा-स०स्त्री०—नदी, दरिया।

तळोसणौ, तळोसवौ—देखो 'तळासणौ, तळासवौ' (रू भे)

उ०—तळोसै पग्ग नवै निघ तुम्ह, मोटा सिध साधक जाणै अम्म।
—ह.र.

तळौ-स०पु० [स० तल] १ कुआ, कूप। उ०—१ जा भवरी रोज न कर, भवर मुवा न जाण। बाधा जे ही छूटसी, तळै चढता भूण।
—र रा.

उ०—२ 'नीवे' तळौ निकाळ्यो नैडो, जिण री आव नाव रै जैडो।
—ऊ का

२ किसी वस्तु के नीचे की सतह, पैंदा।

उ०—राणाजी दुस्मन हाथ आया सो जाणै नही पावै, आज इहा री तळौ तोड देवौ।—कुवरसी साखला री वारता

३ जूते के नीचे का चमडा।

अल्पा०—तळियो।

तलौ-स०पु०—१ छुटकारा, पृथकता, फारगती २ सवध।

उ०—भगवन म्हारै तू हिज साहिब भलौ, तू किम लेखवै नहीय मोसु तलौ। विरुद धारी विया चाल वीजो चलौ, पूछस्यू हु पिण जाव पकडी पलौ।—ध व ग्र

तलौ-वलौ-स०पु०यौ०—रिश्ता, सम्बन्ध।

तल्क-स०पु० [स०] वन, जगल।

तल्प—देखो 'तलप' (रू भे)

तल्पज-स०पु० [स०] क्षेत्रज पुत्र।

तल्पिका—देखो 'तलप' (अल्पा, रू भे)

तळ्यौ तोरण—देखो 'तळियौ-तोरण' (रू भे)

तल्ल-स०पु० [स०] १ विल, गड्ढा. २ ताल ३ नाग।

उ०—तेरह साख राठउडा तणी कहीजइ। तेह माहे मोटउ स्त्री राठउडी राया माहे वडउ राउ स्त्री सातळ, जिणइ मालविया सुरताण तणउ दळ भाजी कीधउ तल्ल।—जिनसमुद्र सूरि री वचनिका

तल्लड-स०पु०—लम्बा डडा।

मुहा०—तल्लड पडणा = तल्लड चेपणा—डडो की मार पडना

तल्ली—देखो 'तळी' (रू भे)

तल्लीण, तल्लीन-वि०—तन्मय, मग्न। उ०—दह खट भूखण सारि करि, अनुभवि अठ्ठइ भोग। तनु भेळी तल्लीन थ्या, स्वामी विसि सयोग।—मा का प्र

तव-मवं [स०] १ तेरा, तुम्हारा २ देखो 'तव' (रू भे)
उ०—तव जादव अगरागिय लागिय रहिया पागि।—नेमिनाथ फागु
३ देखो 'तप' (रू भे) (जैन)
तवकिया-स०स्त्री०—एक प्रकार की हरताल (अमरत)
तवक्षीर-स०पु० [स०] तवशीर, तीखुर।
तवक्षीरी-स०स्त्री० [स०] कनकचूर लता की जड से निकलने वाला तीखुर। (अबीर इसी तीखुर से बनता है)
तवडक्या-स०स्त्री०—सोलकी वश की एक शाखा।
तवज्जा, तवज्जै-स०स्त्री० [अ० तवज्जह] ध्यान, देख-भाल।
क्रि०प्र०—देणी।
तवणु— देखो 'तपण' (रू भे) उ०—तह वि न भीजइ मुणिपवरो तव वेस वोलावइ। तवणु तुल्ल तुह देह नाह मह तणु सतावइ।
—प्राचीन फागु सग्रह
तवणौ, तववो-क्रि०स० [स० स्तवन] १ कहना, उच्चारण करना।
उ०—मुणं ब्रह्म तोडै रखं लोपि मोनू। तवै तात कोई न ह्वं घात तोनू।—सू.प्र
२ वर्णन करना, विस्तारपूर्वक कहना, कथना।
उ०—स्रीपति कुण सुमति तूझ गुण जु तवति, ताल्ह कवण जु समुद्र तरै। पखी कवण गयण लगि पहुचै, कवण रक करि मेर करै।
—वेलि
३ स्तुति करना, प्रार्थना करना।
४ देखो 'तपणौ, तपबौ' (रू भे) (जैन)
तव-तेण-वि० [स० तप +स्तेन] तपस्या का चोर (जैन)
तवन-स०पु० [स० स्तवन] स्तुति, प्रार्थना (जैन)
उ०—आप आप री उगत सू, तीस रचै तवनांह। मात तणी महिमा कही, जैन वेद जवनाह।—बा दा
तवर—देखो 'तवर' (रू भे)
तवलता-स०स्त्री०—इलायची की लता (अ मा)
तवलवध—देखो 'तवलवध' (रू भे.)
तवसमायारी-स०स्त्री० [स० तपः समाचारी] चार प्रकार के तप व उनका अनुष्ठान (जैन)
तवस्सी—देखो 'तपस्वी' (रू भे) (जैन)
तवह-स०स्त्री०—वेल, वल्लरी (ह ना)
तवानौ—देखो 'तावान' (रू भे.)
तवाइफ—देखो 'तवायफ' (रू भे.) उ०—आप जमी ऊपर बैठती, तवाइफां गावै थी।—पदमसिंघ रा वात
तवाखीर-स०पु० [स० त्वक्क्षीर त्वक्क्षीरी] वशलोचन (अ मा.)
तवायफ-स०स्त्री० [अ० तवायफ] १ वेश्या, रडी २ नाचने गाने का व्यवसाय करने वालों की मडली।
रू०भे०—तवायफ, तवाइफ।
तवारां-क्रि०वि०—उस समय, तब।
तवारीख-स०स्त्री० [अ०] इतिहास। उ०—तवारीख विलायत खुरसाण री मे लिखियो छै।—नी प्र.
तविखि, तविसि-स०पु० [स० तविष] स्वर्ग (ह ना)
तवी-स०स्त्री० [स० तप+रा प्र.ई] १ भट्टी पर औंधा रखा जाने वाला तवा. २ मिट्टी का बना छोटा तवा। उ०—खावण नै लायोडी बाजरी उण घणी ई मही पीसी पण कई बरसा री जूनी अर स्रुख्योडी खातर व्है जिसी होवण सू उणरौ सोगरौ ई वणणौ मुस्किल हौ। तवा पर नाखता-नाखता सोगरा रा टुकडा टुकडा व्है जावता।—रातवासो
३ कढाई के आकार का लोहे का पात्र जिसका तल समतल होता है।
तवोकम्म-स०पु० [स० तप. कर्मन्] तपकर्म, तपोनुष्ठान (जैन)
तवोघण—देखो 'तपोवन' रू भे)
तवौ-स०पु० [स० तप] लोहे की मोटी चद्दर का एक गोल पात्र जिसका तल छिछला होता है जो रोटी सेंकने के काम आता है।
क्रि०प्र०—चढाणौ, तपणौ, मेलणौ।
मुहा०—१ तवा जैडो मूडो होणौ—तवे के समान काला मुह होना, अधिक लज्जित होना, क्षुब्ध होना, दुखी होना, कृश होना. २ तवा री छाट होणौ—तवे की बूद होना, प्रभावहीन होना, कुछ भी प्रभाव न पडना ३ तवौ हसणौ—तवे की कालिख का ज्यादा लाल होकर चमकना। (यह घर मे कलह या किसी महमान के आगमन का सकेत करता है (अध विश्वास)
कहा०—१ तवै की काची नै सासरै की भाजी नै कठैई ठोड कोनी—तवे पर कच्ची रहने वाली रोटी तथा ससुराल से भाग जाने वाली स्त्री को कही ठौर-ठिकाना नही रहता २ तवौ हाडी नै काळी बतावै—तवा जो स्वय काला है, हाडी को अपने से अधिक काली बताता है। उस व्यक्ति के लिए जो स्वय दोषी होकर दूसरो के दोषो की निन्दा करता है।
२ मिट्टी या खपडे का गोल ठीकरा जिसे चिलम पीते समय चिलम की आग को इधर-उधर गिरने से बचाने के लिए उस पर रखा जाता है। यह चिलम के अन्दर तमाखू के नीचे भी रखा जाता है। यह आकार मे छोटा होता है ३ युद्ध के समय योद्धा के वक्षस्थल या पीठ पर कसा जाने वाला लोहे की मोटी चद्दर का एक उपकरण।
उ०—पयलोळ धरता सार साकळा वडकै। तवा भीड पाखरा जगी चाह वजडकै।—वखतो खिडियो
मुहा०—तवौ बाधणौ—१ युद्ध के लिए तैयार होना २ आफत अपने ऊपर लेना।
४ भाल या ललाट के मध्य का भाग। उ०—१ किसाहेक घोडा छै? • उर ढाल ऐसा, कूकड कध तैसा, आख पाणी मोती, तवा लिलाड का बैठा नवा।—रा सा स.
उ०—२ मिळै मोहरा चोहरा पति मोती, कळा करतरी जीत पावै कनौती, दिपै भाळ बैठा तवा जेव देता, लसै गल्ल की आब भा नैण लेता।—व भा
५ रण के समय हाथियो के मस्तक पर बाधा जाने वाला लोहे का

एक उपकरण। यह ढाल से मिलता-जुलता होता है।

उ०—जद आप तीर री हाथी रा सिर माहि दीन्हो तो सिर रो तवो भाजि तीर कारगर हुवो।—ठा. जैतसिंघ री वारता

६ बखतर का ऊपरी कडा भाग। उ०—वगतरा रा तवा फोड-फोड पूठी परा अणीआळा अणी नीसरै छै।—रा सा स.

रू०भे०—तावो।

तस-स०पु०—१ हाथ, हस्त। उ०—सामरथ भोभीखण रक राखै सरणा। तसा आपण सुदन लक तेहा रजवट्ट रखवणा।—र ज प्र.

रू०भे०—तसस, तसीस।

[सं० त्रस] २ द्वीन्द्रियादि प्राणी। उ०—आकास वायु दग प्रिथ्वी तस, थावर जीव होय।—जयवाणी

स०स्त्री० [स० तर्प] ३ प्यास ४ इच्छा।

सर्व० [स० तद्=तस्य] उस। उ०—तिथि दसम सुभ दिन तोम। मिळ वार तस सुभ सोम।—रा रू

क्रि०वि०—तैसे-वैसे। उ०—तिरगे हम ज्यू तस और तिरै। फिरगे हम ज्यू त्रस और फिरै।—ऊ का

तसकर—देखो 'तस्कर' (रू भे) उ०—काया नगर मझार पच तसकर पवीजै। काम क्रोध मद मच्छर, कुवुध ममता काढ़ीजै।—जग्गो खिडियो

तसटा-स०पु० [स० तष्टा] १ वस्तु को छील-छाल कर गढ़ने वाला, विश्वकर्मा २ एक आदित्य का नाम।

तसटो—देखो 'तसळो' (रू भे)

तसणा—देखो 'त्रसणा' (रू.भे.)

तसतरी-स०स्त्री० [फा० तश्तरी] थाली के आकार का बहुत छिछला छोटा पात्र, रिकाव।

तसतूबो-स०पु०—इन्द्रायन का फल।

रू०भे०—तउडो, तडतूबो।

अल्पा०—तसतूबियो।

मह०—तसतूब, तसतूबोड।

तसदीक-स०स्त्री० [अ० तस्दीक] १ प्रमाण द्वारा की गई पुष्टि, प्रामाणिकता, सचाई २ समर्थन।

क्रि०प्र०—करणी, कराणी।

३ गवाही।

रू०भे०—तस्दीक।

तसदीह-स०स्त्री०—दर्द, पीडा, कष्ट।

तसफियो-स०पु० [अ०+तस्फिय] फैसला, निर्णय।

क्रि०प्र०—करणो, कराणो, होणो।

तसबो—देखो 'तसवीह' (रू भे) उ०—१ सू अमीपाळ साह दोइ माळा पहिरै—गळै मे एक तुळछी-री माळा, एक तसबी।

—अमीपाळ साह री वात

उ०—२ परदारा सू फस भी जावै, हुस भी जावै हेर। काम पडै तव नस भी काटै, फेरै तसबी फेर।—ऊ का.

तसवीर—देखो 'तसवीर' (रू भे) उ०—पाणी नह पाऊ रै प्यारा, सैनाणी न सरीर। काणी कहै चितारा कोभी, तै आणी तसवीर।

—ऊ का.

तसबीह, तसब्बी-स०स्त्री० [अ० तस्वीह] माला, जपमाला।

उ०—१ दादू काया महल मे नमाज गुजारू, तह और न आवन पावै। मन मणके कर तसबीह फेरू, तव साहिब के मन आवै।

—दादू वाणी

उ०—२ कै तुम किल्ले तोरियो, कै मरियो सब्बी। देखो नब्बी क्या करै, कर नाख तसब्बी।—ला रा.

रू०भे०—तसवी।

तसमात-क्रि०वि० [स० तस्मात्] इसलिए। उ०—रहणा नही निदान अकेला जाइए, हरिहा जन हरिदास तसमात निरजन गाइए।

—ह पु वा.

तसमो-स०पु० [फा० तस्म] चमडे का डोरी के आकार का कुछ चौडा फीता जो वस्तु आदि को वाधने या कसने के काम मे आता हो, कस्सा, तसमा।

क्रि०प्र०—कसणो, खीचणो, वाधणो।

तसरीफ-स०स्त्री० [अ० तशरीफ] १ इज्जत २ वडप्पन ३ महत्व।

तसळियो-स०पु०—मित्र, दोस्त, साथी।

तसळी-स०स्त्री०—१ छोटा तसला २ मित्र-मण्डली।

तसळीम-स०स्त्री० [अ० तस्लीम] १ प्रणाम, अभिवादन, सलाम।

उ०—१ आय नै राव जोधै नू तसळीम कीधी।

—दूदै जोधावत री वात

उ०—२ तरै देवराज कह्यो, मै कदै था कना धरती मागी थी। थे यारी उचित सू मोनू तसळीम कराई थी। हूमैं तो म्हारो थारो ना कह्यो भलो न दीसै।—नैणसी

रू०भे०—तळेम तळेम।

तसळो-स०पु० [फा० तश्त+रा प्र ळो] १ कटोरे के आकार का परतु उससे वडा व गहरा पात्र जो लोहे, पीतल, तावे आदि का बनता है।

रू०भे०—तसटो।

[स० त्रि+रा सळ] २ भाल पर पडने वाली तीन सिलवटें।

उ०—दुरत निलै तसळै वळ दीधो। कमधज घनख टकारव कीधो।

— सू प्र.

तसल्ली-स०स्त्री० [अ०] धैर्य, धीरज, सान्त्वना, ढाढस।

मुहा०—तसल्ली देणी—सान्त्वना देना, धैर्य बधाना।

तसवीर-स०स्त्री० [अ० तस्वीर] किसी कागज, पटरी आदि पर किसी वस्तु की वनी हुई आकृति या किसी वस्तु व्यक्ति आदि का चित्र।

उ०—होस उडै फाटै हियो, पडै तमाळा आय। देखै जुध तसवीर द्रग, मावडिया मुरझाय।—वा दा

क्रि०प्र०—उतारणी, खीचणी, वणाणी, लगाणी।

मुहा०—१ तसवीर उतारणी—चित्र बनाना, खर्च कराना

२ तसवीर वणणो—चित्रलिखित-सा रहना, चित्रवत बन जाना।

रू०भे०—तसवीर, तस्वीर।

तसस—देखो 'तस' (१) (रू भे) उ०—हरख रण खेल खागा वसत होळिया, पधारै थान दुसहा दवट पोळिया। तसस मूछा दिया आभ भुज तोलिया, वोलवाला किया कूत झकवोळिया—मेघजी मेहडू

तसा—क्रि०वि०—उसी ओर, उसी दिशा मे, उसी तरफ।

तसियौ—स०पु०—१ सकट, कष्ट। उ०—पाछै भाटिया रै गढ मे सामान खूटौ अरु पूरौ तसियौ हुवौ।—द दा

२ छेह, अन्त।

मुहा०—तसियौ लैणौ—अन्त लेना, छेह लेना।

वि०—१ प्यासा, तृपातुर. २ लालची, लोभी।

उ०—नित रोगी बहु नीद, रग वाता रौ रसियौ। रामत मे मन रहै, ताकल्यै सहु रौ तसियौ।—ध व ग्र

तसीस— देखो 'तस' (१) (रू भे) उ०—असीला रसी रेहिया हाथ आणै। तसीसा करै जोस कावाण ताणै।—सू प्र

तसु—सर्व० [स० तद] १ उस। उ०—जोता नवरस एणि जुगि, सवि हू धुरि सिणगार। रागइ सुर-नर रजियइ, अवळा तसु आधार।
—ढो मा

२ उसके, अपने। उ०—नितवणी जघ सु करभ निरूपम, रभ खभ विपरीत रुख। जुग्रळि नाळि तसु गरभ जेहवी, वयणे वाखाणै विदुख।—वेलि

तसू—स०पु०—लम्बाई का एक माप, इमारती गज का २४वा भाग।

तसौ—सर्व०—तैसा, वैसा। उ०—मेच सगा रहै किम मीडा, तोलै उड उडियद तसा। सीसोदिया तुहाळी समवड, कीजै जे भूपाळ कसा।
—ओपौ आढौ

तस्कर—स०पु० [स०] चोर, दस्यु। उ०—१ अवधू सतगुरु सवद सहि सति आयुध, तस्कर मारि मनावै। ग्रासण अचळ तहा मन निहचळ, निरभै वस्त वतावै।—ह पु वा

उ०—२ तस्कर लेइ न पावक जाळै, प्रेम न छूटै रे। चहु दिसि पसरा विन रखवाळै, चोर न लूटै रे।—दादू वाणी

रू०भे०—तसकर, तसगर।

तस्करता—स०स्त्री० [स०] चोरी का कर्म, चोरी।

तस्करस्नायु—स०पु० [स०] काकनासा लता।

तस्करी—स०स्त्री० [स०] १ चोरी. २ चोर की स्त्री ३ वह स्त्री जो चोर हो।

तस्गर—देखो 'तस्कर' (रू भे.)

तस्दीक—देखो 'तसदीक' (रू भे)

तस्वीर—देखो 'तसवीर' (रू भे)

तह, तहं—क्रि०वि०—तहां, वहां। उ०—जहा सुरति तह जीव है, आदि अत अस्थान। माया ब्रह्म जह राखिये, दादू तह विस्राम।—दादू वाणी

सर्व०—वह, उस।

अव्य०—तथा। उ०—तेहि न रोगो दाहनु तहु, तह मगळ कल्लाणु।—ऐ जै का स

स०स्त्री०—१ चेतना, यथार्थ ज्ञान। उ०—मन पगु थियो सहु सेन मूरछित, तह नह रही सपेखतै। किरि नीपायौ तदि निकुटी ए, 'मठ पूतळी पाखाण मे।—वेलि

देखो 'तै' (रू भे)

तहक—देखो 'चहक' (रू.भे.) उ०—बहक भाजै असुर बका, डहक ववी सुणे डका, तहक वाजै तूर।—र.रू.

तहकणौ, तहकवौ—क्रि०अ०—१ चलना। उ०—दिस लक अगद आद द्वादस, तहकिया तेखी। इक अरण सो बिच त्रिसा आतुर, दरि द्रग देखी।—र रू

२ नगाडे का बजना ३ भयभीत होना। उ०—द्रढ प्रताप आठू दिसा पसरै अवनी पर, हितू कमळ फूलै विहद, भात चक्र हणभर। निस अनीत कहु लेस न, तहकै दुख तीमर, सूरज कुळ सूरज तपै, वड तेत सियावर।—र रू

तहकणहार, हारौ (हारी), तहकणियौ—वि०।

तहकवाडणौ, तहकवाडवौ, तहकवाणौ, तहकवावौ, तहकवावणौ, तहकवाववौ—प्रे०रू०।

तहकाडणौ, तहकाडवौ, तहकाणौ, तहकावौ, तहकावणौ, तहकाववौ
—क्रि०स०।

तहकिग्रोडौ, तहकियोडौ, तहक्योडौ—भू०का०कृ०।

तहकीजणौ, तहकीजवौ—भाव वा०।

ग्रहकणौ, ग्रहकवौ—रू०भे०।

तहकाणौ, तहकावौ, तहकावणौ, तहकाववौ—क्रि०स०—१ चलाना. २ भयभीत करना २ नगाडा वजाना।

तहकियोडौ—भू०का०कृ०—१ चला हुआ २ भयभीत हुवा हुआ ३ बजा हुआ (नगारा)
(स्त्री० तहकियोडी)

तहकीक—स०स्त्री० [अ० तहकीक] १ सत्य, यथार्थता।

उ०—१ बादसाह नू चाहिए काम करै तिण मे रजाबदी प्रभु री चाहै। मन री चाही न करै। तहकीक मे सारी गरज सू प्रभु री रजावदी ऊपजै।—नी प्र

उ०—२ जे उवा डाहळी टूटे तौ तहकीक धरती ऊपर पडै।—नी प्र

२ जाच-पडताल, सच्चाई की खोज, अन्वेषण।

रू०भे०—तहतीक, तै'कीक।

तहकीकत, तहकीकात—स०स्त्री० [अ० तहकीकात] किसी घटना या विषय के सम्बन्ध मे ठीक-ठीक खोज, अन्वेषण, जाच-पडताल।

क्रि०प्र०—करणी, कराणी, होणी।

मुहा०—१ तहकीकात आणी—किसी घटना आदि के सम्बन्ध मे जाच-पडताल करने पुलिस अफसर आदि का आना. २ तहकीकात करणी—किसी मामले की खोज-बीन करना।

रू०भे०—तै'कीकत, तै'कीकात, तै'कीगात।

तहखानौ—स०पु० [फा० तहखाना] मकान के अन्दर भूमि मे नीचे बना हुआ कोठा या कमरा, तलगृह।

रू०भे०—तेहखानौ, तैखानौ।

तहड़-स०स्त्री०— उ०—सहर सू कोस पूण री तहड़ कूण मे गागडी नदी छै।—नैणसी

तहजीब-स०स्त्री० [अ० तहज़ीब] शिष्टता, सभ्यता।

तहत—देखो 'तहत्त' (रू.भे) उ०—ओळया पाधरी लिखणी, जद हेमजी स्वामी बोल्या, तहत स्वामीनाथ।—भि द्र

तहतावणो, तहतावबो—क्रि०स०—आग्रह करना, अनुरोध करना, हठ करना।

तहतीक—देखो 'तहकीक' (रू भे.) उ०—कही विध हुवै तहतीक वरखा कणा, वळै परसे अरस कहे किण वार। तोय घर कदाचित पार लघै तउ, प्रभू गुण ताहरा न लाभै पार।—र रू

तहत्त-स०पु०—तथ्य, सत्य। उ०—विस्सा हाथ आवै नही, मिस्सा जीव रहत्त। जीव-सहित ते योगमा, सो जिनवाणी तहत्त।—जयवाणी

तहत्ति-अव्य० [स० तथेति] ठीक है, ऐसा, तथेति।

उ०—हियडइ हरख थयउ घणउ रे, सुणियउ सुपन विचार। तहत्ति करी उठि तदा रे, पहुती भुवन मझार।—ऐ जै.का स

वि०—सत्य, यथार्थ, तथ्य। उ०—भला अठाणु भेदसो, बोल्या अलप बहुत्त। जिण मे भमियो जीवणो, ते सहु वात तहत्ति।—ध व ग्र.

तहदरज-वि० [फा० तहदरज] जिसकी तह या पड़त न खुली हो, तहबध।

तहनाळ-स०पु०—तलवार के म्यान पर नीचे के भाग पर लगाया जाने वाला सोने अथवा चांदी आदि का वन्धन। उ०—इण भात री तरवार, घणै ककडै गोनीग्रै सावर मा लपेटी थकी तहनाळ, मुहनाळ, कडी, कुरसी समेत नकसी मढ़ि उवा राजावा रै हाथ री।—रा सा.स

२ तलवार के नीचे का भाग।

रू०भे०—तेनाळ, तैनाळ।

तहपेच-स०पु० [फा०] शिर पर बाधी जाने वाली पगडी के नीचे का कपड़ा।

तहबद—देखो 'तहमद' (रू भे)

तहमत, तहमद, तहमद्द-स०पु० [फा० तहबन्द] धड के नीचे के अग को ढकने के लिए बिना लाग के लटकता हुआ बाधा जाने वाला पुरुषो का वस्त्र विशेष।

तहमल-स०पु० [अ० तहम्मुल] धैर्य, सब्र, सहिष्णुता।

उ०—बीजे ठाकुरे वात विचारि अर राव भोज मेलियो। कहाडियो जु राजि पातिसाहजी सलामति रावळी साथ आइ आपडियो छै। पर पहुचण दीजै। पातिसाहजी तितरै तहमल कीजै।—द वि

तहमूर-स०पु०—तैमूरलग।

तहरउ-सर्व०—तेरा, तुम्हारा।

तहरि-सर्व०—तुझको, तुमको।

तहरीर-स०स्त्री० [अ०] १ लिखा हुआ मजमून, लिखित बात का आदेश २ लिखावट, लेख, शैली ३ लिखित प्रमाण. ४ लिखने का मेहनताना।

तहलको-स०पु० [अ० तहलक] १ हगामा, भगदड, खलबली, विप्लव।

क्रि०प्र०—मचणो, मचाणो।

२ बरबादी, नाश।

क्रि०प्र०—मचणो, मचाणो, होणो।

३ मौत, मृत्यु, मारकाट।

तहवि—देखो 'तथापि' (रू.भे) (जैन)

तहवील-सं०स्त्री० [अ०] १ धरोहर, अमानत. २ किसी मद विशेष की आमदनी जो किसी के पास जमा हो ३ खजाना, कोष।

तहवीलदार-स०पु० [अ० तहवील+फा० दार] वह व्यक्ति जिसके पास किसी मद का धन जमा हो, कोषाध्यक्ष, खजान्ची।

तहस-नहस, तहस-महस-वि०यौ०—नष्ट, बरबाद, ध्वस्त।

उ०— करि तहस-महसा केक, असपत्ति सहर अनेक। महि साह सहरा मोड, ठहराव सोवा ठोड।—सू प्र.

क्रि०प्र०—करणो, कराणो, होणो।

तहसील-स०स्त्री० [अ०] १ वह आमदनी जो भूमि के लगान के रूप मे एकत्रित की जाती है २ जिले का एक भाग जो तहसीलदार के आधीन रहता है, परगना ३ इस भाग का कार्यालय जहां तहसीलदार कार्य करता है।

रू०भे०—तैंसील।

तहसीलदार-स०पु० [अ० तहसील+फा० दार] वह सरकारी कर्मचारी जो अपने अधीनस्थ कर्मचारियो द्वारा मालगुजारी वसूल कराता है, तहसील का अधिकारी।

रू०भे०—तैंसीलदार।

तहसीलदारी-स०स्त्री०—तहसील का कार्य या पद।

तहां-क्रि०वि०—उस स्थान पर, वहां। उ०— दादू भावै तहा छिपाइयै, साच न छाना होइ। सेस रसातळ गगन धू, परकट कहियै सोइ।

तहारत-स०पु० १ शौच-स्थान, शौचालय। उ०—बारी रै नीचै तळझाड तहारत वण्यो छै।—कुवरसी साखला री वारता

रू०भे०—तारत।

यौ०—तहारतखानो।

२ शुद्धता, पवित्रता।

तहावि—देखो 'तथापि' (रू भे) (जैन)

तहिं, तहि-क्रि०वि०—१ तब, तो। उ०—ग्रै ग्रहू वै मैं वात उचारी, तहि हवि तूझ रीझ इकतारी।—सू प्र

२ वहा। उ०—१ अतिरथि मारथि तहिं वसए राय तणइ घरि-सूत्तु। राधा नामहिं तसु घरणि करणु भणु तसु पुत्तु।—प प च.

उ०—२ कुती जळ विणू तूछीइ, तहि हिडब जळ लउ आवइ।

—प प च

तहीम-सर्व०—तुम्ह रा।

तहु-सर्व०—उस। उ०—तेहिं न गेगो दोहगु तहु, तह मगळ कल्लाणु।

—ऐ जै का स

तह्मो-सर्व०—तुम। उ०—ते जोता तह्मो सा दूखिया ? जु नि, धीरय आणु। करम तणि वसि सघळा प्राणी, एहवू अतरि जाणु।

—नळाख्यान

ता-सर्व०—उन। उ०—१ ताहरा वडा नीसाण पडीया, ता उपरि राजा भोज एक डको दीयो।—चौबोली

उ०—२ असुर मार तू आतमा, निमो तुम्हारा नाम। मारै तां समपै मुगति, राकस तारै राम।—पी ग्र

क्रि०वि०—१ तब तक। उ०—साहा उर असुहावतो, राजावा रखवाळ। जा जसराज प्रतप्पियो, ता सुर पूज अकाळ।—रा.रू

उ०—२ जा जीविया ता सीमफडीस अर पणखो छाछ पातळी री आरोगता।—द वि

२ तब। उ०—सज्जण अळगा ता लगइ, जा लग नयणे दिट्ठ। जब नयणा हू वीछुडे, तब उर मझ पइट्ठ।—ढो मा

३ वहा, तहा।

अव्य०—१ तो। उ०—त्याहार पछी तू नि त्यु अ[रजुन] साहाय्य स्रो जगदीम। एक थई दुरयोधन ऊ[पर] ऊतारज्यो सवि रीस।—प प च.

२ देखो 'ता' (रू भे)

ताई-अव्य० [स० तावत्] १ तक, पर्यंत। उ०—वडी वेढ हुई भीक पडी। वीजै दिन वेपोहर ताई वेढ हुई।—नैणसी

२ वास्ते, निमित्त, लिए। उ०—तद इहा अरज कीवी और खरची हम आय कर लेंगे रुपया तीन सौ हमारे तांई अब दिरावौ।—दूलची जोइये री वारता

३ पास, समीप। उ०—मोनू एक वार राणै ताई जावणै देवौ जे राणाजी म्हारी अरज मानसे तौ थानू बुलाय लेयसे।—कुंवरसी साखला री वारता

सर्व०—१ उस। उ०—महा ककाळी वडी अविद्या, दसू दिसा मे छाई। बहु विध नाच नचावै माया, किस विध जीते ताई।—स्री सुखरामजी महाराज

२ देखो 'ताइ' (रू भे) ३ देखो 'ताई' (रू भे)

ताउ-क्रि०वि०—ताउ। उ०—जाउ जागइ ताउ मागइ।—व स.

ताग-स०स्त्री०—एक प्रकार का वहुत पतला व विषैला साप जो प्राय पैरो मे लिपट जाया करता है।

तागड-स०पु०—१ वह रस्सा जो ऊट से हल जोतते समय हल के लम्बे डडे (हरिसा) से वाध कर ऊट के गले मे वाधा जाता है। २ हाथी को वाधने का लम्बा और मोटा रस्सा। उ०—इण वात नू गिवार, लोक जाणै कै कवरजी हाथिया रो तागड करायो है नै तागड हाथ अस्सी रो लावौ छै।—द.दा

३ एक पैर पर दौड कर खेला जाने वाला एक देशी खेल।

रू०भे०—तगड।

तागलो-स०पु०—एक छोटा सिक्का। उ०—ताकै की भड ताग़ळा, निरख नाप न नह तोल। मूधी घर मोलावणी, मायौ समपो मोल।—रेवतसिह भाटी

(मि० धीगलो)

तागो-म०स्त्री० [स० तग या त्वग] १ पैरो से लडखडाते हुए चलने का कार्य, लडखडाहट। २ एक देशी खेल।

तागो-स०पु०—१ एक प्रकार की दो पहियो की गाडी जिसमे एक घोडा जोता जाता है, इक्का या एक्का २ एक देशी सवारी की गाडी जो बैलो द्वारा चलाई जाती है।

रू०भे०—धागो।

३ असफल यात्रा, चक्कर।

क्रि०प्र०—काडणो, पडणो, होणो।

४ अधिक या लम्बी दूरी तक परिभ्रमण करने से उत्पन्न होने वाली थकान, थकावट।

ताजो-सर्व० (स्त्री० ताजी) तुम्हारा, तेरा। उ०—समरो सगतपुर मडोवर-छतर घर समोसर, तकर कर अजर वर घजर ताजो। ऊसर वगतर ऊभर वीर सासर अतर, 'गग' हर कळोधर कहर गाजो।—वखतो खिडियो

ताड-स०पु०—१ धधकता हुआ अग्नि-कण, वडी चिनगारी २ सतान, पुत्र। [स० ताडन] ३ नृत्य, नाच. ४ बैल या साड की दहाड। [स० तुण्डकम्] ५ मुख, थूथन। उ०—ताड ऊपाडिउ घालिउ पाइ, पूछिउ कुसलु युधिस्टिरि राइ।—प प च.

ताडणो, ताडवो-क्रि०अ०—१ बैल या साड का जोश के साथ ध्वनि करना। उ०—वडै भार जूपै वहै, करै न खाचा ताण। जद तू ताडै धवळ जिम, तो ताडणो प्रमाण।—वी दा

२ गरजना। उ०—घमळ विमन्नो धुर ताजै, देख दुमन्नो साथ। उण वेळा ताडै 'अजो' मूछा घालै हाथ।—रा रू

३ दहाडना ४ नृत्य करना, नाचना।

ताडळ-स०पु०—१ वडा, दीर्घकाय सर्प. २ देखो 'तडळ' (रू भे)

३ देखो 'तदुळ' (रू भे)

ताडव-स०पु० [स०] १ पुरुषो का नाच २ शिव का एक नृत्य विशेष।

रू०भे०—तडव, तडवि, तडेव।

३ तीनो लघु के ढगण के तृतीय भेद का नाम (डि को)

ताडवी-स०पु० [स०] सगीत के चौदह तालो मे से एक।

ताडि-स०पु० [स०] नृत्य शास्त्र (तडि मुनि का निकाला हुआ)

ताडियोडो-भू०का०कृ०—१ जोश के साथ आवाज किया हुआ (बैल या साड) २ गरजा हुआ, दहाडा हुआ।

(स्त्री० ताडियोडी)

ताडी-स०पु० [स० ताडिन्] १ सामवेद की ताड्य शाखा का अध्ययन करने वाला। २ यजुर्वेद का एक कल्प सूत्रकार

[रा०] भील नामक जाति (व्यग)

(मि० काडी)

ताडीर-स०पु०—वडा कृष्ण सर्प।

ताडीस-स०पु० [स० ताड] नृत्य, नाच। उ०—जागी जुनाळी तोपखाना वाळी जुझाऊ, तीव्रसै जागी ताळी प्रेतकाळी खुले कपाळी। ताडीस वा आळी आवता पैलरूं, हलै अवी हारी, 'पातला' सीह री वागी कराळी पाडीस।—जवानजी आढो

ताडो-सं०पु०—१ झुंड, समूह २ गावो मे पानी पीने के कुए के पास का खुला मैदान ३ फौज मे तंबू आदि का सामान ४ अगारा, अग्नि-कण ४ बनजारे के बैलो का वह समूह जिन पर माल का लदान कर व्यापार के लिए ले जाता है।

ताण-स०स्त्री० [स० तनु=विस्तारे] १ दबाव, शक्ति २ खिंचाव, तनाव. ३ विवाद, जिद्द, झौड, हठ। उ०—१ गुणवत री निंदा करी, अवळा किया रे वखाण। क्रिया पात्र रैं साध सू, उलटी माडी रे तांण।—जयवाणी

उ०—२ मोसू तांण मती करो रे लाल, कह्यो इम कोटवाळ।
—घ व ग्र.

४ खीचतान।
यौ०—ताणाताण, ताणाताणी।
५ वात रोग से होने वाली ऐंठन ६ एक विशेष प्रकार की पत्थरो या ईंटो द्वारा की जाने वाली जुडाई जिससे विना धरन के मकान की छत रह सकती है (जयपुर)
[मि० लदाव (३)]
७ गर्व, अहकार (अ मा) ८ लोहे की छड का वह टुकडा जो मजबूती के लिए पलग के पायो तथा होदे मे लगाया जाता है।

तांणणो-स०पु०—गिरासिया जाति मे विवाह की एक रीति जिसमे युवा होने पर युवक जिस युवती को चाहता है उसे राजी कर अपने साथ ले जाता है। जब लडके के पिता को पता चलता है तव वह १०-१५ आदमियो को साथ लेकर लडकी के पिता के पास जाकर मुखिया के सामने गाय, भैंस, बैल आदि देकर उसका फैसला करता है।
वि० [स० त्राण] रक्षक।

तांणणो, ताणबो-क्रि०स० [स० तनु = विस्तारे] १ वस्तु को उसकी पूरी लम्बाई या चौडाई तक बढा कर ले जाना। फैलाने के लिए जोर से खीचना, तानना। किसी वस्तु को स्थिर रख कर उसके एक छोर को जोर से खीचना २ धनुष की प्रत्यन्चा पर तीर रख कर खीचना। उ०—१ आतम वाण चिला मझि आणं। तेज अमोघ स्रवण लगि ताणं।—सू प्र

उ०—२ असीला रसी रेहिया हाथ आणै, तसीसा करै जोम कावाण ताणै।—सू प्र

३ घसीटना. ४ ताव देना, मरोडना (मूछ)
उ०—दळ वादळ बळ देखि मगज धरि भूप महावळ। ताणि मूछ खग तोलि हुकम इम दीध झळाहळ।—सू प्र
५ वलपूर्वक किसी ओर ले जाना, प्रवृत्त करना, वढाना।
उ०—तुरक हिंदवा ताण, अकवर लायो एकठा। मेछा आगळ माण, पाण कृपाण प्रतापमी।—दुरसो आढ़ो

ताणणहार, हारो (हारी), ताणणियो—वि०।
तणवाड़णो, तणवाड़बो, तणवाणो, तणवावो, तणवावणो, तणवाववो, तणाडणो, तणाड़बो, तणाणो, तणावो, तणावणो, तणाववो—प्रे०रू०।

ताणिओडो, ताणियोड़ो, ताण्योडो—भू०का०कृ०।
ताणीजणो, ताणीजबो—कर्म वा०।
तणणो, तणबो—अक०रू०।

ताणाव—देखो 'तणाव' (रू भे) उ०—ताणाव हीर खभ नग जडत अग, जरकस चद्र ताणिया अण। तखत छत्र सझि छत्रपती, एम अवासा आणिया।—सू प्र

ताणि—देखो 'तणी' (४) (रू भे) उ०—ताहरा मदनो पूदा ताणि पडियो, पाछो हीज विगर लोहडै लागैं।—द वि.

ताणियोडी-भू०का०कृ०—ताव दी हुई, मरोडी हुई (मूछें)

ताणियोडो-भू०का०कृ०—१ खीचा हुआ, ताना हुआ २ धनुष की प्रत्यञ्चा पर तीर रख कर खीचा हुआ. ३ घसीटा हुआ ४ वलपूर्वक किसी ओर ले जाया हुआ, प्रवृत्त किया हुआ, बढाया हुआ।
(स्त्री० ताणियोडी)

ताणी—देखो 'ताणो' (रू भे)

ताणूमौं—देखो 'तेराणमौं' (रू भे.)

ताणो-स०पु० [स० तनु=विस्तारे] १ कपडा बुनने के लिए लम्बाई मे, खीचा गया सूत का तार।
यौ०—ताणोवाणो, ताणोवेझो।
२ ताने मे दोनो सिरों की खूटियो के बीच की दो लकडियां जो थोडी-थोडी दूरी पर ताने को सीधा करने के लिए गाड़ी जाती है।
रू०भे०—ताणी।

तात-स०स्त्री० [स० ततु] १ भेड वकरी की आतडी. २ भैंस के चमडे से काट कर निकाली हुई लम्बी-पतली पट्टी जो बैल गाडी के पहियो आदि को बाधने के काम मे ली जाती है ३ धनुष की डोरी, प्रत्यञ्चा. ४ डोरा, धागा ५ तार वाद्यो का तार।
उ०—अरथ जिका दी आपणी, हरख गरीवा हत्थ। गवरीजै जस गीतडा, तात तणका सत्थ।—वा दा.
६ सुधि, खवर। उ०—वडा महळ री पहिले महिने कोई तात न कीवी सो उवा कुढ़-कुढ वळणै लागी।—नापै साखले री वारता
क्रि०प्र०—लेणी।
७ जुलाहो का एक ओजार. ८ मगरमच्छ आदि कुछ विशेष जलचर जन्तुओ के थूथन का ततु जिससे वे अपने भक्ष्य प्राणी को झपट्टा मार कर अपनी ओर खीचते है।
रू०भे०—ताति।
अल्पा०—'तातडो'।
[स० तत्र] ९ सेना (ह.ना) १० देखो 'तातो' (मह, रू भे.)

तातण-स०पु०—तागा, धागा, सूत का तार। उ०—काचै तातण पाणी काढचउ, जिन सासन जयकार जी।—स कु
अल्पा०—तातणियो।

तातणियो-सं०पु०—१ गले मे धारण करने का जेवर जो हँसली की हड्डी पर रहता है और उसी के आकार का होता है.

२ देखो 'तातरण' (अल्पा, रू भे) उ०—ताणाताणी लागी रहे, थारे नेह तांतणियं बाध रे।—जयवाणी

३ देखो 'तातो' (अल्पा, रू भे)

तातळ-स०स्त्री० [स० तातल] १ शीघ्रता फर्ती, त्वरा २ बकझक, कलह।

तातळि-स०पु०—कलह। उ०—राज कुळ रुधा खळि. राय राणा वातइ छळि, क्षत्रिय नास दीठि दळि, भला माणस हुइ तांतळि।
—व स

तातवो-स०पु० [स० तन्तु] मगरमच्छ। उ०—जद गजराज तातवे ग्रहियो, जळ भीतर जबरे। पुकार साभळ हरि वेग पधारिया, पाळा पाव धरे।—ईसरदास बारहठ

तांति-स०पु० [स० तन्तुः] १ ततु के आकार का स्नायु रोग का कीडा। २ देखो 'तात' (रू भे) उ०—खुटे जरदैत जिके इम खाति। तुटे तिम सावण दावण तांति।—सू प्र

तांतियो-स०पु०—१ तात की तरह लम्बा व पतला एक प्रकार का हरा घास. २ देखो 'तातो' (अल्पा, रू भे.)

ताती-स०स्त्री० [स० ततु] १ पैर मे पहिनने का चादी के तार का वना हल्का आभूषण विशेष २ किसी भी प्रकार के शारीरिक कष्ट की मुक्ति के हेतु देव विशेष के नाम से वाधा जाने वाला कच्चे सूत का धागा।
क्रि०प्र०—वाधणी।
३ गडा, तावीज ४ सन्तान।
[स० तति] ५ खलिहान मे अनाज निकालने के अभिप्राय से बालें या भुट्टो को कुचलने के लिए दो या दो से अधिक बैलो को एक दूसरे के साथ गले से वाध कर चलाई जाने वाली पक्ति।
उ०—यम पळचरा जमानो आयो, दुसमण तोडे गज दिया। तुरगा तणी चमूकर तांती, किलमा घट घाहट किया।
—करमसोत भीमसिह री गीत
६ पशुओ के क्रय-विक्रय के लिए लगाई जाने वाली अस्थायी हाट।
क्रि०प्र०—ऊठणी, खुलणी, वैठणी।
७ देखो 'तात' (रू भे) उ०—विमळ मजीरा वाजिया, के ताती झणकार। भजन कियो मिळि भाइया, ओ तूठी अवतार।—पी ग्र

तातू-स०पु० [सं० तन्तु] ग्राह। उ०—तातू जळ ताणीजता, कीवी गज-राज पुकार, राज विना स्रीरामजी, है कुण राखणहार।—गजउद्धार
२ देखो 'ताती' (रू भे.)

तातो-स०पु० [स० तन्ति] १ श्रेणी, पंक्ति, कतार।
उ०—तीरा रो तांतो वध्यो, गढ-तीरा घण धाण। नद-तीरा मे लुक निम्यो, भीरु न अद रो भाण।—रेवतसिंह भाटी
क्रि०प्र०—वधणी, लागणी।
मुहा०—१ तातो वाधणो—किसी बात को हठपूर्वक लम्बी बनाना, झगडा बढ़ाना, बात को लम्बी खीचना २ तांतो मेटणो—बात समाप्त करना, झगडा मिटाना।
[स० तन्तु.] २ लता का वह अग्र भाग जिस पर लता का वढ़ना निर्भर रहता है. ३ लता का वह भाग जहा फूल व फल लगते हैं।
क्रि०प्र०—निकळणो, वढ़णो, मेलणो।
४ लता मे से निकलने वाला वह पतला ततु या रेशा जो आस-पास की वस्तुओ पर लिपट जाता है ५ मुख्य द्वार के चौखट के बाहर की ओर चारो ओर लगाई जाने वाली खुदाई की कारीगरी-युक्त पतली लकड़ी ६ सम्बन्ध, रिश्ता। उ०—अरज करा छा आप सू, गरजवान कर जोड। ईडर चालू आपरे, तांतो कुळ रो तोड।
—पना वीरमदे री वात
७ बन्धन। उ०—जोडे ज्यू ही जोड, विणजारा रा ब्याज ज्यू। तनक जोड मत तोड, नातो तातो नागजी।—नागजी री वात
मुहा०—तातो वाधणो—बन्धन मे लेना, सम्बन्ध जोडना।
८ देखो 'तत्र' ४ (रू भे) उ०—अहडो तातो भेळजे, पहुचे यम रै द्वार। फेर कचाई ना रहै, करजे गहरो वार।
—गौड गोपाळदास री वारता
९ रहट की माल बनाने के लिए घास विशेष 'एरो' तथा वृक्ष विशेष की छाल को वँट कर बनाया जाने वाला पतला लम्बा रस्सा।
क्रि०प्र०—वटणो, मेलणो।
१० वश, परम्परा. ११ डोरा, धागा। उ०—सोनो थे लाइजो लका देस रो, वनडी रै भवर घडायजे रे तो रे आवजो जिसडो कतवारी रो सूत, जिसडो तातो राखजो।—लो गी.
१२ देखो 'तात' (८) (रू भे) उ०—आठ दिसावित हुरै उताळा। ताता जाण तिमगळ वाळा।—रा रू
रू०भे०—तातू।
मह०—तात।
अल्पा०—तातणियो, तातियो।

तान्त्रिक-स०पु० [स०] तन्त्र शास्त्र का जानने वाला. मारण, मोहन, उच्चाटन आदि करने वाला।
वि०—तन्त्र सम्बन्धी।

तांद-स०स्त्री० [स० तुन्दम्] वढा हुआ पेट, तोद।

तावळ—१ देखो 'तदुळ' (रू भे) २ देखो 'तादाळ' (रू.भे.)

तावळी-स०स्त्री०—चदलाई (अमरत)

तांवाळ, तावाळो, तांदी, तादोलो-वि० [स० तुदिल] वढे हुए पेट वाला, तोंदीला।

तान-स०स्त्री० [स० तान] १ गान क्रिया का एक अग, मूर्च्छना आदि द्वारा राग या स्वर का विस्तार। उ०—गान सप्तसुर ग्राम मुर, अरु मुरछन यकवीस। तांन कोटि गुणचासते, मूरतिवत मईस।—सू प्र
क्रि०प्र०—भरणी, वैठणी, मारणी, मिळणी, मिळाणी।
२ अवसर, मोका. ३ मेल, घनिष्टता। उ०—आना अध आंना अरथ, तुरत विगाडै तांन। वदळै तुस रै वाणियो, धुर गोढा लै धान।—बा.दा.

मुहा०—१ तान पीणी—सयोग से अवसर मिलना। परस्पर अच्छा सम्बन्ध होना, घनिष्ट मेल होना २ तान बैठणी—देखो 'तान पीणी' ३ तान मिळणी—देखो 'तान पीणी'।
वि०—प्रस्तुत, तैयार, कटिबद्ध।
सर्व०—उन, उनको।
तानपूरी-स०पु० [स० तान+रा० पूरी] सितार के आकार का एक तार वाद्य जो गवैयो कोसुर साधने मे बडी सहायता देता है। सुर मे जहाँ विराम आदि पडता है वहाँ यह उसे पूरा करता है।
तानसेन-स०पु०—बादशाह अकबर का दरबारी सगीतज्ञ जो उसके प्रसिद्ध नवरत्नों मे से एक था।
तानारीरी-स०स्त्री०—साधारण गाना, मन बहलाव के लिए आलापी जाने वाली राग।
तानियौ-स०पु०—तुनक-मिजाज का व्यक्ति।
अल्पा०—तान्यौ।
तानौ-स०पु०—वह चुभती हुई बात जिसका कुछ अर्थ छिपा हो, ताना, व्यग्य। उ०—१ सावरौ मोही दे गयौ ताना। न जाणू करायौ कहि बाना।—लो गी.
उ०—२ ताना तीखा तीर, जिय मे लागै जोर रा। परगट लखै न पीर, चित मे मालै चकरिया।—मोहनराज साह
क्रि०प्र०—दैणौ, मारणौ।
अल्पा०—तान्यौ।
तान्यौ—१ देखो 'तानियौ' (अल्पा, रू भे)
२ देखो 'तानौ' (अल्पा., रू भे)
ताबडानकमुह—देखो 'तामडानकमुह' (रू भे)
ताबडी, ताबडौ—देखो 'तामडी, तामडौ' (रू भे)
ताबपत्र—देखो 'तावापत्र' (रू भे) उ०—काज कीरत तणै नकु वधै कमर, निरतर सुणै मुख चुगल नाम। वावडै तो हूत आज 'अरजन' विया, गयोडा ताबपत्रां तणा गाम।—वा दा.
तांबरस—देखो 'तामरस' (रू भे.)
ताबागळ-स०पु० [स० ताम्रागल] १ नक्कारा २ ढोल।
वि०—तावा सम्बन्धी, तावे का।
उ०—स्री महाराज 'मान' गुण सागर, दाखै जस हाका दोहु राह। तावा पतर दियै तावागळ, गज-वरीस दूजौ 'गजसाह'।
—महादान महडू
ताबाडणौ, ताबाड़बौ-क्रि०अ०—(गाय का) रभाना।
उ०—हीचता वाछडिया ताबाड, मिळै जद गाया अडवड जाय।
—साफ
ताभाडणौ, ताभाडबौ—रू०भे०।
ताबाडौ-स०पु०—गाय के रंभाने की आवाज।
रू०भे०—ताभाडौ।
ताबापतर, ताबापत्र-स०पु०यौ० [स० ताम्रपत्र] १ तावे की चद्दर का टुकडा जिस पर प्राचीनकाल मे अक्षर खुदवा कर दिए गये दान के लिए दानपत्र लिखते थे। उ०—जस भ्रम काज जगीस, नवा गाव 'अजमल' नरिंद। तावापत्र अवि तीस, जस लीधौ 'जसराज' उत्त।
—सू प्र.
२ तावे की चद्दर या उसका पत्र।
रू०भे०—तव-पत्र, ताव-पत्र, ताम्रपट्ट, ताम्रपत्र।
ताबियौ—देखो 'तामौ' (अल्पा, रू.भे)
ताबौ—देखो 'तामौ' (रू भे)
ताबील—देखो 'तामील' (रू भे)
तांबोली—देखो 'तामोली' (रू.भे)
ताबुलबेली-स०स्त्री० [स० ताम्बूलम्+वल्ली] पान की बेल, नागवल्ली।
ताबूल, ताबूलपत्र-स०पु० [स० ताम्बूलम्+पत्र] नागरबेल का पत्ता, पान का बोडा, पान। उ०—भगति भाव सू भोग लगायौ, रुचि रौ मुख ताबूळरचाय।—गी रा.
यौ०—ताबूलबीटिका, ताबूलवल्ली, ताबूलवाहक।
ताबूलिक, ताबूली-स०पु० [स० ताबूलिन्] पान बेचने वाला, तमोली।
ताबूली-स०स्त्री० [स० ताम्बूल+रा प्र ई] पान की लता, नागवल्ली
(अ मा)
ताबेडौ, ताबेटौ-स०पु० [सं० ताम्र+रा.प्र डौ टौ] बनावट विशेष का तावे या पीतल का बना पात्र, कलश।
रू०भे०—तवेडौ।
ताबेसर—देखो 'तामेसर' (रू भे)
ताबेसरी—देखो 'तामेसरी' (रू भे.)
तांबौ-स०पु० [स० ताम्र] लाल रग की एक धातु विशेष, तावा, ताम्र।
पर्या०—आस, उदुवर, कनीअस, धरज, घिस्टि, घ्रिस्ट, भरमबरधन, मरकट, मलेछमुख, मेछमुख, रगत, वरसट, सुलव, सावर।
रू०भे०—तव, तामौ।
तांभाडणौ, ताभाड़बौ—देखो 'तावाडणौ, तावाडबौ' (रू भे)
उ०—डाढा ताभाडै केरडिया ढीकै। रोटी पाणी नै टीगरिया रीकै।
—ऊ का
ताभाडौ—देखो 'तावाडौ' (रू भे)
ताम-स०पु० [स० तामस्] १ क्रोध, रोष. २ अधकार, तिमिर।
सर्व०—१ उस। उ०—बीस मत्त विसराम हुवै, सतर गुरु अत दस। तीस सात मत ताम, जिण पद छद सभूलणा।—र ज प्र.
२ तुम (आप)। उ०—तळै पग छाह नवै ग्रह ताम। पगा दिग पाळ करत प्रणाम।—ह.र
बहु०—३ उन। उ०—बदै ताम सुग्रीव मो वालि वैरी। तिके पाहडा हू वसू धाक तेरी।—सू प्र
वि० [अ० तमाम] सब, समस्त।
क्रि०वि० [स० तावत्] १ तब। उ०—ताम अजीम अरज की तैसी, साह नचीत हुवै मन जैसी।—रा रू.
२ उस समय मे। उ०—सासू पूछइ माहरइ, ए वर आविउ जाम।

रगिइ जोसी समइ समइ वरतावइ ताम ।—नळ-दवदती रास

३ तहा, वहा । उ०—हुई कटक अव हाजरी, मथुरा नयर मुकाम । सब कुसुम केसर बसण, तुले वराती ताम ।—व भा

तामग–स०पु० [स० ताम + रा.प्र.ग] घमड, गर्व, अभिमान (डि ना.मा , अ.मा)

तामडानकमुह–स०पु०यो०—एक प्रकार के अशुभ रग का घोडा (शा हो)

रू०भे०—तावडानकमुह ।

तामडायत–स०पु०[स० ताम्र+रा प्र ड+आयत] वह भूमि का अधिकारी जिसको भूमि के अधिकार के लिए सनद के रूप मे ताम्रपत्र प्राप्त हो ।

तामडी, तामडो–वि० [स० ताम्र+रा प्र. डी,डो] तावे के वर्ण का, ताम्रवर्ण, ललाई लिए हुए । उ०—रोमझडा केक भसमय रग, तामडा केयक नुकरा तुरग ।—पे रू.

तामजान, तामजाम, तामजामा–स०पु० [स० ताम्रयान] एक प्रकार की गद्देदार कुर्सी जो हाथी के हौदे की अगली वैठक के आकार की होती है जिसे कहार अपने कन्धो पर उठा कर चलते हैं, खुली पालकी ।

वि०वि०—यह आरम्भ मे तावे की वनी हुई वतलाई जाती है ।

तामण–स०पु०—१ घास का तिनका, तृण ।

स०स्त्री०—२ एक प्रकार की हरी घास विशेष । उ०—खावण रूणे घन ऊणे मन खूणे । घागण तामण बिन जामण सिर घूणे । —ऊ का

तामणियो–स०पु० [स० तेमनी] मिट्टी का वना विशेष आकार का एक छोटा पात्र जो घर मे सब्जी आदि पकाने या दही जमाने के काम आता है ।

रू०भे०—तावणियो ।

मह०—तामणी, तावणी ।

तामणी—देखो 'तामणियो' (मह , रू भे)

तामरस–स०पु० [स० तामरस] १ कमल. २ तावा ३ सोना. ४ धतूरा ५ एक वर्ण वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे एक नगण दो जगण और एक यगण होता है ।

रू०भे०—ताव-रस ।

तामळि–स०पु० [स० तामलि] एक प्रसिद्ध तापस (जैन)

तामलित्ति–स०स्त्री० [स० ताम्रलिप्ति] बग देश की एक प्राचीन नगरी जहा तामलि तापस ने जन्म लिया था (जैन)

तामळोट, तामळोट–स०पु०—टीन का छोटा पात्र जिस पर चमकदार रोगन चढा रहता है, तामलोट ।

तामस–स०पु० [स० तामस] १ क्रोध, गुस्सा । उ०—१ तरै तामस कर नै कह्यो तरै पूतळी री केह्यो ।—वीरमदे सोनगरा री वात

उ०—२ चख चोळ मूछ भूहा चढ़ो, तामस ऊठि तमोगणी । मेह री गाज जाणै मरद, सारदूळ काना सुणी ।—मे.म.

२ प्रकृति का एक गुण, तमोगुण । उ०—भाखि सतोगुण भलो खरो कोई कहीजै खोटो । त्रिविध तणी विच तीन त्रिविध तामस गुण ओटो ।—पी ग्र

३ चौथे मनु का एक नाम. ४ एक अस्त्र का नाम. ५ तैंतीस प्रकार के केतु जो सूर्य और चद्रमा के भीतर दृष्टिगोचर होते हैं. ५ अधकार (जैन) ६ अज्ञान ।

वि०—१ तमोगुण युक्त, क्रोधी प्रकृति वाला २ अज्ञान भाव वाला (जैन)

रू०भे०—तामस्स ।

तामसकीलक–स०पु० [स० तामसकीलक] एक प्रकार के केतु जो राहु के पुत्र माने जाते हैं और सख्या मे ३३ हैं (पौराणिक)

तामसमद्य–स०पु० [स० तामसमद्य] कई वार खीची हुई शराब ।

तामसवांण–स०पु० [स० तामसवाण] १ एक वाण विशेष जिसके द्वारा युद्धस्थल मे अन्धकार फैला दिया जाता है (जैन) २ एक शास्त्र का नाम ।

तामसी–वि० [स० तामस] तमोगुण युक्त, क्रोधी प्रकृति वाला, क्रोधी । उ०—मुझ स्वभाव छै तामसी जी, रहि न सकइ खिण मात । —वि कु

स०स्त्री०—१ अधेरी रात. २ एक प्रकार की मायावी विद्या जिसे शिव ने प्रसन्न हो कर मेघनाद को दी थी ३ रात्रि । (ना.मा , ह ना)

तामस्स—देखो 'तामस' (रू भे) उ०—दुय सहस पमग चढ चले दूठ । तामस्स जोर तन आण तूट ।—सू प्र.

तामिल–स०स्त्री०—१ भारत के दक्षिण मे रहने वाली द्रविड वश की एक जाति. २ इन लोगो द्वारा वोली जाने वाली भाषा, तामिल भाषा ।

तामिस्र–स०पु० [स० तामिस्र] १, एक नरक का नाम. २ क्रोध. ३ द्वेष ४ एक अविद्या का नाम ।

तामी–स०स्त्री० [स० ताम्र] १ तावे का तसला, तावे का बना छिछला पात्र २ द्रव पदार्थों को नापने का एक वरतन या नाप विशेष. ३ तावे की करछी ।

रू०भे०—तावी ।

अल्पा०—ताबियो ।

तामील–स०स्त्री० [अ० तामील] १ (आज्ञा का) पालन, हुक्म मानने का भाव २ किसी फरमान, परवाने या सम्मन आदि का निष्पादन ।

क्रि०प्र०—करणी, कराणी ।

रू०भे०—तावील ।

तामीली–स०स्त्री०—आज्ञा-पालन ।

वि०—१ पालन करने योग्य (आज्ञा) २ आज्ञापालक ।

रू०भे०—तावीली ।

तामेसर–स०पु० [स० ताम्र+ईश्वर] १ ताम्र-भस्म (अमरत)

स०स्त्री०—२ एक लता विशेष जिसके पत चौडे होते हैं और घाव, फोडे आदि पर वाधने के काम आते हैं ।

रू०भे०—तावेसर, तामेसुर, तमेस्वर ।

तामेसरी-स०पु० [सं० ताम्र+ईश्वर+ई] तावे के रंग सा एक रग विशेष जो गेरू के योग से बनता है।
रू०भे०—तावेसरी।
तामेसुर, तामेस्वर-स०पु० [स० ताम्र+ईश्वर] १ ताम्र, तावा २ एक प्रकार का सर्प विशेष. ३ देखो 'तामेसर' (रू भे.)
वि०—कुपित, तमोगुणयुक्त।
ताम्र-स०पु० [स० ताम्र] १ तावा. २ एक प्रकार का कोढ।
ताम्रक्रमि-स०पु० [स० ताम्रक्रमि] बीरवहूटी (डि ना मा)
ताम्रचूड-स०पु० [स० ताम्रचूड] १ कुकरौंधा नाम का पौधा. २ मुर्गा।
ताम्रतुड-स०पु० [स० ताम्र+तुण्ड] मुर्गा। उ०—सुजि तांम्रतुड कथा समाथ। वाजोट उवर अइवाळ बाथ।—सू प्र
ताम्रपट्ट, तांम्रपत्र—देखो 'तावापत्र' (रू भे) उ०—आखियो जिती धर ओपण थायो इळा, सुभोजन चाखियो थाळ साथै। ताम्रपत्र ढ़ाकियो चाखडा थान तळ, हतेरण राखियो आप हाथै।—खेतसी वारहठ
तांम्रपरणी-स०स्त्री० [स० ताम्रपर्णी] १ वावडी २ तालाव. ३ दक्षिण भारत की एक नदी।
उ०—सिंघ ताम्रपरणी प्रमुख, नदिया ते नरनाह। हैवर ढोया 'भीम' हर, गिरा उतगा गाह।—वा दा.
ताम्रपुस्प-स०पु० [स० ताम्रपुष्प] लाल फूल का कचनार का पौधा।
तांम्रवरण-वि० [स० ताम्रवर्ण] तावे के रग का, लाल।
स०पु०—१ वैद्यक के अनुसार मनुष्य के शरीर पर की चौथी त्वचा का नाम. २ पुराणानुसार भारतवर्ष के अतर्गत एक द्वीप, सिंहलद्वीप।
ताम्रसिखी-स०पु० [स० ताम्रशिखिन्] मुर्गा।
ताम्रसार, ताम्रसारक-स०पु० [स० ताम्रसार] लाल चदन का वृक्ष।
ताम्रा-स०स्त्री० [स० ताम्रा] १ सिंहली पीपल. २ दक्ष प्रजापति की कन्या जो कश्यप ऋषि की पत्नी थी।
ताय-प्रत्य०—तृतीया या पचमी विभक्ति का चिन्ह, से।
उ०—खळकिया स्रोण ताय वोह घट-खाळिया। रिण भडा सीस यू वैंठि रतनाळिया।—हा झा
तावण-स०पु० [स० ताप] तेली का तेल औटाने का लोहे का बना पात्र।
तावणियो—देखो 'तामणियो' (रू भे)
तावणी-स०स्त्री०—देखो 'तामणियो' (मह, रू भे)
तावर-स०स्त्री०—१ ताप, ज्वर २ मूर्छा ३ देखो 'तवर' (रू भे.)
ताह-सर्व०—१ उस। उ०—आडा डूगर वन घणा, ताह मिळीजइ केम। ऊलाळीजइ मूठ भरि, मन सीचाणउ जेम।—ढो मा
(वहु व०) २ उन। उ०—१ सदा तौ नाव लियै स्री रग। भखै नह ताह ससार भुयग।—ह र
उ०—२ जिणि दीहे तिल्ली ग्रिडइ, हिरणी झालइ गाभ। ताह दिहा री गोरडी, पडतउ झालइ आभ।—ढो मा.
३ तुम। उ०—हे सुभद्रा ये तरवार उण वीर पुरुख री नाम ले नै वाधी सो ताह री कठे ही हार न होवै।—वी स टी.
क्रि०वि०—१ वहा। उ०—मेटे सुर लोक पंठी जळ माह, तठै इक अड निपायौ ताह।—ह.र.
२ उस प्रकार, उस तरह। उ०—ते संतान तणी अति चिंता, करतु राजा याह। दमन नाम रिसि ईंछ्या आवु, मदिर तेणि ताह।
—नळाख्यान
रू०भे०—ताहा, ताहृ।
ताहजौ-सर्व० (स्त्री० ताहजी) तेरा, तुम्हारा। उ०—रावळजी कह्यौ, भाई माहजी, निवळा तू ले गयौ छै, तांहजी सूरज ले जाइया।
—वीरमदे सोनगरा री वात
ताहरा-क्रि०वि०—तव, उस समय। उ०—ताहरा उवा जाणियौ, राजा साकडै पडियो।—चौवोली
तांहा-क्रि०वि०—१ वहा. २ तव। उ०—सुव सुदा दीस्ट जोयौ सगत। ताहा उठचौ 'लाखण' वेग तत।—रामदान लाळस
३ देखो 'ताह' (रू भे)
ता-स०स्त्री०—१ तान २ ताल ३ मां. ४ स्त्री.
स०पु०—५ विस्तार ६ शिव ७ ईश ८ मैथुन. ९ वस्त्र १० तरुण पुरुष ११ तिल १२ तार (क कु वो)
सर्व०—१ उस। उ०—जिण मुख राम न ऊचरै, ता मुख लोह जडाय।—ह र
२ इस। उ०—दादू पीड न ऊपजी, ना हम करी पुकार। ता थै साहिव न मिळया, दादू वीती वार।—दादू वाणी
प्रत्य०—१ करण या अपादान कारक का चिन्ह, से।
उ०—बोडा री ठिकाणो घणा दिना रौ थो सु समत १६९९ राव, महेसदास दळपतोत नू जाळोर हुई, वरस चार महेसदास जीवियौ, तठा ता श्री वोडा कल्याणदास नाराणदासोत नू सैणो, सदा भोमिया रुखौ हुतौ त्यौं रह्यौ।—नैणसी
२ देखो 'ता' (रू भे.) उ०—तद विहारी मिलकखान हेतावत नू परगना जाळोर वासै दीया था सु तद रा जाळोर वासै पाड़ि ता सू हमे जाळोर खासै हीज छै।—नैणसी
ताअळी—देखो 'तासळी' (रू भे)
ताअळो—देखो 'तासळो' (रू भे)
ताइ-सर्व०—उन। उ०—ताइ देखै घाइ ताडिका साह्मी राम सुजाण।
—रामरासो
ताइ-सर्व०—१ वह। उ०—सरल वुद्धि पैं सनस सफल पिंडि अडोळ पहाड ताइ ओनाडजी ओनाड।—ल पिं.
२ उस। उ०—खानाणं खडे खडग वळ खाधौ, लाधौ श्री व्रद आज सलाह। 'कावळ' कहे रूधिया केहर, साथ किसो ताइ किसो सनाह।
—द दा
३ उन। उ०—वे पख सूवति विहु मास वे, वसत ताइ सारिखौ वहति।—वेलि

क्रि०वि०—१ वहाँ, तहाँ। उ०—भड म्हारां पाछै भिड़ै, जिका वहोडो जाइ। अब जै झडियो एक भी, तो पडियो पधि ताइ।
—व भा

२ इससे। उ०—खेंगा चढ़ चौगान न रोल्हे, वैर्ल पहियो राज विजोग। आगमणी सींसोद न आवै, रोद हिये ताइ लागी रोग।
—पीरदान आसियो

वि०—१ आततायी, शत्रु। उ०—तन फूट पडत तडफडत ताइ। लख हेक जाणी लोटण लुटाइ।—सू प्र.

२ विधर्मी, दुष्ट।

स०पु० [स० तायिन्] १ मोक्ष को प्राप्त होने वाला (जैन)
[स० त्रायिन्] २ रक्षक, परिपालक (जैन)
[स० तापिन्] ३ तापयुक्त (जैन) ४ देखो 'ताई' (रू भे)
५ देखो 'ताइ' (रू भे)

ताइण–स०पु० [स० त्रायिता] रक्षक (जैन)

ताइत—देखो 'ताईत' (रू भे) उ०—१ वनाती पटा, रुपै री भवर कडी रेसमी डोर, कान मे रूपै सोनै रा वेढ़ला, गळै मे निजरै रा ताइत। इण भात सू आण हाजर हुवा छै।—रा.सा सं.

उ०—२ छत्रधारी कना हू इळा री कोट छोडावणो। तुडावणी भूखां बाघ गळा री ताइत।—महादान महडू

अल्पा०—ताइतियो।

ताइफो—देखो 'तायफो' (रू.भे) उ०—प्रथ्वी पै रग भोमि हुई। पंथी है इहै मेळगर हुआ। मेळगर इहै जु आखाडो की सव सामग्री ताइफो।—वेलि टी

ताई–स०स्त्री०—१ बडी माता, पिता के वडे भाई की पत्नी।
उ०—मारण मारण समझे मूरख, तारण लखे न ताई नें। रात दिन हिंसा सू राजी, कर दे मात कसाई नें।—ऊ का.

२ कपडा वुनने वाली एक जाति (नळ-दवदती रास; व स.)
३ घोडे की एक जाति (व स) ४ [स० आततायी] दुष्ट, असुर।
उ०—सेहाई सतां सेवगा ताई देणा तापरा। ओनाडा राघो भू अखैं, पाणा धाडा आपरा।—र.ज प्र

५ शत्रु, दुश्मन।

उ०—१ ताइया खाति तरवारिया भात तह। लडण कजि दियतो सुपह सुजि वीत लह।—हा.झा.

उ०—२ चवै ग्रेम जैमाल चीतोड मत चळवळै, हेड दू अरी-दळ न दू हाथै। ताहरै कमळ पग चढ़ै नह ताइयां, माहरै कमळ जा खवा माथै।—राठोड जैमल वीरमदेवोत रो गीत

६ देखो 'ताई' (रू.भे)

ताईत–स०स्त्री० [अ० ताअत, फा० तावीज] १ उपासना, आराधना, इवादत २ धातु के चौकोर या अठ-पहलू चद्दर के टुकडे पर किसी देव-मूर्ति विशेष को अकित कर वनाया जाने वाला तावीज जिसे गले या बाहु पर धारण करते है, जन्तर।

मि०—चौकी (८)

३ हाथी का एक आभूषण।

रू०भे०—ताइत, तायत।

अल्पा०—ताइतडो, ताइतियो, तायतियो।

ताईतिमर–स०स्त्री० [स० तिमिर+तायिन्] ज्योति, प्रकाश (अ मा.)

ताईद–स०स्त्री० [अ०] १ सहायता, मदद. २ पक्षपात ३ समर्थन, पुष्टि। उ०—नै इता जोस खरास रै सायै इणरी ताईद करणी पडै तद जरूर मन मे सका ऊपजै।—वाणी

क्रि०प्र०—करणी, कराणी।

ताईधर–वि०—वीर, योद्धा। उ०—मिणधर छत्रधर अवर गेल मन, ताईधर रजधर 'सीध' तण। पूगीदळ पतसाह पेरता, फेरै कमळ न सहसफण।—महाराणा प्रतापसिंघ रो गीत

ताईप्रयात–स०पु० [स० आततायी+प्रयात] युद्ध (ह ना.)

ताउ, ताउ–क्रि०वि०—तक, पर्यन्त। उ०—पाटण तो आगै वडी ठोड हुती, रुपीया लाख सात री पैदास हुती, सवत् १६८२ तथा १६८३ ताउ उपजता।—नैणसी

२ तव। उ०—जाउ वाळो ताउ हुइ लाली पाळी।—व स.

ताऊ–वि०—१ तेज गति से चलने वाला, शीघ्रता करने वाला, उतावला
२ शीघ्र क्रोधित होने वाला, तडकने वाला।

स०पु०—पिता का बडा भाई।
(स्त्री० ताई)

ताऊन–स०पु० [अ०] एक घातक सक्रामक रोग जिसमे गिल्टी निकलती है और ज्वर का प्रभाव होता है, प्लेग।

ताऊस–स०पु० [अ०] १ मोर, मयूर. २ सारगी व सितार से मिलता। जुलता एक वाद्य विशेष।

ताऊसी–वि० [अ०] १ मोर के सदृश २ वेगनी रग का।

ताक–स०स्त्री०—१ ताकने की क्रिया।

यौ०—ताक-झाक।

२ टकटकी, स्थिर दृष्टि।

मुहा०—ताक वाधणी—टकटकी वाधना, स्थिर दृष्टि से देखना।

३ अवसर की प्रतीक्षा, मौके की टोह मे रहने का काम, घात।

उ०—माल मुलक हैंगे घणा, छग छाह मन छाक। के मारचा के मारसी, काळ करत है ताक।—ह पु वा

मुहा०—१ ताक मे रै'णो—मौके की टोह मे रहना, घात लगाना, अवसर की प्रतीक्षा मे रहना. २ ताक राखणी—देखो 'ताक मे रै'णो'. ३ ताक लगाणी—देखो 'ताक मे रै'णो'।

४ खोज, तलाश।

मुहा०—ताक राखणी—खोज मे रहना, तलाश मे रहना।

५ उपाय, तरकीव। उ०—साथ नू पूछियो 'वयू ठाकुरै! अठा थी सूरजमल खीवावत नू किण ताक थी मारियो जाय?'—नैणसी

६ देखो 'तांसळी' (रू.भे.)

स०पु० [अ०] ७ दीवार में रखा जाने वाला खाली स्थान जो वस्तु आदि रखने के लिए काम आता है, आला, ताख।

उ०—अनूप ताक गोख सी विचित्र चित्र सू अटा। घणू उतग अग जाणि सिग मेघ ची घटा।—रा रू.

मुहा०—१ ताक मायं मेलणौ—किसी वस्तु को उपयोग मे न लाना, प्रयोग न करना. २ ताक मे मेलणौ—वस्तु को पृथक रखना, उपयोग मे न लाना।

क्रि०वि०—तरह, प्रकार।

ताकड–स०स्त्री—शीघ्रता, ताकीद।

क्रि०प्र०—करणौ।

ताकडियौ—देखो 'ताकडी' (अल्पा, रू भे) उ०—तोला ताकडियां थका, खलक तणौ घन खाय। तिके ग्रहै तरवार नू, जवरौ कह्यौ न जाय।—बा दा

ताकडी–स०स्त्री० [स० तर्कटी] १ सीधी डडी के छोरों पर रस्सियो के सहारे बधे हुए दो पलडो का यत्र जिससे वस्तुग्रो का तोल मालूम करते हैं। तोलने का यत्र, तुला, तराजू। उ०—लेखण तोला ताकडी, सोगन नै जीकार। वणियाणी जाया तणा, है ये हिज हथियार।
—बा दा

कहा०—ताकडी तणी राम ना हाथ माये है—तराजू की डण्डी ईश्वर के हाथ मे है। ईश्वर ही सभी का न्याय कर सकता है।

२ पाच सेर का तोल।

रू०भे०—तकडी, ताखडी।

यौ०—ताकडी तोला।

अल्पा०—ताकडियौ।

वि०स्त्री०—१ उतावली, शीघ्रता करने वाली २ हृष्ट-पुष्ट, सुडौल।

ताकडौ–वि० (स्त्री० ताकडी) १ उतावला, जल्दबाज २ तेज, जोशीला ३ हृष्टपुष्ट, सुडौल. ४ शक्तिशाली, वहादुर।

रू०भे०—तकडौ, ताखडौ।

ताकण–वि०—टकटकी लगा कर देखने वाला।

अल्पा०—ताकणियौ।

ताकणौ, ताकबौ–क्रि०स० [सं० तकण] १ सोचना, विचारना २ टकटकी लगाना, स्थिर दृष्टि से देखना। उ०—आइस्यै जाइ सा‌थि सु चढ़ि-चढ़ि आया, तुरी लाग ले ताकि तिम। सिलह माहि गरकाव संपेखी, जोध मुकुर प्रतिविंव जिम।—वेलि.

३ अवसर की प्रतीक्षा करना, मौके की राह देखना, घात में रहना. ४ दृष्टि रखना, रखवाली करना ५ रुख करना, प्रवृत्त होना।

उ०—उत्तर आज न जाइयइ, जिहा स सीत अगाध। ता भइ सूरिज डरपतउ, ताकि चलइ दखिणाध।—ढो मा.

ताकणहार, हारौ (हारी), ताकणियौ—वि०।

तकवाडणौ, तकवाडबौ, तकवाणौ, तकवावौ, तकवावणौ, तकवाववौ, तकाड़णौ, तकाडबौ, तकाणौ, तकावौ, तकावणौ, तकाववौ—प्रे०रू०।

ताकिग्रोडौ, ताकियोडौ, ताक्योडौ—भू०का०कृ०।

ताकीजणौ, ताकीजवौ—कर्म वा०।

तकणौ, तकवौ—रू०भे०।

ताकत–स०स्त्री० [अ० ताकत] १ वल, शक्ति, जोर।

मुहा०—१ ताकत अजमाणी—वल की जाच करना, ताकत दिखाना २ ताकत दिखाणी—वल प्रकट करना ३ ताकत रा खेल—शक्ति से ही सब कुछ सम्भव है. ४ ताकत लगाणी—१ शक्ति या बल का प्रयोग करना. २ सहारे के लिए शक्ति का प्रयोग करना।

२ सामर्थ्य, सामर्थता।

मुहा०—ताकत सार—सामर्थ्यानुसार, शक्ति अनुसार।

ताकतवर–वि० [अ० ताकत+फा० वर] १ बलवान, शक्तिशाली. २ सामर्थ्यवान।

ताकधिन–स०पु०—तवले की ध्वनि, तबले का बोल।

ताकळियौ–स०पु०—१ एक प्रकार का सांप. २ देखो 'ताकळी'। (अल्पा, रू.भे)

वि०—कृश, दुवला।

ताकळौ–स०पु० [स० तर्कु, तर्कुक] चरखे पर लगाया जाने वाला लोहे का पतला व नुकीला सुइया। सूत कातने का तकुवा।

रू०भे०—तकळौ, तकवौ, ताकू।

अल्पा०—ताकळियौ।

ताकव–स०पु० [स० तार्किक] १ तर्क, मीमासा आदि शास्त्रो मे कुशल २ कवि। उ०—ताकव नृप तणी जी कर-कर मुणै मजुळ कीत। घट उमदा घणी जी पूछै गहर गुण घर प्रीति।—र रू.

३ चारण।

ताकि–अव्य० [फा०] १ इसलिए कि, जिससे।

ताकियोडौ–भू०का०कृ०—१ सोचा हुआ, विचारा हुआ २ स्थिर दृष्टि से देखा हुआ, टकटकी लगाया हुआ ३ अवसर की प्रतीक्षा किया हुआ, घात मे रहा हुआ. ४ रखवाली किया हुआ, दृष्टि रखा हुआ ५ रुख किया हुआ, प्रवृत्त हुवा हुआ।

(स्त्री० ताकियोडी)

ताकीद, ताकीदी–स०स्त्री० [अ० ताकीद] १ जोर के दवाव के साथ दी जाने वाली आज्ञा का आदेश। उ०—१ बादसाह लाहौर रै सूबायत नू ताकीद कीवी जे चोर नू पकडौ।
—दूलची जोइए री वारता

उ०—२ पण सवर नहीं कि वार-वार म्हाने बादसाह सलामत से अरज करणे की ताकीदी करता था।—साई री पलक

२ शीघ्रता, जल्दबाजी। उ०—१ जितरै सुजाण नायक अरज कीवी–कुवरजी महाराज अवै ताकीद करै छै।—पलक दरियाव री वात

उ०—२ ब्राह्मण सू व्याव की ताकीदी कीनी छै।
—वगसीराम प्रोहित री वात

क्रि०प्र०—करणी, कराणी।

ताफू—देखो 'ताकळी' (रू.भे.) उ०—ताफू तेरे सोवणी, लाल गुलाबी माळ। चरकू-मरकू फिरै घेरणी, मघरो मघरो चाल।—लो.गी

वि०—तकने वाला।

ताको-स०पु०—१ ताकने क्रिया का भाव। उ०—हमार हीज अठा सू ऊठिया दीसै छै। रावळ ताका करण लागो।—नैणसी

मुहा०—ताको राखणो—ताक मे रहना, घात मे रहना।

२ अवसर, मौका।

मुहा०—ताको पीणो—अवसर मिलना, मौका मिलना।

३ देखो 'ताखो' (३)

ताखगी-स०पु० [स० तक्षक+अङ्ग+ई] १ तक्षक।

उ०—उरा सुरा कुत डक ताखगी पै नांख अेहो, काळ रूपी वना लागा-लागा जेहो कुत।—रावत भीमसिंह री गीत

२ वीर, बलवान, योद्धा।

ताखडी—देखो 'ताकडी' (रू भे) उ०—सात ताखडी साजांनी तोल री खून भूडण रा डील माहि रहियो।—डाढ़ाळा सूर री वात

ताखडो—१ देखो 'ताकडो' (रू भे) उ०—जिण वन भूल न जावता, गैद गवय गिडराज, तिण बन जवुक ताखडा, ऊधम मडै आज।

—वी.स.

२ देखो 'ताखो' (अल्पा., रू भे.) (डि को)

(स्त्री० ताखडी)

ताखणि-क्रि०वि० [स० तत्क्षण] उसी समय; तत्काल, फौरन।

उ०—वेटउ रूडु करतउ जाणी। ताखणि आवि गगाराणी।

—प प च.

ताखणो, ताखबो-क्रि०स०—क्रोधित होना, कुपित होना, गुस्से मे भरना।

ताखति-स०स्त्री०—ताकीद, शीघ्रता। उ०—गूजराति माहि ताखति कीधी सहूय समेटी लीधउ। वाजी सान खान सोमईआ भणी पीआणउ दीधउ।—का दे प्र.

ताखा-ताखो, ताखा-तीवो-स०पु०—छोटे-बडे जेवर आदि।

उ०—ऊठ पर वंठघोडी सेठाणी रा रूंगता ऊभा व्हैग्या अर सेठजी रो काळजो ऊचो चढग्यो। सेठाणी कुरळाई वीरा, भीमजी वीरा! गम्र खाओ, लिजावण दो इण पापिया नै ताखा ताखो।—रातवासो

ताखियोडो-भू०का०कृ०—क्रोधित हुवा हुआ।

(स्त्री० ताखियोडी)

ताखी-स०पु०—१ ऐसा घोडा जिसकी एक आख एक रगढग की और दूसरी आंख दूसरे रगढग की हो। ऐसा घोडा अशुभ समझा जाता है (शा हो) २ छोटे बच्चो के शिर को ढकने का वस्त्र विशेष।

ताखो-वि०—१ जोशीला, उत्साही। उ०—वाजै घाव जागिया कुराण वाच लागा वोम, रोस भीना दोवडा चळूळा उडै रीठ। साइका छडाळा धारा कटारा जवना सेती, ताखा मडा आपूकारै मेलिया नत्रीठ।—वखतो खिडियो

२ महान्, जबरदस्त। उ०—सीधुरा ढहाड सूवा दहाड विभाड सत्रां, धाव सिध्र विरदाई अवाडा धरेस। तुरगा कव्यदा बांवराड मडा राम ताखा, निखगा रीझणा धाड जानकी नरेस।—र ज प्र.

३ वीर, बहादुर। उ०—मोडै आज रा अदावा माण, राखै पातजादा ,'दान रो अमाप हाको, फैलै दसू देस। लेवै क्रीत आडै अक, जोवजो फूलाणी लाखो, ताखा जोडायत सिंघा सोहै 'जगतेस'।

—राजाधिराज जगतसिंह री गीत

स०पु० [स० ताक्ष्यं] १ गरुड २ देखो 'तक्षक' (रू भे)

उ०—१ जिको किसडोहेक रजपूत, आग अजाग, ताखो नाग।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ आखै अेम 'ओपलो' आढो, खूनी कासू लाभ खटै। ताहरी रसण डसण ताखा री, मेळू जद मो' दाझ मिटै।—ओपो आढो

उ०—३ डाकी ठाकर री रिजक, ताखा री विख अेक। गहळ मुवा ही ऊतरै, सुणिया सूर अनेक।—वी स

३ निश्चित लम्बाई का पूरा कपडा, थान। उ०—ताखो आखो लावयो, कामण प्यारा कत। मोल महूगो मनि समो, सो क्यु रहै निरखत।—व स

४ एक प्रकार का कपडा। उ०—खासो दुकडी जामसाइ मुलतानी तपाइ साळू मुगीपटण ताखो स्रीसाप तासतो चुनडी चोरसो लाखारस दुदांमी जामावाड कचीयो।—व स

अल्पा०—ताखडो।

ताग-स०पु० [स० तडाग] १ तालाव (अ मा) २ देखो 'तागो' (मह, रू भे) उ०—सजण सिधाया हे सखी, परवत देग्या पूठ। हिवडो काचा ताग ज्यू, गयो लडगा तूट।—र.रा.

तागउ—देखो 'तागो' (रू भे) उ०—राजि हियइ राखु रे बाभण तागउ।—वि च

तागडदी-स०पु०—तबले का बोल। उ०—गगा गडदि दहू ओडा दळ गाजै। तागडदि तबल वाजै रिण तूर।—र रू.

तागडी-स०स्त्री०—१ तागे मे पिरोये हुए सोने या चादी के घुघरुओ का बना हुआ कमर मे पहनने का एक आभूषण विशेष, करधनी.

२ कमर मे बाधा जाने वाला रगीन डोरा, कटिसूत्र (शेखावाटी)

तागणो, तागबो-क्रि०स०—१ सुई मे धागा डालना. २ दूर-दूर की मोटी सिलाई करना. ३ सुई आदि नुकीली वस्तु को किसी अन्य वस्तु मे दवाव से चुभाना, गोदणा।

तागत—देखो 'ताकत' (रू भे.) उ०—तागत तूटोडी तापड तूटोडा। खाता पीता सू पै'ला खूटोडा।—ऊ.का

तागभरणी-स०स्त्री०—करघे मे एक पतली लकडी जिसका एक सिरा नोकदार और दूसरा चपटा होता है। चपटा सिरा बीच मे फटा होता है जिसमे तागे लगाये जाते है। कही-कही लोग लोहे का भी प्रयोग करते है।

तागावरण-स०पु०यौ० [स० त्याग+वर्ण] ब्राह्मण, सन्यासी, जोगी, जगम, भाट और साधु जातियो के छः समूह।
मि०—खटदरसण (२)

तागीर-स०पु०—अधिकारी या राज्य द्वारा दड स्वरूप किसी अपराधी की जायदाद या सपत्ति पर अधिकार करने का भाव, जब्त।
उ०—पाधरो बीकानेर महाराज् रै कदमा मे आइयो। गाव लालमदेसर वडो पट्टो दियो। पछै फेर नोखो रूपावता सू तागीर दियो।
—मारवाड रा अमरावा री वारता

तागो-सं०पु०—१ कच्चे सूत का धागा। उ०—नागो गयो निरधार, तागो रह्यो न तेण रै। लेगो 'वीसळ' लार, माया सासो मोतिया।
—रायसिंह सादू
२ डोरा, धागा. ३ यज्ञोपवीत, जनेऊ।
यौ०—तागा-वरण।
[स० त्याग] ४ देवता के पुजारी ब्राह्मणो आदि द्वारा आततायी के अधिक सताने पर उसे अभिशाप देने के अभिप्राय से अपने तन पर घाव लगा कर रक्त के छीटे लगाना। उ०—ते तन फिकर करे कई तागा। भय पड केइक जीव ले भागा।—गो रू
५ देव विशेष के विरुद्ध अभीष्ट फल की प्राप्ति हेतु अनशन करना या धरना देना।
मुहा०—तागो लेणो—दृढ निश्चय करना, व्रत धारण करना।
रू०भे०—तागउ।
मह०—तग्ग, ताग।

ताड-स०पु० [स० ताड] १ बहुत लम्बे तने का एक वृक्ष विशेष जिसका तना शाखा रहित होता है और काफी ऊचाई तक बढता ही जाता है। इसके सिरे पर चौडे और चपटे पत्ते होते हैं जो मजबूत डठलो मे चारो ओर निकलते रहते हैं। यह वृक्ष उष्ण प्रदेश मे समुद्र के तट के प्रदेशो मे अधिक पाया जाता है।
पर्या०—तळ, ताळ, ताळद्रुम, तृणराजक, पत्री, मधुरस।
रू०भे०—ताड।
[स० ताड] २ पर्वत, पहाड। उ०—छिळता भिलता घणू छछोह, ताढी तट छाया अख ताढि। मद झरता इतरा मयगळ पारा ले चालस्याइ।—सिव पारवती री वेल
स०स्त्री०—३ ताडन, फटकार. ४ प्रहार, आघात।
उ०—खग्ग ताड वाजति, सुहड अधो धड तुट्टई।—प च चौ
५ वौछार। उ०—तठै गोळिया री पडै छै ताड। तिको गडा री सणक किना घणा मेह री वोछाड।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
६ कुए से पानी निकालने के 'पाट' के नीचे की सीधी लकडी।

ताडका-स०स्त्री० [स० ताडका] यक्ष सुकेतु की कन्या मतान्तर से सुद नामक दैत्य की कन्या, मारीच सुबाहु की माता तथा सुन्दर दैत्य की भार्या, एक प्रसिद्ध राक्षसी जिसे रामचद्रजी ने बाल्यावस्था मे ही मारा था।
रू०भे०—ताडिका।

ताडकाफळ-स०पु० [स० ताडकाफल] बडी इलायची।

ताडकायन-स०पु० [स०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

ताडकारि-स०पु० [स०] ताडका का शत्रु, श्री रामचन्द्र।

ताडकेय-स०पु० [स०] ताडका का पुत्र, मारीच।

ताडघ-स०पु०—बेंत या कोडा मारने वाला, जल्लाद।

ताडण, ताड़णा-स०स्त्री० [स०] १ डाट, डपट, फटकार, ताडना।
उ०—साधु ही लाहाणि थाये, हास्य रोगी जाणि। निंदा थकी वध बधना वळि, ताडणादि पिछांणि।—स्रीपाळ रास
२ प्रहार, मार।
वि०—ताडना देने वाला।

ताड़णो, ताडबौ-क्रि०स० [स० तड आघाते] १ ताडना देना, डाटना, फटकारना. २ पीटना, मारना। उ०—तरा नापैजी ल्याळिया नू ताड दूर किया। अर आ जागा खुस कीवी।—द दा.
३ हाकना (मवेशी आदि को) उ०—घोरा मरदता पुलिंद पास करि घेनुक वछक ताडिया। विद्याधर नऊ विख अपहरीयो कटक कोडि विभाडिया।—रुकमणी मगळ
मुहा०—ताडियो रै'णो—कुछ नही मिलना, अप्राप्य अवस्था मे रहना।
४ भापना, समझना, सतर्क होना।
ताडणहार, हारौ (हारी), ताडणियौ—वि०।
ताडिओडो, ताड़ियोडो, ताडयोड़ो—भू०का०कृ०।
ताड़ीजणो, ताडीजबौ—कर्म वा०।
ताउणो, ताडबौ, त्राउणौ, त्राडबौ—रू०भे०।

ताडपत्र-स०पु०—१ ताड वृक्ष २ ताड वृक्ष का पत्ता।

ताडरोग-स०पु०—घोडे का एक रोग विशेष जिसके कारण उसका मस्तक ऊपर उठा रहता है, वह कम खाता है और दुर्बल होता जाता है (शा हो)

ताडासन-स०पु० [स०] योग के चौरासी आसनो के अन्तर्गत एक आसन जिसमे दोनो हाथो को ऊपर कर के खडे रहना होता है।

ताडिका—देखो 'ताडका' (रू भे) उ०—हणे ताडिका वाण हू ता सुवाहा, बचै मूरछा होय मारीच वाहा।—सू प्र.

ताडी-स०स्त्री०—१ ताड वृक्ष के फूल के कच्चे अकुरो को गोद कर उनमे से निकाला जाने वाला रस जो कुछ नशीला होता है. २ वह तार जो छाते मे कपडे के नीचे लगाया जाता है ३ साइकिल के चक्के मे धुरी के चारों ओर लगाये जाने वाले तारो मे से एक
४ मथानी के नीचे के चिरे हुए भाग की एक खपच्ची. ५ लोहे की शलाका या शलाख।
रू०भे०—तारी।

ताचकणो, ताचकबौ, ताचणो, ताचबौ-क्रि०अ०—१ हमला करना, क्रोधित होकर आक्रमण करना २ ताकना, घात मे बैठ कर आक्रमण करना।

ताचियोडौ–भू०का०कृ०—हमला किया हुआ, झपट कर आक्रमण किया हुआ।
(स्त्री० ताचियोडी)
ताछ—देखो 'तास' (रू भे.) उ०—ताछ ताछ वटि अतर मडि, डबर मनुहारा। नरमी करे अनेक 'अभा', आगळि उण वारा।—सू प्र.
ताछटणौ, ताछटबौ–क्रि०स०—१ आक्रमण करना, वार करना. २ पछाड़ना, गिराना।
ताछटणहार, हारौ (हारी), ताछटणियौ—वि०।
ताछटिओडौ, ताछटियोडौ, ताछटयोडौ—भू०का०कृ०।
ताछटीजणौ, ताछटीजबौ—कर्म वा०।
ताछटियोडौ–भू०का०कृ०—आक्रमण किया हुआ, वार किया हुआ, पछाडा हुआ।
(स्त्री० ताछटियोडी)
ताछणौ, ताछबौ–क्रि०स०—१ बलिदान देना २ सोने का जेवर आदि साफ करना. ३ वार करना।
ताछणहार, हारौ (हारी), ताछणियौ—वि०।
ताछिओडौ, ताछियोडौ, ताछयोडौ—भू०का०कृ०।
ताछीजणौ, ताछीजबौ—कर्म वा०।
ताछियोडौ–भू०का०कृ०—१ बलिदान दिया हुआ २ साफ किया हुआ (आभूषण)
(स्त्री० ताछियोडी)
ताज–स०पु० [अ०] १ राजमुकुट।
मुहा०—१ ताज बखसणौ—राज्याधिकार देना, राज्य सौंपना २ सिर रौ ताज होणौ—श्रेष्ठ होना, पूर्ण सम्माननीय होना।
यौ०—ताजदार, ताजपोसी।
२ मुकुट। उ०—दादू साहिब मेरे कप्पडे, साहिब मेरा खाण। साहिब सिर का ताज है, साहिब पिंड पराण।—दादू वाणी
३ कलगी, तुर्रा ४ मोर, मुर्गा आदि पक्षियो के सिर पर की चोटी, कलगी ५ वह बुर्ज जिसे मकान के सिरे पर शोभा के लिए बना देते हैं ६ मुख्य द्वार अथवा भवन के ऊपर आगे की ओर बाहर निकला हुआ हिस्सा (शेखावाटी) ७ आगरे मे यमुना के किनारे पर बना हुआ भवन, ताजमहल ८ अरबी घोडा (डिं ना.मा)
उ०—मिळै नही मकराण, ताज केच माझल तुरी। जेहलियै घण जाण, मौजा दियण मगाविया।—बा दा
वि०—श्रेष्ठ।
ताजक–स०स्त्री०—घोडी।
[फा०] एक ईरानी जाति।
स०पु०—यवनाचार्य्य कृत ज्योतिष का एक ग्रथ।
ताजगी–स०स्त्री० [फा० ताजगी] १ शुष्कता या कुम्हलाहट का अभाव, ताजापन, चुस्ती, प्रफुल्लता।
क्रि०प्र०—आणी, लाणी, होणी।

ताजण–स०स्त्री०—१ घोडी। उ०—वरदायक ताजण कोड वर्णं, जिण खेंगण मोल अभा न जुडै। समर्प भुज वाघव जाण सही, लखमोलिय केसर मोल नही।—पा प्र
स०पु०—२ एक लोक-नृत्य विशेष।
[फा० ताजियाना] ३ चाबुक, कोडा।
ताजणियौ—देखो 'ताजणौ' (अल्पा, रू भे)
उ०—१ काळी पीळी बादळी, बरगत भीज्यौ गात। ताजणिया लागा तिका, साजणिया विन सात।—र.रा.
ताजणौ–स०पु० [फा० ताजियाना] १ चाबुक, कोडा, हटर।
ताजणौ, ताजबौ–क्रि०स० [स० तर्ज्जन] डाटना, फटकारना।
ताजदार–वि० [फा०] १ ताज के ढग का २ मुकुट धारण करने वाला। उ०—ताजदार बैठे तखत, रज मे लोटै रक। गिणै दोना नू हेक गत, निरदय काळ निसक।—बा दा.
स०पु०—१ बादशाह, २ राजा।
ताजपोसी–स०स्त्री० [फा० ताजपोशी] राजमुकुट धारण करने या राज-सिंहासन पर बैठने का उत्सव, राज्याभिषेक।
ताजमहल–स०पु०—मुगल बादशाह शाहजहा द्वारा अपनी प्रिय बेगम मुमताज की स्मृति मे आगरे मे यमुना के किनारे पर बनवाया हुआ प्रसिद्ध मकबरा।
ताजिणौ—देखो 'ताजणौ' (रू भे) उ०—मूरित नाह नू जाणै सार, हाथि लगामि ताजिणौ।—वी दे
ताजिम—देखो 'ताजीम' (रू भे.) उ०—सरळिय अगि लता जिम, ताजिम नमतीय वाकि। सोरठणी मनि गउलिय, कउलिय मानि ज लाकि।—प्राचीन फागु सग्रह
ताजियोडौ—देखो 'तजियोडौ' (रू भे.)
ताजियौ–स०पु० [अ० तअजिय] मुसलमानो के धार्मिक नेता इमाम-हुसैन की याद मे प्रतिवर्ष बास की कमचियो व रगीन कागजो आदि का मकबरे के आकार का बनाया जाने वाला मडप। शीया मुसल-मान इसके सामने मातम मनाते हैं और सायकाल के समय इसे दफन करते हैं। मोहर्रम।
मुहा०—ताजिया ठडा होणा—१ ताजिया दफन होना २ अशक्त होना, निर्बल होना ३ मृत्यु को प्राप्त करना।
ताजी–स०पु० (स्त्री० ताजण) १ अरब का घोडा।
उ०—१ वर्ण लूम झूमा हुवा सज्ज बाजी, तुखारी खुरासाण भाडेज ताजी, किता खेत कबोज बाल्हीक कच्छी।—व.भा
उ०—२ मन ताजी चेतन चढै, ल्यौ की करै लगाम। सब्द गुरू का ताजणा, कोइ पहुंचै साधु सुजान।—दादू वाणी
२ ताज देशोत्पन्न कुत्ते की एक जाति या इस जाति का कुत्ता।
उ०—इतरा नै हुकम हुवै छै। कुता रा डोर छूटै छै। लाहोरी ताजी लूच वाण गिलजा पहाडी, जिका री मूडहथ मोहनाळ हाथ भर नस, वड रै पान जिसा कान।—रा सा स

स०स्त्री०—अरब की भाषा, अरबी भाषा।

वि०—१ अरबी, अरब का। २ देखो 'ताजौ' (पु०)

उ०—पार पखं राजी प्रजा, पाजी न करै प्यार। साजी ताजी साहवी, माजी रै परताप।—वा दा.

ताजीम-स०स्त्री० [अ० तअ्जीम] १ सम्मान-प्रदर्शन २ सम्मान, आदर, सत्कार। उ०—रतनां लगथगती लाजती थकी लटकौ कियौ। कवर विण तरह सू ताजीम दियौ।—र. हमीर

क्रि०प्र०—देणी।

रू०भे०—ताजिम।

ताजीर-स०स्त्री० [अ० ताजीर] १ दण्ड, सजा. २ ईर्ष्या।

उ०—तन मन मार रहे साइंसौं, तिनकौ देख करै ताजीर। यह वडी वूझ कहा ते पाई, ऐसी कजा अवलिया पीर।—दादू वाणी

ताजीमी सरदार-स०पु० [फा० ताजीम+रा प्र ई+अ० सरदार] दरबार का वह प्रतिष्ठित सामत या सरदार जिसे राजा या वादशाह की ओर से ताजीम दी जाय।

ताजौ-वि० [फा० ताज.] (स्त्री० ताजी) १ हरा-भरा, ताजा, जिसमे शुष्कता का अभाव न हो २ स्वस्थ, प्रसन्न चित्त, प्रफुल्लित ३ जो पुराना न हो, तुरत का वना, सद्य प्रस्तुत, सद्य उत्पन्न. ४ मोटा-ताजा, हृष्ट-पुष्ट।

यौ०—ताजौ-मातौ।

५ जो बहुत दिनो का न हो, नया। उ०—१ नित हाजी नाजी, पूरा पाजी, ताजी राड तकदा है।—ऊ का

उ०—२ हिवडा थारी जाभौ रे, वैराग छै ताजौ रे।—जयवाणी

६ जो व्यवहार के लिए अभी निकाला गया हो या तय्यार किया गया हो। ज्यू—ताजौ दूध, ताजौ पाणी।

ताटक-स०पु०[स०] १ एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे १६ और १४ के विराम से ३० मात्रायें होती है और अत मे मगण होता है। लावणी प्राय इसी छद मे होती है २ छप्पय छद का २४ वा भेद जिसमे ४७ गुरु, ५८ लघु से १०५ वर्ण या १५२ मात्रायें होती हैं। इसको तालक भी कहते हैं ३ डिंगल का एक गीत (छद) विशेष जिसके प्रथम तीन चरणों मे १६-१६ मात्रा और चतुर्थ चरण मे ११ मात्रा, इसी क्रम से इसका उत्तरार्द्ध रख कर ८ तुक का द्वाला वनाया जाता है।—क कु वो

४ आर्या गीति या खधाण (स्कधक) का भेद विशेष।—पिं प्र

५ कान का आभूषण, कर्णफूल। उ०—चालुक्यराज भीम आप रा वांय भुज नू इच्छणी रा ताटक री पीढ़ करण री सकळप तजियौ।

६ प्रथम गुरु के एगण के प्रथम भेद का नाम।

ताट-स०स्त्री०—१ मिट्टी के पात्र मे पडी दरार।

कहा०—तपियौ घडौ ताट मेलै—अधिक तपने पर मिट्टी के घडे या पात्र मे दरार पड ही जाती है। किसी को अधिक दुःख देने या सताने पर वह आपे से वाहर हो ही जाता है।

२ लवी पतली रस्सी के छोर पर वाधी जाने वाली आक के छाल की वटी हुई रस्सी जिसको हवा में जोर से घुमाने पर आवाज उत्पन्न होती है। यह खेत मे पक्षियो को उडाने के लिए काम आती है. (पोकरण)

ताटकणौ, ताटकवौ-क्रि०अ०—१ वादलों का गरजना. २ मूसलाधार वर्षा होना. ३ कडकना, विजली का जोर से चमकना ४ आक्रमण करना, झपट कर ऊपर आना।

ताटकणहार, हारौ (हारी), ताटकणियौ—वि०।

ताटकिओड़ौ, ताटकियोडौ, ताटक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

ताटकीजणौ, ताटकीजवौ—भाव वा०।

ताटावरड-वि—जवरदस्त ? उ०—जवा चारियौ रातवां चरा'र साताजी को, उपट थाटा कियौ जुळत आछौ। कायवा काज ताटावरड़ काढ़ियौ, कमळ फाटा मठा देख काछौ।

—चादारुण ठा० सुरताणसिंह रौ गीत

ताटियौ—वह टट्टी (आड) जो पानी को वाहर गिरने से रोकने के लिए उस पत्थर की कुंडी की वाजू मे लगाई जाती है जहा रहट की माल पर लगे पात्रों से पानी गिरता है।

मि०—छाजारी।

ताटी—देखो 'टाटी' (रू भे)

ताटीसेवी-स०पु०—नोकर, सेवक, आश्रित। उ०—एक जात रा माट ज्यां माहे पालू पोता सेखावता रा ताटीसेवी।—वां दा. ख्यात

ता'टौ-स०पु०—१ चौडे पेंदे और छोटी दीवार का मझला पीतल का वरतन २ वृक्ष, पेड. ३ गर्मी की ऋतु मे शीतल वायु के लिए लगाई जाने वाली टट्टी।

अल्पा०—ताटी।

४ रोक आदि के लिए लगाई जाने वाली आड।

ताटौ—देखो 'टाटौ' (अल्पा., रू.भे)

ताठणौ, ताठवौ—छीनना, खोसना। उ०—पातसाहा राखै प्रसन्न, जेहा तो घण जाण। मक्के मदीनै मारगा, ताठ सकै कुण ताण।—वा दा

ताठसकणौ, ताठसकवौ-क्रि०स०—छीन लेना, खोसना, अधिकार मे कर लेना।

ताडक—देखो 'ताटक' (४) (रू.भे.) उ०—अजनि अजिय वेवि नयण, पत्रवेलि कपोळि, मोतीलग ताडक कन्नि, मुखि रगु तवोळि।

—प्राचीन फागु सग्रह

ताड—देखो 'ताड़' (रू भे.) उ०—ताळ तमाळिय तरुच्छ घण, तिहा तुळसी नइ ताड। तज तडिल नइ तिलवडी, ताळीसाना झाड।

—मा.का प्र.

ताडणौ, ताडवौ-क्रि०अ०—तमतमाना। उ०—भ्रगुटी भीसण ताडतउ, विकट चपेटा ऊपाडतउ, ओस्ठ युगळ फुरफुरत, वोलतउ खळतउ,

रौद्रमुख करतउ, राता नेत्र करतउ, दुरवचन बोलतउ, राजा कोपानळ प्रज्वळइ ।—व स

२ देखो 'ताडूकणौ, ताडूकबौ' (रू भे) उ०—म्हैं जाण्यौ धवळौ मुग्रो, खाली हो गयौ वग्ग । वाडै उणहिज बाछडो, ऊठ'र ताडण लग्ग ।—महाराजा मानसिंघ

३ देखो 'ताडणौ, ताड़बौ (रू.भे) उ०—फूटि घरी घूवड घाइ ताडइ, ग्राक्रदती द्रूपदि बूब पाडइ ।—विराटपर्व

ताडियौ—स०पु०—सोने के तार से जजीर गूथने का कासी का बना एक छोटा लबा डडा ।

ताडूकणौ, ताडूकबौ—क्रि०ग्र०—बैल का जोश मे ग्राकर ग्रावाज करना। उ०—जद उणहीज वीर धवळा री वाळक वाछडो तिकौ हीज इण सकटै रै कध लगाय नै ताडूकै छै ।—वी स टी

ताडूकणहार, हारौ (हारी), ताडूकणियौ—वि० ।

ताडूकिग्रोडौ, ताडूकियोडौ, ताडूक्योडौ—भू०का०कृ० ।

ताडूकीजणौ, ताडूकीजबौ—भाव वा० ।

ताडणौ, ताडबौ—रू०भे० ।

ताडूकियोडौ—भू०का०कृ०—जोश से ध्वनि किया हुग्रा (बैल)

ताढ़उ—देखो 'ताढौ' (रू भे) उ०—लहरी सायर सदिया, वूठउ सदउ वाव । बीछुडिया साजण मळइ, वळि किउ ताढ़उ ताव ।

—ढो मा

ताढ़क—स०स्त्री०—ठड, शीतलता । उ०—सयणा तणा सदेस, जो कोइ केथे ही कहै । ग्रतर मिटै अदेस, तो मन ताढ़क वापरै ।

—जसराज

ताढ़ौ—वि०—देखो 'ठाढ़ौ' (रू भे) उ०—मेहा वूठा ग्रन वहळ, थळ ताढ़ा जळ रेस । करसण पाका कण खिरा, तद कउ वळण करेस ।

—ढो मा

(स्त्री० ताढी)

ताणौ—क्रि०स०—१ मवखन को गर्म कर घी बनाना

२ देखो 'तावणौ' (रू भे) उ०—अगा ऊससै सवायौ तायौ सुणै वैण राणवाळा, वडाळा छोह मे छायौ चखा चोळ व्रन्न ।—र रू

ताण्यू—स०पु०—कोपीन ।

तात—स०पु० [स० तात.] १ पिता । उ०—सुधन्य माता कौसल्या, तात दसरथ धनि भूपति ।—सू प्र

२ पूज्य व्यक्ति, गुरु ३ पति । उ०—सयणा पाखा प्रेम की, तइ ग्रब पहिरी तात । नयण कुरगउ ज्यू बहइ, लगइ दीह नइं रात ।

—ढो मा

४ ईश्वर । उ०—दादू मन माळा तह फेरिये, जह दिवस न परसे रात । तहा गुरु बाना दिया, सहजै जपियै तात ।—दादू वाणी

५ स्वामी । उ०—व्यथा तुम्हारे दरस की, मोहि व्यापै दिन रात । दुखी न कीजै दीन को, दरसन दीजै तात ।—दादू वाणी

६ प्यार का एक सम्बोधन या शब्द जो भाई-बधु, इष्ट-मित्र के लिये बोला जाता है ।

स०स्त्री०—७ चिंता । उ०—१ जोगी सुणि ढोलउ कहइ, तोनू केही तात । थे पथी हुग्रो पथ सिर, म करि पराई वात ।—ढो.मा

उ०—२ मालवणी म्हे चालस्या, म करि हमारा तात । का हसि करि म्हा सीख दै, खडिस्या माझिम रात ।—ढो मा.

८ कष्ट, पीडा ।

रू०भे०—ताति ।

तातउ, तातउ—देखो 'तातौ' (रू.भे) उ०—१ त्रिसिउ कराळिउ मागइ नीर । तातउ करी ते पाइ कथीर ।—चिहुगति चउपई

उ०—२ करहा माळवणी कहइ, समळि वोल्यउ सच्च । तातउ लोहउ ताहरइ, वयण न लागौ जच्च ।—ढो मा.

तातकाळिक—वि० [स० तात्कालिक] उसी समय का, तत्काल का ।

तातर—स०पु०—समुद्र, सागर । उ०—ईस धुरती रा धाम नीरा तातर मा ग्रोप, सूर तेजगौरा सतभीरा देत साल । धक्का-पखी खगा सुधा सीरा ज्यु मुनद्र धीरा, मही ग्रासतीक वीरा दुजो रायामाल ।

—हुकमीचद खिड़ियो

तातायइ—स०स्त्री० (ग्रनु०) नृत्य मे एक प्रकार का बोल ।

रू०भे०—थताथेइ ।

तातार—स०पु० [फा०] हिन्दुस्तान ग्रौर फारस के उत्तर कैस्पियन सागर से लेकर चीन के उत्तर प्रान्त तक फैला हुग्रा एशिया महाद्वीप का एक दे ।

तातारी—वि०—तातार देश सम्बन्धी ।

स०पु०—तातार देश का निवासी ।

ताताळ—वि०—तेज चलने वाला, शीघ्रगामी, उतावला ।

उ०—खळ काळ माथाळ खाताळ खडा, भिडजाळ ग्राताळ ताताळ भडा, चुडसै धड ग्रीध ग्रखै सवळी, हिय माझळ पेम उठी हवळी ।

—पा प्र

ताति—स०स्त्री०—१ रटन । उ०—तेह कारणि हु टळवळू, दिवस न जाई राति । मुझ घाठी पणि जीभडी, करता तेह नी ताति ।

—मा का.प्र

२ देखो 'तात' (रू भे) उ०—बाळउ बाबा देसडउ, पाणी सदी ताति ।—ढो मा.

तातील—स०स्त्री० [ग्र०] छुट्टी का दिवस, छुट्टी, ग्रवकाश ।

तातेडखानौ—स०पु०यौ०—स्नानागार, हमाम ।

तातै—क्रि०वि०—इससे, इसलिए, इस कारण ।

तातौ—वि० [स० तप्त] (स्त्री० ताती) १ गर्म, उष्ण, तपा हुग्रा ।

उ०—प्रीतम तोरइ कारणइ, ताता भात न खाहि । हियडा भीतर प्रिय वसइ, दझणती डरपाहि ।—ढो मा

मुहा०—तातौ होणौ—गर्म होना, कुपित होना ।

२ तृप्त, पूर्ण । उ०—उच्च जाति मद एक, महा कुळ मद सू मातौ । लाभ तणौ मद लोळ. तेम तप मद सू तातौ ।—ध व ग्र

३ उतावला, जल्दबाज । उ०—मरै नही झक मार, तिकै जीवण नै

ताता। मारै जूवा मसत रहे रगिया नख राता।—ऊ का.

क्रि०प्र०—होणौ।

४ चचल। उ०—वारस आज सहेलिया, ऊगा वारै भाण। जाणै साजन आवसी, ताता तुरी पिलाण।—अज्ञात

५ शीघ्रगामी, जल्दी चलने वाला। उ०—ताता दोय धोरी जोतरिया, भंवर उजळ दोहु पास भलाह। वाजे जिहा पाटळी विध विध, इण रा खेड़ू आप अजाह।—श्रोपो आढो

क्रि०वि०—शीघ्र, जल्द। उ०—करहो कत कवेरियो, सुगणी मारू सग। वो सं ऊमर सुमरो, ताता खड़ै तुरग।—ढो मा

रू०भे०—तत्तौ।

तात्सरज-स०पु० [स० तात्पर्य] तात्पर्य, अभिप्राय। उ०—जिण सिरदार कनै रुजगार ले सिर देण मार्ट सूरवीर रहै है वो देस धिन्न है, देस धिन्न कहण री तात्सरज म्हनै सूरवीर नै परणावजो।

—वो स टी.

तात्विक-वि० [स०] तत्त्व सम्बन्धी, तत्वज्ञानयुक्त।

तायेइ—देखो 'तातायेइ' (रू भे) उ०—तत नक तायेइ तटक दे, तोडत तान।—ध व ग्रं

तादाणळ, तादात्मय-स०पु० [स० तादात्म्य] एक वस्तु का दूसरी वस्तु मे मिल कर एक रूप हो जाने का भाव, आत्मसात होने का भाव, तत्त्वरूपता।

तादाद-स०स्त्री० [अ० तग्रदाद] १ सख्या, गिनती २ कुल योग।

तादृस-वि० [स० तादृश] उसके समान, ठीक वैसा।

ताप-स०पु० [स०] १ एक प्राकृतिक शक्ति जिसका प्रभाव पदार्थों के पिघलने, फैलने और भाप आदि बनने के व्यापारो मे देखा जाता है। इन्द्रियो को इसका अनुभव अग्नि, सूर्य की किरण आदि के रूप मे होता है। उष्णता, गरमी. २ ज्वाला, लपट, आंच. ३ कष्ट, पीडा, दुख। उ०—१ सखिया राणी मू कहइ, तजह न जावइ ताप। साल्ह विरह तिल तिल मइ, मारु करइ विलाप।—ढो.मा.

उ०—२ अहू जग मिटावण विघन तन ताप रा। खपावण पाप रा मूळ खोटा।—खेतसी वारहठ

४ ज्वर, बुखार। उ०—ताप सन्निपात जाणी अतीसर सग्रहणि।

—ध व ग्र.

क्रि०प्र०—आणौ, उतरणौ, उतारणौ, चढणौ, चढाणौ।

५ भय, आतक। उ०—१ वगसर भग्गा वैढ तज, सुण वग्गा नीसाण। ताप उनग्गा तेग री, अर डग्गा आराण।—किसोरदान बारहठ

उ०—२ किण ही वीर स्त्री री पती जुद्ध मे हार अनै मरण सू डरतो तरवार रा ताप सू घर मे आय वडियो।—वी स.टी

६ प्रताप, तेज ७ जोश, साहस। उ०—फौज सारी गारत कराय देक, राती मगरूरी करै सो की री ताप।

—महाराजा जयसिंह आमेर रा धणी री वारता

रू०भे०—तापु।

तापक-स०पु० [स०] १ ताप उत्पन्न करने वाला, उष्णता देने वाला २ रजोगुण ३ ज्वर, बुखार।

तापड-स०पु० [स० ताप+पट्] १ 'जट' या जूट का बना वस्त्र जो प्राय विछाने के काम मे लिया जाता है. २ मैले-कुचैले वस्त्र।

उ०—तागत तूटोडी तापड़ तूटोडा। खाता पीता सू पैला खूटोडा।

—ऊ का.

३ ऊट की पीठ पर चारजामे के नीचे डाला जाने वाला कपडा. ४ ऊट की चाल विशेष. ५ व्यक्ति की मृत्यु के उपरान्त मृतक के घर उसके प्रति सहानुभूति एव परिवार के सदस्यो को आश्वासन देने के लिए आने वाले व्यक्तियो के बैठने के लिए रिवाज के अनुसार निश्चित अवधि तक विछाया जाने वाला वस्त्र।

क्रि०प्र०—न्हाकणौ, विछाणौ।

रू०भे०—तप्पड।

अल्पा०—तापडियो।

तापडणौ, तापड़बौ-क्रि०अ०—१ भागना, दौडना २ दुखित होना, कष्ट अनुभव करना। उ०—सेन अकब्बर तापडे, आप गयो खह मग्ग। ज्या क्रस भजे तन गळै, घण गोळक तन लग्ग।—रा.रू

तापडणौ, तापडबौ—रू०भे०।

तापडधिन, तापडधिन्न-स०पु०— तवले पर प्रहार करने से उत्पन्न शब्द।

क्रि०प्र०—उडणा, उडाणा, होणा।

तापडाणौ, तापडावौ-क्रि०स०—घोडे ऊट आदि को दौडाना।

उ०—इतरी सजनळ कहिनै घोडो तापडाय नै घोडे रै वासो दियो।

—रा घ

तापडणौ, तापडबौ—देखो 'तापडणौ, तापडबौ' (रू भे.)

उ०—जेतइ वे दळ हीचडइ, तेतइ तत्काळ कायर तापडइ।—व स.

तापण—देखो 'तापन' (रू भे.) (डिं को)

तापणौ, तापबौ-क्रि०अ०—१ शीतला (चेचक) के व्रणो का निकलना २ आग की आच से अपने को गरम करना, शरीर को आग या धूप के सामने गरमाना।

३ देखो 'तपणौ, तपबौ' (रू भे) उ०—सो सियाळा मे राजकुमारी री जनम हुवो है जिणसू जचा रै तापण नै तपणी लाया है।

—वी.स टी.

तापणहार, हारौ (हारी), तापणियौ—वि०।

ताविप्रोडौ, तापियोडौ, ताप्योडौ—भू०का०कृ०।

तापीजणौ, तापीजबौ—भाव वा०।

तापतिल्ली-स०स्त्री०—तिल्ली बढने का एक रोग।

तापती-स०स्त्री० [स०] १ सूर्य की कन्या, तापी. २ एक नदी का नाम जो भारत के दक्षिण मे सतपुडा पर्वत से निकल कर पश्चिम की ओर बहती हुई खंभात की खाडी मे गिरती है।

रू०भे०—ताप्ती।

तापत्रय–स०पु०यौ० [स०] तीन प्रकार के ताप—आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक ।

तापन–स०पु० [स०] १ ताप देने वाला, सूर्य. २ कामदेव के पाच बाणों मे से एक. ३ सूर्यकात मणि ४ एक नरक का नाम ५ तत्र मे एक प्रकार का प्रयोग जिससे शत्रु को पीडा होती है ।
रू०भे०—तापण ।

तापमानजत्र, तापमानयत्र–स०पु०यौ० [स० तापमान यत्र] ताप या उष्णता की मात्रा मापने का एक यत्र, थर्मामीटर ।

तापल–स०पु० [स० ताप] १ क्रोध २ श्वास रोग से पीडित पशु ।
वि०वि०—पशुओ मे यह रोग प्राय॰ ग्रीष्म ऋतु मे होता है ।

तापस–स०पु० [स०] १ तप करने वाला, तपस्वी । उ०—नमो ससि तापस रूप रिखभ । नमो अवतार उदार असभ ।—ह र.
२ तेजपत्ता ३ एक प्रकार की ईख ४ शिव (ना मा.)
रू०भे०—तावस ।

तापसक–स०पु० [स०] वह तपस्वी जिसकी तपस्या थोडी हो, सामान्य श्रेणी का तपस्वी ।

तापसतरु, तापसद्रुम–स०पु० [स०] हिंगोट वृक्ष, इगुदी वृक्ष ।

तापस्वेद–स०पु० [स०] १ उष्णता के प्रभाव से उत्पन्न किया हुआ पसीना २ गरम बालु-कण. ३ नमक ।

तापहरी–स०स्त्री० [स०] एक पकवान, एक व्यजन का नाम (व स)

तापाडी–स०स्त्री०—आख की पुतली मे अधिक चोट लगने के कारण होने वाला सफेद चिन्ह ।

तापियोडी–भू०का०कृ०—व्रण निकली हुई (शीतला, चेचक)

तापियोडो–भू०का०कृ०—तापा हुआ, तप्त, गर्म ।
(स्त्री० तापियोडी)

तापी–वि० [स० तापिन्] १ ताप देने वाला, उष्णता पहुचाने वाला । २ दुःख देने वाला, सताने वाला । उ०—उठै मन उकळाइ, प्राण छूटै नहि पापी । हाय रे निठर हिया, ताप किम सहियौ तापी ।
—पना वीरमदे री वात
स०पु०—१ बुद्ध देव २ तपस्वी मुनि ।
स०स्त्री०—३ सूर्य की एक कन्या ४ तापती नदी. ५ नदी (अ मा)

तापु—देखो 'ताप' (रू भे) उ०—सुगुरु साथिय हीण घणु भमिया विसम वाट किहाइ न वीसमिया । वसइ जे जिनमदिरि सीयळइ, त्रिहु परे तीह तापु सही टळइ ।—अर्बुदाचळ वीनती

तापेंद्र–स०पु० [स०] सूर्य ।

तापैलेदिन, तापैलैदिन–स०पु०यौ०—आने वाला या बीता हुआ पाचवा या छठा दिन ।

तापो–स०पु०—१ ऊट के चारो पैरो से एक साथ उछलने का कार्य २ ऊट के द्वारा चलाया जाने वाला पदाघात ।

ताप्ती—देखो 'तापती' (रू भे)

ताफतो–स०पु० [स० तापत·] १ चमकदार रेशमी कपडे ताफते जैसे रग का घोडा । उ०—कासनी ताफता पच कल्याण । सूळहरी चपा पट सिचाण ।—सू प्र
२ एक प्रकार का चमकदार रेशमी कपडा ।

ताब–स०स्त्री० [फा०] १ ताप, गरमी, उष्णता । उ०—आखै दिन बटी अरक, लूआ नै निज ताब । आथवता इण कारणै, उतरी मुख री आब ।—लू
२ आभा, कान्ति, चमक. ३ शक्ति, हिम्मत, सामर्थ्य.
४ सहिष्णुता, धैर्य ५ आतक, रोब । उ०—सुण नवाब पत जाब, ताब ना सहे उरतर । हुय वे आब सिताब, प्राण विण आब मच्छ पर ।—रा रू
रू०भे०—ताबि ।
६ देखो 'ताव' (रू भे) ७ दात निकलने के समय बच्चो के होने वाला फोडा

ताबडतोड–क्रि०वि० [अनु०] तुरत, एक के बाद दूसरा, शीघ्र, झटाझट, लगातार । उ०—आखर वरी रो दिन नैडो आयो । परसू वरी है । अबै काई करसा । मूडै आडो फेपया आयगी । ताबडतोड़ लागी ।
—वरसगाठ

ताबची–स०स्त्री०—एक प्रकार की बन्दूक ।

ताबदान–स०पु० [फा० ताबदान] १ दीवार मे वस्तुयें आदि रखने के लिए छोडा हुआ स्थान, ताख, आला २ कमरे के दरवाजे के ऊपर 'सिलदरो' पर गोलाकार स्थान जिसमे झरोखे भी होते हैं
३ खिडकी, रोशनदान ।
रू०भे०—तावदान ।

ताबातीबो—देखो 'ताखा-ताखी' ।

ताबादार–वि० [अ० ताबऽ+फा० दार] १ आज्ञाकारी, हुक्म का पाबद । उ०—जावतौ तौ बळदेवजी करसी पण ताबादार तौ लखावसी ।—मयाराम दरजी री वात
२ आधीन, मातहत । उ०—पहली ग्यारहौं पातसाह अलावुद्दीन रै अनतर केही सूबादार दिल्ली हू पलटिया तिका मे किताक पाछा दिल्ली रा ताबादार हू ता तिका भी तैमूरवेग री विजय देखि ।
—व भा.
स०पु०—सेवक, नौकर ।
रू०भे०—तावेदार, ताबेदार ।

ताबादारी–स०स्त्री० [अ०+फा०] १ मातहती, अधीनता. २ आज्ञाकारिता ।
रू०भे०—तावेदारी, ताबेदारी ।

ताबि–स०पु० [स० ताप] देखो 'ताब' ५ (रू भे) उ०—जग पवन बिना तर पत्र ज्यौं, थिरि जुवान पण थप्पियौ । उरि ताबि सही असपत्ति री, पाछौ ज्वाब न अप्पियौ ।—रा रू

ताबीज—देखो 'तावीज' (रू भे)

ताबीत-स०पु० [अ० तावईन, ताबऽ का बहु०] १ अधीनता, मातहती। उ०—सेखावत सादा माहाराज बखतसिंघजी री तावीत मे रामसिंघ-जी सू झगडो हुवो। जद गाव रिया डेरा सेखावता नू खबर आई। —वा दा ख्यात

रू०भे०—तावीन।

२ देखो 'तावीज' (रू भे.)

ताबीन-वि०—१ मातहत, आधीन। उ०—त्रिय सहस तावीन, दीघ महाराज पायदळ। उभै सहस उमराव, वघव जतनेत सहस वळ। —सू प्र

२ देखो 'तावीत' १ (रू भे) उ०—नृप गौड निज तावीन, तस-लीम साजत तीन। गढ़ एण सोपुर गाम, इद्रसिंघ इण रो नाम। —सू प्र.

ताबीनदार-स०पु०यौ०—१ नौकर, सेवक. २ सिपाही।

ताबूत-स०पु०—१ जनाजा, अर्थी। उ०—तद खुरम री ताबूत कर सारो लोग उदास सो लार हालियो आयो। —गौड गोपाळदास री वारता

क्रि०प्र०—करणौ, काढ़णौ, निकाळणौ।

२ वह सदूक जिसमे लाश रख कर दफनाने को ले जाते हैं ३ लाश, शव। उ०—कप्पूरो नै मरहटो, भडे उतारे भूत। मागै साह कमाल दी, 'केहर' रो तावूत।—नैणसी

४ मृत व्यक्ति को दफनाने के बाद उसी स्थान पर उसकी स्मृति मे बनाई गई इमारत। मजार, मकबरा, देवल।

उ०—महि वैर वस गोहरि मडप, अवरग बहु कीधा इसा। तावूत (रा) वैर भूलै तिके, कहै 'अजो' राजा किसा।—सू प्र

मि०—'छतरी' १

५ देखो 'ताजियो'।

ताबे-वि० [अ० ताबऽ] वशीभूत, आधीन, आज्ञानुवर्ती।

उ०—मुनसबत तागीर हुवो। जद अमरसिंघ नू खबर हुई जे केसरी-सिंघ नवाव रै ताबे कियो थो सो गयो नही तिण सू मुनसब तागीर हुवो।—राठौड अमरसिंघ री वात

मुहा०—१ ताबे आणौ—अधिकार मे आ जाना, कावू मे आ जाना. २ ताबे करणौ—वश मे करना, अधिकार मे करना ३ ताबे होणौ—वश मे होना, अधिकार मे होना।

रू०भे०—तावे।

यौ०—तावेदार, तावेदारी।

ताबेदार—देखो 'तावादार' (रू भे)

ताबेदारी—देखो 'तावादारी' (रू.भे.)

ताबै—देखो 'ताबे' (रू भे.) उ०—मुसकिल कूच्या माडि, तिका निठि कीधा ताबै। अडता सिर आकास, फेण झडता मुख फाबै।—मे.म.

ताबैदार—देखो 'तावादार' (रू भे.)

ताबैदारी—देखो 'तावादारी' (रू.भे)

ताय-स०पु० [स० तात] १ पिता। उ०—पय पणमीय निय ताय कुली मद्री पय नमीय। सच्च वयण निरवाहु करिवा काणणी सचरइं। —प.प च

रू०भे०—तायग।

स०स्त्री०—२ रात्रि, रात (ह ना)

सर्व०—१ उस। उ०—गुरुजी गोविंद लखाया ए, लखिया ताय भक्या निज अनुभव, परगट गाया ए।—स्री सुखरामजी महाराज

२ किस। उ०—लाख वरीस महत तू लाखा, तायक समवड कीजै ताय। इळ अणवूठै किसौ अवहर, अनड अदठ नै उहवै आय। —महाराणा लाखा री गीत

वि०—समान, तुल्य। उ०—रग थारा हाथा दळपत रा, घणा देख आभचे घाय। साहब मदत मदत अम सामै, तोप कटी खरबूजा ताय।—महेसदास कूपावत री गीत

क्रि०वि०—१ तब। उ०—अवरग तणी सुरग आवटियो, जादव तै करता घण जंग। मेछा तुळ घातिया मुडे, काडै ताय साकडा कुरग। —रामसिंह भाटी री गीत

२ लिये, वास्ते। उ०—इम पच कल्याणक थुणियउ त्रिभुवन ताय। मुनि सुव्रत सामी वीसमउ जिणवर राय।—स कु.

३ वैसे ही, ज्यो। उ०—दिना जवान सको वळ दाखै, सदा तनै अवसाण सदै। आइयो दुरग तो आळी आसत, वदै वेस ताय जोस वदै।—दुरगादास राठौड री गीत

तायक-वि०—१ वीर, योद्धा। उ०—नरकध हजारा नोफुडे, उभै करा जाय न लिया। तिण वार लियण सिर तायका, करह सिव हजारा किया।—सू प्र

२ सहारक, नाश करने वाला। उ०—जानुकी वर मरम जाणग, तेग अरेसा तायक। 'किसन' भज जन मान रख के, दान अभै वरदायक। —र ज प्र

३ शीघ्रतापूर्वक, त्वरायुक्त। उ०—सुणै 'गजण' कथ सूरसाह, तायक तिण ताळा। कळहण ऊससियो कुवर, पित वीर प्रमाळा। —सू प्र

४ शत्रु। उ०—कळह मरन हर पदम कुरम, ओरिया अजरायका। तायका मुगळा करै तडळ, घाय खग घण घायका।—सू प्र

५ एक देश का नाम (नळ-दवदती रास)

सर्व०—तेरा, तेरी। उ०—लाख वरीस महत तू लाखा, तायक सम-वड कीजै ताय। इळ अणवूठै किसौ अवहर, अनड अदठ नै उहवै आय।—महाराणा लाखा री गीत

तायग—१ देखो 'ताय' १ (रू भे) (जैन)

२ देखो 'तायक' (रू भे)

तायत—देखो 'ताईत' (रू भे.) उ०—म्हारे काना नै कुडळ ल्याव, हजा मारू याही रैवो जी। याही रैवो हिवडै रा तायत, याही रैवो जी।—लो.गी.

तायतियो—देखो 'ताईत' (अल्पा., रू.भे)

तायत्तीसग–स०पु० [स० त्रायस्त्रिंशक] इंद्र के स्थानीय देवता (जैन)

तायफ–स०पु० [अ०] १ चारो ओर घूमने का भाव, परिक्रमा
२ चौकीदारी ३ चौकीदार ४ देखो 'तायफो' (मह, रू भे)
उ०—केई केई तायफ लोग न डरै छै। वे पण गोळिया बावण री हास घरै छै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

तायफो–स०पु० [फा० तायफ] १ नाचने गाने वाली वेश्याओ और समाजियों की मडली। उ०—बना रै तायफो जैसळमेर रो सा रे घर आणा सुसरेजी रै पोळा नचाय।—लो गी
२ वेश्या अथवा वेश्याओ का समूह। उ०—बाजै नित घूघर बधै, फरगट वाळो फैल। तन मन मिळियो तायफै, छाका हिळियो छैल।
—बा दा.

तायल–वि०—१ वीर, शक्तिशाली, समर्थ। उ०—सत्रु प्रबळ की सोचणी, सखी कढै रण सार। तायल पिव नित तोलणी, भुज तुल पै भू-भार।—रेवतसिंह भाटी
२ उग, तेज। उ०—जाजुळ दुजराज करण जुध जाडो, तस कुठार द्रग तायल। राहु वरात ईख अजरायळ, आय'र ऊभो आडो।—र रू
३ सहारक। उ०—हुतो सयद हुसैन अब गढ मझि अजरायळ। लोक विदा करि लगस तिको काढै खळ तायल।—सू प्र
४ शत्रु। उ०—घण बोह पतग डोळी बहै घायला, पतग झड छायला कोह पूरी। ताव खग झडा तोडै कमळ तायला। भडा अज-रायला बाघ भूरी।—बळवतसिंह हाडा री गीत

तायलो–सर्व०—१ तेरा, तुम्हारा। उ०—रहे न तायलो राज तर चोयल भालो टकै। मरसी जुध मे भाज, वीर वचन अमणो वदै।—पा प्र
२ देखो 'तायल' (रू भे)

ताया–स०पु० [स० आततायी] (बहु व०) अत्याचारी, आततताई।
उ०—अह छडु विहाया सातम आया सूर अछाया दरसाया। डर आसुर ताया सबद अभाया उभकै पाया असुहागा।—रा.रू

तायोडो–भू०का०कृ० [स० तप्त] १ पिघलाया हुआ २ तपाया हुआ ३ सताया हुआ।
(स्त्री० तायोडी)

तारग—देखो 'तारक' ५ (रू भे)

तारगमत्र—देखो 'तारकमत्र' (रू भे) उ०—तारगमत्र आदेस तो दिढ चा रग निस सधि दिव। सारग नयण उमया सुवर सीस गग धारग सिव।—सू प्र.

तारगसिला–स०स्त्री०—चौसठ योगिनियो के एकत्रित होकर नृत्य करने की शिला।

तार–स०पु० [स०] १ सूत, तागा, सूत्र, ततु। उ०—सजण बोळावे हू वळी, ऊभी मदिर पूठ। हिवडो काचा तार ज्यू, गयो लडगा टूट।
—र रा.

मुहा०—१ तार तार करणो—किसी बुनी या बटी हुई वस्तु को एक-एक रेशे मे बिखेरना २ तार-तार होणो—वस्तु का ऐसा फटना कि उसकी धज्जिया अलग-अलग हो जाय। वस्तु का एक-एक रेशा अलग होना।

यौ०—तार-जोड।

२ चादी, रौप्य (डिको, अ.मा) उ०—जर तार चिगा साइवान जास। परगटे जाण बहु रवि प्रकास।—सू प्र.

यौ०—तारकूट।

३ सोना, चादी, लोहा, तावा आदि धातु को पिघला कर या पीट कर बनाया हुआ तागा। रस्सी या तागे के रूप मे परिणत की हुई धातु। धातु-ततु।

क्रि०प्र०—खीचणो।

४ धातु का वह तार या डोरी जिसके द्वारा बिजली की सहायता से सदेश भेजा जाता है, टेलीग्राफ।

यौ०—तार घर।

५ तार पर बिजली की सहायता से आई हुई खबर, सदेश.

६ मादक पदार्थ सेवन करने के बाद की अवस्था। हलका नशा, खुमारो। उ०—जिम जिम मन अमले कियइ, तार चढती जाइ। तिम तिम मारवणी तणइ, तन तरणापउ थाइ।—ढो मा

७ बराबर चलता हुआ क्रम, निरन्तरता, सिलसिला।

मुहा०—१ तार जमणो—क्रम बैठना. २ तार टूटणो, तार तूटणो—क्रम भग होना, सिलसिला टूटना ३ तार बधणो—क्रम बधना, सिलसिला लगना ५ तार बधियो हूंणो—क्रम मे चलना, सिलसिला जारी रहना. ५ तार बाधणो—क्रम जारी रखना, निरन्तरता रखना ६ तार लगणो—देखो 'तार बधणो' ७ तार लगाणो—ताता बाधना, क्रम लगाये रखना।

८ सयोग, अवसर।

मुहा०—१ तार जमणो—कार्य सिद्धि का अवसर बैठना, सयोग मिलना २ तार बैठणो—काम बनने का अवसर मिलना।

९ सार, तत्व, निष्कर्ष। उ०—उदयवत आज दुनियाण सह ऊपरा, सार रो तार लागो सवा ही। हस राखै जिका नीर अळगो हुवै, नीर राखै जिका हस नाही।—महाराणा प्रताप री गीत

मुहा०—तार काढणो—सार निकालना, तथ्य ज्ञात करना।

१० वश, परम्परा। उ०—मेवट कोटे राव मेलणो, साहण सेन सवायो। लोदा तार कहै लाखावत, ऊगै दीहत आयो।
—महाराणा मोकळ री गीत

११ सुवीता, व्यवस्था।

मुहा०—१ तार जमणो—सुवीता होना, कार्य सिद्धि की व्यवस्था बैठ जाना. २ तार बधणो—देखो 'तार जमणो'
३ तार लागणो—देखो 'तार जमणो' ४ तार टूटणो—व्यवस्था का भग हो जाना।

१२ युक्ति, उपाय, तरकीब।

मुहा०—१ तार बैठणो—तरकीब काम आना २ तार लगाणो—

युक्ति काम मे लेना, उपाय करना।
१३ राम की सेना का एक बन्दर १४ तारकासुर नामक राक्षस.
१५ मय दानव का एक साथी १६ नतीजा, फल १७ ध्यान, लगन।
उ०—बोलै चालै वैठै ऊठै, पारब्रह्म सू तार न टूटै।
—स्री सुखरामजी महाराज
१८ तार वाद्य। उ०—वीण ताळ सुर वीण, तार तवूर चग तदि।
ग्रस खजरी पिनाक जुगति मरदग वजत जदि।—सू प्र
कहा०—तार वजियो नै राग पिछाणी—तारवाद्य वजा अर्थात् तार-वाद्य के तार झकृत हुए और राग का परिचय मिला। कार्यारम्भ करने के ढग से ही व्यक्ति की योग्यता का पता चल जाता है। व्यक्ति की वाणी से उसके चरित्र का पता लग जाता है।
१९ शुद्ध मोती २० सगीत मे एक सप्तक जिसके स्वरो का उच्चारण कठ से उठ कर कपाल के अभ्यतर स्थानो तक होता है
२१ प्रकाश, आभा, चमक। उ०—ऊपरि पदपलव पुनरभव ओपति, निर्मळ कमळ दळ ऊपरि नीर। तेज कि रतन कि तार कि तारा हरिहस सावक मम्हिर हीर।—वेलि
२२ चाशनी की परिपक्व अवस्था के समय जाच करने पर बनने वाला ततु।
(मि० 'टोरो' १६)
२३ आख की पुतली।
स०स्त्री०—२४ मूर्च्छा, वेहोशी।
क्रि०प्र०—आणी।
२५ पर्याप्त भोजन करने से पेट के तनने की अवस्था २६ क्रोध, गुस्सा।
वि०—१ निर्मल स्वच्छ २ थोडा, किंचित, अल्प।
उ०—घूर्णं सिर पकडै घरा, असह सहै जे आर। वौहलिया विरदावियां, गरज सरै नह तार।—वा दा
तारक-स०पु० [स०] १ नक्षत्र तारा। उ०—गैण नै मिळिया भोळा नैण, जोवता तारक जोडया हाथ। छुडावै कोई साथण मून, भलो है उण साथण रो साथ।—साझ
२ आख की पुतली ३ इन्द्र का एक शत्रु जिसे कार्तिकेय ने मारा था, तारकासुर। उ०—मनख्या मत विलळाय गाय प्रभुजी पख तूटल, रामण हणियो राम गुह खाघो तारक खळ।—र.ज प्र.
४ चादी, रौप्य। उ०—घरे तारक द्रव्य धारा, वदे तोरण जेर वारा।—सू प्र
५ वह जो पार उतारे, तारने वाला। उ०—क्रतू करुणामय ध्रु करतार, भणं भय भाजन भू भरतार। नधारक धारक लोक असेस, सुधारक तारक सेस विसेस।—ऊ का
रू०भे०—तारग।
यौ०—तारक तीरथ।
अल्पा०—तारको।
६ एक जाति विशेष जिसके व्यक्ति मृतक व्यक्ति के क्रियाकर्म-सस्कार तथा तर्पण आदि कराते हैं और मृत्यु कृत्यो का दान भी ग्रहण करते हैं।
मि०—कारट (१)
७ ईश्वर ८ कर्णधार, मल्लाह ९ प्रत्येक चरण में चार सगण और एक गुरु सहित तेरह वर्ण का वर्णिक छंद विशेष।
१० [स० ताक्ष्यं] गरुड (ना मा) ११ घोडा (अ मा)
रू०भे०—तारकी, तारख, तारग, तारच्छ, ताराक्ष, तारिक, तारिक्ख, तारखि।
तारकअसवारी-स०पु० [स० ताक्ष्यं+रा अ+फा सवारी] ईश्वर (अ मा.)
तारकगाह-स०पु०—स्वामी कार्तिकेय (डि को)
तारकजित-स०पु० [स० तारकजित्] कार्तिकेय (डि को)
तारकटोडी-स०स्त्री० [स० तारक+रा-टोडी] ऋषभ और कोमल स्वरों के लगने से बनने वाली एक राग जिसमे पचम स्वर वर्जित होता है।
तारकतीरथ-स०पु० [स० तारकतीर्थ] गया तीर्थ जहा के लिए यह माना जाता है कि वहाँ पिंडदान करने से पुरखे तर जाते हैं।
तार-कवाणी-स०स्त्री० [स० तार+फा० कमान+रा प्र ई] धनुष के आकार का एक औजार जिसमे डोरी के स्थान पर लोहे का तार लगा रहता है और इससे नगीने काटे जाते हैं।
तारकब्रह्म, तारकमत्र-स०पु० [स०] राम का षडक्षर मत्र, राम तारक मत्र।
रू०भे०—तारगमत्र, तारगमत्र।
तारकस-स०पु० [स० तार+फा० कश] वह जो धातु के तार खीचने का काम करे।
तारकसी-स०स्त्री०—१ तार खीचने का कार्य २ तार खीचने की मजदूरी।
तारका-स०स्त्री०—१ वालि की पत्नी २ इन्द्रवारुणी. ३ नक्षत्र, तारा (अ मा.) उ०—खीवरा हाथ वाणास खास, वहतीक जाण रोकी वनास। सातरा अती धाराक सेल, तारका झवभवै अणीह सेल।—वि स
४ ज्योति, प्रकाश (ह ना) ५ घोडो की जाति विशेष (शा हो.)
तारकाक्ष-स०पु० [स०] तारकासुर का ज्येष्ठ पुत्र, यह उन तीन भाइयो मे से एक था जो ब्रह्मा के वर से तीन पुर (त्रिपुर) वसा कर रहते थे।
तारकायण-स०पु० [स०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।
तारकार, तारकारि-स०पु० [स० तारकारि] स्वामी कार्तिकेय, षडानन (अ मा)
तारकासुर-स०पु० [स०] एक असुर का नाम जिसका पूरा वृत्तान्त शिवपुराण मे मिलता है।
तारकिक-स०पु० [स० तार्किक] १ तर्क शास्त्र को जानने वाला।
उ०—ज्योतिषी वैद पौराणिक जोगी, सगीती तारकिक सही।

चारण भाट सुकवि भाखा चित्र, करि अेकठा तो अरथ कहि।
—वेलि

२ तर्क करने वाला।

तारकिणी—वि०स्त्री० [स०] तारावलीयुक्त, तारो से भरी।

तारकित—वि० [स०] तारो से युक्त।

तारकी—वि० [स० तारकिन्] १ तारकित २ थोडा, किंचित।
उ०—खोयो आसुरी धरम आयो बीगोयो तै मीरखान, जोयो नही तारकी न आगली जवाव।—नवलदान लालस
स०पु०—देखो 'तारक' (१०) उ०—कपू मार तेगा तीजी ताळी सो कुरगी कीधो, जका वाद नीरगी प्रजाळी भुजा जोम। मानू तारकी विरगी काळी घडा माथै। भूप डूगै विधूसी फिरगी वाळी भोम।
—डूगजी जवारजी री गीत
३ देखो 'तारक' (१०, ११)

तारकूट—स०पु० [स० तार+कूट=नकली] चादी और पीतल के योग से बनी एक धातु।

तारकेस, तारकेस्वर—स०पु० [स० तारक+ईश और तारकेश्वर]
१ शिव, महादेव २ एक शिवलिग जो कलकत्ते के पास है.
३ तर्कशास्त्र।
[स० तार्किक] ४ तर्कशास्त्र करने वाला।

तारको—देखो 'तारक' (५) (अल्पा., रू भे)
(स्त्री० तारकी)

तारक्खी, तारक्ष, तारख, तारखी, तारिख—१ देखो 'तारक' (१०, ११)
(डि को , अ मा ,ना डि को.)
उ०—१ पर्‌यो व्याल ज्यों कीलनी वध्य किल्लो। मनू भक्खि तारक्ष पीछे उगल्यो। वहू वायके वेग मानू उवारची, पर्‌यो छाग भूमी मनू तेग मार्‌यो।—ला.रा
उ०—२ किवली पिच्छू कहै लहू लघु अक लहावै, गिणै छद वस गुरु कवी लघु चार कहावै। वीजा दीरघ वरण जपै गुरु आदि सजोगी, विसरग अग सिर विंदु भणै तारख सा भोगी।—र रू
उ०—३ ताखडा फरै फरगाण तारख तरह, दुरग वाको लयण रोड ददमा।—मोडजी आढो

तारग—देखो 'तारक' (रू भे) उ०—मारग मे तारग मिळै, सत राम दोई। सत सदा सीस राखू, राम ह्रदय होई।—मीरा

तारगमत्र—देखो 'तारकमत्र' (रू भे) उ०—अत वार कहि अत उधारसि, तारगमत्र समपि सिव तारसि।—सू प्र

तारगा—स्त्री०—१ यक्षो के इन्द्र पूर्णभद्र की चतुर्थ पटरानी (जैन)
२ नक्षत्र।

तारघर—स०पु० [स० तार+गृह] वह कार्यालय जहाँ बिजली के सहारे तार द्वारा सदेश भेजा जाता है और प्राप्त किया जाता है।

तारच्छ—देखो 'तारक' (१०, ११) (रू भे)

तारजोड—स०पु०यौ०—कशीदाकारी का एक कार्य जो सुई और धागे की सहायता से कपडे पर किया जाता है। कारचोवी।

तारण—वि० (स्त्री० तारणी) उद्धार करने वाला, तारने वाला।
उ०—१ तिण सुत सजय रघुकुळ तारण। मावय सजय सुत दुसह सघारण।—सू प्र
उ०—२ वारण रा तारण व्रजवासी, कारण जिसे सुणै नह कान।
—गणेसदान रतनू
स०पु० [स०] १ (अन्य को) पार करने का कार्य. २ उद्धार, विस्तार।
यौ०—तारण-तरण।
३ ईश्वर. ४ ऋण की रकम, जो सोना गिरवी रख कर ली जाती है, पर जब व्याज बढता है और ऋण की अदायगी नहीं हो पाती है तब ऋणदाता गिरवी मे और सोना लेता है। यह अतिरिक्त गिरवी मे रखी जाने वाली वस्तु तारण कहलाती है (शिवगढ)।
रू०भे०—तारन।

तारण-पारण—स०पु०—एक व्रत जो आश्विन शुक्ला पूर्णिमा के दिन मे उपवास के द्वारा प्रारम्भ किया जाता है। इसमे प्रथम उपवास के बाद कार्तिक कृष्णा प्रतिपदा को प्रात एक समय भोजन, अन्य दिवस सायकाल मे एक समय भोजन और तृतीय दिवस पुन उपवास। फिर अगले दिन प्रात एक समय, दूसरे दिन सायकाल एक समय भोजन और पुनः उपवास—इसी क्रम से कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा तक यह व्रत किया जाता है।

तारणी—स०स्त्री०—१ उद्धार करने वाली।
यौ०—तारणी तेरस।
२ देवी, दुर्गा. ३ कश्यप की एक पत्नी जो याज और उपयाज की माता कही जाती है।

तारणीतेरस—स०स्त्री०यौ०—बुधवार के दिन पडने वाली त्रयोदशी की तिथि जिस रोज स्त्रिया व्रत कर तेरह अनाजो को सम्मिलित कर रोटी बना और तेरह शाको को एक साथ पका कर भोजन करती हैं।

तारणो, तारबो—क्रि०स० [स० तृ] १ पार लगाना, उद्धार करना, मुक्त करना। उ०—रात दिवस हिक राम, पढिया जो आठू पहर। तारै कुटुब तमाम, मिटै चोरासी मोतिया।—रायसिंह सादू
२ बचाना, रक्षा करना। उ०—आऊ मे तूटी वरत, कूए मझ पैठाह। अणदी खाती तारियो, (मा)खारोडै बैठाह।—अज्ञात
३ तिराना। उ०—साह तणी करणी सुणी, अळगा हूत अवाज। तद तारी मेहा तणो, जळ डूबती जिहाज।—अज्ञात
उ०—२ वैरी कडछे 'वाकला', करै अहोणी काज। राम तार गिरवर रची, पाणी ऊपर पाज।—वा दा.
तारणहार, हारौ (हारो), तारणियौ—वि०।
तरवाडणौ, तरवाडबौ, तरवाणौ, तरवावौ, तरवावणौ, तरवावबौ, तराडणौ, तराडवौ, तराणौ, तरावौ, तरावणौ, तरावबौ—प्रे०रू०।
तारिओडौ, तारियोडौ, तार्‌योडौ—भू०का०कृ०।

तारीजणौ, तारीजवौ—कर्म वा० ।
तरणौ, तरवौ—अक०रू० ।
तारणौ, तारबौ—रू०भे० ।
तारत, तारतखानौ. तारय—स०पु० [अ० तहारत] पाखाना, शौचालय । उ०—वासै अति विकराळ, महा मुख तारत मोखो । है कूडो इक हाथ, हाथ हेकरण मे होको ।—ऊ का
तारदी—स०स्त्री०—एक प्रकार का काटेदार पेड ।
तारन—देखो 'तारण' (रू भे)
तारपीन—स०पु० [अ० टरपेन्टाइन] चीड के पेड से निकला हुआ तेल जो औषध के काम मे आता है और दर्द के स्थान पर मला जाता है ।
तारवणौ, तारववौ— देखो 'तारणौ, तारवौ' (रू भे)
उ०—हू वळिहारी जाऊ तेह नी, जे स्री साधु निग्रय । आप तरइ अउर तारवइ, साघइ मुगति नउ पथ ।—स कु
तारवियोडौ—देखो 'तारियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री० तारवियोडी)
तारसार—स०पु० [स०] एक उपनिषद् का नाम ।
तारहौ—तेरा । उ०—गणं तारहा नाम सुर कोडि गनै । भला माहरी एक आराध मनै ।—पी ग्र
तारा—क्रि०वि०—१ तव । उ०—तारा मडळेजी अरु वीदेजी वा काम-दारां भाय रावजी नू कयो ।—द.दा
२ देखो 'तारा' (३, ४) (रू भे)
ताराण—देखो 'तारायण' (रू भे)
तारा—स०पु०—१ युद्ध मे वजाया जाने वाला एक वाद्य विशेष ।
उ०—रायजादा रा भाला भळकिनै रहीया छै । तबलवधा मीर-जादा वाका बहादरवा नै तारा तवल वाजिनै रहीग्रा छै ।—रा सा स
२ सुरणाई नामक सगीत वाद्य के छेदो का नाम जो सख्या मे कुल ६ होते हैं ।
स०स्त्री०—३ वालि वदर की पत्नी ४ सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र की धर्मपत्नी शैव्या का एक नाम ।
रू०भे०—तारा ।
५ ज्योति, प्रकाश (ह.ना)
यो०—ताराधिप, ताराधीस, तारानाथ, तारापत, तारापति ।
ताराइण—देखो 'तारायण' (रू भे.) उ०—करण सहस सम करग, तिमर कुरियद भगो तिण । दवै तास तप देखि अवर छत्रपति ताराइण ।—सू प्र
ताराई—स०स्त्री०—एक घास विशेष ।
ताराक्ष—स०पु०—एक असुर का नाम ।
ताराग्रह—स०पु० [स०] मगल, बुद्ध, गुरु, शुक्र और शनि इन पाच ग्रहो का समूह (ज्योतिष)
ताराज—देखो 'तराज' (रू भे.)
तारादूती—स०स्त्री०—चुगली करने वाली स्त्री । उ०—जेठजी के तारा-दूती नार, नित उठ थासू लड पडै जी म्हाका राज ।—लो गी.
ताराधिप, ताराधीस, तारानाथ—स०पु०—१ चन्द्रमा २ शिव ३ वृहस्पति. ४ वालि ५ सुग्रीव ६ राजा हरिश्चन्द्र ।
तारापत—स०स्त्री० [स० तारा+पक्ति] तारावली, तारो की पक्ति ।
तारापत, तारापति—देखो 'ताराधिप' ।
तारापथ, तारापह—स०पु० [सं० तारापथ] १ आकाश २ आकाश गगा ।
तारपीड—स०पु० [स०] १ चंद्रमा २ अयोध्या के एक राजा का नाम (मत्स्य पुराण) ३ काश्मीर के प्राचीन राजा का नाम ।
तारापैसानौ—स०पु०—वह घोडा जिसके ललाट पर अगूठे के वरावर सफेद तिलक हो (अशुभ) (शा हो)
तारामडळ—स०पु० [स० तारामडल] १ नक्षत्रो का समूह, तारागण ।
उ०—जगमगत फूल जरदोज रा, वयडा पीठ वखाणिया । अधार निसा जाणं अरस, तारामडळ ताणिया ।—सू प्र
२ एक प्रकार की आतिशवाजी ।
तारामडूर—स०पु० [स०] अनेक द्रव्यो के योग से वनने वाला वैद्यक मे एक विशेष प्रकार का मडूर ।
ताराम्रग—स०पु० [स० तारामृग] मृगशिरा नक्षत्र ।
तारायण—स०पु० [स०] १ आकाश ।
स०स्त्री०—२ तारावली, तारो की पक्ति । उ०—नारायण देवा मही, ज्यू तारायण चद । कमळा पग चपी करै, 'वक' सक तज वद ।—वा दा
३ नेत्र-ज्योति, नजर ।
मुहा०—तारायण वधणी—दृष्टि स्थिर होना ।
४ मस्तक, कपाल । उ०—वेद परायण इसी वचाई, मही सरायण सुणज्यो मूढ । निज नारायण गुरू निवाजै, फजर गई तारायण फूट ।
—वाकीदास वीठू
५ चोट लगने या कमजोरी के कारण यदाकदा आखो के आगे छा जाने वाला अधेरा ।
क्रि०प्र०—आणी, वधणी ।
वि०पु० (स्त्री० तारायणी) उद्धार करने वाला, उद्धारक ।
उ०—अभे रूप धारायणी साचेली जेहान आखै, तारायणी सिला धु नाचेली निरस्याद । पारायणी प्रवाडा आछेली दसा दैण पाता, नारा-यणी रूप नमो काछेली अनाद ।—नवळदान लाळस
रू०भे०—ताराअण, ताराइण ।
तारायणी—स०स्त्री०—नक्षत्र समूह, तारो का समूह ।
उ०—नखत जोतीक धिन 'वखत' नव साहसा, सो अचळ वीर पै तखत समराथ । पाय नामै प्रथीनाथ सारी प्रथी, सुर गिरा जेम तारा-यणी साथ ।—महाराजा वखतसिंह रो गीत
तारिक—वि० [अ०] १ तर्क करने वाला, तर्क छेडने वाला २ त्यागी ।
उ०—दादू आसिक एक अल्लाह के, फारिग दुनिया दीन । तारिक इस औजूद थै, दादू पाक यकीन ।—दादू वाणी
रू०भे०—तारिख, तारिख ।

देखो 'तारक' (रू भे) (ना मा)

तारिका—देखो 'तारो' (२) (अल्पा, रू.भे)

उ०—सुदर नयन तारिका सोभत, मान कमळ दळ मध्य अलि हो। —स कु.

तारिख, तारिख—१ देखो 'तारक' (रू भे) उ०—तविक वेग तारिख भ्रमन नन मविख विसारन। चद सरद लख चमक, तमक तज्जत नह तारन।—जैतदान बारहठ

उ०—२ करखि प्राण केविया दसा अमरखि दुर-वद्या। सु-रिख बाण सासत्र, जाग सुर तारिख यद्या।—रा रू.

२ देखो तारिक' (रू भे)

तारिया—स०स्त्री० [स० तारिका] १ तारिका देवी (जैन) २ आख की पुतली (जैन)

तारियोडौ—भू०का०कृ०—१ उद्धार किया हुआ, पार किया हुआ २ रक्षा किया हुआ, बचाया हुआ ३ तिराया हुवा। (स्त्री० तारियोडी)

तारिस—क्रि०वि० [स० तादृश] वैसा ही। उ०—'सावळ' को 'केहरि' खग साहै, मारू वर्ण घणी दळ माहै। 'उमेदसो' तारिस 'अन्नावत', आयो राजी करण 'अजावत'।—रा.रू

तारी—स०स्त्री०—१ घी, चावल आदि के सयोग से बना एक चटपटा व्यजन जिसमे चने की दाल, आलू, गोबी, मटर आदि भी डाले जाते हैं २ तार का बना एक उपकरण जिससे बच्चे गोल पहिया चलाते हैं ३ देखो 'ताडी' (रू भे)

तारीक—वि० [फा०] १ स्याही, काला २ धुधला।

तारीकी—स०स्त्री० [फा०] अधकार, अधेरा, स्याही।

तारीख—स०स्त्री० [फा०] १ मास का प्रत्येक २४ घटे की अवधि का एक दिन, तिथि २ कोई नियत तिथि जो किसी पूर्व की घटना के लिए प्रसिद्ध हो ३ किसी कार्य के लिए ठहराया हुआ दिवस।

मुहा०—१ तारीख देणी—किसी कार्य के लिए कोई तिथि निश्चित करना २ तारीख पडणी—पेशी के लिए तिथि मिलना।

४ इतिहास।

मुहा०—तारीख वाचणी—इतिहास प्रकट करना।

तारीफ—स०स्त्री० [अ०] १ वर्णन, बखान. २ प्रशसा, श्लाघा।

क्रि०प्र०—करणी, कराणी, होणी।

मुहा०—तारीफ रा पुळ बाधणा—बेहद प्रशसा करना।

तारु—देखो 'तारू' (रू भे)

तारुण—स०पु० [स० तारुण्य] युवावस्था, वयस्कता।

रू०भे०— तारुणण, तारुन्न।

तारुणी—देखो 'तरुणी' (रू भे) उ०—तारुणी सऊजळ सेतदत। वाणी सुवाणि नइ लाजवत।—र ज प्र

तारुण्ण, तारुन्न, तारुण्य—देखो 'तारुण' (रू भे)

उ०—वैरी तरवर हम है बयार, तारुण्य तरुन तत्पर तयार।—ऊ का

तारू—वि०—१ उद्धार करन वाला, पार लगाने वाला

२ देखो 'तैरू' (रू भे) उ०—स्रीपति कुण सुमति तूझ गुण जु तवति। तारू कवण जु समुद्र तरै।—वेलि

३ देखो 'ताहरा' (रू भ) उ०—चक्राकारि फिरइ तारू पठाण करइ किउ।—व म

रू०भे०—तारु।

तारेक—क्रि०वि०—कभी, यदाकदा।

तारै—क्रि०वि०—तब। उ०—इम करता गुदहळक वेळा हुई, तारै कोहर उपर पधारीया। पछे करहा नै पाणी पावण लागा।—ढो मा.

तारौ—स०पु० [स० तारा] १ नक्षत्र, सितारा, तारा।

पर्या०—उडगण, ग्रह, जोत, जोतकी, तारा, तेज, दीपनभ, धिसन, नखत, भा, रिखभ, रूपमिण।

मुहा०—१ तारा गिणणा—तारे गिनना, कष्ट अनुभव करना २ तारा तोडणा—तारे तोडना, कठिन कार्य करना ३ तारा मे—गुरु और शुक्र ग्रहो के अस्तकाल का समय जो मागलिक कार्यो के लिए अशुभ माना जाता है ४ तारौ अस्त होणौ—गुरु या शुक्र या दोनो का ही अस्त होना जो अशुभ समझा जाता है ५ तारौ ऊगणौ—गुरु और शुक्र दोनो का उदयकाल मे रहना। यह शुभ माना जाता है ६ तारौ लागणौ—गुरु या शुक्र या दोनो ही के अस्तकाल से उदयकाल तक का समय जो मागलिक कार्य के लिए अशुभ माना जाता है।

२ आंख की पुतली (ह ना) उ०—आख्या रा तारा अवस, सुख स्वारथ रा सार। साहब सिर रा सेहरा, आतम रा आधार।—र रा

३ अश्विनी नक्षत्र. ४ भाग्य ५ प्रकाश ६ नैचे के मध्य के उभरे हुए गोलाकार भाग पर लगाये जाने वाले धातु के बने फूल।

ता'रौ—सर्व०—तेरा, तुम्हारा।

तारौ-राणौ—स०पु०—बालिकाओ द्वारा गाया जाने वाला एक राजस्थानी लोक-गीत।

तालक—स०पु०—छप्पय छद का २४ वा भेद जिसमे ४७ गुरु ५८ लघु से १०५ वर्ण या १५२ मात्रायें होती है।

ताळ—स०स्त्री०—१ वेला, समय। उ०—ताहरा देवीदास कह्यो, ताळ तो काही लागी नही। जावण आवण हीज कियो। —पलक दरियाव री वात

२ हाथ का तल या हथेली ३ करतल ध्वनि।

उ०—१ सुणै बात ऐ मात नै भ्रात साथै। हसै तेम लकेस दे ताळ हाथै।—सू प्र

उ०—२ साचो धणी विपत मे सामी, तेडचा आवै तीजी ताळ। विखमी वाट तणो वोळाऊ, साई तू काळा तणो सुगाळ। —ओपो आढो

यौ०—ताळताळी।

४ तली अथवा जाघ या बाहु पर जोर से हथेली मार कर उत्पन्न किया हुआ शब्द ।
मुहा०—१ ताळ ठोकणी—बाहु या जाघ पर हाथ मारते हुए जोश दिखाना, ललकारना २ ताळ देणी—ताली बजाना ।
५ घोडे की टाप की ध्वनि । उ०—तठै दूग तूटै घिकै आग तोडा । घणू नाळ ताळां वजै नास घोडा ।—सू प्र
६ टहनी ७ हरताल ८ हाथियो के कान फडफडाने की ध्वनि । उ०—चले करण ताळा उजाळा चलावे । घरै काळ भा अद्रि पखाळ धावै ।—व भा.
९ तलवार की मूठ. १० भाल, ललाट ११ हाथ ऊपर उठा कर खडे हुए मनुष्य के बरावर की ऊचाई और गहराई का एक माप, लम्बाई का एक माप ।
(मि० ऊबता)
यौ०—ऊबताळ ।
१२ सलाह, राय ।
मुहा०—ताळ मिळणी—राय मे एक होना, विचार मिलना ।
१३ तरकीब । उ०—वास निकट निबळा वसै, सबळ न लागै ताळ । गाजीजै नहि गुरड सू, पैठा नाग पयाळ ।—बा दा
मुहा०—१ ताळ जमणी—युक्ति बैठना, तरकीब काम आ जाना २ ताळ वैठणी—देखो 'ताळ जमणी' ।
१४ दाव पेच १५ लय, धुन । उ०—रुघनाथसिंघ नै भी अपनी वाकवी दिखाय समज का सुना सम छोड कर ताळ लगाई ।
—दुरगादत्त बारहठ
यौ०—ताळधर, ताळधारी ।
स०पु०—१६ ताड वृक्ष । उ०—रे झोका सीराम तू, सातै ताळ वेधण तीर । यूं देता थोका, दीना चा नाथ जगदाता ।—र ज प्र
यौ०—ताळकेतु, ताळपत्र, ताळपिसाय, ताळपुत्र, ताळवन ।
१७ तालीशपत्र १८ बिल्व फल, बिला, बेल १९ एक प्रकार का प्राचीन वाद्य विशेष जो मजीरे से बडा होता है ।
उ०—वाज्या भूगळ भेरी रै, ताळ नगारा वाजीया ।
—स्रीपाळ रास
२० जलाशय, तालाब । उ०—१ पालर ठढौ 'जाभै' पायौ, स्वाद अनोखौ घणौ सरायौ । दया करी निज ताळ दिखायौ, गया पाडिया जळ गिदळायौ ।—ऊ का
उ०—२ जेहल ताळ खडीण ह्वं, तरवर लाकड होय । हरम ढहै ढूढ़ा हुवै, जस अविकारी जोय ।—बां दा.
२१ पिंगळ मे ढगण के दूसरे भेद का नाम जो आदि गुरु और अन्त लघु होता है (डिं को) २२ लय का समय के आधार पर निश्चित विभाजन जो सगीत मे मात्राओ के रूप मे वॅटा होता है
२३ महादेव २४ खजूर का वृक्ष. २५ देखो 'ताळी' (मह., रू भे.)
उ०—सयोगिणि चीर रई कैरव, स्री, घर हट ताळ भमर गोघोख । दिणयर ऊगि एतला दीधा, मोखिया बध बधिया मोख ।—वेलि.
ताल—म०स्त्री०—१ सिर के मध्य के बाल झर जाने पर होने वाली अवस्था । इसे शुभ माना जाता है ।
(मि० घनटाट)
२ नाचने या गाने मे उसके काल और क्रिया का परिमाण जिसे प्रायः हाथ से ताली बजा कर सूचित करते जाते हैं ।
मुहा०—ताल देणी—नाच का गायन मे क्रिया के लिए सकेत देना ।
स०पु०—३ ऊसर भूमि का समतल विस्तृत मैदान ४ कठोर भूमि, कङ्करीली भूमि । उ०—नैणा पटकूं ताल मे, किरच किरच हुय जाय । मैं थनै नैणा कद कह्यौ, मन पैली मिळ जाय ।—लो गी
५ देखो 'ताळ' (रू भे)
उ०—१ झाल्लर वाज्या घटा वाज्या, वाज्या ताल मजीरा ।
—लो गी.
उ०—२ राते सारस कुरळिया, गूजि रया सब ताल । जाकी जोडी वीछडी, ताको कूण हवाल ।—लो गी
६ तमालपत्र (अ मा) ७ पुरुषो की ७२ कलाओ में से एक कला (व स)
ताळउ—स०पु०—पत्र, पता । उ०—रक्तोत्पल कमळ नी परिइ कुसुमाळ ताळउ, प्रकट जिह्वाणउ अग्र ।—व स.
तालडउ—स०पु० [स० तालपुट] तारपुर नामक विष, तत्काल प्राणनाशक विष (जैन)
तालकर—स०पु०—१ प्रथम गुरु के ढगण के भेद का नाम (डिं को.)
स०स्त्री०—२ करताल ।
तालके—क्रि०वि०—अधीन, कब्जे मे, अधिकार मे ।
उ०—गढ रे माही किलेदार भाटी सुजाणसिंह जैसो थो । लवेरे रो ठाकुर सदा किलो उणरे ही तालके रहतो ।
—मारवाड रा अमरावा री वारता
तालकेतु—स०पु० [स०] १ वह जिसकी पताका पर ताड के पेड का चिन्ह हो २ भीष्म पितामह ३ बलराम ।
तालकेस्वर—स०पु० [स० तालकेश्वर] एक औषध जो कुष्ट, फोडा, फुन्सी आदि रोगो के होने पर दी जाती है ।
तालको—स०पु० [अ० तअल्लुक] बहुत से गावो की जमीदारी, बडा इलाका ।
यौ०—तालकेदार ।
ताळजघ—स०पु० [स०] एक यदुवशी राजा जिसके पुत्रो ने राजा सगर के पिता असित से राज्य छीन लिया था ।
ताळताळी—स०स्त्री०—दोनों हाथो की हथेलियो को आपस मे जोर से मिलाने पर उत्पन्न शब्द या ध्वनि, करतल ध्वनि ।
क्रि०वि०—शीघ्रता ।
ताळधर, ताळधारी—स०पु०—ताल प्रकट करने वाला, ताल धारण करने वाला । उ०—कळ हस जाणगर मोर निरतकर, पवन ताळ-

धर ताळ पत्र ।—वेलि

ताळपत्र—सं०पुं०यौ०—ताड वृक्ष के पत्ते ।

ताळपलब—सं०पुं०यौ० [सं० तालप्रलब] गोशाला का एक श्रावक (जैन)

ताळपिसाय—सं०पुं०यौ० [सं० तालपिशाच] ताडवृक्ष के समान लम्बी काया वाला राक्षस (जैन)

ताळपुडगविस—सं०पुं०यौ० [सं० तालपुटक विष] शीघ्र प्राणनाशक विष। (जैन)

ताळवुंत्र—सं०पुं०यौ०—१ ताड-फल २ पखा या पखी

तालबखानो—सं०पुं०—अंत पुर मे निवास करने वाली रानियो का समूह ?
उ०—कामेतिया कन्हा ग्रोपत खपत सुणि नवो वीमाह करि अर महल माह पधारै सु इसी भाति नर नामै कोई पखी जावण पावै नही, इसो तालबखानो मडेछै ।—सैणी री वात

तालबेइल्म—सं०पुं० [अ० तालिबेइल्म] १ शिक्षार्थी, विद्यार्थी २ जिज्ञासु।
उ०—दूजे पाठसाळा स्थापित कर पडित तालबेइलम रोजगारी बैठाणे।
—नी प्र.

ताळवेताळ—सं०पुं०यौ०—दो देवता या यक्ष जिनके विषय मे ऐसा प्रसिद्ध है कि राजा विक्रमादित्य ने इन्हें सिद्ध किया था और ये बराबर राजा की सेवा मे रहते थे ।

तालमखाणा—सं०पुं० (बहु व०) १ एक प्रकार का वर्षा ऋतु मे जलाशयो के समीप होने वाला पौधा तथा इस पौधे की गाठो मे से निकलने वाले बीज, यह पौधा औपधि के प्रयोग मे भी आता है २ मैदे या चावल के आटे की बनी खाद्य सामग्री विशेष जिसे दूध मे डाल कर खीर बनाई जाती है ।

तालमान—सं०पुं०—६४ कलाओ मे से एक (व स)

ताळमेळ—सं०पुं०—१ ताल व सुर का मिलान २ मिलान, सयोग

ताळयर—सं०पुं० [सं० तालचर] १ एक मनुष्य जाति (जैन)
२ नट या नृत्यकारो का एक वर्ग ३ ताल देने वाला ।
रू०भे०—ताळायर ।

तालरग—सं०पुं०—१ एक प्रकार का बाजा ।

तालर, तालरो—सं०पुं०—१ पथरीला मैदान, ऊसर भूमि ।
उ०—खारो लालाणा सू लगाय नै राखी तक पाच कोस री भुइ मे फैल्योडो है । बिल्कुल सपाट तालर उडणखटली रै मैदान व्है जिसो।
—रातवासो

(मि० छापर २, ३)
२ छिछला गड्ढा । उ०—रुवर रा तालरा भर रह्या छै ।
—पना वीरमदे री वात

ताळलक्षण, ताळलखण, ताळलखम—सं०पुं० [सं०ताललक्षण] तालध्वजी, बलराम (ना मा, अ मा)
(मि० ताळकेतु)

ताळवन—सं०पुं०यौ० [सं० तालवन] वह वन जहा ताड वृक्ष अधिक हो ।

ताळवाही, तालवाही—सं०पुं० [सं० तालवाही] वह बाजा जिससे ताल दी जाय यथा मजीरा, झाझ आदि ।

ताळ-विमाळ—वि०—नष्ट भ्रष्ट, लुप्त । उ०—देम दसू दिस दाबिया, कीधा धकचाळा । अरि ओद्राहा उड गया, कई ताळ विमाळा ।
—वी.मा.

ताळवी—वि० [सं० तालव्य] तालु सम्बन्धी ।
सं०पुं०—तालु से उच्चरित किया जाने वाला वर्ण ।
रू०भे०—ताळवी ।

तालविलव—सं०पुं०—नारियल (अ मा)

ताळवो—सं०पुं० [सं० तालु] मुह के अन्दर का ऊपरी भाग जो ऊपर के दातो की पक्ति से लेकर कौवे तक होता है, तालु । उ०—प्रवन होइ जब तीन प्रकार, बोली दम क्रिया तहां वार । एक ताळवै दीजै गोळ, दूजी ग्रीवा जोत्रै ग्रोळ ।—ध व प्र
मुहा०—१ जीभ नै ताळवै रै विचै छेटी पडणी—भयातुर होने से बोलने मे असमर्थ होना, स्तम्भित हो जाना २ जीभ नै ताळवै रै विचै छेटी पटकणी—भय दिखा कर किसी को मूक बना देना, भय मे स्तम्भित करना ३ ताळवै लगाम लगाणी—बोलने मे असमर्थ करना, मूक बना देना, प्रत्युत्तर देने मे असमर्थ कर देना. ४ ताळवो फोडणो—सिर पर जोर का आघात करना, सिर पर जोर की चोट लगाने की धमकी देना ।
रू०भे०—ताळ, ताळूउ, ताळूग्रो ।

तालव्य—वि० [सं०] देखो 'ताळवी' (रू भे.)

ताळूसम—सं०पुं०—ताल के अनुसार स्वर (सगीत)

तालाक—सं०पुं० [सं०] बलराम (ना मा)
(मि० तालकेतु २)

ताळा—सं०स्त्री०—१ करताल, ताली । उ०—फैल क्रोध चसमां कराळां आग झाळा फुणा, ताळा दे भुजाळा ज्यू गुपाळा तीर बान ।—र ज प्र.
२ देखो 'ताळ' (१) (रू भे) उ० सुणै 'गजण' कथ 'सूरसाह' तायक तिण ताळा । कळहण ऊससियो कुवर, पित धीर प्रमाळा ।
—सू प्र

ताळाचर—सं०पुं० [सं० तालचर] नृत्य का व्यवसाय करने वाली एक जाति । उ०—न ताळाचर वाइ ताळ, 'हारू हारू' भणी न हीचकइ बाळ ।—नळ दवदती रास

ताळातोड—सं०पुं०यौ०—चोर, दस्यु ।

ताळाधारी—वि० [अ० तालअ+सं० धारी] भाग्यशाली ।

ताळाव—देखो 'तळाव' (रू भे)

ताळाविलव, ताळावुलव—देखो 'ताळाविलद' (रू भे.)
उ०—ताळावुलव इसलाम ताज ।—ऊ का.

ताळावेली—सं०स्त्री०—बेचैनी, परेशानी । उ०—अब तुम प्रीत मौर से जोडी, हम से करी क्यू पहेली । बहु दिन बीतै अजहु नहिं आये, लग रहि ताळा वेली ।—ह पु वा

ताळायर—देखो 'ताळयर' (रू भे.)

ताळायर कम्म–स०पु० [स० तालचर कर्म] ताल क्रिया (जैन)

ताळाग्घाडणी–स०स्त्री० [स० तालोद्‌घाटनी] ताल प्रकट करने वाली विद्या (जैन)

ताळाविलद–वि० [ग्र० ताग्र+फा० वलद] भाग्यशाली, धनी।
उ०—जोहरी परखे जिए विध जुहार, दस चार परख विद्या उदार। वस सकत पाय ताळाविलद, 'ग्रघ-जीत' सुतन नरलोक इद।—वि स

ताळि–स०स्त्री०—१ समय। उ०—तिणि ताळि सखी गळि स्यामा तेही, मिळी भमर भारा जु मर्हि। वळि ऊभी थई घणा धाति वळ, लता केळि ग्रवलंब लहि।—वेलि
२ देखो 'ताळी' (रू भे) उ०—ताळि चरती कुफ्फडी, सर सचियउ गवार। क्रोइक ग्राखर मन वस्यउ, ऊडी पख सभार।—ढो मा

तालिब–स०पु० [ग्र०] १ चाहने वाला, जिज्ञासा करने वाला।
उ०—१ इस्क मुहब्बत मस्त मन, तालिब दर दीदार। दोस्त दिल हरदम हजूर, यादगार हुसियार।—दादू वाणी
उ०—२ महा पुरख महुरं वधं, तालिव कार्छ तार। 'रज्जब' जळहित जुगळ सो, ग्रतक ग्रगनि मभार।—रज्जब वाणी
२ ढूढने वाला, तलाश करने वाला।

तालिस–वि० [स० तादृश] समान, वैसा, उसी प्रकार का (जैन)

ताळी–स०स्त्री० [स० ताली] १ ताले को खोलने ग्रोर बद करने के लिए धातु का बना एक उपकरण, कुजी, चाबी।
कहा०—ताळी लाग्या ताळी खुलै—चाबी से ही ताला खुलता है ग्रर्थात् युक्ति से ही काम चलता है।
[स ताल] २ हथेली।
मुहा०—१ ताळी देणी—हाथ मे हाथ देकर वादा देना या वचन देना
२ ताळी मिळाणी—हाथ मिलाना, साठ-गाठ करना, सधि करना.
३ करतल ध्वनि। उ०—जसवत गुरड न उड्डही, ताळी ग्रजड तणेह। हाकलिया ढूळा हुवै, पछो ग्रवर पुणेह।—हा भा
मुहा०—ताळी वजाणी—मजाक उडाना, निरादर करना, प्रशसा करना।
४ ध्यानावस्था, समाधि। उ०—गुफा ध्यान लवलीन गिरोवर, ताळी खुली ऊठिया तपेसुर।—सू प्र.
क्रि०प्र०—खुलणी, लगाणी, लागणी।
५ छोटा ताल ग्रथवा तलैया. ६ छोटा ताला. ७ तीन दीर्घ वर्ण या छ मात्रा का छद विशेष (र ज प्र) ८ समय, वेला।
रू०भे०—ताळि।

ताली–स०स्त्री०—१ खलिहान मे साफ किए हुए ग्रनाज का ढेर
२ साफ की हुई वह समतल भूमि जहाँ खलिहान बनाया जाता है। (मि० वळाव)
३ खलिहान मे ग्रनाज के रूप मे किसानो से जागीरदार द्वारा लिया जाने वाला कर ४ गिलहरी (मेवाड)
कहा०—ताली री दौड पीपळी ताई—गिलहरी पर जब ग्रापत्ति ग्राती है तो वह दौड कर पास के वृक्ष पर चढ जाती है। यही उसका एक मात्र सहारा है। किसी निर्बल एव ग्रसहाय व्यक्ति का सीमित सहारा होने पर यह कहावत कही जाती है।
(मि० मिया री दौड मसजिद ताई।)

ता'ळी—देखो 'तासळी' (रू भे)

तालीको–स०पु०—१ सनद, पट्टा, जागीरनामा।
उ०—तरै पातसाजी कह्यो 'राणा री वेटो के लायक छै, तरै तालीको लिख दियो', जगमाल तालीको ले ग्रायो।—नैणसी
२ देखो 'तालुको' (रू भे)

ताळीतड–स०स्त्री० [स ताल+रा. तड] करतल ध्वनि। उ०—वसुधा काळी री ताळीतड वागी, भिडिया सोना री चिडिया पड भागी।
—ऊ का

ताळीपत्र—देखो 'ताळीसपत्र' (रू भे)

ताळीपीटो–स०पु०—धोखा, छल, कपट, फुसलाने की क्रिया।

तालीम–स०स्त्री० [ग्र०] शिक्षा, ज्ञान, ज्ञानार्थ दिया जाने वाला उपदेश। उ०—कुजर ज्यू ग्रो केहरी, तू लेतो तालीम। कळ मे रख-वाळत कवण, सपूरण वन सीम।—बा दा

ताळीसपत्र–स०पु० [स० तालीश-पत्र] तमाल या तेज पत्ते की जाति का एक पेड तथा उसके पत्ते।
रू०भे०—ताळीपत्र।

ताळीहर–स०पु०—महादेव ? उ०—तूटे नदी तटाक, हाक खूटे ताळीहर। पगराव जिम प्रवळ, हलं फौजा घेसा हर।—सू प्र

तालु–स०पु०—मजीरा, झीझा। उ०—धा धा धपमु 'मद्दुर म्रिदग। चचपट चचपट तालु सुरग।—विद्याविळास पवाडउ

ताळुकटक–स०पु० [स० तालुकटक] वच्चो के तालु मे होने वाला एक रोग जिसमे तालु मे कुछ काटे से पड जाते हैं।

तालुक–स०पु० [ग्र० तग्रल्लुक] सम्बन्ध, रिश्तेदारी, लगाव।

तालुकदार–स०पु० [ग्र० तग्रल्लुक+फा० दार] बडे इलाके का स्वामी, इलाकेदार।
रू०भे०—तालुकादार।

तालुकदारी—देखो 'तालुकादारी' (रू भे)

तालुकादार—देखो 'तालुकदार' (रू भे)

तालुकादारी–स०स्त्री०—तालुकेदार का पद।

तालुको–स०पु० [ग्र० तग्रल्लुक] वहुत से मौजो की जमीन, वडा इलाका।
रू०भे०—तालीको।
यौ०—तालुकदार, तालुकादार, तालुकादारी।

ताळुय, ताळुयौ—देखो 'ताळवौ' (रू भे, जैन)

ताळुसोख–स०पु० [स० तालुशोष] एक रोग जिसमे तालु सूख जाता है ग्रोर उसमे घाव-सा हो जाना है।

ताळू, ताळूइ, ताळूग्रौ—देखो 'ताळवौ' (रू भे) उ०—फूल वीट छिगुइ करपूर ताळइ तवइ, गगाजळि सेवाळ लागइ।—व.स.

उ०—२ पगतळ हू ती ताळूआ, लगइ लोहमइ लक्ष । सूर समा सख्या विना, सिस मोहिया समक्ष ।—मा.का प्र.

यौ०—ताळूकठ, ताळूफाड ।

ताळूकठ-स०पु०—पुरुषो के तालू मे होने वाला एक रोग विशेष ।

ताळूफाड-स०पु०—हाथियो का एक रोग जिसमे हाथी के तालु मे घाव हो जाते हैं ।

ताळूरव्यव-स०पु० [स तालु+रा व्यव] छप्पय छद का एक भेद जिसमे प्रयोग किये जाने वाले वर्ण तालु को स्पर्श करते हो ।—र ज प्र.

ताळेवर-वि० [अ० तालअ+फा० वर] १ भाग्यशाली. २ धनी, ऐश्वर्यशाली ।

तालोडी—देखो 'ताली' (४) (अल्पा, रू भे)

तालोटा-स०पु० (बहु व०) वर के छिकी पर आने पर औरतो द्वारा अगवानी के लिए गाये जाने वाले गीत । (पुष्करणा ब्राह्मण)

ताळोवळी, ताळोवीळी-स०स्त्री०—१ व्याकुलता, बेचैनी । उ०—१ दीन बचन बोलती, सखीजन अपमानती, थोडइ पाणी माछळी जिम ताळोवळी जाती ।—व स

उ०—२ ओसीसु अति दुख धरइ, ताळोवीळी थाय । ओसीसु अति तापव्यु, तडफडता निसि जाय ।—प्राचीन फागु सग्रह

२ उत्सुकता ।

ताळो-स०पु० [स० तलक] १ लोहे, पीतल आदि की वह कल जो बद किवाड, सदूक आदि की कु डी मे लगा कर कु जी आदि से बद कर दी जाती है । इसे विना कु जी से खोले किवाड या सदूक खुल नही सकता । ताला, कुल्फ । उ०—तोडण तूहीज वेडिया ताळा, पाळा री तूहीज सुखपाळ । वोह नामी ऊघाडा वगतर, ढळिया लोहा न ढाला ढाल ।—ओपो आढो

मुहा०—ताळो तोडणो—ताला तोडना, चोरी करने के अभिप्राय से घर, सदूक आदि का ताला तोडना ।

[अ० ताळअ] २ भाग्य । उ०—चहु दिस सुणी च्यार चका रै, निकळ क इसडो धणी नीका रै । ताळै कीनो जोर तीका रै । जोधपुरो जजमान जिका रै ।—भैरूदान वारहठ

३ ललाट । उ०—महाजटियळ अगुट भैरव वक्रत मयक । अलक्रत सेस मेचक उथाळो । किरणपत प्रभा परभात रा समीकर, तेज पु ज नाथ रा तणो ताळो । —वा दा

ता'ळो—देखो 'तासळो' (रू भे)

ताव-स०पु० [स० ताप] १ वह गरमी या उष्णता जो किसी वस्तु को तपाने या पकाने के लिए दी जाय । ताप, आच ।

मुहा०—ताव आणो—आवश्यकतानुसार किसी वस्तु का गरमी प्राप्त कर गर्म होना ।

२ गुस्सा, क्रोध ।

मुहा०—ताव देणो—आच पहुचाना, गरम करना ।

क्रि०प्र० —आणो ।

३ अहकार का आवेग ।

मुहा०—१ ताव दिखाणो—अहकार मिश्रित क्रोध दिखाना

२ मूछां पर ताव देणो—सफलता आदि के अहकार मे मूछें ऐंठना ।

४ जोश, उत्साह । उ०—तोडे इह विध जुध लगा ताव, रजवट पाधोरे पच राव ।—सू.प्र.

क्रि०प्र०—आणो, दिखाणो ।

५ ज्वर, बुखार । उ०—लहरी सायर सदिया, वूठउ सदउ वाव । बीजुडिया साजण मिळइ, वळि किउ ताढउ ताव ।—ढो मा

क्रि०प्र० —आणो, उतरणो, चढणो ।

मुहा०—ताव हाथी रा हाड भागै—ज्वर हाथी जैसे विशालकाय प्राणी को भी शिथिल बना देता है । ज्वर से कमजोरी आना अवश्यम्भावी है ।

यौ०—ताव-तप ।

६ कष्ट, पीडा, सताप । उ०—रटै तो नाम व दाजन राव । तिका पिड कोय न लागै ताव ।—ह र.

७ तेज, ओज, पराक्रम । उ०—थारो तो मुनीमर ! तेज अपार । सूरज ही सकै थारा ताव सू ।—गी.रा.

८ सूर्य का ताप, तडका, धूप उ०—देख तपती ताव सू, मुरधर अख रै माण । हियो हिमाचळ अभ्भळयो. वह चाल्यो वरफाण ।—लू

९ जोर, दबाव । उ०—दोय तीन बार हेला कर नीमरणी नाखी तद माहिला इसो ताव दियो सो माणस पाच दस मराय पाछा आया ।

—मारवाड रा अमरावा री वारता

क्रि०प्र०—देणो ।

१० प्रकाश, चमक । उ०—ताव दान के जलूस अस्ट नदी का भाव । अस्मू को आव जै महताबू का ताव ।—सू प्र.

११ शीघ्रता एव तेजी करने का भाव १२ भय, आतक ।

उ०—तरै न लागै ताव, ओट तुहाळी आविया । नदी हुई तू नाव, भवसागर भागीरथी ।—वा दा

१३ गति, चाल । उ०—कछ धर तणो कमेत ताव खग राज सरोतर ।—पना वीरमदे री वात

क्रि०वि०—१ तरह २ तब

[स० तावत्] ३ तब तक (जैन)

रू०भे०—ताव ।

तावक—देखो 'ताकव' (रू भे)

तावकखेत-स०पु० [स० तापक्षेत्र] सूर्य का प्रकाश जितनी दूरी तक पड जाय उतना स्थान (जैन)

तावख—देखो 'तविख' (रू भे)

तावड—देखो 'तावडो' (मह, रू भे.) उ०—तावड वैठ तिग तिग तिरै, रमो सिकारा रावतो । ऊतरै अमल बस हूं नही, जूवा रो ई जावतो ।—ऊ का.

तावडियो—देखो 'तावडो' (अल्पा, रू.भे) उ०—सूकै जेठ मभार

सर, तीखा तावडियाह । सूकै इम सिंधू सुणै, मुहडा मावडियाह ।
—वा दा.

तावडो-स०पु० [स० ताप+रा०प्र०डो] सूर्य की गरमी, धूप ।
उ०—रीस भरचौ कोइ राक, वस्त्र विण चालियौ वाटै । तपियौ अति तावड़ौ, चालता मुसकल टाटै ।—घ व ग्र
क्रि०प्र०—पडणौ, लागणौ ।
मुहा०—तावडै तपणौ—धूप मे तपना, अधिक परिश्रम करना ।
अल्पा०—तावडियौ, तावडौ, तावडि, तावडी ।
मह०—तावड ।

तावडि, तावडी—देखो 'तावडौ' (अल्पा , रू भे)
उ०—'श्रा तु कळा कूवडा माहि घणी', चित्ति चितइ वसुधा धणी । सूरय तणइ तावडि रस होइ, नळ विना अवर न जाणइ कोइ ।
—नळ-दवदती रास

तावणियौ-स०पु० [स० ताप] मक्खन को गरम कर घी बनाने का पात्र ।

तावणी—१ देखो 'तपणी' (रू भे) उ०—सोनु होवै तौ सोगी रे मेळावु, तावणी ताप तपावु । लई फूकणी नै फूकवा बैसू, पाणी जेम पिगळावु ।—स कु
२ देखो 'तावणियौ' (मह , रू भे) (शेखावाटी)

तावणीय-वि० [स० तापनीय] तापने योग्य (जैन)

तावणौ, तावबौ-क्रि०स० [स० तापन] १ तपाना, गरम करना ।
उ०—१ पाणी पाणी विलोय कर कोई माखण तावै ।
—केसोदास गाडण
उ०—२ तेज इसै दीसै झळहळ तन, फिर तावियौ सोळमौ कचन ।
—सू प्र
२ कष्ट देना, सताना, तग करना ।
तावणहार, हारौ (हारी), तावणियौ—वि० ।
तवाडणौ, तवाडवौ, तवाणौ, तवावौ, तवावणौ, तवाववौ—प्रे०रू० ।
ताविप्रोड़ौ, तावियोडौ, ताव्योडौ—भू०का०कृ० ।
तावीजणौ, तावीजवौ—कर्म वा० ।
ता'णौ, ता'वौ—रू०भे० ।

तावत-क्रि०वि० [स० तावत्] १ उतने काल तक, तब तक. २ उतनी दूरी तक, वहा तक ।

तावतप-स०पु०यौ०—१ बुखार, ज्वर. २ बीमारी ।

तावदान-स०पु०—१ द्वार पर के आले का छिछला पत्थर जिसके ऊपर बाहरी ओर खुदाई की हुई होती है ।
२ देखो 'तावदान' (रू भे)

ताव-भाव-स०पु०यौ०—उपयुक्त अवसर, मौका ।
वि०—थोडा सा, जरा सा ।

तावलणौ, तावलबौ-क्रि०अ०—ज्वर आना, बुखार चढ़ जाना ।

तावलियोडौ-भू०का०कृ०—ज्वर-पीडित, बुखार चढ़ा हुआ ।
(स्त्री० तावलियोडी)

तावळौ—देखो 'उतावळौ' (रू भे)

कहा०—तावळौ सो बावळौ—जो शीघ्रता करता है, वह पागल है ।

तावस—देखो 'तापस' (रू.भे.) (जैन)

तावसा-स०स्त्री०—जैन मुनियो की एक शाखा (जैन)

तावह-स०स्त्री०—नौकरी, सेवा । उ०—वध दोट भुज भुज वीस रा, सिर वोट कर दस सीस रा । तत इद्र परगह सहत तावह, करै कळपह असह रह रह ।—र.रू.

तावान-स०पु० [फा० तावान] १ वह वस्तु जिससे क्षति पूर्ति की जाय । यह दड के रूप मे दी जाय या ली जाय ।
रू०भे०—तवानो ।

ताविख-स०पु०—देखो 'तविख' (रू भे) (ना मा)

ताविखी-स०स्त्री० [स० ताविषी] १ देव-कन्या २ पृथ्वी ।

ताविच्छ-स०पु० [स० तापिच्छ] तमाल वृक्ष (जैन)

तावियोडौ-भू०का०कृ० —१ सताया हुआ, कष्ट दिया हुआ
२ तपाया हुआ, गर्म किया हुआ ।
(स्त्री० तावियोडी)

तावीज-स०पु० [अ० तअवीज] १ वह कागज जिस पर कोई मत्र आदि लिख कर गले मे या बाहु पर धारण करते है २ सोने, चादी, तावे आदि घातु का चौकोर या अठपहलू सपुट जिसके भीतर किसी यत्र-मत्र को रख कर गले या बाहु पर धारण करते है ।
रू०भे० —तावीज, तावीत ।
अल्पा०—तावीतौ ।

तावीतौ-स०पु०—१ एक प्रकार का आभूषण (व स)
२ देखो 'तावीज' (अल्पा , रू भे)

तावुरि, तावुरी-स०पु० (यू० टारस) वृप राशि ।

तावै-क्रि०वि०—विषय मे, सम्बन्ध मे ।

तावौ—देखो 'तवौ' (रू भे) उ०—चालने ढेलीद, लोह घटित तावा कडे सहावा ।—व स

तास-स०स्त्री० [अ०] १ खेलने के लिए मोटे कागज के चौखूटे टुकडे जिन पर रगो की बूटिया या तस्वीरें छपी रहती हैं । खेलने का पत्ता, ताश. २ एक प्रकार का जरदोजी कपडा । उ०—मुहगा घणा मोल रा, पडै पग मडा अपारा । मह पसमी मुखमला, तास अतलस जर-तारा ।—सू प्र
[स० त्रास] ३ कष्ट, पीडा । उ०—दुसमण री किरपा बुरी, भली सैण री तास । जद सूरज गरमी करै, तद वरसण री आस ।—अज्ञात
४ भय, आतक । उ०—अजामेळ वड अधन तै, तै उण विध तारै । तै दुरवासा तास तै, अवरीस उबारै ।—भगतमाळ
५ मोह । उ०—तज जग झूठी तास, आस राख राघव अठी । प्रभु मेटै भव पास, भजन किया सू भैरिया ।
—महाराजा बळवतसिंह, रतळाम
स०स्त्री० [अ० तासीर] ६ प्रभाव, असर ।
सर्व० [स० तद्=तस्य] उस, वह । उ०—जइ रू खा मारू हुई, छव-

डउ पडियउ तास। तइ हुती चदउ कियउ, लइ रचियउ आकास।
—ढो मा

क्रि०वि०—प्रकार, तरह। उ०—तोवै ज्यू धरती तपै, ऊपर तपै आकास। लू लपटा सै दिस तपै, जीव तपै, इण तास।—लू

रू०भे०—ताछ।

तासक—देखो 'तासळी' (रू.भे)

तासकारी—वि० [स० तसु = उपक्षये] १ नाश करने वाला, मिटाने वाला। २ असर डालने वाला, प्रभावशाली।

तासतौ—स०पु० [अ० तास] एक प्रकार का जरदोजी कपडा (व स) उ०—लाला नीला तासता तगतगइ, पाडी सोना री छाप। सूडा पखी सोभता, केई पइहरइ देई थाप।—प्राचीन फागु सग्रह

तासना—स०स्त्री०—पीडा, कष्ट। उ०—अब गरब कियौ अमलान मे, तन देखेला तासना। जनमात फेर जासी नही, बुरा करम री वासना।
—ऊ का

तासळी—स०स्त्री० [फा० तास+रा प्र ळी] चौडे मुह वाला छिछला छोटा बर्तन, तश्तरी, रकाबी। उ०—तरै रावजी अरोगता रिसाय नै सोना री तासळी नाखी। जाणिग्री थी—तेजसी तासळी लेण रह्यौ।
—राव मालदे री बात

रू०भे०—ताग्रळी, ताक, ता'ळी, तासक।

तासळौ—स०पु० [फा० तास+रा प्र ळौ] भोजन करने का कासी अथवा पीतल का चौडे मुह वाला छिछला पात्र। उ०—जिकण सिरदार रै अमल गळियोडा रा तो कचोळा तासळा ऊभळ छिलै है, केसर गळोजै है जिणसू हौद भरियोडा ऊभळ छै।—वी स टी

रू०भे०—ताग्रळो, ता'ळो।

अल्पा०—तासळियौ, तासळी।

तासि—वि० [स० त्रासिन] जीओ और जीने दो की भावना रखने वाला
(जैन)

तासिय—वि० [स० त्रासित] कष्ट प्राप्त (जैन)

तासियाळौ, तासियौ—वि० [स० अत्यास+रा प्र आळौ] प्यासा, तृषातुर। उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति रातौ छाके, ते दारू पिग्रा तासिग्रा त्रिखावत हूआ।—रा सा स.

स०पु०—वह पशु जिसे दो दिन प्यासा रख कर तीसरे दिन पानी पिलाया जाता है।

वि०वि०—यह उन्ही स्थानो पर होता है जहा जलाभाव के कारण कष्ट देखा जाता है।

तासीर—स०स्त्री० [अ०] १ असर, प्रभाव। उ०—अकबर खोस लियौ इण आटै, मारण हुकिया किताक मीर। अै तौ दिली न लै इण आटै, तिलियक लूण तणी तासीर।—वीर दुरगादास रो गीत

२ गुण।

तासीसा—स०पु०—प्रत्येक चरण मे सात-सात गुरु के चरण वाला छद विशेष।

तासु—सर्व०—उस। उ०—इग्रा वाहणु जासिका, तासु तणइ उणिहार। तस भख हूवउ प्राहुणउ, तिणि सिणगार उतार।—ढो मा.

तासू, तासौ—उससे, जिससे।

तासौ—स०पु० [अ० तास] १ चमडे से मढ़ा हुआ एक वाद्य जो उत्सव आदि पर गले मे डाल कर दो पतली कमचियो से बजाया जाता है. २ एक प्रकार का कासी का बना बडा झीझा. ३ तांबे और कथीर के मिश्रण तथा कासी धातु से बनाया जाने वाला बडा कटोरा ४ अभाव, कमी। उ०—तासौ सह अन जळ तणौ, वासौ कारावास। पासौ सासण पळटवा, रासौ भड री आस।—रेवतसिह भाटी [स० अत्यास] ५ कई दिनो का प्यासा (पशु) ६ जल-सकट। उ०—सु गढ मे सामान तो घणौ थौ पण पाणी नही जिणसू पाणी रौ वडो तासौ हुवौ।—द.दा

ताह—स०स्त्री०—१ तेज गरमी, उष्णता। उ०—वैसाखा मे धूप पडसी, तावडियै री ताह। पडछावा मे पडिया रहसा, वाह रे साई वाह।—ली गी

२ देखो 'ताह' (रू भे.) उ०—१ ताह माहि ले अधिका उतिमि ग्यान रूप गाहेडि गडा। वारहट अनै रिखि वरावरि वेद व्यास ईसर वडा।
—पी ग्र

उ०—२ गोतम सुता तास सुत नागर, धीरज सुचिता ध्यावै। प्रभु वैमुख जिण रौ रिपु प्राणी, ताह न कदै सतावै।—र रू

ताहजा—सर्व०—तेरा, तेरे, तुम्हारे। उ०—तिण ऊपर रावळ जोस कर वोलियौ अरु लाल नू इसो कही कै ताहजा राठौड माहजी धरती मे घोडो फेरै जितरी जमी ब्राह्मण नू उदक करदू।—द दा

ताहम—अव्य० [फा०] तो भी, तिस पर भी।

ताहरइ—सर्व०—तेरे। उ०—सेव करइ ते स्वारथइ हो लाल, तेह नी ताहरइ चित्त।—वि.कु

ताहरउ—देखो 'ताहरो' (रू भे) उ०—हू गुण रागी हो सागी सेवक ताहरउ, साहिब सुगुण सुपास।—वि कु.

ताहरडौ—देखो 'ताहरौ' (अल्पा, रू भे)
(स्त्री० ताहरडी)

ताहरा—क्रि०वि०—तब। उ०—ताहरा कुवर स्री दळपत विचाळै पर-धान फेरिया।—द वि.

ताहरु, ताहरु, ताहरू, ताहरू—देखो 'ताहरौ' (रू भे)
उ०—१ तारक ताहरु नाम हो, जिनजी।—वि कु.
उ०—२ जीव माहरु तुझ कन्हइ, ताहरु मुझ नइ प्राण।—मा का प्र.
उ०—३ लेई भेंटि कइ मिळवा आवै, कइ पुरुसारथ दाखै। कइ ताहरू भलपण जाणिसिइ, घर आपण यू राखे।—का.दे.प्र

ताहरे, ताहरै—क्रि०वि०—तब, तदुपरान्त। उ०—मारियौ दळद्र दस लक्ख दे, इम उपाय अकुस कियौ। हडहडै भट्ट ताहरै हस्यौ, सिद्धराव एतौ दियौ।—लल्ल भाट

ताहरौ—सर्व० (स्त्री० ताहरी) तेरा। उ०—वार-वार रांम कीत बोल रे

ताहरी वडो कनेस तोल रे।—र.ज प्र

रू०भे०—ताहरउ, ताहुर, ताहरु, ताहरू, ताहरू।

अल्पा०—ताहरडो।

ताही-सर्व०—उस, वह। उ०—सदा सनेही राम है, ताही सू मन लाइ। जन हरिदास देही सहत, दीजं अगनि जळाइ।—ह पु वा.

क्रि०वि०—तहां।

रू०भे०—ताही, ताही।

ताहे-क्रि०वि०—तब (जैन)

तितिड, तितिड्रिका, तितिडि, तितिडीक तितिडीका-स०स्त्री० [स०] इमली।—वा द.

तितिणिग्र, तितिणियौ-स०पु०—बड-बड करने वाला (जैन)

तिंदुकतीरथ-स०पु० [स० तिंदुकतीर्थ] व्रज मडल के अतर्गत एक तीर्थ।

तिंदुय-स०पु० [स० तिंदुक] १ ग्यारहवे तीर्थंकर का चैत्य वृक्ष (जैन) २ एक प्रकार का वृक्ष।

रू०भे०—तिंदुग।

तिंदू-स०पु०—तेंदू का पेड (ग्रमरत)

तिमची-स०स्त्री०—१ कपडे आदि रखने की तीन पायों की बडी मेज. २ काष्ठ या लोह की बनी एक तिपाई जिस पर पानी का घडा आदि रक्खा जाता है।

रू०भे०—टिमची, टिंवची, टिमची, टीमची।

तिंय-सर्व०—उस। उ०—मदन सजीवनी तिंय री नाम।

—सिंघासण बत्तीसी

तियाळी, तियाळीस—देखो 'तयाळीस' (रू.भे)

तियाळौ-स०पु०—४३ वा वर्ष।

तियासी—देखो 'तइयासी' (रू भे.)

तिंवरी-स०स्त्री०—एक प्रकार का छोटा जन्तु जो कुछ देर के लिए निरन्तर ध्वनि करता है। यह ध्वनि रात्रि मे विशेष रूप से सुनाई देती है। झिंगुर।

रू०भे०—तिमरी।

तिंवार-स०पु०—त्यौहार, पर्व, मगल दिवस। उ०—जाणा जोबन जावसी, ग्राड खचावत बाड। कू कू कूपळि मेलती, कढती वार तिंवार।—र रा

रू०भे०—तिउहार, तिवहार, तिव्हार, तिहवर, तिहवार, त्युहार, त्यूहार।

तिंवारी-स०स्त्री० [स०तिथि+वार+ई] त्यौहार के अवसर पर भिन्न-भिन्न प्रकार के सेवा कार्य करने वाले व्यक्तियों को दिया जाने वाला धन, अनाज या भोजन, त्यौहारी। उ०—लगी गाव मे लाय तर्क तद हूम तिंवारी। साध सराहै सती निरथक हू विधवा नारी।

—ऊ.का

क्रि०प्र०—घालणी, देणी, लेणी।

तिंवारीक मरजावीक-स०स्त्री०—राज दरबार मे दरीखाने में पाग, पछेवडी, चन्द्रमा, रूमाल, आगा, कमरबन्द, कटारी; तलवार और ढाल आदि धारण कर के जाने की एक प्रथा। (मेवाड)

तिंवाळ-स०स्त्री०—१ मूर्च्छा, बेहोशी। उ०—आवै लोही ईखिया, तन ज्या भडा तिंवाळ। अचरज किसो अचेत हू, देख लोह विकराळ।

—वा दा.

तिहैं-क्रि०वि०—वहा, उसमे। उ०—अकबर समद अथाह, तिहैं डूबा हिंदू तुरक। मेवाडो तिण माय, पोयण फूल प्रतापसी।—दुरसौ आढौ

तिहा-क्रि०वि०—वहा। उ०—देस वडो 'मेवाड' दयाळ, प्रारथिया दुखिया प्रतिपाळ। "चित्रकूट' तिहा चावो अछै, पहोवीगढ बीजा तसु पछै।—प च चौ

तिंहो-क्रि०वि०—तैसे, वैसे, इसी प्रकार से।

तिहु, तिंहु, तिहू, तिंहू-वि०—तीन। उ०—पूरै सूरै पाइयौ, भुयण तिहु चो भूप। माधेई साराहियौ, आलमसाह अनूप।—पी ग्र

रू०भे०—तिहु, तिहु, तिह, तिहू।

ति-सर्व०—१ उस, वह। उ०—कुभा रै बेटौ मुदायत ऊदौ थो ति कुभा नु कटारिया मार नै आप पाट बैठौ।—नैणसी

२ देखो 'तीन' (रू.भे) उ०—बि, ति, चौ इद्री जीवडा रे लाल।—जयवाणी

२ देखो 'ती' (रू भे)

तिग्र—देखो 'तिय' (रू भे) उ०—नारायण! हौं तुझ नमां, इग्र कारण हरि! अज्ज। जिग्र दी भ्रो जग छडणो, तिग्र दी तोसू कज्ज।—ह र

तिग्रसिंद-स०पु० [स० त्रिशेंद्र] देवताओ के अधिपति इद्र (जैन)

तिग्रार—देखो 'तयार' (रू भे)

तिग्राळ-वि० [स० त्रिचत्वारिंशत्] तयालीस (जैन)

तिग्रोतर—देखो 'तिहोतर' (रू भे)

तिग्रोतरौ—देखो 'तिहोतरौ' (रू.भे)

तिइंदिया-स०पु० [स० त्रिइन्द्रिय] तीन इन्द्रिय जीव (जैन)

तिइक्खा-स०स्त्री० [स० तितिक्षा] १ क्षमा २ सहिष्णुता (जैन)

तिउण, तिउणउ-वि० [स० त्रिगुण] १ तिगुना (जैन)

२ देखो 'त्रिगुण' (रू भे)

तिउल-वि० [स० त्रितुल] मन, वचन और काया इन तीनो की तुलना कर जीतने वाला (जैन)

तिउहार—देखो 'तिंवार' (रू भे)

तिऊ-क्रि०वि०—वैसे, उस प्रकार। उ०—सुणिया थका काच री सीसी रा टुकडा हुवै है तिऊ सत्रुआ री फौज मे भिळ सरीर री विणठा विणास करसी।—वी स.टी

तिऊड—देखो 'त्रिकूट' (रू भे)

तिकडम-स०पु०—उपाय, तरकीब।

क्रि०प्र०—बैठाणी, भिडाणी, लगाणी।

रू०भे०—तिगडम।

तिकण-सर्व०—उस, वह । उ०—१ वुहा बडेरा वाट, वाट तिकण वहणी विसद । दाग, त्याग, खत्रवाट, पूरो राण प्रतापसी ।—दुरसो आढ़ो, उ०—२ कुळ खेती हीज जुद्ध करणी मारणी मरणी इज है जिणसू पण पती वाज नैं काम आवसी तद अपछरा वरसी सो वा सुरग री वेस्या तिकण सौक रो च्यार मईना कुसग रहसी ।—वी स टी

तिकत-वि० [स० तिक्त] १ तीक्ष्ण, तेज २ चुस्त. ३ चरपरा (जैन)

तिकम—देखो 'टीकम' (रू भे) उ०—तन अरहट रचे अनोखा तिकम आयुस बळ जळ भरियो आण । माळ अहो ! जिण मे निस मेली, जिण बाघी घडिया वोह जाण ।—ओपो आढो

तिकर-स०स्त्री०—कटारी ।

तिकरण—देखो 'त्रिकरण' (रू.भे)

तिकरि-सर्व० -उस, वह ।

क्रि०वि०—के लिए । उ०—सरसती कठि स्री अहि मुखि सोभा, भावी मुगति तिकरि भुगति । उवरि ग्यान हरि भगति आतमा, जपै वेल त्या ए जुगति ।—वेलि

तिका-सर्व० (बहु व०) वे, उन । उ०—लागी हर हू ता लगन, जागी क्रीत जिकाह । वडभागी वे 'वाकला', त्यागी नाम तिकांह ।—वा.दा. रू०भे०—तका ।

तिका-सर्व०स्त्री०—१ वह, उस । उ०—आभा तेणि छाह मझि आवै, दुति घर तिका कनक दरसावै ।—सू प्र

तिकाळ—देखो 'त्रिकाळ' (रू भे)

तिकावरवतक-स०पु०—एक प्रकार का घोडा जिसकी कटि पर तीन भौंरी होती है (शुभ, शा हो)

तिकी-सर्व०स्त्री०—१ वह, उस ।

रू०भे०—तिक्की ।

२ देखो 'तिगी' (रू भे)

तिकु-सर्व०—वह, उस । उ०—तरै रावजी मन माहे दळगीर हू ण लागा तरै जैतेजी कह्यौ—थे दलगीर मत हुवो, थे कहस्यो तिक्कु काम करस्यां ।—राव मालदे री वात

रू०भे०—तिकू ।

तिकूणो-वि०—तीन कोने वाला, त्रिकोण ।

स०पु०—जयसलमेर के दुर्ग का नाम ।

रू०भे०—तिखूटो, तिखूणो ।

तिकू—देखो 'तिकु' (रू भे)

तिकूड-स०पु० [स० त्रिकूट] १ जवू द्वीप के मेरु के पूर्व मे आई हुई शितोदा महानदी के दक्षिण दिशा मे आया हुआ एक पर्वत (जैन)

२ देखो 'त्रिकूट' (रू भे)

तिके, तिकै-सर्व०—वे, उन । उ०—समझावा सौ वार जिके समझण नह जाणै । दिन ऊगैरै दौर तिकै नित ऊधी ताणै ।—ऊ.का.

तिकोरी-स०पु०—१ फौलाद का वना एक औजार जिसके तीन तरफ धार लगती है २ वढई का एक औजार ।

तिको-सर्व० (स्त्री० तिका) वह, उस । उ०—१ सिव कहाय जग सघरै, अग पुजावै और । तो रासै सिर पर तिको, तज जबरी रा तौर ।—वा दा.

उ०—२ जवन अनेक वैर धक जुडसी, मरसी तिको काय जुध मुडसी —सू प्र

तिक्की—१ देखो 'तिकी' (रू भे)

२ देखो 'तिगी' (रू भे)

तिक्ख-वि० [स० तीक्ष्ण] १ तीक्ष्ण, तेज २ वेगवान ३ कठोर (जैन) उ०—पर माहम्मी नइ भवे, दीधा नारिक दुक्ख । छेदन भेदन वेदना, ताडना अति तिक्ख ।—स कु.

तिक्खुत्तो-स०पु० [स० त्रिकृत्वस] तीन वार । उ०—जद वे मोटा पुरख मत्थेन वदामि तिक्खुत्तो आया हिण पयाहिण इम कहि वाद्यो । इसा अजाण हे पिण न्याय निरणो नही ।—भि.द्र.

तिक्खुत्ता-स०स्त्री० [स० त्रिकृत्वस्] सूत्र मे कहे हुए पाठ के अनुसार सविधि तीन प्रदक्षिणा देकर वन्दना करने की क्रिया । उ०—सिंघासण थी राणी ऊठ नैं जी, सात-आठ पग साम्ही जाय । तिक्खुता रो पाठ गिणी करीजी, लुळ लुळ नीची जी थाय ।—जयवाणी

तिक्त-वि० [स०] तीता, कडुआ ।

स०पु० [स०] १ पित्त पापडा २ कुटज ।

तिक्षण-स०पु० [स० तीक्ष्ण] १ तीर, वाण

२ देखो तीक्ष्ण' १ (रू.भे)

तिखग-स०पु० [स० तक्षक] सर्प, नाग । उ०—परा खॅगा उरड झलूसा पाखरे, विजड झड वाहि घड गजा वोळै । 'अभा' राजेस कासव सुतन आगळी, अर तिखग ऊबरै गिरा ओळै ।—महाराजा अभैसिंह रो गीत

तिखडौ-वि०—तीन मजिल वाला ।

तिख-वि०—१ तीक्ष्ण । उ०—चलतो खडग तिख धार—जयवाणी

२ देखो 'तक्षक' (रू भे)

यौ०—तिखराव

तिखट-स०पु०—तराने के समान गाए जाने वाला गीत जिसमे पखावज के बोल काम मे लाये जाते हैं ।

तिखण-स०स्त्री० [स० तीक्ष्ण] मिर्च, मिरची । उ०—जद आ बोली काचरी रा स्वाद री तो तिखण मिळी हुती तो खवर पडती ।—भि.द्र

रू०भे०—तीखण ।

तिखता-स०स्त्री [स० तीक्ष्ण] काली मिर्च (अ मा)

तिखनख-स०पु०—तीखे पैर वाला घोडा ।

तिखराव-स०पु० [स० तक्षक+राज] १ शेषनाग, नागराज.

२ तक्षक नाग ३ कद्रू पुत्र कालिय नाग जिसको कृष्ण ने नाथा था । उ०—दडै काज जळ डोहि, नाग नाथियो निभै नरि । पुठै चढियो प्रभु तुरत, तिखराव गयो तरि ।—पी ग्रं

तिखूटो, तिखूणो-स०पु०—१ सोने-चादी के आभूषणो आदि पर खुदाई

करने का लोहे का कीलनुमा ग्रोजार. २ देखो 'तिकूणौ' (रू भे)

उ०—तुग हुतै 'छाडै' तजडा-हत, थायौ माभी भोम थडी । रावळ खड ग्रायौ सिर रावळ, पोळ तिखूणं भीड पडी ।—राव छाडा रो गीत

तिखणी-वि० [स० तीक्ष्ण] तीखा । उ०—दुत(तं) लोचन काज लं रीख दीनें, धणं कामदेय विख(खं) पाण मीनें । वणे नासिका कीर लुड(डे) विमोय, लसते किधू तिख्खणी दीप लोय ।

—वगसीराम प्रोहित री वात

तिग-स०स्त्री०—१ कमर, कटि । उ०—क्रितराहेका का तिग तूट गया छै तिका रिगमता थका लफ-लफ कोटरै जाय-जाय कटारी लगावै छै ।

— प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२ हिलने-डुलने की क्रिया, लडखडाने की क्रिया ।

उ०—तावड बैठ तिग तिग तिरै, रमौ सिरारा रावतौ । उतरै ग्रमल वस ह्वै नही, जूवा री ई जावतौ ।—ऊ का

स०पु०—३ तीन मार्ग का संगम (जैन)

तिगडम—देखो 'तिकडम' (रू भे,)

तिगता-स०स्त्री० [स० तिक्तम्] कालीमिर्च (ग्र मा)

तिगतिगणौ, तिगतिगबौ-क्रि०ग्र०—१ लडखडाना, डगमगाना ।
२ लटकना ।

तिगतिगाड़णौ, तिगतिगाडबौ, तिगतिगाणौ, तिगतिगावौ, तिगतिगावणौ, तिगतिगावबौ-क्रि०स०—१ लटकाना । उ०—मोती तणा झूमखा ढवाव्या, माहि पद्मरागपटळ लवाव्या, केळि ने स्तभे तोरण तिगतिगाव्या ।—व स.

२ (हाथ पकड कर इस प्रकार खीचना ग्रथवा भटका देना जिससे) लडखडाते हुए चल पडना ।

क्रि०ग्र०—३ लडखडाना, डगमगाना ।

तगतगाडणौ, तगतगाडबौ, तगतगाणौ, तगतगावौ, तगतगावणौ, तगतगावबौ—रू०भे० ।

तिगम-स०पु० [स० तिग्म] १ वज्र (ग्र मा) २ पिप्पली (ग्र मा)
३ प्रत्येक चरण मे २६ मात्रा का छद विशेष ।
[स० तिग्मगो] ४ सूर्य (ह ना)
रू०भे०—तिग्म ।
वि० [म० तिग्म] तीक्ष्ण, तेज ।

तिगमग्रस, तिगमग्रभीसु, तिगमासु तिगमहर-स०पु० [स० तिग्माशु, तिग्माभिसु] सूय (डि को , ना मा, क कु बो)

तिगरण-स०पु० [स० त्रिकरण] मन, वचन ग्रौर काया (जैन)

तिगरी-स०स्त्री० [स० तुग्रही] १ सकट, कष्ट, पीडा
२ जल का ग्रभाव ।
रू०भे०—तगरी ।

तिगिच्छकूड-स०पु० [स० त्रिगिच्छकूट] पर्वत विशेष (जैन)

तिगिछिद्दह-स०पु० [स० त्रिगिच्छद्रह] निषेध पवत के ऊपर का भाग (जैन)

तिगिच्छ, तिगिच्छग-स०पु०—चिकित्सक (जैन)

तिगिच्छा-स०स्त्री०—चिकित्सा (जैन)

तिगी-स०स्त्री०—१ ताश का वह पत्ता जिस पर तीन बूटिया बनी हो ।
रू०भे०—१ तिकी, तिक्की, तिग्गी ।
२ ग्रत्यन्त पतली टहनी ।
रू०भे०—तिग्गी ।

तिगुडय-स०स्त्री० [स० त्रिकटुक] सूठ, पीपर ग्रौर कालीमिर्च (जैन)

तिगुणौ-वि० (स्त्री० तिगुणी) तीन गुना, तिगुना ।

तिगुत्त, तिगुत्ति-स०पु० [स० त्रिगुप्ति] मन, वचन और काया से गुप्त, सुरक्षित (जैन)

तिगूमिगू-स०पु०—सूर्यास्त होने के कुछ पहले का समय ।

तिगौ-स०पु०—३ का वर्ष, ३ का अक ।

तिग्गी—देखो 'तिगी' (रू भे)

तिग्म [स०] देखो 'तिगम' (रू.भे)

तिग्मकर-स०पु० [स०] सूर्य ।

तिग्मकेतु-स०पु० [स०] भागवत के ग्रनुसार वत्सर ग्रौर सुवीथी के पुत्र जो एक राजा हो चुके हैं ।

तिग्मता-स०स्त्री० [स०] तीक्ष्णता, तेजी ।

तिग्मदीधिति-स०पु० [स०] सूर्य ।

तिग्ममन्यु-स०पु० [स०] शिव, महादेव ।

तिग्मरस्मि-स०पु० [स० तिग्मरश्मि] सूर्य ।

तिग्मासु—देखो 'तिगमासु' (रू भे)

तिघट—देखो 'तिवट' (रू भे) उ०—उलट सुलट मिति वट झपट, दुघट तिघट चढ पाइ । परख विकट ग्रस गति लगै, नट नटवर उर लाइ ।—रा.रू

तिड-स०पु०—१ स्थान, निवास २ जलाशय ३ भाग, हिस्सा

तिडकणौ, तिडकबौ-क्रि०ग्र०—देखो 'तडकणौ, तडकबौ' (रू.भे)

उ०—छप्पर पुराणा पिया पड गया रे, कोई तिडकण लागा तिडकण लागा थोडा वास, हो जी ढोला वास, ग्रब घर ग्राजा फूल गुलाब रा हो ।—लो गी

तिडकणहार, हारौ (हारी), तिडकणियौ—वि० ।

तिडकाणौ, तिडकावौ, तिडकावणौ, तिडकावबौ—प्रे०रू० ।

तिडकिग्रोडौ, तिडकियोडौ, तिडक्योडौ—भू०का०कृ० ।

तिडकीजणौ, तिडकीजबौ—भाव वा० ।

तिडक्यिोडौ—देखो 'तडकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० तिडक्रियोडी)

तिडकी-स०स्त्री०—सूर्य की किरणो की तेजी, धूप की प्रखरता ।
ज्यू—तावडा री तिडकी ।
रू०भे०—तडकी ।

तिडकौ—देखो 'तडकौ' (रू भे) उ०—जणा कुवरसी कही थाळ जोम चढ्ज्यो, सियाळो छै, धूप तिडकौ काई नही छै ।

—कुवरसी साखला री वारता

ग्रल्पा०—तिडकी ।

तिडणौ, तिडबौ—देखो 'तडणौ, तडबौ' (रू भे)

उ०—किडकी कारायण कनफडिया कूटी। तिडगी तारायण सो पुरसा तूटी।—ऊ का.

तिडियोडौ—देखो 'तडियोडौ' (रू भे)

तिडोतरसउ, तिडोतरसौ–वि० [तिड=स० त्रि=तीन+उत्तर=उत्तर=बाद+सौ=शत] सौ के बाद तीन और अर्थात् १०३।

रू०भे०—तिसय-तिडुत्तर।

तिचक्खु–स०पु० [स० त्रिचक्षु] चक्षु-ज्ञान, परमश्रुत ज्ञान एव परम अवधि ज्ञान को रखने वाला साधु (जैन)

तिजड, तिजडा–सं०स्त्री०—१ तलवार। उ०—ताए मूछ तोले तिजड, विसन सकति कर वद। कूच नगारा हुय कटक, चवै हुकम जयचद।

२ कटार। —सू प्र

यौ०—तिजडहथौ।

तिजरौ—देखो 'तिजारौ' (रू भे) उ०—जब गेहू चणा री क्यारिया माही नै खुसबू छाय रही छै, तिजरौ फूल रह्यो छै।

—डाढाळा सूर री वात

तिजणौ, तिजबौ—देखो 'तजणौ, तजबौ' (रू भे)

उ०—नयणि करइ न पयोधर, योवर सुरत सग्रामि। कचुक तिजइ सनाहु रे, नाहु महाभडु पामि।—व वि

तिजाव–सं०पु० [फा० तेजाव] किसी क्षार पदार्थ का अम्ल सार जो तरल रूप मे होता है।

रू०भे०—तेजाव।

तिजावी–वि० [फा० तेजाबी] तेजाव सम्बन्धी।

रू०भे०—तेजावी।

तिजारत–स०स्त्री० [अ०] १ वाणिज्य, व्यापार, रोजगार।

रू०भे०—तेजारत।

तिजारती–वि० [अ०] व्यापार या रोजगार सम्बन्धी।

तिजारसी–स०पु० [रा०] अफीम। उ०—जीवतौ हुवौ मुरदे ज्यू ही, अवै देख मुख आरसी। कह कत सोच तार न कियौ, तै जद लियौ तिजारसी।—ऊ का.

तिजारी—देखो 'तेजरी' (रू भे.)

तिजारौ–सं०पु० [रा०] १ खस-खस। उ०—पछै दारू री तुगा मण ५०-६० री भराई, कसूबौ मणा-बध कढायौ। तिजारौ मणा-बध कढायौ। तिसै राति घडी च्यार गई।—जगमाल मालावत री वारता

क्रि०प्र०—काढणौ, देणौ, लैणौ।

२ खस खस के दाने रहने का फल। वि० वि०—देखो 'डोडौ'।

उ०—तठा उपरायत राजाना मलूक कुवरारै साथ सारू कलाळी रौ हुकम हुवौ छै। तिजारौ मगायजै छै। तिको तिजारौ किण भात रौ छै? तासणी री वाडी रौ नीपनौ, इकतीस ताडी रौ नाळेर सो मोटौ खोपरा वड रौ, गरी रै दळ रौ, हाथ सु छूट पडै तौ काच री सीसी ज्यू किरचा किरचा हुइ जावै।—रा सा स

रू०भे०—तजारौ, तिजरौ, तेजारौ।

३ तीसरी वार निकाला हुआ शराव।

तिजोडी, तिजोरी–स०स्त्री०—फौलाद के मोटे चद्दर की बनी वह सदूक जो धन, जेवर आदि सुरक्षित रखने के लिए काम मे ली जाती है।

रू०भे०—तजोरी।

तिड, तिडु–सं०पु०—१ पक्ष। उ०—जाणै अकबर जोर, तौ पिण ताणै तोर तिड। आ बलाय है ओर, पिसण खोर प्रतापसी।

—दुरसौ आढौ

२ देखो 'तीड' (रू भे) उ०—मारू थाकइ देसडइ अेक न भाजइ रिड्ड। ऊचाळउ क अबरसणउ, कइ फाकउ कइ तिड्ड।—ढो मा.

तिणग–स०स्त्री०—चिनगारी। उ०—अवै क्यू पूछौ? बारूद रा कोठार मे जाणै तिणग पडी।—वाणी

रू०भे०—तिणगार, तिणगारी।

मह०—तिणगारौ।

तिण–स०पु० [स० तृण] तिनका, तृण। उ०—अरिया जिकै आपरा झूपडा रा तिणखला मूढा मूढा प्रतै पकडिया पण घव धणी, वेही तिण लेनै जावण दीधा नही और पाछा पडाय लीधा।—वी स टी

रू०भे०—तिन।

अल्पा०—तिणकलौ, तिणकौ, तिणखलौ, तिणगौ, तिनकलौ, तिनकौ।

वि० [स० त्रीणि] तीन। उ०—अविल करी पूजा करइ, तिण टक सूध आचारी जी।—स कु

सर्व०—१ उस, वह। उ०—राति जु सारस कुरळिया, गुजि रहे सब ताल। जिणकी जोडी बीछडी, तिण का कवण हवाल।—ढो.मा

२ इस। उ०—हमारी साढिया लेवेगा तो वडौ रजपूत विरद-धारी जाणेगो। तिण ऊपर महवेची कह्यौ—तुम्हारी साढिया लेजाय तो तुम रजपूत जाणजी।—रा सा स

क्रि०वि०—इसलिये। उ०—तिण तोरे चरणे हू आवियौ।

—वृहत स्तोत्र

तिणकलौ, तिणकौ, तिणखलौ—देखो 'तिण' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ तिणकौ व्है तो तोडलू, प्रीत न तोडी जाय। प्रीत लगै छूटै नही, ज्या लग जीव न जाय।—र रा

उ०—२ अठै इण झूपडै तिणखला री ही घाडौ खटै नही।

—वी.स टी,

मुहा०—१ तिणकला चुगणा, तिणकला वीणणा—तिनके चुगना अर्थात् वेसुध होना, पागल होना २ तिणका तोडणा—तिनके तोडना, लज्जित होना, पागल होना ३ तिणका री ओट मे भाखर—तिनके की ओट मे पहाड। छोटी वात मे बडी वात का रहस्य छिपा रहना। ४ तिणका री सा'रौ—तिनके का सहारा, थोडा सहारा ५ तिणका मूडे लैणा—तिनका मुह मे लेना, दया की भीख मागना। ६ तिणखला चुगतौ करणौ—दरिद्र बनाना, कगाल कर देना।

तिणगार, तिणगारी—देखो 'तिणग' (रू भे)

तिणगारौ–स०पु०—देखो 'तिणग' (मह, रू भे)

तिणगौ—१ देखो 'तिण' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'तिणग' (मह, रू भे) उ०—धड धड वलय धारू-

जळ धार, चमकं बीजळ जिम जळ धार। तूटं सन्नाद्रे तलवार, ऊडइ तिणगा अगन सुझाळ।—प.च.चो

तिणावत-स०पु०—एक राक्षस का नाम।

तिणि-क्रि०वि०—१ इससे, इसलिए।

उ०—आरोपित हार घणौ थियौ अतर, उरस्थळ कुभस्थळ आज। सु जु मोती लहि नहीं सोभा, रज तिणि सिर नाखे गजराज।—वेलि.

२ देखो 'तिण' (रू भे) उ०—ते देखि तिणि पूछियउ, कुण अे राजकुमारी।—ढो मा

तिणी—१ देखो 'तिरणी' (रू भे)

२ देखो 'तणी' (रू भे)

तिणै-प्रत्य०—के। उ०—प्रभ मेघा रै परणिया, रिमा तिणै सिरि रीस। वारट ईसर बोलिया, जमो करो जगदीस।—पीं ग्रं

तिणौ-वि०—दुबला, पतला, कृश।

स०पु० [स० तृण] तिनका, तृण। उ०—सूरा होइ सुमेर उलघं, सब गुण बध्या छूटै। दादू निरभय ह्वं रहे, कायर तिणा न टूटं।
—दादू बाणी

मुहा०—तिणौ मेलिया आग उठै—तिनका रखते ही आग प्रज्वलित होती है। थोडी सी ही बात पर क्रोधित होना।

कहा०—तिणौ तोड नै दो तिणा को करै नी—तिनका तोड कर भी दो तिनके नही करता अर्थात पूर्ण निठल्ला है। अकमण्य व्यक्ति के प्रति।

तिण्णि-वि०—तीन (जैन)

तिण्हा-स०स्त्री०—तृष्णा (जैन)

तित-क्रि०वि०—१ वहा, तहा। उ०—प्रभु पथ एण पधारजे, तित नार गोतम तारजे।—र रू.

२ देखो 'तिथि' (रू.भे.)

तितकार-स०स्त्री०—नृत्य के शब्द, नाच के बोल। उ०—विसतार ग्यान जैकार वाच, नितकार करै तितकार नाच।—वि स

तितरइ—देखो 'तितरै' (रू भे) उ०—तितरइ तउवात कहता वार लागइ।—अ वचनिका

तितरउ-क्रि०वि०—इतने मे।

वि०—उतना।

तितर-बितर-वि०—१ जो इधर-उधर बिखर गया हो, बिखरा हुआ, २ अव्यवस्थित।

तितरै-क्रि०वि०—१ इतने ही मे, तब। उ०—बेटो तो इयारोहीज ह्वं। तितरै साह कह्यो—रे कपूत ! कासू कहै छै कै'रो बेटो छै ?
—पलक दरियाव री वात

२ तब तक। उ०—म्हे महासरोवर न्हाय आवा छा तितरै तू बैठो रहजे।—पचदडी री वारता

तितरौ-वि० (स्त्री० तितरी) उतना। उ०—१ राणी जितरी मन माहे तेवडी, तितरी दीधी परकास रे लाला।—जयवाणी

उ०—२ सो जितरी साथ हुतो तितरो जे हुवै और उणसू कजियो करा जणा तो खबर पड जाय।—सूरे खीवे काधळोत री वात

तितली-स०स्त्री०—एक उडने वाला सुन्दर कीडा या पतगा जो प्राय बागो मे फूलो के पराग के लिए उन पर मडराता है।

पर्या०—तीतरी, पुत्तिका।

तितलौ-वि० (स्त्री० तितली) उतना। उ०—तितलो सकट सुघाट।
—वि कु.

तितिकसा-स०स्त्री० [स० तितिक्षा] क्षमता, सहनशीलता (जैन)

तितिक्ख-वि० [स० तितिक्षा] धैर्यवान, सहनशील (जैन)

रू०भे०—तितिक्खिय।

तितिक्खण-स०पु० [स० तितिक्षण] सहिष्णुता, धैर्य (जैन)

तितिक्खा-स०स्त्री० [स० तितिक्षा] सहनशीलता।

तितिक्खिय-वि०—देखो 'तितिक्ख' (रू भे)

तितिक्षा-स०स्त्री० [स०] क्षमा, सहनशीलता। उ०—हिम्मत का ह्रासकारी, विद्या को विणासकारी। तितिक्षा को तासकारी, भीड भडवाई फो।—ऊ का

तितिक्षु-वि० [स०] १ क्षमाशील, शात प्रवृत्ति वाला, सहिष्णु।

स०पु०—पुरुवशीय एक राजा जो महामना का पुत्र था।

तितिल—देखो 'तैतिल' (रू भे)

तितै-क्रि०वि०—१ तब तक, उस समय तक। उ०—परमेस भगत जितरै प्रगट, जो गमाय सकर जितै। उचरू दवा जितरै 'अभा', तूझ राज रहजो तितै।—सू प्र

२ वहा, उधर।

तितौ-वि० (स्त्री० तिती) उतना, उस मात्रा या परिमाण का।

उ०—आदि ग्रथ रै स्री अक्षर, सुकवि कहै बुद्धि सार। तठै अगण दूखण तिता, लगै न हेक लगार।—सू प्र

रू०भे०—तित्तो, तिथौ।

तित्त-वि० [स० तृप्त] १ तृप्त, सतुष्ट (जैन)

[स० तिक्त] २ जिसका स्वाद नीम, चिरायते आदि के समान हो, कड आ (जैन) ३ मिरची के समान चरपरा, तीक्ष्ण।

रू०भे०—तित्तो।

तित्तणाम-स०पु० [स० तिक्तनामन] नाम और कर्म की एक प्रकृति।

तित्तरि, तित्तिर—देखो 'तीतर' (रू भे.) (जैन)

तित्तो—१ देखो 'तितौ' (रू भे) उ०—फळ तित्तो ही पामीयै, जितो लिख्यो नीलाडि।—स्रीपाळ रास

२ देखो 'तित्त' (रू भे)

तित्थकर—देखो 'तीरथकर' (रू भे) उ०—तित्थकर त्रिभुवन तिलो, कर जोडी हे करि सुरनर सेव।—स कु

तित्थ [स० त्रिस्थ] १ साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओ का समूह, जैन-सघ (जैन)

[स० तीर्थ] २ देखो 'तीरथ' (रू भे) उ०—अट्ठावयपमुह सवि नमीय तित्थ जा घरि पहुच्चई।—प प.च

तित्थकर, तित्थगर—देखो 'तीरथकर' (रू भे)

तित्थनाह—स०पु० [स० तीर्थनाथ] तीर्थंकर, तीर्थनाथ।

तित्थयर—देखो 'तीरथकर' (रू भे) उ०—सिद्धि जेहिं सइ वर वरिय, ते तित्थयर नमेवि। फागु वधि पहुनेमि जिणु, गुण गाएसउ केवि। —प्राचीन फागु सग्रह

तित्थाधिव—स०पु० [स० तीर्थाधिप] चार प्रकार के तीर्थों के अधिपति, तीर्थंकर (जैन)।

तित्थी—क्रि०वि०—१ वहा। उ०--जित्थै-जित्थै जोइये, तित्थी दरसदा।—सू प्र

२ देखो 'तिथ' (रू भे) उ०—तर्कं भादवी माह उपात तित्थी पडै माय रैं पाय प्रयीप प्रथी।—मे म

तित्थीय—वि० [स० तीर्थीय] दर्शन शास्त्र सम्बन्धी, दार्शनिक।

तित्थु—देखो 'तीरथ' (रू.भे) उ०—तित्थु रणुद्ध स मुणिरयणु, जुगप्रधान क्रमि पत्तु। जिणवल्लह सूरि जुगपवर, जसु निम्मलउ चरित्तु। —ऐ जै का स.

तित्थुगाळीय—वि० [स० तीर्थोद्गालिक] किसी भी दर्शन का ज्ञाता व अनुभवी (जैन)।

तिथकर—देखो 'तीरथकर' (रू भे) उ०—लह्यो अवतार भयो चक्रधार। तिथकर ह्वं पदवी दोइ पामि।—ध व ग्र

तिथ, तिथि—स०स्त्री० [स० तिथि] १ चन्द्रमा की कला के घटने बढने के क्रम से गिने जाने वाले महिनो का एक-एक दिन, तिथि, तारीख। उ०—१ तिथ चतुरदसी सनवार तव, रयण पहर बीता अरध। —रा रू

उ०—२ तिथि नौमी चैत्र महिनौ ताम।—रा रा

२ पन्द्रह की सख्या*। उ०—कीजै दूहो प्रथम यक, सतरह मत्ता पाय। तिथ रिव तिथ सिव तिथ सुपय, रडु छद कहाय।—र ज प्र.

३ वृत्तान्त, गाथा।

मुहा०—तिथ बाचणी—गाथा कहना, हाल सुनाना।

रू०भे०— तथ, तित, तित्थी, तिथी, तिही।

तिथिए—क्रि०वि०—वहा।

तिथिनक्षत्रदोख (दोस)—फलित ज्योतिष के अनुसार तिथि व नक्षत्र सबधी तृतीय योग।

तिथिपति—स०पु० [स०] तिथियो के स्वामी, देवता।

तिथिपत्र—स०पु० [स०] पत्रा, पचाग।

तिथी—देखो 'तिथ' (रू भे)

तिथैं—क्रि०वि०—वहा।

तियो—देखो 'तितौ' (रू भे)

तिदड—स०पु० [स० त्रिदण्ड] सन्यासियो का एक उपकरण, त्रिदडी का एक दड विशेष (जैन)

तिदडि, तिदडी—स०पु० [स० त्रिदडिन्] सन्यासी, त्रिदडी (जैन)

तिदिसा, तिदिसी—देखो 'त्रिदिस' (रू०भे०)

तिदुग—देखो 'तिदुय' (रू भे)

तिदुळ—वि० [स० त्रिदोल] मन, वचन और काया को डुलाने वाला (जैन)

तिद्र—स०स्त्री०—हल्की नीद, तन्द्रा।

तिधारी—स०पु०—बढई का एक औजार जिसके तीन और धार लगी होती है।

तिधारीकटणी—स०स्त्री०यौ०—आभूषणो मे जाली के समान खुदाई करने का औजार।

तिधारो—स०पु० [स० त्रिधार] १ थूहर जाति का एक वृक्ष जिसकी शाखाओ मे पत्ते नही निकलते। इसकी जड से केवल डडो के रूप मे शाखायें ही निकलती हैं २ एक प्रकार का भाला।

तिन—सर्व०—१ उन। उ०—तिन के सम या जगत मे, नरपति नाही आन।—सिंघासण बत्तीसी

२ देखो 'तिण' (रू भे) उ०—सब ही सौं डरै दात लियैं तिन रहै है।—स कु

तिनकळो, तिनको—स०पु०—देखो 'तिण' (अल्पा, रू भे)

तिनगनी—स०स्त्री०—एक प्रकार की मिठाई।

तिनवइ—वि० [स० त्रिनवति] ९३ की सख्या (जैन)

तिना—स०पु०—प्रत्येक चरण मे एक मगण और एक दीर्घ वर्ण का छद विशेष।

तिनि—वि० [स० त्रीणि] तीन। उ०—एकि अरजनि करया तिनि कुची। आधि ऊडी हूया ति निकुची।—विराट पर्व

तिन्न—वि०—१ नम, तर, आर्द्र (जैन) २ देखो 'तिन' (रू भे) उ०—अट्ठ पहर अरस मे, ऊभोई आहे। दादू पसे तिन्न के, अल्लह गाल्हाये।—दादू बाणी

तिन्नि—वि० [स० त्रिणि] तीन (जैन)

तिन्नाण—स०पु० [स० त्रिज्ञान] मति, श्रुति और अवधि ये तीन ज्ञान (जैन)

तिन्ह, तिन्हं, तिन्हा—सर्व०—उन। उ०—जिन्हा खेत न सपजेउ, तिन्हा दीन्हो गाव।—द दा

तिपच—वि० [स० त्रिपञ्च] पन्द्रह, १५ (जैन)

तिपडो—स०पु०—१ भवन की तीसरी मजिल २ भवन मे दूसरी मजिल के ऊपर की खुली छत।

तिपति—स०स्त्री० [स० तृप्ति] सतोष, तृप्ति।

तिपनी—स०स्त्री०—घास विशेष।

वि० [स० त्रि+पत्री] तीन पत्तो वाली।

तिपाई—स०स्त्री० [स० त्रि+पाद+रा प्र ई] १ बैठने या वस्तु आदि रखने के लिए तीन पायो की बनी छोटी परन्तु कुछ ऊची चौकी, स्टूल २ पानी का घडा रखने की काष्ठ या लोहे की बनी तीन पायो की चौकी।

तिपाट—स०पु०—क्रम से तीसरी बार लिया जाने वाला अफीम।

तिपाटो—स०पु०—१ वह स्थान जहा तीन गावो की सीमा मिलती है।

वि०—१ तीन तह वाला २ तीन हिस्सो वाला।

तिपुज—स०पु० [स० त्रिपुञ्ज] शुद्ध, अशुद्ध तथा मिश्र इस प्रकार तीन पुद्गल का समूह (जैन)

तिपुर—देखो 'त्रिपुर' (रू भे)। उ०—महण मयण रावो वाग संवार माळी। तिपुर घडण भजे वाजता हेक ताळी।—र ज प्र

तिपुरारि, तिपुरारी—देखो 'त्रिपुरारि' (रू भे)

तिपोकड-उ०लिं०—वह लडका जो तीन लडकियो के बाद जन्मे या वह पुत्री जो तीन पुत्रों के बाद जन्म ले (ग्रनुभ)

तिपोळियो-स०पु० [सं० त्रि-प्रतोली] १ वह स्थान जहा एक साथ और एक ही कतार मे तीन बडे-बडे द्वार हो जिनमे होकर सभी प्रकार की सवारिया ग्रासानी से निकल सकें २ राजमहल का प्रथम प्रवेशद्वार।

तिफास-स०पु० [सं० त्रिस्पर्श] ग्राठ स्पर्श दोषो मे से तीन स्पर्श दोष (जैन)

तिवणो, तिववो-क्रि०ग्र०—'तीवणो, तीववो' का ग्रक०रू०।

रू०भे०—तुवणो, तुववो।

तिवर-वि० [स० तीव्र] तेज, तीव्र।

तिवरसो-स०पु० [स त्रि+वर्ष+रा प्र ग्रो] ऊटो मे होने वाला एक राग विशेष जिससे ऊट १५ दिवस बीमार रहता है ग्रोर १५ दिन स्वस्थ। यह रोग तीन वर्ष तक रहता है ग्रोर ऐसा माना जाता है कि इसके बाद ऊट या तो ठीक हो जाता है या फिर मर जाता है।

रू०भे०—तिवरसो।

तिवारियो—देखो 'तिवारो' (ग्रल्पा, रू भे)

तिबारी-स०स्त्री० [सं त्रिद्वार] १ तीर, बदूक ग्रादि चलाने के लिए दीवार मे बना छेद २ तीन खिडकी या तीन द्वार वाला कमरा।

तिबारो-स०पु०—१ तीसरी बार लिया जाने वाला ग्रफीम।

(मि० तिपाट)

२ तीसरी बार निकाला हुग्रा मद्य ३ तीन द्वार या खिडकी वाला कमरा।

रू०भे०—तिवारो, तीवारो।

ग्रल्पा०—तिवारियो, तिवारी।

तिब्बत-स०पु०—एक देश जो हिमालय के उत्तर मे स्थित है।

तिब्बती-स०स्त्री०—तिब्बत देश की भाषा।

वि०—तिब्बत सबधी, तिब्बत का।

तिब्र-स०पु०—पान (ग्र मा)

वि० [स० तीव्र] तेज, तीव्र।

तिभवण—देखो 'त्रिभुवन' (रू भे)

तिमगळ-स०पु० [स० तिमिंगल] १ वडा मत्स्य, एक वडी मछली जो तिमि नामक मछली को भी निगल सकती है। उ०—१ ग्राठ दिसा वितहरै उताळा, नाता जाग्ग तिमगळ वाळा।—रा रू.

उ०—२ इलोळत सोग्ग विचे मळ एम, जळाधर वीच तिमगळ जेम।—सू प्र.

२ ठाट-बाट, ग्राडम्बर। उ०—हरवळा फेर कोतल हले, साजिया मुजरा जोत रा। मोहकमा क्वध मोटा मिनख, तिमगळ सारा तोत रा।—ग्ररजुणजी वारहठ

रू०भे०—तिममगळ, तिमिंगिळ।

तिमजळो, तिमजिळो-वि०—तीन खड का, तीन मजिल का।

(मि० तिखडो)

तिम-क्रि०वि०—१ तैसे, वैसे। उ०—सूरवीर गोयद सहित, बढिया कुळ वट्टी। तूटा मोती हार तिम, मड पडिया मट्टी।—सू प्र

२ त्योंही, तैसे ही। उ०—चिंतातुर चित इम चितवती, थई छींक तिम धीर थई।—वेलि

स०स्त्री० [स० तिमि] १ एक बडी मछली।

२ देखो 'तम' (रू भे)

रू०भे०—तिमि।

तिमग-स०पु० [स० तिग्मगो] सूर्य (ना मा)

तिमची—देखो 'तिमची' (रू भे.)

तिमणियो—देखो 'तमणियो' (रू भे) उ०—हिवडै नै हार घडाय भँवर म्हारै हिवडै नै हार घडाय, होजी म्हारो तिमणियो रतन जडाय भँवर म्हानै खेलग्ग दो गिणगोर।—लो गी

तिमणो-वि०—तिगुना।

तिमतिमाट-स०स्त्री०—१ तमतमाहट, क्रोधित होने का भाव २ प्रबल चमक।

तिममगळ—देखो 'तिमगळ' (रू भे)

तिमर-स०पु० [स० तिमिर] १ अंधेरा, अधकार। उ०—ग्रहारै तिमर विख नजर ग्राका पिये। घूमरा सत्रा खग धजर घावै।
—कविराजा करणीदान

उ०—२ ग्राठ पो'र जळ इदु री, जिग्ग घर दुत जागत। तिग्ग घर मू ग्रपजस तिमर, ग्रळगा यो भागत।—वा दा

२ तैमूरलग वादशाह। उ०—तिमर हर तणा ग्राभरग्ग मवळा तखत, 'राग्ग' हर ग्राभरग्ग तूझीज राखै।—ग्रज्ञात

३ गुफा, खोह, कन्दरा।

तिमरखतंन, तिमरत, तिमरहर-स०पु०—सूर्य, भानु (ना मा, ग्र मा)

तिमराण-स०पु० [स तिमिर+रा प्र ग्राग्ग] अधेरा, तम। उ०—नदी वहनाळ ग्रूटे जळ ताळ। मिळै रजभाग्ग, मडै तिमराण—सू प्र

तिमरार, तिमरारि, तिमराहर-स०पु० [स० तिमरारि] सूर्य (ग्र मा, ना मा)

उ०—निमो तिमराहर कारज कव्य।—सूरज ग्रसतुत

तिमरि—देखो 'तिमर' (रू भे) उ०—धूळि नइ तिमरि ग्रबर रोळिउ। सूरय बिंब ससि माहि कि बोळिउ।—विराटपर्व

तिमरी—देखो 'तिंवरी' (रू भे) उ०—वीच खचइ चातुक लवइ, दादुर तिमरी तेख। विरहिणिग्रा तनि वेदना, सावग्ग सरइ विसेख।
—मा का प्र

तिमहर-स०पु०—सूर्य (ना डिं को.)

तिमहुर-स०पु० [स० त्रिमधुर] घी, शक्कर ग्रोर शहद (जैन)

तिमासिय-वि० [स० त्रैमासिक] तीन मास का।

तिमासियभत्त-स०पु० [स० त्रिमासिक भक्त] तीन मास का उपवास। (जैन)

तिमासियो-स०पु०—१ वह बच्चा जो गर्भ में तीन माह रह कर जन्म चुका हो।
   वि०—तीन मास का।

तिमिगिळ—देखो 'तिमिगळ' (रू भे)

तिमिगिळगिळ-स०पु०—तिमिगल नामक बड़े मत्स्य को भी निगल जाने वाला दीर्घकाय मत्स्य।

तिमि—देखो 'तिम' (रू भे) उ०—बापड़ा कटक बूडिसै, आइए पारि उतारि। ताहरा सेवग तारिया, तिमि मुनाई तारि।—पी ग्र.

तिमिकोस—स०पु० [सं० तिमिकोश] समुद्र।

तिमिज-स०पु० [सं०] तिमि नामक मछली से प्राप्त होने वाला मोती।

तिमिध्वज-स०पु०—शंबर नामक एक दैत्य।

तिमिर—देखो 'तिमर' (रू भे)
   उ०—गो तिमिर गच्छ सूझत स्वच्छ। दरसन दयाळ क्रपया क्रपाळ।
   —ऊ का

तिमिरनुद, तिमिरभिद, तिमिररिपु, तिमिरहर, तिमिरार, तिमिरारि—स०पु० [सं० तिमिरनुद्, तिमिरभिद्, तिमिररिपु, तिमिरहर, तिमिरारि] सूर्य। (डिं को, ना मा)
   उ०—१ नर माधवनळ निरमि करि, काम कदळा नारि। कुडाळया धि कमळ भूह, तुहिन किरण तिमिरार।—मा का प्र
   उ०—२ वस तिमिरारि पुर अवध मघवान वर। धनुस धर राम अवतार धर।—र रू

तिमिरास्त्र-स०पु०—एक प्रकार का अस्त्र (व स.)

तिमिसा, तिमिस्सा-स०स्त्री० [सं० तिमिस्रा] वैताढ्य पर्वत की एक गुफा (जैन)।

तिमीस-स०पु० [सं० तिमि+ईश] १ समुद्र २ बड़ा मत्स्य, तिमिंगल। उ०—गज ठणिया वण ग्राह, बाह जणिया बादाळक। तणिया करन तिमीस, चरम भणिया चउ चातक।—व भा

तिमुह-स०पु० [सं० त्रिमुख] तीसरे संभवनाथ तीर्थंकर के यक्ष का नाम (जैन)

तिमोतर—देखो 'तिहोतर' (रू भे)

तिमोतरो—देखो 'तिहोतरो' (रू भे)

तिय, तिय-स०स्त्री० [सं० स्त्री] १ स्त्री, औरत, पत्नी। उ०—ढळता आगी रातड़ी, जागै और न लोग। कै तो जागै मत जन, कै तिय पिय वियोग।—र ग
   रू०भे०—त्रिया, तिया, तीय, तीया।
   २ देखो 'त्रिक' (रू भे) (जैन)
   वि० [सं० तृतीय] तीन। उ०—प्रथम वार मत्त पनर दुवै पद, वळ तिय वार पनर चौथै पद।—र ज प्र
   सर्व०—उस, वह। उ०—रमता थका गेंद जाइनै एक डोकरी छाणा चुगती थी तिय रै पगां माहे जाय पड़ी।—नैणसी

तियउ—सर्व०—उस। उ०—राजा कउ जण पाठवइ, ढालइ तिरति न होइ। माढवणी मारइ तियउ, पूगळ पथ जिकोइ।—ढो मा

तियलोय—देखो 'त्रिलोक' (रू.भे., जैन)

तियस-स०पु० [सं० त्रिदश] देव, देवता (जैन)। उ०—ससिहर उप्परि तियस तियस उप्परि जिम सुर वर। इदुप्परि नवगीय गीय उप्परि पचुत्तर।—ऐ जै का स

तियह-स०पु० [सं० त्रि+अहन्] तीन दिन (जैन)

तिया-क्रि०वि०—१ तैसे, इस प्रकार २ वहां, उस जगह।
   उ०—किता केइ मारग माहि कळेस, आवै केइ यात्री लोग असेस। सरै छै काम तिया सतमेव, दीयै सुख वंछित रिखभ देव।—ध व.ग्र
   सर्व०—१ उस। उ०—अरक जसो जगि आथमै, गौ चकवा गुणियाह। भुवण अधारो भाजिसी, त्रिभुवण पति कुणि त्याह। तिया कुण भाजिसी भुवण अधियार तण। भमै नर सजोगी विजोगी इणि भुवण।—हा झा.
   (बहु व०) २ उन, वे। उ०—मारुवणी भगताविया, मारू राग निपाइ। दूहा सदेसा तणा, दीया तिया सिखाइ।—ढो मा.

तिया—देखो 'तिय' (रू भे) उ०—तिया पिया पै ही हुती, अपने सुख के काज। परि गौ दिठ पद्मारिसो, ढिग आयो गजराज।—गज उद्धार

तियाग—देखो 'त्याग' (रू भे) उ०—भारा तो धन भाग, जाडेचा दाखै जगत। तीखो खाग तियाग, 'जेहल' वेटो जनमियो।—बा दा

तियागणो, तियागबो—देखो 'त्यागणो, त्यागबो' (रू भे.)

तियागियोडो—देखो 'त्यागियोडो' (रू भे)
   (स्त्री० तियागियोडी)

तियागी—देखो 'त्यागी' (रू भे) उ०—रिणमलोत कहै रिण रूघा, अचड तियागी बोल इसो।—नापा साखला री वारता

तियार-क्रि०वि०—१ उस समय, तब। उ०—वटै घट मुगळ द्रव्य विचार। अखै वनि रातळ दाद तियार।—सू प्र
   २ देखो 'तैयार' (रू भे)

तियारी—देखो 'तैयारी' (रू भे.)

तियाळीस—देखो 'तगाळीस' (रू भे)

तियै-सर्व०—उस, उसको। उ०—१ नरसिंघ री वेटी मेघो तियै नू जाय मारि।—दूदे जोधावत री वात
   उ०—२ तियै रै पाट छोटो भाई महिपाळदे वरस १३ मास २ दिन ७ राज कियो।—नैणसी

तियोतर—देखो 'तिहोतर' (रू भे)

तियोतरो—देखो 'तिहोतरो' (रू भे)

तियो-स०पु०—१ तीन। उ०—१ सिरोरुह कौमेय काळा सरीसा, तियो आक भू बाकड़ा नेत तीखा।—मे म
   २ देखो 'तीयो' (रू भे) उ०—तद वखतसिंहजी कही ठाकुरां री तियो करि पछै लागस्यां।—मारवाड रा अमरावा री वारता
   वि०—१ तीसरा। उ०—दस अठ मत विसराम दो, चवद तियो विसराम।—र.ज प्र
   २ प्यासा, तृषातुर। उ०—एक दिन तियो अर एक दिन पियो, ब्याव रो दिन कियो।—कहावत

सव०—उस । उ०—तियै रो नाम बादसाह लाखावट दियो ।

—सोमसातल री वात

तिरगो-वि०— तीन रंगो वाला, तिरगा ।
(स्त्री० तिरगी)

तिरवो-वि०—तैरने वाला, तैराक । उ०—बोहत तिरदा डूब ही, डूबदा तारै ।—केसोदास गाडण

तिर—देखो 'तिरस' (रू भे)

तिरकाळ-स०पु० [स० त्रिकाल] १ तीनो काल-भूत, भविष्यत् और वर्तमान २ प्रात, मध्यान्ह और साय का समय, त्रिकाल ।
वि०—पागल, मूर्ख ।

तिरख, तिरखा—देखो 'तिरमा' (रू भे) उ०—१ तिरख न खमणी जाय ।—वि कु.
उ०—२ साधुजी साता पामिया, तिरखा दोधि निवार हो ।

—जयवाणी

तिरगस—देखो 'तरगस' (रू भे)

तिरगुण—देखो 'त्रिगुण' (रू भे) उ०—१ ख्याल मायँ नही ख्याल स्वरूपी, रहता आप निराळा । तिरगुण नही रे खोज्या खवर करं ।

—श्री सुखरामजी महाराज

उ०—२ आतम सुद्ध अचित सदाई, भेदाभेद जहा नाही । भेदाभेदा भयो तिरगुण मे, तिरगुण चित के माही ।—स्री सुखरामजी महाराज

तिरछउडी-स०स्त्री०—मालखभ की एक कसरत ।

तिरछाई-स०स्त्री०—तिरछापन, वक्रता ।

तिरछी बैठक-स०स्त्री०— मालखभ की एक कसरत जिसमे दोनो पैरो को ऊपर कर परस्पर गूथ कर धड को ऊपर उठाते हैं ।

तिरछोळ-वि०—१ दुष्ट, वदमाश २ कठोर हृदय ।

तिरछो-वि० [स० तिरश्चीन] (स्त्री० तिरछी) जो अपने आधार पर लम्बवत् न हो । उ०—अजडी धक घूण तकी तिरछी । बुरची तोग देवळ ना विरची ।—पा प्र
मुहा०—१ तिरछा वैण—तिरछे वचन, कटु वाक्य, अप्रिय वात
२ तिरछी नजर, तिरछी चितवन—वगल से देखना, लोगो की दृष्टि वचा कर देखना ।
रू०भे०—तरच्छो, तरछो ।

तिरजच, तिरजचो, तिरजक-स०पु० [स० तिर्यञ्च, तिर्यक] १ पशु, पक्षी । उ०—१ सात आठ भव लगता नर तिरजच मे रहियो ।

—ध व ग्र

उ०—२ गुरु ऊपर जे राचइ नही, ते माणस तिरजचो रे ।—स कु.
२ सर्प ३ मृत्यु लोक या मध्यलोक (जैन) ४ मध्य ।
वि०—तिरछा, टेढ़ा ।
रू०भे०—तिरि, तिरिग्र, तिरिक्ख, तिरिच्छ, तिरियच, तिरिय ।

तिरणी-स०स्त्री०—१ कुछ अधिक खा कर पानी पी लेने पर पेट के तनने की अवस्था ।
रू०भे०—तिरणी ।
२ तैरने का कार्य, तैरने का ढग ।

तिरणू, तिरणो-स०पु०—तृण, तिनका । उ०—सीवरी कासली वीच काटीव जग जूटा । घोडा रजपूत का तिरणा ज्या सीस तूटा ।

—सि व.

तिरणो, तिरबो—क्रि०अ० [स० तृ] १ हाथ पैर या अग सचालित कर के पानी पर चलना, तैरना । उ०—फिरिया नही फेरू, मारग मेरू तेरू पार तिरदा है ।—ऊ का.
२ पानी पर ठहरना, उतराना । उ०—घडो न डूबै वेवडो ए पणिहारी ए लो, ईडाणी तिर तिर जाय वाला जी ओ ।—लो गी.
३ उद्धार होना, मोक्ष पाना । उ०—१ जो थारै सिरणो हुवै तो समगत निरमळी पाळ ।—जयवाणी
उ०—२ गळि अमलदार तिरणू गिणै, मरणू डूवि सु माणसा ।—ऊ का
४ क्षुद्र प्राणियों का ऊपर-ऊपर हिलना-डुलना । उ०—तावड बैठ तिग-तिग तिरै, रमो मिकारा रावतो । ऊतरै अमल वस व्है नही, जूवा री ई जावतो ।—ऊ का
(मि० टळवळणो, टळवळवो)
तिरणहार, हारो (हारी), तिरणियो—वि० ।
तिरवाडणो, तिरवाडवो, तिरवाणो, तिरवावो, तिरवावणो, तिरवाववो—प्रे०रू० ।
तिराडणो, तिराडवो, तिराणो, तिरावो, तिरावणो, तिराववो—स०रू० ।
तिरिओडो, तिरियोडो, तिरचोडो—भू०का०कृ० ।
तिरीजणो, तिरीजवो—भाव वा० ।
तरणो, तरवो, तैरणो, तैरवो—रू०भे० ।

तिरथ—देखो 'तीरथ' (रू भे)

तिरप-स० [स० त्रि] १ नृत्य मे एक प्रकार का ताल ।
उ०—आगणि जळ तिरप उरप अलि पिंग्रति, मरुत चक्र फिरि लियत मरू । रामसरी खुमरी लागी रट, घूमा माठा चद धरू ।

—वेलि

२ नृत्य मे पैरो को टेढा करके खडा होना, तिर्यक पद भगिमा ।
उ०—नृत पलग रुच लावै नूपर । उरप तिरप जग बाजी ऊपर ।

—सू प्र

तिरपण—१ देखो 'तिरेपन' (रू भे) २ देखो 'तरपण' (रू भे)

तिरपत-वि० [स० तृप्त] १ तुष्ट, तृप्त । उ०—राजा भात-भात रा भोजन लेय गर्या छै सु वानै जिमाय तिरपत किया छै ।

—पलक दरियाव री वात

२ प्रसन्न, खुश ।

तिरफळो—देखो 'त्रिफळो' (रू भे)

तिरवड-वि०—वदमाश, धूर्त ।

तिरवेणी, तिरवेनी—देखो 'त्रिवेणी' (रू भे.)

तिरमाळौ—देखो 'तरवाळौ' १ (रू भे)

तिरमिरा [स० तिमिर] शारीरिक कमजोरी के कारण दृष्टि मे होने वाला एक दोष जिससे अधिक चमक या तीक्ष्ण प्रकाश के सामने दृष्टि स्थिर नही रह सकती।

तिरमिराणौ, तिरमिराबौ-क्रि०अ०—दृष्टि का चकाचौंध होना, चौंधियाना।

तिरमिरायोडौ-भू०का०कृ०—चकाचौंध हुवा हुआ।
(स्त्री० तिरमिरायोडी)

तिरयग—देखो 'तिरजक' (रू भे)

तिरयण-स०पु० [स० त्रिरत्न] सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन तथा सम्यग् चरित्र—ये मोक्ष साधन रूप तीन रत्न (जैन)

तिरलोई, तिरलोक [स० त्रिलोक] त्रिलोक, तीन लोक।
उ०—नवग्रह आसण आवि वइट्ठा, सुभ सातिक होई। रिख वेद भणति वाणी साभळे तिरलोई।—रुकमणी मगळ

तिरलोकमिण-स०पु० [स० त्रिलोकमणि] सूर्य। उ०—मेरु रगे तिरलोकमिण, पुणग वार मिट पाय। गजवी रगं गिरवरा, जमी गेरु न्है जाय।—रेवतसिह भाटी

तिरलोकी—देखो 'तिरलोक'। उ०—साचं मन राखै घर साख, वंठै सहज घणी वरदास। वेटो इसो मिळै जे-वरळी, तिरलोकी मा किया तलास।—हिंगळाजदान कवियौ

तिरवाडी—देखो 'तिवाडी' (रू भे)

तिरवाळी-स०स्त्री०—देखो 'तरवाळौ' (अल्पा., रू भे.)

तिरवट—देखो 'तिवट' (रू भे)

तिरवाळौ-स०पु०—१ मूर्च्छा, गस। उ०—खाय तिरवाळौ मिरगी ढे' पडी, कोई श्रौ दुख सह्यौ न जाय। मिरगा विन मिरगी ग्रेकलडी, मिरगौ छोड गयौ वन माय।—लो.गी.
२ देखो तरवाळौ' १ (रू भे) उ०—तरै सोनगरी पूछियौ—'पाणी माहे इसडौ सुवास, इसडौ तिरवाळौ किण भात पडै छै।
—नैणसी

तिरवेणा—देखो 'त्रिवेणी' (रू भे)। उ०—दरसी जोत दीदार, तिरवेणा री ताक मे। छूटा सकल विकार, आया मन माग मे।
—स्री सुखरामजी महाराज

तिरस, तिरसइ, तिरसई—देखो 'तिरसा' (रू भे)
उ०—१ चतुर पुरुख चातक तणी सखि मिट गई तिरस तुरत।
—वि.कु.
उ०—२ आगइ एक ढळवळइ तिरसइ, बीजी लागइ भूख।
—का.दे.प्र
रू०भे०—तिर।

तिरसडी—देखो 'तिरसा' (अल्पा, रू भे)

तिरसठ—देखो 'तिरेसठ' (रू भे)

तिरसठौ—देखो 'तिरेसठौ' (रू भे)

तिरसणौ, तिरसबौ—देखो 'तरसणौ, तरसबौ' (रू भे)
उ०—खारक पाक्या खोपरा स रै, म्हू कामण करती कोड। जद विलसण रुत हुई स रै, गया तिरसती छोड।—लो गी.

तिरसा-स०स्त्री० [स० तृषा] तृषा, प्यास। उ०—जावै न तिरसा पीधा सुजळ। निज ध्रम कीधा नह फळं।—चौथ वीठू
रू०भे०—तिरख, तिरखा, तिरस, तिरसइ, तिरसई, तिरास।
अल्पा०—तिरसडी।

तिरसाणौ, तिरसाबौ—देखो 'तरसाणौ, तरसाबौ' (रू भे.)

तिरसायोडौ—देखो तरसायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० तिरसायोडी)

तिरसाळु-वि० [स० तृष=तृषा+आलुच] तृषावान, प्यासा।

तिरसावणौ, तिरसावबौ—देखो 'तरसाणौ, तरसाबौ' (रू भे)
उ०—गगा ब्रह्मा कमडळी, पावनता विण पार। तू मो नू तिरसावही, कै देसी दीदार।—बा दा

तिरसिंघ-वि०—१ शक्तिशाली, समर्थ २ वीर।

तिरसू-क्रि०वि०—तीसरे दिन।

तिरसूळ—देखो 'त्रिसूल' (रू भे)

तिरसूळियाळीलगाम-स०स्त्री० यौ० [स० त्रिशूल+आलुच+फा० लगाम] उद्दड घोडो को वश मे करने के लिए उनके मुह मे डाली जाने वाली लगाम जिसमे त्रिशूल के आकार के नुकीले कीले होते है।

तिरसौ-वि० [स० तृषित] प्यासा, तृषावान।
रू०भे० —तिरस्यौ।

तिरस्कार-स०पु० [स०] अपमान, अनादर।

तिरस्यौ—देखो 'तिरसौ' (रू भे) उ०—कइ घरि आव्या अतिथ न पूज्या, तिरस्या नीर न पायौ।—का दे प्र

तिरहुत-स०पु० [स० तीरभुक्ति] मिथिला प्रदेश जो विहार के अन्तर्गत है।

तिरहुतियौ-वि०—तिरहुत प्रदेश का।

तिरा-क्रि०वि०—१ तब २ पास, निकट।

तिराणवे—देखो 'तेराणू' (रू भे)

तिराणवौं—देखो 'तेराणमौं' (रू भे)

तिराणू—देखो 'तेराणू' (रू भे)

तिराई—देखो 'तैराई'।

तिराक—देखो 'तैराक' (रू भे)

तिराडणौ, तिराडबौ—देखो 'तिराणौ, तिराबौ' (रू भे)
तिराडणहार, हारौ (हारी), तिराडणियौ—वि०।
तिराडिओडौ, तिराडियोडौ, तिराड्योडौ—भू०का०कृ०।
तिराडीजणौ, तिराडीजबौ—कर्म वा०।
तिरणौ, तिरबौ—अक०रू०।

तिराडियोडौ—देखो 'तिरायोडौ' (रू.भे)
(स्त्री० तिराडियोडी)

तिराणो, तिराबो–क्रि०स० ('तिरणो' क्रिया का प्रे०रू०) १ हाथ, पैर या अग सञ्चालित करा कर पानी पर चलाना २ पानी पर ठहराना, तैराना ३ उद्धार करना ।
तिराणहार, हारो (हारी), तिराणियो—वि० ।
तिरायोडो—भू०का०कृ० ।
तिराईजणो, तिराईजबो—कर्म वा० ।
तिरणो, तिरबो—अक०रू० ।
तराडणो, तराडबो, तराणो, तराबो, तरावणो, तराववो, तिराडणो, तिराडबो, तिरावणो, तिराववो, तैराड़णो, तैराडबो, तैराणो, तैराबो, तैरावणो, तैराववो—रू०भे० ।

तिरायोडो–भू०का०कृ०—१ हाथ, पैर या अग सञ्चालित करा कर पानी पर चलाया हुआ. २ पानी पर ठहराया हुआ, तैराया हुआ ३ उद्धार किया हुआ ।
(स्त्री० तिरायोडी)
तिरावणो, तिराववो—देखो 'तिराणो, तिराबो' (रू भे)
तिरावणहार, हारो (हारी), तिरावणियो—वि० ।
तिराविप्रोडो, तिरावियोडो, तिराव्योडो—भू०का०कृ० ।
तिरावीजणो, तिरावीजबो—कर्म वा० ।
तिरणो, तिरबो—अक०रू० ।

तिरावियोडो—देखो 'तिरायोडो' (रू भे)
(स्त्री० तिरावियोडी)

तिरास–स०स्त्री०—१ कष्ट, पीडा २ देखो 'तिरसा' (रू भे)

तिराह–अव्य० [स० त्राहि] रक्षार्थ पुकारने का भाव, त्राहि-त्राहि ।

तिराही–स०स्त्री०—तिराह नामक स्थान की बनी कटारी या तलवार

तिरि, तिरिग्र, तिरिक्ख—देखो 'तिरजच' (रू भे)
उ०—सुर नर तिरिग्र प्रजापति, जागति मइ किम जाइ। तिणि त्रिणि जित कळकठ रे, रेखा व(च)ह्र माइ ।—प्राचीन फागु सग्रह

तिरिक्खगइ–स०स्त्री० [स० तिर्यग्गति] तिर्यकगति (जैन)

तिरिक्खजोणि, तिरिक्खजोणी–स०स्त्री० [स० तिर्यग्योनि] तिर्यकयोनि । (जैन)

तिरिक्खजोणीय–वि०—तिर्यकयोनि मे उत्पन्न ।

तिरिच्छ—देखो 'तिरजच' (रू भे)

तिरियच—१ देखो 'तिरजच' (रू भे) उ० १ देवता तिरियंच नार की, च्यार च्यार प्रकासी । चउदह लाख मनुस्य ना, ए लाख चउरासी ।—स कु

तिरिय—१ देखो 'तिरजच' (रू भे) उ०—२ सुर नर तिरिय श्राऊ तित्थकर पुण्य वायाल ।— वृहद स्तोत्र
२ देखो 'तिरिया' (रू भे)

तिरियलोग, तिरियलोय–स०पु० [स० तिर्यग्लोक] मृत्युलोक ।

तिरिया–स०स्त्री० [स० स्त्री] स्त्री, ग्रौरत, पत्नी । उ०—१ मोरा विन डूगर किसा, मेह विन किसा मल्हार । तिरिया विन तीजा किसी, पिव विन किसा सिंगार ।—र रा.
उ०—२ तजै मती तिरिया, पितु, माता, छोडि न घोरी छोटा । घोती छोडि बनै मति धूरत, लेकर घोट लगोटा ।—ऊ का
मुहा०—तिरिया चरित—त्रिया चरित्र, स्त्री का रहस्य या कौशल ।
रू०भे०—तिरिय ।

तिरियोडो–भू०का०कृ०—१ हाथ पैर हिला कर या अग सञ्चालित कर के पानी पर चला हुआ २ पानी पर ठहरा हुआ, उतराया हुआ ३ मोक्ष प्राप्त।

तिरीड–स०पु० [स० किरीट] मुकुट (जैन)

तिरीडी–वि० [स० किरीटी] मुकुट धारण करने वाला (जैन)

तिरुडि–स०स्त्री०—१ उपजाऊ भूमि । उ०—हिवि युगलिया ना सुख साभळउ; तिरुडि नित्योद्योति रत्नमय भूमि ।—व स.
२ जितनी दूर तीर जा सके उतनी दूरी की भूमि ।

तिरेपन–वि० [स० त्रिपञ्चाशत्] पचास ग्रौर तीन का योग, त्रेपन ।
स०पु०—५३ की सख्या ।
रू०भे०—तिरपण, तेपन, त्रेपन ।

तिरेपनमों, तिरेपनवों–वि०—५३ वा ।
रू०भे०—तेपनमों, तेपनवों ।

तिरेपनेक–वि०—त्रेपन के लगभग ।
रू०भे०—तेपने'क ।

तिरेपनो–स०पु०—५३ की सख्या का वर्ष ।
रू०भे०—तेपनो, तेपन्नो ।

तिरेसठ–वि० [स० त्रय षष्टि, त्रिषष्टि, प्रा० तेसट्ठि ग्रसट्ठि] साठ ग्रौर तीन का योग, तिरसठ ।
रू०भे०—तिरसठ, तेसठ ।
स०पु०—साठ से तीन ग्रधिक की सख्या, ६३ ।

तिरेसठमों–वि०—तिरेसठवा ।
रू०भे०—तेसठमों ।

तिरेसठे'क–वि०—तिरेसठ के लगभग ।
रू०भे०—तेसठे'क ।

तिरेसठो–स०पु०—६३ की सख्या का वर्ष ।
रू०भे०—तिरसठो, तेसठो ।

तिरेहण–वि०—१ पार लगाने वाला, उद्धार करने वाला २ रक्षक ।

तिरै–क्रि०वि०—तब ।
स०पु०—फीलवानो का एक शब्द जिसे वे नहाते हुये हाथियो को लेटाने के लिए बोलते है ।

तिरोतर, तिरोतरइ—देखो 'तिहोतर' (रू भे.)

तिरोभाव–स०पु० [स०] अतर्ध्यान, ग्रदर्शन, गोपन ।

तिरोभूत–वि० [स०] गुप्त, ग्रदृष्ट ।

तिरोहित–वि० [स०] छिपा हुग्रा, ग्रतर्हित, गुप्त (ग्र.मा.)
स०पु० [स० तीर भुक्ति] मिथिला प्रदेश जिस के ग्रन्तर्गत मुजफ्फरपुर ग्रौर दरभगा जिला है ।

उ०—केसा केरळियाह, वखाण न कीजही। किसू तिरोहित नारि क. कच्छ कहीजही।—बा दा

तिलग-स०पु०—१ अंग्रेजी फौज का भारतीय सिपाही।

वि०वि०—भारत मे ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना के बाद सर्व प्रथम कम्पनी के अधिकारियो ने मद्रास मे किला बना कर वहा के तेलगियो को अपनी सेना में भरती किया था। इससे अंग्रेजी फौज के देशी सिपाही तिलग कहे जाते है २ तैलग देश-वासी।

उ०—वामा भार नितब तिलगी वारिया। नही इस अग वासक सिहल नारिया।—बा दा.

३ देखो 'तैलग' (रू भे)

रू०भे०—तिलगाण, तिलगी, तिलगाण, तिल्यग, तेलग, तेलगी, तेलगू।

तिलगणी-स०स्त्री०—तिलपपडी (शेखावाटी)

तिलगाण, तिलगी, तिलगौ—देखो 'तिलग' (रू भे)

तिल-स०पु० [स० तिल] १ वर्षा ऋतु मे बोया जाने वाला डेढ दो हाथ ऊचा पौधा जिसकी खेती ससार के प्राय सभी गर्म देशो मे तेल के लिए होती है २ इसी पौधे के बीज जो दो प्रकार के होते हैं सफेद व काले।

रू०भे०—तिली, तिल्ली।

मुहा०—१ काळा तिल खाणा—पूर्व जन्म मे किसी के प्रति किए कुकृत्यो का फल भोगना २ तिल-तिल—थोडा-थोडा. ३ तिल मात्र—किंचित, जरा सा ४ तिल रौ ताड करणौ—तिल का ताड बनाना, बात का बतगड़ करना। (मि० राई री भाखर करणौ) ४ तिला मे तेल होणौ—तिलो मे तेल होना, सार होना, तत्व होना ५ बाडिया तिला मे जाणौ—व्यर्थ भटकना।

यौ०—तिलपापडी।

२ शरीर पर पाया जाने वाला काले रग का छोटा दाग ३ काली बिंदी के आकार का गोदना जिसे स्त्रिया शोभा के लिए गाल, ठुड्डी आदि पर गोदाती हैं। उ०—वणियौ तिल थारै वदन, नेह रसिक मन नार। तिल ऊपर तिल्लोतमा, वार दई सो वार।—बा दा

४ आख की पुतली के बीचोंबीच की गोल काली बिंदी।

[स० तिलक, प्रा० तिलउ] ५ तिलक। उ०—धरपत सीहे तई मुरद्धर, आसथान तिल पाट उजागर।—रा.रू.

५ देखो 'तिलौ' (मह, रू भे.)

रू०भे०—तल।

तिलउ—देखो 'तिलक' (रू भे) (उ र) उ०—नयण सलूणिय काजळरेह, निलउ कसतूरी यम णिधडीय। करयले ककण मणि झमकार, जादर फालीय पहिरण ए।—प प च

तिलकठ-स०पु०—एक प्रकार का घास।

तिलक-स०पु० [स०] मस्तक पर केसर चदन या गोरोचन आदि का लगाया जाने वाला चिन्ह जो किसी साम्प्रदायिक सकेत या शोभा के अभिप्राय से मागलिक अवसरो पर लगाया जाता है, टीका।

उ०—बादळ ज्यू सुर धनुख विण, तिलक विना दुजपूत। वनो न सोभै मौड विन, घाव विना रजपूत।—बा दा.

मुहा०—१ तिलक उघडणौ—तिलक का प्रकट होना। किसी के कपट का धीरे-धीरे पता चलना. २ तिलक काडणौ (लागणौ)—नुकसान पहुचाना, क्षति पहुचाना।

२ राज्याभिषेक, राजसिंहासन पर प्रतिष्ठा।

क्रि०प्र०—करणौ।

३ विवाह सम्बन्ध स्थिर करने पर कन्या पक्ष की ओर से वर के माथे पर अक्षत कुकुम का तिलक कर उसके हाथ मे कुछ द्रव्य देने की एक रीति. ४ विवाह सम्बन्ध स्थिर करने पर कन्या पक्ष की ओर से वर को दिया जाने वाला द्रव्य।

क्रि०प्र०—चढाणौ, देणौ।

(मि० 'टीकौ')

५ माथे पर पहिनने का स्त्रियों का एक आभूषण।

उ०—मुख सिख सधि तिलक रतन मैं मडित, गयौ जु हूतौ पूठि गळि। आयै क्रिमन माग मग आयौ, भाग कि जाणै भाळियळि।

—वेलि

(मि० 'टीकौ')

६ श्रेष्ठ व्यक्ति ७ एक जाति का एक घोडा ८ सगीत मे ध्रुवक का एक भेद जिसमे एक-एक चरण पच्चीस अक्षरो का होता है ९ दो सगण का एक वृत्त विशेष

[तु० तिरलीक] १० मुसलमान स्त्रियो द्वारा सूथन के ऊपर पहिने जाने वाला ढीला लहँगा।

रू०भे०—तलक, तिलउ, तिलक्क, तिलिक, तिलौ, तिल्लक, तीलक।

अल्पा०—तिलकडौ।

तिलक कामोद-स०पु० [स० तिलक कामोद] एक रागिनी जो कामोद और विचित्र अथवा कान्हडा कामोद और पड्योग से बनती है।

तिलकड़ौ-स०पु०—१ एक प्रकार का घोडा विशेष (शा हो)

२ देखो 'तिलक' (अल्पा, रू भे)

तिळकणौ, तिळकबौ-क्रि०अ०—१ फिसलना। उ०—नदिया नाळा नीझरण, पावस चढिया पूर। करहउ कादिम तिळकस्यइ, पयौ पूगळ दूर।—ढो मा

२ प्रज्वलित होना। उ०—तन पर लूआ आगसी, अन्तर तिळकी आग। दो आगा री आच मे, पडिया प्राण अभाग।—लू.

तिलकणौ, तिलकबौ-क्रि०स०—तिलक करना, टीका लगाना।

तिलक पिछेवडौ-स०पु०यौ०—साले के द्वारा दिया जाने वाला वस्त्र विशेष।

उ०—ए तौ ओढै बा रा साळाजी रो तिलक पिछेवड़ौ।—लो गी.

तिलकमग-स०पु०—नासिका, नाक (अ मा)

रू०भे०—तिलक मारग ।

तिलकमणी–स०स्त्री०—चूडामणि, शिरोभूषण ।

तिलकमारग—देखो 'तिलक मग' (रू भे) (ह ना.)

तिलकमुद्रा–स०स्त्री० [स०] चदन ग्रादि का टीका ग्रौर शख चक्रादि का छापा जिसे प्राय भक्त लोग लगाते हैं ।

तिलका–स०पु०—दो सगण (।।ऽ) युक्त ६ वर्णों का छद विशेष ।

तिलकायत–स०पु०—१ वल्लभ कुल सम्प्रदाय के पीठाधीश । २ देखो 'टीकायत' ।

तिलकारक–स०पु० [स० तिल कालक] देह पर तिल के ग्राकार का काला चिन्ह ।

तिळकियोड़ो–भू०का०कृ०—१ फिसला हुग्रा. २ प्रज्वलित हुवा हुग्रा । (स्त्री० तिळकियोडी)

तिलकियोडो–भू०का०कृ०—तिलक किया हुग्रा । (स्त्री० तिलकियोडी)

तिलक्क—देखो 'तिलक' (रू भे) उ०—करत कुकम तिलक्क पाणि राज प्रोहित ।—सू प्र.

तिलगाण—देखो 'तिलग' (रू भे)

तिलडो—देखो १ 'तील' (ग्रल्पा, रू भे) २ तीन लडकी ।

तिलडो–वि०—१ जिसमे तीन लड हो २ तीन लडो का । (स्त्री० तिलडी)

तिलचावळी–स०स्त्री०यौ०—तिल ग्रौर चावल के मेल से बनाई जाने वाली खिचडी ।

तिलट–स०पु०—तिल, तिलहन ।

तिलताम–स०स्त्री० [स० तिलोत्तमा] १ ग्रप्सरा (डि नां.) २ तिलोत्तमा नामक ग्रप्सरा ।

तिलपपडी, तिलपापडी–स०स्त्री०यौ०—तिल के साथ गुड या शक्कर मिला कर बनाया जाने वाला खाद्य पदार्थ, तिलपट्टी । रू०भे०—तिलगणी ।

तिलभगक–स०पु०—एक प्रकार का ग्राभूषण (व स.)

तिलम–वि०—१ ग्रमूल्य २ ग्रद्भुत, विचित्र ।

तिलमडेस्वरी–स०स्त्री० —प्रयाग वट के पास शिवजी का स्थान । (बा.दा. ख्यात)

तिलवट्ट–स०पु०—सहार, नाश । उ०—बाबा सुणि बादळ कहै, छोड रहो सुभट्ट । तो भत्रीज हुं ताहरो, खळा करू तिलवट्ट ।—प च चौ (मि० खळवट)

तिलवठ–१ तेल या तिल युक्त ? उ०—खप्पर ग्रो भैरव खप्पर भरावू तिलवठ बाकळा । ऊपर ग्रो भैरव मद री जी धार ।—लो गी. २ देखो 'तिलवट्ट' (रू भे)

तिलवडी–स०स्त्री०—एक प्रकार का वृक्ष । उ०—ताल तमालीय तणच्छ घणा, तिहा तुळसी नइ ताड । तज तटिल नइ तिलवडी, ताळीसा ना भाड ।—मा का प्र

तिलवा–स०पु०—वह खेत जिसमे प्रथम बार तिल बोये गये हो । ग्रल्पा०—तिलवाडो ।

तिलवाड़ा–स०स्त्री०—मन्द गति का एक १६ मात्रा का ताल ।

तिलवाड़ियो–स०पु०—तिलवट का वशज, चौहान वश की शाखा का व्यक्ति ।

तिलवाडो—देखो 'तिलवा' (ग्रल्पा. रू.भे.)

तिलवाय–वि०—तरवतर, सराबोर । उ०—घणा मीह जामा ग्रतर मे तिलवाय कीधा तिका रा वध छाती उपरास खोल दीधा छै ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

तिलवास–स०पु०—एक प्रकार का वस्त्र ।—व स.

तिलसकरात, तिलसकराती–स०स्त्री०—मकर राशि मे सूर्य के ग्राने पर तिल दान का एक पर्व, मकर सक्रान्ति ।

तिलसर–स०पु०—तिल के डठल ।

तिलसाकळी–स०स्त्री०यौ०—खाजे के ग्राकार का तिल मिश्रित व्यजन । वि०वि०—देखो 'साकळी' (रू भे)

तिलागणि–स०स्त्री० [स० तिलाग्नि] तिल के पौधे की ग्रग्नि (जैन)

तिलाजळी–स०स्त्री० [स० तिलाजलि] मृतक सस्कार के बाद की जाने वाली एक क्रिया जिसमे ग्रजली मे जल भर कर उसमे तिल, डाभ ग्रादि डाल कर मृतक को ग्रर्पित करते हैं ।

मुहा०—तिलाजळी देणी—तिलाजली देना, बिल्कुल त्याग देना, कोई सम्बन्ध नहीं रखना ।

तिलाक—देखो 'तलाक' (रू भे)

तिलाकारी–स०स्त्री० [ग्र०+फा] सोने पर मुलम्मा चढ़ाने का कार्य । उ०—तिलाकारी के पडदे जोति के जहूर जरबफती चिगं का बणाव ।—सू प्र

तिलाकूटी–स०स्त्री०—तिलो को कूट कर उसमें शक्कर या गुड मिला कर बनाया जाने वाला एक खाद्य पदार्थ ।

तिलार—पक्षी विशेष जिसका शिकार मास के लिये करते हैं । उ०—हमें तीतरां ऊपर बाज छूटे छै, करवान का ऊपर जुर्रा छूटे छै, तिलारा ऊपर बासा छूटे छै ।—रा सा स.

तिलिक—देखो 'तिलक' (रू.भे.)

तिलिम, तिलिमा–स०पु०—एक प्रकार का वाद्य विशेष (जैन) उ०—भभा मउग मद्दल कउत्र झल्लरि हुडुक्क कमाळा । काहल तिलिमा वसो भम्भो पणवो य वारसमो ।—व.स

तिलियक–वि०—किंचित, जरा । उ०—ग्रकबर खीम लियौ इण ग्रांटै, मारण हुकिया क्रिताक मीर । ग्रै तो दिली न लै इण ग्राटै, तिलियक लूण तणी तासीर ।—वीर दुरगादास राठौड री गीत

तिलियो–वि०—१ दुर्बल, क्षीण, कृश २ तिल सम्बन्धी ।

तिली—१ देखो 'तिल' १, २ (रू भे) २ देखो 'तिल्ली' (रू भे.) ३ देखो 'तीली' (रू भे)

तिलुक्क–स०पु० [स० त्रैलोक्य] स्वर्ग, मृत्यु ग्रौर पाताल इन तीनो

लोको का जन-समुदाय (जैन)।

तिलू-स०पु०—१ घास मे रहने वाला एक दुबला-पतला कीड़ा।
२ तृण, तिनका।

तिलेक-वि०—कुछ, थोडा, किंचित।

तिलोअ—देखो 'त्रिलोक' (रू भे.)

तिलोई-स०पु० [स० त्रिलोकी] स्वर्ग, मृत्यु और पाताल लोक (जैन)

तिलोक—देखो 'त्रिलोक' (रू भे)

तिलोकपति—देखो 'त्रिलोकपति' (रू.भे)

तिलोकी-स०स्त्री०—१ इक्कीस मात्राओ का एक उपजाति छद जो प्लवगम और चाद्रायण के मेल से बनता है। इसके प्रत्येक चरण के अत मे लघु गुरु ।ऽ होता है।
२ देखो 'त्रिलोक' (रू.भे) उ०—तीन तिलोकी सू हैं व्है निराळा, मरुधर थारा रूख।—

तिलोडी-स०स्त्री० [स० तैलकुटी] १ तेल रखने का पात्र विशेष।
२ देखो 'टीली' (अल्पा, रू भे)

तिलोचण—देखो 'त्रिलोचन' (रू भे)

तिलोट-स०स्त्री०—तिलो को कूट कर उसमे गुड या शक्कर मिला कर बनाया हुआ खाद्य पदार्थ।

तिलोतमा, तिलोत्तमा-स०स्त्री० [स० तिलोत्तमा] १ एक परम रूपवती अप्सरा जिसे सृष्टि रचना के समय उत्तम पदार्थो मे से एक-एक तिल लेकर बनाया गया (पौराणिक)।
उ०—तिलोत्तमा मेंणका सची उरवसी सरोतरी। सुरपती सेवता ईढ न घरै तिण ओसरी।—रा रू
२ अप्सरा। (डि ना ना.मा)
रू०भे०—तिल्लोतमा।

तिलोय—देखो 'त्रिलोक' (जैन)

तिलोर-स०स्त्री०—शीतकाल मे उत्तर एशिया से राजस्थान के रेतीले या ककरीले भाग मे आने वाला एक पक्षी जिसका शिकार किया जाता है।
रू०भे०—तिल्लोर।

तिलो—१ देखो 'तिलक' (रू भे.) उ०—न्याय निपुण पुहवी तिलो रे लाल, रूपे जाणे काम।—स्रीपाळ रास
२ देखो 'तिल्लो' (रू भे)

तिल्यग—दखो 'तिलग' (रू भे) (जैन)

तिल्लक—देखो 'तिलक' (रू भे.)

तिल्ला-स०पु०—प्रत्येक चरण मे दो सगण का वर्णिक छद विशष।

तिल्ली-स०स्त्री०—१ पेट मे बाईं ओर पसलियों के नीचे का एक अवयव जो मास की पोली गुठली के आकार का होता है, प्लीहा
२ देखो 'तिल' १, २ (रू भे) उ०—जिणि दीहे तिल्ली त्रिडइ, हिरणी झालइ गाभ। ताह दिहा री गोरडी, पडतउ झालइ आभ।
—ढो मा.

रू०भे०—तिली।

तिल्लोतमा—देखो 'तिलोत्तमा' (रू भे) उ०—वणियो तिलपारं वदन, नेह रसिक मन नार। तिरा ऊपर तिल्लोतमा, वार दई सौ वार।
—बा.दा

तिल्लोर—देखो 'तिलोर' (रू भे)

तिल्लो-स०पु०—१ कलाबत्तू या बादले आदि का काम।
यौ०—तिल्लादार, तिल्लेदार।
२ वह तेल जो लिंगेंद्रिय पर उसकी शिथिलता दूर करने के लिए लगाया जाता है, तिल्ला ३ एक जगली वृक्ष जो पहाड़ी भूमि मे अधिक पाया जाता है।
रू०भे०—तिलो।

तिवग्ग—देखो 'त्रिवग्ग' (जैन)

तिवट—देखो 'त्रिवट'।

तिविट्ठु-स०पु०—भरत खड के भविष्य के नौवें वासुदेव (जैन)
रू०भे०—तिविट्ठ।

तिवडो-स०पु०—एक प्रकार का वृक्ष। उ०—तिल तदुल नइ ताड खर, तिवडा त्रिपुसी चग। तिदुग ततणि तिय वळी, तगर तणा तिहा तुग।—मा का प्र

तिवणो-वि०—तिगुना।

तिवरस-स०पु० [स० त्रिवर्ष] तीन वर्षो की दीक्षा वाले साधु, साध्वी (जैन)

तिवरसो—देखो 'तिवरसो' (रू भे)

तिवरस्यो-वि०—तीन वर्ष का।

तिवरारि—देखो 'त्रिपुरारि' (रू.भे) उ०—अरे साव सलखण राजल, रूपि नही अनु नारि। अरे के सावत्रीय ब्रह्मा, के गवरी तिवरारि।
—प्राचीन फागु सग्रह

तिवल-स०पु०—१ एक प्रकार का वाद्य। उ०—तिवल ददामा दड-वडी, निरदोस्या नीसाण। रेणू असखित ऊछळी, भूतळि छाहिउ भाण।—मा का प्र.
रू०भे०—तिविल।
२ देखो 'त्रिवलि' (रू भे) उ०—सरळ तरळ भुयवल्लरिय, सिहण पीण घण तुग। उदर देसि लंकाउळि, सोहइ तिवल तुरगु।
—प्राचीन फागु सग्रह

तिवळि, तिवळिया, तिवळी—देखो 'त्रिवलि' (रू भे)

तिवहार—देखो 'तिवार' (रू भे)

तिवाअ-स०पु० [स० त्रिपात] मन, वचन तथा काया इन तीनों को गिराना (जैन)

तिवाडी-स०पु०—त्रिपाठी।
(स्त्री० तिवाडण)
रू०भे०—तिरवाडी, तिवारी।

तिवायण, तिवायणा-स०पु० [स० त्रिपातन] मन, वचन और काया का

नाश करना (जैन)

तिवारी—देखो 'तिवाडी' (रू भे)
(स्त्री० तिवारण)

तिवारौ—देखो 'तिवारी' (रू भे)

तिवाव-स०पु० [सं० त्रिपाद] तिपाई। उ०—जिकै खदक भरवा नू आवै आडा, लकडिया रा तिवाव। तिका सू भुरजा खोदवा रा दाव।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

तिविट्ट—देखो 'तिवट्ट' (रू भे)

तिविल—देखो 'तिवल' (रू भे) उ०—भेर भुगळ भरहरइ, करइ भाट जयकार। तूर तिविल वाजा सुणइ, तति तणा टमकार।—मा का प्र

तिविह—देखो 'त्रिविध' (रू भे, जैन)

तिव्व—देखो 'तीव्र' (रू भे., जैन)

तिव्हार—देखो 'तिवार' (रू.भे) उ०—सावणिये री ग्रे माम, तीज तिव्हारा मा, वावडी जे।—लो.गी

तिसज्झ, तिसझ, तिसझा-स०स्त्री० [सं० त्रिसन्ध्य, त्रिसन्ध्या] प्रात-काल, मध्यानकाल एव सायकाल इन तीनों सध्याम्रो का समूह।
उ०—नाम मत्र जे मुख जपइ ए मगु तणु सुद्धि तिसझ।
—ऐ जै.का स

तिसधि-स०स्त्री० [सं० त्रिसन्धि] आदि, मध्य एवं अन्त (जैन)

तिस-स०स्त्री० [सं० तर्ष, तृषा] प्यास, तृषा। उ०—माणस कही अमल आरोगस्यो, तद कही तिस लागी छै पाणी हुवै तो पावो।
—मारवाड रा अमरावा री वारता

सर्व०—उस। उ०—सहर की तारीफ कुण कर सकै। अमरावती के अमर तिस शहर कू तर्क।—र रू.

तिसडे-क्रि०वि०—तब। उ०—तिसडै सै पातसाहजी नू खवरि हुई ताहरा पातिसाहजी हैमू रा डेरा ऊपर आवता हुता।—द वि

तिसडौ-वि० (स्त्री० तिसडी) १ वैसा, तैसा। उ०—१ आप जीमतो तिसडो खाणो फकीरा नू दीजै।—नैणसी
उ०—२ मन राखण नू वात करो खुशामद नू नही। होवै जिसडी वात जे कहि देवो तिसडी सही।—ठाकुर जैतसिंह री वारता
२ देखो 'तिसौ' (अल्पा, रू भे)

तिसटणौ, तिसटवौ-क्रि०अ०—१ स्थिर रहना। उ०—ज्यारै थोडा सैण जग, वैरी घणा वसत। तिसटै दिन थोडा तिके, अर्ख सत अमत।
—वा दा

२ अनुकूल होना ३ तुष्टमान होना, अनुकम्पा प्रकट करना।
तिसटणहार, हारौ (हारी), तिसटणियौ—वि०।
तिसटवाडणौ, तिसटवाडवौ, तिसटवाणौ, तिसटवावौ, तिसटवावणौ, तिसटवाववौ, तिसटाडणौ, तिसटाडवौ, तिसटाणौ, तिसटावौ, तिसटा-वणौ, तिसटाववौ—प्रे०रू०।
तिसटिग्रोडौ, तिसटियोडौ, तिसटचोडौ—भू०का०कृ०।
तिसटीजणौ, तिसटीजवौ—भाव वा०।

तिसटाडणौ, तिसटाडवौ-क्रि०स०—अनुकूल बनाना।

तिसटियोडौ-भू०का०कृ०—१ स्थिर २ अनुकूल बना हुआ. ३ तुष्टमान।
(स्त्री० तिसटियोडी)

तिसणा, तिसना-स०स्त्री० [सं० तृष्णा] १ प्यास, तृषा २ प्राप्त करने के लिए आकुल करने वाली इच्छा, लालच, लोभ।
उ०—उर नभ जितै न ऊगयै, श्री सतोस अदीत। नर तिसना किसना निसा, मिटै इतै नह मीत।—वा दा
रू०भे०—तिस्णा।

तिसमारी-स०स्त्री० [सं० तृषा+मारी] प्यास, तृषा।
उ०—मारग लूवा लपट मचाई। अत्र ऊपर तिसमारी आई।
—ऊ का.

तिसय-तिडुत्तर—देखो 'तिडोतरसौ' (रू.भे) उ०—मणुया तिसय-तिडुत्तर, नारय चउदसय तिरिय अडयाळा।—स कु.

तिसर-स०पु० [सं० त्रिशिरस्] खर और दूषण नामक राक्षसों का सेनापति। उ०—खर सधर दैत दूखण तिसर, दही वेल दहसीस री। चउदह हजार खळ चूरिया, जैत जैत जगदीस री।—पी ग्रं

तिसळणौ, तिसळवौ-क्रि०अ०—फिसलना। उ०—घडै चीकणै छाट, रवै ना तिसळै नीचै। घट काचे पट रचै, जचै रग सोणी सींचै।—दसदेव
तिसळणहार, हारौ (हारी), तिसळणियौ—वि०।
तिसळवाडणौ, तिसळवाडवौ, तिसळवाणौ, तिसळवावौ, तिसळवावणौ, तिसळवाववौ—प्रे०रू०।
तिसळाडणौ, तसळाडवौ, तिसळाणौ, तिसळावौ तिसळावणौ, तिस-ळाववौ—क्रि०स०।
तिसळिग्रोडौ, तिसळियोडौ, तिसळयोडौ—भू०का०कृ०।
तिसळीजणौ, तिसळीजवौ—भाव वा०।
तरसळणौ, तरसळवौ, तीसळणौ, तीसळवौ—रू०भे०।

तिसला-स०स्त्री० [सं० त्रिशला] भगवान महावीर की माता का नाम (जैन)

तिसळाणौ, तिसळावौ-क्रि०स०—फिसलाना, गिराना।

तिसळायोडौ-भू०का०कृ०—फिसलाया हुआ, गिराया हुआ।
(स्त्री० तिसळायोडी)

तिसळियोडौ-भू०का०कृ०—फिसला हुआ।
(स्त्री० तिसळियोडी)

तिसाइयउ, तिसाइयौ-वि०—तृषित, प्यासा। उ०—१ करहउ पाणि तिसाइयउ, आयउ पुहकर तीर। ढोलइ उतर पाइयउ, निरमळ सरवर नीर।—ढो मा
उ०—२ ऊफळै उपराळा आखो, ताळा धान तिसाइयो।—दसदेव

तिसायोडौ, तिसायौ-भू०का०कृ० [सं० तृषित] प्यासा।
उ०—हिरण भागतो तिसायो होय एक वस्ती मे मरणं गयो।
—नी प्र
(स्त्री० तिसायोडी, तिसायी)

तिसाळवौ, तिसाळु, तिसाळुवौ [सं० तृषा+आलुच्] प्यासा।

उ०—तेरा रे वीरा तिसाळुवा घण देवा नै सरवत घोळ पिलाय।
—लो गी

तिसालौ–स०पु०—१ तीन वर्ष का सम्मिलित रूप से लिया जाने वाला कर या लगान. २ ऊट का एक रोग जो तीन वर्ष की अवधि का होता है।

तिसाहियौ, तिसियौ–वि० [स० तृपित] प्यासा, तृषित।
उ०—भूखा तिसिया थाकडा, राखीजे नैडाह। ढळिया हाथ न आवसी, 'गोगादे' घोडाह।—गो.रू

तिसै–क्रि०वि०—तब। उ०—तिसै रावजी अठी उठी देख नै बोलिया।
—वीरमदे सोनगरा री वात

तिसोतरी–स०स्त्री०—तृषा, प्यास। उ०—(तरवार तांण'र) मा! आज थारी तिसोतरी धाप'र मिटाय लीजे।—वरसगाठ

तिसोता–स०स्त्री० [स० त्रिश्रोता] गगा नदी। उ०—तिसोता जिसौ नीर गम्भीर टांकौ। बिलूमे बिचै जाळ भुज्जाळ वाकौ।—मे म

तिसोवण–स०पु० [स० त्रिसोपन] जीने की तीन सीढ़ियो का समूह (जैन)

तिसौ–वि० (स्त्री० तिसी) १ तैसा, वैसा, जैसा।
उ०—तक लीधौ सोना तिसौ, पातर वाळौ प्रेम।—वा दा.
२ वही. ३ प्यासा।

तिस्टौ–वि० [स० तुष्ट] सतुष्ट, खुश, प्रसन्न। उ०—चेतन परम प्रकासी द्रस्टा, कारण कारज मे नहिं रुस्टा रु तिस्टा।
—स्री सुखरामजी महाराज

तिस्णा—देखो 'तिसणा' (रू भे)

तिस्या–क्रि०वि०—वैसे, उसी प्रकार।

तिस्त्रनायक–स०पु०—एक आभूषण विशेष (व स)

तिह–क्रि०वि०—वहा। उ०—वाण्या बभण निवसइ घणा, लाख एक छइ हाटा तणा। वरणावरण लोक तिह बहू, जाति प्रजा निवसइ छइ सहू।—हम्मीरायण

तिह—सर्व उस (रू भे) उ०—विरह सहू तिह भागलउ, कागलउ कुरळतउ पेखि। वायसना गुण वरणए, अरणए'स्यजीग्र विसेखि।
—व वि.

तिहतरि, तिहत्तर—देखो 'तिहोतर' (रू भे)

तिहवर, तिहवार—देखो 'तिवार' (रू भे) उ०—उण चौथाई री पईसौ वार तिहवार वेस्यावा नू दिरीजतौ, राज रै हराम हुतौ।
—वा दा ख्यात

तिहां–क्रि०वि०—वहा। उ०—सउदागर राजा तिहा, बइठा मदिर माभ।—ढो मा.

तिहारडौ, तिहारौ–सर्व० (स्त्री० तिहारडी, तिहारी) तेरा, तुम्हारा।
उ०—१ दोस नही थारा मे दोसत, दोस तिहारी दाई नै।
—ऊ.का.
उ०—२ ब्राम्हण ना कुळ भूप जे, मुखि तिहारडा मयक। समवडि किम बईसी सकइ, राउ सरीसू रक।—मा का प्र

अल्पा०—तिहारड़ौ, तिहारडौ।

तिहिं, तिहि–सर्व०—उस। उ०—१ दादू देख्या एक मन, सो मन सब ही माहि। तिहि मन सौं मन मानिया, दूजा भावे नाहि।
—दादू वाणी
उ०—२ कुसुमित कुसुमायुध ओटि केळि क्रत, तिहि देखे थिउ खीण तन। कत सजोगणि किसुक कहिया, विरहणि कहै पळास वन।
—वेलि.

तिही—देखो 'तिथि' (रू.भे)

तिहु—देखो 'तिहु' (रू भे) उ०—कर दोनो कटि ऊपरै, पुरुख फिरै चौफेर। ओ आकार तिहु लोक नो, काढचो ग्रथ निहेर।—जयवाणी

तिहुअण, तिहुग्रण, तिहुयण–स०पु० [स० त्रिभुवन] त्रिभुवन, तीनो लोक। उ०—१ सुयस तिहुअण छाय।—वि कु.
उ०—२ तिहुग्रण तारण सिख सुख कारण। वछित पूरण कल्पतरौ।—ऐ जै का स.
उ०—३ तिहुयणि ए मगळा चारु जय जय कारु।—ऐ जै का स

तिहू, तिहू—देखो 'तिहु' (रू भे) उ०—तिहू लोका मही जोड 'सागा' तणी। हेक रिव दुवौ जटधर अरोडौ।
—कविराजा करणीदान

तिहूप्रण, तिहूअणि, तिहूयण, तिहूयणि—देखो 'तिहुअण' (रू भे)
उ०—१ गान सूसर मुखि गाय करि, वायसि पचइ वाच्य। तिहूयण श्रणवत लेखवउ, आज्ज नइ उन्मादि।—मा का प्र
उ०—२ वळी आ तुझ विरुदावळी। परदुख भंजन भूप। तिहूयणि को तोल नही, काम कदळा रूप।—मा का प्र
उ०—३ अेक अेक पाहि भली, रूप तणी जे आलि। तिहूयण तेजइ तप तपइ, कोडि निसाकर भालि।—मा का प्र.

तिहोतरे'क–वि०—तिहोतर के लगभग।
रू०भ०—तेवोतरे'क, तेहोतरे'क।

तिहोत्तर–वि० [स० त्रयस्सप्तति, प्रा० तेसत्तरि अर्ध मा तेवत्तरि अप. त्रेत्तरि] सत्तर और तीन का योग।
स०पु०—तिहोत्तर की सख्या।
रू०भे०—तिग्रोतर, तिमोतर, तियोतर, तिरोतर, तिरोतरइ, तिहतरि, तिहत्तर, तीडोतर, तेग्रोतर, तेवोतर, तेहतर, तेहुत्तर, तेहोतर।

तिहोत्तरौ–स०पु०—७३ वां वर्ष।
रू०भे०—तिग्रोतरौ, तियोतरौ, तेवोतरौ, तेहतरौ, तेहोतरौ।

तीं–सर्व०—१ उस। उ०—उवे दोनू नोकर दरवाजे जाय बैठा छै तीं पथी री वाट जोवै छै।—साह रामदत्त री वारता
२ इस।

तींखोळी–स०स्त्री०—१ शिखर, शृ ग २ वृक्ष की चोटी।

तींछे–क्रि०वि०—वहां। उ०—ता वणि पेखइ मणिमइ भूयणु, तींछे निवसइ नारी रयणु।—प प.च.

तींडसी, तींडो—देखो 'टीडसी' (रू.भे)

तींण—देखो 'तीण' (रू भे.)

तींदुलो, तींदूलो–स०पु०—सिंह की जाति का एक हिंसक वन पशु, तेंदुआ। उ०—तठा उपरायत करि नै राजान सिलांमति वडा सिकारी सिंघली, सादूळ, पटाळा, केहरी·· तेलिया, तींदूला वघेरिया, चीतरा भांति भांति रा जाति जाति रा नाहर साकळे जडिया।—रा सा स.

तींमण—देखो 'तींवण' (रू भे)

तींय–सर्व०—उस। उ०—राव जैतसी विहारीदासोत बीकमपुर मे राज करै, वडो भलो सरदार, वृद्ध भयो तींय रै वेटो सुदरदास।

—सुदरदास बीकमपुरी री वारता

तींयाळो–स०पु०—४३ वां वर्ष, तैंतालीस का वर्ष।

तींयासी—देखो 'तइयासी' (रू भे)

तींवण–स०पु० [स० तेमनम्=चटनी, मसाला] १ खाने के लिए पकाई हुई शाक-सब्जी २ पकवान, व्यजन।

कहा०—विगडी रा तींवण कदे आगे ही सुधरचा हा—विगडे पकवान कभी पुन नही सुधर सकते अर्थात् विगडी वात सुधरना अत्यन्त कठिन है।

वि०वि०—'तिम्मण' शब्द का अपभ्र श साहित्य मे व्यापक प्रयोग मिलता है। लगभग नवी शताब्दी के स्वयम्भू कृत 'पउम-चरिउ' मे तिम्मण या तिम्मणय कई बार प्रयुक्त हुआ है। दसवी शताब्दी के पुष्पदन्त के 'महापुराण' मे भी मिलता है। हेमचन्द्र कृत 'देसी-सद्द सग्रह' मे कुसण का अर्थ तीमन दिया गया है। यथा—

कुट्टाकुमारि कुट्टयरीकोसट्टइरियाउ चडीए।
कुहिय लित्तम्मि कुहेडो य गुरेडम्मि तीमणे कुसणा॥

रामानुज स्वामी ने इसका अर्थ Sauce, किया है। आपटे के सस्कृत कोश मे तेमन का अर्थ Sauce Condiment दिया है। 'पाइअ सद्द महण्णवो' मे तीमण का अर्थ कढ़ी दिया गया है। अपभ्र श साहित्य मे 'भोजन-वर्णन' मे तिम्मण, सालण और व्यजन का साथ-साथ निर्देश मिलता है।

रू०भे०—तीमण, तीमण, तीवण, तेमण।

ती–स०स्त्री० [स० स्त्री, प्रा० तीय] १ स्त्री, नारी. २ औरत, पत्नी ३ नदी. ४ भ्रमरावली।

स०पु०—५ नट ६ दोस्त, मित्र ७ समुद्र (एका०)

वि०—१ तीसरी। उ०—धर तुक मत चौवीस धर, वळ दूजी अकवीस। ती चौवीसह चतुरथी, कळ अकवीस कवीस।—र ज.प्र.

२ तीन। उ०—भूआण वाऊ वण ती दिन तेऊ काय।

—वृहद् स्तोत्र

प्रत्य०—तृतीया और पचमी विभक्ति की वाचक शब्द, 'से'।

उ०—१ मव कु मीठा वाद स्वाद मुख ती उचरण।

—केसोदास गाडण

उ०—२ ढोला आमण-दूमणउ, नख ती खूदइ भीति। हम थी कुण छइ आगळी, वसी तुहारइ चीति।—ढो मा.

रू०भे०—ति।

तीअ–वि० [स० तृतीय] तीसरा (जैन)

तीऊ–क्रि०वि०—तैसे, जैसे। उ०—जीऊ फिरिया तीरथ कीया जाप, तीऊ दरसण करनळ मिटै ताप।—रामदान लाळस

तीक—देखो 'तीख' (रू भे.)

तीकम–स०पु० [स० त्रिविक्रम] १ श्री कृष्ण। उ०—तीकम करै तीसरी ताळी, वाहर नाथ अनाथा वाळी।—र ज प्र

२ विष्णु ३ ईश्वर. ४ वामन अवतार। उ०—तू तीकम रहमाण रव, तू काइम करतार। तू करीम वसदेव तण, आप लियो अवतार।—पी ग्र

तीकोरी–स०स्त्री०—वढई का तीन धार वाला एक औजार, तीन धार की अरगती।

वि०—तीन धार वाला, तिधारी।

तीखो—देखो 'तीखो' (रू भे)

तीक्ष—देखो 'तीक्ष्ण' (रू भे.) उ०—आकास तारा मडळ ओडतो, कुळाचळ परवत पाताळि घाततो, हाथि तीक्ष काती नचावतो, महा-कपाळि रुधिर पीतउ।—व स

तीक्षण, तीक्षन—देखो 'तीक्ष्ण' (रू भे) उ०—रिदि लागा रामानि ते वचन तीक्षण वाण। नयन आसू कठ विठि, कथ नि कहि वाणि।

—नळाख्यान

तीक्षणसग–स०पु०—लवग (अ मा.)

तीक्ष्ण–वि० [स०] १ तेज धार वाला या नुकीला २ प्रखर, तीव्र, तेज ३ प्रचड, प्रवल, उग्र ४ चरपरा, तीखे स्वाद का।

स०पु०—१ लोहा. २ ज्योतिष मे मूल, आर्द्रा, ज्येष्ठा और अश्लेपा नक्षत्र।

रू०भे०—तिक्षण, तीक्ष, तीक्षण, तीक्षन, तिक्खण, तीक्खण, तीछण, तीछन।

तीक्ष्णरस्मि–स०पु० [स० तीक्ष्णरश्मि] सूर्य।

वि०—तीक्ष्ण किरणो वाला।

तीक्ष्णासु, तीखस, तीखसक्रम–स०पु० [स० तीक्ष्णांशु, तीक्ष्णांशक्रम] सूर्य (अ मा)

रू०भे०—तीखअस।

तीख–स०स्त्री०—१ तीक्ष्णता, तीखापन। उ०—तुटी खग रोद घडा पर तीख। सही जमदाढक भाळ सरीख।—सू प्र

२ श्रेष्ठता, विशेपता। उ०—ते सुनन सीह दन खाग तीख। साभाव सुपह जैचद सरीख।—सू प्र

३ महत्त्व, वडप्पन, गुरुता. ४ प्रतिष्ठा, मान।

उ०—त्या मे हीरानद तिको, तीख लिया वड तोल। जनमी जिणरै पुत्रिका, अदभुत रतन अमोल।—र हमीर

५ अधिकता ६ कटाक्ष। उ०—लगि गुलाल पिचकार लग, साजै

छूट सरीख । करै पना नैरणा कहर, तरह ग्रनोखी तीख ।
—पना वीरमदे री वात

७ उत्कंठा, जिज्ञासा । उ०—सही ग्राज इग्यारसी, म्हारै हिवडै तीख । करसा तौ ही पारणौ, जो पिव मिळै हतीक ।—र.रा

८ शिखर, चोटी ।

ग्रल्पा०—तीखोळी ।

[स० तीक्ष्ण] ६ काली मिर्च (ग्र मा)

वि०—१ तेज, चरपरा । उ०—ग्रेकइ लागइ मधुर फळ, ग्रेकइ कडूया तीख । ग्रेक खाटा ग्रेक खटरसा, सहि परि सगति सीख ।
—मा का.प्र.

२ विशेष, श्रेष्ठ । उ०—प्यारी राखै पुत्र सू, जाफा कर जतनाह । तीख रतन्ना तोल तिरण, नाम कहै रतनाह ।—र हमीर

रू०भे०—तीक ।

यौ०—तीखचौख ।

तीखग्रस—देखो 'तीक्ष्णासु' (रू भे , ना मा)

तीखडी-स०पु०—१ द्वार के ऊपर ग्रन्दर की ग्रोर बनाया हुग्रा त्रिभुजाकार ताक या ग्राला ।

२ देखो 'तीखो' (ग्रल्पा , रू भे)

तीखचौख-स०स्त्री०यौ०—१ विशेषता, ग्रधिकता ।

उ०—ताता रजपूता मे ही तीखचोख री बात ग्रखियात री उवारणहार ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२ मर्यादा, प्रतिष्ठा ।

३ स्पर्द्धा । उ०—घोडा रा उबटा लीजै छै । ग्रमल पीजै छै । घोडा चडिया सावळा तोलता थका माहोमाहि तीखचौख रा वचन बोलता थका । ग्रादमी कुरण जको म्हा सू ग्रडै ।— पना वीरमदे री वात

४ मान, गौरव, वडप्पन । उ०—१ ग्राजानबाह पोग्स ग्रछाह, दीवा सू लाय वडी बलाय, रिझवारा रिझवार, कमरा सिणगार, तीख-चौख री राखणहार, रस-विलास री चाखणहार । —र हमीर

उ०—२ साथ मै ग्रमला री मनुवारचा करै है, ग्रासवर पिरण प्याला भरै है, इरण तरै हगाम करता वहै, तीख-चौख राखण री वाता करै है ।—र हमीर

तीखण [स० तीक्ष्ण] १ लोहा (ह ना)

२ देखो 'तीक्ष्ण' (रू भे)

३ देखो 'तिखरण' (रू भे)

तीखाचद-स०पु०—एक प्रकार का देशी खेल ।

तीखोडो देखो 'तीखो' (ग्रल्पा , रू भे)

(स्त्री० तीखोडी)

तीखोळी-स०स्त्री०—देखो 'तीख' ८ (ग्रल्पा , रू भे)

तीखो-वि० [स तीक्ष्ण] (स्त्री० तीखी) १ तेज धार या नोक वाला ।

उ०—१ हूं रांणी पिण थू ग्रछाई जी, निरागी निरधार । मावै नही इक म्यान माइ जी, तीखी दोई तरवार ।—वि कु

उ०—२ तीखा भाला ऊपर चालणौ ।—जयवाणी

२ उग्र, प्रचण्ड । उ०—सूकै जेठ मझार सर, तीखा तावडियाह । सूकै इम सिंधू सूणै, मुहडा मावडियाह ।—वा दा

मुहा०—तीखो होणौ—तेज स्वभाव का होना ।

३ तेज या द्रुतगति से चलने वाला । उ०—सर डावै वड जीवणै, दुहू विचाळै वट्ट । तीखा खडिया ग्रोठिया, कामठिया मू फट्ट ।
—कुवरसी साखला री वारता

४ विशेष, ग्रधिक । उ०—१ देह जिकरण वाता ग्रै दोई, तिके सदाई तीखा । बीजा जड जगम वसुधा रा, सारा जीव सरीखा ।
—र ऊ

उ०—२ 'भारा' तो धन भाग, जाडेचा दाखै जगत । तीखो त्याग तियाग, 'जेहल' वेटो जनमियो ।—वा दा

क्रि०प्र०—करणौ, होणौ ।

५ कुशाग्र बुद्धि वाला, बुद्धिमान. ६ सुनने मे ग्रप्रिय, कर्ण-कटु (ध्वनि या वाक्य) उ०—पाडोसरिए नी जीभि जस्या कडूग्रा, जिसिया सद्गुरु तरण उपदेस तिस्या कसायला, जिसी सुकिनी जीभ एहवा तीखा, जिस्या माता ना चित्र तिस्या मधुरा पलेव ।—व स

७ चरपरा, तेज स्वाद का । उ०—सेक्या सतल्या तल्या ताव्या तीखा तमतमा खाटा खारा कडूग्रा कसायला ।—व स

८ ग्रच्छा, वढिया । उ०—मया लहइ नितु नवी, हीरा हेम पटव । गो महिखी तीखा तुरी, क्रीडा करइ कुटंब ।—मा का प्र

९ नोकदार (सुन्दर नयन) उ०—१ झुर झुर कुरजा सी उरजा सुक झडकै । तीखा नेतर री छेतर मे तडफै ।—ऊ का.

उ०—२ अगिया री पेस बद तरणाइजै छै, तीखा लोयणा मे ग्रणियाळो काजळ सारिजै छै ।—पना वीरमदे री वात

स०पु०—एक प्रकार का पक्षी ।

रू०भे०—तीकौ ।

ग्रल्पा०—तीखोडो ।

तीडोतरो-स०पु०—१ एक प्रकार का सरकारी लगान २ तीन की सख्या का वर्ष ।

तीछण, तीछन—देखो 'तीक्ष्ण' (रू भे)

तीज-स०स्त्री० [स० तृतीया] १ मवत् के मास के प्रत्येक पक्ष की तृतीया तिथि. २ श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया का पर्व जो विशेषतः कुमारी वालिकाग्रो द्वारा मनाया जाता है ।

वि०वि०—यह झूले का पर्व होता है । इस दिन कुमारियाँ ग्रथवा स्त्रिया तीज सबधी गीत गाती हुई झूला झूलती है । यह छोटी तीज के नाम से प्रसिद्ध है ।

३ भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की तृतीया का पर्व जो सधवा स्त्रियो द्वारा मनाया जाता है । कजली तृतीया । उ०—जइ तू ढोला नाविग्रउ, काजळिया री तीज । चमक मरेसी मारवी, देख खिवता बीज ।
—ढो मा

४ भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की तृतीया के पर्व पर अपनी विवाहिता लड़कियो के लिये पितृ गृह की ओर से भेजे जाने वाले वस्त्र, मिठाई आभूषण आदि ।
क्रि०प्र०—आणी, चढ़ाणी, देणी, भेजणी, मेलणी ।
५ वीरबहूटी, इन्द्रवधू (शेखावाटी)

तीजण, तीजणी-स०स्त्री०—१ श्रावण के शुक्ल पक्ष एव भादो के कृष्ण पक्ष की तृतियाओं के पर्व को मनाने वाली कुमारी या वधू ।
उ०—भूलै भूलै भूमती, तीजण सावण तीज ।—लो गी
२ देखो 'तीज' ५ (रू भे)

तीजबर, तीजवर-[स० तृतीय+वर=पति] स०पु०—वह पुरुष जो दो विवाह कर चुका हो और तीसरी स्त्री से विवाह करने वाला हो अथवा कर चुका हो ।

तिजियाण, तीजियात-स०स्त्री०—वह गाय या भैंस जो तीसरा बच्चा दे चुकी हो ।

तीजोडो—देखो 'तीजो' (अल्पा, रू भे)
(स्त्री० तीजोडी)

तीजो-वि० [स० तृतीय] (स्त्री० तीजी) १ तीसरा, तृतीय २ अन्य ।
अल्पा०—तीजोडो ।
स०पु०—देखो 'तीयो' ३ (रू भे)

तीजो-पो'र-स०पु०यौ०—१ तीसरा प्रहर २ सायकाल के कुछ पूर्व का समय ।

तीठ-स०स्त्री० [स० तृप्टि] १ अभिलाषा, इच्छा २ दया ।

तीठो-वि०—निर्मोही, रूखा ।

तीड-स०पु० [स० टिट्टिभ] एक प्रकार का उडने वाला कीडा जो बडा भारी दल बना कर चलता है और मार्ग के पेड पौधे, फसल आदि को खा कर नष्ट कर देता है । उ०—१ छुटे तीर सा जोम त्या व्योम छायो, उडै चील कै हीड कै तीड आयो ।—रा रू
उ०—२ हरियो दोठा हेम हरस तीडियां हालो ।—ऊ का
वि०वि०—मादा टिड्डी नमी वाली रेतीली या कछार भूमि मे ३ से ६ इच तक की गहराई मे अडे देती है । यह दक्षिणी पूर्वी अरब, बलुचिस्तान, ईरान आदि मे प्राय वसन्त ऋतु मे जनवरी से अप्रेल तक अडे देती है । इनका झुण्ड मार्ग की फसलो आदि को नष्ट करता हुआ लगभग एक हजार से डेढ हजार मील तक की लम्बी यात्रा करता है । मानसून के आरम्भ में फिर इन्हें अडे देने योग्य नमी वाली रेतीली भूमि मिलती है और ये सिंध, पजाब, राजस्थान आदि मे अपने अडे देती हैं । जून-जुलाई से लगा कर यदि अनुकूल मौसम रहे तो ये अक्तूबर-नवम्बर तक अडे देती रहती हैं ।
मादा टिड्डी अपने अडे प्राय ६० से १०० अडों के गुच्छो मे कई बार देती है, प्रत्येक मादा लगभग ७५० अडे देती है और इस प्रकार एक ही मादा से अनुमानत उतने ही टिड्डे पैदा होते हैं । तापमान के अनुसार ११ से १४ दिन मे इन अडो से बिना पख के फुदकने वाले (हापर्स) पैदा होते है जिन्हें 'फाको' कहते हैं ।
ये 'एकात' और 'सामूहिक' दशाओ में बढते है । पहले ये 'एकान्त' (सालिटरी) दशा में बढ़ते हैं और फिर 'सामूहिक' (ग्रिगेरियस) दशा मे । इस प्रकार जब ये फिर कुछ बडे हो जाते हैं तो 'एकान्त' दशा मे और फिर पूर्ण टिड्डे बनने पर 'सामूहिक दशा' मे चलते हैं । 'एकान्त' (सालिटरी) दशा वाले 'फाके' का रग हरा होता है और सामूहिक (ग्रिगेरियस) दशा वाले 'फाके' का रग पहले काला फिर काले धब्बे सहित पीला हो जाता है जिसे राजस्थान मे 'रीऊण' कहते है । उसी प्रकार 'एकान्त' दशा वाले 'वयस्क' (एडल्ट) टिड्डे का रग भूरा होता है और 'सामूहिक' दशा वाले वयस्क टिड्डे का रग पहले गुलाबी होता है जिसे राजस्थान मे 'फिरड' कहते हैं और बाद मे जब वह मैथुन की अवस्था को पहुँच जाता है तो उसका रग पीला हो जाता है ।
फाके से पूर्ण टिड्डा बनने मे २५ से ५० दिन का समय लगता है । भारत मे यह प्राय: खरीफ की फसल को हानि पहुँचाता है परन्तु कई बार इसके पैदा होने की अनुकूल परिस्थिति मे इसका आक्रमण जाडे मे रबी की फसल पर भी हो जाता है ।
रू०भे०—टीड, तिड ।
अल्पा०—तीडो ।

तीडीभळको—देखो 'टीडीभळको' (रू भे)

तीडोत्तर—देखो 'तिहोतर' (रू भे)

तीडो-स०पु०—१ चार पाच अगुल का कई रगो मे मिलने वाला एक प्रकार का परदार कीडा जो पेडो या छोटे पौधो पर दिखाई पडता है और नरम पत्ते खाता है । उ०—तीडा माखी डास मच्छर कसारी धार ।—वृहद् स्तोत्र
२ देखो 'तीड' (रू भे) उ०—तीडा करसण सूपियो, वानरडा नू बाग । माल किराडा सूपियो, ज्यारा फूटा भाग ।—वा दा

तीण-स०स्त्री०—१ कुये या रहट पर वह स्थान जहाँ कुए से चडस निकाल कर खाली किया जाता है । उ०—खारो कुवो सहर मे तेजसी री वाय ऊपर छै, तिण तीण छह वहे छै ।—नैणसी
२ कुये या जलाशय मे से पानी पीने या पिलाने का अधिकार ।
उ०—पछै विकू कोहर पाणी री तीण वेई माहोमाह बोलाचाली हुई तद भाटी अचळदास मारियो ।—नैणसी
मुहा०—तीण टूटणी—१ अधिकार का समाप्त होना
२ आमदनी का जरिया बद होना ।
३ कुए से पानी खीचने की क्रिया ।
रू०भे०—तीण ।

तीणी-सर्व०—उसी । उ०—राजा भोज आयो तीणी ठाई सामही आयो छै बीसल राई ।—वी दे.

तीणो-स०पु० [स० तक्षणम्] छेद, छिद्र, सूराख ।

तीत-स०पु०—बच्चा, बालक । उ०—ग्रस्मी ७००० पोतला लघु तीत साथै ग्रफीम घोळ पीधो ।—नैणसी
वि० [स० ग्रतीत] १ बीता हुग्रा, गत (जैन)
२ विरक्त, निर्लेप (जैन)
तीतकियो—देखो 'तीती' (ग्रल्पा रू भे)
तीतग्रागोउ-स०पु०—एक प्रकार का वस्त्र (व स.)
तीतर-स०पु० [स० तित्तर] एक प्रसिद्ध पक्षी जो समस्त एशिया ग्रौर यूरोप मे पाया जाता है। यह काला ग्रौर मटमैला दो रंग का होता है।
वि०वि०—यह जिस क्षेत्र मे रहता है वहां की भूमि से इसका रंग मिलता-जुलता होता है। मास के लिए लोग इसका शिकार करते हैं। कुछ लोगो द्वारा यह पाला भी जाता है ग्रौर परस्पर तीतरों की लडाई भी कराते हैं।
तीतरी-स०स्त्री०—१ छितराये हुए बादल।
[स० पुत्तिका] २ तितली ३ कागज का छोटा टुकड़ा, चिट। (जयपुर)
तीती-स०स्त्री०—योनि, भग।
ग्रल्पा०—तीतकियो, तीतो।
तीतुल-स०पु०—तीतर।
तीतो-वि० [स० तिक्त] १ जिसका स्वाद तीक्ष्ण ग्रौर चरपरा हो, तिक्त. २ कड़वा. ३ देखो 'तीती' (ग्रल्पा, रू भे)
तीथकर—देखो 'तीरथकर' (रू भे) उ०—धनसारथवाह साधु नइ, दीधु घ्रित नू दान। तीथकर पद मइ दीउ, तिण मुझ ए ग्रभिमान। —स कु.
तीथ—देखो 'तीरथ' (रू.भे) उ०—सेत्रुजि तीथि चडेवि पाचइ ए, पाडव सिधि गया ए।—प प च
तीधर-क्रि०वि०—कही, किधर ही। उ०—१ एक साच सो गहगही, जीवन मरण निबाहि। दादू दुखिया राम बिन, भावै तीधर जाय। —दादू बाणी
उ०—२ काळा मुह ससार का, नीले कीये पाव। दादू तीन तलाक दे, भावै तीधर जाव।—दादू बाणी
तीन-वि० [स० त्रि० प्रा० तिरीण] दो ग्रौर एक का योग।
स०पु०—तीन की सख्या, ३।
मुहा०—१ तीन तेरह करणो—तितर-बितर करना २ तीन तेरह होणो—तितर-बितर होना ३ तीनपाच करणो—हुज्जतबाजी करना, बकवास करना ४ न तीन मे न तेरै मे—न तीन मे न तेरह मे, जो किसी गिनती मे न हो, जिसको कोई पूछ न हो।
रू०भे०—ति, तीनी।
यौ०—तीनकाळ, तीनरेख।
तीनकाळ-स०पु० [स० त्रिकाल] १ तीनों समय—भूत, भविष्य ग्रौर वर्तमान २ प्रात, मध्यान ग्रौर सायकाल तीनो समय।
तीनघूमी-स०पु०—ग्राभूषणा की घुडाई का एक ग्रौजार (स्वर्णकार)।
तीननैयन-स०पु० [स० त्रि नयन] महादेव, शिव। उ०—कर तीननयन पिनाक कोदड ताणवै तिहताळ।—र ज.
तीनरेख-स०पु०—दास (मि.को.) उ०—हनु-कठ भुज विमाळ ग्रात तीनरेख।—मीरा
तीनलड़ी-वि०—तीन लड वाली, तिलड़ी।
तीनसिर-स०पु० [स० त्रिशिरस्] कुबेर, धनेश्वर (ह ना)
तीना-क्रि०वि०—तंग।
तीनी—देखो 'तीन' (रू भ)
तीनेक-वि०—तीन के लगभग।
तीन्हो-स०पु०—एक प्रकार का पौधा विशेष।
तीय-स०स्त्री०—१ धातु का पतला तार जो वस्तु की जोड के लिए काम मे लेते है २ टूटी वस्तु पर लगाई गई जोड ३ छोटा टाका ४ लोहे पीतल ग्रादि की छोटी बारीक कील पिन. ५ सुन्दरता के लिए ऊपर के ग्रगले दातो मे छेद कर के लगाई जाने वाली सोने की मेख।
तीयपट्टी-वि०—[सुहागिन स्त्रियो के सिर का] विशेष ग्राकार का ग्राभूषण।
तीयणो, तीयबो-क्रि०स०—१ पतले नुकीले ग्रौजार से किसी मे बारीक छेद करना २ किसी वस्तु ग्रादि की टूट पर तार ग्रादि से जोड़ लगाना ३ वस्त्र मे टाको द्वारा तीय लगाना।
तीयणहार, हारो (हारी), तीयणियो—वि०।
तीयवाड़णो, तीयवाड़बो, तीयवाणो, तीयवाबो, तीयवावणो, तीयवावबो, तीयाड़णो, तीयाड़बो, तीयाणो, तीयाबो, तीयावणो, तीयावबो, —प्रे०रू०।
तीयियोड़ो, तीयियोड़ो, तीय्योड़ो—भू०का०कृ०।
तीयीजणो, तीयीजबो—कर्म वा०।
तिबणो, तिबबो—ग्रक०रू०।
तीवणो, तीवबो, तूवणो, तूवबो—रू०भे०।
तीवारी—देखो 'तिवारी' (रू.भे)
तीयियोड़ो-भू०का०कृ०—१ तार ग्रादि की जोड़ लगाया हुग्रा २ नुकीले ग्रौजार से छेद किया हुग्रा ३ टाको द्वारा दुरुस्त किया हुग्रा।
(स्त्री० तीयियोड़ी)
तीमण—१ देखो 'तींवण' (रू भे)
२ देखो 'तमणियो' (मह रू भे)
तीमणियो—देखो 'तमणियो' (रू भे)
तीमारदारी-स०स्त्री० [फा०] सेवा-सुश्रुषा, रोगियो की सेवा का कार्य।
तीय-स०पु०—त्रेतायुग (जैन)
तीय-वि० [स० ग्रतीत] १ बीता हुग्रा, गत (जैन)
२ देखो 'तिय' (रू भे.)

तीयल—देखो 'तील' (रू भे)
तीया-सर्व०—उन । उ०—सोनि नैं च्यार आदमी आपरा हुता तीया नु तेडि नैं कह्यो सुरग दीसै नही ।—चौबोली
तीयाग—देखो 'त्याग' (रू भे)
तीयार—देखो 'तैयार' (रू भे) उ०—कचियौ प्रेम पिछेंवडो, किधी सेज तीयार । गोवर रमे मदिर गई, पिउ माणी तिण वारि ।
—व स
तीयै, तीयैं-सर्व०—उस । उ०—१ तीयै रै दरसण सु मोनु गरभ रह्यौ ।—देवजी बगडावत री वात
उ०—२ जीय घडी उदैराव रो जनम हुवो तीयै घडी प्रोळि रा कगारा टूट पडिया ।—देवजी बगडावत री वात
वि०—तृतीय, तीसरा । उ०—पद धुर वार दुवै पनरह पुण । तीयै वार अठार चवथ तिण ।—र ज प्र
तीयौ-स०पु० [स० त्रि] १ तीन का अक ।
मुहा०—तीयो पाचो करणो—जैसे-तैसे निपटारा करना, फैसला करना, समाप्त करना ।
२ ताश का वह पत्ता जिस पर तीन बूटिया हो ३ किसी की मृत्यु के पीछे तीसरे दिन किया जाने वाला सस्कार ।
मुहा०—१ तीयो करणो—किसी की अमगल कामना करना
२ तीयो राचणो—किसी के प्रति क्रुद्ध होने पर उसका अमगल चाहते हुए बुरा-भला कहने के लिए यह मुहावरा प्रयुक्त किया जाता है ।
रू०भे०—तइयौ, तियौ, तीजौ, तीसरौ, तेइयौ, तेयौ ।
तीरदवाज, तीरदाज-वि० [फा० तीर+अन्दाज] तीर चलाने में दक्ष, तीर चलाने वाला । उ०— अर अमामा तीरदाजा नैं चाप चढावण री वाता वतळावै छै जिण री चोट अमामां लागै छै ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
रू०भे०—तीरमदाज ।
तीरदाजी-स०स्त्री० [फा०] तीर चलाने की विद्या या क्रिया ।
तीर-स०पु० [स० तीर] १ जलाशय अथवा नदी आदि का किनारा, तट । उ०—अधम न जा तीरथ अवर, तु जा सुरसरी तीर । दीरघ लहसी नीन द्रग, मुजळ पवाळ सरीर ।—बा दा
मुहा०—१ तीर उतरणो—तीर जाना, पार उतरना, किनारे पर पहुचना, भव सागर पार होना. २ तीर उतारणो—पार करना, किसी का उद्धार करना, भव सागर पार कराना ३ तीर मेलणो—किसी वस्तु को दूसरे किनारे रखना अर्थात् दूर रखना
४ तीर होणो—पार होना ।
[फा०] २ बाण, शर (डि को)
पर्या०—अलख, अजिह्मग, आसुग, ककपत्र, करण्ड, कलब, काड, खगाळ, खड, खग, खुहम, ग्रीवपख, चित्रपूख, तुनको, तोमर, नाराच, निखद्द, नीरस्त, पखाळ, पखी, पत्रवाह, पत्री, प्रखतक, प्रदर, बाण, विसिख, मारगण, अगणाल, इखु, रोप, रोपण, सर, सायक, सिलीमुख ।
मुहा०—१ तीर करणो—तीर करना, गायब करना, उडा लेना, (किसी को) भगा देना २ तीर चलाणो—तीर चलाना, युक्ति लगाना, दाव फेंकना, वार करना. ३ तीर ठिकाणे बैठणो—लक्ष्य पर वार होना ४ तीर फेंकणो, तीर वावणो—देखो 'तीर चलाणो' ५ तीर लागणो—ठेस पहुचाना, ताना मुनाना ६ तीर होणो—तीर होना, भाग निकलना ।
यौ०—तीरकस, तीरगर, तीरवार ।
३ बदूक की नाल का वह छेद जिसमे बारूद और गोली आदि डालते है ४ सीसा नामक एक धातु । उ०—आधा पाव तीर रो धमाक छाती चाढ आयो ।—कवि महकरण महियारियो
५ जहाज का मस्तूल. ६ रहट के चक्र के बीच मे खडे रहने वाले काष्ठ के लट्टू का नीचे का नुकीला भाग ।
अल्पा०—तीरियौ ।
मह०—तीरो ।
क्रि०वि०—पास, निकट, समीप । उ०—भाव सहित सेवा करू, रहू जिण रै तीर ।—जयवाणी
तीरइ—देखो 'तीरे' (रू भे) उ०—राय तणी सेवा करइ । राति दिवस तीरइ सचरइ ।—विद्याविळास पवाडउ
तीरकस-स०पु०—१ द्वार के ऊपर बना धनुषाकार ताक (आला) जिसमे बहुत से छिद्र होते हैं और जिनमे रगीन काँच के टुकडे जडे रहते हैं २ द्वार या चहारदीवारी मे बने वे छेद जिनसे तीर या बन्दूक की गोलिया चलाई जाती हैं । उ०—त्यारै ऊपरै केसर मतग रग री धारा पिचकारिया तीरकसा मे घाली थकी छूटै छै ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
तीरकारी-स०स्त्री०—तीर चलाने की क्रिया ।
तीरगर-स०पु० [फा०] तीर बनाने का व्यवसाय करने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति ।
तीरत—देखो 'तीरथ' (रू.भे)
तीरथकर-स०पु० [स० तीर्थंकर] जैन समुदाय के उपास्यदेव जो देवताओं से भी श्रेष्ठ और सब प्रकार के दोषो से मुक्त माने जाते हैं । इनकी मूर्तिया दिगम्बर होती हैं और प्राय एक-सी होती हैं ।
वि०वि०—समयसुन्दर कृति 'कुसुमाञ्जली' के अनुसार तीनो कालो मे प्रत्येक काल के चौवीस तीर्थंकर माने गये हैं जो निम्न है—
अतीत काल के—१ केवळग्यानी (केवलज्ञानी) २ निरवाणी (निर्वाणी) ३ सागर ४ महाजस (महयश) ५ विमळनाथ (विमलनाथ) ६ सरवानुभूति (सर्वानुभूति) ७ स्रीधर (श्रीधर) ८ दत्त ९ दामोदर (दामोदर) १० सुतेज ११ सामी (स्वामी) १२ मुनिसुव्रत. १३ सुमति १४ सिवगति (शिवगति) १५ अस्ताग १६ नमीस्वर (नमीश्वर) १७ अनिल १८ जसोधर (यशोधर)

१९ क्रितारथ (कृतार्थ) २० जिनेस्वर (जिनेश्वर) २१ सुद्धमति (शुद्धमति) २२ सिवकर (शिवकर) २३ स्यदन और २४ सम्प्रति।

वतमान काल के—१ रिखभदेव (ऋषभदेव) २ अजितनाथ ३ सभवनाथ ४ अभिनदन ५ सुमतिनाथ ६ पद्मप्रभ ७ सुपासनाथ (सुपार्श्वनाथ) ८ चद्रप्रभ ९ सुबुधिनाथ. १० सीतळनाथ (शीतलनाथ) ११ स्रेयासनाथ (श्रेयासनाथ). १२ वासूपूज सामी (वासुपूज्य स्वामी) १३ विमळनाथ (विमलनाथ) १४ अनतनाथ १५ धरमनाथ (धर्मनाथ) १६ सातिनाथ (शातिनाथ) १७ कुथुनाथ. १८ अमरनाथ १९ मल्लिनाथ २० मुनि सुव्रत २१ नमिनाथ २२ नेमिनाथ २३ पारसनाथ (पार्श्वनाथ) २४ महावीर सामी (महावीर स्वामी)।

भविष्य काल के—१ पद्मनाभ २ सूरदेव (सुरदेव) ३ सुपास (सुपार्श्व) ४ स्वयप्रभ ५ सरवानुभूति (सर्वानुभूति) ६ देवस्रुत (देवश्रुत) ७ उदैनाथ (उदयनाथ) ८ पेढाळ ९ पोट्टिल. १० सतकीरति (सत्कीर्ति) ११ सुव्रत १२ अमम १३ निकखाय (निकषाय) १४ निस्पुलाक (निःपुलाक) १५ निरमम (निर्मम) १६ चित्रगुप्त १७ स्री समाधि (श्री समाधि) १८ सवरनाथ १९ जसोधर (यशोधर) २० विजय. २१ मल्लिदेव २२ देवचद्र. २३ अनतवीरज (अनन्तवीर्य) २४ भद्रकर (भद्रकृत)।

रू०भे०—तित्थकर, तित्थकर, तित्थगर, तित्थयर, तिथकर, तीथकर, तीरथकर।

तीरथ—स०पु० [स० तीर्थ] १ वह पवित्र स्थान जहा धर्म भाव से लोग यात्रा, पूजा या स्नान आदि के लिए जाते हैं।

उ०—क्रम-क्रम तीरथ कीधु, धन भ्रम नेकी धारणा। लेंटे लाहो लीध, मिनख जमारै मोतिया।—रायसिंह सादू

क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ, जाणौ।

यौ०—तीरथजात्रा, तीरथदेव, तीरथपति, तीरथराज।

२ हाथ के कुछ विशिष्ट स्थान जिनसे आचमन, पिण्डदान, पितृकार्य और देवकार्य किया जाता है ३ शास्त्र ४ दसनामी सन्यासियो की एक उपाधि ५ माता-पिता ६ ब्राह्मण ७ अतिथि मेहमान ८ साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका का सघ या समुदाय (जैन)

९ तीर्थंकर का साम्राज्य, शासन (जैन)

१० जिन, तीर्थंकर का नाम (जैन)

रू०भे०—तिरथ, तिथु, तिरथ, तिथि, तीरत्त, तीरथु।

तीरथकर—देखो 'तीरथकर' (रू भे)

तीरथजात्रा—देखो 'तीरथ यात्रा' (रू भे)

तीरथदेव—स०पु० [स० तीथदेव] १ शिव, महादेव २ जिन, तीर्थंकर (जैन)

तीरथनायक—स०पु०—तीर्थाधीश, तीर्थङ्कर। उ०—देवळ जोज्यो हरखित होज्यो, धुरि पातक मळ धोज्यो। सहु सुखदायक तीरथ नायक, ज्योवा लायक ज्योज्यो।—ध व ग्र.

तीरथपति—देखो 'तीरथराज'

तीरथपाद—स०पु० [स० तीर्थपाद] विष्णु।

तीरथयात्रा—स०स्त्री० [स० तीर्थयात्रा] पवित्र एव पुण्य स्थानो पर धर्म भाव से दर्शन पूजा आदि के लिए जाने का कार्य। तीर्थाटन।

रू०भे०—तीरथ जात्रा।

तीरथराई, तीरथराज—स०पु० [स० तीर्थराज] प्रयाग।

उ०—महपति धरम वभ कुळ जगमिणि, तीरथराज दोजो तिणि।
—सू प्र.

रू०भे०—तीरथ्थराज।

तीरथराजी—स०स्त्री० [स० तीर्थराजी] काशी।

वि०वि०—काशी सभी तीर्थों का केन्द्र होने से इसका यह नाम पड़ा।

तीरथाटण, तीरथाटन—स०पु० [स० तीर्थाटन] तीर्थ-दर्शन हेतु यात्रा करने का कार्य, तीर्थ-यात्रा।

तीरथीयो—स०पु०—तीर्थस्थानो पर रहने वाला।

तीरथु तीरथ्थ—देखो 'तीरथ' (रू.भे.)

तीरथ्थराज—देखो 'तीरथराज' (रू भे)

तीरबार—स०पु०—दुर्ग की बुर्ज मे बने छोटे सूराख जहाँ से तीर अथवा बन्दूक की गोली चलाई जाती है। उ०—तठै तेली बुरज चढ रसो वाय तागड खाचियो अरु साच नै ऊपर तीरवारा सू जरू बाधियो।
—द दा.

तीरभुक्ती—स०स्त्री० [स०] गगा, गडक और कौशिकी इन तीन नदियो से घिरा हुआ तिरहुत देश।

तीरमदाज—देखो 'तिरदाज' (रू भे) उ०—तद रावजी कही—भला भला तीरमदाज हाथिया ऊपर चढ लेवो।
—डाढाळा सूर री वात

तीरवरती—वि० [स० तीरवर्ती] १ तट पर रहने वाला, समीप रहने वाला २ पडोसी।

तीरा—क्रि०वि०—पास। उ०—जो ईणा माहरै माथै झूठो बदनामी दीधी है तो अबै हू पण एक वार ईणा तीरा थी लेनै छोडसूँ।
—साहूकार री वात

तीरांण—स०स्त्री०—तैरने की क्रिया या ढग। उ०—गुटकाण सीदाण वीमाण तणी गत, नाव तीरांण देधाण नूणै। पखराण वैगाण अमाण परछाक, वात वसै विडगाण भणै।—किसनजी दधवाडियो

तीराई—स०स्त्री०—तीरदाजी का भाव।

तीराव—स०स्त्री०—तिपाई।

तीरी—स०पु०—तट, किनारा।

क्रि०वि०—पास।

तीरोया—स०पु० (बहु० व०) रहट को उल्टा घूमने से रोकने वाली लकडी (डूग्रो) पर दो सीधी पतली लगाई जाने वाली लकडियां जिनमे मधुर ध्वनि उत्पन्न करने के लिए पटडिया डाली जाती हैं।

तीरीयौ—देखो 'तीर' (अल्पा, रू भे)
मुहा०—तीरिया चलाणा, तीरिया फेंकणा—भरसक प्रयत्न करना, पूर्ण प्रयत्न करना।

तीरैं, तीरे, तीरैं, तीरैं-क्रि०वि०—पास, समीप। उ०—१ जद साह आपरी बहू तीरैं सीख मागवा गयौ।—बघी वुहारां री वात
उ०—२ सीमाळ पैंहली कानडदेजी तीरैं रहतौ।—नैणसी
उ०—३ तद साहू री छोटी बहू राजा भोज तीरैं पूकारू गई।
—साहूकार री वात
रू०भे०—तीरइ।

तीरौ—देखो 'तीर' (मह, रू भे) उ०—मारैं मीर महावळी, ताकैं वाहे तीरौ रे। कूटै कोट नैं कागुरा, धुव खडै वड धीरौ रे।
—प च चौ

तीलक—देखो 'तिलक' (रू भे) उ०—माणक मोती ले बोल्यौ उठी नैं गोरी तीलक सजोई।—वीं दे

तील-स०पु०—एक प्रकार का स्त्रियो के कण्ठ पर धारण करने का आभूषण विशेष। उ०—तनै रै वाछडिया हुसली कडूला अगड घडाऊ तेरी माय नैं, तेरै रै वाछडिया झुगला टोपी तील पहराऊ तेरी माय नैं।—लो गी.
रू०भे०—तीयल।
अल्पा०—तिलडी।

तीली-स०स्त्री०—१ वडा तिनका अथवा सीक २ धातु आदि का कडा पतला तार ३ जुलाहो के करघे के उपकरण ढरकी की सीक जिसमे वाने के लिए लपेटे हुए सूत की नारी पहनाई जाती है।
रू०भे०—तिली।

तीवण-स०स्त्री०—१ कूए से पानी निकालने की क्रिया।
२ देखो 'तीवण' (रू भे) उ०—भावज जीमैंली फलका मोवण, तीवण जीमैंली तीस वत्तीस।—लो गी

तीवणियौ, तीवणौ—१ देखो 'तीवण' (अल्पा, रू भे)
२ देखो 'तेवणियौ' (रू भे)

तीवणौ, तीवबौ—१ देखो 'तीवणौ, तीववौ' (रू.भे)
२ देखो 'तेवणौ, तेवबौ' (रू भे.)

तीव्र-वि० [स०] १ अत्यन्त, अतिशय २ बहुत गरम ३ नितात, वेहद ४ तीक्ष्ण, तेज ५ कटु, कडुआ ६ प्रचड, प्रवल, वेग-युक्त ७ असह्य. ८ कुछ ऊचा और अपने स्थान से वढा हुआ। (स्वर)
स०पु०—१ लोहा, इस्पात।
रू०भे०—तिव्व।

तीव्र कठ-स०पु० [स०] जमीकद।

तीव्रगति-स०स्त्री० [स०] वायु, हवा।

तीव्रता-स०स्त्री० [स०] तीव्रता का भाव, तीक्ष्णता, तेजी।

तीव्रतेज-स०पु०—लवग, लौंग (अ मा)

तीव्रा-स०स्त्री० [स०] पडज स्वर की चार श्रुतियो मे से प्रथम श्रुति (सगीत)

तीव्रानुराग-स०पु० [स०] एक प्रकार का अतिचार (जैन मत) (इसमे पर-स्त्री या पर-पुरुप से अत्यधिक प्रेम करना तथा कामोत्पन्न के लिए मादक द्रव्य का सेवन होता है।)

तीस-वि० [स० त्रिंशति] वीस और दस का योग।
स०पु०—तीस की सख्या, ३०।

तीसटकी-स०पु०—एक प्रकार का मजवूत और वडा धनुप। (मि० टक १३)

तीसमार-वि०—वहादुरी की डीग हाकने वाला, अपने आपको वहादुर समझने वाला।
मुहा०—तीसमार खा होणौ—वहुत वहादुर होना, वहादुरी की डीग हाकना।

तीसमौं-वि०—तीसवा, ३० वां।
रू०भे०—तीसवौ।

तीसरौ-वि० (स्त्री० तीसरी) १ क्रम मे तीन के स्थान पर पडने वाला तृतीय, तीसरा २ जिसका प्रस्तुत विपय से कोई सम्वन्ध न हो, अन्य ३ देखो 'तीयौ' (रू भे) उ०—सत्थरा सोय सारा सुखी, चवरी ढुळता चौसरा तन लगन तीसरा री तिका, मगत ध्यान मन मौसरा।—ऊ का

तीसळणौ, तीसळवौ—देखो 'तिसळणौ, तिसळवौ' (रू भे)
उ०—कदेक माख्या तिसळती, भैंस्या री पीठाह। अव पाणी नह तीसळै, जिण दिन लू दीठाह।—लू

तीसळियोडौ—देखो 'तिसळियोडौ' (रू भे) (स्त्री० तिसळियोडी)

तीसवौं—देखो 'तीसमौ' (रू.भे)

तीसौ-क्रि०वि०—तैसी।

तीसेंक-वि०—तीस के लगभग।

तीसौ-स०पु०—तीसवा वर्ष।
क्रि०वि०—वैसा।

तीह-स०पु०—१ वृक्ष २ पक्षी।
सर्व०—वे, उन। उ०—तीहू नइ घोडा दे रजपूत, दियइ वाप वळी दुइ पूत।—हम्मीरायण

तीहु-क्रि०वि०—तैसे, वैसे। उ०—कमधज वासी मारवाड रा चीता रै कैई तीहु'ही वासी मेवाड रा चीतारै तमाम।
—रतलाम नरेस महाराजा वळवतसिह री गीत

तु—देखो 'तू' (रू भे)। उ०—मोहणी रूप तु ना निमो विसन नमौ तु लच्छिवर। ताहरै मीत चलणा तणी स्रेव विलगी सखधर।—पी ग्र
क्रि०वि०—१ तैसे, तिस भाति। उ०—दिसि चाहती सज्जणा, ने हालदी मुध। साधण झुझि वचाह ज्यउ, लवी थई तुं कध।—ढो मा.

तुअ—देखो 'तू' (रू भे) उ०—गिर आव तपै नूप दीह घणा। तुंअ

हत्थ जोग्रे लघु भ्रात तणा ।—पा प्र.

तुकार—देखो 'तुकारौ' (रू भे) उ०—दळ थभ तुकार पुकार दोग्रे। हिक साथ हुकार धुकार होग्रे ।—पा प्र

तुकारणौ, तुकारबौ—देखो 'तुकारणौ. तुकारबौ' (रू.भे.)

तुकारौ-स०पु० [स० त्वकारः] (किसी को) तू कह कर पुकारने का शब्द। उ०—सू इणा रे चारण १ गैंपौ सिंढायच हो, इणरौ पण मुलायजौ छौ। सारा नू तुकारौ देय नै बतळावतौ ।—द.दा

क्रि०प्र०—देणौ।

रू०भे०—तुकार, तुकार, तुकारौ, तुकार, तुकारयउ, तूकारौ, तूकार, तूकारौ।

तुग-स०पु० [स०] १ सेना, फौज। उ०—तुग अणथाग चीतौड दली तणा, करे गौडीरवण चढै केवी। कुरभाराज गिरराज लोपै नकौ, वेहु पासै रहै समद वे वे ।—दयाळदास ग्राढौ

२ समूह, झुड, दल, टुकडी। उ०—१ तिल तदुल नइ ताड खर, तिवडा त्रिपुसो चग। तिदुग ततणि तिम वळी, तगर तणा तिहा तुग। —मा का प्र.

उ०—२ लखि फौज तुग लडग ऊवध किर दधि अग। वाणि सुरथ पायक ग्र द जग जाण दळ जयचद ।—रा रू

ग्रल्पा०—तुगौ।

३ पर्वत ४ शिखर, चोटी ५ नारियल ६ एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे दो नगण ग्रौर दो गुरु होते हैं

७ देखो 'तूग' (रू भे) उ०—वीरमदे नै इसो रोस चडयौ जाणै दारू रा गज मे ग्राग रौ तुग पडचौ ।—पना वीरमदे री वात

८ बावन वीरो (भैरव) मे से एक वीर का नाम।

स०स्त्री०—९ शराव भरने का पात्र। उ०—सो मदवा कै मदभरी तुग हाथ ग्राई। कना कामी कू रमणी एकत्ति दरसाई।—रा.रू

वि०—१ उन्नत, ऊँचा। उ०—वीरा चार पोळ तुग प्राकार। —धर्म प

२ प्रचड, प्रवल। उ०—वन गहे गेलौ जेण विच मे, रहे राखस रोस मे। तन तुग नाम कवध तिण रो, करग जोजन कोस मे।—र रू

तुगक-स०पु० [स०] १ नाग केसर २ महाभारत के ग्रनुसार एक तीर्थ।

तुगणौ, तुगबौ-क्रि०स०—फटे वस्त्र को छोटे-छोटे टाको द्वारा ठीक करना, तीवना, तुनना।

तुगता-स०स्त्री०—१ ऊचाई. २ उग्रता।

तुगघज-स०पु० [स० तुग+ध्वज] पर्वत (ना मा)

तुगनाथ-स०पु० [स०] हिमालय पवत पर एक शिवलिंग जो तीर्थ-स्थान है।

तुगनाभ-स०पु० [स०] सुश्रुत के ग्रनुसार एक कीडा जिसके काटने से जलन एव वेदना होती है।

तुगवाहु-स०पु० [स०] तलवार के ३२ हाथो मे से एक।

तुगभद्र-स०पु० [स०] मतवाला हाथी।

तुगभद्रा-स०स्त्री० [स०] दक्षिण भारत मे वहने वाली कृष्णा नदी की एक सहायक नदी (देवि)

तुगळ-स०पु०—देखो 'तुगल' (व स) (रू भे)

तुगवेणा-स०स्त्री०—महाभारत के ग्रनुसार एक नदी, तुगभद्रा।

तुगार—देखो 'तूग' (रू भे)

तुगरी-स०पु०—१ सफेद कनेर का पेड।

२ देखो 'तुग' (रू भे)

तुगिनी-स०स्त्री० [स०] महाशतावरी, वडी सतावर।

तुगी-स०स्त्री० [स०] १ पृथ्वी (ना डि.को) २ रात्रि।

उ०—नहु जामणहि पवट्टरत्ति रहु भमइ नभ-मणह। नहु विह्वरि वखाणु जत्त तुगी भरि समणह।—ऐ जै का म

३ हल्दी ४ वन तुलसी।

तुगीनास—देखो 'तुगनाभ' (रू भे.)

तुगीपति, तुगीस, तुगेस-स०पु० [स० तुङ्गीपति, तुङ्गीश] १ चद्रमा

२ राजा, नृप। उ०—तणु केहर मझम राव गागळ राव तुगेस, भूपाळै भूपाळ भाटी वडी वखत वडाळ।—नैणसी

तुगौ—देखो 'तुग' (ग्रल्पा, रू भे.)

उ०—तेरै तुगा भागिया 'माल' सलखाणी।—वी मा.

तुजाल-स०पु० [स० तुरग+जाल] एक प्रकार का जाल जो मच्छर मक्खी ग्रादि के काटने से बचाने के लिए घोडे की पीठ पर डाला जाता है।

तुड-स०पु० [स०] १ मस्तक, सिर। उ०—१ झड सुड करी ग्रस तुड झडै। पिंड रुड गुडै इत मुड पडै।—रा रू

उ०—२ दईत पडिसै घणा दडदड, रुड राकस तुड रडवड। खाग खासा वहै खड खड, त्रिगडा त्रडतड।—पी ग्र.

२ मुख, मुह। उ०—१ सरभ वाघ गज रीछ सरीखा। तुड कुदाळ मगर सम तीखा।—सू प्र

उ०—२ फुरवकावती मुछि फाडत तुड। ललवकत लोला विकट्ट विहड।—ध व ग्र

३ शूकर ग्रौर हाथी के मुख के ऊपर का भाग जो नाक के समीप होता है, थूथन ४ तलवार का ग्रग्र भाग ५ पक्षी की चोच

६ हाथी की सूड। उ०—कटै गजा ग्रसुडा, प्रचडा झडै तुडा केई। —वुधसिंह सिंढायच

रू०भे०—तुडि, तुडिका, तूड।

तुडकेसरी-स०पु० [स० तुडकेशरी] मुह मे होने वाला एक रोग जिसमे तालू की जड मे सूजन होती है ग्रौर उससे दाह-पीडा उत्पन्न होती है।

तुडि, तुडिका-स०स्त्री० [स०] १ विवाफळ. २ नाभि.

३ देखो 'तुड' (रू भे)

तुडिकेसी-स०स्त्री० [स० तुण्डिकेशी] कुदरू।

तुडिळ-वि० [स० तुडिल] १ वडी तोद वाला २ जिसकी नाभि निकली हुई हो ३ बकवादी, वाचाल।

तुडी-वि० [स० तुडिन्] १ मुह वाला २ चोच वाला ३ सूड वाला।

स०स्त्री०—नाभि।
तुतुभ-स०पु०—सरसो।
तुद-स०पु० [स०] पेट, उदर।
रू०भे०—तुदी, तूद, तोद।
वि० [फा०] तेज, प्रचड।
तुदळ—देखो 'तदुळ' (रू भे)
तुदिक-वि० [स०] बडे पेट वाला, तोद वाला।
रू०भे०—तुदी।
तुदिका-स०स्त्री० [स०] नाभि।
तुदिन-स०स्त्री०—तोद, उदर।
तुदी-स०स्त्री० [स०] १ नाभि २ देखो 'तुद' (रू भे)
३ देखो 'तुदिक' (रू भे)
तुदैल तुदैलो-वि०—तोद वाला, वडे पेट वाला।
तुब, तुबक, तुबग—देखो 'तुबुक' (रू भे)
तुबड़ी—देखो 'तुबी' (अल्पा, रू भे)
तुबर, तुबरि-स०पु० [सं० तुबर] १ एक देव जाति या इस जाति का देव (ना मा) उ०—गावै तुबर गीत वेद ऊचरै ब्रहमा, निमो नद रा नेस आज उत्तरै अक्रमा।—पी ग्र
[सं० तुबरम्] २ एक वाद्य यत्र ३ देखो 'तुबरु' (रू भे)
उ०—१ सिर वरि मेघाडबर तुंबर गाइ गीति। नाचइ रभ थ्रिता-चीय राचीय आपइ चीति।—नेमिनाथ फागु
उ०—२ वाजइ दुंदुभि अवरि तुबरि सुर अवतार। स्रीपति अति आणदिउ वदिउ नेमिकुमारु।—नेमिनाथ फागु
रू०भे०—तुवर, तुमर, तुम्मर।
तुबरु-स०पु० [स० तुबुरु] १ तुबर जाति के एक देव या गधर्व का नाम २ प्रथम लघु ढगण के भेद का नाम (डि को)
रू०भे०—तुबर, तुबरि, तुबुरि, तुबुरु।
तुबिका, तुबी-स०स्त्री० [स० तुबी] १ छोटा कडवा घीया २ गोल कडवे घाये को सुखा कर बनाया हुआ पात्र।
मुहा०—तुबी लेणी—तुबी ग्रहण करना, साधु व्रत अपनाना, ससार से विरक्ति लेना, फकीर होना।
रू०भे०—तूबी।
अल्पा०—तुबडी, तुमडी, तूबडी, तूमण, तूमडी।
तुबुक-स०पु० [स०] १ कद्दू का फल, घीया, लोकी. २ कद्दू को खोखला कर बनाया हुआ पात्र।
रू०भे०—तुब, तुबक, तुबग, तूबू।
अल्पा०—तूबडियो, तूबडो, तूबो, तूमडो, तूमो।
तुंबुरी, तुबुरु—देखो 'तुंबरु' (रू भे) उ०—धुनि करै अमर मगळ धमळ, गै तुबुर गावत गुण। कर जोड एम ईसर कहै, कर पूजा जाणै कवण।—ह र
तुबेरख-स०पु० [स० स्तवेरम्] हाथी।

तुवर—१ देखो 'तवर' (रू भे.) २ देखो 'तुबर' (रू भे)
उ०—नारद तुवर गीत गावई, विप्र दान अघट्ट। मगळीक अनेक वरतया, विडद बोलई भट्ट।—रुकम्णी मगळ
तुवरावटी-स०स्त्री०—जयपुर राज्यातर्गत एक भू-भाग जहा पहिले तुवर-वशीय क्षत्रियो का राज्य था।
तुवेरी-स०पु०—दोहा छद का एक भेद विशेष जिसके प्रथम चरण मे १३ मात्राए द्वितीय और तृतीय चरण मे ११ मात्राए से तुकवदी व चतुर्थ चरण मे १३ मात्राएं होती है।
तुह—देखो 'तू' (रू भे) उ०—वीर, विहिल आवजे, कुसळ मारग तुंह नि। करै कारज मन वाछित, ममइ सभारे मूहनि।—नळाख्यान
तुहारी-सर्व० (स्त्री० तुहारी) तुम्हारा। उ०—म्हारी आतिमो महा मूरिखि मयण। तुहारै वातिडै तुहीज जाणै त्रिगुण।—पी ग्र
तुही-सर्व०—तुम।
तु-स०पु०—१ कमल २ सुरपुर ३ रक्त ४ कष्ट
स० स्त्री०—५ रमा (एका, क.कु वो) ६ देखो 'तू' (रू भे)
उ०—अधम न जा तीरथ अवर, तु जा सुरसरि तीर। दीरघ लहसी तीन द्रग, सुजळ पखाळ सरीर।—वा दा
सर्व०—तेरा, तेरे। उ०—पुकारत आय तु पास परम्म। उवार विसन्न। कहे सुर अम्म।—ह र
क्रि०वि०—तव। उ०—दाणवि कूरि कमीरि पचाळी वीहावीयउ। झूझिउ मारीउ वीरु भीमिहिं तु दुरयोधनह।—प प च
प्रत्य०—करण और अपादान कारक का चिन्ह, तर्ताया और पचमी विभक्ति। उ०—सोळ कोडि वरसोवन तणी। एह थानक तु पुख भणी।—विद्याविलास पवाडउ
तुअ-सर्व०—१ तव, तेरा, तुम्हारा २ वह (उ र)
क्रि०वि०—तव (उ र)
तुअर-स०पु० [स० तुवरी] अरहर।
तुआळो-सर्व० (स्त्री० तुआळी) तुम्हारा, तेरा। उ०—१ अजूणी वार ससार ईखता चौरग अमिट अखूटत चाय। तडवड नह गजसिह तुआळी, नाक तणा आभूमण न्याय।—महाराजा गजसिंह रो गीत
उ०—२ तोय करम नासा तणै, नर सुभ करम नसाय। तोय तुआळे त्रिपथगा, माठा क्रम मिट जाय।—वा दा.
रू०भे०—तुवाळो।
तुई-स०स्त्री०—१ वस्त्रो के किनारे पर लगाई जाने वाली पट्टी, गोट, किनारी २ लौह की खोखली नली जो धौंकनी के अग्र भाग मे लगाई जाती है एक प्रकार की चिडिया विशेष।
तुईजणी, तुईजवौ—देखो 'तूईजणी, तूईजवौ' (रू भे)
तुईजियोडी—देखो 'तूईजियोडी' (रू भे)
तुक-स०स्त्री०—१ किसी पद्य या गीत का खड, कडी २ पद्य के दोनो चरणो के अन्तिम अक्षरो का परस्पर मेल।
मुहा०—१ तुकजोडणी—साधारण वाक्याशो को मिला कर कविता

करना २ तुकवदी करणो—साधारण कविता रचना ३ तुक बैठणी—परस्पर मेल होना ४ तुक मिळणी—तुक मिलना विचारो की एकता होना ५ तुक मिळाणी—देखो 'तुक जोडणी' ६ तुक लागणो—तुक लगना, युक्ति बैठना।

तुकणो, तुकबौ—देखो 'तकणो, तकबो' (रू भे)

तुकवदी–स०स्त्री०—तुक जोडने का कार्य, साधारण कविता करने का कार्य।

क्रि०प्र०—करणी।

तुकम—देखो 'तुखम' (रू भे)

तुकमौ–स०पु०—तगमा, पदक।

मुहा०—तुकमो लेणो—तुकमा लेना, श्रेष्ठता हासिल करना, अग्रगण्य बनना।

रू०भे०—तकमौ, तगमौ, तमगौ।

तुकात–स०पु०—पद्य के दो चरणो के अंतिम अक्षरो का मेल, अन्त्यानुप्रास।

तुकार—देखो 'तुकारो' (रू भे)

तुकारणो, तुकारबौ—देखो 'तूकारणो, तूकारबो' (रू भे)

तुकारौ—देखो 'तुकारो' (रू.भे)

तुकौ—देखो 'तुक्कौ' (रू भे) उ०—नै पछै उदैसिंघ दूखण चीतारियो, मोनु मानसिंघ तुकौ वाहचौ थौ।—नैणसी

तुक्कड–वि०—तुक जोडने वाला, तुकवदी करने वाला।

तुक्कौ–स०पु० [फा० तुका] १ छोटा तीर जिसके सिरे पर गासी के स्थान पर घुडी लगी रहती है।

मुहा०—तुक्को लागणो—तुक्का लगना, युक्ति काम आना।

२ तुकवन्दी। उ०—थोडा दिना पछै राखडी रै दिन तो एकाएक बेटो मर गयो। थोडा दिना मे धणी विण मर गयो। जद सोभजी सावक तुकौ जोडचो।—भि द्र

रू०भे०—तुकौ, तुगौ।

तुख–स०पु० [स० तुप] १ भूसी, छिलका (अनाज आदि का)

२ अडे के ऊपर का छिलका।

तुखाट—देखो तुरासाट (रू०भे०) (ना मा)

तुखानाळ–स०पु० [स० तुषानल] भूसी की आग (डि को)

पर्या०—कुकुल, तुसाग।

तुखार–स०पु० [फा० तोखार] १ एक देश का प्राचीन नाम और इस देश का निवासी २ घोडा, अश्व। उ०—मुलताणी घर मन वसी, सुहगा नइ सेलार। हिरणाखी हसि नइ कहइ, आणउ हेडि तुखार।
—ढो मा

रू०भे०—तोखार।

३ हिम-कण, हिम ४ शीत, ठडक।

तुखारी–स०पु०—१ तुखार देश का २ एक प्रकार का घोडा।

उ०—वर्ण लूमझूमा हुवा सज्ज वाजी। तुखारी खुरासाण भांडेज ताजी।—व.भा

तुखम–स०पु० [फा०] १ बीज २ वीर्य, शुक्र।

रू०भे०—तुकम।

तुगम–स०पु०—१ किसी देवता या महापुरुष के पदचिन्ह. २ घोडा। [फा० तगमा] ३ पदक।

तुगल–स०स्त्री०—१ गोल कडीनुमा कानो मे पहिना जाने वाला आभूपण, बाली २ नाथ सम्प्रदाय के कालवेलिया जाति के व्यक्तियो द्वारा कान मे पहिनी जाने वाली मुद्रा।

रू०भे०—तुगल।

तुगा, तुगाक्षिरी–स०पु० [त्वक्क्षीरी] वशलोचन।

तुगौ—देखो 'तुक्कौ' (रू.भे) उ०—इतरै मे बगलाऊ खडा था, उहा भेळिया उहारो मुहो भालियो, इतरै दूसरो तुगो आण पडियो, आगला आण भेळिया।—मारवाड रा अमरावा री वारता

तुगस—देखो 'तरकस' (रू भे) उ०—वे वे तुगस बधि कै, कमनैत कमाया।—व भा

तुग्र–स०पु० [स०] अश्विनीकुमार के उपासक वैदिक काल के एक ऋषि।

तुडकणो, तुडकबौ–क्रि०अ०—१ रुक-रुक कर थोडी-थोडी मात्रा में पेशाब करना २ रुक-रुक कर गाय आदि का थोडा-थोडा दूध देना।

तुडकियोडौ–भू०का०कृ०—रुक रुक कर पेशाब किया हुआ।

(स्त्री० तुडकियोडी)

तुडकौ–स०पु०—१ टुकडा, खड २ चुल्लू भर, अल्प।

तुडच्छौ–वि० [स० तुच्छ] निम्न, नीच।

तुडणो, तुडबौ–क्रि०स०—मारना, सहार करना। उ०—करा तरवार सजे 'कलयाण'। तुडे जिण हूत कई तुरकाण।—पे रू

तुडताण–वि०—अपने वश, कुटुम्ब या दल की मर्यादा बढाने वाला।

उ०—१ तेण पाट तुडताण वधे 'मोभम' वडाई। 'सोभ्र म' रै सहस मल्ल सूर रै 'क्रत' सवाई।—नैणसी

उ०—२ अरिजण वळ आखियो, सामि तूना नह छोडा। तूझ तणै तुडताण, हमैं कुण करिसै होडा।—पी ग्र.

रू०भे०—तुडिताण।

क्रि०वि०—शीघ्र, त्वरित।

तुडवाणो, तुडवाबौ–क्रि०स० ('टूटणो' का प्रे०रू०) १ तोडने का कार्य अन्य मे कराना, तुडवाना २ बडे सिक्के को उसके बराबर के मूल्य के छोटे सिक्के मे बदलाना ३ मूल्य मे कमी कराना, दाम घटवाना।

तुडाणो, तुडावो, तुडावणो, तुडावबो—रू०भे०।

तुडवायोडौ–भू०का०कृ० –१ तुडवाया हुआ. २ बडे सिक्के को छोटे मे बदला हुआ ३ मूल्य मे कमी कराया हुआ।

(स्त्री० तुडवायोडी)

तुडाई–स०स्त्री०—तुडाने की क्रिया या भाव, तोडने की मजदूरी।

तुडाणो, तुडाबौ—देखो 'तुडवाणो, तुडवाबौ' (रू.भे)

तुडायोडौ—देखो तुडवायोडौ' (रू भे.)

तुडावणो, तुडावबौ—देखो 'तुडवाणो, तुडवाबौ' (रू भे)

उ०—बाळया वाळ डाडी का उपाड ल्यूगी बाप खाणा, भोगना का राळया वादा क्यू सूजी रे भूड। तकादो भोत बताडे दात सं तुडावेगो तू, माजना सू रंज्ये दंज्ये फुडावेगो मूड।—ऊ का

तुडि-स०पु०—योद्धा। उ०—तुडि हेक गयो मरण दिस ताणे। पुहवि लयो हेक तूग पणे।—राठौड सेखा सूजावत रो गीत

तुडिताण—देखो 'तुडताण' (रू भे) उ०—वखाणे जाणे एक विसन, कहै मति कूरम मच्छ किसन। कहै दत देव कपिल कल्याण, तवे दसरथ तणे तुडिताण।—पी ग्र.

तुच, तुचा-स०स्त्री० [स० त्वच्, त्वचा] चमडा, छाल। उ०—१ राम सिकारा सहल कर, मिरग तुच ले आया।—केसोदास गाडण

उ०—२ चवे सीत मोनू तुचा एह चाहे। वहो म्रिग मारीच नू बाण बाहे।—सू प्र

उ०—३ केहर हाथळ घाव कर, कुजर ढिगलो कीध। हसा नग हर नू तुचा, दात किराता दीध।—बा.दा.

तुचामेल-स०पु० [स० त्वच्+मल] रोम (डि को.)

तुचीसार-स०पु० [स० त्वचिसार] वास (अ मा)

तुच्छ-वि० [स०] १ अल्प, छोटा. २ हीन, क्षुद्र, नाचीज, अकिंचन। रू०भे०—तुच्छो, तुछ, तुछप, तूछ।

तुच्छता-स०स्त्री० [स०] हीनता, नीचता, ओछापन, क्षुद्रता।

तुच्छो, तुछ, तुछप—देखो 'तुछ' (रू भे.) उ०—१ पार न पावे कव वडे, मत तुच्छो नर का।—दुरगादत्त बारहठ

उ०—२ वोहळा ओगण तुछ गुण, दिल मझ क सुधा।
—केसोदास गाडण

तुज—देखो 'तुझ' (रू.भे) उ०—वसे तू रोमाळी कवन थळ खाली तुज विना।—ऊ.का

तुजक-स०पु० [अ० तुजुक] १ शोभा, वैभव. २ आत्म-चरित्र (विशेषत किसी बादशाह का लिखा हुआ) ३ प्रबध, व्यवस्था।
यौ०—तुजकधार।

तुजकधार-स०पु०यौ० [अ० तुजुक+धार] सैन्य सज्जा करने वाला, फौज की व्यवस्था करने वाला। उ०—धरथभ बरोबर तुजकधार। वेढ रो एम कीधो विचार।—सू प्र

तुजकमीर-स०पु० [अ० तुजुक+फा० अमीर] अभियान या उत्सव आदि की व्यवस्था करने वाला। उ०—तुजकमीर ताप हूँ, जाव दीधो नह जाए। सझे अनम सलाम, एम पाए निज आए।—सू प्र.

तुजमाल-स०स्त्री०—पार्वती, गोरी।

तुजी, तुजीह-स०पु० [स० त्रिजिह्व] धनुष (डि को) उ०—बाणा ओक मोक धोक हजारा सणका वजे, तोक भाला हजारा रणका वज्जे तास। तुजीहा हजारा बज्जे भणका छणका तीरा, बीरा घूँ हजारा बज्जे खणका बाणास।—हुकमीचद खिडियो

तुज्ज-वि० [स० तृतीय] १ तीसरा (जैन) [स० तुर्य] २ चौथा (जैन) ३ देखो 'तुझ' (रू भे)
उ०—ईराण वतन हिम्मत अथाह। सिर विलद तुज्ज सिरखा सिपाह।—वि स

तुज्झ, तुज्झो, तुझ, तुझ्झ-सर्व०—तुझे, तेरा, तेरी, तेरे।
उ०—१ काढि कळेजउ आपणउ, भोजन दिउनी तुज्झ।—ढो मा.
उ०—२ सूख सपति छइ तुज्झो जी।—स कु
उ०—३ तुझ विण घण विलखी फिरइ, गुण विन लाल कमाण।
—ढो मा.

उ०—४ दइ तह रूधो मारू देस, तिसा ही लछण तुझ्झ नरेस।
—जैसी. रासो

उ०—५ किण दिन देखू वाटडी, आता पडवे तुझ्झ। घाव भरती आवगो, बीतो जोवन मुझ्झ।—वी स.
रू०भे०—तुज, तुज्ज, तूज, तूझ, तूझ्झ।

तुझे-सर्व०—तुझको, तुम्हे, तुझसे। उ०—तुझे वडा को नही हू कहा जाणू।—केसोदास गाडण

तुट-वि०—तनिक, जरासा, टूक।

तुटण-स०स्त्री०—फूट, विरोध।
वि०—कलह करने वाला।

तुट्टणो, तुट्टबो—देखो 'टूटणो, टूटबो' (रू भे)
उ०—इणि पर सहस सहस दुइ तुट्टइ, पगि पगि अडइन पग अवहट्टइ।
—अ वचनिका

तुट्ठ—देखो 'तुस्ट' (रू भे)

तुट्ठणो, तुट्ठबो—देखो 'तुस्टणो, तुस्टबो' (रू.भे)

तुट्ठि—देखो 'तुस्टि' (रू भे.)

तुट्ठियोडो-भू०का०कृ०—तुष्ट हुवा हुआ।
(स्त्री० तुट्ठियोडी)

तुठणो, तुठबो, तुट्ठणो, तुट्ठबो—देखो 'तुस्टणो, तुस्टबो' (रू भे)
उ०—१ काळी माता काहली, भगता ऊपरि भाइ। जिमि तुठी सुरजेठ ना, इमि तूसे महमाय।—पी ग्र.
उ०—२ अज्जु सफळ अवतार असाडा, दिट्ठा पारस देव। वुट्ठा मेह अमियदा. तुट्ठा साहिब सतमेव।—ध व ग्र

तुड-वि०—वीर, योद्धा। उ०—रहू तुड आण तुले भउ दूठ, पडे रिण घाण न दे फिर पूठ।—पे रू.

तुडि-स०स्त्री० [स० तुलित, प्रा० तुडिग्र] स्पर्धा, बराबरी।
उ०—पुरविइ कवि हुवा घणा, तेह नी किम करू तुडि। अचित्य सक्ति ना धणी, नवी आवू तेणि जोडि।—नळ-दवदती रास

तुडिकार-स०पु०—बाहुयुद्ध करने वाला, मल्ल ?
उ०—तलकार तालाकार भुगळकार आउजकार पखाउजकार गीतकार, वातकार नृत्यकार पाडकार तुडिकार आरामकार।—व.स

तुडियाण-स०पु० [स० तूर्याण] एक प्रकार का वाद्य (जैन)

तुडुम-स०पु० [स० तुरम्] तुरही, विगुल।

तुणको-वि०—तुच्छ, अकिंचन ।

मुहा०—तुणकै पर तेह करणौ—तनिक सी बात पर क्रोध करना ।

तुणगार, तुणगारी—देखो 'तिणगारी' (रू भे)

तुणणौ, तुणबौ—क्रि०स० [स० तूण=परिपूरणे] फटे वस्त्र को छोटे छोटे टाको द्वारा पैबन्द के रूप मे ठीक करना, तुनना । उ०—धोती घडचाळी सधियोडा धागा । तुविया तुणियोडा बधियोडा तागा ।
—ऊ का.

तुणणहार, हारौ (हारी), तुणणियौ—वि० ।

तुणवाणौ, तुणवावौ, तुणाणौ, तुणावौ—प्रे०रू० ।

तुणिग्रोडौ, तुणियोडौ, तुण्योडौ—भू०का०कृ० ।

तुणीजणौ, तुणीजबौ—कर्म वा० ।

तूणणौ, तूणबौ—रू०भे० ।

तुणि-स०पु० [स०] तुन का वृक्ष ।

तुणियोडौ-भू०का०कृ०—छोटे-छोटे टाको द्वारा ठीक किया हुआ, तुना हुआ ।
(स्त्री० तुणियोडी)

तुणीर-स०पु० [स० तूणीर] तर्कश ।

रू०भे०—तुनीर, तुन्नीर, तूनीर ।

तुतकारौ-स०पु०—कुत्ते को पुकारने के लिए किए जाने वाले शब्दो का (तू-तू) का उच्चारण ।

तुतळाणौ, तुतळाबौ-क्रि०अ०—तुतलाना, हकलाना, अस्पष्ट उच्चारण करना । उ०—तोता बोता मे रं'ता तुतळाता, बाता बीसरगा वैता बतळाता ।—ऊ का

तुतळाणहार, हारौ (हारी) तुतळाणियौ—वि० ।

तुतळायोडौ —भू०का०कृ० ।

तुतळाईजणौ, तुतळाईजबौ—भाव वा० ।

तुतळायोडौ-भू०का०कृ०—हकलाया हुआ, तुतलाया हुआ ।
(स्त्री० तुतळायोडी)

तुतळौ—देखो 'तोतलौ' (रू भे)
(स्त्री० तुतळी)

तुत्थ, तुत्थक-स०पु० [स०] नीला थोथा, तूतिया ।

तुदन-स०पु० [स०] व्यथा, या कष्ट देने की क्रिया, पीडन, पीडा ।

तुन-स०पु० [स० तुन्न] एक प्रकार का वृक्ष जो प्राय सारे उत्तरी भारत मे पाया जाता है । इसके विषय मे यह प्रसिद्ध है कि इसकी लकडी मे दीमक नही लगती ।

रू०भे०—तुनी, तुन्न ।

तुनतुनियौ-स०पु०—वेजो नामक तारवाद्य ।

अल्पा०—तुनतुनी ।

तुनतुनी-स०स्त्री०—देखो 'तुनतुनियौ' (अल्पा., रू भे)

तुनवाय-स०पु० [स० तुन्नवाय] दरजी (डि.को)

रू०भे०—तुन्नवाय ।

तुनी—देखो 'तुन' (रू भे)

तुनीर—देखो 'तुणीर' (डि को)

तुन्न—देखो 'तुन' (रू भे)

वि०—कटा या फटा हुआ ।

तुन्नवाय—देखो 'तुनवाय' (रू भे)

तुन्नीर—देखो 'तुणीर' (रू भे) उ०—चुकुमार धनुस तुन्नीर सर, सार टोप पक्खर झिलम ।—ला.रा

तुन्ह-सर्व— तुझे, तुझको ।

तुपक, तुपक्ख-स०स्त्री० [स तुपक] १ छोटी तोप २ बदूक ।

उ०—काराबीन जम्बूर, तुपक पिसतोल तमारिय ।—ला रा

तुपाणौ, तुपाबौ, तुपावणौ, तुपावबौ-क्रि०स०—बीज बोना, बुआई करना । (बीकानेर) उ०—मूळ मोळता मिनख मिरडिया घणा घुरावै । हूळ वावतडी वेर, फोगडा बीज तुपावै ।—दसदेव

तुफग-स०स्त्री० [फा० तोप] तोप । उ०—भारथा पटैत बाक वीस वीस हाथा भाला । आवधा छत्तीस ढाला उफाला अनेक । कबाण बत्तीस दूण तुफगा चोरासी कळा । वखाणो जादवा पती कवादा विवेक ।—क कु बो

तुबणौ, तुबबौ—देखो 'तिबणौ, तिबबौ' (रू.भे)

उ०—धोती घडचाली सधियोडा धागा । तुविया तुणियोडा बधियोडा बागा ।—ऊ का.

तुभणौ, तुभबौ-क्रि०अ०—१ स्तब्ध रहना, स्थिर रहना. २ चुभना ।

तुभियोडौ-भू०का०क्र०—१ स्तब्ध रहा हुआ. २ चुभा हुआ ।
(स्त्री० तुभियोडी)

तुभ्यौ-सर्व० [स० तुभ्य'] तुम्हे, तुमको ।

तुम-सर्व० [स० त्वम्] वह सर्वनाम जो उस पुरुष के लिए प्रयुक्त होता है जिससे कुछ कहा जाता है । 'तू' शब्द का बहुवचन, शिष्टता के विचार से एक वचन मे भी प्रयुक्त होता है । उ०—कहु स्वामी, कही छि तुम वास ? कीम कीधु अही कणि आयास ?—नळाख्यान

मुहा०—तुम तोम करणौ—तू-तपाड करना, गाली-गलोच-देना ।

रू०भे०—तुमा ।

तुमडी—१ देखो 'तुबी' (अल्पा., रू.भे.) २ सूखे कद्दू का बना एक बाजा जिसे सपेरे अधिक बजाते है ।
(मि० पूगी)

तुमण-स०पु०—चरखे के मध्य का डडा ।

तुमणी-सर्व०—तुम्हारी । उ०—त्रिजडा लाय जान हलै तुमणी । हव बाधन वात सुणो हमणी ।—पा प्र.

तुमतडाक-स०स्त्री० [फा० तुमतडाक] १ तडक-भडक, ठाट-बाट । २ गाली-गलोच, बोलचाल (झगडे के रूप मे)

तुमती-स०स्त्री०—एक प्रकार का शिकारी पक्षी । उ०—तठा उपरात करि नै राजान सिलांमति बाज कुही सिकरा सिंचाण जुररा तुमती हुसनाका सारखाना हाथा ऊपरा सू सगगाट करता छूटै छै ।
—रा सा स

तुमर-स०पु० [सं० तोमर] १ बरछी. २ देखो 'तुवर'। (रू मे) (अ मा.)

उ०—ब्रह्मा वेद उच्चरं, वीरण वहो तुमर बजावै। रभा प्रवसर रचै, गीत सुरसत्ती गावै।—ह.र

तुमरा, तुमरो-सर्व०—तुम्हारा।

(स्त्री० तुमरी)

उ०—साभळ चित हरख्यो घरणो, सरण्या तुमरा वैण। भवि जीवा ना तारका, ये साचा मिळिया सैण।—जयवारणी

तुमल—देखो 'तुमुल'। उ०—विख वेघ तुरी उद्यम तुमल, महरण मेछ उर माडिया। —रा रू.

तुमा—देखो 'तुम' (रू मे)

तुमार-स०पु०—१ जाच, परीक्षा।

क्रि०प्र०—करणो, कराणो।

२ अनुमान, अदाज।

क्रि०प्र०—करणो, कराणो, जोवणो, देखणो, होणो।

मुहा०—तुमार बैठणो—सही मन्दाज लगना।

३ हृद सीमा।

[अ० तूमार] ४ बात का व्यर्थ विस्तार।

रू०भे०—तूमार।

तुमारू, तुमारो—देखो 'तुम्हारो' (रू भे.) तुम का सबध कारक का रूप।

उ०—१ नाम तुमारू स्यु अछै।—वि कु.

उ०—२ गादी तो हमारी छै तुमारी नही सादा।—सि व

(स्त्री० तुमारी)

तुमुर-सं०स्त्री०—१ क्षत्रियो की एक जाति।

२ देखो 'तुमुल' (रू मे)

तुमुल-स०पु० [स०] ध्वनि, शोर, युद्ध का कोलाहल।

उ०—पत्त खरक्के जुगिनी के रत्त छूरक्के। तक्यो जिन तंसो तुमुल वे फेरिन तक्के।—वं भा.

रू०भे०—तुमल, तुमुर।

तुम्मर,—देखो 'तुवर' (रू भे.) उ०—कसा करव हो महल, महल गिरमेर कहावै। कसा गाव हों गुणव, गुणव ज्या तुम्मर गावै।—ह र.

तुम्यो-सर्व०—तुम्हें, तुमको, तुझे।

तम्ह-सर्व०—१ तुम। उ०—तुम्ह जावउ घर आपणइ, म्हारी केही वात।—ढो मा.

२ तुमको, आपको। उ०—अम्ह कजि तुम्ह छडि अवर वर आणै, ऐठित किरि होमै अगनि। साळिगराम सूद्र ग्रहि सग्रहि, वेद मत्र म्लेच्छा वदनि।—वेलि.

३ तुम्हारा।

तुम्हा-सर्व०—तुम, तुमको, तुझे। उ०—महरण मथे मू लीध महमहरण, तुम्हा किणं सीखव्या तई।—वेलि.

तुम्हाण-सर्व०—आपका, तुम्हारा। उ०—सुआ जेरण तुम्हांण वाणी सहेवं, गत तस्य मिथ्यात्व-मात्मीय-मेवम्।—स कु.

तुम्हारइ, तुम्हारउ—देखो 'तुम्हारो' (रू भे) उ०—१ आज अम्हो मोटा करिया, सगे सणीजे स्वामि। सीमाडा सवि सकसिइ, नाथ! तुम्हारइ नामि।—मा का प्र

उ०—२ कवरण देस तइ आविया, किहा तुम्हारउ वास।—ढो मा

तुम्हारड, तुम्हारड, तुम्हारड़ो, तुम्हारडु, तुम्हारडु, तुम्हारडो—देखो 'तुम्हारो' (अल्पा, रू.भे.)

उ०—१ मीठी जीभ तुम्हारडी, लूणउ लागइ तेणि। वाण हणे नर बप्पडे, सहिज न जाई केणि।—मा.का.प्र.

उ०—२ सूरिज! सहिज तुम्हारडु, साहमा दीइ सतापि। खेचर सही खीजी रहिया, अडवडि तावडि आपि।—मा का.प्र.

उ०—३ अे अविवेक तुम्हारडू, अघर घरि रह्या राग। तु तुम्ह मदिर प्राहुणउ, भरइ केणी परिपाग।—मा.का प्र.

उ०—४ मोर कठोर तुम्हारडा, सब्द हुई ते सत्य। हाळाहळ होसिइ गळड, सकर केरी गत्ति।—मा का प्र

(स्त्री० तुम्हारडी तुम्हारडी)

तम्हारो-सर्व० (स्त्री० तुम्हारी) तुम्हारा, आपका।

उ०—साहिब हियडै मुझ सही जी, नित ही तुम्हारो नाम।
—घ व ग्र.

रू०भे०—तुमारो, तुम्हारइ, तुम्हारउ।

अल्पा०—तुम्हारड, तुम्हारड, तुम्हारडो, तुम्हारडु, तुम्हारडु, तुम्हारडो।

तुम्हि, तुम्ही-सर्व०—१ तुम। उ०—लगनि थकी पहिलइ इक मासि। माणस मूकेस्या तुम्हि पासि।—वेलि.

२ तुमसे (उ र)

तुम्होणो-सर्व०—तुम्हारा, तेरा। उ०—नाम तुम्हीणो हों! घणनामी, सास उसास सभारिस स्वामी।—ह र.

(स्त्री० तुम्हीणी)

तुम्हें, तुम्हैं-सर्व०—तुमको, तुझे। उ०—दादू बहुत बुरा किया, तुम्हें न करणा रोस। साहिब समाई का धनी, वदे को सब दोस।
—दादू वाणी

तुय-सर्व०—तेरा। उ०—ज्यां हुवा क्रत जोय, दोजग नह वासो दियो। ते न्हावै तुय तोय, जोत समावै जह्नवी।—वा.दा.

तुरग-स०पु० [स०] (स्त्री० तुरगण तुरगी) १ घोडा, अश्व।

उ०—परठि जीण पाखरा तुरग, सभिया अतुळीवळ।—सू प्र.

२ चित्त, मन ३ सात की संख्या*।

वि०—जल्दी चलने वाला, चचल*।

रू०भे०—तुरग, तुरय, तुरि, तुरिउ, तुरियद, तुरिय, तुरीय, तूरग, तूरगम।

अल्पा०—तुरियो।

तुरगगोड-स०पु० [स०] गौड़ राग का एक भेद।

रू०भे०—तुरुस्कगोड ।

तुरगण–स०स्त्री० [स० तुरग+रा प्र.ण] घोडी । उ०—धुर रूप तुरगण देह धरी । फिर वीट कमधज श्राण करी ।—पा प्र

तुरगप्रिय–स०पु० [स०] जौ, यव ।

तुरगम—देखो 'तुरग' (रू भे) उ०—इण तेज तुरगम श्रारुहवा, चवियौ हुकमा तुर रोस चवा ।—रा रू

तुरगमसिक्षा–स०स्त्री० [स०] घोडो के सम्बन्ध मे ज्ञान, ७२ कलाश्रो मे से एक ।

तुरगवदन, तुरगमुख, तुरगवदन–स०पु० [स०] किन्नर गण, एक देवता विशेष (श्र.मा) उ०—तूझ तुरगा दान रा, हिमगिर तळहटियाह, गावै गीत तुरग-मुख, जळरख जळवटियाह ।—वा.दा.

तुरगलक्षण–स०पु० [स०] ७२ कलाश्रो मे से एक (व स.)

तुरगसाळ, तुरगसाळा–स०स्त्री०[स० तुरग+शाला] घुडशाल, श्रस्तबल ।

तुरगाण—देखो 'तुरगण' (रू भे) उ०—सुण हाक जगै उठ 'पाल' सही । वदळ तुरगाण रै गाय वही ।—पा प्र

स०पु० [स० तुरग] घोडा । उ०—मांनह तात स मोलबीयै । निस दीह दता तुरगाण तता । निज दान सु जीवण सोह दीयै ।

—किसनौ दधवाडियो

तुरगारि–स०पु० [स०] कनेर ।

तुरगी–स०स्त्री० [स०] १ घोडी ।

२ श्रस्वगधा ।

तुरगु—देखो 'तरग' (रू.भे) उ०—सरळ तरळ भुयवल्लरिय, सिहण पीणघण तुग । उदरदेसि लकाउळीय, सोहइ तिवळ तुरगु ।

—प्राचीन फागु सग्रह

तुरज–स०पु० [फा०श्र० तुर्ज] १ चकोतरा नीबू २ विजौरा नीबू ।

तुरंजका–स०स्त्री०—हड, हर्रे (ना.मा)

तुरजवीन–स०स्त्री० [फा०] नीबू का शर्बत ।

तुरजिया–स०पु०—बैलगाडी के मुख्य चौडे तख्ते को उसके नीचे रहने वाले डडो के साथ जोडने वाली कील या कीला ।

तुरड–स०पु०—एक प्राचीन देश ? उ०—सगवण गजण सवर बरबर-काय चिलाय तुरड गुड उडकुड पक्कण ।—व स

तुरत, तुरतउ, तुरत, तुरतौ–क्रि०वि० [स० त्वरितम्] शीघ्र, तत्क्षण, त्वरित । उ०—१ उठिउ भीमु गदा फेरतउ, तउ दुरयोधन भिडइ तुरतउ ।—प प च

उ०—२ इणि मारीसइ मुहडु भिडतु, बीजउ कोई घाउ तुरत ।

—प प च

उ०— ३ विस्ठा घर माहि बइठउ श्रादमी, तेडइ तु श्रावि तुरतो जी ।

रू०भे०—तुरत ।

तुर–क्रि०वि० [स० त्वर्] शीघ्र । उ०—तथास्तू कहि मुनिद वळै तुर, राका दिन मिळसी राजेस्वर ।—सू प्र

वि०—शीघ्रगामी, वेगवान ।

स०स्त्री० [स० तुरी] १ वह लकडी जिस पर जुलाहे कपडा बुन कर लपेटते जाते हैं ।

स०पु० [स० तुरग] (स्त्री० तुरी) २ घोडा । उ०—विकराळ तुरा खुरताळ वजै ।—गो रू.

३ तूरान देश का निवासी ।

रू०भे०—तूर ।

तुरई—देखो 'तुररी' (रू.भे)

तुरक, तुरकडौ–स०पु० [स० तुरुष्क, फा० तुर्क] (स्त्री० तुरकडी, तुरकण, तुरकणी, तुरकाणी) १ तुर्किस्तान का निवासी, तुर्क २ यवन, मुसलमान । उ०—१ तुरक घटा नव तेरही, तेरह साख कमध ।—रा रू

उ०—२ सो श्रादमी चारसो तुरकडं री फोज रा काम श्राया ।

श्रमरसिंघ राठौड़ री गीत

मुहा०—तुरक रो दातण होणौ—तुर्क का दातुन होना, एकाकी होना, साथ रहित होना, निर्धन होना, वस्त्रहीन होना ।

रू०भे०—तुग्यक, तुरस्क, तुरुक, तोरक, तोरकौ ।

मह०—तुरकाण ।

श्रल्पा०—तुरकडो, तुरकडौ, तुरकियौ ।

तुरकाण–स०पु० [सं० तरुष्क+रा०प्र०श्राण] १ यवनो का राज्य

२ देखो 'तुरक' (मह , रू भे.) उ०—उण वेळा बोलियौ 'दलो' सोनगरो दारण। तुरग थाट तुरकाण वीच श्रोरू घड वारण।—सू प्र

तुरकाणी–स०स्त्री० [स० तुरुष्ट, फा० तुर्क+रा प्र श्राणी] १ तुर्क की स्त्री. २ इस्लामधर्म. ३ तुर्कों का राज्य, तुर्कों की सत्ता ।

उ०—सेरसाह खने सू पातसाह श्रकबर दिली छोडाई । तिण समै मालदेजी जोधपुर लियो नै पहली जोधपुर मे तुरकाणी रही ।—द दा

वि०—तुर्क सम्बन्धी, तुर्क का । उ०—पछै तुरकाणी राज हुवौ, हिंदवाणो मिटियो ।—नैणसी

तुरकाणो–स०पु० [स० तुरष्क या फा० तुर्क+रा प्र. श्राणो] १ यवन राज्य, बादशाहत । उ०—१ तद बादसाह श्रौरगजेब जोधपुर तुरकाणो कियौ जद राठौड दुरगदास श्रासकरणोत विखो कियौ ।

—भाटी सुन्दरदास बीकूपुरी री वारता

उ०—२ तू तोलै तरवार, सिर साहा गजसिघदे । हुवै तुरकाणै हार, हिंदवाणै ऊछव हुवै ।—चतुरो मोतीसर

२ तुर्कों का देश, तुर्किस्तान. ३ मुसलमान ।

तुरकावडो–स०पु० [स० तुरी+कम्बा] काष्ठ का कीला या छड जो करघे की तुर या लपेटन मे लगी रहती है ।

तुरकिया बोहरा–स०पु०—मुसलमानो की एक जाति जिसके लोग प्राय. लेन-देन का व्यवसाय करते है । इस जाति का व्यक्ति ।

तुरकिस्तान–स०पु०[तु०+फा] पश्चिम एशिया का एक देश, तुर्की, टर्की ।

तुरकी–वि० [तु० तुर्क] तुर्किस्तान का, तुर्क देश का ।

स०पु०—१ घोडे की एक जाति श्रौर इस जाति का घोडा ।

उ०—श्रैराकी श्रारबी, घाटी काछी खधारी । के बलकी सौवनी केक तुरकी श्रप्रकारी ।—सू.प्र

स०स्त्री०—तुर्किस्तान की भाषा।
रू०भे०—तुरक्की।

तुरकीय-स०स्त्री०—घोडे की चाल विशेष। उ०—रहवाळ तुरकीये डोळ खुरकीय ग्रेवी पै छारक ग्रादर सीरै।—किसनो दधवाडियो

तुरक्क—देखो 'तुरक' (रू भे) उ०—धका धका चहू चका हू चका खडग धारा। वीर हक्का हीदवा, तुरक्का भिडै वाद।
—महाराणा स्री जयसिंह (दूसरा) रो गीत

तुरक्की—देखो 'तुरकी' (रू.भे.) उ०—चढे कुच्च दड्डु सिखा हीन मत्थे। इरानी ग्ररव्वी तुरक्की चिगत्थे।—ला रा.

तुरखूंटो-स०पु० [स० तुरी+राज. खूंटो] करघे का एक खडा डडा जिस पर 'तुर' घुमाया जाता है।

तुरग-वि० [स०] तेज गति से चलने वाला, द्रुतगामी।
स०पु०—देखो 'तुरग' (रू भे)
रू०भे०—तुरगम।

तुरगगधा-स०स्त्री० [स०] ग्रश्वगधा।

तुरगदानव-स०पु० [स० तुरग+दानव] केशी नामक दैत्य जो कस की ग्राज्ञा से घोडे का रूप धारण कर कृष्ण को मारने गया था।

तुरगबदन-स०पु० [स० तुरग वदन] वह जिसका मुह घोडे का सा हो, किन्नर (ग्र मा)

तुरगलीलक-स०पु० [स०] सगीत मे एक ताल का नाम।

तुरगवैद्य-स०पु० [स०] ग्रश्वचिकित्सक। उ०—भोजिक सूयकार चक्षक नरवैद्य गजवैद्य तुरगवैद्य विखभवैद्य मात्रिक तान्त्रिक।—व स

तुरगसाळा-स०स्त्री० [स० तुरग+शाला] ग्रश्वशाला।

तुरगसिक्षा-स०स्त्री० [सं०] पुरुषो की ७२ कलाग्रो मे से एक (व.स)

तुरगाण-स०स्त्री०—घोडी। उ०—ग्रम सगट मोद धरै ग्ररसै। दिन ग्रैं तुरगाण चढ्यो दरसै।—पा प्र

तुरगारोहण-स०पु० [स०] ग्रश्व पर सवारी करने की कला, ७२ कलाग्रो मे से एक।

तुरगि-स०पु० [स० तुरगिन्] घुडसवार, ग्रश्वचालक।

तुरगी—१ घोडे की एक जाति (व स) २ देखो 'तुरग' (रू भे)
उ०—तुरगी रच कति तेहरी, किम ग्रद्रि लघति केहरी।—व भा

तुरगु—देखो 'तुरग' (रू भे.) उ०—गइवरि गइवरु तुरगि तुरगु राउत रण रूधइ।—प प.च

तुरजका-स०स्त्री०—हरड, हरैं (ग्र मा)

तुरजाळ-स०पु०—घोडा।

तुरजिका—देखो 'तुरजका' (रू भे)

तुरण-क्रि०वि० [स० तूर्णम्] तुरन्त, शीघ्र (ह नां)

तुरणी—देखो 'तरुणी' (रू.भे) उ०—१ व्यास कहै सुर नर गन मोहनी रे, ग्रद्भुत रूप ग्रनेक। है चितहरणी तुरणी महल मे रे, पिण नही पद्मणी एक।—प.च चौ.
उ०—२ फाली भली ग्रोढणि ग्रगि रेटइ। ग्रावी रही जु तुरणी निभेंटइ।—प्राचीन फागु सग्रह।

तुरत-क्रि०वि० [स० तुर] शीघ्र, जल्दी, तत्क्षण (ग्र मा)
उ०—निज पितु छोडै नीच तुरत छोडै महतारी।—ऊ का
कहा०—तुरत दान महा कल्याण—१ विचारा हुग्रा दान तुरत दे देना ही उत्तम रहता है २ किसी कार्य को झटपट करने या कराने के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।
रू०भे०—तुरता, तुरती।
यौ०—तुरतपुरत, तुरतबुद्धि।

तुरतबुद्धि-स०स्त्री०—प्रत्युत्पन्न मति, हाजिरजवाब।

तुरता—देखो 'तुरत' (रू भे.) उ०—तुरता लज राखण 'मोड' तणी, घर धावेय तीजिय ताल घणी।—पा प्र.

तुरतांण-क्रि०वि०—शीघ्र, त्वरित। उ०—तेजल धनख चढै तुरताणा, वादळ तीतर पख वखाणा।—वर्षा-विज्ञान

तुरती-स०स्त्री०—१ गली (ग्र मा) २ देखो 'तुरत' (रू भे)

तुरतुरियौ-स०पु०—भीगी दाल या वेसन मे ममाला मिला कर खौलते घी ग्रथवा तेल मे तला हुग्रा खाद्य पदार्थ, वडा, पकौडा।
(मि० वडौ)
मुहा०—तुरतुरिया ज्यू कूदणौ—खौलते तेल मे बडे के समान कूदना। शीघ्रता करना, जल्दबाजी करना, छिछलापन दिखाना।
वि०—जल्दबाज, उतावला।

तुरपग-स०पु०—नृत्य का एक भेद? उ०—नवरग कटाच्छ रस रग नृत, जग जग वाजिय जगत। हूं रमिय उरप तुरपग हद, लाग दाट ग्रैवट लगत।—सू प्र

तुरप—देखो 'तुरुप' (रू भे)

तुरपण-स०पु०—हाथ से की जाने वाली एक विशेष सिलाई, तुरपाई।

तुरपणौ, तुरपवौ-क्रि०स०—तुरपन (तुरपाई) की सिलाई करना।
तुरपणहार, हारौ (हारी), तुरपणियौ—वि०।
तुरपवाडणौ, तुरपवाडवौ, तुरपवाणौ, तरपवाग्रौ, तुरपवावणौ, तुरपवाववौ, तुरपाडणौ, तुरपाडवौ, तुरपाणौ, तुरपावौ, तुरपावणौ, तुरपाववौ—प्रे०रू०।
तुरपिग्रोडौ, तुरपियोडौ, तुरप्योडौ—भू०का०कृ०।
तुरपीजणौ, तुरपीजवौ—कर्म वा०।
तुरुपणौ, तुरुपवौ—रू०भे०।

तुरपाई-स०स्त्री०—महीन टाको की एक प्रकार की सिलाई।
रू०भे०—तुरपाई।

तुरपियोडौ-भू०का०कृ०—तुरपाई की सिलाई किया हुग्रा।
(स्त्री० तुरपियोडी)

तुरफ—देखो 'तुरुप' (रू.भे.)

तुरफरी-स०पु० (स्त्री०) ग्रंकुश का वह भाग जो सामने सीधी नोक की ग्रोर होता है।

तुरमती-स०स्त्री० [स० तुरमता] बाज की तरह शिकार करने वाली एक छोटी चिडिया। उ०—लवा ऊपर सिकरा छूटै छै, वटेरा ऊपर तुरमती छूटै छै।—रा सा स.

तुरमनामो-स०पु०—एक वाद्य का नाम। उ०—तुरमनामो अगरेजा रै वाजो हुवै।—बा दा. ख्यात

तुरय—देखो 'तुरग' (रू भे.)

तुरय्या-स०पु० [स० तुर्य्या] वह ज्ञान जिससे मुक्ति प्राप्त हो, तुरीय ज्ञान।

तुररी-स०स्त्री० [स० तूर] मुह से फूक देकर बजाने का एक वाद्य विशेष। उ०—उच्चरी तुररी कुररी जसी, सुभट ना सवि रोम उद्वसी।—विराट पर्व

रू०भे०—तुरइ, तुरहा, तुरही, तुरैया, तूरही।

तुररो-स०पु० [ग्र० तुर्रा] १ घुघराले बालो की लट जो सिर मे लटकती हो, अलक. २ टोपी, पगडी आदि पर लगाई जाने वाली कलगी। उ०—कसि जडित जवाहर खग कटार, तुररा स जवाहर रूप तार।—सू.प्र

३ पर या फुदना जो कलगी के स्थान पर लगाया जाता है ४ पुष्प विशेष, गुलतुर्रा ५ दूल्हे के शिर पर बाधे जाने वाले सेहरे के साथ लगाई जाने वाली कलगी विशेष ६ फूलो का गुथा हुआ गुच्छा। उ०—वाग री सैल फिरै छै। अैस रस विना महामगरूर फळ करै छै। वोही मोती वागवान तुररा वणाय-वणाय ल्यावै छै। जिकै तुररै रै तुररै मोहर पावै छै।—पना वीरमदे री वात ७ श्मश्रु, मूछ। उ०—तुररा हूत भटतारा भलौ, पागा हू त भली कोपीद।—बुधजी आसियो

रू०भे०—तुरो।

वि०—श्रेष्ठ, शिरमौर। उ०—मदवी को मछोळी, हाथ की हाल, तीजणियां को तुररो।—मयाराम दरजी री वात

मुहा०—तुररो होणो—तुर्रा होना, श्रेष्ठ बनना, सर्वोपरि होना।

तुरळ-स०पु०—बवण्डर, प्रचण्ड वायु-गोल। उ०—वणी गजा तणै सिरवाना, मिळिया तुरळ रजी असमाना।—रा रू

तुरवसु-स०पु० [स० तुर्वसु] राजा ययाति का देवयानी के गर्भ से उत्पन्न पुत्र।

तुरस-वि० [फा० तुर्श] खट्टा।

स०स्त्री०—ढाल। उ०—पीठ तुरस केवाण कर, आसपास रजपूत। मावडिया सोहै नही, मुख मूछा सिर सूत।—वा दा

रू०भे०—तुरस्स।

तुरसाई, तुरसाही-स०स्त्री० [फा० तुर्शी=खटाई] १ जायका, स्वाद. २ खटाई, खट्टापन।

रू०भे०—तुरहाही।

तुरस्स—देखो 'तुरस' (रू.भे.) उ०—विधे धज सावळ चोळ वरन्न। तुरस्स जरद अगारक तन्न।—सू.प्र

तुरह-क्रि०वि० [स० त्वर] शीघ्र, जल्दी (ह.ना)

तुरहाही—देखो 'तुरसाई' (रू भे.)

तुरही—देखो 'तुररी' (रू भे) उ०—सवद उग्र करनाळ सवाई, सुर वरधू तुरही सहनाई।—रा रू

तुराण-स०पु० [स० तुरग] घोड़ा। उ०—हय ठाण घुपाण खोवाण हलासिसे, भाण तुराण भुताण विये।—पा प्र.

तुरान-स०पु०—फारस के उत्तर पूर्व मे पड़ने वाला मध्य एशिया का भाग जो तुर्क, तातारी, मुगल आदि जातियो का निवास-स्थान है।

तुरानी-स०पु०—तुरान देश का निवासी, यवन, मुसलमान।

उ०—उजबकि इरानी गोळ थाप, चगताह तुरानी दस्त चाप।
—वि स.

तुरा-स०स्त्री० [स० त्वरा] शीघ्रता, जल्दबाजी (ह ना)

तुराखाट, तुराखाउ-स०पु० [स० तुराषाट्] इन्द्र, सुरराज (ह ना.)

तुराट-स०पु०—घोडा। उ०—भूप तुराटा भेळिया, जुध कारण जाकी।—वी मा.

तुराटी-स०स्त्री०—हलका नशा।

क्रि०प्र०—आणी।

तुरातुर-क्रि०वि० [स० त्वर] शीघ्र, जल्दी। उ०—तुरातुर नोसरजा भवतीर। विरे विस वीसरजा वरवीर।—ऊ.का.

तुरापाचम-स०स्त्री०—माघ मास के शुक्लपक्ष की पचमी तिथि, बसन्तपचमी।

तुरायण-स०पु० [स०] एक यज्ञ जो चैत्र शुक्ला पचमी और वैशाख शुक्ला पचमी को होता है।

तुरावत-वि० [स० त्वरावत्] वेगवान, वेगयुक्त।

(स्त्री० तुरावती)

तुरासाट, तुरासाह-स०पु० [स० तुरासाह, कर्ता एक बचन तुराषाट् या तुराषाड्] इद्र (डि.को.)

तुरि, तुरिउ-क्रि०वि० [स० त्वरा] १ शीघ्र. २ देखो 'तुरग' (रू भे.)

उ०—तती नाद तबोळ रस, सुरहि सुगधह जाह। आसण तुरि घरि गोरडी, किसउ दिसाउर त्याह।—ढो मा

तुरिए, तुरित-क्रि०वि० [स० त्वरित] शीघ्र, जल्दी।

तुरियव—देखो 'तुरग' (रू.भे)

तुरिय-क्रि०वि० [स० त्वरित्] १ शीघ्र, तुरन्त.

२ देखो 'तुरग' (रू भे) उ०—गज तुरिय न लाभइ पार, सघर सुहड सार, छाजति अवनिसार तुज्झ करो।—व.स.

तुरिया-स०स्त्री० [स० तुरीय] १ ज्ञान की चतुर्थावस्था जिसे मोक्ष समझा जाता है। उ०—यु ही खट चक्कर भेद अघाव। पछै त्रिपुटी तुरिया पद पाव।—ऊ.का

२ घोडा।

वि०—चतुर्थ*।

रू०भे०—तुरिय, तुरीय।

तुरियो—देखो 'तुरग' (अल्पा, रू भे) उ०—जाणीय दुरयोधनि बाहु वाह्या। रहइ किमइ ते तुरिया न साह्या।—विराट पर्व

तुरी-स०पु० [स० तुरग] १ घोडा। उ०—जिणि दीहे पाळउ पडइ, टापर तुरी सहाइ। तिणि रिति बूढ़ी ही भुरइ, तरुणी केम रहाइ।
—ढो.मा.

स०स्त्री०—२ घोडी। उ०—जद हरियाळी वनडो तोरण आयो श्रे, तोरण तुरी डकाई श्रे बाई जी म्हारा राज।—लो गी.

३ लगाम, वाग. ४ तुरही नामक वाद्य। उ०—अवका अहका वजै भेर तुरी। घणवासुर को अधरात घुरी।—गो रू

५ देखो 'तुररी' (२) (अल्पा, रू भे)

तुरीजत्र-स०पु० [स० तुरीयत्र] सूर्य की गति बताने वाला यत्र।

तुरीय—१ देखो 'तुरग' (रू.भे.) उ०—तुरीय सहइस पचास, दोय सइ महगळ मता।—प च चो

देखो 'तुरिया' (रू भे.)

तुरीयतरग-स०पु०—दो नलियो का एक वाद्य विशेष जिसकी नलियो को चिकुर के नीचे गले के लगा कर अद्भुत तरीके से वजाई जाती है।

तुरीया—देखो 'तुरिया' (रू भे) उ०—जाग्रत स्वप्न सुसुपती तुरीया, इनते अलग रहाया।—स्री हरिरामजी महाराज

तुरीस-क्रि०वि०—शीघ्र (ह ना.)

स०पु०—घोडा। उ०—करी उर टक्कर ऊडत केक। अरी जरदंत तुरीस अनेक।—सु प्र.

तुरुक—देखो 'तुरक' (रू.भे)

तुरुप-स०पु० [अ० ट्रप] ताश के खेल विशेष मे कोई एक प्रधान माना जाने वाला रग। इस रग का छोटे से छोटा पत्ता दूसरे रग के बडे से वडे पत्ते को मार सकता है।

क्रि०प्र०—बोलणी, बोलाणी, राखणी।

रू०भे०—तुरप, तुरफ।

तुरुपणी, तुरुपबो—देखो 'तुरपणी, तुरपवी' (रू भे)

तुरुपाई—देखो 'तुरपाई' (रू भे)

तुरुस्क—देखो 'तुरक' (रू भे)

तुरुस्कगोड—देखो 'तुरगगोड' (रू भे)

तुरुही—देखो 'तुररी' (रू भे)

तुरेस-स०पु० [स० तुरग+ईश] श्रेष्ठ घोडा। उ०—पडे भगाण देस देस अग्रवाण पीडणी। सलाह पाछले पुरे मिटी तुरेस भीडणी।—रा रू

तुरेया—देखो 'तुररो' (रू.भे)

तुरो—देखो 'तुररो' (रू भे)

तुळ, तुल-स०पु०—१ एक लगन का नाम। उ०—श्रद करणसिघ रै वडा कवर अनोपसिघजी री जनम सवत् १६६५ चैत सुद ६ रोहणी। इस्ट ३४-२- तुल लगन।—द.दा

२ घास। उ०—अवरग तणो सुरग आवटियो, जादव तै करता घण जग। मेछा तुळ घातिया मुहडै, काडे तांम साकडा कुरग।

—रांमसिह भाटी री गीत

स०स्त्री०—३ तुला राशि। उ०—दिन रात सम तुल रासि दिन कर सरकि अनुक्रम सरवरी।—रा रू

४ तुला, तराजू। उ०—१ छळ छिद्र 'खीचीडोह' तुल जोहै तोलीजतो। 'धाधळ' तणौ धडोह, हव चेळै भारी हुवौ।—पा प्र.

उ०—२ जसरी तुल पग दे ललका ले जावै, हीरा माणक सब हळका ह्वै जावै।—ऊ.का

वि० [स० तुल्य] समान।

तुळछ, तुळछां—देखो 'तुळसी' (रू.भे) उ०—१ वादळा कनक रा गंग वार, घूमरा मजरा तुळछ धार।—वि स

उ० —२ धन बाई तुळछा धन थारो नाम।—लो गी

तुळछातेला-स०पु०—कार्तिक शुक्ला अष्टमी से एकादशी तक किया जाने वाला स्त्रियो का एक व्रत, तुलसीव्रत।

तुळछी—देखो 'तुळसी' (रू भे) उ०—घर घर मे तुळछी को विडलो दरसण माधवजी को रे।—मीरा

तुळछीवळ—देखो 'तुळसीदळ' (रू भे) उ०—जळ गगा जमना पुह-कर जळ, दळ ग्रह दरम छिडक तुळछीवळ।—रा रू.

तुळछीपतियौ—देखो 'तुळसीपतियौ' (रू भे)

तुलजा, तुलजाउ तुलज्जा, तुलज्या-स०स्त्री० [स० तुल्य+ज्या] पार्वती, दुर्गा (ह ना)

वि०—वृद्धा, बूढी।

तुलणी, तुलबौ-क्रि०अ० [स० तुल] १ तोला जाना, तुलना, तराजू पर अदाजा जाना। उ०—काळी घणी कुरूप, कसतूरी काटा तुलै। सक्कर वडी सरूप, रोडा तुलै राजिया।—किरपाराम खिडियौ

२ तोल या मान मे बराबर उतरना, तुल्य होना. ३ अदाज होना, वधे हुए मान का अभ्यास होना. ४ किसी अस्त्र को भली प्रकार से चलाना जिससे वह लक्ष्य पर वार कर सके, सधना ५ उद्यत होना, तैयार होना।

मुहा०—वात माथै तुलणी—अपनी वात को पक्का करने के लिए उद्यत होना।

६ किसी आधार पर इस प्रकार टिकना कि आधार के वाहर निकला हुआ भाग किसी ओर को झुका न हो। ठीक अनुमान के साथ टिकना। उ०—अणी कढ जवाना अनै सुरताण ऊत। खडै चढ हटो घोडा भडा खूर। जबर चेळा तुलै आठ ममला जठी। वोह जठी हुवै वेहु श्रे वरापूर।—जसजी आढो

७ समझ मे वैठना, ध्यान मे उतरना। उ०—आप कहो हो कै धणी री फौज सत्रुआ ऊपरै जावै है सो धणी म्हासू रूठा रहै है तिण सारू वणियं झगडै हू दूसरा जोधारा नै मालक नै छोड आय जावसू सो आ म्हारै तुलै नही।—वी स टो

८ समान होना, तुल्य होना। उ०—'अहह रूप असभम भूवलइ। कवण कामिनि एह समी तुलइ।—विराटपर्व

तुलणहार, हारो (हारी), तुलणियो—वि०।

तुलवाडणो, तुलवाडबो, तुलवाणो, तुलवाबो, तुलवावणो, तुलवावबो, तुलाडणो, तुलाडबो, तुलाणो, तुलाबो, तुलावणो, तुलाववो—प्रे०रू०।

तुलिग्रोडो, तुलियोडो, तुल्योडो—भू०का०कृ०।

तुलीजणो, तुलीजबो—भाव वा० ।
तुलना-स०स्त्री० [स०] १ मिलान, समता, सादृश्य. २ उपमा ।
तुलनी-स०स्त्री० [स० तुला] तराजू की डंडी ।
तुलवाई—देखो 'तुलाई' (रू भे)
तुलसक्रांत, तुलसक्रांति—देखो 'तिलसकरात' (रू भे.)
तुळसी-स०स्त्री० [स० तुलसी] १ एक छोटा पौधा जिसकी ऊंचाई दो तीन फीट के लगभग होती है और जिसकी पत्तियो से एक तीक्ष्ण गंध निकलती है। हिन्दू लोग इसे बहुत पवित्र मानते है और इसकी पत्तिया देव मूर्तियो पर चढाते है। वैद्यक मे बहुत से रोगो के लिए भी यह लाभदायक मानी जाती है। मथुरा के आस-पास इसका पौधा प्रचुरता मे पाया जाता है। वृन्दा, वैष्णवी। उ०—वळिबधण मूंफ स्याळ सिंघ बळि, प्रासे जो बीजी परणे। कपिळ धेनु दिन पात्र कसाई, तुळसी करि चाडाळ तणे।—वेलि
यौ०—तुळसीठाणो, तुळसीठावडो, तुळसीतेला, तुळसीदळ, तुळसीदान, तुळसीवन।
रू०भे०—तुळछ, तुळछा, तुळछी।
स०पु०—२ प्रसिद्ध कवि तुलसीदास. ३ एक मारवाडी लोकगीत।
तुळसीठाणो, तुळसीठावडो-स०पु० [स० तुलसी+स्थान] तुलसी के पौधे को लगाने का कुंड जो प्राय घर के आगन या मन्दिर के चौक आदि मे लगाया जाता है।
रू०भे०—तुळसीथाणो।
तुळसीतेला-स०पु०—कार्तिक शुक्ला एकादशी से तीन दिन तक स्त्रियो द्वारा किया जाने वाला उपवास जिसमे स्त्रिया तुलसी के निकट दीपक जलाती हैं और अखण्ड व्रत रखती हैं।
तुळसीथाणो—देखो 'तुळसीठाणो' (रू भे)
तुळसीदळ-स०पु० [स० तुलसीदल] तुलसीपत्र। उ०—पोते रावराजा छानो थको लारै ऊभो, जद दुरगा री मत्र पढ़नै सीजी तुळसीदळ रगनाथजी नू चढायो।—बा दा ख्यात
रू०भे०—तुळछीदळ।
तुळसीदाणो-स०पु०—एक स्वर्ण आभूषण।
तुळसीदास-स०पु० [स० तुलसीदास] 'रामचरित मानस' के रचयिता एक श्रेष्ठ भक्त कवि जिनका जीवनकाल स० १५८९ से १६८० माना गया है। इनकी अनेक रचनायें हिन्दी मे प्रसिद्ध हो चुकी हैं।
तुळसीपत—देखो 'तुळसीदळ'।
तुळसीपतियो-स०पु०—स्त्रियो के गले का एक आभूषण विशेष।
रू०भे०—तुळछीपतियौ।
तुळसीपान, तुळसीपानि—देखो 'तुळसीदळ'।
तुळसीमजर-स०पु० [स० तुलसी+मजरि] तुलसी के पौधे की बालें, तुलसीमजरी। उ०—वेणी पवित्र करिस लिखमीवर। मसतग चाढै तुळसीमजर।—ह र
तुळसीवन-स०पु० [स० तुलसी+वन] वह वन खण्ड जहाँ तुलसी की अधिकता हो।

तुला-स०स्त्री०—१ तकडी, तराजू, काटा। उ०—असपत तणो चीत आहाटा, तुला चढता हुवै तुना।—महाराणा जगतसिंह रो गीत
यौ०—तुलादड।
२ गुजा (अ.मा) ३ ज्योतिष की बारह राशियो मे से सातवीं राशि ४ मान, तोल।
तुलाई-स०स्त्री०—१ तौलने की क्रिया अथवा तौलने के कार्य की मज़दूरी।
रू०भे०—तुलवाई, तोलाई, तौलाई।
[स० तूलिका] २ तूलिका, तूली (उ र)
तुलाकोट, तुलाकोटि-स०पु०—एक आभूषण, नूपुर।
तुलाजत्र-स०पु० [स० तुलायत्र] तराजू, काटा।
तुलाडड—देखो 'तुलादड' (रू भे)
तुलाडणो, तुलाडबो—देखो 'तुलाणो, तुलाबो' (रू भे)
तुलाडियोडो—देखो 'तुलायोडो' (रू भे)
(स्त्री० तुलाडियोडी)
तुलाणो, तुलाबो-क्रि०स० ('तुलणो' क्रिया का प्रे०रू०) तुलाने का कार्य अन्य से कराना, तुलाना, तुलवाना।
तुलाणहार, हारो (हारी), तुलाणियो—वि०।
तुलायोडो—भू०का०कृ०।
तुलाईजणो, तुलाईजबो—कर्म वा०।
तुलणो, तुलबो—अक०रू०।
तुलाडणो, तुलाडबो, तुलावणो, तुलावबो, तोलाडणो, तोलाडबो, तोलाणो, तोलाबो, तोलावणो, तोलावबो, तौलाडणो, तौलाडबो, तौलाणो, तौलाबो, तौलावणो, तौलावबो—रू०भे०।
तुलादड-स०स्त्री०—तराजू या काटे की डडी जिसके दोनो छोरो पर पलडे बधे रहते हैं।
रू०भे०—तुलाडड।
तुळादान, तुलादान-स०पु० [स० तुलादान] सोलह महादानों मे से एक प्रकार का दान जिसमे मनुष्य अपने स्वय के तौल के बराबर द्रव्य या पदार्थ का दान करता है।
तुलाधार-स०स्त्री० [स०] १ तुलाराशि २ तराजू की रस्सी जिससे पलडे बधे रहते हैं।
स०पु०—३ वणिक्, बनिया. ४ काशी का प्रसिद्ध व्याध जो माता-पिता की सेवा मे सदैव तैयार रहता था।
तुलापुरुसदान—देखो 'तुलादान'।
तुलामान-स०पु० [स० तुलामान] १ तोल का अभ्यास, अदाज, अनुमान २ बाट, तोल।
तुलायोडो-भू०का०कृ०—तोल कराया हुआ, तुलाया हुआ।
(स्त्री० तुलायोडी)
तुलावट-वि०—तोलने वाला। उ०—चौधरी चोकडती रे, तुलावट खाती रे, कायथ कानूगा रे, केई लेता चूगा रे।—जयवाणी

स०स्त्री०—तोलने की क्रिया।
तुलावणी, तुलावबौ—देखो 'तुलाणी, तुलावौ' (रू भे)
तुलावियोडौ—देखो 'तुलायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० तुलावियोडी)
तुलि-वि० [स० तुल्य] तुल्य, समान, सदृश।
स०स्त्री०—१ तराजू। उ०—वाहुडि ग्राय मत्री इम बोलै। तुलि मेघा धरि धरि वीहू तोलै।—सू प्र
२ तुला राशि। उ०—तुलि वैठौ तरणि तेज तम तुलिया, भूप कणय तुलता भू भाति। दिणि दिणि तिणि लघुता ग्रामै दिन, राति राति तिणि गौरव राति।—वेलि
रू०भे०—तुलि।
तुलियोडौ-भू०का०कृ०—१ तराजू पर अदाजा हुग्रा, तोला हुग्रा २ तौल या मान मे बरावर उतरा हुग्रा ३ बधे हुए मान का अभ्यास हुवा हुग्रा, अदाज हुवा हुग्रा ४ किसी शस्त्र को भली प्रकार चलाया हुग्रा, सधा हुग्रा ५ तैयार हुवा हुग्रा, उद्यत ६ किसी ग्राधार पर टिका हुग्रा, ठीक अनुमान के साथ टिका हुग्रा. ७ समझ मे वैठा हुग्रा, ध्यान मे उतरा हुग्रा. ८ समान हुवा हुग्रा, तुल्य हुवा हुग्रा।
(स्त्री० तुलियोडी)
तुलौ-स०पु०—तराजू का पलडा। उ०—तुके भुज रास नीवाज भाला तठी। जोधपुर भुकै वाजी तुला जेम।—जसजी ग्राढौ
तुल्य-वि० [स०] समान, बरावर (रू भे)
तुल्यजोग—देखो 'तुल्ययोग' (रू भे)
तुल्यता-स०स्त्री० [स०] बरावरी, समता, सादृश्य।
तुल्यप्रधानव्यग-स०पु० [स० तुल्यप्रधानव्यग्य] वह व्यग्य जिसमे वाच्यार्थ ग्रौर व्यग्यार्थ समान हो।
तुल्ययोग, तुल्ययोगिता-स०स्त्री० [स०] एक अलकार जिसमे अनेक उपमेयो अथवा अनेक उपमानो का एक ही धर्म कहा जाय। इसके तीन भेद होते हैं।
रू०भे०—तुल्यजोग।
तुल्ययोगी-वि०—समान सवध रखने वाला।
तुल्ल—देखो 'तुल्य' (रू भे) उ०—मव्वे भला मासडा पण वइसाह न तुल्ल। जे दवि दाधा रू खडा, तीह मायइ फुल्ल।—रा.सा स
तुव-सर्व०—१ तुम २ तेरा, तुम्हारा ३ तुझे, तुझको।
उ०—नर नाग असुर सुर नीम वण, अलख पुरुस ग्रादेस तुव।
—ह र
तुवर—देखो 'तवर' (रू भे)
तुवाळौ—देखो 'तुग्राळौ' (रू भे)
तुसडा-सर्व०—तेरा, तुम्हारा। उ०—फुरियदा फुरमाण नर, रहमाण तुसडा।—केसोदास गाडण
तुसडौ-स०पु०—अपराध, गुनाह।

सर्व०—तेरा, तुम्हारा।
तुस-स०पु० [स० तुष] १ अन्न के ऊपर का छिलका, भूसी।
उ०—ग्राना ग्रव ग्राना ग्ररथ, तुरत विगाडे तान। बदळै तुस रै वाणियौ, धुर गोढा लै धान।—वा दा
मुहा०—तुस उतारणौ—तुष उतारना, कूट-पीट कर साफ करना।
कहा०—ग्राख मे पडियौ तुस ग्रोही हुग्रो मिस—ग्राख मे गिरा तुष यही बना मिस। छोटा सा सहारा मिलने पर बहाना बना लेने पर कही जाने वाली कहावत।
२ सोने-चादी का छोटा कण।
वि०—तुच्छ थोडा, कम। उ०—सह वाता समरथ्थ करै तुस रक नै राजा। सह वाता समरथ्थ पर्व तारण दघ पाजा।—ज खि
रू०भे०—तुमी।
अल्पा०—तुसियौ।
तुसग्रह-स०पु० [स० तुषग्रह] अग्नि।
तुसर-स०पु०—तृण, तिनका। उ०—हरी तुसर ना नाव, छाट भर जळ न कोसा। ऐडी ग्रापत मडा खेजडा राखै होसा।—दसदेव
तुसल्यौ-स०पु०—एक प्रकार के अशुभ रग का घोडा (शा हो)
तुसाग—देखो 'तुसानळ'।
तुसाड, तुसाडौ, तुसाड, तुसाडौ-सर्व० (स्त्री० तुसाडी, तुसाडी) तेरा।
उ०—सच्ची एक तुसाडी सेवा, दूजी गल्ल न दिल्ल।—घ व ग्र
तुसानळ-स०पु० [स० तुषानल] भूसी अथवा घासफूस की ग्राग।
तुसार-स०पु० [स० तुषार] १ हवा मे मिली भाप जो अत्यधिक शीत के कारण सूक्ष्म जलकण के रूप मे हवा से पृथक होकर वस्तुग्रो पर जमती है, पाला २ हिम, वर्फ। उ०—तर तुसार दव जळै, सीस माघव रुत ग्रावै। ग्रीखम रैणा गात जळण वरसात मिटावै।
—रा रू.
३ ठडक। उ०—जग सतोस तुसार नर, वर्स निरंतर वरू। तिया लोभ ग्रीखम तणी, सुपनै ही नहि सक।—वा दा
४ एक प्राचीन देश का नाम जहाँ के घोडे प्रसिद्ध है ५ तुषार देश का घोडा।
वि०—वरफ की भाति पूर्ण ठडा।
तुसारकर, तुसारकाति-स०पु० [स० तुषारकर, तुषारकाति] हिमकर, चद्रमा।
तुसारपाखाण-स०पु० [स० तुषारपाषाण] १ ग्रोलो २ वरफ।
तुसारमूरति, तुसाररसमि, तुसारासु-स०पु० [स० तुषारमूर्ति, तुषाररश्मि, तुषारांशु] चन्द्रमा (ग्र मा ना मा)
तुसाराद्रि-स०पु० [स० तुषाराद्रि] हिमालय पर्वत।
तुसिणीग्र-स०स्त्री० [स० तूष्णीक] मौन भाव, मौनवृत्ति (जैन)
तुसित-स०पु० [स० तुषित] १ एक प्रकार के गण देवता जो सख्या मे १२ है. २ विष्णु ३ एक स्वर्ग का नाम (बौद्ध)
तुसियौ—देखो 'तुष' (अल्पा, रू.भे) उ०—अन्नित भोजन छोडनै हो

मुनिवर, तुसिया को कुण खाय। देव लोक रा सुख देखनै हो मुनिवर, नरक न आवै दाय।—जयवाणी

तुसी—देखो 'तस' (रू भे)

तुसै-सर्व०—तुम्हारा, तेरा।

तुस्ट-वि० [स० तुष्ट] १ सतोप-प्राप्त, सतुष्ट, तृप्त २ प्रसन्न, खुश। रू०भे०—तुट्ठ।

तुस्टणौ, तुस्टवौ—देखो 'तूठणौ, तूठवौ' (रू भे)

तुस्टता-स०स्त्री० [स० तुष्टता] १ सतोप, तृप्ति २ प्रसन्नता।

तुस्टमान-वि० [स० तुष्टमान] १ अनुकूल. २ प्रसन्न। उ०—तठै स्री गोरखनाथजी तुष्टमान हुयनै बोलिया—राजा! माग, तनै तूठौ चाहीजै सो मागलै।—रीसाळू री वात

तुस्टि-स०स्त्री० [स० तुष्टि] १ सतोप, तृप्ति २ अनुकूलता ३ प्रसन्नता।

रू०भे०—तुठि।

तुस्टियोडौ—देखो 'तूठियोडौ' (रू.भे)
(स्त्री० तुस्टियोडी)

तुस्णि-वि० [स० तूषीण] शान्त मौन। उ०—यती सुसील डील मे न तुस्णि सील योग मे।—ऊ का

तुस्ततुरग-स०पु०—घोडा।

तुस्साडौ-सर्व० (स्त्री० तुस्साडी) तेरा। उ०—तरै कागडै कह्यौ तुस्साडे जोवने चैन रख अस्साडा लेख है त्यू व्हैगा।

—जखडा मुखडा भाटी री वात

तुह-सर्व०—तुझ (जैन) उ०—तुह मुह चद विलो अरोण मह नाह सुहकर।—स कु

क्रि०वि० [स० तत खलु=प्रा० तश्रो खु=तश्रोहु=अप तउहु=राज तउह=तुह] तदपि, तो भी। उ०—तेह नू रूप ते तुह ज सरू जु थाइ पटराणि।—नळाख्यान

तुहइ-अव्य०—तदपि, तो भी (उ र)

तुहफौ—देखो 'तोफौ' (रू भे)

तुहमत—देखो 'तोहमत' (रू भे)

तुहा-सर्व०—आप, तू। उ०—सब तुझ मझ तुहा विय सव्व। उपज्जहि जेम सु अवुद अव्व।—ह र.

तुहाइळौ—देखो 'तुहाळौ' (रू.भे) उ०—तारण नाम तुहाइळौ, अइयो केवळ आप।—पी ग्र

तुहार, तुहारइ, तुहारौ-सर्व० (स्त्री० तुहारी) तेरा, तुम्हारा।

उ०—१ ढोला आमण दूमणउ, नख ती खूदइ भीति। हम थां कुण ल्यइ आगळी, वसी तुहारइ चीत।—ढो मा

उ०—२ ध्यान कर थारो धरम, अलख अपपर आप। महादेव सरीखा मरद, जपै तुहारौ जाप।—पी ग्र

तुहाळ, तुहाळोय, तुहाळौ-सर्व० (स्त्री० तुहाळी) तेरा, तुम्हारा।

उ०—१ अछै सव्र माझ तु आप अळूझ। गोविंद! तुहाळ लवौ हिव गूझ।—ह र

उ०—२ तुहीज समद तुहीज तरंग, अनीयन मांय तुहाळा अस।

—ह र

उ०—३ जग मे राम तुहाळै जोडै, हुवौ न कोई फेर हुवै।—र रू

उ०—४ एकण आस तुहाळी ऊपर, सीसोदा आवै सह कोय।

—महाराणा हमीर री गीत

रू०भे०—तुहाइळौ।

तुहिन-स०पु० [स०] १ पाला, हिमकण २ हिम, वरफ।

उ०—नर माधवनळ निरमि करि, काम कदळा नारि। कुडाल्या वि कमळ भूह, तुहिन किरण तिमिरारि।—मा.का प्र.

३ चादनी।

स०स्त्री०—४ शीतलता।

रू०भे०—तूहिन, तूहीन।

तुहिनगिरि-स०पु० [स०] हिमालय पर्वत।

तुहिनासु, तुहिनास्तु-स०पु० [स० तुहिनाशु] चद्रमा।

तुहैं-सर्व०—तुम्हें।

तुह्मारडौ—देखो 'तुम्हारौ' (अल्पा, रू भे) उ०—१ लेखण ताहरइ लेखवइ, चौद लोक नी चाल। चित्र विचित्र? तुह्मारडौ, हू छउ नाह नी वाल।—मा का प्र

उ०—२ हू लूकिउ रे लाडकी? दिहाडी दूरि पीयाण। माहरू भमइ तुह्मारडा, पजर पूठइ प्राण।—मा.का.प्र

(स्त्री० तुह्मारडी)

तुह्य-सर्व—तुम्हारा, तेरा। उ०—हळधर वधव गोकुळवाळ, खिमावत साधुन दुस्ट खंगाल। तवै जै नाम अहोनिस तुह्य, जरातक काळ न व्यापै जम्म।—ह र

तू-सर्व० [स० त्वम] तू, तुम। उ०—प्राणी तू डूवौ पुखत, मोह नदी रे माहि। देव नदी मे डूविधौ, नख पग हुदो नाहि।—बा.दा

मुहा०—१ तूतडाक—अशिष्ट शब्दो मे वाद-विवाद, बोलचाल २ तू तू मैं मैं—झगडा फिसाद करना अशिष्ट शब्दों मे वाद-विवाद करना।

रू०भे०—तु, तुअ, तुह, तु, तुम्र।

तूअर—देखो 'तवर' (रू.भे) उ०—भजि जात प्रजा मय वात भगेला, पाटण तूअर कप पुरौ। वडगूजर जाट अहीर तजै वळ दाट लगा पुर राट दुरै।—रा रू

तूअरइ, तूअरि-स०स्त्री०—तुवरि, तूवी (उ र)

तूकार, तूकारयउ—देखो 'तुकारौ' (रू.भे) उ०—जिण कीधउ हो सदा हाल हुकम्म, तउ वे तूकारयउ किम खमइ।—स कु.

तूकारणौ, तूकारवौ—देखो 'तुकारणौ, तुकारवौ' (रू.भे)

तूकारौ—देखो 'तुकारौ' (रू भे) उ०—ते तूकारो किम खमैं।

—वृहत् स्तोत्र

तूग-स०स्त्री०—१ आग की चिनगारी। उ०—धीर जवाहर अडिर

आगि झड़ै छै। जिकै तूग उडि उडि कापडा मे पडै छै।

—पना वीरमदे री वात

रू०भे०—तुगार, तुगारी।

२ देखो 'तुग' (रू भे) उ०—१ घणा नीदाळवा नींद वारो घणी तूग नह छै भली, होस घोडा तणी।—हा.झा.

उ०—२ पाच अथवा छ रौ मण धान रधायो। पछै दारू री तूगा मण ५०-६० री भराई, कसूभो मणावध कढायो।—रा सा.स

तूगणौ, तूगवौ—देखो 'तुगणौ, तुगवौ' (रू भे)

तूगिम-स०स्त्री० [स० तुग] १ महिमा, गौरव। उ०—भगवत सुतन हुवो त्रिहु भुवण घणा दीहा लगि नाम घणो। ब्रह्मा विसन महेस वदीतो तप तूगिम जस तूझ तणौ।—गोपाळ मीसण

२ ऊंचाई, उच्चता।

तूगियरौ-स०पु०—फौज का एक भाग, दल, टुकडी। उ०—घक साभळ चाक चढी घर यू, भुरिया गिर पाधर झगर यू। पनसा लुळ लेवण वित्त परा, असवार खडै अस तूगियरा।—पा प्र.

तूगियोडौ-भू०का०कृ०—छोटे छोटे टाको द्वारा ठीक किया हुआ।

(मि० तोबियोडौ)

(स्त्री० तूगियोडी)

तूगियौ—देखो 'तूग' (अल्पा, रू भे)

तूगी-स०स्त्री०—१ पृथ्वी, भूमि २ नाव, नौका (डि को)

तूगौ-स०पु०—सेना, फौज की टुकडी। उ०—१ भिडियौ मालौ अउव भत्त, रौदा सगत रही न। किल तेरे तूगा किया, अजडा तेरे तीन।

—वा दा.

तूछणौ, तूछवौ-क्रि०अ० [स० तुष्ट] तृषित होना, प्यासा होना।

उ०—कुती जळ विणू तूछीइ। तहि हिडंव जळु लेउ आवइ।

—प प.च

तूछियोडौ-भू०का०कृ०—तृषित, प्यासा।

(स्त्री० तूछियोडी)

तूज-स०पु०—एक प्रकार का वर्तन विशेष ? उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति इकबीसमी तार रा पुराणा पोसत। मडवाई रा नीपना, आगै वखाणिआ तिण भाति रा, तजारी तूज, घणी कासमीरी केसर, घणी ऊजळी मिसरी रै मेळि कपूर वासिअै पाणी री कल्हारी झारीजै छै।—रा मा स.

तूजी—देखो 'तुजीह'।

तूझ-सर्व०—१ तुझको, तुझे २ तुम्हारा।

तूड—देखो 'तुड' (रू भे) उ०—दुसमण सगळा रोळदे, खूब चला तू तूड। तो डाढाळा वाछडा, गुड सू भरस्यू रुड।

—डाढाळा सूर री वात

तूडी-स०स्त्री०—१ नाव, नौका। उ०—तव तणी पय धार लेवता, सगत वधारे पाण सिताव। तूडी उदध तणै डूवता, ग्राढे सुत तारियो ग्राव।—चौथ वीठू

२ पैदा।

तूडौ-स०पु०—तल, पैदा।

तूण-स०पु० [स० तूण] तर्कश। उ०—कटी तूण पाण सर चाप अमाप तेज कळासं।—र ज प्र.

तूणणौ, तूणवौ—देखो 'तुणणौ तुणवौ' (रू.भे.)

तूणी-स०स्त्री०—कमर, कटि।

रू०भे०—तूनी।

तूणौ-स०पु०—समय के पूर्व ही गिरा हुआ गर्भ (पशु)

तूतड, तूतडौ, तूतड्यौ-स०पु०—१ बाजरी की बाल या भुट्टा २ बाल के अन्दर का कच्चा दाना। उ०—त्रिया कहै पणि तुरत गरासे, सूखिम बीर चलावै। काचा तूतडा कानै डारै, सार सकळ चुणि खावै।—ह पु वा.

३ निकम्मी वस्तु ४ घास विशेष।

वि०—दुर्बल, पतला, क्षीण।

रू०भे०—तूतड, तूतडौ।

तूतळौ-स०पु०—१ बाजरी या ज्वार के भुट्टे का वह अग जिसमे दाना लगा रहता है। इसके हटाने पर दाना साफ होता है २ तुरई की वेल से मिलती-जुलती देवदाली नामक एक लता जिसके फल ककोडे की तरह काटेदार होते हैं।

तूद—देखो 'तुद' (रू भे.)

तूना-सर्व०—तेरा, तुम्हारा। उ०—जडो रूप तूना अणावत जेहो, कुहाडो अणा ऊपरं मात्र केहो।—ना द.

रू०भे०—तूना।

तूबडियाळौ-स०पु०—१ 'तूबडी' नामक वाद्य को बजाने वाला.

२ साधु, फकीर।

तूबडियौ—देखो 'तुबक' (अल्पा, रू भे) उ०—पाचरिया चुग ऊचा मेलै, तूबडिया गुड जावै। तूबडिया री सिर मे लागै, सूरदास गरळावै।

—रतनौ खाती

तूबडी—देखो 'तुबी' (अल्पा., रू भे)

तूबडौ—देखो 'तुबक' (अल्पा. रू भे)

उ०—मटका जेहो मूडडो. पड्यो पाछटे खाग। तोउ उछट तूबडो, दडो कि दोटे लाग।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

तूबर—देखो 'तोमर' (रू भे) उ०—राणी मिरघावती जिकण पूठै देरावर। राजा मिण राणिया तेण कुळ मोटो तूबर।—रा.रू

तूबिणि-स०स्त्री०—एक प्रकार की लता या इसका फल कद्दू।

उ०—तूबिणि तूरी आगडी, आहिमाण त्रिपुरारि। तूरफळ तरसाउळी, त्रिजटा नइ त्रिवितारि।—मा.को.प्र.

तूबी—देखो 'तुबी' (रू भे)

तूबु—देखो 'तुबुक' (रू भे) उ०—भवि पहिलेरइ वभणि हूती। कडुउ तूबु मुणिवर दिती।—प प च

तूबेल-स०पु०—१ चारणो की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति

२ दोहा छंद का भेद विशेष जिसमे तुकांत दूसरे और तीसरे चरण से मिलाया जाता है।

तूबो—१ देखो 'तुम्बक' (अल्पा, रू भे) २ देखो 'तमतूबो' (रू भे)
उ०—उख गिरी घर ऊपरै, यळ साडा मय आव। तूबा मीठम होय तो सूना होय सबाव।—बा दा

तूमण—देखो 'तुंबी' (अल्पा, रू भे) (शेखावाटी)

तूर-स०पु०—गौड वश के अन्तर्गत एक राजपूत वश।

तूराटी—देखो 'तवरावटी' (रू भे) उ०—दिल्ली तूराटी बीच रोकवा न पाया। तूराटी तार तीर ज्या सतेज आया।—सि व

तूवर—देखो 'तवर' (रू भे.) उ०—घरि उच्छव पाटण घणी, तूवर वगसीराम।—रा रू

तूहह-सर्व०—तेरा।

तू—देखो 'तू' (रू भे) उ०—जग नायक चा नाह, विच जट जूट वसावियो। पावन गग प्रवाह, पाणी तू फद परसही।—बा दा
रा०पु०—१ तू तू कर कुत्ते को पुकारने की ध्वनि।
मुहा०—तू तू करतो फिरणो—आवारा फिरना, भटकना।
वि०—२ युद्ध ३ अंगुली ४ हाथ ५ कटाक्ष (एका)
वि०—१ अशुद्ध. २ तुच्छ।

तूईजणो, तूईजबो-क्रि० भाव वा०—(पशु का) गर्भस्राव होना, गर्भपात होना।
कहा०—सो लरडिया मासू एक तूईज जावै तो काई डर—सौ भेड मे से यदि एक का गर्भस्राव हो भी जाय तो कोई हानि नही। अधिक व्यक्तियो के कार्य मे यदि एक का सहयोग प्राप्त न भी हो तो उसमे कोई हानि नहीं होती।
तुईजणो, तुईजबो, तूणो, तूवो, तू'णो, तू'बो—रू०भे०।

तूईजियोडो-भू०का०कृ०—(वह मादा पशु) जिसका गर्भपात हो गया हो।
रू०भे०—तूईजियोडी।

तूकार—देखो 'तुकारो' (रू भे)

तूकारणो, तूकारबो-क्रि०स० [स० त्वकार] तू तू कह कर सम्बोधन करना, अशिष्ट सम्बोधन करना। उ०—तू, तूकारेह सु कवि विरदावै सदा। दत तू हैवर दह, नू जेहल जोकारा दिए।—बा दा
तुकारणो, तुकारबो, तुकारणो, तुकारबो, तूकारणो, तूकारबो—रू०भे०

तूग-स०पु० [स० तुष] तिनके का वह छोटा तिनका जिससे दोना बनाने के काम मे लिया जाता है।

तूत्री, तू'डी—देखो 'तमतूबो' (रू भे.)

तूछ—देखो 'तुच्छ' (रू भे) उ०—अत उछाह रिम राहि उर आणियो, गुडतै वहळ दळ तूछ जाणियो।—गिरधाम री गीत

तूछरेळ-वि०—तुच्छ। उ०—तंहो लक सागा सो जोजना गिणै तूछरेळ।—र ज प्र

तूज—देखो 'तुझ' (रू भे) उ०—अति विरद बहादर तव अबूज। तरवार बहादुर विरद तूज।—वि स

तूजो—देखो 'तुजीह' (रू भे) (अ मा) उ०—गुपत छुरा पासिया कटारा, चुगा चकर तूजीया कूत भूधाण हवाई।—वखतो खिडियो

तूझ, तूझ्झ—देखो 'तुझ' (रू भे) उ०—१ गळ मुंडमाळ मसाण ग्रह, सग पिसाच समाज। पावन तूझ प्रभाव सू, सभु अपावन साज।
—बा दा
उ०—२ धूप दान क्रीत राम माह वाह मोटा धणी। तीनू बाता तूझ तणी मोख री दातार।—रा रू

तूटणी-स०स्त्री०—नसो मे होने वाला दर्द।

तूटणो, तूटबो—देखो 'टूटणो, टूटबो' (रू भे) उ०—१ कमालदी गढ आय घेरियो, घणा दिन हुवा पण गढ तूटो नही।—नैणसी
उ०—२ पछै पडिहार तूट गया, सारी खरड केलणा रै हेठै आई।
—नैणसी
उ०—३ तूटै नीर तळाव रो, खूटै आका खीर। भाणू वन पावै भुटो, नगियो पालर नीर।—बा दा. ख्यात
उ०—४ छत्रपति तुग गमा गम छूटा, तिकरि गयण सु नाखत्र तूटा।
—रा रू.

तूटियोडो, तूटोडो, तूटो—देखो 'टूटियोडो' (रू भे)
(स्त्री० तूटियोडी, तूटोडी, तूटी)

तूठ—देखो 'तुस्ट' (रू भे) उ०—रिभा सग झाट हुएं जमरूठ। तठै 'वखतेस' दलावत तूठ।—सू प्र

तूठणो, तूठबो-क्रि०अ० [स० तुष्ट, प्रा० तुट्ठ] १ प्रसन्न होना, खुश होना।
उ०—१ राव नासण नू नाडूल देवी आसापुरी तूठी नाडूळ रो राज दियो।—नैणसी
२ अनुकूल होना ३ तुष्टमान होना। उ०—जेहनै तूठारे मोज लहीजीयै रे (वि कु)
तूठणहार, हारो (हारी), तूठणियो—वि०।
तूठवाडणो, तूठवाडबो, तूठवाणो, तूठवावो, तूठवावणो, तूठवावबो, तूठाडणो, तूठाडबो, तूठाणो, तूठावो तूठावणो, तूठावबो—प्रे०रू०।
तूठिओडो, तूठियोडो, तूठयोडो—भू०का०कृ०।
तूठीजणो, तूठीजबो—भाव वा०।
तुस्टणो, तुस्टबो—रू०भे०।

तूठियोडो, तूठो-भू०का०कृ०—१ प्रसन्न हुवा हुआ २ अनुकूल हुवा हुआ
(स्त्री० तूठियोडी, तूठी)

तूण-स०पु० [स० तूण] तीर रखने का चोगा, तर्कश। उ०—कडिया खग खजर तूण कसै, तद पाण कबाण लई तरसै।—रा.रू.
रू०भे०—तून।

तूणियउ-वि० [स० तूणित] बुना हुआ (उ र)

तूणी-स०स्त्री० [स०] १ तरकश, तूणीर २ मूत्राशय से सम्बन्धित एक वात रोग जिसमे गुदा और पेडू तक दर्द होता है।

तूणीर-स०पु० [स०] तरकश, निषग।
रू०भे०—तूनीर।

तूणो-वि०—तिगुना। उ०—लूटैं खावैं धन धन मे धर लेवैं। दोढा दूणा रा तूणा कर लेवैं।—ऊ.का

तूणो, तूबो—देखो 'तुईजणो, तुईजवो' (रू भे.)

तूत-स०पु०—१ स्तम्भ, खम्भा। [स० तूद] २ शहतूत।

तूतक-वि०—१ मूर्ख, अज्ञानी. २ लम्बा।

तूतड, तूतडो—देखो 'तूतड' (रू भे) उ०—पराकिरत पढ रामदास, सैसकरत ले जोय। सबही कूकस तुतडा, राम नाम कण होय।
—रामदास की वाणी

तूताड़ियौ-स०पु०—भेड व बकरी के छोटे बच्चो को रखने का स्थान विशेष।

तूताडी-सं०स्त्री०—बालको का मुंह से फूक देकर बजाया जाने वाला बाजा या वाद्य विशेष जो किसी वृक्ष के चौडे पत्ते या सरकडे की नली आदि से बनाया जाता है।

तूतियौ-स०पु०—नीला थोथा, मोर थोथा।

तूती-स०स्त्री०—१ मुँह से बजाया जाने वाला एक वाद्य जो प्राय नौबत के साथ बजाया जाता है, शहनाई।

मुहा०—तूती बोलणी, तूती बाजणी—किसी की तूती बोलना, प्रभाव के कारण अधिक चलना, प्रभाव का जमना।

२ एक मटमैले रग की चिडिया जो बहुत अच्छी बोलती है।

उ०—दरखता ऊपर मोर कुहक रह्या छै, सुवा केळ करै छै, तूती बोल रही छै, लाल हाक मार रह्यो छै।—रा सा स.

३ हाहाकार, चीत्कार।

उ०—धरमी नर ऊपर कोमळ कर धारै। पापी पुरखा नै सदव्रत सहारै। तद अनुग्रह विन हा ग्रिहग्रिह तूती। जिण तिण विग्रह मे निग्रह री जूती।—ऊ का

तूदाग्र-म०पु० [स०] उदर का आगे बढा हुआ भाग, तोद (ह.ना.)

तून—देखो 'तूण' (रू भे)

तूना, तूना-सर्व०—देखो 'तूना' (रू भे) उ०—जम रा जम तूना जयौ, बडा धिणी तूं वाह वाह।—पी ग्र

तूनारा-स०स्त्री०—एक जाति विशेष जो फटे हुए कपडे मे तागे भर कर ठीक करती है (व स)

तूनारो-स०पु०—तूनारा जाति का व्यक्ति।

तूनी-स०स्त्री०—१ एक रोग विशेष २ देखो 'तूणी' (रू भे)

तूनीर—देखो 'तूणीर' (रू भे) (अ मा) उ०—निज कटि सुघट तट तूनीर, सर धनु सकर धार सुधीर। भजण कोड सता भार रे, मन गाव स्री रघुवीर।—र ज प्र

तूप-स०पु० [स० स्तुप समुच्छ्राये] घृत, घी (ह ना) उ०—मिडर भूप नागोर समर झोकै दळ सव्वळ। क्रोध रूप कळकळै तूप सीचै किर मगळ।—सू प्र

तूफान-स०पु० [अ० तूफान] १ वायु के वेग का उपद्रव, वात-चक्र २ डुबाने वाली बाढ। उ०—मयदी वर्ण कान्ह रै थाप मारी, तरी साह तूफान रै माह तारी।—मे.म.

क्रि०प्र०—आणो, ऊठणो।

३ प्रलय ४ आपत्ति, सकट ५ उपद्रव, झगडा, फिसाद।

मुहा०—तूफान मचाणो—तूफान मचाना, उपद्रव करना, शोरगुल मचाना।

रू०भे०—तोफान।

तूफानी-वि० [फा०] तूफान खडा करने वाला, उपद्रवी, उग्र, प्रचड।

तूबणो, तूबवो—देखो 'तीवणो, तीववो' (रू भे)

तूबियोडो—देखो 'तीवियोडो' (रू भे.)
(स्त्री० तूबियोडी)

तूमडी—देखो 'तुबी' (अल्पा, रू.भे)

तूमडो—देखो 'तुबुक' (अल्पा, रू भे.)

तूमा-सर्व०—तुम।

तूमार—देखो 'तुमार' (रू भे)

तूमो—देखो 'तुबुक' (अल्पा, रू भे)

तूयोडो—देखो 'तूईजियोडो' (रू भे)

तूरग, तूरगम—देखो 'तुरग' (रू भे)

तूर-स०पु० [स० तूर्य] १ एक प्रकार का बाजा जो मुह से बजाया जाता है। उ०—विराण सब्द सुणिया विहद्द। नीसाण तूर अनहद्द नद्द।
—धि सं.

[स० तुवरी] २ अरहर नामक द्विदल अनाज।

स०स्त्री०—देखो 'तुर' (रू.भे.)

तूरण-क्रि०वि० [स० तूर्णम्] शीघ्र (ह ना)

तूरही—देखो 'तुररी' (रू भे)

तूरान—देखो 'तुरान' (रू भे) उ०—तिणरी धाक ईरान, तूरान, रूम, स्याम फिरग, रूस, चीन्ह, महाचीन देस देसा रा पातसाह इण रा हुकम रा आधीन सारा डरै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

तूरानी—देखो 'तुरानी' (रू भे) उ०—धर हिंदू दूजा रजधानी। तुरक 'इरान' अनै 'तूरानी'।—सू.प्र

तूराटी—देखो 'तवरावटी' (रू भे)

तूरी-स०पु०—१ भाट जाति की एक शाखा जिसके लोग मोचा व चमारो की विरुदावली गा कर उनसे अपनी जीविका प्राप्त करते है
(मा म)

[स० तुरग] २ घोडा (ह ना) ३ देखो 'तुअर'।

४ देखो 'तोरू' (रू.भे) उ०—तूविणि तूरी आगडी, आहिमाण त्रिपुरारि। तूरफळी तरसाउळी, त्रिजटा नइ त्रिग्रितारि।
—मा.का प्र.

तूरीउ-वि०—चतुर्थ, चौथा। उ०—सिखा फरहरती, उत्तरासगी धोती, हाथि प्रवीत्रीसऊ, तूरीउ जनोई, सिर भद्रिउ तिलक वधारिउ।
—व.स.

तूरय—देखो 'तूर' (रू भे) उ०—प्रभात समउ हुउ, अधकार, फीटइ,

गाय तणा गाळा खूटा, तारागण विरळ हुइ, चद्रमा विच्छाय थिउ, कूकडा तणी उलि लवइ, देव तणा बार उघडिया, प्रभातिक तूरच वाजिया।—व स.

तूळ, तूल–स०पु० [स० तूल] १ कदम का वृक्ष (अ मा.) २ शहतूत का वृक्ष. ३ रूई। उ०—१ जाडा पापा दाहे जेही, तिलकण दहण अगण मण तूल।—र.ज प्र

उ०—२ कासी की हासी करी, लाखी दे ललकार। पिजण पार्ख तूल जिम, उडतै फिरे अगार।—ऊ,का

तूळक–स०स्त्री० [स० तूल] रूई।

तूलता–स०स्त्री० [स० तुल्यता] तुल्यता, समानता।

तूळिका, तूळी, तूली–स०स्त्री० [स० तूलि] १ चितेरे की कूची २ सीक ३ तार आदि का छोटा व सीधा टुकडा ४ आग जलाने की तिली।

तूस–स०पु०—१ एक प्रकार की लता तथा उसका फल जो कच्ची अवस्था मे तो सफेद धारीयुक्त हरा रग और पकने पर पीले रग का होता है। इद्रायण का फल। उ०—खळ न तजै मन खार, जरा हुई बूढो जोइ। पीळो हुवो पाकि, तूस खारो फळ तोइ।—ध.व.ग्र

२ भय, डर। उ०—उत्तम मूसे अेक झड़, मध्यम दूहा मूस। अधम गीत मूसे अड़र, त्रिविध कुकवि विण तूस।—बा दा.

रू०भे०—तूह।

३ खुरासान का एक शहर ४ खुरासान का एक प्रदेश जहाँ पर तूस शहर है।

तूसडौ—देखो 'तमतूबो' (अल्पा, रू भे,)

तूसण—देखो 'तूस' (रू भे)

तूसणौ, तूसबौ–क्रि०अ० [स० तूष=तप] खुश होना, प्रसन्न होना, सतुष्ट होना (उ र) उ०—कबहू रूसै कबहू तूसै, नेह मिरदग बजावती। कबहू तामी कबहू सीली, जीवा जेर गिरावती।—ह.पु.वा

तूसी–वि०—१ तूस देश का उ०—वलखी हिनबी बावरी, रूसी तूसी रोद। अै ले अकबर आवियो, सझ ऊभा सीसोद।—बा दा

२ देखो 'तूस' (३, ४)

तूह—देखो 'तूस' (रू भे)

तूहिन, तूहीन–स०पु० [स० तुहिन] १ शीत, जाडा। उ०— तूहिन कठीरव तन कुजर तावै। डग डगि चढ़ियोडा मरिया डुमकावै।—ऊ का

२ देखो 'तुहिन' (रू भे)

तें—देखो 'ते' (रू.भे.) उ०—थूळ उथापिया साद तें थापिया। किलग रा सेन तरुआरि सा कापिया।—पी ग्र

तेंण–सर्व०—उस।

क्रि०वि०—उसमे। उ०—चाल सखी तिण मदिरइ, सज्जण रहियउ जेंण। कोइक मीठउ बोलडइ, लागो होसइ तेंण।—ढो मा.

तेंतीस—देखो 'तेतीस' (रू भे)

तेंतीसौ—देखो 'तेतीसो' (रू भे)

तेंदुओ–स०पु०—बिल्ली या चीते की जाति का एक बडा हिंसक पशु।

तेंदिय, तेंद्रिय—देखो 'त्रीद्रिय' (रू भे, जैन)

तेंहवार—देखो 'तिवार' (रू भे) उ०—वडला आयो आयो राखडियो तेंहवार, कुण नै बाधै ओ थारै राखडी।—लो.गी.

ते–स०पु०—१ यमुना का जल २ नासिका, नाक. ३ देवता. ४ राक्षस ५ पुत्र. ६ ज्ञान (एका)

[फा० तह] ७ वर्षा के कारण जमीन के अन्दर तक होने वाली नमी या आर्द्रता।

क्रि०प्र०—जमणौ, जाणौ, पैठणौ, बैठणौ, लागणौ, होणौ।

मुहा०—ते देणौ—१ अपनी थाह को प्रकट करना. २ ते होणौ—थाह होना, गाम्भीर्य होना।

[स० तेज, प्रा० तेय] ८ देवी-देवताओ को दूध चढाने का मुकर्रर दिन।

रू०भे०—तेह, त्रेह।

सर्व० [स० एप, प्रा० एहो] १ तू, तुम, आप। उ०—१ वहता रहै विमाण, ले तट मू बैकुठ लग। ते इम करडी ताण; अवक लोक उजाडियो।—बा दा

उ०—२ तिण करमे करि साध री, ते खाल हो उतारी राय।

—जयवाणी

२ इस। उ०—ते माटइ करिनइ मया रे, आणी मन उपगार। आवी नइ मुझ थी मिळउ, दरसण द्यो इक वार।—वि कु

३ वह। उ०—ऊनमियउ उत्तर दिसइ, मंडी ऊपर मेह। ते विरहिण किम जीवसे, ज्यारा दूर सनेह।—ढो मा

४ व। उ०—१ विरळा इसडा ब्रह्मचारी रे, ते तो नैणे न निरखै नारी रे।—जयवाणी

उ०—२ हित सू कमठा कत हरी, सेवै पुळक सरीर। वदन छिपावण देह विच, ते मागै तदवीर।—बा दा

उ०—३ चिंता बध्यउ सयळ जग, चिंता किणहि न बध्ध। जे नर चिंता वस करइ, ते माणस नहिं सिध्ध।—ढो मा

उ०—४ सुरदेव व्यास जैदेव सारिखा सुकवि अनेक ते एक सथ श्री वरणण पहिलो कीजै तिणि, गूथियै जेणि सिंगार ग्रथ।—वेलि.

५ उन। उ०—सउदागर-सदेसडा साभळिया स्रवणेहि। मारुवणी ते मन दहइ, मूक्यउ जळ नयणेहि।—ढो मा

६ अपने। उ०—बोलति मुहुरमुह विरह गर्भ वे, तिसी सुकळ निसि सरद तणी। हमणी ते न पासै देखै, हस हस न देखै हसणी।

—वेलि

क्रि०वि०—इसलिये। उ०—वे हरि हर भजै अताल बोळै, ते अब भागीरथी म तू। एक देस वाहणी न आणा, सुरसरि सम सरि वेलि सू।—वेलि

प्रत्य०—तृतीया या पचमी विभक्ति का चिन्ह से। उ०—१ सब ही रमता राम हे, ता ते राम कहाया हो। गुप्त होता प्रगट किया, सतगुरु दरसाया हो।—श्री हरिरामजी महाराज

उ०—२ माया मायँ ग्रभास चेतन का, ता ते तिरगुण जाना। सत-गुण ग्रधिक सोई है ग्याना, रज तम दोई ग्रग्याना।
—श्री सुखरामजी महाराज

रू०भे०—तेह ग्रेह।

तेग्र-देखो 'तेज' (रू भे) (जैन)

तेइंदिय, तेइद्रिय—देखो 'ग्रीद्रिय' (रू भे) (जैन)

तेइयौ—देखो 'तीयो' (रू भे) उ०—खापरे री वह ग्ररज कीवी छै-धणिया री वेळा छै क्यूं खबर लेसो तो तेइयँ किरिगा री सरवरा हुसी।—राजा भोज ग्रर खापरै चोर री वात

तेइस—देखो 'तेईस' (रू भे)

तेइसमौं, तेइसवौं—देखो 'तेईसमौं' (रू.भे)
(स्त्री० तेइसमी, तेइसवी)

तेईस-वि० [स० त्रयोविंशति, प्रा० तेवीसा] बीस ग्रौर तीन का योग, तेवीस।

स०पु०—२३ की सख्या।

रू०भे०—तेइस, तेवीस, ग्रेवीस।

तेईसमौं, तेईसवौं-वि०—२३ वा, तेवीसवां।
(स्त्री० तेईसमी तेईसवी)

रू०भे०—तेइसमौं, तेइसवौं, तेवीसमउ, तेवीसमौं।

तेईसेक-वि०—तेवीस के लगभग।

तेईसो-स०पु०—तेवीसवां वर्ष। उ०—प्रथम तेईसे, पछै ग्रठाईसे तीजक फेर छतीसे, चौथा फेर तयाळीसे जुमले चार वार नाथजी दुवारे वडा महाराज पधारिया।—बा दा ख्यात

रू०भे०—तेवीसो, ग्रेवीसो

तेग्रोतर—देखो 'तिहोतर' (रू भे)

तेग्रोतरमौं, तेग्रोतरवौं-वि०—तिहत्तरवा।
(स्त्री० तेग्रोतरमी, तेग्रोतरवी)

तेउ-सर्व०—१ उस। उ०—१ नरवपात ऊवेलइ जेउ, मोटा सकट छोडिउ तेउ।—का दे प्र

उ०—२ मत्रीसर नदन मनमोहन, नामिइ लच्छिनिवास। तेउ तीहइ भणइ मनखति, लहूउ लीलविलास।—विद्याविलासपवाडउ

२ देखो 'तेज' (रू भे) (जैन)

रू०भे०—तेऊ।

तेउकाय, तेउक्काय—देखो 'तेजकाय' (रू भे) (जैन)

रू०भे०—तेऊकाय।

तेऊ—देखो 'तेउ' (रू भे) (जैन)

तेऊकाय—देखो 'तेजकाय' (रू भे)

तेग्रोतरो-स०पु०—७३ की सख्या का वर्ष।

तेग्रो-लेसा—देखो 'तेजो-लेश्या (रू भे) (जैन)

तेख-स०पु०—१ मान, इज्जत, प्रतिष्ठा [स० तीक्ष्ण] २ क्रोध, गुस्सा
उ०—सरणो ग्रजरो सपज्या, ताकै कुण कर तेख। तारख जिम तण तिलमळै, ग्रह ग्रज गळ ग्रवरेख।—रेवतसिंह भाटी

३ घमड, ग्रभिमान (ग्र मा)

उ०—१ गुरु लघु विप्लुत करी, व्यजन वरण विसेख। धूया माठा पड-मठा, ताल तणा तिहा तेख।—मा का प्र.

उ०—२ कस्तूरी। चूरी करिउ, ऊगटि ग्रग विसेख। ग्रबर। ग्रति घण वीनवउ, तूय म छडिसि तेख।—मा का प्र.

स०स्त्री०—४ बढ़ई के ग्रौजार 'रन्दे' के ग्रन्दर की तेज धार वाली लोहे की पत्ती।

रू०भे०—ग्रेख।

तेखट, तेखटियो-स०पु०—ग्राभूषणो की खुदाई करने का एक उपकरण।

ग्रल्पा०—तेखटियो।

तेखडियो-भू०का०कृ०—१ क्रुद्ध हुवा हुग्रा. २ बिगडा हुग्रा ३ नाराज हुवा हुग्रा।
(स्त्री० तेखियोडी)

तेखणौं, तेखवौं-क्रि०ग्र०—१ क्रुद्ध होना. २ नाराज होना ३ बिगडना।

तेखळ, तेखळौ-स०पु० [स० त्रिशृखल] १ घोडे या गधे के दो पैर ग्रगले ग्रौर एक पैर पिछला शामिल बाधने की क्रिया. २ ऊंट के पिछले ग्रौर एक ग्रागे के पैर को बांधने का बधन या इस प्रकार बधे हुए पैर. ३ एक दिन छोड कर फिर दो दिन किया जाने वाला दधि-मथन।

तेखानो-स०पु० [फा० तहखाना] भूमि के ग्रन्दर बना कोठा, तहखाना।

तेखा-स०पु०—ढोली जाति की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति जो पवारो से निकले कहे जाते हैं।

तेखियौ-वि०—पापी, दुरात्मा।

तेखी, तेखीलौ-वि०—क्रोधयुक्त। उ०—१ दिस लक ग्रगद ग्राद द्वादस तहकिया तेखी। इक ग्ररण सो विच त्रिसा ग्रातुर दरि दृग देखी।
—र रू.

उ०—२ थे ग्रणखोला म्हे तेखीला, थासू म्हारै नही काज। मारूडा जी म्हारा ग्राया माभल रात।—लो गी

तेग-स०स्त्री० [ग्र०] तलवार, कृपाण। उ०—जाहरा तेग तू सब जिहान। खोटड ग्रमीर सिर विलद खान।—वि स.

ग्रल्पा०—तेगो।

मह०—तेगाळ।

तेगझाट-स०पु०—युद्ध (ग्रसि युद्ध) (ग्र.मा)

तेगधर-वि०—खडगधारी, योद्धा। उ०—चमू मेल गज चढै 'विजसाह' ढुळ ते चवर, तेगधर जोधहर जवर ताळै।
—महाराजा विजयसिंह रो गीत

तेगबध-वि०—खडग रखने वाला, तलवारधारी, योद्धा।

तेगाळ—देखो 'तेग' (मह., रू भे) उ०—गाळै माण कायरा सोकिया तीर बाण गोळा, गजाकध ढाळै पाण तोकिया तेगाळ। भाण रथा रोकिया गैणाग खेल रीधा भाळै, 'गीध' वाळै सत्रा धाण झोकिया वेगाळ।—जालमसिंह चापावत रो गीत

तेगिच्छ-स०पु०—रोग का प्रतिकार, चिकित्सा (जैन)

तेगून-स०स्त्री०—तलवार। उ०—घडी चार ला सावठी सोर दगी। तप्यो लोक तेगून की रीठ वगी।—ला रा

तेगो—१ देखो 'तेग' (अल्पा, रू भे) उ०—मरणं सू जे डरं, लोटिया तोपा को भं खाय। तेगो तेरो करे म्यान मे, पूठो घर नै जाय।
—डूगजी जवारजी री पड

२ तलवार का धारदार पूरा भाग, तलवार की पाती।

उ०—खीया थू खुरसाण, घण तेगो तरवार रो। मुखमल हूदै म्यान, खवै विलूवू खीवजी —र रा

तेघड–स०स्त्री०—स्त्री के पैर का आभूषण विशेष। उ०—दूजी बार नृत्य करती कुलाच मारी सु पग री तेघड थी तेरी कोल उछळ पडी।
—पचदडी री वारता

तेड–स०स्त्री०—१ वह खाली स्थान जो किसी वस्तु के फटने पर सीधी लकीर सी हो जाती है, दरार।

क्रि०प्र०—आणी, आवणी, पडणी, पटकणी।

२ किसी भोज आदि के अवसर पर आमन्त्रित, समीपवर्ती गावो के जाति बन्धुओं का समूह ३ बडे भोज का आयोजन जिसमे दूर-दूर से अतिथि निमन्त्रित किये जाते हैं ४ योनि, भग। उ०—तार री नही सुख तेड मे, पावे दुख अपार रो। सार री बाण खटकै सदा, नेह पराई नार रो।—ऊ का

तेडणो, तेडवो, तेडवणो, तेडववो–क्रि०स०—१ बुलाना।

उ०—१ बादसाह चाही कोल आपरो पाळजे, सो खजानची नू तेड नै कह्यो–नकद खजाने रो लेखो करो।—नी प्र

उ०—२ चाढ़ि छाक मद भख ले चवियो, तवि कथ मुझ केम तेडवियो।—सू प्र

[स० तट उच्छ्राये] २ बच्चे को उठा कर गोद मे लेना।

तेडणहार, हारो (हारी), तेडणियो—वि०।

तेडवाडणो, तेडवाडवो, तेडवाणो, तेडवाबो, तेडवावणो, तेडवाववो, तेडाडणो, तेडाडवो, तेडाणो, तेड़ावो, तेडावणो, तेडाववो—प्रे०रू०।

तेडिग्रोडो, तेडियोडो, तेडयोडो—भू०का०कृ०।

तेडीजणो, तेडीजवो –कर्म वा०।

तेढवणो, तेउववो, तेडणो, तेडवो—रू०भे०।

तेडवियोडो—देखो 'तेडियोडो' (रू भे)।

(स्त्री० तेडवियोडी)

तेडाडणो, तेडाडवो—देखो 'तेडाणो, तेडावो' (रू भे)

तेडाडियोडो—देखो 'तेडायोडो' (रू भे)

(स्त्री० तेडाडियोडी)

तेडाणो, तेड़ावो–क्रि०स० ('तेडणो' क्रिया का प्रे०रू०) १ बुलवाना।

उ०—ओ किसो उपद्रव। ताहरा पडित तेडाया, कहियो ओ किसो उपद्रव।—देवजी बगडावता री वात

२ गोद मे उठवाना

तेडाडणो, तेडाड़वो, तेडायणो, तेडाववो, तेउाणो, तेडाबो—रू०भे०

तेडायोडो–भू०का०कृ०—१ बुलवाया हुआ. २ गोद मे उठवाया हुआ

(स्त्री० तेडायोडी)

तेडावणो, तेडाववो–देखो 'तेडाणो, तेडावो' (रू भे)

उ०—बोलइ बीसळदे परधान, राय कुवर आयो बहुमान। राज कुवर तेडावियो, पाट पटोला कुलह कवाई।—वी दे

तेडावियोडो—देखो 'तेडायोडो' (रू भ)

(स्त्री० तेडावियोडी)

तेडियोडो–भू०का०कृ०—१ बुलाया हुआ, आमन्त्रित. २ गोदी मे लिया हुआ।

(स्त्री० तेडियोडी)

तेडियो–स०पु०—स्त्रियो का गले मे पहिनने का एक स्वर्ण आभूषण।

(मि० तिमणियो)

तेडी–स०पु०—एक जाति विशेष का घोडा (शा हो)

तेडो–स०पु०—१ बुलाने की क्रिया या भाव, बुलावा।

उ०—१ कदोई कह्यो हू तो राह्यू उडीकतो रह्यो पण तेडो कोई आयो नही, नै साह नै फिकर हुवो।
—राजा भोज नै खापरा चोर री वात

उ०—२ हर मत छाडे रे हिया, लिया चाहे जो लाह। दिल साचै तेडो दिया, नेडो लिछमी नाह।—र ज प्र.

क्रि०प्र०—आणो, मेलणो।

२ बाजरी के साथ खरीफ की फसल के अन्य अनाजो का सम्मिश्रण.

३ घाटा, कमी, अन्तर।

तेजगी–वि० [स० तेजोऽअगी] तेजस्वी, जोशीला, पराक्रमी।

तेज–स०पु० [स तेजस्] १ दीप्ति, काति, चमक। उ०—गिणका रो जे नर ग्रहै, कवरी डड करेण। खाग ग्रहै किमि दळण खळ, तेज विहीणा तेण।—बा दा

२ पराक्रम, शौर्यबल, ओजस्विता। उ०—सुणिया 'पातल' समर रा, नीधसता नीसाण। तेज न मावै तन्न में, तन्न न मावै त्राण।
—किसोरदान बारहठ

मुहा०—तेज दिखाणो—तेज प्रकट करना, शौर्यबल दिखाना, बहादुरी का कार्य करना।

३ वीर्य, ओज।

यौ०—तेजधारी, तेजवान।

४ पचभूत तत्वो मे से तीसरा, अग्नि (अ.मा)

उ०—१ प्रथी अप तेज वायू अकास। नही कुछ जेथ स तेथ निवास।
—ह र.

उ०—२ धरणी नीर तेज वायू नभ, सबै सता प्रकासी। निराकार आकार मे पूरण, नहि आवै नहि जासी।—स्री सुखरामजी महाराज

५ प्रकाश, ज्योति। उ०—आखै कवि ईसर तेज अबार। प्रभूजी टाळो जम्म प्रहार।—ह र

यौ०—तेजपुञ्ज।

६ वस्तु या पदार्थ का सार, तत्व।

क्रि०प्र०—निकाळणो।

७ गर्मी, ताप ८ सूर्य (अ मा.) ९ किरण (अ मा)
१० स्वर्ण, सोना। उ०—तेज सोळमी जूभियौ हिंदू तुरक। 'अमर' अकबर तणं तखत आगं।—अमरसिंह राठोड री वात
११ तारा (अ मा) १२ सत्वगुण से उत्पन्न लिंग शरीर.
१३ प्रताप, रौब १४ तेजी, प्रचडता, प्रबलता. १५ घोडा (डि ना मा)
(स्त्री० तेजण)
१६ पित्त १७ मक्खन १८ घोडे का वेग या चलने की तेजी
१९ दीपक (ह ना)
वि०—१ तीक्ष्ण धार का २ तीक्ष्ण, तीखा. ३ चलने मे शीघ्रगामी, वेगवान, फुर्तीला ४ चचल, चपल ५ महगा ६ उग्र, प्रचड. ७ कातियुक्त, चमकीला. ८ सुन्दर (अ मा) ९ शीघ्र प्रभाव डालने वाला, अधिक असर डालने वाला. १० कुशाग्र बुद्धि वाला, बुद्धिमान ११ अधिक।
रू०भे०—तेअ, तेउ, तेऊ, तेजइ, तेजि।
[स० तेज+फा० अवार] १२ सूर्य (ह ना)

तेजआनूप-स०पु०यौ०—नृप, राजा (डि को)

तेजइ—देखो 'तेज' (रू भे) उ०—तेजइ पटळि सूरय निवारइ। स्वेत छत्र कि इद्र ज डारइ।—विराटपर्व

तेजकाय-स०स्त्री० [स० तेजस्काय] तेजस्काय, अग्नि।
रू०भे०—तेउकाय, तेउवकाय, तेउक्काय।

तेजकिरण-स०पु०यौ० [स तेजस् किरण] सूर्य।

तेजगळ-वि०—तेजगति से चलने वाला। उ०—सेवक सिउ राइ कहिउ, सीख कही ते सार। पान पटवर पाठव्या, तेजगळ तोखार। —मा का प्र.

तेजग्रह-स०पु०यौ०[स० तेज+गृह] १ दीपक. प्रकाश, ज्योति (ना.मा)

तेजचड-स०पु०यौ० [स०] सूर्य।

तेजण-स०स्त्री०—घोडी।

तेजधार, तेजधारी-वि० [स० तेजधारिन्] ओजयुक्त, तेजस्वी।
स०पु०—सूर्य।

तेजपत्तौ, तेजपात-स०पु० [स० तेजपत्र] दालचीनी की जाति का एक पेड व उसका पत्ता। इसकी पत्तिया व छाल अनेक ओषधियो मे काम आती हैं। तेजपत्र।

तेजपुज-स०पु०यौ० [स० तेज+पुञ्ज] सूर्य (डि को)
वि०—अप्रतिहत, तेजस्वी। उ०—आगळी उन्नत पाछलि विनत त्रिक्ष भाजई चमकतउ चालइ वाहीयउ देखी न सहइ न सहइ ताज्यउ न सहइ वाज्यउ न सहइ रूप न सहइ प्रति रूप जिमउ तेजपुज प्रत्यक्ष जिसउ जमराउ।—व स

तेजबळ-स०पु०यौ० १ पराक्रम, तेज २ प्रताप।
[स० तेजोवती] ३ एक काटेदार जगली वृक्ष जिसकी छाल चरपरी होती है। उ०—तठा उपरात इलूरा री कूडी तेजबळ रो घोटो घोय तैयार कीजै छै।—रा सा स.
४ तुरई की लता और उसका फल (अमृत)

तेजमालोत-स०पु०—भाटी वश की एक शाखा और उसका व्यक्ति।

तेजरौ-स०पु० [स० त्रिज्वर] १ हर तीसरे दिन आने वाला ज्वर।
उ०—ज्यू वैद कहै लौ तेजरा री गोळी २। तौ तेजरौ गमाव री अरथो तिण नै तेजरा री गोळी विसेस प्यारी लागै।—मि द्र.
कहा०—तेजरा री कैवै जणा ताव री हाकारी भरै—त्रिज्वर का कहे जब कही साधारण ज्वर के लिए हा भरता है। कार्य के कष्ट से बचने वाले व्यक्ति से साधारण कार्य कराने के लिए पहिले बहुत बडा कार्य बताया जाता है ताकि मना करते-करते साधारण के लिए तो तैयार हो ही।
रू०भे०—तिजारी, तेजारौ।
२ कोप की अवस्था मे ललाट मे होने वाली तीन शिलवटें
३ देखो—'तिजारौ' (रू भे)

तेजल-स०पु० [स०] चातक, पपीहा।

तेजवत, तेजवती-वि०—१ तेजस्वी, प्रतापी। उ०—१ अग तेजवत सोभा अनग। 'अजमाल' पाट अभमल अभग।—सू प्र
उ०—२ सनागा रमा चख अरु ढाल जेहा। तके तेजवत्ती अरी साल तेहा।—शि सु.रू
रू०भे०—तेजवान।
स०पु०—१ घृत, घी (ह ना मा)
स०स्त्री०—२ आग्नेय दिशा का नाम।

तेजवान—देखो 'तेजवत' (रू भे)

तेजस-वि० [स० तेजस्वी] बहादुर, पराक्रमी, तेजस्वी। उ०—सेवग पयपे तेजस मोह, विसभ रखे हिव थाय विछोह।—ह र
२ तेज धार वाला. ३ शीघ्रगामी, वेगवान, फुर्तीला. ४ महगा।
स०पु०—सूर्य (ह.ना)
रू०भे०—तैजस।

तेजसपुज-वि०—१ तेजस्वी, प्रकाशवान। उ०—मुनीस महेस कोपन्नल मज। प्रसिद्ध महाबळ तेजसपुज।
स०पु०—देखो 'तेजपुज' (रू भे)

तेजसवती, तेजसवी—देखो 'तेजस्वी' (रू भे)

तेजस-सरीर-स०पु०—ग्रहण किये आहार को तथा कर्म पुद्गलो को पाचन कर रस रूप बनाने वाला, आभ्यतर सूक्ष्म शरीर (जैन)
रू०भे०—तेयससरीर।

तेजसिहोत-स०पु०—'बीकावत' राठोड वश की उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।
रू०भे०—तेजसियोत।

तेजसी-स०पु०—१ सूर्य (ह ना) २ देखो 'तेजस्वी' (रू भे)

तेजसियोत—देखो 'तेजसिहोत' (रू भे.)

तेजस्व-स०पु० [स०] महादेव, शिव।

तेजस्वत्–वि० [सं०] तेजस्वी ।
तेजस्विनी–सं०स्त्री० [सं०] मालकगनी ।
तेजस्वी–वि० [सं० तेजस्विन्] कांतिमान, प्रतापी, तेजयुक्त ।
सं०पु०—इन्द्र के एक पुत्र का नाम ।
रू०भे०—तेजसवती, तेजसवी, तेजस्वत् ।
तेजागळ—देखो तेजगळ' (रू भे) उ०—नळ वाजि विडगा राग नरै । पारेवर वोलै जेण परै । तेजागळ तेज तुरग तिडै, नाखअव जाण निहग खिडै ।—गु रू.व
तेजाव—देखो 'तिजाव' (रू भे)
तेजावी—देखो 'तिजावी' (रू भे.)
तेजारत—देखो 'तिजारत' (रू भे)
तेजारती—देखो 'तिजारती' (रू भे.)
तेजारो—१ देखो 'तिजारो' (रू भे) उ०—खुरिया करता खूद, हुवै तुरिया होकारा । घिरिया दुसमण घडा, तिकण वेळा तेजारा ।
—ऊ का
२ देखो 'तिजारी' (रू भे)
तेजाळ, तेजाळू, तेजाळो–सं०पु०—१ तेज, प्रताप । उ०—तेजाळ जागिया कमध तोर, आगिया दवै भूपाळ ओर ।—वि स
२ घोडा ३ सूर्य ।
वि०—१ तेजस्वी २ तेज गति वाला । उ०—घण तेजाळ घोडलो, तुरी करै बह तान । होरै जडित पिलाणियो, दे वारट ना दान ।—पी ग्र
तेजावत–सं०पु०—देवडा वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।
तेजि—देखो 'तेज' (रू भे) उ०—पोळि पहुतउ पडु, तेजि तरणि पयडु । सीसि चमर ववाळ, अनु कटि कुसुमह माळ ।—प प च.
तेजिउ–वि० [सं० उत्तेजितम्] उत्तेजित । (उ. र)
तेजिय–सं०पु०—घोडा, अश्व । उ०—तुड पडै तेजिया नृपति, वळ वड निहट्टो । प्रळैमड कारणै काळ परचन्ड कि जुट्टो ।—रा रू.
तेजी–सं०स्त्री० [फा०] १ तेज होने का भाव, तीव्रता २ उग्रता, प्रबलता ३ गुस्सा, क्रोध. ४ महगाई ५ शीघ्रता ६ तीव्र गति ।
सं०पु०—७ एक प्रकार का घोडा (डिं ना.मा)
उ०—वाजै वजै तीन लाख, लाख लाख अभिलाख । तजि के चोरासी लाख, तेजी रथ दति दति ।—ध व.ग्र
तेजेयु–सं०पु० [सं०] रौद्राक्ष राजा के एक पुत्र का नाम ।
तेजो-मडळ–सं०पु० [सं० तेजो मडल] सूर्य चद्रमा आदि आकाशीय पिंडो के चारो ओर का मडल ।
तेजोमई, तेजोमय–वि०—१ तेजस्वी, प्रतापी । उ०—१ जिकै वार तेजोमई थाट जाडो उभै, वीस कोसा जितो कीध आडो ।—सू प्र.
उ०—२ जे सुत ब्रहदस्त्र भूप करण जय । ते सुत भानु मानु तेजोमय ।—सू प्र
२ सूर्य, भानु । उ०—१ कान जडाऊ काम रा, कुडळ धारण कीन्ह । झळहळ तारा झूमका, दुहु पासा ससि दीन्ह । दुहु पासा ससि दीन्ह, अधार निकदवा, तेजोमय रथ तास, निघात वही नवा । माग फूल जडाऊ मडिया, जिण जिण निरखै भाहे हित दुख खडिया ।
—बा दा.
तेजो-लेस्या–सं०स्त्री० [तेजो लेश्या] तपोवल से उत्पन्न होने वाले तेज की ज्वाला, कांति (जैन)
तेजो–सं०पु०—राजस्थान मे जाटो, गूजरो आदि द्वारा विशेष रूप से पूजा जाने वाला एक जूझार ।
वि०वि०—तेजा का जन्म राजस्थान के नागोर परगने के 'खडनाळ' नामक ग्राम मे हुआ था । इसके पिता का नाम 'बखतो' और माता का नाम 'लछमा' था । राजस्थान के जाटो मे यह एक परोपकार-परायण, प्रतिज्ञापालक, सत्यनिष्ठ जुझार हुआ है । इसका विवाह किशनगढ राज्य के 'पनेर' गाव मे हुआ था । यह अपनी पत्नी को लेने ससुराल गया हुआ था । वहाँ गूजरो की गायें मेर जाति के लोग घेर कर ले गए । गूजरो की प्रार्थना पर 'तेजा' ने मेरो का पीछा किया और उनसे युद्ध कर के गायो को छुडाने मे सफल हुआ । युद्ध मे यह बहुत घायल हो गया था, उसी दशा मे एक सर्प के काटने से इसकी मृत्यु हो गई । 'तेजा' की स्त्री उसके साथ सती हुई । गाँव वालो ने तेजा की 'देवली' बना कर पूजना शुरू कर दिया । आज भी उसकी मृत्यु तिथि भादवा सुदि १० को परवतसर मे एक बहुत बडा मेला लगता है जिसमे लोग अपने पशुओ को साथ ले जाते है और वहाँ उनका क्रय-विक्रय होता है २ 'तेजा' से सम्बन्धित राजस्थान में गाया जाने वाला एक लोक गीत ।
यौ०—तेजो-घोळो ।
तेजो-वितान–सं०पु० [सं० तेजस्+वितान] सूर्य (ना मा.)
तेटलि–क्रि०वि० [सं० तत्तुल्यके] वहाँ (जैन)
तेटलो–वि०—उतना । उ०—तेटला गजवर सार ।—धर्म पत्र
तेडणो, तेडवो—देखो 'तेडणो, तेडवो' (रू भे.)
उ०—पाडव तेडी एम कहे ।—धर्म पत्र
तेडाणो, तेडावो—देखो 'तेडाणो, तेडावो' (रू भे.)
उ०—सयवर मडप मडाउ, सहू देसाधिप तेडाउ ।—सीपाळ
तेडो—देखो 'टेडो' (रू.भे)
तेढ़क–वि०—१ टेढा, वक्र । उ०—कनै होत जो उठै अजमाल वेढक, अकळ लडण तेढ़क खळा दळा लाडो ।—बदरीदास खिडियो
तेढ़, तेढीमणो, तेढो–वि०—१ बाका, बहादुर । उ०—१ देवीदास विसन्न तणः जाणै विसन्न भुजान । गाजेवा तेढ़ा भडा, वेढा तणो 'विसन्न' ।
—रा रू.
उ०—२ चालसी जुध गयण धोम चेढीमणो, मुगळा गाळसी जोम वेढीमणो, तरह लकाळ सी घाट तेढ़ीमणो, वाळमी वया कसर दाट वेढ़ीमणो ।—बदरीदास खिडियो

२ देखो 'टेढो' (रू भे.) उ०—हूं जाणी नै पूछिया, आडा तेढा वैण। ग्यान तणी प्रापत हुई, थे साचा लागी सैण।—जयवाणी

तेण, तेणि–सर्व० [सं० तस्मिन्] १ उस। उ०—धवळ लध भूसर दिया, धवळ करै नह त्याग। तेण धवळ सिर सींग है, तेण धणी सिर भाग।—बा.दा.

क्रि०वि०—उससे। उ०—१ घर नयर वघूसे तेण रिय घूघळी, अमरवत आद सेवरै अणभग।—भल्लो गाघरिणयो।

उ०—२ ऊठिया जगतपति अंतरजामी, दूरतरी आवती देखि। करि वदण आतिथ्य भ्रम कीधी, वेदे कहियौ तेणि विसेखि।
—वेलि

२ इससे, इसलिए। उ०—पहर-रंग रत्तउ हुवइ, मुख काजळ मसि-ब्रन्न। जाण्यउ गुजाहळ अछइ, तेण न दूरुउ मन्न।—ढो मा.

स०पु० [सं० स्तेन] चोर, तस्कर (जैन)

तेतउ–वि०—उतना। उ०—जाउ जागइ ताउ मागइ, जाउ जोयणउ तांउ भोयणउ। जेतिय राति तेतउ जागर, जेवडउ खाडउ तेवडउ घाउ।—व स

तेतजुग—देखो 'त्रेतायुग' (रू भे)

तेतळइ, तेतळई–क्रि०वि०—वहा, तहा। उ०—करी सजाई दीया दमामा, त्रीजइ दिवस विहाणइ। अलूखान ना कटक तेतळइ, चाली गया सिराणइ।—का दे प्र

तेतलउ—देखो 'तेतलौ' (रू भे) उ०—तेहनउ पुण्य हुवई तेतलउ। सामायक लीधं तेतलउ।—स कु

तेतला–वि०—उतने। उ०—जेतला दिहाडा तेतला प्रवाडा।
—रा.सा स

तेतलु, तेतलौ–वि० [सं० तत्रत्य] (स्त्री० तेतली) १ वहा का २ उतना।

उ०—१ जेतलाइ वन तेतलाइ चदन।—व स

उ०—२ अम्हि किम ए जाणिसु तुहितउ वनवासु जु तेतलु ए।
—प प च

रू०भे०—तेतलउ।

तेता—देखो 'त्रेता' (रू भे)

वि०—देखो 'तेते' (रू भे),

(स्त्री० तेती)

तेताळीस—देखो 'तयाळीस' (रू भे.)

तेतीस–वि० [सं० त्रयस्त्रिंशत्, प्रा० तेत्तीस, अप० तेत्तिस] तीस और तीन का योग।

स०पु०—तेतीस की सख्या, ३३।

रू०भे०—तेंतीस, तेतीसू, तेत्रिस, तेत्रीस, त्रेतीस।

तेतीसमौं, तेतीसवौं–वि०—तेतीसवा।

(स्त्री० तेतीसमी, तेतीसवी)

रू०भे०—तेत्रीसमौं।

तेतीसू—देखो 'तेतीस' (रू भे) उ०—जपै नर नार उभै कर जोड। करै सुर सेव तेतीसू कोड।—ह र.

तेतीसे'क–वि०—तेंतीस के लगभग।

तेतीसो–स०पु०—३३ की सख्या का वर्ष।

रू०भे०—तेंतीसो।

तेते–वि०—उतने। उ०—तेते पाव पसारिये, जेती लाबी सौर।

क्रि०वि०—तब, तक। उ०—प्राण गाठ जेते प्रबत, इण तन माफळ ऐह। क्यावर तेते नाम कर, दाम गाठ मत देह।—बा.दा.

वि० (स्त्री० तेती) उतना। उ०—दाता धन जेतौ दिये, जस तेतौ धर पीठ।—बा दा.

अल्पा०—तेतलौ।

तेत्रिस, तेत्रीस—देखो 'तेतीस' (रू.भे.)

तेत्रीसमौं—देखो 'तेतीसमौ' (रू.भे.)

तेथ, तेथि, तेथी, तेथो–क्रि०वि० [सं० तत्र] वहा, वहा।

उ०—१ सहर अजमेर वडो गढ। तेथ राजा वीसळदे चहुवाण राज्य करै।—देवजी वगडावता री वात

उ०—२ मधू मास आसोज मे रास मडै। तिहू लोक री डोकरी तेथि तडै।—मे म

उ०—३ एकौ लाखा आगमै, सीह कहीजे सोय। सूरा जेथी रोडियै, कळहळ तेथी होय।—हा झा

उ०—४ सावक थयउ चित्र सारथी, ते लेइ गयउ तेथो जी। पर-देसी पापी हुतउ, कहइ जीव जुदउ न केथो जी।—स कु.

तेन–स०पु० [सं० स्तेन] चोर (ह ना.)

तेनाळ—देखो 'तहनाळ' (रू.भे)

तेनेता–स०पु० [सं० त्रिनेत्र] महादेव, शिव।

तेपन—देखो 'तिरेपन' (रू भे)

तेपनमौं, तेपनवौं—देखो 'तिरेपनमौ' (रू.भे)

(स्त्री० तेपनमी, तेपनवी)

तेपने'क—देखो 'तिरेपनेक' (रू भे)

तेपनौ, तेपन्नौं—देखो 'तिरेपनौ' (रू भे) उ०—इम सतरैसै तेपनै वरसै दीप परव सुदीसए।—ध व ग्र.

तेपरार—देखो 'तैपरार' (रू भे)

तेपैंलेदिन—देखो 'तैपैंलेदिन' (रू भे)

तेम–क्रि०वि०—इस प्रकार, तैसे। उ०—अभपती जती गोरख अेम। तंरै सख बारह पथ तेम।—वि स.

तेमडा, तेमडाराय–स०स्त्री०—चारणकुलोत्पन्न प्रसिद्ध आवड देवी का एक नाम। उ०—भालाळ पीठ रछपाळ भाळ, तेमडाराय तीसरी ताळ।—पा प्र.

तेमडो–स०पु०—जैसलमेर का एक पर्वत जिस पर आवड देवी का एक मन्दिर स्थित है।

तेमण—देखो 'तींवण' (रू भे)

तेमरू–स०पु०—आबनूस का वृक्ष।

तेमा–क्रि०वि०—तैसा। उ०—नही नेमा अेमा यम नहिन तेमा दगन मे।—ऊ का

तेयसी—देखो 'तेजसी' (रू भे.) (जैन)

तेय—१ देखो 'तेज' (रू भे) उ०—तेय परिक्कमि आगळउ, पुणि नारिविरत्तउ। सामि सुलक्खण सामळउ, सिवसिरिअणुरत्तउ।
—प्राचीन फागु सग्रह

तेयलेस्सा—देखो 'तेजोलेश्या' (रू भे) (जैन)

तेयस्सरीर—देखो 'तेजस-सरीर' (रू भे) (जैन)

तेयाळ—देखो 'तयाळीस' (रू भे)

तेयो—देखो 'तीयो' (रू भे)

तेर, तेरइ—देखो 'तेरै' (रू भे) उ०—सवत तेर इकोतरइ, देस लहर अधिकारी जी।—स कु

तेरतेरम, तेरमउ, तेरमो-वि० [स० त्रयोदशम्] तेरहवा।
उ०—१ तेरम विमळ अज्जा लज उपर आठसै जाण।—ध.व ग्र.
उ०—२ तेरम सयोगी गुणधाम।—वृहत स्तोत्र
उ०—३ मत्स्यदेसि जाई नइ रमउ। ए तेरमउ वरसु तीगमउ।
—प प च
उ०—४ वारै वेला नै तेरमों तेलो।—जयवाणी
रू०भे०—तेरहमो।

तेरस, तेरसि, तेरसी-स०स्त्री० [स० त्रयोदशी] प्रत्येक मास के किसी पक्ष की तेरहवी तिथि।

तेरह—देखो 'तेरै' (रू भे)

तेरहमों, तेहरवों—देखो 'तेरमों' (रू भे)
(स्त्री० तेरहमी, तेरहवी)

तेरही-स०स्त्री०—मृतक की दाह क्रिया के बाद प्रेत कर्म की तेरहवीं तिथि जिसमें पिंड दान कर ब्राह्मणभोज दिया जाता है।

तेराणमों, तेराणवों—वि०—६३ वां, तिरानुवा, क्रम मे ६३ के स्थान पर पडने वाला।
स०पु०—६३ का वर्ष।
रू०भे०—ताणूमों, तेराणूमों, तिराणवों, तेराणूवों।

तेराणू-वि० [स० त्रयोनवति, प्रा० तेणउइ] नव्वे से तीन अधिक, नव्वे और तीन का योग।
स०पु०—नव्वे से तीन अधिक की सख्या, उक्त सख्या को सूचित करने वाला अक, ६३।
रू०भे०—तराणू, तिराणु त्याणू, तिराणवे, तिराणू

तेराणूक-वि०—तिरानवे के लगभग।

तेराणूमों, तेराणूवों—देखो 'तेराणमों' (रू भे)
(स्त्री० तेराणूमी, तेराणूवी)

तेरा—देखो 'तेर' (रू भे) उ०—तेरासै समत वरस इकतीसै, जवन हीदवा हुवो जुद।—महाराणा स्री गढ लछमणसिह रो गीत
सर्व०—'तू' का सम्बन्धकारक रूप, तुम्हारा।
(स्त्री० तेरी)

तेरातार्ळी-स०स्त्री०—१ वाद्य की एक क्रिया विशेष जिसमे एक ही व्यक्ति अपने हाथ से शरीर पर १३ स्थानो पर बधे हुए मजीरो को बजाता है। इसके साथ ढोलक और तदूरे की लय मिलाई जाती है. २ इस प्रकार के वाद्य से उत्पन्न होने वाली ध्वनि. ३ उक्त प्रकार के वाद्य को बजाने वालो की मडली।

तेरापथ—जैन श्वेताम्बर शाखा की एक प्रशाखा।
वि०वि०—आचार्य भिक्षुगणि ने विक्रम सवत १८१७ मे साध्वाचार को शुद्ध और सुदृढ़ बनाने के लिए व अहिंसा दयादान आदि को यथार्थ स्वरूप मे उपस्थित करने के लिए प्रवर्तित किया। आरम्भ मे १३ साधु होने से इसे तेरापथ कहा गया।

तेरापथी-स०पु०—जैन सम्प्रदाय की तेरापथ शाखा का अनुयायी।

तेरायळ-वि०—१ बदमाश, दुष्ट २ क्रोधी. ३ दोगला।
मि०—'आयल'।
रू०भे०—तैरायल।

तेराहियो-स०पु० [स० त्र्यहिक] एक प्रकार का ज्वर जो हर तीसरे दिन आता है (जैन)

तेरिंदी-स०पु०—तीन इन्द्रिय वाला जीव या प्राणी। उ०—वेइदी तेरिंदी नै चोरिंदी मझारे।—ध व ग्र

तेरीर—देखो 'तहरीर' (रू भे)

तेरूडो-स०पु०—मकर सक्राति के दिन स्त्रियो द्वारा किया जाने वाला व्रतोद्यापन जिसमे उपवास करने वाली स्त्री १३ कुमारी कन्याओ को एक ही प्रकार की एक वस्तु भेंट करती है। यही क्रिया निरन्तर तेरह वर्ष तक की जाती है और एक बार भेंट की जाने वाली वस्तु या पदार्थ दुबारा नही दिया जाता।

तेरू, तेरुडो, नेरू-वि० (स्त्री० तेरुडी) तैरने की विद्या मे कुशल, तैराक
उ०—फिरिया नही फेरू मारग मेरू तेरू पार तिरदा है।—ऊ.का
रू०भे०—तैरू।
अल्पा०—'तेरुडो'।

तेरे—देखो 'तेरै' (रू भे)
सर्व०—तुम्हारे।

तेरैक-वि०—तेरह के लगभग।

तेरै-वि० [स० त्रयोदश, प्रा० तेरस तेरह] दस से तीन अधिक, तेरह.
स०पु०—दस से तीन अधिक की सख्या, उक्त सख्या को सूचित करने वाले अक, १३।
रू०भे०—तेर, तेरइ तेरह, तेरा, तेरे, तैरै।

तेरोडो, तेरो-सर्व० (स्त्री० तेरी, तेरोडी) तेरा, तुम्हारा।
उ०—जाळू बाळू रे सूवा तेरोडी चाच। तू म्हारो वीर जगावियो।
—लो.गी.
अल्पा०—तेरोडो।

तेरो—तेरह की सख्या का वर्ष।

तेलग—देखो 'तिलग' (रू भे)

तेल-स०पु० [स० तैल] बीजो या वनस्पतियो आदि से विशेष क्रिया द्वारा निकाला जाने वाला स्निग्ध तरल पदार्थ जो पानी से हलका

होता है और उसमे घुल नही सकता है । यह अग्नि के संयोग से जल भी जाता है और विशेष प्रकार का अधिक सर्दी पा कर जम भी जाता है ।

मुहा०—१ तेल उतरणी (उतारणी) विवाह की एक रस्म जिसमे शादी के उपरात दूल्हे और दुलहिन के घर पर उनके कुटुम्ब की चार या सात सधवाएं अथवा कुमारी कन्याए हल्दी मे तेल मिला कर वर के या वधू के शिर पर फिर कधो या भुजाओ पर, फिर घुटनो पर, तत्पश्चात् पैरो के नाखूनो पर दोनो हाथो से वह तेल मिली हल्दी लगाती है । यह क्रिया हर स्त्री अथवा कन्या अपने दोनो हाथो को मिला कर चार बार या सात बार करती है । इस क्रिया के साथ गीत भी गाती रहती हैं २ तेल काढणौ—तेल निकालना, परेशान करना, तग करना ३ तेल चढणौ—तेल चढना, तेल की मालिश करने पर त्वचा पर तेल का प्रभाव होने से उसमे विकार होना ४ तेल (चढाणौ) चाढणौ—विवाह की एक रस्म जो साधारणत विवाह से दो दिन तथा कही-कही चार पाच दिन पूर्व होती है जिसमे वर और वधू को अपने-अपने परिवार की कुमारी कन्याए तथा सुहागिन स्त्रिया हल्दी मे मिला तेल पैरो से शिर की ओर लगाते हैं । राजपूतो मे यह रस्म बारात के दुलहिन के घर पर पहुँचने पर दूल्हे और दुलहिन को तेल चढाया जाता है । ५ तेल तिला री धार देखणी—तेल देखो तिलो की धार देखो—प्रतीक्षा करना, सोच-समझ कर करना ६ तेल पाडणौ—परेशान करना, तग करना ७ तेल पावणौ—अधिक कष्ट देना, सताना, जबान बन्द करना, मूक बनाना ८ तेल बळणौ—तेल जलना, अधिक खर्च होना, धन का व्यय होना । ९ तेल जितै खेल—जितना तेल उतना ही खेल । जितनी आयु उतना ही जीवन । जितनी शक्ति उतना ही काम. १० तेल तेली रो बळै मसालची री गाड दयू बळै—तेल तो तेली का जलता है फिर मसालची क्यो क्रुद्ध होता है । जब हानि या व्यय किसी का हो और अन्य व्यक्ति चिढता है तब यह मुहावरा कहा जाता है ११ तेल तौ तिला सू ही निकळै—तेल तो तिलो से ही निकलता है । जिस वस्तु की प्राप्ति जिस स्थान से होती है वह वही से प्राप्त होगी अन्यत्र से नही । निर्माण के लिए पैसा पूजीपतियो से प्राप्त होगा ।

तेलकार—स०पु० [स० तैलकार] तेल का व्यवसाय करने वाला ।
रू०भे०—तैलकार ।

तेलग—देखो 'तिलग' (रू भे)

तेलडो—वि०—१ तीन लड वाला २ तीन परत या तह का ३ तीन पक्तियो का ।
(स्त्री० तेलडी)

तेलण—स०स्त्री०—तेली की स्त्री, तेलिन ।
रू०भे०—तेलिण ।

तेल-फुलेल—स०पु०यौ०—इत्र, पुप्पसार । उ०—पुणची मटकादार, पना काचा हरियाळा । अध वेस हुवो दीसै बुरो, धरते तेल्फुलेल रै ।
—अरजुणजी बारहठ

तेळा, तेलास—स०स्त्री०—१ ऊट पर तीन व्यक्तियो की सवारी, ऊंट पर सवार तीन व्यक्ति ।

तेळायो—स०पु०—वह ऊट जिस पर तीन व्यक्तियो की सवारी हो ।
रू०भे०—तैळायो ।

तेलार—स०पु०—तेली । उ०—रंगकार तेलार विनु, विनु कलार दरवेस । सारबध 'लावै' असुर, पुर नहि करत परवेस ।—ला.रा.

तेलिण—देखो 'तेलण' (रू.भे)

तेलियो—वि०—१ तेल की तरह चिकना और चमकीला ।
मुहा०—तेलिया करणा—राज-सत्ता के विरुद्ध तेल मे कपडे भिगो कर जल कर मर जाना (प्राचीन)
२ तेल के रग का, मटमैला । उ०—आटाळी पाघडी बाध नै तेलियो पागळ माथै चढ'र सेठ जठैई जावता खूब आव-आदर होवतौ पण औ आव-आदर होवतौ ऊपरला मन सू ईज ।—रातवासो
स०पु०—१ तेल के रग का ऊट विशेप ।
२ उक्त रग का घोडा. ३ एक प्रकार का बबूल ४ सीगिया नामक विप ५ श्याम रग का भैरव । उ०—तमासो घतावण वीस हत तेलिया । लार रिझवार गोरा सहत लेलिया ।—महादान महडू
६ एक तरह का साप (शेखावाटी) ७ तेल मे भीगा वस्त्र
८ एक प्रकार का सिंह ९ 'हावू' से कुछ बडा एक प्रकार का वर्षा ऋतु मे होने वाला कीडा विशेप (शेखावाटी)
(मि० तेली)

तेलियो-कद—स०पु०यौ० [स० तैलकद] एक प्रकार का जमीकद । जिस भूमि मे यह उत्पन्न होता है वह तेल से सीची हुई जान पडती है ।

तेलियो-कत्थो—स०पु०यौ०—एक प्रकार का कत्था जो अदर से काले रग का होता है ।

तेलियो-कुमैत—स०पु०यौ०—वह घोडा जिसका रग अधिक कालापन लिए लाल या कुमैत होता है ।

तेलियो-पाणी—स०पु०यौ०—१ बहुत खारे स्वाद का भारी पानी
२ वह पानी जिस पर तेल सी चिकनाई तैरती हो ।

तेलियोसुरग—देखो 'तेलियो-कुमैत'

तेलियो सुहागो—स०पु०यौ०—एक प्रकार का सुहागा जो देखने मे बहुत ही चिकना और श्याम रग का होता है ।

तेली—स०पु० [स० तैलिक] (स्त्री० तेलण) सरसो, तिल आदि पेर कर तेल निकालने का व्यवसाय करने वाली जाति तथा इस जाति का व्यक्ति ।
वि०वि०—राजस्थान मे तेल पेरने का व्यवसाय हिन्दू व मुसलमान दोनो जाति के लोग करते है । अत तेल पेरने का व्यवसाय करने वाली मुसलमान जाति को तेली तथा हिन्दुओ को घाची भी कहते हैं । व्यवसाय के हिसाब से इनमे कोई अन्तर नही है, केवल धर्म का अन्तर है ।
यौ०—तेली-तबोळी, तेलीवाडो ।

तेलीवाडो-स०पु० [स० तैलिक +पाटक] वह मोहल्ला या कूचा जहाँ तेलियो का निवास हो।

तेलू-स०स्त्री०—चिकनाई, स्निग्धता।

तेळो, तेलो-स०पु०—१ स्त्रियो द्वारा किया जाने वाला एक उपवास जो तीन दिन की अवधि का होता है २ तीन दिन तक निरन्तर किया जाने वाला उपवास (जैन) उ०—१ ग्रहस्थ खूचणो काढै जिसो काम करै तो तेला री दड।—भि द्र.

उ०—२ वैग्स वैरागी त्यागी तन तावै। बेला तेला विधि सहजा वण आवै।—ऊ का

३ भाद्रपद की शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा तक का गो सेवा का एक व्रत विशेष।

४ एक ही स्त्री से एक साथ उत्पन्न होने वाले तीन बच्चे।

५ देखो 'तेलियो' (मह, रू.भे)

तेवड-स०स्त्री०—१ तैयारी। उ०—राज हिमें चालण री तेवड करो जान करै नै परणीजण पधारो।—लो.गी.

क्रि०प्र०—करणी, कराणी।

२ तीन लडो से बटी जाने वाली रस्सी की एक लड।

स०पु०—३ विचार. ४ निश्चय।

वि०—तीन तह वाला, तिगुना, तिहरा। उ०—व्याव मडचो श्रे भली हुई, दीज्यो थे दोवड तेवड दान, सोदागर महदी राचणी।
—लो गी.

तेवडणो, तेवडबो-क्रि०स०—१ विचारना, सोचना। उ०—तेवडा रीत द्वापुर तणी, इळ रावा कौरत अमर। कहि समर वात पिसण करा, मराजाम हूता समर।—सू प्र.

[स० त्रिगुणाकरणम्] २ निश्चय करना, तय करना।

उ०—पछै कुवर भीमसिहजी नू राज देणो तेवडियो नै राणाजी नू कुवर जैसिहजी नू चूक तेवडायो।—वा दा. ख्यात

३ दृढतापूर्वक निश्चय करना। उ०—इसडी वात विचार नै कुमर बोलाव्यो पास रे लाला। राणी जितरी मन माहे तेवडी तितरी दीधी परकास रे लाला।—जयवाणी

तेवडणहार, हारो (हारी), तेवडणियो—वि०।

तेवडाडणो, तेवडाडबो, तेवडाणो, तेवडाबो, तेवडावणो, तेवडावबो—प्रे०रू०।

तेवडिग्रोडो, तेवडियोडो, तेवड्योडो—भू०का०कृ०।

तेवडीजणो, तेवडीजबो—भाव वा०।

तेवडियोडो-भू०का०कृ०—१ विचारा हुआ २ निश्चय किया हुआ ३ दृढतापूर्वक विचारा हुआ।

(स्त्री० तेवडियोडी)

तेवडो-वि० (स्त्री० तेवडी) तीन परत या तह वाला, तिहरा, तिगुना उ०—आरोह पखर धर उडड, सिलह सम्म्र धर ऊससै। तेज मे दुरग सभि तेवडै, जग 'मुरादि' अवरग जसै।—सू प्र.

तेवट-स०स्त्री०—तबले के बोल, एक ताल।

स०पु०—देखो 'तेवटियो' (मह, रू.भे)

तेवटियो, तेवटो-स०पु०—१ स्त्रियो के गले मे पहिनने का एक प्रकार का आभूषण। उ०—१ गरदन जसकी गागडी, तक कुरज तरारा। नस मे बाध्या तेवटा, झळ मोती ऊपरा।—मयाराम दरजी री बात

उ०—२ तेवटियो घडावू पनडी आळी मेहडो हुवण दे।
—लो गी.

२ तीन जोड लगा हुआ पुरुषो के ओढने का या पहिनने का सफेद वस्त्र।

रू०भे०—त्रेवटो।

अल्पा०—तेवटियो।

(मह० तेवट)

तेवडउ-वि०—इतना, उतना (उ र)

तेवण—देखो 'तीवण' (रू भे)

तेवणियो-स०पु०—कूए से पानी निकालने वाला।

रू०भे०—तीवणियो।

तेवणो, तेवबो-क्रि०स०—कुए से चरस द्वारा पानी निकालना।

उ०—ताहरा आगै सेंचाळ कोहर तेवै छै, पणिहार घडो भरियो छै।
—नैणसी

तेवणहार, हारो (हारी), तेवणियो—वि०।

तेववाडणो, तेववाडबो, तेववाणो, तेववावो, तेववावणो, तेववावबो, तेवाडणो, तेवाडबो, तेवाणो, तेवाबो, तेवावणो, तेवावबो—प्रे०रू०।

तेविग्रोडो, तेवियोडो, तेव्योडो—भू०का०कृ०।

तेवीजणो, तेवीजबो—कर्म वा०।

तीवणो, तीवबो—रू०भे०।

तेवर, तेवरी-स०स्त्री० [स० त्रिकूट] १ क्रोध भरी चितवन, त्योरी

मुहा०—तेवर बदळणो—त्योरी बदलना, क्रोध प्रकट करना।

२ भौंह, भ्रकुटी।

तेवाडणो, तेवाडबो, तेवाणो, तेवाबो-क्रि०स० ('तेवणो' क्रिया का प्रे०रू०) कुए से चडस द्वारा पानी निकलवाना। उ०—सो नापो ऊपर खडो छै, कोहर तेवायो सो वारा आठ नो नीसरिया।
—नापे साखले री वारता

तेवारी—देखो 'तिवारी' (रू भे)

तेवीस—देखो 'तेईस' (रू.भे)

तेवीसमउ, तेवीसमों—देखो 'तेईसमो' (रू भे)

(स्त्री० तेवीसमी)

तेवीसो—देखो 'तेईसो' (रू भे)

तेवोतर—देखो 'तिहोतर' (रू भे)

तेवोतरै'क—देखो 'तिहोतरै'क' (रू भे)

तेवोतरो—देखो 'तिहोतरो' (रू भे)

तेस-क्रि०वि०—१ वहा २ देखो 'तैस' (रू भे)

तेसठ—देखो 'तिरेसठ' (रू.भे.)

तेसठमों—देखो 'तिरेसठमों' (रू भे)

(स्त्री० तेसठमी)

तेसठें'क—देखो 'तिरेसठेक' (रू भे.)

तेसठो—देखो 'तिरेसठो' (रू भे.)

तेसो-सर्व०—तैसा, वैसा।

तेह-स०पु० [स० तैक्ष्ण्य] १ क्रोध, गुस्सा। उ०—मोटा वाळो धीरज मोटी, खावद कीध इती तै खोटी। पैली अगद कीध परोटी, ताण पछै किय तेह।—र रू

२ अहकार, गर्व ३ देखो 'तै' (रू भे.) उ०—१ वस्तु अपूरव दीठी जेह, मुझ आगळि परगासउ तेह।—ढो मा

उ०—२ कहिया रेहा कूड नेंह, वेहा बायक अेह। जे जेहा, जेहा नहीं, त्यागो केहा तेह।—बा दा.

उ०—३ घमासो भलो पागरै, ऊडै जावत तेह। वे नर कदे इ न वावडै, पर नारी सू नेंह।—र रा.

उ०—४ दानादिक सम भाखियउ रे, अरचा नउ फळ सूध। महा-निसीथे ते लहइ रे, तोस्यू तेह असूध।—वि कू

तेहखानो—देखो 'तहखानो' (रू भे.)

तेहडो-वि० (स्त्री० तेहडी) तैसा, वैसा। उ०—वाणिज विण साह सहर हाटा विण, जळ विण गाव वसै जेहडो। विण गाया व्रिखभ, सभा पडित विण, विण महमा तीरथ तेहडो।—सुरताण कवि

रू०भे०—तेहरो।

तेहतर—देखो 'तिहोतर' (रू भे)

तेहतरो—देखो 'तिहोतरो' (रू भे)

तेहत्त—देखो 'तहत्त' (रू भे.)

तेहयो-स०स्त्री०—बकरी के बालो से बुना फर्श पर बिछाने का वस्त्र जो प्राय तीन हाथ लम्बा होता है।

तेहरो—देखो 'तेहडो' (रू भे)

(स्त्री० तेहरी)

तेहवइ-वि०—तैसी, वैसी।

क्रि०वि०—तब।

तेहवउ-वि०—तैसा, वैसा। उ०—१ जेहवउ तेहवउ दरसणी, सेत्रुजइ पूजनीक। भगवत नउ वेस वादता, लाभ हुवइ तहतीक।—स.कु.

उ०—२ समय अछइ इण रीत नू, तउ पिण वखत प्रमाण। मुझ नइ प्रभु तेहवउ मिळयौ, सहज सुरग सुजाण।—वि.कु

क्रि०वि०—तब।

तेहवि, तेहवी-वि०—तैसी, वैसी। उ०—जेहवी मित्राई भेखधारी नी तेहवी हो कापुरसा वाहडी।—वि कु.

क्रि०वि०—उस समय, तब। उ०—१ वाडव बहु करि छि भोजन, तेहवी ते द्विज बोलि। नारी कोए नही तुझ सरखी, नर नहीं को नळ-तोलि।—वि कु

तेहवै-क्रि०वि०—तब। उ०—महल पधारचो पदमिणि, तेहवै बादळ माय आवत। सगळी वात सुणी करी, पासै ऊभी आय रावत।—प च चौ

तेहवो-वि० [स० तादृश, प्रा० ताइस] (स्त्री० तेहवी) तैसा, वैसा।

उ०—१ जेहवा रूप छौ तेहवो तोल रे।—धर्मपत्र

उ०—२ तेहवा हीज फळ थाय।—वि कु

तेहस्यू-क्रि०वि०—उससे। उ०—तास तणा मदिरि वीसमइ, भोगी पुरुख तेहस्यू रमइ। वावि सरोवर वाडी कुआ, नगर निवेसि ढळइ ढीकुआ।—का दे प्र.

तेहि-क्रि०वि०—वहाँ, तहाँ। उ०—मुनि देख दरी माय तेहि मज छांह तोय। जठै वनै चरा जाय सोवजै इकत।—र रू

सर्व०—उस। उ०—राजा धीर धवळ पाटण लियो। वरस ४५ मास ३ दिन १ राज कियो। तेहि न पाट वीसळदे हुवौ।—नैणसी

तेही-वि० [स० तीक्ष्ण] १ गुस्सा करने वाला, क्रोधी २ तैसी, वैसी।

क्रि०वि०—उसी प्रकार। उ०—तिणि ताळि सखी गळि स्यामा तेही, मिळि भमर भारा जु महि।—वेलि.

तेहुत्तरि—देखो 'तिहोतर' (रू भे.)

तेहोतर—देखो 'तिहोतर' (रू भे.)

तेहोतरमों—देखो 'तिहोतरमो' (रू भे)

(स्त्री० तेहोतरमी)

तेहोतरे'क—देखो 'तिहोतरे'क' (रू भे)

तेहोतरो—देखो 'तिहोतरो' (रू भे.)

तेहो-वि० (स्त्री० तेही) तैसा, उस प्रकार का। उ०—जेहो पातल जो मरद, मेलण गरद अमेल। तेहो जारज पातसा, हरक वढावण हेल।

—किसोरदान बारहठ

सर्व०—वह। उ०—१ अलिकापुरी सम तेहो रे।—वि कु

उ०—२ छूटइ तप करि तेहो जी।—स कु

तैं—देखो 'तं' (रू भे) उ०—तीन कारज तै आगै सारचा, अबकै करदो निवेरो। नरसी मू तो चाकर थारो, जनम-जनम को चेरो।

—रतनो खाती

उ०—२ मोती धूड मिळाविया, तैं सादूळ तमाम। देतो सदा जणाय दुप, किळ श्री होणो काम।—वा.दा

उ०—३ मिरजो इब्राहम मेन बीजा भाइया हुता टळि नै हिंदुस्थान नू नीसरियो हुतो। तै ऊपरि पातिसाह अकबर वासो कियो।—द वि.

उ०—४ राजस अहकार तै दम इद्री नीपनी।—द वि

उ०—५ आपणी ही ऐव तै असूझणू गयो।—ऊ का

तैंडो-सर्व० (स्त्री० तैंडी) तेरा। उ०—तैंडा असूदा तुझक दूणे दन सदा। एक थपदा असपई एकै उथपदा।—सू प्र.

रू०भे०—तैंडी।

तैनाळ—देखो 'तहनाळ' (रू भे)

तैयासियो—देखो 'तइयासियो' (रू.भे.)

तैयासी—देखो 'तइयासी' (रू.भे.)

तैयासीमों-वि०—तिरासीवाँ. ८३वाँ।

तै-स०पु० [अ०] १ निर्णय, फैसला, निबटारा. २ निश्चय।

क्रि०प्र०—करणो, कराणो, होणो।

रू०भे०—तह ।

३ मोह. ४ हित (एका)

स०स्त्री०—५ काति ६ ध्वनि (एका) ७ परत, तह, पट ।

वि०—१ जिसका फैसला हो चुका हो २ जो पूरा हो चुका हो, समाप्त ।

सर्व०—१ जिसको, उसको । उ०—चकडोळ लगै इणि भाति सु चाली, मति तै वाखाणण न मू । सखी समूह माहि इम स्यामा, सीळ आवरित लाज सू ।—वेलि

२ तू, तुम, आप । उ०—तै थप्पै सूर धरम, धरम उसरा उथप्पै । देवळ तीरथ देव सुरहि इवकार समप्पै ।—रा रू

३ उस, वह । उ०—ताहरा मुरिखै राजा री कुवरी रै महल हेटै साहरौ घर हुतौ तै माहे कूद पडिया ।—चौबोली

अव्य०—एक अव्यय जिसका व्यवहार किसी शब्द पर जोर देने के लिय या कभी-कभी यो ही किया जाता है।

उ०—अत थारौ जस ऊजळौ जेहल दिस दिस जोय । हिमकर तै घट वध हुवै, हिमगिर गळ जळ होय ।—बा दा

प्रत्य०—तृतीया या पचमी विभक्ति, से । उ०—केहर कुभ विदारियौ, तोड दुहत्था दत । रुहिर कळाई रत्तडी, मद तर तै महकत ।

—बा दा

रू०भे०—तै ।

तैई-सर्व०—तेरी ।

तै'कीक—देखो 'तहकीक' (रू भे)

तै'कीकत, तै'कीकात, तै'कीगात—देखो 'तहकीकात' (रू भे)

उ०—मै तो चोखी तरै सु विचार कर लियो दाना मिनखा सु पण तै'कीगात करली ।—वरसगाठ

तै'खानौ—देखो 'तहखानौ' (रू भे.)

तैगधारी—देखो 'तेगधारी' (रू भे) उ०—कळो थारी तखत सु ऊथाप खीरोद केहौ । तैगधारी रोद केहौ थापसी तगत ।—वखतौ खिडियौ

तैडी-वि०स्त्री०—तैसी, वैसी ।

तैडौ-वि० (स्त्री० तैडी) तैसा, वैसा ।

तैजस-वि०—१ ग्रहण किए हुए आहार को पचाने वाला (जैन)

२ देखो तेजस' (रू भे)

तैडौ—देखो 'तंडौ' (रू भे) उ०—नढ रै नीगर दे ज्यु अम्मा त्यु मैंडै तु साम । जीलु अदर जेद है, नही भुल्ला तैडा नाम ।

—घ व.ग्र.

तैण-वि०—तैसा, वैसा ।

सर्व०—उस, वह । उ०—जपे जू कीरत जैण री, सो थके रसना तैण री ।—र रू

तैतल, तैतिल-स०पु० [स० तैतिल] १ ज्योतिष मे ग्यारह करणो मे से चौथा २ देवता ।

रू०भे०—तितिल, तैत्तिल ।

तैत्तिरि-स०पु० [स०] कृष्ण यजुर्वेद के प्रवर्तक एक ऋषि का नाम ।

तैत्तिरीय-स०स्त्री० [स०] कृष्ण यजुर्वेद की छियासी शाखाओं मे से एक ।

तैत्तिरीयक-स०पु० [स०] तैत्तिरीय शाखा का अनुयायी ।

तैत्तिरीयारण्यक-स०पु० [स०] तैत्तिरीय शाखा का आरण्यक ग्रथ जिसमे वानप्रस्थो के लिए उपदेश हैं ।

तैत्तिल—देखो 'तैतिल' (रू भे)

तैथ, तैथू-क्रि०वि० [स० तत्र, प्रा० तत्थ] वहाँ ।

उ०—तु जग जीवन प्राण आधार, तू मेरा पुत्ता बहुत पियारा । तैथू वजा घोळ ऋषभ जी, आउ असाडा कोल ।—स कु.

तैनात-वि० [अ० तअय्युनात] १ किसी कार्य पर लगाया या नियत किया हुआ, मुकर्रर, नियुक्त । उ०—बीजा मनसबदार साथ घणा दिया तिण मे केसरीसिंह जोधौ हजारी रो मनसबदार थो सो उहा नू तैनात कियो ।—अमरसिंह राठौड री वात

क्रि०प्र०—करणो, कराणो, होणो ।

२ तत्पर, तैयार ।

रू०भे०—तइनात, तइनाथ, तईनात ।

तैनाती—देखो 'तईनाती' (रू.भे)

तैनाळ—देखो 'तइनाळ' (रू भे)

तैपरार-स०पु० [स० तत्परारि] गत दो वर्षों के पहिले का वर्ष, बीते हुए वर्षों मे तीसरा वर्ष ।

रू०भे०—तेपरार ।

तैपैलैदिन-स०पु०—वर्तमान समय से गत या आने वाला पाचवा या छठा दिन ।

रू०भे०—तेपैलैदिन ।

तैम-वि०—तैसे । उ०—'अभपती' जती गोरक्ख एम, तैरै मग्ग बारह पथ तैम ।—वि स

तैयाळिसेक—देखो 'तयाळिसेक' (रू.भे)

तैयाळी, तैयाळीस—देखो 'तयाळीस' (रू भे.)

तैयाळीसमौं, तैयाळीसवौं—देखो 'तयाळीसमौं' (रू भे)

तैयाळीसौ—देखो 'तयाळीसौ' (रू भे)

तैयासियेक—देखो 'तइयासीक' (रू भे)

तैयासी—देखो 'तइयासी' (रू भे)

तैयासीमौं—देखो 'तयासीमौं' (रू भे)

तैयासीयौ—देखो 'तयासीयौ' (रू भे)

तैयार-वि० [अ०] १ जो काम के लिए बिल्कुल उपयुक्त हो, सब तरह से ठीक, लैस २ तत्पर, उद्यत ३ मौजूद, उपस्थित ४ हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा ।

रू०भे०—तइयार, तयार, तय्यार, तियार, तीयार ।

तैयारी-स०स्त्री० [अ० तैयार+रा प्र ई] १ तैयार होने की क्रिया या भाव. २ तत्परता, मुस्तैदी ३ धूमधाम. ४ सजावट ५ प्रबन्ध ।

रू०भे०—तयारी, तियारी, त्यारी ।

तैयो–स०पु०—मिट्टी का वह छोटा पात्र जिसमे कपडे को छपाई करने वाले छापने के लिए रग रखते है ।

तैरणो, तैरबो—देखो 'तिरणो, तिरबो' (रू भे)

तैरणहार, हारो (हारी), तैरणियो—वि० ।

तैरवाडणो, तैरवाडबो, तैरवाणो, तैरवाबो, तैरवावणो, तैरवाववो —प्रे०रू० ।

तैराडणो, तैराडबो तैराणो, तैराबो, तैरावणो, तैराववो—क्रि०स०

तैरिप्रोडो, तैरियोडो, तैरचोडो—भू०का०कृ० ।

तैरीजणो, तैरीजवो—भाव वा० ।

तैराई–स०स्त्री०—१ तैरने की क्रिया या भाव २ वह धन जो तैरने के काय के लिए मिले ।

रू०भे०—तिराई ।

तैराक–वि०—तैरने वाला, तैरने मे दक्ष ।

रू०भे०—तिराक, तेरू ।

तैराडणो, तैराडबो—देखो 'तिराणो, तिराबो' (रू भे)

तैराडियोडो—देखो 'तिरायोडो' (रू भे)

(स्त्री० तैराडियोडी)

तैराणो, तैराबो—देखो 'तिराणो, तिराबो' (रू भे)

तैराणहार, हारो (हारी), तैराणियो—वि० ।

तैरायोडो—भू०का०कृ० ।

तैराईजणो, तैराईजबो—कर्म वा० ।

तरणो, तरबो, तिरणो, तिरबो, तैरणो, तैरबो—अक० रू० ।

तैरायळ—देखो 'तेरायळ' (रू भे)

तैरायोडो—देखो 'तिरायोडो' (रू भे)

(स्त्री० तैरायोडी)

तैरावणो, तैराववो—'तिराणो, तिराबो' (रू भे)

तैरावियोडो—देखो 'तिरायोडो' (रू भे)

(स्त्री० तिरावियोडी)

तैरियोडो–भू०का०कृ०—१ तैरा हुआ, पार किया हुआ ।
२ देखो 'तिरियोडो' (रू भे)

(स्त्री० तैरियोडी)

तैरीख—देखो 'तारीख' (रू भे) उ०—हमार दिवाळी छै, सारा साथ नू लार्खं जी सीख दी छै, फदं वैर वाळण रो मन मे छै तो फलाणी तैरीख वेगा आवज्यो ।—नैणसी

तैरू—देखो 'तेरू' (रू भे)

तैरै—देखो 'तेरै' (रू भे) उ०—'अभपती' जती गोरख एम, तैरै सख वारह पथ तैम ।—वि स

क्रि०वि०—तब ।

तैलग–स०पु०—१ दक्षिण भारत के एक प्रदेश का नाम ।

रू०भे०—तलिग, तिलग, तेलग ।

तैलगी, तैलगी–स०पु०—तैलग देश वासी ।

रू०भे०—तिलगी, तेलगो ।

तैलकार—देखो 'तेलकार' (रू.भे)

तैलको—देखो 'तहलको' (रू भे)

तैळायो—देखो 'तेळायो' (रू भे.)

तैलिग–स०पु०—ब्राह्मणो का एक भेद विशेष ।

तैवडो–वि०—१ तीन तह का २ तीन लड का ।

रू०भे०—ग्रेवडो, ग्रेवडी ।

तैवार, तैवार—देखो 'तिवार' (रू भे)

तैस–स०पु०—आवेश, क्रोध, गुस्सा, आवेग के साथ आने वाला क्रोध ।

तैसनैस—देखो 'तहस-नहस' (रू भे)

तैसील—देखो 'तहसील' (रू भे) उ०—मिळि के वादसाहू का अमल को उठाया । ऊ तीन वरस होगा तैसील कू न आया ।—शि व

तैसीलदार—देखो 'तहसीलदार' (रू भे)

तैसो–वि० (स्त्री० तैसी) उस प्रकार का, वैसा ।

रू०भे०—तैहो ।

तैहरू–स०पु०—हाथी की पीठ पर चारजामे के नीचे रखा जाने वाला एक वस्त्र का उपकरण विशेष जो प्राय २ गज लम्बा तथा ३॥ गज चौडा होता है । इसको गद्देदार बनाने के लिए इसमे रूई या चकमा डाला जाता है ।

तैहो—देखो 'तैसो' (रू भे.) उ०—सलागा रमा चख उरू ढाल जैहा । तकै तेजचली अरी साल तैहा ।—शि सु रू

तों—देखो 'तो' (रू भे) उ०—दा ओगण दुख दाई नै रै, दा ओगण दुखदाई नै । तो मे ओगण तार नही है, ओगण भाग अन्याई नै ।
—ऊ का.

तोंगड—देखो 'तागड' (रू भे)

तोंद—देखो 'तुद' (रू भे)

तोंदळ—देखो 'तोदीलो' (मह , रू भे.)

तोदी–स०स्त्री० [म० तुडी] नाभी ।

तोदीलो–वि० (स्त्री० तोदीली) जिसका पेट आगे बढा हो, तोंद वाला, तोदीला ।

मह०—तोदल, तोदेल (मह , रू भे)

तोंदेल—देखो 'तोदीलो' (मह , रू भे)

तो–सर्व०—१ तुम्हारा, तेरा । उ०—करहा तो वेसासडउ, मो विण सारघा काज । अतरि जउ वासउ हुवउ, मारू न मिळई आज ।
—ढो मा.

२ 'तू' शब्द का वह रूप जो उसे प्रथमा और षष्ठी के अतिरिक्त और विभक्तिया लगने के पहले प्राप्त होता है, तुझ । जैसे—तो को, तो नू, तो सू, तो से, ता पर, तो मे । उ०—१ भीलन कू न भळावियो, नही मेरा मीणाह । तो नू राण भळावियो, सोहडा सुकळीणाह ।—वा दा

उ०—२ मै कीयौ साचै मतै, नायक तो सू नेह। वण आवो सो देह वित, दाह विरह मत देह।—बा दा

३ 'तू' का कर्म और सप्रदान रूप, तुझको। उ०—१ चदा तो किण खडियउ, मो खडी किरतार। पूनिम पूरिउ ऊगसी, आवतइ अवतार।—ढो.मा.

उ०—२ ईडरिया आचार री, वोर चढै तो वेळ। हसत चढै चारण हुवै, माया सरसत मेळ।—बा दा

४ तेरे, तुम्हारे। उ०—१ नीर मिळै तो नीर मे, सायर माहि समाय। नर न्हावै तो नीर मे, जोत समावै जाय।—बा.दा

उ०—२ साळूरा पाणी विना, रहइ विलक्खा जेम। ढाढी साहिब सू कहइ, मो मन तो विण प्रेम।—ढो मा

उ०—३ तारण तरण नही को तो सारीखौ, पुहवि सहु सोभि नै ए लह्यौ पारिखो।—ध व ग्र

अव्य० [स० तद्] १ उस दशा मे, तव। उ०—१ सीखावि मयी राखी आखै सुजि, राणी पूछै रुखमणी। आज कही तो आप जाइ आवू, अव जाग्र अविका तणी।—वेलि

उ०—२ जिम जिम सज्जण सभरइ, तिम-तिम लग्गइ तीर। पख हुवइ तो जाइ मिळि, मना वधाडा धीर।—ढो मा

उ०—३ दादू मन ही सू मळ ऊपजै, मन ही सू मळ धोइ। सीख चलै गुरु साधु की, तो तू निरमळ होइ।—दादू वाणी

२ किसी शब्द पर जोर देने के लिये या कभी-कभी यो ही बोला जाने वाला एक अव्यय। उ०—सज्जण देसातर हुवा, जे दीसता नित्त। नयणे तो वीसारिया, तू मत विसरे चित्त।—ढो मा

रू०भे०—तौ।

तोइ, तोई—स०पु० [स० तोय] १ तेज, कान्ति, आभा।

उ०—'तीड' रो 'सळख' कुळ चाढ तोइ। दन लगा विरद अजवाळ दोइ।—सू प्र

२ देखो 'तोय' (रू भे)

सर्व०—१ तेरी। उ०—पत्री भमतउ जउ मिळइ, कहै अम्हीणी वत्त। घण कणयर की कब ज्यउ, सूकी तोइ सुरत्त।—ढो मा.

२ तुमसे, तुझसे, तुझे। उ०—सहिए फिरि समझावियउ, सुहिणइ दोस न कोइ। सउ जोयण साहिब वसइ, आण मिळावइ तोइ।

—ढो मा

अव्य०—इस पर भी, तो भी, तब भी। उ०—१ जइ खाडउ तोइ चद्र, जइ बाळउ तोइ इद्र। जइ ताव्यउ तोइ काचन, जइ घसउ तोइ चदन।—व स

उ०—२ सखिए सज्जण वल्लहा, जइ अणदिट्ठा तोइ। खिण खिण अतर सभरइ, नही विसारइ सोइ।—ढो मा

उ०—३ मारू तो इण कणमणइ, साल्हकुमर वहु साद। दामी तद दीवाघरी, साभळिया पडसाद।—ढो मा

उ०—४ घणी नोइ एक एकोइ घणी गोविद तु, चद्र-ग्रँ-गमा। देखँ सवाद सुख दुख री तु निसवादी श्रीरमा।—पी ग्र

उ०—५ सरिखा सू वळभद्र लोह साहियँ, वडफरि उच्छजतँ विरुधि। भलाभली सति तोई ज भजिया, जरासेन सिसुपाळ जुधि।—वेलि.

रू०भे०—तोहि, तोही, तोइ, तोई, तोहि, तोही।

तोईव—देखो 'तोयद' (रू भे.)

तोक-स०पु० [प्रा० तोक] १ हसुली के आकार का गले मे पहिनने का एक आभूषण २ हसुली के आकार का ही एक बहुत भारी वृत्ताकार उपकरण जो अपराधी के गले मे पहना देते थे ३ पक्षियो के गले मे वृत्ताकार प्राकृतिक चिन्ह ४ देखो 'तोख' (रू भे)

वि० [स० स्तोक] थोडा, कम, तुच्छ।

रू०भे०—तौक, तोख।

तोकणो, तोकवो—क्रि०स०—१ प्रहार करने को शस्त्र उठाना.

उ०—नमो करनल्ल बळू अवनीस, तोक्या कर पत्र ससत्र छत्तीस।

—मे म

२ वार करना, प्रहार करना. ३ सभालना। उ०—तोकतां भाग सत्रुण तणा, अग्र भाग दोना अड्या। जा पीठ जोध साबळ दुजड, चाप वाण ले ले चढ्या।—मे म

तोखणो तोखबो—रू०भे०।

तोकायत—वि०—शस्त्र उठाने वाला, योद्धा। उ०—सीस वह भुजा तोकायता सावळा, रखा रोकायता अरक रीझ। राळिया भडज धक नयण रोखायता, बीच झोकायता रयण बीज।—रामकरण महडू

तोकियोडो—भू०का०कृ०—१ प्रहार हेतु शस्त्र उठाया हुआ २ वार किया हुआ. ३ सभाला हुआ।

(स्त्री० तोकियोडी)

तोख—स०पु० [स० तोष] १ सतोष, तृप्ति २ मान, प्रतिष्ठा।

मुहा०—तोख राखणो—मान रखना, किसी की मर्यादा रखने के लिए उचित व्यवहार करना।

३ देखो 'तोक' (रू भे) उ०—पीथल के तोख पारचो, महमुद को मान मारचो। बुद्धसिह को बिगारचो नीके निरधारू मैं।—ऊ का

रू०भे०—तौक, तोख।

अल्पा०—तोखियो।

तोखणो, तोखवो—क्रि०स०—१ सतुष्ट करना। उ०—कुदता उडता कूदता, ओद्रकता वप आप। 'जेहो' तोखै जाचणा, साहण इसा समाप।

—बा.दा.

२ देखो 'तोकणो, तोकवो' (रू भे)

तोखार—स०पु०—१ देखो 'तुखार' (रू भे.) उ०—असि लख तोखार लग्ग मैंगळ मदमाता, हाली अलीमसद दयत राकस दीसता।

—राव मानदेव री वात

तोखारी—स०पु०—अश्व, घोडा।

तोखियोडो—भू०का०कृ०—१ सतुष्ट किया हुआ.

२ देखो 'तोकियोडो' (रू भे)

(स्त्री० तोखियोडी)

तोखियो—देखो 'तोख' (अल्पा.)
तोखीर—देखो 'तोक' (मह, रू,भे)
तोग-स०पु० [स० तूग] १ मुगल बादशाहो के शासनकाल मे उच्च पदाधिकारियो तथा मनसबदारो को उनके सम्मान मे प्रदान किया जाने वाला ध्वज विशेष जिसके सिरे पर सुरा गाय के पूछ के बालो के गुच्छे लगे रहते थे २ सेना का झडा या निशान ।
उ०—गजमिका तराजू प्रदल, ग्रहि तोग मही-मुरतब तुरंग । पतिसाह हुवो 'अजमाल' पह दिली जेम तारा तुरग ।—सू प्र.
तोड़-स०पु०—१ तोडने की क्रिया या भाव ।
क्रि०प्र०—करणो, कराणो, होणो ।
यौ०—तोडजोड, तोडमरोड ।
२ नदी, बाध या तालाव आदि का जल-प्रवाह के कारण टूटा हुआ तट या स्थान ।
क्रि०प्र०—करणो, घालणो ।
३ किले की दीवार या प्राचीर का वह भाग जो तोपो की गोलाबारी से टूट गया हो ।
४ कुश्ती का एक पेंच जो दूसरे पेंच को रद कर देता है. ५ रोग आदि से शरीर के क्षीण होने का भाव ६ वजन आदि उठाने के कारण होने वाली कमर अथवा वक्षस्थल की क्षति ७ चौसर के खेल मे एक खिलाडी द्वारा प्रथम वार अन्य खिलाडी की सारी को मारने की क्रिया या भाव ।
क्रि०प्र०—करणो, कराणो, होणो ।
८ ढोलक और मजीरो की ताल मे गीत, भजन आदि के पद की समाप्ति पर किया जाने वाला विशेष परिवर्तन ।
क्रि०प्र०—देणो ।
९ शराब बनाते समय भपके से पहले पहल निकाला हुआ शराब । इसके बाद निकाला हुआ शराब अपेक्षाकृत कम नशीला होता है ।
उ०—तठा उपरायत दारू रा घडा मगायजै छै, सू दारू किण भात रौ छै ? • असवारा रौ पियौ प्यादौ छिकै, राजा पीवै परजा छिकै, इण भात रौ पहलडौ तोड़ रौ घातौ ।—रा सा स.
१० किसी कुमारी स्त्री के साथ प्रथम समागम करने की क्रिया ।
मुहा०—तोड करणो—कुमारी का कौमार्य खडित करना ।
तोडको-वि०—१ काटने वाला. २ तोडने वाला ।
(स्त्री० तोडकी)
तोडजोड-स०पु०यौ०—१ चाल, युक्ति, दाव-पेंच २ अपना मतलब साधने के लिए किसी के साथ साठगाठ करना और किसी से पृथक होने का भाव ।
तोडण-स०स्त्री०—१ नसो मे होने वाला दर्द २ टूटने या तोडने की क्रिया ।
तोडणो, तोडबो-क्रि०स०—१ झटके या आघात से किसी पदार्थ के दो या अधिक खड करना, टुकडे करना, तोडना, खडित करना २ किसी पदार्थ या वस्तु का कोई अग भंग करना या उसमे लगी किसी वस्तु को झटके आदि से अलग करना । उ०—अनवाछा आगै पडै, खिरा विचार र खाइ । दादू फिरै न तोडता, तरुवर ताक न जाइ ।
-दादू वाणी
३ नष्ट करना । उ०—जती राम साथै सिया वाम जोडै । तिका नाम लेता अघा ओघ तोडै ।—सू प्र
४ सहार करना, मारना, काटना । उ०—अला महा सैतान तोफान मोडै । अला त्रिधारै खडग सा दईत तोडै ।—पी ग्र
५ बिताना, व्यतीत करना । उ०—'वीरभाण' 'नेतसी' जिसा 'वीदा' भय कोकळ उजवाळ रिजक धणिया अरथ, विण गणगोरन दौडिया । मोझमा कमध मोटा मिनक, तोफा सुं इज दिन तोडिया ।
—अरजुनजी बारहठ
६ बल, शक्ति, प्रभाव, विस्तार आदि घटाना या नष्ट करना, अशक्त करना, क्षीण करना ७ क्रय-विक्रय मे वस्तु के मूल्य मे दाम घटा कर निश्चित करना ८ कूए आदि का पानी निकाल कर प्राय समाप्त कर देना ९ किसी स्त्री के साथ प्रथम समागम करना, कुमारी का कौमार्य खडित करना । (मि० 'फोडणो' स० ८)
१० सेंध लगाना, चोरी के लिए घर फोडना. ११ किसी चलते हुए कार्य अथवा कार्यालय को आगे के लिए बद करना १२ किसी सगठन, व्यवस्था तथा कार्यक्षेत्र आदि को न रहने देना अथवा दूर करना, हटाना या नष्ट करना १३ मर्यादा का उलघन करना, मर्यादा मिटाना । उ०—धन लोडै तोडै धरम, विध विध जोडै वात । जड सनेह खोडै जडण, गिनका मोडै गात ।—बा दा.
१४ मिटाना । उ०—पथी एक सदेसडउ, लग ढोलइ पैहच्याइ ।, साव ज सबळ तोडस्यइ, बैसासणइ न जाइ ।—ढो मा
१५ निर्धन करना, कगाल करना १६ दूर करना, पृथक करना, बना न रहने देना । जैसे—सनमन तोडणो, सगाई तोडणो, गरब तोडणो ।
मुहा०—गढ तोडणो—किला तोडना, गढ पर विजय प्राप्त करना, अधिकार प्राप्त करना ।
तोडणहार, हारो (हारी), तोडणियो—वि० ।
तुडवाडणो, तुडवाडबो, तुडवाणो, तुडवाबो, तुडवावणो, तुडवावबो, तोडाडणो, तोडाडबो, तोडाणो, तोडाबो, तोडावणो, तोडावबो—प्रे०रू० ।
तोडिओडो, तोडियोडो, तोड्योडो—भू०का०कृ० ।
तोडीजणो, तोडीजबो—कर्म वा० ।
टूटणो, टूटबो, तूटणो, तूटबो—अक०रू० ।
तोरणो, तोरबो, त्रोटणो, त्रोटबो, त्रोडणो, त्रोडबो, त्रोडणो, त्रोडबो—रू०भे० ।
तोडादार-स०स्त्री०—पलीते से छोडी जाने वाली एक प्रकार की प्राचीन बन्दूक ।
रू०भे०—तोडेदार ।

तोडायत—१ देखो 'तोटायत' (रू भे) उ०—पढ पढ़ ठीक सीख पडवा मा, कडवा वचना दगध करै। जीमै घी गोहू जोड़ायत, मा तोडायत भूख मरै।—हिंगळाजदान कवियौ

२ देखो 'तोडादार' (रू भे)

तोडासाट-स०स्त्री०—छोटे बच्चो का या स्त्रियो के पैरो का ग्राभूषण।

तोडियोडौ-भू०का०कृ०—१ झटके या ग्राघात से किसी पदार्थ के दो या ग्रधिक खड किया हुग्रा, टुकडे किया हुग्रा, तोडा हुग्रा, खडित किया हुग्रा २ किसी पदार्थ का ग्रग भग किया हुग्रा, झटके ग्रादि से ग्रलग किया हुग्रा ३ नष्ट किया हुग्रा ४ सहार किया हुग्रा, मारा हुग्रा, काटा हुग्रा ५ व्यतीत किया हुग्रा, बिताया हुग्रा ६ बल, शक्ति, प्रभाव, विस्तार ग्रादि घटाया हुग्रा ७ क्रय-विक्रय मे वस्तु के मूल्य मे दाम घटा कर निश्चित किया हुग्रा ८ कूए ग्रादि का पानी निकाल कर प्राय॰ समाप्त किया हुग्रा. ९ किसी स्त्री के साथ प्रथम समागम किया हुग्रा, कुमारी का कौमार्य खडित किया हुग्रा १० चोरी के लिए घर फोडा हुग्रा, सेंध लगाया हुग्रा ११ किसी चलते हुए कार्य ग्रथवा कार्यालय को ग्रागे के लिए बद किया हुग्रा. १२ किसी सगठन, व्यवस्था तथा कार्य-क्षेत्र ग्रादि को न रहने दिया हुग्रा ग्रथवा दूर किया हुग्रा, हटाया हुग्रा १३ मर्यादा भग किया हुग्रा, मर्यादा का उलघन किया हुग्रा, मर्यादा मिटाया हुग्रा १४ मिटाया हुग्रा १५ निर्धन किया हुग्रा, कगाल किया हुग्रा. १६ दूर किया हुग्रा, पृथक किया हुग्रा।

(स्त्री० तोडियोडी)

तोडियौ—देखो 'तोडौ' (ग्रल्पा, रू भे)

तोडेदार—देखो 'तोडादार' (रू भे.)

तोडौ-स०पु०—१ सोने ग्रथवा चादी का जजीरदार स्त्रियो के पैर का ग्राभूपण विशेष २ हाथी के पैर का ग्राभूपण विशेप ३ रुपए रखने की टाट या मोटे वस्त्र की थैली।

ग्रल्पा०—तोडियौ।

४ नदी का किनारा. ५ घाटा, कमी, न्यूनता, ग्रभाव।

उ०—१ घणी मोर किसडा धनी, भूख न घर हु भगाय। मोती-भूखन मो गळै, तोडौ ग्रन रौ ताय।—रेवतसिह भाटी

उ०—२ नानाणा दादाणा जोडी, ताजा कुळ दोनू रोटी रौ तोडौ।
—ऊ का

६ पलीतादार बदूक या तोप को छोडने के लिए उस पर लगाया जाने वाला सूत का बना पलीता। उ०—तठै दूग तूटै धिखै ग्राग तोडा। घणू नाळ ताळा वजै नास घोडा।—सू प्र

७ सोने चादी के तारो की बनी एक रस्सी जिसमे, बीच-बीच मे सोने चादी के तारो के छोटे छोटे लच्छे लगे रहते है। यह दूल्हे के सिर की पोशाक, पगडी या साफे पर लपेटी जाती है।

उ०—चोगा तोडा पवग्रा किलगी सेली पाग छाई। बाजूवधा चौकी जोत जगाई वसेक। मोतिया मूदडा कडा जनेऊ जडाव माळा, ग्रोपै बीदराजा यसी पोसाका ग्रनेक।—मयाराम दरजी री वात

८ रस्सी ग्रादि का टुकडा ९ वह लोहा जिसे चकमक पर मारने से ग्राग पैदा होती है।

वि०—१ काटने वाला २ मारने वाला।

रू०भे०—तौडौ।

तोच, तोचौ, तोछ-वि०—१ थोडा, ग्रल्प, कम २ छिछला।

उ०—ककर पथर वीटिया कुनण, जण तण दीठा तोच जळ। सुरा-वत तु है कण साचो, ग्राभूसण नव कोट यळ।—भोपाळदान सादू

३ तुच्छ, क्षुद्र। उ०—बोलै साह सगाह महाबळ, सेना तोछ तपस्या सब्बळ।—रा रू

रू०भे०—तोछ।

यौ०—तोछ-बुद तोछ-बुध।

ग्रल्पा०—तोछडौ।

तोछडौ—देखो 'तोछौ' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—नीच कहीजे नेट पेट रौ खोटौ पापी, तुरत वैण तोछडौ सैण नै कहै सतापी।—ध व ग्र

तोछ-बुद, तोछ-बुध-वि०यौ०—तुच्छ बुद्धि वाला, ग्रल्पमति।

उ०—ग्राद जस भेट सुज मेट सगट ग्रवै, कोड जुग लगा कव सुजस कहसी। तोछबुद कवदजे चूक भरिया तोई, वडा वडपण तणै राह वहसी।—गनजी बारहठ

तोछौ—देखो 'तोच, तोचौ' (रू भे) उ०—खाय पछट्टा मीर खग, कटिया फोपट्टै, जाण उलट्टै माछळा, जळ तोछा तट्टै।—लूणकरण कवियौ।

तोजड-स०स्त्री०—ग्रपरिपक्व गर्भ को गिराने वाली गाय।

तोट-स०स्त्री० —१ कगाली, निर्धनता २ कमी, घाटा, ग्रभाव।

उ०—सदेसा ही वीज पडो, नै कागद ग्रावी तोट। सही सलूणा सज्जना, का मन माही खोट।—ढो.मा.

क्रि०प्र०—ग्राणी, लाणी, होणी।

तोटक-स०पु० [स०] १ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे चार सगण होते हैं।

रू०भे०—त्रोटक।

२ शकराचार्य के चार प्रधान शिष्यो मे से एक।

तोटकियौ-स०पु०—दस बारह ययारियो का समूह।

तोटकौ—देखो 'टोटकौ' (रू.भे)

तोटणौ-वि०—टूटने वाला, खड खड होने वाला।

उ०—रगत री जेस खग लाल रग, बगतरा पोस उड्डे बरग। तोटणा बरम घट दम तुटत, लोटणा कबूतर जिम लुटत।—वि स

तोटायत-वि०—१ निर्धन, दरिद्र २ दुखी, सतप्त।

रू०भे०—तोडायत।

तोटो—देखो 'टोटौ' (रू भे.) उ०—१ जीहा राघौ जपै मोटौ छै भाग जेण रौ भूम। तोटौ ना'वै त्यारै, केसो पय मेव ग्रधिकारी।—र.ज प्र

उ०—२ मोटो दाता मगियो, तोटौ भाजे तेण। कीजे सायर खेप किल, जुडे जवाहर जेण।—वा दा.

तोठौ–वि० [स० तुष्ट] प्रसन्न, खुश। उ०—ए छै कोई राजवी, रूपवत रतिराज। जो जीपे किम हो करी, तू तोठौ महाराज।—प.च चौ.

तोड—देखो 'टोड' (रू भे)

तोडउली–स०स्त्री०—१ एक मारवाडी गीत. २ देखो 'तोड' (अल्पा, रू भे)

तोडडी—देखो 'टोडडी' (रू भे)

तोडडौ—१ देखो 'टोडियौ' (रू भे) २ देखो 'टोडौ' (अल्पा, रू भे)

तोडती—देखो 'टोडती' (रू भे)

तोडर–स०पु०—१ स्त्रियो के पैर का एक आभूषण।
उ०—तोडर पायल पइहरणो पाय, सोवन्न घूघरा बाजती जाय। —वी दे
२ देखो 'टोडर' (रू भे)

तोडरमल–स०पु०—एक राजस्थानी लोकगीत।
रू०भे०—टोडरमल।

तोडरौ—देखो 'टोडरौ' (रू भे)

तोडाळ—देखो 'टोडाळ' (रू भे)

तोडियौ–स०पु०—१ ऊट का बच्चा।
(स्त्री० तोड)
२ लडकियो द्वारा गाया जाने वाला एक मारवाडी लोक-गीत।

तोडी–स०स्त्री०—१ एक प्रकार की सरसो. २ देखो 'टोडी' (रू भे)
३ देखो 'टोडौ' (अल्पा, रू भे)

तोडूकणौ, तोडूकबौ—देखो 'ताडूकणौ, ताडूकबौ' (रू भे)
उ०—पछै पोसाक गेहणौ पहिरिया सूधौ चोवो अतर लगाय कस्तूरी री कठी बणाई। सेल रा थिगा दे तोडूकतौ ताडूकतौ आयौ। —जगदेव पवार री वात

तोडौ—देखो 'टोडौ' (रू भे)

तोत–स०पु०—१ धोखा, छल, कपट। उ०—१ तरै जगमाल कह्यौ 'जमैखातर राखो इणा नू तोत कर मारस्या।'—नैणसी
उ०—२ तरै कह्यौ ऊजमाई हमै म्हारै हाथ नही। उण म्हारी धरती कितरीहेक तोत कर ली, नै हमै म्हानू मारण नू सासता साथ करै छै।—नैणसी
क्रि०प्र०—करणौ।
२ आडम्बर, ढोग। उ०—हरवळा फेर कोतल हलै, साजिया मुजरा जोत रा। मोकमा कमध मोटा मिनख, तिमगळ सारा तोत रा। —अरजुनजी बारहठ
मुहा०—तोत रा घोडा खडणा—आडम्बर दिखलाना।
३ झूठ, असत्य।

तोतक–स०पु०—१ झूठ, असत्य २ आडम्बर, पाखण्ड. ३ छल, कपट।
क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ, मचाणौ, रचणौ, रचाणौ।

तोतळा स० स्त्री०—१ पार्वती २ देवी, दुर्गा (ह ना)

तोतळौ–वि० (स्त्री० तोतळी) हकला कर बोलने वाला, तुतला कर बोलने वाला। उ०—टावर री तोतळी वाणी सुणै न जाणै काळजा मे वळवळती डाम लागी।—वाणी
रू०भे०—तुतलौ।

तोतापुरी–स०पु०—आम की एक जाति या इस जाति का आम।

तोतीबलाय–वि०यौ०—मूर्ख।

तोतौ–स०पु० [फा० तोता] एक प्रसिद्ध सुन्दर पक्षी जिसका तन हरे रग का और चोच लाल होती है। शुक, कीर।
मुहा०—१ तोता ज्यू रटणौ—तोते की तरह रटना, बिना सोचे-समझे रट लगा कर याद करना २ तोता रटत—तोते की तरह रटने की क्रिया।
२ बन्दूक की कल।
वि० (स्त्री० तोती) तुतला कर या हकला कर बोलने वाला।
क्रि०प्र०—बोलणौ।

तोत्र–स०पु० [स० तोत्र=अकुश या कीलदार चाबुक] १ भाला, बरछा।
उ०—दो ही बीरा रा तोत्र दो ही तरफा ककटा नू काटि पुदगळा मे पैठि तूटिया।—व भा.
२ वह छडी या चाबुक जिससे जानवर हाके जाते है।

तोत्रमहानट–स०पु० [स०]—महादेव, शकर।

तोद–स०पु० [स०] कष्ट, पीडा, व्यथा।
वि०—कष्ट देने वाला, पीडा पहुचाने वाला।

तोदन–स०पु०—१ तोत्र, चाबुक २ कष्ट, पीडा।

तोदरी–स०स्त्री० [फा०] फारस मे होने वाला एक प्रकार का बडा कटीला पेड जिसमे पतले छिलके वाले फूल लगते हैं।

तोप–स०स्त्री० [तु०] एक प्रकार का बहुत बडा अस्त्र जो प्राय पहियोदार गाडी पर रखा रहता है जिससे युद्ध के समय शत्रु की सेना पर गोले छोडे जाते हैं। आजकल वैज्ञानिक आविष्कारो के कारण वायुयानों, जहाजो तथा मोटरो मे भी तोपें रखी जाती हैं।
क्रि०प्र०—चलणौ, चलाणौ, छुटाणौ, छूटणौ, दगणौ, दागणौ।
यौ०—तोपची, तोपखानौ।

तोपखानौ–स०पु० स० [तु+फा] वह स्थान जहाँ तोपें व उनका सभी आवश्यक सामान रहता हो, रण के लिए तैयार किया हुआ तोपो का समूह। उ०—घर मुहर तोपखांना सधीर, ज्या पीछ अराना गज जजीर। सजतौ ह फिरगी लिया साथ, हथनाळ हवाई बाण हाथ।—वि स.

तोपची–स०पु०[तु०] तोप चलाने या दागने वाला, गोलदाज।
रू०भे०—तोबची।

तोफ—देखो 'तोप' (रू.भे.) उ०—दगै तोफा वहै गोळा, रोहला मोरछा दोळा। जो लार सकै सूता सेर नै जगाय।—बा दा.

तोफगी-स०स्त्री० [फा० तुहफा] १ अच्छा होने का भाव, अच्छापन, खूबी. २ नमूना।

तोफान—देखो 'तूफान' (रू भे.) उ०—मयदी वर्ण कान्ह रै थाप मारी, तरी साह तोफान रै माह तारी। —मे म.

तोफो-स०पु० [अ० तुहफ] १ उपहार, भेंट

उ०—१ चूक माफ करणे मे तो तहकीक तोफो दरगाह म्हारी मे सिवाय गुनैगार रे न ल्यावै।—नी प्र

उ०—२ उजवाळ रिजक धणिया अरथ, विण गणगोर न दौडिया। मोहकमा कमध मोटा मिनख, तोफा ही सू दिन तोडिया।

—अरजुणजी बारहठ

२ बनाव, आडम्बर। उ०—वलि राजा बाधिवा हुयो खादरी वडो हरि। आयो प्रोळि अनत, किसन इहडो तोफो करि।—पी.ग्र

वि०—बढ़िया, सुन्दर, अच्छा।

रू०भे०—तुहफो, तोहफो।

तोब—देखो 'तोबा' (रू भे) उ०—सुर सुयणा रा महत तोब दरबार तमारा। कहँ मेर किमेर हैमै गिमि पाप हमारा।—पी ग्र.

२ देखो 'तोबा' (रू.भे)

तोबड—१ देखो 'तोबर' (रू भे.) २ देखो 'थोबडो' (मह, रू भे)

तोबडियो-वि०—मोटा-ताजा, हृष्ट-पुष्ट। उ०—जितरै बीच थोहर झाडा रा बीडा माहा खरगोस ऊठिया छै। सू किण भात रा छै? मोटा पेदा छै, तोबडिया छै।—रा सा स

२ देखो 'तोबर' (अल्पा रू भे.)

तोबडो—देखो 'तोबर' (अल्पा रू भे)

तोबची—देखो 'तोपची' (रू भे) उ०—तठा पछै राव डूगरसी भाई रै वैर कटक कियो। मोटा राजा रै पिण मेळ हुइ कठा की सु जोधपुर सु नसीरदी रा तोबची माणस ६०० तेडिया था।

—राजा उदैसिंघ री वात

तोबणो, तोबबो-क्रि०स०—बीज बोना।

तोबर-स०पु० [फा० तोबर] घोडे का दाना खाने का थैला।

वि०वि०—यह चमडे या टाट का होता है और घोडे के मुह पर लटका दिया जाता है।

रू०भे०—तोबड।

अल्पा०—तोबडियो, तोबडो, तोबरो।

तोबरदार-वि०—रोबदार। उ०—भीवो डीला तोबरदार तो खरो पिण जखडा री सिबी डील रोब री मछर रग मिळै नही।

—जखडा मुखडा भाटी री वात

तोबराळ-स०पु०—घोडा, अश्व।

तोबरो—देखो 'तोबर' (अल्पा, रू भे) उ०—तरै पिउसघी भीवाजी नै आय कह्यो—अे कडा मोती पहरो, सिरपाव पहिरो नै तोबरो लें जावो नै कहिज्यो—सिकार माहे जिनावरा रा डावा कान कठै।

—जखडा मुखडा भाटी री वात

तोबा-स०स्त्री० [अ० तोब:] अपने किए हुए दुष्कृत्य अथवा अनुचित कार्य के लिए पश्चाताप करने की भावना प्रकट करने की क्रिया तथा भाव। उ०—हे गुलाम! वैद्य नूं कह—मैं झूठो होय पछताऊ छू। कोल तोडिया रो तोबा करू छू।—नी प्र

(यह शब्द अनुचित कार्य करने वाले व्यक्ति तथा घृणास्पद पदार्थ के प्रति घृणा प्रकट करने के लिए भी प्रयुक्त किया जाता है।)

मुहा०—तोबा करणो—पश्चाताप करना, घृणा प्रकट करना।

यौ०—तोबा-तोबा।

तोबाकू—देखो 'तमाकू' (रू.भे) उ०—तोबाखू छै नामैं तेहनै रे, तबाखू वळि तेम। नाम तणो पिण अरथ भलो नही रे, कहो पीवै कुण केम।—ध व ग्र

तोम-स०पु० [स० स्तोम] १ यज्ञ, हवन (डि को) २ अन्धकार।

उ०—सहस घाम मल्लनै, जळै परजळै प्रळै जिम। धूम व्योम धुधळो तरिण अम तोम सोम तिम।—रा रू

३ दल, सेना। उ०—जिको दो ही पिता पुत्रा रो मिळाप सुणि अतर मे अेक जाणि तुरका रो तोम त्रासियो।—व भा

४ समूह, झुण्ड। उ०—तमाम सत्रु सग की प्रतापतें तपावणो, खनान कोम भोम खोम तोम को खपावणो।—ऊ का

वि०—१ सर्व, सब। उ०—तुही रोम मैं तोम वेमड राखै। नवै खड तू ही घडै भागि नाखै।—मे म

२ अधिक, बडा।

रू०भे०—तोम।

तोमडो—देखो 'तुबी' (अल्पा, रू भे)

तोमर-स०पु० [स०] १ भाले के प्रकार का एक लोहे का बडा फल लगा शस्त्र (प्राचीन) उ०—घर तोमर खग धार धमगा घाछटै, आचगळा अखडैत असमर आछटै।—किसोरदान बारहठ

२ बाण, तीर ३ एक बारह मात्राओ का एक छद जिसके अत मे गुरु लघु होता है ४ एक देश का नाम (पौराणिक)

५ राजपूतो का एक वश।

रू०भे०—तूवर, तौमर।

तोमरार-स०पु०—शस्त्र (अ मा.)

तोय-स०पु० [स०] १ जल, पानी। उ०—गुर प्रताप हरि जाप घणी सेवग साधारे। मानव कितइक बात तोय ऊपर गिर तारे।—ज खि.

२ पूर्वाषाढा नक्षत्र ३ देखो 'तोइ, तोई' (रू भे.)

उ०—साजन दुरजन के कहै, तुम मत विरचो मोय। ज्या मस लागी कागदा, त्या हित लाग्यो तोय।—अज्ञात

क्रि०वि०—तो भी, तथापि। उ०—चहुवाणा कुळ चल्लणी, वियौ न चल्लै कोय। चाड न घट्टै खूद की, सीस पलट्टै तोय।—रा रू.

तोयचो-स०पु०—एक नृत्य विशेष।

तोयद-स०पु० [स०] १ बादल, मेघ (अ मा) २ नागरमोथा। ३ घृत, घी।

वि०—जल दान करने वाला, जल देने वाला।
रू०भे०—तोईद।

तोयदागम-सं०स्त्री० [स०] वर्षा ऋतु।

तोयध, तोयधर—देखो 'तोयधि' (रू भे) उ०—१ निप सुमेर 'पातल' निडर, अर घर करण उद्यान। तोयध तरळ तरंग तिर, गा लदन गहवान।—किसोरदान बारहठ

उ०—२ कही विध हुवै तहकीक वरखा कणा, वळै परसै अरस कहे किण वार। तोयधर कदाचित पार लधै तऊ, प्रभू गुण ताहरा न लाभै पार।—र रू

तोयधार-स०पु०—मेघ।

तोयधि, तोयधी-सं०पु० [स० तोयधि] समुद्र, सागर।
उ०—तोयधी गिरराज तारे, प्रगट कर कपि सेन पारे रची लका राड।—र ज.प्र
रू०भे०—तोयध, तोयधर।

तोयनिध, तोयनिधि [स० तोयनिधि] समुद्र, सागर। उ०—भटक न अर माराथ भिड, वैर वसा लै वेग। तिरवा भव रो तोयनिध तरणी पिव री तेग।—रेवतसिंह भाटी

तोयनीवी-स०स्त्री० [स०] पृथ्वी, धरा।

तोयेस-स०पु० [स० तोयेश] समुद्र।

तोर—१ देखो 'तौर' (रू भे) उ०—मुहकम छोडै मेडतो, नास गयो नागोर। पूछै जाफर जोधपुर, तूटै छूटै तोर।—रा रू
[स० तुवर] २ अरहर।
सर्व०—१ तेरा, तुम्हारा। उ०—सवत गुणी तिहोतरै, तवियो जस नृप तोर। तवियो जस नृप तोर प्रथीप प्रताप रो।
—किसोरदान बारहठ

तोरइ, तोरई—१ देखो 'तोरू' (रू भे)
सर्व०—२ तुम्हारा, तेरा। उ०—१ तिण हु तोरइ अरणइ आयउ, स्वामी नयण निहालो जी।—स कु.
उ०—२ हु प्रभु तोरइ सरणै आयउ, तु मुझ नइ साधारि जी।
—स कु.
उ० —३ प्रीतम तोरइ कारणइ, ताता भात न खाहि। हियडा भीतर प्रिय वसइ, दाझण ती डरपाहि।—ढो मा

तोरउ-सर्व०—तुम्हारा। उ०—ध्यान इक तोरउ धरू, चरणइ लाऊ चीत।—स कु

तोरकी, तोरकू, तोरको-स०पु०—१ तुर्किस्तान का उत्पन्न घोडा।
उ०—वीरउ भडसी नइ मोखसी, कुअरपाळ लोलउ खेतसी। पवन वेगि जे चालइ चग, ईहा दीधा तोरकी तुरग।—का दे प्र
२ देखो 'तुरक' (रू भे) उ०—जे निसाण तोरकां तिहा सिरि पाडवि घाउ वजाविउ। विसर वाजता वेगि सुणि करि मलिक नेब तिहा आविउ।—का दे प्र

तोरडो-स०पु० (स्त्री० तोरडी) १ ऊट का बच्चा २ शतरज का ऊँट नाम का मोहरा। उ०—त्यागी फेट किस्त की लखियै, हुई इतै वड हाणी। तीखै पग को एक तोरडो, कियो प्रथम कुरबाणी।
—ऊ का.
सर्व० (स्त्री० तोरडी) तुम्हारा, तेरा। उ०—१ मोरा साहिब हो स्री सीतळनाथ कि वीनति सुणि एक मोरडी। दुख भाजइ हो तु दीनदयाळ कि वात सुणी मइ तोरडी।—स कु.
उ०—२ चरण न छोडू तोरडा।—स कु

तोरण-स०पु० [स०] १ किसी घर अथवा नगर का मुख्य प्रवेश द्वार जिसका ऊपरी भाग मडपाकार होता है तथा प्राय सजा हुआ रहता है। (डि को) उ०—जठे भीम रा सिपाहा तोरण रै बाहिर आया जिकै राजा सहित प्राकार मे प्रविस्ट कीधा।—व भा
यौ०—तोरणदुवार।
२ मागलिक अवसरो पर केले आदि के पत्तो से बनाया जाने वाला द्वार ३ वे मालायें जो सजावट के लिए दीवारो अथवा खम्भो पर लगाई जाती हैं। वदनवार। उ०—केसरिया दळ कमध एम मरु-धर पति आया, वदि कळस वर तरणि भार द्रव कळस भराया। तोरण चित्र जर तार सहर बाजार सिंगारै, वर नौबति वाजता महिल महाराज पधारै।—सू प्र.
४ विवाह के अवसर पर कन्या के पिता के भवन के मुख्य द्वार पर लगाया जाने वाला काष्ठ की खपच्चियो का बना एक मागलिक उप-करण।
वि०वि०—इस पर काष्ठ की बनी चिडिया अथवा तोते लगे होते हैं। यह कई रगो से सुसज्जित किया जाता है। यह कई प्रकार का होता है। इसमे 'तळियो तोरण' अधिक महत्वपूर्ण है। विवाह के समय बरात लेकर दूल्हा जब कन्या के पिता के घर आता है तब मुख्य द्वार पर इस 'तोरण' को वृक्षादि की हरी टहनी से स्पर्श करता है। विवाह कर के दूल्हा जब दुलहिन सहित अपने घर लौटता है तो घर मे प्रवेश करते समय मुख्य द्वार पर ऐसे तोरण को अपनी तलवार मे सात वार स्पर्श करता है। उ०—तिसे तोरण वादीयो। आरती कीधी। चवरी वीराजिया। हथळेवो दीधो।
—वीरमदे सोनगरा री वात
क्रि०प्र०—वदाणी, वादणी।
यौ०—तोरण-घोडी, तळियो-तोरण।
५ वदनवार अथवा मुख्य द्वार के आकार का हथेली मे होने वाला सामुद्रिक चिन्ह विशेष। उ०—असि खडग सकति तोरण उदार। अकुमा सख चक्र सुभ अपार।—सू प्र
६ ऊट को अकुश मे रखने के लिए उसके नाक मे डाले जाने वाले काष्ट के छोटे टुकडे मे डाला जाने वाला रस्सी अथवा तार का फदा जिसमे रस्सी बाधी जाती है।
क्रि०प्र०—घलाणी, घालणी, वाळणी।
७ विशाखा नक्षत्र का एक नाम।
अल्पा०—तोरणियो।

तोरण-घोडौ-स०पु०यौ०—वह घोडा जिस पर चढ कर दूल्हा तोरण का अभिवादन करता है।

तोरण-छडी-स०स्त्री०यौ०—कणेर आदि की हरी शाखा जिससे दूल्हा-दुलहिन के घर के मुख्य द्वार पर तोरण को स्पर्श कर के अभिवादन करता है।

तोरणथब, तोरणथभ, तोरणथाभ-स०उभ०लि०यौ०[स० तोरण स्तम्भ] विवाह मे काष्ठ का बना वह मागलिक स्तम्भ जो लगभग दो या तीन फुट लबे काष्ठ के एक डडे पर दो खपच्चिया लगा कर बनाया जाता ह। दोनो खपच्चिया आपस मे एक दूसरी को काटती हुई रखी जाती हैं। उनके चारो छोरो पर छेद कर के लगभग छ इच लबी पतली गोल तीलिया लगादी जाती है।

वि०वि०—इस स्तम्भ को विनायक बधाते समय सुथार तोरण के साथ लाता है। फिर घर मे सुरक्षित स्थान पर गाड दिया जाता है और उस पर मगल-कलश स्थापित कर दिया जाता है जो गणेशजी का प्रतीक माना जाता है। लडके के विवाह मे बारात चढते समय पहले मगल कलश सहित इस स्तम्भ की पूजा होती है तथा लडकी की शादी मे दूल्हे को बधाते समय पहले इसकी पूजा होती है। अच्छे शकुनो के लिए इसको साल भर सुरक्षित रखा जाता है। इसको माणक (माणिक्य) स्तम्भ भी कहते हैं।

तोरणदार-लगाम-स०स्त्री०यौ०—घोडे की एक लगाम विशेष जिसमे छोटे व पैने कीले लगे रहते है।

वि०वि०—ऐसी लगाम प्रायः उद्दड घोडो के लिए काम मे लाई जाती है।

तोरणपूजी-स०पु०—विवाह के अवसर पर दुल्हन के घर पर वर द्वारा 'तोरण' को छडी से स्पर्श करने के पहिले ब्राह्मण द्वारा पढा जाने वाला मत्र जिसका उच्चारण वर भी करता है।

वि०वि०—देखो 'तोरण' स० ४।

तोरणमाल-स०पु० [म०] अवतिकापुरी।

तोरणवार-स०पु०—वदनवार। उ०—सीसम सार की पाटली ऊचा थरि थरि तोरणवार।—वी दे

तोरणस्थभ-स०पु०यौ०—१ मागलिक अवसरो पर केले आदि की पत्तियो से बनाये गये द्वार मे लगाया जाने वाला स्तभ। उ०—ऊभीइ तोरण-स्थभ विसाळ, ब्राह्मण उच्चरइ वेदोद्‌गार।—व.स.

२ देखो 'तोरण-थाभ (रू भे)

तोरणियौ-स०पु०—१ वह बैल जिसके दोनो सीगो के मध्य ललाट पर भौरी हो. २ देखो 'तोरण (अल्पा, रू.भे)

उ०—१ बन्ना म्हे थानै केसरिया ओ यू कैयौ, बनजी मचकै नै तोरणियै मत जाय, खातीडै री नीजर लागणी। म्हारौ केसरियौ हजारी गुल रौ फूल, चपै री तीजी पाखडी।—लो गी

तोरणौ-स०पु०—१ गेहूँ और जौ को फसल काटते समय काटने के लिए एक व्यक्ति द्वारा एक बार मे अपने सामने लिया हुआ भाग।

२ एक प्रकार का घोडा (व.स.)

तोरणौ, तोरबौ-क्रि०स०—देखो 'तोडणौ, तोडबौ' (रू.भे)

उ०—अपराध विना तोरी प्रीति हो।—स कु

तोरणौ, तोरबौ—रू०भे०।

तोरात—देखो 'तौरात' (रू भे)

तोरी-सर्व०—१ तुम्हारी, तेरी। उ०—तुम मू विचि अतर घणउ, किम करू तोरी सेव।—स कु.

२ देखो 'तोरू' (रू भे)

तोरु-सर्व०—१ तेरा, तुम्हारा। उ०—समय सुदर कहइ हु, धरिस तोरु ध्यान।—स कु

२ देखो 'तोरू' (रू भे)

तोरुद-स०स्त्री०—तुरई के बेल से मिलती-जुलती देवदाली नामक एक लता जिसके फल ककोडे की तरह काटेदार होते है।

तोरू, तोरू-स०स्त्री०—चौडे पत्तो वाली एक लता एव इसका फल जो छील कर सब्जी बनाने के काम मे लिया जाता है।

रू०भे०—तूरी, तोरी।

तोरे-क्रि०वि०—तब।

सर्व०—तेरे, तुम्हारे।

तोरौ-सर्व० (स्त्री० तोरी) तेरा, तुम्हारा। उ०—दोरौ लागै दोयणा, छक तोरौ उर छेक। सैणा मन सोरौ रहै, पदवी डोरौ पेख।

—जुगतीदान देथौ

स०पु०—१ देखो 'तोडौ' न० २ (रू भे) उ०—दळ बळ तुरग गज ससत्र द्रव्य, समपिया साह तोरा सरब्ब।—सू प्र.

२ प्रभाव ३ रग-ढग, चाल-ढाल. ४ सीमा, किनारा, छोर।

उ०—गोरी पणियारी तेजो तन गाजै, लारै धोरी रै जणियारी लाजै। फोरै खाथा नै गाळी फटकारै, तोरै जाता नै हाळी ततकारै।

—ऊ का.

मुहा०—तोरै आणौ—किनारे आना, किसी बात अथवा मामले का सीमा पर पहुचना।

तोल-स०पु० [स० तोल] १ तराजू २ तुला राशि ३ किसी व्यक्ति पदार्थ आदि के भार का परिणाम, वजन। उ०—कई कई मोती कीध, तकलीणा घर घर तिकै। अधकै तोल अबीध, माधव घडियो मोतिया।—रायसिंह सादू

४ अदाजा, अनुमान।

क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ, देखणौ, निकळणौ।

५ थाह, गम्भीरता। उ०—बाळपणै की प्रीत रमैया जी, कदेई नहि आयौ थारौ तोल। दरसण विण मोहि जक न परत है, चित मेरौ डावाडोल।—मीरा

मुहा०—तोल देखणौ—थाह जाचना, किसी व्यक्ति की गम्भीरता आकना।

६ स्थिरता, अटलता, दृढता। उ०—१ बोलै साचा बोल, काचा न

यारं करै। तिण माणस रा तोल, मेर प्रमाणै मोतिया।

—रायसिंह सादू

७ मान, प्रतिष्ठा, वडप्पन। उ०—पातिसाह जी आछौ रजपूत देखि चरकौ डील रौव रौ मरोड देख नै तीन हजारी रौ मुनसप दीधौ। ठौड वताई। सिरपाव, हाथी घोडौ मोतिया री माळा किलगी खजर दे विदा कियौ। जागीरी नीसरी। मोटै तोल मे वधियौ।

—जखडा मुखडा भाटी रौ वात

८ अधिकार, कब्जा, वश। उ०—झडाया ओझाडा झाड ककडेल पव्वे झूला, साकडेल भडा मूळा अडाया सधीर। वीफरैल गुर्सैल कदेई तोल न आया वीजा, कई दातडैल जई गुडाया कठीर।

—महकरण महियारियो

९ शक्ति, वल। उ०—वोल्यौ मोय जोधा वडम बोल, त्यारा पण देख्यौ चाहु तोल।—पे.रू

१० विपदा, आपत्ति। उ०—पडता तोल कई फिकन नाठै परा, उड गया केइक असमाण माथै। मातरा हुकम हू नाक काटै महिप, सात वीमा तणा हेक साथै।—वालावक्ष वारहठ

अल्पा०—तोलणौ।

११ इज्जत। उ०—मिंध धणी जद सकियौ, महमद रा सुण बोल। दो म्होरा पाछी 'दला', तिण दिन रहसी तोल।—वी.मा

१२ स्वभाव, प्रकृति। उ०—'दलै' धणीई दाखियौ, 'मधू' परी दै मोल। 'मधू' न जाणै मोटमन राजविया रा तोल।—वी मा

१३ विचार।

अल्पा०—तोलो।

वि०—तुल्य, सदृश, समान। उ०—वरापूर महासेर वेहु खेत नेत वध, वरावरी लडे चडे सूजस रा बोल। काची वात महा पात मुखा हुती मता काढी, तिसा दीठा विसा कह्यौ, विहु एकै तोल।

—मारवाड रा अमरावा री वारता

रू०भे०—तौल।

तोलड़ी—स०स्त्री०—मिट्टी का छोटा पात्र, छोटी हडिया।
अल्पा०—तोलडियो।

तोलणौ—वि०—१ तौलने वाला, मूल्याकन करने वाला २ मारने वाला, सहार करने वाला। उ०—भिजड-हथ मयद जुध गयद धड तोलणा। ऊठि हरधवळ सुत अढग बोलणा।—हा झा

तोलणौ, तोलवौ—क्रि०स० [स० तोलनम्] १ किसी पदार्थ अथवा वस्तु के भार का परिमाण ज्ञात करने के लिए तराजू में रखना, वजन करना, तौलना। उ०—मै चोर जीवतौ तोलियौ, पछै करि उपाय। मसोसि नै मारियौ, नही सस्त्र लगाय। पछै मारि नै तोलियौ, घटचौ वध्यौ न लिगार। तिण कारण मै जाणियौ, जीव काया नही न्यार।—जयवाणी

२ तुलना करना, समानता के लिए परस्पर दो वस्तुओ का मिलान करना। उ०—सारगवाणी सरिस बोलई, नही तोलई कोई। करणे नि सोवन झाल झवकइ, अवसि रभा होई।—रुकमणी मगळ

३ प्रहार के लिए शस्त्रादि उठाना, हाथ मे शस्त्र सभालना। उ०—तिण वार तोलि खग मूछ ताणि। असपति हू कहियौ छोह आणि।—सू प्र

४ युद्ध करना। उ०—उत्तरा कूयर वयव वोलइ, वीर कोइ तुझ आज न तोलइ।—विराट पर्व

५ सहार करना, मारना ६ चिन्तन करना, विचार करना, मनन करना. ७ अनुमान लगाना, अदाजा लगाना।

उ०—जद साध कहता उवै तौ उण गाम रौ मारग पूछचौ कहता था अनै आप अठी नै क्यू पधारौ। जद स्वामीजी फरमायौ हूं जाणू छू उण री कपटाइ। उण गाम रौ मारग पूछचौ तौ उण गाम नही गया अठी नै इज गया दीसै है। आगै जाय नै देखता तौ बैठा लाधता। अनै कदेई गोचरी करता मिळता। साध देख नै वडौ आस्चरय करता। आप वडा तोल्नी।—भि द्र

८ समझ मे बैठाना, किसी वात को ध्यान मे लेकर जाँचना।

तोलणहार, हारौ (हारी), तोलणियौ—वि०।

तुलवाडणौ, तुलवाडवौ, तुलवाणौ, तुलवावौ, तुलवावणौ, तुलवाववौ, तुलाडणौ, तुलाडवौ, तुलाणौ, तुलावौ, तुलावणौ, तुलाववौ, तोलाडणौ, तोलाडवौ, तोलाणौ, तोलावौ, तोलावणौ, तोलाववौ—प्रे०रू०।

तोलिओडौ, तोलियोडौ, तोल्योडौ—भू०का०कृ०।

तोलीजणौ, तोलीजवौ—कर्म वा०।

तुलणौ, तुलवौ—अक०रू०।

तौलणौ, तौलवौ—रू०भे०।

तोलरिण—स०पु०—युद्ध का झडा, ध्वज, पताका। उ०—दमगळ फळ दोख्या दियौ, सज सत रौ सिणगार। तिड निज रौ पड तोलरिण, हेली जताय हार।—रेवतसिंह भाटी

तोलाइ—देखो 'तुलाई' (रू भे)

तोलाअपाई—स०स्त्री०—एक प्रकार का सरकारी कर।

तोलाडणौ, तोलाडवौ—देखो 'तुलाणौ, तुलावौ' (रू भे)

तोलाडियोडौ—देखो 'तुलाडियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० तोलाडियोडी)

तोलाणौ, तोलावौ—देखो 'तुलाणौ, तुलावौ' (रू.भे)

तोलाणहार, हारौ (हारी), तोलाणियौ—वि०।

तोलायोडौ—भू०का०कृ०।

तोलाईजणौ, तोलाईजवौ—कर्म वा०।

तुलणौ, तुलवौ—अक०रू०।

तोलायोडौ—देखो 'तुलायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० तोलायोडी)

तोलावणौ, तोलाववौ—देखो 'तुलाणौ, तुलावौ' (रू भे.)

तोलावियोडौ—देखो 'तुलायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री० तोलावियोडी)

तोलियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ तौला हुआ, वजन ज्ञात किया हुआ २ प्रहार के लिए शस्त्र उठाया हुआ ३ युद्ध किया हुआ ४ तुलना किया हुआ, समानता किया हुआ ५ विचारा हुआ, मनन किया हुआ ६ अनुमान लगाया हुआ. ७ सहार किया हुआ ८ समझ मे बैठाया हुआ।

(स्त्री० तोलियोडी)

तोलियौ—देखो 'तौलियौ' (रू भे)

तोले, तोलै–वि० [स० तुल्य] सदृश, समान, बराबर।

उ०—त्रिभुवण माझ नही त्या तोलै, ग्रोलै सुत ग्रख्यदी।—र ज प्र.

तोळौ–स०पु० [स० तोलक] १ एक तौल जो बारह माशे या छियानवे रत्ती के बराबर होता है २ इस तौल का बाट।

रू०भे०—तोलौ।

३ ऊट को होने वाला एक रोग जिसके कारण वह अगले पैर मे झटका देकर चलता है ४ इस रोग से पीडित ऊट।

तोलौ–स०पु० [स० तोल. या तोलम्] १ पदार्थ के गुरुत्व का परिमाण ज्ञात करने का उपकरण, बाट। उ०—लेखण तोला ताकडी, सोगन नै लीकार। वणियाणी जाया तणा, है ये हिज हथियार।—बा दा

यौ०—ताकडीतोला, तोलाताकडी।

२ अडकोश।

मुहा०—तोला ऊचावणी, तोला तोलणी—खुशामद करना, चाटुकारी करना।

रू०भे०—तोलौ।

३ देखो 'तोल' (अल्पा., रू भे) उ०—काण कूरब थोडा हुसी, ग्रोछौ होसी तोलौ रे। घणा झगडा राडा करी, ग्राणसी ऊचौ बोलौ रे।—जयवाणी

४ देखो 'तोळौ' (१,२) (रू भे)

तोवौ—देखो 'तवौ' (रू भे) उ०—तोवै ज्यू धरती तपै, ऊपर तपै ग्राकास। लू लपटा सै दिस तपै, जीव तपै इण तास।—लू

तोस–स०पु० [स० तोष] १ तृप्ति, सतोष, तुष्टि।

उ०—सूर घपाये सुज्जडा, तो उर पावै तोस। तोलै ग्राभ भुजा वळी, बोलै सूर सरोस।—रा रू

[फा० तोश] २ भोज्य पदार्थ, खाने का सामान।

३ वस्त्र, कपडा ? उ०—पहरण घण ग्रोढण पसमीना। नोख तोस घण मोल नवीना।—सू प्र

तोसक–स०स्त्री० [फा० तोशक] रूई अथवा नारियल की जटा ग्रादि भर कर बनाया हुआ गद्देदार बिछौना, गुदगुदा बिछौना, छोटा हलका गद्दा। उ०—ग्रै तोसक-तकिया थारै, थारी बरोबरी म्हे करा स कोई फाटी गुदडी म्हारै, बनवारी हो लाल।—लो गी

यौ०—तोसक तकिया।

वि० [स० तोषक] सतुष्ट करने वाला, तृप्त करने वाला।

तोसकखानौ—देखो 'तोसाखानौ' (रू भे)

तोसण–स०पु० [स० तोषण] तृप्ति, सतोष।

वि०—सतुष्ट करने या होने वाला।

तोसणौ तोसबौ–क्रि०स० [स० तोषणम्] सतोष देना, सतुष्ट करना, तृप्त करना।

क्रि०अ०—सतुष्ट होना, तुष्ट होना।

तोसदान–स०पु० [फा० तोशादान] १ वह थैला जिसमे यात्रीगण अपनी भोजन सामग्री ग्रादि रखते हैं २ रुपये-पैसे रखने का थैला विशेष। उ०—ताहरा घोडो मगाई तोसदान मुहरा भरि सूतै कटक एकलो चढि खडियो।—चौबोली

३ सिपाहियो की कमर की पेटी मे लगी चमडे की थैली जिसमे कारतूस ग्रादि भरे रहते है।

तोसल–स०पु० [स० तोषल] १ कस के असुर मल्ल का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने धनुर्यज्ञ मे मारा था २ मूसल।

तोसाखानौ–स०पु० [तु० तोश+फा० खाना] वह बडा कमरा जहा राजाग्रो ग्रथवा धनाढ्य लोगो के ग्रमूल्य वस्त्र ग्रथवा ग्राभूषण ग्रादि रखे रहते है। उ०—तद नवाब हुकम दियौ—जावौ तोसाखाने से एक बाफता लावौ। सो मगार चादर उठे हीज बैठा सिवाई।—पदमसिह री वात

रू०भे०—तोमकखानौ।

तोसित–वि० [स० तोषित] तृप्त, सतुष्ट।

तोहफौ—देखो 'तोफौ' (रू भे) उ०—उण कही—थारी दरगाह ग्रायौ छू। पण खाली हाथ न छू, तोहफौ लायौ छू जिसौ कोई दीठौ न सुणियौ।—नी प्र

तोहमत–स०स्त्री० [ग्र०] झूठा कलक, मिथ्या ग्रभियोग।

रू०भे०—तुहमत।

तोहारौ, तोहाळौ–सर्व०—तेरा, तुम्हारा। उ०—ग्रसधारी हिंदवाण, राण भाण ग्रेम ग्राखै। चितौडा तोहाळी भुजा, नचितौ चितोड।—रावत सारगदेव री गीत

तोहि, तोही—देखो 'तोइ, तोई' (रू भे) उ०—१ घणा सियाळी जै जणै जवूक घणा। तोहि नह पूजवै पाण केहिर तणा।—हा झा.

उ०—२ वास जग मे त्रास जम की, ग्रलप जीवनी मोही। जन हरिदास कू विस्वास तेरा, मै न छाडो तोही।—ह पु वा

तोहीन—देखो 'तौहीन' (रू भे.) उ०—तोहीन ग्रदालत ग्रल कितीक, लिल्ला वजूद हैं लासरीक।—ऊ का.

तौ—देखो 'तो' (रू भे) उ०—१ खत्रिया रा खटतीसकुळ, ग्रदस क्रोड तेतीस। जिकै खडा तौ जाबतै, ग्रकबर किसू करीस।—बा दा

उ०—२ नर-पुर मे रहसा नही, बससा सुर-पुर वास। माग इद्रायण! वर मुखा, ग्रब तौ पूरा गास।—मयाराम दरजी री बात

उ०—३ धरिया सु उतारै नव तन धारै, कवि तै वाखाणण किमत्र। भूखण पुहप पयोहर फळ भति, वेलि गात्र तौ पत्र वसत्र।—वेलि

उ०—४ विवरण जो वेलि रसिक रस वधौ, करौ करणि तौ मूझ

कथ। पूरे इतं प्रामिस्यो पूरो, इअे ग्रोढे ग्रोछो ग्ररथ।—वेलि
ज्यू—ग्राप उठं वैठो तो सही। म्हारी वात उणा मानी तो हो ग्रपा तो साथे साथे ही चालस्या।

तोइ, तोई—देखो 'तोइ, तोई' (रू.भे) उ०—भागो तो वाराह राह ग्रहियो तोइ दुणिययर। खोड़ो तोइ हणवत जोर मथियो तोइ सायर। —द दा

तोक, तोख—१ देखो 'तोक' (रू भे)
२ देखो 'तोख' (रू भे)

तोडो—देखो 'तोडो' (रू भे) उ०—साह ताम समसेर जडत जवहरा जमधर। मुलक वधारे समपि हेम तोडा गज हैंमर।—सू प्र

तोछ—देखो 'तोछ' (रू भे) उ०—पडं पक्खराळा तड़प्फे उताळा। जळा तोछ जेहा ग्रोपे मच्छ एहा।—सू प्र

तोवार—वि०—ग्रोजस्वो, तेजस्वी।

तोवत—स०स्त्री० [ग्र०] ग्रपमान, निरादर। उ०—ईरान तूरान यह तोवत ज्वालसी ताती। सो तो वसि रही पतिसाह की छाती।—रा रू

तोम—देखो 'तोम' (रू भे) उ०—कुमद जन विकम सकुचे कमळ कस कुभ, भावका चकोरा नयण भायो। सवळ तम तोम मथुरा गयद तणं सिर, ग्रकळ गोकळ तणो चद ग्रायो।—वा.दा.

तोमर—देखो 'तोमर' (रू भे)

तोर—स०पु०—१ चाल-चलन, चाल ढाल।
मुहा०—१ तोर-तरीको राखणो—व्यवस्था रखना, मान रखना।
२ तोर विगडणो—व्यवस्था विगडना, रगढग विगडना।
यो०—तोर-तरीको।
२ मान, प्रतिष्ठा। उ०—मथाण्या भाग विन कृपा फुरमावियो, तोर वाधावियो सुकव ताई। साम्हळं वीणतो धाविया सुराणी, वैठ रथ ग्राविया ग्रठं वाई।—खेतसी वारहठ
मुहा०—तोर राखणो—मान रखना, प्रतिष्ठा रखना।
३ वैभव, ऐश्वर्य। उ०—सुरज पणो सतेज सवण ग्रम्रत हिमकर सम। उर दाहक सम ग्राग तोर सुर-राज राज तिम।—र ज प्र.
४ प्रभाव, ग्रातंक। उ०—सिव कहाय जग सघरे, ग्रग पूजावं ग्रोर। तो गळं सिर पर तिको, तज जवरी रा तोर।—वा दा.
५ तेज, पराक्रम ६ ग्रवस्था, दशा. ७ गर्व, ग्रभिमान।
रू०भे०—तोरो।

तोरणो, तोरवो—१ जोश पूर्ण ग्रागे की ग्रोर वढाना.
उ०—धारण चित सिरदार नजर धरि। ग्रसि तोरियो सेरखा ऊपरि।—सू.प्र.
देखो २ 'तोरणो, तोरवो' (रू भे)

तोरा—क्रि०वि०—वहाँ। उ०—ग्रघटं जटत जवहर पत ग्रति ग्राछापणं, तोरा 'मान' राजं तखत परस रवि तणं।—वा दा

तोरात—देखो 'तोरेत' (रू भे)

तोरावटी, तोरावाटी—देखो 'तवरावटी' (रू भे)

तोरेत—स०पु० [ग्र० तोरात या तोरैत] यहूदियो का प्रधान धर्म ग्रथ जो हजरत मूसा पर प्रकट हुग्रा था। उ०—१ जमके म फिरनते लगे ग्रसमाण जिनू के देखे से सूके मदमस्त फिलू के डाण। फरकान इजील तोरेत जवून के निडाह मान।—सू.प्र.
उ०—२ फार कलिता ग्रो महमद री नाव तोरेत मे है, याजुन माजुन ग्रो नाव महमद री अजील मे है।—वा दा स्यात
रू०भे०—तोरात।

तोरो—स०पु०—१ मोट की लाव को कीली जोडने का स्थान जो ग्लो के जुग्राडे (पजाळी) के मध्य मे होता है।
२ देखो 'तोरो' (रू भे)

तोल—देखो 'तोल' (रू भे) उ०—वार वार राम कीत वोल रे, ताहरो वडो कवेम तोल रे।—र ज.प्र

तोलणो, तोलवो—देखो 'तोलणो, तोलवो' (रू भे)

तोलाई—देखो 'तुलाई' (रू भे)

तोलाडणो, तोलाडवो, तोलाणो, तोलावो, तोलावणो, तोलाववो—देखो 'तुलाणो, तुलावो' (रू भे)

तोलियोडो—देखो 'तोलियोडो' (रू भे.)
(स्त्री० तोलियोडी)

तोलियो—स०पु० (ग्रं० टोवेल) एक विशेप प्रकार का मोटा अगोछा जिससे स्नान ग्रादि करने के उपरान्त शरीर पोछते है।
रू०भे०—तोलियो।

तोलो—देखो 'तोलो' (रू.भे)
क्रि०वि०—तव तक। उ०—जव लग 'पातल' खग्ग फल, सिर कधर उससत। तोलो पत दिल्ली तखत, चित नित रहो निचत।
—जैतदान वारहठ
देखो 'तोलो' (रू भे)

तोहि, तोही—देखो 'तोइ, तोई' (रू भे)

तोहीन, तोहीनी—स०स्त्री० [ग्र० तोहीन] ग्रपमान, ग्रप्रतिष्ठा, निरादर।
रू०भे०—तोहीन।

त्यो—ग्रव्य०—ऊट, घोडे ग्रादि को पानी पिलाते समय उच्चरित किया जाने वाला शब्द विशेप।

त्यहार—देखो 'तिवार' (रू.भे) उ०—वाळपणं रमता थका, ग्रावै ग्राखातीज। वाको थारं राज मे, त्यहारा री खीज।—लू

त्यउ—क्रि०वि०—तैसे। उ०—या तो छइ भाव नी ग्रास। ज्यौं जाणउ त्यउ मरउ ग्रासपास।—ग्र वचनिका

त्यजउ—वि० [स० त्यक्त] त्यागा हुग्रा, छोडा हुग्रा (उ.र)

त्यजणो, त्यजवो—देखो 'तजणो, तजवो' (रू भे)
उ०—इम करता ग्राविउ वळी, वस तणउ हवइ छेह। तिणि कारणि तुम्हनइ कहीइ, नगर त्यजीसइ ग्रेह।—मा का प्र

त्या—सर्व०—१ उन। उ०—१ लाग वाग दापै विना, त्या सू हुवै न तान। कद इक कळह करावसी, 'जीदे' तणी जवान।—पा प्र

उ०—२ नामता भूइ भारां पडी त्या नहा ।—वि कु.

२ उसके, उनके। उ०—१ फिरि फिरि भटका जे सहै, हाका वाजताह। त्या घरि हुदी वदडी, घरणी कापुरसाह।—हा:झा

उ०—२ सरसती कठि स्री ग्रिहि मुक्ति सोभा, भावी मुगति तिकरी भुगति। उररि ग्यान हरि भगति ग्रातमा, जपै वेलि त्या ए जुगति।—वेलि

३ उनका। उ०—चिता डाइणि ज्या नरा, त्या द्रढ़ अग न थाइ। जइ धीरा मन धीरवइ, तउ तन भीतर खाइ।—ढो मा

४ उनको। उ०—कुम्भडिया कलिग्रळ कियउ, सुणी उपखइ वाइ। ज्या की जोडी वीछुडी, त्या निसि नीद न ग्राइ।—ढो मा

५ उन्होने। उ०—ध्यायो तोनै ध्यान धरि, ग्राराह्यो जग ईस। त्या पायो वैकुठ पुर, मे जीता जगदीस।—पी ग्र

६ देखो 'ता' (रू भे)

क्रि०वि०—१ तहा, वहा २ तैसे।

ग्रव्य०—तक, पर्यंत। उ०—झालै भार साथ सू झालै, सिघ सार जिही सह्या। राणा वडै उवरिया राणा, रवि उगै त्या वोल रह्या।—ग्रजा झाला रो गीत

त्याही–सर्व०—उसी। उ०—जळ माँहि वसइ कमोदणी, चदउ वसइ ग्रगासि। ज्यउ ज्याहीकइ मनि वसइ, सउ त्याहीकइ पासि।—ढो.मा

त्या–सर्व०—वह, उस। उ०—नख की लेखणी। ग्रासू ग्रर काजळ मिळि त्या ही मसि हुई तासु कागळ लिखै छै।—वेलि टी-

त्याग–स०पु० [स०] १ किसी पदार्थ, वस्तु ग्रादि पर से ग्रपना स्वत्व हटा लेने का भाव।

क्रि०प्र०—करणो, कराणो।

२ उत्सर्ग, दान. उ०—जेहा केहा ज्याग, हैवर रामोडा हुवै। ताजी दीजै त्याग, जस नीजै सोई जगन।—वा दा

३ विरक्ति के कारण सासारिक विषयो ग्रोर पदार्थो को छोडने की क्रिया ४ छोडने की क्रिया या भाव।

उ०—म्हारे तो तेरापथ्या नै रोटी देवा रा त्याग है।—भि द

५ किसी से सम्बन्ध या लगाव न रखने की क्रिया ६ राजपूत जाति मे विवाह के अवसर पर वर पक्ष की ग्रोर से याचक जाति के लोगो को दान स्वरूप दिया जाने वाला द्रव्य।

वि०वि०—यह परिपाटी कही-कही ग्रोसवाल जाति मे भी पाई जाती है।

क्रि०प्र०—चुकाणो, देणो, लेणो।

रू०भे०—तियाग, तीयाग।

त्यागण–स०पु०—परित्याग, उत्सर्ग, त्याग। उ०—करण चहे ज्यू ही करे, पण भोटा पण ग्राप। कुण तो चिण त्यागण करण, पर ग्रवगुण 'परताप'।—जैतदान वारहठ

वि०स्त्री०—त्याग करने वाली।

त्यागणो, त्यागबो–क्रि०स०—तजना, छोडना।

त्यागधारी–वि०—त्यागी, उदार, दानी।

त्यागपत्र–स०पु०यौ० [स०]—१ इस्तीफा. २ तलाकनामा।

त्यागियोडो–भू०का०कृ०—छोडा हुग्रा।

(स्त्री०—त्यागियोडी)

त्यागी–वि० [स० त्यागिन्,] (स्त्री० त्यागण) १ जिसने सब कुछ छोड दिया हो, त्यागी।

२ विरक्त ३ उदार, दातार। उ०—कहिया रेहा कूड नह, वेहा वायक ग्रेह। जे जेहा जेहा नही, त्यागी केहा तेह।—वा दा

रू०भे०—तियागी।

त्यार—देखो तैयार रू भे उ०—पढणी वेळा मे पग फावै, पढया विचै पोमाई नै। करै दलील जिका सू कोई, लाधै त्यार लडाई-नै।—ऊ.का

त्यारणी–वि०स्त्री० [स० तृ] दूसरो का उद्धार करने वाली, तारक। उ०—तुही हुई करन्नला तरन्न त्यारणी। नरिंद्र सेख बदि फदत निवारणी।—मे म

त्यारा–क्रि०वि०—तब।

सर्व०—उनका।

त्यारी—देखो 'तैयारी' (रू भे) उ०—तद रावजी स्री बीकेजी फुरमायो के वरस थारो भाई जिसो इ म्हारो भाई है पण तू मेडतै जाय त्यारी कर ग्रठे सू फौज कर, हू ई ग्राऊ-छू।—द दा

त्यारु—देखो 'तारू' (रू भे.)

त्याव–स०स्त्री० [स० त्रिपाद] तिपाई।

त्याहार–क्रि०वि०—तब। उ०—त्याहार पछी त नि ता ग्ररजुन साहय्य लीयगदीस। एक थई दुरयोधन ऊपर ऊतारज्यौ सवी रीस।—नळाख्यान

त्यु, त्यू–क्रि०वि०—१ तैसे, जैसे। उ०—१ ग्रकवर ग्रगम ग्रगाध गह, ते रहिया ग्रज तन्न। वाचे त्यही विचारियो; कमधै साचै मन्न।—रा.रू

उ०—२ वीदो गुहिलोत, भारमल ग्रासाइच त्याह नू कहियो त्यू करो ज्यू कुवर सेतो वेढि हुवै।—द वि

२ वैसा। उ०—ज्यू दलपत ए डूगर समुहा, त्यु जइ सज्जण हुति। चपावाडी भमर ज्यउ, नयण लगाइ रहति।—ढो मा

त्यूहार—देखो 'तिवार' (रू भे) उ०—हरसा मेरा वाला रे ग्रावेला वार त्यूहार। ग्रोदर का रै लोटचा खूणा मे बड बडा रोवैली जीवणी।—लो गी.

त्यों–क्रि०वि०—१ उस भाति, उस प्रकार, उस तरह।

उ०—जो हेणा छै त्यो रस रहियो, तो ऊ घोडो साळ कटारी मे माग लेयसे।—कुवरसी साखला री वारता

२ तैसा। उ०—हम ये हुग्रा न होइगा, ना हम करणे जोग। ज्यो हरि भावे त्यों करै, दादू कहै सब लोग।—दादू वाणी

रू०भे०—त्यौ, त्यो।

त्योरी-म०स्त्री०—चितवन, दृष्टि, अवलोकन।
त्योहार—देखो 'तिवार' (रू भे)
त्यों; त्यौ-सर्व०—१ तेरे २ उनके।
३ देखो 'त्यो' (रू भे.)
त्योणो-वि०—तिगुना। उ०—तिणा नू दूणा त्योणा अमल करावै छै।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
त्योर; त्यौरी—देखो 'त्योरी' (रू भे.)
त्यौहार—देखो 'तिवार' (रू भे.) उ०—अगर चदन को ओढणू ओढू, ओढू वार त्यौहार। पिवजी कहै गोरी ओढलै मेरी, सासू झूळस्या खाय।—लो गी
त्रब-स०स्त्री० [स० त्रम्बिका] १ देवी २ देखो 'तव' (रू भे.)
उ०—देहरा पडै त्रब कटै दुनियाण री, 'अमरिया' राख मरजाद हिंदवाण री।
—नीमाज ठाकुर अमरसिंघ री गीत
स०पु०—३ नगाडा। उ०—वजै त्रब जगी गडै नाळ वग्गे। लजावत त्रगी दुहु दीठ लग्गे।—रा रू
[स० त्र्यबक] ४ महादेव।
रू०भे०—तव
त्रबक-स०पु० [स० त्र्यबक] १ महादेव, रुद्र (ना मा.)
उ०—गन भूत प्रेत पिसाच कौतुक, बत तलु जटा जुटी। जय व्योम केश महेश त्रबक, भीम भूतप धुरजटी।—ला रा
२ नगाडा। उ०—१ वीर त्रिदग वाज्या, जयढक्क वाजी, समहर सामह्या, त्रहत्रहते त्रबक तणे, त्रहत्रहाटि त्रिभुवन टळटळिउ।
—व स
उ०—२ हे पती ! नगर रै कांकड मायँ त्रबक नगारा त्रहकिया, त्रह-त्रह इसो नगारा रो सबद होवै छै।—वी स टी.
रू०भे०—तबक, त्रबक, त्रम्मक, त्रावक।
अल्पा०—त्रबकडो।
त्रबकडो—देखो 'त्रबकडो' (रू भे)
त्रबगळ, त्रबट त्रबटो, त्रबयळ-स०पु०—नगाडा। उ०—१ सबळ कळ आस्त्रिया विलोमा साझंता वाजता त्रबगळ कहर वेळा।
—किसोरदान बारहठ
उ०—२ विकट तोपा कठठ डक त्रबटा वगा। महरजी आगळै भाण टळै मगा।—नीबाज ठाकुर अमरसिंह री गीत
उ०—३ गढ चडे द्वारि जम त्रबयळ गडगडै। उवर फाटै सुणै अरी घड ऊजडै।—राठौड मनोहरदास री गीत
रू०भे०—त्रावगळ।
त्रबा-स०स्त्री०—१ घोडी (अ मा)
२ देखो 'तव' (रू भे) (ह ना)
त्रबाक, त्रबाकियो, त्रबागळ, त्रबागळो, त्रबाट, त्रबाळ, त्रबाळो, त्रबोक, त्रमक, त्रमाट, त्रमाळ-स०पु०—नगाडा, नक्कारा।
उ०—१ हाक डाक जोगणी त्र बाक पूठ हाक हुवै। भैराक भचाक छाक सेलाक ऊनाळ।—पहाडखा आढो
उ०—२ त्यारी करै तमाम जळूसा साजिया। त्र बागळ रिणतूर विहद्दा वाजिया।—र रू
उ०—३ बीजळ सेल गुरज्ज घण वाजै। गाज त्र'बाळ सघण घण गाजै।—सू प्र.
उ०—४ भाळी जुध जूट कराळी भाटी, त्रबाळी घुरियो तिण वार।
—दुरजणसिंह भाटी री गीत
उ०—५ रोक रोक तुरी भाण आराण विलोक रीझै। विश्र मौक त्रलोक त्र बोक घोक वाज।—बदरीदास खिडियो
उ०—६ वजै त्रमक धौंसर वजै, नोवति सवद निराट। मदमत खभू ठाण मय, थटै गयदा थाट।—वगसीराम प्रोहित री वात
रू०भे०—तवाळ, त्र ब, त्र'बक, त्र वगळ, त्र वट, त्र वटो, त्र वयळ, त्र वाट, त्र वाळ, त्रमक, त्रमक, त्रमागळ, त्रमाट, त्रमाळ, त्रमाळो, त्रावाळ, त्रामागळ, त्रिवागळ।
अल्पा०—त्र वाकियो, त्र वागळो, त्रबाळो, त्रावाक, त्रावाट, त्रावाळो।
मह०—त्र बोक।
त्रबठ-स०पु०—एक प्रकार का वृक्ष विशेष। उ०—गळी गोवळ तणस त्र बठ, करजनइ कैळास। विदाम वणकड सेलपी, फिर सागणि पळास।—रुकमणी मगळ
त्र'बाट—देखो 'त्र बाट' (रू भे)
त्र बाळ-स०स्त्री०—१ मूर्छा, बेहोशी। उ०—ढोल ऊकळै धमकी उठै मरद त्र बाळा आ गिरै। जाळ झाळो देय बुलावै सुखद छाय सरजित करै।—दसदेव
२ देखो 'त्रबाळ' (रू भे)
त्र-वि०—तीन।
त्रइलोक-स०पु० [स० त्रिलोक] तीन लोक, त्रिलोक।
उ०—त्रइलोक कीध रामण सत्रास। साहाय करो हरि जग निवास।—सू प्र
त्रइलोकनाथ—देखो 'त्रिलोकनाथ' (रू भे) उ०—रे जगा ! समझ इण जीव नू, पूरो दिन पछतावसी। त्रइलोकनाथ समरण तणी, इसी घात कद आवसी।—ज खि
त्रई-वि०—तीन। उ०—प्रकाड पाठ पाठ के त्रिकरमकाड को करै। तने त्रई उपासना व्रह्माड ग्यात तें तरै।—ऊ का
स०पु०—ईश्वर (ना मा)
त्रईतन-स०पु० [स० त्रयीतनु] सूर्य, भानु (ना मा)
त्रईविक्रम—देखो 'त्रिविक्रम' (रू भे) (ना मा)
त्रकळ—देखो 'त्रिकळ' (रू भे)
त्रकाळ—देखो 'त्रिकाळ (रू.भे.) उ०—त्रकाळ तें त्रकाळ से त्रकाळ हूँ तदा, सुकाळ मे दुकाळ से अकाळ काळ व्है सदा। —ऊ का

त्रकाळाय—देखो 'त्रिकाळाय' (रू भे) उ०—दिल मो ग्यान त्रकाळाय दरसी, [illegible] राणा द्रण वरसी।—सू प्र.
(स्त्री० त्रकाळाया)

त्रकाळग्यानदरसी—देखो 'त्रिकाळग्यानदरसी' (रू.भे)

त्रकाळदरसी—देखो 'त्रिकाळदरसी' (रू भे) उ०—जद सिवलाल राम-[illegible] कह्यौ—रामनाम तो त्रकाळदरसी छै नै थू म्हारै तो बडो [illegible] है।—मयाराम दरजी री बात

त्रकुटन-स०पु० [सं० त्रिकुद्] पहाड़ (अ मा)

त्रकुट-स०पु०—१ पहाड़ (अ.मा) २ लंका का त्रिकूट पर्वत।

त्रकुटाण-स०पु० [सं० त्रिकुट+रा.प्र आण] १ लंका का त्रिकुटाचल उ०—माहो सुरतान दिखणाण मेलै सही। माहो त्रकुटाण [illegible]।—महाराजा अजीतसिंह री गीत

त्रकुटाचळ—देखो 'त्रिकूट' (रू भे)

त्रकुटवासी, त्रकुटवासी-स०पु०—१ लंका का निवासी।
उ०—[illegible] जोर [illegible] गाळिया त्रकुटवासी। राज चील जाळिया [illegible]।—हुकमीचंद खिड़ियो
२ राक्षस।

त्रकुटी—देखो 'त्रिकुटी' (रू भे) उ०—लुळ कर [illegible] त्रकुटी सळ [illegible], [illegible] वापण मी त्रकुटी भळकाती।—ऊ का

त्रकूण-वि०—त्रिकोण, तीन कोने वाला।

त्रकुटबंध-स०पु०—१ डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष जिसमे प्रथम [illegible] द्वितीय चरण मे चोदह चोदह मात्राएँ होती हैं और तुक [illegible] है। तीसरे चरण मे २६ मात्राएँ होती है और यह तुक द्वाले के अन्तिम चरण से मिलती है। तुकान्त का वर्ण लघु होता है। तीसरी तुक और अन्तिम तुक के बीच मे अनुप्रास की आठ तुक होती है [illegible] प्रथम तुक मे १६ मात्रा और शेष सात तुकों मे प्रत्येक मे १४-१४ मात्रा होती है। अनुप्रास की आठों ही तुक मिलती है और [illegible] होता है (र ज प्र)
[illegible] के अनुसार बीच की अनुप्रास की आठ तुकों मे प्रथम [illegible] १४ मात्रा और शेष सात मे बारह-बारह मात्राएं [illegible] होती [illegible]। २ [illegible] (छंद) का दूसरा भेद भी पाया जाता है जिसमे [illegible] जिसके प्रथम चरण मे [illegible] और [illegible] चरण मे १४ मात्रा होती है। तीसरे चरण मे १८ [illegible] मे ६ मात्राएं और अंत मे गुरु लघु होते हैं। [illegible] चरण रहते है जिनका तुकांत मिलता है। [illegible] होते है जिनमे प्रथम पद १६ [illegible] और शेष [illegible] मे १४-१४ मात्रा होती है। ये आठों तुक [illegible] और [illegible] है। [illegible] दस मात्रा का पद ही [illegible] मे मिलता है।
[illegible] अनुसार [illegible] के १६ पद होते है जिनमे प्रथम [illegible] और शेष [illegible] मात्राओं के होते है।

रू०भे०—त्रकुटबंध, त्रिकटबंध, त्रिकुटबंध, त्रिगुटबंध, त्रिकूटबंध, त्रुगटबंध।

त्रकूणो-स०पु०—जैसलमेर के गढ का एक नाम। उ०—त्याग मे दिया गढ परगना त्रकूणे, बीकपुर अजस दूणा विकासै।—द.दा
रू०भे०—त्रखूणो।
वि०—तीन कोने वाला।

त्रख, त्रख, त्रखा-स०पु० [सं० तृषा] १ प्यास। उ०—१ तोय ज्यू पीवत ताम, ज्वाल त्रख मेट जाम। झाळ रुप खाग झाट, घूमरां अरवक घाट।—सू प्र.
उ०—२ जदि त्रख छुधा दहू मिट जावै। लगै समाधि रहे चित लावै।—सू प्र.
उ०—३ छुधा न भाजै पाणिया, त्रखा न भाजै अन्न। मुकत नही हरि नाव बिन, मानव साचै मन्न।—ह र
२ अभिलाषा, इच्छा ३ लोभ, लालच ४ कामदेव की कन्या।
रू०भे०—त्रखणा, त्रिख, त्रिखा।

त्रखारथ, त्रखावत, त्रखित-वि० [सं० तृषार्त, तृषावान्, तृषित] तृषातुर, तृषित, प्यासा। उ०—१ देसी के फिर दिया कडा मोती कवराजा। जळ वरस त्रखारथ छक जगत भोम सब्द जै जै भयो।
—साहबो सुरताणियो
उ०—२ त्रखावत देखे जिकै नीर पाया, इसा जोध दाखो अठै केमि आया।—सू प्र
उ०—३ त्रखित सुरसुरी तीरह, खिती कूप खणत नर मूरख।
—र.ज प्र
रू०भे०—त्रिखावत।

त्रखूणो—१ देखो 'त्रकूणो' (रू भे.) २ तीन कोने वाला।

त्रखणा—देखो 'त्रखा' (रू भे.)

त्रगुट—देखो 'त्रिकूट' (रू भे)

त्रगुण—देखो 'त्रिगुण' (रू भे)

त्रगुणनाथ—देखो 'त्रिगुणनाथ' (रू भे)

त्रघाई-स०स्त्री०—ढोल या नगाडे की ध्वनि।
रू०भे०—त्रिघाई।

त्रड—देखो 'तड' (रू भे) उ०—दईत पडिसै घणा दडदड, रुंड रा हम तुड रडवड। लाग लासा वहै खडखड, खिमाडा त्रडत्रड।—पी.प्र.

त्रडत्रडणो, त्रडत्रडबो—देखो 'तडतडणो, तडतडबो' (रू भे)

त्रजड़—देखो 'त्रिजड' (रू भे) उ०—खिडियो 'मालो' मरुव भत, रौदो मगन रहो न। जिण नरे तूणा किया, त्रजड़ो नेरे तीन।—बा.दा
रू०भे०—त्रजडो, त्रज्झड, त्रझड, त्रिजड।

त्रजड़ाहत, त्रजड़ाहाव-स०पु०—योद्धा, खड्गधारी।
उ०—१ [illegible] पातमणा। त्रजड़ाहत नाचत 'पाल' तणा।—पा प

उ०—२ त्रजडाहथ कोळू तणा, आया छलती आग । तद झूठा जायल तणा, वीर हुवे वड भाग ।—पा.प्र

त्रजडी—देखो 'त्रिजड' (रू भे) उ०—त्रजडी धक घूणा तकी तरछी, बुरची तोय देवल ना विरची ।—पा.प्र.

त्रजट-स०पु०—शंकर, महादेव । उ०—पुर अब उदैपुर जोधपुर, इम तप निजरा आवियौ । 'जैसाह' ब्रहम अमरौ त्रजट, दइव 'अजौ' दरसावियौ ।—सू प्र.

त्रजमा, त्रजामा—स०स्त्री० [स० त्रियामा] रात्रि, रात (अ मा.)

त्रटक—देखो 'ताटक' (रू भे)

त्रट—देखो 'तट' (रू भे)

त्रटकणौ, त्रटकबौ-क्रि०अ०—१ टूटना । उ०—तोरी प्रीत तातण त्रटकइ री ।—स कु

२ जोश मे आना, तडकना । उ०—तप बोल्यउ त्रटकी करी, दान नइ तु अवहीलि । पणि मुझ आगळि तु किस्यउ रे, तु साभळि मील —स कु

३ देखो 'तडकणौ, तडकबौ' (रू भे.) उ०—तब 'ग्यान विमळजी' बोल्या, तुमे सास्त्र आगम नवी खोल्या रे । तमे तौ मरुस्थळीया ना वासी, तुमे वाक्य बोलो ने विमासी रे ।—ऐ जै का स

त्रटकौ-स०पु०—नाज-नखरा, तडक-भडक । उ०—एहरइ बंध न लागइ, ए आगइ ए अगि न अगि । त्रटकै ताहरै नासि सिइ, जाइ सिइ गिरिवर स गि ।—नेमिनाथ फागु

त्रट्ट—देखो 'तट' (रू भे) उ०—लिया सार सिंगार गोचर लीला । नरै आजरौ जम्मुना त्रट्ट लीला ।—ना द

त्रण—देखो 'तिण' (रू.भे) उ०—१ मघ वसण रण हाथ खग, घोडा ऊपर गेह । घर रख वाळौ विन घरण, गिणै न त्रण मम देह । —जैतदान बारहठ

उ०—२ हिक सिवड पडै त्रण बारहठ, सौ पडिया वका सुहड । —रा रू

उ०—३ चेईहर त्रण सय त्रेवीमा ।—वृहद् स्तोत्र

त्रणकाळ-स०पु० [स० तृण+काल] १ घास के अभाव का वर्ष । रू०भे०—त्रिणकाळ ।

२ देखो 'त्रिकाळ' (रू भे)

त्रणकेतु, त्रणकेतुक-स०पु० [स० तृणकेतु] १ वास. २ ताड का पेड ।

त्रणदीठ-स०पु० [स० त्रिदृष्टि] शिव, महादेव । उ०—न लाभत सावत सीस नत्रीठ । देतौ चक्र दड फिरै त्रणदीठ ।—मे म

त्रणद्रुम-स०स्त्री० [स० तृण-द्रुम] खिजूर (अ मा)

त्रणधज, त्रणधुज-स०स्त्री० [स० तृण ध्वज] वास (ह ना मा) रू०भे०—त्रिणधज ।

त्रणनैण—देखो 'त्रिनयन' (रू.भे) उ०—चढी नग रैण छई चहु चक्क, धरा चढि कम्प थई धक्धक्क । गई चढि चीलहणि गीधणि गैण, नसौ करि वैंडु चढयौ त्रणनैण ।—मे.म

त्रणराज, त्रणराजक-स०पु० [स० तृणराज] १ ताड का वृक्ष. २ वास ।

त्रणवाळ-वि० [स० तृण-वाल] नीला, आसमानी* (डि.को.)

त्रताप—देखो 'त्रिताप' (रू भे) उ०—करैं अलाप जाप के त्रताप मे अनुद्यमी । लगें दरिद्र लच्छयें समुद्र छुद्र उद्यमी ।—ऊ का.

त्रताळीस—देखो 'तयाळीस' (रू भे)

त्रती, त्रतीय-वि० [स० तृतीय] तीसरा । उ०—इम दिन त्रती सु सारिख आणी, जिम सब कियौ कहै जिखाणी ।—सू प्र.

त्रतीया-स०स्त्री० [स० तृतीया] मास के प्रत्येक पक्ष की तृतीया तिथि । वि०—तीसरी । उ०—प्रथम्मा तुही पब्बई सैल पुत्ती, दुरग्गा तुही ब्रह्मचारण्य दुत्ती । त्रतीया तुही चद्र घटा तवीजै, चतुरथी तुही कूसमाडा चवीजै ।—मे म.

त्रत्रडणौ, त्रत्रडबौ-क्रि०अ०—टपकना । उ०—नेव त्रत्रडइ, खोलड खडहडइ, वीज भळहळइ, परनाळ खळहळइ ।—व.स

त्रदन, त्रदव—देखो 'त्रिदव' (रू भे) (अ मा, ह ना)

त्रदवसा—देखो 'त्रिदवेस' (रू.भे) (अ मा)

त्रदस-वि०—१ तेरह २ देखो 'त्रिदस' (रू भे) (अ.मा) उ०—खत्रिया रा खटतीस कुळ, त्रदस क्रोड तेतीस । जिकै खडा तौ जावतै, अकवर किसू करीस ।—वा दा

त्रदसतप—देखो 'त्रिदसतप' (रू भे)

त्रदसा—देखो 'त्रिदस' (रू भे) (अ मा)

त्रदसाधिभू-स०पु० [स० त्रिदश+विभु] इन्द्र (अ मा)

त्रदोम, त्रदोस—देखो 'त्रिदोम' (रू भे)

त्रधा—देखो 'त्रिधा' (रू भे)

त्रधार, त्रधारौ-स०पु०—१ एक प्रकार का तीर विशेष (अ मा)

२ तीन तीक्ष्ण धार वाला शस्त्र विशेष । उ०—त्रधारा चोधारा जडै भब्बतारा । पाट्टरा प्रहार ढिका ढिचणा रा ।—ना द

३ थूहर ।

त्रन—देखो 'तिण' (रू.भे)

त्रनयण—देखो 'त्रिनयन' (रू भे) उ०—साह दुसट आगा नव साहसौ, सक जागुर लायौ सकज । 'रासा हरै' सरण राव राणा, रहै न त्रनयण सरण रज ।—द.दा

त्रनया-स०पु०—दुर्गा, भवानी । उ०—सकाळिका सारदा समया त्रिपुरा तारणि तारा त्रनया ।—देवि

त्रनेत्र—देखो 'त्रिनेत्र' (रू भे)

त्रप-स०पु० [स० पत्र] पलाश का वृक्ष (अ मा)

त्रपट-वि० [स० त्रपया=पटति] नीच, दुष्ट । उ०—आगे कुखत्री अेक, तौ जेहौ हूतौ त्रपट । साप्रत कीनौ सेख, नाच नचायौ नागवी । —पा.प्र

त्रपण-स०पु० [स० तर्पणकम्] कर्मकाण्ड की एक क्रिया जिसे देवो, ऋषियो और पितरों को तुष्ट करने के लिए की जाती है । तर्पण ।

त्रपणौ, त्रपबौ-क्रि०अ०—सतुष्ट होना, तृप्त होना ।

उ०—चाप करा नृप राम चढे, माझ रजी तद भाण मढे। खोहण के असुराण खपे, पख सिवा पाळ खाय त्रपे।—र ज प्र

त्रपत, त्रपतक–वि० [स० तृप्त] तृप्त, प्रसन्न, सतुष्ट।

उ०—१ जैंजैकार उचारिया, व्रम व्रद विचाळै। हुवा त्रपत तेतीस क्रोड, सुरपुर वाळै।—पा प्र

उ०—२ धमक सेलक ववक धक धक, तदि उवकि पत्र चडिक त्रपतक।—सू.प्र

रू०भे०—त्रपत्त।

त्रपति–स०स्त्री० [स० तृप्ति] सतोष।

त्रपत्त—देखो 'त्रपत' (रू.भे)

त्रपथा–स०स्त्री० [स० त्रिपथगा] गगा (अ.मा)

त्रपरार–देखो 'त्रिपुरारि' (रू भे) (अ मा)

त्रपा–स०स्त्री० [स०] लज्जा, शर्म। उ०—नीचा तदि कीधा नयण, पाइ त्रपा रोपाळ। इम सजियो हालू अनड, कजियो रचण कराळ। —व.भा.

त्रपावत–वि०—लजालु, शर्मीला २ उष्ण, गर्म।

त्रपु–स०पु० [स०] रागा नामक धातु (डि को)

त्रपुर—देखो 'त्रिपुर' (रू भे)

त्रपुरात—स०पु० [स० त्रिपुर+अतक] महादेव, शिव। उ०—त्रिगुणातम ईम त्रिलोचन, त्रपुरात मार-प्रजारन। अलिकेंदु बिंदु अदेव मरदन, वारिधी विष जारन।—ला रा.

त्रपुरा—देखो 'त्रिपुरा' (रू.भे) उ०—साभळि ध्यान धरे दुज साचो, तिण नू वर वाळा त्रपुरा चो।—सू प्र

त्रपुरार, त्रपुरारि—देखो 'त्रिपुरारि' (रू भे)

त्रपुरा-सुर-स्यामणी–स०स्त्री०—पार्वती (ह ना)

त्रपुरी–स०स्त्री०—छोटी इलायची।

त्रप्त–वि० [स० तृप्त] सतुष्ट, तुष्ट। उ०—सकळ योगनी त्रप्त ह्वो, ठाडा अति सुख पार। तीनू दडवत आय कियो, राजा तत सिर नाय। —सिंघासण बत्तीसी

त्रबक–स०पु०—१ डिंगल का एक गीत (छद) विशेष जिसके प्रत्येक पद मे १६ मात्रायें होती है और प्रथम द्वितीय और चतुर्थ पद के तुकात मिलाये जाते हैं। इसके तीसरे पद के आदि मे दो मात्रायें, मध्य मे दो चौकल और अत मे एक पटकता रखा है। तीसरे पद का चौकल तीन वार उलट पुलट कर पढा जाता है और उसके बाद छ मात्रा होती है। इस गीत का तुकात गुरु होता है (र ज प्र)

२ देखो 'त्रबक' (रू भे.) उ०—राम रूप हु आगइ परणी सुर नर पनग दइठ्ठा। त्रबक धनुस लिया निहु कुटका तहीयइ त्रिभुन दीठा।—रुकमणी मगळ

अल्पा०—त्रबको।

त्रबकडो–स०पु०—१ डिंगल का एक गीत (छद) विशेष जिसके प्रथम चरण मे १८ मात्रा और शेष के तीनो चरणो मे सोलह-सोलह मात्रा होती हैं। इसके तुकात मे दो गुरु होते हैं।

२ देखो 'त्रबक' स० २ (अल्पा, रू भे.)

रू०भे०—त्रबकडो।

त्रबको—देखो 'त्रबक' (अल्पा, रू भे)

त्रबदी—देखो 'त्रिविध' (रू भे)

त्रबळी–स०स्त्री०—देखो 'त्रिवळी' (रू भे)

त्रबाक–स०पु०—नगाडा। उ०—पह बीरहाक पनाक पणचा, बाज डाक त्रबाक। असनाक पर ग्रीधक आवध, करग वाज कजाक। —र.ज प्र

त्रभड–स०पु०—देखो 'त्रभाड' (रू.भे)

त्रभगी—देखो 'त्रिभगी' (रू भे)

त्रभवण, त्रभवन—देखो 'त्रिभुवन' (रू भे.)

त्रभवनाथ—देखो 'त्रिभुवननाथ' (रू भे)

त्रभाड–वि०—बदनाम, अपयश प्राप्त, कुख्यात।

त्रभाग, त्रभागो, त्रभागी–स०पु०—१ भाला (तीन धार वाला) (ना डि को.)

उ०—१ निजर पडता साह दळ, भड नव कोट अभग। सेल त्रभागा झल्लिया, साम्हा किया तुरग।—रा रू

उ०—२ सकत त्रभागो तोलिया, सकती 'पुरा मुरार।' वीज झडेली सारखा, कै सिव हदी रार।—रा रू.

२ त्रिशूल। उ०—लखीजै इसी भाति आकास लागो, भवानी खडा पाण लीधो त्रभागो—मे म

वि०—तीन भागो मे विभक्त, तीन भाग वाला।

त्रभुयण—देखो 'त्रिभुवन' (रू भे.)

त्रभुवणनाथ—देखो 'त्रिभुवननाथ' (रू भे)

त्रमक, त्रमक—देखो 'त्रमक' (रू भे) उ०—घाव डक त्रमक तोया सबद धरहरे, दुजड भड उरड काढण दुखदी। रोद छरहरी लागी करी ऊपरा, सै'र रो सै'र जीम गयो सूदी।—महादान महडू

त्रमागळ—देखो 'त्रबागळ' (रू भे) उ०—घोडा घूमर रग भडा, जाडी जोडा जोध। द्रोह डका त्रमागळा, सुरवा किया सरोध। —पना वीरमदे री वात

त्रमाट—देखो 'त्रमाट' (रू भे) उ०—त्रमाटा घोक वज सोक गोळा तणी, आवधा झोक भड रोख आणै।—कविराजा करणीदान

त्रमाळ, त्रमाळो—देखो 'त्र बाळ' (रू भे) उ०—१ विकसै रणताळ त्रमाळ वगा, दमकै खिजि ज्वाळ विडाळ द्रगा।—मे म.

उ०—२ स्लोका घुणी पाठ दुरगा सुणावै, गुणी माढ रै राग सोभाग गावै। ववी बीण मैतार सैनाय बाजै, त्रमाळा घुरै मेघमाळा तराजै। —मे म

त्रम्मक—देखो 'त्र बक' (रू भे)

त्रय–वि०—१ तीन। उ०—त्रय खटकळ अत रगण नाम छद हीर है, सो पमु कव धन्य पढत कीरत रघुवीर है (र ज प्र)

२ तीसरा, तृतीय।

त्रयण—देखो 'त्रिनयन' (रू भे)
त्रयदस्स-वि० [सं० त्रयोदश] तेरह।
त्रयनयण—देखो 'त्रिनयण' (रू.भे) उ०—गजा कण कळ भूखण चुणे गूथियो। त्रिया तन त्रयनयण वणायो तत। पारवत रिदै सोभत कनकधाम पर, प्रभु मुगत माळ तारायणी पत।—कविराजा करणीदान
त्रयरूप-स०पु०—ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीन रूप धारने वाला ईश्वर उ०—नमो वळि वंधण रूप वावन्न, नमो भर तीन पगा त्रिभुवन्न। नमो त्रयरूप दतात्रय देव। नमो जप तप्प धियान अजेव।—ह.र.
त्रयलोक—देखो 'त्रिलोक' (रू भे)
त्रयलोकनाथ—देखो 'त्रिलोकनाथ' (रू भे)
त्रयलोकी—देखो 'त्रिलोक' (रू भे)
त्रयलोक—देखो 'त्रिलोक' (रू भे) उ०—१ ए नवपद सपद दियण, उद्धारण त्रवलोय। जिन सासन नो सार ए, एह थी चिंतित होय। —स्रीपाळ रास
त्रयाळो—देखो 'तयाळो' (रू भे) उ०—सथुण्या सतरै सै त्रयाळै। —वृहद् स्तोत्र
त्रयानेता-स०पु०—ब्रह्मा, विष्णु, शिव। उ०—त्रयानेता राखै असत नही भाखे अत त्रपा।—ऊ का
वि० [स० त्रय] तीन, तीसरा।
त्रयासियो—देखो 'तइयासियो' (रू भे) उ०—पूरण थयो त्रयासियो, वण वरसात सरस्स। स्रावण घण गंधूवियो, चौरासियो वरस्स। — रा.रू.
त्रयी-स०पु० [स०] १ तीन वस्तुओं का समूह २ तीनो वेद (ऋक्, यजु, साम)। उ०—नीच क्रव्याद रा कुळ नू दुहिता देण री किण मूढ कही छै। जिण रीति मुकुदरा मदिर नू विहाय खेत्रपाळ पूजण री स्रद्धा किसो कापुरुस चित्त धरै अर त्रयी रा तिरस्कार करि किसडो नीच चडाळी मत्र रो साधन करै।—व भा
त्रयीतन-स०पु० [स० त्रयी+तनु] सूर्य (अ मा)
षयोदस-वि० [स० त्रयोदश] तेरह।
त्रयोदसी-स०स्त्री० [स० त्रयोदशी] मास के प्रत्येक पक्ष की तेरहवी तिथि।
त्रयोसळ—देखो 'त्रिसळो' (रू भे.)
उ०—चढ भाळ त्रयोसळ नेत्र चोळ। भ्रगुटी मुछाळ मिळ करत खोळ।—पे रू
त्ररेख-स०पु० [स० त्रिरेख] १ शख २ ललाट पर पडने वाली तीन रेखायें।
त्रलोक—देखो 'त्रिलोक' (रू भे) उ०—रोक रोक तुरी माण आराण विलोक रीझे। विभ्र मोक त्रलोक अत्रोक घोक वाज। —बद्रीदास खिडियो
त्रलोकपत—देखो 'त्रिलोकपति' (रू भे)
त्रलोकराव—देखो 'त्रिलोकराव' (रू भे)
त्रलोचणा—देखो 'त्रिलोचना' (रू भे)
त्रलोयण—देखो 'त्रिलोचण' (रू भे.) उ०—खमा भणि जोगणि खाचत खून, सूरा कर माचत मेहप्रसून। झखध्वज भूपति दोयण भूल, त्रलोयण लोयण रूप त्रसूल।—मे म
त्रवक—१ डिंगल का एक गीत छद (क कु वो)
२ देखो 'त्रवक' (रू.भे)
त्रवकडो—देखो 'त्रवकडो' (रू.भे)
त्रवको-वि०—१ वीर, योद्धा. २ सहारक, नाश करने वाला।
त्रवटो—देखो 'तेवटो' (रू भे)
त्रवधा—देखो 'त्रिविध' (रू भे)
त्रवळ-वि०—टेढा-मेढा चलने वाला, वाकुरा उ०—हाकिया सुं पादरो न हालै, वाकमनीर वहत त्रवळ। मत्र जत्र ओखद नह मुळी, खादा जिण दाठीक खळ।—नीवाज ठाकुर जगरामसिंह रो गीत
त्रवळी—देखो 'त्रिवळि' (रू भे.) उ०—मिळ रैंस सुरग परा गमय। त्रवळी नव तोरथ राजखयं—पा प्र
त्रववेसा—देखो 'त्रदस' (रू भे) (ह.ना)
त्रवाळो-स०पु०—१ चक्कर. २ देखो 'तरवाळो' (रू भे)
३ देखो 'तिरवाळो' (रू भे.)
त्रविक्रम-देखो 'त्रिविक्रम' (रू भे) (ह ना)
त्रवेणी—देखो 'त्रिवेणी' (रू भे) उ०—सरसति जमना गगा त्रवेणी, त्रहुवै उळटी वदै त्रिवेणी।—सू प्र
त्रवेळू-वि०—तीन समय का।
त्रसझा-स०स्त्री० [स० त्रिसध्या] सध्या।
त्रस-स०पु० [स०] १ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की शक्ति रखने वाला जीव। उ०—जाणी पीछी आकूट नै, हू त्रस जीव नही मारू जी।—जयवाणी
२ जगल. ३ त्रास, भय ४ तृपा, प्यास। उ०—जिम जळ पीजइ त्रस नासइ, अन्न भोजनि भूख भाजइ।—व स
त्रसकत-स०पु०—१ हाथ।
स०स्त्री०—२ देखो 'त्रिसकति' (रू भे) (ह ना)
त्रसकाय—देखो 'त्रस' (रू भे) उ०—प्रिथी, पाणी, अगनी, वायरो जीवा, वनस्पति त्रसकाय। धरम कारज हेते हणै जीवा, ते भव तरिया नाय।—जयवाणी
त्रसगती-स०स्त्री० [स० त्रिशक्ति] देवी, शक्ति।
उ०—तू हीज भद्रकाळी कमला, तू त्रसगती ताल।—रामदान लाळस
त्रसटणो, त्रसटवो—देखो 'तिसटणो, तिसटवो' (रू भे)
उ०—कुवरी पित हुता कहे, सोढा सरव सुणोह। धिया म दीजो धाधला, निज त्रसटेला नांह।—पा प्र
त्रसटियोडो—देखो 'तिसटियोडो' (रू.भे)
(स्त्री० त्रसटियोडी)
त्रसणा—देखो 'तिसणा' (रू भे) उ०—वेरण रसणा वस त्रसणा

तन ताई। आभा आगण री अँन मागण आई।—ऊ का.

रू०भे०—त्रसना, त्रसना।

त्रसणो, त्रसबो–क्रि०अ०—१ डरना, भय खाना. २ फटना।

उ०—भड कायर भाजे तिहा भडकै, शेण त्रसै जिम तडकै हो।
—वि कु.

त्रसत–वि० [स० तृषित] प्यासा। उ०—परै त्रसत घायल तहा, मरै सब्बि बहुमारि।—शि व.

त्रसन–स०पु०—भय, डर।

त्रसना, त्रसना—देखो 'तिसणा' (रू भे) उ०—ज्यू ज्यू लालच खार जळ, सेवै दुरमत सग। 'बाका' ग्रत त्यू त्यू वधै, त्रसना तणी तरग।
—बा.दा.

त्रसर–स०स्त्री०—ललाट पर कोप के कारण होने वाली तीन सिलवट। उ०—दिन छिनदा उत्पात चित, रोख तरुनता रत्त। भ्रगुत तोर भ्रगुटी त्रसर, भयौ असुर उन्मत्त।—ला.रा.

त्रसरी–स०स्त्री—तीन रेखाएँ। उ०—कणइअर काव जिसी कूअळी, त्रसरी आटि पेटिइ वळी। आछा भावर कू कू वानि, झबकइ झालि को सीसे कानि।—प्राचीन फागु सग्रह

त्रसळ–स०पु०—१ जोश, आवेग २ भय. ३ घोडा, अश्व।

४ देखो 'त्रिसळी' (रू भे) उ०—त्रसळा चढि भाल कराळ तकै, धडकै नह चित्त लकाळ धकै।—मे म.

५ ललाट। उ०—भालो हाथै भळहळै, त्रसळ पडै सळ तीन। जे खुर हाथी जोड री, जरद बनाती जीण।—पना वीरमदे री वात

त्रसळी—देखो 'त्रिसळी' (रू भे.) उ०—विकट रजवट उछट अघट वेवाहसा। नीपट त्रसळी भ्रगट कठी नव साहसा।
—जोधपुर नरेस महाराजा मानसिह री गीत

त्रसा–स०स्त्री० [स० तृषा] प्यास। उ०—ताप त्रसा अघहर तुरत, सुख दे दे सतसग। की भीसम जणणी कहा, तू जग जणणी गग।
—बा दा.

क्रि०स०—डराना, भय दिखाना।

त्रसाको–

उ०—तटाका पाण छूटै कुरग त्रसाका। रूकडा पाण घमहम विखम रीस।—नाथो सादू

त्रसाणो, त्रसाबो–क्रि०स० [स० त्रसि] डराना, धमकाना, भय दिखाना।

त्रसायोडो–भू०का०कृ०—डराया हुआ, धमकाया हुआ।

(स्त्री० त्रसायोडी)

त्रसावत–वि० [स० तृषावन्त] १ प्यासा २ अतृप्त।

त्रसिंघ, त्रसींग, त्रसींघ–वि०—जबरदस्त, बहादुर।

उ०—१ सिवदान भीम जोधै त्रसिंघ, सक भाण करन हैवत्तसिंघ।
—रा रू.

उ०—२ राजा सीहलदीप रै, तोनू दीध त्रसींग। खित पुड गूजर खडरा, सिघ वधै तै सीग।—बा दा

देखो 'त्रिसकु' (रू भे)

त्रसुर–वि० [स०] भीरु, डरपोक।

त्रसुळ—१ देखो 'त्रिसळी' (रू भे) उ०—आप सिलह कसि आवधा, भरि त्रसुळ भ्रगुट्टी। चढे किसन असि भड चढे, अग नयण उछुट्टी।
—सू.प्र.

२ देखो 'त्रिसूळ' (रू भे.)

त्रसूळ—देखो 'त्रिसूळ' (रू भे) उ०—झळाहळ सावळ वाहत झूल, सदा सिव वाहत जाणि त्रसूळ।—सू प्र

त्रस्त–वि० [स०] १ भयभीत। उ०—सरण सहायक विरुद सिर, पहली ही कुळपाण। अकवर हू मुडियो अवै, त्रस्त करू तुरकाण।—व.भा

२ पीडित, सताया हुआ।

त्रस्सरा–स०पु०—त्रिशिरा नामक रावण का एक भाई जो खरदूषण के साथ दण्डकारण्य मे रहता था।

त्रह–स०पु०—१ भय, डर। उ०—घलियो गढवाडा मे सोर घणौ। त्रह ढोल घुरै बह छेड तणौ।—पा प्र

२ नगाडे की ध्वनि।

वि०—तीन। उ०—इम त्रह दिन वीता तिण औसर। वेद धरम नांमा प्रोहित वर।—सू प्र

त्रहक–स०स्त्री०—वाद्य की ध्वनि। उ०—त्रवका त्रहकां वज भेर तुरी, घण वासुर का अधरात धुरी।—गो रू

रू०भे०—तहक।

त्रहकणो, त्रहकबो–क्रि०अ०—नगाडा बजाना, नगाडे की ध्वनि होना।

उ०—हे पती, नगर रै काकड माथै त्रवक नगारा त्रहकिया, त्रह त्रह इसो नगारा री सब्द होवै छै।—वी स टी.

त्रहत्रहणो, त्रहत्रहबो, त्रहळकणो, त्रहळकबो—रू०भे०।

त्रहकाणो, त्रहकाबो–क्रि०स०—नगाडा बजाना, रणभेरी बजाना।

त्रहकाणहार, हारो (हारी), त्रहकाणियो—वि०।

त्रहकाडणो, त्रहकाडबो, त्रहकावणो, त्रहकावबो—रू०भे०।

त्रहकायोडो—भू०का०कृ०।

त्रहकाईजणो, त्रहकाईजबो—कर्म वा०।

त्रहकणो, त्रहकबो—अक०रू०।

त्रहकवाडणो, त्रहकवाडबो, त्रहत्रहाणो, त्रहत्रहाबो—रू०भे०।

त्रहकायोडो–भू०का०कृ०—नगाडा बजाया हुआ।

(स्त्री० त्रहकायोडी)

त्रहकियोडो–भू०का०कृ०—ध्वनि किया हुआ या बजा हुआ (नगाडा)

त्रहणो, त्रहबो–क्रि०अ०—नगाडे का आवाज करना, बाजे का बजना।

उ०—तरवर डहै उरूमै ताजी, परवत जुग्रळै हुवै पणा। मदझर वहै किणेसर मारू, त्रहै दमामा 'गजन' तणा।—जगनाथ सादू

त्रहत्रहणो, त्रहत्रहबो—देखो 'त्रहकणो, त्रहकबो' (रू भे)

उ०—मन द्रढ रह धडकै मती, त्रहत्रहिया त्रबाळ। सिर धड ऊपर सावतो, मिळण न दू भुरजाळ।—लिखमीदान बारहठ

त्रहत्रहाटि--स०स्त्री०—नगारे की ध्वनि । उ०—त्रीरम्रिदग वाज्या, जयढक्क वाजी, समहर सामह्या, त्रहत्रहते त्रवक तणै त्रहत्रहाटि त्रिभुवन टळटळिउ ।—व स

त्रहत्रहाणो, त्रहत्रहाबो—देखो 'त्रहकाणो, त्रहकावो' (रू भे)

त्रहत्रहायोडो—देखो 'त्रहकायोडो' (रू भे)

त्रहत्रहियोडो—देखो 'त्रहकियोडो' (रू भे)

त्रहळकणो, त्रहळकबो—देखो 'त्रहकणो, त्रहकवो' (रू भे)

उ०—वादे महल छतीस राज वस, कमध नगारा त्रहळक्यिं । दहल पडै ग्रवरा दैसोता, थारै सहल मिकार थियं ।—जगनाथ सादू

त्रहळकाणो, त्रहळकावो—देखो 'त्रहकाणो, त्रहकावो' (रू भे)

त्रहळकायोडो—देखो 'त्रहकायोडो' (रू भे)

त्रहळकियोडो—देखो 'त्रहकियोडो' (रू भे)

त्रहाक—देखो 'त्रहक' (रू भे) उ०—त्रव गजर तूर त्रहाक, हूं कळळ हू वळ हाक । तपवत पूटत ताळ, वणि जाणि निस वरसाळ । —सू प्र

त्रहासणो, त्रहासवो-क्रि०स०—नगाडा वजाना । उ०—खुरम खान दराव वीसिया, त्रहासिया त्रावाट । अवियाट दूजा 'वलू' अचळा, थोभियो गजथाट ।—जैतो महियारियो

त्रहु, त्रहू-वि०—तीन । उ०—१ समरथ विरुद लोक त्रहु सामी, पुणा भामी समथ्थपणो ।—र.ज प्र

उ०—२ त्रहू जग मिटावण विघन नन ताप रा, खपावण पाप रा मूळ खोटा ।—खेतसी वारहठ

त्रागड—देखो 'तागड' (रू भे.)

त्रागडी-स०स्त्री०—एक प्रकार का शाक । उ०—तूवि तूरि त्रागडी, त्राहिमाण त्रिपुरारि । तूरफळी तरसाउळी, त्रिजटा नइ त्रित्रितारि । —मा का प्र

त्राण-स०पु० [स० त्राण] १ कवच । उ०—सुणिया पातल समर रा, नोधसता नीसाण । तेज न मावै तन्न मे, तन्न न मावै त्रांण । —किसोरदान वारहठ

स०स्त्री०—२ ढाल ।

[स० त्राण] ३ रक्षा ।

त्राणपत्र-स०पु० [स० त्राणपत्र] एक वृक्ष विशेष ।

त्राणपोरस-स०पु०—अभिमान, गर्व (डि को)

त्राणो-वि० [स० त्राण] १ रक्षक । उ०—तू गति तू त्रिभुवन पती, तू सरणागत त्राणा । समयसुदर कहइ इह भव पर, भव पारसनाथ तू देव प्रमाणा ।—स कु

२ देखो 'त्राण' (रू भे)

त्रान—देखो 'त्राण' (रू भे)

त्रापणो, त्रापबो-क्रि०अ०—ऊट का उछलना-कूदना ।

त्रावक—देखो 'त्रवक' (रू भे)

त्रावगळ—देखो 'त्रवगळ' (रू भे)

त्रावाक—देखो 'त्रवाक' (रू भे) उ०—ऊपडै सराक वाग पैनाक रठीठ आचा, खडाक भेराक वाढ तेजाक टेवेम । डाक ध्रीह त्रावाक गाजाक ते भाळाक दीसै, रचै ग्रै थडाक केण ऊरै रोजेस । —पहाडखा आढो

त्रावाट—देखो 'त्रवाट' (रू भे) उ०—समर धुवे त्रावाट होय नाद सिंधू, सवद खहण लागै गयण मुगथ खायँ ।

—मानसिंह भाटी (मोही) रो गीत

त्रावा-त्रासिया- स०स्त्री०—ताम्र के पात्र मे उबाली हुई भाग ?

उ०—आप पूछियो ठाकुरै सूरज वासिया किया । तो हिवे त्रावा-त्रासिया करो ।—प्रतापमल देवडा री वात

त्रावाळ—देखो 'त्रवाळ' (रू भे) उ०—घुरै वसराळ त्रावाळ तासा घणा । महाराणा भीमसिंह रो गीत

त्रावाळो—देखो 'त्रवाळ' (अल्पा, रू भे)

त्रावो—देखो 'तावो' (रू भे) उ०—कासी पीतळ त्रावा रज तणी, चोरी कीधी जेणी जी ।—स कु

त्राभाड—देखो 'तावाड' (रू भे) उ०—फुरणा वज वाह हिहाड फिरै, फळ गाय आभाड आभाड करै ।—पा प्र

त्राभाडणो, त्राभाडबो—देखो 'तावाडणो, तावाडबो' (रू भे)

त्राभाडो—देखो 'तात्राडो' (रू.भे)

त्रामागळ—देखो 'त्रवागळ' (रू भे) उ०—दळ आगळ निसदीह विजय त्रामागळ वाजै । दहसत गालिव देस आग कहता मुख दाजै । —मे म.

त्रामाळ, त्रामाळो—देखो 'त्रवाळ' (रू भे.)

त्राकडि—देखो 'ताकडी' (रू भे) उ०—जीवतउ नइ मुयउ चोर मइ तोलियउ, त्राकडि घाली ततो जी ।—स कु

त्राकळउ—देखो 'ताकळो' (रू.भे) (उ र)

त्रागो—देखो 'तागो' (रू भे) उ०—तुम्ह सुं लागउ नेहलउ, जाण मजीठउ राग । पट्ट कूल फाटैं थके, रहे त्रागा सु लागो रे ।—प च चौ.

त्राड-स०पु०—१ आतक, भय ।

स०स्त्री०—२ ध्वनि, आवाज. ३ वृक्ष विशेष ।

त्राडणो, ताडवो—१ काटना, चवाना, काट कर खाना ।

उ०—सो किण भाति रा वाकरा जिके कडकती साथरा वडकती नळी रा भाहरे साद रा मादळिए पेट रा माडि वीर काचर रा वरड़णहार घणै कुभट नै वावळी री टीसीआ रा त्राडणहार ।—ग सा स

२ देखो 'ताडणो, ताडवो' (रू भे) उ०—ताहरा सोम अढाई हजार आदमी लेनै उवै कोट माहे आयो, आगला आदमी त्राडि काढिया ।—सातलसोम री वात

३ देखो 'आडणो, त्राडवो' (रू भे.) उ०—भलो त्राडियो वाळ धमळ ।—वचनिका

त्राचणो, आचवो-क्रि०अ०—मारना, नष्ट करना, सहार करना ।

त्राचणहार, हारो, (हारी), त्राचणियो -वि० ।

त्राचिओडो, त्राचिओडो, त्राच्योडो—भू०का०कृ० ।

ग्राचीजणो, घाचीजवो— भाव वा० ।
ग्राचियोडो-भू०का०कृ०—मारा हुग्रा, सहार किया हुग्रा ।
(स्त्री० ग्राचियोडी)
ग्राछटणो, ग्राछटवो—देखो 'ताछटणो, ताछटवो' (रू.भे.)
उ०—वड वड भीच वकार, खेंग चढ़ कर खाट खड। ग्राछट जोध तरार, ग्राछट घायल राव उत ।—पा प्र
ग्राछटियोडो—देखो 'ताछटियोडो' (रू भे.)
(स्त्री० ग्राछटियोडी)
ग्राछण-स०स्त्री० [स० ग्रासन] काटने की क्रिया या भाव ।
ग्राछणो, ग्राछवो [स० ग्रासण] देखो 'ताछणो, ताछवो' (रू भे.)
उ०—१ घाइ भाजे घड़ा खाग ग्राछै घणो। मेर माझी 'जसो' हेक रिण माल्हणो ।—हा भा.
उ०—२ वळि विच मा वदूक विछूटै, खिण ग्रारावा खूंटै। तरवारा ग्राछता तूटै, सुभटा रो सिर फूटै हो ।—प.च चो.
ग्राछियोडो—देखो 'ताछियोडो' (रू.भे)
(स्त्री० ग्राछियोडी)
ग्राजु-स०स्त्री०—तराजू, तकडी । उ०—ग्राजुए तोलावी मुझ नइ दियउ, एह पारिखा प्रमाण रूडा राजा ।—स कु
ग्राट-स०स्त्री०—१ शस्त्र का प्रहार, वार, चोट, घात ।
उ०—'पातल' री वग ऊपडी, नजड झडी मझ ग्राट। वडी वडी वप वीर री, घडी वीर रस घाट ।—जैतदान वारहठ
२ देखो 'ताट' (रू भे.)
ग्राटक-स०पु०—१ योग के षट् कर्मों मे छठा कर्म या साधन क्रिया। इसमे ग्रनिमेष रूप से किसी विन्दु पर दृष्टि रखते है ।
उ०—साधो ऐसा जोग विचारा । ग्राटक ध्यान धरो धीरप सू, खेलो जग सू न्यारा ।—स्री हरिरामजी महाराज
२ देखो 'ताटक' (रू भे.)
ग्राटको-स०पु०—डिंगल का एक गीत (छद) जिसके प्रथम द्वाले के प्रथम चरण म १८ मात्राए ग्रौर दूसरे तीसरे चरण मे सोलह-सोलह मात्राए होती हैं। प्रथम, द्वितीय ग्रौर तृतीय चरण का तुकात मिलाया जाता है, इसके वाद पाचवें, छठे ग्रौर सातवें चरण मे १६-१६ मात्राए होती हैं ग्रौर इनका परस्पर तुकान्त मिलाया जाता है। चतुर्थ चरण तथा ग्राठवें चरण मे ग्यारह-ग्यारह मात्राए ग्रन्त गुरु लघु के नियम से रख कर इनका परस्पर तुकान्त मिलाया जाता है। इसी प्रकार ग्रागे भी ग्राठ-ग्राठ चरण का एक द्वाला होता है परन्तु प्रथम द्वाले के वाद वनने वाले प्रत्येक द्वाले के प्रथम चरण मे सोलह मात्रा ही होती हैं।
ग्राटि, ग्राटी—देखो 'टाटी' (रू भे.) उ०—१ खादि सीघा, कापि कीधा, सुवरणमइ ग्राटि, सिखरनइ घाटि ।—व.स.
उ०—२ किहा मोति नइ किहा ग्राटी रे ! किहा रभा नइ किहा राटी ! ग्रतर दीसइ एवडू, किहां दूध किहा छासि खाटी रे !
—नळ-दवदती रास

ग्राटीहर-स०पु०—टहनियो से वनाया हुग्रा मकान, घर ।
उ०—धूळ हडी ना राय नइ, न घटइ स्वेत छत्र रे ! ग्राटीहर भीति जिहा नवि, घटइ वारु चित्राम रे !
—नळ-दवदती रास
ग्राठो-वि० (स्त्री० ग्राठी) १ भयभीत, डरा हुग्रा ।
उ०—ग्राठी हिरणी तणी परइ जी, दह दिसि जोवइ माग। दीठउ ग्राह्मण ग्रावतउ जी, सीहरि प्रणम्या पाग—रुकमणी मगळ
२ पीडित ।
ग्राठउ-वि० [स० ग्रस्त] भयभीत, डरा हुग्रा (उ. र)
ग्राठणो, ग्राठवो-क्रि०ग्र० [स० ग्रसि] १ भगना, दौडना ।
उ०—घरे कस रे तुवली तात घाठी। तदा ताहरी केथ खग्रोट ग्राठी
—ना द.
२ पीडित होना, भयभीत होना। उ०—रितु ग्रीखम रान मे त्रिखो त्रिग दव थी ग्राठै। पडियो पासी पाउ नेट साइ तोडै नाठै।
—घ व ग्र.
ग्राठियोडो-भू०का०कृ०—१ भगा हुग्रा २ पीडित. ३ भयभीत।
(स्त्री० ग्राठियोडी)
ग्राड-स०स्त्री०—वैल या साड के दहाडने की ध्वनि, दहाड ।
ग्राडकणो, ग्राडकवो-क्रि०ग्र०—१ सिंह का दहाडना ।
उ०—सुणि वाता मन उल्लसो, वोलै वादळ वीर। केहरि जिम ग्राडकि नै, ग्रतुळीवळ रिणधीर ।—प च चौ.
२ देखो 'ताडूकणो, ताडूकवो' (रू भे)
ग्राडकियोडो-भू०का०कृ०—१ दहाडा हुग्रा ।
२ देखो 'ताडूकियोडो' (रू.भे)
ग्राडणउ-वि०—दहाडने वाला। उ०—राणउ लेणउ, स्त्री स्वभाव लाडणउ साड ग्राडणउ, कुमित्र फाडणउ ।—व स
ग्राडणो, ग्राडवो-क्रि०ग्र०—वैल या साड का दहाडना। उ०—गैणाग ज्यार पडियो गळै, वळहारी मुग्रडड वळ। तिण तार गजैसिंह ग्राडियो, धुर हिलोळ वाळो धमळ ।—गु रू व.
ग्राडियोडो-भू०का०कृ०—१ दहाडा हुग्रा. २ देखो 'ताडूकियोडो' (रू.भे.)
ग्राडूकणो, ग्राडूकवो—देखो 'ताडूकणो, ताडूकवो' (रू भे.)
उ०—ग्राय मती ग्रयान क्रिया करि, ग्राडूकइ जिम साड। हु गीता-रथ इम मुख भाखता, खुलनु थाइरे खाड ।—ऐ.जै का स.
ग्राडूकियोडो—देखो 'ताडूकियोडो' (रू.भे)
(स्त्री० ग्राडूकियोडी)
ग्राता, ग्रातार-स०पु० [स० ग्रातृ] रक्षक, वचाने वाला।
उ०—दीनानाथ ग्रभै वरदाता, ग्राता सेवग तारण ।—र ज प्र.
ग्राप-स०पु० [स० ताप] देखो 'ताप' (रू भे)
ग्रापडणो, ग्रापडवो—देखो 'तापडणो, तापडवो' (रू.भे.)
ग्रापणो, ग्रापवो—१ देखो 'तापणो, तापवो' (रू भे.)
२ देखो 'तापडणो, तापडवो' (रू भे) उ०—मे दीठी मारुई, चीता

जेही लक। वानर आवा डाळ ज्यू, त्रापे चडे डरक्क।—ढो मा

त्रापा—
उ०—कदाचि वाहण भाजिसिइ, इसिउ जाणी वास वळी आणी एक लोक त्रापा वाघइं, एके लोके गोत्रदेवता इस्टदेवता मत्र आराधन कीजइ।—व स

त्रापियोडो—देखो 'तापियोडो' (रू भे)
(स्त्री० त्रापियोडी)

त्राभाडणो, त्राभाडवो—देखो 'ताभाडणो, ताभाडवो' (रू भे)

त्रायणो, त्रायवो—क्रि०अ०—भयभीत होना, डरना। उ०—रामसिंघजी इमडै ताव सेती आइ अर लोहे भिळिया। जिम मूडो हिरण त्रायतो आवै छै त्यू फोगा माहे कूदता आइ भिळिया।—द वि.

त्रायमाण, त्रायमाणा, त्रायमाणिक—स०स्त्री० [स० त्रायमाण] वनफशे के प्रकार की एक लता जो पृथ्वी पर फैलती है।
वि०—रक्षक।

त्रास—स०स्त्री० [स० त्रास] १ डर, भय। उ०—कोडा पापा कीजता, कोपै घू कीनास। जीहा राघो जो जपै, तो नाही तिल त्रास।
—र.ज प्र
२ पीडा, कष्ट, वेदना। उ०—मुनि सुणि त्रास घरम महिपत्ती। कीधो विदा कुंवर कामत्ती।—सू प्र
क्रि०प्र०—देणी, होणी।
३ [स० तृषा] प्यास।
रू०भे०—त्रासा।

त्रासक—वि०—१ भय दिखाने वाला, डराने वाला २ पीडा देने वाला

त्रासणो, त्रासवो—क्रि०अ० [स० त्रासनम्] १ डरना, भयभीत होना।
उ०—१ घरआगण माहे घणा, त्रासै पडिया ताव। जुध आगण सोहे जिके, वालम वास वसाव।—बा.दा.
उ०—२ जिको दो ही पिता पुत्रा रो मिळाप सुणि अंतर मे ग्रेक जाणि तुरका री तोम त्रासियो।—वं भा.
२ कष्ट देना, पीडा पहुँचाना ३ दूर होना, भागना।
उ०—जव ऊगै जगचक्ख तिमिर जिण वेळा त्रासे।—ध व ग्र.
त्रासणहार, हारो (हारी), त्रासणियो—वि०।
त्रासिओडो, त्रासियोडो, त्रास्योडो—भू०का०कृ०
त्रासवणो, त्रासववो—रू०भे०।
त्रासीजणो, त्रासीजवो—भाव वा०।

त्रासन—वि०—आतंकित, भयभीत।

त्रासमाण—वि०—आतंकित, भयभीत करने का कार्य।
उ०—त्रासमाण सुरताण, माण पोरस वळ मूकै। करै निजर केवाण, चीतवै राण स चूकै।—सू प्र.

त्रासवणो, त्रासववो—क्रि०स०—१ भयभीत करना।
उ०—गिरि नदी विलोडतउ, महाद्रह डोहतउ साहसिक तणा मन खोहतउ, तुरगम त्रासवतउ पवन जिम चालतउ।—व स.
२ देखो 'त्रासणो, त्रासवो' (रू.भे) उ०—तिण समै ते त्रिद्धा कहै जी, राखियो तै भलो सीळ। जेथ थको भय सहु त्रासवै जी, पामियो सिवपुर लील।—वि.कु

त्रासा—देखो 'त्रास' (रू.भे.) उ०—१ सिमरू जगपति सासो सासा, तीन लोक जम मनै न त्रासा।—ऊ का.
उ०—२ करहा पाणी खच पिउ, त्रासा घणा सहेसि। छीलरियउ ढूकसि नही, भरिया केथि लहेसि।—ढो मा.

त्रासियोडो—भू०का०कृ०—भयभीत हुवा हुआ, डरा हुआ, डराया हुआ।
(स्त्री० त्रासियोडी)

त्रासो—वि०—१ प्यासा, तृषावान २ भयभीत, डरा हुआ।
उ०—आखर जत्र मत्र लै ओळख, कुक्रम भाखर जुलम करै। अभवण ठाकर हु तन त्रासो, डारण चाकर हुत डरै।
—गभीरसिंघ चापाव्रत री गीत

त्राहि—अव्य० [स०] बचाओ, रक्षा करो आदि पुकार के लिए बोला जाने वाला शब्द। उ०—त्राहि त्राहि स्वामी जगजीवन, दुख सहूं नवि जायि जी।—नळाख्यान
मुहा०—त्राहि त्राहि करणी—रक्षा के लिए चिल्लाना।
रू०भे०—तराहि, तराही।

त्राहिमाण—देखो 'त्रायमाण' (रू भे) उ०—तूविणि तूरि त्रागडी, त्राहिमाण त्रिपुरारि। तूरफळी तरसाउळी, त्रिजटा नइ त्रिव्रितारि।
—मा का प्र.

त्रिवागळ—देखो 'त्रवागळ' (रू भे) उ०—रावत प्रतापसिंघ वडा सामान नै वडी फोजा रा घसार लीधा, गढ आण लागा अर विसर रा त्रिवागळ ठौड ठौड वागा।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

त्रिसास—स०पु० [स० त्रिशाश] १ किसी पदार्थ का तीसवा भाग २ एक राशि का तीसवा भाग (ज्योतिष)

त्रि—वि० [स०] तीन। उ०—प्रकाड पाठ के त्रि करम काड को करै, तनै भई उपासना ब्रह्माड ग्यान तें तरै।—ऊ का.
स०स्त्री०—स्त्री।
उ०—तो सम त्रि नही ईणोई ससार।—वी दे
रू०भे०—त्री।

त्रिआ—देखो 'त्रिया' (रू भे)

त्रिआसी—देखो 'तइयासी' (रू भे)

त्रि-इद्रिय—देखो 'त्रीद्रिय' (रू भे.)

त्रिकटक—स०पु० [स०] १ गोखरू नामक भूमि पर फैलने वाली लता २ त्रिशूल।
वि०—जिसमे तीन काटे या नोक हो।

त्रिक—स०पु० [स०] १ तीन का समूह २ वह स्थान जहा तीन रास्ते मिलते हो, तिराहा। उ०—ग्रथ नगर, प्रसाद प्रतोळी राजकुळ देवकुळ त्रिक चउक चच्चर राजमारगि।—व स
३ त्रिफला ४ त्रिकुट ५ कमर. ६ रीढ के नीचे का भाग जहां कूल्हे की हड्डिया मिलती है।
रू०भे०—तिय।

७ शोक, खेद ।

त्रिकफुद–स०पु० [म०] १ त्रिकूट नामक पर्वत २ विष्णु ।

त्रिकटवध—देखो 'त्रकूटवंध' (रू भे)

त्रिकटु, त्रिकटुक—देखो 'त्रिकुटी' (रू भे)

त्रिकरण–स०पु० [स०] १ मन, वचन और काया । उ०—त्रिकरण-सुद्ध इकतार तो सू कियो ।—ध व ग्र

२ एक प्रकार का घोडा (अशुभ)

रू०भे०—तिकरण ।

त्रिकरण-सुद्धि–स०स्त्री०यौ० [स० त्रिकरण शुद्धि] मन, वचन और काया की शुद्धि (जैन) उ०—नळ मोटइ हऊउ रिखिराय, त्रिकरणसुद्धि वदू पाय ।—नळ-दवदती रास

त्रिकळ–स०पु०—१ तीन मात्राओ का एक शब्द । उ०—सात टगण फिर त्रिकळ यक, अत रगण इक आण । मत सैताळी पाय मे, पच वदन सो जाण ।—र ज प्र.

२ दोहे का एक भेद जिसमे ६ गुरु और ३० लघु अक्षर सहित ४८ मात्रायें होती हैं ।

त्रिकळस–स०पु०—विशेष प्रकार का भवन ? उ०—१ जूनी ख्यातां मे अलाउद्दीन आयो जद चहुवाण सात त्रिकळस बैठो तुरकणिया रो नाच करायो हो ।—वा दा ख्यात

उ०—२ वरणा वरण निवेडईजी, तुरीय अमोलक ल्हास । त्रिकळस जिम अप तपइजी, जेहवा इद्र प्रवास ।—रुकमणी मगळ

त्रिकळाचळ–स०पु०—लका का एक पर्वत ।

त्रिकळाचळयितगति–स०पु०—रावण (ना.मा.)

त्रिकलिंग—देखो 'तैलग' (रू भे)

त्रिकसूळ–स०पु० [स०] एक प्रकार का वात रोग जिसमे रीढ तथा कमर की हड्डी मे पीडा होती है ।

त्रिकाड–स०पु० [स०] १ अमर कोष का दूसरा नाम २ निरुक्त का दूसरा नाम ।

वि०—जिसमे तीन काड हो ।

त्रिकाडी–वि०—तीन काड वाला ।

स०पु०—वह ग्रथ जिसमे कर्म, उपासना और ज्ञान तीनो का वर्णन हो ।

त्रिकारदरसी—देखो 'त्रिकाळदरसी' (रू.भे)

त्रिकाळ–स०पु० [स० त्रिकाल] १ तीनो काल—वर्तमान, भूत और भविष्य । उ०—निरखे ततकाळ त्रिकाळ निदरसो, करि निरणै लगा करुण । मगळ दोस विवरजित साहो, हु तो जई हुओ हरण ।—वेलि.

यौ०—त्रिकाळ-दरसक, त्रिकाळ-दरसी ।

२ तीनो समय—प्रात, मध्यान्ह और सन्ध्या । उ०—नवमों सूर प्रभ नमू, दमणी देर त्रिकाळ । इम वज्जधर इग्यारमों, त्रिकरण प्रणमु त्रिकाळ ।—ध व ग्र

वि०—तीनो ही काल मे पागल रहने वाला, उन्मत्त । उ०—जत-राव महासिव पथ जुओ । हाय आज भालाळ त्रिकाळ हुओ ।—पा प्र.

रू०भे०—त्रकाळ, त्रणकाळ ।

त्रिकाळग्य–स०पु० [स० त्रिकालज्ञ] भूत, वर्तमान और भविष्य का ज्ञाता, सर्वज्ञ, ईश्वर ।

रू०भे०—त्रकाळग्य ।

त्रिकाळग्यता–स०स्त्री० [स० त्रिकालज्ञता] तीनो कालो की बात जानने की शक्ति या भाव ।

त्रिकाळग्यानदरसी, त्रिकाळदरसक–वि० [स० त्रिकालदर्शक] तीनो कालों की वातो को जानने वाला ।

रू०भे०—त्रकाळदरसी, त्रिकाळदरसो ।

त्रिकाळदरसिता–स०स्त्री० [स० त्रिकालदर्शिता] तीनो ही कालो की वातों को जानने की शक्ति ।

त्रिकाळदरसी—देखो 'त्रिकाळदरसक' (रू भे.)

उ०—त्रिकाळदरसी जोइसी, कहै एम आगम कहा । असमाण उपद्रव थाइसे, उठी आग पाणी महा ।—गु रू व

त्रिकाळनरेस–स०पु०—त्रिकालज्ञ, परब्रह्म । उ०—अनक न संकन धक न धीस, अवास न वास न आस न ईस । निराळ न काळ त्रिकाळ नरेस, आदेस आदेस आदेस आदेस ।—ह.र

त्रिकिम–स०पु० [स० त्रिविक्रम] श्रीकृष्ण, विष्णु ।

त्रिकुट–स०पु० [स०] १ लका । उ०—इम चढे सोन गढ ऊपरा, सामत 'गजण' सधीर रा । तोडिवा जाणि चढिया त्रिकुट, विकट घाट रघुवीर रा ।—सू प्र

२ लका का गढ । उ०—त्रिकुट अनै हथणापुर तीजो, घडा खूह-खण एकण घाय । इण निसपति असपति सू अवडो, रिण काछियो जु काछो राय ।—नैणसी

३ देखो 'त्रिकुटी' (रू भे) ४ देखो 'त्रिकूट' (रू भे)

रू०भे०—त्रिगुट ।

त्रिकुटगढ–स०पु०—लका । उ०—रामा अवतारि वहे रणि रावण, किसी सीख करुणा करण । हू ऊधरी त्रिकुटगढ हुती, हरि बध वेळा हरण ।—वेलि

रू०भे०—त्रिकूटगढ, त्रुगटगढ ।

त्रिकुटवध—देखो 'त्रकूटवध' (रू भे)

त्रिकुटा–स०स्त्री०—एकलिंग महादेव के स्थान की तीन शिखर वाली तीन पहाडियो से निकलने वाली मेवाड राज्य की एक नदी का नाम ।

रू०भे०—त्रिकूटा ।

त्रिकुटि, त्रिकुटी–स०स्त्री० [स० त्रिकूट] १ त्रिकूट चक्र का स्थान, दोनो भौंहो के बीच के कुछ ऊपर का भाग । उ०—१ सप्तमी आरती त्रिकुटी वासा । झिळमिळ जोत हुई प्रकासा ।

—स्री हरिरामजी महाराज

उ०—२ भमर गुफा मझि रमे तजे भ्रम जीतें निद्रा त्रिकुटी सजम ।

—सू प्र

२ ललाट, भाल ।

रू०भे०—त्रकुटी, त्रिकूटी ।

त्रिकुटी-स०पु०—सौंठ, मिर्च और पीपल इन तीनो को मिश्रित कर बनाया जाने वाला पदार्थ ।

रू०भे०—त्रिक्टुम, त्रिकुट, त्रिकूट, त्रिगुटी ।

त्रिकूट-स०पु० [स०] १ तीन चोटियो वाला लका का पर्वत २ सेंधा नमक. ३ योग मे मस्तक के छ. कल्पित चक्रों मे पहला चक्र. ४ पर्वत (ह ना) ५ मेवाड राज्यान्तर्गत वह प्रदेश जहा एकलिंग महादेव का स्थान है ६ एकलिंग महादेव के इर्द-गिर्द आई तीन शिखर वाली पहाडियो का समूह (मेवाड)

७ देखो 'त्रिकुट' (रू भे)

८ देखो 'त्रिकुटी' (रू भे)

रू०भे०—तिऊड, तिकूड, त्रकुटाचळ, त्रगुट, त्रिगडू, त्रुगट ।

त्रिकूटगढ—देखो 'त्रिकुटगढ' (रू भे) (व स)

रू०भे०—त्रकुटाण ।

त्रिकूटा-सं०स्त्री०—१ तान्त्रिकों की एक भैरवी ।

२ देखो 'त्रिकुटा' (रू भे)

त्रिकूटी—देखो 'त्रिकुटी' (रू भे)

त्रिकोण-स०पु० [स०] १ तीन कोनो का क्षेत्र, त्रिभुज क्षेत्र. २ तीन कोनो वाली कोई वस्तु. ३ योनि, भग. ४ जन्मकुण्डली मे लग्न स्थान से पाचवा और नवा स्थान ।

त्रिकोणघटी-स०स्त्री० [स०] लोहे की मोटी सलाख का बना एक तिकोना बाजा जिस पर लोहे की अन्य छड से आघात कर ताल देते हैं ।

त्रिकोणा-वि०—तीन कोने वाला, त्रिकोण ।

त्रिकोणासन-स०पु०—योग के चौरासी आसनो मे से एक आसन, इसके तीन भेद है—१ वाम त्रिकोणासन २ दक्षिण त्रिकोणासन और ३ पूर्ण त्रिकोणासन ।

वि०वि०—उभडते बैठ कर वाम पाव की एडी का बाया भाग जघा की ओर निम्न भाग को स्पर्श करा कर उनके घुटने पर बायें हाथ को रख कर उसी हाथ के पजे से मस्तक को स्पर्श किया जाता है । दाहिने पाव की एडी का दाहिना ओर जघा के निम्न भाग को स्पर्श करा कर उनको झुकता हुआ रख कर उस पर दाहिने हाथ को रखने से वाम त्रिकोणासन होता है । इसके विपरीत दक्षिण त्रिकोणासन होता है । वाम तथा दक्षिण त्रिकोणासन दोनो को एक साथ करने से पूर्ण त्रिकोणासन होता है ।

त्रिक्षार-स०पु० [स०] जवाखार, सज्जी और सुहागा इन तीन क्षारो का समूह ।

त्रिख—देखो 'त्रखा' (रू भे) उ० -भूख त्रिस वीसरे सुणे कर जोड ए ।—ध व ग्र

त्रिखत-वि० [स० तृषित] १ प्यासा । उ०—पावै त्रिखत हुवै तद तद त्रिप्त । हिम सर करा नीर अति चित हित ।—सू प्र.

२ तलवार ? उ०— परदळ मिळइ, सुभट किळकळइ, नीसाणि घाय वळइ, चिंघ । झळहळइ, त्रिखत खटकइ, सन्नाह नटकइं ।—व स

त्रिखनहो-स०पु०—एक प्रकार का अशुभ घोडा ।

त्रिखा—देखो 'त्रखा' (रू भे) उ०—१ त्रिगसिर नक्षत्र वाउ वाज्यो सुत्रिगा की वइरी हुग्रो छै । त्रिखा करि व्याकुळ हुग्रो छै ।—वेलि टी.

उ०—२ क्षुधा त्रिखा निद्रा नही, नहि लोही नहिं मास । पजर छडइ प्राणीउ, पणि माधव नी आस ।—मा का प्र

त्रिखावत—देखो 'त्रखावत' (रू भे) उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति राती छाकै ते दारू पिग्रा तासीग्रा त्रिखावत हुग्रा ।—रा सा स

त्रिगग-स०पु० [स०] एक तीर्थ का नाम (महा.)

त्रिगड-स०पु०—एक राक्षस का नाम (पौराणिक)

उ०—त्रिगुण किलग रिणिताळ विन्हइ, भिडिसै अतळीवळ । तरुआरै त्रिगडा विळै, विढिसै नर विमळ ।—पी ग्रं

त्रिगड-स०पु०—हाथी को बाधने का बधन । उ०—चरण सवधीआं त्रिगडा भाजी, वरडा पाडतउ ।—व स

त्रिगडू—देखो 'त्रिकूट' (रू भे)

त्रिगडो, त्रिगढो-स०पु०—तीर्थंकरो के उपदेश देने का वह स्थान जो तीन वृत्ताकार दीवारो से घिरा हुआ हो । उ०—१ अस्टापद जे सुणता आगी, सो विधि दीठी सागी । त्रिगडो देखि मिथ्यामति त्यागी, जिन धरम महिमा जागी ।—ध व ग्र

उ०—२ तिरथकर आवै तिहा, त्रिगढो करय तयार । समकित करणी साचवै, एह कहु अधिकार ।—ध व ग्र.

उ०—३ भवणवइ देव त्रिगढो ।—ध व ग्र.

त्रिगरत, त्रिगरथ-स०पु० [स० त्रिगर्त्त] १ उत्तर भारत के एक प्राचीन प्रात का नाम जिसमे आजकल पंजाब प्रात के कागडा और जालधर आदि नगर हैं ।—व स

[स० त्रिक्=नृत्य, गीत और वाद्य कला+अर्थ] २ हर्ष, प्रसन्नता । उ०—पारथ भूप 'प्रताप' रै, भारथ रा भुज भार । जरमन कुसळ न जाव ही, कर मन त्रिगरथ कार ।—किसोरदान बारहठ

त्रिगुट—१ देखो 'त्रिकुट' (रू भे)

२ देखो 'त्रिकूट' (रू भे) उ०— त्रिगुट गड थरहरै नाग दध डरै तद भरै चत्रकूट डड जोड मुडड ।—ईसरदास सूरजमलोत बारहठ

त्रिगुट-वध—देखो 'त्रकूट-वध' (रू भे)

त्रिगुटी—देखो 'त्रिकुटी' (रू भे) उ०—पुर पुरस मिळै पुन पैलै, वेगी सुमरण जुगत वणी । वळती डाग पछम री वागी, त्रिगुटी फाटी सीस तणी ।—बाकीदास बिठू

त्रिगुण-स०पु० [स०] १ सत्व, रज और तम इन तीनो गुणो का समूह २ तीन मुख्य प्रकृतियो का समूह ३ शीतल, मद और सौरभ इन तीनो गुणो से युक्त पवन । उ०—तव ही उह बाळक नू भूख-त्रिस लागी छै, असै त्रिगुण कहता, सीत, मद, सुगध मलयानिळ लागी

सोई त्या हो वसत नै जनमत ही भूख त्रिस लागी छै।—वेलि टी
त्रि०—तिगुना।
रू०भे०—त्रगुण, त्रैगुण।
त्रिगुणनाथ, त्रिगुणपति-स०पु० [सं०] परमेश्वर, परमात्मा (ना मा.)
रू०भे०—त्रगुणनाथ।
त्रिगुणा-स०स्त्री०—१ देवी, दुर्गा २ माया।
त्रिगणातम, त्रिगुणातमक-वि० [सं० त्रिगुणात्मक] सत्व, रज और तम इन तीनो गुणो से युक्त।
त्रिगुणी-स०पु० [मं०] बेलपत्र का वृक्ष।
त्रिगुणु-स०पु० [सं० त्रिगुणम्] तिगुना (उ र)
त्रिगूढ़-स०पु० [सं०] स्त्रियो के वेश मे पुरुषो द्वारा किया जाने वाला नृत्य।
त्रिघाई—देखो 'तिघाई' (रू भे)
त्रिडइणो, त्रिडइबो—देखो 'तिडणो, तिडवो' (रू.भे.)
त्रिडणो, त्रिडवो—देखो 'तडणो, तडवो' (रू भे) उ०—जिणि दीहे तिल्ली त्रिडइ, हिरणी झालइ गाभ। ताह दिहा री गोरडी, पडतउ झालइ आभ।—ढो मा
त्रिचक्र-स०पु० [सं०] अश्विनीकुमारो का रथ।
त्रिचक्षु, त्रिचख-स०पु० [सं० त्रिचक्षुस्] महादेव। उ०—त्रिचख अनेक लिए सिर ताजा। रथ थाभै देखे ग्रह राजा।—सू प्र
त्रिजच—देखो 'तिरजक' (रू भे) उ०—प्रभु के दरस पाप गए सब, नरग त्रिजच की भीति टरी री।—स कु.
त्रिजग-स०पु०—तीन लोक, त्रिलोक।
रू०भे०—त्रिजुग।
त्रिजड, त्रिजडु-स०स्त्री०—१ शस्त्र। उ०—पूठि भिडजा आरुहिया भड, तिस रूप लेय छतीसै त्रिजड।—गु रू व
२ तलवार। उ०—अडियो राणा 'अमर' सू, अणगज रहियो आप। तडिता सिर त्रिजडा जडि, वो रावत परताप।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
रू०भे०—त्रजड, त्रजडी, त्रझड, त्रिज्झड।
त्रिजटा-स०स्त्री० [सं०] अशोक वाटिका मे जानकी के पास रहने वाली एक राक्षसी जो विभीपण की बहिन थी।
त्रिजाम, त्रिजामा-स०स्त्री० [सं० त्रियामा] रात्रि (ना मा.)
रू०भे०—त्रियामा, त्रीयामा।
त्रिजात-स०पु०—१ वर्णशकर, जारज। उ०—तरै मत मे मुह बोल त्रिजात, वहू नह तुज्ज तणी सत वात।—पा प्र
२ देखो 'त्रिजातक' (रू भे)
त्रिजातक-स०पु० [सं०] १ इलायची, दालचीनी और तेजपत्र के छिलके का सम्मिश्रण।
रू०भे०—त्रिजात।
त्रिजुग—देखो 'त्रिजग' (रू भे)
त्रिजोणी-स०पु० [सं० त्रियोनि] तृतीय योनिज अर्थात् तमोगुण से उत्पन्न।
त्रिजो-वि०—तीसरा, तृतीय। उ०—दुति गयो त्रिजै दिवस।
—रा रा
त्रिज्झड—देखो 'त्रिजड' (रू भे) उ०—अवज्झड त्रिज्झड भड्ड असध, कटै कर कोपर काळिज कध।—वचनिका
त्रिडोरियो-स०पु०—एक वाद्य विशेष। उ०—ताहरा विजाएद त्रिडोरियो यत्र चाढि अर आलापचारी कीवी।—सयणी री वात
त्रिण—देखो 'तिण' (रू भे) उ०—१ त्रिण जुध करि दूखण उतरावो, जठी पायक गयद जुटावो।—सू प्र
उ०—२ अकबर साह निरखिया, जेता चापावत्त। मीढ सहस्सा मरयणो, लक्ख गिणै त्रिण मत्त।—रा.रू
त्रिणउ-स०पु० [सं० तृणम्] तृण (उ र)
त्रिणकाळ—देखो 'त्रणकाळ' (रू भे) उ०—घणो वित्त ले सिंध मे गई, सोरठ त्रिण काळ पडियो सिंध री पातसाह सूमरो जिण जायल नू घर मे घालणी विचारी।—बा दा ख्यात
त्रिणता-स०स्त्री० [सं०] धनुप।
त्रिणधज—देखो 'त्रणधज' (रू भे)
त्रिणपद-स०पु०—तीन कदम, तीन डग।
त्रिणवडि-वि०—तिगुनी। उ०—बादळळ कहइ रे नारि सुणि, असुर सेन त्रिणवडि गिणउ।—प च चौ.
त्रिणि—देखो 'तिण' (रू भे) उ०—१ त्रिणि दीह लगन वेळा आडा तै, घणू किसूं कहिजै आ घात। पूजा मिसि आविसि पुरखोतम, अविकालय नगर आरात।—वेलि.
उ०—२ नयन मिळ ता मन मिळइ, मन मिळि वयण मिळ ति। ए त्रिणि मेळवी करि, काया गढ भेळ ति।—अज्ञात
त्रिणिय-वि०—तीन।
त्रिणी—देखो 'तिण' (रू भे)
त्रिणो-स०पु० [सं० तृण] तिनका, तृण। उ०—तरु लता पल्लवित त्रिणे अकुरित, नीलाणी नीलवर न्याइ। प्रथमी नदिमै हार पहरिया, पहिरे दादुर नूपुर पाइ।—वेलि.
त्रिणह, त्रिण्णि, त्रिण्ह, त्रिण्हि, त्रिण्है, त्रिण्हो—देखो 'तिण' (रू भे)
उ०—१ जुध सहस गुणा खळ मिळै जात। मन गिणै तिका नू त्रिणह मात।—वि स.
उ०—२ पूरव पुण्य पसाउलइ त्रिण्णि नारि विळसइ विग्रवखणि।
—विद्याविळास पवाडउ
उ०—३ कोस त्रिण्ह देह त्रिण पल्ल आयु धारए।—धा.व प्र
उ०—४ उचरइ विप्र एरिस वयण, लोग त्रिण्हि जीता तिरी।
—प.च चौ
त्रितंत्री-स०स्त्री० [सं०] कच्छपी वीणा की तरह की तीन तार वाली वीणा (प्राचीन)

त्रिताप–स०पु० [स०] तीन प्रकार के दुख—आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक ।
रू०भे०—त्रताप ।
त्रिताळ–स०स्त्री०—१६ मात्राओ की एक ताल ।
त्रितिय, त्रिती, त्रितीय–वि० [स० तृतीय] तीसरा । उ०—१ भदं मडळ भाए आगं भोजाइया आई । दोय धाघळ रा कवर त्रितिय री जाई ।—पा प्र
उ०—२ भवानिय दीध सिंदूर ज भाळ । भळाहळ जाणि त्रिती चख भाळ ।—सू प्र
उ०—३ कळ चवद चवदं तणी दुय तुक, मिळे मोहरा ताम ही । कळ त्रितीय खोडस वळे, दसकळ चतुरथी तुक मे चही ।—र रू.
त्रित्र–वि० [स० त्रि] तीन ।
स०पु० [स० तृण] तिनका, तृण ।
त्रिदड–स०पु० [सं०] सन्यास आश्रम का चिन्ह ।
वि०वि०—वास के एक डडे के सिरे पर दो छोटी-छोटी लकडिया वाघ कर बनाया जाता है ।
रू०भे०—तिदड ।
त्रिदडी–स०पु० [स०] १ मन, वचन और कर्म तीनो का दमन करने या वस मे रखने वाला सन्यासी । उ०—आस्तिक विन इदुक नास्तिक निंदुक सास्तिक मत सोखदा है । तज धरम त्रिदडी अधिक अफडी पाखडी पोखदा है ।—ऊ का
२ वैरागी साधुओ का एक सम्प्रदाय विशेष जो तीन दड रखते है. ३ यज्ञोपवीत, जनेऊ ।
रू०भे०—त्रिदडचउ ।
त्रिदडचउ—देखो 'त्रिदडी' (रू भे.) उ०—कवहि राजा कवहि रंक, कवहि भेख त्रिदडचउ । कवहि मूरिख कवहि पडित, कवहि पुस्तक पडचउ री ।—स कु
त्रिदख–स०पु० [स० त्रिदश] स्वर्ग (ना मा)
त्रिदळ–स०पु० [स० त्रिदल] १ बेल का वृक्ष. २ बेल-पत्र ।
त्रिदव—देखो 'त्रिदिव' (रू.भे) (ना मा.)
त्रिदवेस–स०पु० [सं० त्रिदिवेश] देवता, सुर (ना मा)
उ०—हगामा हमेसा वजत त्रिदवेसा नववती । अई इदु अवा जयति जगदवा भगवती ।—मे म
रू०भे०—त्रदवसा ।
त्रिदस–स०पु० [स० त्रिदश] १ देवता, सुर (नां मा) उ०—हुवौ रिण-थभ निय साथ विमुहै हुवै, त्रिदस मनव हूवा तिणि तमासै । सामि-ध्रम दाखि 'केसव' तणौ सीघळी, वरेगो रंभ सुरलोक वासै ।
—गिरधरदास केसवदासोत री गीत
रू०भे०—त्रदस, त्रदसा, त्रदेस ।
यौ०—त्रिदस-गुरु, त्रिदस-तप, त्रिदस-पति, त्रिदस-वधू, त्रिदसाकुस, त्रिदसाधिप, त्रिदसायन, त्रिदसायुध, त्रिदसारि, त्रिदसालय, त्रिदसा-सदन, त्रिदसाहार, त्रिदसेस्वर, त्रिदसेस्वरी ।
त्रिदसगुरु–स०पु०यौ० [स० त्रिदश-गुरु] देवताओ के गुरु, वृहस्पति ।
त्रिदस-तप–स०पु०यौ० [स० त्रिदश-तप] स्वर्ग (ह ना)
रू०भे०—त्रदस-तप ।
त्रिदस-पति–स०पु०यौ० [स० त्रिदश-पति] इन्द्र, देवराज ।
त्रिदस-वधू–स०स्त्री०यौ० [स० त्रिदश-वधू] १ अप्सरा ।
२ वीरवहूटी ।
त्रिदसाकुस–स०पु०यौ० [स० त्रिदश+अकुश] वज्र ।
त्रिदसाधिप–स०पु०यौ० [स० त्रिदश+अधिप] इद्र ।
त्रिदसायन–स०पु०यौ० [सं० त्रिदश+अयन] विष्णु ।
त्रिदसायुध–स०पु०यौ० [स० त्रिदश+आयुध] वज्र ।
त्रिदसारि–स०पु०यौ० [स० त्रिदश+अरि] राक्षस, असुर ।
त्रिदसालय–स०पु०यौ० [स० त्रिदश+आलय] १ स्वर्ग ।
उ०—कठठचौ घमसाण प्रमाण किसा, दहल्यौ हिंदवाण दिसा विदिसा । त्रिदसालय चाव चढचा तरुण्या, समचार थळी छत्रधार सुण्या ।—मे म.
२ सुमेरु पर्वत. ३ देवालय, मदिर ।
त्रिदसासदन–स०पु०यौ० [स० त्रिदश+सदन] १ स्वर्ग (ना मा)
२ मदिर, देवालय ।
त्रिदसाहार–स०पु०यौ० [स० त्रिदश+आहार] अमृत ।
त्रिदसेस्वर–स०पु०यौ० [स० त्रिदश+ईश्वर] इन्द्र, देवराज ।
त्रिदसेस्वरी–स०स्त्री०यौ० [स० त्रिदश+ईश्वरी] दुर्गा, भगवती ।
त्रिदिव–स०पु० [स०] देवलोक, स्वर्ग (ह ना)
उ०—'लाला' 'उमा' साथ गति लीधी । पति सह त्रिदिव सुधा मिळ पीधी ।—व भा.
रू०भे०—त्रदन, त्रदव, त्रिदव ।
यौ०—त्रिदिवाधीस, त्रिदिवेस ।
त्रिदिवाधीस–स०पु०यौ० [स० त्रिदिव+अधीश] देवराज, इन्द्र ।
त्रिदिवेस–स०पु०यौ० [स० त्रिदिव+ईश] इन्द्र ।
त्रिदेव–स०पु० [स०] तीनो देवता—ब्रह्मा, विष्णु और महेश ।
त्रिदेवालय–स०पु०यौ० [सं० त्रिदेव+आलय] स्वर्ग, देवलोक ।
त्रिदोख, त्रिदोस–स०पु० [स० त्रिदोष] १ तीन दोष—वात, पित्त और कफ २ वात, पित्त और कफ जनित रोग, सन्निपात ।
त्रिदोसज–स०पु० [स० त्रिदोषज] सन्निपात रोग ।
वि०—तीनो दोष (त्रिदोस–वात, पित्त और कफ) से उत्पन्न ।
त्रिधज–स०पु० [स० तृणध्वज] बास (ह ना)
त्रिधन्वा–स०पु० [स०] सूर्य वश के सुधन्वा राजा का पुत्र ।—सू प्र
त्रिधा–वि० [स०] तीन प्रकार का । उ०—धरै इक पाप धरै इक ध्रम्म, करै इक जीव करै इक क्रम्म । सरज्जै आप त्रिधा ससार, हुवौ मज्झ आप ही रम्मणहार ।—ह र
क्रि०वि०—तीन प्रकार से, तीन तरह से ।

त्रिधाई–स०पु० [स० त्रि+धा] १ ताल वाद्य का बोल. २ ताल वाद्य पर तीन वार 'धा' की ध्वनि करने की क्रिया ।

त्रिधार—देखो 'त्रिधारौ' (रू भे) उ०—वाधौ तरगस बाधिसै, धुणिसै खडग त्रिधार। खेत उजेणी खेलिसै, करिसै जैजैकार । —पी.ग्र

त्रिधारा–स०स्त्री० [स०] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल मे वहने वाली गगा ।

त्रिधारौ–स०पु० [स० त्रिधार+रा प्र श्रौ] १ एक विशेष प्रकार का भाला जिसके फल पर तीन धार होती है ।

२ एक प्रकार का थुहर, शीहुड ।

वि०—तीन धार वाला ।

रू०भे०—त्रिधार ।

त्रिधासी–स०पु० [स० त्रिध्वशिन्] यमराज (ना मा)

त्रिध्यारुण–स०पु०—एक सूर्यवंशी राजा का नाम (सू प्र.)

त्रिनयण, त्रिनयन–स०पु० [स० त्रिनयन] महादेव, शिव । उ०—जुध समद विरोळै देव दाणव जठै, दूसरा नरा नह भाग दीधौ। सुरतन सगह विख हुवौ सीसोदियौ, कमधज त्रिनयण गरकाव कीधौ। —गोपाळदास गौड़'री वारता

रू०भे०—त्रणनैण, त्रनयण, त्रयण, त्रयनयण, त्रीनेण, त्रीनैण ।

त्रिनाभ–स०पु० [स०] विष्णु ।

त्रिनेत्र–स०पु० [स०] १ महादेव, शिव २ एक भैरव का नाम ३ स्वर्ण, सोना ।

रू०भे०—त्रनेत्र ।

त्रिनेत्ररस–स०पु० [स०] वैद्यक मे एक प्रकार का रस ।

त्रिन्न–वि०—फैला हुआ ? उ०—अति स्वच्छ निरमळ वस्त्र, मस्तिक चद्रमडळ सम त्रिन्न छत्र, कनकदड, चमर दिव्य आभरण डवर । —व.स

त्रिपखौ–स०पु० [स० त्रिपक्ष] डिंगल का एक गीत (छद) विशेष जिसमे सव प्रथम दो पद दुमेल गीत के (जिसमे प्रत्येक चरण मे १६ मात्राएँ होती हैं) होते है। इसके बाद वडे साणोर गीत का प्रथम पद (जिसमे २० मात्राएँ होती हैं) होता है। इस प्रकार इस गीत (छद) मे तीन ही चरण होते हैं ।

त्रिपट–वि०—दुष्ट, नीच, नालायक । उ०—१ आगे कुलत्री एक, तौ जिसौ हुतौ त्रिपट। माग्रत कीनौ सेख, नाच नचायौ 'नागवौ' । —पा.प्र

उ०—२ इकावन्नै थाइ दुनी दुरभरा दुलाइ, काढयौ सो कूटि नै भीर वावनै भाइ। वावना बाहिरो त्रिपट पडीयौ तेपन्नौ, दातारै तजि ददौ, निपट करि भाल्यौ नन्नौ । —ध व ग्र

२ पागल ।

त्रिपण, त्रिपणउ—देखो 'तरपण' (रू भे) (उ र)

उ०—परसराम कर फरस धर, पितु काज वयर का। धर दीधी इकवीस वेर, कर त्रिपण रुवर का । —दुरगादत्त वारहठ

त्रिपत—देखो 'तिरपत' (रू भे) उ०—अति प्रेरित रूप आखिया अत्रिपत, माहव जद्यपि त्रिपत मन। वार वार तिम करै विलोकन, घण मुख जेही रक धन । —वेलि

त्रिपति–स०स्त्री० [स० तृप्ति] तृप्ति, सतुष्टि, सतोष ।

उ०—अदवुद मूरति अति भली, जोता त्रिपति न थायोजी । —स कु

त्रिपथ–स०पु० [स०] तीनो मार्गों का समूह—कर्म, ज्ञान और उपासना ।

त्रिपथगा, त्रिपथगामिनी, त्रिपथा–स०स्त्री० [स० त्रिपथ गामिनी] तीनो लोको मे वहने वाली गगा, भागीरथी (ह ना) उ०—तोय करम नासा तणै, नर सुभ करम नसाय। तोय तुहाळै त्रिपथगा, माठा क्रम मिट जाय । —वा दा

त्रिपद–वि० [स०] तीन पद या चरण वाला ।

स०पु०—१ तिपाई. २ त्रिभुज ३ घोडा (डि ना मा)

४ यज्ञ की वेदी मापने का एक माप (प्राचीन)

त्रिपदा–स०स्त्री० [स०] १ गायत्री. २ एक लता का नाम हसपदी ।

रू०भे०—त्रिपदी ।

त्रिपदिका–स०स्त्री० [स०] १ देव पूजन के समय शख रखने का पीतल का बना तिपाई की तरह का चौखटा २ तिपाई ।

रू०भे०—त्रिपदी, त्रिपादी ।

त्रिपदी–स०स्त्री० [स०] १ हाथी का जेर-बद २ पद्य की तीन पक्ति।

उ०—छए भाखा बोलइ, पठित काव्य अठोतरउ अरथ दीसइ, एकपदी, द्विपदी त्रिपदी, चितित समस्या पूरइ । —व स

३ देखो 'त्रिपदा' (रू भे) ४ देखो 'त्रिपदिका' (रू भे.)

त्रिपन—देखो 'तिरेपन' (रू भे) (उ र)

त्रिपरण–स०पु० [स० त्रिपर्ण] पलास का पेड ।

त्रिपाठी–स०पु० [स० त्रिपाठिन्] ब्राह्मणो की एक जाति, तिवारी, त्रिवेदी ।

वि०—तीनो वेदो को जानने वाला, त्रिवेदी ।

त्रिपाद–स०पु० [स०] १ परमेश्वर २ ज्वर, बुखार ।

त्रिपादी—देखो 'त्रिपदिका' ।

त्रिपाप–स०पु० [स०] एक प्रकार का चक्र जिसके अनुसार व्यक्ति के किसी वर्ष का शुभाशुभ फल जाना जाता है (ज्योतिष)

त्रिपिंड–स०पु० [स०] कर्मकाड के अनुसार वे तीनो पिंड जो पार्वण श्राद्ध मे पिता, पितामह और प्रपितामह के उद्देश्य से दिये जाते हैं ।

त्रिपिटक–स०पु० [स०] भगवान बुद्ध के उपदेशो का बडा सग्रह, बौद्ध लोगो का प्रथम धर्मग्रथ। यह तीन भागो मे विभक्त है ।

त्रिपुड, त्रिपुड्र–स०पु० [स० त्रिपुड्र] शैव या शाक्त लोगो द्वारा ललाट पर लगाया जाने वाला भस्म की तीन आडी रेखाओ का तिलक ।

त्रिपुटी–स०स्त्री० [स०] ज्ञातृ, ज्ञान और ज्ञेय, ध्याता, ध्यान और ध्येय, द्रष्टा, दृश्य और दर्शन आदि का समाहार करने की क्रिया का नाम । उ०—१ सो वणाय गोरी पद्मासण। त्रिपुटी जोरि समाधि मग्न मन । —व भा

उ०—२ युही खट चवकर भेद अघाव। पर्छं त्रिपुटी तुरिया पद पाव।—ऊ का

रू०भे०—त्रुटी।

त्रिपुर–स०पु० [सं०] १ तीन लोक, त्रिलोक २ वाणासुर का एक नाम. ३ तारकासुर के तीनो पुत्रो द्वारा बनवाये गये स्वर्णमय, रजतमय और लोहमय नगर जिन्हें शिव ने एक ही वाण मे नष्ट किए थे और उन राक्षसो को भी मारा था (महाभारत) ४ एक दानव जिसका शिवजी ने वध किया था (महाभारत)

उ०—अति कध सवकति याळ अग। सिव त्रिपुर त्रितकि घनु व्याळ संग।—रा रू

यौ०—त्रिपुरघ्न, त्रिपुरदहन, त्रिपुरातक, त्रिपुरार, त्रिपुरारि।

५ महादेव, शिव ६ चदेरी नगरी का एक नाम. ७ तीन की सख्या* (डिं को)

रू०भे०—तिपुर, त्रपुर।

त्रिपुरघ्न, त्रिपुरदहन–स०पु०यौ० [स०] महादेव, शिव।

त्रिपुरभैरव–स०पु० [स०] वैद्यक का एक रस जो सन्निपात रोग मे दिया जाता है।

त्रिपुरभैरवी–स०स्त्री० [स०] एक देवी का नाम।

त्रिपुरमल्लिका–स०स्त्री० [स०] एक प्रकार का मोतिया।

त्रिपुरातक–स०पु०यौ० [स० त्रिपुर+अतक] त्रिपुर का अत करने वाला, महादेव।

त्रिपुरा–स०स्त्री० [स०] १ पार्वती। उ०—अद्रिनी उवरि आप अस आवो। मो असि रुद्र त्रिपुरा मेलावो।—सू प्र.

२ कामाख्या देवी। उ०—स काळिका सारदा समया, त्रिपुरा तारणि तारा त्रनया।—देवि.

रू०भे०—त्रपुरा।

त्रिपरार, त्रिपुरारि–स०पु० [स० त्रिपुर+अरि] महादेव (ना मा)

रू०भे०—तिपुरारि, तिपुरारी, त्रपरार, त्रपुर, त्रपुरार, त्रपुरारी, त्रिपुरारी, त्रुपरार।

त्रिपुरारिरस–स०पु० [स०] वैद्यक मे उदर के रोगो को नष्ट करने के लिए दिया जाने वाला रस।

त्रिपुरारी—देखो 'त्रिपुरारि' (रू भे)

त्रिपुरासर, त्रिपरासुर–स०पु० [स० त्रिपुरासुर] त्रिपुरासुर राक्षस।

उ०—किधौं इभ कुभ त्रकोदर हत्थ, किधौं जयद्रथ्थहि पै पन पत्थ। किधौ त्रिपुरासर पै त्रिपुरारि, किधौं मुरदानव सीस मुरारि।

—ला रा

त्रिपुसी–स०स्त्री०—एक प्रकार का वृक्ष। उ०—तिल तदुळ नइ ताडखर, निवडा त्रिपुसी चग। तिदुग ततणि तिम वळी, तगर तणा तिहा तुग।—मा का प्र

त्रिपुस्कर–स०पु० [स० त्रिपुष्कर] फलित ज्योतिष मे एक योग जो कृतिका, पुनर्वसु, उत्तरफाल्गुनी, विशाखा, उत्तराषाढा और पूर्वाभाद्रपदा (विषमपादर्क्ष) इन नक्षत्रो रवि, मगल और शनि वारो (प्रकारान्तर से गुरुवार भी) तथा द्वितीया सप्तमी और द्वादशी इन तिथियो मे से किसी एक नक्षत्र, एक वार और एक तिथि के एक साथ पडने से होता है। इसमे मृत्यु, विनाश और वृद्धि आदि का त्रिगुणित फल होता है।

त्रिपोळियो—देखो 'तिपोळियो' (रू भे)

त्रिप्त—देखो 'तिरपत' (रू भे) उ०—१ रोम रोम रस पीजिये, एती रसना होइ। दादू प्यासा प्रेम का, यौं बिन त्रिप्त न होइ।

—दादूवाणी

उ०—२ पावै त्रिखत हुवै तद तद त्रिप्त। हिम सर करा नीर अति चित हित।—सू प्र

त्रिप्रस्न–स०पु० [स० त्रिप्रश्न] दिशा, देश और काल सम्बन्धी प्रश्न।

त्रिप्रस्रुत–स०पु० [स०] वह हाथी जिसके मस्तक, कपोल, और नेत्र इन तीनो स्थानो से मद बहता हो।

त्रिफळो–स०पु० [सं० त्रिफला] हड, बेहडा और आवला का सम्मिश्रण।

रू०भे०—तिरफळो।

त्रिबक–स०पु० [स० त्र्यबक] १ महादेव (ह ना) [स० ताम्रक] २ नगाडा। उ०—त्रिबक गडगड गडड, गोम ठडहड तुरा, आद हुडहुड तला ओपी। वीर बडबड वढ़ण तूर तडतड विकट, रोस चढ़ दुसह घड उरड रोपी।—लखधीर इंदा रौ गीत

वि०—टेढ़ा, तीन वल वाला।

उ०—झूठ बोल्या घणा जीभडी, दीघा कूड कळक। गळ जीभी यास्यै गळै, हुस्यइ मुहडौ त्रिबक।—स कु

त्रिवळि, त्रिवळी—देखो 'त्रिवळि' (रू भे)

त्रिबळीक–स०पु० [स० त्रिवलीक] १ वायु २ मलद्वार, गुदा।

त्रिबाहु–स०पु० [स०] १ तलवार के ३२ हाथो मे से एक हाथ।

२ रुद्र के एक अनुचर का नाम।

रू०भे०—त्रिवाहु।

त्रिबेनी—देखो 'त्रिवेणी' (रू भे)

त्रिभग–वि० [स०] जिसमे तीन जगह बल पडते हो, तीन जगह से टेढा।

स०पु०—खडे होने की एक मुद्रा जिसमे पेट, कमर और गरदन मे कुछ टेढापन रहता हो।

त्रिभगी–स०पु० [स०] १ श्रीकृष्ण २ विष्णु ३ ईश्वर, परमात्मा (ना मा)

४ शुद्ध राग का एक भेद. ५ ताल के साठ भेदो मे एक भेद ६ प्रत्येक चरण में (६ नगण, २ मगण, १ भगण, १ मगण, १ सगण और अत मे एक गुरु के क्रम से) ३४ अक्षर का एक गणात्मक दडक का एक भेद ७ १०, ८, ८, और ६ मात्राओ पर यति के क्रम से प्रत्येक चरण मे ३२ मात्राओ का एक मात्रिक छद। 'लखपत पिंगळ' व 'रघुवरजसप्रकास' के अनुसार इसके प्रत्येक चरण के अतिम दो वर्ण गुरु होते है। 'पिंगळ प्रकास' के अनुसार इसके प्रत्येक चरण के अन्त मे जगण नही होता है।

वि०—जिसमे तीन जगह वल पडता हो, त्रिभग।

रू०भे०—त्रभगी।

त्रिभ-वि० [स०] तीन नक्षत्रो से युक्त।

त्रिभग-स०पु० [स०] भाला, सेल (ना डि.को)

त्रिभवण—देखो 'त्रिभुवन' (रू भे.) उ०—सवरी वन माहि प्रीत सू साची, उवर जठै दरसण अभिलाख। आस्रम उभै सहोदर आया, त्रिभवण नायक सेस तठै।—र रू

त्रिभवणनाथ—देखो 'त्रिभुवननाथ' (रू भे) उ०—त्रिभवणनाथ जगत निस तारण। धरम वेद कीजै धू धारण।—रा रू

त्रिभार्गो-स०पु०—भाला, सेल (डि को)

वि०—तीन धार वाला। उ०—अर कवर भी आरूढ होता ही त्रिभार्गो तोमर भुजादड थी अमाई समुग्रा रै साम्है आपरो वाह भोकियो।—व भा

त्रिभुइओ, त्रिभुइयो-वि० [स० त्रि+भूमि] तीन मजिल का, तीन खडो का, तिमजिला। उ०—अहमदावाद, किसिउ अहमदावाद नगर? गढ गढ मदिर पोळि प्राकार वावि सरोवर कूआ खाइ आराम वनखड विभुइआ त्रिभुइआ आवास, चउरासी चहुटा।—व स

त्रिभुअण—देखो 'त्रिभुवन' (रू भे) उ०—हियै वसाई हरख सू, मधुसूदन महाराज। नर जिणसू ललचै नही, सो तिभुअण सिरताज।
—वा दा

त्रिभुअणधणी—देखो 'त्रिभुवणधणी' (रू भे) उ०—प्रिथमाद पवन भुजै भुजन, घण वारह घर प्रति घणी। समरे राजेसर आदि अपपर, धरणीधर त्रिभुअणधणी।—पि प्र

त्रिभुज-स०पु० [स०] तीन भुजाओ अथवा रेखाओ से घिरा हुआ धरातल, वह क्षेत्र जो तीन भुजाओ से घिरा हो।

त्रिभुवण—देखो 'त्रिभुवन' (रू भे) उ०—पुरसोत्तम पूरण प्रभू, राघव गिरधर रूप। मुरळीधर मोहण मुकद, भजलै त्रिभुवण भूप।—ह र

त्रिभुवणधणी-स०पु०यौ० [स० त्रिभुवन+धनिक] १ रुद्र, महादेव। उ०—अचरज! आदर देय निरखसी गण हरवाळा। त्रिभुवणधणिया थान वेवतो जा भुरजाळा।—मेघ

२ विष्णु ३ परमेश्वर।

रू०भे०—त्रिभुअणधणी, त्रिभुवनधणी।

त्रिभुवणनाथ—देखो 'त्रिभुवननाथ' (रू भे) (डि को)

त्रिभुवन-स०पु० [स०] तीनो लोक—स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल।

उ०—१ देवी गाजता दैत ता वस गमिया। देवी नवे खड त्रिभुवन तूझ नमिया।—देवि

उ०—२ आयो अस रोहि अरि सेन अतरै, प्रथिमी गति आकास पथ। त्रिभुवननाथ तणो वेळा तिणि, रव सभळी कि दीठ रथ।
—वेलि

रू०भे०—तिभवण, त्रभवण, त्रभवन, त्रभुयण, त्रिभवण, त्रिभुअण, त्रिभुवण, त्रिभुवन्न, त्रिभोयण, त्रिभोवण, त्रैभवण, त्रैभुयण, त्रैभुवण, त्रभावण।

यौ०—त्रिभुवणभूप, त्रिभुवनधणी, त्रिभुवननाथ, त्रिभुवनपति, त्रिभुवनराय, त्रिभुवनसुदरी, त्रिभुवनस्वामी।

त्रिभुवननाथ-स०पु०यौ० [स० त्रिभुवन+नाथ] १ ईश्वर, परमात्मा. २ विष्णु. ३ महादेव।

रू०भे०—त्रभवननाथ, त्रभुवणनाथ, त्रिभुवणनाथ।

त्रिभुवनसुदरी-स०स्त्री० [स०] दुर्गा, पार्वती।

त्रिभुवन्न—देखो 'त्रिभुवन' (रू भे) उ०—देवी उम्मया खम्या ईस नारी। देवी धारणी मुड त्रिभुवन्न धारी।—देवि.

त्रिभोयण—देखो 'त्रिभुवन' (रू भे) उ०—भाजण घडण त्रिभोयण भामी। नाग नरा अमरा घणनामी।—सिवपुराण

त्रिभोलग्न-स०पु० [स०] क्षितिज वृत्त पर पडने वाले क्रातिवृत्त का ऊपरी मध्य भाग।

त्रिभोवण, त्रिभोवन—देखो 'त्रिभुवन' (रू.भे.) (गजमोख)

उ०—धारा गिरिनगरी त्रिभोवन जाणू, नगर अहिमदावाद पुहुवि वखाणू।—व.स

त्रिमणी—देखो 'तिमणी' (रू भे) (उ र)

त्रिमद-स०पु० [स०] १ परिवार, विद्या और धन इन तीनो कारणो से होने वाला अभिमान २ मोथा, चीता और वायविडग इन तीनो चीजो का समूह।

त्रिमधु, त्रिमधुर-स०पु० [स०] शहद, घी और चीनी इन तीनो का समूह।

त्रिमात, त्रिमात्रिक-वि० [स० त्रिमात्रिक] जिसके तीन मात्राए हो, तीन मात्राओ का प्लुत।

त्रिमारगगामिनी, त्रिमारगी-स०स्त्री० [स० त्रिमार्गगामिनी, त्रिमार्गी] गगा, सुरसरि।

त्रिमासिक—देखो 'त्रैमासिक' (रू.भे)

त्रिमुकुट-स०पु० [स०] वह पहाड जिसके तीन चोटिया हो।

त्रिमुख-स०पु० [स०] १ गायत्री जपने की चौबीस मुद्राओ मे से एक मुद्रा २ शाक्य मुनि।

त्रिमुखी-स०स्त्री० [स०] भगवान बुद्ध की माता, माया देवी।

त्रिमुनि-स०पु० [स०] तीन मुनि—पाणिनि, कात्यायन और पतजलि।

त्रिमूरति-स०पु० [स० त्रिमूर्ति] ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनो देवता।

त्रिमेळपालवणी—देखो 'झडलुपत'

त्रियच—देखो 'तिरजच' (रू भे) उ०—नीन विवेइ सुरनर त्रियच, ना मैथुन सु मन लग्य। काम विटवन केम कही सकु, जाणै तू जिनराय।—व व ग्र

त्रिय-वि० [स० त्रि] १ तीन। उ०—त्रिय सहस तावीन, दीध महाराज पायदळ। उभै सहस उमराव, वखव जतनेत सहस वळ।
—सू प्र

२ तीसरा। उ०—चवद प्रथम दूजी चवद, अठाईस त्रिय 'अवख'।
—र.ज.प्र

देखो 'त्रिया' (रू भे) उ०—१ त्रिय कोटि कोटि इम सरजु तीर। नग झटित भरत घट हेम नीर।—सू प्र

उ०—२ मिव त्रिय इम प्रभु लखि तिण समियँ। भूली चित माया व्रित भ्रमियँ।—सू प्र

त्रियामा—देखो 'त्रिजामा' (रू भे)

त्रिया-स०स्त्री० [स० स्त्री] १ स्त्री, औरत। उ०—लेता नाम विदाम न लागै, विगत जिका नह व्यापै। आछी त्रिया देख अवरा री, सहसा माल समापै।—र रू

२ पत्नी, पिया। उ०—१ पति अ त आतुर त्रिया मुख पेखण, निसा तणौ मुख दीठ निठ। चद्र किरणि कुलटा सु निसाचर, द्रव-डित अभिसारिका द्रिठ।—वेलि.

उ०—२ विस्वामित्र रै ज्याग सोभा वधारी। त्रिया रैण पै हूत गोतम्म तारी।—सू.प्र

रू०भे०—त्रिग्रा, त्रिय, त्री, त्रीय, त्रीया।

त्रियूह-स०पु० [स०] सफेद रग का घोडा (शा हो)

त्रियौ-वि० [स० तृतीय] १ तृतीय, तीसरा। उ०—आदि त्रियै पाये दस आखर, पठि इग्यार वियँ चौथै पर। दोजै मात्रा पाइ चउद्दह, हाकल ऐम कहीजै छदह।—पि प्र

२ देखो 'तीयौ' (रू भे)

त्रिरसक-स०पु० [स०] वह मदिरा जिसमे तीन प्रकार के रस या स्वाद हो।

त्रिरासिक-स०पु० [स० त्रैराशिक] गणित की एक क्रिया जिसमे तीन ज्ञात राशियों की सहायता मे चौथी अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है।

त्रिरूप-स०पु० [स०] अश्वमेध यज्ञ के लिए एक विशेष प्रकार का घोडा (शा हो)

त्रिरेख-वि० [म०] जिसमे तीन रेखाए हो, तीन रेखाओ वाला।

स०पु०—शङ्ख (ह ना)

त्रिल-स०पु० [स०] नगण जिसमे तीनो लघु वर्ण होते हैं।

त्रिलघु-स०पु० [स०] १ वह पुरुष जिमकी गरदन, जाघ और मूत्रेंद्रिय छोटी हो (शुभ) २ नगण जिसमे तीनो वर्ण लघु होते हैं।

त्रिलवण-स०पु० [स०] तीन प्रकार का नमक—सेंधा, साभर और काला।

त्रिलोक-स०पु० [स०] तीनों लोक यथा स्वर्ग, मर्त्य और पाताल।

उ०—वाका हरख न वधि सू, हाण हुवा नह सोक। हरि सतोख दियौ हियै, तिण नू दीध त्रिलोक।—बा दा

रू०भे०—तियलोय, तिलोग्र, तिलोई, तिलोक, तिलोकी, तिलोय, त्रयलोक, त्रयलोकी, त्रयलोय, त्रलोक, त्रिलोकी, त्रिहलोक, त्रीयलाक, त्रीलोक, त्रैलोक, त्रैलोकि, त्रैलोकी।

यौ०—त्रिलोकनाथ, त्रिलोकपति, त्रिलोकमिण, त्रिलोकराव, त्रिलोकेस।

त्रिलोकनाथ, त्रिलोकपत, त्रिलोकपति, त्रिलोकपती-स०पु०यौ० [स० त्रिलोकनाथ, त्रिलोकपति] १ तीनो लोको के स्वामी, परमात्मा, ईश्वर. २ विष्णु ३ महादेव।

रू०भे०—तिलोकपति, त्रइलोकनाथ, त्रयलोकनाथ, त्रलोकपत, त्रिलोकीनाथ, त्रैलोकनाथ, त्रैलोकपत, त्रैलोकपति।

त्रिलोकमिण-स०पु०यौ० [स० त्रिलोक+मणि] सूर्य। उ०—निरबीज करू राकस निकर, मेटू फिकर त्रिलोकमिण। धारू वभीख लका धणी, तो हू दसरथराव तण।—र रू

त्रिलोकराव-स०पु०यौ० [स० त्रिलोक+राज] तीनो लोको का स्वामी, ईश्वर, परमात्मा।

रू०भे०—त्रलोकराव, त्रैलोकराव।

त्रिलोकी-वि० [स० त्रिलोक] १ तीनो लोको का।

२ देखो 'त्रिलोक' (रू भे)

यौ०—तिलोकीतात, त्रिलोकोतारण, त्रिलोकीनाथ।

त्रिलोकीतात-स०पु०यौ० [स० त्रिलोक+त्राता] तीनो लोको का स्वामी, रक्षक, परमात्मा, विष्णु। उ०—नमो तन हस, त्रिलोकीतात। नमो विध ग्यान, सुणावण बात।—ह र

त्रिलोकीतारण-स०पु०यौ० [स० त्रिलोक+तारण] तीनो लोको को तारने वाला, ईश्वर (डि को)

त्रिलोकीनाथ—देखो 'त्रिलोकनाथ' (रू भे) उ०—हित कर जोडै हाथ, कामण सू अनमी किसा। नमे त्रिलोकीनाथ, राधा आगळ राजिया।

—किरपाराम

त्रिलोकेस-स०पु०यौ० [स० त्रिलोक+ईश] १ सूर्य २ तीनो लोको का स्वामी, ईश्वर।

त्रिलोचण—देखो 'त्रिलोचन' (रू भे)

त्रिलोचणा—देखो 'त्रिलोचना' (रू भे)

त्रिलोचन-स०पु०यौ० [स० त्रि+लोचन] तीन नेत्र धारी, महादेव, शिव (अ मा, ना मा)

रू०भे०—तिलोचण, त्रलोयण, त्रिलोचण, त्रिहनलोचन, त्रिन्ह-लोचन।

त्रिलोचना-स०स्त्री०यौ० [स०] १ पार्वती (ह ना)

२ अप्सरा (अ मा)

रू०भे०—त्रलोचणा, त्रिलोचणा।

त्रिलोतमा—देखो 'तिलोत्तमा' (रू भे) (ना मा.)

त्रिवड-स०पु०—डिंगल का एक गीत छद विशेष।

वि०वि०—इसके पूर्वार्द्ध मे १४-१४ और १० की यति से कुल अड-तीस मात्राए होती हैं और उत्तरार्द्ध मे भी इसी क्रम से अडतीस मात्राए होती है। पूर्वार्द्ध मे भी तीन चरण होते है और उत्तरार्द्ध मे भी तीन-तीन चरण होते है इस प्रकार कुल छ चरण होते हैं। पहले चरण की तुक दूसरे चरण की तुक से मिलती है। तीसरे चरण की तुक छठे चरण से मिलती है और चौथे चरण की तुक पाचवें चरण से मिलती है। राजस्थानी मे इसका दूमरा नाम 'हेलो' भी है।

त्रिवट–स०पु० [स०] दोपहर के समय गाया जाने वाला सम्पूर्ण जाति का एक राग।
रू०भे०—तिवट।

त्रिवरग–स०पु० [स० त्रिवर्ग] १ तीन प्रधान जातिया—ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य. २ तीन गुण—सत्व, रज और तम ३ अर्थ, धर्म और काम. ४ वृद्धि, स्थिति और क्षय ५ एक प्रकार का काव्य।
उ०—छेकानुप्रास लाटानुप्रास सरस त्रिवरग पचवरग परिहारकाव्य करइ, काचइ घडइ पाणी वहइ।—व म.
रू०भे०—तिवग्ग।

त्रिवळी, त्रिवळी–स०स्त्री० [स० त्रिवलि] १ स्त्री के पेट पर पडने वाले तीन वल जिनकी गणना स्त्री के सौन्दर्य मे होती है।
उ०—१ घरघर सिग सुपीन पयोघर, घणी खीण कटि अति सुघट। पदमणि नाभि प्रियाग तणी परि, त्रिवळी त्रिवेणी स्रोणि तट।
—वेलि.
उ०—२ कवीसर कहै जिका सुण लेंणी, पिण कठै त्रिवळी नै कठै त्रिवेणी।—र हमीर
उ०—३ पेट थयु पांण पातळु, त्रिवळी वळइ सुलीह। राति जाइ तु तिम वळी, अधिकु थाइ दीह।—मा का प्र
२ देखो 'तिवल' (१) (रू.भे) उ०—वाजइ त्रिवळी ताळ कसाळ, गीत गावइ वाळ-गोपाळ।—ऐ जै का स
३ स्त्री की योनि, भग (?) उ०—पेट ज्यू लच्छी पाटकी, नितव नारियळ जाण। मदनाकुस की जायगा, त्रिवळी सीप समाण।
—कुवरसी साखला री वारता
रू०भे०—तिवळि, तिवळिया, तिवळी, त्रवळ, त्रिवळी, त्रिवळि, थीवळि।

त्रिवस्ट, त्रिवस्टप–स०पु० [स० त्रिविष्टप] स्वर्ग, देवलोक (ना.मा)
रू०भे०—त्रिविस्टप।

त्रिवायउ–वि० [स० त्रिपाद] तीन पैर वाला, तीन हिस्सो वाला, तीन चौथाई वाला (उ र)

त्रिवाहु—देखो 'त्रिवाहु' (रू भे)

त्रिवक्रिम–स०पु० [स०] १ परमेश्वर, परमात्मा (ह ना)
२ विष्णु ३ वामनावतार।
रू०भे०—त्रईविक्रम, त्रीकम, त्रीविक्रम, त्रीवीक्रम।
अल्पा०—त्रीकमो।

त्रिविद्ध—देखो 'त्रिविध' (रू.भे) उ०—त्रिविद्ध त्रिजग्ग त्रिविक्रम तार। चतुरभुज चेतन आतम सार।—ह.र

त्रिविध, त्रिविध्धी–वि० [स० त्रिविध] तीन प्रकार का, तीन तरह का।
उ०—आधिभूतक आधिदेव अध्यातम, पिंड प्रभवति कफ वात पित। त्रिविध ताप तम् रोग त्रिविध मैं न भवति वेलि जपत नित।
— वेलि
यौ०—त्रिविध ताप।
क्रि०वि०—तीन तरह से, तीन प्रकार से। उ०—१ उत्तम मूसे एक भड, मध्यम दूहा मूस। अधम गीत मूसे अढर, त्रिविध कुकवि विण तूस।—वा दा
उ०—२ पवन त्रिविध झोला देकर पह। बादग सत पाखा हू ता वह।—सू.प्र
रू०भे०—तिविह, त्रवदी, त्रवधा, त्रिविद्ध।

त्रिविस्टप—देखो 'त्रिवस्टप' (रू भे), उ०—किताइक वार नरा सुख कीध। दया करि देव त्रिविस्टप दीध।—ह र

त्रिविस्तीरण–स०पु० [स० त्रिविस्तीर्ण] वह पुरुष जिसका ललाट, कमर और छाती ये तीनों अग चौडे हो (भाग्यवान)

त्रिवेणी–स०स्त्री० [स०] १ गगा, यमुना और सरस्वती का सगम जहा प्रसिद्ध तीर्थ प्रयागराज है। उ०—१ अभो त्रिवेणी आवियो, दिल्ली वाळै दाट। नेस प्रजाळै दुज्जणा, देस करै दहवाट।—रा.रू
उ०—२ मिळियै तट ऊपटि बिथुरी मिळिया, घण घर धारा वर घणी। केस जमण गग कुसुम करबित, वेणी किरि त्रिवेणी वणी।—वेलि
उ०—३ घर घर सिग सघर सुपीन पयोघर, घणी खीण कटि अति सुघट। पदमणि नाभि प्रियाग तणी परि, त्रिवळि त्रिवेणी स्रोणि तट।—वेलि
२ तीन नदियो का सगम. ३ तीन नदियो की मिली हुई धारा.
४ इडा, पिंगला और सुषुम्ना नाडियो का सगम (हठयोग)
उ०—रग राग ज्या घाट त्रिवेणी, गगन मे घोर परो री। ढूढ जाय निज मन री कीजै, फूल्या मुक्ति गहो री।
—स्री हरिरामजी महाराज
५ तीन की सख्या*।
रू०भे०—तिरवेणी, तिरवेनी, तिरवेणी, त्रवेणी, त्रिवेनी, त्रीवेनी।

त्रिवेदी–वि० [स० त्रिवेदिन्] तीन वेदो (ऋक्, यजु और साम) का ज्ञाता।
स०पु०—ब्राह्मणो का एक उपभेद।

त्रिवेनी—देखो 'त्रिवेणी' (रू भे)

त्रिसक, त्रिसकु, त्रिसघ–स०पु० [स० त्रिशकु] १ एक प्रसिद्ध सूर्यवशी राजा। विश्वामित्र ने उस पर प्रसन्न होकर उसकी सशरीर स्वर्ग जाने की इच्छा को पूर्ण करने का निश्चय किया था। अत विश्वामित्र ने (देवताओ के नाराज होने से यज्ञ सफल न होने पर) अपनी तपस्या के बल पर ही उसे सशरीर स्वग भेज दिया किन्तु इन्द्रादि देवताओ ने उसे वापस ढकेल दिया तदपि तपस्या के बल पर विश्वामित्र ने उसे अधर मे ही रोक दिया। तब से त्रिशकु वही आकाश मे नीचे सिर किये हुए लटका हुआ है और विश्वामित्र के बनाए हुए सप्तर्षि और नक्षत्र उसकी परिक्रमा करते हैं २ एक तारा जिसके विषय मे यह प्रसिद्ध है कि यह वही त्रिशकु है जिसको इन्द्रादि देवताओ ने स्वर्ग से वापिस ढकेल दिया और वापिस गिरते हुए को

विश्वामित्र ने उसे आकाश मे रोक दिया था. ३ एक पराक्रमी राजा सत्यव्रत जो महाराज त्रय्यारुण का पुत्र था। उसने एक पराई स्त्री को घर मे रख लिया था अतः त्रय्यारुण ने उसको शाप देकर चाण्डाल बना दिया और वह चाण्डालो के साथ रहने लगा। वही पर उसने अकाल से पीडित विश्वामित्र की पत्नी और उसके पुत्र की रक्षा की किन्तु उसने वशिष्ठ की कामधेनु गाय मार कर विश्वामित्र के पुत्रो को उसका मास खिलाया और स्वय ने भी खाया। इस पर वशिष्ठ ने उसको कहा कि एक तो तुमने पिता को असंतुष्ट किया, दूसरा अपने गुरु की गौ मार डाली और तीसरा उसका मास ऋषि-पुत्रो को खिलाया और स्वय ने भी खाया, अब तुम नही बच सकते। सत्यव्रत ने ये तीन महापातक किये थे इससे वह त्रिशकु कहलाया किन्तु उसने विश्वामित्र के पुत्र व पत्नी की रक्षा की थी अत विश्वामित्र ने उसे वर मागने के लिये कहा। उसने सशरीर स्वर्ग जाने की इच्छा प्रकट की। पहले तो विश्वामित्र उसकी बात मान गये किन्तु बाद मे त्रिशकु को उसके पैतृक राज्य पर अभिषिक्त किया। कैकयवश की सत्यरथा नामक कन्या से विवाह करने पर उसके गर्भ से प्रसिद्ध सत्यव्रती महाराज हरिश्चन्द्र ने जन्म लिया (हरिवंश)

उ०—राजा हरचद राजा त्रिसघ रौ, हरचद रै राणी तारादे हुई, कवर रोहितास हुवो।—नैणसी

रू०भे०—त्रसिघ, त्रसीग, त्रसीघ, त्रिसुक।

त्रिसकुज–स०पु० [स० त्रिशकुज] त्रिशकु के पुत्र राजा हरिश्चद्र।

रू०भे०—त्रिसुकज।

त्रिसझ्या—देखो 'त्रिसध्या' (रू भे)

त्रिसथिउ–स०स्त्री०—एक प्रकार का आभूषण।

त्रिसध्या–स०स्त्री० [स०] १ तीन सध्याएं—प्रात, मध्यान्ह और साय

उ०—सुणत पुराण त्रिसध्या साधत। दिन प्रति दिन द्विज देव अरा-धत।—ला रा.

२ दिन मे तीसरा प्रहर।

रू०भे०—त्रिसझ्या।

त्रिस–स०स्त्री० [स० तर्ष.] प्यास, तृषा। उ०—१ परमेसर पधरै हुवै आनद घणाई, परमेसर पधरै कदै नह चिंता काई। परमेसर पधरै दूखव त्रिस भूख न आवै, परमेसर पधरै आठ सिध नव निध पावै।

—ज खि

उ०—२ दिन रात न जाणइ दूसरी। नीद भूख त्रिस वीसरी।

—अ वचनिका

त्रिसकत, त्रिसकति, त्रिसकती, त्रिसकत्त–स०स्त्री० [स० त्रिशक्ति] १ पार्वती (क कु.बो) २ देवी, दुर्गा, शक्ति। उ०—१ जैत कमध कर जोडिया, जीहा एह जपत्त। करनळ रिणमल बाचरी, पाळ करी त्रिसकत्त।—राव जैतसी

उ०—२ जगदब सकति त्रिसकति जिका, ब्रह्म प्रक्रति माया वजे।

—मे.म.

३ गायत्री. ४ तीन ईश्वरीय शक्तिया—इच्छा, ज्ञान और क्रिया. ४ तान्त्रिको की तीन देविया—काली, तारा और त्रिपुरा।

रू०भे०—त्रसकत।

त्रिसखरमुड–स०पु०यौ० [स० त्रि+शिखर+मुकुट] तीन शिखर वाला मुकुट। उ०—ऊपरि सजळजळदायमान मेघाडबर छत्र धरिउ, मस्तकि त्रिसखरमुड रचिउ।—व स

त्रिसणा, त्रिसना—देखो 'तिसणा' (रू भे.) उ०—१ बाट प्रसाद वळोवळ वागा, त्रिसणा भागी लोभ तणी। चेला गुरा वेढ री चरखा, साधा सौ सौ कोस सुणी।—बाकीदास विठू

उ०—२ अमसी कहै वधतै धनै, त्रिसना वधै अथाग। घुर थी अधिकी धग-धगइ, इधन मिळिया आगि।—ध व ग्र

त्रिसपरसा–स०स्त्री० [स० त्रिस्पृशा] एक एकादशी जो एक ही सायन दिन मे उदयकाल के समय थोडी सी एकादशी और रात के अत मे त्रयोदशी होती है (प्रति उत्तम)

त्रिसम–स०पु० [स०] सोठ, गुड और हड इन तीनो का समान समूह।

त्रिसयउ—देखो 'तिरसो' (रू भे)

त्रिसर–स०पु० [स० त्रिशिर] १ एक प्रकार का मटर जिसकी फलिया चिपटी होती हैं. २ कुबेर, धनेस (ना मा) ३ एक प्रकार का आभूषण (व स.)

४ देखो 'त्रिसिर' (रू भे.) उ०—हरे हरि पेखियो वन पावन हुओ, जवन खर त्रिसर रौ कीयौ वर जूजूओ।—पी ग्र

त्रिसरकरा–स०स्त्री० [स० त्रिशर्करा] गुड, चीनी और मिश्री इन तीनों का समान समूह।

त्रिसरण–स०पु० [स० त्रिशरण] १ जैनियो के एक आचार्य का नाम. २ भगवान बुद्ध।

त्रिसरनायक–स०पु०—एक प्रकार का आभूषण विशेष (व स)

त्रिसरी–स०स्त्री०—तीन लड वाली। उ०—पच वरण पाटू तणा उल्लोच ताडया, मुक्ताफळ तणी त्रिसरी मोतीसरी लबावी।

(व स.)

त्रिसळ—देखो 'त्रिसळौ' (रू भे)

त्रिसळा–स०स्त्री० [स० त्रिशला] चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी का माता का नाम (जैन) उ०—सुपन त्रिसळा सुतन किया साचा।

—ध व ग्र

त्रिसळौ–स०पु०—१ क्रोध या सताप के कारण ललाट पर पडने वाली तीन सिलवट या सिकुडन। उ०—१ मन माया लालच लिया, त्रिसळौ लिया लिलाट। रसणा नकार लिया रहै, औ मूवा रौ घाट।

—बा दा.

उ०—२ पडियौ असुर ऊपरा पडियौ, कोपिअै ओपियौ निमौ कठीर। झाझै त्रिसळै दैत झरडियौ, वडियौ मास भरय रै वीर।—पी ग्र

२ त्रिशूल। उ०—कुळ देवी चारणा आड सिंदूर वणाया। सिर काळी लोवडी विकट त्रिसळौ भुज साया।—साहिबौ सुरताणियौ

रू०भे०—त्रसळ, त्रसळो, त्रसूळ, त्रिसळ, त्रिसूळ, त्रिसूळउ, त्रिसूळो।

त्रिसझ-व्यापणी—वि०स्त्री० [स० त्रिसंध्यव्यापिनी] जो वराबर सूर्योदय से सूर्यास्त तक हो (तिथि, शुभ)

त्रिसा—स०स्त्री० [स० तृषा] प्यासा, तृषा। उ०—भूख त्रिसा नो सोग। —जयवाणी

त्रिसाख—वि० [स० त्रिशाखा] जिसमे आगे की ओर तीन शाखायें निकली हो।

त्रिसिउ—देखो 'तिरसो' (रू भे.) उ०—त्रिसिउ कराळिउ मागइ नीर, तातउ करी ते पाइ कथीर।—चिहु गतिचउपई

त्रिसिख—स०पु० [स० त्रिशिख] १ मुकुट २ त्रिशूल. ३ रावण के एक पुत्र का नाम।

वि०—जिसके तीन शिखर हो, तीन चोटियो वाला।

त्रिसिखर—स०पु० [स० त्रिशिखर] १ तीन चोटियो वाला पर्वत. २ त्रिकूट पर्वत।

त्रिसियउ, त्रिसियो—देखो 'तिरसो' (रू भे) (उ र) उ०—१ जिण कारण थळ लघिया, तिया चिंतन काई। ते साजन बैठा खुह सिर, करहो त्रिसियो जाई।—ढो मा

उ०—२ ताहरा कुवरजी कहियो—हू गगाजळ नही आरोगू। ताहरा त्रिसिया हीज खोजी रै पासि पधारि ऊभा रहिया।—द वि

त्रिसिर—स०पु० [स० त्रिशिरस्] १ कुवेर. २ एक राक्षस का नाम (महाभारत)

३ रावण का एक भाई जो खरदूषण के साथ दण्डक वन मे रहता था, मतान्तर से यह खरदूषण का सेनापति था।

वि०—जिसके तीन शिर हो, तीन शिरो वाला।

त्रिसींघ—वि० [स० त्रिशकु] १ वलवान, जबरदस्त, शक्तिशाली। २ देखो 'त्रिसकु' (रू भे)

त्रिसीरस—स०पु० [स० त्रिशीर्ष] तीन शिखर वाला पहाड।

त्रिसीरसक—स०पु० [स० त्रिशीर्षक] त्रिशूल।

त्रिसीस—स०पु० [स० त्रिशूल] तीन फल का भाला।

त्रिसुक—देखो 'त्रिसकु' (रू भे)

त्रिसुकज—देखो 'त्रिसकुज' (रू भे)

त्रिसुगधि—स०स्त्री० [स०] दालचीनी, इलायची और तेजपात इन तीनो सुगधित मसालो का समूह।

त्रिसूळ, त्रिसूल—स०पु० [स० त्रिशूल, प्रा० तिसूल] एक प्रकार का अस्त्र जिसके सिरे पर तीन फल होते है, यह महादेव का प्रधान अस्त्र माना जाता है। उ०—१ कान्हियो त्रिसूळा मार खळ काळियो। कमर परताळियो जडा काढो।—खेतसी बारहठ

उ०—२ ता ईस्वर तणइ गोरी गगा कलत्र, विनायक कारतीकेय के पुत्र, गजासुर त्रिपुरदैत्य मकरधज सत्रु, विकट चरित्र जटाजूट बाधइ, धनुसबाण सावइ, त्रिसूळ सस्त्र, गजचरम वस्त्र।—व.स.

यौ०—त्रिसूळ-धर।

२ तीन प्रकार के दुख—दैहिक, दैविक, और भौतिक. ३ एक प्रकार की मुद्रा जिसमे अगूठे को कनिष्ठा उगली के साथ मिला कर बाकी तीनो उगलियो को फैला देते हैं (तत्रशास्त्र)

४ देखो 'त्रिसळो' (रू भे) ५ तीन की सख्या*।

रू०भे०—तिरसूळ, त्रसूळ, त्रिसूळउ, त्रिसूळि।

अल्पा०—तिसूळी।

त्रिसूळउ—१ देखो 'तिसळो' (रू.भे) उ०—जेहा सज्जण काल्ह था, तेहा नाही अज्ज। माथि त्रिसूळउ नाक सळ, कोइ विणट्ठा कज्ज। —ढो मा.

२ देखो 'त्रिसूळ' (रू भे)

त्रिसूळघात—स०पु० [स० त्रिशूलघात] एक तीर्थ (महाभारत)

त्रिसूळधर—स०पु०यौ० [स० त्रिशूल-धर] त्रिशूल धारण करने वाले महादेव (डि ना मा)

त्रिसूळि—देखो 'त्रिसूळ' (रू भे) उ०—ऊछाळइ जिम गगनि धूळि, पडतउ धाई नइ झलइ त्रिसूळि।—चिहुगति चउपइ

त्रिसूळी, त्रिसूली—स०पु० [स० त्रिशूलिन्] १ त्रिशूल को धारण करने वाले शिव, महादेव।

स०स्त्री०—२ देवी, दुर्गा ३ देखो 'त्रिसूळो' (१) (रू भे.)

त्रिसूळो—स०पु०—१ मेवाड और डूगरपुर राज्य मे प्रचलित एक प्राचीन तावे का सिक्का। यह सिक्का धीगला सिक्का से प्राचीन है।

रू०भे०—त्रिसूळी।

२ देखो 'त्रिसळो' (रू भे) उ०—लाल आंख त्रिसूळो चढै। —जयवाणी

३ देखो 'त्रिसूळ' (अल्पा, रू भे)

त्रिसो—देखो 'तिरसो' (रू भे)

त्रिस्कध—स०पु० [स०] ज्योतिप शास्त्र जिसके सहिता, तत्र और होरा ये तीन स्कध हैं।

त्रिस्टुप, त्रिस्टुभ—स०पु० [स० त्रिष्टुप, त्रिष्टुभ] सस्कृत भाषा का ग्यारह वर्ण का वृत्त विशेष।

त्रिस्णा—देखो 'तिसणा' (रू.भे) उ०—त्रिस्णा सू लागी रहउ, पिण न भज्यउ सतोस।—वि कु.

त्रिस्तभासन—स०पु० [स०] योग के चौरासी आसनो के अन्तर्गत एक आसन। इसमे दोनो पाँवो को घुटने से मोड कर दोनो जघाओ के निम्न भाग को अधर रख कर एडिओ को जघा के निम्न भाग से लगा कर बैठना होता है।

त्रिस्थळी—स०स्त्री० [स० त्रिस्थली] तीन तीर्थ—प्रयाग, गया और काशी।

त्रिस्नान—स०पु० [स०] सवेरे, दुपहरी एव साय तीनो काल मे किया जाने वाला स्नान जो वानप्रस्थाश्रम मे आवश्यक समझा जाता है।

त्रिस्रंग—स०पु० [स० त्रिशृग] त्रिकूट पर्वत।

त्रिह-वि० [स० त्रि] तीन। उ०—१ त्रिह रावळ गहलोत भाण तउ, भीम हठी उग्रसेन महाभड।—सू प्र.

त्रिहत्तरि—देखो 'तिहोतर' (रू भे) (उ र)

त्रिहनलोचन—देखो 'त्रिलोचन' (रू.भे) (डि ना मा)

त्रिहलोक—देखो 'त्रिलोक' (रू भे.) उ०—इदि ग्रहल्यं उग्रारणा ऊपरा, गोरिज्या लूण उग्रारै। छात्र त्रिहलोक रै छोडिया छेहडा, त्रीकमौ पिरिणियौ सत तारै।—पी ग्र.

त्रिहु, त्रिहु-वि० [स० त्रि] १ तीन। उ०—१ हे त्रिहु सवद उदार आदि गुण रै मैं आणै। स्रीपति मगळ सरूप ब्रहम चत्रु वेद वखाणै।
—सू प्र

उ०—२ दउढ वरस री मारुवी, त्रिहु वरसारउ कत। बाळपणइ परण्या पछइ, ग्रतर पडयउ ग्रनत।—ढो मा.

उ०—३ कोइ न त्रिहु जगि हुईय नारि, हिव पछी कोइ न होइसि ए।—प प च

२ देखो 'त्रिधा' (रू भे.) (उ र)

रू०भे०—त्रिहू।

त्रिहुतरौ—देखो 'तिहोतरौ' (रू भे) उ०—त्रिहुतरौ जैसळमेर नगरै, विजयहरस विसेस ए। धरमसी पाठक तवन कीधौ, दुरस पुस्तक देख ए।—ध.व ग्र

त्रिहू—देखो 'त्रिहु' (रू.भे) उ०—देवळियो वस-नयर ग्रनै पुर डूगर, त्रिहूं ग्रे भूप ग्रभावौ ताम। बाचै तेग घणा वरदायौ, राण वसायौ घासीराम।—पतौ ग्रामियौ

त्रिहोतरौ—देखो 'तिहोतरौ' (रू भे) उ०—सतरै समत त्रिहोतरै, उज्जळ त्रीज प्रकास। तजियौ इदै नागपुर, सावण हदै मास।
—रा रू

त्रिह्नलोचन—देखो 'त्रिलोचन' (रू भे) (डि ना मा)

त्रींगडौ, त्रींगडौ-वि०—तीक्ष्ण ? उ०—तठा उपराति करि नै राजान मिलामति पचास टाक चिलेरोखा ग्रणहारी कवाण रा घोकार वाजिनै रहिग्रा छै। त्रींगडा मालोडा रा वूम पडिग्रा छै।—रा सा स

त्रींदिय, त्रींद्रिय-स०पु० [स० त्रीन्द्रिय] तीन इद्रियो वाला जीव (जैन)
रू०भे०—तिइदिय, तिइद्रिय, तेंदिय, तेंद्रिय, तेइदिय, तेइद्रिय, त्रि-इदिय, त्रि-इद्रिय।

त्री—१ देखो 'त्रि' (रू भे) २ देखो 'त्रिया' (रू भे)
उ०—१ सुकदेव व्यास जैदेव सारिखा, सुकवि ग्रनेक ते एक सथ। त्री वरणण पहिलौ कीजै तिणि, गूथियै जेणि सिंगार ग्रथ।
—वेलि.

उ०—२ निवाण त्री भरत नीर रूप कुभ हेम रा।—सू प्र

उ०—३ पच्छिम दिसि पूठ पूरव मुख परठित, परठित ऊपरि ग्रात-पत्र। मधुपरकादि ससकार मडित, त्री वर वे बैसाणि तत्र।
—वेलि.

उ०—४ वहि मिळी घडी जाइ घणा वाछता, घण दीहा ग्रतरै घरि। ग्रकमाळ ग्रापै हरि ग्रापणी, पधरावी त्री सेज परि।
—वेलि.

त्रीकम—देखो 'त्रिविक्रम' (रू भे, ना मा.) उ०—१ किरि कुटियै कपाळ, त्रीकम तू विमुखा तणा। घडी घडी घडियाळ, वाजै वसदेरावउत।
—प्रिथ्वीराज राठौड

उ०—२ भगवत भिणै भगवत भिणी, त्रीकम-त्रीकम प्राण तवि। नाराइण किहिक तू सा नरिंद, करै पुकारा 'पीर' कवि।—पी ग्र

त्रीकमौ—देखो 'त्रिविक्रम' (ग्रल्पा, रू भे) उ०—१ जळ माही पैठौ जग जीवन, ग्रसुरा तणी भाजिवा ग्रास। ताहरी जाणियौ हुग्रौ त्रीकमा, प्रिथी मडाणी कोड पचास।—पी ग्र.

उ०—२ इदि ग्रहल्यं उग्रारणा ऊपरा, गोरिज्या लूण उग्रारै छात्र। त्रिहलोक रै छोडिया छेहटा, त्रीकमौ पिरिणियौ सत तारै।—पी ग्र.

त्रीखण—देखो 'तीक्ष्ण' (रू भे) उ०—ग्रागाहू त खुधा त्रीखण ग्रति। भोजन करै दमगुणौ भूपति।—सू प्र

त्रीखौ—देखो 'तीखौ' (रू भे)

त्रीछण—देखो 'तीक्ष्णा' (रू.भे) उ०—१ तणी ईस चख धोम नासा धुवै फुणी तक, कणी वज्र वणी ग्ररणी घणी काळ। ग्रेम वुदी घणी तणी ग्रभ्रियामणी, वणी त्रीछण ग्रणी तणी वाढाळ।
—कविराजा करणीदान

उ०—२ वहै कुवरा गुर त्रीछण वाढ। गिरा कध रोड पडै ग्रवगाढ।
—सू प्र

त्रीज—देखो 'तीज' (रू भे) उ०—सतरै समत त्रिहोतरै, उज्जळ त्रीज प्रकास। तजियौ इदै नागपुर, सावण हदै मास।—रा रू

त्रीजउ, त्रीजउ-वि० [स० तृतीय] तीसरा (उ र)
उ०—१ ग्रा त्रीजउ ता ग्रह्म तणइ, नगरी फिरयु वेढि। ग्रापु तु ता ग्राज थी, क्षित्री नही पणि ढेढ।—मा का प्र

उ०—२ प्रथम पवाडइ कीचक मरइ, वीजइ दक्षिणगोग्रहु करइ। त्रीजउ उत्तरगोग्रहु हूउ, पडवि वरसु इस परि गमिउ।—प प च

त्रीजणी—देखो 'तीजणी' (रू भे) उ०—जीण साकति साफ-वाफ लूब भूब करि नै स्रामण री त्रीजणी ज्यौं पाडवै सिणगार पाखर घाति चोकि ग्राणि हाजर किग्रा छै।—रा सा स

त्रीजलौ—देखो 'तीजौ' (ग्रल्पा, रू भे.) उ०—वीजलइ फेरई डाईचउ देई, गज रथ सिणगार। त्रीजलइ फेरई डाइचौ देई, रतन कोडी भडार।—रुकमणी मगळ
(स्त्री० त्रीजली)

त्रीजाम, त्रीजामा— स०स्त्री० [स० त्रियामा] रात्रि, निशा (डि को)

त्रीजौ—१ देखो 'तीजौ' (रू भे.) उ०—१ वि घडि वोटी वि वलि चरै, त्रीजी तनु सुपेखि। ऊची द्रस्टि ग्रमीय रस, ते ताडी हु लेसि।
—मा का प्र

उ०—२ त्रीजै प्रहरै रैण कै, मिळिया तेहा-तेह। धन नहिं धरती हुइ रही, कत सुहावौ मेह।—ढो मा

(स्त्री० तीजी)

२ देखो 'तीज' (रू भे) उ०—जन्म कल्याणक जिन तणौ, माह तणी सुदि त्रीजो जी। दिन दिन वाधइ दीपता, चद कळा जिम बीजो जी।—म कु

त्रीठ—देखो 'तीठ' (रू भे) उ०- १ विण त्रीठ रीठ उडै विसम, हमतम ऊगम हेमरा। मक फौज कीध सका सहित, जाण क लग्गा वजरा।—रा रू

उ०—२ पटदानार वरिसतै वीदा, माडै अधिको माप मन। धरा सरिस नित-नित धाराहर, त्रीठ न दाखै जोव तन।—हरिसूर बारहठ

त्रीठणौ, त्रीठबौ-क्रि०अ०—तृषित होना ? उ०—पालर अण त्रीठिया प्रिथी पुठि, प्रियमी अणत्रीठिया पुण। दीजै वीरम जगिदातारा, घण दानेसर गिरिद घण।—हरिसूर बारहठ

त्रीठियोडौ-भू०का०कृ०—प्यासा।

त्रीणि, त्रीणी, त्रीन—देखो 'तिण' (रू भे) उ०—पखे त्रीणि पोढ़ी मने सीख मोरी। अेरो कोण लाजै पखो आव ओरी।—ना.द

त्रीनेण, त्रीनेयण, त्रीनैण—देखो 'त्रिनयन' (रू.भे.)

त्रीपत्रक-स०पु० [स० त्रिपत्रक] पलास का वृक्ष।

त्रीय-वि० [स० तृतीय] १ तीसरा। उ०—त्रीय उपाग जीवाभिगम जाणियै, च्यार हजार सौ सात परिमाणियै।—ध व ग्र

[स० त्रि] २ तीन। उ०—मारू मारइ पहियडा, जउ पहिरइ सोवन्न। दती, चुडइ, मोतिया, त्रीया हेक वरन्न।—ढो.मा.

३ देखो 'त्रिया' (रू भे.) उ०—कौसिक ज्याग अभग सिहायक, दाणव घायक दूधरी। पाय रजी रघुराय परस्सत, आ त्रीय गौतम ऊधरी।—र ज प्र

त्रीयलोक—देखो 'त्रिलोक' (रू भे)

त्रीया—देखो 'त्रिया' (रू भे.)

त्रीलोक—देखो 'त्रिलोक' (रू भे) उ०—त्रीत सकर करै ध्यान ब्रह्मा धरै। नाथ कीजै नही नाथ त्रीलोक रै। घर कती लोवडी सूरह चारै घणी, तरै त्रीलोक री नाल ठाकर तणी।—रुखमणी हरण

त्रीवध्या-स०स्त्री० [स० स्त्री+वध्या] बाझ स्त्री (एका०)

त्रीविक्रम, त्रीवीक्रम—देखो 'त्रिविक्रम' (रू भे)

त्रीस—देखो 'तीस' (रू भे) (उ र) उ०—त्रीस मास पायेव तवि, कवि तिण छद किसोर। जाणै लाखो गुण जुगति, धरपति कुळ ऊजोर।—ल पि.

त्रीसटकी—देखो 'तासटकी' (रू भे) उ०—कसीसं गुण त्रीसटकी कबाण। कठी नाम सत्या कळी पत्थ बाण।—वचनिका

त्रीसमउ, त्रीसमौ—देखो 'त्रीसमौ' (रू भे) (उ.र)

(स्त्री० त्रीसमी)

त्रीसा—देखो 'तीस' (रू भे) उ०—सैद अली मुहकम्म रै, रहियो त्रास नमत्थ। गोढ़ूं छूटा कोट सू, त्रीसा तूटा मत्थ।—रा.रू

त्रीहायन-वि० [स०] तीन वर्ष का।

त्रुक, त्रुको-स०पु०—एक प्रकार का तीर (अ मा)

त्रुगट—देखो 'त्रिकूट' (रू भे)

त्रुगटगढ—देखो 'त्रिकूटगढ़' (रू भे.) उ०—त्रुगटगढ थरहरै नाग दथ डरै तद, भरै चत्रकुट डड जोड भुडड। गडक डडाळ करमाळ ग्रह गढपती, अेहडी रीस कण सीस उमड।

—ईसरदास सूरजमलोत बारहठ

त्रुगटवध—देखो 'त्रकूटवध' (रू भे)

त्रुच्छ—देखो 'तुच्छ' (रू भे) उ०—प्रचडेस जीता अहू लोक पाणै। विया नै उरावै जतु त्रुच्छ जाणै।—सू प्र.

त्रुटणौ, त्रुटबौ-क्रि०अ० [स० त्रुट्] १ नाश होना। उ०—खळ धारा सिगळाई खूटा, तु सा वाद कियो से त्रुटा।—पी ग्र.

२ देखो 'टूटणौ, टूटबौ' (रू भे) उ०—त्रुटै घाव तुड, भिडै रुड-मुड। लडै फौज लाडा, उडे लोह आडा।—सू.प्र

त्रुटि-स०स्त्री० [स०] १ भूल, चूक. २ कमी, कसर न्यूनता.

३ अभाव।

रू०भे०—त्रुटी, त्रूटी।

त्रुटी—१ देखो 'त्रिपुटी' (रू भे) (उ.र.)

२ देखो 'त्रुटि' (रू भे)

त्रुपरार—देखो 'त्रिपुरारि' (रू भे) उ०—कठठ थट कलकता तणा सग राज कळ, वाज पग कूल चच जगत वरणै। उण समै उरग गत नृपत आवै उडै, सुतन गुमनेस त्रुपरार सरणै।—मोडजी आढो

त्रुरकी—देखो 'तुरकी' (शा हो)

त्रुरहडौ-स०पु०—एक प्रकार का घोडा विशेष (शा हो)

त्रुळ—देखो 'तुरळ' (रू भे)

त्रूटणौ, त्रूटबौ—देखो 'टूटणौ, टूटबौ' (रू भे) उ०—१ लिखमीवर हरख-निगर भर लागी, आयु रयणि त्रूटति इम। क्रीडाप्रिय पोकार किरीटी, जीवित प्रिय घडियाळ जिम।—वेलि.

उ०—२ विसरिया विसर जस बीज बीजिजै, खारी हाळाहळा खळाह। त्रूटै कध मूळ जड त्रूटै, हळधर का वाहता हळाह।—वेलि.

उ०—३ सदेसउ जिन पाठवइ, मरिस्यउ हीया फूटि। पारेवा का भूत जिउ, पाडिसइ आगणि त्रूटि।—ढो मा.

त्रूटी—देखो 'त्रुटि' (रू भे)

त्रूठणौ, त्रूठबौ—देखो 'तूठणौ, तूठबौ' (रू भे)

त्रूठियोडौ—देखो 'तूठियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० त्रूठियोडी)

त्रेस—देखो 'तेस' (रू भे) उ०—आया दूत खबर सह आई, विचित्र फौज लग दोय वताई। चडियो अजन त्रेस मन चाडै, साम्ही सुहडै भडै सचाडै।—रा रू.

त्रेवळणौ, त्रवळबौ-क्रि०स०—रोकना। उ०—साह हेक दस हेक न साझै, विदम न साझै हेक वण। सुजडै राण रायमल-सभ्रम-त्रेवळिया पतसाह त्रण।—महाराणा सागा री गीत

२ बाजना।

त्रेखळियोडो–भू०का०कृ०—१ रोका हुआ. २ बाधा हुआ।
(स्त्री० त्रेखळियोडी)

त्रेगडि, त्रेगति–स०पु० [स० त्रिकाष्ठिका] त्रिकाष्ठिका (उ र)

त्रेता–स०पु० [स०] १ जूए मे तीन कौडियो अथवा पासे के उस भाग का चित्त पडना जिस पर तीन बिंदिया हों
२ देखो 'त्रेतायुग' (रू भे) उ०—सतजुग त्रेता द्वापर कळियुग, येक चौकडी जाणू। ईसि चौकडी होय वहतरी, यद्राराज पहचाणू।
—रुकमणी मगळ

त्रेताग्नि–स०स्त्री० [स०] दक्षिण, गार्हपत्य और आहवनीय ये तीन प्रकार की अग्निया।

त्रेताजुग—देखो 'त्रेतायुग' (रू भे) उ०—१ मधि त्रेताजुग चैत्रमास सक्रति मेखि सरि। करक लगन पख सुकळ धरा पुनवसु नखित्र धुरि।—सू प्र.
उ०—२ अगहन मास त्रितू ग्यो आखो। पो त्रेताजुग वीतो पाखो।
—ऊ का

त्रेताजुगाद–स०पु० [स० त्रेतायुगाद्य] कार्तिक शुक्ला नवमी जिस दिन त्रेता का जन्म या आरम्भ होनो माना जाता है (पुण्य तिथि)

त्रेतायुग–स०पु० [स०] चार युगों मे से दूसरा युग जो १२९६००० वर्षो का माना जाता है।
रू०भे०—तेतजुग, तेता, त्रेता, त्रेताजुग, त्रेत्रा।

त्रेतीस—देखो 'तेतीस' (रू भे) उ०—त्रेतीस लघू गुर वार तार। सुणि माणणि गाहा सिणगार।—ल पि.

त्रेत्रा—देखो 'त्रेतायुग' (रू भे)

त्रेत्रीस—देखो 'तेतीस' (रू भे)

त्रेदस—देखो 'त्रिदस' (रू भे)

त्रेपन—देखो 'तिरेपन' (रू.भे) उ०—आबू द्रव्य सफळ कीयउ, लाख त्रेपन कोडि वार। नेमि प्रासाद मडावीयउ ए, लूणगवसही उद्धार।
—स कु

त्रेभवण, त्रेभुयण, त्रेभूअण, त्रेभूवण, त्रेभोयण—देखो 'त्रिभुवन' (रू भे)
उ०—१ हुतो जि आप केई जुग हुआ, केई वार कळपत हुआ। त्रेभुयण भाजि हुयै एक तन हरी तुझ तोवह हीआ।—पी ग्र.
उ०—२ सह वाता समरत्थ भाज घडवा त्रेभूअण। सह वाता समरत्थ लिअण लका गढ़ दीअण।—ज खि.
उ०—३ धारत कर सायक धनुस, त्रेभोयण सिरताज। भजिया जन कारक अभै, जै राघव माहराज।—र.ज प्र

त्रेवड, त्रेवड़ि, त्रेवड़ी—देखो 'तेवड' (रू.भे) उ०—जदि त्रेवडि करिस्या अउभणउ, तदि हहलाणउ कुमरी तणउ।—ढो मा

त्रेवडो, त्रवडो–स०पु०—१ काव्य छद का भेद विशेष.
२ देखो 'तेवटो' (रू भे) उ०—बिछाइत गादी तकिया फेर विराजमान कीजै छै। बेवडी, त्रेवडी, चौवडी पात्या जुडी छै।—रा.सा स
उ०—२ घडा मेलवै त्रेवडो ग्रूह गाडो। यतै आवियो मैंदरो फेर आडो।—पा प्र.
(स्त्री० त्रेवडी)

त्रेवीस—देखो 'तेईस' (रू.भे) (उ.र) उ०—त्रेवीस तीरथकर समोसरघो रे। प्रभु पूरव निवाणु वार रे।—स कु

त्रेवीसो—देखो 'तेईसो' (रू भे.) उ०—चेईहर त्रण सय त्रेवीसा।
—वृहद स्तोत्र

त्रेसठ, त्रेसठि—देखो 'तिरेसठ' (रू भे) (उ र.)
उ०—त्रिण्हिसइ त्रेसठि पाखडी तणउ, मत खडचउ धरि रग, मोरा साजन।—वि कु.

त्रेसठो—देखो 'तिरेसठो' (रू भे.) उ०—अति सुख वरस त्रेसठो आयो। सो 'अगजीत' जोत सरसायो।—रा रू.

त्रेह—देखो 'ते' (रू भे) उ०—१ आभ तणी छांह, कुपुरिस तणी बाह, दासी नु स्नेह, सरद काळ नु मेह, थोडा मेह नउ त्रेह, वहिलु आवइ छेह।—रा मा स.
उ०—२ मूरखा आगळि न रहइ भिक्ष, कुहाडा आगळि न रहइ व्रिक्ष। पवन आगळि न रहइ मेह, तडका आगळ न रहइ त्रेह।
—नळ-दवदंती रास

त्रै—देखो 'त्रि' (रू.भे) उ०—त्रै दूज गुर कळ चवद तठै। जाणो हाकळ छद जठै। भव सागर तर राम भजो। त्रै विण आन उपाय तजो।—र ज.प्र.

त्रैगुण—देखो 'त्रिगुण' (रू.भे.) उ०—उदोत तपोनिध त्रैगुण ईस, अजीत जरा अत जोग अधीस। विसन्न विमोह विसव्व विग्यान, रती पति तात प्रकत्त राजान।—ह.र

त्रैमासीक–वि० [स०] हर तीसरे महिने होने वाला, जो हर तीसरे महीने हो।
रू०भे०—त्रिमासिक।

त्रैयवीका–स०स्त्री० [स०] गायत्री।

त्रैलोकि—देखो 'त्रिलोक' (रू.भे) उ०—चहुंधा चरित्र वैस्णवे विचित्र। त्रैलोक तत्र वह मिळत अत्र।—ऊ का

त्रैलोकनाथ, त्रैलोकपत, त्रैलोकपती, त्रैलोकराव—देखो 'त्रिलोकनाथ, त्रिलोकपति, त्रिलोकराव' (रू भे.) उ०—समि सूर पवन पाणी सत्ती, मुगति कीअ जामण मरण। त्रैलोकनाथ 'जगियो' तवै, सरण राख असरण सरण।—ज खि

त्रैलोकी, त्रैलोकी—देखो 'त्रिलोक' (रू भे) उ०—जे पद नही ज्याग नइ तीरथि, घणइ दानि त्रैलोकि। सोमनाथ नी चाडि मरता, ते पुहुता सुरलोकि।—का दे प्र

त्रोटक—देखो 'तोटक' (रू भे) उ०—भ्रम भजन को मल छक्क भग्घो। कवि ऊमर त्रोटक छद कग्घो।—ऊ का

त्रोटणो, त्रोटवो—देखो 'तोडणो, तोडवो' (रू भे) उ०—निनाद बध अध के दुकध त्रोटते नदें। महान लठ सठ के कुकठ घोटते मदें।
—ऊ का

त्रोटयोडो—देखो 'तोडियोडो' (रू भे)
(स्त्री० त्रोटियोडी)

त्रोटी—देखो 'टोटी' (रू भे) (व स.) उ०—जउ तइ सोनार नइ जसद घडिवा दियउ, तउ तू मागइ किम कनक त्रोटी ।—स.कु

त्रोटौ—देखो 'टोटौ' (रू भे) उ०—१ ईसर इमि आखियौ मुकद मोटौ अति मोटौ । अनत पार अपार त्रिविध त्रोटौ नह त्रोटौ ।—पी ग्र
उ०—२ भाखि सतोगुण भलौ खरौ कोई कहिजै खोटौ । त्रिविध तणी विच तीन त्रिविध तामस गुण त्रोटौ ।—पी ग्र

त्रोडणौ, त्रोडबौ—देखो 'तोडणौ, तोडबौ' (रू भे)

त्रोडियोडौ—देखो 'तोडियोडौ' (रू.भे)
(स्त्री० त्रोडियोडी)

त्रोडणौ, त्रोडबौ—देखो 'तोडणौ, तोडबौ' (रू भे)
उ०—१ वडो जस खाटियौ सगठ दाणव वहै । त्रिणावत त्रोडियौ कस आधौ कहै ।—पी ग्र.
उ०—२ तातै अति लोही तणा, वहिमै वाहिळिया । तिमि काळोणा त्रोडिया, जिमि दळिया डाहुळिया ।—पी ग्र

त्रोडियोड़ौ—देखो 'तोडियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० त्रोडियोडी)

त्रोण-स०पु० [स०] तरकश ।

त्र्यबक—देखो 'त्र बक' (रू भे)

त्र्यबकसख-स०पु० [स०] महादेव ।

त्र्यबका-स०स्त्री० [स०] दुर्गा, देवी, शक्ति ।

त्र्यबाट—देखो 'त्रबाट' (रू भे) उ०—कळह अवियाट घन सूर माहव काळ, बाजता त्र्यबाटा सत्रा रा फाटै वाका । धूण जे दुरग फौजा लहग हिक धका, असुर ची धरा मझ पडै नत ऊदका ।
—रावत सारगदेव (द्वितीय) कानोड रौ गीत

त्र्यम्रतयोग-स०पु० [स० त्र्यमृतयोग] फलित ज्योतिष मे एक प्रकार का योग जो कुछ विशिष्ट तिथियो, नक्षत्रो और वारो के सयोग से होता है ।

त्र्याणू—देखो 'तेराणू' (रू भे) (उ.र)

त्र्यासी—देखो 'तइयासी' (रू.भे.) (उ र)

त्र्यूखण, त्र्यूसण-स०पु० [स० त्र्यूषण] १ सोठ, पीपल और मिर्च का समूह, त्रिकुटा २ चरक के अनुसार एक प्रकार का घृत जो इन ओषधियो के मेल से बनाया जाता है ।

त्वतरात— । उ०—अविद्ध मोती तणा चउक पूरिया, परवाळा तणा नदावर्त्त रचिया, त्वतरात रा पुस्पप्रकर भरिया ।—व.स.

त्वक, त्वग, त्वचा-स०स्त्री० [स० त्वच्, त्वचा] चर्म, चमडा, त्वक् ।
उ०—अन्न उदक पथ परिहरि, आभरणां ऊवेखि । वकुळ त्वचा वीटिकरि, तरुणी तापस वेखि ।—मा.का प्र.

त्वरित-वि० [स०] तुरन्त, शीघ्र । उ०—रहे जाकी रोकी त्वरित त्रयलोकी तब तरै ।—ऊ.का

त्वस्टा-स०पु० [स० त्वष्टा] एक महा ग्रह जो बिना पर्व के ही सूर्य-चन्द्र पर ग्रहण करता है जिसे विश्व पर विपत्तिसूचक माना जाता है ।

त्वा, त्वौ-सर्व०— तुम, तुमको । उ०—त्रित जोग जीत द्रढ जोग मय । त्वा नमामी गोरख गुरू ।—पा प्र.

त्हारौ-सर्व०—तेरा । उ०—सेवग त्हारा, 'लखा' समोभ्रम, अधिपति वीजा थया अकूप । रइ किम करै अवर नदि रावळ, रेवा नदी तणा गज रूप ।—ईसरदास बारहठ